

ΔΕΛΤΙΟ ΤΗΣ ΕΠΙΣΤΗΜΗΣ ΤΗΣ ΓΕΩΓΡΑΦΙΑΣ

ΔΗΜΟΣΙΑ ΒΙΒΛΙΟΘΗΚΗ  
+200 ΒΕΡΟΙΑΣ  
Αριθ. εισ. 704 β  
ΔΩΡΕΑ Άντων. Τσαϊνέλης

GRVER 00768



Δημόσια Κεντρική Βιβλιοθήκη Βέροιας





Δημόσια Κεντρική Βιβλιοθήκη Βερόιας

Δημόσια Κεντρική Βιβλιοθήκη Βέροιας

*Κρατική Βιβλιοθήκη  
Βερολίνου 1928*



# ΑΔΑΜ ΖΟΙΡΝΙΚΑΒΙ

ΑΙ ΛΟΙΠΑΙ ΔΩΔΕΚΑ ΤΩΝ ΙΘ. ΠΡΑΓΜΑΤΕΙΩΝ  
ΤΩΝ ΠΕΡΙ ΤΗΣ ΕΚΠΟΡΕΥΣΕΩΣ ΤΟΥ ΑΓΙΟΥ ΠΝΕΥΜΑΤΟΣ  
ΕΚ ΜΟΝΟΥ ΤΟΥ ΠΑΤΡΟΣ.

Κ Α Ί

## ΜΑΡΚΟΥ ΕΦΕΣΟΥ ΤΟΥ ΕΥΓΕΝΙΚΟΥ

Κεφάλαια Συλλογιστικά Πεντήκοντα καὶ ἑπτὰ  
πρὸς Λατίνους.

Κ Α Ί

## ΘΕΟΦΙΛΟΥ ΤΟΥ ΚΟΥΤΣΑΛΕΩΣ

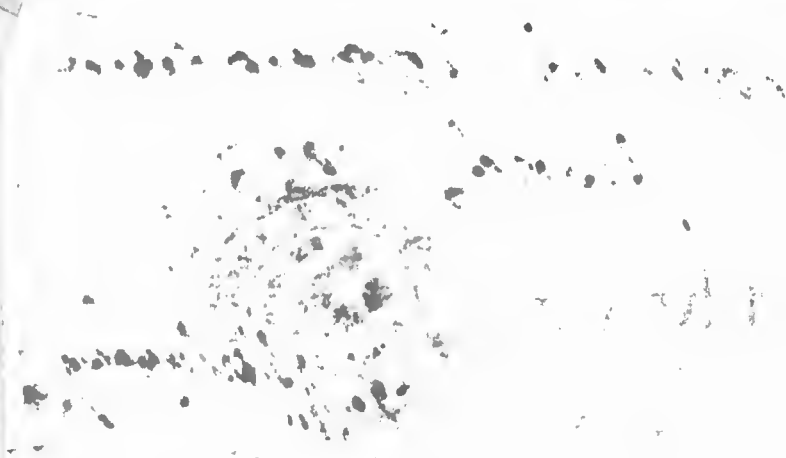
Πρὸς ΣΩΦΡΟΝΙΟΝ ΠΟΚΖΑΣΚΙ Ῥέκτορα  
τῆς ἐν Κιαβίῳ Σχολῆς, καὶ ἐν Γιασίῳ  
τῆς Μολδαβίας Ἠγουμενδύσαντα,  
Ἀπάντησις.

ΤΟΜΟΣ Β΄.



Ἐν τῇ Τυπογραφείᾳ τῆς ἐν ΠΕΤΡΟΥΠΟΛΕΙ Αυτοκρατορικῆς Ἀκαδημίας τῶν Ἐπιστημῶν.  
Ἐν Ἔτει 1797.

704 B



# ΕΛΕΓΧΟΣ ΤΩΝ ΠΡΑΓΜΑΤΕΙΩΝ

Τῶν ἐν τῷ Β'. Τόμῳ περιεχομένων.

## Π Ρ Α Γ Μ Α Τ Ε Ί Α Η'.

Ἐν ᾗ δέκνυται, ὅτι τὸ ἐκ τῆς Τίθς πέμπεσθαι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα,  
ἔδεν τάναι εἰς Πίσιν τῆς καὶ ἐκ τῆς Τίθς Ἐκπορεύσεως  
τῆς Ἁγίας Πνοῦματος.

|               | Σελίδι |
|---------------|--------|
| Ἀπάντησις Α'. | 1      |
| — — Β'.       | 3      |
| — — Γ'.       | 4      |
| — — Δ'.       | 5      |
| — — Ε'.       | 6      |
| — — ς'.       | 13     |
| — — Ζ'.       | 21     |
| — — Η'.       | 51     |

## Π Ρ Α Γ Μ Α Τ Ε Ί Α Θ'.

Ἐν ᾗ ἀποδείκνυται, ὅτι τὸ ἐμφυσῆσαι τὸν Σωτῆρα τοῖς Ἀποστό-  
λοις, καὶ εἰπὴν αὐτοῖς: Λάβετε Πνεῦμα Ἅγιον· ἔδεν συμβάλλεται  
εἰς κατασκευὴν τῆς Ἐκπορεύσεως τῆς Ἁγίας  
Πνοῦματος, καὶ ἐκ τῆς Τίθς.

|               | Σελ: |
|---------------|------|
| Ἀπάντησις Α'. | 70   |
| — — Β'.       | 71   |
| — — Γ'.       | 72   |
| — — Δ'.       | 73   |
| — — Ε'.       | 74   |
| — — ς'.       | 89   |

## Π Ρ Α Γ Μ Α Τ Ε Ί Α Ι'.

Ἐν ᾗ ἀποδείκνυται, ὅτι τὸ ἔχειν τὸν Τιδὸν πάντα τὰ τῆς Πατρὸς,  
ἐκ ἑσιν Ἀπόδειξις τῆς τῆς Ἁγίας Πνοῦματος Ἐκπορεύσεως  
καὶ ἐκ τῆς Τίθς.

|               | Σελ:  |
|---------------|-------|
| Ἀπάντησις Α'. | 102   |
| — — Β'.       | 104   |
|               | Ἀπάν- |

\* \* \*

|                        |      |
|------------------------|------|
|                        | Σελ: |
| Ἀπάντησις Γ' - - - - - | 105  |
| — — Δ' - - - - -       | 107  |
| — — Ε' - - - - -       | 109  |

### Π Ρ Α Γ Μ Α Τ Ε Ί Α ΙΑ'.

Ἐν ᾗ ἀποδείκνυται, ὅτι τὸ εἶναι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, Πνεῦμα τῷ Υἱῷ, ὅθεν εἰς πίσιν σωτελεῖ τῆς τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ Ἐκπορεύσεως.

|                        |      |
|------------------------|------|
|                        | Σελ: |
| Ἀπάντησις Α' - - - - - | 135  |
| — — Β' - - - - -       | 137  |
| — — Γ' - - - - -       | 140  |
| — — Δ' - - - - -       | 142  |

### Π Ρ Α Γ Μ Α Τ Ε Ί Α ΙΒ'.

Ἐν ᾗ ἀποδείκνυται, ὅτι τὸ ὑπὸ τῷ Σωτῆρος περὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι εἰρημένον: Ὅτι ἐκ τῷ εἰς λήψεσιν ὅθεν σωτελεῖ εἰς πίσιν τῆς τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος Ἐκπορεύσεως καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ.

|                        |      |
|------------------------|------|
|                        | Σελ: |
| Ἀπάντησις Α' - - - - - | 162  |
| — — Β' - - - - -       | 172  |
| — — Γ' - - - - -       | 186  |
| — — Δ' - - - - -       | 188  |
| — — Ε' - - - - -       | 191  |

### Π Ρ Α Γ Μ Α Τ Ε Ί Α ΙΓ'.

Ἐν ᾗ ἀποδείκνυται, ὅτι τὸ μὴ ἀφ' ἑαυτοῦ, ἀλλ' ὅσα ἂν ἀκέρῃ λαλεῖν τὸ Πνεῦμα, ὅθεν εἰς Ἀπόδειξιν σωτελεῖ τῆς τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος Ἐκπορεύσεως καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ.

|                        |      |
|------------------------|------|
|                        | Σελ: |
| Ἀπάντησις Α' - - - - - | 210  |
| — — Β' - - - - -       | 213  |
| — — Γ' - - - - -       | 220  |
| — — Δ' - - - - -       | 222  |
| — — Ε' - - - - -       | 224  |

### Π Ρ Α Γ Μ Α Τ Ε Ί Α ΙΔ'.

Ἐν ᾗ τὰ λοιπὰ τῶν Λατίνων Ἐπιχαρίματα, τὰ ὑπὲρ τῆς Ἐκπορεύσεως τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος ἐκ τῷ Υἱῷ, ἀπὸ Ἱερῶν Γραφῶν λαμβανόμενα, ἐπιλύεται.

Σελ: 229 — 242

ΠΡΑΓ-



Π Ρ Α Γ Μ Α Τ Ε Ί Α Ι Ε'.

Ἐν ἣ αἱ ἀπὸ τῶν Συγγραμμάτων τῶν Ἀνατολικῶν Πατέρων,  
ὑπὲρ τῆς Ἐκπορεύσεως τῆ Ἀγίας Πνεύματος καὶ ἐκ τῆ Τίτῃ,  
προχειρίζομενα μαρτυρία διαλύονται.

|                                                                                                                               |      |
|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------|
| § Α'.                                                                                                                         | Σελ: |
| "Ὅπως οἱ Πατέρες φασὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα Ἐκπορεύε-<br>σθαι ἐκ Πατρὸς διὰ τῆ Τίτῃ. - - -                                          | 243. |
| § Β'.                                                                                                                         |      |
| "Ὅπως οἱ Πατέρες φασὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐν τῷ<br>Τίτῳ μένειν καὶ ἀναπνεύσθαι. - - -                                             | 265  |
| § Γ'.                                                                                                                         |      |
| "Ὅπως οἱ Πατέρες διδάσκουσι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ<br>τῆ σόματος τῆ Θεᾶς ἐκπορεύεσθαι τὸν δὲ Τίτον<br>ἄναι τὸ σῶμα τῆ Θεᾶς. - - - | 278  |
| § Δ'.                                                                                                                         |      |
| "Ὅπως ἐκδιδάσκουσιν οἱ Πατέρες, ὅτι τὸ Πνεῦμα<br>ὁμοῦσιν ἐστὶ τῷ Τίτῳ. - - -                                                  | 280  |
| § Ε'.                                                                                                                         |      |
| "Ὅπως οἱ Πατέρες διδάσκουσι, μόνον ἐκ μόνου τῆ Πα-<br>τρὸς τὸν Τίτον. - - -                                                   | 296  |
| § 5'.                                                                                                                         |      |
| "Ὅπως διδάσκουσιν οἱ Θεοὶ Πατέρες, Εἰκόνα τῆ Τίτῃ<br>ὑπάρχειν τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. - - -                                       | 304  |
| § Ζ'.                                                                                                                         |      |
| Ἐκ τῆς τῆ Ευαγγελιστῆς Μάρκας Λειτουργίας. -                                                                                  | 316  |
| § Η'.                                                                                                                         |      |
| Ἐκ τῆ Ἀθωαγόρας τῆ Φιλοσόφου. - - -                                                                                           | —    |
| § Θ'.                                                                                                                         |      |
| Ἐκ τῆ Διονυσίου τῆ Ἀλεξανδρείας. - - -                                                                                        | —    |
| § Ι'.                                                                                                                         |      |
| Ἐκ τῆ Οχυματάρχου Γρηγορίου. - - -                                                                                            | 317  |
| § ΙΑ'.                                                                                                                        |      |
| Ἐκ τῆς Οἰκουμενικῆς Πρώτης Συνόδου τῆς ἐν Νικαίᾳ. —                                                                           | —    |
| § ΙΒ'.                                                                                                                        |      |
| Ἐκ τῶν τῆ Ἀθανασίου. - - -                                                                                                    | 318  |
| § ΙΓ'.                                                                                                                        |      |
| Ἐκ τῶν Διδύμων τῆ Ἀλεξανδρέως. - - -                                                                                          | 350  |
| § ΙΔ'.                                                                                                                        |      |
| Ἐκ τῶν Κυρίλλου τῆ Ἱεροσολυμίτου. - - -                                                                                       | 352  |
| § ΙΕ'.                                                                                                                        |      |
| Ἐκ τῶν τῆ ὁρανοφάντορος Βασιλείου. - - -                                                                                      | 353  |
| Ἐκ                                                                                                                            |      |



\* \* \*

Σελ:

|                                     |   |   |     |
|-------------------------------------|---|---|-----|
| § Ις'.                              |   |   |     |
| Ἐκ τῶν Γρηγορίᾳ τῇ Θεολόγᾳ.         | - | - | 380 |
| § ΙΖ'.                              |   |   |     |
| Ἐκ τῶν τῇ Ἐπιφανίᾳ.                 | - | - | 388 |
| § ΙΗ'.                              |   |   |     |
| Ἐκ τῶν Φίλωνος τῇ Καρπαθίᾳ.         | - | - | 402 |
| § ΙΘ'.                              |   |   |     |
| Ἐκ τῶν Γρηγορίᾳ τῇ Νύσσης.          | - | - | 403 |
| § Κ'.                               |   |   |     |
| Ἐκ τῶν τῇ Χρυσοβρόχμωνος Ἰωάννῃ.    | - | - | 404 |
| § ΚΑ'.                              |   |   |     |
| Ἐκ τῶν τῇ Σωεσίᾳ.                   | - | - | 408 |
| § ΚΒ'.                              |   |   |     |
| Ἐκ τῶν Κυρίλλῳ τῇ Ἀλεξανδρείᾳ.      | - | - | 411 |
| § ΚΓ'.                              |   |   |     |
| Ἐκ τῶν Ἀναστασίᾳ τῇ Σιναίτῃ.        | - | - | 431 |
| § ΚΔ'.                              |   |   |     |
| Ἐκ τῶν Σοδῆρος τῇ Ἀλεξανδρείᾳ.      | - | - | 434 |
| § ΚΕ'.                              |   |   |     |
| Ἐκ τῆς Β'. Σωόδῃ τῶν ἐν Νικαίᾳ.     | - | - | 434 |
| § Κς'.                              |   |   |     |
| Ἐκ τῶν Ἰωάννῃ τῇ Δαμασκίῳ.          | - | - | 435 |
| § ΚΖ'.                              |   |   |     |
| Ἐκ τῆς Σωόδῃ ἐν ᾗ καθήρηται Φώτιος. | - | - | 438 |
| § ΚΗ'.                              |   |   |     |
| Ἐκ τῇ Συμεῶνος τῇ Μεταφρασῇ.        | - | - | 439 |

### Π Ρ Α Γ Μ Α Τ Ε Ί Α Ις'.

Ἐν ᾗ δέκνυνται, εἰδὲ τὰ λοιπὰ Λατίνων Ἐπιχειρήματα οἶατε  
εἶναι, συμπεραίνειν τῷ τῇ Ἀγίᾳ Πνεύματος καὶ ἐκ  
τῇ Υἱῇ Ἐκπόρουσιν.

Σελ:

|                            |   |   |     |
|----------------------------|---|---|-----|
| Α'. Ἐπιχείρημα τῶν Λατίνων | - | - | 442 |
| Ἀπάντησις Α'.              | - | - | 443 |
| — — Β'.                    | - | - | 445 |
| — — Γ'.                    | - | - | 448 |
| — — Δ'.                    | - | - | 451 |
| Β'. Ἐπιχείρημα τῶν Λατίνων | - | - | 467 |
| Γ'. Ἐπιχείρημα τῶν Λατίνων | - | - | 477 |
| Ἀπάντησις Α'.              | - | - | —   |
| — — Β'.                    | - | - | 481 |

Ἀπάν-

|               |   |   |   |   |      |
|---------------|---|---|---|---|------|
|               | * | * | * |   | Σελ: |
| Ἀπάντησις Γ'. | - | - | - | - | 483  |
| — Δ'.         | - | - | - | - | —    |
| — Ε'.         | - | - | - | - | 484  |
| — ς'.         | - | - | - | - | 485  |

#### Π Ρ Α Γ Μ Α Τ Ε Ὶ Α ΙΖ'.

Ἐν ἣ δέκνυται, ὅτι ἡ ἐπὶ Ἰννοκεντίῃ Πάπα τῷ Γ', μετὰ τῆς ἐν Ῥώμῃ Ἐκκλησίας ἔνωσις, χειρὶ βιάᾳ τοῖς Ἀνατολικοῖς ἐπε-  
δεαστοῦθῃ. Ἐνθεν τοι καὶ ὑπὸ τέτων, ἐπειδὴν ἐξίω,  
ἡδέτῃται, καὶ ἀνετράπη.

#### Π Ρ Α Γ Μ Α Τ Ε Ὶ Α ΙΗ'.

Ἐν ἣ ἀποδέκνυται, ὅδ' ὅλως σωτελεῖν Λατίνοις, τὴν ὑπὸ τῷ  
Ἀυτοκράτορος Μιχαὴλ τῷ Παλαιολόγῳ προαχθεῖσαν τῆς Ἀνα-  
τολικῆς τε καὶ Δυτικῆς Ἐκκλησίας ἔνωσιν.

|                             |   |   |   |      |
|-----------------------------|---|---|---|------|
|                             |   |   |   | Σελ: |
| Α'. Ἀντίθεσις πρὸς Λατίνους | - | - | - | 580  |
| Β'. — — — — —               | - | - | - | 591  |
| Γ'. — — — — —               | - | - | - | 594  |
| Δ'. — — — — —               | - | - | - | 596  |
| Ε'. — — — — —               | - | - | - | 599  |
| ς'. — — — — —               | - | - | - | 604  |
| Ζ'. — — — — —               | - | - | - | 613  |
| Η'. — — — — —               | - | - | - | 616  |
| Θ'. — — — — —               | - | - | - | 630  |

#### Π Ρ Α Γ Μ Α Τ Ε Ὶ Α ΙΘ'.

Ἐν ἣ ἀποδέκνυται, ὅτι ἡ ἐν Φλωρεντίᾳ Σύνοδος ἔκ τ' Ἐννομος  
ὥς πολλὰ καὶ δὲν ταῖς Οἰκουμενικαῖς τῶν Σиноδῶν  
ταύτῃ συγκαταλέγεσθαι.

|       |   |   |   |      |
|-------|---|---|---|------|
|       |   |   |   | Σελ: |
| § Α'. | - | - | - | 637  |
| § Β'. | - | - | - | 638  |
| § Γ'. | - | - | - | 541  |
| § Δ'. | - | - | - | 657  |
| § Ε'. | - | - | - | 659  |
| § ς'. | - | - | - | 663  |

#### Μ Α Ρ Κ Ο Υ Ἐ Φ Ε Ὶ Σ Ο Υ Τ Ο Υ Ἐ Τ Γ Ε Ν Ι Κ Ο Υ.

Περὶ τῆς Ἐκπορεύσεως τῷ Ἀγίῳ Πνεύματι  
Συλλογιστικὰ Κεφάλαια

Κατὰ Λατίνων. — — Σελ: 710  
ἘΠΙΣ-

\* \* \*

ἘΠΙΣΤΟΛΗ ΔΟΓΜΑΤΙΚΗ  
ΚΟΡΥΔΑΛΕΩΣ

Τῆ ἐν Κωνσταντινπόλει Διδασκάλῃ

Πρὸς τὸν Πανοσιώτατον Πατέρα

ΣΩΦΡΟΝΙΟΝ ΠΟΚΖΑΣΚΙ

Τὸν Ῥέκτορα μὲν πρώτῳ χρηματίσαντα τῆς ἐν Κιαιβίᾳ

Σχολῆς, τότε δὲ ἐν Γιασίῳ τῆς Μολδαβίας

Ἡγμενδύοντα.

Σελ: 742

Ἐφεξῆς αἱ τῶν Ἐπιχειρημάτων ἐπιλύσεις τῶν περὶ

τῆς Ἐκπορεύσεως τῆς Ἀγίας Πνύματος. Σελ: 749

ΠΡΑΓ-

## ΠΡΑΓΜΑΤΕΙΑ Η.

Ἐν ᾗ δέκνυται

Ὅτι τὸ ἐκ τῆς Υἱᾶς πέμπεσθαι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ἔδεν  
τείνει εἰς Πίσιν τῆς καὶ ἐκ τῆς Υἱᾶς Ἐκπορεύ-  
σεως τῆς Ἁγίας Πνεύματος.

Τῶν οἷς, ὑπὲρ τῆς ἰδίας δόξης, ἐκ τῆς Ἱερᾶς Γραφῆς οἱ Λα-  
τῖνοι κέχρωται ἐπιχειρημάτων, ἐκᾶνο πρώτισόν ἐστι, δι' ὃ,  
ἐπειδὴ πέμπεται τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῆς Υἱᾶς, ἐπιφέρουσιν: ὅτι  
ἄρα καὶ ἐκπορεύεται. Πρῶτον μὲν, φασί, διὰ τὸ τὴν πέμψιν,  
τῇ ἐκπορεύσει εἶναι τὴν αὐτήν. Ὡς, εἰ τὸ Πνεῦμα παρὰ τῆς  
Υἱᾶς πέμπεται, ἐξ αὐτῆς ἄρα καὶ ἐκπορεύεται. — Ἔτι: ὅφ' ὃ τις  
πέμπεται, ἐξ αὐτῆς δὴ τέττε καὶ ἐκπορεύεται· τὸ δὲ καὶ ἐκ τῆς  
Υἱᾶς πέμπεσθαι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, πολλαχῶς διδάσκει τὰ Ἱερὰ  
Λόγια. — Πάλιν: ἔκ ἂν ἐκ τῆς Υἱᾶς τὸ Πνεῦμα πέμποιτο, μὴ  
ἐκπορεύομενον ἐξ αὐτῆς· καθάπερ ἔν ὁ Θεὸς καὶ Πατὴρ, ὡς  
μηδενὶ τὴν ὑπαρξιν ἐποφείλων, ἔδ' ὑπὸ τινος ἀναγινώσκειται ποτε  
πέμπεσθαι. — Τελούταῖον: τὸ Ἅγιον Πνεῦμα πέμπεται παρὰ τῆς  
Υἱᾶς, ἥτοι κατ' ἐπιταγὴν, ὡς ὑπὸ μείζονος ἢ κατὰ συμβεβηλὸν,  
ὡς ὑπὸ σωετωτέρου ἢ τέως κατὰ φυσικῶς τινα πρόεσιν· ἀλλα-  
μὴν ἔτε κατ' ἐπιταγὴν, ἔτε κατὰ συμβεβηλὸν τὸ Πνεῦμα πέμ-  
πεται παρὰ τῆς Υἱᾶς κατὰ φυσικῶς ἄρα πρόεσιν. Ταῦτα μὲν  
οἱ Λατῖνοι.

### ἈΠΑΝΤΗΣΙΣ Α'.

Τῷ δ' αὐτῷ ἐπιχειρήματι ἐχρῶντο πάσαι, καὶ οἱ ἐξ Αἰρέσεως,  
(1) ἐπιφέροντες κατὰ τῶν Ὁρθοδόξων, γεννητῶς τὸ Πνεῦμα  
ἐκ τῆς

(1) Οἱ τὸ ὁμοῦσιον τῆς Τριάδος ἀρνέμενοι, καὶ τοῖς κτίσμασι τὸ Πνεῦμα ἐναρίθμιον  
τάττοντες, ἐξ ὑποθέσεως τῆς: „Εἰ ἔκ ἐστι κτίσμα,“ εἰσέβαλλον, ὅτι „ἄρα τὸ  
Τόμ: Β'. Α Πνεῦμα

ἐκ τῆς Υἱᾶς προῖεναι, καὶ ὅτως Υἱὸν μὲν τῆς Υἱᾶς αὐτὸ εἶναι, Υἱωνὸν δὲ τῆς Πατρὸς λέγοντες. Οὕτω γὰρ περὶ ἐκείνων ἈΘΑΝΑΣΙΟΣ ἐν τῇ Β'. τῶν πρὸς Σεραπίωνα Ἐπιστολῶν, Τόμῳ Β'. Σελίδι 16. „Εἶτα ἐπιλέγῃς, ὡς γράφεις, εἰ ἐκ τῆς Υἱᾶς λή-  
 „ψεται τὸ Πνεῦμα, καὶ παρ' αὐτῆς δίδεται (ὅτι γὰρ γέγραπται.)  
 „εὐθὺς ἐπάγῃς: ἔκ ἐν Πάππος ὁ Πατὴρ, καὶ ἐκγονον αὐτῆς ἐστὶ  
 „τὸ Πνεῦμα. Ἄμα δὲ κἀντεῦθεν ἐκδηλον, μηδαμῶς τῆς Πα-  
 „τέρας, τὸ ἐκ τῆς Υἱᾶς πέμπεσθαι, ἢ δίδοσθαι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα,  
 „ὡς ἐπιχάρημα ἐξεληφέναι τῆς αὐτῆς ἐκπορεύσεως καὶ ἐκ τῆς Υἱᾶς.  
 „Ὑπο

„Πνεῦμα Υἱᾶς, καὶ „ἀδελφοὶ δύο, ὁ Υἱὸς καὶ τὸ Πνεῦμα. Ἐπειτα: εἰ μὴ ἅλις  
 „τῶν ἔχει εἰς ἑλεγχον δῆθεν τῶν ἐρροδόξων, ἐπιλέγοντες κατὰ τὸ διεζωγμένον:  
 „Εἰ δὲ ἐκ τῆς Υἱᾶς, ἐπῆγον: „ἔκ ἐν Πάππος ὁ Πατὴρ, καὶ ἐκγονον αὐτῆς ἄρα τὸ  
 „Πνεῦμα. Ἡ ἔν τῶν Αἱρεσῶν ἐκ ἐν τῶν κυρίως ἰσχυρῶν ἡτοὶ Υἱὸν, ἢ τῆς μὲν  
 „Πατρὸς Υἱωνὸν, τῆς δὲ Υἱᾶς Υἱὸν αὐτῆς τῶν ὄντι ὑπεληφέναι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον.  
 „Τῶν παλιν γὰρ ἀπέχον, τῆς ἐποτερονὲν συγχωρεῖν, ὡς παρρησιαστικῶς τῆς Πατρὸς  
 „ἐκείνης τὸ Πνεῦμα, οἱ ἐπὶ τῶν κτίσιν αὐτὸ κατὰγοντες. Ἀλλ' ἐκεῖνα κατ' ἐπαγω-  
 „γὴν Συμπεράσματος ἐπερρίπτεται τοῖς εὐσεβέσι, ὡς δῆθεν ἀτόπως ἐκ τῆς αὐτῶν δίγ-  
 „ματος σωαγόμενα. Διὸ, ὅς ἐστιν ἰσχυρῶς πρὸς Λατίνους, τῆς ἄλλως φρονέοντας, ἀπαν-  
 „τῶν ἐνταῦθα μοι δοκεῖ Ζοιζινικάδης, λέγων: ὡς ἔπειτα οἱ Πατέρες ἐκ τῆς Υἱᾶς ἐδό-  
 „ξαζον ἐκπορεύεσθαι τὸ Πνεῦμα, ῥᾶστα ἂν τὸ τῶν Αἱρετικῶν ἐπέλυσαν ἐπιχάρημα  
 „ἀπαντήσαντες: ἐκπορεύεσθαι μὲν, μὴ γεννᾶσθαι δέ. Πῶς γὰρ, (ἔρεϊ ὁ Λατῖνος;)   
 „τοῖς τοῖς ἐκ ἀπεκρίναντο ὡς ἐκ τῆς Πατρὸς μόνῃ, δεικνύοντες γὰρ τὸ μὴ Υἱὸν τῆς  
 „Πατρὸς εἶναι τὸ Πνεῦμα; Τίς δ' ἂν, μὴ τῶν ἀποκρινόμενων, ἐντεῦθεν εἰσβάλοι  
 „εὐλόγως, μὴ ἐκ τῆς Πατρὸς τῶν ὄντι τὸ Πνεῦμα Ἅγιον ἐκπορεύεσθαι; Οὕτω δὲ πρᾶ-  
 „ξεν, ὅς ἐκ κατὰ τῆς Λατίνικῆς δόξης ἐρῶς ἄντις σωαζέειν ἐκ τέττε, ἐπεὶ μηδὲν  
 „τοῖς ἀπώτησαν οἱ Πατέρες, μηδὲ περὶ τῆς ἐκπορεύσεως τῆς Ἁγίας Πνεύματος,  
 „τῆς καὶ ἐκ τῆς Υἱᾶς. Ἀλλ' ὁ τῆς Μεγάλῃς Ἀθανασίᾳς Λόγος, ὁ κατὰ τῶν Πνεύμα-  
 „τομάχων ἐκείνων, ἀλλὰ χίθον λαμβανόμενος, ἐκ τῶν ἐν τοῖς ἱεροῖς, δηλονότι, ἐκπε-  
 „φασμένων, κράτιστος ἐστὶ, καὶ οἷος ἐμπης ὅς ὅπως ἐκείνης, ἀλλὰ καὶ Λατίνους αὐτῆς  
 „ἐντρέψαι τε καὶ κατασιγᾶσαι, τῆς δογματίζοντος καὶ λέγειν θρασυνομένους ὅπερ  
 „ὁ γέγραπται. „Ἄ γάρ, (φασὶν ἈΘΑΝΑΣΙΟΣ Αὐτῇ Σελ: 19.) ὁ Θεὸς ἀνόμασε,  
 „τίς μετονομάσαι τολμήσῃ; ὁ γὰρ Πατὴρ, Πατὴρ καὶ ὁ Πάππος καὶ ὁ Υἱὸς,  
 „Υἱὸς ἐστὶ τῆς Θεᾶς, καὶ ὁ Πατὴρ τῆς Πνεύματος καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, Πνεῦμα  
 „Ἅγιον, καὶ ἐκ ἐκγονος τῆς Πατρὸς, ὅς ἐστιν Ἀδελφὸς τῆς Υἱᾶς: τέττων ἐν ὅτι δεικνυ-  
 „μένων μαίνοιτ' ἄντις ἐρωτῶν, Υἱὸς ἐν ἐστὶ καὶ τὸ Πνεῦμα; . . . . Ἀλλ' ὡς γέγραπ-  
 „ται (ἐκαστος) πιστεύτω . . . . τὰ γὰρ τῇ πίστει παραδιδόμενα, ἀπεριέργασον ἔχει  
 „τῶν γνωσθῶν . . . . Οἱ γὰρ Μαθηταὶ ἀκέσαντες: βαπτίζοντες αὐτῆς εἰς τὸ ὄνομα  
 „τῆς Πατρὸς, καὶ τῆς Υἱᾶς, καὶ τῆς Ἁγίας Πνεύματος . . . . Οὐχ ὥστε (οἱ ἐξ Αἱρε-  
 „σεως) ἠρώτησαν: Υἱὸς ἐν ἐστὶ τὸ Πνεῦμα; Οὐδὲ, εἰπόντες τῆς Κυρίᾳ μετὰ τὸν  
 „Υἱὸν τὸ Πνεῦμα, ἠρώτησαν: Πάππος ἐν ὁ Πατὴρ; (Αὐτῇ Σελ: 20.) Οὐ γὰρ ἡ-  
 „κισαν εἰς ὄνομα Πάππου, ἀλλ' εἰς ὄνομα Πατρὸς . . . . Οὐ γὰρ ἰσχυρῶς ἄλλως εἰπὲν,  
 „ἢ ὡς ἐρηκεν ὁ Σατὴρ. Ἐαυτὸν μὲν Υἱὸν, τὸ δὲ Πνεῦμα Ἅγιον. Οὐδ' ἀλλάξαι  
 „θέμις, ἢ ὡς σωτέταται, ὥστε καὶ ἐπὶ τῆς Πατρὸς. Ὡς γὰρ ἐκ ἐστὶν ἄλλως  
 „εἰπὲν περὶ αὐτῆς, ἢ ὅτι Πατὴρ: ὅτι αἰετῶς ἐρωτᾷ: εἰ ὁ Υἱὸς ἐστὶ τὸ Πνεῦμα,  
 „ἢ τὸ Πνεῦμα Υἱὸς; . . . . Τίς γὰρ παρέδωκε ταῦτα; τίς ὁ διδάξας; Ἀλλ' ὁ δὲ  
 „ἐκ τῶν Θεῶν Γραφῶν. Ἐκ δὲ τῆς περιουσίας τῆς καρδίας αὐτῶν ἐξῆλθεν ἡ  
 „τοιαύτη παραφροσύνη . . . . Οὐκ ἐν (Αὐτῇ Σελ: 21.) ὁ ἐρωτῶν: Υἱὸς ἐν ἐστὶ τὸ  
 „Πνεῦμα; ὡς διωαμένη τῆς ὀνόματος ἀλλὰ σκεδᾶται, φαντάζεται, καὶ μαίνεται ἐαυτῷ  
 „περιποιεῖται. Καὶ ὁ ἐρωτῶν δέ: Πάππος ἐν ἐστὶν ὁ Πατὴρ; ἐπινωῶν ὄνομα τῶν  
 „Πατρῶν, πλανᾶται τῇ καρδίᾳ . . . . Παιζόντων γὰρ, (εἰ μὴ ἀφραγνόντων) ἰδίον,  
 „ἐρωτᾷ τὰ μὴ γεγραμμένα, καὶ λέγειν. Οὕτως ἐν τοῖς τῆς Μεγάλῃς τέττε Πα-  
 „τρὸς ῥήμασιν ἄμεινον ἂν ἐπείσσει καὶ Ζοιζινικάδης, εἴπερ ἐχρήσατο. Παρὰ τῆς Πα-  
 „τρὸς

Ἐνὶ γὰρ αὖν ἔπερ λόγῳ τῷ ἐπιχείρημα ἐπέλυσαν ἐκεῖνο, δείξαντες ἔπειθαι μὲν πάντως ἐντεῦθεν, ἀρχὴν εἶναι τῷ Πνεύματος τὸν Υἱόν· ἀλλὰ μὴ μεντοιῖ ἐκ τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα γεννᾶσθαι, ἀλλ' ἐκπορεύεσθαι. Νυνὶ δὲ, ὡς ἐκ τῶν Ἀθανασίῃς δῆλον, τὸ μὲν Ἐπιχείρημα μόνον, οἱ Πατέρες ὡς ἄτοπον ἐκσυρίτῃσι, λύσιν δὲ αὐτῷ ἐπαγαγεῖν τοιαύτῳ οὐκ ἔχουσιν. Οὐκ ἄρα τὸ „ἐκ τῷ Υἱῷ „πέμπεσθαι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, λόγος ὡς αὐτοῖς τῆς καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ προόδου τῷ Πνεύματος. Δεόντως ἄρα καὶ ἡμεῖς τὸ τέως (ὡςπερ Ἀθανάσιος τοῖς Αἰρεσιόφροσιν ἐκείνοις ἀπώτα) πρὸς τὸν παραπλήσιον, ὃ Λατῖνοι κέχρωται, λόγον δι' ἃ, ἐκ μὲν τῷ Πατρὸς τὸν Υἱόν, ἐκ δὲ τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα ἐκπροϊέναι, οἷον κατὰ τινὰς βαθμύς, ἐπιφέρουσιν, ἀπαντήσομεν: „Τίς τῶν „ἀκρίτων ἐστὶ Χριστιανὸς, καὶ οὐ μᾶλλον Ἑλλήνας αὐτὸς νομίζει;

### Ἀ Π Α Ν Τ Η Σ Ι Σ Β'.

Πῶς δὲ ἐκ τῆς τῷ Πνεύματος πέμψεως παρὰ τῷ Υἱῷ, καὶ ἢ ἐκ τῷ Υἱῷ ἐκπορεύσιν τῷ αὐτῷ σωμαθῆσεται, τῶν Πατέρων ἀριδῆλως ἐκδιδασκόντων: ὅτι „πέμπεσθαι μὲν λέγεται τὸ Ἅγιον „Πνεῦμα παρὰ τῷ Υἱῷ, οὐ μὲν τοιγε διὰ τὴν „ἀρχὴν, μόνον δὲ διὰ τὴν „οἰκειότητα, καὶ τὴν τῆς φύσεως ἐνότητα. Οὐκ ἄρα ἐκ τῆς τῷ Πνεύματος προέσεως, ἐκ δὲ τῷ ἐνιαίῃ τῆς φύσεως ἔχει ὁ Υἱὸς πέμπειν τὸ Πνεῦμα. Οὕτω καὶ γὰρ ἈΜΒΡΟΣΙΟΣ ἐν τῷ περὶ τῷ Συμβόλῳ Βιβλίῳ, Κεφαλ: Γ'. ἐν τῷ Δ'. Τόμ: τῶν Συγγραμ: Στήλῃ 94. „Φησὶν ὁ Υἱός: (ὅτι ὁ Πα- „ράκλητος) παρὰ τῷ Πατρὸς ἐκπορεύεται, διὰ τὴν Ἀρχὴν λέ- „γει δέ: ὅν ἐγὼ πέμψω, διὰ τὴν οἰκειότητα καὶ τὴν ἐνότητα „τῆς

τῶς γέγραπται, ὃ Λατῖνοι, τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκπορεύεσθαι παρὰ δὲ τῷ Υἱῷ, ἢ καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ, ὅθεν γέγραπται ἐκπορεύεσθαι ἀλλ' ἢ πέμπεσθαι. Ἐν τέτοις οὖν σήκτεσ' ὅθεν μένετε; μὴδὲ γε τὸ πέμπεσθαι εἰς τὸ ἐκπορεύεσθαι μεταλαμβάνειν ἐπαυθαδίσοιθε, τὸ γεγραμμένον εἰς ὃ μὴ γέγραπται μεταλλάσσοντες. „Α ὁ Θεὸς „ὠνέμασε, τίς μετονομάσαι τολμήσει; ὡς γέγραπται πισθεύετε. Τὰ γὰρ τῇ πίστει „παραδεδομένα, ἀπεριέργασον ἔχει τὴν γνώσιν. Οὐκ ἔστιν ἄλλως εἰπεῖν, ἢ ὡς ἔρη- „κεν ὁ Σωτὴρ, ὅθεν ἀλλάξαι θέμις, ἢ ὡς σωτέτακται. Οὐκ ἔστιν ἄλλως εἰπεῖν, ἢ ὅτι τὸ Πνεῦμα παρὰ τῷ Πατρὸς ἐκπορεύεται, καὶ παρὰ τῷ Υἱῷ πέμπεται· τὸ δ' ὅτι ἐκπορεύεται παρὰ τῷ Υἱῷ, ἢ καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ καὶ ὅτι τὸ πέμπεσθαι αὐτὸ εἰς τὸ ἐκπορεύεσθαι, τίς ὁ παραδεδικώς; „Τίς δ' ὁ διδάξας ταῦτα γε; „Ἀλλ' ὅθεν ἐκ τῶν Θεῶν Γραφῶν, ἐκ δὲ τῷ περιεσώματος τῆς καρδίας τῶν περὶ τὰ Θεῶν καινοτομησάντων ἐξῆλθεν ἡ τοιαύτη παραφροσύνη. Ὁ ἐκ τῷ παρὰ τῷ Υἱῷ πέμπεσθαι τὸ Πνεῦμα, εἰσβάλλων ὅτι ἄρα καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ αὐτὸ ἐκπορεύεται, ὡς διωα- „μένη τῷ ὀνόματος ἀλλάσσεσθαι „(τετέστιν, ὡς ἐξὸν πατέρες ἀντὶ πατέρων μελαλαμ- „βάνεσθαι) ὁ τοιοῦτος φαντάζεται, καὶ μανίαν ἑαυτῷ περιποιεῖται, καὶ τῇ καρδίᾳ „πλανᾶται. Παιζόντων (εἰ μὴ γε ἀφραϊνόντων) ἐστὶν ἐρωτᾶν τὰ μὴ γεγραμμένα, „καὶ λέγειν.

„τῆς φύσεως,,. Δι' ὧν δὴπε σαφῶς διδάσκει, ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, τὸ μὲν παρὰ τῷ Πατρὶ ἐκπορεύεται, λέγεται διὰ τὴν Ἀρχὴν· τὸ δὲ ἐκ τῷ Υἱῷ πέμπεται, ἔκτετι διὰ τὴν Ἀρχὴν, διὰ δὲ τὴν τῆς ἁγίας ταυτότητα μόνον, καὶ τὸ ἐνιαῖον τῆς φύσεως. Ὡσαύτως δὲ καὶ ἹΕΡΩΝΥΜΟΣ ἐν Ὑπομνήμῃ: ΙΔ'. τῶν εἰς τὸν Ἡσαΐαν, Κεφαλ: ΝΖ. „Τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ὃ πρόεισι μὲν παρὰ τῷ Πατρὶ, πέμπεται δὲ καὶ παρὰ τῷ Υἱῷ διὰ τὴν συμφυΐαν· λέγοντος: ἂν ἐγὼ ἀπέλθω, πέμψω αὐτὸν πρὸς ὑμᾶς,,.

### Ἀ Π Ἀ Ν Τ Η Σ Ι Σ Γ'.

Εἰ δὲ ἐκ τῆς τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος πέμψεως, καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ, ἐπὶ τὴν ἐκείνης αἰτίαν ἀνελθεῖν ἐθέλεις (ὅς γάρ πέμπεται, καὶ ἐξ αὐτῆς ἐστίν·) οἱ Πατέρες αὐτοῖς διδάσκουσιν εἶναι μὲν τὴν τῷ Πνεύματος πέμψιν, τῆς τῷ αὐτῷ ἐκπορεύσεως ἀπόδειξιν, ὃ μὲν τοιαύτης γε ἐκ τῷ Υἱῷ, ἀλλ' ἐκ τῷ Πατρί. Οὕτω γὰρ ὁ Ναζιανζηνὸς ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ ἐν Ὁμιλ: ΛΖ'. Σελ: 611. „Ὅσα ταπεινότερον (περὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι) λέγεται, τὸ δίδοσθαι, τὸ ἀποστέλλεσθαι, τὸ μερίζεσθαι, τὸ χάρισμα, τὸ δώρημα, τὸ ἐμψύσημα, ἢ ἐπαγγελία, ἢ ὑπερένδοξις, εἴτε τι ἄλλο τοιοῦτον, ἵνα μὴ καθ' ἑκάστον λέγω, ἐπὶ τὴν πρώτην αἰτίαν ἀνενεκτέον (τὸν Πατέρα) ἵνα τὸ ἐξ ὃ δαχθῇ, καὶ μὴ τρεῖς Ἀρχαὶ μεμερισμέναι πολυθέως παραδεχθῶσι,,. Οὐ περὶ μόνης δὲ τῆς τῷ Πνεύματος πέμψεως ἐκ τῷ Πατρί, ἀλλὰ καὶ περὶ τῆς ἐκ τῷ Υἱῷ, ὁ Θεολόγος ἐνταῦθα Γρηγόριος φθέγγεται· ἐν γένει γὰρ ὁ λόγος αὐτῷ: „Ὅσα ταπεινότερον λέγεται, τὸ δίδοσθαι, τὸ ἀποστέλλεσθαι,, ἐν οἷς καὶ ἡ τῷ Πνεύματος παρὰ τῷ Υἱῷ πέμψις ὁμοίως ἐμπεριείληπται. Ἐτι δὲ δὴ καὶ „τὸ ἐμψύσημα,, ἔπερ ὁ Γρηγόριος μέμνηται, ἐγένετο παρὰ τῷ Υἱῷ, ἐχὼ παρὰ τῷ Πατρί· τὸ τοίνυν „δίδοσθαι, τὸ ἀποστέλλεσθαι, τὸ μερίζεσθαι,, ῥηθέντα περὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος, δεικνύουσιν ὅθεν τὸ Πνεῦμα. Ὅτι δηλ: ἐξ ἄλλων ἐστίν, ἔκ ἐξ ἑαυτῶ. Δείξων δὲ, τίς ἢ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος αἰτία, δι' ἣν, ὅτε μὲν ἐκ τῷ Πατρί λέγεται πέμπεται, ὅτε δὲ ἐκ τῷ Υἱῷ, μόνον ὀνομάζει τὸν Πατέρα, τὸν δὲ Υἱὸν ὃ καὶ ἐπιδήλως ἄρα ἐντεῦθεν σιμνάγεται, τὴν τῷ Πνεύματος παρὰ τῷ Υἱῷ πέμψιν, μηδαμῶς εἶναι ἀπόδειξιν τῆς, καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ ἐκπορεύσεως τῷ αὐτῷ, ἀλλὰ τῆς ἐκ τῷ Πατρί. Παραπλήσια δ' ὁ Θεολόγος ἔχει καὶ ἐν τῷ Γ'. Ἐπεὶ, τῷ περὶ τῶν Ἀρχῶν ὅπερ ἐστὶ περὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος ἐν Τόμῳ Β'. τῶν Συγγραμμάτων, Σελίδι 163.

„Εἴτινα



„Εἴτινα δ' ἢ περὶ Παιδὸς ἀκούμεν, ἢ ἀγαθοῦ  
 „Πνεύματος ἐν Θεοῖσι λόγοις, καὶ Θεοφόροις  
 „Ἀνδράσιν, ὡς ῥὰ Θεοῦ τὰ ὀφύτερα Πατὴρ ἐχουσιν,  
 „Ὡδε νοεῖν κέλομαί σε λόγοις Σοφίης βαθυκόλπῃ.  
 „Ὡς εἰς ῥίζαν ἀναρχὸν ἀνέρχεται, ὃ Θεότητα  
 „Τέμνει, ὅφρα κεν οἶον ἐχῆς κράτος ὃ πολύσεπτον.,,

Καὶ ΑΥΤΟΥΣΤΙΝΟΣ δὲ ὡσαύτως ἐν Βιβλ: Δ'. περὶ Τριάδος,  
 Κεφ: Κ'. „Καὶ ὡς περ τῷ Ἀγ: Πνεύματι τὸ δῶρον εἶναι Θεῶ,  
 „τὸ παρὰ τῇ Πατρὶ ἐστὶν ἐκπορεύεσθαι· ἔτω καὶ τὸ πέμπεσθαι  
 „ἐς τὸ γινώσκεισθαι, ὅτι ἐξ ἐκείνης ἐκπορεύεται.,,

### ΑΠΑΝΤΗΣΙΣ Δ'.

Ταύτη τοι ἀπανταχῶ οἱ Πατέρες ἀποφάσκουσιν ἐκ τῆς Τίτῃ ἐκ-  
 πορεύεσθαι τὸ Πνεῦμα, καὶ τοι ἅμα προσιθέντες τῷτο πέμπεσθαι  
 ἐξ αὐτῆς. ΚΥΡΙΛΛΟΣ, Βιβλ: περὶ Τριάδος: Κεφαλ: Ι'. „Χρὴ  
 „δὲ γινώσκων ὅτι τὸν Πατέρα ὃ λέγομεν ἑκτὸς, λέγομεν δὲ  
 „αὐτὸν τῇ Τίτῃ Πατέρα. Τὸν δὲ Τίτῃ ὃ λέγομεν ἀνείτιον, ὃ δὲ  
 „Πατέρα· λέγομεν δὲ αὐτὸν ἐκ τῆς Πατρὸς, καὶ Τίτῃ τῇ Πατρὶ.  
 „Τὸ δὲ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, καὶ ἐκ τῆς Πατρὸς λέγομεν, καὶ Πνεῦμα  
 „Πατρὸς ὀνομάζομεν· ἐκ τῆς Τίτῃ δὲ τὸ Πνεῦμα ὃ λέγομεν,  
 „Πνεῦμα δὲ Τίτῃ ὀνομάζομεν· (ἔτις γὰρ Πνεῦμα Χριστῷ ἐκ ἑχαι  
 „κτ: φησὶν ὁ Θεὸς Ἀπόστολος) καὶ δι' Τίτῃ πεφανερῶσθαι καὶ  
 „μεταδεδοῦσθαι ἡμῖν ὁμολογῶμεν., Ταυτὰ ἐπαναλαμβάνει καὶ ὁ  
 ἐκ Δαμασκῆς ΙΩΑΝΝΗΣ. Βιβλ: Α'. τῆς Ὀρθοδ: Πίτ: (2) Κεφ:  
 ΙΑ'. Καὶ ἐν τῷ Λόγῳ τῷ περὶ τῆς Ἀγ: Σαββάτης: „Τῷτο ἡμῖν  
 „τὸ λατρεύμενον . . . Πνεῦμα Ἅγιον τῇ Θεῷ καὶ Πατρὶ, ὡς  
 „ἐξ αὐτῆς ἐκπορεύομενον· ὅπερ καὶ τῇ Τίτῃ λέγεται, ὡς δι' αὐτῆς  
 „Φανερόμενον, καὶ τῇ κτίσει μεταδιδόμενον, ἀλλ' ἐκ ἐξ αὐτῆς  
 „ἔχον τὴν ὑπαρξιν., (3). Καὶ ΜΑΞΙΜΟΣ δὲ ἐν τῇ πρὸς Μα-  
 ρτῖνον

(2) Ἐν δὲ τῇ κατὰ Λεκυῖνον Ἐκδόσει, Κεφ: Η'.

(3) Ταῦτα δὴ ἀποφαντικῶς τε καὶ διαρρήδην οἱ Πατέρες· ὡς ἔτις καὶ ἡμῶς τῶν  
 Λατίνων, τοῖσδε τι παρ' αὐτοῖς τολμήσειεν ἐξερεῖσθαι, θαῦμα ἂν εἶναι, εἰ τῶν  
 ἱερῶν ὑπ' αὐτῶν καλεμένους ἐτασμούς ὑπαλύξαι. „Μεταδιδόμενον μὲν, φασὶ,  
 „διὰ τῆς Τίτῃ, ἀλλ' ἐκ ἐξ αὐτῆς τὴν ὑπαρξιν ἔχον., Ὁ δὲ τοι Κομμοφίστος, ὃν ὁ  
 Λεκυῖνος ἀνακαλεῖται ἐνταῦθα, (ἐν τῷ Β'. Τόμ: τῶν τῆς Δαμασκῆς Συγγραμ-  
 μελ: 817. ἐν Σημείωσει τῇ ἐκεί (2): Imo et ex illo: „μάλις καὶ ἐξ αὐτῆς, ἀντα-  
 πάγει, ἔτως ἀποτόμως τοῖς Θεοφόροις Διδασκάλοις ἀντιφθεγγόμενος. Ἀλλ' ἡμεῖς,  
 ὡς γενναῖοι, Κυρίως τε καὶ Δαμασκῆς μᾶλλον ἀκούμεν, ἢ ὑμῶν. Ἄ δὲ, ἐπὶ τῇ  
 (ΔΙΑ) καταφύγοντες, καὶ τῆς αἰτίας τὸ μὲν „Προκαταρκτικόν., τὸ δὲ „δῶτε-  
 „ρεῦον., σοφίζεσθαι ἐπιχειρεῖτε, φρεσὶ πάντῃ ἐνταῦθα ἐλέγχεται, διὰ τὴν ἐπα-  
 γομένην, τῇ „μεταδιδεσθαι καὶ φανερεῖσθαι, πρὸς τὸ ἔχειν τὴν ὑπαρξιν., ὃ μόνον  
 ἀντιδιασολῶ, ἀλλὰ καὶ ἀντίφασιν. („λέγομεν, ὃ λέγομεν.,)

Τόμ: Β'.

B



ρίνον Ἐπισολῇ: „Εἰς μὲν τὸ πρῶτον συμφώνως παρήγαγον  
 „χρήσεις Ῥωμαίων Πατέρων, ἔτι μὲν καὶ Κυρίλλου Ἀλεξανδρείας,  
 „ἐκ τῆς πονηθείσης αὐτῷ Ἱερᾶς Πραγματείας εἰς τὸν Εὐαγγελι-  
 „σὺν Ἰωάννῳ ἐξ ὧν, ἐκ αἰτίαν τὸν Υἱὸν ποιῶντας τῷ Πνύμα-  
 „τος σφᾶς αὐτὰς ἀπέδειξαν· μίαν γὰρ ἴσασιν Υἱὸν καὶ Πνύμα-  
 „τος τὸν Πατέρα αἰτίαν· τῷ μὲν κατὰ τὴν γέννησιν, τῷ δὲ  
 „κατὰ τὴν ἐκπόρευσιν· ἀλλ' ἵνα καὶ δι' αὐτὰ προίεναι δηλώσωσι, „  
 Καὶ ἈΝΑΣΤΑΣΙΟΣ δὲ ὁ Βιβλιοθηκᾶριος, ἐν τῇ πρὸς Ἰωάννῳ  
 τὸν Διάκονον Ἐπισολῇ: „Παρὰ ταῦτα διερωτώμενοι ἐσμὲν,  
 „ἐκ τῆς Ἐπισολῆς τῷ αὐτῷ Θείῳ Μαξίμῳ τῆς πρὸς Μαρίνον τὸν  
 „Πρεσβύτερον, τὸ περὶ τῆς τῷ Ἁγίῳ Πνύματος Ἐκπορεύσεως.  
 „Εὐθὺς μάλιστα ἡμῖν ἐπεγκαλεῖν τὰς Γραμμὰς ἀποφαίνεται· οἱ δὲ  
 „αἰτίαν, ὅδε ἀρχὴν φαμὲν τὸν Υἱὸν τῷ Ἁγίῳ Πνύματος, ἥπερ  
 „οἶονται. Ἀλλὰ, τὴν κατ' ἐσίαν ἐνότητά Πατρὸς καὶ Υἱοῦ, μη-  
 „δαμῶς ἀγνοῶντες, ὥσπερ ἐκ τῷ Πατρὸς ἐκπορεύεται, ὅπως  
 „αὐτὸ ἐκπορεύεσθαι καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ ὁμολογῶμεν ἀποσολῶν, δηλο-  
 „νότι, ἡγῶμενοι τὴν ἐκπόρευσιν· ἐνσεβῶς ἐξηγῶμενος, καὶ τὰς  
 „ἐκατέρως εἰδήμονας τῆς γλώσσης πρὸς εἰρῶν διεκπαιδῶν.  
 „Εν ᾧ δηλ.: ἡμᾶς τε καὶ τὰς Γραμμὰς ἐκδιδασκαί, ἐσι μὲν ὡς  
 „ἐκπορεύεσθαι, ἐσι δ' ὡς μὴ ἐκπορεύεσθαι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ  
 „τῷ Υἱῷ, „ Καὶ ΜΙΧΑΗΛ δὲ ὁ Σύγκελλος τελοῦντων, βιογραφῶν  
 τὰ Διονυσίῳ τῷ Ἀρεοπαγίτῃ: „Εἶνα Θεὸν, εἶνα Κύριον ἐαυτῷ  
 „λατρεύειν προτίθῃσι, τὸν ἐν ὑποστάσει τριῶν λατρουμένον τε  
 „καὶ προσκυῶμενον, πρὸς μίαν ἀρχὴν καὶ αἰτίαν Υἱὸν τε καὶ  
 „Πνύματος ἀναφερομένων . . . . τῷ Ἁγίῳ Πνύματος ἐκ μόνου  
 „τῷ Πατρὸς ἐκπορευομένον, καὶ διὰ τῷ Υἱῷ ἐξιόντος, καὶ τοῖς  
 „ἀνθρώποις φανερωθέντος, „ Οὐκ ἄρα οἱ Πατέρες τὴν τῷ Ἁγίῳ  
 Πνύματος παρὰ τῷ Υἱῷ ἀποσολῶν, εἰς ἀπόδειξιν ἔχον τῆς αὐτῆς  
 καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ ἐκπορεύσεως.

#### Ἀ Π Ἀ ν τ ῆ σ ι ς Ε'.

Τιθέμενοι τοίνυν, ὡς ὁ παρ' ἄλλου ἀποσελλόμενος, ἐξ αὐτῶν  
 ἐκείνων καὶ τῆς ὑπάρξεως τὴν αἰτίαν ἔχει, ἥτοι πρόεισιν· ἡτῶντο τὸ  
 ἐν ἀρχῇ· ὅ γὰρ ἀληθῶς τῷ καθόλου· διὸ καὶ τὰ τῆς σιωπείας  
 σοφισόμενοι ἔπαιζον. Ἡ γὰρ τῷ Ἁγίῳ Πνύματος Ἀποσολή, καὶ  
 πρὸς τὴν κτίσιν περαίνεται, καὶ ἐν χρόνῳ οἰκονομεῖται, καὶ τοῖς  
 Θεῷ ἔργοις τοῖς πρὸς τὰ ἐκτὸς ἐναριθμεῖται. Τὰ δὲ τοιαῦτα,  
 ὅχι μίᾳ μόνῃ ὑπόστασι, ταῖς δὲ τρισὶ κοινῇ προσήκειν αἰρεῖται  
 τὸ δόγμα τὸ ἐνσεβὲς καὶ ὀρθόδοξον.

ἈΘΑΝΑΣΙΟΣ γὰρ, ἐν τῷ Λόγῳ τῷ κατὰ Σαβελλιανῶν,  
 περὶ τῆς σὺν τῷ Θεῷ ὑπάρξεως Υἱοῦ τε καὶ Πνύματος, ἐν τῷ  
 Α'. Τόμ:

Α'. Τόμ: τῶν Συγγραμμάτων: Σελ: 661. „Όταν δὲ τὰ πάντα „ἐνεργῇται ὑπὸ τῆ Θεῆ διὰ Χριστῆ ἐν Ἀγ: Πνεύματι, ἀχώρι- „σον ὁρῶ ἐνεργεῖαν τῆ Πατρὸς, καὶ τῆ Υἱῆ καὶ τῆ Ἀγίης Πνεύ- „ματος„. Παραπλήσια δὲ τέτοις ἔχει καὶ τῇ πρὸς Σεραπίωνα Ἐπισολῇ, κατὰ τῶν λεγόντων, ὅτι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἀγ: κτίσμα ἐστὶ Τόμ: Α'. Σελ: 205. Καὶ τῷ Συγγράμματι περὶ τῆς Ἐν- σάρκως Ἐπιφανείας τῆ Θεῆ καὶ Λόγως, ἐς πλάτος πολλάκις ἀνα- διδάξας τὰ τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ προσήκοντα, ταῦτα καὶ τῷ Ἀγ: Πνεύματι προσάπονέμεθα: ὑποσιωπάται, ἐν τῷ Α'. Τόμ: Σελ: 605. „Οὐαί, ὅτι ἅπερ ἐστὶν ἔργα τῆ Πατρὸς, ταῦτα λέγει „ἡ Γραφὴ τῆ Υἱῆ εἶναι, καὶ τὰ αὐτὰ τῆ Ἀγίης Πνεύματος„; — Καὶ ἔτι, ἐν τῷ περὶ τῆς κατὰ φύσιν κοινωνίας, ἐκ τῆ ὁμοίως εἶναι, τὸν Πατέρα καὶ τὸν Υἱὸν καὶ τὸ Ἀγιον Πνεῦμα, ἐν τῷ Α'. Τόμῳ, διὰ πολλῶν ἀπανταχῆ τιῶ ἀντιῶ τῆς Τριάδος ἐνέρ- γειαν, περὶ τιῶ κτίσιν, δηλαδὴ, ἀποδείκνυσι.

Καὶ ΔΙΔΥΜΟΣ δὲ ὁ Ἀλεξανδρεὺς, ἐν Βιβλ: Α'. περὶ τῆ Ἀγίης Πνεύματος, περὶ τὸ τέλος: ἐν Τόμῳ 5'. τῶν Ἱερωνύμου Συγγραμμάτων, Στήλη 495. „Ἐν ἅπασιν δείκνυται τιῶ ἀντιῶ „ἐνεργεῖαν εἶναι, Πατρός τε καὶ Υἱῆ καὶ Ἀγίης Πνεύματος„.

Καὶ ΒΑΣΙΛΕΙΟΣ ὁ Μέγας, ἐν Βιβλ: Ε'. τῶν κατ' Εὐνο- μίαν, Τόμῳ Β'. Σελίδι 119. (4) „Μία καὶ ἡ αὐτὴ προφανῶς „ἐνεργεῖα Θεῆ, δι' Υἱῆ, ἐν Πνεύματι φαίνεται„. Καὶ πάλιν, Σελ: 124. (5) „Ἐνεργείας τὰς αὐτάς, Πατρὸς καὶ Υἱῆ καὶ „Ἀγίης Πνεύματος ἐπιδείκνυμεν„. Καὶ πρό γε τῆ τέλους, Σελίδι 135. (6) „Όταν γὰρ τὰ πάντα ἐνεργῇται ὑπὸ τῆ Θεῆ, διὰ „Ἰησοῦ Χριστοῦ, ἐν Πνεύματι„. Καὶ Ἐπισ: Π'. πρὸ τῆ τέλους, ἐν Τόμ: Β'. Σελ: 905. (7) „Ἐὰν δὲ μίαν νοήσωμεν τιῶ ἐνέρ- „γειαν Πατρός τε καὶ Υἱῆ καὶ Πνεύματος Ἀγίης, ἐν μηδενὶ δια- „φέρεσάν τι, ἢ παραλλάσσεσαν„. Καὶ περὶ τὸ τέλος, Σελίδι 906. (8) „Ὡς μίαν ἐνεργεῖαν Πατρὸς καὶ Υἱῆ καὶ Ἀγίης Πνεύ- „ματος, ἔτω μίαν φαιμέν εἶναι τιῶ Θεότητα„.

Καὶ ἈΜΒΡΟΣΙΟΣ Βιβλ: Α'. περὶ τῆ Ἀγίης Πνεύματος, Κεφαλ: Γ'. ἐν τῷ Δ'. Τόμ: τῶν Συγγραμμάτων, Στήλη 216. „Ἐνθα ἐνεργεῖα τις τῷ Πατρὶ, ἢ τῷ Υἱῷ, ἢ τῷ Ἀγ: Πνεύματι „ἀπονέμεται, ὃ μόνον πρὸς τὸ Πνεῦμα τὸ Ἀγιον, ἀλλὰ καὶ „πρὸς τὸν Πατέρα ἀνάγεται, καὶ πρὸς τὸν Υἱόν. Οὐδὲ μόνον „πρὸς

(4) Ἐν τῇ κατὰ Γαρενιῆρον Νεωτάτῃ Ἐκδόσει: Τόμ: Α'. Σελ: 304.

(5) Ἐν τῇ αἰρημ: Ἐκδόσ: Τόμ: Α'. Σελ: 308.

(6) Ἐν τῇ αὐτῇ Ἐκδ: Τόμ: Α'. Σελ: 317.

(7) Ἀλλως ἐπὶ τῆς αἰρημ: Ἐκδ: Ἐπισ: ΡΠΘ'. Τίμ: Γ'. Σελ: 280.

(8) Αὐτ: Σελ: 281.

„πρὸς τὸν Πατέρα, ἀλλὰ καὶ πρὸς τὸν Υἱὸν ἀναφέρεται, καὶ  
 „τὸ Πνεῦμα,,. Τὸ δ' αὐτὸ καὶ ἐν πλείοσι Κεφαλαίοις, τῶν περὶ  
 τῆς Ἁγίας Πνεύματος Βιβλίων δείκνυσι.

Καὶ ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ δὲ ὁ Νύσσης, ἐν τῷ περὶ τῆς μὴ δεῖν  
 οἷσθαι λέγειν τρεῖς Θεούς περὶ τὸ μέσον, Τόμ: Β'. Σελ: 454. (9)  
 „Ὅπερ ἂν γένηται, τῶν εἴτε εἰς τὴν ἡμετέραν πρόνοιαν φθα-  
 „ρόντων, εἴτε πρὸς τὴν τῆς παντὸς οἰκονομίαν καὶ σύσασιν,  
 „διὰ τῶν τριῶν μὲν γίνεται τῶν Θεαρχικῶν, δηλαδή, ὑποστά-  
 „σεων,,.

Καὶ ὁ Χρυσόστομος ἸΩΑΝΝΗΣ, ἐν Ὁμιλ: τῇ περὶ τῆς  
 Πίσεως, Τόμ: Ζ'. τῶν ἐν Ἐτόνῃ ἐκδοθέντων μόνον Ἑλληνιστ.  
 Συγγραμ: Σελ: 290. (10) „Μιᾶς δὲ ἐνεργείας Πατρὸς καὶ Υἱοῦ  
 „καὶ Ἁγίας Πνεύματος ἀποδεικνυμένης, ἀνάγκη πάσα, καὶ μίαν  
 „ἔσιν πιεῖσθαι,,.

Καὶ ΑΥΓΟΥΣΤΙΝΟΣ ἐν τῷ Ἐγχειρίδι τῷ πρὸς Λαυρέν-  
 τιον, Κεφαλ: ΛΗ'. „Ἐπειδὴ τὸ κτίσμα ἐκείνο, τὸ ὑπὸ τῆς  
 „Παρθένου συλληφθέν τε καὶ κυηθέν, εἰ καὶ μόνῳ τῷ τῆς Υἱοῦ  
 „προσώπῳ ἀνῆκον, ἡ Τριάς ὅλη ἐποίησε· τὰ γὰρ τῆς Τριάδος  
 „ἔργα ἀδιαχώριστα. Τὶ δὴποτε ἐν τῇ ἐκείνῃ γεννήσεται τὸ Πνεῦ-  
 „μα μόνον ὠνόμασαι; ἢ ὅτι, καὶ τῆς ἐνὸς τῶν Τριῶν ἐπὶ ἔργῳ  
 „τινὶ ὀνομαζομένης, ὅλη ἐνεργεῖν ἡ Τριάς ἐννοεῖται. Οὕτως ἔχει  
 „καὶ δι' ὑποδειγμάτων ἀποδειχθῆναι δοῦναι,,. Ἐνθεντοὶ καὶ πολ-  
 λαχρὸν ἀχώρισον τὴν τῆς Τριάδος εἶναι ἐνέργειαν ἐκδιδάσκει.  
 Οἷον ἐν τῷ ΙΑ'. Λόγῳ περὶ τῶν τῆς Κυρίου ῥημάτων καὶ ἐν  
 Ἐπισ: ΥΘ'. καὶ ρε'. Καὶ ἐν τῷ Α' δὲ Βιβλ: περὶ τῆς Προορι-  
 σμῶν τῶν Ἁγίων. Κεφ: Η'. Καὶ Λόγῳ ΛΗ'. τῷ περὶ τῆς χρόνῳ.  
 Καὶ ἐν Πραγματ: Κ'. καὶ ΥΕ'. καὶ ρδ'. τῶν εἰς Ἰωάννην. Καὶ  
 ἐν τῷ Βιβλ: τῷ κατὰ τῆς Ὁμιλίας τῶν Ἀρειανῶν πανταχρῶς.  
 Καὶ ἐν Βιβλ: Α'. περὶ Τριάδος, Κεφαλ: Δ'. Ε'. καὶ ΙΒ'. Καὶ  
 Βιβλ: Β'. Κεφαλ: Γ'. Καὶ Βιβλ: Δ'. Κεφαλ: ΚΑ'. Καὶ Βιβλ:  
 ΙΓ'. Κεφαλ: ΙΑ'. Καὶ Βιβλ: ΙΕ'. Κεφαλ: Γ'. Καὶ ἀλλὰ χε.  
 Καὶ ὁ τῶν Ἑρωτήσεων δὲ Συγγραφεὺς, τῶν ἐκ τῆς Παλαιᾶς τε  
 καὶ Νέας Διαθήκης, ἐν Ἑρωτήσῃ Β'. Ἐν τοῖς Αὐγῶν: Συγγραμ:  
 Τόμ: Δ'. „Εἴτε ὁ Πατὴρ ποιεῖ, εἴτε ὁ Υἱὸς, εἴτε τὸ Ἅγιον  
 „Πνεῦμα, ἡ Τριάς ἐστὶν ἡ ἐνεργῶσα,,. Ταυτὰ δ' ἔχει, καὶ ἐν  
 Ἑρωτήσῃ γζ'.

Καὶ ΚΥΡΙΛΛΟΣ ὁ Ἀλεξανδρείας Βιβλ: Δ'. τῶν εἰς Ἰωάν:  
 Κεφαλαίῳ Γ'. ἐν Τόμῳ Δ'. τῶν Συγγραμμάτων, Σελίδι 366.  
 „Μιᾶς

(9) Ἐν δὲ τῇ κατὰ τὸ 1638. Παρισ: Ἐκδόσ: Τόμ: Γ'. Σελ: 22.

(10) Κατὰ δὲ τὴν Μοντφαλκονίσ Ἐκδόσιν, ἐν Τόμῳ Θ'. Σελ: 854 — 856. παρ' ᾧ καὶ  
 ἡ Ὁμιλ: αὕτη νεθείας ἐλήλεγται.

„Μιάς ἑσῆς τῆς κατὰ φύσιν Θεότητος, καὶ ἐν Πατρὶ καὶ Υἱῷ  
„νοομένης, καὶ ἐν τῷ Ἀγ: Πνεύματι, ὃ μεμερισμένως ἕκαστος  
„ἐνεργήσῃ περὶ τι τῶν ὄντων· ἄλλ' ὅπερ ἂν λέγοιτο γενέσθαι καὶ  
„δι' ἐνὸς, τῷτο πάντως ἐστὶν ὅλης ἔργον τῆς Θείας φύσεως,,  
Ταῦτά ἔχει καὶ ἐν Βιβλίῳ Δ'. τῶν εἰς Ἰωάν: Κεφαλαίων Α'.  
Σελίδι 346. καὶ 347. Καὶ Βιβλ: Ι'. εἰς Ἰωάν: Κεφαλαίων Β'.  
Σελίδι 859.

Καὶ ΘΕΟΔΩΡΗΤΟΣ, ἐν Ὑπομνήμῃ: εἰς τὸν ΡΑ'. Ψαλμ:  
πρὸς τὸ τέλος ἐν Τόμ: Α'. τῶν Συγγραμ: Σελίδι 802. (11)  
„Α γὰρ ἂν ἐκείνος (ὁ Πατὴρ) ποιῇ, ταῦτα καὶ ὁ Υἱὸς ὡσαύτως  
„ποιεῖ· καὶ τὸ ταῦτόν τῆς φύσεως ἐν ἑκατέρῳ γνωρίζεται. Μίαν  
„γὰρ ἴσμεν τὴν τῆς Τριάδος ἐνέργειαν,,.

Καὶ ΛΕΩΝ ὁ Μέγας ἐν τῷ ΙΒ'. Λόγῳ περὶ τῆς Πάθους τῆς  
Κυρίης: „Τὰ τῆς Τριάδος ἔργα κοινὰ ἐν πᾶσιν ἐστὶ, καὶ τὰ  
„δείγματα,,. Ταῦτά δ' ἔχει καὶ ἐν Λόγ: Β'. καὶ Γ'. εἰς τὴν  
Πεντηκοστήν.

Καὶ ῬΗΜΗΤΙΟΣ Ἐπίσκοπος Ῥημύσιος (12) εἰς τὸ 5'. Κε-  
φαλ: τῆς πρὸς Ῥωμ: Ἐπισ: ἐν Τόμ: Ε'. Μέρ: Γ'. τῆς τῶν  
Πατέρ: Βιβλιοθ: τῆς ἐν Κολων: Σελ: 826. „Τὰ τῆς Τριάδος  
„ἔργα ἀμέριστα ἐστὶ,,.

Καὶ ΦΟΥΛΓΕΝΤΙΟΣ (13) ἐν τῇ Ἀποκρ: τῇ πρὸς τὰς  
πέντε Ἑρωτήσεις, πρὸς τὴν Α'. τῶν Ἑρωτήσ: Τόμ: 5'. τῆς τῶν  
Πατέρ: Βιβλιοθ: τῆς ἐν Κολων: Σελ: 68. „Ἐκ τῆς ἀχωρίστου  
„εἶναι τὸν Πατέρα καὶ τὸν Υἱὸν καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ἔπεται  
„καὶ τὸ ἀχωρίτως ἐνεργεῖν,,.

Καὶ ὁ ΣΥΓΓΡΑΦΕΥΣ δὲ τῶν Βιβλίων τῶν περὶ τῆς Ἐνι-  
αίας ἐν τῇ Θεότητι Τριάδος, μεταξὺ τῶν Ἀθανασίῃ Συγγραμ:  
Βιβλ: Ζ'. ἐν τῷ Β'. Τόμ: Σελ: 573. „Ὑποκριταὶ, μάθετε  
„μίαν εἶναι τὴν ἐνέργειαν Πατρὸς καὶ Υἱὸς καὶ Ἁγίῃ Πνεύματος.  
„Ἐπειδὴ

(11) Ἐν τῇ κατὰ Χάλλιν Νεωτ: Ἐκδόσ: Ἔτει 1768. Τόμ: Α'. Μέρ: Β'. Σελ: 1322.

(12) Ῥημύσιος τῷ Γένει Γάλλος, ἐν Ἔτει 471. ἢ, ὡς ἄλλ: 459 τῆς Ῥημύσιων Ἐκκλησ:  
Ἐπίσκ: προχειρίθης, ἔτος ἥδη τῆς ἡλικίας ἄγων τὸ ΚΒ'. παρέτεινεν ἄχρι τῆς 96.  
ἐνιαυτῆς Ἐπισκοπῆσας 74.

(13) Φελεγενίῳ γενόμενων δύο, ἐξ Ἀφρικῆς ἀμφιτέρων, καὶ τῷ Ἡσυχαστικῷ βίῳ ὁμοίως  
ἀφωσιωμένων, ἐπίτε παιδείαν ἐπίσης διαπρεψάντων· τῷ μὲν Ῥωσσίῳ ἐπικληθέν-  
τος ἐκ τῆς Ἐπισκοπῆς, ἡ περὶ τὸ 507. κεκλήρωτο, τῷ ἐν Ἔτει 533. τὸ ζῆν ἐκ-  
μετρήσαντος (περὶ ὃ ὅρα ἐν Πραγματ: Δ'. ἐκ τῆς 5'. Ἐκατονταετηρ: (Ἐνθα  
δήπῃ καὶ περὶ αὐτῆς σεσημείωται) καὶ τῷ Φελεγεντίῳ Φεββάνδῳ ἐπιλεγόμενῳ, καὶ  
παρὰ τῷ προλεχθέντι Ῥωσσίῳ μαθητεύσαντος· καὶ κατὰ μὲν τὸ 533. (καθ'  
ὃ ἐκείνος ἀπεβίω) ἀκμάζοντος, κατὰ δὲ τὸ 551. καὶ αὐτῆς τέττε τελοῦντήσαντος·  
τέττων περὶ τῆς Β'. ἐνταῦθα λόγος· ὃ δὴ καὶ τὸ Σύγγραμμα τὸ πρὸς τὰ πέντε  
Ζητήματα, ἐν εἰδὲ φέρεται Ἐπιστολῆς Συγγραφεύτα· ἡ πρὸς τὸν αὐτῆς Καθηγη-  
τὴν Ῥωσσίῳ, ὁ Φεββάντος ἔτος γράψας ἐπέσειλεν. (περὶ Φελεγεντίου ὅρα καὶ  
ἐπὶ τῆς Δ'. Πραγματ: ἐν Ἐκατονταετ: 5'. καὶ τὴν ἐκεῖ Σημείωσιν (49).  
Τόμ: Β'.  
Γ

„Επειδή, πάντα ἃ ἂν ποιῇ ὁ Πατήρ, τὰ αὐτὰ ἡνωμένως ἔργα  
 „ἀποδείκνυται εἶναι καὶ τῷ Υἱῷ, καὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι. Οὕτω  
 „καὶ ἃ ἂν ὁ Υἱὸς ποιῇ, τὰ αὐτὰ καὶ πρὸς τὸν Πατέρα ἀνάγε-  
 „ται, καὶ πρὸς τὸ Ἡγεμονικὸν Πνεῦμα· καὶ τὰ αὐτὰ δὲ ταῦτα  
 „ἔργα ἡνωμένως δηλώνονται, καὶ τῷ Πατρὶ εἶναι, καὶ τῷ Υἱῷ. Ὅπως  
 „ὅπως ἡνωμένη αὐτῶν ἐστὶν ἡ ἐνέργεια ἐν τῇ μιᾷ φύσει τῆς  
 „Θεότητος,, ;

Καὶ ΒΙΓΓΛΙΟΣ δὲ ὁ Ῥώμης Πάπας (14) ἐν τῇ Ἐγκυκλίῳ  
 Ἐπισολῇ πρὸς ἅπασαν τὴν Ἐκκλησίαν, ἣτις ἀριθμεῖται ἐν ταῖς  
 Ἐπισολαῖς αὐτῷ ἢ ΙΕ'. ἐν τῷ Ε'. Τόμ: τῶν Συνοδικ: Στήλ: 332.  
 „Ἐν τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ καὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι, μία ἡ  
 „ἐνέργεια ἐστὶ,,.

Καὶ ΠΕΛΑΓΙΟΣ (15) ὁ Ῥώμης Πάπας ἐν Ἐπισολῇ ΕΖ'.  
 τῇ πρὸς Χιλδέρτον Ἀνακτα, ἐν Τόμῳ Ε'. τῶν Συνοδικ: Στήλῃ  
 803. „Πιστῶν Πρόσωπα τρία, ἦτοι τρεῖς Ὑποστάσεις, μιᾶς ὁ-  
 „σίας, μιᾶς διωάμεως, μιᾶς ἐνεργείας, μιᾶς μακαριότητος, μιᾶς  
 „ἐξουσίας,,.

Καὶ ἈΝΑΣΤΑΣΙΟΣ ὁ Σιναΐτης (16) Βιβλ: Α'. περὶ τῶν  
 Δογματῶν τῆς Πίστεως, ἐν τῷ 5'. Τόμ: τῆς τῶν Πατέρ: Βιβλιοθ:  
 τῆς ἐν Κολων: Σελ: 897. „Δαψιλῶς ἀποδέδεικται μίαν εἶναι  
 „τὴν τῆς Ἁγίας Τριάδος ἐνέργειαν, ἡ μίαν εἶναι καὶ τὴν ὁσίαν  
 „συναποδείκνυσιν,,.

Καὶ ἈΓΑΘΩΝ δὲ ὁ Πάπας Ῥώμης (17) ἐν Ἐπισολῇ τῇ  
 πρὸς τὸν Αὐτοκράτορα, τῇ ἀναγνωθείσῃ ἐπὶ τῆς 5'. Πράξ: τῆς  
 5'. Συνοδῶς τῆς Οἰκουμεν: ἐν τῷ 5'. Τόμῳ τῶν Συνοδικ: Στήλῃ  
 637. „Ὅπως μία φύσις λέγεται τῆς Ἁγίας καὶ ἀχωρίστῃς Τριά-  
 „δος, ἀκολούθως καὶ ἐν φυσικὸν θέλημα, καὶ μία φυσικὴ ἐνέργεια  
 „νοεῖται,,.

Καὶ τῶν ἐν ΤΟΛΗΤΩ δὲ Συνοδῶν ἢ 5'. Καν: Α'. ἐν Τόμ: Ε'.  
 τῶν Συνοδικ: Στήλ: 1742. Καὶ ἡ ἐν Τολήτῳ ΙΑ'. ἐν Τόμ: 5'.  
 τῶν Συνοδικ: Στήλ: 544. Καὶ ἡ ἐν Τολήτῳ Ι5'. ἐν Τόμ: 5'.  
 τῶν

(14) Οὗτος ἑαυτὸν τε, καὶ ὡς ἐδόκει πῶς πρεσβεῖν, αἰχρῶς πάντῃ τῇ Βασιλείᾳ Θεο-  
 δώρῃ τῇ Ἰεσυνιανῇ τῷ Αὐτοκράτ: Γαμετῇ, ἐπὶ χρήμασι διαπεπρακώς· καὶ ἐκ  
 διαβολῆς Σιλδέριον ἐξελάσας, ἐπεχείρησε μὲν ἐπιβῆναι τῷ Θρόνῳ, Ἐπει 537. αἰρε-  
 θεὶς δὲ τέως ἐν Ἐπει 540. πολλῆς τε ταραχῆς καὶ θορύβου ἐκατέραν τὴν Ἐκκλη-  
 σίαν ἐνέπλησεν, ἕως τε δὴ καὶ Ἐσπερίον. Εἰς δὲ δὴ ἐκ Βυζαντίου εἰς Ῥώμην ἐπα-  
 νελθὼν, κατὰ τὰς ἐν Σικελίᾳ Συρακούσας νοσήματι λιθιάσεως κατατρυχαθεὶς κα-  
 τέστρεψεν, Ἐπει 555. (Ὁρα καὶ Βαζών: Ἐπει 538. Ἀριθμ: 2. καὶ 539. Ἀριθμ: 8.  
 τὰ κάκιστα τῷ Βιγίλῳ τέττε καταμαρτυρούμενον. Ὁρα δὲ καὶ ἀνωτ: ἐν Πραγμ:  
 Γ'. Παραφθ: ΚΖ'. Σημ: (37).

(15) Ὁρα περὶ τῷ Πελαγίῳ καὶ ἐν Πραγματείᾳ Δ'. Ἐκατοντ: 5'. Σημ: (51).

(16) Ὁρα ἐν Πραγμ: Α'. Ἐκατοντ: 5'. Σημ: (141).

(17) Περὶ δὲ ἐν Πραγμ: Δ'. Ἐκατοντ: Ζ'. Σημ: 64.



τῶν Σιωδικ: Στήλ: 1333. „Αχώριστοι εἰσὶν αἱ τῆς Τριάδος ἐνέργειαι,,.

Καὶ ὁ ΔΑΜΑΣΚΗΝΟΣ Βιβλ: Α'. περὶ τῆς Ὁρθοδ: Πίστεως, Κεφαλ: Η'. „Μία ἐνέργεια, μία ἀρχὴ, μία ἐξουσία, μία κυριότης, μία βασιλεία ἐν τρισὶ τελείαις ὑποστάσεσι γνωριζομένη,,. Ταῦτο διδάσκει καὶ ἐν Βιβλ: Α'. Μέρει ΙΑ'. Καὶ ἐν Βιβλ: Δ'. Κεφαλ: ΙΘ'. Καὶ ἐν Βιβλ: τῷ περὶ τῶν διωγμῶν ἐπὶ Χριστῷ θελήσεων καὶ ἐνεργειῶν, Κεφαλαίῳ 5'. Καὶ ἐν ἄλλοις πολλαχῶς.

Καὶ ΒΕΔΑΣ δὲ (18) ἐν τῷ Ὑπομν: τῷ εἰς τὸ Ι5'. Κεφ: Ἰωάννη, ἐν τῷ Ε'. Τόμῳ τῶν αὐτῶν Πονημάτων Στήλῃ 567. „Αχώριστοι εἰσὶν αἱ τῆς Τριάδος ἐνέργειαι,,. Καὶ ἐν τῷ εἰς τὰς Πράξεις δὲ Ὑπομνήμ: Κεφαλ: ΚΑ'. Τόμ: Ε'. Στήλῃ 660. ὡσαύτως: „Τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, καθάπερ ὁ Πατὴρ καὶ ὁ Υἱὸς, Κύριος καὶ Θεὸς ἐστίν· ἔδδὲ χωρισθῶναι δυνάταί ἢ ἐνέργεια, ὧν ἢ φύσις καὶ ἢ Θεότης μία,,.

Καὶ ἈΛΒΓΝΟΣ τελευτᾷον ὁ Ἀλκεῖνος (19) ἐν Ἐρωτήσει ΙΑ'. „Πότερον ἀχώριστοι αἱ τῆς Ἁγίας Τριάδος ἐνέργειαι; Πάντως ὅ,τι ἂν ὁ Θεὸς ποιῇ· τῷτο πᾶν ἢ Ἁγία Τριάς ἐνεργεῖ ἀμερίσως. Μία γὰρ ἢ τῆς Ἀγ: Τριάδος ἐνέργεια, ὡς περ μία καὶ ἢ ἐξουσία καὶ φύσις ἐστίν, καὶ ἢ δυνάμις,,.

Ἐπεὶ τοίνυν αἱ τῆς Τριάδος ἐνέργειαι αἱ πρὸς τὰ ἐκτὸς, κοινὰ εἰσὶ ταῖς τρισὶν ὑποστάσεσι, τοῖς δέ τοι Θεοῖς πρὸς τὰ ἐκτὸς ἐνεργήμασι, καὶ ἢ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι σωμαριθμεῖται πέμψις ἐνδηλον δέηκε, ὅτι τὸ Πνεῦμα καὶ ὑφ' αὐτῷ αὐτὸ ἐδὲν ἦτον, ἢ ὑπὸ τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ τοῖς πιστεύουσι πέμπεται, καὶ χορηγεῖται. Αὐτὴ γὰρ ἐστὶ ἡ Γραφὴ λέγει, ὅτι „τὸ Πνεῦμα ὅπως θέλει πνεῖ. Ὁ,τε Ἀπόστολος: ἐν τῇ Α'. πρὸς Κορινθίους: Ταῦτα πάντα χορηγεῖ τὸ ἐν καὶ τὸ αὐτὸ Πνεῦμα, διακρίν ἰδίᾳ ἐκάσῳ καθὼς βέλεται,,. Ἐνθεντοι Αὐγουστῖνος ἐν τῷ ΙΕ'. Βιβλ: τῶν περὶ Τριάδος, Κεφαλ: ΙΘ'. „Οὐδ' ὅτι, οἱ μὲν διδόναι, τὸ δὲ δίδοται, διὰ τῷτο ἑλαττον ἐκείνων ἐστίν· ἔγω δίδομαι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ὡς δῶρον Θεῷ, ὡς καὶ ἑαυτὸ δίδοναι, ὡς Θεός· ἔγω γὰρ ἐστὶ λέγειν μὴ εἶναι αὐτεξέστιον, περὶ ὃ εἴρηται: τὸ Πνεῦμα ὅπως θέλει πνεῖ. Καὶ τὸ Ἀποστολικὸν ἐκεῖνο, ὃ ἀνωτέρω ὑπεμνήσθην: Πάντα ταῦτα ἐνεργεῖ τὸ ἐν καὶ τὸ αὐτὸ Πνεῦμα διακρίν ἰδίᾳ ἐκάσῳ καθὼς βέλεται,,. Καὶ ὁ Βέδας δὲ ἐν τῷ Βιβλ: τῶν

(18) Περὶ τέττα καὶ ἐν Πραγμ: Γ'. Παραφθ: ΛΖ'. Σημ: (49). Καὶ ἐν Πραγμ: Δ'. Ἐκατοντ: Η'. Σημ: 67.

(19) Ὁρα ἐν Πραγμ: Γ'. Παραφθ: ΜΒ'. Σημ: (54). Καὶ ἐν τῇ Ε'. Πραγμ: ὃ πολὺ ἀπὸ τῆς ἀρχῆς.

τῶν Ἐπαναλήψεων εἰς τὰς Πράξεις: τῶν Ἀποσ: εἰς τὸ Γ. Κεφ: ἐν τῷ 5'. Τόμ: Στήλη 20. „Οὕτω δίδοται τὸ Ἅγιον Πνεῦμα „ὡς Θεὸς δῶρον, ὥς τε καὶ ἑαυτὸ δίδοναι ὡς Θεός· τὸ γὰρ Πνεῦμα ὅπως θέλει πνεῖ,,. Καὶ ἐν Ὁμιλ: 5'. Θερινῇ περὶ τῶν Ἀγίων, ἐν Τόμ: Ζ'. Στήλη 111. „Ὁ Πατὴρ πέμπει τὸ Πνεῦμα· ὁ Υἱὸς πέμπει τὸ Πνεῦμα· ὅπως θέλει πνεῖ· ὅτι δὴ, „καθάπερ ἔφημεν, μία ἡ θέλησις καὶ ἡ ἐνέργεια Πατρὸς, καὶ „Υἱοῦ, καὶ Ἁγίου Πνεύματος,,. Καὶ ἐν Ὁμιλίᾳ Χειμερινῇ τῇ περὶ τῶν Ἀγίων εἰς τὰ Ἐπιφάνια τῆς Κυρίης, ἐν Τόμ: Ζ'. Στήλη 322. „Τὴν ἐξουσίαν τῆς δίδοναι τοῖς ἀνθρώποις τὸ Πνεῦμα, „ἐδὲν ἤττον ὁ Υἱὸς αὐτὸς ἔχει, ἢ ὁ Πατὴρ· ὅτι δηλ: μία ἐν „τῇ Θεότητι ἐστὶν ἡ ἐξουσία, καὶ ἀχώριστος ἡ ἐνέργεια· Πατρὸς τε „καὶ Υἱοῦ, καὶ αὐτῆς τῆς Ἁγίας Πνεύματος. Καὶ γὰρ καὶ περὶ „αὐτῆς τῆς Πνεύματος, ὅτι ἀφ' ἑαυτῆς ἐρχεται ὅπως θέλει, καὶ „ἀφ' ἑαυτῆς ἐνεργεῖ, ἅπερ θέλει, μαρτυρεῖ ὁ Υἱὸς, ἐνθα φησὶν: „(ὅ καὶ ἀνωτέρω ὑμᾶς ὑπέμνησα) τὸ Πνεῦμα ὅπως θέλει πνεῖ. „Ταῦτα δὲ πάντα, φησὶν ὁ Ἀπόστολος, ἐνεργεῖ τὸ ἐν καὶ τὸ „αὐτὸ Πνεῦμα, διακρῖν ἰδίᾳ ἐκάστω ὡς βέλεται,,. Ἀλλήνως δὲ ὁ Ἀλκίνοος ἐν τῷ Β'. Βιβλ: περὶ Τριάδος, Κεφαλ: ΙΘ'. „Ὅτι „καὶ ἐκ τῆς Πατρὸς, καὶ ἐκ τῆς Υἱοῦ ἐξίστα δίδοται, μᾶλλον δὲ καὶ „ἐξ ἑαυτῆς δίδοται, ὥσπερ καὶ ὁ Υἱὸς περὶ αὐτῆς φησὶ: τὸ Πνεῦμα „ὅπως θέλει πνεῖ,,. Καὶ Ἀύμων δὲ, Κυριακῇ πρὸ τῆς Η'. τῆς τῆς Χριστοῦ Ἀναλήψεως: „Ὅτε δίδοται παρὰ τῆς Πατρὸς τὸ „Ἅγιον Πνεῦμα, δίδοται καὶ παρὰ τῆς Υἱοῦ καὶ ὡς δίδοται παρὰ „τῆς Υἱοῦ, δίδοται καὶ παρὰ τῆς Πατρὸς. Ἐρχεται δὲ τὸ αὐτὸ „Ἅγιον Πνεῦμα καὶ παρ' ἑαυτῆς· τετέστιν ἐξ ἰδίας θελήσεως: „καθ' ὃ περὶ αὐτῆς, φησὶν, ὁ Κύριος ἀλλαχῶς: τὸ Πνεῦμα ὅπως „θέλει πνεῖ· ἕτινος ἂν ἐβελήσῃ ἀνθρώπων τὴν καρδίαν φωτίσαι, „φωτίζει. Καὶ ὁ Παῦλος καταλέξας τὰ τῆς αὐτῆς Πνεύματος „χαρίσματα, τελευταῖον ἐπιφέρει: ταῦτα πάντα ἐνεργεῖ τὸ ἐν „καὶ τὸ αὐτὸ Πνεῦμα, διακρῖν ἰδίᾳ ἐκάστω ὡς βέλεται, ὅτι μιᾶς „ἐστὶν ἐξουσίας σὺν Πατρὶ καὶ Υἱῷ,,. Ἐνθεντοι καὶ Ἰγναριος ὁ Ῥημῳσῖος Ἀρχιεπ: καὶ εἰ τῆς τῆς Ἁγίας Πνεύματος καὶ ἐκ τῆς Υἱοῦ ἐκπορεύσεως πρόμαχος· ἐν τῷ Βιβλ: τῷ περὶ τῆς μὴ τριουῆς Θεότητος, ἐπαναλαμβάνει τὰ Ἀλλήνως τῆς Ἀλλήνως προενεχθέντα ῥήματα, ἐν Τόμ: Α'. Σελ: 422. Καὶ Ῥάτραμνος δὲ ὁ Κορνηλίως Μοναχὸς, τῆς αὐτῆς καὶ τοῖς προῖσάμενος δόξης, ἐν τῷ Α'. Βιβλ: περὶ τῆς Ἐκπορ: τῆς Ἁγίας Πνεύματος, κατὰ τῶν Ἀνατολικῶν Κεφαλ: Ε'. Τόμ: Β'. τῆς Σταχυολογίας τῶν Ἀρχ: Συγγραφ: Σελ: 11. „Μαρτυρεῖ, φησὶ, τὸ Ἅγιον Εὐαγγέλιον, ὅτι τὸ „Πνεῦμα ὅπως θέλει πνεῖ. Τί ἐστὶ τὸ πνεῖ; τῆτο ἐστὶν, ἐπεὶ ὅτε „θέλει, ὅπως θέλει, ἑαυτὸ ἐκχέει,,.

Τελευταῖον



Τελούταϊον πρὸς γε τοῖς ἄλλοις καὶ αὐτὸς ΛΟΜΒΑΡΔΟΣ, ἀρξαμένῃ ἤδη τῷ Σχίσματος (20), ἐν Βιβλ: Α'. Κεφαλ: ΙΕ'. „Ὅθεν σκεπτέον: ἐπειδὴ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα δίδεται τοῖς ἀνθρώποις ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱῶ. ὅπερ ἐστὶ, χρονικῶς αὐτὸ ἐξ ἑκατέρῃ, προῖέναι, ἢ πέμπεσθαι· πότερον καὶ ἐξ ἑαυτῶ δίδεται; Εἰ δ' ἐξ ἑαυτῶ δίδεται, ἄρ' ἔν καὶ ἐκπορεύεται, ἢ πέμπεται ἐξ ἑαυτῶ; „Πρὸς δὲ δὴ φαμέν: ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, καὶ Θεὸς ἐστὶ, καὶ δῶρον, ἥτοι διδόμενον καὶ διὰ τῷτο, καὶ δίδωσι τε καὶ δίδεται, καὶ δίδωσι μὲν, ἢ Θεός· δίδεται δὲ, ἢ δῶρον· ἥτοι διδόμενον. „Ἐπειδὴ δὲ τὸ δῶρημα, ἥτοι ἡ δόσις τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος, Θεῷ, ἐνέργεια ἐστὶ· κοινὴ δὲ καὶ ἀδιαίρετος ἢ τῶν τριῶν Προσώπων, ἐνέργεια· δίδεται μὲν ἔτω τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ἐμὴ δὲ ἐκ τῷ Πατρὸς καὶ ἐκ τῷ Υἱῶ μόνον, ἀλλὰ καὶ ἐξ ἑαυτῶ. „Ἀπομνημονεύσας δὲ μεταξὺ τὰ τῷ Αὐγυστίνῃ ῥήματα, τὰ ἡμῶν ἀνωτέρω ἐπενεχθέντα, ἐφεξῆς πρόεισιν. „Εἴπερ γὰρ τὸ Πνεῦμα, τὸ Ἅγιον ἑαυτὸ δίδοναι ἔκ ἑχει· ὁ δὲ Πατήρ καὶ ὁ Υἱὸς ἔχει αὐτὸ δίδοναι· δυνάται ἄρα ὁ Πατήρ καὶ ὁ Υἱὸς δύναι τι, ὅπερ, τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐ δυνάται. „Ἐτι: εἴπερ ὁ Πατήρ καὶ ὁ Υἱὸς, διδῶσι, τὸ δὲ Ἅγιον Πνεῦμα ἐδέν τι δίδωσιν. „Ἀρα ὁ Πατήρ, ἐργάζεται καὶ ὁ Υἱὸς, ὁ ἐκ ἐργάζεται τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. „Δίδωσιν ἄρα τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγ: αὐτὸ ἑαυτό. Εἴπερ δ' ἑαυτὸ δίδωσι, τότε καὶ ἀφ' ἑαυτῶ ἐκπορεύεται καὶ πέμπεται. (21) „Ὁ δὴ πῃ ἀληθὲς ἐστίν. Ἡ γὰρ χρονικὴ ἐκπόρευσις τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος, εἴτ' ἔν ἢ πέμψις αὐτῶ, τὸ δῶρημα ἐστὶ, καὶ αὐτὴ ἢ Θεία ἐνέργησις. „Ἐκπορεύεται ἄρα τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, χρονικῶς ἐξ ἑαυτῶ, καὶ πέμπεται ἐξ ἑαυτῶ, ὅτι καὶ δίδεται, ἐξ ἑαυτῶ. „

### Ἀ Π Ἀ Ν Τ Η Σ Ι Σ 5'.

Ὅπερ ἔν ἐντεῦθεν παραπλησίως, ἐπειδὴ καὶ ἡ τῷ Υἱῶ Ἀποστολή, ἔργον ἐστὶ Θεῶν ὡσαύτως τῶν πρὸς τὰ ἐκτὸς, τῷτεσι τῶν ἀμερί-

(20) Πέτρος δὲ Λομβάρδος Παρισίων Ἐπίσκοπος, κατὰ τὴν ΙΒ'. ἐγένετο Ἐκατονταετ: λήγασαν. Διδάσκαλος ἐπικληθεὶς τῶν Ἀποφάνσεων, ἐκ τῆς Ἐπιγραφῆς τῷ Πονήματος, ἐν ᾧ σφαιλόχει τὰς δόξας διαφόρων Λατίν: Συγγραφ:

(21) Ὅρα μοι τὸ ξενὸν τῆς Λατίνων γλώττης: ὅπως τὸ „ἐκπορεύεται,, εἰς σημασίαν ἐκλαμβάνει τῷ „πέμπεσθαι,,. Δῆλον γὰρ ὅτι, ἐκ ἐκείνου Λομβάρδος ἐνταῦθα νοεῖν ἐθέλει, ὅτι ἀφ' ἑαυτῶ τὸ Πνεῦμα ἔχει τὴν ὑπάρξιν, αὐτὸ ἑαυτῶ τῷ εἶναι ἢ ἀρχὴν ὄν, ὡπερ ὁ Πατήρ· ἀλλ' οἷον ἐκπόρουσιν τινα καὶ τὴν διὰ τῆς ἀποστολῆς αὐτῶ ἐπὶ τὴν κτίσιν πρόοδον, ἥτοι τὴν ἐκχυσιν τῶν χαρισμάτων αὐτῶ ἐκδεχόμενος, ἀφ' ἑαυτῶ, φησὶν, „ἐκπορεύεται καὶ πέμπεται,,. Διὸ ἐδὲ χρὴ θαυμάζειν, εἰ τινὲς πῃ καὶ ἄλλοι τῶν παρὰ Λατίνους ἀρχαιοτέρων ὁμοίως, τῷ τῆς διαλέκτου παραδιαθέντες ξενότητι, τὴν φωνὴν τῆς „ἐκπορεύσεως,, εἰς δήλωσιν τῆς „πέμψεως,, προσεχρήσαντο.

Τόμ: Β'.

Δ

ἀμερίζων· ταύτη τοι καὶ ὁ Υἱὸς τοῦ Θεοῦ, ἑαυτὸν εἰς τὸν κόσμον ἀπεσταλέναι ῥητέος ἐστίν. Διδάσκει δ' αὖ καὶ τῆτο οἱ Θεηγόροι Πατέρες, καὶ τῶ ἐπενεχθέντος λόγου πολλάκις μνείαν ποιοῦμενοι. Ἐν οἷς καὶ κἀκεῖνο, παρὰ ταῦτα, ἐκ τέττα ἀποδεικνύουσιν, ὅπερ ἡ Ἱερὰ ἡμᾶς ἐκδιδάσκει Γραφή, ὡς ὁ Κύριος ἡμῶν ἑαυτὸν ὑπὲρ τοῦ κόσμου παρέδωκεν.

ἈΜΒΡΟΣΙΟΣ μὲν ἔν, ἐν τῷ Γ'. Βιβλ: περὶ τοῦ Ἁγίου Πνεύματος, Κεφ: Β'. Τόμ: Δ'. τῶν αὐτῶ Συγγραμ: Σελ: 255. „Μὴ προσδιορισάμενος ὁ Προφήτης, ὑφ' οὗ δέδοται (ὁ Υἱὸς τοῦ Θεοῦ) χάριτι τῆς Τριάδος δοθῶν αὐτὸν ἐπιδείκνυσιν. Ἐπειδὴ „τοίνυν ὁ Υἱὸς ἔδωκεν ἑαυτὸν, πάντως ἐκ εἶχεν αὐτὸς ἑαυτῷ „κατὰ τὴν Θεότητα ὑποκεῖσθαι,.

ἸΔΑΚΙΟΣ δὲ ὁ Κλάρος, ἐν τῷ κατὰ Βαριμένδου, ἐν Τόμ: Α'. τῆς τῶν Πατέρ: Βιβλιοθ: τῆς ἐν Κολων: Σελ: 622. „Μήτοι „ἐν ταύταις ταῖς τοσαύταις καὶ τηλικαύταις μαρτυρίαις, αἷς „ἑαυτὸν Θεὸν ὁ Υἱὸς ἀφ' ἑαυτοῦ μαρτυρῶν ἐστίν, διωήση λέγειν „παρ' ἄλλου αὐτὸν ἐληλυθέναι, καὶ μὴ παρ' ἑαυτοῦ; ὅποτε φα- „νερὸν ἐστίν, ὡς, ὁ τὴν ἡμετέραν σάρκα προσλαβέσθαι καταδε- „ξάμενος, ἐθελοσίνως αὐτὸς καὶ ἔχ ὑφ' ἑτέρου πεμφθεὶς παρεγέ- „μετο,; Ταῦτα δ' αὐτὰ καὶ ἐν τῇ Ὑγίνου τοῦ Ῥώμης Ἐπισκόπου Ἐπιστολῇ Α'. τῇ ὑπὸ Ἰσιδώρου τοῦ Μερκάτορος ἀναπεπλασμένη, παραπλησίως ἀναγινώσκεται, ἐν Τόμῳ Α'. τῶν Σωοδικ: Στή- λη 566.

Καὶ ΑΥΓΟΥΣΤΙΝΟΣ δὲ, Βιβλ: Γ'. κατὰ Μαξιμίνου τοῦ Ἀρειανῶν Ἐπισκόπου, Κεφαλ: Κ'. ἐν Τόμ: 5'. τῶν Συγγραμ: Σελ: 240. „Οὐδ' ἔτι (ὁ τοῦ Θεοῦ Υἱὸς) ἀπεστάλη, ὡς ἑαυτὸν „μηδαμῶς ἀπεσταλέναι, ὥστε ὑπὸ Πατρὸς δέκνυται παραδο- „θῆς, ἐνθα ἀναγινώσκεται: ὅς τοῦ ἰδίου Υἱοῦ ἐκ ἐφείσατο, ἀλλ' „ὑπὲρ ἡμῶν ἀπάντων παρέδωκεν αὐτόν· ἀλλὰ καὶ δὲ περὶ αὐτοῦ „τοῦ Υἱοῦ λέγεται: ὅς τις ἡγάπησέ με, καὶ παρέδωκεν ἑαυτὸν ὑπὲρ „ἐμοῦ, . Πρὸ πάντων δὲ Αὐγουστίνος πραγματεύεται περὶ τέττα ἐν Βιβλ: Β'. τῶν περὶ Τριάδος, Κεφαλ: Ε'. „Βιάζεται τις τυ- „χὸν ἵνα φῶμεν ἀφ' ἑαυτοῦ καὶ τὸν Υἱὸν ἀπεστάλθαι· ἡ γὰρ „τῆς ΜΑΡΙΑΣ σύλληψις ἐκείνη, καὶ ὁ τόκος, ἐνέργεια ἐστὶ τῆς „Τριάδος, ὑφ' ἧς δημιουργήσῃς πάντα δημιουργεῖται. Καὶ πῶς „ἔν, φησὶν, ὁ Πατὴρ ἀπέστειλεν αὐτόν, εἴπερ αὐτὸς ἑαυτὸν ἀπέ- „σταλκε; Πρὸς ὃ δὴ πρῶτον ἀποκρίνομαι ζητῶν ἰν' εἶπη, εἰ ἂν „ἔχη: πῶς ὁ Πατὴρ αὐτόν καθηγίασεν, εἰ αὐτὸς ἑαυτὸν καθη- „γίασεν; Ἐκάτερον γὰρ τέττων εἶπεν ὁ Κύριος: ὃν ὁ Πατὴρ, „φησὶν, ἡγίασε, καὶ ἀπέστειλεν εἰς τὸν κόσμον, ὑμεῖς λέγετε, „ὅτι βλασφημεῖ, ἐπειδὴ εἶπον, Υἱὸς Θεοῦ εἰμί· Ἀλλὰ καὶ δὲ εἶπε: „καὶ ὑπὲρ αὐτῶν ἀγιάζω ἑμαυτόν. Ἔτι πιωθάνομαι: πῶς αὐτόν „ὁ Πατὴρ

„ὁ Πατὴρ παρέδωκεν, εἰ αὐτὸς ἑαυτὸν παρέδωκεν; Ἐκότερον  
 „γὰρ Παῦλος λέγει ὁ Ἀπόστολος ὅς τῃ ἰδίᾳ (φησὶν) Υἱὸς ἐκ ἐφεί-  
 „σατο, ἀλλ' ὑπὲρ ἡμῶν πάντων αὐτὸς παρέδωκεν. Ἀλλὰ χῆ  
 „δὲ περὶ αὐτῶ τῇ Σωτήριος εἶπεν: ὁ ἀγαπήσας με, καὶ παραδὼς  
 „ἑαυτὸν ὑπὲρ ἡμῶν. Ἀπαντήσῃ οἶμαι, εἴ τις ταῦτα καλῶς ἐπί-  
 „σταται, ὅτι μία ἡ θελήσις ἐστὶ Πατρὸς καὶ Υἱοῦ, καὶ ἀχώριστος  
 „ἡ ἐνέργεια. Οὕτως ἄρα ἐννοεῖται καὶ τὴν ἐνσάρκωσιν ἐκείνῃ,  
 „καὶ τὴν ἐκ τῆς Παρθένου γεννήσιν, ἐν ᾗ ὁ Υἱὸς νοεῖται ἀποσα-  
 „λῆς, μιᾷ καὶ τῇ αὐτῇ ἐνεργείᾳ τῇ Πατρὸς καὶ τῇ Υἱοῦ ἀδια-  
 „χωρίστως γενέσθαι. — Ἐὰν γὰρ ἔτω ζητήσωμεν, σαφέστερον  
 „ἴσως ὁ λέγομεν ἐπιδηλωθήσεται, ὅπως ὁ Θεὸς ἀπέστειλε τὸν  
 „Υἱὸν αὐτοῦ; Ἐκέλευσεν ἵνα ἔλθῃ ὁ δὲ κελεύσαντι ὑπακούσας  
 „ἐλήλυθεν. Ἀρ' ἠρώτησεν, ἢ μόνον ὑπέθετο; Ἀλλ' ὅ, τι ποτὲ  
 „τάτων καὶ εἶη, τῷ λόγῳ πάντως ἐγένετο. Ὁ δὲ τῇ Θεῷ Λό-  
 „γος, αὐτὸς ἐστὶν ὁ τῇ Θεῷ Υἱός. Διὰ τῆτο, ὅτε ὁ Πατὴρ αὐ-  
 „τὸν λόγῳ ἀπέστειλεν, παρὰ τῇ Πατρὸς καὶ τῇ Λόγῳ αὐτοῦ γέ-  
 „γονεν ἵνα ἀποσαλῇ. Ἀρ' ἐν παρὰ τῇ Πατρὸς καὶ τῇ Υἱοῦ, ὁ  
 „αὐτὸς Υἱὸς ἀπεστάλη, ὅτι ὁ Λόγος ὁ τῇ Πατρὸς αὐτοῦ ἐστὶν ὁ  
 „Υἱός. Τίς γὰρ ἔτω δυσεύρετον ἀμφιέσεται δόξαν, ὡς ἠγείσθαι  
 „χρονικὸν ὑπὸ τῇ Πατρὸς τὸν Λόγον γενέσθαι, ἐφ' ᾧ τὸν ἀπ'  
 „αἰῶνος Υἱὸν ἀποσαλῶναι, καὶ φανερωθῆναι ἐν σαρκὶ κατὰ χρό-  
 „νον; Ἀλλὰ γε πάντως ἐν αὐτῷ τῷ τῇ Θεῷ Λόγῳ, ὅς ἐστι ἐν  
 „ἀρχῇ πρὸς τὸν Θεόν, καὶ Θεὸς ὡς τετέστιν, ἐν αὐτῇ τῇ σοφίᾳ  
 „τῇ Θεῷ ἀχρόνως ὡς, καθ' ὃν αὐτῷ ἔδει χρόνον ἐμφανισθῆναι.  
 „Τοιγαρὲν, ἐπεὶ ἄνευ οἰασθῆναι ἀρχῆς χρονικῆς ἐν ἀρχῇ ὡς ὁ Λό-  
 „γος, καὶ ὁ Λόγος ὡς πρὸς τὸν Θεόν, καὶ Θεὸς ὡς ὁ Λόγος,  
 „ἄνευ τινὸς χρόνου ἐν αὐτῷ τῷ Λόγῳ ὡς, τὸ ἐν χρόνῳ τὸν Λό-  
 „γον σὰρκα γενέσθαι, καὶ σκηνῶσαι ἐν ἡμῖν. Ὅτε δὲ ἦλθε τὸ  
 „πλήρωμα τῇ χρόνῳ, ἐξαπέστειλεν ὁ Θεὸς τὸν Υἱὸν αὐτοῦ, γε-  
 „νόμενον ἐκ γυναικὸς, γεόμενον ὑπὸ νόμον τετέστιν γεόμενον  
 „ἐν χρόνῳ ἵνα σαρκωθεὶς ὁ Λόγος τοῖς ἀνθρώποις φανερωθῇ,  
 „ὅς ἐν αὐτῷ τῷ Λόγῳ ὑπὲρ χρόνον ὡς, ἐν ᾧ χρόνῳ ἐγένετο.  
 „Ἡ γὰρ τῶν χρόνων τάξις ἐν τῇ τῇ Θεῷ προαιωνίῳ Σοφίᾳ,  
 „ἐπέκεινα τῇ χρόνῳ ἐστίν. Ἐπειδὴ τοίνυν ὑπὸ τῇ Πατρὸς ἐγέν-  
 „ετο τῆτο καὶ τῇ Υἱοῦ, ἵνα ἐν σαρκὶ ὁ Υἱὸς ὀφθῇ, προσηκόντως  
 „εἰρηται, ἀπεστάλῃ μὲν ὁ ἐν ἐκείνῃ ὀφθεὶς τῇ σαρκὶ, ἀπεσταλ-  
 „κέναι δὲ ὁ ἐν αὐτῇ μὴ ὀφθεὶς. Τὰ γὰρ τοι πρὸ τῶν σωματι-  
 „κῶν ὀφθαλμῶν ἔξω γινόμενα, ἐκ παρασκυβῆς ἐσωτέρας τῆς  
 „Πνευματικῆς ὑπάρχεις φύσεως, καὶ διὰ τῆτο ἐκ ἀπεικόντως ἐξα-  
 „ποστέλλεσθαι λέγεται. Ἡ δὲ μορφή ἐκείνη τῇ προσληφθέντος  
 „ἀνθρώπου, τὸ τῇ Υἱοῦ Πρόσωπον ἐστίν, ἐκείτι δὲ καὶ τὸ τῇ Πα-  
 „τρός. Διὸ περ ὁ Πατὴρ ἀόρατος ὢν, ἅμα τῷ Υἱῷ, τῷ σὺν  
 Δ ρ αὐτῷ

„αὐτῷ ἀοράτῳ, τὸν αὐτὸν Υἱὸν ὁρατὸν ποιήσας, τῷτον εἶρηται  
 „ἀπεσαλκέναι· ὅς γε, εἶπερ ὁρατὸς ἔτος ἐγένετο, ὡς σὺ τῷ  
 „Πατρὶ παύσαθαι τῷ εἶναι ἀόρατος· ὅπερ ἐστίν· εἶπερ ἡ ἀόρα-  
 „τος τῷ Λόγῳ ἔσται, εἰς ὁρατὸν κτίσμα ἀμειφθεῖσα τε καὶ μετα-  
 „βάσας ἐτράπετο ἂν, ἔτως ἂν ἀπεσάλθαι μὲν παρὰ τῷ Πατρὶ  
 „ὁ Υἱὸς νοηθείη, ὡς μόνον ἀπεσάλθαι, ἔχῃ δὲ καὶ σὺ τῷ Πατρὶ  
 „ἀποσέλλων ἅμα ἐυρίσκεισθαι. Ἐπεὶ δ' ἔν τῳ τῷ δέλῳ μορφῷ  
 „ἔτω προσείληφεν, ὡς ἀτρέπτως μείναι καὶ ἐν τῇ μορφῇ τῷ  
 „Θεῷ· ἐκδηλον ὅτι παρὰ τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ μὴ ὁπτανομέ-  
 „νων, γέγονε τὸ ὁφθῆναι ἐν τῷ Υἱῷ· τῷ τῷ, τὸ παρὰ τῷ ἀορά-  
 „τῳ Πατρὶ, ἅμα καὶ τῷ ἀοράτῳ Υἱῷ, τὸν αὐτὸν τῷτον Υἱὸν  
 „ὁρατὸν γεγονότα ἀποσαλῶναι. Διατὶ τοίνυν εἶπε καὶ ἀπ' ἐμαυ-  
 „τῷ ἔκ ἐλήλυθα; Ἀλλ' ἡδὴ τῷτο εἶρηκε κατὰ τῳ τῷ δέλῳ  
 „μορφῷ· καθ' ὃ καὶ λέλεκται· ἐγὼ ἔκ κρῖνω ἔδενα,,. Ταυτὰ  
 δὲ ἔχει καὶ ἐν τῇ Πραγματείᾳ τῇ εἰς τὸν ΞΕ'. Ψαλμόν.

Ὁ δὲ ΕΥΤΣΕΒΙΟΣ ὁ Ἐμισιωτὸς τῇ Γ'. τῆς μετὰ τῳ Α'.  
 Κυριακῷ Ἑβδομάδος, ἐν Τόμῳ Ε'. Μέρῳ Α'. τῆς Βιβλιοθῆ: τῶν  
 Πατέρῳ: τῆς ἐν Κολωνῳ: Σελῳ: 654. „Τί δ' ἐστὶν ὁ Φησί: ὁ πέμ-  
 „ψας με; ἢ, ὁ ἄνθρωπόν με γενέσθαι, καὶ σάρκα με βεβηθεῖς  
 „προσλαβέσθαι. Ἡ δὲ ἐνέργεια αὕτη, τῆς ὅλης Τριάδος ἐστὶ, καὶ  
 „ἔ μόνον τῷ Πατρί,,.

Καὶ ὁ ΒΕΔΑΣ ἐν Ὑπόμνῳ: τῳ εἰς τῳ πρὸς Ῥωμῳ: Ἐπισῳ:  
 εἰς τὸ Η'. Κεφαλῳ: Τόμῳ 5'. τῶν Συγγραμῳ: Στήλῳ 170. „Εἴ-  
 „ρηται τῳ Ἀποστόλῳ: ὁ ἀγαπήσας με, καὶ παραδὼς ἑαυτὸν ὑπὲρ  
 „ἐμῷ. Εἶρηται δὲ καὶ περὶ τῷ Πατρί: ὅς τῷ ἰδίῳ Υἱῷ ἔκ ἐφεί-  
 „σατο, ἀλλ' ὑπὲρ ἡμῶν ἀπάντων παρέδωκεν αὐτόν. Εἰ ἄρα ὁ  
 „Πατὴρ τὸν Υἱὸν παρέδωκε, καὶ ὁ Υἱὸς ἑαυτὸν παρέδωκεν, ὁ  
 „Ἰδὼς τί ἐτέλεσεν; ὁ Πατὴρ παραδὼς ὑπὲρ ἡμῶν εἰς θάνατον  
 „τὸν Υἱὸν, ἔν ἐποίησεν· ὁ Χριστὸς παραδὼς ἑαυτὸν ὑπὲρ ἡμῶν,  
 „ἔν ἐποίησε,,.

Καὶ ἡ ἐν ΤΟΛΗΤΩ δὲ Σύνοδος ΙΑ'. ἐν 5'. Τόμῳ: τῶν Συ-  
 νοδικῳ: Στήλῳ 544. „Καὶ ἀφ' ἑαυτῷ ὁμοίως ἀπεσαλμένος λαμ-  
 „βάνεται ὁ Σωτὴρ, καθὸ ἀχώριστος ἔ μόνον ἢ ἐξουσία, ἀλλὰ καὶ  
 „ἡ ἐνέργεια τῆς Τριάδος ὅλης ἐπιγιγνώσκεται,,.

Καὶ ὁ ΕΘΗΡΙΟΣ δὲ καὶ ΒΕΑΤΟΣ κατὰ Ἐλιπάνδῳ ἐν τῳ  
 Α'. Βιβλῳ: περὶ τὸ τέλος, ἐν Η'. Τόμῳ: τῆς τῶν Πατέρων Βι-  
 βλιοθῆ: τῆς ἐν Κολωνῳ: Σελίδι 358. „Ὅτι μία ἢ θέλησις, καὶ  
 „μία ἢ ἐξουσία ἐστὶ τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ καὶ τῷ Ἁγίῳ Πνῶ-  
 „ματος· καὶ ὁ Πατὴρ ἀπέσαλκε τὸν Υἱὸν, καθὸ ὁ Υἱὸς ἐλάσ-  
 „σων· ἐστὶ καὶ ὁ Υἱὸς ἑαυτὸν ἀποσέλλει καθὸ ἴσος ἐστὶ,,. Τὸ  
 δ' αὐτὸ καὶ ὁ ΛΟΜΒΑΡΔΟΣ ἐν τῳ Α'. Βιβλῳ: τῶν Ἀποφάνσεων,  
 ἐν Διαίρεσει ΙΕ'.

Εἰ τοίνυν

Εἰ τοίνυν ὁ Υἱὸς ἐπεμψεν ἑαυτὸν, παρὰ πλησίως δὴπερ ἔπε-  
ται, ὅτι καὶ τὸ Πνεῦμα ἐπεμψεν ἑαυτό· ἢ, ῥητέον μὴ τῆς  
αὐτῆς εἶναι ἰχὺος τε καὶ διωάμεως, κατὰ τὸν Υἱόν· ὅπερ ἐκ  
ἔσιν εἰπεῖν. Ἀλλὰ, καὶ τις ἔτι λόγος ἂν εἴη τῶ, τὸν μὲν Υἱὸν  
ἑαυτὸν ἀποσέλλειν, τὸ δὲ Πνεῦμα ἔ; Λόγος γὰρ ἔμπης τῆς  
τοιαύτης ὥδε διαφορᾶς, ἐκ ἂν ἀποδοθείη ἐδέας· ἐδὲν γὰρ μάλλον  
ἢ τῶ Υἱῶ Ἀποσολῇ, ἢπερ ἢ τῶ Πνδύματος ἐν χρόνῳ γεγέννη-  
ται, καὶ πρὸς τῶ κτίσιν ἀναφέρεται· τῶτεςιν, ὡσαύτως ἐκατέ-  
ρα τοῖς τῶ Θεῶ πρὸς τὰ ἐκτὸς ἐνεργήμασι ἐναριθμῖος τάσσεται.  
Ἐπειτα δὲ, ἐδὲν ἂν ἦτλον ἔχοι λέγεσθαι τὸ Πνεῦμα ἑαυτὸ δε-  
δωκέναι, ἢ ἐκχέαι, ἢπερ κατὰ τὸ τῆς Γραφῆς Λόγιον, τὸν Υἱὸν  
ἑαυτὸν παραδεδωκέναι ὑπὲρ ἡμῶν. Τελούταῖον δὲ καὶ Αὐγασῖ-  
νος, καὶ Εὐσέβιος, ἢτε Σωόδος ἢ ἐν Τολήτῳ, καὶ σιωάμα Βεάτῳ  
Ἐθήριος, διὰ δὴ τῶτο καὶ τὸν Υἱὸν ἑαυτὸν ἀπεσαλκέναι ἐδίδα-  
σκον, ὅτι μία ἢ ἐνέργεια ἢ τῆς Τριάδος ἐσί. Διὰ τὸν αὐτὸν  
ἄρα λόγον, τῶ τῶ πέμψιν τῶ Πνδύματος ἐνέργειαν Θεῶ εἶναι  
ἐξίσα τῶν πρὸς τὰ ἐκτὸς, ἐξ ἀνάγκης ἔπεται τῆς Τριάδος ὅλης  
καὶ ταύτῳ εἶναι ἐνέργειαν, καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ὡσαύτως  
καὶ παρ' ἑαυτῶ πέμπεσθαι. Εἰ δὲ, ὡς ἄχρι τῶδε ἀπεδείκνυτο,  
τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἑαυτὸ ἐκχέαι καὶ δίδωσι καὶ πέμπει πῶς,  
πρὸς Θεῶ, οἱ Λατῖνοι προσλαμβάνειν ἂν ἔχοιεν, ὅτι, παρ' ἔ τις  
πέμπεται, ἐξ αὐτῶ καὶ κατὰ τὸ εἶναι προβάλλεται; Μὴ ἄρα  
τέως, καὶ αὐτὸ ἑαυτῶ τὸ Πνεῦμα ἀρχὴ καὶ αἰτία καθέστηκε;  
καὶ ἐδ' ἄρ' Λατῖνοις ὁ Πατὴρ καὶ τὸ Πνεῦμα, εἰς τῶτο ἐμὴ  
ἐξαρκέσειαν; Εἰ δ' ἔν ὁ Υἱὸς καὶ ἑαυτὸν πέμπει, ὡς δέδεικται,  
μὴ τοι γε καὶ αὐτὸς ἑαυτῶ Γεννήτῳρ καὶ Πατὴρ γένοιτο; Ψόβ-  
δέσατον ἄρα τὸ λέγειν, ἐπάναναγκες εἶναι τῶ Θεῖαν Ὑπόστασιν  
ἐξ ἐκείνῳ προεληλυθέναι, παρ' ἔ καὶ πέμπεται.

Ἀλλὰ τὰ ἈΘΑΝΑΣΙΟΥ προτείνουσιν ἐν τῶ Λόγῳ τῶ κατὰ  
τῶν Σαβελλιανῶν. „Εἰ ἐν τὸ Πρόσωπον ἐσί, πῶς τὸ μὲν πέμ-  
„πει, τὸ δὲ πέμπεται,; Οἷς ἀδελφὰ εἶναι καὶ τὰ ἘΠΙΦΑΝΙΟΥ,  
ἐν Αἰρέσει ΞΕ. κατὰ Ναυατιανῶν. Ἀλλ' οἱ Πατέρες τὰς Γρα-  
φικὰς ἐκείνας ἐννοῶσι ῥήσεις, ἐν αἷς τῶ μὲν ὡς πέμποντος, τῶ  
δὲ ὡς πεμπομένου, γίνεται μνεία· ἐνθα πάντως ἐκ ἂν ἐν τὸ  
Πρόσωπον εἴη, τό τε πέμπον καὶ τὸ πεμπόμενον. Ἀλλὰ μὴ γὰρ,  
ἐκ τέτῳ ἐπάναναγκες αἰεὶ διοδὸν πρόσωπον εἶναι τὸ πέμπον, καὶ ὁ  
πέμπεται; Τῶ ὄντι δὲ, τῶ Ἀποσόλῳ λέγοντος: „Ὅς τῶ ἰδίῳ  
„Υἱῶ ἐκ ἐφείτατο, ἀλλ' αὐτὸν παρέδωκεν ὑπὲρ ἡμῶν ἀπάντων·  
ἐνταῦθα δὴ, ἐπειδὴ θατέρῳ μὲν ὡς παραδεδωκότος, θατέρῳ δὲ  
ὡς παραδοθέντος γίνεται μνήμη, ἐχ οἷα τε ἀμφοτέρω τὰ πρό-  
σωπα εἶναι ἔν. Ἀλλὰ γὰρ, ἀλλὰχῶ ἢ Γραφὴ λέγει „τῶ ἀγα-  
„πήσαντός με, καὶ παραδόντος ἑαυτὸν ὑπὲρ ἐμῶ,“. Μὴ ἔν, ἐπεὶ

Τόμ: Β'.

Ε

διὰ



διὰ τὴν προτέραν τῇ Ἀποστόλῃ μαρτυρίαν, τὸ, τε τῇ παραδιδόν-  
τος, καὶ τὸ τῇ παραδιδομένῃ Πρόσωπον ἐν εἶναι μὴ διώταται, καὶ  
κατὰ τὴν δευτέραν μαρτυρίαν ὁμοίως, ἐπὶ τῇ ἑαυτὸν παραδόν-  
τος, ἐπάναγκες εἶναι διὸ τὰ Πρόσωπα; Ἀλλ' ἐκ ἑξῆς τῆτο,  
ἐκ ἑξῆς. Οὐ γὰρ ἔμπης δύο, ἓνα δὲ καὶ μόνον οἱ Χριστιανοὶ  
πισθόμεν τὸν Χριστόν. Τῷ ἴσῳ ἄρα λόγῳ καὶ τὸ Ἅγ. Πνεῦμα  
ἑαυτὸ λέγεται πέμπειν πάντῃ ὁρθῶς καὶ διὰ τῆτο τὰ τῶν Πα-  
τέρων προτεινόμενα ῥήματα, ὥς ἡκιστα προσλυμάνεται. Ἀλλως  
τε καὶ τὸ λεγόμενον ἔτως ἐνδήλον, καὶ διὰ τὴν Ἀποστολικὴν μαρ-  
τυρίαν ἔτως ἀναμφισβήτητον, ὡς χολῇ γ' ἂν τις μηκιῶναι τὸν  
λόγον, περαιτέρω τῆτο κατασκιδνάξεν πειρώμενος.

Προτείνουσι δ' ἔτι καὶ τὰ τῇ Μεγάλῃ ΒΑΣΙΛΕΪΟΥ, Βιβλ.: Ε'.  
κατὰ Εὐνομίας (22) „Οὐ δὴπερ δὲ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἑαυτὸ  
„πέμπει Ἀποστολῇ δὲ καλεῖ, τὴν πρὸς τὸ ἔργον αὐτῆς συγκατά-  
„βασιν, ἐκ τῆς ἐκ τόπου εἰς τόπον μετάβασιν,,. Ὁ δὲ τῇ Βασι-  
λεῖς νῆς, ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα „ἐκ ἑαυτοῦ,, ταστέσιν ἐκ τῆς  
„ιδίαν αὐτῆς Θεότητα,, πρὸς ἡμᾶς πέμπει τῇ γὰρ Θεότητι  
πανταχῇ παρὼν, ἐδαμόσε ἂν αὐτὸ ἑαυτὸ πέμψειν, ἐκ ἂν μὴ  
παρῇ καθ' ὧν δὴπερ ἐννοίαν, ὁμοίως κατωτέρω ἀκασόμεθα καὶ  
ἸΩΑΝΝΟΥ τῇ Χρυσόστομῳ, καὶ ΚΥΡΙΛΛΟΥ τῇ Ἀλεξανδρέως,  
καὶ τῇ τὴν Ἐπιτομῇ κατὰ τῶν Ἀρειανῶν Συγγεγραφότος, τὴν  
ὑπὸ τῇ Ἰσαΐτῃ Συρμόνδε ἐκδοθεῖσαν καὶ δὴ καὶ ἈΜΜΩΝΙΟΥ,  
καὶ ΣΕΒΗΡΙΑΝΟΥ τῶν σαφέσι ῥήμασι διδασκόντων, τὸ Ἅγιον  
Πνεῦμα μὴ πέμπεσθαι. Διὸ δὴ καὶ Βασίλειος ἐν τέτοις προσέ-  
θῃσιν: „Αποστολῇ δὲ καλεῖ τὴν πρὸς τὸ ἔργον αὐτῆς συγκα-  
„τάβασιν σημαίνων, δηλονότι, διὰ δὴ τῆτο, ἑαυτὸ τὸ Πνεῦμα,  
„ἢτοι τὴν ιδίαν αὐτῆς Θεότητα μὴ διώσθαι πέμπειν διότι ἡ  
„Αποστολή αὐτῆς, τὴν πρὸς τὸ ἔργον συγκατάβασιν ἐμφαίνει, καὶ  
„ἐκ τῆς ἐκ τόπου εἰς τόπον μετάβασιν,, καθότιγε τὸ Ἅγιον  
Πνεῦμα πάρεστιν ἀπανταχῇ ἡ δὲ αὐτῆς ἕξοδος ἐν τέτῳ καίται,  
ἵνα τὸ κατ' ἐσίαν τέως ἐδαμόθεν ἀπὸν Πνεῦμα Ἅγιον αὐτὸ,  
διὰ τῶν κατὰ χάριν αὐτῆς δωρημάτων ἐν τοῖς πισθούσιν ἀρξήται  
ἐνεργεῖν.

Ἐνίστα-

(22) Παρασημεῖται Γαρενῆλος ἐν τῇ Νεωτάτῃ τῶν τῇ Βασιλεῖς Συγγραμ.: Ἐκδόσε,  
Τόμ.: Α'. Σελ.: 297. Σημειώσε (8), ὅτι ἐν τοῖς ἐκδομένοις ἀναγινώσκεται: αὐτὸ  
ἑαυτοῦ. „Αλλ' οἱ ἡμέτεροι, Φησὶ, Χειρόγραφοι Κώδικες, τὸν ἀριθμὸν ἑπτὰ, ἔχου-  
„σιν αὐτὸς ἑαυτοῦ,,. Ἐνθα ἐξυπακχθέν τὸ Χριστός, ἢ Θεός. Τὸ δ' ἂν  
μὴ μᾶλλον ἐξυπακχέοιτο, ὁ Παράκλητος; Περὶ γὰρ τῇ Πνύματος ὡδε ὁ  
λόγος μάλισα, ἐκ τε τῶν ἡγεμένων, καὶ ἐκ τῶν ἐπομένων ἀριθλοτάτα καταφαί-  
νεται. Ἡγείται μὲν γάρ: „Ἐξαποσελεῖς τὸ Πνεῦμα σε καὶ κτιθήσονται,,.  
Ἐπεταὶ δὲ εὐθὺς ἀμέσως, ὅτι (τὸ ἐκ τῆς Σοφίας: Κεφαλ.: Α'. Ἐδαφ.: 7.)  
„Πνεῦμα Κυρίῃ πεπλήρωκε τὴν οἰκὸν ἐν τῇ, καὶ τὸ σωέχον τὰ πάντα γινώσιν ἔχει  
„φανῆς,,.



Ἐνίσταται τις τῶν Ἰησιῦτων (23) τελουταῖον. „Ζητεῖν χρή:  
 „τί δὴποτε αὐταὶ σημαίνουσιν αἱ Προτάσεις: τὸ Ἅγιον Πνεῦμα  
 „ἔστιν, ἢ ἐκπορεύεται πρὸς τὰ ἐκτὸς παρὰ τῆς Τίς, ἢ διὰ τῆς  
 „Τίς· ὡς δὲ ῥηθῇ ταῦτόν εἶναι, καὶ πέμπεσθαι αὐτὸ, καὶ χορηγεῖσθαι  
 „τοῖς ἀνθρώποις· ἐπιφέρειν ἐντεῦθεν: ἐπειδὴ αὐτοὶ φασί, τὸ  
 „Πνεῦμα τὸ Ἅγιον καὶ πέμπεσθαι ἀφ' ἑαυτῆς καὶ χορηγεῖσθαι,  
 „ὁφείλειν αὐτὰς ἀσάφως λέγειν, τὸ Ἅγιον Πνεῦμα καὶ εἶναι ἀφ'  
 „ἑαυτῆς, καὶ ἐκπορεύεσθαι ἀφ' ἑαυτῆς, ἢ δι' ἑαυτῆς καθὼς λέγεται  
 „εἶναι ἐκ τῆς Τίς, εἶναι ἐξ ἀμφοῖν, ἐκπορεύεσθαι ἐκ Πατρὸς καὶ  
 „Τίς, ἢ διὰ τῆς Τίς· καὶ προβάλλεσθαι παρὰ τῆς Πατρὸς δι' ἑαυτῆς,  
 „ὃν τρόπον ὑπὸ τῆς Θείας Δαμασκηνῶς λέγεται προβάλλεσθαι ἐκ τῆς  
 „Πατρὸς, διὰ τῆς Λόγος. Οὗτοι ῥαδίως ὁ Σφῶν ἔτος ἀπεκκρεσθή-  
 „σεται· ὁπότε μέντοι γε, κατὰ τιῶν ἐν τῇ Καθολικῇ Ἐκκλησίᾳ  
 „Θεολογίαν, τὸ ῥηθὲν τῆτο ῥᾶξον ἐστὶ νοηθῆναι· ἅτε διδάσκουσιν  
 „μετὰ τῆς Θείας Βασιλείας τῆς Μεγάλης, τὸ ἐκ τῆς Θεᾶς προῖον μὴ  
 „προϊέναι ἐν χρόνῳ, καὶ εἰ ἐν χρόνῳ ἀναφαίνοιτο αὐτῆς ἢ ἐνέρ-  
 „γεια· καὶ τιῶν πρόοδον, ἢ μᾶλλον τιῶν πρὸς τὰ ἐκτὸς Ἀποστολῶν,  
 „ἀείποτε προῦποτιθέμεναι δυνάμιν καταρκτικῶς ἐν τῷ Προσώπῳ  
 „τῷ πέμποντι. Διὸ, μηδὲ λέγεσθαι ποτε τὸν Πατέρα πέμπε-  
 „σθαι, ἢ χορηγεῖσθαι, ὡς ἀρχῶν αὐτὸν ὄντα ἀναρχον. Ταῦτα  
 ἐκείνος.

Ἀλλὰ πρὸ πάντων καὶ αὐτοὶ Λατῖνοι, ὅτε τὸ Ἅγ: Πνεῦμα  
 λέγεται προϊέναι πρὸς τὰ ἐκτὸς παρὰ τῆς Τίς, ἢ διὰ τῆς Τίς·  
 ἔδεν ἄλλ', ἢ τὸ Πνεῦμα παρὰ τῆς Τίς πέμπεσθαι καὶ χορηγεῖσθαι  
 νοῶσιν. Αὕτη γὰρ ἡ σαφής τε καὶ πρῆπτος ἐστὶ τῶν ῥημάτων  
 ἐκείνων ἐννοία, ἔδεν ἐπέκεινα τῇ καθ' αὐτὰς τὰς φωνὰς διωάμεναι  
 δηλόντων. Ἐκ δὲ διὰ τῆς λέγεσθαι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἑαυτὸ  
 πέμπειν, τὰς Λατίνους αὐτὰς σιωπᾶν ἐξ ἑαυτῆς τε εἶναι, ἔξω τε  
 ἐκπορεύεσθαι, εἰς δᾶγμα πρόκειται Λομβάρδος ἡμῖν ἀνωτέρω ἐπὶ  
 τῆς Ε'. τῶν Ἀπαντήσεων. Ἡμεῖς δ' ἐν καταχρηστικῶς καίτοι γε,  
 τιῶν φωνῶν τῆς „ἐκπορεύσεως,, ὁμολογᾶμεν ὑπ' ἐνίων ἐκλαμβά-  
 νεσθαι Λατίνων, ἀντὶ τῆς „χρονικῆς πέμψεως,, κυρίως ἄλλ' ἐν,  
 καὶ καθ' ὡς κοινῇ σημασίαν, ἢ Καθολικῇ παραδέχεται Ἐκκλη-  
 σία, ἔδεν ἐν τρόπῳ συμφάσκομεν, τιῶν τῆς „ἐκπορεύσεως,, φωνῶν  
 ἔτως ἔχαιν ἀντιμεθέλλεσθαι· διὰ ταύτης γὰρ, μόνον τὸν τρόπον  
 τῆς τῆς Ἁγίας Πνεύματος ὑπάρξεως ἐκ τῆς Πατρὸς ὑποδηλεσθαι  
 φάμεν. Ταύτην δὲ τοι εὐδόλως συγχωρῶμεν, ὡς ὑπέληφεν ὁ Ἰη-  
 σούτης, τὰς τῇ φωνῇ χρωμένους τῆς „ἐκπορεύεσθαι,, ἢτοι κατὰ  
 τιῶν

(23) Ὁ Κιχάσιος ὁ Πολωνὸς ἐστὶν ὁ λεπτολέσχων ταῦτα, ἐν ε'. τῶν αὐτῆς Ζητημῶν  
 Σελ: 69.

τιῷ ἐκπόρυσιν προῖεναι, Θεωπεσίης Πατέρας· τῆς διδάσκοντας δηλ: τὸ Πνεῦμα ἐκ Πατρὸς δι' Υἱῶ προῖον ἐκπορεύεσθαι, τῷ λόγῳ τῷ πρὸς τὰ ἐκτὸς νοητέας ἀποφθεγγεσθαι τῆτο γε, ὡς ἐν οἰκείῳ τόπῳ περὶ τῆς πραγματούσόμεθα. Ἐνθεν τοι καὶ παρὰ τὸ προκείμενον ἐπάγεσθαι Φαμὲν τιῷ τῷ Δαμασκίῳ μαρτυρίαν, τὸ Πνεῦμα Θεολογῆντος ἐκ τῷ Πατρὸς, διὰ τῷ Υἱῶ ἐκπορεύεσθαι.

Λέπεται ἄρα μόνον ἐνταῦθα τὸν τῷ Ἰησοῦ Σφῆνα ἐκκρέσασθαι, δι' ἃ ἀντιβάλλων ὡς εἰ „τὸ Πνεῦμα ἑαυτὸ πέμπει, „καὶ ἀφ' ἑαυτῶ ἄρα τὸ Πνεῦμα ἐστίν,,. Ὁ δὲ Σφῶ ἔτος, ὅτι ῥᾶσα ἐκκρέσεται. Ὅτε γὰρ διὰ τὸ παρὰ τῷ Υἱῶ πέμπεσθαι, ἐκ τῷ Υἱῶ εἶναι τὸ Πνεῦμα ὑπὸ τῶν Πατέρων λέγεται, ὁ νῦν ἐστίν: ὅτι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκ τῷ Υἱῶ ἐστίν, χορηγούμενον ἡμῖν δηλονότι· ὡς ἐς πλάτος ἡμῖν ἀποδέδεικται ἐν τῇ Πραγματείᾳ, ἐν ἣ τὰς ἐκ τῶν μαρτυριῶν τῶν Ἀνατολικῶν Πατέρων προτεινόμενας ἐνστάσεις διελυσάμεθα· ἐν αἷς δὴ, καὶ τὰς περὶ τιῷ τῷ Κυρίῳ τῷ Ἀλεξανδρέως ῥῆσιν. Ἀλλὰ, μὴ γὰρ ἐκ ἀληθῶς τὸ Πνεῦμα τὸ Θεῖον ἑαυτὸ ἡμῖν, ἐξ ἑαυτῶ ἐκχέειν τε καὶ χορηγεῖν λέγεται; Οὐκᾶν, καὶ ἀληθῶς τὸ Πνεῦμα λέγεται ἐξ ἑαυτῶ εἶναι ἡμῖν, δηλονότι, ἐπιχορηγούμενον. Ἐν γὰρ ταῖς Πράξ: τῶν Ἀποστόλων, Κεφαλ: Β'. ταῦτα Πέτρος ἀναλαμβάνει τὰ ὑπὸ τῷ Προφῆτῃ Ἰωὴλ προαγορευθέντα: „Καὶ ἔσαι ἐν ταῖς ἡμέραις „ἡμέραις, λέγει ὁ Θεὸς, ἐκχεῶ ἀπὸ τῷ Πνεύματός μου ἐπὶ πᾶσαν σάρκα,,. Ἐπεὶ ἔν ἄρα τὸ Πνεῦμα ἑαυτὸ ἐκσῶς ἐκχέει· ὁ δὲ Θεὸς ὡδε λέγεται ἀπὸ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος ἐκχέειν· ἀφ' ἑαυτῶ πάντως, ἥτοι ἐξ ἑαυτῶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκχέειν ὁμοίως ἐπάναγκες. Ὅρθῳς τοίνυν τὸ Πνεῦμα ἐξ ἑαυτῶ λέγεται εἶναι, ἡμῖν ἀμέλει τοι ἐπιχορηγούμενον.

Περὶ δὲ ἃ περὶ ὁ Ἰησοῦς προσέθησιν: ὡς ἡ πρὸς τὰ ἐκτὸς πέμψις, αἰὲν προσέθησι „διῶαμίν τινα (vim principativam· vim principandi) „καταρκτηκῶς, (καὶ οἶον „ἀρχοειδῆ, φαῖναι) ἐν τῷ „Προσώπῳ τῷ πέμποντι,, περὶ τῆς καλῶτέρῳ πλατύτερον. Τὸ δὲ, τοιῶτον τι καὶ τὸν Μέγαν Βασίλειον παραδεδωκέναι, ὡς πάνυ σφόδρα ψευδὲς ἐστίν. Τιῷ μὲν ἔν ῥῆσιν, ἡ τὸ χωρίον ὁ Ἰησοῦς ἐ παραφαίνει, ἄμενον δὲ λαθεῖν, καὶ τὸ ἴδιον ψεῦδος παρακαλύψει ἐκ εἶχεν. Ἀλλὰ γὰρ ἔπερ ἠθέλε καὶ παρ' ἡμῶν κομισσάσθαι τιῷ Ἀπάντησιν, καὶ πρὸς τὰ λοιπὰ τὰ ὡς ἐκ τῷ Βασιλείῳ προβαλλόμενα: ὅτι δηλ: „τὸ ἐκ τῷ Θεῷ προῖον ἐκ ἐν „χρόνῳ πρόεισι, καὶ εἰ ἐν χρόνῳ αὐτῶ ἀναφαίνοιτο ἢ ἐνέργεια,, ὡφείλε δήπερ τὸ παρὰ τῷ Βασιλείῳ παραδηλῶσαι χωρίον ἃ κεῖται, ἢν' εἶχομεν τὸ ἐκείσε εἰρημένον, θεωρηθὲν ἢ δέον καὶ ἐπισαυμηθὲν, ἀνακρίνασθαι. Καί τοι γε τὰ αὐτὰ ῥήματα, καὶ ἀπλῶς ἔτω προενεχθέντα, δῶκατ' ἂν ἐπανακληθῶμεν καὶ ἐπὶ νῦν τὸν ὁρθῶς τε

ὀρθῶς τε καὶ εὐσεβῶς ἔχοντα, ὡς μηδέν, μηδὲ τὸ τυχὸν ἐντεῦθεν προσγίνασθαι τῇ τῶν Λατίνων δόξῃ ἐπιβοήθημα.

### Ἀ Π Α Ν Τ Η Σ Ι Σ Ζ'.

Ἀλλὰ καὶ ὁ Υἱὸς πέμπεται παρὰ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι. Ἐστὶ γὰρ ἡ Ἀποστολή τῷ Υἱῷ, ἔργον τῶν πρὸς τὰ ἐκτός· ἀλλὰ μὴ, καθ' ἃ προενώετο, τὰ πρὸς τὰ ἐκτός ἔργα τοῖς τρισὶ Θεοῖς Προσώποις ἐστὶ κοινά. Αὐτὸς γὰρ ὁ τῷ Θεῷ Υἱὸς, παρὰ τῷ Ἡσαΐᾳ, (Κεφ: ΜΗ'. 12 — 17.) „Καὶ νῦν Κύριος ἀπέσταλκέ με, „καὶ τὸ Πνεῦμα αὐτῷ (ἄχρι γὰρ τέττα, ὁ Θεὸς ἐστὶν ὁ λαλῶν) „ἐγὼ εἰμὶ πρῶτος, καὶ ἐγὼ εἰς τὸν αἰῶνα· καὶ ἡ χεὶρ μου ἐθεμελίωσεν τὴν γῆν, καὶ ἡ δεξιὰ μου ἐσερέωσε τὸν ὕψος· καλέσω αὐτούς, (τὰς ἐν ὕψει Ἀσέρας) καὶ στήσονται. . . . Ἐγὼ ἐλάλησα, ἐγὼ ἐκάλεσα, ἤγαγον αὐτόν, (τὸν Βασιλέα) καὶ ἐνώδωσα τὴν ὁδὸν αὐτῷ. (Καντεῦθεν ἐφεξῆς ὑποσυνάπτει:) Καὶ νῦν Κύριος Κύριος ἀπέσταλκέ με, καὶ τὸ Πνεῦμα αὐτῷ, „Ὁ Υἱὸς ἄρα τῷ Θεῷ ὁ ταῦτα λέγων ἐστίν· ὁ γὰρ Πατήρ δὲ πέμπεται. Ὡς περὶ αὐτῷ εἰρημένα ταῦτα ἀνέγνω: „Πνεῦμα Κυρίου ἐπ' ἐμὲ, δὲ ἔνεκον ἔχρισέ με, εὐαγγελίσασθαι πτωχοῖς ἀπέσταλκέ με,.

Τὸ δ' αὐτὸ καὶ οἱ Θεοὶ Πατέρες κοινῇ διδάσκουσιν. ὩΡΙΓΕΝΗΣ ἐν τῷ Β'. Τόμ: τῶν Ἐξηγητικῶν εἰς Ἰωάννῳ, Σελ: 57. „Ἐν τῷ Ἡσαΐᾳ, ὁμολογεῖ Χριστὸς ὅτι ὑπὸ τῷ Πατρὶ ἀπεστάλθαι μόνον, ἀλλὰ καὶ ὑπὸ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι φησὶ γάρ: Καὶ νῦν Κύριος ἀπέσταλκέ με, καὶ τὸ Πνεῦμα αὐτῷ, „Καὶ ἈΘΑΝΑΣΙΟΣ εἰς τὴν Ὑπεραγίαν Θεοτόκον, ἐν τῷ Α'. Τόμ: Σελ: 1039. (24) „Καὶ πρότερον ἐν Ἡσαΐᾳ αὐτῷ τῷ ἀπεσταλμένῳ λέγοντος ἄκουε: „Ἐγὼ εἰμὶ πρῶτος, καὶ ἐγὼ εἰς τὸν αἰῶνα· καὶ ἡ χεὶρ μου ἐθεμελίωσεν τὴν γῆν, καὶ ἡ δεξιὰ μου ἐσερέωσε τὸν ὕψος· καὶ ἐξερχόμενος τὰς κατὰ καιρὸν ἐνεργείας, συνάπτει λέγων: „Καὶ νῦν Κύριος ἀπέσταλκέ με, καὶ τὸ Πνεῦμα αὐτῷ φανερώς „διὰ

(24) Τὴν εἰς τὸν Εὐαγγελισμόν Ὀμιλίαν ταύτην, ἀπαντες μοναχοὶ, τῷ Μεγ: Ἀθανασίῳ ἀποκηρύττουν, μετὰ τὰς Αἱρέσεις τῶν Νεστοριανῶν, καὶ Εὐτυχιανῶν, καὶ Μονοθελητῶν αὐτῷ συγγραφῶναι διὰ πλείων κατασκοινοῦντες. (Ὁρα Ῥιβέτον ἐν τῷ Ἱερῷ Κριτικῷ, Βιβλ: Γ'. Κεφ: Ε'. Σελ: 268. Δεπῖνον ἐν τῇ Νέᾳ Βιβλιοθ: Τόμ: Β'. Σελ: 41. Φαβρίν: ἐν τῇ Ἑλλῶν: Βιβλιοθ: Τόμ: Ε'. Σελ: 310. Καθεὶν περὶ τῶν Ἐκκλησιῶν: Συγγραφ: Τόμ: Α'. Σελ: 195. Κασσιμῖρ: Ὁσδῖνον ἐν Ὑπομνήμ: τῷ περὶ τῶν Ἐκκλησιαστικῶν: Συγγραφ: Τόμ: Α'. Στήλη 338. 339.

Τόμ: Β'.

Ζ

„διὰ τέτων παραδείξας ἑαυτὸν, ὅτι αὐτὸς ὁ Θεὸς ὁ ποιήσας τὸν ἔρανόν καὶ τῷ γλῶ, λέγει: Καὶ νῦν Κύριος ἀπέσταλκέ με, καὶ τὸ Πνεῦμα αὐτῶ. Τὰ μὲν ἐν ΒΑΣΙΛΕΪΟΥ ῥήματα, ἐκ τῶ Γ'. Βιβλ: τῶν κατὰ Εὐνομίαν, τὰ εἰς τόδε τείνοντα, κατωτέρω παρατεθείεται. Ὁ δὲ ἈΜΒΡΟΣΙΟΣ ἐν τῷ Γ'. Βιβλ: τῶν περὶ τῶ Ἁγίου Πνεύματος, ἐν Κεφαλ: Α'. Τόμ: Δ'. τῶν Συγγραμ: Στήλῃ 255. „Νῦν Κύριος ἀπέσταλκέ με, καὶ τὸ Πνεῦμα αὐτῶ: „Τίς ἐστὶν ὁ λέγων, Κύριος ὁ Θεὸς ἀπέσταλκέ με, καὶ τὸ Πνεῦμα αὐτῶ; Εἰ μὴ ὁ ἐλθὼν παρὰ τῶ Πατρὸς τῶ σῶσαι τῶς ἀμαρτωλῶς; ὃν, ὡς ἀκούεις, καὶ τὸ Πνεῦμα ἀπέσταλκεν, ἵνα μὴ, ἀναγινώσκων ὅτι ὁ Υἱὸς πέμπει τὸ Πνεῦμα, ὑποδεεσέρας εἶναι τὸ Πνεῦμα νομίσης διωάμεως. Τοιγαρὶν τὸν Υἱόν, καὶ ὁ Πατήρ ἀπέσταλκε καὶ τὸ Πνεῦμα. Καὶ τὸ Πνεῦμα δὲ, ὁμοίως καὶ ὁ Πατήρ ἐπέμψε καὶ ὁ Υἱός. — Εἰ τοίνυν ἀμοιβαδὸν ὁ Υἱὸς καὶ τὸ Πνεῦμα ἀποστέλλουσιν ἀλλήλους, ὥστε ὁ Πατήρ αὐτῶς πέμπει ἔχ' ὑποταγῆς ὕβρις, ἀλλὰ κοινότης ἐστὶ διωάμεως. Καὶ ἐν Κεφ: Β'. „Ἐδόθη (ὁ Υἱὸς τῶ Θεῶ) τολμῶ λέγειν, καὶ ὑπὸ τῶ Πνεύματος, ὅς ἀπεστάλη ὑπὸ τῶ Πνεύματος. Καὶ ἐν Βιβλ: Β'. περὶ Πίς: Κεφ: Δ'. ἐν Τόμ: Δ'. τῶν Συγγραμ: Στήλ: 138. „Ἐπίσημι, ὅτι ὁ Κύριος ἡμῶν Ἰησοῦς Χριστὸς παρὰ τῷ Ἡσαΐᾳ εἶπεν, ὡς ὑπὸ τῶ Ἁγίου Πνεύματος ἀπεστάλη. Μὴ ἄρα ἐλάσων τῶ Πνεύματος ἐστὶν ὁ Υἱός, ὅτι ἀπεστάλη ὑπὸ τῶ Πνεύματος; „Ἐχεις τοίνυν γεγραμμένον, ὅτι ὁ Υἱὸς παρὰ τῶ Πατρὸς καὶ τῶ Πνεύματος αὐτῶ, φησὶν, ἑαυτὸν ἀπεστάλθαι. Ἐγὼ εἰμὶ ἔφη, ὁ πρῶτος, καὶ ἐγὼ εἰς τὸν αἰῶνα· καὶ ἡ χεῖρ μου ἐθεμελίωσε τῷ γλῶ, καὶ ἡ δεξιὰ μου ἐσερέωσε τὸν ἔρανόν. — Καὶ κατωτέρω: „Ἐγὼ ἐλάλησα, ἐγὼ ἐκάλεσα, ἤγαγον αὐτὸν, καὶ ἐνώδωσα τῷ ὁδόν αὐτῶ. Προσαγάγετε πρὸς με, καὶ ἀκούσατε ταῦτα: Οὐκ ἀπ' ἀρχῆς ἐν κρυφῇ λελάληκα· ἡνίκα ἐγένετο ἐκὼ ἡμῶν. Καὶ νῦν Κύριος Κύριος ἀπέσταλκέ με, καὶ τὸ Πνεῦμα αὐτῶ. Πάντως ὁ ποιήσας τὸν ἔρανόν καὶ τῷ γλῶ, αὐτὸς εἶπεν ὑπὸ τῶ Κυρίου καὶ τῶ Πνεύματος αὐτῶ ἀπεστάλθαι. Ὁρᾶτε τοίνυν, ὅτι λόγος ἐστὶν ἀπλότης, ἔκκεν ὕβρις τῆς πέμψεως. Αὐτὸς ἄρα ὁ παρὰ τῶ Πατρὸς ἀποσταλὴς, αὐτὸς ἀπεστάλη ὑπὸ τῶ Πνεύματος.

Καὶ ἸΔΑΚΙΟΣ (25) δὲ ὁ Κλάρος, Βιβλ: κατὰ Βαριμένδαν, ἐν Τόμ: Δ'. τῆς τῶν Πατέρ: Βιβλιοθ: τῆς ἐν Κολων: Σελ: 635. „Ὡστε αὐτὸς ὁ τῶ Θεῶ Υἱός, ἀπέστειλε τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον τοῖς Μαθηταῖς, ἔτω καὶ ἑαυτὸν ὑπὸ τῶ Ἁγίου Πνεύματος ἀπεστάλθαι, προφητικῶς προκατήγγειλε διὰ Ἡσαΐαν λέγοντος: Πνεῦμα „Κυρίου

(25) Ὁρα περὶ τέτων Πραγμ: Δ'. Ἑκατοντ: Δ'. Σημ: (27).

„Κυρίε ἐπ' ἐμὲ, ὃ ἔνεκεν ἔχρισέ με, εὐαγγελίσασθαι πτωχοῖς  
 „ἀπέσταλκέ με, κηρύξαι αἰχμαλώτοις ἄφεςιν, καὶ τυφλοῖς ἀνά-  
 „βλεψιν,,.

Ὁ δὲ ἹΕΡΩΝΥΜΟΣ ἐν Κεφαλ: ΜΗ'. εἰς τὸν Ἡσαΐαν,  
 Τόμ: Δ'. τῶν Συγγραμ: Σελ: 338. „Ἰνα ταῦτα ἀναγγείλῃ,  
 „λέγει ἑαυτὸν ὁ Προφήτης ἀπεστάλθαι ὑπὸ τῷ Κυρίῳ, καὶ ὑπὸ  
 „τῷ Πνεύματος αὐτοῦ· τῷτο κατὰ τῆς Ἑβραίας, καὶ τὴν αὐτῶν  
 „δόξαν. Κατὰ μέντοι τὸν Σύμμαχον, ὃς ἡρμηνεύσε: τίς αὐτῷ  
 „ἀνήγγελε ταῦτα; ὃν ὁ Κύριος ἠγάπησεν· ὃς ἐποίησε τὸ θέλη-  
 „μα αὐτοῦ ἐν Βαβυλῶνι. Καὶ κατὰ τῆς Ο'. (Ἀγαπῶν σε ἐποί-  
 „ησα τὸ θέλημά σου ἐπὶ Βαβυλῶνα·) τῷ ἄραι σπέρμα Χαλδαίων:  
 „Ἐπὶ τὸ Πρόσωπον τῷ Κυρίῳ ἀναφέρεται· ὃς τις ἀληθῶς τῷ  
 „Πατρὶ ἐστὶν ὁ ἀγαπητός, καὶ ὃς ἐποίησεν ἅπαν τὸ θέλημα  
 „τῷ Πατρὶ· καὶ ὃς ἀνέτρεψεν ἐν τῇ Βαβυλῶνι, τὰ τέταρτον, ἐν τῇ  
 „συγχύσει τῷδε τῷ κόσμῳ, ἅπαν τὸ Χαλδαίων σπέρμα· οἱ ἐρμη-  
 „νεύονται εἶναι οἱ Δαίμονες. — Ὅς καὶ νῦν λέγει: ἐγὼ, ὃς αἰεὶ  
 „ἡμῶν μετὰ τῷ Πατρὶ καὶ ἐν τῷ Πατρὶ, καὶ ἄνευ τῷ Πατρὶ  
 „ἡμῶν ἐδέετο, καὶ νῦν εἰμὶ ὁ λαλῶν, καὶ κατὰ τὴν τῆς προ-  
 „σληφθείσης σαρκὸς ἀφένειαν λέγω: ὅτι Κύριος ὁ Θεὸς ἀπέσταλ-  
 „κέ με, καὶ τὸ Πνεῦμα αὐτοῦ· καὶ σωτόμως τῆς Τριάδος ἡμῶν  
 „παρέφηνε τὸ Μυστήριον,,.

Καὶ ὁ Χρυσόρρημων δὲ ἸΩΑΝΝΗΣ, ἐν Ὁμιλ: περὶ τῷ  
 Ἀγίῳ καὶ προσκυνητῷ Πνεύματος, περὶ τὸ τέλος· ἐν Τόμ: 5'.  
 τῶν Συγγραμ: τῆς Γραικο-Λατιν: Ἐκδότ: Σελ: 225. (26)  
 „Ἐάν σοι δείξω τὸν Ποιητὴν ἑρμηνεύει καὶ γῆς, ἀποσελλόμενον ὑπὸ  
 „τῷ Πνεύματος τῷ Ἀγίῳ, τί ποιεῖς; ἢ ἄρνησαι τὸν Χριστὸν, καὶ  
 „ἀπάλειψαι τὰς Γραφάς· ἢ ὁδὸς ὢν τῶν Γραφῶν, ὑποτάτῃς  
 „ταῖς Γραφαῖς. Καὶ πῶς, φησὶν, εἴρηται τῷτο; Ἄκουε τῷ Θεῷ  
 „λέγοντος διὰ τῷ Προφῆτῃ Ἡσαΐᾳ, τῷ κήρυκος τῆς εὐσεβείας:  
 „Ἄκουέ με, φησὶν, Ἰακώβ καὶ Ἰσραὴλ, ὃν ἐγὼ καλῶ: Ἐγὼ Θεὸς  
 „πρῶτος, καὶ ἐγὼ μετὰ ταῦτα, καὶ πλὴν ἐμῷ, Θεὸς ἕκ ἑστι.  
 „Πρόσεχε λοιπὸν καὶ ἐνταῦθα τὸ ζητούμενον. Ἄρα τίς ὁ εἰπὼν  
 „ταῦτα; ὁ Πατὴρ, ἢ ὁ Υἱός; ὅρα πῶς ἐν Μοναρχίᾳ τύπω  
 „τὴν Τριάδα κηρύττει συγκεκαλυμμένως: Ἐγὼ Θεὸς πρῶτος,  
 „καὶ ἐγὼ μετὰ ταῦτα, πλὴν ἐμῷ Θεὸς ἕκ ἑστι. Τίς ὁ ταῦτα  
 „λέγων; ὁ Δημιουργός. Ἐπάγει γάρ: Ἐγὼ τῇ χαρίμῳ ἐθεμελί-  
 „ωσα τὴν γῆν. Βλέπε, πῶς ὁ Δημιουργὸς λέγει: καὶ τὸ Πνεῦμα  
 „με ἐξερέωσα τὸν ἑρμηνεύον. Ἐγὼ πᾶσι τοῖς ἄστροις ἐνετελάμην  
 „ἐγὼ

(26) Περὶ τῆς Ὁμιλ: ταύτης, σεσημειώται τι ἐν τῇ Α'. Πραγματ: ἐν Ἑκατοντ: Δ'.  
 Σημ: (94). Κεῖται δ' ἡ Ὁμιλία κατὰ τὴν Μοντφαλκονίαν Ἐκδόσιν, ἐν Γ'. Τόμῳ  
 Σελ: 797. ταῖς ὑπόνοιαν νοθείας φερέσαις ἐν ἑνὶ ἑνὶ.



„ἐγὼ ἡγείρα μετὰ δικαιοσύνης Βασιλέα, καὶ πᾶσαι αἱ ὁδοί μου  
 „ἐυθεῖαι. Εἰπὼν ἑαυτὸν Δημιουργὸν ἔρανθῃ καὶ γῆς, λέγει λοιπὸν  
 „ταῦτα: Οὐκ ἀπαρχῆς ἐλάλησα ὑμῖν ἐν κρυφῇ ταῦτα, ἔδδῃ  
 „ἐν τόπῳ σκοτεινῷ. Εἰπὼν ὅτι ἐθεμελίωσα τὴν γῆν, καὶ ἐποί-  
 „ησα τὸν ἔρανόν· ὅτε ἐγένοντο, ἐκεῖ ἡμῶν καὶ νῦν Κύριος ἀπέ-  
 „σειλέμε, καὶ τὸ Πνεῦμα αὐτῷ. Σὲ, τὸν ποιήσαντα τὸν ἔρανόν  
 „καὶ τὴν γῆν, τὸν εἰπόντα τοῖς ἄστροις, Κύριος ἀπέσειλέμε καὶ  
 „τὸ Πνεῦμα αὐτῷ (ἐγέννησε κατὰ τὴν Θεότητα, ἀπέσειλε κατὰ  
 „τὴν Σάρκα) ὁ Ποιητὴς ἔρανθῃ λέγει: Κύριος ἀπέσειλέμε καὶ τὸ  
 „Πνεῦμα αὐτῷ,,.

Ὁ δὲ Αὔγουστινός, ὅπως ταῦτα ὁμοίως διδάσκει  
 ἐν τῷ 5. Λόγῳ, τῷ περὶ τῷ Χρόνῳ καὶ Βιβλ: Β'. περὶ Τριάδ:  
 Κεφαλ: Ε'. Καὶ Βιβλ: τῷ κατὰ τῆς Ὀμιλ: τῶν Ἀρειανῶν,  
 Κεφαλ: ΚΑ'. Καὶ Βιβλ: Γ'. κατὰ Μαξιμίνῃ τῷ Ἀρειανῷ. Ἀλλ'  
 ἔγω προσέτι καὶ ἐν τῷ Βιβλ: τῆς κατὰ Ἀρειαν: Ὀμιλ: Κεφ:  
 ΙΘ'. Φησί: „Δείκνυται διὰ τῷ Προφῆτῃ, ὅτι καὶ ὁ Πατὴρ, καὶ  
 „τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἀπεσάλκασιν τὸν Υἱόν. Τίς γάρ, εἰμὴ ὁ  
 „Υἱός, διὰ Ἡσαΐῃ τὴν ἐπιδημίαν αὐτῷ προαγγέλλων Φησίν: Ἀ-  
 „καέ με Ἰακώβ, καὶ Ἰσραὴλ, ὃν ἐγὼ καλῶ. Ἐγὼ εἰμὴ πρῶτος,  
 „καὶ ἐγὼ εἰς τὸν αἰῶνα, καὶ ἡ χεὶρ μου ἐθεμελίωσε τὴν γῆν, καὶ  
 „ἡ δεξιὰ μου ἐσερέωσε τὸν ἔρανόν· καλέσω αὐτῶς, καὶ στήσονται  
 „ἅμα, καὶ σιωαχθήσονται πάντες, καὶ ἀκέσονται τίς αὐτοῖς ἀνήγ-  
 „γειλε ταῦτα; Ἀγαπῶν Σε, ἐποίησα τὸ θέλημά μου ἐπὶ Βαβυ-  
 „λῶνα, τῷ ἄρῳ σπέρμα Χαλδαίων. Ἐγὼ ἐλάλησα, ἐγὼ ἐκά-  
 „λεσα, ἡγάγον αὐτὸν, καὶ ἐνώδωσα τὴν ὁδὸν αὐτῷ. Προσαγά-  
 „γετε πρὸς με, καὶ ἀκέσατε ταῦτα. Οὐκ ἀπ' ἀρχῆς ἐν κρυφῇ  
 „λελάληκα· ἡνίκα ἐγένετο ἐκεῖ ἡμῶν καὶ νῦν Κύριος Κύριος  
 „ἀπέσειλέμε, καὶ τὸ Πνεῦμα αὐτῷ. Τί τέτε σαφέςερον; Ἰδὲ  
 „αὐτὸς ἑαυτὸν, Φησίν, ἀπεσάλθαι ὑπὸ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος, ὅς  
 „ἐποίησε τὴν γῆν, καὶ ἐσερέωσε τὸν ἔρανόν,,. Ἐνθα ἐπιγινώ-  
 σκεται ὁ Μονογεννὴς, δι' ὃ τὰ πάντα ἐγένετο.

Καὶ ὁ Συγγραφεὺς δὲ τῆς κατὰ Ἀρειανῶν Ἐπιτομῆς, Σελ:  
 107. ἐν τοῖς Δογματικοῖς Πονηματίοις πέντε παλαιῶν Συγγρα-  
 φέων, τοῖς ὑπὸ τῷ Ἡσαΐῃ Ἰακώβ Σιρμόνδῃ, ἐν Παρις: 1630  
 ἐκδεδομένοις. „Ἀλλ' ἐρεῖ τις τυχόν: Διὰ τῷτο ἔλαττον (τὸ Ἅγ:  
 „Πνεῦμα) ὅτι πεμπόμενον ἀναγινώσκεται. Καὶ τίποτε φήσει  
 „ἀναγινώσκων παρὰ Ἡσαΐῃ τῷ Προφῆτῃ, ἐκ προσώπου τῷ Χρι-  
 „στῷ, λέγοντος: Κύριος ἀπέσαλκέμε, καὶ τὸ Πνεῦμα αὐτῷ; —  
 „Πῶς ὅν ἔλαττον πισυτέον (τὸ Πνεῦμα) τὸ τὸν Θεὸν (Λόγον),  
 „τὸν, ὡς αὐτὸ, ἴσον τῷ Πατρὶ, πρὸς ἡμετέραν ἄφεισιν ἀπεσαλ-  
 „κέναι, καὶ ὃ μόνον ἀπεσαλκέναι, ἀλλὰ καὶ κατὰ σάρκα δεδι-  
 „μουργηκέναι μαρτυρούμενον,,;

Ὁ δὲ



Ὁ δὲ τῶν Ἑρωτήσεων Συγγραφεὺς, τῶν ἐκ τῆς Παλαιᾶς τε καὶ Καινῆς Διαθήκης, τῶν ἐν τοῖς Αὐγασίνε Ποινήμασι. Τόμ: Δ'. Ἑρωτήσ: 45'. „Αναγινώσκουμεν (Φησὶ) παρὰ τῷ Ἡσαΐᾳ ὅτι, „λέγει Κύριος: Ἐγὼ εἰμὶ Πρῶτος, ἐγὼ εἰμὶ εἰς τὸν αἰῶνα· καὶ „ἡ χεὶρ μου ἐθεμελίωσε τὴν γῆν, καὶ ἡ δεξιὰ μου ἐσερξέωσε τὸν „ὐρανόν. — Ἦνίκα ἐγένετο ἐκεῖ ἡμῶν καὶ νῦν Κύριος ἀπέσειλέ- „με, καὶ τὸ Πνεῦμα αὐτῶ. Τίνα εἶναι βέβαιον τὸν θεμελιώσαντα „τὴν γῆν; αὐτὸς γὰρ, φησὶν, ἑαυτὸν ἀπεσάλθαι. Μήτοι γε τὸν „Πατέρα; ἀπαγε! ὁ Υἱὸς ἄρ' ἐστὶν ὁ λέγων ἑαυτὸν ἀπεσάλθαι „παρὰ τῷ Θεῷ, καὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι. Ἰδὲ τὰ ἐν τῷ Υἱῷ „καὶ τῷ Ἀγ: Πνεύματι πάρισα. „Ὡς περ γὰρ παρὰ Πατρὸς καὶ „Υἱῶ, ἀπεσάλθαι ἀναγινώσκεται τὸ Ἀγ: Πνεῦμα, ἔτω καὶ παρὰ „τῷ Θεῷ, καὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι ἀπεσάλθαι ὁ Υἱός.,.

Ε΄ΥΣΕΒΙΟΣ δὲ ὁ Ἐμισιῶδης, τῇ Γ'. τῆς Ἑβδομάδος μετὰ τὴν Δ'. Κυριακῶν, ἐν Τόμ: Ε'. Μέρει Α'. τῆς τῶν Πατέρ: Βιβλιοθ: τῆς ἐν Κολων: Σελ: 654. „Τί ἐστὶν ὃ φησὶν: ὅς ἀπέ- „σαλκε με; εἰμὶ, ὅς ἀνθρωπὸν με γενέσθαι, καὶ σάρκα λαβεῖν „ἡθέλησεν; ἡ δὲ ἐνέργεια αὕτη ὅλης ἐστὶ τῆς Τριάδος, καὶ ἔχῃ „τῷ Πατρὶ μόνη.,.

Καὶ ΚΕΡΕΑΛΙΟΣ Ἐπίσκοπος Ἀφρικανὸς, (27) ἐν τῷ Ε'. Τόμ: τῆς τῶν Πατέρ: Βιβλιοθ: τῆς ἐν Κολων: Μέρει Γ'. Σελ: 647. Καὶ ἐν τῷ Βιβλ: τῷ κατὰ Μαξιμίνου, Κεφαλ: Γ'. „Καὶ „τὸ Ἅγιον Πνεῦμα τὸν Υἱὸν ἀπέσαλκε τῷ Θεῷ, ὡς γέγραπται „αὐτῷ διδάσκοντος διὰ Ἡσαΐου τῷ Προφήτῃ: Καὶ νῦν γὰρ, φη- „σὶ, Κύριος ἀπέσειλέ με, καὶ τὸ Πνεῦμα αὐτῶ.,.

Καὶ ΠΑΣΧΑΣΙΝΟΣ (28) Βιβλ: Α'. περὶ τῷ Ἀγ: Πνεύματι Κεφ: Ζ'. ἐν Τόμ: Ε'. τῆς Βιβλιοθ: τῶν Πατέρ: τῆς ἐν Κολων: Σελ: 736. „Καὶ νῦν Κύριος ἀπέσειλέ με, καὶ τὸ Πνεῦμα αὐτῶ. „Ἐτερος ἄρα τῷ Προσώπῳ ἐστὶν ὁ Κύριος ὁ Πατὴρ, ἕτερον δὲ „τὸ Πνεῦμα τῷ Θεῷ καὶ Πατρί. „Ὅτε δ' ἐν παρὰ τῷ Πατρὶ, „καὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι ἀποσέλλεσθαι ὁ Υἱὸς ἀναγινώσκεται, „ὑπ' ὀνόματι τῶν Τριῶν Προσώπων, τὸ Ἀγ: Πνεῦμα καθ' ἑαυτὸ „ὑφεσῆναι σαφῶς δηλᾶται.,.

Ὁ δὲ Συγγραφεὺς τῶν Βιβλίων, τῶν περὶ τῆς ἐν Τριάδι ἐνιαίας Θεότητος, ἐν τοῖς Ἀθανασίῃ Συγγράμμασι, Τόμῳ Β'. Σελ: 562. „Μέμνησο ἀντίστροφον εἶναι ταύτῃ τῆς φύσεως δύ- „ναμιν, τῷ τε πέμποντος (Χριστῶ), καὶ τῷ πεμπομένῳ (Ἁγίῳ „Πνεύματι). Ἐπειδὴ ἔτος ὁ νῦν πεμφθεὶς, ὁ αὐτὸς ἤδη πρό- „τερον

(27) Ἦν δὲ Ἐπίσκοπος Κασέλλων, κατὰ τὸ 487. ἀκμάσας, καὶ ἐν Καρθαγένῃ δημοσίαν συγκροτήσας Διάλεξιν, πρὸς Μαξιμίνον Ἀρειανὸν Ἐπίσκοπον τὸν Ἀμμωνιτῶν.

(28) Περὶ τούτου ὅρα ἐν Πραγμα: Δ'. Ἐκατοντ: Ε'. Σημ: (48).

Τόμ: Β'.

Η

„τερον εὐρίσκεται πέμψας τὸν πέμψαντα. Τελούταϊον δὲ, διὰ  
 „Ἡσαίᾳ ἔχε τὸν Θεόν, καὶ τῷ Θεῷ γιόν μαρτυρεῖντα. Προσαγά-  
 „γετε πρὸς με, καὶ ἀκέσατε ταῦτα: ἐκ ἀπ' ἀρχῆς ἐν κρυφῇ λε-  
 „λάληκα. Ἡνίκα ἐγένετο ἐκεῖ ἡμῶν καὶ νῦν Κύριος ἀπέσειλέ-  
 „με, καὶ τὸ Πνεῦμα αὐτῷ. Κατάμαθε τέως ποτὲ ἡνωμένῳ  
 „εἶναι ταύτῳ τῷ τῆς φύσεως Θεότητι, τῷ τε πέμποντος καὶ τῷ  
 „πεμπόμενου· ὁπότε ὁ νῦν ἐν τῷ Εὐαγγελίῳ τὸ Παράκλητον  
 „Πνεῦμα διαβεβαίωσάμενος πέμψειν, αὐτὸς ἐμπῆς ὑπ' ἐκείνου  
 „πρότερον ἀπεσάλθαι, διὰ τῷ κλεινῷ Ἡσαίᾳ, καθωμολόγησε,,

Καὶ ΦΟΥΛΓΕΝΤΙΟΣ (29) Βιβλ: Β'. πρὸς Μόνιμον Κεφ: 5'.  
 ἐν Τόμ: 5'. τῆς Βιβλιοθ: τῶν Πατέρ: τῆς ἐν Κολων: Σελ: 24.  
 „Εἰ τῷ πεμφθέντος ὁ πέμψας κρείσσων ὑποληπτέος, γνώτωσαν  
 „ἐν τέτῳ τῷ ἑαυτῶν ἡτῶσθαι δυσεβειαν· ὥστε γὰρ παρὰ Πα-  
 „τρὸς καὶ γιόν, πεμπόμενον ἀναγινώσκειται τὸ Ἅγιον Πνεῦμα,  
 „ἔτω καὶ ἐκ τῷ Πατρὸς καὶ τῷ Πνεύματος, ἀποσαλῆς εὐρίσκεται  
 „καὶ ὁ γιός. — Ἀλλὰ καὶ ἀλλὰ καὶ παρὰ τῷ αὐτῷ Προφῆτῃ, ἐκ  
 „τῷ Κυρίῳ καὶ τῷ Πνεύματος αὐτῷ ἀπεσάλθαι, διὰ τῶνδε δείκ-  
 „νυσι τῶν ῥημάτων: καὶ νῦν Κύριος ἀπέσαλκέ με, καὶ τὸ Πνεῦμα  
 „αὐτῷ. — Παρὰ τῷ Πατρὸς ἄρα καὶ τῷ Πνεύματος ἀπεσάλῃ  
 „ὁ γιός, καὶ παρὰ τῷ Πατρὸς καὶ τῷ γιόν ἀπεσάλῃ τὸ Πνεῦμα,,

Καὶ ἈΝΑΣΤΑΣΙΟΣ δὲ ὁ Συναίτης, Βιβλ: Α'. περὶ τῶν  
 Δογμ: τῆς Πίς: ἐν Τόμ: 5'. τῆς Βιβλιοθ: τῶν Πατέρων τῆς  
 ἐν Κολων: Σελ: 696. „Τὸν γιόν ἀπεσάλθαι ἐδιδάχθημεν ὅ-  
 „μόνον παρὰ τῷ Πατρὸς, ἀλλὰ καὶ παρὰ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος,  
 „ὥς αὐτὸς εἶπε διὰ Ἡσαίᾳ: καὶ νῦν Κύριος ἀπέσειλέ με, καὶ τὸ  
 „Πνεῦμα αὐτῷ,,

Καὶ ἸΣΙΔΩΡΟΣ ὁ Ἰσπαλεὺς Ἐπίσκοπος (29) Βιβλ: Α': τῶν  
 Ἀποφάνσ: Κεφαλ: ΙΕ'. „Ὁ Χριστὸς ὁ μόνον παρὰ τῷ Πατρὸς,  
 „ἀλλὰ καὶ παρὰ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος ἀποσαλιῶν μαρτυρεῖ, τῷ  
 „Προφῆτῃ λέγοντος: προσαγάγετε πρὸς με, καὶ ἀκέσατε ταῦτα:  
 „ἐκ ἀπ' ἀρχῆς ἐν κρυφῇ λελάληκα· ἡνίκα ἐγένετο, ἐκεῖ ἡμῶν:  
 „καὶ νῦν Κύριος ἀπέσαλκέ με, καὶ τὸ Πνεῦμα αὐτῷ,, Τὰ αὐτὰ  
 δὲ, φησὶ, καὶ ἐν τῷ Βιβλίῳ τῷ περὶ τῆς τῷ Κυρίῳ Γεννήσεως  
 Κεφαλ: Δ'.

Καὶ ἡ ἐν ΤΟΛΗΤΩ δὲ Σύνοδος ΙΑ'. ἐν τῷ 5'. Τόμῳ τῶν  
 Σιωδικ: Στήλῃ 544. „Οὐ μόνον παρὰ τῷ Πατρὸς, ἀλλὰ καὶ  
 „παρὰ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος τὸν γιόν ἀπεσάλθαι πισύειν χρῆ,  
 „ἐν οἷς

(29) Ὅρα περὶ τέτῃ Πραγμ: Δ'. Ἑκατοντ: 5'. Σημ: (49).

(30) Τέτῃ μνείᾳ ἐγένετο, ἐν Πραγμ: Γ'. Παραφθορᾷ ΛΓ'. Σημ: (42).

„ἐν οἷς αὐτὸς διὰ τῆ Προφήτε ἐρηκε: καὶ νῦν Κύριος ἀπέσταλ-  
„κέ με, καὶ τὸ Πνεῦμα αὐτῶ,“

Καὶ ἸΛΔΕΦΟΝΣΟΣ (31) ἐν Βιβλ: τῷ περὶ τῆς Παρθε-  
νίας τῆς ΜΑΡΙΑΣ, Κεφαλ: Ζ'. ἐν Τόμ: Ζ'. τῆς τῶν Πατέρ:  
Βιβλιοθ: τῆς ἐν Κολων: Σελ: 429. „Ὁ μὴ πισθὺσας ἐνὶ ἐκάσῳ  
„τῶν τῆς Τριάδος προσώπων λαλῶντι, πισθὺσον τῇ αὐτῇ ἀδία-  
„ρέτῳ Τριάδι, τῇ σωενεργάσῃ καὶ σωεργάτιδι. ἔτω γὰρ διὰ  
„Ἡσαίᾳ λέγεται: καὶ νῦν Κύριος ἀπέσταλέ με, καὶ τὸ Πνεῦμα  
„αὐτῶ,“

Καὶ ἘΘΕΡΙΟΣ δὲ, καὶ ΒΕΑΤΟΣ (32) ἐν Βιβλ: Β'. κατὰ  
Ἑλιπάνδου, μετὰ τὰ περὶ τὸ μέσον, ἐν τῷ Η'. Τόμ: τῆς τῶν  
Πατέρ: Βιβλιοθ: τῆς ἐν Κολων: Σελ: 377. „Μόνος ὁ Υἱὸς διὰ  
„τῆς αὐτῶ ὑποστάσεως (33) τοῖς ἀνθρώποις ἐφανέρωθη, ἐχὼ καθ'  
„ὃ ἴσος ἐστὶ τῷ Πατρὶ, καθ' ὃ δὲ ἐπεδήμησεν ἀποσταλὴς παρὰ  
„τῶ Πατρὸς καὶ τῶ Ἀγ: Πνεύματος,“

Καὶ ΠΑΥΛΙΝΟΣ δὲ ὁ Ἀκυληῖας Ἐπίσκοπος (34) ἐν τῇ  
κατὰ τὸ Φοροῦχλίον Σωόδῳ, Ἔτει 797. ἐν τῷ Ζ'. Τόμ: τῶν  
Σωοδ: Στήλῃ 996. „Ἐνθεντοι διὰ Ἡσαίᾳ, τῶ Πατρὸς εἶναι  
„μαρτυρεῖ (τὸ Πνεῦμα, ὁ Υἱὸς τῶ Θεῶ) ἡνίκα διὰ τὸν προ-  
„σληφθέντα ἄνθρωπον λέγων φησὶ: Πνεῦμα Κυρίου ἐπ' ἐμέ. Κα-  
„κῆνο δέ: Κύριος ἀπέσταλέ με καὶ τὸ Πνεῦμα αὐτῶ,“

Καὶ ἡ σωήθης δὲ Γλωσσηματικὴ Ἑρμηνεία εἰς τὰ τῶ Προ-  
φήτε ῥήματα: „Κύριος ἀπέσταλέ με καὶ τὸ Πνεῦμα αὐτῶ. Ὁ  
„Πατὴρ προσέθετο ἵνα σάρκα Φορέσῃ ὁ Υἱὸς: σωελήφθη δὲ ἐξ  
„Ἀγίᾳ Πνεύματος,“ Ὁν τρόπον ἐντεῦθεν καὶ ΛΟΜΒΑΡΔΟΣ  
(35) ἐν τῷ Α'. Βιβλ: τῶν Ἀποφάνσ: Διακρίσ: ΙΕ'. διὰ πλειό-  
νων ὁμοίως διδάσκει, τὸν Υἱὸν ὡσαύτως ἀπεσταλθῆ παρὰ τῶ  
Πνεύματος.

Ἐμπεδον εἶν ἐστὶν ἄχρι τῶδε, ὅτι καὶ παρὰ τῶ Πατρὸς, καὶ  
παρὰ τῶ Πνεύματος ἀπεσταλὴ ὁ Υἱὸς εἰς τὸν Κόσμον. Ἐκ δὲ δὴ  
τάτῃ φανερόν αὐτοῖς, ὅτι: „Ἡ τῶ Ἀγίᾳ Πνεύματος παρὰ τῶ  
„Υἱῶ Ἀποστολή τε καὶ πέμψις, ἔδεν τι σωτελεῖ εἰς κατασκώβῳ  
„τῆς τῶ Πνεύματος καὶ ἐκ τῶ Υἱῶ ἐκπορεύσεως. Ἦτοι: ὅτι ἔ  
„πάν

(31) Ἰωαννὸς ΙΩ, Ἐπίσκοπος Τολήτε, ὃς ἐτελεύτα Ἔτει 657.

(32) Ὁρα Πραγμ: Γ'. Παραφθ: ΛΘ'. Σημ: (50).

(33) Per substantiam suam, φησὶν ἡ Λατινικὴ ῥῆσις, δηλῶσα τὴν subsistentiam, ἢτοι  
„τὴν ὑπόστασιν,“ τὴν ἐνανθρωπήσαν καὶ τὸ Πρόσωπον τὸ φανερωθὲν ἐν δέλῳ  
μορφῇ, καὶ ἡ φύσιν δηλ: προσελάβετο.

(34) Περὶ τῶν ἐν Πραγμ: Γ'. Παραφθ: ΜΑ'. Σημ: (53). Καὶ ἐν Πραγμ: Ε'.  
Σημ: (5).

(35) Περὶ ὃ ὅρα ἐπὶ τῆς παρῆσης Πραγματείας, περὶ τὸ τέλος τῆς Ε'. Ἀπαντήσεως  
Σημ: (\*).

„πάν τὸ παράτινος ἀποσελλόμενον, καὶ παρὰ τῷ αὐτῷ εἰς τὸ  
 „εἶναι ἐξ ἀνάγκης προβάλλεται,,. Οὐ γὰρ ἐκ τῷ Πνύματος προ-  
 βέβληται ὁ Υἱός, εἰ καὶ παρ' αὐτῷ ἀπεσάλη. Δῆλον δὲ τῷτο  
 καὶ τῶν Ἀμβροσίων ρημάτων τῶν ἀνωτέρω ἐπενεχθέντων. Ἐπι-  
 σήσας γὰρ, ὡς ὁ μὲν Υἱός παρὰ τῷ Πνύματος, τὸ δὲ Πνεῦμα  
 πάλιν παρὰ τῷ Υἱῷ πέμπεται (ἐν τῷ Γ. Βιβλ: τῶν περὶ τῷ  
 Ἁγίῳ Πνύματος Κεφαλ: Α'. ἔφασκεν: ) „Εἰ τοίνυν ἀμοιβαδόν  
 „ὁ Υἱός καὶ τὸ Πνεῦμα ἀποσέλλουσιν ἀλλήλους, ὥστε ὁ Πατήρ  
 „αὐτὸς ἀποσέλλει, ἔχ' ὑποταγῆς τῷτο ὕβρις, ἀλλὰ κοινότης δυ-  
 „νάμεως,,. Ἐξ ἴσης ἄρα καὶ κοινῆς δυνάμεως, τό, τε Πνεῦμα  
 τὸν Υἱόν, καὶ ἀνάπαλιν ὁ Υἱός τὸ Πνεῦμα πέμπει τὸ Ἅγιον  
 καὶ καθάπερ, ἔχ' κατὰ λόγον ἀρχῆς τὸ Πνεῦμα πέμπει τὸν  
 Υἱόν, ἔτως ἔδὲ κατὰ τοιόνδε λόγον παρὰ τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα  
 τὸ Ἅγιον πέμπεται. Οὕτω δ' ἐντεῦθεν τὴν ἰσότητά ἐπιγινώσκει  
 τὴν ἐν Υἱῷ καὶ Πνύματι, καὶ ὁ Συγγραφεὺς τῶν ἐκ τῆς Πα-  
 λαϊᾶς καὶ Καινῆς Διαθήκης Ἑρωτήσ: παρὰ Αὐγῆς: ἐν Ἑρωτ: γς'.  
 διὰ τῶν κατόπιν ἐπενεχθέντων, φάσκων: „Ἰδὲ ἴσα τὰ ἐν Υἱῷ  
 „καὶ Πνύματι ὥστε γὰρ παρὰ Πατρός καὶ Υἱῷ ἀπεσάλθαι  
 „ἀναγινώσκεται τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ἔτω καὶ παρὰ τῷ Θεῷ καὶ  
 „τῷ Ἁγίῳ Πνύματος ἀπεσάλθαι ὁ Χριστός,,. Ἀλλὰ γὰρ ἐντεῦ-  
 θεν, ἐκ ἂν εἶεν ἴσα τὰ ἐν τῷ Υἱῷ καὶ τῷ Πνύματι, εἰ κατὰ  
 μὲν τὸν τῆς ἀρχῆς λόγον διετέλει πέμπων τὸ Πνεῦμα ὁ Υἱός,  
 ἔκτετι δὲ τῷ αὐτῷ λόγῳ ἀνάπαλιν τὸν Υἱόν, ἐτύγχανε πέμπων  
 καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. Καὶ ὁ Συγγραφεὺς δὲ τῶν Βιβλ:  
 τῶν περὶ τῆς ἡνωμένης ἐν Τριάδι Θεότητος, παρὰ Ἀθανασίῳ,  
 Βιβλ: Γ. „Μέμνησο (ἔλεγεν) ἀντίστροφον εἶναι ταύτῃ τῇ τῆς  
 „φύσεως δυνάμει, τῷ τε πέμποντος καὶ τῷ πεμπομένου. (τῷ Υἱῷ  
 „δηλ: καὶ τῷ Ἁγίῳ Πνύματος.) Ἐπειδὴ ἔτος ὁ νῦν πεμφθεὶς,  
 „ὁ αὐτὸς ἤδη πρότερον εὐρίσκεται πέμψας τὸν πέμψαντα,,.  
 Φύσεως ἄρα μόνον ἐστὶ δυνάμις, δι' ἧς τὸ Πνεῦμα ὁ Υἱός, καὶ  
 ἀνάπαλιν τὸν Υἱόν τὸ Πνεῦμα ἀποσέλλει. Ἀλλ' ἢ τῆς φύσεως  
 δυνάμις, ἐ τῷτο ἐστὶν ἀντίκα τὸ Προβόλεα εἶναι θατέρω θατέρον.  
 Παραπλησίως ἄρα, ὥστε ἐ κατὰ λόγον ἀρχῆς τὸν Υἱόν πέμπει  
 τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ἔτως ἔδὲ κατὰ τὸν τοιόνδε λόγον, τὸ  
 Πνεῦμα πέμπει ὁ Υἱός λέγεται.

Ταὐτὸ δὲ μόνον, οἷον κατ' ἔριν ἅπαντες κοινῇ ἀπαντῶσιν  
 ὑπολαμβάνοντες: „Πέμπεται μὲν παρὰ τῷ Πνύματος τὸν  
 „Υἱόν, πέμπεται δ' ἔν ὅμως κατὰ τὴν φύσιν τῆς ἀνθρωπότητος,,.  
 Ἀλλὰ πρὸς τί τῷτο; ἦτοι γὰρ δήπερ οἶοντα, μὴ ἐπίσης παρὰ τε  
 τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Πνύματος τὸν Υἱόν ἀπεσάλθαι, ἅτε παρὰ  
 τῷ Πατρὶ, μὴ μόνον κατὰ φύσιν τὴν ἀνθρωπίνην (ὡς δῆθεν ὑπὸ  
 τῷ Πνύματος πέμπεται) ἀλλὰ καὶ κατὰ τὴν Θεότητα ἀποσα-  
 λέντα.



λέντα· ἢ γὰρ ἐπίσης τῷ αὐτῷ μὲν λόγῳ παρὰ Πατρὸς καὶ Πνεύματος, τὸν Υἱὸν πεμφθῆναι, φρονέσι μόνον ὡς ἄνθρωπον· ὑπὸ δὲ τῆς Υἱᾶ ἀποσέλλεσθαι τὸ Πνεῦμα, κατ' αὐτῷ τῷ φύσιν τῷ τῆς Θεότητος. Οὕτω καὶ γὰρ, κατὰ τῷ Θεότητι, προσδιοριθήσεται ἡ τῶν Λατίνων Πρότασις αὕτη: „Υφ' ἧς τι Πρόσωπον πέμπεται „κατὰ τῷ Θεότητι, ἐξ αὐτῆς καὶ προβάλλεται ὡς ἐξ αἰτίας, „Ο μὲν ἔν πρὸς τὸ πρῶτον ἀνήκει, ψυδὲς πάντως· τὸ δ' ὡς, τὸ ἄλλως μὲν παρὰ τῆς Πατρὸς, ἄλλως δὲ παρὰ τῆς Πνεύματος τὸν Υἱὸν ἀπεσάλλει· καθ' ὃν, δηλονότι, λόγον ἂν βέλουντο παρὰ τῆς Πατρὸς τὸν Υἱὸν ἀποσαλῶναι καὶ κατὰ τῷ Θεότητι. Α': μὲν γὰρ ἡ τῆς Υἱᾶ τῆς Θεᾶς Ἀποσολή, ἔργον ἐστὶ Θεᾶς τῶν πρὸς τὰ ἐκτὸς, ἅτε δὴ πρὸς ἡμετέραν ἀφορῶν σωτηρίαν, καὶ ἐν χρόνῳ γενόμενον. Τὰ δὲ τοιαῦτα τῆς Θεᾶς ἔργα, καὶ ταῖς τρισὶ Θεαρχικαῖς ὑποστάσεσιν, ὡς ἀνωτέρω ἐδείχθη, ἐστὶ κοινά. Ὁν περ ἄρα τρόπον ὁ Πατήρ τὸν Υἱὸν ἀποσέλλει, τὸν αὐτὸν ὁμοίως καὶ τὸ Πνεῦμα τὸν Υἱὸν ἀποσέλλει τὸ Ἅγιον. Β': Ἦν δὲ καὶ τὰ τῆς Προφήτης ῥήματα: „Καὶ νῦν Κύριος ἀπέσειλέ με, καὶ τὸ „Πνεῦμα αὐτῆς, δι' ὧν δὴ, ὥστε ὁ Κύριος τὸν Υἱὸν πέμπει, ἔτω καὶ τὸ Πνεῦμα λέγεται πέμπειν αὐτόν. Ὡς, καθ' ὡς δὴ ποτε διάνοιαν, καὶ καθ' ὃν ἂν τινα λόγον ὁ Πατήρ ἔχει πρὸς τῷ Ἀποσολῶ τῆς Υἱᾶ, τοῖς αὐτοῖς ὡσαύτως ἀποδείκνυσθαι ῥήμασι, καὶ τὸ Πνεῦμα ἔχειν πρὸς τῷ Ἀποσολῶ τῆς αὐτῆς. Οὐκ ἄρα, παρὰ μὲν τῆς Ἁγίας Πνεύματος ὁ Υἱὸς κατὰ μόνῳ τῷ ἀνθρωπότητα πέμπεται, παρὰ δὲ τῆς Πατρὸς, καὶ κατ' αὐτῷ τῷ φύσιν τῷ τῆς Θεότητος. Γ': Ψυδὲς δὲ, καὶ τὸ παρὰ τῆς Πατρὸς τὸν Υἱὸν ἀπεσάλλει κατὰ τῷ Θεότητι· ὁ γὰρ ποι ἀποσελλόμενος, αὐτόσε πάντως ἔκ ἂν πρόθεν παρείη, ὅποι σέλλεται. Εἰ γὰρ ἐκεῖ πάρεσι, πῶς καὶ πεμφθήσεται; Ἀλλ' ὁ Θεὸς Λόγος, ὃς κατὰ τῷ Θεῖαν ἔμψης φύσιν ἑδαμόθεν ἀπῶ, πῶς ἂν ἄρα κατ' αὐτῷ παρὰ τῆς Πατρὸς ποι πεμφθείη; Ἐπειτα ἡ τῆς Υἱᾶ Ἀποσολή, τῆς τῆς ἀνθρώπου σωτηρίας χάριν ἐγένετο, δι' ὡς ὁ Υἱὸς ἀποσαλῶν ἐλήλυθεν εἰς τὸν κόσμον· τῆ δὲ κόσμος καὶ τῶν ἀνθρώπων, ἀπῶ ἑδέποτε ὁ τῆς Θεᾶς Υἱὸς τῇ Θεότητι. Πῶς ἔν τῆς τῶν πισυδόντων ἔνεκεν σωτηρίας, ὁ Υἱὸς παρὰ τῆς Πατρὸς ἀπεσάλλει κατὰ τῷ ἰδίαν αὐτῆς Θεότητι; Δ': Ἐν τίνι δ' ἡ τῆς Υἱᾶ ὑφίσταται Ἀποσολή, ὁ Ἀπόσολος ἡμᾶς ἐκδιδάσκει: „Οτε „γὰρ, φησὶν, ἦλθε τὸ πλήρωμα τῆς χρόνου, ἑξαπέσειλεν ὁ Θεὸς „τὸν Υἱὸν αὐτῆς, γεννώμενον ἐκ γυναικὸς, γενόμενον ὑπὸ νόμον, „Δι' ὧν δὴ περ ῥημάτων ὁ Ἀπόσολος δέκνυσιν, ὅπως ὁ Πατήρ εἰς τὸν κόσμον ἀπέσειλε τὸν Υἱὸν, ἐν ἀνθρωπίνῃ, δηλονότι, τῇ φύσει, ὅτε σάρκα ἐκ γυναικὸς ὁ Υἱὸς προσελάβετο. Κἀντεῦθεν οἱ Θεοὶ Πατέρες, ἀποφάσκουσιν ὁμοφρόνως κατὰ τῷ Θεότητι ἡμῖν

Τόμ: Β'.

Θ

τὸν

τὸν Υἱὸν πεμφθῆναι, τὴν Ἀποστολὴν τῷ Υἱῷ ἔδεν ἄλλ', ἢ τὴν ἐνσάρκωσιν εἶναι διδάσκοντες.

Τῶν λοιπῶν εἰκότως εἰς προτακτέοι, οἱ τῆς Α'. Οἰκουμενικῆς Συνόδου Πνεύματοφόροι Πατέρες, ἥς, καὶ μία ἡ τυχῶσα ἤρκεσε ῥῆσις, πρὸς τὴν τῆς προκαμένης ἐπιμαρτύρησίν τε καὶ διαπίστωσιν. Τίς γὰρ ἂν τοῖς δόγμασι τῆς τηλικαύτης Συνόδου ἀνθενεχθῶναι ποτὲ τολμήσειεν; Ἡ τοίνυν Σύνοδος αὕτη, τῷ αὐτῷ τῷδε, ὃ καὶ ἡμεῖς λόγῳ (διὰ τὸ πανταχῶς τε παρῆναι καὶ τὰ πάντα πληρῆν, μὴ δυνάσθαι τὸν Υἱὸν τῷ Θεῷ ἀποσταλῆναι κατὰ τὴν Θεότητά) σωεβάλλομεν, παραπλησίως καὶ αὐτῇ ἀποδείκνυσιν, ὅτι ἡ τῆς Υἱῶ τῷ Θεῷ Ἀποστολή, ἔδεν ἄλλ', ἢ τὴν αὐτῆς ἐνανθρώπησιν ἐννοεῖν παρέχεται. Οὕτω γὰρ, ὡς ἐξ ὀνόματος τῶν λοιπῶν Θεωπεσίων Πατέρων, Μακάριος ὁ τῶν Ἱεροσολύμων Ἐπίσκοπος παρὰ Γελασίῳ, ἐν Βιβλ: Β'. Κεφ: ΚΓ'. Τόμ: Β'. τῶν Συνοδικῶν, Στήλη 222. (36) „Πάλιν ἐρῶμεν: τὸ συγκαταβῆναι, καὶ τὸ κατελθεῖν, καὶ τὸ ἀπεσάλλθαι, κατὰ τὸν τῆς ἐνανθρωπήσεως αὐτῆς τρόπον διαληπτέον, ὡς προαπεδέξαμεν τῇ γὰρ Θεότητι αὐτῆς, τὰ πάντα σὺ τῷ Πατρὶ πληροῖ αἰ, κατὰ τὰς προαποδοθείσας Ἐννοίας,,.

ΩΡΙΓΕΝΗΣ ἐν τῷ Β'. Τόμ: τῶν Ἐξηγητ: εἰς τὸν Ἰωάν: Σελ: 57. „Εἰ δὲ κατὰ τὸν Ἡσαΐαν, φησὶν, ὁ Κύριος ἡμῶν, ὑπὸ τῷ Πατρὶ ἀπεσάλλθαι, καὶ τῷ Πνεύματος αὐτῆς. Ἐστὶ καὶ ἐνταῦθα περὶ τῆς ἀποσείλαντος τὸν Χριστὸν Πνεύματος ἀπολογησάσθαι. ἔχ' ὡς φύσει διαφέροντος, ἀλλὰ διὰ τὴν γενομένην οἰκονομίαν τῆς ἐνανθρωπήσεως τῷ Υἱῷ τῷ Θεῷ. Καὶ ὁ Μέγας δὲ ΒΑΣΙΛΕΙΟΣ, ἐν Βιβλ: Γ'. τῶν κατὰ Εὐνομίαν, ματὰ τὴν ἀρχὴν. Τόμ: Β'. τῶν Συγγραμ: Σελ: 82. (37) „Ὁ δὲ Ἡσαΐας ἐκ προσώπου Κυρίου διαλεγόμενος, κατὰ τὸ ἀνθρώπειον αὐτῆς, δηλονότι, Κύριος ἀπέσαλκέ με, φησὶ, καὶ τὸ Πνεῦμα αὐτῆς. Καὶ ὁ Θεολόγος ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ Λόγῳ εἰς τὰ Θεοφάνια παρὰ Θεωρήτῳ ἐν τῷ Β'. τῶν Διαλόγων ὃς ἐπιγράφεται ἈΣΥΓΧΥΤΟΣ, ἐν Τόμ: Δ'. τῶν Συγγραμ: Σελ: 98. (38) „Ἀπεσάλλη μὲν (ὁ Υἱὸς τῷ Θεῷ) ἄλλ' ὡς ἄνθρωπος διπλῇ γὰρ ἡ φύσις αὐτῆς. ἀμέλει τοι ἐντεῦθεν καὶ ἐκοπίασε, καὶ ἐπέινασε, καὶ ἐδίψησε, καὶ ἡγωνίασε, καὶ ἐδάκρυσεν ἀνθρωπίνου σώματος νόμῳ. Ταῦτα δὲ τὰ τῷ Ναζιανζίῳ, καὶ ΛΕΩΝ ὁ Μέγας ὁ Ῥώμης Πάπας ἀπεμνημόνευσεν Ἐπισ: 42'. πρὸς Λέοντα τὸν Σεβαστόν. Καὶ ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ ὁ Νύσσης ἐν Λόγ: τῷ περὶ τῆς Θεότητος Υἱῶ καὶ Ἀγίῳ

(36) Παρὰ τῷ Ἀρδεῖνῳ ἐν Τόμῳ Α'. Λόγ: Β'. Κεφ: ΚΓ'. Στήλη 420.

(37) Κατὰ τὴν Γαλενίαν Νεωτέραν Ἐκδ: Τόμ: Α'. Σελ: 275.

(38) Κατὰ τὴν ἐν Χάλκῳ Ἐκδ: τὴν Ἐτ' 1772. Τόμ: Δ'. Κεφ: Α'. Σελ: 148.



Ἀγίε Πνεύματος, ἐν Τόμ: Β'. τῶν Συγγραμ: Σελ: 902. (39)  
 „Εἴρηται τοίνυν, ὅτι ὁ πέμψας με μένων με ἐστίν. Οὐκ ἔν σο-  
 „πήσωμεν περὶ τίνος ὁ λόγος; πῶς ἐπέμφθη; ἐν μορφῇ Θεῶ  
 „ὑπάρχων, ἢ μορφῇ δόξα λαβών; ἐν τῷ πληρώματι ὡν τῆς  
 „Θεότητος; ἢ κενώσας ἑαυτὸν ἐν τῇ τῷ δόξα μορφῇ; Πάντη  
 „γὰρ οἶμαι πρόδηλον εἶναι, ὅτι ἡ Θεία δυνάμις τε καὶ φύσις παν-  
 „ταχῶς ἔσα, καὶ διὰ πάντων διήκασα, καὶ τῷ παντὸς περιεδραγ-  
 „μένη, ἐκ ἃν εἰκότως πέμπεσθαι λέγοιτο. Οὐ γὰρ ἐστὶ κενοὶ  
 „ἔξω ταύτης, ἐν ᾧ πρότερον μὴ ἔσα, ὅταν πεμφθῇ, παραγένη-  
 „ται ἀλλὰ τῇ σωτηρητικῇ δυνάμει διακρατῆσα τὸ πᾶν, ἐκ ἧς  
 „εἰς ὃ μεταχωρήσει, αὐτῇ τῷ παντὸς ἔσα πλήρωμα. Ἡ τοίνυν  
 „πρὸς τὸ ἡμέτερον ταπεινόν τε καὶ ἀθηνὲς, τῷ Υἱῷ τῷ Θεῷ καί-  
 „θοδος, κατὰ γνώμην τῷ Πατρὸς γεγεννημένη, Ἀποστολὴ λέγε-  
 „ται ἢ γὰρ ἐκ τῆς ἀκηράτης φύσεως πρὸς τὴν ἡμετέραν ζωὴν  
 „μετάσσει, ἢ τοπικῶς ποιῆται τῷ Κυρίῳ τὴν κίνησιν, ἀλλὰ τὴν  
 „ἀπὸ τῷ ὕψους τῆς δόξης, πρὸς τὸ ταπεινὸν τῆς σαρκὸς ἐνδείκνυ-  
 „ται κάθοδον. Κατέβη τοίνυν, καὶ ἐφάνη ἢ γυμνὸς ὁ Λόγος,  
 „ἀλλὰ σάρξ γενόμενος. ἔχ ἢ τῷ Θεῷ μορφῇ καθ' ἑαυτὴν, ἀλλ'  
 „ἐν τῇ δόξα μορφῇ θεωρούμενος. Καὶ ἹΕΡΩΝΥΜΟΣ ἐν τῷ  
 εἰς τὸν Ἡσαΐαν Ὑπομνήμ: Κεφαλ: ΜΗ'. ἔτω τὸν Υἱὸν τῷ Θεῷ  
 ἐπιστάγει φθεγγόμενον: „Κατὰ τὴν ἀθηνείαν τῆς προσληφθείσης  
 „σαρκὸς λέγω, ὅτι Κύριος ὁ Θεὸς ἀπέσταλκέ με καὶ τὸ Πνεῦμα  
 „αὐτῶ. ἸΔΑΚΙΟΣ ὁ Κλάρος ὁ Ἰσπανὸς Ἐπίσκοπος ἐν Βιβλ:  
 τῷ κατὰ Βαριμάνδου, Τόμ: Δ'. τῆς τῶν Πατέρων Βιβλιοθ: τῆς  
 ἐν Κολωνίᾳ, Σελ: 622. „Ὁρᾷς, ὡς ὁ Υἱὸς ἐχὶ κατὰ τὴν Θεό-  
 „τητα ὑπὸ τῷ Πατρὶ ἀπεστάλη, ἀλλὰ καθ' ὡς σάρκα φιλανθρω-  
 „πως τε καὶ συμπαθῶς ὑπὲρ ἡμῶν ἐκ ἀπηξίωσε προσλαβεῖν. Καὶ  
 „μετά τινα τῶν μεταξὺ: „Ὅς γὰρ ἐν τῷ Πατρὶ μένων τῇ  
 „ἐξουίᾳ τῆς αὐτῷ δυνάμεως ὑφίσταται, ἐκ εἶχεν ὅποι ἂν ἀποστα-  
 „λάη. ἔδεν γὰρ, ἢτοι τῶν αἰώνων, ἢ τῆς γῆς μέρος, τῆς τῷ  
 „Πατρὸς ὁψεως ὑπεξήρηται, πρὸς ὅγε κατ' αὐτὸς παρὰ τῷ Πα-  
 „τρὶ ὁ Υἱὸς πεμφθείη.

Καὶ ὁ Χρυσόρρῳμος δὲ ἸΩΑΝΝΗΣ ἐν Ὁμιλ: τῇ περὶ τῷ  
 Ἀγίῳ καὶ προσκυνητῷ Πνεύματος, περὶ τὸ τέλος, ἐν Τόμ: Σ'.  
 τῶν Συγγραμ: τῆς Γραικο-Λατίν: Ἐκδόσ: Σελ: 225. (40)  
 „Ἀπέστειλεν ὁ Θεὸς τὸν Υἱὸν αὐτῷ εἰς τὸν κόσμον ἄρα ὡς μὴ  
 „παρόντα ἐν τῷ κόσμῳ; καὶ μὴ ὁ κόσμος ἐκ τῷ Υἱῷ διὰ τῷτο  
 „ἐν

(39) Κατὰ τὴν ἐν Παρισ: Γραικο-Λατίν: Ἐκδ: τὴν ἑτα 1638. ἐν Τόμ: Γ'. Σελ: 470.

(40) Κατὰ τὴν Μοντφελκονίᾳ Ἐκδ: Τόμ: Γ'. Σελ: 797.

„ὅν ἦλθεν εἰς τὸν κόσμον, ὡς πρὸ τέττα μὴ ὦν ἐν τῷ κόσμῳ.  
 „Πῶς ὅν Ἰωάννης ὁ Εὐαγγελιστὴς λέγει: πάντα δι' αὐτοῦ ἐγένε-  
 „το; ἐν τῷ κόσμῳ ὡ, καὶ ὁ κόσμος δι' αὐτοῦ ἐγένετο; πῶς ὅν  
 „ἀπεσάλη εἰς τὸν κόσμον; Πάλιν: εἰ ἀπεσάλη ὁ ἀποσταλὴς,  
 „καὶ ἔμεινεν ὁ ἀποσταλὴς ἄνω, καὶ ὁ ἀποσταλὴς κάτω, πῶς ἔλε-  
 „γε, καὶ ὁ πέμψας με μετ' ἐμοῦ ἐσί; Παρακαλῶ πρόσεχε μετὰ  
 „ἀσφαλείας: ἀσφάλισαι τὸν λόγον. Διώταται γὰρ ἀπὲν ὁ Αἰρε-  
 „τικός: μετ' ἐμοῦ ἐστὶ τῇ βοηθείᾳ, ὡς λέγω καὶ γὰρ: ὁ Θεὸς μετ'  
 „ἐμοῦ ἐστίν. Οὐκ εἶπεν ἀπλῶς: ἀλλὰ τί; ὁ Πατήρ, ὁ ἐν ἐμοὶ  
 „μένων. Εἰ μετ' αὐτοῦ ὡ, καὶ ἐν αὐτῷ ἔμενε, πῶς ἐκεῖνος ἀπέ-  
 „στειλεν, ἢ ἕτος ἀπεσάλη; . . . . Εἰ ἔμενε ὁ Πατήρ ἄνω, πῶς  
 „λέγει ὁ Τίος: ὁ Πατήρ με μετ' ἐμοῦ ἐστίν; εἰ ἄνω ἔμεινεν ὁ ἀποσταλ-  
 „λας, πῶς μετ' αὐτοῦ ἔχει ὁ ἀποσταλὴς τὸν ἀποσταλάντα; Ἐγὼ  
 „γὰρ εἶπεν ἐν τῷ Πατρὶ, καὶ ὁ Πατήρ με μετ' ἐμοῦ ἐσί: πῶς ὅν  
 „ἀπεσάλη ὁ λέγων: ὁ Πατήρ ἐν ἐμοὶ ἐσί; Καί τινων παρεν-  
 „τεθέντων, Σελίδι 226. „Σὲ τὸν ποιήσαντα τὸν ἕρανὸν καὶ τὴν  
 „γῆν, τὸν εἰπόντα τοῖς ἄστροις: Κύριος ἀπέστειλέ με, καὶ τὸ  
 „Πνεῦμα αὐτοῦ ἐγέννησε κατὰ τὴν Θεότητα, ἀπέστειλε κατὰ  
 „τὴν Σάρκα,„

Ὁ δὲ Αὔγουστινὸς Βιβλ: Β'. περὶ Τριάδος Κεφ: Ε'.  
 „Ἐν τέτοις ὑπενδύσαι ἀναγκαζέμεντες, πρὸς ἐκείνης ἐπιστρέφουσιν  
 „ὥς λέγειν, ὅτι μέζων ἐστὶν ὁ πέμπων, ἢ ὁ πεμπόμενος, ὅθεν  
 „μέζων ὁ Πατήρ ἐστὶ τῷ Υἱῷ: ὁ γὰρ Υἱὸς σιωχῶς μνημονόβει,  
 „ὅτι παρὰ τῷ Πατρὶ πέμπεται. Μείζων δὲ καὶ τῷ Πνεύματι  
 „ἐστὶ τῷ Ἁγίῳ, ὅτι καὶ περὶ τέττα ἔφη ὁ Ἰησοῦς: ὅν ὁ Πατήρ πέμπει  
 „ἐν τῷ ὀνόματί μου. Τὸ δὲ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκατέρωθεν ἔλαττον,  
 „ὅτι καὶ ὁ Πατήρ αὐτὸ πέμπει, ὡς ὑπεμνήσαμεν, καὶ ὁ Υἱὸς,  
 „ὅτε φησὶν: εἰ ἄνθρωπος ἐγὼ ἀπέλθω, πέμψω αὐτὸν πρὸς ὑμᾶς.  
 „Ἐν ᾧ δὴ Ζητήματι, πωθάνομαι πρῶτον: πόθεν, καὶ πῶς ἀπε-  
 „σάλη ὁ Τίος; Ἐγὼ, φησὶ, παρὰ τῷ Πατρὶ ἐξῆλθον, καὶ ἐλή-  
 „λυθα εἰς τὸν κόσμον. Ἄρα τὸ παρὰ τῷ Πατρὶ ἐξέρχεσθαι,  
 „καὶ ἔρχεσθαι εἰς τὸν δε τὸν κόσμον, τέτο ἐστὶ τὸ πέμπεσθαι.  
 „Τί ὅν ἐστίν, ὃ περὶ αὐτοῦ ὁ αὐτὸς Εὐαγγελιστὴς φησὶν; ἐν τῷ  
 „κόσμῳ ὡ, καὶ ὁ κόσμος δι' αὐτοῦ ἐγένετο, καὶ ὁ κόσμος αὐτὸν  
 „ὅκ ἐγνώ. Εἴτα σωάπται: εἰς τὰ ἴδια ἦλθεν. Ἐνθάδε πάντως  
 „ἀπεσάλη, ἐνθα καὶ ἦλθεν. Ἀλλ' εἰς τὸν δε τὸν κόσμον ἀπεσά-  
 „λη: ὅτι ἐξῆλθε παρὰ τῷ Πατρὶ, καὶ ἐλήλυθεν εἰς τὸν κόσμον,  
 „καὶ ἐν τῷ κόσμῳ ὡ. Ἐνθάδε ἄρα ἀπεσάλη, ἐνθαπερ ὡ. Καὶ  
 „γὰρ καὶ κεῖνο, ὃ γέγραπται παρὰ τῷ Προφῆτῃ, τὸν Θεὸν λέγειν:  
 „τὸν ἕρανὸν καὶ τὴν γῆν ἐγὼ πληρῶ: εἰ περὶ τῷ Υἱῷ εἴρηται  
 „(αὐτὸν γὰρ εἶσιν οἱ νοεῖσθαι θελάσι, τὸν ἦτοι τοῖς Προφῆταις,  
 „ἢ

„ἢ ἐν τοῖς Προφήταις λαλήσαντα·) ποῖποτε ἀπεσάλη, εἰμὶ ἐν-  
 „θάδε ἐνθαπερ ὧ; πανταχῶ γὰρ ὧ ὁ εἰπών: τὸν ἔρανδον καὶ  
 „τιῶ γιῶ ἐγὼ πληρῶ. Εἰ δὲ περὶ τῷ Πατρὸς εἶρηται, πῶ εἶναι  
 „ἠδύνατο ἄνευ τῷ Λόγῳ αὐτῷ, καὶ ἄνευ τῆς Σοφίας αὐτῷ, ἥτις  
 „διατείνει ἀπὸ πέρατος εἰς πέρας ευρώσως, καὶ διοικεῖ τὰ πάντα  
 „χρησῶς. — Ταύτητοι καὶ εἰ ἐκείσε ὁ Υἱὸς πέμπεται, ὅπως ὧ,  
 „ζητητέον, πῶς ἂν ἄρα ἡ πέμψις αὕτη ἢ τῷ Υἱῷ νοηθείη; Καὶ  
 „περὶ μὲν τῷ Υἱῷ ὁ Ἀπόστολος ἔτω γράφει: ὅτε δὲ ἦλθε τὸ  
 „πλήρωμα τῷ χρόνῳ, ἐξαπέστειλεν ὁ Θεὸς τὸν Υἱὸν αὐτῷ, γενό-  
 „μενον ἐκ γυναικὸς, γενόμενον ὑπὸ νόμον, ἵνα τὸς ὑπὸ νόμον  
 „ἐξαγοράσῃ. Ἐξαπέστειλε τὸν Υἱὸν αὐτῷ, φησὶ, γενόμενον ἐκ  
 „γυναικὸς. — Ὅτε τοίνυν λέγει: ἐξαπέστειλεν ὁ Θεὸς τὸν Υἱὸν  
 „γενόμενον ἐκ γυναικὸς, ἄλλος δέκνυσι κατ' αὐτὸ τῷ τὸν Υἱὸν  
 „ἀπεσάλκεναι, καθ' ὅ, τι γέγονεν ἐκ γυναικὸς· ἥπερ ἄρα ἐκ τῷ  
 „Θεῷ γεγέννηται, ἐν τῷ κόσμῳ τέττω ὧ· ἢ δ' ἐκ τῆς Μαρίας  
 „ἐγεννήθη, εἰς τὸν κόσμον ἀποσαλεῖς τῷτον ἐλήλυθε,,. Καὶ ἂν  
 „δέ τοι πλείονα ἐφεξῆς διαλέγεται περὶ τῆς ἐνσαρκώσεως, καὶ τῆς  
 „ἐκ τῆς ἀειπαρθένου γεννήσεως, τιῶ αὐτῷ περιέχει διδασκαλίαν  
 „τῆς τῷ Υἱῷ ἀποστολῆς τε καὶ πέμψεως.

Ὁ δ' αὐτὸς ἔτι Αὐγουστῖνος ἐν Βιβλ: Δ'. τῶν περὶ Τριάδος,  
 Κεφαλ: Κ'. πρὸ τῷ μέσῃ: „Οὐκ ἄρα κατ' αὐτό γε τῷτον, ὅτι  
 „ἐκ τῷ Πατρὸς ἐγεννήθη, ἀπεσάλθαι λέγεται ὁ Υἱός· ἀλλ' ἦτοι  
 „καθὸ ἐν τῷ κόσμῳ τέττω σάρξ ὁ Λόγος γενόμενος· ὅθεν φησὶν:  
 „ἐξῆλθον παρὰ τῷ Πατρὸς, καὶ ἐλήλυθα εἰς τὸν κόσμον· ἢ καθὸ  
 „ἐν χρόνῳ (ὁ Λόγος) ὑπὸ ἐκείσε, διανοίᾳ ἐπιγινώσκεται· κα-  
 „θάπερ εἶρηται (Σοφ: Σολομ: Κεφαλ: Θ'. 10.) πέμψον αὐτῷ  
 „(τιῶ Σοφίαν καὶ Λόγον) ἵνα συμπαρῇ μοι κοπιάσῃ,,. Καὶ ἐκ  
 „τῷ Βιβλ: τῷ κατὰ τῆς Ὀμιλ: τῶν Ἀρειανῶν, Κεφ: Δ'. „Τῷτον  
 „δὲ ὧδε νοεῖσθαι δοῦναι, τὸ κατ' αὐτὸ τῷτον παρὰ τῷ Πατρὸς  
 „ἀπεσάλθαι τὸν Υἱὸν λέγεσθαι, καθὸ ὁ Υἱὸς τῷ ἀνθρώπῳ ἐπε-  
 „φάνη ἐν σαρκὶ, ἔχ ὁ Πατήρ· τίς γὰρ πέμπεται ἐνθα ἐς; πῶ  
 „δ' ἐκ ἐσιν ἢ τῷ Θεῷ Σοφία, ὅς ἐστιν ὁ Χριστός; περὶ ἧς ἀνα-  
 „γινώσκεται, ὅτι διατείνει ἀπὸ πέρατος εἰς πέρας ευρώσως, καὶ  
 „διοικεῖ τὰ πάντα χρησῶς; Ἐπειδὴ ἄρα ἀπανταχῶ καὶ ὁ  
 „Υἱὸς ἐστὶ, πῶς εἶχε πέμπεσθαι ἐνθα ἐκ ὧ, εἰμὶ ἐπιφανεῖς κα-  
 „θάπερ ὁπτανόμενος ὧ,,; Τελούταῖον δὲ, καὶ ἐν τῷ περὶ Χρι-  
 „στιανικῆς Διδασκαλίας Βιβλ: Κεφ: ΙΑ'. „Οὐκ ἄρα διὰ τοπικῶν  
 „διασημάτων ἐρχόμενος, ἀλλ' ἐν θνητῇ σαρκὶ τοῖς θνητοῖς ὁπ-  
 „τανόμενος, ἐλθεῖν λέγεται πρὸς ἡμᾶς. Ἐκείσε γὰρ ἦλθεν  
 „ὅπως ὧ, ὅτι ἐν τῷ κόσμῳ ὧ, καὶ ὁ κόσμος δι' αὐτῷ ἐγέ-  
 „νετο,,.

Τόμ: Β'.

I

Καὶ

Καὶ ὁ ἀσκητὴς δὲ ΝΕΪΛΟΣ, ὁ τῷ Χρυσορρήμονος Ἰωάννη μαθητῆς (41) ἐν τῷ Α'. Βιβλ: τῶν Ἐπιστολῶν, Ἐπισ: σιθ'. τῆς ἐν Ῥώμῃ Γραμμο - Λατιν: Ἐκδόσ: τῆς ἐν Ἔτει 1668. ἐρμηνεύσαντος (Λατινιστῆ) Λέοντος Ἀλλατίς, Σελίδι 81. „Ἀπεσάλθαι „λέγεται ὁ Υἱὸς, ὃ καὶ ὁ Θεὸς Λόγος ἐστὶν ἐν κόλποις τῷ Πατρὶ, περιέχων τὰ πάντα· ἐξ αὐτοῦ γὰρ, καὶ εἰς αὐτὸν τὰ „πάντα· καὶ ἐν αὐτῷ ζῶμεν, καὶ κινεῖμεθα, καὶ ἐσμεν· ἀλλὰ „καὶ ὁ ἰδιοποιεῖται ὁ Θεὸς Λόγος τὰ πάντα, ὃ ἀνείληφε σώματος „.

Καὶ ΚΥΡΙΑΛΛΟΣ δὲ ὁ Ἀλεξανδρείας, ἐν τῷ Β'. Λόγω τῷ Βιβλ: τῷ περὶ τῆς ὀρθῆς Πίστεως, ταῖς Βασιλείαις: μετὰ τὴν ἀρχὴν, ἐν τῷ Ε'. Τόμ: τῶν Συγγραμμ: Μέρει Β'. Σελ: 136. „Πῶς γὰρ ἐκ ἑστὶν ὁ τῷ Θεῷ Λόγος, εἰ πληροὶ τὰ πάντα τῇ τῆς „Θεότητος φύσει; Πῶς ἐν πέμπεται παρὰ τῷ Πατρὶ; πῶς δὲ „καὶ ὑπάγει πρὸς αὐτόν; Οὐκ ἐν πέμπεται μὲν ἀνθρωπίνως, κα- „τά γε τὸν τῆς Ἀποστολῆς τρόπον καὶ λόγον, ἵνα κηρύξῃ μὲν „αἰχμάλωτοις ἄφρονοι, τυφλοῖς δὲ ἀνάβλεψιν,. Καὶ ἐν τῷ εἰς τὸν Ἰωάννην Ὑπομνήματι, Βιβλ: Δ'. Κεφ: Γ'. Τόμ: Δ'. Σελ: 366. „Ὅτε τοίνυν ἀπεσάλθαι, φησὶν, ἑαυτὸν ὁ Υἱὸς, τότε τὸ „σεσαρκῶσθαι δηλοῖ, ἕτερον ἔδεν. — Καὶ μετὰ τινα . . . εἰ καὶ „γέγονα, φησὶ Σάρξ· τῷτο γὰρ, τὸ ἀπεσάλθαι σημαίνει „.

Καὶ ὁ Συγγραφεὺς δὲ τῆς κατὰ Ἀρειαν: Ἐπιτομῆς, Σελ: 77. μεταξὺ τῶν πέντε παλαιῶν Συγγραφέων, τῶν ὑπὸ Σιρμόνδου ἐν Παρίσι: Ἔτει 1630. ἐκδοθέντων. „Ἀλλὰ τυχὸν, ἐπειδὴ „ἀκέραια ἀπεσάλθαι τὸν Υἱὸν, διὰ τῷτο ἐλάσσονα τῷ Πατρὶ νο- „μίζεις αὐτόν. Εἰπέ μοι: Θεὸν εἶναι πισθύνεις τὸν Υἱὸν, ἢ ἔτι; „Ἀναμφισβότως ἀποκριθῆσθαι, ὅτι Θεόν· καὶ γὰρ, καὶ ἀρνήσασθαι „θελήσας, ὑπὸ τῶν ἱερῶν ὁμολογήσαι ἀναγκασθήσῃ Γραφῶν,. Ἀποδεδειχώς δὲ τὸν Υἱὸν Θεὸν εἶναι, πρόεισι περαιτέρω, Σελ: 78. „Εἰ τοίνυν Θεὸς ἐστὶ, μάλλον δὲ, ἐπειδὴ Θεὸς ἐστὶν, ὅτι πάντα „δι' αὐτοῦ ἐγένετο· καὶ ἔτι ὅπως ἐκ ἐλάσσων, ἀλλὰ καὶ Θεὸς ὕψι- „σος· πωθανόμεθά σοι: πότερον, ὁ Θεὸς πανταχῶς ἐστὶν, ἢ τυχὸν „τοπικῶς; Ἐπεὶ δ' ἀσεβεῖς ἐστὶν ἀποφάναι ὅτι πανταχῶς ὁ Θεός, „δέομαί σοι: ποῦ ἀπεσάλη; Ἀλλ' Ἀποστολῶ τῷ Υἱῷ τὸ σεσαρ- „κῶσθαι μοι νόει, αὐτῷ τῷ Ἀποστόλῃ διερμηνεύοντος: Ἀπέσειλε „γὰρ, φησὶ, τὸν Υἱὸν αὐτοῦ, γενόμενον ἐκ γυναικὸς, γενόμενον „ὑπὸ νόμον. Τελύτατον δὲ περὶ τῷ αὐτῷ ἀναγινώσκουμεν παρὰ „τῷ Προφήτῃ: Τὸν ἔρανὸν καὶ τὴν γλῶσσαν ἐγὼ πληρῶ, λέγει „Κύριος.

(41) Ἡμεῖς δὲ Νεῖλος, περὶ ἔτους 440. παρέτανε δὲ τὸ βιβλίον, ἄχρι καὶ τῶν Μαρκιανῶν χρεόνων.

„Κύριος. Καὶ ὁ Εὐαγγελιστὴς δὲ περὶ τῷ αὐτῷ, ἐκ τῷ πληρώ-  
ματος αὐτῷ, φησὶν, ἡμεῖς πάντες ἐλάβομεν. Εἰ δ' αὐτὸς πάντα  
„πληροῖ, πῶς ποτε ἀπεσάλη, ἢ τῆς μεγαλωσύνης τὰ πάντα  
„πλήρη ἐστίν,;

Καὶ ὁ Συγγραφεὺς δὲ τῷ Βιβλ: τῶν ΜΕΛΕΤΩΝ παρὰ τῷ  
Αὐγυστίνῳ Κεφαλ: ΙΓ'. ἐν τῷ Θ'. Τόμ: τῶν Αὐγυσ: Συγγραμ-  
μάτων: „Σὺ ὁ Θεὸς καὶ Πατὴρ μόνος, ἐδέποτε, καὶ ἑαυμῇ  
„ἀναγινώσκῃ ἀπεσάλθαι περὶ δὲ τῷ Σὺ Τίς ὁ Ἀπόστολος ἔτω  
„γράφει: ὅτε δὲ ἦλθε τὸ πλήρωμα τῷ χρόνῳ, ἐξαπέστειλεν ὁ  
„Θεὸς τὸν Υἱὸν αὐτοῦ. Ἐπειδὴ, φησὶν, ἐξαπέστειλεν, ἄλλως δείκ-  
„νυσιν ὅτι εἰς τόνδε τὸν κόσμον ὁ ἀποσταλὴς ἐπεδήμησεν, ἡνίκα  
„ἐκ τῆς Μακαρίας Παρθένου Μαρίας τεχθεὶς, ἀληθὴς καὶ τέλειος  
„ἄνθρωπος ἐν σαρκὶ ἐπεφάνη. Ἀλλὰ τί ἐστίν, ὃ περὶ αὐτοῦ ὁ  
„τῶν Εὐαγγελιστῶν κορυφαῖος φησὶν: Ἐν τῷ κόσμῳ ἦλθε, καὶ  
„ὁ κόσμος δι' αὐτοῦ ἐγένετο; Ἐκείσε δὲ ἀπεσάλη τῇ ἀνθρωπό-  
„τητι, ἐνθαπερ αἰὲ καὶ ἡ, καὶ ἐστὶ τῇ Θεότητι. Ἦν δὴ καὶ ἀπο-  
„στολῇ ἔργον εἶναι ὅλης τῆς Ἀγίας Τριάδος, ὅλη τε καρδίᾳ πι-  
„σθῶ, καὶ σόματι καθομολογῶ,.

Καὶ ὁ Συγγραφεὺς δὲ τῷ Βιβλίῳ, τῷ περὶ τῷ καινῷ Ἀσμα-  
τος, ὃ δὴ καὶ αὐτὸ τοῖς Αὐγυστίνῳ Συγγραμμάσι σωεμφέρεται.  
Κεφαλ: Ζ'. ἐν Τόμ: Θ'. „Ὁ Χριστὸς, ἡ μὲν τὸν ἄνθρωπον  
„προσελάβετο, ἀπεσάλθαι λέγεται ἡ δὲ Θεὸς, ἴσος ἐστὶ τῷ Πα-  
„τρί. Ποῦ γὰρ ἂν ὁ Πατὴρ ἐκείνον πέμψειεν, ὅπως περ αὐτὸς  
„μετ' αὐτοῦ ἐκ ἂν εἴη,; Ταῦτα δὲ τῷ Συγγραφέως τῶν ΞΕ'.  
Ἐρωτήσεων παρὰ τῷ αὐτῷ Αὐγυστίνῳ, Ἐρωτ: Θ'. μετὰ ταῦτα  
εἰσόμεθα.

Καὶ ΠΡΙΜΑΣΙΟΣ δὲ (42) ἐν Ὑπομνήματι τῷ εἰς τὴν πρὸς  
Γαλάτας, Κεφαλ: Δ'. ἐν Τόμ: 5'. Μέρει Β'. τῆς τῶν Πατέρων  
Βιβλιοθ: τῆς ἐν Κολων: Σελ: 81. „Ἀποστολὴ τῷ Τίς νοεῖται  
„ἡ αὐτοῦ ἐνσάρκωσις, ἐχὼ δὲ ἡ τῆς μεγαλωσύνης τῆς αὐτοῦ ὑπο-  
„μείωσις,.

Καὶ ΕΥΣΕΒΙΟΣ δὲ ὁ Ἐμισιῶδης (43) τῇ Β'. τῆς Ἑβδομά-  
δος, τῆς μετὰ τὴν Δεύτεραν Κυριακῇ, ἐν Τόμ: Ε'. Μέρει Α'.  
τῆς τῶν Πατέρ: Βιβλιοθ: τῆς ἐν Κολων: Σελ: 642. „Ὁ Τίς  
„παρὰ τῷ Πατρὶ ἀπεσάλη ἐν σαρκὶ γεννηθεὶς, καὶ ἐνλωθρώπησε.  
„Ταῦτο

(42) Ἦν δὲ Πριμάσιος, ὁ τῆς Ἰεσωνιανῆς πόλεως ἐν τῇ Βυζαντικῇ Ἐπίσκοπος ὁ περὶ τὸ  
550. εἰς Κωνσταντινῆσιν, σιωάμα καὶ ἄλλοις, ὑπὲρ τῶν τῆς ἐν Ἀφρικῇ Ἐκκλησι-  
πραγμάτων ἀπεσταλμένος. Οὗτος ἐπὶ τῆς Οἰκῆς: Ε'. Σιωάδ: τῆς ἐν Ἐτει 553.  
καὶ τοὶ πολλοὶ προσκληθεὶς παρῆναι, ἐκ ἑξέ: σιωυπέγραψε δὲ σιω ἄλλοις, τῷ  
Βιγίλῃ τῷ Πάπα, ὑπὲρ τῶν Τριῶν Κεφαλ: Διατάγματι ἔπερ ἔτος ἀνέωγκε τῷ  
Αὐτοκράτορι.

(43) Ὅρα περὶ τέττε ἐν Πραγματ: Γ'. Παραφθορ: ΚΕ'. Σημ: (34).



„Ταὐτὸ γὰρ ἐστὶν ἡ Ἀποστολή, ὅπερ ἡ Ἐνσάρκωσις,“. Καὶ ἐν ἡμέρᾳ Γ'. τῆς Ἑβδομάδ᾽· μετὰ τῷ τετάρτῳ Κυριακῷ, διὰ τῶν ἀνωτ᾽· ἐπενεχθέντων ῥημάτων: „Τί ἐστὶν, ὃ φησὶν, ὃ πέμψας, „με; εἰ μὴ ὃ, ἀνθρώπον με γενέσθαι, καὶ σάρκα προσλαβέσθαι, „ἐνδοκήσας; Αὐτὸ δὲ τὸ ἔργον τῆτο, ὅλης ἐστὶ τῆς Τριάδος, καὶ „ἐ μόνον τῷ Πατρὶ,“.

Καὶ ΚΕΡΕΑΛΙΟΣ δὲ ὁ Ἀφρικανὸς Ἐπίσκοπος (44), ἐν τῷ κατὰ Μαξιμίνου Βιβλίῳ Κεφαλ᾽ Γ'. Τόμ᾽ Ε'. τῆς Βιβλιοθ᾽ τῶν Πατέρ᾽ τῆς ἐν Κολων᾽ Μέρ᾽ Γ'. Σελ᾽ 647. „Πῶς δὴ πέμψαι- „ἐν ὃ Πατὴρ τὸν Υἱόν, ὥδε διδασκόμεθα· ἡ τῷ Υἱῷ Ἀποστολή, „ἡ Ἐνσάρκωσις ἐστὶ τῷ Υἱῷ. Μαρτυρεῖ δὲ Παῦλος ὁ Ἀπόστολος „καὶ τίς ἐστὶν ὁ ἀποσταλὴς, πότερον ὁ Υἱὸς, ἢ ὁ Υἱὸς τῷ ἀνθρώ- „πῳ; λέγων: ἐξαπέστειλεν ὁ Θεὸς τὸν Υἱόν αὐτοῦ, γενόμενον ἐκ „γυναικὸς, γενόμενον ὑπὸ νόμον, ἵνα τῷ ὑπὸ νόμον ἐξαγο- „ράσῃ,“.

Καὶ ΦΟΥΛΓΕΝΤΙΟΣ (45) Βιβλ᾽ περὶ Πίς: πρὸς Πέτρον, Κεφ᾽ ΙΕ'. „Ὁ τῷ Θεῷ Υἱὸς, ὅτε ἦλθε τὸ πλήρωμα τῷ χρόνῳ, „ἀποσταλὴς παρὰ τῷ Πατρὶ, καὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι, ἐγένετο „ἐκ γυναικὸς, ὡς μόνος ἐποίησεν ἐγένετο ὑπὸ νόμον, ὃν αὐτὸς „ἔδωκε,“. Καὶ ἐν τῷ κατὰ Φαβιανῷ, (46) Βιβλ᾽ Η'. ὅπερ ἀνα- φέρει Θεοδόλφος Ἐπίσκοπος Αὐρηλιανώσιος, ἐν τοῖς αὐτοῖς Συμ- μίκτοις περὶ τῆς Ἐκπορεύσεως τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι, ἐν τῷ 5'. Τόμ᾽ τῆς τῶν Πατέρ᾽ Βιβλιοθ᾽ τῆς ἐν Κολων᾽ Σελ᾽ 190. „Ὅτι „ἐ καθ' ἓνα τρόπον, ἐν Ἱερῶν Γραφαῖς λέγεται ἡ Ἀποστολή, „διὰ δὴ τῆτο ἐν τῷ τῆς ἐνανθρωπήσεως Μυστηρίῳ, ἐ μόνον παρὰ „τῷ Πατρὶ, ἀλλὰ καὶ παρὰ τῷ Πνεύματι ὁ Υἱὸς ἀπεστάλη· ὃ „γὰρ μεσίτης Θεὸς καὶ ἀνθρώπων, ἄνθρωπος Ἰησοῦς Χριστὸς σωερ- „γήσει τῆς Τριάδος ἐπλάσθαι,“.

Καὶ ἸΛΔΕΦΟΝΣΟΣ (47) ἐν τῷ περὶ τῆς Παρθενίας τῆς Μαρίας Βιβλ᾽ Κεφαλ᾽ Ζ'. Τόμ᾽ Ζ'. τῆς τῶν Πατέρ᾽ Βιβλιοθ᾽ τῆς ἐν Κολων᾽ Σελ᾽ 439. „Διὰ τῷ Ἡσαΐᾳ λέγεται: καὶ νυνὶ „Κύριος

(44) Περὶ τῆτο ἀνωτ᾽ ἐπὶ τῆς Ζ'. Ἀπαντ᾽ Σημ᾽ (26).

(45) Τὸν Ῥεσπλιώσιον ὥδε μοι νόει Φελεγέντιον, ἐχὶ τὸν Φεράνδον· ἐς ἀνωτ᾽ διεσελάμε- θα ἐν Ἀπαντ᾽ Ε'. Σημ᾽ (23). Ἐκεῖνος γὰρ τὸ περὶ Πίς: ἢ Βιβλ᾽ τὸ Πέτρῳ Διακόνῳ ἀνατεθὲν, ὃ καὶ τῷ Ἱερ᾽ Αὐγουστίνῳ ἀναγκαζόμενον ἐκ ἐξῆς, τοῖς τῆτο Συγγράμμασι· ἐμφέρεται εἰωθεν.

(46) Τὰ τῷ Ῥεσπλιώσιῳ Φελεγεντίῳ Δέκα Βιβλία, τὰ περὶ „Προορισμῶ καὶ Χάριτος,“ κατὰ Φαβιανῷ, ἀπώλετο. Ἐκ δὲ τῆτων Θεοδόλφος ἐν τοῖς Συμμίκτοις, ἐπτά διέσωσεν ἡμῖν Ἀποσπάσματα. Καί τινα δὲ καὶ ἄλλα, ἐκ Παλαιῶν Κώδικος Ἰάκωβος ὁ Σερμίνδος παρέθετο, ἐν τοῖς Ἀλκίμῳ Ἀβίτῳ Πονήμασιν, ἐν Παρίσι: ἐκδοθ᾽ ἔτεσι 1643. Καὶ ἕτερα δὲ προσέτι Χιφφλέτιος, ἐν τισὶ τῶν Παλαιῶν Συγγραμματίοις. Ἐν Λιβιδῶνι, 1651.

(47) Οὗ μνεία ἀνωτ᾽ Σημ᾽ (30).

„Κύριος ἀπέσπασέ με καὶ τὸ Πνεῦμα αὐτοῦ. Ἰδὲ γὰρ, τῷ διὰ τῆς Παρθένου ἡμῶν, τὸν τῷ Θεῷ Υἱὸν σαρκωθέντα παραγενέσθαι, καινόν τι ἢ Τριάς ὅλη τῆς ἐνεργείας αὐτῆς ἐνεδείξατο „θαῦμα“.

Καὶ ὁ ΒΕ΄ΔΑΣ (48) ἐν τῷ Ὑπομν: τῷ εἰς τὸ Ε΄. Κεφάλ: τῷ Ἰωάννῃ ἐν τῷ Ε΄. Τόμ: τῶν αὐτῶ Συγγραμ: Στήλη 499. „Ἡ Ἀποστολὴ αὕτη, ἡ ἐνανθρώπησις ἐστὶ τῷ Χριστῷ. Εἰς δὲ τὸ Η΄. Κεφάλ: Στήλη 542. „Τί ἐστὶν ἡ τῷ Χριστῷ Ἀποστολὴ ἄλλ᾽, ἢ ἡ αὐτῷ ἐνσάρκωσις; Ἀπεσάλη Χριστός· ταῦτόν ἐστιν ὡς ὡς „εἴποις: σεσάρκωται ὁ Χριστός· καὶ παρὰ τῷ Πατρὶ ἀπεσάλη, „καὶ τῷ Πατρὶ ἐδέετο ἐχωρίσθαι· καὶ ὡς ὡς διὰ τῆς ἐνσαρκώσεως, καὶ ὡς νῦν ἐστὶ διὰ τῆς Θεότητος. Καὶ μετὰ ταῦτα: „Σωήσωμεν ἄρα, ὅτι Ἀποστολὴ τῷ Υἱῷ ὠνόμασαι ἢ τῷ Υἱῷ ἐνσάρκωσις. Καὶ ἐν Στήλῃ δὲ 533. „Χριστῷ Ἀποστολὴ, ἡ αὐτῷ ἐνσάρκωσις ἐστὶ. Καὶ ἐν τῷ Βιβλ: τῶν Ἑρωτήσεων, Ἑρωτ: ἐχάτη, ἐν Τόμ: Η΄. τῶν Συγγραμ: Στήλη 302. „Ὁ Θεὸς καὶ „Πατὴρ πέμπει λέγεται τὸν Υἱὸν καταχρησικώτερον: (Impro- priè). Οὐ γὰρ πέμπει, ὥς τοπικῶς ἀποδιῶν αὐτῷ τὸν σὺν αὐτῷ πανταχῶ παρόντα· ἀλλὰ κατὰ τινα ὁμοιότητα πέμπει αὐτὸν λέγεται. Ὅτι, ὥς περ ὃν ἡμεῖς πέμπομεν, ἀφ' ἡμῶν δια- ζώομεν, ἔτι καὶ ὁ Πατὴρ πέμπομεν τὸν Υἱὸν, ἐπειδὴ αὐτὸν ἐν τῇ τῆς σαρκὸς προσλήψει αὐτῷ ὅπως διέστησεν. Εἰ γὰρ „καὶ ὁ Πατὴρ, καὶ ὁ Υἱός, καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ἐν τῇ συλ- λήψει τῆς Μακαρίας Παρθένου Μαρίας σωήρησαν, ἀλλὰ μόνον „τὸ τῷ Υἱῷ πρόσωπον ὡς τὸ τῷ σάρκα προσειληφός· καὶ ἔτι „ὡς ἀνέπῳς ἀφ' αὐτῷ (ὁ Πατὴρ τὸν Υἱόν) πέμπει δοκεῖ, ὅτι „ἐχὶ σωάμα τῷ Υἱῷ καὶ αὐτὸς, τῷ ἐκ τῆς Παρθένου σάρκα „προσείληφε.

Καὶ Ὁ ΕΘΗΡΙΟΣ δὲ καὶ ΒΕΑ΄ΤΟΣ (49) ἐν τῷ Α΄. Βιβλ: κατὰ Ἑλιπάνδῃ, πρὸ τῷ τέλει, ἐν Τόμ: Η΄. τῆς Βιβλιοθ: τῶν Πατέρ: τῆς ἐν Κολων: Σελ: 358. „Ὅτι μία ἢ θέλησις καὶ „μία ἢ δυνάμις ἐστὶ, Πατρὸς καὶ Υἱῷ καὶ Ἁγίῳ Πνεύματος· ὁ „μὲν Πατὴρ πέμπομεν τὸν Υἱόν, καὶ ὁ ἕτερος ἐλάσων ἐστὶν· ὁ „δὲ Υἱὸς αὐτὸν πέμπομεν, καὶ ὁ ἐκείνῳ ἴσος ἐστὶ. Καὶ ἐν τῷ Β΄. Βιβλ: μετὰ τὸ μέσον, ἐν τῷ ῥηθέντι Η΄. Τόμῳ, Σελ: 377. „Μόνος ὁ Υἱὸς ἐπεφάνη κατ' ἐσίαν τῷ αὐτῷ τοῖς ἀν- θρώποις, καὶ μέντοι κατ' ἐκείνῳ ἐπεφάνη, καὶ ὡς ἴσος ἐστὶ τῷ „Πατρί· ἀλλὰ καθ' ὡς ἐπεδήμησε πεμφθεὶς παρὰ τῷ Πατρὶ, καὶ „τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι.

Καὶ

(48) Περί τῶ ἐν τῇ Γ΄. Πραγμ: ΛΖ'. Σημ: (49).

(49) Περί τέτων μνεία καὶ ἀνωτ: Ὅρα Σημ: (31).

Τόμ: Β΄.

Κ

Καὶ ΠΑΤΡΙΨΝΟΣ δὲ ὁ Ἀκυληΐας (50) Μητροπολίτης, ἐν τῇ κατὰ τὸ Φορο-ἰσλίον Σωόδω, Τόμ. Ζ'. τῶν Σωοδι. Στήλ. 996. „Ενθεντοι διὰ τῶ Ἡσαΐα μαρτυρεῖ τῶ Πατρὸς εἶναι (τὸν Υἱὸν „τῶ Θεῶ, τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον) ἡλικία διὰ τὸν προσληφθέντα „ἄνθρωπον λέγον, Φησί: Πνεῦμα Κυρίου ἐπ' ἐμὲ κατ: Κἀκεῖνο: „Κύριος ἀπέσαλκέμε, καὶ τὸ Πνεῦμα αὐτῶ,,.

Τὰ δὲ τῶ ΒΕΔΑ ῥήματα, ἃ πρὸ μικρῶ, ἐκ τῶ Ὑπομνήματος ἐκείνου, τῶ εἰς τὸ Ε'. καὶ Η'. Κεφάλ: τῶ Ἰωάννη παρεσησάμεθα, ἔχει καὶ ἈΛΚΟΥΤΨΝΟΣ ὁ ἈΛΒΙΨΝΟΣ εἰς τὸ εἰρημένον τῶ Ἰωάννη: „Εὰν ἐγὼ κρίνω, ἢ ἐμὴ κρίσις ἀληθὴς ἐστίν,,. Ὁ αὐτὸς ἔν καὶ τῶ περὶ τῆς Τριάδος Βιβλ: Γ'. Κεφαλ: Δ'. Στήλη 739. „Ζητητέον, πῶς ἂν ἡ Ἀποστολὴ τῶ Υἱῶ νοοῖτο; „Ὁ γὰρ Πατὴρ μόνος ἐκ ἀναγινώσκειται ἀπεσάλθαι: περὶ δὲ „τῶ Υἱῶ ἔτω γέγραφεν ὁ Ἀπόστολος: ὅτε δὲ ἦλθε τὸ πλήρωμα „τῶ χρόνου, ἐξαπέστειλεν ὁ Θεὸς τὸν Υἱὸν αὐτῶ, γενόμενον ἐκ „γυναικὸς, γενόμενον ὑπὸ νόμον, ἵνα τῶς ὑπὸ νόμον ἐξαγοράσῃ. „Ὅτε δὲ, Φησὶν, ἐξαπέστειλεν ὁ Θεὸς τὸν Υἱὸν αὐτῶ γενόμενον „ἐκ γυναικὸς ἄλλως δείκνυσιν, κατ' ἐκεῖνο τὸν Υἱὸν ἀπεσάλθαι, καθ' ὃ „ἐγένετο ἐκ γυναικὸς: Ὅτι μὲν ἔν ἐκ τῶ Θεῶ γεγέννηται ὁ τῶ „Θεῶ Υἱὸς ἐν τῶδε τῶ κόσμῳ ἡ, ὡς ὁ Εὐαγγελιστὴς Φησὶν: ἐν „τῶ κόσμῳ ἡ, καὶ ὁ κόσμος δι' αὐτῶ ἐγένετο. Ὅτι δὲ ἐκ Μα- „ρίας τῆς Παρθένου ἐγεννήθη, εἰς τὸν κόσμον τόνδε ἀποσταλὴς „ἐπεδήμησε. Καὶ γάρ τοι καὶ αὐτὸς ὁ Κύριος ἔφη: Ἐγὼ παρὰ „τῶ Πατρὸς ἐξῆλθον, καὶ ἐλήλυθα εἰς τὸν κόσμον: τῶτο δ' ἐστὶ τὸ „πέμπεσθαι,,. Καὶ ἐν Κεφαλ: δὲ 5'. „Εἰκότως ἔρηται, ἀπε- „σάλθαι μὲν ὁ ἐν Σαρκὶ ἐπιφανείς (ἀποσῆλαι δὲ αὐτὸν, ὁ μὴ „ἐν Σαρκὶ ἐπιφανείς.) Ἡ προσληφθεῖσα τοίνυν τῶ ἀνθρώπου „μορφῇ, τὸ πρόσωπον ἐστὶ τῶ Υἱῶ: ἔκειν δὲ καὶ τὸ τῶ Πατρός,,. Διὰ τοι τῶτο ὁ Πατὴρ ἀόρατος ὢν, ἅμα μετὰ τῶ Υἱῶ τῶ σὺ αὐτῶ ἀοράτῃ, τὸν αὐτὸν Υἱὸν, ὁρατὸν ἀποφήνας, ἀπεσαλκέναι ἔρηται.

Ἡ δὲ σωήτης Γλωττηματικὴ Ἑρμηνεία εἰς τὰ τῶ Προφήτου ῥήματα: νῦν Κύριος ἀπέσειλέμε, καὶ τὸ Πνεῦμα αὐτῶ: „Ὁ „Πατὴρ προέθετο ἵνα σαρκωθῇ ὁ Υἱός: σινελήφθη δὲ ἐκ Πνῶ- „ματος Ἁγίου,,.

Ὡσαύτως δ' ἐντεῦθεν καὶ ἈΝΣΕΛΜΟΣ ὁ Κανταρίας (51) ἐν τῶ Ὑπομνήματι τῶ εἰς τὸ Δ'. Κεφαλ: τῆς πρὸς Γαλάτας Ἐπι-

(50) Περὶ 8 καὶ ἄνωτ: Σημ: (33).

(51) Προήχθη Κανταρίας Ἀρχιεπίσκοπος ἐν Ἔτ: 1093. ἀπῆλθε δὲ τῶ βίῃ Ἔτ: 1169. Ἔτος ἄγων τῆς ἡλικίας 76. Οὗτος δὲ καὶ ἐν τῇ κατὰ τὸ Βάριον τῆς Ἀπελίας συστάσῃ Σωόδῳ, ἐν Ἔτει 1097. ὑπὲρ Λατίνων ἡγῶνισαι κατὰ τῶν Γραικῶν. Διό

Ἐπισολῆς, ἐν τῷ Β'. Τόμ: τῶν Συγγραμ: τῆς ἐν Κολων: Ἐκ-  
δός: τῆς ἐν Ἑτα 1612. Σελ: 245. „Ἀπέσειλεν αὐτὸν, τρεῖσι,  
„σαρκωθῶμαι ἐποίησεν, ἵνα τοῖς ἀνθρώποις γένηται ὁρατός. Αὐ-  
„τὸν λέγω τὸν κατὰ σάρκα γενόμενον ἐκ γυναικός: τρεῖσιν ἐκ  
„Θηλείας μητρός,,.

Τελυταῖον δὲ καὶ ΛΟΜΒΑΡΔΟΣ, Βιβλ: Α'. τῶν Ἀποφάν-  
σεων, Διαμρ: ΙΕ'. „Ἐκ τῶν ἀνωτέρω εἰρημένων σαφῶς ἀπο-  
„δείκνυται, ὅτι ὁ Υἱὸς ἀπεσάλη παρὰ τῷ Πατρὶ, καὶ παρὰ τῷ  
„Ἁγίῳ Πνεύματι, καὶ παρ' ἑαυτῷ. Καὶ τίς ποτ' ἂν ἡ Ἀποστολή  
„εἴη αὕτη; δῆλον ὅτι ἡ ἐνσάρκωσις, καθ' ἣν ἄνθρωπος γέγονεν,  
„ὅθεν ὁρατός ἐπεφάνη. Τὸ δέ τοι ἔργον τῷ κοινὸν ἐστὶ τῷ  
„Πατρὶ, καὶ τῷ Υἱῷ, καὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι,,. Ἀπατῶσιν ἄρα  
ἄλλας τε δὴ, καὶ σφᾶς ἑαυτὰς, ὅποσοι τῶν Λατίνων, ἐκ μὲν τῷ  
Ἁγίῳ Πνεύματι, τὸν Υἱὸν κατὰ μόνῳ τῷ ἀνθρωπότητι, ἐκ δὲ  
τῷ Πατρὶ, καὶ κατὰ τῷ Θεότητι διατείνονται ἀποσέλλεσθαι.  
Βέβαιον γὰρ ἐκ τῶν εἰρημένων, ὅτι ὁμοίως καὶ παρὰ τῷ Πατρὶ  
ὁ Υἱὸς κατὰ μόνῳ ἀποσαλεῖς ἀπεσάλη τῷ ἀνθρωπότητι.

Ὁ δὲ πρὸς τὸ ὑπ' αὐτῶν λεγόμενον ἐστὶ τῷ, ὅτι τὸ μὲν  
Ἅγιον Πνεῦμα, κατὰ τῷ ἀνθρώπειον μόνον φύσιν ἀπεσαλκε τὸν  
Υἱόν, αὐτὸ δὲ τὸ Πνεῦμα ὑπὸ τῷ Υἱῷ καὶ κατὰ τῷ Θεότητι  
ἀποσέλλεται, ψεύδεις τὸ παράπαν ἐστίν· ὅ γὰρ ἂν τὸ Ἅγιον  
Πνεῦμα ἐκ τῷ Υἱῷ τῷ λόγῳ τῆς Θεότητος ἀποσαλείη. Αὐ: γὰρ  
τὸ Ἅγιον Πνεῦμα τῇ Θεότητι τὰ πάντα πληρῶν ἐστὶ, καὶ πά-  
ρουν ἀπανταχῇ. Οὐ δ' ἂν τις παρῇ, ἐκείσε παρ' ἄλλῃ ἐκ ἂν  
ἀποσέλλοιτο. Τίνα τρόπον ἄρα τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον κατὰ τῷ  
Θεῷ αὐτῷ φύσιν ῥηθείη πέμπεσθαι; Β: Τὸ ἡμῖν ἐπιχορηγέ-  
μενον Ἅγιον Πνεῦμα, δώαται πως καὶ αὐξεσθαι καὶ μειῶσθαι  
ἐνθεντοι καὶ Ἐλισαῖος διπλῶς ἐφιέμενος ὥφθη τῷ Πνεύματι τῷ  
Ἡλιῷ· ὅ, τε Ἀπόστολος πρὸς Θεσσαλονικεῖς γράφων Κεφαλ: Ε'.  
παραινῇ: „Τὸ Πνεῦμα μὴ σβέννυτε,,. Καὶ ἐν τῇ Α'. δὲ τῶν  
Ἰωάννη Ἐπιστολῶν, Κεφαλ: Δ'. λέγεται: „Ὁ μένων ἐν τῇ  
„ἀγάπῃ, ἐν τῷ Θεῷ μένει, καὶ ὁ Θεὸς ἐν αὐτῷ,,. Ἀλλὰ γὰρ  
τὸ Ἅγιον Πνεῦμα κατὰ τῷ Θεότητι, ὅτε αὐξεσθαι δώαται,  
ὅτε μειῶσθαι, ὅτε σβέννυσθαι, ὅτε ἀποχωρεῖν ἀπό τινος· ἐκ ἄρα  
τὸ Πνεῦμα κατὰ τῷ Θεότητι τοῖς πιλοῖς δίδοται, ἢ πέμπεται.  
Γ: Τῷ Εὐαγγελιστῇ ῥήματα ἐστὶ ταῦτα: „Οὕτω γὰρ ὡς Πνεῦμα  
„Ἅγιον· διότι ἔγω δεδόξατο ὁ Χριστός,,. Ἀλλὰ κατ' ἐσίαν τῷ  
ἑαυτῷ,

Διὸ καὶ Ἐδρας ἡξίωται τῆς ἐγγύς τῷ Ῥώμῃ Ἀρχιδιακόνῃ, ᾧ ἀπέναντι τῷ Πεν-  
τίφικῳ ἐδραῖζεν ἐφ' αὐτοῦ ἐπειπόντος τῷ Πάπα: Includamus hunc in orbe nostro,  
quasi alterius orbis Papam. „Ἐν τῷ καθ' ἡμᾶς ἐγκυκλίῳ χορᾷ τῷτον, οἶονεὶ Πά-  
„παν ἐτέρῃ κόσμῳ, ἐμπερικλείσωμεν,,.

ἑαυτῶ, καὶ πρὸ τῆς τὸν Χριστὸν δοξαθῆναι, τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον  
 ὡς καὶ ὑπῆρχεν. Ἐπειδὴ ἄρα, καθ' ὃν λόγον ὑπερον πρὸς ἡμᾶς  
 ἀπεσάλη τὸ Πνεῦμα, πρὶν ἢ ὁ Χριστὸς δοξαθῇ, καὶ ὡς ἐκδη-  
 λον δήπερ, ὅτι ἦμεις τὸ Ἅγιον Πνεῦμα χορηγεῖται τοῖς πιστεύουσι  
 κατὰ τὴν Θεότητα. Δ<sup>ον</sup>: Ἠνίκα τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἡμῶν  
 ἐπιπέμπεται, καὶ αὐτὸ μόνον, ἀλλὰ σὺ αὐτῷ καὶ ὁ Πατὴρ ἔρ-  
 χεται καὶ ὁ Υἱός. Τοιαῦτα γὰρ, αὐτὰ τῶν Τῶν Θεῶν τὰ ῥή-  
 ματα: „Ὁ ἀγαπῶν με τὸν λόγον μὴ τηρήσει καὶ ὁ Πατὴρ μὴ  
 „ἀγαπήσει αὐτόν καὶ πρὸς αὐτόν ἐλθούμεθα, καὶ μονῶ παρ'  
 „αὐτῷ ποιήσομεν,,. Ἀλλ' ὁ Πατὴρ καὶ ὁ Υἱός, ἐδὲ κατ' αὐτῶν  
 Λατίνες παραγένοιντ' ἂν ποι κατὰ τὴν Θεότητα παραπλησίως  
 ἄρα ἐδὲ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, σὺ ὡς πεμφθέντι καὶ ὁ Πατὴρ  
 ἅμα καὶ ὁ Υἱός συμπαραγίνονται, ἔλθοι ποτ' ἂν πρὸς ἡμᾶς  
 κατὰ τὴν Θεότητα. Ε<sup>ον</sup>: Τὸ δ' αὐτὸ διδάσκει, καὶ οἱ τὸν ἀριθ-  
 μὸν τοσῶτοι Πατέρες, ὧν πρὸ μικρῶ ἀπεμνημονόσαμεν. Γρη-  
 γόριος ὁ Νύκτας· Ἰδάκιος ὁ Κλάρος· Ἰωάννης ὁ Χρυσόστομος·  
 Αὐγυστίνος ἐν Βίβλ: τῷ κατὰ τῶν Ἀρειανῶν· Νεῖλος ὁ Ἀσκητής·  
 Κύριλλος Ἀλεξανδρείας· ὁ Συγγραφεὺς τῆς κατὰ Ἀρειανῶν Ἐπι-  
 τομῆς· ὁ Συγγραφεὺς τῆς Βίβλ: τῆς περὶ τῆς Καινῆς Ἀσματος,  
 παρὰ τῷ Αὐγυστίνῳ. Καὶ οἱ Πατέρες τελευτᾶν αὐτῆς τῆς Οἰ-  
 κουμεν: Α' Σωόδης τῆς ἐν Νικαίᾳ. Ἐπειδὴ, διὰ δὴ τῶν τῶν  
 Υἱόν, κατὰ τὴν Θεότητα τρεῖς, ἡπερ Θεὸς ἐστὶ, παρὰ τῶν  
 Πατέρων πέμπεται ἀπὸ πάντων, διὰ τὸ πάντα τὸν τῶν Θεῶν Υἱόν τῇ  
 αὐτῇ παρσὶα πληρῆν. Εἰ γὰρ πέμπεται τὸν Υἱόν κατὰ τὴν  
 Θεότητα ἐδὲ δυνατὸν ὡς διὰ τῶν, διότι πάρεστιν ἀπανταχῶς πάν-  
 τως δήπερ, ἐδὲ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα πέμπεται διωθήσεται κατὰ τὴν  
 Θεότητα, ὅτι καὶ αὐτὸ, ἐδὲν ἡτλὸν ὑπάρχει πανταχῶ παρὸν.

Τοσάκις ἄρα οἱ καταλεχθέντες Θεοὶ Πατέρες ἐκδιδάσκον-  
 τες ἡμᾶς εἰς, μηδαμῶς πέμπεται κατὰ τὴν Θεότητα τὸ Πνεῦ-  
 μα, ὅσάκις τὸν Υἱόν, διὰ τὸν ῥηθέντα λόγον, ἀποφάσκειν ὡς  
 Θεὸν ἀποσέλλεται. Τέτοις δὲ καὶ τῶν ἐπὶ τῆς Α'. Οἰκουμενικῆς  
 Σωόδης σωμαριθμεμένων, τίς ἂν ποτε περὶ τῆς τέως τῆς Δόγμα-  
 τος ἀληθείας διαμφισβητῆσαι τολμήσαιεν;

Ἀλλὰ τελευτᾶν ἐντεῦθεν καὶ 5<sup>ον</sup>: παραπλησίως ἐν ἄλλοις  
 οἱ Θεολόγοι Πατέρες, καὶ αὐτὸ ἴδια τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, κατὰ  
 τὴν Θεότητα τρεῖς ἡ Θεὸς ἐστὶ πέμπεται ἀποφάσκειν. ΓΡΗ-  
 ΓΟΡΙΟΣ μὲν ἐν ὁ Θεολόγος, ἐν Λόγῳ ΛΖ'. Σελ: 611. „Ὅσα  
 „δὲ (περὶ τῆς Ἁγίας Πνεύματος) λέγεται ταπεινότερον, τὸ δίδο-  
 „μαι, τὸ ἀποσέλλεται, τὸ μερίζεται, τὸ χάρισμα, τὸ δώρημα,  
 „τὸ ἐμφύσημα, ἢ ἐπαγγελία, ἢ ὑπερένδοξις· ἔτι ἄλλο τοιοῦτον,  
 „ἵνα μὴ καθ' ἑκάστον λέγω· ἐπὶ τὴν πρώτην αἰτίαν ἀνενεκτέον,,.  
 Ταπεινότερον ἄρα περὶ τῆς Ἁγίας Πνεύματος λέγεται ἢ πέμψις  
 αὐτῆς,



αὐτῷ, διὸ ἔδὲ κυρίως τῇ αὐτῷ προσήκει Θεότητι. Ὁ δὲ Χρυσόρρημων ἸΩΑΝΝΗΣ ἐν Ὁμιλ: τῇ περὶ τῷ Ἁγίῳ καὶ προσκυνητῷ Πνεύματος, ἐν τῷ 5'. Τόμῳ τῶν αὐτῷ Συγγραμ: Σελ: 224. (52) „Ἐὰν ἀκρόσης λέγοντος: ἀποσελῶ ὑμῖν τὸ Πνεῦμα „τὸ Ἅγιον, μὴ κατὰ τὴν Θεότητα ἐκλάβης. Θεὸς γὰρ ἐκ ἀπο- „σέλλεται ὀνόματα ἐς τὰ ταῦτα, τὴν ἐνέργειαν σημαίνοντα. — „Πᾶς ἀποσέλλων, εἰς ἐκείνας ἀποσέλλει τὰς τὸπας ἐν οἷς μὴ πά- „ρεςιν: ὑπόθῃ ἐμὲ εἶναι τὸν λαλῶντα ἐν τῷ καθίσματι τέτῳ „ἐξ ὁνόματι τινὶ εἶπεν: δεῦρο ἀποσελῶ σε ὡδε. τῷτο ἐκ ἐξί „πέμψαι, ἀλλὰ συγκαθίσαι, ἢ παρασιῶαι. Εἰ δὲ ὁ Θεὸς παν- „ταχῶ (τὸν ἔρανὸν γὰρ, φησὶ, καὶ τὴν γλῶττάν ἐγὼ πληρῶ) πῶ „ἐν πέμπει ὁ πανταχῶ ὢν; Ἐὰν ἀναβῶ εἰς τὸν ἔρανόν, Σὺ „ἐκεῖ εἶ. ἐὰν καταβῶ εἰς τὸν Ἄδω, πάρε. Ἐὰν ἀναλάβω τὰς „πτέρυγας μου κατ' ὄρθρον, καὶ κατασκηνώσω εἰς τὰ ἔχματα τῆς „Θαλάσσης, καὶ γὰρ ἐκεῖ ἡ χεῖρ σου ὁδηγήσει με. πῶ ἐν ὁ Θεὸς „ἀποσέλλει; Ἀλλ' ἄρα μὴ αὐτὸς μὲν πανταχῶ, ὁ δὲ ἀποσελ- „λούμενος ἐκ πανταχῶ; Καὶ ἐν Ὁμιλ: δὲ ΟΖ'. (53) τῶν εἰς Ἰωάννου: „Διατὶ δὲ, φησὶ: πέμψω αὐτόν; τῷτῃ, προπαρα- „σκευάσω ὑμᾶς πρὸς τὴν ὑποδοχὴν. Ὁ δὲ Α'ΥΓΟΤΣΙΤ'ΝΟΣ Βιβλ: Γ'. περὶ Τριάδος, πρὸς τὸ τέλος: „Λέιπεται τοίνυν ἡδη „ἡμᾶς ἰδεῖν ἐπειδὴ, καὶ τῷ Κυρίῳ διὰ τῆς Περθένου τεχθέντος, „καὶ σωματικῶς πῶς ἐν εἶδει περισερᾶς τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος κα- „τελθόντος, καὶ τῶν πυρίνων γλωσσῶν ὁφθαλμῶν, ἡχῶ ἀπ' ἔρανῶ „γενομένων κατὰ τὴν ἡμέραν τῆς Πεντηκοστῆς, μετὰ τὴν Ἀνάλη- „ψιν τῷ Κυρίῳ. ἔδ' αὐτὸς ὁ τῷ Θεῷ Λόγος κατ' ἐσίαν τὴν ἐκλήσιν, „ἔδὲ τὸ τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ Πνεῦμα κατὰ τὴν ἰδίαν ἐσίαν, „καθ' ἣν αὐτὸ ἀμφοτέροις ἴσον ἐστὶ, καὶ σωματικῶς ἀλλὰ πάν- „τως διὰ τινος κτίσματος, ὃ κατ' ἐκείνας τὰς τὸπας μορφωθῆναι „τε καὶ ὑφ' ἐσῆναι ἡδυνάτο. αἰσθήσεσι σωματικαῖς καὶ θνηταῖς „ἐπεφάνη. Ὅποια τις ἄρα μεταξὺ τῶν Ἐπιφανειῶν ἐκείνων, καὶ „τῶν δε τῶν ιδιοτήτων τῷ Υἱῷ τῷ Θεῷ καὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος, „καὶ περ δι' ὅρατῃ κτίσματος γενομένων, ἐγχαρεῖ ἢ διαφορά; Καὶ ἐν Βιβλ: δὲ Β'. περὶ Τριάδος, Κεφαλ: Ε'. „Ὁ Θεὸς ἀνευ „τῷ ἰδίῳ Πνεύματος ἔδέποτε εἶναι δεδωῆται τοιγαρὲν εἰ παντα- „χῶ ὁ Θεὸς, πανταχῶ καὶ τὸ Πνεῦμα αὐτῷ. Ἐκεῖσε ἄρα καὶ „τὸ αὐτῷ Πνεῦμα ἀπεσάλη, ἐνθαπερ ὡς. Καὶ γὰρ καὶ κείνος ὁ „μηδένα τόπον ἐυρίσκων, ὅποι ἂν ἀπὸ προσώπου τῷ Θεῷ ἀπέλι- „θοι, καὶ λέγων: ἐὰν ἀναβῶ εἰς τὸν ἔρανόν, Σὺ ἐκεῖ εἶ. ἐὰν „καταβῶ

(52) Κατὰ δὲ τὴν Μοντφάλκον: Ἐκδ: Τόμ: Γ'. Σελ: 809.

(53) Κατὰ τὴν Μοντφάλκον: Ἐκδ: ἀριθμεῖται ΟΗ'.

Τόμ: Β'.

Λ

„καταβῶ εἰς τὸν Ἄδιν, πάρει πανταχῶ παρόντα τὸν Θεὸν νοεῖ-  
 „θαι βεβλόμενος, πρότερον ὠνόμασε τὸ Πνεῦμα αὐτῶ. Εἶπε  
 „γὰρ ἔγω: πῶ πορεύω ἀπὸ τοῦ Πνεύματος Σ; καὶ ἀπὸ τοῦ  
 „προσώπου Σ πῶ φύγω; Τότε δὴ χάριν, εἰ καὶ ὁ Υἱὸς, καὶ  
 „τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ἐκείσε πέμπεται, ἔνθαπερ ὡς ζητητέον πῶς  
 „χρὴ νοεῖθαι τὴν πέμψιν ταύτην, ἅτε τὴν τοῦ Υἱῶ, εἴτ' ἐν τὴν  
 „τοῦ Ἁγίου Πνεύματος; Καθάπερ ἔπειτα ἐν τοῖς ἐφεξῆς, ἐχὶ  
 „κατὰ τὴν Θεότητα, καθ' ἕτερον δὲ λόγον δεικνυσιν, ὅτι τὸ Ἅγ:  
 Πνεῦμα πέμπεται παρὰ τοῦ Υἱῶ. Καὶ τὰ τοῦ Συγγραφέως δὲ  
 τῶν ΞΕ'. Ἐρωτήσεων, τῶν ἐν τοῖς Αὐγυστίνου πονήμασιν ἐμφε-  
 ρομένων, Ἐρωτ: Θ'. δι' ὧν, καὶ ἕτος ὁμοίως ἀπόφησι τὸ Πνεῦμα  
 τὸ Ἅγιον κατ' ἐσίαν πέμπεσθαι τὴν ἑαυτῶ. Ὡς μετὰ ταῦτα  
 εἰσόμεθα.

Ἀλλὰ καὶ ΚΥΡΙΛΛΟΣ ὁ Ἀλεξανδρ: ἐν τῷ περὶ Πίς: Βιβλ:  
 τῷ ταῖς Βασιλίσαι προσφωνηθέντι, ἐν τῷ Β'. Τόμ: τῶν Σωδοικ:  
 Μέρει Α'. τῶν Πρακτ: τῆς ἐν Ἐφέσῳ Σωόδου, Στήλη 240. (54)  
 „Εἰ δὲ δὴ καὶ ἐπ' αὐτῶ τοῦ Λόγου τὸ ἀπεσάλαθαι λαμβάνοιτο, χα-  
 „λεπαινέτω μηδεὶς ἕθους γὰρ τῇ Θεοπνεύστῳ Γραφῇ, καὶ ταῖς  
 „τοιαύταις ἐφ' ὅτε κεχρησθαι φωναῖς, καὶ ἐ τόποις τε καὶ περι-  
 „γραφαῖς τὴν Θεῖαν τε καὶ ὑπερκόσμιον ὑποφέρειν φύσιν· οἶδε  
 „γὰρ ἔσαν ἀσώματον, καὶ περιορισμῶν ἐπέκεινα, καὶ τοῦ ἐν τόπῳ  
 „νοεῖσθαι μακράν· φωναῖς δὲ μᾶλλον ταῖς ἀνθρωπίναις, τὰ ὑπὲρ  
 „νῦν ὄντα τὸν ἐν ἡμῖν, πειρᾶται καταδηλῆν. Ἐπεὶ καὶ αὐτὸς  
 „ὁ Σωτὴρ, πέμπειν ἔφασκε πρὸς ἡμᾶς τὸν Παράκλητον, καὶ τοι  
 „πληρῶντος τὰ πάντα τοῦ Ἁγ: Πνεύματος. Πνεῦμα γὰρ Κυρίως,  
 „Φησί, πεπλήρωκε τὴν οἰκουμενίαν;.

Ὁ δὲ τῆς Ἐπιτομῆς Συγγραφεὺς τῆς κατὰ τῶν Ἀρειανῶν,  
 παρὰ Σιρμόνδῳ, Σελίδι 107. „Ἀλλὰ τυχόν τις ἐρεῖ: Διὰ δὴ  
 „τὸτο ἔλαττον, ὅτι πεμπόμενον ἀναγινώσκεται (τὸ Πνεῦμα τὸ  
 „Ἅγιον) — πισθεῖν οἷον τε πέμπεσθαι, τὸ ἀπανταχῶ παρῆναι  
 „γινωσκόμενον, ὡς ὁ Ψαλμογράφος Φησί: πῶ πορεύω ἀπὸ τοῦ  
 „Πνεύματος Σ, καὶ ἀπὸ τοῦ Προσώπου Σ πῶ φύγω;.

Καὶ ἈΜΜΩΝΙΟΣ δὲ, ἐν τῇ Σειρᾷ τῶν Γραικῶν Πατέρ: τῇ  
 εἰς τὸν Ἰωάννῳ εἰς τὸ ΙΔ'. Κεφάλ: „Οὔτε δὲ τὸ Πνεῦμα πέμ-  
 „πεται· ἀλλ' αὐθεντικῶς ἐφίσταται τὸ πανταχῶ ὄν. Ἀλλὰ τὸτο  
 „εἶπε, δεικνὺς τῆς παρυσίας τὸν καιρὸν· εἰμὴ γὰρ ἐτύθη ὁ Χρι-  
 „στὸς, καὶ ἐλύθη ἡ ἀμαρτία, ἐκ ἂν ἐπεφοίτησε τοῖς πιστοῖς τὸ  
 „Πνεῦμα;.

Καὶ

(54) Παρὰ Βινίῳ ἐν Τόμ: Β'. Σελ: 126. 127.

Καὶ ΣΕΒΗΡΙΑΝΟΣ δὲ τελούταϊόν, τῷ Θεοφυλάκτῃ τῷτον ἀνακαλῶντος ἐν τῷ Ὑπομνήματι τῷ εἰς τὰς Πράξεις, Κεφ: Β'. Σελ: 32. τῆς ἐν Κολων: Ἐκδ: Ἐτ: 1568. (55) „Οὐκ εἶπεν, „ἐκχεῶ τὸ Πνεῦμα μου, ἀλλ' ἀπὸ τῷ Πνεύματός μου. Τὸ Πνεῦμα „ἐκ ἐκχεῖται,,

Ὅπως ἔν τὸ Πνεῦμα πέμπεται τὸ Ἅγιον, ῥᾶστα καὶ ἐκ τῶν εἰς τὸδε εἰρημένων, συμβαλεῖν ἐσι. Πῶς γὰρ τὸ Πνεῦμα ἀνυξοῦται διώκται, μειᾶται, σβέννυται, ἀποχωρεῖν; Πῶς, πρὸ τῷ δοξασιῶν τὸν Κύριον ἐκ ἡμῶν; Πῶς σὺ Πατρὶ καὶ Υἱῷ τοῖς πιστοῖς ἐπεδήμησεν ἃ δὴ πάντα ἡ Θεία διδάσκει Γραφή· εἰμὴ διὰ τῶν δωρημάτων τῆς χάριτος; Διὰ τῷ ἐν Ψαλμῷ ΞΖ'. λέγεται, ὅτι ὁ Σωτὴρ ἐν τῇ Ἀναλήψει ἔλαβε δόματα ἐν ἀνθρώποις. „Ἀνέβης, φησὶν, εἰς ὕψος· ἡ χιμαλῶτόβσαν αἰχμαλιωσίαν „ἔλαβες δόματα ἐν ἀνθρώποις,,. Ἐτι δ' ὁ Σωτὴρ ἐπαγγέλλεται πέμψαι τὸ τῷ Ἅγ: Πνεύματος διώκων. Οὕτω γὰρ ἐν τῷ κατὰ Λουκᾶν Κεφ: ΚΔ'. „Μένετε, φησὶν, ἐν Ἱερουσαλὴμ, ἕως ἃ ἐν- „δύσηται διώκων ἐξ ὕψους. Καὶ λήψεσθε διώκων ἐξ ὕψους, „ἐπελθόντος τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος ἐφ' ὑμᾶς. Καὶ Πράξ: δὲ Β'. „Βαπτισθήτω ἕκαστος ὑμῶν ἐπὶ τῷ ὀνόματι Ἰησοῦ Χριστοῦ, εἰς „ἁφῆσιν ἁμαρτιῶν,,. Καὶ λήψεσθε τὸ δωρεῶν τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος. Ἐνθεντοὶ τὸ αὐτὸ καὶ οἱ Πατέρες κοινῇ διδάσκουσιν.

ἈΘΑΝΑΣΙΟΣ ἐν Ῥήσεσι καὶ Ἑρμηνείαις Παραβολῶν τῷ Ἁγίῳ Εὐαγγελίῳ, Ἐρωτήσ: ΚΘ'. Τόμ: Β'. τῶν Συγγραμ: Σελ: 400. Διαλεχθεὶς περὶ τῷ τῷ Ἅγ: Πνεύματος ἐκχύσεως, τῆς ἐπὶ τὸς Ἀποστόλους κατὰ τὸ Πεντηκοστῶν, καὶ ἐπικρίνων τὸ ῥηθέν: „Ἑμεῖς δὲ βαπτισθήσεσθε ἐν Πνεύματι Ἁγίῳ, καὶ λήψεσθε δύ- „ναμιν, ἐπελθόντος τῷ Ἅγ: Πνεύματος ἐφ' ὑμᾶς. Καὶ τό: ἔπω „γὰρ ἡμῶν Πνεῦμα Ἅγιον, ὅτι Ἰησοῦς ἐδέπω ἐδοξάσθη. Πνεῦμα, „φησὶν, Ἅγιον ὀνομάζει, ἃ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος τὸ Ὑπόστασιν. „Αὐτὸ γὰρ ἡμῶν τε αἰεὶ, καὶ ἔστι, καὶ ἔσται· ἀλλὰ τὸ τῷ Ἁγίῳ „Πνεύματος χάρισμα· ὅπερ, κατὰ τὸν δεκάτῳ ἡμέραν τῆς Ἀνα- „λήψεως, Πεντηκοστῶν δὲ τῆς Ἀναστάσεως, ἐπὶ τῷ Χριστῷ Μα- „θηταῖς κατεφοίτησεν,,.

Ὁ δὲ Χρυσόστομος ἸΩΑΝΝΗΣ, ἐν Ὁμιλ: τῇ περὶ τῷ Ἁγίῳ τε καὶ προσκυνητῷ Πνεύματος, περὶ τὸ τέλος, ἐν τῷ 5'. Τόμ: τῶν Συγγραμ: Σελ: 225. (56) „Ὅταν ἔν λέγῃ (ὁ Υἱὸς) πέμ- „ψω ὑμῖν τὸ Πνεῦμα, τὸ Ἅγιον· τῇ τέσει, τὸ δωρεῶν τῷ Πνεύ- „ματος. Καὶ ἵνα μάθητε ὅτι ἡ δωρεὰ πέμπεται, τὸ δὲ Πνεῦμα „ἐκ

(55) Ἐπὶ τῆς Ἑνετίῃσιν ἐκδόσεως Ἐκδόσ: τῆς ἐν Ἐτ: 1758. Τόμ: Γ'. Σελ: 26.

(56) Κατὰ τὸν Μοντφάλλον: Ἐκδ: ὡς εἴρηται, ἐν Τόμ: Γ'.

„ἐκ ἀποσέλλεται, ὁ Σωτὴρ λέγει τοῖς Ἀποστόλοις: μείνατε εἰς  
 „Ἱερουσαλὴμ, ἕως ἂν ἐνδύσηθε δυνάμιν ἐξ ὕψους καὶ λήψετε  
 „δυνάμιν ἐπελθόντος τοῦ Ἁγίου Πνεύματος ἐφ' ὑμᾶς. Ἄλλῃ ἢ δύ-  
 „ναμις ἢ χορηγημένη, ἄλλο τὸ Πνεῦμα τὸ χορηγῶν, διαιρῶν  
 „ἰδίᾳ ἐκάσῳ καθὼς βέλεται. Σὺ μὲν ἔν, ἐ δυνή δέξαι πεμ-  
 „πόμενον τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ὑπὸ γυνυῆς τῆς Θεότητος. —  
 „Καὶ ἔπειτα: τὴν Ἀποστολὴν ὁ Αἰρετικὸς εἰς ὕβριν λαμβάνει.  
 „Ἀπέστειλεν ὁ Πατὴρ, ἐ μετασᾶς, ἐ μετασῆσας. Ἀπέστειλεν  
 „ὁ Ὑῖος τὸ Πνεῦμα, ἐ διαιρῶν, ἐ διαιρεθείς. Διὰ τοῦτο ἡ Γραφή  
 „φησὶν: Ἐξέχεεν ὁ Θεὸς τὸ Πνεῦμα αὐτοῦ ἡγῶν τὴν δωρεάν  
 „τοῦ Ἁγίου Πνεύματος. Θεότης ἐκ ἐκχέται, ἀλλ' ἡ δωρεά. Διὰ  
 „τοῦτο ἵνα δειχθῇ, ὅτι τὸ ἐκχωρούμενον ἐ Πνεῦμα Ἅγιον, ἀλλὰ  
 „Πνεύματος Θεῶς χάρις, λέγει ὁ Δαβὶδ τῷ Χριστῷ: ἐξεχύθη  
 „χάρις ἐν χείλεσί σου· χάρις ἐκχέται, ἐχ ὁ-δωρέμενος τὴν χά-  
 „ριν. Μετὰ δὲ τὸ κατ' ἀρχὰς τοῦ αὐτοῦ λόγου, ἐς πλάτος δεῖ-  
 „ξαι, ὅτι τὰ τοῦ Ἁγίου Πνεύματος χαρίσματα, τῷ τοῦ Πνεύματος  
 „ὀνόματι ἡ Θεῖα Γραφή ἐπιγνωρίζει, τέως ὑποσιωπάται: „Οἱ δὲ  
 „Αἰρετικοὶ ἀγνοήσαντες, ὅτι, ὅταν λέγῃ, Πνεῦμα Ἁγιοσύνης,  
 „ἢ Ἐπαγγελίας, τῶν δωρεῶν μέμνηται· αὐτοὶ ἐπὶ τὴν φύσιν  
 „ἀνάγκη, λέγοντες: ὅτι ὁ Θεὸς ἔδωκε, καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγ-  
 „ιον ἔδωκεν. Εἶδες, φασὶν, ὅτι δῶρον ἐστὶ τοῦ Θεοῦ; ἀνέγνω τὰ  
 „τῶν δωρεῶν, καὶ εἰς τὴν φύσιν ἀνήγαγον. Δέον νοῆσαι, τίνα  
 „τὰ ὀνόματα τὰ τὴν φύσιν δηλῶντα, καὶ τίνα τὰ ὀνόματα τὰ  
 „τὴν χάριν ἐρμηνεύοντα. „

Ὁ δὲ ἈΓΓΟΥΣΤΙΝΟΣ Λόγος ΚΒ'. ὅς ἐστιν ὁ Γ'. τῶν εἰς  
 τὴν Πενήκοντον, ἐν τῷ Παραπληρώματι τῶν Ἀντιόχειων Συγγραμ-  
 τῶ ἐν Παρισίοις ἐκδοθέντι Ἐτα 1654. Τόμῳ Α'. Σελίδι 54.  
 „Τί τοίνυν βέλεται σημαίνειν τό: ἐ δυνάται αὐτὸς ἐλθεῖν, ἐάν  
 „ἐγὼ μὴ ἀπέλθω; Συμφέρει γὰρ, φησὶν, ἵνα ἐγὼ ἀπέλθω  
 „ἐάν γὰρ ἐγὼ μὴ ἀπέλθω, ὁ Παράκλητος ἐκ ἐλθούσεται πρὸς  
 „ὑμᾶς. Τί τοίνυν ἐστὶν; Ὅσον αὐτοὶ ἦτοι χωρῶμεν, ἢ  
 „ὑπολαμβάνομεν, ἢ, αὐτὸς διδόντος, κατανοῶμεν, ἢ, ἃ πισύομεν  
 „λαλῶμεν, σωτόμας δεχέσθαι ἢ ὑμετέρα ἀγάπη. Δοκεῖ μοι ὡς  
 „οἱ Μαθηταί, πρὸς τὴν κατὰ τὸ ἀνθρώπινον τοῦ Κυρίου μορφῇ  
 „τὸν νῦν ἀχολέμενοι, ἅτε δὴ ἄνθρωποι ὄντες, ἀνθρωπίνης ἐνεί-  
 „χοντο διαθέσει ἐννοίας τῆς πρὸς τὸν ἄνθρωπον. Ἐβόλετο ἔν  
 „αὐτοῖς μάλλον ἐξέχεσθαι διαθέσεως Θεοτέρας, καὶ ἔτις ἐκ  
 „σαρκικῶν ποιῆσαι πνευματικῶν· ὅπερ ἐ γίνεται ἄνθρωπος, εἰμὴ  
 „τῇ τοῦ Ἁγίου Πνεύματος δωρεᾷ τε καὶ χάριτι. Καὶ τοῦτο ἄρα  
 „φησὶ: πέμψω ὑμῖν τὴν δωρεάν, δι' ἧς ἂν γένοιθε Πνευματικοί·  
 „τὴν δωρεάν, δηλονότι, τοῦ Ἁγίου Πνεύματος. Πνευματικοὶ δὲ  
 „γενέσθαι ἐ τοὶ δωρήσεσθε, ἐάν μὴ Σαρκεῖοι εἶναι παύσησθε. „

Καὶ



Καὶ ἐν τῇ ΟΔ'. δε Πραγματεία τῶν εἰς τὸν Ἰωάννῳ. „Οὐδ' „αὐτὸ διαιρεῖται τὸ Πνεῦμα, ἀλλ' αἱ δωρεαὶ διὰ τῆς Πνύματος. „Καὶ γὰρ διαιρεῖται εἰς χαρισμάτων, ὁ δὲ αὐτὸς Κύριος,.

Καὶ ὁ Μέγας δὲ ΛΕΩΝ ὁ Ῥώμης Πάπας, ἐν τῷ Γ'. Λόγ: τῷ εἰς τὴν Πεντηκοστῇ: „Ἡ τῆς Ἁγίας Πνύματος ἡλπίζετο ἐπι- „δημία, ἐπεὶ ὁ Κύριος αὐτὸ ἐπαγγειλάμενος ἦν, ὅτι παρέσεται. „Οὐχ ἵνα τότε δὴ πρῶτον ἐν τοῖς Ἁγίοις ἐνοικεῖν ἄρξηται· ἀλλ' „ἵνα τὰ καθιερωθέντα αὐτῷ ἑρῶνα, καὶ θερμότερον ἐξάψει, „καὶ δαψιλέσῃ ἐπικλύσειεν, ἐπισωρῶν τὰ ἑαυτῆς χαρίσματα· „ἔκταν μὲν ἀρχόμενον, ἔδὲ διὰ τῆς νεοργῶν τὴν ἐνέργειαν, ὅτι „πλεσιώτερον ἢ τὴν δαψίλειαν,.

Ὁ δὲ ΘΕΟΔΩΡΟΣ ὁ Ἡρακλείας Ἐπίσκοπος (57). Ἐν τῇ τῶν Γραικῶν Πατέρ: Σειρά, τῇ εἰς τὸ Κ'. Κεφ: τῆς Ἰωάννης: „Πνεῦμα, τὴν πνύματικὴν χάριν καλεῖ, εἰπὼν, λάβετε Πνεῦμα „Ἅγιον: διὰ τὸ Πνύματικὸς ἀπεργάζεσθαι τὰς ἀκρόντας, ὡς „προλαβὼν αὐτὸς ἔφη: τὰ ῥήματα ἃ λελάληκα ὑμῖν, Πνεῦμα „ἐστὶ καὶ ζωή. Εἰ ἔν τὰ ῥήματα ἃ αὐτὸς ἐλάλησε, Πνεῦμα κα- „λεῖ τετέστι Πνύματικά· πῶς ἔχει μᾶλλον τὸ τηλικῶτον χαρι- „σμα, Πνεῦμα ὁμωνύμως προσαγορεύσει,;

Καὶ ΦΟΥΛΓΕΝΤΙΟΣ δὲ, ἐν τῷ Β'. Βιβλ: πρὸς Μόνιμον· Κεφ: 5'. ἐν Τόμ: 5'. τῆς τῶν Πατέρ: Βιβλιοθ: τῆς ἐν Κολων: Σελ: 24. „Οὐδὲ τῆς Υἱῆς, ἔδὲ τῆς Ἁγίας Πνύματος τὴν Ἀποσο- „λὴν, ὡς τοπικῶς γενομένην θέμις τινὰ τῶν Χριστιανῶν ἐκλα- „βεσθαι· τῷ δὲ τῆς Ἀποσολῆς, ὀνόματι ἔργον νοήσομεν τῆς συγ- „χωρηθείσης παραδηλώσεως. Οὕτω γὰρ, ἔχει τοπικῶς ἀπεσάλη „ὁ Υἱὸς, ἔδὲ τοπικῶς πέμπεται τὸ Ἅγιον Πνεῦμα. Ὡστερ ἔν, „ἔδ' αὐτῆς τῆς Πατρὸς τοπικὴ ὁμοίως ἐστὶν ἢ ἐπέλδοσις. Ἐπεὶ „μέντοι ὁ Υἱὸς τοῖς αὐτὸν ἀγαπῶσιν, ἔ μόνον τὴν ἑαυτῆς, ἀλλὰ „καὶ τὴν τῆς Πατρὸς ἐπέλδοσιν ἐπαγγέλλεται· φησὶ γάρ: αἵτις „ἀγαπᾶ με, καὶ τὸν λόγον μου τηρήσει, καὶ ὁ Πατήρ μου ἀγαπήσει „αὐτὸν, καὶ πρὸς αὐτὸν ἐλδοσόμεθα, καὶ μονίῳ παρ' αὐτῷ ποιή- „σομεν. Ὡστερ τοίνυν ὁ Πατήρ καὶ ὁ Υἱὸς ἑδαμόθεν ἀπεισι, „καὶ μέντοι γε πρὸς ὃν βάλονται ἔρχονται· διὰ γὰρ τῆς χάρι- „τος ἔρχονται, οἱ κατὰ τὴν δυνάμιν ἑδαμόθεν ἀπόντες· ἔτω καὶ „ἐπὶ τῆς Ἀποσολῆς, ἢ ἐπιδημίας τῆς Ἁγίας Πνύματος, ἔδὲ μία „κίνησις αὐτῆς τοπικὴ ἐστὶ νοητέα, ἀλλὰ τὸ τελέμενον πρὸς ἀγία- „σμον.

(57) Ἀπὸ τῆς ἐν τῇ Θράκῃ Ἡρακλείας, τῆς πρὶν Περὶνθ καλεμένης ὁρμώμενος, καὶ ταύτης δ' ἔπειτα ἐπισκοπήσας, ἐκάτερον ἐπιλέγεται: καὶ Ἡρακλεώτης Θεόδωρος, καὶ Ἡρακλείας· τὸ μὲν, ἀπὸ τῆς ἐνεγκαμένης· τὸ δὲ, ἀπὸ τῆς ἐπιστάσεως τῆς Ἀξιώματος. Καὶ ἡμαρξεν μὲν περὶ τὸ 334. ἐτελεύτα δὲ περὶ τὸ 358. τῶν Ὁμοισιασῶν, ἦτοι τῶν Ἡμιαρειανῶν ἔτος τῆς λύμης μετεληχῶς τῆς Φρονήματος.

Τόμ: Β'.

Μ



„σμὸν ἡμῶν ἐς πισυότεον,,. Καὶ ἐν Κεφαλ: δὲ Ζ'. „Διὰ τῶ-  
 „το, ὡς φησὶν ὁ Ἀπόστολος, τὰ πνῶματικὰ τοῖς Πνῶματικοῖς  
 „συγκρίνοντες, κὶ ἐν τῷ Πνῶματι, ὃ δὴπερ τῇ φύσει Θεὸς ἐστὶ,  
 „μηδὲν σωματικὸν, μηδὲν τοπικὸν, μηδὲν χρονικὸν, μηδὲν με-  
 „ταβλητὸν ἐννοῶντες, ἡγεῖσθαι ὁφείλομεν, τῷ τῷ Ἁγίῳ Πνῶμα-  
 „τος ὀνόματι, τὰς τῆς Πνῶματικῆς χάριτος δωρεὰς ἔσιν ὅτε  
 „ὑποσημαίνεσθαι. Καὶ γὰρ ἐν τῷ Βιβλ: τῶν Βασιλειῶν ἀναγι-  
 „νώσκουμεν, ὅτι τῷ Ἡλίου τῆς Θεᾶς μέλλοντος μετατεθείσεσθαι  
 „ὑπεργίας, καὶ τὸν Μαθητῶν πρὸ τῷ ἀναληφθῶναι, ὅ,τι ἂν καὶ  
 „βέλοιο θάρρεῖν κελεύσαντος ἐξαυτήσεσθαι ἔτος, τῷ ἔπερ Ἡλίου  
 „μετῶ Πνῶματος, τὸ διπλὲν ἐαυτῷ ἐξητήσατο ἐπιχορηγηθῶναι.  
 „Εὐθα δὴπερ, ὑπὸ τῇ τῷ Πνῶματος ὀνομασίᾳ, ἔδεν ἄλλ', ἢ  
 „τῷ δωρεὰν δηλῶσθαι νοῶμεν τῆς Πνῶματικῆς χάριτος. Οὐδὲ  
 „γὰρ ἢ τῷ Θεῷ Πνῶματος ἔσῃα ἐπαυξάνεσθαι δῶαται, ἔθ' ὑπο-  
 „μεῖσθαι. Ὡς γὰρ ἀναρχὸν τε καὶ ἀτελεύτητον αὐτὸ, αἰώνιον  
 „ὄν, διὰ δὴ τῷ καὶ ἀναυξήτως καὶ ἀπαραμειώτως ἐστὶν ὑπερ-  
 „τέλειον,,.

Καὶ ὁ ΣΕΒΗΡΙΑΝΟΣ δὲ (58) παρὰ τῷ Θεοφυλάκτῳ, ἐν  
 τοῖς ἡδὴ προενωγμένοις κατόπιν ἐκείνοις ῥήμασιν: „Ὅτι ὁ τὸ  
 „Πνεῦμα ἐκχεῖται, ἄλλ' ἢ δωρεὰ ἢ τῷ Πνῶματος,,.

Καὶ ἸΣΙΔΩΡΟΣ ὁ Ἰσπαλεὺς (59) ἐν τῷ Α'. Βιβλίῳ τῶν  
 Ἀποφάνσεων, Κεφαλ: ΙΕ'. „Ἡ τῷ Ἁγίῳ Πνῶματος δωρεὰ, ἐν  
 „τοῖς μέλεσι τῆς Ἐκκλησίας καθ' ἑκάστα διανέμεται, κὶ ἐκάστοις  
 „τῶν χαρισμάτων ἑκάστα, χορηγεῖται. Χριστὸς δὲ, ὅλον ὡς ἔχων  
 „τῶν χαρισμάτων τὸ πλήρωμα, περὶ ὃ γέγραπται, ὅτι πλήρης  
 „χάριτος καὶ ἀληθείας. Ἐν τῷ Χριστῷ ἄρα τῶν χαρισμάτων  
 „ἅπαν τὸ πλήρωμα τῶν γὰρ ἐκλεκτῶν ἐκάστοις, ἑκάστα χαρί-  
 „σματα ἐπινέμεται,,.

Τὰ δὲ δὴ τῷ ΑΥΓΟΥΣΤΙΝΟΥ, ἐκ τῆς ΟΔ. τῶν εἰς τὸν  
 Ἰωάννῳ, ἀρτίως προενεχθέντα, ἐπαναλαμβάνει κὶ ΒΕΔΑΣ ἐν  
 τῷ Ὑπομνήματι τῷ εἰς τῷ πρὸς Ῥωμ: Ἐπιστολῷ, Κεφαλ: ΙΒ'.  
 κὶ ἈΛΒΙΝΟΣ δὲ ὁ Ἀλκεῖνος, Βιβλ: Β'. περὶ Τριάδος, Κεφ: ΚΒ'.  
 „Τὰ τῷ Ἁγ: Πνῶματος δῶρα, τοῖς τῆς Ἐκκλησίας μέλεσι καθ'  
 „ἑκάστα διαιρεῖται, καὶ ἐκάστοις ἑκάστα τῶν χαρισμάτων ἐπιχο-  
 „ρηγεῖται.

(58) Οὗτος δὴ Γαβάλων ὡς τῶν κατὰ Συρίαν Ἐπίσκοπος ἠκμαζε δὲ περὶ τὸ 401.  
 Σώτηριον ἔτος ὅτε καὶ ἐν τῇ Κωνσταντίνῃ διατρέξων, καὶ περὶ Λόγους τῶν ἐπ'  
 Ἐκκλησίας τῷ Λαῷ ἐκφωνημένους εὐδοκιμῶν, αὐτοῖς τε τοῖς Βασιλεῦσιν ἐκ ἀγνοή-  
 μενος ὡς, καὶ πολλῶν καὶ παρὰ τῷ τῷ Ἐκκλησίαν τότε διέποντι Χρυσόμῳ  
 ἀπολάων ἐνοσίᾳ. Καί τοιγε, πρὸς τὸν Θεωπέσιον Ἄνδρα ὕστερον ἐκ ἐγνωμένως  
 προσενεχθῆναι ἰστένηται, τοῖς κατ' ἐκείνους φερομένοις συμφαιδιάσας τοῖς περὶ Θεό-  
 φιλον δηλ.: καὶ Ἀντίοχον.

(59) Περὶ ὃ καὶ ἐν τῇ Γ'. Πραγμ: Παραφθ: ΛΓ'. Σημ: (42).

„ρηγείται. Ἐν γὰρ Χριστῷ μόνῳ ἅπαν τὸ τῶν χαρισμάτων πλήρωμα, ἔτι δὲ καὶ πᾶν τὸ πλήρωμα τῆς Θεότητος αὐτῷ ἐνοικεῖ. ὁθεν, καὶ πλήρης χάριτος καὶ ἀληθείας κυρήτῃται πρὸς τὴν Εὐαγγελισθ. Ἐν τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι, ἡ τῶν δωρεῶν ἅπαντα, χάρις σωίζεται. Αὐτὸ γὰρ, ὡς βέλεται τὰς τῶν δωρημάτων, ἐπιδαψιλεύεται χάριτας· καὶ τοῖς μὲν δίδωσι λόγον Σοφίας, τοῖς δὲ Ἐπισήμης, τοῖς δὲ Πίσιν· καὶ ἕτως ἐνὶ ἐκάστῳ ἐν τῇ τῇ Πνεύματος διδάμει, κατὰ τὴν Θελήσιν τῇ δωρεαμένῃ ἡ χάρις δίδεται. Καὶ μετὰ βραχέα, Στήλη 736. „Ἀλλ' ἐχὶ νῦν ὡς πάλαι τὰ τῇ Πνεύματος ἐν ἀνθρώποις χαρίσματα. Ἐν γὰρ τῷ Ἰσραὴλ, ὀλίγοις τὰ τῇ Ἁγίῃ Πνεύματος ἐξελαμψε δῶρα, διὰ τινῶν Συμβόλων, ἢ Προφητῶν· τὰ νῦν δὲ, ἐν παντὶ τῶν πισυόόντων τῷ πλήθει ἡ τῇ Ἁγίῃ Πνεύματος ἐκχεῖται χάρις, κατὰ τὸ Θελημα τῇ διανέμοντος Θεῷ· καὶ τῷτο ἐστὶν ὅπερ ἐν τῷ Εὐαγγελίῳ λέγεται: Ὅτι ἐπὶ νῦν Πνεῦμα Ἁγίον, ἐπὶ γὰρ ὁ Ἰησοῦς ἐδοξάσθη. Ὡςπερ γὰρ σώματος ἐνὸς τὰ μέλη, ἔργα μὲν κεκλήρωται διαφέροντα, μία δ' ἡ ψυχὴ ἡ ἐν ἅπασιν ἐνεργῶσα καὶ διδωδύσασα, καὶ τὸ ποιητέον ἐκάστῳ τῶν μελῶν ἐπινέμεσθαι· ὁφθαλμῷ μὲν ὁρᾶν, χερσὶ δ' ἐργάζεσθαι, ποδὶ δὲ βαδίζειν, ὡτὶ δ' ἀκθεῖν. Οὕτω ποικίλα καὶ τοῖς πισυόουσιν ἐστὶ τὰ χαρίσματα, οἷα δὴ μέλεσι, κατὰ τὸ ἴδιον ἐκάστῳ μέτρον διανεμόμενα. Καὶ τοι· γὰρ· ἐν ἅπαντι τῶν πισυῶν τῷ πλήθει, αἱ τῶν δωρημάτων χάριτες εἰσὶ διαφέρουσιν, ἀλλ' ἐν οἷονεὶ σῶμα ἡ Ἐκκλησίᾳ ἐστὶ, δι' ἐνὸς Πνεύματος συγκεκολλημένον τε καὶ σωημμένον, ἐν ἐνὶ σωδέσμῳ ἀγαπήσεως. Καὶ εἰς τὸ Πρῶτον δὲ τῇ Ἰωάννῃ, πρὸς ἐκεῖνα δὴ: „Ἐκ τῇ πληρώματος αὐτῇ ἡμεῖς πάντες ἐλάβομεν: Σύμπαντες οἱ Ἁγιοι, ἐχὶ τὸ πλήρωμα τῇ Πνεύματος αὐτῇ, ἀλλ' ἐκ τῇ πληρώματος αὐτῇ, ὅσον αὐτὸς δίδωσι, λαμβάνουσι. Τῷ μὲν γὰρ διὰ τῇ Πνεύματος, δίδεται λόγος σοφίας, τῷ δὲ λόγος ἐπισήμης, κατὰ τὸ αὐτὸ Πνεῦμα. „

Ὁ δὲ ΜΑΡΚΟΣ ὁ Ἐρημίτης (60) ἐν τῇ Ἀποκρίσει τῇ πρὸς τῆς ἐνδοιάζοντος περὶ τῇ Θεῷ Βαπτίσματος. Ἐν Ἑρωτ: „Πῶς πρὸ βραχέος εἶρηκας, ὅτι τελείως ἐνοικεῖ ἐν ἡμῖν τὸ Πνεῦμα; (ἐν τῷ Α'. Τόμ: τῇς Βιβλιοθ: τῶν Γραικῶν Πατέρ: Σελ: 931.) „Ἀπαρ-

(60) Τῷτον κατὰ τὴν Δ'. Ἐκατονταετηρίδα γενόμενον, καὶ ὑπὲρ τὰ ἐκατὸν ἔτη ἐν τῇ Ἀσκήσει διαβιώσαντα (περὶ ὃ ἠωζόμενος ἐν τῷ 5'. Βιβλ: Κεφαλ: ΚΘ'. Καὶ Παλ- λάδιος ἐν τοῖς Λαυσαϊκοῖς Κεφαλ: Κ'. καὶ ΚΑ'. Καὶ Νικηφόρος Βιβλ: ΙΔ'. Κεφ: ΝΔ'.) ἐχρή συγγέειν τῷ Ὁμωνύμῳ, τῷ ἐπὶ τῇ Αὐτοκράτορος Λέοντος, ἐν Ἑτε- 900. περιέντι τῷ βίῳ. Περὶ ὃ Ζωναράς εἰς βίον Λέοντος· καὶ ἐξ αὐτῇ ὁ Γλυ- κας, καὶ Κωνσταντῖνος ὁ Μανασσῆς διελήφατον.)

„Απαρχὴν εἶπον, ὃ μέρος τι τῆ ὅλης, ὃδ' ὡς τομὴν τινα τῆ Πνύ-  
 „ματος εἰσάγων· (ἔτε γὰρ τέμνεται, ἔτε ἀλλοιᾶται) ἀλλὰ τὸ  
 „ἡμῶν χωρητικὸν ἐμφαίνων, μὴ διωάμενον χωρῆσαι πᾶσαν τὴν  
 „τῆ Πνύματος ἐνέργειαν· εἰμὴ διὰ τῆς τελείας ἐντολῆς· τῆς  
 „διὰ θανάτου. Εἶπερ, καὶ ὁ ὑπὲρ ἀληθείας Χριστὸς θάνατος, ἐν-  
 „τολὴ Θεοῦ ἐστίν. Ὡς περ ἐν ὁ ἥλιος ὢν τέλειος, τελείαν, καὶ  
 „ἀπλὴν, καὶ ἴστω ἅπασιν τὴν ἑαυτοῦ χάριν ἐπιβάλλει· λοιπὸν δὲ  
 „ἕκαστος, καθ' ὅσον ἔχει τὸ ὄμμα κεκαθαρμένον, κατ' αὐτὸν καὶ  
 „εἰς Λαϊκὸν εἰσδέχεται φῶς· ἔτω καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, πασῶν  
 „μὲν ἐνεργειῶν καὶ δωρεῶν τὰς πισθύνοντας αὐτῷ, δεκτικὰς ἀπὸ  
 „τῆς Βαπτίσματος ἐποίησε· λοιπὸν δὲ καὶ πᾶσιν ὁμοτίμως τὰς  
 „δωρεὰς ἐνεργεῖ, ἀλλ' ἐκάστω πρὸς ἀξίαν, κατὰ ἀναλογίαν τῆς  
 „ἐργασίας τῶν ἐντολῶν, ὅσον μαρτυρῆσαι τοῖς ἀγαθοῖς ἔργοις,  
 „καὶ φανεροποιῆσαι τὸ μέτρον τῆς ἐν Χριστῷ πίσεως,,

Καὶ ΛΟΜΒΑΡΔΟΣ δ' ἐμνήσθη τῶν Βέδα ῥημάτων αὐτὸ τῆ-  
 „το σημαίνοντων, ἐν τῷ Α'. Βιβλ.: τῶν Ἀποφάνσ: Διαιρ: ΙΔ'.  
 „Εἰσὶ δέ τινες, οἳ φασὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ἅτε δὴ Θεὸν, αὐτὸ  
 „μὴ δίδοσθαι· ἀλλὰ τὰ χαρίσματα αὐτοῦ, ἅπερ ἐκ ἑστίν αὐτῷ τὸ  
 „Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. Καὶ, ἡ φασὶ, τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγ: λέγεται  
 „δίδοσθαι μετὰ τῆς χάριτος αὐτοῦ, ἥτις ἀλλ' ἐν, ἐκ αὐτοῦ δὲ, τὸ  
 „τοῖς ἀνθρώποις ἐστὶ διδόμενον. Καὶ τῆτο λέγεσθαι ἐννενοηκέναι  
 „Βέδαν ἐν τοῖς ἀνωτέρω ῥήμασι· δι' ὧν φάσκει τὸ Ἅγιον Πνεῦ-  
 „μα ἐκπορεύεσθαι, ἐπειδὴ τοῖς ἀνθρώποις χορηγεῖται ἡ χά-  
 „ρις αὐτοῦ. Ὡς εἰ γε μὴ τῆτο, ἀλλ' ἡ αὐτοῦ χάρις εἴη τὸ χο-  
 „ρηγούμενον ..

Ἐνθεντοι καὶ ὁ Πατὴρ, καὶ ὁ Υἱὸς, ἐκ ἄλλως εἰμὴ κατὰ  
 „τὰς δωρεὰς τῆς χάριτος, ἥτοι τῆς ἐν τῇ χάριτι ἐνεργείας· ἡ  
 „(ὅπερ εἰς ταυτὸ ἦκει) κατὰ τὴν διὰ τῆς χάριτος ἐνοίκησιν, ἐν  
 „ἡμῖν παραγίνονται.

ῬΕΜΙΓΙΟΣ ὁ Ῥημῳσίος, ἐν τῷ εἰς τὴν πρὸς Κορινθ: Α'.  
 „Υπομνήματι αὐτοῦ, εἰς τὸ ΙΒ'. Κεφαλ: ἐν Τόμ: Ε'. Μέρει Γ'.  
 „τῆς τῶν Πατέρ: Βιβλιοθ: τῆς ἐν Κολων: Σελ: 889. „Ὁμολο-  
 „γητέον, ὡς εἰ καὶ πανταχῶς ὁ Θεὸς ἐστὶ, κατὰ τὴν τῆς Θεότη-  
 „τος διώαμιν, ἀλλ' ἐκ πανταχῶς ἐστὶ, καὶ κατὰ τὴν διὰ τῆς χά-  
 „ριτος ἐνοίκησιν. Καὶ ἐν οἷς δὲ διὰ τῆς χάριτος ἐνοικεῖ, ἐκ  
 „ἐνοικεῖ ἐπίσης,,

Καὶ ΦΟΥΛΓΕΝΤΙΟΣ δὲ, Βιβλ: Β'. πρὸς Μόνιμον, ἐν τοῖς  
 „ἀνωτ: ἐπενεχθεῖσιν: „Ὡς περ ὁ Πατὴρ καὶ ὁ Υἱὸς ἐδαμύθεν  
 „μὲν ἅπασιν, καὶ μὲν τοι γε πρὸς ὃν ἂν βεληθεῖεν ἔρχονται· διὰ  
 „γὰρ τῆς χάριτος ἔρχονται, οἳ μηδαμῶθεν τῇ διώαμει ἀπόντες·  
 „ἔτω καὶ ἐπὶ τῆς πέμψεως, ἡ τῆς τῆς Ἁγίας Πνύματος ἐπιδη-  
 „μίας, ἐδεμίαν αὐτοῦ κίνησιν τοπικῶς γίνεσθαι ἡγητέον, ἀλλὰ τὸν  
 „ἀγία-

„ἀγιασμὸν ἡμῶν πισυότέον τελεῖσθαι,,. Καὶ πρὸ δὴ τῶτων Α'Υ-  
 ΓΟΥΣΤΙ'ΝΟΣ ἐν 'Επισολῇ ΝΖ'. εἰ βραχὺ πρὸ τῆ μέσση: „Τὸν  
 „Θεὸν ὁμολογητέον ἀπανταχῆ μὲν παρῆναι, τῇ κατὰ τὴν Θεό-  
 „τητα παρσσία, εἰμὴ δὲ πανταχῆ καὶ τῇ ἐνοικήσει τῇ διὰ τῆς  
 „χάριτος. Διὰ γὰρ τὴν ἐνοικήσιν ταύτῃ, ἐνθα ἀναμφιβόλως  
 „ἡ χάρις ἐπιγινώσκεται τῆς αὐτῆς ἀγαπήσεως· εἰ Φαμέν: Πά-  
 „τερ ἡμῶν ὁ πανταχῆ παρὼν· καὶ τοι καὶ τῆτο ἀληθὲς ἐστίν·  
 „ἀλλὰ Πάτερ ἡμῶν ὁ ἐν τοῖς ἔρανοῖς· ἵνα τῆ νᾶς αὐτῆ, μᾶλλον  
 „ἐν τῇ προσδύχῃ ἐπιμνησθῶμεν, ὃ καὶ αὐτοὶ εἶναι ὀφείλομεν. —  
 „Επεὶ τοίνυν ὁ πανταχῆ παρὼν, εἰ ἐν ἅπασιν κατοικεῖ, ἐτι δὴ  
 „καὶ ἐν οἷς ἐνοικεῖ, εἰ ἐπίσης οἰκεῖ· καὶ γὰρ πόθεν ἐκεῖνο, ὅπερ  
 „Ἐλισαῖος ἠτήσατο, ἵνα διωδὸν γένηται ἐπ' αὐτὸν τὸ Πνεῦμα  
 „τὸ ἐπὶ 'Ηλιῶ; καὶ πόθεν ἐν ἅπασιν τοῖς Ἀγίοις, ἄλλοι ἄλλων  
 „εἰσὶν ἀγιώτεροι, εἰμὴ ἐκ τῆ ἐνοικον ἔχειν τὸν Θεὸν δαψιλέ-  
 „σερον,,;

Ἀλλὰ καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, τῆ Πατρὸς ἀνευ καὶ τῆ Υἱῆ  
 ἔστιν ἐδέποτε· εἰδ' ὁ Πατὴρ καὶ ὁ Υἱὸς, ἀνευ τῆ Πνύματος τῆ  
 Ἀγίης, πρὸς ἡμᾶς παραγίνονται. Αὐγυστῖνος καὶ γὰρ ἐν Βιβλ: Α'.  
 περὶ Τριάδος Κεφαλ: Θ'. μικρὸν ἀνωτέρω ἔφη: „Καὶ ἐγὼ πα-  
 „ρακαλέσω τὸν Πατέρα, καὶ ἄλλον Παράκλητον δώσει ὑμῖν, ἵνα  
 „ἡ μεθ' ὑμῶν εἰς τὸν αἰῶνα. Οὐκ ἄρα ἀποχωρήσει τῆ Πατρὸς  
 „καὶ τῆ Υἱῆ παραγενομένων, ἀλλ' ἐν τῇ αὐτῇ μονῇ σὺ αὐτοῖς  
 „εἰς τὸν αἰῶνα ἔσαι· ὅτι εἰδ' αὐτὸς ἐκεῖνων ἀνευ παραγίνεται,  
 „εἰδ' ἐκεῖνοι αὐτῆ ἀνευ. Ἀλλὰ πρὸς ἐνδειξιν τῆς Τριάδος, τῶν  
 „Προσώπων ἐτι καὶ καθ' ἑκαστα ὀνομαζομένων, λέγεται μὲν τινα  
 „χωρὶς καὶ ἰδίᾳ, εἰμὴ δὲ καὶ τῶν ἄλλων χωρὶς ἐννοεῖνται, διὰ  
 „τὴν τῆς αὐτῆς Τριάδος ἐνότητα, καὶ τὴν μίαν ἐσίαν τε καὶ  
 „Θεότητα, τῆ Πατρὸς καὶ τῆ Υἱῆ καὶ τῆ Ἀγίης Πνύματος,,.  
 Καὶ ἐν 'Επισολῇ δὲ ΝΖ'. πολὺ πρό γε τῆ μέσση: „Τίς τολμή-  
 „σειεν ὑπολαβεῖν, εἰμὴ ὁ τὸ ἀχώρισον τῆς Τριάδος πάντῃ ἀγ-  
 „νοῶν, ὅτι ἐνοικῆσαι ἐν τινι ὁ Πατὴρ εἰ διώεται, ἢ ὁ Υἱὸς, ἐν  
 „ᾧ μὴ ἐννοικῇ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον; ἢ ἐν τινι τὸ Ἅγιον Πνεῦ-  
 „μα, ἐν ᾧ μὴ παρῇ ὁ Πατὴρ καὶ ὁ Υἱός,,; Ἐκ τῶνδε ἐμφα-  
 νὲς ἄχρι τῆδε, ὅτι Λατίνων παῖδες παραλογίζονται, ὑπολαμβά-  
 νοντες τὸ Ἅγιον Πνεῦμα καὶ κατὰ τὴν Θεότητα πέμπεσθαι πα-  
 ρὰ τῆ Υἱῆ· μόνον γὰρ, ὡς ἀποδέδεικται, κατὰ γε τὰς δωρεὰς  
 καὶ τὴν χάριν, καὶ τὰς διὰ τῆς χάριτος ἐνεργείας, πέμπεται  
 τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον.

Κἀντεῦθεν δὲ οἱ Πατέρες κοινῇ διδάσκουσιν, ὅτι τὸ Πνεῦμα  
 τὸ Ἅγιον εἰ πέμπεται κατὰ τὴν ἐσίαν, ἀλλὰ κατὰ τὰς ὁρατὰς  
 μορφαὶς δι' ὧν ἐπεφάνη. Α'ΥΓΟΥΣΤΙ'ΝΟΣ Βιβλ: Β'. περὶ Τριάδ:  
 Κεφαλ: Ε'. „Εἴπερ εἴν, ἀπεσάλθαι λέγεται (ὁ τῆ Θεῆ Υἱὸς)  
 Τόμ: Β'. N „καθ'



„καθ' ὅσον ἐπεφάνη ἐν σωματικῷ κτίσματι ἔξωθεν, ὃς ἔσωθεν  
 „κατὰ τὴν Πνευματικὴν καὶ ἀσώματον φύσιν, ὀφθαλμοῖς θνητῶν  
 „αἰεὶ κέκρυπται· πρόχειρον ἤδη καὶ περὶ τῆς Ἁγίας Πνεύματος  
 „ἐννοεῖν, τί δὴ ποτε καὶ αὐτὸ πεμφθῆναι λέγεται; Ἐγένετο  
 „γάρ τινος κτίσματος εἶδος ἐν χρόνῳ, δι' ἧς ἐπερ ἂν ὁρατῶς τὸ  
 „Ἅγιον Πνεῦμα δεχθείη, εἴτε ἐπ' αὐτὸν τὸν Κύριον ἐν εἰδει σω-  
 „ματικῆς περισερᾶς κατελθόν· εἴτε, τῶν δέκα παρελθουσῶν ἡμε-  
 „ρῶν μετὰ τὴν Ἀνάληψιν, κατὰ τὴν ἡμέραν τῆς Πεντηκοστῆς,  
 „ἡνίκα ἦχε ἐξαίφνης ἀπ' ὕραν γενομένη, ὥσπερ φερομένης  
 „πνοῆς βιαίας, ὠφθησαν αὐτοῖς διαμεριζόμεναι γλῶσσαι ὡσεὶ πυ-  
 „ρός· ἐκάθισέ τε ἐφ' ἓνα ἕκαστον αὐτῶν. Αὕτη ἡ ἐνέργεια ὁρα-  
 „τῶς ἐκτυπωθεῖσα, καὶ θνητοῖς ὁμμασι παρασᾶσα, τῆς Ἁγίας  
 „Πνεύματος πέμψις εἴρηται. Οὐχ ὡς αὐτῷ ἐκείνῳ τῷ ἑστίαν  
 „ἐπιφανῶναι, καθ' ὃν καὶ αὐτὸ ἀόρατόν τε καὶ ἀμετάτρεπτον  
 „ἔστιν, ὡς ὁ Πατὴρ καὶ ὁ Υἱός· ἀλλ' ἵνα ὑπὸ τῶν ἐκτὸς ὁράσεων,  
 „αἱ τῶν ἀνθρώπων κινήσεις καρδίας, ἀπὸ τῆς τῆς κατὰ χρόνον  
 „ἐλθόντος ἐπιφανίας, ἐπὶ τὴν κρυφαίαν αἰωνιότητα τῆς αἰεὶ πα-  
 „ρόντος ἐπιστρέψωσιν.

Καὶ ὁ τῆς κατὰ Ἀρειανῶν δὲ ἘΠΙΤΟΜΗΣ Συγγραφεὺς,  
 ὁ τοῖς πέντε τῶν ὑπὸ Σιρμόνδου ἐκδεδομένοις ἐνάρθρος, Σελίδι  
 108. „Πισθεῖν δεῖ πέμπεσθαι τὸ πανταχῶς εἶναι ἐπιγινωσκόμε-  
 „νον, ὡς ὁ Ψαλμωδὸς Φησί: Πῶς πορεύσῃ ἀπὸ τῆς Πνεύματός Σου,  
 „καὶ ἀπὸ τῆς Προσώπου Σου πῶς φύγω; Ἀλλ' ὥσπερ Ἀποστόλη τῆς  
 „Υἱὸς ἡ Ἐνσάρκωσις ἀναφαίνεται (ἔτω καὶ ἡ τῆς Πνεύματος ἐπι-  
 „γινώσκεται πέμψις) ἐπειδὴν, ἥτοι ἐν εἰδει Περισερᾶς, ἢ διὰ  
 τοιούτων ἄλλων ποικίλων τεκμηρίων προσληφθέντων, ἑαυτὸ πα-  
 ραδηλῶσαι ἠξίωσεν.

Ὁ δὲ τὸ Σύγγραμμα φιλοπονήσας τῶν Εἰς. Ἐρωτήσεων  
 παρ' ΑἴΓΙΟΥΣΤΙΝΟΥ ἐν Τόμ: Δ'. Ἐρωτήσει Θ'. ΟΡΟΣΙΟΥ δια-  
 πιθανομένης: „Παρακαλῶ, πῶς ποτε φρονεῖς περὶ τῆς τῆς Ἁγίας  
 „Πνεύματος πέμψεως; μήποτε καὶ αὐτὸ τὸν ἄνθρωπον προσε-  
 „λάβετο, ἵνα ῥηθῇ, ὅτι ἀπέσαλται; Ἀπαντᾷ: „Ὡς περ ἐχὶ  
 „κατὰ τὴν ἑστίαν λέγεται, ἔτε ἀπεσαλμένος, ἔτε ἐλάσων ὁ  
 „Υἱός· ἔτως ἐδὲ τὸ Πνεῦμα. Τελούταῖον δὲ, καθάπερ ἐκείνος  
 „ἐλάσων, ἢ ἀπεσαλμένος διὰ τὸν ἄνθρωπον, ἔτω καὶ αὐτὸ διὰ  
 „τὴν Περισερᾶν, ἢ διὰ τὸ Πῦρ ἀπεσάλλθαι λέγεται. Ἀμέλει τοι,  
 „ἐπειδὴ, ὅ καθ' ὃν ἑστίαν ἴσον ἐστὶ τῷ Πατρὶ, ἐπεφάνη ἀλλ', ὡς  
 „εἴρηται, κατὰ τὸ ὑποκείμενον κτίσμα.

Καὶ ἈΛΒΙΝΟΣ δὲ ὁ Ἀλκαῖος Βιβλ: Γ'. περὶ Τριάδος  
 Κεφαλ: Ε'. „Ἡ πέμψις αὕτη (τῆς Ἁγίας Πνεύματος) διὰ τινων  
 „ὁρατῶν πρὸς ὥραν ἐγένετο κτισμάτων. Γέγονε γὰρ εἶδος τι  
 „κτισματος ἐπὶ χρόνον, δι' ἧς ὁρατῶς δεχθείη τὸ Ἅγ: Πνεῦμα.  
 „ὡς



„ὡς ὅτε ἐπ' αὐτὸν τὸν Κύριον βαπτισθέντα, ἐν εἵδει Περισερᾶς „κατήλθε σωματικῆς· ἢ καὶ κατὰ σωματικὸν εἶδος ἐν πυρίναις „γλώσσαις ὠράθη ἐπὶ τῶν Ἀποστόλων κατιόν. Αὕτη ἡ ἐνεργεῖα „ὁρατῶς ἐκτυπωθεῖσα, καὶ θνητοῖς ὀφθαλμοῖς προσπεσῆσα, πέμ- „ψις εἴρηται τῷ Ἀγ: Πνεύματος,,. Καὶ ἔτω μὲν ἡγνόησαν δια- „παντὸς οἱ Πατέρες, τὸ καὶ κατὰ τὴν Θεότητά διώκεται τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον πέμπεσθαι.

# Ἄ Π Α Ν Τ Η Σ Ι Σ Η'.

**Β**έβαιον ἄρα, ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ἐκ ἄλλως ἢ τῷ λόγῳ τῶν δωρεῶν: ἦτοι κατὰ τὰς διὰ τῆς χάριτος ἐνεργείας ἐς τὴν πέμπο- μενον. Τίς ἔν ἄρα (πρὸς Θεῷ) ἡ ἐντεῦθεν σωεπεία; „Τὸ „Ἅγιον Πνεῦμα, σωδοκῶντος διὰ τὸ ὁμοῦσιον τῷ Υἱῷ, τὰ ἐαυτῷ „πρὸς ἡμᾶς ἐκχέει χαρίσματα,,. Ἄρα τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῷ Υἱῷ ἐκπορεύεται; ἢ καὶ, τῆς τοιαύτης δε σωεπείας τὴν ἀνάγκην ἐδεμίαν εἶναι, ἐδῆς ἐχὶ σωορᾶ. Ταυτὸν γὰρ ἐστὶν ὡς εἶγε καὶ συλλογίσαιο: ὅτι τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι ὁμοῦσιος ἐστὶν ὁ Υἱὸς, Ἄρα τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῷ Υἱῷ ἐκπορεύεται. Σωδοκῶντος δ' ἐφ' ὧ, διὰ τὸ ὁμοῦσιον τῷ Υἱῷ, τὰς ἐαυτῷ τὸ Πνεῦμα ἐκχέειν ἄρχεσθαι δωρεῶν, ταῦτ' ἐστὶν τὸ ἐκ τῷ Υἱῷ πέμπεσθαι. Οὐ γὰρ ἐπὶ τὴν τῷ Ἀγ: Πνεύματος πέμψιν δι' ἄλλο σωεργεῖ ὁ Υἱὸς, ἢ διὰ τὴν ταυτότητα καὶ τὴν κοινωνίαν τῆς φύσεως. Οὕτω γὰρ ἈΜΒΡΟΣΙΟΣ, Βιβλ: περὶ τῷ Συμβόλῳ, Κεφαλ: Γ'. Τόμ: Β'. Στήλη 94. „Λέγει παρὰ τῷ Πατρὶ ἐκπορεύεται, διὰ τὴν ἀρ- „χὴν λέγει: ὅν ἐγὼ πέμψω, διὰ τὸ οἰκεῖον καὶ ἐνιαιὸν τῆς „φύσεως,,. Καὶ ἐν Βιβλίῳ Γ'. περὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος Κεφ: Α'. Τόμ: Δ'. τῶν Συγγραμ: Στήλη 255. „Εἰ τοίνυν ἀμοιβαδὸν „ὁ Υἱὸς καὶ τὸ Πνεῦμα σφᾶς αὐτὰς πέμπουσιν, ὡς καὶ ὁ Πατήρ „πέμπει, ἐκ ὑποταγῆς τότε ὕβρις, κοινωνία δ' ἐστὶν δωάμενος,,. Καὶ ἹΕΡΩΝΥΜΟΣ δὲ, ἐν τῷ εἰς τὸν Ἡσαΐαν Ὑπομνήματι Κεφαλ: ΝΖ'. „Τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ὃ παρὰ τῷ Πατρὶ ἐξέρχε- „ται, καὶ διὰ τὴν οἰκειότητα τῆς φύσεως παρὰ τῷ Υἱῷ πέμπε- „ται, λέγοντος: εἰ ἐγὼ ἀπέλθω, πέμψω αὐτὸν πρὸς ὑμᾶς,,. Καὶ ΚΥΡΙΛΛΟΣ ὁ Ἀλεξανδρ: Βιβλ: ΙΑ'. εἰς Ἰωάν: Κεφαλ: Γ'. Τόμ: Δ'. τῶν Συγγραμ: Σελ: 987. „Ὅτι τὸ Πνεῦμα τῷ Πα- „τρὶ, Πνεῦμα ἐστὶν Υἱὸς τε καὶ Πατὴρ τῷ πέμποντος, ἢ τῷ τοῖς „Ἁγίοις αὐτὸ δώσειν ὑπὸ χνυσμένον. Πάλιν αὐτὸ ὡς ἴδιον ἐπιδά- „ψιλλοῦται ὁ Υἱὸς διὰ τὴν ταυτότητα τῆς ἐσίας, ἥς ἔχει μετὰ „τῷ Πατρὶ,,. Καὶ ὁ ΣΥΓΓΡΑΦΕΥΣ δὲ τῶν Βιβλίων, τῶν περὶ τῆς ἡνωμένης Τριάδος ἐν τῇ Θεότητι, Βιβλ: Γ'. ἐν τοῖς Ἀθανα- σίῳ Συγγράμμασι, Τόμῳ Β'. Σελίδι 562. „Μάθε τέως ποτὲ

„ἡνωμένῳ εἶναι τῷ Θεότητι ταύτῳ, τῷ τε πέμποντος Υἱῷ, καὶ  
 „τῷ πεμπομένῳ Ἁγίῳ Πνεύματι· ὅποτε ὁ νῦν ἐν τῷ Εὐαγγε-  
 „λίῳ, καὶ τοὶ πέμψαν τὸ Πνεῦμα ἐπαγγελάμενος, ἑαυτὸν μὲν  
 „τοὶ γε πρότερον ὑπ' ἐκείνῳ αὐτῷ πεμφθῆναι, διὰ τῷ ἐνδόξῳ  
 „Ἡσαΐᾳ Φθάσας κατήγγειλεν· ὃ γὰρ ἦτον, δηλονότι, διὰ τῷ  
 „θέλῃσιν, καὶ τῷ κατὰ τὸ ὁμοῦσιον σῶνδουσιν (μία γὰρ ἡ τῆς  
 „Τριάδος θέλησις τε καὶ σῶνδουσις) ὁ Υἱὸς ρητέος τὸ Πνεῦμα  
 „πέμπειν ἡμῖν τὸ Ἅγιον· ἢ, διὰ τὸν αὐτὸν λόγον, τὸ Πνεῦμα  
 „λέγεται πέμψαι τὸν Υἱόν·.

Ἀλλὰ κατὰ τῷ ἀποδειχθέντος, ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα κατὰ  
 μόνον πέμπεται τὰ χαρίσματα, ποικίλα τινὰ οἱ Λατῖνοι εἰώθα-  
 σιν ἀποκρίνεσθαι. ΒΕΛΛΑΡΜΙΝΟΣ μὲν γὰρ Βιβλ: Β'. περὶ τῷ  
 Χριστῷ Κεφαλ: ΚΒ'. „Τὸ πρεσβύειν, φησὶ, τὸναντίον, ἀπάτη  
 „ἐστὶ προφανές. Καὶ γὰρ ἐν τῇ πρὸς Ῥωμαίους Κεφαλ: Ε'. λέ-  
 „γεται: ὅτι ἡ ἀγάπη τῷ Θεῷ ἐκκέχυται ἐν ταῖς καρδίαις ἡμῶν,  
 „διὰ Πνεύματος Ἁγίου τῷ δοθέντος ἡμῖν. Ἐνθα ὁρᾷς, ὅπως σα-  
 „φῶς διακρίνεται τό, τε Ἅγιον Πνεῦμα, καὶ αἱ δωρεαὶ αὐτῷ·  
 „καὶ ἐκάτερον δὲ δίδεται·. — Ἀλλ' εἰ καὶ πρεσβύομεν κατὰ τὰς  
 δωρεὰς μόνον πέμπεται, τὰς διὰ τὰ τῷ χάριν, τὸ Πνεῦμα τὸ  
 Ἅγιον, ἐμὴν παρὰ τῷτο (ὅπερ ἀπείη!) ἀπανανόμεθα καὶ  
 αὐτὸ τὸ Πνεῦμα πεμφθῆναι τὸ Ἅγιον. Πάντως γὰρ, εἰ καὶ ὁ  
 τῷ Θεῷ Υἱὸς, ὅχι ἡ Θεός· τρεῖς εἰς, ὅχι κατὰ τῷ αὐτῷ Θεότητι,  
 κατὰ δὲ μόνῳ τῷ ἀνθρώπῳ ἀπέσταλται φύσιν· λέγεται γε  
 μὴ ἔτι, ὅτι καὶ αὐτὸς ὁ τῷ Θεῷ Υἱὸς τε καὶ Λόγος ἐπεδήμησεν  
 εἰς τὸν κόσμον. Πέμπεται τοίνυν εἰς τὸν κόσμον ὁ τῷ Θεῷ Υἱός·  
 πέμπεται εἰς τὸν δε τὸν κόσμον ἄνθρωπος ὁ Χριστός· μή τοι γε  
 ὁ ἄρα, ὅτι ἐν τοῖς δε μνεία γίνεται τῷ τε Υἱῷ τῷ Θεῷ, καὶ τῆς  
 πεμφθείσης Σαρκὸς, ἔψοιτο ἂν ἐκ τῷ, μὴ μόνον κατὰ τῷ  
 Σάρκα τὸν Υἱόν τῷ Θεῷ ἐπὶ τὸν δε τὸν κόσμον πεπέμφθαι;  
 Διακρίνεται ἄρα, ἐπὶ τῶν προεπενεχθέντων ρημάτων τῷ Ἀπο-  
 στόλῃ, τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἀπὸ τῶν χαρισμάτων, ὡς ὁ αὐτίος  
 καὶ ἐπενεργῶν, ἀπὸ τῶν ἔργων τῶν αὐτῷ. Καθ' ὃ, δηλονότι,  
 ἡμῖν αὐτὸ ἐπιχορηγᾶται, τὰς ἐν ἡμῖν αὐτῷ δωρεὰς ἐργασόμε-  
 νον. Εἰ δέ τινες τῶν Πατέρων, κατὰ τὰ ἀνωτέρω προτεθέντα  
 ρήματα, ὃ φασὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα πέμπεται, ἢ ἐκχεῖσθαι,  
 ἐκεῖνο πάντως εἶσιν ἐννοῶντες, ὅπερ ὡσαύτως σιμωράκαμεν·  
 ὅτι τὸ Πνεῦμα κατὰ γε τῷ Θεότητι· τρεῖς εἰς, ἢ Θεὸς ἐστὶν·  
 ὅτε πέμπεται, ὃ ὅλως ἐκχεῖται.

Τῷ γὰρ ὄντι ΚΥΡΙΛΛΟΣ ὁ Ἀλεξανδρεὺς, ὁ σαφῶς ἀπο-  
 φάσκων τῷ πέμψῃ προσήκειν τῷ Πνεύματι· ἀλλὰ καὶ ἐν τῷ  
 πρὸς

πρὸς Ἑρμείαν Ζ'. Διαλόγῳ. (61) „Οὐχὶ τῆς χάριτος (Φησὶ, „ψιλῆς δηλονότι) ἀλλ' αὐτῆς τῆς ἐνός τε καὶ Ἁγίᾳ Πνύματος, „δι' ἐκείνης τῆς τῆς Σωτῆρος ἐμφυσήσεως, μέτοχοι γεγόνασιν οἱ „Ἀπόστολοι,,.

Πρόεσι δ' ἔν ΒΕΛΛΑΡΜΙΝΟΣ ἔτι: Α'. πρὸς Κορινθ: 5'. „Τὸ Σῶμα ὑμῶν ναὸς τῆς ἐν ὑμῖν Ἁγ: Πνύματος ἐστίν, ὃ ἔχει „ἀπὸ Θεοῦ,,. Καὶ κατωτέρω: „Δοξάσατε δὴ τὸν Θεὸν ἐν τῷ „σώματι ὑμῶν. Ἀλλ' ἦπερ τὰ τῆς Ἁγίᾳ Πνύματος χαρίσματα, „ἐχὼς Θεὸς ἐστίν· ἐδὲ ναὸς αὐτοῖς ἐποφείλεται. Καὶ Α'. Ἰωάννης „Δ'. ὁ μένων ἐν τῇ ἀγάπῃ, ἐν τῷ Θεῷ μένει, καὶ ὁ Θεὸς ἐν „αὐτῷ· ἐκ ἄρα μόνῃ ἡ ἀγάπη ἐν ἡμῖν μένει, ἥτις ἐκ ἔστι Θεός, „ἀλλὰ μένει ἀληθῶς αὐτὸς ὁ Θεός. Καὶ τελευτᾷον τὰ λεγόμενα Ἰωάν: 15'. Ἐὰν ἐγὼ μὴ ἀπέλθω, ὁ Παράκλητος ἐκ „ἐλθύσεται πρὸς ὑμᾶς. Καὶ Ἰωάν: 14'. τό: καὶ ἄλλον Παράκλητον δώσει ὑμῖν κτ: ἀτόπως λίαν ἐρμηνεύοιτ' ἂν περὶ τῶν δωρεῶν· αἱ γὰρ δωρεαὶ ἔτε ἔρχονται, ἔτε πέμπονται, ἔτε παραβάλλεσθαι διώκονται πρὸς τὸν Χριστὸν, ὡς Παράκλητος πρὸς ἕτερον Παράκλητον,,. Ἐπαγαγὼν δ' ἐπὶ τέτοις, καὶ τὰ εἰρημμένα τῷ Χρυσόσῳ ἐν τῷ Ὑπομνήματι τῷ εἰς τὴν πρὸς Ῥωμ: ἐν Κεφαλ: Ε'. καὶ τὰ Κυρίλλου τῆς Ἀλεξανδρέως εἰς τὸ Ἰωάννης 15'. Κεφάλ: ὑποσυνάπτει: „Ὅτι δὴ πάντες, αὐτὸν Θεὸν, τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, παρὰ τῆς Τίς διδάσκουσι πέμπεσθαι,,.

Δείκνυσιν ἔν ἐν τέτοις ὁ Ἰησοῦς, μόνον ἡμῖν τὰ τῆς Ἁγίᾳ Πνύματος χαρίσματα μηδαμῶς δίδοσθαι, ἀλλὰ καὶ αὐτὸ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον πέμπεσθαι. Ἀλλὰ τῶ, ὡς περ εἴρηται, ἐδὲ

ΠΟΤΕ

(61) Σωτελεῖ δὴ πρὸς ἐννοίαν ἀκριβῆ, τῶν ὑπὸ τῆς Θεωσιᾶς Πατρὸς εἰρημένων, αὐτὰ πληρέστερον ἐνταῦθα μεταγράψαντας παρατίθει. Τοιγαρὲν Κύριλλος ἐν τῷ Ζ'. τῶν πρὸς Ἑρμείαν Διαλόγων. Τόμ: Ε'. τῶν Συγγραμ: Μέρει Α'. Σελ: 638. 639. ὡς ἀδόκιμον ἐκσυρίττων τὴν δόξαν, εἰς νομίσειεν, ὅτι καὶ αὐτὸ ἡμῖν τὸ Πνεῦμα,,. ἀλλ' ἡ δὲ αὐτῆς χάρις, (ψιλῆς δηλονότι) „ἐνσημαίνεται,,: „Εἰ τῆς ἐσίας (Φησὶ) „τῆς Πνύματος διεχοινομένης καὶ ἡ δὲ αὐτῆς χάρις, τί μὴ ἔφη σαφῶς ὁ μὲν „Μακάριος Μωσῆς, ὅτι παρενταγμένῳ τῷ ζῶντι πρὸς τὸ εἶναι, λοιπὸν ἐνεφύσησε „χάριν ὁ πάντων Δημιουργός, τὴν διὰ πνοῆς τῆς ζωῆς; Χριστὸς δὲ ἡμῖν λάβετε „χάριν τὴν δι' ὑπεργίας τῆς Ἁγίᾳ Πνύματος; ἀλλ' ὠνόμασαι μὲν ἐν ἐκείνῳ πνοῇ „ζωῆς· ζωὴ γὰρ ἀληθῶς ἡ τῆς Θεότητος φύσις· ὅπερ ἐστὶν ἀληθὲς, ὡς ἐν αὐτῇ „ζῶμεν, καὶ κινέμεθα, καὶ ἐσμέν. Διὰ δὲ τῆς τῆς Σωτῆρος φωνῆς, Πνεῦμα Ἁγ: „αὐτό περ κατὰ τὸ ἀληθὲς ταῖς τῶν πισθόντων ψυχαῖς ἐγκατοικίζοντός τε καὶ „ἐνιέντος τὸ Πνεῦμα... Ὅτε τοίνυν πρὸς Χριστὸν μετῴμεθα, καὶ αὐτὸς ἡμῖν „ἐνσημαίνεται καὶ εἰδοποιᾶται καλῶς, ὡς δι' ὁμοίᾳ φυσικῶς τῆς Πνύματος, Θεὸς „ἄρα τὸ Πνεῦμα ἐστὶ τὸ διαμορφῶν πρὸς Θεὸν, ἐχὼς ὡς διὰ χάριτος ὑπεργικῆς, „ἀλλ' ὡς Θεὸς φύσεως μέθεξιν ἑαυτοῦ τοῖς ἀξίοις δωρέμενον. — Καὶ μικρὸν δὲ „κατωτέρω: Ναιὶ δὲ Θεῶ, καὶ μὴ καὶ Θεοὶ κεκλήμεθα καὶ ἐσμέν· ἀνδρότεγε δὴ; „πῦθ' τῶν δι' ἐναντίας, εἴπερ ἐσμέν ἀληθῶς ψιλῆς καὶ ἀνυποστάτης χάριτος μέ- „τοχοι; Ἀλλ' ἐχ' ὡς ἔχει· πῶθεν; Ναιὶ γὰρ ἐσμέν τῆς ὄντος τε καὶ ὑφ' ἐξουσί- „ας Πνύματος. Κεκλήμεθα δὲ δι' αὐτὸ καὶ Θεοὶ, ἅτε δὴ τῇ Θεῷ τε καὶ ἀποβ- „ήτῳ φύσει, τῇ πρὸς αὐτὸ σωμαθείᾳ κεκωνηκότες,,.

Τόμ: Β'.

Ξ

ποτε αὐτοὶ ἀπέφημεν. Δεῖξαι δ' ὁ Ἰησοῦς ὥφειλεν, ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ἔχι κατὰ μόνα τὰ χαρίσματα, ἀλλὰ καὶ κατ' αὐτῷ πέμπεται τῷ Θεότητι, εἰ τῷ δόξαν ἤθελεν ἀνασκιάσαι τῷ τῶν Ἀναβολικῶν. Ἀπεσάλη δὴ πάντως, ὡς πρὸ μικρῆ ἀπεφαινόμεθα, εἰς τὸν κόσμον ἄνθρωπος ὁ Χριστός· ἀπεσάλη δὲ καὶ ὁ τῷ Θεῷ Υἱός· μήτοι δὲ παρὰ τῷτο ὁ Υἱὸς τῷ Θεῷ, ἔχι κατὰ μόνη τῷ ἀνθρώπῳ φύσιν ἀπέσεται; Ἐπετα, ἄλλο μὲν ἐστὶν ἢ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος ἀποστολή, ἄλλο δ' ἢ ἐνοίκησις τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι τῷ ἀποσταλένῳ. Θεὸς γὰρ, ἐδεμίαν ἔχει πρὸς τόπον ἀναφοράν· ἀλλ' ὅπως ἂν ἐνεργείαν τινα ἐνδεικνύμενος ἦ, ἐκεῖσε περὶ λέγεται καὶ παρῆναι ὡς εἰς πλάτος ἐκδιδάσκουσι, ΒΑΣΙΛΕΙΟΥΣ τε, ἐν Ὁμιλ: Α'. τῇ περὶ Παραδείσῃ, ἐν Τόμ: Α'. Σελ: 628. (62) Καὶ ΔΙΔΥΜΟΣ ὁ Ἀλεξανδρεὺς Βιβλ: Β'. περὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι καὶ ὁ Νύσσης ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ. Βιβλ: Α'. κατὰ Εὐνομίαν, ἐν τῷ Προσαρτήματι τῶν τῷ Νύσσης Συγγραμμάτων, τῶν ὑπὸ τῷ Ἰησοῦ Γρετσέρῃ ἐν Παρισ: Ἐτε 1618. ἐκδοθ: Σελ: 55. Καὶ ΑΥΓΟΥΣΤΙΝΟΣ Βιβλ: Ε'. περὶ Τριάδος, Κεφαλ: Α'. Locutionis περὶ Γενέσεως, Ἀριθμ: 102. Καὶ Βιβλ: Η'. περὶ Γενέσεως κατὰ Γράμμα Κεφ: ΙΘ'. καὶ ΚΔ'. Καὶ ἐν Ἐπισ: Β'. καὶ ΡΙΒ'. Καὶ ΜΑΞΙΜΟΣ δὲ ὁ Μάρτυς, ἐν τῇ πρὸς Πύρρον Διαλέξει, ἐν Τόμ: Ε'. τῶν Σωδοικ: Στήλη 1810. Καὶ ΝΕΜΕΣΙΟΣ Ἐπίσκοπος Ἐμισιῶς περὶ φύσεως ἀνθρώπου, Τόμ: Β'. τῆς τῶν Γραικο: Πατέρ: Βιβλιοθ: Σελ: 493. Καὶ ἸΩΑΝΝΗΣ τελοῦταϊον ὁ Δαμασκηνός, ἐν Βιβλ: Α'. περὶ Ὁρθοδ: Πί: Κεφ: Ις'.

Ἐπεὶ τοίνυν τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ὡς πάντα ἐν πᾶσι ἐνεργεῖν, κατ' ἐσίαν τῷ ἑαυτῷ ἐδαμόθεν ἄπεσι· κἀντεῦθεν ἐδαμόσε κατὰ τῷ αὐτῷ ἐσίαν διώλαται πέμπεσθαι: τὸ Ἅγιον ἄρα Πνεῦμα, ἔρχεσθαι καὶ πέμπεσθαι λέγεται, ἐνθα τὰ ἑαυτῷ ἐκχέειν χαρίσματα, ἢτοι τὰς ἑαυτῷ, κατὰ χάριν, ἐνεργείας ἀρχεται ἀποτελεῖν. Κατὰ γὰρ τὰς τῆς χάριτος ἐνεργείας, ἐ τοῖς πᾶσι πάρεσι, τὸ κατ' ἐσίαν τῷ ἑαυτῷ ἀπὸ τοῖς πᾶσι παρόν. Ἀλλ' ἐνθαπερ ἂν τὸ Πνεῦμα, τὰ διὰ τῆς χάριτος ρηθέντα ἐνεργήματα ἐκτελῇ (ἐπειδὴ ἐκεῖ πάρεσι Θεὸς ὅπως ἐνεργεῖ.) τὰς δὴ

ἐνεκα,

(62) Ταύτῃ τῷ περὶ τῷ Παραδείσῃ Ὁμιλίαν, καὶ τὰς πρὸ αὐτῆς δύο, τὰς περὶ τῆς τῷ ἀνθρώπου κατασκώης, ὡς Κομψοφίσιος ἐν ταῖς γνησίαις τῷ Βασιλεῖ Ὁμιλίαις κατέταττε· Γαρυῆρος ὁ τῷ Νεωτάτῳ τῶν τῷ Θεῷ Πατέρῃ Συγγραμ: Ἐκδοσιν, ἐν Ἐτε 1721. ἡμῖν προσφιλοπονήσας, ὑποβολιμαίας εἶναι ἡγήσατο, καὶ διὰ πολλῶν τῷ ὑποβολῇ ἐπεχείρησε δεῖξαι, ἐν τῷ πρὸ τῷ Α'. Τόμῃ Προλόγῳ § 1. Ἀριθμ: 13 — 20. Σημείωσαι μέντοι, ὡς ἐν τῷ περὶ Παραδείσῃ Λόγῳ, καὶθάπερ ἔχει ἐπὶ τῆς ρηθείας Ἐκδόσεως, ἐδὲν τοιούτον ἀνεγνωκίον ἡμῖν ἀπώτησεν, οἷον· περὶ ὧδε ἐπαγγέλλεται ὁ Συγγραφεὺς ἡμῶν Ζοιζνικάειος.

ἐνεκα, καὶ μᾶλλον ἐκάσσε κατ' ἐσίαν παρῆναι λέγεται, ὅσω περ ἐπιδηλοτέρα αὐτόσε ἢ αὐτῆ τῆ Θεῶ ἐνέργεια καταφαίνεται. Ἀνθότῃ δὴ, καὶ διὰ τὰς προδηλοτάτας ἐν σφίσιν ἡμῶν ἐνεργείας, Ναοὶ τῆ Ἀγίας Πνεύματος οἱ πιστοὶ λεγόμεθα. Τὰ ἄρα προτεθέντα τῆ Ἀποστόλου ἐκ τῆς Α'. πρὸς Κορινθ: Κεφαλ: 5'. καὶ ἐκ τῆς Α'. τῆ Ἰωάν: Κεφ: Δ'. ἔχῃ περὶ τῆς πέμψεως, περὶ δὲ τῆς διὰ τῆς χάριτος τῆ Ἀγίας Πνεύματος ἐνοικήσεως ἔρηται. Ὁ δὲ πρὸς τε τὸν ΧΡΥΣΟΣΤΟΜΟΝ τείνει, καὶ πρὸς ΚΥΡΙΑΛΟΝ, ὁ μὲν, (ἐκατέρω γὰρ ἀνωτέρω τὰ ῥήματα ἐπενώεταί) διαρρήδην ἐδίδασκε μηδαμῶς κατὰ τὴν Θεότητα τὸ Πνεῦμα, κατὰ δὲ τὰ χαρίσματα μόνον πέμπεσθαι· ὁ δὲ, παραπλησίως ἀπηξίς τὸ κατὰ τὴν Θεότητα ἐξῆναι ἐκδέχεσθαι, ἐνθα τὸ Πνεῦμα πέμπεσθαι λέγεται. Τὴν δὲ φωνὴν (ΘΕΟΝ) ἐν χρήσει λαμβάνεσθαι πρὸς τὴν ἀνθρώπων κατάληψιν. Ἄλλο γὰρ ἐστὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ΘΕΟΝ πέμπεσθαι, ἄλλο δὲ τὸ αὐτὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ΚΑΤΑ τὴν Θεότητα πέμπεσθαι.

Ἄλλ' ὑποσιωπῶν ΒΕΛΛΑΡΜΙΝΟΣ: „Παρίτω, φησὶν, εἰς μέσον ὁ σαφέςατος λόγος. Εἰ γὰρ διὰ τῆτο ἐλέγετο, πέμπεσθαι τὸ Πνεῦμα παρὰ τῆ Τίς, ὅτι ὁ Τίς ἐστὶν ὁ τῶν χαρισμάτων χορηγός, ἐξὼ ἂν λέγειν, καὶ τὸν Πατέρα πέμπεσθαι παρὰ τῆ Τίς· μᾶλλον δὲ καὶ τὸν Πατέρα καὶ τὸν Τίον, παρὰ τῆ Ἀγίας Πνεύματος. Ἐκαστον γὰρ τῶν Προσώπων, ἐστὶ τῶν χαρισμάτων, ἀπάντων αἰτιόν τε καὶ πρόξενον. Ἄλλὰ πέμπεσθαι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα παρὰ τῆ Τίς φημὲν, καθ' ὃ, σιωπεύοντες τῆ Τίς διὰ τὸ ὁμοῦσιον, τὰς κατὰ χάριν δωρεὰς αὐτῆ ἐκχεῖν κατάρχεται. Πρὸς δὲ τὰ ἄτοπα, ἅτλα δὴ κατὰ τὸ Βελλαρμίνω δοκῶν ἐντεῦθεν ἀντεπενεχθεῖν, ἐπὶ τῶν ἐξῆς ἀπαντήσομεν.

Τελουταῖον δὲ προσίθῃσι ΒΕΛΛΑΡΜΙΝΟΣ ἔτι: „Εἰ παρὰ τῆ Τίς πέμπεσθαι τὸ Πνεῦμα, τὸ τὰς ἐκείνῃς ὡς πέμπεσθαι δωρεάς· καὶ ὅτε τὸν Τίον ἀναγινώσκουμεν, εἰς τὸν δε τὸν κόσμον, παρὰ τῆ Πατρὸς ἀπεσάλλεται, ἔχοιεν ἂν, οἱ τῆτο μὴ πιστεύοντες, ἀποκρίνεσθαι, μὴ ἀληθῶς τὸν Τίον πεπέμφθαι, ἀλλ' ἐν τι δώρημα κλισὸν, καὶ ἔτιως ἂν κενωθεῖν τὸ Μυστήριον τὸ τῆς Ἐνσαρκώσεως. Ἄλλ' ἔχ' ἀπλῶς ἔτιως ἡμεῖς διατεινόμεθα: ὅτι τὸ πέμπεσθαι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα παρὰ τῆ Τίς, τὸ τὰς δωρεὰς τὰς αὐτῆς πέμπεσθαι ἐστὶν, οἷον, εἴπερ ἅμα γε ἀπαναυνοίμεθα τὸ, καὶ αὐτὸ τὸ Πνεῦμα ἡμῶν ἀποσέλλεσθαι· τὰ δὲ μόνον διατεινόμεθα, ὅτι ἔχῃ κατὰ τὴν Θεότητα τὸ Πνεῦμα, ἀλλὰ κατὰ τὰ αὐτῆ πρὸς ἡμᾶς χαρίσματα, ὡς ἡμᾶς ἡκεῖ πεμπόμενον. Πῶς ἂν ἐντεῦθεν ἂν ἔποιτο, μηδὲ τὸν Τίον ἀληθῶς, ἀλλὰ κατὰ τὰ χαρίσματα μόνον πρὸς ἡμᾶς αὐτὰς ἀπεσάλλεται; Ἐξ ἴσου πάντως τῆ λόγῃ, ἔχῃ κατ' αὐτὴν τὴν Θεότητα, ἄλλως δὲ πως, κατὰ γε



τιῷ ἀνθρωπότητι, δηλονότι, τὸν Υἱὸν εἰς τὸν κόσμον ἀποσταλῶναι συμπερανθήσεται. Τὸν γὰρ αὐτὸν ἀπαραλλάκτως λόγον τῆς Ἀποστολῆς εἰς ταῦτὸ σωελθεῖν τὸν Υἱὸν καὶ τὸ Πνεῦμα, τῶν ἀδιωάτων. Οὐ γὰρ, ὥσπερ ὁ Υἱὸς, ἔτω καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον σάρκα προσέληφε. Πῶς ἄρα, κατὰ τὴν δευτέραν ἐκθεσιν τῆς τῆς Ἁγίας Πνεύματος πέμψεως, τὸ τῆς Ἐνσαρκώσεως Μυστήριον κενωθήσεται;

Ἀλλ' ἐνσαίνης ἂν: Πέμπεται ἡμῖν τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, Θεὸς ἴσος τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ· διὸ καὶ τὸ τρίτον Πρόσωπον τῶν ἐν τῇ Θεότητι. Εἰ δὲ διὰ τῆς τοῦ Πνεύματος πάντως τὸ Ἅγιον, τὸ πεμπόμενον ἐστὶ κατὰ τὴν Θεότητα πρὸς ἡμᾶς· ἢ διήκε, ἢ Θεότης αὐτῆς ἐμήκε τῇ ἐκείνῃ τυχὸν ὑποστάσει, τῷ Θεῷ ἀπα- νήνασθαι φύσει προέλοιτο. — Ἀλλὰ τῆς Πνεύματος ὡς ἡμᾶς πεμφθέντος, καὶ ὁ Πατὴρ ἐλήλυθεν ὁ ἀληθινὸς Θεός, ἢ πρώτη τῶν ὑπερθέων Ὑπόστασις. Ἦκε δὲ ἡμῖν ἅμα καὶ ὁ Υἱὸς τῆς Θεᾶς, ὁ ταῦτα διδάσκων ἡμᾶς· ὁ τῷ Θεῷ καὶ Πατρὶ ἴσος· ἢ ἐν τῷ Θεῷ δευτέρα Ὑπόστασις· ἐμὴν δὲ παρὰ τῆς τοῦ Πατρὸς καὶ ὁ Υἱὸς ἡμῖν κατὰ τὴν Θεότητα ἔρχονται. Προσέτι δὲ, καὶ ὁ τῆς Θεᾶς Υἱὸς καὶ Λόγος ἀπεστάλη εἰς τὸν κόσμον, ὁ ἴσος ὢν τῷ Θεῷ καὶ Πατρὶ, ἢ δευτέρα τῶν Θεαρχικῶν Ὑποστάσεων· ἐμὴν δὲ καθ' αὐτὸ, καὶ ἡ Θεὸς, εἰς τὸν κόσμον ὁ τῆς Θεᾶς Υἱὸς ἀπεστάλη. Παραπλησίως δ' ἔπειτα ὁ Υἱὸς τῆς Θεᾶς καὶ Λόγος, ὁ τῷ Θεῷ καὶ Πατρὶ καὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι ἴσος, τὸ δευτερον τῆς Θεότητος Πρόσωπον, γενόμενος ἀνθρωπος, καὶ σαρκωθεὶς, καὶ παθὼν, καὶ θανὼν, ἐξαναστὰς εἰς ἔρανθες ἀνῆλθε.

ΦΟΥΛΓΕΝΤΙΟΣ Βιβλ: περὶ Πίς: πρὸς Πέτρον, Κεφ: ΙΓ'. „Στερεότατα κάτεχε, καὶ μηδὲν ἀμφίβαλλε, τὸ ἐν τῆς Τριάδος Πρόσωπον, τετέστι, τὸν Υἱὸν καὶ Θεὸν, τὸν μόνον ἐκ τῆς „ἐσίας τῆς Θεᾶς καὶ Πατρὸς γεννηθέντα, καὶ τῷ Πατρὶ ὁμοῖον „ὄντα, ἐν τῷ τῶν χρόνων πληρώματι, κατὰ πρόσληψιν μορφῆς „δαλκῆς, θελήσει ἐν τῇ Παρθένῳ συλληφθέντα, καὶ ἐκ τῆς Παρ- „θένης γεννηθέντα, καὶ σάρκα τὸν Λόγον χρηματίσαντα„. Καὶ Κεφαλ: ΜΕ'. „Συμφέρει δ' ἔτι πισθεῖν εἰς σωτηρίαν, ὅτι τὸ ἐν „τῆς Τριάδος Πρόσωπον, ὁ τῆς Θεᾶς Μονογενὴς Υἱὸς καὶ Θεός „μόνος, ὑπὲρ τῆς ἡμετέρας σωτηρίας ἀνθρωπος γέγονε„. Καὶ ἐν τῷ περὶ τῆς Ἐνσαρκώσεως δὲ Βιβλίῳ, καὶ τῆς Χάριτος τῆς Κυρίας ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ Κεφαλ: Ι'. „Μόνος ὁ Υἱός· τετέστιν, ὃν ἐν „ταυλότῃ φύσει, ὁ Πατὴρ σωαιώνιον ἐαυτῷ Υἱὸν καὶ ἴσον ἐγέν- „νησεν· ἦτοι τὸ ἐν τῆς Τριάδος Πρόσωπον τῆς Χριστοῦ, ὁ τῆς Θεᾶς „μόνος Υἱός, ὃν ἡμᾶς σῶση, σωελήφθη τε καὶ ἐτέχθη ἐκ κοιλίας „τῆς Παρθένου Μητρός„.

Καὶ

Καὶ ἸΩΑΝΝΗΣ δὲ ὁ Δαμασκινὸς Βιβλ: Γ'. περὶ Ὁρθοδ: Πίσεως, Κεφ: ΙΑ'. „Τὸ Σάρκα γενέσθαι τὸν Λόγον, αὐτῷ τῷ „τῷ Λόγῳ ὑπόσασιν, ἀτρέπτως γενέσθαι τῆς Σαρκὸς ὑπόσασιν,,. Καὶ Βιβλ: δὲ Δ'. Κεφαλ: Ε'. „Ἡ Ὑπόσασις τῷ Θεῷ Λόγῳ πρὸ „τῆς Σαρκώσεως, ἀπλῆ ὡς, καὶ ἀσώθετος, καὶ ἀσώματος, καὶ „ἄκτιστος· σαρκωθεῖσα δὲ αὕτη, γέγονε καὶ τῇ σαρκὶ ὑπόσασις „καὶ γέγονε σώθετος ἐκ Θεότητος ἧς αἰεὶ εἶχε, καὶ ἐξ ἧς προ- „σείληφε σαρκός,,. Εἵπερ ἄρα ἡ τῷ Τίῳ σαρκωθεῖσα ὑπόσασις, ἡ δ' αὕτη ἔπειτα καὶ παθεῖσα, ὁμοίως εἰς ἕρανθες ἀνελήλυθε· μή τοι γε δὴ παρὰ τῷτο, καὶ κατὰ τῷ Θεότητι σεσάρκωται τε καὶ ἔπαθεν ὁ Χριστός; Οὐδενὶ ἄρα τρόπῳ ὁμοίως ἔπεται, καὶ ἐκ τῷ τὸ Πρόσωπον τῷ Ἁγ: Πνεύματος πρὸς ἡμᾶς πέμπεσθαι, ὅτι ἄρα καὶ κατὰ τῷ Θεότητι αὐτὸ πέμπεται. Ἀμέλειτοι: εἰ καὶ τινὰ ἀληθῶς περὶ τῷ Τίῳ τῷ Θεῷ, καὶ περὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος, καὶ περὶ τῶν Προσώπων αὐτῶν λέγεται, καὶ ἐξ ἀνάγκης τὰ αὐτὰ αὖ περὶ αὐτῶν ἐπαχθείη, καὶ κατ' αὐτῷ τῷ Θεότητι λέγεσθαι. Λέγεται γὰρ περὶ ἀμφοῖν τῶν Προσώπων ἔστιν ὁ, ὁμῶς, ἀλλ' ἔχῃ ἡ Πρόσωπα Θεῶν ἔστιν, ἀλλ' ἑτέρῳ τρόπῳ ἢ δὴ περὶ τὸ μὲν κατὰ τῷ ἀνθρωπότητι σεσάρκωται τε καὶ ἔπαθε· τὸ Πρόσωπον δὴλ: τῷ Τίῳ· τὸ δὲ κατὰ τὰ χαρίσματα ἀπεσάλη, τό γε τῷ Πνεύματος· ἐδ' ἄρ' ἐντεῦθεν τέως παρέπεται, τὸ τῶν Προσώπων τῷ Θεότητι ἀποφάσκεσθαι· ἐδὲν γὰρ μᾶλλον ἢ, ἐπειδὴν τὸν Τίον καὶ τὸ Πνεῦμα, καὶ φανερόν κατὰ τῷ Θεότητι ἀπεσάληται ἢ ὅτε κατ' αὐτῷ σεσαρκώσθαι, ἢ παθεῖν, ἢ κίερα συγχωρεῖμεν. Παντίπερ γὰρ δῆλον, ὡς καὶ παρὰ τῷτο, τῷ Τίῳ καὶ τῷ Πνεύματος ἐξαργόμεθα τῷ Θεότητι. Τὸν δέ τοι λόγον ἐφθίμεν· ἀποδεδωκότες, ὁμοίως κἀνλαῦθα εἰς ταῦτο φέροντα. Καὶ ἄλλος ἄρα ἐκ τοσούτων ἀπαντήσεων καθίσταται συμφανὲς, ἐκ μηδεμιᾶς ἀνάγκης τῆς Λατίνης σωάγειν, ὅτι ὁ πεμπόμενος πρόεισιν ἐκ τῷ πέμποντος· κἀντεῦθεν, ὅτι ἄρα τὸ Πνεῦμα ἐκ τῷ Τίῳ ἐκπορεύεται, διὰ τὸ παρὰ τῷ Τίῳ πέμπεσθαι.

Παρεκτὸς δὲ τούτων ἔτι ἀντιβάλλοντες ὑπῆρχον, τὸ τῷ Πέμψιν εἶναι τῇ Ἐκπορεύσει τῷ αὐτῷ ὥσε, εἵπερ δὴ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα πέμπεται παρὰ τῷ Τίῳ, καὶ ἐξ αὐτοῦ ἐκπορεύεται. Ἀλλὰ γὰρ ταῦτα τῷ παντὶ ἀλλήλων ἐστὶ διαφέροντα. Ἡ μὲν γὰρ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος Πέμψις ἐν χρόνῳ ἐγένετο· γέγονε γὰρ πρὸς ἡμᾶς, ἡ δὲ ὑποστατικὴ πρόεισις τῷ αὐτῷ, εἴτ' ἐν ἡ Ἐκπόρσεσις, ὑπὲρ χρόνον, καὶ πρὸ παντὸς αἰῶνος ἔσα ἐστὶ. Καὶ ἡ μὲν Πέμψις, ἡμῶν χάριν τελεῖται, καὶ Θεῷ ἔργον ἐστὶ τῶν λεγομένων πρὸς τὰ ἑκτός· ἡ δὲ Προβολὴ εἰς τὸ εἶναι, ἥτοι ἡ Ἐκπόρσεσις τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος ἀχέτως ὅλως τυγχάνει ἔχασα πρὸς τὰ κτίσματα, ἐδὲν τι ἦτον, ἥπερ ἡ τῷ Τίῳ γέννησις, προαιώνιος

Τόμ: Β'.

Ο

ἔσα,

ἔσα, καὶ τῶν ἐντὸς τοῦ Θεοῦ περαινομένων ἐνεργημάτων ἀνωμολόγηται. Καὶ ἡ μὲν Πέμψις, τῶν χαρισμάτων ἐκχυσίς ἐστίν· εἴτεν ἡ κατὰ χάριν τῶν δωρημάτων ἐνέργεια (περὶ ἧς ἀνωτέρω) ἢ δὲ Ἐκπόρευσις, ὁ τρόπος ἐστὶ, καθ' ὃν τὸ Ἄγ: Πνεῦμα τὴν αἰτίαν ἔχει τῆς ἰδίας ὑπάρξεως. Ἔτι, ἡ μὲν Ἐκπόρευσις ὁ λόγος ἐστὶ τοῦ ὑφίστασθαι τὸ Πνεῦμα, ἡ δὲ Πέμψις, ὁ. Ὡς περ ὃν ἡ ἐκ Πατρὸς γεννησις, ὁ λόγος ἐστὶ τοῦ ὑφίστασθαι τὸν Υἱόν· ἡ δὲ τέττα εἰς τὸν κόσμον Ἀποστολή, ὁ. Ἡδὴ μὲν ὃν ἀπ' αἰῶνος, κατὰ τὸν ἰδιάζοντα αὐτῷ τοῦ ὑφίστασθαι τρόπον, ὑφεστὸς ἦν τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ἀλλ' ἡ πέμψις ἡ τέττα ἐν χρόνῳ τέως ἐγένετο. Τελούταιον δὲ τὸ Πνεῦμα, καὶ αὐτὸ ἑαυτὸ παραπλησίως ἐξέχεεν, ἔδωκε, πέπομφεν· ἀλλ' ὁ μὲν τοι τὸ Πνεῦμα καὶ ἐξ ἑαυτοῦ ἐκπορεύεται. Τοσέτω ἄρα τοῦ ἀληθοῦς ἐστὶν ἀπέχον, τὸ τὴν τοῦ Ἁγίου Πνεύματος Πέμψιν, αὐτὴν εἶναι τὴν αὐτῆς Ἐκπόρευσιν, ὅσω ἀπέχει, τὸ καὶ τὴν τοῦ Υἱοῦ Γέννησιν ἐκ τῆς Ἀγιωτάτης Παρθένου, τὴν αὐτὴν εἶναι τῇ τέττα Γεννήσει τῇ παρὰ τοῦ Πατρὸς αὐτῆς. Ἐκατέρωσε γὰρ λόγος ὁ αὐτός. Ὡς εἶγε τῶν Λατίνων τινὲς διὰ τῆς φωνῆς τῆς ἐκπορεύσεως, καὶ τὴν πέμψιν παρεδήλωσαν τὴν χρονικῶς, κατ' ἀκυρολεξίαν τὸδ' ἐγένετο, καὶ λίαν καταχρησικῶς, ὡς ἀνωτέρω περ σεσημαίωται. Κατά γε μὴν τὸν ἀληθῆ τε καὶ κύριον νόον, τὸν ὑπὸ τῆς Καθολικῆς Ἐκκλησίας ἐγκεκριμένον, ἡ φωνὴ ἡ τῆς ἐκπορεύσεως, τὸν λόγον μόνον ἐμφαίνει τῆς τοῦ Πνεύματος προβολῆς τῆς καθ' ὑπαρξιν. Εἰ δὲ Σὺ τὴν ἀκυρον ἐκείνῳ σημασίαν προτείνεις, καὶ μίαν μὲν εἶναι προθείης τὴν τοῦ Ἁγίου Πνεύματος ἐκπόρευσιν, ὅλως δὲ τῇ πέμψει τὴν αὐτὴν ψευδὲς δῆσοι καὶ τῷ δε τῷ λόγῳ τὸ ὑποτιθέμενον, εἴ τι καὶ μόνον εἶναι τὸ γένος τῆς ἐκπορεύσεως. Ἦτοι γὰρ χρονικὴ καὶ ἔτις ἐστίν, ἢ γένος αἰώνιος αὐτῇ, καὶ τοῦ Ἁγ: Πνεύματος ὑποστατική. Ἐνθεντοι ΛΟΜΒΑΡΔΟΣ ἐν Βιβλ: Α'. τῶν Ἀποφάνσεων Διαμρ: ΙΔ'. „Παρὰ ταῦτα, φησὶν, ἐπιμελῶς σημειωτέον, ὅτι διτλῇ ἐστὶν ἡ τοῦ Ἁγίου Πνεύματος ἐκπόρευσις. „Ἦτε αἰώνιος, δηλονότι, ἡτις καὶ ἀφρατος ἐστὶ, καθ' ὃν ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱοῦ (λέγει) αἰωνίως τε καὶ ἀχρόνως προῆλθε· καὶ ἡ „χρονικὴ, καθ' ὃν παρὰ Πατρὸς καὶ Υἱοῦ προβαίνει πρὸς τὸ ἀγιάσαι τὴν κτίσιν. „ Ἀλλ' ἐν τῇ χρονικῇ ταύτῃ ἀκυρολεξίᾳ σημασία, καθ' ὃν ἡ ἐκπόρευσις τὴν Ἀποστολὴν ὑπεδήλα, ἡ πέμψις μία τε δὴ καὶ ἡ αὐτῇ τῇ ἐκπορεύσει ὑποτίθεται εἶναι, ὅχι καθὸ τῷ τῆς ἐκπορεύσεως ὀνόματι ὁ τρόπος ἐκδηλεῖται, ὡς τὸ Ἅγιον Πνεῦμα τὴν αἰτίαν ἐστὶν ἔχον τῆς ἰδίας ὑπάρξεως.

„Ἀλλὰ, καὶ περ (ἄλλοι φασὶν) ἡ Πέμψις ἐκ ἐστὶν αὐτῇ ἡ „Ἐκπόρευσις· προϋποτίθησί γε μὴν ἐπὶ τοῦ πέμποντος τὸ ἀρχοῦν, „δὲς τῆς διωάμεως. — Πάντως δέ τοι προϋποτίθησι μὲν ἡ Πέμ-

ψις

ψις τὸν τῆς Ἀρχῆς λόγον, καθ' ὃν ἐντεῦθεν καὶ ὁ Υἱὸς ὁ ἀπο-  
σελλόμενος αἰτιατὸς ἐστὶ, καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα τὸ πεμπόμενον  
ἐστὶ προβλητόν· ἀλλ' ἢ πρὸ ψεύδους, τὸ τιτὼ Πέμψιν ἐξ ἀνάγκης ἐν  
αὐτῷ γε τῷ πέμποντι, περιὸν προὑποτιθέναι τὸ ἀρχοειδὲς τῆς  
διωάμεως. Ὁ γὰρ Υἱὸς, ὡς ἐς πλάτος ἔρηται ἀνωτέρω, ἀπε-  
σάλη μὲν ὑπὸ τῷ Πνδύματος, ἐμὼ δὲ παρὰ τῷτο ἢ τῷ Υἱῷ ἐκ  
τῷ Πνδύματος Ἀποσολῇ αὕτη, καὶ τιτὼ διώαμιν τῷ προβάλλειν  
τὸν Υἱόν, ἐν τῷ πέμψαντι προὑποτίθῃσι Πνδύματι. Ὁ γὰρ  
Πατὴρ μόνος, τῷ Υἱῷ ὁ γεννήτωρ ἐστίν. Ἐπειτα καὶ ὁ Υἱὸς καὶ  
τὸ Πνεῦμα ἑαυτὸς πέμπουσι, καθάπερ ὁμοίως ἀνωτέρω καὶ τῷτο  
δεδεικται· μὴ πρὸ δὲ καὶ τῷ Υἱῷ καὶ τῷ Πνδύματι, διὰ δὴ τῷτο,  
ἔνεσι καὶ ἢ τῷ προβάλλειν σφᾶς αὐτὸς διώαμιν; Μᾶλλον δὲ, ὁ  
ἐκ τῆς Ναζιανζῆς ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ, ἐπιγινώσκων παραπλησίως τὸ  
Ἅγιον Πνεῦμα, ὡς ἄρα πεμπόμενον προὑποτιθέναι τὸν Προβο-  
λέα, καὶ δείξων τίς ποτε ἄρα ὁ τῷ Πνδύματος τυγχάνει ὢν  
Προβολεὺς, καὶ τίνι ἢ τῷ αὐτὸ προβάλλειν προὑποτίθεται διώα-  
μιν, ἐχὼ τὸν Υἱὸν ὀνομάζει, ἀλλὰ τὸν Πατέρα μόνον. Οὕτω  
γὰρ ἐν τῷ ΛΖ. Λόγῳ: „Ὅσα δὲ λέγεται ταπεινότερον (περὶ  
„τῷ Ἁγίῳ Πνδύματος) τὸ δίδοθαι, τὸ ἀποσέλλεσθαι, τὸ μερίζε-  
„σθαι· τὸ χάρισμα, τὸ δώρημα, τὸ ἐμφύσημα· ἢ ἐπαγγελία,  
„ἢ ὑπερένταξις, εἴτε τι τοιοῦτον, ἵνα μὴ καθ' ἑκάστον λέγω·  
„ἐπὶ τιτὼ πρώτῳ αἰτίαν ἀνενεκτέον· ἵνα τὸ ἐξ ἑ δειχθῇ, καὶ  
„μὴ τρεῖς ἀρχαὶ μεμερισμέναι πολυθῶς παραδεχθῶσιν,,.

Ἐνίσταται δ' ἔν τις: (63) „Ἰν' ἢ κατὰ τὰ ἐντόστε καὶ τὰ  
„ἐκτὸς διαίρεσις ἐκ μέσων ἀρθῇ, ζητητέον παρὰ τῶν ἀντιφερο-  
„μένων. Α': Ἐκ τίνος ποτ' ἔν τῶν Γραικῶν Πατέρων κατέ-  
„μαθον, πρόοδόν τινα τῷ Ἁγίῳ Πνδύματος δίδοθαι καθαρῶς χρῶ-  
„νικῶ, καὶ τῷ Υἱῷ μόνῳ προσιδιάξασαν; ἢ γὰρ ἐν τῷ Πατρὶ  
„ἔσα, ὑποτίθῃσιν ἐξ ἀνάγκης τιτὼ ἐκπόρουσιν τιτὼ ἀπ' αἰῶνος.  
„Τίς δ' αὐτὸς ἐδίδαξεν, ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ἄλλως μὲν τῷ  
„Υἱῷ, ἄλλως δὲ τῷ Πατρὶ ἐστὶ; καὶ ἄλλως μὲν ἐστὶ παρὰ τῷ  
„Υἱῷ, ἄλλως δὲ παρὰ τῷ Πατρί; καί τοι γε ἀμφοτέρων Πνεῦ-  
„μα ἔν τε καὶ τὸ αὐτὸ πεφυκός; Πόθεν ἔχουσι παραλαβόντες,  
„ὡς ὁ μὲν Πατὴρ, Παροχεὺς ἐ διώαται εἶναι τῷ Ἁγίῳ Πνδύμα-  
„τος, μὴ ὁ αὐτὸς καὶ ἀρχὴ ὑπάρχων αὐτῷ· ὁ δὲ Υἱὸς, χορη-  
„γὸς αὐτῷ διώαται εἶναι, καί τοι μηδὲν ἀρχὴ τυγχάνων  
„αὐτῷ,,;

Ἀλλὰ γὰρ πρῶτον: πῶς ἀδιώατον τῷ Υἱῷ μόνῳ τιτὼ χρο-  
νικῶ προσήκειν Πέμψιν τῷ Πνδύματος, καὶ μὴ καὶ τιτὼ ἐξ αὐτῷ  
Ἐκπό-

(63) Κιχῶς: Ζητήμ: 5. Σελ 68.



Ἐκπόρευσιν, (καὶ περ τῷ Πατρὶ μετὰ τῆς χρονικῆς πέμψεως καὶ τῆς αἰωνίᾳ ἅμα προβολῇ τῷ Πνεύματος προσήκοντος) ὁπότε δὴ καὶ τὸ Πνεῦμα χρονικῶς μὲν τὸν Υἱὸν πάντως ἀποσέλλει, ἀπ' αἰῶνος δὲ ὁ γεννᾷ; Καίτοιγε τῷ Πατρὶ, καὶ χρονικῶς τὸν Υἱὸν ἀποσέλλοντος, καὶ πρὸ τῶν αἰώνων ἀπάντων γεννῶντος; Τό γε μὴν χρονικῶς καθαρὰν τῷ Πνεύματος πρόοδον, ἥτοι πέμψιν, (τῇ γὰρ χρονικῇ προόδῳ ἡ πέμψις μόνῃ ὑποσημαίνεται) δίδοσθαι, καὶ αὐτῇ ἡ Θεία Γραφή περὶ τῆς τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος πέμψεως διεξιῶσα, καὶ πληθὺς τοσάτων Πατέρων διδάσκει, ὅσοι ἀνωτέρω θεολογῶντες ὑπῆρχον, μηδαμῶς τὸ Ἅγιον Πνεῦμα κατὰ τὴν Θεότητά πέμπεσθαι, ἀλλ' ἡ μόνον κατὰ τὰ χαρίσματα. Ψεῦδος δὲ, καὶ τὸ τὴν τοιάνδε πέμψιν τῷ Υἱῷ μόνῳ προσιδιάζειν καὶ γὰρ καὶ τῷ Πατρὶ, καὶ αὐτῷ δὴ τῷ Πνεύματι, ἔδεν ἡττον εἶναι προσήκοντα. Εἰ γὰρ ἐν τῷ Πατρὶ προϋποτίθῃσι, τὴν ἐκπόρευσιν τὴν ἀπ' αἰῶνος, ἡ καθαρὰ πέμψις ἡ ἐν χρόνῳ ἡ αὐτῇ μέντοι γε αὐτῇ πέμψις θεωρημένη καθ' ἑαυτὴν, μία τε ὅλως καὶ ἡ αὐτῇ τυγχάνει τῷ ἀριθμῷ ἐν τε τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ, ἐν ᾧ οὐχὶ καὶ τὴν ἀπ' αἰῶνος παραπλησίως προϋποτίθῃσι πρόοδον. Ἔστι γὰρ ἡ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος πέμψις ἐνέργημα τῶν ἐκτὸς, ὅθεν μία τε καὶ τῷ ἀριθμῷ ἡ αὐτῇ προσήκοντα Πατρὶ καὶ Υἱῷ. Ἡ μὲν ἐν κτίσις, ἐν τῷ Πατρὶ πάντως θεωρημένη προϋποτίθῃσι τὴν αἰτίαν τῷ Υἱῷ, καὶ δὴ καὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι ἐν δὲ τῷ Υἱῷ ἔδαμῶς. Ἀλλὰ καὶ ἔτις ἐμπης, ἡ δημιουργικὴ δυνάμις ἐν Υἱῷ καὶ Πατρὶ μία ἐστίν. Καὶ ἀπέστειλε μὲν τὸν Υἱὸν ὁ Πατήρ, ἀπέστειλε δὲ τὸν αὐτὸν καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, κατὰ τὰ ἀνωτέρω εἰρημένον· ἀλλ' ἐν μὲν τῷ Πατρὶ, τὴν ἀπ' αἰῶνος γεννησιν ἡ πέμψις προϋποτίθῃσι, ἐν δὲ τῷ Πνεύματι τῷ Ἁγίῳ ἔχ' ὡσαύτως. Μία μέντοι γε τῷ ἀριθμῷ καὶ ἔτις μένει ἡ τῷ Υἱῷ πέμψις ἐν τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Πνεύματι, διὰ δὴ τῆτο: ὅτι, καὶ εἰ ἐν τῷ Πατρὶ ἡ τῷ Υἱῷ, εἴτ' ἐν τῷ Πνεύματι πέμψις, τὴν αἰτιώδη προϋποτίθῃσι δυνάμιν, ἀλλ' ὁ τῆς τῷ Υἱῷ πέμψεως ὅρος καὶ Πατρὶ καὶ Πνεύματι προσήκων ἐστίν· καὶ ὁ τῆς πέμψεως ὁμοίως τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι ὅρος ἐξίστα, ὡπερ τῷ Πατρὶ, ἔτις καὶ τῷ Υἱῷ προσήκων ἐστίν. Οὐ τῆτο δὲ λέγομεν ἡμεῖς, ὅτι τὸ Πνεῦμα ἄλλως μὲν ἐστὶ τῷ Υἱῷ, ἄλλως δὲ ἐστὶ τῷ Πατρὶ. Ἀλλὰ τὸ περὶ τῆτος, ἐν Πραγματείᾳ ἄλλῃ ἰδιαίτερᾳ. Οὐδ' ἄλλως μὲν πως διατεινόμεθα τὸ Πνεῦμα παρὰ τῷ Πατρὶ εἶναι, ἄλλως δέ πως παρὰ τῷ Υἱῷ. Εἰ γὰρ διὰ τῆς φωνῆς ΕἶΝΑΙ διασημαίνοιτο ἡ Ἐκπόρευσις ἡ ἀπ' αἰῶνος, ἔκταν τὸ Ἅγιον Πνεῦμα παρὰ τῷ Υἱῷ, ἐκ δὲ τῷ Πατρὶ μόνον ἐστίν, ἥτοι ἐκπορεύεται. Εἰ δὲ διὰ τῆς τῷ ΕἶΝΑΙ φωνῆς σημαίνοιτο ἡ πέμψις ἡ χρονικὴ (περὶ ἧς ἐκδοχῆς ἀλλαχῇ πλατύτερον) ὡσαύτως δήπερ καὶ παρὰ τῷ Πατρὶ καὶ



καὶ παρὰ τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα εἶναι φασί. Ψευδὲς δ' ἔτι καὶ τὸ μὴ διώσθαι τὸ ἐν καὶ τὸ αὐτὸ Πνεῦμα Ἅγιον ἀμφοτέρων εἶναι, εἰμὴ καὶ ἅμα παρὰ Πατρὸς καὶ Υἱῷ ἐκπορεύοιτο. Ἀλλὰ περὶ τούτου, ἐν ἰδιαιτέρᾳ ὡς εἴρηται Πραγματείᾳ. Τελυταῖον δ' ὅτι καὶ Παροχεὺς τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι ἐστὶν ὁ Υἱὸς, καὶ μὴ εἴη μηδόλως αὐτῷ ἀρχὴ, ὃν τρόπον ὁ Πατὴρ καὶ Παροχεὺς ἐστὶ καὶ Προβολεὺς ἅμα τῷ Πνεύματι ὁ αὐτὸς τῷ αὐτῷ· δῆλον ἐξ ἐκείνου, ὅτι, εἰ καὶ ὁ Πατὴρ πέμπει τε καὶ γεννᾷ ἅμα τὸν Υἱόν, ἀλλὰ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα τὸν Υἱόν πέμπει μὲν, καὶ γεννᾷ δέ. Μᾶλλον δὲ καὶ τὸ Πνεῦμα πάντως ἑαυτῷ γίνεται Παροχεὺς, Προβολεὺς δ' ἔν, ὡς ἤκουσα πάντῃ. Τὰτι δ' ἄρα οἱ Θεοὶ Πατέρες τοσαύτῃ διδάσκουσιν, ὡς αὐτῇ τὸν Υἱόν, Παροχέα μὲν, καὶ δ' αἰτίαν, καὶ ἀρχὴν, καὶ πηγὴν εἶναι τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι· τὸν δὲ Πατέρα καὶ Παροχέα, καὶ αἰτίαν τῷ Ἀγ: Πνεύματι ὅντα ἀνακηρύττουσιν.

Ὁ αὐτὸς δ' ἔν (64) ἐν ἄλλοις καὶ ταῦτα ἀντιπροβάλλεται: „Ἡ τῷ πέμπειν δυνάμις, ἢτοι ἡ αὐτὴ (φῆσιν) ἐστὶν ἐν τῷ Υἱῷ, τῇ ἐν τῷ Πατρὶ, ἢ διαφέρουσα· εἰ μὲν διαφέρουσα, καὶ αἱ πέμψεις ἔσονται διαφέρουσαι· καὶ ἔσται ἢ τῷ Υἱῷ καὶ τῷ Πατρί ἐνέργεια μία· ἐπομένως δὲ, καὶ ἢ ἑστία αὐτῶν καὶ ἢ φύσις μία. (ὣν γὰρ αἱ φυσικαὶ δυνάμεις τε καὶ ἐνέργειαι διαφέρουσι, καὶ τῶν καὶ αἱ ἑστία διάφοροι εἰσὶν· ἐκ γὰρ τῆς ἑστίαις ἢ δυνάμεις ἀπορρέει.) Εἰ δὲ ἡ αὐτὴ, ἐπειδὴ ἄρα ἐν τῷ Πατρὶ ἢ τῷ πέμπειν δυνάμις, τὴν τῷ πνεῖν δυνάμιν ὑποτίθῃσι, τὴν αὐτὴν ἐπάναγκες ὑποτίθεναι καὶ τῷ Υἱῷ. — Πάντως δὲ ἀληθὲς ὃν ἐστὶ, τὴν αὐτὴν δυνάμιν τῷ πέμπειν τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐν τε τῷ Πατρὶ εἶναι, καὶ τῷ Υἱῷ. Ἀλλὰ γὰρ καὶ τῶν πάντων ψευδομένων ἐστὶν ἐκείνο, ὅτι ἡ αὐτὴ παραπλησίως δυνάμις καὶ τῷ Υἱῷ, τὴν αὐτὴν ἔξιν τῷ πνεῖν τὸ Πνεῦμα ἐξ ἀνάγκης προὑποτίθῃσι. Ἡ γὰρ αὐτὴ δυνάμις τῷ τὸν Υἱόν πέμπειν, καὶ ἐν τῷ Πατρὶ ἐστὶ, καὶ ἐν τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι. (εἰ γὰρ ὡς διαφέρουσα, ὡς τῷ αὐτῷ τῷ Ἰησοῦ Ἐπιχειρήματι χρῆσθαι, καὶ αἱ πέμψεις αὐτῇ εἴησαν διάφοροι, καὶ καὶ ἢ τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Πνεύματι ἐνέργεια μία, καὶ δὲ, κατὰ τὸ ἐπόμενον, μία ἢ τῶν ἑστίαις καὶ ἢ αὐτῇ.) Καμῶν, ἐπὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι ἢ τῷ πέμπειν δυνάμις, τὴν τῷ γεννᾷν δυνάμιν καὶ δόλως προὑποτίθῃσι. Πέμπει δὲ καὶ ἑαυτὸν ὁ Υἱὸς, ὡς εἶδομεν ἀνωτέρω· ἢ δ' αὐτὴ ἐν αὐτῷ καὶ ἢ τῷ πέμπειν ἑαυτὸν ἐστὶ δυνάμις, ἢ ἑστία ἐν τῷ Πατρὶ· ἢ τε δυνάμις τῷ ἑαυτὸν πέμπειν ἢ ἐν τῷ Υἱῷ, ἢ αὐτὴ ἐστὶ τῇ δυνάμει τῷ τὸν Υἱόν πέμπειν τῇ ἐν τῷ Ἀγ: Πνεύματι. Ὡς ἢ ἐν τῷ Πνεύματι δυνάμις τῷ

(64) Κιχάδισ ἐν Ζητήματι Η'. Σελ: 81.

Τόμ: Β'.

τῷ πέμπειν τὸν Υἱὸν, μία καὶ ἡ αὐτὴ ἔσαι τῇ δωάμει τῷ τὸν Υἱὸν πέμπειν τῇ ἐν τῷ Πατρὶ. Καμὼ ἡ δωάμις τῷ ἑαυτὸν πέμπειν, ὅς προὔποτίθῃσιν ἐν τῷ Υἱῷ τὴν δωάμιν τῷ γεννᾶν. Ἡ δὲ τῷ δημιουργεῖν δωάμις, ἡ αὐτὴ πάντως τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ καὶ τῷ Πνύματι καίτοιγε ὁ αὐτὴ, ἐν τῷ Πατρὶ τὴν δωάμιν ὑποτίθῃσι τῷ αἰτίαν εἶναι Υἱῷ καὶ Πνύματος, ἀλλ' ἐν τῷ Υἱῷ, ἢ τῷ Πνύματι, τοιαύτῳ αἰτίαν ἑδόλως προὔποτίθῃσιν. Ἡ δέ τοι δωάμις τῷ πέμπειν τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ἐν τῷ Πατρὶ προὔποτίθῃσιν ἀρχῆς λόγον ἀνευ ἀρχῆς (τετέστιν ἀνάρχῃς) μήτοιγε δὲ παρὰ τῷτο, ἀρχὴν τοιαύτῳ ἀρχῆς ἀνευ, ἢ τοιαύτῃ ὁμοίως δωάμις τῷ πέμπειν, προὔποθείη καὶ τῷ Υἱῷ; Ἀλλ' ὁ τῆς ἐπιφορᾶς λόγος ἐστὶ παραπλήσιος, ὥπερ ὧδε ὁ Ἰησοῦτης ἐχρήσατο. Ἡ τῷ πέμπειν δωάμις, ἡ αὐτὴ ἐν Πατρὶ καὶ Υἱῷ. Ἀλλ' ὁ μὲν Υἱὸς πέμπει τὸ Ἅγιον Πνεῦμα παρὰ τῷ Πατρός· ὁ δὲ Πατὴρ ὅς πέμπει αὐτὸ παρὰ τῷ Υἱῷ (περὶ ὃ μετὰ ταῦτα.) Καίτοιγε, ἔπερ ὁ τῆς τῷ Ἰησοῦτι σωπεΐας λόγος, ὑγειῆς ὧ, ἔποιτ' ἂν ἐντεῦθεν, καὶ τὸν Πατέρα χρῶναι τὸ Πνεῦμα πέμπειν παρὰ τῷ Υἱῷ. Ἐφ' οἷς, ἑδὲ τὴν τῷ πέμπειν τὸ Ἅγιον Πνεῦμα δωάμιν, τὴν ἐπὶ τῷ Υἱῷ, καὶ τὴν δωάμιν τῷ αὐτὸ πνεῖν ὑποτιθέναι, (καίτοι, ὥπερ καὶ ὁ Πατὴρ, αὐτὸ πέμποντος) Φανερόν καθίσταται ἐκ τῶν ἈΜΒΡΟΣΙΟΥ ῥημάτων, Βιβλ: Β'. περὶ τῷ Ἁγίῳ Πνύματος Κεφαλ: Α'. „Εἴπερ γὰρ, ἄρα, φησὶν, ἀμοιβαδὸν ἑαυτὸς πέμπουσιν ὁ Υἱὸς καὶ τὸ Πνεῦμα, ὥπερ ὁ Πατὴρ πέμπει, ὅς ὑποταγῆς ὕβρις, ἀλλὰ κοινότης ἐστὶ δωάμεως,,. Ὅποιαπερ ἄρα δωάμις τῷ Πνύματι ἐνεστὶ πέμποντι τὸν Υἱὸν, καθάπερ ὁ Πατὴρ πέμπει αὐτόν· τὴν αὐτὴν ὧδε, φησὶν, ὁ Ἀμβρόσιος δωάμιν τῷ πέμπειν ἐνεῖναι καὶ τῷ Υἱῷ, τῷ πέμποντι τὸ Πνεῦμα, καθάπερ καὶ ὁ Πατὴρ πέμπει αὐτό. Ἀλλ' ἅπασιν ἐνδηλον, ὡς ἢ ἐν τῷ Πνύματι δωάμις τῷ τὸν Υἱὸν πέμπειν, ἑδόλως ἐν ἐκείνῳ τὴν δωάμιν προὔποτίθῃσι τὴν γεννητικῶν ὡσαύτως ἄρα καὶ ἢ δωάμις τῷ πέμπειν τὸ Πνεῦμα, ἢ τῷ Υἱῷ ἐνῆσα, ἢ κίσα τὴν ἐκπορεύτικῶν ἑδ' ἐν τῷτω προὔποτίθῃσι δωάμιν. Ὅθεν δὴ τὸ τῷ Ἰησοῦτι ἐπιχέρημα ἑδέν τι σωάγει. Πρὸς γὰρ σύσασιν μιᾶς καὶ τῆς αὐτῆς δωάμεως, ἢ τῆς ἀρχῆς ταυτότης ἑδέν σωτελεῖ, ὡς ἐκ τῷ ὑποδείγματος τῷ ἐκ τῆς Δημιουργίας κατάδηλον γίνεται. Μία γὰρ καὶ ἡ αὐτὴ δημιουργικὴ δωάμις ἐστὶν, ἐν τε Πατρὶ καὶ Υἱῷ· ἀλλ' ὁ μὲν Πατὴρ ἀφ' ἑαυτοῦ, ὁ δὲ Υἱὸς ἐκ τῷ Πατρὸς ἔχει τὴν τῷ δημιουργεῖν δωάμιν. Ἀπόχρη δ' ἐπὶ τῷ μίαν τε καὶ τὴν αὐτὴν τῷ ἀριθμῷ δωάμιν (65) ἐνῆσαν τισὶν ἐπιγ-

(65) Ἀλλὰ τὸδ' ἔμπης, ὅπερ ἐνταῦθα ὁ Συγγραφεὺς ἡμῶν ἀξιοῖ Ζοιρνικάβ: ἀληθὲς ἐστὶ πάντως, ἐπὶ τῶν ὑπερθέων Ὑποστάσεων τῆς ὑπερσὺς Τριάδος ἐκ Πίσεως νοηθὲν, διὰ τὸ

ἐπιγινῶναι, εἴπερ ὁ τῆς αὐτῆς δυνάμεως αὐτοτελὴς ὁριστικὸς λόγος προσήκων εἴη τοῖς αὐτοῖς. Ὡς περ ἄλλως καὶ αὐτοὶ Λατῖνοι, μηδέν τι προσίστασθαι τῇ μιᾷ πνύσει διατείνονται, καὶ εἰ ὁ μὲν Πατήρ παρ' ἑαυτοῦ, ὁ δὲ Υἱὸς ἔ παρ' ἑαυτοῦ, ἀλλὰ παρὰ τῷ Πατρὶ λαβὼν ἔχει (κατὰ τὴν ἰδίαν αὐτῶν δόξαν) τὴν τῆς πνύσεως δυνάμιν.

Ἀνθυπέφερον δ' ἔτι: „Τὸ Ἅγιον Πνεῦμα πέμπεται παρὰ τῷ Υἱῷ, ἥτοι ὡς μείζονος, ἢ ὡς παρὰ σωετωτέρου, ἢ ὡς παρ' αἰτίας προβάλλοντος αὐτό. Ἀλλὰ μὴ ἔχει κατὰ τὰς δύο προλέξεις „τρόπους. Ἄρα ὡς παρὰ προβάλλοντος πέμπεται,, — Ἀλλὰ γὰρ ἐκ τῷ ἀποχρῶσα ἢ τῶν τῷ πέμπειν τρόπων προτεθεῖσα ἐξαρίθμησης. Ἄλλως γὰρ ἔψοιτ' ἂν, ὁμοίως καὶ περὶ τῷ Υἱῷ φᾶναι ταυτὰ ἐξεῖναι: ὅτι, ἥτοι ὡς παρὰ ἀνωτέρου καὶ μείζονος τῷ Πνύματος πέμπεται, ἢ ὡς παρὰ σωετωτέρου, ἢ ὡς παρ' αἰτίας προβάλλοντος. Ἀλλὰ μὴ δύσιν τοῖς προτέροις τρόποις, ὁ Υἱὸς ἔ πέμπεται παρὰ τῷ Πνύματος. Ἄρα παρὰ τὰς ὡς παρ' αἰτίας προβάλλοντος. Ἐνταῦθα τοίνυν ὁ λόγος αὐτόθεν ἐκδηλός, καθ' ὃν τὸ Πνεῦμα πέμπεται παρὰ τῷ Υἱῷ, ἐπεὶ περ κατὰ τὸν αὐτὸν, καὶ ὁ Υἱὸς παρὰ τῷ Πνύματος ἀποσέλλεται. Ἀμέλει τοι διὰ τὴν τῶν θελημάτων σωαίνεσιν καὶ τὴν ὁμοσιότητα, συμφανὲς ὅτι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον πέμπεται παρὰ τῷ Υἱῷ, δι' αὐτὸ καὶ παρὰ τῷ Πνύματος πεμπόμενος ἐστὶν ὁ Υἱός. Τὰτι δ' ἀνωτέρω τῶν Πατέρων ἀκηκόαμεν διαρρήδην ἡμᾶς διδασκόντων, ἐν οἷς διὰ τὴν οἰκειότητα καὶ τὸ ταῦτόν τῆς φύσεως ἐδίδασκον τὸ Πνεῦμα πέμπεται παρὰ τῷ Υἱῷ. Μάλιστα δὲ ἈΜΒΡΟΣΙΟΣ ἐν τῷ Γ'. Βιβλ: περὶ τῷ Ἁγίῳ Πνύματος σαφῶς ἐπεγίνωσκειν, ὡς ἐκ τῆς κοινότητος τῆς δυνάμεως, ὅ, τε Υἱὸς καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, καὶ ἑαυτὸς ἔτι πέμπουσιν. Εἴπερ γὰρ ἄρα (ἔφασκεν) ὁ Υἱὸς καὶ τὸ Πνεῦμα ἑαυτὸς ἀμοιβαδὸν πέμπουσιν, καθάπερ ὁ Πατήρ πέμπει, ἔχ' ὑποταγῆς ὕβρις, ἀλλὰ δυνάμεως τόδε κοινότης ἐστίν,,. Ἀλλὰ μὴ ἔτε κατ' ἐξουσίαν, ἔτε κατὰ συμβεβηκέναι, ἔτε κατὰ παραγωγὴν, ἀλλὰ κατὰ ὁμοσιώδη σὺνδυσίν τε καὶ βέλησιν ὁ Υἱὸς ὑπὸ τῷ Ἁγίῳ Πνύματος πέμπεται κατὰ τὸν αὐτὸν ἄρα λόγον, ὁμοίως καὶ τὸ Πνεῦμα πέμπεται παρὰ τῷ Υἱῷ.

Ἐνθεν τοι παραπλησίως καὶ τὸ Ἐπιχείρημα περιτρέπεται τὸ τῷ Ἰησοῦ (66) τῷ λόγον ἔτι περαιτέρω προβαλλομένον, ὡς εἰς

διὰ τὸ μοναδικόν τε καὶ ἐνιαῖον τῆς ἐν αὐταῖς ἐξουσίας καὶ φύσεως. Ἄλλως γὰρ ἐπὶ τῶν κλισμάτων, ὁ τῷ τὴν εἶναι λόγος, τῆς ἐνότητος εἴτε δυνάμεως, εἴτε ἐνεργείας, ὁ αὐτὸς ἐπ' ἀκριβὲς ὢν, τῷ μὲν εἶδει, μίαν καὶ τὴν δυνάμιν παρέρχεται, ἢ τὴν ἐνεργείαν μίαν δὲ καὶ τῷ ἀριθμῷ, ἑδαιμάς.

(66) Κιχωβίς ἐν Ζητήμ: Γ'. Σελ: 102.

„εἰς Ἀποστολὴν ἐπιζητεῖται, τὸ κινεῖσθαι ὅπως τὸ πεμπόμενον „Πρόσωπον πρὸς τῷ πέμποντος, ἢτοι κατ' ἐξουσίαν, ἢ κατὰ συμβεβηκὸς, ἢ κατὰ δυνάμιν ἐναισενεχθεῖσαν, ἢ κατὰ φυσικὴν ἀρχὴν, ὃν δὴ πᾶς τρόπον ὁ κλάδος ἐκ τῷ δένδρῳ ἐκπέμπεται. Ὡν περ, ἐπειδὴ μηδὲν ἂν προσήκοι τοῖς ὑπερθεοῖς Προσώποις παρὰ τὸ ἔχαιον, ἐκ ἂν λέγεσθαι ἔχοι, ὅτι τὸ Πνεῦμα ἀπ' αἰῶνος πέμποιτο παρὰ τῷ Υἱῷ, εἰ μὴ ἐξ αὐτῷ τινὶ κατὰ φύσιν ἀρχὴν διετέλει ἀποφερόμενον. Καὶ γάρ τοι, παρὰ τῆς ἐξαριθμηθέντος τῷ πέμπειν τρόπου, ἔτι καὶ διὰ τινὶ ὁμοσιότητι, καὶ τινὶ τῶν θελημάτων εἰς ταῦτ' ὁμολογῶσιν ἐν τοῖς Θεοῖς, πρόσωπον παρὰ προσώπῳ πέμπεσθαι, δῆλον αὐτόθεν: ὅτι καὶ ὁ Υἱὸς πέμπεται μὲν παρὰ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι, ἔτε δὲ κατ' ἐξουσίαν ἐς τὸ πεμπόμενος, ἔτε κατὰ συμβεβηκὸς ὑποθήκῃ, ἔτε κατὰ μετάδοσιν ἐναισάκτως δυνάμει, ἔτε κατὰ φυσικὴν ἀρχὴν τε καὶ πρόβλυσιν· ἀλλὰ κατὰ τινὶ ὁμοσιώδη Θελήσει μόνῃ, καὶ τινὶ εἰς τὸ αὐτὸ σωμαπίνυσι, ὥστε ἔρηται. Ἀλλ' ὅτι γεμὴν τὸ Πνεῦμα τὸ Ἁγ: αἰωνίως λέγεται παρὰ τῷ Υἱῷ πέμπεσθαι, ψοδῶς πάνυ τῷ λέγεται· καὶ τόδε ὁ Ἰησοῦς προσλαμβάνων, τὸ ἐν ἀρχῇ λαμβάνει αἰτέμενον.

Ἀλλ' ἐνίσταται μέντοι ὁ αὐτὸς Ἰησοῦς, καὶ ἀλλαχῇ. (67) „Ζητητέον γὰρ (Φησὶ) πῶς καὶ ἐν τῇ τοιαύτῃ δόσει, ἢ πρὸς τὰ „ἐκτὸς μετάδοσει, ὁ Υἱὸς ἔχει πρὸς τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον; Πότερον ἀρχῆς τινος λόγον ἐστὶν ἔχων, ἢ ὑπεργίας, καθ' ὃν παρὰ „τῷ Υἱῷ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα δίδεται; ἢ τέως λόγον ἔχει σωεργῆς τε καὶ συμπράττοντος; ἢ ἐπύδοκῆς τε καὶ ἐπιδοκιμαζόντος; ὃ δὴ περ ἔχαιον εἶγε φαῖεν (ὥστε εἰώθασιν) σωμαπλῆον: „ὅτι ἄρα λέγειν ἐξόν τε καὶ δεόν, καὶ αὐτὸν δὴ τὸν Πατέρα „πέμπεσθαι παρὰ τῷ Υἱῷ καὶ παρὰ τῷ Πνεύματι, καὶ παρ' αὐτῶν δίδεσθαι, καὶ ἐκπροϊέναι ἐκ τῶν αὐτῶν, Τὸ δ' ἔτιως ἀποδαικτέον: Ἰωάν: 18. 25. Φησὶν ὁ Κύριος Ἰησοῦς: Εἴ τις ἀγαπᾷ με τὸν λόγον μὲς τηρήσει· καὶ ὁ Πατὴρ μὲς ἀγαπήσει αὐτὸν, „καὶ πρὸς αὐτὸν ἐλθοσόμεθα, καὶ μονῶ παρ' αὐτῷ ποιήσομεν. „Βέβαιον ἔν ἐστιν, ὅτι πρὸς τὸν τηρῶντα τὰς ἐντολὰς τῷ Χριστῷ, „ἐ μόνον ὁ Υἱὸς καὶ τὸ Πνεῦμα, ἀλλὰ καὶ ὁ Πατὴρ αὐτὸς παραγίνεται· ἔ δὴ τεθέντος, ὥ δέ πως ἐπιχειρῶ: Ὑμεῖς φατέ: „διὰ δὴ τῷτο εἶναι τὸ Πνεῦμα, προϊέναι τε καὶ παρὰ Πατρός „καὶ Υἱῷ, ἢ ἐξ ἀμφοῖν, ἢ ἐκ Πατρὸς δι' Υἱῷ· ὅτι τὸ Ἅγιον „Πνεῦμα παραγίνεται πρὸς ἡμᾶς, καὶ διδάσκει ἡμᾶς, καὶ χορηγεῖ ἡμῖν τὰ αὐτῷ χαρίσματα, ἐπύδοκῆς τε Πατρὸς καὶ „τῷ

(67) Κιχώσιος Ζητήμ: 5'. Σελ: 69.

„τῷ Υἱῷ. Ἀλλὰ μὴ ἐπὶ δόξαντος καὶ τῷ Υἱῷ καὶ τῷ Ἁγ: Πνδ-  
 „ματος, καὶ ὁ Πατὴρ πρὸς ἡμᾶς παραγίνεται, ὡς ἐκ τῷ προ-  
 „τεθέντος χωρὶς δῆλον; καὶ διδάσκει δὲ ἡμᾶς, ὡς ἐστὶ σαφές  
 „Ματθ: 15'. ἐν τῇ δοθείσῃ τῷ Μακαρίῳ Πέτρῳ ἀποκαλύψει,  
 „παρὰ τῷ Πατρὶ τῷ ἐν τοῖς ἔρανοῖς· καὶ ἐπιδαψιλεύεται ἡμῖν  
 „τὰς παρ' αὐτῷ, ὡς συμφανές ἐξ ἀρχῆς τῆς Ἰακώβου Ἐπιστολῆς.  
 „Ἄρα δι' ἡμῶν αἰτίαν φατέ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον εἶναι παρὰ τῷ  
 „Υἱῷ, προῖεναι, ἀναβλύζειν, προχεῖσθαι ἐκ τῷ Υἱῷ διὰ τὴν αὐτῶν  
 „ὀφείλετε λέγειν καὶ τὸν Πατέρα εἶναι, προῖεναι, ἀναβλύζειν,  
 „προχεῖσθαι παρὰ τῷ Υἱῷ καὶ τῷ Ἁγίῳ Πνδματος. Ὁψόμεθα  
 „δὴ ἔπειτα ὁ Σφῶν αὐτῶν, τῷ Σφῶν τῷ δε ἐκκρεθῆς, ἐκ ἀπε-  
 „λαθήσεται,,.

Ἀλλὰ γὰρ πρῶτον, εἰ μὴ ἡ τῆς θελήσεώς τε καὶ ἐνεργείας  
 ἦρκει ταυτότης, ὥστε λέγεσθαι, ὅτι ὑπὸ τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα τὸ  
 Ἅγιον πέμπεται, ἀπαιτοῖτο δ' ἂν προσέτι, τὸ καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ τὸ  
 Πνεῦμα ἐκπορεύεσθαι. ἔποιτ' ἂν ἐξ ἀνάγκης ἐντεῦθεν, τῷ Υἱῷ  
 καὶ τῷ Πνδματος πρὸς ἡμᾶς ἐρχομένων, τὸ μὲν Πνεῦμα τὸ  
 Ἅγιον πέμπεσθαι παρὰ τῷ Υἱῷ, ἐκέτι δὲ καὶ τὸν Υἱὸν παρὰ τῷ  
 Πνδματος. Ἐποῖτο δ' ἂν ἔτι παραπλησίως, τῷ Πατρὶ, καὶ τῷ  
 Υἱῷ, καὶ τῷ Πνδματος ὡς ἡμᾶς παραγινόμενων, τὸν Υἱὸν ἦκειν  
 ἐπενεργῶντος τῷ Πατρὶ, καὶ σωδοκῶντος, οἷα περ αἰτίαι· ἀλλ'  
 ἔψοιτ' ἂν, ἐντεῦθεν ἅμα καὶ τὸν Υἱὸν πρὸς ἡμᾶς ἐρχεσθαι με-  
 τά γε τῷ Πνδματος, καὶ αὐτὸ πεμπόμενον, ὅπερ ἐκ ἔστιν.  
 Ἀπαντες γὰρ οἱ Θεοὶ Πατέρες ὁμοφρόνως διδάσκουσι, τὴν τῷ  
 Ἁγίῳ Πνδματος Ἀποστολῇ, καθ' ἣν ἐπὶ τῆς Ἀποστόλης ἐπέμφθη  
 ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῆς Πεντηκοστῆς, καὶ τῇ καθ' ἣν ἐν εἶδει Περισερᾶς  
 ἐπὶ τῷ Χριστῷ κατήλθεν ἐν τῷ Βαπτίσματι, καὶ ἐπειδὴν ἔτι  
 πρὸς τῆς πισθόντας ὁσημέραι πέμπεται, ἰδιαιτέραν εἶναι τινὰ  
 τῷ Ἁγίῳ Πνδματος ταύτῃ Ἀποστολῇ, μὴ δὲ καὶ τῷ Υἱῷ κατὰ  
 τὸ αὐτὸ τὴν αὐτῇ ἐπανήκσαν. Τὴν δὲ Ἀποστολῇ τῷ Υἱῷ τὴν  
 ἐν τῷ τῷ χρόνῳ πληρώματι γεγεννημένῳ, μόνῳ εἶναι τὴν ἐναν-  
 θρώπησιν· μηδὲ γενέσθαι ἄρα ἐκ τῷ Υἱῷ, ὡς ἐξ αἰτίας ἐκείνῳ,  
 ἀλλ' αἰτίαν παρὰ τῷ ἐτέρῳ ὑπείναι δι' ἣν, καίτοι ὁ Υἱὸς καὶ  
 τὸ Πνεῦμα πρὸς ἡμᾶς ἐρχονται, μόνον ἀλλ' ἐν τῷ Πνεύματι πέμ-  
 πεσθαι λέγεται παρὰ τῷ Υἱῷ.

Ἀμέλειτοι: ὅτε τὸ Πνεῦμα πέμπεται λέγεται ἐν εἶδεσιν  
 ὁρατοῖς· οἷον ἐν μὲν πυρίναις γλώσσαις τοῖς Ἀποστόλοις, ἐν δὲ  
 Περισερᾶς εἶδει ἐπὶ τῷ Χριστῷ βαπτισθέντος· συνεπιρρεῖ δὴ πρὸς  
 τῷ καὶ ὁ Υἱὸς τῷ Θεῷ διὰ τὸ ταῦτόν τῆς θελήσεως, τῆς τε  
 εὐδοκίας, καὶ τῆς ἐνεργείας (καὶ γάρτοι παραπλησίως καὶ ὁ  
 Υἱὸς δημιουργεῖ κτίσων τὰ ὀρώμενα κτίσματα καὶ τὰ εἶδη)· μό-  
 νον δὲ τὸ Πνεῦμα διὰ τῷ παρὰ τῷ Υἱῷ λέγεται ἀπεσάλθαι,

Τόμ: Β'.

P

ὅτι



ὅτι μόνον αὐτῷ ὑπ' ἐκείνοις ἐπεφάνη τοῖς ὁράτοις ἔδεσι, καὶ ταῦτα οἷον προσιδιοποιήσατο ἑαυτῷ, καί τοιγε καὶ ὑπὸ τῆς Υἱᾶς ποιηθέντα. Καίπερ ἄρα σωέδραμεν ὁ Υἱὸς ὁμοίως διὰ τὴν τῆς θελήσεως καὶ ἐνεργείας ταυτότητα· ἐμὴν ἀλλ' ὅτε τὸ Ἅγιον Πνεῦμα τοῖς Ἀποστόλοις ἐπιπεφοίτηκεν, καὶ αὐτῷ τέτω σωάμα, καὶ ὁ Υἱὸς τῆς Θεᾶς πρὸς αὐτὰς ἐλθεῖν ἂν λέγοιτο, ὥσε κατὰ γε τὰ τῆς Χριστοῦ ῥήματα, διὰ τῆτο καὶ αὐτὸν τιμηκαῦτα ὑπὸ τῆς Ἁγίας Πνεύματος ἀπεσάλθαι. Οὐ γὰρ ὁ Χριστὸς ὑπὸ τῷ ὁρατῷ εἶδει ἐκείνῳ ἐπέφανεν, ἐδ' ἑαυτῷ τὰς μορφὰς ἐκείνας ἐξιδιώσατο, καθάπερ δὴ τῆτο περὶ τῆς Ἁγίας προσήκει λεγεσθαι Πνεύματος: Τὸ δ' αὐτό μοι νόει καὶ ἄλλως, ἐνθα τὸ Πνεῦμα πρὸς ἡμᾶς παραγίνεται, καὶ ἐν διαφόροις προσπαραληφθεῖσι τεκμηρίοις παραδηλὸν ἑαυτὸ ἀξιοῖ· ὡς ὁ τῆς κατὰ τῶν Ἀρειανῶν Ἐπιτομῆς Συγγραφεὺς, Φησὶ, παρὰ Σιρμόνδῳ Σελ: 108. παραπλησίως δὲ ἄρα καὶ ἐνθα ἐπὶ τῆς τῆς Πνεύματος Ἀποστολῆς τῆς πρὸς τὰς πισθόντας ἐδὲν σημεῖον ὁρατὸν ἀναφαίνεται, ἐδὲ τότε διὰ τὴν ἐρημένῳ ταυτότητα τῆς θελήσεως, λέγοιτ' ἂν ὁμοίως ὁ Πατὴρ καὶ ὁ Υἱὸς ὑπὸ τῆς Πνεύματος πέμπεσθαι· εἰ γὰρ κἄνταῦθα ὡσαύτως ὁ Πατὴρ πάρεσι καὶ ὁ Υἱὸς καὶ τὸ Πνεῦμα, κατὰ μίαν εὐδοκίαν, καὶ μιᾷ θελήσει, καὶ μιᾷ ἐνεργείᾳ τῶν χαρισμάτων, δηλονότι, ἐκτελεσικῇ· (ἐ γὰρ δὴπε ταῦτα καθ' ἑαυτὰ ὑφηρεηκότα καθέσηκεν, ἀλλ' ἐνεργήματα, καὶ κατὰ τὸ ἐπόμενον κτισά· ὡς ὁ Θεὸς Φησὶ, Βασίλειος Βιβλ: Ε'. κατὰ Εὐνομίσ, Τόμ: Β'. Σελ: 141.) τῷ γεμῶ ἴσῳ λόγῳ, ὡπερ τὰς ὁρατὰς μορφώσεις ἐκείνας, οἷον τὴν Περισερὰν καὶ τὰς πυρίνας γλώσσας, ἔτω καὶ τὰ κτισὰ ταῦτα δωρήματα, λόγῳ τινὶ προσιδιᾶται ἑαυτῷ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, καὶ ἀοράτως πως διὰ τέτων ἑαυτὸ ἡμῖν παρὸν ἀναφαίνει. Παρεκτὸς δὲ τέτων ἔτι, τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐντεῦθεν καὶ αὐτὸ πέμπειν ἑαυτὸ λέγεται· διὸ καὶ πέμπον ἐστὶ καὶ πεμπόμενον: τὸ μὲν, τῷ κοινῷ λόγῳ, ἅτε δὴ τὰ παρ' ἑαυτῆς δῶρα ἀποτελὲν, καὶ κατ' εὐδοκίαν τε καὶ θέλησιν τὴν ἑαυτῆς ἡμῖν ἐπιδημῶν· τὸ δὲ, λόγῳ τινὶ ἰδιαιτέρῳ, εἰ καὶ μὴ ἐξ ἑαυτῆς ταύτη γε ἐκπορεύομενον. Ταῦτα γὰρ τὸσάκις διετέλεσεν διδάσκοντες οἱ Θεοὶ Πατέρες, ὁσάκις ἀνωτέρῳ ἐδίδασκον ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα τῷ λόγῳ τῶν χαρισμάτων, καὶ ἐχὶ κατὰ τὴν Θεότην πέμπεται. Ἐπεὶ γὰρ ἐντεῦθεν, ἰδιαιτέρῳ τινὶ λόγῳ τὸ Πνεῦμα πέμπεσθαι κατὰ τὰ χαρίσματα, καὶ ἐχὶ τῷ κοινῷ καθ' ὃν ὅτε Πατὴρ καὶ ὁ Υἱὸς τὰ αὐτὰ δῶρα ὁμοίως τε κτίζουσι, καὶ πρὸς ἡμᾶς ἐπιχέουσιν. Ἐπειδὴ τοίνυν κατὰ τινὰ λόγον, ὡπερ δὴ τὰς ἔξωθεν τῇ ὁράσει προσιπτέσας μορφὰς, ἔτω καὶ τὰ ἴδια αὐτῆς χαρίσματα, ἅπερ ἡμῖν ἐπιχορηγεῖ, ἑαυτῷ προσιδιοποιεῖται τὸ Πνεῦμα, εὐδηλον ὡς ἐδόλως ἔπεται καὶ τὸν Υἱὸν ὑπὸ τῆς Πνεύματος πέμπεσθαι, ὁπότε

ὁπότε πρὸς ἡμᾶς σὺν αὐτῷ γε τῷ Πνεύματι ἦκει κατ' ἐυδοκίαν καὶ θέλησιν αὐτῶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι. Ἐκδηλον δὲ καὶ ὅτι (εἰ μὴ δέοι τὸν Υἱὸν καὶ τιωκαῦτα λέγειν ὑπὸ τῷ Ἁγίῳ πεμπόμενον εἶναι Πνεύματος) εὐδολως ἐπιζητεῖται, τὸ κατὰ τὸν τῆς ἀρχῆς λόγον καὶ τὸ Πνεῦμα χρῆναι δοξάζειν ὑπὸ τῷ Υἱῷ πέμπεσθαι. Ἀλλὰ ταῦτα πρὸς τὴν ἀνθυποφορὰν ἐκείνῳ. Καὶ δὴ χωρῶμεν.

Τελούταῖον ἀντεπῆγον: Ὁ Πατὴρ μόνος εὐδαμῶς πεμπόμενος ἀναγινώσκεται· εἰ δὲ ἄλλον δήπερ λόγον, ἢ διότι ἐτέρῳ τῷ αἰτίᾳ τῆς ιδίας ὑπάρξεως εὐδαμῶς ἐποφείλει. Τὸ ἄρα πέμπεσθαι σημαίνει, τὸ παραγόμενον εἶναι· τὸ δέ τοι Πνεῦμα καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ πρόεισιν, ἐπειδήπερ ἐξ αὐτῶ πέμπεται — Ἀλλ' ὡς ἡδιστα μὲν ἡμεῖς ἐκείνο σωομολογῶμεν, τὸ τὸν αἰτίαν τῷ εἶναι μὴ ἔχοντα, μηδὲ πέμπεσθαι καὶ τὸ τὸν πεμπόμενον, καὶ αἰτίαν ἔχοντα τῷ ἐξ ἧς παράγοιτο ἐξ ἀνάγκης. Ψυδὲς γεμῶν τὸ, ἐκ τῷ μὴ διώσθαι πεμφθῆναι τὸν αἰτίαν μὴ ἔχοντα τῷ προβάλλεσθαι, σωάγεσθαι καὶ τὸν πεμπόμενον ἐξ ἀνάγκης παρῆχθαι παρὰ τῷ πέμποντος. Πέμπει δήπερ τὸν Υἱὸν τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον εἰς τὸ σαρκωθῆναι· μήποτε δὲ ἄρα παρὰ τῷτο καὶ ὁ Υἱὸς ὑπὸ τῷ Πνεύματι προβάλλεται, ἢ γὰρ γεννᾶται; Πέμπει ἑαυτὸν ὁ Υἱὸς, πέμπει δ' ἑαυτὸ καὶ τὸ Πνεῦμα, ἀλλ' εὐδέτερος τῶτων ἀρχὴ καὶ αἰτία τῷ εἶναι αὐτὸς ἑαυτῷ καθέστηκε; Μᾶλλον δὲ ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ ὁ Ναζιανζηνὸς καὶ Αὔγουστινὸς εἰσι διδάσκοντες, ὅτι τὸ Πνεῦμα διὰ τῆς πέμψεως ἐκ τῷ Πατρὸς ἐπιγινώσκεται ὄν, καὶ εἰ καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ ἐκπορεύομενον· καθὰ πλατύτερον ἀνωτέρῳ τῷ ἐκείνων διδασκαλίαν σωεωράκαμεν, περὶ τῷ πρὸς τὸ Α': τῶν Ἐπιχειρημάτων τρίτῳ Ἀπάντησιν.

Ὁ δὲ Ἰησοῦς (68) ἔτι ἐνίσταται: „Ἐν τοῖς Θεοῖς, φησὶ, „κυρίως εἰπεῖν, εἰ μὴ ἂν ῥηθείη Πρόσωπον πέμπον, καὶ ταῦτα αἰω- „νίως, εἰ μὴ, ὁ λόγον ἔχει ἀρχῆς πρὸς γε τὸ Πρόσωπον τὸ πεμ- „πόμενον. Καὶ ἔτος ὁ μονώτατος ἐστὶ λόγος δι' ὃν ὁ Πατὴρ εἰς „λέγεται πέμπεσθαι, (καθὰ καὶ Αὐγυστῖνος μαρτυρεῖ ἐν τῷ Δ'. „Βιβλ: τῶν περὶ Τριάδος Κεφαλ: Κ'. καὶ ἐν Τόμ: 5'. κατὰ τῆς „τῶν Ἀρειανῶν Ὀμιλίας, Κεφ: Δ'.) ὅτι μόνος εἰς ἔχει αἰτίαν, „ἐξ ἧς πρόεισι. Τῷ εἰ μὴ πέμπεσθαι τὸν Πατέρα λόγος ἐστὶ, τὸ μὴ ἔχειν τὸν ἐξ εἰς πρόεισιν· ὁ ἄρα μὴ ἔχων τὸν αἰτίον ἐξ εἰς πρόεισιν, εἰ πέμπεται. Καὶ ἔτω, τὸ δι' ἀντιπροφῆς ἐπόμενον ἐντεῦθεν· ὁ πεμπόμενος αἰτίον ἔχει τὸν ἐξ εἰς πρόεισιν. Αὕτη ἄρα ἐστὶν ἡ τῷ Αὐγυστίνῳ Διδασκαλία. — Ἀλλὰ ψυδὲς τὸ ἐντεῦ-  
θεν

(68) Κιχώριος Ζητήμ: Γ'. Σελ: 102.

θεν ἔπεσθαι, ὅτι τῷ πεμπόμενῳ ὁ πέμπων ἐστὶν ὁ Προβολεύς· καὶ γὰρ ὁ πεμπόμενος ἐξ ἀνάγκης Προβολέα ἔχει τὸν αὐτὸν πέμποντα. Οὐδὲ δὴ τῷτο ὁ ἐπενεχθεὶς ἐκ τῷ Αὐγυστίνῳ λόγος διαπισθῆται· ἐδὲ γὰρ ἔφη, ὅτι ὁ παρά τιος πεμπόμενος, αἴτιον ἔχει τὸν αὐτὸν, ἢ ὅτι τὸν πέμποντα· ἀλλ' ἀπλῶς μόνον· ὁ πεμπόμενος ἔχει Προβολέα τὸν ἀφ' οὗ πρόεσιν. Ὡς εἶγε τῷτο νοηθεῖν περὶ τῷ πέμποντος ἀπ' αἰῶνος, ἀληθὲς πάντως ὅτι ὁ πέμπων λόγον ἀρχῆς ἔχει ἐξ ἀνάγκης, ὡς πρὸς τὸ παρ' αὐτῷ πεμπόμενον Πρόσωπον. Οὐκ ἐν ἀλλ' ἐν ἀληθείᾳ, ὅτι καὶ τὸ Πανάγιον Πνεῦμα ἔτω παρὰ τῷ Υἱῷ πέμπεται.

Ἀλλὰ παρὰ τῷ ἐκδοχῶ τῷδε „τῆς πέμψεως,, καθ' ἣν ἢ πρὸς ἡμᾶς μόνον Ἀποστολὴ ἐννοεῖται, ἐστὶν ὅτε καὶ τῷ προαιωνιόν τε καὶ ὑποστατικῶς πρόεσιν οἱ Πατέρες ὑπὸ τῇ φωνῇ ταύτῃ ἐξεδέξαντο. Οὕτω γὰρ καὶ ἈΝΑΣΤΑΣΙΟΝ ἐξεκληφότα ἴσμεν τὸν Σιναίτῳ ἐν τῷ Ὁδηγῷ, καὶ ΕΠΙΦΑΝΙΟΝ πολλαχῶς, ἐν τῇ Πραγματείᾳ τῇ περὶ τῶν μαρτυριῶν τῶν Ἀνατολικῶν Πατέρων, ἐπὶ τῆς 5'. Ἐκατονταετηρίδος περὶ τῷ τῷ αὐτῷ Ἀναστασίῳ ῥῆσιν κατείδομεν. Καὶ ΚΥΡΙΛΛΟΣ δὲ ὁ Ἀλεξανδρεὺς Βιβλ.: Β'. τῶν εἰς τὸν Ἰωάνν: Κεφαλ.: Ε'. Τόμ.: Δ'. Σελ.: 197. „Ἀπε- „σάλθαι, φησὶ, δῆλον δὲ ὅτι παρὰ τῷ Θεῷ καὶ Πατρὶ, ἢ κατὰ „τὸν τῆς ἐνανθρωπήσεως τρόπον, καθ' ὃν ἐπέλαμψε τῷ κόσμῳ „μετὰ σαρκὸς, εὐδοκίᾳ καὶ σωανέσει τῷ Πατρός· ἢ ὡς Λόγος „ἐκ τῷ γεννήσαντος νῦν προκύπτων τρόπον τινὰ, καὶ τὸ δόξαν „ἀποπληρῶν,,. Τὰ δ' αὐτὰ ἔχει καὶ Βιβλ.: Β'. τῶν εἰς Ἰωάννῳ, Κεφαλ.: Γ'. Τόμ.: Δ'. Σελ.: 169. Καὶ Βιβλ.: Δ'. εἰς Ἰωάνν: Κεφ.: Ε'. Σελ.: 413. „Ἰεὺν δὲ, ὅτι διὰ τῷ πάλιν ἀπεσάλθαι λέγειν, „ἐκ ἐν δούτεροις τῆς τῷ Πατρὶ ἀξίας εἶναι ὄντα δεικνύει· καὶ „γὰρ δαλοπρεπῆ νοητέον τῷ Ἀποστολῶ· εἰ καὶ ὅτι μάλιστα τῷ „τῷ δέλῳ μορφῶν ἡμφιεσμένος, ἀνεγκλήτως ἂν λέγοι καὶ ταῦτα „περὶ αὐτῷ. Ἀπεσάλη δὲ ἔτις ὡς Λόγος τῷ Νῷ, ὡς ἀπάνυγα- „σμα τὸ ἡλιακὸν ἐξ αὐτῷ,,. Τοιγαρὲν καὶ περὶ τῷ Υἱῷ, καὶ περὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος τῷ φωνῶ τῆς Ἀποστολῆς, περὶ τῆς ἀπ' αἰῶνος προόδου ἐκλαμβάνουσιν ἐνίοτε οἱ Πατέρες. Ἀλλ' ἢ ἐκδοχὴ αὐτῇ ὡς ἡμῖς τείνει, καὶ ἄραρε. Νῦν γὰρ περὶ τῆς κατὰ χρόνον μόνον, τῆς εἰς τὸν κόσμον καὶ πρὸς ἡμᾶς γινομένης πέμψεως Υἱῷ τε καὶ Πνεύματος ἐνταῦθα ἡμῖν ὁ λόγος ἐστὶ, καὶ ὑπὸ τῇδε μόνῃ τῇ ἐννοίᾳ τῷ φωνῶ τῆς Ἀποστολῆς ἐκδεχόμεθα. Ὅτι δὲ κατὰ τῷδε τῷ ἐννοίᾳ ἢ πέμψις αὐτῇ ἐστὶν ἢ τῷ Προσώπῳ παραγωγῇ, ἢ ὅτι ταύτῳ προὑποτίθησι, ψευδὲς ἐστὶ τὸ παράπαν. Καὶ μὲν δὴ, καὶ τῆς Προτάσεως ἐκείνης κατὰ τῷ προτέραν τῶν ἐννοιῶν ἐκκληφθείσης, ψευδὲς ἐστὶ παντάπασιν αὐθις, τὸ πέμπεσθαι λέγειν τὸ Πνεῦμα παρὰ τῷ Υἱῷ· καὶ ἐδὲν τι σωτελεῖ

σωτελεῖ ἐνταῦθα, τὸ τιῶ φωνῶ τῆς πέμψεως ἐνίστε καὶ ἀπ' αἰῶνος λαμβάνεσθαι, ὥς ἐφ' ἧς τις ἂν χρονικῶς ἀποσέλλοιτο, τῷ τῶν ὑπ' ἐκείνης ἀπεσάλλθαι καὶ αἰωνίως. Καὶ γάρ τοι καὶ περὶ τῷ Τίῳ ἢ τῆς Ἀποστολῆς φωνῇ ἐλαμβάνετο· ἀλλ' ἔ γάρ ὁ Τίος ἀπ' αἰῶνος ὑπὸ τῷ Πνύματος πέμπεται, εἰ καὶ κατὰ χρόνον εἰς τὸν δε τὸν κόσμον ἐπὶ τῷ σαρκωθῶναι ἀπέσεται.

"Εχατον δ' αὖ, τῶν τις Ἰησιτῶν πρὸς ταῦτα, ἐκ τινων ῥήσεων ΓΡΗΓΟΡΙΟΥ τῷ Θαυματουργῷ, καὶ ΓΡΗΓΟΡΙΟΥ τῷ Θεολόγῳ, καὶ ἈΘΑΝΑΣΙΟΥ, ἐκ τῷ Β'. τῶν κατὰ Ἀρειανῶν Λόγῳ ἀντιπροτίθῃσι, ῥᾶστα ἐπιλυθήσεται, παρ' οἷς ἐγκύψαι τοῖς ἐκείνων Βιβλίοις ἂν γένοιτο. Ῥᾶσον γὰρ ἂν εἶη δεῖξαι, τῷ τῶν λεγομένων ὕφους ἐξεταθέντος, ἢ περὶ τῆς χρονικῆς μόνον Ἀποστολῆς ἐκείνοις εἶναι τὸν λόγον· ἢ μηδὲν ἐπάναγκες εἶναι τὰ λεγόμενα νοεῖσθαι περὶ τῆς ὑποστατικῆς προέσεως. Ταῖς δὲ προβαλλομέναις ὑπὸ τῷ αὐτῷ μαρτυρίας ἈΘΑΝΑΣΙΟΥ, ἐκ τῷ Βιβλίῳ τῷ περὶ τῆς προσληφθείσης ἀνθρωπίνης φύσεως· καὶ τῆς πρὸς Σεραπίωνα Ἐπιστολῆς, περὶ τὸ τέλος. Καὶ δὴ καὶ ἈΝΑΣΤΑΣΙΟΥ τῷ Σινάτῃ, ἐκ τῷ Α'. Βιβλ.: τῷ περὶ τῶν Δογματῶν τῆς Πίσεως. Ταύτας, ἐν τῇ Πραγματείᾳ, τῇ περὶ τῶν ἡμῶν ἀντιπροβαλλομένων χρήσεων ἐκ τῶν Ἀνατολικῶν Πατέρων, ἀνακρίναντες διελύσαμεν. Τὰ δὲ ΦΟΥΛΓΕΝΤΙΟΥ ἅπερ ὁμοίως σιῶπται, ἅτε δὴ παραφθορὰν παθόντα, ὥς ἐν τοῖς περὶ τῶν γενομένων διανοούσεων ἐν τοῖς τῶν Λατίνων Πατέρων Συγγράμμασιν ἀποδέδεικται· ἔδοτιξ ἡμᾶς ἐπιστρέφει. Καὶ ταῦτα μὲν εἰς τόδε πρὸς τὸ Ἐπιχέρημα τῶν Λατίνων, δι' ἧς ἐκ τῆς παρὰ τῷ Τίῳ Πέμψεως τῷ Ἀγίῳ Πνύματος, καὶ τιῶ ἐκ τῷ αὐτῷ Ἐκπόρῳσιν ὑπῆρχον ἐπισιῶγοντες.

## Π Ρ Α Γ Μ Α Τ Ε Ϊ Α Θ.

Ἐν ἣ ἀποδείκνυται, ὅτι τὸ ἐμφυσησά τὸν Σωτῆρα τοῖς Ἀπο-  
στόλοις, καὶ εἰπεῖν αὐτοῖς: λάβετε Πνεῦμα Ἅγιον· ἐδὲν συμ-  
βάλλεται εἰς κατασκώλῃ τῆς Ἐκπορεύσεως τῆς Ἀγίας  
Πνεύματος, καὶ ἐκ τῆς Τίξης.

Πρὸς ἀπόδειξιν ἔτι τῆς ἰδίας αὐτῶν δόξης, προτάνασιν οἱ Λα-  
τῖνοι καὶ τὸ ὑπὸ Χριστοῦ πραχθὲν, ὅτε ἐνεφύσησε τοῖς Ἀποστόλοις  
αὐτοῖς, καὶ εἶπεν αὐτοῖς: „Λάβετε Πνεῦμα Ἅγιον,“. Οὐ γὰρ ἂν  
ἐνεφύσησεν, εἰμὴ ἐξ αὐτῆς ὡς τὸ Πνεῦμα ἐκπορευόμενον· εἰμὴ  
διὰ τῆς, δηλονότι, δεξιᾶς ἐσκόπει, ὅτι ἐξ αὐτῆς ἀπ' αἰῶνος  
φυσᾶται, τρεῖς, πνεῖται τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. Ἐτι δὲ μία  
ἐστὶν ἡ τῆς Ἀγίας Πνεύματος πνεύσις· ἐνταῦθα δὲ ὑπὸ τῆς Τίξης  
πνέεται, ἥτοι ἐμφυσᾶται τὸ Ἅγιον Πνεῦμα· ἡ ἄρα ἐμφύσησις  
αὕτη, ἡ αὕτη ἐστὶ τῇ ἀπ' αἰῶνος πνεύσει τῆς Πνεύματος.

## Ἀ Π Ἀ Ν Τ Η Σ Ι Σ Α'.

Ἀλλὰ πρῶτον, εἰτις, ἐκ τῆς ἐμφυσησεως τῆς Χριστοῦ ἐκείνης,  
διὰ πωδῆς ποιῆται τὸν αἷτιον ἐπισιμάγειν τῆς Πνεύματος, ἐχλ  
τὸν Τίδον τῆς Θεῆς, τὸν δὲ Πατέρα μόνον ἐντεῦθεν ἂν εἰσβάλ-  
λαν ἔχοι, τὸν Προβόλεα εἶναι τῆς Πνεύματος. Τῆτο γὰρ ὁ  
Θεολόγος διδάσκει ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ, Λόγῳ ΛΖ'. Σελ: 611. „Ὅσα  
„δὲ λέγεται ταπεινότερον (περὶ τῆς Ἀγ: Πνεύματος) τὸ δίδοσθαι,  
„τὸ ἀποσέλλεσθαι, τὸ μερίζεσθαι, τὸ χάρισμα, τὸ δώρημα, τὸ  
„ἐμφύσημα· ἡ ἐπαγγελία, ἡ ὑπερένδοξις, εἴ τέ τι τοιοῦτον, ἵνα  
„μὴ καθ' ἑκάστων λέγω: ἐπὶ τῷ πρώτῳ αἰτίαν (τὸν Πατέρα)  
„ἀνεκτεῖν· ἵνα τὸ ἐξ ἑ δειχθῇ, καὶ μὴ τρεῖς ἀρχαὶ μεμερισ-  
„μέναι πολυθέως παραδεχθῶσι,“. Τὸ „ἐμφυσᾶσθαι,“ (Φησὶ) περὶ  
τῆς Ἀγίας Πνεύματος λέγεται, ὡς ἂν δειχθῇ ὅθεν τὸ Πνεῦ-  
μα



μα (1). Ὡς ἂν δῆλον τῆς ἐξ ἑαυτοῦ τοῦ Πνεύματος εἶναι, ἀλλ' ἐξ ἄλλου. Δεικνύς δὲ, τίς ἢ τῷ Πνεύματος αἰτία, δι' ἣν αὐτὸ λέγεται ὑπὸ τοῦ Υἱοῦ ἐμφυσᾶσθαι, τὸν Πατέρα μόνον ὠνόμασεν, ἔτι δὲ καὶ τὸν Υἱόν. Καὶ σαφὲς ἄρ' ἐντεῦθεν ἔπεται, ὅτι ἢ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος ἐμφύσησις, ἢ ἐξ ἑσὶ πῖσις τῆς αὐτοῦ ἐκ τοῦ Υἱοῦ Ἐκπορεύσεως, ἀλλὰ μᾶλλον τῆς ἐκ τοῦ Πατρὸς.

## Ἀ Π Α Ν Τ Η Σ Ι Σ Β'.

Ἐνθεντοι, ὁ, τε ΣΥΓΓΡΑΦΕΥΣ τῷ περὶ Τριάδος Βιβλίῳ, καὶ ὁ ἐκ Δαμασκῶ ἸΩΑΝΝΗΣ, Βιβλ: Α'. περὶ τῆς Ὁρθοδ: Πίς: Κεφαλ: ΙΑ'. (2) ἐν ᾧ διδάσκει τὸ Πνεῦμα τοῖς Ἀποστόλοις ὑπὸ τοῦ Κυρίου ἐμφυσθῆναι, ἅμα κατὰ τὸ αὐτὸ ἀποφάσκει τὴν τῷ Πνεύματος Ἐκπόρυσιν, τὴν ἐκ τοῦ Υἱοῦ. Φασὶ γάρ: „Ἐκ τοῦ Υἱοῦ „τὸ Πνεῦμα ὃ λεγομεν, Πνεῦμα δὲ Υἱοῦ ὀνομάζομεν, καὶ δι' Υἱοῦ „πεφανερῶσθαι καὶ μεταδεδόσθαι ἡμῖν ὁμολογῶμεν. Ἐνεφύσησε „γὰρ, Φησὶ, καὶ εἶπε τοῖς Μαθηταῖς αὐτοῖς: λάβετε Πνεῦμα Ἅγιον. „Ὡστερ ἐκ τοῦ Ἁγίου μὲν, ἢ τε ἀκτῖς, καὶ ἢ ἑλλαμψίς αὐτοῦ „γὰρ ἐστὶν ἢ πηγὴ τῆς ἀκτίνος καὶ τῆς ἑλλαμψείας διὰ δὲ τῆς „ἀκτίνος, καὶ ἢ ἑλλαμψίς ἡμῖν μεταδίδοται καὶ αὕτη ἐστὶν ἢ „Φωτίζουσα ἡμᾶς καὶ μετεχομένη ὑφ' ἡμῶν. Οὐκ ἄρα οἱ Θεοὶ ἡμῶν Πατέρες, τὴν ἐκ τοῦ Υἱοῦ γενομένην ἐμφύσησιν τοῖς Ἀποστόλοις, εἰς πίσωσιν ἐξεδέξαντο τῆς καὶ ἐκ τοῦ Υἱοῦ προόδου τοῦ Ἁγίου Πνεύματος.

Ἀ Π Α Ν -

- (1) Ἐγὼ δὲ τὸν νῦν ἐφιστάνων τῇ ἐνταῦθα τῷ Γρηγορίῳ Θεολογίᾳ τῷ ἐκ τῆς „ἐμφυσήσεως,, ὡς ἐκ λόγου ἀποχερῶντος, τὸν ἐξ ἑ προέειπε τὸ ἐμφυσηθὲν συμβάλλοντος αἰτίον, ἦτοι τὸν Πρεβολέα· εἰ μᾶλλον εὐκαίρως ἔχειν ὥστε ἐκ τοῦ Υἱοῦ προεἶναι τὸ Πνεῦμα ἀποφύνασθαι, (ἐν ὑποθέσει ὅτι καὶ αὐτὸς ἔγω κατὰ τῆς Λατίνης ἐδόξαζον) θαυμάσαιμι ἂν! „ἵνα γὰρ (φησὶ) τὸ ἐξ ἑ δεχθῇ,, Πῶς δ' ἂν εἰσείκοιτο εἶχε „τὸ ἐξ ἑ,, ἀποδειχθῆναι, ἢ εἶπερ, (ἐπεὶ διὰ τοῦ „ἐμφυσηθῆναι,, ἐπὶ τὴν αἰτίαν ἀνάγεται τὸ Πνεῦμα, ὃ δὲ Υἱὸς ἢ „ὃ ἐμφυσήσας,,) τὸ Πνεῦμα, ὡς πρὸς αἰτίον ἀναχθεῖν πρὸς τὸν Υἱόν „τὸν ἐμφυσήσαντα,,; Νῦν δὲ ὁ Θεολόγος τὸν Υἱόν „ἐμφυσῆσαι,, ὁμολογῆσας, ἐκέτι δὴ καὶ αἰτίον ὡπασεν τὸν Υἱόν ὀνομάσαι ἡξίωσεν, ἀλλ' ἐπὶ τὸν Πατέρα ἀνέδραμεν. Θαυμάσαιμι δ' ἂν ἔτι κακῆτος: ἔπερ τὸ „ἐμφύσημα,, ὡς σημαντικὸν τῆς Ἐκπορευτικῆς διωάμεως ὁ Θεοπέσιος Διδάσκαλος (ὁμοίως τοῖς Λατίνοις) ἐκλαβόμενος, εἴτα τοῖς ταπεινότερον περὶ τοῦ Ἁγίου Πνεύματος λεγομένοις, καὶ τόδε φέρων συγκατελέξατο! ὡς εἴ γε μικρὸν ἢ καὶ ταπεινὸν τῷ Πνεύματι, τὸ ἐκ τοῦ Πατρὸς, ἢ καὶ ἐκ τοῦ Υἱοῦ (ἐπειδὴ τὰτο βέλονται) ἐκπορεύεται.
- (2) Ἐν τῇ Λεκυνίᾳ Ἐκδόσει τῇ ἐν ἔτει 1712. ἀριθμεῖται Κεφαλ: Η'. τῷ Α'. Βιβλ: περὶ Ὁρθοδ: Πίς: Τόμ: Α'. Σελ: 141. 142.

Σ 2

## Ἀ Π Α Ν Τ Η Σ Ι Σ Γ'.

Παρεῖχε μὲν γὰρ ὁ τῷ Θεῷ Υἱὸς τοῖς Μαθηταῖς τὸ Πνεῦμα, ὅτε ἐμφυσήσας εἶπεν αὐτοῖς: λάβετε Πνεῦμα Ἅγιον· ἐμὴ δὲ τὸ ἐμφυσηθὲν ἄθμα τοῖς Ἀποστόλοις παρὰ τῷ Υἱῷ τῷ Θεῷ, αὐτοῦ ὡς τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ἀλλὰ τῷτο ὑπεδήλωσεν μόνον. Οὕτω γὰρ ἈΥΓΟΥΣΤΙΝΟΣ Βιβλ: ΙΓ'. περὶ τῆς Θεῆς Πόλεως, Κεφ: ΚΔ'. „Οὐκ ἔστι κτίσμα τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ἀλλὰ Κτίσις· ἐδὲ γὰρ „ἢ πνοὴ ἐκείνη ἢ σωματικὴ, ἢ ἐκ τῷ σώματος τῆς σαρκὸς ἐκ- „προῖστα, ἢ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος ὅσια τε καὶ φύσις ὑπῆρχεν, „ἀλλ' ὑποδήλωσιν τις μᾶλλον ὥστε ἡμᾶς ἐννοῆσαι, καθάπερ ἐφω, „ὅτι τὸ Θεῖον Πνεῦμα, τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ κοινὸν ἐστίν· ὁ „γὰρ ἐστὶν αὐτοῖς ἴδιον ἐν ἐκατέρῳ, ἀλλ' ἐν ἀμφοτέροις ἐστίν· „Καὶ ἐν Βιβλ: Γ'. περὶ τῆς Γενέσεως κατὰ τὸ Γράμμα, Κεφ: Ε'. „Οὐδ' ἐκείνο τὸ ἐμφύσημα, τὸ ἐκ τῷ Κυρίῳ, ἢ ὅσια τῷ Ἁγίῳ „Πνεύματος, ὡς, ὅτε ἐνεφύσησε καὶ εἶπε: Λάβετε Πνεῦμα Ἅγιον, „Καὶ ἈΥΜΩΝ Ἐπίσκοπος Ἀλβεργαδιώσιος, ἐν τῇ Α'. Κυριακῇ τῇ μετὰ τὸ Πάθος, εἰς ἐκείνα: „Λάβετε Πνεῦμα Ἅγιον,,: „Οὐκ „ὡς τὸ ἐμφύσημα ἐκείνο, τὸ Ἅγιον Πνεῦμα· ὥστε ἐδὲ τὸ Πῦρ „ἐκείνο, τῇ δεκάτῃ μετὰ τὴν εἰς ἑρανθὲς Ἀνάληψιν τῷ Κυρίῳ, „τὸ ἐπὶ τῶν Μαθητῶν κατελθόν. Αὕτη ἡ ἐμφύσησις, ἐδὲν ἀλλ', „ἢ αἷρ ὡς κινήσεις· ὥστε ἔν, ἐδ' ἢ πνοὴ μέρος ἐστὶ τῆς ψυχῆς „σε, ὡσαύτως καὶ ἡ ἐμφύσησις ἐκείνη, ἐκ ὡς τὸ Πνεῦμα τὸ „Ἅγιον. Ἀλλὰ διὰ τῆς ἐμφυσήσεως ἐκείνης, καὶ διὰ τῷ σωμα- „τικῷ πυρὸς, ὑπεδήλωτο τὸ ἀσώματον Θεῖον Πνεῦμα, τὸ ἐν καρ- „δίαις τῶν Μαθητῶν ὑπὸ τῷ Κυρίῳ πεμπόμενον,· „Ἐτι δὲ καὶ ῬΑΤΡΑΜΝΟΣ ὁ τῆς Κορνηλίας Μοναχὸς, ἐν τῷ κατὰ τῶν Ἀνατολικῶν Α'. Βιβλ: Κεφ: Γ'. Τόμ: ΙΒ'. τῆς Στάχυολογίας τῶν Ἀρχαίων Συγγραφέων, Σελίδι 7. „Οὐχ ὥστε τὴν σωματικῶς „πνοὴν ἐκείνῃ, τὴν ἐξ ἀέρος ληφθεῖσαν, καὶ τῶν πνευμάτων „διὰ τῷ σώματος ἐκχυθεῖσαν, ὑπάρξαι τὴν ὅσιαν τῷ Ἀγ: Πνεύ- „ματος,· Δι' ἐκείνης ἄρα τῆς ἐμφυσήσεως τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγ: παρὰ τῷ Σωτῆρι δεδοθαι τοῖς Ἀποστόλοις ὑποσημαίνεται, καὶ διαμεριθῆναι· ἡκιστα δ' αὐτὸ τὸ ἄθμα τὴν ὅσιαν εἶναι τὴν τῷ Πνεύματος. Ἀλλὰ γὰρ ὅτι ἡ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος πέμψις, τε- τέστιν, ἢ τῶν χαρισμάτων διανομὴ, ἐδὲν εἰς ἀπόδειξιν σωτελεῖ τῆς τῷ Πνεύματος καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ Ἐκπορεύσεως, δι' ἰδιατέρας ἐφθήμεν Πραγματείας (3) προαποδείξαντες.

ἈΠΑΝ-

(3) Τῆς ἀμέσως προηγηθείσης.

Ἄ Π Ἀ ὐ Ἰ Ἡ Σ Ἰ Σ Δ.

“Ἐπειτα, καὶ εἰ τοῖς Μαθηταῖς ὁ Χριστὸς ἐμφυσᾷ τὸ Πνεῦμα, ἀλλὰ καὶ τὸ Πνεῦμα αὐτὸ ὁμοίως πνεῖ ἐαυτοῦ: „Τὸ γὰρ Πνεῦμα, „φησὶν ὁ Σωτὴρ, ὅπως θέλει πνεῖ,,. Τὸ δὲ ρηθὲν ἔγωγε περὶ τῆς Ἀγίας Πνεύματος ἐρμηνεύουσιν, Αὔγουστινὸς Βιβλ: ΙΕ'. περὶ Τριάδος, Κεφαλ: ΙΘ'. Καὶ ὁ ΒΕΔΑΣ ἐν τῷ Βιβλ: τῶν Ἀναπραγματώσεων, εἰς τὰς Πράξεις τῶν Ἀποστόλων, περὶ τὸ Γ. Κεφάλαιον. Καὶ ἐν Ὁμιλ: 5'. Θερινῇ περὶ τῶν Ἀγίων. Καὶ ἐν Ὁμιλίᾳ Χαιμερινῇ περὶ τῶν Ἀγίων, εἰς τὰ Ἐπιφάνια τῆς Κυρίας. Καὶ ἈΛΒΙΝΟΣ ἔτι ὁ Ἀλκιβίους, Βιβλ: Β'. περὶ Τριάδος Κεφ: ΙΘ'. Καὶ ἈΥΜΩΝ ἐν Κυριακῇ πρὸ τῆς Η'. τῆς τῆς Κυρίας Ἀναλήψεως. Καὶ ἸΓΚΜΑΡΟΣ ὁ Ῥημιώσιος προσέτι, Βιβλ: περὶ τῆς Τριαδικῆς Θεότητος. Καὶ ΡΑΤΡΑΜΝΟΣ τελού-  
ταῖον, Βιβλ: Α'. κατὰ τῶν Ἀνατολικῶν, Κεφ: Ε'. Ὡς τῶν τὰς ρήσεις ἀπαξάπαντων προακηκοότες ἔφθην ἐπὶ τῆς ἀνωτ: Πραγματείας, ὅτι ἡ τῆς Πνεύματος Πέμψις ἐκ ἑσιν ἀπόδειξις „τῆς αὐτῆς Ἐκπορεύσεως καὶ ἐκ τῆς Υἱᾶ, ἐν τῇ Ε'. τῶν ἐκεί „Ἀπαντήσεων,,. Εἴπερ ἔν καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα αὐτὸ ὁμοίως ἑαυτὸ πνεῖ, πῶς ἢ τὰς ἐμφύσεις εἰς πῖσιν ἂν προτεθείη τῆς Ἐκπορεύσεως αὐτῆς καὶ ἐκ τῆς Υἱᾶ; ἢ τέως, ὅπερ ἐντεῦθεν ἂν ἔψοιτο παραπλησίως, τὸ Πνεῦμα ἑαυτῆς αὐτὸ εἶη αἷτιον;

Ἐπειδὴ γὰρ τις ὁμοίως ταῦτα τοῖς Λατίνοις πρᾶττατο, τῶν τις Ἰησχιτῶν (4) πρὸς αὐτὰ ἔτως ἐτίσεται: „Ὁ δὲ Λιθο-  
„λόγος, (5) φησὶ, τὸ Ἅγιον Πνεῦμα πρὸς τὰ ἐκτὸς πνεῦον δέξαι  
„ἐπι-

(4) Αὐτὸς Κιχώσιος ἐν τῷ παρ' αὐτῷ Βήματι, Σελ: 155.

(5) Ρῶσος τις τῇ εὐσεβῆς Δόγματος προσάτης, ἐπὶ τῆς ΙΖ'. ἥδη μεσότης τῶν Σωτηρίων Ἑτῶν Ἑκατονταετηρίδος, περὶ τῆς Ἐκπερύσεως τῇ Ἀγίῃ Πίσματος ἐκ μόνου τῇ Πατρὸς Βιβλίον συγγραψάμενος, τὸ μὲν ἴδιον (ἐφ' ὅτ' αὐτῷ δὴ τῷ σκοπῷ καὶ λαθεῖν ἐλόμενος) ὑπεσίγησεν ὄνομα· τὸ δὲ τοι Εὐσεβίς ὑπερανισάμενος, Λίθον ἐπέγραψε τῇ Συγγράμματος· ὅντινα δῆποτε καὶ νοήσας ἐκείνος Λίθον· εἴτε τὸν εἰς κεφαλῇ γωνίας γινόμενον τῇ Κυρίῃ λόγον, καὶ τὰ διεσῶτα ἐν ταῖς περὶ τῆς Πίσεως διαφοραῖς συνάπτοντα, ὃν οἱ τὸ νέον Δόγμα εἰκοδομήσαντες Λατῖνοι ἀπεδοκίμασαν· εἴτε καὶ τὸν ἀπὸ τῆς Δαδιδικῆς σφενδόνης ἐκπροϊέμενον, καὶ τὸν κατὰ τῆς Ἀγίας παρεμβολῆς φρουαττόμενον Γολιάθ καταβράσσοντα· τῆτον ἔν τὸν Συγγραφέα, ὃ Ἰησιῆτης Κιχῳβίος σσιιδών, τὸ Βῆμα τὸ ὑπ' αὐτῇ φαθὲν σφοδρῶς κατασεύοντα, δι' ἰδιαιτέρας Πραγματείας ἐν εἵδει Προσαρτήματος, ἀπελέγχει προέθετο, τῇ κατ' αὐτὸν ρηθέντι Βήματι σωσεπεκδοθείσης, Σελ: 1134. Ἀρχόμενος δὲ τῶν ἐλέγχων, αὐτίκα ἐξ αὐτῶν προσιμίων, τίμ μὲν ὑποσίγησιν τῇ ὀνόματι τῷ Ἀνταγωνιστῇ ἐπεγκαλῶν κακίζει· ἀντὶ δὲ ΕΥΣΕΒΙΟΥ, παρονομάζειν ἀξιοῖ ΛΙΘΟΛΟΓΟΝ, ἀπὸ τῇ Λίθῃ, αἶμαι, τῇ ἐν τῇ Ἐπιγραφῇ τῇ Συγγράμματος· ταύτῃ τοι καὶ τὸ ΛΙΘΟΛΟΓΟΣ συχνότατα ἐπιλέγει, μετὰ πολλῆς τῆς κορύψης τῆτο φυσῶν, καὶ ὡς ἐπὶ ὀνοματοθεσίᾳ δῆθεν προσφυσάτῃ ἐπαβρωόμενος· ἀγνοῶν ὅτι, καὶ διὰ τῆς παρονομασίας ταύτης, τὸ περιὸν οἱ τῆς ἀπαιδευσίας ἐνέφηνε. Ὁ γὰρ ΛΙΘΟΛΟΓΟΣ τὸν εἰκοδόμον μάλλον σημαίνει, ἢ γὰρ τὸν εἰς οἰκοδομίῳ λίθου ἐπισυλλέγοιτα. Ἀλλὰ

Τόμ: Β'. Τ γὰρ

„ἐπιχειρῶν ἐκ τῶν ῥημάτων ἐκείνων: „τὸ Πνεῦμα ὅπερ θέλει πνεῖ,,  
 „καταγέλαστος ἅπασι γίνεται, παρ' ὅσοις ὡς γνήσιος τῶν Γρα-  
 „φῶν Ἑρμιευὲς τιμᾶται ὁ Θεοφύλακτος, ὁ ῥητῶς διδάσκων ἐν  
 „ἐκείνῳ τῷ χωρίῳ, ἔχι τὸ Πρόσωπον τῆς Παναγίας Τριάδος  
 „ὑποσημαίνεσθαι, ἀλλὰ τὸν Ἄνεμον,,. — Ἀλλὰ γὰρ ἐν ᾧ τὰ ῥή-  
 ματα ταῦτα περὶ τῆς Ἀγ: Πνδύματος ἡμεῖς ἐκτιθέμεθα, ἔ παρ'  
 αὐτὸ καὶ τὸν Θεοφύλακτον, ὡς περὶ τῆς ἀνέμου διηρμιωδύκωτα  
 παρὰ τὸ εἰκὸς αἰτιώμεθα. Ὡς πλείων γὰρ δήπερ τῶν τῆς Ἱε-  
 ρᾶς Γραφῆς τόπων, πλείονες εἰώθασιν ἐπάγεσθαι τῆς διανοίας  
 τῶν γεγραμμένων αἱ ἐρμιυῖαι Ἐξ ἧς σωῆσθαι καὶ τῆς Ἱερᾶς  
 Παλῆρας εἰς διαφερέσας πολλάκις ἐξηγήσεις περιενεχθῶμαι. ὁ περ  
 ἄρα κἀνταῦθα ὁμοίως σωῆπεσε. Τὰ γὰρ τῆς Χριστῆ ἐκεῖνα: „τὸ  
 „Πνεῦμα ὅπερ θέλει πνεῖ,,: διαφόρως ἐννοίας ἐπιδέχεται, ἐξ ὧν  
 ἄλλω μὲν ὁ Θεοφύλακτος, ἄλλω δὲ οἱ μνημονευθέντες Πατέρες  
 ἀναφέρουσιν. Ὡς ἔν ἀληθὲς ἐπικρῶς ἡμῖν ὁ Ἰησοῦς, ὁ κατα-  
 γέλασον ἐπὶ τέτοις εἶναι φάσκων τὸν περὶ τῆς Προσώπε τῆς  
 Ἀγίης Πνδύματος τὰ τῆς Χριστῆ ἐκεῖνα ἐκλαμβάνοντα, ἐπεὶ περὶ  
 τῆς Ἀνέμου αὐτὰ ὁ Θεοφύλακτος ἐξεδέξατο. (6) Ὅσω γὰρ μάλ-  
 λον γέλως αὐτὸς ἀναδεικνύει ἀξίος, ἐν ᾧ τὸν αὐτῷ διαφωνῶντα  
 ἀπειροκάλως καθυποβάλλει τῶν ἄλλων τῷ καταγέλῳτι;

#### Ἀ Π Ἀ Ν Τ Η Σ Ι Σ Ε'.

Ἡ κατὰ τὴν ἡμέραν τῆς Πεντηκοστῆς τῆς Ἀγ: Πνδύματος Πέμ-  
 ψις, μακρῷ τὴν ὑπὸ τῆς Σωτήρος ἐμφύσησιν ἐκείνῳ ἐστὶν ὑπερ-  
 φέρουσα. Εἰ γὰρ τὸ Πνεῦμα τοῖς Μαθηταῖς καὶ ἐμφυσήσας πα-  
 ρέχεν,

- γὰρ προσφύεσθαι ἂν ἴσως προσημαῖναι τὸ ΛΙΘΟΒΟΛΟΝ ὁ Ἰησοῦς τὸν Ἄνδρα,  
 διὰ τῆς ὑπὸ τέττα εὐστόχως ἀφεθέντος λίθου κατὰ τῆς σαθρᾶς Βήματος, ὁ πυρ-  
 γῶσαι κατὰ τῆς Ὁρθοδόξου Δόγματος εἰς κενὸν αὐτὸς ἐματαιοπότησεν.
- (6) Καὶ τοιγε, ἔδ' ἔτῳς ἀπλῶς τὸ ῥηθὲν ὁ Βελγάριας Ἀρχιεπίσκοπος ἐξεδέξατο, ὡς  
 εἶναι μὲν ἐπὶ τῷ κελύφει τῆς Γράμματος, μὴ χωρῆσαι δὲ καὶ ἐνδοτέρῳ ἐπὶ τὸ  
 νοούμενον. Σιωπῶν γὰρ δι' ὅλης τῆς Κεφαλῆς, ὡς ἀπὸ τῶν αἰδητῶν ὁ Κύριος τὸν  
 Νικόδημον, ἐπὶ τὰ ὑπὲρ τὴν αἰδησιν ἀνῆγε νοούμενα, καὶ πρὸς δὴ τοῖς ἄλλοις, καὶ  
 τῷ κινεμένῳ Πνδύματι, τατέξι τῷ Ἀνέμῳ, ὡς παραδείγματι προσεχρήσατο παρα-  
 βολικῶς. Ἐργον ἔν Ἑρμιυῖαις ἐκπληρῶν ἐπισήμονος, πρῶτον μὲν τὴν Παραβολὴν προ-  
 τίθησιν, ἔπειτα δὲ τὸ δηλούμενον ἐπαναπτύσσει σαφῶς, ἀπὸ τῆς αἰδητῆς Ἀνέμου ἐπὶ  
 τὴν ἔννοιαν τῆς Παναγίας καὶ τελεταρχικῆς Πνδύματος τὴν Ἀκρατικὴν προσβιάζων:  
 „Εἰ γὰρ τὸν Ἄνεμον, φησὶ, τέτο δὴ τὸ αἰδησὶ ὑποπίπτον Πνεῦμα ἀγνοεῖς πῶς,  
 „καὶ πῶς πνεῖ, πῶς τὴν ἀπὸ τῆς Θείας Πνδύματος Ἀναγέννησιν περιεργάζει; . . .  
 „Ἄνεμος ὅπερ θέλει πνεῖ: πολλῷ ἔν μᾶλλον τὸ Πνεῦμα αὐτεξουσιώτερον ἔχει τὴν  
 „κίνησιν, καὶ ὅπερ θέλει, καὶ ὡς θέλει, ἐνεργήσει,,. (Μέτιθι τὸν Θεοφύλακτον εἰς  
 τὸ Ἰωάν: Κεφαλ: Γ'. ἐν τῷ Α'. Τόμ: τῆς Νέας Ἐκδόσ: τῆς Ἑνετίησι 1754. Σελ:  
 540. 541.) Τίς ἔν ἔχι δεόντως ἐκγελάσεται τὸν Ἰησοῦν, διατεινόμενον κατὰ τῆς  
 Λιθολόγης „ὅτι ὁ Θεοφύλακτος ῥητῶς ἐστὶν ἐκδιδάσκων ἐν ἐκείνῳ τῷ ἑδαφίῳ, ὡς  
 „ἔχι τὸ Πρόσωπον τῆς Θεαρχικῆς Τριάδος ὑποσημαίνεται, ἀλλ' ὁ Ἄνεμος,,;

ρέσχειν, ἀλλ' εἰς ἕρανδον ἔτι μέλλων ἀναλαμβάνεσθαι, παρήγγειλεν  
 „αὐτοῖς ἀπὸ Ἱεροσολύμων μὴ χωρίζεσθαι, ἀλλὰ περιμένειν τὴν  
 „ἐπαγγελίαν τῆς Ἁγίας Πνεύματος,· ἡ τοσάκις δηλ.: ἐπηγγείλατο  
 τοῖς Μαθηταῖς, Ἰωάν.: ΙΔ'. ΙΕ'. ΙΣ'. Πάλιν δ' ὁ Σωτὴρ ἔλεγεν:  
 „Ἐὰν ἐγὼ μὴ ἀπέλθω, ὁ Παράκλητος ἐκ ἐλδύσεται πρὸς ὑμᾶς·  
 „Ἐὰν δὲ ἐγὼ ἀπέλθω, πέμψω αὐτὸν πρὸς ὑμᾶς,·. Τῆς αὐτῆς  
 ἄρα Ἀναλήψεως ἀπαρτὰ τὴν τῆς Ἁγίας Πνεύματος ἐπιφοίτησιν.  
 Πῶς ἔν ἐν Ἱεροσολύμοις μετὰ τὴν τῆς Κυρίας Ἀνάληψιν περιμέ-  
 νειν ἔδει τὰς Ἀποστόλους τὴν παρῴσταν τῆς Πνεύματος; Πῶς τῆς  
 Κυρίας μὴ παρόντος τὸ Ἅγιον ἐδόθη Πνεῦμα, ἔπερ ὥδε ὁ Σωτὴρ  
 ἐμφυσήσας τοῖς Ἀποστόλοις ἔφη: „Λάβετε Πνεῦμα Ἅγιον,·;  
 Ταῦτα δὴ ἔποτ' ἐπὶ συμφωνίαν ἀνακληθήσεται, ἔαν μὴ, τῶν  
 Θεωπεσίων προαγόνων Πατέρων, ἔπωμεν, ὅτι καθ' ἑκάτερον μὲν  
 τῶν χρόνων τὸ Πνεῦμα δέδοται· ἀλλὰ διὰ μὲν τῆς ἐμφυσήματος  
 ἐκείνης, ἔντι καὶ μόνον τῆς Πνεύματος δώρημα ὑπὸ τῆς Σωτῆρος  
 τοῖς Μαθηταῖς κεχορήγηται, τὸ ἀφίεναι, δηλονότι, τὰς ἁμαρτίας·  
 καθάπερ ἔν καὶ ὁ Σωτὴρ αὐτοῖς ἐμφυσήσας ἔπε: „Λάβετε  
 „Πνεῦμα Ἅγιον,· ἂν τινων ἀφῆτε τὰς ἁμαρτίας, ἀφίενται αὐ-  
 τοῖς· κατὰ δὲ τὴν ἡμέραν τῆς Πεντηκοστῆς, πᾶσα δὴ πάντων  
 ἢ τῶν χαρισμάτων δαψίλεια, οἷον τὸ δώρημα τῶν γλωσσῶν, καὶ  
 τὰ ἄλλα, διανερέμειται. Ὅσῳ δὲ ἄρα τῆς ἐμφυσήματος ἐκείνης  
 διαφέρει ἢ τοσάκις προεπαγγελθεῖσα Ἀποστολή ἢ τῆς Πνεύματος,  
 παντί περ δῆλον. Καὶ ἐπεὶ τοίνυν ἢ Ἀποστολή αὕτη, ἔδεν εἰς δεῖ-  
 ξιν συμβάλλεται τῆς τῆς Ἁγίας Πνεύματος καὶ ἐκ τῆς Υἱῆς Ἐκπο-  
 ρύσεως, ὡς διὰ Πραγματείας ἰδιατέρας ἐδείχθη· (7) ἔδεν δὴ  
 μάλλον εἰς αὐτὸ τῆτο, ἢ κατὰ τὸ ἐμφύσημα συμβαλεῖται Πέμψις.  
 Τῷ γὰρ λόγῳ τῷ ἐρημένῳ, τὰς προτεθείσας ῥήσεις οἱ Πατέρες  
 ἀπανταχῆ συμβιβάζουσιν.

ΕἴΤΣΕΒΙΟΣ μὲν ἔν ὁ Παμφίλος πρὸς Μαρίνον, παρ' Ἀνα-  
 στασίῳ τῷ Συναίτῃ, Ἐρωτήσαι ρμῃ. „Τὸ Ἅγιον Πνεῦμα τὸ ὑπὸ  
 „Χριστῇ τοῖς Ἀποστόλοις ἐμφυσηθὲν, πάντα παρῆχε λύειν τε καὶ  
 „ἀφίεναι τὰ ἁμαρτήματα. Τὸ δ' ἐν ἐπαγγελίᾳ σφίσις ὑποχε-  
 „θὲν, ὡς ἄρα βαπτισθήσονται ἐν Πνεύματι τῷ Ἁγίῳ, καὶ τῆς  
 „διωάμεως τῶν ἐνεργημάτων μεθέξουσιν, τῆτο τὴν ἐκτελεσιμὴν  
 „διώαμιν δηλοῖ, ὧν ἔμελλον ποιεῖν θαυμασίων, καὶ ἔς κινδύνους  
 „ὑποστήσεσθαι ἔμελλον. Πρὸ γὰρ τῆς διωάμεως ταύτης, ἐκ ἡξίς  
 „αὐτὰς κηρύττειν τοῖς Ἑθνεσιν· ἐκέλευσε δὲ, τῆς ἀνωθεν ἐπελδύ-  
 „σομένης ἰχύος ἐν μετῴσῃ πρότερον γενέσθαι. Τῆτι δὲ τὸ δῶ-  
 „ρον ὁ Ἀπόστολος, τῶν ἄλλων τῆς Ἁγίας Πνεύματος διακρίνεσθαι  
 „ἐνεργη-

(7) Δι' ὅλης δηλονότι τῆς ἀνωτέρω Πραγματείας.



„ἐνεργημάτων, ἐν τοῖς δε διδάσκει τοῖς ῥήμασιν: Ἄλλω μὲν δι-  
 „δοται διωάμεων ἐνεργήματα, ἄλλω δὲ Προφητεία. Καὶ Κύριος  
 „δώσει ῥῆμα τοῖς Εὐαγγελιστομένοις διώκει πολλῇ. ἥς περ ἐπεὶ  
 „διωάμεως ἔπω ἐν μετὰ τὴν ὑπὲρ ἰσχυρίαν, ἅπαντες αὐτὸν ἠρνήσαντο,  
 „καὶ ἐν τῷ καιρῷ τῷ Πάθους ἐσκανδαλίσθησαν. ὅτε δὲ τὴν διώα-  
 „μιν ταύτῃ ἐνδυσάμενοι ἐπεβρώθησαν, ἐκθύμως τε καὶ ἀτρέως  
 „τὴν ὑπὲρ Χριστοῦ μαρτυρίαν παρρησίᾳ δεδώκασιν,,.

ΚΥΡΙΛΛΟΣ δὲ ὁ Ἱεροσολυμίτης ἐν Κατηχήσει ΙΔ'. „Ὅμῃ  
 „δὲ πάντες (οἱ Μαθηταὶ) τῷ σωτηριώδους ἐμφυσήματος ἀπολαύ-  
 „σαντες, καὶ τῷ συγχωρεῖν ἁμαρτίας ἐν διώκει Πνεύματος Ἁγίου  
 „καταξιωθέντες,,. Καὶ ἐν Κατηχήσει ΙΖ'. „Οὕτω διηγήσατο τὸ  
 „Εὐαγγέλιον, ὅτι μετὰ τὴν Ἀνάστασιν τότε ἐνεφύσησεν· ἀλλὰ  
 „δίδωσι μὲν νῦν τὴν χάριν, ἐπιδαψιλεύεται δ' ἐπὶ πλείον, καὶ  
 „φησὶ πρὸς αὐτούς: ἔτοιμος μὲν εἰμὶ τῷ δοῦναι καὶ νῦν, ἔπω δὲ  
 „τὸ ἀγγεῖον χωρεῖ· τέως μὲν ἐν λάβετε τὴν χάριν, ὅσοι χω-  
 „ρεῖτε· ἐκδέχεσθε δὲ καὶ πλείονα. Ὑμεῖς δὲ καθίστατε ἐν τῇ πόλει  
 „Ἱερουσαλὴμ, ἕως ἂν ἐνδύσηθε διώκασιν ἐξ ὕψους νῦν λάβετε  
 „μερικῶς, τότε φορέσετε αὐτοτελῶς· ὁ μὲν γὰρ δεχόμενος  
 „πολλὰκις, μερικῶς ἔχει τὸ διδασκόμενον (ἴσ: τὸ διδόμενον) ὁ  
 „δὲ ἐνδύμενος, ὑπὸ τῆς σολῆς πανταχόθεν περιέχεται,,.

Καὶ ἈΘΑΝΑΣΙΟΣ ἐν τῷ περὶ Ῥήσεων, καὶ Ἑρμηνειῶν τῶν  
 Παραβολῶν τῷ Ἁγίῳ Εὐαγγελίῳ (8) Ἑρωτήσεσι ΚΘ'. ἐν τῷ Β'.  
 Τόμ: τῶν Συγγραμ: Σελ: 399. „Διατὶ ἐνεφύσησεν ὁ Χριστὸς  
 „τοῖς Μαθηταῖς αὐτῷ λέγων: Λάβετε Πνεῦμα Ἅγιον; Εἰπὼν,  
 „φησὶν, αὐτοῖς λάβετε Πνεῦμα Ἅγιον, ἔδωκεν αὐτοῖς ἐξουσίαν  
 „καὶ χάριν, διὰ τῷ ἐμφυσήματος, πρὸς τὸ ἀφιεῖν ἁμαρτίας.  
 „Διὰ τῆς ἐπιφοιτήσεως ἐν τῇ Ἁγίᾳ Πεντηκοστῇ, τὴν τῷ Βαπτί-  
 „σματος, καὶ τὴν τῶν Σημείων ἐνέργειαν παρεῖχε. Διὸ φησὶν:  
 „Ὑμεῖς δὲ βαπτισθήσεσθε ἐν Πνεύματι Ἁγίῳ, καὶ λήψεσθε διώα-  
 „μιν, ἐπελθόντος τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος ἐφ' ὑμᾶς. Πρὸ γὰρ τῷ  
 „πάθους, ἔκ ἐν Πνεύματι Ἁγίῳ τὰς ἰάσεις ποιεῖν οἱ Ἀπόστολοι,  
 „ἀλλὰ τῇ παρὰ τῷ Χριστῷ ἐξουσίᾳ καὶ προσάξει· ἔπω γὰρ ὡς  
 „Πνεῦμα Ἅγιον· ὅτι Ἰησοῦς ἐδέξασθαι ἐδόξασθαι δὲ ἐγερ-  
 „θεὶς ἐκ νεκρῶν. Πνεῦμα δὲ Ἅγιον ὡς ὀνομάζων, καὶ τῷ Ἁγίῳ  
 „Πνεύματος τὴν Ὑπόστασιν· αὐτὸ γὰρ ὡς τε αἶ, καὶ ἔσι, καὶ ἔσαι·  
 „ἀλλὰ τὸ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος χάρισμα, ὅπερ κατὰ τὴν δεκά-  
 „τῃ ἡμέραν τῆς Ἀναλήψεως, Πεντηκοστῇ δὲ τῆς Ἀναστάσεως,  
 „ἐπὶ τῷ Χριστῷ Μαθηταῖς κατεφοίτησε,,.

Καὶ

(8) Τοῖς ὑποβελιμαίοις καὶ τόδε συγκαταλέγεται· τῆς δὲ ὑποβολῆς τὸν ἑλεγχον αἱ  
 Ἑρωτήσεις πς'. καὶ γθ'. σαφῆ παρέχονται. (Ὅρα Κασσιμῆρον Ὁρθίνον ἐν τῷ Α'.  
 Τόμῳ τῶν αὐτῶν Ὑπομνημάτων Στήλη 357. 358.)

Καὶ ἈΜΒΡΟΣΙΟΣ δὲ Βιβλ: Γ'. τῷ εἰς τὸν Λακῶν Ὑπομνήμ:  
 Κεφάλ: ΚΔ'. περὶ τὸ τέλος: „Τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ἦτοι τοῖς ἑν-  
 „δεκα ἐκείνοις (Μαθηταῖς) ὡς ἀτελεστέροις ἐνεφύσησεν (ὁ Χριστὸς),  
 „τοῖς δὲ λοιποῖς ὕστερον ἐπηγγέλλετο δώσειν· ἢ τοῖς αὐτοῖς ἐκέισε  
 „μὲν ἐνεφύσησεν, ὥδε δὲ ἐπαγγέλλεται. Οὐδ' ὑπεναντίον εἶναι  
 „τὸ πρᾶγμα δοκεῖ. Ἐπειδὴ διαίρεσις χαρισμάτων εἰσὶ καὶ ὧ  
 „μὲν διὰ τῷ Πνεύματος δίδοται λόγος Σοφίας, ἄλλω δὲ λόγος  
 „γνώσεως κατὰ τὸ αὐτὸ Πνεῦμα· ἐτέρω δὲ πίσις, ἐν τῷ αὐτῷ  
 „Πνεύματι· ἄλλω δὲ χαρίσματά ἐστιν· ἄλλω δὲ γένη γλωσσῶν.  
 „Τοιγαρὲν ἄλλω μὲν ἐνεφύσησεν ἐκέισε ἐνέργειαν, ἄλλω δ' ὑπὲρ  
 „ἡμετέρας ἐνταῦθα. Ἐκέισε γὰρ ἡ χάρις δέδοται πρὸς τὸ ἀφι-  
 „έναι τὰς ἀμαρτίας, ὃ δοκεῖται εἶναι σενώτερον· καὶ διὰ τῷτο  
 „ἐμφυσᾶται παρὰ τῷ Χριστῷ, ἵνα πισθῇ τὸ Πνεῦμα τῷ  
 „Χριστῷ, καὶ πισθῇ ἐκ τῷ Θεῷ τὸ Πνεῦμα. Μόνος γὰρ ἀμαρ-  
 „τίας ἀφίησιν ὁ Θεός. Ὁ δὲ Λακῶς τὴν τῶν γλωσσῶν χάριν  
 „διέγραψεν ἐκκεχυμένῳ. Τελούταιον ἐκέισε μὲν ἔχεις: Λάβετε  
 „Πνεῦμα Ἅγιον· ἀντιπῶν ἀφῆτε τὰς ἀμαρτίας, ἀφίενται αὐτοῖς·  
 „ἀλλ' ἐν ταῖς τῶν Ἀποστόλων Πράξεσιν ἔτις ἔχεις: καὶ ἐπλήθη-  
 „σαν ἅπαντες Πνεύματος Ἁγίου, καὶ ἡρέξαντο λαλεῖν ἐτέροις γλώσ-  
 „σαις, καθὼς τὸ Πνεῦμα ἐδίδοκε αὐτοῖς ἀποφθέγγεσθαι.,,

Καὶ ἹΕΡΩΝΥΜΟΣ δὲ, ἐν τῇ πρὸς Ἐδιβίαν Ἐπισ: Ἐρω-  
 τήσει Θ'. „Πῶς ὁ Σωτὴρ, κατὰ μὲν τὸν Ἰωάννην, ἐνεφύσησε  
 „τοῖς Ἀποστόλοις τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον· κατὰ δὲ τὸν Λακῶν, με-  
 „τὰ τὴν Ἀνάληψιν αὐτὸ ἀποσελεῖν ἐπαγγέλλεται; Τῷδε ῥάση  
 „τῷ Ζητήματος ἢ ἐπίλυσις, εἴπερ ἐκ τῷ Ἀποστόλου Παύλου διδάσ-  
 „κοντος, διάφορα ὄντα τὰ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος ἐπιγινώμεν χα-  
 „ρίσματα. Ὁ Κύριος τοίνυν, ὁ μετὰ τὴν αὐτῷ Ἀνάστασιν εἰπὼν  
 „κατὰ τὸ Λακῷ Εὐαγγέλιον: Ἰδὲ ἐγὼ ἀποσελεῖ τὴν ἐπαγγε-  
 „λίαν τὸ Πατρός μου ἐφ' ὑμᾶς· ὑμεῖς δὲ καθίστατε ἐν τῇ πόλει,  
 „ἕως ἢ ἐνδύσηθε δυνάμει ἐξ ὕψους: ὁ αὐτὸς κατὰ τὸν αὐτὸν  
 „Ἀπόστολον ἐλάλησε καὶ ταῖς Πράξεσι, παραγγέλλας αὐτοῖς ἀπὸ  
 „Ἱεροσολύμων μὴ χωρίζεσθαι, ἀλλὰ περιμένειν τὴν ἐπαγγελίαν  
 „τῷ Πατρὶ, ἣν ἡκούσατε, ὡς ἔφη, διὰ τῷ Πατρός μου: ὅτι Ἰωάν-  
 „νης μὲν ἐβάπτισεν ὕδατι, ὑμεῖς δὲ βαπτισθήσεσθε ἐν Πνεύματι  
 „Ἁγίῳ, ὃ μετὰ πολλὰς ταύτας ἡμέρας. Πάλιν δὲ περὶ τὸ τέ-  
 „λος τῷ κατὰ Ἰωάννην Εὐαγγελίῳ, καθ' ἣν ἡμέραν ἀνέστη, τε-  
 „τέσι, τῇ ἡμέρᾳ τῇ Κυριακῇ, τῶν θυρῶν κεκλεισμένων, γέ-  
 „γραπται τὸν Ἰησοῦν εἰσελθόντα τοῖς Ἀποστόλοις τὸ δεύτερον εἰρη-  
 „κέναι: Εἰρῶν ὑμῖν· καὶ ἐπαγαγεῖν: καθὼς ἀπέσταλκεμε ὁ Πα-  
 „τήρ, καὶ γὰρ πέμπω ὑμᾶς· καὶ τῷτο εἰπόντα ἐμφυσῆσαι αὐτοῖς,  
 „καὶ εἰπὼν: Λάβετε Πνεῦμα Ἅγιον· ἂν τινων ἀφῆτε τὰς  
 „ἀμαρτίας, ἀφίενται αὐτοῖς· ἂν τινων κρατῇτε, κεκράτωται.

Τόμ: Β'.

Υ

„Τῇ

„Τῇ τοίνυν πρώτῃ τῆς Ἀναστάσεως ἡμέρᾳ, τὴν χάριν ἔλαβον τῷ  
 „Ἀγ: Πνεύματος πρὸς τὸ ἀφιεῖναι ἁμαρτίας, καὶ βαπτίζειν, καὶ  
 „Ἰῆς Θεὸς ποιῆν, καὶ τὸ Πνεῦμα τῆς Ἰσοθεσίας χορηγεῖν, αὐτῷ  
 „τῷ Σωτῆρος λέγοντος: ἂν τινων ἀφῆτε τὰς ἁμαρτίας, ἀφίενται  
 „αὐτοῖς ἂν τινων κρατῆτε κεκράτωται. Τῇ δὲ ἡμέρᾳ τῆς Πεν-  
 „τηκοστῆς, ἔτι μᾶλλον αὐτοῖς ἐπήγγελται, ἵνα βαπτισθῶσιν ἐν  
 „Πνεύματι Ἁγίῳ, καὶ τὴν ἐξ ὕψους ἐνδύσωνται δυνάμιν, δι' ἧς  
 „ἂν τὸ Χριστὸν Εὐαγγέλιον εἰς πάντα τὰ ἔθνη κηρύξωσι, κατὰ  
 „τὸ ἐν τῷ ΞΖ. Ψαλμῷ ἀναγινωσκόμενον: Κύριος δώσει ῥῆμα  
 „τοῖς εὐαγγελιστομένοις δυνάμει πολλῇ· ἵνα ἔχωσι τὴν ἐνέργειαν  
 „τῶν δυνάμεων, καὶ τὴν χάριν τῶν ἰαμάτων, καὶ τὰ γένη λάβωσι  
 „τῶν γλωσσῶν, ὥς πολλοῖς κηρύξαι μέλλοντες Ἔθνεσιν. Ὡς ἤδη  
 „γινώριμον γενέσθαι τότε, τίνας τῶν Ἀποστόλων, τίσι τῶν Ἐθνῶν  
 „ἔδει εὐαγγελίσασθαι. Ἡ δὲ ἐπαγγελία τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι  
 „αὐτῇ, τῇ δεκάτῃ μετὰ τὴν Ἀνάληψιν τῷ Σωτῆρος πεπλήρωται,  
 „ὥς ὁ Λακᾶς διηγήσατο. Οὐκ ἄρα Ἰωάννης τε καὶ Λακᾶς δια-  
 „πεφωνήκατον καθότι, ὃ τῇ πρώτῃ τῆς Ἀναστάσεως ἡμέρᾳ ἐκεί-  
 „νος ἐδήλωσε δοθησόμενον· ἐν τῇ Πεντηκοστῇ ἔτος ἔλθῃν ἰσό-  
 „ρησεν. Ἀλλ' ἐπίδοσις τις ἡ τῆς Ἀποστολικῆς ἀξίας, ἥν' οἱ τὸ  
 „πρῶτον τὴν τῷ ἀφιεῖναι τὰς ἁμαρτίας χάριν δεξάμενοι, τὰς  
 „ἐνεργείας μετ' ἐκείνο προσεπιδέξωνται τῶν δυνάμεων, καὶ τὰ  
 „γένη πάντα τῶν χαρισμάτων, ὧν ὑπὸ τῷ Ἀποστόλῳ ἀναγε-  
 „γραμμένων ὑπεμνησάμεθα· καὶ (τὸ δὴ μᾶλλον ἀναγκαῖον) τὴν  
 „διαφορὰν τῶν κατὰ πᾶν ἔθνος γλωσσῶν· ὅπως ἂν τὸν Χριστὸν  
 „μέλλοντες καταγγέλλειν, μηδενὸς ἐπιδεῖς Ἑρμηνείας τυγχά-  
 „νωσιν „.

Ὁ δὲ ΧΡΥΣΟΣΤΟΜΟΣ, ἐν Ὁμιλ: ΟΕ'. εἰς τὸν Ἰωάννῳ,  
 μετὰ τὸ μέσον, ἐν τῷ εἰς τὸν Ἰωάν: Ὑπομνήμ: τῷ ὑπὸ Κομ-  
 μελίῳ Γραικο-Λατίν: Ἐκδοθέντι, Σελ: 432. (9) „Πῶς ἔν,  
 „Φησὶν, εἰ μὴ ἀπέλθω, ἐκεῖνος ἔ μὴ ἔλθῃ; καὶ δὴ τὸ Πνεῦμα  
 „δίδωσι; τινὲς μὲν φασὶν, ὅτι ἔ τὸ Πνεῦμα ἔδωκεν, ἀλλ' ἐπιτη-  
 „δείας αὐτῶν δι' ἐμφυσήματος κατέβησεν. . . . Οὐκ ἂν δέ τις ἀμάρ-  
 „τη, καὶ τότε εἰληφέναι αὐτὸς λέγων, ἐξουσίαν τινὰ Πνευματικῶν  
 „καὶ χάριν· ἀλλ' ἔχ ὥς νεκρὸς ἐγείρειν, καὶ δυνάμεις ποιῆν  
 „ἀλλ' ὥς ἀφαιῖναι ἁμαρτήματα. Διάφορα γὰρ τὰ χαρίσματα  
 „τῷ Πνεύματι διὸ ἐπήγαγεν: ὧν ἂν ἀφῆτε, ἀφίενται: δεικ-  
 „νὺς ποῖον εἶδος ἐνεργείας δίδεται. Ἐκεῖ δὲ, μετὰ πεντήκοντα  
 „ἡμέρας, τὴν τῶν σημείων ἔλαβον ἐνέργειαν· διὸ φησί: λήψεσθε  
 „δυνάμιν „.

(9) Ἐν τῇ κατὰ Μονίφαλκόνιον Νεωτάτῃ Ἐκδόσει, ἀριθμεῖται Ὁμιλία Πς'. ἐν Τόμ: Η'.  
 Σελ: 516. 517.

„διώαμιν ἐπελθόντος τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος ἐφ' ὑμᾶς· καὶ ἔσεσθαι μοι  
 „μάρτυρες, ἐν τε Ἱερουσαλὴμ, καὶ ἐν πάσῃ τῇ Ἰουδαίᾳ· μάρτυρες  
 „δὲ, διὰ τῶν σημείων ἐγίνοντο,,. Παραπλήσια τέτοις ἔχει,  
 καὶ ἐν τῷ εἰς τὴν Πεντηκοστὴν Λόγῳ περὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος,  
 μετὰ τὴν ἀρχὴν. Ἐπὶ τῆς ἐν Παρισίοις Λατινικῆς Ἐκδόσεως:  
 Ἔτει 1588. ἐν Τόμῳ Γ'. τῶν Συγγραμμάτων, Στήλη 788.

Καὶ ΕΥΣΕΒΙΟΣ δὲ ὁ Ἐμισιωδός, Κυριακῇ Α'. μετὰ τὸ  
 Πάχα, ἐν Τόμῳ Ε'. Μέρει Α'. τῆς τῶν Πατέρων Βιβλιοθ.: τῆς  
 ἐν Κολωνίᾳ, Σελίδι 678. περὶ τῷ ἐμφυσήματος ἐκείνου λέγων:  
 „Καὶ τοι νῦν ὁ Κύριος, φησὶ, τὸ Ἅγιον Πνεῦμα τοῖς ἰδίοις ἔδωκε  
 „Μαθηταῖς, ἀλλ' ἔχῃ μὲν τοι καθ' ὃ ὑπερον πλήρωμα δώσειν  
 „ἔμελλε,,.

Καὶ ΛΕΩΝ ὁ Μέγας, Λόγῳ Β'. εἰς τὴν Πεντηκοστὴν:  
 „Πάντες ὅσοι πεπισθόκασιν εἰς Κύριον, ἐγκεχυμένον εἶχον σφίσι  
 „τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον· καὶ τῷ ἀφιέναι τὰς ἀμαρτίας ἤδη τότε  
 „οἱ Ἀπόστολοι εἰλήφασιν τὴν ἐξουσίαν, ὅτε μετὰ τὴν Ἀνάστασιν  
 „αὐτῷ ὁ Κύριος ἐνεφύσησε, καὶ εἶπεν αὐτοῖς: Λάβετε Πνεῦμα  
 „Ἅγιον: Ἄντινων ἀφῆτε τὰς ἀμαρτίας, ἀφίενται αὐτοῖς· ἂν  
 „τινων κρατῆτε, κεκράτῃται. Τῇ γε μὴν τελειότητι τῇ τοῖς  
 „Μαθηταῖς προμνηστύθητομένη, μέζων ἢ χάρις καὶ δαψιλεστέρα  
 „ἢ ἐπίπνοια ἀπεταμιόβετο, δι' ἧς, καὶ ἂ μὴπω εἰλήφεσαν δέ-  
 „ξαιντο, καὶ διαφερόντως ἔχοιεν ἅτλα ἔλαβον. Ἔδει γὰρ καὶ  
 „τὴν δεξιότητα τῶν ὁδηγεμένων ἐπαύξασθαι, καὶ τὸ εὐσταθὲς  
 „ἐκείνης τῆς ἀγάπης πολλαπλασιάσασθαι, ἥτις ἂν πτόησιν ἅπα-  
 „σαν πόρρω βάλλοι, καὶ τὴν τῶν διωκτῶν μανίαν μηδόλως δε-  
 „δίτῃτο. Οὕτινος δὴ χάρισματος οἱ Ἀπόστολοι, τῆς καυῆς  
 „ἤδη δαψιλείας τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος ἐμπληθέντες, θερμότερόν τε  
 „βέλεσθαι, καὶ ἰχυρότερον δυνάσθαι ἤρξαντο ἀπὸ τῆς τῶν ἐν-  
 „τολῶν ἐπιγνώσεως, ἐπὶ τὴν ἀνοχὴν τῶν παθημάτων προάγε-  
 „σθαι, ὡς ὑπὸ μηδενὸς ὅλως κλύδωνος σαλδομένης, τά τε κύ-  
 „ματα τῷ αἰῶνος, καὶ τὰς τῷ κόσμῳ ἐπάσεις, ὑπερβαίνεσης,  
 „τῆς Πίσεως καταπατεῖν, καὶ τῷ Θανάτῳ καταφρονῶντας,  
 „παρὰ πᾶσι τοῖς Ἑθνεσι τὸ Εὐαγγέλιον τῆς ἀληθείας ἐνει-  
 „σάγειν,,.

Καὶ ἈΝΑΣΤΑΣΙΟΣ δὲ ὁ Συναίτης, Ἑρωτ.: ρμῇ. διερωτῶν:  
 ὅπως νοητέον ἐστὶ τὸ τῷ Κυρίῳ ἐκεῖνο: „Εὰν μὴ ἀπέλθω, ὁ  
 „Παράκλητος οὐκ ἐλεύσεται,,· καὶ περ διὰ τῆς Ἐμφυσήσεως, τὸ  
 Πνεῦμα τοῖς Ἀποστόλοις τὸ Ἅγιον ἐμφυσῶντος; Ἀποκρίνεται:  
 „Ὅτι διὰ μὲν τῆς Ἐμφυσήσεως αὐτοῖς τὴν ἐξουσίαν καὶ τὴν  
 „Πνευματικὴν χάριν παρέχετο εἰς τὸ ἀφιέναι τὰς ἀμαρτίας·  
 Ὡς  
 „ἐπήγαγε



„ἐπήγαγε γάρ: ὧν ἂν ἀφῆτε τὰς ἁμαρτίας ἀφίενται· ὧν δ' ἂν  
 „κρατῆτε κεκράτιωται. Διὰ δὲ τῆς κατὰ τὴν Πεντηκοστὴν,  
 „(τῷ Πνεύματος) καθόδου, τὴν τε τῷ Βαπτίσματος χάριν, καὶ τὴν  
 „τῶν σημείων ἐνέργειαν αὐτοῖς ἐδωρήσατο. Διὸ φησὶν: ὑμεῖς δὲ  
 „βαπτισθήσεσθε ἐν Πνεύματι Ἁγίῳ, καὶ λήψεσθε δώαμιν ἐξ  
 „οὐρα, ἐπελθόντος τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι ἐφ' ὑμᾶς. Πρὸ γὰρ τῷ  
 „Πάθῳ οἱ Ἀπόστολοι, ἐχὼν διὰ Πνεύματος ἐχορήγησαν τὰς ἰάσεις,  
 „ἀλλ' ἐκ δωάμεως, καὶ ἐπιτάγματος Χριστοῦ. ἔγω γὰρ ὡς Πνεῦμα  
 „Ἅγιον, ὅτι Ἰησοῦς ἐδόξασα· ἐδοξάσθη δὲ, ἐπεὶ ἀνέστη ἐκ  
 „τῶν νεκρῶν,,.

Ὁ δὲ ἈΜΜΩΝΙΟΣ ἐν τῇ εἰς τὸν Ἰωάννην Σειρᾷ τῶν  
 Γραικῶν Πατέρων, εἰς τὸ Ἰωάν: Κ'. Κεφάλαιον: „Πνευματικὸν  
 „αὐτοῖς δέδωκε χάρισμα τῷ λύειν ἁμαρτίας καὶ κατακρίναι...  
 „πλὴν διωατὸν εἶπεν ὅτι, εἰς μὲν τὸ ἀφεῖναι ἁμαρτίας ἔλαβον  
 „τὸ χάρισμα· μετὰ δὲ τὴν Πεντηκοστὴν τὸ ἐγῆραι τὰς νεκρὰς,  
 „καὶ ὅσα τελεώτερα,,.

Καὶ ὁ ΒΕΔΑΣ εἰς τὰς τῶν Ἀποστόλων Πράξεις, Ἐρωτήσας  
 Β'. πωθανόμενος: „Ὅπως τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ὑπὸ τῷ Σωτῆρος,  
 „κατὰ τὸν Εὐαγγελιστὴν Ἰωάννην, πρὸ τῆς Ἀναλήψεως ἐμφυσά-  
 „ται τοῖς Ἀποστόλοις· τὸ κατὰ τὰς Πράξεις τῶν Ἀποστόλων,  
 „μετὰ δεκάτῳ ἀπὸ τῆς Ἀναλήψεως ἡμέραν τοῖς Ἀποστόλοις  
 „ἐπιπεμφθέν,,; Ἀποκρίνεται: „Πολλὰ τῶν τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι  
 „χαρισμάτων αἱ δωρεαὶ, κατὰ τὸ εἰρημένον τῷ Ἀπόστολῳ: ὃ  
 „μὲν γὰρ δίδεται διὰ τῷ Πνεύματος λόγος Σοφίας· ἄλλω δὲ λό-  
 „γος Γνώσεως κατὰ τὸ αὐτὸ Πνεῦμα... ἄλλω δὲ χάρις ἰαμά-  
 „των ἐν τῷ αὐτῷ Πνεύματι κτ.: Πρὸ τοίνυν τῆς Ἀναλήψεως,  
 „τὴν χάριν τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι ἔλαβον, δι' ἧς τὰς ἁμαρτίας  
 „ἐχρὶεν ἀφεῖναι, καὶ βαπτίζεν, καὶ τοῖς πιστεύουσι τὸ Πνεῦμα  
 „τῆς Υἱοθεσίας ἐγχέει· καθ' ὃ καὶ τότε, ἡνίκα ὑπὸ τῷ Σωτῆρος  
 „αὐτοῖς τὸ Πνεῦμα ἐνεφυσᾶτο, εἶρηται: Ἄν τινων ἀφῆτε τὰς  
 „ἁμαρτίας ἀφίενται αὐτοῖς, ἂν τινων κρατῆτε κεκράτιωται.  
 „Μετὰ δὲ τὴν Ἀνάληψιν, πολλῶν μέζονα τὴν χάριν τῷ Ἁγίῳ  
 „Πνεύματι προσελήφασιν, ἔντε τῇ ἐνεργήσει τῶν δωάμεων,  
 „καὶ τῇ χάριτι τῶν ἰαμάτων, καὶ ἐν τῇ σωέσει διαφόρων γλωτ-  
 „τῶν, καθ' ὃ αὐτοῖς τῇ αὐτῇ ἡμέρᾳ ἐπήγγελται: ὡς ἂν βαπ-  
 „τισθέντες ἐν Ἁγίῳ Πνεύματι, καὶ δώαμιν ἐνδυσάμενοι, ἔχοιεν  
 „δι' αὐτῆς κηρύττειν τὸ Χριστοῦ Εὐαγγέλιον πᾶσι τοῖς ἔθνεσιν.  
 „Ἐν ταύτῃ ἄρα τῇ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι μεθέξει, κατὰ τὴν  
 „διανομὴν τῆς τῷ Κυρίῳ χάριτος, ἢ τῶν Ἀποστόλων ἐπίδοσις  
 „ἀποδείκνυται· ἡκιστα δὲ ἢ τῶν Γραφῶν, ὡς δῆθεν μαχομένων  
 „διαφορὰ καὶ ἐναντιότης,,.

Καὶ



Καὶ ἈΜΑΛΑΡΙΟΣ δὲ Φορτηνάτος (ΙΟ) ἐν τῷ Δ'. Βιβλίῳ  
περὶ τῶν Ἐκκλησιαστικῶν Τελετῶν, Κεφ: ΚΖ'. ἐν τῷ Θ'. Τόμ:  
Μέρ: Α'. τῆς τῶν Πατέρ: Βιβλιοθ: τῆς ἐν Κολων: Σελ: 381.  
ἀπομνημονεύσας τὰ τῷ Σωλήρος ἐκάνα: „Λάβετε Πνεῦμα Ἅγ:  
κτ: „ἤδη, φησὶν, εἰληφότες ἦσαν τὸ Ἅγιον Πνεῦμα εἰς τὸ ἀφιε-  
„ναι ἁμαρτίας· ἀλλ' ἐλάπετο αὐτοῖς ἔτι τὸ δῶρον, ὃ ἔπω εἰλή-  
„φесαν, ἀλλ' ἔμελλον λήψεσθαι ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῆς Πεντηκοστῆς·  
„τῆς τῆς, ἵνα τὸ ἐαυτῶν κήρυγμα τοῖς τῶν θαυματῶν σημείοις  
„σηριζοιεν ἔχοιεν μηδ' ὑποπτήσκειαν τῶν λύσαν τῶν διωκόντων,  
„μηδ' οἷοιτ' εἶναι ἀγροῦσθαι γαυῶδες ἐπιθυμίας δελέατι, μηδ' εἰς  
„ἀπάτῃ τινὰ ὀλιθαίνειν,,.

Ὁ δ' ΟΪΚΟΥΜΕΝΙΟΣ, ἐν ταῖς Πράξ: Κεφ: Α'. ἐν τῷ Α'. Τόμ: τῶν Συγγραμ: τῆς ἐν Παρις: Γραικο - Λατιν: Ἑκδ: Ἔτει 1631. Σελίδι 4. „Ἀτὰρ εἰ μηδέπω παρεγένετο τὸ Πνεῦμα, „πῶς ἔλεγε: Λάβετε Πνεῦμα Ἅγιον; ἢ ὅτι τῆτο ἔλεγε, δεκτικὰς „αὐτὰς καὶ ἐπιτηδεύς ποιῶν εἰς τὴν ὑποδοχὴν τῷ Πνῶματος. „Ἐλαβον δὲ ὅτε καθῆλθεν ἢ ὅτι τὸ μέλλον, ὡς ἡδὴ παρὸν ἔρη- „κεν ἢ ὅτι τῷ Πνῶματος ἢ δόσις, ἢ μὲν καθαρτικὴ, ἢ δὲ „τελειωτικὴ. Ἡ ἔν τελεία καὶ τελειοποιὸς, ὥς τε καὶ ἑτέρας τελειο- „ποιεῖν, τῷ Πνῶματος τοῖς Ἀποστόλοις ἐπιφοίτησις, κατὰ τὸν „καιρὸν τῆς Πεντηκοστῆς γέγονεν. καὶ ἦλθε δὲ παρόντος αὐτῶ, „Οὕτω καὶ ἩΛΙΑΣ ὁ Κρήτης Ἀρχιεπίσκοπος, ἐν Ὑπομνήμ: εἰς τὸν Γρηγορίαν τῷ Ναζιανζῷ: Λόγον περὶ τῷ Πνῶματος. Ἔτι δὲ „καὶ ΘΕΟΦΥΛΑΚΤΟΣ ἐν Ὑπομνήμ: εἰς τὸ Ἰωάν: Κεφ: Γ'. „καὶ εἰς τὸ Κ'. καὶ εἰς τὰς Πράξ: Κεφ: Α'. πρὸς ἐκεῖνο: „Βαπ- „τιζήσεσθε ἐν Πνῶματι Ἁγίῳ, „

Τελουταῖον δὲ καὶ ΒΕΡΝΑΡΔΟΣ, Λόγ: 5'. εἰς τὴν τῇ Κυρίᾳ  
'Ανάληψιν, ἐν Τόμ: τῶν Συγγραμ: Στήλη 269. „Δῆλον γὰρ  
„αὐτῶς, καὶ πρότερον εἰληφέναι τὸ Πνεῦμα, ὅτε δηλ: ἐνεφύσησε  
καὶ εἶπεν αὐτοῖς: Λάβετε Πνεῦμα. Ἅγιον. Ἀλλὰ Πνεῦμα ὅλως  
„πίστεως καὶ σωτέσεως, ἔχῃ δὲ ζήσεως· καθ' ὃ μᾶλλον φωτισθεῖη  
„τὸ λογιζόμενον, ἢ ἐξαφθείη τὸ τῆς ψυχῆς ἐφιέμενον. Διτῇ  
„γὰρ ἡ Πνεύματος χρεία. Οὐς γὰρ ὁ τῇ Πατρὶς Λόγος τὴν  
„Διδασκαλίαν πρότερον καὶ τὴν γνῶσιν ἐδίδαξε, καὶ σωτέσεως  
„ἐνέπλησεν αὐτῶν τὰς καρδίας· τῶν, ἐπελθὼν ἔπειτα δὴ τὸ  
„ἐνθεον πῦρ, καὶ εὐρὸν ἤδη καθαρά τὰ σκοῦλη, ἐνέχεε δαψιλε-  
„ΐστρας τῶν χαρισμάτων τὰς δωρεάς, καὶ εἰς πνευματικὸν ὅλως  
„πόθον μετέβαλεν· ὡς διεμπυριθεῖσαν ἐν αὐτοῖς τὴν ἀγάπην,  
„μηδὲ

(10) "Ηκμαζε δ' ἔτος περὶ τὸ 810. καθ' ὃ καὶ εἰς Ἀρχιεπίσκοπον Τρεβιρέως προήχθη. Ἐν δὲ τῷ 813. καὶ Πρίστυς παρὰ Καρόλου εἰς τὴν Κωνσταντίναν ἀπεσέλλετο, ὅθεν ἐπανῶν, κατὰ τὸ 814. ἐτελεύτα.

„μὴ μόνον κραταῖαν αὐτῷ γενέσθαι ὡς ὁ θάνατος· ἀλλ' ἔδ' αὐτὰ τὰ σόματα, διὰ τὸν φόβον τῶν Ἰουδαίων, κλείειν ἀξιῶν·

Ἀλλὰ γὰρ ἅμα οἱ Πατέρες καὶ ἑτέρων ἐπεμνήθησαν λόγων, δι' ὧς δηλονότι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγ: δις κεχορήγηται. Οἱ μὲν γὰρ, διὰ τῷ διπλῷ ἀγάπησιν τῷ Θεῷ δηλ: καὶ τῷ πλησίον, τὸ γένεσθαι διδάσκουσιν· ὅσον ἈΥΓΟΥΣΤΙΝΟΣ Βιβλ: ΙΕ'. περὶ Τριάδος, ἐν Κεφ: ΚΣ'. „Τίς ἡ αἰτία τῷ μετὰ τῷ αὐτῷ Ἀνάσσειν, καὶ ἐπὶ τῆς γῆς μὲν πρότερον δέδωκεναι, καὶ ἀπ' ἔρανθ' ὅδε ὕσερον ἀπεσαλκέναι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον; Τῷτο ἐγὼ ὑπέβληφα, ὅτι „διὰ τῆς δωρεᾶς ταύτης ἡ ἀγάπη ἐκκέχυται ἐν ταῖς καρδίαις ἡμῶν, δι' ἧς τὸν Θεὸν ἀγαπῶμεν, καὶ τὸν πλησίον, κατὰ τὰς δύο ἐντολάς ἐκείνας, ἐν αἷς ἅπας ὁ Νόμος καὶ οἱ Προφῆται κρέμονται. Ταῦτα σημαίνων ὁ Κύριος Ἰησοῦς, δις δέδωκε τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον· ἅπαξ μὲν ἐπὶ τῆς γῆς ὦν, διὰ τῷ ἀγάπῳ τῷ πρὸς τὸν πλησίον· αὐθις δὲ ἔρανόθεν, τῆς ἀγάπης ἕνεκα τῆς πρὸς τὸν Θεόν. Ταῦτο δ' ἔχει καὶ τῷ Βιβλίῳ τῶν ἑπτακαίδεκα Λόγων, Λόγ: Σ'. Καὶ ἐν τῇ ΟΔ'. Πραγματεῖα τῶν εἰς Ἰωάννῳ.

Καὶ ὁ Μέγας δὲ ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ ὁ Πάπας Ῥώμης ἐν Ὁμιλ: ΚΣ'. τῶν εἰς τὰ Εὐαγγέλια. „Ζητητέον ἡμῖν ἐστὶ, διατὶ τὸ Ἅγ: Πνεῦμα ὁ Κύριος ἡμῶν ἅπαξ τε δέδωκεν ἐπὶ γῆς ἔτι ὦν, καὶ ἅπαξ ἐπ' ἔρανθ' προεδρόων; Οὐδὲ γὰρ ἀλλαχῇ παρὰ τὸ Πνεῦμα „δεδόσθαι σαφῶς δείκνυται, εἰμὴ νῦν, ὅτε διὰ τῆς ἐμφυσήσεως „μεταλαμβάνεται καὶ ὕσερον, ἐπειδὴν ἀπ' ἔρανθ' κατιὸν ἐν ταῖς „διαφόροις ἐμφανίζεται γλώσσαις. Τίνος οὖν ἕνεκα, πρότερον μὲν „ἐπὶ τῆς γῆς χορηγεῖται ταῖς Μαθηταῖς, ὕσερον δὲ ἔρανόθεν κατέρχεσθαι; Ἡ ὅτι δύο αἱ τῆς ἀγάπης εἰσὶν ἐντολαί: ἥτε τῷ Θεῷ „δηλονότι ἀγάπη, καὶ ἡ τῷ πλησίον· ἐπὶ γῆς μὲν δίδεται τὸ „Πνεῦμα, ἵν' ὁ πλησίον ἢ ἀγαπώμενος· ἐξ ἔρανθ' δὲ, ἵν' ὁ Θεός. „Καθάπερ οὖν μία μὲν ἐστὶν ἡ ἀγάπη, δύο δὲ αἱ ἐντολαί: ἔτι „ἐν μὲν ἐστὶ τὸ Πνεῦμα, δύο δὲ τὰ διδόμενα. Τὸ μὲν πρότερον „ὑπὸ τῷ Κυρίῳ ἐσῶτος ἐπὶ τῆς γῆς, τὸ δὲ ὕσερον ἐκ τῷ ἔρανθ'. „Καὶ γὰρ ἐν τῇ τῷ πλησίον ἀγάπῃ μαρτυρεῖται, ὅπως, τῆς τῷ Θεῷ „ἀγάπης ἐφικέσθαι δύνάται. Ταῦτα δ' αὐτὰ ἐπαναλαμβάνει καὶ τῇ Λ'. Ὁμιλ: τῇ εἰς τὰ Εὐαγγέλια. Ἡ δὲ μικρὸν ἀνωτέρω ἐπηγάγομεν ἐκ τῶν Ἀνγλικῶν ἐν τῷ ΙΕ. Βιβλ: τῶν περὶ Τριάδος, Κεφ: ΚΣ'. ἐπαναφέρει καὶ ΒΕΔΑΣ, ἐν τῷ Ε'. Κεφ: τῆς πρὸς Ῥωμ: Ἐπισ: ὡς ἐκ τῷ Λόγῳ τῷ Ἀνγλικῶν περὶ τῆς τῷ Κυρίῳ Ἀναλήψεως, ἐν Τόμ: Σ'. τῶν Συγγραμ: Στήλη 83. Καὶ τῷ αὐτῷ δὲ προτίθησιν Ἑρμιωείαν, καὶ τῷ Β'. τῶν εἰς τὰς Πράξεις Ἑρωτήσεων, ἐν Τόμ: Σ'. Στήλη 29.

Καὶ

Καὶ ἘΘΕΡΙΟΣ δὲ καὶ ΒΕΑΤΟΣ ἐν Βιβλ: Α'. τῶν κατὰ Ἐλιπάνδου, ἐν Τόμ: Η'. τῆς τῶν Πατέρ: Βιβλιοθ: τῆς ἐν Κολων: Σελ: 342. „Ἀπαξ ἐπὶ γῆς τὸ Πνεῦμα παρέχε τὸ Ἅγιον, διὰ τὴν πρὸς τὸν πλησίον ἀγάπην, δούτερον δὲ ἀπ' ἑρανῆ, διὰ τὴν πρὸς τὸν Θεόν,,.

Καὶ ἈΛΒΙΝΟΣ δὲ ὁ Ἀλκύνος Βιβλ: Β'. περὶ Τριάδος, Κεφαλ: ΚΑ'. „Ἀναμφιβόλως διὰ τῆς δις τὸ Ἅγιον Πνεῦμα δέδοται, ἐπὶ τῇ τῶν διωγῶν τῆς Ἀγάπης ἐνταλμάτων ἐπισυνάσει. Αἱ μὲν γὰρ ἐντολαὶ διωγῶν εἰσὶν, ἡ δὲ Ἀγάπη μία. „Ὡς περ ἐν μὲν τὸ Πνεῦμα, δύο δὲ τὰ διδόμενα. Οὐδ' ἄλλῃ τις ἀγάπη τὸν πλησίον ἀγαπᾷ, ἢ περ ἡ τὸν Θεὸν ἀγαπῶσα. „Ἐπὶ γῆς ὅν διδοται τὸ Πνεῦμα, ἐφ' ᾧ ὁ πλησίον ἀγαπῶτο, καὶ ἀπ' ἑρανῆ δὲ δίδοται, ἵν' ἀγαπῶτο Θεός,,.

Τὰ δέ τοι ΓΡΗΓΟΡΙΟΥ τῷ Μεγάλῳ ἐκ τῆς Κς'. Ὁμιλ: ἀρτίως παρατεθέντα, ἐπαναλαμβάνει καὶ αὐτὸς Ἀλκύνος ἐν τῷ εἰς τὸν Ἰωάν: Ὑπομν: πρὸς ἐκείνα: „Λάβετε Πνεῦμα Ἅγιον,,. καὶ ΑΥΓΜΩΝ δὲ ἐν Κυριακῇ Α'. τῇ μετὰ τὸ Πάθος, πρὸς τὰ αὐτά: „Λάβετε Πνεῦμα Ἅγιον,,. „Δις ἀναγινώσκομεν ἐν τῷ Ἁγίῳ Εὐαγγελίῳ, τοῖς Μαθηταῖς ὑπὸ Θεῶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα δεδόσθαι. Τῇ μὲν, καθ' ἣν ἀνέστη ἀπὸ τῶν νεκρῶν ἡμέρα ἐπὶ γῆς ἱσάμενος· τῇ δὲ, μετὰ τὴν Ἀνάληψιν ἐπ' ἑρανῆ προκαθήμενος. Διατὶ τῆτο; ὅτι αἱ τῆς Ἀγάπης ἐντολαὶ δύο: τὸν τε Θεὸν δηλονότι φιλεῖν, καὶ τὸν πλησίον· ἔτω τὸ μὲν Πνεῦμα ἐν, ἡ δ' ἐντολὴ διωγῶν τῆς, Θεὸν τε ἀγαπᾷν, καὶ τὸν πλησίον· ἔτως, ἐν μὲν τὸ Πνεῦμα, δύο δὲ τὰ χορηγηθέντα. „Ἐπὶ γῆς μὲν τὸ Πνεῦμα δίδοται, ὡς ἀγαπᾶσθαι τὸν πλησίον, „ἐξ ἑρανῆ δὲ, ὡς ἀγαπᾶσθαι Θεόν. Καὶ τὸ μὲν πρῶτον δίδοται ἐπὶ γῆς, τὸ δὲ δούτερον ἀπ' ἑρανῆ πέμπεται, ὅτι διὰ τῆς τῷ πλησίον Ἀγάπης, πρὸς τὴν τῷ Θεῷ ἐφικέσθαι ἐστίν. Ὡς γὰρ Ἰωάννης ἔφη ὁ Εὐαγγελιστὴς, ὁ μὴ ἀγαπῶν τὸν Ἀδελφὸν αὐτοῦ ὃν ἐώρακε, τὸν Θεὸν ὃν ἔχει ἐώρακε πῶς δύναται ἀγαπᾷν,,.

Τῷ δὲ τῷ λόγῳ καὶ ἑτέρῳ αὐτοῖς ΑΥΓΟΥΣΤΙΝΟΣ ὑποσυνάπτει ἐν τῷ Βιβλ: τῷ κατὰ τῆς τῶν Μανιχαίων Ἐπιστολῆς, ὡς τῷ „Θεμελίῳ,, ἀποκαλῶσι Κεφαλ: Ι'. Τόμῳ 5'. τῶν Συγγραμμάτων: „Διὰ δὴ τὴν διττὴν ταύτην (τῷ Σωτῆρος) δόξαν, „κατὰ τε τὴν ἀνθρωπότητα καὶ τὴν Θεότητα, δις δέδοται καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα· ἀπᾶς μὲν, μετὰ τὸ αὐτὸν ἐκ τῶν νεκρῶν ἀναστῆναι· ὅτε ἐνεφύσησεν εἰς τὸ πρόσωπον τῶν Μαθητῶν, καὶ εἶπεν αὐτοῖς: Λάβετε Πνεῦμα Ἅγιον· αὐτοῖς δὲ, „μετὰ τὴν εἰς οὐρανὸς Ἀνάληψιν, ἡμερῶν δέκα παρελθουσῶν,,.

Καὶ ἕτερον δ' ἔτι προσεπισημειᾶται λόγον ΚΥΡΙΑΛΟΣ ὁ Ἀλεξανδρ: Βιβλ: ΙΒ'. τῶν εἰς Ἰωάν: εἰς ἐκάνα: „Λάβετε Πνεῦμα Ἅγιον,,: ἐν Τόμ: Δ'. τῶν Συγγραμμάτων, Σελίδι 1096. „Πλὴν ἐκείνοις λέγων ἀφίξεταί τυχόν, καὶ φιλοπονήσῃσι χρη- „σομαθῶς. Ἐρεῖ δὲ ἴσως, πῶς δὴ ἄρα, καὶ πότε, τιῷ διὰ τῆ „Πνύματος χάριν, οἱ τῆ Σωτῆρος ἡμῶν ἐκομίσαντο Μαθηταί; „ὅτε κατ' οἶκον αὐτοῖς ἐπέλαμψεν ὁ Σωτὴρ ἐνθὺς μετὰ τῷ „Ἀνάσασιν, ἐνεφύσησέ τε λέγων, λάβετε Πνεῦμα Ἅγιον; ἢ ἐν „ταῖς ἡμέραις τῆς Ἁγίας Πεντηκοστῆς; ὅτε δὴ πάλιν εἰς ἓνα „σιωαχθέντων τόπον, ἐγένετο ἄφνω ἐκ τῆ ἕρανθ ἡχος, ὥστε „φερομένης πνοῆς βιαίας, καὶ ὠφθησαν αὐτοῖς διαμεριζόμεναι „γλώσσαι ὡσεὶ πυρός· καὶ ἐκάθισεν ἐφ' ἓνα ἕκασον αὐτῶν, καὶ „ἤρξαντο λαλεῖν ἑτέροις γλώσσαις, καθὼς τὸ Πνεῦμα ἐδίδε „ἀποφθέγγεσθαι αὐτοῖς; ἢ γὰρ, Φησὶ, διτλῶ δεδόσθαι τῷ χάριν „αὐτοῖς οἰησόμεθα, ἢ γὰρ τὸν καιρὸν ἀγνοήσομεν, καθ' ὃν ἀλη- „θῶς γεγόνασιν μέτοχοι τῆ Ἁγίας Πνύματος· εἴπερ ἀληθῆς καὶ „ὁ τῆ Σωτῆρος ἡμῶν εὐρίσκοιτο λόγος, καὶ τὸ ἐν ταῖς Πράξεσι „γεγραμμένον περὶ τῶν Ἁγίων Μαθητῶν. Ἀλλ' ἐνδοιασμῶ μὲν „ἄξιον τὸ χρῆμα ἐστὶ μάλιθ' ὅτι καὶ αὐτὸς ἔφη πρὸς ὁ Χριστός: „Συμφέρι ὑμῖν ἵνα ἐγὼ ἀπέλθω· εἰ γὰρ μὴ ἀπέλθω, ὁ Πα- „ράκλητος οὐ μὴ ἔλθῃ πρὸς ὑμᾶς· ὅταν δὲ ἀπέλθω, πέμψω „αὐτὸν πρὸς ὑμᾶς. Ἐρεῖ γὰρ ἴσως ἐκεῖνα ζητῶν: ψόδομυθεῖν „ἐκ οἴδεν ἢ ἀλήθεια, τρεῖσι Χριστός. Ὅτε τοίνυν ἔφη σαφῶς: „ὥς ἐκ ἂν ἔλθοι πρὸς ὑμᾶς ὁ Παράκλητος, ἐκ ἀναληφθέντος αὐτοῦ, „πρὸς τὸν Πατέρα· πέμψαι δὲ τότε καὶ ἀραρότως, ὅταν ἂν γενήται „παρ' αὐτῶ· πῶς εὐρίσκεται τὸ Πνεῦμα διδόν, καὶ τοὶ ἐντεῦθεν „ἀποδημίαν ἔπω σειλάμενος; Πλὴν, εἰ καὶ λίαν ἀσυμφανὲς τὸ „ζητούμενον, καὶ περισκελῆς ὁ λόγος, ἐκταράξαι τε καὶ σφόδρα „ἐκτανός· ἀλλ' ἔχει τῷ λύσειν τῷ αὐτῷ πρεπωδεσάτω, ὅταν, μὴ „τῶν καθ' ἡμᾶς ὑπάρχειν ἓνα πισθῶμεν τὸν Χριστόν, Θεὸν δὲ „μᾶλλον ὡς ἐκ Θεοῦ, καὶ τῶν ἰδίων κατεκχεσθιάζοντα λέγων, διὰ „τῷ τοῖς πράγμασι πρεπωδεσάτω οἰκονομίαν. Ἐπηγγέλατο „μὲν γὰρ καταπέμψαι ἡμῖν ἐκ ἕρανθ τὸν Παράκλητον, ὅταν „ἂν γενήται παρὰ τῷ Θεῷ καὶ Πατρί· ὁ δὲ καὶ πέπραχεν „ἀποδημήσας πρὸς τὸν Πατέρα, καὶ δαψιλεσάτω τοῖς ἐθέλουσιν „ἐλαῖν τῷ τῆ Πνύματος ἐκχυσιν ἐπιδόν· ἔλοι δ' ἂν τις αὐτὸ „διὰ Πίσεως, δῆλον ὅτι, τῆς εἰς αὐτόν, καὶ τῆ Ἁγίας Βαπτίσματος. „Ἐπληρῶτο δὲ τότε, τὸ διὰ τῆς τῆ Προφήτου Φωνῆς εἰρημένον: „ὅτι ἐκχεῶ ἀπὸ τῆ Πνύματος μου ἐπὶ πᾶσαν σάρκα. Ἀλλ' ἔδει „τῆ Πνύματος χορηγόν, καὶ τῷ Πατρὶ σωδοτῆρα φαίνεσθαι τὸν „Υἱόν. Ἔδει σωιέναι τὰς πισθόντας εἰς αὐτόν, ὅτι περ αὐτοῦ „ἐστὶν ἢ τῆ Πατρὸς δυνάμεις, ἢ τότε τὸ σύμπαν δημιουργήσασθαι, „καὶ

„καὶ ἐκ τῆ μὴ ὄντος εἰς τὸ εἶναι παρενεγκῆσα τὸν ἄνθρωπον. —  
 „Κατὰ τὸν αὐτὸν οἶμαι τρόπον πέμψειν εἰς ἡμᾶς τὸν Παράκλη-  
 „τον εἰπὼν, ὅταν ἀπέλθῃ πρὸς τὸν Πατέρα, καὶ καιρὸν τῇ κατὰ  
 „πάντων καὶ ἐπὶ πάντας χάριτι τῆτον διορισάμενος, ἀπαρχὴν  
 „ὥσπερ τινα τῆς ἐπαγγελίας ἐν τοῖς Μαθηταῖς εἰργάζετο, διὰ  
 „πολλὰς ἐυλόγους τε καὶ ἀναγκαίας ἀφορμὰς, ἃς προείπομεν.  
 „Οὐκ ἂν δέχονται μὲν τὴν τῆ Ἁγίας Πνεύματος μέθεξιν, ὅτε καὶ  
 „ἐνεφύσησεν αὐτοῖς λέγων: Λάβετε Πνεῦμα Ἅγιον· ἔδὲ γὰρ ἡ  
 „διαψύσταθαι λέγοντα τὸν Χριστὸν, ἔδ' ἂν ἔφη λάβετε, μὴ διδῶς.  
 „Ἐν δὲ ταῖς ἡμέραις τῆς Ἁγίας Πεντηκοστῆς ἐμφανεσέραν τῆς  
 „χάριτος τὴν ἀνάβρεξιν, καὶ τὴν φανέρωσιν τῆ ἐνοικιαθέντος αὐ-  
 „τοῖς Ἁγίας Πνεύματος, τιθέντος Θεοῦ, ὡφθῆσαν αἱ γλυῦσαι ὡσεὶ  
 „πυρός· ἐκ ἀρχῆς ἐν αὐτοῖς τῆς δωρεᾶς σημαίνεσθαι, εἰς ἀρχὴν  
 „δὲ μᾶλλον ἀναφέρεισθαι τῆ λόγῃ.

Τελούτατον ἄλλοι τὸν Χριστὸν ἐμφυσῶντα καὶ λέγοντα: „Λα-  
 „βετε Πνεῦμα Ἅγιον,,: δεδωκέναι τοῖς Ἀποστόλοις τὸ Πνεῦμα  
 ἦκιστα φασί, μόνον δὲ διὰ τῆς ἐμφυσήσεως ἐκείνης, ἐπιτηδεύας  
 αὐτὸν, φασί, πεποιημέναι τὰς Ἀποστόλους, πρὸς ὑποδοχὴν ἔπειτα  
 τῆ Ἁγίας Πνεύματος οἶον ὁ Χρυσόσομος ἸΩΑΝΝΗΣ, ἐν Ὁμιλ:  
 Α'. τῶν εἰς τὰς Πράξεις, ἐν τῇ Γραικο-Λατιν: Ἐκδόσει τῇ ἐν  
 Ἐιδελβέργῃ· σινάμα τῷ τῆ αὐτῆς Χρυσόσομου Ὑπομνήμ: τῷ εἰς  
 τὸν Ἰωάν: Ἔτει 1609. Σελ: 452. (11) „Τὸ δὲ Πνεῦμα πα-  
 „ρεγένετο ἐν τῷ συμπληρωθῆαι τὴν ἡμέραν τῆς Πεντηκοστῆς.  
 „Καὶ πῶς, εἰ μὴδέπω παρεγεγόναι, ἔλεγε: Λάβετε Πνεῦμα  
 „Ἅγιον; ἵνα δεκτικὸς αὐτὸς ποιήσῃ, καὶ ἀρκούντας πρὸς τὴν  
 „ὑποδοχὴν. Εἰ γὰρ Ἄγγελον μέλλων ὁρᾶν ὁ Δανιὴλ παρίετο,  
 „πολλῷ μᾶλλον ἔτοι, τοσαύτῃ μέλλοντες δέχεσθαι χάριν ἢ,  
 „τῆτο ἢ ἐστὶν εἰπεῖν ἢ ὅτι, τὸ μέλλον ἔσεσθαι, ὡς γεγεννημένον  
 „εἶρηκεν: ὥσπερ ὅταν λέγῃ: Παταῖτε ἐπάνω ὄφειν καὶ σκορ-  
 „πίων, καὶ ἐπὶ πᾶσαν τὴν δυνάμιν τῆ ἐχθρῆς. Καὶ Ὁμιλ: ΠΕ'.  
 τῶν εἰς Ἰωάννῃν, κατὰ τὴν ἀρημέν: Ἐκδοσ: Σελ: 432 (12)  
 „Τινὲς, φασίν, ὅτι ἔ τὸ Πνεῦμα ἔδωκεν, ἀλλ' ἐπιτηδεύας αὐτὸς  
 „πρὸς ὑποδοχὴν δι' ἐμφυσήματος κατέβησεν. Εἰ γὰρ Ἄγγελον  
 „ἰδὼν ὁ Δανιὴλ ἐξέστη, τί τὴν ἀπύρρητον χάριν ἐκείνοι δεχό-  
 „μενοι ἔκ ἂν ἔπαθον, εἰ μὴ Μαθητὰς αὐτὸς πρότερον κατε-  
 „σκύβασε; Διὰ τῆτο ἔκ εἶπε, φησὶν, ἐλάβετε Πνεῦμα Ἅγιον,  
 „ἀλλὰ λάβετε Πνεῦμα Ἅγιον. Οὐκ ἂν δέ τις ἀμάρτη καὶ τότε  
 „αὐτὸς λέγων εἰληφέναι ἐξουσίαν τινὰ Πνευματικὴν καὶ χάριν.

Καὶ

(11) Ἐν τῇ Μοντφαλκον: Παρισιακ: Ἐκδόσ: Τόμ: Θ'. Σελ: 8.

(12) Παρὰ τῷ Μοντφαλκ: Ὁμιλ: ΠΕ'. (ἀλλ' ΠΕ'.) ἐν Τόμ: Η'. Σελ: 516.

Τόμ: Β'.

X



Καὶ ἈΜΜΩΝΙΟΣ ἐν τῇ Σερᾷ τῶν Γραικῶν Πατέρων εἰς τὸν Ἰωάννῳ, Κεφαλ: Κ'. „Ἄλλοι δὲ λέγουσιν, ὅτι ἐπιτηδεύς „αὐτὸς ἐποίησε πρὸς ὑποδοχὴν τῷ Πνεύματος, ὃ ἡμελλόν λαμβάνειν μετὰ τὴν ἀνάβασιν. Διὸ ἐκ εἶπεν, ἐλάβετε Πνεῦμα „Ἅγιον, ἀλλὰ λάβετε,,.

Καὶ ΟἰΚΟΥΜΕΝΙΟΣ ἐν τῷ Α'. Κεφ: τῶν Πράξεων, περὶ τὰ προληφθέντα ῥήματα: „Ἀτὰρ, εἰ μηδέπω παρεγένετο τὸ „Πνεῦμα, πῶς ἔλεγε: Λάβετε Πνεῦμα Ἅγιον; ἢ ὅτι τῷτο „ἔλεγε, δεκτικὸς αὐτὸς καὶ ἐπιτηδεύς ποιῶν εἰς τὴν ὑποδοχὴν „τῷ Πνεύματος: ἔλαβον δὲ, ὅτε κατήλθεν ἢ ὅτι τὸ μέλλον, „ὥς ἡδὴ παρὸν εἶρηκεν ἢ ὅτι τῷ Πνεύματος ἡ δόσις, ἢ μὲν „καθαρτικῇ, ἢ δὲ τελειωτικῇ,,.

Προσίδετχι δὲ στωικῶν τῇ Ἐξηγήσει ταύτῃ καὶ ΘΕΟΔΩΡΟΣ ὁ Μοψαεσίας, ὃ μνεία γίνεται ἐπὶ τῆς Δ'. Συναγωγῆς τῆς Οἰκμ: Ε'. Σωόδχ: ἐν τῷ Ε'. Τόμ: τῶν Σωοδικ: Στήλη 440. (13) Οὕτω γὰρ καὶ κεῖνος τὸ ῥηθέν: „Λάβετε,, , ἀντὶ τῷ „λήψαθε,, λέγει: „Εἰ γὰρ ὅτε ἐνεφύσησε τὸ Πνεῦμα ἐδεδώκει „τοῖς Μαθηταῖς, οἵτινες πάνν ἀφρόνως ᾤκησαν, ὅτι περιττὸν „ἦν ὑπερον λέγειν αὐτοῖς, καὶ μάλιστα ἐν καιρῷ τῆς εἰς τὸν ἔραν „νὸν ἀναβάσεως: ἀπὸ Ἱεροσολύμων μὴ χωρίζεσθαι, ἀλλὰ περι- „μένειν τὴν ἐπαγγελίαν τῷ Πνεύματος — Καὶ τοῖς ἐξῆς: Ἄλλὰ „λήψαθε δῶαμιν ἐπελθόντος τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος ἐφ' ὑμᾶς. „Αὐτῷ δὲ τῷ Πνεύματος τῷ Ἁγίῳ τὴν ἐπὶ τῷ Ἀποστόλῳ ἐπι- „φοίτησιν, σαφῶς ὁ Λακῶς γενέσθαι φησὶ, τῇ Πεντηκοστῇ ἀπὸ „τῆς Ἀναστάσεως ἡμέρας, μετὰ τὴν Ἀνάληψιν. Ἐπισητέον δὲ „καὶ κεῖνο, ὡς εἶπερ ἐκ τῷ ἐμφυσήματος δεχθεῖν τὸ Πνεῦμα, „ἐκ ἂν εἶρηκεν: „λάβετε,, ἀλλ' ἐπεὶ „ἐλάβετε,, τὸ γὰρ εἰρημέ- „νον: „λάβετε,,: τοῖς μήπω λαβόντων ἄραρε,,. Ταύτῃ μὲν ἐν τὴν Ἑρμηνείαν κατὰ τὸν ἐν αὐτῇ νῦν καθ' ὃν δηλ: ἀπλῶς ἀποφάσκειται, τὸ διὰ τῷ ἐμφυσήματος τιμωκαῦτα μεταδοθῆναι τοῖς Ἀποστόλοις τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος, ἐνδίκως ἢ Οἰκουμενικῇ Ε'. Σωόδος ἀπεσύριξεν. Οὕτω γὰρ ἐν Ἀναθεματισμῷ ΙΒ'. Τόμ: Ε'. τῶν Σωοδικ: Στήλη 576. (14) „Πρὸς δὲ δὴ ταῖς ἄλλαις ἀνα- „ριθμήτοις αὐτῷ βλασφημίαις, ἐτόλμησεν εἰπεῖν: ὅτι μετὰ τὴν „Ἀνάβασιν ὁ Κύριος ἐμφυσήσας τοῖς Μαθηταῖς, καὶ εἰπὼν: „Λά- „βετε Πνεῦμα Ἅγιον,,: ὃ δέδωκεν αὐτοῖς Πνεῦμα Ἅγιον ἀλλὰ „χρήματι μόνον ἐνεφύσησε,,. — Ταῦτα δὲ καὶ ἸΟΥΣΤΙΝΙΑΝΟΣ ἐπαναλαμβάνει ὁ Αὐτοκράτωρ, ἐν τῇ κατὰ τῶν Τριῶν Κεφαλαίων

(13) Παρὰ Βινίῳ ἐν Τόμ: Δ'. Σελ: 224. καὶ παρὰ Ἀρδεῖνῳ ἐν Τόμ: Γ'. Στήλη 76.

(14) Παρὰ Βινίῳ ἐν Τόμ: Δ'. Σελ: 293. Παρὰ δὲ Ἀρδεῖνῳ Τόμ: Γ'. Στήλη 288.

λαίων 'Ομολογία· ἣτις κείται μετὰ τὰς Πράξεις τῆς Ε': Σωόδκ, Στήλη 706. (15)

'Αλλ' ἐντεῦθεν κατὰ μόνκ τῷ Θεοφυλάκῃ κατεπανίσταται τις τῶν Ἰησιτών. (16) „Καὶ διὰ ταῦτα, δικαζέτω, φησὶν, ὁ ἐυθύς „Αναγνώσης, εἰ μὴ βαρέως πρὸ τῷ Βήματος τῶν Ἱερῶν Ἀνατολικῶν Πατέρων (ἐφ' ᾧ τὰς Δυτικὰς παρελθεῖν) ὁ Θεοφύλακτος διήμαρτεν, ἐν οἷς, ἐν τῷ Ὑπομνήμῃ: τῷ εἰς τὸ Γ'. Κεφάλῃ: „τῷ Ἀγίῳ Ἰωάννῃ, τῷ τοιαύτῳ ἐκείνων Ἑρμῳείαν, ἀνοίαν ἀποκαλεῖ, κρυφτέρῳ τινὶ λόγῳ, τῷ τῷ Μοψχεσίας Θεοδώρῳ, εἰς „τὸ παρηνεχθεῖς. Εἰ γάρ, φησὶ, τοῖς Μαθηταῖς τιμωκαῦτα „τὸ Πνεῦμα παρέχεν, ὅτε ἐνεφύσησε, τίνος χάριν ὕπερον αὐτὸ „τέτοις παρέξεν προσεπηγγείλατο; καὶ μὲν δὴ, καὶ κατὰ τῷ „ἡμέραν τῆς Πεντηκοστῆς παρέχετο; Μεμνηθεὶς γὰρ ὡφείλε, „ταύτῳ αὐτῷ τῷ Ἀντίρρησιν συγκαταλεχθῆναι ὑπὸ τῆς Οἰκουμενῃ: Ε'. Σωόδκ: ταῖς Θεοδώρῳ κακοδοξίαις, Κεφαλῃ: ΙΔ'. „Ὁν „Βιγίλιος ὁ Πάπας, ἐν τῷ πρὸ τῆς αὐτῆς Σωόδκ προτεθέντι „αὐτῷ Διατάγματι, ἔτως ἀπελέγχει; Τὸ ἐν ἐκείνῳ τῷ Κεφῃ: „ἐξημένον, ὅτι ὁ Κύριος ἡμῶν Ἰησοῦς Χριστὸς ἐμφυσήσας τοῖς „Ἀποστόλοις, ἐκ ἔδωκεν αὐτοῖς τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ἀλλὰ δώσειν „προεπηγγείλατο ὥστε διὰ τῶν, ἥτοι τῷ αὐτοαλήθειαν (ὕπερ „ἀπείη!) ψεύδους ἐνθυώσθαι ἐπέσταν: Λάβετε Πνεῦμα Ἅγιον, ὃ „ἐκ ἐδίδε· ἢ, ὡς ψιλὸν ἄνθρωπον, μὴ ἐχηκέναι ὅπερ καὶ δοῖν „ἢ δῆναι μηδαμῶς διωγηθῆναι. Εἰ ταῦτα φρονεῖ, ἢ κηρύττει, „Ἀνάθεμα ἔστω. Ταῦτα μὲν ἔν διελεσθῆν ὡφείλε Θεοφύλακτος, „ἵνα μὴ καὶ ἑαυτὸν, καὶ ἑτέρους ὑπὸ βαρὺ ἐνθυώης κίνδυνον „ἐλθεῖν ἀπεργάσῃται. (17)

'Αλλ' ὁ μὲν ταῦτα: ὥπερ ἂν εἴπερ, ἥτοι μόνος ὁ Θεοφύλακτος, τοιαύτῳ τινὰ τῶν τῷ Κυρίῳ ῥημάτων ἐκείνων, Ἑρμηνείαν

(15) Παρὰ Βινίῳ, Τόμ: Δ'. Σελ: 344. καὶ Ἀρδεῖ: Τόμ: Γ'. Στήλη 288. κζ:

(16) Κιχώσιος Ζητήμ: Α'. Σελ: 6.

(17) Οὐ πάντι ἡδὴ αὐτῷ ὄντα, ἐν πολλοῖς τῶν αὐτῷ Συγγραμμάτων, διαβάλλει καὶ ταῦτα ὁ Ἰησιτὴς ἐθελόκακος τὸν Ἱερὸν Θεοφύλακτον. Οὐ γάρ ὁ Ἱερὸς Ἀνὴρ, μεταδοθῆναι τῷ Πνεύματος διὰ τῆς ἐμφυσήσεως τοῖς Ἀποστόλοις, ἀπλῶς ἀπηνέστατο (ἥτις ἢ τῷ Μοψχεσίας ὑπῆρχε δόξα, ἢς ἢ Σωόδκ κατεψηφίστατο.) Ἀλλὰ τῆς δαψιλετέρας τῶν χαρισμάτων χρηγίας, μηδαμῶς τότε, ὡς ἐπὶ τῆς Πεντηκοστῆς ὕπερον αὐτὸς μεταληφέναι ἐδίδασκεν. Οὕτω καὶ γὰρ φησὶν, (εἰς τὸ Γ'. τῷ Ἰωάν: Κεφαλῃ: ἐν τῷ Α'. Τόμ: τῆς Ἑνετήσι Νέας Ἐκδόσ: Ἐτὶ 1754. Σελ: 550.) „Οὐ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα δέδωκεν ἀλλὰ χάρισμα ἐν τῶν τῷ Πνεύματος, τὸ ἀφιέναι „τὰς ἀμαρτίας· ἐυθύς γὰρ ἐπάγει: „Ἀντιπὼν ἀφῆτε τὰς ἀμαρτίας κτ: „ Σαφὲς δὲ, ὅτι δῶρον ἐστὶ τῷ Πνεύματος ἢ ἐξουσία τῆς τῶν ἀμαρτημάτων ἀφέσεως. Τίς γὰρ δυνάται ἀμαρτίας ἀφιέναι, εἰμὴ εἰς ὁ Θεός; Ἀλλὰς τε δὲ, (ὡς ἄριστα πρὸς τῷ Ἑνσασιν καὶ ὁ Συγγραφεὺς ἡμῶν Ζοιρηνιάσιος ἀπαντᾷ.) ὅμοια τοῖς Θεοφυλάκτῃ καὶ Χρυσόστομῳ ἀπεφῆναιτο, καὶ ἄλλοι τῶν Πατέρων συχνοί. Ὡς καὶ τῶν ἡμῶν εἴσει πρὸ τῷ Ἰῆσι αὐτῷ τολμηρῷ Βήματος ὁ Πολωνὸς Ἰησιτὴς, πάντας ἐπίσης αὐτῷ λόγον ὑφῆκοντας· ἢ, καὶ αὐτὸν ἑαυτῶν καταψηφισμένους, ὡς εἴκεν.

ἰεῖαν φέροιτο παραδεδωκώς· ἵνα καὶ μόνος τῆς παρὰ τῷ Ἰησοῦ ὑποσῇ ἐλέγχος· ὅποτε δὴ τοσῶτοι οἱ παρ' ἡμῶν καταλεχθέντες, καὶ ἕτεροι προσέτι, ὧν αὐτοὶ ὁμοίως ὑπεμνήθησαν Πατέρες, τῇ αὐτῇ παρηκολαθηκότες γένοιτο διερμινύσει· ἢ γὰρ, ὡς εἰ πρὸς τῷ Μωϋσεῖας Θεοδώρῳ τέως τιῶν αὐτῶν ὁ Θεοφύλακτος ἐδέδεκτο Ἑρμινεύειν· ὡς δὴ καὶ ὁ Χρυσόστομος, καὶ ἄλλοι πρὸς τῷ Θεοδώρῳ χρηματίσαντες, (ὧν ὑπεμνήθη καὶ ὁ Χρυσόστομος) παρεδέξαντο. Ἀλλὰ γὰρ παντίπερ δῆλον, ὡς εἰ καὶ διὰ τῆς λοιπῆς ἐπενεχθέντας λόγος, δις τὸ Πνεῦμα τοῖς Ἀποστόλοις δοθῶναι δυνάται λέγεσθαι· ἐμὴν ἄλλ' ἔχ' ὅτως οἱ τόποι συμβιβάζονται, ἐν οἷς οἱ Ἀπόστολοι, καὶ εἰληφέναι λέγονται τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, καὶ τὸ αὐθις ἀποκαρδοκεῖν κελύονται, μετὰ τιῶν εἰς ἑρανὲς τῷ Σωτῆρος Ἀνάληψιν· καθάπερ ἀνωτέρω ἐπὶ τῶν τῆς Ἱερᾶς Γραφῆς λογίων κατείδομεν. Ὡς δὲ ἡμῖν ἄρα ἐξ αὐτῶν ἡ πρώτη σωτελεῖ Ἑρμινεία, κατ' ὡς: πρῶτον μὲν ἐλέγετο τοῖς Ἀποστόλοις χορηγηθῶναι τὸ Πνεῦμα, κατὰ τὸ χάρισμα τῆς ἀφέσεως τῶν ἀμαρτιῶν· δεύτερον δὲ αὐθις, ἐν τῇ τῆς Πεντηκοστῆς ἡμέρᾳ, χορηγηθήσεσθαι κατὰ τιῶν τῶν χαρισμάτων ἀπάντων τελείωσιν. Καὶ ἔστιν ἄρα φανερόν· ἄλλις ἄχρι τῆς, ὅτι ἡ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι κατὰ τιῶν Πεντηκοστῶν Πέμψις, πολλῶν τελεωτέρα ὑπῆρξεν, ἢ ἐπὶ τῆς ὑπὸ τῷ Σωτῆρι γενομένης τῆς αὐτῆς ἐμφυσήσεως. Ἐπειδὴ δὲ ἔδενι λόγῳ, ἐκ τῆς ἐν τῇ Πεντηκοστῇ Πέμψεως, ἐπόμενον ἐστὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ ἐκπορεύεσθαι, δῆλον πάντως, ὅτι, ἔδὲ παρὰ τὸ, διὰ τῆς ἐμφυσήσεως τὸν Υἱὸν τῷ Θεῷ τοῖς Ἀποστόλοις τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι μεταδόναι, ἔψεται τὸ Ἅγιον Πνεῦμα καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ ἐκπορεύεσθαι.

#### Ἀ Π Α Ν Τ Η Σ Ι Σ Σ'.

Ὁ δέ τοι, ἐκ τῷ τὸν Χριστὸν ἐμφυσῆσαι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐπισυνάγεται, ἔδὲν ἐστὶν ἄλλ', ἢ ὅτι Πνεῦμα ἐστὶν αὐτὸ τῷ Χριστῷ· ὅτι ἐκ ἀλλότριον τῆς τέως ἐστὶν ἐσίας· ὅτι ἐκ τῷ Θεῷ ἐστὶν, ὅτι ἐκ τῆς Θείας ἐσίας δίδεται· ὅτι διὰ τῷ Υἱῷ χορηγεῖται· ὅτι τὸ τῷ Πατρὶ Πνεῦμα ἐκ ἀλλότριον ἐστὶ τῷ Υἱῷ· ὅτι ἡ ἐν τῷ Χριστῷ ἀνθρωπότης ἅπαντα ἤδη προελήφει τὰ χαρίσματα τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι. Οὕτω γὰρ ἈΘΑΝΑΣΙΟΣ ἐν Ἐπισ: Β'. τῇ πρὸς Σεραπίωνα, περὶ τῷ Ἀγ: Πνεύμ: Τόμ: Β'. τῶν Συγγραμ: Σελ: 18. „Τῷ Πατρὶ πέμποντος τὸ Πνεῦμα, ὁ Υἱὸς ἐμφυσῶν δίδωσιν αὐτὸ τοῖς Μαθηταῖς· ἐπειδὴ πάντα ὅσα ἔχει ὁ „Πατὴρ, τῷ Υἱῷ ἐστὶ· τῷ δὲ Λόγῳ γινόμενα ἐν τοῖς Προφήταις, „αὐτοὶ τῷ Πνεύματι προεφήτεον„. Καὶ ἐν τῷ Βιβλ: τῷ περὶ τῆς ἐνσάρκου Ἐπιφανείας τῷ Θεῷ Λόγῳ, διὰ τῶν ρημάτων, ὧν περ,

περ, (ἐν τῇ περὶ τῶν Μαρτυριῶν Πραγματείᾳ, ἃς ἐκ τῶν Ἀνα-  
τολικῶν Πατέρων οἱ Λατῖνοι ἀντιπροτείνουσιν) γενήσεται ἡ διά-  
σκεψις: „Ἐμφυσᾷ αὐτὸ εἰς τὸ πρόσωπον τῶν Ἀποστόλων, λέ-  
γων: Λάβετε Πνεῦμα Ἅγιον ἵνα μάθωμεν, ὅτι ἐκ τῆ πλη-  
ρώματος τῆς Θεότητος ἐστὶ, τὸ διδόμενον Πνεῦμα τοῖς Μαθη-  
ταῖς. Ἐν Χριστῷ γὰρ, φησὶ, κατοικεῖ τετέστιν, ἐν τῇ σαρκὶ  
αὐτῶ: πᾶν τὸ πλήρωμα τῆς Θεότητος σωματικῶς καθὼς καὶ  
ὁ Εὐαγγελιστὴς Ἰωάννης λέγει: ἡμεῖς ἐκ τῆ πληρώματος αὐτοῦ  
ἐλάβομεν. Σωματικῶ γὰρ εἶδεν, τετέστιν ὡς Περισερᾷ, ὡφθη  
τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον καταβαῖνον, καὶ μένον ἐπ' αὐτόν. Ἐν  
ἡμῖν μὲν γὰρ ἀπαρχὴ καὶ ἀρχαίων Θεότητος κατοικεῖ, ἐν  
Χριστῷ δὲ πᾶν τὸ πλήρωμα τῆς Θεότητος. ΒΑΣΙΛΕΙΟΣ δὲ  
ὁ Μέγας ἐν Ὁμιλ: ΙΖ'. περὶ τῆ Βαπτίσματος: (18) „Ὁ βαπ-  
τιζόμενος . . . μεμνήσθω τῆ Κυρίᾳ Πνεῦμα Ἅγιον ἐμφυσήσαν-  
τος, καὶ δείξαντος διὰ τῆς ἐμφυσήσεως, ὅτι τὸ Πνεῦμα τῆς  
Θεότητος ἐστὶς ἐστὶ. Καὶ ἘΠΙΦΑΝΙΟΣ, Αἵρέσει ΟΔ'. ἥτις ἐστὶν  
ἡ τῶν Πνευματομάχων, Τόμ: Α'. Σελίδι 902. „Ὡς ἐκ ἄλλο-  
τρὶς τῆ Πνεύματος τυγχάνοντος τῆς τῆ Θεῶ Θεότητος, ἐνε-  
φύσησεν εἰς τὸ πρόσωπον τῶν Μαθητῶν, καὶ εἶπε: Λάβετε  
Πνεῦμα Ἅγιον. Ὁ δὲ ἈΜΒΡΟΣΙΟΣ Βιβλ: Ι'. τῆ εἰς τὸν  
Λαζάρου Ὑπομνήματος, Κεφαλ: ΚΔ'. „Διὰ δὴ τῆτο ὑπὸ Χριστοῦ  
τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐμφυσᾶται, ἵνα πισθῇς ὅτι τὸ Πνεῦμα ἐστὶ  
τῆ Χριστοῦ, καὶ πισθῇς εἶναι ἐκ τῆ Θεῶ. Μόνος γὰρ ὁ Θεὸς  
ἀμαρτίας ἀφίησι. Καὶ ἈΓΓΟΥΣΤΙΝΟΣ, Βιβλ: ΙΓ'. περὶ  
Πόλεως Θεῶ, Κεφαλ: ΚΔ'. „Ἐν ᾧ ἐποίησεν ὁ Κύριος, ὅτε  
ἐνεφύσησε λέγων: Λάβετε Πνεῦμα Ἅγιον: ἐκείνο νοεῖσθαι ἠθέ-  
λησεν, ὅτι τὸ Πνεῦμα, ὃ μόνον ἐστὶ τῆ Πατρὸς, ἀλλὰ καὶ τῆ  
Μονογενεῖς αὐτοῦ Πνεῦμα. Αὐτὸ γὰρ ἐστὶ τὸ τῆ Πατρὸς καὶ  
τῆ Υἱοῦ Πνεῦμα, σὺν τῇ Τριάδι, Πατὴρ, καὶ Υἱὸς, καὶ Πνεῦμα  
Ἅγιον. ὅχι κτίσμα, ἀλλὰ Κτίσεως. Οὐδὲ γὰρ ἡ σωματικὴ  
ἐκείνη πνοή, ἡ ἐκ τῆ σόματος τῆς Σαρκοῦ προερχομένη, ἡ ἐστὶς  
ὑπῆρχε τῆ Ἁγίας Πνεύματος καὶ ἡ φύσις: ἀλλὰ μᾶλλον δήλωσις,  
δι' ἧς ἂν νοήσῃμεν, ὡς ἔφω, ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα κοινὸν ἐστὶ  
Πατρὶ καὶ Υἱῷ. ὅδε γὰρ αὐτοῖς ἴδιον ἑκατέρωις ἐστὶν, ἐν δὲ  
„ἀμφο-

(18) Τίτῳ Ὁμιλίαν ταύτην, τοῖς τῆ Μεγάλῃς Βασιλεῖς Συγγραμμάσιν ἐγκαταλέγειν  
ἐκ ἀξίᾳ Γαρενίῃς. ἄλλως τε, καὶ διὰ τίτῳ φωνῇ ἐχ' ἡκιστα ΘΕΙ' ΚΗ' Σ, τίτῳ ἐν  
τῇ προτεθείσῃ περικοπῇ ἀπαντῶσαν, ἡ περὶ ἐδάμῃ τῶν αὐτῶ ἐν χερίσιν τὸν Βα-  
σίλειον, φησὶν, εἰληφέναι, ἐσάκεις αὐτῷ περὶ Θεῶν πραγμάτων λόγος ἐνέπεσε.  
Διὸ καὶ ἐν τῷ Προσαρτήματι τῆ Β'. Τόμῃ, τακτέον εἶναι διέγνω, τίτῳ Ὁμιλίαν  
τίτῳ δὲ, ἡ ἐν ἐνέφῃς Σελ: 583. Οὐχὶ „περὶ τῆ Βαπτίσματος, ἀλλὰ „περὶ τῆ  
Ἁγίας Πνεύματος, ἐπιγεγραμμένῳ, καθάπερ ἐν δυσὶν αὐτοῖς, φησὶν, Ἀρχαίοις  
ἀνέγνω Κώδιξιν.

Τόμ: Β'.

Ψ



„ἀμφοτέρων,,. Ὁ δὲ ΚΥΡΙΛΛΟΣ ὁ Ἀλεξανδρεὺς Βιβλ: Θ'. τῶν εἰς τὸν Ἰωάν: πολὺ πρὸ τῆ τέλους, ἐν Τόμ: Δ'. τῶν Συγγραμ: Σελ: 810. „Πῶς δ' αὖ πάλιν, ἔπερ ἐστὶν ἑτεροόσιος ὁ „Υἱὸς, τὸ τῆ Πατρὸς Πνεῦμα δίδωσιν, ὡς ἑαυτῆ; γέγραπται „γὰρ, ὅτι ἐνεφύσησε τοῖς Μαθηταῖς, λέγων: Λάβετε Πνεῦμα „Ἅγιον,,. (Καὶ αὐτοὶς αὐτόσε:) „Ἀλλ' ὡςπερ ἡμῶν ἕκαστος τὸ „ἴδιον ἐν ἑαυτῷ Πνεῦμα σιωέχει, καὶ ἐκ τῶν ἐνδοτάτω σπλάγ- „χνων εἰς τὸ ἔξω προχέει. Διὰ γάρτοι τῆτο σωματικῶς ἐνε- „φύσησεν ὁ Χριστὸς, δεικνὺς, ὅτι καθάπερ ἐκ σώματος τῆ ἀν- „θρώπινου προέεισι τὸ Πνεῦμα σωματικῶς, ἔτω καὶ ἐκ τῆς Θείας „εἰσίας Θεοπρεπῶς προχεῖται τὸ ἐξ αὐτῆ (διδόμενον),,. Καὶ ἐν τῇ Ἐκθέσει δὲ τῆ ἐν Νικαίᾳ Συμβόλῃ: „Ἐξείσι μὲν, ὡς ἐκ „Πηγῆς τῆ Θεῆ καὶ Πατρὸς, χορηγᾶται δὲ τῇ κτίσει διὰ τῆ „Υἱῆ, ὅθεν ἐνεφύσησεν εἰς τὰς Ἀποστόλους, λέγων: Λάβετε Πνεῦ- „μα Ἅγιον,,. Καὶ ἐν τῷ ΙΒ'. Βιβλ: τῶν εἰς Ἰωάννῳ, Σελίδι 1095. Τόμ: Δ'. „Ἀγιάζει παρὰ χρῆμα, τὸ ἴδιον αὐτοῖς Πνεῦμα „διδὼς δι' ἐμφανῆς ἐμφυσήματος, ἵνα καὶ ἡμεῖς ἀραρότως πισθώ- „μεν, ὡς ἐκ ἀλλότριον τῆ Υἱῆ τὸ Πνεῦμα ἐστὶν, ἀλλ' ὁμοόσιον „αὐτῷ, καὶ δι' αὐτῆ προῖον ἐκ τῆ Πατρὸς,,. Καὶ ἸΣΙΔΩΡΟΣ ὁ Πηλῶσιώτης, Βιβλ: Α'. Ἐπισ: 42'. „Ἰνα δείξῃ τῷ πρὸς ἑαυ- „τὸν καὶ τὸν Πατέρα τῆ Παναγίᾳ Πνοῦματος ἔνωσιν, ὁ Κύριος „ἡμῶν καὶ Δεσπότης ἔφη τοῖς Μαθηταῖς, ἐκ τῶν νεκρῶν ἀνα- „στὰς, Λάβετε Πνεῦμα Ἅγιον: Ἄν τινων ἀφῆτε τὰς ἀμαρτίας, „ἀφίενται: τῇ αὐτῇ αὐθεντίᾳ, δηλονότι, ὃ λαμβάνετε Πνοῦμα- „τος τῆ Θεῆως συγχωρεῖν τὰ ἀμαρτήματα ἔχοντος,,. Καὶ ἈΜΜΩΝΙΟΣ ἐν τῇ Σειρᾷ τῶν Γραικῶν Πατέρων τῷ εἰς Ἰωάν- νῳ, εἰς τὸ Κ'. Κεφάλ: „Δι' ὧν ἐμφυσήσας ἔδωκε τὸ Πνεῦμα, „ἔδειξεν ὅτι ὁμοόσιον αὐτῷ ἐστὶ, καὶ ἐκ ἀλλότριον, καὶ δι' αὐτῆ „προῖον ἐκ τῆ Πατρὸς, ὅπερ αὐτὸς ἐνδύρωσεν εἰς τὸ ποιῆσαι „τὰ Θεῷ ἀρεσά, καὶ γινῶναι τῆ κατὰ Χριστὸν Μυστηρίᾳ τῷ δύ- „ναμιν,,. Καὶ ΣΩΦΡΟΝΙΟΣ ὁ Ἱεροσολύμων, ἐν Ἐπιστολῇ τῇ πρὸς Σέργιον, ἐν Πράξει ΙΑ'. τῆς Οἰκουμενικ: 5'. Σιῳόδε, Στήλῃ 879. Τόμ: 5'. τῶν Σιωδικῶν: (19) „Καὶ Πνεῦμα τέτοις πα- „ρέχει Πανάγιον, ὡς Συγγενὲς αὐτῷ καὶ ὁμόφυλον,,. Καὶ ὁ ΣΥΓΓΡΑΦΕΥΣ δὲ τῆ περὶ Τριάδος Βιβλ: τῆ ὑπὸ τῷ Κυρίλλῳ τῆ Ἀλεξανδρ: ὀνόματι φερομένη, Κεφαλ: Γ'. Καὶ ἸΩΑΝΝΗΣ ὁ ἐκ Δαμασκῆ Βιβλ: Α'. τῆς Ὁρθοδ: Πίς: Κεφ: Γ'. (20) „Ἐκ „τῆ Υἱῆ δὲ τὸ Πνεῦμα ὃ λέγομεν.... δι' Υἱῆ δὲ πεφανερῶσθαι „ἡμῖν

(19) Παρὰ Βινίῳ Τόμ: Ε'. Σελ: 158. Παρὰ δὲ Ἀρδεῖν: Στήλῃ 1257.

(20) Ἐν τῇ κατὰ Λεκυῖνον Ἐκδόσ: Ἔτε 1712. ἐν Τόμ: Α'. Ἀριθμεῖται δὲ Κεφαλ: Η'.



„ἡμῶν καὶ μεταδίδοσθαι ὁμολογῶμεν. Ἐνεφύσησε γὰρ, φησὶ, καὶ  
 „εἶπε τοῖς Μαθηταῖς αὐτῶν: Λάβετε Πνεῦμα Ἅγιον,,. Καὶ ὁ  
 ΒΕΔΑΣ ἐν τῷ εἰς τὸν Ἰωάνν: Ὑπομνήμ: εἰς τὸ Κ'. Κεφάλ: ἐν  
 τῷ Ε'. Τόμ: τῶν αὐτῶν Συγγραμ: Στήλη 613. „Ἐμφυσήσας  
 „ἐστήμανε τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, μὴ μόνον τῶ Πατρὶ εἶναι Πνεῦμα,  
 „ἀλλὰ καὶ ἑαυτῶν,,. Ὅπερ καὶ ἈΛΒΙΝΟΣ ἐπαναλαμβάνει ὁ  
 Ἀλκρίνος, ἐν τῷ εἰς τὸν Ἰωάνν: Ὑπομνήμ: περὶ τὰ αὐτὰ ἐκεί-  
 να: „Λάβετε Πνεῦμα Ἅγιον,,. Εἰ γὰρ ὁ τῶ Θεῶ Τίδς Θεὸς  
 ἐστὶ καὶ τὸ ὑπὸ τῶ Τίδς ἐμφυσώμενον, ὑπὸ τῶ Τίδς δίδοται, ἔπε-  
 ται δὴ πάντως αὐτὸ τὸ ὑπὸ τῶ Τίδς ἐμφυσώμενον, τῆς Θείας  
 εἶναι ἐξίας καὶ φύσεως· ἐνθεντοὶ καὶ ἄριστα ἐκ τῆς ἐπὶ τῶν  
 προτεθέντων ῥημάτων τῶ Χριστῶ ἐμφυσήσεως, ὁ Μέγας ἐπισυ-  
 νάπτει ΒΑΣΙΛΕΙΟΣ, ὅτι ἄρα τῆς Θείας πέφυκεν ἐξίας τὸ  
 Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. Ὡσαύτως δὲ καὶ ΕΠΙΦΑΝΙΟΣ, ἐκ ἐντεῦ-  
 θεν τῶ τῶ Πνδύματος Ἐκπόρουσιν καὶ ἐκ τῶ Τίδς ἐστὶν ἐπιφέ-  
 ρων, ἀλλὰ μόνον, ὅτι τὸ Πνεῦμα ἐκ ἀλλότριον τῆς Θεότητος.  
 Εἰ γὰρ Θεὸς ὁ Τίδς, ἐμφυσᾷ δὲ τὸ Πνεῦμα ὡς ἴδιον, πῶς ἐχὶ  
 ἐκ ἀλλότριον τὸ Πνεῦμα τῆς Θεότητος ἐξ ἀνάγκης; Ἀλλὰ καὶ  
 ἈΜΒΡΟΣΙΟΣ αὐτόθεν σωπεύει, ὅτι Θεὸς μὲν ἐκ Θεῶ τὸ  
 Πνεῦμα· ἐ μόνον δὲ παρὰ τὸ ἐκ τῶ Τίδς ἐμφυσήσαντος αὐτὸ δε-  
 δόσθαι, ἀλλὰ παρὰ τὸ ἀφίεναι αὐτὸ μᾶλλον εἰρηθεῖν τὰ ἀμαρτή-  
 ματα. Ἐτι τε μὴ: ἔπερ ἐκ τῶ Τίδς τὸ Πνεῦμα ἐμφυσᾶται  
 τὸ Ἅγιον, ἐστὶ δὴ καὶ Πνεῦμα ἴδιον αὐτῶ. Θεὸς δὲ ὁ τῶ Θεῶ  
 Τίδς, ἐκὸν ἐπάναντες ἐκ τῆς Θεῶ ἐξίας τὸ Πνεῦμα Θεοπρε-  
 πῶς, καὶ ἐχὶ δαλοπρεπῶς, προχέσθαι τοῖς πιστεύουσιν. Ὡς δὴ  
 τῶτ' αὐτὸ ἐντεῦθεν σωῆγε καὶ ΚΥΡΙΛΛΟΣ ὁ Ἀλεξανδρείας,  
 Βιβλ: Θ'. τῶν εἰς Ἰωάνν: Ἐπειδὴν ἄρα ἔτω παρὰ τῶ Τίδς  
 ἐμφυσᾶται τὸ Πνεῦμα, συμφανὲς ὅτι καὶ διὰ τῶ Τίδς, ἐκ τῶ  
 Πατρὶ τὸ Πνεῦμα προῖον ἐστὶ, πρὸς ἡμᾶς δηλονότι· καθάπερ  
 ἐν ἐντεῦθεν μετὰ τῶ Ἀλεξανδρ: Κυρίλλου, Βιβλ: ΙΒ'. τῶν εἰς  
 Ἰωάνν: καὶ ἈΜΜΩΝΙΟΣ ἐπισυνῆγεν, ἐν τῇ Σειρῶ τῶν Γραικῶν  
 Πατέρων, εἰς τὸ Ἰωάνν: Κ'. Κεφάλαιον. Οὐ γὰρ ἐνταῦθα περὶ  
 τῆς αἰωνίης καὶ ὑποστατικῆς Ἐκπορεύσεως, τοῖς εἰρημένοις δυσὶ  
 Πατράσιν ὁ λόγος, ἀλλὰ περὶ τῆς χρονικῆς μόνον τῶ Πνδύμα-  
 τος διὰ τῶ Τίδς ἐκχύσεως. Ταῦτ' ἄρα ἐκ τῆς τῶ Χριστῶ ἐμφυ-  
 σήσεως, κατὰ τῶ τῶ Θεοπεσίαν Πατέρων διδασκαλίαν σωά-  
 γεται· ἐδόλως δὲ, ὅτι καὶ ἐκ τῶ Τίδς τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγ: ἐκ-  
 πορεύεται.

Μίαν δὲ προσέτι ἔφασκον εἶναι τῶ τῶ Ἁγίῳ Πνδύματος  
 πνεῦσιν· ὥδε δὲ, ὑπὸ τῶ Τίδς πνέσθαι τὸ Πνεῦμα· καὶ τῶ αὐτῶ  
 ἄρα ταύτῳ εἶναι τῇ πνδύσει τῇ προαιωνίῳ τῶ Ἁγίῳ Πνδύματος·  
 Ψ 2 κατὰ

κατὰ δὲ τὸ ἐξ ἀνάγκης ἐπόμενον, καὶ ἐκ τῆς Υἱᾶ ἄρα ἐκπορεύεσθαι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον.

Ἀλλὰ γὰρ ἐστὶ ταῦτα τῷ παντὶ διαφέροντα: Ἡ μὲν γὰρ ἐμφύσησις ἐγένετο ἐν χρόνῳ, πρὸς ἡμᾶς γὰρ ἐγένετο· ἡ δὲ τῆς Ἁγίας Πνεύματος Πρόοδος, πρὸ παντὸς χρόνου, καὶ αἰῶνος ἐστὶν ἐπέκεινα. Ἡ μὲν ἐμφύσησις, τῶν Ἀποστόλων χάριν ἐγένετο· καὶ Θεὸς ἔργον ἐστὶ τῶν πρὸς τὰ ἐκτός· ἡ δὲ τῆς Ἁγίας Πνεύματος Προβολὴ ἀχέτως ἔχουσα πρὸς τὴν κτίσιν, ἔδεν ἡτλον, ἡπερ ἡ τῆς Υἱᾶ γέννησις, ἀπ' αἰῶνος τε ὧν, καὶ Θεὸς ἐνέργεια ἐστὶ τῶν ἐντός. Καὶ διὰ μὲν τῆς ἐμφυσήσεως, δῶρον ἐν τοῖς Ἀποστόλοις δέδοται τῶν τῆς Πνεύματος, ἡ τῆς ἀφίεναι, δηλονότι, τὰς ἀμαρτίας ἐπιτροπή· ἡ δέ τοι Πρόοδος, ἐστὶν ὁ τρόπος καθ' ὃν τὸ Πνεῦμα τὴν αἰτίαν ἔχει τῆς ἰδίας ὑπάρξεως. Καὶ ἡ μὲν Ἐκπόρευσις ὁ τρόπος ἐστὶ τῆς τὸ Πνεῦμα ὑφίστασθαι, ἡ δὲ ἐμφύσησις ἕ. Προσέτι δὲ καὶ τὸ Πνεῦμα ἑαυτὸ πνεῖ, ὡς δέδεικται ἀνωτέρω· ἡκιστα δ' ἔν καὶ ἀφ' ἑαυτῆς ἐκπορεύεται. Αὐθις: ἡ σωματικὴ ἐμφύσησις, ἡ ἐκ σώματος τῆς Χριστοῦ προελθούσα, ἔκ ὧν ἡ αὐτὴ ἔσθια ἡ τῆς Ἁγίας Πνεύματος· ἀλλὰ τὸ πνεύμενον ἀπ' αἰῶνος, ἥτοι τὸ ἐκπορευόμενον, αὐτὸ τὸ Πνεῦμα ἐστίν. Εἰ δὲ τὸ Ἐπιχείρημα τόδε ἰχυέτι, εἶπετ' ἂν πάντως τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, καὶ ἐξ αὐτῆς δὴ τῆς ἐν χρόνῳ ὑπὸ τῆς Υἱᾶ τῆς Θεοῦ προσληφθέντος σώματος ἐκπορεύεσθαι· εἴτ' ἔν τινι αἰτίαν ἔχειν τῆς ἰδίας αὐτῆς ὑπάρξεως. Καὶ αὐθις: τὸν ὄντα Θεὸν εἰς τὸ ὑπάρχειν προαχθῆναι ὑπὸ τῆς κτίσεως. Ἄ δὴ πρὸς τῶν ἀδωάτων ἐστὶ, μᾶλλον δὲ βλάβη· τῷ γὰρ σωματικῷ ἁθματι τὸ τῆς ἐμφυσήσεως ἐτελεῖτο, καὶ διὰ τῆς σώματος ἐγένετο. Ἐὰν δὲ ἄρα ἡ ἐμφύσησις ταύτην ἢ τῇ πνεύσει, ὑπὸ ἀνθρωπίνου σώματος ἔψοιτ' ἂν τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκπορεύεσθαι, καθάπερ δὴ καὶ ὑπὸ σώματος ἀνθρωπίνου ἐνεφυσᾷτο. Μία, φησὶν, ἡ πνεῦσις, εἴτ' ἔν ἢ τῆς Ἁγίας Πνεύματος Ἐκπόρευσις, μία ἐστίν. Ἀλλὰ τί τὸ ἐπόμενον; Ἀρ' ὀπιωλικά ὥδε τὸ Ἅγιον Πνεῦμα πνεῖται, εἴτ' ἔν ἐμφυσᾷται, ἢ ἐμφύσησις ἦδε, ἢ αὐτὴ ἐστὶ τῇ πνεύσει, ἥτοι τῇ Ἐκπορεύσει τῆς Πνεύματος; Μία μὲν ἢ τῆς Πνεύματος πνεῦσις, ἢ ἀπ' αἰῶνος δηλονότι· ἀλλὰ πάντως, εἴπερ ἐκεῖνα ἐννοήσωμεν, τὰ ἐν χρόνῳ διὰ τὴν ἡμετέραν σωτηρίαν οἰκονομηθέντα, ἄλλω αὐθις τὴν χρονικῶς ἐμφύσησιν, ἥτοι ἔμπνευσιν, ἐπιγινώσκων ἀναγκαζόμεθα. Καὶ ἐπεὶ ἄρα ἡδε ἢ ἐμφύσησις τῷ παντὶ διαφέρει τῆς αἰωνίας ἐκείνης τῆς Πνεύματος πνεύσεως, ἐκδηλον ὡς ἔδαμῶς ἔπελαι, εἴπερ ὥδε τὸ Πνεῦμα πνεῖται, ἥτοι ἐμφυσᾷται, ταύτῃ δὴ τὴν εἴτε ἐμφύσησιν, εἴτε πνεῦσιν ἂν καλεσμένῳ, τῇ πνεύσει ἐκείνῃ, τετέστι τῇ αἰωνίῳ τῆς Πνεύματος Προόδῳ, εἶναι τὴν αὐτὴν: Καί τοι γε τῷ ὄντι, κυριολεκτεῖν ἐλομένοις, ἔδ' ἐκεῖνο συγχωρητέον ἂν εἴη, τὸ ὥδε πως ἐμπε-

ἐμπεφυσθῆναι τὸ Πνεῦμα ἢ λέγεται. Εἰ γὰρ καὶ ὁ Σωτὴρ ἐμφυσήσας παρέχε τοῖς Μιθιταῖς τὸ Πνεῦμα τὸ "Ἅγιον, καὶ τῇ τοιαύτῃ ἐμφυσήσει τὴν δόσιν τῷ Πνέματος ὑπεσήμεναν, ἀλλ' ἐκ ἐμψυγῆς καὶ ἡ πνοὴ ἡ σωματικὴ, ἡ τῷ Πνέματος ἦν ἐσία, ὡς ἀνωτέρω Ἀυγστίνῃ τε καὶ ἄλλων τῶντο ἡμᾶς διδασκόντων διακηκόαμεν. Ὁ γὰρ ἦν διὰ τῆς σωματικῆς πνοῆς ἐνεφυσᾶτο τὸ Πνεῦμα τὸ "Ἅγιον, ὅτι μὴ „οἰκονομικῶς καὶ διὰ Συμβολικῆς πως συγκαταβάσεως καθὼ μετὰ τῷ ἐμφυσήματος ἐκείνῃ ἐχορηγεῖτο ἅμα τὸ Πνεῦμα, ἥτε τέττα δόσις τῇ ἐμφυσήσει ὑπεσημαίνετο ταύτῃ γὰρ δὴ καὶ μόνον ὑπὸ τῷ Χριστῷ ἐμφυσήθηναι τὸ "Ἅγιον Πνεῦμα διώταται λέγεσθαι. Ἀλλ' ἐδὲ τῇ φωνῇ τῆς „Πνέσεως οἱ τῆς Καθολικῆς ἐκκλησίας Πατέρες προσχρησάμενοι φαίνονται, τὴν τῷ Ἁγίῳ Πνέματος Ἐκπόρευσιν ἐρμηνεύοντες. Πόθεν γὰρ δήλον γένοιτο, κατὰ τρόπον Πνέσεως ἐκπροϊέναι τὸ "Ἅγιον Πνεῦμα, ὅποτε ὁ τῆς αὐτῆς Ἐκπορεύσεως λόγος πάντῃ πάντως ἀγνοῖσθαι διωμολόγηται, ὡς ἐν ἄλλοις ἐδείξαμεν; Οὐδὲ τῷνομα τὸ τῷ Πνέματος εἰς τῶντο ἂν σωτελέσειε· κοινόν γὰρ τῇ Τριάδι τῇ τῷ ὀνομα καὶ ἔστι Πνεῦμα καὶ ὁ Πατὴρ· ἐδὲν δὲ ἥττον καὶ ὁ Υἱός. „Ὁ γὰρ Θεὸς Πνεῦμα ἐστίν,, ὡς ἡ Θεία Γραφὴ φησί. Μήτοιγε δέ, ἐπειδὴ Πνεῦμα ἐστίν ὁ Υἱός, κατὰ τρόπον Πνέσεως παραπλησίως ἐκ τῷ Πατρὸς καὶ αὐτὸς προέρχεται; Ἀλλὰ περὶ τέττα δὴ ἀλλὰχόσε.

Ἀλλ' εἰ καὶ ἡ ἐμφύσησις, φασὶν ἕτεροι, ἐκ ἡ αὐτῇ πάντως τῇ τῷ Ἁγίῳ Πνέματος Ἐκπορεύσει, προσηκόντως ἀλλ' ἔν διὰ τῆς ἐμφυσήσεως ἐκείνης, ἡ τῷ Ἁγίῳ Πνέματος ἐκ τῷ Υἱῷ ὑπεσημάνθη Ἐκπόρευσις — Ἀλλ' ἔτις ἡμῖν τὸ ἐν ἀρχῇ εἶσιν αἰτῶμενοι ἔστι· περὶ γὰρ δὴ τέττα ἡ παρῆσα ζήτησις πᾶσα καὶ διαμάχη. Προσέτι δὲ περὶ τέττα, ἄχρι τῶδε καὶ διαιλέγμεθα. Ὁμοιον γὰρ τὸ τὴν ἐμφύσησιν ἐκείνῃ διατείνεσθαι, τῆς τῷ Ἁγίῳ Πνέματος Ἐκπορεύσεως καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ πῶς εἶναι, τῷ τὴν ἐμφύσησιν αὐτῷ προσήκυσαν τε καὶ προσφυῇ παρέχειν τὴν δὴ λωσιν, τῷ τὸ "Ἅγιον Πνεῦμα καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ ἐκπορεύεσθαι ὥς περὶ γε τῶντο περαιτέρω προσδιατρίβειν περιττόν.

Ἀνθυποφέρει, τέως πρὸς ταῦτα τις τῶν Ἰησῆϊτων, (21) ποιεῖν ἄτλα· Μετὰ γὰρ τὰ ἡδὴ ἐπενεχθέντα ἐκ τῷ Κυρίλλῳ, (ἐν Βιβλ: IB. τῶν εἰς τὸν Ἰωάν:) ταῦτα δὴ ἐκ τῷ αὐτῷ ἔτι ἐκείνῃ Βιβλίῳ ἀντιπροβάλλεται: „Οὐκᾶν, φησί, δέχονται μὲν „(οἱ Ἀπόστολοι) τὴν τῷ Ἁγ: Πνέματος μέθεξιν, ὅτε καὶ ἐνε- „φύσησεν αὐτοῖς, λέγων: Λάβετε Πνεῦμα "Ἅγιον· οὐδὲ γὰρ ὡς „δια-

(21) Κιχώβιος Ζητήμ: Α'. τῷ κατ' αὐτὸν Βήματος, Σελ: 3.

Τόμ: Β'.

Ω

„διαψεύσασθαι τὸν Χριστὸν ἔδ' ἄλλως ἂν ἔφη: „λάβετε,,: μὴ διδῶς.

Οὐδὲν ἔν ἑτερον Κύριλλος ἐν τέτοις διδάσκων ἐστίν, ἢ ὅτι διὰ τῆ ἐμφυσημάτων ἐκείνων δέδοται τοῖς Ἀποστόλοις τὸ Πνεῦμα· ἐκ ἑτι δὲ καὶ κείνο προσέθησιν, ὡς ἄρα διὰ τῆ αὐτῆ ἐμφυσηματος καὶ ἡ τῆ Ἀγ: Πνύματος διὰ τῆ Υἱῆ ἐκδηλεῖται Ἐκπόρευσις. Ἀλλὰ τίς ποτ' ἕξαρνος ἐγένετο τῆς διὰ τῆ ἐμφυσηματος πρὸς γε τῆ Σωτήρος γενομένης τοῖς Μαθηταῖς τῆ Ἀγίας Πνύματος μεταδόσεως; το μὲν τοι τὴν διὰ τῆ Υἱῆ χορηγίαν τῆ Πνύματος εἰς ἀπόδειξιν συμβάλλεσθαι τῆς τῆ Πνύματος Ἐκπορεύσεως καὶ ἐκ τῆ Υἱῆ, τῷ ἑξῆς ὅπερ εὐτόνως ἀρνέμεθα.

Πρόεσιν ἄλλ' ἔν ὁ Συγγραφεὺς ἐκείνος: „Καὶ ἐκ τῆς, „φησὶ προϋποκειμένης, (ὅτι δηλ: διὰ τῆς ἐμφυσησεως ἐκείνης, „ἐπίστευε Κύριλλος, τὴν τῆ Πνύματος Ἐκπόρευσιν τὸν Χριστὸν „ὑποσημιώσθαι) ὁμοῦσιον τῷ Πατρὶ τὸν Υἱὸν πεφυκέναι ἐπιφέρει ὁ Θεὸς αὐτὸς Πατριάρχης, ἐν τῷ Θ'. τῶν εἰς τὸν Ἰωάννην „Βιβλ: „Σελ: 810. Πῶς φάσκων, ἔπερ ἑτεροῦσιος ὁ Υἱὸς, τὸ „τῆ Πατρὸς Πνεῦμα δίδωσιν ὡς ἑαυτῆ; γέγραπται γὰρ, ὅτι ἐνε- „φύσησε τοῖς Μαθηταῖς, λέγων: Λάβετε Πνεῦμα Ἅγιον. Ἄρ' ἔν „ἐκ οἰήσεται τις, καὶ μάλα δικαίως, μᾶλλον δ' ἀραρότως ἔδια- „κρίσεται, ὅτι τῶν τῆ Θεῆ καὶ Πατρὸς φυσικῶν ἀγαθῶν ἑστὼν „δῶς ὑπάρχων κοινωνός ὁ Υἱὸς, ἔχει τὸ Πνεῦμα κατὰ τὸν αὐ- „τὸν τῆτον τρόπον, καθ' ὃν περ ἂν καὶ ὁ Πατὴρ ἔχει νοοῖτο, ἐκ „ἐπακτὸν, ἔδ' ἕξωθεν; Ἐνηθες γὰρ, μᾶλλον δὲ μανικὸν τὸ ἔ- „τω φρονεῖν. Ἀλλ' ὥσπερ ἡμῶν ἕκαστος τὸ ἴδιον ἐν ἑαυτῷ Πνεῦ- „μα σιμῶει, καὶ τῶν ἐνδοτάτω σπλάγχχνων ἐπὶ τὰ ἕξω προ- „χέει. Διὰ γὰρ τοι τῆτο σωματικῶς ἐνεφύσησεν ὁ Χριστὸς δεικ- „νύς, ὅτι καθάπερ ἐκ σώματος τῆ ἀνθρωπίνης πρόεσι τὸ Πνεῦ- „μα σωματικῶς, ἔτω καὶ ἐκ τῆς Θείας ἑσίας Θεοπρεπῶς προ- „χέεται τὸ ἐξ αὐτῆ. (22).

Ἀλλὰ Ἀν: ψευδῶς λέγεται, ὅτι Κύριλλος ἐπιφέρει ὁμοῦσιον πεφυκέναι τῷ Πατρὶ τὸν Υἱὸν, ἐκ τῆς δὴ προϋποκειμένης, ὡς διὰ τῆ ἐμφυσηματος ἐκείνης, ἢ ἐκ τῆ Υἱῆ ὑποδηλεῖται Ἐκπό-  
ρευσις

(22) Κοινῇ μὲν οἱ Λατῖνοι διὰ τῆς ἐμφυσησεως, ἐπιχειροῦσι σιμάγειν τὴν τῆ Πνύματος ἐκ τῆ ἐμπεφυσηκότος Ἐκπόρευσιν· ὁ δὲ Πολωνὸς ἕτος, ἀναποδίζων, προϋποτίθησιν ὡς ὁμολογημένως τὴν αὐτὴν ἔσαν τῇ ἐμφυσησει τὴν Ἐκπόρευσιν, καὶ Κύριλλον προσενδιαβάλλει, ὡς ἐντεῦθεν ἐπιχειροῦντα κατασκευάσαι τὸ ὁμοῦσιον πεφυκέναι τὸν Υἱὸν τῷ Γενήτορι. Ἐμφυσᾶται, φησὶν, ὑπὸ τῆ Υἱῆ τοῖς Ἀποστόλοις τὸ Πνεῦμα, ὅπερ ἐστὶν ἐξ αὐτῆ ἐκπορεύεται. Ἄρα καὶ ὁμοῦσιον ἐστὶν αὐτῷ τε δὴ καὶ τῷ Πατρὶ. Ἀλλ' ἐκείνο μὲν ὃ γὰρ πρόκειται τὸ ζητούμενον· τῆτο δὲ ἀκαταζήτητον. Τίς ἔν ἡ Διαλεκτικῇ, ἢ ἐκ τῶν ἀμφιβαλλομένων ἐπιχειροῦσα σιμάγειν τὰ ὁμολογούμενα.

ρευσις τῆ Ἁγίας Πνεύματος. Τοιοῦτο γάρ τι διὰ τῶν προενεχθέντων ῥημάτων Κύριλλος ἔτε διδάσκει, ὅδ' ὁπωσὺν ὑπηνίξατο. „Τὸ Πνεῦμα, φησὶ, τὸ Ἅγιον ἴδιον εἶναι τῆ Υἱῆς, ὅκ ἐπακτὸν, „ὅδ' ἔξωθεν. ἀλλ' ὃν τρόπον ἡμῶν ἕκαστος τὸ ἴδιον ἐν ἑαυτῷ „Πνεῦμα σωέχει καὶ τῶν ἐνδοτάτω σπλάγχνων ἐπὶ τὰ ἔξω „προχέει. Καὶ καθάπερ ἐκ σώματος τῆ ἀνθρωπίνης πρόεισι τὸ Πνεῦμα σωματικῶς, ἔτω τὸν Χριστὸν διὰ τῆ ἐμφυσήματος ἐκείνης δέξαι, φησὶν, ὡσαύτως μὴ ἔξωθεν, μηδ' ἐπισάκτως, ἀλλ' ἐκ τῆς Θείας αὐτῆς ἑσίας, κατὰ τρόπον πρέποντα Θεῷ, ἐπὶ τῆς Ἀποστόλης προχέσθαι τὸ Πνεῦμα, τὸ ἐξ αὐτοῦ δηλονότι ἡμῶν χορηγούμενον. Ἐπεὶ ἔν ὁ τῆ Κυρίλλου νῆς ἐστὶν ἔτος. τίνι δὴ τρόπῳ, ὅκ ἂν ἄλλως, ἢ προὑποκειμένη τῆ διὰ τῆς Χριστῆς ἐκείνης ἐμφυσήσεως ὑποσημαίνεσθαι τὴν τῆ Ἁγίας Πνεύματος Ἐκπόρουσιν ἐξ αὐτῆς διὰ ταύτης δὴ τῆς τῆ Χριστῆς ἐμφυσήσεως ὑποσώψει Κύριλλος τὸ αὐτὸν πέφυκέναι τῷ Πατρὶ ὁμοῦσιον; Ἐξ ἀνάγκης μὲν ἔν τῷ ἐντεῦθεν ὁ Κύριλλος ἐπισωῆγεν ἔτως: Ἐκ γε τῆς τῆ Σωτῆρος ἐμφυσήσεως, ἐνδηλον ὅτι ὁ Υἱὸς δίδωσι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ὅκ ὡς ἐπακτὸν ἔξωθεν, ὅδ' ἀλλότριον, ἀλλ' ὡς ἴδιον. Ἐπεὶ δὲ τὸ αὐτὸ Πνεῦμα Ἅγιον τῆ Πατρὸς ἐστὶ, καὶ κείνης Πνεῦμα ἴδιον ἀνάγκη πάντως ὁμοῦσιον εἶναι τῷ Πατρὶ τὸν Υἱόν. εἰ δὴ τὸ τῆ Πατρὸς ἴδιον Πνεῦμα, ἴδιον ἐστὶν ὡσαύτως καὶ τῆ Υἱῆς. Ποῦ δὲ, ἔν ἔτω τις συμπεράνη, προὑποθετέον αὐτῷ, ὅτι τὸ Πνεῦμα καὶ ἐκ τῆ Υἱῆς ἐκπορεύεται; ἢ ὅτι διὰ τῆς ἐμφυσήσεως τῆ Χριστῆς ἐκείνης, ἢ ἐξ αὐτῆς Ἐκπόρευσις τῆ Ἁγίας Πνεύματος ἐκδηλῆται; Ἀδ' ἂν ἔχοι ἐκ τῶν νῦν προτεθέντων τῆ Κυρίλλου ῥημάτων ἀνθυπενεχθῆναι, ταῦτα ἐπὶ τῆς Πραγματείας ἐν ἣ τὰ ἐκ μαρτυρίας τῶν Ἀνατολικῶν Πατέρων ἡμῶν οἱ Λατίνοι ἀντιπροβάλλειν εἰώθασιν, περὶ αὐτὰς τὰς Κυρίλλου ῥήσεις ἐπιλέλυται.

Χωρεῖ δ' ἔτι προῖων ὁ αὐτὸς Ἰησυχίτης (23) οὕτως: „Ἰνα δὲ „μή τις εἴπῃ, διὰ τῆ ἐμφυσήματος ἐκείνης μόνον δεδόσθαι τὰ τῶν „δωρημάτων χαρίσματα. Κύριλλος αὐτὸς ἀπαντῶν ἐν τῷ Ζ'. „τῶν πρὸς Ἑρμείαν Διαλόγων, φύλλ: 638. Ὁ γὰρ τῆς χάριτος, φησὶν, ἀλλ' αὐτῆς τῆ ἐνὸς καὶ Ἁγίας Πνεύματος, δι' ἐκείνης τῆς τῆ Σωτῆρος ἐμφυσήσεως ἐν μεθέξει γεγόνασιν οἱ Ἀπόστολοι. (24) — Ἀλλ' ἔποτε γὰρ αὐτοὶ ἀπέφημεν, τῆ Σωτῆρος εἰπόντος: „Λάξετε Πνεῦμα Ἅγιον, ὅτι ἀληθῶς τὸ Πνεῦμα τοῖς Μαθηταῖς ἐδωρήθη ὥστερ δὲ τῆ Πνεύματος ποικίλα ἐστὶ τὰ χαρίσμα-

(23) Ἐν τῷ πρὸ μικρῆς ῥηθέντι Βιβλ: Σελ: 4.

(24) Ὅρα μοι ἄνωτ: ἐν τῇ Η'. Πραγματ: Σημ: (60)



ρίσματα, ἔτω διὰ τῆς ἐμφυσήματος ἐκείνης, καθ' ἑντι δώρημα καὶ μόνον, τὸ πρὸς τὴν τῶν ἀμαρτημάτων ἄφεσιν, τὸ Ἄγ: Πνεῦμα πρεσβύομεν τιωκαῦτα κεχορηγήθαι. Καίτοιγε ἄλλως τὰ ὡς ἐκ τῆς Κυρίλλου προτεθέντα ῥήματα, ἐπὶ τῆς ῥηθέντος χωρὶς ἐκείνου. Ἄ δὲ τέτοις ἀντισοιχῆς πως, ἐν τῷ Β'. Τόμ: τῶν Συγγραμ: τῆς ἐν Παρισ: Λατινικ: Ἐκδόσ: τῆς ἐν Ἐτῆ 1604. Σελ: 321. (25). Ταῦτα ἐστὶν: Α'. „Τὸ δὲ δὴ τὴν Θεῖαν ἡμῶν ἐγχαράττον εἰκόνα, καὶ σημάντρῃ δίκῃ ἐμποιῶν τὸ ὑπερ- „κόσμιον κάλλος, ἐχὶ τὸ Πνεῦμα ἐστὶν; Β. Ἄλλ' ἐχὶ ὡς Θεός „ἄλλ' ὡς Θεῖας Χάριτος ὑπεργός. Α. οὐκ αὐτὸ τοιγαρὲν ἡμῶν, „ἄλλ' ἡ δι' αὐτῆς χάρις ἡμῶν ἐνσημαίνεται. . . . Ἦν ἔν ἀναγκαῖ- „ον εἰκόνα τῆς χάριτος, καὶ ἐχὶ μᾶλλον εἰκόνα Θεῶς διακε- „κλῆθαι τὸν ἄνθρωπον. (Εἶτα περὶ τῆς Ἀδὰμ διελθὼν.) Διε- „μορφῆτο πρὸς Θεὸν ἐμψυσηθείσης αὐτῷ πνοῆς ζωῆς. ἀπεμπολη- „κῶς δὲ τὸν ἀγιασμὸν διὰ τῆς εἰς φαυλότητα παρατροπῆς, εἰς „τὸ ἐν ἀρχαῖς καὶ πρεσβύτατον αὐτῆς ἀνεκομίζετο κάλλος, καὶ „νεργῶντος τὸ παλαιωθὲν εἰς εἶδος τὸ Θεῖον τε καὶ νεωθὲν τῆς „Χριστῆς καὶ ἐκ καθ' ἑτερόντινα τρόπον, πλὴν ὅτι τὸν ἐν ἀρχαῖς „ἐνεφύσησε γὰρ τοῖς Ἁγίοις Ἀποστόλοις λέγων: Λάβετε Πνεῦμα „Ἅγιον. (Καὶ μετὰ τινά:) Θεός ἄρα τὸ Πνεῦμα ἐστὶν, τὸ δια- „μορφῶν πρὸς Θεὸν ἐχὶ ὡς διὰ χάριτος ὑπεργικῆς, ἄλλ' ὡς „Θεῖας φύσεως μέθεξιν αὐτὸ τοῖς ἀξίοις δωρεῶμενον. Ὁ νῦν ἄρα ὁ τῆς Κυρίλλου ἐν τέτοις ἐστὶν, τὸν Χριστὸν ἐμπεφυσηκότα τοῖς Ἀποστόλοις, μὴ χάριν τινὰ δεδωκέναι τοιαύτῳ οἶαν, δηλονότι, ὡς ὑπὸ δόξης δοθῆναι ἂν, ἀλλὰ καὶ τὸ Ἄγ: Πνεῦμα. Οὐκ ἄρα Κύριλλος ἀπόφῃσι χάριν τιωκαῦτα δεδόσθαι νοεῖ δὲ τὴν χάριν ἐκείνῃ μὴδαμῶς ἔτω δέδοσθαι, ὥσπερ ἂν καὶ ὑπὸ ὑπεργῆς τιμος δοθείη. Τοιάνδε δέ τινα δήπερ χάριν τοῖς Ἀποστόλοις τιωκαῦτα ἐπιδοθῆναι, ἐδ' ἡμεῖς πάντως ἀπανανόμεθα.

Προσέτισι δ' ἔν ἑτι ὁ Ἰησοῦς καὶ τὸ τῆς ἈΘΑΝΑΣΙΟΥ ἐκ τῆς Βίβλου τῆς περὶ τῆς προσληφθείσης τῆς ἀνθρώπου φύσεως. Ἀλλὰ περὶ τέτων ἐν τῇ Πραγματείᾳ ἐν ἣ, τάς ἀντεπαγομέ- νας ὡς ἐκ τῶν Ἀνατολικ: Πατέρ: ῥήσεις, ἐπιλυσόμεθα. Ὡς δὲ ἐκ τῆς Ἀθανασίου ἐπάγει καὶ τὸ ἐκ τῆς πρὸς Σεραπίωνα Ἐπισ: Τόμ: Β'. τῶν Συγγραμ: Σελ: 10. „ἐμψυσήσας δέδωκεν ἐξ „αὐτῆς τῆς τοῖς Μαθηταῖς. (Συνάπτει δέ:) πῶς ἐξ ἑαυτῆς, εἰ μὴ ἐκπορευόμενον,; — Ἀλλὰ μὴ γὰρ ὁ Υἱὸς ἐκ ἑχει τὸ Πνεῦμα ἐν

(25) Το δὲ κατὰ τὴν ἐν Παρισ: Γραικο-Λατιν: Ἐκδόσιν, ἔτει 1638. ἐν Τόμ: Ε'. Μέρ: Α'. Σελ: 638. 639. ἐμφέρεται ἐν τῷ Ζ'. τῶν πρὸς Ἑρμείαν Διαλόγῳ. Τῆ μὲν Α. τὸν Κύριλλον ὑποσημαίνοντος λέγοντα τῆ δὲ Β. τὸν Ἑρμείαν.

ἐν ἑαυτῷ; καὶ ἐκ φύσεως ἴδιον; Εἶπερ ἄρ' ἄλλοις τὸ Πνεῦμα χορηγεῖ ὁ Υἱὸς, ἐξ ἑαυτοῦ πάντως ἐπάνανγκες ἄλλοις αὐτὸ χορηγεῖν. Πῶς ἄρα ἔκ ἂν ἔχοι ὁ Υἱὸς ἐξ ἑαυτοῦ χορηγεῖν τὸ Πνεῦμα, εἰ μὴ καὶ ὁ καὶ ἐξ αὐτοῦ, τῷ ἂν ἦ ἐκπορευόμενον; (26) Ἄδ' ἐπὶ τέτοις ἐπάγει ἈΝΑΣΤΑΣΙΟΥ τῷ Συναίτῃ ἐκ τῷ Α'. Βιβλ: τῷ περὶ τῶν Δογμαμάτων τῆς Πίστεως καὶ ἅπερ αὐθις ΚΥΡΙΛΛΟΥ τῷ Ἱεροσολυμίτῃ ἐφεξῆς ἐπάξειν προσεπαγγέλλεται, ἐν τῇ Πραγματείᾳ, καὶ ἦν τὰς ἀντιπροβαλλομένας ἡμῖν ὡς παρὰ τῶν Ἀνατολικῶν Πατέρων ἀπελεγόμεν διαμαρτυρήσεις, ὡσαύτως καὶ ταῦτα ἐπιλυσόμεθα. Περὶ δὲ τῶν τῷ ΕΠΙΦΑΝΙΟΥ, ἐκ τῆς ΟΔ'. Αἰρέσεως, μικρὸν ἀνωτέρω διελήπται.

Ἐν δὲ δὴ τέτοις παρασιωπτεῖ (27) καὶ τὰ ΕΠΙΦΑΝΙΟΥ ἐκ τῆς ΕΘ'. Αἰρέσεως. „Ἐν ἄλλῳ τόπῳ ἐκέτι αἰτάμενος διδωσιν, ἀλλ' αὐθεντία τὰ ἴδια, ὡς πηγὴ ὦν ἀπὸ πηγῆς καὶ Θεὸς ὦν ἐκ Θεοῦ, ἐνεφύσησεν εἰς τὸ Πρόσωπον αὐτῶν, καὶ εἶπε: Λάβετε Πνεῦμα Ἅγιον,.. — Ἀλλ' ἐκ τέτων ἐδὲν ἐστὶ πορίσασθαι, ὑπὲρ τῆς τῷ Ἀγ: Πνύματος Ἐκπορεύσεως καὶ ἐκ τοῦ Υἱοῦ. Ἡ γὰρ διάνοια ἡ τῷ Ἐπιφάνειᾳ ἐστίν, ὅτι: ὁ Σωτὴρ κατὰ μὲν τὴν ἀνθρώπου φύσιν, αἰτᾶται πολλάκις παρὰ τῷ Πατρὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐν ἄλλοις δὲ, (ὡς ἐπὶ τῆς ἐμφυσήσεως ἐκείνης) καὶ ἐν ἰδίᾳ ἐξέσσει, ὡς ἴδιον αὐτοῦ δηλονότι τὸ Πνεῦμα, καὶ μὴ παρ' ἄλλου καὶ ἑκείαν αἰτηθὲν, κατὰ γε τὴν Θεῖαν φύσιν αὐτὸ διανέμει ἅτε Θεὸς ὦν, καὶ πηγὴ, ἢτοι διανομεὺς τῷ Πνύματος. (Ἐστὶ γὰρ δὴ Θεὸς ἐκ Θεοῦ, καὶ πηγὴ ἐκ πηγῆς ὁ δὲ Πατὴρ ὁμοίως καὶ πηγὴ, καὶ τῷ Πνύματος ἐστὶ χορηγός.) Ὁ δὲ Φησὶ, τὸν Υἱὸν διδόναι τὸ Πνεῦμα ὡς πηγὴν ἐκ πηγῆς πρὸς τὰ ἐκτὸς τῷτο ἐστὶν ἐννοῶν. Καὶ γὰρ ἐν τῇ ΕΘ'. Αἰρέσει, Ἀριθμ: ΝΔ. Σελ: 776. τῆς ἐν Παρισ: Γραικο-Λατινικῆς Ἐκδόσεως, τὸν Υἱὸν ὁ Ἐπιφάνιος ὡσαύτως πηγὴν ἐκ πηγῆς ὀνομάσας, καὶ κατ' ὄνομα τὸ τῷ Υἱῷ καὶ Λόγῳ, μία πηγὴ, εἰπὼν, „ἐκ πηγῆς ὁ Υἱὸς προσελθὼν, αἰὲ ὦν παρὰ τῷ Πατρὶ γεγεννημένος, ὅτι παρὰ Σοὶ πηγὴ ζωῆς,“ ἐξῆς ἐντεῦθεν καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, πηγὴν ἐκ πηγῆς ἀποκαλεῖ ὁ πάντως, ἐκ ἂν ἄλλως,

(26) Καὶ τὸ Πνεῦμα δὲ, ἐπεὶ αὐτὸ ἑαυτὸ δίδωσιν, ἐξ ἑαυτοῦ πάντως καὶ δίδεται ἄλλ' ἔκ ἑαυτοῦ εἰς τὸ εἶναι προβάλλει, ἔτ' ἐξ ἑαυτοῦ ἐκπερέζεται. Ἄλλο γάρ, καὶ τῷ παντὶ διαφέρειν ἐστὶ, τὸ ἐξ ἑαυτοῦ δίδοναι, καὶ τὸ ἐξ ἑαυτοῦ εἰς τὸ εἶναι προβάλλειν. Τὸ μὲν γὰρ ἔχειν ἐστὶ, τὸ δὲ τὸ εἶναι παρέχειν καὶ τὸ μὲν, τὴν οἰκιστὴν ἐμφαίνει τῆς φύσεως, καὶ τὸ ταῦτόν τῆς ὕσεως τῶν ὑποστάσεων τὸ δὲ, τὴν ἀρχὴν σημαίνει καὶ τὴν αἰτίαν, τῆς ἑτέρας ἀπὸ τῆς ἰδίας ὑπάρξεως. Συγχεῖν δ' ἔχει ταῦτα ἄλλήλοις, θάτερον ἀντὶ θάτερον ἀτόπως λαμβάνοντας.

(27) Περὶ τῆς Ὀμιλ: ταύτης, ὅρα τὴν ἀνωτ: Σημείωσιν. (17.)

Τόμ: Β'.

Α α

λως, ἢ πρὸς τὰ ἐκτὸς κατανοηθείη. Ἀμέσως γὰρ ἐπὶ τοῖς προτεθείσιν ῥήμασιν ἐπισυνάπτει: „Καὶ ἵνα δείξῃ καὶ περὶ τῆς Ἀγ: „Πνεύματος, ἐν τῷ φωτίσθαι ὁψόμεθα Φῶς. ἵνα δείξῃ Φῶς τὸν „Πατέρα, καὶ Φῶς τοῦ Πατρὸς εἶναι τὸν Υἱὸν, καὶ Φῶς τὸ „Πνεῦμα τὸ Ἀγ: , καὶ πηγὴν ἐκ πηγῆς, ἐκ τῆς Πατρὸς καὶ τῆς Μονογε- „νῆς τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. Ποταμοὶ γὰρ ἐκ τῆς κοιλίας αὐτῆς ρεῖ- „σασιν ὕδατος ἁλλομένους εἰς ζωὴν αἰώνιον. Ἐλεγε δὲ τῆτο περὶ „τῆς Ἀγίου Πνεύματος, φησὶ τὸ Ἐναγγέλιον „.

Ἐφεξῆς δ' ἀντιπροτείνει ὁ Ἰησοῦς τὰ τῆς ΒΑΣΙΛΕΪΟΥ, ἐκ τῆς ΙΖ'. Ὀμιλίας περὶ τῆς Βαπτίσματος (28) τὰ ἀνωτέρω ἐπενεχθέντα, καὶ συνάπτει: „ὅτι τὸ ῥηθὲν ἐκ ἄλλως ἂν ἔχοι „ἀναπτυχθῶμαι, εἰμὴ διὰ τῆς τοιῶδε Ἐπιχειρήματος: Εἴτι πρόει- „σιν ἐκ τῆς Θεᾶς, τῆς τῆς Θεᾶς ἐσίας ἐστὶ τὸ δὲ ἐμφυσηθὲν τοῖς „Ἀποστόλοις Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῆς Θεᾶς ἐστὶ (Θεὸς γὰρ ὁ Υἱὸς.) Τὸ ἄρα τοῖς Ἀποστόλοις ἐμφυσηθὲν Πνεῦμα τῆς Θεᾶς ἐσίας ἐστίν „.— Ἀλλ' ὅτι γὰρ τὰ τῆς Θεοσεύς Βασιλείας ἄλλως πως ἀναπτύσσεται καὶ ἐστὶ καὶ δεῖ, ἀνωτέρω παραπλησίως σκευράκαμεν. Τὸ γὰρ κατὰ Βασιλεῖον Ἐπιχείρημα τοιῶτον: Τὸ Πνεῦμα τὸ Ἀγ: παρὰ τῆς Υἱᾶς τῆς Θεᾶς ἐμφυσᾶται· τὸ ἄρα Ἀγ: Πνεῦμα Θεᾶς ἐσίας ἐστίν, ὡς ἐκ τῶν ἐκείνης ῥημάτων φανερόν γίνεται· ὡς γὰρ ἡ μείζων τῶν Προτάσεων μόνη ἄπεισιν· ἥς προσεδείσθη, τέλειος ἔτω προ- κύψει ὁ κατὰ τὸν Βασιλεῖον Συλλογισμὸς ὅδε: „Τὸ παρὰ τῆς Υἱᾶς „τῆς Θεᾶς ἐμφυσώμενον, τῆς Θεᾶς ἐσίας ἐστίν (ὁ γὰρ Υἱὸς τῆς „Θεᾶς, ἐστὶ Θεός. Καὶ γε τὸ παρὰ τῆς Υἱᾶς ἐμφυσώμενον, παρὰ „τῆς Υἱᾶς δίδεται.) Ἀλλὰ μὲν τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, παρὰ τῆς Υἱᾶς „ἐμφυσώμενον ἐστίν. Ἄρα τὸ Ἅγιον Πνεῦμα τῆς Θεᾶς ἐσίας „ἐστίν „. Ἡ δὲ τοι ἐλάσσων, ἢ οὕτως ὑπὸ τῆς Ἰησοῦς παραχη- ματιζομένη: ὅτι „τὸ ἐμφυσηθὲν τοῖς Ἀποστόλοις Ἅγιον Πνεῦμα „ἐκ τῆς Θεᾶς ἐστίν „, οὐ κατὰ νῦν τίθεται τὸν τῆς Βασιλείας οὐ γὰρ δὴ ταῦτα τὰ Βασιλείας ῥήματα ὡς ἀλλ' ἀπλῶς μόνον ὁ Πα- „τὴρ ἔλεγεν: „ἐνδείξασθαι τὸν Κύριον διὰ γε τῆς ἐμφυσήσεως „ὅτι τὸ Πνεῦμα τῆς Θεᾶς ἐσίας ἐστίν „. Ἐκ μόνης ἄρα τῆς ἐμ-

(28) Ὁ γὰρ Ἰησοῦς, ἔπερ αὐτῷ ἀληθεύειν ἔμελλεν, ἐκ τῶν εἰρημένων τῷ Μεγάλῳ Βασιλείῳ, διανοηθῆναι ὤφειλεν: ὅτι τὸ ἐκ τῆς Θεᾶς προεῖν τῆς τῆς Θεᾶς ἐσίας τῆς ὄντι ἐστίν, ἀλλ' ἦτοι ὡς ὑπόστασις ὁμοσσίως ἀπ' αἰῶνος ἐκπροϊῶσα· ὅσαπερ ὁ ἐκ τῆς Θεᾶς καὶ Πατρὸς γεννώμενος, καὶ τὸ ἐκπορευόμενον Πνεῦμα· ἢ γὰρ, ὡς δῶρον καὶ χάρισμα ἐκ τῆς αὐτῆς Θεαρχικῆς ἐσίας, ἐν χρόνῳ τοῖς κτίσμασιν ἐπικονι- νώμενον. Οὕτω γὰρ εἰς ἐλάττωνα τῆς Συλλογισμῶ παναληθεστάτῳ θέμενος, τὸ ἐκ τῆς ἐσίας τῆς Υἱᾶς καὶ Θεᾶς ἐμφυσηθὲν Πνεῦμα τοῖς Ἀποστόλοις τίτωκαῦτα χορη- γηθῆναι· εὐλόγως ἂν ὑποσυνῆψεν: ὡς, εἰ καὶ μὴ κατὰ τὴν ὑπόστασιν εἰς τὸ εἶναι προελθόν, κατὰ γε μὴν τὸ ἐπιχορηγηθὲν χάρισμα, ἀναντιρρήτως ἐκ τῆς τῆς Θεᾶς ἐσίας καὶ ἔτω πρόεισιν.

ἐμφυσήσεως ἐδείκνυ ὁ Θεὸς Βασιλεὺς ὑποσυνάπτεσθαι, ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα τῆς τῷ Θεῷ ἐξίας ἐστίν. Ἐνθα δὴπερ πρὸς τὴν τῶν δέξιν, αὕτη κατὰ τὴν Βασιλείαν διάνοιαν, εἰς ἐλάττωνα τῷ Συλλογισμῷ, ἀπόχρη ἢ Πρότασις: „Τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον „παρὰ τῷ Υἱῷ ἐμφυσᾶται τοῖς Μαθηταῖς,,. Κἀντεῦθεν δ' ἅμα φανερόν ἐστι, μηδὲ τὴν μέγιστον Πρότασιν ἐκείνῳ, κατὰ νῦν τὸν τῷ Βασιλεῖ ὑπὸ τῷ Ἰησοῦ ἐχηματίσθαι. „Εἴτι πρόεισιν ἐκ τῷ „Θεῷ, τῆς Θεῆας ἐξίας ἐστίν· ὃ γὰρ, ὡς παντίπερ δῆλον, ἢ τοιαύτη μέγιστον Πρότασις ἐκ τῶν Βασιλείαν ἀνακύπτει ῥημάτων, ὅπερ ἐναργῶς ἡμῖν ἀποδέδεικται.

Ἀλλ' ἐτι ὁ αὐτὸς ἐνιστάμενος, φησὶν, ἐν Βιβλ: Ε'. τῶν κατὰ Εὐνομίαν, Κεφαλ: τῷ περὶ τῆς Ἀφέσεως τῷ ἁμαρτιῶν, Φύλ: 780. πρὸς γε τὸ τέλος „Εφ' ᾧ δέξαι ὅτι τὸ Ἅγ: Πνεῦμα Θεὸς ἐστίν, τῷδε κέχρηται (Βασιλεὺς) τῷ Ἐπιχειρήματι: „Ὅς διώσκει διὰ τῶν Ἀποστόλων ἀφιέναι ἁμαρτίας, Θεὸς ἐστίν. „(ὅδεῖς γὰρ διώσκει ἀφιέναι ἁμαρτίας, ἐμὴ εἰς ὁ Θεός.) Ἀλλὰ „μὴ τὸ Ἅγ: Πνεῦμα ἐμφυσηθὲν καὶ τοῖς Ἀποστόλοις δοθὲν, „διώσκει διὰ τῶν Ἀποστόλων ἀφιέναι τὰς ἁμαρτίας. Ἄρα ἐστὶ „Θεός. Τόδε τὸ Ἐπιχείρημα κατασκευάζει σαφῶς, διὰ τῶν ῥημάτων, λάβετε Πνεῦμα Ἅγιον κτ: αὐτὸ τὸ Πνεῦμα τοῖς Ἀποστόλοις δεδόσθαι, ὅχι δέ τι δῶρον κτιστόν. Τὸ γὰρ τι τῶν κτισμάτων λέγειντε καὶ δεικνύειν εἶναι Θεὸν, ἐλάσφημόν τε καὶ τῆς τῶν Ἑθνικῶν ἀσεβείας ἰδίον,,. — Ἀλλ' ὅδ' αὐτοὶ ἀπανανόμεθα, τοῖς Ἀποστόλοις τὸ τιτωκαῦτα, τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον αὐτὸ, μετὰ τῷ πρὸς τὸ τὰς ἁμαρτίας ἀφιέναι χάρισματος, ὑπὸ τῷ Σωτῆρος ἐπιδοθῶν. Ταῦτα δ' ἐξ ἀφορμῆς τῶν ὑπὸ Θεοφυλάκτου εἰρημένων ὁ Ἰησοῦ διαλέγεται περὶ ὧν ἀνατέρω διήλθομεν. (29).

Πρόεισι δ' εἰς: „Ὅτι δὲ διὰ τῆς ἐμφυσήσεως ἐκείνης ἢ τῷ „Θεοτέρῳ Πνεύματος διεσημάνθη Ἐκπόρευσις, καὶ ὁ Θεὸς ἐτι „Γρηγόριος ὁ Θεολόγος διδάσκει, Λόγῳ ΜΔ', εἰς τὴν Ἅγ: Πεντηκοστὴν τῆς ἐν Ἀντιοχείᾳ: Ἐκδόσι: Ἐτ: 1612. Φύλ: 269: (30) „Τὸ μετὰ τὴν οἰκονομίαν τῆς Σωτηρίας ἐμφύσημα, ὃ Θεοτέρως „πάντως εἶδος παρίσθαι ἐμπνεύσεως. — Ἀλλὰ τάγε τῷ Θεωπεσίᾳ „Γρηγόρις, ἐστὶ τοιάδε,,: Τὸ μετὰ τὴν οἰκονομίαν ἐμφύσημα σαφῶς ἢ ἐμπνεύσει Θεοτέρῳ. Ἀμέλειτοι, ὅτι ἢ ἐμφύσησις αὕτη, τῆς προτέρως ἐκείνης ἐμπνεύσεως ὑπερφυσέει τις ἢ, τῆς ἐπὶ τῇ τῶν νοσημάτων καὶ τῶν Πνευμάτων ἀπελάσει, ὅχι ἄνευ τῷ Ἁγίῳ

(29) Ὅρα ἐπὶ τῆς Ε'. Ἀπαντήσι: περὶ τὸ τέλος καὶ τὴν ἐκεῖ Σημείωσιν (14).

(30) Ἐπὶ τῆς Παρισ: Ἐκδόσι: Ἐτ: 1630. Τόμ: Α'. Σελ: 713.



Ἄγις Πνέματος ἔδ' αὐτῆς γινομένης. Δείκνυσι γὰρ (ὁ Θεολόγος) ἐν τέτοις, ὅτι τρεῖς δέδοται τοῖς Ἀποστόλοις τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. Α'. μὲν ἀφανῶς. Β'. δὲ προφανέστερον. Γ'. δὲ τελεώτερον, καθὰ καὶ ὁ χρόνος, καὶ ἡ τῶν Ἀποστόλων ἡνεγκε δεξιότης. Ἐνθεν τοι τῷ τῆς „Θεοτέρας ἐμπνεύσεως ὀνόματι,, καὶ ἐμφανεστέραν χορηγίαν τῷ Ἄγ: σημαίνει Πνέματος. „Ἐνέργει γὰρ, φησὶν, „ἡ τῷ Πνέματος δυνάμει τοῖς Χριστῷ Μαθηταῖς καὶ τέτοις τρισσῶς, καθ' ὅσον οἱ τε ἦσαν χωρεῖν, καὶ κατὰ καιρὸς τρεῖς, „πρὶν δοξασιῶν Χριστὸν τῷ Πάθει μετὰ τὸ δοξασιῶν, Ἀνα- „στάσει μετὰ τὴν εἰς ἔρανθς ἀνάβασιν, ἢ ἀποκατάστασιν, ἢ ὅ, τι „χρὴ λέγειν. Δηλοῖ δὲ ἡ πρώτη, τῶν νόσων, καὶ ἡ τῶν Πνέμα- „των κάθαρσις, ἐκ ἄνευ Πνέματος δηλ: γενομένη καὶ τὸ „μετὰ τὴν οἰκονομίαν ἐμφύσημα, σαφῶς ὅν ἐμπνεύσις Θεοτέρα „καὶ ὁ νῦν μερισμός τῶν πυρίνων γλωσσῶν, ὅ καὶ πανηγυρίζομεν. „Ἀλλὰ τὸ μὲν πρῶτον ἀμυδρῶς, τὸ δὲ δεύτερον ἐκτυπώτερον, „τὸ δὲ νῦν τελεώτερον ἐκ ἔτι ἐνεργείας παρὸν, ὡς πρότερον „ἔσιωδῶς δὲ, ὡς ἂν ἔποιτις, συγγινόμενόν τε καὶ συμπολιτευό- „μενον. Οὕτω δὲ καὶ ὁ ΝΙΚΗΤΑΣ ἐν τῷ Σχολιάσματι. „Τρισ- „σῶς τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγ: τοῖς Ἀποστόλοις τὴν ἰδίαν ἐνέφηνε „δυνάμιν, ὡς ἀμέλει τέτων τε ἡ δεξιότης, καὶ τὸ τρισσὸν ἔφε- „ρε τῶν καιρῶν. Α'. γὰρ πρὸ τῷ Πάθους τῷ Χριστῷ ἀμυδρῶς, „ὅτε αὐτὸς ἀπέστειλεν εἰς τὸ κήρυγμα, καὶ τὴν δυνάμιν αὐτοῖς „ἐνήκε τῷ τὰς νόσας ἀπελάυναν, καὶ φυγαδεύειν τέας δαίμονας. „Ἀ δὴ πάντα ἐκ ἄνευ τῆς τῷ Πνέματος ἀπετελεῖτο Θεότητος. „Β'. δὲ μετὰ τὴν Ἀνάστασιν, ἐκτυπώτερόν τε καὶ ἐμφανεστέρον „ἐμφυσήσας γὰρ ὁ Χριστὸς εἶπε: Λάβετε Πνεῦμα Ἅγιον ἐκ ἄλ- „λος δὴπα ὑπάρχων, παρὰ τὸν ἀπὸ τῆς πρώτης τῶν πραγμά- „των δημιουργίας ἐμφυσήσαντα. Ἄλλ' αὐτὸς ἐκείνος, δι' ὃ τὸ ἐμ- „φύσημα δέδοται, τότε μὲν μετὰ τῆς ψυχῆς, νῦν δὲ ἐν τῇ „ψυχῇ. Γ'. δὲ τελεώτερον, ἐπειδὴν ἐπὶ τῆς ἔρανθς ὁ Χριστὸς „ἀνέβη.

Ἐτι ἀντιπροβάλλεται τὸ ΓΡΗΓΟΡΙΟΥ τῷ Νύσσης, ἐκ τῷ Λόγῳ τῷ εἰς ἐκείνα; „Τότε καὶ ὁ Υἱὸς ὑποταγίσηται. Τὰ γὰρ „τῆς Γραφῆς Λόγια: τὴν δόξαν ἣν δέδωκεμοι, ἀναπτύσσων, „ὡς δόξαν ἰδίαν ἀποκαλεῖ, φησὶ, τὸ Ἅγ: Πνεῦμα, ὃ τοῖς Μα- „θηταῖς παρέχε διὰ τῷ ἐμφυσήματος,, — Ἀλλ' ὡς τοσάκις ὑπε- „θέμεθα, ἔκιν ἡμεῖς ἔξαργοι, τῷ καὶ αὐτὸ τιμωκαῦτα τὸ Πνεῦμα „τοῖς Ἀποστόλοις ἐπιχορηγηθῶν. Δόξαν δὲ αὐτῷ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγ: ὁ Υἱὸς ὀνομαζει, ὅτι αὐτόν ἐδόξεσε. „Τίνι δὴ λόγῳ; ὡς τὸ „Πνεῦμα δηλ: τὸ Ἅγ: ἡμᾶς ἐκδιδάξαν, ὅτι ὁ Υἱὸς ἡ εἰκὼν „ἐστὶ τῷ ἀοράτῳ Θεῷ, καὶ τὸ ἀπαύγασμα τῆς δόξης, καὶ ὁ χα- „ρακτήρ τῆς ὑποστάσεως αὐτοῦ, καθὰ φησὶν ὁ Θεὸς ἈΜΒΡΟΣΙΟΣ,

Βιβλ:



Βιβλ: Β'. περὶ τῆς Ἀγ: Πνεύματος Κεφαλ: ΙΒ'. Ἀλλὰ γὰρ καὶ ὁ Υἱὸς δοξάζει τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ἵν' ἔτως ἀναφανῇ τὸ ἐνιαῖον τῆς Θείας φύσεως, ἐν ᾧ ἀμοιβαδὸν ἀλλήλας δοξάζουσιν ὁ Υἱὸς καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα· ἐμὴ δὲ καὶ διὰ τὸ, ἥτοι παρὰ τῆς Πνεύματος τὸν Υἱόν, ἢ παρὰ τῆς Τίς τὸ Πνεῦμα προβάλλεσθαι. Οὕτω γὰρ αὐτόσε προτάτῃ ὁ Θεὸς Ἀμβρόσιος: „Δοξάζει ἄρα „καὶ τὸ Πνεῦμα τὸν Υἱόν, καθὰ δοξάζει καὶ ὁ Πατήρ. Ἀλλὰ „καὶ τὸ Πνεῦμα δοξάζει ὁ τῆς Θεῆς Υἱὸς, ὡς ἔφημεν ἀνωτέρω „καὶ ἐκ ἑστὶν ἄρα διωάμεως ἀμοιρῶν, ὁ ἐξ ἀμοιρῆς ἀντιδιδῶς „τιὴν δόξαν, διὰ τῆς ἐνότητος τῆς αἰωνίης φωτός,,.

Τελούταϊον ὑποσιωπάει (ὁ Ἰησοῦς) καὶ τὴν Α΄ΥΓΟΥΣΤΙΝΟΥ μαρτυρίαν. — Ἀλλὰ περὶ μὲν τῶν Ῥήσεων τῶν Λατίνων Πατέρων, τῶν τὴν Ἐκπόρευσιν τῆς Ἀγίας Πνεύματος ἐκ τῆς Τίς ἀποφωλαμένων, ἐν τῇ Πραγματ: τῇ περὶ τῶν Παραφθορῶν, τῶν ἐν τοῖς τῶν Λατίνων Πατέρων Συγγράμμασι γενομένων. Περὶ δὲ τῆς ΘΕΟΦΥΛΑΚΤΟΥ ἀνωτέρω κατέδομεν.

Οὐκ ἄρα ἐκ τῆς τὸν Σωτῆρα, εἰς τὰ πρόσωπα τῶν Ἀποστόλων ἐμφυσῆσαι, καὶ εἰπεῖν: „Λάβετε Πνεῦμα Ἅγιον,, κτ: ὡς ἐπόμενον ἂν ἐπαχθεῖη, ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκπορεύεται καὶ ἐκ τῆς Τίς.

## Π Ρ Α Γ Μ Α Τ Ε Ι Α Ι.

Ἐν ᾗ ἀποδείκνυται, ὅτι τὸ ἔχειν τὸν Υἱὸν πάντα τὰ τῷ Πατρὶ, ἔκ ἐστιν Ἀπόδειξις τῆς τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος Ἐκπορεύσεως καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ.

Ἐξ αὐτῶν τῶν τῷ Κυρίῳ ῥημάτων: „Πάντα τὰ τῷ Πατρὶ ἔμα ἐστίν,,: οἱ Λατῖνοι ἀπανταχῶς συμβάλλουσιν, ὅτι ἄρα τὸ Πνεῦμα καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ ἐκπορεύεται. Εἰ γὰρ πάντα ὁ Υἱὸς ἔχει τὰ τῷ Πατρὶ, προβάλλει δ' ὁ Πατὴρ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ἀνάγκη πάντως ἀμολογεῖν ὅτι καὶ ὁ Υἱὸς προβάλλει αὐτό. Ἄλλοι δὲ ἔγω: Πάντα τὰ τῷ Πατρὶ ἔχει ὁ Υἱὸς, τῆς χάριτος μόνης ἐξακριβμένης τῆς Πατρικῆς. Ἄρα καὶ ὁ Υἱὸς πνέει τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐπεὶ καὶ ἐστὶ τὸτο Πατέρα εἶναι.

### Ἀ Π Α Ν Τ Η Σ Ι Σ Α.

Ἀλλὰ Ἀν: ταύτῃ τῇ Πρότασιν: „Πάντα τὰ τῷ Πατρὶ ἔχει ὁ Υἱός,,: καὶ ἔδει νοεῖσθαι περὶ τῶν ιδιωμάτων τῶν ὑποστατικῶν, καὶ περὶ τῶν ἐντὸς τῆς Θεότητος θεωρημένων ἐνεργημάτων. Ἐχει γὰρ δήπερ ὁ Πατὴρ τὸ γεννᾶν, μηδαμῶς τῷ Υἱῷ προσήκον· ἔχει δὲ καὶ τὸ ἀγέννητος εἶναι, ὅπερ καὶ ἔχει ὁ Υἱός. Καὶ Πατὴρ μὲν, αἰτία τε καὶ πηγὴ ἐστὶ τῆς Θεότητος, ὁ δὲ Υἱός ἔστι. Καὶ ὁ μὲν Πατὴρ καὶ ἐξ ἑτέρου τινός, ὁ δὲ Υἱὸς ἐκ τῷ Πατρὶ. Καὶ ἡ Καθέδρα ἐν δεξιοῖς τοῖς τῷ Πατρὶ, καὶ δὲ τοῖς τῷ Υἱῷ. Καὶ ὁ Πατὴρ, καὶ ὁ Υἱὸς ἐν κόλποις φέρει, ὃν φέρει: καὶ γὰρ καὶ τότε τὸ ἔχατον ταῖς τῷ Πατρὶ ὑποστατικαῖς ιδιότησιν ἐγκαταλέγει ἈΝΑΣΤΑΣΙΟΣ ὁ Σιναΐτης ἐν τῷ Ὁδηγῷ, Κεφ: Ις'. „Ὁ γὰρ Λόγος, φησὶν, καὶ ἔχει τὸ ἀγέννητον τῷ Πατρὶ, καὶ δὲ „τῷ δώαμιν τῷ γεννᾶν, καὶ ἀρχῆς ἐστὶν ἀμοιρῶν, καὶ ἐν τῇ „δεξιᾷ αὐτῷ κάθηται τις, καὶ φέρει ἐν κόλπῳ τινὰ, καὶ τὰς „ἄλλας ὑποστατικὰς ἔχει τῷ Πατρὶ ιδιότητας,“. Ἐπειδὴ τοίνυν τσαῦτα, ἃ τῷ Πατρὶ ἐστὶ, τῷ Υἱῷ καὶ προσήκει τὰ δὲ, τὰς τῷ Πατρὶ ἀφορᾷ ὑποστατικὰς ιδιότητας· ἢ ἐπὶ τὰ ἐντὸς ἀνήκει αὐτῷ

αὐτῶ ἐνεργήματα· δῆλον ἄρα, ὅτι τὴν Πρότασιν: „Ὁ Υἱὸς ἵπαντα ἔχει τὰ τῶ Πατρὸς,, : ἔχῃ περὶ τῶν ὑποστατικῶν ιδιοτήτων, ἔδὲ περὶ τῶν ἐντὸς τῶ Θεῶ ἐνεργειῶν, ἔθ' οἷον τε, ἔτε δέον ἐστὶ νοεῖν. Ἡ γὰρ καθόλου Πρότασις: „Πάντα ὅσα ἔχει ὁ Πατὴρ ἐμὰ ἐστὶ,, : περὶ ὧν νοεῖται ὑποκειμένων, περὶ τῶν οφείλει καὶ καθόλου ἐκτείνεσθαι. Ἐπειδὴ δὲ τὸ καθόλου χώραν ἐκ ἔχει ἐπὶ τῶν ὑποστατικῶν ιδιωμάτων, καὶ τῶν ἀφορώντων τὰ ἐντὸς τῆς Θεότητος· πρόδιδον ἄρα τὸ μὴ δεῖν τὴν Πρότασιν περὶ τῶν ὑποστατικῶν γνωρισμάτων ἐκλαμβάνεσθαι, μηδὲ περὶ τῶν ἐν τῶ Θεῶ ἐνδοτέρων ἐνεργειῶν. Ἀλλὰ γὰρ ἡ προβολὴ τῶ Ἁγίου Πνεύματος, τῶν ἐντὸς ἐστὶ, καὶ τοῖς ιδιώμασιν ἐγκαταλέγεται τῆς τῶ Πατρὸς ὑποστάσεως. Θεῶ γὰρ ἔργον τῶν ἐντὸς ἀκέραι, ὅπερ ἂν ὁ Θεὸς ἀπ' αἰῶνος ἐργάζοιτο, ἄνευ οἰάσθαι ἀναφορᾶς πρὸς τὰ κτίσματα· οἷον δῆπερ τὸ τῆς προβολῆς εἰς τὸ εἶναι ἐστὶ τῆς τῶ Πνεύματος ἐνεργείας γὰρ καὶ αὕτη τῶ Πατρὸς ἐνδοτάτη, ἔδεν τι ἡττον ἢπερ ἡ τῶ Υἱὸς γέννησις· καὶ ταῖς τῶ Πατρὸς ἐναριθμεῖται ὑποστατικαῖς ιδιότησι, καθάπερ ἐς πλάτος ἔφθῃ ἀποδειχθῆναι ἐπὶ τῆς Πραγματείας, ἐν ἣ τὰ διάφορα παρετέθη, περὶ τῆς τῶ Ἁγίου Πνεύματος ἐκ μόνου τῶ Πατρὸς Ἐκπορεύσεως, Ἐπιχειρήματα, τὰ ἐκ τῶν Θεολογικῶν Ἀρχῶν λαμβανόμενα. Τετὶ δὲ μόνον αὐτὴς ὑποτιθέμεθα ὡς Δόγμα ὃν τῆς Ἐκκλησίας· Καθολικὸν, τὸ παραπλησίως ἡμῖν ἐπὶ τῆς ῥηθείσης Πραγματείας ἀποδειχθῆναι: ὡς ὅσα τῇ Θεῷ ἐστὶ κατ' ἐαυτῷ (ἢ ἐστὶ) ἐκ ἐπανήκει, τρόπον αὐτὰ ὑποσημαίνει τὸν τῶ ὑφίστασθαι· τετέστι, τὰς ὑποστατικὰς ἐκείνα παρίσχησιν ιδιότητας. Ἐπεὶ δὲ ἡ Πρότασις: „Πάντα τὰ τῶ Πατρὸς ἐμὰ ἐστὶ,, : περὶ τῶν ὑποστατικῶν ιδιοτήτων, ἦτοι περὶ τῶν ἐντὸς τῶ Θεῶ ἐνεργειῶν, ἦμισα νοεῖται· ταύταις δὲ ἡ Προβολὴ τῶ Ἁγίου Πνεύματος ἐστὶν ἐναριθμῖος, ἄτε δὴ τῶ Θεῶ καὶ Πατρὶ προσήκεισα· δῆλον ἄρα πάντως, ὅτι ὑπὸ τῇ Προτάσει ταύτῃ: „Ὁ Υἱὸς ἵπαντα ἔχει τὰ τῶ Πατρὸς,, : ἐκ ἂν προσλαβεῖν διώκοντο οἱ Λατῖνοι τῷ: „Ἀλλὰ μὴ τῶ Πατρὶ προσήκει ἡ Προβολὴ τῶ Ἁγίου Πνεύματος,, (1)

Ἀλλ' ἀντιπρολείνῃσι τὸ καθόλου τὸ τῆς Προστάσεως: ΠΑΝΤΑ, Πάντα γὰρ, ὅσα ὁ Πατὴρ ἔχει, καὶ ὁ Υἱός. Καὶ ἔδ' αὐτοὶ πάντως τὸ καθόλου ἔττο ἀπανανόμεθα· συγχωρῶμεν δ' ἔμπης αὐτῷ

(1) Τετέστιν: ἐπειδὴ τὸ „προσήκει,, ἢ δέον ἐκληφθῆναι, κοινῶς νοεῖται ἐπὶ τῆς Μείζονος, ἢ θέμις Λατῖνοις, κατ' ἰδιαιτέραν ἐννοιαν τὸ αὐτὸ ῥῆμα προσλαβεῖν εἰς Ἐλάσσονα· ὡς ἐντεῦθεν συμπερᾶναι σοφιστικώτερον, ἢ ἀληθέστερον, ὅτι ὁ Πατὴρ τῶ προσήκοντος αὐτῷ ιδιώματος, ὅπερ ὑποστατικῶς ἐστὶν ἔχων· ἦτοι τῆς τῶ προβάλλειν τὸ Πνεῦμα διωάμεως, ἀπ' αἰῶνος μόνῳ τῶ Υἱῷ μεταδίδωσιν.

αὐτὸ περὶ ἐκείνου, περὶ ὧν ὁ λόγος: ἔκετι δὲ καὶ περὶ ὧν ἡκιστα νοητέον· τετέστι, περὶ τῶν ὑποστατικῶν ιδιοτήτων, καὶ τῶν τῷ Πατρὶ ἐνεργημάτων τῶν εἰς τὰ ἐντός. Τῷ ὄντι γὰρ, εἰ τοσαύται τὸν ἀριθμὸν τῷ Πατρὶ ιδιότητες, ὥς κατελεξάμεθα τῆς Προτάσεως ταύτης ὑπεξαίρεινται, ἀπαρалуμάντα ἔτι σωζομένης τῆς ἐν τῇ Προτάσει καθόλου ἐκτάσεως, ἔδεν ἦτον ἐν αὐτῇ τὸ καθόλου περιωδήσεται ὡσαύτως, καὶ εἰς τὰς τῷ Πατρὶ ὑπεξέλοιτο λοιπὰς ιδιότητας. Εἰ γὰρ καὶ περὶ τέτων ἐχρῶ νοεῖσθαι καθόλου τῷ Πρότασιν, ἔδεμια δῆπερ ὑπεξαίρεισθαι διώκετο ἂν. Ἀλλὰ περὶ τέτα ἔτως.

#### Ἀ Π Α Ν Τ Η Σ Ι Σ Β'.

Κάντεῦθεν ὁμοίως ὁ ἐκ Ναζιανζῶ ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ ἐκ τῆςδε τῆς Προτάσεως: „Πάντα τὰ τῷ Πατρὶ ἔχει ὁ Υἱός,,: ἔ μόνω τῷ Υἱῷ γέννησιν ὑπεξαίρει, ἀλλὰ καὶ τὸ αἴτιον εἶναι ἀπλῶς ὅπερ ἐστὶ, τὸ τῷ αἰτίαν πεφυκέναι Υἱῷ τε καὶ Πνεύματος. Οὕτω καὶ γὰρ ἐν Λόγῳ ΚΔ'. τῷ εἰς τὰς ἐξ Αἰγύπτου ἐπιδημήσαντας, πρὸ τῷ τέλει: „Πάντα ὅσα ἔχει ὁ Πατήρ, τῷ Υἱῷ ἐστὶ, πλὴν τῆς αἰτίας· πάντα δὲ ὅσα τῷ Υἱῷ, καὶ τῷ Πνεύματος πλὴν τῆς Υἱότητος, καὶ τῶν ὅσα σωματικῶς περὶ αὐτῷ λέγεται διὰ τὸν ἐμὸν ἄνθρωπον, καὶ τῷ ἐμῷ σωτηρίαν,“. Οὐκ ἄρα ὑπὸ τῆςδε τῇ Προτάσει: „Πάντα τὰ τῷ Πατρὶ ἔχει ὁ Υἱός,“, ἡ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος Προβολὴ συμπροσλαμβάνεσθαι ἔχει, ἀλλὰ καὶ αὕτη πάντως ἀπὸ τῆς Προτάσεως ταύτης ὑπεξαίρειται.

Ἐρεῖς: ὑπὸ τῇ φωνῇ τῆς αἰτίας ἐννοεῖν τὸν Γρηγόριον μόνω τῷ αἰτίαν τῷ Υἱῷ. Ἀλλ' ἐπειδὴ τῇ φωνῇ ταύτῃ ἀπλῶς ὁ Γρηγόριος χρητῇ, δηλῶν ἐθέλει τῷ αἰτίαν ἐπίσης καὶ τῷ Υἱῷ καὶ τῷ Πνεύματος, ὡς ἐν πολλοῖς τῶν αὐτῷ λόγων γίνεται φανερόν· μάλιστα δ' ἐν τῷ Α'. Λόγῳ τῷ Ἀπολογητικῷ ὑπὲρ τῆς Φυγῆς, Σελ: 17. Τῷ Πατρὶ μόνω τὸ τῆς Αἰτίας ἀξίωμα νέμας, ὅπερ ὡς Πατήρ ἔχων ἐστὶν, ἐκδησόμενός τε ἐπὶ τῶν ἐφεξῆς παραυτίκα, ὅποιον τότε τὸ τῆς αἰτίας ἀξίωμα, τὸ μόνω μὲν τῷ Πατρὶ προσήκον, τῷ δὲ Υἱῷ ἀπαγόμενον, τῆς αἰτίας μέμνηται ἅμα καὶ τῷ Υἱῷ καὶ τῷ Πνεύματος: „Οὐ τοσῶτον φιλοχρίσθαι εἶναι (φησὶ δέον), ὡς μήτε τέτω φυλάττειν τὸ εἶναι „Υἱῷ... μήτε τῷ Πατρὶ τὸ τῆς ἀρχῆς ἀξίωμα, τῆς ὡς Πατρὶ „καὶ γεννήτορι· μικρῶν γὰρ ἂν εἴη καὶ ἀναξίων ἀρχῇ· μάλλον „δὲ μικρῶς τε καὶ ἀναξίως, μὴ Θεότητος ὧν ἀρχὴ καὶ ἀγαθότητος τῆς ἐν Υἱῷ καὶ Πνεύματι θεωρουμένης: τῷ μὲν, ὡς „Υἱῷ καὶ Λόγῳ· τῷ δὲ, ὡς προόδῳ, καὶ ἔ διαλυτῷ Πνεύματι,“.

Ἐπίσης

Ἐπίσης ἄρα τὸν τῆς αἰτίας λόγον ἀπὸ τῆς Τίς ἐξαιρῶν, τιῶ τε τῆς Τίς αὐτῆς, καὶ τιῶ τῆς Ἁγίας Πνεύματος αἰτίαν ἐννοεῖ ὁ Γρηγόριος.

# Ἀ Π Α Ν Τ Η Σ Ι Σ Γ'.

Ἐχει δὲ καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον πάντα τὰ τῆς Πατρὸς. Εἰ γὰρ ὁ μὲν Τίς ὡς τὰ τῆς Πατρὸς ἅπαντα ἔχων, τὸ δὲ Ἅγιον Πνεῦμα ἔ, μέζων πάντως ἂν ὡς ἡ Πατρὸς μεταξὺ καὶ Τίς ἐνότης, ἢ περ ἢ τῆς Πατρὸς καὶ τῆς Πνεύματος, ὅπερ ἄτοπον. Πά-  
λιν: μία ἢ Τίς τε καὶ Πνεύματος Θεότης, μία ἢ μεγαλωσιῇ καὶ καθάπερ ὁ Πατὴρ μόνῃ τῇ ὑποστάσει διακρίνεται τῆς Τίς, ἔτω μόνῃ τῇ ὑποστάσει παραπλησίως καὶ τῆς Πνεύματος διαφέ-  
λεται, ὡς τῶν τῆςτο ἡμᾶς διδασκόντων Πατέρων φθάσαντες ἀκη-  
κόαμεν, ἐν ᾗ Πραγματεία τὰ ἐκ τῶν Θεολογικῶν Ἀρχῶν λαμ-  
βανόμενα Ἐπιχειρήματα, ὑπὲρ τῆς τῆς Ἁγίας Πνεύματος ἐκ τῆς  
Πατρὸς-μόνης Ἐκπορεύσεως παρεθέμεθα. Διὸ καὶ ΔΙΟΝΥΣΙΟΣ  
ὁ Ἀρεοπαγίτης, Βιβλ: περὶ Θεῶν Ὄνομ: Κεφαλ: Β'. περὶ τιῶ  
καταρχῶ: „Ὅσα ἐστὶ τῆς Πατρὸς, καὶ αὐτῆς (τῆς Τίς) τῷ Θε-  
„αρχικῷ Πνεύματι κοινωνικῶς καὶ ἡνωμένως ἀνατίθῃσι,,. (2)  
Καὶ ΑἴΓΟΥΣΤΙΝΟΣ Βιβλ: ΙΑ'. περὶ Τριάδος Κεφαλαίῳ Δ'.  
„Πάντα ὅσα ἔχει ὁ Πατὴρ, ἔ μόνον τῆς Τίς, ἀλλὰ καὶ τῆς Ἁγίας  
„Πνεύματος εἰσὶν ὅτι διωατὸν ἐστὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον δοξάσαι  
„τὸν Τίον, ὃν δοξάζει ὁ Πατὴρ,,. Καὶ ΛΕΩΝ Πάπας Ῥώμης  
ὁ Μέγας, ἐν τῷ Α'. Λόγῳ εἰς τιῶ Πεντηκοστῷ: „Οὐκ ἄλλα  
„μὲν εἰσὶ τῆς Πατρὸς, ἀλλὰ δὲ τῆς Τίς, ἀλλὰ δὲ τῆς Ἀγ: Πνεύ-  
„ματος ἀλλὰ πάντα ὅσα ἔχει ὁ Πατὴρ, ἔχει καὶ ὁ Τίς, ἔχει  
„καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα καὶ ἔδεποτε ἐπὶ τῆς Τριάδος ἐκείνης ἢ  
„κοινωνία αὕτη διέλιπε τὸ γὰρ ἐκεῖ πάντα ἔχειν, αὐτὸ τὸ αἰεὶ  
„ὑπάρχειν εἰσὶν ἔδαις ἐκεῖ χρόνος, ἔδαις βαθμὸς, ἔδεμία νοεῖσθαι  
„δια-

(2) Σημειῶσαι χρῆ, ὅτι ἐπὶ τοῖς τῆς Κυρίως ῥήμασιν, ἐφ' οἷς οἱ Λατῖνοι τιῶ τῆς Πνεύ-  
ματος ἐπερίδαν ἐπιχειροῦσιν ἐκ Πατρὸς καὶ Τίς Ἐκπορεύσιν ἐπὶ τοῖς αὐτοῖς τέ-  
τοις ὁ Ἀρεοπαγίτης ἀνταναιρεῖ τὸ Λατίνικόν Σόφισμα. Προτάξας γάρ, ὡς ὁ Θεαρ-  
χικὸς ἔφη Λόγος: „Εγὼ καὶ ὁ Πατὴρ ἐν ἐσμέν· εἴτα καὶ τὸ ὑπὸ Λατίνων ἡμῖν  
„πρεβάλλομενον τόδε,,: Πάντα ὅσα ἔχει ὁ Πατὴρ, ἐμὰ εἰσὶν, ἐπὶ τέτοις ἔτων  
ἢ ὑπ' αὐτῆς προτεθεῖσιν, ὁ Ἱεράρχης ἐφεξῆς ἐπιφέρει: „Καὶ αὐτίς, ὅσα ἐστὶ τῆς  
„Πατρὸς, καὶ αὐτῆς (τῆς Τίς) τῷ Θεαρχικῷ Πνεύματι κοινωνικῶς καὶ ἡνωμένως  
„ἀνατίθῃσι τὰς Θεεργίας, τὸ σέβας, κτ:,,. Οὐκ ἂν δὲ πάντως τῶν τῷ Πατρὶ  
καὶ τῷ Τίῳ προσηκόντων, καὶ αὐτῷ τῷ Πνεύματι μετεδίδῃ ὡς ὁ Θεολόγος, εἴπερ  
ἐν τῇ ἀπομνημονεύσει ῥῆσαι: (πάντα ὅσα ἔχει ὁ Πατὴρ ἐμὰ εἰσὶν) καὶ αὐτὸ  
τῆςτο σιωπεπινεῖσθαι ἡγάτο, σὺ τοῖς ἄλλοις, τὸ ἐκ Πατρὸς ἅμα καὶ Τίς τὸ  
Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκπορεύεσθαι. Πῶς γὰρ ἂν ποτε καὶ νοῆσαι ἔχεν ὁ Θεωπέ-  
σιος, καὶ τολμᾶν ἀποφθίνασθαι, ὅτι καὶ ἀφ' ἑαυτῆς τὸ Πνεῦμα ἔχει τιῶ ὑπαρξίν;  
ἢ ὅτι ἑτερόν τι πρεβάλλει καὶ αὐτὸ Πρόσωπον;

Τόμ: Β'.

Γ γ



„διαφορά. Καὶ ἔδῃς περὶ Θεῶ ἐρμηνεύσαι διώαται ὅπερ ἐστὶ  
 „μηδὲς τολμάτω καταφάσκειν ὅπερ ἐκ ἐστὶ. Συγγνωσὸν γὰρ  
 „μᾶλλον περὶ τῆς ἀρρήτου φύσεως μὴ φθέγγεσθαι τὰ ἐπάξια, ἢ  
 „ἀποφθέγγεσθαι τὰναντία. Εἴτι τοίνυν περὶ τῆς αἰωνίης καὶ  
 „ἀτρέπτου δόξης τῷ Πατρὶ αἱ ἐυσεβεῖσαι καρδίαι διώανται συλ-  
 „λαβᾶν, τῷτο ἅμα καὶ περὶ τῷ Υἱῷ καὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος  
 „ἀχωρίσως τε καὶ ἀδιαφόρως νοείτωσαν. Διὰ τῷτο γὰρ τὴν μα-  
 „καρίαν Τριάδα Θεὸν ἓνα ὁμολογῶμεν, ὅτι ἐν τοῖς τρισὶ τῷτοις  
 „Προσώποις ἔτε ἐσίας, ἔτε διωάμεως, ἔτε θελήσεως, ἔτε ἐνερ-  
 „γείας ἐστὶ τις ὅλως διαφορά. Καὶ ἐν τῷ Γ'. δὲ Λόγῳ τῶν εἰς  
 τὴν Πεντηκοστὴν: „Ἀπερ ἔχει ὁ Πατήρ, ἔχει καὶ ὁ Υἱός· καὶ  
 „ἅπερ ἔχει ὁ Πατήρ καὶ ὁ Υἱός, ἔχει καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα·  
 „ὅτι ὅλη ἅμα ἡ Τριάς, εἰς ἐστὶ Θεός. Τελουταῖον δὲ καὶ ὁ  
 Μοναχὸς τῆς Λαύρας τῷ Ἀββᾶ Σάββα ἈΝΤΙΟΧΟΣ ἐν Ὁμιλ:  
 Α'. περὶ Πίσεως, Τόμῳ Α'. τῆς τῶν Γραικῶν Πατέρ: Βιβλιοθ:  
 Σελίδι 1028. (3) „Συλλήβδῳ εἰπὲν: αὐτὸς ὁ Θεαρχικὸς ἔφη  
 „Λόγος: ἐγὼ καὶ ὁ Πατήρ ἐν ἐσμέν· καὶ πάντα τὰ ἐμὰ, σὰ  
 „ἐστὶ, καὶ τὰ σὰ ἐμὰ. Καὶ αὐθις ὅσα ἐστὶ τῷ Πατρὶ, καὶ αὐτῷ  
 „τῷ Υἱῷ, τῷ Θεαρχικῷ Πνεύματι κοινωνικῶς καὶ ἡνωμένως  
 „ἀνατίθῃσι, τὰς Θεουργίας, τὸ σέβας· καὶ τὴν πηγαίαν καὶ ἀνέ-  
 „κλειπτον αἰτίαν, ἐν τῷ λέγειν: πορεύθεντες μαθητεύσατε πάντα  
 „τὰ Ἔθνη, βαπτίζοντες αὐτοὺς εἰς τὸ ὄνομα τῷ Πατρὶ καὶ τῷ  
 „Υἱῷ καὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι.·

Ἐπίσης ἄρα καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, πάντα ἔχει τὰ τῷ  
 Πατρὶ, ὡπερ καὶ ὁ Υἱός. Εἰ γὰρ διὰ τῷτο, ὅτι πάντα ὁ  
 Υἱὸς τὰ τῷ Πατρὶ ἔχει, (ἐξακριωμένης τῆς μόνης γεννήσεως)  
 ἔποιτ' ἂν ἔχεν αὐτὸν καὶ τὰ παρ' αὐτῷ λοιπὰ πάντα, καὶ σὺ γε  
 τέτοις καὶ τὸ προβάλλειν τὸ Πνεῦμα· ἐκ τῆς ἴσης δῆπερ ἀναγ-  
 κῆς ἂν ἔψοιτο, καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ἅτε δὴ καὶ αὐτὸ τὰ  
 τῷ Πατρὶ ἅπαντα ἔχον, ἐξακριωμένης τῆς κατ' Ἐκπορεύσειν προ-  
 βλητικῆς διωάμεως, καὶ τὰ λοιπὰ παρ' αὐτῷ τῷ Πατρὶ ἔχον,  
 καὶ σὺ τέτοις καὶ τὸ γεννᾶν τὸν Υἱόν· ἢ καὶ τῆς τῷ Υἱῷ γεν-  
 νήσεως ὑπεξακριωμένης, τὰ λοιπὰ γὰρ τῷ Πατρὶ ἔχον, καὶ σὺ  
 τέτοις καὶ Πνεῦμα ἴσον προβάλλειν δι' Ἐκπορεύσεως. Ἄ δὴ πάντα  
 ἀδωάατα. Ἀλλ' ἔτι κἀντεῦθεν ἀριδῆλως φαίνεται, ὡς ἡ Πρότα-  
 σις: „Ὁ Υἱὸς πάντα ἔχει τὰ τῷ Πατρὶ.· ἐκ ἂν περὶ τῶν  
 ἰδιοτήτων ἔχοι νοεῖσθαι τῶν ὑποστατικῶν, ἢ περὶ τῶν ἐνεργημά-  
 των, ὧν ὁ ὅρος ἐν αὐτῇ τῇ Θεότητι. Αὕτη καὶ γὰρ ἡ Πρότασις:  
 „Τὸ

(3) Ταῦτα δὲ τῷ Ἀββᾶ, ἀπὸ τῶν ἐν τῷ περὶ Θεῶν Ὀνομάτων, Κεφαλ: Β'. εἰρημένων,  
 ὧν ἀνωτ: ἐμνήσθημεν, ἐπὶ λέξεως εἰληπται.

„Τὸ Πνεῦμα ἔχει πάντα τῷ Πατρὶ, ἥπερ ἀντιστοιχεῖ ἡ πρό-  
 τέρα ἐκείνη: „Ὁ Υἱὸς ἔχει πάντα τὰ τῷ Πατρὶ, : Οὕτε  
 περὶ τῶν ὑποστατικῶν ιδιωμάτων, ἔτε περὶ τῶν ἐντὸς τῷ Θεῷ  
 καὶ Πατρὶ ἐνεργημάτων νοεῖται διώαται. Τῶν γὰρ τοιούτων τῷ  
 Πατρὶ ιδιοτήτων τε καὶ ἐνεργειῶν, ἡδεμίαν ἔχειν νοεῖται τὸ  
 Πνεῦμα τὸ Ἅγιον· ὁ γὰρ γεννᾷ, ὁ προβάλλει Πνεῦμα ἕτερον,  
 ὁ ἔστιν ὁ ἀγέννητος, ὁ φέρει τινὰ ἐν κόλποις, ὁ ἔχει τὸν  
 καθήμενον αὐτῷ ἐν τοῖς δεξιοῖς κτ: ἀλλὰ καὶ ἔτως ἐμπης, ἀπαντὰ  
 τὰ τῷ Πατρὶ ἔχειν Θεολογεῖται καὶ αὐτὸ τὸ Πνεῦμα. Οὐκ  
 ἄρα τιῷ δε τιῷ Πρότασιν, καὶ ἔτως ἔδὲ τιῷ ἑτέραν ἐκείνῳ: ὅτι  
 „ὁ Υἱὸς πάντα ἔχει τὰ τῷ Πατρὶ, : (ὡς γὰρ ἀντιστοιχεῖσαι  
 εἰς καὶ ὁμοιοσήμενοι) περὶ τῶν ὑποστατικῶν ιδιωμάτων, ἔδὲ  
 περὶ τῶν ἐντὸς τῷ Θεῷ ἐνεργημάτων, δεῖον νοεῖν. Πῶς ἔν ὑπ’  
 ἐκείνῃ καμένη: „Ὁ Υἱὸς πάντα ἔχει τὰ τῷ Πατρὶ, : προσ-  
 λαβεῖν εἶχον παῖδες Λατίνων σιμάμα καὶ τιῷ Προβोलῷ τῷ Ἁγ:  
 Πνεύματος, ἐνεργεῖαν τῷ Πατρὶ ἐσωτερικῶς ἔσαν, καὶ Προσω-  
 πικῶς αὐτῷ ιδιότητα; Ἐπειδὴ ἄρα ἐκ τῆς Προτάσεως: τὸ Ἁγ:  
 Πνεῦμα „πάντα ἔχει τὰ τῷ Πατρὶ, : ἥτε τῷ Υἱῷ γεννησις,  
 καὶ ἡ πρόοδος ἡ τῷ Πνεύματος ὑπεξαίρεται· καὶ ἔδὲ, τῶν  
 ὑπεξαίρεμένων, τὸ καθόλου τῆς Προτάσεως καθαιρεῖται· ἐκδι-  
 λον δὴπε, ὡς ἔδὲ τῆς Προτάσεως ἐκείνης: „Ὁ Υἱὸς πάντα  
 „ἔχει τὰ τῷ Πατρὶ, : τῇ καθόλου ἐκτάσει προσλυμαίνεται τι,  
 εἴπερ ἐπίσης καὶ ἐκ ταύτης τὰ δύο ἐκείνα, ὑπεξαίρεται· ἥτε  
 κατ’ ἐνεργεῖαν, δηλονότι, γεννησις τῷ Υἱῷ, καὶ ἡ Ἐκπόρουσις ἡ  
 τῷ Πνεύματος.

#### Ἄ Π Α Ν Τ Η Σ Ι Σ Δ’.

Ἐπατα δὲ, τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον πάντα ἔχει τὰ τῷ Υἱῷ. Εἰ  
 γὰρ τὰ τῷ Πατρὶ πάντα καὶ ὁ Υἱὸς ἔχει, καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ  
 Ἅγιον· ὁ δὲ Πατὴρ αὐτῷ ἀπαντα ἔχει ὅσα ὁ Υἱὸς καὶ τὸ  
 Πνεῦμα πάντως τὸ Ἅγιον, ἀπαντα ἔχει τὰ τῷ Υἱῷ. ΔΙΟ-  
 ΝΥΣΙΟΣ μὲν ἔν ὁ Ἀρεοπαγίτης, ἐν τοῖς ἡδὴ ἀπομνημονεύθεσι  
 ρήμασιν: „Ὅσα ἐστὶ τῷ Πατρὶ καὶ αὐτῷ (τῷ Υἱῷ), τῷ Θεαρ-  
 „χικῷ Πνεύματι κοινωνικῶς καὶ ἡνωμένως ἀνατίθῃσι τὰς Θεαρ-  
 „χίας τὸ σέβας,. Καὶ ΔΙΔΥΜΟΣ ὁ Ἀλεξανδρεὺς Βιβλ: Β’.  
 περὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος: „Τὰ τῷ Υἱῷ ἔχει καὶ τὸ Πνεῦμα  
 „τὸ Ἅγιον,. Καὶ ΕΠΙΦΑΝΙΟΣ Αἰρέσει Ος’. ἥτις ἰὼ τῶν Ἀνο-  
 μοίων, κατὰ τῷ ΚΒ’. Κεφαλ: τῷ Ἀετίῳ: „Ὁ γεννήσας τὸν ἕξ  
 „αὐτῷ γεγεννημένον, καὶ ἀποστείλας ἐξ αὐτῷ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα  
 „αὐτῷ, Πνεῦμα τῶν Υἱῶ μελέχον· ὁ πάντως ἐγέννησεν, ἀλλ’ ἕνα,.  
 Καὶ ἸΕΡΩΝΥΜΟΣ ἐν τῇ Ἐξηγήσει τῆς Πίσεως πρὸς Κύριλλον:  
 Γ γ ρ „Πάντα

„Πάντα τὰ τῷ Πατρὶ, ταῦτα τῷ Υἱῷ καὶ πάντα τὰ τῷ Υἱῷ, ταῦτα πάντα τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι ἐστίν. Καὶ ὁ Χρυσόρρημον ἸΩΑΝΝΗΣ Ὁμιλ: ΕΖ'. εἰς τὸν Ἰωάν: μετὰ τὸ μέσον: „Τὰ τῷ Πατρὶ, τῷ Υἱῷ καὶ τὰ τῷ Υἱῷ, τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι. Τὰ δὲ τῷ Μεγάλῳ ΛΕΟΝΤΟΣ ἤδη ἀνέγνωμεν. Καὶ ἈΝΑΣΤΑΣΙΟΣ δὲ ὁ Συναίτης ἐν Βιβλ: Α'. περὶ τῶν Δογματ: τῆς Πίς: Σελ: 694. Τόμ: 5'. τῆς τῶν Πατέρ: Βιβλιοθ: τῆς ἐν Κολωνίᾳ: „Τὸ Ἅγιον Πνεῦμα λαμβάνει πάντα τὰ τῷ Υἱῷ, τῷ πάντα ἔχοντος τὰ τῷ Πατρί,“. Καὶ τὰ ἈΝΤΙΟΧΟΥ δὲ τελευτάων τῷ Μοναχῷ, καὶ αὐτὰ ὁμοίως σωθήκαμεν.

Ἐχει ἄρα τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον πάντα τὰ τῷ Υἱῷ. Ὡς ἔγχε, ἐκ τῷ πάντα τὰ τῷ Πατρὶ τὸν Υἱὸν ἔχειν, ἐπόμενον τῷ τὸν Υἱὸν (μόνης τῆς κατ' ἐνέργειαν γεννήσεως ἐξαίρετης) τὰ λοιπὰ πάντα τῷ Πατρὶ ἔχειν, καὶ σὺ γε τέτοις καὶ τὴν τῷ προβάλλειν τὸ Πνεῦμα δῶαμιν διὰ τὸν αὐτὸν δῆπερ λόγον ἐκ ἀνάγκης ἂν ἔποιτο, καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ὡς πάντα ἔχον τὰ τῷ Υἱῷ, παρὰ τὴν αὐτῷ Προβολῇ, κατὰ τῆς Λατίνης, καὶ τὰ λοιπὰ πάντα ἔχειν τὰ τῷ Υἱῷ, καὶ σὺ τέτοις, καὶ τὸ γενναῖον ὥστε ὁ Υἱὸς ὅπερ ἀδύνατον. Ἀλλὰ κἀντεῦθεν φανερὸν αὐθις, ὡς ἡ Πρότασις: „Ὁ Υἱὸς ἔχει πάντα τὰ τῷ Πατρί,“: ἐκ ἂν νοηθεῖν περὶ τῶν ιδιωμάτων τῶν ὑποστατικῶν, ἢ περὶ τῶν ἀπ' ἐντὸς ἐνεργημάτων τῷ Θεῷ καὶ Πατρί: τὸ γὰρ τὰ τῷ Υἱῷ πάντα ἔχειν τὸ Πνεῦμα, ἐκτὶ περὶ τῶν κατὰ τὴν ὑπόστασιν ιδιοτήτων, ἢ περίτινος τῶν ἐντὸς ἐνεργήματος ἐπὶ τῷ Υἱῷ τῷ Θεῷ, νοεῖσθαι χρεών. Οὐδεμίαν γὰρ τὸ Πνεῦμα τῶν ἐν τῷ Υἱῷ Προσωπικῶν ιδιοτήτων, ἢ ἐσωτέρων ἐνεργειῶν ἔχει, καὶ τοὶ πάντα ἔχον τὰ τῷ Υἱῷ. Οὐκ ἄρα ἡ Πρότασις αὕτη, καὶ ἐδ' ἡ ἑτέρα ἐπομένως ἐκείνη: ὅτι „ὁ Υἱὸς πάντα ἔχει τὰ τῷ Πατρί,“: ἢ ἀντίσχοιός τε καὶ αὐτοσήμαντος, ἢτοι περὶ τῶν ιδιωμάτων τῶν ὑποστατικῶν, ἢ περὶ τῶν ἐντὸς ἐνεργημάτων ἐκδεκτέα ἐστίν. Πῶς ἔν ἄρα πάλιν ὑπὸ τῇ Προτάσει: „Ὁ Υἱὸς πάντα ἔχει τὰ τῷ Πατρί,“: προσλαβέσθαι ἔχον Λατῖνοι, τὴν Προβολὴν τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι, ἔργον ἔσαν τῷ Πατρὶ τῶν ἐντὸς, καὶ Προσωπικὸν αὐτῷ γνῶρισμα; Ἐπειδὴ τοίνυν ἐκ τέττα καμένων, ὅτι τὸ Πνεῦμα ἔχει πάντα τὰ τῷ Υἱῷ, αἱ ὑποστατικαὶ τῶν ιδιοτήτων ἐκλείονται, καὶ αἱ ἐνεργήσεις δὲ αἱ ἐντὸς τῷ Θεῷ: οἷον ἡ γέννησις ἢ κατὰ πάθησιν νοημένη, καὶ (κατὰ Λατίνης δὲ) καὶ ἡ κατ' ἐνέργειαν Προβολὴ αὐτῷ: καὶ ἐδὲ τέτων ἐμ-πης ὑπεξαίρετων, τὸ καθόλου τῆς Προτάσεως ἀνταναιρεῖται ἀριδηλότερα πάντως ἔπεται αὐθις, τὸ μηδὲν τῇ καθολικότητι τῆς Προτάσεως: „Πάντα τὰ τῷ Πατρί ἔχει ὁ Υἱός,“: προσ-λυμαίνεσθαι, καὶν ἐπίσης τὰ δύο ὑπεξαίρεθείη ἐκείνα: ἢτε γέννησις

γέννησις τῷ Υἱῷ ἢ κατ' ἐνέργειαν, δηλονότι, καὶ ἡ Προβολὴ ὁμοίως ἢ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος. Ἰσὸς γὰρ ὁ λόγος ἐπ' ἀμφοῖν κρατεῖ τῶν Προτάσεων.

### Ἀ Π Α Ν Τ Η Σ Ι Σ Ε'.

Τοιγαροῦν ἡ Πρότασις: ὅτι „πάντα ὁ Υἱὸς ἔχει τὰ τῷ Πατρὶ,”: περὶ ὧν ἀνήκει τῷ Θεῷ ἡσία νοητέα ἐστίν: „Διὰ γὰρ τὸ „πάντα μὲν τὰ τῷ Πατρὶ τὸν Υἱὸν ἔχειν, πάντα δὲ τὸ Πνεῦμα „τὰ τῷ Υἱῷ καὶ ἁνθις: πάντα μὲν τὰ τῷ Υἱῷ τὸν Πατέρα „πάντα δὲ τὰ τῷ Πατρὶ τὸ Πνεῦμα, καὶ τὸν Πατέρα δὲ πάντα „τὰ τῷ Πνεύματι,” (4). Πρόδηλον ὅτι τὰς τοιαύτας δε Προτάσεις περὶ τῆς μιᾶς Θεότητός τε καὶ μεγαλωσιῶς δεον ἐκδέχεσθαι. Ἄ γὰρ τῇ Θεότητι προσανήκει (ταῦτα μόνον καὶ ἐκ ἄλλων) κοινὰ ὅλη τῇ Τριάδι ἐστίν. Ἐτι δὲ (ὡς δεδεικται) τὰς Προτάσεις πάλιν ἐκείνας: „Πάντα τὰ τῷ Πατρὶ ἔχει ὁ Υἱός” πάντα „τὰ τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ ἔχει τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ἔτε περὶ „τῶν ὑποστατικῶν ιδιοτήτων ἐκδεκτέον, ἔτε περὶ τῶν τῷ Θεῷ „ἐννοημένων ἐντός,” (5). Ἀλλὰ μὲν τὰ μὴ πρὸς τὰς ὑποστατικὰς ἐπανήκοντα ιδιότητας, τὴν Θεῶν ἡσίαν ἀφορᾷ, καὶ τῇ Τριάδι ὅλη κοινὰ ἐστίν. Τὰ γὰρ τῇ Θεῶι μὴ ἐπαναφερόμενα ἡσία, ταῖς ὑποστατικαῖς τῶν ιδιοτήτων προσήκει, ὡς ἐν τῇ Πραγματείᾳ ἐδείχθη, ἐν ἣ διαφόρα Ἐπιχειρήματα ἐκ τῶν Θεολογικῶν Ἀρχῶν παρετέθη ὑπὲρ τῆς ἐκ μόνου τῷ Πατρὶ Ἐκπορεύσεως τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι. Διὸ δὴ καὶ οἱ Θεοὶ αὐτοὶ Πατέρες, τὰ τῷ Σωτῆρι ἐκείνα: „Πάντα τὰ τῷ Πατρὶ ἐμὰ ἐστίν,”: περὶ τῆς μιᾶς ἡσίας τε καὶ Θεότητος τῷ Πατρὶ καὶ τῶν περὶ τὴν μίαν ταύτην ἡσίαν τε καὶ Θεότητα τῷ Πατρὶ λεγομένων ἐξεθεν/ο.

ΔΙΟΝΤ-

(4) „Καὶ τὸν Υἱὸν ὁμοίως πάντα τὰ τῷ Πνεύματι,”. Ἐνδεῖ γὰρ τῷ κόμματι τῷδε εἰς πλήρωμα καὶ ἀπαρτισμόν, τῆς πρὸς ἄλληλα τῶν ὑπερθέων Προσώπων ἐκτιθεμένης ὡς κοινωνίας καὶ χέσεως.

(5) Τῶν Θεῶν ἐνεργημάτων, ἔθ' ἃ μὲν ἐν αὐτῇ ἐνδεωρεῖται τῇ Θεότητι, οἷον μένοντα, ὧν περ ὅροι ἐστὶν αὐτὸς ὁ Θεός. Τοιαῦται αἱ ἐκ τῷ Πατρὶ προέσσης τῷ Υἱῷ καὶ τῷ Πνεύματι ἥτε γνώσις καὶ ἡ ἀγάπη, καθ' ἣν ὁ Θεός καὶ Πατὴρ γινώσκει τε καὶ ἀγαπᾷ τὸν ἐξ αὐτῶν Υἱόν, καὶ τὸ ἐξ αὐτῶν Πνεῦμα καὶ ἔτσι, τὸν Πατέρα τε καὶ Προβολέα ἀνάπαλιν, καὶ ἀλλήλους. Ἐθ' ἃ δὲ, οἷον ἐκτὸς τῆς Θεότητος ἐννοεῖται προβαίνοντα, ὡς ἐπὶ τὰ κτίσματα περαινόμενα. Τοιαῦτα ἢ τῶν ὅλων δημιουργία, καὶ ἡ Θεοπρεπὴς Πρόνοια, καὶ ἡ χάρις, καὶ αἱ λοιπαὶ Θεουργίαι, αἷς ἡ σύμπασα κτίσις ἡσίσσεται καὶ τελειοποιεῖται, καὶ σωέχεται: τὰ μὲν ἐν τῷ πρώτῳ εἶδει, ἐνεργήματα „ἀπ' ἐντός,”: Opera ab intra: τὰ δὲ τῷ δευτέρῳ, „πρὸς „τὰ ἐκτός,”: Ad extra: οἱ Λατίνων Θεολόγοι ἀπικαλεῖν φιλοῦσι, Σχολαστικώτερον φράζοντες. Εἴποισ δ' ἂν τὰς μὲν, ἐνεργείας „ἐμμένους τε καὶ ἀμεταβάτους,”: τὰς δὲ, „Μεταβατικάς,”, ὡς ἐκ τῶν ὅρων ἀντιδιατελέας πρὸς ἑς ἐκπεραίνοντα.

Τόμ: Β'.

Δ δ



ΔΙΟΝΥΣΙΟΣ ὁ Ἀρεοπαγίτης ἐν τῷ περὶ Θεῶν Ὀνομάτων Βιβλίῳ, Κεφαλ: Β'. ὑπὸ τῷ ἀρχίῳ: „Αὐτὸς ὁ Θεαρχικὸς ἔφη „Λόγος: ἐγὼ καὶ ὁ Πατὴρ ἐν ἐσμέν· καὶ πάντα ὅσα ἔχει ὁ „Πατὴρ ἐμὰ ἐστίν, „ Καὶ αὖθις: „Ὅσα ἐστὶ τῷ Πατρὶ καὶ αὐτῷ, „τῷ Θεαρχικῷ Πνύματι κοινωνικῶς καὶ ἡνωμένως ἀνατίθην „τὰς Θεουργίας, τὸ σέβας, τὴν πηγαίαν καὶ ἀνέκλειπτον αἰτίαν „καὶ διανομὴν τῶν ἀγαθοπρεπῶν δώρων· καὶ μηδὲνα τῶν ἐν „τοῖς Θεοῖς λόγοις, ἀδιάσπρόφοις ἐννοίαις ἐντεθραμμένων, οἶμαι, „πρὸς τὸτο ἀντερῆν: ὅτι τὰ Θεοπρεπῆ πάντα τῇ ὅλῃ Θεαρχίᾳ „πρόσέξι κατὰ τὸν Θεοτελεῖ λόγον, „

Καὶ ΘΕΟΦΙΛΟΣ δὲ ὁ Ἀντιοχεὺς (6) ἐν τῷ εἰς τὰ Εὐαγγέλια Ὑπομνήματι Βιβλ: Α'. Τόμ: Β'. τῆς τῶν Πατέρ: Βιβλιοθ: τῆς ἐν Κολων: Σελ: 171. „Εἶπε, πάντα τὰ τῷ Πατρὶ ἐμὰ „ἐστίν. „Εἰ τοίνυν ἡ φύσις ἡ τῷ Πατρὶ ἐν τῷ Τίῳ ὡς, ἡ τῆς „γνώσεως φύσις μεταπεσεῖν ἐκ ἑαυτοῦ, „

Καὶ ΤΕΡΤΥΛΛΙΑΝΟΣ, ἐν Βιβλ: τῷ κατὰ Πραξέας, Κεφ: ΙΖ'. „Τὸ τῷ Πατρὶ ὄνομα (ἐστὶ) Θεὸς πανθενῆς, ὕψιστος, Κύριος τῶν Δωάμεων, Βασιλεὺς τῷ Ἰσραὴλ, ὁ ὢν, καθ' ἑαυτὸς „καὶ Γραφαὶ διδάσκει. Ταῦτα φάμεν καὶ τῷ Τίῳ προσανήκειν, „καὶ ἐν τέτοις τὸν Τίον ἐληλυθέναι, καὶ ἐν τέτοις εἰς αὐτὸν „ἐνεργῆσαι, καὶ ἑαυτὸς ἐν αὐτῷ τοῖς ἀνθρώποις ἐμφανίσαι „αὐτά, „

Καὶ ἈΘΑΝΑΣΙΟΣ εἰς τὸ εἰρημένον: Πάντα μοι παρεδόθη ὑπὸ τῷ Πατρὶ καὶ ἐν Τόμ: Α'. τῶν Συγγραμμάτων: Σελ: 151. „Ὅτε τῷ πατρὶ ἐνότης σημαίνει βέλεται, ὅ κρύπτει, ἀλλὰ διδάσκει λέγων: πάντα ὅσα ἔχει ὁ Πατὴρ ἐμὰ „ἐστίν. — Ὅντων γὰρ ἐν τῇ τῷ Πατρὶ ἐξουσία τέτων (ἀπάντων), ἔστιν ὁμοίως καὶ ἐν τῇ τῷ Τίῳ. Τὶ δὲ ἔχει ὁ Πατὴρ, „ἐξετασέον πάλιν. — Πάντα ὅσα ἔχει ὁ Πατὴρ ἐμὰ ἐστίν: „ὅ δὲ αὐτὸν αὐτὸν αὐτὸν εἶναι σὺν τῷ Πατρὶ τὸ γὰρ ὅσα ἔχει, τῷ „δεσποτείαν κρατεῖν δέκνυσι τὸν Πατέρα· τὸ δὲ ἐμὰ ἐστίν, τῷ „ἀχώρισον ἑνωσιν. Ἀνάγκη τοίνυν νοεῖν ἡμᾶς, ὅτι ἐστίν ἐν τῷ „Πατρὶ τὸ αἰδίον, τὸ αἰώνιον, τὸ ἀθάνατον. Ἐστὶ δὲ ἐν αὐτῷ, „ὅς ὡς ἀλλότρια αὐτῷ· ἀλλ' ὡς ἐν πηγῇ ἐστίν ἐν αὐτῷ ἀναπανύμενα,

(6) Ἐγένετο δ' ὁ Θεόφιλος τῶν ἐν Ἀντιοχείᾳ Ἐπισκοπησάντων ὁ 5'. (ἢ, συγκριτικῶς μέν· τῷ Πέτρῳ, ὁ 2'.) ὁ τὰ πρὸς Αὐτόλυνον τρία τομῶδες Βιβλίον συγγεγραμμένον περὶ τοῦ Εὐαγγελίου ἐν τῷ Δ'. τῆς Ἰσορ: Κεφαλ: Κ'. Καὶ Ἰερώνυμος ἐν τοῖς περὶ τῶν Συγγραμμάτων, Κεφαλ: ΚΕ'. Καὶ ἀκμᾶσαι μὲν Θεόφιλος λέγεται περὶ τὸ 169. τομῶδες δὲ κατὰ τὸ 181. ἐν ὅλοις ἔτεσι τρισκαίδεκα τῷ Ἀντιοχείῳ Ἐκκλησίᾳ ἰδιώσας, ὡς Εὐσέβιος ἐν τῷ Χρονικῷ. Ἀλλὰ γὰρ τὸ εἰς τὰ Δ'. Εὐαγγέλια τῷ Θεοφίλῳ Ὑπόμνημα, ἐξ ὃ ἡ προτεθείσα ἐνταῦθα εἰληπταὶ χρῆσις, Λατινιστὶ μόνον φέρεται σωζόμενον, καὶ ἐκ αὐτοῦ ἴσως ἀπαραιοποιήτον.



„μενα, καὶ ἐν τῷ Υἱῷ· ὅταν τοίνυν περὶ τῆς Υἱᾶς νοεῖν ἐθέλῃς,  
 „μαθὼν τίνα ἐστὶν ἐν τῷ Πατρὶ, ταῦτα καὶ ἐν τῷ Υἱῷ εἶναι  
 „πίσθες. — Ὡς ἐν τῷ Πατρὶ, ἔτω καὶ ἐν τῷ Υἱῷ ἐστὶν ἡ ζωὴ,  
 „ἵνα τὸ ἀδιαίρετον καὶ αἰδίου διδάξῃ. — Τοιγαρὶν καὶ Πατὴρ  
 „τῆς μέλλοντος αἰῶνος ὁ Μονογεννῆς καὶ Θεὸς ἰσχυρὸς, καὶ ἐξ-  
 „σιαστὴς ὁ Υἱὸς ὑπάρχει τῆς Θεᾶς καὶ σαφῶς δέδεικται, ὅτι  
 „πάντα ὅσα ἔχει ὁ Πατὴρ, αὐτῆς ἐστὶ καὶ καθὼς ζωὴ δίδωσιν  
 „ὁ Πατὴρ, καὶ τῷ Υἱῷ ὁμοίως πάρεστιν ὅς θελῇ ζωοποιεῖν.  
 „Ἀκέραια γὰρ, φησὶ, τῆς φωνῆς τῆς Υἱᾶς οἱ νεκροὶ καὶ ζήσονται.  
 „Καὶ ἐν θέλημα Πατρὸς καὶ Υἱᾶς καὶ βέλημα, ἐπεὶ καὶ ἡ φύσις  
 „μία καὶ ἀδιαίρετος. Καὶ ἐν τῇ πρὸς Σεραπίωνα δὲ Ἐπιστολῇ,  
 „κατὰ τῶν λεγόντων τὸν Υἱὸν εἶναι κτίσμα, Τόμῳ Α΄. τῶν  
 „Συγγραμμάτων: Σελίδι 167. „Αἰδὼς τοιγαρὶν ὄντος τῆς Πατρὸς,  
 „ἀνάγκη καὶ τὸν Υἱὸν αἰδίου εἶναι. Ἄ γὰρ ἂν ἐν τῷ Πατρὶ,  
 „νοήσωμεν, ταῦτα καὶ ἐν τῷ Υἱῷ καὶ ἀμφίβολον, λέγοντος  
 „αὐτῆς τῆς Κυρίας, πάντα ὅσα ἔχει ὁ Πατὴρ, ἐμὰ ἐστίν. Αἰώνιος  
 „γὰρ ἐστὶν ὁ Πατὴρ, αἰώνιος καὶ ὁ Υἱὸς, δι’ αὐτῆς γὰρ οἱ Αἰῶνες  
 „γεγόνασιν. . . . ὁ Ὡν ἐπὶ πάντων Θεὸς εἰς τὰς αἰῶνας Ἀμὴν.  
 „ὥς εἶπεν ὁ Ἀπόστολος. — Παντοκράτωρ ἐστὶν ὁ Πατὴρ, Παντο-  
 „κράτωρ ἐστὶ καὶ ὁ Υἱὸς, λέγοντος τῆς Ἰωάννης: τάδε λέγει ὁ Ὡν,  
 „καὶ ὁ υἱός, καὶ ὁ ἐρχόμενος, ὁ Παντοκράτωρ. Φῶς ἐστὶν ὁ Πα-  
 „τὴρ, ἀπαύγασμα ὁ Υἱὸς, καὶ Φῶς ἀληθινόν. Ἀληθινὸς Θεὸς  
 „ὁ Πατὴρ, ἀληθινὸς Θεὸς ὁ Υἱός. Οὕτω γὰρ ὁ Ἰωάννης ἔγρα-  
 „ψεν: ἐσμὲν ἐν τῷ ἀληθινῷ, ἐν τῷ Υἱῷ αὐτῆς Ἰησοῦ Χριστοῦ.  
 „Οὗτος ἐστὶν ὁ ἀληθινὸς Θεός, καὶ ζωὴ ἡ αἰώνιος. Καὶ ὅλως  
 „ὁδὲν ἐστὶν ὃν ἔχει ὁ Πατὴρ, ὃ μὴ τῆς Υἱᾶς ἐστὶ. Διὰ τῆτο καὶ  
 „ὁ Υἱὸς ἐν τῷ Πατρὶ, καὶ ὁ Πατὴρ ἐν τῷ Υἱῷ. Ἐπειδὴ τὰ  
 „τῆς Πατρὸς ταῦτα ἐν τῷ Υἱῷ ἐστὶ καὶ πάλιν ταῦτα ἐν τῷ  
 „Πατρὶ νοεῖται. Οὕτω νοεῖται καὶ τὸ ἐγὼ καὶ ὁ Πατὴρ ἐν  
 „ἐσμέν· ἐπειδὴ καὶ ἄλλα ἐν τέτῳ, καὶ ἄλλα ἐν τῷ Υἱῷ· ἀλλὰ  
 „τὰ ἐν τῷ Πατρὶ, ταῦτα ἐν τῷ Υἱῷ ἐστὶ καὶ ἂν βλέπεις ἐν τῷ  
 „Πατρὶ, βλέπεις ἐν τῷ Υἱῷ. Καὶ μετὰ βραχέα, Σελ: 169.  
 „Πάντα τὰ τῆς Πατρὸς, τῆς Υἱᾶς ἐστίν· ὅτι ὁμοῦσιος ἂν εἴη ὁ  
 „Υἱὸς τῷ Πατρὶ. Ὡς περ γὰρ εἰ τῶν κτισμάτων τινὰ εἶχεν  
 „ὁμοιότητα, καὶ πρὸς αὐτά τινά εἶχε συγγένειαν, ὁμοῦσιος ἂν  
 „αὐτοῖς ᾤετο· ἔτι καὶ ἄλλοτριος μὲν ὢν κατ’ ἐσῖαν τῶν γεννητῶν,  
 „ἴδιος δὲ τῆς Πατρὸς λόγος, καὶ ἄλλος ὢν ἔτος ἐκείνων, ἐπειδὴ  
 „καὶ αὐτῆς ἐστὶν ἴδια πάντα τὰ τῆς Πατρὸς, ὁμοῦσιος εἰκότως ἂν  
 „εἴη τῷ Πατρὶ. Οὕτω γὰρ καὶ οἱ Πατέρες νοήσαντες ὡμολόγη-  
 „σαν, ἐν τῇ κατὰ Νίκαιαν Συνόδῳ, ὁμοῦσιον, καὶ ἐκ τῆς ἐσῖας  
 „τῆς Πατρὸς τὸν Υἱόν. Σιωπῶν γὰρ καλῶς, ὅτι κτιστὴ ἐσῖα  
 „ὃ δὲ δύναται ποτε εἰπεῖν, ὅτι πάντα ὅσα ἔχει ὁ Πατὴρ ἐμὰ ἐστίν·

Δ δ 2

„ἀρχὴν

„ἀρχὴν γὰρ ἔχουσα τῷ γενέσθαι, ἔκ ἔχει τὸ ὦν, καὶ τὸ ἰῶ,  
 „αἰδίως. Διὰ τῆτο, ἐπειδὴ ταῦτ' ἔχει ὁ Υἱὸς, καὶ πάντα τὰ  
 „προειρημένα περὶ τῷ Πατρὸς, τῷ Υἱῷ ἐστίν, ἀνάγκη μὴ κτιστῶ  
 „εἶναι τὴν ἐστίαν τῷ Υἱῷ, ἀλλ' ὁμοόσιον τῷ Πατρί. Ἄλλως τε  
 „καὶ κατὰ τῆτο ἔκ ἂν εἴη κτιστὴ ἐστία δεκτικὴ τῶν ἰδίων τῷ  
 „Θεῷ ἴδια δὲ αὐτῷ ἐστίν, ἐξ ὧν γινώσκεται Θεός· οἷον τὸ Παν-  
 „τοκράτωρ, τὸ Ὡν, τὸ ἀναλλοίωτον, καὶ τὰ ἕτερα τὰ προειρη-  
 „μένα, ἵνα μὴ ὁμοόσιος αὐτῶν τῶν κτισμάτων αὐτὸς ὁ Θεός  
 „φαίνεται κατὰ τὰς ἀφρονάς, ἔχων ἄπερ καὶ τὰ κτίσματα  
 „ἔχειν δυνάταί,,. Ἔτι δὲ καὶ ἐν τῷ Γ'. Διαλόγῳ τῶν περὶ  
 Τριάδος (7)· ἐν Τόμῳ Β'. τῶν Συγγραμμάτων, Σελίδι 212.  
 „Αὐτὴ ἡ τῷ Πατρὸς δόξα καὶ βελλὴ καὶ δυνάμεις, τῷ Υἱῷ ἐστίν,  
 „διὰ τῆτο λέγει ὁ Υἱὸς, πάντα ὅσα ἔχει ὁ Πατὴρ ἐμὰ ἐστίν,,  
 Αὐθις δ' ἐν τῇ πρὸς τὸν Ἀρειον Προσδιαλέξει, τῇ ἐν τῇ κατὰ  
 Νίκαιαν Συνόδῳ συζήσῃ, ἐν τῷ Α'. Τόμῳ: Σελίδι 132. (8).  
 „Οὐχ ἔνεκεν κτιστῶν πραγμάτων τῆτο ἔφη ὁ Σωτὴρ, τὸ πάν-  
 „τα ὅσα ἔχει ὁ Πατὴρ ἐμὰ ἐστίν· ἀλλ' ὅσα ἀνήκει τῇ Θεότητι  
 „τῷ Πατρὸς, αὐτὰ ἴδια ἔφη ὁ Κύριος· οἷον τὸ ἀθάνατον, τὸ  
 „ἀφθαρτον, τὸ ἀχέρωτον, τὸ ἄτρεπτον, τὸ ἀκατάληπτον,  
 „τὸ διωατὸν, τὸ προγνωσικόν, καὶ ὅσα ἐστίν ὁ Πατὴρ, ταῦτα  
 „ἴδια τῷ Υἱῷ τυγχάνει,,. Ἐνθεντοὶ καὶ ἐν τῷ Α'. τῶν περὶ  
 Τριάδος Διαλόγων, Τόμῳ Β'. Σελίδι 181. Τὰ ἴδια μόνον τὰ  
 τῆς ἐστίας, ἔχῃ δὲ καὶ τὰ τῆς ὑποστάσεως τῷ Πατρὸς, κοινὰ  
 τῷ Υἱῷ εἶναι διδάσκει. ἌΝΟΜΟΙΟΣ: „Εἰ πάντα τὰ ἴδια τῷ  
 „Πατρὸς, καὶ τῷ Πνεύματος, εἰσὶ καὶ τῷ Υἱῷ κοινὰ, ὀφείλει  
 „καὶ Πατὴρ εἶναι τὸ Πνεῦμα, καὶ ὁ Υἱός,,. ὉΡΘΟΔΟΞΟΣ:  
 „Οὐκ εἶπον τὰ ἴδια τῷ Πατρὸς καὶ τῷ Υἱῷ καὶ τῷ Πνεύματος  
 „εἰσὶ κοινὰ· ἀλλὰ τὰ ἴδια τῆς ἐστίας τῷ Θεῷ, τῷ Πατρὸς καὶ  
 „τῷ Υἱῷ καὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος εἰσὶ κοινὰ· οἷον τὸ ἀφθαρτον,  
 „τὸ ἀθάνατον, τὸ ἀναλλοίωτον, τὸ ἀψύδῃς, καὶ ὅσα τοιαῦτα,,.  
 Ὁ δὲ ἸΛΑΡΙΟΣ ὁ Πικτάδων Βιβλ: Θ'. περὶ Τριάδος:  
 „Δέδωκε τοίνυν ὁ Πατὴρ πάντα, ἔλαβε δ' ὁ Υἱὸς πάντα· ἐδ'  
 „ἔστιν

(7) Τῶν τῷ Ἀθανασίῳ γνησίων Συγγραμμάτων τῆς Διαλόγου τέττες παραγράφους οἱ Κριτικοὶ καὶ εἰκότως: πῶς γὰρ ἂν, φασί, κατὰ Μακεδονιανῶν ἔχει συγγράφειν Ἀθανάσιος, ὁ τὸ ζῶν ἐκμετρήσας πρὸ τῷ ἐκείνων καταψηφισθῆναι τὴν Αἴρεσιν; Ἀλλ' ὁ μὲν Γαρνέριος Θεοδωρήτῳ τὸν Διάλογον τῆτον προσαναγράφει, ἐν τοῖς τῶν Θεοδωρήτου Συγγραμμάτων Παραπληρώμασι, τοῖς ἐν Παρίσι: Ἔτι 1684. ἐκδοθεῖσιν· ὁ δὲ Κομβεφίστιος Μαξίμῳ τέττες ἀπονέμει τῷ Ὁμολογητῇ. Σὺν Κομβεφιστῇ δὲ σιωᾶδου καὶ Ἀβραάμ Σκελτέτος, καὶ Ἀνδρέας Ριβέτος οἱ Ἀντιπontiφίκοι. (Ὁρεα Ὁρθῶν ἐν τῷ Α'. Τόμῳ τῶν Ὑπομνημάτων, Στήλη 349. καὶ 350.

(8) Τοῖς Ὑποβελιμαίοις συγκαταλέγεται ὑπὸ τῷ Κάβει· ὑπὸ δὲ Κασμίρε τῷ Ὁρθῶν Βιγιλίῳ ἀναγράφεται τῷ Ταψῶν.

„ἔσιν ἀμφιβάλλειν, ἐπειδὴ ἔφη: πάντα ὅσα τῷ Πατρὶ ἐσιν, ἐμὰ  
 „ἔσιν. Κἀνταῦθα δὴπερ, ἔχῃ τὰ τῶν κτισμάτων εἶδη, ἔδὲ τὰς  
 „τῶν σοιχείων παντοίας ὑποστάσεις ὁ παρὼν λόγος ἐμφαίνει· ἀλλ’  
 „ὁ τῆς μακαρίας καὶ ἐπὶ πάντων ἔσης Θεότητος τὴν δόξαν ἡμῖν  
 „ἐμφανίσων, τὸν Θεὸν ἐν τέτοις δείκνυσι χρῶμαι νοεῖν: ἅπερ  
 „αὐτῷ ἐστὶ, διδάμει, αἰωνιότητι, καὶ προνοίᾳ τε, καὶ κράτει ἐξου-  
 „σίας,.. Ἄ δὴ τὰντα ἐπαναλαμβάνει καὶ ὁ Συγγραφεὺς τῷ Βι-  
 βλίῳ, τῷ περὶ τῆς τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ ἐνότητος, τῷ μεταξὺ  
 τῶν Ἱλαρίῳ Συγγραμμάτων ἐμφερομένῃ. Σελ: 760.

ΔΙΔΥΜΟΣ δὲ ὁ Ἀλεξανδρεὺς, ἐν τῷ Β'. Βιβλίῳ περὶ τῷ  
 Ἁγίῳ Πνεύματος: „Εἰ καὶ ἐκ τῷ Πατρὶ ἐκπορεύεται τὸ Πνεῦμα  
 „τῆς ἀληθείας, δίδωσι δ’ αὐτοῖς ὁ Θεὸς τὸ Ἅγιον Πνεῦμα τοῖς  
 „αἰτέουσιν αὐτόν: ἀλλ’ ὅτι γὰρ πάντα, ὅσα ὁ Πατὴρ ἔχει, ἐμὰ  
 „ἔσιν· καὶ αὐτὸ τὸ τῷ Πατρὶ Πνεῦμα ἐμὸν ἐστὶ, καὶ ἐκ τῷ ἐμῷ  
 „λήψεται. Πρόσεχε μὲν τοι τέτων λεγομένων, μὴ ἐπὶ βαρὺ  
 „κατενεχθῆς διανοίας πλημμέλημα, ὑπολαβὼν πρᾶγμα τι εἶναι  
 „καὶ κτήμα, τὸ ὑπὸ τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ ἐχόμενον· ἀλλ’  
 „ἅπερ ἔχει ὁ Πατὴρ κατ’ ἐσίαν, τετέστι τὸ αἰώνιον, τὸ ἄτρεπ-  
 „τον, τὸ ἄφθαρτον, τὴν ἀναλλοίωτον ἀγαθότητα, τὴν κατ’  
 „ἑαυτῷ, καὶ ἐν ἑαυτῇ ὑφεσῶσαν, τὰ αὐτὰ ταῦτα ἔχει καὶ ὁ  
 „Υἱός· καὶ ὅσα ἐστὶ τῷ Υἱῷ, αὐτὰ ταῦτα ἔχει καὶ ὁ Πατὴρ. —  
 „Ἀλλὰ τέτω δὴ τῷ λόγῳ, καὶ κατὰ τὴν προκειμένῳ ἔννοιαν,  
 „ἐπομένως, ἅπερ ἀνωτέρω ἔφημεν τῷ Πατρὶ εἶναι, ἔχει καὶ  
 „ὁ Υἱός· καὶ τὰ τῷ Υἱῷ, ἔχει καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον,..

Καὶ ὁ Μέγας ΒΑΣΙΛΕΙΟΣ ἐν τῷ περὶ τῆς Πίστεως Λόγῳ,  
 ἐν τῷ Α'. Τόμῳ, Σελ: 500. (9) „Μένων ἐν τῷ εἶναι ὁ Υἱός,  
 „πάντα ἐσιν ὅσα ἐσιν ὁ Πατὴρ, κατὰ τὴν φωνὴν αὐτῷ τῷ Κυρίῳ  
 „ἐπόντος: πάντα ὅσα ἔχει ὁ Πατὴρ, ἐμὰ ἐστὶ τῷ ὅτι γὰρ  
 „τῆς ἐκόντος ἐστὶ πάντα, ὅσα πρόσεσι τῇ πρωτοτύπῳ μορφῇ.  
 „Ἐθεασάμεθα γὰρ, φησὶν ὁ Εὐαγγελιστής, τὴν δόξαν αὐτῷ,  
 „δόξαν ὡς Μονογενῆς παρὰ Πατρός· τετέστιν, ἔκ ἐκ δωρεᾶς,  
 „καὶ χάριτος δοθέντων αὐτῷ τῶν θαυμάτων, ἀλλ’ ἐκ τῆς κατὰ  
 „φύσιν κοινωνίας ἔχοντος τῷ Υἱῷ τῆς Πατρικῆς Θεότητος τὸ  
 „ἀξίωμα. — Ὡς μὲν ὁ Υἱός, φυσικῶς κέκτηται τὰ τῷ Πατρὶ  
 „ὡς δὲ Μονογενῆς, ὅλα ἔχει ἐν ἑαυτῷ συλλαβὼν, ἑδενὸς κατα-  
 „μεριστομένης πρὸς ἕτερον. Ἐξ αὐτῆς τοίνυν τῆς Υἱῷ προσηγο-  
 „ρίας διδασκόμεθα, ὅτι τῆς φύσεως ἐστὶ κοινωνός. . . Ἰσὸς ἐν  
 „ἀγαθότητι, ἴσος ἐν διδάμει, κοινωνός τῆς δόξης,.. — Καὶ ἐν  
 τῷ Βιβλίῳ: τῷ περὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος, Κεφαλ: Η': Τόμ: Β'.  
 Σελ:

(9) Κατὰ τὴν Γαβριήλ Ἐκδοσιν, Τόμ: Β'. Σελ: 132.

Τόμ: Β'.

Ε Ε

Σελ: 161. (10). „Διὰ τῆτο, φησὶν ὁ Κύριος, τὰ ἐμὰ πάντα  
 „σὰ ἐστὶν, ὡς ἐπ' αὐτὸν τῆς ἀρχῆς τῶν δημιουργημάτων ἀναγο-  
 „μένης· καὶ τὰ σὰ ἐμὰ ὡς ἐκείθεν αὐτῷ τῆς αἰτίας τῆ δημιουργ-  
 „γῆν καθηκείας, ἢ βοηθείας χρωμένῳ πρὸς τὴν ἐνέργειαν, ἣ δὲ  
 „ταῖς κατὰ μέρος ἐπιτροπαῖς τῷ ἐκάστῳ ἔργῳ διακονίαν πιστο-  
 „μένῳ. . . . Ἀλλὰ πλήρης ὁ Λόγος τῶν Πατρικῶν ἀγαθῶν τῆ  
 „Πατρὸς ἀπολάμψας, πάντα ποιεῖ κατὰ τὴν τῆ γεννήσαντος  
 „ὁμοιότητα. Εἰ γὰρ κατὰ τὴν ἑσῖαν ἀπαραλλάκτως ἔχει, ἀπα-  
 „ραλλάκτως ἔξει καὶ κατὰ τὴν δυνάμιν. Ὡν δὲ ἡ δυνάμις ἴση,  
 „ἴση καὶ πάντως καὶ ἡ ἐνέργεια. Χριστὸς γὰρ Θεὸς δυνάμις, καὶ  
 „Θεὸς σοφία: καὶ ὅτω πάντα δι' αὐτῆς ἐγένετο, καὶ πάντα δι'  
 „αὐτῆς, καὶ εἰς αὐτὸν ἐκτίσται,,

Ὁ δὲ ἈΜΒΡΟΣΙΟΣ ἐν τῷ Βιβλ: τῷ περὶ τῆ Μυστηρίου τῆς  
 Ἑνσαρκώσεως τῆ Κυρίου, Κεφαλ: Η'. „Εἰπὼν: πάντα ὅσα ἔχει  
 „ὁ Πατὴρ ἐμὰ ἐστὶ καὶ κατωτέρω, πάντα τὰ ἐμὰ, σὰ ἐστὶ, καὶ  
 „τὰ σὰ ἐμὰ: διεβαιώσατο τὴν ἐνότητα,, Καὶ Βιβλ: περὶ Πί-  
 σεως, Κεφαλ: Γ'. „Πάντα ὅσα ἔχει ὁ Πατὴρ, ἐμὰ ἐστὶ. Τίνα  
 „πάντα; ἢ δὴ καὶ περὶ τῶν δημιουργημάτων εἶπε ταῦτα γὰρ  
 „ἅπαντα ἐγένετο διὰ τῆς Τιᾶς· ἀλλ' ἅπερ ἔχει ὁ Πατὴρ: τριτέσι  
 „τὴν αἰωνιότητα, τὴν μεγαλωσύνην, καὶ τὴν Θεότητα γεννηθεὶς  
 „ἔχει. Τὸν ἄρα ἔχοντα πάντα, ὅσα ὁ Πατὴρ ἔχει (γέγραπται  
 „γὰρ, πάντα ὅσα ὁ Πατὴρ ἔχει, ἐμὰ ἐστὶ) πανθενὴ εἶναι, ἀμ-  
 „φιγνωεῖν ἐδόλωσεν δυνάμεθα,, — Καὶ Βιβλ: Δ'. περὶ Πίσεως,  
 Κεφαλ: Δ'. ὑπὸ τῇ ἀρχῇ: „Ὅτε ὁ Υἱὸς φησὶ: πάντα ὅσα  
 „ἔχει ὁ Πατὴρ, ἐμὰ ἐστὶ: τῆτο ἐστὶν, ἔχ' ἅπερ αὐτὸς παρέδωκε  
 „τῷ Πατρὶ, ἀλλ' ἢ παρὰ τῆ Πατρὸς, κατὰ τὸ δικαίωμα τῆς  
 „γεννήσεως εἴληφε, καὶ διὰ τῆτο τὸν προαιώνιον Υἱὸν δυνάμιν  
 „εἶναι φημέν. Εἰ ἄρα αἰώνιος ἡ αὐτῆς δυνάμις καὶ Θεότης,  
 „πάντως δὴ καὶ τὸ κράτος αὐτῷ αἰώνιον,, — Καὶ τοῖς ἐξῆς  
 δὲ διαρρήδην ἐκ τῶν τῆ Κυρίου ῥημάτων ἐκένων: πάντα τὰ τῆ  
 Πατρὸς ἐμὰ ἐστὶν: ἑξαίρει ὅσα τῆς Πατρικῆς ἐστὶν ιδιότητος:  
 „Οὐδ' ἤτλον διὰ γε τῆτο, φησὶν, ὁ Υἱὸς ἔχει, ὅτι ἐκ ἐστὶ Πατὴρ  
 „ἔδ' ὁ Πατὴρ ἤτλον ἔχει, ὅτι ἐκ ἐστὶν Υἱός. Εἶπε γὰρ ὁ Υἱός,  
 „πάντα ὅσα ἔχει ὁ Πατὴρ, ἐμὰ ἐστὶν ὅθεν ἡ γέννησις τῆς  
 „Πατρικῆς ἐστὶν ιδιότητος, ἐχὶ τῆ δικαιώματος τῆ κράτους,, —  
 Καὶ ἐν τῷ Β'. Βιβλ: τῶν εἰς τὸν Λακᾶν, περὶ τὸ τέλος. „Εἴτα  
 „ἐπειδὴν, φησὶν, ἐν ᾧ εὐδόκησα, ἐχὶ τὰ ἀλλότρια ἐν τῷ Υἱῷ,  
 „ἀλλὰ τὰ ἑαυτῆς ἐπαινεῖ· τί γὰρ ἐστὶ τὸ, „ἐν ᾧ εὐδόκησα,,; εἰ  
 „μὴ ὅτι, πάντα ὅσα ἔχει ὁ Υἱός, καὶ ὁ Πατὴρ ἔχει; ὥστε  
 „καὶ

(10) Κατὰ τὴν Γαλιναίαν Ἐκδόσιν, Τόμ: Γ'. Σελ: 17.

„καὶ ἅπερ τῷ Πατρὸς ἐστὶ, τῷ Υἱῷ ἐστὶν; Ὁ Υἱὸς εἶπε: πάντα „ὅσα ἔχει ὁ Πατὴρ ἐμὰ ἐστὶ τῆς γὰρ μηδεμίαν ἐχέσης διαφο- „ρὰν Θεότητος ἢ δυνάμεις, ἢ διασέλλει μεταξὺ Πατρὸς καὶ Υἱῶ, „ἀλλ' ἐνὸς τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ μεταδίδωσι κράτους,, — Καὶ ἐν τῷ Ὑπομνήματι τῷ εἰς τὴν πρὸς Ἐφεσίους Ἐπιστολῇ, εἰς το Β'. Κεφάλ: „Τόδε Πατρὸς μεταξὺ καὶ Υἱῶ τὸ διάφορον. ἐγνώ- „ρῃ: ὅτι ὁ μὲν Πατὴρ παρὰ μηδενὸς (τὸ Θεὸς ὄνομα) εἴληφεν, „ὁ δὲ Υἱὸς διὰ τῆς γεννήσεως, πάντα εἴληφε παρὰ τῷ Πατρί: „ὥστε δυνάμει καὶ ἐξουσίᾳ καὶ ὀνόματι μηδέν τι δέξασθαι τὸν Υἱὸν „ἀπὸ τῷ Πατρί: ὅθεν φησί: πάντα ὅσα ἔχει ὁ Πατὴρ ἐμὰ „ἐστὶ, καὶ τὰ ἐμὰ τῷ Πατρί:,,

Καὶ ἹΕΡΩΝΥΜΟΣ ἐν τῇ τῆς Πίσεως Ἐκθέσει πρὸς Κύ- ριλλον: „Ὁ Σωτὴρ φησί: πάντα τὰ τῷ Πατρὸς ἐμὰ ἐστὶν. εἰδὲν „ἐν τὰ τῷ Πατρὸς, ταῦτα καὶ τῷ Υἱῷ ἐστὶν. ἅπαντα δὲ τὰ τῷ „Υἱῷ, καὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι ἐστὶν. ἔδεν ἄρα ἐν ἅπασιν λαίπεται „τῷ Υἱῷ, ὃ μὴ πρὸς τῆς αὐτοῦ ἐξουσίας ἢ. ἔδεν, ὃ μὴ παρ' αὐτοῦ „εἴη γεγονὸς, καὶ τῇ αὐτοῦ νοῦσαι τε καὶ κηδεμονίᾳ μὴ διδωθήοιτο. „Ἐχοντι ἐν τῷ Υἱῷ τὰ πάντα ὑπὸ τῷ ἐξουσίαν αὐτοῦ, ἔδεν ἐν „ἅπασιν αὐτοῦ λαίπεται. καὶ τῶν ἄρα τῷ ἐξουσίαν ἀπάντων „ἔχει καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ὃν περ ἔχει καὶ ὁ Υἱός:,,

Καὶ ἘΠΙΦΑΝΙΟΣ δὲ Αἰρέσει Ος'. ἡ τῶν Ἀνομοίων ἐστὶν, ἐν τῇ Ἀνατροπῇ τῷ Α'. Κεφάλ: τῷ Ἀετίᾳ, περὶ τὸ τέλος: „Ἐνταῦθα περιλήψεται τῆς ταυτότητος τὸ κατὰ φύσιν ἐξ „Εὐαγγελικῆς μαρτυρίας, ὅτι πάντα τὰ τῷ Πατρὸς ἐμὰ ἐστὶ „τῷ Υἱῷ: Θεὸς ὁ Πατὴρ, Θεὸς ἐγώ. Ζωὴ ὁ Πατὴρ, Ζωὴ ἐγώ. „καὶ τὰ ἐξῆς πάντα, ὅσα πρέπει Πατρὶ, καὶ Υἱῷ καὶ Ἁγίῳ „Πνεύματι, ἐν μιᾷ Θεότητι, μηδὲν τῆς Τριάδος παρηλλαγμένον „ἐχέσης,, — Καὶ ἐν τῷ Ἀγκυρωτῷ, Ἀριθμ: Ις'. Τόμω Β'. Σελίδι 21. „Νομίζουσιν οἱ ἀνόητοι, οἱ μὴ κεκοσμημένοι Πνεῦ- „ματι Ἁγίῳ μὴ ἐστὶ ἐν τῷ Πατρὶ, ὅπερ ἔκ ἐστιν ἐν τῇ Θεό- „τητι τῷ Υἱῷ; Ὡς γὰρ ἔχει ὁ Πατὴρ ζῶν ἐν ἑαυτῷ, ὥτως „ἔχει ὁ Υἱὸς ζῶν ἐν ἑαυτῷ. καὶ πάντα τὰ τῷ Πατρί: ἐμὰ „ἐστὶ, φησὶν, ὁ αὐτὸς τῷ Θεῷ Ἅγιος Λόγος. Τίνα δὲ ἐστὶ τὰ τῷ „Πατρὶ, ἀλλ' ἢ ταῦτα; Τὸ Θεὸς, τῷ Πατρὶ ἐστὶ, τῷ καὶ „τῷ Υἱῷ. ἢ Ζωὴ τῷ Πατρὶ ἐστὶ, τῷ καὶ τῷ Υἱῷ. τὸ Φῶς τῷ „Πατρὶ, δηλονότι, καὶ τῷ Υἱῷ. τὸ ἀθάνατον τῷ Πατρὶ, ὡσαύ- „τως καὶ τῷ Υἱῷ. τὸ ἀκατάληπτον τῷ Πατρὶ, καὶ τῷ Υἱῷ. „Πάντα τὰ τῷ Πατρὶ, τῷ Υἱῷ ἐστὶ:,,

Καὶ ἸΩΑΝΝΗΣ δὲ ὁ Χρυσορρήμων ἐν Ὁμιλίᾳ τῇ περὶ τῆς Τριάδος, μετ' ἔκ ὀλίγα ἀπὸ τῆς ἀρχῆς, Τόμ: 5'. τῶν Σύνγραμ: Ε ε 2 τῆς



τῆς Γραικο-Λατιν: Ἐκδόσ: Σελ: 192. (11). „Πάντα ὅσα ἔχει  
 „ὁ Πατήρ, ἐμὰ ἐσίν. Εἶπεν ὁ Μονογενὴς Θεός, ὁ Ὡν εἰς τὸν  
 „κόλπον τῆ Πατρός. Μωϋσῆς λέγει: ὁ ὩΝ ἀπέσταλκέ με· ὁ  
 „ὩΝ ἐσίν ὁ Πατήρ· ὁ ὩΝ ἐσίν ὁ Υἱός· ὁ ὩΝ, πρὸς τὸν  
 „ΟΝΤΑ, ἀνάρχως καὶ ἀχρόνως γεγεννημένος. Πάντα ἔχει ὁ  
 „Πατήρ, ἀληθῶς ζωὴ, καὶ ἀθανασία, καὶ φῶς, καὶ παντοδύναμος,  
 „καὶ Θεὸς καὶ Κύριος· ἅπερ ἔχει καὶ ὁ Υἱός. Ἐγὼ γὰρ εἰμὶ,  
 „Φησὶν, ἡ ἀλήθεια, καὶ ἡ ζωὴ καὶ τὸ φῶς τὸ ἀληθινόν,  
 „καὶ Θεὸς ὡς ὁ Λόγος„.

Ὁ δὲ ΑΥΓΟΥΣΤΙΝΟΣ ἐν Λόγῳ 5'. τῷ περὶ Χρόνου περὶ  
 τὸ τέλος: „Πάντα, φησὶν, ἃ ἔχει ὁ Πατήρ ἐμὰ ἐσίν· ἐπεὶ δὲ  
 „πάντα λέγει, ὥδε ἄπεσιν ὁ μὴ ἔχει παρὰ τῆ Πατρός. Πάν-  
 „τα: τριτέσι, τῆς μιᾶς Θεότητος τῷ δυνάμει, τῷ ἐσίν, τῷ  
 „μεγαλωσίῳ„. Καὶ ἐν τῇ Πραγματείᾳ δὲ τῇ ΡΖ'. τῇ εἰς τὸν  
 Ἰωάννῳ: „Ὁ δὲ, φησὶ, περὶ τῆ Ἁγίας Πνεύματος λέγων:  
 „Πάντα ὅσα ἔχει ὁ Πατήρ ἐμὰ ἐσίν: διὰ τῆτο εἶπον, ὅτι ἐκ τῆ  
 „ἐμῆ λήψεται καὶ ἀναγγελεῖ ὑμῖν: περὶ τῶν ἀνηκόντων ἐφῆ  
 „τῇ τῆ Πατρός Θεότητι, ἐν οἷς ἐκείνῳ ἴσος ἐστὶ, πάνθ' ὅσα περ  
 „ἔχει ἐκεῖνος ἔχων„. — Καὶ ὁ ΣΥΓΓΡΑΦΕΥΣ δὲ τῶν Ἐρωτήσεων:  
 τῶν ἐπὶ τῆς Καινῆς καὶ Παλαιᾶς Διαθήκης, τῶν ἐν τοῖς τῆ Αὐ-  
 γουστίνου Συγγραμμάσιν ἐμφερομένων, ἐν Τόμῳ: 5'. Ἐρωτ: ΡΚΕ'.  
 „Πάντα τὰ τῆ Πατρός ἐμὰ ἐσίν· δι' ἧς ἐσήμανε τῷ τῆ Θεῆ καὶ  
 „Πατρός ἐσίν, ἐαυτῆς εἶναι ἐσίν„.

Καὶ ΚΥΡΙΛΛΟΣ ὁ Ἀλεξανδρεὺς Βιβλ: ΙΑ'. τῶν εἰς Ἰωάν-  
 νῳ, Κεφαλ: Β'. Τόμῳ: Δ'. τῶν Συγγραμ: Σελ: 931. „Πάντα  
 „γὰρ τὰ ἐμὰ σὰ ἐσίν, καὶ τὰ σὰ ἐμὰ· οἷς γὰρ ὅλως ἐνεστὶ τὸ  
 „διαλλάττον ἐδέν, καὶ ἡ κατὰ πᾶν ὁτιῶν ἐσιώδης ἰσότης τε καὶ  
 „ἐμφέρεια, πῶς ἐκ ἂν εἶεν τὰυτὰ τῇ φύσει„; — (Εἶτα:) „Καρ-  
 „πὸς ἐν ἅρᾳ, καὶ χαρακτηρ τῆς ὑποστάσεως τῆ γεννήσαντος  
 „ὑπάρχων ὁ Υἱός, πάντα τὰ αὐτῆ κατὰ φύσιν ἐπάγεται· διὰ  
 „τῆτο φησί: πάντα ὅσα ἔχει ὁ Πατήρ, ἐμὰ ἐσίν· διὰ τῆτο εἶπον,  
 „ὅτι ἐκ τῆ ἐμῆ λαμβάνει, καὶ ἀναγγελεῖ ὑμῖν„. — Καὶ ἐν τῷ  
 ΙΑ'. Βιβλ: τῶν εἰς Ἰωάν: Κεφαλ: Θ'. Σελ: 969. (12). „Βα-  
 „σιλεία τε γὰρ ἡ αὐτῇ, κράτος τε τὸ κατὰ πάντων ἐν, τῆς  
 „Ἁγίας τε καὶ ὁμοσίᾳς Τριάδος· καὶ ἅπερ ἂν γένοιτο τῆ Υἱῆ,  
 „τῇ τῆ Πατρός ὑποκείσεται δόξῃ· καὶ πάλιν: ὅπερ ἂν ὑποπίπῃ  
 „λέγει-

(11) Τὸν δὲ τὸν περὶ Τριάδος Λόγον, τοῖς Νόθοις Μοντεφαλκόνιος συγκατέλεξεν ἐκκη-  
 ρύξας. Ἐν τῷ Α'. Τόμῳ: τῆς αὐτῆς Ἐκδόσ: Σελ: 832. Σαφῆ τὸν ἔλεγχον τῆς  
 νοθείας σωραῖν φήσας, ἐξ αὐτῆς δὴ τῆς φράσεως· ὡς, ὡς λίαν ἀπέχων τῆς  
 ἰδίᾳς ῥεῖσης τῆ Χρυσόμοις λειότητός τε καὶ χάριτος, οἶεται.

(12) Ἀλλ: Κεφαλ: Η'. Σελ: 968.

„λέγεται τῷ Πατρὶ, τέττε δὴ πάντως κατάρξει καὶ ὁ Υἱός. Διὰ  
 „γάρ τοι τῆτο, Φησὶ, καὶ τὰ ἐμὰ πάντα σὰ ἐστὶ, καὶ τὰ σὰ ἐμὰ.  
 „Ὅπε γὰρ φύσεως ἢ εἰς ἅπαν ταυτότητος διαλάμπει καὶ φαίνεται,  
 „ἐκεῖ τῆς ἀξίας ἀπαράλλακτος ἢ δόξα, ὃ μεμερισμένως ἐν τινι  
 „τῶν ὄντων ἀνατιθεῖσα τυχόν, καὶ παρωθεμένη τὸν ἕτερον,  
 „ἀλλ' ἴστω μίαν τε καὶ τὴν αὐτὴν, τὴν εἰς ἅπαν ὅτις ἐκτείνεσθαι  
 „δόξαν. Ὁ γάρ τοι τῶν τῶ ἰδίᾳ Πατρὸς Θεῶν ἀξιωματῶν  
 „ἐσιωδῶς κληρονόμος, ἔχων μὲν αὐτὸς πάντα φανέται τὰ τῶ  
 „Γεννήτορος, ἔχοντα δὲ δείξει πάντα τὰ αὐτῶ τὸν Γεννήτορα. —  
 Καὶ Βιβλ: Α'. εἰς Ἰωάν: Κεφαλ: Γ'. πρὸ τῶ τέλους, Σελίδι 27.  
 „Πάντα ὅσα ἔχει ὁ Πατήρ, ταῦτα πάντα ἐστὶ τῶ Υἱῶ. Ἐστὶ δὲ  
 „ἐν Πατρὶ τὸ τέλειον· τέλειος ἔσαι καὶ ὁ Υἱός, ὁ τῶ Πατρὸς  
 „ἔχων τὰ ἴδια καὶ ἐξαίρετα.„

Καὶ Εὔλογιος δὲ ὁ Ἀλεξανδρεὺς (13) ἐν ταῖς Συγγρα-  
 φαῖς τῶ Ἀνωνύμου τῶ κατὰ Σεβηριανῶν Συγγραψαντος, ἐν τῷ  
 Δ'. Τόμῳ τῶν παλαιῶν Ἀναγνωσμάτων, τῶν ὑπὸ Κανισίᾳ ἐκδο-  
 θέντων, Μέρει Α'. Σελ: 240. „Λέγομεν τὴν Τριάδα εἶναι ὁμο-  
 „ῥσιον, διὰ τὸ τὴν αὐτὴν ὅλως ἑσῖαν ἐν τοῖς Τρισὶ Θεοῖς Προ-  
 „σώποις γνωρίζεσθαι· ὁ γὰρ Πατήρ τελείαν ἔχει τὴν ἑσῖαν τῆς  
 „Θεότητος· ὁμοίως δὲ καὶ ὁ Υἱός· ὁμοίως δὲ καὶ τὸ Πνεῦμα.  
 „Διὸ τέλειος Θεὸς ὁ Πατήρ· τέλειος Θεὸς ὁ Υἱός· τέλειος Θεὸς  
 „τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. Σωφάδει τέτοις Παῦλος ὁ τῆς ἀληθείας  
 „Κήρυξ ὅτε φησὶν: ἐν αὐτῷ γὰρ οἰκεῖ πᾶν τὸ πλήρωμα τῆς  
 „Θεότητος σωματικῶς. Οὐ γὰρ, Φησὶ, τὸν Πατέρα σαρκωθῆναι  
 „ἀλλ' ὅτι ἡ Θεότης ὅλη ἐν τοῖς τρισὶ Προσώποις ἐστὶ· μηδοτιῶν  
 „ἐλλείπον ἐν Πατρὶ, καὶ Υἱῷ, καὶ Ἁγίῳ Πνεύματι, ἐν ἐκάστῳ  
 „τελείως, κατὰ τὴν τῶ Κυρίᾳ Φωνῇ εἰπόντος: πάντα τὰ τῶ  
 „Πατρὸς ἐμὰ ἐστὶ. Τηλέστιν, ὅσαι αἱ ἐννοιαὶ τῆς τῶ Πατρὸς ἑσῖας,  
 „αἱ αὐταὶ καὶ τῶ Θεῷ Λόγῳ τῶ σαρκωθέντος εἰσὶν. Οὐχ' ὅτι  
 „ὁ Πατήρ Υἱός, ἢ Πατήρ ὁ Υἱός· ταῦτα γὰρ τὰ ὀνόματα τὴν  
 „πρὸς ἀλλήλους χάριν διασημαίνουσι. Πῶς ἔν ἐκ ἐρῶμεν, τὴν τῆς  
 „Θεότητος ἑσῖαν πεπληρωμένως εἶναι ἐν τῷ Χριστῷ καὶ ἀνελλι-  
 „πῶς, εἰ τέλειον αὐτὸν φαμέν.„;

ἈΝΤΙΟΧΟΣ ὁ Μοναχὸς τῆς τῶ Σάββα Λαύρας, ἐν Ὁμιλ:  
 Α'. περὶ Πίστεως, ἐπαναλαμβάνει τὰ τῶ Ἀρεοπαγίτου Διονυσίου  
 προενεχθέντα· καὶ τὰ Ἀντιόχῃ δ' αὐτῶ τέττε περὶ τὴν Γ'. τῶν  
 Ἀπαντήσεων προενώκεται. Ἄ δὲ ἐκ τῶν Αὐγυστίνου τῆς ΡΖ'.  
 τῶν εἰς τὸν Ἰωάννην Πραγματειῶν ἀπομεμνημόνευται, ἐπανελά-  
 βετο

(13) Προεδρεύων μὲν ἰῶ, μέχρι τινός, ἐν τῷ κατὰ Ἀντιόχειαν Πρεσβυτέρῳ Εὐλόγιος·  
 ἦρθη δ' ἔπειτ' ἐνθενδε ἐπὶ τὴν τῶ Ἀλεξανδρείας Ἀρχιεπισκοπικῆς Θρόνον περιωπλῶ,  
 ἔτει 581. Ἐτελεύτα δὲ κατὰ τὸ 608.

Τόμ: Β'.

Ζ ζ

βετο καὶ ΒΕ'ΔΑΣ ἐν τῷ Δ'. Βιβλ: τῆ εἰς τὸν Λακᾶν Ὑπομνήματος, Κεφαλ: ΕΓ'. περὶ τὸ ΙΕ'. Κεφαλ: ἐν τῷ Ε'. Τόμω τῶν αὐτῶ Συγγραμ: Στήλη 375. Καὶ ἐν τῷ Ὑπομνήμ: τῷ εἰς τὸν Ἰωάν: Κεφαλ: ΙΖ'. Τόμ: Ε'. Στήλη 585. Καὶ ἐν τῇ Θερυνῇ Ὀμιλ: περὶ τῆ Χρόν, ἐν τῇ Κυριακῇ „Ψάλατε,, Τόμ: Ζ'. Στήλη 21. Καὶ τελοῦταῖον ἐν τῇ Τεσσαρακοσησίμῳ Ὀμιλίᾳ, τῷ Σαββάτῳ μετὰ τὸ „Αναμνήσθῃτι,,: περὶ τὸ τέλος, ἐν τῷ Ζ'. Τόμῳ, Στήλη 248. Τὰ δ' αὐτὰ τῆ Αὐγυστίνου ἐπανέληφε καὶ ἈΛΒΙΝΟΣ ὁ Ἀλκεῖνος ἐν τῷ εἰς τὸν Ἰωάν: Ὑπομνήμ: εἰς τὸ ὑπὸ τῆ Σωτῆρος ἐρημένον: „Πάντα ὅσα ἔχει ὁ Πατήρ, „ἐμὰ ἐστίν,,. Καὶ ἈΥΜΩΝ δὲ ἐν τῇ Κυριακῇ „Ψάλατε,,: Εἰς τὰ αὐτά: πάντα ὅσα ἔχει κτ: „Τίνα ἐστὶν ὃ ἔχει ὁ Πατήρ; „τιῷ αἰωνιότητῃ; ὁμοίως καὶ ὁ Υἱὸς τιῷ αἰωνιότητῃ ἔχει, ὅτι „ἐκείνῳ σωμαῖος ἐστίν. Δάξον μοι πῦρ ἄνευ θερμότητος καὶ γὰρ „σοι Πατέρα δείξω ἄνευ Υἱῶ. Ὁ Πατήρ δ' χρόνῳ ἡγήσατο τῆ „Υἱῶ, ἀρχῇ δέ. Ἔστιν ὁ Πατήρ παντοδύναμος, ὁμοίως καὶ ὁ „Υἱὸς παντοδύναμος ἐστίν, μετὰ τῆ Ἁγίας Πνεύματος. Ποιητὴς „παντὸς τῆ κόσμου ἐστίν, ὁμοίως καὶ ὁ Υἱὸς δημιουργὸς παντὸς „τῆ κόσμου ἐστίν. Δι' αὐτῶ ἐκτίσεν ὁ Θεὸς καὶ Πατήρ τὰ πάντα, „τά, τε ἐν ἔρανῳ καὶ τὰ ἐπὶ τῆς γῆς· καθ' ὃ δὴ αὐτὸς ὁ Εὐαγγε- „γελιστὴς Ἰωάννης ὁ τότε γράψας τὸ Εὐαγγέλιον εἶπε, τῆ Βιβλίου „ἀρχόμενος: Πάντα δι' αὐτῶ ἐγένετο. Διὰ τῶτο ἔφη: ὅτι ἐκ „τῆ ἐμῆ λήψεται, καὶ ἀναγγελεῖ ὑμῖν,,.

Καὶ ΠΑΒΑΝΟΣ δὲ ὁ Μαῦρος ἐν Ὀμιλ: ΡΕ'. Τόμῳ Ε'. τῶν Συγγραμ: Σελ: 654. Πάντα ὅσα ἔχει ὁ Πατήρ ἐμὰ ἐστίν „διὰ τῶτο εἶπον: ὅτι ἐκ τῆ ἐμῆ λήψεται, καὶ ἀναγγελεῖ ὑμῖν. „Περὶ ἐκείνων ἔφησεν, ἃ τῇ τῆ Πατρὸς ἀνήκει Θεότητι, ἐν οἷς „αὐτὸς ἴσος ἐστὶ τῷ Πατρί· καθ' ὃ καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἴσον „Πατρὶ καὶ Υἱῷ. Ὅτι μία ὁσία, μία φύσις, μία μεγαλωσύνη, „μία δόξα, μία αἰωνιότης ἐστὶ Πατρὸς καὶ Υἱῶ καὶ Ἁγίας Πνεύ- „ματος: καὶ ἐστὶ Θεὸς εἰς πανθενῆς, ἀόρατος καὶ ἀκατάληπτος „πάσῃ τῇ κτίσει, ὁ Πατήρ καὶ ὁ Υἱὸς καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα,,. Τὰ δ' αὐτὰ καὶ ΣΜΑΡΤΔΟΣ ἔχει, ἐν Κυριακῇ Γ'. μετὰ τῷ Η'. τῆ Πάχα. Τελοῦταῖον δὲ τὰ προενεχθέντα τῆ Αὐγυστίνου ἐκ τῆς ΡΖ'. εἰς τὸν Ἰωάν: Πραγματείας, ἀναφέρει καὶ ἸΓΚΜΑΡΟΣ ὁ Ρημύσιος, ἐν τῷ Βιβλ: τῷ περὶ τῆς μὴ τριπλῆς Θεότητος, ἐν τῷ Α'. Τόμ: τῶν Συγγραμ: Σελ: 422. Καὶ ἄλλος ἄρα συμ- φανὲς ἐκ τῶτων, ὡς τὸ ρηθὲν ὑπὸ τῆ Σωτῆρος: „Πάντα τὰ „τῆ Πατρὸς ἐμὰ ἐστίν,, περὶ τῶν τῇ Θεᾷ τῆ Πατρὸς ὁσίᾳ ἐπανηκόντων ἐρηθῆναι νοητέον ἐστίν. Πῶς ἔν ὑπ' ἐκείνῃ τῇ προ- τάσει προσλαμβάνει παῖδες Λατῖνων: Ἀλλὰ μὲν „ὁ Πατήρ προ- „βάλλει τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον,,; Ἡ γὰρ τῆ Ἁγίας Πνεύματος Προβολή

Προβολή αὕτη, ἔχι τῷ λόγῳ τῆς ἐσίας τῷ Πατρὶ ἀπονέμεται, ἀλλ' ἐνέργημα ἐστὶ τῶν ἐντὸς τῆς Θεότητος νοσμένων, καὶ τῆς τῆς Θεῆ καὶ Πατρὸς Ὑποστάσεως ἴδιον.

Ἀλλ' ἐνίστανται οἱ Λατῖνοι καὶ φασὶ Ἀν: τὰς Πατέρας συνεχῶς δεῖξαι μέλλοντας, τίνι ποτὲ λόγῳ πάντα ἔχει τὰ τῆς Πατρὸς ὁ Υἱός, τὸ ἀγεννητον μόνον ὑπεξαίρειν· καὶ ἔτω σιγῶντες ὁπωσὲν ἀποφάσκουσι, τὸ καὶ τῷ Ἐκπορεύσειν τῆς Ἁγίας Πνεύματος ἐκ τῆς Υἱῆ χρῶμαι ὑπεξαίρεσθαι. Οἷον ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ ὁ Ναζιανζινὸς Λόγῳ ΜΔ'. εἰς τῷ Ἁγίαν Πενήμησιώ: „Πάντα ὅσα ἔχει „ὁ Πατὴρ τῆς Υἱῆ ἐστὶ, πλὴν τῆς Ἀγεννησίας,,. Καὶ ἸΩΑΝΝΗΣ δὲ ὁ ἐκ Δαμασκῆ, ἐν τῷ Α'. Βιβλ: τῆς Ὁρθοδ: Πίσεως Κεφ: Θ'. (14). „Ὁ Υἱὸς κατὰ πάντα ὅμοιος τῷ Πατρὶ πλὴν τῆς Ἀγεννησίας,,. — Καὶ πάλιν (Αὐτ: αὐτ:): „Καὶ πάντα ὅσα „ἔχει ὁ Πατὴρ αὐτῆς εἰς, πλὴν τῆς Ἀγεννησίας,,. Ὅπερ ἐπαναλαμβάνει καὶ ἐν τῷ Γ'. Βιβλ: τῶν περὶ τῆς Ὁρθοδ: Πίσεως Κεφαλαίῳ ΙΓ'. Καὶ ἐν τῷ Βιβλ: τῷ περὶ τῶν τῆς Χριστῆ δύο Θελήσεων Κεφαλ: Ζ'. — Ἀλλὰ γὰρ εἴπερ οἱ Πατέρες περὶ τῷ Πρότασιν ἐκείνῳ: (Πάντα τὰ τῆς Πατρὸς ἔχει ὁ Υἱός:) μόνον ἐξαίρῃσι τὸ Ἀγεννητον. Ὁμοίως δὴπερ, ἅπαντα τὰ τῆς Πατρὸς ἔχαι καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ὑπεξαίρεσθαι μόνον τῆς Ἀγεννησίας, διδάσκουσι πολλαχῆ. Οἷον ὁ Θεολόγος ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ Λόγῳ ΛΖ'. περὶ τῆς Ἁγίας Πνεύματος Σελίδι 610. „Τὶ δὲ ἐ' προσαγορεύεται „ὡν Θεός, πλὴν ἀγεννησίας καὶ γεννήσεως,,; Καὶ ὁ τῆς αὐτῆς Γρηγορίου ὁμαίμων ΚΑΙΣΑΡΙΟΣ, ἐν τῷ Α'. Διαλόγῳ: „Πᾶσα „ἐνότης, καὶ ἰσότης, καὶ ταυτότης ἐν τῇ Τριάδι, πλὴν ἀγεννη- „σίας, καὶ γεννήσεως, καὶ ἐκπορεύσεως,,. Καὶ ΚΥΡΙΛΛΟΣ, ἡ, ὅς τις ἐν τῷ ὁ Συγγεγραφῶς τὸ Περὶ Τριάδος Βιβλίον, Κεφ: Η'. „Πάντα ὅσα ἔχει ὁ Πατὴρ, αὐτῆς (τῆς Ἁγίας Πνεύματος) εἰς, „πλὴν τῆς Ἀγεννησίας,,. Καὶ ἐν Κεφαλ: Θ'. „Πιστεύομεν καὶ „εἰς ἐν Πνεῦμα Ἅγιον . . . πάντα ἔχον ὅσα ὁ Πατὴρ, πλὴν τῆς „ἀγεννησίας καὶ τῆς γεννήσεως,,· ἅπερ ὁμοίως ἐπαναλαμβάνει καὶ ἸΩΑΝΝΗΣ ὁ Δαμασκινὸς Βιβλ: Α'. περὶ Ὁρθοδ: Πίσεως Κεφαλ: Γ'. (15). Εἴπερ ἐν ἄρα, διὰ τὸ διδάσκειν τὰς Πατέρας πάντα τὸν Υἱὸν ἔχαι τὰ τῆς Πατρὸς, πλὴν τῆς ἀγεννησίας, ἐκ τῆς εἴπετο καὶ τὸν Υἱὸν Προβάλλειν τὸ Πνεῦμα· ὡσαύτως ἂν πάντως ἐπόμενον εἴη, καὶ διὰ τὸ ἔχαι τὸ Πνεῦμα τὰ τῆς Πατρὸς πάντα, παρεκτὸς τῆς ἀγεννησίας, ἥτοι καὶ τὸ Πνεῦμα τὸν Υἱὸν γεννᾷν, ἢ καὶ αὐτὸ ἑαυτὸ προβάλλειν, (ἢ Πνεῦμα ἕτερον) ἢ πάντως καὶ ἀδιώατα ἐστὶ καὶ βλάσφημα.

Εἰ

(14) Παρὰ δὲ Λεκυνίῳ Κεφ: Η'. Σελ: 135.

(15) Κεφαλ: Η'. ἐν τῇ κατὰ Λεκυνίον Ἐκδόσ: Σελ: 138.



Εἰ δ' ἐξὶ αὐτῶ ἀπλῶς ἐπιχειρῶν, ἐκ τῆς πάντα τὰ τῆς Πατρὸς ἔχεν τὸν Υἱόν, πλὴν τῆς ἀγεννησίας, ὅτι ἐκ τῆς Υἱᾶς ἄρα τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκπορεύεται· ἐπίσης ἂν τις συμβάλλοιτο, τὸν Υἱόν ἔχεν καὶ τὴν δυνάμιν τῆς γεννᾶν· τὸ γὰρ ἀγέννητον εἶναι, καὶ τὸ γεννᾶν ἔκ ἐστι ταυτόν· τὸ μὲν γὰρ, ἐξ ἄλλου σημαίνει μὴ εἶναι, τὸ ἀγέννητον· τὸ δὲ γεννᾶν, ἐστὶν ἄλλον παράγειν, κατὰ τρόπον γεννήσεως (16). Ἐποίτο δ' ἂν ἔτι καὶ τὸ ἐν δεξιοῖς τῆς Υἱᾶς καθῆσθαι τινὰ, καὶ τὸ τὸν Υἱόν ἐν κόλποις φέρειν τινὰ, καὶ τὰς λοιπὰς ἔχεν; ὅσαι τῆς Πατρὸς ιδιότητες εἰσὶν ὑποστατικά· Καὶ σαφῶς ἄρ' ἐντεῦθεν ἀναφαίνεται, ὡς ὅτε οἱ Πατέρες μόνῳ τῷ ἀγεννησίαν ὑπεξαίρῃσιν, ὡς μὴ προσήκουν τῷ Υἱῷ, μηδὲ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι· τὰ λοιπὰ πάντα καὶ Πατρὶ καὶ Υἱῷ καὶ Πνεύματι ὁμολογῶντες εἶναι κοινὰ, τῇ διασολῇ τῆς μιᾶς προσωπικῆς ιδιότητος, καὶ τὰς λοιπὰς ἀπάσας προσωπικὰς συλλήβδων σινεκλαμβάνουσι. Τὰ γὰρ τοι γνωριστικὰ τῶν ιδίων, ὡς ἐν ἀλύσει ἀλλήλοις σωέρεται. Ἐνθεντοι ὁ Δαμασκηνὸς ἐν τῷ περὶ τῶν ἐπὶ τῆς Χριστοῦ δύο Θελήσεων Βιβλίῳ, Κεφαλ: Ζ'. „Εἰπὼν, ὅτι „ὁ Υἱὸς πάντα ἔχει τὰ τῆς Πατρὸς πλὴν τῆς ἀγεννησίας,“ ἐν τοῖς ἐφεξῆς ἅμα ὑπεξαίρει καὶ τὴν γέννησιν. Οὕτω γὰρ αὐτόθι: „Πάντα ὅσα ἔχει ὁ Πατήρ, ἐμὰ ἐστὶ καὶ πρὸς αὐτὸν τὸν Πατέρα λέγει: πάντα τὰ ἐμὰ σὰ ἐστὶ τῆς δὲ ὑποστάσεως αὐτοῦ ἰδίον, τὸ Υἱὸν εἶναι γεννητὸν ἐκ τῆς Πατρὸς, καὶ ὁ Πατέρα „ἀγέννητον, ἔδδ' γεννήτορα· ἐκ τῆς Πατρὸς γὰρ γεγέννηται ἀπα- „θῶς,“. Καὶ ἔτι ἐν τῷ Γ'. Βιβλ: περὶ τῶν Εἰκόνων· ὁ μόνῳ τῷ ἀγεννησίαν, ὡς ἄλλοθι εἰώθει ἄλλὰ καὶ τῷ Πατρότητα ὑπε- „ξαίρει,“. Ὁ Υἱὸς Εἰκὼν τῆς Πατρὸς φυσικῇ, ἀπαράλλακτος, κα- „τὰ πάντα ὁμοίᾳ τῷ Πατρὶ, πλὴν τῆς ἀγεννησίας καὶ τῆς Πα- „τρότητος,“. — Τὸ δ' αὐτὸ καὶ ἐν τῷ Βιβλ: τῷ περὶ τῶν ἐπὶ Χριστοῦ διωγῶν Θελημάτων, Κεφαλ: ΙΒ'. Οὐκ ἄρα μιᾶς καὶ μό- νης ιδιότητος τῆς Πατρὸς ὀνομασίᾳ ὑπεξαίραμένης, ἐπιφέρειν ἐξέ- „σαι, τὰ λοιπὰ, ὅσα τῷ Πατρὶ προσιδιάζει, καὶ τῷ Υἱῷ προσήκειν „αὐτά. Καὶ γὰρ εἰ καὶ τὸ ἀγέννητον, ἔκ ἐστι καθ' αὐτὸ τὸ προ- „βάλλειν τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ἀλλ' ὑπὸ τῇ μιᾷ μέντοι γε ιδιό- „τητι τῆς ἀγεννήτης κατονομαθείσης, καὶ αἱ λοιπαὶ ἀπασαι σινεκ- „λαμβάνονται. Πρὸς γὰρ τοῖς ῥηθεῖσιν, ἡ τῆς ἀγεννήτης ὥδε „ιδιότης ἐξείληπται, ἀντὶ τῆς προσιδιάζοντος τῷ Προσώπῳ, ὅπερ „ἀγέννητον ἐστὶ. Καθαπερὲν ἐν παραπλησίᾳ τῇ περιζῶσει καὶ ὁ

Ἰησοῦς

(16) „Οὐ ταυτόν ἐστὶν, ἔδδ' τὴν ὁμοίαν ἔχον δήλωσιν, ἀγέννητον καὶ Πατὴρ . . . . τὸ Πατὴρ ὄνομα, τί ἂν ἐβόλοιτο δηλῆν; πότερον, τὸ μὴ γεγέννησθαι πρὸς τινος; ἢ μᾶλλον ὅτι γεγέννηκεν,; Α. Ὁρθῶς (Κύριλ: Ἀλεξανδρ: ἐν τῷ Β'. Διαλόγῳ τῶν πρὸς Ἑρμείαν Τόμ: Ε'. Μέγ: Α'. Σελ: 420.)



Ἰησῆϊτης ἐκῆνος (17), πρὸς ὃν ἐς δεῦρο τοσάκις διειλέγμεθα, καὶ ἔτι δὲ προδιαλεξόμεθα· τῆς τῆ ἀγεννήτης καὶ τοιγε Προσώπῃς ιδιότητος, πρὸς τὴν ὑποκειμένῳ αὐτῷ ὑπόθεσιν προσεφαρμοθείσης, παραπλησίαν τινὰ δυχέρειαν (τίνος χάριν, δηλονότι, μόνῃ ἢ ἀγεννησίᾳ, ἥκιστα δὲ καὶ ἢ κατ' ἐνέργειαν γέννησις, καὶ ἢ Προβολῇ ἔτι ὑπεξαίρεται ἀπὸ τῆς Πνύματος;) ἐπιλυόμενος, Φησί: „Λέγεται μὲν ὧδε τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον πάντα ἔχειν, „ὅσα ὁ Πατὴρ ἔχει καὶ ὁ Υἱὸς, ἐξακριβμένης τῆς ιδιότητος τῆς ἀγεννήτης καὶ τῆς γεννητῆς· ἐκλαμβανομένης ταύτης ἐκ ἀμεταβάτως, ἀλλὰ μεταβατικῶς (18)· τῆς ἐκείνης τῆς ιδιότητος, τῆς ἀνέκοντος τῷ Προσώπῳ, ὅπερ ἀγεννητον· καὶ αὐτ' ἐκείνης, ὅπερ ἴδιον τῷ Προσώπῳ ὁ γεννητόν. Ἰδιον τῆς ἀγεννήτης Προσώπῃς ἐστὶ, τὸ γεννᾶν Υἱόν, καὶ τὸ πνεῖν σὺν τῷ Υἱῷ καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα. Ἰδιον δὲ τῆς γεννητῆς Προσώπῃς ἐστὶ, τὸ γεννᾶσθαι παρὰ τῆς Πατρὸς, καὶ τὸ πνεῖν σὺν τῷ Πατρὶ καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, (19). Καθάπερ ἄρα τὸ τῆς Πατρὸς Πρόσω-

(17) Κιχώριος αὐτὸς ἐν Ζητήμ: Γ'. Σελ: 1014.

(18) Πολλὴ τις ἡ τῶν Φωνῶν κατάχρησις, ἐπὶ τῆς δὲ τῆς τῆς Ἰησῆϊτης Σχολαστικῆς διασολῆς, καὶ φαίνεται. Κυρίως γὰρ „Ἀμεταβάτως,“ ἐννοῖται Φαμὲν τῶν ἡτοι διαθέσεων, ἢ καὶ ἐνεργειῶν „τὰς ἐμόνους,“ ὅσα αὐτὸ ἔχουσιν ὅρον, τὸ ἐν αὐτῇ εἶναι, ὡς ἐν ὑποκειμένῳ· τῆς δὲ ἐνεργείας, ἢ διατιθέμενον. „Μεταβατικῶς,“ δ' ἐκείνας μόνον ὥνπερ τὸ πέρας ἐκτὸς τῆς ἐνεργείας ἐστὶ. Καὶ γὰρ τὴν ἐννοίαν ταύτην, τὸ μὲν „ἀγεννητον,“ ἐκ αὐτοῦ ἔχει μεταβατικῶς ὥστε θεωρηθῆναι τὸ δὲ „γεννητόν,“ ἐκ αὐτοῦ ἄλλως, ἢ ἀμεταβάτως. Πρὸς δὲ γὰρ αὐτὴν φαίνεται Πρόσωπον ἕτερον τῶν ἐν τῇ Τριάδι, ὡς πρὸς ὅρον, τὴν τῆς Πατρὸς μεταβαίνειν ἀγεννησίαν, ἢ τὴν τῆς Υἱοῦ γέννησιν; Ἀλλ' ἐβόλετο πάντως ὁ Ἰησῆϊτης ὧδε, „Συνεκδοχῆς,“ τινὰ τρόπον, ἢ „Μεταλήψεως,“ ὑποσημαίνει, καθ' ὃν, ἀντὶ μὲν τῆς „ἀγεννήτης,“ τὸ τῆς Πατρὸς Πρόσωπον ἢ μόνον καθ' αὐτὸ, ἀλλὰ καὶ πάντα καθ' ἑαυτὴν ἅμα, ὅσα τῷ Πατρὶ ὑποστατικὰ προσιδιάζει γνωρίσματα συνεκδέχεται· ὅσον τὸ γεννᾶν τὸν Υἱόν, τὸ ἐκπορεύειν τὸ Πνεῦμα· ἀντὶ δὲ τῆς „Γεννητῆς,“ τὸ τῆς Υἱοῦ Πρόσωπον ὡσαύτως. καὶ ὅσα τῷ Υἱῷ ἐπιθεωρεῖται ὡς ἴδια. Ὅσον τὸ ἐκ τῆς Πατρὸς γεννᾶσθαι ὃ παραζέγγυσθαι, καὶ τὸ (κατὰ τὴν Λατινικὴν δοξασίαν) τῷ Πατρὶ σπλάγμα, καὶ τὸν Υἱόν πρεβάλλειν τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. Αὐτὸ τῆτο σπαρακάζων λίαν σιφιστικῶς τὸ ζητῶμεν.

(19) „Ἰδιον, Φησί, τῆς μὲν ἀγεννήτης, τὸ πνεῖν σὺν τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα· ἴδιον δὲ τῆς „Γεννητῆς,“ τὸ πνεῖν σὺν τῷ Πατρὶ τὸ Πνεῦμα,“ Ἀλλὰ μὲν, τὸ τὸν Πατέρα πνεῖν τὸ Πνεῦμα σὺν τῷ Υἱῷ, τῷ τὸν Υἱόν σὺν τῷ Πατρὶ τὸ Πνεῦμα πνεῖν, ταῦτόν τι ἀπαραλλάκτως ἐστίν, εἴτι νοῶμεν. Διὰ γὰρ ἑκατέρωθεν τῶν δυῶν Ἀποφάνσεων, ὑπ' ἀμφοτέρων ἐπίσης ὑπόκειται πνεῖσθαι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. Ἄρα τὸ ἴδιον τῆς „ἀγεννήτης,“ ταυτὸν ἐστὶ τῷ ἴδιῳ τῆς „Γεννητῆς,“ Καὶ Ἀ' μὲν τὸ ἴδιον, ἀμφοῖν ὅτω γίνεται τοῖν Πρόσωποις κοινόν, καὶ τὸ κοινόν δὲ ἴδιον ἐμπαλιν. Β' δὲ, ζητήσας ἂν ὁ διαπορήσας ἔτι, ὡς τὸ πρότερον: τί μὴ καὶ τῆτο τὸ ἴδιον ὑπεξείλον τῆς Πνύματος; ἀλλ' ἄχρι τῆς τῆς „ἀγεννήτης,“ καὶ τῆς „Γεννητῆς,“ ὑπεξαίρεσως οἱ Θεολόγοι γενόμενοι, ἔστησαν; Εἰ δὲ μὴ τῶν Πρόσωπων ἴδιον ἐν ταῦτα φαῖν, τῆς δὲ ἀγεννήτης καὶ τῆς Γεννητῆς καθ' ἑαυτὰ θεωρημένων τὸ μὲν ἀγεννητον, ἢ ἀγεννητον, εἶναι τὸ τὸν Πατέρα σὺν τῷ Υἱῷ· τὸ δὲ Γεννητόν ὁμοίως ἢ γεννητόν, εἶναι τὸ τὸν Υἱόν τῷ Πατρὶ σπλάγμα ἐκπορεύειν τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ὅπως αὐτὸ καὶ θαυμάσειέ τις ἐκόντως ἀκούσας, ὡς ἀμφω ταῦτα δηλοῖ τὸ συνεκπορεύειν τὸ Πνεῦμα, καὶ τοι ὡς ἐναντία, καὶ ἀλλήλοις ἔντα ἀσύμβατα. Τόμ: Β'. Η η

Πρόσωπον συμπεριλαμβάνει πάντα, ὅσα περὶ τῆ Πατρὸς, τῷ λόγῳ τῆ Προσώπῃ, καὶ ἐπὶ τῷ λόγῳ τῆς ἑσίας λέγεται· ἔτω καὶ ἐνθα ἐκ τῶν ὑπεξαίρεται τῆ ἀριθμῆς ἢ ἀγεννησία, ἀπὸ τῆ Τίς μόνῃ, ἔκιν ἐπιφέρειν ἐστὶν ἐντεῦθεν, ὅτι τὰ λοιπὰ ἄρα, ἅτλα περὶ τῆ Πατρὸς τῷ λόγῳ τῆ Προσώπῃ λέγεται μόνον, ταῦτα καὶ τῷ Τίῳ προσήκοντα ἐστὶν.

Βον: δ' ἐνίστανται οἱ Λατῖνοι, λέγοντες τῆς Πατέρας διδάσκων, ὅτι ὁ Τίς πάντα ἔχει τὰ τῆ Πατρὸς, ἐξαίρεμένης μόνῃς τῆ εἶναι Πατέρα· ἀλλὰ καὶ τὸν Τίον ἐμπῆς προβάλλειν τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. ἈΘΑΝΑΣΙΟΣ μὲν γὰρ ἐν Ἐπιστολῇ τῇ περὶ τῶν Σιωδῶν τῆς τε ἐν Ἀριμίνῳ, καὶ τῆς ἐν Σελδοκείᾳ, Τόμ: Α'. Σελ: 923. „Διὰ γὰρ τῆτο καὶ τὸ ἰσάζον ἔχει πρὸς τὸν Πατέρα ταῖς ἐνοιαδέσι φωναῖς, καὶ τὰ ἐπὶ τῆ Πατρὸς λεγόμενα, ταῦτα καὶ ἐπὶ Τίς λέγασιν αἱ Γραφαί· χωρὶς μόνῃς τῆ λέγεσθαι αὐτὸν Πατέρα. Αὐτὸς γὰρ εἶπεν ὁ Τίς, πάντα ὅσα ἔχει ὁ Πατήρ, ἐμὰ ἐστὶ τῷ τε Πατρὶ ἔλεγε: πάντα τὰ ἐμὰ, σὰ ἐστὶ καὶ τὰ σὰ ἐμὰ, — Καὶ μετὰ ταῦτα, Σελ: 924. „Καὶ ὅλως ὅσα ἂν ἔυρης περὶ τῆ Πατρὸς λεγόμενα, τοσαῦτα ἂν ἔυροις καὶ περὶ τῆ Τίς λεγόμενα, χωρὶς μόνῃς τῆ εἶναι αὐτὸν Πατέρα, καθάπερ εἴρηται, — Καὶ ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ ὁ Νύσσης ἐν Λόγῳ Α'. κατὰ Εὐνομίαν, Τόμ: Β'. τῶν Συγγραμμάτων: Σελ: 19. (20). „Φαμέν γὰρ καὶ ἡμεῖς, ὅτι ὁ πάντα τὰ τῆ ἰδίᾳ Πατρὸς ἔχων, ὅλον ἐκείνο ἐστὶ, πλὴν τῆ Πατὴρ εἶναι καὶ ὁ πάντα τὰ τῆ Τίς ἔχων, ὅλον τὸν Τίον ἐν ἑαυτῷ δέκνυσι, πλὴν τῆ Τίς γενέσθαι, — Καὶ ἐν Λόγῳ Β'. Σελ: 87. (21). „Πάντα ἂν ἔτος (ὁ Τίς), ὅσα ἐστὶν ἐκεῖνος (ὁ Πατήρ), πλὴν τῆ ἐκεῖνος εἶναι Πατήρ, — Καὶ ὁ Χρυσόστομος δὲ ἸΩΑΝΝΗΣ, Ὁμιλ: ΑΒ'. τῶν εἰς τὸν Ἰωάννῳ (22): „Ὅρξῃ πῶς τὸ ἀπαράλλακτον καὶ ἐνὶ μόνῳ τῷ διαφορὰν ἐμφαῖνον, τῷ τὸν μὲν, Πατέρα εἶναι, τὸν δὲ, Τίον, — Καὶ ΚΥΡΙΑΛΛΟΣ ὁ Ἀλεξανδρεὺς Βιβλ: Α'. τῶν εἰς Ἰωάννῳ, Κεφαλ: Δ'. ἐν Τόμ: Δ'. τῶν Συγγραμμάτων: Σελ: 36. „Θεὸν ἀληθινόν, ἐκ Θεῆ Πατρὸς ἀληθινῆς πεφηνότα δεικνύων, ἑαυτὸν ὁ Μονογενὴς τῆ Θεῆ Λόγος καὶ Τίς, πάντα, Φησὶν, ὅσα

Ἄλλως τε δὲ, ἐπεὶ ἰσοδιώμα ἐπ' ἀκριβὲς ὑποτίθεται καὶ ταυτοσημάντα ταῦτα, ἔσται κατὰ πᾶσαν ἀνάγκην, καὶ τὸ μὲν ἀγέννητον καὶ γεννητὸν, τὸ δὲ γεννητὸν καὶ ἀγέννητον. „Ἀλλὰ γὰρ ἕτερον πάντως τὸ ἀγέννητον εἶναι παρὰ τὸ γεννητὸν, ὅ, τε Θεοπέσιος Κύριλος ἀποφαντικῶς ἰὼ διδάσκων, (ὄρα ἀνωτ: Σημείωσ: „(16.) καὶ ἀνεκδοκίᾳς ὁμολογήσει, πᾶς ὅς τις τῶν ὁρθῶν λογισμῶν ἐκ ἐκκέκρηται.

(20) Τετὶ ἀναγινώσκειται ἐν τῷ Β'. τῶν πρὸς Εὐνόμ: Λόγῳ κατὰ τὴν Ἐκδοσὶν τῶν τῆ Νύσσης τῷ Γραικο-Λατίν: τῷ ἐν Παρισ: Ἐτὶ 1638. Τόμ: Β'. Σελ: 447.

(21) Ἐν Τόμῳ Γ'. τῆς εἰρημῆς: Ἐκδόσ: Σελ: 515.

(22) Κατὰ τὴν Μοντφωλκ: Ἐκδοσὶν ἀριθμεῖται Ὁμιλ: ΑΘ'.

„ὅσα ἔχει ὁ Πατήρ ἐμὰ ἐστίν· ἀλλὰ καὶ πάντων ἐστὶ τῶν ἐνό-  
 „των τῷ Πατρὶ φυσικῶν ιδιωμάτων κληρονόμος ὁ Υἱὸς, καὶ ἐξ  
 „αὐτῶ κατὰ φύσιν ὑπάρχων, ἀλλάγε τὸ εἶναι Πατὴρ ἔχ' ἔξει  
 „ποτέ. Καὶ τῷτο γὰρ ἐν τῶν προσόντων τῷ Γεννήτορι. Μενεῖ  
 „δὲ ὁ Υἱὸς ἕδενός ἀποσερέμενος τῶν ἐνότων τῷ Πατρὶ, καὶ  
 „μὴ νοῆται Πατὴρ· πάντα δὲ ἔχων ἐν ἑαυτῷ τελείως, τὰ τῆς  
 „τῶ Πατρὸς ἑσίας ἴδια, καὶ ἐξαίρετα (23). Τὸν αὐτὸν δὴ τῷ-  
 „τον τοιγαρὲν, καὶ τῷ Προσώπῳ τῶ Πατρὸς ἐφαρμόσαντες λό-  
 „γον, πάντα μὲν ἔχαιν αὐτὸν τὰ τῶ Υἱῶ φαμὲν φυσικῶς, μὴ  
 „μὴ δυνάσθαι ποτε καὶ εἰς Υἱότητα, καὶ εἰς τὸ εἶναι Λόγον με-  
 „ταχωρεῖν. — Καὶ Βιβλ: ΙΑ'. εἰς Ἰωάννῳ, Κεφ: Β'. Σελ: 930.  
 „Διατέμνοντος γὰρ, ἦτοι διιζάντος ἕδενός εἰς ἀλλοτριότητα τῶ  
 „Πατρὸς τὸν Υἱόν, ὅσον ἦκεν εἰς τὸ κατὰ πᾶν ὅτιεν ὁμοίον τε  
 „καὶ ἴσον, δίχα μόνον τῶ εἶναι Πατέρα· διαλαμπέσης δὲ τῆς  
 „ἑσίας ἐν ἀμφοῖν ἔχ' ἑτεροτρόπως, πῶς ἔκ' ἂν εἶεν ἡδὴ κοινὰ,  
 „μᾶλλον δὲ ταῦτά ἐν ἀμφοῖν, ὡς εἶναι μὲν ἐν Υἱῷ τὰ τῶ Πα-  
 „τρὸς, ἐν δὲ τῷ τεκόντι τὰ τῶ γεννήματος. — Αὐτοῖς δὲ, ἐν  
 „τῇ διασαφῆσαι τῶ Θ'. τῶν Ἀναθεματισμῶν: „Ἀπαντα ὑπάρχων  
 „ὁ Υἱὸς, ὅσα ἐστὶν ὁ Πατήρ, πλὴν μόνον τῶ εἶναι Πατέρα. —  
 „Καὶ ἐν τοῖς Θησαυροῖς δὲ, Λόγ: ΙΒ'. Τόμ: Ε'. Μέρ: Α'. Σελ: 110.  
 „Εἴτις ἀκριβῶς ἐξετάσει τὴν Θεῖαν Γραφὴν, εὕρησαι τοσέτοις  
 „ὀνόμασιν ἀποκαλούμενον τὸν Υἱόν, ὅσοις περ ἂν ἴδοι καὶ τὸν  
 „Πατέρα, δίχα μόνον τῶ λέγεσθαι Πατέρα. — Καὶ πάλιν (ὁ  
 „αὐτὸς) ἐπὶ τῶ Πατρὸς: „Τοσέτοις ὀνόμασιν ἀποκαλούμενον αὐτὸν,  
 „ὅσοις καὶ ὁ Υἱὸς, δίχα μόνον τῶ λέγεσθαι Υἱόν. — Καὶ ἸΩΑΝ-  
 „ΝΗΣ Δὲ ὁ Δαμασκινὸς Βιβλ: Γ'. περὶ τῶν Εἰκόνων (24): „Ἐστὶν  
 „ὁ Υἱὸς Εἰκὼν τῶ Πατρὸς φυσικὴ, ἀπαράλλακτος, κατὰ πάντα  
 „ὁμοία τῷ Πατρὶ, πλὴν τῆς Ἀγεννησίας καὶ τῆς Πατρότητος. —  
 „Τελούταῖον δὲ καὶ ΒΕΔΑΣ ἐν τῷ εἰς τὸν Ἰωάν: Ὑπομνήματι  
 „εἰς τὸ Ε'. Κεφάλ: ἐν Τόμ: Ε'. Στήλη 493. „Ἰσα ἐστὶν ἅπαντα  
 „ἐν Πατρὶ καὶ Υἱῷ· πλὴν ὅτι ὁ μὲν Πατήρ, Πατήρ ἐστὶν· ὁ δὲ  
 „Υἱὸς, ἐστὶν Υἱός. Ἡ μὲν διαίρεσις τῶν Προσώπων, ἡ δὲ ἐνότης  
 „τῆς φύσεως. —

Ἀλλὰ γὰρ, ἐνθα λέγεται, („τὸν Υἱόν ἔχαιν πάντα τὰ τῶ  
 „Πατρὸς, πλὴν τῶ Πατέρα εἶναι. —) κατὰ διτλῶ ἐννοίαν διώταται  
 τὸ λεγόμενον ἐκλαμβάνεσθαι. Τὸ γὰρ εἶναι Πατέρα, ἦτοι μόνῳ  
 τῷ

(23) Μενεῖ γὰρ: „τὰ τῆς ἑσίας. — ἀλλ' ἔτι γὰρ „τὰ τῆς ὑποστάσεως· ὥστε ἔν καὶ ἐφε-  
 „ξῆς προσεχῶς, πάντα, φησὶν, ἔχαιν τὸν Πατέρα τὰ τῶ Υἱῶ „φυσικῶς. — ταῦτα,  
 „τὰ τῆς ὑπερθέας „ἑσίας καὶ φύσεως. — ἅπερ ἐν τῇ Θεότητι ἐστὶν, ὥστε ἔρηται,  
 „τὰ κοινὰ.

(24) Ἐν τῇ Λεκυίνῃ Ἐκδόσ: Λόγ: Γ'. Σελ: 354.

τιῶν χέσιν ὑπεμφαίνει τιῶν πρὸς Υἱόν· ἢ καὶ διὰ τῆς τοιαύτης φωνῆς παρίσταται τὸ Πρόσωπον, ἥτοι ὁ τῷ Υἱῷ γεννήτωρ ὢν, τῆς τῷ Πατρὶ κλήσεως ἕως ὅλικῶς τιῶν ὑπόστασιν σημαίνουσης. Κατὰ μὲν ἐν τιῶν προτέραν τῶν ἐννοιῶν, τὸ „Πατέρα εἶναι“, ἔδεν πλέον ὑποβάλλει, ἢ τὸ γεννᾶν τὸν Υἱόν. Εἰ τοίνυν κατὰ τιῶνδε τιῶν ἐννοιῶν οἱ Λατῖνοι τιῶν ὑπεξαίρεσιν ἐκείνῳ εἰσὶ νοῦν-τες, ταύτῃ ἡμεῖς ἀντίκα ἐπὶ τῆς ἐφεξῆς ἀντιθέσεως διευκρινήσομεν: ἐνθα δείξομεν, ἐκ τῷ διδάσκοντι τῶν Πατέρων, („πάντα „τὸν Υἱόν ἔχειν τὰ τῷ Πατρὶ, παρὰ τὸ γεννᾶν,“) ἑδαμῶς ἔπεσθαι, τὸ τὸν Υἱόν προβάλλειν τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. Κατὰ δὲ τιῶν ἐννοιῶν τιῶν δευτέραν τὸ „Πατέρα εἶναι“, ληφθέν: ὅτι („ἐκ τῷ τὸν Υἱόν πάντα ἔχειν τὰ τῷ Πατρὶ, παρὰ τὸ Πατέρα „εἶναι,“) ἑδόλως ἔπεται τὸ Υἱόν παράγειν τὸ Πνεῦμα, ῥᾶσα ὁμοίως δειχθῆναι δυνάται.

1) Καὶ γάρτοι περὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος οἱ Πατέρες διδάσκουσιν, ὅτι πάντα καὶ αὐτὸ ἔχει τὰ τῷ Πατρὶ, πλὴν μόνον τῷ Πατρὶ εἶναι. Πλῆσαι δ' ἡμῖν εἰς τόδε τένυσθαι παρήχθησαν μαρτυρίαι ἐν τῇ Πραγματείᾳ, ἐν ᾗ παντοῖα Ἐπιχειρήματα πρέ-τέθη ἐκ τῶν Θεολογικῶν Ἀρχῶν λαμβανόμενα, ὑπὲρ τῆς τῷ Πνεύματος Ἐκπορεύσεως, τῆς ἐκ μόνου τῷ Πατρὶ. Οὕτω καὶ γὰρ ἘΠΙΦΑΝΙΟΣ εἶχεν, ἐν τῷ περὶ τῶν ἐν τοῖς Ἀριθμοῖς Μυστηρίων, Ἀριθμ: Β'. Τόμ: Β'. Σελ: 304. „Τριάς — Πατὴρ, „Υἱός, Ἅγιον Πνεῦμα· ὁμοῦσιος κατὰ πάντα· κατὰ συμφωνίαν, „κατὰ δυνάμιν, κατ' ἐνέργειαν, κατὰ Θεότητα, κατὰ μέγεθος, „ἐν ὑποστάσει καὶ ὀνόμασιν (ὅτι δηλ: ὁ μὲν Πατὴρ, ὁ δὲ Υἱός, „τὸ δὲ Πνεῦμα Ἅγιον) μόνον διηρημένῃ ἐν δυνάμει καὶ πραγ- „μασιν ἡνωμένῃ,“. Καὶ ὁ Νύσσης ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ ἐν τῷ περὶ Πίστεως πρὸς Συμπλίκιον, ἐγγύς περὶ τῷ τέλει, Τόμ: Β'. Σελ: 473. (25). „Πᾶν τίμιον ὄνομα ἕτω λέγεται ἐπὶ τῷ Ἁγίῳ „Πνεύματος, ὡς καὶ ἐπὶ τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ λέγεται· πλὴν „τέτων, δι' ὧν αἱ ὑποστάσεις τρανῶς τε καὶ ἀσυγχύτως ἀπ' ἀλλή- „λων διαχωρίζονται· λέγω δέ: ὅτι ἕτε Πατὴρ λέγεται τὸ „Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ἕτε Υἱός· τὰ δὲ ἄλλα, ὅσα ὁ Πατὴρ καὶ ὁ „Υἱός ὀνομάζονται, ταῦτα καὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι παρὰ τῆς „Γραφῆς ἐφαρμόζεται,“. Παραπλήσια δὲ τοῖς τῷ Ἐπιφανίῳ καὶ ὁ Χρυσόρρηνων ἸΩΑΝΝΗΣ ἔχει ἐν τῷ Ζ'. Τόμ: τῆς Ἑλληνικῆς Ἐκδόσεως τῆς ἐν Ἀγγλίᾳ Σελ: 289. ἐν τῇ περὶ Πίς: Ὁμιλ: (26). Καὶ ὁ ΣΤΥΓΓΡΑΦΕΥΣ δὲ τῶν περὶ τῆς ἡνωμένης ἐν τῇ Θεότητι

(25) Ἐν τῇ Παρίσι: Γραικο-Λατίν: Ἐκδόσει τῇ 1638. Τόμ: Γ'. Σελ: 4-

(26) Κατὰ τιῶν Μοντφάλκ: Ἐκδοσ: Τόμ: Θ'. Σελ: 854. καταψηφίζεται δὲ ἡ Ὁμιλ: νοθείας.



Θεότητι Τριάδος, τῶν ὑπὸ τῷ Ἀθανασίᾳ ὀνόματι ἐκδεδομένων,  
Βιβλ: Β'. ὑπὸ τὸ μέσον· ἐν Τόμ: Β'. τῶν Ἀθανασίᾳ Συγγραμ:  
Σελ: 556. „Πάντως διηρημένη μὲν ἐστὶν ἡ Τριάς τοῖς ὀνόμασι  
„μόνον τῶν Προσώπων, τῇ δὲ Θεότητι ἐστὶν ἀδιαίρετος,,. Ὁ δὲ  
ΔΑΜΑΣΚΗΝΟΣ ἐν τῷ κατὰ Νεστοριανῶν Βιβλίῳ, Ἀριθμ: ΚΑ'.  
ἐν τῷ Δ'. Τόμῳ τῶν Κανισίᾳ Παλαιῶν Ἀναγνωσμάτων, Σελίδι  
218. (27). „Εἰ μία φύσις τῆς Τριάδος, καὶ μία ἐνέργεια, καὶ  
„πάντα ἐπ' αὐτῆς κοινὰ, πλὴν τῆς Ὑποστάσεως,,. Ἐμαρτύρει δὲ  
καὶ ὁ Νύσσης ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ, τῆς Ὁρθοδόξου Ἐκκλησίας εἶναι  
Δόγμα, τὸ μηδεμίαν ἄλλω ἐν τῇ Τριάδι διαφορὰν ἐγκωρεῖν  
παρὰ τὴν καθ' ὑπόστασιν. Οὕτω γὰρ ἐν τῷ Α'. τῶν κατ' Εὐνο-  
μίας Λόγων, ἐν Τόμ: Β'. Σελ: 64. (28). „Τὸ Ἐκκλησιασικὸν,  
„Φησὶ, Δόγματος, μίαν ἐν Πατρίτε καὶ Υἱῷ καὶ Πνεύματι Ἀγίῳ  
„δωαμὴν τε, καὶ ἀγαθότητα, καὶ εἰρήνην, καὶ δόξαν· καὶ πάντα  
„τὰ τοιαῦτα κηρύσσοντες, πλὴν τῆς κατὰ τὰς ὑποστάσεις διαφορᾶς,,.  
Οἱ Πατέρες τοίνυν, ὥσπερ τὸν Υἱὸν ἅπαντα τὰ τῷ Πατρὶ ἐχεν,  
πλὴν τῷ εἶναι Πατέρα διδάσκουσιν, ὅτι καὶ περὶ τῷ Ἀγίῳ Πνεύ-  
ματος αὐτὸ τὸτο πάντως παραδιδόσκει. Καθάπερ ὅτι ἐκ τῷ τὸ  
Πνεῦμα ἐχεν τὰ τῷ Πατρὶ πάντα, πλὴν τῷ εἶναι Πατέρα,  
τὸ καὶ αὐτὸ ἄρα παράγειν τὸ Πνεῦμα εἶχ' ἔπειτα· (29) παρὰ  
τὸ μὴ δῆθεν, αὐτὸ δὴ τὸτο, Πατέρα εἶναι, τὸ προβάλλειν τὸ  
Πνεῦμα· ὅπως ἐντεῦθεν παραπλησίως, ἐξ ἐδεμῖας αὐτὴν ἀνάγ-  
κης ὑποσώαπτοίτο, διὰ τὸ ἐχεν τὸν Υἱὸν τὰ τῷ Πατρὶ πάν-  
τα, πλὴν τῷ εἶναι Πατέρα, τὸ καὶ προβάλλειν αὐτὸν τὸ Πνεῦμα  
τὸ Ἅγιον, ὡς τὸ τοιοῦτο μηδαμῶς ὄν, εἶναι Πατέρα (30).

2)

(27) Ἐν τῇ κατὰ Λεκυῖνον Ἐκδόσ: Τόμ: Α'. Σελ: 560.

(28) Ἐν τῇ ἐκδόσει Παρίσι: Ἐκδόσ: Β'. ἐπὶ Λόγος, ὁ Α'. ὡς ἀριθμῶμενος. Ἀναγνω-  
σκειται δὲ ἡ περίκοπη ἐν τῷ Β'. Τόμ: Σελ: 492.

(29) Ἡ, καὶ Πνεῦμα, εἰ βέβαιον, ἕτερον.

(30) Οὐ μόνον δὲ ἄρα κατὰ τὸν Θανμασὸν λόγον τῶν Λατίνων, καὶ τὸν Υἱὸν αὐτὸν ἕτερον  
γεννᾶν ἐπαχθεῖν, καὶ τὸ Πνεῦμα δὲ ὡσαύτως αὐτὸ προβάλλειν, ἢ καὶ ἕτερον  
ἄλλα καὶ ἄλλα εἶτι παρὰ ταῦτα αὐτὸν ἔπειτα, μηδὲν τῶν τῶν αὐτοῦ ἀπολαπτό-  
μενα. Οἷον λ. χ. ὅπως αὐτὸν ἔχον εἴη τὸ Πνεῦμα καὶ τὴν ἀγεννησίαν· εἰ γὰρ, δη-  
λονότι, τὸ ἀγέννητον ἐστὶ Πατέρα εἶναι· ὡς ἐκ τῷ Θεῷ Κυρίῳ ἀνωτ: Σημ: (16)  
ἐδιδάχθημεν· καθάπερ εἰδὲ τὸ προβάλλεσθαι κατὰ τὴν ἀπόρρητον Ἐκτίρεσιν, τὸ  
γεννᾶσθαι ἐστὶ. Καὶ ὅπως ἐνός ὄντος τῷ Πατρὶ ἐν τῇ Τριάδι, διὰ αὐτὸν εἴη (ὅ, τε  
Πατὴρ καὶ τὸ Πνεῦμα) τὰ ἀγέννητα Πρόσωπα. Ἀλλὰ γὰρ εἴησαν ὑπὲρ εὐδωλῶν  
τῶν τοιῶνδε βλασφημιῶν, οἱ τῷ ταύτας ἀναφέρειν τὰς ἀφορμὰς ἡμῖν παρεχό-  
μενοι. Αὐτοὶ δὲ, ἐν οἷς μετὰ τῶν τῆς Ὁρθοδόξου Κηρύκων, ἅπαντα τὰ τῷ  
Πατρὶ ἐχεν τὸν Υἱὸν καὶ τὸ Πνεῦμα ὁμολογῶμεν, πλὴν τῷ εἶναι Πατέρα, τὸτο  
φρονέμεν, ἀντὶ τῆς ὑποστάσεως τῷ Θεῷ καὶ Πατρὶ, σωπεπινόμενων πάντων τῶν  
κατ' αὐτὴν ὑποστατικῶν χαρακτήρων τε καὶ γνωρισμάτων, τὸ εἶναι Πατέρα ἐκδε-  
χόμενοι. Ἡ μάλιστα ἐπὶ τὸ Ἀγέννητον, τὸ γεννᾶν Υἱὸν, τὸ ἐκπορεύειν τὸ Πνεῦμα  
τὸ Ἅγιον· ὡς ἡμᾶς ὁ τῆς Πίσεως εὐσεβὴς λόγος ἐμυσταγώγησεν.

Τόμ: Β'.

Θ ς



2) Ἐκ τῶν ἐπαχθαισῶν ἡδὴ μαρτυριῶν, δῆλον ὅτι τὸ Πνεῦμα πάντα ἔχει καὶ τὰ τῷ Υἱῷ, πλὴν τῷ Υἱῷ εἶναι, ὡς παντί πρ σαφές· ὥστε ἐν αὐτοῖς ἑδαμῶς ἔπεται (ἐδὲ κατ' αὐτὰς Λατίνους) ἐκ τῷ πάντα τὰ τῷ Υἱῷ ἔχειν τὸ Πνεῦμα, παράγειν αὐτὸ ἑαυτό· (31) καὶ τοι γε τῷ μὴ ὂν τὸ εἶναι Υἱόν· παραπλησίως ἐδὲν ἐπάναγκες, ἐκ τῷ τὸν Υἱόν ἅπαντα ἔχειν τὰ τῷ Πατρὶ, παρεκτός τῷ εἶναι Πατέρα, ἔπειθαι δὴ καὶ τὸν Υἱόν τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι εἶναι Προβλήτορα, καὶ τοι καὶ τότε Πατέρα εἶναι μὴ ὂν.

3) Ἀμέλειτοι ἐφ' ὅσον ἡ τῷ Πατρὶ κλήσις τῷ ὅλῳ ὑποσημαίνει νοεῖται Θεῖαν ὑπόστασιν, μετὰ πάντων αὐτῆς τῶν ιδιωμάτων τῶν προσωπικῶν· ὑπὸ τῇ τοιαύτῃ πάντως Προτάσει (,ὁ Υἱὸς πάντα ἔχει τὰ τῷ Πατρὶ, πλὴν τῷ εἶναι Πατέρα,) ἐδοτιζεν ὅλως οἷον τε νοήσαι προσληφθῆναι ἐκ τῷ ἀριθμῷ τῶν (κατὰ λόγον ἐχὼ τῆς ἐξέσεως, ἀλλὰ τῆς ὑποστάσεως) τῷ Πατρὶ ἐπιλεγομένων, οἷον δὴ πρ τυγχάνει ὂν καὶ τῷ τῆς Προβολῆς τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι. (Οὐ γὰρ ἄλλο τι νῦν σκοπεῖται ἢ δαῖξαι, τῷ τῷ Πατρὶ Φωνῆς, ἀντὶ τῆς ὑποστάσεως ὁλικῶς προσληφθείσης, μηδὲν εἶναι τὸ ἀκόλουθον, τῷ, διὰ τὸ ἔχειν τὸν Υἱόν τὰ τῷ Πατρὶ πάντα, πλὴν τῷ εἶναι Πατέρα, τὸ καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα· τὸ Ἅγιον ἐκπορεύεσθαι.) Κἀντεῦθεν δὴ πρ ὁ Ναζιανζηνὸς ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ, ὡς ἐκδιδάσκων· ὡς ὑπὸ τῷ προτερίματι τῆς αἰτίας, τῷ οἷα δὴ πρώτη τῶν ὑπερθέων ὑποστάσεων προσόντι τῷ Πατρὶ καὶ γεννήτορι, συμπεριέληπται ὡσαύτως καὶ ἡ ἀρχὴ καὶ αἰτία τῷ Πνεύματι. Οὕτω γὰρ ἐν τῷ Α'. Λόγῳ: „Μήτε „τοσούτον (εἶναι δέον) φιλοχρίστως, ὡς μήτε τέτω φυλάττειν τὸ „εἶναι Υἱῷ — μήτε τῷ Πατρὶ τὸ τῆς Ἀρχῆς ἀξίωμα, τῆς ὡς „Πατρὶ καὶ γεννήτορι· μικρῶν γὰρ ἂν εἴη καὶ ἀναξίων Ἀρχῇ, „μᾶλλον δὲ μικρῶν τε καὶ ἀναξίως, μὴ Θεότητος ὦν Ἀρχῇ καὶ „Ἀγαθότητος τῆς ἐν Υἱῷ καὶ Πνεύματι θεωρουμένης, „ Τῷ γὰρ Πατρὶ, φησὶ, τὸ τῆς Ἀρχῆς ἀξίωμα προσήκειν, ὅπερ ἔχει ὡς Πατὴρ ὦν καὶ γεννήτωρ. Ἀναπτύξουν δὲ ὅποια τις ἡ Ἀρχὴ ἡδὲ τῷ αὐτῷ μέμνηται, ὡς αἰτίᾳ ὄντος ἐπίσης καὶ τῷ Υἱῷ καὶ τῷ Πνεύματι. Τοιαύτῳ ἄρα προὔπεθετο τῷ ἀρχῇ καὶ αἰτίᾳ νοήσας, ἐν οἷς εἰρήκεα τῷ Πατρὶ, τὸ τῆς Αἰτίας ἀξίωμα, ὡς Πατρὶ προσήκειν, τετέστιν, ὅπερ ἔχει, ἢ Πατὴρ εἶσι. Καὶ κατὰ ταύτῃ ἄρα τῷ ἐννοίᾳ τὸ Πατέρα εἶναι ἐκ ἑσιν ὡδὲ τὸ γεννᾶν μόνον, ὡς ἡ τῶν Λατίνων ἐνστάσις ὑπελάμβανεν.

4)

(31) Ἡ τύχη γε καὶ ἕτερον.

4) Διὰ τῆτο γέν τεως, ἐπειδὴν οἱ Πατέρες διδάσκουσι πάντα ἔχεν τὰ τῆ Πατρὸς τὸν Υἱὸν, παρὰ τὸ εἶναι Πατέρα, ἔδεν νοῶσι τὸν Υἱὸν ἔχεν, οἷον ἐπὶ τῆ Πατρὸς, τῷ λόγῳ τῆ προσώ-  
 πῃ, καὶ ἔχῃ τῷ λόγῳ τῆς φύσεως θεωρεῖται λεγόμενον. Ἀλλὰ τὸ Πατέρα εἶναι, τῆς Θείας ἀντιδιαξέλλουσι φύσεως, καὶ πάντων, ὅσα κατὰ λόγον τὸν τῆς ἑσίας λέγεται· ἔδ' ἕτερόν τι προσλαμ-  
 βάνουσιν ὑπὸ τῇ Προτάσει ἐκείνῃ: („Πάντα τὰ τῆ Πατρὸς εἰσὶ  
 „τῆ Υἱῆ, πλὴν τῆ εἶναι Πατέρα,“) εἰ μὴ ἄπερ τῷ λόγῳ τῆς  
 μιᾶς Θεαρχικῆς ἑσίας προφέρεται. Οὕτω γὰρ ἈΘΑΝΑΣΙΟΣ  
 τὰ προεπενεχθέντα προτάξας ῥήματα, ἀντίκα ὑποσυνάπτει, οἷον  
 τὸ Θεός: „Θεὸς γὰρ ὡς ὁ Λόγος· τὸ Παντοκράτωρ· — τὸ εἶναι  
 „Φῶς· — τὸ δημιουργικὸν αἴτιον· — τὸ εἶναι αἰδῖον· — τὸ εἶναι  
 „Κύριον. — Καὶ τῷ μὲν Πατρὶ λειτουργοῦσιν Ἄγγελοι, ὁ δὲ Υἱὸς  
 „προσκυνεῖται παρ' αὐτῶν· — τὸ τιμᾶσθαι ὡς τὸν Πατέρα· — τὸ  
 „εἶναι ἴσα Θεῷ· — τὸ εἶναι ἐξ ἀληθινῆ ἀλήθειαν, καὶ ἐκ ζῶντος  
 „ζωῶν, ὡς ἀπὸ πηγῆς ὄντος τῆ Πατρὸς· τὸ ζωοποιεῖν τὸν Υἱὸν  
 „καὶ ἐγείρειν τῆς νεκρῆς, ὡς περὶ ὁ Πατήρ· ἔτω γὰρ ἐν τῷ Εὐαγ-  
 „γελίῳ γέγραπται. Καὶ περὶ μὲν τῆ Πατρὸς γέγραπται: Κύ-  
 „ριος ὁ Θεός σου, εἰς ἐξί· καὶ Θεὸς Θεῶν Κύριος ἐλάλησε καὶ  
 „ἐκάλεσε τὴν γλῶσσαν· περὶ δὲ τῆ Υἱῆ: Θεὸς Κύριος καὶ ἐπέφανεν  
 „ἡμῖν· καὶ ὀφθήσεται ὁ Θεὸς τῶν Θεῶν ἐν Σιών,“. Οἷς περὶ δὴ  
 τέτοις ἔπειτα μετὰ τινα παρασυνάπτεται, τὰ ἐν οἷς Β'. οἱ Λα-  
 τῖνοι ἐνίσταντο, ἐκ τῆ αὐτῆς Ἀθανασίᾳς ἡμῖν ἀνωτέρω μνημονοῦ-  
 θέντα. Ὁ δὲ ΚΥΡΙΛΛΟΣ ὁμοίως ἐκ τῶν προενηνεγμένων ἐκ  
 τῆ Α'. Βιβλ: τῶν εἰς τὸν Ἰωάννην: „Πάντα ἔχων (ἔφασκε)  
 „ἐν ἑαυτῷ τελείως, τὰ τῆς τῆ Πατρὸς ἑσίας ἴδια καὶ ἐξαί-  
 „ρετα... τὸν δὲ Πατέρα πάντα ἔχεν αὐτὸν τὰ τῆ Υἱῆ φα-  
 „μὲν φυσικῶς,“. Οὕτω καὶ ἐν τοῖς ἐκ τῆ ΙΑ'. Βιβλ: τῶν εἰς  
 τὸν Ἰωάννην ὁμοίως προτεθεῖσι, προτάττει μὲν: „Διδώσιν τε δι'  
 „ῶν ἔφη νοεῖν, ὅτι καρπὸς ὑπάρχων τῆς ἑσίας αὐτῆς πάντα τὰ  
 „αὐτῆς κατὰ φύσιν ἐπάγεται, ἰδιά τε εἶναι Φησί,“. Κἀντεῦθεν  
 ἐπὶ τοῖς αὐτοῖς ἐκείνοις, ὧν ἤδη ἀνωτέρω ἐμνήσθημεν, ἐφεξῆς  
 ἐπιφέρει: „Διὰ γὰρ τῆτο, καθάπερ ἐγ' ὧμαι, μετὰ δριμύσεως  
 „τινὸς τῆς ἐπιτηρήσεως τῆς περὶ τέτων ἐποιήσατο λόγος. Ἐφη  
 „γὰρ, ἔχ' ὅτι πάντα ὅσα ἔχει ὁ Πατήρ, ἔχω καὶ γὰρ ἵνα μὴ  
 „ψιλή τις εἰκὼν ἢ νοημένη τὴν ἰσοτυπίαν, καὶ τοῖς ἔξωθεν ὥραι-  
 „σμοῖς μεμορφωμένη νοῆται πρὸς τὸ ἀρχέτυπον, καθάπερ ἐν  
 „καὶ ἡμεῖς αὐτοί: γεγόναμεν γὰρ κατ' εἰκόνα Θεῶ. Ἀλλ' ἐμὰ,  
 „Φησὶν, ἐξί· τὴν εἰς ἄκρον ἔνωσιν ὡς ἔχει πρὸς τὸν γεννήσαντα,  
 „καὶ τὴν τῆς ὁμοσιότητος δυνάμιν, ἐν ἀπαραλλάκτοις ἔσαν τοῖς  
 „ἰδιώμασιν, ἐν ἀμφοῖν διὰ τῆτο παραδεικνύς· τέτοις δ' ἂν ἴδοις  
 „καὶ μάλα σαφῶς ἐν ἑτέροις λέγοντα πρὸς τὸν Πατέρα: πάντα  
 Θ ρ 2 „γὰρ

„γὰρ τὰ ἐμὰ, σὰ ἐστὶ καὶ τὰ σὰ ἐμὰ, οἷς γὰρ ὅλως ἔνεσι τὸ „διαλλάττον ἔδεν; καὶ ἡ κατὰ πᾶν ὅτιεν ἐσιώδης ἰσότης τε καὶ „ἐμφέρεια, πῶς ἐκ ἂν εἶεν τὰυτὰ τῇ φύσει; Οὕτω καὶ πλὶ τοῖς ἀπομνημονοῦθῆσιν ἐκ τῆ IB'. Λόγος τῶν Θεσαυρῶν, αὐτίκα προσίθῃσιν: „Ἦξει δὲ ἡμῖν καὶ δι' ἐναργῶν Ἀποδείξεων ὁ Λόγος Παντοκράτωρ ὁ Πατήρ· φέρεται καὶ ἐφ' Υἱῶ: τὰ δε λέγει „ὁ υἱ, ὁ ἐρχόμενος, ὁ Παντοκράτωρ. Κύριος ὁ Πατήρ· καὶ εἰς „Κύριος Ἰησοῦς Χριστός. Φῶς ὁ Πατήρ· λέγει καὶ ὁ Υἱός: ἐγὼ „εἰμὶ τὸ Φῶς τῶ κόσμου. Ὁ Πατήρ ἀφίησιν ἁμαρτίας· ποιῶ „τῆτο καὶ ὁ Υἱός. Ἵνα γὰρ, φησὶν, εἰδῆτε, ὅτι ἐξουσίαν ἔχει ὁ „Υἱὸς τῶ ἀνθρώπου ἐπὶ τῆς γῆς ἀφίεναι ἁμαρτίας. Ἐπειδὴ τοῖ- „νω πάντα πρόσσεσι τῷ Υἱῷ, ὅσα καὶ τῷ Πατρὶ, ἀληθεύων λέγει „πάντα ὅσα ἔχει ὁ Πατήρ ἐμὰ ἐστὶ. Καὶ πάλιν πρὸς τὸν ἑαυ- „τῶ Πατέρα τῶς λόγους ποιῶμενος φάσκει: τὰ ἐμὰ πάντα, σὰ „ἐστὶ, καὶ τὰ σὰ ἐμὰ,„

Ἐπειδὴ τοίνυν εἰς τὸδε, ἡ Πρότασις αὕτη: („Πάντα τὰ „τῶ Πατρὸς εἰσὶ τῶ Υἱῶ, πλὴν τῶ εἶναι Πατέρα,„) νοητέα περὶ μόνων τῶν τῷ λόγῳ μιᾶς καὶ τῆς αὐτῆς Θείας ἐσίας ἐπὶ τῶ Πατρὸς λεγομένων, πρόδηλον πάντως ὅτι κατὰ τὸ σφόδρα ἀπα- „δον ὑπὸ τῇ δε τῇ Προτάσει, Λατίνων Παῖδες τὴν τῶ Ἀγίῳ Πνεύ- „ματος Προβολῇ εἰσὶ προσλαμβάνοντες, τὴν μὴ τὸ παράπαν τῷ κατὰ τὴν ἐσίαν λόγῳ, τῷ δὲ κατὰ τὴν ὑπόστασιν μάλισα, τῷ Πατρὶ ἀπονεμομένῳ. Ἐπειδὴ δὲ, παρὰ ταῦτα, ὁ Υἱὸς ἐκ ἔχει τὸ εἶναι ἀγέννητος, ἔδὲ γε τὸν, ὅς ἂν καθίσαιεν ἐκ δεξιῶν αὐτῶ, ἔχει ἔδὲ τινα ἐν κόλποις αὐτὸς ἐστὶ φέρων· ἃ μὲν τοι τῷ Πατρὶ προσανήκει· καὶ εἰ τὰ τῶ Πατρὸς πάντα ὁ Υἱὸς ἔχων ὑπάρχον· μόνον ὑπεξαίρεμένον τῶ Πατέρα εἶναι· δῆλον δὴ πᾶς καὶν- τεῦθεν γίνεταί αὐτῶς, ὡς ἐν ταῖς δε ταῖς Προτάσεσιν, ἥτοι διὰ τῆς τῶ Πατρὸς φωνῆς, ὁλικῶς ἡ πρώτη τῶν ὑποστάσεων, μετὰ πάντων δηλ: τῶν ὑποστατικῶν αὐτῆς ιδιωμάτων ὑποσημαίνεται· ἢ, εἴπερ ἄλλως ὑπὸ τῇ τοιαύτῃ φωνῇ, μόνον ἡ πρὸς τὸν Υἱὸν ἀναφορὰ ὑποδηλώτο, τῇ κατὰ τὴν γέννησιν· ιδιότητι σωάμα καὶ τὰ λοιπὰ τῶ Πατρὸς γνωρίσματα σιωεξέληπτα. Περὶ ἧς δὴ:

Καὶ Γ'. οἱ Λατῖνοι φέρονται ἐνιστάμενοι, καὶ φασὶ τῶς Πα- τέρας διδάσκειν, ὅτι ὁ Υἱὸς πάντα ἔχει τὰ τῶ Πατρὸς, ὑπεξαί- ρεμένον μόνον τῶ γεννᾶν· τὸ δὲ προβάλλειν τὸ Πνεῦμα ἐκ ἑστὶ γεννᾶν· προέβληκεν ἄρα καὶ ὁ Υἱὸς τὸ Πνεῦμα, ἐπεὶ γε τῆτο παρὰ τῶ Πατρὸς ἐκπορεύεται. Οὕτω φασὶν, ἹΕΡΩΝΥΜΟΣ ἐν τῇ τῆς Πίσεως Ἐκθέσει πρὸς Κύριλλον: „Ἀπαγε ἐπὶ τῶ Υἱῶ „τῶ Θεῶ τὸ μᾶλλον τι εἶναι, ἢ ἡττον· ἡτοι τόπῳ, ἢ χρόνῳ, ἢ „διωάμει, ἢ γνώσει, ἢ ἰσότητι, ἢ ἐν ὑποταγῇ, ὅτε λέγεται „ταῦτα

„ταῦτα τῇ Θεότητι αὐτῶ, καὶ μὴ τῇ σαρκὶ ἐπιγράφεσθαι. Εἰ  
 „γὰρ τὸ μᾶλλον καὶ ἥττον, ἢ τι τοιοῦτον εὐρίσκεται, ἐξαίρεμεν,  
 „ὅτι ὁ Πατὴρ ἐγέννησε τὸν Υἱὸν, καὶ μὲν δὴ, καὶ ὅτι ἐκ αὐτοῦ  
 „ἐαυτῶ ὁ Υἱὸς, ἀλλ' ἐκ τοῦ Πατρὸς ἐστὶ γεννηθεὶς κυρίως· ἐκ ἐν  
 „χρόνῳ, ἀλλ' αἰεὶ· ἐκ ἄλλοθεν, ἀλλ' ἐκ τῆς ἰδίας αὐτοῦ ἐσσίας  
 „τυχόν, κατὰ τὸν ἐκείνων λόγον, ἢτοι βασκαίνων, ἢ μὴ θένων  
 „ὁ Πατὴρ νομίζεται· καὶ ἐπὶ πλέον δὲ, καὶ χρονικὸς εἶναι γινώ-  
 „σκεται,,. Καὶ ὁ ΚΥΡΙΛΛΟΣ ἐν τῷ Β'. Διαλόγῳ τῶν πρὸς  
 Ἑρμείαν: „Παραδέξῃ τὸν Υἱὸν τῷ Πατρὶ ἅμα τε καὶ σωματίδιον,  
 „καὶ κατὰ πᾶν ὅτιδ' ἰσομέτρως ἔχοντα, δίχα μόνον τῶ τεκεῖν,,.  
 Καὶ ἸΩΑΝΝΗΣ αὐτῶς ὁ Δαμασκηνὸς, Βιβλ: Γ'. περὶ Ὁρθοδ:  
 Πίσεως Κεφαλ: Ζ'. (32). „Προῖεναι μὲν ἐν ἀχρόνως καὶ αἰδίως  
 „φάμεν τὴν Θεῖαν τῶ Θεῷ Λόγον ὑπόσασιν, . . . πάντα ἔχουσιν  
 „ὅσα ἔχει ὁ Πατὴρ, ὡς αὐτῷ ὁμοῦσιον τῷ τῆς γεννήσεως τρό-  
 „πῳ, καὶ χέσει τῆς Πατρικῆς ὑποστάσεως διαφέρεισαν,,.

Ἀλλ' ἢ τῶ ὧδε ἀντιπροτεινομένῃ ἐπίλυσιν, ἐξ ὧν κατὰ τῆς  
 Α'. τῶν προτεθεισῶν Ἑνστάσεων διελέγμεθα, αὐτόθεν καταφα-  
 νής. Εἰ γὰρ οἱ Πατέρες περὶ τὴν Πρότασιν ἐκείνῃ: „Ἀπαντα  
 „τὰ τῶ Πατρὸς ἔχει ὁ Υἱὸς,, μόνον ὑπεξαίρωντες εἰς τὸ γεννᾶν  
 παραπλησίως ἤπερ διδάσκουσιν ἀπανταχῶ, ὅτι καὶ τὸ Ἅγιον  
 Πνεῦμα ἔχει πάντα τὰ τῶ Υἱῶ, ἐξαίρεμεν τῶ γεννᾶσθαι. Οἷον  
 ὁ Θεολόγος ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ ἐν Λόγῳ ΜΔ'. εἰς τὴν Ἁγίαν Πεντη-  
 κοστῶν, Σελ: 712. - „Πάντα ὅσα ἔχει ὁ Υἱὸς, τῶ Πνεύματος,  
 „πλὴν τῆς γεννήσεως,,. Καὶ Λόγῳ ΚΔ'. εἰς τὰς ἐξ Αἰγύπτου  
 ἐπιδημήσαντας: „Πάντα ὅσα τῶ Υἱῶ, καὶ τῶ Πνεύματος· πλὴν  
 „τῆς Υἱότητος,,. Καὶ ὁ Δαμασκηνὸς ἸΩΑΝΝΗΣ, ἐν τῷ Α'. τῶν  
 περὶ τῆς Ὁρθοδόξου Πίσεως, Κεφαλ: Γ'. (33). „Πισθόμεν εἰς  
 „ἐν Πνεῦμα Ἅγιον . . . πάντα ἔχον, ὅσα ὁ Πατὴρ καὶ ὁ Υἱὸς,  
 „πλὴν τῆς ἀγεννησίας, καὶ τῆς γεννήσεως,,. Καὶ ἐν τῇ Ἱσορίᾳ  
 τῶ Βαρλαάμ καὶ τῶ Ἰωσαφάτ Κεφαλ: ΙΘ'. „Ἴδιον ἐστὶ τῶ μὲν  
 „Πατρὸς τὸ εἶναι ἀγεννητον, τῶ δὲ Υἱῶ τὸ γεννᾶσθαι, τῶ δὲ Ἁγ:  
 „Πνεύματος τὸ ἐκπορεύεσθαι. — Ὁ τοίνυν Πατὴρ, καὶ ὁ Υἱὸς,  
 „καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, κατὰ πάντα ἐν εἰσί, πλὴν τῶν ἰδιοτή-  
 „των αἷς προέφηκα,,. Καὶ οἱ πρὸ τῶ Δαμασκηνῶ δὲ γεγονότες,  
 ΚΑΙΣΑΡΙΟΣ τε ὁ Γρηγορίῃς τῶ Θεολόγῳ ὁμαίμων, ἐν τῷ Α'.  
 τῶν Διαλόγων: „Πᾶσα ἐνότης, καὶ ἰσότης, καὶ ταυτότης ἐν τῇ  
 „Τριάδι, πλὴν τῆς ἀγεννησίας, καὶ τῆς γεννήσεως, καὶ τῆς ἐκ-  
 „πορεύσεως,,. Καὶ ΛΕΟΝΤΙΟΣ ὁ Μοναχὸς περὶ Αἱρέσεων Πρά-  
 ξει Α'.

(32) Κατὰ τὴν Δεκυίναν Ἐκδοσιν Τόμ: Α'. Σελ: 214.

(33) Ἐν τῇ κατὰ Δεκυίνον Ἐκδόσει, Κεφαλ: Η'. Σελ: 137.

Τόμ: Β'.



ξει Α'. „Μία ἐστὶν ὑπόστασις ἢ τῷ Πατρὶ, καὶ μία ἢ τῷ Υἱῷ, καὶ μία ἢ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι. Ταῦτα δὲ τὰ τρία ἐδὲν ἀλλήλων διαφέρουσιν, εἰ μὴ μόνον κατὰ τὰ ἰδιώματα· κατὰ τὸ, τὸν μὲν εἶναι Πατέρα, τὸν δὲ Υἱόν, τὸ δὲ Πνεῦμα Ἅγιον. Ἐπεὶ μία ἐστὶ ἡ τῶν τριῶν, καὶ μία δυνάμις, καὶ μία βύλησις· τῷτο μόνον διαφέρουσιν: ὅτι ὁ μὲν Υἱὸς γεννᾶται ἐκ τῷ Πατρὶ, τὸ δὲ Πνεῦμα ἐκπορεύεται ἐξ αὐτοῦ. Ὁ δὲ ΣΥΓΓΡΑΦΕΥΣ τῷ περὶ Τριάδος Βιβλίῳ, τῷ προσαναγραφόμενῳ Κυρίῳ, ἐν Κεφαλ: Ι'. „Ἐνα Θεὸν γινώσκουμεν ἐν μόναις ταῖς ἰδιότησι, τῆς τε Πατρότητος, καὶ τῆς Υἱότητος, καὶ τῆς Ἐκπορεύσεως, κατὰ τε τὸ αἷτιον καὶ τὸ αἰτιατὸν, καὶ τὸ τέλειον τῆς ὑποστάσεως· ἦτοι τὸν τῆς ὑπάρξεως τρόπον· τὴν διαφορὰν ἐννοῶμεν. Καὶ αὖτις αὐτόθι: „Ὅτι κατὰ πάντα ἐν εἰσὶν ὁ Πατὴρ καὶ ὁ Υἱὸς καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, πλὴν τῆς ἀγεννησίας, καὶ τῆς γεννήσεως, καὶ τῆς ἐκπορεύσεως. Ἄπερ ὁμοίως ἔτι ἐπαναλαμβάνει καὶ ἸΩΑΝΝΗΣ ὁ Δαμασκηνὸς ἐν Βιβλ: Α'. περὶ Ὁρθοδ: Πίσεως, Κεφαλ: ΙΑ'. (34). Ὡς ἔπερ ἄρα ἐκ τῷ διδάσκειν τὴν Πατέρα, ἅπαντα τὸν Υἱὸν ἔχειν τὰ τῷ Πατρὶ, πλὴν τῷ γεννᾶν, καὶ τὸν Υἱὸν εἶπετο προβάλλειν τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ἔψοιτ' ἂν ὁμοίως ἐκ τῷ καὶ τὸ Πνεῦμα πάντα ἔχειν τὰ τῷ Υἱῷ, (τῷ κατὰ Λατίνους τὸ Ἅγιον Πνεῦμα προβάλλοντος) πλὴν τῆς γεννήσεως· δι' ἧς καὶ τὸ Πνεῦμα αὐτὸ ἑαυτὸ προβάλλειν (35) ὅπερ ἀδύνατον. Εἰ ἔν ἀπλῶς ἐπιχειρεῖν ἐξείη ὥδε: Πάντα τὰ τῷ Πατρὶ (πλὴν τῷ γεννᾶν) ἔχει ὁ Υἱός. Ἄρα καὶ ὁ Υἱὸς προβάλλει τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον· τὸν αὐτὸν ἂν ἔψοιτο τρόπον, καὶ τὸν Υἱὸν εἶναι ἀγέννητον (36) τὸ γὰρ ἀγέννητον εἶναι καὶ τὸ γεννᾶν, ἐ πάντως ταῦτά· τὸ μὲν γὰρ σημαίνει τὸ μὴ ἐξ ἄλλου εἶναι, τὸ δὲ ἐτέρῳ διδόναι τὸ εἶναι, κατὰ τρόπον γεννήσεως. Ἐψοιτο δ' ἂν ἐπὶ τέτοις, καί τινα εἶναι τὸν καθήμενον ἐκ δεξιῶν τῷ Υἱῷ· καί τινα δὲ, ὃν ἂν ὁ Υἱὸς φέροι ἐν κόλποις· καὶ τὰς λοιπὰς δὲ τὸν Υἱὸν ἔχειν Προσωπικὰς τῷ Πατρὶ ἰδιότητας.

Καὶ τοίνυν ἐκ τέτων κατὰδῃλον, ὡς ἐπειδὴν ἅπαντα τὰ τῷ Πατρὶ τὸν Υἱὸν ἔχειν οἱ Πατέρες διδάσκουσι, τῆς γεννήσεως ὑπεξαίρουμένης· ὑπό γε τῇ διαβολῇ τῆς μιᾶς ταύτης ὑποστατικῆς ἰδιότητος, καὶ τὰ λοιπὰ ὡσαύτως τῶν ἰδιωμάτων τῷ Πατρὶ τῶν Προσωπικῶν συμπεριλαμβάνεσθαι· καθότι τὰ γνωριστικὰ τῆς ὑποστάσεως ἀλλήλοις σωθήρηται δίκην ἀλύσεως. Καὶ γὰρ καὶ ὁ Θεολό-

(34) Ἐν τῇ ῥηθείᾳ Ἐκδόσ: Κεφαλ: Η'. Σελ: 139. 140.

(35) Ἡ γὰρ Πνεῦμα ἕτερον.

(36) Ἐπίσηθι καὶ ἐπὶ τῆς ἀνωτέρω Σημειώσεως (30).



Θεολόγος ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ ἐν τῷ Α'. Λόγῳ, διὰ τῶν ἀπομνημονού-  
θεντων ῥημάτων, τὸ τῆς Ἀρχῆς γέρας τῷ Πατρὶ, καὶ ἐχὶ τῷ  
Υἱῷ, ὡς Πατρὶ ἐκείνῳ προσδὸν καὶ γεννήτορι, προσήκειν ἐδίδασκε.  
Δείξων δὲ ὅποιον ἂν εἴη τὸ τῆς αἰτίας ἀξίωμα, ὅπερ ὁ Πατὴρ,  
ἢ Πατὴρ ὢν καὶ γεννήτωρ, ἔχων τυγχάνει, τηλαυγῶς τὸν αἴτιον  
ὀνομάζει τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι ἧς περ δὴ μαρτυ-  
ρίας ἔδεν τηλαυγέσσερον.

Οὐκ ἄρα μιᾶς καὶ μόνης ιδιότητος τῷ Πατρὶ ὀνομασθὶ ὑπε-  
ξαίρεμένης, ἐπιφέρειν ἕξει τὰ λοιπὰ τῷ Πατρὶ ἅπαντα προ-  
σῆκειν καὶ τῷ Υἱῷ. Εἰ γὰρ τὸ γεννᾶν ἐκ ἑσὶ Πνεῦμα προβάλλ-  
ειν, ὑπό γε μὴν τῇ μιᾷ τῆς γεννήσεως ιδιότητι κατονομαθεί-  
σης, καὶ τὰ λοιπὰ (τῶν ἰδίων) συμπεριείληπται· λαμβάνεται  
γὰρ ὡς ἡ τῷ γεννητῷ ιδιότης, ἐχὶ „ἀμεταβάτως,, ἀλλὰ „με-  
ταβατικῶς,, (37) καθὸ ἴδιον ἀμέλει τῷ Προσώπῳ τῷ γεννηθέν-  
τος ἢ τινι διασολῇ καὶ τὸν Ἰησοῦν ἀνωτέρῳ κατέδομεν κε-  
χρημένον πρὸς ἐπίλυσιν τῷ ἀπορήματος: (τίνος ἄρα χάριν οἱ  
Πατέρες, ὢν περ ὁ Υἱὸς ἔχει, μόνῳ ἀπὸ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι  
ὑπεξαίρετες εἰσὶ τῷ γέννησιν;) Ὡς περ τοίνυν τὸ τῷ Πατρὶ  
Πρόσωπον, συμπεριλαμβάνει πάντα, ὅσα κατὰ τῷ Πατρὶ τῷ  
λόγῳ τῷ Προσώπῳ, καὶ ἐχὶ τῷ γε τῆς ἑσίας λέγεται. Οὕτως  
ἐνθα ἐκ τῷ ἀριθμῷ τέτων ἢ κατ' ἐνέργειαν γέννησις ὑπεξαίρε-  
ται ἀπὸ τῷ Υἱῷ, ἐκ ἑσὶν ἐπαγαγεῖν, ὅτι τὰ λοιπὰ διὰ τῷτο,  
τὰ τῷ λόγῳ μόνον τῷ Προσώπῳ λεγόμενα κατὰ τῷ Πατρὶ, καὶ  
τῷ Υἱῷ αὐτὰ ἐσὶ προσανήκοντα.

Δ'. δ' Ἐνίσταται τελοῦταῖον Βελλαρμῖνος ἐν τῷ Β'. Βιβλ: πε-  
ρὶ τῷ Χριστῷ, Κεφαλ: ΚΒ'. „Εἰ μὴ ἔχον ὁ Πατὴρ καὶ ὁ Υἱὸς  
„πάντα κοινὰ, ὑπεξαίρεμένης τῆς ἀντιθέτης χέσεως, εἶψαν ἂν  
„πλέον ἢ χέσει διακρινόμενοι καὶ κατὰ γε τὸ παρακολοῦθον,  
„διακρίνουντ' ἂν κατ' ἑσίαν. Οὐ γὰρ ὁ Πατὴρ ὡς Πνεύσεως χέσειν  
„ἔχει πρὸς τὸν Υἱόν. Εἴπερ ἄρα ὁ Πατὴρ ὡς Πνεύσεως διακρί-  
„νεται δῆπερ διὰ τῆς Πνεύσεως, ἐχ ἢ τις χέσις αὕτη ἐσὶν,  
„ἀλλ' ἢ μορφὴ τις τῷ Πατρὶ ἐνυφισαμένη· τοιγαρὶν ὁ Πατὴρ  
„καὶ ὁ Υἱὸς κατ' ἑσίαν διοίσουσιν. Ἦδε ἢ τῶν Ἀρειανῶν Αἰ-  
„ρεσις,,.

Ἀλλ' ἔδεν σωλῆσιν ὁ Ἰησοῦς Βελλαρμῖνος· Ἐλεβοριῶν δὲ,  
τῷ κεφαλῷ ὥφειλεν ἐκκαθάραι, πρὶν ἢ τοιαῦτα ἐπαγαγεῖν  
ἀναβάλληται. Εἴτι γὰρ ἢ ἀκολοῦθία αὕτη ἰχύσειεν, παρέψοιτ'  
ἂν ὡσαύτως καὶ πάντα ὅσα ὁ Πατὴρ ἔχει, εἶναι καὶ τῷ Πνεύ-  
ματος, καθάπερ ἐν ἀνωτέρῳ δέδεικται. Εἰ γὰρ ὁ Πατὴρ καὶ τὸ  
Πνεῦμα

(37) Μέτιθι τὰ ἀνωτ: ῥηθέντα ἐν τῇ Σημείωσει (18).

Πνεῦμα ἔκ ἔχον ἅπαντα, ἑξακριβμένης τῆς ἀντιθέτου χέσεως, διακρίνονται ἂν πλέον ἢ κατὰ χέσιν, καὶ κατὰ τὸ ἐπόμενον διακρίνονται ἂν κατ' ἐσίαν. Καὶ γὰρ ὁ Πατήρ, ἢ Πατήρ, ἔκ ἔστιν ἀντιχετικὸν πρὸς τὸ Πνεῦμα, ἀλλ' ἢ γε Πνύβσης. Ἄρα εἰ ὁ Πατήρ, ἢ Πατήρ, διακρίνεται τῷ Ἁγίῳ Πνύβματος, διακρίνεται δὴ καὶ διὰ τῆς Πατρότητος, ἔκ ἢ περ χέσις αὕτη ἐστίν, ἀλλ' ἢ μορφή τις τῷ Πατρὶ ἐνιστάμενα· καὶ ταύτη δέ, ὁ Πατήρ καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον διοίσασιν κατ' ἐσίαν. Αὕτη ἢ τῷ Ἀρείῳ Αἵρεσις ὡς. Οὐκ ἐν ἄρα τῇ Πατρότητι ὁ Πατήρ τῷ Ἁγίῳ Πνύβματος διαφέρει· καὶ ἔτω δὴ καὶ τὸ Πνεῦμα ὡσαύτως γεννᾷ τὸν Υἱόν· τὸ βλάσφημον καὶ ἀδωάτον.

Προσέτι καὶ εἶπερ ἢ τῷ Ἰησοῦ ἐπιφορὰ χώραν εἶχεν, ἔποιτ' ἂν καὶ τὸ Πνεῦμα εἶναι ἀγέννητον, ὡς περ ὁ Πατήρ. Ἐπειδὴ κατὰ τὸν Βελλαρμίνου λόγον, καὶ αὐτὸ τὸ Πνεῦμα πάντα ἔχειν ὀφείλει τὰ τῷ Πατρὶ, ἐνθα μή τις χέσις ἀντίθετος ἅπαντ' ἐν δὲ δὴ τῷ Πνύβματι ἔδεν ἐστίν, ὃ κατὰ χέσιν ἀντικείμετο, τῷ εἰρημένῳ τῷ „Ἀγεννήτῳ,“ γνωρίσματι· τὸ Πνεῦμα πάντως τὸ Ἅγιον ἔξει τῷ ὑποστατικῷ ιδιότητι τῷ Πατρὶ, τῷ „ἀγεννησίαν,“ ὃ πάλιν ἄτοπον. Ἐκ γὰρ τῆς κοινῆς τῶν Πατέρων διδασκαλίας, ὡς εἴρηται, τὸ Ἀγέννητον ἐστίν ιδιότης ὑποστατικῇ τῷ Πατρὶ καὶ ταύτης ἄρα τῷ Πνύβματι τῷ Ἁγίῳ μετέναι ἀδωάτον. Καί περ δὲ ἀποφατικῶς τὸ Πνεῦμα, „μὴ γεννητὸν,“ ἀληθεύοντες ὁμολογῶμεν, ἐμὴν ἔμπης περὶ αὐτῷ, καὶ ὅτι ἐστίν „ἀγέννητον,“ λέγειν διωάμεθα, καθ' ὃ ἐννοίαν περὶ τῷ Πατρὶ τῷ λέγεται. Σημαίνει γὰρ τὸ „ἀγέννητον,“ κατὰ τῷ ἐννοίαν ταύτῃ, καὶ τὸ μὴ εἶναι ἐκ ἄλλου. Πρὸς δὴ τῷ τοις: ἐπειδὴ Προβλεπὺς (κατὰ Λατίνου) τῷ Ἁγίῳ Πνύβματος ἐστίν ὁ Υἱός, ἔξει δὴ παρὰ τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα, καὶ πάντα τὰ τῷ Υἱῷ, ἑξακριβμένης τῆς ἀντιθέτου χέσεως. Καὶ ἔξει ἄρα παρ' αὐτῷ, καὶ ὡς αὐτὸς ἔχει Υἱότητα. Ἡ γὰρ Υἱότης, καὶ ἢ κατὰ πάθησιν Πνύβσις, ἔκ ἂν ἄλλως ἀντικείμετο ἢ χετικῶς. Καὶ ἔτω τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, σιωάμα τῷ Υἱῷ, εἰς καὶ μόνος ἐστίν Υἱός (38) ἄπερ εἰς πέρας ἀτοπίας ἦκει τὸ ἔχον. Ἀμέλειτοι παρακέρσαι Βελλαρμίνος ψυδῶς προσειληφῶς, ὅτι, εἰ μὴ ὁ Πατήρ καὶ ὁ Υἱός ἔχοιεν ἅπαντα κοινὰ, τῆς ἀντιθέτου μόνης χέσεως ὑπεξαίρεθείσης, διοίσασιν τῇ ἐσίᾳ. Οὐ γὰρ ὁ Πατήρ καὶ τὸ Πνεῦμα κοινῶς ἔχουσι τῷ γεννήσιν. Καὶ δὲ μηδὲν ἔχει τὸ Πνεῦμα χετικῶς πρὸς τὸν Πατέρα ἀντίθετον, ἐ μὲν τοι γε

παρὰ

(38) Εἰ μή τις λέγειν ἐπιτολμήσειεν ὅτι καὶ Υἱὸς δύο· ἢ καὶ ὅτι τὸ Πνεῦμα, καὶ Πνεῦμα ἅμα τὸ αὐτὸ καὶ Υἱός· ἐκ περιστάσεως ἐπαναδιδόμενος πληθύνει τῆς δυσεβείας τὸ βλάσφημον.

παρὰ τῷτο, ὁ Πατὴρ καὶ τὸ Πνεῦμα διακρίνονται κατ' ἑσίαν.

Ἄλλ' ἔτιως ἂν διακρίνουντο, φησὶ, μᾶλλον ἢ κατὰ χέσιν ἀντίθετον διακρίνουντο δ' ἂν ἄρα κατ' ἑσίαν. — Ἀλλὰ ψυδὲς αὐθὶς καὶ τότε εἶναι, ἐκ τῆς προαποδοθείσης ἀντιτάσεως φανερόν. — Ἄλλ' ἔτιω κατὰτι (πρόεσι γὰρ ἔτι:) διακρίνοιτ' ἂν ὁ Υἱὸς ἀπὸ τῷ Πατρὸς, ἔχῃ χετικῶς καθὸ δ' ἐκείνο, μορφὴ τις ἐστὶ τῷ Πατρὶ προπεριῖσα· ὅθεν ὁ Πατὴρ καὶ ὁ Υἱὸς διαφέρειεν ἂν κατ' ἑσίαν. — Ἀλλὰ γὰρ καὶ τῷτο ψυδὲς: ὅτι, ὡ περ ἂν τὸ τῷ Υἱῷ διακρίνοιτο Πρόσωπον ἀπὸ τῷ Πατρὸς, μὴ κατὰ χέσιν, ἐκείνο ταύτη γε μορφὴ τις ἂν εἴη τῷ Πατρὶ ἐνυπάρχουσα. Εἴη γὰρ ἂν τι τῶν Προσωπικῶν γνωρισμάτων, ἃ πάντα πάντῃ ἐστὶν ἀκοινώνητα. Καὶ γὰρ ἡ τῷ Πατρὸς ὑπόστασις διακρίνεται τῆς τῷ Π. ὕματος, καὶ κατὰ τὴν γέννησιν τῷ Υἱῷ, ἡκίσα χετικῶς. Οὐμὴ δὲ παρὰ τῷτο μορφὴ τις ἐστὶ τῷ Πατρὶ ἐνυφεσῶσα ἢ τῷ Υἱῷ γέννησις, ἀλλ' ἴδιον ὑποστατικὸν τῷ Πατρί (39). Ὡσε δεόντως περὶ τῶν τοιούτων Συμπερασμάτων, (τῶν ὑπὸ τῷ Ἰησοῦ, καὶ ἑτέρων Λατίνων, ἐκ τῶν τῷ Κυρίῳ ῥημάτων: „Πάντα τὰ τῷ Πατρί ἐμὰ ἐστὶν, ἐπισυναγομένων”) Μάρκος Ἀντώνιος ὁ de Dominis, ἐν τῷ Η. Βιβλ: τῶν περὶ Πολιτείας Κεφαλαίῳ Γ. Ἀριθμ: ΡΚΗ'. παραινῶν ἔλεγε: „Μὴ χρῶμαι τὴν Ἱερὰν Γραφὴν δι' αὐτῶν βεβηλῶν, ἀλλὰ μετὰ ἀπλότητος αὐτῷ ἐννοεῖν, καὶ ὡς οἶον τε σωφρόνως καὶ νηφαλίως μεταχειρίζεσθαι,·

Ἐχάτον σημειῶμεν: ἀτοπωτάτης ἐν Λατίνοις εἶναι, τῆς, ἐπειδάν τις αὐτοῖς, (ἐκ τῷ ῥηθέντος: ὅτι πάντα τὰ τῷ Πατρὸς ἐμὰ ἐστὶν) ἐπιχειρῶσιν, ἀντιπροτείνουσι: ὡς ἄρ' ἔτιω καὶ τὸ Πνεῦμα ἑαυτὸ προβάλλειν ἐφέψεται, καὶ τὸ γεννᾶν δὲ τὸν Υἱόν· ἀπαντᾶν εἰωθότας: μὴ ἔχειν τὰ τοιαῦτα ἀντιπροτείνεσθαι, μηδ' ἐκ τῶν καμμένων ἐπισυνάγεσθαι, ἅτε δὴ ἐπιδήλως ἅπαντιν ἀδιωλά τε ὄντα αὐτὰ, καὶ τῇ ιδιότητι τῷ Π. ὕματος ἀντιβάνοντα. Πάντως μὲν ἔν τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἑαυτὸ προβάλλειν, ἢ τὸν Υἱόν γεννᾶν, σιωμολογεῖντων ἀπάντων, ἐστὶν ἀδιώατον· ἀλλ' εἴπερ ἐκράτει τὰ τῶν Λατίνων Ἐπιχειρήματα, ἐξ αὐτῶν ἐπίσης καὶ τὰ τοιαῦτα ἂν ἔποιτο.

Φανε-

(39) Πρόθεσις ἐπὶ τοῖς ἐξημένοις: ὡς εἴπερ, ὅ, τι μὴ χέσιν ἐμφαίνει, ἐκείνο ὡς ἐσιῶδες (ἢτοι κατὰ λόγον τὸν τῆς ἑσίας πρόεσι τῷ Πατρὶ (ἢ τῷ Βελλαρμίνῳ δοκεῖ) τοιγαρῶν καὶ τὸ „ἀγέννητον, (ὃ τὸ μὴ εἶναι ἐξ ἄλλου, ἀλλ' ἀφ' ἑαυτοῦ ὑπάρχειν ἐμφαίνει) προσέσαι αὐτῷ ὡς μορφὴ περιῖσα. Ταύτη δὲ διακρίνεται πάντως ὁ Πατὴρ Υἱὸς τε καὶ Π. ὕματος· μηδετέρου τῶν ἰδιοποιεμένων τὴν „ἀγεννησίαν,· καθ' ἣν ἐννοίαν αὐτὴ θεωρεῖται ἐπὶ τῷ Πατρὶ. Καὶ κατ' ἑσίαν ἄρα ὁ Πατὴρ, πρὸς τὰ ἐξ αὐτοῦ, Υἱόν τε καὶ Πνεῦμα, διαίσει. Αὕτη ἡ τῶν Ἀρειανῶν ἅμα καὶ Π. ὕματος δυνάμει.

Τόμ: Β'.

Κ κ

Φανερόν δ' ἔτι δήπερ, ὡς ἐπεὶ τὰ τοιαῦτα ἔτις ἐξὶν ἀδωά-  
 τα· ἔπεται δ' ἐν ὅμῳ, ἐξ ὧν αὐτοὶ ἐπιχειρῶσιν, αὐτά: παιζόν-  
 των ἄρ' ὡς αὐτῶν αἱ ἐπιχειρήσεις· εἰ γὰρ αὐτῶν ἔρρωτο τὰ δια-  
 νοήματα, ἀληθὲς ἂν ὑπῆρχε, καὶ ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα αὐτὸ  
 ἑαυτὸ παράγει, καὶ ὅτι καὶ τὸν Υἱὸν γεννᾷ. Ἐπεὶ δὲ ταῦτα  
 τῶν ἀδωάτων· τὸ δέ τοι ἄτοπον ἐκ ἄλλοθεν εἰμὴ ἐκ τῶν ψυ-  
 δῶς κειμένων σωάγεται· ἔυδηλον ὡς ἄχρι τῆδε Λαλίνων Παῖδες,  
 διὰ ψυδῶν ἐπιχειρῶντες ἔδεν ὅ, τι καὶ ὑγιὲς σωεπέραινον.  
 Καὶ ἀποχρώντως ἄρα καλεφάνη, ὅτι τὸ „τὸν Υἱὸν ἔχειν πάντα  
 „τὰ τῆ Πατρὸς,, ἔδεν εἰς πίσιν συμβάλλεται τῆς τῆ Ἁγίης  
 Πνοῦματος καὶ ἐκ τῆ Τιῆ Ἐκπορεύσεως.

ΠΡΑΓ-

## Π Ρ Α Γ Μ Α Τ Ε Ϊ Α Ι Α΄.

Ἐν ἣ ἀποδείκνυται, ὅτι τὸ εἶναι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, Πνεῦμα  
τῷ Υἱῷ, ὅθεν εἰς πίσιν σωτελεῖ τῆς τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος  
καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ Ἐκπορεύσεως.

Ἀλλὰ καὶ τῷ ἐν Ἱεραῖς Γραφαῖς εἰρημένῳ, ὅτι, „τὸ Πνεῦμα  
„ἐστὶν ἐκ τῷ Υἱῷ,, παραχρῶνται Λατῖνοι πρὸς ἐμπέδωσιν τῆς  
τῷ Πνεύματος καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ Ἐκπορεύσεως. Ὅτε γὰρ τὸ Πνεῦ-  
μα τὸ Ἅγιον, Πνεῦμα τῷ Υἱῷ λέγεται, τῇ δυνάμει τῆς τοιαύτης δε,  
Φασί, φράσεως, ἥτοι πνεύσιν εἶναι τὸ Πνεῦμα τῷ Υἱῷ δηλεῖται,  
τετέστι τὸ παρὰ τῷ Υἱῷ πνεῖσθαι καὶ ἐπεὶ καὶ τῷ Πατρὶ Πνεῦμα  
λέγεται, καὶ δι' ἄλλο ἔμπης, ἢ ὅτι ὡς ἐξ αἰτίας τῷ Πατρὶ ἐκπο-  
ρεύεται, τῷ αὐτῷ λόγῳ καὶ τῷ Υἱῷ Πνεῦμα κέκληται καὶ ἔτι  
ἄρα παρὰ τῷ Πατρὶ ἅμα καὶ τῷ Υἱῷ ἐκπορεύεται ἢ γὰρ, εἴπερ  
ἄλλως πως τῷ Πατρὶ εἶναι τὸ Πνεῦμα λέγοιτο, ἄλλως δέ πως  
εἶναι τῷ Υἱῷ ὁμωνύμως ἂν πάντως καλοῖτο, τῷ Πατρὶ εἶναι  
τὸ Πνεῦμα, καὶ τῷ Υἱῷ καὶ ἐκ αὐτοῦ, ἐκ τῷ ἐπομένῳ, τὸ Πνεῦμα  
ἐν εἴῃ ὅπερ ἀδωάτον, καὶ βλάσφημον.

### Ἄ Π Α Ξ Ν Τ Η Σ Ι Σ Α΄.

Ταῦτὸ δὴ τέτο, καὶ οἱ Ἀρειανοὶ ποτε τοῖς Καθολικοῖς ἀντεπέ-  
φερον, ὡς δὴθεν τέτλης ἀπάξοντες εἰς ἀδωάτον. Οὕτω γὰρ  
ἐπεχείρουν καὶ καὶνοὶ, ὡς ἐν τοῖς πρὸς Σεραπίωνα, κατὰ τῶν κτίσ-  
μα εἶναι τὸ Πνεῦμα λεγόντων, διέξισιν ἈΘΑΝΑΣΙΟΣ ἐν τῷ  
Α΄ Τόμῃ: τῶν Συγγραμῶν: Σελ: 189. „Εἰ τῷ Υἱῷ ἐστὶ Πνεῦμα,  
„ἐκὼν Πάππος ἐστὶν ὁ Πατὴρ τῷ Πνεύματος,,. Ἀλλ' ἡ Καθολικὴ  
Ἐκκλησία, ὡς πορρωτάτῳ τῷ ἔτῳ γινώσκων αἰείποτε ἐγένετο  
ὡς ἄρα διὰ τὸ τῷ Υἱῷ εἶναι τὸ Πνεῦμα, καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ αὐτὸ  
ἐκπορεύοιτο. Τὴναντίον γὰρ οἱ Καθολικοὶ πολλάκις Πατέρες τε  
καὶ Διδάσκαλοι, καὶ τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα εἶναι ὁμολογῶντες, ἐκ  
τῷ Υἱῷ ὅμως αὐτὸ ἀπέφησαν προβάλλεσθαι. Οἷον ΘΕΟΔΩΡΗ-  
ΤΟΣ ἀνασκυδάζων τὸν Θ'. τῶν τῷ Κυρίῳ Ἀναθεματισμῶν:  
„Ἴδιον δὲ τὸ Πνεῦμα τῷ Υἱῷ, εἰ μὲν ὡς ὁμοφυῆς, καὶ ἐκ Πατρὸς  
Κ κ 2 „ἐκπο-



„ἐκπορεύόμενον ἔφη, σωομολογήσομεν, καὶ ὡς ἐυσεβῆ δεξόμεθα  
 „τιῷ Φωνῷ· εἰ δ' ὡς ἐξ Υἱῶ, ἢ δι' Υἱῶ τιῷ ὑπαρξιν ἔχον, ὡς  
 „βλάσφημον τῷτο, καὶ ὡς δυσσεβὲς ἀπορρίψομεν,,. Καὶ ΚΥ-  
 ΡΙΑΛΟΣ δ' ἔτι πρὸς τιῷ παρὰ Θεοδωρήτη Ἀνατροπῇ τῷ Θ'.  
 ἐκείνῃ Ἀναθεματισμῷ· ἐπεὶ διτλὸν, ὡς εἶδομεν, τὸν νῦν Θεοδώ-  
 ρητος αὐτῷ καθυπέβαλε, τὸν μὲν πρότερον συγχωρήσας, τὸν δὲ  
 δοῦτερον ἐκσυρίξας, ἐκείνῳ καὶ παρακολαθεῖν ἐνεδέξατο, μὴ ἐκ  
 τῷ Υἱῶ, ἀλλ' ἐκ τῷ Πατρὸς ἐκπορεύεσθαι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἀπο-  
 φηνάμενος: „Ἦν γὰρ, φησὶ, καὶ ἔστιν αὐτῷ τὸ Πνεῦμα, καθά-  
 „περ ἀμέλει καὶ τῷ Πατρὶ· καὶ τῷτο ἡμῖν ἐν μάλα σαφηνεῖ  
 „γεγραφῶς ὁ Θεωπέσιος Παῦλος... Ἐκπορεύεται μὲν γὰρ ὡς  
 „ἐκ τῷ Θεῷ καὶ Πατρὸς τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, κατὰ τιῷ τῷ  
 „Σωτήρι Φωνῷ· ἀλλ' ἐκ ἀλλότριον ἐστὶ τῷ Υἱῶ· πάντα γὰρ ἔχει  
 „μετὰ τῷ Πατρὶ,,. Κἀντεῦθεν ἐν τῷ Ζ'. Βιβλίῳ τῶν περὶ  
 Τριάδος (1) ὁμοίως διδάσκει: τῷ τῷ Πνέματος ὀνόματι διαση-  
 μαίνεσθαι: „Τὸ ἐκ μὲν τῷ Πατρὸς ἐκπορεύόμενον, τῷ δὲ Υἱῶ  
 „ἴδιον ὄν. Ὅτι γὰρ τέτοκε (φησὶ) δηλοῖ τὸ Πατήρ· καὶ ὅτι  
 „γεγέννηται, διεσάφησε τὸν Υἱόν. Καμῶ, ὅτι τὸ Πνεῦμα ἔστιν  
 „ἐκ Θεῷ Πατρὸς, ἴδιον δὲ καὶ αὐτῷ τῷ Υἱῶ, δίκῃ τῷ κατ' ἡμᾶς  
 „καὶ ἀνθρωπίνῃ Πνέματος, εἰ καὶ ἐν Ὑποστάσει νοεῖτο, καὶ ὑπάρ-  
 „χον ἀληθῶς· διαμεμῶνκεν ἢ κλησίς, (ἢ τῷ Πνέματος δηλο-  
 „νότι),,,. Οἷς δὴ παραπλήσια ἔχει καὶ ΣΤΜΕΩΝ ὁ Θεολόγος  
 ἐν τῷ Γ'. Λόγῳ τῷ περὶ Πίστεως καὶ Ἡθῶν τῶν Χριστιανῶν,  
 καὶ τῶν Μοναζόντων· ἐν τοῖς ἀλλαχῶ παρ' ἡμῶν ἀπομνημονού-  
 θῆσι τέτοις: „Ὅτι ὁ Υἱὸς καλεῖται Θεός, νοεῖται Υἱὸς εἶναι  
 „Θεῷ· ὅτι δὲ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον Θεὸς καλεῖται, νοεῖται ὡς  
 „ἐκ τῷ Πατρὸς ἐκπορεύόμενον, καὶ τῷ Υἱῶ Πνεῦμα ἴδιον,,. Καὶ  
 οἱ Ἀνατολικοὶ δὲ Ἐπίσκοποι, ἐν τῇ πρὸς Ἰωάννῳ τὸν Ἀντιο-  
 χέας Ἐπιστολῇ: (2) „Τὰ νῦν ἀπεσαλμένα (Γράμματα) τῇ  
 „Εὐαγγελικῇ εὐγενείᾳ καλλιώνεται. Θεὸς γὰρ τέλειος, καὶ ἄν-  
 „θρωπος τέλειος, ὁ Κύριος ἡμῶν Ἰησοῦς Χριστὸς ἀναδείκνυται...  
 „Καὶ τὸ Πνεῦμα δὲ τὸ Ἅγιον, ἐκ ἐξ Υἱῶ, ἢ δι' Υἱῶ τιῷ ὑπαρ-  
 „ξιν ἔχον, ἀλλ' ἐκ τῷ Πατρὸς ἐκπορεύόμενον, ἴδιον δὲ Υἱῶ, ὡς  
 „ὁμοούσιον· ταύτῳ τιῷ ὁρθότητα ἐν τοῖς Γράμμασι θεασάμε-  
 „νοι, ὑμνήσαμεν τὸν τὰς ψευδίστας γλώσσας ἱατρύσαντα, καὶ  
 „τὸν ἀπηγῇ φθόγγον εἰς ἡδέαν ἀρμονίαν μεταρρύθμιζοντα,,.  
 Ὁ δὲ

(1) Ἐστὶ δ' ἔτος ὁ Ζ'. τῶν πρὸς Ἑρμεῖαν Διαλόγων, ἐν τῷ Ε'. Τόμ: τῶν τῷ Κυρίῳ Συγγραμ: Μέρει Α'. Σελ: 640.

(2) Ἐκδέδοται δὲ αὕτη, σὺν ταῖς Θεοδωρήτης Ἐπιστολαῖς ΡΕΓ'. ἀριθμεμένη, ἐν τῷ Δ'. Τόμῳ τῆς τῶν Θεοδωρήτης Σωζομ: Συγγραμ: Ἑλληνικῆς Ἐκδόσεως τῆς ἐν Χάλῃ, Ἐτεῖ αψεβ'. Σελ: 660.

Ο δὲ ΣΥΓΓΡΑΦΕΥΣ τῷ περὶ Τριάδος Βιβλίῳ, τῷ Κυρίλλῳ τῷ Ἀλεξανδρεῖ ἐπιγραφόμενος, ἐν τῷ Γ'. Κεφ: „Εκ τῷ Υἱῷ δὲ τὸ Πνεῦμα „ὃ λέγομεν, Πνεῦμα δὲ Υἱῷ ὀνομάζομεν. Εἴτις γὰρ Πνεῦμα Χριστῷ „ὃ ἔχει, φησὶν ὁ Θεὸς Ἀπόστολος,,. Καὶ ἸΩΑΝΝΗΣ δὲ ὁ ἐκ Δαμασκῷ, καὶ τὰδε μὲν τὰ τῷ ῥηθέντος Συγγραφέως τῷ περὶ Τριάδος Βιβλ: ἐπαναλαμβάνει, ἐν τῷ Α'. Βιβλ: τῶν περὶ Ὁρθοδόξῃ Πίστεως, Κεφ: ΙΑ'. (3) Ἀλλὰ καὶ τῇ Ἐπιστολῇ τῇ περὶ τῷ Τρισαγίῳ, περὶ τὸ τέλος: (4) „Ἡμῖν, φάσκων, εἰς ἑστὶ Θεὸς „ὁ Πατὴρ, καὶ ὁ Λόγος αὐτῷ, καὶ τὸ Πνεῦμα αὐτῷ. Λόγος δὲ, „ἐνυπόστατον γέννημα, διὸ Υἱός· καὶ τὸ Πνεῦμα ἐνυπόστατον „Ἐκπόρευμα, καὶ Πρόβλημα· ἐκ Πατρὸς μὲν, Υἱῷ δὲ καὶ μὴ „ἐξ Υἱῷ ὡς Πνεῦμα σώματος Θεῷ Λόγῳ ἐξαγγελτικόν,,. Καὶ ἐν τῷ Λόγῳ δὲ τῷ εἰς τὸ Ἅγιον Σάββατον: (5) „Ἐστὶ δὲ ἡμῖν „λατρουόμενον καὶ Πνεῦμα Ἅγιον τὸ ἐκ τῷ Θεῷ καὶ Πατρὸς, „ὡς ἐξ αὐτῷ ἐκπορευόμενον· ὅπερ καὶ τῷ Υἱῷ λέγεται, ὡς δι' „αὐτῷ φανερόμενον, καὶ τῇ κτίσει μεταδιδόμενον, ἀλλ' ὅτι ἐξ „αὐτῷ ἔχον τιῷ ὑπαρξίν,,. Τρανώτατα δὲ τελευταῖον καὶ ΑΥΤΟΥΣΤΙΝΟΣ δείκνυσιν, ἕτερον μὲν εἶναι τὸ ἐκ τῷ Πατρὸς ἐκπορεύεσθαι, ἕτερον δὲ τὸ εἶναι τινὸς Πνεῦμα, τὸ Πνεῦμα. Οὕτω γὰρ ἐν τῷ Ἐυχαριδίῳ τῷ πρὸς Λαυρέντιον, Κεφ: Θ'. „Ἀπό- „χρη τῷ Χριστιανῷ Πιστεύειν εἰς Πατέρα, καὶ εἰς Υἱὸν τὸν ἐκ „τῷ Πατρὸς γεννηθέντα, καὶ εἰς Πνεῦμα Ἅγιον, τὸ ἐξ αὐτῷ „μὲν τῷ Πατρὸς ἐκπορευόμενον, ἐν δὲ καὶ τὸ αὐτὸ Πνεῦμα πε- „φυκὸς τῷ Πατρὸς καὶ τῷ Υἱῷ,,. Διασέλλων γὰρ ἀπ' ἀλλήλων τὰ δύο ταῦτα, τῷ λέγειν, ἐκ μὲν τῷ Πατρὸς ἐκπορεύεσθαι τὸ Πνεῦμα, ἀμφοτέρων δὲ ἴδιον εἶναι, μὴ τὸ αὐτὸ πάντως εἶναι ὁμολογῶν ἐξὶν ἐννοῶν, τό, τε εἶναι ἕκτινος, καὶ τὸ ἴδιον τινὸς εἶναι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. Ὅτι δ' ἐνταῦθα ἕτος ὁ τῷ Αὐγυστίνῳ ἐστὶ νῆς, τὸ ἐκ μόνῃ τῷ Πατρὸς ἐκπορεύεσθαι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ἐν τῇ Πραγματείᾳ τῇ περὶ τῶν Μαρτυριῶν τῶν Δυτικῶν Πατέρων, ἡδὴ δέδεικται.

## Ἀ Π Α Ν Τ Η Σ Ι Σ Β'.

Μαρτυρεῖ δὲ ἡ Θεία Γραφή, ὅτι ὁ Θεὸς Πνεῦμα ἐστίν. Ἐστὶν ἄρα Πνεῦμα ὁ Πατὴρ· ἐστὶ δὲ καὶ ὁ Υἱός. Ἐπιμαρτυρεῖ δὲ πάλιν ἡ Θεία Γραφή, ὅτι ὁ Θεὸς Ἅγιος ἐστίν. Ἅγιος ἄρα ὁ Θεὸς καὶ Πατὴρ· ἐστὶ δὲ καὶ ὁ Υἱός. Τὸ ἄρα τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος ὄνομα

(3) Ἐν τῇ Λευκίῃ Ἐκδόσει, ἀριθμεῖται Κεφαλ: Η'. ἐν τῷ Α'. Τόμ: Σελ: 141. 142.

(4) Ἐπὶ τῇ προσημειωθείσῃ Ἐκδόσει, Τόμ: Α'. Σελ: 497.

(5) Ἐπὶ Ἐκδόσ: τῇ αὐτῇ, Τόμ: Β'. Σελ: 817.

Τόμ: Β'.

Λ λ

ὄνομα κοινὸν ἐστὶ τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ. Τὸ ὄνομα δὲ τῷ τοῦ κοινὸν τῇ Τριάδι, ὡς ἴδιον ἑαυτῷ οἰκείσται τὸ τρίτον τῆς Θεότητος Πρόσωπον· καθ' ὃν δὴ σημασίαν ὁρθῶς ἀποφάσκω τὸν Πατέρα καὶ τὸν Υἱὸν εἶναι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. Ἀμέλει τοι τὸν τῆς Προβολῆς λόγον, καθ' ὃν τὸ τρίτον τῆς Τριάδος πρόεισιν ἡμῶν ἀγνοούντων, (ὃ γὰρ ἡμῖν ταύτῃ ἀπεκάλυψεν ὁ ἐπὶ πάντων Θεός· ὃ δ' ὡς ἀποκαλύψει ἴσως κατανοῆσαι οἴοιτ' ἂν εἴημεν) ἐκ τῆς Πατρὸς μόνον λέγεται αὐτὸ ἐκπορεύεσθαι, εἴτ' ἔν προβάλλεσθαι· ἀνθ' ὅτε γε καὶ τῷ κοινῷ κατωνομάθη ὀνόματι, Πνεῦμα Ἅγιον. Ὁ δὲ Υἱὸς ἴδιον ἔλαχεν ὄνομα Υἱὸς καλεῖσθαι, διὰ τὸν ἀποκαλυφθέντα λόγον τῆς ἐκ τῆς Πατρὸς προόδου αὐτοῦ, τετέστι τῆς προαιωνίου τε, καὶ ἀνερμινώδους αὐτοῦ γεννήσεως. Ἐνθεν τοι ἈΘΑΝΑΣΙΟΣ ἐν τῷ Α'. Διαλόγῳ τῶν περὶ Τριάδος, Τόμ: Β'. Σελ: 171. „Ὁ γὰρ Πατὴρ ἐκ ἐστὶ Πνεῦμα Ἅγιον; Καὶ ὁ „Πατὴρ Πνεῦμα Ἅγιον ἐστίν, ἀλλ' ὃ Πνεῦμα Θεῶν. Καὶ ἈΜΒΡΟΣΙΟΣ δὲ ἐν τῷ Συμβόλῳ, Κεφαλ: Α'. ἐν Τόμ: Δ'. τῶν Συγγραμ: Στήλῃ 88. „Εἰ γὰρ Πνεῦμα καὶ ὁ Πατὴρ, Πνεῦμα „δὲ καὶ ὁ Υἱός· καὶ Ἅγιος. μὲν ὁ Πατὴρ, Ἅγιος δὲ καὶ ὁ Υἱός· „μόνον ἀλλ' ἔν τὸ Πρόσωπον τὸ τρίτον ἰδίως Πνεῦμα Ἅγιον κα- „τωνόμασαι. Διότι δὲ ἄρα σιωπῶντες ἐστὶ, καὶ ἀμφοτέροις κοι- „νόν, διὰ δὴ τῷ καὶ καλεῖται τῷ ὅπερ ἀμφὶ εἰσί. Καὶ ΑΥΓΟΥΣΤΙΝΟΣ Βιβλ: Ε'. τῶν περὶ Τριάδος, Κεφαλ: ΙΑ'. „Τὸ δὲ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, καθὸ γέγραπται ὅτι ὁ Θεὸς Πνεῦμα „ἐστὶ, διώκεται κοινῶς λέγεσθαι· καὶ γὰρ καὶ ὁ Πατὴρ Πνεῦμα, „καὶ ὁ Υἱὸς Πνεῦμα· καὶ ὁ Πατὴρ Ἅγιος, καὶ ὁ Υἱὸς Ἅγιος. „Καὶ τοίνυν ὁ Πατὴρ καὶ ὁ Υἱὸς καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ὡς „Θεὸς εἷς, καὶ Θεὸς πάντως Ἅγιος ἐστὶ καὶ Θεὸς Πνεῦμα ἐστὶ „καὶ ἡ Τριάς ὅλη καλεῖσθαι ἔχει καὶ Πνεῦμα Ἅγιον. — Ἐπειτα „δ' ἐξῆς: Πνεῦμα Ἅγιον ἀφραστός τις τῆς Πατρὸς καὶ τῆς Υἱοῦ „κοινωνία· καὶ διὰ τῷ τυχὸν ἔτω καὶ καλεῖται, ὅτι καὶ τῷ „Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ ἢ αὐτῇ κλήσις προσήκειν διώκεται. Αὐτὸ „γὰρ τῷ ἰδίως ἐκείνο λέγεται, ὅπερ αὐτοὶ κοινῶς. Ὅτι καὶ „ὁ Πατὴρ Πνεῦμα, καὶ ὁ Υἱὸς Πνεῦμα· καὶ ὁ Πατὴρ Ἅγιος, „καὶ ὁ Υἱὸς Ἅγιος. Ἰνα ἄρα ἐκ τῆς ὀνόματος τῆς ἀμφοτέροις „προσήκοντος, ἢ ἐν ἀμφοτέροις κοινωνία διασημαίνοιτο, δῶρον „ἀμφοτέρων ὠνομάθη τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. Τέτοις παρα- „πλήσια ἔχει, καὶ τῷ ΙΕ'. Βιβλ: τῶν περὶ Τριάδος, Κεφ: ΙΘ'. Καὶ ἐν τῇ ροδ'. Ἐπισολῇ περὶ τὸ τέλος. Καὶ ΚΥΡΙΛΛΟΣ δὲ ὁ Ἀλεξανδρείας, ἐν τῷ Ζ'. Διαλόγῳ περὶ Τριάδος, ἐν Ε'. Τόμ: τῶν Συγγραμ: Μέρεα Α'. Σελ: 637. „Διὰ τὸ τῆς ἐσίας ταυτὸν „ἐφήρμοσαι μὲν τῷ Θεῷ καὶ Πατρί. Καί τοι τρίτη, κατὰ μόνον „τῶν ὀνομάτων τῷ σωτάξιν, ἐκφερομένη πρὸς ἡμῶν ἢ τῆς Πνεύ- „ματος

„ματός κλήσις. Ἐφήρμους δὲ τῷ Υἱῷ. Ἐφη γὰρ ὁ Χριστός, „τὸ ἐκ Σαμαρείας γινώσκον ἐν μάλα παιδαγωγῶν: Πνεῦμα ὁ Θεός, „καὶ τὰς προσκυῶντας ἐν Πνύματι κτ: Γράφει δὲ καὶ ὁ Παῦ- „λος . . . ὁ δὲ Κύριος τὸ Πνεῦμα ἐστίν. Καὶ ἈΝΑΣΤΑΣΙΟΣ δὲ ὁ Συναίτης, Βιβλ: Α'. περὶ τῶν Δογμάτων τῆς Πίσεως, ἐν Τόμ: 5'. τῆς τῶν Πατέρων Βιβλιοθ: τῆς ἐν Κολωνίᾳ, Σελίδι 696. „Πνεῦμα λέγεται ὁ Θεός, καὶ Ἅγιος λέγεται ὁ Θεός· ἀμφω δὲ „τὰ ὀνόματα προσεφαρμόζεται τῷ ἰδίως λεγομένῳ Ἁγίῳ Πνύ- „ματι. — Πατήρ, ὁ Θεός ὢν καὶ Πατήρ, τοῖς τῷ Πνύματος „καλεῖται ὀνόμασι καὶ Ἅγιος, δηλονότι, καὶ Πνεῦμα· καί τοις ἑ „καλεῖται τὸ ὄλον, Πνεῦμα Ἅγιον. Καὶ ἸΣΙΔΩΡΟΣ δὲ ὁ Ἰσπαλεὺς τελοῦταῖον, ἐν Βιβλ: Ζ'. τῶν Ἀρχῶν, Κεφαλαίῳ Γ'. „Εἰ καὶ ὁ Πατήρ Πνεῦμα ἐστίν καὶ ὁ Υἱὸς Πνεῦμα καὶ ὁ Υἱὸς „Ἅγιος, καὶ ὁ Πατήρ Ἅγιος· ἰδίως ἀλλ' ἐν αὐτῷ καλεῖται τὸ „Ἅγιον Πνεῦμα, ὡς Ἀγιότης συμφυῆς τε καὶ ὁμοῦσιος ἀμφοτέρων. „Τὸ ἄρα Πνεῦμα εἶναι, καὶ τὸ εἶναι Ἅγιον, κοινὸν Πατρὶ καὶ Υἱῷ ὄνομα πέλον ἐστίν, καὶ τῷτο ὡς ἑαυτῷ ἰδίον οἰκείσθαι τὸ Πνεῦ- „μα τὸ Ἅγιον. Ἐξ ἧς δῆλον γίνεται, ὡς ἡνίκα τὸ Ἅγιον Πνεῦ- „μα τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ Πνεῦμα λέγεται, ἕκην (ὁ Λατῖνοι διετέλουν προτείνοντες) διὰ τῆς τῷ Πνύματος φωνῆς, ἢ τῷ Πα- „τρὶ καὶ τῷ Υἱῷ πνεύσις παρίσταται. Ἐν ᾧ γὰρ τὸν Πατέρα Πνεῦμα λέγομεν, παντί περ δῆλον, ὡς ἡνίκα πνεῖσθαι αὐτὸν καὶ „προβάλλεσθαι, διὰ τῆς φωνῆς τῷ Πνύματος ὑποδηλῶμεν· ἀλλὰ „τὸ κοινὸν τότε τῷ „Πνύματος, ὄνομα τὸ τῇ Τριάδι ὅλη προ- „σηκόν· καὶ ὡς δῆπερ ἔννοϊαν κατὰ τῷ Πατρὶ, κατὰ τῷ αὐτῷ πάντως, καὶ κατὰ τῷ Πνύματος λέγεται.

Ἐρεῖς μετὰ ἈΛΒΕΡΤΟΥ τῷ Μεγάλῳ, ἐν τῇ Ἐπιτομῇ τῆς Θεολογικῆς Ἀληθείας, Βιβλ: Α'. Κεφαλ: Θ'. ὅτι τὸ Πνεῦμα λαμβάνεται, ἢ τοι „ἐνεργητικῶς, καὶ τὸ „πνεῖ, κατ' ἐκείνο τὸ τῷ Ἰωάννῃ: „Τὸ Πνεῦμα ὅπερ θέλει πνεῖ, ἢ παθητικῶς, καθὸ „πνεῖται, τῷ τῷ: κατὰ τρόπον πνύσεως ἐκπορεύεται. Κατὰ μὲν ἐν τῷ προτέρῳ τῶν ἐννοιῶν, ἢ τῷ Πνύματος φωνῇ, καὶ τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ κοινῇ ἔσα ἐστίν· κατὰ δὲ τῷ δευτέρῳ, μόνῳ τῷ Ἁγίῳ Πνύματι ἐστὶν ἰδιάζουσα.

Ἀλλ' ἐπινόημα τόδε Ἀλβέρτου τῷ Μεγάλῳ ἐστίν, τὸ τοιῷδε τινὶ λόγῳ, ἢ τοι „ἐνεργητικῶς, ἢ παθητικῶς, λέγεσθαι. Πάν- „τως γὰρ οἱ εἰρημένοι Πατέρες τῷ τοιαύτῳ διαβολῇ ἀγνοῶντες, καὶ ἓνα δὴ καὶ τὸν αὐτὸν λόγον, καὶ ὃν ἢ τῷ Πνύματος κλή- „σις τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ κοινῇ ἄραρε, καὶ τῷ Ἁγίῳ προσα- „ρῆναι Πνύματι αὐτῷ ἐφασκόν· διὸ ἑδὲ λόγῳ τινὶ, τῷ δευτέρῳ ταύτῳ ἐκδοχῇ τῆς τῷ Πνύματος κλήσεως κασκυβάσας, ἢ καλ- „σκυβάσαι οἷος τε ὢν ὁ Μέγας Ἀλβέρτος, παχυλῶς ἔτως ἡτέϊτο

τὸ ἐν ἀρχῇ. Ἐπειτα δὲ καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, κατὰ τρόπον πνύσεως ἐκπορεύεσθαι, πόθεν ἂν δῆλον εἴη, ἀπαξαπάσης ἀπλῶς τῆς τῶν Πατέρων χορείας, τὸν τῆς Ἐκπορεύσεως τῷ Ἀγ: Πνύματος τρόπον λαμβάνειν ἀγνοούμενον διδασκίσης τε καὶ ὁμολογίσης; Λέγεται μὲν γὰρ Ἰωάννης Κεφαλ: Γ'. „Ὅτι τὸ Πνεῦμα „ὅπερ θέλει πνεῖ,,. Ἀλλὰ τότε περὶ τῆς χρονικῆς ἐξὶ νοητέον πνύσεως εἰρημένον, καθ' ὃ τὸ Πνεῦμα τὰ ἑαυτῷ διανέμει χαρίσματα τοῖς πιστεύουσι. — Τίς δ' ἔν παρὰ τῷτο φαίη, κοινὸν Πατρὶ καὶ Υἱῷ γενέσθαι ἀπ' αἰῶνος τὸ τῷ Πνύματος ὄνομα; Εἰδ' ἀπ' αἰῶνος, „παρὰ τὸ πνεῖν,, τὸ κοινὸν τῇ Τριάδι ὄνομα ἰδιοποιεῖται καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ποῖποτε ἄρα πνέον αὐτὸ ἀπὸ τῷ αἰῶνος ἐτύγχανεν, ἢ ἐντεῦθεν καὶ τὸ ὄνομα τῷ Πνύματος εἶχε τὸ κατ' ἐνέργειαν; (6)

### Ἀ Π Α Ν Τ Η Σ Ι Σ Γ'.

Λέγεται ὅτι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον: „Πνεῦμα τῷ Πατρός,, ὅτι Πνεῦμα ἐστὶν ἴδιον αὐτῷ, ὁμοῦσιον αὐτῷ, καὶ ἐκπορεύομενον ἐξ αὐτοῦ. Οὐκ ἐπάναγκες δὲ, εἰμὴ παραπλησίως καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ ἐκπορεύοιτο, ἢ ὁμωνύμως λέγεται Πνεῦμα τῷ Πατρός καὶ τῷ Υἱῷ καὶ μηδ' ἐν αὐτῷ ἢ ἐκ τῷ ἀκολέσθαι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. Ὁ γὰρ

(6) Τὸ Πνεῦμα „ἐνεργητικῶς,, νοούμενον, νοεῖται πάντως ἢ πνέον· τῷτο κατ' ἐνέργειαν τὴν τῷ πνεῖν ἥτοι τὴν πνεῦσιν ἢ δὲ τοὶ πνεῦσις, ἥτοι κατὰ τὴν ἐν χρόνῳ γινόμενῃ τῶν χαρισμάτων μετάδοσιν νοηθήσεται, ἢ κατὰ τὴν ἀπ' αἰῶνος τῆς τῷ Πνύματος ὑποστάσεως πύεσιν, ἢ τέως, πῇ μὲν κατ' ἐκείνῳ, πῇ δὲ κατὰ ταῦτῳ. Ἀλλ' εἰ μὲν τὸ Α'. εἰδὲν ἐκ τῆς ἐνεργητικῆς τῷ Πνύματος σημασίας τῷ Μεγάλῳ Ἀλξέρτῳ προσγενήσεται ὁφέλος, εἰς κατασκευὴν τῆς ἐξ ἀμφοῖν τῷ Πνύματος ἐκπορεύσεως. Εἰ δὲ τὸ Β'. ἐπεὶ τὸ Πνεῦμα πνεῖ ὅπερ θέλει, ὡς εἰρηλατ' πρῶτον μὲν ἢ τῷ Πνύματος ἐκπόρευσις ἐκ ἐσιώδης, ἐξ ἀνάγκης φύσεως, ἄλλως εἶναι μηδαμῶς ἔχουσα, ἐλδύτερα δὲ, εἶναι τε καὶ μὴ διωαμένη, ὡς κατὰ βέλησιν, οἷα ἢ ἐκ δημιουργίας τῶν ὄντων παραγωγή· ἐπειτα ἄλλως καὶ τὸ Πνεῦμα ἄρα αὐτὸ ἑαυτὸ προβάλλει ὅπερ ἐστὶν ἐξ ἑαυτοῦ ἐκπορεύεται· ἢ καὶ Πνεῦμα ἕτερον προῖσιν· ὅπερ βλάσφημον. Εἰ δὲ δὴ τὸ Γ'. τίς ἢ ἀποκλήρωσις, τῷ ἐπὶ μὲν Πατρός καὶ Υἱῷ, τὴν ἐνεργητικὴν πνεῦσιν, σημαίνειν τὴν εἰς ὑπαρξίν τῷ Πνύματος προβολὴν τῷ Ἁγίῳ, ἐπὶ δὲ αὐτῷ τέτε τὴν τῶν χαρισμάτων μετάδοσιν; ἐπότε μάλιστα ἐπίσης τῷ Πνύματι, καὶ τὸν Πατέρα καὶ τὸν Υἱὸν τὰ πνύματικά χαρίσματα διανέμειν ἱεραὶ τε Γραφαί, καὶ λέγοι Πατέρων ἡμᾶς ἐκπαιδύουσι; Πρὸς δ' ἐπὶ τέτοις, Πατὴρ μὲν καὶ Υἱός, Πνεῦμα ἀπ' αἰῶνος ὑπάρχον, ὡς ἀπ' αἰῶνος τὸ Πνεῦμα πνέοντες· τὸ δὲ Πνεῦμα ἐκ ἀπ' αἰῶνος τίνα γὰρ ἂν καὶ πνύσειεν; Εἰδ' Ἀλξέρτος ὁ Μεγάλος φαίη, ὡς οἱ μὲν, Πνεῦμα ἀπ' αἰῶνος, καθ' ὃ τὸ Πνεῦμα σημασίαν νοεῖται „ἐνεργητικῶς,, τὸ δὲ, καθ' ὃ τὸ „παθητικῶς,, τῷτο: οἱ μὲν, ὡς τῷτο πνέοντες· τὸ δὲ, ὡς ἐξ αὐτῶν πνεόμενον. Ἄρα ἢ τῷ Πνύματος κοινὴ κλήσις ἐπὶ τῆς Θεότητος λέγεται ὁμωνύμως· καὶ εἰδὲ κατὰ τὴν αὐτὴν ἐννοίαν ἐκληπτέον τὸ γεγραμμένον, ὅτι „Πνεῦμα ὁ Θεός,, ὡς μὲν γὰρ „παθητικῶς,, ὅτι πνεῖται· ὡς δὲ „ἐνεργητικῶς,, ὅτι πνεῖ. Καὶ τῷ „ἐνεργητικῶς,, προσέτι, τὸ μὲν ἀπ' αἰῶνος, ὡς ἐπὶ Πατρός καὶ Υἱῷ· τὸ δὲ ἐν χρόνῳ, ὡς ἐπ' αὐτῶν τε δὴ, καὶ ἐπ' αὐτῷ τῷ Πνύματος, εἰδὲν ἡμῖς.



Ὁ γὰρ Υἱὸς πάντως ἐστὶν ἐν τῷ Πατρὶ· ἐστὶ δὲ καὶ ἐν τῷ Ἀγίῳ Πνεύματι. Ἔστι δὲ καὶ ἴδιος αὐτὸς τῷ Πατρὶ, καὶ τῷ Ἀγίῳ Πνεύματι (7) ὅτι καὶ ἀμφοῖν ὁμοῦσιος. Μήτοι γε δὲ παρὰ τῆτο, ἐπειδὴ ὁ Υἱὸς ἐν τῷ Πατρὶ, καὶ ὁμοῦσιος αὐτῷ, καὶ ἴδιος αὐτῷ διὰ τὸ ἐξ αὐτοῦ γεννηῖσθαι, ἔποιτ' ἂν αὐτὸν γεννηῖσθαι ὡσαύτως καὶ ἐκ τῷ Πνεύματος; ἢ ὁμωνύμως λέγεσθαι αὐτὸν ἐν τῷ Πατρὶ εἶναι, καὶ ἐν τῷ Ἀγίῳ Πνεύματι, τὸν ἀμφοῖν ὁμοῦσιόν τε ὄντα καὶ ἴδιον; Ἔτι δὲ δὴ καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, τῷ Πατρὶ Πνεῦμα ἐστὶν, ὡς Ἀρχῆς Ἀνάρχ· μήτοι γε δὲ παρὰ τῆτο ἐστὶ τὸ Πνεῦμα, καὶ Πνεῦμα τῷ Υἱῷ ὡς Ἀρχῆς ὡσαύτως Ἀνάρχ; (8) Ἡ ἐπὶ τῆτο ἀδωάτον, ὁμωνύμως διὰ τῆτο εἰρήσεται τὸ Πνεῦμα, Πνεῦμα τῷ Πατρὶ εἶναι καὶ τῷ Υἱῷ; Ἀλλ' αὐτόθεν δῆλον, ὅτι ὁ νῦν τῆς Προτάσεως: („Τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ἑτέρω τινὸς Πνεῦμα ἐστὶν,“) διακριτέος ἐστὶν ἀπὸ τῆς ἀμέσως αἰτίας, δι' ἣν ὁ νῦν αὐτὸς ὁ τῆς Προτάσεως κρατῇ. (9) Κατὰ γὰρ τὸν αὐτὸν πάντως νῦν, λέγεται τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον Πνεῦμα εἶναι τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ· τῆτες, καθ' ὅτι ἀμφοτέροις ὁμοῦσιον ἐστὶ, καὶ Πνεῦμα ἴδιον ἀμφοτέρων. Καθάπερ ἔν καὶ ἄλλα πλεῖστα, ἃ πρὸς ἄλληλα ἀναφέρεται, καὶ δι' ἄλλο, εἰ μὴ ὅτι διὰ τὸ ζενώ-  
τατον τῆς Σωενώσεως ἀμοιβαδὸν ἀναφερόμενα ἐστὶν· ὃν δῆπερ τρόπον ἢ ψυχὴ τῷ σώματος εἶναι λέγεται. Ἀλλ' ἐνθα λέγεται τὸ Ἅγιον Πνεῦμα τῷ Πατρὶ εἶναι, διὰ τὸ ἐκ τῷ Πατρὶ ἐκπο-  
ρεῖσθαι, τότε δὴ ἢ ἀμέσως αἰτία δηλῆται, δι' ἣν ὁ νῦν ὁ τῆς Προτάσεως („τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, Πνεῦμα ἐστὶ Πατρός τε καὶ Υἱῷ,“) κρατῇ· ἐκ ἅρα δὲ αὐτίκα τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ὁμωνύμως  
ρηθῇ-

(7) Οὐχ ὡς Υἱὸς ἀμφοτέρων, ἀλλ' ὡς ἐκ ἀλλότριος ἀμφοῖν, δηλονότι, τῇ δὲ φύσει εἶς.

(8) Ὡς εἰδ' αὐτοὶ Λατῖνοι εἰπὲν ἐτόλμησαν.

(9) Τὸ Πνεῦμα αἰτίαν ἔχει μόνῳ καὶ ἄμεσον τὸν Πατέρα, ἐξ ὃ ἐκπορεύεται· ὁμοίως δὲ καὶ ὁ Υἱὸς τὸν αὐτὸν, ἐξ ὃ γεννᾶται. Μίᾳς ἔν καὶ τῆς αὐτῆς αὐτοῖς ἕως αἰτίας, τῆτες τῷ Πατρὶ, καὶ οἱ τῶν προόδων διαφέρωσι τρόποι, τὰ ἐκ τῆς αἰτίας οἰκειᾶται φύσει πρὸς ἄλληλα, ὡς ἐκ τῆς αὐτῆς ἕως αἰτίας προϊόντα· καὶ ἐστὶν αὐτὰ, ὅσα τῷ Πατρὶ ὁμοῦσια, ἔτω καὶ ἀλλήλοις τῇ ἕσῃ τὰ αὐτά. Ὁμοῦσια δὲ πεφυκότα, καὶ θάτερον ἐν θάτερω, καὶ θάτερον θάτερον ἐστὶ· καθάπερ ἔν καὶ ἀμφοτέρω ἐν τῷ πρώτῳ, καὶ τῷ πρώτῳ ἴδια· καὶ τὸ πρῶτον δὲ ἐν ἀμφοτέροις, καὶ ἴδιον ἀμφοτέρων. Οὕτω τοίνυν ἢ ἀμέσως καὶ πρώτη αἰτία, πρὸς γνῶσιν τῆς ὁμοσιότητος τῶν ἐξ αὐτῆς, καὶ τῷ θάτερον τῶν θάτερον ἴδιον εἶναι, καὶ τῷ αὐτῆς ἄμφω, καὶ ἀμφοῖν αὐτῷ, χειραγωγῇ. Ὅτε ἔν λέγεται, ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἑτέρω Πνεῦμα ἐστὶ· τῆτες, τῷ Πατρὶ ἴδιον, ἢ τῷ Υἱῷ καὶ ὅτι ὁ Υἱὸς ἴδιος τῷ Πατρὶ, καὶ ἴδιος τῷ Πνεύματι· καὶ ὅτι ὁ Πατὴρ ἴδιος τῷ Υἱῷ καὶ τῷ Πνεύματι· εἰδὲν ἐπάναγκες ἐπὶ τῷ πρώτῳ αἰτίαν αἰεὶ ἀνατρέχειν τῷ ἄμεσον, καθ' ἣν ὁ Πατὴρ γεννᾷ μὲν τὸν Υἱόν, πρεβάλλει δὲ καὶ τὸ Πνεῦμα. Ἀπό-  
χρη δὲ τῷ ἐξ ἐκείνης σωμαγομένῳ ὁμοσιότητι ἐννοῶντας· ἥτοι τῷ κατὰ μίαν τε καὶ τῷ αὐτῷ ἕσῃαν τε καὶ φύσιν ἀναλογιζομένους συμφύαν τε καὶ οἰκειότητα, δι' αὐτῆς τε καὶ κατ' αὐτῷ δογματίζεν, τῷ ἐπ' ἀκριβὲς κοινωνίαν τῶν ὑπερθέων ὑποστάσεων, καὶ τὸ τῷ ἑτέρω τῶν τῆς ἑτέρας ἴδιον εἶναι, καὶ ἐκ ἀλλοτρίαν· μηδεμιᾶς ὅλως ὁμωνυμίας χώραν ἐχέσης, διὰ τὸ ταυτὲν καὶ ἐνῆϊον τῆς φύσεως.

Τόμ: Β'.

Μ μ

ρηθήσεται, Πνεῦμα εἶναι Πατρός καὶ Υἱῶ, καὶ μὴ καὶ ἐκ τῶ  
 Υἱῶ αὐτὸ ἐκπορεύοιτο. Ἐκ γὰρ τῶ τὸ μὲν Πνεῦμα αὐτὸ ἐκ τῶ  
 Πατρὸς ἐκπορεύεσθαι, τὸν δὲ Υἱὸν ἐκ τῶ Πατρὸς γεννᾶσθαι, πα-  
 ραπλησίως αὐτῶ τῶ Υἱῶ πέφυκεν εἶναι τὸ Πνεῦμα· τατέξιν,  
 ἰδίον τε καὶ ὁμοῦσιον ἐστὶν αὐτῶ· ὅπερ ἐστὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, εἶναι  
 Πνεῦμα αὐτῶ. Ἐντεῦθεν γὰρ ὡσαύτως καθ' ἓνα τε καὶ τὸν αὐτὸν  
 νῦν τε καὶ λόγον, ὁ Υἱὸς ἐστὶν ἐν τῶ Πατρὶ, ἐστὶ δὲ καὶ τῶ  
 Ἁγίῳ Πνεύματι· ἀλλ' ὅχι ὁμοίως καὶ ἐκ τῶ Ἁγίῳ Πνεύματος ὁ  
 Υἱὸς γεννᾶται, καθάπερ ἐκ τῶ Πατρὸς. Ἀλλ' ὅν περ τρόπον ἐκ  
 τῆς αὐτῆς παρὰ τῶ Πατρὸς γεννήσεως ὁ Υἱὸς ἔχει τὸ ἐν τῶ  
 Πατρὶ εἶναι, ὅτως ἐκ τῆς αὐτῆς γεννήσεως μόνης ἔχει καὶ τὸ  
 εἶναι ἐν τῶ Ἁγίῳ Πνεύματι. Τῷτο γὰρ ἤδη τιῶ αἰτίαν τιῶ  
 ἄμεσον ἀφορᾷ. Μία ἄρα ἡ ἄμεσος ἐστὶν αἰτία, δι' ἣν τὸ Πνεῦμα  
 τὸ Ἅγιον, Πνεῦμα ἐστὶ τῶ Πατρὸς καὶ τῶ Υἱῶ· ἢ Ἐκπορεύοις  
 αὐτῶ, δηλονότι, ἢ ἐκ τῶ Πατρὸς. Ὁμωνύμως δὲ μὴ λέγεσθαι  
 τῶ Πατρὸς καὶ τῶ Υἱῶ Πνεῦμα, τὸ Πνεῦμα, καὶ μὴ καὶ ἐκ  
 τῶ Υἱῶ αὐτὸ ἐκπορεύοιτο, τὰ ἐπενεχθέντα ὑποδείγματα κατὰ-  
 δηλον ἴσησιν. Ἀπόχρη γὰρ, εἰ καθ' ἓνα καὶ τὸν αὐτὸν νῦν  
 λέγοιτο Πνεῦμα Πατρὸς, καὶ Πνεῦμα Υἱῶ· ἀμφοῖν τε Πνεῦμα  
 ἰδίον εἶναι καὶ ὁμοῦσιον, ἅτε δὴ ἐκ τῶ Πατρὸς ἐκπορεύομενον.

#### Ἀ Π Ἀ Ν Τ Η Σ Ι Σ Δ'.

Διά τοι τῷτο, ὅδ' οἱ Πατέρες ἄλλως ἐπέγνων τὸ Πνεῦμα τῶ  
 Πατρὸς καὶ τῶ Υἱῶ εἶναι, εἰ μὴ καθὼ αὐτοῖς ἰδίον τε καὶ τῆς  
 αὐτῆς ἐστὶν ὁσίας, ὡς ἐκ τῶ Πατρὸς, δηλονότι, ἐκπορεύομενον.  
 ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ μὲν ἦν ὁ Ναζιανζίνος, Λόγῳ ΛΖ'. περὶ τῶ Ἁγίῳ  
 Πνεύματος, Σελ: 610. „Ἐγὼ μὲν φρίττω τὸν πλεῖστον ἐννοῶν  
 „τῶν κλήσεων, καὶ καθ' ὅσων ὀνομάτων ἀναιχλωτῶσιν οἱ τῶ  
 „Πνεύματι ἀντιπίπτοντες. Πνεῦμα Θεῶ λέγεται, Πνεῦμα Χρι-  
 „στῶ, Νῆς Χριστῶ, Πνεῦμα Κυρίῳ, Αὐτοκύριος, Πνεῦμα Υἱοθεσίας,  
 „ἀληθείας. — Δάκτυλος Θεῶ, πῦρ ὡς Θεὸς, εἰς ἔμφασιν οἶμαι  
 „τῶ ὁμοσίῳ. Καὶ ἈΜΒΡΟΣΙΟΣ ἐν τῶ Ὑπομνήματι τῶ εἰς  
 τιῶ πρὸς Ἐφεσ: Ἐπισ: Κεφαλ: Γ'. ἐν Τόμῳ Γ'. Στήλη 501.  
 „Πνεῦμα Χριστῶ, ὃ καὶ τῶ Θεῶ καὶ Πατρὸς ἐστὶ, δίδοται ἡμῖν. —  
 „Ἐν οἷς γὰρ μιᾶς φύσεως ἡ ἐνότης ἐστὶν, ἀλλήλων ἴδια ταῦτα  
 „ἐστὶν· ὅθεν ὁ Κύριος φησί: πάντα τὰ τῶ Πατρὸς ἐμὰ ἐστὶ, καὶ  
 „τὰ ἐμὰ πάντα ἐστὶ τῶ Πατρὸς. Δι' ὧν δὴ τρανῶς ἐστὶν ἐκδι-  
 δάσκων, τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, διὰ τιῶ τῆς μιᾶς φύσεως ἐνότη-  
 τα, Πνεῦμα εἶναι τῶ Πατρὸς καὶ τῶ Υἱῶ. Καὶ τῶ Ὑπομνήμ:  
 τῆς πρὸς Ῥωμ: Ἐπισ: Κεφαλ: Η'. εἰς ἐκείνα: „Ἐῖτις Χριστῶ  
 „πίσιν ἐκ ἔχει, ὅτος ἐκ ἐστὶν αὐτῶ, ἐν Τόμῳ Γ'. Στήλη 288.  
 „Τὸ

„Τὸ τῷ Θεῷ Πνεῦμα, νῦν Πνεῦμα λέγεται τῷ Χριστῷ, ὅτι πάντα  
 „τὰ τῷ Πατρὶ τῷ Υἱῷ ἐστίν,,. Καὶ ἹΕΡΩΝΥΜΟΣ Βιβλ: Β'.  
 κατὰ τῶν Πελαγιανῶν, ἐν Τόμ: Β'. Στήλη 442. „Σημείωσαι,  
 „ὅτι τὸ Πνεῦμα τῷ Ἰησῷ, τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐστίν, ὅπερ  
 „ἄλλαχθ' διὰ τὴν ἐνότητα τῆς ἑσίας, Πνεῦμα τῷ Πατρὶ ὀνο-  
 „μάζεται,,. Καὶ ἐν Βιβλ: Β'. εἰς τὴν πρὸς Γαλάτας Ἐπισ:  
 Κεφαλ: Δ'. ἐν Τόμῳ 5. Στήλη 311. „Ἀδιαφόρως τὸ αὐτὸ  
 „Πνεῦμα, διὰ τὴν φύσεως οἰκειότητα, ὅτε μὲν τῷ Πατρὶ  
 „ἔναι λέγεται, ὅτε δὲ τῷ Υἱῷ,,. Ὁ δὲ τῶν Ἑρωτήσεων ΣΥΓ-  
 ΓΡΑΦΕΥΣ τῶν ἐπὶ τῆς Παλαιᾶς τε καὶ Καινῆς Διαθήκης,  
 Ἑρωτήσει ρηέ. Τόμ: Δ'. τῶν Αὐγουστίνου Συγγραμ: „Οὐκ ἄλλως  
 „οἶδε τὸ Ἅγιον Πνεῦμα τὰ Μυστήρια τῷ Θεῷ, εἰμὴ κατὰ τὴν  
 „ἑσίαν· ἢ γὰρ μία ἑσία, καὶ τὴν διανοήσιν ἔχει, καὶ τὴν θέ-  
 „λησιν μίαν· ὁ γὰρ ὁ Πατὴρ θέλει, τὸτο θέλει καὶ ὁ Υἱός·  
 „καὶ ὁ θέλει ὁ Υἱός, τὸτ' αὐτὸ θέλει καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον.  
 „Τέττε χάριν, (διὰ τὴν αὐτὴν δηλονότι ἑσίαν καὶ θέλησιν) ποτὲ  
 „μὲν λέγεται Πνεῦμα Θεῷ, ποτὲ δὲ Πνεῦμα Χριστῷ· ὅπερ ἐκ  
 „τῷ Θεῷ, φησὶν, ἐκπορεύεται, καὶ ἐκ τῷ ἑμῷ λήψεται,,. Καὶ  
 ἸΩΑΝΝΗΣ δὲ ὁ Χρυσόστομος, ἐν τῇ εἰς τὴν Πεντηκοστὴν Ὁμιλίᾳ,  
 ἧς ἡ ἀρχή: „Πᾶσα μὲν ἡμέρα,, κτ: ἐν Τόμ: Ζ'. τῶν Συγ-  
 γραμ: τῆς Ἑλλάδος: Ἐκδόσ: τῆς ἐν Ἀγγλίᾳ, Σελ: 584. (10)  
 „Ποτὲ μὲν Πνεῦμα τὸ Ἅγιον λέγεται, ποτὲ δὲ Πνεῦμα Υἱῷ,  
 „ποτὲ δὲ Πνεῦμα Πατρός· ἐκ ἐν συγχύσει κηρυττόμενον, ἀλλὰ  
 „τὸ ἀδιάσπαστον τῆς Θείας ἑσίας ἐρμηνεύμενον,,. Καὶ ἐν τῇ  
 Ὁμιλίᾳ τῇ περὶ τῷ Ἁγίῳ καὶ προσκυνητῷ Πνεύματος, κατ' ἀρ-  
 χᾶς, ἐν Τόμ: 5. τῶν Συγγραμ: τῆς Γραικο-Λατιν: Ἐκδόσ:  
 Σελ: 205. (11) „Ἰνα μήποτε ἀκέσαντες ἡμεῖς Πνεῦμα Θεῷ,  
 „νομίσωμεν δι' οἰκειότητα λέγεσθαι Πνεῦμα Θεῷ, εἰσάγει ἢ Γρα-  
 „φὴ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, καὶ προσέθησι τῷ Θεῷ, τὸ ἐκ Θεῷ.  
 „Ἄλλο δὲ τὸ Θεῷ, καὶ ἄλλο τὸ ἐκ Θεῷ· Θεῷ μὲν γὰρ ὁ ἔρηνος  
 „καὶ ἡ γῆ, ὡς παρ' αὐτῷ πεποιημένα· ἐκ Θεῷ δὲ ἕδεν λέγεται,  
 „εἰ μὴ ὁ ἐκ τῆς ἑσίας ἐστίν· λέγεται τοίνυν Πνεῦμα Ἅγιον. —  
 „Ἰνα τοίνυν ὡς ἔφθην εἰπών: μή τις ἀκέσας Πνεῦμα Θεῷ, νο-  
 „μίση οἰκειότητα σημαίνεσθαι, καὶ μὴ φύσεως κοινωνίαν, ὁ Παῦ-  
 „λος λέγει: ὑμῖν ἐκ ἐδόθη τὸ Πνεῦμα τῷ κόσμῳ, ἀλλὰ τὸ Πνεῦ-  
 „μα τὸ ἐκ Θεῷ,,. Καὶ μετὰ τὴν ἀρχὴν δὲ, Σελίδι 207. (12)  
 „Ἰδὲ

(10) Ἐν τῇ κατὰ Μοντφਾਲκ: Ἐκδόσ: ἢ Ὁμιλ: αὕτη ταῖς Νόθοις συγκαταλέλεκται,  
 ἐν Τόμ: ΙΒ'. Σελ: 814.

(11) Καὶ αὕτη ὁμοίως ταῖς ὑποβοηθαιαῖς Συγγραμ: σωρηίδμηται· (ὡς καὶ ἄλλαχθ' ἡμῖν σεσημείωται.) Κεῖται δὲ ἐν τῷ Γ'. Τόμ: τῆς Μοντφαλκ: Ἐκδόσ: Σελ: 797.

(12) Ἐνθ: ἐγγὺς ἀνωτ: Σελ: 799.

„Ἰδὲ αὐτὸ τὸ Πνεῦμα τῷ Τιῷ. Ἀλλὰ καὶ πάλιν, Πνεῦμα Χριστοῦ λέγει Παῦλος ὅτι ἐκ ἐξ ἐν σαρκί, ἀλλ' ἐν Πνύματι, ἔπερ Πνεῦμα Χριστοῦ οἰκεῖ ἐν ὑμῖν. Παρακαλῶ πρόσεχε τῇ πλοκῇ ταύτῃ τῇ ἀγία: Πῶς ὡπερ σεράντινα ἀγίαν καὶ ζῶσαν, ἐκ τριπλόκῃ δωάμεως εἰσήγαγεν ὁ Παῦλος, τῷ φύσιν συνάπτων τῷ ἀδιαίρετον, καὶ ἐν διαφόροις ὀνόμασι μίαν τῷ δώαμιν ἐνδεικνύμενος. Καὶ ΘΕΟΔΟΥΛΟΣ δὲ ὁ κατὰ τῷ κοίλῳ Συρίαν Πρεσβύτερος (13), ἐν Ὑπομνήμῃ: τῷ εἰς τῷ πρὸς Ῥωμ: Ἐπισ: Κεφαλ: Η'. Τόμ: Ε'. Μέρει Γ'. τῆς τῶν Πατέρ: Βιβλιοθ: τῆς ἐν Κολων: Σελ: 579. „Τὸ Πνεῦμα τῷ Θεῷ, καὶ Πνεῦμα ἐστὶ τῷ Χριστῷ καὶ γὰρ Πατρί τε καὶ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα ἐστὶ κοινόν. Καὶ ΣΕΔΥΛΙΟΣ (14) ἐν Ὑπομνήμῃ: τῷ εἰς τῷ πρὸς Ῥωμ: Ἐπισ: Κεφ: Η'. Σελ: 25, τῆς ἐν Βασιλ: Ἐκδόσ: Ἔτει 1528. „Τὸ Πνεῦμα τῷ Θεῷ, καὶ Πνεῦμα τῷ Χριστῷ λέγει ὅτι τὰ τῷ Πατρὶ ἅπαντα τῷ Υἱῷ ἐστὶ. Καὶ ἈΝΑΣΤΑΣΙΟΣ τελοῦταῖον ὁ Συναίτης Βιβλ: Α'. περὶ τῶν Δογμ: τῆς Πίς: Τόμ: 5'. τῆς τῶν Πατέρων Βιβλιοθ: τῆς ἐν Κολωνίᾳ, Σελίδι 696. „Τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, Πνεῦμα Θεῷ, καὶ Πνεῦμα Χριστοῦ, καὶ Πνεῦμα τῷ Ἰησοῦ, δι' ὅλων τῶν Ὑποστάσεων τὰ Θεῷ δεικνύσιν λόγια, τῷ φυσικῷ οἰκειότητά τῆς Θεότητος. Καὶ πάλιν Σελ: 697. „Τοῖς μὲν Ἀποστόλοις καὶ παρὶ μεθεκτικῶς, Χριστῷ δὲ τῷ Σωτῆρι καὶ Θεῷ ἡμῶν, ὡς ὁμοῦσιον καὶ ὁμόθεον τῷδε δὴ τῷ λόγῳ, καλεῖται Πνεῦμα Θεῷ, καὶ Πνεῦμα Χριστοῦ. Καὶ ΛΕΟΝΤΙΟΣ δὲ ὁ Καισαρείας τῆς Καππαδοκίας Ἐπίσκοπος, ὁ ἐκ ὀνόματος ἀπάσης τῆς Οἰκουμένης Α'. Σωδόδῃ τῷ Φιλοσόφῳ προσδιαλεξάμενος, παρὰ Γελασίῳ τῷ Κυζικηνῷ, ἐν Βιβλ: Β'. τῶν Πρακτικῶν τῆς Α'. Σωδόδῃ τῆς ἐν Νικαίᾳ, Κεφαλ: Κ'. ἐν Τόμ:

(13) Ἀκμάσαι δ' ὁ Θεόδοτος ἔτος ἐξόρηται περὶ τὸ 480. κατὰ δὲ τὸ 492. τελοῦται. Τό γε μὴ περιφερόμενον Ὑπόμνημα εἰς τῷ πρὸς Ῥωμ: Ἐπισ: ἐξ ἧς τῷ ἐπ' αὐτῷ Ζοιρηνιάδῃ: προεχειρήσατο χρῆσιν, Λατινιστὴ μόνον σωζόμενον, ὃ Φασὶ Θεοδότῃ γνήσιον εἶναι, καὶ εἰκότως. Σερᾷ γὰρ αὐτὸ εἰσε μᾶλλον ἐκ πλεόνων Πατέρων σωεσμένη, τῶν μὲν παλαιότερων, τῶν δὲ καὶ αὐτῷ Θεοδότῃ μεταγενεστέρων οἷον Φωτίῃ, Οἰκουμένῃ, καὶ ἄλλῃ:

(14) Ἐγένετο μὲν Σεδύλιος, ἢ Καίλιος τις Σεδέλιος, Φασὶ, Σκότος, κατὰ τὸ 434. ἔτος γεγονώς, ἐπὶ Θεοδοσίῃ τῇ Νεωτέρῃ, καὶ Οὐαλεντινιανῇ τῇ Ἀρχίῳ διεπόντων τῷ Αὐτοκράτορῃ, ὃς διάφορα ἐν μέτρῳ σωέγραψεν. ἀλλὰ τὸν περὶ ἧς ὁ λόγος ἐνταῦθα Σεδέλιον, νεώτερον ὄντα ἕτερον ἡγήσασθαι εἰκός. Ἐν γὰρ τοῖς εἰς τὰς Ἐπιστολάς τῇ Παύλῃ Ὑπομνήμασι τέτοις, καὶ τοῖς Σεδελίῳ τῷ Σκότῳ κοινῇ ἐπιγεγραφομένοις, ἀναγινώσκειται τινὰ ἐμφερόμενα ἐκ τῶν Γρηγορίῃ τῇ Διαλόγῃ Ἠθικῶν, ἀπὸ τῇ ΙΒ'. Βιβλ: τῶν εἰς τὸν Ἰωῆ, Κεφαλ: ΚΑ. Ἐξ ἧς ἐστὶν εἰκάσαι, ἐτέρῳ τινὶ Σεδελίῳ Βρεττανῶν χρηματίσαντι Ἐπισκόπῳ, ἐκπονηθῆναι τὰ Ὑπομνήματα ταῦτα. Ὅν περ, οἱ μὲν Φασὶν εἶναι, τὸν ἐν τῇ κατὰ Ῥώμῃ Σωδόδῃ, τῇ ἐν ἔτει 721. ἀθροισθείσῃ, καθυπογράψαντα. οἱ δὲ, ἄλλον ἐτι ὄλη Ἐκατονταετηρίδι ὕστερον, περὶ τὸ 818. ἀκμάσαντα. (Ὅρα, εἰ βέλει, Καθέον περὶ τέτῃ, ἐν τῇ Ἰσορ: τῶν Ἐκκλησιασ: Συγγραφ: Τόχ: Α'. Σελ: 425.)



Τόμ: Β'. τῶν Συνοδικῶν, Στήλη 208. (15) „Τὴν Θεότητα κη-  
 „ρύττει τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι τῷ ἐκπορευομένῳ ἐξ αὐτῶ τῷ Πατρὶ,  
 „ιδίῳ δὲ ὄντος τῷ Υἱῷ, καθὰ φησὶν ὁ Θεὸς Ἀπόστολος Παῦλος:  
 „Ἐτις Πνεῦμα Χριστὸν ἐκ ἔχει, ἔτος ἐκ ἔστιν αὐτῶ„. Καὶ ΔΙ-  
 ΔΥΜΟΣ ὁ Ἀλεξανδρεὺς Βιβλ: Β'. περὶ Πνεύματος Ἁγίου, ἐν τῷ  
 5. Τόμ: τῶν Ἱερωνύμου Συγγραμ.: „Τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐξαίρε-  
 „τως σωῆται τῷ Υἱῷ· ὅθεν (διὰ τὴν ἰχυροτάτην δηλ: καὶ  
 „ἐξαίρετον οἰκειότητα, τὴν ἐν τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι μετὰ τῷ Υἱῷ)  
 „καὶ τῷ Υἱῷ ἔρηται Πνεῦμα· τῷ Υἱοθετῶντος τῶν βελομένων  
 „παραδεξαθῆναι„. Καὶ ΒΑΣΙΛΕΙΟΣ Βιβλ: περὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύ-  
 ματος, Κεφαλ: ΙΗ'. Τόμ: Β'. Σελ: 189. (16) „Πνεῦμα Χριστὸν  
 „λέγεται, ὡς ὠκειωμένον κατὰ τὴν φύσιν αὐτῶ· διὰ τὸτο, ἔτις  
 „Πνεῦμα Χριστὸν ἐκ ἔχει, ἔτος ἐκ ἔστιν αὐτῶ„. — Καὶ ἐν τῷ  
 κατὰ Σαβελλιανῶν δὲ Λόγῳ, πρὸ τῷ τέλει, ἐν Τόμ: Α'. Σελ:  
 608. (17) „Τὴν μὲν πρὸς Πατέρα οἰκειότητα νοῶ, ἐπειδὴ ἐκ  
 „Πατρὸς ἐκπορεύεται· τὴν πρὸς Υἱὸν δὲ, ἐπειδὴ ἀκῶ: ἔτις  
 „Πνεῦμα Χριστὸν ἐκ ἔχει, ἔτος ἐκ ἔστιν αὐτῶ· εἰ γὰρ μὴ οἰκεῖον  
 „αὐτῶ, πῶς οἰκειοῖ τῷ Χριστῶ„; Καὶ ΚΥΡΙΛΛΟΣ δὲ ὁ Ἀλε-  
 ξανδρείας Βιβλ: Ζ'. περὶ Τριάδος (18) ἐν τοῖς προαπομνημονύ-  
 θῃσιν ἀνωτέρῳ ῥήμασιν: „Ὅτι γὰρ τέτοκε δηλοῖ τὸ Πατήρ·  
 „καὶ ὅτι γεγέννηται, διεσάφησε τὸ Υἱός· καὶ μὴ, ὅτι τὸ Πνεῦμα  
 „ἐστὶν ἐκ Θεοῦ Πατρὸς, ἴδιον δὲ καὶ αὐτῶ τῷ Υἱῷ, δίκῃ τῷ καθ'  
 „ἡμᾶς καὶ ἀνθρωπίνῳ πνεύματος, εἰ καὶ ἐν ὑποστάσει νοοῖτο, καὶ  
 „ὑπάρχον ἀληθῶς· διαμεμῶνκεν ἢ κλήσις· (ἢ τῷ Πνεύματος  
 „δηλονότι)„. ΣΥΜΕΩΝ δὲ ὁ Θεολόγος ἐν Λόγῳ Γ'. περὶ Πίς:  
 ἐπὶ τῶν ἀνωτ: προτεθέντων: „Ὅτε ὁ Υἱὸς καλεῖται Θεός, νοεῖ-  
 „ται Υἱὸς εἶναι Θεὸν· ὅτε δὲ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον Θεὸς καλεῖ-  
 „ται, νοεῖται ὡς ἐκ τῷ Πατρὶ ἐκπορευόμενον, καὶ τῷ Υἱῷ  
 „Πνεῦμα ἴδιον, ἐνώσει τε καὶ διακρίσει ἀνερμινώτῳ„. Ἐνθεντοί  
 ὁ Ἀλεξανδρεὺς ΚΥΡΙΛΛΟΣ τῆς τοιαύτης ἔνεκα σενωτάτης  
 οἰκειότητος τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι μετὰ τῷ Υἱῷ, πανταχῶ διδάσκει  
 τὸν Ἀποσ: Παῦλον ἀποκαλεῖσαι Πνεῦμα καὶ τὸν Υἱόν· Οὕτω  
 γὰρ ἐν τῷ Δ'. τῶν εἰς Ἰωάν: Βιβλ: Κεφαλ: Γ'. ἐν Τόμ: Δ'.  
 Σελ: 377. „Ὅτι δὲ πολλάκις τῷ τῷ Πνεύματι ὀνόματι παρὰ  
 „ταῖς Θεαῖς Γραφαῖς καλεῖται καὶ ὁ Υἱός, διὰ τῶν ὑποτεταγμέ-  
 „νων εἰσόμεθα. Γράφει τοίνυν ὁ Μακάριος Ἰωάννης περὶ αὐτῶ:  
 „ἔτος ἐστὶν ὁ ἐλθὼν δι' ὕδατος καὶ Πνεύματος Ἱησοῦς Χριστός· ἐκ ἐν  
 „τῷ

(15) Παρὰ Ἀρδάνῳ Τόμ: Α'. Στήλη 409.

(16) Κατὰ τὴν Γαλιήνῃ Ἐκδοσὶν ἐν Τόμ: Γ'. Σελ: 39.

(17) Κατὰ τὴν ῥηθῆσαν Ἐκδοσὶν Τόμ: Β'. Σελ: 194.

(18) Τῶτον δὲ τὸν Ζ'. εἶναι τῶν πρὸς Ἑρμείαν Διαλόγων ἀνωτέρῳ σεσημείωται (1).

Τόμ: Β'.

N ν



„τῷ ὕδατι μόνον, ἀλλὰ καὶ ἐν τῷ ὕδατι καὶ ἐν τῷ Πνεύματι  
 „τὸ Πνεῦμα ἐστὶ τὸ μαρτυρεῖν, ὅτι τὸ Πνεῦμα ἐστὶν ἡ ἀλήθεια.  
 „Ἰδὲ γὰρ Πνεῦμα τὴν ἀλήθειαν ὀνομάζει, καὶ τοὶ βουώντος διαβ-  
 „ρήδω τῷ Χριστῷ, ὅτι ἐγὼ εἰμὶ ἡ ἀλήθεια. Παῦλος δὲ πάλιν  
 „ἡμῖν ἐπισέλλων φησὶν: οἱ ἐν σαρκὶ ὄντες, Θεῷ ἀρέσκουσιν ὃ δὲ  
 „νανταί. ὑμεῖς δὲ ἢ ἐξ ἐν σαρκὶ, ἀλλ' ἐν Πνεύματι Θεῷ, ἔπερ  
 „Πνεῦμα Θεῷ οἰκᾷ ἐν ὑμῖν· εἰδέ τις Πνεῦμα Χριστῷ ἢ ἔχει,  
 „ἔτος ἢ ἐστὶν αὐτῷ. Εἰ δὲ Χριστὸς ἐν ὑμῖν, τὸ μὲν σῶμα νε-  
 „κρὸν διὰ τὴν ἀμαρτίαν, τὸ δὲ Πνεῦμα ζωὴ διὰ τὴν δικαιοσύνην.  
 „Ἰδὲ γὰρ δὴ πάλιν ἐν τέτοις τὸ τῷ Θεῷ Πνεῦμα κατοικεῖν ἐν  
 „ἡμῖν ἀποφωλάμενος, αὐτὸν εἶρηκεν ἐν ὑμῖν εἶναι τὸν Χριστόν·  
 „ἀδιαίρετον γὰρ τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα αὐτῷ, κατὰ γε τὸν ἐν ταυ-  
 „τότητι φύσεως λόγον, εἰ καὶ νοοῖτο ὑπάρχον ἰδιοσυζάτως. Διὰ  
 „τῷτο πολλάκις ἀδιαφορεῖ· ποτὲ μὲν τὸ Πνεῦμα, ποτὲ δὲ ἑαυτὸν  
 „ὀνομάζων,.. — Καὶ ἐν τοῖς πρὸ τέτων, Σελ: 376. „Πνεῦμα  
 „δὲ φησὶν ἑαυτόν· Πνεῦμα γὰρ ὁ Θεός· καὶ κατὰ τὸν μακάριον  
 „Παῦλον: καὶ γὰρ Κύριος τὸ Πνεῦμα ἐστὶ. Καὶ ἢ ἀναιρῶντες  
 „τὸ ἰδίως ὑφ'ἑαυτοῦ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, τὰ τοιαῦτα φημέν·  
 „ἀλλ' ὥσπερ Υἱὸν ἀνθρώπου, φησὶν ἑαυτὸν, ἐπειδὴ γέγονεν ἄνθρω-  
 „πος, ἔτω πάλιν ἀπὸ τῷ ἰδίῳ Πνεύματος ἑαυτὸν ὀνομάζει· ὃ γὰρ  
 „ἀλλότριον αὐτῷ τὸ Πνεῦμα αὐτῷ,.. Καὶ Βιβλ: Β'. εἰς Ἰωάν:  
 Κεφαλ: Α'. Σελ: 126. (19) „Ὁρθῶς δὴ καὶ ἀμωμήτως φρο-  
 „νῶντες, καὶ πάσης ὡς πορρωτάτω ἀποκρομένης πλάνης, ταῖς  
 „παρὰ Θεῷ ἀποκαλυφθείσαις Γραφαῖς σοιχῶντες φημέν, ὡς ἢ  
 „ἑτερόν τι ἐστὶν αὐτῷ (τῷ λόγῳ, δηλονότι, τῆς κατὰ φύσιν ταυ-  
 „τότητος χωρὶς καὶ μεμερισμένως) τῷτο γὰρ ὡς οἶμαι εἰδὼς  
 „καὶ ὁ μακάριος Παῦλος σιωπᾷ πολλάκις, καὶ ὡς εἶγε ταῦτον  
 „ὡς

(19) Μάτῳ ἂν ἐπὶ τῷ σημειωθέντος τύπου τὴν προτεθεῖσαν ῥῆσιν ζητήσας, ὡς ἐκεῖ  
 βραχυλογημένα ἔχει δ' ἐπὶ λέξεως ἔτω: (Σελ: 124.) „Τοιαύτην ἔχειν ἡμᾶς  
 „τὴν περὶ τῷ Σωτῆρος διάληψιν χρῆται δὲν ὑπολαμβάνων τῆς ἐνσεβῆς λεγομένης,  
 „καὶ ἐπὶ τῇ τῶν Δογματῶν ὀρθότητι χαίροντας· ὃ γὰρ δήπερ πρὸς τοσαύτῳ ἀλο-  
 „γίαν καταβησόμεθα καὶ ἡμεῖς, ὡς οἶδαί μεθεκτὸν ἐν τῷ κατὰ φύσιν διὰ τῷ  
 „Πνεύματος ὑπάρχον, καὶ ἔχῃ μᾶλλον ἐσιωδῶς ἐμπεφυκός· ὥσπερ ἐν ἀμέλει καὶ  
 „αὐτῷ τῷ Πατρὶ. Ὡσπερ γὰρ τῷ Πατρὶ, ἔτω καὶ τῷ Υἱῷ ἐστὶ τὸ Πνεῦμα τὸ  
 „Ἅγιον· ἔτω γὰρ καὶ ἀνέγνωμεν παρὰ ταῖς Θεαῖς Γραφαῖς... (Σελ: 25.) Τίνα δὴ  
 „ἐν τρέπον ἀπομεριῶμεν τὸ Πνεῦμα τῷ Υἱῷ, τὸ ἔτος ἐμπεφυκός, καὶ ἐσιωδῶς  
 „ἠνωμένον; (Σελ: 126.) Δι' αὐτῷ τε προκύπτει, καὶ ὑπάρχον ἐν αὐτῷ φυσικῶς,  
 „ὡς μηδὲν ἕτερον εἶναι νομίζεσθαι παρ' αὐτόν, διὰ τε τὴν τῆς ἐνεργείας ταυτότητα  
 „καὶ αὐτὸ τὸ τῆς φύσεως ἀπαράλλακτον,.. Καὶ γὰρ ὁ Μακάριος Παῦλος σαφέ-  
 „στατα τῷτο διδάσκων φησὶ: (Σιωπᾶν, δηλονότι, ὡς ἐν καὶ ταῦτον τῇ ἐσῆα τῷ  
 Πρὸσωπα, καὶ ἀντὶ θατέρου λαμβάνων θάτερον.) „ὑμεῖς δὲ ἢ ἐξ ἐν σαρκὶ,  
 „ἀλλ' ἐν Πνεύματι, ἔπερ Πνεῦμα Θεῷ οἰκᾷ ἐν ὑμῖν. Εἰ δέ τις Πνεῦμα Χριστῷ ἢ  
 „ἔχει, ἔτος ἢ ἐστὶν αὐτῷ... Πνεῦμα Χριστῷ τὸ κατοικεῖν ἐν ἡμῖν ὀνομάσας, ἐπὶ  
 „γαγεν ἐνθύς: εἰ δὲ Χριστὸς ἐν ὑμῖν, ἀπαραλλάκτως εἰσφέρων τὴν ὁμοιότητα τῷ  
 „Υἱῷ πρὸς τὸ ἴδιον αὐτῷ, καὶ παρ' αὐτῷ κατὰ φύσιν προχέμενον Πνεῦμα,..

„ὡς θάτερον ἐπάγει τὸ Ἅγιον, Φημι, Πνεῦμα καὶ τὸν Υἱόν.  
 „Εὐροις γὰρ ἂν λέγοντα: εἴ τις Πνεῦμα Χριστὸν ἔκ ἔχει, ἔτος  
 „ἔκ ἔστιν αὐτῷ,,. Καὶ ἐν τοῖς Θησαυροῖς Λόγ: ΛΓ'. ἐν Τόμ: Ε'.  
 Μέρεα Α'. Σελ: 334. „Χριστὸν δὲ πάλιν εὐθὺς τὸ Πνεῦμα καλεῖ  
 „λέγων: εἰ δὲ Χριστὸς ἐν ὑμῖν: ἔκ ἀλλότριον αὐτὸ δεικνύων τῆς  
 „τῷ Λόγῳ φύσεως, ἀλλ' ἔτις ἡνωμένον, εἰ καὶ ἐστὶν ἰδιοσύστατον  
 „ὡς αὐτότε ὑπάρχειν ἐν Υἱῷ, καὶ Υἱὸν ἐν αὐτῷ, διὰ τὴν τῆς  
 „ἁπλότητος ταυτότητα,,.

Διὰ τῆτο, τελευτάϊον, τῷ Υἱῷ Πνεῦμα φασὶν εἶναι τὸ Πνεῦ-  
 μα τὸ Ἅγιον, ὅτι παρὰ τῷ Υἱῷ πέμπεται, καὶ ὑμῖν ἐμφανίζεται.  
 Οἷον ὁ Μέγας ΒΑΣΙΛΕΙΟΣ, Βιβλ: Ε'. κατὰ Εὐνομίαν: „Διὰ  
 „δὴ τῆτο, τὸ μὲν ἐκ Θεοῦ τὸ Πνεῦμα εἶναι, τρανῶς ἀνεκήρυξεν  
 „ὁ Ἀπόστολος, λέγων: ὅτι τὸ Πνεῦμα τὸ ἐκ Θεοῦ ἐλάβομεν καὶ  
 „τὸ δι' Υἱῷ πεφηνέναι σαφὲς πεποίηκεν, Υἱῷ Πνεῦμα ὀνομάσας  
 „αὐτό,,. Καὶ ὁ ΔΑΜΑΣΚΗΝΟΣ ἐν τῷ Λόγῳ τῷ εἰς τὸ Ἅγιον  
 Σάββατον: „Ἐστὶ δ' ἡμῖν λατρουόμενον, Πνεῦμα Ἅγιον τῷ Θεῷ  
 „καὶ Πατρὶ, ὡς ἐκ αὐτῷ ἐκπορεύομενον ὅπερ καὶ τῷ Υἱῷ λέ-  
 „γεται, ὡς δι' αὐτῷ φανερόμενον, καὶ τῇ κτίσει μεταδιδόμενον,  
 „ἀλλ' ἔκ ἑξ αὐτῷ ἔχον τὴν ὑπαρξιν,,.

Ἐρᾶς: εἰ διὰ μόνον τὴν τῆς ἁπλότητος ἐνότητα, τὸ Πνεῦμα  
 τὸ Ἅγιον Πνεῦμα λέγεται τῷ Υἱῷ εἰρήσεται δὴ παραπλησίως,  
 διὰ τὴν αὐτὴν αἰτίαν, καὶ ὁ Υἱὸς Πνεῦμα τῷ Πατρὶ, καὶ ὁ  
 Πατὴρ Πνεῦμα τῷ Υἱῷ καὶ ὁ Πατὴρ δὲ ἔτι καὶ ὁ Υἱὸς ἔσονται  
 τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι Πνεῦμα. Ὅν μὲν τοι τρόπον καὶ εἰ ὁ Πα-  
 τὴρ Πνεῦμα, καὶ εἰ Ἅγιος, μόνον ἀλλ' ἔν τῷ Πνεύματι τὴν τῷ  
 Ἁγίῳ Πνεύματι κλήσιν ἐξιδιδῶται ἔτι καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον  
 μόνον Πνεῦμα τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ λέγεται, καὶ εἰ μηδὲν  
 ἥττον ὁ Πατὴρ (ταυτὸ δὲ φρονεῖ καὶ περὶ τῷ Υἱῷ) Πνεῦμα ἦ.  
 Καὶ πάλιν ἴδιον τῷ Υἱῷ, καὶ διὰ τῆτο ἴδιον αὐτῷ Πνεύματι ἑμὴν  
 ἀλλ' ἔτι τοιῷδε, ὡς εἴρηται, ὀνόματι ὁ Πατὴρ καλεῖται, (ὥσπερ  
 ἔδ' ὁ Υἱὸς) „τῷ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι,, ἐπεὶ μόνον ταῦτα τὸ  
 Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐαυτῷ ὡς ἴδια προσοικεῖται. Ὁ δὲ δὴ Πα-  
 τὴρ, ἢ ὁ Υἱὸς, ἔκ εἶχε λέγεσθαι Πατὴρ, ἢ Υἱὸς τῷ Ἁγίῳ Πνεύ-  
 ματι, καθὰ τὸ Πνεῦμα τῷ Πατρὶ, ἢ τῷ Υἱῷ Πνεῦμα λέγεται.  
 ἔτι γὰρ ἂν τὸ Πνεῦμα λέγοιτο, ἥτοι γεννᾶσθαι ἐκ τῷ Πατρὶ,  
 ἢ γεννᾶν τὸν Υἱόν. Ἐξ ἀνάγκης γὰρ ἢ τῷ Πατρὶ φωνῇ τὸ  
 γεννᾶν σημαίνει, ἢ δὲ τῷ Υἱῷ τὸ γεννᾶσθαι. Οὐχ ἔτι δέ τοι  
 καὶ ἢ φωνῇ ἢ τῷ Πνεύματι, ἄτε μὴ τὸ προβάλλεσθαι καὶ πα-  
 ράγεσθαι σιωπεπισημαίνουσα, ὡς φθάσαν δεδακται. Οὐδ' ὡς ἐπά-  
 ναγκες, ἢ ὥσπερ πρὸς τὸν Πατέρα καὶ τὸν Υἱόν τὸ Πνεῦμα τὸ  
 Ἅγιον ἀναφέρεται, ἄτε δὴ Πνεῦμα ὃν τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ,  
 ἔτι δὴ καὶ ὁ Πατὴρ καὶ ὁ Υἱὸς ἀναφέροντο πρὸς τὸ Πνεῦμα

τὸ Ἅγιον. Καὶ γάρ τοι τῶν χετικῶν ἐν πολλοῖς τε καὶ ἄλλοις συμβαίνει, τὸ μὴ παρῆναι ὀνόματα, οἷς περ ἂν τὸ ἀντιχετικὸν ἀμοιβαδὸν ἀντιστοιχῆν ὀνομάζοιτο. (20)

Μηδένα δὲ κινέτω, Φησὶν ΑΥΓΟΥΣΤΙΝΟΣ Βιβλ: Ε'. περὶ Τριάδος Κεφαλ: ΙΒ'. „Εἰ χετικῶς ἡμῶν ἐρηκότων λέγεσθαι τὸ „Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ἐκ αὐτῷ τῷ Τριάδα, ἀλλὰ τὸ ἐν τῇ Τρι- „άδι ἔδοκεῖ ἀντιστοιχεῖν αὐτῷ ἀμοιβαδὸν τῆνομα τῷ πρὸς ὃν „ἀναφέρεται. Οὐ γὰρ, ὥσπερ λέγομεν δῆλον τῷ Κυρίῳ, καὶ „Κύριον τῷ δέλῳ. Υἱὸν τῷ Πατρὶ, καὶ Πατέρα τῷ Υἱῷ. ἐπεὶ „ταῦτα χετικῶς λέγεται. ἔτω λέγειν κἀνταῦθα διωάμεθα. „Λέγομεν γὰρ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα τῷ Πατρὶ, ἀλλ' ἐκ ἀνάπαλιν „λέγομεν τὸν Πατέρα τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι, ἵνα μὴ Υἱὸς αὐτῷ „νοηθῇ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. Ἔτι λέγομεν τὸ Πνεῦμα τὸ „Ἅγιον τῷ Υἱῷ. Ἀλλ' ἔτι λέγομεν τὸν Υἱὸν τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι, „ἵνα μὴ Πατὴρ αὐτῷ νοηθῇ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. Ἐν πολλοῖς „γὰρ τῶν χετικῶν τῷτο προβαίνει, τὸ μηδαμῶς εὐρίσκεσθαι ὀνό- „ματα, οἷς περ ἀντιστοιχοῖ πρὸς ἄλληλα τὰ ἀναφερόμενα. „Καὶ ἐν Λόγῳ δὲ ΛΗ'. περὶ τῷ Χρόνῳ: „Ὡσπερ χετικῶς ὁ Πα- „τὴρ καὶ ὁ Υἱὸς λέγονται, ἔτω καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον πρὸς τε „τὸν Πατέρα, καὶ πρὸς τὸν Υἱὸν ἀμωσγέπως κατὰ χέσιν λέ- „γεται, ὅπερ τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ Πνεῦμα ἐστίν. Ἀλλ' ἢ τῷ „Ἁγίῳ αὐτῇ Πνεύματι χέσις, κατὰ γε τὸν ἀντιχετικὸν λόγον „ἀντιστρέφειν ἔδιωται, ὥσπερ ὁ Πατὴρ καὶ ὁ Υἱός. ὁ γὰρ Πα- „τὴρ Υἱὸς Πατὴρ λέγεται, καὶ ὁ Υἱὸς Πατὴρ Υἱὸς λέγεται. τὸ „δὲ Ἅγιον Πνεῦμα μονοειδῶς λέγεται πρὸς τὸν Πατέρα, καὶ τὸν „Υἱόν, ὅτι τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ Πνεῦμα ἐστίν. Λέγομεν γὰρ „τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον Πνεῦμα τῷ Πατρί. ἀλλ' ἐκ ἀνάπαλιν „λέγομεν τὸν Πατέρα, τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι Πατέρα, ἵνα μὴ τὸ „Πνεῦμα Υἱὸς ἐκείνῳ νομιθῇ. Ἔτι λέγομεν τὸ Πνεῦμα τὸ „Ἅγιον, Πνεῦμα τῷ Υἱῷ, ἀλλ' ἔτι λέγομεν τὸν Υἱὸν τῷ Ἁγίῳ „Πνεύματι, ἵνα μὴ Πατὴρ ἐκείνῳ νοηθῇ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. „Καὶ ὁ Νύσσης δὲ ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ Ὁμιλ: Γ'. εἰς τῷ Κυριακῷ Προ- „σούχῳ, ἐν οἷς ἀλλαχῇ ἀπεμνημονόβσαμεν: „Τὸ Ἅγιον Πνεῦμα „ἐκ Θεοῦ ὃν, καὶ Χριστοῦ Πνεῦμα ἐστίν. ὁ δὲ Υἱὸς ἐκ τῷ Θεῷ ὢν, „ἐκ τῷ καὶ ἐκ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι, ἢ ἐστίν, ἢ λέγεται. Οὐδ' ἀντι- „στρέφει ἢ Σχετικὴ αὐτῇ ἀπολαθία, ἵνα τῷ ἴσῳ λόγῳ ἐπαμεί- „βηται ἢ ἀνάλυσιν. καὶ ὥσπερ τὸ Πνεῦμα τῷ Χριστῷ λέγομεν, „ἔτω καὶ τὸν Χριστὸν τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι ὀνομάζοιμεν. „

Ἐπὶ

(20) Περὶ δὲ τῶνδε θεῶν, εἰ βέβαια, καὶ Ἀριστοτέλῳ ταῦτα φιλοσοφῆντα, ἐν τοῖς περὶ τῶν Κατηγοριῶν Κεφαλ: Ζ'. Περὶ τῶν πρὸς τι.

Ἐπὶ τέτοις ἐνίσταται ὁ Ἰησοῦτης ΠΕΤΑΪΒΙΟΣ: „Ἰδιος ἐστὶν ὁ Υἱὸς τῷ Πατρὶ, ὅτι ἐκ τῷ Πατρὶ γεννητός. Τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἴδιον τῷ Πατρὶ, ὅτι ἐκ τῷ Πατρὶ ἐκπορεύεται. Ἄρα τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ὁμοίως ἴδιον ἐστὶ τῷ Υἱῷ, ὅτι ἐκ αὐτοῦ ἐκπορεύεται. — Ἀλλὰ γὰρ ταῦτα ἀνωτέρω ἡμῖν διαλέλυται. Παραπλήσιον γὰρ ὁ Φῆς, ὡς εἰ καὶ ἐπιχειρήσεις, εἰπών: „Τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐστὶ Πνεῦμα τῷ Πατρὶ, ὅτι ἐκ αὐτοῦ ἐκπορεύεται. Ἄρα ὡσαύτως καὶ Πνεῦμα ἐστὶ τῷ Υἱῷ, ὅτι ἐκ τῷ Υἱῷ ἐκπορεύεται. Ἀλλ' ἐκ ἀληθείας, τό: εἴ τις ἴδιος ἂν εἴη τινός, παρὰ τέτα ἐκείνον καὶ ἐξ ἀνάγκης παράγεται. Καὶ ἀτελής ἐμπης ἢ ἐπένεχθεῖσα ἐπαγωγή. Καὶ γὰρ καὶ ὁ Υἱὸς ἴδιος ἐστὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι, (21) ἀλλ' ἐκ ἐκ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι ὁ Υἱὸς γεννᾶται. Καθ' ἓνα μὲν ἔντινα νυντε καὶ λόγον, λέγεται πάντως ὅ, τε Υἱὸς, καὶ ὁ Πατήρ, καὶ διὰ καὶ τὸ Πνεῦμα, ὅτι ἀλλήλων ἴδιοι εἰσίν. ἀλλ' ἀπὸ τῆς κατὰ τὴν Πρότασιν ἐννοίας διακριτέα ὡς ἡ αἰτία ἢ ἄμεσος, δι' ὧς ὁ Υἱὸς ἴδιος ἐστὶ τῷ Πατρὶ, ἢ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον τῷ Υἱῷ. καὶ αὖθις ὁ Υἱὸς τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι, ἢ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἴδιον εἶναι τῷ Πατρὶ λέγεται. Ἐκ μόνης καὶ γὰρ τῆς αὐτοῦ ἐκ τῷ Πατρὶ γεννήσεως ὁ Υἱὸς ἔχει, ἵνα τὸ Πνεῦμα ἴδιον αὐτοῦ ἢ ἐξ ἧς μόνης ὁμοίως αἰτίας ἔχει, καὶ τὸ αὐτὸς Υἱὸς εἶναι ἴδιος τῷ Πατρί. Ἐνθεν γὰρ παραπλησίως καὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι ἴδιος ὁ Υἱὸς καὶ τῷ Πατρὶ, καθ' ἓνα δῆπερ καὶ τὸν αὐτὸν νυντε καὶ λόγον. ἀλλ' ἔτι ὁμοίως ἐκ τῷ Πνεύματι γεννητός ὁ Υἱὸς ὡς περ διὰ τὴν αὐτὴν ἐκ τῷ Πατρὶ γέννησιν, ἔχει τὸ εἶναι ἴδιος τῷ Πατρί. Ταῦτα γὰρ τὴν αἰτίαν ἀφορᾷ τὴν ἄμεσον, δι' ὧς ὁ νῦν τῶν τοιῶνδε κρατεῖ Προτάσεων, ὃν τῇ τῶν ὀνομάτων διωάμει καθ' ἑαυτὰς αὐταὶ προβάλλονται. Πᾶς δὲ λόγος ἀρχῆς ἐπὶ τῆς Θεότητος μοναδικός τε ἐστὶ, καὶ ἐκ τῷ Πατρὶ μόνος βλυσάνει. Ἀλλὰ περὶ τέτα καὶ πρότερον εἴρηται (22). Τῷ ὄντι δὲ, καὶ ὁ Ἀλεξανδρείας ΚΥΡΙΑΛΛΟΣ ἐν τῷ ΙΑ'. τῶν εἰς Ἰωάν: Κεφαλ: Β'. Τόμ: Δ'. τῶν Συγγραμμάτων, Σελίδι 934. διερωτῶν: „Τίνος „χάριν" τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἴδιον ἐστὶ τῷ Υἱῷ; Οὐκ ἀπαντᾷ, ὡς φίλον ἐστὶ Λατίνοις, ὅτι καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ ἐκπορεύεται. ἀλλ' ὅτι ὁμοούσιος ἐστὶν ὁ Υἱὸς τῷ Πατρί: „Ἰδιον τέτο (φησὶ) τὸ Πνεῦμα καὶ τῷ Υἱῷ, ὁμοούσιος γὰρ ὁ Υἱὸς τῷ Πατρί. Καὶ ὁ ΘΕΟΔΩΡΗΤΟΣ δὲ τῷ Υἱῷ ἴδιον εἶναι ἔφασκε τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ὅτι αὐτῷ ὁμοούσιον, καὶ ἐκ τῷ Πατρὶ ἐκπορεύόμενον, ἔτι δὲ καὶ

(21) Καὶ ὁ Υἱὸς τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι ὁ Υἱὸς μὴδὲ ἢ, μὴδὲ λέγεται. ἀλλ' ἴδιος ἐμπης, ὡς ὁμοούσιος καὶ ἐκ ἀλλοτέρου τῷ Πνεύματι καὶ λέγεται, καὶ εἶναι.

(22) Μάλιστα τὴν ἀνωτ: Σημείωσιν (9).

Τόμ: Β'.

Ξ ξ



καὶ διὰ τὸ ἐκ τῆς Υἱᾶς αὐτὸ ἐκπορεύεσθαι. Καὶ τὴν Θεοδωρήτην δὲ ταύτῃ διάνοιαν ἔδ' αὐτὸς ἀποδοκίμάζων ὑπῆρχε Κύριλλος ἐν τῇ Ἀπολογίᾳ· ὡς ἀνωτ': ἔρηται ἐπὶ τῆς Α'. τῶν Ἀπαντήσεων. Καθάπερ ἔν ὃ αὐτὸς Κύριλλος καὶ ἐν τῷ Σ'. τῶν Διαλόγων περὶ Τριάδος, μετὰ τὴν ἀρχὴν, ἐν τῷ Β'. Τόμῳ τῶν Συγγραμμάτων: Μέρει Α'. Σελ: 592. „Τίνος ἰδίου Φῶμεν εἶναι τὸ Πνεῦμα τὸ „Ἅγιον; πότερά δὴ μόνον τῆς Θεᾶς καὶ Πατρὸς, ἢ γὰρ καὶ τῆς „Υἱᾶς; ἢ καὶ ἀνὰ μέρος ἑκατέρως καὶ ἀμφοῖν ὡς ἐν, τῆς Πατρὸς „δι' Υἱᾶς, διὰ τὴν ταυτότητα τῆς ὁσίας; ἔτις ἐγωγε φημί,,.

Ἀνθυποφέρει τις (23) μὲν τοι καὶ πρὸς ταῦτα, τὸν „Κύριλλον, „Φάσκων, διδάσκειν ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἔτις ἐστὶ τῆς ἀληθείας „τῆς Χριστῆς, ὥστε ἐστὶ τῆς Πατρὸς ἐξ ἧς ἐκπορεύεται. Ἐπεὶ ἄρα „τῆς Πατρὸς ἐστὶ καθὼς ἐκ τῆς Πατρὸς ἐκπορεύεται, καὶ τῆς Υἱᾶς „ἔσαι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα καθὼς καὶ ἐξ αὐτῆς ἐκπορεύεται, ὡς ἂν „ἀληθῶς λέγεται τὸν αὐτὸν τρόπον εἶναι τῆς Υἱᾶς, ὅν περ ἐστὶ τῆς „Πατρὸς,,. Τὰ μὲν ἔν τῆς ΚΥΡΙΛΛΟΥ ἐκ τῆς Γ'. τῶν εἰς Ἰωάν: Βιβλ: ταῦτα ὡς: „Πνεῦμα τῆς ἀληθείας, ταῖς ἐξ, ἑαυτῆς τὸν „Παράκλητον εἰπὼν, παρὰ τῆς Πατρὸς αὐτὸν ἐκπορεύεσθαι φησίν· „ὥστε γὰρ ἐστὶν ἰδίου Πνεῦμα τῆς Υἱᾶς φυσικῶς, ἐν αὐτῷ τε „ὑπάρχον, καὶ δι' αὐτῆς προϊὼν, ἔτις καὶ τῆς Πατρὸς,,. Ἀλλ' ἐν „τέτοις μὲν τοι Κύριλλος, φησὶ, τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ὁμοίως ἰδίου „εἶναι τῆς Υἱᾶς, καθάπερ ἐστὶ καὶ τῆς Πατρὸς· ἐκείνο γε μὴν: „τὸ „ἐξ ἧς ἐκπορεύεται,,: ἔτις καὶ περὶ τῆς Υἱᾶς ἐννοεῖ, ὡς ἔπερ, „δηλονότι, καὶ κατὰ τὸνδε τὸν λόγον ὑπῆρχε τὸ Πνεῦμα ἰδίου „τῆς Υἱᾶς· ἀλλὰ μόνον διὰ τὸ ἐκπορεύεσθαι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ „τῆς Πατρὸς, ἐντεῦθεν ἐπιφέρει ἰδίου αὐτὸ εἶναι τῆς Πατρὸς: „Ἐαυτῆς (ἔφη) τὸν Παράκλητον εἰπὼν, παρὰ τῆς Πατρὸς αὐτὸν „ἐκπορεύεσθαι φησίν· ὥστε γὰρ ἐστὶν ἰδίου Πνεῦμα τῆς Υἱᾶς.... „ἔτις καὶ τῆς Πατρὸς,,. Τόδε γὰρ ἐξ ἐκείνης δείκνυται, ὅτι ἐκ „τῆς Πατρὸς προϊέναι λέγεται. Οὗτος ἄρα ὁ τῆς Κυρίλλου νῆς, „ἐκ ἐκείνου πρὸς ὃν ὁ Ἰησοῦς τὰ ἐκείνη ἀνθέλλεκε ῥήματα.

Τῇ δε δὴ τῶν Λατίνων ἐνστάσις: „Ὅτι τὸ Πνεῦμα τὸ „Ἅγιον, Πνεῦμα λέγεται τῆς σόματος καὶ τῶν χειλέων τῆς Χριστῆς· „Ἄρα καὶ ἐκ τῆς Υἱᾶς ἐκπορεύεται (τῇ δε φημί τῇ ἐνστάσι) προ- „σεπιδιατρίβειν ἑδὲν ἐπάναγκες,,. Ταῦτόν γὰρ ἐστὶν ὡς ἔπερ ἐνστάσις: „Ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐστὶ τῆς Υἱᾶς· Ἄρα καὶ ἐκπο- „ρεύεται ἐξ αὐτῆς. Οὐ γὰρ κυρίως χεῖλεά τε καὶ σόμα ἐνεσι „τῷ Θεῷ· ἀνθρωποπρεπῶς δὲ ταῦτα ἐπὶ τῆς Θεᾶς λέγεται: ἵνα „ἀκούοντες τὸ Ἅγιον Πνεῦμα λέγεσθαι „Πνεῦμα τῶν χειλέων, „καὶ

(23) Ὁ Κιχώσιος Ζητήμ: Η'. Σελ: 81.



καὶ τὸ σῶματος τὸ Χριστῶν, διδαχθῶμεν μίαν εἶναι τὴν τὸ Πνεύματος φύσιν τῇ τὸ Χριστῶν καθάπερ καὶ ὅπερ ἄνθρωποι προχέουσι Πνεῦμα, ἐκ ἀλλότριον τῆς ἀνθρωπίνης πέφυκε φύσεως.

Ἀλλ' ἀνθυποφέρουσιν ἔτι: „Ὁ Υἱὸς ἐστὶν ὁ βραχίον τὸ Θεῶν. τὸ δὲ Ἅγιον Πνεῦμα ἐστὶν ὁ δάκτυλος, ὡς ἡ Ἱερὰ Φησὶ Γραφή. ἄλλ' ὁ μὲν βραχίον ἐκ τὸ σῶματος, ὁ δὲ δάκτυλος ἐκ τὸ βραχίονος πρόεισι. τὸ ἄρα Πνεῦμα πρόεισι ἐκ τὸ Υἱῶν. — Ἀλλὰ γὰρ αὐτοὶς ἐδενὶ ἄλλω λόγῳ, ὁ μὲν Υἱὸς „βραχίον,, εἶναι λέγεται τὸ Πατρός, τὸ δὲ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον „δάκτυλος,, τὸ Θεῶν καλεῖται, ἢ ἵνα τῆς αὐτῆς ἐσίας ἀποδειχθῇ τὸ συμφυές τε καὶ ὁμοιώματον. Ὁ μὲν ἔν ἈΘΑΝΑΣΙΟΣ ἐν τῇ κατὰ Νίκαιαν πρὸς Ἀρειον Προσδιαλέξει, ἐν Α'. Τόμ: τῶν Συγγραμ: Σελ: 145. Ἀναλογισάμεθα θέλησον τὴν ἐκ τὸ Υἱῶν σωδοιοπορήσασαν συνέξετασιν, καὶ εὐρήσεις τὴν αἰδίον τὸ Ἅγιον Πνεῦματος διῶμα ὁμοῦσιον τῷ Πατρὶ, ἐκ τὸ δάκτυλον αὐτὸ εἰρησθαι. Ἀμέλει γὰρ τὴν ἀκαταμάχητον δῶαμιν τὸ Ἅγιον Πνεῦματος θεωρήσαντες οἱ Μάγοι ἐν Αἰγύπτῳ, ἐβόων λέγοντες: Τὸ δάκτυλος Θεῶν ἐστὶν. ἐδὲν δὲ ἕτερον, ἢ τὴν ὁμοῦσιον τὸ Ἅγιον Πνεῦματος δῶαμιν ὁμολόγησεν ὡς ἔχει πρὸς τὸν Θεὸν Πατέρα, διὰ τῆς τὸ δακτύλου Θεῶν φωνῆς, ἧς ἀντοφθαλμῆσαι τινὰ ἀδύνατον,,.

Ὁ δὲ Ἀλεξανδρεὺς ΔΙΔΥΜΟΣ Βιβλ: Α'. περὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦματος πρὸς τῷ τέλει ἐν τῷ 5. Τόμ: τῶν Ἱερωνύμου Συγγραμ: „Δὶ ἄλλα δ' ὡσαύτως τῶν Γραφῶν ὑποδείγματος ἢ τῆς Τριάδος ἐνότης καὶ φύσις καὶ διῶαμις δείκνυται. Ὁ Υἱὸς καὶ χεῖρ, καὶ δεξιὰ, καὶ βραχίον τὸ Πατρός λέγεται, ὡς πολλάκις ἐδιδάξαμεν. Ἐκ δὲ τῶν φωνῶν τῶν δε τῆς ἐνιαιίας φύσεως τὸ ἀδιάφορον κατασκευάζεται. Τὸ γὰρ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον δάκτυλος Θεῶν, κατὰ τὴν σωφειαν τῆς φύσεως τὸ Πατρός καὶ τὸ Υἱῶν ὀνομάζεται. — Εἰ ἔν σωῆπται ὁ δάκτυλος τῇ χειρὶ, ἢ δὲ χεῖρ τῷ 5 χεῖρ ἐστὶ καὶ ὁ δάκτυλος ἀναμφιβόλως ἐπὶ τὴν ἐσίαν ἐκείνη ἀναφέρεται, 5 δάκτυλος ἐστὶν. Ἀλλὰ πρόσεχε μὴ ἐπὶ τὰ ταπεινὰ ἀποκρεσθῆς, καὶ τὸ λόγῳ ἐπιλαθόμενος περὶ 5 νῦν ἢ Διάλεξις, μελῶν διαφορὰς σωματικῶν ἐν τῇ σῇ ψυχῇ καταγράψης, καὶ ἄρξῃ παρὰ σεαυτῷ μεγέθη τε, καὶ ἀνισότητας, καὶ τὰ λοιπὰ, καὶ σωμάτων μείζονά τε καὶ ἐλάττωνα μέλη ἀναπλάττεσθαι λέγων τὸν μὲν δάκτυλον ἀπὸ τῆς χειρὸς, τὴν δὲ χεῖρα ἀπὸ τὸ 5 χεῖρ ἐστὶ, πολλάκις ἀνισότησι διενίωχέναι. Ὅτι περὶ ἀσωμάτων νῦν ἢ Γραφῇ φθέγγεται, τὴν ἐνόησεν μόνον, ἐκτετι δὲ καὶ μέτρα τῆς ἐσίας βελομένη ἐνδείξασθαι. Ὡστερ γὰρ ἢ χεῖρ 5 διαυρεῖται τὸ σῶματος, δι' ἧς αὐτὸ πάντα

„ἀποτελεῖ καὶ ἐργάζεται, καὶ ἐν ἐκείνῳ ἐστίν, ἔ ἐστὶ χείρ. Οὕτω  
 „καὶ ὁ δάκτυλος ἔ διαχωρίζεται τῆς χειρὸς, ἥς ἐστὶ δάκτυλος.  
 „Τοιγαρὲν ἀπόβαλε τὰς ἀνισότητας καὶ τὰ μέτρα, ἡνίκα περὶ  
 „Θεῷ λογίσῃ καὶ ἐννόει τῆς τῆ δακτύλου, καὶ τῆς χειρὸς, καὶ  
 „τῆς ὅλης τῆ σώματος ἐσίας τὸ ἐνιαῖον, ὅφ' ἔ δακτύλου ὁ Νόμος  
 „ἐν λιθίναις πλαξὶ γέγραπται,,.

Καὶ ὁ Ναζιανζηνὸς δὲ ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ ἐν τῷ ΛΖ'. Λόγῳ περὶ  
 τῆ Ἁγίας Πνεύματος ἐν τοῖς ἀνωτ: κατὰ τὴν Δ'. τῶν Ἀπαντή-  
 σεων προενεχθεῖσι ῥήμασι: „Καὶ ἐγὼ μὲν φρίττω τὸν πλεον-  
 „ἐννοῶν τῶν κλήσεων, καὶ κατ' ὅσων ὀνομάτων ἀναιχωτῶσιν οἱ  
 „τῷ Πνεύματι ἀντιπίπτοντες. Πνεῦμα Θεῷ λέγεται, Πνεῦμα  
 „Χριστῷ, Νῆς Χριστῷ, Πνεῦμα Κυρίῳ, Αὐτοκύριος Πνεῦμα Τίθε-  
 „σίας, ἀληθείας. — Δάκτυλος Θεῷ, πῦρ ὡς Θεὸς, εἰς ἔμφασιν  
 „οἶμαι τῆ ὁμοσίᾳ,,.

ΚΥΡΙΑΛΛΟΣ δὲ ὁ Ἀλεξανδρεὺς ἐν Ὑπομνήματι τῷ εἰς τὸν  
 Λακῶν, ἐν τῇ Σειρᾷ τῶν Γραικῶν Πατέρων τῇ εἰς τὸν Λακ:  
 ὑπὸ τῆ Ἰησοῦ Κορδερίᾳ, ἐν Ἀνταρπία ἐκδοθέντι, εἰς τὸ ΙΑ'.  
 Κεφάλ: Ἐδάφ: 20. Σελ: 324. „Δάκτυλον ὡς Θεῷ τὸ Πνεῦ-  
 „μα τὸ Ἅγιον ὀνομάζει. Βραχίων μὲν γὰρ αὐτὸς τῷ Θεῷ καὶ  
 „Πατρὸς καλεῖται, τῷ πάντα δι' αὐτῷ ἐνεργῶντος ὡς περ ἐν καὶ  
 „ὁ Τίς ὁμοίως ἐνεργᾷ ἐν τῷ Πνεύματι. Ὡς περ τοίνυν ὁ δάκ-  
 „τυλος ἐνήρμοςαι τῇ χειρὶ, ἔχ ὡς διαφέρων ἐκείνης, ἀλλ' ὡς  
 „αὐτῇ φύσει ἐμπεφυκώς ἔτω καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, καίτοι ἐκ  
 „τῷ Θεῷ καὶ Πατρὸς ἐκπορεύομενον, ὁμοσίως τῷ Τίῳ συνηπται,  
 „καὶ δι' αὐτῷ πάντα ὁ Τίς ἐνεργᾷ,,. Καὶ ἐν τοῖς Θησαυροῖς  
 δὲ, Λόγ: ΛΔ'. ἐν τῷ Ε'. Τόμ: τῶν Συγγραμμάτων, Μέρει Α'.  
 Σελ: 339. „Δάκτυλον, φησὶν, ἐνθάδε τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον,  
 „τρόπον τινὰ τῆς Θείας ἐσίας ἐκπεφυκὸς, καὶ φυσικῶς αὐτῆς  
 „ἐκκρεμάμενον, ὡς περ καὶ ὁ δάκτυλος ἐκ τῆς ἀνθρωπείας χει-  
 „ρὸς. Βραχίονα μὲν γὰρ καὶ δεξιᾶν Θεῷ, τὸν Τίον ἀποκαλεῖσιν  
 „αἱ Θεαὶ Γραφαὶ κατὰ τό: ἔσωσεν αὐτὸν ἡ δεξιὰ αὐτῷ, καὶ  
 „ὁ βραχίων ὁ Ἅγιος αὐτῷ. Καὶ πάλιν: Κύριε ὑψηλὸς Σα ὁ  
 „βραχίων, καὶ ἐκ ἡδαισαν... Ὡς περ ἐν ὁ βραχίων φυσικῶς  
 „ἐνήρμοςαι τῷ ὅλῳ σώματι, πάντα ἐνεργῶν, ὅσα περ ἂν δόξη  
 „τῇ διανοίᾳ καταχρεῖ δὲ σωήθως τῷ δακτύλῳ πρὸς τῷ κε-  
 „ρημένῳ ἔτω τὸν μὲν τῷ Θεῷ Λόγον ἐκ αὐτῷ, καὶ ἐν αὐτῷ  
 „φυσικῶς ἡρμωσμένον, ἵν' ἔτῳς εἴπω, καὶ ἐμπεφυκὸτα λογισόμε-  
 „θα: ἐν δὲ τῷ Τίῳ φυσικῶς τε καὶ ἐσιωδῶς διήκον παρὰ Πα-  
 „τρὸς τὸ Πνεῦμα, δι' ἔ τὰ πάντα χρίων ἀγιάζει. Οὐκ ἐν ἐκ  
 „ἀλλότριον ἐδ' ἀπεξενωμένον τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον τῆς Θείας  
 „φύσεως φαίνεται, ἀλλ' ἐκ αὐτῆς καὶ ἐν αὐτῇ φυσικῶς, ὡς περ  
 „ἐν

„ἔν κὲ ὁ τῷ σώματος δάκτυλος ἐν τῇ χειρὶ, ὁμοφυῆς ὢν αὐτῇ·  
 „καὶ ἡ χεὶρ αὖ πάλιν ἐν τῷ σώματι ἔχ ἑτεροόσιος ὡς πρὸς  
 „αὐτὸ τυγχάνουσα. Τύτων δὲ ἡμῖν ἐχόντων τῇδε, Θεὸς ἄρα  
 „τὸ Πνεῦμα ἐστὶ, καὶ ἔχ ἑτέρως,,.

ἈΝΑΣΤΑΣΙΟΣ δὲ ὁ Σιναΐτης ἐν Βιβλ: Α'. περὶ τῶν Δογ-  
 μάτων τῆς Πίσεως, ἐν Τόμ: 5'. τῆς τῶν Πατέρ: Βιβλιοθ: τῆς  
 ἐν Κολων: Σελ: 696. „Εἰ πάντα ποιῇ διὰ τῷ Υἱῷ, τρεῖσι  
 „διὰ τῷ Λόγῳ ὅς ῥα ἐν ἀρχῇ, ἥτοι ἐν τῷ Πατρί· παρὰ δὲ τῷ  
 „Θεῷ τὸ Πνεῦμα καὶ ἡ χεὶρ αὐτῷ πάντα ἐποίησε, καὶ οἱ δάκ-  
 „τυλοι αὐτῷ τὸν ἔβρανόν· ἔδδεν οἶμαι διοίσει ὀνομάσαι Υἱὸν, ἢ  
 „Πνεῦμα, ἢ χεῖρας εἶπεν, καὶ δακτύλους, κὲ τὰ τοιαῦτα, εἴπερ  
 „τῷ ὁμοοσιότητα, καὶ τῷ σωεργόν δώαμιν καὶ ἐνέργειαν, διὰ  
 „τῆς τῶν μελῶν σωμαθείας, τὰ συμβολικῶς ὀνομαζόμενα διαφαί-  
 „νουν. Ἐπειδὴ ἀσώματος ἐστὶν ὁ Θεός, καὶ ἔθελμις ἡγεῖσθαι  
 „μέλεσιν ἀποχρηῖσθαι, ὡς ἡμῖν σώηθες· ὡς εἶγε τὸ ὁμοόσιον  
 „ταῦτα δεικνύουσιν; ἢ δὲ χεὶρ καὶ οἱ ἐν αὐτῇ δάκτυλοι τῆς αὐ-  
 „τῆς φύσεως ἀλλήλοις τε δὴ, κὲ τῷ σώματι εἰσὶ· πάντῃ πάντως  
 „ἀποδεδαγμένον ἐστὶ, μίαν εἶναι καὶ ἀδιαίρετον τῷ Θεῷ φύσιν,  
 „καὶ εἰς φύσεως ἑτέρας ἀδιαμερίζον,,. Τὸ ἄρα Ἅγιον Πνεῦμα  
 „δάκτυλος Θεῷ, ὁ δὲ Υἱὸς βραχίον αὐτῷ λέγεται, διὰ τῷ τῆς  
 φύσεως τε καὶ δωάμεως ἐνότητα. Τίνι δ' ἔν ποτ' ἀνάγκη ἐκ τῷ  
 ὁμοόσιον τῷ Υἱῷ εἶναι τὸ Πνεῦμα, καὶ ὁμοδιώαμον, σωμαψαῖς  
 ἂν ἐπιφέρων τὸ Πνεῦμα καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ ἐκπορεύεσθαι; Ἐπειτα,  
 σιμήρμοςαι μὲν ὁ βραχίον τῷ σώματι, ἢ δὲ χεὶρ τῷ βραχίονι,  
 ὁ δὲ δάκτυλος τῇ χειρὶ μήποτε δὲ ἄρα ὁ δάκτυλος ἀπὸ τῷ  
 βραχίονος προελήλυθε; Πῶς δ' ἂν ἐκ τῷ ὁμοίῳ τῷδε ἢ τῷ  
 Πνεύματος ἐκ τῷ Υἱῷ ἂν ἀποδειχθῇ Ἐκπόρευσις; Τῷ γὰρ  
 χεῖρα ἐκ τῷ βραχίονος προῖεναι, ἔ κατ' ἄλλω ἐννοίαν λέγεται,  
 ἢ καθὼ δηλᾶται τῷ χεῖρα σωμαπτεσθαι τῷ βραχίονι.

Ἄλλ' ἔτι καὶ ὁ Μέγας ΒΑΣΙΛΕΙΟΣ παρίσῃσιν, ὡς διὰ μό-  
 νω τῷ τῷ ποιῇ τὰ θαυμαστικὰ δώαμιν, τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον  
 τῷ Θεῷ δάκτυλος κατωνόμασαι. Οὕτω γὰρ ἐν τῷ Ε'. Βιβλίῳ  
 τῶν κατὰ Εὐνομίαν, Τόμ: Β'. Σελ: 112. (25) „Δάκτυλος δὲ  
 „Θεῷ ἐν τέτοις τοῖς ὑπὸ Μωσέως, καὶ τοῖς τῷ Κυρίῳ σημείοις  
 „ἔρηται τὸ Πνεῦμα, ἔχ ὅτι μικρά τις ἐστὶ τῷ Θεῷ ἐνῶσα δύ-  
 „ναμις, καθάπερ σώματι δάκτυλος· ἀλλ' ἐπειδὴ ἐν τι τῶν κατὰ  
 „διαίρεσιν χαρισμάτων ἐστὶν αὐτῷ τὸ χάρισμα τῶν σημείων καὶ  
 „λαμάτων, τὸ ἐν τι, κὲ ἔχι τὰ ὅλα χαρίσματα τῷ Πνεύματος,  
 „δάκτυλον καλεῖ· ὥ μὲν γὰρ διὰ τῷ Πνεύματος δίδοται λόγος  
 „σοφίας,

(24) Κατὰ δὲ τῷ Γαβριήλ Ἐκδοσιν ἐν Τόμ: Α'. Σελ: 298.

Τόμ: Β'.

„σοφίας, ἄλλω δὲ λόγος γνώσεως κατὰ τὸ αὐτὸ Πνεῦμα, ἄλλω  
 „δὲ χαρίσματα ἰαμάτων ἐν τῷ αὐτῷ Πνέματι, ἄλλω δὲ Προ-  
 „φητεία, ἄλλω δὲ διάκρισις πνευμάτων, ἄλλω δὲ γένος γλωσσῶν,  
 „ἄλλω δὲ ἐρμηνεία γλωσσῶν· ταῦτα δὲ πάντα ἐνεργεῖ τὸ ἐν ἡ-  
 „τὸ αὐτὸ Πνεῦμα, διακρῖν ἰδίᾳ ἐκάσῳ καθὼς βέλεται. Εἴποι  
 „τις ἂν, ὅτι ταῦτα πάντα, καὶ ὅσα ἄλλα χαρίσματα εἰσὶ τῷ  
 „Πνέματι, ὥσπερ τι σῶμα αὐτὸ τυγχάνει, τὸ δὲ καθ' ἐν τῶν  
 „χαρισμάτων δάκτυλος,,.

Ἐνθεντοι καὶ ΑΥΤΟΥΣΤΙΝΟΣ Βιβλ: Β': τῶν Εὐαγγελικῶν  
 Ἑρωτήσεων, Ἑρωτήσαι ΙΖ'. Τόμ: Α'. τῶν Συγγραμ: „Ἐντεῦθεν  
 „ἔτι λέγεται τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον δάκτυλος Θεῶ, διὰ τῶν δια-  
 „μερισμῶν τῶν δωρεῶν, τῶν ἐν αὐτῷ χορηγημένων ἰδίᾳ ἐκάσῳ,  
 „ἥτοι τῶν ἀνθρώπων, ἢ τῶν Ἀγγέλων. Ἐν ἐδενί γὰρ τῶν  
 „ἡμετέρων μελῶν μάλλον ὁ μερισμὸς καταφαίνεται, ἢ ἐπὶ τῶν  
 „δακτύλων,,. Ταῦτα δὲ ταῦτα καὶ ΒΕΔΑΣ ἐπαναλαμβάνει ἐν  
 τῷ Δ'. Βιβλ: τῷ εἰς τὸν Λακῶν Ὑπομνήματος, Κεφαλαίῳ ΜΗ'.  
 ἐν τῷ Ε'. Τόμ: τῶν Συγγραμμάτων, Στήλη 339. Καὶ ἐν τῇ  
 Τεσσαρακοσησίμῳ δὲ Ὀμιλίᾳ, Κυριακ: Γ'. εἰς τὴν Τεσσαρακοσίῳ,  
 ἐν Τόμ: Ζ'. τῶν Συγγραμμάτων, Στήλη 249. Καὶ εἰς τὴν ἐξή-  
 γησιν δὲ αὕτη τῇ προτεθείᾳ τῶν Λατίνων ἐνστάσει ἐπιβοηθεῖ,  
 ὡς παντί περ κατάδηλον.

Ἄ δὲ κοινῇ προτείνεσι, παρὰ τὸ λέγεσθαι τὸ Πνεῦμα προϊ-  
 εῖναι ἐκ τῷ σώματος τῷ Πατρὶ, τὸν δὲ Υἱὸν τὸ τῷ Πατρὶ  
 εἶναι σῶμα· ταῦτα ἐν τῇ Πραγματείᾳ ἐπιλυσόμεθα, ἐν ἣ τὰς  
 ἀντιφερομένας ἡμῖν ἀντιμαρτυρήσεις ἐκ τῶν Συγγραφέντων τοῖς  
 Ἀνατολικοῖς Πατέρεσιν ἀνασκόψασμεν.

Ἀλλ' ἀντιβάλλει τις (25) τὰ Κυρίλλου ἐκεῖνα ἐκ τῷ ΙΑ'. Βιβλ:  
 τῶν εἰς τὸν Ἰωάν: Φύλ: 925. „Βλέπε δὲ, ὡς ἐγρήγορεν ἡ  
 „Φωνή· ὅρα τῷ λόγῳ τῷ νῆψιν· προερρηκὼς γὰρ ἦξεν ἐπ' αὐτῷ  
 „τὸν Παράκλητον, τὸ Πνεῦμα τῆς ἀληθείας ὠνόμασεν αὐτόν·  
 „τῷ αὐτῷ αὐτὸς γὰρ ἐστὶν ἡ ἀλήθεια . . . εἰ γὰρ ἀλλότριον  
 „τῆς ὁσίας τῷ Μονογενεῖ τὸ Ἅγιον νοεῖται Πνεῦμα, πρόεισι δὲ  
 „φυσικῶς ἐξ αὐτῆς,,. — Οὐκ ἐν μὲν τοῖς Κυρίλλου αὐτόθι, φησὶν  
 ἐκπορεύεσθαι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῆς ὁσίας τῷ Υἱῷ, ἀλλὰ μό-  
 νον προϊέναι ἐξ αὐτῆς· ταῦτα γὰρ ἐκείνους τὰ ῥήματα: „Πρόεισι  
 „δὲ φυσικῶς ἐξ αὐτῆς,,· ὁ δὲ νῦν ὁ τῷ Κυρίλλῳ ἐστὶν, ὅτι ὁ  
 Υἱὸς ἡμῖν ἐπιδαψιλεύεται τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, εἰς ὡς ἀλλότριον,  
 εἰ δὲ ὑπεργικῶς· ἀλλ' ὡς ὁμοῦσιον, καὶ ἐν ἑαυτῷ ἴδιον ἔχων, κα-  
 θάπερ ἐν πλάτει, ἐπὶ τῆς ἡδὴ προβρῆθείσης Πραγματείας, περὶ  
 τὰ

(25) Κιχώβιος Ζητήμ: Α'. Σελ: 3.



τὰ Κυρίλλου ῥήματα αὐτοὶ ἀποδείξομεν. Κατὰ τινὶδε τινὶ διά-  
νοιαν ἄρα, τῷ Τιῷ Πνεῦμα φησὶν ὁ Κύριλλος εἶναι τὸ Πνεῦμα  
τὸ Ἅγιον, ὡς ἐπὶ τῆς αὐτῆς ἐκείνης Πραγματείας, αὐτό τε  
τῷτο, καὶ τὰ λοιπὰ ὅσα παραπλήσια ἐκ τῶν τῷ Κυρίλλῳ,  
ἐπ' ἀναπτύξει τῶν τῷ Κυρίῳ ῥημάτων, ὁ μνημονοῦθαις Ἰησοῦ  
της, καὶ οἱ λοιποὶ τῶν Λατίνων εἰώθασιν ἀναφέρειν, ἐπιλυ-  
σόμεθα.

Ὁ δ' αὐτὸς Συγγραφεὺς καὶ τὰ Ἐπιφανίᾳ ἀντιπροβάλλει  
ἐκεῖνα, τὰ ἐκ τῆς ΟΔ. Αἰρέσεως: „Τὸ Ἅγιον Πνεῦμα μόνον  
καλεῖται ὑπὸ, (ἢ ἀπὸ) Πατρὸς καὶ Τιῷ Πνεῦμα ἀληθείας,  
καὶ Πνεῦμα Θεῶν. — Ὡς ἔπερ ἡμεῖς ὁ τῷ Ἐπιφανίᾳ, ὅτι  
ἐν ᾧ τὸ Πνεῦμα λέγεται Πνεῦμα τῆς ἀληθείας, ἐκ τῷ Τιῷ αὐτὸ  
ἐκπορεύεσθαι νοεῖται. (26) Ἀλλὰ καὶ ῥαδιουργεῖ περὶ τὰ Ἐπιφανίᾳ  
ὁ Ἰησοῦτης

(26) Ὁ μὲν σκοπὸς τῷ Ἱερῷ Ἐπιφανίᾳ ἐνταῦθα πρέκειτο, τῶν ἐν ταῖς Γραφαῖς ἀνα-  
φερομένων διαφορῶν πνύμάτων, τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἀντιδιασεῖλαι, τὸ Θεῶν  
καὶ ἐνυπόστατον. Διὸ καὶ ὅθεν ἐκεῖνα, τὰ πνύματα ὀνομάζεσθαι εἴληχε δείξας,  
ἐπιφέρει ἀφ' ὧν καλεῖται τὸ κυρίως τε καὶ ἀληθῶς Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. Καὶ περὶ  
μὲν ἐκεῖνων: „Ἀπερ, φησὶ, τὰ περὶ πνύμάτων λόγια τοῖς σοφοῖς,“ (ἄπερ δὴ  
καὶ ἐφεξῆς πρόεισι καταλέγων αὐτά) λέγεται γὰρ Πνύματα Λειτουργικά· Πνύ-  
ματα δὲ καὶ τὰ χαρίσματα· καὶ Πνύματα ἐπερῶνια· Πνύματα ἐπίγεια, ἀπά-  
της καὶ πλάνης· Πνύματα ὑπόγεια, αἰῶσε καὶ σκότους τέκνα· καὶ Πνεῦμα κρί-  
σεως, καὶ Πνεῦμα καύσεως, καὶ Πνεῦμα κόσμου, καὶ Πνεῦμα ἀνθρώπου, καὶ Πνεῦμα  
Προφήτου· Πνεῦμα κατανύξεως, Πνεῦμα δειλίας, Πνεῦμα Πύθωνος, Πνεῦμα πορ-  
νείας, Πνεῦμα καταιγίδος· Πνεῦμα πολυῤῥήμον, Πνεῦμα ἀδενείας, Πνεῦμα ἀκά-  
θαρτον καὶ κωφόν, καὶ ἀλαλον, καὶ μογιῶλον· καὶ Πνεῦμα χαλεπὸν λίαν, ὃ  
καλεῖται Λεγεών. — Τῶν δὲ ἕτω καταλεχθέντων, ἄπερ, ἀπὸ διαφορῶν, δηλο-  
νότι, πραγμάτων, ἢ ἔργων, διωάμεων ἢ ἀδιωάμεων, ἀρετῶν ἢ κακιῶν, ὀνόμασαι  
Πνύματα· ἐπὶ τὸ κυρίως τε καὶ παναληθῶς καὶ ὅν καὶ ὑμνέμενον μεταβαίνει  
Πανάγιον Πνεῦμα, καὶ δέκνυσιν ἀφ' ὧν αὐτὸ ἐν Ἱερῶν Δέλοις εἶωθεν ὀνομά-  
ζεσθαι· λέγει δὲ: ὅτι αὐτὸ καλεῖται μὲν ἀπὸ τῷ Πατρὸς „Πνεῦμα Θεῶν,“ καλεῖ-  
ται δὲ ἀπὸ τῷ Τιῷ „Πνεῦμα ἀληθείας, καὶ Πνεῦμα Χριστοῦ,“ καλεῖται δὲ καὶ  
ἀφ' ἑαυτοῦ „Πνεῦμα Χάριτος,“ χαρίζεται γὰρ ἐκάσῳ τὸ ἀγαθόν, διαιρῶν ἐκάσῳ  
ὡς βέλεται· ὅτι τὸ „Πνεῦμα σε,“ τὸ ἀγαθὸν ὁδηγήσει με . . . καὶ τὸ „Πνεῦμα  
ὅπως θέλει,“ πνεῖ δεικνύς ἡμῖν διὰ τῶν τοιούτων τὸ τῷ Ἁγ: Πνύματι ἐνυπόστατον.  
Καὶ αὕτη μὲν ἡ πρόθεσις τῷ Ἱερῷ Ἐπιφανίᾳ, τὰ ὀνόματα διασεῖλαι, ἵνα τινὶ  
διαφορᾷ τῶν ὀνομαζομένων ἐνδείξηται. Διὸ καὶ φησὶ: „Τὸ δὲ Ἅγιον Πνεῦμα μό-  
νον καλεῖται ἀπὸ Πατρὸς καὶ Τιῷ, Πνεῦμα ἀληθείας, καὶ Πνεῦμα Θεῶν, καὶ  
Πνεῦμα Χριστοῦ, καὶ Πνεῦμα χάριτος,“ μὴδὲν ἐνταῦθα σκοπῶν εἰπεῖν περὶ τῆς  
ἐκ Πατρὸς καὶ Τιῷ Ἐκπορεύσεως τῷ Πνύματος, (ὡς ὁ Ἰησοῦτης ῥαδιουργῶν κα-  
κέρως σοφίζεται) ἀλλὰ περὶ τῷ ἀπ' αὐτῶν ὀνομάζεσθαι ὅπερ αὐτὸ μόνον ἔχον  
ἐστὶ, παρὰ τὰ λοιπὰ τὰ ἄλλως λεγόμενα Πνύματα: „Τὸ γὰρ Ἅγιον (φησὶ)  
Πνεῦμα μόνον καλεῖται ἀπὸ Πατρὸς καὶ Τιῷ,“ Ἡ δὲ τῷ Ἰησοῦτι ῥαδιουργία  
αὕτη, καὶ χολίῳ ἔμπης κινήσειεν· ἕτως ἀναιδὲς ἐστὶ καὶ εὐφώρατος πολλὰχόθεν,  
ὡς μὴδὲ εἶναι εὐφώρητος. Τριῶν γὰρ ὄντων τρόπων οἷς ῥησις τις διανοθεύει πα-  
ραραπονηθεῖσα: „Διασηῖ· Ἀλλοιώσει, Προθήκη,“ μᾶλλον δὲ τετλίρων (καὶ γὰρ  
καὶ „Ἀφαιρέσει,“) ἀπασι δὴ καὶ τοῖς τέσσαρσιν ἐνταῦθα ὁ Ἰησοῦτης ἐλέγχεται  
προχρησάμενος ἐπὶ διαφορᾷ τῆς ἀπὸ τῷ Θεωσὶ Πατρὸς προτεθείσης ῥήσεως.  
1) „Διασηῖ: τῷ γὰρ Ἐπιφανίᾳ εἰπόντος, ὅτι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον μόνον κα-  
λεῖται ἀπὸ Πατρὸς καὶ Τιῷ Πνεῦμα ἀληθείας, καὶ Πνεῦμα Θεῶν,“ κτ: ὁ Ἰησοῦτης  
παρέγραφε τε καὶ ἀνεγίνωσκε: Sanctus Spiritus unus dicitur: à Patre et Filio etc:



ὁ Ἰησοῦς δολιχόβουλος· ἔ γὰρ Ἐπιφάνιος ἐκεῖνα („Ἀπὸ Πατρὸς καὶ Υἱῶ,“) διακρίνει τῶν ἡγήσαμένων· ἔδὲ μὲν ἐν προσίῳσι τὸ μόριον (ἦ)· ἔδ' ἄχρι τῶν ἀπομνημονοθέντων ἴσαται· ἔτω γὰρ ἀκέραια ἔχει τὰ ἐκεῖνα ῥήματα ἐν τῷ Ἀγκυρωτῷ, Ἀριθμ: ΟΒ'. Καὶ Αἰρέσει ΟΔ'. Ἀριθμ: Θ'. „Τὸ δὲ Ἅγιον Πνεῦμα μόνον καλεῖται ἀπὸ Πατρὸς καὶ Υἱῶ, Πνεῦμα ἀληθείας, καὶ Πνεῦμα Θεῶ, καὶ Πνεῦμα Χριστοῦ,“. Ἐνθα καὶ τῶν ἐπομένων ἐκεῖνα: („Ἀπὸ Πατρὸς καὶ Υἱῶ“) διασέλησ, ἔδ' ἔτως ἐντεῦθεν τῇ τῶν Λατίνων δόξῃ ἰσχύος τι προσεπιγενήσεται. Ὁ γὰρ νῦν ἐστίν, ὅτι ἐκ μὲν τοῦ Πατρὸς ἐκπορεύεται, ἐκ δὲ τοῦ Υἱῶ λαμβάνει, καθάπερ ἐν τῇ προῤῥηθείσῃ Πραγματείᾳ, περὶ τὰ Ἐπιφανίᾳ ῥήματα τῷτο δείκνυται. Ἐπειτα καὶ ἀτόπως ὁ Ἰησοῦς, τῷ Ἐπιφανίᾳ εἰρηκότος τὸ Πνεῦμα ἀπὸ τοῦ Πατρὸς καὶ τοῦ Υἱῶ λέγεσθαι Πνεῦμα ἀληθείας

(Πνεῦμα δὲ Ἅγιον ἐν λέγεται) Ἐνθα δὲ εἰζας τὸ δίσιμον (:), ὅσον ἐξ ὑπαρχῆς ἀναλαβάν, φησὶν: (ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱῶ) ἵνα δὴ νήσῃς τὸ ἐξ ἀμφοῖν, ὑπονοημένον τῷ (ὄν). 2) „Ἀλλοιῶσαι,“ ἢ δ' ἀλλοιώσις διτλή: Δ'. μὲν ἡ κατὰ τὸν νῦν τῆς ἐν τῇ Προτάσει καθήγορίας. Ἐπὶ μὲν γὰρ τῆς κατ' Ἐπιφάνιον Ἀποφάνσεως, ὑποκείμενον μὲν ἐστὶ τό: (μόνον τὸ Ἅγιον Πνεῦμα) κατηγορούμενον δὲ, τό: (καλεῖσθαι ἀπὸ Πατρὸς καὶ Υἱῶ) ἐπὶ δὲ τῆς κατὰ τὸν Ἰησοῦν, ὑπόκειται μὲν τό: (ἐν, ἢ τὸ μόνον) κατηγορεῖται δὲ τό: (καλεῖσθαι Ἅγιον Πνεῦμα.) Καὶ ὁ μὲν ἔλεγεν: ὅτι („μόνον τὸ Ἅγιον Πνεῦμα καλεῖται ἀπὸ Πατρὸς καὶ Υἱῶ, Πνεῦμα ἀληθείας, Πνεῦμα Θεῶ,“) ἔτος δ' ἐκεῖνον ποιεῖ λέγοντα ὅτι, (ἐν καὶ μόνον ἐστὶ τὸ λεγόμενον Πνεῦμα Ἅγιον) Sanctus Spiritus unus dicitur: Β'. δὲ ἡ ἀλλοιώσις, ἢ παρὰ τὸν νῦν τῆς Προθέσεως. Ἐπιφάνιος γὰρ τῇ (ὑπὸ) Προθέσει ἐχρήσατο ἐν τῇ ΟΔ'. Αἰρέσει ἢ (ὁ καὶ ἀμεινον) τῇ (ἀπό), ἐν τῷ Ἀγκυρωτῷ, Ἀριθμ: ΟΒ'. Οὐδετέρᾳ δὲ τῶν Προθέσεων τέτων (ἔθ' ἢ ὑπὸ, ἔθ' ἢ ἀπό) εἰς ἐκφανσιν τῆς προαιωνίᾳ τε καὶ ὑποστατικῆς προόδου τοῦ Πνεύματος παρελήπται (ἐχ' ὅσα γὰρ καὶ μεμνηθῆναι) παρά τινος· ἀλλ' ἦτοι ἢ (ἐκ) ἢ γέν ἢ (παρὰ) εἰς τῷτο διὰ τῆς σωτηρίας παραλαμβάνεται. Ὁ δὲ Ἰησοῦς τῇ Λατινικῇ Προθέσει (ἀ) προσκέχρηται· ἥτις (καθὰ καὶ ἡ ἐκ) παρ' αὐτοῖς Λατίνοις ἐπὶ τῇ Ἐκπορεύσει προσφυῶς τίθεται· ἀπὸ τοῦ τῷ τῆς, δηλονότι, τῷτο τῆς Λατινίδος ἀποκερδάνας φωνῆς, τὸ ἀπὸ Πατρὸς καὶ Υἱῶ ὧδε, ἢ ὧδε καλόμενον, διωηθῆναι παραστήσαι ἐκ τοῦ Πατρὸς αὐτὸ καὶ τῷ Υἱῶ εἶναι ἐκπορεύμενον. Ἀλλὰ 3) καὶ „Προθήκη,“ ἐπὶ βραδερῶν φαίνεται ὁ Ἰησοῦς. Παρὰ γὰρ τῷ Ἐπιφανίῳ ἀπλῶς κεῖται, ὅτι „τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, καλεῖται ἀπὸ Πατρὸς καὶ Υἱῶ, Πνεῦμα ἀληθείας, Πνεῦμα Θεῶ, κατ: Ὁ δὲ Ἰησοῦς προηγεῖσθαι τάσσει τῷ κόμματι: (Πνεῦμα ἀληθείας) τὸ μέριον: ut pote: (ἦ, καθὸ) ἵνα δὴ, ἐκόντος, ἄκοντος τοῦ Πατρὸς Ἐπιφανίᾳ, σωτηρημένον αὐτὸς ἐκπορίσσηται τὸ ἴδιον δόξασμα. Φησὶ γὰρ: S. Spiritus unus dicitur à Patre et Filio; ut pote Spiritus Veritatis. etc. ὅπερ ἐστίν: „Ἅγιον Πνεῦμα ἐν καὶ μόνον λέγεται, τὸ ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱῶ καθὸ Πνεῦμα ἀληθείας, κατ: ἦγεν τὸ ὄν ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱῶ, κατὰ τῷτο: καθὸ ἐστὶ Πνεῦμα τῆς ἀληθείας, καὶ Πνεῦμα τοῦ Θεῶ. Τελούταιον δὲ 4) καὶ „Ἀφαιρέσει,“ Δέον γὰρ ἀνελεῖν καὶ μὴ κολεῖν τὸ εἰρημένον ἐπαγαγεῖν· μηδὲ εἰσῆναι ἄχρι τοῦ (Πνεῦμα ἀληθείας, καὶ Πνεῦμα Χριστοῦ) προδεῖναι δὲ καὶ τὰ ἐφεξῆς ἀμέσως ἐπόμενα, ὅτι „καὶ Πνεῦμα χάριτος, καθὸ καὶ τὸ ἀγαθὸν χαρίζεται, καὶ διαιρεῖ ὡς ἐκάτω βέλεται, καὶ ὁδηγεῖ ἐν γῇ εὐδοσίᾳ, καὶ ὅπερ θέλει πνεῖ,“ ὁ δὲ δολίως αὐτὰ ἀπεσίγησε, σιωπῶν ὅτι: καὶ τὸ Πνεῦμα τῆς ἀληθείας, καὶ Πνεῦμα τοῦ Θεῶ, λόγον αὐτῷ τινὰ παρῆχεν, ὡς ὦτο, τῷ ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱῶ τὸ Πνεῦμα προῖναι ἐνδείξεσθαι· ἀλλὰ τὰ μετὰ ταῦτα τιῶ ἀπάτῃ εἰς ἀπελέρχεται· ἔ γὰρ καὶ ἐκεῖνα εἰς δήλωσιν τοῦ ὅθεν ὑπάρχει τὸ Πνεῦμα, ἡδυνάτο μετελκύσασθαι. Εἰ μὴ ἐχρεῖα τὸν ἐγκέφαλον ἐξεπτυκτότα δογματίσαι, τὸ καὶ αὐτὸ ἀφ' ἐαυτοῦ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκπορεύεσθαι.

ἀληθείας καὶ Πνεῦμα Θεῶ, τοιόνδε τὸν νῦν ὑπετίθετο εἶναι τῶν λεγομένων, ὡς δῆθεν διά γε τῆτο ἐκ τῆ Πατρὸς καὶ ἐκ τῆ Τίξ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ὅτι Πνεῦμα λέγεται ἀληθείας καὶ Πνεῦμα Θεῶ. Οὐ γὰρ προσέθετο Ἐπιφάνιος (καθὰ ψευδῶς τὰ τέτα οἱ Ἰησοῖτης παράγει) τὸ ut pote: τετέστιν (ἢ) αἶτ' εἴν καθὸ Πνεῦμα ἀληθείας, καὶ Πνεῦμα Θεῶ· ἀπλῶς δὲ, φησὶν, ἐν τῇ Ἱερᾷ Γραφῇ λέγεσθαι: ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἀπὸ τῆ Πατρὸς καὶ τῆ Τίξ καλεῖται Πνεῦμα ἀληθείας, καὶ Πνεῦμα Θεῶ: ἐκείνα δὲ μόνον παρασηῶσαι σκοπῶν, αἵτις ἐν τοῖς Θεοῖς λογίοις περὶ τῆ Πνύματος λέλεκται. Ταύτῃ δέτοι, καὶ μετὰ τὰ ἐπενεχθέντα: (Πνεῦμα ἀληθείας, καὶ Πνεῦμα Θεῶ), προσίθῃσι καί: (Πνεῦμα Χρισῶ) ὃ πάντως ἐκ αὐν προσέθετο, εἴπερ ἐκ τῆ (Πνεῦμα ἀληθείας, καὶ Πνεῦμα Θεῶ) λέγεσθαι, δεῖξαι ἐβέλετο τὸ Πνεῦμα ἐκπορεύεσθαι ἐκ τῆ Πατρὸς καὶ ἐκ τῆ Τίξ. Ὅλως γὰρ αὐν ἔτως ἢ τῶν λεγομένων τάξις διαταράττοιτο· ἔ δὲ χάριν, καὶ τὰ τελοῦτα ἐκείνα τῆ Ἐπιφανίς διαμνημονεῦσαι μετὰ τῶν ἄλλων ὁ Ἰησοῖτης παρέλιπε. Τὸ γὰρ Πνεῦμα Χρισῶ σωαπτέον ὡ πάντως τῷ πρῶτον ταχθέντι: Πνεῦμα ἀληθείας.

Ἀντιπροτέίνουσι (27) τελοῦταῶν τὸ τῆς Ἀποστολικῆς ῥήσεως: „Ὁν ὁ Κύριος Ἰησῶς ἀναλώσει τῷ Πνύματι τῆ σόματος αὐτῶ,“ φάσκοντες τὴν ῥῆσιν ταύτῃ ὑπὸ τῶν Ἀνατολικῶν παρεφθάρθαι ἀφελόντων μὲν τὴν φωνήν: („Ἰησῶς,“), κοινῇ δ' ἀναγινωσκόντων: „ὃν ὁ Κύριος ἀναλώσει τῷ Πνύματι τῆ σόματος αὐτῶ,“ καίτοι γε τῆς φωνῆς (Ἰησῶς ἐμφερομένης ἐν Παλαιῷ τινι Ἐξεμπλασίῳ, τῷ ἐν Μοχοσίῳ ἐκδοδομένῳ.

Ἄλλ' ἡδέως ἡμεῖς συγχωρῶμεν τὴν χρῆσιν πάσαι ἀναγινώσκεισθαι μετὰ τῆς φωνῆς „Ἰησῶς,“, ὡς ἐκ τῶν ἀρχαίων μάλισα Λατίνων Πατέρων, φανερόν γίνεται. Οὕτω γὰρ τῶν ῥημάτων ἐκείνων ὁ ΤΕΡΤΥΛΛΙΑΝΟ'Σ μνημονοῦει, Βιβλ: περὶ Ἀναστάσεως τῆς σαρκὸς, Κεφ: ΚΔ'. Καὶ ἹΕΡΩΝΥΜΟΣ ἐν τῇ κατ' αὐτὸν Ἑρμηνείᾳ. Καὶ ἈΜΒΡΟΣΙΟΣ Βιβλ: Γ'. περὶ τῆ Ἁγίης Πνύματος, Κεφαλ: Ζ'. Καὶ ΡΟΥΦΙΝΟΣ ἐν τῇ Ἐκθέσει τῆ Συμβόλης. Καὶ ΑΤΤΟΥΣΤΙΝΟΣ Βιβλίῳ Κ'. περὶ Πόλεως Θεῶ, καὶ ἐν Ἐπισ: Π'. Καὶ ἩΣΥΧΙΟΣ δὲ ἐν ταῖς Αὐγυστίνης Ἐπισολαῖς, Ἐπισ: ΟΘ'. Καὶ ΦΟΥΛΓΕΝΤΙΟΣ ἐν τῷ περὶ Πίσεως Βιβλ: πρὸς Πέτρον, Κεφαλ: ΙΑ'. Καὶ ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ ὁ Μέγας Βιβλ: ΙΔ'. εἰς τὸν Ἰωῆ, Κεφαλ: ΙΑ'. Καὶ ὁ ΒΕΔΑΣ ἐν τῷ Ὑπομνήμῃ: εἰς τὴν πρὸς Θεσσαλονικ: Ἐπισ: πρὸς τὰ εἰρημένα. Καὶ ἈΝΣΕΛΜΟΣ

(27) Κιχώβιος Ζητήμ: Α'. Σελ: 15.

Τόμ: Β'.

Π π

ΣΕΛΜΟΣ ὁμοίως ἐν τῷ Ὑπομνήματι. Καὶ ΠΕΤΡΟΣ ὁ ΔΑΜΙΑΝΟΥΤ Βιβλ: 5'. τῶν Ἐπισολῶν, Ἐπισολ: ΙΕ'. καὶ ἐν τῷ ΛΗ'. Πονημαλίω, τῷ περὶ τῆς Ἐκπορεύ: τῆς Ἀγ: Πνεύματος, Κεφ: Γ'. Καὶ τὰς παλαιὰς δὲ τῶν Χειρογράφων Γραμμῶν Κωδίκων τῆς Θείας Γραφῆς ἔτις ἔχεν, μαρτυρεῖ ἐν τοῖς Πολυγλώσσοις τῶν Ἱερῶν Βιβλίων ΒΡΙΑΝΟΣ ὁ ΒΑΛΤΟΝΟΣ ἐν τῇ Ἐκδόσει τῇ ἐν Λονδίῳ, Ἔτη 1657. ἐν Τόμ: Ε'. Σελίδι 818. (28) Ὁμοίως δὲ ἀναγινώσκει τὸ ῥήματα ταῦτα τῆς Ἀποστόλῃς καὶ ἈΘΑΝΑΣΙΟΣ ἐν Ἐπισ: τῇ πρὸς Σεραπίωνα, ἐν Τόμ: Α'. τῶν Συγγραμμάτων: Σελ: 349. τῆς ἐν Ἐιδελξέρῃ Ἐκδόσεως, Ἔτη 1600. Καὶ ὁ ΧΡΥΣΟΣΤΟΜΟΣ ἐν τῷ Ὑπομνήματι Ὁμιλ: Δ'. εἰς τὴν Β. πρὸς Θεσσαλονικεῖς Ἐπισολῶν. Καθ' ἡμᾶς δὲ ἡ τῆς χωρὶς ἀνάγνωσις ἐν τοῖς Ἑλληνικοῖς Κώδιξι. τῆς Φωνῆς ἸΗΣΟΥΤΣ ἀμοιρεῖ. ὡς δὲ φωνὴ ἀγνοεῖ καὶ ἡ κατὰ τὰς Ἀραβας Ἑρμηνεία, καὶ ἡ τῶν Αἰθιοπῶν παρὰ τῷ Βαλτόνῳ ἐνθα εἴρηται.

Ἀλλὰ γὰρ εἰδὼν καινὸν ἔμπης, εἴτι τῶν ἐν ταῖς Ἱεραῖς Γραφαῖς χωρίων διαφερέσεως ἔτυχεν Ἀναγνώσεως. Ὅσαι γὰρ ἐπικαῶς Ἀναγνώσεις διὰ τῆς Ἱεραῖς ἀπάσης Γραφῆς, παρὰ τῆς Βαλτόνῃς ἐκ ἐν τοῖς Πολυγλώσσοις Βιβλίοις αὐτῆς σεσημειῶνται; Οὕτω ποτὲ ἐπὶ τῆς Κυριακῆς αὐτῆς Προσδύχῃς, ἐν τῷ κατὰ Λακᾶν Εὐαγγ: ἀνεγινώσκετο: „Ἐλθέτω τὸ Ἅγιον Πνεῦμα,“. Ἐνθα καθ' ἡμᾶς ἀναγινώσκεται: „Ἐλθέτω ἡ Βασιλεία σου,“. Ταύτη καὶ γὰρ ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ ὁ Νύκσης ἐν τῷ Γ'. Λόγ: περὶ τῆς Κυριακ: Προσδύχ: ἐν Τόμ: Α'. Σελ: 737. „Ἡ καθὼς ἡμῖν ὑπὸ „τῆς Λακᾶς τὸ αὐτὸ νόημα σαφέστερον ἐρμηνεύεται, ὁ τὴν βασιλείαν ἐλθεῖν ἀξιῶν, τὴν τῆς Ἁγίας Πνεύματος συμμαχίαν ἐπιβοᾷται. Οὕτω γὰρ ἐν ἐκείνῳ τῷ Εὐαγγελίῳ φησὶν, ἀντὶ τῆς: „ἐλθέτω ἡ Βασιλεία σου, ἐλθέτω τὸ Ἅγιον Πνεῦμα σου ἐφ' ἡμᾶς“ ὁ μὲν γὰρ Λακᾶς Πνεῦμα Ἅγιον λέγει. Ματθαῖος δὲ Βασιλείαν ὠνόμασε,“. Καὶ ΜΑΞΙΜΟΣ δὲ ὁ Μάρτυς, ἐν τῇ Ἑρμηνείᾳ τῇ εἰς τὴν Προσδύχῃ τῆς „Πάτερ ἡμῶν,“ παρὰ ΕΥΘΥΜΙΩΝ ἐν τῇ Πανοπλίᾳ, Τίτλῳ Β'. Κεφ: Ζ'. (29) „Βασιλεία τῆς Θεᾶς καὶ Πατρὸς ἐσιωδῶς ἐστὶν ὑφεστῶσα τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον· ὃ γὰρ „ἐνταῦθα, Ματθαῖος φησὶ Βασιλείαν, ἀλλὰ καὶ τῶν Εὐαγγελίων ἕτερος

(28) Ἐν δὲ τῷ περιφύμῳ Ἀλεξάνδρ: Κώδιξι, τῷ ἐν τῷ Βρετανικῷ Μουσείῳ τῷ ἐν Λονδίῳ ἀποκειμένῳ, Χαρακτήρσιν ἀπαρραλλάκτως ἀρχαιομόρφοις ἐκδοθέντι ἀρτίως: Ἔτη 1786. γεγραμμένον ἐμφέρεται ἔτις: „Ὁν ὁ Κύριος Ἰησοῦς ἀναιεῖ (ἀντὶ „ἀναλάσσει“) τῷ Πνεύματι τῆς σόματος αὐτῆς,“. Β'. πρὸς Θεσσαλον: Κεφαλ: Β'. Ἐδαφ: 8.

(29) Τὸ δ' αὐτὸ εὐρήσεις καὶ τοῖς αὐτῆς τῆς Μαξίμου Συγγραμμάσι, τοῖς ὑπὸ Φραγκίσκου τῆς Κομβεφισίς Ἔτη 1675. ἐν Παρισίοις Γ-Λ. ἐκδομένοις: ἐν Τόμῳ Α'. Σελίδι 350.

„ἕτερος Πνεῦμα κέκληκεν Ἅγιον, φάσκων: ἐλθέτω σὺ τὸ Πνεῦμα  
„τὸ Ἅγιον, καὶ καθαρισάτω ἡμᾶς,,.

Ἐπειδὴ ἄρα κἀνταῦθα τε, καὶ ἀλλαχῇ πολλάκις, αἱ τῶν  
Ἑλλωικῶν Κωδίκων διαφέρουσιν Ἀναγνώσεις, μήτοι γε οἱ Ἀνα-  
τολικοὶ παρὰ τῷτο ψῦδος ἂν ὑπόδιοι εἶεν, ἔνθα κατὰ τὰς  
κοινῇ περιφερομένας τῶν Ἀναγνώσεων, ἐπὶ τῷ Ἀποσολικῷ ἐκεί-  
νῃ χωρὶς ἢ φωνῇ ἸΗΣΟΥΣ ἐκ ἀναγινώσκεται; Ἐστὶ μὲν δὴ  
ῥήματα Παύλου κἀκείνα: (30) „Ἡμεῖς δὲ ὃ τὸ Πνεῦμα τῷ  
κόσμῳ ἐλάβομεν, ἀλλὰ τὸ Πνεῦμα τὸ ἐκ τοῦ Θεοῦ,,. Ἀλλ' ὁ ἐν  
Πατράσιν Ἀρχαιότατος Ἰσῆνος ὁ Μάρτυς, ἔτω τὰ αὐτὰ ἐν τῇ  
Ἐκθέσει τῆς Πίσεως ἀνεγίνωσκεν: (31) „Ὑμεῖς δὲ ὃ τὸ Πνεῦμα  
„τῷ κόσμῳ ἐλάβετε, ἀλλὰ τὸ Πνεῦμα τὸ ἐκ Θεοῦ καὶ Πατρός,,  
μὴ δ' ἄρα τὰς Λατίνους χρὴ λέγειν ἐκ τῶν Ἱερῶν ἀφηρηκέναι  
Κωδίκων τό: ΚΑΙ ΠΑΤΡΟΣ, ὡς σωηγορεῖν δοκεῖν τῇ ἐκ μόνου  
τῷ Πατρὶ Ἐκπορεύσει τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι; Ἐπὶ δὲ τέτοις καὶ  
ΠΕΤΡΟΣ ὁ ΔΑΜΙΑΝΟΥ ὁ ἀλλαχῇ ἀναγινώσκων: „Ὁν ὁ Κύ-  
ριος Ἰησοῦς ἀναλώσει τῷ Πνεύματι τῷ σώματι αὐτοῦ,,. Ἐν τῷ  
ΝΘ. Πονηματίῳ, τῷ περὶ τοῦ Ἀντιχρίστου, Τόμ: Γ'. Σελ: 387.  
καὶ ἐν τῷ Α'. Πονηματίῳ, ἔνθα περὶ τῆς Καθολικῆς Πίσεως  
ἢ Πραγματείας, Κεφαλ: Γ'. ἀναγινώσκει: „Ὁν ὁ Κύριος Ἰησοῦς  
„Χριστὸς ἀναλώσει τῷ Πνεύματι τῷ σώματι αὐτοῦ,,. Μήποτε  
δ' ἄρα οἱ Ἀνατολικοὶ ἀφείλον ἐκ τῶν ῥημάτων ἐκείνων τὰς φω-  
νὰς ἸΗΣΟΥΣ ΧΡΙΣΤΟΣ, καθάπερ ἐν καθ' ὑπερβολὴν παρα-  
παιόντες οἱ ἐκ τῆς Λαθίης Συμμορίας Τυβιγγιώσιοι, ἐν τῇ Ἀπο-  
κρίσει τῇ πρὸς τὴν Β'. Ἀπάντησιν Ἱερεμίου τῷ Κωνσταντινουπό-  
λεως Πατριάρχῃ, Σελίδι 249. τοῖς Ἀνατολικοῖς ἐπιτοξάζουσιν;  
Ἀλλὰ καὶ ὁ Σωτὴρ τελευταῖον παρὰ τῷ Ἰωάννῃ φησὶν: „Οὐ  
„λαλήσει ἀφ' ἑαυτοῦ, ἀλλ' ὅσα ἀκήσῃ λαλήσει,,. Ὁ δὲ Θεοφόρος  
Ἰγνάτιος ἐν τῇ πρὸς Ἐφεσίους Ἐπιστολῇ, ἔτως ἀναγινώσκει αὐτὰ:  
„Οὐ λαλήσει ἀφ' ἑαυτοῦ, ἀλλ' ὅσα ἂν ἀκήσῃ παρ' ἐμοῦ λαλήσει,,.  
Μήπερ δὲ παρὰ τῷτο αὐτοῖς οἱ Ἀνατολικοὶ παραγράψαιεν ἂν τῶν  
ῥημάτων τὰ τελευταῖα, ὡς σωηγορεῖντα δῆθεν τῇ καὶ ἐκ τοῦ  
Τῷ Ἐκπορεύσει τῷ Πνεύματι;

Τελευταῖον δολίως τὰς ἡμετέρας ὑπέλαβον ἐκ τοῦ Ἀποσο-  
λικῷ ἐκείνῃ χωρὶς τὴν φωνὴν ἸΗΣΟΥΣ ἐξωβελικέναι, ὡς ἄλλως  
τῶν δὲ τῶν ῥημάτων τῷ Ἀποστόλῃ προτίσαιμένων τῇ ἐκ μόνου τῷ  
Πατρὶ Ἐκπορεύσει τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι ὥστερ εἰμὴ ταῦτόν ἢ,  
Πνεῦμα

(30) Α'. πρὸς Κορινθ: Κεφαλ: Β'. Ἐδαφ: 12.

(31) Ἐν τῷ Γ'. Τόμ: τῶν Συγγραμμάτων, κατὰ τὴν ὑπὸ Φρειδερίκου τῷ Σουλβεργίου  
Ἐκδοσιν, ἐν τῷ Ἱερωνύμῳ τῷ Κομμελίνῳ Τυπογραφείῳ, ἔτει 1593. Σελ: 296.

Πνεῦμα τῷ Τιῷ εἶναι, καὶ Πνεῦμα τῷ σώματος αὐτοῦ, τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον· ὡς ἂν τὸ μὲν δευτερον ἀφαιρεθῇ, τὸ δ' ἀπαράτρωτον ὑπὸ τῶν Ἀνατολικῶν καταλειφθῇ, τὸ πρότερον. Καί τοι γε παρὰ ταῦτα καὶ τῆς φωνῆς ἸΗΣΟΥΣ μηδαμῶς ἀναγινωσκομένης, ἔτω σαφὲς ἐστὶ περὶ τῆς τῷ Σωτῆρος δευτέρας ἐπιδημίας ἐνταῦθα εἶναι τῷ Ἀποστόλῳ τὴν πρόθεσιν, ὡς μηδένα ἂν τὸν περὶ τέττα γενέσθαι ἀμφισβητήσαντα. Τί ἔν ἄρα καὶ σωτελέσας τὸ πρὸ φωνῆς ἸΗΣΟΥΣ ἐξεβελιωθῆναι, ὅποτε σαφέστατα ὑπὸ τῷ Ἀποστόλῳ αὐτόθι νοεῖται, ὅτι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον τῷ σώματος ἐστὶ τῷ Χριστῷ, δι' ὃ ὁ Ἀντίχριστος ἐξαναλωθήσεται;

Καὶ ταῦτα μὲν ἄχρι τέττα πρὸς ἐκείνο: καθ' ὃ, ἐκ τῷ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον λέγεσθαι Πνεῦμα Χριστῷ, συμπεραίνειν ἐπεχέρην οἱ Λατῖνοι, ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα καὶ ἐκ τῷ Τιῷ ἐκπορεύεται.

ΠΡΑΓ-



## ΠΡΑΓΜΑΤΕΙΑ ΙΒ΄.

Ἐν ἧ ἀποδείκνυται, ὅτι τὸ ὑπὸ τῆ Σωτῆρος περὶ τῆ Ἀγίας  
Πνεύματος ἐρημένον: ὅτι „ἐκ τῆ ἐμῆ λήψεται,, ἐδὲν σωτελεῖ  
εἰς Πίσιν τῆς τῆ Ἀγίας Πνεύματος Ἐκπορεύσεως  
καὶ ἐκ τῆ Υἱῆς.

Παρά ταῦτα δὲ Λατῖνοι προβάλλονται τὸ ῥηθὲν ὑπὸ τῆ Σω-  
τῆρος περὶ τῆ Πνεύματος: ὅτι „ἐκ τῆ ἐμῆ λήψεται,,: Θεὸς γὰρ  
ὢν τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ἐδενὸς δὴπε ἀμοιρεῖ, ὅπερ λαβεῖν ἐν  
χρόνῳ παρά τῃ δεῖσαιτο. Καὶ εἴτι ἄρα τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ῥη-  
θεῖν λήψεσθαι, ἐκ τῆς αἰτίας αὐτὸ νοητέον λαμβάνειν, ἐξ ἧς  
ἔχει τιὸ ὑπαρξιν. Εἰ γὰρ ἐκ τῆ Υἱῆς τι τὸ Πνεῦμα λαμβάνει,  
ὥς αὐτὸς ὁ Σωτὴρ ἀποφαίνεται, ἐξ ἀνάγκης ἄρα τὸ Πνεῦμα,  
κατὰ λόγον αἰτίας, παρὰ τῆ Υἱῆς λαμβάνει ἔχειν ἀπ' αἰῶνος  
αὐτό. Οὐδὲν γὰρ ἀπ' αἰῶνος, εἰμὴ παρὰ τῆς αἰτίας ἔχει λαβεῖν.  
Τί δαί; ὅτι καὶ ἡ Σοφία αὐτὴ ἐσιώδης ἐστὶ τῷ Πνεύματι, ἥτις  
αὐτῷ ἐν χρόνῳ προσεπιγενέσθαι ἐ διώαται, ἀπ' αἰῶνος ἐνῆσα;  
Λαμβάνον ἄρα τὸ Πνεῦμα παρὰ τῆ Υἱῆς, ἐκ τέτῃ πάντως καὶ  
ἐκπορεύεται. — Ἀλλὰ γὰρ αὐθις τοιόνδε ὡ καὶ τῶν Ἀρειανῶν  
τέπιχέρημα, πρὸς τὸ δεῖσαι τὸν Υἱὸν ἀρχῶ πεφυκέναι τῆ  
Πνεύματος. Οὕτω γὰρ αὐτὸ δαίξων ἐχώρει καὶ ΜΑΞΙΜΙΝΟΣ  
ὁ τῶν Ἀρειανισόντων Ἐπίσκοπος, παρ' Αὐγυστίνῳ ἐν Βιβλ: Α΄.  
τῶν κατ' ἐκείνῃ, Τόμ: Δ΄. τῶν Συγγραμμάτων: „Τὸ Πνεῦμα  
„τὸ Ἅγιον παρὰ Χριστῆ εἴληφε, κατὰ τιὸ μαρτυρίαν αὐτῆς τῆ  
„Χριστῆ, καθὰ Φησὶν ἐν τῷ Εὐαγγελίῳ ὁ Κύριος,,. Καὶ μετὰ  
βραχεὰ δὲ τῶν μεταξύ: „Ἐγὼ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ὡμολό-  
„γησα κατὰ τιὸ τῆ Σωτῆρος διδασκαλίαν, ὅτι, εἴτε φωτίζει,  
„παρὰ τῆ Χριστῆ ἔλαβεν· εἴτε διδάσκει, παρὰ τῆ Χριστῆ ἔλαβε·  
„πάνθ' ὅσα ἐπιτελεῖ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, παρὰ τῆ Μονογενῆς Θεῆ  
„ἐπορίσατο,,. Διὸ καὶ τὰ τῆ Χριστῆ ἐκείνα ἔτως οἱ Ἀρειανοὶ  
ἐκδεχόμενοι, ἐκ τέτῃ ἐπὶ τὸ ἀδιώατον ἀπάγειν τὰς ὀρθοδόξους  
ἐπεχέρων ὡδέ πως: Τὸ Ἅγιον Πνεῦμα λαμβάνει παρὰ τῆ Υἱῆς·  
ἄρα τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον Υἱὸς ἐστὶ τῆ Υἱῆς. Πάππος δὲ αὐτῆς  
Τόμ: Β΄. P ρ ὁ Πατήρ.

ὁ Πατήρ. Οὕτω καὶ γὰρ ἈΘΑΝΑΣΙΟΣ ἐν Β'. Ἐπισ: τῶν πρὸς Σεραπίωνα, ἐν Τόμ: Β'. τῶν Συγγραμ: Σελ: 16. „Εἴτα ἐπι-  
λέγασιν, ὡς γράφεις, εἰ ἐκ τῆς Υἱᾶς λήψεται τὸ Πνεῦμα, καὶ  
παρ' αὐτῆς δίδοται. (ἔγω γὰρ γέγραπται) ἐνθὺς ἐπάγασιν:  
„ἐκὼν Πάππος ὁ Πατήρ, ἐκγονόν ἐσὶν αὐτῆς τὸ Πνεῦμα. Τίς  
τέτων ἀκρίων, ἐστὶ Χρίστιανός, καὶ ἔ μᾶλλον Ἑλλῶας αὐτὸς  
„νομίσει“.

### Ἀ Π Ἀ ν τ ῆ σ ι ς Ἀ'.

Πρῶτον μὲν εἶναι, ὅσα γε πρὸς τὰ τῆς Σωτῆρος ἀφορᾷ ῥήματα:  
„Εκ τῆς ἐμῆς, φησὶ, τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον λήψεται“.. Καὶ ση-  
μαίνει ἄρα ὁ Σωτὴρ διὰ τέτων, ὅτι: ἐξ ἐκείνης ὅπερ ἐν αὐτῷ  
ἐστὶ, τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον λήψεται: ἐκ τῆς Πατρὸς, δηλονότι,  
ὃς ἐστὶν ἐν τῷ Υἱῷ· καὶ ὃν δὴ νῦν τῶν τῆς Χριστοῦ ῥημάτων  
ληφθέντων, ἐδὲν ἔσαι, ὅπερ ἂν ἐπενεχθεῖ ἐντεῦθεν ἄτοπον.  
Ἀληθὲς γὰρ, ὅτι καὶ παρὰ τῆς Πατρὸς τὸ Πνεῦμα λαμβάνει,  
καὶ ἐξ αὐτῆς ἐκπορεύεται. Ὅτι δὲ περὶ τῆς Πατρὸς τὸ εἰρημένον  
δέον νοεῖσθαι, φανερόν ἐξ ἐκείνης, ὅτι εἰπὼν ὁ Σωτὴρ, ὡς τὸ  
Πνεῦμα ἐκ τῆς ἐμῆς λήψεται, αὐτὸς καὶ τὴν ἐρμηνείαν τῆς ῥη-  
θέντος παρασυνάπτει: „Πάντα τὰ τῆς Πατρὸς ἐμὰ ἐσὶ: διὰ  
τῆτο εἶπον, ὅτι ἐκ τῆς ἐμῆς λήψεται“.. Ἐνθα, ἵνα ἀπηρτισμένη  
καὶ πλήρης ἡ τῆς Σωτῆρος παρασηῖ διάνοια, προσληπτέα ἐξ  
ἀνάγκης ἦδε ἡ Πρότασις: („Εκ τῆς Πατρὸς λαμβάνει τὸ Πνεῦ-  
μα τὸ Ἅγιον“.. Ἐνδεῖ γὰρ τῷ Ἐπιχειρήματι ἡ τῶν Προτά-  
σεων ἐλάσων, (ὡς ἐν ταῖς τῶν Διαλεκτικῶν Σχολαῖς αὐτῷ  
ὀνομάζεσθαι, ἅτε ἐκ τε τῆς μέσης καὶ τῆς (1) μέζονος, τῶν ὄρων  
σωσιζαμένῳ) οἷα περ ἡ ῥηθεῖσα: „Τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον λαμ-  
βάνει ἐκ τῆς Πατρὸς“.. Ὡς ταύτη γε τὸν ὀλοχερῆ τῆς Σωτῆ-  
ρος Συλλογισμόν εἶναι τόνδε: Πάντα τὰ τῆς Πατρὸς ἐμὰ ἐσὶ  
τὸ Πνεῦμα λαμβάνει ἐκ τῆς Πατρὸς· τὸ ἄρα Πνεῦμα λαμβάνει  
ἐκ τῆς ἐμῆς. (2) Καὶ κατάδηλος τοίνυν ἐντεῦθεν γίνεται ὁ νῦν  
ὁ τῆς

(1) Οἶμαι δὴ τυπογραφικὸν εἶναι ἐνταῦθα τὸ ἀμάρτημα. Ἐκ γὰρ τῆς μέσης τῶν ὄρων,  
καὶ τῆς ἐλάσσονος τῶν ἀκρῶν, ἡ ἐν ταῖς Συλλογισμοῖς Ἑλάσων σωσιζαται τῶν Προ-  
τάσεων, ὡς οἱ Διαλεκτικοὶ φασίν.

(2) Τὸ τῆς Συλλογιστικῆς ἐφόδος ἐστὶ σαφέστερον ἔσαι, ἔγω σχηματιζέιν:

Α'.

„Τὸ ἐκ τῆς Πατρὸς λαμβάνον ἐκ τῆς ἐμῆς λήψεται“..

Ἀλλ: τὸ Πνεῦμα ἐκ τῆς Πατρὸς ἐστὶ λαμβάνον.

\*\* Ἄρα τὸ Πνεῦμα ἐκ τῆς ἐμῆς λήψεται. — Ἐπεὶ:

Β'.

„Εἰ τὰ ἐκ τῆς Πατρὸς πάντα ἐμὰ ἐσὶ, τὸ ἐκ τῆς Πατρὸς λαμβάνον ἐκ τῆς  
ἐμῆς λήψεται“..

\* Ἀλλ:

ὁ τῷ Σωτῆρος, ὅτι τὸ („ἐκ τῷ ἐμῷ,“) τὸ („ἐκ τῷ Πατρὸς,“) ὡς τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον λήψεται. Ὅποτε ἔν ὁ Σωτὴρ, διωάμει τῶν φωνῶν αἷς ἐχρήσατο, διδάσκων ἐστὶν ἐνταῦθα, ὅτι τὸ Πνεῦμα ἐκ τῷ Πατρὸς λαμβάνει; πῶς οἱ Λατῖνοι αὐτόθεν ἔχον συνάγειν, ὅτι τὸ Πνεῦμα Ἐκπορεύεται ἐκ τῷ Υἱῷ; Σημειωτέον παρὰ ταῦτα: ὡς ὁ Σωτὴρ, ἐφ' ᾧ δεῖξαι τὸ Πνεῦμα ἐκ τῷ αὐτῷ λαμβάνειν, ἀνατρέχει πρὸς τὸν Πατέρα, διὰ τῷτο φάσκων, δηλονότι, ἐκ τῷ αὐτῷ λαμβάνειν τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ὅτι λαμβάνει ἐκ τῷ Πατρὸς: δι' ὧν πάντως ῥημάτων τῷ λήψιν ἐκείνῳ ἔπρὸς ἑαυτὸν, πρὸς δὲ τὸν Πατέρα λίαν σαφῶς ἀναφέρει· ἐπεὶ ἄλλως ἐκ ἂν ἐκ τῷ Πατρὸς, ἐξ ἑαυτῷ δὲ τὸν λόγον τῆς ἐκδοχῆς τῷ διδομένῳ ἀνῆξεν. Οὗ δὴ χάριν καὶ περὶ τῷ Πατρὸς ὁμοίως διερμιωδύσσα ἐστὶν ἡ Καθολικὴ Ἐκκλησία ἐκεῖνα τὰ ῥήματα.

ἈΘΑΝΑΣΙΟΣ μὲν γὰρ ἐν τῷ Α'. Διαλόγῳ κατὰ Μακεδονίαν, Τόμ. Β'. Σελ: 278. „Ὡπερ ἔν ὁ Υἱὸς πάντα ἔχων ἐν τῇ φύσει, ὡς Υἱὸς λέγει: ἔδεν ποιῶ ἀπ' ἑμαυτῷ, ἵνα τῶν ἀγαθῶν τῷ ἀρχικῷ ἐπὶ τὸν Πατέρα ἀναγάγῃ· ἔτω καὶ περὶ τῷ Πνεύματος ἀκεῖ αὐτῷ λέγοντος: πάντα γὰρ ἔχοντος ἐν τῇ αὐτῷ φύσει, ὡς Πνεύματος Θεῷ, ἐπὶ τὸν αἴτιον ἀνάγει λέγων: „ἔλαλήσει ἀφ' ἑαυτῷ, ἀλλ' ὅσα ἀκέρση λαλήσει, καὶ τὰ ἐρχόμενα ἀναγγελεῖ ὑμῖν. Καὶ τὸ, ἐκεῖνος ἐκ τῷ ἐμῷ λήψεται, δηλονότι, „ἐκ τῷ Πατρὸς· ἐπάγει γάρ: πάντα ὅσα ἔχει ὁ Πατὴρ ἐμὰ ἐστὶ· „διὰ τῷτο εἶπον, ὅτι ἐκ τῷ ἐμῷ λήψεται καὶ ἀναγγελεῖ ὑμῖν. „Λαμβάνει δὲ αὐτὸ εἶπεν, ἔχ ὡς ἀγνοεῖν, ἀλλ' ὡς ἐπὶ τὸν αἴτιον ἀνάγων τῷ τῷ Πνεύματος ἐνέργειάν τε καὶ χάριν,“

Καὶ ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ δὲ ὁ Θεολόγος ὁμοίως, ὅσα δῆποτε ταπεινότερον λέγεται περὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος, πρὸς τῷ ἀρχικῷ Αἰτίαν, τὸν Πατέρα δηλονότι, ἀξιοῖ ἀναφέρεισθαι. Οὕτω γὰρ ἐν Λόγῳ ΛΖ'. Σελ: 611. „Ὅσα ταπεινότερον λέγεται (περὶ

„τῷ

\* Ἀλλ' τὰ τῷ Πατρὸς πάντα ἐμὰ ἐστὶν.

Ἄρα τὸ ἐκ τῷ Πατρὸς λαμβάνον ἐκ τῷ ἐμῷ λήψεται.

Κατὰ γὰρ ἐπανάλυσιν, τῆς τῷ Β'. τῶν Συλλογισμῶν Ὑποθετικῆς Μείζονος Φυσικῷ Φωτὶ αὐτοδύλῃ ἔσης, τῷ κατὰ τῷ Ἐλάσσον προσηψιν, ὁ Σωτὴρ ἡμῖν ἀπεκάλυψεν. Ἐξ ἧς αὐθις τό, τε κατὰ Φυσικὸν λόγον ἐπόμενον Συμπεράσμα, τὸ εἰς Μείζονα παρ' ἡμῶν τῷ Συλλογισμῷ τῷ Α'. τεθὲν, καὶ τῆς αὐτόθι προσεδείσης Ἐλάσσονος ἀποσιγηθείσης, ἀμέσως ἡ μετὰβασις δι' ἐνδυμήματος γενήσεται ἐπὶ τὸ σκοπόμενον, ὅπερ ἔν καὶ αὐτὸ ἔχει τὸ πιστὸν ἐξ Ἀποκαλύψεως. Τὸ δὲ τοῖ Ἐνδυμήμα ἔτω μάλα σαφές: ἐκ τε τῆς Ἐλάσσονος τῷ Β'. καὶ ἐκ τῷ Συμπεράσματος τῷ Α'. τῶν Συλλογισμῶν, ἐξ Ἀποκαλύψεως ἔσαι ἡμῖν συγκροτούμενον, τοιόνδε:

\* Τὰ τῷ Πατρὸς πάντα ἐμὰ ἐστὶν.

\*\* Ἄρα ἐκ τῷ ἐμῷ λήψεται.

Ὅπερ δὴ ἐν πρωθυερέα τῇ κατὰ τὸ Ἠγόμενον καὶ τὸ Ἐπόμενον τάξει ὁ Σωτὴρ τοῖς αὐτῷ προήνεγκεν Ἀποσόλοις, ἔτως εἰπών:

\*\* Ἐκ τῷ ἐμῷ λήψεται.

\* Ὅτι πάντα ὅσα ἔχει ὁ Πατὴρ, ἐμὰ ἐστὶν. Ἰωάν: Κεφαλ: Ιζ'. 14. 15.

„τῷ Πνεύματος τῷ Ἁγίῳ) τὸ δίδοσθαι, τὸ ἀποσέλλεσθαι, τὸ με-  
 „ρίξεσθαι, τὸ χάρισμα, τὸ δώρημα, τὸ ἐμφύσημα κτ: ἵνα μὴ  
 „καθ' ἑκάστα λέγω· ἐπὶ τῷ πρώτῳ Αἰτίαν (τὸν Πατέρα) ἀνε-  
 „νεκτέον· ἵνα τὸ ἐξ ἧς δειχθῇ, καὶ μὴ τρεῖς ἀρχαὶ μεμερισμέ-  
 „ναι πολυθῶς παραδεχθῶσι,,.

Καὶ ΑΥΤΟΤΣΤΙΝΟΣ δὲ, ἐν τῷ Βιβλ: τῷ κατὰ τῷ Λόγῳ  
 τῶν Ἀρειανῶν, Κεφαλαίῳ ΚΓ'. Τόμῳ Γ'. τῶν Συγγραμμάτων:  
 „Ὁ δὲ περὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος εἶπεν: ἐκ τῷ ἐμῷ λήψεται:  
 „αὐτοῦ τὸ ζήτημα ἐπιλύεται· ὡς ἂν μὴ νομιθῇ, οἷον διὰ τινων  
 „βαθμῶν, ὅπως ἐξ αὐτῷ εἶναι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ὥσπερ  
 „αὐτὸς ἐκ τῷ Πατρὸς· ἐπειδὴ ἐκ τῷ Πατρὸς ἄμφω, ὁ μὲν γεν-  
 „νᾶται, τὸ δὲ ἐκπορεύεται· ἅτινα δὴ δύο ταῦτα, ἐν τῷ ὕψει τῆς  
 „Φύσεως ἐκείνης διακρίνεν ὅλως ἀμήχανον· ἵνα γένῃ μὴ τῷτο νομιθῇ,  
 „ὥσπερ ἔφω, ἐχόμενα ὑποσυνήψε: πάντα ὅσα ἔχει ὁ Πατήρ  
 „ἐμὰ ἐστὶ· διὰ τῷτο εἶπον, ὅτι ἐκ τῷ ἐμῷ λήψεται· ὅπως ἀναμ-  
 „φιβόλως νοεῖσθαι θέλων, ὅτι ἐκ τῷ Πατρὸς μὲν λαμβάνει· ἀλλὰ  
 „διὰ τῷτο ἐκ τῷ ἰδίῳ αὐτοῦ· ὅτι πάντα ὅσα ἔχει ὁ Πατήρ αὐτῷ  
 „εἰσὶν. Αὕτη δὲ ἐχὶ φύσεως ἐστὶ διαφορὰ, ἀλλ' ἀρχῆς μιᾶς ἐπι-  
 „σύσασσι,,. Καὶ ἐν Κεφαλ: δὲ ΚΔ'. „Μηδέτινα κινεῖτω, ὅτι  
 „ἐπὶ μέλλοντος χρόνου τὸ ῥῆμα ἐστὶ: „λήψεται,,: ὡς εἶγε μήπω  
 „εἶχε λαβόν· Ἀδιαφόρως γὰρ οἱ τῶν ῥημάτων λέγονται χρόνοι,  
 „καὶ τοι γε ἀχρόνως ἢ αἰωνιότης νοεῖται μένουςα. Καὶ γὰρ καὶ  
 „ἐλάβεν, ὅτι ἐκ τῷ Πατρὸς προελήλυθε· καὶ λαμβάνει, ὅτι ἐκ  
 „τῷ Πατρὸς προέρχεται· καὶ λήψεται, ὅτι ἐκ τῷ Πατρὸς προέρ-  
 „χεται ἔποτε παύσεται. Ὡςπερ ὁ Θεὸς καὶ ἐστὶ, καὶ ὦ, καὶ  
 „ἔσαι· καὶ μὲν τοι ἐδ' ἀρχῶν, ἐδὲ τελούτῳ χρόνῳ ἐδ' ἔχει, ἐδ'  
 „ἔχεν, ἐδ' ἔξει,,. Ἐπιλυσόμενος δὲ καὶ τὸ προμνημονευθὲν Ἐπι-  
 „χείρημα Μαξιμίνῳ τῷ Ἀρειανῷ, ἐν τῷ Α'. Βιβλ: τῷ κατ' ἐκείνῳ  
 ἐν τῷ Α'. Τόμῳ τῶν Συγγραμμάτων: „Ὁ δὲ Φῆς τὸν Κύριον  
 „εἰρηκέναι περὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος: „ἐκ τῷ ἐμῷ λήψεται,,:  
 „διὰ τῷτο εἶρηται, ὅτι ἐκ τῷ Πατρὸς εἴληφε, καὶ πάντα ὅσα  
 „ἐστὶ τῷ Πατρὸς ἀναμφιβόλως εἰσὶ καὶ τῷ Υἱῷ. Αὐτὸς γὰρ, ἐν  
 „ᾧ τῷτο ἔφη, προσέθετο: διὰ τῷτο εἶπον ὅτι ἐκ τῷ ἐμῷ λήψε-  
 „ται, ὅτι πάντα ὅσα ἔχει ὁ Πατήρ ἐμὰ ἐστὶ,,. Καὶ ἐν τῇ ΡΖ'.  
 Πραγματεῖα τῇ εἰς τὸν Ἰωάννῳ, ἐν Τόμῳ Θ'. τῶν Συγγραμμά-  
 των. Ἐκείνο ὅπερ ἔφη περὶ τῷ Ἀγ: Πνεύματος λέγων: „Πάντα  
 „ὅσα ἔχει ὁ Πατήρ ἐμὰ ἐστὶ, διὰ τῷτο ἔφω ὅτι ἐκ τῷ ἐμῷ  
 „λήψεται καὶ ἀναγγελεῖ ὑμῖν, περὶ ἐκείνων ἔφησεν, ἃ πρὸς  
 „αὐτῷ ἀνήκει τῷ Πατρὸς τῷ Θεότητι, ἐν οἷς αὐτῷ Ἰσὸς ἐστὶ,  
 „πάντα ὅσαπερ ἔχει, ἔχων· ἐδὲ γὰρ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκ  
 „τῷ κτίσματος, ὃ τῷ Πατρὶ ὑπόκειται καὶ τῷ Υἱῷ, ληψόμενον  
 „ᾧ, ὅπερ ἔφη ἐκ τῷ ἐμῷ λήψεται· ἀλλὰ πάντως ἐκ τῷ Πατρὸς  
 „ἐξ ἧς

„ἐξ ὃ το Πνεῦμα ἐκπορεύεται, ἐξ ὃ καὶ ὁ Υἱὸς γεννᾶται,,  
 Ὡσαύτως δὲ καὶ ἐν τῇ Ρ'. Πραγματεία τῶν εἰς τὸν Ἰωάννῳ :  
 „Ὅπερ, φησὶν, ἐκ τῆ ἐμῆ λήψεται καὶ ἀναγγελεῖ ὑμῖν, καθο-  
 „λικαῖς προσδέξαθε διανοίας· ὃ γὰρ διὰ τῆτο, ὅτινες τῶν ἐξ  
 „Αἰρέσεως ὑπειλήφασιν, ἔλαττον ἐστὶ τῆ Υἱὸς το Πνεῦμα το Ἅγιον,  
 „ὅτι ὁ μὲν Υἱὸς λαμβάνει παρὰ τῆ Πατρὸς, τὸ δὲ Πνεῦμα παρὰ  
 „τῆ Υἱὸς, κατὰ τινὰς τῶν φύσεων βαθμύς. Ἄπαγε τῆ ἔτω  
 „πισθεῖν! ἄπαγε τῆ τόδε λέγειν! ἄπαγε ἀπὸ Χριστιανικῶν  
 „καρδιῶν τῆτο φρονεῖν! Τελούταῖον γὰρ αὐτὸς ἐχόμενα το ζη-  
 „τέμενον ἐπιλύεται, ἀναπτύσσων ἀνθρώτῳ γε τῆτλ ἐφησε. Πάντῃ,  
 „φησὶν, ὅσα ὁ Πατὴρ ἔχει ἐμὰ ἐστὶ διὰ τῆτο εἶπον ὅτι ἐκ τῆ  
 „ἐμῆ λήψεται, καὶ ἀναγγελεῖ ὑμῖν. Τί βέλεθε περαιτέρω;  
 „Ἄρα παρὰ τῆ Πατρὸς λαμβάνει τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ὅθεν λαμ-  
 „βάνει καὶ ὁ Υἱός. Ἐν γὰρ τῇ Τριάδι ταύτῃ ἐκ τῆ Πατρὸς  
 „ὁ Υἱὸς γεννᾶται, ἐκ τῆ Πατρὸς τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκπορεύεται.  
 „Ὁ δὲ ἐκ μηδενὸς μὲν γεννητὸς, ἐκ μηδενὸς δὲ ἐκπορεύτὸς,  
 „ὁ Πατὴρ μόνος ἐστὶ,, Καὶ ἐν Βιβλ: Β'. περὶ Τριάδος Κεφ: Γ'.  
 ἐν Τόμ: Γ'. τῶν Συγγραμμάτων: „Περὶ τῆ Πνύματος εἶπεν  
 „ὁ Χριστός: ὃ λαλήσει ἀφ' ἐαυτῆ, ἀλλ' ὅσα ἂν ἀκέσῃ λαλήσει,  
 „καὶ τὰ ἐρχόμενα ἀναγγελεῖ ὑμῖν. Αὐτὸς ἐμὲ δοξάσει, ὅτι ἐκ  
 „τῆ ἐμῆ λήψεται καὶ ἀναγγελεῖ ὑμῖν. Μετὰ ταῦτα τὰ ῥήματα,  
 „εἰ μὴ ἐχόμενα ἐφεξῆς εἰρήκει: πάντα ὅσα ἔχει ὁ Πατὴρ ἐμὰ  
 „ἐστὶ, διὰ τῆτο ἔφω, ὅτι ἐκ τῆ ἐμῆ λήψεται καὶ ἀναγγελεῖ  
 „ὑμῖν, ἐπισθεῖθι ἂν ἴσως ἐκ τῆ Χριστῆ γεννηθῶναι τὸ Πνεῦμα,  
 „ὥπερ αὐτὸς ἐκ τῆ Πατρὸς: περὶ ἐαυτῆ καὶ γὰρ ἔφη: ὅτι ἡ  
 „ἐμὴ Διδασκαλία ὃν ἔστιν ἐμὴ, ἀλλὰ τῆ πέμψαντός με: περὶ δὲ  
 „τῆ Ἁγίᾳ Πνύματος: ὃ γὰρ λαλήσει ἀφ' ἐαυτῆ, ἀλλ' ὅσα ἂν  
 „ἀκέσῃ λαλήσει ὅτι ἐκ τῆ ἐμῆ λήψεται καὶ ἀναγγελεῖ ὑμῖν.  
 „Ἐπειδὴ δὲ τῷ αἰτίαν ἀπέδωκε δι' ᾧ ἔφη: ἐκ τῆ ἐμῆ λήψεταί·  
 „(ἔφησε γὰρ, ὅτι πάντα ὅσα ἔχει ὁ Πατὴρ ἐμὰ ἐστὶ) διὰ  
 „τῆτο ἔφω ὅτι ἐκ τῆ ἐμῆ λήψεται. Λοιπὸν ἄρα ἵνα καὶ  
 „περὶ τῆ Πνύματος νοηθῇ, ὅτι ἐκ τῆ Πατρὸς λαβὼν ἔχει,  
 „καθάπερ καὶ ὁ Υἱός,, Καὶ ἐν τῷ Β'. Βιβλίῳ κατὰ τῆς Ἐπι-  
 „τολῆς τῆ Παρμενιανῆ, Κεφαλ: ΙΕ'. Τόμ: Ζ'. τῶν Συγγραμ-  
 „μάτων: „Οὕτως ἀφ' ἐαυτῆ (τῆ Παρμενιανῆ) τῶν μαρτυριῶν  
 „προενωεγμένων, μὴ τῶν δικαίων ἐλέγχεται ἀντεχόμενος. Εἰ  
 „γὰρ καὶ ὁ Υἱὸς λέγει, ὡς εἴληφε μὲν αὐτὸς παρὰ τῆ Πατρὸς,  
 „τὸ δέ τοι Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκ τῆ ἰδίᾳ αὐτῷ λαμβάνει, ὃχ  
 „οἶον πως βαθμηδόν· (ἵνα τὸ μὲν Πνεῦμα δηλ: παρὰ τῆ Υἱὸς,  
 „ὁ δὲ Υἱὸς παρὰ τῆ Πατρὸς, λαμβάνῃ) ἀλλ' ὡς αὐτὸς διηρημή-  
 „νυσε λέγων: ὅτι πάντα ὅσα ἔχει ὁ Πατὴρ ἐμὰ ἐστὶ, διὰ τῆτο  
 „εἶπον, ὅτι ἐκ τῆ ἐμῆ λήψεταί,, Τελούταῖον καὶ ἐν τῷ Β'. Βιβλ:  
 Τόμ: Β'. Σ σ τῶν



τῶν περὶ Τριάδος Κεφ: Δ'. „Παρὰ δὲ ταῦτα ἔτι: αἰ τὸ Ἅγιον  
 „Πνεῦμα δοξάζει τὸν Υἱὸν διὰ τῆτο, ὅτι ὅπερ ἐστὶ τῷ Υἱῷ λή-  
 „ψεται· διὰ δὲ τῆτο ἐκ τῆ ὅπερ αὐτῷ ἐστὶ λήψεται, ὅτι πάντα  
 „ὅσα ἔχει ὁ Πατὴρ αὐτῷ εἰσὶ φανερόν ἐστιν, ὅτι ἐν ᾧ τὸ  
 „Πνεῦμα τὸ Ἅγιον δοξάζει τὸν Υἱὸν, ὁ Πατὴρ δοξάζει τὸν  
 „Υἱόν,,.

Ὁ δὲ Θεὸς ἸΩΑΝΝΗΣ ὁ Χρυσόστομος, ἐν Ὁμιλ: ΚΖ'.  
 εἰς τὸν Ἰωάν: (3) „Πάντα ὅσα ἔχει ὁ Πατὴρ ἐμὰ ἐστὶν· ἐπεὶ  
 „ἐν ἐμὰ ἐστὶν ἐκεῖνα, ἐκεῖνος δὲ ἐκ τῶν τῷ Πατρὶ ἐρεῖ, ἐκ  
 „τῶν ἐμῶν ἐρεῖ,,.

Καὶ ΚΥΡΙΛΛΟΣ ὁ Ἀλεξανδρείας Βιβλ: 5'. τῶν Διαλόγων  
 τῶν περὶ Τριάδος (4) Μέρει Α'. Τόμῳ Ε'. τῶν Συγγραμμάτων,  
 Σελίδι 629. „Ἐτι πολλὰ ἔχω ὑμῖν λέγειν, ἀλλ' εἰ διώαθε βα-  
 „σάζειν ἄρτι· ὅταν δὲ ἔλθῃ ἐκεῖνος, τὸ Πνεῦμα τῆς ἀληθείας,  
 „ὁδηγήσει ὑμᾶς εἰς πᾶσαν τὴν ἀλήθειαν· εἰ γὰρ λαλήσει ἀφ'  
 „ἐαυτοῦ, ἀλλ' ὅσα ἀκούσει λαλήσει, καὶ τὰ ἐρχόμενα ἀναγγελεῖ  
 „ὑμῖν. Ἄρα σοι σαφές τὸ παροισθὲν ἐστὶ λόγιον, καὶ προσδέδορ-  
 „κας ὅτι Πνεῦμα μὲν ἀληθείας κατωνόμασε τὸν Παράκλητον,  
 „ἐφ' ᾧ γε μὴν ὡς πρόεισιν ἐκ Πατρὸς, ἴδια πάντα δεικνύς ἐαυτῷ  
 „τὰ τῷ Πατρὶ,,;

Καὶ ΕΥΣΕΒΙΟΣ δὲ ὁ Ἐμισιωδὸς, Κυριακῇ Δ'. μετὰ τὸ  
 Πάχα, ἐν Τόμ: Ε'. Μέρ: Α'. τῆς τῶν Πατέρ: Βιβλιοθ: τῆς  
 ἐν Κολων: Σελίδι 671. Τὰ ἐπαχθέντα τῷ Σωτῆρος ῥήματα  
 διαλυομένων, φησὶν: „Εἰ γὰρ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα λαμβάνει ἐκ  
 „τῶν αὐτῷ Πατρὶ ἐστὶ, λαμβάνει πάντως ἐκ τῶν αὐτῷ Υἱῷ  
 „ἐστὶν ὅτι πάντα ὅσα ὁ Πατὴρ ἔχει τῷ Υἱῷ ἐστὶν,,.

Καὶ ΝΟΪΝΝΟΣ δὲ ὁ Πανοπολίτης, ἐν τῇ εἰς τὸν Ἰωάν:  
 Παραφράσει πρὸς τὰ προεπενεχθέντα τῷ Σωτῆρος Λόγια, ἐν τῷ  
 Προσαρτήματι τῆς τῶν Γραικῶν Πατέρων Βιβλιοθήκης Σελ: 366.

„Πνεῦμα δὲ Πανάγιον, τὸ πρόεισι περ ἐκ Γενετήρος,  
 „Ὑψώσει με κλεῖζον, ἐπεὶ Πατὴρ παρ' ἐμεῖο  
 „Εἰληφὸς, σιωᾷσι, σιωαπτομένοις τ' ἀθρόοιςι,  
 „Χρησμὸς τέστι γε χρόνων ἐκφάντορας ἐξυποδείξει·  
 „Πάντα τε ἀγγελεῖ, ὅσα ὑμῖν ἐς ὕψερρον ἦξει·  
 „Ὅφρα δ' αὖ ἀρχαίοις θεσμοῖς ἐμὸς ἐπλετο κλήρος,  
 „Πάνθ' ὅσ' ἔχει Γενέτης, ὑμῖν τῷδ' ἔνεκα λέξω,  
 „Ὡς Παρακλήτωρ κείνος, ἐμεῖο λαβὼν ῥὰ Τοκῆος,  
 „Ἄτλα τέως ἔσεται πρὸς φαίνει τέρματα ἔργων,,.

Καὶ

(3) Ἐπὶ τῆς Μοντφαλκονίε Ἐκδόσ: Ἀριθμεῖται Ὁμιλ: ΟΗ'. (ἀλλ: ΟΖ'.) ἐν Τόμ: Η'.  
 Σελίδι 461.

(4) Τῶν πρὸς Ἑρμείαν δηλ:

Καὶ ΒΙΓΓΙΛΙΟΣ ὁ Τριδεντίνος Ἐπίσκοπος, ἐν τῇ Ἀθανασίᾳ Διαλέξει τῇ πρὸς Σαξέλλιον, καὶ Φωτεινόν τε καὶ Ἀρειον, τῇ ἐν τοῖς Γεωργίᾳ τῷ Κασάνδρᾳ ἐμφερομένῃ Συγγράμμασι, Σελ: 498. „Διὰ τῆτο πλὴν ἀλήθειαν τὸ Ἅγιον Πνεῦμα λαλεῖ, ὅτι ἐκ τῶν ἰδίων, τρεῖς ἐκ αὐτοῦ, ἀλλ' ἐκ τῶν τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ, ὅσα ἂν λαλήσῃ λαλεῖ. Ἐκ τῶ ἐμῶ γὰρ, φησί, λήψεται καὶ ἀναγγελεῖ ὑμῖν, Καὶ ἵνα δείξῃ τῆτο εἶναι τὸ ἀπὸ τῶν αὐτῶ λαμβάνειν, ὅπερ καὶ τὸ ἐκ τῷ Πατρὶ λαμβάνειν, φησί: διὰ τῆτο εἶπον ἐκ τῶ ἐμῶ λήψεται, ὅτι πάντα ὅσα ἔχει ὁ Πατήρ, ἐμὰ ἐστί,„

Καὶ ἈΠΟΛΛΙΝΑΡΙΟΣ ἐν τῇ Σαρᾷ τῶν Γραικῶν Πατέρων εἰς τὸ Ἰωάν: Κεφάλ: Ις'. „Τὸ παρ' ἐμῶ λέγων, δηλῶ καὶ τοῦ πατρὸς ἐμὰ γὰρ ἐστί τὰ Πατρῶα. Τὸ ἐκ τῷ ἐμῶ λήψεται, κατὰ τὸν αὐτὸν αὐθις ἀκρίβησιν τρόπον, εἰδὲ ὡς γνώσεώς τινος ἐπιγινωσκόμενης τῷ Πνεύματι,„

Ἄ δὲ ἐκ τῆς Αὐγυστίνου ΡΖ'. Πραγματείας τῶν εἰς τὸν Ἰωάννῃ παρηγάγομεν, ἥδη καὶ ΒΕΔΑΣ ἐπαναλαμβάνει αὐτὰ, ἐν τῷ Δ'. Βιβλ: τῷ εἰς τὸν Λακκῶν Ὑπομνήματος, Κεφαλ: ΕΓ'. εἰς τὸ ΙΗ'. Κεφάλ: ἐν τῷ Ε'. Τόμ: τῶν Συγγραμ: Στήλη 375. Καὶ ἐν τῇ Θερινῇ δὲ Ὀμιλ: τῇ περὶ τῷ χρόνῳ, ἐν Κυριακῇ: „Ψάλατε,„ Τόμῳ Ζ'. τῶν Συγγραμ: Στήλη 21. Καὶ ἐν τῇ Τεσσαρακοσισίμῳ Ὀμιλ: τῷ Σαββάτῳ μετὰ τὸ „Ἀναμνήθητι,„ περὶ τὸ τέλος τῷ Ζ'. Τόμῳ, Στήλη 248. Καὶ ἐν τῷ Ὑπομνήματι τέως τῷ εἰς τὸ ΙΖ'. Κεφάλ: τῷ Ἰωάννῃ, Τόμῳ Ε'. Στήλη 585. Ἄ δὲ ἐκ τῆς Αὐγυστίνου Ρ'. Πραγματ: τῶν εἰς Ἰωάν: ἀπεμνημονόδομεν, ἐπαναλαμβάνει ὁ αὐτὸς (Βέδας) καὶ ἐν τῷ Ὑπομνήμ: τῷ εἰς τὸ Ις'. τῷ Ἰωάννῃ Κεφάλαιον, Τόμῳ Ε'. τῶν Συγγραμμάτων: Στήλη 572. Καὶ ἐν τῇ Θερινῇ Ὀμιλίᾳ τῇ περὶ τῷ χρόνῳ, ἐν τῇ Κυριακῇ „Ψάλατε,„ Τόμ: Ε'. τῶν Συγγραμ: Στήλη 21.

Καὶ ἈΛΒΙΓΝΟΣ δὲ ὁ Ἀλκαῖνος ἐν τῷ εἰς τὸν Ἰωάννῃ Ὑπομνήμ: εἰς τὰ ῥήματα: ἐκ τῷ ἐμῶ λήψεται: „Ὅτι ἐκ τῷ ἐμῶ λήψεται καὶ ἀναγγελεῖ: Τρεῖς ἐκ τῷ ἐμῶ Πατρὶ. Ἐκ τῷ Πατρὶ ἐλάβε τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ὅτι ἐκ τῷ Πατρὶ ἐκπορεύεται, ἐξ ἧ καὶ ὁ Υἱὸς γεννᾶται ὁ δὲ ἐκ ἐκτινος γεννηθεὶς, εἰς τὸν ἐκπορεύομενος, ὁ Πατήρ ἐστὶ ἕκτος,„ Ἡ δὲ σωτήριος Γλωσσηματικὴ Ἑρμηνεία εἰς τὰ τῷ Σωτῆρος ἐκεῖνα: „Ἐκ τῷ ἐμῶ, τρεῖς ἐκ τῷ Πατρὶ, ἐξ ἧ καὶ ἐγώ,„

Καὶ ἈΥΓΜΩΝ δὲ, ἐν τῇ Κυριακῇ „Ψάλατε,„: εἰς τὰ εἰρημένα, ἐκ τῷ ἐμῶ λήψεται: τρεῖς ἐκ τῷ ἐμῶ Πατρὶ. Καὶ ἐν τῇ Θερινῇ δὲ Ὀμιλ: Κυριακῇ Δ'. μετὰ τὸ Πάχχα, Σελ: 127.

τῶν αὐτῶ Θερινῶν Ὀμιλιῶν, τῶν ἐν Κολων: Ἐκδεδομένων  
 Ἔτει 1539. „Ὁ δὲ, φησὶν, ὅτι ἐκ τῆ ἐμῆ λήψεται καὶ ἀναγ-  
 „γελεῖ ὑμῖν, ἐξυπακυσέον, ἐκ τῆ ἐμῆ Πατρός· ὁ γὰρ ἐκ ἔκτινος  
 „ῶν, ἐδ' ἔκτινος ἐκπροῖων, μόνος ἐστὶν ὁ Πατήρ. Ὁ Υἱὸς ἐξ  
 „ἑαυτῆς εἶναι ἐ λέγεται, ὡς ἐκ τῆ Πατρὸς γεννηθείς· τὸ Πνεῦμα  
 „τὸ Ἄγ: ἐκ τῆ Πατρὸς λαμβάνειν λέγεται· ὅθεν καὶ ἔπεται,  
 „πάντα ὅσα ἔχει ὁ Πατήρ ἐμὰ ἐστίν,,.

Τὰ δ' ἀρτίως ἀπομνημονοθέντα Ἀλδίνε τῆ Ἀλκείνε ρή-  
 ματα, ἐπαναφέρει καὶ ΡΑΒΑΝΟΣ ὁ Μαῦρος, Ὀμιλ: ΡΕ'.  
 Τόμ: Ε'. τῶν Συγγραμμάτων: Σελ: 654. καὶ ΣΜΑΡΑΓΔΟΣ ἐν  
 Κυριακ: Γ'. μετὰ τῷ Η'. τῆ Πάχα, φύλ: 97. Ὡστερ ἐντεῦ-  
 θεν ὁ ρηθεὶς ἐστὶ Σμάραγδος ἐν τῇ Κυριακῇ τῶν Βαΐων, φύλ:  
 69. τὰ Αὐγυστίνε ἐκεῖνα ἐκ τῆς Ρ'. εἰς τὸν Ἰωάν: Πραγματείας  
 ἐπαναφωνεῖ: „Ἄρα ἀπὸ τῆ Πατρὸς λαμβάνει τὸ Πνεῦμα τὸ  
 „Ἅγιον, ὅθεν λαμβάνει καὶ ὁ Υἱός. Ἐν γὰρ ταύτῃ τῇ Τριάδι,  
 „ὁ μὲν Υἱὸς ἐκ τῆ Πατρὸς γεννητός· τὸ δὲ Πνεῦμα ἐκ τῆ Πα-  
 „τρὸς ἐκπορεύτόν· ὁ γὰρ ἐκ ἔκτινος γεννητός, ἐδ' ἔκτινος ἐκ-  
 „πορεύτός μόνος ὁ Πατήρ ἐστίν,,.

Τελυτάϊον δὲ καὶ ἸΓΚΜΑΡΟΣ ὁ Ῥημῳσίος ἐν τῷ Βιβλ:  
 τῷ περὶ τῆς μὴ τριπλῆς Θεότητος, Τόμῳ Α'. Σελίδι 422. ἐπα-  
 ναλαμβάνει τὰ προαπενεχθέντα τῆ Αὐγυστίνε ἐκ τῆς ΡΖ'. εἰς  
 τὸν Ἰωάν: Πραγμ: Ἐπὶ δὲ πᾶσι τέτοις καὶ ΖΑΧΑΡΙΏΣ Ἐπί-  
 σκοπος ὁ Χρυσοπολίτης, (5) ἐν τῷ εἰς τὰς Εὐαγγελιστὰς Ὑπομ-  
 νήματι, εἰς τὰ Ἰωάννε ρήματα: „Ἐκ τῆ ἐμῆ λήψεται,,. Ἐν  
 Τόμ: ΙΒ'. Μέρ: Α'. τῆς τῶν Πατέρ: Βιβλιοθ: τῆς ἐν Κολων:  
 Σελ: 183. „Ἐκ τῆ ἐμῆ, φησὶν ὁ Υἱός, λήψεται τὸ Πνεῦμα,  
 „ὅτι ἐκ τῆ Πατρὸς λαμβάνει τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ὅθεν λαμ-  
 „βάνει καὶ ὁ Υἱός. Τὸ μὲν Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῆ Πατρὸς λαμ-  
 „βάνει ἐκπορευόμενον, ὁ δὲ Υἱὸς γεννηθείς,,. Ἐπειδὴ δὲ τὰ  
 αὐτὰ καὶ αὐθις ὁ Χρῖστος ἐπανέληφε, Σελίδι 184. „Εἶπον  
 „ὅτι ἐκ τῆ αὐτῆς ἔχει τὸ ἐκπορεύεσθαι τὸ Πνεῦμα, ἐξ ἧ καὶ  
 „ἐγὼ γεγέννημαι· ἵνα μὴ νομιθῇ τὸ Πνεῦμα ἡττοῦ ἐμῆ, ἢ γεν-  
 „νηθὲν ἐξ ἐμῆ, ὥστερ ἐγὼ ἐκ τῆ Πατρὸς,,.

Ἐνθεντοι παντάπασιν ἄτοπος ἐστὶν ὁ γράψας: (6) „Ἰδέ-  
 „τωσαν καὶ κείνοι οἱ τάδε τὰ ρήματα: „ἐκ τῆ ἐμῆ λήψεται,,·  
 „ἀναπτύσσοντες ἐκ τῆ Πατρὸς, εἰ μὴ προπετῶς ἀντιλέγῃσι τοῖς  
 Ἁγίοις

(5) Εἴτ' Ἐπίσκοπος Χρυσοπόλεως (Goldiborougs)· εἴτ' ἐν καὶ Μοναχὴς ἐκ τῆ παρὰ  
 Λατίνοις τῶν Πραιμονστρατῶσιων καλεσμένης Τάγματος· περὶ δὲ ὁ Ζαχαρίας ἕτος  
 ἀκμάζων περὶ τῷ ΙΒ'. μεσῆσαν τῶν Σωτηρίων ἐτῶν Ἑκατονταετηρίδα, συνέγραψε  
 δὲ Συμφωνίαν. ἔτε Ἀρμονίαν τῶν Τεσσάρων Εὐαγγελιστῶν.

(6) Κιχώβιος Ζητήμ: Α'. Σελ: 12.

„Αγίοις Πατράσι, τοῖς τρανώς ἐκδιδάσκεισι περὶ τῆς Τιῆς ἐννοεῖσθαι  
 „αὐτά. (Εἶτα προσιδέας:) θαυμασὸν τέως, πῶς τῇ τῆς Θεῆς  
 „Γρηγορίᾳ μαρτυρίᾳ τὸ ἰχυρόγνωμον ἔχ' ὑπέκει! ἔφη γὰρ ἐκεί-  
 „νος: ἐξ αὐτῆς λαμβάνει τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ὅπερ ἐστὶν ὁ Υἱός.  
 „Πῶς ἔν' ἔτοι τολμῶσι τῷ Πατρὶ τάδε ἀπονέμειν τὰ ῥήματα;  
 „Μή τοι γε δὴ τέτοις, ὡς ποτὲ τοῖς ἀμφὶ Σαβέλλιον, ὁ Υἱὸς ἐστὶν  
 „ὁ Πατήρ,; Ὅτω γὰρ δὴ τῷ Προσώπῳ, εἰ μὴ ἀναιδέας γε  
 „πλήρει, ὁ Ἰησοῦτης προπέταιν καὶ ἰχυρογνωμοσιῶν ἐπεγκαλεῖν  
 „ἔχει τοῖς τὰ Χριστῆ ῥήματα ἐκείνα περὶ τῆς Πατρὸς ἐρμηνεύσιν;  
 „ἢ ἔχι τέτο ὁ μέγας τῶν ἐπενεχθέντων Πατέρων παρέδωκεν  
 „ἀριθμός; Ἡ πῶς ἐκ αὐτὸς ἐαυτῷ ἀντιπίπτων ὁ Ἰησοῦτης ἐλέγ-  
 „χεται, ὅς αὐτόθι τὰ αὐτὰ τῆς Χριστῆ ῥήματα („ἐκ τῆς ἐμῆς,)  
 „ἔχι περὶ τῆς Τιῆς, ἀλλὰ περὶ ὧν ὁ Πατήρ ἔχει ἡρμηνεύσεν;  
 „Ἐπεὶ περαιτέρω, Φησὶν, ὁξύτατα σωεῖδεν ὁ Σοφώτατος Καρδι-  
 „νάλης τε καὶ Πατριάρχης Βησσαρίων, ἐν τῷ Πονηματίῳ, τῷ  
 „πρὸς Ἀλέξιον τὸν Λάσκαριν ὑπ' αὐτῆς Συγγραφέντι, ὅτι παρὰ  
 „τοῖς Γραικοῖς τάδε τὰ ῥήματα („ἐκ τῆς ἐμῆς,) ἐπιθετικῶς ληφ-  
 „θέντα ἐδέποτε τίθεται ἄνευ τῆς ἑσιαστικῆς (7) ἄλλως γὰρ διὰ  
 „τῆς

(7) Καμινῶ, ἐδέποτε ἄλλως ἢ ἐπιθετικῶς, αἱ Κτητικαὶ τῶν Ἀντωνυμιῶν λαμβανόμεναι, τὸ ἑσιαστικὸν ἀέποτε, ἥτοι ἐνεργεῖα προσκείμενον ἔχουσιν, ἢ ἔξωθεν ὑπονοούμενον. Οἶον Εὐριπίδης ἐν Ὀρέσῃ: („Εἰ, τέμὸν ἀπολίποιμί σε,) εἰπὼν, ἐνόησε: („τό γε ἐμὸν μέρος,). Καὶ Ὅμηρος Ἰλιάδ: Α'. Στίχῳ 526. („Οὐ γὰρ ἐμὸν παλινάγρετον, ἐδ' ἀπατηλὸν κτ:.) ὑπεδήλωσε (ῥῆμα, κατάνευμα, ἐπάγγελμα, ἔπος.) Καὶ Πλάτων ἐκ Τιμαίου: („Τὸ μὲν ἐμὸν, ἐδὲν θαυμαστόν,) τετέστι γε τὸ ἐμοὶ προσανῆκον, χρῆμα, ἔργον. Καὶ ἐν τῷ Φιλήσῳ: („Ἀλλ' ὦ Πρώταρχε, εἰσὶ κατὰ γε τιὸ ἐμὴν,) τέτο γὰρ ἐστὶ γνώμην. Τοιγαρὲν κἀνταῦθα, ἐπὶ τῆς εἰρημένης: („ἐκ τῆς ἐμῆς λήψεται,) νοητέον ἔξωθεν: ἢ ἐκ τῆς ἐμῆς Πατρὸς, ἢ ἐκ τῆς ἐμῆς κηρύγματος, ἢ βελημάτος, ἢ τῆς τῶν χαρισμάτων πληρώματος τῆς ἐν ἐμοί. Ταῦτα γὰρ πάντα, ὁ Πατήρ, τὸ κήρυγμα, τὸ βέλημα, τὰ χαρίσματα, εἰσὶ μὲν αὐτῆς, ὅτι καὶ ἐν αὐτῷ, ἐκ εἰσὶ δὲ αὐτὸς, ὡς διὰ τέτων ὑποσατικῶς χαρακτηριζόμενος, ἵνα καὶ τὸ („ἐκ τῆς ἐμῆς λήψεται) εἰς τὸ Πρόσωπον μεταληφθῇ τὸ ἴδιον αὐτῆς ὡσανεὶ ἔφησεν, ἐκ τῆς ἐμῆς, ἀντὶ ἐξ ἐμῆς, πρωτοτύπως. Οὐδὲ γὰρ ἄλλως τῆς Ἐλλάδος Φωνῆς ἢ Χρῆσις, τὸ ἐκ τῆς ἐμῆς φράζειν, ἀντὶ τῆς ἐξ ἐμῆς, ἐδ' ἄλλης ἴσως, ἢ ἂν καὶ προβάλλοιτο. Ταύτητοι καὶ ἄριστα ὁ Νοβογροδίας Θεοφάνης ἐν τοῖς περὶ τῆς Ἐκπορεύσεως, Κεφαλ: Γ'. § 171. Gratis, imo frustra, τὸ de meo, accipiunt pro de me. Incumbit sane eis probare, de meo, idem significare quod de me. Quod negotium, nisi dissimulent, gravissimum esse fateantur necesse est. Quo enim sese hic convertent? ad Linguam ne Latinam? sed neque Latine Christus loquutus est, aut scripsit Iohannes, neque occurrit in hac Lingua simile exemplum. Ad Græcam ne? nec illa exemplum dabit. Si ad Hebraicam? nihil tale produunt ejus Interpretes. Mira ergo et Mystica Loquutio est. Et quomodo ergo Latini pro confesso arripiunt, quod Interpretatione indiget? Si dicent, id ita dictum esse, quomodo dicere solemus servum non sua habere, sed ex nostris diutescere; id est rebus; tum vel consubstantialitas, vel quidquid aliud: certe nulla hic causa, nulla productio subintelligi poterit. („Προῖκα, μάλλον, δὲ μάττω, τὸ „ἐκ τῆς ἐμῆς, ἐκδέχονται ἀντὶ „τῆς ἐξ ἐμῆς,“ δεῖσαι γὰρ αὐτοῖς δὴ „πρὸς δεῖξαι, τὸ „ἐκ τῆς ἐμῆς,“ τῷ „ἐξ ἐμῆς,“ εἶναι ταυτοσήμαντον τὸ δὲ, μὴ κα- „ταρῶνδόμενοις ἐργαδέσαστον αὐτοῖς εἶναι ὁμολογεῖν ἐπάνανγκες ὅποι γὰρ ἐνταῦθα „καὶ τραπήσσονται; Ἀρ' ἐπὶ τιῷ Λατινίᾳ φωνῶ; ἀλλ' ἐδὲ Λατινισὶ ὁ Χριστὸς ἐφ- „θέγγατο, ἐδ' Ἰωάννης σωέγραψεν, ἐδ' ἐν τῇ γλώσσῃ ταύτῃ προσεοικός τι ἀπαντὰ „τοιόνδε ὑπόδειγμα. Ἀλλ' ἐπὶ τιῷ Ἑλληνίδῃ; ἐδ' αὐτῇ δῆγμα δὴ τι παρέχεται.  
 Τόμ: Β'. Τ τ „Εἰ

„τῆς Φωνῆς: („ἐκ τῆ ἐμῆ,,) ἔδεν ἂν ἦτον διασημανθεῖη ὁ πο-  
 „λέμιος, εἴτε ὁ Θεράπων, ἢ ὁ Πατήρ. Ἦν ἄρα ἡ τῆ Χριστῆ  
 „συλλογισομένη διάνοια ἐκείνη, ὡς ἔφω· ἢ γὰρ αὕτη: ὁ λαμβά-  
 „νων ἐξ ὧν ἔχει ὁ Πατήρ, λαμβάνει ἐκ τῶν ἐμῶν, ἢ ἐκ τῆ  
 „ἐμῆ· (πάντα γὰρ, ὅσα ἔχει ὁ Πατήρ, ἐμὰ ἐστίν.) Τὸ Ἅγιον  
 „Πνεῦμα ἐξ ἐκείνων λαμβάνει, ὧν περ ὁ Πατήρ ἔχων ἐστίν.  
 „Ἄρα λαμβάνει ἐκ τῶν ἐμῶν, ἢ ἐκ τῆ ἐμῆ,,. Διδάσκει μὲν  
 ἔν οἱ Πατέρες ἐν ἄλλοις, ὅτι ἐκ τῆ Υἱῆ λαμβάνει τὸ Πνεῦμα,  
 ἐμὴν δὲ κατ' αὐτὸ τῆτο καὶ ἀντιλέγουσι, τοῖς τὰ („ἐκ τῆ ἐμῆ  
 „λήπεται,,) ῥήματα περὶ τῆ Πατρὸς ἐρμηνεύουσιν. Ὡς περ δ' ἐπὶ  
 τῶν πλεοναχῶς νοημένων, αἰεὶ τις ὁ πρῶτος ἐστὶ καὶ κυριώτερος  
 νῆς, ὃν περ τὸ Πνεῦμα σκοπεῖ· ἔτω δὴ περθεῖν, ἢ κατόπιν σωεί-  
 δομεν, κατ' αὐτὴν γε τὴν τῶν ῥημάτων δυνάμιν, τὸ τῆ Χριστῆ  
 ἐκάλετο: („ἐκ τῆ ἐμῆ λήπεται,,) εἰρηθαι νοεῖται περὶ τῆ  
 Πατρὸς.

Ἀτόπως δ' ἔτι ὁ αὐτὸς Ἰησοῦτης (8) φησὶν: „Ὅτι τελευτᾶτον  
 „αὐτὸς ὁ Χριστὸς μονοναχὶ Συλλογιστικῶς αὐτὸ τῆτο συμπεραίνων  
 „ἐστίν· ἔτω γὰρ ἐπιχειρεῖ: ἔτινος ἐστὶ πάντα ὅσα ἔχει ὁ Πατήρ,  
 „ἐξ αὐτῆς ἐκείνης τὸ Ἅγιον Πνεῦμα λαμβάνει τὸ λαλεῖν, τὸ εἰδέ-  
 „ναι, καὶ τὸ αὐτῷ εἶναι ταύτόν. Ἐμὰ δὲ ἐστὶ πάντα ὅσα ἔχει  
 „ὁ Πατήρ, φησὶν ὁ Υἱὸς· ἐξ ἐμῆ ἄρα τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον  
 „λαμβάνει τὸ εἰδέναι, τὸ λαλεῖν, τὸ εἶναι,,. — Ἀλλ' ὁ Σωτὴρ  
 εἰπὼν ὅτι πάντα τὰ τῆ Πατρὸς ἐμὰ ἐστίν· ἔτω συμπεραίνων  
 ἂν εἴη, καὶ ὅτι τὸ Πνεῦμα ἄρα τὸ Ἅγιον ἐξ ἐμῆ λήπεται;  
 Πῶς δὲ δὴ ἐνταῦθα προσέθετο ὁ Υἱὸς, ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα  
 (ἐξ αὐτῆς) λήπεται τὸ εἰδέναι, τὸ λαλεῖν, καὶ ἐκ τῆ ἀκολούθου  
 τὸ εἶναι; ἢ μάλλον, πῶς ἐνταῦθα ὁ Υἱὸς συμπεραίνει βέλεται,  
 ὡς ἐξ αὐτῆς λαμβάνει τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ὅποτε δεῖξαι μόνον  
 αὐτῷ ἢ πρόθεσις ὡς, ὅτι ἐξ ἐκείνης, ὅς ἐστὶν αὐτῆς, τὸ Πνεῦμα  
 λαμβάνει; Ἐπειτα δὲ καὶ λανθάνει ὁ Ἰησοῦτης, ἐν ᾧ τὴν μεί-  
 ζονα τῆ Ἐπιχειρήματος Πρότασιν, ἔτω σχηματίζει: „Οὐπερ  
 „ἐστὶ πάντα ὅσα ἔχει ὁ Πατήρ, ἐξ αὐτῆς ἐκείνης τὸ Ἅγ: Πνεῦμα  
 „λαμβάνει; (9) Ἦν γὰρ τὰ τῆ Χριστῆ ῥήματα: ὅτι „πάντα τὰ  
 „τῆ

„Εἰ δ' ἐπὶ τὴν Ἑβραϊδα, ἔδεν τοιοῦτον ἔδ' οἱ Διαρμυλῶται ταύτης προβάλλονται.  
 „Παραδόξος ἄρα καὶ μυστηριώδους ἡ φράσις. Πῶς ἔν παιδες Λατίνων, ὡς ὁμολογε-  
 „μένοις περιδράσονται, τῆ ἀναπτύξεως χρήζοντες; ἢ περ γὰρ φαῖεν τῆς ἔως  
 „εἰρηθαι, ὡς λέγειν εἰώθαμεν, μὴ τὰ ἴδια τον δελδόντα ἔχεν, πλητεῖν δ' ἐκ τῶν  
 „ἡμετέρων· ταῦτέσι πραγμάτων· τλιωκαῦτα δήπερ, εἴτε τὸ τῆς ὁμοσιότητος, εἴθ' ὅ-  
 „τις ἕτερον πάντως· ἔτις δ' ὡς πάντως αἰτία, ἐδέτις παραγωγὴ, νοηθῆναι δυ-  
 „νήσεται,,.

(8) Ἐνθ: ἀνωτ: Σελ: 12.

(9) Αὕτη, ὡς περ ἀντὶ μείζονος τῆ βαψωδμένης αὐτῷ Συλλογισμῶ ὁ Ἰησοῦτης ὡς ἡμῖν  
 ὑποτίθησι, πρότασις τις ἐστὶν ἐπιδήλως τῶν Ἐνδυμηματικῶν παρὰ τε ῥήτορι καὶ  
 δια-



„τῷ Πατρὶ ἐμὰ ἐστίν,· ἄρα „τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῷ ἐμῷ  
 „λήψεται,·. Ἐν οἷς, ὡς ἀνωτέρω κατέδομεν, (10) ἡ Πρότασις:  
 ὅτι „πάντα τὰ τῷ Πατρὶ ἐμὰ ἐστίν,· ἔχῃ τῆς ἐλάσσονος χώ-  
 ραν ἐπέχει, τῆς δὲ μέζονος τῶν ἐπὶ τῷ Συλλογισμῷ Προτάσεων.

Ἀλλὰ καὶ ἔτι ὁ αὐτὸς Συγγραφεὺς (11) ἐνίσταται Φάσκων,  
 „ὅτι τέτοις τέως τοῖς ῥήμασιν, „ἐκ τῷ ἐμῷ λήψεται,·, προσί-  
 „θεται καὶ τὸ „ἀναγγελεῖ ὑμῖν,·. Ἐξ ὧν περ ἔτι ἐστὶ ἐπι-  
 „χαρεῖν: Ἐξ ἧς τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον λαμβάνει τὴν σοφίαν, καὶ  
 „τὴν δυνάμιν τῷ φωτίζειν τὰς Ἀποστόλους, ἐξ αὐτῷ λαμβάνει τὸ  
 „εἶναι. (Ἐπὶ Θεῷ γὰρ τὸ εἶδέναι, ταυτὸν ἐστὶ τῷ εἶναι.) Ἐκ  
 „τῷ Υἱῷ δὲ (τὸ Πνεῦμα) λαμβάνει τὴν σοφίαν καὶ τὴν δυνάμιν  
 „τῷ φωτίζειν, ὡς ἡ ἀλήθεια μαρτυρεῖ. Ἄρα ἐκ τῷ Υἱῷ λαμ-  
 „βάνει τὸ εἶναι,·. — Ψυδὲς ἀλλ' ἐν τῷ λεγόμενον, ὡς ἡ αὐτοα-  
 λήθεια ταῦτα μαρτυρεῖ: τὸ ἐξ αὐτῷ τῷ Υἱῷ, τὸ Πνεῦμα τὴν σο-  
 φίαν λαμβάνειν, καὶ τὴν τῷ φωτίζειν δυνάμιν· καὶ γὰρ κατὰ  
 τὴν σημασίαν τῶν ὑπὸ τῷ Υἱῷ εἰρημένων, ἐκ τῷ Πατρὶ μόνον  
 δηλᾶται τὸ Πνεῦμα ληψόμενον, ὡς ἀνωτέρω δέδεικται. Καὶ δι-  
 δάσκουσι μὲν οἱ Πατέρες ὅτι τὸ Πνεῦμα λαμβάνει καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ·  
 ἀλλ' ἐκ ἄλλως τῆτο νοῶσιν, ἢ ὡς καὶ ὁ Υἱὸς παραπλησίως λαμ-  
 βάνει παρὰ τῷ Πνύματος τὰ ἀναγγελλόμενα, διὰ τὴν ἑστίαν,  
 δηλονότι, τὴν μίαν καὶ τὴν αὐτὴν· ἦτοι διὰ τὸ ὁμοῦσιον· καθ'  
 ὅτι ἔχ' ὑπεναντία ἀναγγέλλει τὸ Πνεῦμα, ὧν φθάσας ὁ Υἱὸς  
 προανήγγειλεν. Ἀλλὰ περὶ τῆς, ἀντίκα ἤδη πραγματευ-  
 σόμεθα.

Ἐνίσταται τελευταῖον ὁ αὐτὸς Ἰησοῦς: (12) „Ἐτερον,  
 „φασὶ, τὸ ἐξ ἐμῷ λήψεται, καὶ ἕτερον τὸ ἐκ τῷ ἐμῷ. Ἀπαντᾷ  
 „δὲ λέγων, ὡς ἀποφάσκουσιν τῆτο ὅ,τε Θεὸς Ἰγνάτιος, καὶ ὁ Θεὸς  
 „Ἀθανάσιος, καὶ οἱ λοιποὶ οἱ ἀνενεχθέντες. (13) Ἐπειτα διαιρῶ,  
 „φησὶν,

διαλεκτικοῖς καλεσμένων (Ὅρα, εἰ βύλει, ἐν τῇ Ἐκπονηθείσῃ ἡμῖν Λογικῇ Πραγ-  
 ματείᾳ §. ψμέ.) ἐν ᾗ πᾶσα ἐπὶ λέξεως ἡ τῷ Σωτῆρος διανοητικὴ παρίσταται  
 ἔφοδος. Ταῦτά γὰρ ὄντι τὸ φάναι: „Ὅτι ἔπερ ἐστὶ πάντα ὅσα ἔχει ὁ Πατήρ, ἐξ  
 „αὐτῷ τὸ Πνεῦμα λαμβάνει,·: ἢ δὲν ἀλλ', ἢ λέγειν ἐστὶ, (τῆς τῷ λόγῳ τριτοπροσω-  
 πίας ἐπὶ τὸ πρῶτον Πρόσωπον μεταλαμβανομένης) ὅτι ἐπειδὴ πάντα ὅσα ἔχει  
 ὁ Πατήρ ἐμὰ ἐστὶ, τὸ Πνεῦμα ἐκ τῷ ἐμῷ λήψεται. Οὐμὶν δ' ἐντεῦθεν ἔπεται, ὅτι  
 καὶ ἐξ ἐμῷ τῷ Υἱῷ λήψεται, ἀλλ' ἐκ τῷ ἐμῷ, ὡς καὶ εἴρηται· τῆτο δ' ἐστίν, ἐκ τῷ  
 ἐμῷ Πατρός.

(10) Ὅρα ἐπὶ τῆς Α'. Ἀπαντήσεως, κατ' ἀρχάς· καὶ τὴν ἐκῇ Σημείωσιν.

(11) Αὐτὸς αὐτ: Σελ: 13.

(12) Αὐτόθι, Σελ: 12.

(13) Ἀλλ' εἰμὲν, καὶ ὅπως ἀποφάσκουσιν οἱ Πατέρες τῆτο, ὁ Συγγραφεὺς ὁ ἡμέτερος  
 ἀπαντᾷ· ἥδη δ' εἵτεινον ὡς Ἰησοῦς μικρὸν τὸ ἔς Σε τοῖς τῷ Θεῷ Χρυσόστομῳ  
 ῥήμασιν (ἐν Λόγῳ περὶ τῷ Ἁγ: Πνύμ: Τόμ: Γ'. τῆς τῷ Μοντφאלκ: Ἐκδόσ:  
 Σελ: 305.) „Πρόσεχε (φάσκοντος) τῇ ἀκριθείᾳ: ἐκ εἵπεν „ἐξ ἐμῷ, ἀλλ' ἐκ τῷ  
 „ἐμῷ,·... ἐκ τῷ ἐμῷ δώσει ὑμῖν, ἀλλὰ λήψεται. Λαμβάνει ὁ δανειζόμενον. Ἀλλ'  
 „ἐπειδὴ ἐπλήρωσε τὴν πηγὴν, ὡς ἀρχὴν χαρισμάτων, ἀπὸ τῆς δεξαμενῆς ἀντλαῖ

Τ τ 2

„καὶ

„Φησὶν: ἕτερον μὲν ἐστὶν ἐν ἐκείνοις, ἐφ' ὧν διακρίνεται τὸ ἐμὸν  
 „καὶ τὸ ἐμέ· ἕμι δ' ἐν οἷς ταῦτα ἐν καὶ ταὐτὸν ἐστὶν. Ὁ δὲ  
 „(Θεὸς) Λόγος, ἐπειδὴ καθαρά ἐστὶν ἐνέργεια, ἐκ ἔχει αὐτὰ  
 „διακρινόμενα, ἀλλὰ πάντα ἐν,, — Τέτων ἀλλ' ἐν, περὶ μὲν  
 τῷ προτέρῳ ἤδη διαλέληπται· τὸ δ' ἐπὶ τῷ Τίῳ μηδαμῶς διακρί-  
 νεσθαι τὸ „ἐμὸν,, καὶ „τὸ ἐμέ,,. Παντάπασι ψευδὲς ὅν (14)  
 καὶ Σαβελλιανισμῷ ἀπόδει. Εἰ γὰρ τὸ τῷ Τίῳ Πρόσωπον, ἐν τι  
 καὶ ταυτὸν πάντῃ ὑπάρχει τοῖς ἐν αὐτῷ (ὃ γάρ τι ἐν τινι ἐστὶ,  
 καὶ αὐτῷ ἐστὶ) δεῖσθαι πάντως, ἐν τι καὶ ταὐτὸν εἶναι τὸ τῷ  
 Τίῳ Πρόσωπον τῷ τῷ Πατρὶ· ὁ γὰρ Πατήρ ἐν τῷ Τίῳ, καὶ τὰ  
 τῷ Πατρὶ πάντα, τῷ Τίῳ ἐστὶ. Δεῖσθαι δ' ἂν, καὶ τὸ τῷ Τίῳ  
 Πρόσωπον τῷ τῷ Πνεύματος, καὶ τὸ τῷ Πνεύματος τῷ τῷ Πα-  
 τρὶ, ἐν εἶναι καὶ ταυτὸν Πρόσωπον ὡσαύτως καὶ γὰρ καὶ τὸ  
 Πνεῦμα ἐν τῷ Τίῳ, καὶ ὁ Πατήρ ἐν τῷ Πνεύματι. Ἀλλὰ γὰρ  
 ἐπὶ τῷ Θεῷ πάντα ἐστὶ κοινὰ, ἐξαιρουμένων τῶν ἂ τοῖς Προσώ-  
 ποις ἐστὶν ἐπανήκοντα, ἐν οἷς περ δῆπερ, τότε „ἐμὸν,, καὶ τὸ  
 „ἐμέ,, διακρίνεται καθάπερ ἐν ὁμοίως, εἴαν περὶ τῷ αὐτῷ  
 Προσώπῳ, καὶ ἔχῃ ἕτερον „τὸ ἐμὸν,, νοῆται, τὸ „ἐμὸν,, τιωικαῦτα  
 καὶ τὸ „ἐμέ,, ἀπ' ἀλλήλων ἡκιστα διασέλλεται. Ἀλλ' ἐνταῦθα  
 ἔμπης τὸ „ἐμὸν,, ἐκείνο, περὶ τῷ Πατρὶ νοητέον εἰρησθαι, ὡς  
 ἀνωτέρω ἐδείχθη (15) καὶ ἐκ ἄρα ταὐτὸν ὡς τὸ „ἐμὸν,, φᾶναι,  
 καὶ τὸ „ἐμέ,,.

### · Α Π Α Ν Τ Η Σ Ι Σ Β'.

Ἐπειτα οἱ Πατέρες ἐκείνα: Ἐκ τῷ ἐμῷ λήψεται: καὶ περὶ τῷ  
 Τίῳ ἔτι φέρονται διερμηνευτικότες, ὡς εἶναι τὸν νῦν: ὅτι ἐκ τῷ  
 Τίῳ

„καὶ παρέχει πᾶσιν ἐκ τῶν ἰδίων. — Ἐκ τῷ ἐμῷ λήψεται· ἐξ ὧν ἐχορήγησέ μοι  
 „μόνον τῷ Κυριακῷ ἀνθρώπῳ, λήψεται τὸ δεδοκός, τὸ ἐλθὼν καὶ μέναν ἐν ἐμοί,  
 „τὸ χρίσαν με, τὸ ἀγιάσαν, τὸ ἀγαγὼν εἰς τιμὴν ἔρημον, τὸ ὑποσφύσαν με νικητιῷ·  
 „ἐκ τῷ ἐμῷ λήψεται καὶ ἀναγγελεῖ ὑμῖν. Καὶ ἵνα δείξῃ ὅτι ἐκ τῷ Ἁγίῳ Πνεύμα-  
 „τος ἐμνημόνευσεν, ἀλλὰ τῶν δωρεῶν, ἐπάγει, μετὰ τὸ εἰπεῖν ἐκ τῷ ἐμῷ λήψεται,  
 „ἐνθὺς: πάντα ὅσα ἔχει ὁ Πατήρ ἐμὰ ἐστὶν· ἔλαβον αὐτὰ ἐκ τῷ Ἁγίῳ Πνεύμα-  
 „τος, διὰ τῷτο εἶπον ἐκ τῷ ἐμῷ λήψεται,,. Ἐκ τέτων ἐν μαθήσει: 1) ὅτι ἐκ ταυ-  
 τὸν ἐπὶ τῷ Κυρίῳ, „τὸ ἐξ ἐμῷ,, καὶ τὸ „ἐκ τῷ ἐμῷ,, 2) ὅτι τὸ δεύτερον ὡς χά-  
 ραν ἔχει, ἀλλ' ἔχει τὸ πρῶτον· 3) ὅτι ἂν λαμβάνει καὶ παρέχει τὸ Πνεῦμα, τὰ  
 τῷ Πνεύματος ἐστὶ χαρίσματα, ἃ περ ἀπόκειται μὲν ὡς ἐν ἀρχῇ καὶ πηγῇ τῷ  
 Κυρίῳ, ἐν ᾧ οἰκεῖ πᾶν τὸ πλήρωμα τῆς Θεότητος σωματικῶς· ἐστὶ γεμῖν ὅδε τῷ  
 Πνεύματος ἀλλότρια, τῷ ἐξ αὐτῶν ὡς ἐξ ἰδίων λαμβάνοντος, καὶ τοῖς πιστοῖς δια-  
 νέμοντος.

(14) Ἄλλως γὰρ, τῷ Σωτῆρος εἰπόντος: „ὁ Πατήρ ὁ ἐμός,, ὁ Ἰησοῦς τοῦ νοήσε: „ὁ  
 „Πατήρ ἐγώ,,.

(15) Ἡ καὶ περὶ τῶν χαρισμάτων, (ὡς ἀνωτ: ἐν Σημ: (13) εἴρηται) ἅτινα τῷ ὄντι,  
 ἔχει κατὰ τὰ ὑποστατικά τῶν γνωρισμάτων, ἐν καὶ μόνῳ τῶν ὑπερθέων Προσώπων  
 προσιδιάζει· ἀλλὰ κοινὰ ἐστὶ τῆς ὅλης Τριάδος, καὶ τῷ Πατρὶ δηλ: καὶ τῷ Τίῳ,  
 καὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι.

Τίς λαμβάνει τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. Πλέα τῆς δε τῆς διανοίας τὰ τῶν Πατέρων ἐστὶ Συγγράμματα, καὶ πρὸ παντὸς τὰ Ἐπιφανίς· οἱ δὲ συχνάκις τὸ Πνεῦμα λαμβάνειν καὶ παρὰ τῷ Τίῳ ἐκδιδάσκουσιν. Οἷον ἈΘΑΝΑΣΙΟΣ Βιβλ: Δ'. κατὰ Ἀρειανῶν (16) ἐν Τόμ: Α'. Σελ: 477. „Αὐτὸς γὰρ τὸ Πνεῦμα δίδωσι καὶ ὅσα ἔχει τὸ Πνεῦμα, ταῦτα παρὰ τῷ Λόγῳ ἔχει,,. Καὶ ἐν τῇ Ἐπιστολῇ τῇ πρὸς Σεραπίωνα, ἐν Τόμ: Β'. Σελίδι 17. „Τῷ Τίῳ ἐστὶ τὸ Πνεῦμα καὶ παρὰ τῷ Τίῳ πάντα δέχεται τὸ Πνεῦμα, ὡς αὐτὸς ἔρηκε, καὶ ἐμφυσήσας δέδωκεν αὐτὸ τοῖς Μαθηταῖς,,.

Καὶ ΚΥΡΙΑΛΟΣ δὲ ὁ Ἱεροσολυμίτης ἐν Κατηχήσει Ις'. Φύλ: 187. „Πατὴρ μὲν δίδωσιν Τίῳ, καὶ Τίς μεταδίδωσιν Ἀγίῳ Πνεύματι,,. Αὐτὸς γὰρ ἐστὶν ὁ Ἰησοῦς ὁ λέγων, ἐκ ἐγώ: „Πάντα μοι παρεδόθη ὑπὸ τῷ Πατρὸς μου,,. Καὶ περὶ τῷ Ἀγίῳ Πνεύματος λέγει: . . . „Ἐκεῖνος ἐμὲ δοξάσει, ὅτι ἐκ τῷ ἐμῷ λαμβάνει, καὶ ἀναγγελεῖ ὑμῖν,,. — Ἀλλ' ἔδέποτε οἱ Πατέρες, τῷ τῆς αἰτίας λόγῳ τῷτο ἐνόησαν καθ' ὃν δὲ λόγον ἔφασκον λαμβάνειν τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῷ Πατρὸς κατὰ δὲ τὸ ἐνιαῖον μόνον, καὶ τὸ ταῦτόν τῆς ὁμοσίσ φύσεως καθ' ὅτι γε ἔχ ὑπεναντία τοῖς ὑπὸ τῷ Σωτῆρος ἀνηγγελημένοις, ἀλλ' ἐκείνοις ἀναγγελεῖ πάντῃ ταῦτα, καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον πάντα διδάσκοντες εἰληφέναι τὸ Πνεῦμα ἐκ τῷ Τίῳ, ὅπερ ἡμῖν ἔμελλεν ἐπαναγγελεῖν. Καθ' ὃν δὲ πρὶν νῦν ὁμοίως καὶ ἐκ τῷ Ἀγίῳ Πνεύματος ὁ Τίς εἰληφῶς ὡς πάντα, ὅσα δὲ ποτε τῷ κόσμῳ ἀνήγγειλεν.

Οὕτω γὰρ ΔΙΔΥΜΟΣ ὁ Ἀλεξανδρεὺς ἐν τῷ Β'. Βιβλίῳ περὶ τῷ Ἀγίῳ Πνεύματος, ἐν 5'. Τόμ: τῶν Ἱερωνύμου Συγγραμμάτων: „Ὁ Παράκλητος ἐκ τῷ ἐμῷ λήψεται: Κἀνταῦθα αὖθις τὸ λαμβάνειν νοητέον ἢ προσήκον ἐστὶ Θεῷ· ὃν ἐν τρόπον ὁ Τίς διδῶς, ἐκ ἀποσερεῖται ὡς χορηγεῖ, ἔδὲ κατὰ ζημίαν τῷ ἑαυτῷ ἄλλοις μεταδίδωσιν· ἔτω καὶ τὸ Πνεῦμα ὃ λαμβάνει ὃ πρὶν ἐκ ἔχεν. Εἰ γὰρ ὃ πρὶν ἐκ εἶχεν εἰλήφει, μετενεχθέντος ἐφ' ἕτερον τῷ ἔργῳ, κενὸς χορηγὸς ὡς κατέστη, παυσάμενος ἔχειν ὅπερ ἐνείμαλο. Ὡς περ τοίνυν περὶ τῶν ἀσωμάτων διαλεγόμενοι φύσεων νενοήκαμεν, ἔτω καὶ νῦν τὸ Ἅγ: Πνεῦμα ἐκ τῷ Τίῳ λαμβάνειν, ὅπερ ὡς τῆς φύσεως αὐτῷ, γινώσκων χρεῶν καὶ μὴ τὸν διδόντα καὶ τὸν λαμβάνοντα, ἀλλὰ τῷ ὅσιν μίαν ἔσαν δηλῶν,,. Ἐπεὶ καὶ ὁ Τίς παρὰ τῷ Πατρὸς τὰ αὐτὰ λέγεται

(16) Λόγος δ' Ἀριθμεῖται Δ'. ὃν ὁ πρῶτος ἐπιγραφὴν ἔχει: „Πρὸς τὸς Ἐπισκόπους Αἰγύπτου καὶ Λιβύης Ἐπιστολὴ Ἐγκύκλιος κατὰ Ἀρειανῶν,,.

Τόμ: Β'.

Υ υ

λέγεται λαμβάνειν, οἷς περ αὐτὸς ὑφέσκηκεν. Οὐδὲ γὰρ ἄλλο τι ἐστὶν ὁ Υἱὸς, ὑπεξαίρεσμένων, τῶν ἃ δίδοται αὐτῷ παρὰ τῷ Πατρός· ἢ ἄλλη τις ἢ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος ἔσθια παρὰ τὰ διδόμενα αὐτῷ παρὰ τῷ Υἱῷ. Διὰ δὲ τῆτο ταῦτα λέγεσθαι, ἵνα τῷ αὐτῷ ἐν τῇ Τριάδι φύσιν πισθώσωμεν τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος, τῷ καὶ τῷ Πατρός ἔσαν, καὶ τῷ Υἱῷ.

Καὶ ἈΜΒΡΟΣΙΟΣ δὲ ἐν Β'. Βιβλ: τῶν περὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος, Κεφαλ: ΙΒ'. „Ὡς, ἔγε βέλει μαθεῖν, ἐπειδὴ οἶδε „τὰ πάντα, καὶ τῷ πρόγνωσιν ἀπάντων ἔχει τῶν ἐσομένων ὁ „τῷ Θεῷ Υἱὸς, ἅπερ ἠγνοῖσθαι τῷ Υἱῷ ὑπέληφας, ταῦτα δὴ „ἐστὶν ἃ τὸ Πνεῦμα λαβὼν ἔχει παρὰ τῷ Υἱῷ· ἔληφε δὲ διὰ τὸ „ἐνιαῖον τῆς ἔσθιας, ὥσπερ καὶ ὁ Υἱὸς ἔληφεν αὐτὰ παρὰ τῷ „Πατρός. Αὐτὸς, φησὶν, ἐμὲ δοξάσει, ὅτι ἐκ τῷ ἐμῷ λήψεται, „καὶ ἀναγγελεῖ ὑμῖν ἅπαντα: ὅσα ἔχει ὁ Πατήρ, ἐμὰ ἐστὶ „διὰ τῆτο εἶπον: ἐκ τῷ ἐμῷ λήψεται καὶ ἀναγγελεῖ ὑμῖν. „Τί τοίνυν ταύτης προδηλότερον τῆς ἐνότητος; Ἄ ἔχει ὁ „Πατήρ, τῷ Υἱῷ ἐστὶν ἃ ὁ ἔχει ὁ Υἱὸς, ἔληφε καὶ τὸ Πνεῦμα.”

Καὶ ΚΥΡΙΛΛΟΣ δὲ ἐν Διαλόγῳ 5'. τῶν περὶ Τριάδος μετὰ τῷ ἀρχῇ, Τόμ: Ε'. Μέρει Α'. Σελ: 593. „Προσιθίς δὲ, „ὅτι ἐκ τῷ ἐμῷ λήψεται, τῷ ἐσιώδῃ καὶ φυσικῷ οἰκειότητά „δέδεχεν ἐναργῶς, καθ' ὃν ἐστὶ πρὸς αὐτὸν τὸ Πνεῦμα αὐτῷ. „Οὐ γάρ τοι μεταληπτῶς σοφὸν ἔσεσθαι παρ' αὐτῷ τὸ Πνεῦμα „φησὶν· ἔτε μὲν ἐν τάξει τῇ ὑπεργνωτῇ τῆς παρ' Υἱῷ λόγους τοῖς „Ἁγίοις διακομίσαι· ἀλλ' ὥσπερ ἂν, εἴ τι τῶν ἐνοσμοτάτων ἀν- „θρώπων περὶ τῆς ἐξ ἑαυτῷ διασκιδναμένης ὁσμῆς, καὶ ταῖς τῶν „περιεσώτων αἰσθήσεσιν ἐμπίπτειν, λέγοι, ὅτι ἐκ τῷ ἐμῷ λή- „ψεται, τῷ φυσικῷ οἰκειότητά κατασημῶσιν ἂν καὶ ἔτι περ „τὸ ὡς ἐν μεθέξει διηρημένως: ὥδε πῃ νοήσεις καὶ ἐφ' Υἱῷ „καὶ Πνεύματος· Πνεῦμα γὰρ σοφίας καὶ δυνάμεως ὄν, σοφία „πάντως καὶ δυνάμις ἐστὶν, ὅλως ἐξ ὅλης τῷ τῷ προϊόντος ἐνέρ- „γειαν ἀποσῶζον ἐν ἑαυτῷ, καὶ ὡς ἐν ἰδίᾳ φύσει καταδεικνύον „ἔν μάλα τῷ ἅπερ ἐστὶν. Ἐπεὶ δὲ τὸ ἐκ τῷ ἐμῷ λήψεται, „φησί: προσέθεικεν ἀναγκαίως, ὅτι πάντα ὅσα ἔχει ὁ Πατήρ „ἐμὰ ἐστὶ, διὰ τῆτο εἶπον ὑμῖν ὅτι ἐκ τῷ ἐμῷ λαμβάνει. Ὡς περ „γὰρ Ἅγιον ἐστὶ κατὰ φύσιν, ἐπέπερ ἐστὶν Ἁγίῳ Πνεύματι Πατρός· „ἔτω καὶ Σοφὸν, ἐπειδὴ Σοφίας Πνεῦμα ἐστὶ. Σοφία δὲ ὁ Υἱὸς „καὶ ἔτι περ φαμέν, ὡς κατὰ χάριν τινὰ καὶ μέθεξιν, Ἅγιον καὶ „Σοφὸν τὸ Πνεῦμα ἐστὶν· ἐσιωδῶς δὲ μᾶλλον, καὶ οἶονί τις ποιό- „της φυσικῇ τῆς Ἁγίας τε καὶ Σοφῆς Θεότητος, τῆς, ὡς ἐν „Πατρὶ καὶ Υἱῷ, νοσμένης καὶ αὐτῷ τῷ Πνεύματι.” Καὶ ἐν Βιβλ: δὲ ΙΑ'. τῶν εἰς τὸν Ἰωάννῃν Κεφαλ: Β'. εἰς τὸ εἰρημένον ἐκ τῷ ἐμῷ λήψεται: ἐν Τόμ: Δ'. Σελ: 931. „Πάντα τὰ ἐμὰ „σα



„σὰ ἐστὶ, καὶ τὰ σὰ ἐμά. Οἷς γὰρ ἔνεσι τὸ διαλλάττον ἔδεν,  
 „καὶ ἢ κατὰ πᾶν ὁτιῶν ἐσιώδης ἰσότης τε καὶ ἐμφέρεια, πῶς  
 „ἐκ ἂν εἴη τὰντὰ τῇ φύσει; Ἐχει τοίνυν ὁ Θεὸς καὶ Πατὴρ  
 „ἐξ ἑαυτῶ τε καὶ ἐν ἑαυτῷ τὸ ἴδιον Πνεῦμα· τατέσι, τὸ Ἅγιον,  
 „δι' ἃ τοῖς Ἁγίοις ἐναυλίζεταί τε καὶ ἀποκαλύπτει Μυστήρια· ἐκ  
 „ἐν τάξει τῇ ὑπεργικῇ παραλαμβανομένης πρὸς τῆτο· μὴ γὰρ  
 „οἰηθῇς τι τοιῶτον· ἀλλ' ἐν αὐτῷ τε ὄντος ἐσιωδῶς, καὶ ἐξ αὐτῶ  
 „προϊόντος ἀμερίσως τε καὶ ἀδιασάτως, καὶ ὡς ἰδιά τε διερμη-  
 „νύοντος, τὰ ἐν ᾧ, καὶ ἐξ ἑπερ ἐστίν. Ὁμιλεῖ γὰρ ἐχ' ἐτέρως  
 „τῇ κτίσει Θεὸς, εἰ μὴ δι' Υἱῶ ἐν Πνῶματι. Ἀλλ' ἴδιον Πνεῦμα  
 „τῆτο ἐστὶ καὶ τῶ Μονογενῆς, ὁμοῶςιος γὰρ ἐστὶ τῷ Πατρὶ.  
 „Ἐπειδὴ τοίνυν, φησὶν, ἐνυπάρχον φαίνεται τῷ Θεῷ καὶ Πατρὶ,  
 „τῷ ἐν Πνῶματι τῷ ἰδίῳ τοῖς ἀξίοις ἀποκαλύπτεσθαι, ἐνεργεῖν-  
 „τε καὶ δι' αὐτῶ τὰ ὅσαπερ ἂν βέληται· καὶ μοι δὲ τῆτο πρό-  
 „σεσι φυσικῶς, διὰ ταύτῃ ἐρηται τὴν αἰτίαν, ὅτι ἐκ τῶ ἐμῶ  
 „λαμβάνει καὶ ἀναγγελεῖ ὑμῖν. Ταρὰτῆσθω δὲ μηδεὶς ὅταν ἐν  
 „τῆτοις ἀκῆη τὸ τῆς λήψεως ὄνομα· διενθυμέσθω δὲ μᾶλλον  
 „ἐκῆνο, δράσειε γὰρ ἂν ὀρθῶς. Ὅτι πάντα τὰ περὶ Θεῶ λα-  
 „λεῖται μὲν καθ' ἡμᾶς, νοεῖται γεμῶ ἐχ' ἔτῳς, ἀλλ' ὑπὲρ ἡμᾶς.  
 „Λαμβάνειν τε ἔτῳ τὸ Πνεῦμα φαμὲν ἐκ τε τῶ Πατρὸς καὶ τῶ  
 „Υἱῶ, τὰ αὐτῶν, ἐχ' ὡς ποτὲ μὲν ἐκ ἔχον τὴν ἐνῆσαν αὐτοῖς  
 „γινῶσιν τε καὶ δῶαμιν, ἔχον δὲ τότε μόλις ὅταν νοῆται λαμ-  
 „βάνειν· αἶ γὰρ σοφὸν καὶ δωατὸν τὸ Πνεῦμα ἐστὶ· μᾶλλον δὲ  
 „αὐτόχρημα σοφία καὶ δῶαμιν, ἐκ ἐκ μετοχῆς τῆς τινὸς, ἀλλὰ  
 „φυσικῶς. Ὡσπερ δ' ἂν φῶμεν τὴν ἐκ τῶν ἀρωμάτων ταῖς  
 „ἡμετέραις ὁσφρήτεσι προσβάλλουσιν ἐνωδῖαν, ἐτέραν μὲν ὥσπερ,  
 „ὡς πρὸς αὐτὰ ταῖς ἐπινοαῖς δοῖη τις ἂν· προεκκύπτειν γεμῶ  
 „ἐχ' ἐτέρως οἶοιτο τυχόν, ἢ τῶν ἐξ ᾧ περ ἐστὶ δεχομένη τὴν  
 „δῶαμιν εἰς ἐπίδειξιν ἑαυτῆς· ἐκ ἔσαν δὲ γεμῶ ἐτέραν, διὰ τὸ  
 „ἐξ αὐτῶν τε καὶ ἐν αὐτοῖς πεφυκέναι· τοιῶτον τι, μᾶλλον δὲ  
 „καὶ ὑπὲρ τῆτο νοήσεως ἐπὶ τῶ Θεῶ καὶ τῶ Ἁγίῳ Πνῶματος· οἶνε  
 „γὰρ ὁσμήτις ἐστὶ τῆς ἐσίας αὐτῶ, ζῶσα τε καὶ ἐνεργῆς, διακο-  
 „μίζουσα τῇ κτίσει τὰ παρὰ τῶ Θεῶ, καὶ τῆς ἀνωτάτω πασῶν  
 „ἐσίας ἐντιθεῖσα δι' ἑαυτῆς τὴν μέθεξιν. Εἰ γὰρ ἢ τῶν ἀρω-  
 „μάτων ἐνοσμία τὴν ἰδίαν ἰχὺν ἐναπομάττεται τοῖς ἐσθήμασι,  
 „καὶ μετασκόβει τρόπον τινὰ πρὸς ἑαυτὴν τὰ ἐν οἷς ἂν γέ-  
 „νοιτο, πῶς ἐκ ἂν ἰχύσαι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ἐπάπερ ἐστίν  
 „ἐκ Θεῶ φυσικῶς, κοινωνῆς τῆς Θείας ἀποτελέσαι φύσεως δι'  
 „ἑαυτῶ τῆς ἐν οἷς ἂν γένοιτο; Καρπὸς ἐν ἄρα καὶ χαρακτήρ  
 „τῆς ὑποστάσεως τῶ γεννήσαντος ὑπάρχων ὁ Υἱὸς, πάντα τὰ  
 „αὐτῶ κατὰ φύσιν ἐπάγεται· διὰ τῆτο, φησὶ, πάντα ὅσα ἔχει  
 „ὁ Πατὴρ ἐμὰ ἐστὶ διὰ τῆτο ἔπον ὑμῖν, ὅτι ἐκ τῶ ἐμῶ λαμ-

Τ υ 2

,βάνει



„βάνει καὶ ἀναγγελεῖ ὑμῖν· τὸ Πνεῦμα, δηλονότι, τὸ δι' αὐτῆς τε καὶ ἐν αὐτῷ· δι' ἧς τοῖς Ἀγίοις ὡς αὐτὸς ἐνοικεῖ. Οὐ γὰρ ἔτερον παρ' αὐτὸν τὸ Πνεῦμα αὐτῆς, καὶν ὑπάρχεν νοῆται καὶ ἑαυτὸ ἰδίως. Πνεῦμα γὰρ τὸ Πνεῦμα, καὶ ἔχ' Υἱός,„. Ταῦτα μὲν ἐκεῖνος· ὥς ἀνάγκη μὴ πᾶν ἐπ' ἀκριβὲς τὸ χωρίον διεσαθμηκέναι, τὸν (τῶν δὲ προτεθέντων τῷ Κυρίῳ ρημάτων) „ταρατλέθω δὲ μηδεὶς, ὅταν ἐν τέτοις ἀκῆη τὸ τῆς λήψεως „ὄνομα· διενθυμείθω δὲ μᾶλλον ἐκεῖνο: δράσαιε γὰρ ἂν ὀρθῶς „ὅτι πάντα τὰ περὶ Θεοῦ λαλεῖται μὲν καθ' ἡμᾶς, νοεῖται γεμῶ „ἔχ' ἔτως, ἀλλ' ὑπὲρ ἡμᾶς λαμβάνειν τε ἔτω τὸ Πνεῦμα φαρμέν „ἐκ τε τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ τὰ αὐτῶν,„.

ὑποσώπτοντα (17): „Ἐκ τῷ ἐχάτε τῷδε, ἔτως ἐπιχαρῶ: Ὅσα λαμβάνει τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῷ Πατρὶ, ταῦτα λαμβάνει τῷ λόγῳ τῷ τῆς Ἀρχῆς. Ἄ δὲ λαμβάνει τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῷ Υἱῷ, ταῦτα λαμβάνει ἐκ τῷ Πατρὶ. Ἄρα ὅσα λαμβάνει τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῷ Υἱῷ, ταῦτα λαμβάνει τῷ λόγῳ τῆς Ἀρχῆς ἢ σαφέστερον: τὸ λαμβάνειν τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῷ Πατρὶ καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ ἅπερ αὐτῶν ἐστίν, ἐκπορεύεται ἐστίν ἐκ τῷ Πατρὶ καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ. Τὸ δ' Ἅγιον Πνεῦμα λαμβάνει ἐκ τῷ Πατρὶ καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ. Τὸ ἄρα Ἅγιον Πνεῦμα ἐκπορεύεται ἐκ τῷ Πατρὶ καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ,„. — Ἀληθεὲς μὲν γὰρ ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα τῷ λόγῳ τῆς Ἀρχῆς λαμβάνει, ἅπερ ἀπ' αἰῶνος λαμβάνον ἐστὶ παρὰ τῷ Πατρὶ, ψυδὲς μέντοιγε ὅτι Κύριλλος ἐνταῦθα νοεῖ, τῷ τῆς Ἀρχῆς λόγῳ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα παρὰ τῷ Πατρὶ λαμβάνειν, ἢ παρὰ τῷ Υἱῷ ἐπὶ τῶν προτεθέντων, ἐν οἷς διδάσκει τὸ Πνεῦμα λαμβάνειν ἐκ Πατρὶ καὶ Υἱῷ, περὶ ὧν γὰρ ἐν χρόνῳ παρὰ Πατρὶ καὶ Υἱῷ λαμβάνον ἐστὶ, πραγματεύεται μόνων· περὶ ὧν ἡμῖν ἀμέλει τὸ Πνεῦμα ἔμελλεν ἀναγγελεῖν. Αὐτὸς γὰρ Κύριλλος ἐπὶ τῶν προκειμένων ἀναπτύσσει ρημάτων, ὅπως ὑπ' αὐτῆς λέγεται τὸ Πνεῦμα ἐκ τῷ Πατρὶ λαμβάνειν καὶ τῷ Υἱῷ, ἅπερ αὐτῶν εἰσὶ· τὸ δὲ, ἔχ' τῷ τῆς Ἀρχῆς λόγῳ, ἢ τῆς Ἐκπορεύσεως ἐπαληθεύειν φησί· μᾶλλον δὲ καὶ τότε νοεῖσθαι χρῆσθαι ἀπλῶς ἀπόφησι: „Λαμβάνειν γὰρ „ἔτω, φησὶ, τὸ Πνεῦμα φαρμέν ἐκ τε τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ, „τὰ αὐτῶν, ἔχ' ὡς ποτὲ μὲν ἐκ ἔχον τῷ ἐνῆσαν αὐτοῖς γινώσκουσιν τε καὶ διώσκουσιν. . . . Ἀλλ' ὥσπερ ἂν φῶμεν τῷ ἐκ τῶν „ἀρωμάτων ταῖς ἡμετέραις ὁσφρήσεσι προβάλλασαν ἐνωδία, ἐτέραν μὲν ὥσπερ, ὡς πρὸς αὐτὰ, ταῖς ἐπινοίαις δοίη τις ἂν, „προεκπίπτειν γεμῶ ἔχ' ἑτέρως οἶοιτο τυχόν, ἢ τῶν ἐξ ὧν περ „ἐστὶ

(17) Ὁ Κιχώβιος ἐστὶν ἔτος, ἐν Ζηλ: Α'. Σελ: 9.

„ἐστὶ δεχομένῳ τὴν δυνάμιν εἰς ἐνδεξιν ἑαυτῆς: ἃς ἔσαν γεμῶ  
 „ἐτέραν, διὰ τὸ ἐξ αὐτῶν τε καὶ ἐν αὐτοῖς πεφυκέναι,,. Τοιού-  
 τον τι, μᾶλλον δὲ καὶ ὑπὲρ τῆτο νοήσεις ἐπὶ τῷ Θεῷ, καὶ τῷ  
 Ἁγίῳ Πνεύματι. Διὰ μόνῳ ἄρα τὴν μίαν τε καὶ τὴν αὐτὴν  
 φύσιν νοεῖ Κύριλλος, ὅτι ἐκ τῷ Πατρὸς καὶ τῷ Υἱῷ λαμβάνει τὸ  
 Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ὥστε δὴ καὶ φθάσας προέταξεν: „Ἐπειδὴ  
 „τοίνυν ἐνυπάρχον φαίνεται τῷ Θεῷ καὶ Πατρὶ τὸ ἐν Πνεύματι  
 „τῷ ἰδίῳ τοῖς ἀξίοις ἀποκαλύπτεσθαι, ἐνεργεῖν τε καὶ δι' αὐτῶ  
 „τὰ ὅσα περ ἂν βέληται, καὶ μὲν δὲ τῆτο πρόσθετι φυσικῶς, διὰ  
 „ταύτῃ εἶρηκα τὴν αἰτίαν, ὅτι ἐκ τῷ ἐμῷ λαμβάνει καὶ ἀναγ-  
 „γελεῖ ὑμῖν,,. Καὶ ταῦτα μὲν πρὸς ἐκείνῳ τὴν ἐκδοχὴν, ἐφ' ᾧ  
 ὁ Ἰησοῦς κατέφυγεν.

Ὁ δ' αὐτὸς ἐστὶ ΚΥΡΙΛΛΟΣ ἐν τοῖς Θησαυροῖς, Λόγῳ ΛΔ'. ἐν  
 Τόμῳ Ε'. Μέρει Α'. Σελίδι 350. „Οὐ λαλήσει ἀφ' ἑαυτοῦ, ἀλλ'  
 „ὅσα ἂν ἀκήσῃ λαλήσει, ὅτι ἐκ τῷ ἐμῷ λήψεται. Ὁμοιον γὰρ,  
 „ὥς εἰ καὶ τὸ μέλι περὶ τῆς ἐνέσεως αὐτῷ φυσικῆς ποιότητος  
 „λέγοι: ἃς ἐνθήσει τί ἀφ' ἑαυτῆς τοῖς ἀπογυόμενοις, ἀλλ' ἐκ τῷ  
 „ἐμῷ λήψεται. Φυσικῶς διαβαίνουσης τῆς ἐκ τῶν ἑσίων, ἢ ἔτι  
 „ἔτι, ποιότητος ἐπὶ τὰ ἐξ αὐτῶν ἀμερίσως προερχόμενα: οἷον,  
 „καθάπερ ἤδη προείπομεν, ἐκ μέλιτος ἢ γλυκύτης, ἐκ πυρὸς  
 „ἢ θερμότητος, ἐξ ὕδατος ἢ ψύξης,,.

Οὕτω τελευτᾷ καὶ ΕΥΣΕΒΙΟΣ ὁ Ἐμισιωδὸς ἐν Κυρια-  
 κῇ Δ'. τῇ μετὰ τὸ Πάχα, ἐν Τόμῳ Ε'. Μέρει Α'. τῆς τῶν Πα-  
 τέρων Βιβλιοθ': τῆς ἐν Κολων: Σελ: 682. Ὅς τις τρανῶς τὸν  
 Υἱὸν ἂν ἔχεν ὁμολογεῖ λέγειν: ὅτι τὸ Πνεῦμα λαμβάνει ἐκ τῷ  
 αὐτοῦ: „Ταῦτα δὲ, φησὶν, ἐπειδὴ τῶν τριῶν ἀπάντων κοινὰ  
 „ἐστὶ, καὶ ἑσίωνδως κοινὰ, ἡδυνάτο εἰπεῖν ὁ Κύριος, ἔπερ ἠθέλην:  
 „ὅτι ἐκ τῷ ἐμῷ λήψεται, καὶ ἐκ τῷ ἐν ἑαυτῷ λήψεται, καὶ  
 „ἀναγγελεῖ ὑμῖν. Καὶ γὰρ καὶ ὁ Υἱὸς ὅτε ἐδίδασκε, καὶ ἐκ τῷ  
 „ἰδίῳ, καὶ ἐκ τῶν τῷ Πατρὸς καὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι ἐλάμβανε.  
 „Μία γὰρ ἡ τῶν τριῶν Σοφία, καὶ ἡ ἀλήθεια. Διὸ καὶ ἔφασ-  
 „κεν: ἡ ἐμὴ διδασκαλία ἃς ἔστιν ἐμὴ,,. Ἀμέλειτοι: ἐπειδὴ μία  
 ἡ ἐσία, καὶ μία ἡ σοφία ἐστὶ τῆς Θεότητος: πάντα δὴ τὰ πρὸς  
 τὰ ἐκτὸς ἔργα τῇ Τριάδι κοινὰ. Κατὰ δὲ τὸν τοιοῦτον νῦν ἐπο-  
 μένως, ἐπειδὴ καὶ ἡμῖν τὸ Πνεῦμα ὁτιῦν ἀναγγελεῖ, καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ  
 τόδε λαμβάνειν λέγεται, ὡς τῆτο ποιεῖν μὴ ἔχον, ἀνευ τῆς τῷ  
 Υἱῷ σωανέσεώς τε καὶ σωεργήσεως. Κἀντεῦθεν ἔν κατὰ γε  
 τὴν αὐτὴν διάνοιαν, καὶ ἐκ τῷ Πνεύματι λαβεῖν τὸν Υἱόν, ὅπερ  
 ἀνήγγειλε, διαρρήδην ἐδίδασκεν ὁ Ἐμισιωδὸς Ἐπίσκοπος Εὐσέβιος.  
 Καὶ καταφανὲς ἄρ' ἄλλως ἐς τόδε, τοσούτων τετλὶ Πατέρων ἐκδεδι-  
 δαχότων, ὅτι διὰ τὴν μίαν τε καὶ τὴν αὐτὴν ὁμοῦσιν φύσιν,

Τόμ: Β'.

Φ Φ

καὶ

καὶ σοφίαν, καὶ δυνάμιν, ἐκ τῆς Υἱᾶς λέγεται λαμβάνειν τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον.

Εἰς τῆτο δ' αὐτὸ τένυσσι καὶ τὰ τῶν Πατέρων ἐκείναν, ἐν οἷς διὰ δὴ τῆτο, φασὶν, ἐκ τῆς Υἱᾶς τὸ Πνεῦμα λαμβάνειν, ὅτι ἐκείνα τῆτ' ἔμελλεν ἀναγγελεῖν, ἅπερ ἐδόλως ἂν εἶεν τῶν ἀναγγελεθέντων ὑπὸ Χριστοῦ διαφέροντα, ἀλλ' ἐκείνοις πάντῃ πάντως ταῦτά. Μιᾶς γὰρ ἀμφοτέρων ἔσης τῆς φύσεως, καὶ δὴ καὶ μιᾶς τῆς σοφίας, ἐκ ἧς ἔχεν ἀναγγελεῖν τὸ Πνεῦμα τῆς τῆς Υἱᾶς τῆς Θεᾶς σοφίας τε καὶ ἀληθείας τάναντία ἀναγγελεῖν. Ὅλως δὲ τῆς Υἱᾶς τῆς Θεᾶς σωεργέντος τε καὶ σωδοκέντος, τὰ αὐτὰ ἐπανήγγειλεν. Οὕτω γὰρ ὁ Χρυσορρήμων ἸΩΑΝΝΗΣ ἐν Ὁμιλ: ΟΖ'. (18) τῶν εἰς τὸν Ἰωάν: πρό γε τῆς μέσης: „Ἐπειδὴ γὰρ „εἶπεν, ὅτι ἐκεῖνος ὑμᾶς διδάξει καὶ ἀναμνήσει, καὶ ἐν ταῖς θλί- „ψουσιν ὑμᾶς παραμυθήσεται, ὅπερ αὐτὸς ἐκ ἐποίησε καὶ ὅτι „συμφέρει ἐμὲ ἀπελθεῖν, καὶ ἐκεῖνον ἐλθεῖν καὶ νῦν μὲν ἐδυνάσθε „βασάξαι, τότε δὲ δυνήσεσθε καὶ ὅτι ὁδηγήσει εἰς πᾶσαν τὴν „ἀλήθειαν ἵνα μὴ ταῦτα ἀκούοντες μείζον τὸ Πνεῦμα νομίσωσι, „καὶ εἰς ἀσεβείας ὑπόθεσιν ἐχάτω ἐμπέσωσι διὰ τῆτο, φησὶν, „ἐκ τῆς ἐμῆς λήψεται τῆτέστιν: ἅπερ ἂν εἶπον ἐγὼ, ταῦτα καὶ „κεῖνος ἐρεῖ. Ὅταν δὲ εἴπῃ ἐδὲν ἀφ' ἑαυτοῦ λαλήσει ἐδὲν ἐναν- „τίον, ἐδὲν ἰδίον παρὰ τὰ ἐμὰ φησί... τὸ δὲ ἐκ τῆς ἐμῆς, ἐξ „ἧς ἐγὼ οἶδα, ἐκ τῆς ἐμῆς γνώσεως μία γὰρ ἐμῆ καὶ τῆς Πνδ- „ματος γνώσις... Ἐκ τῆς ἐμῆς λήψεται, τῆτέστι σωφδὰ τοῖς „ἐμοῖς ἐρεῖ... Καὶ ἐκ ὀλίγον δὲ πρὸ τῆς τέλους: „Τὸ δὲ ἐκ τῆς „ἐμῆς λήψεται, ἥτοι ἐκ τῆς χάριτος τῆς εἰς τὴν σάρκα τὴν „ἐμὴν ἐλθόντος ἢ ὅτι ἀπὸ τῆς γνώσεως ἧς καὶ ἐγὼ ἔχω ἐχ „ὥς δεόμενος, ἐδὲ ὥς παρ' ἑτέρου μαθὼν, ἀλλ' ὥς μιᾶς ἔσης καὶ „τῆς αὐτῆς. Καὶ διατὶ ἔτως εἶπε, καὶ μὴ ἑτέρως; ὅτι ἐδέπω „τὸν περὶ τῆς Πνδματος ἡδεσαν λόγον. Διόπερ ἐν κατασκευάζει „μόνον ὥς περὶ πισθῶμαι αὐτὸν, καὶ δεχθῶμαι παρ' αὐτῶν, καὶ μὴ „σκανδαλιθῶμαι. Ἐπειδὴ γὰρ ἔλεγεν, ὅτι εἰς ἐσὶν ἡμῶν ὁ δι- „δάσκαλος ὁ Χριστός, ἵνα μὴ νομίσωσι παρακῆαν ἐκείνῳ πειθό- „μενοι, μία (φησὶν) ἡ ἐμὴ καὶ ἡ ἐκείνης διδασκαλία ἐσὶν ἐξ „ἧς ἔμελλον ἐγὼ διδάσκειν, ἐκ τῶν αὐτῶν ἐρεῖ μὴ δὴ νομίσω- „τε ἕτερα εἶναι τὰ ἐκείνης καὶ γὰρ καὶ ἐκείνα ἐμὰ ἐσὶ, καὶ „τὴν ἐμὴν συγκροτεῖ δόξαν... Ὡς δὴ πρὸς ῥημάτων ἐδὲν ἂν εἴη ἀριδηλότερον.

Καὶ ὁ Ἀλεξανδρείας δὲ ΚΥΡΙΛΛΟΣ Βιβλ: ΙΑ'. τῶν εἰς τὸν Ἰωάννην, Κεφ: Α'. ἐν Τόμ: Δ'. τῶν Συγγραμμάτων: Σελ: 929. „Υπο-

(18) Κατὰ δὲ τὴν Μοντφελκόνιον Ἑκδοσιν ΟΗ'. ἀλλ: ΟΖ'.

„Υποτοπητέον δὲ ὁδαμῶς ἰχύος ἐπιδεᾷ τῆς ἐμφύτης καὶ φυσικῆς  
 „καθεστῆναι τὸν Παράκλητον, τῆς τὸ Πνεῦμα, ὡς εἰμὴ λάβοι  
 „τυχὸν μηδ' ἂν ἐξαρκέσαν αὐτὸν ἐαυτῷ διώσθαι. (19) πρὸς τὴν  
 „τῶν Θεῶν κατορθωμάτων ἐνέργειαν ἀποτελεσικῶς. Δυσσεβείας  
 „γὰρ ἂν τῆς ἀπάσων ἐχάτης ὑπομέναι γραφῶν, καὶ σφόδρα  
 „εἰκότως, ὁ καὶ μόνον οἰηθεὶς ἀληθές τι τῶν τοιούτων εἶναι περὶ  
 „αὐτῶ. Ἐπειδὴ δὲ ὁμοούσιόν τε ἐστὶ τῷ Υἱῷ, καὶ πρόεισι θεοπρε-  
 „πῶς δι' αὐτῶ, πᾶσαν αὐτῶ τὴν ἐφ' ἅπασιν τελεωτάτῃ ἔχον  
 „ἐνέργειάν τε καὶ διώαμιν, διὰ τῆς, φησὶν, ὅτι ἐκ τῶ ἐμῶ λή-  
 „ψεται. Ὑφεσῆναι γὰρ αὐτὸ κατ' ἐαυτὸ τὸ Πνεῦμα πισύομεν,  
 „εἶναι τε κατὰ ἀλήθειαν τῶν ὅπερ ἐστὶ καὶ λέγεται. Ἐνυπάρ-  
 „χον γεμῶ τῇ ἐσῖα τῶ Θεῷ, προκύπτει τε καὶ πρόεισιν ἐξ  
 „αὐτῆς, πάντα τὰ αὐτῆς ἔχον ἐν ἐαυτῷ φυσικῶς· ὁ γὰρ  
 „κατὰ μέθεξιν, ἀλλ' ὁδὲ κατὰ τρόπον χετικόν· ἀλλ' ὁχ ὡς  
 „ἕτερον ὃν παρ' αὐτῷ, ἐπέπερ ἐστὶν ἴδιον αὐτῆς. Ὅνπερ γὰρ  
 „τρόπον ἢ ἐκ τῶν ἐνοσμοτάτων ἀνθέων ἐνωδία λαβῆσα τρόπον  
 „τινὰ τῶν προσόντων αὐτοῖς τὴν ἐσιώδη καὶ φυσικῶς ἐνέργειαν,  
 „ἢτοι ποιότητα, διακομίζει τοῖς ἔξω τὴν γνῶσιν, τοῖς ὁσφραντι-  
 „κοῖς τῶ σώματος μορίοις ἐμπίπτεισα. Καὶ δοκεῖ μὲν πως, ὅσον  
 „ἦκεν εἰς ἐπινοίας λόγον, ἑτέρα τις εἶναι παρὰ τὴν πέμπεισαν  
 „αὐτῷ φύσιν, νοσμένην γεμῶ ἐκέτι κατ' ἐαυτῷ, ὁχ ἑτέραν  
 „ἔχει φύσιν, ἢ τὴν ἐξ ὧν, καὶ ἐν οἷς ἐστὶν· ὅτω νοήσεις ἐπί τε  
 „Θεῷ καὶ τῶ Ἀγίῳ Πνῦματος, τὸν τῶ παραδείγματος ἀναβαίνων  
 „λόγον. Ἀκατηγόρητον ἔν ἄρα παντελῶς, καὶ λοιδορίας ἀπάσης  
 „ἔξω κέσεται, τὸ λαβεῖν λέγεσθαι τι παρὰ τῶ Μονογενῆς τὸ  
 „Πνεῦμα αὐτῶ. Προῖον γὰρ δι' αὐτῶ φυσικῶς, ὡς ἴδιον αὐτῶ,  
 „μετὰ πάντων ὧν ἔχει τελείως, λαμβάνειν λέγεται τὰ αὐτῶ.  
 „Εἰ δὲ παχυτέρας τὸ τοιοῦτον ἐσημάνθη φωναῖς, ἀφέντες τὸ  
 „σκανδαλίζεσθαι, δικαίως ἂν μᾶλλον τῆς ἐαυτῶν γλώττης αἰτία-  
 „σαίμεθα τὴν πτωχείαν, ὁχ ἀντεχέσης εἰπεῖν τὰ θεοπρεπῆ  
 „κατ' ὃν ἔδει τρόπον· ποῖος γὰρ λόγος ὁχ ἐλάττων ἐστὶ τῆς ἀρ-  
 „ρήτης φύσεώς τε καὶ δόξης; Ἀναγγελεῖ τοιγαρῶν, φησὶν, ὑμῖν,  
 „ἐκ τῶ

(19) Θεὸς ἐπὶ βραχὺ, τὸ „λαμβάνειν, ῥημα σημαίνει ἐν τέτοις τὸ „ἐκπορεύεσθαι. Τῆς τὸ „εἰς τὸ εἶναι προβάλλεσθαι, καὶ τὸν Κύριλλον ὅπως ἔχεις ἐν οἷς εἶπε διανοόμενον: „Υποτοπητέον δὲ ὁδαμῶς ἰχύος ἐπιδεᾷ τῆς ἐμφύτης καὶ φυσικῆς „καθεστῆναι τὸν Παράκλητον, ὡς, „εἰμὴ ἐκπορεύοιτο, τυχόν, „μηδ' ἂν ἐξαρκέ- „σειεν αὐτὸν ἐαυτῷ διώσθαι πρὸς τὸ εἶναι. Ὅρας τότε παροπηδῶν ἄτοπον ὅσον; Οὐκ ἄρα τὸ „λήψεται, ἀντὶ τῶ „κατ' ὑπαρξιν προελύσεται, ἐκδέχεσθαι χεῖ. Οὐ γὰρ ἂν, δηλονότι, περὶ τῶ Παρακλήτης φησιν ποτε Κύριλλος, ὡς, „ἔχει „ἂν ἐκείνος ἀφ' ἐαυτῶ καὶ εἰμὴ λάβοι, ἐννοήσας τίς „λήψιν, ἀντὶ τῆς ὑπαρκ- „τικῆς προόδου, ἢτοι ἀντὶ „τῆς Ἐκπορεύσεως, ὅως ὁ τὸν Πατέρα μόνον ἀγει- νήτως τε καὶ ἀνεκπορεύτως, ταυτὸν εἰπεῖν ἀνάρχως τε καὶ ἀναιτίως ἀφ' ἐαυτῶ ὅντα ἐυσεβῶν ἐδογματίζεν.



„ἐκ τῆ ἐμῆ λαβὼν ὁ Παράκλητος τῆς ἐξ ἑτερόν τι λα-  
 „λήσει παρὰ τὸν ἐν ἐμοὶ σκοπὸν καὶ ἐπέπερ ἐς Πνεῦμα ἐμὸν,  
 „ταυτολογήσει δὴ πάντως, καὶ τὰ ἐκ τῶν ἐμῶν ἀναγγελεῖ θε-  
 „λημάτων,,.

Ἐπειδὴ ἄρα, κατὰ τὸν εἰρημένον λόγον, οἱ Πατέρες διδάσ-  
 κῃσι, διὰ τὸ ἐνιαῖον τῆς ἑσίας καὶ τῆς σοφίας καὶ τῆς γνώσεως  
 λαμβάνειν τὸ Πνεῦμα ἐκ τῆ Υἱῆς διὰ τῆτο καὶ πανταχῶ ἐκ τῆ  
 παρὰ τῆ Υἱῆς λαμβάνειν τὸ Πνεῦμα, σωάγουσιν ὁμοῦσιον εἶναι  
 αὐτῶ. Ὅσον ἘΠΙΦΑΝΙΟΣ ἐν τῷ Ἀγκυρωτῷ, Ἀριθμ: Η'. ἐν  
 Τόμ: Β'. τῶν Συγγραμ: Σελ: 12. „Αὐτὸς γὰρ ὁ Μονογενὴς  
 „λέγει τὸ Πνεῦμα τῆ Πατρὸς, καὶ τὸ ἐκ τῆ Πατρὸς ἐκπορεύο-  
 „μενον, καὶ ἐκ τῆ ἐμῆ λήψεται ἵνα μὴ ἀλλότριον νομιθῇ  
 „Πατρὸς, μηδὲ Υἱῆς ἀλλὰ τῆς αὐτῆς ἑσίας, τῆς αὐτῆς Θεότητος,,  
 Καὶ Αἰρέσει ΟΑ'. Τόμω Α'. τῶν Συγγραμ: Σελίδι 833. „Φάσκει  
 „Κύριος περὶ τῆ Πνύματος τῆ Ἀγίης, ὁμολογῶν αὐτὸ γνήσιον  
 „τῆς αὐτῆς Θεότητος καὶ φησὶ τὸ ἐκ τῆ Πατρὸς ἐκπορεύομενον,  
 „καὶ ἐκ τῆ ἐμῆ λήψεται,,. Καὶ Αἰρέσει ΕΘ'. Σελ: 774. „Καὶ  
 „γὰρ καὶ περὶ τῆ Πνύματος βλασφημῶσι, καὶ τολμῶσι λέγειν  
 „κεκτίσθαι ὑπὸ τῆ Υἱῆς, ὅπερ ἐστὶν ἄκτιστον, ἐκ τῆ Πατρὸς ἐκπο-  
 „ρεύομενον, καὶ τῆ Υἱῆς λαμβάνον,,. Καὶ πάλιν: (Αὐτ: αὐτ:  
 Σελίδι 780.) „Πῶς δὲ κλίσθον εἴη τὸ Πνεῦμα, τὸ μαρτυρούμενον  
 „ὅτι ἐκ τῆ Πατρὸς ἐκπορεύεται, καὶ ἐκ τῆ ἐμῆ λαμβάνει,,;  
 Ὁ δὲ ΧΡΥΣΟΣΤΟΜΟΣ ἐν τῷ περὶ Τριάδος λόγῳ, πολὺ πρὸ  
 τῆ τέλους, ἐν τῷ 5'. Τόμω τῆς Γραικο-Λατινικῆς Ἐκδόσ: Σελ:  
 200. (20) „Πίσυθε ὅτι ὁμοῦσιος ἐστὶ τῷ Πατρὶ ὁ Υἱὸς, ὁμοῦσιον  
 „δὲ καὶ τὸ Πνεῦμα· εἰ γὰρ ἐκ τῆ Πατρὸς ἐκπορεύεται, καὶ ἐκ  
 „τῆ Υἱῆς λαμβάνει, ἔκ ἀλλότριον τῆς ἑσίας τῆ Θεῆ τὸ Πνεῦμα,,  
 Καὶ ἈΝΑΣΤΑΣΙΟΣ δὲ ὁ Συναίτης, ἐν Βιβλ: Α'. περὶ τῶν Δογ-  
 μάτων τῆς Πίσεως, Τόμ: 5'. τῆς τῶν Πατέρ: Βιβλιοθ: τῆς ἐν  
 Κολων: Σελ: 694. „Τὸ Πνεῦμα τὸ Ἁγιον, Πνεῦμα τῆς ἀλη-  
 „θείας λέγεται· τὸ δὲ, ἐκ μὲν τῆ Πατρὸς ἐκπορεύεται, λαμβά-  
 „νει δὲ πάντα τὰ τῆ Υἱῆς, τῆ πάντα ἔχοντος ἐκ τῆ Πατρὸς,  
 „ἵνα δείξῃ, καὶ φανεράν ποιήσῃ μίαν εἶναι τὴν ἑσίαν τῆ τε λαμ-  
 „βάνοντος, καὶ τῆ ἐξ ἧς λαμβάνει, καὶ τῆ ἐξ ἧς φυσικῶς ἐκπο-  
 „ρεύεται. (21) Οὐδὲ γὰρ προήλθεν ἑκτινος ἑτεροσίσ, ἔδ' ἔλα-  
 „βέ τι

(20) Κατὰ τὴν Μοντφαλκον: Ἐκδόσιν, ἐναριθμῆται τοῖς μὴ γνήσιοις ὁ Λόγος, ἐν τῷ  
 Α'. Τόμω· ἡ δὲ χρῆσις ἐν Σελ: 838.

(21) Μὴ ἔκ ἐνταῦθα τὸ „λαμβάνει,, ἐκ τῆ Υἱῆς, τῆ ἐξ αὐτῆς „ἐκπορεύεται,, τηλαυ-  
 γέστα διασέλλεται, ὥς μὴ ἐπ' ἀνάγκης εἶναι καθομολογεῖν μακρῶ διαφέρειν θα-  
 τέρας θάτερον; Πῶς γὰρ ἂν ἄλλως ἀνεκτὴ γένοιτο ἡ ταυτολογία ἐπὶ τῆ „ἐξ ἧς  
 λαμβάνει,, καὶ τῆ „ἐξ ἧς ἐκπορεύεται,,; καὶ ἐπὶ τῆς: „ἔτε προήλθεν, ἔτ' ἔλαβεν,,;  
 εἰ δὲ ἀμφοῖν ὡσαύτως τῶν ζημάτων ἢ εἰς τὸ εἶναι ὑποσημαίνεται ὑποστατικὴ τῆ  
 Ἀγίης Πνύματος πρόοδος;



„βέτι ἐκ τῆ μὴ ὁμοσίᾳ. Εἰ ἔν τῆς αὐτῆς εἰσὶν αὐτῷ ἑσίας,  
 „ὅ, τε ἐξ ἑ ἐκπορεύεται, καὶ ὁ ἐξ ἑ λαμβάνει, καὶ κῆνοι ἀναγ-  
 „καίως ἔσονται ἑσίας τῆς αὐτῆς,,. (Πάλιν δέ:) „Ὁ Σωτὴρ  
 „ἡμῶν Ἰησοῦς περὶ τῆ ὁμοσίᾳ αὐτῷ Παρακλήτῃ, φησὶν, ὅς ἐκ  
 „τῆ Πατρὸς μὲν ἐκπορεύεται, λαμβάνει δὲ ἐκ τῆ Υἱῆ, τῆ,  
 „πάντα ἅπερ ἐστὶ τῆ Πατρὸς ἰδιοποιούμεν τε καὶ ἔχοντος. Μία  
 „γὰρ ἡ ἑσία· τῆς δὲ μιᾶς ἑσίας πάντα κοινά· κοινὴ δὲ καὶ ἡ  
 „ἑσία. Φυσικὴ γὰρ ἡ χέσις,,. (Οὕτω καὶ ἄλλοι.)

Ἄλλ' ἀπαντᾷ ὑπολαβὼν πρὸς τὰ ἐκ τῆ Ἐπιφανίᾳ ἀπομνη-  
 μονοθέντα ἐκείνα, ΒΕΛΛΑΡΜΙΝΟΣ, Βιβλ: Β'. περὶ τῆ Χριστῆ,  
 Κεφαλ: ΚΕ'. „Ενθα τὸ „ἐκ τῆ Υἱῆ λαμβάνον,, ἔδεν διώταται  
 „σημαίνειν, (φησὶν) εἰμὴ τὸ „ἐκ τῆ Υἱῆ ἐκπορευόμενον,, κατὰ  
 „αἰωνίαν πρόβλυσιν. Ἀντιπαρατίθῃσι γὰρ Ἐπιφάνιος τὸ ἐκ τῆ  
 „Υἱῆ λαμβάνειν, τῷ κτίσματι διδάσκει γὰρ τὸ Πνεῦμα μὴ κτι-  
 „θὲν εἶναι ὑπὸ τῆ Υἱῆ, ὡς ἔφασκον οἱ ἐκ τῆς Αἰρέσεως· εἰλη-  
 „φέναι δὲ τὴν ἑσίαν ἐκ τῆ Υἱῆ, ἐτέρῳ τρόπῳ καὶ ἐχὶ διὰ  
 „κτίσεως,,. — Ἀντιπαρατίθῃσι πάντως τῇ κτίσει ὁ Ἐπιφάνιος,  
 τὸ λαμβάνειν τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῆ Υἱῆ· ἀλλὰ τίνι ποτε  
 ἀνάγκῃ ἐντεῦθεν ἔπεται, τὸν Ἐπιφανίᾳ νῦν εἶναι τοιόνδε, ὡς  
 ἐπειδὴ τὸ Πνεῦμα ὑπὸ τῆ Υἱῆ ἑ δημιουργεῖται, ἐτέρῳ τρόπῳ ἐξ  
 αὐτῆ τὸ εἶναι τῆ Υἱῆ εἴληφεν; Οὐδὲν δὴπερ ἐπάναγκες. Εὐλό-  
 γως μὲν ἔν Ἐπιφάνιος, ἐκ τῆ τὸ Πνεῦμα παρὰ τῆ Υἱῆ λαμ-  
 βάνειν, ἐπιφέρει, ὅτι ἑκ ἄρα κτίσμα ἐστὶν, ὡς παρὰ τῆ Υἱῆ  
 λαμβάνειν ἑκ ἔχον, εἰ μὴ καὶ ὁμοσίον τῷ αὐτῷ. Πῶς δ' ἄρα  
 ἡ τοιάδε σωσπεία καὶ ἀπόδειξις ἑκ ἂν ἔρρωτο, εἰμὴ ἅμα καὶ  
 τὸ Πνεῦμα θείης, ἐτέρῳ γε τρόπῳ ἐκ τῆ Υἱῆ, παρὰ τὸν κατὰ  
 δημιουργίαν, παράγεσθαι; Ἀπηχῆς τόδε τὸ σώολον. Ὁ δ' αὐτὸς  
 ἕτος Ἰησοῦτης καὶ ἐπὶ τῶν ἀρτίως παρατεθέντων ἐξ Ἀνασάσις  
 τῆ Συναίτης: „Ἰνα διδάξῃ μίαν εἶναι τὴν ἑσίαν τῆ τε λαμβά-  
 „νοντος, καὶ τῆ ἐξ ἑ λαμβάνει, καὶ ἐξ ἑ φυσικῶς ἐκπορεύεται,,  
 ἐπὶ τῆ χωρὶς ἐκείνῃ ὑπολαβὼν σιωπάει: „Ενθα διὰ μὲν τῆ  
 „λαμβάνοντος τὴν ἑσίαν, νοεῖ τὸ Πνεῦμα· διὰ δὲ τῆ ἐξ ἑ λαμ-  
 „βάνει, τὸν Υἱόν: διὰ δὲ τῆ ἐξ ἑ ἐκπορεύεται, τὸν Πατέρα.  
 „Ὡς εἶγε τὸ Πνεῦμα· ἐκ τῆ Υἱῆ τὴν ἑσίαν λαμβάνει, τίποτε  
 ἕτερον ἐστὶν ὃ ζητῶμεν; ἑ γὰρ περὶ τῆς φωνῆς, „ἐκπορεύεται,,·  
 „ἀμφισβητητέον, ἐπειδὴ αὐτὸ τὸ πρᾶγμα κατὰδηλον,,. — Φησὶ  
 δὴπερ Ἀνασάσιος, τὸ μὲν Πνεῦμα εἶναι τὸ λαμβάνον, τὸν δὲ  
 Υἱὸν τὸν ἐξ ἑ λαμβάνει· ἀλλ' ἐκ τῶν αὐτῶ οἴκοθεν ὁ Ἰησοῦτης  
 προσίθῃσι, καὶ κῆνο λέγειν τὸν Ἀνασάσιον, ὅτι ἐκ τῆ Υἱῆ λαμ-  
 βάνει τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον καὶ „τὴν ἑσίαν,, τὴν „ἑσίαν,, φημί.  
 Ἀλλὰ γὰρ ὅπως ἐκ τῆ Υἱῆ τὸ Πνεῦμα λέγεσθαι λαμβάνειν, ἄχρι  
 τῆδε ἀποδείξαμεν.

Τόμ: Β'.

Χ Χ

Φρεῖδος

Φρεδος τελοῦταϊον ὡσαύτως, καὶ ὁ ἐπὶ τῶν αὐτῶν τῷ Ἀνα-  
 σασίᾳ ἀπομνημονοῦθέντων ῥημάτων, ἐπιλέγων: (22) „Ἐνθα  
 „σημειωτέον ἐστὶ, σωετῶς λίαν τὸν Θεὸν Πατέρα, ἑτέρα φράσις  
 „κεχρηῖσθαι, τὴν ἐκ τῷ Υἱῷ Ἐκπορεύσιν ἀναπτύσσοντα τῷ Ἁγίῳ  
 „Πνεύματος, παρ' ᾧ ἐχρήσατο πρὸς ἀνάπτυξιν τῆς τῷ αὐτῷ Ἐκ-  
 „πορεύσεως ἐκ τῷ Πατρὶ. ἵνα, δηλονότι, φανερωθῇ διὰ τῶν  
 „κυρίων φωνῶν τῆς Ἱερᾶς Γραφῆς, καὶ ἵνα δηλώσῃ τὸν Πατέρα  
 „καὶ τὸν Υἱὸν τὸν ἔχοντα πάντα ἐκ τῷ Πατρὶ, ὥτως ἕνα γε  
 „καὶ τὸν αὐτὸν Πνεῦμα εἶναι, ὡς καὶ εἰς ἐστὶ Θεός, καὶ εἰς  
 „Δημιουργός· καὶ ἵν' ὑπανίστηται τὴν πνευματικὴν δυνάμιν τὴν ἐν τῷ  
 „Υἱῷ, εἶναι παρὰ τῷ Πατρὶ· μηδ' ἔχειν τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι τὴν  
 „ἐξουσίαν ἐκ τῷ Πατρὶ μετεῖναι, χωρὶς τῷ ἅμα τὴν αὐτὴν αὐτῷ  
 „ἐπικοινωνεῖσθαι καὶ παρὰ τῷ Υἱῷ, τῷ πάντα ἔχοντος τὰ τῷ  
 „Πατρὶ. „ Ἀπαντα γὰρ δὴ ταῦτα τῷ Ἰησοῦ πλάσματα ἐστὶ,  
 τὸ ἐν ἀρχῇ παχυλῶς αἰταμένους τε καὶ λαμβάνοντος. Πολλὰ  
 μὲν γὰρ λέγει, ὀλίγα δὲ, μᾶλλον δὲ ἔδεν ἀποδείκνυσιν, ἐπαρι-  
 σέρως ὥς τοις τῶν προσδιαλεγομένων ὅροις σοιχῶν.

Βέβαιον ἄρα, μὴ καθ' ἕτερον νῦν, τὸ ἐκ τῷ Υἱῷ λαμβάνειν  
 τὸ Πνεῦμα, τῶς Πατρὸς διδάσκειν, ἢ κατὰ τὴν ἐξῆς ἐννοιαν:  
 ὅτι, μιᾶς ἕσης γε τῆς ἐξουσίας, μιᾶς τε τῆς σοφίας καὶ τῆς δυνά-  
 μεως τῷ τε Ἁγίῳ Πνεύματι καὶ τῷ Υἱῷ· τῶν δὲ πρὸς τὰ ἐκτὸς  
 τῷ Θεῷ ἔργων ἐπὶ τῆς Τριάδος κοινῶν ὄντων· ἐπιδάν τι τὸ  
 Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἡμῖν ἀναγγελεῖ, ἢ τὰς δωρεὰς τὰς αὐτῷ δια-  
 νέμει, ἢ ὅτις τῆς ἡμῶν χάριν διαπράττεται σωτηρίας, ταῦτα  
 ἐκ τῷ Υἱῷ ὁμοίως λαμβάνει, καθ' ὅ, τι γε σωεργέντος τῷ Υἱῷ  
 καὶ σωεπύδοκέντος, ἅπαντα ἐν ἡμῖν ἀναγγελεῖ καὶ ἀπεργάζεται.  
 Ὅποιον δ' ἄρα, πρὸς Θεῷ! τὸ ἀκόλουθον: ὅτι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον  
 λαμβάνει ἐκ τῷ Υἱῷ· ἄρα ἐκπορεύεται καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ; Συγκα-  
 ταβάσεως χάριν καὶ οἰκονομίας ἐστὶ, τὸ λαμβάνειν ἐκ τῷ Υἱῷ τὸ  
 Πνεῦμα, ἡμῶν γε ἕνεκα· καὶ ἔχει τῷ λόγῳ τῆς ἀπ' αἰῶνος αὐτῷ  
 Ἐκπορεύσεως. Ἀλλὰ περὶ τούτου μετὰ ταῦτα.

Τοιγαρὲν τῷ παρὰ τὴν ὁμωνυμίαν μόνῳ Σοφίσματι παίξουσι  
 Λατίνων παῖδες, ἡνίκα μακρῶ ἄλλως, ἢ ὡς τούτο ἡμῶν παρέ-  
 δωκαν οἱ Θεοὶ Πατέρες, τὸ ἐκ τῷ Υἱῷ λαμβάνειν τὸ Πνεῦμα  
 τὸ Ἅγιον ἐρμηνεύουσιν. Ἐνθεντοὶ καὶ ἔδεν τι ἡττοῦ ἀτοποῖ εἶσι,  
 τῶν Λατίνων οἱ τοιαῦτα ἡμῖν ἀντιπροτείνοντες, ἢ, εἴ τις ἂν ἐκ  
 μόνης τῆς μιᾶς τε καὶ κοινῆς Θεαρχίᾳ φύσεως καὶ σοφίας καὶ  
 δυνάμεως σωάγειν ἐπιχειροίη: ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα καὶ ἐκ τῷ  
 Υἱῷ ἐκπορεύεται, διὰ τὸ, ἐκ τῷ Πατρὶ, ἔπερ ἦτε ἐξουσία καὶ  
 ἡ σοφία

(22) Κιχάβ: ἐν Ζητήμ: Α'. Σελ: 10.

ἡ σοφία καὶ ἡ δυνάμις μία καὶ ἡ αὐτὴ τῇ ἐν τῷ Υἱῷ ἐσίγα τε καὶ σοφία καὶ δυνάμει ἐστίν, ἐκπορεύεσθαι.

Ὁ μὲν ἔν ἈΘΑΝΑΣΙΟΣ ἐν τῇ πρὸς Σεραπίωνα Ἐπιστολῇ, ὅτι ἐχὶ κτίσμα τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον· Τόμ: Α'. τῶν Συγγραμ: Σελ: 195. ἔτως ἐκεῖνα: „ἐκ τῆ ἐμῆ λήψεται,, ἀναπτύσσει, ὡς ἔπερ ὡ ὁ νῦς: „ὅ, τι ἂν ἐκ τῆ Υἱῆ ἀκέσση,,. Δείξων καὶ γὰρ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἔτως ἔχειν πρὸς τὸν Υἱόν, ὥσπερ ὁ Υἱὸς ἔχει πρὸς τὸν Πατέρα, καὶ τίνα ἐξαριθμήσας ἐν οἷς κοινωνήσιν, προσέθησι: „Καὶ ὁ μὲν Υἱὸς φησὶν: ἃ ἤκουσα παρὰ τῆ Πατρὸς, „ταῦτα καὶ λαλῶ εἰς τὸν κόσμον· τὸ δὲ Πνεῦμα ἐκ τῆ Υἱῆ „λαμβάνει· ἐκ τῆ ἐμῆ γὰρ λήψεται καὶ ἀναγγελεῖ ὑμῖν φησί. „Καὶ ὁ μὲν Υἱὸς ἐν τῷ ὀνόματι τῆ Πατρὸς ἦλθε· τὸ δὲ Πνεῦμα „τὸ Ἅγιον, φησὶν, ὃ πέμψει ὁ Πατήρ ἐν τῷ ὀνόματί μου. „Τοιαύτῳ δὲ τάξιν καὶ φύσιν ἔχοντος τῆ Πνδύματος πρὸς τὸν „Υἱόν, οἶαν ὁ Υἱὸς ἔχει πρὸς τὸν Πατέρα, πῶς ὁ τῆτο κτίσμα „λέγων, ἐ τὸ αὐτὸ καὶ περὶ τῆ Υἱῆ ἐξ ἀνάγκης φρονήσιν,,; Ἀλλὰ τίνι δὴ τρόπῳ ἐκ τῆ Υἱῆ λέγεται τὸ Πνεῦμα ἀκέσιν, ἐν ἰδιαιτέρᾳ Πραγματείᾳ διασαφῆμεν.

Ὁ δὲ ἈΜΒΡΟΣΙΟΣ, Βιβλ: Γ'. περὶ τῆ Ἁγίης Πνδύματος, Κεφαλ: ΙΗ'. ἔτως ἐκεῖνα διερωτῶν: „Ὡσπερ ἐχ ἀρπάζεται „τῷ Πατρὶ, ἔτως ἐχ ἀρπάζεται τῷ Υἱῷ, ἔτως ἐχ ἀρπάζεται „ἐδὲ τῷ Ἁγίῳ Πνδύματι, ὅς ἐξ ἡμῶν ἐν τέτῳ τῷ τῆς Τριάδος „ὀνόματι, τῷ αἰώνιον ζῶν ἐκπορίζεται· ἐξ αὐτῆ δὴπερ τῆ „λεγομένης, δεδοκέναι μὲν τῷ Υἱῷ τὸν Πατέρα, εἰληφέναι δὲ „παρὰ τῆ Υἱῆ τὸ Πνεῦμα· ὅτι γέγραπται: αὐτὸς ἐμὲ δοξάσει, „ὅτι ἐκ τῆ ἐμῆ λήψεται, καὶ ἀναγγελεῖ ὑμῖν· ὃ περὶ τῆ ἔργῃ „μᾶλλον τῆς οἰκονομίας, ἢ περὶ τῆ δικαιοσύματος τῆς Θείας ἐξ- „σίας εἰρηκέναι δοκεῖ. Οὐς, γὰρ ἐξαγοράζει ὁ Υἱὸς, ὁμοίως καὶ „τὸ Πνεῦμα καθ'αγιαζόν αὐτὸς λαμβάνει,,. Ἀλλ' εἰς τὸ αὐτὸ ἐπανήκει τὸ πρᾶγμα. Ὁ γὰρ εἶχε χώραν καθόλου, ἐν μέρει μόνον παρὰ τῆ Ἀμβροσίᾳ ἀπομνημονεύεται. Παραπλησίως γέν, ἐκ ἄλλως, ἢ κατὰ τὸν τῆς οἰκονομίας λόγον, τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῆ Υἱῆ λαμβάνειν ὁμολογεῖ· καθάπερ ἡδὴ καὶ αὐτὰ τῆ Χριστῆ τὰ ῥήματα, κατὰ τὴν ὑσέραν ταύτῃ ἐννοίαν, (καθ' ὡ ἐκεῖνα: „ἐκ τῆ ἐμῆ λήψεται,, περὶ τῆ Χριστῆ ἀναπτύσσεται) ἐκληφ- „θέντα διηρωτῶνκότες ἐσμέν.

Καὶ ἄλλῳ δ' ἐτι Ἑρμηνείαν ἀλλαχῆ ἀσπάζεται ἸΩΑΝΝΗΣ ὁ Χρυσορρήμων· ἔτω γὰρ ἐν τῇ Ὀμιλ: τῇ περὶ τῆ Ἁγίης καὶ προσκυνητῆς Πνδύματος, πρὸ τῆ τέλους: (23) „Εἶδες πῶς φησὶν: „ἀφ'

(23) Ἐν τῷ Γ'. Τόμ: τῆς τῆς Μοντφαλκ: Ἐκδόσ: Σελ: 803. 804. 805. Καὶ δὲ ὁ Λό- γος, ἐ τῶν γνησίων τῆ Πατρὸς, παρὰ τὴν ἀμφιβάλλεται τῶν ὑστερον, ἀλλὰ Συγ-

„Ἄφ' ἑαυτῆς ἐ λαλεῖ, ἀλλ' ἐξ αὐτῆς λαμβάνει; Μὴ διώταται ἡ  
 „αὐθεντία δεχθῆναι τῆς Πνεύματος; Οὐκ ἔδειξε, φησὶν, ἡ  
 „Γραφὴ ὑποκείμενον αὐτὸ τῇ ἐξουσίᾳ τῆς Υἱῆς; καὶ δανειζόμενον  
 „παρ' αὐτῆς, καὶ ἄλλοις χορηγῆν; Πρόσεχε ἀκριβῶς: ὅταν τι  
 „τῶν λεγομένων ἀπορὸν σοὶ φανῇ, μὴ εὐθέως ἐπιπηδήσῃς τῇ  
 „λέξει, ἀλλ' ἀνάμεινον τὸ τέλος τῆς νοήματος. — Μία φύσις Υἱῆς  
 „καὶ Πνεύματος, μία δυνάμις, μία ἀλήθεια, μία ζωὴ, μία σοφία.  
 „Ἄφ' ἧς δὲ ὁ Σωτὴρ κατηξίωσε τὸ πλάσμα λαβεῖν τὸ ἡμέτερον,  
 „πληρῆσθαι Πνεύματος Ἁγίου ἔχ' ὡς κατώτερος τῆς Ἁγίας Πνεύματος  
 „ἀλλ' ὡς τῆς σαρκὸς ὀφειλῆς ἀνθρωπίνῳ τύπῳ λαβεῖν τῆς Πνεύ-  
 „ματος τὴν ἐπιφοίτησιν. ἔχ' ὅτι ἐκ ἡδυνάτο ὁ Θεὸς Λόγος ἀγιά-  
 „σαι τὸ πλάσμα ὃ ἀνέλαβεν. — Κατηξιώθη ἔν' ἡ σὰρξ ἡ Δε-  
 „σπολικὴ Πνεύματος Ἁγίου καὶ λοιπὸν ἐβέβητο ὁ Σωτὴρ τὸ πλάσμα  
 „ὃ ἀνέλαβεν, οἰκειῶν τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι. Ἰν' ὅπερ ἂν ποιῇ ὁ  
 „Χριστὸς κατὰ σάρκα, ἐπιγράφεται τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι τῷ ἐνοι-  
 „κῶντι ἐν αὐτῷ, ὡς ἐν Ἁγίῳ ναῷ τῷ ἀνθρωπίνῳ. — Εἶχεν  
 „ἔν' ἡ σὰρξ Πνεῦμα Ἅγιον, ἐ μέρος χαρισμάτων, ὡς ἡμεῖς. ἐπειδὴ  
 „τῷ μὲν σοφία, τῷ δὲ γνώσις· ἀλλὰ πάντα ἔχε τὰ χαρίσμα-  
 „τα. — Χρεῖα δὲ ὡς πάντως ἡμᾶς λαμβάνειν ἐκ μέρους, ὡς ἀπὸ  
 „δεξαμενῆς, ἀπὸ τῆς Κυριακῆς σώματος (ὥς) χορηγεῖσθαι καὶ  
 „Ἀποστόλοις καὶ Προφήταις ἐξ αὐτῆς. Ἰωάννης ἐμαρτύρει, ὅτι ἐν  
 „αὐτῷ ὅλον τὸ πλήρωμα τῆς Θεότητος σωματικῶς. Οὐκ εἶπεν  
 „ἀπλῶς, ἐν ᾧ κατώκησεν ἡ Θεότης· ἀλλὰ τὸ πλήρωμα τῆς  
 „Θεότητος: τέτρεσι, πᾶσα ἡ δωρεὰ τῆς Θεότητος. Καὶ ἵνα μὴ  
 „τις νομίσῃ ὅτι ἐν τῷ Θεῷ Λόγῳ κατώκησε· λέγει: ἐν ᾧ κα-  
 „τώκησε πᾶν τὸ πλήρωμα τῆς Θεότητος σωματικῶς. Ἐν τῇ  
 „σαρκὶ αὐτῆς πᾶν τὸ πλήρωμα σοφίας, σωέσεως, δυνάμεως,  
 „σημείων, πάσης ἐνεργείας. Λοιπὸν ἀπὸ τῆς πληρώματος δανει-  
 „ζόμεθα πάντες. Μαρτυρεῖ Ἰωάννης ὁ Βαπτιστής: καὶ γὰρ ἐκ ἡδεῖν  
 „αὐτόν· ἀλλ' ὁ πέμψας με βαπτίζειν ἐκείνος μοι εἶπεν: ἐφ' ὃν ἂν  
 „ἴδῃς τὸ Πνεῦμα καταβαῖνον καὶ μένον, (ἐκ εἶπε χαριζόμενον  
 „αὐτῷ ἐν δῶρον, ἀλλὰ μένον ὅλον) ἔτος ἐστὶν ὁ βαπτίζων ἐν  
 „Πνεύματι Ἁγίῳ καὶ πυρί· ἔτα βεβλόμενος δεῖξαι ὁ Ἰωάννης,  
 „ὅτι ἔχ' ὡς ἄνθρωπος ἔλαβε χάριν ὁ Σωτὴρ, λέγει: ἐκ ἐκ  
 „μέτρους δίδωσιν ὁ Θεὸς τὸ Πνεῦμα· ὁ Πατὴρ ἀγαπᾷ τὸν Υἱόν,  
 „καὶ πάντα δέδωκεν ἐν τῇ χαρὶ αὐτῆς. Ἡμεῖς ἔν' πόθεν λαμ-  
 „βάνομεν; Ἐκ τῆς πληρώματος αὐτῆς ἡμεῖς πάντες ἐλάβομεν.  
 „Ἐκεῖνος

Συγγραφέως, εἶναι τὸ πόνημα, καὶ ἀγχινοῖα διαφέροντος, καὶ ἐδ' ἔτω πολὺ μετὰ  
 τὸν Χρυσόστομον ἐπακμάσαντος, αὐτὸς Μοντεφελκόνιος ἐκὼν ὁμολόγησεν, ἐν τῇ  
 πρὸ τῆς Λόγου τέτρε προσημειώσει: (Αὐτ: Σελ: 797.) Καθάπερ ἡμῖν καὶ ἀλλοῦ  
 παρατετήρηται (ὄρα ἐπὶ τῆς Α'. Πραγματείας, Σελ: 72. Σημειώσει (81).)



„Ἐκεῖνος τὸ πλήρωμα, ἡμεῖς ἐκ τῆ πληρώματος. Πῶς; ἀφ' ἧ  
 „ἐπλήρωσε τὴν Δεσποτικὴν σάρκα, ἀπ' αὐτῆς ἦντλει ὡς ἀπὸ  
 „πηγῆς, καὶ ἐδάνειζε τοῖς ἀνθρώποις τὴν δωρεάν. Πρόσεχε πα-  
 „ρακαλῶ: λέγει ἔν, ὅταν ἔλθῃ ὁ Παράκλητος, τὸ Πνεῦμα τῆς  
 „ἀληθείας, ὁδηγήσει ὑμᾶς εἰς πᾶσαν τὴν ἀλήθειαν, ὅτι ἐκ τῆ  
 „ἐμῆ λήψεται. Πρόσεχε τῇ ἀκριθείᾳ: ἔκ εἶπεν ἐξ ἐμῆ, ἀλλ'  
 „ἐκ τῆ ἐμῆ. Ἐξ ἐμῆ, τίς; ἐκ τῆ ἐμῆ δώσει ὑμῖν, ἀλλὰ  
 „λήψεται λαμβάνει ἢ δανειζόμενον. Ἀλλ' ἐπειδὴ ἐπλήρωσε τὴν  
 „πηγὴν, ὡς ἀρχὴν χαρισμάτων, ἀπὸ τῆς Δεξαμενῆς ἀντλεῖ, καὶ  
 „παρέχει πᾶσιν ἐκ τῶν ἰδίων. Καὶ πόθεν τῆτο, ὅτι τὸ λαβεῖν  
 „ἐκ τῶν ἰδίων ἐστὶ λαβεῖν; Ἄκου: Ἐπλήρωσεν ὁ Θεὸς τὸν  
 „Μωϋσῆν Πνύματος· καὶ λέγει Μωϋσῆς: ἢ διώμαι μόνος φέρειν  
 „τὸ βάρος τῆ λαῖ τέτῃ προχείρισαι ἄλλον σεαυτῷ. Λέγει αὐτῷ  
 „ὁ Θεός: ἐπίλεξαι ἐβδομήκοντα Πρεσβυτέρους· καὶ λήψομαι ἀπὸ  
 „τῆς Πνύματος τῆ ἐν Σοί, καὶ δώσω ἐπ' αὐτούς· ἔκ εἶπε λήψομαι  
 „τὸ σὸν, ἀλλ' ἀπὸ τῆς Πνύματος τῆ ἐν Σοί· ἐκ τῆ ἐμῆ λήψομαι.  
 „Λέγει ὁ Θεός: ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις ἐκχεῶ ἀπὸ τῆς Πνύ-  
 „ματός μου ἐπὶ πᾶσαν σάρκα, καὶ προφητεύσουσιν. Εἰ ὁ Θεὸς  
 „παρὰ Μωϋσέως λαμβάνων ἐδανείσατο, καὶ τὸ Πνεῦμα παρὰ  
 „τῆς Τίς λαμβάνων ἐδανείσατο· καὶ γὰρ Μωϋσῆς τύπος ἰὼ τῆ  
 „Χριστῆ· ὅτι ὡς ἀπὸ Μωϋσέως ἐβδομήκοντα ἐγένοντο, ἔτως  
 „ἀπὸ τῆς Χριστῆ ἡ οἰκουμενὴ ἐδέξατο τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. Ἐκ  
 „τῆ ἐμῆ λήψεται· ἐξ ὧν ἐχορήγησέ μοι μόνῳ τῷ Κυριακῷ ἀν-  
 „θρώπῳ, λήψεται αὐτὸ τὸ δεδοκός, τὸ ἐλθὼν καὶ μέιναν ἐν  
 „ἐμοί, τὸ χρίσαν με καὶ ἀγιασαν, τὸ ἀγαγὼν εἰς τὴν ἔρημον,  
 „τὸ ὑποσρέψαν με νικητιῶ· ἐκ τῆ ἐμῆ λήψεται καὶ ἀναγγελεῖ  
 „ὑμῖν. Καὶ ἵνα δείξῃ ὅτι ἢ τῆς Ἁγίας Πνύματος ἐμνημόνευσεν,  
 „ἀλλὰ τῶν δωρεῶν, ἐπάγει μετὰ τὸ εἰπεῖν: ἐκ τῆ ἐμῆ λήψεται,  
 „ἐνθύς: πάντα ὅσα ἔχει ὁ Πατὴρ ἐμὰ ἐστὶ· ἔλαβον αὐτὰ ἐκ  
 „τῆς Ἁγίας Πνύματος, διὰ τῆτο εἶπον ἐκ τῆ ἐμῆ λήψεται. Ἐπει-  
 „δὴ ὁ Θεὸς τὴν σάρκα ἡγήσατο Πνύματι Ἁγίῳ· καὶ ἀπέστειλε  
 „τὴν δωρεάν τῆς Πνύματος ὁ Πατὴρ εἰς τὴν σάρκα τῆς Χριστῆ.  
 „Ἐλθῶσα δὲ ἡ χάρις ὅλα τὰ δῶρα ἐνέθηκε τῷ Χριστῷ, λέγει:  
 „ἐκ τῆ ἐμῆ λήψεται καὶ ἀναγγελεῖ ὑμῖν,. Τοιγαρὲν καὶ τέτοις  
 „ἐπιγινώσκει ὁ Χρυσορρήμων, ὡς ἢ ἄλλως, εἰμὴ τῷ λόγῳ τῶν  
 „κατ' οἰκονομίαν ὑπὲρ τῆς ἡμῶν σωτηρίας ὑπὸ τῆς Πνύματος τε-  
 „λεμένων· (ἢ δηλονότι τὰ ἑαυτῆς χαρίσματα τοῖς πιστεύουσι χο-  
 „ρηγεῖ) τὸ Πνεῦμα λέγεται λαμβάνειν ἐκ τῆς Τίς. Καὶ κατὰ  
 „τὸν νῦν τὸν δε, τὸ Πνεῦμα λέγεσθαι ἐκ τῆς Τίς λαμβάνειν  
 „ἄχρι τῆδε ἡμῖν ἀποδέδεικται. Μᾶλλον δὲ, ὁ Χρυσόσομος ἐνλαυθα  
 „διδάσκει, ἐκ τῶν ἰδίων ἑαυτῆς λαμβάνειν τὸ Πνεῦμα, ἀπὸ τῆς  
 „ἰδίας, δηλονότι, πληρώματος, καθ' ὃ ἐνώκησεν ἐν τῇ σαρκὶ τῆς  
 Τόμ: Β'. Ψ ψ Χριστῆ.



Χριστῷ· ὅθεν καὶ σαφέστερον ἔτι δηλᾶται, ὡς ἐκ τῆς τοῦ Πνεύματος τοῦ Ἁγίου λαμβάνειν ἀπὸ τῆς Υἱᾶς, ἢ ἂν ἔχοι ἐπάγεσθαι, ὅτι ἄρα καὶ ἐκ τῆς Υἱᾶς ἐκπορεύεται. Οὐ γὰρ δήπερ, ἢ δ' ἢ τῆς Κυρίου Σάρξ τὸ αἷτιον ἂν εἴη τῆς Πνεύματος, ἢ δὲ τὸ Πνεῦμα αὐτὸ ἑαυτῷ.

#### Ἀ Π Α Ν Τ Η Σ Ι Σ Γ'.

Ἐπὶ δὲ τέτοις, ἢ δὲ τὸ Πνεῦμα ἐκ τῆς Υἱᾶς λαμβάνειν ἡδυνάτο λέγεσθαι μόνον. Ἀλλὰ καὶ ὁ Υἱὸς ὡσαύτως λαμβάνει πάντως ἐκ τῆς Ἁγίας Πνεύματος. Πρῶτον γὰρ ἀριδῆλως ἐκ τῆς ἐπιχαιρήσεως αὐτῆς φανερόν καθίσταται, δι' ἧς τοιῶδε λόγῳ δέκνυσιν ὁ Σωτὴρ, ὅτι τὸ Ἁγιον Πνεῦμα λαμβάνει ἐκ τῆς Υἱᾶς: Πάντα γὰρ, φησὶν, ἔχει τὰ τῆς Πατρὸς ὁ Υἱός· τὸ ἄρα Πνεῦμα λαμβάνει ἐκ τῆς Υἱᾶς. Ἀλλ' εἰ διὰ τὸ πάντα τὰ τῆς Πατρὸς ἔχεν θάτερον τῶν Προσώπων ἐκ τῆς Υἱᾶς λαμβάνει ἅτλα ἀναγγέλλει, ἐξ ἀνάγκης δήπερ τῆς ἴσης ἔψεται, διὰ τὸ καὶ τὸ Ἁγιον Πνεῦμα πάντα ἔχεν τὰ τῆς Πατρὸς, καὶ θάτερον τῶν Θεῶν Προσώπων, τρεῖσι τὸν Υἱόν, ἐκ τῆς Ἁγίας Πνεύματος λαμβάνειν ἅπερ ἂν ἀναγγέλοι. Εἰ δὲ διὰ τῆς τοῦ Υἱοῦ καὶ Πνεύματος μία ἡ ἐξία καὶ ἡ σοφία· κοινὰ δὲ τῇ Τριάδι τὰ πρὸς τὰ ἐκτὸς ἔργα· ἔπεται δὴ: ὡς περ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἁγιον, σπεργέντος τῆς Υἱᾶς καὶ σπυροδοκῆντος, μηδαμῶς τὰ τῇ σοφίᾳ τῆς Θεᾶς ἀντιβαίνοντα, πάντῃ δὲ ταῦτα ἀναγγέλλον, ἐκ τῆς Υἱᾶς λαμβάνει αὐτά· παραπλησίως καὶ τὸν Υἱόν λαμβάνειν ἐκ τῆς Πνεύματος ἅπερ ἀναγγέλλει· καὶ γὰρ ὡσαύτως καὶ τῆς Πνεύματος σπεργέντος τε καὶ σπυροδοκῆντος, ἔκιν τὰ τῇ σοφίᾳ τέττα ἀντίξοα, ταυτὰ δὲ πάντῃ καὶ πάντως τῷ Υἱῷ σύμφωνα ἀναγγέλλει.

Ὁ μὲν ἔν ΧΡΥΣΟΣΤΟΜΟΣ, Ὁμιλ: ΟΖ'. εἰς τὸν Ἰωάννην, ἐπὶ τῶν ἀνωτέρω ἡμῖν ἀπομνημονοθέντων ἔφασκε: „Διὰ τῆς τοῦ ἐκ τῆς ἐμῆς λήψεται (τὸ Ἁγιον Πνεῦμα, φησὶν ὁ Κύριος:) τρεῖς: ἅπερ ἂν εἶπον ἐγὼ, ταῦτα καὶ ἐγὼ εἶμι... τὸ δὲ ἐκ τῆς ἐμῆς, ἐξ ὧν οἶδα ἐγὼ· ἐκ τῆς ἐμῆς γνώσεως· μία γὰρ ἐμῆ, καὶ τῆς Πνεύματος ἡ γνώσις... Ἐκ τῆς ἐμῆς λήψεται, τρεῖς σπυροδοκῶ τοῖς ἐμοῖς ἔρεϊ... Εἰ δὲ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἁγιον διὰ δὴ τῆς τοῦ λαμβάνει ἐκ τῆς Υἱᾶς, ὅτι λέγει ἃ εἶπεν ὁ Υἱός, καὶ ἅπερ οἶδε τε καὶ γινώσκει ὁ Υἱός, ὡς ἐν μηδενὶ τέττα διαφωνῶν· καὶ ὁ Υἱός πάντως, ἡνίκα εἶπε τὰ διὰ τῶν Προφητῶν εἰρημένα ὑπὸ τῆς Πνεύματος, καὶ ἅπερ τὸ Πνεῦμα ἡδὲ τε καὶ ἐγίνωσκεν, ἐν μηδενὶ τέττα διαφωνῶν, ὁρθῶς λέγεται λαμβάνειν ὑπὸ τῆς Πνεύματος. Αὐτὸς δ' ἐπὶ τῆς ῥηθέντος χωρὶς διὰ τῶν προαπομνημονοθέντων ὁ ΧΡΥΣΟΣΤΟΜΟΣ: „Τὸ δὲ ἐκ τῆς ἐμῆς λήψεται, ἢ τοι

„ἦτοι ἐκ τῆς χαρίσματος, τῆς εἰς τὴν σάρκα τὴν ἐμὴν ἐλθόντος.  
 „ἦ ὅτι ἀπὸ τῆς γνώσεως ἧς καὶ ἐγὼ ἔχω, ἔχῃ ὡς δεόμενος,  
 „ἐδ' ὡς παρ' ἑτέρου μαθὼν, ἀλλ' ὡς μιᾶς ἕσης καὶ τῆς αὐτῆς...  
 „μία, Φησὶν, ἡ ἐμὴ, καὶ ἡ ἐκείνης διδασκαλία ἐστίν· ἐξ ὧν ἐμελ-  
 „λον ἐγὼ διδάσκω, ἐκ τῶν αὐτῶν ἐρεῖ· μὴ δὴ νομίσητε ἕτερα  
 „εἶναι τὰ ἐκείνης; καὶ γὰρ καὶ ἐκεῖνα ἐμὰ ἐστίν,,. Εἰ δὲν αὐτοῖς  
 τὸ Πνεῦμα διὰ τῆτο λέγεται ἐκ τῆς Τίς λαμβάνειν, ὅτι, ἂ λέγει,  
 λαμβάνει ἐκ τῆς αὐτῆς γνώσεως ἣν ἔχει ὁ Τίς, ἔχῃ ὡς τι μα-  
 θεῖν παρ' ἄλλου ἔχον ἐπιδεῶς, ἀλλ' ὅτι ἀμφοτέρων μία τε καὶ ἡ  
 αὐτὴ γνώσις ἐστίν, καὶ τὰ αὐτὰ ἐμελλεν ἐρεῖν, ἅπερ ἂν εἰρήκει  
 ὁ Τίς· δῆλον ἄρα ἐκ τῆς ὁμοίᾳ παρακολυθεῖν τὸ εἰληφέναι καὶ  
 τὸν Τίον παρὰ τῆς Ἁγίας Πνοῦματος. Ὡσαύτως γὰρ ἅπερ ὁ  
 Τίς ἣν διδάσκων, ἐκ τῆς αὐτῆς γνώσεως εἰληφὼς ὑπῆρχε τῆς  
 ἐνέσεως τῷ Ἁγίῳ Πνοῦματι, ἔχῃ ὡς ἐπιδεῖς ὧν, ἐδ' ὡς παρ' ἄλλου  
 διδασκόμενος· ἀλλ' ὅτι μία τε καὶ ἡ αὐτὴ γνώσις ἐστίν ἀμφοῖν,  
 καὶ τὰ αὐτὰ ὁ Τίς ἐτύγγανε λέγων, ἅπτα καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα  
 διδάξαι ἐμελλεν.

Ὁ δὲ Ἀλεξανδρείας ΚΥΡΙΑΛΛΟΣ προσέτι, Βιβλ: ΙΑ'. τῶν  
 εἰς Ἰωάν: Κεφαλ: Α'. ἐν τοῖς καὶ ἀνωτ: ἀπομνημονοῦσιν ῥή-  
 μασιν ἔφασκεν: „Ἀναγγελεῖ τοιγαρὲν ὑμῖν ἐκ τῆς ἐμῆς λαβῶν  
 „ὁ Παράκλητος· τῆτεςιν, ἔχῃ ἕτερόν τι λαλήσει παρὰ τὸν ἐν  
 „ἐμοὶ σκοπόν· καὶ ἐπέπερ ἐστὶ Πνεῦμα ἐμὸν, ταυτολογήσει δὴ  
 „πάντως, καὶ τὰ ἐκ τῶν ἐμῶν ἀναγγελεῖ θελημάτων,,. Ἀλλ',  
 ἐκ τῆς κατὰ τὸ προσεικὸς ἐπομένῃ, πάλιν ἔπετα καὶ τὸν Τίον  
 ἐκ τῆς Ἁγίας Πνοῦματος εἰληφέναι ἅπερ ἀνήγγειλε. Παραπλησίως  
 γὰρ, ἐδὲν παρ' ὃ ἡθελε τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, καὶ αὐτὸς ἐξέθετο  
 τὰ δ' αὐτὰ πάντῃ αὐτῷ σωεφθέρξατο.

Κάντεῦθεν, ἐπεὶ μία, δηλονότι, ἡ τῆς ὅλης Τριάδος σοφία  
 τε καὶ ἀλήθεια, ΕΥΤΣΕΒΙΟΣ ὁ Ἐμισιωὺς τρανῶς ἣν διδάσκων  
 καὶ τὸν Τίον ἐκ τῆς Πνοῦματος εἰληφέναι ἅπερ ἐδίδασκεν. Οὕτω  
 γὰρ καὶ ἕτος ἐν τῇ Δ'. Κυριακῇ τῇ μετὰ τὸ Πάχα: „Καὶ  
 „γὰρ καὶ ὁ Τίς ἡνίκά ἐδίδασκεν, ἐκ τε τῆς ἰδίας αὐτοῦ, καὶ ἐκ  
 „τῶν τῆς Πατρὸς, καὶ τῆς Ἁγίας Πνοῦματος ἐλάμβανε. Μία γὰρ  
 „ἡ σοφία τε καὶ ἀλήθεια τῶν τριῶν· ὅθεν καὶ αὐτὸς ἔλεγεν:  
 „ἡ ἐμὴ διδασκαλία ἐκ ἐστίν ἐμή,,. Εἰ δὴπερ ἄρα ἐκ τῆς Ἁγίας  
 Πνοῦματος λαμβάνει καὶ ὁ Τίς, πῶς (πρὸς Θεῶ!) ἔποιτο ἂν,  
 ὅτι ἐπεὶ ἐκ τῆς Τίς λαμβάνει τὸ Πνεῦμα, διὰ τῆτο αὐτὸ καὶ  
 ἐξ αὐτοῦ ἐκπορεύεται; Μήτοι γε ἄρα καὶ τὸ Πνεῦμα ἀρχὴ  
 ἐστὶ τῆς Τίς; Μὴ ὥσπερ ἐκ τῆς Πνοῦματος ὁ Τίς ἐστὶ γεννητὸς,  
 ἔτω δὴ καὶ ἐκ τῆς Τίς τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκπορεύεται;

## Ἀ Π Α Ν Τ Η Σ Ι Σ Δ'.

Παρά ταῦτα: λαμβάνει μὲν τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῆς Τίθ, ἀλλ' ἐκ ἀπ' αἰῶνος, ἐν χρόνῳ δὲ διὰ τὴν μίαν, δηλονότι, καὶ τὴν αὐτὴν, ὡς εἴρηται, εἶσαν τε καὶ σοφίαν καὶ ἀληθείαν καὶ δυνάμιν· περὶ γὰρ τῆς χρονικῆς μόνον ἐνταῦθα λήψεως τῷ Σωτῆρι τὸν λόγον ἐνταῦθα εἶναι κατάδηλον, ἐξ ὧν φάσκει: ἐκ τῆς ἐμῆς „λήψεται, καὶ ἀναγγελεῖ,, ὑμῖν. Ἐνθα δὴπερ τὸ ῥῆμα μέλλοντα χρόνον ἐμφαίνει, ἐχὼ παρωχημένον, ἔκινεν τῆς ἀπ' αἰῶνος γενομένης, τῆς δ' ἐν χρόνῳ γενέσθαι δέοντος ἐς παραστατικόν. Καὶ ἡ χάρις δ' ἐπὶ τούτῳ, ὡς ἀναγγελεῖν ὡς τὸ Ἅγιον Πνεῦμα τοῖς Μαθηταῖς, ἔπω τέως πεπλήρωτο, μέλλουσα δ' ὡς, ἅτε πρὸς τὴν παρυσίαν τῆς ἐπιδημήσοντος Πνεύματος ὑπὸ τῆς Σωτῆρος ὑπερτιθεμένη· ὁ παραπλησίως καὶ τὸ ῥῆμα διασημαίνει τὸ ἐν χρόνῳ μέλλοντι: καὶ „ἀναγγελεῖ,, ὑμῖν. Οὕτω γὰρ ἄρα ἡ περὶ ἧς ὁ λόγος ἀγγελία γεγέννητο, καὶ ἐκ ἀπ' αἰῶνος ὡς ἐπομένως. Ἀλλὰ παραπλησίως ἔφησεν ὁ Σωτὴρ: ἐκ τῆς ἐμῆς „λήψεται, καὶ ἀναγγελεῖ,, ὑμῖν· ἐν ᾧ ἔν ἄρα „ἀναγγελεῖ,, τῷ χρόνῳ τὸ Πνεῦμα, ἐν αὐτῷ δὴπερ καὶ „λήψεται,, ἐκ τῆς Τίθ· καί γε τότε καὶ „ἐλήφεν,, ἄρα, ὅτε δὴ καὶ „ἀνήγγειλε,,· Ἀνήγγειλε δὲ ἐν χρόνῳ, καὶ ἐκ ἀπ' αἰῶνος· ἔκινεν ἐν χρόνῳ μόνον καὶ παρὰ τῆς Τίθ ἔλαβε.

Ταύτητοι ΔΙΔΥΜΟΣ ὁ Ἀλεξανδρεὺς, ἐν Βιβλ: Β'. περὶ τῆς Ἁγίας Πνεύματος ἐν τοῖς καὶ πρὶν ἀπομνημονοθεῖσιν ἀλλὰ καὶ ῥήμασι: „Τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ λαμβάνει, ὁ πρῶτος ἐκ ἔχεν· „εἰ γὰρ ὁ πρὶν ἐκ εἶχεν εἰλήφει, μετενεχθέντος ἐπ' ἄλλον τῆς „δώρε, κενὸς χορηγὸς αὐτὸν κατέστη, παυσάμενος ἔχειν ὅπερ ἐνέ- „ματο,,. Εἰ γὰρ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῆς Τίθ ἐλήφεν, ὅπερ ἤδη καὶ πρότερον εἶχε· ταῦτέστιν, ὁ καὶ τῆς Τίθ μήπω δόντος, ἤδη καὶ πρὶν ἔχον ὑπῆρχε· πάντως ἐκ αἰωνία ἢ λήψις ἢ δε, ἀλλὰ τέως χρονική.

Ὡσαύτως καὶ ὁ ΧΡΥΣΟΣΤΟΜΟΣ ἐν Ὁμιλ: ΟΖ'. τῶν εἰς τὸν Ἰωάν: „Ἐκ τῆς ἐμῆς λήψεται, ἥτοι ἐκ τῆς χάρισματος τῆς „εἰς τὴν σάρκα τὴν ἐμὴν ἐλθόντος· ἢ ὅτι ἀπὸ τῆς γνώσεως ἧς „ἔχω ἐγώ· ἐχὼ ὡς δεόμενος, ἐδὲ ὡς παρ' ἑτέρου μαθὼν,,. Εἴπερ ἄρα ἐκ τῆς Τίθ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον λαμβάνει, ἐχὼ ὡς ἐπιδεῖς ὄν, ἢ μανθάνον· ἅτλα ἐκ τῆς Τίθ ἐλήφει, ταῦτα ἤδη καὶ πρότερον ἔχον ὡς, πρὶν τὸν Υἱὸν δεδωκέναι γινώσκον· καὶ ἐκ ἄρα ἀπ' αἰῶνος, ἀλλ' ἐν χρόνῳ τέως ἔλαβεν αὐτά.

Καὶ ΚΥΡΙΛΛΟΣ δὲ Βιβλ: ΙΑ'. τῶν εἰς Ἰωάννῳ, Κεφ: Β'. „Λαμβάνειν τε ἔτω τὸ Πνεῦμα φαιμέν, ἐκ τε τῆς Πατρὸς καὶ τῆς „Τίθ τὰ αὐτῶν· ἐχὼ ὡς ποτὲ μὲν ἐκ ἔχον τὴν ἐνέσαν αὐτοῖς „γνώ-

„γνώσιν τε καὶ διώμιν, ἔχον δὲ τότε μόλις ὅταν νοῆται λαμβάνον· αἰ γὰρ σοφὸν καὶ δωατὸν τὸ Πνεῦμα ἐστίν,,. Καὶ τῷ Πατρὸς ἄρα καὶ τῷ Υἱῷ μήπω διδόντων, εἶχε τὸ Πνεῦμα, ὃ, κατὰ τὰ τῷ Σωτῆρος ῥήματα, ἐκ τῷ Πατρὸς καὶ ἐξ αὐτῷ ἐλάμβανε· καὶ ἐκ ἄρα περὶ τῆς ἀπ' αἰῶνος ἐκείνης, περὶ δὲ τῆς χρονικῆς μόνον ὁ λόγος ἄχρι τέττε λήψεως. Ὁ δ' αὐτὸς ἔτι Κύριλλος, καὶ ἐν Βιβλ: ΙΑ'. τῶν εἰς Ἰωάννῳ Κεφ: Α'. „Υποστηγητέον δὲ ἐδαμῶς ἰχύος ἐπιθεῖν τῆς ἐμφύτης καὶ φυσικῆς καθεστῆναι τὸν Παράκλητον, τετέστι τὸ Πνεῦμα, ὡς, εἰ μὴ λάβοι τύχον, μηδ' ἂν ἐξαρκέσειν αὐτὸν ἐαυτῷ διώσθαι, πρὸς τῷ τῶν Θεῶν κατορθωμάτων ἐνέργειαν ἀποτελεσιμῶ. Δυσσεβείας γὰρ ἂν τῆς πασῶν ἐχάτης ὑπομέναι γραφίῳ, καὶ σφόδρα αἰκότως, ὃ καὶ μόνον οἰηθεὶς ἀληθές τι τῶν τοιούτων εἶναι περὶ αὐτῶν,,. Τέλειον ἄρα ἤδη τὸ Πνεῦμα καὶ ἀνεκδέξας ὄν, ἐλάμβανεν ἐκεῖνα ἐκ τῷ Υἱῷ. Ὡς ἔπερ ἄρα κατὰ τὰ Σωτῆρος ῥήματα: „ἐκ τῷ ἐμῷ λήπεται,,: ἐκ ἀπ' αἰῶνος, ἀλλ' ἐν χρόνῳ μόνον τὸ Πνεῦμα ἐκ τῷ Υἱῷ λαμβάνει· πῶς ἂν (πρὸς Θεῶ!) τὸ ἐκ τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα εἰληφέναι, ἀπόδειξις γένοιτο τῆς τῷ Πνδύματος καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ Ἐκπορεύσεως; Πάντως ἢ μὲν τῷ Ἁγίῳ Πνδύματος Ἐκπόρῳσις αἰώνιος ἐστίν, καὶ ἔχι χρονικὴ ἢ δέ τοι λήψις τῷ Πνδύματος ἢ ἐκ τῷ Υἱῷ ἐκείνη, χρονικὴ ὡ καὶ ἐκ ἀπ' αἰῶνος. Ἡ, τίς ἢ σωέπεια; τὸ Πνεῦμα χρονικῶς καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ λαμβάνει. Ἄρα καὶ προαιωνίως ἐκ τῷ αὐτῷ λαμβάνει τὸ εἶναι, διὰ τῆς ὑποστατικῆς ἐξ αὐτῷ ἐκπορεύσεως. Παραπλήσιως γὰρ δὴ, (ὡς ἐπὶ τῆς Γ'. τῶν Ἀπαντήσεων δεδαικται) καὶ ὁ Υἱὸς ἔλαβεν ἐκ τῷ Πνδύματος, ἐμῶ δὲ παρὰ τῷτο, καὶ ἀπ' αἰῶνος γεννᾶται ἐκ τῷ Πνδύματος.

Ἄλλ' ἢ Λατίνων ἐν Κεφαλῇ τῆς ἐν χερσὶ Πραγματείας ἐκτεθεῖσα ἔνστασις ὡς: „Ὅτι τὸ Πνεῦμα, Θεὸς τέλειος ὢν, ἔδεονδς ἀμοιρεῖ ἔδὲ χρήζει, ὅπερ λαβεῖν χρονικῶς ἂν διώαιτο,, — Τὸ μὲν ἐν λέγειν εἰληφέναι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἁγιον ἐν χρόνῳ ἐκ τῷ Υἱῷ, παρὰ τὸ μήπω πρότερον αὐτὸ ἐχηκέναι, ὅπερ ἂν εἰλήφοι ἀτοπώτατον τῷτο γε. (24) Ἄλλὰ γὰρ ἔμπης ἅμα, καὶ ἐν χρόνῳ ἐκ τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα λαμβάνειν ὁρθῶς ἂν λέγοιτο, ἃ καὶ πρότερον ἔχον ὡς, διὰ τὸν ἕνα, δηλονότι, λόγον τῆς ἑσίας καὶ γνώσεως, κατὰ τὸν ἐκτεθέντα ἀνωτέρω ἀμέλειτοι νῦν ἐξ ἑ τῷ

(24) „Δυσσεβείας γὰρ ἂν τῷτο τῆς ἐχάτης ὑπομέναι γραφίῳ, καὶ σφόδρα αἰκότως,, ὡς ὁ Θεοπέσιος ἀνωτέρω Κύριλλος ἔφασκε· τὸ μὲν τι Πνεῦμα λαμβάνει, ἔχι ἴν' ἔχει· γὰρ ἀπ' αἰῶνος· ἀλλ' ἵνα κατὰ τῷ οἰκονομίαν, ἐν χρόνῳ παρέχη τὰ αὐτῷ χαρίσματα τοῖς πιστεύουσι.



τῷ ὄντι ἡδὸλως ἔπεται ἀτελὲς εἶναι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον διὰ δὴ τῆτο, ἢ τινὸς ἐνδεές, ἢ τινὸς ἄμοιρον.

Ἄλλ' ἔρεῖς, ὅτι καὶ Αὔγουστινός ἐν τῷ κατὰ τὴν Λόγον τῶν Ἀρειανῶν Βιβλ: Κεφ: ΚΔ'. ἔτως ἐφθέγγετο: „Μηδέ τινα „κινείτω ὅτι μέλλοντος ἐστὶ χρόνος τὸ ῥῆμα λήψεται· ὡς εἰ μήπω „ἔχε (τὸ Πνεῦμα) λαβόν· ἀδιαφόρως γὰρ οἱ τῶν ῥημάτων λέ- „γονται χρόνοι, καὶ τοιγε ἀχρόνως ἢ αἰωνιότης νοεῖται μένεσα, — Ἄλλ' Αὐγουστίνος ἐν τοῖς τῇ Σωτήρος ἐκάνοις: „ἐκ τῆ ἐμῆ λή- „ψεται,,: ἢ περὶ τῆς τῇ Ἁγίᾳ Πνεύματος χρονικῆς λήψεως τῆς ἐκ τῆ Γίγ, τὸ ῥηθὲν ἐξελάβετο, ἀλλὰ περὶ τῆς αἰωνίᾳ τατέσι, περὶ τῆς ἐκ τῆ Πατρὸς ἐκπορεύσεως· καθάπερ ἔν καὶν τοῖς ἀπομνημονοῦσθαι ῥήμασιν ἐπιπροσθεῖς φαίνεται: „Καὶ γὰρ καὶ „ἐλάβεν, ὅτι ἐκ τῆ Πατρὸς προελήλυθε· καὶ λαμβάνει, ὅτι ἐκ „τῆ Πατρὸς προέρχεται· καὶ λήψεται, ὅτι ἐκ τῆ Πατρὸς προέρ- „χεται ἡδέποτε παύσεται,,: Κατὰ τὸν δὲ τὸν νῦν ἄρα, τῷ τῇ Πνεύματος ἐκδεχόμενοι λῆψιν, ἐκ ἂν ὀρθῶς ἐπ' αὐτῆς χρό- νος ῥηματικὸς ἔχοιμεν διασκέπτεσθαι. Ἄλλ' ἅπερ ἡμῖν Θεὸς εἰς σωτηρίαν παρέχεται, ὡς ἐν χρόνῳ δῆπερ τὰ τοιαῦτα τελέμενα, καὶ τῷ ἐκ τῶν χρόνων ὑφίσταται διαφοράν. (25) Ὡς ἡδὸλως ἔπεται, ἐπεὶ ἐν χρόνῳ ἔλαβε τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκ τῆ Γίγ, ἅτλα πρὸς ἡμετέραν σωτηρίαν ἡμῖν ἀναγγέλοι, διὰ τῆτο ἄρα καὶ ἀπ' αἰῶνος λέγειν ἐκ τῆ Γίγ εἰληφέναι αὐτά.

Ἐρεῖς ἔτι: ἀπᾶδον δοκεῖν εἶναι τὸ διατείνεσθαι: ὡς εἴπερ μὲν τὰ τῇ Σωτήρος: „ἐκ τῆ ἐμῆ λήψεται,,: αὐτῷ γε τῷ Σω- τηρὶ ἀπονέμοιτο, περὶ τῆς χρονικῆς μόνον νοέμενα ὑποκείμεται λήψεως: εἰ δὲ περὶ τῆ Πατρὸς διερμολογήθῃ, καὶ λῆψιν ἔτι τῷ ἀπ' αἰῶνος νοεῖν παρέξεσθαι· τατέσιν, αὐτῷ τῷ ἐκπόρῳσιν. Πρὸς δ' ἔτι, καὶ πῶς ἢ τῇ Ἁγίᾳ Πνεύματος λήψις ἢ ἐκ τῆ Γίγ, χρονικὴ μόνον ἂν εἴη, τῆς χρονικῆς ἐκ τῆ Πατρὸς λήψεως τῇ Ἁγίᾳ Πνεύματος, τῷ πρὸ αἰῶνος πρόοδον αὐτῇ προϋποτιθείσης; — Ἄλλ' ὁ μὲν πρὸς γε τὸ πρῶτον τῆνον ἐστὶ, κατ' ὃν δὴ νῦν προ- χέει τὰ τῇ Σωτήρος ῥήματα προφερόμενα, καὶ ὅνπερ πρῶτως σκοπὸν ἐν τέτοις τὸ Πνεῦμα προτίθεται, καὶ εἰ περὶ τῆ Πα- τρὸς αὐτὰ ἐκληφθήθῃ, ὡς ἐκ ἄλλως, εἰ μὴ περὶ τῆς χρονικῆς λήψεως τῇ Πνεύματος ἐκ τῆ Πατρὸς ἐστὶν ἐν ἐκάνοις ὁ λόγος, αὐτόθεν καταφανές· καθάπερ ἔν καὶ τῆς Πατέρας ἔτω παρα- δεδωκότας ἀνωτέρω ἠκῶσαμεν. Καθότι δὲ μιᾶς καὶ τῆς αὐτῆς ῥήσεως

(25) Θεία γάρ τις ἐστὶ ἐστὶ βεβλή περὶ τῷ κτίσιν ἐπὶ τῶν τοιούτων, κατὰ καιρὸς καὶ χρόνος, ὅς ὁ πρὸ αἰῶνων Θεὸς ἐν τῇ ἰδίᾳ ἐξουσίᾳ ἔχων προδιτάξαι, ἐκπεράνο- μένη· ἢς δὴ βεβλή, κοινῆς τῇ Θεαρχικῇ Τριάδι ἐνθεωρημένης, πρὸ μὲν χρόνος ἢ πρόθεσις, χρονικὴ δὲ ἢ ἐν τοῖς ὑπὸ χρόνον ἐκτέλεσις.



ρήσεως τὰ πολλὰ αἱ ἔννοιαι ποικίλαι εἶναι εἰώθασιν· ἔτω παρὰ ταῦτα, καὶ περὶ τῆς Πατρὸς καὶ περὶ τῆς Σωτῆρος ἐκλαμβανόμενων ῥημάτων ἐκείνων ἢ διάνοια, καὶ περὶ τῆς αἰωνίης προσέτι τῆς Πνύματος λήψεως, ἥτοι περὶ τῆς ἐκπορεύσεως, αὐτῆς τῆς ἐκ τῆς Πατρὸς ἐρμηνεύεται. Ἀπαντα γὰρ τὰ ἐν τῇ Ἱερᾷ Γραφῇ ταπεινότερον εἰρημένα περὶ τῆς Ἁγίας Πνύματος, (κατὰ τὴν ὑποθήκην τῆς Θεολόγου Γρηγορίου) ἐπὶ τῷ πρώτῳ Αἰτίαν, τὸν Πατέρα, δηλονότι, δεόν ἀνάγεσθαι, ἵνα δειχθῇ ὅθεν τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. Καὶ ἐπεὶ ἔν κατὰ τὸν ῥηθέντα λόγον, ἐκ μὲν τῆς Πατρὸς καὶ αἰωνίως καὶ κατὰ χρόνον τὸ Πνεῦμα λαμβάνον ἐστίν· ἐκ δὲ τῆς Τίς μόνον χρονικῶς διὰ τῆτο δὴ, ἐπὶ τῆς τῆς χωρίης ἐκείνης διερμηνύσεως, πρὸς μὲν τὸν Πατέρα τῆς διττῆς λήψεως, πρὸς δὲ τὸν Υἱὸν μιᾶς τε καὶ μόνης τῆς κατὰ χρόνον, οἱ Πατέρες μνημονεύσιν. Πῶς ἔν ἄτοπον εἶναι τὸ ἐν τέτοις ἔτω διατάνεσθαι λέγοιτο; Ἐκ μὲν ἔν τῆς Πατρὸς τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον λαμβάνον, ἢ χρονικῇ λήψει τῷ ἀπ' αἰῶνος, τῆς τῆς ἐκ τῆς Πατρὸς ἐκπόρουσιν προὔποτίθησιν. Οὐδὲν δ' ἐπάναγκες, ἵνα καὶ ἢ χρονικῇ τῆς Πνύματος ἐκ τῆς Τίς λήψει προὔποτιθεμένῳ ὁμοίως ἔχη τῷ ἀπ' αἰῶνος, ἥτοι τῷ Ἐκπόρουσιν καὶ ἐκ τῆς Τίς. Ἐπεὶ καὶ ἐπὶ τῆς Τίς αὐτῆς, ὁπότε καὶ ὁ Υἱὸς ἐκ τῆς Πατρὸς ἐστὶ λαμβάνων· ἢ ἀπ' αἰῶνος λήψει, εἴτ' ἔν ἢ ἐκ Πατρὸς γέννησις, προὔποτίθεται πάντως· ἔμῳ δὲ καὶ ὅταν ὁ Υἱὸς λαμβάνῃ παρὰ τῆς Πνύματος, προὔποθετέα καὶ τότε λήψις τις αἰωνία, ὡς καὶ ἐκ τῆς Πνύματος διὰ τῆτο γεννᾶσθαι τὸν Υἱόν. Οὕτω δὴ καὶ ἢ τῆς Τίς παρὰ τῆς Πατρὸς πέμψις, προὔποτίθησιν ἐν τῷ Υἱῷ τῷ γέννησιν τῷ ἀπ' αἰῶνος ἐκ τῆς Πατρὸς· ἔμῳ δὲ καὶ παρὰ τῆς Πνύματος ὡσαύτως τῆς Τίς ἀποσελλομένης, προὔποκειται διὰ τῆτο ἐν τῷ Υἱῷ, καὶ ἢ ἀπ' αἰῶνος τέτῃ γέννησις ἐκ τῆς Πνύματος. Ἀλλὰ περὶ τέτῃ ἡμῖν διείληπται ἐν τῇ Πραγματείᾳ, ἐν ἣ ἀποδείκνυμεν, τῷ τῆς Ἁγίας Πνύματος ἐκ τῆς Τίς πέμψιν μηδὲν συμβάλλεσθαι πρὸς Ἀπόδειξιν τῆς τῆς Ἁγίας Πνύματος καὶ ἐκ τῆς Τίς Ἐκπορεύσεως.

#### Ἀ Π Ἀ Ν Τ Η Σ Ι Σ Ε'.

Διὰ τῆτο τοίνυν οἱ Πατέρες τῷ τῆς Ἁγίας Πνύματος λήψιν ἐκ τῆς Τίς, περὶ τῆς αἰτιώδους λόγου εἰ διηρμηνεύσαν, μᾶλλον δὲ, εἰ ἔχον, εἰδὲ χρῶμαι λόγῳ τοιῷδε διερμηνεύεσθαι αὐτῷ ὁμολόγησαν. Καὶ πρῶτον μὲν, εἴπερ ἈΘΑΝΑΣΙΟΣ, ἐκ τῆς τῆς Πνεῦμα λαμβάνειν παρὰ τῆς Τίς, ἐπόμενον ἡγήτο εἶναι τὸ καὶ ἐξ αὐτῆς ἐκπορεύεσθαι· τὸ Ἐπιχείρημα πάντως τῶν ἐκ τῆς Αἱρέσεως ἐκείνου, τὸ κατ' ἀρχὰς τῆς ἐν χερσὶ Πραγματείας ὑμῖν προε-

Ω ω 2

νεχθέν:

νεχθέν: „Οτι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκ τῆς Υἱᾶς λαμβάνον, καὶ τῆς Υἱᾶς ἄρα Υἱὸς ἐστὶ, καὶ τῆς Πατρὸς Υἱωνός, : δυοὶ ῥήμασιν ἐπελύσατο ἂν, δεκνὺς ἔπεσθαι μὲν ἐξ ἐκείνης δὴπερ τὸ ἐκ τῆς Υἱᾶς τὸ Ἅγιον Πνεῦμα παράγεσθαι, ἐπὶ μέντοι τῶν Θεῶν μὴ ἓνα καὶ μόνον εἶναι τὸν λόγον τῆς παραγωγῆς τὸν μὲν γὰρ Υἱὸν γεννᾶσθαι, τὸ δὲ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκπορεύεσθαι. Ἀλλὰ γὰρ Ἀθανάσιος τῇ τοιαύτῃ προκρήσασθαι ἐπιλύσει ἐκ ὧς το δυνάμεσθαι ἄλλα τῶν ἐπιχέρημα ἐκείνου, ὡς ἀπηχῆς μόνον καὶ ἀπώδον ἀπεσφύριζατο· περὶ δὲ ἡδὴ ἄλλαχθ' ἡμῖν πεπραγματεύεται. Οὐκ ἄρα τὸ ἐκ τῆς Υἱᾶς τὸ Πνεῦμα λαμβάνειν, Ἀθανάσιος εἰς λόγον ἐτίθετο τῆς τῆς Πνέματος καὶ ἐκ τῆς Υἱᾶς Ἐκπορεύσεως.

ΔΙΔΥΜΟΣ δ' ὁ Ἀλεξανδρεὺς, ἐνθα λέγεται τὸ Ἅγιον Πνεῦμα λαμβάνειν ἐκ τῆς Υἱᾶς, καταχρηστικῶς μόνον τῆτο, καὶ μὴ κυρίως εἶναι νοητέον ἐδίδασκε· μηδὲ γὰρ τὸν Υἱὸν εἶναι διδόντα, μηδὲ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα λαμβάνον εἶναι κυρίως εἰπέν. Τὸ δέ τοι Πνεῦμα εἰληφέναι, ὅπερ ἔχεν ἡδὴ καὶ πρότερον. Ἀλλὰ πῶς ἐκ ἂν ὁ Υἱὸς διδοίη; πῶς δ' ἐκ ἂν τὸ Πνεῦμα λαμβάνοι; εἰ τῆς Πνέματος λεγομένης λαμβάνειν ἐκ τῆς Υἱᾶς, ὁ νῦν ὑπῆρχεν ἐκ τῆς Υἱᾶς τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκπορεύεσθαι; Εἰ δὲ καὶ ἐκ τῆς Υἱᾶς προσέτι τὸ Πνεῦμα λαμβάνει, ὁ, καὶ πρὶν ἢ τὸν Υἱὸν δεῖναι, αὐτὸ ἔχον ὡς πάντως ἔτοιγε κατὰ τὴν διάνοιαν τῶν δε τῶν ῥημάτων, ἐκ τῆς Υἱᾶς, ὡς ἐξ αἰτίας τὸ Πνεῦμα εἰληφεν. Οὐ γὰρ ἄπερ ἐκ τῆς αἰτίας τὸ Πνεῦμα λαμβάνει, ταῦτα δὴ εἶχε καὶ προλαβόν. Οὕτω γὰρ ὁ Δίδυμος ἐν τῷ Β'. Βιβλ.: περὶ τῆς Πνέματος: „Ἐνταῦθα τὸ λαμβάνειν, ἢ τῇ Θεῷ φύσει προσήκει, ἐκληπτέον ἐστίν· ὃν γὰρ ἄρα τρόπον διδόντες ὁ Υἱὸς ἐκ ἀποσερεῖται ὧν δίδωσιν, ἐδὲ κατὰ ζημίαν τὴν ἑαυτῆς διανέμει τοῖς ἄλλοις· ἔτω καὶ τὸ Πνεῦμα δὲ λαμβάνει ὁ πρὶν ἐκ ἔχεν. Εἰ γὰρ, ὁ πρὶν ἐκ εἶχεν ἔλαβε, μετενεχθέντος ἐπ' ἄλλον τῆς δώρας, κενὸς ἂν χορηγὸς κατέστη, τὸ διανεμηθὲν ἔχεν παυσάμενος. Ὅνπερ ἐν ἀνωτέρῳ τρόπον, περὶ τῶν ἀσωμάτων φύσεων διαλεγόμενοι νενοήκαμεν, ἔτω καὶ νῦν τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκ τῆς Υἱᾶς λαμβάνειν τὸ τῆς ἑαυτῆς φύσεως ὄν, ἐπιγνωσέον ἐστὶ· μηδέ γε τῆτο τὸν διδόντα καὶ τὸν λαμβάνοντα, ἀλλὰ τὸ ἐνιαῖον τῆς ἑσίας δηλῶν. Ἐπειδὴ ἄρα Φωνὴ πᾶσα ἀνθρώπιος, ἐδὲν ἔχει κρίνειν ἄλλο παρὰ τὰ σώματα, ἢ δὲ Τριάς περὶ ἧς νῦν ὁ λόγος πάσης ἐνύλη ὑπερίδρυται φύσεως, διὰ τῆτο ἐδὲν ῥῆμα δυνάται κυρίως αὐτῇ προσεφαρμοσθῆναι, καὶ τὴν ἐκείνης παραδηλωσάμεν ἑσίαν· ἀλλ' εἴτι ἂν καὶ λαλήσαιμεν, καταχρηστικῶς λέγεται καὶ περὶ τῶν ἀσωμάτων ἀπάντων, καὶ περὶ τῆς Τριάδος μάλιστα, ὅτις ἂν φθεγγώμεθα.

Ὡσαύτως

Ὡσαύτως δὲ καὶ ἈΜΒΡΟΣΙΟΣ ἀπόφησι τὸ „ἐκ τῆ ἐμῆ  
 „λήψεται,, : τῇ τῆς Θεαρχικῆς ἐξουσίας εἰρηθεῖαι δικαιώματος· ἀλλ' εἴπερ ἄρα  
 διὰ τῶν ῥημάτων τῶνδε ὑποσημαίνονται ἐκπορεύεσθαι τὸ Ἅγιον  
 Πνεῦμα καὶ ἐκ τῆς Υἱῆς, ἔδει πάντως αὐτὸ νοεῖσθαι περὶ τῆς  
 Θείας ἐξουσίας τε καὶ δωάμεως δικαιώματος. Ἦν γὰρ ἂν ἔτι  
 ἢ δωάμεως, ἦτοι ἢ ἐξουσία τῷ Υἱῷ, τῆ παράγειν τὸ Πνεῦμα τὸ  
 Ἅγιον. Ἐστὶ δὲ τὸ ὑπὸ Ἀμβροσίου ἐν τῷ Γ'. Βιβλ.: περὶ τῆς  
 Ἁγίας Πνοῦματος, Κεφαλ.: ΙΗ'. ῥηθὲν, τοιοῦτον: „Γέγραπται,  
 „αὐτὸς ἐμὲ δοξάσει, ὅτι ἐκ τῆ ἐμῆ λήψεται, καὶ ἀναγγελεῖ ὑμῖν  
 „ὃ περὶ τῆς ἔργου μᾶλλον τῆς οἰκονομίας, ἢ περὶ τῆς δικαιώματος  
 „τῆς Θείας ἐξουσίας εἰρηκέναι δοκεῖ,,.

Ἐφ' οἷς δὴ, παρὰ τὸ λαμβάνειν τὸ Πνεῦμα ἐκ τῆς Υἱῆς,  
 ἐπιφέροντος καὶ τῆ Νοβατιανῆς, ὡς καὶ νῦν οἱ Λατῖνοι φιλοῦσιν:  
 ὅτι μέζων ἄρα τῆ Ἁγίας Πνοῦματος ἐστὶν ὁ Υἱός, διαβρῆδω τῷ  
 Νοβατιανικῷ ταύτῳ διδασκαλίαν ὁ ἹΕΡΩΝΥΜΟΣ ἀναγινώσ-  
 κεται κατακρίνων. Ἐν μὲν ἔν τῷ περὶ Τριάδος Βιβλίῳ Νοβα-  
 τιανῆς τῆς Παλαιᾶς Ῥώμης Πρεσβυτέρου, ἐν Κεφαλαίῳ ΚΔ'.  
 Σελίδι 1046. τῶν Τερτυλλιανῆς Συγγραμμάτων, τῆς ἐν Παρισι:  
 τῆ Παμελίας Ἐκδόσεως: τῆς ἐν Ἐτῇ 1616. τοιαῦτα ἐμφέρεται:  
 „Εἴπερ ἐκ τῆ Χριστῆς εἰληφεν, ἅπερ ἀναγγέλλει, μέζων ἄρα τῆ  
 „Παρακλήτης ἐστὶν ὁ Χριστός· ἐδὲ γὰρ ἂν ὁ Παράκλητος ἐλάμ-  
 „βανεν ἀπὸ τῆ Χριστῆς, εἰμὴ ἐλάσων ὡς τῆ Χριστῆς. Ἐλάσων δὲ  
 „ὢν τῆ Χριστῆς ὁ Παράκλητος, καὶ τὸν Χριστὸν Θεὸν εἶναι κατ'  
 „αὐτό γε τῷ δέκνυσιν, ἐξ ἧς εἰληφεν ἅπερ ἀναγγέλλει, ἵνα ἢ  
 „τῆς τῆ Χριστῆς Θεότητος μαρτυρία μεγάλη ἢ· ἐπειδὴν τῆ Χριστῆς  
 „ἐλάσων ὁ Παράκλητος εὐρεθεῖς, ἐξ αὐτῆς λαμβάνει ἅ τοῖς ἄλ-  
 „λοις παρέχεται. Εἰ γὰρ ἄνθρωπος ψιλὸς ὡς ὁ Χριστός, αὐτὸς  
 „ἂν ἐλάμβανεν ἐκ τῆ Παρακλήτης ἢ εἴποι, ἕκ ἐκ τῆ Χριστῆς ὁ  
 „Παράκλητος ἢ ἀναγγεῖλοι,,. — Ἀλλὰ καὶ τέτων ἕνεκα τῶν  
 ῥημάτων, τὸ Νοβατιανῆς Βιβλίον ἐκείνο Ἱερώνυμος κατεδίκησεν·  
 ἔτι γὰρ ἐν τοῖς αὐτόθι αὐτῆς Σημειώμασι, καὶ τοι γὰρ Λατῖνος  
 ὢν ὁ Παμελιος, Σελίδι 1060. „Ὀνομαστὶ ταύτης γε τῆς ῥήσεως  
 „ἕνεκα, ἢ Βιβλος αὕτη Αἰρεσιώδης ὑπὸ τῆς Μακαρίας Ἱερωνύμου  
 „ὑπὸνόμασι,,. Εἰ γὰρ ἐκ τῆς Υἱῆς τῆς Θεῆς ἐκπορεύεται τὸ Ἅγιον  
 Πνεῦμα, μέζων πάντως αὐτῆς ἔσται ὁ Υἱός· καθάπερ διὰ τὸν  
 αὐτὸν λόγον, καὶ τῆς Υἱῆς μέζονα τὸν Πατέρα οἱ Θεόφοροι δι-  
 δάσκαλοι ἀποφαίνονται. Ἐπεὶ δ' ἔν ἄρα Ἱερώνυμος ἀπλῶς ἀπο-  
 φάσκει, παρὰ τὴν λαμβάνειν τὸ Πνεῦμα ἐκ τῆς Υἱῆς, μέζονα εἶναι  
 ἔπεσθαι τὸν Υἱόν, ἢ τὸ Πνεῦμα· δηλὸς δὴπερ ἐντεῦθεν Ἱερώνυμος  
 γίνεσθαι, μηδέποτε τὰ τῆς Χριστῆς ἐκείνα: „ἐκ τῆ ἐμῆ λήψεται,, :  
 περὶ τῆς τῆς Ἁγίας Πνοῦματος ἐξελιφῶς καὶ ἐκ τῆς Υἱῆς Ἐκπορεύσεως.

Τόμ.: Β'.

Α α α

Οὕτω

Οὕτω δὲ ἄρα καὶ ὁ Χρυσορρήμων ἸΩΑΝΝΗΣ διαρρήδιω ἐστὶ διδάσκων ἀσαφὲς ὅλως εἶναι ὃ λέγεται, τὸ Ἅγιον Πνεῦμα λαμβάνειν ἐκ τῆς Υἱᾶ· προσίθῃσι δ' ἔν, μηδαμῶς ἔπεσθαι ἐντεῦθεν, τὸ παρὰ τῆς Υἱᾶ τὸ Πνεῦμα κιχρᾶσθαι, ἢ τῇ ἐξουσίᾳ τῇ τῆς Υἱᾶ ὑποκεῖσθαι· ἅπερ κατ' ἰδιαιτέραν ἐννοιαν ὡς ἄντως ἐπάληθρόντα, εἴπερ ἐκ τῆς Υἱᾶ ὑπῆρχε τὸ Πνεῦμα ἐκπορεύόμενον. Οὐ γὰρ ἂν ὑφesyήκοι μὴ ἐκ τῆς Υἱᾶ παραχθέν· καὶ ἔτως ἂν τῇ ἐξουσίᾳ, ἥτοι τῇ Πνύσικῇ δωάμεν τῆς Υἱᾶ ὑποκεῖτο, ὡς ἐξ αὐτῆς τὸ εἶναι ἐξηρητημένον. Καὶ μὲν δὴ, καὶ εἰδὲν ἂν ἔχον εἴη τὸ Πνεῦμα, μὴ διδόντος τῆς Υἱᾶ· καὶ τοιῶδε λόγῳ, πάντα ἂν τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα προσοφλισκάνον ἐτύγχανεν. Οὕτως ἔν ὁ Χρυσορρήμων ἐν τῇ Ὁμιλίᾳ τῇ περὶ τῆς Παναγίας καὶ προσκυνητῆς Πνύματος: „Εἶδες πῶς, φησὶν, ἀφ' ἑαυτῆς ἔλαλεῖ, ἀλλ' ἐξ αὐτῆς „λαμβάνει; Μὴ δωάται ἢ αὐθεντία δειχθῆναι τῆς Πνύματος; „ἐκ ἔδειξε, φησὶν, ἡ Γραφὴ ὑποκείμενον αὐτὸ τῇ ἐξουσίᾳ τῆς Υἱᾶ; „καὶ δανειζόμενον παρ' αὐτῆς, καὶ ἄλλοις χορηγῆν; Πρόσεχε „ἀκριβῶς· ὅταν τι τῶν λεγομένων ἀπορόν σοι φανῇ, μὴ εὐθεὺς „ἐπιπηδήσῃς τῇ λέξει, ἀλλ' ἀνάμεινον τὸ τέλος τῆς νοήματος. „Οὐκ εἶδες ἐν ταῖς παρασκυδαῖς τῶν οἰκοδομῶν, πῶς πάντα „συγκεχυμένα; ἄσβεστος, λίθοι, ξύλα· καὶ τῇ μὲν σῇ ὄψει πάντα „συγκέχυται, τῷ δὲ τεχνίτῃ πάντα ἡρμῶσαι· καὶ οἶδε τὸν καιρὸν, „καθ' ὃν τῆτο τὸ συγκεχυμένον ἀρμόσει ἐκείνῳ· καὶ τὰ „νῷ διεσκορπισμένα, τῷ πρέπσαν ἀρμονίαν λαμβάνοντα, ἀπο- „τελεῖ τὸ τῆς οἰκοδομῆς κάλλος. Ὅταν τοίνυν ἴδῃς τὸν λέγοντα „ἀπὸ τῆτος εἰς τῆτο, καὶ ἀπ' ἐκείνου εἰς ἄλλο μεταβαίνοντα, νόει „τὰς ὕλας αὐτὸν παρασκυδάειν. Ὅταν γὰρ παραθῷ τὰς ὕλας, „τότε δέκνυμι τῷ ἀρμονίαν... Ἐνθα δὴπερ, εἴπερ ὁ Χρυσόσομος ᾤετο, ὅτι παρὰ τὸ ἐκ τῆς Υἱᾶ τὸ Πνεῦμα λαμβάνειν, ἔπειτα, ἢ γὰρ ὑποδηλῆται, καὶ τὸ ἐκ τῆς Υἱᾶ αὐτὸ ἐκπορεύεσθαι· τῷ ἀντιπροτείνοντι ἔμπης ἐντεῦθεν καὶ ὑποκεῖσθαι, καὶ τῷ Υἱῷ πάντα ὀφείλειν, συμφήσειεν ἥπερ ταύτη γε, κατ' ἰδίον τινα νῆν; ἔχεν τὸ πρᾶγμα ἀποκρινάμενος· καθότι γε ἐκ τῆς Υἱᾶ ἐκπορεύεται τὸ Πνεῦμα, ἢ δέδεικται· καὶ εἰδ' ἂν ὠνόμασε ποτὲ τὰ τῆς Σωτῆρος ἐκείνα ῥήματα ἀσαφῆ, καὶ μακρὰς ἐπιδεόμενα ἀναπτύξεως. Ἐφῆτε γὰρ ἂν ἐνὶ λόγῳ, ἐκείνο ἐντεῦθεν νοεῖσθαι: ὅτι τὸ Ἅγιο Πνεῦμα ἐκπορεύεται ἐκ τῆς Υἱᾶ. Οὕτω δέ τοι καὶ τῇ ΟΖ' τῶν εἰς τὸν Ἰωάννῃν Ὁμιλιῶν: „Ἐκ τῆς ἐμῆς, φησὶ, λήψεται, „ἥτοι ἐκ τῆς χαρίσματος, τῆς εἰς τῷ σάρκα τῷ ἐμῷ ἐλθόντος· „ἢ ὅτι ἀπὸ τῆς γνώσεως ἧς ἔχω ἐγὼ, ἔχ' ὡς δεόμενος, εἰδ' ὡς „παρ' ἐτέρου μαθὼν... Ἄπερ ἄρα τὸ Ἅγιον Πνεῦμα λαμβάνει ἐκ τῆς Υἱᾶ, ἔχ' ὡς ἐπιδεῖς ὃν λαμβάνει· διὸ καὶ πρὶν ἢ δεῖναι τὸν Υἱὸν, αὐτὰ εἶχεν. Οὐκ ἄρα τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῆς Υἱᾶ, ὡς



ὡς ἐξ αἰτίας, λαμβάνει. Ἄ γὰρ ἐκ τῆς Αἰτίας λαμβάνει, ἐκ ἤδη πρότερον ἐτύγχανεν ἔχον.

Τῶν μὲν ἄν Ἀρειανῶν, ἐκ τῆς τὸ Πνεῦμα παρὰ τῆς Υἱᾶς λαμβάνειν, ἀρχὴν τῆς Πνύματος εἶναι τὸν Υἱὸν ἐπισυναγόντων, πρὸς τόδε τῆς ἐπιχείρημα ἀποκρινόμενος ΑΥΤΟΥΣΤΙΝΟΣ, ἐν τῷ Βιβλ: τῷ κατὰ τῆς Λόγου τῶν Ἀρειανῶν, Κεφαλ: ΚΓ'. ἐκ ἐκείνου ἐπάγει: ὡς ὁρθῶς μὲν, παρὰ τὸ Πνεῦμα λαμβάνειν ἐκ τῆς Υἱᾶς, ἀρχὴν τὸν Υἱὸν τῆς Πνύματος εἶναι ὑποσυνάπτειν· ἀπατῶνται δὲ ὁμῶς οἱ Ἀρειανοί, ὡς κατὰ τρόπον δημιουργίας πισθύνοντες παρὰ τῆς Υἱᾶς τὸ Ἅγιον Πνεῦμα παράγει· ὃ δὴ περὶ ἐξ ἀνάγκης ἂν ἀπεκρίνατο, εἰ τὸ ἐκ τῆς Υἱᾶς λαμβάνειν τὸ Πνεῦμα, πῶς εἶναι ἡγάτο τῆς τῆς Πνύματος καὶ ἐκ τῆς Υἱᾶς Ἐκπορεύσεως. Περὶ γὰρ τέττα ὁ λόγος ἰσχύει· ἀλλὰ τὸναντίον ἀριδῆλως, ἐκ τῆς λαμβάνειν τὸ Πνεῦμα παρὰ τῆς Υἱᾶς, σωεφέπειται ἀποφάσκει τὸ καὶ εἶναι τὸ Πνεῦμα ἐκ τῆς Υἱᾶς· διὰ τὸ ἐπίσης καὶ τὸν Υἱὸν καὶ τὸ Πνεῦμα εἶναι ἐκ τῆς Πατρὸς. Καὶ προσίστησι γε: Ἐὰν ἡ Πρότασις: „ἐκ τῆς ἐμῆς λήπεται“,: ἀντὶ τῆς Ἀρχῆς νοηθεῖν, νοεῖται δὲν αὐτῷ περὶ τῆς Πατρὸς, ἐξ ἧς τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκπορεύεται. Τὰ γὰρ ἐκείνη τοιάδε: „Ὁ δ' ἔφησε περὶ τῆς Ἀγίας Πνύματος, ὅτι ἐκ τῆς ἐμῆς λήπεται: αὐτὸς τὸ ζήτημα ἐπιλύεται. Ἰνα μή τις νομίση κατὰ βαθυμῆς τινὰς, ἔτις ἐξ αὐτῆς εἶναι τὸ Πνεῦμα, ὡς περὶ αὐτὸς ἐστὶν ἐκ τῆς Πατρὸς ἀμφοτέρων ὄντων ἐκ τῆς Πατρὸς, τῆς μὲν γεννητῶς, τῆς δὲ ἐκπορευτῶς. Ἄ δὴ δύο ἐπὶ τῆς ὑπερτάτης φύσεως ἐκείνης διακρίνειν ἔστι βλάδιον. Ἰνα γὰρ μή τις τέτο νομίση, ὡς ἔφω, ἐχόμενα ὑποσυνήψε: πάντα ἃ ἔχει ὁ Πατὴρ ἐμὰ ἐστὶ διὰ τέτο ἔφω: „ἐκ τῆς ἐμῆς λήπεται: ἔτις ἀναμφισβητήτως θέλων νοεῖται ὅτι λαμβάνει ἐκ τῆς Πατρὸς.

Ἐνθεντοὶ αὐτοῖς καὶ τὸ ὑπὸ τῆς Ἀρειανῆς Μαξιμίνου προτεθέν ἀνωτέρω Ἐπιχείρημα ἐπιλυσόμενος, δι' ἧς, παρὰ τὸ λαμβάνειν τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῆς Υἱᾶς, ὁμοίως ἐπιφέρων ἰσχύει καὶ ἐκείνος, τὸν Υἱὸν ἀρχὴν εἶναι τῆς Πνύματος· τὸ εἰρημένον: „ἐκ τῆς ἐμῆς λήπεται“,: περὶ τῆς Πατρὸς αὐτὸς ἐξεδέξατο, καὶ ἔτι περὶ τῆς Υἱᾶς· διαβρῆδω ἀποφῆσας, εἰ κατὰ τὸν τῆς ἀρχῆς λόγον ἡ Πρότασις ἐκληφθεῖν αὐτῇ: „ἐκ τῆς ἐμῆς λήπεται“,: τὸ νοεῖται ἔχειν περὶ τῆς Υἱᾶς. Οὕτω καὶ γὰρ ἐν τῷ Α'. πρὸς Μαξιμῖνον Βιβλίῳ ἀπαντᾷ: „Ὁ φῆς τὸν Κύριον περὶ τῆς Ἀγίας Πνύματος εἰρηκέ- ναι: „ἐκ τῆς ἐμῆς λήπεται“,: διὰ τέτο εἴρηται ὅτι ἐκ τῆς Πατρὸς ἔλαβε· καὶ πάντα ἃ ἐστὶ τῆς Πατρὸς ἀναμφισβόλως καὶ τῆς Υἱᾶς ἐστὶν. Αὐτὸς γὰρ, ὅτε τέτο εἴρηκε, προσέθετο: διὰ τέτο εἶπον, ἐκ τῆς ἐμῆς λήπεται: ὅτι πάντα ἃ ἔχει ὁ Πατὴρ, ἐμὰ ἐστὶ“.

Α α α 2

Κατ'



Κατ' αὐτὸν δὲ τὸν δε τὸν λόγον, καὶ ἀλλαχῇ ἀπόφῃσι τὸ λαμβάνειν τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῆς Τίτῃς. Οὐ γὰρ ἐγχωρεῖ ἐπὶ τῆς Τριάδος, ἵνα βαθμηδὸν τὸ μὲν Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκ τῆς Τίτῃς, ὁ δὲ Υἱὸς λαμβάνῃ ἐκ τῆς Πατρὸς. Οὕτω καὶ γὰρ ἐν τῷ Β'. Βιβλ: κατὰ τῆς τῆς Παρμενιανῆς Ἐπιστολῆς, Κεφαλ: ΙΕ'. ἐν Τόμ: Ζ'. τῶν Συγγραμμάτων: „Οὕτως ἔν, διὰ τῶν ἐξ αὐτῆς „(τὸν Παρμενιανὸν λέγει) προηγμένων μαρτυριῶν, ἢ χείρων „ὑπόθεσις ἐξελέγχεται. Εἰ γὰρ καὶ ὁ Υἱὸς, φησὶν, εἰληφέναι „μὲν αὐτὸς παρὰ τῆς Πατρὸς, λαμβάνειν δὲ τὸ Πνεῦμα ἐκ τῶν „αὐτῶν ἐμὴν ἀλλ' ἐχ οἷον βαθμηδὸν πως εἰπῆν· καὶ ἂν δὴ αὐτὸς „ἐξέδετο φήσας: ὅτι πάντα ἂν ἔχει ὁ Πατήρ, ἐμὰ ἐστὶ διὰ „τῆτο, ἔφω, ἐκ τῆς ἐμῆς λήψεται„. Καὶ ἐν τῇ Ρ'. Πραγματεῖα τῶν εἰς τὸν Ἰωάννῳ, ἐν τῷ Θ'. Τόμῳ τῶν Συγγραμμάτων: „Ο, φησὶν, „ἐκ τῆς ἐμῆς λήψεται„: καὶ ἀναγγελεῖ ὑμῖν, εὐσεβεῖσι „προσδέξαθε διανοοίαις. Οὐ γὰρ διὰ τῆτο, ὅτινες τῶν ἐξ Αἱρέ- „σεων ὑπειλήφασιν, ἔλαττον ἐστὶ τῆς Τίτῃς τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ὅτι „ὁ μὲν Υἱὸς λαμβάνει παρὰ τῆς Πατρὸς, τὸ δὲ Πνεῦμα τὸ Ἅγ: „παρὰ τῆς Τίτῃς, κατὰ τινὰς φύσεως βαθμύς. Ἄπαγε τῆτο πι- „σθεῖν. Ἄπαγε τῆτο λέγειν. Ἄπαγε ἀπὸ Χριστιανῶν καρδιῶν „τῆς ἔτω φρονεῖν· τελοῦταῖον δ' ἐχόμενα τὸ ζητούμενον αὐτὸς „ἐπιλύεται, διατὶ τῆτ' ἔφησεν ἀναπτύσσων. Πάντα, φησὶν, ὅσα „ὁ Πατήρ ἔχει, ἐμὰ ἐστὶ διὰ τῆτο εἶπον, ὅτι ἐκ τῆς ἐμῆς λή- „ψεται, καὶ ἀναγγελεῖ ὑμῖν· τί βέλεθε περαιτέρω; Ἄρα παρὰ „τῆς Πατρὸς λαμβάνει τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ὅθεν λαμβάνει καὶ ὁ „Υἱός. Ἐν γὰρ τῇ Τριάδι ταύτῃ παρὰ τῆς Πατρὸς ὁ Υἱὸς γεν- „νᾶται, παρὰ τῆς Πατρὸς τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκπορεύεται. Ὁ δὲ „ἐκ τινος γεννητὸς, ἐδ' ἐκ τινος ἐκπορεύτῃς, ὁ Πατήρ μόνος „ἐστὶ„. Καθάρπερ ἔν καὶ ἐπὶ τῶν προαπομνημονευθέντων ἐκ τῆς Βίβλῃς τῆς κατὰ τῆς Λόγῃς τῶν Ἀρειανῶν, Κεφαλ: ΚΓ'. ὑποσυνάπτει: „Ἐκ τῆς Τίτῃς λαμβάνειν τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, λθ- „γεθαι μόνον διὰ τὴν ὁμοσιότητα· ἔτως ἀναμφιβόλως νοεῖται „θέλων, ὅτι ἐκ τῆς Πατρὸς μὲν (τὸ Πνεῦμα) λαμβάνει διὰ δὲ „τῆτο ἐκ τῆς ἑαυτῆς, ὅτι πάντα ὅσα ἔχει ὁ Πατήρ, αὐτῆς εἰσὶν„. Οἷς δὴπερ τέτοις παραπλήσια ἔχει καὶ τοῖς πρὸ βραχέος ἀνε- „νεχθεῖσιν ἐκ τῆς Β'. Βιβλ: τῆς κατὰ τῆς Ἐπιστολῆς τῆς Παρμε- „νιανῆς. Κάντεῦθεν διαβρῆδω τέως, εἰρηθαι τῆτο διὰ τὸ τῆς Θεότητος ἐνιαῖον ὁμολογεῖ, ἐν τῇ ΡΖ'. Πραγματεῖα τῶν εἰς Ἰωάννῳ: „Ἐκείνο δ' περὶ τῆς Ἀγίας Πνεύματος ἔφη λέγων: „Πάντα ὅσα ἔχει ὁ Πατήρ, ἐμὰ ἐστὶ: διὰ τῆτο εἶπον, ὅτι ἐκ τῆς „ἐμῆς λήψεται καὶ ἀναγγελεῖ ὑμῖν: περὶ ἐκείνων ἔφησεν, ἂν πρὸς „αὐτῷ ἀνήκει τὴν Θεότητα τῆς Πατρὸς, ἐν οἷς αὐτῷ ἴσος ἐστὶ, „πάντα ὅσα περ ἔχει ἔχων„.

Καί

Καὶ ΚΥ'ΡΙΛΛΟΣ δὲ ὁ Ἀλεξανδρεὺς Βιβλ: ΙΑ'. τῶν εἰς τὸν Ἰωάν: Κεφαλ: Β'. τρανῶς διδάσκων ἐτύγχανε, καταχρησικώτερον περὶ τῆς Ἀγίας Πνεύματος λέγεσθαι, ὅτι λαμβάνει ἐκ τῆς Υἱῆς καὶ ἡμᾶς μὲν ἔτω περὶ τῆς Θεῆς φθέγγεσθαι νοεῖσθαι γε μὴ τὸ λεγόμενον ἐχὶ κατὰ τρόπον ἀνθρώπινον, ἀλλὰ κατὰ λόγον τῷ ἐν ἡμῖν διάνοιαν ὑπερβαίνοντα: „Ταρατλέσθω δὲ „μηδεὶς, ὅταν ἐν τέτοις ἀκῆῃ τὸ τῆς λήψεως ὄνομα, διενθυμείσθω δὲ μᾶλλον ἐκείνο· δράσαιε γὰρ ἂν ὁρθῶς: ὅτι πάντα τὰ „περὶ Θεῆς, λαλεῖται μὲν κατ' ἡμᾶς, νοεῖται γε μὴ ἐχ' ἔτως, „ἀλλ' ὑπὲρ ἡμᾶς,„ Καὶ ἐν Βιβλ: δὲ ΙΑ'. τῶν εἰς τὸν Ἰωάννῳ, Κεφαλ: Α'. „Εἰ δὲ παχυτέρας τὸ τοῖστον ἐσημάνθῃ φωναῖς, „ὀφέντες τὸ σκανδαλίζεσθαι, δικαίως ἂν μᾶλλον τῆς ἐαυτῶν „γλώττης αἰτιασάμεθα τῷ πτωχείαν, ἐκ ἀντεχέσεως εἶπῃν τὰ „Θεοπρεπῆ, κατ' ὃν ἔδει τρόπον. Ποῖος γὰρ λόγος ἐκ ἐλάτλων „ἐστὶ τῆς ἀρρήτου φύσεώς τε καὶ δόξης,; Οὐκ ἄρα ἐκείνα: „ἐκ „τῆς ἐμῆς λήψεται,;: περὶ τῆς τῆς Πνεύματος Ἐκπορεύσεως ἐκ τῆς Υἱῆς, ὁ Κύριλλος ἐξεδέχετο· ἄλλως καὶ γὰρ, ἐκ ἂν δήπερ καταχρησικώτερον εἰρηκῶς εἶη, τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον λέγεσθαι λαμβάνειν ἐκ τῆς Υἱῆς, ἢ καὶ δυχερῶς πάνυ λεχθὲν ἀναπτύσσεσθαι. Καὶ γάρ τοι, καὶ τῶν παχυτέρων ἄνευ ῥημάτων, καὶ δίχα τῆς τῷ ἔνδειαν αἰτιασθαι τῆς γλώσσης, ὡς νῦν ποιεῖ, προχέρως δήπερ ἐν δυσὶ ῥήμασιν ἐκείνο σαφέςατα ἀπέδειξεν ἂν ἀναπτύσσεσθαι· ἀμέλει τοι, τὸν νῦν ἐπειπὼν εἶναι τῆς λεγομένης, ὅτι ἐκ τῆς Υἱῆς τὸ Πνεῦμα προέβληται, καθάπερ ἔν καὶ Λατῖνοι, ταύτῳ εἶναι τῷ τῶν ῥημάτων ἐκείνων διάνοιαν, τῷ μάλα πρᾶπτον τε καὶ προχειροτάτῳ διατείνοντα. Πρὸς τέτοις ἐν τῷ ΙΑ'. τῶν εἰς τὸν Ἰωάν: Βιβλίων, Κεφαλ: Β'. „Λαμβάνειν τε ἔτω τὸ Πνεῦμα „Φαμέν ἐκ τε τῆς Πατρὸς καὶ τῆς Υἱῆς τὰ αὐτῶν, ἐχ' ὡς ποτὲ „μὲν ἐκ ἔχον τῷ ἐνῆσαν αὐτοῖς γινῶσιν τε καὶ διώαμιν, ἔχον „δὲ τότε μόλις ὅταν νοῆται λαμβάνον· αἰεὶ γὰρ σοφὸν καὶ διωα- „τὸν τὸ Πνεῦμα ἐστίν,„ (Καὶ ἐν τῷ Α'. Κεφαλαίῳ: ) „Υποτο- „πητέον δὲ ἑδαμῶς ἰχὺος ἐπιδεᾶ τῆς ἐμφύτης καὶ φυτικῆς καθε- „στάναι τὸν Παράκλητον, τῆς τῆς Πνεύματος ὡς, εἰ μὴ λάβοι „τυχὸν, μηδ' ἂν ἐξαρκέσαιν ἐαυτῷ διώασθαι πρὸς τῷ τῶν Θεῶν „κατορθωμάτων ἐνέργειαν ἀποτελεσικῶς,„ Εἰ ἔν τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ ἐπιδεῆς λήψεως ὡς πάντα δὲ ἤδη ἔχον ὑπάρχει ἃ ἐκ τῆς Πατρὸς λαμβάνει καὶ τῆς Υἱῆς· καί τοι τῆς Πατρὸς καὶ τῆς Υἱῆς μὴ διδόντων· δῆλον δήπερ τὸν Κύριλλον, τὰ τῆς Χριστοῦ ῥήματα ἐκείνα, „ἐκ τῆς ἐμῆς λήψεται,;: ἐχὶ τῷ λόγῳ τῆς Αἰτίας ἐξεληφέναι· ἐ γὰρ ἄπερ ὡς ἔχον ἤδη τὸ Πνεῦμα, ταῦτα ἐκ τῆς αὐτῆς Αἰτίας, ἢ Αἰτίας, εἶχε λαβεῖν.

Τόμ: Β'.

Β β β

Ἀλλὰ

Ἀλλὰ καὶ τὰ Εἴςσεβίον τελούταῖον τῷ Ἐμιοσιωῶ ῥήματα, ὡς σαφῆ τε καὶ πρόδηλα, ἐν Κυριακῇ Δ'. μετὰ τὸ Πάχα: „Ταῦτα δὲ ἐπειδὴ τοῖς τρισὶ κοινὰ, καὶ ἑσιωδῶς κοινὰ, ἠδωάτο „εἰπεῖν ὁ Κύριος, ἑπερ ἠθέλεν: ὅτι ἐκ τῷ ἐμῷ, καὶ τῷ ἐν αὐτῷ „λήψεται, καὶ ἀναγγελεῖ ὑμῖν. Καὶ γὰρ, καὶ ὁ Υἱὸς ὅτε ἐδί- „δάσκει, καὶ ἐκ τῷ ἰδίῳ, καὶ ἐκ τῶν τῷ Πατρὸς, καὶ τῶν τῷ „Ἁγίῳ Πνεύματος ὄντων ἐλάμβανε· μία γὰρ ἐστὶν ἡ τῶν τριῶν „ἀπάντων σοφία καὶ ἡ ἀλήθεια. Διὸ καὶ αὐτὸς ἔφασκεν: ἡ „ἐμὴ διδασκαλία ἐκ ἑστὶν ἐμῇ,,. Πῶς ἔν, εἰ διὰ τῆς Προφάσεως: ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῷ Υἱῷ λαμβάνει, ἡ ἐκ τῷ Υἱῷ ὑπε- δηλῆτο Ἐκπόρουσις τῷ Πνεύματος· πῶς εἶχε λέγειν Εὐσέβιος, εἴτε τὸν Υἱὸν ἐκ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος ἐληφέναι, εἴτε δὴ καὶ τὸ Πνεῦμα αὐτὸ ἐξ ἑαυτοῦ; Μὴ γὰρ ἄρα, εἴθ' ἑαυτῷ, εἴτε τῷ Υἱῷ ἀρχὴ καὶ αἰτία τὸ Πνεῦμα γένοιτο; Οὐκ ἐν ἄρα ἡ Πρό- τασις ἐκείνη, ὅτι „τὸ Πνεῦμα ἐκ τῷ Υἱῷ λαμβάνει,,: διερμη- νυθῆναι ἂν ἔχοι περὶ τῆς τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος ἐκ τῷ Υἱῷ Ἐκ- πορεύσεως.

Ἐρῶς Α': Εἰ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκ τῷ Υἱῷ πάντα λαμ- βανει, (ὡς Ἀθανάσιος (26) ἀνωτέρω ἐδίδασκε·) λαμβάνει πάντως καὶ τὸ εἶναι κατὰ δὲ τὸ ἐπόμενον, καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ ἐκπορεύε- ται. — Ἀλλὰ γὰρ ὁ Σωτὴρ αὐτὸς δι' ἐκείνων: „ἐκ τῷ ἐμῷ λή- „ψεται, καὶ ἀναγγελεῖ ὑμῖν,,. ἐννοῶμαι δέ κινυσι τῷ τῷ Πνεύ- ματος λῆψιν, περὶ ἐκείνων μόνων, ἃ κατὰ τῷ οἰκονομίαν, ἦτοι τῆς ἡμῶν χάριν σωτηρίας τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἀποκαλύπτειν ἔμελλεν, ἢ ἐπιτελεῖν· τέτοις γὰρ ἐνάριθμα ὡς, καὶ τὰ ἀναγγε- λεῖσθαι μέλλοντα τοῖς Ἀποστόλοις ὑπὸ τῷ Πνεύματος. Καὶ πάντα ἄρα, ὅσα πρὸς ἡμετέραν σωτηρίαν ἀποκαλύπτει, ἢ ἐκτελεῖ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ἐκ τῷ Υἱῷ λαμβάνει. Σὺ γε μὴ τέτοις, ἐδό- λως ἔχει καὶ ἡ τῷ Πνεύματος ἑστία συμπροσλαμβάνεσθαι. Πα- ρεκτὸς δὲ τέττα, καὶ ὁ Υἱὸς αὐτὸς λαμβάνει (ὡς ἀπεδείχθη) παρὰ τῷ Πνεύματος· ὅπερ ἐκ ἄλλως ἐκδεκτέον, ἢ περὶ ὧν ὁ Σωτὴρ, τῆς ἡμῶν ἔνεκα Σωτηρίας, ἦτοι ἀπεκάλυψεν ἡμῖν, ἢ διὰ τῆς αὐτοῦ Θεότητος ἐνεργῶν διεπράξατο· ἔ γὰρ δήπερ, καὶ ἢ τὸ εἶναι λαβὼν ἔχει παρὰ τῷ Πνεύματος. Ἐνθεντοι παρα- πλησίως καὶ ΚΥΡΙΛΛΟΣ ὁ Ἀλεξανδρεὺς, περὶ τῆς χρονικῆς ταύτης τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱῷ λήψεως πραγμα- τούμενος, τῷ λόγῳ μόνον τῆς γνώσεώς τε καὶ τῆς δυνάμεως αὐτῷ ἐκτίθουσιν, ἐν τῷ ΙΑ'. Βιβλ: τῶν εἰς Ἰωάν: Κεφαλ: Β'. „Λαμ-

(26) Πῶς δὲ Ἀθανάσιος ἀπλῶς „πάντα,, ἐκ τῷ Υἱῷ λαμβάνειν τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ἐδίδασκεν;

„Λαμβάνειν, φησιν, ἔτω τὸ Πνεῦμα φάμεν, ἔκτε τῷ Πατρὶ  
καὶ τῷ Υἱῷ τὰ αὐτῶν, ἔχ' ὡς ποτὲ μὲν ἐκ ἔχον τὴν ἐνδοσαν  
αὐτοῖς γινώσκιν τε καὶ δώαμιν, ἔχον δὲ τότε μόλις ὅταν νοῆται  
λαμβάνον,,. Διὸ, ἐδ' οἱ τῆς Καθολικῆς Ἐκκλησίας Πατέρες,  
καὶ τὴν ἐσίαν ἐκ τῷ Υἱῷ λαμβάνειν τὸ Πνεῦμα ποτὲ παρέ-  
δωκαν.

Ἐρεῖς ἔτι: Εἴπερ ἐκ τῷ Υἱῷ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα τὴν γινώσκιν  
λαμβάνει κατὰ τὰ τῷ Σωτῆρος ῥήματα, λαμβάνει πάντως καὶ  
τὴν ἐσίαν ἐκ τῷ Υἱῷ. Ἐν γὰρ τοῖς Θεοῖς ἡ γινώσκιν τῇ ἐσίᾳ  
ταυτίζεται. Καὶ ἀληθὲς μὲν δῆπρ τὴν ἐσίαν τῷ Ἁγίῳ Πνεύμα-  
τος, τῇ ἐν αὐτῷ ἐσιώδῃ γνώσει εἶναι τὴν αὐτῇ ψυδὲς δὲ ὅμως  
τὸ τὴν ἐσιώδῃ γινώσκιν τὸ Πνεῦμα λαμβάνειν, ἔπερ ἡμῖν μετα-  
δίδωσι· μεταδίδωσι δ' ἐ πάντως ἡμῖν τῆς ἐσιώδῃς γνώσεως τῆς  
ἐαυτῷ· ἀλλὰ μόνον, ἀλλὰ τῷ τῆς γνώσεως μόνον χαρίσματος.  
Χαρίσματα δὲ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος, αἱ αὐτῷ ἐνέργειαι εἰσὶν (αἱ  
πρὸς ἡμᾶς)· καὶ ἐπομένως, κτιστὰ ἅτλα εἰσὶν. Οὕτω γὰρ ὁ  
Μέγας ΒΑΣΙΛΕΙΟΣ ἐν τῷ Ε'. τῶν κατ' Εὐνομίαν, ἐν τῷ Β'.  
Τόμ: τῶν Συγγραμ: Σελ: 141. (27) „Τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον,  
ὡς Πνεῦμα Θεῷ, καὶ ἐξ αὐτῷ πεφωδός, αἷτιον αὐτὸν ἔχον,  
ὡς πηγὴν ἐαυτῷ, καὶ κέθεν πηγάζον· πηγὴ δὲ καὶ αὐτὸ τῶν  
προσηρμένων ἀγαθῶν. Ἀλλὰ τὸ μὲν ἐκ Θεῷ πηγάζον, ἐνυπό-  
στατον εἶσι· τὰ δὲ ἐξ αὐτῷ πηγάζοντα ἐνέργειαι αὐτῷ εἰσὶ,,.  
Λαμβάνει τοίνυν τὸ Πνεῦμα ἐκ τῷ Υἱῷ τὸ τῆς γνώσεως χά-  
ρισμα μόνον, ὃ τοῖς πιστεύουσι διανέμεται. Οὐκ ἀληθὲς δὲ τὸ τῆς  
γνώσεως χάρισμα, ἥτοι τὴν γινώσκιν, λόγῳ τοιῷδε ἐννοημένῳ,  
τὴν ἐσίαν εἶναι τὴν τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος· ἡ μὲν γὰρ τῷ Πνεύ-  
ματος ἐσίᾳ ἄκτιστος, τὰ δὲ τῷ Πνεύματος χαρίσματα τῇ κτιστῇ  
φύσει συγκαταλέλεκται. (28) Τὸν αὐτὸν δὲ τρόπον καὶ ὁ Υἱός,  
τὴν

(27) Κατὰ τὴν Γαβριήλ "Εκδοσιν Τόμ: Α'. Σελ: 322.

(28) Τὰ τῷ Πνεύματος χαρίσματα τῇ κτιστῇ φύσει συγκαταλέλεκται, κατὰ γε τὰ ἀπο-  
τελέσματα, ἐμὴν δὲ κατὰ τὴν ἐνέργειαν τῆς διωάμεως, δι' ἧς ἐκεῖνα περαίνονται·  
πρὸς δὴ τῆς τὴν ἀκριβεστέραν διασάφειν· σημειωτέον, ὅτι τὸ Θεῶν τε καὶ Πα-  
ναγίου Πνεύματος, θεωρεῖται μὲν καὶ κατ' ἐαυτὸ ἐνυποστάτως, οἷα περ ἐν τῶν ἐν τῇ  
Θεαρχικῇ Τριάδι Πρόσωπον ὑποστατικόν· θεωρεῖται δὲ καὶ κατὰ τὰς ἐνέργειας τὰς  
ἐξ αὐτῷ, ὡς ἐν τῷ ῥηθέντι χωρίῳ διδάσκει ὁ ἐρανοφάντωρ Βασίλειος· καὶ κείνως  
μὲν τὸ Πνεῦμα νοούμενον, ἐκ τῷ Θεῷ καὶ Πατρὶ ἐκπηγάζον εἶναι, αὐτὸν μόνον ὡς  
πηγὴν ἐαυτῷ τῷ εἶναι ἔχον αἷτιον· ἔτω δὲ τοῖς ἐ μόνον ἐκ τῷ Πατρὶ ἐς πρόβ-  
λυσον, ἀλλὰ καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ, καὶ ἐξ ἐαυτῷ δὲ ἐχ' ἡκιστα· οἷα πηγὴ καὶ αὐτὸ τῶν  
ἐξ ἐαυτῷ χαρισμάτων τοῖς ἀξίοις γινόμενον. Αἱ μὲν τῷ Πνεύματος ἐνέργειαι  
αὐταί, αἱ ἐκ τῆς Τριάδος ὅλης κοινῇ προπηγάζουσαι· (ταυτὸν δὲ εἰπεῖν τὸ Πνεῦ-  
μα, κατὰ τὰς αὐτῷ ποικίλας δωρεὰς ἐννοούμενον) διτλῶς ἂν καὶ αὐταὶ θεωρηθεῖεν·  
ἥτοι γὰρ κατὰ τὸν ἐξ ἑ ὅρον, ὡς ἔτω φῶμαι, τῆς κατὰ τὴν Θεότητα ἐξ ἧς  
προΐασι, καὶ ἐν ἧς φύσει τε καὶ ἀμεθέκτως ἐνδοσαι τῆς πανουργικῆς διωάμεως αἰεὶ  
ἀχώριστοι εἰσὶν· ἡ γὰρ κατὰ τὸν ὅρον τὸν πρὸς ὄν, τὸν ἐκτὸς ὄντα τῆς Θεότητος·  
λέγω τὴν κτίσιν, ἐφ' ᾧ τὰ Πνευματικὰ ἐνεργήματα μεταβαίνει ἀμεταβάτως,  
καὶ



τιῶν γινώσκων, ἤτοι τιῶν σοφίαν ὡς ἡμῖν δίδωσι, λαμβάνει ἐκ τῆς Ἁγίας Πνεύματος, ὡς ἀνωτέρω δεδεικται· ἐμὴ δ' ἐντεῦθεν καὶ ἔπεται, (καί τοι τῆς γνώσεως ἐπὶ τῶν Θεῶν τῇ ἐσὶ ταυτίσθης) τὸ λαμβάνειν τὸν Υἱὸν τιῶν ἐσὶ ἐκ τῆς Ἁγίας Πνεύματος. Διατὶ δὲ ἄρα ἡ σωεπεία αὕτη ἔχ' ὑγιαίνει; εἰ μὴ ὅτι, ἡ μὲν ἐσιώδης γινώσκω, ἡ αὕτη πάντως τῇ ἐσὶ ἐστὶ τὸ δὲ τῆς γνώσεως χάρισμα ἔχ' ἔτως. Ἀλλὰ γὰρ ἔχ' τιῶν ἐσιώδης γινώσκων, τὸ δὲ χάρισμα τῆς γνώσεως μόνον ἐκ τῆς Ἁγίας Πνεύματος ὁ Υἱὸς λαμβάνει, καὶ τέττα μόνον ἡμῖν μεταδίδωσι.

Καὶ ἐντεῦθεν ὁμοίως περιτρέπεται τῶν τινὸς Ἰησοῦτων (δηλ: τῆς Κιχωβίς) τὰ Ἐπιχειρήματα, τὰ περὶ τὸ τέλος τῆς Α'. τῶν Ἀπαντήσεων ἀνωτέρω ἡμῖν προτεινόμενα. Ἐπιχειρῶν γὰρ ὡς: „Οὐπερ ἐστὶ πάντα ὅσα ἔχει ὁ Πατήρ, ἐξ ἐκείνων τὰ Ἁγίον „Πνεῦμα λαμβάνει τὸ λαλεῖν εἰδέναι, καὶ τῷ αὐτῷ ἐκείνῳ ταυτίσθαι. Ἐμὰ γὰρ ἐστὶν ὅσα ὁ Πατήρ ἔχει, φησὶν ὁ Υἱός. „Ἄρα.... Πάλιν: Ἐξ ἧς τὸ Πνεῦμα λαμβάνει τιῶν σοφίαν, καὶ „τιῶν τῆς φωτίζαν τῆς Ἀποστόλης δωάμιν, ἐξ αὐτῆς λαμβάνει τιῶν „τῆς

καὶ ἐπαναπύεται μεθεκτικῶς. Καὶ κατὰ μὲν τὸν πρῶτον λόγον, αἱ τῆς Πνεύματος ἐνέργειαι, ἥπερ ἐκ τῆς Θεῆς προῖσται, καὶ αὐτῷ αἰδίως τε καὶ ἀδιαζύκτως προσῆσαι, ὡς τελειότητες τῆς ὑπερθέας φύσεως ἀδιάστατοι, ἐκ ἀν' βλασφημίας ἀνευ καὶ ἀτοπίας τῆς ἐχάτης συγκαταλεχθῆεν ποτὲ τοῖς κτίσμασι· πάντα γὰρ τὰ ἐπὶ τῆς Θεῆς ἀκτίσας ἐστὶν, ὡς αὐτὸς. Κατὰ δὲ τὸν δεύτερον λόγον αἱ αὐταὶ ἐνέργειαι, ἅτε δὴ πῶς τῇ κτίσει ἐσιώσει μεταδιδόμεναι, καὶ παρὰ ταύτης ἐν χρόνῳ μεταλαμβάνονταί τε καὶ μετεχόμεναι· ἢ, ἐρρότερον ἴσως εἰπὲν· αὐτὰ τὰ διὰ τῶν ἐνεργειῶν ἐκείνων ἀποτελέμενα, ἐδὲν ἀπεικὸς εἰ παρωνύμως ἀπὸ τῆς κτίσεως τῆς δι' αὐτῶν τιῶν κρείσσονα ἀλλοίωσιν ἐπιδεχόμενης, καὶ κτίσας λέγοιτο. Ἀλλὰ γε διὰ τῆς ἀπλυστέρως, καὶ μὴ ἐπ' ἀκριβὲς διασέλλειν τὰς προτεθείσας διασας ἐννοίας οἷος τε ὕψος, τὸ κτίσιον ἐνέργειαν Θεῆς ὀνομάζειν ἐκ ἀπρόσκοπον, ἐδ' ἀκρίδιον· ὁμοίως δὲ καὶ χρονικῶς εἰς ταῦτό γὰρ συμπίπτει τό, τε κτίσιν εἶναι, καὶ τὸ ἐν χρόνῳ· καθάπερ ἐν καὶ τὸ ἀπ' αἰῶνος ἀκτίσιν ἐστὶ, καὶ ἀνάπαλιν. Διόπερ καὶ πεφυλαγμένως λίαν τῇ λέξει ὁ Μέγας προσέχε Βασιλεὺς. (ἐνθ: ἀνωτ:) Καταλέξας γὰρ τὰ ἀγαθὰ τῆς Πνεύματος: „Ἀγάπη, χαρὰ, εἰρήνη μακροθυμία, „κρηστικότητα, σοφία, σωεσις, βελή, ἀσφάλεια εὐσέβεια, γνώσις, ἀγιασμός, ἀπο- „λύτρωσις, πίσις, ἐνεργήματα δωάμεων, χαρίσματα ἰαμάτων, καὶ ὅσα τέτοις „παραπλήσια· ἔχεται δὴ τῆς ἀρχῆς ἐδραίως ἐξ ἧς αὐτὰ προῖσται καὶ παρ' αὐτῶν „πάντα τέλεια ἐστὶ (φησὶ) καὶ ἐδὲν ἔχον ἐστὶ (τὸ Πνεῦμα) ἐπικτήτων, ἀλλ' αἰδίως „πάντα ἔχον. Δεῖσαν δὲ, κατὰ τιῶν προκειμένῳ αὐτῷ θεωρίαν, καὶ ἐπὶ τιῶν τῶν τοιούτων ἀγαθῶν μεταδόσιν μεταβίβαι, ἐδ' ἔτως τῆς ἐννοίας τῆς, ἐδὲν αὐτὰ πηγάζει, ἀποσιῶσαι θαρρῆς, ἐδ' ἀποτολμᾶ περὶ τέτων, ἀπὸ τῆς πέραςτος πρὸς ἡ μεταδόσις, φθέγγεσθαι: ἀπέχει δὲ καὶ ταύτη τῷ τῆς κτίσεως ἐνόματι ἀποχερή- „σαθαι, δέει τῆ μὴ ἐπὶ τιῶν πηγῶν τὸ βλάσφημον παρὰ τινος δι' ἀγνοίαν ἐπα- „ναχθῆναι: „Καὶ δὴ, τὰ ἐξ αὐτῆς πηγάζοντα, ἐνέργειαι (φησὶν) αὐτῆς εἰσί. (Καὶ „προσίθῃσι) τῆτο τὸ Πνεῦμα τὸ Ἁγίον ἐξέχεεν ἐφ' ἡμᾶς πλυσίως ὁ Θεός. „Ἐξέχεεν, ἐκ „ἐκτίσεν, (εἰ καὶ ἐπὶ τὸ κτίσμα ἐξέχεεν) „ἐχαρίσατο, ἐκ „ἐποίησεν, (καὶ εἰ τῷ ποιήματι ἐχαρίσατο) „ἐδωκεν, ἐκ „ἐδημιούργησε, (καὶ εἰ τῷ δημιούργηματι ἐδωκεν.) Ἀλλὰ γὰρ καί τοι τὸ μεθεκτικὸν εἰς κτίσμα, εἰ ποιή- „μα, εἰ δημιούργημα ἐστὶν ἢ γε μὴν μέθεξις, καὶ ἡ μετεσσία, καὶ ἡ, ὡς ἔτως εἰπὲν τῆς ἐνεργήματος ἐφάρμοσις καὶ ἀποπεράτωσις, ἢ ἐν τῷ κτίσματι καὶ ποιήματι καὶ δημιούργηματι ἐπιτελεσμένη, κτίσιν τι καὶ ποιητὸν ἐστὶ καὶ δημιούργητὸν τῶ λόγῳ τῆς μετέχοντος καὶ διὰ τῆτο καὶ ἐν χρόνῳ πάντως καὶ ἐκ αἰώνιον.



„τῷ ἑσείαν. ταυτῶν γὰρ ἐπὶ τῷ Θεῷ τὸ εἶδέναι, καὶ τὸ εἶναι.  
 „Ἐκ τῷ Υἱῷ δὲ λαμβάνει τὸ Ἅγιον Πνεῦμα τὴν σοφίαν καὶ τὴν  
 „τῷ φωτίζειν διδάμιν, ὡς ἡ ἀντολήθαι μαρτυρεῖ,· Ἄρα κτ: . . . —  
 Τῷ ὄντι μὲν ἔν, ἡ ἐσιώδης γνώσις τε καὶ ἐπιστήμη, καὶ ἡ διδά-  
 μιν τῷ φωτίζειν καὶ τῷ λαλεῖν, ταυτίζοντα τῇ ἑσείᾳ· ἐκ ἀληθὲς  
 δὲ τὸ, τὴν ἐσιώδην φέρει γνώσιν, ἐκ τῷ Υἱῷ εἰληφὸς ἔχον τὸ  
 Πνεῦμα τὸ Ἅγιον· ἢ, παρὰ τῷ τὰ τῷ Πατρὶ πάντα ἔχοντος  
 ἔχοντα τὴν ἐσιώδην σοφίαν καὶ τὴν διδάμιν τῷ λαλεῖν. Ἄ γὰρ  
 τὸ Πνεῦμα εἰληφεν ἐκ τῷ Υἱῷ, τὰ τῆς γνώσεως χάρισμα ἔστιν.  
 οἷον τὸ τῷ φωτισμῷ κτ: Κατὰ δὲ τὸν δετὸν νῦν, τῇ τῷ φω-  
 τισμῷ λ. χ. διδάμιν, τῇ τῶν γλωσσῶν, τῇ τῆς γνώσεως, ἔχον  
 τὸ εἶναι ἐπὶ τῶν Θεῶν ταύτων· ἢ παρὰ, ἐκ τῶν ἀνωτέρω  
 δεικνύοντων, καὶ ὁ Χριστὸς ὁμοίως λαμβάνει παρὰ τῷ Ἁγίῳ Πνεύ-  
 ματος τὸ λαλεῖν, τὸ εἶδέναι, τὴν σοφίαν, τὴν τῷ φωτισμῷ διδά-  
 μιν· ἀλλ' ἐκ ἐντεῦθεν ἔπειτα καὶ τὸ τὴν ἑσείαν λαμβάνειν ἐκ  
 τῷ Πνεύματος τὸν Υἱόν. Διατὶ δέ; εἰ μὴ ὅτι, ἄλλο μὲν τὸ  
 δῶρον λ. χ. τῆς γνώσεως, ἄλλο δὲ ἡ ὑποστατικὴ γνώσις ἔστιν.  
 Ἀπεφάσκομεν ἔν ἀνωτέρω τὰ Ἐπιχειρήματα ἀναφέροντες ἐκεί-  
 να, ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα λαμβάνει ἐκ τῷ Υἱῷ· ἀλλὰ τῷ κυ-  
 ριωτάτῳ τότε προσέχοντες ἡμεῖς σκοπῶ τῶν ῥημάτων: „ἐκ τῷ  
 „ἐμῷ λήψεται,·: καὶ ὃν τὸ Πνεῦμα πάντως ἐν ἐκείνοις νοεῖται  
 λαμβάνειν παρὰ τῷ Πατρί· ἐνθεντοὶ καὶ σωμαπεφάσκομεν ἅμα,  
 καὶ τὸ ἐκπορεύεσθαι τὸ Πνεῦμα ἐκ τῷ Υἱῷ, κατὰ τὸν τοιόνδε  
 νῦν τὸν τῷ Ἰησοῦ, καὶ ὃν τέτω ἐδόκει, περὶ τῷ Υἱῷ τὰ ῥή-  
 ματα ἐκεῖνα χρῆσαι διερωτῶμεθα.

Ἄλλ' ἀντεποίσεις τὰ ΔΙΔΥΜΟΥ τῷ Ἀλεξανδρέως, (ἐν τῷ  
 Β'. Βιβλ: περὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος:) „Τῷ τὸ Πνεῦμα ἀποφη-  
 „ναμένον ἐν ἐκείνοις τὴν ἰδίαν ἑσείαν λαμβάνειν ἐκ τῷ Υἱῷ· καὶ  
 „γὰρ τοι καὶ ὁ Υἱὸς τὰ αὐτὰ παρὰ τῷ Πατρὶ λέγεται λαμβά-  
 „νειν, ἐν οἷς ὑφῆσεν· ἔδὲ γὰρ ἄλλοτι ἔστιν ὁ Υἱὸς, ὑπεξαίρου-  
 „μένων τῶν ἃ δίδεται αὐτῷ παρὰ τῷ Πατρί· ἔδ' ἄλλητις ἔστιν  
 „ἢ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος ἑσεία, παρὰ τὰ διδόμενα αὐτῷ παρὰ  
 „τῷ Υἱῷ,·. Εἴπερ ἔν ἐκ ἄλλῃ ἢ ἑσείᾳ τῷ Πνεύματος, παρ' ὃ  
 αὐτῷ δίδεται, ἢ παρ' ὃ λαμβάνει αὐτὸ τέτω παρὰ τῷ Υἱῷ· τὴν  
 ἄρα ἑσείαν τὴν ἑαυτῷ λαμβάνει τὸ Πνεῦμα ἐκ τῷ Υἱῷ. — Ἀλλὰ  
 γὰρ τὸν Δίδυμον μὴ συγχωρεῖν τὸ ἐκ τῷ Υἱῷ λαμβάνειν τὴν  
 ἑαυτῷ ἑσείαν τὸ Πνεῦμα, ἐυδελὸν ἐκ τῷ αὐτῷ χωρίῳ, ἐνθα  
 διαρρήδην ἀπόφησιν, ὅτι τὸ Πνεῦμα λαμβάνει ἐκ τῷ Υἱῷ, ὁμο-  
 λογῶν μὴ „κυρίως,·, ἀλλὰ „καταχρησικῶς,·, τέτω λέγεσθαι.  
 Ἔστι δὲ τὰ ἐκεῖνα τοιάδε: „Λαμβάνειν τὸ Πνεῦμα, ὃ τῆς αὐτῷ  
 „φύσεως ὡς, γνώσκων χρεῶν· τὸ δὲ, μηδαμῶς τὸν δίδοντα καὶ  
 „τὸν λαμβάνοντα, ἀλλὰ μίαν τὴν ἑσείαν δηλῶν,·. Ἐντεῦθεν γὰρ

Τόμ: Β'.

Γ γ γ

δη

δὴ τὰ ἀντεπενεχθέντα ὑποσυνάπτει ἐφεξῆς. Εἶτα δὲ, καὶ περαιτέρω πρόεισι λέγων: „Ἐπειδὴ ἄρα φωνὴ πᾶσα ἀνθρώποις, ἔδὲν ἔχει κρίναι ἄλλο παρὰ τὰ σώματα· ἡ δὲ Τριάς, περὶ ἧς, νῦν ὁ λόγος, πάσης ἐνύλες ὑπερίδρυται φύσεως· διὰ τῆτο ἔδὲν ῥῆμα διώταται αὐτῇ κυρίως προσαρμοθῆναι, καὶ τὴν ἐκείνης παρὰ δηλωσάσαι εἶσαν· ἀλλ' εἴ τι ἂν λαλήσαιμεν, καταχρηστικῶς λέγεται καὶ περὶ τῶν ἀσωμάτων ἀπάντων, καὶ περὶ τῆς Τριάδος, μάλιστα, ὅτε φθεγγόμεθα, „ Ἀμέλει τι ὁ νῆς ὁ Διδύμος ἐν τέτοις ἐστίν: ὅτι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον Θεός, ὄν, τέλειον ὄν, μηδὲν δὴ πάντως λαβεῖν ἠδύατο, ὃ πρὶν ἔχον ἐκ ὧ. Τῷ ὄντι δὲ, τὸ ἐκ τῆς Τρίτης μηδὲν λαβεῖν διωηθῆναι τὸ Πνεῦμα, Δίδυμος αὐτὸς ἐπὶ τῶν προἀπομνημονοθέντων προτάξας ἔφασκε: „Τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκ λαμβάνει, ὃ πρὶν ἐκ ἔχεν. Εἰ γὰρ, ὃ πρὶν ἐκ ἔχεν ἔλαβε, μετενεχθέντος ἐπ' ἄλλον τῆ δώρε, κενὸς ἂν χορηγὸς κατέστη, τὸ διανεμηθὲν ἔχεν παυσάμενος, „ Λέγεσθαι δὲ ὅμως τὸ Πνεῦμα λαμβάνειν ἐκ τῆς Τρίτης μὴ κυρίως, καὶ μόνον καταχρηστικῶς, ὡς ἂν ἐντεῦθεν ἀμέλει τοι δῆλον γένηται, μίαν ἐκατέρωθεν εἶναι τὴν εἶσαν, καὶ τὴν ἀντιῶ. Οὐδὲν ἄρα Λατίνος ὀνίνησι Δίδυμος· τίς γὰρ ἡ σωέπειρα; Ἡ τῆς Τρίτης, καὶ τῆς Ἁγίας Πνεύματος εἶσα μία ἐστίν: (τῆτο γὰρ ὧ Διδύμω „τὸ λαμβάνειν τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῆς Τρίτης, καὶ τοι μὴ ἐκ τῆς Τρίτης κυρίως λαμβάνον, „) ἐκ τῆς Τρίτης ἄρα τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκπορεύεται; Τοῖστο γάρ τι τέως τῷ ὄντι ἂν ἐπαχθείη, εἰ τῷ ὄντι λέγοιτο καὶ τὴν εἶσαν τὸ Πνεῦμα λαμβάνειν ἐκ τῆς Τρίτης. Καὶ αὕτη τοίνυν ἰδιαιτέρα τις ἂν εἴη τῶν ῥημάτων ἐκείνων: „ἐκ τῆς ἐμῆς λήψεται, „: διερμηνύσεις. Ἡμεῖς δὲ διὰ τῆτο κατόπιν, ἐν τοῖς τῶν λοιπῶν Πατέρων, καὶ τάδε κατελέξαμεν τὰ τῆς Διδύμου, καθ' ὅτι ἐν τέτοις ὁμολογᾷ: τὸ ἐκ τῆς Τρίτης λαμβάνειν τὸ Ἅγιον Πνεῦμα λέγεσθαι μόνον πρὸς τὴν τῆς ἐνιαίας τῆς Θείας εἶσας παράστασιν.

Ὁ δὲ Ἰησοῦς ἐτι ἐνίσταται (29) ἀντιβάλλων, ὅτι Ἀθανάσιος ἐν ἄλλοις διδάσκει ἐκ τῆς Τρίτης τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον λαμβάνειν τὴν γνῶσιν τῆς ἐν τῇ Σωτελείᾳ Κρίσεως. Τὰ δὲ τῆς Ἀθανασίας ἐν τῷ Δ'. Λόγῳ τῷ κατὰ Ἀρειανῶν, Φύλ: 495. τοιαῦτα: „Εἰ τὸ Πνεῦμα οἶδε, (τὴν ἡμέραν τῆς Κρίσεως) πολλῷ μᾶλλον ὁ Λόγος οἶδεν, ἢ Λόγος ἐστίν, παρ' ἧς καὶ τὸ Πνεῦμα λαμβάνει, „ — Ἀλλ' ἔδὲ Ἀθανάσιος ἐν τέτοις, ἐκ τῆς Τρίτης τὸ Πνεῦμα λαμβάνειν τῆς ἐν τῇ Σωτελείᾳ Κρίσεως τὴν γνῶσιν, ἔφη· ἔδ' εἴπερ ἔλεγεν, ἀτοπὸν τι ἔψοιτο ἂν· ὅπως γὰρ τὴν γνῶσιν τῶν μελλόντων

(29) Ὁ αὐτὸς Κιχώβιος ἐν Ζητήμ: Α'. Σελ: 8.

των ἐκ τῆς Τίθ το Πνεῦμα ἐσὶ λαμβάνον, ἀνωτέρω σιμείδομεν. Ἀμέλειτοι, καθὼς ἐκ τῆς αὐτῆς γνώσεως τῆς ἐν τῷ Τίῳ, ἔχει τε καὶ λαμβάνει τὴν αὐτήν. — Προσέλθῃσι δ' ἔν ὁ Ἰησοῦς: „Οτι „ὁ αὐτὸς Ἀθανάσιος, ἐν τῷ Βιβλ: τῷ περὶ τῆς κοινῆς ἐσίας „τῆς Πατρὸς, καὶ τῆς Τίθ, καὶ τῆς Ἀγίας Πνεύματος, φύλ: 222. „πρὸς γε τὸ τέρμα· διὰ τῶνδε τῶν ῥημάτων: „ἐκ τῆς ἐμῆς λή- „ψεται,,: δέκνυσι τὴν Ἐκ (πρόθεσιν) ἀποδοτέαν εἶναι καὶ τῷ „Τίῳ, καθάπερ ἀποδίδεται τῷ Πατρί,,. — Ἀλλ' ὡς ῥάση καὶ πρὸς τὰδε ἀπαντήσῃεν ἡ ἐπίλυσις, ἔπερ ἂν τὰ Ἀθανασίῳ Βιβλία ἐν χερσὶ παρείη, τῶν δε γὰρ πρὸς τὸ παρὸν ἡμεῖς ἀμοι- ρῶμεν. (30)

Ἐνθεν-

(30) Ἀλλ' ἡμῖν τὰ τῆς Ἀθανασίῳ τῆς ἀνὰ χεῖρας ἐστὶ, καὶ θαυμάζειν ἔπεισιν, ἃ τι ἐκ τῆς ἀπομνημονεύοντος χωρί, συμβαλλόμενον πρὸς τὴν ὑποθάλαπαι δοξασίαν ὁ Ἰησοῦς, ἐκτρίψῃεν ἤλπισε. Καί τοι γε ἄλλως, καὶ Τεγεδίῳ πελέκει ἀντὶς ἐνταῦθα χρήσαστο, καταφρονήσας τῆς προτεθέντος, καὶ σφόδρα εἰκότως. Οὐδὲ γὰρ τῆς Θεασεῖς Πατρὸς εἶναι τὸ Σύγγραμμα ἐκεῖνο καθωμολόγηται, ὡς μὴδὲ παρά τινος τῶν παλαιότερων ἀπομνημονεύον, μὴδ' ἐν τοῖς Ἀρχαιοτέροις τῶν σωζομένων Κω- δίκων ἐμφερόμενον· καὶ μὴδὲ κατὰ τὴν Ἀθανασίῳ δὲ φράσιν φθηνόμενον· καὶ κατὰ τῆς Ὀριγένης δεινῶς καταφερόμενον, ἔπερ ἐπεικέρειον Ἀθανάσιος ἐμνήθη, εἴποτε μέμνηται· καὶ κατὰ τῶν Ὀριγενιστῶν ἀποφαινόμενον· καὶ ἔστιν ἃ, καὶ ἐκ τῶν πρὸς Ἀντίοχον Ἐρωτημάτων ἀναφέρειν, τῶν συγγραφεῶν πολλῶν ὕστερον ἐοι- κότων· καὶ μὲν δὴ καὶ κῆφα τὴν κομιδὴν καὶ παιδαριάδην περιέχον, καὶ Ἀθανασίῳ ἡκιστα ἄξια. Ἐπὶ δὲ πᾶσι, καὶ τὴν εἰς τὸ Ἅγιον Πνεῦμα βλασφημίαν, περὶ ἧς ὁ Κύριος ἐν Εὐαγγελίοις, ἄλλως πῶς, ἢ ὡς Ἀθανασίῳ ἐν τῇ πρὸς τὸν Σεραπίωνα Ἐπιστολῇ ἐδόκει, διεκρίνωμεν. (Ὅρα Δεπῖνον ἐν τῇ Νέᾳ Βιβλιοθήκῃ τῶν Ἐκκλη- σιας: Συγγραφ: ἐν Τόμ: Β'. Σελ: 40. Καὶ Γυλλέμον Καβέν ἐν τῇ Ἰσορ: τῶν Συγγραφ: τῶν Ἐκκλησιας: Τόμ: Α'. Σελ: 194. Καὶ Κασιμίρον Ὁσδῖνον ἐν τοῖς Ὑπομνήμ: Τόμ: Α' Στήλῃ 331. 332. Καὶ Φαβρίκιον ἐν τῇ Γραμ: Βιβλιοθ: Τόμ: Ε'. Σελ: 306.) Ἀλλὰ γὰρ καὶ εἰ τὴν τοιάνδε τῶν ἐκ τῆς Γραφῆς μαρτυριῶν Συλλογὴν, περὶ τῆς κατὰ φύσιν κοινωνίας τῶν ὑπερθέων Προσώπων τῆς Μεγάλης εἶναι συγχωρήσασμεν Ἀθανασίῳ, ἔδεν ἔδ' ἐξ αὐτῆς ἐντεῦθεν τῷ Ἰησοῦ πρεσπι- γενήσεται ὅφελος. Πρόκειται γὰρ τῷ Συγγραφόντι, (ὅς τις ποτ' ἂν ἦ) ἐν ἐκεί- νοις, κατὰ τῶν, τὸ μὲν „ἐξ ἑ,, τῷ Πατρὶ ἀποδιδόντων, τὸ δὲ „δι' ἑ,, τῷ Τίῳ, ὡς ἔλατον· τὸ κοινόν τε καὶ ἀδιάφορον ἀποδείξαι τῆς τῶν Προθέσεων τέτων ἐπὶ τῶν τριῶν Θεαρχικῶν Προσώπων χρήσεως, ἐν οἷς μάλιστα περὶ τῶν μεταβατικῶν ἐνεργημάτων ὁ λόγος, τῶν πρὸς τὰ ἐκτὸς τῆς Θεότητος. Ἐνθεν τοι καὶ τὸ „δι' ἑ,, λέγεσθαι καὶ ἐπὶ τῆς Θεῆς καὶ Πατρὸς ἐκ Μαρτυριῶν Γραφικῶν παραστήσας πρῶ- τον, ἐπὶ „τὸ ἐξ ἑ,, μεταβαίνει, καὶ ἔδεν τι ἥτιον λέγεσθαι καὶ τῆτο διδάσκει καὶ ἐπὶ τῆς Τίθ, καὶ ἐπὶ τῆς Ἀγίας Πνεύματος: „Καὶ γὰρ τοι, περὶ μὲν τῆς Τίθ ἐρη- „ται, φησὶν, ὅτι καὶ „ἐκ τῆς πληρώματος αὐτῆς,, πάντες ἐλάβομεν καὶ ὅτι ἐγὼ „διώαμιν „ἐξ αὐτῆς,, ἐξεληθῶσαν· καὶ δὴ, καὶ ὅτι τὸ Πνεῦμα „ἐκ τῆς ἐμῆς,, λή- „ψεται,,. Τελούταιον δὲ προσέλθῃσιν, ὡς καὶ ἐπὶ τῆς Ἀγίας Πνεύματος λέγεται, ὅτι ὁ ἀπείρων εἰς τὸ Πνεῦμα, „ἐξ αὐτῆς,, θείσει ζωὴν. „Καὶ τὸ τῆς Ἰωάννης „ὁ ἐπάγει: γινώσκουμεν ὅτι ἐν ἡμῖν ἐστὶν ὁ Θεός, „ἐκ τῆς Πνεύματος,, αὐτῆς, ἢ „ἔδωκεν ἡμῖν. Καὶ τὸ ὑπὸ τῆς Ἀγγέλης ρηθέν: ὅτι τὸ ἐν αὐτῇ γεννηθὲν „ἐκ Πνεύ- „ματος,, ἐστὶν Ἀγίος. Καὶ τὸ ὑπὸ τῆς Κυρίως: ὅτι τὸ γεγεννημένον „ἐκ τῆς Πνεύ- „ματος,, Πνεῦμα ἐστὶν. Ὁ μὲν ἔν Ἰησοῦς, ἀποδοτέον, φησὶ, τὴν „ἐκ,, τῷ Τίῳ, „καθάπερ καὶ τῷ Πατρὶ ἀποδίδεται,,. Μενῶν γε: ἀποδοτέον δὴ καὶ αὐτοὶ φημὲν, ἀλλ' ἔχῃ κατὰ τὸν αὐτὸν νόον: ὥς καθάπερ ἐκ τῆς Πατρὸς τὸ Πνεῦμα, ἔτω καὶ ἐκ τῆς Τίθ ἐκπορεύεται. Ἀλλ' ἐκπορεύεται μὲν „ἐκ τῆς Πατρὸς,, αὐτό· καὶ λαμβάνειν δὲ καὶ τὰς δωρεὰς ὡς χορηγεῖ τοῖς πιστεύοντι, καὶ τὰς ἐνεργείας καθ' ἃς αὐτοῖς κοινωνεῖται. „Ἐκ δὲ τῆς Τίθ,, λαμβάνειν μὲν ταύτας διὰ τὸ ταυτὲν τῆς

Γ γ γ 2

"Ενθεντοι ὁ αὐτὸς ἔτι ἀντιπροτείνει καὶ τὰ Κυρίλλου, ἐκ τῆς ΙΑ'. Βιβλίου τῶν εἰς τὸν Ἰωάννην, Κεφαλ: Α'. ἐν οἷς διὰ δὴ τῆτο, φησὶ, λαμβάνειν τὸ Πνεῦμα ἐκ τῆς Υἱᾶς, ὅτι ὁμοῦσιον ἐστὶ τῷ Υἱῷ καὶ Θεοπρεπῶς ἐκπορεύεται δι' αὐτῆς, πᾶσαν τὴν αὐτῆς ἐπὶ πᾶσι δώκειν ἔχον. Τέτοις δὲ παραπλήσια ἔχει καὶ ΒΕΛΛΑΡΜΙΝΟΣ, ἐν οἷς Βιβλ: Β'. περὶ τῆς Χριστοῦ, Κεφαλ: ΚΕ'. ἐκ τῆς αὐτῆς χωρὶς προβάλλεται τὰ Κυρίλλου ἐκείνα: „Προῖον γὰρ δι' αὐτῆς (τῆς Υἱᾶς) φυσικῶς, ὡς ἴδιον αὐτῆς, μετὰ πάντων ὧν ἔχει τελείως λαμβάνειν λέγεται τὰ αὐτῆς,, — 'Αλλ' ἐνθα Κύριλλος, φησὶ, τὸ "Αγιον Πνεῦμα Θεοπρεπῶς, ἢ φυσικῶς διὰ τῆς Υἱᾶς προῖεναι, (31) („Προῖον,, γὰρ λέγει, ἐκ „ἐκπορεύομενον,,“) ἔχῃ τὴν ἀπ' αἰῶνος τῆς Ἁγίας Πνεύματος Ἐκπόρευσιν ἐννοεῖ, ἀλλὰ τὴν πέμψιν μόνον αὐτῆς τὴν χρονικῶν. — Βελλαρμίνος δ' ἐν ἐνίσταται: „Σημείωσαι (φάσκων) ἐκπορεύεσθαι τὸ Πνεῦμα διὰ τῆς Υἱᾶς, μετὰ πάντων ὧν ἔχει τελείως. Τί γὰρ τόδε σημαίνει ἄλλ', ἢ τὴν Θείαν ἔσιν, καὶ ἀπαξάπασας ἀπλῶς τὰς τελειότητας τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι διὰ τῆς Ἐκπορεύσεως ἐκ τῆς Υἱᾶς μεταδίδοσθαι,,; — Οὐδὲν ὑγιές. Οὐ γὰρ ὁ Κύριλλος, φησὶν, ὅτι τὸ "Αγιον Πνεῦμα διὰ τῆς Υἱᾶς πρόεισι, σὺν πᾶσιν οἷς ἔχει. 'Αλλ' ἐστὶ τὰ ἐκείνη τοιάδε: „Ὅτι τὸ Πνεῦμα διὰ τῆς Υἱᾶς πρόεισι φυσικῶς, ὡς ἴδιον αὐτῆς μετὰ πάντων ὧν ἔχει τελείως,,. Οὕτω δὲ ἄρα τὰ: „μετὰ πάντων ὧν ἔχει τελείως,,: σωάπτεται τῷ ἀμέσως προηγησαμένῳ κόμματι „ὡς ἴδιον αὐτῆς,,: ἔχῃ δὲ τῷ πρὸ τέττα: „προῖον ἐξ αὐτῆς,,: Ἐπειτα τῶν ἀντεπενεχθέντων τῆς Κυρίλλου ῥημάτων ὁ νῆς ἐστὶν, ὃν ὁ Κύριλλος αὐτὸς ἐπὶ τῆς μνημονοθέντος χωρὶς παρίσῃσι, ἃ τῶν ῥημάτων τὴν ἔννοιαν ἀνωτέρω σωήκαμεν ἐπὶ τῆς Β'. τῶν Ἀπαντήσεων· τετέστιν: ὅτι ὥσπερ ἡ ἀποφερομένη ἀπὸ τῆς ἀνδρας ὁδοῦ, ὅσα αὐτῆς δεκτικὰ τυγχάνει ἐκώδη καθίσησιν· ἡ δὲ ὁδοῦ, καὶν εἰ ἐξωτερικόν τι εἶναι δοκοῖ, τῷ γε

τῆς ἔσιν καὶ τῆς θελήσεως· μηδαμῶς „δ' ἐξ αὐτῆς,, ὡς ἐξ ἀρχῆς καὶ αἰτίας ὄντος αὐτῷ τῆς ὑπάρξεως. Τελουταῖον γὰρ ὁ ὑπὸ τῷ Ἀθανασίῳ ὀνόματι λαοφάνων Συγγραφεὺς αὐτόσε, ἀποδοτέαν εἶναι, φησὶ, τὴν „ἐκ,, καὶ τῷ Πνεύματι· ἀλλὰ μὴ γὰρ καὶ τὸ Πνεῦμα αὐτὸ ἀφ' ἑαυτῆς ἐκπορεύεται, διὰ τὸ „ἐκ τῆς Πνεύματος,, δεδοσθαι ἡμῖν. Ὁμολογῶμεν δὲ καὶ ἐν τῷ Ἱερῷ τῆς Πίστεως Συμβόλῳ, τὸν Υἱὸν τῆς Θεᾶς ἐκ μὲν τῆς Πατρὸς γεννηθέντα πρὸ πάντων τῶν αἰώνων: „Διὰ δὲ τὴν ἡμετέραν Σατηρίαν, ἐν χρόνῳ σαρκωθέντα ἐκ Πνεύματος Ἁγίου, καὶ Μαρμαρίας τῆς Παρθένου, καὶ ἐνανθρωπήσαντα,,. Τί δέ; μὴ ἄρα παρὰ τῆτο, τὴν αὐτὴν ἢ Ἐκ σημασίαν ἐπ' ἀμφοῖν διασώζει τῶν δε τῶν ῥήσεων; Οὐκὲν καὶ ἐπὶ τῆς: „ἐκ τῆς ἐμῆς λήφεται,,: ἔδὲν ἐπ' ἀναγκῆς τὴν Ἐκ ταυτὸ σημαίνειν, ὡς καὶ ἐπὶ τῆς: ὅτι „ἐκ τῆς Πατρὸς ἐκπορεύεται,,· ἔ γὰρ, δηλονότι, ἐδὲ τῆτο νοῶν ὁ Συγγραφεὺς ὑπῆρξεν ἐκεῖνος· ἐδ' ἵνα τοιόνδε τι παραδελώσῃ πρὸς ἐκείνην: „τὸ „ἐκ τῆς ἐμῆς λήφεται,,.

(31) Ὁ Λατίνος τὸ φυσικῶς „προῖεναι,, quod naturaliter procedat ἡρμηνεύσεν, ὃ διὰ πτωχείαν τῆς γλώττης, σημαίνειν ἐπίσης τάσσεται καὶ τὸ „προῖεναι,, καὶ τὸ „ἐκπορεύεσθαι,,.



τῷ γε μὴν ἀνθεὶ ταυτόν τι ἐστίν. Οὕτω δὴ νοητέον, καὶ τὸ λαμβάνειν τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῆς Υἱᾶς· ἐπειδὴν αὐτὸ, δηλονότι, πρὸς ἡμᾶς διὰ τῆς Υἱᾶς ἔρχεται φωτίζον τε καὶ ἀγιάζον. Τὸ γὰρ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ἐξίστα σὺν ἅπασιν οἷς περ ἔχει τῆς Υἱᾶς ἴδιον ἐστίν.

Τὰ λοιπὰ δ' ἃ ὁ πρότερος Ἰησοῦτης ἐκ τῆς αὐτῆς Κυρίλλου ἐπάγει, ἀνωτέρω ἐπὶ τῆς δευτέρας τῶν Ἀπαντήσεων ἐπελύετο. Ἀλλὰ καὶ περὶ τῆς Ἰγνατίου ῥήσεως, ὡς ἐφεξῆς ὁ αὐτὸς ἐφθη προτείνας, ἐν ἰδιαιτέρᾳ Πραγματείᾳ διαληψόμεθα. Ἐνθα δεικνύσεται ὅτι „τὸ ἀκῆσαι τὸ Πνεῦμα ἅπερ ἂν λαλήσῃ, εἰδὲν ὀνύνησιν εἰς κατασκευὴν τῆς αὐτῆς τῆς Ἁγίας Πνεύματος Ἐκπορεύσεως „καὶ ἐκ τῆς Υἱᾶς„. Καὶ τὰ ἐπὶ τέτοις δ' ἀντεπαγόμενα ἐκ τῶν Ἀνασαςίε τῆς Συναίτης, ἀνωτέρω ἤδη καὶ αὐτὰ τῆς δεύσεως ἔλαχεν ἀποκρίσεως. — Ἀλλ' ἀνθυποφέρει καὶ τὰ Κυρίλλου ἐκεῖνα τῆς Ἱεροσολυμίτης, ἐκ τῆς Ις'. τῶν Κατηχήσεων: (32) „Πατὴρ μὲν „δίδωσιν Υἱῶν, καὶ Υἱὸς μεταδίδωσιν Ἁγίῳ Πνεύματι. Αὐτὸς γὰρ „ἐστὶν Ἰησοῦς ὁ λέγων, ἐκ ἐγώ: πάντα μοι παρεδόθη ὑπὸ τῆς „Πατρὸς μου καὶ περὶ τῆς Ἁγίας Πνεύματος λέγει: ἐκεῖνος ἐμὲ „δοξάσει, ὅτι ἐκ τῆς ἐμῆς λήψεται. Ἐφ' οἷς προσίθῃσιν ὁ Ἰησοῦτης: ὅτι ἐντεῦθεν ἐστὶ φανερόν, κατὰ τὸν αὐτὸν νόον λέγεσθαι „τὸ Πνεῦμα λαμβάνειν ἐκ τῆς Υἱᾶς, ἢ τὸν Υἱὸν μεταδιδόναι τῷ „Ἁγίῳ Πνεύματι, καθ' ὃν καὶ τῷ Υἱῶ πάντα παρεδόθη ὑπὸ τῆς „Πατρὸς. Ἀλλὰ μὴ τῷ Υἱῶ πάντα παρεδόθη καὶ τὰ ἐντός, „κατὰ τὸν τῆς ἀρχῆς λόγον. Ἄρα καὶ ὁ Υἱὸς μεταδίδωσι τῷ „Ἀγ: Πνεύματι, καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, παρὰ τῆς Υἱᾶς λαμβάνει „καὶ τὰ ἐντός κατὰ λόγον ἀρχῆς, ἅπαντα„. — Ἀλλὰ γὰρ, εἰ καὶ τῷ Υἱῶ ὑπὸ τῆς Πατρὸς παρεδόθη πάντα τῷ λόγῳ τῆς ἀρχῆς, ἐστὶ μὲν τοι, καὶ ἅπερ ἐν χρόνῳ λαμβάνει παρὰ τῆς Πατρὸς ὁ Υἱὸς, διὰ γε τὸ ταυτόν καὶ ἐνικαῖον τῆς γνώσεως, ἅτλα ἐκ ἀπ' αἰῶνος ἔλαβεν αὐτὰ, εἰδὲ κατὰ τὰ ἐντός. Ὡς περ εἰδ' ὅσα ἐν χρόνῳ ἀνιήγγειλεν, ἀπ' αἰῶνος τε καὶ κατὰ τὰ ἐντός ἀνιήγγειλεν αὐτά. Κατὰ γὰρ τὸν τοιόνδε νόον, ἀληθὲς ἐστὶ πάντως: ὅτι, ὃν τρόπον τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκ τῆς Υἱᾶς λαμβάνει, κατὰ τὸν αὐτὸν καὶ ὁ Υἱὸς ἔλαβε παρὰ τῆς Πατρὸς καὶ ἀνάπαλιν. Τὸ δέ τοι, ἐπεὶ πάντα τὰ ἐντός τῆς Θεότητος ὁ Υἱὸς ὁμολογεῖται παρὰ τῆς Πατρὸς ἔχειν, (ἔτι καὶ τὸ ὡς ἐξ αἰτίας ἐξ αὐτῆς προελθεῖν) κατὰ τὴν αὐτὴν ὡσαύτως ἐννοίαν, καὶ τὸ Πνεῦμα νοεῖσθαι δεῖν ἐξ ἀνάγκης εἰληφέναι παρὰ τῆς Υἱᾶς, ὡς ἐξ αἰτίας καὶ τὸ ὑπάρχειν, εἰδὲς ἂν εἴη λόγος ὁ τῆτο δείξων.

„Πατὴρ

(32) Ἐπὶ τῆς ἐν Παρισ: Γραικο-Λατίν: Ἐκδόσε: τῆς ἐν Ἔτει 1631. Σελ: 187.

Τόμ: Β'.

Δ δ δ



„Πατήρ μὲν (φησὶ Κύριλλος) δίδωσιν Υἱῷ· καὶ Υἱὸς μεταδίδωσιν „Αγίῳ Πνεύματι,,. Ἀμέλαιοι, ἵνα διὰ τῆς κοινωνίας ταύτης διαχθῇ μίαν εἶναι καὶ τινὶ αὐτῷ ἑσῖαν Πατρός καὶ Υἱῆ καὶ Ἀγίῳ Πνεύματος. Ἀλλὰ τόδ' ἂν ὁμοίως ἐπιφέροιτο ἀναγκαίως, καὶ εἰ ὁ μὲν Υἱὸς, ἥπερ Υἱὸς, τὰ ἐντὸς τῆς Θεότητος λαμβάνειν ἅπαντα ἐκ τοῦ Πατρὸς νοοῖτο· τὸ δὲ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, (παρὰ ταῦτα, ἢ καὶ ἐξ ἐκείνου ἐκπορεύομενον) λαμβάνειν μὲν καὶ ἐκ τοῦ Υἱῆ, λαμβάνειν δὲ ὅμως μόνον τὰ ἀφορῶντα πρὸς χρόνον. Ἐὰν γὰρ ἅπαντα καὶ τὰ ἀπ' ἐντὸς ὁ Υἱὸς ἐκ τοῦ Πατρὸς ἔχῃ, (ἥπερ Υἱὸς) ὁμοῦσιος πάντως τῷ Πατρὶ ἔσαι. Ἐὰν δὲ καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, τὸ ἐκ τοῦ Πατρὸς ὄν, ἔχῃ καὶ παρὰ τοῦ Υἱῆ λαμβάνον, ὅσα πρὸς τὸν χρόνον ἀφορᾷ, διὰ τὸ ταυτὸν τῆς γνώσεως, καὶ τῆς διωάμεως, καὶ τῆς θελήσεως· ὡσαύτως ἔμπης ἔπεται, ὥσπερ δὴ τῷ Πατρὶ, ἔτω καὶ τῷ Υἱῷ πεφυκέναι αὐτὸ ὁμοῦσιον.

Ὑποσυνάπτει ὁ Ἰησοῦς καὶ τινὰ τῶν ὑπὸ τοῦ Ἐπιφανίῃς ῥηθέντων· ἀλλὰ περί γε τέτων, ἐν τῇ Πραγματείᾳ ἐν ἣ τὰ ἀντιπροτεινόμενα ἐκ τῶν ῥήσεων τῶν Ἀνατολικῶν Πατέρων ἐπιλυθῆσεται. Ἐπ' αὐτοῖς δὲ προσίθῃσι καὶ τὰ τοῦ Βασιλείου, τὸ Πνεῦμα λέγοντος λαμβάνειν ἐκ τοῦ Υἱῆ. Ἀλλὰ καὶ τὸ περὶ τέττα δι' ὅλης τῆς ἐν χειρὶ Πραγματείας διηκριβωκότες ἐσμέν. Ἀντεπάγει δὲ καὶ τὰ τοῦ Θεολόγου Γρηγορίου, ἐκ τοῦ ΜΘ'. Λόγος, περὶ Πίσεως, Σελ: 736. (33) „Ὁ Σωτὴρ ἀπέσταλκεν ἡμῖν τὸ „Ἅγιον Πνεῦμα, ἐκ τῆς ἰδίας μὲν αὐτοῦ, μιᾶς δὲ καὶ τῆς αὐτῆς „ἑσῖας, προσάτιω τε, καὶ ἐπισφραγιστῶ καὶ ὁδηγὸν εἰς ζωὴν αἰώνιον, ὡς γεγραπται ἐκ φωνῆς Θεοῦ: Ἐκχεῶ ἀπὸ τοῦ Πνεύματος μου ἐπὶ τὴν ἐκκλησίαν μου, καὶ ἐπὶ τὰς ἐκκλησίας μου. Καὶ αὐτὸς; „τὸ Πνεῦμα ἐξ ἐμοῦ προελθύσεται. Καὶ αὐτὸς δὲ ὁ Κύριος καὶ „Σωτὴρ ἡμῶν: ἐκ τοῦ ἐμοῦ, φησὶ, λήψεται· ἐξ ἐκείνου δὲ πάντως, ὅπερ ἐστὶν ὁ Υἱός. (34) Ὅτι καὶ ὁ Υἱὸς ἐξ ἐκείνου, ὅπερ „ἐστὶν

(33) Ὁ Λόγος ἔστος Λατινιστὶ μόνον φέρεται, ὡς δῆθεν ἐκ τῆς Ῥωμῆς διεσπασμένης ἐκείνῃ ἀλλ' οἷς ὁ μυκτὴρ εἰς κρίσιν δριμύτερος, ἔφασιν εἶναι τοῦ Ναζιανζηνίου Θεολόγου τὸ πῶν ἡμῶν· μηδὲ μετάφρασιν εἶναι τινὶ φερομένῳ· ἐξ ἀρχῆς δ' ὡς ἔχει συγγεγράφαι τὸν Λόγον Λατινιστὶ φωνῇ, ὡς ἐκ τῆς ἱφῆς εἰκάζεται· εἴτε ὑπὸ Βιγιλίου τοῦ Ταψῶν φιλοπονηθέντα, εἴτε ἄλλως ὑπὸ Γρηγορίου τοῦ Βατικῆ, τοῦ Ἰλλυριανῶν Ἐπισκοπήσαντος, καὶ συγχρόνως τοῦ Ναζιανζηνίου γενομένης, ἅτε κατὰ τὸ 370. ἑκατέρω ἀκμάσαντος.

(34) Ὁ μὲν τοῦ Λόγου Συγγραφεὺς ἔχει: Ex eo utique quod est Filius, de eo quod Pater est. Ὅπερ ἂν μεθερμηνεύσθαι: „Ἐξ ἐκείνου πάντως ὁ ἐστὶν ὁ Υἱός, ἐκ τοῦ „ὅπερ ὁ Πατήρ ἐστίν,,. Τῷ γε μὴν Ἰησοῦς ἄλλως πως ἔδοξε τὸ ῥηθὲν μεταγράψαι ἔσως: Ex eo utique quod est Filius; quia est Filius de eo quod Pater est. Ὅπερ ἡμῖν ἡμελιώδεται ἐπὶ λέξεως: „Ἐξ ἐκείνου πάντως ὅπερ ἐστὶν ὁ Υἱός, ὅτι „καὶ ὁ Υἱὸς ἐξ ἐκείνου, ὅπερ ἐστὶν ὁ Πατήρ,,. Ἡ μὲν ὅν γνησίαν ῥῆσιν τοῦ Πατρὸς τοῦ Λόγου, μετενεχθεῖν ἂν καὶ εἰς ταῦτά: ὅτι τὸ Πνεῦμα λήψεται, ἐκ τοῦ Υἱῆ, τῷ

„ἐξὶν ὁ Πατήρ,,. Προσίθῃσι δὲ ὁ Ἰησοῦς: „Σημειώσωσαν ἐν-  
ταῦθα οἱ ἀντιδοξῆντες: ὅτι ἔτως ὀφείλῃσι πρὸς τὸν Υἱὸν ἀνά-  
γειν, ὃ παρ' αὐτῷ λαμβάνει τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ὡς ἀνά-  
γειν πρὸς τὸν Πατέρα, ὃ παρ' αὐτῷ τέττα λαμβάνει τῷ Πατρὶ  
ὁ Υἱός,,.

Ἀλλὰ πρῶτον μὲν, τίνι τρόπῳ ἀποσέλλει ἐκ τῆς ἰδίας αὐτῷ  
ἐξίας τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ὁ Υἱός, δέδοκται ἡμῖν ἐπὶ τῆς  
Πραγματείας, ἐν ᾗ τὸ ἐκ τῷ Υἱῷ πέμπεσθαι τὸ Πνεῦμα, μηδὲν  
ἐδάκνυτο, πρὸς κατασκῶν τῆς τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος ἐκ τῷ Υἱῷ  
Ἐκπορεύσεως, συμβάλλεσθαι. Ἐκ γὰρ δὴ τῷ Υἱῷ τῷ ἐν ἑαυτῷ,  
καὶ ἐν τῇ ἰδίᾳ ἑαυτῷ ἐξίας τὸ Πνεῦμα ἔχοντος, ἐκ ὧ ἄλλως  
πέμπεσθαι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, εἰ μὴ ἐκ τῆς μιᾶς καὶ τῆς αὐτῆς  
ἐξίας ἐκείνης τῆς αὐτῆς. Ἐπεὶ δὲ ὁ Θεὸς Γρηγόριος ἐδίδαξεν,  
ὅτι Σωτὴρ ἀποσέλλει τὸ Πνεῦμα ἐκ τῆς μιᾶς ἐξίας τῆς ἑαυτῆς,  
εἰς κατασκῶν τῷ τέττα πρὸς τοῖς ἄλλοις ἐπάγει καὶ τὰ τῷ Χρι-  
στῷ ῥήματα: „ἐκ τῷ ἐμῷ λήψεται,, ἢ ὁ νῦν ἡ: ὡς ἐκ ἐξ ἄλλης  
τινός, ἐκ μιᾶς δὲ καὶ τῆς αὐτῆς τῷ Υἱῷ ἐξίας εἴληφε τὸ Πνεῦμα  
ἡνίκα πρὸς ἡμᾶς ἀπέσταλται. Ἐξ ἧς δὴ πᾶς συμφανὲς, περὶ τῆς  
Χρονικῆς μόνον τῷ Πνεύματος ἐκ τῷ Υἱῷ λήψεως, εἶναι τῷ Θεῷ  
Γρηγορίῳ τὸν λόγον: καθ' ὧ δὴ πᾶς ἐννοίαν ἐντεῦθεν ὁμοίως  
προσίθῃσιν, ὅτι καὶ ὁ Υἱὸς ἐξ ἐκείνης ἐξὶν, ὅπερ ἐξὶν ὁ Πατήρ:  
σημαίνων, δηλονότι, ὅτι ὡς περὶ τὸ Πνεῦμα ἐν ᾧ ἐκ τῷ Υἱῷ  
ἐπέμφθη, ἐκ μόνης αὐτῆς τῆς ἐξίας ἐπέμφθη τῆς τῷ Υἱῷ, καὶ  
ἐξ αὐτῆς εἴληφεν ἅπερ ἂν ἀπαγγείλῃ ἡμῖν: ἔτω δὴ καὶ ὁ Υἱὸς  
παρὰ τῷ Πατρὶ ἀπεστάλη, ἐκ μιᾶς ὦν καὶ τῆς αὐτῆς ἐξίας  
τῆς τῷ Πατρὶ ἐξ ἧς καὶ εἴληφεν ἅπερ ἡμῖν εὐηγγελίστατο.  
Θῶμεν τοιγαρὶν κατὰ τὸν Θεολόγον Γρηγόριον, ἔτω πρὸς τὸν  
Υἱὸν χρῆσθαι ἀνάγεσθαι, ὃ παρ' αὐτῷ λαμβάνει τὸ Πνεῦμα, ὡς  
ἀνάγειν πρὸς τὸν Πατέρα ὃ παρὰ τέττα λαμβάνει ὁ Υἱός: ἀλλὰ τέττο  
πάντως νοεῖν ἐπάναγκες, περὶ ὧν ἐν χρόνῳ παρὰ μὲν τῷ Πα-  
τρὶ ὁ Υἱός, παρὰ δὲ τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα λαμβάνει, ἐν ᾧ πρὸς  
ἡμᾶς ἐκάτερος ἀποσέλλεται. Ἀλλ' ὑπόθετε ἄλλως, ὅτι περὶ τῷ  
Υἱῷ λέγων ὁ Γρηγόριος, τῷ ἐκ τῷ Πατρὶ ἐννοεῖ λήψιν τῷ ἀπ'  
αἰῶνος καὶ ἐδ' ἔτως ἂν Σοὶ ὑπὲρ τῆς τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος ἐκ τῷ  
Υἱῷ Ἐκπορεύσεως παρήι τι ἐκπορίσασθαι. Καὶ γὰρ καὶ ἔτως, ἐκ  
ἀν

τῷ ὄντος ἐκ τῷ Πατρὶ ἢ δὲ παραπέποιμένη διὰ τῆς προδήκης („ἔτι καὶ ὁ  
Υἱός,,), τῷ τῷ Πνεύματος ἐκ τῷ Υἱῷ λήψιν, ὁμολογόν πως ἐπιχειρεῖ ἀποφθεῖναι  
τῇ ὑποστατικῇ προόδῳ τῷ Υἱῷ ἐκ τῷ Πατρὶ. Ἰνα δὲ ἐκείνο ἡμῖν ἐπαγάγῃ εἰκ-  
τεῶς ὀνειδίζων, ὃ καὶ προσέθετο: „Σημειώσωσαν (εἰπὼν) ἐνταῦθα οἱ ἀντιδοξῆν-  
τες, ὡς ἔτως ὀφείλῃσι πρὸς τὸν Υἱὸν ἀνάγειν, ὃ παρ' αὐτῷ λαμβάνει τὸ Πνεῦ-  
μα τὸ Ἅγιον, ὡς περὶ ἀνάγειν πρὸς τὸν Πατέρα, ὃ παρ' αὐτῷ τέττα λαμβάνει  
ὁ Υἱός,,.

Δ δ δ 2

ἂν τῷ λόγῳ τῷ λαμβανομένῃ ἀπλῶς, ὅ,τι δὴ ποτε, καὶ ὅποιοι οὖν τῷτο εἴη, τῷ μεταξὺ τῷ Πνεύματος παράδεισιν ποιήσασθαι ὁ Γρηγόριος ἀναβάλοιτο, ὡς ὁ Ἰησοῦς ἐβόλετο. Ἀλλὰ τῷ λόγῳ μάλιστα τέτῳ, ὅτι ἐκ μιᾶς καὶ τῆς αὐτῆς ἑσίας ἢ λήψις. Ἐφ' ἡ γὰρ ὁ Θεὸς Γρηγόριος, ὅτι τὸ Πνεῦμα πέμπεται παρὰ τῷ Υἱῷ, ἐκ τῆς μιᾶς καὶ τῆς αὐτῆς ἑσίας τῆς ἑαυτοῦ. τῷτο γὰρ δὴ τὸν Σωτῆρα διδάσκων λέγοντα: „ἐκ τῷ ἐμῷ λήψεται,,. Διὸ καὶ προσέειπεν: ὅτι „καὶ ὁ Υἱὸς ἐξ ἐκείνου, ὅπερ ἐστὶν ὁ Πατήρ,,. Ἀναφέροντες τὸ λεγόμενον τόδε πρὸς τὸ ἤδη εἰρημένον ἐκεῖνο, ὅτι τὸ Πνεῦμα ἐκ μιᾶς τε καὶ τῆς αὐτῆς ἑσίας τῷ Υἱῷ πέμπεται. Ἐνθα δὴ πᾶς αὕτη ἢ διάνοια, ἀραρεῖα μάλισ' ἂν εἴη: ὅτι, Καθάπερ ὁ Υἱὸς ἔδεν τῶν ἀπ' ἐντὸς τῆς Θεότητος παρὰ τῷ Πατρὶ λαβεῖν ἔχει, εἰμὴ ἐκ τῆς ἑσίας τῆς ἐκείνου, ἔτῳ τοι καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ἡνίκα πρὸς ἡμᾶς πέμπεται, ἔδεν ὁμοίως ἔχει λαμβάνειν παρὰ τῷ Υἱῷ, ὅ,τι μὴ ἐκ τῆς μιᾶς καὶ τῆς αὐτῆς ἑσίας.

Τὰ δὲ τῶν Δυτικῶν Πατέρων Ἰλαρίῳ τε καὶ Φελεγεντίῳ, αὐτοῖς ἐπενεχθεῖσιν ὁ Ἰησοῦς ὑποσώπτει, ὅτι παρὰ Λατίνων διέφθαρται, ἐπὶ τῆς Πραγματείας ἀπεδείχθη, τῆς περὶ τῶν Παραφθορῶν τῶν γενομένων ἐν τοῖς τῶν Λατίνων Πατέρων Συγγράμμασιν. Ἀλλὰ καὶ τὰ τῷ Λέοντος τῷ Μεγάλῳ ὁμοίως ἀντιπροβαλλόμενα, ἐπεὶ ἔδεν πλέον φέρει, ἢ ὅτι τὸ Πνεῦμα δίδωσιν ὁ Υἱὸς (ταῦτόν δὲ φάναι, ὅτι τὸ Πνεῦμα λαμβάνει ἐκ τῷ Υἱῷ) αὐτόχρομα παρίσῃσι τέπιχέρημα, τὸ ὑπὸ Λατίνων ἐνταῦθα ἡμῖν προτεθέν, καὶ δι' ὅλης τῆς παρέσης Πραγματείας ἀνασκοβαθέν· καθάπερ ἔν καὶ τ' ἄλλ' αὐτοῖς ἐφεξῆς, περὶ τῶν τῷ Χριστῷ ῥημάτων: „Ἐκ τῷ ἐμῷ λήψεται,,: ὁ αὐτὸς Ἰησοῦς προσέειπε.

Ἀντιφέρει δ' ὁ αὐτὸς τέως (35) καὶ τὰ τῷ Ἐπιφανίῳ ἐπὶ τῆς ΞΘ'. Αἰρέσεως, τῆς τῶν Ἀρειανῶν: (36) „Πάντα γὰρ ὑπὸ Θεοῦ κτίσθαι, μόνον δὲ ὁ Υἱὸς τῷ Θεῷ γεγέννηται, καὶ μόνον „τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ Πατρὸς προήλθε, καὶ ἐξ Υἱοῦ ἔλαβε· τὰ „δ' ἄλλα πάντα κτίσθαι καὶ ἔτε προελθόντα ἐκ Πατρὸς προήλθεν, ἔτε τῷ Υἱῷ λαμβάνοντα, ἄλλ' ἐκ τῷ πληρώματι τῷ Υἱῷ,,. — Ἀλλ' ἔδεν ἔδ' ἐν τέτοις ὅ,τι καὶ κατορθοῖ ὁ Ἰησοῦς. Διδάσκων γὰρ ἐστὶν Ἐπιφάνιος, ὅτι πάντα ἐκτίσθη ὑπὸ Θεοῦ, ὁ δὲ Υἱὸς καὶ τὸ Πνεῦμα ἀκτιστοὶ εἰσὶ, διὰ τὸ τὸν μὲν Υἱόν, δηλονότι, ἐκ τῷ Πατρὶ γεννᾶσθαι, τὸ δὲ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκ τῷ Πατρὶ ἐκπορεύεσθαι, καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ λαμβάνειν. Πᾶς δ' ἂν ἐντεῦθεν ἔψοιτο,

(35) Ἀντίφ. Σελ: 12. 13.

(36) Ἐν Ἀρειμ: ΛΔ'. Σελ: 757.

ἔψοιτο, ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα καὶ ἐκ τῆς Υἱᾶς ὡσαύτως προέβληται; Πρᾶκται γὰρ Ἐπιφανίῳ δαῖξαι, ἄκτιστον εἶναι τὸ Πνεῦμα, τὸ δὲ κατασκυδάζειν ἐθέλει, ἐκ τῆς τὸ Πνεῦμα λαμβάνειν ἐκ τῆς Υἱᾶς· ἢ ἔχι ἐκ τῆς, ὅτι διὰ τὴν μίαν τε καὶ τὴν αὐτὴν ἐσίου, ἐκ τῆς τῆς Υἱᾶς ἐσίου τε καὶ γνώσεως καὶ διωάμεως λαμβάνον ἐς τὸ Πνεῦμα, ἅπερ ἡμῖν ἀναγγέλλει, καὶ ἃ ἐπὶ τῇ ἡμῶν σωτηρίᾳ ἐνεργεῖ. (τῆτο γὰρ ἐμφαίνει τὸ λαμβάνειν τὸ Πνεῦμα ἐκ τῆς Υἱᾶς) ἢ ἔχι, Φημι, ἀναγκαίως ἐκ τῆς ἔπεται, ὅτι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἄκτιστον ἐστίν; Ἐντεῦθεν ἔν Ἐπιφάνιος, καὶ ἵνα τὰ λοιπὰ πάντα κτίσματα εἶναι δείξῃ, τὸν δε τὸν λόγον ὑποσυνάπτει: „Ὡς ἔτε ἐκ τῆς Πατρὸς αὐτὰ προήλθεν, ἔτε ἐκ τῆς Υἱᾶς ἐλήφεν, ἀλλ' ἐκ τῆς πληρώματος τῆς Υἱᾶς μόνον κατὰ τὰ τῆς Εὐαγγελιστῆς ῥήματα: Ἐκ τῆς πληρώματος αὐτῆς ἡμεῖς πάντες ἐλάβομεν,:: σημαίνων, δηλονότι, διὰ τῆτο τὰ λοιπὰ εἶναι κτίσματα, ὡς ἔτε ἐκ τῆς Πατρὸς αὐτὰ προεληλυθότα, ἔτε διὰ τὸ ἐνιαῖον τῆς ἐσίου, ἐκ τῆς αὐτῆς τῆς Υἱᾶς φύσεώς τε καὶ σοφίας καὶ διωάμεως ἐληφότα, μόνον δὲ ἐκ τῆς πληρώματος αὐτῆς, κατὰ μέθεξιν πάντως, καὶ οἷον ἄλλοθεν. Καθ' ὃν δὴ περὶ νῦν ὁρθῶς λέγεται, κτιστὰ πεφυκέναι τὰ λοιπὰ πάντα, ὅτι ἐκ τῆς πληρώματος αὐτῆς ἐλάβον· καὶ ἐν μὴδόλῳ ἐν τῆτοις ἢ δημιουργικῇ ἀρχῇ τῇ ἐξ αἰῶνος ἐκπορεύσει τῇ ἐκ τῆς Υἱᾶς ἀντικείμεν.

Καὶ ταῦτα μὲν πρὸς ἐκείνα: δι' ἃ τῆς Υἱᾶς εἰρηκότος: „ἐκ τῆς ἐμῆ λήψεται,:: συνάγειν οἱ Λατῖνοι ἐπιχειροῦσιν, ὅτι ἄρα τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῆς Υἱᾶς ἐκπορεύεται.

## Π Ρ Α Γ Μ Α Τ Ε Ϊ Α Ι Γ'.

Ἐν ἧ ἀποδείκνυται, ὅτι, τὸ μὴ ἀφ' ἑαυτῆ, ἀλλ' ὅσα ἂν ἀκέσῃ, λαλεῖν τὸ Πνεῦμα, ἐδὲν εἰς Ἀπόδειξιν σωτελεῖ τῆς τῆς Ἁγίας Πνεύματος Ἐκπορεύσεως καὶ ἐκ τῆς Υἱῆς.

Ἀντιφέρουσιν ἔτι Λατῖνοι, ὡς αὐτὸς ἐστὶν ὁ Χριστὸς μαρτυρῶν, μηδὲν ἀφ' ἑαυτῆ δυνάσθαι ἐργάζεσθαι, εἰ μὴ ἴδοι τὸν Πατέρα ποιῶντα. Ἰωάν: Κεφ: 5'. καὶ ὡς, ὅσα ἀκέσῃ παρα τῆ Πατρὸς, λαλήσῃεν ἐν τῷ κόσμῳ. Ἀλλὰ ταῦτα ἐκ ἄλλως νοεῖσθαι ἂν ἔχοι, ἢ καθότι ὁ Υἱὸς ἐκ τῆ Πατρὸς, ὡς ἐξ αἰτίας παρήκται. Νυνὶ ἔν ὡσαύτως ὁ Υἱὸς καὶ περὶ τῆ Πνεύματος ἔφη, Ἰωάν: 15'. „Ὅτι τὸ Πνεῦμα ἐ λαλήσῃ ἀφ' ἑαυτῆ, ἀλλ' ὅσα ἂν ἀκέσῃ λαλήσῃ, „ Ἐπειδὴ τοίνυν τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐδὲν λαλεῖ, ὃ μὴ ἂν ἀκέσῃ παρα τῆ Υἱῆς, φανερὸν ἐντεῦθεν, ὅτι ἐκ τῆ Υἱῆς ἐκπορεύεται αὐτό. τὸ γὰρ ῥηθὲν, (ὅσα ἂν τὸ Πνεῦμα ἀκέσῃ) καὶ τῆ ἐξ ἐμῆ μηδαμῶς προσκειμένης, περὶ τῆ Υἱῆς πάντως δεόν νοεῖν, τῆ εἰρηκότος: „Ἐκ τῆ ἐμῆ λήψεται, καὶ ἀναγγελεῖ ὑμῖν, „ Ἐκ τῆ Υἱῆς γὰρ ἀκεί, ὅτι ἐκ τῆ Υἱῆς λαμβάνει.

Τόδε μὲν ἐν τῆ ἐπιχείρημα τῷ πρὸ τῆδε, (δι' ἧ, παρα τὸ ἐκ τῆ Υἱῆς λαμβάνειν τὸ Πνεῦμα, σωῆγον ὅτι καὶ ἐκ τῆ Υἱῆς ἐκπορεύεται) συμπίπτον ὅλως ἐστίν. Ἐν γὰρ τῇ Τριάδι τὸ ἀκείν, τὸ τὰ ἀναγγελλόμενα λαμβάνειν ἐστίν. ὡς ῥᾶσα διαφαίνεται ἐντεῦθεν ἢ λύσις ἢ τῆ προβαλλομένης Ἐπιχειρήματος. Πάλιν δ' αὐτὸ τῆτο καὶ τοῖς ἐξ Ἀρείς ὡς Ἐπιχείρημα, τὸν Υἱὸν ἀποδείξαι πειρωμένοις ἀρχὴν ὄντα τῆ Πνεύματος. Οὕτω γὰρ ἐν τῷ Λόγῳ αὐτῶν, παρ' Αὐγυστίνῳ ἐν 5'. Τόμῳ τῶν Συγγραμμάτων αὐτῶν: „Τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἀφ' ἑαυτῆ ἐ λαλεῖ, ἀλλ' ἐν ἅπασιν τιῶ ἐντολῶ τῆ Χριστῆ περιμένει. Οὐ, φησὶν, ἀφ' ἑαυτῆ, ἀλλ' ὅσα ἂν ἀκέσῃ λαλήσῃ, „

## Ἀ Π Α Ν Τ Η Σ Ι Σ Α'.

Ἀλλὰ γὰρ πρῶτον, ἐὰν ἐπὶ τὸν σκοπιμώτατον καὶ πρώτιστον τῆδε τῆ χωρίε νῦν ἀπιδώμεν, ὃν πρὸ παντὸς μάλιστα τὸ Πνεῦμα ἐνταῦ-



ἐνταῦθα σκοπεῖ τὸ Ἅγιον, ὅν τε αὐτὰ τῷ Σωτῆρος καθ' ἑαυτὰ  
 χέει τὰ λόγια, διὰ τῶν δε ἡμῖς πάντων λέγεται τὸ Πνεῦμα  
 ἀκέειν ἐκ τῷ Υἱῷ. Οὐ γὰρ ὁ Χριστὸς ἔφη „ἂν ἐξ ἐμῶ ἀκέση  
 „τὸ Πνεῦμα, λαλήσει· ἀλλ' ἀπλῶς ἔτω: ὅσα ἂν ἀκέση, λαλήσει·  
 „προσίθῃσι δέ: ἐκ τῷ ἐμῷ λήψεται καὶ ἀναγγελεῖ ὑμῖν,,. Ἐξ  
 ἐκείνου ἔν ἀκεί, ἐξ ἧ λαμβάνει. Ἀλλὰ μὴ κατὰ τὸν σκοπιμώ-  
 τερον νῦν τῶν δε τῶν ῥημάτων, ἐκ τῷ Πατρὸς δὴ πρ λέγεται  
 τὸ Πνεῦμα λαμβάνειν, ὡς ἐν τῇ πρὸ τῆς ἐν χερσὶν ἀποδόδεικ-  
 ται Πραγματεία. Παραπλησίως ὁ τῷ χωρίῳ νῦν ἐστὶν ἄχρι τῷδε,  
 ὅτι ἐκ τῷ Πατρὸς τὸ Πνεῦμα ἀκέσεται. Διὸ καὶ Α΄ΥΓΟΥΣΤΙ-  
 ΝΟΣ αὐτὸς πρὸς τὸ ἐκ τῶν Ἀρειανῶν ἐκείνο Ἐπιχέρημα ἀπαν-  
 τῶν, ἐν τῷ Βιβλ: τῷ κατὰ τῷ Λόγῳ τῶν ἐξ Ἀρείου, Κεφ: ΚΓ΄.  
 „Ὅτι δ' ἐν ἅπασιν, φησὶ, τὸ Ἅγιον Πνεῦμα τῷ τῷ Χριστῷ ἐντο-  
 „λῶ ἐκδέχεται, ὡς ἔχουσιν, ἀναγνώττωσαν εἰ δυνάμεται· τὸ γὰρ  
 „εἰρημένον: ἐκ ἀφ' ἑαυτῷ λαλήσει: ἐκ εἰρηται, ὅσα ἂν ἐξ ἐμῶ  
 „ἀκέση, ἀλλ' ὅσα ἂν ἀκέση, λαλήσει. Διατὶ δὲ εἰρηται; πρὸ  
 „μικρῶ κατεφάνη, ἐξ αὐτῆς τῆς ὑπομνημονοῦθῆσθαι μοι τῷ Κυρίῳ  
 „ἐκδέσεως, ἐνθα φησὶ: πάντα ἂ ἔχει ὁ Πατὴρ ἐμὰ ἐστὶ διὰ  
 „τῷτο ἔφω, ἐκ τῷ ἐμῷ λήψεται,,.

Κάντεῦθεν ἔν ἅπαντες οἱ Θεοὶ Πατέρες, τὸ „ἅπερ ἂν  
 „ἀκέση,, περὶ τῷ Πατρὸς ἐρμηνεύουσιν. ἈΘΑΝΑΣΙΟΣ ἐν τῷ  
 Α΄. Διαλόγῳ κατὰ Μακεδονίαν, ἐν τοῖς ἄλλοις προενεχθεῖσιν  
 ἐκείνοις: „Ὡς περ ἔν ὁ Υἱὸς πάντα ἔχων ἐν τῇ φύσει, ὡς Υἱὸς  
 „λέγει: ἔδεν ποιῶ ἀπ' ἑμαυτῷ: ἵνα τῶν ἀγαθῶν τῷ ἀρχίῳ ἐπὶ  
 „τὸν Πατέρα ἀναγάγῃ· ἔτω καὶ περὶ τῷ Πνύματος ἀκε αὐτῷ  
 „λέγοντος: πάντα γὰρ ἔχοντος ἐν τῇ αὐτῷ φύσει, ὡς Πνύμα-  
 „τος Θεῷ, ἐπὶ τὸν αἵτιον ἀνάγει λέγων: ἔ λαλήσει ἀφ' ἑαυ-  
 „τῷ, ἀλλ' ὅσα ἂν ἀκέση λαλήσει, καὶ τὰ ἐρχόμενα ἀναγγε-  
 „λεῖ ὑμῖν,,. — Καὶ ἔτι: „Ἐκ τῷ ἐμῷ λήψεται· τῷτέσιν, ἐκ  
 „τῷ Πατρὸς,,.

Α΄ΥΓΟΥΣΤΙΝΟΣ δὲ ἐν τῷ Βιβλ: τῷ κατὰ τῷ Ἀρειανῶν  
 λόγῳ, Κεφαλ: ΚΓ΄. Ἐπεὶ, ὡς περ εἶδομεν ἀπέφη, τὸ „ὅσα ἂν  
 „ἀκέση,, περὶ τῷ Υἱῷ χρῆσθαι ἐφερμηνεύεσθαι προσέθετο: „Κατὰ  
 „τῷτο, ἐκ ἀφ' ἑαυτῷ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα λαλεῖ, ὅτι ἐκ ἐστὶν ἀφ'  
 „ἑαυτῷ τὸ ἐκ τῷ Πατρὸς ἐκπορεύομενον. Ὡς περ ἔδεν ὁ Υἱὸς  
 „διώσται ἀφ' ἑαυτῷ ποιεῖν ἔδεν, ἐπεὶ ἔδεν αὐτὸς ἀφ' ἑαυτῷ ἐστὶ,,.  
 Καὶ ἐν τῇ γθ'. Πραγματεία τῶν εἰς τὸν Ἰωάννῳ, Τόμῳ Θ΄.  
 „Ὡς περ ὁ Πατὴρ ἔχει ζωὴν ἐν ἑαυτῷ, καὶ ἔδεν αὐτὸς ἐστὶν ἄλλ'  
 „ἡ ζωὴ, ἥτις ἐν αὐτῷ ἐστὶ καὶ τῷ Υἱῷ ζωὴν ἔδωκεν ἔχειν ἐν  
 „ἑαυτῷ· τῷτέσιν: ἐγέννησεν Υἱόν, ὅς καὶ αὐτὸς ἡ ζωὴ ἐστὶν.  
 „Οὕτω τοίνυν ἡμᾶς χρὴ νοεῖν, ὁ περὶ τῷ Ἁγίῳ Πνύματος εἰρη-  
 „ται: ἔ λαλήσει ἀφ' ἑαυτῷ, ἀλλ' ὅσα ἂν ἀκέση, λαλήσει: ἵνα  
 „τῷτο ἔφω, ἐκ τῷ ἐμῷ λήψεται,,.

Ε ε ε 2

,,τῷτο

„συνῶμεν, αὐτὸ μὴ εἶναι ἀφ' ἑαυτῶ· μόνος γὰρ ὁ Πατὴρ ἐκ ἑσιν  
 „ἐξ ἄλλων· καὶ γὰρ καὶ ὁ Υἱὸς ἐκ τῶ Πατρὸς γεννᾶται, καὶ τὸ  
 „Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκ τῶ Πατρὸς Ἐκπορεύεται. — Οὐκ ἄρα  
 „λαλήσει ἀφ' ἑαυτῶ, ὅτι ἐκ ἀφ' ἑαυτῶ ἐσιν· ἀλλ' ὅσα ἂν ἀκέσῃ  
 „λαλήσει· ἐξ ἐκείνων λαλήσει, ἐξ ὧ ἐκπορεύεται· τὸ ἀκέσαι αὐτῷ,  
 „εἰδέναι ἐστὶ τὸ δὲ εἰδέναι, εἶναι· ὡς ἀνωτέρω διειλεγμένα.  
 „Ἐπεὶ ἄρα ἐκ ἑσιν ἀφ' ἑαυτῶ, ἀλλ' ἐξ ἐκείνων, ἐξ ὧ ἐκπορεύεται·  
 „ἐξ ὧ αὐτῷ ἡ ἐσία, ἐξ ἐκείνων καὶ ἡ ἐπισήμη, ἐξ ἐκείνων τοίνυν  
 „καὶ ἡ ἀκρόασις· ὅπερ εἰδὲν ἄλλ' ἢ ἐπισήμη. Μηδένα δὲ κινέτω,  
 „ὅτι τὸ ῥῆμα ἐπὶ χρόνον μέλλοντος τέτακται· ὁ γὰρ ἔρηται: ὅσα  
 „ἀκήκοεν, ἢ ὅσα ἀκεί· ἀλλ' ὅσα ἂν ἀκέσῃ λαλήσει· ἐκείνη γὰρ  
 „ἢ ἀκρόασις αἰώνιος ἐσιν, ὅτι αἰώνιος ἢ ἐπισήμη. Ἐπὶ δὲ τῶ  
 „ἀπ' αἰῶνος ὄντος ἀρχῆς ἄνευ καὶ τέλους, ὁποῖα τινοσὶν ἂν τύχοι  
 „χρόνον τὸ ῥῆμα, εἴτε παρωχημένον, εἴτε ἐνεσῶτος, εἴτε δὴ  
 „μέλλοντος, ἔτοιγε ψευδῶς τίθεται. — Ἐξ ἐκείνων ἄρα καὶ ἡ κα-  
 „σε, καὶ ἀκεί, καὶ ἀκεί, ἐξ ὧ καὶ ἐσιν· ἐξ ἐκείνων δὲ ἐσιν,  
 „ἐξ ὧ ἐκπορεύεται,,.

Ἐνθεντοι καὶ ὁ τῶν Γνωμῶν ΕΥΓΓΡΑΦΕΥΣ, ὃς ἐκ τῶν  
 Αὐγαστίνων ἀπεδρέψατο Συγγραμμάτων, Γνώμη ΤΕΖ'. „Διὰ τῆτο,  
 „Φησὶν, ἐπειδὴ κατὰ τὰς περιφορὰς τῶν χρόνων, ἢ λαλιὰ ποι-  
 „κίλλεται ἢ ἀνθρώποιος περὶ τῶ ἐν μηδενὶ μὴ εἶναι χρόνῳ μήτε  
 „δωηθέντος, μήτε δωαμένου, μήτε δωησομένου, ἀληθῶς περὶ  
 „αὐτῶ λέγεται παντοίων χρόνων τὰ ῥήματα. Ἀεὶ τοίνυν τὸ  
 „Πνεῦμα ἀκεί τὸ Ἅγιον, ὡς αἰεὶ ἐπιστάμενον,,. Ἐπίσταθαι δὲ  
 αὐτῷ ἐστὶ, τὸ αἰεὶ εἶναι· αἰεὶ δ' αὐτῷ τὸ εἶναι, τὸ ἐκ τῶ Πατρὸς  
 Ἐκπορεύεσθαι. Οὐδεὶς δ' εἰπεῖν δύναται, ὡς ἐκ ἑσιν τὸ Πνεῦμα  
 ζῶν· ἐπεὶ καὶ ὁ Πατὴρ ζῶν, καὶ ὁ Υἱὸς ζῶν ἐστὶ.

Ἄ δ' ἐκ τῶν Αὐγαστίνων, ἐκ τῆς γθ'. Πραγμ: τῶν εἰς Ἰωάν:  
 παρεθέμεθα, ταῦθ' ἔκαστα καὶ ΒΕΔΑΣ ἐπαναλαμβάνει, ἐν τῷ  
 εἰς τὸν Ἰωάν: ἰδίῳ αὐτῶ Ὑπομνήματι, Κεφαλ: Ις'. ἐν Τόμ: Ε'.  
 τῶν Συγγραμμάτων, Στήλη 570. Καὶ ἐν τῷ Βιβλ: τῶν Θερι-  
 νῶν Ὁμιλιῶν, περὶ τῶ Χρόνου, Κυριακῇ „Ψάλατε,,. Καὶ ἐν τῷ  
 Ζ'. Τόμ: τῶν Συγγραμμάτων, Στήλη 20.

Καὶ ἈΛΒΙΝΟΣ δὲ ὁ Ἀλκείνος, ἐν τῷ εἰς τὸν Ἰωάν: αὐτῶ  
 Ὑπομνήμ: εἰς ἐκείνα: („ἐκ ἀφ' ἑαυτῶ λαλήσει,,) „Οὐ γὰρ  
 „λαλεῖ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἀφ' ἑαυτῶ· ἴσως ὅτι ἐκ ἑσιν ἀφ'  
 ἑαυτῶ, ἀλλ' ἐκ τῶ Πατρὸς. Καὶ γὰρ ὁ μὲν Υἱὸς ἐγεννήθη ἐκ  
 τῶ Πατρὸς, τὸ δὲ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκπορεύεται ἐκ τῶ Πατρὸς·  
 ὁ γὰρ λαλεῖ ἀφ' ἑαυτῶ· τετέστιν, ἄνευ τῆς τῶ Πατρὸς καὶ τῶ  
 Υἱῶ κοινωνίας· ὁ γὰρ διήρηται τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, τῶ Πατρὸς  
 „καὶ τῶ Υἱῶ, ἀλλ' ἐν τῷ ἔργῳ Πατὴρ τε καὶ Υἱὸς καὶ Ἅγιον Πνέ-  
 „ματος. Ἀλλ' ὅσα ἂν ἀκέσῃ λαλήσει. Ἀκεί, δηλονότι, δια-  
 „τῶ

„τῷ ἐνιαίῳ τῆς ἑσίας, καὶ τῷ προσόντος τῆς ἐπισήμης. Οὐ  
 „λαλεῖ ἀφ' ἑαυτῷ, ὅτι ἔκ ἐξιν ἀφ' ἑαυτῷ· ὁ γὰρ Πατὴρ μόνος  
 „ἔκ ἐξιν ἐξ ἄλλου· ὁ δὲ Υἱὸς ἐκ τῷ Πατρὶ γεννητὸς, καὶ τὸ  
 „Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῷ Πατρὶ ἐκπορεύον. Ἐξ ἐκείνου καὶ γὰρ  
 „ἀκέραια τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ἐξ ἧ καὶ ἐκπορεύεται· ὅτι ἔκ ἐξιν  
 „ἀφ' ἑαυτῷ, ἀλλ' ἐξ ἐκείνου ἐξ ἧ ἐκπορεύεται. Ἐξ ἐκείνου ἄρα  
 „ἡ ἀκρόασις, ἥτις ἔδεν ἐστὶν ἄλλ', ἥπερ ἡ ἐπισήμη,.. Καὶ ἈΥ-  
 ΜΩΝ δὲ ἐν Κυριακῇ Δ'. μετὰ τὸ Πάχα, ἐν τῇ Θερινῇ Ὀμιλ:  
 εἰς τὰ παρὰ τῷ Χριστῷ ἡμῖν προτεινόμενα: „Ἀκέραια, δηλονότι,  
 „ἐκ τῷ Πατρὶ, ἐξ ἧ ἐστὶν ὁ χρονικῶς, ἀλλ' αἰωνίως· ὅχι ὁρα-  
 „τῶς, ἀλλ' ἀοράτως,.. Καὶ ΠΑΒΑΝΟΣ ὁ Μαῦρος Ὀμιλ: ΡΕ'.  
 ἐν Τόμῳ Ε'. τῶν Συγγραμ: Σελίδι 653. Καὶ ΣΜΑΡΑΓΔΟΣ,  
 Κυριακῇ Γ'. μετὰ τῷ Η'. τῷ ἀπὸ τῷ Πάχα, Σελίδι 97.  
 ἐπαναλαμβάνουσι καὶ αὐτοὶ τὰ, ὧν περ ἀπομνημονεύοντες ἐσμὲν  
 Ἀλκίῳ τῷ Ἀλκίῳ ῥήματα.

Ἐπειδὴ ἄρα, καὶ ὃν νῦν πρώτως τὸ Πνεῦμα σκοπεῖ, καὶ  
 ὃν αὐτόθεν αὐτὰ τὰ λεγόμενα χεῖ, ἀκέραια ἐννοεῖται τὸ Πνεῦμα  
 ἐκ τῷ Πατρὶ, διὰ τῷ ἐξ αὐτῷ ἀπ' αἰῶνος Ἐκπόρευσιν· δηλονότι  
 πάντως, μηδὲν ἐντεῦθεν τὸ μέχρι τέτε, τῇ τῶν Λατίνων συ-  
 νεισφέρειν δόξῃ αὐτά. Τίς γὰρ ἄν ποτε ἡ σωεπεία γένοιτο:  
 διότι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἀκέραια ἐκ τῷ Πατρὶ, διὰ τῆς ἐξ αὐτῷ  
 αἰωνίᾳ Ἐκπορεύσεως ἢ, (ὃ ταυτὸν ἐστὶ:) διότι τὸ Πνεῦμα ἐκ  
 τῷ Πατρὶ ἐκπορεύεται, τὸ ἄρα Ἅγιον Πνεῦμα καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ  
 ἐκπορεύεται;

## Ἀ Π Α Ν Τ Η Σ Ι Σ Β'.

Ὡς περ δὲ, κατὰ τῷ δευτέρῳ τῶν ῥημάτων τέτων: (Ἐκ τῷ  
 ἐμῷ λήψε[τα]) ἐννοίαν, ἐκ τῷ Υἱῷ νοεῖται λαμβάνειν τὸ Πνεῦμα·  
 καὶ δὲ, δηλονότι, διὰ τὸ τῆς ἑσίας ταυτὸν τε καὶ ἐνιαῖον, τὰ ὑπ'  
 αὐτῷ ἡμῖν ἀναγγελλόμενα λαμβάνει ἐκ τῆς αὐτῆς γνώσεως τῆς  
 ἐν τῷ Υἱῷ, ὡς ἐν ἄλλῃ Πραγματείᾳ δεδεικται· ὅπως ὁμοίως  
 ἐντεῦθεν ἔπεται: (ἐξ ἧ γὰρ λαμβάνει, ἐξ αὐτῷ κατὰ τὰ ῥή-  
 ματα τῷ Σωτῆρος, καὶ ἀκέραια τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον) ἐκ τῷ  
 Υἱῷ τὸ Πνεῦμα ἀκέραια, καὶ ὃν, δηλονότι, νῦν εἰρηκότες ἐφθῆ-  
 μεν· ἥπερ διὰ τὸ ἐνιαῖον καὶ ταυτὸν τῆς ἑσίας, ὅχι ἕτερα ἡμῖν  
 ἀναγγέλλει, παρὰ τὰ τῇ γνώσει, καὶ τῇ ἀληθείᾳ, καὶ τῇ βεβλήσει  
 τῷ Υἱῷ ταυτιζόμενα. Καὶ τὸν νῦν δὲ τὸν δε ἀπανταχῶς παρὰ-  
 πλησίως ὑποτιθέασιν οἱ Πατέρες. Οἶον ἈΘΑΝΑΣΙΟΣ ἐν τῷ  
 Α'. τῶν περὶ Τριάδος Διαλόγων, ἐν Τόμῳ Β'. Σελ: 179. „Ὅτι  
 „πάν τὸ γεννητὸν εἴαν ἢ λογικόν, ὅτε θέλει, καὶ ἀφ' ἑαυτῷ λαλεῖ·  
 „ἐπειδὴ καὶ ἴδιον ἔχει θέλημα, ὃ κατασιγάσει ἵνα τὸ τῷ Θεῷ  
 Τόμ: Β'. Ζ ζ ζ „θέλη-

„θέλημα εἶπῃ· τὸ δὲ Πνεῦμα ἔχ' ἔτως· ἀλλ' ὡς Πνεῦμα Θεῶ,  
 „ταυτὸ θέλημα ἔχει τῷ Θεῷ· καὶ τῆτο ἐστὶ τὸ, ἔχῃ λαλήσει  
 „ἀφ' ἑαυτῶ· — Καὶ Σελ: 180. „Καὶ πάντα τὰ λογικὰ κτίσ-  
 „ματα, ποτὲ μὲν τὰ ἑαυτῶν λαλῶσι, ποτὲ δὲ τὰ τῷ Θεῷ· τὸ  
 „δὲ Πνεῦμα ἔχ' ἔτως· ἔ γὰρ ποτὲ τὰ τῷ Θεῷ, καὶ ποτὲ τὰ  
 „ἑαυτῶ· ἔδὲ γὰρ ἐστὶν ἄλλο τι ἐν αὐτῷ θέλημα, ἐπειδὴ ἔδὲ ἐν  
 „τῷ Υἱῷ. Ἀλλ' ἐν ἐστὶ θέλημα Πατρὸς καὶ Υἱῶ καὶ Ἁγίῳ Πν-  
 „όματος· καὶ διὰ τῆτο εἴρηται περὶ τῷ Πνόματος, ἔ λαλήσει  
 „ἀφ' ἑαυτῶ· καὶ περὶ τῷ Υἱῷ, ὅτι ἀπ' ἑμαυτῶ ποιῶ ἔδὲν, ἀλλὰ  
 „καθὼς ἐδίδαξέ με ὁ Πατήρ, ταῦτα λαλῶ· ἔκ ἐπειδὴ ἔκ οἶδε  
 „λαλήσαι τι· ἀλλ' ὅτι ἔκ ἄλλο θέλει ὁ Πατήρ, καὶ ἄλλο θέλει  
 „ὁ Υἱὸς, καὶ ἄλλο τὸ Πνεῦμα· —

Ὁ δὲ ΔΙΔΥΜΟΣ ὁ Ἀλεξανδρεὺς, Βιβλ: Β'. περὶ τῷ Ἁγίῳ  
 Πνόματος, ἐν Τόμ: 5'. τῶν Ἱερωνύμου Συγγραμμάτων: „Περὶ  
 „τῷ Πνόματος τῆς ἀληθείας, ὅπερ ἂν πέμποιτο παρὰ τῷ Πα-  
 „τρὸς, καὶ εἴη Παράκλητος· ὁ Σωτήρ, ὅς ἐστιν ἡ ἀλήθεια, φησὶν:  
 „ἔ γὰρ λαλήσει ἀφ' ἑαυτῶ· τρεῖς εἰν, ἔκ ἄνευ ἑμῶ, ἔδ' ἄνευ τῷ  
 „θελήματος ἑμῶ τε καὶ τῷ Πατρὸς· ὅτι ἀχώρισον ἐστὶ τῆς ἑμῆς,  
 „καὶ τῆς τῷ Πατρὸς θελήσεως· — Καὶ μετὰ τινὰ δὲ, τὰ ὑπὸ Λατί-  
 „νων ἐμπαρεισενεχθέντα: (1) „Ἰνα μή τις τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον  
 „ἔκ τῆς Πατρὸς τε καὶ Υἱῶ θελήσεως καὶ κοινωνίας διακρίνη, γέ-  
 „γραπται: ἔ γὰρ ἀφ' ἑαυτῶ λαλήσει, ἀλλ' ὡς ἂν ἀκέση λαλήσει· —  
 Πάλιν: „Τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἀχώρισον ὃν τῷ Υἱῷ διὰ τὴν τῆς  
 „φύσεως κοινωνίαν, ἔκ ἀφ' ἑαυτῶ πισθόεται λαλεῖν, ἀλλὰ κατὰ  
 „τὸν τῷ Θεῷ λόγον καὶ τὴν ἀλήθειαν λαλεῖ πάντα· —

Καὶ ἈΜΒΡΟΣΙΟΣ Βιβλ: Β'. περὶ τῷ Ἁγίῳ Πνόματος Κε-  
 φαλ: ΙΒ'. „Διὰ τῆτο δὲ ὁ λαλεῖ ὁ Υἱὸς, λαλεῖ καὶ ὁ Πατήρ.  
 „καὶ ὁ λαλεῖ ὁ Πατήρ καὶ ὁ Υἱὸς, λαλεῖ καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ  
 „Ἅγιον. Διὸ καὶ περὶ τῷ Πνόματος ὁ Υἱὸς τῷ Θεῷ εἴρηκεν,  
 „ἔ γὰρ λαλεῖ ἀφ' ἑαυτῶ· τρεῖς εἰν, ἔκ ἄνευ τῆς ἑμῆς τε καὶ τῆς  
 „τῷ Πατρὸς κοινωνίας· ἔδὲ γὰρ διηρημένον ἐστὶ καὶ διακεχωρισ-  
 „μένον τὸ Πνεῦμα· ἀλλ' ὅσα ἂν ἀκέση λαλεῖ· ἀκέει, δηλονότι,  
 „διὰ τῆς κατ' ἐσίαν ἐνότητος, καὶ τῆς κατ' ἐπισήμῳ ιδιότητος· —  
 Καὶ Βιβλ: δὲ Ε'. τῷ περὶ Πίσεως, Κεφαλ: Ε'. „Οὐκ ἐν δὲ εἰς  
 „τῆτο ταπεινότητος τὸν τῷ Θεῷ Υἱὸν κατὰξομεν, ὡς μὴ εἶδέναι,  
 „εἰ μὴ ἄπερ ἂν ἀκέση, λέγειν τε αὐτὸν καὶ ποιεῖν· ἔδὲ περι-  
 „γεγράφθαι αὐτῷ τὸ τῷ ἐνεργεῖν τε καὶ φθέγγεσθαι ἡγησόμεθα  
 „μέτρον· ὅτι γεγράφται: ἀπ' ἑμαυτῶ ἔκ ἐλάλησα· καὶ κατωτέρω:  
 „καθὰ·

(1) Ὅρα ἐν τῇ περὶ τῶν Παραφθορῶν Πραγματείᾳ τῶν Πατέρων τῶν Ἀνατολικῶν  
 Παραφθορῶ Θ'.

καθάπερ ἔρηκέ μοι ὁ Πατήρ, ἔτω λαλῶ. Ἀλλ' ἐπὶ τῷ ὑπα-  
κοῦν τῆς σαρκὸς, ἢ εἰς πίσιν τῆς ἐνότητος, ταῦτα ἀναφερέσθω.  
Πολλοὶ γὰρ τῶν σοφωτέρων, τὸ καὶ ἀκέν τὸν Υἱὸν, καὶ λέ-  
γουν τι τῷ Υἱῷ τὸν Πατέρα, κατὰ τὸ ἐνιαῖον τῆς φύσεως ἐξε-  
λήφασιν. Ὅ, τι γὰρ διὰ τῆς ἐνότητος τῆς θελήματος γινώσκει  
ὁ Υἱὸς τὸν Πατέρα θέλοντα, τῆτο ἀκηκοέναι δοκεῖ ὅθεν ἔχῃ  
σωματικὸν ἔργον, βέλημα δὲ σωεργίας ἀδιάσδοκτον παραδη-  
λᾷται. Οὐδὲ γὰρ ῥημάτων ἀκοή τις ἐνταῦθα τὸ σημαίνόμε-  
νον, ἐνότης δὲ θελήσεώς τε καὶ δωάμεως, τῆς ἐν τῷ Πατρὶ  
ἔσης καὶ τῷ Υἱῷ. ὡς περὶ δὴ καὶ τῷ Πνεύματι τῷ αὐτῷ  
εἶναι, ἀλλὰ καὶ ἀπεμνημόνευσε λέγων: ἔ γὰρ λαλήσει ἀφ' ἑαυτοῦ,  
ἀλλ' ὅσα ἂν ἀκέσῃ λαλήσει ἵν' αὐτοὶ σωήσωμεν, ὡς ὅ, τι ἂν τὸ  
Πνεῦμα λαλῇ, καὶ ὁ Υἱὸς λαλεῖ καὶ ὅ, τι ἂν ὁ Υἱὸς λαλῇ,  
καὶ τὸ Πνεῦμα λαλεῖ,,.

Ὁ δὲ Χρυσόρρημων ἸΩΑΝΝΗΣ, ἐν Ὁμιλ: ΟΖ'. τῶν εἰς  
τὸν Ἰωάν: πρὸ τῆς μέσης, Σελ: 395. (2) „Ὅταν δὲ ἔπῃ, ἔδεν  
ἀφ' ἑαυτοῦ λαλήσει ἔδεν ἐναντίον, ἔδεν ἴδιον, παρὰ τὰ ἐμὰ,  
φησὶν. Ὡς περὶ ἑαυτοῦ λέγων: ἀπ' ἑμαυτοῦ ἔ λαλῶ:  
τῆτο φησὶν, ὅτι ἔδεν ἐκτὸς τῶν τῆς Πατρός: ἔδεν ἴδιόν τι παρ'  
ἐκείνον, καὶ ἀλλότριον ἔτω καὶ ἐπὶ τῆς Πνεύματος,,.

Καὶ ΚΥΡΙΛΛΟΣ ὁ Ἀλεξανδρείας, Βιβλ: Γ'. τῶν εἰς τὸν  
Ἰωάν: περὶ τὸ τέλος, ἐν Τόμ: Δ'. Σελ: 925. „Ὅταν ἔν ἔλθῃ,  
φησὶν, ἔ λαλήσει ἀφ' ἑαυτοῦ ἔδεν ἀντὶ τῆς; σιωπῆς μὲν ὑμᾶς,  
καὶ τὸ περὶ τῆς ἀληθείας ἀποκαλύψει μυστήριον λαλήσει γεμῶν  
παντελῶς ἔδεν τῶν ἀπαδόντων ἐμοί: ἀλλ' ἔδεν ξένον ὑμῖν εἰση-  
γήσεται μάθημα: ἔ γὰρ ἰδίως τυχὸν εἰσώσει νόμους. Ἐπειδὴ δὲ  
Πνεῦμα καὶ οἷον ἐν ἑσὶν ἐμοί, λαλήσει διὰ πάντως τὰ ἐν  
ἐμοί,, — Καὶ ἐν Λόγῳ ΛΔ'. τῶν Θεσαυρῶν, τῆς ἐξ Αἰρέσεως  
ἀνθυπαγαγόντος, ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἀτελειότητα νοσεῖ, διὰ  
τὸ λέγειν τὸν Σωτῆρα: „ἔ λαλήσει ἀφ' ἑαυτοῦ,,. Ἀποκρίνεται  
ἐν τῷ Ε'. Τόμ: τῶν Συγγραμμάτων Μέρει Α'. Σελίδι 344.  
Οὐ γὰρ ἀτελὲς τὸ Πνεῦμα δεικνύων, ταῦτα περὶ αὐτοῦ φησὶν  
ὁ Σωτῆρ, ἀλλ' ἵνα μᾶλλον πληροφορήσῃ τῆς ἀκρωμένης, ὡς  
τῆς ἐσίας ὑπάρχον αὐτῆς, ἔχ ἕτερόν τι λαλήσει παρ' ὅπερ αὐτὸς  
βέλεται. Καὶ γὰρ νῆς ὑπάρχων αὐτῆς κατὰ τὸν Μακάριον  
Παῦλον: ἡμεῖς δὲ νῆν Χριστῆ ἔχομεν, λέγοντα περὶ τῆς Πνεύ-  
ματος ἐκείνα πάντως λογιᾶται καὶ διατάξει, ἅπερ ἂν καὶ αὐτὸς,  
ἔπερ ἐστὶ νῆς. Διὰ τῆτο μηδὲν ἐξ αὐτοῦ λαλήσει τὸ Πνεῦμα  
δι' ἡχυρίσατο, μονονεχὶ λέγων: ἐγὼ εἰμὶ πάλιν ὁ λαλῶν ὡς περ  
,,ἂν

(2) Ἐν δὲ τῇ κατὰ Μοντφελκόν Ἐκδόσει, Ὁμιλ: ΟΗ'. ἐν τῷ Η'. Τόμῳ, Σελ: 460.



„ἀν εἰ καὶ ὁ ἐν ἀνθρώπῳ νῦν λέγοι περὶ τῆ προκύπτοντος ἐξ αὐτῆ λόγῃ: ὃ λαλήσει ἀφ' ἑαυτῆς ἑδὲν, ἀλλ' ὅσα ἀν ἀκέσῃ λαλήσει,,. — Καὶ Σελίδι 350. „Οὐ λαλήσει ἀφ' ἑαυτῆς, ἀλλ' ὅσα ἀν ἀκέσῃ λαλήσει: Ἐπειδὴ γὰρ ἔμελλε τὴν μετὰ σαρκὸς πληρώσας Οἰκονομίαν ἀναβαίνειν πρὸς τὸν Πατέρα, πέμψεν δὲ ὑπέχετο τὸν Παράκλητον τοῖς ἑαυτῆς Μαθηταῖς, ἵνα μηδὲς ὑπολάβῃ τὰ μὴ κατὰ γνώμην αὐτῆ διατάξαι ποτὲ τὸ Πνεῦμα, τὸ Ἅγιον· δεικνύς τε σαφῶς ὅτι Πνεῦμα αὐτῆ ὑπάρχον, τὰ ἐξ αὐτῆ πάλιν διακονήσῃ ῥήματι· ὃ λαλήσει, φησὶν, ἀφ' ἑαυτῆς· ἀλλ' ὅσα ἀν ἀκέσῃ λαλήσει, ὅτι ἐκ τῆς ἐμῆς λήψεται,,.

Ὁ δὲ ἈΝΩΝΥΜΟΣ ἐν τῇ Σειρᾷ τῶν Γραικῶν Πατέρων εἰς τὸ Ις'. Ἰωάν: Σελ: 394. „Οὐ μᾶλλον τῆ Τίς τὸ Πνεῦμα, φησὶ, διὸ ἑδὲ ἀφ' ἑαυτῆς λαλήσει, ἀλλ' ὃ ἀκεί. Ἄ γὰρ ἐγὼ, κακῆϊνος ἐρεῖ· ὃ δὲ ἀθένειαν ὃ λαλεῖ· ἀλλὰ διὰ τὴν ἀκριβῆ συμφωνίαν τῆς Τριάδος τῷτο εἶπεν,,.

Ὁ δὲ Ἐμεισιωδὸς ΕἴΤΣΕΒΙΟΣ, Κυριακῇ Δ'. μετὰ τὸ Πάχα, ἐν Τόμ: Ε'. Μέρ: Α'. τῆς τῶν Πατέρ: Βιβλιοθ: τῆς ἐν Κολων: Σελ: 63. „Τί ἐστὶν ἀκεί; ἑδὲ γὰρ χρὴ νοεῖν ὅτι ἐν ἐκείνῃ τῇ ἀθεάτῳ Τριάδι φωνήεσά τις καὶ κραυγώδης συλλαβὴ γίνεταί. Ἐν τῷ αὐτῷ ἄρα ἀλλήλων ἀκείσιν, ἐν ᾧ γινώσκασί τε καὶ θέλῃσι. Λαλήσει τοιγαρὲν τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ὅσα ἀν γνῶ θέλοντα τὸν Πατέρα καὶ τὸν Υἱόν· ὥστε γὰρ ἡ θέλησις κοινὴ, ὅτῳ καὶ ἡ ἀκοή,,.

Καὶ ΒΙΓΓΙΛΙΟΣ ὁ Τριδεντίνος Ἐπίσκοπος, ἐν τῇ Ἀθανασίᾳ Διαλέξει, τῇ πρὸς Σαβέλλιον, καὶ Ἀρειον, καὶ Φωτεινόν, ἐν τοῖς Γρηγορίᾳ (3) τῆ Κασάνδρου Συγγράμμασι, Σελ: 498. „Πολλῷ μᾶλλον ἐκ τῆς φαίνεται τὸ Ἅγιον Πνεῦμα τῆς τῆ Πατρὸς καὶ τῆ Τίς ἑσίας μηδαμῶς εἶναι ἀλλότριον, ἐπειδὴ ἐκ ἀφ' ἑαυτῆς ὡς ὁ θνήσκον, καὶ ἔξωθεν ἤκον, ἀλλ' ὡς μιᾶς τε καὶ τῆς αὐτῆς ἑσίας κοινωνῶν, τὰ κοινὰ ὄντα Πατρὶ καὶ Υἱῷ διαπράττεται καὶ λαλεῖ. — Ὅρας ἔν ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα τῆ Πατρὸς καὶ τῆ Τίς ἡμῖς διακρίνεται, ἐν ᾧ ἐκείνα λαλεῖ, ὃ Πατρός τε καὶ Τίς ἴδια εἶναι γινώσκεται,,;

Καὶ ΒΕΔΑΣ δὲ, ἐν τῇ Θερινῇ Ὀμιλ: τῇ περὶ τῆς Χρόνης, τῇ Κυριακῇ „Ψάλατε,, ἐν τῷ Ζ'. Τόμῳ τῶν Συγγραμμάτων, Στήλη 20. Ἀμβροσίῳ παρηκολογηκώς: „Οὐ λαλεῖ, φησὶ, τὸ

(3) Γεώργιος παρ' ἄλλοις ὁ Συγγραφεὺς ἔτος κέκληται· ὃς τῆς Ις'. Ἐκατονταετηρίδος μεσότης ἀκμάζων ἐγένετο. Τῆς δὲ ἐν οἷς καὶ ἄλλοις σωτέγραψεν, ἐστὶ καὶ ἡ ἔκδοσις τῶν Φιλοπνευμάτων Βιγίλῃς τῆ Ταψῶν, ἅπερ ὡς δῆθεν ὄντα Βιγίλῃς τῆ Τριδεντίνῃ ἐξέδοτο. Ὅρα περὶ τῆς Μωρεσίᾳ τὸ Λεξικὸν ἐν Ὀνόματι ΚΑΨΣΑΝΔΡΟΣ. Καὶ ἐτι καὶ τὸν Δεπῖνον.

„τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἀφ' ἑαυτῶ· τῆς τε, ἀνευ τῆς Πατρὸς τε καὶ  
 „Τίς κοινωνίας· ἐδὲ γὰρ διήρηται, ἢ ἀπομεμέρισαι τὸ Πνεῦμα·  
 „ἀλλ' ὅσα ἂν ἀκέρη λαλήσει. Ἀκέρη, δηλονότι, διὰ τὸ κατ'  
 „ἑσὶαν ἐνιαῖον, καὶ τὴν κατ' ἐπισήμῳ τε καὶ γινώσκῳ ιδιότητα.,,

Προσέτι δὲ ἈΛΒΙΝΟΣ ὁ Ἀλκείνος ἐν τῷ προεπενεχθέντι  
 χωρίῳ τῆς προτέρας διανοίας μνηθεὶς, καὶ ὡς ἀκέρη παρὰ τῷ  
 Πατρὶ τὸ Πνεῦμα νοεῖται διὰ τῆς ἀπ' αἰῶνος ἐξ αὐτῶ Ἐκπο-  
 ρύσεως, καὶ θάτερον ἅμα ὑποτίθῃσι τότε τὸ διάνοημα, καὶ ὁ,  
 δηλονότι, ἐκ Πατρὸς τε καὶ Τίς ἀκέρη νοηθείη τὸ Πνεῦμα, διὰ  
 τὴν τῆς ἐπισήμης ἐνότητά· καὶ ὅτι ἐδὲ τῷ Τίς διήρηται, ἐδ'  
 ἀνευ τῆς μετὰ τῷ Τίς κοινωνίας ἔστιν ὁ διαπράττεται. Τὸ γὰρ  
 ἔργον ἐν Πατρὶ τε καὶ Τίς καὶ Ἁγίῳ Πνεύματι. Τὰ μὲν ἐν  
 τῷ Ἀλκείνῳ, κατὰ τὴν Α'. τῶν Ἀπαντήσεων ἤδη ἀνιῶνται.  
 Τὸ δὲ τῷ αὐτῷ ὁλοχερὲς τότε χωρίον, καὶ ΠΑΒΑΝΟΣ ἐπανα-  
 λαμβάνει ὁ Μαῦρος, καὶ ΣΜΑΡΑΓΔΟΣ, ἐνθα ἀνωτέρω ἡμῶν  
 σεσημείωται.

Βέβαιον ἄρα, τὸ κατὰ μηδὲνα νῦν ἕτερον τῶν Πατέρων δι-  
 δάσκον, ὅτι τὸ Πνεῦμα λαμβάνει ἐκ τῷ Τίς, ἢ καὶ ἐκ τῶν  
 ὑποσημαίνεται, ὡς διὰ τὸ μίαν εἶναι τῶν τῶν ἐπὶ  
 ἐπὶ, καὶ βέβαιον, ἅτλα ἂν τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐξαγγέλλοι,  
 ἐκ τῷ Τίς ἀκέρη αὐτά· ὅπερ ἔστιν, ἐκ τῆς αὐτῆς ἐκείνης γινώ-  
 σεώς τε καὶ ἐπισήμης, καὶ κατὰ τὸ αὐτὸ βέβαιον, ἀναγγέλλει.  
 Πῶς ἄρ' ἐν ἔποιτο, τό: διὰ τὸ ἐκ τῷ Τίς ἀκέρη τὸ Πνεῦμα,  
 ἐκπορεύεσθαι καὶ ἐξ αὐτῶ; Ἀλλ' ὡς ἂν ἔτις ἴσον καὶ εἰσάλλειν  
 ἐπιχειρεῖν, ὡς ἄρα καὶ ἐκ τῷ Τίς τὸ Πνεῦμα ἐκπορεύεται, διότι  
 μία ἀμφοτέρων ἢ σοφία ἐστὶ, καὶ ἡ δυνάμις, καὶ ἡ θέλησις·  
 ὅπερ ἄτοπον.

Καὶ ἄλλῳ δὲ τινι τῶν τοιούτων ῥημάτων ἐρμηνείαν ἀσπά-  
 ζεται ἸΩΑΝΝΗΣ ὁ τὴν γλώτταν χρυσῆς, ἐν Ὁμιλίᾳ τῇ περὶ  
 τῷ Ἁγίῳ καὶ προσκυνητῷ Πνεύματι, πολὺ ἀπὸ γε τῶν μέσων ἐξῆς.  
 (4) „Ἐρμηνεύσον μοι τί ἐστὶ, τὸ ἀπ' ἑμαυτῶ ἐλθῶν; Πῶς  
 „εἶπεν ὁ Σωτὴρ; Ἦν γὰρ ἂν ἐλκύσῃ λύσιν ὁ Μακεδονιανὸς  
 „περὶ τῷ Τίς, ταύτῳ ἐπινοεῖ καὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι. — Καὶ  
 „νῦν λέγω: διὰ τὸ ὁ Σωτὴρ εἶπεν: ἀπ' ἑμαυτῶ ἐλθῶν καὶ περὶ  
 „τῷ Πνεύματι: ἀφ' ἑαυτῶ ἐλθῶν λαλήσει. Δέομαι τῆς ὑμετέρας  
 „ἀγάπης, ἐνταῦθα τὸν νῦν ἔχωμεν. Ἐνὸς ὄντος Χριστοῦ, πολλοὶ  
 „προῆλθον ψευδόχριστοι· ὡς ὁ Σωτὴρ εἶπε: πολλοὶ ἐλθούσονται  
 „ἐπὶ τῷ ὀνόματί μου ψευδόχριστοι, καὶ ψευδοπροφήται. Ἐνὸς  
 „ὄντος Χριστοῦ, καὶ ἐπαγγελθέντος διὰ τῶν Προφητῶν ὅτι  
 „ἔρχε-

(4) Ἐν τῇ Μοντφελκονίᾳ Ἐκδόσει, Τόμ: Γ'. Σελ: 806. κζ:  
 Τόμ: Β'. Η η η

„έρχεται — ήλθον εκείνοι οί ψεύδοχριστοι, καὶ ἐκ ἐδίδαξαν ἀπὸ  
 „Νόμου, ἐκ ἀπὸ Προφητῶν, ἀλλ' ἐξ ἐαυτῶν ἐλάλουν, καὶ ἀπὸ τῆς  
 „ιδίας γνώμης· ὁ Σωτὴρ ἐλθὼν ἐκ ἀπέστη τῷ Νόμῳ, ἐκ ἀπέστη  
 „Προφητῶν· ἐπεὶ ἐν οἱ ἐλθόντες πρὸ τῷ Χριστῷ, ἐν ὀνόματι  
 „Χριστῷ ἐκ ἐλάλησαν· ἐκ ἀπὸ Νόμου, ἐκ ἀπὸ Προφητῶν, ἀλλ'  
 „ἀπὸ ιδίας γνώμης τὰ τῆς πλάνης ἐλάλουν, λέγει ὁ Σωτὴρ: ἐγὼ  
 „ἀπ' ἐμαυτοῦ ἐ λαλῶ, ὡς ἐκεῖνοι· τὸ γὰρ ἀφ' ἐαυτοῦ λαλεῖν, τὸ  
 „ἐξῶ Νόμου λαλεῖν ἐστίν. — Ἐπεὶ ἐν οἱ ψεύδοπροφήται ἀφ' ἐαυ-  
 „τῶν ἐκήρυττον, ὁ Σωτὴρ ἀποδυνάμενος τῷ ὑπόνοιαν, λέγει: ἐγὼ  
 „ἀπ' ἐμαυτοῦ ἐ λαλῶ. Πόθεν τῆτο; ὅτι ὁ Σωτὴρ πλάνος ὑπε-  
 „νοήθη· τῆτο πρῶτον σήσωμεν. — Ἐπεὶ ἐν πλάνος ἐνομίζετο,  
 „λέγει: ἐγὼ ἀπ' ἐμαυτοῦ ἐ λαλῶ, ἀλλ' ἀπὸ Νόμου, ἀπὸ Προφη-  
 „τῶν, ὅσα ἤκουσα παρὰ τῷ Πατρὶ. Οὐ κατὰ τῷ Θεότητι  
 „ἤκουσα παρὰ τῷ Πατρὶ, ἐν Νόμῳ, ἐν Προφήταις. Ἐκ προ-  
 „σώπῃ τῆς σαρκὸς λαλεῖ εἰς ἐκλυσιν τῆς πλάνης. Ἐγὼ ἀπ'  
 „ἐμαυτοῦ ἐ λαλῶ, ἀλλ' ὅσα ἤκουσα παρὰ τῷ Πατρὶ. Ὑμεῖς δὲ,  
 „ὅσα ἤκουσατε παρὰ τῷ Πατρὶ ὑμῶν τῷ Διαβόλῳ, λαλεῖτε.  
 „Καὶ ἵνα δείξῃ, ὅτι ὁ Διαβόλος ὅταν λαλῇ ἐν τισι ψεύδος ἐργά-  
 „ζεται· λέγει: ὅταν λαλῇ τὸ ψεῦδος, ἐκ τῶν ἰδίων λαλεῖ. Ἐγὼ  
 „ἐξ ἐμαυτοῦ ἐ λαλῶ, ἀλλ' ἀπὸ Προφητῶν, ἀπὸ Νόμου· τῆτο γὰρ  
 „ἐστίν ἀλήθεια. Ὡςπερ ἐν ὁ Σωτὴρ ἐκλύων τῷ ὑπόνοιαν, καὶ  
 „ἀποδυνάμενος τῷ κακῷ ὑποψίαν, λέγει: ἐγὼ ἀπ' ἐμαυτοῦ ἐ λα-  
 „λῶ, ὡς οἱ πλάνοι· ἔτω καὶ περὶ τῷ Πνεύματος. Λοιπὸν ὡς  
 „τὸν νῦν παρακαλῶ ἔχωμεν. Κατὰ μὲν ἐν τὸ μέρος τῷ Σω-  
 „τῆρος φαίνονται πολλοὶ ψεύδοχριστοι, καὶ ψεύδοπροφήται· καὶ ἔλε-  
 „γεν ὁ δαίνα, ἐγὼ εἰμὶ, καὶ ἄλλος, ἐγὼ εἰμὶ, καθὼς γεγραπται:  
 „ὅτι πολλοὶ ἐλεύσονται ἐπὶ τῷ ὀνόματί μου λέγοντες: ἐγὼ εἰμὶ  
 „ὁ Χριστός· καὶ πολλὰς πλανήσασιν, ἀλλὰ μὴ πλανᾶσθαι. Ὡςπερ  
 „ἐν ὑπενοήθη τὸ ὄνομα τῷ Χριστῷ εἰς τὰς πλάνους, ἔτως ἐμελ-  
 „λον πολλοὶ χηματίζεσθαι ἔχαι Πνεῦμα Ἅγιον, ὃ μὴ εἶχον, καὶ  
 „λαλεῖν. Ἀλλ' ἐκεῖ μὲν ὁ ἄνθρωπος ἐφάνετο, καὶ ἔλεγεν: ἐγὼ  
 „εἰμὶ ὁ Χριστός. Ἐνταῦθα δὲ, ἐκ ἐτόλμα ἀπαῖν τις ἐγὼ εἰμὶ  
 „τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον· ἐ· γὰρ ἐγένετο ἐν σώματι, ἀλλ' ἀοράτως  
 „ἐπεδήμει· ἤλθεν ἐπὶ Πέτρον, ἤλθεν ἐπὶ Παῦλον, καὶ ὡς ὡμο-  
 „λογημένον, ὅτι Πνεῦμα Κυρίου εἶχον. Ἀνέκυψε Σίμων, καὶ  
 „λέγει: Πνεῦμα ἔχω· ἀπὸ τῆς ὕψεως, εἰς οὐρανὸν ἦν τις ἔχει, τις  
 „ἐκ ἔχει ἢ τις ἔχει Πνεῦμα ἀκάθαρτον, ἢ τις ἔχει Πνεῦμα  
 „Ἅγιον. Εἰ μὲν γὰρ ὅψις ὡς, ἐκ ἂν ὑπέκλεπεν· ἀπὸ γὰρ τῆς  
 „διαγνώσεως εἶχε τὸν ἔλεγχον. Ἦλθε Μοντανὸς λέγων: Πνεῦ-  
 „μα Ἅγιον ἔχω. Ἦλθε Μανιχαῖος λέγων: Πνεῦμα Ἅγιον ἔχω·  
 „ἐκ ὡς δὲ δῆλον. Ἴνα ἐν μὴ πλανῶνται τῷ ὀνόματι, ἐπειδὴ  
 „ἀοράτως ἐμελλε τὸ χάρισμα ἐρχεσθαι· λέγει: ὅταν ἔλθῃ  
 „ὁ Παρά-

ὁ Παράκλητος, τὸ Πνεῦμα τῆς ἀληθείας, ὃ παρὰ τῆς Πατρὸς ἐκπορεύεται, ἐκεῖνος ὑμᾶς ἀναμνήσει τὰ ῥήματά μᾶς, καὶ ὁδηγήσει ὑμᾶς πρὸς πᾶσαν τὴν ἀλήθειαν· ὃ γὰρ ἀφ' ἑαυτοῦ λαλήσει. Ἐὰν ἴδῃ τέτινα λέγοντα: Πνεῦμα Ἅγιον ἔχω, καὶ μὴ λαλῶντα τὰ Εὐαγγελικὰ, ἀλλὰ τὰ ἴδια· ἀφ' ἑαυτοῦ λαλεῖ, καὶ ἐκ ἑσὶ Πνεῦμα Ἅγιον ἐν αὐτῷ. Ὡς περὶ λέγει περὶ ἑαυτοῦ: ἐγὼ ἀπ' ἑμαυτοῦ ὃ λαλῶ, ἵνα ἐκλύσῃ τὴν ὑπόνοιαν τῆς πλάνης· μᾶλλον δὲ τὴν πλάνην ἀπὸ τῆς ἀληθείας διέλη· ἕτως ἵνα δάξῃ τίνες ἔχουσι Πνεῦμα Ἅγιον, τίνες οὐκ ἔχουσιν, ἀλλὰ προσποιῶνται ἔχειν, λέγει: ἀφ' ἑαυτοῦ ὃ λαλήσει· παρ' ἐμοῦ ἠκούσατε, τί παρέδωκα· ὅταν ἔλθῃ τὸ ἀόρατον Πνεῦμα, τὰ ἐμὰ λαλήσει. Ἐὰν ἴδῃτε τινὰ, τὰ τῆς Εὐαγγελίας δοῦτεροντα, ὧντως Πνεῦμα ἔχει Ἅγιον. Ἐρχεται γὰρ τὸ Πνεῦμα ἀναμνήσαι ὑμᾶς ὃ ἐδίδαξα. Ἐάν τις ᾖ τῶν ὀνομαζόντων, (λείπει· ἑαυτὸς ἢ γὰρ τῶν ὀνομαζομένων) ἔχειν Πνεῦμα, λέγει τι ἀφ' ἑαυτοῦ, καὶ μὴ ἀπὸ τῶν Εὐαγγελίων, μὴ πισύσῃτε· τῇ ἐμῇ διδασκαλίᾳ ἵσχυρήσατε.

Ταύτῃ δὲ τῇ ἐρμηνείᾳ ὑποσυνάπτει ὁ αὐτὸς αὐτόθι καὶ ἑτέραν, τὴν δὲ δηλονότι: Ἀφ' ἑαυτοῦ ὃ λαλήσει· ἀλλ' ὅσα ἂν ἀκούσῃ, ἀναγγελεῖ ὑμῖν. Ἀντὶ τῆς: ὃ ἐλάλησα, ταῦτα βεβαιώσει· καὶ ὅρα τὸ θαυμαστόν: Ὡς περὶ ὁ Σωτὴρ ἐλθὼν, ἐγένετο πλήρωμα Νόμου καὶ Προφητῶν, ἕτω πλήρωμα τῆς Εὐαγγελίας τὸ Πνεῦμα. Ὁ Χριστὸς ἐλθὼν ἐβεβαίωσε τὰ παρὰ τῆς Πατρὸς, τὰ ἐν τῷ Νόμῳ ἐρημμένα καὶ Προφήταις, διὰ τῆς λέγει Παῦλος, πλήρωμα Νόμου Χριστός· τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐλθὼν, ἐπλήρωσε τὰ τῆς Εὐαγγελίας· ὅσα ἐστὶν ἐν τῷ Νόμῳ, ὁ Χριστὸς πληροῖ· ὅσα ἐστὶν ἐν τῇ τῆς Χριστοῦ διδασκαλίᾳ, τὸ Πνεῦμα πληροῖ· ὃς ὡς ἀτελεῖς ὄντος τῆς Πατρὸς· ἀλλ' ὡς ἐφάνη Χριστὸς βεβαιῶν τὰ τῆς Πατρὸς, ἕτως ἐφάνη τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον βεβαιῶν τὰ τῆς Υἱοῦ. Πόθεν τῆς; λέγει ὁ Σωτὴρ τοῖς Μαθηταῖς: πολλὰ ἔχω λέγειν ὑμῖν, ἀλλ' οὐ δύναμαι βεβαιῶν ἅρτι· ὅταν δὲ ἔλθῃ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ὁδηγήσει ὑμᾶς εἰς πᾶσαν τὴν ἀλήθειαν· ὅτι ἀφ' ἑαυτοῦ ὃ λαλήσει, τὰ γὰρ ἐμὰ πληροῖ. Ἀναπληροῖ ὁ Υἱὸς τὰ τῆς Πατρὸς, καὶ ἀφ' ἑαυτοῦ ὃ λαλεῖ.

Τὴν μὲν ἔν προτέρῳ τῶν ἐννοιῶν ἀσπάσεται καὶ ΒΙΓΓΙΛΙΟΣ ὁ Τριδεντίνων Ἐπίσκοπος, ἐν τῇ Ἀθανασίᾳ Προσδιαλέξει πρὸς Σαβέλλιον, καὶ Φωτεινὸν, καὶ Ἀρειον· ἐν τοῖς Γρηγορίᾳ τῆς Κασσιανδρᾶς Συγγράμῃ: Σελ: 498. Καὶ γὰρ, εἰ ἐκ τῶν ἰδίων ἐλάλει (φησὶν) ὃς ὅπως ἄλλότριον ἂν τῆς Πατρὸς ὑπῆρχεν, ἀλλὰ καὶ ἀπατεῶν, καὶ πλάνος ἀναμφιβόλως ἂν νομιθεῖ. Ἐπεὶ περὶ ὡς ὁ Υἱὸς ἔφη: πᾶς ὃ λαλῶν τὸ ψεῦδος ἐκ τῶν ἰδίων λαλεῖ.

Η η η 2.

καὶ



„κὶ διὰ τῆτο τὸ Πνεῦμα, τὸ ἀληθὲς λαλεῖ, ὅτι ἐκ τῶν ἰδίων  
 „τρετέσιν, ἐκ αὐτῶν, ἀλλ' ἐκ τῆ Πατρὸς καὶ τῆ Υἱῶ, ἀ δὲ  
 „λαλήσαι, λαλεῖ,,. Τὴν αὐτὴν δὲ Ἑρμηνείαν ἠσπάσατο καὶ  
 ῬΟΤΠΕΡΤΟΣ ὁ Τριττωσίος (5), Βιβλ: ΙΒ'. τῶν εἰς τὸν Ἰωάν:  
 εἰς ἐκείνα: „ἐ λαλήσει αὐτῶν,, κτ: ἐν τῷ Β'. Τόμ: τῶν  
 Συγγραμμάτων, Σελίδι 307. Ἀλλ' ἐδ' αἱ Διερμηνεύσεις αὐτὰ  
 συνηγοροῦσαι εἰς Λατίνους. Τὸ γὰρ ἐκ τῆς Ἱερᾶς Γραφῆς τὸ  
 Πνεῦμα προβάλλει ἅπερ ἀναγγέλλει ἢ τὸ τὴν διδασκαλίαν  
 τῆς Υἱῶ ἐπικυρῶν τε καὶ πιστοποιεῖν, τί δὴ ποτε πρὸς ἀπόδειξιν  
 τείνει τῆς τῆς Ἁγίας Πνεύματος ἐκ τῆς Υἱῶ Ἐκπορεύσεως;

### Ἀ Π Α Ν Τ Η Σ Ι Σ Ι Γ'.

Εἰ τοίνυν τὸ Πνεῦμα ἀκέραιον ἐκ τῆς Υἱῶ ἀ λαλεῖ, ἐδέν τι ἦτορ  
 καὶ ὁ Υἱὸς ἀ λαλεῖ, ἀκέραιον παρὰ τῆς Πνεύματος. Ταῦτα γὰρ τῆ  
 Σωτῆρος ἐστίν: „Οὐ γὰρ αὐτῶν λαλήσει, ἀλλ' ὅσα ἂν ἀκέραιον  
 „λαλήσει. Ἐκ τῆς ἐμῆς λήψεως ὅσα ἀναγγελεῖ ὑμῖν. Πάντα τὰ  
 „τῆς Πατρὸς. ἐμὰ ἐστίν, διὰ τῆτο εἶπον ὅτι ἐκ τῆς ἐμῆς λήψεως,  
 „καὶ ἀναγγελεῖ ὑμῖν,,. Ἐν οἷς δὴπερ, ἐκ τῆς πάντα ἔχον τὰ  
 τῆς Πατρὸς ὁ Υἱὸς ἐπιφέρει, ὅτι τὸ Πνεῦμα ἐξ αὐτῶν λήψεως,  
 ἦτοι ἀκέραιον ἐξ ἧς γὰρ λαμβάνει, ἐξ αὐτῶν καὶ ἀκέραιον τὸ Πνεῦμα, ὡς  
 ἀνωτέρω δέδεικται. Εἴπερ ἄρα τὸ Πνεῦμα ἐκ τῆς αὐτῶν ἀκέραιον,  
 διὰ τὸ πάντα τὸν Υἱὸν ἔχειν τὰ τῆς Πατρὸς ἐκ τῆς ὁμοίᾳ ἐπε-  
 ται καὶ τὸν Υἱὸν ἀκέραιον ἐκ τῆς Πνεύματος, ὅτι καὶ τὸ Πνεῦμα  
 πάντα ἔχει τὰ τῆς Πατρὸς. Καὶ εἰ τοίνυν τὸ Πνεῦμα ἐκ τῆς  
 Υἱῶ ἀκέραιον, ὅτι ἐκ μιᾶς καὶ τῆς αὐτῆς ἐσίας τε καὶ γνώσεως καὶ  
 θελήσεως τῆς Υἱῶ, ἅπερ ἀναγγέλλει, λαλεῖ κατὰ τὸ ἐν τῇ Β'.  
 τῶν Ἀπαντήσεων ἀποδειχθέν: ὡσαύτως ἄρα καὶ τὸν Υἱὸν ἐκ  
 τῆς Πνεύματος ἐπ'ἀνάγκης ἀκηκοέναι ὁμολογεῖν, ὡς ἐκ τῆς αὐτῆς  
 καὶ γνώσεως καὶ θελήσεως τῆς Ἁγίας Πνεύματος καὶ αὐτὸν λα-  
 λήσαντα.

Τὸ δ' αὐτὸ τῆτο φανερόν. καὶ ἐξ ὧν εἰρήκασιν οἱ Πατέρες,  
 ἐν οἷς ἐδίδασκον τίνι δὴποτε λόγῳ τὸ Πνεῦμα λέγεται ἀκέραιον  
 ἐκ τῆς Υἱῶ. Ὁ μὲν γὰρ ἈΘΑΝΑΣΙΟΣ διὰ τῆτο ἔφασκεν ὅτι τὸ  
 Πνεῦμα ἐκ τῆς Υἱῶ ἀκέραιον, ὅτι τὴν αὐτὴν ἐστίν ἔχον σὺν αὐτῶ  
 θελήσιν. ἐ γὰρ ὅτι λαλεῖν ἐκ ἠπίστατο. Ἀλλὰ καὶ ὁ Υἱὸς, τὴν  
 αὐτὴν ὡσαύτως θελήσιν ἔχει τῷ Πνεύματι, ὡς διώαμιν πᾶσαν,  
 καὶ ἅπασαν ἐξουσίαν ἐξ αἰῶνος ἔχων, διὰ τῆς ἐκ τῆς Πατρὸς  
 αἰωνίᾳ

(5) Ἡκμαζε δ' ὁ Ῥοτπερτος ἔτος, ἀρχομένης τῆς ΙΒ'. Ἐκατονταετηρίδος, ἐτελεύτα δ' ἐν  
 ἔτει 1135.



αἰωνίᾳ γεννήσεως. Καὶ ΔΙΔΥΜΟΣ δὲ ὁ Ἀλεξανδρῶς: „Ὅτι  
 „τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐστὶν ἀχώριστον τῆς θελήσεώς τε καὶ φύσεως  
 „καὶ τῆς ἀληθείας τῷ Υἱῷ,,. Ἀλλὰ καὶ ὁ Υἱὸς ὁμοίως τῆς τῷ  
 Πνύματος θελήσεώς τε καὶ φύσεως καὶ ἀληθείας ἐστὶν ἀχώριστος.  
 Καὶ ἈΜΒΡΟΣΙΟΣ δὲ, τὸ Ἅγιον Πνεῦμα φησὶν ἀκέναι, διὰ τὸ  
 ἐνιαῖον τῆς ἑσίας καὶ τῆς θελήσεως. Ἐπεὶ περ, ὁ διὰ τῆς ἐνό-  
 τητος τῷ θελήματος οἶδε καὶ ὁ Υἱὸς τὸν Πατέρα θέλοντα, ἀκη-  
 κοέναι δοκεῖ καὶ τὴν ἀδιάζυκτον αὐτῷ ἐντεῦθεν νοεῖσθαι σωεργησιν.  
 Ἀλλ' ἥτις τῷ Πνύματι πρὸς τὸν Υἱὸν, ἡ αὐτῇ ἐνότης φύσεώς τε  
 καὶ θελήσεως, καὶ σωεργείας ἀδιαχωρίσθαι, ἐγχαυρεῖ καὶ τῷ Υἱῷ  
 πρὸς γε τὸ Πνεῦμα καὶ ἐδὲν ἡτῶν ἄρα, ὅπερ διὰ τῷ ἐνιαίᾳ  
 θελήματος καὶ ὁ Υἱὸς οἶδεν ὅτι τὸ Πνεῦμα βέλεται, ἀκηκοέ-  
 ναι δοκεῖ. Καὶ ὁ ΧΡΥΣΟΣΤΟΜΟΣ, ὅτι τὰ αὐτὰ ἄπερ ὁ Υἱὸς,  
 καὶ ἐχ' ὑπεναντία αὐτῷ, ἐλάλησε τὸ Πνεῦμα. Ἀλλὰ μὴ ἐδ'  
 ὁ Υἱὸς ὑπεναντία, τῷ δέ τοι Πνύματι ἐλάλησε τὰ αὐτά. Ὁ δὲ  
 Ἀλεξανδρείας ΚΥΡΙΛΛΟΣ, ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα κατὰ τὴν τῷ  
 Χριστῷ θελήσιν λαλεῖ, ἐδ' ἀλλοτρίαν τινὰ παραδίδωσι διδασκα-  
 λίαν. ὅτι ἐχ' τὰ ἴδια νομοθετεῖ, ἀλλὰ τὰ ἐν τῷ Χριστῷ φθέγγ-  
 γεται. ὅτι διὰ τὸ ταῦτόν τῆς ἑσίας, ἐδὲν παρὰ τὴν τῷ Χριστῷ  
 θελήσιν φθέγγεται. ὅτι διὰ τὴν ιδιότητα τῆς ἑσίας, τὰ ἐν τῷ  
 Υἱῷ φθέγγεται. Ἀλλὰ γὰρ ὡσαύτως καὶ ὁ Υἱὸς κατὰ τὴν τῷ  
 Πνύματος ἐφθέγγετο θελήσιν, ἐκ ἀλλότρια ἐδίδαξεν, ἐκ ἐνο-  
 μοθέτησεν ἴδια, ἀλλὰ διὰ τὴν κατ' ἑσίαν οἰκειότητα, τὴν Υἱὸς τε  
 μεταξὺ καὶ Πνύματος ἐγχαυρῶσαν, τὰ ἐν τῷ Ἁγίῳ Πνύματι  
 ἀπεφθέγγετο. Ὁ δὲ ἈΝΩΝΥΜΟΣ Συγγραφεὺς: ὅτι διὰ τὸ  
 ἐνιαῖον τῆς ἑσίας, τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ταυτὰ ἐρεῖ. Ἀλλὰ ταυτὰ  
 σὺ τῷ Πνύματι, διὰ τὸ τῆς ἑσίας ἐνιαῖον, καὶ ὁ Υἱὸς εἶπεν.  
 Ὁ δὲ Ἐμυσίως ΕΥΣΕΒΙΟΣ, ἀκέναι (ἐλεγε) τὸ Πνεῦμα ἐκ  
 τῷ Υἱῷ, διὰ τὴν κοινωνίαν τῆς θελήσεώς τε καὶ γνώσεως. ἀλλ'  
 ἥτις τῷ Πνύματι πρὸς τὸν Υἱὸν, ἡ αὐτῇ δῆπρ καὶ τῷ Υἱῷ  
 πρὸς τὸ Πνεῦμα, θελήσεώς τε καὶ ἐπισήμης ἐνεστὶν ἐγχαυρῶσα  
 κοινότης. Ὁ δὲ Τριδεντίνος ΒΙΓΓΛΙΟΣ ἐφασκεν, ὅτι τὸ Πνεῦμα  
 ἐκ ἀφ' ἑαυτῆς, ὡς ἀλλότριόν τι καὶ ἐκφυλον, ἀλλ' ὡς μιᾶς τε καὶ  
 τῆς αὐτῆς φύσεως μετέχον, τὰ Πατρὶ καὶ Υἱῷ κοινὰ ὄντα λα-  
 λεῖ. ἀλλὰ καὶ ὁ Υἱὸς ὁμοίως ἐκ ἀφ' ἑαυτῆς ὡς ὁ θνήσκων τε καὶ  
 ἀλλότριος, ἀλλ' ὡς μιᾶς τε καὶ τῆς αὐτῆς φύσεως κοινωνὸς, τὰ  
 τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Πνύματος λαλεῖ κοινὰ γε τυγχάνοντα. Ὁ  
 δέ τοι ΒΕΔΑΣ: ὅτι ἐκ ἀνευ τῆς τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ κοι-  
 νωνίας λαλεῖ τὸ Πνεῦμα καὶ ὅτι διὰ τὴν ἐνότητα τῆς ἑσίας,  
 καὶ τὴν ιδιότητα τῆς ἐπισήμης, ἀκέναι. Ἀλλ' ἐδ' ὁ Υἱὸς ἀνευ τῆς  
 τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Πνύματος κοινωνίας ἐστὶ λαλῶν, ἡ τε ἐνότης  
 ἡ μέσον Υἱὸς ἐγχαυρῶσα καὶ Πνύματος, ἡ αὐτῇ καὶ τὴν ιδιότητα

Τόμ: Β'.

Θ ϑ ϑ

τῆς

τῆς ἐπισήμης καὶ αὐτὸς ἔχει. Τὸν δ' αὐτὸν ἀπεδίδεν λόγον καὶ ἈΛΒΙΝΟΣ ὁ Ἀλκεῖνος, καὶ ΡΑΒΑΝΟΣ ὁ Μαῦρος, καὶ ὁ ΣΜΑΡΑΓΔΟΣ, προσιδέντες ἅμα, ὅτι καὶ τὸ ἔργον Πατρός τε καὶ Υἱῆς, καὶ Ἁγίου Πνεύματος ἐν καὶ ταῦτόν ἐστίν. Καὶ τῷ αὐτῷ ἄρα λόγῳ, καὶ ὁ Υἱὸς ἀκέει ἐκ τῆς Ἁγίας Πνεύματος, ἅτλα λαλεῖ καθάπερ ἐν ὁμολογῇ τῆτο καὶ ὁ Ἑμισιωὺς ΕΥΣΕΒΙΟΣ ἐν τοῖς ἀνωτέρῳ ἀπομνημονοῦσιν ῥήμασι, λέγων: „Τί ἐστὶν ἀκέει; „ἔδὲ γὰρ χρὴ νοεῖν, ὅτι ἐν ἐκείνῃ τῇ ἀθεάτῳ Τριάδι, φωνήσασά τις καὶ κραυγώδης συλλαλία γίνεται ἐν τέτῳ ἄρα ἀλλήλων „ἀκέειν, ἐν ᾧ γινώσκασί τε καὶ θέλῃσι. Λαλήσει τοιγαρὲν τὸ „Ἅγιον Πνεῦμα, ὅσα ἂν γινῶ θέλοντα τὸν Πατέρα καὶ τὸν „Υἱόν. Ὡς περ γὰρ ἡ θέλησις κοινὴ, ἔτω καὶ ἡ ἀκοή,.. — Εἰ τοίνυν ἐκ τῆς Ἁγίας Πνεύματος καὶ ὁ Υἱὸς ἀκέει, πῶς ἂν (πρὸς Θεῶ!) ἐντεῦθεν ἔποιτο: ὡς ἐπειδὴ τὸ Πνεῦμα ἐκ τῆς Υἱῆς ἀκέει, ἔξ αὐτῆς ἄρα καὶ ἐκπορεύεται; Μὴ γὰρ τέως καὶ τῆς Υἱῆς τὸ Πνεῦμα ἐστὶν ἀρχή, καὶ καθάπερ τὸ Πνεῦμα λέγεται ἐκ τῆς Υἱῆς ἐκπορεύεσθαι, ἔτω καὶ ὁ Υἱὸς ἐκ τῆς Ἁγίας Πνεύματος γεννᾶσθαι ῥηθῆσεται;

#### Ἀ Π Α Ν Τ Η Σ Ι Σ Δ'.

Ἀκέει μὲν ἐν τῷ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῆς Υἱῆς, ἔ μὲν τοι γε ἀπ' αἰῶνος, ἀλλ' ἐν χρόνῳ, (6) καθάπερ ἔρηται, διὰ τὸ ἐνιαῖον τῆς ἐσίας, καὶ τῆς σοφίας, καὶ τῆς ἀληθείας, καὶ τῆς βελησεως. Περὶ γὰρ τῆς χρονικῆς μόνον ἀκοῆς εἶναι τῷ Σωτῆρι τὸν λόγον, ἔξ αὐτῶν αὐτῶ τῶν ῥημάτων γίνεται φανερόν, ἐν οἷς φησὶν: „ἐκ αὐτῆς λαλήσει, ἀλλ' ὅσα ἂν ἀκέει, λαλήσει,.. Ἐνθα δὴ περὶ τὸ ῥῆμα, ἐχὼ κατὰ τὸ παρωχηκὸς ἀποφαίνεται, κατὰ δὲ τὸ μέλλον: ὅσα ἂν „ἀκέει, ἔδὲ τὸ ἀπ' αἰῶνος ὄν, τὸ δὲ τέως γενήσεσθαι μέλλον παρίσῃσιν. Ἀλλὰ καὶ ἡ χάρις δι' ἧς τὸ Πνεῦμα τοῖς Ἀποστόλοις λαλήσεν ἔμελλεν, ἔπω τὸ τιτωκαῦτα πεπλήρωτο, πληρωθῆσομένη δὲ ὡς, ὡς ἐκ τῆς τῆς Πνεύματος ἐπιδη-

(6) Οὐχὶ διὰ τὸ τῆς ἐσίας, καὶ τῆς σοφίας, καὶ τῆς ἀληθείας, καὶ τῆς βελησεως ἐνιαῖον, ἀκέει ἐν χρόνῳ ἐκ τῆς Υἱῆς τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἢ γὰρ κατὰ τὰ εἰρημένα ἐνόησε τε καὶ ταυτέτης ἐν τοῖς Θεολογικοῖς ὁμολογῆται χρέναι παντὸς ἔσα ἐπέκεινα· ἐνθεν τοι καὶ ἀπ' αἰῶνος ταύτη γε τὸ Πνεῦμα ἐκ τῆς Υἱῆς ἐστὶν ἀκέει, καθάπερ καὶ ὁ Υἱὸς ἐκ τῆς Πνεύματος. Ἀλλ' ἐν χρόνῳ τὸ Πνεῦμα λέγεται ἀκέειν, ἅτλα τῇ κτιστῇ φύσει ἀναγγελεῖν ἀποκαλύψει τοῖς δὲ λόγῳ, καὶ ὄν ἐν αὐτῇ ἐνεργήσει διὰ τῆς αὐτῆς χάριτος. Ὡς ἐγχερον μὲν εἶναι τὰ, οἷς ἀκέει, τιτὼ δὲ γε ἀκίω καὶ αὐτῷ αἰωνίαν ἑαυτῷ καὶ ὑπέρχερον ἢ, ὡς ἄλλως εἰπεῖν, χρονικῶ μὲν εἶναι τιτὼ ἀκίω κατὰ τὰ ἐφ' ᾧ περατῆται διαβαίνοντα κτίσματα, αἰωνίαν δὲ κατὰ τιτὼ ἀρχίω αὐτῷ τῆς ἀκτικῆς ἔτω φᾶναι, καὶ κατανοητικῆς ἐν τῷ Θεῷ σοφίας τε καὶ διωάμεως.

ἐπιδημίας, κατὰ τὴν ἐπαγγελίαν τῆ Σωτῆρος ὑπερτιθεμένη, καθάπερ αὐθις δηλοῖ τὸ ῥῆμα, τὸ ἐν μέλλοντι χρόνῳ σημαντικόν: „λαλήσει,“ ἔπω γὰρ δὴ γεγέννητο ἡ ἐκλάλησις, ἐπομένως δὲ ἀπὸ τῆ αἰῶνος ἐκ ὧ. Παραπλησίως δὲ ὁ Σωτὴρ ἔφησεν: „ὅσα ἀκέσει λαλήσει,“ ὅτε ἄρα τὸ Πνεῦμα λαλήσει, τότε καὶ ἀκέσεται. Ἐλάλησε δ' ἐν χρόνῳ, ἐκ ἀπ' αἰῶνος ἤκασεν ἄρα ἐκ τῆ Υἱᾶ ἐν χρόνῳ. Ἐνθεντοι ἈΘΑΝΑΣΙΟΣ ἐν τῷ Α'. Διαλόγῳ τῶν περὶ Τριάδος, Τόμ: Β'. Σελ: 180. „Διὰ τῆτο εἴρηται περὶ τῆ Πνύματος: ὃ λαλήσει ἀφ' ἑαυτῆς καὶ περὶ τῆ Υἱᾶ, ὅτι ἀπ' ἑμαυτῆς ποιῶ ὁδόν: ἀλλὰ καθὼς ἐδίδαξέ με ὁ Πατήρ, ταῦτα λαλῶ. ἐκ ἐπειδὴ ἐκ οἶδε λαλήσαι τι. ἀλλ' ὅτι, ἐκ ἄλλο θέλει ὁ Πατήρ, καὶ ἄλλο θέλει ὁ Υἱός, καὶ ἄλλο τὸ Πνεῦμα,“. Εἰ ἔν ὁ Υἱός, ἡ τὸ Πνεῦμα ἀκέειν λέγεται, ὅτι ἐκ ἔγνω τί λαλήσει, διὰ δὲ τὴν μίαν θέλησιν ἐπάναγκες ἄρα καὶ πρότερον ἤδη τὸν Υἱὸν εἰδέναι, ἡ τὸ Πνεῦμα, ὅ, τι δῆποτε καὶ λαλήσει καὶ ἐκ ἄρα αἰώνιος, χρονικὴ δὲ ἡ τοιαύτη λαλιὰ ἐστίν. (7)

Ἔτι δὲ καὶ ἈΜΒΡΟΣΙΟΣ Βιβλ: Ε'. περὶ Πίσεως, Κεφ: Ε'. „Οὐκ ἐν δὲ εἰς τῆτο ταπεινότητος τὸν Υἱὸν τῆ Θεᾶ κατὰξομεν, ὡς ἀγνοεῖν, εἰ μὴ ἄπερ ἂν ἀκέσει, ποιεῖν ἢ λαλεῖν,“. — Ἦν περ δὴ (Θελήσεως ἐνότηता καὶ δωάμεως, τὴν Πατρὶ καὶ Υἱῷ ἐνέσσαν): „ἔτι καὶ ἐν τῷ Ἁγίῳ Πνύματι εἶναι, ἀπεμνημόνευσεν ἄλλαχθ' εἰπών: ὃ γὰρ λαλήσει ἀφ' ἑαυτῆς, ἀλλ' ὅσα ἂν ἀκέσει λαλήσει,“. Εἰ δὲ ψυδὲς τὸ τὸν Υἱὸν, ἡ τὸ Ἁγιον Πνεῦμα μὴ εἰδέναι ποιεῖν, ἢ λαλεῖν, εἰ μὴ, ἄπερ ἂν ἀκέσει δῆλον πάντως ὅτι καὶ πρότερον ἐντελῶς τὴν Θεάν ἐχον ἐσίαν ὁ Υἱός καὶ τὸ Πνεῦμα, πρὶν ἂν ἀκέσωσιν. ἐκ ἄρα ἀπ' αἰῶνος ὧ ἡ ἀκοὴ αὐτῇ (8) ἐν χρόνῳ δέ.

Ὡσαύτως καὶ ὁ Ἀλεξανδρείας ΚΥΡΙΛΛΟΣ ἐν Λόγῳ ΛΔ'. προτείναντος τῆ Αἰρεσιόφρονος ὅτι τὸ Πνεῦμα, ἀτελειότητα νοσῶν ἐστὶ παρὰ τὸ μὴ ἀφ' ἑαυτῆς λαλεῖν ἀπαντᾷ: „Οὐ γὰρ ἀτελες τὸ Πνεῦμα δεικνύων, ταῦτα περὶ αὐτῆς φησὶν ὁ Σωτὴρ, ἀλλ' ἵνα μᾶλλον πληροφορήσῃ τῆς ἀκρωμένους, ὡς τῆς ἐσίας ὑπάρχον αὐτῆς, ὅχ' ἑτερόν τι λαλήσει παρ' ὅπερ αὐτὸς βέλεται,“. Εἵπερ ἄρα ὁδόν τι τελειότητος ἐνδεῖ τῷ Πνύματι πρὶν ἀκέσει ἐκ τῆ Υἱᾶ ἡ ἀκοὴ πάντως αὐτῇ ἐκ ἐστίν αἰώνιος, ἀλλὰ χρονικὴ ὡς εἶγε ἐκ ἀπ' αἰῶνος, ἐν χρόνῳ δὲ μόνον ἔτω παρὰ τῆ Υἱᾶ ἀκέει τὸ Πνεῦμα τὸ Ἁγιον, πῶς (πρὸς Θεᾶ!) τὸ ἐκ τῆ Υἱᾶ ταύτη

(7) Οὕτως ἡ μὲν εἰδησις, ὥσπερ δὴ καὶ ἡ ἀκοὴ, αἰώνιος ἡ δὲ λαλιὰ ἐστὶν ἐγχρονος.

(8) Ἡ ἀκοὴ „αὐτῇ,“ καλῶς τὸ „αὐτῇ,“ ἡ διαβαίνουσα, δηλονότι, καὶ μεταδιδόμενη τῇ κτιστῇ Φύσει ταύτῃ γε δήπερ, ἢ μεταδίδεται.

ταύτη λαμβάνειν τὸ Πνεῦμα εἰς πίσιν συμβαλεῖται τῆς τῆς Ἁγίας Πνεύματος ἐκ τῆς Υἱῆς Ἐκπορεύσεως; Πάντως γὰρ ἢ μὲν τῆς Πνεύματος Ἐκπορεύσεως ἐστὶν αἰωνία καὶ ὁ χρονική· ἢ δ' ἀκοὴ τῆς Πνεύματος αὕτη ἐκ τῆς Υἱῆς, χρονική ἐστὶ μόνον καὶ ἐκ αἰωνία. Πῶς ἔν ἄρα ἢ ἀκοὴ αὕτη (9) τῇ Ἐκπορεύσει εἴη ἂν ἢ αὐτή; ἢ, τίς ἢ τῆς λόγος ἀκολουθία, ἵν' ἐπειδὴ τὸ Πνεῦμα ἐκ τῆς Υἱῆς χρονικῶς ἔστω ἀκέραια, διὰ δὲ τῆς αὐτῆς ἀπ' αἰῶνος ἐκ τῆς αὐτῆς ἀκέραια, κατὰ τὴν αὐτῆς ὑποστατικῶς Ἐκπορεύσει; Ὡσαύτως ἐμπης, ὡς ἐν τῇ Γ'. τῶν Ἀπαντήσεων ἐδείχθη, καὶ ὁ Υἱὸς ἀκέραια ἐκ τῆς Ἁγίας Πνεύματος ὁ μὲν τοι, παρὰ τῆς, ἐκ τῆς Ἁγίας Πνεύματος καὶ γεννητὸς ἐστὶν. Ἄ δὲ κατὰ τῆς ἐν χρόνῳ ταύτης νοημένης ἀκέραιας εἶχεν ἀντιπροτείνεσθαι, ἐν ἣ Ἐκπορεύσει ἐδείκνυτο, ὅτι τὸ λαμβάνειν τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῆς Υἱῆς, ἔδεν εἰς ἀπόδειξιν σωτελεῖ τῆς τῆς Ἁγίας Πνεύματος ἐκ τῆς Υἱῆς Ἐκπορεύσεως, περὶ τὴν Δ'. τῶν Ἀπαντήσεων, ἥδη ἐπελυσάμεθα· ὁ γὰρ αὐτὸς λόγος διὰ πάντων κρατεῖ.

#### Ἀ Π Α Ν Τ Η Σ Ι Σ Ε'.

Ἐνθεν τοι οἱ Πατέρες καλεῖται: „Οὐκ ἀφ' ἑαυτῆς λαλήσει, ἀλλ' „ὅσα ἂν ἀκέραια λαλήσει,, : Οὐχὶ περὶ τῆς Υἱῆς παρέδωκεν ἐρμηνεύεσθαι, εἰς περὶ τῆς τῆς Ἁγίας Πνεύματος ἀρχῆς ἢ ὁ λόγος. Εἰς ἀντὶ πάντων ἀρκέσει μάρτυς ὁ ΑΥΤΟΥΣΤΙΝΟΣ. Τῆς γὰρ Ἀρειανῆς ἐκ τῶν Χριστῶν τῶν δε ρημάτων ἐπιφέροντος μὴ ἀφ' ἑαυτῆς τὸ Πνεῦμα λαλεῖν, ἀλλ' ἐν ἅπασιν τὴν ἐντολὴν τῆς Χριστῆς ἀπεκδέχεσθαι, ἵν' ἐντεῦθεν ὑποσώψῃ, ἀρχὴν τῆς Πνεύματος καὶ αἰτίαν εἶναι τὸν Υἱόν· ἀπαντᾷ πρὸς ταῦτα ὁ Αὐγουστίνος ἐν τῷ Β'. Βιβλ: κατὰ τῆς Λόγος τῶν Ἀρειανῶν, ἐν Κεφαλῇ ΚΓ'. „Ὅτι δ' ἐν ἅπασιν τὸ Ἅγιον Πνεῦμα τὴν τῆς Χριστῆς ἐντολὴν, ὡς „φασὶν, ἀπεκδέχεται ἀναγνώτῳσαν, εἰ διώκονται· τὸ γὰρ εἰρη- „μένον ἐστὶν: ἐκ ἀφ' ἑαυτῆς λαλήσει· ἐκ εἴρηται δέ: ὅσα ἂν παρ' „ἐμῆς ἀκέραια· ἀλλ' ὅσα ἂν ἀκέραια, λαλήσει,,. Κἀντεῦθεν ἐφεξῆς δείκνυσιν, περὶ τῆς Πατρὸς διερμηνεύεσθαι εἶναι τὰ τῆς Χριστῆς ῥήματα, ὡς ἀνωτέρω πεπύσμεθα. Ἐνθα δὲ πάντως, ἔπερ Αὐγουστίνος πισθῶν ὡς, ὡς ἐκ τῶν ρημάτων ἐκείνων ὁπωσδηποτῶν ἔπεται, ἀρχὴν τῆς Ἁγίας Πνεύματος καὶ αἰτίαν τὸν Υἱόν πεφυ- κέναι, σιέφησεν ἂν τῷ Αἰρεσιόφρονι τῆς δὲ δήπῃ· ἔδειξε δ' ἂν μὴ μὲν τοι κατὰ δημιουργίαν, τῷ δὲ λόγῳ τῆς Ἐκπορεύσεως προῖεναι

(9) Ἡ „ἀκοὴ αὕτη,, : περὶ γὰρ ταύτης τῆς ἀκοῆς ὁ λόγος: τῆς τῆς κτιστῆς ἐσιώσεως μεταδομένης· ἐξ ἧς ἔχ' οἶοντες εἰσβαλεῖν τὴν ἀπ' αἰῶνος τῆς Ἁγίας Πνεύματος Πρόοδον.

προϊέναι τὸ Πνεῦμα ἐκ τῆς Υἱᾶς· ἥδη δὲ διαβρίδω ἀπόφῃσιν, ἐκ τῶν τῆς Χριστοῦ ῥημάτων ἐκείνων κατασκουάζεσθαι, ὅτι τὸ Πνεῦμα τῆς τῆς Χριστοῦ ἐντολῆς ἐν ἅπασιν ἀκέραια τετέστιν, ὅτι ἐκ τῆς Υἱᾶς ἐν πᾶσιν ἠρτήται. Ὁ δὴ πρὸς ἀληθῆς ἂν εἴη, εἶπερ ἐκ τῆς Υἱᾶς ἀπ' αἰῶνος πεφύκει τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκπορευόμενον. Ἐντεῦθεν δὲ καὶ τὸ δ' ἅμα φανερόν ἐστιν, ὅτι Ἀνγέλῳς ἐδόλως τὰ τῆς Σωτῆρος ἐκείνα ῥήματα, εἰς λόγον τῆς τῆς Ἁγίας Πνεύματος Ἐκπορεύσεως ἐκ τῆς Υἱᾶς ἐτύγχανεν ἐκδεχόμενος.

Ἐνίσταντο δ' οἱ Λατῖνοι, κατ' ἀρχὰς εὐθύς τῆς ἐν χερσὶ Πραγματείας, προτείνοντες: ὡς ἐνθα περὶ τῆς Υἱᾶς λέγεται, ἀκέραιον αὐτὸν παρὰ τῆς Πατρὸς, καὶ μηδὲν ἐργάζεσθαι, ὅ,τι μὴ ἴδῃ καὶ τὸν Πατέρα ποιεῖντα· περὶ τῆς αἰωνίᾳ ταῦτα Προόδα νοεῖται λεγόμενα· παραπλησίως δὲ ἄρα περὶ τῆς αἰωνίᾳ Ἐκπορεύσεως τῆς καὶ ἐκ τῆς Υἱᾶς νοητέον εἶναι, ἐνθα τὸ Ἅγιον Πνεῦμα μηδὲν ἀφ' ἑαυτῆς λαλεῖν, ἀλλ' ὅσα ἂν ἀκέραια λαλήσῃν λέγεται. — Ἀλλὰ γὰρ κατὰ διτλῶν ἐννοιῶν ὁ Υἱὸς νοεῖται παρὰ τῆς Πατρὸς ἀκέραιον, καὶ ἀφ' ἑαυτῆς μὴ λαλεῖν. Ἦτοι γὰρ τῆτο, κατὰ λόγον ἐκλαμβάνεται τῆς αἰωνίᾳ Προόδα αὐτῆς, ἢ γὰρ κατὰ τιῶν χρονικῶν ἀκέραιον. Καίτοι γὰρ πολλαχῶς οἱ Πατέρες τιῶν παρὰ τῆς Πατρὸς πύσιν τῆς Υἱᾶς, περὶ τῆς αἰωνίᾳ γεννήσεως αὐτῆς ἐρμηνεύουσιν, ἀλλὰ καὶ περὶ τῆς ἐν χρόνῳ ἔμπης τῆς αὐτῆς ἀκέραιας ἐνιαχῶς ἐκτιθέουσιν. Οἷον ἈΘΑΝΑΣΙΟΣ ἐν τῷ Α'. Διαλόγῳ περὶ Τριάδος, ἐπὶ τῶν ἀπομνημονυθέντων ἀνωτέρω ῥημάτων: „Διὰ τῆτο „εἴρηται περὶ τῆς Πνεύματος: καὶ λαλήσει ἀφ' ἑαυτῆς· καὶ περὶ τῆς „Υἱᾶς, ὅτι ἀπ' ἑμαυτῆς ποιῶ ἐδὲν· ἀλλὰ καθὼς ἐδίδαξέ με ὁ Πατήρ, ταῦτα λαλῶ· ἐκ ἐπειδὴ ἐκ οἷδε λαλήσαι τι· ἀλλ' ὅτι ἐκ „ἄλλο θέλει ὁ Πατήρ, καὶ ἄλλο θέλει ὁ Υἱὸς, καὶ ἄλλο τὸ Πνεῦμα „. Περὶ γὰρ μόνῃς τῆς χρονικῆς ἀκέραιας ἐνλαῦθα τὸν λόγον εἶναι, ἐπὶ τῆς Δ'. τῶν Ἀπαντήσεων ἥδη δέδεικται. Καθάπερ ἐν αὐτόθι ἀπεδείχθη καὶ τὰ Ἀμβροσίᾳ, ἐκ τῆς Ε'. περὶ Πίσεως, Κεφ: Δ'. περὶ τῆς κατὰ χρόνον μόνῃς λήψεως τῆς τῆς Υἱᾶς παρὰ τῆς Πατρὸς ἐννοούμενα: „Οὐκ ἐν δὲ εἰς τῆτο ταπεινότητος τὸν Υἱὸν „κατάξομεν, ὥστε, ὅ,τι μὴ ὅπερ ἂν ἀκέραια, ποιῶν ἢ λέγειν „αὐτὸν ἀγνοεῖν· καὶ περιγεγραμμένον νομίζειν εἶναι αὐτῷ τῆς ποιῶν „καὶ λέγειν τὸ μέτρον· ὅτι δὴ γέγραπται: ἀπ' ἑμαυτῆς ἐκ ἐλά- „λησα· καὶ κατωτέρω: καθάπερ εἶπε μοι ὁ Πατήρ, ἔτω λαλῶ „. Παραπλησίως ἄρα κατὰ διτλὸν ἐκλαμβάνεται λόγον, καὶ ἢ ἐκ τῆς Πατρὸς ἀκέραια τῆς Πνεύματος· καὶ γὰρ καὶ κατὰ χρόνον ἀκέραια καὶ διὰ τὸ ταῦτὸν τῆς ἐσίας ἀκέραια καὶ ἀπ' αἰῶνος, κατὰ τιῶν ἐκ τῆς Πατρὸς πρὸ αἰῶνος αὐτῆς Ἐκπορεύσιν. (10) Ὅτι δὲ, ἐπειδὴ

(10) Ὅρα τὰς ἀνωτ: Σημειώσεις (6. 7. 8. 9.).  
Τόμ: Β'. I I I



ἐπειδὴ καὶ ὁ Υἱὸς καὶ τὸ Πνεῦμα, τῷ διτλῷ τῷδε λόγῳ ἀκέσαι παρὰ τῷ Πατρὶ, ἐπάναγκες ἐντεῦθεν παρακολαθεῖν ὅτι καὶ τὸ Πνεῦμα, μὴ καθ' ἓνα διὰ καὶ μόνον, κατὰ δὲ διτλὸν λόγον ὁμοίως ἀκεῖν καὶ παρὰ τῷ Υἱῷ· ἐδεῖς ἐστὶ λόγος ὁ τῷτο ἀποδεικνύς. Πάντως γὰρ καὶ ὁ Υἱὸς ἐκ τῷ Πνεύματος ἀκεῖ, ὡς προαποδέδεικται· ἐμὴ δὲ καὶ διὰ τὸ τὸν Υἱὸν, κατὰ τὸν διτλὸν ῥηθέντα λόγον παρὰ τῷ Πατρὶ ἀκεῖν, διὰ δὴ τῷτο ἐν χρόνῳ τε καὶ ἀπ' αἰῶνος, (τῷ τῆς ἀρχῆς δηλονότι λόγῳ) ἐκ τῷ Ἁγίῳ ἀκεῖ Πνεύματος.

Ἄλλ' ἔστιν ὃς ἀντιπροβάλλεται (11) τὰ τῷ ἸΓΝΑΤΙΟΥ ἐκείνῳ ἐκ τῆς πρὸς Ἐφεσίους Ἐπιστολῆς: „Τὸ δὲ Ἅγιον Πνεῦμα, „ἐκ τῶ ἰδίου, ἀλλὰ τὰ τῷ Χριστῷ καὶ ἐκ αὐτοῦ, ἀλλ' ἀπὸ τῷ „Κυρίου ὡς καὶ ὁ Κύριος τὰ παρὰ τῷ Πατρὶ ἡμῖν κατήγγελλεν „ὁ λόγος γὰρ, φησὶν, ὃν ἀκέετε, ἐκ ἔστιν ἐμὸς, ἀλλὰ τῷ πέμψαντός με Πατρός. Καὶ περὶ τῷ Πνεύματος τῷ Ἁγίῳ: ἐλάλησει, φησὶν, αὐτοῦ, ἀλλ' ὅσα ἂν ἀκήσῃ παρ' ἐμῶ. Καὶ περὶ αὐτοῦ φησὶ πρὸς τὸν Πατέρα: ἐγὼ Σε, φησὶν, ἐδόξασα ἐπὶ τῆς γῆς κτ: καὶ περὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος: ἐκείνος ἐμὲ „δοξάσει, ὅτι ἐκ τῷ ἐμῷ λαμβάνει,,. Ἐκ τῷδε τοίνυν τῷ χωρίῳ ἐνιστάμενος ὁ Ἰησοῦς, ἐπισυνάγεται, φησὶν, ὃ ζητῶμεν. Ἐξ ἧ γὰρ ἔτω λαμβάνει τὸ Πνεῦμα, ὡς λαμβάνει καὶ ὁ Υἱὸς παρὰ τῷ Πατρὶ, ὅπερ ἀναγγέλλει, ἐξ ἐκείνου ἔτως ἐκπορεύεται τὸ Πνεῦμα, ὥστε καὶ ὁ Υἱὸς τῷ Θεῷ γεννᾶται ἐκ τῷ Πατρός. Ἄλλα μὲν τὸ Ἅγιον Πνεῦμα λαμβάνει ἐκ τῷ Υἱῷ ὅ,τι λαλεῖ. Ἄρα ἔτως ἐκπορεύεται ἐκ τῷ Υἱῷ, ὥστε ὁ Υἱὸς γεννᾶται ἐκ τῷ Πατρός. Ἄλλὰ γὰρ ὥστε διτλῷ λόγῳ καὶ ὁ Υἱὸς ἀκεῖ καὶ τὸ Πνεῦμα· χρονικῶς τε, δηλονότι, καὶ κατὰ τὴν Πρόοδον τὴν ἀπ' αἰῶνος· ἔτως εἰ καὶ μείζων τῶν ἐν τῷ Συλλογισμῷ προκειμένων, περὶ τῆς ἐν χρόνῳ νοητῇ ἀκείσεως, ψευδὴς ἔσα ἐλέγχεται· καθάπερ δι' ὅλης τῷτο τῆς ἐν χερσὶν ἀποδέδεικται Πραγματείας. Ἐὰν δὲ ἡ μείζων αὐτῇ περὶ τῆς τῷ Υἱῷ Προόδου νοητῇ τῆς ἀπ' αἰῶνος, ἀληθὲς μὲν τὸ ῥηθέν: ὅτι ἐξ ἧ τὸ Πνεῦμα ἔτω λαμβάνει, ἢ ἀκεῖ αὐτοῦ λαλεῖ, ὥστε ὁ Υἱὸς ἐκ τῷ Πατρὶ λαμβάνει διὰ τῆς ἐξ αὐτοῦ προαιωνίης γεννήσεως· ἔτως ἐκ τῷ αὐτοῦ πρόεισιν ἐκπορευόμενον τὸ Πνεῦμα, ὥστε καὶ ὁ Υἱὸς γεννᾶται ἐκ τῷ Πατρός. Ἄλλ' ἡ ἐλάσων ἔτως ἔσαι ψευδὴς παντάπασιν: ὅτι δηλ: τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ὡσαύτως ἐκ τῷ Υἱῷ λαμβάνει ὅ,τι λαλεῖ, ὥστε ὁ Υἱὸς λαμβάνει παρὰ τῷ Πατρὶ ὅ,τι ἀναγγέλλει. Κακουργότατα καὶ γὰρ ἔτω τὴν ἐλάσωνα ὑπὸ τῇ μείζονι ἐκείνῃ ὁ Ἰησοῦς ἐμόρφῃ: Ἄλλα μὲν τὸ Ἅγιον Πνεῦμα λαμβάνει ἐκ τῷ

(11) Κιχῶς: ἐν Ζητήμ: Α'. Σελ: 9.

τῷ Τίῳ ὅ,τι λαλεῖ· ὁπότε τὸ τῆς μέζονος ὑποκείμενον ἔχον ὡς:  
 Ἐξ ἧς τὸ Πνεῦμα ἔτω λαμβάνει ὅ,τι λαλεῖ, ὡς καὶ ὁ Υἱὸς παρὰ  
 τῷ Πατρὶ ὅπερ ἀναγγέλλει. Ἐὰν ἔν ὁ Συλλογισμὸς ἐπὶ τῆς  
 ἀπλῆς ὁρᾶς ἀναχθῇ τῆς δε: Ὁ Υἱὸς διὰ τῆτο ἀκείν ἐκ τῷ  
 Πατρὶ λέγεται, ὅτι ἐκ τῷ Πατρὶ γεννᾶται· ἐπεὶ δ' ἔν καὶ τὸ  
 Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ὥσπερ ὁ Υἱὸς παρὰ τῷ Πατρὶ γεννᾶται,  
 τὸν αὐτὸν δὴ καὶ αὐτὸ ἐκ τῷ Τίῳ τρόπον ἀκείν λέγεται· ὁμοίως  
 δὴπε καὶ τὸ Πνεῦμα ἐκ τῷ Τίῳ ἀκείν νοητέον, διὰ τὴν ἀπ'  
 αἰῶνος Πρόοδον· τῆς δε, διὰ τὴν Ἐκπόρυσιν αὐτῆς τὴν ἐκ τῷ Τίῳ.  
 Ἀλλ' ἔτω προτεθὲν τῆπιχάρισμα, μετὰ τὴν Ε', τῶν Ἀπαντήσεων  
 ἡμῖν ἐπελύετο. Οὐ γὰρ διὰ τῆτο μόνον ὁ Υἱὸς παρὰ τῷ Πατρὶ  
 λέγεται ἀκείν, ὡς ἄρα προαιωνίως ἐξ αὐτῆς γεννηθείς· ἀλλ' ὅτι  
 καὶ κατὰ χρόνον ἅτλα λαλεῖ, κατὰ τὴν σοφίαν καὶ τὴν ἀλήθειαν  
 καὶ τὴν βέλησιν τῷ Πατρὶ αὐτὰ λαλεῖ. Ἐὰν ἄρα ἐπὶ τὴν  
 δοῦτέραν τῶν ἐννοιῶν ἀπίδης, πάντως δὴπε καθάπερ ἐκ τῷ  
 Πατρὶ ὁ Υἱὸς ἀκείν, ἔτω καὶ τὸ Πνεῦμα ἀκείν ἐκ τῷ Τίῳ.  
 Ἀλλ' ἔκ ἂν ἐντεῦθεν συμπερανθείη, ὡς πᾶσι δῆλον, ὅτι ἄρα  
 καὶ ἐκπορεύεται τὸ Πνεῦμα ἐκ τῷ Τίῳ. Ἐὰν δ' ἐπὶ τὴν προ-  
 τέραν ἐννοιαν ἐπιβλέψης, ὁ μὲν Υἱὸς παρὰ τῷ Πατρὶ ἀληθῶς  
 ἀκείν, διὰ τὴν ἀπ' αἰῶνος ἐξ αὐτῆς γέννησιν· ψεύδεις δ' ὅτι κατὰ  
 τὴν αὐτὴν ταύτῃ ἐννοιαν, ὡς παρὰ τῷ Πατρὶ ὁ Υἱὸς ἀκείν,  
 ἔτω καὶ τὸ Πνεῦμα τυγχάνει ἀκείν ἐκ τῷ Τίῳ.

Ἀντιφέρει δ' ὁ αὐτὸς (12) ἔτι, καὶ τὰ τῷ Ἀλεξανδρείας  
 ΚΥΡΙΛΛΟΥ ἐκείν, ἐκ τῷ Ζ'. Διαλόγος τῶν περὶ Τριάδος,  
 Σελίδι 658: (Ἄ γὰρ ἐκ τῶν Διδύμων, καὶ Αὐγασίνων, καὶ Φελ-  
 γεντίων ὁμοίως προσέλθῃσι (13) ἐν ἄλλοις ἡμῖν ἀπεδείχθη ὅτι  
 παρέφθαρται.) „Ὡσπερ ἔν ὁ Υἱὸς ὁμοῦσιος ὑπάρχων τῷ Θεῷ  
 „καὶ Πατρὶ, Λόγος τε ὢν αὐτῆς, τὰ αὐτὰ λαλεῖ . . . κατὰ τὸν  
 „ἴσον οἶμαι τρόπον τε καὶ λόγον, καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον τὰ  
 „Χριστῶ λαλεῖ, Πνεῦμα ὑπάρχον αὐτῆς,, — Ἀλλ' ἐν τέτοις ὁ  
 Κύριλλος διὰ τὸ ἐνιαῖον τῆς ἑσίας μόνον (14) καὶ διὰ τὴν μέσον  
 τῷ Πνεύματος καὶ τῷ Τίῳ κοινωνίαν, τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον,  
 Πνεῦμα

(12) Ὁ Αὐτ: αὐτόθι Σελ: 7.

(13) Ὁρα ἐν Πραγματ: ἀνωτ: Β'. Παραφθορ: Θ'. καὶ Ι'. Καὶ Πραγμ: Γ'. Παραφθ:  
 ΙΖ'. ΙΗ'. καὶ ΚΒ'. Καὶ Πραγμ: Δ'. ἐπὶ τῆς ε'. Ἐκατονταετηρίδος.

(14) Δῆλιν δὲ τὴν αὐτῆς διάνοιαν ὁ Θεὸς ποιῶται Πατὴρ, ἐξ ὧν ἐπὶ τῆς προτεθείσης  
 ῥήσεως, αὐτὸς κατὰ τὸ σιωχῆς παρὰυτὴν πρὸς αὐτὴν λέγων: „Τὰ Χριστῶ λαλεῖ,  
 „Πνεῦμα ὑπάρχον Χριστῶ, καὶ τῇ πρὸς πᾶν ὅτι ἐν ταυτὸτητι φυσικῇ, τὴν αὐτῆς  
 „δόξαν καὶ ταυτοτέλειαν ἔχον,,. Ὅπερ δὴ τελευτᾶν τετὶ κόμμα ὁ Ἰησοῦς  
 παρέλιπε, μέχρι τῆς: („Πνεῦμα ὑπάρχον Χριστῶ,,) εἰσας· ὁ παράλληλον ἐστὶ τῆς:  
 („Λόγος ὢν αὐτῆς τῷ Πατρὶ,,) ἵνα ἐκ τῆς παραλλήλειας σοφιστῇ τὸ ἐπιφε-  
 ρόμενον· καί·τοι τὸ παραλειφθὲν ἄλλως, μήτε διεξοδικόν τι ὄν, μήτε ἔξω τῆς προ-  
 κειμένης λέγῃ βαδίζον· ἀλλὰ καὶ τὴν αἰτίαν μάλιστα ἐκφῆρον τε καὶ διαλυκαῖον,  
 δι' ἣν τὸ Πνεῦμα τὰ τῷ Χριστῶ λαλεῖν λέγεται.

Πνεῦμα τῷ Υἱῷ ἴδιον εἶναι διδάσκει, καὶ τὰ Χριστῷ ῥήματα λαλεῖν, ἐκείτι δὲ καὶ διὰ τὸ ἐξ αὐτοῦ ἐκπορεύεσθαι. Ἐν αὐτοῖς γὰρ παρὰ θεσίν τινα Κύριλλος ἐποίησατο Πνεύματος μετὰ καὶ Υἱῷ κατὰ γε τὸτο: ὅτι ὁ μὲν Υἱὸς τὰ τῷ Πατρὶ, τὸ δὲ Πνεῦμα τὰ τῷ Υἱῷ λαλεῖ. Οὐμὴ δὲ καὶ ἐφ' ἑνὸς καὶ τῷ αὐτῷ λόγῳ τῷ ἐκατέρῳ κοινωνίαν ἔτῳς ἰδρύει, ὡς εἶγε κατ' ἑνα λόγον καὶ τὸν αὐτὸν, ὅ, τε Υἱὸς τὰ τῷ Πατρὶ, καὶ τὰ τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα φθέγγοιτο. Ἀλλ' ἐπὶ τοιαύτης ἐννοίας ἔφη: καθάπερ ὁ Υἱὸς, οἷα τῷ Πατρὶ ὁμοῦσιος καὶ ἐξ αὐτοῦ γεννητὸς, λαλεῖ τὰ τῷ Πατρί: ἔτῳς ὁμοῦσιος καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα τὰ τῷ Υἱῷ λαλεῖ, ἅτε δὴ Πνεῦμα ἴδιον πεφυκὸς τῷ Υἱῷ, καὶ αὐτῷ ὁμοῦσιον.

Ἀντεπάγει τελευτᾶν ὁ αὐτὸς αὐτόθι καὶ κείνα τῶν τῷ ΚΥΡΙΛΛΟΥ, τὰ ἐκ τῷ ΛΔ'. Βιβλ: τῶν Θεσαυρῶν, Σελίδι 334. „Οὐ γὰρ ἀτελες τὸ Πνεῦμα δεικνύων, ταῦτα περὶ αὐτοῦ φησὶν „ὁ Σωτὴρ, ἀλλ' ἵνα μάλλον πληροφορήσῃ τῆς ἀκρωμένης, ὡς τῆς „ἐσίας ὑπάρχον αὐτοῦ, ἔχ' ἑτερόν τι λαλήσει παρ' ἅπερ αὐτὸς „βλέπεται,.. — Πάλιν τὸ ἐκ τῷ αὐτῷ χωρίῳ καὶ κείνα: „Καὶ γὰρ „νῆς ὑπάρχον αὐτοῦ (τῷ Χριστῷ) ἐκείνα πάντως λογιᾶται καὶ „διατάξει, ἅπερ ἂν καὶ αὐτὸς, ἔπερ ἐστὶ νῆς... ἐκ ἐν ἰδίᾳ τινὶ „θελήσει, ἐδὲ μὴ ἐν ἀλλοτρίᾳ βελήσει τῷ ἐν ᾧ, καὶ ἐξ ἑ ἐστὶν „ὁμιλεῖν, ἀλλ' ὡς ἐκ τῆς ἐσίας αὐτοῦ φυσικῶς προῖον,..

Ἀλλὰ γὰρ, ὡς ἐν τῇ Πραγματείᾳ, ἐν ἣ τὰς ἐκ τῶν Ἀνατολικῶν Πατέρων ἀνθυποφερομένας ἐπελυόμεθα μαρτυρίας, ἀποδείκνυται μὴ κατ' ἄλλῳ ἐννοίᾳ τὸν Κύριλλον ἐκδιδάσκειν ἐκ τῆς ἐσίας τῆς τῷ Υἱῷ πεφυκέναι τὸ Πνεῦμα, ἢ καθ' ὅτι ὁμοῦσιον ἐστὶ τῷ Υἱῷ μὴδὲ κατ' ἄλλῳ ἐννοίᾳ τῷ Υἱῷ εἶναι τὸ Πνεῦμα ὑποτιθέναι, ἢ κατ' ὅτι ἐκ τῷ Υἱῷ ἡμῖν αὐτὸ δίδοται. Ἐκ δὲ τῆς τῷ Υἱῷ ἐσίας (φησὶν) αὐτὸ φυσικῶς „προϊέναι, (ἔτῳς γὰρ Ἑλληνιστὶ ἔχει ἢ λέξεις, ἔχ' „ἐκπορεύεσθαι,) ἐπειδὴ ἔχ' ὑπεργικῶς, ἐδ' ὡς ἀλλότριον, ἀλλ' ὡς ἴδιον χορηγεῖται ἐκ τῷ Υἱῷ. Οὐκ ἄρα τῷ Υἱῷ ἀλλότρια, ἢ τῆς ἐκείνης θελήσεως ἀπάρχοντα λαλεῖν τὸ Πνεῦμα, φησὶ Κύριλλος, ὅτι τῆς αὐτῆς ἐστὶ τῷ Υἱῷ ἐσίας ὅτι ἐκ τῷ Υἱῷ δίδοται ὅτι τέως ἐκ τῷ Υἱῷ, ὡς ἴδιον τῷ Υἱῷ, καὶ ἐκ ἀλλότριον τοῖς πιστεύουσι χορηγεῖται. Πῶς δ' ἐν τέτοις ὁ Κύριλλος ἐκ τῶν τῷ Χριστῷ ῥημάτων: „Τὸ Πνεῦμα ὅσα ἂν ἀκέσῃ λαλήσει, καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ διδάσκει τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκπορεύεσθαι;

Καὶ περὶ μὲν τῷ, ἐκ τῶν τῷ Κυρίῳ ῥημάτων: („Οὐκ ἀφ' „ἑαυτοῦ λαλήσει τὸ Πνεῦμα, ἀλλ' ὅσα ἂν ἀκέσῃ λαλήσει,..) Τῷ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι Ἐκπόρουσιν ἐκ τῷ Υἱῷ μηδαμῶς συμπεράνεσθαι, τοσαῦτα.

ΠΡΑΓ-

## ΠΡΑΓΜΑΤΕΙΑ ΙΔ΄.

Ἐν ἣ τὰ λοιπὰ τῶν Λατίνων Ἐπιχειρήματα τὰ ὑπὲρ τῆς Ἐκπορεύσεως τῆς Ἀγίας Πνεύματος ἐκ τῆς Υἱᾶς, ἀπὸ Ἱερῶν Γραφῶν λαμβανόμενα, ἐπιλύεται.

Ἀντιπροτείνουσι προσέτι Λατίνοι καὶ τὰ τῆς Θεολόγου Ἰωάννου ἐκείνου, ἐν τῷ ΚΒ΄. Κεφαλ: τῆς Ἀποκαλύψεως ἀναγινωσκόμενα: „Καὶ ἔδειξέ μοι καθαρὸν ποταμὸν ὕδατος, λαμπρὸν ὡς κρύσταλλον, ἐκπορεύομενον ἐκ τῆς θρόνου τῆς Θεᾶς καὶ τῆς Ἀρνίας,,. Διὰ μὲν γὰρ τῆς Θεᾶς καὶ τῆς Ἀρνίας, τὸν Πατέρα καὶ τὸν Υἱὸν ὑποσημαίνεισθαι· διὰ δὲ τῆς Ποταμῆς τῆς ὕδατος τῆς ζωῆς, τὸ Ἅγιον Πνεῦμα· ὃ καὶ ἀλλαχῇ ὑπὸ τῷ τοιῷδε ὀνόματι παρὰ τῆς Σωτήρος δεδήλωται. Καὶ τρανῶς ἄρα τὸν Θεολόγον, Φασί, διδάσκειν, ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱᾶς ἐκπορεύεσθαι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ἐν οἷς ἐκ τῆς Θρόνου τῆς Θεᾶς καὶ τῆς Ἀρνίας παρίσχησι τὸν Ποταμὸν ἐκπορεύομενον τῆς τῆς ζωῆς ὕδατος.

Καὶ τάδε μὲν πρῶτον περὶ τῆς Βαπτίσματος ἐρμηνεύει ΑΥΤΟΤΥΠΩΝΟΣ ἐν Ὁμιλ: ΙΖ΄. τῶν εἰς τὴν Ἀποκάλυψιν, Τόμ: Θ΄. τῶν Συγγραμ: „Τὴν πηγὴν, φάσκων, τῆς Βαπτίσματος δέκνυσιν ἐν μέσῳ τῆς Ἐκκλησίας προῤῥέεσαν ἐκ τῆς Θεᾶς καὶ ἐκ τῆς Χριστῆς. Τίς γὰρ ἂν ἡ καλλονὴ τῆς Πόλεως εἴη, τῆς Ποταμῆς διὰ μέσης τῆς πλατείας αὐτῆς κατιόντος, ὡς ἐμποδῶν καθίστασθαι τοῖς οἰκήτοσι,,;

Καὶ ἈΡΕΘΑΣ δὲ ὁ Καισαρείας τῆς Καππαδοκίας Ἐπίσκοπος (1) ἐν τῷ εἰς τὴν Ἀποκάλυψιν Ὑπομνήματι, εἰς τὰ αὐτὰ ῥήματα, περὶ τὸ τέλος, ἐν Τόμ: Β΄. τῶν Οἰκουμενικῶν Συγγραμμάτων, Σελ: 831. „Διττῶν ἴσμεν τῆς ποταμῆς τὴν ὠφέλειαν, διψῶν ἀνάκτησιν, καὶ ῥύπον καθάρσιν ὧν ἀμφοτέρων πλήρης ἡ „κατὰ

(1) Ἀρέθαν τὸν Καισαρείας Ἀρχιεπίσκοπον, τὸν ἐξ Ἀνδρέου Καισαρείας ἢ τέττε ὁμοίως Ἐπισκοπήσαντος, τὴν τῆς Ἀποκαλύψεως ἡμῖν Ἑρμηνείαν ἀπανθισάμενον, οἱ μὲν κατὰ τὴν 5. τῶν ἀπὸ Χριστῆ Ἐκατονταετηρίδων χρονολογήσιν γεγόμενον· οἱ δὲ κατὰ τὴν Ζ΄. οἱ δὲ τέως, κατὰ τὴν Γ΄. ἀρχομένῳ, ἔτι 920. ὡς Κασσιμῆρος Οὐδίνος· ὃν ὅρα, εἰ βέβαιον, ἐν τῷ Β΄. Τόμῳ τῆς περὶ τῶν Ἐκκλησιαστικῶν Συγγραμμάτων Στήλη 426 — 428.

Τόμ: Β΄.

Κ κ κ



„κατὰ τὸ Εὐαγγελικὸν Χριστὸν κήρυγμα ζωῆ· δίψος τε γὰρ ἀνεκ-  
 „τήσατο τῶν πρὸ τῆς παρυσίας Χριστὸς Προφητῶν: ἐδίψησέ Σε,  
 „Φασκόντων, ἡ ψυχὴ ἡμῶν· καὶ βαπτίσματι Θεοργῶ τὰς λουόμε-  
 „νες ἀγνίσκωσα ἐκάθαιρε. Καὶ ὅτι τὸ Βάπτισμα σκοπὸς παρεμ-  
 „φαίνειν τὸν Ποταμὸν, τῷ Εὐαγγελιστῇ ἐνταῦθα ἐχέγγυον πι-  
 „στώσαθαι, τὸ ἀπὸ τῆς θρόνης τῆς Ἀρνίς ἐκπορεύεσθαι αὐτὸν ὑπο-  
 „θέραι, καὶ μέσον τῆς πλατείας διαρρεῖν, τῷ Εὐαγγελικῷ δηλαδὴ  
 „κηρύγματος· ὃ γὰρ ἐστὶν εἰς τὴν ἄνω Ἱερουσαλὴμ εἰσελθεῖν, κατὰ  
 „τὴν τῆς Κυρίας Φωνὴν, τὸν μὴ ἄνωθεν ἀναγεννηθέντα δι' ὕδατος  
 „καὶ Πνεύματος„.

ΠΡΙΜΑΣΙΟΣ δὲ (2) ἔχει περὶ τῆς Βαπτίσματος, περὶ δὲ  
 τῆς καρπῆς τῆς Βαπτίσματος ταῦτα ἐξείληφεν. Οὕτω γὰρ ἐν τῷ  
 Ὑπομνήματι, τῷ ἐν τῷ 5'. Τόμῳ τῆς τῶν Πατέρ: Βιβλιοθ: τῆς  
 ἐν Κολων: Μέρει Β'. Σελ: 195. „Καὶ ἔδειξέ μοι καθαρὸν Πο-  
 „ταμὸν ὕδατος ζωῆς, λαμπρὸν ὡς κρύσταλλον, ἐκπορεύομενον ἐκ  
 „τῆς Θρόνης τῆς Θεῆς καὶ τῆς Ἀρνίς, ἐν μέσῳ τῆς πλατείας αὐτῆς.  
 „Ἐν τῷ ποταμῷ τῆς ζωῆς, τῷ διὰ μέσης τῆς Πόλεως ἐκπορεύο-  
 „μένῳ, ἔπω ἡ τῆς Βαπτίσματος ὑποσημαίνεται τελετῇ, ἀλλ' ὃ  
 „καρπὸς ἤδη τῆς Μυστηρίου τέττε ἀνακαλυφθήσεται. Νῦν μὲν γὰρ  
 „ἐν δάκρυσι σπείρεται, ὅπερ τότε ἐν χαρᾷ μέλλει θερίζεσθαι.  
 „Καὶ διὰ τῆτο νῦν ἡ Ἐκκλησία σπείρει ἐν Πνεύματι, ἵνα ἐκ τῆς  
 „σπέρματος ζωὴν θερίσῃ αἰώνιον. Ἐπειδὴν τοίνυν τῇ πείρᾳ δοκιμά-  
 „σωμεν, ὅταν ἡμᾶς ὃ τῆς ὠφελείας καλὰ ἔσῃ καρπὸς τῆς διὰ τῆς  
 „χάριτος προσληφθέντος Μυστηρίου, τότε δηλοῦσθαι, παρὰ τῷ  
 „Ἰωάννῃ, τῇ Ἐκκλησίᾳ παρίσταται, ὃ τῆς ὕδατος τῆς ζωῆς Πο-  
 „ταμὸς, ὃ λαμπρὸς ὡς κρύσταλλος: τέττεσιν, ὃ τῆς ζωῆς σιτηγ-  
 „μός· ὃ γὰρ ὑπομένει εἰς τέλος, ἔτος σωθήσεται„.

Ἐπαναλαμβάνει τὰ αὐτὰ καὶ ΒΕΔΑΣ ἐν τῷ εἰς τὴν Ἀπο-  
 κάλυψιν Ὑπομνήματι Τόμῳ Ε'. τῶν Συγγραμμάτων: Στήλη 815.  
 „Ἐν τῷ Ποταμῷ τῆς ζωῆς, φάσκων, τῷ διὰ μέσης τῆς Πόλεως  
 „ἐκπορεύομένῳ, ἔπω ἡ τῆς Βαπτίσματος ὑποσημαίνεται τελετῇ  
 „ἀλλ' ὃ καρπὸς ἤδη αὐτῇ τῆς Μυστηρίου ἀνακαλύπτειται„. Νῦν γὰρ  
 ἡ Ἐκκλησία σπείρει ἐν Πνεύματι, ἵνα ἐκ τῆς Πνεύματος τότε  
 θερίσῃ ζωὴν τὴν αἰώνιον.

Ὁ δὲ Καντβαρίας ἸΑΝΣΕΛΜΟΣ, καὶ τοι τῆς τῆς Πνεύματος  
 ἐκπορεύσεως καὶ ἐκ τῆς Υἱῆς ὑπέρμαχος ὢν, τὰ εἰρημένα περὶ  
 τῆς Χριστὸς ἐξελάβετο. Οὕτω γὰρ ἐν τῷ Ὑπομνήματι: Τόμῳ Β'.  
 τῶν Συγγραμμάτων, Σελίδι 507. „Δείκνυσί μοι (Ποταμὸν) τὴν  
 δαψί-

(2) Πριμάσιος Ἀδριανητὴς Ἐπίσκοπος Βυζαντινῆς, εἶς ὧν τῶν ἐπὶ Ἱερουσαλὴμ εἰς Κωνσταντι-  
 νουπόλιν ἀποστέλλοντων τὰ ὑπὲρ τῆς Ἀφρικανῶν Ἐκκλησίας διαπραχθέντα, περὶ τοῦ  
 550. Ὁρᾷ καὶ περὶ τέττε Ὁσδίνον, ἐν τῷ Α'. Τόμῳ Σελ: 1433.



„δαψίλειαν τῆς ζωῆς ὕδατος τῆς ἀναψυχῆς, τῆς ζωοποιῶντος  
 „ἅπαντας τὰς ἐνοικῶντας. (Λαμπρὸν) δηλαδὴ τὸν Χριστὸν, ὅς  
 „ἡ παντελὴς ἐστὶν ἀναψυχὴ καὶ ἀνάπαυσις. (Ὡς κρύσταλλον)  
 „ὅτι ἐκεῖ μόνη καθαρότης ἐστὶ, καὶ ἔδεν ῥυπαρόν (Ἐκπορεύο-  
 „μενον ἀπὸ τῆς θρόνου τῆς Θεᾶς καὶ τῆς Ἀρνίας) ἀπὸ τῶν μεϊό-  
 „νων, ἐφ' ὧν ἐπικάθηται ὁ Θεός. Διὰ γὰρ τῆς τῶν αἰσηγι-  
 „σεως ἐκδέχοντα οἱ ἐλάσσονες ἐκείνῳ τῷ μακαριότητι.,,

Ἔτι δὲ καὶ ἈΓΓΛΩΝ περὶ τῆς διδασκαλίας τῆς Παλαιᾶς  
 καὶ Καινῆς Διαθήκης, ἐκεῖνα ἐκτίθησιν. Οὕτω γὰρ ἐν τῷ εἰς  
 τῷ Ἀποκάλυψιν Ὑπομνήματι αὐτῆς, τῷ ἐν Κολωνίᾳ ἐκδομένῳ  
 Ἔτει 1531. „Ποταμὸς ὕδατος ζωῆς νοεῖται ἡ διδασκαλία τῆς  
 „Παλαιᾶς τε καὶ Καινῆς Διαθήκης.,,

Παρὰ δὲ ἈΝΔΡΕἈΝ τὸν Καισαρεᾶ ἐκ τῷ Ὑπομνήματι: ἡ τῶν  
 ῥημάτων ὑπερον ἀκασόμεθα, τὰ αὐτὰ περὶ τῆς Ἀγίας Πνεύματος  
 ἐξεδέξατο καὶ ἈΜΒΡΟΣΙΟΣ. Οὕτω γὰρ ἐν Βιβλ: Γ'. τῶν περὶ  
 τῆς Ἀγίας Πνεύματος, Κεφαλ: ΚΑ'. „Οὐδ' ἐκεῖνο μικρὸν, ὅτι ἐκ  
 „τῆς θρόνου τῆς Θεᾶς ἐκπορεύεσθαι τὸν Ποταμὸν ἀναγινώσκουμεν.,  
 Οὕτω γὰρ ἔχεις λέγοντα Ἰωάννῳ τὸν Εὐαγγελιστῇ: „Καὶ ἔδει-  
 „ξέ μοι ποταμὸν ὕδατος ζωῆς, λαμπρὸν ὡς κρύσταλλον, ἐκπο-  
 „ρεύόμενον ἐκ τῆς θρόνου τῆς Θεᾶς καὶ τῆς Ἀρνίας, ἐν μέσῳ τῆς  
 „πλατείας αὐτῆς καὶ τῆς ποταμῆς ἐντεῦθεν καὶ ἐντεῦθεν ξύλον  
 „ζωῆς ποιεῖν καρπὸς δώδεκα, κατὰ μῶν ἕνα ἕκαστον, ἀποδιδόν  
 „τὸν καρπὸν αὐτῆς καὶ τὰ φύλλα τῆς ξύλης εἰς θεραπείαν τῶν  
 „Ἑθνῶν. Οὗτος ἐστὶ πάντως ὁ Ποταμὸς ὁ ἐκ τῆς θρόνου τῆς Θεᾶς  
 „ἐκπορεύόμενος. Τετέστι, τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ἐξ ἧς πίνει πᾶς  
 „ὁ πισθῶν εἰς Χριστὸν, ὡς αὐτὸς ἔφη: ὁ διψῶν ἐρχέσθω πρὸς με  
 „καὶ πινέτω ὁ πισθῶν εἰς ἐμέ, ὡς εἶπεν ἡ Γραφή, ποταμοὶ  
 „ῥέουσιν ἐκ τῆς κοιλίας αὐτῆς ὕδατος ζωῆς. Τῆτο δὲ ἔλεγε  
 „περὶ τῆς Πνεύματος ὁ ἄρα Ποταμὸς τὸ Πνεῦμα ἐστὶ τῆτο δ' ἐν  
 „τῷ Ὁρόνῳ ἄρα ἐστὶ τῆς Θεᾶς ἔδεν γὰρ ὕδωρ ἐστὶ τὸ πλῆρον τὸν  
 „Ὁρόνον τῆς Θεᾶς.

Ἀλλ' εἰ δὴ καὶ τῷ ἐχάτῳ ταύτῳ ἀσπασάμεθα ἔννοιαν,  
 ἔδεν ἔδ' ἐντεῦθεν ἐστὶ Λατίνοις, σωτελεῖν αὐτοῖς, ἀπενέγκασθαι.  
 Α'. γὰρ τὰ τῆς Θεολόγου ῥήματα ἐκεῖνα ἐκ ἄλλως, ἢ περὶ τῆς  
 ἐκχύσεως, τετέστι περὶ τῆς κατὰ χρόνον τῆς Ἀγίας Πνεύματος  
 προελθούσεως, νοητέα ἐστὶν. Ἐωρακέναι γὰρ, φησὶ, ποταμὸν ἐκ-  
 πορεύόμενον ἀπὸ τῆς θρόνου τῆς Θεᾶς καὶ τῆς Ἀρνίας, πρὸς ἐπάρ-  
 δοσιν, δηλονότι, τῆς Ἀγίας Πόλεως, τῆς Νέας Ἱερουσαλήμ.  
 „Καθὰ καὶ προσέθησιν, ὡς ἐθεάσατο, ποταμὸν ἐκπορεύόμενον  
 „ἐκ τῆς θρόνου τῆς Θεᾶς καὶ τῆς Ἀρνίας, ἐν μέσῳ τῆς πλατείας  
 „αὐτῆς.,, Ἐξεπορεύετο ἄρα ὁ Ποταμὸς ἐκεῖνος ἀπὸ τῆς θρόνου  
 τῆς Θεᾶς καὶ τῆς Ἀρνίας πρὸς τῷ Ἀγίαν Πόλιν, καὶ διὰ μέσης  
 τῆς

τῆς πλατείας αὐτῆς διέρρρεε· κατὰ καὶ Α'ΥΓΟΥΣΤΙ'ΝΟΣ ἐν 'Ομιλ: ΙΖ'. τῶν εἰς τὴν 'Αποκάλυψιν, ἐπὶ τῶν ἀνωτέρω ἀνενεχθέντων ἔλεγε: „Τῷ Ποταμῷ διὰ μέσσω τῆς πλατείας αὐτῆς κατιόντος,,· ἀπὸ τῷ Θεῷ Θρόνῳ κατιέναι σημαίνων διὰ μέσης τῆς πλατείας τὸν ποταμόν.

Καὶ 'ΑΝΔΡΕ'ΑΣ δὲ ὁ Καισαρεὺς (3) κατὰ τὰ μετὰ βραχὺ τῶν αὐτῷ ἀπομνημοτοῦτέα: διὰ τὸ Ποταμῷ τὰ τῷ Πνδύματος χαρίσματα ὑποδηλῶται „ἃ διὰ τῷ Θρόνῳ τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ „ἐπὶ τὰς πλατείας ἐξίασιν τὰς τῆς Πόλεως,,. Εἶπερ ἄρα ἡ ἐκπόρουσις ἐκείνη ἔτι μέλλουσα ὡς εἰ ὁ Ποταμὸς ἐκεῖνος καταρδύσειν ἔμελλε τὴν πόλιν τὴν 'Αγίαν, καὶ τὴν Νέαν 'Ιερουσαλήμ, κατὰ γε τὰ ἐκτὸς δήπερ, καὶ ἔχι τὰ ἐντὸς, νοητέον τὸ ὧδε λεγόμενον. Κἀντεῦθεν καὶ ὁ Καισαρεὺς 'Ανδρέας περὶ τῶν χαρισμάτων τῷ Πνδύματος, τῶν ἐπὶ τῷ τῶν 'Αγίων πλήθους ἐκκεχυμένων, τὸν ποταμὸν ἐκεῖνον ἡρμυῶσεν. Οὕτω γὰρ ἐν τοῖς νῦν ἀπομνημονοῦτέοις: „Διὰ τῷ Ποταμῷ, ὡς εἴρηται, τὰ τῷ „ζωοπονεῖ Πνδύματος χαρίσματα ὑποδηλῶται, ἃ διὰ τῷ Θρόνῳ „τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ ἐπὶ τὸ πολυάριθμον πλήθος ἐκεῖνο „ἐξίασιν,,. Προσιθὺς δὲ τὸ („ὡς εἴρηται,,) σημαίνει πάντως, τόδ' αὐτὸ παραπλησίως αὐτὸν προεννενοηκέναι, καὶ τοῖς προληφθεῖσιν αὐτῷ ῥήμασιν, ἃ μικρὸν κατωτέρω εἰσόμεθα. 'Αλλὰ γὰρ ἐκ τῆς χρονικῆς πέμψεως τῷ 'Αγίῳ Πνδύματος παρὰ τῷ Υἱῷ, ἔκ ἂν ἐπισυναχθεῖν καὶ ἡ ἐκ τῷ αὐτῷ ὑποστατικῇ πρόοδος, ὡς ἄλλαχθ' ἀποδέδεικται. "Επειτα ἐκ τῷ Θρόνῳ τῷ Θεῷ καὶ τῷ 'Αρνίῳ ἐνταῦθα λέγεται τὸ Πνεῦμα τὸ 'Αγιον ἐκπορεύεσθαι· τίς δ' ἄρ' ὁ Θρόνος ἐκεῖνος; τῷ γὰρ ὄντι ὁ τῷ Θεῷ Θρόνος, ἐκ αὐτοῦ ἐστίν

- (3) 'Ανδρέαν τῷτον τὸν Καισαρέα, τῷ Ἐπιτομέῳ αὐτῷ ἀρχαιότερον γενέσθαι παρὰ πᾶσιν ὁμολογόν· ἀλλ' οἱ μὲν λίαν εἰκόασιν αὐτῷ ὑπερτείνειν τὴν ἀρχαιότητα, ἐς γ' ἐπὶ τὸν Δ'. Αἰῶνα ἀνάγοντες, ὡς Περιζώνιος· οἱ δὲ ὅλην 'Εκατονταετηρίδι κατὰ γασιν, ὡς Καβέος, Βελλαρεμίνῳ τυφλώτῳ τυφλώτῳ παρηκολογηκῶν, ἥπερ ἐκρινεν 'Οσδίνος· ὅς ὁξύτερον οἶόμενος βλέπειν, περὶ τὸ μέσον τῆς Θ'. 'Εκατονταετηρίδος ἐπήξατο· (ἐν Τόχῃ Β'. τῶν αὐτῷ Ἐπιτομημάτων, Στήλῃ 97 — 100.) τῷ δὲ μάλιστα τῷ τεκμηρίῳ χρησάμενος, ὅτι ἐκ πολλῶν Χρήσεων Πατέρων τὴν εἰς τὴν 'Αποκάλυψιν 'Ερμηνείαν ὁ 'Ανδρέας συνέβραψεν· ὁ, περὶ τῷ Θ'. φησὶν, 'Εκκλησιαστικῷ Αἰῶνος ἤκιστα ἐν ἔθει ὡς τοῖς Συγγράφεσιν. 'Αλλὰ τί γὰρ ἂν 'Οσδίνος εἴποι περὶ 'Ιωάννη τῷ ἐκ Δαμασκῶ, τῷ ἐκ παμπλείων Χρήσεων, ἑτερά τε δὲ τῶν αὐτῷ Φιλοπονημάτων, καὶ τὴν παναρμόνιον Συγγραφὴν τὴν περὶ τῆς 'Ορθοδόξου Πίστεως σωαρετύσαντος, καὶ τὰ τοῖς ἐκκρίτοις τῶν Διδασκάλων ἐκπεπονημένα εἰς ἓν συλλεξαμένα, ὡς αὐτὸς Κοσμῷ τῷ Ἐπισκόπῳ Μαΐνῳ ἐπισέλλων καθωμολόγησε; Πάντως γὰρ ὁλοκλήρῳ ἐν αὐτῶν 'Εκατοντῷ ὁ Θεοπέσιος αὐτὸς 'Ανὴρ προήγεν ἀκμάσας περὶ τῷ Ἀντιοχείᾳ 'Επισκόπῳ 'Ιωάνῃ, καὶ τῷ Στραβῶ Οὐαλαφρίδῃ, τῶν κατὰ τὸ 830. τὰ Συλλογισμῶν αὐτῶν ἐκδεδωκότων Φιλοπονήματα· καὶ Φωτίῳ τῷ τὴν Μυριόβιβλον συσταξαμένῳ καὶ 'Αναστασίῳ τῷ Βιβλιοθηκαρίῳ, τῷ τὴν Τριμερῇ Χρονολογίαν σωαρμολογήσαντος· περὶ τὸ 850. 'Αλλὰ περὶ τέττα κρινέτωσαν, οἷς μικρῆς τῷ ἐμῷ δριμύτερος πρόσσεσιν.

ἐστὶν ὁ Θεός. Πῶς ἄρα, εἰ περὶ τῆς αἰωνίᾳ Ἐκπορεύσεως νοεῖν δεόν τὰ τῆ Θεολογικῆς ἐκείνα ῥήματα, λέγοιτ' ἂν τὸ Πνεῦμα ἐκ τῆς Θεότητος τῆς Θεᾶς ἐκπορεύεσθαι; μὴ γὰρ καὶ τὸ κτίσμα τέως γένοιτ' ἂν ἀρχὴ τῆς Ἁγίας Πνεύματος; ὁ μὲν ἔν Ἀνδρέας τῆς Θεᾶς Θεόνον καὶ τῆς Ἀρνίᾳ ἐνόησε τὰ τῶν Πνεύμάτων τάγματα τὰ Χερσικὰ διὰ γὰρ τούτων ἐκ τῆς Πατρὸς δι' Υἱοῦ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ἥτοι τὰ ἐκείνα χαρίσματα ἐπὶ τὰ πλήθη τῶν πισθόντων προχέεται. Οὕτω γὰρ ὁ Καισαρεύς ἔτος ἈΝΔΡΕΑΣ ἐν τῷ εἰς τὴν Ἀποκάλυψιν αὐτῆς Ὑπομνήματι τῷ ἐκδοθέντι ἐν Ἐιδελξέργῃ, Ἔτη 1596. (4) Σελίδι 106. „Ποταμὸς τῆς Θεᾶς ὁ τῷ ἄνω Ἱερουσαλὴμ δαψιλῶς τοῖς ὕδασι καταρδύων, ἐστὶ τὸ Πνεῦμα τῆς Θεᾶς, τὸ ἐκ μὲν τῆς Θεᾶς καὶ Πατρὸς ἐκπορευόμενον, διὰ δὲ τῆς Ἀρνίᾳ, διὰ τε τῶν ὑπερτάτων δωάμεων, αἱ τῆς Θεότητος ὀνομάζονται Θεόνοι, κατιόν· τῆς δὲ Ἁγίας Πόλεως τὰς πλατείας· τρεῖς, αὐτῆς τὰ Συστήματα, τὰ ὑπὲρ ἄμμον, κατὰ τὸν ψαλμογράφον, πληθύνοντα, ἀφθόνως ζωογονεῖν, — Ἐπειτα δὲ, Σελίδι 107. „Διὰ τῆς Ποταμῆς, ὡς ἔρηται, τῆς ζωοποιῆς Πνεύματος τὰ χαρίσματα ὑποδηλῆται· ἃ διὰ τῆς Θεότητος τῆς Πατρὸς καὶ τῆς Υἱοῦ, ἥτοι διὰ τῶν τάξεων τῶν Χερσικῶν Νόων, ἐφ' ὧν ὁ Θεὸς κἀθήται, εἰς τὰς πλατείας τῆς Πόλεως, τρεῖς εἰς τὴν πολυάριθμον ἐκείνῃ πληθύν τῶν Ἁγίων ἐξίσαι, — Τίς ποτ' ἔν ἄρα ἡ Σωσέπεια: Ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα διὰ τῶν Χερσικῶν ταγμάτων προχέομενον ἐστὶν ἐπὶ τῆς πισθόντας: Ἄρα τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῆς Υἱοῦ ἐκπορεύεται; Τελούταϊον δὲ ὁ Καισαρεύς ἔτος Ἀνδρέας, ἐξ ἀφορμῆς τῶν τῆς Θεολογικῆς ῥημάτων ἐκείνων, τῆς τῆς Ἁγίας Πνεύματος μνηθείς Ἐκπορεύσεως, ἔχ' ὡς οἱ Λατῖνοι ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱοῦ ὡσαύτως τὸ Πνεῦμα ἔφησεν ἐκπορεύεσθαι, ἀλλ' ἐκπορεύεσθαι μὲν ἐκ τῆς Πατρὸς, δι' Υἱοῦ δὲ ἀφθόνως ψυχαγωγεῖν τῆς πισθόντας.

Ἐπὶ τῆς ἐν Φλωρεντίας Σωδόδῃ, ἸΩΑΝΝΗΝΣ ὁ Προβιγκιάλις, ἐν Σωελόσει ΚΑ'. Τόμ: ΙΓ'. τῶν Σωοδικῶν, Στήλῃ 1106. (5) ἐκ τῆς Θεᾶς Γραφῆς ἀνθυποφέρων ὑπῆρχε καὶ ἐκείνα, ἐν οἷς ὁ Χριστὸς ἐνεργεῖν διὰ τῆς Ἁγίας Πνεύματος λέγεται. Οὕτω γὰρ ἐκείνος αὐτόθι: „Πέμπτος δὲ λόγος ἐκ τῆς Γραφῆς ἔτος ἐστὶν: „Εὐρίσκομεν ὅτι ὁ Υἱὸς ἐνεργεῖ διὰ τῆς Πνεύματος, κατ' ἐκείνο ἡδὴ τὸ τῆς πρὸς Ἑβραίων Ἐπισολῆς: ὅτι διὰ τῆς Πνεύματος „ἑαυτὸν

(4) Ἐμφέρεται δὲ τὸδε τὸ τῆς Καισαρέως Ἀνδρέας Σύγγραμμα, Γραικο-Λατίνισι ἐκδοθὲν, μετὰ τὸ εἰς τὸν Ἰωάννῃν τῆς Χρυσόστομος Ὑπόμνημα, ἐν τῷ Η'. Τόμῳ τῶν Χρυσόστομικῶν, ἐπὶ τῆς Μαρελλίᾳ Ἐκδόσεως.

(5) Ἐν τοῖς Πρακτικοῖς τῆς ἐκείνης Σωδόδῃ, ἃ συνέγραψεν Ὁράτιος Ἰσπανιανός, ὁ τῆς Οὐατικανῆς ἐν Ῥώμῃ Βιβλιοθήκης Φύλαξ, ἐν Μέρει Β'. Collatione (Σωάξαι) ΚΑ'. ἐν Στήλῃ 930. παρὰ τῷ Ἀρδεῖνῳ ἐν Τόμ: τῶν Σωοδικῶν Θ'.

Τόμ: Β'.

Λ λ λ

„ἐαυτὸν προσώεγκε. Καὶ ἔτως ἐυρήσετε' ἐν ταῖς προενεχθησο-  
 „μέναις χρήσεσιν, ὅτι διὰ τῆς Πνοῦματος ἐνεργεῖ ὁ Υἱός· ἤδη δὲ  
 „ὁ λόγος ὁ ἐκ τῆς Αὐθεντίας ὡς μορφῆται. Ἐπειδὴν τις διὰ  
 „τινος ἐνεργεῖν λέγεται, δεῖ τὸν ἐνεργῶντα δυνάμεως μελαδιδόναι  
 „ἐνεργῶ, τῷ δὲ ὃ ἐνεργεῖ· οἷον ὁ Βασιλεὺς ἐνεργεῖ διὰ τῆς Το-  
 „πάρχης. Σαφὲς δὲ ὅτι ὁ Βασιλεὺς δυνάμιν παρέχεται ἐνεργῶν  
 „τῷ Τοπάρχει, ἢ ἀνάπαλιν· ὅτε ὁ Τοπάρχης διὰ τῆς Βασιλείας  
 „λέγεται ἐνεργεῖν. Δείκνυται γὰρ, ὅτι τὸ δὲ ὃ ἐνεργεῖ ὁ Το-  
 „πάρχης, δυνάμιν αὐτῷ τῷ ἐνεργῶντι παρέχεται· τῆς τῷ  
 „Τοπάρχει. Καὶ τόδε δὴ δόγμα τῆς περὶ τὴν φύσιν ἐστὶ φιλο-  
 „σοφίας. Ἦδη μὲν ἔν, ἐξ ὧν ἡ Γραφή λέγει, ὅτι ὁ Υἱὸς διὰ  
 „τῆς Πνοῦματος ἐνεργεῖ, ὡς τῇ τῆς Πνοῦματος δυνάμει πολλὰ ση-  
 „μεῖα τελῶν· λέγειν ἐπάναγκες· ἦτοι τὸ Πνεῦμα τὴν εἰς τὸ  
 „ἐνεργεῖν δυνάμιν τῷ Υἱῷ παρέχων, ἢ τὸ ἀνάπαλιν. Ἐπεὶ δὲ  
 „ἡ ἐνεργὸς αὕτη δυνάμις, ἢ δὲν ἄλλ', ἢ ἡ Θεία ἔστι ἐστίν, ὡς  
 „ἅπασιν τοῖς Διδασκάλοις δοκεῖ· ὁ λόγος ἐξ ἀνάγκης ἐπισυνάγει  
 „ταὐτὸν εἶναι λέγειν τῷ τὴν ἐνεργὸν δυνάμιν διδόναι, τὸ τὴν  
 „ἔστιαν. Οὐδεὶς δὲ τῶν Διδασκάλων, φησὶ, τὸν Υἱὸν λαμβάνειν  
 „τὴν ἔστιαν παρὰ τῆς Πνοῦματος· ἀλλὰ τὴν ἀντίστοιχον. Καθ' ὃν ἄρα  
 „λόγον Θεῖον ἐστὶ Πρόσωπον ὁ Χριστὸς, λέγειν ἐπάναγκες· ὡς εἰ  
 „διὰ τῆς Πνοῦματος ἐνεργεῖ, αὐτὸς ἐστὶν ὁ διδὼς τὸ ἐνεργὸν τῆς  
 „δυνάμεως, καὶ τὴν Θεῖαν ἐπομένως ἔστιαν, τῷ Ἁγίῳ Πνοῦματι.  
 „Τὸ δὲ τὴν ἔστιαν λαμβάνειν καὶ δυνάμιν, τῷ γε ἐκπορεύεσθαι  
 „ταὐτὸν ἐστίν.

Ἐστὶ μὲν ἔν ἀληθὲς τὸ σιωχῶς τὴν Θεῖαν Γραφὴν ἐκδι-  
 δάσκων, ὡς ὁ Σωτὴρ ἀπετέλει τὰ σημεῖα ἐν τῷ Πνοῦματι καὶ·  
 νοεῖται γεμῶ, ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα διὰ τῆς Χριστεῖς ἡ ἐνεργῶν,  
 καὶ τὰ σημεῖα ἐκείνα ἀπεργαζόμενον. Κατὰ γὰρ τὴν ἀνθρώπινον  
 ἐπὶ Χριστεῖς φύσιν τὰ Γραφικὰ ἐκείνα ἐστίν· ἐκληπτέα· ἢ δηλ·  
 ἅπαν τὸ πλήρωμα τῶν ἐαυτῆς χαρισμάτων ἐπεδαψιλεύσατο τὸ  
 Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ἢ ὁ Σωτὴρ τῇ δυνάμει τῆς ἐνοικῶντος ἐν αὐτῷ  
 Πνοῦματος τὰ σημεῖα ἐκείνα ποιῇ. Καί τοι γὰρ εἰς τὸ Πρόσωπον  
 ὁ Σωτὴρ, τῆς τε Θείας καὶ Ἀνθρωπίνης, ἐκατέρων δηλαδὴ τῶν  
 φύσεων εἰς μίαν σιωλευσῶν ὑπόστασιν· ἢ ἐπιδεῖς ἡ τῶν τῆς  
 Ἁγίης Πνοῦματος χαρισμάτων ἢ Σάρξ αὐτῆς, ὡς ἄρ' ἀποχρῶται  
 πλετῆσα τὴν δυνάμιν, μάλλον δὲ πανθενῆς· ἢ δια τὴν αὐτῇ  
 σωλωμένῃ Θεότητι· ὃν μὲν τοι γε τρόπον ἀγιασθῆναι τὴν αὐτῆς  
 Σάρκα ὁ Σωτὴρ διὰ τῆς Ἁγίης Πνοῦματος ἐβελήθη ἐν τῷ Βαπ-  
 τίσματι, ἔτως ἅμα καὶ τὰ χαρίσματα πάντα, τῆς τῷ πλή-  
 ρωμα τῆς Πνοῦματος τῶν καὶ αὐτὰ ἐδέξατο, τῆς καὶ τὰ σημεῖα ἐκεί-  
 να διὰ τῆς αὐτῆς σαρκὸς ἐκτελέσοντος. Ψυδὲς ἡ ἄρα ὁ προσε-  
 λάμβανεν Ἰωάννης, ὡς ἔχει τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον τῷ Χριστῷ,  
 ἀλλ'



ἄλλ' ὁ Χριστὸς τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι παρέχε τὴν τῶν θαυμασίων ἐκτελεστικὴν δυνάμιν.

Σαφὲς δ' ἐστὶ τὸτο καὶ ἐκ τῆς Ἱερᾶς καθίσταται Γραφῆς οἶον, ἐπὶ παραδείγματος: ὁ Σωτὴρ ἀπαχθῆναι λέγεται εἰς τὴν ἔρημον ὑπὸ τοῦ Πνεύματος· ὑπὸ τοῦ Πνεύματος φησὶ τὸ Ἅγιον. ἐκείσε γὰρ ἐνεργῶν ἐτύγχανε τὸ Πνεῦμα, καὶ διὰ τοῦ Χριστοῦ ἐτέλεσεν αὐτὰ, ἅπερ ἐτέλεσεν. Ἐπεὶ τὸ Πνεῦμα τὸν Χριστὸν ἀπήγαγεν εἰς τὴν ἔρημον, καὶ ἔχεν τὸ Πνεῦμα ὁ Χριστός. Ἀλλὰ καὶ κατὰ τὸν δετὸν νῦν ὁμοίως γέγραπται τὸν Χριστὸν τὰ σημεῖα πεποιηκέναι, καὶ τὰ Δαιμόνια ἐκβεβληκέναι ἐν Πνεύματι τῷ Ἁγίῳ: ὡς ἐκ τοῦ Πνεύματος, δηλονότι, λαβόντα τὴν δυνάμιν τοῦ Πνεύματος ἐκτελεῖν; ἔχων ὡς αὐτὸν αὐτῆς τῷ Πνεύματι μεταδόντα. Διὸ δὴ ἈΘΑΝΑΣΙΟΣ ἐν Λόγῳ Β'. κατὰ τῶν Ἀρειανῶν, Τόμος Α'. Σελ: 357. „Ὡς περὶ ἐνταῦθα τοῦ Πνεύματος δοτῆρ ὢν ὁ Υἱός, ἔπαυται εἰπεῖν ἐν Πνεύματι ἐκβάλλειν τὰ Δαιμόνια ὡς ἄνθρωπος· τὸν αὐτὸν τρόπον ὁ αὐτὸς ὢν τοῦ Πνεύματος δοτῆρ, ἔπαυται λέγειν: Πνεῦμα Κυρίου ἐπ' ἐμὲ, ἔνεκεν ἔχρισέ με„. Καὶ ὁ Χρυσόστομος δὲ ἸΩΑΝΝΗΣ ἐν τῇ Ὁμιλίᾳ τῇ περὶ τοῦ Ἁγίου καὶ Προσκυνητοῦ Πνεύματος: (6) „Κατηξιώθη ὁ Σάβας ἡ Δεσποτικὴ Πνεύματος Ἁγίου καὶ λοιπὸν ἐβέλετο ὁ Σωτὴρ τὸ πλάσμα ὃ ἀνέλαβεν, οἰκίσαν τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι ἵν' ὅπερ ἂν ποιῇ ὁ Χριστὸς κατὰ σάρκα, ἐπιγράφεται τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι τῷ ἐνοικῶντι ἐν αὐτῷ, ὡς ἐν Ἁγίῳ Ναῶ τῷ Ἀνθρωπίνῳ. Ἄνθρωπος γὰρ δι' ἡμᾶς, Θεὸς δι' ἑαυτόν. Θεὸς δι' ἑαυτόν, Ἄνθρωπος δὲ διὰ φιλανθρωπίαν. Ἐξέβαλε Δαιμόνια, καὶ ἠθέλησε τὴν ἀπέλασιν τῶν Δαιμονίων ἐπιγράφειν τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι, καὶ λέγει: Εἰ δὲ ἐγὼ ἐν Πνεύματι Ἁγίῳ ἐκβάλλω τὰ Δαιμόνια: καὶ ἔκρινεν ἐν τῷ Θεῷ Λόγῳ ἄλλ' ἐπιγράφει τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι, ὡς Ἄνθρωπος Ἁγίος, Πνεύματος Ἁγίου κατηξιωμένος„. Ὁ δὲ Αὔγουστινὸς Βιβλ: Α'. τῶν περὶ Τριάδος, Κεφαλ: ΙΑ'. „Κατὰ τὴν τῆς δόξης μορφῇ ὁ Υἱὸς ἐλάσων ἐστὶ τοῦ Ἁγίου Πνεύματος. Αὐτὸς γὰρ ἔφη: ὅς ἂν ἐλασφημῇσιν εἰς τὸν Υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου, ἀφεθήσεται αὐτῷ: ὅς δ' ἂν βλασφημῇσιν κατὰ τοῦ Πνεύματος τοῦ Ἁγίου, ἔκρινεν αὐτῷ. Καὶ ἐν αὐτῷ δὲ δυνάμεις ἐνήργησε, λέγων: Εἰ ἐγὼ ἐν Πνεύματι Θεῷ ἐκβάλλω τὰ Δαιμόνια, ἄρα ἦλθεν ἐφ' ὑμᾶς ἡ Βασιλεία τοῦ Θεοῦ„. Πλέα τούτων εἰσὶ τὰ Κυρίως Συγγράμματα, καὶ μάλιστα ἐν τῷ εἰς τὸν Ἰωάννῃν Ὑπομνήματι. Οὕτω δὲ καὶ ἄλλοι.

Παρα-

(6) Παρὰ Μοντφאלκ: ἐν τῷ Γ'. Τόμῳ τῆς κατ' αὐτὸν Ἐκδόσεως: Σελ: 803.



Παραπλησίως γεμῶν, ὥσπερ τὰ ἔργα τῆς Τριάδος τὰ πρὸς τὰ ἐκτὸς, πᾶσιν ἐς τοὺς Θεαρχικοὺς Προσώποις κοινά· καὶ ἡ τῆς Υἱοῦ Θεότης, διὰ τῆς αὐτῇ ἐνωθείσης σαρκὸς, τὰ σημεῖα ἐτέλει σωάμα τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι, τῷ τῷ ἐκτελεστικῷ τέτῳ δώαμιν ταύτῃ παρεχομένῳ. Ἐνθεντοὶ ὁ ἐκ τῆς Δαμασκῆς ἸΩΑΝΝΗΣ ἐν Βιβλ: Γ'. περὶ τῆς Ὁρθοδ: Πίς: Κεφ: ΙΕ'. (7) „Οὕτω καὶ περὶ τῆς Κυρίως ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ, ἡ τῶν θαυμάτων „δωάμιν τῆς Θεότητος αὐτοῦ ὑπῆρχεν ἐνέργεια,,. Καὶ ἐν τῷ Βιβλίῳ τῷ περὶ τῶν ἐν τῷ Χριστῷ δύο Θελημάτων, καὶ Ἐνεργειῶν, πρό γε τῆς τέλους: (8) „Ὡσπερ γὰρ διὰ τῆς σωματικῆς „ἐνεργείας αὐτοῦ, ἡ Θεία ἐνήργει αὐτοῦ θέλῃσις (ἐκράτησε γὰρ „τῇ χειρὶ τῆς χειρὸς τῆς Παιδὸς, καὶ εἶπε: τὸ κοράσιον ἔγειραι: „καὶ διὰ τῆς ἀφῆς καὶ τῆς λόγῃς, ἡ Θεία ἐνέργεια τῷ κόρῳ „ἐζωοποίησεν.) ἔτω καὶ διὰ τῆς ἀνθρωπίνης αὐτοῦ θελήσεως, „ἡ Θεία ἐνήργει αὐτοῦ θέλῃσις. θελήσας γὰρ Θεϊκῶς, τῷ θαυματουργίαν ἐργάσατο καὶ θελήσας ἀνθρωπίνως, τῷ χεῖρα ἐξέτανε, καὶ εἶπεν: ἔγειραι,,. Ὡσπερ τοίνυν διὰ τῆς Ἁγίης Πνεύματος, ἔτω καὶ διὰ τῆς Θεότητος αὐτοῦ, ὁ Χριστὸς ἐποίησε τὰ σημεῖα· ἀλλ' ὡς εἴρηται, ἔχῃ ἡ τῆς Χριστοῦ Θεότης τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι, ἀλλὰ καὶ ὁ τῆς Θεοῦ Λόγος, καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, μετέδωκαν τῇ τῆς Χριστοῦ σαρκὶ τῆς δωάμεως τῆς ἐνεργεῖν τὰ θαυμάσια.

Καί τοι γε (ὑποκείμενῳ δὲ, ὅτι καὶ ἡ τῆς Χριστοῦ Θεότης ὡς ἡ ἐνεργεῖσα διὰ τῆς Πνεύματος) ἐ πάντως ἀληθὲς, τό: παρὰ τὸ, διὰ τῆς Πνεύματος ἐνεργεῖν τὸν Θεὸν Λόγον, ἥτοι τῷ Πνεύματι τὸν Υἱόν, ἡ τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα δεῖσαι τῆς ἐνεργητικῆς τῶν θαυμάτων μεταδῆναι δωάμεως. Λέγεται γὰρ τῷ λόγῳ τῷδε: διὰ δὲ τῆς τῆς Υἱὸν διὰ τῆς Ἁγίης Πνεύματος ἐνεργεῖν, ὅτι ἡ αὐτῇ ἐστὶν ἐκατέρῳ μία δωάμις τε καὶ θέλῃσις: καὶ ἐδ' ὁ Υἱὸς, ἀνευ τῆς κοινωνίας τε καὶ σωματικῆς τῆς Ἁγίης Πνεύματος δώαται ἐνεργεῖν καθ' ὃν δὲ νῦν παραπλησίως, καὶ τὸ Πνεῦμα διὰ τῆς Υἱοῦ λέγεται ἐνεργεῖν. Οὕτω γὰρ ὁ Ἀπόστολος ἐν τῇ πρὸς Ῥωμ: Ἐπισ: Κεφαλ: Η'. Ἐδαφ: 2. „Ὁ γὰρ Νόμος τῆς Πνεύματος τῆς ζωῆς ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ, ἡλοῦθέρωσέ με ἀπὸ τῆς „Νόμου τῆς ἀμαρτίας, καὶ τῆς θανάτου,,. Ἐνθα τό: „ἐν Ἰησοῦ,, ταῦτόν ἐστι τῷ: „διὰ τῆς Ἰησοῦ,,: ὡς πανλίπῃς δῆλον. Συμπεραίνεται δ' ἔτι καὶ ἐκ τῶν παραπλησίων Γραφικῶν ῥήσεων, ἐν αἷς ὁ Χριστὸς λέγεται, ἐν Πνεύματι τὰ Δαιμόνια ἐκβάλλειν.

Καὶ

(7) Κατὰ τὴν Λεκκύνῃς Ἐκδοσιν Τόμ: Α'. Σελ: 231.

(8) Κατὰ τὴν αὐτὴν Ἐκδοσιν: Αὐτ: Σελ: 553.

Καὶ γὰρ κἀνταῦθα τό: „ἐν Πνύματι,, ἴσον τῷ: „διὰ τῷ Πνύματος,,. Καίπερ ἄρα διὰ τῷ Πνύματος ὁ Υἱὸς ἐνεργεῖ, ἐμὴν παρὰ τῷ ἔπεται, ὅτι ὁ Υἱὸς τῷ Πνύματι παρέχει τὴν τῷ ἐνεργεῖν δυνάμιν: καὶ γὰρ ἐδὲ τὸ Πνεῦμα τῷ Υἱῷ ταύτῃ παρέχον ἐστὶ, καὶ τοὶ δι' ἐκείνους καὶ αὐτὸ ἐνεργεῖν.

Ἡδὺς δὲ ἄλλως ἡμῖν τῷ ὄντι ὁ Ἰωάννης ἐκείνος ὁ ἐκ τῶν ἐν τῇ φύσει ἀρχῶν, καὶ τῶν κατὰ τὴν Φιλοσοφίαν δοξασμάτων, ἐπὶ τὰ τῆς Θεαρχικῆς Τριάδος ἀδιερμυνώτα ἔργα σοφιστεῖν ἐπιχειρῶν, ἥς μία ἡ δυνάμις, μία ἡ θέλησις, ἐν τῷ κράτει τῷ ὅπερ ἐπὶ τῶν κατὰ φύσιν χώραν ἐκ ἔλαχε. Διὰ γὰρ τῷ ὁ Βασιλεὺς διὰ τῷ Τοπάρχῃ, (δεῖ γὰρ τῷ Ἰωάννῃ προχρησάσθαι παραδείγματι) λέγεται ἐνεργεῖν, ὅτι κατὰ γε τὸ κέλευσμα, καὶ τὴν ὑπ' ἐκείνους δοθεῖσαν ἐπιταγὴν ἐνεργεῖ ὁ Τοπάρχης: ἐμὴν δὲ καὶ διὰ τὸ, αὐτὸν ἅμα τὸν Βασιλέα ἐνεργεῖα συμπράττειν πρὸς τὸ τελέμενον, χεῖρα τε ἅμα τῇ φωνῇ κινῶντα ἐν τῷ ἐκδιδόναι ἐπιταγῇ, καὶ τὴν ψῆφον ἐκφέρεσθαι. Ἀλλ' ἐπὶ τῆς Τριάδος, εἰ καὶ Πρόσωπον διὰ Προσώπου λέγεται ἐνεργεῖν, ἐδὲν ἐπιταγῇ χώραν ἔχει, ἐδὲν τι κέλευσμα: ἐδὲ θάτερος ἐνεργεῖν/ος, θάτερον ἐν τῷ ἥτοι θάτερῳ τῆς ἐνεργεῖς δυνάμεως μεταδιδόναι, ἢ θάτερον ἐνεργεῖν, ὑφίσταται: ἀλλ' ἐκάτερον ὡσαύτως σιωτρεῖται πρὸς τὴν ἐνεργεῖαν: ἐπειδὴ θάτερον τῆς θάτερος ἄνευ κοινωνίας τε καὶ σιωεργήσεως ἐδὲν τι ἔχει ἐργάσασθαι: ἢ χάριν, καὶ διὰ τὴν ῥηθεῖσαν τῆς θελήσεως ταυτότητα καὶ τῆς σιωεργίας, Πρόσωπον διὰ Προσώπου λέγεται ἐνεργεῖν, καὶ εἰ μηδὲν τὴν δυνάμιν τῷ ἐνεργεῖν θάτερον θάτερῳ παρέχοιτο: ὡς ἀτοπώτατα ἄρα ἀπὸ τῶν ἐν τῇ φύσει ὑποδειγμάτων ὁ Ἰωάννης ἐκείνος, περὶ τῶν Θεῶν ἐνεργειῶν διαλεγόμενος ἡμῖν ἀπεφάνετο.

Ἀλλ' ὁ αὐτὸς ἸΩΑΝΝΗΣ προσέτι ἐπὶ τῆς ἐν Φλωρεντίᾳ Σωδὸς ἔτω πως αὐτόθι διελέγετο: „Τρίτος δὲ λόγος ἐκ τῆς Γραφῆς ἐστίν. „Ἡμεῖς ἐνρίσκομεν, ὅτι διὰ τῷ Πνύματος συμμορφόμεθα αὐτῷ „τῷ Υἱῷ τῷ Θεῷ: ἐμφέρεται δ' ἡ μαρτυρία αὕτη ἐν τοῖς τῷ „Ἀποστόλῃ ρήμασι τῆς πρὸς Κορινθ: Β'. Ἐπιστολῆς: ὁ χρίστας „ἡμεῖς, καὶ σφραγισάμενος ἡμεῖς, καὶ δὲς τὸν ἀβράβωνα τῷ Πνύματος ἐν ταῖς καρδίαις ἡμῶν: τετέστι, καθὸ τὸ Πνεῦμα ἡμεῖς „ἀποφαίνει κατὰ Υἱοθεσίαν Υἱός. Ἀλλ' ἐκ τῆς ρήσεως ταύτης, „τοιόςδε (φησὶ) λόγος λαμβάνεται: Τὸ δι' ἃ τι πρὸς ἕτερον μορφοῦται, δέον ἔχειν τὸ εἶναι ἐξ ἐκείνους, ὡς τὸ ἕτερον συμμορφοῖ: „καὶ περὶ τῷδε, ἐστὶν ἐν τοῖς κατὰ φύσιν ὑπόδειγμα, ὡς ἂν „μᾶλλον σιωῇτε. Ἡμεῖς γὰρ ἔτω φάμεν: ὅτι τὸ τῷ ζῶν σπέρμα ἐστὶ, δι' ἃ τὸ γεννηθὲν συμμορφοῦται, καὶ ὅμοιον καθίσταται „τῷ γεννήσαντι. Ἀλλὰ γὰρ τὸ σπέρμα ἐκείνο ἐπάναγκες ἀπορρῶγα τινὰ πεφυκέναι τῷ, ὡς προσομοιᾶται τὸ παραγόμενον.

Τόμ: Β'.

Μ μ μ

„Καὶ

„Καὶ τέττα γε ἔνεκα τὸ ἀνθρώπου σπέρμα ἔ παράγει λέοντα,  
 „ἀλλὰ μόνον ἄνθρωπον ἐξ ἑ ἀπετμήθη. Ταῦτα μὲν εἰσι πα-  
 „ραδείγματα, ἔχι πάντῃ πάντως ὁμοία· ἀλλ' ἵνα μόνον σωτήσω-  
 „μεν, ὅτι τὸ δι' ἑ τι καθομοιοῖται, ἀποτμήθην ἐς τὴν ᾧ προσω-  
 „μοίωται. Ἐπειδὴ ἄρα τὸ Πνεῦμα, ἔχον τέτο ἐστίν, ὅτι δι'  
 „αὐτῆς τὸ τῷ Υἱῷ ἡμᾶς συμμορφῶσθαι γίνεται, ἀνάγκη φάσκειν,  
 „ὅτι τῷ Πνύματι τὸ εἶναι ἐκ τῆς Υἱῆς. Καὶ τῷ τοιῷδε λόγῳ  
 „σφόδρα ἐρέδονται τῶν Γραικῶν τινες Διδασκάλων· οἷον Βασί-  
 „λειός τε καὶ Ἀθανάσιος, λέγοντες: ὅτι ὡς περὶ ὁ Υἱὸς εἰκὼν ἐστὶ  
 „τῆς Πατρὸς, ὡς φύσει ὑπάρχων ἐκ τῆς παραδείγματος αὐτῆς· ἔτω  
 „καὶ τὸ Πνεῦμα εἰκὼν λέγεται τῆς Υἱῆς. Τέτο δὲ φανερόν γίνε-  
 „ται ἐν τοῖς Ἀντιρρήτικοῖς ἐκ τῆς Βασιλείας σαφῶς, καὶ ἐκ τῆς  
 „Ἀθανασίως ἐν τῇ Α'. Ἐπισ: τῇ πρὸς Σεραπίωνα.,,

Οὐδὲν τῆς τῆς Ἰωάννης Ἐπιχειρήσεως ταύτης γένοιτ' ἂν ἀη-  
 δέσερον. Α'. γὰρ, ἐπειδὴ τὸ Πνεῦμα συμμόρφος ἡμᾶς καθίστησι  
 τῷ Υἱῷ τῆς Θεῆς, ὅλη τέτο πάντως τῇ Τριάδι κοινὸν ἐστὶ. Θεῆ  
 γὰρ ἔργον τέτο τῶν πρὸς τὰ ἐκτός· καὶ ἔ μόνον ἄρα τὸ Ἅγιον  
 Πνεῦμα, ἀλλὰ καὶ ὁ Πατήρ, καὶ ὁ Υἱὸς δὲ αὐτὸς, συμμόρφος  
 ἡμᾶς τῷ Υἱῷ τῆς Θεῆς ἀποφαίνεσι. Πῶς ἄρ' ἂν ἐπόμενον ἐντεῦ-  
 θεν εἴη, ὡς ἐπειδὴ τῷ Υἱῷ τῆς Θεῆς συμμόρφος ἡμᾶς τὸ Πνεῦμα  
 καθίστησιν, ἄρ' ἐκ τῆς Υἱῆς αὐτὸ ἐκπορεύεται; Ἢ, πῶς ἂν ἀλη-  
 θῶς ῥηθείη: „Ὅτι τὸ δι' ἑ τι ἑτέρῳ τινὶ συμμορφῶται, δεόν ἐξ  
 „ἐκείνου τὸ εἶναι ἔχειν ᾧ τὸ ἕτερον συμμορφοῖ.,; Παραπλησίως  
 γὰρ ἂν ἔποιτο, καὶ τὸν Πατέρα ἐκ τῆς Υἱῆς λέγειν ὅτι παρήχθη  
 ἐπειδὴ ὡσαύτως καὶ ὁ Πατήρ συμμόρφος ἡμᾶς (9) τῷ Υἱῷ κα-  
 θίστησιν. Ἐποιτο δ' ἂν καὶ τὸν Υἱὸν λέγειν, ὅτι ἐξ ἑαυτῆς τὸ  
 εἶναι πέφυκεν ἔχων, ἐπειδὴ καὶ ὁ Υἱὸς ὁμοίως ἑαυτῷ συμμόρ-  
 φος ἀναδείκνυσι τῆς πιστεύουσας. „Ἐπειτα δὲ, ὁ Ἀπόστολος φησὶν,  
 „ὅς προέγνω, τέττα καὶ προώρισε συμμόρφος τῇ εἰκόνι τῆς Υἱῆς  
 „αὐτῆς.,. Ὡς καὶ περὶ τῆς Ἁγίας Πνύματος, ὅπερ εἰκὼν ἐστὶ  
 τῆς Υἱῆς, τέτ' αὐτὸ ἀπεφῆνατο ὁ Ἀπόστολος.

Ὁ μὲν ἔν ἈΘΑΝΑΣΙΟΣ ἐν τῇ πρὸς Σεραπίωνα Ἐπιστολῇ,  
 κατὰ τῶν κτίσμα λεγόντων τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ἐν Τόμ: Α'.  
 Σελ: 199. „Εἰκὼν τῆς Υἱῆς λέγεται καὶ ἔστι τὸ Πνεῦμα: ὅς  
 „γὰρ προέγνω, καὶ προώρισε συμμόρφος τῆς εἰκόνος τῆς Υἱῆς αὐτῆς.,  
 Καὶ ΒΑΣΙΛΕΙΟΣ Βιβλ: Ε'. τῶν κατὰ Εὐνομίαν: „Εἰκὼν μὲν  
 „Θεῆ

(9) Διαβρίθω καὶ γὰρ ὁ Ἀπόστολος ἐπὶ τῆς προτεθέντος χάρις, φησὶν: „Ὁ βεβαιῶν  
 „ἡμᾶς σὺν ὑμῖν εἰς Χριστόν· καὶ χρίσας ἡμᾶς Θεός· ὁ καὶ σφραγισάμενος ἡμᾶς,  
 „καὶ δεῖς τὸν ἀρραβῶνα τῆς Πνύματος ἐν ταῖς καρδίαις ἡμῶν.,. Ὁ ἄρα εἰς τὴν  
 τῆς Χριστοῦ μόρφωσιν ἡμᾶς σφραγίζων, ὁ Θεὸς ἐστὶ καὶ Πατήρ: καὶ ὁ Χριστὸς ἐνταῦθα  
 ὅπερ σύμμορφος διὰ τῆς Πνύματος ὑπὸ τῆς Πατρὸς καθιστάμεθα.

„Θεὸς Χριστός: ὅς ἐστι, φησὶν, ἐκὼν τῷ Θεῷ τῷ ἀοράτῳ· εἰκὼν  
 „δὲ Υἱὸς τὸ Πνεῦμα, καὶ οἱ τέσσα μεταλαμβάνοντες Υἱοὶ σύμ-  
 „μορφοὶ κατὰ τὸ γεγραμμένον: ὅτι ἕως προέγνω καὶ προώρισε  
 „συμμόρφους, φησὶ, τῆς εἰκόνης τῷ Υἱῷ αὐτοῦ, εἰς τὸ εἶναι αὐτὸν  
 „πρωτότοκον ἐν πολλοῖς ἀδελφοῖς,·. Καὶ ΚΥΡΙΛΛΟΣ δὲ ὁ Ἀλε-  
 ξανδρεὺς Βιβλ: Γ'. τῶν εἰς Ἰωάν: Τόμ: Δ'. Σελ: 988. „Τῆς  
 „γὰρ τῷ Μονογενεῖς ἑσίας εἰκὼν ἀκραιφνής τὸ Πνεῦμα αὐτοῦ,  
 „κατὰ τὸ γεγραμμένον διὰ τῷ Παύλῳ: ἕως γὰρ προέγνω καὶ  
 „προώρισε συμμόρφους, τῆς εἰκόνης τῷ Υἱῷ αὐτοῦ,·. Ποιεῖ ἄρα  
 ἡμᾶς συμμόρφους, ἥτοι τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι ἡμᾶς συμμορφοῖ μετὰ  
 τῷ Υἱῷ ὁ Θεὸς καὶ Πατήρ. Πῶς ἂν ἔντευνθεν ἔποιτο, ὅτι  
 τὸ Πνεῦμα συμμορφοῖ ἡμᾶς τῷ Υἱῷ: Ἄρα καὶ ἐξ αὐτοῦ ἐκπο-  
 ρεύεται; ἢ πῶς ἂν ἀληθεύσειεν: ὅτι, „τὸ δὲ ἔτι ἄλλῳ τινὶ συμ-  
 „μορφῶται, δεῖν ἔχειν τὸ εἶναι ἐξ ἐκείνου ὥς θάτερον προσαφο-  
 „μοιοῖ,·; Μὴ ἄρα τέως καὶ τὸ Πνεῦμα ἑαυτῷ αὐτὸ αἴτιον εἴη,  
 ἑδ' ἤρκεσάτω εἰς τόδε Λατίνοις ὁ Πατήρ καὶ ὁ Υἱός. Τίνι δ' ἄρα  
 καὶ τρόπῳ τὸ Πνεῦμα, ἵνα ἡμᾶς τῷ Θεῷ ὑποδείξῃ· τελέσειν,  
 ἵνα συμμόρφους ἀναδείξῃ τῷ Υἱῷ τῷ Θεῷ, ἐχρήμῃ καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ  
 ἐκπορεύεσθαι; ἢ γὰρ ἔχι, ὅ,τι ποτ' ἂν τὸ Πνεῦμα διὰ τῆς ἐκ  
 τῷ Υἱῷ προόδου δώσεται ἔχειν, ὥς περ ἡμᾶς τῷ Υἱῷ συμμόρφους  
 ἐναποφύηται· ἢ ἔχι, φημί, τῷ αὐτῷ καὶ ἀποχρώντως ἂν ἔχοι,  
 ἐκ τῷ Πατρὶ μόνον ἐκπορευόμενον; Πρῶτον μὲν γὰρ, ἐκπορευό-  
 μενον τὸ Πνεῦμα ἐκ τῷ Πατρὶ, αὐτόθεν πάντως ἔχει τὸ προ-  
 σαφομοιεῖν ἡμᾶς δώσεται τῷ Πατρί· ἐκ δὲ τῷ ἀκολούθῳ, καὶ τὸ  
 συναφομοιεῖν ἡμᾶς τῷ Υἱῷ τῷ Θεῷ καὶ Πατρί: ὁ γὰρ τῷ Πατρί  
 συμμορφῶν, συμμορφοῖ δὴ καὶ τῷ Υἱῷ, καὶ ἀνάπαλιν· καθ' ὃν  
 τρόπον τῷ ὄντι ἔσ' μόνον τῷ Υἱῷ τῷ Θεῷ γινόμεθα σύμμορφοι,  
 ἀλλὰ καὶ αὐτῇ τῇ τῷ Υἱῷ τῷ Θεῷ εἰκόνι, τελέσει τῷ Πνεύματι  
 τῷ Ἁγίῳ, ὡς ὁ Ἀπόστολος φησὶ, περὶ ἧς ἡδὴ καὶ διηγήσαμεν.  
 Ἐπειτα δὲ, ἐκ τῷ Πατρὶ τὸ Πνεῦμα ἐκπορευόμενον, ἑδέν τι  
 ἔλαττον καὶ ἔτω τῆς, ἕως περ ἂν ἀναγεννοίη συμμόρφους ἂν αὐτῆς  
 καθιστᾶν ἔχοι τῷ Υἱῷ, ἢ εἴπερ καὶ ἐξ αὐτοῦ τῷ Υἱῷ ἐκπο-  
 ρεύοιτο. Οὕτω γὰρ, ἐκ τῷ αὐτοῦ τὸ Πνεῦμα προϊὼν, ἐξ ἧς καὶ  
 ὁ Υἱός, μιᾶς ἐστὶν ἑσίας, μιᾶς διωάμεως, μιᾶς θελήσεως, συ-  
 νάμα τῷ Υἱῷ. Μείζονα δὲ συμφυεῖν τε καὶ ἐνότητα ἐκ ἂν  
 ἔχοι πρὸς τὸν Υἱὸν τὸ Πνεῦμα, καὶ εἰ ἐξ αὐτοῦ ἐκπορεύοιτο  
 τῷ Υἱῷ. Ὡς εἴγε τι καὶ περαιτέρω προσεπικητήθῃ, ὡς ἂν  
 ἡμᾶς τὸ Πνεῦμα συμμόρφους τῷ Υἱῷ τῷ Θεῷ ἀναδείξαι· ἔδει  
 δὴ καὶ τῷ Υἱῷ τῷ Θεῷ αὐτὸ εἶναι, καὶ ἐξ αὐτοῦ γενναῖσθαι, τὸ ἀτο-  
 πώτατον. Ἄλλως τε γὰρ, ταυτὸν ἐστὶν ἐκ τῷ Πατρὶ ἐκπορεύε-  
 σθαι, ἢ ἐκ τῷ Υἱῷ· ἐφ' ᾧ, δηλονότι, τῆς πισθόντας καθιστᾶν  
 ἔχειν συμμόρφους τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα. Τὸ ἄρα ἢ ἀνάγκη τῷ,  
 Μ μ μ 2 πρὸς



πρὸς τὸ καθομοιοῦν ἡμᾶς τῷ Υἱῷ, ἐκ τῆς Υἱᾶς χρῆναι τὸ Πνεῦμα ἐκπροϊέναι· ὁπότε τῷτ' ἀναγκαιῶς ἔχει ἐκ τῆς αὐτῆς παρὰ τῷ Πατρὶ Ἐκπορεύσεως;

Ἄλλ' ἔπερ ἄρα καὶ ἐπὶ τῶν ἐν τῇ φύσει κρατῇ τῷτο γε: „τὸ δὲ ἔτι προσαφομοιοῦται τινι, δεῖν καὶ ἐξ ἐκείνου ἔχειν τὸ εἶναι, „ὥςτινι προσαφομοιοῦθαι θάτερον,“ ἡμισιά γε μὴν ἐντεῦθεν προσῆκε τῷτ' αὐτὸ συμπεραίνειν καὶ περὶ τὰ τῶν Θεουργημάτων Μυστήρια, ἐν οἷς, ἔχει περὶ παραγωγῆς ὁ λόγος, ἀλλὰ περὶ τῆς μουσικωτέρας καὶ Πνευματικῆς Υἱοθετήσεως: „Τὸ σπέρμα (ἔφασκεν „ὁ Προβιγκιάλις Ἰωάννης) δὲ ἔπερ ἂν ὁ ἀνθρώπος ἀποκνηθῇ, „ἀναγκαιῶς ἀπορῥῶγα (ἢ ἀπότμημα) ἐξ ἀνθρώπου εἶναι χρεών. Μήτοιγε δ' ἄρα, ἐπειδὴν ἀναγεννάμεθα διὰ τῆς Πνεύματος, ἐξ αὐτῆς ὡς ἐκ τινος σπέρματος, Υἱοὶ μορφόμεθα τῷ Θεῷ; ἢ μήποτε τὸ Πνεῦμα, ἐν ᾧ ἡμᾶς ἀναγεννᾷ, Υἱὸς Θεῷ καθίστηται ἡμᾶς κατὰ φύσιν, καὶ ἔχει θέσει μόνον καὶ χάριτι; Ἐν ταῖς κατὰ φύσιν (οἷα περὶ ἢ τῆς Ἰωάννης ἀπόφανσις) ὡς ἂν τι ἀφομοιωτο τινι, ἐπάνανγκες ἐστὶν ἐξ ἐκείνου αὐτὸ παράγεσθαι, τῷ, ὥπερ ἂν μέλλοι καθομοιοῦσθαι. Ἀλλὰ γὰρ τὸ Πνεῦμα, καὶ μὴ ὄν Υἱός (ἐκ γὰρ τῆς Πατρὸς ἔγεννᾶται, ἀλλ' ἐκπορεύεται) τῆς γε μὴν πισθόντας ὁμοίως τῷ Υἱῷ τῷ Θεῷ ἀναδείκνυσιν. Ἐν ταῖς κατὰ φύσιν ἐκείνῳ, δὲ ἔτι ἕτερον τῷ παράγοντι καθομοιοῦτο, ἐκ ἂν ποτ' εἴη ἀδελφὸν τῷ παράγοντος· καρπὸς δὲ μόνον, ἢ Υἱὸς τῷ παράγοντος. Ἄλλ' ἐνταῦθα τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, δὲ ἔπερ ἀφομοιοῦμεθα τῷ Υἱῷ, ἔχει τῆς Υἱᾶς Υἱὸς ἡμᾶς, ἀλλ' ἀδελφὸς ἀπεργάζεται, ἐπειδὴν ἡμᾶς καθομοιοῦ τῷ Υἱῷ. Οὕτω καὶ γὰρ φητὶν ὁ Ἀπόστολος: „Οὗς προέγνω, καὶ προώρισε συμμόρφους τῆς „ἐκόντος τῆς Υἱᾶς αὐτῆς, εἰς τὸ εἶναι αὐτὸν πρωτότοκον ἐν πολλοῖς „ἀδελφοῖς. Ἀπηχῆς ἄρα καὶ ἀπάδεσσα, ἢ ἀπὸ τῶν ἐν τῇ φύσει γεννήσεων, ἐπὶ τὰς μουσικωτέρας τῶν τελευμένων Θεουργιῶν Ἐπιχείρησις.

Ὅτι δὲ τέτων παρεκτός, ἐδ' ἐπὶ τῶν Θεαρχικῶν ἐγχωρεῖ Προόδων· ἵνα, τὸ δὲ ἔτι θάτερον συμμορφῆται θάτέρῳ Προσώπῳ, ἐξ ἐκείνου τὸ εἶναι ἔχει, ὥπερ ἂν καὶ ἀφομοιωτο, δηλὸν ἐκ τῆς ὅτι ὁ μὲν Πατὴρ προήγαγε τὸ Πνεῦμα, πάντῃ πάντως σύμμορφον τῷ Υἱῷ καὶ τὸν Υἱὸν πάλιν ἐν πᾶσιν ἴσον ὄντα τῷ Πνεύματι· ἐμὴν δὲ παρὰ τῷτο γε ὁ Πατὴρ, ἦτοι ἐκ τῆς Υἱᾶς, ἢ ἐκ τῆς Πνεύματος τῆς Ἁγίας προέβληται. Τὸ δὲ καὶ τὸν Βασίλειον καὶ τὸν Ἀθανάσιον λέγειν: ὅτι ὥσπερ ὁ Υἱὸς ἐκ τῆς Υἱᾶς καὶ Θεῷ καὶ Πατρὶ, ὡς φύσει ἐξ αὐτῆς ὑπάρχων, κατὰ τὸ παράδειγμα αὐτῆς· ἔτω καὶ τὸ Πνεῦμα ἐκ τῆς Υἱᾶς λέγεται τῆς Υἱᾶς, ὡς ὑπάρχον φύσει, δηλονότι, ἐκ τῆς Υἱᾶς· ἦτοι ἐκ τῆς παραδείγματος αὐτῆς, ψυδδέξατον ἐστὶ τὰ γὰρ τῶν Πατέρων τέτων



τέτων ῥήματα ἤδη σωείδομεν, ἔνθα τοιῶτον εἶδεν ἐκείνοι πα-  
ραδεδωκότες φαίνονται. Ἀλλὰ περὶ τέτων εἰς πλάτος ἐν τῇ  
Πραγματείᾳ, ἐν ᾗ τὰς ἐκ τῶν Ἀνατολικῶν Πατέρων ἀντιπρο-  
τεινομένας ἡμῖν μαρτυρίας ἐπιλυσόμεθα. Ἐν ᾗγε δὴ Πραγμα-  
τεία προσέτι, καὶ ἅπερ ἐκ τῶν ἀπομνημονοβθέντων Πατέρων  
δύαται παρὰ ταῦτα εἰς τῶτο ἐπενεχθῶαι διδοκρινήσομεν. Καὶ  
τοῦτον μὲν πρὸς τὰ λοιπὰ τῶν Ἐπιχειρημάτων, ἅπερ ἐκ τῆς  
Ἱερᾶς Γραφῆς οἱ Λατίνοι, ὑπὲρ τῆς ἐκ τῆς Τίτῃ Ἐκπορεύσεως τῆς  
Ἀγίας Πνεύματος διαπλέκειν εἰώθασι.

Τί δὴ ποτ' ἐν ᾧ εἰς τόδε ἡγεῖσθαι χρή, περὶ πάντων τῶν  
ἐκ τῆς Ἱερᾶς Γραφῆς λαμβανομένων παρὰ Λατίνοις Ἐπιχειρη-  
μάτων, πανήϊπτε δῆλον. Παρ' αὐτὸν γὰρ τὸν νῦν τῆς Πνεύματος,  
δηλονότι, διασρέφειν αὐτοῖς ἔθος τὰ ἱερὰ λόγια, καὶ πρὸς ἐκεῖνα  
ἀντιπεριέλκειν, ἅπερ ἐν μὲν τῇ Καθολικῇ Ἐκκλησίᾳ ἡκέσθη μηδέ  
ποτε, παραληρήματ' ἄτλα δὲ Λατίνων ἐστὶ, τῶν ἀθλίοις μάλ-  
λον τισὶ λογαρίοις ἄγεσθαι, ἢ τῇ ἀπλῇ τε καὶ καθαρᾷ τῆς Θείας  
Γραφῆς, καὶ τῶν Θεσπεσίων τῆς Καθολικῆς Ἐκκλησίας Πατέρων  
Διδασκαλίᾳ παρακολυθεῖν αἰρεμένων· οἳ δὴ καὶ τοῦτον ἐλεεινό-  
τεροι διὰ τῶτο, ὅσον εἶδεν διαμαρτάνειν δυνάσθαι τῆς ὁρθότητος  
οἶονταί, εἶδεν πείθονταί· κἀντεῦθεν ὡς ὑπὲρ ἀληθείας ἀναμφισ-  
βητήτως παλαίοντες, ὅποια ποτ' ἂν τύχοι, πρὸς κατασκευῇ τῆς  
ἰδίας φρονήματος ὅπως ἐν τείναι εἰκότα, διὰ σπασθῆς ποιῶνται  
ἐπινοεῖν καὶ προβάλλεσθαι. Ἀλλ' ὅσον ἂν αὐτοῖς σωτελέσερον εἴη,  
τῇ τῆς Ἱεροσολυμίτης ΚΥΡΙΛΛΟΥ ὑπακῆσαι παραινέσει, τῇ ἐπὶ  
τῆς Ις'. ἀναγινωσκομένῃ τῶν Κατηχήσεων, Σελ: 176. „Λεγέ-  
„θω τοίνυν ὑφ' ἡμῶν περὶ τῆς Ἀγίας Πνεύματος τὰ γεγραμμένα·  
„εἰ δέ τι μὴ γέγραπται, μὴ πολυπραγμονῶμεν. Αὐτὸ τὸ Πνεῦ-  
„μα τὸ Ἅγιον ἐλάλησε τὰς Γραφάς· αὐτὸ καὶ περὶ αὐτῆς εἶρη-  
„κεν ὅσα ἐξέλετο, καὶ ὅσα ἐχωρῶμεν. Λεγέσθω γὰρ ἃ εἶρηκεν·  
„ὅσα γὰρ ἐκ εἶρηκεν, ἡμεῖς εἰς τολμῶμεν. Καὶ πάλιν ἐπὶ τῆς  
ΙΖ'. Κατηχήσεως, Σελ: 192. „Μετ' ἐγγνωμοσύνης καὶ νυνὶ ὁμο-  
„λογῶμεν, ἐκ ἀνθρωπίνους καὶ σήμερον κεχρημένοι Σοφίσμασιν·  
„ἀσύμφορον γάρ: ἀλλὰ τὰ ἐκ τῶν Θεῶν Γραφῶν μόνων ὑπο-  
„μιμνήσκοντες. Ἀσφαλέστατον γὰρ, κατὰ τὸν Μακάριον Ἀπό-  
„στολον, ὃς καὶ φησὶν: ἃ καὶ λαλῶμεν, ἐκ ἐν διδακτοῖς ἀνθρω-  
„πίνης Σοφίας λόγοις, ἀλλ' ἐν διδακτοῖς Πνεύματος, πνευματικοῖς·  
„πνευματικῶς συγκρίνοντες,· Ἐνθεντοὶ ὁ αὐτὸς, Σελίδι 196.  
προσίθῃσιν: „Αὐτῆς δὲ τῆς Σωτῆρος καὶ νυνὶ ἀκυσέον τῶν περὶ  
„τῆς Ἀγίας Πνεύματος ῥημάτων,· Μετὰ δὲ τὸ πλεῖστα καταλέξαι  
τῶν περὶ τῆς Ἀγίας Πνεύματος ὑπὸ τῆς Σωτῆρος εἰρημένων, Σελ:  
197. ὑποσπάπτει: „Αὐτῆς τῆς Μονογενῆς νυνὶ ἀνέγνω Σοὶ τὰς  
„Φωνάς· ἵνα μὴ προσέχῃς ἀνθρωπίνους ῥήμασιν,· Ἐπειδὴ ἐν

Τόμ: Β'.

Ν ν ν

Παῖδες

Παῖδες Λατίνων, τῆς δε τῆς τῆ Θεωπεσίᾳ Πατρὸς ὑποθήκης λόγον μηδὲνα ποιέμενοι, αὐτοῖς μὲν τοῖς τῆ Χριστῷ λογίοις ἐκ ἡγάπησαν, τὰ δ' ἐν ἐκείνοις μηδαμῶς ἐμφερόμενα πολυπραγμονεῖν περιέργως προείλοντο καὶ διερδυνᾶν· διὰ τῆτο θαυμαστὸν ἔδεν, εἰ πλείους ἐπιπλέκοντες συλλογιστικὰς ἀτόπας πλεκτάνας, καὶ αὐτῆς τῆς Καθολικῆς Πίστεως τῇ Διδασκαλίᾳ βίαν ἐπάγασιν, ὡς ἄχρι τῆ δεῦρο ἡμῖν ἀποδέδεικται.

## Π Ρ Α Γ Μ Α Τ Ε Ι Α Ι Ε'.

Εν ἣ, αἱ ἀπὸ τῶν Συγγραμμάτων τῶν Ἀνατολικῶν Πατέρων,  
ὑπὲρ τῆς Ἐκπορεύσεως τῆς Ἁγίας Πνεύματος καὶ ἐκ τῆς  
Τίτῃ, προχαριζόμεναι μαρτυρίαι διαλύονται.

### § Α'.

Ὅπως οἱ Πατέρες Φασὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα Ἐκπο-  
ρεύεσθαι ἐκ τῆς Πατρὸς διὰ τῆς Τίτῃ.

Οὐδὲν Λατίνοις σωηθέσερον, ἢ τὰς Πατέρων ῥήσεις, ἐν αἷς ἐκ  
Πατρὸς δι' Τίτῃ τὸ Πνεῦμα ἐκπορεύεσθαι λέγεται, πρὸς ἀπόδειξιν  
ἐπάγειν τῆς ἐκπορεύσεως τὸ Ἅγιον Πνεῦμα καὶ ἐκ τῆς Τίτῃ.  
Ταῦτόν γὰρ εἶναι, φασὶν, εἰπῶν: ΔΙΑ τῆς Τίτῃ, καὶ ἘΚ τῆς Τίτῃ.  
Τὸ γὰρ τὰ πάντα διὰ τῆς Τίτῃ δημιουργηθῆναι λεγόμενον, νοητέον  
ἐστὶ πάντως, ὅτι ἐκ τῆς Τίτῃ τό τε διὰ τῆς Ἁγιωτάτης Παρθένου  
τὸν Κύριον γεννηθῆναι, ἐδὲν ἄλλ', ἢ ὅτι ἐκ τῆς Παρθένου ἐγεν-  
νήθη, λέγειν ἐστὶ. Καὶ ἐπὶ τῶν παραπλησίων ὡσαύτως.

Ἀλλὰ γὰρ ἐκ πλειόνων ῥήσεων τῶν Πατέρων γίνεται φα-  
νερὸν, ὡς ἔχει περὶ μόνης τῆς ἀπ' αἰῶνος Προόδου τῆς Πνεύματος  
αὐτοῖς ὁ λόγος, ἐπειδὴν αὐτὸ φασὶν ἐκ τῆς Πατρὸς ἐκπορεύεσθαι  
διὰ τῆς Τίτῃ. Πολλάκις μὲν εἰν, ἐκ τῆς Πατρὸς διδάσκοντες οἱ  
Θεοὶ Πατέρες ἐκπροϊέναι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, διὰ τῆς Τίτῃ προ-  
σιδέασιν αὐτὸ πέμπεσθαι πρὸς τὰ ἔκτος, τὸ διὰ τῆς Τίτῃ ἰδίᾳ  
περὶ τῆς χρονικῆς ἐρμηνεύοντες πέμψεως. Οὕτω τρανῶς τοσά-  
κις ὁ Ἀλεξανδρείας ΚΥΡΙΛΛΟΣ, ἐκ τῆς Πατρὸς μὲν ἐκπορεύεσθαι,  
λέγει τὸ Πνεῦμα, διὰ τῆς Τίτῃ δὲ ὁμῶς τοῖς κτίσμασι δίδεσθαι,  
ἢ ἐπὶ τῇ κτίσει ἐκχεῖσθαι ὡς αὐτὰ περὶ ἡμῶν καταλέλεκται τὰ  
χωρία, ἐν τῇ περὶ τῶν μαρτυριῶν τῶν Ἀνατολικῶν Πατέρων.  
Πραγματεῖα, ἐν αὐταῖς ταῖς τῆς Ἀλεξάνδρου: Κυρίλλου ῥήσεσι.  
Ταῦτά δ' ἔχει καὶ ὁ Ἀλεξανδρέων ὡσαύτως Ἐπίσκοπος ΕΥΛΟ-  
ΓΙΟΣ, ἐν Λόγῳ Ε'. παρὰ Φωτίῳ. Καὶ ὁ ΚΟΣΜΑΣ ἐν τῇ Β'.  
N ν ν 2 τῶν

τῶν Ὑμνων. (1) Καὶ ὁ τῷ περὶ Τριάδος δὲ Βιβλίῳ ΣΥΤΤΓΡΑ-  
ΦΕΥΣ, τῷ Κυρίλλῳ ἐπιγραφομένῃ, Κεφαλ: Θ'. καὶ Γ'. Καὶ ὁ  
ἐκ Δαμασκῶ ἸΩΑΝΝΗΣ Βιβλ: Α'. τῆς Ὁρθοδ: Πίς: Κεφ: Γ'.  
καὶ ΙΑ'. Καὶ ΓΕΡΜΑΝΟΣ δὲ ἐν τῇ Μουσικῇ Θεωρίᾳ, κατὰ τὰ  
προεπενεχθέντα ἐπὶ τῆς εἰρημένης Πραγματείας. Καὶ ἸΛΑΡΙΟΣ  
τελευταῖον ὁ Πικτάδων, ἐν Βιβλ: ΙΒ'. περὶ Τριάδος, κατ' ἃ ἐκ  
τῶν αὐτῶ ἀπεμνημονεύθη ἐν τῇ Πραγματ: τῇ περὶ τῶν μαρ-  
τυριῶν τῶν Δυτικῶν Πατέρων. Οὐ χάριν καὶ ὁ Θαυματουργὸς  
ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ (ὡς δι' ἧς ἐκ' τῶ Θεολόγου Ἰωάννη μεμύηται Πί-  
σεως διδάξας φέρεται) τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκπορεύεσθαι μὲν  
ἐκ τῶ Πατρὸς ἀπῶν, πεφηνέναι δὲ διὰ τῶ Υἱῶ, ἀνεπτυγμένως,  
ἐπὶ τῷ χρονικῷ πέμψιν διέσελε τῷ γενομένῳ τῶ Υἱῶ ταύτῳ  
Φανέρωσιν, προσιθείς: „Τατέσι τοῖς ἀνθρώποις,,.

Παρά γε μὴ ταῦτα ῥαδίως συγχωρῶμεν ἐν ἄλλοις, τῶς  
Θεωσιῶ Πατέρας, καὶ τῷ Ἐκπόρῳ τῶ Πνεύματος ἐννοῶν-  
τας, διδάσκων αὐτὸ ἐκ τῶ Πατρὸς ἐκπορεύεσθαι διὰ τῶ Υἱῶ.  
Οἷον ὁ ῥηθεὶς Θαυματουργὸς ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ ἐν τῇ κατὰ Αἰλιανῶ  
Ἐκθέσει τῆς Πίσεως, τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, φησὶν, αἰωνίως ἐκ τῶ  
Πατρὸς διὰ τῶ Υἱῶ πέμπεσθαι ἢ τοῖ ἐκπορεύεσθαι. Καὶ ἘΠΙ-  
ΦΑΝΙΟΣ Αἰρέσει ΟΓ'. ἥτις ἐστὶ τῶν Ἡμιρειανῶν, τῶς Ἀνατο-  
λικῆς φάσκει πισθεῖν τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκπορεύεσθαι ἐκ Πατρὸς  
δι' Υἱῶ. Καὶ ΜΑΞΙΜΟΣ δὲ ὁ Μάρτυς ἐν τῷ εἰς τὸν Ζαχαρίαν  
ὑπομνήματι, Κεφ: Δ'. Ἐκ Πατρὸς ὑσιωδῶς δι' Υἱῶ τῶ ἀνερ-  
μιωδῶτως γεννηθέντος, ἐκπορεύεσθαι τὸ Πνεῦμα. Καὶ ὁ Δαμα-  
σκῶς ἸΩΑΝΝΗΣ Βιβλ: Α'. περὶ Ὁρθοδ: Πίς: Κεφαλ: ΙΓ'.  
τὸν Πατέρα Θεολογεῖ τῶ Ἁγίῳ Πνεύματος Προβολέα εἶναι διὰ  
τῶ Υἱῶ. Ἔτι δὲ καὶ παρὰ Πατρὸς δι' Υἱῶ τὸ Πνεῦμα ἐκπροϊέναι,  
ὃ μὲν τοῖ κατὰ τρόπον γεννήσεως· τέτοις δὲ παραπλήσια ἔχει,  
καὶ τῇ περὶ τῶ Τρισυγίῳ Ἐπισολῇ.

Ἀλλ' ὅτι μὲν γὰρ τοῖς Πατέράσι, διδάσκει τὸ Ἅγιον Πνεῦμα  
προβάλλεσθαι ἐκ τῶ Πατρὸς διὰ τῶ Υἱῶ, κατὰ νῦν ὑδέποτ' ἐπῆλ-  
θε τὸν Υἱὸν ἀρχιώτε καὶ αἰτίαν εἶναι τῶ Πνεύματος: Α'. φα-  
νερόν ἐξ αὐτῶν τῶν τῶ Δαμασκῶς ἸΩΑΝΝΟΥ ῥημάτων ἐν τῷ  
Α'. Βιβλίῳ περὶ τῆς Ὁρθοδ: Πίς: Κεφαλ: ΙΓ'. ἐν οἷς ἀριδιήλως  
φησί: „Καὶ Υἱῶ δὲ Πνεῦμα, ὅχ ὡς ἐξ αὐτῶ, ἀλλ' ὡς δι' αὐτῶ  
„ἐκ τῶ Πατρὸς ἐκπορεύόμενον· μόνος γὰρ αἴτιος ὁ Πατήρ,,  
Ὡς

(1) Τὸ Β'. οἶμαι, τῶν Τροπαρίων ὧδε νοεῖ Ζοιρηνιάσιος, τῆς Ε'. Ὡδῆς τῶ ἐν τῷ Ὁρθοδ  
τῆς Πεντηκοστῆς Κανόνος, τῶ ἐν Ἠχῳ Βαρεῖ μελοποιηθέντος ὃ Τροπαρίῳ ἀρχή:  
„Ἡ ἐπιφοιτήσασα ἰχὺς σήμερον,, κτ: (Ἐν αὐτῷ γὰρ ἔτῳ ὁ Ἀσματογράφος  
Κοσμάς Θεολογεῖ...): „Πνεῦμα ἐκ Πατρὸς ἐκπορεύθεν, καὶ δι' Υἱῶ πιστοῖς ἡμῖν  
„πεφηνός, μεταδοτικόν, κτ:,,.

Ὡς ἔγχε διὰ τῆτο ἐκ τῆ Υἱᾶ τὸ Πνεῦμα ἐκ ἐκπορεύεται, ὅτι μόνος ἐστὶ τῆ Πνύματος αἰτίας τε καὶ Προβολεὺς ὁ Πατήρ· δηλὸν δὴπε μὴδαμῶς τὸν Υἱὸν νοεῖσθαι αἴτιον εἶναι, ἢ Προβολέα τῆ Πνύματος· δι' ὡς αἰτίαν ἐκ ἐκ τῆ Υἱᾶ λέγεται τὸ Πνεῦμα ἐκπορεύεσθαι, ἀλλὰ διὰ τῆ Υἱᾶ ἐκ τῆ Πατρός. Ἐπειτα δὲ καὶ ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ ὁ Νύσης διαβρῆδω ἐν τῷ Α'. τῶν κατὰ Εὐνομίαν: „Ἐκ μὲν τῆ Θεᾶ τῶν ὅλων καὶ αὐτὸ (τὸ Πνεῦμα) τὴν αἰτίαν ἔχον τῆ εἶναι· ὅθεν καὶ τὸ Μονογενὲς ἐστὶ Φῶς· διὰ δὲ τῆ ἀληθινῆς Φωτὸς ἐκλάμψαν, ἔτε διασήματι, ἔτε φύσεως ἑτερότητι τῆ Πατρός, ἢ τῆ Μονογενῆς ἀποτεμένεται,,. Διὰ γὰρ δὴ τέτων τρανῶς διακρίνει, ἔχεν μὲν αὐτὸ τὸ Πνεῦμα τὴν αἰτίαν τῆ εἶναι, ἐκ τῆ Θεᾶ, ἐκλάμπειν δὲ διὰ τῆ Υἱᾶ. Καὶ τῆτο ἄρα ἐκ ἐκείνῳ ταύτῳ ἐστὶ. Παραπλήσια δὲ τέτοις, ὁ αὐτὸς Νύσης „Αὐτόθι ἔχει, ἐν οἷς φησὶν: ὅτι δι' αὐτῆς (τῆ Υἱᾶ) μὲν ἐστὶν ἐκλάμπον (τὸ Πνεῦμα), τὴν δὲ τῆς ὑποστάσεως αἰτίαν ἔχον ἐκ τῆς πρωτοτύπου Φωτὸς (τῆ Πατρός),,. Ἐνθα αὖθις, εἰ καὶ διὰ τῆ Υἱᾶ ἐκλάμπειν ἐστὶ διδάσκων τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, τὴν γεμὴν αἰτίαν τῆ αὐτὸ εἶναι ἐπὶ τὸν Πατέρα ἀνάγει. Οὐκ ἄρα τὴν ἀρχὴν τῆς ἰδίας αὐτῆς ὑποστάσεως παρὰ τῆ Υἱᾶ τὸ Πνεῦμα ἔχεν ἐδίδασκεν, ὅτε διὰ τῆ Υἱᾶ ἐκλάμπειν αὐτὸ ὑπετίθετο.

Ἦπερ δέτοι ἐκ Πατρός δι' Υἱᾶ τὸ Πνεῦμα προβάλλεσθαι, κατ' ἄλλω ἔννοϊαν οἱ Πατέρες διδάσκουσιν, ἢ κατ' ὅτι, τῆ Υἱᾶ γεννηθέντος τὸ Πνεῦμα προβάλλεται. Διαβρῆδω γὰρ τῆτο, σῳάμα Γρηγορίῳ τῷ Νύσης ἘΦΡΑΪΜ διδάσκει ἐν τῷ περὶ τῆς Ἐξομολογήσεως Λόγῳ, καὶ τῆς ἑαυτῆς Ἐπιτιμῆσεως: „Οὐ πάθει, καὶ χρόνῳ, καὶ τρόπῳ (ἴσ: καὶ τροπῇ) ἐκ αἰτίας τινὶ ὁ Πατήρ τὸν Υἱὸν ἐγέννησεν· ἀλλὰ φύσει ἀνάγκης ἐλδύθερα, ὡς σιωισῶ διὰ τῆς ὑποστάσεως αὐτῆς· (2) ὅτι θελήσαντα τὸν Πατέρα καὶ ἄλλον κοινωνὸν προβαλεῖν, καὶ ὃν ἔτεκεν· ἀλλὰ Πνεῦμα Ἅγιον ἐκ τῆς ἑσίας αὐτῆς σῳέσησεν· καὶ πρὸ τῆ Υἱᾶ τὸ Πνεῦμα προήγαγεν, ὥς μὴ εἴπωμεν ὑπ' ἀνάγκῃ τὸ θέλημα. — Τὸ δὲ εἰπεῖν ἡμᾶς μετὰ τὸν Υἱὸν τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, καὶ χρόνῳ ἐστὶ σημαντικόν, ἀλλὰ προσώπῳ· Πνύματος γὰρ καὶ Λόγῳ ἕς ὁ χρόνος. Ἐν λόγῳ καὶ ἡμεῖς τὸ Πνεῦμα προάγομεν· ἔτε ὅν ὁ Πατήρ χρειώδης χρόνῳ γέγονε προαγαγεῖν τὸν Λόγον· καὶ ἐν χρόνῳ ὕπερον τῆς Λόγῳ, τὸ Ἅγιον Πνεῦμα προήγαγε· διόπερ καὶ σῳαΐδιος ἢ Θεότης ἐστὶ τῆς Ἀγίας Τριάδος,,. Δι' ὧν δὴπε διδάσκει τὸν Πατέρα ἐκ τῆς ἰδίας ἑσίας πρῶτον μὲν προαγαγεῖν τὸν Υἱόν· μετὰ δὲ τὸν Υἱόν, καὶ τὸ Πνεῦμα· μὴ πρὸ τῆ Υἱᾶ δὲ προβλη-  
θῆναι

(2) Ὅρα ἐν τῇ Α'. τῶν Πραγματῶν: Σελ: 25. καὶ τὰς ἐκεῖ δὲ Σημειώσεις.

Τόμ: Β'.

Ξ Ξ Ξ



θῶναι τὸ Πνεῦμα, ὡς πρὸ τῆς Πνοῦματος τὸν Υἱόν· ἔχ' ὅτι χρόνος μεσολαβήσας ἐνέπεσεν, ὡς τάχιον μὲν τὸν Υἱὸν ἐκ τῆς Πατρὸς γεννηθῆναι, χρονικῶς δέ τινος παρεγκεχωρηκότος διαστήματος, προελθεῖν καὶ τὸ Πνεῦμα· ἐκότερον δὲ ἅμα, καὶ κατὰ τὸ αὐτό: πρὸ πάντων δηλ: τῶν αἰώνων ἐκ τῆς Πατρὸς προεληλυθέναι: τὸν μὲν Υἱὸν, μηδενὸς προβληθέντος· τὸ δέ τοι Πνεῦμα γεννηθέντος τῆς Υἱᾶς.

Οὕτω καὶ ὁ Νύσσης ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ ἐν τῷ Βιβλ: τῷ „περὶ „τῆς μὴ οἷσθαι λέγειν τρεῖς Θεός,,. Τὸν μὲν Υἱὸν διδάσκει ἐκ τῆς Πατρὸς, μηδενὸς μεσιτεύοντος· ἥτοι μηδενὸς ἤδη προβληθέντος, προβάλλεσθαι τὸ δὲ Πνεῦμα ἐκ τῆς Πατρὸς, τῆς Υἱᾶς ἤδη προβεβλημένον, ἥτοι γεννηθέντος, ἐκπορεύεσθαι. Τοιῷδε διαφύκῃ δὴ τῷ λόγῳ, τὸ („ἐκ Πατρὸς δι' Υἱᾶς τὸ Πνεῦμα προῖεναι,,) ἀναπτύσσων: διὰ τὸ τῆς Υἱᾶς ἤδη ἐκ τῆς Πατρὸς γεννηθέντος, τὸ Πνεῦμα προβάλλεσθαι. Ἔστι δὲ τὰ ἐκείνη: „Καὶ τῆς ἐξ αἰτίας ὄντος, πάλιν ἄλλω διαφορᾷ ἐννοῶμεν τὸ μὲν γὰρ, προσεχῶς ἐκ τῆς Πρώτης· τὸ δὲ, διὰ τῆς προσεχῶς ἐκ τῆς Πρώτης. „Ὡς καὶ τὸ Μονογενὲς ἀναμφιβόλῳ ἐπὶ τῆς Υἱᾶς μένει· καὶ τὸ „ἐκ τῆς Πατρὸς εἶναι τὸ Πνεῦμα μὴ ἀμφιβάλλειν· τῆς τῆς Υἱᾶς „μεσιτείας, καὶ αὐτῷ τὸ μονογενὲς φυλαττέσης, καὶ τὸ Πνεῦμα „τῆς φυσικῆς πρὸς τὸν Πατέρα χέσεως μὴ ἀπειργάσης,,. Καθάπερ ἔν καὶ ἐν τῷ Α'. τῶν κατὰ Εὐνομίαν: „Ὡς γὰρ σωάπτεται τῷ Πατρὶ ὁ Υἱός, καὶ τὸ ἐξ αὐτῆς εἶναι ἔχων ἔχων ὅς ἐστι „ρίζα κατὰ τὴν ὑπαρξιν, ἔτω πάλιν καὶ τῆς Μονογενὲς ἔχεται „τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ἐπινοία μόνη, κατὰ τὸν τῆς αἰτίας λόγον, προθεωρημένον (τῆς Υἱᾶς) τῆς τῆς Πνοῦματος ὑποστάσεως, (ἢ δηλονότι πρὸ τῆς Πνοῦματος ὁ Υἱός νοεῖται ἐκ τῆς Πατρὸς προβαλλόμενος.) „Αἱ δὲ χρονικαὶ παρατάσεις περὶ τῆς προαιωνίου ζωῆς χώραν ἐκ ἔχουσιν· ὥς τῆς λόγος τῆς αἰτίας ὑπεξηρημένον, ἐν μηδενὶ τῷ Ἁγίαν Τριάδα πρὸς ἑαυτὴν ἀσυμφώνως ἔχον,,.

Κατὰ νῦν δὲ τὸν αὐτὸν ὁμοίως καὶ ὁ Δαμασκίως ἸΩΑΝΝΗΣ ἐν τῷ Α'. Βιβλ: τῶν περὶ Ὁρθοῶς Πίστεως Κεφαλ: ΙΗ'. τῷ Πατρὶ τὸ Πνεῦμα διὰ τῆς Υἱᾶς διδάσκει σωάπτεσθαι καθό, δηλονότι, τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ ἀμέσως, ἥτοι μηδενὸς προβληθέντος προβάλλεσθαι· ἀλλὰ μεσιτεύοντος, τέτρεσι προβαλλομένοις τῆς Υἱᾶς: „Τὸ γὰρ Πνεῦμα, φησὶ, τὸ Ἅγιον, μέσον ἀγεννήτης καὶ „γεννητῆς καὶ δι' Υἱᾶς τῷ Πατρὶ σωαπτόμενον,,. Ἐκ τέτων ἔν φανερόν, ὡς ἐν οἷς οἱ Πατέρες τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ Πατρὸς δι' Υἱᾶς διδάσκουσιν ἐκπορεύεσθαι, τῷ διὰ τῆς Υἱᾶς ῥήματι ἔδεν ἄλλ', ἢ τὴν τῆς προβολῆς τάξιν διδάσκειν ἐθέλῃσι, καὶ ἔχῃ τῆς εἶναι τὴν ἀρχὴν, καὶ τὸν αἴτιον.

Ἀλλὰ

'Αλλὰ τὸ ΔΙΑ' ταύτὸν ἔφασκον εἶναι τῷ 'ΕΚ. — 'Αλλὰ γὰρ, ὅπως ἂν ἐπὶ τῶν προενεχθέντων ὑποδειγμάτων ταυτὰ καὶ λέγοιτο, εἰδὲν ἐντεῦθεν κατὰ τῆς προτεθείσης διανοίας συμπερανθῶμαι δυνήσεταί. Ἐπειδὴ γὰρ ἢ ἐκ τῆς Πατρὸς, εἴ τι μίας, οὐκ ἐν ὑποστάσει, Υἱὸς τε καὶ Πνύματος, προβολὴ αὕτη πάντα νῦν ἐστὶν ὑπερπάσσει· εἰδ' ἂν ἄλλη τις ποτὲ προβολὴ ἐγχωρήσειε, μὴ καὶ ἄλλης κατὰ τὸ αὐτὸ Τριάδος ἐπὶ τῆς ἐνὸς Θεῶς ὑποτιθεμένης. Διοσὼν γὰρ ὑποστάσεων τελείων κατὰ τὸ αὐτὸ, πρὸ παντὸς αἰῶνος ἐκ τῆς Πατρὸς προβαλλομένων, ἑτέρα μὲν πρὸ τῆς ἑτέρας γεννᾶται· τὸ δὲ Πνεῦμα, τῆς Υἱῶς γεννηθέντος, ἐκπορεύεται μὲν, εἰ γεννᾶται δέ· ἔτι καὶ ἄλλ' ἔν, ὡς εἶναι ἓνα τε καὶ μόνον Θεὸν, τὸν Πατέρα καὶ τὸν Υἱὸν καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ "Ἅγιον" διὰ τῆς τοῦ καὶ πρὸς ἐκφράσει τῆς κατὰ τόνδε τὸν ἐξηρημένον λόγον προβολῆς τῶν διοσῶν ἐκείνων ὑποστάσεων, ἰδιάζων τις τρόπος τῆς λέγειν καὶ παρὰ τοῖς Θεσπεσίοις Πατράσιν ἐκράτησε: δι' ἧς, δηλονότι, τὸν μὲν Υἱὸν, μηδενὸς προπαραχθέντος· τὸ δὲ τοι Πνεῦμα τῆς Υἱῶς γεννηθέντος, ἐξ ἐνός τε καὶ τῆς αὐτῆς Πατρὸς ἐκπροϊέναι, ἔχοιεν παραδηλῆν. Οὕτω δὲ ἄρα ὡς τῷ ἰδιοπρεπεῖ τῷ δε καὶ ἐξηρημένῳ τρόπῳ τῆς ἐκφράσεως, τῆς κοινῇ ἐν χρήσει γινομένης τῆς λέγειν τρόπος μηδὲν ἔχεν καὶ προσλυμνίεσθαι. Τῷ δ' ὄντι φθάσαν προαποδέδεικται, ὡς ὁ τῶν Πατέρων νῦν, τῶν τὸ Πνεῦμα ἐκ Πατρὸς δι' Υἱῶς ἐκπορεύεσθαι διδασκόντων, τοιούτος ἐστὶν: ὅτι ἐκ τῆς Πατρὸς, τῆς Υἱῶς ἤδη γεννηθέντος (3) τὸ Πνεῦμα τὸ "Ἅγιον" ἐκπορεύεται. Πάντως δέπε, εἰ κατὰ τόνδε τὸν νῦν αἰ Προθέσεις ἐκληφθῶσιν, εἰ ἰσοδυναμῶσιν ὅλως τὸ ΔΙΑ' τῆς Υἱῶς, καὶ τὸ 'ΕΚ τῆς Υἱῶς· ἐπεὶ καὶ ὁ ἐκ Δαμασκῆς 'ΙΩΑΝΝΗΣ ἐπὶ τῆς προενεχθείσης ῥήσεως, τὸ μὲν ἐκ τῆς Πατρὸς ἐκπορεύεσθαι τὸ "Ἅγιον" Πνεῦμα σιμῶσκει, τὸ δὲ ἐκ τῆς Υἱῶς, ἀπεφασκε. Πῶς ἔν τὸ 'ΕΚ τῷ ΔΙΑ' εἶη ταυτόν; Διὰ δὴ τῆς τοῦ καὶ οἱ Θεοὶ Πατέρες, εἰ καὶ τοσάκις πολλαχῶς τὸ Πνεῦμα ἐκ Πατρὸς δι' Υἱῶς διδάσκουσιν ἐκπορεύεσθαι, εἰ καὶ μὴ γε μὴν εἰδέποτε αὐτὸ ἀπεφῆναντο ἐκπορεύεσθαι ἐκ τῆς Υἱῶς· μάλλον δὲ μυριάκις, καὶ τὸν Υἱὸν αἰτίαν εἶναι τῆς τῆς Πνύματος ὑποστάσεως διαβρίθδω ἀπέφησαν, ἓνα ὄντα τὸν Πατέρα καὶ εἰδότες καὶ κηρύττοντες, τὸν αἰτίον τε καὶ Προβόλεα τῆς Πνύματος.

'Αντιπρο-

(3) Τετάρτη: ἐκ τῆς καὶ ἑνὸς καὶ ὀνομαζομένης Πατρὸς διὰ τὸ Υἱὸν γεγεννημένην. "Ἀλλως τε γὰρ, πῶς ἂν ὅλως καὶ Πατὴρ νοεῖτο, ἢ λέγοιτο, ὁ τῆς Πνύματος προβάλλειν Θεολογούμενος Πατὴρ, ἀνευ τῆς τῆς Υἱῶς κατὰ τὸ αὐτὸ σιμωπινοήσεως; Ὡς ἐκ Πατρὸς δι' Υἱῶς (τῆς τοῦ δ' ἐμφαίνει: ἐκ τῆς διὰ τὸν Υἱὸν Πατρός) τὸ "Ἅγιον" Πνεῦμα ἐκπορεύεσθαι λέγεται πάνυ εἰκότως.

Ἀντιπροτείνει δ' ἔν ἐνταῦθα ὁ πολλάκις μνημονοθεὶς Ἰησοῦς (4) πρὸ τῶν ἄλλων ποικίλα, ἃ πρῆργε ἴσως ἡμῖν γένοιτο ἐπιλύσασθαι: „Α'. γὰρ οἱ Πατέρες (φησὶν ἐνιστάμενος) διδάσκοντες τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ Πατρὸς δι' Υἱῶ ἐκπορεύεσθαι, ἢ „προβάλλεσθαι, ἥτοι νοῶσι τὸ Πνεῦμα ἐκπορεύεσθαι διὰ τῶ Υἱῶ „ὡς δι' ὑπὲρ, ἢ ὡς διὰ δευτέρας αἰτίας (ἅπερ ἄτοπα) ἢ διὰ „τῶ Υἱῶ, ὡς δι' ὁμοσίης, ὃ καὶ αὐτὸ παραπλησίως ψευδὲς ἐστὶ. „Πρῶτον γὰρ ἂν ἔτις ἐποίτο καὶ τὸν Υἱὸν διὰ τῶ Ἁγίῳ Πνεύματος γεννητὸν εἶναι, ἅτε δὴ καὶ τέττε ὁμοσίης τῶ Υἱῶ πεφυκότος. Β'. ἢ κατ' ἐνέργειαν ἐπιρροή, ὡς περ ἢ διὰ τῶ Υἱῶ πρόσδος ἐξ ἀνάγκης προϋποτίθησιν, ἔδεικν' λόγῳ ἐπὶ τὸ ὁμοσίον „ἔχει ἀνάγεσθαι. Αἱ γὰρ ἐνέργειαι εἰσὶ τῶν ὑποστάσεων. Ἀνάγεσθαι ἄρα ἐπὶ τῶ ἐνέργειαν, τῶ κοινῶ ἔσαν τῶ Πατρὶ καὶ „τῶ Υἱῶ. Γ'. δὲ, εἰ τὸ διὰ τῶ Υἱῶ σημαίνει τῶ ὁμοσιότητα, „ζητεῖν δὴ λέπεται, τί τὸ ἐκπορεύεσθαι, ἢ προβάλλεσθαι διὰ τῶ „Υἱῶ, ὡς διὰ ὁμοσίης, ἐστὶ; Τὸ γὰρ ἐκπορεύεσθαι τέτο, ἥτοι τὸ „παράγεσθαι σημαίνει, διὰ τῶ τῶ αὐτῶ ἔχοντος ἑσάν σωάμα „τῶ Πατρὶ καὶ τῶ Πνεύματι, ἢ τι ἕτερον. Εἰ μὲν ἔν τὸ πρῶτον, τὸ Πνεῦμα πάντως τὸ Ἅγιον ἐκπορεύεσθαι ἐκ τῶ Υἱῶ. „Εἰ δ' ἔχι σημαίνει τὸ παράγεσθαι διὰ τῶ Υἱῶ, ὅποιον δὴ (πρὸς „Θεῶ!) ἐγχωροῖ τὸ μεταξὺ τῶ ἐκπορεύεσθαι καὶ τῶ παράγεσθαι „διάφορον; Ἡ τελευταῖον, ὃ, τε Θεὸς Δαμασκινῶς καὶ οἱ ἄλλοι „ἐνόησαν ἐκπορεύεσθαι διὰ τῶ Υἱῶ τὸ Πνεῦμα, ὡς δι' ἀρχῆς: τῇ „(διὰ τῶ Υἱῶ) Φωνῇ τὸν Υἱὸν ἐκ τῶ Πατρὸς ἔχαι τὸ ἅμα καὶ „αὐτὸν ἀρχῶ εἶναι τῶ Ἁγίῳ Πνεύματος ὑπεμφαίνοντες, — „Ο μὲν ἔν ταῦτα.

Ἀλλ' ὅπως μὲν ἂν τὸ Πνεῦμα λέγοιτο ἐκ τῶ Πατρὸς διὰ τῶ Υἱῶ ἐκπορεύεσθαι, ἄχρι τέττε σωείδομεν. Τετέστιν: ὅτι τῶ Υἱῶ γεννηθέντος ἐκ τῶ Πατρὸς ἐκπορεύεσθαι αὐτό. ἔ πρὸ τῶ Υἱῶ τέτο γὰρ τῶν προεπενεχθέντων Πατέρων τὸ φρόνημα ὡς. Κατὰ δὲ τόνδε τὸν νῦν ἐκ ἀτόπως εἰρήσεται, ὡς τὸ ἐκ Πατρὸς δι' Υἱῶ ἐκπορεύεσθαι τὸ Πνεῦμα ταύτη γε θεολογεῖται: καθὸ τὸ Πνεῦμα διὰ τῶ Υἱῶ, τῶ αὐτῶ ὁμοσίης ἐκ Πατρὸς γεννηθέντος, ἐκπορεύεσθαι ἐκ τῶ Πατρός. Ὁ δὲ πρὸς τὰ ἀντεπενεχθέντα ὑπὸ τῶ Ἰησοῦς ἀνήκει, πῶς ποτ' ἂν ἐποίτο, πρὸς Θεῶ! Α'. μὲν τῶ αὐτῶ λόγῳ καὶ τὸν Υἱὸν χρῶναι λέγειν γεννᾶσθαι διὰ τῶ Πνεύματος; τῶ μὲν γὰρ Υἱῶ ἥδη γεννηθέντος, ἐκπορεύόμενον τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ἔσι πάντως διὰ τέτο φάσκαι: διὰ τῶ ὁμοσίης Υἱῶ, ἢ προγεννηθέντος, ἐκ τῶ Πατρὸς αὐτὸ ἐκπορεύεσθαι. ἀλλὰ γὰρ

(4) Κιχώριος ἐν Ζητήμ: Δ'. Σελ: 37.

γὰρ ἔχῃ καὶ τὸ Πνεῦμα πρὸ τῆς Υἱᾶς ἐκπορεύομενον ὁμοίως νοεῖται, ὡς ἐντεῦθεν κατὰ τὸν αὐτὸν λόγον ἐξεῖναι λέγειν καὶ τὸν Υἱὸν ἐκ τῆς Πατρὸς γεννηῖσθαι διὰ τῆς Πνεύματος. Ἐπειτα ψυδὲς ἐστὶ, καὶ τὸ ἐν τῷ Υἱῷ ἐνεργητικῶς τινα ἐπιβρῶν προὔποτιθέναι ἐπὶ τῆς τῆς Πνεύματος Ἐκπορεύσεως ἥτοι: τὸ ὑπονοεῖν, ὡς δῆθεν καὶ ὁ Υἱὸς ἐπὶ τῇ τῆς Πνεύματος ἐκπορεύσει ἐπιβρῶν κατ' ἐνέργειαν. Ἡ μὲν γὰρ Ἐκπόρευσις ὑποσημαίνει πάντως ἐνέργειάν τινα παρακτικῶς· αὕτη γεμὴ ἡκιστα πρὸς τὸν Υἱὸν ἐξὶν ἀναγομένη, ἐνθα διὰ τῆς Υἱᾶς τὸ Πνεῦμα λέγεται ἐκπορεύεσθαι. Διὰ γὰρ τέττε μόνον δηλῆται, ὅτι τῆς Υἱᾶς γεννηθέντος, ἐκπορεύεται τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον· ἥπερ δὲ τέως καὶ τὸ διὰ τῆς Υἱᾶς ἐκπορεύεσθαι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, τὸ διὰ τῆς Υἱᾶς παράγεσθαι σημαίνει, τῆς τῷ αὐτῷ ἐσίαν ἔχοντος τῷ Πατρὶ, καὶ τῷ Πνεύματι· ἄλλ' ἐκ ἀληθὲς καὶ τὸ ἐντεῦθεν ἔπεσθαι, ὡς ἄρα τὸ Πνεῦμα ἐκπορεύεται καὶ ἐκ τῆς Υἱᾶς· ἐπεὶ ὁδε μόνος ἐστὶν ὁ νῆς ὁ τῆς Προτάσεως ἐκείνης, ὅτι διὰ τῆς Υἱᾶς: τετέστιν, ἡδὴ τῆς Υἱᾶς γεννηθέντος, τὸ Πνεῦμα προβάλλεται· δι' ἧς πάντως, ἔδεν ἄλλ', ἢ τῆς παραγωγῆς ἢ τάξις ἐπιδηλῆται. Ὡς ἐντεῦθεν ἔδενι σὺν λόγῳ ἐπιφέρεσθαι, τῇ (διὰ τῆς Υἱᾶς) Φωνῇ ἐθελῆσαι τὰς Πατέρας διδάξαι, τὸ ἐκ τῆς Πατρὸς τὸν Υἱὸν λελαχέναι τὸ ἐκπορεύειν τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον.

Προσίδησι δ' ἐστὶ ὁ Ἰησοῦς: „Τὸν Δαμασκινὸν ὡς λίαν ἀντιβαίνειν τοῖς τὸ (διὰ τῆς Υἱᾶς) περὶ τῆς τῶν χαρισμάτων χρονικῆς διανομῆς ἐρμηνεύσει· λίαν δὲ ἀντιφέρεσθαι καὶ τοῖς „τὸ (διὰ τῆς Υἱᾶς) ἀναπτύσσει (σὺν τῷ Υἱῷ.) Πρὸς μὲν γὰρ τὸ Α'. πλείοις ἐντυχεῖν εἶναι χωρίοις (Φησὶ) προδηλοτάτοις, ἐν „οἷς ὁ Δαμασκινὸς ὑπὸ τῇ Φωνῇ τῆς Ἐκπορεύσεως τῷ παραγωγῶν ἐννοεῖ, τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, φάσκων, ἐκ Πατρὸς δι' Υἱᾶς ἐκπορεύεσθαι. Ὁ δὲ πρὸς τὸ Β'. ἐπανήκει, τὸν Δαμασκινὸν αὐτὸν λέγειν, ὡς ὁ τῆς Λόγῃς γεννήτωρ, διὰ τῆς Λόγῃς ἐστὶ τῆς Ἁγίας Πνεύματος Προβολῆς. Ἐνθα τῆς ΔΙΑ, τῇ ΣΥΝ, ὡς ἂν „ὁ νῆς ὁ τῆς Δαμασκινῶς πάντως, ὅτι ὁ Πατὴρ σιωάμα τῷ Λόγῳ „ἐστὶν ὁ τῆς Ἁγίας Πνεύματος Προβολῆς· ὅπερ ἐν ἀνυπεξάλυκτῳ „τινὶ τὰς Ἀνατολικὰς ἀποσφάττει τραύματι.,,

Ἄλλ' ἔδ' αὐτοὶ γινόμεθα ἕξαρνοι, ὡς ἐπὶ τοῖς ἐνταῦθα ὑπὸ τῆς Ἰησοῦς ἡμῖν προτεθεῖσι χωρίοις, τῷ παραγωγῶν ὁ Δαμασκινὸς τυγχάνει νοῶν, καὶ ἔχῃ τῷ κατὰ χρόνον τῶν χαρισμάτων διανομῇ τῶν τῆς Πνεύματος. Ἀλλὰ μὴ παρὰ τέτο καὶ ἐν ἄλλοις· πάλιν χωρίοις ἔχῃ τὸ (διὰ τῆς Υἱᾶς) ἄλλως ἐγένετο ὁ Δαμασκινὸς ἐρμηνεύων, περὶ τῆς χρονικῆς μόνον τῶν τῆς Πνεύματος χαρισμάτων διανομῆς αὐτὸ ἐκλαβόμενος; Ἐμπης γὰρ τὰ τῆς Δαμασκινῶς διαρρήδην τέτο ἐκφαίνοντα, κατόπιν σιωεωρακότες

Τόμ: Β'.

Ο ο ο

ἔσμεν



ἐσμέν· ἢ γὰρ, μὴ ἄρα παρὰ τὸτο, ὅτι ἐχὶ ἀπανταχὲ οἱ Πατέρες τὴν φωνὴν τῆς Ἐκπορεύσεως περὶ τῆς τῶν χαρισμάτων ἐν χρόνῳ γινομένης χορηγίας ὑπεξαλήφασιν, διδάσκοντες τὸ Πνεῦμα ἐκ τῆ Πατρὸς διὰ τῆ Υἱᾶ ἐκπορεύεσθαι, ἐκ τούτου ἔπεται τὸ Πνεῦμα ἐκπορεύεσθαι καὶ ἐκ τῆ Υἱᾶ; Ἀλόγως.

Τὸ δέ τοι ἀπ' ἐντεῦθεν ἐξῆς ἐν μόνῃ παΐσαν τῇ ὁμωνυμίᾳ ὁ Ἰησοῦς ἐλέγχεται. Ἐν οἷς γὰρ τὴν ΔΙΑ' εἰς τὴν ΣΥΝ οἱ Ἀνατολικοὶ μεταλαμβάνουσι, νοῶσι δὴπε μὴ κατὰ λόγον τὸν τῆς αἰτίας τῆ εἶναι τὸ Πνεῦμα τῷ Πατρὶ σιωάπτεσθαι τὸν Υἱόν, τῷ δὲ τῆ αἰτιατῆ λόγῳ μόνον σιωέρχεσθαι τὸν Υἱόν τῷ Πνύματι· τῷ οἰκειωτικῷ σιωδέσμῳ ΣΥΝ, ἐχὶ τὸν Υἱόν πρὸς τὸν Πατέρα, πρὸς δὲ τὸ Πνεῦμα αὐτὸ ἀναφέροντες. (5) Ὡς εἶναι τὸ νοόμενον· ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα σιῶ τῷ Υἱῷ παράγεται ἐκ τῆ Πατρὸς· καὶ κατὰ τόνδε μόνον ἄρα τὸν νόον, ὁ Δαμασκηνὸς ἀνφαίη τὸν Πατέρα, σιῶμα τῷ Υἱῷ τὸν Προβολέα εἶναι τῆ Πνύματος. Πῶς ἔν τραυματίᾳ πέσειαν οἱ Ἀνατολικοὶ, πληγῇ τῇ τῆ Ἰησοῦς ἀνυπεξαλύκτῳ ταύτῃ τρωθέντες, οἱ ἔτω ῥαδίως τὸ βέλος ἐκκλίνοντες;

Ἵποσυν-

- (5) Ὡς ἄριστα περὶ τούτου, ὁ Συνοδικὸς ἡμῶν κατὰ τὸν Ἄθω ποτὲ γεγωνῶς, Νεόφυτος ὁ Πελοποννήσιος, (ἐν τῷ εἰς τὸ Δ'. τῆς Θεωρίας τῆ Γραμμῆς Γραμματικῆς αὐτῆς Ἵπομνήματι, τῷ ἐν Βασιλεῖᾳ, κατὰ τὸ ἀψῆξ. τύποις ἐκδοθέντι, Σελ: 997. 998.) Τὰς γὰρ τῆς ΔΙΑ' Προθέσεως ἀναπτύσσων διωάσεις, καὶ τὴν ταύτης μετάληψιν εἰς τὴν ΣΥΝ, ἢ ΜΕΤΑ', ἐν ἄλλοις τε δὴ συχινῶς ἔσαν, καὶ ἐπὶ τῇ Δόγματι μάστιχα τῆς Ἐκπορεύσεως προσφυσάτιν, Θεολογικώτατα διετράνωσε: „Τὸ γὰρ ΔΙ' ΟΥ, φησὶν, ἐν τῷ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκ Πατρὸς ΔΙ' ΥΙΟΥ Θεολογεῖσθαι, ἐπὶ μὲν τῆς ἐγγρόνης προόδου τὸ „σιῶματιον,, δηλοῖ κατὰ τὴν ἐννοίαν, ὅ μόνον καὶ ἐξ Υἱᾶ, ἀλλὰ καὶ ἐξ αὐτῆς τῆ Πνύματος, τὰ τῆ Πνύματος τοῖς πνύματικοῖς „προχέται χαρίσματα· εἶγε καὶ τέτων ἕκαστον Πνεῦμα ὁμωνύμως ἀκτὴ παρὰ τῷ Ἡσαίᾳ. Ἐπὶ δὲ τῆς σιῶματιᾶς, ὅ τὸ „σιῶματιον,,. Τῶν γὰρ ἐπὶ τῆς Μοναρχικῆς Τριάδος Ἑλληνικῶ πολυαρχίαν νοσόντων τούτω γὰρ ἀλλὰ τὸ „σιῶματιον,,. Τὴν γὰρ Θέρμιν διὰ τῆ Φωτὸς ἐκ τῆ πυρὸς προῖναι ἀκτῶντες· ἢ τὸ „Φῶς διὰ τῆς ἀκτίνος ἐκ τῆ Ἡλίου, ἔδεν ἄλλ', ἢ τούτω ἐννοῶμεν: ὅτι ἅμα καὶ ἀχωρίως ἐμὲ τῷ Φωτὶ καὶ ἡ Θέρμη ἐκ τῆ πυρὸς, καὶ μετὰ τῆς Θέρμης τὸ Φῶς ἐκ τῆ πυρὸς πρέσιν. Ἐπεὶ μὴδέτερον τέτων ὑπερίκει ὁπωσὲν τῆ ἐτέρῃ, κατὰ τὴν ἐκ τῆ πυρὸς διάφορον ὑπαρξίν· ἀλλ' ἅμα τε καὶ ἐνθὺς ἐκάτερον ἐξ αὐτῶν ὅλων μὲν ἐκατέρων ἐν ἀλλήλοις θεωρημένων, ὑδετέρῃ δὲ τέτων ἐκ τῆ ἐτέρῃ, ἢ διὰ τῆ ἐτέρῃ τὸ εἶναι ἐχόντων. Κατὰ δὲ τὴν σημαίνον ἐρεται τοῖς Θεοῖς Πατράσιν ἔστιν ὅ, τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκ Πατρὸς δι' Υἱᾶ ἐκπορεύεσθαι· ἀντὶ τῆ ΜΕΤΑ' τῆ Υἱᾶ· ἢ τῷ ΣΥΝ τῷ Υἱῷ γεννωμένῳ, καὶ τὸ Πνεῦμα αἰδίως ἐκπορεύεσθαι· ὡς καὶ τινες αὐτῶν, αἰτὶ τῆ ΔΙ' ΟΥ, τὸ ΜΕΘ' ΟΥ μεταλαμβάνοντες, τὸ Πνεῦμα λέγουσι,,. ΜΕΤΑ' τῆ Υἱᾶ ὁσιωδῶς γεννηθέντες, ἐκ τῆ Πατρὸς ἀφράως ἐκπορεύεται (ὡς μικρὸν ὑποκαταβάς καὶ ὁ Συγγραφεὺς ἡμῶν Ζοιρηνικάσιος, ἐκ τῆς ῥήσεως Γρηγορίου τῆ Νύσσης, σαφῶς ἀποδείκνυσιν) „Ἀλλ' αἱ μὲν ἅμα πεμπόμεναι δύο ἀκτίνες, ἡγῶνται μὲν, ἐμὴν ἀλλήλαις, ἀλλ' ἐν τῷ Ἡλίῳ ὡς ἔδεν δύο κλάδοι, εἰμὴ ἐν τῷ σελέχει. Τὸ δὲ Πνεῦμα δι' Υἱᾶ ἐκπορεύεσθαι, τὴν αὐτῆ πρὸς τὸν Υἱόν κατ' ἐσίαν ἀκρὰν ἐνότητά, καὶ ἀσύγχυτον περιχάρησιν ἐμφαίνει, διαπεφοιτηκὸς (ὡς ἀν' εἴποι τις) καὶ διὸν τῆς τῆ Υἱᾶ ὑποστάσεως, ἀσυγχύτως Θεοῦ, πρεπῶς νοσμένης τῆ διέναι,,.



ὑποσώπτει προσέτι: τὸ μηδέποτε τῆς Ἀνατολικῆς δαΐδα διωθήσασθαι, ὅτι τὴν ΔΙΑ οἱ Πατέρες, ὡς ταυτοδιωαμῆσαν τῇ ΣΥΝ ἐξειλήφασιν (6). Τῆς δὲ Λατίνης, συχνὰ, φησὶν, ἀποδε-  
δειχέναι,

- (6) Πῶς ἔγω θρασέως ἡμῖν ταῦτα διατείνεται ὁ Ἰησοῦς, ὅποτε ἐν πολλαῖς τῶν θειογραφικῶν δήσεων, οἱ Πατέρες τὴν ΔΙΑ, ἀντὶ τῆς ΣΥΝ, ἢ τῆς ταυτοδιωαμῆ-  
σης ΜΕΤΑ, ἀριδηλότερα μετειλήφασιν; Αὐτίκα καὶ γάρ: ὅπερ ὁ Προφήτης  
Ἰσαΐας (Κεφαλαῖα ΚΘ'. 15.) „Οὐαὶ, φησὶν, οἱ βαθέως ποιῶντες βελίω, καὶ  
„ἐ ΔΙΑ τῇ Κυρίῃ καὶ (Κεφαλαῖα Λ'. 1.) ἐποίησατε βελίω, ἐ ΔΙ' ἐμῆ, καὶ  
„σωθήκατε, ἐ ΔΙΑ τῇ Πνύματος με,,. Ὁ Θεὸς Κύριος ἐν τῷ εἰς τὸν Ἰσαΐαν  
αὐτῇ ὑπομνήματι, ἐν Τόμ: Β'. τῶν Συγγραμ: Σελ: 419. διερμινύων: „Ταλανίζει  
„(λέγει) ὡς φιλαμαρτήμονας καὶ ἀποστάτας γεγονότας τῆς ἐξ Ἰσραὴλ, πονηρῆς τε  
„ἄγαν, καὶ πικρὰ βεβλόμενες, ἐ ΔΙΑ Θεῷ: ἐ γὰρ θέμις ΜΕΤΑ Θεῷ βεβλόμεθα  
„τῆς ἐπί τινι τῶν φαύλων ὁμογνωμονεῖν ἐθέλοντας. Βεβλόμεθα δὲ ΜΕΤΑ Θεῷ,  
„καὶ χωρήσει πρὸς τὰ πρακτέα, πᾶς ἑῖς ἐστὶν εὐσεβὴς τε καὶ ἀγαθὸς, καὶ δι-  
„καισιῶς ἐραστὴς,,. Οὕτως ἐκ τῆ ἐναντίας τοῖς ἐξ Ἰσραὴλ τέτοις, οἱ ἐν Τύρῳ  
Μαθηταὶ ΜΕΤΑ Θεῷ βεβλόμενοι, ἔλεγον τῷ Παύλῳ: „ΔΙΑ τῇ Πνύματος,  
„μὴ ἀναβαίνειν εἰς Ἱερουσαλὴμ,,. Ἀντὶ ΜΕΤΑ τῇ Πνύματος δηλονότι. (Πράξ:  
Κεφαλ: ΚΑ'. 4.) κατὰ τό: (ὡς ὁ ἀνωτ: προσημειωθεὶς Νεόφυτος ἔφασκε:) ἔδοξε  
τῷ Ἀγίῳ Πνύματι, καὶ ἡμῖν. Τέτο γὰρ ἐστὶν: „ἔδοξεν ἡμῖν, ΜΕΤΑ τῇ Ἀγίῃ  
„Πνύματος βεβλόμενοι,,. Ἀλλὰ καὶ (Πράξ: Κεφαλ: 14. 3.) ὁ Κύριος τοῖς Ἀπο-  
στόλοις ἐν Ἰκονίᾳ ἐδίδε σημεῖα καὶ τέρατα γίνεσθαι ΔΙΑ τῶν χειρῶν αὐτῶν: „Καὶ  
„οἱ Μαθηταὶ (Πράξ: Κεφαλ: 1Ε'. 12.) ἤκουον βαριάδα καὶ Παῦλος ἐξηγούμενων ἑα  
„ἐποίησεν ὁ Θεὸς σημεῖα καὶ τέρατα ἐν τοῖς ἔθνεσι ΔΙ' αὐτῶν,,. Ἀλλ' οἱ Ἀπόστολοι  
„αὐτοὶ (Πράξ: 1Δ'. 27.) τοῖς εἰς Ἀντιόχειαν παραγερόμενοι, καὶ σιναγαγόντες  
„τὴν Ἐκκλησίαν, ἀνέγγειλαν, ὅσα ἐποίησεν ὁ Θεὸς μετ' αὐτῶν,,. Τῇ ΔΙ' αὐτῶν  
πάντως, καὶ ΔΙΑ τῶν χειρῶν αὐτῶν, εἰς τὸ ΜΕΤ' αὐτῶν, σαφέστατα μεταληφ-  
θέντος. Καὶ Παῦλος δὲ Κορινθίοις ἐπιστέλλων (Α'. Κορινθ: Α'. 10.) „Παρακαλῶ,  
„φησὶν, ὑμᾶς Ἀδελφοί, διὰ τῇ ὀνόματος τῇ Κυρίῃ ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστῷ,,. Ὁ δὲ Χρυ-  
σόστομος ἐν Ὁμιλ: Γ'. τῶν εἰς τὰς Πράξ: (κατὰ τὴν Μοντφαλκ: Ἐκδοσὶν Τόμ: Γ'.  
Σελ: 14.) „Ἀναπτύσσων τὸ εἰρημένον, φησὶ παρακαλεῖν διὰ τῇ Χριστῷ, ὡς ἐδὲ  
„αὐτὸς ἀρκῶν μόνος ταύτῃ θέδαι τὴν ἱκετηρίαν, καὶ πείσαι: τί δὲ ἐστὶ παρακαλῶ  
„διὰ τῇ Χριστῷ; τὸν Χριστὸν λαμβάνω σύμμαχον καὶ βοηθόν,,. Δηλοῖ τοιγαρὲν ἡ  
„ΔΙΑ πολλάκις, κατὰ τὸν ἀνωτ: Γραμματικὸν (ἐν Σημ: 5.) καὶ ἀπλῶς τὸ „ὁμῶς,,  
„ἀναιτίως, ἰσοδιωάμως τῇ ΜΕΤΑ, ὡς οἱ τῆς Ἐκκλησίας Θεοὶ Διδάσκαλοι, καὶ  
„μάλιστα οἱ ἀμφὶ τὸν Χρυσόστομον, ἐν ἄλλοις τε καὶ περὶ τὰ τέλη τῶν ἰδίων λόγων,  
„τὸ ΔΙ' ὉΥ καὶ τὸ ΜΕΘ' ὉΥ, ἐφερμιλύτικῶς οἷον ἐπισιωάπτοντες,,. Δηλοῖ δὲ  
καὶ „αἰτίαν,, καὶ ταύτῃ „πρωτὸν,, ἢ αὐτὴ ΔΙΑ καθ' ἑαυτὴν μάλισα κεμένη,  
καὶ ἰσοδιωαμῆσα ἐστὶ τῷ καὶ τῇ ἘΚ. ἢ ἜΠΟ: ὡς ἐν τοῖς: „Ἐκτεσάμην ἄν-  
„θρωπον διὰ τῇ Θεῷ καί: ἐχὶ διὰ τῇ Κυρίῃ ἢ διασάφισις αὐτῶν,,. Δηλοῖ δὲ  
καὶ „ἰσπεργίαν,, ἢ τοι „σιωαίτιον,, κατὰ ὁμοτιμίαν τῇ δούτερᾳ πρὸς τὸ πρῶ-  
τον, ἐπιφερομένη τῇ ἘΚ, ὡς ἐπὶ τῶν Θεαρχικῶν Προσώπων, καθὰ πρὸς τὴν κλισίῃ  
ἐσίωσιν αὐτὰ νοεῖται ἔχειν ἀναφορὰν ὡς ὅτε „ἐκ Πατρὸς δι' Υἱῷ ἐν Ἀγίῳ Πνύ-  
„ματι, τὰ πάντα λέγεται διημεργηθῆναι καὶ ὅτι ἐκ Πατρὸς δι' Υἱῷ τὸ Πνεῦμα  
„χορηγῆται τοῖς πιστεύουσι προχοόμενον,,. Οὐ γὰρ ἄντις, εἰ μὴ βλασφημῶν, ἐν  
τέτοις τὸν Υἱόν, ἢ τὸ Πνεῦμα, „ὑπεργικῶς, ἢ ὀργανικῶς,, χωρεῖν φήσκει. Δηλοῖ  
δὲ τελευταῖον καὶ τὸ „σιωαίτιον,, ὡς ἐπὶ τῆς πρὸ ταύτης σημειώσεως (5) ἐδη-  
λῆτο. Ἐνθα ἐπισητέον, ἐπιεικῶς ἀνοηταίνειν τὸν Ἰησοῦν, τὸν τὴν σημασίαν τῆς  
ΣΥΝ ἢ ΜΕΤΑ ἀπὸ τῆς ΔΙΑ Προθέσεως πάντῃ πάντως ἀποσυρίζαι ἰχυριζόμενον.  
Καὶ γάρ ται καὶ αὐτοὶ Λατῖνοι, ἐδέν τι ἥτιον τῶν Ἀνατολικῶν, ταύτῃ εἰς ἐκείνας  
ἀξίῃσι μεταλαμβάνεσθαι: ἐν τῷ ἡμῶν διαφέροντες, ὅτι: οἱ μὲν κατὰ λόγον „σι-  
„ωαίτις,, ἡμεῖς δὲ κατὰ τὸν τῇ „σιωαίτιᾳ,, τὸ ΔΙΑ τῇ Υἱῷ, εἰς τὸ ΜΕΤΑ  
τῇ Υἱῷ, ἢ ΣΥΝ τῷ Υἱῷ ἐκδεχόμεθα. Αὐτοὶ γὰρ εὐσεβοφρονῶντες φασί: ὅτι  
„ἐκ τῇ Πατρὸς μόνῃ μετὰ τῇ Υἱῷ γεννηθέντος, ἐκπορεύομενον εἰς τὸ Ἅγιον Πνεῦ-  
μα,,. Ὅπερ ἐστὶν: α. μόνῃ τῇ Πατρὸς καὶ τὸν Υἱόν γεννάσθαι, καὶ τὸ Πνεῦμα  
ἐκπορεύεσθαι, ἀμα καὶ κατὰ τὸ αὐτὸ ἀμφοτέρως, προεπινομένης τῇ τῇ Πατρὸς  
νοεῖα

δειχέναι, ἔκ τε τῆ Βασιλείᾳ, καὶ Ἀθανασίᾳ, καὶ Κυρίλλῳ τῷ ΔΙΑ' Ἰσοδιωαμῆν τῇ ἘΚ ἐν Ἱεροῖς Γράμμασιν. — Ἀλλὰ γὰρ ἀνωτέρω κατείδομεν ὡς ὁ Νύσσης Γρηγόριος τὸ „διὰ τῆ Υἱῆς“ ἐρμηνεύων ὡς, καθὼς τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ ἀμέσως, ἀλλὰ τῆ Υἱῆς προβληθέντος ἐκπορεύεται ἐκ τῆ Πατρὸς· καθ' ὃν δήπερ ἔννοϊαν ὀρθῶς λέγεται, ὅτι τὸ ΔΙΑ' τῆ Υἱῆς, σημαίνει τὸ ΣΥ'Ν τῷ Υἱῷ, τῷ γεννηθέντι ἐκ τῆ Πατρὸς. Μάλιστα δ' αὐτὸς ὁ Νύσσης Γρηγόριος Βιβλ: Α'. τῶν κατ' Εὐνομίαι: „Πατὴρ μὲν ἀναρχος, φησὶ, „καὶ ἀγέννητος, καὶ αἰ Πατὴρ νοεῖται· ἐξ αὐτῆς δὲ, κατὰ τὸ „προσεχὲς ἀδιασάτως, ὁ Μονογενὴς Υἱὸς τῷ Πατρὶ σιωπεπινόηται. „Δὲ αὐτῆς δὲ καὶ μετ' αὐτῆς, πρὶν τι κενόν τε καὶ ἀνυπόστατον διὰ „μέσῃ παρεμπεσεῖν νόημα, ἐνθὺς καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον σωημ- „μένον καταλαμβάνεται· ἐχ' ὑπερίσxon κατὰ τὴν ὑπαρξιν μετὰ „τὸν Υἱόν· ὥς ποτε τὸν Μονογενῆ διόχα τῆ Πνοῦματος νοηθῶσι. „Ἀλλ' ἐκ μὲν τῆ Θεῆ τῶν ὁλῶν καὶ αὐτὸ τὴν αἰτίαν ἔχον τῆ „εἶναι, ὅθεν καὶ τὸ Μονογενὲς ἐστὶ φῶς, διὰ δὲ τῆ ἀληθινῆς φω- „τὸς ἐκλάμψαν, ἔτε διασήματι, ἔτε φύσεως ἑτερότητι, τῆ Πα- „τρὸς ἢ τῆ Μονογενῆς ἀποτεμένεται. „Ἐν τέτοις δ' ἐν τῷ ὄντι ὁ Νύσσης, ὁ νῦν ἔρηκε: „Δὲ αὐτῆς τε καὶ μετ' αὐτῆς (τῆ Υἱῆς), „πρὶν τι κενόν τε καὶ ἀνυπόστατον διὰ μέσῃ παρεμπεσεῖν νόημα, „ἐνθὺς καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον σωημμένον καταλαμβάνεται“ (ἐκφέρει δι' ἐκείνων:) „διὰ δὲ τῆ ἀληθινῆς φωτὸς ἐκλάμψαν, „ἔτε διασήματι, ἔτε φύσεως ἑτερότητι, τῆ Πατρὸς, ἢ τῆ Μο- „νογενῆς ἀποτεμένεται. „Ἐνθα, τὸ ἀρτίως εἰρημένον: (ΔΙΑ' τῆ Υἱῆς, καὶ ΜΕΤΑ' τῆ Υἱῆς) ἐπὶ τῶν ἐφεξῆς, ταῦτόν εἶναι τίθησι, τῷ: („διὰ τῆ Υἱῆς τὸ Πνεῦμα ἐκλάμψαι. „) Πῶς ἄρα, ἐν οἷς τὸ Πνεῦμα λέγεται διὰ τῆ Υἱῆς ἐκπορεύεσθαι, ἐδεῖς τῶν Πατέ- ρων ἐστὶν ὁ διδάξας ὑποσημαίνεισθαι τὸ ἐκ Πατρὸς προῖέναι τὸ Πνεῦμα σωάμα τῷ Υἱῷ; Ἐπὶ τέτοις δὲ, καὶ ἰσοδιώματος ἐν Ἱεραῖς δέλτοις ἀπαντᾷ τῇ ἘΚ ἢ ΔΙΑ', ἀλλ' ἐπ' ἐκείνων δὴ τῶν ῥήσεων, ἐν αἷς, περὶ τῆς ἐν τῇ Τριάδι ἀμερίστῃ ἐνεργείας ὁ λό- γος· ἦλθον δὲ περὶ αὐτῆς τῆς τῆ Ἁγίας Πνοῦματος ἐκ Πατρὸς δι' Υἱῆς Ἐκπορεύσεως.

Ἀλλ'

νοεῖται ἀντιλήψει, τῆς τῆ Υἱῆς γεννήσεως. Οἱ δὲ δογματίζοντες ἐθέλουσιν: „Ὅτι ἐκ τῆ „Πατρὸς ὁμῶς καὶ τῆ Υἱῆς, αὐτὸ τὸ Πνεῦμα ἐκπορεύεται. „ Τὶ ἐν ἐστὶ τὸ κατ' αὐτῆς, ἐκ τῆ Πατρὸς ΑΜΛ καὶ τῆ Υἱῆς, ἀλλ' ἢ τὸ ἐκ Πατρὸς ΜΕΤΑ' τῆ Υἱῆς, ἢ ΣΥ'Ν τῷ Υἱῷ, ὡς ἐκ Σωαιτίων; ἢ (καθάπερ αὐτοῖς ἀρέσκει λέγειν, ὅπερ καὶ ἀτοπώ- τερον) ὡς ἐξ ἐνὸς αἰτίᾳ ἀμφοῖν ἐκπορεύεσθαι; Ἐγὼ γὰρ, εἴ τι παρὰ τὸ φανερὸν ἔχον, τὸ κατ' αὐτῆς Δόγμα, σημαίνοντο ἄλλο, θαυμάσαιμι αὖν. Καὶ πῶς ἐν ἄρα, ἐν ᾧ αὐτοὶ πρεσβεύουσιν, ὅτι τὸ ΔΙΑ' τῆ Υἱῆς, σημαίνει αἰτίαν εἶναι τῆ Πνοῦ- ματος εἰς τὸ εἶναι, τὸν Πατέρα ΣΥ'Ν τῷ Υἱῷ· πῶς ἐπειτα, καθ' ἑαυτῶν ἐκ δια- μέτρων ἀντιφερόμενοι „μηδέποτε τὰς Ἀνατολικὰς αὖν δεῖξαι, φασὶ, διωθήσεσθαι ὅτι τὴν ΔΙΑ' οἱ Πατέρες, ὡς ἰσοδιωμάσαν τῇ ΣΥ'Ν ἐξηλήφασιν;

'Αλλ' ὁ Ἰησοῦτης ἀνθυποφέρει: ὡς ἀφορᾷ μὲν ἐκεῖνα τὰ Γραφικὰ, τὰ ὑπὸ τῶν Πατέρων μνημονοδόμενα, τὰς ἐνεργείας μόνον τὰς πρὸς τὰ ἐκτός· συμβαίνειν δὲ ὅμως τῷτο, παρὰ τὸ δῖς πρὸς μόνον, ἢ τρὶς, τὴν Ἱερὰν Γραφὴν φθέγγεσθαι περὶ τῶν ἐνεργειῶν τῶν πρὸς τὰ ἐντός, τῇ ΔΙΑ' προχρωμένῳ καὶ τῷτο δ' ἔμπης καθ' ὑπερβάτιν τῷ Θεῷ τινα πρόνοιαν: „Εἰ γὰρ, Φησὶν, „ἐκ τῷ τὴν Γραφῇ, τῷ λόγῳ τῶν πρὸς τὰ ἐκτός ἐνεργημάτων, „τῷ μὲν Πατρὶ τὴν ἘΚ ἀπονέμειν, τῷ δὲ Υἱῷ τὴν ΔΙΑ', ἐπι- „σωτήριον οἱ ἐξ Ἀρείς, τὸν Υἱὸν εἶναι ἑτεροῦσιον τῷ Πατρὶ: πῶς „δὲ μᾶλλον τῷτ' ἂν ἐτόλμησαν, εἰ ἐπὶ τῇ τῶν ἐντός ἐνεργημά- „των ἐκθέσει, παρσιήγετο ἡ ΔΙΑ',; Καίτοι γε, τὰ, δι' ὧν τι- „νὰς τῶν Ἐπιστολῶν ὁ Παῦλος προοιμιάζει: „Παῦλος Ἀπόστολος „Ἰησοῦ Χριστοῦ, διὰ θελήματος Θεοῦ,“ (Ἐνθα τῇ ΔΙΑ' ἰσοδιωαμῆν τῇ ἘΚ διδάσκει ὁ Μέγας Βασίλειος, Βιβλ: περὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι, Κεφαλ: Ε'.) „δηλοῦσιν ἐνέργειαν ἐν τῷ Θεῷ ἐσωτερικῶς. Καὶ „τῷτο γε ἕνεκα, ἐπεὶ ἐν τῷ ῥηθέντι Βιβλίῳ, Κεφ: ΚΕ'. καὶ ΚΖ'. „ἡρμηνεύσεν ὁ Μέγας Βασίλειος τὴν πρόθεσιν ΣΥ'Ν, ἀκριβῶς τε „ἀπέδειξεν, ὅπως διαφέρει τῆς ἘΝ, ἑδάμῃ δ' ὑπεδήλωσε ταύτοση- „μάντας εἶναι τὴν ΣΥ'Ν τῇ ΔΙΑ'. Φανερόν ὅτι νεαρὸν ἐστὶ τῷτο „γε τῶν Φωτεινῶν ἐπινόημα, εἰς τὸ παρεκκλίνειν τὰς τῶν Ἀνα- „τολικῶν Θεωσιῶν Πατέρων μαρτυρίας ἀναπλαθεῖν, καὶ μηδένα „ἔχον παρὰ τοῖς Ἁγίοις Πατράσι θεμέλιον,.

'Αλλὰ γὰρ, πρῶτον μὲν ἄτερ λόγου, τῶν ἐντός τῷ Θεῷ ἐνε- γείας ἀποκαλεῖ ὁ Ἰησοῦτης, τὰς πρὸς τὴν κτίσιν ἀναφερομένας, καὶ ἐν χρόνῳ ἐκπερατεμένας· καθάπερ ἔν καὶ ἐπὶ τῆς κλήσεως τῷ Ἀποστόλῃ, περιπίπτει ἀπάτη μηδὲν ἐλάσσονι. Παῦλον καὶ γὰρ τῷ Θεῷ ἐκεῖνα θελήματος ἀφορῶντος, καὶ τῷ Παύλῳ ἐν χρόνῳ ἐπὶ τὴν Ἀποστολὴν κληθέντος, πῶς αὕτη ἢ τῷ Παύλῳ κλήσις ἐκ τῶν ἐνεργειῶν τῶν πρὸς τὰ ἐκτός. Περὶ μόνων ἄρα τῶν πρὸς τὰ ἐκτός ἐνεργημάτων ἡ Ἱερὰ Γραφή διαλεγόμενη τῇ ΔΙΑ' χρητάται ἀντὶ τῆς ἘΚ· ὥστε ἐκ τῶν εἰρημένων μηδὲν προσ- γίνεσθαι Λατίνοις ἐπιβοήθημα. — Ἀλλὰ, Φησὶν, ἐν ταῖς πρὸς τὰ ἐντός ἐνεργείαις, ἔχ' ἕτως ὁ Θεὸς ἐχρήσατο τῇ φωνῇ τῇ „διὰ τῷ Υἱῷ,“ κατὰ πρόνοιαν αὐτῷ ὑπερβάτιν· ἐπεὶ περ ἄλλως ἐντεῦθεν οἱ ἐξ Ἀρείς μᾶλλον ἂν τὸν Υἱὸν ἑτεροῦσιον τῷ Πατρὶ σωεπέρανταν, ἢ ἔνθα περὶ τῶν πρὸς τὰ ἐκτός ἐνεργημάτων, τῇ „διὰ τῷ Υἱῷ,“ φράσει ἡ Γραφή κέχρηται. — Ἀλλὰ φρεῖδοιτε καὶ κενοὶ, οἱ τῷ κακόφρονος Ἰησοῦτος οἰωνισμοὶ ἔτοι τυγχάνεσι. Πρῶτον μὲν γὰρ, πῶς ἐπὶ τῶν ἐντός ἐνεργημάτων σπανίως ὁ Θεὸς λόγος τῷ διὰ „τῷ Υἱῷ,“ προσεχρήσατο, ὁπότε δὲ τότε, ἑδάμῃ γενέσθαι, ἀρτίως ἡμῖν ἀποδέδεικται; ἢ πῶς σπανίως ἐν Ἱερῇ ἀπαντᾷ Δέλλοις, ὁ, παρεκλὸς τῶν ἄλλων χωρίων, τοσάκις

Τόμ: Β'.

Π π π

λέγεσθαι

λέγεσθαι ὑπὸ τῆς Ἀποστόλου, ὁ Ἰησοῦς ἡδὴ σιωποῦντος; ἢ ἔτι τοσάκις ἐπαναληφθὲν ἐν Ἱεροῖς Γράμμασιν ἤρκεσεν ἂν τοῖς ἐκ τῆς Ἀρείας, ἢ ἐντεῦθεν τὰς σφῶν αὐτῶν βλασφημίας ζηρίξωσι; Πῶς ἔν ἄρα, ἵνα μὴ ταῖς τοιαύταις καταχρήσωνται ῥήσεσιν, ὁ Θεὸς ἀπέχετο τῆς φωνῆς ΔΙΑ τῆς Υἱοῦ, ἐν τοῖς πρὸς τὰ ἐντὸς αὐτῆς ἐνεργήμασιν; Ἐπειτα, καὶ πολλὰς πάντως ῥήσεσιν οἱ ἐκ τῶν Αἱρέσεων καταχρῶνται, ἀλλ' ἔμντοι τῶν τοιούτων ὁ τῶν ἀπάντων προγνώσης Θεὸς ἀπέχετο. Καὶ πόθεν δ' ἄρ' οἶον τε γινώσκουν, ὡς ἔστιν ὅ,τι καθ' ὠρισμένῳ βεβλήν ὁ Θεὸς διὰ τινος Αἱρέσεως ἐκ εἴρηκε; Πῶς δὲ, πρὸς Θεῶ! τῶν Ἀρειανῶν ἕνεκα, τῷ λόγῳ τῶν ἐνεργημάτων τῶν πρὸς τὰ ἐντὸς, τῆς φράσεως ὁ Θεὸς λόγος ἀπέχετο τῆς ΔΙΑ τῆς Υἱοῦ; Πάντως γε οἱ ἀμφὶ τὸν Ἀρειον, ἑδεμίαν ἥδεσαν ἐνεργείαν τῶν καλεσμένων πρὸς τὰ ἐντὸς· ἀλλὰ τὸν μὲν Υἱὸν κτίσμα τῆς Θεῶ, τὸ δὲ Πνεῦμα, κτίσμα τῆς Υἱοῦ ἐβλασφήμουν λέγοντες· ἢ δ' ἂν ποτε ἐνεργεία τὸ κτίσμα σωεργὸν γίγνοιτο Θεῷ, ἐκ ἔστιν αὕτη τῶν πρὸς τὰ ἐντὸς. Διὸ καὶ ὁ τὰς ἐσωτερικὰς ἐνεργείας, τὰς μεταξὺ τῆς Θεῶ, καὶ τῆς Υἱοῦ αὐτῆς συγχωρῶν, ἅμα δὴ καὶ μίαν εἶναι τὴν ἐστίαν ἕτος ὁμολογεῖ, καὶ μίαν τὴν Πατὸς καὶ Υἱοῦ Θεότητά τε καὶ δυνάμιν. Πῶς ἄρα οἱ ἐκ τῆς Ἀρείας (ἀντιβολῶν) εἰ τὸ ΔΙΑ τῆς Υἱοῦ ἐλέγετο, ἐπὶ τῶν ἐνδοτέρων ἐνεργημάτων, μᾶλλον ἂν ἐντεῦθεν ἐπιφέρουν εἶχον, τὸν Πατέρα καὶ τὸν Υἱὸν μηδαμῶς εἶναι φύσεως τῆς αὐτῆς, ἢ ὅθεν, τὸ ΔΙΑ τῆς Υἱοῦ, ἐπὶ τὰ ἔξω παραλαμβάνεται; Ἀλλ' ἔδ' οἱ Ἀρειανοὶ πρὸς τὰς Καθολικὰς, ἐκ τῶν παρὰ τέτοις ὁμολογεμένων Ἀρχῶν, προσδιαλεγόμενοι, ἐντεῦθεν οἶον τ' ἂν εἶεν ἐπισωπάπτειν τι ὑπὲρ τῆς ἰδίας αὐτῶν Αἱρέσεως. Ἐνθα γὰρ πρὸς τὰ ἐντὸς τὸ ΔΙΑ τῆς Υἱοῦ νοεῖται, κατὰ τὸ αὐτὸ σωεπινοεῖται ἅμα, ὡς εἴρηται, καὶ τὸν Υἱὸν μετὰ τῆς Πατὸς μιᾶς γε καὶ τῆς αὐτῆς φύσεως πεφυκέναι. Πῶς ἔν οἱ Ἀρειανοὶ ἐκ τέττα πλέον τι συμπεραῖναι κατὰ τῶν Καθολικῶν δυνάμειν, ἢ ἐκ ὧν, ἐπὶ τῆς πρὸς τὰ ἐκτὸς ἐργοῖς ὁ Θεὸς, τῷ ΔΙΑ τῆς Υἱοῦ προσεχρήσατο; Ταῦτ' ἄρα Ἰησοῦς τῷ ὄντι ἐστὶν ἀναπλάσματα, οἷς ἐν φρεσὶ παύειν ἰδίαις αἰρῶνται μᾶλλον, ἢ τῇ Ὁρθόδοξῳ πίσει ἡγεμόνι παρέπεσθαι. Τελούτατον δὲ, καὶ τίς ἢ σωέπεια; Βασίλειος ἔστιν ἔτι τὴν ΣΥΝ ἀναπτύσσων, διαφέρειν αὐτῷ τῆς ἘΝ ἀποδείκνυσιν· ἔδαμῃ δὲ τὴν ΔΙΑ ταυτοδυναμεῖν διδάσκει τῇ ΣΥΝ· ἀδυνάτον ὡς ἄρα τὴν ΣΥΝ κατὰ τινα ἔννοιαν ὑποσημαίνεσθαι ὑπὸ τῆς ΔΙΑ; Πάντως δὴ, ἐπὶ τῶν εἰρημένων χωρίων τῷ Βασιλείῳ προκείμενον ὡς, τὸ ἀμείριστον μόνον τῆς τῆς Θεῶ ἐνεργείας θεωρήσαι καὶ ὅλως ἀδιαίρετον ἡκιστα δ' αὐτῷ τὴν πρὸς τὰ ἐντὸς τῆς Θεῶ ἀποπερατωμένῳ ἐνεργείαν. Πῶς ἔν μεταξὺς, ἀπὸ γένους εἰς γένος μεταπηδήσειεν;

Ἀλλ'



Ἄλλ' ἐπέκεινα χωρῶν ὁ Ἰησὺς, τὸν Θεόν, φησὶ, Κύριλλον, καὶ τὸν Ἐπιφάνιον λέγειν „ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκπορεύεται δι' ἀμφοῖν· ἔνθα ἔκ ἂν δῆπρ' ἐν ἐρμηνεύσει τὸ ρηθὲν, ὡς ἄρ' αὖ, τὸ Πνεῦμα σὺν τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ ἐκπορεύοιτο,,. Οὐδαμῶς γεμὴν Κύριλλος ἔφησε τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκπορεύεσθαι, (ἘΚΠΟΡΕΥΕΣΘΑΙ λέγων) δι' ἀμφοῖν· ἀλλὰ μόνον ΠΡΟΪΕΝΑΙ· ἔτω γὰρ ἐν τῷ περὶ τῆς ὁρθῆς Πίστεως Βιβλίῳ πρὸς τὰς Βασιλίδας: „Πρόεισι (φησὶ) δ' ἀμφοῖν τὸ Πνεῦμα τὸ ζῶοποιόν,,· ἀλλ' ἐν ἐκείνοις τῷ Κυρίλλῳ ἔ' περὶ τῆς Ἐκπορεύσεως τῆς Πνύματος ὁ λόγος, περὶ δὲ τῆς αὐτῆς μόνον χρονικῆς πέμψεως· κατὰ δὲ τὴν ἔννοιαν ταύτην, ἢ ΔΙΑ' πάντως ταυτοδωαμῶσα ἐστὶ τῇ ἘΚ· ἡμῶν δ' ὁ λόγος ἐνταῦθα περὶ τῆς προβολῆς τῆς Πνύματος τῆς προαιωνίης τε καὶ ὑποστατικῆς. Ἀλλὰ καὶ τῷ Ἐπιφάνιῳ ἔκ ἑρρηται δι' ἀμφοτέρων, ἀλλὰ παρ' ἀμφοτέρων· ὅπως δὲ τὰτ' ἑρρηται, τοῖς ἐκείνῃς ῥήμασιν ἐπισησόμενοι κατωτέρω σιγήσομεν.

Τελούταιον αὐτὸς αὐτόθι ἀντιφέρει: „Μηδέποτε τῆς Πατρός διδάσκειν καὶ τὸν Υἱὸν διὰ τῆς Ἁγίας Πνύματος γεννηθῶαι· ὅπερ ἂν ἀληθὲς εἴη τῆς ΔΙΑ' τὴν ΣΥΝ ὑποσημαίνσεως· μάλιστα δ' ἐπεὶ κατὰ τῆς Ἀνατολικῆς, ἔτως ἀμέσως τὸ Πνεῦμα ἐκ τῆς Πατρὸς μόνῃ τὴν ἀρχὴν λαμβάνει, καθάπερ ὁ Υἱός,,. — Ἀλλὰ γὰρ ταῦτα κατόπιν ἡμῶν διελύετο. Διὰ γὰρ τῆτο, καὶ ὁ Υἱὸς διὰ τῆς Πνύματος γεννᾶσθαι ἔκ ἂν ὡσαύτως ρηθείη, ὡπερ καὶ τὸ Πνεῦμα διὰ τῆς Υἱῆς ἐκπορεύεσθαι, ὅτι ἔχ'ι καθάπερ τὸ Πνεῦμα διὰ τῆς Υἱῆς, ἡδὴ γεννηθέντος, ἐκ τῆς Πατρὸς ἐκπορεύεται, ἔτω καὶ ὁ Υἱὸς, τῆς Πνύματος ἡδὴ ἐκπορεύθέντος, γεννᾶται· καθ' ὃν δὴ ἔννοιαν ἢ ΔΙΑ' λέγεται ὡδε σημαίνειν τὴν ΣΥΝ. Τὸ γὰρ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῆς Πατρὸς ἐκπορεύεται συνάμα τῷ Υἱῷ, τῷ ἐκ τῆς Πατρὸς γεννηθῶαι σιωεπινοκμένῳ καὶ ἀμέσως ἔτως ὁ Υἱὸς, ὡπερ τὸ Πνεῦμα, παράγεται ἐκ τῆς Πατρὸς· ἀμφοτέρων, δηλονότι, ἐκ τῆς Πατρὸς μόνῃ ἐκπροϊόντων. Καίτοι γε τῷ λόγῳ τῆς τάξεως, καὶ αὐτοὶ πάντως μετὰ Γρηγορίου τῆς Νύσσης, ἐπιγινώσκουμεν τὴν μεσιτείαν, καθ' ὃν ὁ Υἱὸς μεσιτεύει ἐπὶ τῆς ἐκ τῆς Πατρὸς Προόδου τῆς Πνύματος. Ἐπὶ, δηλονότι, τὸ μὲν Πνεῦμα τῆς Υἱῆς γεννηθέντος ἐκπορεύεται ἐκ τῆς Πατρὸς· ὁ δὲ Υἱὸς ἀμέσως, τὰτέσι μηδενός τινος προβληθέντος, γεννᾶται ἐκ τῆς Πατρὸς. Κἀντεῦθεν προσέσηκεν, ὡς ἑρρηται τὸ τῆς τάξεως, εἰς τὸ μὴ, καθάπερ τὸ Πνεῦμα διὰ τῆς Υἱῆς λέγεται προβληθὲν, ἔτω καὶ τὸν Υἱὸν λέγεσθαι προβεβληθῆναι διὰ τῆς Πνύματος. Ἀτ[α] δ' ἐν ἄλλοις ὁ αὐτὸς Ἰησὺς ἀντιπροτείνει, περὶ τῶν ρηθέντων ὑπὸ τῆς Ἱερῆς Μαξίμης διαλεγόμενος, ταῦτα δὴ κατωτέρω εἰσόμεθα.

Π π π 2

Πρὸς



Πρὸς ὃ δ' αὐτοὶ ἀνωτέρω διειπνόμεθα, μηδαμῶς τῆς Πατέρας Ἐκ τῆς Υἱᾶ διδάσκειν τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκπορεύεσθαι, ὃν τρόπον ἐκδιδάσκουσιν αὐτὸ ΔΙΑ τῆς Υἱᾶ καὶ δὴ, κατὰ γε τὸ ἐπόμενον, μὴ τὴν ΔΙΑ τῇ Ἐκ ἰσοδυναμεῖν (7), ὁ αὐτὸς ἐστὶ Συγγραφεὺς ἐν ἄλλοις ὅπως ἐστὶν ἀπαντῶν: (8) „Εμπλεων ὑπάρξαι, φησὶν, Αἰρεσιωτῶν τὴν Γραικίαν τὸ τιωικαῦτα, τῶν ἐπὶ τῆς Παναγίας Τριάδος Αἰρέσεως ποικίλας ἐπισωιζῶν ἀγωνισομένων καὶ δεῖσθαι ἄρα τέττα γε ἕνεκα λίαν περιεσκεμμένως τῆς Πατέρας φθέγγεσθαι, ὡς ἂν μὴ τοῖς ἐκ τῶν Αἰρέσεων δοθῇ λαβή τις εἰς σκάνδαλον. Ἀλλὰ καὶ μεταξὺ τῶν ὀρθοδοξόντων γενέσθαι τότε τῆς λεξιθῆρας καὶ διὰ ταῦτα τῆς Πατέρας φωνῶν τινων ἀποχέσθαι τῆς χρήσεως, αἱ περ ἄλλως καὶ μάλα σιωήθεις ἔσαι ἐτύγχανον. Ἐκ τέττα δὲ καί τινας ὑπάρξαι, τῆς, εἰ καὶ τὸ Πνεῦμα Θεὸν ἀληθινὸν εἶναι πισθύνοντας, τῆς γεμῶ Θεωνυμίας περὶ αὐτὸ ἀπεχομένων. Ἐκ τῆς αὐτῆς δὲ ταύτης πηγῆς ἐξερρύη, τὸ καὶ τῆς Πατέρας διαφόροις παρηκολαθηκότας τρόποις ἐπὶ προσασίᾳ τῆς Πίσεως, διαφερόσας προχρήσασθαι καὶ ταῖς φράσεσι. Καὶ τὸν μὲν Θεολόγον Γρηγόριον τῆς τῆς Ἀγεννήτης φωνῆς τὴν χρῆσιν ἐλέσθαι, τῆς λοιπῆς δ' αὐτῆς ἀποτρέπεσθαι. Καὶ θαυμαστὸν ἄρα ἔδεν εἶπερ ἂν Ἑλλάδα, ἐνθα πλεῖσαι περὶ τὸ Πνεῦμα ἐπεπόλαζον αἱ κακοδοξίαι, ἔχοντες ὡσαύτως ἐτύγχανον οἱ πάντες φθειρόμενοι. Ἵνα γὰρ τὸ σῶμα, φησὶν, ἐμφράξωσι τοῖς ἀρχαῖς τρεῖς παριστάγασιν ἐν τοῖς Θεοῖς, ἐδίδασκον τὸ Πνεῦμα ἐκπορεύεσθαι ἐκ τῆς Πατρὸς, διὰ τῆς Υἱᾶ δι' αὐτῆς γε τέττα ὑποδεικνύωτες, μὴ μόνον τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ἀλλὰ καὶ τὸν Υἱὸν αὐτὸν, δι' ὃ τὸ Πνεῦμα ἐκπορεύεται, πρὸς γε τὸν Πατέρα, ὡς πρὸς αἰτίαν καὶ ἀρχὴν δεῖν ἀναφέρεσθαι ἀναρχον. Οὕτως ἵνα τῆς περὶ Εὐνόμιον ἀπελέγξωσι, καὶ δηλώσωσι μὴ παρὰ μόνον τῆς Υἱᾶ, ἀλλὰ καὶ παρὰ τῆς Πατρὸς ὡσαύτως, (καθὰ τρανῶς ὁ Θεὸς φησὶ Βασίλειος, ἐν τῷ τέλει τῆς Β'. τῶν Βιβλίων τῶν κατὰ Εὐνομίαν) ἐκπορεύεσθαι τὸ Πνεῦμα, ἔφασκον αὐτὸ εἶναι, εἴτ' ἐν ἐκπορεύεσθαι ἐκ τῆς Πατρὸς διὰ τῆς Υἱᾶ. Τῷ δ' αὐτῷ τέττω τῆς λέγειν τρόπῳ, καὶ κατὰ τῶν περὶ Σαβέλλιον ἐχρῶντο, τὴν τῶν πνεόντων Προσώπων ὑποδη-

„λαβήντες

(7) Σημείωσαι: ὡς ἐστὶ μὲν ἐφ' ὧν ἰσοδυναμεῖται τῇ Ἐκ τὴν ΔΙΑ, ἐστὶ δ' ἐφ' ὧν, ὅ. Ἐκεῖνο μὲν, ἐπὶ τῶν Θεῶν παραληφθεῖσαν ἐνεργημάτων περὶ τὰ κτίσματα τέττω δὲ, ἐπὶ τῶν προαιωνίων Προόδων τῶν Θεαρχικῶν Ὑποστάσεων. Ἐπὶ μὲν γὰρ τέττων ἡ ΔΙΑ, (ὡς ἐν τῷ ΔΙΑ τῆς Υἱᾶ) ἔδεν ἄλλ', ἢ τὸ ἐν μεσιτιότητι, (καθ' ὃ μετὰ τῆς Υἱᾶ γεννωμένον τὸ Θεὸν Πνεῦμα ἐκ τῆς Πατρὸς ἐκπορεύεται) ἐμφαίνει „Συναιτιατόν,,. Ἐπὶ δ' ἐκείνων, (ὡς ἐν τῷ: ἐκ Πατρὸς Δι' Υἱᾶ ἐν Ἁγίῳ Πνεύματι τὰ πάντα τελεσιουργεῖσθαι) τὸ „Συναιτία,, παραδηλοῖ, ὥσπερ εἴρηται. (Ὅρα τὰς προσεχῶς ἀνωτ: Σημειώσεις: 5. καὶ 6.

(8) Κιχώβιος ἐν Ζητήμ: 5. Σελ: 71.

„Λέγοντες διάκρισιν, καίτοι ἐν μιᾷ δυνάμει, καὶ πνευματικῇ ἐνεργείᾳ  
 „τῇ αὐτῇ. Ἦγόντο γὰρ τὴν 'ΕΚ πρόθεσιν τῇ τῷ λέγειν σωτη-  
 „ρίᾳ, σημαίνειν αἰτίαν τὴν Ἀναρχὸν καὶ Προκαταρκτικὴν τῶ-  
 „ν τῶν, τὴν μὴ ἐξ ἄλλου τὸ προβάλλειν δυνάμει ἔχουσαν. Σωεώ-  
 „ρων γὰρ, ὡς ἡ μὲν 'ΕΚ, τὴν διάνοιαν οἷον ἴσησιν, εἰδ' ἐπείγει  
 „περαιτέρω χωρεῖν, καὶ αἰτίαν τὴν πρώτῃ ἐπαναζητεῖν τὴν αν-  
 „τίον δὲ ἢ ΔΙΑ', ἕτερόν τι Πρόσωπον ἐνιστάγει, ἐπὶ τὴν ἐκείνην  
 „τὴν νῦν προάγουσα διανόησιν. Οὕτω δέ τοι, ὡς ὁ Βασίλειος ἐν  
 „τῷ περὶ τῷ Ἁγίου Πνεύματος Βιβλ: Κεφαλ: Η'. φησὶ, καὶ ὁ  
 „Θεὸς Χρυσόστομος ἐν Ὁμιλ: ΝΓ'. τῶν εἰς τὸν Ματθαῖον, τά-  
 „ξεως τις ὁμολογία αὐτῇ ἐστὶ τάξεως λέγω, τῆς πρὸς τὴν αἰτίαν  
 „τὴν πρώτῃ τε καὶ προκαταρκτικῇ. Διὰ τῆτο δὲ ἄρα, τῇ μὲν  
 „ΔΙΑ' χρησθῆναι ἡρῶντο πρὸ τῆς 'ΕΚ. τὴν δὲ 'ΕΚ τῇ ὑπερτάτῃ  
 „αἰτίᾳ (ὡς ὁ Θεὸς φησὶ Βασίλειος, Βιβλ: περὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύ-  
 „ματος, φύλ: 226.) προσοικεῖν,,. Τέως προσέθησιν ὁ Ἰησοῦς  
 „της: „Τὴς Πατέρας μὲν τοι γε πανταχῶς διδάσκειν, τὴν ΔΙΑ',  
 „ἰσοδυνάμειον εἶναι τῇ 'ΕΚ,,.

Ἀλλὰ πρῶτον μὲν, διὰ τῆς κατὰ γένος ἐκείνης προφάσεως,  
 ὡς ὁ Ἰησοῦς προέταξεν, εἰδὲν τῷ ὄντι ποιεῖ ἄλλ', ἢ ὅτι πᾶσι  
 τοῖς Αἱρέσεσι νοσῶσιν, εὐρέαν τινὰ τὴν πύλιν ἀναπετάννυσιν,  
 ὡς ἂν ἐπίσης τὴν αὐτῇ ἐπὶ ταῖς ἰδίαις ἐαυτῶν κακοδοξίαις πρό-  
 φασιν προτείνειν δωησομένοις, εἰς αὐτὰς ἐξελέγχειν ἐπιχειροῦν  
 τῷ λέγειν: τῶν τοιῶν δε, ἢ τοιῶν δε ῥημάτων τῶν Πατέρας ἐπί-  
 τηδες ἀποχέσθαι. Καὶ δεκτέον ὡς ἄρα τῷ Ἰησοῦ, τοιοῦτον  
 πράγματι γενέσθαι τῶν Πατέρων τὸν νῦν, ὃν ἔτος αὐτοῖς ἐν  
 τῷ δε τῷ μέρει προσανεπλάσατο τῶν τῶν: ἵνα μὴ εἰς σκάνδαλον  
 ἢ τοῖς Αἱρεσιόφροσι, διὰ τῆτο τῶν Πατέρας τῆς 'ΕΚ τῷ Τίῳ  
 φράσεως ἀποχέσθαι ἐπὶ τῆς Ἐκπορεύσεως τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος.  
 Ἀλλὰ τῆτο γὰρ ἄτοπον ἐπικαλῶν: τῷ γὰρ ὄντι, τάδε γε ἐνεκα  
 ὅ, τε Νυσαῶν Γρηγόριος, καὶ ὁ Ἀλεξανδρείας Ἀρχιεπίσκοπος  
 Κύριλλος, καὶ τελευτάων ὁ ἐκ Δαμασκῆ Ἰωάννης, 'ΕΚ τῷ Τίῳ  
 τὸ Πνεῦμα ἐκπορεύεσθαι ἀποφάσκουσιν, ὅτι ἄλλως, καὶ ὁ Τίς  
 ἂν εἴη αἰτία τῷ Πνεύματος: εἰ ἄρα ἵνα μὴ τοῖς ἐξ Αἱρέσεως  
 εἰς σκάνδαλον γένοιτο. ἄλλ' ὅτι τῷ ὄντι, τότε τὸ Δόγμα κα-  
 τακρίνοντες, ὡς ἀρχὰς δύο ἐν τῇ Θεότητι παριστάγον, ἡρῶντο  
 ἐκπορεύεσθαι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα 'ΕΚ τῷ Τίῳ: — „Ἀλλ' οἱ Πατέ-  
 „ρες, φησὶν, ἔτι καὶ διὰ τῶν ἐκ τῶν Καθολικῶν τὰ ἀλλότρια  
 „θεωροῦντας ῥήματα, καὶ αὐτῶν τῶν σωτηριεσάτων φωνῶν ἐτύγ-  
 „χανον ἀπεχόμενοι,,. — Τί δ' ἄρ' ἐντεῦθεν ἂν ἐπαχθείη, πρὸς  
 ὃ ἡμῖν ἐστὶ τὸ προκείμενον; Ἀπέχοντο γὰρ δὴ τινες ἐξ αὐτῶν,  
 ἕτεροί γε μὴν διαρρήδην τὰ αὐτὰ κηρύττοντες ὑπῆρχον, ὡς ἐκ τῶν  
 ὑπὸ τῷ Ἰησοῦ ἐπενεχθέντων παραδειγμάτων δῆλον καθίσταται.

Τόμ: Β'.

P ρ ρ

Ἐνταῦ-

Ἐνταῦθα δὲ ἑδάμῃ φαίνονται διδάσκοντες οἱ Πατέρες, ὅτι τὸ Πνεῦμα ἐκπορεύεται καὶ ἐκ τῆς Υἱᾶς.

Ἔτι δέ: πῶς (πρὸς Θεῶ!) τῶν Πατέρων ἐπὶ τῆς τῆς Ἁγίας Πνεύματος Ἐκπορεύσεως τῇ Ἐκ τῆς Υἱᾶς Φωνῇ χρήσασθαι ἐλομένων, πῶς ἂν ἐντεῦθεν εἰς σκάνδαλον λαβή τις παρέχοιτο τοῖς ἐξ Αἱρέσεως, ἢ τοῖς ὀρθοδόξοις; ἢ ἔχι, (εἴ τι σκανδάλα προσεσῆν ἐντεῦθεν εἶχε τοῖς ἄλλοις) ταῦτὸ κἀκείθεν προσγένοιτ' ἂν, ὅτι κοινῇ οἱ Πατέρες τὸν κόσμον ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱᾶς δημιουργήσασθαι ἢ ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱᾶς εἶναι τὰ πάντα πισθόντες ἦσαν, διδάσκοντες, πανταχῇ κηρύττοντες; Ὡστερ γὰρ ὧδε, ἔτω κἀκῆσε διὸς τίθεται τὰ Πρόσωπα τὰ παράγοντα. Ἐπειτα δέ: εἴπερ ἰσοδῶαμοι εἰσὶν (ὡς οἱ Λατῖνοι βέλονται) ἡ Ἐκ καὶ ΔΙΑ καὶ τῆτο δὲ, καὶ ὁ Ἰησοῦτης ἡμῖν αὐτὸς ἐν τοῖς ἐφεξῆς ἐυτόνως ὁράται διατεινόμενος πῶς (πρὸς Θεῶ!) τῆς Ἐκ προείλοντο οἱ Πατέρες ἀποχέσθαι μᾶλλον, ἢ τῆς ΔΙΑ; τῇ αὐτῇ ἀμφοτέρωθεν ἀπαντῶντος σημαυνομένῃ; Πάλιν: εἴπερ οἱ Πατέρες, ἵνα μὴ λαβῶν παρέξωνται εἰς σκάνδαλον τοῖς Ὀρθοδόξοις, ἢ τοῖς ἐκ τῶν Αἱρέσεων, μᾶλλον εἶλοντο λέγειν Ἐκ Πατρὸς ΔΙ' Υἱᾶς ἐκπορεύεσθαι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ἢ Ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱᾶς τί ὅτι ταύτῃ τῇ τῶν Πατέρων βελῶν καὶ προμήθειαν παρ' ἑδὲν οἱ Λατῖνοι τίθενται, οἱ μὴ μόνον διδάσκοντες, ἀλλὰ καὶ πάσαις διωάμεσιν ὑπερδιατεινόμενοι τῇ τῆς Πνεύματος Ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱᾶς Ἐκπόρυσιν; Ὅσον γὰρ τοῖς Ἀνατολικοῖς τὸ σκάνδαλον ἐντεῦθεν παρέχον τε καὶ παρέχουσιν, αὐτὸ, φασὶ, φθέγγεται.

Παρὰ δὲ τὰ εἰρημένα, (ὡς ἂν ἐν μιᾷ ἐποπτεῖα τῆς Ἀνθυποφορᾶς τὸ κενόν τε καὶ φρεῖδον ἐλέγξωμεν) τίνας δὴ πρὸς Θεῶ! χρήσεις Πατέρων ἐκ ἐπισυμφορᾶσιν, ἐν αἷς, Ἐκ τῆς τῆς Υἱᾶς Οὐσίας ἐκπροϊέναι, καὶ Ἐκ τῆς Υἱᾶς εἶναι τὸ Πνεῦμα λέγεται; ἅς τε, κατὰ τῇ τῶν Φωνῶν ὑποβολῇ καὶ διάνοιαν, ταυτοδωάμεας προσιδέασιν εἶναι, τῷ Ἐκ τῆς Υἱᾶς ἐκπορεύεσθαι; Αὐταὶ γὰρ δήπερ ἀριθμῶ τοσαῦτα εἰσὶν, ὡς ὑπεραίρειν μακρῶ τὰς ῥήσεις, ἐν αἷς τὸ Πνεῦμα Ἐκ Πατρὸς ΔΙ' Υἱᾶς ἐκπορεύεσθαι ὁμολογῆται· καθάπερ ἐκ τῆς ἐν χερσὶ Πραγματείας ἐφεξῆς δῆλον γενήσεται. Πάλιν δ' ὑπὲρ ἀριθμὸν ἐστὶ τὰ χωρία, ἐν οἷς οἱ Πατέρες πρεσβεύουσι, τὸ Πνεῦμα παρὰ τῆς Υἱᾶς λαμβάνειν, καὶ ἐκ τῆς Υἱᾶς. Ἀλλὰ καὶ τῆτοις οἱ Λατῖνοι βέλονται, κατ' αὐτῇ τῇ τῶν λεγομένων δήλωσιν, σημαίνεσθαι ὅτι τὸ Πνεῦμα ἐκπορεύεται Ἐκ τῆς Υἱᾶς. Πῶς ἂν ἄρα ῥηθῇσεται, τῆς Πατέρας διὰ τῆς ἐξ Αἱρέσεων προσελέσθαι μᾶλλον ΔΙΑ τῆς Υἱᾶς, ἢ Ἐκ τῆς Υἱᾶς τὸ Πνεῦμα φράζειν ἐκπορεύεσθαι; ὁπότε δὴ, κατὰ τὸ πᾶσι δοκῆν Λατῖνοις (ἢ δέδεικται) μακρῶ πλείοσιν ἐν μέρεσιν οἱ αὐτοὶ Πατέρες Ἐκ τῆς Υἱᾶς διδάσκουσιν ἐκπορεύεσθαι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ἢ ΔΙΑ τῆς Υἱᾶς;

Ἐποσυν-

Ὑποσυνάπτει τήτοις τὰ τῆς παρ' αὐτῷ Μανλικῆς ὁ Ἰησοῦς: τῷ χάριν, ἀμέλει τοι, κατὰ τῶν Αἰρετικόντων οἱ Πατέρες λέγειν προείλοντο ἐκπορεύεσθαι τὸ Πνεῦμα ἔκ τῃ Πατρὸς ΔΙΑ τῇ Υἱῷ, οἷον ἀποφοιβάσων. — Ἀλλὰ γὰρ πόθεν εἰδὼς ὡς αὐτὸς, τοιαύτῳ γενέσθαι τῷ τῶν Πατέρων διάνοιαν; ἄλλις ἄρ' ἂν ἔχοι τὸ φᾶναι, ἐπειδὴν περὶ ἑτὶς ἕτερος διανοεῖται ὁ λόγος; Κατὰ τῶν Ἀναρχικῶν, φησὶ, τῆς Πατέρας διδάξαι, τὸ ἔκ τῃ Πατρὸς ΔΙΑ τῇ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκπορεύεσθαι. Μᾶλλον μενῶν γε, ἵνα μὴ τοῖς Αἰρεσιώταις ἐκείνοις σωέλθωσιν, (ὡς διὰ τῇ κατόπιν ἐνεχθέντος τῶν εἰρημένων Πατέρων παραδείγματος δῆλον) ἔκ τῃ Υἱῷ ἀπέφασκον ἐκπορεύεσθαι τὸ Πνεῦμα, μίαν, δηλονότι, καὶ μόνῳ τῷ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος αἰτίαν εἶναι πειθόμενοι. Ἔτι: ἵνα τῆς περὶ Εὐνόμιον, φησὶν, ἀπελέγξωσι τὸ δὲ Πνεῦμα δηλώσωσι, καὶ ἔκ τῃ Πατρὸς, ἡμισυ δ' ἔκ τῃ Υἱῷ μόνον ἐκπορεύεσθαι διὰ τῆτο ἔκ τῃ Πατρὸς ΔΙΑ τῇ Υἱῷ, ἥρξαντο μᾶλλον τὸ Πνεῦμα Θεολογεῖν. — Ἀλλὰ πολλῷ μᾶλλον κἀνταῦθα, ἔκ τῃ Υἱῷ προσῆκε, καὶ ἔκ τῃ Πατρὸς, τὸ Πνεῦμα τῆς Πατέρας ὁμολογεῖν. Καὶ δὴ, καὶ ὁμολόγησαν ἂν, εἴ τι δὴ ἐτύγχανον τοιοῦτο πισθόντες. Ὡς περ αὐτὸ, τέττα γε ἕνεκα, τὸν Βασίλειον κατὰ τῶν Αἰρετικῶν ἐκείνων διδάξαι, ὁ Ἰησοῦς δι᾽χυρίζετο: ἔτι γὰρ ἂν ἐπ' εὐθείας ἀντεφθέγγεσαντο τοῖς Αἰρεσιόφροσι. Παρὰ πλησίον δὲ καὶ κατὰ τῶν ἀμφὶ Σαβέλλιον, εἰς Ἀπόδειξιν τῆς τῶν Προσώπων διακρίσεως, μᾶλλον ἂν ἔφησαν ἔκ τῃ Πατρὸς καὶ ἔκ τῃ Υἱῷ, ἢ περ ἔκ τῃ Πατρὸς ΔΙΑ τῇ Υἱῷ ἐκπορεύεσθαι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, εἴ τι τοιοῦτον ἐπρέσβεον. Ἐπεὶ καὶ τρανώτερον ἐκείνο τὰ δις ἀπαρίσσειν Πρόσωπα, τὸν Πατέρα καὶ τὸν Υἱόν. — Ἀνοήτως δὲ καὶ περὶ τῶν ἀμφὶ τὸν Εὐνόμιον, ὁ Ἰησοῦς μετὰ τῶν λοιπῶν Λατίνων, πρὸς τὸν Μέγαν Βασίλειον ἡμᾶς πρὸς καλίσκετο. Εἰκόδες γὰρ, ὡς λίαν τυφλώτῃ τῆς τὸ χωρίον ἐκείνο σθεωρακέναι μὴ δωρηθέντας: ὡς κατωτέρω περὶ τῷ τῷ Βασιλείῳ ῥῆσιν εἰσόμεθα. — Ἀλλὰ καὶ τὸ τῷ ἔκ πρόθεσιν, μηδαμῶς τῷ προκαταρκτικῶς αἰτίαν καθ' αὐτὸ δηλῶν πεφυκέναι, εἰς πλάτος ἡμῖν ἔφθη προαποδεχθὲν, ἐν τῇ Πραγματείᾳ τῇ περὶ τῶν Μαρτυριῶν τῶν Ἀνατολικῶν Πατέρων, περὶ τὰ τῇ Δαμασκηνῷ ῥήματα.

Μυρίαχθ' δὲ προσέτι δι᾽χυρίζοντα οἱ Λατῖνοι, ὡς ἐδίδαξαν οἱ Πατέρες, τὸν Υἱὸν αἰτίαν εἶναι τῇ Πνεύματος: τὸν Νύσσης προβαλλόμενοι, καὶ Βασίλειον, καὶ Ἀθανάσιον, καὶ τὸν Δαμασκηνόν, ὡς ἐν τῇ περὶ τῶν Μαρτυριῶν τῶν ἐκ τῶν Ἀνατολικῶν Πατέρων Πραγματεῖα κατέδομεν, καὶ δὴ καὶ κατωτέρω διὰ πλειόνων ἔτι εἰσόμεθα. Τῷ αἰτίαν μέντοιγε ὁμοίως, αἰτίαν σημαίνει τῷ Προκαταρκτικῶς οἱ αὐτοὶ Λατῖνοι βέλοντα. Εἰ τοίγῃ



οἱ Πατέρες πολλαχῶς ἀπεφώνησαν αἷτιον εἶναι τῷ Πνεύματος τὸν Υἱόν· καί τοι γε τῇ τῷ αἰτίᾳ φωνῇ τῆς αἰτίας τῆς Προκαταρκτικῆς ὑποδηλωμένης. Πῶς ἄρα, καὶ τὴν Ἀναρχικὴν αἰτίαν τῆς Ἐκ σημαίνειν ὑποτεθείσης, ἀποχέσθαι λέγοιτ' ἂν τὰς Πατέρας τῆς Ἐκ τῷ Υἱῷ φωνῇ ἐπὶ τῇ Ἐκπορεύσει τῷ Πνεύματος; (9) — Πάλιν: Εἴπερ ἡ Ἐκ Προκαταρκτικῶς αἰτίαν σημαίνει, καὶ τότε γε ἔνεκα, λέγειν προείλοντο οἱ Πατέρες: „ΔΙΑ τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα, „ἡ Ἐκ τῷ Υἱῷ ἐκπορεύεσθαι,· Πόθεν ἄρα μυριαχῶς διδάσκοντες εἰσὶν: „Ἐκ τῷ Υἱῷ εἶναι τε καὶ λαμβάνειν, καὶ προϊέναι τὸ „Πνεῦμα,· εἰ ταῦτα γε ἰσοδύναμα ἡγῶνται Λατίνοι, (ὅσα γε εἶπεν ἐκ τῆς διωάμεως τῶν φωνῶν) τῷ Ἐκ τῷ Πατρὶ ἐκπορεύεσθαι; — Προσέτι δὲ δὴ: καὶ εἴπερ οἱ Πατέρες τῆς Ἐκ τῷ Υἱῷ φωνῇ τῆς χάριν ἀπέχοντο ἐν τῇ τῷ Πνεύματος Ἐκπορεύσει: τί δὴποτε ἀποχέσθαι τῆς αὐτῆς πρότερον ἔφασκεν ὁ Ἰησοῦς, ἵνα μὴ εἰς σκάνδαλον γένοιτο ἅτε τοῖς ἐξ Αἰρέσεως, ἅτε καὶ τοῖς ὀρθοδοξοῦσι; — Τελούταιον δὲ ἡ ΔΙΑ ἐπὶ τῆς τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος Ἐκπορεύσεως, τάξεως ἐστὶ δὴ πᾶς ἐμφαντικῇ, ὡς ἀνωτέρω σωείδομεν. Ψυδὲς μέντοι ἐστὶ τὸ τῷ Πατρὶ διὰ δὴ τῷ Ἐκ Πατρὶ ΔΙ' Υἱῷ μᾶλλον, ἢ Ἐκ Πατρὶ ΚΑΙ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα ἐκπορεύεσθαι λέγειν· καθάπερ ἔν καὶ τὸ τὸν Βασίλειον, ἐν τῷ σημειωθέντι μέρει, τὴν Ἐκ βεληθῶς προσοικειώσασθαι τῇ ὑπερτάτῃ τῶν Αἰτιῶν. Βασίλειος μὲν γὰρ ἐπὶ τῷ ρηθέντος χωρίῳ, περὶ τῶν ἐνεργημάτων ἐπραγματόετο τῶν πρὸς τὰ ἐκτός, ἔκκεν δὲ τῶν πρὸς τὰ ἐντός· καὶ πόθεν ἔν εἰς μάρτυρα εἶχεν ὡς παρειαχθῶς; Ὁ δ' ἄρ' ἐντεῦθεν ἡμῖν ὁ Ἰησοῦς ἐστὶν ἐπιφέρων, ἐν ἄλλοις κατωτέρω ἐπιλυθήσεται. — Ἐπὶ πᾶσιν ὑποσυνάπτει ὁ Ἰησοῦς, ὡς οἱ Πατέρες ἐκδιδάσκουσιν τὴν ΔΙΑ τῇ Ἐκ ἰσοδυναμεῖν. Ἀλλὰ περὶ τῶν ἀμερίστων ἐνεργειῶν τοῖς Πατράσιν ἐν ἐκείνοις ὁ λόγος· καθὰ καὶ ἀνωτέρω τὴν ἀνθυποφορὰν ταύτῃ διελυτάμεθα. Εἰ δὲ καὶ ἡ Ἐκ ταυτοδυναμεῖ τῇ ΔΙΑ, πῶς ἔπειτα, ἢ μὲν Ἐκ αἰτίαν εἶχε τὴν Ἀναρχικὴν σημαίνειν, ἢ δὲ ΔΙΑ ἔ;

Πρὸς δὲ τὰς λοιπὰς τῶν Λατινοφρονόντων Γραμμῶν διερμηνύσεις: τῷ χάριν δηλ: Ἐκ Πατρὶ ΔΙ' Υἱῷ τὸ Πνεῦμα ἐκπορεύεσθαι λέγεται· ὥς ὁ Ἰησοῦς αὐτόθι ὑποσυνάπτει, ἐδόλως ἐπισρεφόμεθα. Αἰτῶνται γὰρ τὸ ἐν ἀρχῇ ἐκείνοι, καὶ λόγον ἐδένα

(9) Ἡ ἐχ' ἔτι ἀντὶς ἐκ τῆς κατὰ Λατίνους τοιαύτης Θεολογίας συμβάλλοιτο, ὅτι καὶ Ἀναρχικῶς τῷ Πνεύματος Αἰτίαν, τὸν Υἱόν ὄντα οἱ Πατέρες ἤδεσαν μὲν, ἀλλὰ λέγειν αὐτὸ τῷ ἀπόχοντο; Τοιγαρὲν κατὰ τὴν ὑπὸ τῷ Ἰησοῦ σοφιστικώτατα ἐπινοηθεῖσαν τοιάνδε πρόφασιν, Προκαταρκτικῇ καὶ Ἀναρχικῇ ἂν ρηθεῖν Αἰτία τῷ Πνεύματος καὶ ὁ Υἱός· καὶ ἐδ' ἐξ ἄλλης Αἰτίας ἂν ἔχοι τὸ εἶναι τῆς τῷ Πατρὶ καὶ ἐδ' Υἱός ἂν εἴη ὁ Υἱός.



ἐδέναι τῆς ὡς ἀποδιδόασιν Ἑρμιωείας ἐπάγασιν, ὃν ἂν ἐκ τῶν Θεωπεσίων Πατέρων παρεληφότες προβάλοιντο.

Ἄ δ' ἐφεξῆς αὐτὸς ὁ Ἰησῆϊτης (10), περὶ τῆ προκειμένη διαλεγόμενος φέρεται, τάδε ἐστίν: „Ἦδη μὲν γὰρ (φησὶν) ὅπερ „ἐν ταῖς αὐτῆς Ἐπιλύσεσιν ὁ αὐτὸς Μολδαβὸς (11) γράφει: μὴ „ἐς αἰ τὴ ΔΙΑ πρόθεσιν ἐν ταῖς Γραφαῖς αἰτίαν ὑποσημαίνειν „τ' ἀληθὲς μὲν φάσκων ἐστίν· ἀλλ' ἐντεῦθεν ἔχ' ἔπετα, τὸ μη- „δενὶ τρόπῳ τὴ ΔΙΑ σημαίνειν ἐνέργειαν τῶν πρὸς τὰ ἐντός. „Δειξάτω καὶ ἐντι δαῖγμα καὶ μόνον, (12) ἐνθα δὴ, περὶ τῆς „ἐντὸς τῆ Θεᾶ προόδου, τῆ λόγου προκειμένης, ἡ ΔΙΑ πρόθεσις „ἕτερόν τι σημαίνει, καὶ μὴ ἀρχὴν εἰς ἐνέργειαν σιῶδρομον. Ἐν „γὰρ τοσούτοις τῆ λέγειν τρόποις, δι' ὧν ἡ Γραφή παρίσῃσι τὸ „ὁμοῦσιον τῶν Προσώπων, ἐδὲ ἐντι χωρίον οἷοιτε ὥφθησαν οἱ „Γραμμοὶ ἐξυβρέσθαι, ἐν ᾧ ἡ ΔΙΑ εἰς δήλωσιν: ἐκλαμβάνοιτο „ὁμομοσιότητος. — Ἀλλ' εἰ καὶ ἔχ' ἔπετα, ἐκ τῆ μὴ αἰ τὴ ΔΙΑ πρόθεσιν αἰτίαν σημαίνειν, τὸ μὴδ' ἐνέργειάν ποτε ὑποδηλῶν τὴ ΔΙΑ ἐσωτερικῶς ἐκείνο μέντοι ἐντεῦθεν ἐστὶν ἐπόμενον, ὡς ἐδὲν ἐπάναγκες, ἐνθα ἂν τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκπορεύομενον ἔκ Πατρὸς δι' Υἱῆς λέγηται, περὶ Ἀρχῆς σωματικῇ τὴ ΔΙΑ νοημένῳ ἐφερμιωδύεσθαι, ἡ Λατίνοις δοκεῖ. Καὶ ἡπὲρ δέ τοι ἐπὶ τῆς Προτάσεως τῆς δέ: τὸ ΔΙΑ τῆ Υἱῆς ὑπεμφαίνει μὲν ἐνέργειαν ἐσωτερικῶς, ἀλλὰ τῷ λόγῳ ταύτῳ τῷ τῆ Πατρὸς, τῆ ἐπὶ τῷ Υἱῷ γεννωμένῳ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα προβάλλοντος. Καὶ ἐδὲν μὲν ἐκ τῆς Ἱερᾶς Γραφῆς προτεθεῖναι δυνάτα δαῖγμα, ἐν ᾧ ἐπὶ τῆς Ἐκπορεύσεως τῆ Πνεύματος ἡ ΔΙΑ ἐκ ἀρχῆς αἰτιώδης, ἀλλὰ τῆ ὁμομοσίης σημαντικὴ κέοιτο· ἀλλὰ γὰρ καὶ ἑδάμῃ ἡ Γραφή φαίνεται διδάσκουσα: ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἔκ Πατρὸς δι' Υἱῆς ἐκπορεύεται· τὴ γὰρ Πρότασιν ταύτῃ, (ἐπὶ λέξεως δηλονότι ἔτῳς ἐκφερομένῳ) ὑπὸ τῶν Πατέρων μόνον παρελάβομεν. Καὶ πῶς ἄρα ὁ νῦν ὁ τῆς Προτάσεως, ἐκ τῶν Ἱερῶν Γραφῶν οἷος ἐστὶ θηραθῆναι; Εἰ δὲ τοῖς Πατράσι διδασκάλοις χρησαίμεθα, τρανῶς ἡδὲ δέδεικται ἀνωτέρω, μὴδὲν αὐτῆς πλέον τῇ ΔΙΑ τῆ Υἱῆς φρά-  
σαι

(10) Κιχάβ: Αὐτ: Σελ: 89.

(11) Τῶν τις ἐν Γιασίῳ τῆς Μολδαβίας, πρὸ ἑκατὸν ἡδὲ ἑνιαυτῶν καὶ ἔτι πρὸς, τὸν Διδασκαλικὸν Θρόνον κοσμήτων, ὁ Μολδαβὸς ἔτος ὡς: Quidam Iassensis in Moldavia Professor· πρὸς δ' τὰς κατὰ τῶν Λατινικῶν Σοφισμάτων ἐλέγχους ἀποδύομενος ἐπεχείρει ἀπαντῆσαι ὁ Λέξος Ἰησῆϊτης Κιχάβιος, ἐν τῷ Η'. Ζητήμ: τῆ κατ' αὐτὸν Βήματος Σελ: 88 — 94.

(12) Ἀλλ' ἔχ' τῷ γε ἀποφάσκοντι, τῷ δὲ διατενομένῳ τι ὑποτιθέναι, οἱ τῶν Διαλεκτικῶν ἐπιβάλλουσιν ὅροι, τὸ ὑπὸ θατέρῃ ἀποφασκόμενον δεῖξαι, ταύτῃ γε ἔχειν, ἡ παρ' αὐτῆς ὑποτίθεται. Δειξάτω τοίνυν ἡμῖν ὁ Ἰησῆϊτης μᾶλλον, καὶ ἐντι καὶ μόνον χωρίον ἐκ τῶν ἱερῶν λογίων εἰς δαῖγμα, καθ' ὅτις τῶν Θεωρητικῶν Προόδων ἐκφέροιο, διὰ τῆς ΔΙΑ δηλαμένη προθέσεως.

Τόμ: Β'.

Σ σ σ

σαι δηλὸν ἐθέλειν, ἢ τάξιν τιῶ ἐν τῇ τῶν ὁμοσίων προόδῳ, ἐκέτι δὲ καὶ ἀρχιῶ τιῶ Σωαίτιον.

Οὐδ' ὁ Βασίλειος, ὃν ἡμῖν ἐνταῦθα ὁ Ἰησοῦτης ἀντιπροβάλλεται (13) σωηγορῶν ἐστὶν ὅλως τῇ Λατινικῇ δόξῃ, ὡς φθάντες σωείδομεν. Καμὲν καὶ κεῖνο ἤδη ἡμῖν ἐπιλέλυται, ὅπερ αὐτὸς προσίθῃσι, τὸ ἐκ μηδεμιᾶς δηλαδὴ μαρτυρίας διαπιστωθῶσα ἔχειν τιῶ ΔΙΑ, εἶναι τῇ ΣΥΝ ταυτοσήμαντον.

Ἀλλὰ προσίθῃσιν: Εἰ τιῶ ΔΙΑ λέγειν ἐξέσαι τῇ ΣΥΝ ἰσοδωάμον, οἱ Ἀρειανοὶ τὰς Γραικὰς ἐηλώσαντες, τό: („πάντα ΔΙ „αὐτὸ ἐγένετο) εἰς τὸ (πάντα ΣΥΝ αὐτῷ ἐγένετο) μεταλήψονται,, — Ἀλλ' αὐτοὶ τιῶ ΔΙΑ φάμεν σημαίνειν τὴν ΣΥΝ κατὰ τὰ ἀνωτέρω ἐκτεθέντα (14), ἐπὶ τῇ Ἐκπορεύσει τῆς Ἀγίας Πνεύματος Ἐκ τῆς Πατρὸς ΔΙΑ τῆς Υἱῆς. Πῶς ἂν ἐντεῦθεν συναχθεῖν, τὸ καὶ πάντα ἄρα τὰ ΔΙΑ τῆς Υἱῆς γενέσθαι λεγόμενα, παραπλησίως γεγονότα νοεῖσθαι ΣΥΝ τῷ Υἱῷ; Μὴ γάρ, ὅτι ἐπὶ τῇ τῆς Πνεύματος παραγωγῇ, ἢ ΔΙΑ ἔ σημαίνει αἰτίαν, ἰσοδωαμῆ δὲ τῇ ΣΥΝ· ἢ αὐτὴ ἄρα ἔσαι τῆς ΔΙΑ σημασία αἰεὶ ἐν ἅπασιν; ἄλογον. Ἀλλὰ καὶ τὸ μὴ πανταχῶ ἐν Ἱεραῖς Γραφαῖς τιῶ ΔΙΑ σημαίνειν αἰτίαν, καὶ αὐτὸς ὁ Ἰησοῦτης φθάσας ἀρτίως προωμολόγησεν. (15) Ἐπειτα καὶ ὁ τῆς διαφορᾶς λόγος σαφῶς· Ἐκείσε γὰρ ἐνέργειά τις ὑπέκειτο δηλαδὴ τῶν πρὸς τὰ ἐντὸς, ὡς δὲ πρὸς τὰ ἐκτός. Ἀλλ' ἐκεῖνα μὲν εἰσὶ μεμερισμένα αἱ ἐνέργειαι, αὐταὶ δὲ ἀμέριστοι, καὶ τῇ ὅλῃ Τριάδι ἐξίσως κοιναί.

Ἀλλὰ περαιτέρω προῖων, φησὶ, τὸν Βασίλειον διδάσκων: „Ὅτι ἢ μὲν Ἐκ ἐν ταῖς Γραφαῖς ἀπονέμεται τῷ Πατρί· ἢ δὲ „ΔΙΑ τῷ Υἱῷ· ὡς ἂν ἔτως ἀσύγχυτος μὲν διασώζοιτο ἢ ἐννοία „ἢ τῆς Πατρὸς, καὶ ἢ τῆς Υἱῆς· ὑποσημαίνοιτο δὲ καὶ ἢ τῆς Προκαταρκτικῆς αἰτίας ὁμολογία. Ἐπειδὴ τοίνυν (φησὶν) ἐν τε „ταῖς πρὸς τὰ ἐντὸς ἐνεργείαις, καὶ ἐν ταῖς πρὸς τὰ ἐκτός, ἀσύγχυτον δεῖ τηρεῖσθαι τιῶ τῆς Πατρὸς καὶ τῆς Υἱῆς ἐννοίαν· καὶ δὴ, „καὶ τιῶ τῆς Προκαταρκτικῆς Αἰτίας ἀναπτύσσεσθαι ὁμολογίαν“ „ἔδὲν θαυμασὸν, ἔπερ οἱ Γραικοὶ Πατέρες κατὰ τῶν περὶ τὸν „Εὐνό-

(13) Ἐν Σελ: 90.

(14) Τιῶ ΔΙΑ τῇ ΣΥΝ ἰσοδωαμῆν φάμεν ἐπὶ τῶν „Σωαίτιατῶν,, ἐκ ἐπὶ τῶν „Συναίτιων,, εἰμὴ ἐπὶ μόνῃ τῆς ἐγχερόμενης Προόδου. (Ὁρα ἀνωτ: Σημ: (5) καὶ Σημ: (6). Ὅτι δὲ „Σωαίτιος,, ὁ Υἱὸς τῆς Πατρὸς καθάπερ ἐν καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐπὶ τῆς Δημιουργίας, ἐκ μυρίων τῆς Θείας Γραφῆς τόπων κατὰδὴλον· ὥς μὴδὲν ὑπολείπεσθαι δέος, μὴ τοι γε οἱ ἐκ τῆς Ἀγίας Φατρὸς, ἐν τῇ: (τὰ πάντα δι' αὐτὸ ἐγένετο:) τῇ ἐναλλαγῇ τῶν προθέσεων προκρήσασθαι διωθῆσιν ἐυλόγως, εἰς κατασκευὴν τῆς ἰδίας αὐτῶν ἀθροότητος.

(15) Καὶ καλόν, ὅτι ἔγω καταψεύδόμενον ἐξελέγχει ὁ Ἰησοῦτης ὡς τὸν ἐκ Νικαίας Καρδινάλισαντα, τὸν ἐν τῷ Δογματικῷ, ἢ περὶ Ἐνώσεως συγγραφεῖντι ὑπ' αὐτὸ Λόγῳ, τὸ ΔΙ ὉΥ: („Ἐπὶ πάντων ἀπλῶς αἰτίαν ὑποσημαίνειν, ἐφ' ᾧ περ πάντα „ἐξαλαμβάνεται,,) διατεινόμενον.

„Εὐνόμιον Πνεύματομάχων γράφοντες, τῶν τὸ Ἅγιον Πνεῦμα  
 „ἐκ μόνου προβάλλεσθαι τῷ Υἱῷ διατανομένων, τὴν ΔΙΑ' προϊ-  
 „λόντο τῷ Υἱῷ ἀπονείμαι, ἢ μόνον ἐπὶ τῶν πρὸς τὰ ἐντὸς ἐνεργ-  
 „γημάτων, ἀλλ' ἔτι δὴ καὶ ἐπὶ τῶν πρὸς τὰ ἐκτός. Ἵνα μὴ, τὴν  
 „Ἐκ τῷ Υἱῷ αὐτῶν ἀπονενεμηκότων, οἱ ἐκ τῆς Αἰρέσεως ὑπο-  
 „σώψωσιν, ὅτι ἐκ τῷ Υἱῷ ἄρα τὸ Πνεῦμα, ὡς ἐξ αἰτίας Προ-  
 „καταρκτικῆς ἐκπορεύεται, καὶ διὰ τῆτο μὴ ἐκ τῆς Πατρὸς αὐτὸ  
 „Ἐκπορεύεσθαι. Μετὰ ταῦτα δ' ἐν τῶν Εὐνομιανῶν ἐκποδῶν  
 „γενομένων, καὶ οἱ Γραικοὶ Πατέρες, ἐν τῷ τὰς Θείας ἀναπτύσ-  
 „σειν Προόδου, ἀναμίξ καὶ ἀδιαφόρως νῦν μὲν τὴν Ἐκ, νῦν δὲ  
 „τὴν ΔΙΑ' ἀπέδωκαν τῷ Υἱῷ· μᾶλλον δὲ καὶ τὴν ΔΙΑ' ἐνίοτε  
 „καὶ τῷ Πατρὶ ἀπέδωκαν,,.

Ἄλλ' ὅποια ποτὲ ἡ τῆς Σωπερίας ἀνάγκη; Ἡ Ἱερά, φησὶ,  
 Γραφὴ ἐν ταῖς πρὸς τὰ ἐκτός ἐνεργείαις, τὴν μὲν Ἐκ τῷ Πατρὶ  
 ἀποδίδωσι· τὴν δὲ ΔΙΑ' τῷ Υἱῷ, ὡς ἂν αἱ τῆς Πατρὸς καὶ τῆς  
 Υἱῆς ἐννοίαι μόνον τηροῖντο ἀσύγχυτοι, καὶ ἵνα ἡ τῆς Προκα-  
 ταρκτικῆς Αἰτίας διασώζοιτο ὁμολογία· ἐπεὶ δ' ἐν καὶ ταῖς ἐνεργ-  
 γείαις ταῖς πρὸς τὰ ἐντὸς, τὰς τε τῆς Πατρὸς καὶ τῆς Υἱῆς ἐννοίας  
 ἀσυγχύτως δεόν τηρεῖσθαι, καὶ τὴν τῆς Προκαταρκτικῆς Αἰτίας  
 ὁμολογίαν ἀναπτύσσεσθαι, διὰ ταύτην μόνον τὴν αἰτίαν οἱ Πατέ-  
 ρες ὁμοίως τῷ μὲν Πατρὶ τὴν Ἐκ, τῷ δὲ Υἱῷ τὴν ΔΙΑ' ἀπέ-  
 νεμαν ἐπὶ τῇ Ἐκπορεύσει τῷ Πνεύματος; Καί τοι ἄλλως, δηλο-  
 νότι, ὥστε ἐπὶ τῶν ἐκτός, ἔτω καὶ ἐπὶ τῶν ἐντὸς ἐνεργημάτων,  
 καὶ τῷ Υἱῷ ἑδὲν ἡττον προσήκειν πισθύνοντες; Ὅτι μὲν γὰρ ὁ  
 νῆς ὁ τῶν Πατέρων ἕτερος ὢν, τῶν ΔΙΑ' τῆς Υἱῆς τὸ Πνεῦμα  
 ἐκπορεύεσθαι διδάσκοντων, ἀνωτέρω κατέδομεν. Αὐτόθεν γὰρ  
 δῆπερ καταφανὲς, διὰ τῆτο αὐτὸς ἀποφάσκειν μὲν τὸ ἐκπορεύε-  
 σθαι τὸ Πνεῦμα Ἐκ τῆς Υἱῆς, συμφάσκειν δὲ τὸ ΔΙΑ' τῆς Υἱῆς  
 Ἐκ τῆς Πατρὸς, διὰ τὸ μὴ Αἴτιον τὸν Υἱὸν εἶναι, ἢ Προβολεᾶ  
 τῷ Πνεύματος· ἔκκεν δ' ἐπὶ τῷ ἀσύγχυτον τηρεῖν μόνον τὴν Πα-  
 τρὸς τε καὶ Υἱῆς ἐννοίαν, καὶ τὴν ὁμολογίαν ἀναπτύσσειν τῆς  
 Αἰτίας τῆς Προκαταρκτικῆς· καί τοι ἄλλως καὶ τῷ Υἱῷ προσή-  
 κειν διδάσκοντας τὴν Ἐκ ἐπὶ τῇ Ἐκπορεύσει τῷ Πνεύματος.  
 Κἀντεῦθεν ἔτι καὶ ἡ τούτων διαφορὰ σαφῶς ἀναφαίνεται.  
 Καί περ γὰρ, διὰ τὸν εἰρημένον λόγον, οἱ Πατέρες εἰσὶ διδάσκον-  
 τες, ἐπὶ τῶν πρὸς τὰ ἐκτός ἐνεργημάτων, τὴν μὲν Ἐκ ἀπο-  
 νέμεσθαι τῷ Πατρὶ, τὴν δὲ ΔΙΑ' τῷ Υἱῷ· ἐν ἄλλοις μέντοι γε  
 οἱ αὐτοὶ διαβρῆδιν ὁμολογῶσιν Ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱῆς τὰ πάντα  
 παρῆλθαι· ὥδε δὲ, ἢ ἂν ὅπως εἰπῇν τις ἔχοι, ὅτι καὶ ἐκ τῆς Υἱῆς  
 ἐκπορεύεσθαι τὸ Πνεῦμα οἱ Πατέρες ἐδίδαξαν. Πῶς γὰρ; ὅπως  
 γε καὶ ἀνεπτυγμένως ἀποφάσκοντες Ἐκ τῆς Υἱῆς ἐκπορεύεσθαι τὸ  
 Ἅγιον Πνεῦμα, μόνον ΔΙΑ' τῆς Υἱῆς πισθύνειν τῆτο προσέθεντο;

Καθάπερ ἤδη, διά τε τῶ Ἀλεξανδρείας Κυρίλλου, καὶ τῶ Συγγράψαντος τὸ περὶ Τριάδος Βιβλίον, καὶ Ἰωάννη τῶ Δαμασκηνῶ, καὶ δι' ἄλλων, (ἐν τῇ Πραγματείᾳ τῇ περὶ τῶν Μαρτυριῶν τῶν Ἀνατολικῶν Πατέρων) φθάσαντες ἀπεδείξαμεν. Ἐπειτα δὲ, πῶς; καὶ εἴπερ οἱ Πατέρες ἔφησαν τὸ Πνεῦμα ἐκπορεύεσθαι Ἐκ τῶ Υἱῶ. οἱ Ἐκ τῶ Υἱῶ μόνον ἐκπορεύεσθαι τὸ Πνεῦμα βλασφημῶντες Αἵρεσιῶται, Ἐκ τῶ Υἱῶ, ὡς ἐξ αἰτίας ἀπρόβλητον. ἢ γὰρ Ἐκ τῶ Υἱῶ μόνον αὐτὸ ἐκπορεύεσθαι σωήγαγον ἄν; Ἡ ἔχῃ τὸν Υἱὸν, οἱ περὶ Εὐνόμιον, ἔφασκον εἶναι τῶ Πατρὸς ποίημα. Εἰ δ' ἔτω, πῶς ἂν εἶχον ἔπειτα, διὰ τὸ Ἐξ Υἱῶ εἰρηθεῖν ἐκπορεύομενον, τὸν Υἱὸν ὑποσυνάψαι ἀπρόβλητον Αἰτίαν εἶναι τῶ Πνῶματος; Οὐδὲν γὰρ μᾶλλον τῷτο ἐκείθεν ὑποσυνάψαιαν, ἢ ἐκ τῶ τὰ πάντα τῷ Λόγῳ δημιουργηθῶναι εἰρηθεῖν, τὸν Υἱὸν ἐντεῦθεν αἰτίαν ἀναρχὸν ἐπιφέρουσαν εἶναι καὶ ἀπρόβλητον. Τὸ δ' ἔτι πλέον: ὅτι καὶ ὁ Ἰησοῦτης ἀνωτέρω ἡξίει, τὸν Βασίλειον, περὶ τὸ τέρμα τῶ Β'. τῶν κατ' Εὐνομίαν Βιβλίων ὁμολογήσαι, μὴ Ἐκ μόνον τῶ Υἱῶ, ἀλλὰ καὶ Ἐκ τῶ Πατρὸς ὡσαύτως τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκπορεύεσθαι. Πῶς ἔν δ' δεδία Βασίλειος, κατὰ τῶν περὶ Εὐνόμιον τῶτι εἰρηκῶς, μὴ τὸν Υἱὸν ἔτοι, αἰτίαν εἶναι τῶ Πνῶματος ἀπρόβλητον ἐπιφέρωσιν. Οἱ δὲ λοιποὶ τῶν Αἵρετικῶντων, οἱ τὸν Υἱὸν Θεὸν ἀληθινὸν εἶναι γεννηθέντα Ἐκ τῶ Πατρὸς συγχωρῶντες: τίνι ποτὲ λόγῳ καὶ ἔτοι, παρὰ τὸ ῥηθῶναι τὸ Πνεῦμα Ἐκ τῶ Υἱῶ, ἐπιφέρειν εἶχον, αἰτίαν πεφυκέναι τῶ Πνῶματος ἀναρχὸν τὸν Υἱὸν, ἵν' ἐντεῦθεν κατασκευάσωσιν, ἐκ τῶ Υἱῶ μόνον τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκπορεύεσθαι; Τῷ γὰρ ὄντι τῶν ἀδωάτων, τὸν Υἱὸν ἅμα καὶ γεννητὸν ὄντα ὑποτιθέναι, καὶ αἰτίαν τὸν αὐτὸν ἀναρχόν.

Ἀλλ' ὁ Ἰησοῦτης ἐχώρει: τῶν περὶ τὸν Εὐνόμιον, φάσκων, ἐκποδῶν γενομένων τῶς Γραικῆς Πατέρας τὰς Θεαρχικὰς ἀναπτύσσοντας Προόδους, καὶ τῷ Υἱῷ ἀναμῖξ τῷ Ἐκ, ἢ τῷ ΔΙΑ ἀπονέμασθαι — Ἀλλὰ πόθεν ἄρα τῶν ἐφεξῆς Πατέρων τὸ σίφος, συμφώνῳ τῇ ψήφῳ, Ἐκ τῶ Υἱῶ ἀπείπον τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκπορεύεσθαι; Κύριλλον λέγω τὸν Ἀλεξανδρείας, καὶ Θεοδώρητον, καὶ τῶς Ἀνατολικῆς Ἐπισκόπου, καὶ τὸν τὸ περὶ Τριάδος Συγγεγραφότα Βιβλίον, καὶ τὸν ἐκ Δαμασκῆ Ἰωάννην, καὶ τῶς ἄλλας: ὡς ἐν τῇ Πραγματείᾳ τῇ περὶ τῶν Μαρτυριῶν τῶν Ἀνατολικῶν Πατέρων ἐδείκνυτο. Καὶ εἰ, τῶν περὶ Εὐνόμιον ἤδη ἐκλιπόντων, τῇ Ἐκ καὶ τῇ ΔΙΑ οἱ Πατέρες ἀναμῖξ ἀπεχρήσαντο περὶ τὸν Υἱόν, μὴ δεδιότες δηλαδὴ τῶς ἐκ τῶν Αἵρέσεων Ἐκ μόνον γε ἂν ἐρεῖν τῶ Υἱῶ τὸ Πνεῦμα, καὶ τῶτο ὑποσυνάψαι αἰτίαν αὐτὸν ἀναρχόν πεφυκέναι πόθεν ἄρα τῷ Δαμασκηνῷ ἐπῆλθεν ἀρνήσασθαι τὸ Ἐκ τῶ Υἱῶ κατὰ Λατίνους,  
διὰ



διὰ τὸ τιῶν 'ΕΚ ὑποδηλῶν αἰτίαν τιῶν ἀναρχον; Τί δὲ καὶ τε-  
λοδοταῖον, τῶν Εὐνομιανῶν ἐκλιπόντων, περὶ τῆς παρέδωκαν  
οἱ Πατέρες; εἰδὲν ἄλλ', ἢ 'ΕΚ τῆς Τίς λαμβάνειν τὸ 'Αγιον Πνεῦ-  
μα, 'ΕΚ τῆς Τίς εἶναι, 'ΕΚ τῆς ἐσίας τῆς Τίς εἶναι, προῖέναι  
εἰδέποτε δὲ καὶ 'ΕΚ τῆς Τίς ἐκπορεύεσθαι. ἀλλὰ ταῦτα ἐκείνα  
καὶ πανταχῶς οἱ Πατέρες, καὶ πρὸ τῶν Εὐνομιανῶν, καὶ ἐπ'  
αὐτῶν ὡσαύτως, παραδεδωκότες αἰεὶ γεγονόσι. Πῶς δ' ἔν τῶν  
περὶ Εὐνόμιον ἤδη μηκέτι ὄντων, ἐπέκεινά τι τῶν εἰρημένων  
τῆς Πατέρας παραδεδωκέναι, ὃ Ἰησοῦς λέγειν ἐκ ἡχώετο;  
Καὶ τεῦθεν ἄρ' εὐδηλον, Ἰησοῦς αὐτὰ ταῦτα τυγχάνειν πλάσ-  
ματα, μηδενὶ λόγῳ βασίμῳ ἐπεριδόμενα.

'Αλλ' ὡς ἡδὺς ἡμῖν ὁ Ἰησοῦς! ἐπειδὴ γὰρ αὐτῷ ἀντιπροτεῖται  
(16) ὅτι Βασίλειος ἐδίδασκε, μηδαμῶς τιῶν 'ΕΚ ἰσοδωαμῆν τῇ  
ΔΙΑ, περὶ δὲ τῶν Θεῶν ἀμερίσων ἐνεργημάτων ἐν ἐκείνοις αὐτῷ  
εἶναι τὸν λόγον· ὁ δὲ, ἄλλοθί περ ἀπλώτα· τὸν Θεσπέσιον Βασι-  
λειον κοινότατα φθέγγεσθαι κατὰ τῶν Ἀρειανῶν κοινότατα ἄρα,  
τιῶν τῆς ΔΙΑ ἀπὸ τῆς 'ΕΚ διαφορὰν καὶ διάκρισιν ἀποφᾶναι.  
'Αλλ' ἀποφῆσας γὰρ ἔσω κοινότατα Βασίλειος τιῶν διάκρισιν τῆς  
'ΕΚ ἀπὸ τῆς ΔΙΑ κοινότατα δὴ πάντως ἔτις ἀποφῆσας ἐγένετο  
τῷ λόγῳ τῶν ἐνεργημάτων τῆς Θεῆ τῶν πρὸς τὰ ἐκτός. Πῶς ἔν  
ἐκ εὐτόνως ἐντεῦθεν τῆς Ἀρειανῆς καταθλίψει, τῆς, ἐν ᾧ πάν-  
τα λέγεται διὰ τῆς Τίς δημιουργηθῆναι, τιῶν 'ΕΚ τῆς ΔΙΑ διασέλ-  
λοντας, ἐφ' ᾧ καταγαγεῖν τὸν Τίδον τῆς Θεῆ ἐπὶ τὰ κτίσματα;  
Καὶ ταῦτα μὲν ἄχρι τῆς, περὶ ἧς Λατῖνοι ἀντιπροτείνουσι τῆς  
Πατέρας διδάσκειν· τὸ 'Αγιον Πνεῦμα 'ΕΚ τῆς Πατρὸς ΔΙΑ τῆς  
Τίς ἐκπορεύεσθαι.

## § Β'.

Ὅπως οἱ Πατέρες φασὶ τὸ 'Αγιον Πνεῦμα ἐν τῷ Τίῳ  
μένειν καὶ ἀναπνεύεσθαι.

Ἀντιπροβάλλει δ' ἐφεξῆς ὁ Ἰησοῦς καὶ τῆς Πατέρας διδάσ-  
κοντας, ὅτι τὸ Πνεῦμα ἐκπορεύεται μὲν ἐκ τῆς Πατρὸς, μένει δὲ  
καὶ ἀναπνεύεται ἐν τῷ Τίῳ. (17) Ἐπιχειρεῖ δὲ πρῶτον ὡδέ πως:  
Εἰ μὴ ὡς ἐκπορεύομενον τὸ Πνεῦμα καὶ ἐκ Τίς, ἀλλ' ἐκ τῆς Πα-  
τρὸς μόνον, ἀδωάτον ὡς τὸ 'Αγιον Πνεῦμα μένειν ἐν τῷ Τίῳ.  
Μένει δ' ἔν· ἄρα καὶ ἐκπορεύεται. Τιῶν Σωέπειαν τῆς μείζονος,  
φησὶν,

(16) Ἐν τῇ κατὰ τιῶν πόλιν τὸ Κίαιβον συγκροτηθεῖση Διαλέξει, τῇ ἐφεξῆς μετὰ τιῶν  
προσδιόλεξιν ἡμέρα. Ὅρα ἐν τῷ Κιχώβις Βήματι ἐν Σελ: 322.

(17) Ἐκ τῆς τῆς 'Αγίου Πνεύματος διδάσκειν τῆς Πατέρας ἐν τῷ Τίῳ μένειν καὶ ἀναπνεύ-  
εσθαι, τιῶν αὐτῆς δόξαν κρατύνειν ἐπιχειρεῖ ὁ Κιχώβιος, ἐν Ζητήμ: 5'. Σελ: 61.

Τόμ: Β'.

Τ Τ Τ



φησὶν, ἔγω δαίκνυμι. Εἰ τὸ Πνεῦμα ἐκ μόνου ὡς ἐκπορεύομενον τῷ Πατρὶ, ἔκ ἂν ἐν τῷ Υἱῷ μένειν ἔχεν, εἰμὴ μεταβαίνειν ἀπὸ τῷ Πατρὶ ἐπὶ τὸν Υἱόν. Ἀλλὰ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα μεταβαίνειν ἔδωκεται ἀπὸ τῷ Πατρὶ ἐπὶ τὸν Υἱόν. Ἄρα ἔπερ ἐκ μόνου τῷ Πατρὶ τὸ Πνεῦμα ἐκπορεύομενον ὡς, ἔκ ἂν ἔχε μένειν ἐν τῷ Υἱῷ. Ἡ μείζων ἔοικε σαφής· ἔ γὰρ ἄλλως νοητὸν ἐστίν, ὅπως τὸ Πνεῦμα ἐκ μόνου ἐκπορεύομενον τῷ Πατρὶ, δώκετ' ἂν εἶναι ἐν τῷ Υἱῷ, εἰ μὴ εἰς αὐτὸν τῷτον μεταβαίνειν ἀπὸ τῷ Πατρός. Ἀλλ' ἵνα σαφέστερον ἢ τὸ λεγόμενον, τάχα, φησὶ, καὶ δεῖξιν ἔτι προσίθῃμι. Ἦτοι γὰρ κοινωνεῖται διὰ τῆς γεννήσεως τῷ Υἱῷ, σωάμα τῇ ἑστίᾳ καὶ τὸ εἶναι τῷ Πνεύματος, ἢ ἔχλ. Εἰ μὲν ἔν κοινωνεῖται, προϋποτίθεσθαι ἄρα πνεύθεν τὸ Πνεῦμα, πρὶν ἢ γεννηθῶσι τὸν Υἱόν ὅπερ ἀδωάτον. Εἰ δὲ μὴ, ἔκ ἄρα ἄλλως ἂν νοηθεῖν τὸ Πνεῦμα εἶναι ἐν τῷ Υἱῷ, εἰμὴ ἀπὸ τῷ Πέοντος Πατρὶ μεταβαίνειν αὐτὸ ἐπὶ τὸν Υἱόν. Εὐπεδῶτα δὲ ἔγω: Τὸ μεταβαίνειν ἀπὸ τῷ ἀφ' ἔ ὅρα ἐπὶ τὸν πρὸς ὄν, ἔκ ἂν εἰς τὸν πρὸς ὄν εἴη ὅρον, εἰ μὴ ἀπὸ τῷ ἀφ' ἔ ὅρα ἐπὶ τὸν πρὸς ὄν μεταβάν. Ἀλλὰ μὴ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ἐκ μόνου τῷ Πατρὶ (κατὰ τῆς Φωτιανῆς) πνεόμενον, ἔχει ὡς τὸ ἀπὸ τῷ ἀφ' ἔ ὅρα μεταβαίνειν ἐπὶ τὸν πρὸς ὄν. Τετέστιν ἀπὸ τῆς Ἀρχῆς καὶ Αἰτίας, οἷος ὁ Πατήρ, ἐπὶ τὸν Υἱόν. Ἄρα τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἔδωκεται εἶναι ἐν τῷ Υἱῷ, εἰμὴ πρὸς τῷτον μεταβαίνειν ἀπὸ τῷ Πατρός. Ὅτι δὲ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα μεταβαίνειν ἔδωκεται ἀπὸ τῷ Πατρὶ ἐπὶ τὸν Υἱόν, ἔγω δαίκνυμι: Οὐ δώκεται τὸ Πνεῦμα μεταβαίνειν ἀπὸ τῷ Πατρὶ ἐπὶ τὸν Υἱόν, εἰ μὴ ἐγκαταλειφθέντος τῷ Πατρός (ἀδύνατον γάρ τι ὅτις, ἀπὸ τῷ ἀφ' ἔ ὅρα ἐπὶ τὸν πρὸς ὄν μεταβῶσι, εἰ μὴ ἐγκαταλειφθέντος τῷ ὅρα, ἀφ' ἔ.) Ἀλλ' ἀδωάτον ἐστὶ τὸ Πνεῦμα ἐγκαταλιπεῖν τὸν Πατέρα. Ἀδωάτον ἄρα μεταβῶσι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἀπὸ τῷ Πατρὶ ἐπὶ τὸν Υἱόν.

Οὕτω καὶ ἄρα καθήκει, τὰ πάντα λόγον ὑπερεπαναβεβήκοντα τῆς Ὑψίστης Τριάδος Μυσήρια λογαρίοις ἀνθρωπίνοις κατεξιχνιάζειν, καὶ τῇ ἐκ τῷ κόσμῳ φιλοσοφίᾳ καθυποβάλλειν; Ὡς μᾶλλον αὐτοὶ δεόντως τὰ τῷ ΑΥΓΟΥΣΤΙΝΟΥ ἐκείνα, (ἐκ τῷ Α'. τῶν περὶ Τριάδος Βιβλίων, Κεφαλ: Α'.) τῷ Ἰησοῦ ἀνθυποβάλλομεν! „Ὁ ταῦτα μέλλων ἀναγινώσκων, ἃ περὶ Τριάδος „διαλεγόμεθα, πρὸ πάντων εἰδέναι ὀφείλει, ὡς ἡμῖν ὁ κάλαμος „ἐγγρήγορε κατὰ τῶν διαβολῶν τῶν ἀνθρώπων ἐκείνων, οἱ τῆς διὰ τῆς „Πίσεως κατ'ολιγωρῶντες ἀρχῆς, τῷ τῷ λόγῳ ἀκαίρωτε καὶ διαστρόφῳ „ἔρωτι παρακρόνται. Ὡν τινες, ἄπερ ἐπὶ τῶν σωματικῶν „πραγμάτων, εἴτε διὰ τῶν τῷ σώματος αἰσθήσεων τῇ πέτρᾳ ἐπέγ„νων, εἴτε τῇ φύσει τῆς ἀνθρωπίνης διανοίας, καὶ τῇ τῆς ἐπι„μελείας ἀκμῇ, ἢ τῷ ἐπιβοηθήματι τῷ ἐκ τέχνης κατέμαθον, „ἐπὶ

„ἐπὶ τῶν ἀσωμάτων καὶ ὑπὲρ τῶ ὕλῳ ὄντων μεταφέρειν σπασ-  
 „δάξουσιν, ὡς ταῦτα ἐξ ἐκείνων μετρεῖν καὶ δοξάζειν βέλεσθαι,,  
 Οἷον δὲ, πρὸς Θεῷ! τὸ ἐπιχέρημα εἰς πίσιν τῆς τῆς Ἁγίας Πνοῦ-  
 ματος Ἐκπορεύσεως ἐκ τῆς Υἱῶς τό: παρὰ τὸ λέγεσθαι τὸ Πνεῦ-  
 μα μένειν τε καὶ ἀναπαύεσθαι ἐν τῷ Υἱῷ;

ΓΡΗΓΕΝΤΙΟΣ ἦπερ ὁ Τάφρων Ἀρχιεπίσκοπος, ἐν τῇ πρὸς  
 Ἐρξῶν τὸν Ἰσδαῖον Διαλέξει, ἐν τῷ Α'. Τόμ: τῆς τῶν Γραικῶν  
 Πατέρ: Βιβλιοθ: Σελ: 196. „Τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ἔφη, ὡς  
 „ἐκ τῆς Νῆς ἐκπορεύόμενον, ἐν δὲ τῷ Λόγῳ ἀναπαυόμενον, καὶ  
 „ζωῶν τοῖς πᾶσι διδόν, Πνεῦμα ὀνομάζομεν,,. Ἐν οἷς πάντως  
 διασολῇ χρησάμενος, ὅπως αὐτὰ διακρίνειν ἐστὶν ἐνδηλος ὅτι ἐκ  
 τῆς Πατρὸς μὲν ἐκπορεύεται τὸ Πνεῦμα, ἀναπαύεται δὲ ὁμῶς  
 ἐν τῷ Υἱῷ. ἐκ ἄρα ὡσαύτως διὰ τῶν ὑσέρων ῥημάτων ἀποφαί-  
 νει καὶ ἐκ τῆς Υἱῶς τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκπορεύεσθαι. Καὶ πῶς  
 ἔχεν (ἀντιβολῶν) Γρηγόριος ἐν τοῖς δε τοῖς ῥήμασιν, ὑπὲρ τῆς  
 τῆς Πνοῦματος καὶ ἐκ τῆς Υἱῶς μαρτυρεῖν Ἐκπορεύσεως, ὁπότε κατ'  
 αὐτὰ τάδε τὰ ῥήματα οἱ τῶν τῶν Γραικῶν Πατέρων Βιβλιοθήκῳ  
 ταύτῳ ἐκδεδωκότες καὶ μὲν δὴ, καὶ οἱ τῶν ἑτέραν τῶν Πατέρ:  
 Βιβλιοθ: τῶ ἐν Κολων: Μέρ: Α'. Τόμ: Ε'. προσημειώσασθαι παρὰ  
 τὸ χεῖλος ἐπιμελὲς ἔθεντο: „Πρόσεχε ἀπὸ τῆς Γραικῶν ψυδ-  
 „δοδοξίας καὶ ἐξαπάτης, τῆς περὶ τῶ Ἐκπόρουσιν τῆς Ἁγίας  
 „Πνοῦματος,,;

Ἀλλὰ καὶ τῷ Συγγραφεῖ τῆς περὶ Τριάδος Βιβλ: ὅπερ ἐπ'  
 ὀνόματι τῆς Ἀλεξανδρ: Κυρίλλου φέρεται, συμφώνως ὁ ἐκ Δα-  
 μασκῆ ἸΩΑΝΝΗΣ διδάσκει, ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα μένει ἐν τῷ  
 Υἱῷ. μή τοι γε δ' ἄρα εἰς πίσιν καὶ ἀπόδειξιν τῆς τῆς Ἁγίας Πνοῦ-  
 ματος καὶ ἐκ τῆς Υἱῶς Ἐκπορεύσεως, ἐξελήφασιν ἔτοι, τὸ ἐν  
 τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα μένειν καὶ ἀναπαύεσθαι; Τὸναντίον μὲν  
 ἐν τέτων ἑκάτερος καὶ ἀποφάσκει διαβρῆδῳ, ὅτι τὸ Πνεῦμα  
 ἐκπορεύεται ἐκ τῆς Υἱῶς: ὡς ἐν τῇ Πραγματ: τῇ περὶ τῶν Μαρ-  
 τυριῶν τῶν Ἀνατολικῶν Πατέρων σιωεωράκαμεν.

Ἐπειτα δέ: καὶ ὁ Πατὴρ μένει ἐν τῷ Υἱῷ, καὶ ἐν τῷ Πνοῦ-  
 ματι ἐν δὲ τῷ Πνοῦματι μένει καὶ ὁ Υἱός. Καὶ γὰρ ΦΟΥΛ-  
 ΓΕΝΤΙΟΣ, ἐν τῷ περὶ Πίς: Βιβλ: πρὸς Πέτρον, Κεφαλ: Α'.  
 „Ὁλος, φησὶν, ὁ Πατὴρ ἐν τῷ Υἱῷ καὶ ἐν τῷ Ἁγίῳ Πνοῦματι  
 „ἐστίν. ὅλος ὁ Υἱὸς ἐν τῷ Πατρὶ καὶ ἐν τῷ Ἁγίῳ Πνοῦματι  
 „ἐστίν. ὅλον ὡσαύτως τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐν τῷ Πατρὶ καὶ ἐν  
 „τῷ Υἱῷ ἐστίν,,. Εἰ δέ γε τὸ Πνεῦμα ἐκ ἄλλως ἐν τῷ Υἱῷ  
 μένειν ἔχεν, ἢ ὅτι ἐξ αὐτῆς ἐκπορεύοιτο, ἔποιτ' ἂν πάντως μηδὲ  
 τὸν Υἱὸν ἐν τῷ Πνοῦματι τῷ Ἁγίῳ ἀναπύεσθαι ἔχεν, ἢ μέ-  
 νειν, εἰ μὴ καὶ ἐξ αὐτῆς τέττα ὁμοίως ὁ Υἱὸς εἴη ἐκπορεύόμενος  
 ὃ τί ἀτοπώτερον;

Ἴνα δὲ δῆλον γένηται, πῶς ἐκ τῆς Πατρὸς τὸ Πνεῦμα ἐκπορεύομενον ἐν τῷ Υἱῷ μένει, ἔδεν ἀναγκαῖον μεταβάσεις, ἐκ οἷο ὁποίας ἀναπλάττειν, οἷας παρίσῃ τὸ Ἰησεῖτα ἡμῖν ἐπιχείρημα. Διὰ γὰρ τῆτο καὶ ἔστι, καὶ μένει, καὶ ἀναπύεται τὸ Πνεῦμα ἐν τῷ Υἱῷ, ὅτι ὁ Πατήρ ἐκ τε τῆς ὑσίας, καὶ ἐν αὐτῇ τῇ ἰδίᾳ τε καὶ μοναδικῇ ὑσίᾳ τῇ τῆς Υἱῆς, ὡς ἐν ὑποκειμένῳ (ὡς δηλ: ἔχ' ὁ) προώεγκε τὸ Πνεῦμα, Θεόν τε ὄντα καὶ ἑαυτῷ ὁμοῦσιον. (18) Ἐνθεν γὰρ ἐκ τῶ ἄλλως, εἰ μὴ τὸ Πνεῦμα ἐν τῷ Υἱῷ ἐνοικεῖν, καὶ ἐν αὐτῷ μένειν καὶ εἶναι, ἥπερ ἐκ τῆς ὑσίας, καὶ ἐν τῇ ὑσίᾳ ἥτις ἰδίᾳ ἐστὶ καὶ τῆς Υἱῆς, προαχθέν· ἐν μὲν ὃν σὺ Πατρὶ καὶ Υἱῷ κατὰ τὸν τῆς ὑσίας λόγον, διαφέρον δὲ καθ' ὑπόστασιν. Ἐχει ἄρα ὁ Υἱὸς ἐκ τῆς Πατρὸς τὸ ἐν αὐτῷ εἶναι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, καὶ τὸ ἐν αὐτῷ μένειν· καθ' ὅτι γε (ὡς εἴρηται) ἐκ τῆς ὑσίας, καὶ ἐν τῇ αὐτῇ ὑσίᾳ παρήχθη παρὰ τῆς Πατρὸς αὐτῷ ὁμοῦσιον.

Ὁ μὲν ἐν Ἰησεῖτης τῆτο ἀποφάσκων, χαλεπωτάτης τινὸς Αἰρέσεως προΐστασθαι ἔοικεν· ὑποτιθέμενός τι, δηλονότι, τὸν Υἱὸν ἔχειν, ὅπερ ἂν ἀφ' ἑαυτῆς, καὶ μὴ ἐκ τῆς Πατρὸς ἔχων εἴη. Εἴπερ γὰρ τῷ Υἱῷ διὰ τῆς γεννήσεως, μὴ κατὰ τὸ αὐτὸ κοινωνοῖτο σωάμα τῇ ὑσίᾳ καὶ τὸ εἶναι τῆς Πνύματος, ἔχοι ἂν τι δήπερ ὁ Υἱὸς ἀφ' ἑαυτῆς, ὃ μὴ λαβὼν ἔχε παρὰ τῆς Πατρὸς, ἐξ ἧς γεννητὸς ἐστίν· ὅπερ ἄτοπον εἶναι ἔδεν ἀδελον. Ἀπαντες γὰρ οἱ ἀπὸ Χριστοῦ ἀεὶ πεπισθόκασιν, καὶ πισθόμενον τὸν Υἱὸν, πάντα ὅσα ἔχει, ἐκ τῆς Πατρὸς ἔχειν, διὰ τὴν ἐξ ἐκείνης προαιώνιον γέννησιν· ὃ, τε τῆτο ἀποφάσκων, τῆς τῶν ὅσοι Χριστιανοὶ ἀκρίβειαν ἐξεκύμηνε μοίρας, καὶ ἔδεν τῆτο ὀνομάζεσθαι ἄξιός, ἅτε διοσῶς ἔτως ἀρχῶς, καὶ Θεὸς δύω, καὶ τίνα ἐχὶ τερατώδη ἄλλα; ἐμπαρεισάγων. Εἴπερ γάρ τι ὁ Υἱὸς λαβὼν ἐκ ἑαυτοῦ ἐκ τῆς Πατρὸς, κατ' αὐτὸ δὴ τῆτο ἐκ τῆς Πατρὸς ἡκιστα προῆκται. Ἐν γὰρ τῇ Θεότητι, τὸ ἐκ τῆς Πατρὸς τι ἔχειν, ἢ ἀπὸ τῆς Πατρὸς κοινωνεῖν, τὸ προάγεσθαι ἐστὶ παρὰ τῆς Πατρὸς. Ὁ ἄρα Υἱὸς, εἰ τὰ μὲν ἐκ τῆς Πατρὸς ἔχων ἐστὶ, τὰ δὲ ἐκ ἐκ τῆς Πατρὸς πῇ μὲν προῆκται, πῇ δὲ ἐχί· ὅπερ δὴ τῶν ἀδιωάτων ἐστὶ, καὶ ὅλιως βλάσφημον. Ἀ δ' ἂν ὁ Υἱὸς ἀφ' ἑαυτῆς ἔχοι, καὶ ἐκ ἐκ τῆς Πατρὸς

(18) Κατὰ τὴν Σχολαστικὴν πρὸς τερθερίαν, τὸ ἐνταῦθα λεγόμενον πέφρασαι· οἶμαι δ' ὡς ὁ νῆς εἰς ἐκεῖνο φέρει· ὅτι ἐκ τῆς τῆς Θεῆς καὶ Πατρὸς ὑσίας, καὶ ἐν αὐτῇ τῇ Οὐσίᾳ τῆς Υἱῆς καὶ Λόγου, (ἥτις μία τε μοναδικὴ καὶ ἐνιαία ἐπὶ τῆς Τριάδος ἐστὶ) τὸ τῆς Παναγίας Πνύματος Πρόσωπον ἐστὶν ἐκπορεύομενον. Καὶ ἐστὶν ἄρα ἢ τοῖς τρεῖσι κοινῇ λατρευομένη μία Οὐσία ἐν μὲν τῷ Πατρὶ ὡς ὑποκείμενον, ὃ τὸ Πνεῦμα προβάλλει· ἐν δὲ τῷ Υἱῷ, ὡς ἐν ᾧ τὸ Πνεῦμα προβάλλεται. Ἐν δὲ τῷ Πνύματι, ὡς αὐτὸ τὸ παρὰ τῆς Πατρὸς ἐν τῷ Υἱῷ διὰ τῆς Ἐκπορεύσεως προβαλλόμενον.

Πατρός· τέτων δὴπε τῷ λόγῳ αἰτία προκαταρκτικὴ ἂν ὑπάρ-  
χοι, καὶ ἀναρχος· καὶ ταύτῃ γε ἀπρόβλητος ἂν εἴη ὁ Υἱός· (καὶ  
ἐδ' Υἱός.) Καὶ ἐπομένως αἱ Ἀρχαὶ διτλαί· Αἷτια διτλά· Θεοὶ  
δύο. Ἀλλὰ γὰρ παντὸς ὑποδίκης Ἀναθέματος ἐς αὐὰ ἔθετο ἡ  
Καθολικὴ Ἐκκλησία, τὰς διωκὰς τὰς Ἀρχὰς ἐπὶ τῆς Θεότητος  
παρεσάγοντας.

Ψυδὲς δὲ καὶκῆνο· ὅτι τὸ, τὸν Υἱὸν παρὰ τῷ Πατρὶ  
ἔχειν τὸ τῷ Ἀγίῳ Πνεύματος ΕἶΝΑΙ διὰ τῆς γεννήσεως, ὁμο-  
λογηθὲν, ἐντεῦθεν ἔπεται τὸ Πνεῦμα πνεῖσθαι πρὸ τῷ Υἱῷ.  
Καὶ γὰρ δὴ πάντως καὶ ὁ Υἱός, ἐκ τῆς ἰδίας αὐτοῦ γεννήσεως  
ἔχει τὸ ὁμοῦσιον εἶναι τῷ Ἀγίῳ Πνεύματι, ὥς τε τῷ ἴδιον εἶναι  
Πνεῦμα αὐτοῦ. Ἀλλὰ μὴ παρὰ τῷ ἂν ἔψοιτο, πρὸ τῷ Υἱῷ προ-  
βληθὲν εἶναι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον; Ἐχει δὲ προσέτι καὶ ὁ Υἱός  
διὰ τῆς ἰδίας αὐτοῦ γεννήσεως (καθάπερ οἱ Λατῖνοι βέλονται·)  
τὸ Προβλεῦς εἶναι τῷ Ἀγίῳ Πνεύματι· ἀλλὰ μὴ παρὰ τῷ  
ἔψοιτ' ἂν πρὸ τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα εἶναι προβεβλημένον; Παρα-  
πλησίως ἄρα, ἐδὲ παρὰ τὸν Υἱόν, ἐκ τῆς ἰδίας αὐτοῦ γεννή-  
σεως, ἔχειν τὸ ΕἶΝΑΙ τῷ Ἀγίῳ Πνεύματι, ἐντεῦθεν ἔπεται τὸ  
προβεβληθῆναι τὸ Πνεῦμα πρὸ τῷ Υἱῷ. Ἐκατέρωσε γὰρ λόγος  
ἐστὶν ὁ αὐτός· Ἀπόχρη ἄρα, πρὸς τὸ λέγεσθαι ἴδιον τῷ Υἱῷ τὸ  
ΕἶΝΑΙ τῷ Πνεύματι, τὸ σιμάμα τῷ Υἱῷ πρὸ τῶν αἰώνων  
ἀπάντων, τὸ Πνεῦμα ἐκ τῷ Πατρὶ ἐκπορεύεσθαι· καίτοι γε τῷ  
Υἱῷ, ἐπινοία μόνῃ προθεωρημένη πρὸ τῆς τῷ Πνεύματος ὑποστά-  
σεως κατὰ τὸν τῆς αἰτίας λόγον· καὶ ἐχὶ τῷ λόγῳ χρονικῆς τι-  
νος παρατάσεως, ὡς ὁ Νύσαέων φησὶ ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ.

Πρὸς μὲν ἔν ἐμπέδωσιν τῷ κατ' αὐτὸν Σιωπομένῃ τῇ Μείζο-  
νι τῶν Προτάσεων, παχυλῶς πως ὁ Ἰησοῦς, ἠτέτο τὸ ἐν ἀρχῇ.  
Ἦν γὰρ αὐτῷ δαικτέον, μὴ ἄλλως ἐν τῷ Υἱῷ εἶναι τὸ Πνεῦμα,  
εἰμὴ μεταβαῖνον ἀπὸ τῷ Πατρὶ ἐπὶ τὸν Υἱόν. Ὁ δὲ ἐπὶ τῆς  
Ἐλάσσονος προσελάμβανεν, ὅτι τὸ Ἅγ· Πνεῦμα ἐκ μόνῃ τῷ Πα-  
τρὶ πνεόμενον, ἔτως ἔχει· καθάπερ τὸ μεταβαῖνον ἀπὸ τῷ  
ἈΦ' Οὗ ὅρα, (τῷ Πατρὶ δηλ·) ἐπὶ τὸν ὅρον τὸν ΠΡΟΣ ΟὐΝ.  
(Τετέστιν ἐπὶ τὸν Υἱόν.) Ὅποτε δὴ σαφῶς πάνυ περὶ αὐτοῦ τέ-  
τα ἐστὶν ἡ ζήτησις· „Πότερον, τὸ Πνεῦμα ἐκ τῷ Πατρὶ μόνῃ  
ἐκπορεύομενον, ἔτως ἔχει· καθάπερ τὸ μεταβαῖνον ἀπὸ τῷ Πα-  
τρὶ ἐπὶ τὸν Υἱόν,; Τετέστιν ἀπὸ τῷ ἈΦ' ὅρα, ἐπὶ τὸν πρὸς  
ὄν; Ὁ δὲ πρὸς κατασκοπῇ ἀνήκει τῆς πρώτης Ἐλάσσονος· καὶ  
τοὶ ὅλως ἀποφάσκουσιν δίδοσθαι τινα μετάβασιν ἐπὶ τῆς Θεότητος·  
ἐδὲν ἄλλ' ἔν ἔτος ὁ τῷ Ἰησοῦ Προσυλλογισμὸς ἂν σιμάψειν·  
ἐδὲ κατὰ τῷ συμφάσκοντος τὸ Ἅγιον Πνεῦμα μεταχωρεῖν ἀπὸ  
τῷ Πατρὶ ἐπὶ τὸν Υἱόν. Καὶ γὰρ ἐν τοῖς κατὰ φύσιν ἐκῆνο  
κρατῇ· τὸ ἀπὸ τῷ ἈΦ' ὅρα ἐπὶ τὸν πρὸς ὄν, μηδὲν ἔχειν με-

Τόμ· Β'.

Υ υ υ

θίσα-



θίσαθαι, εἰμὶ ἐγκαταλιπὸν ἤδη τὸν ὅρον τὸν ἀφ' ὃ. Ἀλλὰ μὴ γὰρ οἶαί τε, καὶ τῇ ἐπὶ τῆς Τριάδος ἀνερμυδύτῳ Προόδῳ, αἱ κατὰ τὰ ἐν τῇ φύσει ἀρχαὶ προσαρμόζεσθαι; Μιᾶς γὰρ καὶ τῆς αὐτῆς οὐσίας ἕσης Πατρός τε καὶ Υἱὸς καὶ Ἁγίου Πνεύματος, πῶς ἐν αὐτῇ ἀπὸ τοῦ Πατρὸς ἐπὶ τὸν Υἱὸν μεταβαῖνον τὸ Πνεῦμα, τὸν Πατέρα ὅλως ἐγκαταλείψει;

Ἀλλ' ἐπιχειρεῖ Β'. ὁ Ἰησοῦτης: (19) „Ἀδωάτον ἐστὶ τῆς ἐμ-  
„μόνης ἐνεργείας τὸν ὅρον, πρὸς τι ἕτερον περατῆσθαι, παρὰ τὸ  
„ἐξ ὃ προβάλλεται (ἕτος γὰρ ὁ τῆς ἐμμόνης ὀρισμὸς ἐνεργείας  
„καὶν τέτῳ ταύτης ἢ πρὸς τὴν μεταβατικὴν καὶται διαφορά.)  
„Ἀλλ' ἡ πνεύσις ἐνεργεῖα τις τῶν ἐμμόνων ἐστίν. Ἄρα τὸν ταύ-  
„της ὅρον, ὃς ἐστὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἀδωάτον ἐν τινὶ εἶναι,  
„ἐξ ὃ μὴ προβάλλοιτο. Ἐνθεντοὶ καὶ ἀλλάχῃ ἐν τῷ αὐτῷ ἐκ-  
„πονήματι ὁ Ἰησοῦτης ἐπιχειρεῖ: (20) Ὅτι „καθάπερ ἐν τῷ  
„Πατρὶ ἔκ ἂν εἶχε μένειν καὶ ἀναπάυεσθαι (τὸ Πνεῦμα) εἰ μὴ  
„ἐξ αὐτῷ ἐκπορεύοιτο (Ἀδωάτον ὄν, τὸν τῆς ἐμμόνης ζωτικῆς  
„ἐνεργείας ὅρον, πρὸς ἕτερόν τι ὑποκείμενον ζωτικῶς περατῆσθαι,  
„εἰ μὴ ἐν αὐτῷ μένοντα ἐκείνῳ, τῷ ἐξ ὃ προβάλλεται ὡς δῆλον  
„ἐξ Ἐπαγωγῆς τῶν ἐν τῷ ἀνθρώπῳ διανοήσεων καὶ θελήσεων)  
„ἕτως ὅδ' ἐν τῷ Υἱῷ ἀναπάυεσθαι ἂν ἔχοι (τὸ Πνεῦμα) εἰ μὴ  
„ἐξ αὐτῷ ἐκπορεύοιτο. — Ἀλλὰ γὰρ ἀλογώτατα ὁ Ἰησοῦτης  
ἀπὸ γένους εἰς γένος μετέλλεται ἀτόπως δὲ τὰς ἐν αὐτῷ τῷ  
Θεῷ ἐνεργείας, τὰς ὑπὲρ πᾶσαν κατάληψιν ἀνθρωπίνῳ, καὶ  
πᾶσαν τὴν τῶν Φιλοσοφικῶν Ἀξιωματικῶν καθόλου ἔκτασιν ὑπε-  
ρεπαναβεβηκείας, τοῖς ἐν τῇ φύσει ἐνεργήμασι παραβάλλειν θρα-  
σύεται. Αὐτόθεν δ' ἐκδηλον καὶ ὅσον ἀηδῶς ἕτως ὁ Ἰησοῦτης  
σιωπάει. Παραπλησίῳ γὰρ ἂν ἄλλως τῷ λόγῳ ἔψοιτο ἐξ ἀνάγκης  
καὶ τότε, ἕτως ἐπιφερόμενον: „Ἀδωάτον ἐστὶ τὸν τῆς ἐμ-  
„μόνης ἐνεργείας ὅρον, εἰς ἕτερόν τι περατῆσθαι παρὰ τὸ ἐξ ὃ  
„προβάλλεται. Ἀλλ' ἡ τοῦ Υἱὸς γέννησις ἐνεργεῖα τις τῶν ἐμμό-  
νων ἐστίν. Ἄρα ὁ ταύτης ὅρος, ἔκ ἔστιν ἐν ἑτέρῳ, ἐξ ὃ μὴ  
προάγοιτο ἔκ ἔστιν ἄρα ἐν τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι ὁ Υἱός ἢ γέν,  
εἴπερ ἐστὶ, καὶ ἐκ τοῦ Πνεύματος ὁ Υἱός ἄρα προβάλλεται ὅπερ  
ἀδωάτον. Καί περ ἄρα, εἴτε ἡ Πνεύσις, εἴτε ἡ Γέννησις, ἐνεργε-  
γεια τῶν ἐμμόνων ἐστίν ἐπεὶ γεμὴν ἡ ἐνεργεια αὕτη ἐν τῇ Θεῇ  
Οὐσίᾳ, ὡς ἐν ὑποκειμένῳ (ῶ) τελεῖται (21) ἥτις Οὐσία ἰδίᾳ  
ἐστὶ

(19) Ἐνθα ἀνωτέρω εἴρηται, Σελ: 62.

(20) Ἐν τῷ Προσαρτήματι τῷ μετὰ τὸ Βῆμα (Σελίδι 137.) Ἐπιγραφικῶς ἔχοντι: „Ἐλεγχος τοῦ Λιθολόγου. Οὕτω δ' ἀποκαλεῖ ὁ Ἰησοῦτης, τὸν ὑπὸ τῷ Ὄνόματι ΕΥΣΕΒΙΟΥ τοῦ ΠΙΜΗΝΟΣ λαθεῖν ἀξιώσαντα, καὶ τὸ κατὰ Λατίνων Βιβλίον, ὃ ΛΙΘΟΝ ἐπέγραψεν, ἐκφιλοπονήσαντα.

(21) Ὅρα ἀνωτ: Σημείωσις (18).



ἐστὶ τῷ Υἱῷ· ἔκ ἑαυτοῦ δὴ πᾶς ὁ τῆς Πνέουσεως ὅρος, τῆς τῆς, τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, μὴ εἶναι ἐν τῷ Υἱῷ· ὡς ἐντεῦθεν μηδὲν ἐπάναγκες εἶναι τῷ Υἱῷ ἀπονείμει τὴν τῆς Πνέουματος Προβολὴν, ἵνα καὶ ἐν τῷ Υἱῷ ὁ ὅρος ἦ ὁ τῆς Πνέουσεως.

Ἐπιχειρεῖ Γ'. ὁ Ἰησοῦς: (22) „Διὰ δὴ τῆς λέγεται τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐν τῷ Υἱῷ διαμένον, (κατὰ τὰ ῥήματα τῶν Μαθητῶν Ἀνδρέας τῷ Ἀποστόλῃ: (23) „ἵνα γνωσθῇ ἐν Πνεύμα Ἅγιον εἶναι ἐν Πατρὶ καὶ Υἱῷ· καὶ τοσούτον εἶναι τὸν Μονογενῆ Υἱόν, ὅσον ὁ γεννήσας εἶη. Ἀλλ' ἑξέτερον τέτων δηλὸν ἂν γένοιτο, εἰ μὴ ἕτως ἐν τῷ Υἱῷ μένον ὡς τὸ Πνεῦμα, ὥστε μὴ εἶναι ἐν τῷ Πατρὶ. Ὡς δὲ δηλαδὴ ἐκ ἀμφοῖν ἐκπορεύεσθαι, καὶ ἐν ἀμφοτέροις ὡς ὅρος μιᾶς ἐμμόνης ἐνεργείας ἐμμένειν. Ἰν' ἄρα δηλὸν ἦ, ὅπερ εἴρηται, ὑποτίθεσθαι δεόν ἐκ ἀμφοῖν τε ἐκπορεύεσθαι τὸ Πνεῦμα, ἐν ἀμφοῖν τε μένειν. Οὕτω γὰρ ἀληθῶς ἐν Πνεύμα ἐστὶν ἀμφοτέρων· ἐνός τε ὄντος τῆς ἐκ ἀμφοῖν πνεομένης, καὶ αὐτὸ τῆς καὶ Μονογενῆς πεφυκότος, ὅπερ καὶ ὁ Γεννήτωρ ἐστὶν· ὅτι ὃν τρόπον ὁ Γεννήτωρ ἐστὶν ὁ πνέων, ἕτω καὶ ὁ Μονογενής. — Ἀλλὰ ψεύδεις, ὅτι, ἔκ ἂν τὸ αὐτὸ εἶσοιτο Πνεῦμα τὸ ἐν Πατρὶ καὶ ἐν Υἱῷ: ἢ ὅτι, ὁ Υἱὸς ἔκ ἂν εἶη ὅπερ ἐστὶν ὁ Πατήρ, εἰ μὴ ἐκ ἀμφοῖν εἶη τὸ Πνεῦμα ἐκπορεύομενον. Περὶ μὲν ἐν τῷ προτέρῳ, ἐς πλάτος διελέγεσθαι ἐν τῇ Πραγματείᾳ (24) ἐν ἣ ἀπεδείκνυτο, ὅτι τὸ εἶναι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον Πνεῦμα τῷ Υἱῷ, ἑδὲν εἰς πίσιν σωτελεῖ τῆς τῷ Ἁγίῳ Πνέουματος Ἐκπορεύσεως καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ. Ὁ δὲ πρὸς τὸ δεύτερον ἐστὶν ἀνήκον: Πῶς ποτε (πρὸς Θεῶ!) ἔκ ἂν ὁ Υἱὸς εἶη ὅπερ ὁ Πατήρ, εἰ μὴ καὶ ὁ Υἱὸς, παραπλησίως τῷ Πατρὶ, Προβόλεις ὡς τῷ Πνέουματος; Ἔτι καὶ γὰρ τῷ λόγῳ τῆς μιᾶς καὶ τῆς αὐτῆς ἰσχύος, ταύτην ἐστὶν, ὅπερ ὁ Πατήρ, καὶ μὴ παραπλησίως καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκπορεύεται. Προσέτι γὰρ καὶ τῷ λόγῳ τῶν ὑποστατικῶν ἰδιωμάτων, τὸν αὐτὸν εἶναι δεῖν τῷ Πατρὶ τὸν Υἱόν, τίς ἂν φαίη ποτέ; Ἀλλ' ἐκ τῷ Προσώπῳ τῷ Πατρὸς, ἢ Πρόσωπον ἐστὶν, ἐκπορεύεται τὸ Ἅγιον Πνεῦμα: — „Ἀλλ' ἕτω, φησὶν, ἔκ ἂν ἕτως ἔμενεν ἐν τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα, ὡς μένει ἐν τῷ Πατρὶ· μένον γὰρ ἂν εἶη, ἐν μὲν τῷ Πατρὶ, ὡς ἐν αἰτίῳ, ἐν δὲ τῷ Υἱῷ, ἐτέρῳ λόγῳ. — Ἀλλ' ὅλως ἀπόχρη τὸ ἐκ τῷ Πατρὸς προβάλλεσθαι τὸ Πνεῦμα, ἢ ἀληθῶς μένει ἐν ἀμφοτέροις αὐτό. ἕτω γὰρ ἔτι, διὰ μίαν αἰτίαν καὶ τὴν αὐτὴν ἀμφοτέροις μένον ἐστὶ τῆς, διὰ τὸ ἐκπορεύεσθαι ἐκ τῷ

(22) Ἐνθα ἀνωτ. ἔρηται: Ζητήμ: 5. Σελ: 62. 63.

(23) Ὅρα ἐν τῇ Α'. τῶν Πραγματειῶν Σημ: (5).

(24) Ἐστὶ δ' ἡ ΙΑ'. τῶν Πραγματειῶν αὐτῆς.

ἐκ τῆς Πατρὸς. Οὐδὲν δ' ἐπ'ἀνάγκης, τὸ ὡς ἐν τῷ Πατρὶ, ἔτω καὶ τῷ Υἱῷ μένειν ὡς ἐν αἰτίῳ, ἔπερ ἐπίσης ἐν τῷ Υἱῷ μένειν ἔδει ὥπερ ἐν τῷ Πατρὶ. ὁ γὰρ Υἱὸς μένει ἐν τῷ Πατρὶ ὡς ἐν Γεννήτορι. ἔμῳ δὲ κατὰ τὸν αὐτὸν τόνδε λόγον καὶ τῷ Πνεύματι μένων, ἔδεν ἡττον ἀληθῶς μένει καὶ τῷ Πνεύματι καθάπερ ἐν τῷ Πατρὶ. Καὶ τὸ Πνεῦμα δὲ ἐν τῷ Πατρὶ μένει, ὡς ἐν ἀρχῇ αὐτῆς ἀνάρχῳ· ἐν τῷ Υἱῷ δὲ, ὡς ἐν ἀρχῇ τῶν πάντων, τῇ ἐκ τῆς ἀρχῆς. Μήτοι δ' ἄρ' ἐντεῦθεν ἂν ἐπαγάγοις μὴ ἀληθῶς τὸ Πνεῦμα μένειν ἐν τῷ Υἱῷ, καθάπερ ἐστὶ μένον ἐν τῷ Πατρὶ; (25) Οὐκὲν ἔδ' ἔπεται, ὅτι: παρὰ τὸ μένειν τὸ Πνεῦμα, ἐν μὲν τῷ Πατρὶ ὡς Αἰτίῳ, ἐν δὲ τῷ Υἱῷ ἔχ' ὡς Αἰτίῳ· ἐκ ἄρα ἐν τῷ Υἱῷ μένει τὸ Πνεῦμα, ὥπερ ἐν τῷ Πατρὶ· εἰ μὴ κατὰ τὴν ῥηθεῖσαν ἀνάφορὰν τὸ λεγόμενον ἐπισυσείλαιο. Ἔπειτα δὲ, καὶ ἀληθὲς μὲν: ὅτι τὸ ἐκ δυοῖν πνεόμενον, δυοῖν Πνεῦμα ἐστὶ· ψεῦδές μὲντοι τὸ ὑπολαμβάνειν, ὡς ἐκ ἑνὸς τὸ Πνεῦμα Πατρὸς τε καὶ Υἱοῦ Πνεῦμα εἶη, ἐκ τῆς Πατρὸς μόνον πνεόμενον. Τῆτο μὲν ἔνδεα δεῖξαι, καὶ ἐπ'προσῆκε προσλαβεῖσθαι τὸ παρ' ὃ πρόκειται. Ὡσαύτως δέ: καὶ κατὰ τὸδε μὲν, ὡς ἂν ὁ Υἱὸς ὅπερ ἐστὶν ὁ Πατήρ, εἰ καὶ ὁ Υἱὸς ἐτύγχανε κατὰ τὸν Πατέρα πνέων τὸ Πνεῦμα. Ψεῦδές δ' ἔν ὅμως τό: τέττα γε ὑπεξαίρουμένον, μηκέτι ἂν ἔσεσθαι τὸν Υἱὸν, ὅπερ ὁ Πατήρ. Ἀλλὰ περὶ τέττα ἤδη.

Ἰνα δὲ μὴ τόδε δόξῃ, ἴδιον ἑαυτῆς εἶναι ἀνάπλασμα, προκαλεῖται ἡμᾶς ὁ Ἰησοῦτης ἐπ' ἄλλας, τὰς πρὸ πολλῆς τὸ αὐτὸ τῆτο διδάξαντας. Ἀλλὰ τίνες, ἀντιβολῶ, ἔτοι εἰσί; ΠΑΣΧΑΣΙΟΣ ἀμέλει ὁ Ῥαδβέροτος· καὶ ΠΕΡΕΓΡΙΝΟΣ ὁ Λαυρηνακώσιος Ἐπίσκοπος, καὶ ΓΥΓΙΤΜΟΤΗΔΟΣ τελευταῖον Ἐπίσκοπος Αὐερσανός. Ἀλλ' οἷας ποτὲ ἀξιοπιστίας ἐτύγχανον ἔτοι; Πότε δ' ἀκμάσαντες ἐγένοντο; ὁ μὲν Παχάσιος, πρὸ τῆς 906. ἐβίβ' ἀπὸ Χριστοῦ ἔττας· ὁ δὲ Περεγρίνος περὶ τὸ 910. Γυγίτμηνδος δὲ, κατὰ τὴν ΙΑ'. τῶν ἀπὸ τῆς Σωτηρίας Οἰκονομίας Ἐκατονταετηρίδων, μεσῶσαν ἤδη ἐγένετο. Ἀλλὰ γὰρ τίποτε ὑγιὲς ἐλπίσαν ἐξελθὼν παρὰ τῶν ἐκ προλήψεως ἤδη παραπεπεισμένων, ὅτι τὸ Πνεῦμα ἐκπορεύεται καὶ ἐκ τῆς Υἱοῦ; Πηλίκης δ' ἂν εἴη τέττω· ἡ μαρτυρία δωάμεως; Ἐπαγαγεῖν ἡμῖν ὤφειλεν ὁ Ἰησοῦτης Βασίλειον, καὶ Ἀθανάσιον, καὶ τὸν Θεολόγον Γρηγόριον, καὶ τὰς λοιπὰς Πατέρας, τὰς ὑπὸ πάσης κοινῇ τῆς Καθολικῆς Ἐκκλησίας ἐγκρι-

(25) Ἀλλὰ καὶ ὁ Σωτήρ: „Ἐγὼ (Φησὶν) ἐν τῷ Πατρὶ, καὶ ὁ Πατήρ ἐν ἐμοί,“ ὁ μὲν, ὡς ἐν Αἰτίῳ πάντως καὶ Γεννήτορι· ὁ δὲ, ὡς ἐν τῷ ἐξ αὐτῆς Μονογενεῖ. Μὴ γὰρ παρὰ τῆτο ἐκ ἀληθείας ἐξίσῃ ἢ τῶν ὑπερθέων Προσώπων ἀμοιβαία μονὴ καὶ ἐμπειριχώρησις;

ἐγκρινομένων· ἔκην δὲ Λατίνους τινὰς τῆς περιόντας τῷ βίῳ, ἐπειδὴν ἤδη Λατίνων παῖδες, καινῶ τινα σφίσι Θεολογίας τρίτον τεμόντες, τῆς ἐν τῇ Πίσει παλαιᾶς παραδόσεως, καὶ τῶν κατ' ἐκείνῳ φρονημάτων ἀπεσκιρτήκεσαν. Τῷ γὰρ ὄντι, ὅποια τις ἂν ἡμῖν ἢ Διάλεξις γένοιτο, εἴπερ ἡμεῖς μὲν ἐκ τῶν τῆς Φωτίου Διδασκαλῶν, καὶ τῶν τῆς Σισινίου, καὶ Μιχαήλ, καὶ Γερμανῶ, καὶ τῶν ἄλλων· οἱ δὲ Λατίνοι ἐκ τῶν Σεργίου, καὶ Νικολάου, καὶ Λέοντος τῆς Θ'. καὶ τῶν τοιούτων Παπῶν τῆς πάλαι Ῥώμης, τὰ οἰκεία ἐκάτεροι κατασκευάσαι προελοίμεθα;

Πρόεισι δ' ἔν ὃ Ἰησοῦτης: „Καὶ εἰμὴ, φησὶν, οἱ Φωτιανοὶ „τόνδε τὸν νῦν τηρήσωσιν ἐκείνης τῆς ῥήσεως: ὅτι τὸ Πνεῦμα „μένει καὶ ἀναπύεται ἐν τῷ Υἱῷ: ὁδέποτε τὴν τῆς Πνύματος „ἐν τῷ Υἱῷ μονὴν διωήσονται συμβιβάζει, πρὸς τὸ ἐκεῖν, ἀπὸ τῆς „Πατρὸς ἀχώρισόν τε καὶ ἀμετάβητον,“. (Ἀλλὰ τῆτο αὐτοὶ ἤδη διελυσάμεθα, ἔν μάλαγε συμβιβάζσαντες.) Προσέτι τοιγαρῶν: „Ἐτι δὲ, ὁδέποτε ἀναπτύξαι διωήσονται: τίνι λόγῳ τὸ Πνεῦμα „ἔχῃ ἔξωθεν ἐπιγίγνεται τῷ Υἱῷ, ὅδ' ἄλλότριον τέττα ἐστὶ κατὰ „τὴν τῆς Θεοσεσίου Κυρίλλου τῆς Ἀλεξανδρείας φράσιν, εἰ μὴ ἐκ τῆς „Υἱοῦ ἐνδοθεν ἢ, ἀλλ' ἐκ τῆς Πατρὸς αὐτῷ προσγίγνοιτο ἐμπνεό- „μενον,“. — Ἀλλὰ τίνι λόγῳ, ἐκ μόνου ἐκπορεύομενον τῆς Πατρὸς τὸ Πνεῦμα, ἔξωθεν ἂν ἐπιγίγνοιτο τῷ Υἱῷ, ἢ ὀθνεῖον τε καὶ ξένον εἴη αὐτῷ; ὁ Πατὴρ πάντως προβάλλεται τὸ Πνεῦμα ἐκ τῆς ἰδίας ἐσίας, καὶ ἐν τῇ αὐτῆς ἐσίᾳ· ἢ δὲ Οὐσία αὕτη ἀπα- „ραλλάκτως ἰδίᾳ ἐστὶ τῆς Υἱοῦ. Πῶς ἄρα τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῆς Πατρὸς μόνου ἐκπορεύομενον, ἔξωθεν ἂν εἴη ἐπιγινόμενον τῷ Υἱῷ;

Πάλιν δὲ ὁ Ἰησοῦτης ὑποσυνάπτει: „Προσέτι, φάσκων, „ὁδέποτε δείξαι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἔτω πάντῃ τῆς Υἱοῦ εἶναι, „ὥσπερ ἐστὶ τῆς Πατρὸς· εἰμὴ κατὰ τὸν αὐτὸν τρόπον ἀμφοτέρων „εἴη ἢ γῆν: εἴαν ἐν μὲν τῷ Πατρὶ ὑπάρχη ὡς ἐξ αὐτῆς πνεό- „μενον, ἐν δὲ τῷ Υἱῷ, ὡς ἔξωθεν παρ' ἄλλου ἐμπνεόμενον αὐτῷ,“. Περὶ ὧν τέτων τῆς μὲν προτέρου ἐς πλάτος ἤδη ἡμῖν διείληπται ἐν τῇ Πραγματείᾳ ἐν ἣ ἐδέκνυτο: ὅτι τὸ εἶναι τῆς Υἱοῦ τὸ Πνεῦμα, ὁδὲν ὅλως συμβάλλεται πρὸς Ἀπόδειξιν τῆς Ἐκπορεύσεως τῆς Πνύματος καὶ ἐκ τῆς Υἱοῦ. — Ἀλλ' ἔτι, ἐξ ἄλλου ἔχει τὸ Πνεῦμα ὁ Υἱός, φησὶν. — Ἀλλ' ἐξ ἄλλου μὲν τῷ λόγῳ τῆς Προσώπου ἄλλος μὲν γὰρ ὁ Πατὴρ, ἄλλος δὲ ὁ Υἱός· ἔχῃ δ' ἐξ ἄλλου τῷ λόγῳ τῷ τῆς ἐσίας· κατὰ γὰρ ταύτῃ ὁ αὐτὸς ἐστὶ τῷ Πατρὶ ὁ Υἱός. Ἐνθα δ' ἀποφάσκουσιν οἱ Πατέρες τὸν Υἱὸν ἔχειν τὸ Πνεῦμα ἄλλοθεν, ἢτοι ἔξωθεν· ὅπερ ἐστὶ: τὸ εἶναι τὸ Πνεῦμα ἄλλότριον τῆς Υἱοῦ· ἔχῃ τὸ πρῶτον νοῦν, ἀλλὰ τὸ δεύτερον· τετέστι, μη- „δαμῶς κατὰ τὸν τῆς ἐσίας λόγον ὑπολαμβάνοντες ἔξωθεν ἐπι- Τόμ: Β'. Φ Φ Φ γίγνε-

γίγνεσθαι τῷ Υἱῷ ἢ ὁ θνήσκον αὐτῷ εἶναι τε καὶ ξένον· καθ' ὃν δὴ τρόπον ἤδη εἰρήκαμεν.

Ἀλλ' ὁ Ἰησοῦς ἐνέσκηκεν: "Ὅτι κατὰ τὴν ἔννοιαν τὴν ὑπὸ τῶν ἀπομνημονοθέντων Πατέρων, („Νοεῖ δὲ τὸν Παχάσιον, καὶ τὸν Περεγρίνον, καὶ τὸν Γυιτμῆνον,“) προενεχθεῖσαν: „Ῥᾶσα ἀναπτύσσομεν τίνι λόγῳ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐν τῷ Υἱῷ μένει, χωρὶς τῷ ἀπὸ τῷ Πατρὸς μεταβαίνειν ἐπὶ τὸν Υἱόν· ὅτε γὰρ λέγομεν τὸ Πνεῦμα ἐξ ἀμφοῖν ὡς ἐξ ἑνὸς πνέοντος πνεῖσθαι, τότε δὴ ῥαδίως τὸ Πνεῦμα ἐννοεῖται μένον ἐν Πατρὶ καὶ Υἱῷ, καθάπερ καὶ τις νόησις ἐμμένεσα νοεῖται τῷ ἀφ' ἧς προήχθη, καὶ τις δὲ θελήσις τῷ θελήσαντι· ἢ μάλλον ἐν τῇ ψυχῇ τῇ ἀφ' ἧς προενώεσθαι· ῥᾶσα δὲ προσέτι ἀναπτύσσομεν, καὶ ὅπως ἀμφοτέρων ἐν τῷ Πνεύματι ἐστίν, ἥνικα λέγομεν ἐν ἐξ ἀμφοῖν, καὶ τὸ αὐτὸ ἐξ ἀμφοῖν, ὡς ἐξ ἑνὸς πνέοντος πνεῖσθαι. Καὶ τὸν Υἱόν δὲ, ταῦτόν εἶναι ὅπερ ὁ Πατήρ, ἐπειδὴν ἐκ τῆς αὐτῆς αἰτίας τὸν Υἱόν ἐπιγινώσκουμεν, πνέοντα εἶναι· τὸν αὐτὸν τῷ Πατρὶ· ὅτι πάντα, ὅσα ὁ Πατήρ ἔχει, τῷ Υἱῷ ἐστίν· ἢ, ὅτι ἐν ὁ Υἱὸς ἐστὶ σὺν τῷ Πατρὶ,“. — Ἀλλὰ πρῶτον, ἐπειδὴ ἐκ ἄλλης, ἀλλὰ τῆς τρεῖς ἐκείνης ἐκ τῶν πρὸ αὐτῶν γεγονότων ἀπομνημονοσασθαι ἔχεν ὁ Ἰησοῦς, τῆς τὴν τῷ Πνεύματος μονῇ ἔτῳ ἐν τῷ Υἱῷ ἀναπτύξαντας· δηλὸν δὴ πᾶσι τὴν ἀνάπτυξιν ταύτην, ὅθεν, ὅ, τι μὴ πλάσμα τυγχάνειν τῶν προμάχων τῆς τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ Ἐκπορεύσεως. Τὴν δ' ἐπιφορὰν τῆς τοιαύτης ἀναπτύξεως, ἣν ὁ Ἰησοῦς ὑποσυνάπτει, ὡς ἐκ ψευδῶς ὑποτεθέντων ἐπαγομένῳ, ἅτε δὴ ἀτοπίας ὁμοίως καὶ ψευδὲς ἐμπλεων δεόντως ἀποσυρίττωμεν. Πῶς δὲ τὸ Πνεῦμα τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ εἶναι λέγεται· προσέτι δ' ὅπως καὶ πάντα τὰ τῷ Πατρὶ ἔχει ὁ Υἱὸς, ἔτῳ ὥστε μηδαμῶς ἐντεῦθεν ἔπεσθαι ὅτι τὸ Πνεῦμα ἐκπορεύεται καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ, ἐν ταῖς προταχθείσαις ἀποδείκται δυσὶ Πραγματείαις. (26) Τὸ δὲ ἐκ τῷ ἑνῷ εἶναι τὸν Πατέρα καὶ τὸν Υἱόν, τὴν ἐκ τῷ Υἱῷ Ἐκπόρυσιν τῷ Πνεύματος ἐπισυνάγειν πειρᾶσθαι, ὅσης ἐστὶν ἐχόμενον ἀλογίας, ἐν ἄλλοις εἰσόμεθα.

Τελόβτατον (αὐτόθι πρόεισι λέγων:) „Κατὰ ταύτῃ ἀναπτύσσόμενα τὴν ἔννοιαν τὰ ῥήματα ἐκείνα, τῆς Καθολικῆς Ἐκκλησίας ἐμπεδῶσι τὸ Δόγμα. Διὸ καὶ οἱ τέτοις χρώμενοι, (οἱ ἐν πολλοῖς εἰσὶ καὶ ὁ Θεὸς Γερμανὸς, ὁ ἀπὸ Κυρίως Πατριάρχης Κωνσταντινουπόλεως χρηματίσας, ἐν τῇ περὶ τῶν Ἐκκλησιαστικῶν πραγμάτων Μυσικῇ Θεωρίᾳ καὶ Ἀνδρόνικος ὁ „Κομ-

(26) Εἰσὶ δ' ἡ Ι'. καὶ ΙΑ'.



„Κομνιωδς, ὁ ἐξ οἷα τῶν κατὰ τὴν Ἑῶαν Αὐτοκρατορησάντων, ἐν τῷ κατὰ Ἰσδαίων Βιβλίῳ, τῷ ἐν τῷ ΙΔ'. Τόμῳ τῆς Βιβλιοθήκης ἐμφερομένῳ, Κεφαλαίῳ Γ'.) τοῖς ὑπὲρ τῆς Καθολικῆς Ἐκκλησίας μαρτυρίαν κατατιθεμένοις σωμαριθμητέοι εἰσίν.,, — Ἀλλ', ὡς δεδεικται, ἔδεν Λατίνες ὀνίνησι, τὸ λέγεσθαι μένειν τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐν τῷ Τίῳ. Ἀτόπως δὲ καὶ προκαλεῖται ἡμᾶς ὁ Ἰησοῦς ἐπὶ τῆς ἐν τῷ Τίῳ τὸ Πνεῦμα μένειν τε καὶ ἀναπαύεσθαι διδάσκοντας Πατέρας, πρὸς ἐμπέδωσιν τῆς οἰκείας δόξης, ὡς, κατὰ μηδὲν τὸ προσήκον, τῇ κλήσει τῆς Καθολικῆς ἀληθείας ἐπισεμνύει.

Θαυμασὸν μὲν ἔν, ὅτι καὶ Ἀνδρόνικον τὸν Κομνιωδν (27) τὸν πρὸ Ἐκατονταετηρίδων ἔ πάνυ πολλῶν περιόντα τῷ βίῳ, μάρτυρα ἡμῖν ὁ Ἰησοῦς τῆς αὐτῆς δοξασίας παρίσῃσιν, ὡς εἰπόντα: „τὸ Πνεῦμα ἀναπαύεσθαι ἐν τῷ Τίῳ.,, Τί γὰρ ἄλλως ἔχῃ καὶ ἑτέρας πλείονας ἐκ τῶν Ἀρχαιοτέρων προσεπεκαλέσατο, τῆς αὐτοῦ μὲν τῆτο παραδεδωκότας, τὰ δ' ἄλλα τὴν τῆς Ἁγίας Πνεύματος Ἐκπορεύσιν τὴν ἐκ τῆς Τίῃ, ἔδεν τι ἥττον, ἀποσυρίξαντας; Οὕτω γὰρ Μιχαὴλ ὁ Ψελλὸς, (28) ὁ ληγέσης μὲν τῆς ΙΑ'. ἀρχομένης δὲ τῆς ΙΒ'. Ἐκατονταετηρίδος βίῃς, ἐν τῷ Α'. τῶν Θεολογικῶν Κεφαλ: τῶν ἐν Αὐγύσῃ τῇ Οὐινδελίκων ἐκδεδομένων: (29) „Καὶ εἰς Πνεῦμα (φησὶν) Ἅγιον, ἔ γεννώμενον ἐκ τῆς Πατρὸς, ἀλλ' ἐκ τῆς ἐσίας αὐτῆς ἐκπορευόμενον, καὶ

(27) Ἐξ ὧν ὡς φησὶ Ζιγνικάδιος, τὸν Κομνιωδν Ἀνδρόνικον ὑπὸ τῆς Ἰησοῦς ὡς παρρησιεχθίῃαι μάρτυρα, τὸν πρὸ Ἐκατονταετηρίδων ἔ πάνυ πολλῶν γεγονότα, ὑπονοήσας εἶπκε, τὸν τῆς Μιχαὴλ Ἀνδρόνικον τὸν Κομνηνὸν Παλαιολόγον, τὸν ἄχρι τῆς ΙΔ'. προίσης ἑκατοσῶς ἀπὸ Χρυσῆ 1332. ἐν Κωνσταντινουπόλει Βασιλεύοντα. Ἀλλ' ὁ τῆς Ἰησοῦς Κομνιωδς Ἀνδρόνικος, ὁ ἐξ Ἰσαακίῃς Φύς ὑπῆρχε τυχὴν τῆς Σεβαστοκράτορος ὁ περὶ τὴν ΙΒ'. Ἐκατοντάδα λήγσαν (Ἔτα 1183 — 1185.) κακῶς καὶ τῆς Θρόνῳ ἐπίθας, καὶ τὸ ζῆν καταστρέψας. Καὶ θαυμάζειν ἔ χρεῖ, ἐπεὶ καὶ ἄλλοι τῆς Ἀνδρονίκῃς τῆς δὲ σιωέχον ἐν οἷς καὶ Κασσιμῆρος Ὀσδίνος, ἐν τῷ κατ' αὐτὸν τῆς Βελλαερμίνῃς Ἀναπληρώματι, Σελίδι 593. ἔτω γε παραχρονίσας τε καὶ παραπροσωπίσας πρῶτον, τὴν ἀπάτῃ ὕψρον ἐξιάσατο, αὐτὸς ἑαυτὸν ἐπιδιορθέμενος, ἐν τῷ Ὑπομνήματι αὐτῆς τῷ περὶ τῶν Ἐκκλησιαστικῶν Συγγραφ: Τόμ: Β'. Σελ: 1605. θαυμάζειν ἔν μᾶλλον ἄξιον, εἰ τὸν Ἀνδρόνικον τῆτον, τὸν Κομνιωδν δηλονότι Παλαιολόγον, τὸν τῆς Μιχαὴλ, παρρησιώθισεν ὁ Ἰησοῦς, ὡς ὑπὲρ τῆς Λατινικῆς δόξης τὴν μαρτυρίαν κατατιθέμενον: „Ὅποτε ἄλλως τῆτον ἴσμεν πρὸς ἡ Λατίνες ἔ πάνυ εὐμενῶς διακείμενον· ἔς δὴ καὶ (τῆς Καρδινάλεως Ἰωάννου, τῆς ἐν Κωνσταντινουπόλει τῷ Πάπα Λεγαλδούλου, ἐν τῇ τῇ ἐπισυμβάσει ἀναιρεθέντος) τῆς Βασιλεύσεως ἐξήλασεν· ὅρα Γυλλέλλον. Καθεὶν ἐν τοῖς περὶ τῶν Ἐκκλησιασ: Συγγραφ: ἐν Τόμῳ Β'. Σελ: 248.

(28) Ὁ Μιχαὴλ Λέκκα τῆς Αὐτοκράτορος Καθηγητῆς χρηματίσας ὅς ἤκμαζε περὶ τὸ Σωτήρ: Ἔτος 1050.

(29) Ἐπὶ γέγραπται δὲ τὸ Σύγγραμμα: ΔΙΔΑΣΚΑΛΙΑ ΠΑΝΤΟΔΑΠΗ· ἥτις, ἐκ τῆς Δινδεμφογιανῆς Ἀπογράφ, τῆς ἐν τῇ κατὰ τὸ Ἀμβρογιον Βιβλιοθ: τῆς Ἀγ: Ἰωάννου, ὑπὸ Ἰωάν: Ἀλέξετῃς Φάβρικις, (ὡς αὐτὸς φησὶ) Γραικο-Λατινιστὶ ἐκδοθεῖσα φέρεται, μετὰ τὴν Ἀλλατίς περὶ τῶν Ψελλῶν Διατριβῇ ἐν Τόμῳ Ε'. τῆς Γραικῶν Βιβλιοθ: ἐν τέλει τῆς Τόμῃς, Σελ: 70.



„καὶ ἐν Τίῳ (30) ἀναπαυόμενον,, (Ἐν δὲ Κεφαλ: Ι'.) „Ἡ  
 „Ἀγία καὶ Καθολικὴ Ἐκκλησία τὸν Πατέρα δογματίζει Ἀγένη-  
 „τον· τὸν δὲ Τίον Γεννητὸν ἐκ τῆ Πατρὸς· τὸ δὲ Πνεῦμα τὸ  
 „Ἅγιον Ἐκπορεύτῳ ἐκ μόνῃ τῆ Πατρὸς, ἀλλ' ἐχὶ καὶ ἐκ τῆ  
 „Τίῃ,, (Καὶ πάλιν:) „Εἰ γὰρ καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκ  
 „μόνῃ τῆ Πατρὸς ἐκπορεύεται, ἀλλ' ἐ γεννητῶς, ἀλλ' ἐκπορεύτῳ,,  
 (Καὶ ἔτι:) (31) „Τὸ δὲ Πνεῦμα Ἅγιον, καὶ αὐτὸ μὲν ἐκ τῆ  
 „Πατρὸς μόνῃ, ἀλλ' ἐκπορεύτῳ. Ἀμα δὲ, καὶ ἡ τῆ Τίῃ ἐκ τῆ  
 „Πατρὸς Γέννησις, καὶ ἡ τῆ Ἁγίᾳ Πνεύματος Ἐκπόρευσις,, (Τε-  
 τούταῖον δέ:) „Τὸ μὲν τοι Πνεῦμα ἐκ τῆ Πατρὸς Φαμὲν ἐκπο-  
 ρεύεσθαι, δι' Τίῃ δὲ μεταδίδοσθαι,, (32) Ὡς ἐκάντευσθεν εἶναι  
 κατάδηλον, παρὰ χορδῶν τὸν Ἰησοῦν ἡμῖν προκαλεῖσθαι τῆς  
 τὸ Πνεῦμα ἀναπάυεσθαι ἐν τῷ Τίῳ ἐκδιδάξαντας· καὶ μάλιστα  
 εἰ ἐξ ἐκείνων τύχωσιν ὄντες, οἱ περιῆσαν τῷ βίῳ, μεθ' ὃ, διὰ  
 τῆ Σχίσματος αὐτῶν οἱ Λατῖνοι τῆς Ἀνατολικῆς Ἐκκλησίας  
 ἐξεκκυμήναντο.

Οὐδὲν δὲ ἡττον ἀηδὴς ἐστὶ καὶ ἄλλοθι (33) ὁ αὐτὸς Ἰησοῦς  
 τῆς ἐπὶ παραπλησίᾳ τῇ ῥήσει, προκαλέμενος Ἠλίαν τὸν ἐκ  
 Κρήτης, ὡς δῆθεν ἐπιμαρτυρῶντα ὑπὲρ τῆς τῆ Ἁγίᾳ Πνεύματος  
 Ἐκπορεύσεως καὶ ἐκ τῆ Τίῃ. Φάσκει γὰρ ἔγω: „Τῆς δ' αὐτῆς  
 „περὶ τῷ τῆ Ἁγίᾳ Πνεύματος Ἐκπόρευσιν Πίσεως ὑπολαμβάνω  
 „γενέσθαι, ἐπισημοτάτως δύο τῆ ἐν Ἀγίοις Γρηγορίᾳ τῆ Θεολόγῃ  
 „διερμυλωτάς: Νικήτιω Φημι, καὶ Ἠλίαν: τὸν μὲν Ἡρακλείας  
 „Μητροπολίτῳ χρηματίσαντα, τὸν δὲ Κρήτης. — Τὸν μὲν ἔν  
 „Ἠλίαν, καὶ ἐφ' οἷς περὶ τὰ τῆ Ἁγίᾳ Γρηγορίᾳ τῆ Ναζιανζιώ  
 „ὑπομνηματογραφῶν διδάσκει· καὶ ἐφ' οἷς μάλιστα, ἐν τῷ ΚΓ'.  
 „Λόγῳ τῷ πρὸς Ἡρώνα, Ἀριθμ: ΚΗ'. Ἐνθα φησί: Τὸ Πνεῦ-  
 „μα τὸ Ἅγιον, ἐν τῇ ἰδίᾳ μένον ὑποσάσει, ἐδέποτε ἀπὸ τῆ  
 „ἀφ' ἧς πρόεισι χωρίζεται. Κάνταῦθα δῆπερ ὁ Γορδιαῖος δεσμός,  
 „(ὃν

(30) („Τὸ ἐν Τίῳ ἀναπαυόμενον,,) παρὰ Ἀλβέρτῳ Φαβρικ: λείπει ἀναγινώσκειται δ' ἐφεξῆς ἐχομένως: „Παράκλητον ὀνομαζόμενον, ὡς αἱ τῶν ὅλων Παρακλήσεις δε-  
 „χόμενον κατὰ παντός, (ἀναγιν: κατὰ πάντα) ὁμοιον τῷ Πατρὶ καὶ Τίῳ· ἐκ τῆ  
 „Πατρὸς μὲν ἐκπορεύόμενον, δι' Τίῃ δὲ μεταδιδόμενον, καὶ μεταλαμβάνόμενον ὑπὸ  
 „πάσης κτίσεως,,. Προσέκειτο δ' ἔν ἴσως, (καὶ τὸ ἀναπαυόμενον) ἐν τῇ Ἰωάν:  
 τῆ Οὐγγελίᾳ Ἐκδόσει, τῇ ἐν Ἑτεῖ 1611. ἐν Αὐγέστῃ τῇ Οὐινδελίκῳ, καὶ ἰὼ τὰ  
 ἄχρι τῆ ΙΑ'. Κεφαλ: προεληλύθει, τῶν ἀπὸ τῆς καὶ ἐξῆς, ἐς γ' ἐπὶ τὸ ρηγ'.  
 ὑπὸ τῆ ῥηθέντος Φαβρικίᾳ, τὸ πρῶτον (ὡς εἴρηται) ἐκλατινισθέντων καὶ ἐκδοθέν-  
 των ἀπὸ τῆ Λινδεμυρογιανῆ Ἀπογράφῃ, ὅπερ εἰς Κεφάλ: ενζ'. διήρητο.

(31) Ἐν Κεφαλ: ΙΑ'.

(32) Προδίδει δ' ἄν τις ἐνταῦθα, καὶ τὸ ὑπὸ Λέοντος τῆ Δεσπότης Ἀσματογραφεύου,  
 ἐν τῷ ἐπὶ τῆ Ἑσπερινῆ τῆς Πεντηκοστῆς Τροπαρίῳ: Δόξα καὶ Νῦν: ἐν ἧχα Πλ: Δ'.  
 „Τὸ Παράκλητον Πνεῦμα, τὸ ἐκ Πατρὸς ἐκπορεύόμενον, καὶ ἐν Τίῳ ἀναπαυό-  
 „μενον,,.

(33) Κιχώβ: Ἐνθ: ἄνωτ: Σελ: 65.

»(ὃν σωεχῶς ἐπισίβω) τοῖς ἀντιφρονέσι προσίσταται. Ἦτοι γὰρ  
 »τὸ Πνεῦμα ἀπ' αἰῶνος ἐστὶν ἐν τῷ Υἱῷ, ἢ ἔκ ἐστὶ τὸ μὲν ἐν  
 »δοῦτερον ῥηθῆναι ἀπάτης ἀνευ ἑ δώαται. Εἰ δέ γε φαῖεν τὸ  
 »πρῶτον, ζητητέον: πῶς ἔσται τὸ Πνεῦμα ἐν τῷ Υἱῷ; ἢτοι γὰρ  
 »κατὰ μετάβασιν ἀπὸ τῆ Πατρὸς ἐπὶ τὸν Υἱόν· τῆτο δ' ὡς ἡκι-  
 »σα, ὅτι ἀχώρισον τὸ Πνεῦμα, τῆ ἀφ' ἧ ἐκπορεύεται· πῶς ἔν  
 »ἄρα ἐπ' ἐκείνον μεταβαίη, ἐξ ἧπερ ἑδαμῶς ἐκπορεύοιτο· ἢ γέν  
 »ἐν τῷ Υἱῷ εἴη κατὰ γέννησιν· καὶ ἔτως ἐκπορεύοιτο μὲν ἐκ  
 »τῆ Πατρὸς τὸ Πνεῦμα, γεννώτο δ' ἐκ τῆ Υἱῶ, ὅπερ βλάσφημον·  
 »ἢ τέως ἐν τῷ Υἱῷ εἴη, καθάπερ ἐστὶν ἐν τῷ Πατρί· κατὰ  
 »μίαν γε καὶ τὴν αὐτὴν πνεῦσιν. — Καὶ πάλιν δὲ φανερόν  
 »ἐντεῦθεν, ὅσον οἰκτρὰ τὰ τοιαῦτα τῆ Ἰησοῦ διανοήματα, τῆ  
 »ἐπὶ τὸν Κρήτης Ἠλίαν ὁμοίως ἡμᾶς παραπέμποντος. Οὗτος  
 »γὰρ ἀναφανδὸν μεταξὺ τῶν ἄλλων, ἐν τοῖς Σχολιάσμασι τοῖς  
 »εἰς τὸν τῆ Θεολόγου Γρηγορίου Λόγον, τὸν περὶ τῆ Ἀγίας Πνύ-  
 »ματος, ἀπελέγχων τῆς Λατίνου ἀναγινώσκειται, ὅτε δὴ μὴ μό-  
 »νον πέμπεσθαι, ἀλλὰ καὶ ἐκπορεύεσθαι τὸ Πνεῦμα πρεσβόοντα  
 »ἐκ τῆ Υἱῶ, ὡς ἐν τῇ Πραγματείᾳ τῇ περὶ τῶν μαρτυριῶν τῶν  
 »Ἀνατολικῶν Πατέρων, κατὰ τὴν Γ. τῶν Ἑκατονταετηρίδων ἀπο-  
 »δέδεικται. (34) — Τὰ δὲ τῆ Νικήτης, ἐπεὶ μὴ ὧδε ἀνήκει κα-  
 »τωτέρω σωοψόμεθα. Ἀμα δ' ἔν κ' δῆλον ἐντεῦθεν ἡδὴ, τίποτε  
 »ὑποληπτέον περὶ τῆ Γορδιαίας δεσμῆ, ὃν ἡμῖν ἐνταῦθα ὁ Ἰησοῦ  
 »ἔτος ἐγκαταπλέκει ἐκ τῆς τῆ Ἠλίας συγκαταμύσεως. Εὐλύτον  
 »γὰρ εἶναι καὶ μάλα τὸν δεσμὸν τῆτον οἶμαι, ὃν ὑπὲρ Λατίνων  
 »ὁ τοῖς Λατίνοις ἀντιδοξῶν σφίγγειεν. Ὅντως καὶ γὰρ τὸ Ἅγιον  
 »Πνεῦμα ἐστὶν ἐν τῷ Υἱῷ διὰ τὴν ἐκ τῆ Πατρὸς Ἐκπόρυσιν.  
 »Οὐ γὰρ ἔχει ἄλλως εἰμὴ ἐν τῷ Υἱῷ εἶναι, ὡς ἐκ τῆς ἑσίας τῆς  
 »τῆ Πατρὸς, καὶ ἐν αὐτῇ τῇ ἑσίᾳ, καθὰ ἐν ὑποκειμένῳ ἐν τῷ  
 »τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐστὶ προβαλλόμενον. (35) Ἡ γὰρ ἑσία τῆ  
 »Πατρὸς, ἑσία τῆ Υἱῶ ἅμα ἐστὶ. Τῆτον ἔν τὸν λόγον ἐπεὶ πα-  
 »ρέρχεται ὁ Ἰησοῦ, τίς ἑ ξωορά, ὡς κατ' αὐτό γε τῆτο, καὶ πὶ  
 »τὴν τῶν μερῶν, ἢ λόγων ἐξαριθμησιν ἀπολιθαίνει ἐλλιπῶς ἔχ-  
 »σαν; Καὶ ταῦτα μὲν εἰς τόδε: Περὶ τῆ, ὅτι τὸ Πνεῦμα λέ-  
 »γεται μένειν ἐν τῷ Υἱῷ.

§ Γ'.

(34) Ὅρα εἰ βέλει καὶ τὴν ἐκ Σημείωσιν (197).

(35) Ὅρα ἀνωτ: §. Β'. καὶ τὴν Σημ: (18).

Τόμ: Β'.

X X X

## § Γ'.

“Ὅπως οἱ Πατέρες διδάσκουσι, τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῆ  
 σώματος τῆ Θεᾶ ἐκπορεύεσθαι· τὸν δὲ Υἱὸν  
 εἶναι τὸ σῶμα τῆ Θεᾶ.

Ἀντιβάλλουσι δ' οἱ Λατῖνοι καὶ τὸ τῆς Θεωπεσίας Πατέρας διδάσ-  
 κειν, ὅτι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκπορεύεται ἐκ τῆ σώματος  
 τῆ Θεᾶ. Τῶν γὰρ αὐτῶν Πατέρων παραπλησίως καὶ τὸν Υἱὸν  
 εἶναι τὸ σῶμα τῆ Θεᾶ διδασκόντων, πῶς ποτε, φασίν, οἱ Ἀνα-  
 τολικοὶ ἀποφάσκου ἔχον, τὸ καὶ ἐξ Υἱᾶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ-  
 πορεύεσθαι;

Πανταχῆ μὲν εἰς οἱ Πατέρες εἰσι διδάσκοντες ἐκπορεύεσθαι  
 τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκ τῆ σώματος τῆ Θεᾶ· οἷον ὁ, τε Θεὸς  
 Διονύσιος ὁ Ἀρεοπαγίτης, καὶ Βασίλειος, καὶ Ἀθανάσιος, καὶ Φι-  
 λόθεος· ὧν καὶ τὰς ῥήσεις ἀναγνωσόμεθα ἐφεξῆς. Καὶ δὴ ἸΛΛΑ-  
 ΡΙΟΣ μὲν ὁ Πιλάτων, ἐν τῷ Ὑπομνήματι τῷ εἰς τὸν ριή. Ψαλ-  
 μόν: „Στόμα Θεᾶ ἐστίν, ὃς ἐστίν ἡ δυνάμις καὶ ἡ σοφία, καὶ ὁ  
 „τῆ Θεᾶ βραχίων· ὃς καὶ εἰκὼν ὑπάρχει τῆ Θεᾶ· τρεῖςιν ὁ Κύ-  
 „ριος καὶ Θεὸς ἡμῶν Ἰησοῦς Χριστός,,. Ὁ δὲ ΦΙΛΩΝ ὁ Καρπά-  
 θιος (36) ἐν τῷ Ἀσματι τῶν Ἀσμάτων ἐγγυὲς τῆς ἀρχῆς „Στό-  
 „μα τῆ Θεᾶ καὶ Πατρὸς ἐστίν ὁ Υἱός,,. Ὁ δὲ Ἀλεξανδρείας ΚΥ-  
 ΡΙΑΛΟΣ, ἐν τῷ Δ'. Βιβλ: τῶν κατὰ Νεστορίου Τόμ: 5'. Σελ: 110.  
 „Στόμα Θεᾶ καὶ Πατρὸς τὸν ἐξ αὐτῆς φησὶ Λόγον· ἔ τῷ Πνύ-  
 „ματι διακρατεῖται πρὸς ὑπαρξιν τὰ ὑπ' αὐτῆς γεγονότα,,. Καὶ  
 ἈΝΑΣΤΑΣΙΟΣ δὲ ὁ Νικαεὺς (37) Βιβλ: Α'. περὶ τῶν Δογμα-  
 των τῆς Πίσεως: „Πνεῦμα τῆ σώματος αὐτῆς, τρεῖς τῆ Θεᾶ,  
 λέγε-

(36) Τῆτον ὁ Ἱερὸς Ἐπιφάνιος ἀπὸ τῆ τῆς Ἱεροδιακονίας βαθμῆς Ἐπίσκοπον τῆς  
 Νήσου Καρπάθου· ἡ ὡς ἄλλοι πιθανώτερον ἠγῶνται, (Καθεὶς ἐν τῷ Α'. Τόμῳ  
 περὶ τῶν Ἐκκλησιαστικῶν Συγγραφέων, Σελίδι 375.) τῆς ἐν Κύπρῳ Καρπασίας  
 Πέλειος ἐκ ἀσῆμ, προήγαγε, περὶ τὸ 401. Τῆ δὲ εἰς τὸ Ἄσμα Συγγραμματος  
 τῆ Φιλοθέου, καὶ Σειδᾶς ἐν Δεξ: μνείαν ποιᾶται (ὃς καὶ Καρπάθιον ὀνομάζει)  
 καὶ ἔτι, ὁ πολλῶ τῆ Σειδᾶ ἀρχαιότερος Κασσιόδωρος, ὁ κατὰ τὸ 530. ἔτος ἀκμά-  
 σας, (ἐν τῷ Α'. Βιβλ: τῶν Θεῶν Ἀναγνωσμάτων, Κεφ: Ε'.) Ὡς ἐκ ἀκμαστέος  
 ὁ Γάλλος Δεπῖνος, ὁ (ἐν τῇ Καινῇ Βιβλιοθ: τῶν Ἐκκλησιαστικῶν Συγγραφῶν: Τόμ: Β'.  
 Σελ: 302.) νοθεύαν ἀμφοτέροις ἐπεγκαλῶν, καὶ τῷ Συγγραφεῖ, καὶ τῷ Συγγραμ-  
 ματι. (Ὅρα περὶ τέττε Κασσιμῖρον Ὀσδῖνον ἐν Τόμ: Α'. τῆ ἰδίας Ὑπομνήματος,  
 Στήλη 891 — 892.

(37) Πότερον ἔτος ἐστίν ὁ Νικαίας Μητροπολίτης Ἀναστάσιος, ὁ ἐν Ἑτῇ 520. τῇ Ἀνα-  
 φορᾷ τῆς ἐν Κωνσταντινουπόλει Συνόδου, περὶ τῆς χειροτονίας Ἐπιφάνους τῆ Ἐπισ-  
 κόπου καθυπογράφας, καὶ τῇ ἐπὶ Μινοῦ συγκροτηθείσῃ Συνόδῳ παρευριστάς,  
 Ἑτῇ 536. Ὑφ' ἑ τῷ ὀνόματι καὶ τὰ ὑφ'. Ζητήματα, εἴτ' ἐν Ἐρωτήσεσι, ἐν ταῖς  
 τῶν Πατέρων Βιβλιοθήκαις ἐμφέρονται, αἱ ὑπὸ τῶν πλεόνων Ἀναστασίου τῷ Σι-  
 ναίτῃ ἀναγραφόμεναι· ἢ ἕτερός τις παρ' ἐκείνον; Ἐν τοσούτῳ Ἀναστασίῳ ἀριθμῶ,  
 ὁμωνύμων ἀλλήλοις, ἔργον εἰπεῖν. Περὶ δὴ τέττε λεγόντων οἱ κριτικώτεροι.

λέγεται τὸ Ἅγιον Πνεῦμα· σῶμα δὲ ἐστὶν ὁ Μονογενής. Καὶ ταῦτα μὲν ἔστωι.

Οὐκ ἐν μὲν τοιγε οἱ Πατέρες, τὸ εἶναι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγ· Πνεῦμα τῆ σῶματος τῆ Θεᾶ, ὡς λόγον ἔχον ποτὲ τῆς τῆ Ἁγίας Πνύματος καὶ ἐκ τῆ Τίτ' Ἐκπορεύσεως, ὡς δῆλον ἐκ τῶν τῆ Δαμασκίω τῶν (ἐν τῇ περὶ τῆ Τρισαγίας Ἐπιστολῇ, περὶ τὸ τέλος: (38) „Καὶ τὸ Πνεῦμα ἐνυπόστατον ἐκπορεύεται καὶ πρόβλημα· ἐκ Πατρὸς μὲν· Τίτ' δὲ, καὶ ἔτι ἐκ Τίτ'· ὡς Πνεῦμα σῶματος Θεᾶ λόγος ἐξαγγελτικόν. „Ὅπως γὰρ ἂν καὶ ἀναπτύξαις τάδε τὰ ἔχοντα ῥήματα· εἴτε, ὡς τῶν ὁ νῦν, μὴ εἶναι ἐκ τῆ Τίτ' τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ὡς Πνεῦμα ἐκ τῆ σῶματος αὐτῆς προφερόμενον· εἴτε, ὅτι τὸ Πνεῦμα ἐκ μὲν τῆ Πατρὸς ἐκπορεύεται, ἔστι δὲ τῆ Τίτ', ὡς Πνεῦμα τῆ σῶματος αὐτῆς προενωσμένον· εὐδελον δῆλον, ὡς ἐκ τῆς, ἥτοι τὸν Τίτ' σῶμα τυγχάνειν τῆ Πατρὸς ἢ γέν, καὶ ἐκ τῆ σῶματος τῆ Πατρὸς ἐκπορεύεσθαι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ὁδωμῶς ἐπόμενον ἐστὶν ἤδη καὶ ἐκ τῆ Τίτ' αὐτὸ ἐκπορεύεσθαι. Ἀμέλει τοι: οἱ διδάσκοντες Πατέρες, ἐκπορεύεσθαι τὸ Πνεῦμα ἐκ τῆ σῶματος τῆ Θεᾶ, ἐννοῶντες εἰς, κατ' αὐτὸ τῆτο, τὸ Πρόσωπον αὐτὸ τῆ Θεᾶ· ὡς εἶναι τὸν νῦν: ὅτι (τὸ Πνεῦμα ἐκπορεύεται ἐκ τῆς ὑποστάσεως τῆς τῆ Πατρὸς,.) Οὕτω καὶ γὰρ ΒΑΣΙΛΕΙΟΣ ἐν τῷ εἰς τὸν ΛΒ'. Ψαλμὸν αὐτῆς Ὑπομνήματι, Τόμ: Β'. Σελ: 203. (39) „Ὡς ὁ Δημιουργὸς Λόγος ἐξερέωσε τὸν ἄνθρωπον, ἔτω τὸ Πνεῦμα τὸ ἐκ τῆ Θεᾶ, ὃ παρὰ τῆ Πατρὸς ἐκπορεύεται· τέτρεσιν: ὃ ἐκ τῆ σῶματος αὐτῆς· ἵνα μὴ τῶν ἐξωθέν τι, καὶ τῶν κτισμάτων αὐτὸ κρίνης· ἀλλ' ὡς ἐκ Θεᾶ ἔχον τὴν ὑπόστασιν δοξάζης· ἀπάσας τὰς ἐν αὐτῷ δυνάμεις σωεπέφερον. — Καὶ ἔπειτα: „Ἐνθάδε μὲν ἐν Πνεῦμα σῶματος αὐτῆς ἀναγέγραπται· εὐρήσομεν δὲ ἀλλὰ καὶ, καὶ Λόγον σῶματος αὐτῆς εἰρημένον: ἵνα νοηθῇ ὁ Σωτὴρ, καὶ τὸ Ἅγιον αὐτῆς Πνεῦμα, ἐκ τῆ Πατρὸς,.

Ἐτι δὲ καὶ ἈΘΑΝΑΣΙΟΣ ἐν τῷ Α'. Διαλόγῳ τῶν περὶ Τριάδος, ἐν Τόμ: Β'. Σελ: 176. „Ὁ ἈΝΟΜΟΙΟΣ: Καὶ τὸ Πνεῦμα ἐκ τῆς ὑποστάσεως λέγεις; (τῆ Πατρὸς δηλ:) Ὁ ὈΡΘΟΔΟΞΟΣ: Ἐπεὶ πόθεν; . . . Καὶ μετέπειτα ὁ ὈΡΘΟΔ: καὶ ἡμεῖς ἐκ τῆ Θεᾶ ἐγεννήθημεν . . . ἀλλ' ὥστε ἡμεῖς γεννηθέντες ἐκ τῆς ὑποστάσεως τῆ Θεᾶ ἐγεννήθημεν· ἔτω καὶ τὰ ἐκπορεύόμενα Πνύματα ἐκ τῆ Θεᾶ, ἐκ τῆς ὑποστάσεως αὐτῆς εἰς· τὸ δὲ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ἐκ τῆ σῶματος τῆς ὑποστάσεως, . . .

(38) Ἐν τῇ κατὰ Λεκυῖνον Ἐκδόσει, Τόμ: Α'. Σελ: 497.

(39) Ἐν τῇ κατὰ Γαβριήλον Νεωτάτῃ Ἐκδόσει, Τόμ: Α'. Σελ: 135 — 137.



„ως, ἐς τὸ Πνεῦμα. ἈΝΟΜ: Εἰ καὶ ὁ Υἱὸς ἐκ τῆς ὑποστάσεως, καὶ τὸ Πνεῦμα ἐκ τῆς ὑποστάσεως, εἰσὶν Ἀδελφοί; ὉΡΘΟΔ: „Διὰ τῆτο ὁ Υἱὸς ἔ μόνον ἐκ τῆς ὑποστάσεως, Ἀλλὰ καὶ ἐκ γασ-  
 „ρὸς ἄρηται καὶ τὸ Πνεῦμα ἔ μόνον ἐκ τῆς ὑποστάσεως, ἀλλὰ  
 „καὶ Πνεῦμα σώματος ἄρηται. Ἰνα ἡ διαφορὰ, μὴ κατὰ τὸν τῆς  
 „ὑποστάσεως λόγον γένηται, ἀλλὰ κατὰ τὸν ἐκ γασρὸς καὶ σώ-  
 „ματος,.. — Ἐν τέτοις δὴπερ Ἀθανάσιος τὸν Υἱὸν λέγων ἐκ γα-  
 „σρὸς τῆς ὑποστάσεως τῷ Πατρὶ γεννηθῶναι, τὸ Πρόσωπον ἐστὶ  
 „νοῶν τὸ τῷ Πατρί. Ἀλλὰ τὸν αὐτὸν φησὶ τρόπον, τὸν μὲν  
 „Υἱὸν ἐκ τῆς γασρὸς, τὸ δὲ Πνεῦμα ἐκ τῷ σώματος τῆς ὑποστά-  
 „σεως τῷ Θεῷ καὶ Πατρὶ εἶναι. Ἐπὶ δὲ τέτοις καὶ τῷ διαφορῶν  
 „ἔτι, διδάσκει, μὴ κατὰ λόγον εἶναι τὸν τῆς ὑποστάσεως, ἀλλὰ  
 „κατὰ τὸν ἐκ τῆς γασρὸς, καὶ ἐκ τῷ σώματος ἐξ αὐτῆς ἄρα τῆς  
 „τῷ Πατρὶ ὑποστάσεως, καὶ τὸν Υἱὸν καὶ τὸ Πνεῦμα θεολογεῖ, ἐν  
 „οἷς τὸν μὲν Υἱὸν ἐκ τῆς γασρὸς εἶναι λέγει, τὸ δὲ Πνεῦμα ἐκ  
 „τῷ σώματος τῷ Πατρί.

Παραπλησίω δὲ τῷ νοήματι καὶ ὁ Ἀρεοπαγίτης ΔΙΟΝΥΣΙ-  
 ΟΣ, ἐν Ἐπιστολῇ τῇ πρὸς Τίτον: Ἐπὶ τῆς ὑπερσίσ Θεογονίας,  
 „γαστέρα Θεῷ, Θεὸν γεννῶσαν (ἡ περὶ Θεῷ Συμβολικὴ Ἱεροπλά-  
 „στία) ἀναπλάττει καὶ λόγον εἰς ἄερα προχεόμενον, ἀπὸ καρδίας  
 „ἀνδρικῆς ἐξεργασμένης αὐτόν καὶ Πνεῦμα ἐκπνεόμενον ἀπὸ σώ-  
 „ματος ἀναγράφει,.. Δι' ὧν δὴ πάντως ἐν ἐκείνῳ εἶναι τὸ σῶμα  
 „ἐπιγινώσκει, ἐξ ἧς τὸ Πνεῦμα πρόεισιν ἔτινος καὶ ἡ γαστὴρ ὡς ἐξ  
 „ἧς ἐγεννήθη ὁ Υἱός. Ἀναμφισβόλως δὲ διὰ τῆς τῷ Πατρὶ γα-  
 „σέρος, αὐτὸ τὸ Πρόσωπον τὸ τῷ Πατρὶ ἐννοεῖ τὸ αὐτὸ ἄρα ἐν-  
 „νοῶν τυγχάνει, καὶ διὰ τῷ σώματος τῷ Θεῷ καὶ Πατρί. Λέγεται  
 „δ' ἔτι τὸ Πνεῦμα, καὶ Πνεῦμα σώματος Χριστοῦ. Εἴπερ ἔν, ὅτε  
 „λέγεται ἐκ τῷ σώματος τῷ Θεῷ ἐκπορεύεσθαι, διὰ τῷ σώματος  
 „τῷ Θεῷ ἐξ ἀνάγκης Πρόσωπον ἕτερον ἐννοεῖται ἔψεται κἀνταῦ-  
 „θα πάντως καὶ Πρόσωπον ἄλλο τέταρτον ὑποτιθέμεναι δεῖν, ὅπερ  
 „ἂν εἴη σῶμα τῷ Χριστοῦ ὃ δὴπερ ἄτοπον. Ἐπεὶ δ' ἄρα τὰς Προ-  
 „τάσεις ἐκείνας: „Ὁ Υἱὸς ἐστὶ σῶμα τῷ Θεῷ τὸ Πνεῦμα ἐκ τῷ  
 „σώματος ἐκπορεύεται τῷ Πατρί, : ἀπὸ τῶν Πατέρων παρελάβο-  
 „μεν, τῶν ἐν μιᾷ καὶ τῇ αὐτῇ ἐφερμιωθῆσιν ἡκιστα συμφωνούν-  
 „των τῶν μὲν ὑπὸ τῷ Θεῷ σώματι αὐτὸ τὸ Πρόσωπον τῷ Πα-  
 „τρὶ, τῶν δὲ τὸν Υἱὸν ἐκδεχομένων: Φανερόν ὡς ἔδεν ἐντεῦθεν  
 „οἱ Λατῖνοι, σεβρόν τε δυνάμει συμπερᾶναι καὶ πάγιον. Εἰ γὰρ τῷ  
 „ἐπιχειρήματι τῷ δε χρησάμε: Ἐκ τῷ σώματος τῷ Θεῷ καὶ Πα-  
 „τρὶ ἐκπορεύεται τὸ Πνεῦμα: ὁ δὲ Υἱὸς τὸ σῶμα ἐστὶ τῷ Θεῷ  
 „ὡς δ' ἐπὶ τῆς Μείζονος Προτάσεως σῶμα Θεῷ νοήσαις τὸ Πρό-  
 „σωπον τὸ τῷ Πατρί καθάπερ αὐτὸ νενοήκασιν, καὶ Διονύσιος,  
 „καὶ Ἀθανάσιος, καὶ Βασίλειος, ψεύδης πάντως ἡ Ἐλάσων ἔσαι  
 „ἔ γάρ



ὁ γὰρ ὁ Υἱὸς τὸ Πρόσωπον ἐστὶ τὸ τῷ Πατρὶ. Ἐὰν ἔν ἐπὶ τῆς Μείζονος ὑπὸ τῷ ὀνόματι τῷ σώματος τὸν Υἱὸν ἐννοήσῃς, τῆς Ἐλάσσονος ὁμολογηθείσης κατὰ τὸν Ἰλάριον, καὶ τὸν Φίλωνα, καὶ Κύριλλον, καὶ Ἀναστάσιον, ψευδῆς ἡ Μείζων Πρότασις. Καὶ τέτρα δὴ χάριν τῶν Πατέρων, οἱ μὲν φάσκοντες σῶμα εἶναι τῷ Θεῷ τὸν Υἱὸν, ἔδὲ ποτε κατὰ τόνδε τὸν νῦν φασίν, ἐκ τῷ σώματος τῷ Θεῷ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκπορεύεσθαι· οἱ δὲ φάσκοντες ἐκ τῷ σώματος τῷ Θεῷ, τεττέσιν ἐξ αὐτῆς τῆς ὑποστάσεως τῷ Πατρὶ, ἐκπορεύεσθαι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ἔδὲ ποτε κατὰ τὴν δὲ τὴν ἐννοίαν· εἶπον, τὸν εἶναι σῶμα Θεῷ.

Ἀλλ' ἐνίσταται ὁ τοσαύτης ἀπομνημονεύθεις Ἰησαΐτης (40) ὅτι ὁ Θεὸς Φιλόθεος (41) ὁ Κωνσταντινουπόλεως Πατριάρχης, ἐν ταῖς Ἐσπεριναῖς Ἐυχαῖς ταῖς εἰς τὴν Ἑορτὴν τῆς Πεντηκοστῆς, ἐν τοῖς, Σλαβωνικοῖς Βιβλίοις ἔτως ἐστὶ φθεγγόμενος: „Πνεῦμα τῆς ἀληθείας, Πνεῦμα ἡγεμονικὸν τὸ ἐκ τῆς τῷ Πατρὶ ὑποστάσεως, καὶ ἐκ τῷ Θεῷ αὐτῷ σώματος ὁμοπροσώπως (42) (σιωυποσατικῶς) „κῶς)

(40) Κιχώσιος Ζητήμ: 5. Σελ: 61.

(41) Ὁ Φιλόθεος ἔτος ὁ τέττακτω Κόκκινος λῶ· ὁ πρῶτον μὲν ἐν τῇ κατὰ τὸ Σίναιον Μονῇ διατρίψας, εἶτα δὲ τῆς ἐν τῷ Ἀθωνι Λαύρας ἡγιστάμενος, ἐκεῖθεν δὲ Ἡρακλείας Μητροπολίτης προχειρίθεις, καὶ τελευταῖον ἐπὶ τὸν Κωνσταντινουπόλεως ἀρθεὶς Θερόν· ἑκατοστὸς εἰκοστὸς πρῶτος τῶν ἐν Κωνσταντινουπόλει Πατριαρχουσάντων ἀριθμύμενος, κατὰ Ὀνέφριον, παρὰ Ἰακώβῳ τῷ Γόαρ, ἐν τῷ Μεγάλῳ Εὐχολογίῳ Σελ: 9. Σημ (3)· μετὰ δὲ τὴν Πατριαρχίαν, ἐν ἐνιαυτοῖς πέντε ἐπὶ δέκα διέπων ἐγένετο, περὶ τὸ 1371 Σωτήριον ἔτος ἐκδημήσας πρὸς Κύριον: „Ἀνὴρ βίῳ τε καὶ λόγῳ τοῖς ἐρῶσιν ἀξιοχρεῶς ὢν πρὸς αἰδῶ, ὡς περὶ αὐτῷ γράφων ὁ Καντακζηνὸς μαρτυρεῖ, Ἰσορ: Βιβλ: Δ'. Κεφ: ΛΒ'. Σιωέγραψε δὲ ποικίλα, ὧν ἐυρήσεις τὸν Κατάλογον, παρὰ τε Ἐβρίκῳ Οὐάριον, καὶ Ῥοβέρτῳ Γερίῳ, ἐν τῷ Προσαρτήματι τῆς περὶ τῶν Ἐκκλησιαστικῶν Συγγραφέων Ἰσορίας Γυλλέλμου τῷ Καβέσ, ἐν Τόχῳ Β'. Σελ: 68 69. 70.

(42) Ἐμοὶ γὰρ τὸ („ὁμοπροσώπως, τεττο γε) ἢ καὶ („σιωυποσατικῶς,) τὸ Ῥωσιτὶ παρ' αὐτῷ τῷ Κιχώσιῳ: Сохростатице: (εἰ μέλλω τάληθες λέγειν) παρέχει πράγματα. Οὐπω γὰρ, εἰσέτι καὶ νῦν, ἔδενες, τὸ „ὁμοπροσώπως, ἢ σιωυποσατικῶς,, ἐπὶ τῆς Μακαρίας Τριάδος Θεολογῆντος ἀκήκοα: ὥστε δὴ τὸ „ἐμοσιῶς,, τε καὶ ἐμοφυῶς, καὶ ὁμοδιώμως,, καὶ τὰ τοιαῦτα, ὅροι παρέχει. Οἶδα δ' αὐτοῖς, καὶ διὰ τῆς ὁρθῆς ὁμολογίας πισθεῖν ἐπαγγέλλομαι: τὴν μὲν ἐσῖαν καὶ φύσιν ἐπὶ Θεῷ ἐνέσθαι καὶ ταυτίζεσθαι, μίαν τε καὶ μοναδικῶς ὑπάρχουσαν· τὰ δὲ Πρόσωπα ἀπ' ἀλλήλων διαιρεῖσθαι, ἥτοι τὰς τριστὰς ὑποστάσεις, ἥπερ ὑποστάσεις εἰσὶ: διακρίνεσθαι καὶ μερίζεσθαι. Καὶ ἐπὶ μὲν τῆς κατὰ τὴν ἐνανθρωπήσιν οἰκονομίας· τό: „ὁμοπροσώπως,, τε καὶ „σιωυποσατικῶς,, (δεδοῶθα γὰρ καὶ ἔτω λέγειν: ἢ μᾶλλον, τὸ „μονοπροσώπως καὶ μονοὑπόστατος,, προσκυνηθῆναι τὸν ἐνανθρωπήσαντα Θεὸν Λόγον ἐδιδάχθην. Ἐνθα δὲ περὶ τῶν ἀποβήτων τε καὶ ὑπερφῶν Προόδων ὁ λόγος, τὴν „ὁμοπροσωπίαν, ἢ συμπροσωπίαν καὶ σιωυπόσασιν,, κηρύττειν· ἢ, καὶ εἰ ἔτω βέλει: τὴν εἰς ταῦτ' „σιωυμπῶσιν,, τῶν δύο τῆς Θεαρχικῆς Τριάδος Προσώπων εἰς ἓν, πρὸς τὴν ἑνὸς καὶ τῷ αὐτῷ Προσώπῳ Προβολὴν καὶ Ἐκπόρευσιν, τεττο δὴ τῆς τῷ Ἰησαΐτῃ Κιχώσιῳ, καὶ τῶν ὁμοδοξόντων αὐτῷ Θεολογίας ἡγῆμαι φερόντα εἶναι ἄξιον Ὡς ἐξεταστέον μοι δοκεῖ, καὶ τὸ Ῥωσιτὶ προενηχθὲν ἐκείνο: (Сохростатице) εἰ ἔτως ἔχει τῷ ἔντι τὴν σημασίαν· καὶ ἔπερ ἀληθῶς αὐτὸ ἐκ τῷ Ἑλληνικῷ Ἐπιβήματος, („ὁμοπροσώπως ἢ σιωυποσατικῶς,,) μετενιψέεται. Ἐγὼ γὰρ καὶ μάλα ἐπισκεψάμενος, ἔδὲν τοῖσιν, ἐν τοῖς Ἑλλήσι φερομένοις τῷ Φιλοθέῳ (ὡς φησὶν ὁ Ἰσαΐτης) Εὐχολογίῳις κατέληφα.

Τόμ: Β'.

Ψ Ψ Ψ

„κῶς) πνεόμενον. Ἐνθα διὰ τῆς σόματος τῆς Θεᾶς ὡσαύτως, ὡς παρὰ τῷ Θεῷ Ἀνασσίῳ, καὶ τοῖς ἄλλοις τοῖς ἀνωτέρω, ἀπομνημονοῦσθαι Πατράσι τὸν Υἱὸν νοεῖσθαι καλὰ δὲ ἔστιν. — Ἀλλὰ δεδοθῶ τῶν Πατέρων τινὰς, ἀντὶ τῆς σόματος τῆς Θεᾶς νενοηκότας γενέσθαι τὸν Υἱόν· ἔτι πάλιν ἕτεροι διὰ τῆς σόματος τῆς Θεᾶς νενοήκασιν τὸ Πρόσωπον τῆς Πατρὸς; οἷον Διονυσίος τε καὶ Ἀθανάσιος, καὶ Βασίλειος, καθάπερ εἶδομεν; Ἐξ ἑδεμιάς ἄρα ἀνάγκης ὁ Ἰησοῦς ἐξείληφε τὸν Φιλόθεον κατὰ τὴν προτέραν τῶν ἐννοιῶν εἰρηκέναι „ἐκ τῆς σόματος τῆς Πατρὸς τὸ „Πνεῦμα πνεῖσθαι τὸ Ἅγιον. Μάλιστα δέ: ἐπειδὴ τῶν Πατέρων, οἱ μὲν εἰς σόμα τῆς Θεᾶς τὸν Υἱὸν μεταλαβόντες, ἑδάμῃ (ὡς εἴρηται) φαίνονται παραδεδωκότες ἐκπορεύεσθαι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ σόματος τῆς Θεᾶς· οἱ δὲ ἐκ τῆς σόματος ἐκπορεύεσθαι τὸ Πνεῦμα διδάξαντες, ἀντὶ τῆς σόματος τῆς Θεᾶς τὸ Πρόσωπον ἐξελαβόν τὸ τῆς Πατρὸς· ἐνταῦθα δὲ ὁ Φιλόθεος μετὰ τῶν ὑσέρων ἐκ τῆς σόματος τῆς Πατρὸς ἐκπορεύεσθαι φησὶ τὸ Πνεῦμα· δῆλον, ὡς μᾶλλον κατὰ τὸν νῦν τῶν ὑσέρων τῶν δε Πατέρων, περὶ τῆς Προσώπου τῆς Πατρὸς, ἐρμιωδύτεον καὶ τὸ ὑπὸ τῆς Φιλοθέου λεγόμενον. (43) Ἀλλ' ἴωμεν δὴ περαιτέρω.

## § Δ'.

Ὅπως ἐκδιδάσκουσιν οἱ Πατέρες, ὅτι τὸ Πνεῦμα Ὁμοόσιον ἐστὶ τῷ Υἱῷ.

Ὅνπερ ἐν τρόπον Λατίνοις σωήθεις ἐστὶ, πάντα, (ὅσα καθ' οἶαν· διήποτε τῷ τυχεῖσαν χροιάν ἔλκεσθ' ἂν ἔχοι) πρὸς ἀπόδειξιν ἐπάγειν τῆς τῆς Ἁγίας Πνεύματος ἐκ τῆς Υἱᾶς Ἐκπορεύσεως, ἔτω δὴ πάντως ἀτοπώτατα προτείνουσι τοῖς Ἀνατολικοῖς κἀκείνοι: ὅτι τὸ Πνεῦμα ὁμοόσιον ἐστὶ τῷ Υἱῷ, οἷον ἐπιχέρημα δῆθεν καὶ τῆτο προτείνοντες, δι' ἃ ἢ τῆς Πνεύματος ἐκ τῆς Υἱᾶς διαπιστῆται Πρόοδος. — Ἀλλὰ πῶς γὰρ (πρὸς Θεᾶ!) τῶν Πατέρων ὁμοόσιον τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα ἐκδιδασκόντων, ὁ νῦν ἂν εἴη, ὅτι καὶ ἐκ τῆς

(43) Μεταφορικώτερον οἱ Λατῖνοι φασὶν, ἐκ τῆς Υἱᾶς προεῖναι τὸ Πνεῦμα εἰρηθῆαι, ὡς οἷον τὸ ἄσθμα, τὸ ἐκ τῆς ἡμετέρας σόματος προεῖναι, τὸ δὲ ἐκ τῆς ἄλλης συγχωρήσειε τις, εἰ μὴ περὶ τῶν χαρισμάτων, καὶ τῆς ἐγγύχονος Ἀποστολῆς καὶ ἐνεργείας τῆς Πνεύματος εἴη λόγος. Οἱ γὰρ ἐκ τῶν Πατέρων ἔτω φθελγόμενοι, ἐπὶ τῷ τῆς Ψαλμῆ ἐκείνο εἰκάσιν ἀπιδεῖν: „Τῷ λόγῳ Κυρίου οἱ ἑταῖροι ἐξερεώθησαν, καὶ „τῷ Πνεύματι τῆς σόματος αὐτῆς, κτ: Ἐνθα περὶ τῶν ἐκτὸς τῆς Θεᾶς, ἐν χρόνῳ περαιομένων ἐνεργημάτων, καὶ ἔτι περὶ τῆς ἀπ' αἰῶνος Προόδου, νοεῖν ἐπ' ἀνάγκης τὸ λεγόμενον, περὶ ἧς τότε νοεῖσθαι, ἐκ τῶν ποτε οἱ Λατῖνοι δέξαι διωθήσονται: (ὡς ὁ Θεοφάνης Προκοπὸς: ἐν Κεφ: ΙΖ'. § 296. τῆς περὶ Ἐκπορεύσεως Συγγράμματος: εἴρησε.)

τῷ Τίῳ αὐτὸ ἐκπορεύεται; ὁπότε πανταχῶ, ἐνθα ἂν αὐτοὶ τῷ Τίῳ λέγοιεν ὁμοῦσιον εἶναι τὸ Πνεῦμα, τῷ τῷ Πνεύματος Ἐκπορεύσιν ἐπὶ τὸν Πατέρα, καὶ ἔτι ἐπὶ τὸν Υἱὸν, δῆλοι εἰσὶν ἀναφέροντες; Οὕτως ὁ ΚΥΡΙΑΛΟΣ ἐν τῷ εἰς τὸν Λακᾶν Ὑπομνήματι: (44) „Καθάπερ ὁ δάκτυλος ἐξήρτηται τῆς χειρὸς, ὡς μὴ ἀλλότριος αὐτῆς, καὶ φύσει ἐν αὐτῇ ὦν ἔτω καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, τῷ λόγῳ τῆς ὁμοουσιότητος, σωῆπται καὶ ἡνωται τῷ Τίῳ, εἰ καὶ ἐκ τῷ Θεῷ καὶ Πατρὸς ἐκπορεύεται,„ Καὶ ἐν τῇ Ἐκθέσει δὲ τῇ ἐν Νικαίᾳ Συμβόλῃ, πρόγε τῇ τέλει: (45) „Τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ὁμοῦσιον ἐστὶν αὐτοῖς (Πατρὶ καὶ Τίῳ.) Καὶ προχέεται μὲν, ἡγὼν ἐκπορεύεται καθάπερ ἀπὸ πηγῆς τῷ Θεῷ καὶ Πατρὸς, χορηγεῖται δὲ τῇ κτίσει διὰ τῷ Τίῳ,„ Καὶ ἐν τῷ περὶ τῆς Ὁρθῆς δὲ Πίσεως Βιβλίῳ πρὸς τὰς Βασιλίδας: (46) „Πισθόμεν δὲ ὁμοίως καὶ εἰς τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ἐκ ἀλλότριον αὐτὸ τῆς Θείας φύσεως καταλογιζόμενον καὶ γὰρ ἐστὶν ἐκ Πατρὸς φυσικῶς, προχέμενον δι' Τίῳ τῇ κτίσει νοεῖται γὰρ ἔτω μία τε καὶ ὁμοῦσιος, καὶ ἐν ταυτότητι δόξης ἡ Ἁγία καὶ προσκυωμένη Τριάς,„ Καὶ αὐτῇ δὲ ἡ Οἰκουμενικῇ Σύνοδος, ἡ ἐν Νικαίᾳ Α' ἐν Β' Βιβλ: τῶν Πρακτικῶν τῆς ἐν Νικ: Συνόδ: ΓΕΛΑΣΙΟΥ τῷ Κυρίῳ, Κεφαλ: ΚΒ'. (47) „Καὶ τὸ Πνεῦμα δὲ τὸ Ἅγιον, ὅτι ἐξ αὐτῷ λαμβάνομεν ἅπαντες οἱ πιστοί, τῆς αὐτῆς ὄν ἐσίας, ἧς ὁ Πατὴρ καὶ ὁ Υἱός ἐκπορευόμενον μὲν ἐκ τῷ Πατρὸς, ἴδιον δὲ ὃν τῷ Τίῳ, καθάπερ ράνωλέρω ἀπεδείξαμεν,„ Ἀμελεῖ τοί γὰρ τὸ εἶναι ὍΜΟΟΥΣΙΟΝ ἑδέν τι ἕτερον πάντως σημαίνει, εἰμὴ τὸ τῆς αὐτῆς πεφυκέναι ἐσίας ἥτοι τὸ ἐσίαν ἔχειν μίαν καὶ τῷ αὐτῷ, ὡς ἐξ ἀναριθμητῶν Πατέρων, τινὰς μόνον ὧδε καταλέξομεν.

ἸΛΑΡΙΟΣ γὰρ ὁ Πικτάβων, ἐν τῷ περὶ τῶν Συνόδων Βιβλ: κατὰ τῶν Ἀρειανῶν, τὰ ῥήματα τῇ ἐν Νικαίᾳ Συμβόλῃ ἐκεῖνα: („Ὁμοῦσιος τῷ Πατρὶ,„) Ἑρμηνεύει: („Μιᾶς ὦν ἐσίας σὺ τῷ Πατρὶ,„)

Οὕτω

(44) Τὸ εἰς τὸν Λακᾶν τῷ Κυρίῳ Ὑπόμνημα, ἐν οἷς ἀπώλετο Συγγραμ: τῷ Κυρίῳ καταλέγει Ἀλξερτ: Φαβρίκ: ἐν Τόμῳ: Η'. Σελ: 591. τῆς Ἑλλῶν: Βιβλιοθ: Φησὶ δ' ἔτι τότε τὸ Ὑπόμνημα σιωπῶς ἀνακαλεῖται ἐν τῇ Κορδερίᾳ Σειρᾷ τῶν Γραμ: Πατέρ: τῇ ἐν Ἀντσερπ: τυπωθείσῃ μόνον Λατινισί, ὡς δὴ καὶ τῷ ἡμετ: Συγγραφέῃ Ζοιρνικᾷ: σεσημείωται, ἐν τῇ Α'. τῶν Πραγματ: Ἐκάλοντάδι Ε'. ἐνθα αἱ παρὰ τῷ Θεασεσίᾳ Κυρίῳ μαρτυρίαι προβάλλονται. Ἀνακαλεῖται δὲ τὸ εἰρημένον τῷ Κυρίῳ εἰς τὸν Λακᾶν ὑπόμνημα, καὶ τῇ χρυσῇ ἐπιγραφομένῃ Σειρᾷ Ὡμῶν τῷ Ἀκωάτῃ.

(45) Ἐν τῷ Ε'. Τόμῳ: τῶν Συγγραμ: Μέρει Β'. Σελ: 190.

(46) Ἐν τῷ Ε'. Τόμῳ: Μέρει Β'. Σελ: 44.

(47) Παρὰ Ἀρδανῶν ἐν τῷ Α'. Τόμῳ: τῶν Συνόδων: Στήλῃ 416.

Οὕτω καὶ ἈΘΑΝΑΣΙΟΣ, διὰ τῆτο τὸν Υἱὸν ὁμοῦσιον εἶναι τῷ Πατρὶ λέγει, ὅτι πάντα ἔχει τὰ τῷ Πατρὶ. Πάντα δηλαδὴ ὅσα τῇ Θεῇ ἑσὶα πρόσεσιν· ἢ καὶ προσιθεὶς κατὰ τὸν δε, Φησὶ, τὸν νῦν τῆς ἐν Νικαίᾳ Πατέρας ὡμολογηκέναι τὸν Υἱὸν εἶναι τῷ Πατρὶ ὁμοῦσιον. Οὕτω γὰρ ἐν τῇ πρὸς Σεραπίωνα Ἐπιστολῇ, κατὰ τῶν λεγόντων εἶναι κτίσμα τὸν Υἱόν. Σελ: 169. ἐν Τόμ: Α'. „Πάντα δὲ τὰ τῷ Πατρὶ, τῷ Υἱῷ ἐσὶν, ὅτι ὁμοῦσιος ἂν εἴη ὁ Υἱὸς τῷ Πατρὶ. Ὡς περ γὰρ, εἰ τῶν κτισμάτων τινὰ ἔχεν ὁμοιότητα, καὶ πρὸς αὐτά τινά ἔχε συγγένειαν, ὁμοῦσιος ἂν αὐτοῖς ᾤετο· ἔτις αὐτοῖς μὲν ὢν κατ' ἑστίαν τῶν γεννητῶν, ἴδιος δὲ τῷ Πατρὶ Λόγος, καὶ ἄλλος ὢν ἔτος ἐκείνων· ἐπεὶ δὲ καὶ αὐτὸς ἐσὶν ἴδια πάντα (τὰ) τῷ Πατρὶ, ὁμοῦσιος εἰκότως ἂν εἴη τῷ Πατρὶ. Οὕτω γὰρ καὶ οἱ Πατέρες νοήσαντες ὡμολόγησαν ἐν τῇ κατὰ Νίκαιαν Συνόδῳ, ὁμοῦσιον, καὶ ἐκ τῆς ἑστίας τῷ Πατρὶ τὸν Υἱόν. Σωεῖδον γὰρ καλῶς, ὅτι κλισὴ ἑστία ἐδέσπορε διῶναι εἰπέν: „πάντα ὅσα ἔχει ὁ Πατήρ ἐμὰ ἐσὶν. Ἀρχὴ γὰρ ἔχουσα τῷ γενέσθαι, ἐκ ἔχει τὸ ὢν, καὶ τὸ ᾧ, αἰδίως. Διὰ τῆτο, ἐπεὶ δὲ ταῦτ' ἔχει ὁ Υἱὸς, καὶ πάντα τὰ προειρημένα περὶ τῷ Πατρὶ, τῷ Υἱῷ ἐσὶν· ἀνάγκη μὴ κτιστὸν εἶναι τὴν ἑστίαν τῷ Υἱῷ, ἀλλ' ὁμοῦσιον τῷ Πατρὶ. Ἀλλως τε, καὶ κατὰ τῆτο ἐκ ἂν εἴη κτιστὴ ἑστία δεκτικὴ τῶν ἰδίων τῷ Θεῷ. Ἰδια δὲ αὐτὸς ἐσὶν, ἐκ ὧν γινώσκεται Θεός· οἶον τὸ, Παντοκράτωρ, τὸ ὢν, τὸ ἀναλλοίωτος, καὶ τὰ ἕτερα τὰ προειρημένα..

Καὶ ΔΙΔΥΜΟΣ δὲ ὁ Ἀλεξανδρεὺς Βιβλ: Α'. περὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος. „Ἐν ἅπασιν δέκνυται τὴν αὐτὴν εἶναι ἐνέργειαν Πατρὶ καὶ Υἱῷ καὶ Ἁγίῳ Πνεύματος. Ὡς δὲ μία ἡ ἐνέργεια, μία καὶ ἡ ἑστία. Τὰ γὰρ ὁμοῦσια, ἐνεργείας ἔχει τὰς αὐτάς.. Τὸ ἄρα ὉΜΟΟΥΣΙΟΝ· τὴν σημαίνει: τὸ ἑστίαν ἔχειν μίαν καὶ τὴν αὐτὴν.

Καὶ ΑΤΓΟΥΣΤΙΝΟΣ δὲ Βιβλ: περὶ τῆς Πίστεως καὶ τῷ Συμβόλῳ, ἐν Κεφ: Θ'. „Τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ ἐλαττονέσθαι τῇ φύσει τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ. Ἀλλ' ἵν' ἔτις εἴπω: Consubstantialis et coæternus: (Σωῦσιον τε καὶ Σωαιώνιον) ὅτι ἡ Τριάς αὕτη Θεὸς εἷς ἐστίν.. — Καὶ ἐν τῇ ΡΟΗ'. Ἐπισ: περὶ τὸ μέτρον: „Τὴν δὴ ποῦ ὑμῖν τὸ τῷ ὁμοῦσις ῥῆμα, νέμεσιν ἐδοξε κινεῖν κατὰ τῆς Καθολικῆς Πίστεως, ἡ μίαν ἀπλῶς τὴν τῷ Θεῷ ἑστίαν πισθῶσα, πρὸς ἁμῶν τῆς τῷ ὁρθῷ Δόγματος ὁμολογίας, τὴν τὸ ῥῆμα παρὰ τῶν Γραικῶν Πατέρων ἐδέξατο.. (Καὶ ἐξῆς:) „Ἰδὲ τί ἐστὶ τὸ ὁμοῦσιον, ὃ ἐκ ἐν δέκνυται πρὸς ὄνειδος τίθεται· ἐ γὰρ τὸ ῥῆμα μόνον, τὸ δὲ πρᾶγμα ἐν τῷ ῥήματι· ἐδ' ἡ φωνὴ μόνη ἢ τοῖς ὡσὶν ἐνηχῶσα, ἀλλ' ἡ τῷ Θεῷ ἑστία ἐκ διανοίας μία πισθῶτέρα ἐστίν. — Ὁμοῦσιος ἄρα ἐρμηνεύεται,

„νύβεται, ὅτι μιᾶς ἐστὶν ἑσίας ὁ Πατήρ, καὶ ὁ Υἱὸς, καὶ τὸ  
 „Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. Καὶ μηδεὶς ἄρα νῦν διαβαλλέτω τὸ ῥῆμα·  
 „εἴ γὰρ καὶ μὴ γέγραπται, ἀλλὰ καθὼς ἐφεξῆς ἔχει, ἢ ἡχεῖ,  
 „ἐμφαίνον ἐστὶ, μὴ δὲ ἄλλῃ τινός, κατὰ δὲ τὴν μίαν τῆς Θεότη-  
 „τος ἑσίαν, ἐν ἣ ὁ Υἱὸς τῷ Πατρὶ διαλέγεται φάσκων: τὰ Σὰ  
 „πάντα ἐμὰ ἐστὶ, καὶ Σὰ τὰ ἐμὰ. — Ταύτῃ τὴν ἰσότητά τῆς  
 „Οὐσίας, ἢ Ἑλλάς φωνῇ διὰ τῆς ὁμοσίης παρίσῃσι. — Τὸ ῥῆμα  
 „(Ὁμοσίον) τὸν μιᾶς τε καὶ τῆς αὐτῆς ὄντα ἑσίας Ἑλλωσιζέ-  
 „σημαίνει, ἐκ ἀφενῇ τινὰ τέτον: ἀλλὰ τὸν Πατέρα, καὶ τὸν  
 „Υἱὸν, καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον.

Εὔταξιος δὲ ὁ Ἀλεξανδρεὺς (48) ἐν ταῖς Συλλογαῖς τῆς  
 Ἀνωρύμης Συγγραφῆς, κατὰ τῶν Σεβηριανῶν ἐν Τόμῳ Δ'. τῶν  
 Κανισίῃς Ἀρχαίων Ἀναγνωσμάτων, Μερὶ Α'. Σελ: 240. „Φα-  
 „μὲν ἐκάστῳ χαρακτηριστικῶς ὑπόσασιν, ἀνελλιπῶς τὰ τῆς Θεό-  
 „τητος ἔχειν γνωρίσματα· οἷον τὸ ἀγαθόν, τὸ δημιουργικόν, καὶ  
 „ὅσα περὶ τὴν ἄκτιστον φύσιν ὑπάρχει· ἔτω γὰρ ὁμοσίον τὴν  
 „Τριάδα φάμεν, ὡς τῆς αὐτῆς ἑσίας ὁλοτελῶς ἐν τρισὶ προσώ-  
 „ποις γνωρίζομένης· καὶ γὰρ ὁ Πατήρ τελείως ἔχει τὴν τῆς  
 „Θεότητος ἑσίαν· ὁμοίως ὁ Υἱός· ὁμοίως τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον.,,

Καὶ ΣΟΥΛΠΗ'ΤΙΟΣ δὲ ὁ Σεβήρος (49) ἐν Βιβλ: Β'. τῆς  
 Ἱερᾶς Ἱστορίας: „Εὐθα τὸ ὉΜΟΟ΄ΥΣΙΟΝ ἐγγράπτο, ὅπερ  
 „ἐστὶ: (μιᾶς καὶ τῆς αὐτῆς Οὐσίας:) ἐκείνοι ὉΜΟΙΟ΄ΥΣΙΟΝ, τε-  
 „ντέσι: (παραπλησίας ἑσίας:) γεγράφθαι ἔφασκον.,,

Καὶ ΓΕΝΝΑΊΔΙΟΣ ὁ Μασσαλιώτης (50) ἐν τῷ περὶ τῶν  
 Ἐκκλησιαστικῶν Δογμάτων Βιβλ: Κεφαλ: Ε'. „Ὁμοσίος ἄρα,  
 „τεντέσι: τῆς αὐτῆς ἑσίας ἐν τῇ Θεότητι ὁ Υἱὸς τῷ Πατρὶ.,,  
 Καὶ

(48) Τότε δὴ μνεία ἐγένετο καὶ ἐν τῇ Α'. τῶν Πραγματειῶν ἐπὶ τῆς Ε'. Ἐκατοντάδος·  
 ἐν Σημ: τῶν ἐκεῖ (30).

(49) Σεβλίτιος Σεβήρος, ὃς μὲν Γάλλος Ἀκυϊτανὸς τὸ γένος, ἀκμάζων δὲ περὶ τὸ 401.  
 ἔτος, Παυλίῳ τε μάλιστα τῷ Νωλάνῳ, καὶ τῷ Ἱερωνύμῳ τῶν σινηθῶν ἐτύγχανεν·  
 ὅς δὲ καὶ Πελαγίαςας μὲν τὴν κακοδοξίαν τὸ πρῶτον, γνωσιμαχίῃσας δὲ ὑπερῶν,  
 καθόλου τὸ ἐξῆς σιγᾶν, διὰ τὸν Παραδογματισμὸν ὃ περιεπεπτῶκει πλημμελή-  
 σας καὶ προέθετο, τῆτι πρόσμον αὐτὸς ἐαυτῷ ἐπιτάξας. Φρονήσας δὲ καὶ τὰ  
 τῶν Χιλιάδων ἔτος λέγεται, ὡς ἰδεῖν ἐστὶ παρὰ Ἱερωνύμῳ, ἐν τῷ εἰς τὸν Ἱερεκίηλ  
 Ὑπομνήματι, Κεφαλ: Α'. Ἐγραψε δὲ πρὸς τοὺς ἄλλοις καὶ Ἱερὸν Ἱστορίαν,  
 ἄλλῃς ἢ τῇ βίῳ αὐτὸς περιῶν, διελθὼν, ἐς ἔτος τὸ ἀπὸ τῆς Σωτηρικῆς Οἰκono-  
 μίας 400.

(50) Γεννάδιος τῷ Ἑθνει Γάλλος, τῆς ἐν Μασσαλία Ἐκκλησίας Πρεσβύτερος χρηματί-  
 σας, ἠκμαζε περὶ τὸ 495. εἰς ὃ, καὶ ὅνπερ ἰὺ συγγραφέων Κατάλογον τῶν Ἐκ-  
 κλησιαστικῶν Συγγραφέων προήγαγεν· ἀφ' ὧν Ἱερωνύμος ἐναρξάμενος ἐφεξῆς τὸν  
 οἰκῶν σωέταξε. Τέτον Ἀδριανὸς μὲν ὁ Πάπας, ἐν Ἐπιστολῇ τῇ πρὸς Κάρολον  
 τὸν Μάγνον ἐκθειάζων, Ἄνδρα τοῖς ἐν Ἀγιότητι διαπρέψασιν ἐναρίθμῳ τίθησι.  
 Τότε τέτινων Πελαγισμὸν κατεγνωκότων, ὑπεραπολογᾶται Καβέος ἐν τῷ Α'.  
 Τούτῃ τῆς Ἱστορίας: Συγγραφ: ἀπάσης Πελαγισμῆς κακοδοξίας  
 αὐτὸν ἀπαλλάξας. Αὐτῇ δὲ τότε τὸ περὶ Πίς: καὶ Δογμάτων: Βιβλίον, ὃ Γελασίῳ  
 Τόμ: Β'. Ω ω ω τῷ



Καὶ ΕΥΓΕΝΙΟΣ ὁ Καρχηδόνος Ἐπίσκοπος (51) ἐν τῇ Ὁμολογίᾳ τῆς Πίσεως, παρὰ Οὐίκτορι τῷ Ὑτίκῃ, ἐν τῷ Β'. Βιβλ: περὶ τῆς Οὐανδαλικῆς διωγμῆς: „Πρῶτον τοίνυν περὶ τῆς „ἐνικίᾳς τῆς ἑσίας Πατρὸς τε καὶ Υἱῆς, ὅπερ οἱ Γραικοὶ „ὁμοόσιον,, „λέγουσι, διαληπτέον εἶναι ἡγάμεθα. — Καὶ ἐφεξῆς: Πρὸς δὲ „τὸ, ταύτῃ τῇ τῆς ἀσεβείας ὁμολογίᾳ, τῇ κατὰ τῆς Πίσεως „προκύψασαν, ἀπελέγξαι τε καὶ τέλειον ἀπαλεῖψαι, τὸ „Ὁμοόσιον,, „κατὰ τὴν Ἑλληνικὴν φωνὴν ἐτέθη· ὅπερ ἐρμηνεύεται: μίας τε „καὶ τῆς αὐτῆς ἑσίας καὶ φύσεως. — Καὶ προσέτι: „Ἀλλ' εἰ „καὶ ἐκ τῆς μηδενὸς ἕκ ἑσιν, ἐκ τῆς Πατρὸς ἀνάμφιστόλως ἐστίν,,

Τελούταϊον δὲ καὶ ὁ ἐκ Δαμασκῆς ἸΩΑΝΝΗΣ, Βιβλ: Α'. περὶ Ὁρθοῶ: Πίσεως Κεφαλ: Γ'. (52) „Διὰ μὲν τῶν τριῶν „ὑποστάσεων, τὸ ἀσώθετον καὶ ἀσύγχυτον· διὰ δὲ τῆς ὁμοούσιᾳ, „καὶ τὸ ἐν ἀλλήλαις εἶναι τὰς ὑποστάσεις, καὶ τῆς ταυτότητος „τῆς θελήματός τε καὶ τῆς ἐνεργείας, καὶ τῆς διωάμεως, καὶ τῆς „ἐξουσίας, καὶ τῆς κινήσεως, ἣν ἔτῳς ἔπω, τὸ ἀδιάρετον, καὶ τὸ „εἶναι ἓνα Θεὸν γνωρίζομεν.

Ἐπειδὴ τοίνυν τὸ „ὁμοόσιον,, τὸ μίας εἶναι φύσεως καὶ ἑσίας σημαίνει, ἢ τὸ ἑσίαν μίαν ἔχειν καὶ τῇ αὐτῇ πῶς ἂν ἔποιτο, ἐκ τῆς ὁμοούσιον τῷ Υἱῷ εἶναι τὸ Πνεῦμα, τὸ καὶ ἐξ αὐτῆς ἐκπορεύεσθαι; Τίνα γὰρ ἂν καὶ λόγον ἔχοι τὸ ἔτῳς ἐπιβάλλειν ἐπιχειρεῖν; Τὸ Ἅγιον Πνεῦμα μίαν ἔχει ἑσίαν σὺν τῷ Υἱῷ: ἕκῃ καὶ ἐκπορεύεται ἐκ τῆς Υἱῆς; Μὴ γὰρ θάτερον τῶν ὁμοούσιων κατὰ πᾶσαν ἀνάγκην παρήγαγε θάτερον; Καὶ ἄνθρωποι γὰρ, καὶ Ἄγγελοι, τῆς αὐτῆς μετέχουσιν ἑσίας· μὴ δ' ἄρα παρὰ τῆς καὶ Ἄγγελος παρήγαγεν Ἄγγελον; ἢ ὁ Πέτρος, Φέρε, τὸν Παῦλον; Ἀλλ' ἔτι δὴ καὶ τὰ τῆς Δαμασκηνῆς τρανώτατα ἐστίν, ἐν τῷ Γ'. Βιβλ: τῶν περὶ Ὁρθοῶ: Πίς: Κεφ: Γ'. (53) „Κατὰ „μὲν τῇ Θεότητι, τῇ τε Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ (ὁμοόσιος ἐστίν ὁ „Χριστός) κατὰ δὲ τῇ Ἀνθρωπότητι, τῇ τε Μητρὶ, καὶ πᾶσιν „ἀνθρώ-

τῷ Πάπα σὺνλαχθὲν ἀπέσταλλαι. (Ὁρα καὶ ἐν Πραγμ: Δ'. ἐπὶ τῆς Δ'. Ἑκατοντ: περὶ τὸ μέσον, ἐνθα μνεία τῆς Γενναδίου ἐγένετο. Ἐν Σημ: (20).

(51) Περὶ τῆς ὁμοούσιον ἐν Πραγματ: Γ'. Παραφθορᾷ Κς'. Σημ: (35).

(52) Ἐν τῇ κατὰ Λεκυῖνον Ἐκδόσει ταῦτα ἀναγιγνώσκεται ἐν Κεφαλ: Η'. τῆς Α'. Τόμῳ, Σελ: 138.

(53) Κατὰ τὴν Λεκυῖν: Ἐκδοσ: Τόμ: Α'. Σελ: 208. Ταῦτ' ὁ εὐρήσεις καὶ τὸν Θεασέσιον Κύριλλον Θεολογῶντα ὡσαύτως, ἐν τῇ πρὸς Ἀκάκιον τὸν Μελιτινῆς Ἐπιστολῇ, ὡς ἀναφέρει Εὐλόγιος ὁ Ἀλεξανδρεὺς (παρὰ Φωτίῳ, ἐν Κώδικι σλ' τῆς τῆς Ἑσχαλῆς Ἑλληνικῆς Ἐκδόσεως, τῆς ἐν Αὐγύστῃ τῶν Οὐνδελίκων, Ἔτ: 1601. Σελ: 443.) „Τῶν γὰρ Ἀνατολικῶν Ἐπισκόπων τῇ πίστιν ἀποδεχόμενος ὁ Κύριλλος, τὸν αὐτὸν „(τὸν Χριστὸν λέγει) εἶναι φασὶ, τὸν ἐκ Θεῶ Πατρὸς ὡς Θεὸν, καὶ ἐκ γυναικὸς „κατὰ σάρκα, ὡς ἄνθρωπον. Καὶ ὡς, ἕκ ἂν νοῦτο ὁμοόσιος ἡμῖν κατὰ τὴν Ἀνθρωπότητα, ἐδὲ τῷ Πατρὶ κατὰ τὴν Θεότητα, εἰμὴ νοῦτο Θεὸς ὁμοῦ καὶ ἄνθρωπος ὁ αὐτός,,

„ἀνθρώποις,,. Καὶ ὁ Χριστὸς δὲ ἐ πάντας παρήγαγεν ἀνθρώπους κατὰ τὸ ἀνθρώπινον, καὶ τοὶ ὁμοῦσιος ὧν ἀνθρώποις ἅπασιν ἄτε ἀνθρωπος: ὥστε κατὰ τὴν Θεότητα ὁμοῦσιος ἐστὶ τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι. Κατὰ τὸν αὐτὸν νῦν ὁ Χριστὸς ὁμοῦσιος τῷ Πνεύματι λέγεται τῇ Θεότητι, καθ' ὃν καὶ πᾶσιν ἀνθρώποις ὁμοῦσιος καλεῖται τῇ Ἀνθρωπότητι. (54) Πῶς ἄρα (δεομαι) ὁμοῦσιος τῷ Πνεύματος τῷ Υἱῷ λεγομένῃς, ὁ τῷ Ἀιτίᾳ τε καὶ τῷ Αἰτιατῷ λόγος ἐν ἀμφοτέροις αὐτοῖς μεσιτεύει νοούμενος; καὶ γὰρ ὅλως μέσον τῆς ἐν τῷ Χριστῷ ἀνθρωπότητος, καὶ τῶν ἀνθρώπων, τοιοῦτος δέ τις λόγος ἐστὶ χωρῶν. Ὡς τε τῷ ὄντι, καὶ ἐκ τῆς δε καὶ μόνῃς τῆς τῷ Δαμασκῷ ῥήσεως, ψευδοδοξίας ἐλεγχεσθαι τὴν Λατρινικὴν ἐκείνην ἀπόφασιν.

Ἀλλὰ

- (54) Ἦκιστα μοι ἀπλῶς εἶναι δοκεῖ τὸ ἐνταῦθα λεγόμενον νοητέον. Ἀνθρώποις καὶ γὰρ ὁμοῦσιος ὁ Χριστὸς ἐστὶ τε καὶ λέγεται, κατ' εἶδος διὰ τὴν τῆς ἀνθρωπίνης φύσεως, ἐν τῇ ὑπερθέῳ αὐτῷ ἰδίᾳ ὑποστάσει, ἀληθινῶ καὶ πραγματιῶδη πρόσληψίν τε καὶ ἔνωσιν. Πατρὶ δὲ καὶ Πνεύματι ὁμοῦσιος ὁ αὐτὸς ἐστὶ κατὰ τὸ ἀκριβέστατον τῆς μιᾶς τε καὶ ἐνιαίας ἑσίας νοουμένης, ὑπὲρ νῦν ὅλως, ἐν τῇ Θεότητι. Ἐπεὶ τοιγε καὶ ἡ μεταξὺ ἀνθρώπων, ἡ ἔχουσι πρὸς ἀλλήλους ὁμοφυία, καὶ τοιαύτη ἐστὶν, οἷα ἡ ἐν τοῖς Τρισὶ Θεαρχικοῖς Προσώποις, ἡ πίσει σεβόμεθα καὶ λατρευόμεν, ὁμοουσιότης. Ὡς γὰρ Θεολογικῶτατα ὁ Ἀλεξανδρείας Εὐλόγιος παρὰ Φωτίῳ (εἶδα ἐπὶ τῆς ἀμέσως ἀνωτ: Σημειώσεως εἰρηται, Σελίδι 455.) „Ἐφ' ἡμῶν μὲν ἡμῶν ἀνθρώπων, αἱ τῶν ἰδιωμάτων διαφοραὶ φανερώς διεσήκασιν, καὶ ὡς ἀπ' ἀλλήλων διακρινόμεθα: καὶ τὰ χαρακτηριστικὰ τῆς τινὸς ὑποστάσεως, τὰ θατέρως ἐκ αὐτῆς κοινοποιεῖν ἰδιώματα. Ἐπὶ δὲ τῆς Ἁγίας Τριάδος αἱ ἰδιότητες ἀκίνητοι μένυσαι, σιωπῶνται πῶς διὰ τῆς ἀδιαίρετης ἐνώσεως: καὶ, τὸ μίαν εἶναι τῶν ὑποστάσεων τὴν ἐνέργειαν, πλείστῳ ἔχουσι καὶ τῇ διακρίσει τὴν θείκῃ τε καὶ ἀρρήτῳ πρὸς ἀλλήλους Σιωφίαν: καὶ ἡ ὁ Υἱὸς ἐν Πατρὶ, καὶ Πατὴρ ἐν Υἱῷ, καὶ Υἱὸς ἐν Πατρὶ καὶ Πνεύματι, καὶ Πνεῦμα ἐν Υἱῷ καὶ Πατρὶ θεωρεῖται, τῆς σιωφείας πανταχόθεν ἐπικρατήσεως, καὶ μὴδ' ἐν τοῖς ἰδιώμασι καινοτομήσεως τὸ ἀδιαίρετον. . . . Θεὸς ὅν ἡμῖν ἐστὶν εἷς, καὶ Τριάς θεωρούμενος: πηγὴ τυγχάνων ἀπερινοήτης Σοφίας, καὶ Ἀγιαστικῆς Διωάμεως: ὅθεν εἰς Θεὸς καὶ Κύριος καὶ Βασιλεὺς, αὐτὸς τε ὁ Πατὴρ, καὶ ἡ τελειοποιὸς Σοφία αὐτῆς, καὶ ἡ ἀγιαστικὴ Διωάμεις. Ἀδιαίρετος γὰρ ὁ Πατὴρ, πρὸς τε τὴν αὐτῆς Σοφίαν, καὶ τὴν ἀγιαστικὴν Διωάμιν, ἐν μιᾷ φύσει προσκυωμένος. Οὐκ εἰς ἕνα καὶ ἕνα μεριζόμενος Θεὸν, καθάπερ ἐφ' ἡμῶν: οἱ τῷ ἀκοινωνήτῳ τῶν ἰδιωμάτων, καὶ τῷ διαφύκῳ τῆς ἐνέργειας μεριζόμεθά τε καὶ διαίρεμεθα, καὶ τῇ δι' ἐλθ τομῇ τὴν πρὸς ἀλλήλους διαφορὰν ὑφίσταμεθα. Διὸ καὶ εἰς εἶπεν, ὥστε ἐφ' ἡμῶν, ἔτω καὶ ἐπ' αὐτῆς: ὅτι τότε τῆς πρῶτον, ἢ ἐκείνο τῆς δευτέρου, ἢ τρίτον. Μονὰς γὰρ ἀληθῶς ἢ Τριάς, καὶ Τριάς ἢ Μονὰς . . . καὶ γὰρ τὸ ἐν ἐπὶ τῆς Θείας ἑσίας, ὡς ἐπὶ τῶν κτισμάτων νοούμεν: παρ' οἷς καὶ τὸ κυρίως ἐν ἐστὶ θεωρεῖται. Οὐ γὰρ τὸ ἐν ἀριθμῷ ἐφ' ἡμῶν, καὶ κυρίως ἐν: ἄτε δὴ καὶ τῷ ἐνός φέρον τὴν κλήσιν, καὶ πρὸς τὸ πολλὰ εἶναι μεριζόμενον. . . . καὶ εἰ δὲ θαρσύναντα εἶπεν, ἐν ἐστὶ τὸ Θεὸν κατὰ τὴν ἀπλότητα τῆς ὑπάρξεως: καὶ ὡς ἐν τριάντῳ θεωρούμενον, ἢ εἰς μέρη διαίρεμενον, ἢ ἐκ πλειόνων συγκείμενον. Ἀρρήτον γὰρ ἐστὶ καὶ ἀκατόνομαστον τῆς τοῦ ἐν ἐπεί καὶ αὐτῆς τῷ ἐνός ἐστὶν αἴτιον, πάσης ἐνάδος ἐνοποιόν, καὶ παντὸς ἐνός καὶ πλήθους ὑπεραπλάμενον, διὰ τὸ κυρίως ἐν εἶναι, καὶ ἐν πᾶσιν εἶναι, καὶ ὑπὲρ πάντα γνωσκέσθαι: ἐνοποιὸν μὲν ἀπάντων τῶν ὄντων, ὑπεριδρυμένον δὲ ἐν τῇ ὑπερσσίῳ καὶ ἰδίᾳ μονότητι. Ἐνὰς καὶ Μονὰς Θεολογούμενον: Υἱὸς ἐν Πατρὶ, καὶ Πατὴρ ἐν Υἱῷ γνωσκόμενον. Πνεῦμα Ἅγιον, ἐκπορευόμενον ἐκ Πατρός. Ἀρχὴ μὲν ἔχον τὸν Πατέρα, δι' Υἱὸς δὲ εἰς κτίσιν ἐπ' ἐνέργειᾳ τῶν δεχομένων ἐρχόμενον,,

Ω ω ω 2

Ἄλλὰ καὶ τὴν Θεότητα αὐτῷ ἑαυτῇ ὁμοῦσιον ἔσαν οἱ Πατέρες διδάσκουσιν. ΑΥΓΟΥΣΤΙΝΟΣ μὲν γὰρ ἐν τῷ περὶ Τριάδος Βιβλ: Α'. Κεφαλ: Η'. „Οὐ κτίσμα ἡ Θεότης, ἀλλὰ Μονὰς „Τριάδος ἀσώματός τε καὶ ἄτρεπτος, καὶ ἑαυτῇ ὁμοῦσιος, καὶ „σιωαϊάνιος φύσις,,. Καὶ ὁ ἸΩΣΑΦΑΤ ἐν τῇ πρὸς Θεὸν προσυχῇ μετὰ τῷ τῷ Βαρλαάμ ἀπέλθουσιν, παρὰ τῷ Δαμασκινῷ Ἰωάννῃ, ἐν τῇ τῷ Βαρλαάμ καὶ τῷ Ἰωσαφὰτ Ἰσορία: „Πάτερ, „Υἱὲ, καὶ Πνεῦμα Ἅγιον, ἡ ὁμοῦσιος καὶ ἀδιαίρετος Θεότης, ἐπι- „καλῶμαι Σε καὶ δοξολογῶ Σε,,. Καὶ ὁ αὐτὸς δὲ ἔτι ἐκ Δαμασκῆ Ἰωάννης, ἐν τῷ Γ'. Βιβλ: περὶ τῆς Ὁρθοδ: Πίς: Κεφ: 5'. (55) „Οὐκ ἔστιν εὐρεῖν μερικῶς καὶ ἰδιάξασαν φύσιν, ἤτοι ἑσῖαν. „(56) Ἐπεὶ ἀνάγκη τὰς αὐτὰς ὑποστάσεις, καὶ ὁμοουσίους καὶ ἑτερο- „ουσίους λέγειν καὶ τὴν Ἁγίαν Τριάδα καὶ ὁμοῦσιον, καὶ ἑτερο- „ουσίον κατὰ τὴν Θεότητα λέγειν,,. Ἀλλὰ γὰρ πῶς, εἰπέμοι: ἡ Θεότης ἑαυτῇ ὁμοῦσιος λέγεσθαι δυνάμειτο ἅπερ ἐκεῖνα μόνον ἔστιν ὁμοῦσια, ἐν οἷς ὁ λόγος τῷ Αἰτίᾳ τε καὶ τῷ Αἰτιατῷ ἐγχωρεῖ; Ἡ γὰρ Θεότης, καθὼς ἔτε γεννᾷ ἔτε γεννᾶται, ἔτως ἔδε παράγει, ἔγε πνεῖ, ἔδ' ἐκπορεύεται.

Ἀλλ' ὁ Ἰησοῦς ἡμῖν πάλιν ἐνίσταται. (57) Α'. ὅτι κοινῇ οἱ θεοὶ Πατέρες, (ἐξόχως δὲ Ἀθανάσιος, καὶ Ἀυγουστίνος) τὸν Υἱὸν τῷ Πατρὶ ὁμοῦσιον ὄντα ἀποδεικνύουσιν, ὡς φύσει ἐκ τῷ Πατρὸς Προβαλλόμενον· ὑποβιβάσει δὲ μόνον ἐν τοῖς Θεοῖς ὁμοῦσιον εἶναι, τὸ τῷ αὐτῷ ἔχον ἑσῖαν Πρόσωπον τῷ παράγοντι Προσώπῳ, ἢ τῷ παραγομένῳ ἐξ αὐτοῦ. Β'. ὅτι αὕτη δοκεῖ ἀνεπτυγμένως εἶναι ἢ τῷ Ἁγίᾳ Βασιλεῖ Διδασκαλίᾳ, ἐν τῇ Γ'. Ἐπιστολῇ τῇ πρὸς τὰς Κανονικάς, φύλλ: 292. (58) „Οὐ γὰρ τὰ ἀδελφὰ „ἀλλήλοις ὁμοῦσια λέγεται, ὅπερ τινὲς ὑπελήφασιν· ἀλλ' ὅταν „καὶ τὸ αἷτιον καὶ τὸ ἐκ τῷ αἰτίᾳ τῷ ὑπαρξῶν ἔχον τῆς αὐτῆς „ὑπάρχει φύσεως, ὁμοῦσια λέγεται,,. Καὶ ἐν Ὁμιλ: δὲ τῇ κατὰ τῶν Σαβελλιανῶν, καὶ Ἀρειανῶν, καὶ Εὐνομιανῶν, Τόμ: Α'. φύλλ: 521.

(55) Κατὰ τὴν Λεκκύνῃ Ἐκδόσιν Τόμ: Α'. Σελ: 213.

(56) Ταῦτα κατὰ Σευηριανῶν λέγει ἀποτεινόμενος ὁ Θεὸς Δαμασκινός· ἐκεῖνοι γὰρ, ὡς ἐκ τῷ Ἀλεξανδρείας Εὐλογίᾳ πάρεστι μάθεῖν (ὅρα ἐν τῇ κατὰ Λεκκύνῃ Ἐκδόσει τῶν τῷ Δαμασκ: Συγγραμ: Τόμ: Α'. Σελ: 212. ἐν τῇ ἐκῇ Σημειώσει 2.) „Οἰεσθαι ἐδόκειν μερικῶς εἶναι τὴν τῆς Θεότητος ἑσῖαν: καὶ τὸ μὲν μέρος αὐτῆς „ἐν Πατρὶ θεωρεῖσθαι, τὸ δὲ ἐν Υἱῷ, τὸ δὲ ἐν Ἁγίῳ Πνεύματι· ὡς ἐκάστης ὑπο- „στάσεως ἐκ μέρους, ἀλλ' ἐκ ἐν πᾶσι τοῖς τῆς Θεότητος ἰδιώμασι γνωριζομένης. „Ἡμεῖς δὲ, ἐκ ἐκ τούτου ἀσεβείας ἠλάσαμεν, ὡς μερισμὸν ἡγεῖσθαι καὶ κατὰ „τομῇ περὶ τὴν Θεῖαν ὑπάρχειν ἑσῖαν· ἀλλὰ Φαμέν ἐκάστῳ χαρακτηριστικῶν, „καὶ ὡς ἀνωτέρω προηέθετο Θεολογῶν ὁ ῥηθεὶς Εὐλέγιος.

(57) Κιχώσιος ἐν Ζητήμ: Η'. Σελ: 82.

(58) Κατὰ δὲ Γαρενῆρον, ἐν τῇ αὐτῇ Ἐκδόσει, ἀριθμεῖται Ἐπισ: ΝΒ'. ἐν τῷ Γ'. Τίμ: Σελ: 144.

521. (59) „Ὅταν δὲ εἴπω μίαν ἑστίαν, μὴ δύο ἐξ ἐνὸς μερι-  
 „θέντα νόει· ἀλλ' ἐκ τῆς Ἀρχῆς, τῆ Πατρὸς, τὸν Υἱὸν ὑποσάν-  
 „τα. Οὐ Πατέρα καὶ Υἱὸν ἐκ μιᾶς ἑστίας ὑποκειμένης· ὁ γὰρ  
 „Ἀδελφὰ λέγομεν, ἀλλὰ Πατέρα καὶ Υἱὸν ὁμολογῶμεν.

Ἄλλ' ὅπερ ἀφορᾷ πρὸς τὸ Πρῶτον, κατὰ Σωέπειαν πάντως  
 λίαν ὀρθῶς ἔχουσιν ἐπιφέρουσιν οἱ Πατέρες: ὡς ἐπεὶ ὁ Υἱὸς προ-  
 βάλλεται ἐκ τῆ Πατρὸς, ἔστιν ἄρα καὶ ὁμοῦσιος αὐτῷ τῷ Πατρί.  
 Κατ' αὐτὸ δὲ τῆτο, ὑποτιθέασιν μόνον, ὅτι πᾶν τὸ ἐκ τινος παρα-  
 γόμενον, τῷ παράγοντι ὁμοῦσιον ἐστίν· ἥκιστα δ' ἔν καὶ μόνον ἐκεί-  
 νο ὁμοῦσιον εἶναι, τὸ τιῷ αὐτῷ ἔχον ἑστίαν τῷ παράγοντι, ἢ  
 τῷ παραγομένῳ ἐξ αὐτῆ. Ἄλλως γὰρ ὑπὸ τῇ ὑποθέσει ταύτῃ  
 προσλαβεῖν ὥφειλον οἱ Πατέρες: Ἀλλὰ μὲν ὁ Υἱὸς ὁμοῦσιος ἐστὶ  
 τῷ Πατρί: ὅπερ ἀλλ' ἔν τῆτο ὑπῆρχε τὸ τῶν Πατέρων Συμπέ-  
 ρασμα, ὅτε αὐτὸ δεῖξαι βεβλομένων, καὶ ἐχλὶ ἢ Ἐλάσων· ὡς ἐδ'  
 ἂν αὐτὸς ὁ Ἰησοῦτης ἔξαρνος γένοιτο. Ἀλλ' ὑποτιθέτωσαν δὴ οἱ  
 Πατέρες ἔτι, καὶ μόνον ἐν τοῖς θεοῖς ὁμοῦσιον εἶναι, τὸ τιῷ αὐ-  
 τῷ ἑστίαν ἔχον τῷ παράγοντι Προσώπῳ, ἢ τῷ παραγομένῳ ἐξ  
 αὐτῆ. Ταύτῃ δ' ὁ νῦν ἂν εἴη τῆ λεγομένη, ὅτι τὸ ὁμοῦσιον ἐτέ-  
 ρῳ ἐτόμενον, τιῷ αὐτῷ ἑστίαν ὀφείλει ἔχειν τῷ παράγοντι Προ-  
 σώπῳ, ἢ τῷ παραγομένῳ ἐξ αὐτῆ· ἥπερ, δηλονότι, τὸ Ἅγιον  
 Πνεῦμα ὁμοῦσιον ἐστὶ τῷ Υἱῷ, ὡς τιῷ αὐτῷ ἑστίαν τῷ παράγον-  
 τι ἔχον, τῆτέσι τῷ Πατρί. Οὐ γὰρ δὴ τὸ ὑποτεθεῖν, ἐκείνο  
 ἔχεν: ὅτι μόνον ἐν τοῖς θεοῖς ὁμοῦσιον ἐστὶν ἐτέρῳ, τὸ σὺν  
 αὐτῷ γε τέτῳ, ἥτοι ὡς παράγοντι, ἢ ὡς παραγομένῳ ἐξ αὐτῆ  
 Προσώπῳ, ἑστίαν ἔχον τιῷ αὐτῷ· ἀλλὰ μόνον: ὅτι ἐκείνο ἐν  
 τοῖς θεοῖς ὁμοῦσιον, τὸ εἴτε τῷ παράγοντι, ἢ γὰρ τῷ ἐξ αὐτῆ  
 παραγομένῳ Προσώπῳ ἑστίαν ἔχον τιῷ αὐτῷ. Ταῦτα δὲ δῆπερ  
 μακρῷ ἀλλήλων ἐστὶ διαφέροντα. Ἐνθεντοι, ἐδὲ τὸ πρότερον  
 ὑποτιθέασιν οἱ Πατέρες, ὅτε ἐπιχειρῶσιν: ὁ Υἱὸς ἐκ τῆ Πατρὸς  
 γεννᾶται, ἄρα ὁμοῦσιος ἐστὶν αὐτῷ· ἐν τέτοις γὰρ ἐκείνο ὑποτι-  
 θέντες εἰσὶ μόνον, ὡς εἴρηται: ὅτι πᾶν τὸ σὺν τῷ παράγοντι  
 αὐτὸ τιῷ αὐτῷ ἔχον ἑστίαν, ὁμοῦσιον ἐστὶν αὐτῷ· ἐχλὶ δέ: ὅτι  
 πᾶν τὸ ἐτέρῳ ὁμοῦσιον ὄν, σὺν αὐτῷ τέτῳ, ἥτοι ὡς παράγοντι,  
 ἢ ὡς ἐξ αὐτῆ παραγομένῳ Προσώπῳ, τιῷ ἑστίαν ἐστὶν ἔχον τιῷ  
 αὐτῷ. Οὕτω καὶ Βασίλειος ἐν τῇ Γ'. Ἐπιστολῇ Φάσκων ἰω':  
 „Ὅταν καὶ τὸ αἴτιον, καὶ τὸ ἐκ τῆ αἰτίας τιῷ ὑπαρξιν ἔχον,  
 „τῆς αὐτῆς ὑπάρχει φύσεως, ὁμοῦσια λέγεται,,. Τῆτέστιν: ὁσά-  
 „κισ ἢ αἰτία καὶ τὸ αἰτιατὸν φύσιν ἔχουσι τιῷ αὐτῷ, τὰ τοιαῦτα  
 ὁμοῦσια ὄντα ἐστίν· ἐχλὶ δὲ καὶ ὅτι: ὅσα ἐστὶν ὁμοῦσια, τέτων  
 θάτερον

(59) Παρὰ Γαβριήλ Τόμ: Β'. Σελ: 191. 192.

Τόμ: Β'.

Α ααα



θάτερον μὲν αἰτίας λόγον ἔχον ἐστὶ, θάτερον δὲ αἰτιατὸν καὶ τῆς αὐτῆς κατὰ πάντα φύσεως τὴν ὑπαρξιν ἔχουσιν. Εἰ δὲ ἀπλῶς ἡ Πρότασις ἐκείνη νοηθεῖη: μηδὲν ἐν τοῖς Θεοῖς ὁμοῦσιον διώαθαι εἶναι, εἰ μὴ ὡς αἷτιον καὶ αἰτιατόν, τῆς αὐτῆς κατὰ πάντα φύσεως τὴν ὑπαρξιν ἔχοιεν· ἐκ τούτων πάντως πάλιν ἔψεται μόνον: ὡς εἰ τὸ Πνεῦμα ὁμοῦσιον ἐστὶ τῷ Υἱῷ, τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον σωάμα τῷ Πατρὶ τῷ αὐτῷ αἰτίῳ, φύσιν ἔχον ἐπάναγκες τὴν αὐτῇ. Ἐφασκε δὲ τελοῦνταῖον Βασίλειος: „Τὸν „Πατέρα καὶ τὸν Υἱὸν ἐκ μιᾶς ὑσίας ὑπερκειμένης (κατιόντας) „ἀδελφὸς ἂν ἔσεσθαι,,. Ἀλλ' ὁ νῦν ὡς αὐτῷ, ὡς εἶπερ ἐκ μιᾶς ἀνωτέρας ὑσίας, ἐνί γε καὶ τῷ αὐτῷ παραγωγῆς λόγῳ, οἷον κατὰ λόγον γεννήσεως, κατάγοντο· εἶεν ἂν Ἀδελφοί. Ἀεὶ γὰρ ἡ Καθολικὴ Ἐκκλησία ἐπέγνω, (ὡς ἐν τοῖς ἐξῆς εἰσόμεθα) τὸν Υἱὸν καὶ τὸ Πνεῦμα ὡς προϊόντας ἐκ τῆς Πατρὸς, ἐμὴν δὲ παρὰ τούτο καὶ Ἀδελφὸς εἶναι τῆς αὐτῆς, ὅτι ἐκ ἐκ τῆς Πατρὸς ἐνί γε καὶ τῷ αὐτῷ λόγῳ προέχουσιν· ὁ μὲν γὰρ Υἱὸς ἐκ τῆς Πατρὸς γεννᾶται, τὸ δὲ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκπορεύεται. Ἐξ ὧς δὲ δῆπρ φανερόν τὸν νῦν τῶν Πατέρων εἶναι: ἐκείνους τέως Ἀδελφὸς πεφυκέναι, οἵπερ ἂν ἐξ ἐνός τε καὶ τῆς αὐτῆς, τῷ αὐτῷ τῆς παραγωγῆς τρόπῳ κατάγοντο.

Αὐτόθεν ἄρα τὰ Ἐπιχειρήματα ἐξίτηλα οἴχεται, ἅτῳ ἐκ τῶν ῥημάτων τῶν Πατέρων ἐκείνων ὁ αὐτὸς Ἰησοῦς σωεπλεξεν· ἐντεῦθεν, φάσκων: Ἐπιχειρῶ Α'. „Τότε μόνον ἐν τοῖς Θεοῖς „κατὰ τὸν Ἅγιον Βασίλειον εἰσὶ τινὰ ὁμοῦσια, ὅτε τούτων θάτερον μὲν ἐστὶν αἷτιον, θάτερον δὲ τὸ ἐκ τῆς αἰτίας. Ἀλλὰ μὴ τὸ „Ἅγιον Πνεῦμα, εἰ μὴ ἐκ τῆς Υἱᾶς ἐκπορεύοιτο, ἔτε αἷτιον ἂν „εἴη, ἔτε δὴ ἐκ τῆς αἰτίας, ὡς γε πρὸς τὸν Υἱόν. Ἄρα κατὰ τὸν „Θεῖον Βασίλειον, εἰ μὴ τὸ Πνεῦμα ἐκπορεύοιτο ἐκ τῆς Υἱᾶς, ἐκ ἂν „εἴη ὁμοῦσιον τῷ Υἱῷ. — Β'. δὲ ἔτω: Τὰ τῆς αὐτῆς ὄντα φύσεως Πρόσωπα, ταῦτα, εἰ μὴ πρὸς ἄλληλα ἐστὶν ἔχοντα τὸν „τῆς αἰτίας λόγον καὶ τῆς αἰτιατῆς, κατὰ τὸν Βασίλειον εἰσὶν Ἀδελφά· ὁ δὲ Υἱὸς καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα τῆς αὐτῆς φύσεως εἰσὶ „τῶν δὲ μεταξὺ (ἀφαίρεθείσης τῆς τῆς Πνέματος καὶ ἐκ τῆς „Υἱᾶς ἐκπορεύσεως) ἔχωρῃ ὁ λόγος ὁ τῆς αἰτίας καὶ τῆς αἰτιατῆς. „Ἄρα, ἤτοι κατὰ τὸν αὐτὸν, λέγεσθαι ὡφειλὸν Ἀδελφοί· ἢ γὰρ „αὐτῶν μεταξὺ συγχωρητέος ἂν εἴη ὁ λόγος, ὁ κατὰ τὸ αἷτιον „καὶ τὸ αἰτιατόν,,. — Γ'. δὲ τελοῦνταῖον, οἱ δύο τῶν ὑπερθέων Προσώπων ἐκ μιᾶς ἀνωτέρας ὑσίας καταγόμενα ἐννοῶντες, Ἀδελφὰ δύο ἐπὶ τῆς Τριάδος, καὶ δύο ἐξ ἐνός διηρημένα ἀναγκάζονται συγχωρεῖν· ὃ φθάσας ἀπεδοκίμασεν ὁ Θεὸς Βασίλειος. Ἀλλ' οἱ φρονῶντες τὸν Υἱὸν καὶ τὸ Πνεῦμα ἐκ μόνης τῆς τῆς Πατρὸς ὑσίας ἀμέσως κατάγεσθαι, διὸς φρονῶσι: „Πρόσωπα διηρημένα,



ρημένα, ἐκ μιᾶς ἀνωτέρας ἑσίας αὐτὰ καταγόμενα. Ἄρα οἱ αὐτοὶ ἔτσι ἐπαναγκάζονται δύο ἐπὶ τῆς Τριάδος Ἀδελφὰ, καὶ δύο ἐξ ἐνὸς διηρημένα εἰσάγειν κατὰ τὸ ἐπόμενον τῷ ὁμοῦσιότητι Υἱῶ τε καὶ Ἀγίᾳ Πνεύματος ἀναυρεῖν.

Ὁ μὲν ἔν ἐπὶ τὸ Α'. τῶν Ἐπιχειρημάτων ἀνήκει: ψυδὲς πάντῃ τὸ τὸν Θεὸν Βασίλειον ἐστὶ διδάσκειν, ὡς τότε δὴ μόνον ἐν τοῖς Θεοῖς ὁμοσιότητα ὑπάρχει, ὅτε τέτων θάτερον μὲν αἷτιον, θάτερον δ' αἷτιατὸν πέφυκε· τὰ γὰρ ἐκείνῳ εἰρημένα καθαρῶς τοιαῦτα μόνον: ὡς, ἐπειδὴ τὸ αἷτιον καὶ τὸ ἐκ τῆς αἷτις, τῆς αὐτῆς κατὰ πάντα φύσεως τῷ ὑπαρξιν ἔχει, ὁμοῦσια ταῦτα, ὡς ἤδη ὑπεθέμεθα, ἐστίν. Ἐπὶ δὲ τῆ Β'. τῶν Ἐπιχειρημάτων ψυδὲς ὁμοίως λαμβάνει, τὸ διδάσκειν τὸν Βασίλειον: ὅτι τὰ τῆς αὐτῆς ὄντα φύσεως Πρόσωπα, εἰ μὴ πρὸς ἄλληλα ἔχει λόγον τὸν κατὰ τὸ αἷτιον καὶ τὸ αἷτιατὸν, ταῦτ' Ἀδελφὰ ἐστίν· ἔτε γὰρ ἐκ τῶν προαπομνημονοθέντων τῆ Βασιλείᾳ προτέρων ῥημάτων, ἔτ' ἐκ τῶν ὑσέρων, ὑπεξάγειται τῆτο. Ἐν μὲν γὰρ τοῖς προτέροις ἐτίθει μόνον: ὅτι ὁσάκις τὸ αἷτιον καὶ τὸ αἷτιατὸν, μίαν τε καὶ τῷ αὐτῷ τυγχάνει ἔχοντα φύσιν, ὁμοῦσια ταῦτα ἐστίν. Ἐν δὲ τοῖς ὑσέροις: ὅτι τὰ ἐκ μιᾶς ἑσίας ὑπερκειμένης, ἐνὶ, δηλονότι, καὶ τῷ αὐτῷ καταγόμενα τρόπῳ, Ἀδελφὰ ἐστίν. Οὐδαμῶς μὲν τοι Ἀδελφὰ ἀπεκάλει, τὰ, εἰ καὶ μιᾶς καὶ τῆς αὐτῆς ὄντα ἑσίας, τὸν γε μὴν τῆς αἷτις τε καὶ τῆς αἷτιατῆς λόγον ἐν ἀλλήλοις μηδαμῶς ἐστὶν ἔχοντα. Ὁ δὲ τὸ Γ'. ἀφορᾷ τῶν Ἐπιχειρημάτων, αὐτὸ τῆτο ἤδη ποτὲ οἱ ἀπὸ τῶν Αἰρέσεων τοῖς Καθολικοῖς ὑπῆρχον ἀντιπροσάλλοντες· ὡς φανερόν γίνεσθαι κἀντεῦθεν, ὅτι ἐπειδὴ τοιαῦτα ἡμῖν Λατῖνοι ἀντιπροτείνουσιν, ἔδὲν ἄλλ', ἢ κατ' αὐτῶν Λατίνων ἀντιφερόμενοι οἱ Ἀνατολικοὶ, προῖσαντά τε καὶ ὑπερμαχῶσι τῶν Καθολικῶν.

Οὕτω γὰρ ἐν τοῖς λοιποῖς ΜΑΞΙΜΙΝΟΣ ὁ τῶν Ἀρειανῶν Ἐπίσκοπος παρὰ Αὐγυστίνῳ, ἐν Βιβλ: Α'. τῷ κατ' αὐτῶ Μαξιμί-  
 νῳ, Τόμ: 5'. „Θαυμάζω δὲ, Ἀγαπητέ· ἐπειδὴ γὰρ καὶ τὸ  
 „Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ἐκ τῆς ἑσίας τῆ Πατρὸς εἶναι φατέ: ἔπερ  
 „ὁ Υἱὸς ἐκ τῆς ἑσίας τῆ Θεᾶ καὶ Πατρὸς ἐστίν· ἐκ τῆς ἑσίας  
 „δὲ τῆ Πατρὸς καὶ τὸ Πνεῦμα· διατὶ εἰς ὁ Υἱὸς, ἔχλ δὲ καὶ ὁ  
 „ἕτερος ἐστὶν Υἱός; Τί γὰρ ὑμῖν ἐνδεῖ αὐτῷ; Ἐκ γὰρ τῆς  
 „αὐτῆς ὦν ἑσίας, καὶ ἴσος πεφυκὼς τῷ Υἱῷ, καθὰ φῆς, τί μὴ  
 „καὶ αὐτὸς κληρονόμος πάντων καθίσταται; τί μὴ καὶ αὐτὸς  
 „Υἱὸς ἐστίν; — Καὶ μετὰ βραχέα: „Ὡς τινι, (τῷ Υἱῷ τῆ Θεᾶ)  
 „εἰ τυχὸν αὐτῷ προσοικειοῖς Ἀδελφόν: ὅτι τὸ Πνεῦμα παρα-  
 „πλήσιόν τε ὄν καὶ ἴσον ἀποφαίνεις: ἐκ τῆς ἑσίας τῆ Πατρὸς  
 „ἐπίσης καὶ αὐτὸ εἶναι ὁμολογεῖς. Εἰδ' ἔτως ἔχει, ἐκ ἄρα Μο-  
 „νογενῆς ἐστὶν ὁ Υἱὸς, ἐπεὶ καὶ ἕτερος ἐκ τῆς αὐτῆς ἑσίας ἐστίν; „

Α ααα 2

Ἐκθα

Ἐνθα δὴ περ σαφές, ὅτι τὸ τῷ Ἀρειανῷ Ἐπιχείρημα κατὰ Σχῆμα διατυπωθὲν, τοιῦτον ἐστίν: Οἱ ἐκ μιᾶς καὶ τῆς αὐτῆς προαχθέντες ὑσίας, Ἀδελφοὶ εἰσὶν ὁ Υἱὸς, καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ἐκ μιᾶς καὶ τῆς αὐτῆς τῷ Πατρὸς ὑσίας προαχθέντες εἰσὶν. Ὁ Υἱὸς ἄρα, καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, Ἀδελφοὶ εἰσὶν. Ἀλλ' αὐτὸ δὴ περ τῷτο, τὸ τῷ Ἰησοῦ ἐστὶν Ἐπιχείρημα, ὡς δῆλον παντί.

Ὡσαύτως δ' οἱ Ἀρειανοὶ ἐπιχειρῶντες εἰς καὶ παρὰ ἈΝΑΣΤΑΣΙΩΝ τῷ Συναίτη, ἐν τῷ Ὁδηγῷ, Κεφαλ: ΚΒ'. „Εἴπερ „ὁ Υἱὸς, καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῷ Πατρὸς, σαφές ἐστὶν ἕκαστον „τέρων Πατέρα εἶναι τὸν αὐτόν. ἔγω δέ τοι καὶ αὐτὸ τὸ Πνεῦμα „τὸ Ἅγιον εἶναι γεννητόν. Εἶδὲ τῷτο καὶ συγχωρεῖτε, ἔπατε „ἡμῖν: τίς πρότερος, τίς δ' ὕστερος ἐκ τῷ Πατρὸς προελήλυθε; „Πότερον ὁ Υἱὸς, ἢ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον; Εἰ δ' ἅμα προήλ- „θσαν, ἤδη καὶ αὐτῷ τῷτω δῆλον γίνεται, τὸν Πατέρα διδύ- „μοτοκῆσαι, καὶ τὸν τε Υἱὸν καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον διδύμους „εἶναι ἐν τῇ Θεότητι. Τῷτι δὲ τῶν Αἵρετικῶν τῷ ἐπιχείρημα ἐκ ἄλλως ἐπιλύονται οἱ Πατέρες, ἢ ἀποδεικνύεται τὸν Υἱὸν καὶ τὸ Πνεῦμα μὴ κατὰ τὸν αὐτὸν λόγον προϊέναι ἐκ τῷ Πατρὸς ἀλλὰ τὸν μὲν Υἱὸν γεννᾶσθαι, τὸ δὲ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκπορεύεσθαι.

Καὶ ἈΘΑΝΑΣΙΟΣ δὲ, ἐν τῷ Γ'. Διαλόγῳ τῶν κατὰ Μακεδονίαν, Τόμ: Β'. τῶν Συγγραμ: Σελ: 213. ΜΑΚΕΔΟΝΙΟΣ: „Οὐκ ἔστιν ὅν ἐκ τῆς ὑσίας τῷ Θεῷ τὸ Πνεῦμα; ὉΡΘΟΔΟΞΟΣ: „Καὶ πάνυ. ΜΑΚΕΔ: Καὶ αὐτὸ ἄρα Υἱός. ὉΡΘΟΔ: Ἀλλ' ὁ „μὲν Υἱὸς ἐκ τῆς ὑσίας γεγέννηται, καὶ διὰ τῷτο Μονογενὴς „Υἱός· τὸ δὲ Πνεῦμα ἐκ τῆς ὑσίας ἐκπορεύεται (ὡς) γέγραπται, „καὶ γεγέννηται. Κατὰ τὸν αὐτὸν δὲ νόμον ὡσαύτως καὶ τὸ Ἐπι- „χείρημα ἐπιλύεται, ἐν τῷ Α'. Διαλόγῳ τῶν περὶ Τριάδος: Τόμ: Β'. τῶν Συγγραμ: Σελ: 176. „ΑΝΟΜΟΙΟΣ: Εἰ καὶ ὁ Υἱὸς „ἐκ τῆς ὑποστάσεως, (τῷ Πατρὸς) καὶ τὸ Πνεῦμα ἐκ τῆς ὑπο- „στάσεως, εἰσὶν Ἀδελφοί. ὉΡΘΟΔΟΞ: Διὰ τῷτο ὁ Υἱὸς καὶ μόνον „ἐκ τῆς ὑποστάσεως, ἀλλὰ καὶ ἐκ γαστρὸς εἴρηται: καὶ τὸ „Πνεῦμα, καὶ μόνον ἐκ τῆς ὑποστάσεως, ἀλλὰ καὶ Πνεῦμα σώ- „ματος εἴρηται. ἵνα ἡ διαφορὰ μὴ κατὰ τὸν τῆς ὑποστάσεως „λόγον γένηται, ἀλλὰ κατὰ τὸν ἐκ γαστρὸς καὶ σώματος.

Ὁμοίως καὶ ΑΥΓΟΥΣΤΙΝΟΣ Βιβλ: Γ'. κατὰ Μαξιμίναν, Κεφαλ: ΙΔ'. „Ἐκ τῷ Πατρὸς ἐστὶν ὁ Υἱός· ἐκ τῷ Πατρὸς ἐστὶ „τὸ Ἅγιον Πνεῦμα· ἀλλ' ὁ μὲν γεννητός, τὸ δὲ ἐκπορεύτόν. „(Καὶ Κεφαλ: ΙΕ'.) Περὶ δὲ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι, ὅπως καὶ „αὐτὸ ἐκ τῷ Θεῷ ἐστὶ, καὶ τοι Υἱὸς καὶ ἔστιν: ὅτι ἐκπορεύόμενον, „καὶ καὶ γινώμενον ἀναγινώσκεται εἶναι ἐκ τῷ Θεῷ, ἤδη ἀνω- „τέρω,

„τέρω, ὅσον ἄλλις ἔδοξε, διέλεγμαι,,. Κατὰ τὴν αὐτὴν δὲ διάνοιαν καὶ ἐν τῷ Δ'. Βιβλ: τῶν περὶ Τριάδος, Κεφ: ΙΔ'. „Πρὸς ἄλληλῃς, φησὶν, ἐν τῇ Τριάδι, εἴπερ ὁ γεννῶν πρὸς τὸ γέννημα ἀρχὴ ἐστίν, ὁ Πατὴρ πρὸς τὸν Υἱὸν ἀρχὴ ἐστίν, ὅτι γεννᾷ αὐτόν. Πότερον δέ: καὶ πρὸς τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἀρχὴ ἐστίν ὁ Πατὴρ; εἰρηλα γὰρ, ὅτι ἐκ τῶ Πατρὸς ἐκπορεύεται: ὁ μικρὸν Ζήτημα ἐστίν. Ὡς εἴπερ ἔτις ἐστίν, ἐκ ἅρα μόνον ἀρχὴ ἔσαι τῶ ὁ γεννᾷ, ἢ ποιᾷ, ἀλλὰ καὶ τῶ ὁ παρέχει. Ἐνθα καί κ' ἐκ γίνετα φανερόν, ὁ πολλὰς, εἰώθε ταράττειν: Διατὶ Υἱὸς ἐκ ἐστὶ καὶ τὸ Πνεῦμα, τὸ ἐκ τῶ Πατρὸς καὶ αὐτὸ ἐκπροϊόν, ὡς ἐν τῷ Εὐαγγελίῳ ἀναγινώσκεται; Πρόεισι γὰρ ἔχ' ὡς γεννηθὲν, ἀλλ' ὡς δοθέν· καὶ διὰ τῆτο ὁ λέγετα Υἱὸς, ὅτι ἐδὲ γεννητὸν, ὡπερ ὁ Μονογενὴς· ἔτε ποιητὸν, ὡς ἐκ τῆς Θεᾶς χάριτος εἰς Υἱοθεσίαν γεννᾷσθαι, καθάπερ ἡμεῖς,,. — Τελούταϊον δὲ καὶ ἐν Βιβλ: ΙΕ'. τῶν περὶ Τριάδος, Κεφαλ: ΚΖ'. „Ἄροι τὰς ὀφθαλμοὺς πρὸς αὐτὸ τὸ φῶς, καὶ σήριξον αὐτὰς ἐπ' αὐτὸ, καὶ διωήση· ἔτι γὰρ ὅψῃ, ὅσον ἢ τῶ Θεᾷ Λόγῳ γέννησις διέσηκε τῆς ἐκπορεύσεως τῆς δωρεᾶς τῶ Θεᾷ. Καὶ διὰ τῆτο ὁ Μονογενὴς Υἱὸς, ἐκ ἐκ τῶ Πατρὸς γεννητὸν εἶπε τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον· ἄλλως γὰρ ἂν ὡς Ἀδελφὸν αὐτῶ· ἀλλ' ἐκπορεύτόν: καὶ ἵνα μὴ Ἀδελφὸς ἔχῃς τὸ Ἅγιον Πνεῦμα καὶ τὸν Υἱόν, ὡς ἐκ μιᾶς πηγῆς βλύζοντας,,.

ΠΑΥΛΙΝΟΣ δὲ ὁ Νωλανὸς (60) ἐν Ἐπιστολ: Ε'. πρὸς Ἀμάνδον: „Τὸ Πνεῦμα τῶ Θεᾷ, φησὶν, ὡπερ καὶ ὁ τῶ Θεᾷ Λόγος, Θεὸς ἐκάτερος, ἐν μιᾷ μένοντες κεφαλῇ, καὶ ἐκ μιᾶς πηγῆς τῶ Πατρὸς προβλυσάνοντες· ἀλλ' ὁ μὲν Υἱὸς γεννητῶς, τὸ δὲ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκπορεύτῶς.

ἈΡΝΟΒΙΟΣ δὲ (61) Βιβλ: περὶ Θεᾷ τῶ Τριαδικῆ τε καὶ ἐνιαίᾳ, κατὰ Σεραπίωνος· ἐν τῷ Ε'. Τόμ: τῆς τῶν Πατέρων Βιβλιοθ: τῆς ἐν Κολων: Μέρ: Γ'. Σελ: 202'. ἈΡΝΟΒ: „Εἴπερ ὁ Λόγος ἐκ τῶ σώματος τῶ Πατρὸς, ὁ πάντα τὰ ὁρατά τε καὶ τὰ ἀόρατα τῇ αὐτῇ δυνάμει δημιουργήσας· ἐδέποτ' ἔχε Λόγος ἄνευ τῆς πνοῆς τῶ Πνύματος προελθεῖν; ὡς ΣΕΡΑΠΙΩΝ: Ἄρα δύο εἰσὶν Υἱοὶ, οἱ ἐκ τῶ σώματος τῶ Πατρὸς προελθούτες· ὁ Λόγος δηλ: καὶ τὸ Πνεῦμα. ἈΡΝΟΒ: Μήτοιγε, ὅτε ὁ Λόγος ἐγεννᾷτο, ἐκ τῶ σώματος προελθὼν τῶ κελύσαντος, τὸ μὴ ὂν ἐποίησεν; Μήτοιγε καὶ ἢ Πνοὴ ἢ ἐκπορεύομένη ἐκ τῶ τὸν Λόγον προβάλλοντος, γεννωμένη μάλλον ἢ ἐκπορεύομένη, ἀποδειχθῆναι, λόγῳ

(60) Ὅρα περὶ τῆς ἐν Πραγματ: Δ'. ἐκ τῆς Ε'. Ἐκατονταετ: καὶ Σημ: (39).

(61) Καὶ περὶ τῆς Πραγματ: Δ'. Ἐκατ: Ε'. καὶ Σημ: (43).

Τόμ: Β'.

Β βββ

„λόγω τινι διωθήσεται; Ὡς εἶγε τῆτο ἐπὶ ἀνθρώπῳ κελύοντος  
 „γενέσθαι ἔχ οἶον τε· πόσω δὴ μάλλον ἐν τῷ Θεῷ, τὸ ῥῆμα ἐκ  
 „τῆ γεννῶντος σώματος ἐκπίπτειν ἔκ ἔχει, ὡς αὐτῷ τῷ πνοῶν  
 „τῷ τῆ Ἁγίας Πνεύματος πλήρῃ, Υἱὸν λέγεσθαι; Ἀλλ' ἔστιν ὁ  
 „Πατήρ ὁ τὸν Λόγον ἐξεργάζαμενος, καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, τὸ  
 „μηδέποτε παυόμενον ἐκπροϊέναι ἐκ τῆ Πατρὸς.

Καὶ ΠΑΣΧΑΣΙΟΣ δὲ τελοῦνταῖον (62) ὁ Ῥωμαῖος Διάκονος,  
 Βιβλ: Α'. περὶ τῆ Ἁγίας Πνεύματος, Κεφαλ: Η'. ἐν Τόμ: Ε'.  
 τῆς τῶν Πατέρ: Βιβλιοθ: τῆς ἐν Κολων: Σελ: 736. „Οὐκ ἔφη  
 „γεννητὸν, ἵνα μὴ Υἱὸν εἶναι πισύσης· ἔκ ἔφη ἀγέννητον, ἵνα  
 „μὴ Πατέρα νομίσῃς, ἀλλὰ πρὸς διάκρισιν τῆ εἶναι, μεμαρτύρη-  
 „κεν αὐτὸ ἐκπορεύεσθαι,,.

Τρανώς ἄρα μαρτυροῦντες εἰσὶν οἱ Πατέρες, ὡς εἰ καὶ ἐξ  
 ἑνὸς καὶ τῆ αὐτῆ Πατρὸς ὅ, τε Υἱὸς καὶ τὸ Πνεῦμα, ἑμὴν διὰ γε  
 τῆτο Ἀδελφῷ ἡσῶ, ὡς μὴ τὸν αὐτὸν τρόπον ἐκ τῆ Πατρὸς  
 προϊόντε, τῆ μὲν Υἱῶ γεννωμένῃ, τῆ δὲ Πνεύματος ἐκπορευομένῃ  
 ἐξ αὐτῆ. Καὶ τῶικαῦτα δὲ ἄρα δεικνύσιν τὰς Θείας ὑποστάσεις  
 Ἀδελφὰς ἂν ἔσεσθαι, ἔπερ ἂν ἐκ τῆ ἑνὸς, ἐνί τε καὶ τῷ αὐτῷ  
 λόγῳ, καταγόμεναι εἶεν, ἔκ εἰ ἐκ τῆ ἑνὸς, κατὰ διαφέροντα λό-  
 γον προάγουντο. Οὗτος ἄρα τῶν Πατέρων ἐστὶν ὁ νῆς· ἔτος ὁ  
 τῆ Βασιλείᾳ, πρὸς ὃν ὁ Ἰησοῦς ὡς προκαλούμενος. Ἦδη μὲν  
 ἔν παρὰ τοῖς αὐτοῖς Πατράσι προσετίθετο, ὅτι κατὰ μὲν ὁ  
 Υἱὸς καὶ τὸ Πνεῦμα ἐκ τῆς ἑνὸς τε καὶ μόνῃ τῆ Πατρὸς ἑσίας,  
 ἑκῆτι δὲ καὶ κατὰ λόγον ἕνα τε καὶ τὸν αὐτόν· ἀλλὰ τὸ μὲν  
 κατ' ἐκπόρυσιν, ὁ δὲ κατὰ γέννησιν. Οὐδὲν ἄρα τελεσφορεῖν  
 τὸν Ἰησοῦν, ἔδενι ἀδελόν. Καὶ ὅρα (παρακαλῶ) ὅσω τῶν  
 εἰρημένων Πατέρων οἱ Λατῖνοι εἰσι διαφέροντες. Διὰ δὴ τῆτο  
 (ἔτοι φασὶ) τὸ Ἅγιον Πνεῦμα καὶ ὁ Υἱὸς, ἔκ εἰσιν Ἀδελφοί,  
 καί τοι γε ἄμφω ἐκ τῆ Πατρὸς πεφυκότες· ὅτι, ὁ μὲν Υἱὸς ἐκ  
 τῆ Πατρὸς μόνῃ, τὸ δὲ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ἐκ τῆ Πατρὸς ἅμα  
 καὶ τῆ Υἱῶ κάττειν. (Οὗτος γὰρ ὡς ὁμοίως καὶ τῆ ἡμετέρῃ  
 Ἰησοῦς ὁ νῆς.) Οἱ δὲ Πατέρες τὸ Ἐπιχείρημα τόδε ἐπιλύσό-  
 μενοι, διὰ δὴ τῆτο (Ἀποκρίνονται) ὁ Υἱὸς καὶ τὸ Πνεῦμα ἔκ  
 εἰσιν Ἀδελφοί, καί τοι ἄμφω ἐκ τῆ Πατρὸς προελθόντες· ὅτι ὁ  
 μὲν Υἱὸς ἐκ τῆ Πατρὸς γεννᾶται, τὸ δὲ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῆ  
 αὐτῆ ἐκπορεύεται.

Τῆ δ' αὐτῆ Ἰησοῦς Ἐπιχειρήματος τῶν μερῶν θάτερον  
 τόδε ὡς: Οἱ διὸς Πρόσωπα ἐκ μιᾶς ὑπερκειμένης ἑσίας κατι-  
 όντα νοῶντες, δύο ἐξ ἑνὸς διηρημένα ἐπαναγκάζονται συγχω-  
 ρεῖν,

(62) Καὶ περὶ τῆς Αὐτόθι καὶ Σημ: (48).

ρεῖν, τῷ ὅπερ ἀποδοκιμάζων ἐστὶν ὁ Θεὸς Βασιλεὺς. Ἀλλ' οἱ νοῶντες τὸν Υἱὸν καὶ τὸ Πνεῦμα ἐκ μόνου τῷ Πατρὶ προΐεναι κτ: Ἄρα κτ: — Ἀλλὰ γὰρ ἔχ' ἀπλῶς ὁ Βασιλεὺς φαίνεται ἀποδοκιμάζων, ἔτις δις αὐτὰ ἐξ ἐνὸς διηρημένα, ἥτοι πρόσωπα διαφέροντα δύο, ἐξ ἐνὸς προϊόντα, τιθεῖται· ἀλλὰ μόνον τῷ λόγῳ τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ ἐφασκεν: „Ὅταν δὲ εἴπω μίαν ἑσῖαν (τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ δηλονότι,) μὴ δύο ἐκ τῷ ἐνὸς μεριζήντα νοεῖ (ὡς εἴπερ ἄρα ὁ Πατὴρ καὶ ὁ Υἱὸς ἐξ ἐνὸς προ-άγοντο.) Προσέσθῃσι γὰρ: „Ἀλλ' ἐκ τῆς ἀρχῆς τῷ Πατρὶ τὸν Υἱὸν ὑποσάντα,,. Περὶ τῷ Πατρὶ ἄρα καὶ τῷ Υἱῷ λέγων, ἐκείνο παρέδωκεν· ἔκκεν δὲ κατ' αὐτὸ καὶ ἀπλῶς ἀπέφη, ἀδυνάτον εἶναι διδάσκων τὸ δύο τινὰ ἐξ ἐνὸς παράγειν. Ἀποφάσκων δὲ τὸν Υἱὸν καὶ τὸν Πατέρα ἐξ ἐνὸς εἶναι μεμερισμένους, ἐκ ἐκείνου κατὰ νῦν ἔχεν, ὡς ὁ Πατὴρ καὶ ὁ Υἱὸς, ἐκ ἐξ ἐνὸς φύσει διηρημένοι εἰσίν· ἀλλὰ μόνον, τὸ μὴ ἐξ ἐνὸς τινος τιῶ ὑπαρξιν ἔχειν, διακρινομένων τὰ Πρόσωπα. Ὁ γὰρ ἀρτίως εἰρήκει, τὸν Πατέρα καὶ τὸν Υἱὸν μὴ ἐξ ἐνὸς εἶναι μεμερισμένους, ταῦτ' ἐπαναληψόμενος ὑποσυνάπτει: ὅτι ὁ Πατὴρ καὶ ὁ Υἱὸς ἐκ μιᾶς τινος ὑπερκειμένης ἑσῖας κατάγονται. Οὐκ ἄρα ἄτοπον ἀπλῶς ἡγεῖται Βασιλεὺς, τὸ διδάσκειν δύο ἐξ ἐνὸς διαφέροντας ἀλλήλων παράγειν, ὡς ὁ Ἰησοῦς ἐξεδέχετο. Ἀλλὰ γὰρ ἔτι: καὶ εἴπερ ἀπλῶς ἄτοπον ἡγεῖτο Βασιλεὺς τὸ τοιοῦτον νοητέον πάντως ἂν εἴη αὐτὸ, κατὰ τὸν εἰρημένον λόγον: τὸ ἐν τοῖς Θεοῖς δηλονότι, μὴ εἶναι δύο τινὰ ἐξ ἐνὸς, κατ' ἓνα τρόπον καὶ τὸν αὐτὸν προαγόμενα. Ἀλλ' ἔτι ψευδεδεσάτη ἂν εἴη ἡ Μείζων: ὅτι δηλ.: ὁ δις αὐτὰ τιθεῖς ἐκ μιᾶς κατιόντα ἑσῖας Πρόσωπα, ἕτος δύο τινὰ ἐξ ἐνός τε, καὶ ἐνὶ καὶ τῷ αὐτῷ λόγῳ, παραγόμενα τίθῃσι. Τελούτατον δ' ἐπὶ τὸν Πατέρα καὶ τὸν Υἱὸν ἐν τέτοις ἐστὶ Βασιλεὺς ἀφορῶν· μηδαμῶς μίαν εἶναι διδάσκων αὐτῶν τιῶ ἑσῖαν νοεῖται δεῖν ταύτη γε: ὡς εἴπερ ἄρα ἐξ ἐνὸς γέ τινος παρὰ πλησίον ὑπῆρχον αὐτοὶ παραγόμενοι: ἔμιν δὲ καὶ ἐν αὐτῷ τέτῳ ἀπλῶς ἀπόφῃσιν: ἐνθα δύο ἐξ ἐνὸς εἰσὶ προηγμένοι, τὸ ἀλλήλοις αὐτὰς πεφυκέναι ὁμοσιίας· ὥς καὶ ἔτι πάλιν, ἡδένα λόγον ὁ Ἰησοῦς τῷ οἰκείῳ αὐτῷ προσέσθῃσι συμπεράσματι, ἐν ᾧ εἰσβάλλει: ὅτι ἀναγκάζονται ἄρα διηρημένα δύο ἐξ ἐνὸς συγχωρεῖν· ἐκ δὲ τῷ ἀκολούθῳ, καὶ τιῶ τῷ Υἱῷ καὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος ἀναρεῖν ὁμοσιότητα. Καθάπερ γὰρ ἐκ ἑσῖ τῶν ἀδυνατών, ὅπερ ἀδυνάτον ὑπὸ τῷ Βασιλεὶς τίθεσθαι, ἐνταῦθα πείθειν ἡμᾶς ἐθέλει, ὡς δέδεικται: καὶ διὰ τῷτο, ὅλον πάντως ἐν τῷ δε τῷ μέρει συγχωρεῖται τῷ Ἰησοῦ τῷ κατ' αὐτὸν ἐπιχαρήματος τὸ σωμαγόμενον: (ὡς ἄρα οἱ τὸν Υἱὸν, δηλονότι, καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκ μόνου τῷ Πατρὶ εἶναι πιστεύοντες, δύο ἐξ ἐνὸς

B βββ 2

πεφυ-



πεφυκέναι μεμερισμένα, ἥτοι διὰ διαφέροντα πρὸς ἄλληλα Πρόσωπα ἐξ ἐνὸς ὀφείλῃσι συγχωρεῖν) ἔτω ψευδὲς ἄλλως, τὸ, τὸν δύο μεμερισμένα ἐκπροϊέναι ἐξ ἐνός τινος συγχωρῶντα, τὸν ἀναγκαίως, καὶ τὴν μετὰ τὴν Τί᾽ καὶ τὴν Ἁγίαν Πνεύματος ὁμοσιότητα ἀναιρεῖν. Τίς γὰρ ὁ τὴν Βασιλέα νῆς ἐστίν, μὴ ἔτω Πατρός τε καὶ Τί᾽ τὴν αὐτὴν εἶναι ἑσῖαν, ὡς ἐξ ἐνὸς μεμερίσθαι, ἤδη σωεωράκαμεν. Ἐπὶ πᾶσι δέ: τὸ ἐκ μιᾶς κατιέναι ἑσῖας τὸ Ἅγιον Πνεῦμα καὶ τὸν Υἱόν, ὁ Ἰησοῦς ἡμεῖς παραδέχεται, ὁπότε περὶ τέττα πλέα τὰ τῶν Πατέρων ἐστὶ Συγγράμματα, ὥσπερ ἐν ταῖς περὶ τῶν μαρτυριῶν Πραγματεαῖς τῶν Πατέρων τῶν Ἀνατολικῶν τε καὶ Δυτικῶν ἀποδέδεικται.

## § Ε'.

Ὅπως οἱ Πατέρες διδάσκουσιν, μόνον ἐκ μόνου εἶναι τὴν Πατρός τὸν Υἱόν.

Ἀλλ' ἔτι καὶ κἀκεῖνο ἀντιπροβάλλουσιν οἱ Λατῖνοι, λέγοντες τὴν Πατέρα διδάσκειν: „Μόνον ἐκ μόνου εἶναι τὴν Πατρός τὸν Υἱόν.“ Εἰ δὲ μόνος ὁ Υἱὸς ἐκ μόνου τὴν Πατρός, ἔκ ἄρα τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκ μόνου τὴν Πατρός ἄλλως γὰρ, ἔκ ἐκ μόνου μόνος εἴη ἂν ὁ Υἱός. Οὕτως ὁ ῥηθεὶς Ἰησοῦς (63) τὰ τὴν ΓΡΗΓΟΡΙΟΥ ἐκεῖνα τὴν Θαυματουργῶν προτενόμενος ἐκ τῆς αὐτῆς Ὁμολογίας: „Εἰς ὁ Θεὸς καὶ Πατὴρ τὴν Λόγον τὴν ζῶντος, Πατὴρ „Τί᾽ Μονογενῆς. Εἰς Κύριος μόνος ἐκ μόνου, Θεὸς ἐκ Θεῶ. — „Υποσώπτει: τὴν Πατέρα ἐκ τέττα μεμαθηκέναι, μόνον ἐκ „μόνου τὸν Λόγον εἶναι ἢ δὴ φράσει πολλοὶ, ὡς εἶδομεν, προσε- „χρήσαντο: οἷς περ καὶ τὸν Θεὸν προσέθημι Βασιλεῖον ἐν τῷ Δ'. „τῶν κατὰ Εὐνομίαν, Φύλ: 776. Μονογενῆς ἐστίν ὁ Υἱός, ὅτι „γεννᾶται μόνος ἐκ μόνου. Καὶ τὸν Ἐπιφάνιον Αἰρέσις: Λ5'. „Φύλ: 228. Ὁ Πατὴρ γεννῶν ἔκ ἐξερήθη τῆς ἰδίας ἑσῖας, „ἐδὲ τῆς ἐκείνης, ὅς γεννητὸς ἐστὶ μόνος ἐκ μόνου. ἐδὲ τῆς τὴν „Πνεύματος αὐτῆς. Ἐνταῦθα δ' ἐ λέγεται τὸ Πνεῦμα μόνον ἐκ „μόνου. Μᾶλλον δὲ, Αἰρέσις: ΞΘ'. Φύλ: 380. λέγεται: ὅτι μόνον „τὸ Πνεῦμα ἐστὶ τὸ ἐκ τὴν Πατρός ἐκπορεύομενον, καὶ ἐκ τὴν Τί᾽ „λαμβάνον. Προσέθημι δὲ καὶ τὸν Θεὸν Μάξιμον ἐν τῷ Δια- „λόγῳ τῷ μετὰ τὴν Ἀνομίαν, ἔπερ ὁ Πατριάρχης Γεννάδιος „ἀπεμνήθη ἐν τῇ Ἀποκρίσει τῇ πρὸς τὴν τὴν Ἐφέσον Ἐγκύκλιον: „Ἐπειδὴ, φησὶ, μόνος ἐκ μόνου ὁ Υἱός,, καὶ:

Ἀλλ'

(63) Κιχώσιος ἐν Ζητήμ: 5'. Σελ: 56.

'Αλλ' ἔκ ἄλλως τὸν Υἱὸν μόνον ἐκ μόνου τῆ Πατρὸς οἱ Πατέρες θεολογῶσιν, ἢ καθότι μόνος ἐκ μόνου γεννᾶται τῆ Πατρὸς. τὸ δὲ, πρὸς διάκρισιν τῆς τῆ Υἱῆς γεννήσεως, ἀπὸ πασῶν τῶν ἄλλων φυσικῶν γεννήσεων λέγουσιν· ἐφ' ᾧ δηλῶσαι τῷ τοιαύτῳ γέννησιν ὑπερβάλλειν ἅπαντα λόγον ἄλλον τεκνώσεως. Οὐδέποτε γὰρ ἐκ Πατρὸς μόνου γεννᾶται τις ἐν ἀνθρώποις· τετὶ δὲ μόνῳ τῷ Υἱῷ τῆ Θεῆς προσήκον ἐστίν· ὃ καὶ ὁ ἐκ Δαμασκῆ ἸΩΑΝΝΗΣ δηλῶν, ἐν τῷ περὶ τῶν διωσῶν ἐπὶ τῆ Χριστῆ θελημάτων καὶ ἐνεργειῶν Βιβλίῳ, Κεφ: ΙΒ'. ὑπὸ τὸ μέσον: (64) „Εἰς (φησὶν) „ὁ Μονογενὴς Υἱὸς, μόνος ἐκ μόνου τῆ Πατρὸς, καὶ μόνος ἐκ „μόνης Μητρὸς· Υἱὸς Θεῆς, καὶ Υἱὸς ἀνθρώπου, Θεὸς καὶ ἀνθρωπος, Ἰησοῦς Χριστὸς ὁ Υἱὸς τῆ Θεῆς,,. Μόνος γὰρ ὁ Χριστὸς ἐκ μόνης Μητρὸς κατ' ἀντίθεσιν λέγεται τῷ πρὸς τὰς λοιπὰς τῶν ἀνθρώπων, ὧν ἐκ Μητρὸς μόνης ἐδείξ. Καὶ κατὰ τὸν αὐτὸν ἄρα νόον, καὶ ὁ Υἱὸς ἐρηται μόνος ἐκ μόνου εἶναι τῆ Πατρὸς. Ὅτι δὲ οἱ Πατέρες, μόνον ἐκ μόνου τῆ Πατρὸς διδάσκοντες τὸν Υἱόν, τὸ ἐκ τῆ Πατρὸς μόνου μόνον αὐτὸν γεννᾶσθαι ἐνόησαν, καὶ αὐτὰ τὰ ἀντεπενεχθέντα ἡμῖν ῥήματα τῆ Βασιλείας ἐδείκνυνεν. Εἶχε γάρ: ὅτι („μόνος ἐκ μόνου γεννᾶται,,) καθάπερ ἔν καὶ τὰ τῆ Ἐπιφάνειας: („ὅς γεννητὸς ἐστὶ μόνος ἐκ μόνου,,) Εἰ δὲ διὰ τὸ μὴ ὁμοίως προσιθῆναι τὸν Ἐπιφάνιον, ὅτι: („καὶ μόνον „ἐκ μόνου τὸ Πνεῦμα,,) ἔποιτο μηδὲν αὐτὸν τοιοῦτο πεπισθῆναι· παραπλησίως δὴπερ ἂν ἔψοιτο, μηδὲ πιθεῖσθαι ὅλως τὸν Ἐπιφάνιον τὸ Πνεῦμα, μήτε προαχθῆναι, μήτ' ἐκπορεύεσθαι. Περὶ μὲν γὰρ τῆ Υἱῆς προέταξεν ὅτι γεννητὸς ἐστὶ, περὶ δὲ τῆ Πνύματος δ' προσέθηκεν, ὅτι ἐκπορεύτῳ: „Ὁ γεννητὸς, φησὶν, „ἐστὶ μόνος ἐκ μόνου· καὶ τὸ Ἅγιον αὐτῆς Πνεῦμα,,. — Ἐτι δὲ Ἐπιφάνιος, ἔχ' ὅπως ἐν ἄλλοις φάσκει: „Μόνον ἐκ τῆ Πατρὸς „ἐκπορεύεσθαι τὸ Πνεῦμα, καὶ ἐκ τῆ Υἱῆς λαμβάνειν,,. Ἀλλὰ καὶ ἀπλῶς διδάσκει: τὸν Πατέρα μόνον προβαλέσθαι τὸ Πνεῦμα, ὥστερ καὶ τὸν Υἱόν. Καὶ προσέτι, τὸ Πνεῦμα εἶναι ἐκ μόνου τῆ Πατρὸς· καὶ μίαν εἶναι μόνῳ τῷ Ἀρχῷ, καὶ τὸν Προβολέα τῆ Πνύματος, τὸν Πατέρα. Ὡς αὐτῆς τὰ ῥήματα, ἐν τῇ Πραγματείᾳ τῇ περὶ τῶν Μαρτυριῶν τῶν Ἀνατολικῶν Πατέρων, σαφῶς σιγήκαμεν. Τίς ἔν ἡ Σωπέπεια, εἰπέμοι: Μόνος ἐκ μόνου τῆ Πατρὸς ὁ Υἱὸς γεννᾶται: τὸ ἄρα Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ἔκ ἐκ μόνου τῆ Πατρὸς ἐκπορεύεται;

Ἀλλὰ προσιθῆσιν ὁ Ἰησοῦτης: „Ταῦτα πλατύτερον διεξεληλυθέναι εἰς ἔλεγχον τῶν ὑπὸ τῆ Ἐφέσου εἰρημένων· ὅς συμπεραῖναι

(64) Κατὰ τῷ Λεκυίνῃ Ἐκδοσ: ἐν Τόμ: Α'. Σελ: 550.  
Τόμ: Β'. Γ γγγ

„περᾶναι θέλων (φησὶν) ἐξ ἐκείνων: („τὸ ἐκ τῆ Πατρὸς ἐκπο-  
 „ροῦόμενον,“) ὅτι τὸ Πνεῦμα ἐκ μόνου ἐκπορεύεται τῆ Πατρὸς,  
 „τοιῷ δὲ ὡς ἐπιχειρήματι χρώμενος: Ὅτε ὁ Υἱὸς λέγεται ἐκ  
 „τῆ Πατρὸς γεννηθεὶς πρὸ πάντων τῶν αἰώνων, μήτοι γέ τις  
 „προσέθετο ἐκ μόνου; ἀλλὰ τὰτὶ νοεῖται ἐπὶ δὲ δέη, καὶ ἐκφέ-  
 „ρεται. Ἄλλ' εἴθε μάλλον αὐτὸς ἐκ τῶν ἀπομνημονοθέντων  
 „Θεωπεσιῶν Πατέρων, ἢ ἐκ τῆ Παλαμᾶ, ἢ τῆ Καββάσιλα, τὰ  
 „τῆς Πίσεως μαθεῖν προέλετο Δόγματα! Εὗρε γὰρ ἂν εὗρε,  
 „καὶ πλείους ὧν ἐγὼ παρήγαγον μαρτυρίας, δι' ὧν οἱ Πατέρες  
 „(περὶ τῆ Υἱᾶ) φασὶν, ὅτι μόνος ἐκ μόνου ἐστὶ τῆ Πατρὸς...  
 Ὅποιον δ' ἐν λόγῳ ὁ Ἰησοῦς τῆ Ἐφεσιακῆ ἐπιχειρήματος ἐπι-  
 λαμβάνεσθαι ἐκ αἰδεῖται; Μῶν ἐκ ἀληθῆς, ὅτι ἐνθα ἐπὶ τῆ  
 Ἱερᾶ Συμβόλου, ἢ ἐν τῇ Ἀγίᾳ Γραφῇ, ἐκ τῆ Πατρὸς γεννᾶσθαι  
 ὁ Υἱὸς λέγεται, καὶ μὴ προσκείμενον ἢ τό: „ἐκ μόνου,“ ὅμως  
 ἐν αὐτῷ τῷ τυγχάνει σωεννοούμενον, τὸ ἐκ τῆ Πατρὸς μόνου  
 τὸν Υἱὸν γεννητὸν προβάλλεσθαι; Μῶν ἐκ ἀληθῆς, ὅτι τῆ:  
 „ἐκ μόνου,“ τῷ λόγῳ τῆς τῆ Υἱᾶ ἐκ τῆ Πατρὸς γεννήσεως,  
 μήτε ἐν τῇ Ἀγίᾳ Γραφῇ, μήτε ἐν τῷ Ἱερῷ προσκειμένῃ Συμ-  
 βόλῳ, ἔδῃς ὁ τὸ λεξίδιον ἐκείνο τοῦ μόνου („ἐκ μόνου,“) ἔτ' ἐν τῇ  
 Ἱερᾷ Γραφῇ προθεῖναι, ἔτε κατὰ τὸ Σύμβολον; καὶ μὴ ἔτος ὡς  
 ὁ τῆ Ἐπιχειρήματος τῆ Ἐφέσε σκοπός· καὶ τοι γὰρ τὰτὶ ἄλλως  
 παρὰ ταῦτα μηδαμῶς ἀπανηναμένῃ τῆς Πατέρας ἄλλοθι διδάσ-  
 κειν, ἐκ μόνου γεννητὸν εἶναι τὸν Υἱὸν τῆ Πατρὸς· μάλλον δ' αὖ-  
 τὸς καὶ προσετίθει (ὁ Ἐφέσε): „Καίτοι τόδε νοῶμεν, καὶ ὅποι  
 „δέον τῷτο καὶ ἐκφέρομεν,“ Οὐδὲ μὲν ἐν ἡ Ἀνατολικῇ Ἐκ-  
 κλησίᾳ, ἐκ τῆ Παλαμᾶ καὶ τῆ Καββάσιλα, ἢ τῆ Φωτίε καὶ  
 τῶν μεταγενεσέων ἄλλων ἐν αὐτῇ Διδασκάλων, τῷ Πίσιν, ἢ  
 τῷ ἀπόδειξιν τῆ τοιᾶν μόνον πορίζεται· ἀλλὰ ταύτῃ ἐκ τῆς  
 Ἱερᾶς ἀναφωνεῖ Γραφῆς τῷ ὁμολογίῳ, κατὰ τῷ ἐννοίᾳ τῷ  
 παρὰ τῶν Θεωπεσιῶν Πατέρων παραδεδομένῳ ἄνωθεν· ὡς ἐς  
 πλάτος ἐν ἄλλοις δέδεικται.

Τελούταῖον δὲ ψεύδης καὶ τὸ τῆς Πατέρας μηδαμῆ διδάξαν-  
 τας γενέσθαι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ μόνου τῆ Πατρὸς ἐκπορεύεσθαι.  
 Ἐφ' ᾧ γὰρ σιγῇ παρελθεῖν τῆς Ἀνατολικῆς Διδασκάλης, τῆς  
 κατὰ τῷ Θ'. καὶ τῷ Γ'. τῶν ἀπὸ Χριστοῦ Ἐκατονταετηρίδων  
 ἀκμάσαντας, ἔς ἀριθμῷ πλείους, (ἐν τῇ περὶ τῶν Μαρτυριῶν  
 τῶν Ἀνατολ: Πατέρ: Πραγμ:) παρεθέμεθα. Τῷτο δὴ καὶ ὁ  
 Μέγας ΒΑΣΙΛΕΙΟΣ διδάσκων ἐγένετο, ἐνθα ἐν Ε'. Βιβλ: τῶν  
 κατὰ Εὐνομίε, ἐκ ἄλλοθεν ἢ ἐκ τῆ Πατρὸς: τὰτὶςιν, ἐκ ἐξ  
 ἄλλου παρὰ τὸν Πατέρα: παρεδίδοι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκπορεύό-  
 μενον. — Τῷτο καὶ ΕΠΙΦΑΝΙΟΣ, ἐπιδὼν Αἱρέσ: Ος'. κατὰ  
 τῆ ΙΑ'. τῶν Ἀετίε Κεφαλαίων, μόνον τὸν Πατέρα προβεβληκότα  
 τὸ

τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον δέκνυσιν· ἐπειδὴν τε περὶ τῷ καταρχῶ  
 τῷ Ἀγκυρωτῆ: καὶ τὸν Υἱὸν καὶ τὸ Πνεῦμα κηρύττει ἐκ μόνου  
 πεφυκέναι τῷ Πατρὶ. — Τῷ τῷ ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ ὁ Νύσσης,  
 ἐν τῷ Βιβλ: περὶ τῶν Κοινῶν ἐννοιῶν· ὅτε ἐξ ἐνός τε καὶ τῷ  
 αὐτῷ Προσώπῳ τῷ Πατρὶ, ἐκπορεύεσθαι μὲν τὸ Πνεῦμα γράφει,  
 γεννᾶσθαι δὲ τὸν Υἱόν. — Τῷ τῷ ἈΝΑΣΤΑΣΙΟΣ ὁ Σιναΐτης, ὅτε  
 ἐν τῷ Α'. Βιβλ: τῶν περὶ τῆς Πίς: Δογματῶν, ἐξ ἐνός καὶ  
 τῷ αὐτῷ, καὶ τὸν Υἱὸν εἶναι διδάσκει, καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. —  
 Τῷ τῷ ΔΑΜΑΣΟΣ ὁ Πάπας Ῥώμης, ὅτε ἐν τῷ Συμβόλῳ ἐξ  
 ἐνός τῷ Πατρὶ τῷ Τριάδα εἶναι ὁμολογεῖ. — Τῷ τῷ ΑΜΒΡΟ-  
 ΣΙΟΣ, ὅτε ἐν τῷ Βιβλ: τῷ περὶ τῷ ἀξιώματος τῆς ἀνθρωπείας  
 καταστάσεως, ἐξ ἐνός κηρύττειν ἐστὶ καὶ τὸν Υἱὸν εἶναι, καὶ τὸ  
 Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. — Τῷ τῷ τῷ Βίβλον ΣΥΓΓΡΑΨΑΣ τῷ περὶ  
 τῆς ἡνωμένης Θεότητος παρὰ Ἀθανασίῳ ἐν οἷς ἐν Βιβλ: Α'.  
 ἐξ ἐνός καὶ μόνου τῷ Πατρὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκπορεύεσθαι  
 παραδίδωσι. — Τῷ τῷ ΠΡΟΣΠΕΡΟΣ ὁ Ἀκυϊτανός, ἐνθα ἐπὶ τῷ  
 ἐχάτῃ τῶν Ἐπιγραμμάτων, ἄδων ἐστὶ τῷ Τριάδα εἶναι ἐξ  
 ἐνός. — Τῷ τῷ ΕΘΗΡΙΟΣ ὁ Οὐξάμων Ἐπίσκοπος, καὶ ΒΕΑΤΟΣ  
 ὁ Πρεσβύτερος, ἐπειδὴν ἐν τῷ Α'. τῶν κατὰ Ἐλιπάνδου Βιβλίων,  
 ἐξ ἐνός εἶναι καὶ τὸν Υἱὸν καὶ τὸ Πνεῦμα πρεσβένεσι. — Τῷ τῷ  
 τέως, ὅσοι εἰσὶν ἀποφάσκοντες τὸ Πνεῦμα εἶναι, ἢ ἐκπορεύεσθαι,  
 ἢ προεβλήσθαι ἐκ τῷ Υἱῷ ἐν οἷς: ΚΥΡΙΛΛΟΣ τε ὁ Ἀλεξαν-  
 δρεὺς, ἐν τῇ περὶ τῆς Τριάδος Ὁμολογίᾳ. — Καὶ ΘΕΟΔΩΡΗ-  
 ΤΟΣ ἐν τῇ Ἀνατροπῇ τῷ Θ'. τῶν Ἀναθεματισμῶν τῷ Κυρίλλῳ. —  
 Καὶ οἱ ἈΝΑΤΟΛΙΚΟΙ Ἐπίσκοποι, ἐν τῇ πρὸς Ἰωάννῳ τὸν Ἀν-  
 τιοχείας Ἐπιστολῇ. — Καὶ ἈΝΑΣΤΑΣΙΟΣ ὁ Σιναΐτης ἐν τῷ  
 Ὁδηγῷ, Κεφαλ: ΙΖ'. — Καὶ ὁ ΣΥΓΓΡΑΦΕΥΣ τῷ περὶ Τριά-  
 δος Βιβλίου Κεφαλ: ΙΑ'. — Καὶ ἸΩΑΝΝΗΣ ὁ Δαμασκηνὸς ἐν  
 τῇ περὶ τῷ Τρισάγιῳ Ἐπιστολῇ. Καὶ ἐν τῷ εἰς τὸ Μέγα Σάβ-  
 βατον Λόγῳ. Καὶ ἐν τῷ Α'. Βιβλ: τῶν περὶ τῆς Ὁρθοδ: Πίς:  
 Κεφαλ: ΙΑ'. καὶ ΙΓ'. — Καὶ ὁ Κωνσταντινουπόλεως ΚΛΗΨΟΣ. —  
 Καὶ ΜΑΞΙΜΟΣ ἐν τῇ πρὸς Μαρίνον Ἐπιστολῇ. — Καὶ ΑΥΓΟΥΣΤΙ-  
 ΝΟΣ ἐν τῷ κατὰ τῷ Λόγῳ τῶν Ἀρειανῶν Βιβλ: Κεφ: ΚΓ'. —  
 Καὶ πολλοὶ ἐκ τῶν Παλαιότερων παρὰ ῬΟΤΣΤΙΚΩ' τῷ Διακόνῳ  
 καὶ Καρδινάλι τῆς ἐν Ῥώμῃ Ἐκκλησίας, ἐν τῇ κατὰ τῶν Ἀρε-  
 φάλων Προσδιαλέξει: περὶ ὧν, διὰ τῷ τῷ, καὶ αὐτὸς γράφων ἡ  
 μηδαμῶς πεπληροφορήσθαι. Καθάπερ ἔν ἀπαξάπασας τὰς δε  
 τὰς ἐπιμαρτυρήσεις, ἐν ταῖς Πραγματείαις ταῖς περὶ τῶν Μαρ-  
 τυριῶν τῶν Ἀνατολικῶν τε καὶ Δυτικῶν Πατέρων· φθάσαντες  
 ἐπηγάγομεν.

Ἐπιλίποι δ' ἂν ἡμᾶς ἡ ἡμέρα, ἔπερ ἐκ τῶν αὐτῶν Πραγμα-  
 τειῶν ἐπιχαρήσασμεν καὶ τῷ Πατρί ἀνευγεῖν, τῷ μίαν  
 αἰτίαν



αίτίαν ἐπὶ τῆς Θεότητος, καὶ μίαν Ἀρχὴν τῷ Πνεύματος, τὸν Πατέρα ἐπεγνωκότας· ἴσον γὰρ ἐστὶν ἐκείνῳ τῷ φάσκαι: ὅτι ἐκπορεύεται τὸ Πνεῦμα ἐκ μόνου τῷ Πατρὶ. Τετὶ δὴ μόνον προσίδεμεν, ὅτι καὶ αὐτοὶ οἱ Λατίνων Ἐπίσκοποι, Ἀριθμὸς πολὺς: ἐπὶ τῆς ἐν Ἀκυϊσγράνῳ Σιωόδα, τῆς ἐν Ἑτα 809. συζήτησι, ἀντιφρονῶντες τοῖς λοιποῖς καινοτόμοις ὤφθησαν, τῆς τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος ἐκ τῷ Πατρὶ μόνου Ἐκπορεύσεως προϊσάμενοι. Προέσκησαν δὲ καὶ τῶν Λατίνων ἐκείνοι, καθ' ὧν ΘΕΟΔΟΥΛΦΟΣ ὁ Αὐρηλιανιώσιος γράψαι προήχθη, ὑπὲρ τῆς τῷ Πνεύματος Προόδου καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ. — Προέσκη δὲ καὶ ἈΝΑΣΤΑΣΙΟΣ ὁ Βιβλιοθηκῆριος, ὁ ἐν τῇ πρὸς Ἰωάννῳ τὸν Διάκονον Ἐπιστολῇ τρανῶς ἀποφάσκων ἐκ τῷ Υἱῷ προβάλλεσθαι τὸ Πνεῦμα, ἐὰν ἡ λόγος περὶ τῆς Ἀρχῆς. — Προέσκη δὲ τέως καὶ ἸΩΑΝΝΗΣ ὁ Η'. ὁ Ρώμης Πάπας, ἐνθα Φωτίῳ ἐπισέλλων, τῆς ἐκπορεύσεως τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος τῆς καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ, ὡς βλασφημίας ἀντικρυς, καὶ ὡς Δόγματος τῇ Χριστιανῶν Θεολογίᾳ ὑπεναντίως φερομένην καταψηφίζεται. Πόθεν ἄρα τῷ Ἰησοῦ ἐξῶ ἀποφᾶναι, τὸ τῶς Πατέρας μηδαμῇ γενέσθαι παραδεδωκότας τὸ Πνεῦμα, ἐκ μόνου τῷ Πατρὶ εἶναι, ἢ ἐκπορεύεσθαι;

Χωρεῖ δ' ἐν ἐτι προσωτέρω αὐτὸς αὐτόθι: „Δύττερον, ἵνα καὶ πᾶς, (ὅτῳ ἀληθείας μέλοι) διασκεψηταί τε καὶ ἐρδονήσῃ: „Τίνος δὴ χάριν ἔδαμῃ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον εἶρηται „ἐκ μόνου; „καὶ τοι γε καὶ σιωχῶς ἀφορμῆς ὑπέστης, καὶ πρὸς γιγνόμενον ὄν, „τιῷ δὲ ποθὶ προεξενεχθῆναι τῷ πρότασιν; Περὶ μὲν γὰρ τῷ Υἱῷ, ἔδειξεν ἑδῆποτε ὑπενδοιόων ἐγένετο, εἰ ἐκ μόνου ἐστὶ τῷ Πατρὶ περὶ δὲ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος, οἷτε περὶ Εὐνόμιον, „καὶ οἱ Ἀρειομανῖται ἔλεγον εἶναι ἐκ μόνου τῷ Υἱῷ. Εἰ γὰρ „ἀληθὲς ὡς, ὅτι ἐκ μόνου τὸ Πνεῦμα ἐκπορεύεται τῷ Πατρὶ ὡς ἀληθὲς ἐστὶν ἐκ μόνου τῷ Πατρὶ τὸν Υἱὸν προεληλυθέναι ἐκ ἂν ἡμέλησαν περὶ οἱ Πατέρες εἶπαι· μὴ μόνον τὸν Υἱὸν ἐκ „τῷ Πατρὶ εἶναι μόνου, ἀλλὰ καὶ τὸ Πνεῦμα ἑδέν τι ἦκιστα. „Ἐπεὶ δὲ τῷτο ἐκ ἐποίησαν μάλλον δὲ καὶ τέναντίον: διότι „σαφῶς διδάσκοντες ὑπῆρχον, τὸν Υἱὸν μόνον εἶναι ἐκ μόνου τῷ Πατρὶ: πεισμονῆς ἦπερ τε καὶ πορρώσεως τινὸς ἂν εἴη, ὑπερ- „βολῶς ἐκ ἐχέσεως, τὸ ἐκ μόνου διατένεσθαι θέλει τῷ Πατρὶ „ἐκπροϊέναι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον..

Ἀλλὰ γὰρ, τὰς μὲν τῶν Πατέρων ἐπιμαρτυρήσεις, τῶν ἐκ μόνου τῷ Πατρὶ διδαξάντων ἐκπορεύεσθαι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα. Καὶ προσέτι δὲ, καὶ τίνι λόγῳ ἐκ τῷ Πατρὶ μόνον ἐκ μόνου τὸν Υἱὸν εἶναι, οἱ αὐτοὶ Πατέρες ἐκδιδάσκουσιν, ἄρτι σιωείδμεν. Ὡς ἐν δίκῃ, κατ' αὐτῶν Λατίνων ἔχαι ἡμᾶς ἀντιστρέψαι τὸ τῷ Ἰησοῦ Ἐπιχείρημα. Εἴπερ ὡς ἡ τῶν Πατέρων Πίστις τοιαύτη: ὅτι



ὅτι τὸ Πνεῦμα, μιᾷ Πνύσει ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱῶ ἐκπορεύεται· πόθεν ἄρα, καὶ τοὶ μυριαχθεῖς διδάσκοντες ἐκπορεύεσθαι τὸ Πνεῦμα ἐκ τῆ Πατρὸς, ἔδαμῃ μὲν τοι γε ἐκ τῆ Υἱῶ ἐκπορεύεσθαι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐδίδαξαν; — Πάλιν: οἱ Αἰρεσιῶται, οἱ ἐκ τῆ Υἱῶ μόνον ἐκπορεύεσθαι τὸ Πνεῦμα διδάσκοντες, δημιουργεῖσθαι αὐτὸ ἐφρόνουν ὑπὸ τῆ Υἱῶ· ἔ γάρ ἐκπορεύεσθαι τί ἔν ἔχῃ κατ' ἐκείνων οἱ Πατέρες ἐδίδαξαν, τὴν τῆ Ἁγίας Πνύματος Ἐκπόρουσιν ἐκ τῆ Υἱῶ, εἰ ταύτῃ ἔτοι πεπισθυκότες ὑπῆρξαν; — Πῶς δὲ κατὰ τῶν περὶ Μακεδόνιον, τῶν τὸ Πνεῦμα ὁμοίως ἐξαρχνμένων ἐκπορεύεσθαι ἐκ τῆ Υἱῶ· οἱ ἐκ Κωνσταντινπόλεως Πατέρες ἐπὶ τῆ Συμβόλῃς ἔθεντο μόνον, ὅτι ἐκπορεύεται καὶ ἐκ τῆ Υἱῶ; καὶ περ ἐπίσης, καὶ ἔθεντι μᾶλλον ἐκ τῆ Πατρὸς, ἢ ἐκ τῆ Υἱῶ, ἐκπορεύεσθαι τὸ Πνεῦμα ἀποφασκόντων τῶν ἐξ ἐκείνης τῆς Αἰρέσεως; Ἡ ἔχῃ καὶ ἐκ τῆς φανερόν ἦν, τὸ μηδαμῶς τῆς Πατέρας πεπισθυκέναι τὴν ἐκ τῆ Υἱῶ Ἐκπόρουσιν τῆ Ἁγίας Πνύματος;

Ἄλλ' οἱ Λατῖνοι ἐνιστάμενοι, μὴ κατ' ἕτερον, φασὶ, νῦν τῆς Πατέρας διδάσκειν, τὸν Υἱὸν ἐκ τῆ Πατρὸς εἶναι („μονογενῶς,,: ) ἢ ὅτι μόνος ὁ Υἱὸς ἐκ μόνον παρήχθη. Διδάσκειν δὲ τῆτο Γρηγόριον τὸν Νύσσης ἐν τῷ Α'. Βιβλ: τῶν κατὰ Εὐνομίαν, φάσκοντα: τὸ Πνεῦμα ἐν τῆτω διακρίνεσθαι τῆ Υἱῶ: ὅτι ἔχῃ „μονογενῶς,,: τῆτεςιν, ἔχῃ μόνον ἐκ μόνον ἐστὶν ὑφεσῶς· καὶ ὅτι διὰ τῆ Υἱῶ φανερεῖται.

Ἄλλὰ πῶς; εἰπέμοι: Εἰ τῷ διδάσκειν τὸν Υἱὸν ἐκ τῆ Πατρὸς εἶναι μονογενῶς, οἱ Πατέρες τὸ Πνεῦμα ἐκ τῆ Πατρὸς εἶναι μόνον ἀπέφασκον: πῶς ἘΠΙΦΑΝΙΟΣ, Μονογενῆ τὸν Υἱὸν τῆ Θεῶ ἀποκαλέσας, ἅμα ἠδυνάτο φάσκειν, καὶ τὸν Πατέρα μόνον προεγνωχέναι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον; Οὕτω γὰρ ἐν τῇ Ος'. Αἰρέσει τῶν Ἀνομοίων, κατὰ τῆ ΙΑ'. Κεφαλ: τῆ Ἀετίαν: „Ἀγέννητος ἐστὶν ὁ Πατήρ, καὶ ἐγέννησεν αἰδίως τὸν Μονογενῆ, φύσεως ὡν ἑαυτῇ πρεπέσης, τῷ ἑνα μόνον τὸν Μονογενῆ γεγεννηκέναι, καὶ Πνεῦμα ἐγνωχέναι τὸν μόνον μόνον ἐπὶ Μονογενεῖ „Γεννήτορα, ὅς τῷ ἀνάρχως γεγεννημένῳ Υἱῷ σωυπάρχει, „Καὶ κατ' ἀρχὰς τῆ Ἀγκυρωτῆς, Ἀριθμῷ Β'. „Εἷς Θεὸς τοίνυν ὁ Πατήρ, καὶ μόνος ἀληθινὸς Θεὸς, καὶ ἔ κατὰ τῆς ἐψυμένους Θεὸς, ἐκ ὄντας Θεὸς· ἀλλὰ μόνος ἀληθινὸς Θεὸς, ἐπειδὴ μόνος ἐκ μόνον ὁ Μονογενὴς, καὶ μόνον τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, „ (65) Ψυδὲς

(65) Ταῖς τῆ Ἱερῆς Ἐπιφανίαν προτεθείσας ῥήσεις, συνάψαις ἂν καὶ τὴν τῆ Θεῶς Δαμασκηνῆς, ἐκ τῆ Α'. περὶ τῆς Ὁρθοδ: Πίς: ληφθεῖσαν, Κεφαλ: Η'. Σελ: 132. Τόμ: Α'. τῆς Δεκύναν Ἐκδόσ: „Παλίαν μὲν Ποιητῷ, ἐνός δὲ μόνον Πατέρων φύσει, Τόμ: Β'. Δ ὁδδ „τῆ

Ψεύδεις γὰρ δήπερ ὅτι ἡ („Μονογενῶς,,) φωνή, τὸ („μόνον ἐκ μό-  
 νου εἶναι,,) σημαίνει· δηλοῖ γὰρ ἑδὲν ἄλλ', ἢ τὸ „μόνον εἶναι γεν-  
 νητόν,,· τὸ γὰρ Ἑλλωισι μὲν „μονογενῶς,,· Λατινισι δὲ unige-  
 nite, ἔχῃ τὸ μόνον ἐκ μόνου εἶναι, ἀλλὰ τὸ ἓνα καὶ μόνον εἶναι  
 τὸν γεννηθέντα διδάσκει. Σωέσηκε γὰρ ἡ „Μονογενῆς,, φωνή,  
 ἐκ τῆς ἐνὸς „μόνου,, καὶ „τῆς γεννητῆς,,. Διόπερ ἈΘΑΝΑΣΙΟΣ  
 ἐν Διαλόγῳ Γ'. τῶν κατὰ Μακεδονίαν, Τόμῳ Β'. Σελίδι 213.  
 „Ὁ μὲν Υἱὸς ἐκ τῆς ἐσίας γεγέννηται, καὶ διὰ τῆτο Μονογενῆς  
 „Υἱός,,. — Καὶ ΒΑΣΙΛΕΙΟΣ Βιβλ: Δ'. τῶν κατὰ Εὐνομίαν:  
 „Μονογενῆς ἐστὶν ὁ Υἱός, ὅτι μόνος ἐκ μόνου γεννᾶται,,. — Καὶ  
 ἘΠΙΦΑΝΙΟΣ Αἰρέσι: Ος'. ἥτις ἐστὶ τῶν Ἀνομοίων: „Οὕτω καὶ  
 „ἐπὶ τῆς Ἀγίας Πνεύματος, διὰ τὸ ἐκ Πατρὸς ἐξελθεῖν, εἰ καὶ ἔ-  
 „γεγέννηται, διὰ τὸ τῆς Υἱῆς μονογενῆς,,. — Καὶ κατὰ τῆς ΚΒ'.  
 Κεφαλ: τῆς Ἀετίαν: „Ὅτι ὁ γεννήσας τὸν ἐξ ἑαυτῆς γεγεννη-  
 „μένον, καὶ ἀποστείλας ἐξ αὐτῆς τὸ Ἅγιον Πνεῦμα αὐτῆς, Πνεῦμα  
 „τῶν Υἱῆς μετέχον, ἔπαισας ἐγέννησεν ἄλλ' ἓνα· διὸ μονογενῆς  
 „καὶ ἐν ἐξ αὐτῆς ἀπέστειλε, διὸ Ἅγιον Πνεῦμα,,. — Καὶ Αἰρέ-  
 σαι ΕΖ'. „Κἄν τε ἔ λέγομεν τὸ Πνεῦμα γεννητόν· ἐπειδὴ Μο-  
 „νογενῆς ὁ Υἱός· ἀλλὰ Πνεῦμα τῆς Πατρὸς ἐκπορευόμενον, καὶ  
 „τῆς ἐμῆς λαμβάνον, φησὶν ὁ Χριστός,,. — Καὶ ΓΕΝΝΑΔΙΟΣ ὁ  
 Μασσαλιώτης, Βιβλ: Α'. περὶ τῶν Ἐκκλησιαστικῶν, Κεφαλ: Β'.  
 „Οὐκ ἄρα δύο Χριστοί, ἑδὲ δύο Υἱοί ὁμολογῶμεν· ἀλλὰ Θεόν τε  
 „καὶ ἄνθρωπον, Υἱὸν ἓνα: ὃν διὰ τῆτο καὶ Μονογενῆ λέγομεν,,. —  
 Καὶ ΦΟΥΛΓΕΝΤΙΟΣ, ἐν τῷ πρὸς Πέτρον Βιβλ: περὶ Πίσεως.  
 Κεφ: Θ'. „Δεικνύς ὁ τῆς Θεῆς Υἱὸς ἑαυτὸν μόνον ἐκ τῆς Πατρὸς  
 „γεννητὸν ὄντα, φησὶν: ἔγω γὰρ ἠγάπησεν ὁ Θεὸς τὸν κόσμον,  
 „ὥστε τὸν Υἱὸν αὐτῆς τὸν Μονογενῆ ἔδωκε,,. — Καὶ παρακατιών:  
 „Ὁ δὲ μὴ πισθῶν ἤδη κέκριται, ὅτι ἔ πισθῆ· εἰς τὸ ὄνομα  
 „τῆς Μονογενῆς Υἱῆς τῆς Θεῆς,,. — Καὶ ἸΩΑΝΝΗΣ δὲ ὁ Δαμασ-  
 κιώτης ἐν τῷ Α'. Βιβλ: τῆς Ὁρθοδ: Πίς: Κεφαλαίῳ Θ'. (66)  
 „Μονογενῆς δὲ (ὁ Υἱὸς τῆς Θεῆς λέγεται) ὅτι μόνος ἐκ τῆς Πα-  
 „τρὸς μόνως ἐγεννήθη· ἑδὲ γὰρ ὁμοιᾶται ἑτέρα γέννησις τῇ τῆς  
 „Υἱῆς τῆς Θεῆς γεννήσει· ἑδὲ γὰρ ἔστιν ἄλλος Υἱὸς τῆς Θεῆς,,. —  
 Καὶ Βιβλ: Δ'. Κεφαλ: Η'. „Ἀλλ' αὐτὸς ἐκ τῆς ἐσίας τῆς Θεῆς  
 „καὶ Πατρὸς μόνος ἀχρόνως γεγεννημένος, εἰκότως Υἱὸς Μο-  
 „νογενῆς, πρωτότοκος, καὶ ἔ πρωτόκτιστος λεχθήσεται,,. Οὕτω  
 καὶ ἄλλοι. (67)

Τὸ

„τῆς Μονογενῆς Υἱῆς αὐτῆς... καὶ Προβολέα τῆς Ἀγίας Πνεύματος,,. Οἷς δὴ συ-  
 νωδὰ τέτοις, καὶ τὰ ἐν τῷ περὶ Τριάδος Βιβλ: ὁ τῷ Ἀλεξανδρῶ Κυρίλλῳ ἐπιγραφείαι.

(66) Ἐν τῇ κατὰ Λευκὴν: Ἐκδόσει, Κεφ: Η'. Σελ: 135.

(67) Πρὸ δὲ πάντων ὁ ἐκ Ναζιανζῆς Θεολόγος, ἐν Λόγ: ΚΓ'. Σελ: 425. „Ἀληθῶς Πα-  
 τέρας τὸν Πατέρα (ὀνομάζομεν) καὶ πολὺ γε τῶν παρ' ἡμῶν ἀληθέστερον, ὅτι μόνως·  
 ἴδιο-

Τὸ δέ τοι ἔτω σαφὲς ἐστὶ, καὶ τὰ περὶ τήν τε ὑπὸ τῶν Πατέρων λεγόμενα, ἔτω δῆλα, ὡς τὸν περὶ αὐτὸ ἀμφισβητῆν αἰρέμενον δυσροπώτατον δι' ἰχυρογνωμοσύνῃ (ὃ γὰρ ἂν χριστιανὸν ἔγωγε εἴποιμι) ἀνθρώπον εἶναι, ἐπάνανγκες. Τὶς ἔν ἄρα ποτὲ ἢ σωέπεια: ὅτι τὸ Πνεῦμα ἕκ ἐκ μόνων τῶ Πατρὸς ἐκπορεύεται, ἐπειδὴ ἕκ μόνων γεννᾶται τῶ Πατρὸς ὁ Υἱός; (68) Οὐδὲ γὰρ ἐνέχει τέτοις τὰ ἐκ τῶ Νύσσης Γρηγορίου προτεθέντα τὸ σωόν. (69) „Ἀφίσταται πάλιν (τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἀπὸ τῶ Υἱοῦ „διακρινόμενον“) ἐν τῷ ἰδιάζοντι ἐν τῷ μήτε μονογενῶς ἐκ τῶ Πατρὸς ὑποστῶν, καὶ ἐν τῷ δι' αὐτῶ τῶ Υἱοῦ πεφηνέναι,,. Καὶ γὰρ ὁμοίως ψυδὲς, ὅτι τὸ „μονογενῶς,, σημαίνει τὸ „μόνον ἐκ μόνων προβεβλήθαι,, ἐπεὶ τῶ λεγομένον πάντως ὁ νῆς: ὅτι ἔχει κατὰ τὸν τῶ Μονογενῶς τρόπον, ἐκ τῶ Πατρὸς προβάλλεται τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον τετέστιν ἔχ, ὡς ὁ μόνος Υἱός, ἐστὶν ἐκ τῶ Πατρὸς καὶ αὐτὸ γεννητόν. Τῶ γὰρ Υἱὸς μόνων ἐκ τῶ Πατρὸς γεννηθέντος, ἔχ ἔτω δὲ καὶ τῶ Πνύματος γεννητῶ ὄντος, ἀνάγκη πᾶσα τὸν Υἱόν, κατ' αὐτό γε τῶτο, τῶ Πνύματος ἀντιδιαξέλλεσθαι.

Ἐξα-

- ἰδιοτρόπως γὰρ, καὶ ἔχ ὡς τὰ σώματα· καὶ μόνος, ὃ γὰρ μετὰ συζυγίας· καὶ ἰμόν, μονογενῆς γὰρ καὶ μόνον, ὃ γὰρ Υἱὸς πρότερον καὶ ὅλον Πατὴρ, καὶ ὅλε· τὸ γὰρ ἡμέτερον ἀδελφόν· καὶ ἀπ' ἀρχῆς, ἔχ ὕστερον. Ἀληθῶς Υἱὸν τὸν Υἱόν· ὅτι μόνος, καὶ μόνων, καὶ μόνων, καὶ μόνων· ὃ γὰρ Πατὴρ καὶ ὅλον Υἱός, καὶ ὅλε, καὶ ἀπ' ἀρχῆς ἔποτε τῶ εἶναι Υἱὸς ἡγεμένον,,. Ἐπίσημι ἐν, ὅτι ὁ Υἱὸς λέγεται „μόνος,, Υἱός, ὥσπερ ὁ Πατὴρ „μόνος,, Πατὴρ εἴρηται καὶ πάλιν ὁ Υἱὸς λέγεται „μόνος,, Υἱός, ὥσπερ ὁ Πατὴρ εἴρηται „μόνος,, Πατὴρ ἐπεὶ ὁ Πατὴρ Υἱὸς Πατὴρ, καὶ ὁ Υἱὸς Πατὴρς Υἱός. Ἀλλὰ μὲν ὁ Πατὴρ „μόνος,, Πατὴρ εἴρηται, (καθάπερ ἑαυτὸν ὁ Θεολόγος ἀναπτύσσων διεκμιλῶν) ὡς καθ' ἑαυτὸν ἀσυνδυάσως γενήσας, καὶ ἔχει μετὰ συζυγίας· ὃ γὰρ ἄλλος ἔτω. Ἄρα κατὰ τὴν αὐτῶ σημασίαν, καὶ ὁ Υἱὸς ἀντιστοίχως „μόνος,, λέγεται τῶ Πατρὸς Υἱός, ὡς ἐξ αὐτῶ γεννηθεὶς ὃ μετὰ συζυγίας γενήσαντος: „μόνος,, δὲ καὶ „ἰδιοτρόπως,, μηδεμιᾶς τοιαύτης μηδ' εἶναι μηδὲ νοηθῆναι διωαμένης ἄλλης γενήσεως· καὶ „ἔχ ὡς τὰ σώματα,,. Πρὸς δ' ἔτι: καὶ „μόνος,, Πατὴρ ὁ Πατὴρ (ὡς ὁ Θεολόγος φησὶν.) Ἄρα καὶ ὁ Υἱὸς „μόνος,, διὰ τὸν αὐτὸν λόγον· ὡς Μονογενῆς δηλονότι. Τὸ ἄρα „μόνος ἐκ μόνων,, ἐπὶ τῶ Υἱὸς καὶ Λόγῳ Θεολογούμενον, ἔδεν ὅ, τι μὴ διασολῶ τινὰ ἐμφαίνει, καὶ ἐξαίρεσιν τῆς τῶ Θεῶ Λόγῳ ἐκ τῶ Θεῶ καὶ Πατρὸς προαιωνίῳ γενήσεως, καθ' ἡν ἔτ' ἄλλος τις ἂν ἔτω γεννηθεὶς ἐκ τινος, ἔτ' ἄλλον τινὰ ἄλλος ὡσαύτως γενήσας. Ὁ δὲ Ἰησοῦς τὸ „μόνος ἐκ μόνων,, διατρώφως παρεξηγέμενος, ὡς εἶπερ ἄρα μόνων τῶ Υἱὸς αἴτιος εἴη ὁ Πατὴρ „μόνος,, μηδὲ κατ' ἄλλον ἀνεκμιλῶτόν τε καὶ ἀνέκφραστον λόγον, ὁ αὐτὸς ἐπίσης μόνος αἴτιος εἴη καὶ τῶ Ἁγίου Πνύματος ἄλλως, εἰμή περ σὺ τῶ Υἱῶ, ὡς σιωπαίῳ τῆς τοιαύτης δε Ἐκπορεύσεως· ἐπεικῶς σοφίζεται καὶ κακοήθως ἀνοηταίνει, πρὸς νῦν τὸν ἴδιον ἀντιμεθέλει ἐπιχειρῶν τὰ ὑπὸ τῶν Θεωπεσιῶν Πατέρων σαφέστατα διδασκόμενα.
- (68) Ἡ ἐκ ἂν εὐλόγως πᾶν ἐπιμέμφαιτο καὶ αὐτὸς ὁ Ἰησοῦς, εἰ τις φέρε τῶν Γραικῶν, (ἐκ τῶ ἰδίου δόγματος τῶ ὀρθοδόξῳ πάντως: ὅτι τὸ Πνεῦμα ἐκπορεύεται ἐκ τῶ Πατρὸς μόνων) εἰσβάλλειν ἀνοήτως ἐπιχειρήσειεν, ὡς ἐντεῦθεν ἐπόμενον: ὅτι ἄρα ὁ Υἱὸς ὃ γεννᾶται ἐκ μόνων τῶ Πατρός· ἀντιστρόφως τῶ Ἰησοῦ βλασφημιῶν, καὶ ἀσυλλογίως συλλογιζόμενος; Οὐδὲν γὰρ μᾶλλον ἢ τῶτο, τὸ τῶ ἐν ὑποθέσει παρανοήντος Γραικοῦ, ἐκείνο τὸ τῶ εὐήθως σοφισθόντος Λατίνου, ἄτοπον ἂν εἴη συμπέρασμα καὶ ἀλογώτατον.
- (69) Ἐν τῇ κατὰ τὸ 1638. Παρισιακῇ Ἐκδόσει· ἐν Τόμῳ Β'. Σελ: 343.

Ἐχατον ὁ τοσάκις μνημονεύθεις Ἰησούτης (70) καὶ πρὸς ταῦτα ἔτι ἐνίσταται: „Πᾶν Πρόσωπον (φησὶ) τὸ ἐκ τῆ Πατρὸς „μόνον ἀμέσως ὄν, ἐστὶν Υἱός. Τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, κατὰ τῆς „Φωτιανῆς, ἐστὶν ἀμέσως ἐκ μόνου τῆ Πατρὸς. Ἄρα τὸ Ἅγιον „Πνεῦμα, κατὰ τῆς αὐτῆς, ἐστὶν Υἱός. Καὶ διὰ τῆτο οἱ Θεοὶ „Πατέρες ὁ Ἅγιος Βασίλειος, ὁ Ἅγιος Νύσσης, ὁ Ἅγιος Ἐπιφάνιος, τὴν δὲ τὴν αἰτίαν ἀποδιδόασιν τῆ μὴ τὸ Πνεῦμα εἶναι „Υἱόν, τὸ μὴ παράγεσθαι μονογενῶς: τρεῖς ἐκ μόνου τῆ Πατρὸς „μηδὲ ἀμέσως ἐν τῆ πρώτῃ, ἀλλὰ διὰ τῆ ἐκ τῆ πρώτῃ „ἔθεν (ὡς ὁ Θεὸς φησὶν Ἐπιφάνιος) ἐξ ἀμφοτέρων.

Ὁ μὲν ὅν πρὸς αὐτὸ ἀφορᾷ τῆπιχείρημα: ἡνίκα λέγεται τὸ ἀμέσως εἶναι ἐκ μόνου τῆ Πατρὸς ἤτοι νοεῖται τὸ ἀπλῶς ἐκ τῆ Πατρὸς μόνου, καὶ ἔκ ἐτέρου προσώπου παράγεσθαι ἢ νοεῖται ἐκ μόνου τῆ Πατρὸς, καὶ μηδενὸς ἐτέρου παραχθέντος προσώπου, τὸ εἶναι ἔχειν. Εἰ μὲν ὅν κατὰ τὴν προτέραν διάνοιαν ἐκλαμβάνοιτο, ἢ Μείζων πάντως ψευδής· εἰ δὲ κατὰ τὴν ὑστέραν, ψευδής ἢ Ἐλάσσων· τῆ γὰρ Υἱὸς γεννηθῶν νοημένον, ἐκ τῆ Πατρὸς ἐκπορεύεσθαι ἐπινοεῖται τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. Ἐν οἷς δ' οἱ Πατέρες ἐκδιδάσκουσιν διαφέρειν τῆ Υἱὸς τὸ Πνεῦμα, ὡς μὴ τῆτο ἐκ τῆ Πατρὸς μονογενῶς ὄν· δι' αὐτῆς γε τέττε εἰσὶν ἀποφάσκοντες, τὸ κατὰ τὸν τῆ Μονογενῆς τρόπον, ἐκ τῆ Πατρὸς τὸ Ἅγ: Πνεῦμα προβάλλεσθαι: καὶ ὄν δηλ: ὁ Υἱὸς μόνος ἐκ τῆ Πατρὸς ἐστὶ γεννητός· ἔμω δὲ καὶ ἀπλῶς διὰ τέττε δηλῶσι, τὸ μηδαμῶς τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ μόνου τῆ Πατρὸς ἐκπορεύεσθαι. Καὶ μὲν δὴ Γρηγόριος ὁ Νύσσης, ἐμέσως δήπε ἐκ τῆ Πατρὸς διὰ τῆ Υἱὸς, τὸ Πνεῦμα εἶναι διδάσκει· ἔμω ἀλλ' ἔχι καὶ ἑτέραν ἔννοιαν, ἢ καὶ ὡς ἀρτίως ἀπέφημεν τὸ Ἅγιον Πνεῦμα εἶναι ἀμέσως ἐκ τῆ Πατρὸς τρεῖς: ὅτι τῆ Υἱὸς γεννηθέντος, ἐκ τῆ Πατρὸς ἐκπορεύεσθαι νοεῖται τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. Ἀλλὰ περὶ τέττε ἐς πλάτος, ἐν τῇ περὶ τῶν Μαρτυριῶν τῶν Ἀνατολικῶν Πατέρων Πραγματεῖα διήλθομεν. Περὶ δὲ τῆς τῆ Ἐπιφανίε ρήσεως κατωτέρω.

## § 5'.

Ὅπως διδάσκουσιν οἱ Θεοὶ Πατέρες, Εἰκόνα τῆ Υἱὸς  
ὑπάρχειν τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον.

Πάλιν ἀντιπροβάλλουσιν οἱ Λατίνοι λέγοντες τῆς Πατέρας κοινῇ τε καὶ συμφώνως διδάσκειν, ὅτι τὸ Πνεῦμα Εἰκὼν τῆ Υἱὸς ὑπάρχει  
τὸ

(70) Κιχώβ: ἐν Ζητήμ: Η'. Σελ: 91.

τὸ Ἅγιον. Οὐκ ἂν εἴη δὲ τὸ Πνεῦμα Εἰκὼν τῆς Υἱᾶς, εἰ μὴ καὶ ἐξ αὐτῆς ἐκπορεύοιτο. Διὰ γὰρ τῆτο Εἰκὼν τῆς Πατρὸς ἐστὶν ὁ Υἱὸς, ὅτι ἐξ αὐτῆς γεννᾶται.

Ἀπανταχῶς τῷ ὄντι διδάσκουσιν οἱ Πατέρες τῆς Υἱᾶς εἶναι Εἰκόνα τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. Οἷον ὁ Θαυματουργὸς ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ ἐν τῇ Ὁμολογίᾳ παρὰ Γρηγορίῳ τῷ Νύκτις, ἐν τῷ ἐκείνῃ Βίῳ Τόμ: Β'. Σελ: 978. (71) „Εἰκὼν τῆς Υἱᾶς, τελεία τελεία,,. — Καὶ ἈΘΑΝΑΣΙΟΣ ἐν τῇ πρὸς Σεραπίωνα Ἐπισ: κατὰ τῶν τὸ Πνεῦμα κτίσμα εἶναι λεγόντων, Τόμ: Α'. Σελ: 199. „Εἰκὼν τῆς Υἱᾶς λέγεται καὶ ἐστὶ τὸ Πνεῦμα· ὅς γὰρ προέγνω καὶ προώρισε συμμόρφως τῆς Εἰκόνης τῆς Υἱᾶς αὐτῆς,,. — Ταῦτα δὲ καὶ ὁ Μέγας ΒΑΣΙΛΕΙΟΣ ἀπανταχῶς διδάσκει ἐν τῷ Ε'. Βιβλ: τῶν κατὰ Εὐνομίαν: πρὸς δὲ τοῖς ἄλλοις μετὰ τιῶν καταρχῶν, ἐν Τόμῳ Β'. Σελίδι 110. (72) „Εἰκὼν μὲν Θεῶς Χριστός· ὅς ἐστὶ (φησὶν) Εἰκὼν τῆς Θεῶς τῆς ἀοράτης. Εἰκὼν δὲ Υἱᾶς τὸ Πνεῦμα· καὶ οἱ τῆς μεταλαμβάνοντες Υἱοὶ σύμμορφοι κατὰ τὸ γεγραμμένον: ὅτι ὅς προέγνω καὶ προώρισε συμμόρφως, φησὶ, τῆς Εἰκόνης τῆς Υἱᾶς αὐτῆς, εἰς τὸ εἶναι αὐτὸν πρωτότοκον ἐν πολλοῖς Ἀδελφοῖς,,. — Ὁ δὲ ΚΥΡΙΛΛΟΣ ὁ Ἀλεξανδρείας, Βιβλ: ΙΑ'. τῶν εἰς Ἰωάννῳ, ἐν Τόμῳ Δ'. Σελίδι 988. „Τῆς τῆς Μονογενεῖς ὁσίας Εἰκὼν ἀκραιφνής τὸ Πνεῦμα αὐτῆς· κατὰ τὸ γεγραμμένον διὰ τῆς Παύλας: Οὗς γὰρ προέγνω καὶ προώρισε συμμόρφως τῆς Εἰκόνης τῆς Υἱᾶς αὐτῆς,,. Παραπλήσια δ' ἔχει καὶ ἐν Λόγῳ ΛΓ'. ἐν τοῖς Θεσαυροῖς, Τόμῳ Ε'. Σελ: 336. Καθάπερ ἐν καὶ τῷ Θ'. Βιβλ: τῶν εἰς τὸν Ἰωάν: τὸ Πνεῦμα Πρόσωπον εἶναι διδάσκει τῆς Υἱᾶς. Τόμ: Δ'. Σελ: 787. „Εἰ τὸ Πρόσωπον αὐτῆς (τῆς Υἱᾶς) τρεῖς τὸ Πνεῦμα· (Πρόσωπον γὰρ τῆς Υἱᾶς καλεῖ τὸ Πνεῦμα) τὰ πάντα πληροῖ,,. — Καὶ ἸΩΑΝΝΗΣ ὁ Δαμασκηνός, ἐν Λόγῳ Γ'. περὶ Εἰκόνων, Σελίδι 770. (73) „Τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον Εἰκὼν τῆς Υἱᾶς,,. Ταῦτ' ὁ ἔχει, καὶ ἐν Α'. Βιβλ: τῆς Ὁρθοδόξης Πίς: Κεφ: ΙΗ'. (74)

Ἀλλὰ καὶ τότε πάλιν τὸ Ἐπιχέρημα τῶν ἐξ Αἱρέσεως ὡς δι' ἧς κατὰ τῶν Ὁρθοδόξων σιωπῶν, Υἱὸν πεφυκέναι τῆς Υἱᾶς τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. Οὕτω γὰρ ὁ Μέγας ΒΑΣΙΛΕΙΟΣ Βιβλ: Ε'. τῶν κατὰ, Εὐνομίαν, Κεφαλ: ΙΒ'. Τόμ: Β'. Σελ: 120. „Ἀλλὰ λέγεις: εἰ τῆς μὲν Θεῶς εἰκὼν ὁ Υἱὸς, τῆς δὲ Υἱᾶς τὸ Πνεῦμα· διατὶ τὸ Πνεῦμα ὅς λέγεται Υἱὸς τῆς Υἱᾶς,,; Ἀλλὰ κἀντεῦθεν αἶμα

(71) Ἐν τῇ κατὰ τὸ 1638. Παρισ: Ἐκδόσι: Τόμ: Γ'. Σελ: 546.

(72) Κατὰ τιῶν Γαργήνης Ἐκδόσιν Τόμ: Α'. Σελ: 302.

(73) Κατὰ τιῶν Λευκῆς Ἐκδόσι: Τόμ: Α'. Σελ: 354.

(74) Κατὰ τιῶν εἰρημ: Ἐκδόσι: ἐνθ: εἴρηται· Σελ: 151.

Τόμ: Β'.

Ε ΕΕΕ



ἅμα φανερόν ἐστιν, ὁδολῶς τὸν μέγαν Βασίλειον ὑπειληφέναι, ἐκ τῆς τοῦ Πνεύματος εἶναι Εἰκόνα τῆς Τιᾶς, ὅτι ἔπεται τὸ καὶ ἐξ αὐτῆς τῆς Τιᾶς ἐκπορεύεσθαι· ὁ γὰρ δὴ τῆς ἐπιχέρημα ἐκείνου ἐπιλύεται, ὡς δὲ ἄτοπον καὶ ἀπηχὲς ἐκσυρίττει· καὶ περ εἴτι αὐτὸ ἰχύνῃ ἡγήτο, δι' ἧς συμπεραίνεται ἐξ Τιᾶς παράγεσθαι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ἐν δυσὶ ῥήμασι τῇ ἀνθυποφορᾷ ἀπαντήσας, ἔργον ἂν αὐτῷ εἴη πάντως ὁδὸν, διτλόν τινα τὸν τῆς παραγωγῆς τρόπον ἐπὶ τῆς Τριάδος δείξαντι, τὸν μὲν κατὰ γεννησιν, τὸν δὲ κατ' Ἐκπόρουσιν· ὅθεν μὴδ' ὑγιὲς μὴδὲν τῷ Μεζονα ἀποφαίνεσθαι: ὡς ὁ, τινος Εἰκὼν ἐστὶν ἑτέρας, τέρας καὶ Τιᾶς ἐκείνου ἐστὶν. Ἀμέλει τοι τῆς Τιᾶς Εἰκόνα οἱ Πατέρες τὸ Πνεῦμα λέγοντες, ὅτι ἄλλως τὸ λεγόμενον ἐννοοῦσιν, ἢ ὅτι τῆς Ἁγίας Πνεύματος ἐπιγνωθέντος καθ' ὃ ἐστὶ, καὶ ἢ τῆς Τιᾶς ὁσία ἐπιγινώσκεται. Ἐπεὶ μὴδ' ἄλλο τι τὸ Πνεῦμα διαφέρει τῆς Τιᾶς, εἰ μὴ καθότι τῆς Τιᾶς γεννηθέντος, τὸ Πνεῦμα ἐκπορεύεται παρὰ τῆς Πατρὸς. Τῆτον δὲ εἶναι τὸν περὶ τέρας νῦν τῶν Πατέρων, ἐνδελον ἐκ τῶν ῥημάτων ἸΩΑΝΝΟΥ τῆς Δαμασκηνῆς, ἐν τῷ εἰρημένῳ Γ'. Λόγω, περὶ τῶν Εἰκόνων: „Καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον Εἰκὼν τῆς Τιᾶς· ὁδεῖς γὰρ δύναται εἰπεῖν Κύριον Ἰησοῦν, εἰμὴ ἐν Πνεύματι Ἁγίῳ. Διὰ Πνεύματος ἔν Ἁγίῳ γινώσκουμεν τὸν Χριστὸν Υἱὸν τῆς Θεᾶς καὶ Θεόν· ἐν δὲ τῷ Υἱῷ καθορῶμεν τὸν Πατέρα· φύσει γὰρ νοούμενα (75) „Λόγος, Ἄγγελος· Λόγος δὲ μυωτικὸν τὸ Πνεῦμα· ὁμοίᾳ δὲ καὶ „ἀπαράλλακτος ἐστὶν Εἰκὼν τῆς Τιᾶς τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ἐν „μόνῳ τῷ ἐκπορεύτῳ τὸ διάφορον ἔχον· ὁ μὲν γὰρ Τιᾶς γεννητὸς, ἀλλ' ὅτι ἐκπορεύτός, „ Ἐνθα δὴ τρανῶς ἐκδιδάσκει τελεῖαν εἶναι Εἰκόνα τῆς Τιᾶς τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ὑπεξαίρεμένους τῆς τὸν μὲν Υἱὸν γεννητὸν εἶναι, τὸ δὲ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκπορεύτόν: ἐκ τῆς Πατρὸς δηλονότι. Διδάξας γὰρ Εἰκόνα διὰ τῆς εἶναι τὸ Πνεῦμα τῆς Τιᾶς, ὅτι κατὰ πάντα ἴσον ἐστὶ τῷ Υἱῷ, τῷ διαφορὰν ὑπεξῆλε τῆς Ἐκπορεύσεως. Δείξων δὲ, πῶς τὸ Ἅγιον Πνεῦμα τῷ τῆς Ἐκπορεύσεως λόγῳ διαφέρειν ἐστὶ τῆς Τιᾶς, ὅποτε ἄλλως ἀκριβεστάτη τέρας ἐστὶν Εἰκὼν; προσίθουσιν: ὅτι, παρὰ τὰ τὸν Υἱὸν „γεννητὸν, εἶναι, ὅτι „ἐκπορεύτόν, ἐν ᾧ δήπερ νοεῖται τὸν Υἱὸν ἐκ τῆς Πατρὸς γεννᾶσθαι, μὴ ἐκπορεύεσθαι. Καὶ τὸν Πατέρα ὁμοίως ἄρα νοήσας ὡς, ἐν οἷς ἔφασκε τὸ Πνεῦμα τῇ Ἐκπορεύσει διαφέρειν τῆς Θεᾶς· ὥδε γὰρ ἀπέφησε περὶ τῆς Τιᾶς, ὃ πρὶν κατέφησε περὶ τῆς Ἁγίας Πνεύματος. Ἀπέφησε δὲ τὸν Υἱὸν ἐκ τῆς Πατρὸς ἐκπορεύεσθαι: κατέφησεν ἄρα τὸ Πνεῦμα ἐκπορεύεσθαι παρὰ τῆς Πατρὸς.

Ἐπει-

(75) Προσφυῶς ἄγαν Ἰάκωβος ὁ Βίβλιος ἐπιδιορθούμενος ἀνεγίνωσκε: „Φύσει γὰρ, νόος „μὲν (ἢ νῦν μὲν) Λόγος Ἄγγελος, λόγος δὲ κτ: „

"Επειτα δέ: εἰ τιὼν Ἐκπορεύσιν ὁ Δαμασκιωδὸς ἐνόει τιὼν ἐκ τῆς Υἱᾶς, τὸ Πνεῦμα, φάσκων, τὸ "Αγιον ἐκπορεύεσθαι· ἢ, καὶ εἰ μόνον ἀπλῶς πισθύνων ἐτύγχανεν, ὅτι τὸ "Αγιον Πνεῦμα ἐκπορεύεται ἐκ τῆς Υἱᾶς· τὸν δὲ μάλιστα τὸν λόγον ὠφείλεν ἀποδεῖναι, δι' ὃν τὸ Πνεῦμα τῇ Ἐκπορεύσει διαφέρειν ἐστὶ τῆς Υἱᾶς, τὸ τὸν Υἱὸν εἶναι Προβολέα τῆς Πνύματος· ὠφείλε φημί: ἐφ' ᾧ δὴ, καὶ τῷ λόγῳ τῆς αἰτίας ἐπισημειώσασθαι τιὼν διαφορὰν, ἐχὶ δὲ τῷ λόγῳ μόνῳ τῆς αἰτιατῆς· ὡς ἐποίησε. Τῆτο γὰρ δὴ μάλιστα βέβηλονταί τε καὶ διατείνονται Παῖδες Λατίνων. Ἐπεὶ δ' ἔν ἄρα δείξων ὁ Δαμασκιωδὸς τῆς Υἱᾶς διαφέρειν τὸ Πνεῦμα τῇ Ἐκπορεύσει, ἐχὶ τιὼν παραγωγῇ τέττα τιὼν ἐκ τῆς Υἱᾶς, ἀλλὰ τιὼν τῆς Υἱᾶς γέννησιν τιὼν ἐκ τῆς Πατρὸς, ἐπάγει· ὅπερ ἐστὶ: κατὰ τὸν τῆς αἰτιατῆς λόγον μόνον αὐτὰ παρίσῃσι διαφέροντα, ἐκέτι δὲ καὶ κατὰ τὸν τῆς αἰτίας: σαφέςατα δὴπερ ὁ ἐκ Δαμασκῆ Πατήρ ἐντεῦθεν σωιδεῖν παρέχεται, μηδαμῶς ὑπειληφέναι, ὅτι τὸ Εἰκόνα τῆς Υἱᾶς εἰρηῖσθαι τὸ Πνεῦμα, ἀπόδειξις ἐστὶν εἰς πίσιν τῆς αὐτῆς παρὰ τῆς Υἱᾶς Ἐκπορεύσεως.

'Αλλ' ὅτι δὴ, εἰ καὶ διὰ τῆτο ὑπῆρχε τὸ Πνεῦμα Εἰκὼν τῆς Υἱᾶς, ὅτι παρὰ τῆς Υἱᾶς ἐκπορεύεται· ἐποιτ' ἂν ἐν ἅπασιν ὑπὸ τῆς Υἱᾶς παριστάνεσθαι τὸν Πατέρα, καὶ προσέτι δὲ καὶ τῷ κατὰ τιὼν αἰτίαν λόγῳ: ἦτοι τῷ προβάλλειν τὸ Πνεῦμα· πλὴν τῆς, τὸν μὲν Πατέρα τὸν γεννῶντα εἶναι, τὸν δὲ Υἱὸν τὸν γεννώμενον. Ἀλλ' ἔτω δὴ ὑποτεθεῖν, δηλονότι, ἐκ τῆς Υἱᾶς ἐκπορεύεσθαι τὸ Πνεῦμα, ἐκ ἂν ἔτω τῆς Υἱᾶς ἀκριβεῖς Εἰκὼν εἴη, ὥπερ ὁ Υἱὸς τῆς Πατρὸς· ὑπεξαίροίτο γὰρ ἂν, ἢ μόνον ἢ τῆς Υἱᾶς γέννησις ἢ νοσμένη κατὰ πάθησιν, ἀλλὰ καὶ ἢ τῆς Πνύματος προβολὴ ἢ κατ' ἐνέργειαν. "Ωσε τελειότερα τε καὶ ἀκριβεστέρα Εἰκὼν ἂν εἴη τῆς Πατρὸς ὁ Υἱὸς, ἢ τῆς Υἱᾶς τὸ "Αγιον Πνεῦμα· ὅπερ ἄτοπον. "Ωπερ γὰρ ὁ Υἱὸς Εἰκὼν τελεία ἐστὶ τῆς Πατρὸς, ἔτω καὶ τὸ Πνεῦμα Εἰκὼν τελεία ἐστὶ τῆς Υἱᾶς. Ἀλλ' εἰάν τιὼν τῆς Δαμασκιωδῆς Ἰωάννης ἀσπασώμεθα Διδασκαλίαν, ὥπερ τῆς Υἱᾶς ὑπεξαίρεται μόνον ἢ αἰτία, ὡς εἶναι τελείαν αὐτὸν Εἰκόνα τῆς Πατρὸς· ἔτω παραπλησίως, εἰς τε καὶ μόνος διαφορᾶς λόγος, ὁ κατὰ τὸ αἰτιατὸν δηλονότι, ὑπεξαίρεται τῆς Ἁγίας Πνύματος, ὥσε καὶ αὐτὸ Εἰκόνα τελείαν ὑπάρχειν τῆς Υἱᾶς. Ἐνθεν τοι καὶ λὼ πρὸς τιὼν αἰτίαν ἀπίδης· (ὡς εἰ διὰ τὸ ἐκπορεύεσθαι δῆθεν ἐξ αὐτῆς, Εἰκὼν ὑποτεθείη τὸ Πνεῦμα τῆς Υἱᾶς·) τὸν Αὐγαστῖνον ἔξεις, (ἐν τῷ ΙΕ'. τῶν περὶ Τριάδος, Κεφαλ': ΛΒ'.) διαβρήδῳ ἀποφάσκοντα τῆς Υἱᾶς εἶναι Εἰκόνα τὸ Πνεῦμα τὸ "Αγιον. Ἀναπτύσσων γὰρ ἐν ἐκείνοις διὰ τινος ὑποδείγματος τιὼν Τριάδα: καὶ τῇ μὲν Φωνῇ τῆς „γνώσεως,, τὸν Πατέρα ὑπεμφαίνων· τῇ δὲ τῆς „ἐννοίας,, τὸν Υἱὸν· τῇ δὲ τῆς „θελήσεως,, τὸ Πνεῦμα· ἔτω πρὸς τοῖς

Ε εεε 2

ἄλλοις

ἄλλοις φησί: „Τὴν θέλουν ἐκ τῆς γνώσεως προῖεναι· (ἐδὲς γὰρ „δήπερ θέλει, ὅπερ ὅλως τίτε, καὶ ὅποιον ἐστίν, ἀγνοεῖ) μὴ „μέντοι Εἰκόνα εἶναι τῆς ἐννοίας,,. — Ἀλλ' ἐν τῷ περὶ τῆς Γενέσεως Βιβλ: κατὰ τὸ Γράμμα, τῷ ἀτελεῖ ὄντι, ἐν Κεφ: Ις'. „Πᾶσα, φησὶν, Εἰκὼν, τῷ ἑτινος ἐστὶν Εἰκὼν, ὁμοία ἐστίν· ἐμὴ „δὲ καὶ πᾶν τὸ τινὲς ὅμοιον, ἤδη καὶ Εἰκὼν αὐτῷ ἐστίν· ὡς ἐπὶ „τῷ Κατόπτρῳ, ἢ τῷ ζωγραφήματος, ὅτι εἰκόνες, καὶ ὁμοίαι „εἰσὶν. Ἀλλ' εἰ μέντοι ἐξ ἑτέρου ἑτεροῦ ἐκ ἐγεννήθη, ἕτις αὐτῶν „Εἰκὼν θατέρου ῥηθῆναι δυνάται· τότε γὰρ Εἰκὼν, ὅτε ἐκ τινος „ἐκτυπᾶται,,. Ἐν μὲν ἔν τῷ προτέρῳ χωρίῳ ἀπόφησιν Αὐγυστίνος, Εἰκόνα εἶναι τὸ Πνεῦμα τῷ Υἱῷ· καθότι, ὡς ἐν τῷ δευτέρῳ ἀποφαίνεται, τότε Εἰκὼν ἐστίν, ἐπειδὴν ἐκ τινος ἐκφέρεται. Οὐκ ἄρα ἐκ τῷ Υἱῷ ἐκπορεύεται τὸ Πνεῦμα κατ' Αὐγυστίνον, ὅτι ἐκ ἐστὶ τὸ Πνεῦμα Εἰκὼν τῷ Υἱῷ. Ὅτε γὰρ ἐκ θατέρου ἐκφέρεται θάτερον, τότε δὴ καὶ θάτερον ἐστὶ θατέρου Εἰκὼν. Οὐκ ἄρα τὸ Πνεῦμα Εἰκόνα εἶναι τῷ Υἱῷ Αὐγυστίνος ἐπιγινώσκει, εἰ τὸν λόγον ἐννοήσας, δι' ὃν τὸ Πνεῦμα ἐκ τῷ Υἱῷ ἂν ἔχοι τὸ αὐτῷ εἶναι Εἰκὼν. Διόπερ ἐδ' Ἀθανάσιος, ἐπὶ τῆς προτεθείσης ῥήσεως, καθ' ἑτερόν τινα σκοπὸν τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι, ὡς Εἰκόνας τῷ Υἱῷ ὑπεμνήθη, ἢ ἐφ' ᾧ δαῖξαι· μίαν εἶναι τὴν ἐστὶν ἀμφοῖν προσέθῃσι δὲ καὶ τὸν λόγον: ὡς οἷαπερ ἡ Εἰκὼν, τοιοῦτον εἶναι δὲ καὶ τὸ κατ' αὐτῷ. Οὕτω γὰρ πρόεισιν: „Οὐκ ἔν τῷ Υἱῷ „κατ' ἐκείνης ὁμολογημένῃ μὴ εἶναι κτίσματος, ἐκ ἂν εἴη ἐδὲ „ἢ τέττα Εἰκὼν κτίσμα· ὁποῖα γὰρ ἂν εἴη ἡ Εἰκὼν, εἶναι τοιοῦτον ἀνάγκη καὶ τὸν ἑ ἐστὶν ἡ Εἰκὼν. Ὅθεν εἰκότως καὶ πρὸ „πόντως ὁμολογεῖται μὴ ὢν κτίσμα, Εἰκὼν τῷ Πατρὶ ὑπάρ- „χων· ὁ ἄρα τοῖς κτίσμασι σωμαριθμῶν τὸ Πνεῦμα, πάντως „περ καὶ τὸν Υἱὸν ἐν τέτοις σωμαριθμήσει· δυσφημῶν ἐν τῷ „τῷ καὶ τὸν Πατέρα, διὰ τὴν εἰς τὴν Εἰκόνα αὐτῷ δυσφη- „μίαν,,.

Ἀλλ' οἱ Λατῖνοι ἐνίστανται: Διὰ δὴ τῷτο Εἰκὼν, φασὶν, ὁ Υἱὸς τῷ Πατρὶ, ὅτι παράγεται παρὰ τῷ Πατρί. Τῷ αὐτῷ ἄρα λόγῳ, καὶ τὸ Πνεῦμα Εἰκὼν ἐστὶ τῷ Υἱῷ, διὰ τὸ ἐκπορεύεσθαι ἐκ τῷ Υἱῷ. Περὶ γὰρ τῷ Υἱῷ, ὡς διὰ τῷτο τῷ Πατρὶ Εἰκὼν ἐστίν, ὅτι παράγεται ἐκ τῷ Πατρί. Οὕτως ὁ Θεολόγος ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ, Λόγῳ Λς'. ὅς τῶν περὶ τῷ Υἱῷ ὁ Β'. ἐστίν: καὶ πάνυ πολὺ πρὸ τῷ τέλει: „Εἰκὼν δὲ, ὡς ὁμοῖον καὶ ὅτι „τῷτο ἐκείθεν, ἀλλ' ἐκ ἐκ τέττα Πατρί. Αὕτη γὰρ Εἰκόνας φύ- „σις, μίμημα εἶναι τῷ Ἀρχετύπῳ, καὶ ἑ λέγεται,,.

Ἀλλὰ τίς γὰρ, εἰπέμοι: ἢ ἐντεῦθεν σωέπεια; ὁ Υἱὸς ἢ περ ἐκ τῷ Πατρὶ γεννᾶται, ἔχει τὸ Εἰκὼν εἶναι τῷ Πατρί· ἢ τοῖ ὁ Υἱὸς Εἰκὼν ἐστὶ τῷ Πατρὶ, ὅτι ἐκ τῷ Πατρί, καὶ ἐκ ἐξ αὐτῷ

αὐτῷ ὁ Πατήρ. Ἄρα καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ὡσαύτως Εἰκὼν ἐστὶ τῷ Υἱῷ, ὅτι ἐκπορεύεται ἐκ τῷ Υἱῷ; ὅπερ ἐστὶν: ὅτι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ἥπερ ἐκ τῷ Υἱῷ ἐκπορεύεται, ἔχει τὸ Εἰκὼν εἶναι τῷ Υἱῷ; Μὴ γὰρ, ἐπειδὴ ὁ Υἱὸς Εἰκὼν ἐστὶ τῷ Πατρὶ, ὅτι ἐκ τῷ Πατρὶ ἐντεῦθεν ἔπεται καθόλου ἐν τοῖς Θεοῖς, εἰκόνα τι πατέρα μὴ διώσθαι εἶναι, ὅτι μὴ τῷ ἐξ ἑ παραγέται; Ἀλόγως. Πάντως καὶ γὰρ, καὶ διὰ τῶν ἄν' εἴη τῷ Υἱῷ Εἰκὼν τὸ Πνεῦμα, ὅτι ὁ Πατήρ τῷ Υἱῷ παραχθέντος, καὶ ἕτερον τῷ εἶναι κοινωνὸν ἔχειν βεβλόμενος, ἐκ μιᾶς τε, καὶ ἐν μιᾷ καὶ τῇ αὐτῇ Θεῷ ἐστὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα προῶνγκε, τῷ Υἱῷ ἴσον κατὰ πάντα καὶ ὅμοιον. Οὕτως ὥσε, καθάπερ ὁ Υἱὸς ἔ διαφέρει τῷ Πατρὶ, εἰμὴ τῷ λόγῳ τῆς αἰτίας, ὡσαύτως καὶ τὸ Πνεῦμα μὴ διαφέρει τῷ Υἱῷ, εἰμὴ τῷ λόγῳ τῷ αἰτιατῷ. Αὕτη γὰρ ἐπὶ τέτοις ὡ καὶ ἡ τῷ Δαμασκῷ Ἰωάννῃ Διδασκαλίᾳ, ὡς εἶδομεν. Ἔτι δὲ δὴ, καὶ τὰ ἘΦΡΑΪΜ τῷ Σύρι, ἐν τῷ περὶ τῆς Ἐξομολογήσεως καὶ τῆς αὐτῇ Ἐπιτιμήσεως Λόγῳ, τοιαῦτα ὡ: „Ὅτι θελήσας ὁ Πατήρ καὶ ἄλλον κοινωνὸν προβαλεῖν, ἔχ' ὃν ἔτεκεν, ἀλλὰ Πνεῦμα Ἅγιον ἐκ τῆς ἐστὶς αὐτῇ σιωέσησεν ἔκ τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα προήγαγεν, ἵνα μὴ ἐπώμεν ὑπ' ἀνάγκῃ τὸ θελημα. — τὸ δὲ εἶπεν ἡμᾶς μετὰ τὸν Υἱὸν τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ἔχ' χρόνῳ ἐστὶ σημαντικόν, ἀλλὰ προσώπῳ. Οὕτω καὶ ὁ Ἀδάμ Εἰκὼν τῷ Θεῷ λέγεται, καὶ ἡ Εὐὰ Εἰκὼν τῷ Ἀδάμ· ὁ μὲν γὰρ Ἀδάμ κατ' Εἰκόνα Θεῷ ἡ δὲ Εὐὰ κατ' Εἰκόνα παρήχθη τῷ τῷ Ἀδάμ. (76) Καίτοι ὁ μὲν Ἀδάμ ὑπὸ τῷ Θεῷ ἐκτίθη, τῷ δὲ Εὐὰν ἔχ' ὁ κτίσας ὡ ὁ Ἀδάμ, ἀλλ' αὐτὸς ὁμοίως ἐποίησεν ὁ Θεός.

Ἄλλ' ὥδε ἐρεῖς: Διαφόρῳ λόγῳ τε καὶ ἐννοίᾳ, μᾶλλον δὲ ὁμωνύμως ἄρ' ἔτις ἐστὶ ὁ μὲν Υἱὸς Εἰκὼν τῷ Πατρὶ, τὸ δὲ Πνεῦμα Εἰκὼν τῷ Υἱῷ· ὅπερ ἄτοπον. — Ἀλλὰ πῶς, ἔχ' τὸν αὐτὸν τρόπον, ὁμωνύμως δὲ, ὁ μὲν Υἱὸς τῷ Πατρὶ, τῷ δὲ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα, Εἰκὼν ἂν εἴη, εἰ μὴ καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ παραγόμενον ὑποτεθείη τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον; Οὐχὶ δὴπερ ὡσαύτως: ὡπερ ὁ Υἱὸς, διὰ τὸ πάντα ἔχειν τὰ τῷ Πατρὶ, (ὑπεξαίρεμένης τῆς αἰτίας, τῶν τε τῆς ὑποστατικῆς ιδιότητος) Εἰκὼν ἐστὶ τῷ Πατρὶ· ἔχ' ὡσαύτως, φημί, καὶ τὸ Πνεῦμα, διὰ τὸ πάντα ἔχειν τὰ τῷ Υἱῷ, (μόνης τῆς κατὰ τὸ αἰτιατὸν διαφορᾶς ὑπεξαίρεμένης, ἥτις

(76) „Ποιήσωμεν αὐτῷ βοηθὸν κατ' αὐτόν,“ (Γεν: Β'. 18.) Εἰ γὰρ κατ' αὐτόν, ἄρα καὶ Εἰκὼν τῷ Ἀδάμ ἡ Εὐὰ, πρὸς ὃν ἐληχε τῷ ἐμφέρειαν. Οὐμὴ ἀλλ' ἐκ ἄν' τις ἐκ τῶν σιωάσκειν, ὡς ἄρα ἡ Εὐὰ ἐκ ἑστὶ κατ' Εἰκόνα Θεῷ· ἡ γὰρ τῆς Εἰκόνας Εἰκὼν, ἡ αὐτῇ ἐμπῆς Εἰκὼν καὶ τῷ πρωτοτύπῳ. Ἀλλ' ἔχ' γὰρ ὁ Ἀδάμ, Θεὸς δὲ ὡ, ὁ τῷ Ἀδάμ τῷ Εἰκόνα προῶνκε, καὶ αὐτῷ κατὰ τὸ ἐπόμενον.  
Τόμ: Β'. Ζ' 555



ἥτις καὶ αὕτη ὑποστατικὴ ἰδιότης ἐστὶ) Εἰκὼν ἐστὶ τῷ Υἱῷ; ἢ γε μὴν διαφορὰ, ἢ τῷ λόγῳ τῷ αὐτίκ τε καὶ τῷ αἰτιατῷ θεωρημένη, ἕτινα τῶν Εἰκόνων ὁμωνυμίαν ἐν τοῖς Θεοῖς ἐνεσάγει. Ἀλλως γάρ, καὶ κατ' αὐτὰς ἐστὶ Λατίνες, ὁμωνύμως ἂν λεγοίτο τῷ Πατρὶ Εἰκὼν ὁ Υἱὸς, καὶ τὸ Πνεῦμα τῷ Υἱῷ. Ὁ μὲν γὰρ Υἱὸς, διὰ τῷτο Εἰκὼν τῷ Πατρὶ, ὅτι ἐξ αὐτοῦ γεννᾶται· τὸ δὲ Πνεῦμα Εἰκὼν τῷ Υἱῷ κατὰ τὰς αὐτὰς, ὅτι ἐκ τῷ Υἱῷ ἐκπορεύεται.

Ἀλλ' ὁ Ἰησοῦτης (77) ἐνέσηκεν: Ἐν τοῖς Θεοῖς, φησὶ, θάτερον θάτερον πρόσωπον Εἰκὼν λέγεται, διὰ τὸ ἐξ αὐτοῦ εἶναι, ἕπερ Εἰκὼν ἐστίν, ὡς ὁ Θεολόγος διδάσκει ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ. — Ἀλλὰ τῷ δε τῷ λόγῳ περὶ τῷ Υἱῷ φάσκει ὁ Θεὸς Γρηγόριος, Εἰκόνα τῷ Πατρὶ αὐτὸν εἶναι, ὡς ὄντα ἐκ τῷ Πατρὶ· ἕκτι δὲ καὶ κἄν ἀπλῶς διδάσκει, ὅτι ἐν τοῖς Θεοῖς τὸ θάτερον ὃν πρόσωπον Εἰκὼν, καὶ ἐξ αὐτοῦ παράγεται, ἕπερ ἐστὶν Εἰκὼν τοῦτον δὲ μόνον, ταύτῃ εἶναι τῷ φύσει τῆς Εἰκόνης προσέθησι: τὸ τῷ Ἀρχετύπῳ αὐτῷ εἶναι μίμημα. Ἐπάγει δὲ τῷτο, δηλονότι, ἔχ' ἵνα δείξῃ ἀπλῶς μὴ διώσθαι θάτερον θάτερον εἶναι Εἰκόνα, εἰ μὴ καὶ ἐξ αὐτοῦ παράγοιτο· ἀλλ' ἐφ' ᾧ δείξαι, μὴ διώσθαι εἶναι τὸν Πατέρα ἐκ τῷ Υἱῷ, ἀλλὰ τὸν Υἱὸν πεφυκέναι ἐκ τῷ Πατρὶ σαφὲς ὃν, ὅτι ἐξ ἀνάγκης ἐκ τῷ ἑτέρῳ τῶν ὁ ἕτερος. Εἴπερ γὰρ τῷ Ἀρχετύπῳ μίμημα ἢ Εἰκὼν, προεπινοεῖται πάντως τὸ Ἀρχέτυπον τῆς Εἰκόνης· ἔκ' ἄρα ἐκ τῆς Εἰκόνης παράγεται τὸ Ἀρχέτυπον. Ἀλλ' εἴπερ ἕτως ἔχει τὰ περὶ ὧν ὁ λόγος, ὡς θάτερον ἐκ θάτερον παράγεσθαι, δεῖ πάντως τῷ Εἰκόνα ἐκ τῷ Ἀρχετύπῳ ἔχειν τῷ παραγωγῷ. Καὶ ἕτως ἄρα καὶ τῷ Υἱῷ Ἀρχετύπως ἔχοντος πρὸς τὸ Πνεῦμα, προεπινοεῖται ὁμοίως πρὸς τῷ Πνεύματος ὁ Υἱὸς, τῷ λόγῳ, δηλονότι, τῆς ἐκ τῷ Πατρὶ αἰτίας, ἔχ' τῷ χρόνῳ. Καὶ ὁ μὲν Αὐγουστίνος ἐπὶ τῶν προαπομνημονυθέντων αὐτοῦ ῥημάτων ἀπέφασκεν εἶναι Εἰκόνα, εἰ μὴ ἕνθα θάτερον ἐκ θάτερον ἐκφέρεται· ἀλλὰ γε τῶν ἐνεκα καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ὡς ἀποφάσκων εἶναι Εἰκόνα τῷ Υἱῷ.

Καὶ κἄν δ' ἐτι ἀντιπροβάλλωσι, τὸ τὸν Υἱὸν εἶναι Πρωτότυπον τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος, ἢ καὶ ἡμεῖς ἤδη σπεφήμεν· ὁ, τε Θεοματῆργος ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ διδάσκει ἐν τῇ κατὰ Αἰλιανὸν Ἐκθέσει τῆς Πίσεως: (78) „Τῷ μὲν Κυρίῳ τὸν Πατέρα εἶναι Ἀρχὴν τὸν ἀπ' αἰῶνος αὐτὸν γεννήσαντα· τὸν δὲ Κύριον τὸ Πρωτότυπον

(77) Κιχώβ: ἐν Ζητήμ: Δ'. Σελ: 40.

(78) Ὁρα ἐν τῇ Παρισιακῇ Ἐκδόσει, τῇ κατὰ τὸ 1622. Ἔτος· ἐν ᾗ Λατινιστὶ μόνον ἢ περὶ ἧς ὁ λόγος ἐμφέρεται Ἐκθέσις, Σελ: 100.



„τότυπον εἶναι τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι“. Ταῦτα γὰρ ἄλλως τῶν πρὸς ἄλληλα ἀναφερομένων ἐστίν. Ἡ μὲν γὰρ Εἰκὼν τῷ Πρωτότυπῳ Εἰκὼν τὸ δὲ Πρωτότυπον Εἰκόνας Πρωτότυπον. Ἀλλ' ὅτι γὰρ ἀνωτέρω εἴρηται λόγῳ τὸ Πνεῦμα Εἰκόνα πεφυκέναι τῷ Υἱῷ, τῷ αὐτῷ λόγῳ καὶ ὁ Υἱὸς τὸ Πρωτότυπον εἶναι λέγεται τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι τῶν γὰρ πρὸς τι πως λεγομένων εἰς ὁ λόγος, καὶ ἡ φύσις μία. Ὁ δέ τοι λόγος: ὅτι ὁ Θεὸς καὶ Πατὴρ τῷ Υἱῷ γεννηθέντος, κοινωνὸν τὸ Ἅγιον Πνεῦμα θέλων παρήγαγε, τῷ Υἱῷ ἐν ἅπασιν ἴσον καὶ ὅμοιον. Καθ' ἡμέραν ὁμοίως τῷ λόγῳ τῷ δε, καὶ ὁ Ἀδὰμ τὸ Πρωτότυπον ἐστὶ τῆς Εὐας (ἢ γὰρ Εὐὰ Εἰκὼν ἐστὶ τῷ Ἀδάμ) τῷ Θεῷ τὴν Εὐαν, δηλονότι, κατ' Εἰκόνα τὴν τῷ Ἀδάμ διαπλάσαντος.

Ἀνθυποφέρουσι γεμῶν ἐτι Λατῖνοι: Εἰ διὰ τὴν μίαν τε καὶ τὴν αὐτὴν ἐστίαν Εἰκὼν τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα καλεῖται, ἤδη καὶ ὁ Πατὴρ τῷ Υἱῷ, καὶ ὁ Υἱὸς Εἰκὼν ἐστὶ τῷ Πνεύματι. — Ἀλλὰ γὰρ ἐμπης ὁ μόνον τὸ ἐνιαῖον καὶ ταύτῃ τῆς ἐστίαν ἐναπαιτῆται, εἰς τὸ εἶναι Εἰκόνα πατέρα πατέρα προσδεῖ δὲ, καὶ μίμημα εἶναι τὴν Εἰκόνα τῷ Ἀρχετύπῳ, ὡς ὁ Θεολόγος Γρηγόριος ἔφασκε. Διὸ καὶ τῷ λόγῳ τῆς αἰτίας προῦφεσηκέναι δέον τῆς Εἰκόνας τὸ Ἀρχετύπον ἐξ ἀνάγκης· ἔτι καὶ ὁ Υἱὸς Εἰκὼν τῷ Πατρὶ ἐστίν· ὁ δὲ Πατὴρ τῷ λόγῳ τῆς αἰτίας τῷ Υἱῷ προῦφεσηκε γεννήσας αὐτόν. Καὶ τὸ Πνεῦμα δὲ Εἰκὼν ἐστὶ τῷ Υἱῷ· ὁ δὲ Υἱὸς τῷ λόγῳ τῆς αἰτίας πρότερος ἐστὶ τῷ Πνεύματι· ὁ μὲν γὰρ Υἱὸς μήτινος παραχθέντος γεννᾶται, τὸ δὲ Πνεῦμα τῷ Υἱῷ γεννηθέντος παράγεται. Ἐπειδὴ ἄρα ἔθ' ὁ Υἱὸς τῷ Πατρὶ, ἔτε τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον τῷ Υἱῷ, τῷ τῆς αἰτίας λόγῳ προῦφεσηκε, διὰ τῆς ἐξ αὐτοῦ τῷ Υἱῷ Εἰκὼν ὁ Πατὴρ ἡδυνάτω εἶναι, ἔθ' ὁ Υἱὸς τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι.

Καὶ ἸΩΑΝΝΗΣ προσέτι ὁ Προβιγκιάλις ἐν τῇ κατὰ Φλωρεντίαν Σωόδῳ, Σωελούσει ΚΒ'. (79) ἐντεῦθεν ἐνίστατο: „Ἐκ τῆς (φάσκων) σωάγεται, ὅτι ὡς ὁ Υἱὸς Εἰκὼν λέγεται τῷ Πατρὶ, ἔτω καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, τῷ Υἱῷ. Ἡ δὲ Εἰκὼν κατὰ τὴν ἀπάντων τῶν Θεωπεσιῶν Πατέρων Διδασκαλίαν, πρόοδον σωεισάγει τὴν κατὰ ὁμοίωσιν ἑτέρας· καὶ τῆς δὴλον ἐξ αὐτῆς τῆς Θεογραφικῆς ὕψους: ἔνθα ἡ Σοφία, ἡτοι ἡ Θεία Γραφὴ περὶ τῆς Σοφίας λέγεται, ἔτω φησὶν: Ἀτμὶς γὰρ ἐστὶ τῆς τῷ Θεῷ διωάμεως, καὶ ἀπόρροια τῆς τῷ Παντοκράτορος δόξης ἐλκρινῆς· ἡ δὲ ἀπόρροια ἐπεισάγει τὴν Πρόοδον. „Καὶ

(79) Ἐν τοῖς Πρακτικοῖς τῆς Φλωρεντιανῆς Σωόδου, τοῖς ὑπὸ Ὡρατίου, τῷ Ἰεσινιανῷ Συγγραφεῖ ἐν Σωαθροῖσι ΚΒ'. Παρὰ Ἀρδεῖαν ἐν τῷ Θ'. τῶν ὑπ' αὐτῷ Ἐκδοθ.: Σωοδικ: Τόμος, Στήλη 939.

„Καὶ ἀδύνατον ἄρα εἶναι τι κατ' Εἰκόνα τινὸς, ἄνευ τῆ προίεναι  
 „κατὰ τὴν ἐκείνης ὁμοιότητα. Τὸ δὲ, ἐξ ἧς πρόεισιν ἡ Εἰκὼν,  
 „καλεῖται Ἀρχέτυπον· ἢ δυνάται δὲ εἶναι τῆ Τίτ' Εἰκὼν ἐν τοῖς  
 „Θείοις, εἰ μὴ φυσική. Διὰ τῆτο ἄρα λαμβάνει τὴ φύσιν ἐκ  
 „τῆ Πατρός. Ἐπεὶ δὲ ἄρα λαμβάνει τὴν φύσιν, Εἰκὼν λέγεται  
 „αὐτῆ. Ἐπειδὴ δὲ ἄρα καὶ τὸ Πνεῦμα φύσει πρόεισιν· ὅτι ἡ  
 „Θεία φύσις αὐτῷ κοινωνεῖται καὶ δίδεται· λέγεται δὲ καὶ Εἰκὼν  
 „τῆ Τίτ'. Εἰκὸς ἄρα καὶ τὴν φύσιν αὐτὸ λαμβάνειν, καὶ τὸ  
 „εἶναι ἐκ τῆ Τίτ'.

Πρῶτον μὲν ἔν, ψυδὲς πάντη, τὸ τὴν Εἰκόνα σweisάγειν  
 πρόοδον κατ' ὁμοίωσιν ἑτέρω, κατ' ὡς ἔννοϊαν ὡδε τῆτο ὁ Ἰωάν-  
 νης νοεῖ· τετέστι: τὸ ἐξ ἀνάγκης τὴν Εἰκόνα ἐκ τῆ αὐτῆς Ἀρχε-  
 τύπου παράγειν. Τίς γὰρ τότε τῶν Πατέρων ποτὲ παρέδωκε;  
 ἢ Ἰωάννης ἐπικομπάζει δοξάζειν ἅπαντας; Τὰ δὲ οὖν ἐκ τῆς  
 Γραφῆς προτεθέντα (Σοφ: Κεφ: Ζ'.) τοιάδε εἰσιν: Ἀτλὺς γὰρ  
 „ἐστὶ τῆς τῆ Θεῆς δωάμεως, καὶ ἀπόρροια τῆς τῆ Παντοκράτορος  
 „δόξης ἀλικρινῆς. Διὰ τῆτο ἔδεν μεμιαμμένον εἰς αὐτὴν πα-  
 „ρεμπίπτει· ἀπάνυγασμα γὰρ ἐστὶ φωτὸς αἰδῖς, καὶ ἔσοπτρον ἀκη-  
 „λίδωτον τῆς τῆ Θεῆς ἐνεργείας, καὶ Εἰκὼν τῆς ἀγαθότητος αὐ-  
 „τῆς. Πῶς δὲ, πρὸς Θεῆ! ἐνταῦθα: (ἐν οἷς ἡ Σοφία λέγεται  
 ἀπόρροια τῆς τῆ Παντοκράτορος δόξης, καὶ Εἰκὼν τῆς τῆ Θεῆς  
 ἀγαθότητος:) πῶς ἅμα διδάσκεται, καὶ ὅτι ἡ ἀπόρροια ἐνείσεται  
 τὴν τῆ Πνέματος Πρόοδον, ἢ τὴν ἐκπόρευσιν; Μὴ γὰρ, διὰ τὸ  
 τὴν Σοφίαν ἀπόρροϊάν τε εἶναι καὶ Εἰκόνα Θεῆ, ἔδεν τῆ λοιπῆ  
 Εἰκὼν-ἂν εἴη ἑτέρω, ἀλλ' ἢ ἡ ἐξ ἑτέρω ἀπόρροια; Πρὸς οἷς καὶ  
 τότε σημειωτέον: ὅτι, ἔχ' ἵνα δείξῃ τὴν Σοφίαν ἀπόρροϊαν εἶναι  
 τῆς τῆ Θεῆς δόξης ἐκείνη ἐπιφέρει: „ὅτι Εἰκὼν ἐστὶ τῆς ἀγαθό-  
 „τητος αὐτῆς: ἀλλ' ἵνα κοτασκυδάσῃ τὴν Σοφίαν ἀκηλίδωτόν τε  
 „εἶναι καὶ ἀμείντον,· ἔτω γὰρ εἴχε τὰ Γραφικά: „Διὰ τῆτο  
 „ἔδεν μεμιαμμένον εἰς αὐτὴν παρεμπίπτει. Ἀπάνυγασμα γὰρ ἐστὶ  
 „φωτὸς αἰδῖς, καὶ ἔσοπτρον ἀκηλίδωτον, τῆς τῆ Θεῆς ἐνεργείας.  
 Ἀλλὰ τὰ λοιπὰ τῆ Ἰωάννης, ἐν τῇ Ἀπαντήσει τῆς παραπλησίως  
 τῆ Βελλαρμίνης Ἐνστάσεως διαλελύσεται.

Οὕτω γὰρ ὁ ΒΕΛΛΑΡΜΙΝΟΣ ἐν Βιβλ: Β'. τῶν περὶ τῆ  
 Χρῆσ, Κεφαλ: ΚΕ'. „Σημειωτέον δὲ τό: („Εἰκὼν τῆ Τίτ',·)  
 „Καί ται γὰρ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ἔχ' ἔτω κυρίως Εἰκὼν ἐστὶ  
 „τῆ Τίτ', ὡς ὁ Τίτ' Εἰκὼν ἐστὶ τῆ Πατρός: ὅτι ἢ πρόεισι δωάμε  
 „τῆς ὁμοιότητος· ἐμὴν ἀλλ' ἔκ' εἴχεν Εἰκὼν λεγεσθαι τῆ Τίτ', εἰ  
 „μὴ ἐξ αὐτῆς ἐκπορεύοιτο, καὶ αὐτῷ κατ' ἑσῖαν ὅμοιον εἴη. Ἡ  
 „γὰρ Εἰκὼν χέσιν λέγει τῆ προβληθέντος πρὸς τὸν προβάλλοντα·  
 „καὶ ταύτης ἄνευ τῆς ἀναφορᾶς, ἔδ' ἂν ἡ τυχεῖσα ὁμοιότης ἀπέ-  
 „χρησε. Διὸ ἔδ' ὁ ἀδελφὸς Εἰκὼν λέγεται τῆ ἀδελφῆς, καὶ  
 „αὐτῷ

„αὐτῷ ἢ ὁμοιότατος· ἔδ' ὡν ὡς Εἰκὼν ἐστὶ, καὶ τοι δι' ὁμοιότητα  
 „ἕτερον ἑτέρου μολίς περ διακρίνοιτο· ἔ γάρ ἡ ὁμοιότης ἀπόχρη,  
 „προσαπαιτῆται δὲ καὶ τὸ θάτερον ἐκ θατέρου παράγεσθαι· ὅπερ  
 „ἐπὶ τῶν ὡν, καὶ τῶν ἀδελφῶν ἔχ' εὐρίσκεται. Ἐπειδὴ τοίνυν  
 „ὁ Θεὸς Γρηγόριος Εἰκόνα εἶπε τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον τῷ Υἱῷ,  
 „ἐκτὸς ἀμφιβολίας ἀπάσης, ἐκ τῷ Υἱῷ ἡγάτο ἀληθῶς αὐτὸ ἐκ-  
 „πορεύεσθαι. Ἐρεῖς: μηδαμῶς ἀπαιτῆσθαι, τὸ τῆς Εἰκόνας αἰτίαν  
 „εἶναι ἐνεργητικῶς τὸ Ἀρχέτυπον· ἄλλ' ἔχειν τὸ Παραδειγμα-  
 „τικῶς αὐτῷ εἶναι, ὡς ἐπὶ τῶν Ἀνδριάντων. Ἀποκρίνομαι:  
 „Ἐπὶ μὲν τῶν κατὰ τέχνῃ, μηδαμῶς εἶναι τὸ παράδειγμα  
 „αἰτίαν ἐνεργητικῶς· ἀλλ' ἐπὶ τῆς κατὰ φύσιν παραγωγῆς καὶ  
 „μάλα· καὶ γὰρ τῇ κατ' ἐνέργειαν ἀρχῇ ἐξ ἀνάγκης συμπίπτει,  
 „ὡς δηλὸν κοινῶς ἐπὶ πάντων. Πάντα γὰρ τὰ κατὰ φύσιν  
 „ἐνεργῶντα παράγει τὰ ἐξ αὐτῶν αἰτιατὰ, κατὰ τὴν τῷ σφῶν  
 „αὐτῶν εἶδος ὁμοιότητα. Ἀνθρώπου γε, καὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος,  
 „ἐκ ἐλευθέρως, ἀλλὰ φύσει προβαλλομένων, τὸ αὐτὸ ἐστὶ, καὶ ἀρχὴ  
 „ἐνεργητικῇ, καὶ παράδειγμα πρὸς αὐτό,,.

Ἀλλὰ γὰρ πρῶτον, ψευδὲς ἐστὶ τὸ τὴν Εἰκόνα ἀναφορὰν  
 ἔχειν τὴν τῷ παραγομένῳ πρὸς τὸ παράγον. Οἱ δὲ τῷ Ἰησοῦ  
 λόγοι ἔδεν εἰς τῷ σωτελεῖντες εἰσὶν· ἡ γὰρ ἀπὸ τῶν κατὰ φύ-  
 σιν ἐπὶ τὰ Θεῖα σωέπεια, ἰχῦει πάντως ἔδεν· ἔ γάρ δὴ ταῦτα  
 πρὸς ἐκείνα παραβάλλεσθαι δυνάται, ὡς ἅπαντα μὲν νῦν, ἅπαν-  
 τα δὲ φύσεως θεσμὸν ὑπερπαίοντα. Ἀμεινον ἔν πάντως ὡς ἐπὶ  
 τῶν τοιῶν, τῇ τῶν Θεωπεσίῳ Πατέρων παρακολοθεῖν ἐξηγή-  
 σει, ἢ ὑπὸ τῶν ἐν τῇ φύσει λόγων ἀγεσθαι. Ὁ μὲν ἔν Θεῷ  
 ἸΩΑΝΝΗΣ ὁ Δαμασκηνὸς τρανῶς ὡς διδάσκων, διὰ δὴ τῷ Εἰ-  
 κόνα εἶναι τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα, ὅτι κατὰ πάντα τὰ αὐτὸν ἐστὶ τῷ  
 Υἱῷ: ὡς γεμῖν ἀμφοτέρων ἐκ τῷ Πατρὸς πεφυκότων: ἡμῖς δὲ,  
 διὰ τὸ τὸν Υἱὸν Προβολέα εἶναι τῷ Πνεύματος. Ἀλλ' ὁ Ἰησοῦς  
 φησὶν: „ὅτι τὸ παράδειγμα αἰτία ἐστὶν ἐνεργὸς ἐπὶ τῆς κατὰ  
 „φύσιν παραγωγῆς,, καὶ δὴ, τῷ Πνεύματος φύσει παραγομένῳ,  
 καὶ τό γε παράδειγμα πάντως αἰτία ἔσται ἐνεργητικῇ. — Ἀλη-  
 θὲς μὲν ἔν, τότινα ἐνεργητικῶς αἰτίαν, ἐπὶ τῆς κατὰ φύσιν  
 παραγωγῆς παράδειγμα γίνεσθαι. Ψευδὲς ἀλλ' ἔν ὅτι, ἐπειδάν τι  
 φυσικῶς παράγεται, καὶ τὸ παράδειγμα ἐξ ἀνάγκης αἰτίον ἐστὶ  
 κατ' ἐνέργειαν. Ἐχοι γὰρ ἂν ἡ ἐνεργὸς αἰτία πρὸς ἕτερον πα-  
 ράδειγμα καὶ τὴν ἰδίαν Εἰκόνα προαγαγεῖν· καθάπερ ἔν καὶ ὁ  
 Θεὸς τὴν Ἐυαν, κατ' Εἰκόνα ἰδίαν τὴν ἑαυτοῦ: (ὁμοίαν τῷ Ἀδάμ  
 δηλονότι) ἐποίησεν. Ἡ δέ τοι δέξις ὡς ὁ Ἰησοῦς ἐπάγει, ἔδεν  
 ὑγιές: (80) „Πάντα, φησὶν, ἃ κατὰ φύσιν ἐνεργεῖ, αἰτιατὰ  
 „παρά-

(80) Εἶχε μὲν ἔχ' ἔτω καλῶς, (ἢ φησὶ περὶ Θεωπεσίῳ Κυρίῳ) ἐκ τῶν κατωτέρων  
 Τόμ: Β'. Η 1111 καὶ

„παράγει καθ' ὁμοιότητα τῶ εἶδους τῶ ἑαυτῶν,,. Ἐντεῦθεν δὲ ἔδεν ἕτερον ἔπετα, ἢ ὅτι τὸ παράγον ἐστὶ τὸ παράδειγμα τῶ παραγομένου· δεῖξαι δ' ὤφειλεν, ὅτι τὸ παράδειγμα ἐξ ἀνάγκης παράγον ἐστὶν ἐπειδάν τι παράγεται, ἵν' εἶχεν ἐντεῦθεν ἐπισιῶψαι, διὰ τὸ παράγεσθαι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, τὸ παραδειγματικὸν αὐτῶ τῇ ἐνεργητικῇ ἀρχῇ ἐξ ἀνάγκης συμπίπτειν· ἔγω γὰρ μόνον ἂν ἔποιτο, ὅτι ὁ Πατήρ, ὡς ὢν ἡ ἐνεργητικὴ ἀρχὴ ἡ τῶ Πνῶματος, καὶ τὸ αὐτῶ τέττε παράδειγμα ἐστὶν· ἔκην δὲ καὶ κείνο, ὅτι καὶ ὁ Υἱὸς ὁμοίως, τῶ Ἁγίῳ Πνῶματος ἐστὶ παράδειγμα, διὰ τὸ τῶ αὐτῶ καὶ αἰτίαν ὑπάρχειν ἐνεργητικῶν.

Προσίθηςίτις, (81) ὅτι καὶ ὁ Θεὸς ΒΑΣΙΛΕΙΟΣ, ἐν τῷ Β'. Βιβλ: τῶν κατὰ Εὐνομίᾳ, τρανῶς διδάσκει: ἀληθινῶς τε καὶ φυσικῶς Εἰκόνα μὴδ' ἐν τῷ κτίσματι δίδοσθαι, εἰ μὴ ἐξ ἐκείνου αὐτῶ παραχθείη, ἔπερ ὃν τυγχάνει Εἰκῶν. — Ἀλλὰ τί τὸ ἐκ τέττε; Ἐν τοῖς κατὰ φύσιν, Εἰκῶν ἔ δίδοται, εἰ μὴ ἐξ ἐκείνου παραχθείη, τῶ ἔπερ ἐστὶν Εἰκῶν. Ἄρα καὶν τοῖς Θεοῖς αὐτὸ δὴ τέτο παρέψεται; Ἀτόπως. Καμῶ καὶ περὶ τέττε, τὰ τῶ Βασιλείᾳ ἡμῶν ὤφειλε παραθέσθαι, τῶ διαρρήδῳ τεττὶ ἀποφάσκοντος ἐν τοῖς Θεοῖς Εἰκόνα δίδοσθαι, ὡ μὴ καὶ ἐξ αὐτῶ, ἔτινος Εἰκῶν ἐστὶ, παράγοιτο. (82)

Ὁ δ'

καὶ περὶ ἡμῶς, καὶ τῶν ὑπερκειμένων σοχάζεσθαι. Πλὴν ἀλλ' εἶχεν ἂν καὶ συγγνωσόν τι ὁ λόγος ἴσως, διὰ τῶν φαινόμενων ἐν τοῖς ἀκαταλήπτοις πλαναίμενος, εἰ καὶ ἀληθείας ὁπωσὲν ἠπτετο, ἢ καὶ λέγεται. Νυνὶ δὲ τίς τῶδ' ἔτως ἀπλῶς καὶ καθόλου, τὸ ῥηθὲν συγχωρήσειεν; ὅτι: „πάντα ὅσα κατὰ φύσιν ἐνεργῶντα,, ἐστὶν, αἰτιατὰ παράγει καθ' ὁμοιότητα τῶ εἶδους τῶ ἑαυτῶν,,. Τί γάρ; ἔχῃ Ἥλιος τὰ μὲν τῆκε τὰς ἀκτῖσι προσβάλλων, τὰ δὲ σκληρύνει; καὶ τὰ μὲν λυκαίνει ἐπενεργῶν, ἢ πέφυκε, τὰ δὲ μελαίνει; τὸ δέτοι ἐν ταῖς Σχολαῖς περιεληθὲν: ἔχῃ ἥλιος καὶ ἄνθρωπος γεννᾷ ἄνθρωπον; Καὶ μὲν δὴ, ἔχῃ κατὰ φύσιν ἐστὶν ἡ παραγωγή, καὶ ἡ τῶ ὠδ, (ἐπειδὴ καὶ τῶν ὠδ ἄλλως ἡμῖν ὁ Ἰησοῦς ἐμνήσθη) ἐκ τῆς ὀρνίθου; καὶ ἐκ τῆς Μελίσης ἡ τῶ Μέλitos; καὶ ἐκ τῶ Φυτῶ ἡ τῶ ἄνθους, καὶ τῶ καρπῶ; καὶ ἐκ τῆς Ἀράχνης ἡ τῶ Ἀραχνίε ὑφάσματος; καὶ ἡ τῶ γάλακτος δὲ, καὶ ἡ τῶ σπέρματος, ἐκ τῶ αἵματος, ἢ τῶ ζῶος; Ἀλλ' ὅποια τίς ἐν τέτοις ἡ μεταξὺ τῶν φύσει παραγόντων τε καὶ παραγομένων ἐμφερέα τε καὶ ἀφομοιώσεις, ὥς καὶ τέτων ἔχειν τὰ μὲν ὡς Πρωτοτύπων Εἰκόνας, τὰ δὲ ὡς Ἐκτύπων παραδείγματα ὀνομάζεσθαι;

(81) Κιχώσιος αὐθις ἐν 5. Ζητήμ: Σελ: 65.

(82) Εὐνομίᾳ τὸν Μονογενῆ ὡς πορρωτάτω τῆς τῶ Πατρὸς ἐντελῆς κοινωνίας ἐκστήσαντος, μὴδὲ κατὰ παράθεσιν παραβάλλειν αὐτῶ ἀξίοντος· ἀλλὰ καὶ νόμῳ φύσεως τὴν τῶ Μονογενῆς εἰσὶν ἀπὸ τῆς τῶ Πατρὸς διαρίθου φάσκοντος· ὁ Μέγας Βασίλειος εὐθυβόλως ἄγαν ἐπιφέρει τῆς ἀσεβείας τὸν ἔλεγχον, ἐξ αὐτῶν ἐκείνων πιεστικοῖς κατασκευάζων τὴν πρὸς τὸν Θεὸν καὶ Πατέρα τῶ Μονογενῆς οικειότητά, ἐξ ὧν ὁ Λίρεσιάρχης ἐπεχέρει εἰσβάλλειν τὴν κατ' εἰσὶν ἀλλοτριώσιν. Τέττε γάρ, νόμῳ φύσεως διαφέρειν τὸν Μονογενῆ διατενομένην, ἀλογίαν παντελῆ καταψηφίζεται ὁ Διδάσκαλος δικαίως, ἄτε μὴδὲ τὴν ἐν τοῖς αἰθητοῖς φύσιν ἐπεσκεμμένην. Καὶ γάρ, καὶ κατὰ τῆς φύσεως Φησὶν ἔρεσ, οικειότητα μᾶλλον καὶ συμφύαν μεταξὺ Πατρὸς καὶ Υἱῶ εἰκὸς συνάγειν, ἢ ἑτεροφύαν καὶ ἀλλοτριώσιν: „Οὐ γάρ τὰ ἀλλότρια, Φησὶν, ἔδὲ τὰ ἐναντία, τὰ οἰκεία δὲ μᾶλλον καὶ τὰ προσηκόντα ἀπογεννᾶσθαι πέφυκεν ὑφ' ἐκάστου,,. (Βιβλ: Β'. τῶν κατ' Εὐνομίᾳ, ἐπὶ τῆς



Ὁ δ' αὐτὸς Συγγραφεὺς (83) ἀντιφέρει τελότατον, ὅτι καὶ ΝΙΚΗΤΑΣ ἐν τῷ ὑπομνήματι τῷ εἰς τὸν ΜΒ: Λόγον ΓΡΗΓΟΡΙΟΥ τῆ Θεολόγῃ ὁμολογεῖ, ὡς ἡ Εἰκὼν ἐν τοῖς Θεοῖς τὴν ἐκ τῆ Πρωτοτύπῃ ὑποτίθησι Πρόοδον· ἐν οἷς δηλονότι φησὶν; „Οτι „ὁ Υἱὸς Εἰκὼν τῆ Πατρὸς λέγεται, ὡς ὢν ἐκ τῆ Πατρὸς· ἔτι „δὲ ἀνάπαλιν, ὁ Πατὴρ ἐξ αὐτῆς, — Ἀλλὰ διὰ τῶν, μηδὲ μὴ νοεῖσθαι τὴν Εἰκόνα ἐν τοῖς Θεοῖς, ἐξ ἀνάγκης προϋποτιθέ- ναι τὴν ἐκ τῆ Πρωτοτύπῃ Πρόοδον, ἀνωτέρω, περὶ τὴν τῆ Θεολόγῃ Γρηγορίᾳ ρῆσιν, κεῖται προαποδειχθέν. Τότε γὰρ τὰ ρή- ματα, καὶ τῶν παρακολυθῶν ὁ Νικήτας προώγειν αὐτά.

Ἀλλὰ

τῆς ἑκδόσεως: Γαρυήρ Τόμ: Α'. Σελ: 267.) Πῶς ἔν ἐν τέτοις „τὸ μὴδ' ἐν τοῖς „κτίσμασι, μὴδ' ἐν τοῖς Θεοῖς, φυσικῶς τινα καὶ ἀληθινῶς δίδωσθαι Εἰκόνα, εἰμὴ ἐξ „αὐτῆς, τῆ ἑπερ Εἰκὼν τυγχάνει, παράγειτο; „Ὡςπερ ὁ Ἰησοῦς ἡμῖν ὑποβάλλει τὸν Θεοφύρον Ἄνδρα τρανῶς ἐκδιδάσκοντα; — Ἀλλὰ καὶ τίς ἡ θρασυτής, τῆ ἀδυνάτου ἀποφάνεσθαι θέλει τῷ Θεῷ καὶ Πατρὶ, τὸ, ὅμοιον μὲν αὐτῷ καὶ ἴσον ἀπ' αἰῶνος διὰ γενήσεως τὸν Μονογενῆ Λόγον προενεγκόντι, ὅμοιον ὡσαύτως καὶ ἴσον οἷ τε αὐτῷ, καὶ τῷ ἐξ αὐτῆς γεννηθέντι Λόγῳ, μὴ ἐξεῖναι καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον προβαλέσθαι, διὰ τῆς ἀνεργικῶς ἀποκαλυφθείσης ἡμῖν ἑκπορεύσεως; — Ἐπεὶτα δὲ καὶ ἀναιδῶς διαβάλλειν καὶ τὸν τῆς Ἐκκλησίας Φωστῆρα, ὡς διήθεν τῆτο, μὴδ' ἐν τῇ κτίσει φύσει, μὴδ' ἐν αὐτῇ τῇ ἀκτίσει διωκτὸν εἶναι ἀποφωλύ- μενον; Ἐτερον γὰρ ἡ σαφῶς, ὅπερ ὁ Βασίλειος κατὰ Εὐνομίαν λέγειν ἐσκόπευ, ἕτερον δὲ, ὅπερ ὁ Ἰησοῦς εἰσέβαλε, κακουργῶν περὶ τὸ λεγόμενον· ὁ μὲν γὰρ, ἐκ τῆς κατὰ γενήσεως παραγωγῆς σωτῆρος τὴν οἰκειότητα καὶ συμφύειαν, ἡ ἐπαίναγ- κες τὸν γεννηθέντα ἔχειν πρὸς τὸν γεννήτορα· ὁ δὲ Ἰησοῦς ἀνάπαλιν, ἐκ τῆς οἰκειότητος καὶ τῆς συμφύειας, ἡ ἔχει τὸ Πνεῦμα πρὸς τὸν Υἱόν, σωτῆρος ἐπι- χερῆ τὴν ἐκ τῆς Υἱᾶς παραγωγῇ τῆς Πιόσεως. Ὁ μὲν ἔφασκεν: ἐπεὶ δὲ ὁ Πατὴρ τὸν Υἱόν παράγει, διὰ δὴ τῆτο φύσει ὅμοιος καὶ οἰκῆος ὁ Υἱὸς ἐστὶ τῷ Πατρὶ· ὁ δὲ φησὶν ἐκεῖνον τρανῶς ἐρηκέναι, ὅτι ἐπεὶ τὸ Πνεῦμα ὁμοίον τε καὶ οἰκῆον φύσει ἐστὶ τῷ Υἱῷ, διὰ τῆτο ὁ Υἱὸς παράγει τὸ Πνεῦμα· ἡ ἐκ ἀντιθέτου ἐπιδήλως ἐνταῦθα τῇ τῆς Θεᾶς Πατρὸς, ἡ τῆς σοφιστικῆς Ἰησοῦς συλλογιστικῆς ἑφοδος; — Καὶ μὴδ' ἐδ' ἐκεῖνο ἔτος ἔχει εἰπεῖν ἀπαντήσας, ὅτι σωτῆρος τὸ ἀντίστροφον. Α'. μὲν, ὅτι ἑδὲμία ἀνάγκη ἐνσυλλογιστὸν καθίστησι τὴν σωτῆρος. Διασώζει γὰρ τὴν ἐμφέρειαν ἡ τῆς Εἰκόνος Εἰκὼν, καὶ ἐκ τῆς αὐτῆς ἀρχῆς εἶναι, ἐξ ἧς καὶ ἡ Εἰκὼν ἡ προσεξείκασαι. Ἐπεὶτα ἐδ' ἐχρῆν ψυδόμενον λέγειν, τὸ ἐρηκέναι τρανῶς τὸν Βασίλειον ὁ μὴ ἐρηκεῖ, μὴδὲ τῷ Θεηγόρῳ Διδασκάλῳ σκαιό- τερον προσανάπτειν τὰ ἴδια συμπεράσματα. — Ὅτι δὲ ἀρα τοιαύτη ἡ τῷ Μεγάλῳ Βασιλείῳ ἡ πρόθεσις, ἡπερ εἰρηται: καὶ ἔτω τῆς τῆς Ἰησοῦς ἀπέχεσθαι, φανερόν γίνεσθαι ἐτι καὶ τῶν ἐφεξῆς: τῆ γὰρ Εὐνομίᾳ εἰπόντος, „ὅτι νόμοις φύ- σεως ἐπομένη ἡ τῆς Θεᾶς εἰσία, ἔτε τὴν πρὸς ἕτερον σύγκρισιν ἐπιδέχεται, καὶ „παρέχει ἡμῖν ἀκόλυσθον καὶ προσήκον τῷ ἴδιῳ ἀξιώματι νοεῖν τὴν ἐνέργειαν, — Ὁ Βασίλειος εἰς τὴν ἀντίον περιτρέπεσθαι τὸν λόγον τῷ Εὐνομίᾳ ἀποδεικνύς, (Αὐτ: Σελ: 268.) „Τῆτο (φησὶν) εἰρηται μὲν ἐκείνῳ, εἰς ἀπόδειξιν τῆς ἀλλο- τριώσεως τῆς Μονογενῆς πρὸς τὸν Πατέρα, σωτῆρος δὲ τὸν ἡμέτερον λόγον. Πῶς; „Εἰ γὰρ, κατὰ τὸν ἐκεῖνον λόγον, τῇ εἰσίᾳ τῆς Θεᾶς ἀκόλυσθαι τὸ ἀξίωμα· τῷ δὲ „ἀξιώματι ἀναλογεῖσθαι ἐστὶν ἡ ἐνέργεια: τῆς ἐνεργείας Εἰκὼν ὁ Μονογενὴς καὶ „ἀνάπαλιν: Εἰ τῆς μὲν ἐνεργείας ὁ Μονογενὴς Εἰκὼν, ἡ δὲ ἐνέργεια τῆς ἀξιώμα- τος· τὸ δὲ ἀξίωμα τῆς εἰσίας Εἰκὼν, — Οὕτως ἐκ τῆς Ἀρχῆς ἔχειν τῆς εἶναι τὸν Πατέρα, καὶ κατὰ τὴν τῶν ἐναντίων λόγον, ὁ Βασίλειος ἐν τέτοις, τῆς τῆς Πα- τρὸς εἰσίας Εἰκόνα τὸν Υἱόν ὄντα ἀποδείκνυσιν. Ὁ δὲ Ἰησοῦς, ἐκ ἐκ τῆς Ἀρχῆς τὴν Εἰκόνα, ἀντιστροφῶς δὲ ἐκ τῆς Εἰκόνος τὴν Ἀρχὴν εἰσβάλλειν ἀγωνίζεται, καὶ „σωαγωνιστῶν ἔχειν τὸν Μεγάλον Βασίλειον κατακαυχῆσθαι ψυδόμενος.

(83) Κιχῶς: Ζητήμ: 5. Σελ: 65.

Η ηηη 2



Ἀλλὰ ταῦτα μὲν ἐς τόδε, πρὸς τὰ ἐκ πλειόνων ἅμα κοινῇ Πατέρων εἰωθότα προβάλλεσθαι· ἤδη δ' ἐπ' ἐκείνα ἰτέον, ἅπερ ἐξ ἐνὸς αὐτῶν ἐκάσθ' ἰδίᾳ ἐπάγεται.

## § Ζ'.

Ἐκ τῆς τῆς Εὐαγγελισῆ Μάρκου Λειτουργίας.

Πρῶτον μὲν πάντων προβάλλοντα τὸν Θεὸν ἐν Ἐυαγγελισαῖς ΜΑΡΚΟΝ, ὡς δῆθεν, ἐν τῇ κατ' αὐτὸν Λειτουργίᾳ, τῷ τῆς Ἀγ: Πνεύματος Ἐκπόρουσιν ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱῆς, ἐπὶ λέξεως διαπισώσαντα. — Ἀλλὰ τῷ τῆς Εὐαγγελισῆ ρῆσιν ἐκείνῳ κάκιςα διαλωβηθῶσι προέφθημεν ἀποδεδιχότες, ἐν τῇ περὶ τῶν Παραφθορῶν Πραγματεῖα τῶν παρὰ Λατίνων τετολμημένων, ἐν τοῖς τῶν Ἀνατολικῶν Πατέρων Συγγράμμασιν. (84)

## § Η'.

Ἐκ τῆς Ἀθωαγόρας τῆς Φιλοσόφας.

Καὶ ἃ δὲ ἐκ τῆς τῆς Φιλοσόφας ἈΘΗΝΑΓΟΡΟΥ ὑπὲρ Χριστιανῶν Ἀπολογίας προσιδέσιν, ἐν τῇ Πραγματεῖα τῇ τὰς Μαρτυρίας τῶν Ἀνατολικῶν Πατέρων προβαλλομένη, ἐπιλέλυται. (85)

## § Θ'.

Ἐκ τῆς Διονυσίης τῆς Ἀλεξανδρείας.

Καί τινα δὲ τῶν ΔΙΟΝΥΣΙΟΥ τῆς Ἀλεξανδρείας, ἃ παρὰ ἈΘΑΝΑΣΙΩΙ φέρεται, Βιβλ: περὶ τῆς τῆς Διονυσίης δόξης, φύλ: 56. ἔσιν ὅς τις ἀνθυποφέρει. (86) Ἐκεῖνα δηλονότι: „Τὸ Πνεῦμα „τὸ Ἅγιον, ἐν ταῖς αὐτῶν (Πατρὸς τε καὶ Υἱῆς) ἐστὶ χερσὶ, καὶ ἔτε „τῆς πέμποντος, ἔτε τῆς φέροντος διώαται χωριθῶσι. Προσέ- „θῃσι δ' (ὁ ἀνθυποφέρων) ὅτι ὑπαινίττεσθαι ἔοικεν (ὁ Διονύς:), τὸ περὶ τῆς Ἁγίας Πνεύματος ἐν Ἱεραῖς Δέλτοις: „ὡς καλεῖται „δάκτυλος Θεῶ. ὅπερ, αὐτὸς δηλῶν, εἰ μόνον ἐκ τῆς Πατρὸς, „ἀλλὰ καὶ ἐκ τῆς Υἱῆς πεφυκέναι, φησί: μὴ ἐν μόναις ταῖς τῆς „Πατρὸς εἶναι χερσὶν, ἀλλ' ἐν ταῖς ἀμφοτέρων,. — Ἀλλὰ γὰρ τὸ

(84) Ἐν Παραφθορᾷ Γ'. ὅρα καὶ ταῖς ἐκεῖ Σημειώσεσιν (21. καὶ 22).

(85) Ἐν τῇ Α'. Πραγμ: Ἐκατονταετ: Β'. περὶ τὸ τέλος.

(86) Κιχώδ: Ζητήμ: Γ'. Σελ: 49.

τὸ Θεῶ δάκτυλον καλεῖσθαι τὸ Πνεῦμα, μηδὲν εἰς πίσιν σωτελεῖν τῆς αὐτῆς ἐκ τῆς Υἱῆς Ἐκπορεύσεως, δέδεικται ἐν τῇ Πραγματείᾳ, ἐνθα ἀσωτελεῖς ὡσαύτως παρίσταται καὶ τὸ λέγεσθαι Πνεῦμα τῆς Υἱῆς. (87)

## § Γ'.

Ἐκ τῆς Θαυματουργῆς Γρηγορίᾳ.

Α δ' ἐκ τῶν ΓΡΗΓΟΡΙΟΥ τῆς Θαυματουργῆς προβάλλει, τῆς ἐν τῇ κατ' αὐτὸν Πίσει διδάσκοντος „ὅτι τὸ Πνεῦμα διὰ τῆς Υἱῆς φανερεῖται, ἐπὶ τῆς τῶν Ἀνατολικῶν Πατέρων τὰς Μαρτυρίας περιεχέσης Πραγματείας, τὴν προσήκυσαν ἔχεν ἐπίλυσιν. (88)

Ὁ δ' ἀντιτίθησίν τις (89) ἐκ τῆς αὐτῆς Θαυματῆς Γρηγορίᾳ, τὸ ἐν τινὶ Ὁμιλῇ: ἐμφερόμενον, ἐν Τόμῳ Ζ'. τῶν τῆς Χρυσόστομου Συγγράμματος: ἐπὶ τῆς τῆς Σαβιλλιανῆς Ἐκδόσεως: Προσαρτήματος: ὅτι: „Οὗτος ἐστὶν (ὁ Υἱὸς) ὁ σὺν ἐμοὶ πέμψας τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ὃς αὐτὸ τῷτο εἰς ἑαυτὸν ἐδέξατο, ἔδεν ἰχθύει. Οὐ γὰρ ἐν ἐκείνοις τῷ Θεωπεσίῳ Γρηγορίῳ περὶ τῆς Ἐκπορεύσεως τῆς Πνδύματος ὡς ὁ λόγος, εἰρηκότι: „Ὁ σὺν ἐμοὶ πέμψας τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον· ἀλλὰ περὶ τῆς πέμψεως τῆς Πνδύματος μόνον, τῆς ἐπὶ τὸν Χριστὸν ἐπιφοιτήσαντος βαπτισόμενον. Διὸ τὸ τῆς Πατρὸς εἰσάγει Πρόσωπον λέγοντος: „Οὗτος ἐστὶν ὁ Υἱὸς μου ὁ ἀγαπητός, ὁ σὺν ἐμοὶ πέμψας τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον· ὃς αὐτὸ τῷτο εἰς ἑαυτὸν ἐδέξατο,“. Εἰ γὰρ καὶ ἐν ἑαυτῷ ἐδέξατο ὁ Υἱὸς τὸ Πνεῦμα βαπτισόμενος ἐν σαρκί· τῷ γε μὴν τῆς Θεότητος λόγῳ, σωάμα τῷ Πατρὶ ὁμοίως αὐτὸ ἀπέστειλε πρὸς ἀγιασμόν τῆς Σαρκὸς αὐτῆς. Ἀλλ' ἐπὶ τῷ Χριστῷ βαπτισμένῳ τῆς Πατρὸς ὡς ἡ Φωνή: „Οὗτος ἐστὶν ὁ Υἱὸς μου ὁ ἀγαπητός ἐν ᾧ ἠνδόκησα,“. Ἐκ τῶν δε ἄρα τῶν τῆς Θεωπεσίᾳ Γρηγορίᾳ ῥημάτων, ἔδεν ὅλως προσγίνεται Λατίνοις ἐπιβοήθημα.

## § ΙΑ'.

Ἐκ τῆς Οἰκουμενικῆς Πρώτης Συνόδου τῆς ἐν Νικαίᾳ.

Ὁ δὲ ΒΕ'ΚΚΟΣ ἐν τῇ τῶν Μαρτυριῶν Συλλογῇ τῶν περὶ τῆς Ἐκπορεύσεως τῆς Ἀγίας Πνδύματος. Καὶ ΜΑΝΟΤΗΛ δὲ ὁ ΚΑΛΕ'ΚΑΣ Βιβλ: Β'. ταῦτα ἐκ τῆς ἐν Νικαίᾳ Συνόδου ἀνθυποφέρουσιν: „Εὐρηται

(87) Ἐν Πραγμ: ΙΑ'. ἐν Ἀπαντ: τῶν ἐκεῖ Δ'.

(88) Ἐν τῇ Α'. Ἐκατονταετηρίδι τῆς ἐκδόσεως Πραγμ:

(89) Κιχάβ: Ζητήμ: Α'. Σελ: 15.

Τόμ: Β'.

⊙ 999

„Εύρηται τὸ Πνεῦμα ἐκπορεύομενον μὲν ἐκ τῆ Πατρὸς, ἴδιον δὲ  
 „τῆ Υἱῆ, καὶ ἐξ αὐτῆ ἀναβλύζον,, — Ἀλλὰ καὶ ταῦτα πάλιν  
 παρεφθαρμένα ἀναφέρεσθαι ὑπὸ τῆ Βέκης, μηδέ τινα φέρειν  
 Λατίνοις ὀνησιν, ἐν τῇ περὶ τῶν Παραφθ: Πραγμ: τῶν ἐν τοῖς  
 τῶν Ἀνατολ: Πατέρων Συγγράμμασι, δέδεικται. (90)

## § ΙΒ'.

Ἐκ τῶν τῆ Ἀθανασίᾳ.

Ἀ δὲ τῶν τῆ Θεοπεσίᾳ ἀντιπροτείνουσιν ἈΘΑΝΑΣΙΟΥ, ἐκ τῆ  
 Δ'. Βιβλ: κατὰ Ἀρείᾳ: „Ἡλιόν τε καὶ ἀπαύγασμα, καὶ ἐν ἐξ  
 „ἀμφοῖν Φῶς,,. Καὶ τὰ ἐν τῷ Βιβλιαρίῳ, τῷ περὶ τῆ Πάθης  
 τῆς Εἰκόνοσ τῆ Κυρίᾳ ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ. Καὶ τὰ ἐν τῷ Συμ-  
 βόλῳ τῆς Πίσεωσ τῆ αὐτῆ: ὅτι καὶ αὐτὰ κἀκίσα διέστραπται,  
 ἐν τῇ ῥηθείᾳ Πραγματ: τῇ περὶ τῶν ἐπιτολμηθεῖσων Παραφ-  
 ρῶν ἐν τοῖς τῶν Ἀνατολικῶν Συγγράμμασι, ὁμοίως δέδεικται. (91)

ΘΩΜΑΣ μὲν ἐν τῷ κατὰ Γραικῶν αὐτῆ Ποιηματίῳ, καὶ  
 ἐξ αὐτῆ ΒΕΛΛΑΡΜΙΝΟΣ, Βιβλ: Β'. περὶ τῆ Χριστοῦ, Κεφ: ΚΗ'.  
 ταῦτα ἐκ τῆς Ἀθανασίᾳ πρὸς Σεραπίωνα Ἐπιστολῆς προβάλλονται:  
 „Εὰν μὴ Θεὸν ὁμολογήσωσι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ἐσιωδῶς ἐκ τῆ  
 „Υἱῆ καὶ Θεῶ ὑπάρχον ὥσπερ καὶ τὸν Υἱὸν φύσει Θεὸν γεννη-  
 „θέντα, ἐσιωδῶς ἐκ τῆ Θεῶ καὶ Πατρὸς ὑπάρχοντα, κατὰ καὶ  
 „ἡμεῖς ὁμολογῶμεν: μηδαμῶς αὐτῆς ἀποδέξῃ,, — Ἀλλ' ἐν ταῖς  
 Ἀθανασίᾳ πρὸς Σεραπίωνα Ἐπισ: εἰδ' ὅτις ἐδὲ καρπῆ ὅλως,  
 εἰδὲ ταρσῆ ἵχνος φαίνεται.

Προβάλλας δὲ καὶ ἐκ τῆ Δ'. Λόγῳ τῶν κατὰ Ἀρειανῶν,  
 ἐν τῷ Α'. Τόμ: τῶν Συγγραμ: Σελ: 477. „Ἐπειδὴ ὁ Λόγος  
 „ἔστιν ἐν τῷ Πατρὶ, τὸ δὲ Πνεῦμα ἐκ τῆ Λόγῳ δίδοται, θέλει  
 „λαβεῖν ἡμᾶς τὸ Πνεῦμα,,. Ἐν δὲ τῇ πρὸς Σεραπίων: Ἐπισ:  
 περὶ τῆ Ἀγίᾳ Πνοῦματος, Τόμ: Β'. Σελ: 11. „Ἐξ αὐτῆ (τῆ  
 „Χριστοῦ) πᾶσι δίδοται,,. — Ἀλλ' ἐν τέτοις, εἰδὲν ἄλλ', ἢ περὶ τῆς  
 ἐγγρόνῃς Ἀποστολῆς τῆ Ἀγίᾳ Πνοῦματος ὁ Λόγος Ἀθανασίῳ.  
 Καὶ γὰρ καὶ ἐκ τῆ Πνοῦματος αὐτῆ δίδωσιν ἡμῖν ὁ Υἱὸς,  
 καὶ ἐξ ἑαυτῆ πάντως, καὶ τῆς ἰδίας αὐτῆ ἐσίας, τὸ Πνεῦ-  
 μα ἡμῖν ἐστὶν ἐπιχορηγῶν, ὡς ἐν αὐτῷ, καὶ ἐν τῇ ἐσίᾳ αὐτῆ  
 πεφυκός.

Ἀντι-

(90) Ἐν τῇ Β'. Πραγματ: ὅρα Παραφθ: Δ'. καὶ τὰς αὐτάς Σημειώσεις.

(91) Ὅρα ἐν τῇ Β'. Πραγμ: Παραφθ: Ε'.

'Αντιπροβάλλει δ' ἔτι καὶ ἐκ τῆς Διαλόγου τῆς ἐν τῇ κατὰ Νίκαιαν Συνόδου συζήτουτος πρὸς Ἄρειον, ἐν Τόμ: Α'. τῶν Συγγραμ: Σελ: 141. „Εἰ ἔν ἐκ ἑσὶ τῆς τῆς Πατρὸς καὶ τῆς Υἱῆς ὁσίας τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, τίνος ἕνεκα σωτηρίθμῃσιν αὐτὸ ὁ Υἱὸς τῆς Θεῆς ἐν τῷ Συμβόλῳ τῆς Ἀγιασμῆς; Φησὶ γὰρ ὁ Κύριος πρὸς τοὺς Μαθητάς: Πορυϋθέντες μαθητεύσατε πάντα τὰ ἔθνη κτ:„ — Τὰ μὲν τοι τῆς Θεῆς Πατρὸς Ἑλλωσι πεφρασμένα, ὁ λέγει: („Ἐκ τῆς ὁσίας τῆς Πατρὸς καὶ τῆς Υἱῆς,,:) μόνον δέ: („Εἰ μὴ ἔσθι τῆς τῆς Πατρὸς καὶ τῆς Υἱῆς ὁσίας,„) — Ἀλλὰ συγχωρέσθω δὴ καὶ τῶν δε τῶν δευτέρων ῥημάτων εἶναι τὸν νῦν: ὅτι τὸ Πνεῦμα ἐστὶν ἐκ τῆς ὁσίας τῆς Πατρὸς καὶ τῆς Υἱῆς: τί δῆτα; ὁ πάντως ἐκ τῆς Πατρὸς καὶ τῆς Υἱῆς ἐκπορεύεται τὸ Ἅγιον Πνεῦμα διὰ τέτων σημαίνει Ἀθανάσιος: ἀλλὰ μόνον μίαν καὶ τὴν αὐτὴν ὁσίαν ἔχειν αὐτὸ σὺν Πατρὶ καὶ Υἱῷ τετέστιν, εἶναι αὐτοῖς ὁμοῦσιον. Διαλέγεται γὰρ ἐν ἐκείνοις κατὰ τῆς Ἀρείου, τῆς ἀπαναινομένης τὴν τῆς Ἀγίας Πνοῦματος σὺν Πατρί τε καὶ Υἱῷ ὁμοουσιότητα, καὶ ὡς κτίσμα (92) αὐτὸ βλασφημούντος. Οὕτω καὶ γὰρ εἰσάγει τὸν Ἄρειον φάσκοντα: „Λοιπὸν περὶ τῆς Ἀγίας Πνοῦματος ζητήσωμεν: Ἐπειδὴ μάλιστα ὠρίσω σὺ ἐν ἀρχῇ, ὁμοῦσιον αὐτὸ εἶναι Πατρὶ καὶ Υἱῷ· ἐγὼ δὲ ἀντιλέγω, ἔχων τὴν ἀπόδειξιν ἐκ τῶν Ἀγίων Γραφῶν, ὅτι κτιστὸν τυγχάνει. — Ἐκ τέττα καταδήλως ὄντος κτιστῆς αὐτὸ φύσεως εἶναι, καὶ ὅτι ἀκτίστῃ, τῆς μακαρίας ὁσίας ἐκείνης, Πατρὸς καὶ Υἱῆς λεγομένης, καὶ σωματικῆς τὰ ὅλα, καὶ πανταχῇ παρούσης κατ' ὁσίαν,„

Ἦν ἄρα, ὡς Ἀθανάσιος ἀνασκοῦντων διετέλει, τῆς Αἵρεσι-ώτης ἡ δόξα, ὅτι φύσεως ἐστὶ τὸ Πνεῦμα κτιστῆς, καὶ ἔτι κατὰ τὴν τῆς Πατρὸς καὶ τῆς Υἱῆς φύσιν τὴν ἀκτίστον. (93) Ἐνθα παντί περ δῆλον, τὸν τῆς Αἵρεσιόφρονος νῦν γενέσθαι μόνον, μὴ τῆς αὐτῆς τῷ Πνοῦματι μετεῖναι ὁσίας, ἥς τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ. Ἦδη μὲν ἔν Ἀθανάσιος, τὴν τοιάνδε τῆς Αἵρετικῆς δόξαν τε καὶ πρότασιν ἀπελέγξων, ἀποκρίνεται: ὡς εἰ μὴ τῆς αὐτῆς τῆς Πατρὸς καὶ τῆς Υἱῆς Οὐσίας μέτεσι τῷ Ἀγίῳ Πνοῦματι, τίνος

(92) Ὡς καὶ τῆς Υἱῆς (ὅν περ καὶ αὐτὸν κτιστὸν ἐβλασφήμει) κτίσμα ἔστι ὑποδείξετον.

(93) Οὐκ ἀκτίστον Ἄρειος τὴν τῆς Υἱῆς φύσιν ἐδόξαζε, κτιστὴν δὲ, ὡς ἐξ ἐκ ὧν. Ἐπειδὴ δὲ οἱ περὶ αὐτὸν, καὶ τῆς τῆς Υἱῆς ἔτι καὶ μᾶλλον ὑφαιμένῳ ἐβλασφήμειν εἶναι τὴν τῆς Πνοῦματος φύσιν· ὁ μόνον ἑτεροφυῆς αὐτὸ τῆς ἀκτίστης Θεῆς καὶ Πατρὸς εἰσηγόμενοι, ἀλλὰ δὴ καὶ τῆς Υἱῆς προσέτι, τῆς ἐν τοῖς κτίσμασιν ὑπ' αὐτῶν καταλογιζόμενης ἀντιφερόμενος ὀλοχερέστερον Ἀθανάσιος τῇ δυσσεβείᾳ, τὸ ὁρῶν ἀντεσάγει δόγμα διδάσκων, ὁμοῦσιον εἶναι Πατρὶ καὶ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον: τετέστι, μίαν καὶ τὴν αὐτὴν εἶναι τὴν ὁσίαν καὶ τῶν Τριῶν ὡς ἄρα ἐν τῷ τῆς Ἀγιασμῆς Συμβόλῳ, τοῖς δυοῖν τὸ τρίτον ἐπίσης σωμαριθμύμενον, εἰς ὁμολογίαν τῆς ἐν τῇ Μοναδικῇ Τριάδι ὁμοουσιότητος.

τίνος χάριν αὐτὸ ὁ Υἱὸς ἐν τῷ τῷ Ἀγιασμῷ Συμβόλῳ συναριθ-  
μεῖ; Ὁ ἄρα Ἀθανάσιος τὴν τῷ Αἵρεσιώτῃ Φάσιν ἐπαναλαμβάνει-  
νων: „Εἰ τὸ Πνεῦμα (Φησὶ) τὸ Ἅγιον, ἐκ ἑστὶ τῆς τῷ Πατρὸς  
καὶ τῷ Υἱῷ ἑσίας κτ:„ Κατὰ τὸν αὐτὸν νῦν τοίνυν ἐπάγει  
ταῦτα Ἀθανάσιος, καθ' ὃν αὐτὰ ὁ ἐκ τῆς Αἵρέσεως ἀπεφθέγ-  
ξατο. Καὶ παραπλησίως τοίνυν καὶ Ἀθανάσιος τὰ μόνον ἐν-  
ταῦθα νοεῖ· ὅτι ἥς περ τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ, τῆς αὐτῆς ἑσίας  
καὶ τῷ Πνεύματι μέτεσι. Πρόεισι δὲ ὁ Πατὴρ καὶ περαιτέρω  
λέγων: „Εἰ ἐν πάντα τὰ ἔθνη τὰ πισδύοντα καὶ ἀγιαζόμενα,  
ἀγιαζονται τῇ τρισμακαριωτάτῃ ὀνομασίᾳ, δηλὸν ἐστὶν ὅτι καὶ  
τὸ Πνεῦμα τῆς τῷ Πατρὸς καὶ τῷ Υἱῷ Θεότητος ὑπάρχει, ἐκ  
τῷ Ἅγιον αὐτὸ εἶναι κατ' ἑσίαν, καὶ ἀγίως ποιεῖν πάντα τὰς  
προσβάλλοντας αὐτῷ τῇ κοινωνίᾳ, καθὼς Φησὶν ὁ Ἀπόστολος,  
πρὸς ἑς ἔφη: Ἀλλ' ἀπελίσσασθε, ἀλλ' ἡγιασθήτε ἐν τῷ ὀνόματι  
τῷ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ, καὶ ἐν τῷ Πνεύματι αὐτῷ τῷ  
Ἅγῳ. Εἰ δὲ ἐκ ἑστὶ τῆς τῷ Θεῷ καὶ Πατρὸς καὶ Υἱῷ Θεό-  
τητος ὑποστάσεως, πάλιν, Φημί: πῶς σωτηριζήσεται Πατὴρ καὶ  
Υἱὸς; ὡς μὴ δωαμένης τῆς τῷ Πατρὸς καὶ Υἱῷ Θεότητος ἐπαρ-  
κείας πρὸς ἀγιασμὸν τοῖς πιστοῖς· προσέλαβε δὲ τὸν Παράκλη-  
τον, τὸ Πνεῦμα τῆς ἀληθείας εἰς συμπλήρωσιν ἀγιασμῷ, τὸν  
ἐκ τῆς ἑσίας αὐτῷ ὄντα; Ἐξ ὧν δὴ πάλιν φανερόν, ὅτι  
Ἀθανάσιος τὸ προκείμενον ὡς, ἵνα τὸ ἐνιαῖον μόνον τῆς τῷ Πνεύ-  
ματος ἑσίας σὺν τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ, κατὰ τῷ Αἵρεσιόφρονος  
ἐπιβεβαιώσεται. Ἐπεὶ δὲ τελευταῖον ἔφη: („Τὸν ἐκ τῆς  
ἑσίας αὐτῷ ὄντα;“) ἐυδηλὸν δήπερ, τὸ ἤδη συγχωρηθὲν, ἔδεν τι  
ἥττον, τὸν αὐτὸν νῦν ὑποβεβλήσθαι καὶ τῆς ἀντεπενεχθείσης  
ρήσεως: („Εἰ ἐκ ἑστὶν ἐκ τῆς τῷ Πατρὸς καὶ τῷ Υἱῷ ἑσίας;“)  
Ἡ γε μὴν τῷ Ἀθανάσιῳ διάνοια, ἐκ ὧς ἑτέρα, ἢ δεῖξαι τῆς  
αὐτῆς, ὡς τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ, ἑσίας μετῆναι τῷ Πνεύματι.  
Καὶ κατὰ τὸν αὐτὸν ἄρα νῦν καὶ οἱ λοιποὶ Πατέρες ἀπαντα-  
χῶς διδάσκουσιν ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐστὶν ἐκ τῆς ἑσίας καὶ  
τῆς φύσεως καὶ τῆς Θεότητος τῷ Πατρὸς καὶ τῷ Υἱῷ: μὴ διὰ  
τῶν δηλῶντες ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱῷ αὐτὸ ἐκπορεύεσθαι. Ἀλλὰ  
περὶ τῶν κατωτέρων.

Ἀντιπροβάλλουσι δὲ καὶ ἐκ τῆς Ἐπιστολῆς Ἀθανασίου τῆς πρὸς  
τὰς Ἀντιοχείας, Τόμ: Α'. τῶν Συγγραμ: Σελ: 575. „Μηδὲν  
πλεῖον ἀπαιτήσητε παρ' αὐτῶν, ἢ ἀναθεματίζειν μὲν τὴν Ἀρει-  
ανὴν Αἵρεσιν, καὶ ὁμολογεῖν δὲ τὴν παρὰ τῶν Ἁγίων Πατέρων  
ὁμολογηθεῖσαν ἐν Νικαίᾳ Πίσιν· ἀναθεματίζειν δὲ καὶ τὰς λέ-  
γοντας κτίσμα εἶναι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, καὶ διηρημένον ἐκ τῆς  
ἑσίας τῷ Χριστῷ. — Ἀλλὰ τί τὸ ἐντεῦθεν; Οὐ γὰρ τὸ σω-  
λον διαιρετὸν ἐστὶ τῷ ὄντι τῆς τῷ Υἱῷ ἑσίας τὸ Πνεῦμα: μήπερ  
δ' ἄρα



δ' ἄρα διὰ τῆτο, καὶ ἐκ τῆ Τις αὐτὸ ἐκπορεύεται; τί τὸ ἔτω συμπεραίνειν ἐπεῖγον; μὴ γὰρ ἡ μία τε καὶ ἡ αὐτὴ ἔσα τῆ Τις καὶ τῆ Ἁγίας Πνεύματος Θεότης, λόγος ἀποχρῶν ἂν εἴη πρὸς δέξι' τῆ τοῦ Ἁγίου Πνεύματος ἐκ τῆ Τις ἐκπορεύεσθαι; Ἄλογον.

Προσεπάγῃσι δ' ἐκ τῆς αὐτῆς Ἐπισ: Σελ: 577. κἀκεῖνα: „Τὸ δὲ Ἁγιον Πνεῦμα ὁ κτίσμα, ὁ δὲ ξένον, ἀλλ' ἴδιον καὶ ἀδιαίρετον τῆς ἑσίας τῆ Τις καὶ τῆ Πατρός,. — Ἀλλὰ τίς ποτ' ἐστὶν ὁ ἀρνούμενος ὅτι τὸ Πνεῦμα ὁκ ἀλλότριον τῆ Τις; τί δαί; μὴ ἄρ' ἀλλότριον ἂν ἦ τῆ Τις καὶ ὁ θνεῖον, εἰμὴ καὶ ἐξ αὐτῆ ἐκπορεύοιτο; τὸ ἐν μιᾷ γε καὶ τῇ αὐτῇ Θεότητι πεφυκὸς, καὶ τῆς αὐτῆς ἑσίας, ἐξ ἧς καὶ ὁ Τις, προβληθέν; Ἀλλὰ περὶ τῆτε δὴ καὶ κατόπιν διελθόντες ἐφθήμεν.

Ἀντιπροτείνουσιν ἔτι κἀκεῖνα, τὰ ἐκ τῆ Δ'. Βιβλ: κατὰ τῶν Ἀρειανῶν, Τόμ: Α'. τῶν Συγγραμ: Σελ: 477. „Αὐτὸς γὰρ τὸ Πνεῦμα δίδωσι, καὶ ὅσα ἔχει τὸ Πνεῦμα, ταῦτα παρὰ τῆ Λόγῃ ἔχει,. Κἀκεῖνα δὲ τὰ ἐκ τῆς πρὸς Σεραπίωνα Ἐπισολῆς, ἐν τῷ Β'. Τόμ: τῶν Συγγραμ: Σελ: 17. „Τῆ Τις ἐστὶ τὸ Πνεῦμα, καὶ παρὰ τῆ Τις πάντα δέχεται τὸ Πνεῦμα, ὡς αὐτὸς εἶρηκε: καὶ ἐμφυσήσας ἔδωκεν αὐτὸ τοῖς Μαθηταῖς,. Καὶ πάλιν, ἐκ τῆ κατὰ τῶν Ἀρειανῶν Δ'. Λόγῃ Σελ: 495. ἐκεῖνα: „Εἰ τὸ Πνεῦμα οἶδε, πολλῶ μᾶλλον ὁ Λόγος οἶδε (τιῷ ἡμέραν τῆς Κρίσεως) ἢ ὁ Λόγος ἐστὶ παρ' ὃ καὶ τὸ Πνεῦμα λαμβάνει,. — Ἀλλὰ ταῦτα πάντα, ἐν τῇ Πραγματείᾳ, ἐν ἣ ἐδείχθη: ὅτι τὸ λαμβάνειν τὸ Πνεῦμα ἐκ τῆ Τις, ὁκ ἐστὶ πῖσις ἀποχρῶσα εἰς κατασκοπὴν τῆ ἐκπορεύεσθαι τὸ Πνεῦμα ἐκ τῆ Τις, σὺ τοῖς τοιαυτοτρόποις ἄλλοις τῶν Λατίνων Ἐπιχειρήμασι διελύομεν. (94) Νῦν δ' ἐκείνο προσίδεμεν, ὡς ἀτόπως ὁ Προβιγκιάλις ἸΩΑΝΝΗΣ, τὰ ἐκ τῆς πρὸς Σεραπίωνα Ἐπισολῆς ἡδὴ προενεχθέντα, ἐν τῇ ΚΒ'. Σωελύσει τῆς Φλωρεντινῆς Σωόδῃ (κατὰ τὰ Πρακτικὰ ταύτης, δηλονότι, τὰ ὑπὸ ὈΡΑΤΙΟΥ τῆ Ἰεσινιανῆ ἐκδοθέντα) ἔτω προτείνων ἐπέκειτο: „Λέγει πρῶτον, ὅτι Πνεῦμα ἐστὶ τῆ Τις. ἐκ δὲ τῆς χέσεως ἐκείνης, Φησὶν, ὅτι λαμβάνει πάντα ἐκ τῆ Τις διὰ τῆς προαιωνίᾳ Ἐκπορεύσεως. ἄλλως γὰρ ὁκ δώαται λαμβάναν ὁδόν. Δεύτερον λέγει, ὅτι αὐτὸ δίδωσιν ἐν χρόνῳ τοῖς Μαθηταῖς. Πᾶσα ἄρα χρονικὴ Πρόοδος, Πρόοδον προῦποτίθησι τιῷ ἀπ' αἰῶνος,. — Ἀλλὰ γὰρ πῶ ποτε, ἐκ τῆ τοῦ Πνεύματος τὸ Ἁγιον εἶναι τῆ Τις, Ἀθανάσιος εἶρηκε, διὰ τῶν ῥημάτων ἐκείνων παραδηλῶσθαι: ὅτι πάντα λαμβάνει τὸ Ἁγιον Πνεῦμα ἐκ τῆ Τις διὰ τῆς αἰωνίᾳ Ἐκπορεύσεως; — Ἀλλ'

(94) Ἐν Πραγμ: ΙΒ'.  
Τόμ: Β'.

Ἄλλ' ἔκ ἂν ἄλλως ἔχοι λαμβάνειν τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. — Ἀλλὰ ψευδὲς εἶναι τὸτο δέδεικται πάντῃ πάντως, ἐπὶ τῆς ῥηθείσης Πραγματείας. Καθαπερὲν παραπλησίως, καὶ τὸ πᾶσαν ἔγχρονον Πρόοδον, προϋποτιθέναι Πρόοδον τῷ ἀπ' αἰῶνος, ψευδὲς ὃν προάπεδείχθη ἐν τῇ Πραγματείᾳ, τῇ: ὅτι ἡ τῆ Πνεύματος παρὰ τῆ Υἱὸς πέμψις, ἔδεν ἐστὶ συμβαλλομένη εἰς πίσιν τῆς ἐξ Υἱὸς Ἐκπορεύσεως τῆ Ἁγίας Πνεύματος. (95)

Ἀντιπροβάλλουσιν ἔπειτα ἐκ τῆς προτέρας τῶν πρὸς Σεραπίωνα Ἐπισ: περὶ τῆ Ἀγ: Πνεύμ: ἐν τῷ Β'. τῶν Συγγραμ: Σελ: 10. — „Οἷαν γὰρ ἔγνωμεν ιδιότητα τῆ Υἱὸς πρὸς τὸν Πατέρα, ταύτῃ ἔχεν τὸ Πνεῦμα πρὸς τὸν Υἱὸν ἐυρήσομεν.” — Ἄλλ' ἔκλ' περὶ τῆς Αἰτίας ταῦτα νοῶν ἐστὶν Ἀθανάσιος, μόνον δὲ περὶ ιδιότητος τῆς κατ' ἑστίαν τῷ αὐτῷ. Σωπάπτει καὶ γάρ: „Οὐκ ἔν, ὥσπερ ὁ Υἱὸς, διὰ τῷ πρὸς τὸν Πατέρα ιδιότητα, καὶ „διὰ τὸ εἶναι αὐτῆ τῆς ἑστίας ἴδιον γέννημα, ἔκ ἐστὶ κτίσμα, „ἀλλ' ὁμοούσιος τῆ Πατρός. ἔτως ἔκ ἂν εἴη ἔδὲ τὸ Πνεῦμα τὸ „Ἅγιον κτίσμα. ἀλλὰ καὶ ἀσεβῆς ὁ λέγων τὸτο, διὰ τῷ πρὸς „τὸν Υἱὸν ιδιότητα αὐτῆ. καὶ ὅτι ἐξ αὐτῆ δίδοται πᾶσι καὶ ἂ „ἔχει, τῆ Υἱὸς ἐστίν.”. Ἐνθα δὴ πῃ, εἰ διὰ τῆς ιδιότητος τῷ κατ' αἰτίαν ἐννοῶν ὡς ιδιότητα, τὸν ὅμοιον ὃν ἔφη τρόπον: „Ὡσπερ ὁ Υἱὸς, διὰ τῷ πρὸς τὸν Πατέρα ιδιότητα, καὶ διὰ τὸ „εἶναι αὐτῆ τῆς ἑστίας ἴδιον γέννημα: Καὶ περὶ τῆ Ἁγίας Πνεύματος ἔφησεν ἂν.”. Οὕτως ἔκ ἂν εἴη ἔδὲ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον κτίσμα „διὰ τῷ πρὸς τὸν Υἱὸν ιδιότητα, καὶ διὰ τὸ ἐξ „αὐτῆ εἶναι ἐκπορεύομενον.”. Νῦν δὲ τῷ λόγῳ τῆ Υἱὸς ἐπιμνηθεὶς τῆς Αἰτίας, περὶ τῆ Πνεύματος ἔ' προσίθῃσιν, ὅτι καὶ αὐτὸ πρόεισιν ἐκ τῆ Υἱὸς. Ὡς δὴ ἄλλοι εἶναι κἀντεῦθεν, μηδαμῶς πεπισθύνεσθαι Ἀθανάσιον τῷ Ἐκπόρῳ τῆ Πνεύματος ἐκ τῆ Υἱὸς, μηδ' ιδιότητα ἐνταῦθα τῷ κατ' αἰτίαν νενοηκέναι. Τί δ' ὅτι ἡ διασέλλων ὥδε: „τὸ τὸν Υἱὸν πρὸς τὸν Πατέρα ιδιότητα ἔχεν, „καὶ δὴ καὶ τὸ τῆς τῆ Πατρός ἑστίας ἴδιον αὐτὸν εἶναι γέννημα. „Φανερόν ἐσησεν ὁ Θεὸς Διδάσκαλος, ὑπὸ τῇ φωνῇ τῆς ιδιότητος, μηδαμῶς τῷ κατ' αἰτίαν ιδιότητα αὐτὸς ἐννοῆσαι; ἔ' γὰρ ἂν, ἄλλως, δηλονότι, προσέθετο ἑπαπών: καὶ ὅτι ἐξήρτηται τῆ Πατρός ὁ Υἱὸς δίκῃ γέννηματος.

Οὐδὲν ἄρ' ἐκτελεῖ ὁ τότε ἡμῖν τὸ χωρίον, ὑπὲρ τῆς τῆ Πνεύματος Ἐκπορεύσεως ἐκ τῆ Υἱὸς ἐπαντιπροτείνων ὥδε: (96) „Ἡδὴ δὲ Τόμ: Β'. ἐν τῇ πρὸς Σεραπίωνα Ἐπισ: Φύλ: 10.

„Ἰνα

(95) Αὕτη δὲ ἰσ' Πραγμ: Η':

(96) Κιχῶδ: Ζητήμ: Γ'. Σελ: 32.

„Ἰνα δείξῃ (Ἀθαν:) τὸ Ἅγιον Πνεῦμα μὴ εἶναι κτίσμα, παν-  
 „ταχὺ τὸδε ὡς πρώτῳ ἐστὶ λαμβάνων ἀρχῷ: ὅτι τὸ Πνεῦμα  
 „τὸ Ἅγιον ἐκπορεύεται ἐκ τῆς Υἱᾶς. Οὕτω γὰρ λόγος: χάρις ἐπι-  
 „χειρεῖ: οἷον ἴσμεν ιδιότητα τὸν Υἱὸν ἔχειν πρὸς τὸν Πατέρα,  
 „τοιαύτῳ εὐρίσκομεν ἔχειν καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα πρὸς τὸν Υἱόν.  
 „Ἀλλ' ὁ Υἱὸς, δι' ὃν ἔχει πρὸς τὸν Πατέρα ιδιότητα, ἐκ ἐστὶ  
 „κτίσμα. Ἄρα ἔδὲ τὸ Πνεῦμα κτίσμα ἐστὶ, δι' ὃν ἔχει πρὸς τὸν  
 „Υἱὸν ιδιότητα. Ὡς μὲν ἔν, ἵνα ἡ Μείζων ἰχὺς Πρότασις,  
 „ὑποτίθῃσι: τοιὸν δέ τι εἶναι τὸ λαμβάνειν τὸ Ἅγιον Πνεῦμα  
 „ἐκ τῆς Υἱᾶς, διὰ τῆς κατὰ χάριν ιδιότητος τῆς Πνεύματος καὶ τῆς  
 „Πνεομένης, οἷον δὴ λαμβάνει τὸ εἶναι ὁ Υἱὸς ἐκ τῆς Πατρὸς, διὰ  
 „τῆς ιδιότητος τῆς Γεννήτορος καὶ τῆς Γεννητῆς. — Ψεῦδὲς ἀλλ'  
 „ἐν ἐστὶ τὸ τῷ Μείζονα, ἵν' ἐρρωμένως ἔχῃ, τοιὸν δέ τι προὑποτι-  
 „θέναι. Ἡ γὰρ, ἐν ἃν ἐρρωμένως ἐπιχειρήσεις; ὡς εἴπῃς, οἷον  
 „ποτὲ τῆς αὐτῆς φύσεως ιδιότητα ἔχειν οἶδαμεν τὸν Υἱὸν πρὸς  
 „τὸν Πατέρα, τοιαύτῳ ἴσμεν καὶ τὸν Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἔχειν  
 „πρὸς τὸν Υἱόν. Ἀλλ' ὁ Υἱὸς διὰ τῷ τῆς αὐτῆς φύσεως ιδιότητα,  
 „ὡς ἔχει πρὸς τὸν Πατέρα, ἐκ ἐστὶ κτίσμα. Ἄρα ἔδὲ τὸ Πνεῦ-  
 „μα τὸ Ἅγιον, διὰ τῷ τῆς αὐτῆς φύσεως ιδιότητα, ὡς ἔχει πρὸς  
 „τὸν Υἱόν, ἐκ ἐστὶ κτίσμα; Πῶς ἔν, ἵν' ἡ ἐπιφορὰ ἰχύσῃ ἡ,  
 „ὑποτίθεσθαι παρὰ ταῦτα ὠφείλεν: ἔτω λαμβάνειν τὸ Ἅγιον  
 „Πνεῦμα τὸ εἶναι ἐκ τῆς Υἱᾶς, ὡς ὁ Υἱὸς αὐτὸ λαμβάνει ἐκ τῆς  
 „Πατρὸς;

Ἀλλ' ἐνίσταται ΒΕΛΛΑΡΜΙΝΟΣ, ἐν Βιβλ: Β'. περὶ τῆς  
 Χριστῶ, Κεφαλ: ΚΕ'. φάσκων: „Τέταρτος ἐστὶ τόπος ἐν τῇ διε-  
 „ξοδικωτάτῃ Ἐπιστολῇ ἐκείνῃ τῇ πρὸς Σεραπίωνα· ἐνθα δέκνυσσι  
 „κατὰ τῶν περὶ Μακεδόνιον, μηδενὶ τρόπῳ μηδένα ἔχειν δι-  
 „κυσσάσθαι κτίσμα εἶναι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, μὴ ὄντος κτίσ-  
 „ματος τῆς Υἱᾶς. Ἡ δὲ τῆς Ἐπιστολῆς ὅλης ὑπόθεσις ἡδε ἐστὶ  
 „πρὸς τὸν τοιῶδε δέκνυσσι λόγῳ, ὃν δι' ὁλοκλήρῃς χεδὸν τῆς  
 „Ἐπιστολῆς πολυτρόπως προτίθῃσι: Τοιάδε (φησὶν) ἡ τάξις  
 „ἐστὶ καὶ ἐνότης ἡ μεταξὺ τῆς Ἁγίας Πνεύματος καὶ τῆς Υἱᾶς,  
 „οἷαπερ ἡ τῆς Υἱᾶς μεταξὺ καὶ τῆς Πατρὸς. Ἀλλὰ μὴ ὁ Υἱὸς,  
 „ἄτε ὡς ἐκ τῆς Θεᾶς καὶ Πατρὸς, Θεὸς ἐστίν, ὡςπερ ὁ Πατήρ.  
 „Ἄρα καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ὡσαύτως, ἐπειδὴ ἐστὶν ἐκ τῆς Υἱᾶς  
 „καὶ Θεᾶς, ἔσται Θεός, καθάπερ ὁ Υἱός· ἢ, εἰ μὴ Θεὸς αὐτὸ ἐστίν,  
 „ἔδ' ὁ Υἱὸς ἄρα· μᾶλλον δὲ, ἔδ' αὐτὸς ὁ Πατήρ.

Πᾶσα μὲν ἔν ἡ τῆς Ἀθανασίου Ἐπιστολὴ ἐκείνη περὶ τῆς  
 πραγματευομένης ἐστίν, ὥς ἐκ ἀποδείξεως ἐξαπατωμένης εἶναι, τῆς  
 Θεοῦ μὲν τὸν Χριστὸν καθομολογῶντας, εἶναι γεμῶς τὸ Πνεῦμα  
 Θεοῦ ἀποφάσκοντας. Ὁ δὲ λόγος ὁ κυριώτατός τε καὶ πρώτιστος,  
 ὅς δι' ὅλης τῆς Ἐπιστολῆς Ἀθανάσιος ἐστὶ χρώμενος, ἔστος ὑπάρχει,  
 ὅτι:

ὅτι: εἰμὴ Θεὸς τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ἐδ' ὁ Υἱὸς ἂν εἴη Θεός. Ἀλλὰ ψεύδεις, ὅτι, ἵνα ταύτῃ ἐπικατασκοδάσῃ τῷ σωέπειαν Ἀθανάσιος, ἔτω τυγχάνει συλλογισόμενος: τοιάνδε δηλ: τῷ τάξιν εἶναι καὶ τῷ ἐνότητᾳ μεταξὺ τῆς Ἁγίας Πνεύματος καὶ τῆς Τίς, οἷαπερ ἢ μεταξὺ ἐστὶν Τίς καὶ Πατὴρ. Ἀλλὰ μὴ ὁ Υἱὸς, ἅτε δὴ ἐκ τῆς Πατρὸς ὢν, Θεὸς ἐστίν. Ἄρα κτ: Πάντως γάρ, διὰ τῷ ἐνότητᾳ μόνον τῆς φύσεως, ἥτις, οἷαπερ Τίς μεταξὺ καὶ Πατὴρ, τοιαύτῃ καὶ μεταξὺ τῆς Πνεύματος ἐστὶ τῆς Ἁγίας καὶ τῆς Τίς (διὰ δὴ ταύτῃ φημι τῷ ἐνότητᾳ) καὶ τὸν Υἱὸν κτίσμα ἂν ἔσεσθαι ἐπιφέρει, εἶγε κτίσμα τὸ Πνεῦμα ἐστίν. Οὕτω γὰρ ἐν Προοιμίῳ τῆς Ἐπιστολῆς ἐκείνης. (Τόμ: Α'. τῶν Συγγραμ: Σελ: 174. „Τέτων γὰρ καὶ θαυμάσειεν ἄντις τῷ ἄνοιαν, ὅτι „τὸν Υἱὸν τῆς Θεᾶς μὴ θέλοντες εἶναι κτίσμα, καὶ καλῶς γε „τῶτο φρονέοντες, πῶς τὸ Πνεῦμα τῆς Τίς, κτίσμα καὶ ἀκῆσαι „ἠνέχοντο. Καὶ γὰρ, εἰ διὰ τῷ πρὸς τὸν Πατέρα τῆς Λόγου „ἐνότητᾳ, ἐθέλουσιν εἶναι τῶν γεννητῶν αὐτὸν τὸν Υἱὸν ἀλλ', „ὅπερ ἐστὶν ἀληθῶς, Δημιουργὸν αὐτὸν τῶν ποιημάτων φρονέοντες „διατὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, τὸ πρὸς τὸν Υἱὸν τῷ αὐτῷ ἔχον „ἐνότητᾳ, ὡς αὐτὸς ἔχει πρὸς τὸν Πατέρα, κτίσμα λέγουσι. Τῷ δὲ ἐνότητᾳ ταύτῃ ἐξ ἐκείνης μάλιστα κατασκοδάσκει: ὅτι τὸ Πνεῦμα ἐστὶν ἐν τῷ Υἱῷ, καὶ Πνεῦμα ἐστὶ τῆς Τίς, ἐκεῖ δὲ, καὶ ὅτι αὐτὸ ἐκπορεύεται καὶ ἐκ τῆς Τίς: „Ἡ γὰρ Ἁγία (φη: „σὶ Σελ: 189.) καὶ Μακαρία Τριάς, ἀδιαίρετος καὶ ἡνωμένη „πρὸς ἑαυτῷ ἐστὶ καὶ λεγομένη τῆς Πατρὸς, πρόσσεσι καὶ ὁ τέτης „Λόγος, καὶ τὸ ἐν τῷ Υἱῷ Πνεῦμα. Ἐὰν δὲ καὶ ὁ Υἱὸς ὀνομάζεται, ἐν τῷ Υἱῷ ἐστὶν ὁ Πατήρ, καὶ τὸ Πνεῦμα ἐκ ἐστὶ „ἐκτὸς τῆς Λόγου: μία γὰρ ἐστὶν ἐκ τῆς Πατρὸς χάρις, δι' Τίς, „ἐν Πνεύματι Ἁγίῳ πληρωμένη καὶ μία Θεότης ἐστὶ καὶ εἷς „Θεὸς ἐστὶν ὁ ἐπὶ πάντων, καὶ διὰ πάντων, καὶ ἐν πάσιν. Οὕτω „γὰρ καὶ ὁ Παῦλος εἰρηκῶς, διαμαρτύρομαι ἐνώπιον τῆς Θεᾶς, καὶ „Ἰησοῦ Χριστοῦ: ἐγίνωσκεν ὅτι ἐδιηρέτο τῆς Τίς τὸ Πνεῦμα, „ἀλλ' ἐν Χριστῷ ὡς καὶ αὐτὸ, ὡςπερ ὁ Υἱὸς ἐν τῷ Πατρί. Τῷ δὲ φυσικῶς ταύτῃ ἐνότητᾳ τῆς Τίς σὺ τῷ Πνεύματι, ὡς ὁμοίως καὶ ὁ Πατήρ ἔχει πρὸς τὸν Υἱόν, ἔτω προῖων ἐπιδάκνυσι, Σελίδι 193.

„Μηκέτι τοιαῦτα τις ἐρωτάτω: ἢ μόνον τὰ ἐν ταῖς Γραφαῖς „μανθανέτω. Ἀντάρκει γὰρ καὶ ἱκανὰ τὰ ἐν αὐταῖς κείμενα „περὶ τέτης παραδείγματα. Πηγὴ τοίνυν καὶ φῶς λέγεται ὁ Πα- „τήρ — λέγεται δὲ καὶ ὁ Υἱὸς, ὡς μὲν πρὸς τῷ Πηγῷ, ποταμός: „ὁ ποταμὸς γὰρ τῆς Θεᾶς ἐπληρώθη ὑδάτων: πρὸς δὲ τὸ φῶς, „ἀπαύγασμα, λέγοντος τῆς Παύλου: ὅς ὢν ἀπαύγασμα τῆς δόξης, „καὶ χαρακτήρ τῆς ὑποστάσεως αὐτῆς τῆς τοίνυν Πατρὸς φωτὸς „όντος,

ὄντος, τῷ δὲ Υἱῷ ἀπαυγάσματος αὐτῷ (τὰ αὐτὰ γὰρ, περὶ τέ-  
 των μάλισα, ἐκ ὀκνητέον λέγειν πολλάκις) ἔξεσιν ὁρᾶν καὶ ἐν  
 τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα ἐν ᾧ φωτίζόμεθα. — Τῷ γὰρ Πνεύματι  
 φωτιζομένων ἡμῶν, ὁ Χριστὸς ἐστὶν ὁ ἐν αὐτῷ φωτίζων. — Πά-  
 λιν τε τῷ Πατρὶ ὄντος πηγῆς, τῷ δὲ Υἱῷ ποταμῷ λεγομένῃ,  
 πίνειν λεγόμεθα τὸ Πνεῦμα· γέγραπται γὰρ, ὅτι ἡμεῖς πάντες  
 ἐν Πνεύμα ἐποτίσθημεν· τὸ δὲ Πνεῦμα ποτιζόμενοι, τὸν Χριστὸν  
 πίνομεν. — Καὶ πάλιν: τῷ Χριστῷ ὄντος ἀληθινῷ Υἱῷ, ἡμεῖς τὸ  
 Πνεῦμα λαμβάνοντες Υἱοποιούμεθα· ἃ γὰρ ἐλάβετε, φησὶ, Πνεῦ-  
 μα ἀδελείας πάλιν εἰς φόβον, ἀλλ' ἐλάβετε Πνεῦμα Υἱοθεσίας:  
 Υἱοποιούμενοι δὲ τῷ Πνεύματι, δηλονότι ἐν Χριστῷ χρηματίζο-  
 μεν τέκνα Θεῶ· ὅσοι γὰρ ἔλαβον αὐτὸν, ἔδωκεν αὐτοῖς ἐξουσίαν  
 τέκνα Θεῶ γενέσθαι. Εἴτα τῷ Πατρὶ, ὡς ὁ Παῦλος εἶπε:  
 μόνῃ σοφῷ ὄντος Θεῷ, ὁ Υἱὸς ἐστὶν ἡ Σοφία αὐτῷ· Χριστὸς γὰρ  
 Θεὸς διώαμις, καὶ Θεὸς σοφία· τῷ γὰρ Υἱῷ ὄντος τῆς Σοφίας,  
 ἡμεῖς Πνεῦμα σοφίας λαμβάνοντες, τὸν Υἱὸν ἔχομεν, καὶ ἐν  
 αὐτῷ σοφοὶ γινόμεθα. Οὕτω γὰρ γέγραπται ἐν τῷ ΡΜΕ'.  
 Ψαλμῷ: Κύριος λύει πεπεδημένους, Κύριος σοφοὶ τυφλούς. Καὶ  
 τῷ Πνεύματος διδομένῃ εἰς ἡμᾶς, λάβετε γὰρ Πνεῦμα Ἅγιον,  
 ἔλεγεν ὁ Σωτὴρ: ὁ Θεὸς ἐν ἡμῖν ἐστὶ. — Τῷ δὲ Θεῷ ὄντος ἐν  
 ἡμῖν, ἐστὶ καὶ ὁ Υἱὸς ἐν ἡμῖν. — Ἐπειτα Ζωῆς ἔσης τῷ Υἱῷ...  
 ζωοποιεῖσθαι λεγόμεθα ἐν τῷ Πνεύματι — ζωοποιούμενων δὲ ἡμῶν  
 ἐν τῷ Πνεύματι, ζωὴ αὐτὸς ὁ Χριστὸς ἐν ἡμῖν λέγεται. — Καὶ  
 πάλιν: „Ὡςπερ ὁ Υἱὸς, ἅπερ ἐποίησεν ἔργα, ἔλεγε τὸν Πατέρα  
 ἐργάζεσθαι. — Οὕτως ἅπερ ἐν διώαμει Πνεύματος ἐργάζετο ὁ  
 Παῦλος, ἔλεγε τῷ Χριστῷ εἶναι τὰ ἔργα. Οὐ γὰρ τολμήσω τι  
 λαλεῖν, ὧν ἃ κατεργάσατο Χριστὸς δι' ἐμῶ εἰς ὑπακοὴν Ἑθνῶν,  
 ἐν λόγῳ καὶ ἔργῳ, ἐν διώαμει σημείων καὶ τεράτων, ἐν διώαμει  
 Πνεύματος Ἁγίου. Τοιαύτης δὲ συστοιχίας καὶ ἐνότητος ἐν τῇ  
 Τριάδι ἔσης, τίς ἂν εἴη λοιπὸν, τὸν Υἱὸν ἀπὸ τῷ Πατρὶ, ἢ  
 τὸ Πνεῦμα ἀπὸ τῷ Υἱῷ, ἢ αὐτῷ τῷ Πατρὶ χωρίζων; ἢ τίς  
 ἔστω τολμηρὸς, ὡς εἰπεῖν ἀνόμοιον καὶ ἑτεροφυῆ τὴν Τριάδα  
 πρὸς ἑαυτῷ; ἢ ἀλλότριον τῷ Πατρὶ τὸν Υἱόν; ἢ ξένον τὸ  
 Πνεῦμα τῷ Υἱῷ; Πῶς δὲ ταῦτα ἐστὶ; πάλιν ἄν τις ἐρωτήσῃ  
 ζητῶν· πῶς τῷ Πνεύματος ὄντος ἐν ἡμῖν, λέγεται ὁ Υἱὸς εἶναι  
 ἐν ἡμῖν; τῷτε Υἱῷ ὄντος ἐν ἡμῖν, λέγεται ὁ Πατὴρ εἶναι ἐν  
 ἡμῖν; ἢ πῶς ἔστω, Τριάδος ἔσης, ἐν ἐνὶ σημαίνεται ἡ Τριάς; ἢ  
 πῶς τῷ ἑνὸς ὄντος ἐν ἡμῖν, ἡ Τριάς λέγεται; ἢ, διελέτωσαν  
 πρῶτον αὐτοὶ τῷ ἀπαυγάσματος τὸ Φῶς, ἢ τὴν σοφίαν τῷ σο-  
 φῷ· ἢ εἰπάτωσαν πῶς ἐστὶ ταῦτα; Εἰ δὲ μὴ τῷτο διώανται,  
 πολλῷ μᾶλλον περὶ Θεῶ τοιαῦτα ζητεῖν μαινομένων ἐστὶ τὸ  
 τόλμημα. Οὕτω τοίνυν ἐνταῦθα Ἀθανάσιος, καὶ ἐν τοῖς  
 Τόμ: Β'.

Κ κκκ

ἐφεξῆς



ἐφεξῆς ἔτι, ἔκ ἐκ τῆς λόγῃς τῆς κατὰ τὴν Ἀρχὴν καὶ Αἰτίαν, πρὸς τὰς ἐξαριθμώμενας Θεὸν εἶναι τὸ Πνεῦμα ἐπιχειρῶν ἐτύγχανε μόνον δὲ τὴν ἐνότητα τῆς φύσεως προσβιβάζων καὶ προβαλλόμενος, τῆς τῆς Τίς καὶ τῆς Ἁγίας Πνεύματος.

Ἀλλὰ προσίθῃσι ΒΕΛΛΑΡΜΙΝΟΣ: „Ἐπειδὴ (Φησὶν) ὑπὲρ „τὸ ἡμῖν τῆς Ἐπισολῆς, τοιάνδε τάξιν καὶ φύσιν ἔχει τὸ „Πνεῦμα πρὸς τὸν Υἱόν, οἷαν ὁ Υἱὸς ἔχει πρὸς τὸν Πατέρα, „πῶς οἷον τε τὸν κτίσμα τὸ Πανάγιον Πνεῦμα λέγοντα, μὴ „τὸ αὐτὸ ἐξ ἀνάγκης καὶ περὶ τῆς Τίς φρονεῖν,; Ἀλλ' εἰ ἔτι καὶ περαιτέρω τὴν Ἀθανασίῃ Ἐπισολῇ προαχθείμεν ἀνακρί- ναι, καὶ ταῦτα δῆπερ τὰ ῥήματα μὴ κατ' ἄλλον τινὰ νοῦν, φα- νερόν γενήσεται αὐτὸν προενυωχέειν, ἢ ὅτι ἡ αὐτὴ φύσεώς τε καὶ ἐνεργείας ἐνότης χωρὶς μεταξὺ τῆς Ἁγίας Πνεύματος καὶ τῆς Τίς, ἢ καὶ τῆς Τίς μεταξὺ καὶ τῆς Πατρὸς χώραν ἔχουσα. Οὕτω γὰρ ὁλοχερῶς ἔχει τὸ χωρίον ἐκεῖνο, Σελ: 195. „Οὕτω „διὰ τὴν ἀπιστίαν τῶν τολμηρῶν λέγειν ἀπλῆστερον, καὶ λέγειν „ἀκινδύνως, καὶ μετὰ συγγνώμης νοεῖν ἕξαι, καὶ πισθεύειν ἕνα „εἶναι τὸν ἁγιασμόν, τὸν ἐκ Πατρὸς καὶ Τίς ἐν Πνεύματι Ἁγίῳ „γνωζόμενον. Καὶ γὰρ, ὡς περὶ γέννημα μονογενὲς ὁ Υἱὸς ἐστίν „ἔτω καὶ τὸ Πνεῦμα παρὰ τῆς Τίς διδόμενον καὶ πεμπόμενον, „καὶ αὐτὸ ἐν καὶ ἔ' πολλὰ, ἔδὲ ἐκ πολλῶν ἐν, ἀλλὰ μόνον αὐτὸ „τὸ Πνεῦμα: Ἐνὸς γὰρ ὄντος τῆς Τίς, τῆς ζώντος Λόγῃς, μίαν „εἶναι δὲ τελείαν καὶ πλήρη τὴν ἁγιαστικὴν καὶ φωτιστικὴν ζωὴν, „ἔσαν ἐνέργειαν αὐτῆς καὶ δωρεάν ἥτις γε ἐκ Πατρὸς λέγεται „ἐκπορεύεσθαι ἐπειδὴ παρὰ τῆς Λόγῃς, τῆς ἐκ Πατρὸς ὁμολογούμενης, „ἐκλάμπει, καὶ ἀποσέλλεται, καὶ δίδοται. Ἀμέλει: ὁ μὲν Υἱὸς „παρὰ τῆς Πατρὸς ἀποσέλλεται ἔτω γὰρ, Φησὶν, ὁ Θεὸς ἡγά- „πησε τὸν κόσμον, ὥστε τὸν Υἱὸν αὐτῆς τὸν Μονογενῆ ἔδωκεν „ὁ δὲ Υἱὸς τὸ Πνεῦμα ἀποσέλλει· εἰ γὰρ, Φησὶν, ἐγὼ ἀπέλθω, „ἀποσελῶ τὸν Παράκλητον. Καὶ ὁ μὲν Υἱὸς τὸν Πατέρα δοξάζ- „ει, λέγων: Πάτερ, ἐγὼ σὲ ἐδόξασα· τὸ δὲ Πνεῦμα δοξάζει τὸν „Υἱόν· ἐκεῖνος γὰρ, Φησὶν, ἐμὲ δοξάσει. Καὶ ὁ μὲν Υἱὸς Φησὶν: „ὃ ἡκούσα παρὰ τῆς Πατρὸς ταῦτα καὶ λαλῶ εἰς τὸν κόσμον „τὸ δὲ Πνεῦμα ἐκ τῆς Τίς λαμβάνει: ἐκ τῆς ἐμῆς γὰρ λήφεται, „καὶ ἀναγγελεῖ ὑμῖν, Φησί. Καὶ ὁ μὲν Υἱὸς ἐν τῷ ὀνόματι τῆς „Πατρὸς ἦλθε· τὸ δὲ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, Φησὶν, ὃ πέμψαι ὁ Πα- „τήρ ἐν τῷ ὀνόματί μου. Τοιαύτῳ δὲ τάξιν καὶ φύσιν ἔχοντος „τῆς Πνεύματος πρὸς τὸν Υἱόν, οἷαν ὁ Υἱὸς ἔχει πρὸς τὸν Πα- „τέρα, πῶς ὁ τῆτο κτίσμα λέγων, ἔ' τὸ αὐτὸ καὶ περὶ τῆς Τίς „ἐξ ἀνάγκης φρονήσει; Εἰ γὰρ ἐστὶ τὸ Πνεῦμα τῆς Τίς κτίσμα, „ἀκόλουθον ἂν εἴη λέγειν αὐτὸς καὶ τὸν Λόγον τῆς Πατρὸς εἶναι „κτίσμα. — Ὡς περὶ γὰρ ὁ Υἱὸς ἐν τῷ Πατρὶ ὢν, ἐν ᾧ καὶ „ὁ Πα-

„ὁ Πατήρ ἐστίν, ἐκ ἑσσι κτίσμα, ἀλλ' ἴδιος τῆς τῆ Πατρὸς ἐσίας·  
 „(τῷτο γὰρ καὶ ὑμεῖς προσποιεῖσθε λέγειν) ἔτω καὶ τὸ Πνεῦμα  
 „τὸ ἐν τῷ Υἱῷ, ἐν ᾧ καὶ ὁ Υἱὸς ἐστίν, ὃ θέμις τοῖς κτίσμασι  
 „σιωτάσων, ἐδὲ διαίρειν αὐτὸ ἀπὸ τῆ Λόγου, καὶ ἀτελῇ τὴν Τριάδα  
 „κατασκοῦάζειν,,.

Οὕτω μὲν ἔν αὐτόθεν κατάδηλον, καθ' ὃν δῆποτε ἐννοίαν  
 Ἀθανάσιος λέγει: „Τοιαύτω τάξιν τε καὶ φύσιν ἔχειν τὸ Πνεῦ-  
 „μα πρὸς τὸν Υἱὸν, οἷαν ὁ Υἱὸς ἔχει πρὸς τὸν Πατέρα,,. Τῆ-  
 „τέστιν, ἣς ἐστίν ὁ Υἱὸς τῆ Πατρὸς· μία καὶ ἡ τῆ Υἱῆ ἰχὺς τε  
 καὶ διώαμις τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον· ὁ μὲν Υἱὸς γέννημα ἐστὶ τῆ  
 Πατρὸς μονογενές· τὸ δὲ Πνεῦμα καὶ ἐκ τῆ Υἱῆ πέμπεται· καὶ  
 ὁ μὲν Υἱὸς δοξάζει τὸν Πατέρα, δοξάζει δὲ τὸν Υἱὸν καὶ τὸ  
 Πνεῦμα· καὶ ὁ μὲν Υἱὸς ἂ λαλεῖ ἀκούει παρὰ τῆ Πατρὸς· τὸ  
 δὲ Ἅγιον Πνεῦμα λαμβάνει καὶ ἐκ τῆ Υἱῆ. Καὶ κατὰ τὴν δε  
 ἄρα τὴν ἐννοίαν ὑποσυνάπτει: „Ἐπεὶ δὲ ἔν τοιάνδε τάξιν καὶ  
 „φύσιν ἔχει τὸ Πνεῦμα πρὸς τὸν Υἱὸν, οἷαν ὁ Υἱὸς ἔχει πρὸς  
 „τὸν Πατέρα, πῶς οἷον τε τὸν κτίσμα τὸ Πνεῦμα λέγοντα, μὴ  
 „τὸ αὐτὸ ἐξ ἀνάγκης καὶ περὶ τῆ Υἱῆ φρονεῖν,,; Ἐνθα πάν-  
 „τως ἐδόλως μέμνηται καὶ τῆς κατ' αἰτίαν Ἀρχῆς: ὅτι ὥσπερ  
 ὁ Υἱὸς ἐκ τῆ Πατρὸς γεννᾶται, ἔτω καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ  
 τῆ Υἱῆ ἐκπορεύεται. Τῷ ὄντι δὲ καὶ τῷτο μεταξὺ τῶν ἄλλων  
 λόγων προσέθετο ἄν· μᾶλλον δὲ καὶ προθεῖναι ὠφείλει αὐτὸ,  
 εἰ τῷ τῆς Ἀρχῆς λόγῳ ἔφασκεν Ἀθανάσιος τοιάνδε τάξιν τὸ  
 Πνεῦμα ἔχειν πρὸς τὸν Υἱὸν, οἷαν καὶ ὁ Υἱὸς πρὸς τὸν Πα-  
 τέρα ἔχων ἐστίν. Ἐνθεντοι ὑποσυνάπτει: „Ὡσπερ γὰρ ὁ Υἱὸς  
 „ἐν τῷ Πατρὶ ὢν, ἐν ᾧ καὶ ὁ Πατήρ ἐστίν, ἐκ ἑσσι κτίσμα,  
 „ἀλλ' ἴδιος τῆς τῆ Πατρὸς ἐσίας· ἔτω καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ ἐν τῷ  
 „Υἱῷ, ἐν ᾧ καὶ ὁ Υἱὸς ἐστίν, ὃ θέμις τοῖς κτίσμασι σιωτάσων,,.  
 Ἐξ ὧν δῆπερ προσέτι ἐκδηλον, ἐκ ἄλλοθεν ἢ ἐκ τῆ ἐνισαίε τῆς  
 φύσεως, καθ' ὃ, ὥσπερ ὁ Υἱὸς ἐν τῷ Πατρὶ, ἔτω καὶ τὸ Πνεῦ-  
 μα ἐν τῷ Υἱῷ· τῆς λόγου αὐτόθι λαμβάνειν τὸν Ἀθανάσιον.  
 Κἀντεῦθεν περὶ τὸ τέρμα τῆς Ἐπιστολῆς ἐκείνης, Σελίδι 208.  
 Φησὶν: „Οἱ ἀληθινοὶ προσκυνοῦνται, προσκυνοῦσι μὲν τῷ Πατρὶ,  
 „ἀλλ' ἐν Πνεύματι καὶ ἀληθείᾳ ὁμολογῶντες τὸν Υἱὸν, καὶ ἐν  
 „αὐτῷ τὸ Πνεῦμα· ἀχώρισον γὰρ τῆ Υἱῆ τὸ Πνεῦμα, ὡς ἀχώ-  
 „ριστος ὁ Υἱὸς τῆ Πατρὸς. Αὐτὴ ἡ Ἀλήθεια μαρτυρεῖ, ἢ λέγου-  
 „σα: πέμψω ὑμῖν τὸν Παράκλητον, τὸ Πνεῦμα τῆς ἀληθείας  
 „ὃ παρὰ τῆ Πατρὸς ἐκπορεύεται· ὃ ὁ κόσμος ὃ διώτα λαβεῖν·  
 „τῆτέστιν, οἱ ἀρνήμενοι αὐτὸ ἐκ τῆ Πατρὸς ἐν τῷ Χριστῷ,,.  
 Μάταιος ἄρα ὁ Βελλαρμῖνος ἐστὶ, προσιθεὶς ὅτι: „Ἐνθα δὲ,  
 „ὡς βέβαιον πισθῶν ὡς Ἀθανάσιος, τὸ Ἅγιον Πνεῦμα προῖέναι  
 „καὶ ἐκ τῆ Υἱῆ, ἔντεῦθεν, ὡς ἐξ ἀρχῆς σεβρότάτης καὶ  
 Κ κκκ 2 „ἀρι-

„αριδηλοτάτης επισωάψῃ τὸ ἀμφιβαλλόμενον,,. Ἀμέλει τοι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα εἶναι Θεόν.

Ἀλλὰ γὰρ ἔτι πρὸς τὴν δοθεῖσαν Ἀπάντησιν Βελλαρμῖνος ἐπαναλαμβάνων φησὶν: „Αποκριθεῖεν ἂν, τὴν τῷ Πνύματος πρὸς τὸν Υἱὸν, καὶ τῷ Υἱῷ πρὸς τὸν Πατέρα τάξιν, ἐν τῷ ἑκ μόνον ὑφίστασθαι: ὅτι ὡς περὶ ὁ Πατὴρ πέμπει τὸν Υἱὸν πρὸς τὰ κτίσματα, ἔτω καὶ ὁ Υἱὸς πέμπει τὸ Πνεῦμα. Τῷτο δ' ἂν ἔχοι ρηθῆναι (φησὶν) εἰ μὴ μετὰ τῆς πρὸς τὰ κτίσματα πέμψεως, νοήσωμεν ἅμα καὶ τὴν ἀληθινὴν κατὰ τὸ εἶναι Ἐκπόροσιν. Ἀλλως γὰρ τὸ τῷ Ἀθανασίῳ Ἐπιχέρημα εἶδεν ἂν ὅλως ἰχθύσειεν ὡς περὶ ἂν ἰχθύει τὸ ἐπιχέρημα: ὁ Θεὸς ἀποσέλλει τὰς Ἀγγέλους. Ἄρα οἱ Ἀγγελοὶ ἂν εἰσὶ κτίσματα ἢ, καὶ ὁ Θεὸς κτίσμα ἐστὶ. Τῷτο γὰρ διὰ τῷτο εἶδεν ἰχθύει, διὰ τὸ τὰς Ἀγγέλους ἔτω πέμπεσθαι παρὰ τῷ Θεῷ πρὸς τὰ κτίσματα, ὡς μὴ τὴν τοιαύτην Ἀποσολὴν περιέχειν ἅμα, καὶ πρόοδον αἰωνίαν, τὴν τῶν Ἀγγέλων ἐκ αὐτῆς τῆς ἐσίας τῷ Θεῷ. Εἰ ἂν τὸ Ἅγιον Πνεῦμα πέμπεται πρὸς τὰ κτίσματα ἐκ τῷ Υἱῷ ἐκ τῷτο δ' ἂν πρόοσιν ἐσιωδῶς, ὡς περὶ ἐκ τῷ Πατρός: πάντως ἂν ἄλλως πέμπεται, εἰ μὴ ὡς περὶ οἱ Ἀγγελοὶ πέμπονται. καὶ διὰ τῷτο, ἂν ἐντεῦθεν συμπερανθεῖν, ὅτι τὸ Πνεῦμα Θεός ἢ ὅτι ὁ Υἱὸς ἂν ἐστὶ Θεός: ὅπερ ἄλλ' ἂν Ἀθανάσιος σωεπέρανεν. Εἰ τοίνυν Ἀθανάσιος λόγον ἐποιεῖτο περὶ τῆς πρὸς τὰ κτίσματα πέμψεως, ἂν ἂν ἐφίσηεν: εἰ γὰρ τῷ Υἱῷ κτίσμα τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐστὶ κτ: Τὰ γάρ τοι ρήματα ταῦτα ἔχ' ἀπλῶς τινα, τὴν πέμψιν διασημαίνει, ἀλλὰ Προβολῶ. Διῃχυρίζεται δ' Ἀθανάσιος τὸ Ἅγιον Πνεῦμα προβάλλεσθαι μὲν ἐκ τῷ Υἱῷ, μὴ κτίζεσθαι δέ,,.

Ἀλλὰ Α'. μὴ ἄρα ἔχει καὶ τῆς πέμψεως αὐτῆς Ἀθανάσιος ἐπεμνήθη, ἵν' ἐπιφέρῃ κἀντεῦθεν, τοιάνδε τάξιν τὸ Πνεῦμα ἔχεν πρὸς τὸν Υἱὸν, οἷαν καὶ ὁ Υἱὸς πρὸς τὸν Πατέρα ἔχων ἐστὶ; τὰ ἐκείνους πάντως ἄρτι κατέδομεν. Πλὴν Β'. ἂν ἐν μόνῃ δὴ τῇ πέμψει ὑπετίθετο Ἀθανάσιος τὴν τάξιν ἐκείνῃ. Ἀλλ' ὅμως ἦκιστα πάντων ἐν τοῖς λοιποῖς σωαριθμῶν ὑπῆρχε καὶ τὴν Ἐκπόροσιν τῷ Πνύματος τὴν ἐκ τῷ Υἱῷ, ὡς σωεωράκαμεν. Γ'. ἔχ' ἀπλῶς Ἀθανάσιος ἐπιχερεῖ ἐκ τῆς πέμψεως: ὅτι εἰ τὸ Πνεῦμα πέμπεται ἐκ τῷ Υἱῷ, ἂν ἐστὶ κτίσμα ἢ, εἰ κτίσμα αὐτὸ ἐστὶν, ἐκ ἴσου κτίσμα ἂν εἴη καὶ ὁ Υἱός. Ἀλλ' ἐν τοῖς λοιποῖς τῶν ὑποδειγμάτων, καὶ τὴν τῷ Πνύματος πέμψιν ἐπάγει τὴν ἐκ τῷ Υἱῷ, ἵν' ἐντεῦθεν ἀποδείξῃ τοιάνδε τάξιν ἔχεν τὸ Πνεῦμα πρὸς τὸν Υἱὸν, οἷαν πρὸς τὸν Πατέρα ἔχων τυγχάνει καὶ ὁ Υἱός. Κἀντεῦθεν τέως ἐπιφέρει Δ'. ἐκ τῆς ἐνότητος τῆς τε φύσεως καὶ τῆς ἐνεργείας: „Ὅτι, εἰ κτίσμα τὸ Πνεῦμα  
,,τὸ

„τὸ Ἅγιον ἐστὶ, καὶ ὁ Υἱὸς κτίσμα ἔσται,,. Ταύτητοι, ὅδε μόνον τὸ Υἱὸν τε μεταξὺ καὶ Πνεύματος ὁμοταγὲς προτείνει, ἀλλὰ καὶ τὸ ὁμοφυὲς ὅθεν ἦτ'ον. Οἷαν (φάσκων) τάξιν τε καὶ φύσιν ἔχων ἐστὶν ὁ Υἱὸς πρὸς τὸν Πατέρα, τὴν αὐτὴν ἔχει πρὸς τὸν Υἱὸν καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. Ὡς ἔτως ἅμα ἐκ τῆς ἐνιαίας τῆς τε φύσεως καὶ τῆς τάξεως ἐξ ἀνάγκης σωάγειν, ὅτι εἰ κτίσμα τὸ Πνεῦμα, κτίσμα ἔσται καὶ ὁ Υἱός. Ὁρθῶς ἄρα καὶ σεβρῶς ἔτι, καὶ τὴν τῆς Ἁγίας Πνεύματος Ἀποστολὴν παρὰ τῆς Υἱᾶ προσεπήγαγεν Ἀθανάσιος, καὶ τοὶ μὴ τὴν ἀπ' αἰῶνος Ἐκπόρουσιν περιέχουσιν.

Ψυδὲς δ' ἐπὶ τέτοις καὶ Ε'. ὅτι καὶ ἐκ μόνης τῆς πέμψεως ἐκ ἡδυνάτο ἐπιχειρεῖν Ἀθανάσιος, εἰ μὴ συμπεριεληφῶς αὐτῇ εἴη καὶ τὴν ἀπ' αἰῶνος Ἐκπόρουσιν. Πέμπεται γὰρ τὸ Πνεῦμα παρὰ τῆς Υἱᾶ, ὡς Πνεῦμα ὁθνεῖον, καὶ αὐτὸ ἀλλότριον, καὶ τῆς αὐτῆς ἰσχύος κεχωρισμένον· ἀλλ' ὡς Πνεῦμα ἰδιόν τε αὐτῆς ὄν, καὶ ἀδιαιρέτως αὐτῇ ἐνυπάρχον. Διὸ καὶ ἐκ μιᾶς καὶ τῆς αὐτῆς τῆς Υἱᾶ ἰσχύος τοῖς πιστεύουσι χορηγούμενον. Εἰ δὲ τῆτο, πῶς ἐκ αὐτῆς ἐξ ἀνάγκης ἔποιτο, ἐκ τῆς, παρὰ τῆς Υἱᾶ, τὸ ἐκ τῆς αὐτῆς τέτῃ ἰσχύος ὄν Πνεῦμα πέμπεσθαι· ὅτι καὶ εἰ κτίσμα ἐστὶ τὸ Πνεῦμα, κτίσμα ἂν εἴη καὶ ὁ Υἱός; Πῶς ὥδε, εἰπέμοι, τό: ἵνα τῆς ἐπιχείρημα τόδε ἰσχύος, προϋποτίθεσθαι δεῖν καὶ τὴν ἐκ τῆς Υἱᾶ Ἐκπόρουσιν ἀπ' αἰῶνος τῆς Πνεύματος; Πέμπονται μὲν γὰρ καὶ Ἄγγελοι παρὰ τῆς Θεᾶς, ἀλλ' ὡς ξένοι, καὶ τῆς Θεᾶς ἰσχύος ὅτι πορρωτάτῳ ἀπέχοντες, ὅδε ἐκ τῆς τῆς Θεᾶς ἰσχύος πεφυκότες. Καὶ ταύτης ἄρα τῆς μεγίστης διαφορᾶς ἐγχαρῆσης μεταξὺ τῆς τῆς Ἁγίας Πνεύματος, καὶ τῆς τῶν Ἀγγέλων πέμψεως, ὡς λίαν ἀτοπώτατα δήπερ ὁ Ἰησοῦς παρασιωῆπτεν, ὅτι: „Εἰ πέμπεται τὸ Ἅγιον Πνεῦμα παρὰ τῆς Υἱᾶ πρὸς τὰ κτίσματα, καὶ μὴ πρόεισιν ὁμοιωδῶς ἐξ αὐτῆς τῆς Υἱᾶ, ὡς πρόεισιν ἐκ τῆς Πατρὸς, πάντως ἐκ ἄλλως πέμπεται, εἰμὴ ὡς οἱ Ἄγγελοι πέμπονται,,; Πῶς δὲ τελοῦνται, καὶ ψιλῶ ῥηματικῶς μεμνημένος φαίνεται Ἀθανάσιος, τῆς: „Προβάλλεσθαι μὲν ἐκ τῆς Υἱᾶ τὸ Πνεῦμα, μὴ κτίζεσθαι δέ,,; Καίτοι γε ἄλλως ἐπάνανγκες ὄν τῆτο προσεπειπῆν, εἰ τόδε αὐτὸς πρεσβύων δι᾽χυρίζοιτο· δι᾽χυρίζοιτο φημί: ὡς μάτῳ μεγαλαυχῶν Βελλαρεμῖνος ἐτύγχανεν; Ἀλλ' Ἀθανάσιος φάσκων: εἰ τῆς Υἱᾶ κτίσμα τὸ Πνεῦμα, παραγωγῶν σημαίνει. Ἄρα καὶ τῆς πέμψεως μεμνημένος, παραγωγῶν ὑποτίθῃσι τὴν αἰώνιον,, — Ἀλλ' ὅποια τις, πρὸς Θεᾶς! ἢ σωέπεια; Τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ ἔστι κτίσμα τῆς Υἱᾶ κατὰ τὸν Ἀθανάσιον. Ἄρα τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἑτέρῳ διαφόρῳ τρόπῳ ἐκ τῆς Υἱᾶ παράγεται; Ἀλλ' ὅθεν ἦτ'ον ἑμπης ἂν ἔποιτο, καὶ ἐκ τῆς τὸν Υἱὸν μὴ κτίσμα εἶναι τῆς Ἁγίας Πνεύματος, ἑτέρῳ τινι

Τόμ: Β'.

Λ αλλ

διαφέ-



διαφέροντι τρόπῳ ἐκ τῆς Πνοῦματος αὐτὸν παράγεσθαι. Ἡ τίς ἢ σωπεία; Ἡ κτίσις σημαίνει παραγωγῇ. Ἀλλὰ μὴ Ἀθανάσιος τῆς πέμψεως ἐμνήσθη, ἵνα δείξῃ τὸν Υἱὸν μὴ εἶναι κλισόν. Ἄρα ἐκ τῆς πέμψεως τὴν ἀπ' αἰῶνος Ἐκπόρευσιν ὑποτίθῃσι; Πάντως ἡ κτίσις παραγωγῇ εἰς τὸ εἶναι σημαίνει, τὴν ἐκ τῆς μηδενὸς δηλονότι· ὁ δὲ, κατὰ τῶν Αἰρεσιωτῶν ἀποφάσκει τὸ Πνεῦμα κτίζεσθαι ὑπὸ τῆς Υἱᾶς· ἀποφάσκει ἄρα καὶ τὸ τοιῷδε λόγῳ παράγεσθαι τὸ Πνεῦμα ὑπὸ τῆς Υἱᾶς. Ἀλλὰ μὴ γάρ, ἐφ' ᾧ τῆτο δείξαι διὰ τῆς πέμψεως, ἐπ' ἀνάγκης ὡς διὰ γε τῆς πέμψεως αὐτῆς, καὶ τὴν ἀπ' αἰῶνος Ἐκπόρευσιν τῆς Ἁγίας Πνοῦματος (ἐκ τῆς Υἱᾶς) προὑποθέσθαι; Ἀλλὰ περὶ τῆς ταῦτα. Πρόεισι δ' ὁ Βελλαρμίνος: „Μετὰ φύλλον ἐν, φησὶν Ἀθανάσιος, μᾶλλον δὲ „καὶ τῆς Υἱᾶς Εἰκὼν ἐσίτε καὶ λέγεται τὸ Πνεῦμα,,. Περὶ γε μὴν τῆς κατόπιν εἴρηται.

Ἐνίσταται αὖθις ὁ αὐτὸς Ἰησοῦτης, καὶ κατωτέρω: „Ὡς „εἴπερ ὁ Υἱὸς, ἅτε ἐκ τῆς Θεᾶς καὶ Πατρὸς ὢν, ἴδιος τῆς αὐτῆς „ἁθείας ἐστίν, ἐπ' ἀνάγκης καὶ τὸ Πνεῦμα, ἐπεὶ ἐκ τῆς Θεᾶς εἶναι „λέγεται: ἴδιον εἶναι τῆς Υἱᾶς κατὰ τὴν ἁθείαν. Τῷ ὄντι δὲ, „φάσκων Ἀθανάσιος τὸ Πνεῦμα ἐκ τῆς Θεᾶς εἶναι, νοῶν ἐστίν „ἐκ τῆς Υἱᾶς καὶ Θεᾶς. Ἄλλως, ἐκ ἂν ὁρθῶς σωεπέρανε, διὰ „τῆτο αὐτὸ ἴδιον εἶναι τῆς Υἱᾶς, ὡς ὁ Υἱὸς διὰ τῆτο ἴδιος τῆς „Πατρὸς, ὅτι ἐκ τῆς Πατρὸς ἐστίν. Σώζονται δὲ καὶ διόσαι ἐτι „Ἐπιστολῇ βραχυλογώτερά, πρὸς τὸν αὐτὸν Σεραπίωνα, ἐν αἷς „ταῖς αὐταῖς φησὶν ἐν ἄλλοις ῥήμασιν,,. — Ἀλλὰ πῶς γάρ, εἰπέμοι: „ἐκ ἂν ὑγιῶς ἐπιχειρήσεις σωάγων, ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐστίν „ἐκ τῆς Θεᾶς καὶ Πατρὸς: Ἄρα ἴδιον ἐστὶ τῆς Υἱᾶς; Εἰ γὰρ ἐκ „τῆς Πατρὸς ἐκπορεύεται, πάντως ἐν τῇ ἁθείᾳ, καὶ ἐκ τῆς ἁθείας „τῆς ἰδίας ἕσης τῷ Υἱῷ, ἀδιαχωρίως παράγεται. Καὶ πᾶσα „ἄρα ἀνάγκη, τὸ Πνεῦμα ἴδιον εἶναι τῆς Υἱᾶς. — Ἀλλ' ἐχὼ πα- „ραπλησίως ἂν ἔτῳ, φησὶν, ἴδιον εἶναι τὸ Πνεῦμα καὶ τῆς Υἱᾶς, „ὡς μὴ ὄν ἐκ τῆς Υἱᾶς, καθάπερ ἔν ὁ Υἱὸς ἴδιος ἐστὶ τῆς Πατρὸς, „ὡς ὢν ἐκ τῆς Πατρὸς: τῆς δ' ὅπερ ἄλλ' ἐν ἐνταῦθα σημαίνει βέ- „λεται Ἀθανάσιος. — Ἀλλὰ πῶς τῆτο, πρὸς Θεᾶς! σημαίνει βέ- „λεται Ἀθανάσιος; Πρᾶκτο μὲν ἐν αὐτῷ δείξαι, ἴδιον τῆς Υἱᾶς „εἶναι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον: ἐνθεντοι, φησὶ, καὶ τὸ Πνεῦμα, „ἐπειδὴ ἐκ τῆς Θεᾶς εἶναι λέγεται, ἴδιον εἶναι τῆς Υἱᾶς κατ' ἁθείαν. Οὐδάμῃ δὲ λέγει, ὅτι: ὥσπερ τῆς Πατρὸς ἴδιος ὁ Υἱὸς, ἅτε ἐκ „τῆς Πατρὸς ὢν· ἔτῳ, ἐδ' ἄλλως ἂν εἶναι ἐδὲ τὸ Πνεῦμα ἴδιον „τῆς Υἱᾶς, εἰ μὴ ὡσαύτως εἶναι καὶ ἐκ τῆς Υἱᾶς. Ὅτι δ' ἔτῳ ἴδιον „τῆς Υἱᾶς τὸ Πνεῦμα, ὡς ἴδιος καὶ ὁ Υἱὸς τῆς Πατρὸς, ἐξ ἀνάγ- „κης ἂν τόδε πάντως παρακολυθῆν ἐπαχθεῖν, ὡς δέδεικται, διὰ  
τὸ



τὸ ἐκπορεύεσθαι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῆ Πατρὸς. Ὁ δὲ πρὸς τὰς λοιπὰς διοσὰς Ἐπισολὰς τὰς πρὸς Σεραπίωνα ἐπανήκει ὧν περ ἂν ἐξ ἐκείνων ἡμῖν ἀντεπενεχθῇ, τὰ μὲν ἤδη λελυταί, τὰ δὲ καὶ αὐτίκα ἐπιλυθήσεται ἐχομένως.

Τῷ μὲν ἔν Θείῃ Ἀθανασίῃ ἐν θατέρᾳ τῶν πρὸς Σεραπίωνα Ἐπισολῶν, πολυτρόπως κατασκευάσαι ἐπιχειρῶντος μὴ εἶναι κτίσμα τὸ Πνεῦμα, ἕτερος Ἰησοῦτης (97) τοιαῦτα ἀντιπροβάλλεται: „Πάλιν τὸ αὐτὸ ἔτως ἐπιπροτείνει: τὸ τῷ Υἱῷ ἄσθμα „ἐκ ἔσι κτίσμα· τὸ δὲ Πνεῦμα ἐστὶν ἄσθμα τῷ Υἱῷ. Ἄρα ἐκ „ἔσι κτίσμα. Ἐνταῦθα τῶν Προτάσεων ἢ Ἐλάσεων, ὑποτίθῃσι „τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἔτως ἐκ τῷ Υἱῷ ἐκπορεύεσθαι, ὥσπερ ἐκπο- „ρεύεται τὸ ἄσθμα τῷ σώματι. Περαιτέρω δὲ ὡδέ πως ἐπιχειρεῖ: „Ἡ τῷ Υἱῷ μορφή ἐκ ἔσι κτίσμα· (ὁ γὰρ Υἱὸς ἐν μορφῇ τῇ „τῷ Πατρὸς ὑπάρχων ἐκ ἔσι κτίσμα·) τὸ δὲ Πνεῦμα μορφή „ἐστὶ τῷ Υἱῷ· (κατὰ τὸν αὐτὸν δῆπερ λόγον, καὶ ὃν καὶ ὁ Υἱὸς „ἐν τῇ μορφῇ τῷ Πατρὸς ἐστίν·) ἐκ ἄρα κτίσμα ἐστίν, — „Ἀλλὰ γὰρ ἄσθμα τὸ Πνεῦμα λέγεται τῷ Υἱῷ, διὰ τὸ εἰς τὰ „πρόσωπα τῶν Ἀποστόλων ἐμφυσηθῶναι τὴν γεμὴν τοιάνδε ἐμ- „φύσησιν μηδαμῶς ἀποχρῶναι, εἰς ἀπόδειξιν τῆς Ἐκπορεύσεως „τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι ἐκ τῷ Υἱῷ, δι' ἰδιαιτέρας Πραγματείας ἀνω- „τέρω δέδεικται. (98) Τὸ ἄρα ἄσθμα πρόεισι δῆπερ ἀπὸ τῷ σώ- „ματος ταύτῃ τοι καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, τὸ διὰ τῆς ἐμφυσήσεως „ὑπὸ τῷ Σωτῆρος τοῖς Ἀποστόλοις χορηγηθὲν, ἀπὸ τῷ Κυριακῷ „σώματος προελήλυθε κατὰ τρόπον ἄσματος· προελήλυθε μὲν „τοὶ πρὸς τῆς Μαθητῶν. Καὶ πᾶν ἄρα ὅπερ ἂν ἐντεῦθεν συ- „ναχθῇ ἐστίν, ὅτι τὸ Πνεῦμα ὑπὸ τῷ Κυρίῳ πέμπεται, ἐμφυ- „σάται, πρόεισιν ἐπὶ τὰ ἐκτὸς, ὡς ἐν ἄλλοις εἴρηται. Λέγεται „δὲ προσέτι τὸ Πνεῦμα καὶ μορφή τῷ Υἱῷ, ὅτι κατὰ τὸ ἀκριβὲς „παρίσῃσι τὸν Υἱὸν, μόνον τῷ κατὰ τὸ αἰτιατὸν διαφόρῃ τρόπῳ „ὑπεξαυραμένον· καὶ ὃν δὴ λόγον ὁμοίως καὶ ὁ Υἱὸς ἐν μορφῇ „ὑπάρχει τῇ τῷ Πατρὸς: παρίσῃσι γὰρ κατὰ τὸ ἀκριβὲς τὸν „Πατέρα, παρεκτὸς τῷ κατὰ τὴν αἰτίαν λόγον. Πῶς ἔν ἄρ' „ἐντεῦθεν ἔποιτο, ἐκ τῷ μορφῶν εἶναι τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα, τὸ „ἤδη καὶ ἐκπορεύεσθαι ἐξ αὐτῶ; Ἀλλὰ καὶ περὶ τῆς ἐς πλάτος „ἀνωτέρω ἡμῖν διείληπται, ἐν οἷς περὶ τῷ ὅπως Εὐκλῶν τὸ Πνεῦ- „μα τῷ Υἱῷ λέγεται, ἐπραγματῶμεθα· (99) τὸ γὰρ πρᾶγμα εἰς „ταυτὸν ἦκει.

Ἔτι

(97) Κιχάβ: Ζητήμ: Γ'. Σελ: 33.

(98) Ὅρα ἐν Πραγμ: Θ'. Ἀπαντ: Γ'.

(99) Ἐν Πραγμ: τῇ ἐν χειρὶ ΙΕ'. § 5'.

Ἔτι δ' ὁ αὐτὸς Ἰησοῦς (100) Β'. φησὶν: „Οὐκ ἔξω τῷ  
 „Λόγῳ τὸ Ἅγιον ἐστὶ Πνεῦμα· ἀλλ' ἐν τῷ Λόγῳ ὑπάρχον δι'  
 „αὐτῷ ἐν τῷ Θεῷ ἐστὶ. Πῶς ἔν ἂν εἴη ἐν τῷ Θεῷ τὸ Πνεῦμα  
 „διὰ τῷ Λόγῳ, εἰ μὴ διὰ τῆς κατ' ἐνέργειαν πνύσεως, τῆς αὐτῷ  
 „σὺ τῷ Πατρὶ ἔσης κοινῆς; ὁ αὐτὸς δ' αὐτόθι τοῖς Αἵρεσιόφρο-  
 „σιν, ἐκ τῶν ῥημάτων ἐκείνων: ἐκ τῷ ἐμῷ λήψεται: τὸ Ἅγιον  
 „Πνεῦμα Υἱὸν εἶναι τῷ Υἱῷ, καὶ Υἱὸν τῷ Πατρὶ ἐπιφέρουσιν  
 „ἀπαντήσαν, μόνῃ κέχρηται τῇ ἀντιστροφῇ, λέγων: ὅτι τὸ ἐπ'  
 „ἐυθείας αὐτοῖς ἀποκρίνασθαι ἐκ ἀσφαλῆς· καὶ τοὶ ἀσφαλέστατον  
 „ἂν ᾧ εἶπεν, μηδαμῶς εἶναι τὸ Πνεῦμα Υἱὸν τῷ Υἱῷ· εἰ μὴ  
 „ὡς ἐξ αὐτῷ ἐκπορεύοιτο, — Ὅπως μὲν ἔν τῷ Ἅγιον Πνεῦμα,  
 „διὰ τῷ Υἱῷ ἐκ τῷ Πατρὶ ἐκπορεύεσθαι λέγεται, ἥτοι ἐν τῷ  
 „Θεῷ εἶναι, κατ' ἀρχὰς τῆςδε τῆς Πραγματείας (101) ἀποδέδεικται.  
 „Καθὸ, δηλονότι, τῷ Υἱῷ γεννηθέντος ἐκπορεύεται ἐκ τῷ Πατρὶ.  
 „Πῶς ἔν ἄρα διὰ τῷ Λόγῳ τὸ Πνεῦμα ἐκ ἂν εἴη ἐν τῷ Θεῷ,  
 „εἰ μὴ διὰ τῆς κατ' ἐνέργειαν πνύσεως, τῆς τῷ Λόγῳ σὺ τῷ  
 „Πατρὶ ἔσης κοινῆς; Ὁ δὲ θάτερον ἀφορᾷ: τί μὴ παραπλησίῳ  
 „τῷ λόγῳ, εἰ πισθῶν ᾧ καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα ἐκπορεύεσθαι,  
 „ἀπώτησεν Ἀθανάσιος, μηδαμῶς Υἱὸν τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα εἶναι,  
 „ὅτι ἐξ αὐτῷ ἔ γεννᾶται, ἀλλ' ἐκπορεύεται; ἐχὼ καὶ τότε φάναι  
 „ἀσφαλέστατον ᾧ, εἰ δὴ τὸ Πνεῦμα καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ ἐκπορεύοιτο;  
 „ὥς φανερόν κἀντεῦθεν, ἀνάγκης εὐδαιμονίας ὑπέσης τὸν Ἰησοῦν  
 „ταῦτα ἡμῖν προτίθεσθαι· ἔ γὰρ ὡς ἀμφιγνοήσας ποτὲ Ἀθανά-  
 „σιος, μή πη τὸ Πνεῦμα τῷ Υἱῷ ὑπάρχοι Υἱός, τοῖς ἐκ τῆς Αἵρε-  
 „σεως ᾧδε ἀπαντήσαι ἀσφαλῆς ἐχ' ἡγήσατο. Ἀπασα γὰρ ἡ Κα-  
 „θολικὴ Ἐκκλησία, τὸ Πνεῦμα τῷ Υἱῷ Υἱὸν εἶναι ἀείποτε ἐξη-  
 „νήσατο. Μᾶλλον δὲ, ὅτι τῷ σοφιστικῷ τῶν Αἵρετικῶν ἐκείνῳ  
 „Ἐπιχαρήματι: (ἐπεὶ τὸ Πνεῦμα ἐκ τῷ Υἱῷ λαμβάνει, Υἱός ἄρα  
 „ἐστὶ τῷ Υἱῷ) ἐκ ἂν ῥαδίως ὅ, τι καὶ εἴποι εἰς πληροφορίαν ἀπέ-  
 „χρησεν. Ἀλλὰ γὰρ περὶ τὰς ἐς πλάτος, περὶ τὰ παραπλήσια  
 „τῷ Μεγάλῃ Βασιλεῖ ῥήματα, ἐν τῇ Πραγματείᾳ τῇ περὶ τῶν  
 „Πατέρων τῶν Ἀνατολικῶν διήλθομεν. (102)

Ἀντιθέτως δ' ἔτι ὁ αὐτὸς Συγγραφεὺς (103) τὰ τῷ Ἀθα-  
 „νασίῳ ἐκείνῳ ἐκ τῆς αὐτῆς Ἐπιστολῆς, Φύλ: 10. „Ὡς περὶ ὁ  
 „Πατὴρ δέκνυσιν τὸν Υἱόν, λέγων: ἔτος ἐστὶν ὁ Υἱός μου ὁ ἀγα-  
 „πητός· ἔτω τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα ἐστὶν. Ἀπέσειλε γὰρ, (ὡς ὁ  
 „Ἀπόστολος πρὸς Ῥώμ: φησὶ) τὸ Πνεῦμα τῷ Υἱῷ αὐτῷ ἐν ταῖς  
 „καρ-

(100) Κιχῶς: αὐτόθι Φύλ: 14.

(101) Ὅρα § Α'. καὶ Β'.

(102) Ἐν τῇ Α' Πραγματ: Ἐκατονταετ: Δ'. πρόγε τῷ μίσε.

(103) Κιχῶς: Ζητήμ: Α'. Σελ: 16.

καρδίαις ἡμῶν. Καὶ ὡς περὶ τῆς Υἱᾶς λέγει: ἅπερ ἐμὰ ἐστὶ,  
 „τῆς Πατρὸς ἐστίν· ἔγω καὶ τῆς Πατρὸς ἐστὶ τὸ Πνεῦμα, καθάπερ  
 „ἔρηται εἶναι τῆς Υἱᾶς. Αὐτὸς γὰρ ὁ Υἱὸς φησὶν: ἐπὰν δὲ ἔλθῃ  
 „ὁ Παράκλητος ὃν ἐγὼ πέμψω ὑμῖν κτ: (Προσέσθῃσι δὲ ὁ Ἰη-  
 „σοῦτης:) Ἐνταῦθα δῆλον, ὅτι διὰ τῆτο λέγεται τὸ Πνεῦμα  
 „τὸ Ἅγιον τῆς Υἱᾶς, διὰ τὸ πέμπεσθαι ἐκ τῆς Υἱᾶς. Καὶ διὰ τῆτο  
 „λέγεται τῆς Υἱᾶς εἶναι, ὡς ἐστὶ καὶ τῆς Πατρὸς· καὶ ἐπομένως  
 „ἔχι διὰ τὴν κατὰ χρόνον πέμψιν, ἀλλὰ διὰ τὴν ἀπ' αἰῶνος. —  
 Ψοδὲς γε μὴν ὅτι Ἀθανάσιος ἐν ἐκείνοις, δείκνυσι τὸ Ἅγιον Πνεῦ-  
 μα τῆς Υἱᾶς εἶναι, διὰ τὸ πέμπεσθαι ἐξ αὐτῆς. Μενῶν γε ἵνα  
 πισώσῃται ὅτι τὸ Πνεῦμα ἐστὶ τῆς Υἱᾶς, ἐπάγει τὰ τῆς Ἱερᾶς  
 Γραφῆς ἐκείνα: „Ἐξαπέστειλε τὸ Πνεῦμα τῆς Υἱᾶς αὐτῆς. — καὶ  
 κείνα δέ: „Ἐπὰν δὲ ἔλθῃ ὁ Παράκλητος, ὃν ἐγὼ πέμψω ὑμῖν  
 „παρὰ τῆς Πατρὸς, τὸ Πνεῦμα τῆς ἀληθείας. — Μήτοιγε δ' ἄρα  
 διὰ τῶν Γραφικῶν τῶνδε Λογίων ὑπεμνήσθῃ Ἀθανάσιος τῆς εἰρη-  
 μένης, ὅτι τὸ Πνεῦμα πέμπεται ἐκ τῆς Υἱᾶς, ἵν' ἐντεῦθεν τὸ  
 Πνεῦμα, τῆς Υἱᾶς εἶναι Πνεῦμα κατασκοδῶσῃ; καὶ μὴ μᾶλλον τῶν  
 λοιπῶν ἐκείνων, ἐν οἷς διαρρήδην τὸ Ἅγιον Πνεῦμα λέγεται,  
 ὅτι Πνεῦμα ἐστὶ τῆς Υἱᾶς; Ἀλλ' ἔσω δὴ καὶ Ἀθανάσιος ἐξ αὐτῆς  
 τῆς πέμψεως συμπεραίνων ὑπάρχειν τῆς Υἱᾶς τὸ Πνεῦμα, ὥστε  
 ὑπάρχει καὶ τῆς Πατρὸς· ἢ ἔχι καὶ ἐκ τῆς ἐγχρόνου πέμψεως  
 ἔπεται τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, Πνεῦμα εἶναι τῆς Υἱᾶς; Ἀλλὰ  
 περὶ τὰτα ἡδὴ πλατύτερον εἴρηται ἐπὶ τῆς τῆς Βελλαρμίνης πα-  
 ραπλησίᾳ ἐνστάσεως. (104)

Ὁ αὐτὸς Ἰησοῦτης (105) ἔτι ἐκ τῆς πρὸς Σεραπίωνα Ἐπι-  
 στολῆς, Τόμ: Α'. τῶν Συγγραμ: Φύλ: 189. ἀνθυποφέρει τὰδε:  
 „Ἡ Τριάς ἀδιαίρετος ἐστὶ καὶ ἐνθα ἂν ὁ Πατὴρ λέγοιτο, αἶμα  
 „σὺ αὐτῷ καὶ ὁ Λόγος αὐτῆς ἐστὶ, καὶ ἐν τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα.  
 „Εἰ δὲ ὁ Υἱὸς ὀνομάζοιτο, ἐν τῷ Υἱῷ ἐστὶν ὁ Πατὴρ, καὶ ἔδὲ  
 „τὸ Πνεῦμα ἐκτὸς τῆς Λόγου ἐστὶ. Μία γὰρ χάρις ἐκ τῆς Πατρὸς  
 „διὰ τῆς Υἱᾶς ἐν Ἀγίῳ Πνεύματι σωτελεῖται. — (Προσέσθῃσι δὲ)  
 „ἐντεῦθεν σωροῦν εἶναι, ὅτι ἡ αὐτὴ σὺ τῷ Υἱῷ σὺνάφεια τῷ  
 „Ἀγίῳ Πνεύματι ἀπονέμεται, ἥτις ἐστὶ καὶ τῆς Πατρὸς μετὰ τῆς  
 „Υἱᾶς. Ὡστε γὰρ ἡ τῆς Υἱᾶς σὺνάφεια μετὰ τῆς Πατρὸς, παρά γε  
 „τὴν τῆς ἑσίας ταυτότητα, ἐμπερικλείει καὶ τὴν Ἀρχὴν, ἔγω  
 „καὶ ἡ σὺνάφεια τῆς Ἀγίας Πνεύματος σὺ τῷ Υἱῷ. — Πάντως  
 „δήπερ ὁ τῆς Ἀθανασίᾳ σκοπὸς ἐστὶ, τὴν αὐτὴν σὺνάφειαν δεῖξαι  
 „μεταξὺ τῆς Πνεύματος καὶ τῆς Υἱᾶς ἐγχωρῆσαν, ἥτις καὶ ἐν τῷ  
 „Υἱῷ καὶ τῷ Πατρὶ ἐγχωρεῖ· μόνον γε μὴ τῷ λόγῳ τῆς φύσεως,  
 ἐκέτι

(104) Οὐ πάντως ἀνωτέρω.

(105) Κιχάδ: Ζητήμ: Γ'. Σελ: 29.

Τόμ: Β'.

Μ μμμ

ἐκέτι δὲ καὶ τῷ τῆς Ἀρχῆς λόγῳ τὸ σενὸν τῆς σωμαθείας ἐκείνης (ὁ Θεὸς Πατὴρ) ἐνόησε. Πρᾶκτο γὰρ αὐτῷ δεῖξαι, ἀμεριζόν τε καὶ ἡνωμένῳ εἶναι τῷ Τριάδα ἐν ἑαυτῇ: (Καί τοι γε τὰ ἔχματα ταῦτα τῆς ῥήσεως ῥαδιουργῶν ὁ Ἰησοῦς παρέλιπεν) ὥς ἐδηλονότι, καθάπερ ἐν τῷ Πατρὶ ὁ Υἱὸς, καὶ ἐν τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον· ἕτως ἀνάπαλιν, καὶ ἐν τῷ Υἱῷ τὸν Πατέρα εἶναι, καὶ ἐν τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι τὸν Υἱόν. Ἡ δὲ δὴ τοιαύτη ἐνότης τε καὶ ἀδιαφραγία, παρίσχει τῷ σωμαθείαν τῷ λόγῳ πάντως τῆς ὁμοσιότητος· καθάπερ ἐν παραπλησίως ἐπὶ τῶν προτεθέντων ῥημάτων, ὑποσυνάπτει Ἀθανάσιος ἐχομένως καὶ τὰ ἐξῆς, ἅπερ ὁ Ἰησοῦς κακουργῶν ὡσαύτως καὶ αὐτὰ παρελίμπανε: „Καὶ μία Θεότης ἐστὶ, καὶ εἷς Θεὸς ἐστὶν ὁ ἐπὶ πάντων, „καὶ διὰ πάντων, καὶ ἐν πᾶσι,,. Τοῦτο δὲ δῆλον, καὶ ἐξ ὧν ἔτι αὐτὸς προσέθησιν Ἀθανάσιος· ἕτω γὰρ καὶ ὁ Παῦλος ἄρηκώς: „Διαμαρτύρομαι ἐνώπιον Θεοῦ καὶ Ἰησοῦ Χριστοῦ: ἐγίνωσκεν, „ὅτι ἐ διηρώετο τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα, ἀλλ' ἐν Χριστῷ ὡ καὶ αὐτὸ, „ὥς περ ὁ Υἱὸς ἐν τῷ Πατρὶ,,. Οὐκ ἐν ἄρα τῷ τῶν Προσώπων ταύτῳ σωμαθείαν, περὶ ἧς αὐτῷ νῦν ὁ λόγος, καὶ ἐπὶ τὸν τῆς Ἀρχῆς λόγον ἀνάγει Ἀθανάσιος.

Αὐθις καὶ κἄνα, (ἐκ τῆς αὐτῆς Ἐπισ: Φύλ: 192.) ὁ Ἰησοῦς ἀντιφέρει: „Τῷ Πατρὶ ὄντος πηγῆς, τῷ δὲ Υἱῷ ποταμῷ, „μὲ λεγομένῳ, πίνειν λεγόμεθα τὸ Πνεῦμα . . . τὸ δὲ Πνεῦμα „ποτιζόμενοι, τὸν Χριστὸν πίνομεν,,. (Καὶ προσέθησιν:) „Ἰδὲ, „ὡς πρὸς αὐτὸ τὸ Πνεῦμα ὁ Υἱὸς λέγεται ποταμός· πρὸς ὃν „(ποταμὸν) ὁ Πατὴρ λέγεται πηγὴ. Ὡς περ τοίνυν ὁ Πατὴρ „διὰ τῷ Ἀρχῇ λέγεται πηγὴ: ἕτω διὰ τῷ αὐτῷ καὶ ὁ Υἱὸς, „ὁ προβλύζων ἐκ τῆς πηγῆς, λέγεται τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι ποταμός. Ἀνάγκη γὰρ ὁμοίως τὸ ὕδωρ προρρέειν ἐκ τῷ ποταμῷ, „ὥς περ ὁ ποταμὸς ἐστὶ προρρέων ἐκ τῆς πηγῆς,,. — Ἀλλ' ἐν τῷ προτεθέντι χωρίῳ, ὡς ὁλοκλήρως αὐτὰ ἀνωτέρω ἀνέγνωμεν, τὸ προκείμενον Ἀθανασίῳ ὡς ἀποδείξαι τὸ ἐνιαῖον τῆς ἰσῆς Υἱοῦ τε καὶ Ἁγίου Πνεύματος. Ἐνθεν τοι καὶ ὅσα τῷ Υἱῷ ἀπονέμεται, δείκνυσιν ταῦτα καὶ τῷ Πνεύματι ἀπονέμεσθαι. Ἐν γὰρ τέτοις τίθησι καὶ τὸ ποταμὸν εἶναι. Ὡς περ γὰρ ποταμὸς ὁ Υἱὸς, ἕτω καὶ τῷ Πνεύματι ἐπίσης τὸ Ἅγιον, ποταμός. Εἰ γὰρ ὅτε πίνομεν τὸ Πνεῦμα, τὸν Χριστὸν πίνομεν· ὁ δὲ Χριστὸς ἐστὶν ὁ ποταμός· ἀνάγκη πᾶσα τὸν ποταμὸν, ὃς ἐστὶν ὁ Χριστός· καὶ αὐτὸ εἶναι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. Οὐκ ἄρα ποταμὸν, ὡς γε πρὸς τὸ Πνεῦμα, τὸν Υἱὸν ὡς καλεῖ Ἀθανάσιος. Καὶ ἐξ ἄρα τῷ προκειμένῳ βαῖνον ἐστὶν, ὅ, τι δὴ ποτε ὁ Ἰησοῦς ἐντεῦθεν ἐπέφερε.

Τελού-



Τελούταϊον ἐνίσταται, (ἐκ τῆς αὐτῆς Ἐπιστολῆς: Σελ: 194.)  
 „Τοιαύτης δὲ συστοιχίας τε καὶ ἐνότητος τῆς ἐν τῇ Τριάδι ἑσθης,  
 „τὴς ἂν γένοιτο λοιπὸν, ὁ τὸν Υἱὸν ἀπὸ τῆς Πατρὸς, ἢ τὸ Πνεῦ-  
 „μα ἀπὸ τῆς Υἱᾶς, ἢ αὐτῆς τῆς Πατρὸς, χωρίζων; ἢ τὴς ἕτω  
 „τολμηρὸς, ὡς εἰπεῖν ἀνόμοιον καὶ ἑτεροφυῇ τῷ Τριάδα πρὸς  
 „ἑαυτῷ; ἢ ἁλλοτριέσιον τῆς Πατρὸς τὸν Υἱόν; ἢ ξένον τὸ Πνεῦ-  
 „μα τῆς Υἱᾶς; (Καὶ προσίθῃσι:) Πάλιν σεσημειώσω: Τὸν μὲν  
 „Υἱὸν ἀχώρισον λέγεσθαι τῆς Πατρὸς· τὸ δὲ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον  
 „τῆς Πατρὸς καὶ τῆς Υἱᾶς· καί τοι καὶ ὁ Υἱὸς ἀχώριστος ἐστὶν ἐπί-  
 „σης τῆς Ἁγίας Πνεύματος, ὥσπερ καὶ τῆς Πατρὸς. Ἰνα τί ἐν ἕτω  
 „λέγεται; ἔδειξέ μοι λόγος ἑπεισιν ἕτερος, ἢ ὅτι περὶ τῆς ἀχω-  
 „ρίσεως ὧδε πρόκειται λέγειν τῆς ἐκ τῆς Ἀρχῆς ἀπονάοντος. Ἐπει-  
 „δὴ ἄρα ὁ Υἱὸς τῷ ἀρχῷ ἔχει ἐκ μόνου τῆς Πατρὸς, διὰ τῆτο  
 „ἀχώριστος εἶναι λέγεται μόνου τῆς Πατρὸς, μηδαμῶς ἀπομνημο-  
 „νιζομένης τῆς Πνεύματος. Ἐπειδὴ δὲ τὸ Πνεῦμα τῷ ἀρχῷ ἔχει  
 „ἐκ τῆς Πατρὸς ἅμα καὶ τῆς Υἱᾶς, ἢ διὰ τῆς Υἱᾶς, διὰ τῆτο λέγεται  
 „ἀχώριστον εἶναι τῆς Υἱᾶς, καὶ τῆς ἐκείνης Πατρὸς. Ἦδη δὲ, πῶς  
 „τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ ἑσθαι ἁλλότριον τῆς Υἱᾶς, ἢ ἔξωθεν ἐπιόν·  
 „(τῆτο γὰρ κυρίως σημαίνει τὸ „ξένον,“) ἔπερ ἁλλοθεν ἐπέρχε-  
 „ται, καὶ εἰ ἐξ αὐτῆς τῆς Υἱᾶς ὡς ἡκιστα πνεῖται,;

Ἀλλ' ἐδὲν ἐδ' ἕτω τελεσφορεῖ ὁ Ἰησοῦτης· εἶχε γὰρ πάντως  
 εἰπεῖν Ἀθανάσιος, τὸν μὲν Υἱὸν τῆς Πατρὸς, τὸ δὲ Ἅγιον Πνεῦ-  
 „μα τῆς Υἱᾶς καὶ τῆς Πατρὸς ἀχώριστον εἶναι τῷ λόγῳ τῆς τάξεως.  
 „ὅτι ἀπὸ μὲν τῆς Πατρὸς ὁ Υἱὸς δοῦτερος, τὸ δὲ Πνεῦμα μετὰ  
 „τὸν Πατέρα καὶ τὸν Υἱὸν ἀριθμεῖται· ἐδὲ γὰρ ἅμα καὶ τῷ Ἀρχῷ  
 „καὶ Αἰτίᾳ ἐμφωῶσθαι τὸν μέγαν Ἀθανάσιον προθέσθαι, μόνον  
 „δὲ κατὰ τῷ τῶν ὑποστάσεων τάξιν, μίαν δεῖξαι τῷ ἑσθῇαν Πα-  
 „τρὸς καὶ Υἱᾶς καὶ Ἁγίας Πνεύματος βεβληθῆναι, καὶ ἐκ τῆτος διῆλον  
 „εἶναι, ἐξ ἧς φησὶν: „ἢ τὴς ἕτω τολμηρὸς, ὡς εἰπεῖν ἁλλοτριέσιον  
 „τῆς Πατρὸς τὸν Υἱόν, ἢ ξένον τὸ Πνεῦμα τῆς Υἱᾶς; ἐδὲ γὰρ καὶ  
 „ὧδε ἔτι προσέθετο: (ἢ τὸ Πνεῦμα ξένον τε καὶ ἐκφυλον τῆς Πα-  
 „τρὸς καὶ τῆς Υἱᾶς). „Ἀλλ' εἰ τῷ Ἀρχῷ ἅμα ἐσκόπει δεῖξαι Ἀθα-  
 „νάσιος, ἢ τοι τῆς Πατρὸς μόνου, ἢ τῆς Πατρὸς καὶ τῆς Υἱᾶς, κατὰ  
 „Λατίνους· καὶ νταῦθα ἂν ὑπεμνήσθῃ. Πῶς δὲ διῆ τελούταϊον, καὶ  
 „εἰ τὸ Πνεῦμα μὴ ἐκ τῆς Υἱᾶς ἐκπορεύοιτο, τῆς Υἱᾶς τὸ Πνεῦμα  
 „ξένον ἂν εἶναι καὶ ἐκφυλον; Ἀλλὰ περὶ τῆτος ἀνωτέρω. Οὐδὲ  
 „μὲν ἔν καθ' ἕτερον νῦν αὐτόθι τὸ „ξένον,“ εἰληφεν Ἀθανάσιος,  
 „ἢ κατὰ τῷ σημασίαν τῆς: „ἐκφύλας τε καὶ ἁλλοτρίας φύσεως,“  
 „αὐτὸ μὴ εἶναι, ταῦτα γὰρ αὐτῆς ὡς τὰ ῥήματα: „ἢ τὴς ἕτω τολ-  
 „μηρὸς, ὡς εἰπεῖν ἁλλοτριέσιον τῆς Πατρὸς τὸν Υἱόν, ἢ ξένον τὸ  
 „Πνεῦμα τῆς Υἱᾶς,; Ἐνότητα γὰρ τῷ αὐτῷ πάντως ἐξέλετο  
 „δεῖξαι, Πατρός τε καὶ Υἱᾶς καὶ Ἀγ: Πνεύματος. Εἰρηκῶς ἔν περὶ



τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ, ὅτι τῆς αὐτῆς, καὶ ἐκ ἀλλοτρίας ἐσίας εἰσι, κατὰ τὴν αὐτὴν ἔννοιαν καὶ περὶ τῷ Υἱῷ καὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος ὑποσώψεν, ὅτι ἡ δὲ τῷ Υἱῷ ἐκφυλὸν τὸ Πνεῦμα ἐστίν, ἥτοι τὴν ἐσίαν ἀλλότριον, καθάπερ δὴ καὶ προτάξας ὡς: „Ἡ „τὴς ἔτι τολμηρὸς, ὡς εἶπεν ἀνόμιον καὶ ἑτεροφυῆ τὴν Τριάδα „πρὸς ἑαυτὴν; (κάντεῦθεν ὑποσώψας:) ἢ ἀλλοτριῶσιν τῷ Πα- „τρὶ τὸν Υἱόν; ἢ ξένον τὸ Πνεῦμα τῷ Υἱῷ; „; Ἐξ ἧ καὶ πάλιν φανερόν γίνεται, μὴ κατ' ἄλλον νῦν τὴν τῷ „ξένῳ, φωνῶν ἐνταῦθα ἐξεληφέναι τὸν Ἀθανάσιον, ἢ καθὼς μὴ μίαν καὶ τὴν αὐτὴν παραδηλοῖ φύσιν, ἀλλὰ διαφέρσαν.

Ἀντιφέρσιν δ' ἔτι ἐκ τῷ Βιβλ: τῷ περὶ τῆς Ἑνσάκης Ἐπιφανείας τῷ Θεῷ Λόγῳ (ἐν Τόμῃ: Α'. τῶν Συγγραμ: Σελ: 600.) „Διὰ τῷτο ἐμφυσᾷ (ὁ Κύριος) αὐτὸ (τὸ Πνεῦμα) εἰς τὸ Πρό- „σωπον τῶν Ἀποστόλων, λέγων: λάβετε Πνεῦμα Ἅγιον: ἵνα μά- „θωμεν ὅτι ἐκ τῷ πληρώματος τῆς Θεότητος ἐστὶ τὸ διδόμενον „Πνεῦμα τοῖς Μαθηταῖς. Ἐν Χριστῷ γὰρ, φησὶ, κατοικεῖ, τῷ „τέστιν ἐν τῇ σαρκὶ αὐτῷ, πᾶν τὸ πλήρωμα τῆς Θεότητος σω- „ματικῶς καθὼς ὁ Εὐαγγελιστὴς Ἰωάννης λέγει: ἡμεῖς δὲ ἐκ „τῷ πληρώματος αὐτοῦ ἐλάβομεν. Σωματικῶς γὰρ εἶδε, τῷτε- „στιν, ὡς Περιεράς ὡφθη τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον καταβαῖνον καὶ „μένον ἐπ' αὐτόν. Ἐν ἡμῖν μὲν γὰρ ἀπαρχὴ καὶ ἀρραβὼν Θεό- „τητος κατοικεῖ, ἐν Χριστῷ δὲ πᾶν τὸ πλήρωμα τῆς Θεότητος. „Καὶ μή τις νομίσῃ, ὅτι μὴ ἔχων αὐτὸς ἐλάβανεν· αὐτὸς γὰρ „αὐτὸ ἀνωθεν ἔπεμψεν ὡς Θεὸς, καὶ αὐτὸς αὐτὸ κάτωθεν ὑπε- „δέχετο ὡς ἄνθρωπος. Ἐξ αὐτοῦ ἔν εἰς αὐτὸν κατήει· ἐκ τῆς „Θεότητος αὐτοῦ, εἰς τὴν ἀνθρωπότητα αὐτοῦ.

Φησὶ δὴ τὰ ἈΘΑΝΑΣΙΟΣ, ὅτι ἐνεφύσησε τοῖς Ἀποστόλοις τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ὁ Σωτὴρ, ἵνα δείξῃ ὅτι ἐκ τῷ πληρώματος τῆς Θεότητος διανέμεται τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον τοῖς Ἀποστόλοις διδόμενον. Ἐκ τῷ πληρώματος δηλ: τῆς Θεότητος τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος, τῷ ἐνοικῶντος μὲν σωματικῶς ἐν τῷ Χριστῷ, ἐν δὲ Περιεράς εἶδε καταβάντος ἐπὶ τὸν Υἱόν· ὡς ἡμῶν, ἔκκεν μὲν τὸ πλήρωμα, τὰς δ' ἀπαρχάς, καὶ τὸν ἀρραβῶνα τῆς τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος Θεότητος εἰληφόντων. Τί ἔν ποτε σωλελέσειαν ταῦτα πρὸς τὴν Ἐκπόρευσιν τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ; Ἡ τυχόν, ἔτις ἐκδέξῃ τὰ ῥήματα, ὡς ἐνεφύσησεν ὁ Σωτὴρ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ἵνα δείξῃ, ὅτι ἐκ τῷ πληρώματος τῆς αὐτοῦ Θεότητος, ὑπάρχει τὸ Πνεῦμα τὸ τοῖς Ἀποστόλοις δοθέν. Ὡς περ ἔν καὶ ὁ Λατινιστὴς ἐρμηνεύσας, τῆς τῷ Ἀθανασίῳ φράσεως ἡ μικρόν τι παρεκκλίνας, ἔτις μετέφρασεν: „Ἐκ τῷ πληρώματος „τῆς Θεότητος αὐτοῦ, (τῷ Χριστῷ δηλονότι:) αὐτὸ τὸ Πνεῦμα „ὑπάρχει τὸ διδόμενον τοῖς Μαθηταῖς. Ἀλλὰ γὰρ Ἐλλωιστὴς ἢ ῥή-

ἢ ῥῆσις, ἔτως ἐσὶν ἔχουσα μόνον: ὅτι, „τὸ δοθὲν τοῖς Μαθηταῖς „Πνεῦμα, ἐκ τῆς πληρώματος ὡς τῆς Θεότητος,,. Καὶ αὐτὸς δ' Ἀθανάσιος, τὸ τῆς Θεότητος πλήρωμα, ἐξ ἧς ἡμῖν χορηγᾶται τὸ Πνεῦμα, ἀντὶ τῆς πληρώματος τῆς τῆς Ἁγίας Πνεύματος Θεότητος ἐξελάβετο: προσίδησι γὰρ, ὅτι ἐν ἡμῖν μὲν, ἀπαρχή τε καὶ Ἀρχαίων Θεότητος κατοικεῖ (τῆς τῆς Ἁγίας Πνεύματος δηλονότι) ἐν Χριστῷ δὲ, πᾶν τὸ πλήρωμα τῆς Θεότητος, ἐν Περισερᾷ εἶδει τῆς Πνεύματος ἐπ' αὐτὸν κατελθόντος, καὶ ἐπ' αὐτὸν μέναντος. Τὸ ἄρα πλήρωμα τῆς Θεότητος τῆς Ἁγίας Πνεύματος ἐννοεῖ καὶ τὰς ἐπειτα τῆς πληρώματος τῆς Θεότητος τῆς Πνεύματος τῆς ἐνοικήσαντος ἐν τῷ Χριστῷ, διδάσκει τὸν Σωτῆρα κεχορηγημέναι τοῖς Ἀποστόλοις τὸ Πνεῦμα, καὶ (ἐφ' ᾧ τὸ ἐνδείξασθαι) ἐμφυσῆσαι αὐτοῖς εἰς τὸ πρόσωπον.

Ἐρεῖς: ἐν ἐκείνοις λέγειν τὸν Ἀθανάσιον, ὅτι „ἐξ αὐτῆς τῆς Κυρίας εἰς αὐτὸν κατῆι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον,,. — Ἀλλ' ἡ Ἀθανάσιος διάνοια ὡς, ὅτι ἔχων ἐν ἑαυτῷ ὁ Υἱὸς τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ὡς Θεός, ὑπεδέξατο αὐτὸ ὡς ἄνθρωπος καὶ ἔτως ἐκ τῆς αὐτῆς Θεότητος, κατῆλθε τὸ Πνεῦμα ἐπὶ τῷ αὐτῆς ἀνθρωπότητι. Οὐδὲν ἄρα ταῦτα Λατίνες ὁλως ὀνίνησι.

Προσεπέγχεσιν ἔτι Λατῖνοι: ὅτι ἈΘΑΝΑΣΙΟΣ ἐνέργειαν Θεῶ τὸ Πνεῦμα κατονομάζει. Οὕτω γὰρ πρὸς τὸν Σεράπιωνα, κατὰ τῶν κτίσμα τὸ Πνεῦμα εἶναι λεγόντων (ἐν Τόμ: Α'. τῶν Συγγραμμάτων, Σελ: 195.) „Ἐνὸς γὰρ ὄντος τῆς Υἱῆς, τῆς ζώντος „Λόγος, μίαν εἶναι δεῖ τελείαν καὶ πλήρη τῷ ἁγιαστικῷ καὶ φωτιστικῷ ζῶντι, ἔσαν ἐνέργειαν αὐτῆς καὶ δωρεάν ἥτις γε ἐκ Πατρὸς λέγεται ἐκπορεύεσθαι. Τὸ δ' αὐτὸ παρὰ τὸν Ἀθανάσιον καὶ ὁ Ἀλεξανδρείας διδάσκει ΚΥΡΙΛΛΟΣ, Λόγ: ΛΔ'. ἐν τοῖς „Θησαυροῖς (Τόμ: Ε'. τῶν Συγγραμ: Μέρ: Α'. Σελίδι 343.) „Εἰ τοίνυν κεκληκότες αὐτὸν εἰς Ἀποστολῶν τῆς Πνεύματος, παρὰ „Χριστῆ Ἰησοῦ κεκληθῆναι φησὶ, δείκνυται σαφῶς ἐκ ἀλλότριον τῆς „ἑστέας τῆς Υἱῆς τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἀλλ' ἐν αὐτῷ, καὶ ἐξ αὐτῆς, „καὶ ὡς ἐν ἐνέργειά τις φυσικῇ, (106) πάντα δωαμένη πληρῆν, „ὅσα καὶ βέλεται,,. (Καὶ πάλιν αὐτόθι: Σελ: 355.) „Ἐνέργειά τις φυσικῇ καὶ ζῶσα καὶ ἴν' ἔτως εἰπωμεν, ποιότης τῆς „Θεό-

(106) Κατὰ μὲν τῷ παρὰ Ζοιρηνικαῖω Ἐρμιόγειαν πρόκειται παρεστειχθὲν ὑπὸ τῆς μετὰ Φεράσαντος, (μετὰ τὸ: ἐνέργειά τις φυσικῇ:) „τὸ ἐν τῇ ἰδίᾳ αὐτῆς ὑποστάσει,,: In propria sua hypostasi. Ἀλλὰ γὰρ ἀνευ τῆς προδήκης ταύτης, ἔχ' ὅπως παρὰ τῷ Θεασεσίῳ Κυρίλλῳ ἀναγινώσκεται, ὡς καὶ αὐτοὶ παρεθέμεθα: ἀλλὰ καὶ Βέκκος. ἐν τῇ Δ'. τῶν Ἐπιγραφῶν, Σελ: 548. ἐν Τόμ: Β'. τῆς κατ' Ἀλλάτιον Ὁρθόδοξου ἐπικληθείσης Γραμμάτης ἔτως ὡς, ὡς καὶ ἡμεῖς αὐτοὶ, ἀναγινώσκων. Καὶ ὁ τῆς Θησαυρῆς δὲ τῆς Κυρίλλου ἐκλατινίσας Ἰωάννης Ἀββέρτος. Καὶ μὲν δὴ καὶ Πετρίσιος, ἔτινος ἢ Ἐνστασις ὑπὸ Ζοιρηνικαῖς ἐνταῦθα προβάλλεται.

Τόμ: Β'.

Ν νιν

„Θεότητος τῆς Υἱᾶς, τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐστίν,„. Ὁθεν δὴ ἐνίσταται ὁ Ἰησοῦτης ΠΕΤΑΒΙΟΣ, ἐν τῷ Ζ'. Βιβλ: τῶν περὶ Τριάδος, Κεφαλ: Ε'. Ἀριθμ: 12. „Τοιαύτως δὲ νοητέον ἐνέργειαν, „μὴ δίκῃ συμβεβηκότος ἀπογινόμενῳ, σερῶν δὲ ἔσαν καὶ ὑφῆσαν. Ἐξ ἧς δῆλον ἀρχὴν τινὰ καὶ παραγωγὴν ἐσιώδη διὰ τῆς Φωνῆς ταύτης ὑποσημαίνεσθαι. Τῷτο γὰρ ἐξ ἐκείνης γινώσκεται, ὅτι ὁ Υἱὸς τῆς αἰωνίης Πατρὸς δυνάμει καὶ ἐνέργεια ὀνομάζεται· ὅπερ ἀναμφισβόλως τῷ ἀρχῇ ἐκείνῃ τῷ κατὰ φύσιν, δηλοῦ. Μαρτυρεῖ δὲ τῷτο Κύριλλος ἐν τῷ 5'. τῶν Διαλόγων, τῶν περὶ Τριάδος. Καὶ γὰρ ὁ Θεὸς Δαβὶδ ζῶσαν τε καὶ ἐνυπόστατον ἐνέργειάν τε καὶ δυνάμιν τῆς Πατρὸς εἰδὼς τὸν Υἱόν, κατὰ τῆς βόλῃς λέγων: Ἐνταῦθα ὁ Θεὸς τῇ δυνάμει Σα· δυνάμωσον ὁ Θεὸς τῷτο, ὃ κατηρτίσω ἐν ἡμῖν. Παῦλος δὲ ὁ σοφώτατος Χριστὸν Θεὸν δυνάμιν, καὶ Θεὸν σοφίαν ἀνεκεκράγει σαφῶς. Καὶ ἐν τῷ Α'. δὲ τῶν Θεσαυρῶν: ὁ Υἱὸς ἐστίν ἡ ζῶσα καὶ ἐσιώδης ἐνέργεια, καὶ δυνάμει, καὶ σοφία, τῆς Πατρὸς. (107) Ὡστερ ἄρα ὁ Υἱὸς ἐνέργεια τῆς Πατρὸς λέγεται, καὶ δι' ἄλλο, ἢ διότι πρόεισιν ἐκ τῆς Πατρὸς· ἔτω καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ἐπειδὴ ἐντεῦθεν καλεῖται ἐνέργεια τῆς Υἱᾶς, ἐκ τῆς αὐτῆς λαμβάνει τῷ ἀρχῇ,„. Ὁ τρανῶς ὁ Κύριλλος ἀναπτύσσει ἐν οἷς τὸ („ἐξ αὐτῆς,„) τετέστι τὸ ἐκ τῆς Υἱᾶς εἶναι, διερμηνεύει ἐνέργειαν αὐτῆς. Καὶ ταῦτα μὲν ἔτοι:

Ψυδὲς δὲ Α'. τό: διὰ δὴ τῷτο λέγειν τὸν Κύριλλον, ὅτι ὁ Υἱὸς ἐνέργεια ἐστὶ τῆς Πατρὸς, διότι πρόεισιν ἐξ αὐτῆς. Σημαίνει γὰρ διὰ τῆς Φωνῆς ταύτης μόνον, ὅτι πάντα ἐνεργεῖ ὁ Πατήρ διὰ τῆς Υἱᾶς ὥστε ἔτῳ εἶναι τὸν Υἱὸν ἐνέργειαν ἐσιώδη τῆς Πατρὸς τῷ λόγῳ τῶν ὑπὸ Θεῶν γινομένων, καὶ δὲ τῷ λόγῳ τῆς παραγωγῆς αὐτῆς τῆς ἐκ τῆς Πατρὸς. Τῷτο δὲ δῆλον, εἰ καὶ χωρὶον ἕτερον τῶν τῆς Κυρίλλου, ἐκ τῆς 5'. τῶν περὶ Τριάδος Διαλόγων, φιλοκρινήσωμεν. Οὕτω γὰρ ἐκάλεσε· Τόμ: Ε'. Σελ: 615. Ὡστερ γὰρ ἐστὶ καὶ εἰκὼν τῆς Πατρὸς, καὶ σοφία, καὶ δόξα, „καὶ

(107) Οὐχ ἔτῳ ἀναγινώσκουμεν, ὡς παρὰ Πεταβίον παρέθετο Ζοιρνικάκιος, τῆς καὶ Ἐλ· λωισί τὰ αὐτὰ ἐν Σημειώσει τῶν παρ' αὐτῷ (44) γράφοντος ἐνθα εἴρηται. Ἀναγινώσκουμεν δὲ αὐτοὶ παρὰ Κυρίλλῳ ἐν τῷ Α'. τῶν Θεσαυρῶν, Σελ: 12. „Εἰ σοφία, καὶ δυνάμει, καὶ λόγος τῆς Πατρὸς ἐστίν ὁ Υἱὸς· ὡς δὲ αἰεὶ ἐν Πατρὶ λόγος, καὶ σοφία καὶ δυνάμει· ἐκ ἐπιγένετον ἐν ὁ Υἱὸς ὅς ταῦτα ἐστὶ καὶ καλεῖται,“ Ὁμοίως δὲ καὶ ὁ Πεταβίος ἐν ἐκείνοις προσέθησιν, ὡς ἐν τῷ Β'. τῶν Θεσαυρῶν, ὃν δὴ τὸν Β'. ἐπιγραφόμενον Λόγον αὐτοὶ νοῶμεν, ἔδεν τοιῶτον ἐστὶ. Λέγει γὰρ αὐτόσε περὶ τῆς: „Ὅτι τὸ ἀγέννητον ἐκ ἐσίας, ἀλλ' ἐσίας σημαντικόν,“ Ἡ δὲ χρῆσις ὡς ὁ Ἰησοῦτης (55) παρασημαίνεται, κεῖται ἐν Λόγῳ ΛΔ'. τῶν τῆς Κυρίλλου Θεσαυρῶν, Σελ: 343. καθάπερ ἀνωτέρω ὑπετέθη· πλὴν μετὰ τινος βραχείας παραλλαγῆς. Οὐ γὰρ ἐκεῖ γέγραπται, ὡς ὁ Πεταβίος ἀνεγίνωσκε: „Δείκνυται σαφῶς ἐκ ἀλλότριον τῆς Υἱᾶς τὸ Πνεῦμα,“ κτ: Ἀλλ' ἐκ ἀλλότριον (τῆς ἐσίας) τῆς Υἱᾶς κτ:

καὶ ἀπαύγασμα, καὶ χαρακτήρ, ἔτω νοοῖτ' ἂν καὶ δυνάμεις, δι'  
 ἧς ἐνεργὸς εἰς πᾶν ὅτιεν τῶν πεποιημένων, γέγονέ τε, καὶ ἐστὶ,  
 καὶ ἔσται. Πάντα γὰρ δι' αὐτῆς ἐγένετο, καὶ χωρὶς αὐτῆς ἐγένε-  
 το ἕδεν. Ὅν περ γὰρ τρόπον οἱ βανανυσικῆς τινος τέχνης  
 Ἐπισήμονες, χαλκοτύποι τυχόν, ἢ γὰρ ἐπιτήδευμα τὸ λιθαρ-  
 γικὸν ἔκ ἀθανμάσως ἐξησκημένοι, δρῶεν ἂν ἔχ' ἐτέρως τὰ  
 τεχνουργήμενα, πλὴν ὅτι διὰ χειρὸς τῆς ἰδίας, καὶ τῆς ἐνέσεως  
 αὐτοῖς ἀσκήσεώς τε ὁμῶς καὶ τῆς εἰς ἔργα σοφίας· κατὰ τὸν  
 αὐτὸν οἶμαι λόγον ὁ Θεὸς καὶ Πατὴρ, τὴν ἐφ' οἷς ἂν ἐθελή-  
 σαι ἐνέργειαν δημιουργικῶν, ὡς διὰ δυνάμεως ἰδίας ποιήσεται  
 τῆς Υἱᾶς. Καὶ γὰρ ὁ Θεὸς Δαβὶδ εἰώσαν τε καὶ ἐνυπόσαν ἐνέρ-  
 γειάν τε καὶ δυνάμιν τῆς Πατρὸς εἰδὼς τὸν Υἱὸν, κατωτησόλει  
 λέγων κτ'::

Τῷ αὐτῷ τοιγαρὲν λόγῳ καὶ τὸ Πνεῦμα οἱ Πατέρες καλεῖ-  
 σιν ἐνέργειαν τῆς Υἱᾶς· καθότι δηλ.: ὁ Υἱὸς πάντα ἐν τῷ Πνῶ-  
 ματι, ἢ διὰ τῆς Πνῶματος ἐνεργεί· ἔχ' ὅτι δὲ ἐξ αὐτῆς ἐκπορέ-  
 νεται. Τόνδε δὲ τὸν τῆς Κυρίλλου νῦν εἶναι, δῆλον ἡμῖν αὐτὸς  
 γενήσεται, τὴν ἐπενεχθεῖσαν ἐκ τῆς ΛΔ'. Λόγος τῶν Θεσαυρῶν  
 διασαθμίσασι ῥῆσιν. Οὕτω γὰρ αὐτὸς ἐπιχειρῶν πρόεισι κατὰ  
 τῶν κτίσμα λεγόντων τὸ Πνεῦμα· (ἐν Σελ: 355.) „Ἐπὶ τοῖς  
 δι' αὐτῆς γινομένοις παρὰ τῆς Σωτῆρος κατορθώμασιν ἐπ' ὠφελείᾳ  
 τῶν Ἑθνῶν, καυχᾶται λέγων ὁ Παῦλος: ἔχω ἐν κἀνυχησιν ἐν  
 Χριστῷ Ἰησοῦ τὰ πρὸς τὸν Θεόν· ἔ γὰρ τολμήσω τι λαλεῖν, ὣν  
 ἔ κατέργασατο Χριστὸς δι' ἐμῆς εἰς ὑπακοὴν Ἑθνῶν λόγῳ καὶ  
 ἔργῳ, ἐν δυνάμει σημείων καὶ τεράτων, ἐν δυνάμει Πνῶματος  
 Ἁγίου. Οὐκ ἔν εἰ σημεῖα καὶ τέρατα διὰ τῆς Παύλου Χριστοῦ  
 ἐργάζεται ἐν δυνάμει Πνῶματος Ἁγίου, ἐνεργείατις φυσικῇ καὶ  
 εἰώσα, καὶ, ἢ ἔτῳς εἰπωμεν, ποιότης τῆς Θεότητος τῆς Υἱᾶς τὸ  
 Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐστίν. Εἰ δὲ τῆτο, πῶς ἔσται ποίημα τὸ ἐν  
 τῷ Θεῷ, καὶ ἐκ Θεοῦ φυσικῶς; πῶς δὲ ἐν ποίηματι πᾶσα ἡ  
 δυνάμεις τῆς Υἱᾶς; ὅπερ ἐστὶ καὶ μόνον εἰπεῖν ἀσεβέστατον,,. Πα-  
 ραπλησίως ἄρα, ἐπεὶ ὁ Υἱὸς πάντα ἐν τῷ Ἁγίῳ Πνῶματι ἐνερ-  
 γεῖ, ἐνέργειαν τῆς Υἱᾶς· ὁ Κύριλλος ὀνομάζει τὸ Πνεῦμα. Ταῦτό  
 δὲ καὶ ἐκ τῆς ἐπαχθείσης ἐτέρας τῆς Κυρίλλου ῥήσεως ἀναφαί-  
 νεται. Φησὶ γάρ: (Αὐτ: Σελ: 345.) „Εἰ τοίνυν κεκληκός  
 αὐτὸν (τὸν Παῦλον) εἰς Ἀποστολὴν τῆς Πνῶματος, παρὰ Χριστοῦ  
 Ἰησοῦ κεκληθῆναι φησὶ, δέκνυται σαφῶς ἐκ ἀλλότριον τῆς ἑσίας  
 τῆς Υἱᾶς τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ἀλλ' ἐν αὐτῷ καὶ ἐξ αὐτῆς· καὶ  
 ὥστε ἐνεργείατις φυσικῇ πάντα δυνάμενη πληρῆν ὅσα βέ-  
 λεται,,. — Ἐνίστατο δὲ παρὰ ταῦτα Πετρίδιος, τὸ ἐξ αὐτῆς  
 ἐρμηνεύειν τὸν Κύριλλον τὴν ἐνέργειαν: „ὁ γάρ τοι Κύριλλος φη-  
 σὶν: ἐπειδὴ ἄπερ ἐνεργεῖ ὁ Υἱὸς, ταῦτα ἐνεργεῖ τὸ Πνεῦμα τὸ  
 Ἅγιον,



„Ἅγιον, σαφῶς δείκνυσιν ἕκ ἀλλότριον τῷ Υἱῷ εἶναι τὸ Πνεῦμα, ἀλλ' ἐν αὐτῷ καὶ ἐξ αὐτοῦ, ὥσπερ ἐνέργειά τις φυσική. — Τὰ γε μὴν ῥήματα ταῦτα, ἔχ' ὡς αὐτοῖς ὑποβάλλει Πετᾶβιος ἐννοίαν ἐξ ἀνάγκης ἐκδέχεσθαι· τῷ γὰρ ὄντι ὡς κατωτέρω δείξομεν περὶ τῷ Κυρίῳ ῥῆσιν, ὁ νῦν ἐκείνους ἐν τέτοις ἐστίν· ὡς ἐπειδὴ ἅπερ ὁ Υἱὸς ἐνεργεῖ, ταῦτα ἐνεργεῖ καὶ τὸ Πνεῦμα, ἐκ τέττα δείκνυσται μὴ ἀλλότριον τῷ Υἱῷ εἶναι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον· ἀλλ' ἐν τῇ ἑσάρ τῷ Υἱῷ ὑπάρχον, καὶ ἐξ αὐτοῦ τῷ Υἱῷ ἡμῖν δίδοσθαι· καὶ διὰ τῆτο, ἐνεργούντος τῷ Υἱῷ ἐνεργεῖν καὶ τὸ Πνεῦμα, ὡς ἐνέργειαν τῷ Υἱῷ φυσικῶς.

Ἀντιφέρουσιν ἔτι, ὅτι πηγὴν εἶναι τὸν Υἱὸν τῷ Ἅγίῳ Πνεύματος ἈΘΑΝΑΣΙΟΣ ἐκιδιδάσκει· ἔτω γὰρ ἐν τῷ Βιβλ: τῷ περὶ τῆς Ἑνσάρκας Ἐπιφανείας τῷ Θεῷ Λόγῳ· (ἐν τῷ Α'. Τόμ: τῶν Συγγραμ: Σελ: 601.) „Δαβὶδ ψάλλον τῷ Θεῷ Λόγῳ: ὅτι παρὰ „Σοὶ πηγὴ ζωῆς, ἐν τῷ φωτίσας ὁψόμεθα φῶς: οἶδε γὰρ παρὰ „τῷ Θεῷ Πατρὶ ὄντα τὸν Υἱὸν, πηγὴν τῷ Ἅγίῳ Πνεύματος· „Καθαπερὲν καὶ ἘΠΙΦΑΝΙΟΣ Αἰρέσι: ΕΘ'. ἥτις ἐστὶν ἡ τῶν Ἀρειανῶν, Ἀριθμ: ΝΔ'. περὶ τῆς τῶν ὑποστάσεων Ἀποσολῆς πραγματοδύμενος: „Οὗτος ἐστὶν ὁ ἀποσείλας, καὶ ὁ ἀποσελλόμενος, „ἵνα δείξῃ τῶν πάντων ἀγαθῶν μίαν εἶναι τὴν πηγὴν, τετέστι „τὸν Πατέρα. Καθεξῆς δὲ τῆς πηγῆς ἔχ' ἑτερονύμως, ἀλλὰ „κατὰ τὸ Υἱῷ ὄνομα καὶ τῷ Λόγῳ, ὡς μία πηγὴ, ἐκ πηγῆς ὁ „Υἱὸς προελθὼν· αἰεὶ ὡς παρὰ τῷ Πατρὶ γεγεννημένος: ὅτι παρὰ „Σοὶ πηγὴ ζωῆς,·. Καὶ ἈΜΒΡΟΣΙΟΣ δὲ, ἐν Βιβλ: Α'. περὶ τῷ Πνεύματος, Κεφαλ: ΙΘ'. „Παράλαβε νῦν, ὅτι ὥσπερ ὁ Πα- „τήρ πηγὴ ζωῆς ἐστὶν, ἔτω καὶ τὸν Υἱὸν πολλοὶ πηγὴν ζωῆς „ὀνομάζουσιν, ἐν ἐκείνῳ δηλούμενον: ὅτι παρὰ Σοὶ, Φησὶ, Θεὸς „Παντοκράτωρ, ὁ Σὸς Υἱὸς πηγὴ ζωῆς ἐστὶ· τετέστι, πηγὴ τῷ „Ἅγίῳ Πνεύματος. Τὸ γὰρ Πνεῦμα ζωὴ ἐστὶ, καθάπερ Φησὶν ὁ „Κύριος: τὰ ῥήματα ἃ ἐγὼ ἐλάλησα ὑμῖν, Πνεῦμα καὶ ζωὴ „εἰσὶν· ὅπερ γὰρ Πνεῦμα, καὶ ὅπερ ζωὴ, ἐκεῖ καὶ τὸ Ἅγιον „Πνεῦμα. Πολλοὶ μὲν τοι ἐνταῦθα τὸν Πατέρα βέβλονται μόνον „διὰ τῆς πηγῆς ἐνσημαίνεσθαι· καί τοι σωροῦν ἔχοντες τίποτε „ἀπεμνημόνευσεν ἡ Γραφή, ἥτις, παρὰ Σοὶ, Φησὶ, πηγὴ ζωῆς „τετέστι, παρὰ τῷ Πατρὶ ὁ Υἱὸς· ὅτι ὁ Λόγος ὡς πρὸς τὸν Θεόν· „ἐπειδὴ ἐν ἀρχῇ ὡς, καὶ πρὸς τὸν Θεὸν ὡς. Ἀλλ' εἴτε τις τὸν „Πατέρα ὥδε, εἴτε τὸν Υἱὸν ἐννοήσῃ πηγὴν, πάντως νοθεύει „ἔχ' ἡ τῆδε τῷ ὕδατος, ὁ κτίσμα ἐστὶν, ἀλλὰ τῆς Θείας ἐκείνης „χάριτος· τετέστι τῷ Ἅγίῳ Πνεύματος. Αὐτὸ γὰρ τὸ ὕδωρ ἐστὶ „τὸ ζῶν. Διὸ καὶ ὁ Κύριος Φησὶν: εἰ ἡδεις τὴν δωρεάν τῷ Θεῷ, „καὶ τίς ἐστὶν ὁ λέγων Σοὶ: δός μοι ὕδωρ πιεῖν, Σὺ ἂν ἤτησας „αὐτὸν, καὶ ἔδωκέ σοι ὕδωρ ζῶν· τῆτο δὲ τὸ ὕδωρ καὶ ἡ τῷ „Δαβὶδ



„Δαδὶδ ψυχὴ ὡς διψήσασα,,. Τελούταϊον δὲ καὶ ὁ Χρυσορρήμων  
 'ΙΩΑ'ΝΝΗΣ ἐν τῷ περὶ τῆς Μυστηρίᾳ τῆς Βαπτίσματος (108) ἐν  
 Τόμῳ Ε'. τῶν Συγγραμ.: τῆς 'Εκκλησιᾶς παρ' Ἀγγλοῖς 'Εκδόσις:  
 Σελ.: 684. „Διὰ τῆτο ὁ Σωτὴρ δείκνυσιν ἑαυτὸν πηγὴν ζωῆς,  
 „καὶ ὕδωρ ζῶν τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον,,.

Τῷ ὄντι, ἐνθα περὶ τῆς τῶν ὑποστάσεων παραγωγῆς ὑπό-  
 κατα λόγος, τὸ τῆς πηγῆς ὄνομα, ἔδεν ἄλλ', ἢ ἀρχὴν σημαῖνον  
 ἐστὶ καὶ πρόσβλυσιν· καθ' ὃν δὴ νῦν καὶ οἱ Πατέρες τοσάκις διδάσ-  
 κουσιν, τὸν Πατέρα μόνον πηγὴν εἶναι τοῦ ἁγίου καὶ Πνέματος.  
 Θαμά γε μὴ κατὰ τινὰ ἀναλογίαν, ὡς καὶ τὸ Πνεῦμα ἐπὶ τὰς  
 τῶν πισυόντων διαδίδεται, ἢ ἐπιχεῖται καρδίας, ὑπὸ τοιαύτῃ τῇ  
 ἐννοίᾳ καὶ ὁ Υἱὸς καλεῖται πηγὴ. Καὶ τοιῶδε δὴ λόγῳ οἱ πα-  
 ραχθέντες Πατέρες πηγὴν τῆς Πνέματος ὀνομάζουσιν τὸν Υἱόν:  
 ἔτι δὲ καὶ κατὰ τὸν προτεθέντα νῦν, καθ' ὃν ἡ πηγὴ, τὸν  
 Προβόλῃ σημαίνει ἔλαχε. Διαβρίδω ἐν ὁ Θεὸς ΒΑΣΙΛΕΙΟΣ  
 ἐν τῇ πρὸς Ἀμφιλόχιον Ἐπιστολῇ (109) Κεφ.: Η'. πρὸς γε τὰ  
 ἐκτὸς μόνον πηγὴν καλεῖσθαι τὸν Υἱὸν ἀποδείκνυσιν: „Διὰ τὸ  
 „πολύτροπον τῆς εἰς ἡμᾶς χάριτος, ἣν διὰ τὸν τῆς ἀγαθότητος  
 „πλῆτον, κατὰ τὴν πολυποικίλον αὐτῆς σοφίαν τοῖς δεομένοις  
 „παρέχεται, μυρία αὐτὸν ἑτέροις ἢ Γραφῇ προσηγορίαις ἀπο-  
 „σημαίνει· ποτὲ μὲν ποιμένα λέγεται· ποτὲ δὲ βασιλέα· καὶ πά-  
 „λιν ἱατρόν· καὶ τὸν αὐτὸν νυμφίον καὶ ὁδὸν, καὶ θύραν, καὶ  
 „πηγὴν, καὶ ἄρτον, καὶ ἀξίνην, καὶ πέτραν. Ταῦτα γὰρ ἐκ τῶν  
 „φύσιν παρίσθουσιν, ἀλλ', ὅπερ ἔφω, τὸ τῆς ἐνεργείας παντοδαπὸν,  
 „ὡς ἐκ τῆς περὶ τὸ ἴδιον πλάσμα ἐκπλαγχνίας, κατὰ τὸ τῆς  
 „χρείας ἰδίωμα, τοῖς δεομένοις παρέχεται,,. Ἐνθεντοι καὶ ἈΜ-  
 ΒΡΟΣΙΟΣ ἐν τῷ ἐφεξῆς Κ'. Κεφαλ.: διαβρίδω ὁμοίως καὶ τὸ  
 Πνεῦμα πηγὴν ἀποκαλεῖ ἔδεντι ἡττον, ἢ τὸν Υἱὸν πηγὴν προα-  
 ρήκει. „Ἐτι καὶ τῆτω, φησὶν, ἡ Γραφὴ ἡμῖν προμνησθεύσατο·  
 „λέγει γὰρ ὁ τῆς Θεᾶς Υἱός: τῷ πίνοντι ἐκ τῆς ὕδατος ὃ ἐγὼ  
 „δώσω αὐτῷ, γενήσεται ἐν αὐτῷ πηγὴ ὕδατος ἀλλομένης εἰς ζωὴν  
 „αἰώνιον. Αὕτη δὲ ἡ πηγὴ, ἡ χάρις πάντως ἐστὶν ἡ Πνέματι-  
 „κή ποταμὸς ἐκ πηγῆς ζωῆς ἐκπορευόμενος. Πηγὴ δὲ ζωῆς  
 „ἔτι καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐστὶ. Σωορᾶς δ' ἔτι ἐν τέτοις τοῖς  
 „ρήμασι, καὶ τῆς Θεᾶς Μεγαλειότητος ὑποσημαίνεσθαι τὴν ἐνό-  
 „τητα: μηδὲ διώσθαι τὸν Χριστὸν, μηδ' ὑπὸ τῶν ἀπίστων, πηγὴν  
 „ὄντα

(108) Ὁρα ἐν τῇ Α'. τῶν Πραγματ.: Ἐκατονταετ.: Δ'. πρὸς τὸ τέλος καὶ τὴν ἐκεί-  
 Σημ.: (83).

(109) Οὐκ ἐν Ἐπιστολῇ, Βιβλίον δὲ ὁλοχερὲς ἐστὶν, εἰς Κεφάλαια Α'. περαινόμενον, τὸ τῆς  
 Θεᾶς Βασιλείας πρὸς Ἀμφιλόχιον, περὶ τῆς ἁγίας Πνέματος φιλοπότημα. Οὕτω  
 δὲ τοι, καὶ τῇ κατὰ Γαλιθαίαν Ἐκδόσει, ἐπιγεγραμμένον εὐρήσεις τὸ Σύγγραμμα,  
 καὶ πρὸ τῶν Ἐπιστολῶν τεταγμένον, ἐν τῷ Γ'. Τόμῳ, Σελ.: 14.

Τόμ.: Β'.

Ξ Ξ Ξ

„ὄντα μὴ ὁμολογεῖσθαι, ὅποτε πηγὴ καὶ αὐτὸ τὸ Πνεῦμα προσα-  
 „γορεύεται... Τῆς τῆ Θεῆ, φησὶ, μεγαλωσύνης, τὸ ἐνιαῖον ὑπο-  
 δηλεῖσθαι, ἐπειδὴν καὶ ὁ Υἱὸς καὶ τὸ Πνεῦμα καλεῖται πηγὴ ὃν  
 ἄρα λόγον πηγὴ ὁ Υἱὸς, τὸν αὐτὸν καὶ τὸ Πνεῦμα πηγὴ ὀνομά-  
 ζεται. Ἀλλὰ γὰρ τῷ λόγῳ τῆς παραγωγῆς, ἔποτ' ἂν πηγὴ ἑαυ-  
 τῇ ρηθεῖη τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον· περὶ μόνης ἄρα τῆς τῆς Ἁγίας  
 Πνεύματος ἐκχύσεως νοητέον ὁμοίως, ἔνθα ἂν ὁ Υἱὸς πηγὴ τῆς  
 Πνεύματος εἶναι λέγοιτο.

Ταυτὸ δὲ σαφὲς ἔτι, καὶ ἐξ ὧν ἐπὶ τῇ προαπομνημονού-  
 θέντος Λόγου ὁ Θεὸς ΧΡΥΣΟΣΤΟΜΟΣ τοῖς ἐρημένοις ἐχομένως  
 ἐπισυνάγει. „Οἱ ὅπως τὸ τῆς ἐσίας ἀμέρισον μαρτυρεῖ; λέ-  
 „γει ὁ Σωτὴρ: ὁ διψῶν ἐρχέσθω πρὸς με καὶ πινέτω· ὁ πισθῶν  
 „εἰς ἐμὲ, ὥστε λέγει ἡ Γραφή: ποταμοὶ ῥέουσιν ἐκ τῆς κοιλί-  
 „ας αὐτῆς, ὕδατος ἀλλομένου εἰς ζωὴν αἰώνιον. Εἴτα ἐπιφέρει ὁ  
 „Εὐαγγελιστὴς Ἰωάννης, λέγων, τί ἐστὶ τὸ ὕδωρ τὸ ζῶν: τὸτο  
 „δὲ ἔρηκε περὶ τῆς Ἁγίας Πνεύματος, ἧς ἐμελλον λαμβάνειν οἱ  
 „πισθῶντες. Προσέχετε ἐπιμελῶς. Εἰ ἔν ὕδωρ μὲν ἐστὶ τὸ  
 „Ἅγιον Πνεῦμα, αὐτὸ δὲ λαμβάνουσιν οἱ πισθῶντες· διατὶ ἔφη:  
 „εἴ τις διψᾷ ἐρχέσθω πρὸς με· καὶ ἐκ ἔφης: εἴ τις διψᾷ ἐρχέσθω  
 „πρὸς τὸ Πνεῦμα; Ἀλλ' εἰ καὶ πρὸς με ἔρηκε, τάληθες εἶπε·  
 „μία γὰρ ἀμφοτέρων ἡ πηγὴ· ὅτι παρὰ Σοὶ πηγὴ ζωῆς· ἐν τῷ  
 „Φωτίσῃ ὀψόμεθα Φῶς... Ζητῶν ὁ Θεὸς Χρυσόστομος, τίνας  
 χάριν: ἐπειδὴ τὸ ὕδωρ τὸ ζῶν τὸ Πνεῦμα ἐστίν· ἐκ ἔφης ὁ Κύ-  
 ριος: ἐρχεσθε πρὸς τὸ Πνεῦμα, ἀλλ' ἐρχεσθε πρὸς με; Ἀποκρί-  
 νεται: ὅτι μία ἐστὶν ἡ ἀμφοτέρων πηγὴ· τρεῖς εἰς: ὥστε ὁ Υἱὸς  
 πηγὴ, ἔτω καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον καὶ διὰ τῆτο ἐν τοῖς προ-  
 λαβῶσιν ἔφασκεν: „ὡς ἐντεῦθεν τὸ τῆς ἐσίας ἀμέρισον ἀναφαί-  
 „νεται... Καθ' ὃ ἄρα μόνον πρὸς ἡμᾶς παρὰ τῆς Τίς ἐκχεῖται  
 τὸ Πνεῦμα, πηγὴ τῆς Πνεύματος τὸν Υἱὸν ὁ Θεὸς ὀνομάζει  
 Χρυσόστομος. Διὸ καὶ τοῖς ἐξῆς δεῖξαι βεβλόμενος, τίς ἡ τῆς  
 Ἁγίας Πνεύματος ἐστὶ πηγὴ τῷ λόγῳ τῆς ἀπ' αἰῶνος Προόδου αὐτῆς,  
 τὸν Πατέρα μόνον ὀνομάζει, καθάπερ τὰ ἐκείνη σωείδομεν ἐν  
 τῇ Πραγματείᾳ, τῇ τὰς μαρτυρίας τῶν Πατέρων περιεχού-  
 τῶν Ἀνατολικῶν. (110)

Ὡσαύτως δὴ καὶ ΕΠΙΦΑΝΙΟΣ πηγὴν τὸν Υἱὸν ἀποκαλέσας,  
 καὶ τὸ Πνεῦμα εἶναι πηγὴν ὁμοίως παρασηψῆς, προῖων γὰρ ἔφη:  
 „Καὶ ἵνα δείξῃ καὶ περὶ τῆς Ἁγίας Πνεύματος: ἐν τῷ Φωτίσῃ  
 „ὀψόμεθα Φῶς: ἵνα δείξῃ Φῶς τὸν Πατέρα, καὶ Φῶς τῆς Πατρὸς  
 „εἶναι τὸν Υἱὸν, καὶ Φῶς τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον καὶ πηγὴν ἐκ πηγῆς,  
 „ἐκ.

(110) Ἐν Πραγμ: Α'. Ἐκατονταετ: Δ'. ἐγγύς τῆς τέλους.

„ἐκ τῆς Πατρὸς καὶ τῆς Μονογενῆς τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. Ποταμοὶ  
 „γὰρ ἐκ τῆς κοιλίας αὐτῆς ῥέουσιν ὕδατος ἁλλομένους εἰς ζωὴν αἰώ-  
 „νιον. Ἐλεγε δὲ τῷτο περὶ τῆς Ἁγίας Πνεύματος, φησὶ τὸ Εὐαγ-  
 „γέλιον,,. Ἐιπὼν τὸν Υἱὸν εἶναι πηγὴν, ταῦτ' οὐκ ἀντιφάσι καὶ  
 περὶ τῆς Πνεύματος ὑποσινάπτει: ὅτι δηλ.: ἐξίστα πηγὴ ἐστὶ καὶ  
 τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, καθάπερ καὶ ὁ Υἱὸς ἢ καὶ διαβρόδῳ προ-  
 σίστησι: τὸ Πνεῦμα εἶναι πηγὴν ἐκ πηγῆς· καὶ κατ' ἕτερον ἄρα  
 λόγον πηγὴν εἰρηκῶς ὡς τὸν Υἱὸν τῆς Ἁγίας Πνεύματος, ἢ κατ' οὗ  
 τὸ Πνεῦμα ἐν ταῖς καρδίαις προχέει τῶν πισυδόντων· καθαπερὲν  
 καὶ τῇ αὐτῇ καθεξῆς ἐννοία τὸ Πνεῦμα φησὶ πηγὴν ἐκ πηγῆς  
 εἶναι τῆς τῆς Πατρὸς καὶ τῆς Μονογενῆς. Ἐπίσης γὰρ, σιωάμα  
 τῷ Πατρὶ καὶ ὁ Υἱὸς τὸ Πνεῦμα προχέει τὸ Ἅγιον ἐπὶ τὰς πι-  
 συδόντας. Δι' ὅλα γὰρ τὰ χωρία τῶδε, περὶ ἑδενὸς ἄλλου τῷ  
 Ἐπιφανίῳ ὁ λόγος, ἢ περὶ τῆς Ἀποστολῆς τῶν ὑποσάσεων.

Ταύτῃ δέ τοι καὶ ἀπανταχῶ οἱ Πατέρες, πηγὴν τὸ Ἅγιον  
 Πνεῦμα προσαγορεύει τῶν ἰδίων αὐτῶν δωρεῶν. Οἶον ὁ Μέγας  
 ΒΑΣΙΛΕΙΟΣ Βιβλ.: Ε'. κατὰ Εὐνομίαν, περὶ τὸ τέλος· ἐν Τόμ:  
 Β'. τῶν Συγγραμ.: Σελ.: 141. (111) „Πηγὴ δὲ καὶ αὐτὸ (τὸ  
 „Πνεῦμα) τῶν προειρημένων ἀγαθῶν,,. Καὶ ἐν Ἐπισ: τὰ'.  
 (112) „Πνεῦμα Ἅγιον ἐκ Θεῶ τινὶ ὑπαρξίν ἔχον, τινὶ πηγὴν  
 „τῆς Ἀγιότητος,,. Καὶ ἸΩΛ'ΝΝΗΣ δὲ ὁ ΔΑΜΑΣΚΗΝΟΣ (113)  
 Βιβλ.: Α'. περὶ Ὁρθοδ.: Πίς: Κεφαλ.: Γ'. „Τὸ ἐκ Θεῶ Πνεῦμα,  
 „τὸ εὐθὲς, τὸ ἡγεμονικόν, τινὶ πηγὴν τῆς σοφίας καὶ τῆς ζωῆς  
 „καὶ τῆς ἀγιασμῶ,,. Ἀμέλειτοι γὰρ ἢ τῆς Ἁγίας Πνεύματος χύ-  
 σις ἔργον ἐστὶ τῶν πρὸς τὰ ἐκτός· ἄρ' ἐν καὶ ἐαυτὸ προχέει τὸ  
 Πνεῦμα ἐπὶ τὰς τῶν πισυδόντων καρδίας, καθάπερ ἐς πλάτος  
 ἐν τῇ Πραγματείᾳ δέδρακται, ἐν ἣ ὁ λόγος ὡς, περὶ τῆς μηδὲν  
 εἰς πίσιν συμβάλλεσθαι τῆς τῆς Ἁγίας Πνεύματος καὶ ἐκ τῆς Υἱῶ  
 Ἐκπορεύσεως, τὸ ἀποσέλλεσθαι τὸ Πνεῦμα ἐκ τῆς Υἱῶ. (114)  
 Ὡς δὴ πάντως κατὰ τὸνδε τὸν νῦν, καὶ αὐτὸ τὸ Πνεῦμα  
 λέγοιτ' ἂν πηγὴ αὐτὸ ἐαυτῶ. Τελούτατον δὲ ἐδ' ἈΘΑΝΑΣΙΟΣ  
 ἐπὶ τῶν προτεθέντων ῥημάτων ἄλλως πως τῆς Ἁγίας Πνεύματος  
 πηγὴν τὸν Υἱὸν εἰρήκει. Ἦν γὰρ ἄχρις ἐκείνου διδάξας, ὅπως  
 ὁ Χριστὸς τοῖς ἐν δόξῃ πορευομένοις ὕδωρ ἐπηγγείλατο δώσειν,  
 τῇ Σαμαρείτιδι συλλαλῶν: „Εἰ ἤδεις τινὶ δωρεᾶν τῆς Θεῶ, καὶ  
 „τίς ἐστὶν ὁ λέγων Σοὶ δός μοι ὕδωρ πιεῖν, σὺ ἂν ἤτησας αὐτὸν,  
 „καὶ ἔδωκε Σοὶ τὸ ὕδωρ τὸ ζῶν· τῷτῶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον,,.  
 Διὰ

(111) Ἐν τῇ Γαργνήρῃ Ἐκδόσει, Τόμ.: Α'. Σελ.: 322.

(112) Ἄλλως Ἐπισ: ΡΕ'. κατὰ τινὶ Γαργνήρῃ Ἐκδόσει.

(113) Κατὰ τινὶ Λευκίῃ Ἐκδόσει Κεφαλ.: Η'. ἐν Τόμ.: Α'. Σελ.: 137.

(114) Αὕτῃ δὲ ἢ Πραγματ.: ἢ Η'.

Διὰ τῆτο δὲ ἄρα καὶ τὸν Δαβὶδ πηγῶν τῆ Πνεύματος τὸν Υἱὸν ἀποκαλέσαι ὑποσώπται. Οὕτω γὰρ ἔχει τὰ Ἀθανασίε ρήματα: „Ἐν τῷ Εὐαγγελίῳ ὁ Υἱὸς ἐπαγγέλλεται διδόναι ὕδωρ „τοῖς πορδομένοις ἐν δίψῃ, λέγων τῇ Σαμαρείτιδι: εἰ ἤδεις τὴν „δωρεάν τῆ Θεᾶ, καὶ τίς ἐστὶν ὁ λέγων σοι: δός μοι πιεῖν, σὺ „ἂν ἤτησας αὐτὸν, καὶ ἔδωκεν ἅν σοι ὕδωρ ζῶν· καὶ μετ' ὀλίγα „λέγει: πᾶς ὁ πίνων ἐκ τῆ ὕδατος τῆς διψήσει πάλιν· ὅς δ' ἂν „πίῃ ἐκ τῆ ὕδατος ἧ ἐγὼ δώσω αὐτῷ, ἔμῃ διψήσῃ εἰς τὸν αἰῶνα· „ἀλλὰ τὸ ὕδωρ ὃ ἐγὼ δώσω αὐτῷ, γενήσεται ἐν αὐτῷ πηγὴ „ὕδατος αἰλλομένης εἰς ζωὴν αἰώνιον· καὶ διὰ τῆτο Δαβὶδ ψάλλον „τῷ Θεῷ λέγει: ὅτι κτ:„. Προλαβὼν δὲ ἔφθη διδάξας Ἀθανάσιος, μηδαμῶς τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐπὶ τῆ Χριστῆ βαπτισμένης κατεληλυθῆναι, ὡς ἤδη καὶ πρὶν βαπτισθῆναι, αὐτὸ μὴ ἔχοντος· ὁ καὶ αὐτόθεν ἐξῆς ἐπικατασκυβάσει, ἐκ τῆ καὶ τὸν Χριστὸν αὐτὸν ἡμῖν τὸ Πνεῦμα δωρεῖσθαι, καὶ διὰ τῆτο καὶ πηγῶν τῆ Πνεύματος εἶναι λέγεσθαι. Ὡς ἐκ ἄλλως, εἰ μὴ τῷ λόγῳ τῆς πρὸς τὰ ἐκτὸς ἐκχύσεως, δῆλος ἐστὶ τὸν Υἱὸν ὀνομάζων πηγῶν τῆ Ἁγίας Πνεύματος.

Ἀλλ' ἐνίσταί τις τῶν Ἰησοϊτῶν: (115) „Ἐφ' ᾧ μή τις εἶπῃ „τὸν Υἱὸν ὥδε πηγῶν καλεῖσθαι τῆ Πνεύματος πρὸς τὰ ἐκτὸς, καὶ „πρὸς τὰ ἐντὸς· ἐπισητέον, τίνας δὲ Πνεύματος πηγὴ ἐνταῦθα „πρὸς τῆ Ἱερῆ Ἀθανασίε καλεῖται ὁ Υἱός. Ἐκείνης γὰρ, δηλο- „νότι, τῆ (ὡς ἐκ τῶν λεγομένων καταφανές) ὑπὸ τῶν Σερα- „φίμ καὶ τῶν Χερυβίμ, ἐν ἐκείναις ταῖς φωναῖς: Ἅγιος, Ἅγιος, „Ἅγιος, προσκινωμένους εἰς ἧ τὸ ὄνομα, καθάπερ καὶ τῆ Πατρὸς „καὶ τῆ Υἱᾶ, βαπτισόμεθα, καὶ Υἱοὶ Θεοῦ καθιστάμεθα· ὅπερ σὺ „τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ ὁ Κύριος ἐστὶ Σαββαῶθ. Αὐτὸ δὲ τὸ „τρίτον εἶναι τῆς Τριάδος Πρόσωπον, (ἧ τινος πηγὴ ὢν ὁ Πατήρ, „τισὶ τῶν Θεαπεσίων Πατέρων γεραίρεται) φανερόν ἐστίν, „— Ὡς ἔπερ ἄρα μὴ καὶ αὐτὸ τὸ Πνεῦμα ἐφ' ἡμᾶς ἐκχέοιτο! ὁπότε τῆτο μυριάκις ἡ Ἱερὰ Γραφή μαρτυρεῖ, ὅσάκις ἡμᾶς ἐκ- „διδάσκει, τὸ ἐκ τῆ Πατρὸς ἐκπορεύομενον Πνεῦμα, αὐτό τε πρὸς ἡμᾶς καταπέμπεσθαι, καὶ παρὰ τῆ Υἱᾶ προχεῖσθαι. Πῶς ἔν ἄρα, ἐπειδὴ ἐνταῦθα Ἀθανάσιος τὸ Ἅγιον αὐτὸ Πνεῦμα, ὃ λα- „τρύεται μὲν ὑπὸ τῶν Ἀγγέλων, ἐστὶ δὲ σὺ τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ ὁ Κύριος Σαββαῶθ, προχεῖται δὲ παρὰ τῆ Υἱᾶ, καθότι τῆς πηγὴ ἐστὶν ὁ Υἱός· πῶς ἐντεῦθεν ἔπεται, φημὶ, ἐξ ἀνάγκης πρὸς τὰ ἐντὸς αὐτὸ, ἔχι δὲ πρὸς τὰ ἐκτὸς χρεῖται νοεῖν; Πάντως γὰρ καὶ ὁ τῆ Θεᾶ Υἱὸς ἀπεσάλη εἰς τὸν κόσμον, ὃν τὰ



τὰ Σεραφίμ καὶ τὰ Χερουβίμ ταῖς τρισαγίοις φωναῖς ἀνυμνεῖσιν ἐκείναις, εἰς δὲ τὸ ὄνομα ὡσαύτως, καθάπερ καὶ τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Πνεύματι ὁ Κύριος ἐστὶ Σαββαώθ· εἶναι δ' αὐτὸν τὸ δεύτερον τῆς ὑπερθέας Τριάδος Πρόσωπον, καὶ τῶν ἁγίων ἐστὶ φανερῶν. Ἀλλὰ μὴ παρὰ τῆτο, τιῶν εἰς τὸν κόσμον Ἀποστολῶν τῷ Υἱῷ, πρὸς μὲν τὰ ἐκτὸς ἐδαμῶς, πρὸς τὰ ἐντὸς δὲ δέον ἐστὶν ἐννοεῖν; Ἀτόπως. Οὐ γὰρ, εἰ μὴ, καθ' ὃν χρόνον ἐκ τῆς Παναγίας Παρθένου ὁ τῷ Θεῷ ἡμῖν ἐτέχθη Υἱός, καὶ ὁ Λόγος Σάρξ ἐγένετο, τιῶν Ἀποστολῶν ταύτῃ γενέσθαι, νοεῖν ἐφαῖται. Ἀλλὰ περὶ γε τέττα καὶ ἀνωτέρω, ἐν τῇ Πραγματείᾳ, ὅτι ἡ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι παρὰ τῷ Υἱῷ πέμψις, ἐδὲν πρὸς κατασκευὴν ἐστὶ συμβαλλομένη τῆς τῷ Πνεύματι καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ Ἐκπορεύσεως. (116)

Τελοῦνται δὲ τῷ Πνεύματι πηγὴν καὶ τὸν Πατέρα καλεῖσιν οἱ τῆς Ἐκκλησίας Διδάσκαλοι. Ἐπεὶ δὲ ἡ τῆς ΠΗΓΗΣ σημασία, διτλή, ὡς δέδεικται: ὅτε μὲν τῷ λόγῳ τῆς τῷ Πνεύματος ἐγχρόνου ἐκχύσεως, τῇ τῆς πηγῆς ὀνομασίᾳ ἐπὶ τῷ Πατρὶ χρόνῳ, ἄλλοτε δὲ τῷ λόγῳ τῇ αἰδίᾳ προέσεως τῷ αὐτῷ, ὡς ἐκ τῆς αὐτῶν φράσεως κατὰ τὴν ὑποκειμένην ἔννοιαν δηλὸν καθίσταται. Ἀλλὰ γὰρ ἐπὶ τῷ Υἱῷ, τῷ λόγῳ μόνῳ τῆς ἐγχρόνου ἐκχύσεως καὶ χορηγίας πηγὴν ὀνομάζεσθαι τὸν Υἱὸν παρὰ τῶν Θεωπεσίων Πατέρων, σερβρῶς ἀποδέδεικται.

Ἔτι γεμὶν ὁ αὐτὸς Συγγραφεὺς (117) ἐνίσταται. „Δεῖ δὲ ὑποθέσθαι, φησὶ, παρὰ τῶν ἀντιδοξέντων: τι δὴποτε, ἐπειδὴν ὁ Πατὴρ λέγεται πηγὴ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι, ἐδὲν τι ἡττον νοεῖται τὸ λεγόμενον περὶ τὰ ἐντὸς, ἢ περὶ τὰ ἐκτὸς; ὡς δ' αὖν ὁ Υἱὸς πηγὴ καλεῖται τῷ αὐτῷ, τότε μόνον πρὸς τὰ ἐκτὸς τῷ αὐτῷ νοητέον; Ἔτι δέ: ἵνα τί, ἐφ' ᾧ μὲν τὸν Πατέρα χορηγὸν εἶναι τῷ Πνεύματι, προϋποθετέον, τῷ αὐτῷ πηγὴν καὶ πρὸς τὰ ἐντὸς ὑπάρχειν; ἐφ' ᾧ δὲ τὸν Υἱὸν, ἐχ' ἔγωγε; Τίνος χάριν δὲ τελοῦνται: ἐφ' ᾧ μὲν τὸ Πνεῦμα λέγεται προχέσθαι παρὰ τῷ Πατρὶ; ἐφ' ᾧ τε λέγεται τὸν Πατέρα ἐκχεῖν, ἢ διδόναι τὸ Πνεῦμα; ἐκδεκτέον τὸ ῥηθὲν ἐντός τε δὴ καὶ ἐκτός; ὅπως δὲ τὰ αὐτὰ ταῦτα λέγεται περὶ τῷ Υἱῷ, τὸ αὐτὸ ἐπὶ προσεπισημαίνεται; Πῶς δὲ καὶ ὁ Υἱὸς χορηγεῖν δώσεται τὸ Πνεῦμα ἐξ ἑαυτοῦ, ὡς τόδε πολλάκις φησὶν Ἀθανάσιος, εἰ μὴ, καθὼς καὶ αὐτὸς τῷ Πνεύματι ἐστὶν ἀρχὴ ἐσιώδης τε καὶ φυσικῆ;”

Ἀλλ'

(116) Ἐν Πραγμ.: τῇ Η'.

(117) Κιχώβ: Ζητήμ: 5'. Σελ: 68.

Τόμ: Β'.



Ἄλλ' ὅσα μὲν εἰς τὸ Α'. ἀνήκει: ἡ πανταχῶς, φαμὲν, νοεῖσθαι ἅμα πρὸς τε τὰ ἐντὸς καὶ τὰ ἐκτὸς, ἐφ' ὧν οἱ Θεολόγοι πηγῶν τῷ Πνεύματος ὀνομάζουσι τὸν Πατέρα· ἀλλὰ κατὰ τὴν ἐκείνων διάνοιαν, ὅτε μὲν τὰ λεγόμενα περὶ τῆς πρὸς τὰ ἐντὸς πηγῆς, ἄλλοτε καὶ περὶ τῆς πρὸς τὰ ἐκτὸς, ὑπόκειται νοεῖσθαι καὶ ἐρμηνεύεσθαι. Περὶ δὲ τῷ Υἱῷ, πρὸς τὰ ἐκτὸς μόνον ἢ τῆς πηγῆς ἐκλαμβάνεται κλησίς, διότι καὶ αὐτὴ ἢ τῶν Πατέρων φράσις παρίσῃσι τὸν λόγον αὐτοῖς εἶναι περὶ τῆς τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος ἐπὶ τὰ ἔξω προχύσεως. Ὁ δὲ πρὸς τὸ Β'. τέλει, ἐπειδὴ, ἐφ' ὃ τὸν Πατέρα χορηγὸν τῷ Πνεύματος εἶναι, προϋποτίθεται τὸν αὐτὸν εἶναι τῷ αὐτῷ πηγῶν καὶ πρὸς τὰ ἐντὸς, ἡ ἐπάναναγκες εἶναι ἐκ τῷ ὁμοίᾳ, ἵνα καὶ ὁ Υἱὸς χορηγὸς ἢ τῷ Πνεύματος, πηγῶν καὶ αὐτὸν τέως προϋποτίθεσθαι πρὸς τὰ ἐνδοθεν. Καὶ γάρ τοι, καὶ πρὸς τὸ ἀποσέλλειν τὸν Υἱὸν εἰς τὸν κόσμον, προϋποθετέον μὲν τὸν Πατέρα τῷ Υἱῷ πρὸς τὰ ἐνδον εἶναι πηγῶν· ἡκέτι δὲ τῷ αὐτῷ καὶ περὶ τῷ Πνεύματος προϋποτίθεναι, τὸ πηγῶν αὐτὸ δηλαδὴ τῷ Υἱῷ καὶ πρὸς τὰ ἐντὸς εἶναι, ὡς ἂν εἰς τὸν κόσμον τὸ αὐτὸ τὸν Υἱὸν ἀποσέλλοι. Περὶ γὰρ τέως εἰς πλάτος εἴρηται ἐν τῇ Πραγματείᾳ: ὅτι ἢ τῷ Πνεύματος παρὰ τῷ Υἱῷ πέμψις, ἡδὲν εἰς ἀπόδειξιν εἰς σωτηρίαν τῆς τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος Ἐκπορεύσεως καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ. (118)

Ὁ δ' ἐπὶ τὸ Γ'. ἀφορᾷ: ἡδ' ἀπανταχῶς, ἐνθα ἂν τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον παρὰ τῷ Πατρὶ λέγοιτο προχεῖσθαι, νοητέον τὸ λεγόμενον, πρὸς τε τὰ ἐντὸς ἅμα καὶ τὰ ἐκτὸς· τέτων δὲ θάτερον, κατὰ τὴν ἐννοίαν τῶν τοῖς Πατράσι διδασκομένων. Καὶ τῷ αὐτῷ δὲ λόγῳ, ἐπεὶ ἐκ τῷ Πατρὸς τὸ Πνεῦμα προχεῖσθαι λέγεται, πρὸς τε τὰ ἐντὸς καὶ πρὸς τὰ ἐκτὸς προχεόμενον ἂν νοηθῇ· ἐπεὶ δὲ ἐκ τῷ Υἱῷ, πρὸς τὰ ἐκτὸς μόνον· ὡς δὴ πρὸς λόγῳ, καὶ ἐνθα μὲν ἐκ τῷ Πατρὸς πέμπεσθαι λέγεται ὁ Υἱὸς, πρὸς τε τὰ ἐντὸς καὶ πρὸς τὰ ἐκτὸς νοηθῇ· (περὶ δ' κατὰ τὸ τέρας (119) τῆς Πραγματείας: ὅτι ἢ παρὰ τῷ Υἱῷ πέμψις τῷ Πνεύματος, ἡ ἐξ ἐξίς τῆς ἐκπορεύσεως τῷ Πνεύματος καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ·) ἐνθα δὲ παρὰ τῷ Πνεύματος ὁ Υἱὸς πέμπεσθαι λέγεται, περὶ τῆς πέμψεως μόνον τῆς πρὸς τὰ ἐκτὸς, τὸ εἰρημένον νοεῖται. Πρὸς τέτοις δὲ, καὶ ἐν οἷς ὁ Πατὴρ λέγεται διδόναι τὸ Πνεῦμα ἐξ ἑαυτοῦ, ψεύδεται ὁ Ἰησοῦς λέγων, ὡς οἱ Ἀνατολικοὶ νοεῖσι τὴν τῆς Προτάσεως δῶαμιν, ὅτι ἅμα ἄρα καὶ πρὸς τὰ ἐντὸς καὶ πρὸς τὰ ἐκτὸς τὸ Πνεῦμα παρὰ τῷ Πατρὶ χορηγεῖται. Αὐτὸ

(118) Ὁρα Πραγμ: Η'. καὶ Ἀπάντ: ἐν αὐτῇ Η'. κζ:

(119) Πραγμ: Η'. Ἀπάντ: Η'. ἐγγὺς τῷ τέλει.

Αὐτὸ γὰρ τὸ πρᾶγμα μονονυχὶ φωνῶ ἀφίησι κράζον, ἐκ ἂν ἄλλως, ἢ περὶ τῆς ἐν χρόνῳ τῷ Πνεύματος χορηγίας, ἔχεν διερμηνεύεσθαι. Ὅπως δὲ τέως καὶ ὁ Υἱὸς διώταται χορηγεῖν τὸ Πνεῦμα ἐξ ἑαυτοῦ, καί τοι μὴ κατὰ τὸν τῆς Ἀρχῆς λόγον, ἀνωτέρω φθάσαν ἡμῖν ἀποδέδεικται.

Τελούτατον ἀντιπροτείνουσι τὰ ἐκ τῷ Β'. Λόγῳ τῷ ἈΘΑΝΑΣΙΟΥ κατὰ τῶν Ἀρειανῶν, ἐκείνα: (Τόμῳ Α'. Σελίδι 357.) „Τοιαῦτα μὲν ἔν τοις Ἰουδαίοις, ὡς ἄνθρωπος ἔλεγεν ὁ Κύριος: „τοῖς δὲ Μαθηταῖς τὴν Θεότητα καὶ τὴν μεγαλειότητα δεικνύς „ἑαυτοῦ, ἐκέτι ἐλάττωνα ἑαυτὸν τῷ Πνεύματος, ἀλλὰ μέζονα καὶ „ἴσον ὄντα σημαίνων: ἐδίδεκε μὲν τὸ Πνεῦμα, καὶ ἔλεγε: λάβετε „Πνεῦμα Ἅγιον: καὶ ἐγὼ ἀποσέλω: καὶ κείνος ἐμὲ δοξάσει. „Ὁρᾷς, Φησὶν, ὅπως Ἀθανάσιος μέζονα τὸν Υἱὸν τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος ἔρηκεν; Ἀλλὰ γὰρ ὁ Πατὴρ μέζων τῷ Υἱῷ, ὅτι αἴτιος ἐστὶ τῷ Υἱῷ. ἔσαι ἄρα ἐπὶ τῷ αὐτῷ ὀνόματι καὶ ὁ Υἱὸς μέζων τῷ Πνεύματος, ὅτι καὶ αὐτὸς τῷ Πνεύματος ἐστὶ Προβολεύς.

Τὸν μὲν ἔν Πατέρα μέζονα λέγεσθαι τῷ Υἱῷ, ὡς Αἴτιον τῷ Υἱῷ, καὶ οἱ Πατέρες διδάσκουσιν ἀπανταχῶς. Οἷον ΒΑΣΙΛΕΙΟΥ τε ὁ Μέγας, Βιβλ: Α'. τῶν κατ' Εὐνομίαν, Τόμῳ Β'. Σελίδι 35. (120) (Παραλειπτέον γὰρ αὐτῶν αὐτὰς τὰς ῥήσεις διὰ τὸ μῆκος.) Καὶ ὁ Θεολόγος ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ Λόγῳ Δ'. καὶ Λόγῳ Μ'. (121) Καὶ οἱ ΣΝ'. Ἐπίσκοποι τῆς ΣΑΡΔΙΚΗΣ Συνόδῳ, ἐν ταῖς Σινοδικαῖς Ἐπιστολαῖς πρὸς τὰς ἀπανταχῶς τῆς Οἰκουμένης Ἐπισκόπους, περὶ πρὸς τὸ τέλος, παρὰ ΘΕΟΔΩΡΗΤΩ Βιβλ: Β'. τῆς Ἐκκλησιαστικῆς Ἱστορίας: Κεφαλαίῳ 5'. (122) Καὶ ἈΝΑΣΤΑΣΙΟΣ ὁ Σιναΐτης Βιβλ: Α'. περὶ τῶν Δογματικῶν τῆς Πίστεως: Σελ: 697. ἐν Τόμῳ: 5'. τῆς τῶν Πατέρων Βιβλιοθήκης: τῆς ἐν Κολων: Καὶ ὁ ΣΥΓΓΡΑΦΕΥΣ δὲ τῷ περὶ Τριάδος Βιβλ: ὁ κοινῇ Κυρίῳ τῷ Ἀλεξανδρεῖ ἀναγράφεται. Κεφαλ: Η'. (123). Καὶ Κεφαλ: ΙΗ'. (124). Καὶ ἸΩΑΝΝΗΣ ὁ Δαμασκηνὸς Βιβλ: Α'. Κεφαλ: Θ'. περὶ Ὁρθοδόξου Πίστεως: Καὶ Βιβλ: Δ'. Κεφ: ΙΘ'. (125) Καὶ Βιβλ: περὶ τῶν διωγμῶν ἐπὶ Χριστῷ Θελημάτων καὶ Ἐνεργειῶν, Κεφαλ: Ζ'. (126). Καὶ ΘΕΟΦΥΛΑΚΤΟΣ ἐν Ὑπομνήμῃ: τῷ

(120) Ἐπὶ τῆς Γαργίνης Ἐκδόσεως: Τόμῳ: Α'. Σελ: 233.

(121) Τῆς ἐν Κολων: Γραικο-Λατιν: Ἐκδόσεως: Ἔτος 1690. Σελ: 582. καὶ Λύτ: Σελ: 669.

(122) Ἐν τῇ κατὰ Χάλιν τῇ Μαγδεβεργ: Νεωτάτῃ Ἐκδόσει Γραικο-Λατιν: Τόμῳ: Γ'. Μέρει Β'. Σελ: 846.

(123) Ἐν τῷ 5'. Τόμῳ: τῶν Συγγραμμάτων: περὶ τὸ τέλος: Σελ: 12.

(124) Αὐτόθι: ἀλλ' ἀριθμεῖται Κεφ: ΚΓ'. Σελ: 28.

(125) Ἐν τῇ κατὰ Λεκυήν Ἐκδόσει, Τόμῳ: Α'. Κεφ: Η'. Σελ: 136.

(126) Κατὰ τὴν ῥηθείσαν Ἐκδ: ἀριθμεῖται Κεφαλ: ΙΗ'. Σελ: 285.

τῷ εἰς τὸν Ἰωάν: Κεφαλ: ΙΔ'. (127) Καὶ ΝΙΚΗΤΑΣ τελού-  
 ταιον ἐν τῷ Θησαυρῷ τῆς Ὁρθοδ: Πίς: Βιβλ: Β'. Κεφαλ: ΛΔ'.  
 ἐν Τόμῳ ΙΒ'. τῆς τῶν Πατέρων Βιβλιοθήκης τῆς ἐν Κολωνίᾳ,  
 Μέρει Α'. Σελίδι 519. Καὶ Βιβλ: Ε'. Κεφαλ: ΜΖ'. Αὐτ':  
 Σελίδι 600.

Καίτοιγε ΑΥΓΟΥΣΤΙΝΟΣ τὸ τὸν Πατέρα μέζονα λέγεσθαι  
 τῷ Τίῳ, κατὰ τὸν τῆς Αἰτίας λόγον ἐκ ἀποδέχεται· ἔτω καὶ  
 γὰρ ἐν Βιβλ: Β'. τῶν περὶ Τριάδος: Κεφαλ: Α'. „Ἐσιν ἂν ἐν  
 „ταῖς Γραφαῖς ἔτω καίται περὶ Πατρός τε καὶ Τίῳ, ὥς τε τὸν Τίον  
 „ἐλάσσονα ἀποφαίνων, διὰ τὴν τῷ δέλτα μορφῇ· τρεῖς διὰ τὸ  
 „προσληφθῆν ποίημα τῆς ὑποκειμένης τροπῇ ἀνθρωπίνης εἰσίας  
 „οἷον ἐσιν, ὃ φησὶν: ὅτι ὁ Πατήρ μείζων ἐστὶ — Τινὰ δὲ,  
 „οἷς περ ἂν μήτ' ἐλάσων, μήτε ἴσος δεικνύοιτο: δι' ὧν τε μόνον  
 „παριστάνοιτο, ὅτι ἐκ τῷ Πατρός οἷον ἐκείνο: ὡς περ ὁ Πατήρ  
 „ἔχει ζωὴν ἐν ἑαυτῷ, ἔτως ἔδωκε καὶ τῷ Τίῳ ζωὴν ἔχειν ἐν  
 „ἑαυτῷ. (Καὶ μετὰ τινά) — Ἐκ τῷ δὲ ἄρα τῷ Κανόνος, καὶ  
 „ὃν αἱ Γραφαὶ ἔτω φθέγγονται, ὡς μὴ ἑτέρω ἑτερον ἐλάσσονα,  
 „δείξαι δὲ μόνον βέλεσθαι, πότερος ἐκ ποτέρω εἴη τοιαύτῳ εἶναι  
 „οἷ προσειλήφασιν ἔννοιαν, ὡς εἴπερ ἄρα ἐλάσων λεγοίτο ὁ Τίος·  
 Καθάπερ δὴ καὶ πρὸς τῶν Δονατιστῶν, ὡς ἀτόπως ἔτω λεγόμενον  
 παρεσημαῖτο: ὅτι καὶ ὁμοῖον τῷ Πατρὶ τὸν Τίον πισυρόντων,  
 τινὲς ὅμως ἐξ αὐτῶν, μέζονα τῷ Τίῳ ἔφασκον τὸν Πατέρα.  
 Τοιάδε γὰρ τὰ ἐκείνῃ ἐν τῇ Ν'. Ἐπιστολῇ: „Οὐχὶ τῷτο, φασὶν  
 „οἱ Δονατισταί, μίαν δὲ τὴν εἰς τῆς Τριάδος ὁμολογῶσιν. Εἰ  
 „δὲ καὶ τινες αὐτῶν τῷ Πατρός ἐλάσσονα ἔφασαν τὸν Τίον, τῆς  
 „αὐτῆς ὅμως εἰσίας εἶναι ἐκ ἀπηρνήσαντο, „Ὅ, τι δ' ἂν ἐν  
 ἔνεκα τέττα ὑποληπτόν· (ἐ γὰρ τόδε τὰ νῦν πρόκειται σκοπεῖν:  
 καίτοι, κατὰ τὸ προσήκον, τοῖς Ἀνατολικοῖς ἡμῶν Πατράσι καὶ  
 περὶ τῷτο ἐπόμεθα) ἐμὴν ἀλλ' ἐδένα ἐδάμῃ ἴσμεν, ὅς τὸν Τίον,  
 μέζονα τῷ Πνύματος ὄντα τῷ λόγῳ τῆς αἰτίας παρέδωκεν  
 ὅπως γὰρ καὶ τῷ Ναυατιανῷ τὸν Τίον μέζονα τῷ Πνύματος εἶναι  
 διδάσκοντος, κακοδοξίας δίκῃ κατεψηφίσατο ἹΕΡΩΝΥΜΟΣ,  
 καθάπερ ἐν τῇ Πραγματείᾳ δέδακται τῇ περὶ τῶν Μαρτυριῶν  
 τῶν Δυτικῶν Πατέρων, περὶ τὰ Ἱερωνύμῃ ρήματα. (128)

Ἐνθεντοι: ἐδ' ἂν ἔχοι ἀποδεχθῆναι, τὸν Ἀθανασίῳ νῦν,  
 ἐπὶ τῷ ἀνθυπενεχθέντος χωρίῳ ὑπάρχει, ὅτι τῷ λόγῳ τῆς  
 αἰτίας ὁ Τίος μείζων ἐστὶ τῷ Πνύματος. Μὴ γὰρ, ὅτι ὁ Τίος  
 τῷ τῆς αἰτίας λόγῳ ἐλάσων ἐστὶ τῷ Πατρός, ἐντεῦθεν ἂν ἔποιτο,  
 μηδενί

(127) Ἐπὶ τῆς Ἐνετίῃσιν ἐκδόσεως Γ. Α. Ἐκδόσ: Ἐτα 1754. ἐν Τόμῳ Α'. τῶν Συγγραμμάτων.  
 Σελ: 708. 709.

(128) Ἐν Πραγματείᾳ Δ'. Ἐκατονταετ: Δ'. περὶ τὸ τέλος.

μηδενί τινι λόγῳ ἑτέρῳ, εἰμὴ τῷ γε κατὰ τὴν αἰτίαν, μέζον  
 ῥηθῆναι δυνάσθαι ἐν τοῖς Θεοῖς Προσώπῃ Πρόσωπον; Πάντως  
 ὁ Υἱὸς καὶ τῷ τῆς ἀνθρωπότητος λόγῳ, ἔχῃ μόνῳ τῷ τῆς προ-  
 αίωνις γεννήσεως, ἐλάσων ἐστὶ τῷ Πατρί. Ὅπως δὲ Ἀθανά-  
 σιος μέζονα τῷ Πνεύματος τὸν Υἱὸν ὡς εἰρηκῶς, ἐξ αὐτῶν αὐτῶ  
 τῶν ῥημάτων κατὰ δὴλον. Ἀμέλειτοι καὶ τὸ Πνεῦμα αὐτὸς μέζον  
 εἶναι διδάσκει τῷ Υἱῷ τῷ Θεῷ, ἐπειδὴν κατὰ τὸ ἀνθρώπινον τὴν  
 τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος εἴληφε δυνάμιν. Καὶ πάλιν τῷ Πνεύματος  
 μέζονα τὸν Υἱὸν εἶναι, φησὶν, ἐπειδὴν ἔτος αὐτὸ τοῖς Ἀποστόλοις,  
 καὶ τοῖς λοιποῖς τῶν πισυόντων διεχορήγησε. Καὶ ἔτι ἄρα  
 τόν τε Υἱὸν μέζονα τῷ Πνεύματος, καὶ τὸ Πνεῦμα μέζον τῷ  
 Υἱῷ ἀνάπαλιν ἀπεφύλατο. Ὡς περ τοίνυν ὁ τῷ Ἀθανασίῳ νῦν  
 ἡμεῖς ὡς, τῷ Υἱῷ ἀπλῶς μέζον εἶναι τὸ Πνεῦμα, ὅ,τι μὴ μό-  
 νον κατὰ γε τὸ ἀνθρώπινον ἔτι αὐτῷ ὁ νῦν ὁμοίως ἐκ ὧν, ὅτι  
 ὁ Υἱὸς ἀπλῶς μέζον τῷ Πνεύματος, ἀλλ' ἢ μόνον καθὼ παρὰ  
 τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα πέμπεται· κατ' αὐτὰ, δηλονότι, τῷ Πνεύμα-  
 τος τὰ χαρίσματα. Περὶ δ' ἡ ἐς πλάτος εἴρηται ἐν τῇ Πραγ-  
 ματείᾳ: ὅτι ἡ τῷ Πνεύματος Πέμψις ἐδὲν εἰς λόγον συμβάλλεται  
 τῆς αὐτῆς καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ Ἐκπορεύσεως. (129) Κάντεῦθεν, ὡς  
 εἴρηται, ἐκ ἄλλως εἰ μὴ τῷ λόγῳ τῆς ἐγχρόνου Ἀποστολῆς, ἢ  
 τῆς ἀπ' αἰῶνος Προόδου, (ὅπερ ἄλλως προαῖναι ὠφελεν, εἰ κατὰ  
 τὸν τῆς Αἰτίας λόγον, ἐννοῶν ὡς, μέζονα τὸν Υἱὸν πεφυκέναι  
 τῷ Πνεύματος) διαβρῆδῳ ὑποσυνάπτει: τὸ Πνεῦμα εἶναι τῷ Υἱῷ  
 ἑλάττω: „Τοῖς γὰρ Μαθηταῖς, φησὶ, τὴν Θεότητα καὶ τὴν  
 „μεγαλειότητα δεικνὺς ἑαυτῷ, ἐκέτι ἐλάττωνα ἑαυτὸν τῷ Πνεύ-  
 „ματος, ἀλλὰ μέζονα (130) καὶ ἴσον ὄντα σημαίνων, ἐδίδου μὲν  
 „τὸ Πνεῦμα, καὶ ἔλεγε: λάβετε Πνεῦμα Ἅγιον,. Καί: ἐγὼ  
 „αὐτὸ ἀποσέλω: καὶ κείνος ἐμὲ δοξάσει. (Προέσι δ' ἐφεξῆς συ-  
 „νάπτων:) „Ὡς περ ἐν ἐνταῦθα τῷ Πνεύματος δοτῆρ ὡς ὁ Υἱὸς,  
 „ἢ παραιτεῖται εἰπεῖν, ἐν Πνεύματι ἐκβάλλειν τὰ δαιμόνια, ὡς  
 „ἄνθρωπος: τὸν αὐτὸν τρόπον ὁ αὐτὸς ὡς τῷ Πνεύματος δοτῆρ,  
 „ἢ παρητήσατο λεγὼν: Πνεῦμα Κυρίου ἐπ' ἐμὲ, ἢ ἕνεκεν ἔχρι-  
 „σέ με,. Ἐνθα σημειωτέον ἐκεῖνα: „Ἐνταῦθα τῷ Πνεύματος  
 „δοτῆρ ὡς ὁ Υἱὸς, ἢ παραιτεῖται εἰπεῖν κτ:,. Καί: „Τὸν αὐ-  
 „τὸν τρόπον, ὁ αὐτὸς ὡς τῷ Πνεύματος δοτῆρ, ἢ παρητήσατο  
 „λέγειν κτ:,. Διὰ γὰρ δὴ τῶν πάντως ἐμφαίνει, ὡς τῶν γε  
 χάριν, ὅτι χορηγὸς ἐστὶ τῷ Πνεύματος ὁ Κύριος, ἐνόησεν ἐν τοῖς  
 προλα-

(129) Ἐν Πραγμ: Η'. Ἀπαντ: Ζ'. μετὰ τὸ μέσον ἄχρι τέλους.

(130) „Μέζονα μὲν, καθὼ τὰ τῷ Πνεύματος χαρίσματα τοῖς πισυόντων ὁ Υἱὸς δια-  
 νέμει. „ἴσον δὲ, καθὼ καὶ αὐτὸ τὸ Πνεῦμα τόν τε Υἱὸν εὐαγγελίσασθαι πτω-  
 χοῖς ἀποσέλλει, καὶ ἑαυτὸ δ' ἐπιχορηγεῖ τοῖς ἀξίοις ὡς βέλεται.

Τόμ: Β'.

Π π π π

προλαβῶσι, τὸ μείζονα εἶναι τῷ Πνεύματος τὸν Υἱόν. Κάντεϋθεν, ἐπειδὴ αὐτὸς ἐστὶ τῷ Πνεύματος ὁ Δότηρ, ἐκδηλον ὅτι κατὰ τὴν ἀνθρωπότητα μόνον ἐκδεκτέον τὸ λεγόμενον, ἐνθα ὁ Σωτὴρ φησὶν ὑπὸ τῷ Πνεύματος αὐτὸς χρίεσθαι.

Ἀλλ' ἀπαντᾷ τις (131) καὶ πρὸς ταῦτα: „Προαποκεκλῆσθαι „ἡδὴ (φάσκων) τὸ σωήθεις καταφύγιον, τῆς ἐνεργείας τῆς πρὸς „τὰ ἐκτός: ὁ γὰρ ἄνευ προδήλως τῷ Ἀρειανισμῷ, ἐν τοῖς πρὸς „τὰ ἐκτός ἐνεργήμασι, θάτερος τῶν Θεῶν Προσώπων μείζον εἶναι „ρήθειά θάτερον„. — Ἀλλ' εἰ καὶ κατὰ τὴν πρὸς τὰ ἐκτός ἐνερ-  
γειαν, ὅκ ἂν εἴη μείζον Προσώπων Πρόσωπον, μιᾶς τῆς τῶν τριῶν Προσώπων ἐνεργείας ἕσης καὶ τῆς αὐτῆς· ἐν γε μὴν ταῖς Ἀποστο-  
λαῖς ταῖς ἐπὶ τὰ ἐκτός, ὁδὲν ἀπεικὸς θάτερος θάτερον καλεῖσθαι μείζον, καθ' ὃν λόγον θάτερον ὑπὸ θάτερος τυγχάνει πεμπόμενον. Οὕτως ὁ μὲν Πατὴρ μείζων εἶναι λέγεται τῷ Υἱῷ, ὅτι κατὰ τὴν ἀνθρωπότητα αὐτὸν ἀπέσειλε· τὸ δὲ Πνεῦμα τῷ Υἱῷ μείζον, ὅτι ὡς ἄνθρωπον αὐτὸν ἔχρισεν, ὡς αὐτὰ ἔχε τὰ Ἀθανασίως ῥήματα. Ἀλλ' ἢ τῷ Υἱῷ Ἀποστολή, καὶ ἢ αὐτῷ χρίσις, ἔργον ἐστὶ πάντως τῶν γ' ἐπὶ τὰ ἐκτός. Παραπλησίως ἄρα, καὶ εἰ κατ' ὁδὲν τῶν πρὸς τὰ ἔξω ἐνεργημάτων, ὅκ ἔστι μείζων τῷ Πνεύματος τῇ Θεότητι ὁ Υἱός, ἔστιν ἀλλ' ἐν αὐτῷ μείζων, καθ' ὃ ἐκ τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον πέμπεται. Τίς γὰρ ἂν ποτὲ ἀποφύσειε, τὸ τὸν Υἱὸν τῷ Θεῷ τῶν χαρισμάτων τῷ Πνεύματος εἶναι μείζονα; Ταύτητοι καὶ τὰ Ἀθανασίως ῥήματα τρανώτατα ἐστὶ, δι' ὧν, τῷ λόγῳ τῆς ἐγχρόνου πέμψεως, τὸν Υἱὸν ἐδίδασκε μείζονα τῷ Πνεύματος εἶναι, ὡς ἀποδέδεικται. Ἀλλὰ καὶ ὁ Ἀρειανισμὸς τελούτατον πρόδηλος, εἴπερ ἐκ τῷ Πνεύματι πέμπεσθαι παρὰ τῷ Υἱῷ, ἐπισωάψει τις, ἔλαττον αὐτὸ τῷ Υἱῷ τῇ Θεότητι πεφυκέναι ὡς παντίπῃ σαφὲς ἐστὶ. Καὶ ταῦτα μὲν, περὶ ὧν, ἐκ τῶν Ἀθανασίως ῥήσεων κοινῇ Παῖδες Λατίνων ἐπιφορῶσιν, ὡς τὴν ἰδίαν αὐτῶν δόξαν κατασκυβάσοντες.

## § ΙΓ'.

Ἐκ τῶν Διδύμων τῷ Ἀλεξανδρέως.

Ἐκ δέ τοι τῶν τῷ Ἀλεξανδρέως ΔΙΔΥΜΟΥ, ἀντιπροβάλλωσι Α'. ἐκείνο ἀπὸ τῷ Β'. Βιβλ: περὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος: „Οὐ γὰρ „ἀφ' ἑαυτῷ ἐστίν, ἀλλ' ἐκ τῷ Πατρὸς ὑπάρχει, καὶ ἐξ ἐμῶ. Αὐτὸ „γὰρ τῷτο, ὅτι ὑφίσταται καὶ λαλεῖ, ἐκ τῷ Πατρὸς, καὶ ἐξ ἐμῶ „αὐτῷ

(131) Κιχώδ: Ζητήμ: Γ'. Σελ: 13.



„αὐτῷ ἐστίν,,. (Καὶ πάλιν ἐκείνα:) „Τατέσι, τὸ ἐκ τῆς ἀλη-  
 „θείας προῖόν· Παράκλητος, ἀναβλύζων ἐκ Παρακλήτῃ· Θεὸς ἐκ  
 „Θεῶ· Πνεῦμα ἀληθείας ἐκπορεύτόν,,. — Ἀλλὰ ταῦτα ὑπὸ Λα-  
 τίνων ἀπιστότατα παρεσιωχέθη, ὡς ἐν τῇ Πραγματείᾳ δέδεικται,  
 τῇ περὶ τῶν Παραφθορῶν, τῶν ἐν τοῖς Συγγράμμασι τῶν Πα-  
 τέρων τῶν Ἀνατολικῶν. (132)

Ἀλλ' εἰσωθῶσιν ἔτι καὶ ἐκεῖνα, ἐκ τῆς Β'. Βιβλ: περὶ τῆς Ἀγίας  
 Πνεύματος: „Καὶ τὸ Πνεῦμα δὲ τὸ Ἅγιον, ὅπερ ἐστὶ Πνεῦμα  
 „Ἀληθείας, καὶ Πνεῦμα Σοφίας, ἔδωκεται τῷ Υἱῷ λαλῶντος  
 „ἐκείνῳ ἅπερ ἀγνοεῖ. Αὐτὸ γὰρ ἐστὶ τὸ ἐκ τῆς Υἱῶ προφερόμενον,,.  
 Εἰ τοίνυν τὸ Πνεῦμα προφέρεται ἐκ τῆς Υἱῶ, ἐξ αὐτῆς πάντως  
 καὶ ἐκπορεύεται. — Ἀλλὰ γὰρ ἔκαστος κατ' ἄλλω ἐννοίαν ὁ Δίδυμος  
 „ἐφῆσεν, ὡς αὐτὸ ἐστὶ τὸ ἐκ τῆς Υἱῶ προφερόμενον, ἢ κατ' ἡ  
 „εἰρήνῃ, ὡς καὶ αὐτὸ τῆτο, ὅτι ὑφίσταται, καὶ λαλεῖ, ἐγὼ ἢ  
 „ἀλήθεια λαλῶ,,. Ἀμέλειτοι: ἐπεὶ αὐτὸ τὸ Πνεῦμα ἀλήθεια  
 ἐστὶ, τὴν δὲ ἀλήθειαν λαλεῖ ὁ Υἱὸς, πάντως ὅπερ ὁ Υἱὸς ἐλάλει,  
 καὶ λαλῶν διετέλει προφῆρων, τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ὡς. Τὸν δὲ  
 τὸν νῦν εἶναι τὸν τῆς Διδύμῃ, καὶ ῬΑΤΡΑΜΝΟΣ ὁ Μοναχὸς  
 ὁ Κορνηλίωσιος σιωπολογεῖ, ἐν τῷ Β'. Βιβλ: τῷ περὶ τῆς Ἐκπορ:  
 τῆς Ἀγίας Πνεύματος κατὰ τῶν Ἀνατολικῶν, ἐν Κεφαλ: Ε'.  
 Τόμ: ΙΒ'. τῆς Σταχυολογίας τῶν Παλαιῶν Συγγραφέων, Σελ: 48.  
 „Οὕτω γὰρ αὐτόθι, λέγων, αὐτὸ τῆτο ὃν ἐξυπακύναι τὸ Πνεῦμα,  
 „ὃ προφέρεται παρὰ τῆς Υἱῶ· τατέσιν, ὃ λαλεῖ ὁ Υἱὸς,,. — Ἀλλ'  
 ἐντεῦθεν ἐνίσταται ὁ αὐτὸς Ῥατράμνος: „Εἴπερ ὃ λαλεῖ ὁ Υἱὸς,  
 „τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐστίν, ὡς ἐκεῖνος ὁ Διδάσκαλος μαρτυρεῖ·  
 „ἐκ ἂν ἀποφᾶναι τις ἔχοι τὸ Πνεῦμα ἐκ τῆς Υἱῶ ἐκπορεύεσθαι·  
 „ἢ γὰρ τῆς Υἱῶ λαλιᾷ, ἐκ τῆς Υἱῶ ἐκπορεύεται,,. — Ἀτόπως.  
 Πάντως γὰρ πᾶς καὶ ἂν τὸ Πνεῦμα λαλεῖ, ἀλήθεια ἐστὶ καὶ ὁ  
 Υἱὸς δὲ, ἀλήθεια ἐστίν· ὁ ἄρα Υἱὸς ἐστίν ὃ προφέρεται ἐκ τῆς  
 Πνεύματος. Πάλιν ἢ τῆς Πνεύματος λαλιᾷ ἐκ τῆς Πνεύματος  
 ἐκπορεύεται. Καὶ ἂν δὲ ὁ Θεάνθρωπος ἐλάλει, ἀλήθεια ὡς καὶ  
 κατὰ τὸ ἐπόμενον, ὡς τὸ Πνεῦμα. Ἡ δὲ ἐκείνη λαλιὰ ἐκ τῆς  
 ἀνθρωπίνῃς προφέρετο σώματος: μή τοι γε δὲ ἄρα τὸ Πνεῦμα,  
 αἰτίαν ἔχε τῆς εἶναι τὸ τῆς Χριστοῦ σώμα τὸ ἀνθρώπινον; τῷ ὄντι  
 δὲ, ἔδ' ὁ διὰ τῆς φθέγγματος τῆς Κυρίου γινόμενος ἦχος τὸ Πνεῦμα  
 ὡς, ἢ δὲ τῶν ῥημάτων δώαμις. Ἀλλ' ἐπὶ τοῖς ἔτι σαφέσιν  
 ἐπενδιατρίβειν ἔχρη.

Ἀντιφέρεισι τέως ἐκ τῆς Β'. Βιβλίας ἐκεῖνο: „Οὐδὲ γὰρ  
 „ἄλλο τι ἐστὶν ὁ Υἱὸς, ὑπεξαρκούντων τῶν ἂν δίδοται αὐτῷ παρὰ  
 „τῆς

(132) Πραγμ: Β'. Παραφθ: Θ'. Γ'. ΙΑ'.

„τῷ Πατρός· ἐδ' ἄλλη τις ἢ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος ἕσις, παρὰ τὰ  
 „διδόμενα αὐτῷ παρὰ τῷ Υἱῷ,, — Ἀλλ' ὅπως ταῦτα διδάσκει  
 Δίδυμος, ἐν τῇ Πραγματείᾳ (133) δέδεικται, ὅτι ἢ τῷ Ἁγίῳ  
 Πνεύματος ἐκ τῷ Υἱῷ λήψις, ἐδὲν εἰς κατασκιδνῶ συμβάλλεται  
 τῆς τέτῃ καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ Ἐκπορεύσεως.

## § ΙΔ'.

Ἐκ τῶν Κυρίλλου τῷ Ἱεροσολυμίτῃ.

Ἐκ τῷ Ἱεροσολυμίτῃ ΚΤΡΙΛΛΟΥ, Κατηχήσαι ΙΖ'. ἀντιπροβάλλουσιν ἐκεῖνα: „Ἐν καὶ τὸ αὐτὸ Πνεῦμα τὸ ἁγιάζον, καὶ ὑφεσῶς,  
 „καὶ πάντοτε Πατρὶ καὶ Υἱῷ συμπάρων· ἐκ ἀπὸ σώματος καὶ  
 „χαιλέων Πατρὸς καὶ Υἱῷ λαλόμενον, ἢ ἀναπνεόμενον, ἐδὲ εἰς  
 „ἄερα διαχεόμενον, ἀλλ' ἐνυπόστατον,, — Κατάγεμνῶ τὸ Ἑλλω-  
 κὸν ὕφος, ἐ λέγεται: ἐκ ἀπὸ σώματος καὶ χαιλέων (Πατρὸς καὶ  
 Υἱῷ) λαλόμενον· ἀλλ' ἔτι: ἐκ ἀπὸ σώματος καὶ χαιλέων „(Πα-  
 „τρὸς ἢ Υἱῷ,, λαλόμενον. Πῶ δ' ἐν τέτοις ὁ Κύριλλος ἐστὶ δι-  
 δάσκων, ὅτι τὸ Πνεῦμα ἐκπορεύεται καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ; Ἀποφάσκει  
 μὲν δὴ, τὸ ἐκ τῷ σώματος τῷ Πατρὸς ἢ τῷ Υἱῷ, εἰς ἄερα τὸ  
 Πνεῦμα διαφυσᾶσθαι· ἐ μὲν τοιγε ἐδ' αὐτὸς προσίθῃσιν, ἐδ' αὐ-  
 τόθεν ἐπισπᾶγεται, ὅτι ἄρα τὸ Πνεῦμα καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ ἐκπορέ-  
 υεται. Μὴ γὰρ, εἰ ἀποφύσωμαι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκ τῷ  
 Πατρὸς φέρε, ἢ ἐκ τῷ Υἱῷ κτίζεσθαι, ἐκ τέτῃ ἄρα σημανῶ τὸ  
 Πνεῦμα ἐκ τῷ Πατρὸς ἅμα καὶ τῷ Υἱῷ ἐκπορεύεσθαι; Καὶ ἡδὺς  
 ἐν ἡμῖν ἐστὶν ἐπιεικῶς ΒΕΛΛΑΡΜΙΝΟΣ, ὁ ἐν τῷ Β'. τῶν περὶ  
 τῷ Χριστῷ Βιβλίῳ, Κεφαλ: ΚΕ'. ἐκ τῶν δε εἰσβάλλων: „Ἐνθα  
 „ἐκ ἂν ἔφησε Κύριλλος, μὴ σωματικῶς αὐτὸ μορφῶσθαι ἐκ τῷ  
 „σώματος Πατρὸς τε καὶ Υἱῷ, εἰμὴ πισθῶν ὡς αὐτὸ ὅπως ἐν πνεύ-  
 „μα ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱῷ. Ἄλλῃ γὰρ ἂν εἶχεν εἰπεῖν, τὸ μὴ  
 „μορφῶσθαι ἐκ τῷ σώματος τῷ Πατρὸς. Βάλεται τοίνυν Κύριλ-  
 „λος, τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, Πνεῦμα εἶναι Πατρὸς καὶ Υἱῷ, καὶ  
 „ἐξ ἀμφοῖν ἐκπορεύεσθαι· τρόπῳ γε μὴ πνευματικῷ καὶ ἀνερ-  
 „μηνότῳ,, — Ἀλλ' εἶχε δὴπρ Κύριλλος εἰπεῖν: ὅτι τὸ Ἅγιον  
 Πνεῦμα ἔτε ἐκ τῷ σώματος τῷ Υἱῷ εἰς ἄερα διαχεῖται, ἵνα  
 μή τις, δηλονότι, κτίσμα τῷ Υἱῷ εἶναι τὸ Πνεῦμα, ἢ μὴ Πνεῦμα  
 καθ' ἑαυτὸ ὑφεσῶς τοπάσῃ. Ἐντεῦθεν ἀλλ' ἐν, ἐκ τῷ ὡς ψυδὲς  
 ἀποφάσκεισθαι, τὸ εἰς ἄερα τὸ Πνεῦμα παρὰ τῷ Υἱῷ διαχεῖσθαι,  
 ἐχ ἅμα ἔπεται, ὅτι ἄρα ἐκπορεύεται τὸ Ἅγιον Πνεῦμα καὶ ἐκ  
 τῷ Υἱῷ, ὡς ἡδη δέδεικται.

## § ΙΕ'.

(133) Ἐν Πραγμ: ΙΒ'. Ἀπαντ: Β'.

## § ΙΕ'.

Ἐκ τῶν τῆ Οὐρανοφάντορος Βασιλέα.

Ἐκ δὲ τῆ Μεγάλῃ ΒΑΣΙΛΕΪΟΥ ἀντιπροτείνουσι πρῶτον, τὰ ἐκ τῆ Ε'. Βιβλ: τῶν κατὰ Εὐνομίᾳ, ἐν οἷς λέγεται ὁ Πατὴρ ἐκ τῆ σόματος αὐτῆς τὸ Πνεῦμα προβάλλειν. Καὶ πάλιν: τὰ ἐν οἷς διδάσκει, μὴ εἶναι τὸ Πνεῦμα Υἱὸν τῆ Υἱῆς, ἔχ' ὅτι ἐκ ἐκ τῆ Θεῆ διὰ τῆ Υἱῆς. Ἐπειτα καὶ τὰ ἐκ τῆ Λόγῃς τῆ κατὰ Σαβελλιανῶν· ἐν οἷς ὁ μὲν Υἱὸς ἐκ τῆ Πατρὸς λέγεται, τὸ δὲ Πνεῦμα ἐκ τῆ Θεῆ. — Ἀλλὰ ταῦτα ἤδη ἐν τῇ Πραγματείᾳ τῇ περὶ τῶν μαρτυριῶν τῶν Ἀνατολικῶν Πατέρων, περὶ τὰς Βασιλέας ῥήσεις (134) ἅπαντα διαλέλυται.

Ἀντιφέρουσι δ' ἔτι, τὰ ἐκ τῆ Γ'. Βιβλ: τῶν κατ' Εὐνομίᾳ, βραχύ τι μετὰ τὴν καταρχὴν, ἐν οἷς λέγεται τὸ Πνεῦμα τὸ εἶναι ἔχειν ἐκ τῆ Υἱῆς, καὶ ἐξ αὐτῆς λαμβάνειν, καὶ ὅλως ἐξ αὐτῆς ὡς ἐξ αἰτίας ἀπηρτηθῆαι. — Ἀλλὰ γὰρ ταῦτα, ἐν τοῖς τῆ Βασιλέας παρεγκεκέντρισται κακουργότατα. Περὶ ὧν ἐν τῇ Πραγματείᾳ, τῇ περὶ τῶν γενομένων Παραφθορῶν ἐν τοῖς τῶν Ἀνατολικῶν Πατέρων Συγγράμμασιν. (135)

Προτείνουσι δὲ παρὰ ταῦτα καὶ ἐκ τῆ Β'. Βιβλ: τῶν κατ' Εὐνομίᾳ, περὶ τὸ τέλος κἀκείνο, (136) ὅπερ ἐν/εὔθεν ὁ ΒΕ'ΚΚΟΣ, ἐν τῇ Συλλογῇ τῶν ῥήσεων τῶν Ἀγίων περὶ τῆς Ἐκπορεύ: οἷον μαρτυρίαν ὑπάρχει κατέταξεν, ἐπὶ μετώπῃ προσησάμενος ὡς διὰ σκηπτῆς ἀντικρυς τέττε δοκῶν σωτελέσειν τε καὶ ἐξίτηλον θέσθαι τὴν ἐκ τῆ Πατρὸς μόνη, τῆ Πνύματος πρόοδον. Οὕτω καὶ γὰρ ἐκεῖ ΒΑΣΙΛΕΙΟΣ ἐν Τόμῳ Β'. τῶν Συγγραμμάτων, Σελίδι 77. (137) „Ἐκεῖνο δὲ, τίνι τῶν πάντων ἀδηλον, ὅτι „ἐδέμια ἐνέργεια τῆ Υἱῆς ἀποτετμημένη ἐστὶ τῆ Πατρὸς; ἔδ' ἔστι τι „ἐν τοῖς ἑσσι τῷ Υἱῷ ὑπάρχον, ὃ τῆ Πατρὸς ἡλλοτριῶται; Πάν- „τα γὰρ, φησί, τὰ ἐμὰ σὰ ἐστὶ, καὶ τὰ σὰ ἐμὰ. Πῶς ἔν τῆ „Πνύματος τὴν αἰτίαν τῷ Μονογενεῖ μόνῳ προσίθῃσι, καὶ κα- „τηγόρημα τῆς φύσεως αὐτῆς τὴν τέττε λαμβάνει δημιουργίαν; „Εἰ μὲν ἔν δύο ἀρχαῖς ἀντιπαρεξάγων ἀλλήλαις ταῦτα, φησί, „μετὰ

(134) Ἐν Πραγμ: Α'. Ἐκατονταετηρ: Δ'.

(135) Ἐν Πραγμ: Β'. Παραφθορᾶ ΙΒ'.

(136) Ἐπὶ τῆς Βέκκῃ Συλλογῇ, τῆς ὑπὸ Ἀλλατίῃ ἐκδοθείσης ἐν Ῥώμῃ, ἔτει 1659. ἔδοκίμῃ δι' ὅλων τῶν τρισκαίδεκα Ἐπιγράφων, ἐν τοῖς σωσλεγμέναις ῥητοῖς ἅπαν- τῶσαν, τὴν ἐκ τῆς τῆς χωρὶς εὐρίσκομεν Ἐνσασιν. Εὐρίσκομεν δ' ἐν αὐτῇ ἐν τῷ Α'. τῶν τῆς Βέκκῃ Λόγων περὶ τῆς Ἐνώσεως καὶ Εἰρημίας τῶν τῆς Παλαιᾶς καὶ Νέας Ῥώμης Ἐκκλησιῶν, Ἀριθμ: Θ'. ἐν τῷ Α'. Τόμῳ τῆς ὑπὸ Ἀλλατίῃ ἐκδο- θείσης Ὁρθόδοξῃ Γραμμάτῃ ἐν ἔτει 1652. Σελ: 74.

(137) Κατὰ τὴν Γαβριήλ Ἐκδοσιν, Τόμ: Α'. Σελ: 270.  
Τόμ: Β'.

„μετὰ Μανιχαίς ἢ Μαρκιωνος σωτρίσεται. Εἰ δὲ μιᾶς ἐξάπ-  
 „ται τὰ ὄντα, τὸ παρὰ τῷ Υἱῷ γεγενῆσθαι λεγόμενον, πρὸς τὴν  
 „πρώτῃ αἰτίαν τὴν ἀναφορὰν ἔχει. Ὡς καὶ πάντα εἰς τὸ  
 „εἶναι παρήχθαι διὰ τῷ Θεῷ Λόγῳ πισδύμεν· ἀλλὰ τὸ πάντων  
 „αἴτιον εἶναι τὸν Θεὸν τῶν ὅλων ἐκ ἀφαιρέμεθα,,. Ἐνίστανται  
 „ἔν οἱ Λατῖνοι φάσκοντες: ὅτι ἀνεπιγυμένως ταῦτα ὥδε ἔχει τὰ  
 „τῷ Βασιλεῖ ρήματα: „Πῶς τῷ Πνεύματος τὴν αἰτίαν τῷ Μο-  
 „νογενεῖ μόνῳ προσίθῃσιν,,. Οὐκ ἄρα ὁ Υἱὸς μόνος, ἀλλὰ καὶ  
 „ὁ Πατήρ διὸ καὶ ὁ Πατήρ μόνος ὁμοίως, ἀλλὰ καὶ ὁ Υἱὸς  
 „τὸ Ἅγιον Πνεῦμα πρεβάλετο. Προσίθῃσι δὲ ΒΕΛΛΑΡΜΙΝΟΣ  
 „ἐπὶ τῷ ρηθέντος χωρίῳ, ὅτι πάντως „δεικνύς ὁ Μέγας Βασιλεὺς  
 „μὴ μόνον τὸν Υἱὸν αἰτίαν εἶναι τῷ Πνεύματος, ἀλλὰ καὶ τὸν  
 „Πατέρα, τῷ πάντα ὅσα ἔχει ὁ Υἱὸς καὶ τὸν Πατέρα ἔχει  
 „διδάσκει ἅμα, μᾶλλον δ' ὡς ἀναμφήριον προσλαμβάνει, τὸ  
 „αἰτίαν τῷ Πνεύματος, ὡς οἱ Γραικοὶ φασίν, εἶναι τὸν Υἱόν.

Ἄλλ' ἦπερ ἔοικεν, ὡς λίαν λημῶντας γενέσθαι, Βέκκοντε  
 δὴ, (138) καὶ τὸν Πρωτοσύγκελλον Γρηγόριον, (139) καὶ Βελ-  
 λαρμῖνον, (140) καὶ πᾶν τὸ σῖφος Λατίνων τε καὶ τῶν Λατινι-  
 σάντων Γραικῶν τὰς ἀντιβάλλειν ἐλομένους τε καὶ καὶ καὶ προσέτι  
 αἰρεμένους, ταῦτα τὰ τῷ Βασιλεῖ, ὡς ὑπεναντίως ἡμῖν φερό-  
 μενα. Κεῖθω γὰρ δὴ πρῶτον, ἐκείνων τῶν ρημάτων: „Πῶς  
 „τῷ Πνεύματος τὴν αἰτίαν τῷ Μονογενεῖ μόνῳ προσίθῃσι,,: τὸν  
 „νῦν εἶναι τοιόνδε, οἷον αὐτοὶ ἐβέλοντο: „Πῶς μόνῳ τῷ Υἱῷ  
 „τῷ Θεῷ, τὴν αἰτίαν ἀνατίθῃσι τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος,, τῷ Θεῷ  
 „δηλονότι; τὸν ἄρα Εὐνόμιον ἀπελέγεων Βασιλεὺς, τὸν ἐκ τῷ  
 „Υἱῷ μόνῳ παραχθῶναι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐθέλοντα, πρὸ πάντων  
 „δείκνυσιν: ὅτι ἅπερ ἐνεργεῖ ὁ Υἱὸς, ἐνεργεῖ καὶ ὁ Πατήρ καὶ  
 „ἔτι: ἔπερ ὁ Υἱὸς παρήγαγε τὸ Πνεῦμα, καὶ ὁ Πατήρ πάντως  
 „παρήγαγεν αὐτό. Τὸτο ἄρα Βασιλεὺς σημαίνων: „Πῶς ἔν  
 „(φησὶ) τῷ Πνεύματος τὴν αἰτίαν τῷ Υἱῷ μόνῳ προσίθῃσιν,,;  
 „Ἀμέλειτοι: ὅτι κατὰ τὸ Εὐνομίᾳ Φρόνημα ἐπόμενον ὡς, τὸ καὶ  
 „τὸν Πατέρα προσέτι, καὶ μὴ μόνον τὸν Υἱόν, τὸ Πνεῦμα προ-  
 „βαλέσθαι τὸ Ἅγιον. Ἀλλὰ πρόεισιν ὁ Βασιλεὺς: „Εἰ μὲν ἔν  
 „δύο ἀρχαῖς ἀντιπαρεξάγων ἀλλήλαις ταῦτα φησὶν (Εὐνόμιος)  
 „μετὰ Μανιχαίς καὶ Μαρκιωνος σωτρίσεται,,. Ἀλλ' ὁ Βασι-  
 „λεὺς ἀποδεδειχῶς ὡς, ἐκ τῆς Εὐνομίᾳ δόξης ἔπεσθαι τὸ προβ-  
 „ληθῆναι

(138) Ἐν τῷ περὶ τῆς Ἐνώσεως καὶ Εἰρήνης Λόγῳ, ὡς ἀνωτέρω ἡμῖν σεσημ: (136).

(139) Ἐν τῷ πρὸς τὸν Τραπεζέντου Βασιλεύοντα Συγγραμ: Ἀριθμ: ΙΗ' ἐν τῷ Α'.  
 Τόμ: τῆς ἐρημ: Ὁρθοδ: Γραικίας, Σελ: 460. Καὶ ἐν τῇ Ἀπολογίᾳ τῇ εἰς τὸ  
 Μάρκον τῷ Ἐφέσῳ Γραμματίῳ, τῇ ἐκδοθείσῃ μετὰ τὰ Πρακτικά τῆς ἐν Φλω-  
 ρεντ Συνόδου παρὰ Ἀρδεῖνῳ, Τόμ: Θ'. τῶν Συνοδικῶν Στήλη 634.

(140) Ἐν τῷ περὶ τῷ Χριστῷ Βιβλίῳ Β'. Κεφαλ: ΚΕ'.

ληθῶναι τὸ Πνεῦμα ἐκ τε τῆ Πατρὸς καὶ ἐκ τῆ Υἱῆς. Διαβρῆ-  
δω ἄρα διὰ τῶν δε διδάσκει: τὸν ἐκ τῆ Πατρὸς καὶ ἐκ τῆ Υἱῆς  
παραχθῶναι τὸ Πνεῦμα ἀποφαινόμενον, διὸς τὰς τῆ Ἁγίας  
Πνεύματος ἀρχὰς ἕτως εἰσάγειν, καὶ διὰ τῆτο σωάμα τῷ Μαρ-  
κίῳ καὶ τοῖς Μανιχαίοις εἶναι κατάκριτον. "Ελεγεν ἄρα δῆψ  
Βασίλειος: „Πῶς τῆ Πνεύματος τὴν αἰτίαν τῷ Μονογενεῖ μόνῳ  
„προσέθησιν,,. Ἄλλ' ἕτως ἀπῆγεν εἰς τὸ ἀδυνάτον τὸν Αἵρεσιό-  
φρονα· δεικνὺς ἐκ τῆς ἐκείνῃς ἐπεσθαι δόξης, μὴ μόνον τὸν Υἱὸν,  
ἀλλὰ καὶ τὸν Πατέρα αἰτίαν εἶναι τῆ Πνεύματος. "Οπερ, εἰ,  
φησὶν, Εὐνόμιος ὑπεσώαπτε: τρεῖς, εἰ τῆτο λέγοι: ὅτι σὺ  
τῷ Υἱῷ καὶ ὁ Πατὴρ αἰτία ἐστὶ τῆ Πνεύματος: διὸς ἕτως ἂν  
ἀρχὰς παρεισάγων εἴη, καὶ σωτριπτέος ἂν γένοιτο μετὰ τῆ  
Μαρκίῳ.

Πῶς τοίνυν τοῖς Ἀνατολικοῖς τολμῶσιν οἱ Λατῖνοι προσείναι  
ταῦτα, ὧν τοιόνδε τὸν νῦν ἐχόντων, οἷον αὐτὰ ἔχειν Λατῖνοι  
ἐπισομβάζουσι, πᾶσα αὐτῶν ἡ δοξασία διαπίπτει κατὰ κρίσιν; τῆ Βα-  
σιλείῃς, δηλονότι, ἕτω διαβρῆδω διδάσκοντος, ὡς εἴπερ ἄμφω  
ὁ Πατὴρ καὶ ὁ Υἱὸς τὸ Πνεῦμα παρήγαγον, δύο εἰσὶν αἱ ἀρ-  
χαί, καὶ δύο τὰ τῆ Πνεύματος παρεισαγόμενα αἰτία: ὅ, τε τῆτο  
πρεσβύων, Μαρκίῳ τε καὶ τοῖς Μανιχαίοις ἅμα συγκατα-  
κρίνεται.

Ἄλλ' ἂν γὰρ αὐτοὶ ἀσμένως ὁμολογῶμεν, μηδαμῶς ἐνλαῦθα  
παρὰ τῷ Βασιλείῳ τὴν κατὰ Λατίνους κρατῆν διάνοιαν, ἥς ἂν  
κρατῆσης, τοσούτω γε δεῖ, τῆ τὸ ρηθὲν λωβᾶσθαι τῷ κατ' ἡμᾶς  
δόγματι, ὅσω καὶ μάλλον καθαρῆ τε καὶ περιτρεπεί τὸ Λατίνι-  
κὸν φρόνημα. Ἐπαγνοχῶς γὰρ ὡς δηλονότι ὁ Θεοφάνης τὰ  
Εὐνομίῃς ταῦτα: „Εὐρήσει, τῆ μὲν Ἀγεννήτης, τὸν Υἱὸν ποιή-  
„μα· τῆ δὲ Μονογενῆς, τὸν Παράκλητον,,. Καὶ δῆτα τὴν τῆ  
Αἵρεσιάρχῃς ταύτῃς κακοφροσύνῃς ἀνασκυβάσων, τῆ τὸν μὲν  
Υἱὸν ὑπὸ τῆ Πατρὸς, τὸ δὲ Πνεῦμα ὡς κλίσμα ὑπὸ τῆ Υἱῆς  
καὶ αὐτῆς κλίσματος ὑποκτεμένῃς, ποιηθῶναι κατὰ βλασφημιῶ-  
τος ἕτως ὡς ἐπιχειρῶν: Ἐπειδὴ ἐδεμῖα ἐνέργεια ἑτέρα ἐστὶ  
παρὰ τὴν τῆ Πατρὸς, ἀνάγκη πᾶσα, ὅσα ἐδημιουργήσεν ὁ  
Υἱὸς, ἅπαντα καὶ τὸν Πατέρα δεδημιουργημένα αὐτά. Εἴπερ  
ἄρα ὁ Υἱὸς ἐστὶ τὸ Πνεῦμα δημιουργήσας, τὸ Πνεῦμα πάντως  
ἂν εἴη καὶ τῆ Πατρὸς δημιουργημα: καὶ ἕτως ἐκ τῆς Εὐνο-  
μίας δόξης ἂν ἔποιτο ἀναγκαίως, τὸ μὴ μόνον τὸν Υἱὸν κτίσμα  
ὄντα, ἀλλὰ καὶ τὸν Θεὸν καὶ Πατέρα παραγαγέσθαι τὸ Πνεῦ-  
μα τὸ Ἅγιον. „Πῶς ἔν (ὡς ὁ Βασίλειος προσέθησι), τῆ Πνεύ-  
„ματος τὴν αἰτίαν τῷ Μονογενεῖ μόνῳ προσάπτεις,,; Ὅποτε  
δηλονότι ἐκ τῆς σαυτῆς δόξης ἐξ ἀνάγκης ἔπεται, παρὰ τὸν  
Υἱὸν κτιστὸν πεφυκότα, καὶ τὸν Πατέρα ἔτι τὸ Πνεῦμα προεξε-  
P ρρρ 2 νέγκα-



νέγκαθαι; Κάντεϋθεν καὶ προσωτέρω βαίνει Βασίλειος: Ὡς εἶγε ταῦτα φάσκει Εὐνόμιος· εἰ λέγω, μὴ μόνον ὑπὸ τῆς Μονογενὲς κτίσματος, ἀλλὰ καὶ ὑπὸ τῆς Θεῆς καὶ Πατρὸς, παραχθῶναι διδάσκει τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ὡς τῇ ἐκείνῃ δόξῃ ἐστὶν ἐπόμενον· δύο ἤδη Ἀρχὰς τῆς Πνύματος ὑποτίθῃσιν ἀντικειμένους ἀλλήλοις τὸν Θεὸν, δηλονότι, καὶ τὸν Υἱὸν κτίσμα τυγχάνοντα: καὶ διὰ τῆτο λοιπὸν μετὰ Μανιχαίς καὶ Μαρκιωνος σωτηριεσέται. Καὶ αὕτη ἄρα ἡ τῶν τῆς Βασιλείας ῥημάτων διάνοια ἡ γνησιωτάτη ἐστίν. Ἐνθενδε δὲ προέειπεν: ὡς ὡς ἄρα Εὐνόμιος ἐκ μιᾶς αἰτίας προεληλυθέναι ἡγήται πάντα, καὶ τὸ Πνεῦμα, πάντως, (ὅπερ ὑπὸ τῆς Υἱῆς, κτίσματος ὄντος, κλιθῶναι ἔφασκεν) ἐπὶ τῷ πρώτῳ ἐκείνῳ αἰτίαν ἀνάξει καὶ ἔτις ἔχῃ ὑπὸ τῆς κλιθῆντος Υἱῆς κλιθῆν αὐτὸ ἔσαι, ἀλλ' ἐξ αὐτῆς τῆς Θεῆς παραχθέν. Ἐνθεντοι, καὶ περ ἡμεῖς οἱ ὀρθοδοξοῦντες ἅπαντα ὑπὸ τῆς Υἱῆς τῆς Θεῆς δημιουργηθῶναι πιστεύομεν, ἅμα μὲν τοι καὶ πάντα κλιθῶναι ὑπὸ τῆς Πατρὸς καθομολογῶμεν, καὶ ἔτις ἓνα τὸν Θεὸν, τὸν Πατέρα τε καὶ τὸν Υἱόν, δεδημιουργημέναι τὰ πάντα λεγόμεν· ἔχῃ δὲ δύο ἀρχὰς ἀλλήλων διαφερέσας, ἀλλὰ μίαν μόνον τιθέμενοι. Καὶ ταῦτα μὲν ἐν ἐκείνοις Βασιλείας. Πῶς ἔν ἀντιπροσθέντων ἡμῖν οἱ Λατῖνοι τὰ τῆς Βασιλείας ἐκείνα: („Πῶς τῆς Πνύματος τῷ αἰτίαν τῷ Μονογενεῖ μόνῳ προσέθῃσι,;) Βασίλειος γὰρ τὸν Αἰρεσιόφρονα εἰς τὸ ἀδύνατον ἀπάγων ὡς, διὰ τῶν ῥημάτων τῆτων: ὡς περ ἡ διάνοια ὡς αὕτη: „Πῶς Σὺ, τῷ Υἱῷ μόνῳ „κτίσματι πεφυκότι, τῷ αἰτίαν τῆς Ἁγίας Πνύματος ἀπο- „νέμεις,;”

Πῶς δὲ καὶ Βελλαρμίνος ὑπελάμβανεν ἀποδεδειχέναι τὸν Βασίλειον, ὅτι ὁ Πατὴρ καὶ ὁ Υἱὸς ἡ αἰτία εἰσὶ τῆς Ἁγίας Πνύματος, ἐκ τῆς τὸν Πατέρα ἔχῃ πάντα τὰ τῆς Υἱῆς; ὁπότε κατ' ἐκείνῃ μόνον ὁ Θεοφάντωρ ἐπιχειρῶν ὡς τῆς βλασφημίας παρὰ τῆς Υἱῆς μόνῃ κλιθῶναι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον; Ἡ δ' αὕτη κρῖσις ἐπιφερέτω, καὶ περὶ τῆς τοσάκις ἀπομνημονοθέντος Ἰησοῦ: (141) ὅς τις ὡς ἀναμψήρισον ἐκδεχόμενος τῷ ἔννοιαν, ὡς οἱ Λατῖνοι τοῖς τῆς Βασιλείας ῥήμασιν ἐκείνοις εἰσὶ προσάπτοντες, ἐντεϋθεν ἐπισιῶναι προθεῖς ἐπὶ τέτοις: „Ὅτι τελευταῖον, „ἔπερ ὁ Θεὸς ἔτος Ἀρχιερεὺς, ἐκ μόνῃς ἐκπορεύεσθαι τῆς Πατρὸς „τὸ Πνεῦμα φρονῶν ἐτύγχανε, πάντως ἂν ἐν τέτοις τὸ ἴδιον „φρόνημα ἀπεκάλυψε· τῷ γὰρ ὄντι τῆτο, καὶ μάλιστα ἀπῆται „αὐτὸ τὸ ζητούμενον· ἔτω γὰρ ἂν ἐντὶ ῥήματι τῷ Αἰρεσιώτῃ τὸ „σῶμα ἐνέφραξεν, ἔπερ ἐκ τῶν ῥημάτων ἐκείνων: (παρὰ τῆς „Πατρὸς

(141) Κιχώβ: Ζητήμ: 5'. Σελ: 46.

„Πατρὸς ἐκπορεύεται: ) σιωπεράνουν, ὅτι τοσῶτον ἀποδεί τῷ ἐκ  
 „τῷ Υἱῷ μόνον τὸ Πνεῦμα παράγεται, (τῷ ὅπερ ὡς πρεσβύων  
 „Εὐνόμιος) ὥς καὶ μάλλον χρῆται λέγειν, μηδ' ἐκ τῷ Υἱῷ,  
 „μηδὲ διὰ τῷ Υἱῷ, ἀλλ' ἐκ τῷ Πατρὸς μόνον ἀμέσως αὐτὸ προ-  
 „βάλλεται,,. Ἐπεὶ δὲ τῶτο, εἰς ἐνταῦθα ὁ Θεὸς Πατὴρ, εἰς  
 ἄλλα χῶρα ἐποίησεν· εὐδηλον ὅτι, τοσῶτον αὐτὸς τῶν Φωτιανῶν  
 ὡς διαφέρων, ὅσον τὸ ἐκ μόνον τῷ Πατρὸς διαφέρει, τῷ καὶ ἐκ  
 τῷ Πατρὸς ἐκπορεύεται.

Ἀλλὰ μήποτε δὴ Βασιλείῳ τε καὶ Εὐνομίῳ ἢ πρὸς ἀλλήλους  
 διένεξις ὡς: πότερον τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῷ Υἱῷ ἐκπορεύεται,  
 ἢ πότερον ἐκ τῷ Υἱῷ καὶ Θεῷ, τὸ Πνεῦμα Θεὸς προελήλυθεν,  
 ὡς διὰ τῶτο δεῖσθαι τὸν Βασίλειον ἀποδείξαι, μηδαμῶς ἐκ τῷ  
 Υἱῷ μόνον, ἀλλ' ἐκ τῷ Πατρὸς τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκπορεύεται;  
 Πάντως Εὐνόμιος, ἐκ τῷ Υἱῷ κλίσματος ὄντος, τὸ Πνεῦμα κλίσμα  
 ὃν ὑπάρχεν ἐδίδασκε· καὶ κατὰ τῶτα ἄρα, τίς εἰ σιωρᾷ, ὡς  
 ὅτι μάλισα σαφῶς τε καὶ εὐπετῶς ὁ Βασίλειος ὡς ἔτω συλλογι-  
 ζόμενος; Εἶπερ καὶ ἐκ Πατρὸς τῷ Θεῷ, καὶ ἐξ Υἱῷ τῷ κτίσ-  
 ματος, δημιουργηθὲν ὑπῆρχε τὸ Πνεῦμα, διοτι αὐτὸν εἶναι αἱ ἀρχαὶ  
 αἱ τῷ Πνεύματος, καὶ αὐτὰ ὑπεναντίαι ἀλλήλαις. Ἄλλως καὶ  
 γὰρ, τίς αὖν ὁ τῷ ὡς ἐπιχειρεῖν γένοιτο λόγος; ὅτι εἶχε Βασι-  
 λειος τῷ Εὐνομίῳ ταύτῳ δόξαν ἀπελέγξαι, διδάξας: μηδαμῶς  
 μὲν ἐκ τῷ Υἱῷ κτιθῆναι τὸ Πνεῦμα, ἐκ δὲ μόνον τῷ Πατρὸς  
 ἐκπορεύεται· ἐπεὶ δ' εἴναι εἰς ἔως ὡς ἐφοδύσας τὸν ἔλεγχον,  
 εἰ ἄρα εἰς πεπιστωκῶς ὡς, ἐκ τῷ Πατρὸς μόνον τὸ Πνεῦμα το  
 Ἅγιον ἐκπορεύεται; Ἀλλ' ἐντεῦθεν ἄρα καὶ ἡμεῖς δικαίως αὖν  
 ἔτω κατὰ τῷ Ἰησοῦ ἀντιτρέψαιμεν τῷ ἐπιχείρημα. Τίνος χά-  
 ριν, εἰπέμοι: τὸν Αἵρεσιώτῳ ὁ Βασίλειος ἀπελέγξων, τὸν ἐκ  
 τῷ Υἱῷ κτιθὲν τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον βλασφημῶντα, εἰ φρονῶν  
 ἐτύγχανεν αὐτὸ ἐκ τῷ Υἱῷ ἐκπορεύεται, εἰ ἀπώτησεν: ὡς εἰ  
 κτιστὸν ἐστὶν ἐκ τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα, ἀλλ' ἐξ αὐτῷ τῶτα ἐκπορεύ-  
 τόν; Πάντως γὰρ καὶ ἔως, ἐν δυσὶ ρήμασιν ὁμοίως τῆς  
 τῷ Αἵρεσιόφρονος ἑαυτὸν βλασφημίας ἀπήλλαξεν αὐτὸν. Τίς εἴναι  
 εἰς ὁρᾷ καὶ ταύτης τῆς τῷ Ἰησοῦ ἀνθυποφορᾶς τὸ φρεῖδον  
 καὶ μάταιον;

Ἀντιφέρουσιν ἔπειτα καὶ ἐκ τῷ Ε'. τῶν κατ' Εὐνομίῳ Βιβ-  
 λίων, ἐν Κεφ: ΙΑ'. Τόμ: Β'. τῶν Συγγραμ: Σελ: 120. (142)  
 „Θεὸς μὲν Λόγος ὁ Υἱός, Ῥῆμα δὲ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα,,. Ἄλλα μὲν  
 (Φασιν) ὁ Υἱός ἐστὶν ὁ τῷ Πατρὸς Λόγος, ὅτι ἐξ αὐτῷ ἐστὶ γεν-  
 νητός. Ἄρα καὶ τὸ Πνεῦμα, τὸ τῷ Υἱῷ ἐστὶ Ῥῆμα, ὅτι ἐξ αὐτῷ  
 ἐκπορεύτόν.

Ὅτι

(142) Κατὰ τῷ Γαβριήλ Ἐκδοσιν ἐν Τόμ: Α'. Σελ: 304.  
 Τόμ: Β'. Σ σσς

Ὅτι μὲν ἔν ὁ τῷ Θεῷ Υἱὸς ὀνομάζεται Λόγος, ὡς ἐκ τῆ Πατρὸς γεννητὸς, αὐτὸς διδάσκων ἐς ΒΑΣΙΛΕΙΟΣ, ἐν Ὁμιλ: τῇ περὶ τὰ Ἰωάννη ἐκείνα: „Ἐν ἀρχῇ ὡς ὁ Λόγος, „ Ἐν τῷ Α'. Τόμ: τῶν Συγγραμ: Σελ: 506. (143) „Διατὶ Λόγος; (κα- „λεῖται ὁ Υἱός) ἵνα δειχθῇ, ὅτι ἐκ τῆ Νῆ προήλθε, „ Καὶ ΑΥΤΟΤΣΗΝΟΣ δὲ ἐν Ὁμιλ: ρή. περὶ τῆ Χρόν, ἐν Τόμ: Γ'. τῶν Συγγραμμάτων: „Ὁ τῷ Θεῷ Υἱὸς καλεῖται Λόγος, ὅτι „αἰ ἐν τῷ Πατρὶ καὶ ἐκ τῆ Πατρός καὶ ἔδεν ὁ Πατὴρ ἄνευ „αὐτῆ προσέταξεν, ἢ ἐποίησε, „ Καὶ ΚΥΡΙΑΛΟΣ ὁ Ἀλεξανδ- ρείας, ἐν Βιβλ: Α'. τῶν εἰς τὸν Ἰωάννη, Κεφαλ: Ε'. ἐν τῷ Δ'. Τόμ: τῶν Συγγραμ: Σελ: 46. „Λόγος μὲν γάρ, καὶ σο- „φία, διὰ τὸ ἐκ Νῆ, καὶ ἐν Νῷ προσεχῶς καὶ ἀδιασάτως, „ Ἔσιν ἀμέλεια ὁ Υἱός, ἔχῃ λόγος προφορικὸς, ἀλλ' ἐνδιάθετος. „Ὁν δὴ περὶ τρόπον καὶ ἡμῖν διανοσμένοις ἐννοιά τις τῆ νοητῆ συλλαμβάνεται, ἢ τῆς ψυχῆς, ἢ τῆ Νῆ λόγος προσαγορεύεται. Οὕτω καὶ γὰρ ὁ προαιώνιος Πατὴρ πῶς ἑαυτῆ εἶσαν κατανοῶν καὶ καταλαμβάνων, Λόγον προαῶγε τὸν αἰώνιον.

Ὁ μὲν τοι ΒΑΣΙΛΕΙΟΣ, ἔχῃ ΛΟΓΟΝ τῷ Υἱῷ προσέειπε τὸ Πνεῦμα, ἀλλὰ ΡΗΜΑ: ὡς τὸ κατὰ Λατίνους μὲν Verbum ἀντιστοιχεῖ, ἐς δὲ διαφέρουσι: Οἱ μὲν ἔν Λατίνων Πατέρες, μεταξὺ τῆ ΛΟΓΟΥ καὶ τῆ ΡΗΜΑΤΟΣ ἔ διεσείλαν· δεῖσαν δὲ τὸν Υἱὸν ὀνομάσαι ΛΟΓΟΝ, τὰ πλεῖστα, Verbum, (ὅπερ ἐς ΡΗΜΑ (144) ἐκάλεσαν. Ἀλλ' ἔχῃ καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα Verbum

(143) Κατὰ τὴν Γαβριήλ Ἐκδοσιν ἐν Τόμ: Β'. Σελ: 136.

(144) Τινὲς ἀλλ' ἔν τῶν Λατίνων τῇ Φωνῇ Sermo προσεχρήσαντο τὸν ΛΟΓΟΝ ἑρμηνεύ- σοντες ἐν οἷς καὶ Ἐρασμος ὁ Ρότερδάμιος, ἐν ταῖς εἰς τὸ Ἰωάννη Εὐαγγέλιον αὐτῆ Σημειώσεσιν ὡς καὶ θαυμάζειν ἔπεισιν, ὅτι τὴν Φωνὴν Verbum, τῆς Φωνῆς Sermo οἱ Λατῖνοι προσέλοντο καὶ κατὰ τῶν διαβαλλόντων τὴν αὐτῆ Ἑρμηνείαν, πολλὰς ἐπάγει τῶν Δυτικῶν Πατέρων (οἷον Κυπριανόν, καὶ Αὐγυστίνον, καὶ Ἰλαρίον, καὶ Ἀμβρόσιον, καὶ Ἰερώνυμον, καὶ Λακτάντιον) καὶ τινὰς δὲ καὶ τῶν Νεωτέρων, τῆς Sermone τὸν ΛΟΓΟΝ εἰπόντας, ἀντὶ τῆ Verbum εἰπεῖν ἔ μόνον δὲ, ἀλλὰ καὶ τὴν Φωνὴν Sermo: rectius et aptius: (ὀρθότερόν τε καὶ οἰκειότερον) ἢ τὴν Verbum, παρὶς διαιτείνεται τὴν τῆ ΛΟΓΟΥ ὑπέσασιν τὸ γὰρ τοι Verbum, „λέξιν, τινὰ, ἢ „ῥῆσιν παροιμιώδη σιώτομον ἔχ ὅλον δὲ, Φησὶ, τὸν λόγον, αὐ- τοτελῶς δηλοῖ ὁ δὲ τῷ Θεῷ Υἱὸς ἔρεται ΛΟΓΟΣ, ὅτι πάντα ὅσα λέγει ὁ Πα- τὴρ, διὰ τῆ Υἱῆ φέγγεται ὁ δὲ τοι Κλέρικος ἐν ταῖς ἰδίαις αὐτῆ Παρασημειώ- σεσι, καὶ τι ἄμεινον ἔτι προσέθετο: ὅτι ΛΟΓΟΣ, vox est magis gravior sensibus quam nostra; sive verbum, sive sermonem dicas: ἐμφαντικώτερον ἀμέλεια τὴν Φωνὴν ΛΟΓΟΣ, εἰδὼς, τῆς Λατινικῆς, εἴτε verbum εἴποις, εἴτε sermonem. Καὶ γὰρ ἢ sermo λέξις, καὶ „λόγον, „ Φησὶ, τὸν ἐνδιάθετον, σημαίνει, καὶ τὴν „ἐννοίαν, καὶ τὸν „ῥῆσιν, ταῦτέσι τὸν ὀρισμόν. Ὅντως γὰρ ὁ τῷ Θεῷ Υἱὸς, καὶ ὡς ὁ ἐν- διάθετος λόγος τὴν ψυχῇ, ἐκφέρει τὸν Πατέρα καὶ ὡς ἢ ἐννοία ὑπὸ τῆ ἀγεν- νῆς Νῆ ἀπαθῶς γεννᾶται καὶ ὡς ὁ ἑρμηνευτικὸς λόγος τῆς τῆ ὀριζῆ φύσεως, τὸν ὑπὲρ νῆν ὄντα καὶ κατάληψιν Θεὸν χαρακτηρίζει τε καὶ παρίσθην. Ἀλλὰ καὶ τῶν Ἑλληνικῶν ὀνομάτων, „λόγος, τε καὶ „ῥήματος, ἀλλήλοις παραβαλλομέ- νων, ὁ ΛΟΓΟΣ, ἢ τὸ ΡΗΜΑ, εἰς δήλωσιν τῆς Μονογενῆς ἔδοξε προσφερέτερος, καὶ εἰς ἐκφάνσιν τῆ νοεμένης οἰκειότερόν τε ἔχων καὶ προσφύετον. Τέτο δὲ μά- λιστα,

Verbum ὠνόμασαν τῷ Τίῳ· ὡς μὴδὲ προσλυμαίνεσθαι τι τὸ πα-  
ράπαν ἡμῖν ἐπὶ τῷ παρόντος, τὴν ἐκ τῶν Λατίνων Πατέρων  
κατάθεσιν. Καὶ γὰρ δὴ καὶ πολλάκις τὰ Ἑλληνικὰ τῶν ὀνο-  
μάτων ἐκ ὁρθῶς τοῖς Λατίνοις νενόηται, ἢ μεθηρμυώδεται· ὡς  
δῆλον καὶ ἐκ τῆς Φωνῆς τῆς ὙΠΟΣΤΑΣΕΩΣ· τὴν γὰρ ΟὐΤΣΙ'ΑΝ  
δὲ αὐτῆς δηλοῦναι τοπάζοντες· καὶ τὸ τρεῖς substantias, ἤτοι  
τρεῖς ὑσίας, ἐπὶ Θεῷ συγχωρεῖν ὡς εἰκὸς ὑποφρίττοντες, ἐδὲ  
ὑποστάσεις τρεῖς, (τὰς ἄλλως παρ' αὐτοῖς substantias) ἤξιον  
ὁμολογεῖν. „Ῥῆμα,, δὲ τῷ Τίῳ τὸ Πνεῦμα εἴρηται, καθ' ὃν ὁ  
Χριστὸς ἔφη λόγον: „Τὰ ῥήματα ἃ ἐγὼ λαλῶ, Πνεῦμα καὶ ζωὴ  
„ἐστίν,,. Ἐνθα πάντως νοεῖται πρὸς τὰ ἐκτὸς τὸν Τίον τῷ Θεῷ  
ταῦτα λαλεῖν· τῆς τοῖς ἀνθρώποις. Καὶ ὡσαύτως ἄρα, καθ' ὃ  
μόνον ἡμῖν φθέγγεται ὁ τῷ Θεῷ Τίος· ἠκιστα δὲ τῷ λόγῳ τῆς  
ἀπ' αἰῶνος Ἐκπορεύσεως, τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, τῷ Τίῳ „Ῥῆμα,,  
προσείρηται.

Ἀντιτίθῃσι δέ τις (144) ἔτι κακεῖνα, ἐκ τῷ Βιβλ: τῷ περὶ  
τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος πρὸς Ἀμφιλόχιον, Κεφ. 11. Φύλ: 331.  
(146) „Ὡς τοίνυν ἔχει ὁ Τίος πρὸς τὸν Πατέρα, ἔτω πρὸς  
τὸν Τίον τὸ Πνεῦμα, κατὰ τὴν ἐν τῷ Βαπτίσματι παραδεδο-  
μένῳ τῷ λόγῳ σώταξιν,,. — Ἀλλὰ καὶ αὐτὰ καθ' ἑαυτὰ τὰ  
ῥήματα ταῦτα, ἐμφαίνει τὴν τῷ Βασιλεῖ διανοιαν εἶναι, ὅτι ὃν  
τρόπον ὁ Τίος σωάπτεται τῷ Πατρὶ ἐν μιᾷ καὶ τῇ αὐτῇ Θεῇ  
Φύσει, ἴσως τε αὐτῷ καὶ κατὰ πάντα ὁμοῦσιος ὢν, ἔτως ὁμοίως  
σωάπτεται καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον τῷ Τίῳ, κατὰ μίαν τε καὶ  
τὴν αὐτὴν Θεῇ φύσιν, ἴσων τε αὐτῷ κατὰ πάντα καὶ ὁμοῦσιον  
ὢν. Σαφὲς δὲ τῷτο, καὶ ἐξ ὧν ἐπικατασκευάζων τὸ εἰρημένον:  
„Ὡς ἔχει ὁ Τίος πρὸς τὸν Πατέρα, ἔτω πρὸς τὸν Τίον τὸ  
Πνεῦμα,,: ἐπὶ τὴν τάξιν προκαλεῖται, ὡς ὁ Τίος παρέδωκεν  
ἐπὶ τῷ Βαπτίσματος. Ἀλλ' ὡς ἐνλαῦθα τὰ ῥήματα: „εἰς τὸ ὀνο-  
μα τῷ Πατρὶ, καὶ τῷ Τίῳ, καὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι,,. Ἐν οἷς  
πάντως, ἢ μία τε καὶ ἡ αὐτὴ ἀδιάκριτος Θεότης τέτων ἐμφαίνεται·  
ἐχ

λιστα, (ὡς ὁ Καμέρων φησὶν ἐν τοῖς ἰδίοις Σημειώμασι, τοῖς εἰς τὸ Α'. Κεφάλ: τῷ  
Ἰωάννῃ) quod ΛΟΓΟΣ etiam ad mentem et voluntatem refertur Lingua Graeca;  
Ῥῆμα πνευματι. (Ὅτι ὁ μὲν ΛΟΓΟΣ, καὶ πρὸς τὸν Νῆν καὶ τὴν Θέλησιν  
ἀναφέρεται Ἑλλάδι Φωνῇ· τὸ δὲ Ῥῆμα ἐδέποτε.) Διὸ, κακεῖνος μὲν, ἐνεργείας  
ἐστὶν ἐμμένει δηλωτικὸς· οἷα περ ἐν τοῖς Θεοῖς, ἢ καθ' ὡς τὸν Μονογενῆ Λόγον κατ'  
διὰ τῷ Πατρὶ ἐξηρῶξατο ἀπ' αἰῶνος· τῷτο δὲ, ἤτοι τὸ „ῥῆμα,, ἐνεργείας ἐστὶ  
μεταβιβάζει ἐπὶ τὰ ἐκτὸς· καθ' ὡς ἄριστα καὶ ὁ ἡμέτερος ὡς Ζοιρηνικάβιος  
ἐπιβάλλων, „Ῥῆμα,, τῷ Τίῳ, φησὶ, καὶ τὸ Πνεῦμα λέλεκται πρὸς τῷ Θεοφάντορος  
Βασιλεῖ· καθ' ὃ πρὸς τὰ ἐκτὸς ὁ Τίος τῷ Θεῷ λαλεῖ, ἀποφθεγγόμενος ἡμῖν διὰ  
τῆς Φωτρυγικῆς λαλιᾶς, δηλονότι, τῷ Πνεύματι· ἠκιστα δὲ κατὰ τὴν ἀπ' αἰῶνος  
τῷ Πνεύματι ὑποστατικῶς Πέσοδον, τὴν διὰ τῆς Ἐκπορεύσεως.

(145) Κιχάβ: ἐνθα εἴρηται ἀνωτέρω.

(146) Κατὰ τὴν Γαρινήν· Ἐκδοσιν ἐν τῷ Γ'. Τόμῳ, Σελ: 36. Ἀριθμεῖται δὲ Κεφ: 12'.



ἔχ' ὅτι δὲ, ὥσπερ ἐκ τῆ Πατρὸς ὁ Υἱὸς γεννᾶται, ἔτω, καθ' ἅ-  
περ διὰ τινων βαθμῶν, καὶ ἐκ τῆς Υἱᾶς τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον  
ἐκπορεύεται.

Ὁ δ' αὐτὸς (147) καὶ κεῖνα προστίθῃσι, τὰ ἐκ τῆς ΙΖ'. Ὁμιλ:  
κατὰ Σαβελλίε, Τόμ: Α'. Φύλ: 523. (148) „Ὡς ὁ Πατὴρ δο-  
„ξάζει τὸν Υἱόν: . . . ἔτω καὶ ὁ Υἱὸς τὸ Πνεῦμα εἰς τὴν ἑαυτῆς  
„καὶ τῆ Πατρὸς κοινωνίαν παραλαμβάνει,,. Ἐπισυνάπτει δὲ ὁ  
Ἰησοῦς φάσκων: „Ὅτι τὰ ῥήματα ταῦτα, τὴν τῆς Ἁγίας  
„Πνεύματος παρακτικὴν δυνάμιν τῷ Υἱῷ σαφέςατα προσανάπτει.  
„Πῶς γὰρ ἄλλως, εἰ μὴ κατὰ τὸν τῆς Ἀρχῆς λόγον, ἔχοι ἂν  
„τὸ Πνεῦμα εἰς τὴν τῆς Πατρὸς καὶ τῆς Υἱᾶς κοινωνίαν παραλαμ-  
„βάνεσθαι,,; — Ἀλλ' ἔχ' ἔτος ὁ τῆς Βασιλείας ἐστὶ νῦν, ὡς ἔπερ  
ὁ Υἱὸς δῆθεν τῷ Πνεύματι, τὸ εἰς κοινωνίαν εἶναι τῆς Πατρὸς τε  
καὶ τῆς Υἱᾶς, παρέχε· μᾶλλον γὰρ ἐκ τῆς Πατρὸς ὁ Υἱὸς ἐστὶν  
ἔχων τὸ ἐν κοινωνίᾳ εἶναι Πατρὸς τε καὶ Πνεύματος, ἢ ἐκ τῆς  
Υἱᾶς ὁ Πατὴρ, ἢ ἐν κοινωνίᾳ τῇ τέττα τὸ Πνεῦμα ἦ. Ἐστὶ δ'  
ἐννοῶν ἐπὶ τῶν εἰρημένων Βασιλείας: ὅτι, ὥσπερ ὁ Πατὴρ δο-  
ξάζει τὸν Υἱόν, ἔτω καὶ ὁ Υἱὸς ἐδόξασε τὸ Πνεῦμα, ὡς διδάξας  
ἐπίσης καὶ αὐτὸ εἶναι τῆς τε τῆς Πατρὸς, καὶ τῆς ἑαυτῆς δόξης  
μέτοχον. Τῆτο γὰρ ἐστὶ τῷ Βασιλείῳ, τὸ παραλαμβάνειν τὸν Υἱόν  
τὸ Πνεῦμα εἰς τὴν ἑαυτῆς καὶ τὴν τῆς Πατρὸς κοινωνίαν: ἄτε,  
δηλονότι, διδάξαντα κοινωνεῖν αὐτὸ ἀμφοτέροις, καὶ ἀμφοῖν ἐν  
τῇ παραδόσει τῆς τῆς Βαπτίσματος τελεσιουργίας σιμώσαντα, τῇ  
εἰς τὸ ὄνομα τῆς Πατρὸς καὶ τῆς Υἱᾶς καὶ τῆς Ἁγίας Πνεύματος.  
Καὶ ἐκ ἄρα τῷ λόγῳ τῆς Ἀρχῆς, τῷ δὲ τῆς διδασκαλίας  
μόνον, ταῦτα νοητέον εἰρηθῆαι τὰ τῆς Θεοφάντορος ῥήματα.

Ἀλλ' ἐκ τῆς Α'. Βιβλ: τῶν περὶ τῆς Ἁγίας Πνεύματος, Κεφ:  
ΙΖ'. ἐν Τόμ: Β'. Φύλ: 190. (149) „Καὶ ὡς Παράκλητος δὲ  
„(τὸ Ἅγιον Πνεῦμα) ἐν ἑαυτῷ χαρακτηρίζει τῆς ἀποδείξεως  
„αὐτὸν Παράκλητον τὴν ἀγαθότητα, καὶ ἐν τῷ ἑαυτῆς ἀξιωματι  
„τὴν μεγαλωσύνην ἐμφαίνει τὴν τῆς ὁδὸς προῆλθεν,,. — Ἀλλὰ  
πῶς γὰρ ὥδε τὸ Πνεῦμα ἐκ τῆς Υἱᾶς ἐκπορεύεσθαι λέγεται; Μὴ  
γὰρ ἐπάναγκες τὸν Υἱόν ἐννοεῖν, ἐν ᾧ λέγει: „Ὅθεν προῆλθε τὸ  
„Πνεῦμα τὸ Ἅγιον,,; Ὡς γὰρ Διὰν ἄραρε τὰ τελευτάα ταῦτα  
περὶ τῆς Πατρὸς ἐφερμιωδόμενα ὥς τὸν νῦν εἶναι τῆς τῆς Βα-  
σιλείας ῥήσεως, ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα χαρακτηρίζει μὲν τὴν ἀγα-  
θότητα τῆς Υἱᾶς ἐξ ἧς ἀπενάλη, ἐμφαίνει δὲ τὴν μεγαλωσύνην  
τῆς

(147) Κιχάβ: Ζητήμ: 5. Σελ: 45.

(148) Κατὰ τὴν Γαλιναίαν Ἐκδοσιν, ἐν Τόμ: Β'. Σελ: 196. Ἀριθμεῖται δὲ, Ὁμιλ: ΚΖ

(149) Ἡ χρῆσις αὕτη εἰληπται ἐκ τῆς περὶ τῆς Ἁγίας Πνεύματος Βιβλ: τῆς πρὸς Ἄμ.  
Φιλόχιον, Κεφαλ: ΙΗ'. κατὰ τὴν τῆς Γαλιναίαν Ἐκδοσιν, ἐν Τόμ: Γ'. Σελ: 39.



τῷ Πατρὶ ἐξ ἑκπορεύεται. Τί δ' ὅτι καὶ Ἑλλωισί καὶ ταῖς ἡδὲν προήλθεν,; (150) ὅπερ αὐτοῖς, ἔδεν ὡς τὸ ἐπεῖγον, ὡς περὶ τῆς αἰωνίης Προόδου τῷ Πνεύματος εἰρημένον ἐκδέξαται.

ὑποβάλλει δέ τις (151) καὶ κεῖνα, ἐκ τῷ περὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος Βιβλίῳ Κεφαλῇ: ΙΗ'. Φύλ: 334. (152) „Ἡ φυσικὴ ἀγαθότης, καὶ ὁ κατὰ φύσιν ἀγιασμός, καὶ τὸ βασιλικὸν ἀξίωμα, ἐκ Πατρὸς διὰ τῷ Μονογενῆς ἐπὶ τὸ Πνεῦμα διήκει... Οἷς καὶ προσέθησιν: „Ἰδὲ ὅπως ὁμολογεῖ σαφῶς, καὶ πρὸς τὰ ἐντὸς ἐστὶ, πηγὴν τὸν Υἱὸν εἶναι τῷ Πνεύματος ἐν οἷς φησὶ τῷ φυσικῷ ἀγαθότητι, καὶ τὸν κατὰ φύσιν ἀγιασμόν τὸν ἐν τῷ Πνεύματι, προεβλύσαν ἐκ τῷ Πατρὶ διὰ τῷ Υἱῷ,; — Ἀλλὰ τὸτο ταῦτον ἐστὶν, ὡς εἶπερ ἔφησε, τὸ Πνεῦμα ἐκ τῷ Πατρὶ διὰ τῷ Υἱῷ ἐκπορεύεται. τὸ δὲ, ὡς δῆκε, (καθ' ὃν νῦν ἐστὶ λεγόμενον) ἔτι γε κατ' ἀκολουθίαν εἰσβάλλειν δίδωσιν, ὅτι πρὸς τὰ ἐντὸς ὁ Υἱὸς ἢ πηγὴ τυγχάνει ἢ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος, κατ' ἀρχὰς αὐτοῦ τῆς ἐν χειρὶ Πραγματείας σωεωράκαμεν. Ἀμέλαιοι, τὸ ἐκ τῆς νοούμενον ἐστὶν, ὅτι τῷ Υἱῷ γεννηθέντος, ἐκπορεύεται τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῷ Πατρί. Τῷ ἄρα λόγῳ τῆς τάξεως τῆς ἐν τῇ Προόδῳ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος παραπλησίως, ὑποδεικνύς ὡς Βασίλειος ἐκδιδάσκει: ἐκ τῷ Πατρί, διὰ τῷ Υἱῷ, ἐπὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα διήκειν τῷ φυσικῷ ἀγαθότητι, καὶ τὸν κατὰ φύσιν ἀγιασμόν, καὶ τὸ βασιλικὸν ἀξίωμα.

Τελούτατον ἀντιπροβάλλουσιν ἐκ τῆς ΙΖ'. Ομιλ: τῆς εἰς τὸ Ἁγ: Βάπτισμα, Τόμῳ Α'. τῶν Συγγραμ: Σελίδι 571. (153) „Ἐνα μὲν ἐν Πατέρα, ἕνα δὲ Υἱόν, ἐν δὲ καὶ Πνεῦμα κατὰ τῷ Θεῷ παράδοσιν ὁμολογητέον καὶ ἔτε δύο Πατέρας, ἔτε δύο Υἱούς. Διόπερ τὸ Πνεῦμα Υἱὸς ἐκ ἐστὶν, ἔτε ὀνομάζεται. „ἔ γάρ

(150) Παρατηρῆσαι δ' ἄν τις ἔχοι ἐπισαμένως ὡς, ὅτι Ἑλλωισί ἀναγινώσκεται: „ἔδεν προήλθεν, ἔ μόνον τῷ τῷ („προήλθεν,;) ῥήματος χεῖρα προσέχων. (Καὶ γὰρ καὶ ὁ Λατῖνος prodijt ἡμελιώδην ἰσοδιώμας: ἐχὶ processit δι' ἑῖς ἰδιαιτέρον τὸ „ἐκπορεύεται, ἐκφέρειν εἰσάγειν) ἀλλὰ καὶ ὑποφωμένως, ὅτι εἰς γε, τὸ ἐν τῷ ἀμφιβολογίᾳ ὑπελόν τῆς Λατινικῆς Ἑμελιώσεως, καθ' ὃν ἐκπέφρασαι: ἐχὶ, unde prodijt (κατὰ τὸ κείμενον: „ἔδεν προήλθεν,;) ἀλλὰ κατὰ τὸ: a quo missus... ei a quo prodijt: ὅπερ ἐστὶν: „ἐξ ἑῖς ἀπεσάλη... καὶ ἐξ ἑῖς προήλθεν,; ὅπερ δὴ τυχόν ὁ διεμελιώδης ἔτος ἐπίτηδες ἐξεφράσατο, ὑποκλέπων τῇ ταύτολη τῆς λέξεως, τῷ τῷ Προσώπῳ ταυτότητι.

(151) Κιχάβιος Ζητήμ Α'. Σελ: 2.

(152) Κατὰ τῷ Γαργίῳ Ἐκδοσιν, ὁμοίως ἀνταῦθα ὡς εἴρηται μικρὸν ἀνωτ: ἐν Σημειώσε (149).

(153) Ομιλίαν ΙΖ': περὶ τῷ Βαπτίσματος, καθάπερ ἐνταῦθα Ζοιρνικάβ: ἐπιγράφει ταῦτον καὶ Νικόλαος ὁ Κιχάβιος, ἐν τῷ κατ' αὐτὸν Βήματι, Ζητήμ: 5' Σελ: 48.) τῷ δ' ἐξ αὐτῆς χεῖρα εἰς Φύλ: 440. τίθησιν. Ἀλλ' ἐπὶ τῆς κατὰ Γαργίον Ἐκδόσε: ἢ Ομιλ: ἐπιγεγραμμένη φέρεται, περὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος. Κατὰ δὲ ἐν τῷ Προσαρτήματι τῷ Β'. Τόμῳ τῶν κατὰ τῷ ῥηθείσαν Ἐκδοσιν τῷ Βασιλείῳ Συγγράμ: Σελ: 385.

Τόμ: Β'.

„ὅ γὰρ παρὰ τῷ Πνεύματος τινὰ λαμβάνομεν, ὥσπερ παρὰ τῷ  
 „Τίῳ τὸ Πνεῦμα. Ἀλλ' αὐτὸ προσιὸν ἡμῖν, καὶ ἀγιάζον, ὑποδε-  
 „χόμεθα, Θεότητος κοινωνίαν, καὶ Τιότητος μετεσσίαν, καὶ τῆς  
 „αἰωνίης κληρονομίας ἀρραβῶνα, καὶ τῶν μελλόντων ἀγαθῶν  
 „ἀπαρχήν. Ἐνίστανται τοιγαρὲν: ὅτι Βασιλεὺς ἀπόφησιν ἐν-  
 ταῦθα τὸ, τὸ Ἅγιον Πνεῦμα λαμβάνειν παρὰ τῷ Τίῳ, ὥσπερ  
 ἡμεῖς λαμβάνομεν παρὰ τῷ Πνεύματος. Ἀλλὰ παρὰ τῷ Ἁγίῳ  
 Πνεύματος ἡμεῖς λαμβάνομεν κτιστάτινα. Οὐκ ἄρα κτιστὸν,  
 Θεὸν δέ τι λαμβάνει τὸ Ἅγιον Πνεῦμα παρὰ τῷ Τίῳ. Ὅ, τι  
 γὰρ ἐστίν, ἢ κτιστὸν τι, ἢ Θεὸν αὐτὸ ἐστίν. Εἰ δέ τι Θεὸν λαμ-  
 βάνει τὸ Πνεῦμα παρὰ τῷ Τίῳ, λαμβάνει δὴ πᾶ καὶ τὴν ἐστίαν  
 καὶ ἔτι δὴ τὸ Πνεῦμα καὶ ἐκ τῷ Τίῳ ἐκπορεύεται. — Τότε  
 μὲν ἔν, ὡς ἐπίσημόν τινα ὑπὲρ συστάσεως τῷ Λατίνικῳ Δόγματι  
 μαρτυρίαν πρὸ χειρὶς ἐκτελεστο ἐν Φλωρεντίᾳ καὶ ὁ Προβινγκιάλις ἸΩ-  
 ΑΝΝΗΣ, ἐν Σμελῶσει ΚΑ'. τῆς ἐκεί Σωόδα. Διὸ δὴ, καὶ πολ-  
 λή τις παρεξετέμετο ἐκείσε, ἢ περὶ τὴν ῥῆσιν ταύτῃ τῷ Βασι-  
 λέϊ Διάλεξις.

Ἀλλὰ πρῶτον, καὶ τῷτον ὁμολογηθὲν γενέσθαι τῷ Βασιλείῳ  
 τὸν νῦν: ὡς ὁ λαμβάνομεν αὐτοὶ τινὰ παρὰ τῷ Πνεύματος, ὡς  
 τὸ Πνεῦμα λαμβάνει παρὰ τῷ Τίῳ. ἔδεν ἔτι ὁ ἐκ τῆς κατὰ  
 τῆς Καθολικῆς κρατῆ Πίστεως. Ὅπως μὲν ἔν τὸ Πνεῦμα λέ-  
 γεται παρὰ τῷ Τίῳ λαμβάνειν, ἐν ἰδιαιτέρᾳ τῇ περὶ τῆς ἡμῖν  
 ἀποδέδεικται Πραγματείᾳ. (154) Διὰ γὰρ τὴν τῆς ἐστίης δηλο-  
 νότι ἐνότητά, λαμβάνειν εἴρηται παρὰ τῷ Τίῳ, ὥσπερ ἡμῖν ἀπο-  
 κάλυπται τὸ Πνεῦμα, ἢ γὰρ χαρίζεται. Οὐ γὰρ δὴ τὸ ἐσιῶδες  
 αὐτῆς τῆς Θεότητος: ἦτοι ἐκ αὐτῇ τὴν ἐστίαν ἐκ τῷ Τίῳ λαμ-  
 βάνει, τὰ δέ τοι χαρίσματα τῆς ἐπιστήμης, τῆς ἀγαθότητος,  
 τῆς σοφίας, (155) ἢ δὴ πᾶθεν ἐστὶ κτιστὰ, καὶ ἐκ ἀκτίης.

Ἐρεῖς:

(154) Πραγματ: ΙΒ' Απάντ: Α'.

(155) Πᾶς ταῦτα κτιστὰ; ἢ ὡς ἡμῖν ἐν χρόνῳ ἐπιχορηγούμενα, διὰ τῆς τῷ Πνεύματος  
 κοινωνίας τε καὶ μεταλήψεως, ἐν μέτρῳ τῆς, ἥς περ' ἂν ἄξιοι γεινοίμεθα χάριτος,  
 ἐλλαμπομένοις τε καὶ δωαμένοις. Ταῦτα δ' ἐστὶ τὰ ἔργα εἴτ' ἐν τα ἀποτε-  
 λήματα, τὰ διὰ τῆς χάριτος ἐπιδοφυλάττομενα: οἷον ἡ γνώσις, ὁ ἀγιασμός, ἡ  
 καθάρσις, ἡ τῶν σημείων ἐκτέλεσις, ἡ διαφορῶν γλωσσῶν μεταχείρησις: καὶ ἄλλοι  
 ἔδεις ἐν τοῖς ἀκτίσις ποτὲ τάξει καὶ τοῖς ὑπερφύσειν. ἦτοι τοῖς ὑπὲρ τὴν  
 ἀνθρώπινον φύσιν τελευτήτοις σωμαριζόμενα. Ταῦτα δὲ νοητέον, καὶ περὶ ὧν ἐν  
 τῷ προτεθέντι χωρίῳ καταλέγει ὁ Μέγας Βασιλεὺς. Ἐκδεκτέον καὶ γὰρ τὴν  
 μὲν τῆς Θεότητος κοινωνίαν, καὶ τῆς Τιότητος τὴν μετεσσίαν, καθὸ Θεοὶ τε καὶ  
 Τίοι Θεοὶ θέσει, καὶ ὁ φύσει, ἀναδεικνύμεθα: τὸν δὲ τῆς αἰωνίης κληρονομίας ἀρρα-  
 βῶνα, καὶ τὴν τῶν μελλόντων ἀγαθῶν ἀπαρχήν, τὴν διὰ πίστεως καὶ ἐλπίδος  
 ἐνταύτομένῃ ἡμῖν τῷ Θεῷ ἀγάπῃ ἐκληπτέον, μεθ' ἧς, καὶ τῷ τῇδε βίῳ, ἐν  
 ἀρρήτῳ τινὶ ἀγαθιάσει διάγομεν, τὰ περδόμενά τε καὶ ἐλπίζόμενα ἀγαθὰ προσ-  
 δοκῶντες καὶ ἀπεκδεχόμενοι, ἃ ὁ Θεὸς ἡτοίμασε τοῖς ἀγαπῶσιν αὐτόν.

Ἐρεῖς: Ἀλλὰ κτιστὶς ἅτλα ἐστὶν ἅπερ ἐκ τῆ Πνοῦματος αὐτοὶ λαμβάνομεν· ὥδε γεμῶν, ὁ Μέγας Βασίλειος ἀπόφησι παρὰ τῆ Πνοῦματος ἡμᾶς τοιαῦτα λαμβάνειν, οἷα τὸ Πνεῦμα λαμβάνει παρὰ τῆ Υἱᾶ. — Ἀλλ' ἐκ ἐν τῷ „ὅ, τι δὴ,, καὶ „ὅποιον,, τὸ λαμβανόμενον, ὁ Θεὸς Πατὴρ ἐτίθετο τὸ ἀνόμοιον, ἐν δὲ τῷ „πῶς,, λαμβάνομεν αὐτό· (156) τῆτέστιν, ἐν τῷ τρόπῳ, καθ' ὃν ἡμεῖς λαμβάνομεν παρὰ τῆ Πνοῦματος, ὅπερ τὸ Πνεῦμα λαμβάνον ἐστὶ παρὰ τῆ Υἱᾶ. Τὸ μὲν γὰρ Πνεῦμα λαμβάνειν λέγεται, διὰ τὸ ἐνιαῖον τῆς φύσεως, καὶ τὸ ταῦτόν τῆς διδασκαλίας, ὡς ἐπὶ τῆς ρηθείσης Πραγματείας ἐδείκνυτο· αὐτοὶ δὲ, ἐχὶ τὸ αὐτὸ Πνεῦμα λαμβάνομεν ὡσαύτως, διὰ τὴν ἐνότητά τῆς φύσεως καὶ διδασκαλίας, ὡς δῆλον παντί.

Ἀλλὰ δεύτερον, ψεύδεις ὅλως, τὸ ἔγω χρῶμαι τὰ τῆ Βασιλείας μεθερμηνεύεσθαι: ὅτι ἐ λαμβάνομεν ἡμεῖς παρὰ τῆ Πνοῦματος τινὰ, οἷα τὸ Πνεῦμα παρὰ τῆ Υἱᾶ. Ἐπειδὴ γὰρ ἐν τῷ Ἑλληνικῷ ὕφει κεῖται: („Ὡςπερ παρὰ τῆ Υἱᾶ τὸ Πνεῦμα,,:) Τὴν φωνὴν τὸ ΠΝΕΥΜΑ, ἐ κατ' Ὁρθῶν, κατὰ δὲ Πτώσιν τὴν Αἰτιατικῶν, ἐκδεκτέαν εἶναι φαμέν. Ὡςτε τὴν τῆ Βασιλείας διανοίαν εἶναι ταύτην: Ὅτι, „ἐχὶ παρὰ τῆ Πνοῦματος τινὰ λαμβάνοντες ἐσμέν,, καθάπερ ἰχυρότατα πρὸς ταῦτα ΜΑΡΚΟΣ ἀπώτησεν ὁ Ἐφέστη Ἀρχιεπίσκοπος, ἐν τῇ ΚΒ'. Σωελόβσει τῆς ἐν Φλωρεντίᾳ Σιωδῶδ. Τῆτο δ' ἔγω σαφὲς ἐστὶ, τοῖς αὐτοῖς τῆ Βασιλείας ἀκριβῶς διασαθμωμένοις τὸ χωρίον, ὡς καὶ αὐτὸν τὸν Λατῖνον Ἑρμηνεύα, ἐν τῷ Α'. Τόμῳ τῶν τῆ Βασιλείας Συγγραμμάτων, Σελίδι 511. ἔγω γενέσθαι ἀναγινώσκοντα: „Οὐχὶ δύο Υἱᾶς, (ὁμολογεῖν δεῖ) διόπερ τὸ Πνεῦμα Υἱᾶς ἐκ ἔστιν, ἔτε „ὀνομάζεται. Οὐ γὰρ παρὰ τῆ Πνοῦματος τινὰ λαμβάνομεν, ὥςπερ παρὰ τῆ Υἱᾶ τὸ Πνεῦμα. Ἀλλ' αὐτὸ προσιὸν ἡμῶν, καὶ „ἀγιάζον ὑποδεχόμεθα, Θεότητος κοινωνίαν, καὶ Υἱότητος μετεσσίαν, καὶ τῆς αἰωνίης κληρονομίας ἀρχαῖον, καὶ τῶν μελλόντων ἀγαθῶν ἀπαρχήν,,. Καὶ γάρ τοι, καὶ Ἑλλήνισι ἔγω κεῖται: („Ἀλλ' αὐτὸ προσιὸν ἡμῶν, καὶ ἀγιάζον ὑποδεχόμεθα,,) Οὐχὶ δὲ ὡς τὸ ρηθὲν ἸΩΑΝΝΗΣ ὁ Προβιγκιάλις διασρέφων, ἀντὶ

(156) Τῆτο δὲ σαφῶς ἐξ αὐτῆς τῆς τῆ Βασιλείας φράσεως πάρεστι σιωιδεῖν· ἐ γὰρ ἔπεν, ὅτι: („ἐ παρὰ τῆ Πνοῦματος λαμβάνομεν αὐτοὶ, τοιαῦτα οἷα παρὰ τῆ Υἱᾶ λαμβάνει τὸ Πνεῦμα,,) Ἀλλ' ἔπεν: („Οὐ παρὰ τῆ Πνοῦματος τινὰ λαμβάνομεν ὥςπερ τῆτέστι καθ' ὃν τρόπον,) λαμβάνει παρὰ τῆ Υἱᾶ τὸ Πνεῦμα αὐτά,,) Σημείωσαι δ' ἐν τῇ τῆ Ζοιενικαβίε ταύτῃ ἀπάντησιν κατὰ συγχώρησιν ἐπάγεσθαι, ὑποτιθέσης, κατὰ τὸ δοκῶν Λατίνῳ νοεῖσθαι, τῆς τῆ Βασιλείας φήσεως.

ἀντὶ τούτων ἐπῆγεν; „Ἀλλ' αὐτῷ ἡμῖν προσιόντος καὶ ἀγιάζοντος,  
„ὑποδεχόμεθα Θεότητος κοινωνίαν, καὶ τὰ ἑξῆς,, : (157)

Ὁ τοίνυν

(157) Καὶ ἐπὶ τῆς κατὰ Γαρνίηρον δὲ ἀρίστης τῶν τῷ Βασιλεῖ Συγγραμμάτων Ἐκδόσεως, ἔγω φέρειμι Λατινιστὶ τὸ χωρίον ἐρμηνεύμενον: Non duos Filios confiteamur, oportet; quandoquidem Filius Spiritus non est, neque nominatur: non enim à Spiritu quempiam accipimus. (Σημείωσαι: ἐν Ἀρσενικῷ τῷ γένει: quempiam ἐκφέρειται: ὡς καὶ ἐφ' ἧς ἐκέχρητο Ζοιρηνάβιος Ἐρμηνείας: aliquem: ἀντισίχως δὲ τὴν ἐφεξῆς ἐπιφέρειται Πτῶσιν Αἰτιατικῷ: Spiritum... ipsum... accedentem... sanctificantem.) quemadmodum à Filio Spiritum; sed ipsum ad nos accedentem, nosque sanctificantem suscipimus. Θαυμάζειν ἐν ἑπεσιν, ὡς ἐπὶ τὸ ὀρθότερον ὡς τὴν Βασιλείαν ταυτίῳ χρεῖσιν Γαρνίηρος προενεγκῶν, ἔδεν ὁμως παρὰ χεῖλος τὸ τῆς Σουλίδος. ἢ πρὸς εἰῶσαι, προσεστημέωκε περὶ τῷ χωρίῳ τῷδε, τῷ ἔως ἐπηρεαδέντος, καὶ θρῆν τοσούτων ἐν ταῖς Φλωρεντιναῖς ἐκείναις Προσδιαλέξεσι διεγείραντος. Ἀλλὰ Γαρνίηρος μὲν, ἐπαρκεδὲς τῇ ἐπανορθώσει τῆς τῷ ῥηθέντος διερμηνύσεως, καὶ ἠξίωσε περαιτέρω τοῖς ἐμὸν δρῆσιν πρᾶγματα παραχρῆν ἡμᾶς δὲ, ἔδεν ὡς τὸν Ἰσπανικὸν παρελθεῖν ἄξιον ἐνταῦθα: ὅς τις, ἐν οἷς Λατινιστὶ σωτέρας Πρακτικῶς τῷ Φλωρεντινῷ ἐκείνῃ Συλλόγῃ, (παρὰ Ἀρδεῖνῳ Τόμῳ: Θ'. τῶν Σωδοκ: Στήλη 904) τὸ (TINA) ἔχῃ κατὰ τὰς ἀνωτέρω δύο Ἐρμηνείας, ἐν Ἀρσενικῷ τῷ γένει: aliquem, quempiam: ἀλλ' ἐν ἑδτέρῳ: aliqua: τάξας, κατὰ Πτῶσιν ἑμῶς Αἰτιατικῷ καὶ αὐτὸς τὸ ΠΝΕΥΜΑ ἡρμηνεύσει: Spiritum εἰπὼν: κατὰ τὴν ἀλλήθεσίαν καὶ γνησίαν ἀνάγνωσιν. Neque enim à Spiritu aliqua accipimus, sicut à Filio Spiritum. Πόθεν ἐν ἐπῆλθεν Ἰωάννη τῷ Προβιγκιάλῃ ἐπὶ τῆς Φλωρεντινῆς λογομαχίας, ἔως ἀθλίως τὴν τῷ Θεωπεσίῃ Πατρός ῥῆσιν παραποιήσασθαι, καὶ γένος τὸ κατὰ Γραμματικῆς, καὶ πτῶσιν, πρὸς τὸ δοκῆν μεταλλάξαντα. τὴν τῆς ἀπάτης ἔγω κυκλώω τοῖς σωδιασώταις αὐτῷ προπιῖν, ἐν οἷς παρερμηνεύσει: Quia non accipimus à Spiritu aliqua, quomodo à Filio Spiritus; (ἐν τῇ ΚΒ'. Σωδοκ: τῆς Φλωρεντ: Σωδοκ: παρὰ Ἀρδεῖνῳ Τόμῳ: Θ'. τῶν Σωδοκ: Στήλη 266.) ὅθεν ἐρμηνεύσει, ὡς οἱ λοιποὶ: Quia non à spiritu quempiam, vel aliquem, accipimus, quemadmodum à Filio Spiritum; — „Ἀλλὰ τὴν τοιαύτην Ἐρμηνείαν, φησὶ „Κιχώβιος, (ἐν τῷ κατ' αὐτὸν Βήματι. Ζητήμ: 5. Σελ: 48.) τῶν νῦν φερομένων „Μεταφράσεων προκριτέαν εἶναι, ὅπως ὑπὸ ἸΩΑΝΝΟΥ τῷ Θεολόγῳ, (τὸν Προβιγκιάλιν ἡμῖν ἔγω τυμπανίζειν προσαναγκάζων) ἀποδίδεται. Πόθεν ὡ γὰρ; ἢ πῶς τῷτο; Πρῶτον γὰρ φησὶ: „πρὸς τριακοσίων ἡδὴ ἐνιαυτῶν, ἔως ἡρμηνεύσει „Λεονάρδος ὁ Ἀρετίνος,,. Ἐπειτα, ὅτι καὶ πρὸς τὴν τῷ Προβιγκιάλῃ τῷ Θεολόγῳ Ἐνστάσιν, ὁ ΔΙΟΣΚΟΡΟΣ (ἔγω τὸν Ἐφέσω ἡμῖν ὁ Λαυρεντίας ἐγκωμιάζει:) abmutuit: (ἐκπεφίμωται.) — Ἀλλὰ πρὸς μὲν τὸ δεύτερον τῷτο, ἀρκούντως ὁ ἡμέτερος ἀπαντᾷ Ζοιρηνάβιος. Πρὸς δὲ τὸ πρῶτον: ἔχῃ ὁ Ἀρετίνος ἔως κατὰ τὸ 1443. ἐν Φλωρεντίᾳ τὸ βιβλὸν ἐξεμέτρησε; Ταυταρὲν τῷ Θεολόγῳ Προβιγκιάλῃ, τῷ κατὰ τὸ 1438. ἐν τῇ Φλωρεντιανῇ Σωδοκῷ ἀγωνιζομένῳ σύγχρονος ἰσχυρὸν δὲ, καὶ τῶν γνωρίμων εἰς καὶ σωτήριον πάντως δὲ πρὸς καὶ ἐμὸν δρῆσιν, καὶ ὁμῶς. Τίς ἐν ἡ πρὸς ἐπισύστασιν τῆς παρερμηνύσεως τῷ ῥηθέντος τῷ Μεγάλῳ Βασιλεῖ, κατασκόλη, τὸ καὶ ἕτερον κατὰ τὸ αὐτὸ χρηματίσαι τινὰ Λατίνον, (Λεονάρδον λέγω τὸν Ἀρετίνον) τὸν Ἰωάννη σινάμα τῷ Προβιγκιάλῃ, τὴν τῷ Οὐρανοφάνταρος ῥῆσιν συμπαρανοῦντα, καὶ συμπαραποιῶντα, καὶ σωδιαστέροντα; ἢ γὰρ, διὰ τῆς τριακοσιετῆς χρονολογίας ὁ Ἰησοῦς μάλιστα ἡμᾶς μεμολύτληται, τὴς διακοσίας εἰκοσιν ἐνιαυτῶν, ἀπὸ τῆς ἐν Φλωρεντίᾳ σωδιασῆς Σωδοκ: εἰς γὰρ ἐφ' ἑαυτὸν συγγράφοντα: (Σωτέρας δὲ Κιχώβιος περὶ τὸ 1558.) εἰς ἑλίας τριακοσίας πληθύνων: ἢ ἐκ γέν τῆς ἀρχαιότητος τῷ σωπειμαρτυρῶντος σωδιασῆς, τῇ παρερμηνύσει τὸ αἰδέσιμον προμνησθῆναι μὴ σωρεῖν ἔχων, δηλονότι, ὅτι τῷ παρερμηνεύοντος Ἰωάννη, ἔδεν ὁ συμπαραερμηνεύων Ἀρετίνος ἰσχυρῶς ἀρχαιότερος ἢ μὴ ἡμᾶς σωτέρας τὸ πρόδηλον τῆς Σοφιστίας ἐλπίσαι, ὡς ἐπὶ πλείονος τυχὸν φέροντας τὸν ἐγκέφαλον. Ἀλλ' ἐπὶ πάνσιν ἔτι: καὶ εἴπερ ἡ τῷ Ἀρετίνῳ καὶ ἡ τῷ Προβιγκιάλῳ, καὶ ἡ αὐτῷ δὴ τῷ Ἰησοῦ Κιχώβι: Ἐρμηνεία, προκριτέα δοκῇ τῶν φερομένων νῦν Μεταφράσεων, τί δήποτε ἐκ αὐτῇ ἠγάπησαν τῶν Ἐκδοτῶν παρὰ Λατίνοις οἱ καθ' ἡμᾶς ἄριστοι καὶ κριτικάτατοι; Ἀλλ' εἰ μὴ τυχὸν ἄποιοις, ὅτι καὶ τῆς χρεῖας ἐπέκεινα.



Ὁ τοίνυν Βασίλειος λέγων: „Οὐ παρὰ τῷ Υἱῷ λαμβάνο-  
 „μέν τινα, ὥπερ παρὰ τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα· καὶ προσιδέντος:  
 „Ἀλλ' αὐτὸ προσιὸν ἡμῖν, καὶ ἀγιάζον ὑποδεχόμεθα,,; τὰ τε-  
 „λοῦταῖα δὴπερ ταῦτα, ἀντιπαραλίθησι τοῖς προλαχθεῖσιν ἐκείνοις:  
 „Οὐ παρὰ τῷ Υἱῷ λαμβάνομέν τινα, ὡς παρὰ τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦ-  
 „μα,,. Ἐξ ἀνάγκης ἄρα, ἐν ᾧ φησὶν: („Ἀλλ' αὐτὸ προσιὸν  
 „τὸ Πνεῦμα ὑποδεχόμεθα,,) ὑπεναντίον τι καὶ ἀντίθετον τοῖς  
 „προηγηθεῖσιν ἐστὶ διὰ τέτων ἀποφανόμενος. Ἀλλὰ γὰρ, εἰ τῶν  
 „προληφθέντων ὡς ἡ διάνοια: („Ὡς ἔκιν παρὰ τῷ Υἱῷ τινὰ  
 „ἄτλα αὐτοὶ λαμβάνομεν, ὥπερ τὸ Πνεῦμα λαμβάνον ἐστὶ παρὰ  
 „τῷ Υἱῷ,,) πῶς ἂν προσιδεῖς: (Ἀλλ' αὐτὸ προσιὸν ἡμῖν, καὶ  
 „ἀγιάζον ὑποδεχόμεθα,) τάναντία οἷς περ ἄρτι ἀποφήσκειν, ἀντε-  
 „πώεγκεν; Εἰρηκῶς καὶ γὰρ ἔτως ἂν εἴη, ὡς ἔχί τι Θεὸν  
 „παρὰ τῷ Πνεύματος λαμβάνομεν, ὡς παρὰ τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα  
 „λαμβάνει, κτιστὰ μόνον λαμβάνοντες· ἀλλὰ μόνον ἡμῖν προσιὸν  
 „τὸ Πνεῦμα ὑποδεχόμεθα. Ἀλλ' ὅτι γὰρ δὴ ταῦτα ἀσωάρμοστα  
 „ἐστὶν ἀλλήλοις, τίνι ἔχί δῆλον γίνεται;

Ἐπὶ δὲ τέτοις, καὶ τῷ Βασιλείῳ πρᾶκτο δεῖξαι, ὅτι τὸ  
 „Ἅγιον Πνεῦμα: „Υἱὸς ἔτε ἐστὶν, ἔτε ὀνομάζεται,,. Τῷ γὰρ  
 „καὶ ἐπὶ λέξεως πρᾶθηκεν: „Ὅτι τὸ Πνεῦμα ἔτ' ἐστὶ, ἔτ' ὀνομάζε-  
 „ται Υἱός,,. Ὡς ἔν φημι τῷτο δείξων, λέγει: „Οὐ γὰρ παρὰ  
 „τῷ Πνεύματος τινὰ λαμβάνομεν, κτ:,,. Μετὰ δὲ τὰ ἀνωτέρω  
 „προενεχθέντα, ἀντίκα ὑποσινάπτει: „Μηδέ τις ἐκτὸς τῶν εἰρη-  
 „μένων ἱερῶν ὀνομάτων περιεργαζέσθω: μηδὲ Υἱὸς προσηγορίαν  
 „ἐπὶ Πνεύματος τιθέναι βιαζέσθω, μηδὲ γέννησιν. Ἀλλ' ἀρκείσθω  
 „τῇ κατὰ τὸ Πνεῦμα προσηγορίᾳ, καὶ ὁμοιώσει,,. Ὡς ἄρα κατα-  
 „σκιδάσων ὅτι τὸ Πνεῦμα Υἱὸς ἔκ ἐστι, τῷτον ἀποδίδωσι τὸν λόγον:  
 „ὅτι, ἔχί τινα ἕτερον λαμβάνομεν παρὰ τῷ Πνεύματος, „ὥπερ  
 „παρὰ τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα· ἀλλ' αὐτὸ προσιὸν ἡμῖν τὸ Πνεῦμα  
 „ὑποδεχόμεθα,,. Πῶς δὲ, εἴπερ ὡς ὁ τῶν λεγομένων νῆς, ὃν  
 „βέλονται οἱ Λατῖνοι: (ὅτι δῆθεν ἐκ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος ἡμεῖς  
 „ἐ λαμβάνομέν τι Θεὸν, οἷον παρὰ τῷ Υἱῷ λαμβάνει τὸ Πνεῦμα  
 „τὸ Ἅγιον.) Πῶς, ἔφω, ἐκ τέτων ἂν ἐπέφερεν, ἢ ἐπιφέρειν  
 „εἶχε Βασίλειος, μὴ Υἱὸν εἶναι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον; Πάντῃ γὰρ  
 „ἂν ἦν τῷτο ἀπᾶδον. Οὐδὲν γὰρ ἦτον, ὡς εἰ καὶ σινάψαις: Ἐπὶ  
 „τῆς γωνίας τὸ βᾶκτρον· αὐριον ἄρα ὕσαι. Ἐνθεντοι ἔδ' αὐτὸς  
 „Ἰωάννης ταύτῃ γε τὸν Βασίλειον ἡξίς ἐπιχειρεῖν· ἀλλ' ὡσανεὶ δεῖ-  
 „ξαι διὰ τῷ Ἐπιχειρήματος τῷδε ἠθέλεν ἐκεῖνο: ὅτι ἐ λαμβάνει  
 „τὸ Πνεῦμα παρὰ τῷ Υἱῷ, ὃνπερ δὴ τρόπον λαμβάνει τὰ κτίσ-  
 „ματα. Ὡδε γὰρ πως αὐτὸς τοῖς προαπομνημονοῦθεῖσι ρήμασιν,  
 „(ἐν Σωελούσαι ΚΑ'. τῆς Φλωρεντινῆς Σινόδου) παρασιωῆπτεν:  
 „Οὕτω ταύτης τῆς παραθέσεως γενομένης, ὁ αὐτὸς (Βασίλειος)  
 Τόμ: Β'. Υ υυυ „ἀπο-



„ἀποκλείει τε καὶ ἀποσρέφει· ἢ τῶν πονηροῦσιν τὴν δόξαν, ὅτι  
 „τὸ λαμβάνειν τὸ εἶναι, τῶν κτισμάτων ἕνεκα γίνεται,, (158)  
 Ὡς δὴ περὶ σωμύλως! ὁπότε, καθάπερ ἀποδεδεικται: ἐκεῖνα ἐρή-  
 και Βασιλείος, ἐφ' ᾧ μόνον κατασκοῦσθαι, τὸ Πνεῦμα Ἰδὸν ἔτ'  
 εἶναι, ἔτ' ὀνομάζεσθαι. Ἡ γὰρ τῆ Βασιλείας Συλλογιστικὴ ἐφοδος ὡς  
 τοιαύδε: Τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον Ἰδὸς ἔκ ἐσιν, ἔτε ὀνομάζεται.  
 Εἰ γὰρ Ἰδὸς ὑπῆρχεν, ἐπάναγκες ἂν ὡς ἡμᾶς, ἕτερόν τινα παρ'  
 αὐτῆς λαμβάνειν, τοσάκις τῆς Ἱερᾶς Γραφῆς διδασκείας, παρὰ τῆ  
 Ἰδὸς ἡμᾶς ἕτερόν τινα δέχεσθαι. (τὸ Πνεῦμα δηλονότι τὸ Ἅγιον  
 παρὰ τῆ Ἰδὸς.) Ἀλλ' ἐν δὴ καὶ μόνον τὸ Πνεῦμα ὃν οἶδαμεν  
 τὸ ἄρα Ἅγιον Πνεῦμα ἔτε ἐσιν, ἔτε ὀνομάζεται Ἰδὸς. Ἐνθεν  
 τοι εἰρηκώς: „ὅτι ἐκ παρὰ τῆ Πνοῦματος τινὰ λαμβάνομεν, ὥστε  
 „παρὰ τῆ Ἰδὸς τὸ Πνεῦμα προσέθετο: ἀλλ' αὐτὸ προσιὸν ἡμῖν,  
 „καὶ ἀγιάζον ὑποδεχόμεθα.

Ἐπεὶ δ' ἐν τῇ Φλωρεντιανῇ Σωόδῃ Πρακτικῇ, τὰ  
 Ἑλληνιστὶ συγγραφέντα (159) παριστᾶν ἐθέλει ΜΑΡΚΟΝ τὸν  
 Ἐφέσῃς Ἀρχιεπίσκοπον, ὡς δὴθεν περὶ τὸ χωρίον τότε ἀμνηχανίᾳ  
 κατελημμένον (160) κἀντεῦθεν αὐτόν τε τῆτον, καὶ σὺ αὐτῷ  
 τὴν ἀλήθειαν ἡττονα ἐλεγχθῶναι ἐπὶ τῆς ῥηθείας Σωόδῃ Παῖδες  
 Λατίνων καταφρυάττονται· ἐτάσωμεν δὴ καὶ τ' ἄλλα καθεξῆς τὰ  
 τῆ Προβιγκιάλεως ἸΩΑΝΝΟΥ· καὶ ἴδωμεν, εἴπερ ἄρα τὸ τιμι-  
 καῦτα δεόντως κατὰ τῆς Καθολικῆς ἀληθείας τὸν θρησκὺν  
 ἔσησαν, εἴτε δ' ἐν καὶ Μάρκος αὐτὸς περὶ τὰ Βασιλείας ῥήματα  
 τότε ἀμνηχανήσας ἐάλω τῷ ὄντι, ἢ λέγεται. Ἐπεὶ καὶ περὶ  
 τὰ τελευταῖα τῆς Σωόδῃ, τῷ ταύτης ὄρω ὑπογράψαι Μάρκον  
 ἀπαναινόμενον, (161) Εὐγένιος ὁ Πάπας, ἀναπολόγητον αὐτὸν  
 διαμείναι, ὡς ἐπὶ τῇ κακοδοξίᾳ τὸν ἐλεγχον ἀναπόδραστον ὑπο-  
 ξάντα, ἀντέκρινεν. Οὕτω καὶ γὰρ ὁ Πάπας: (162) „Δύτερον  
 „περὶ

(158) Ἐν μὲν τῇ ὕψει ἀναγινώσκεται: Quod accipere esse fiat creaturarum ergo: „Ὅτι  
 τὸ λαμβάνειν τὸ εἶναι γίνεται αἰτία τῶν κτιστῶν,, Σησημέωται δὲ παρὰ τὸ  
 χαλὸς τῆς Σελίδος, ὡς ἐν εἶδει ἐπιδιορθώσεως: (b) „Ἰσ: τὸ λαμβάνειν γίνεται  
 „αἰτία τῶν κτιστῶν,, (Παρὰ Ἀρδείνῳ ἐν Τόμῳ Θ'. τῶν Σωοδικῶν: Στήλη 253.)

(159) Οὐχὶ τὰ Συλδέσρε τῆ Συροπέλας, ἢ Συροπέλας τῆ Μεγ: Ἐκκλησιαρχῆς, τῆ  
 παρεσιάσαντος τῇ Σωόδῃ, καὶ ὑπογράψαι προσβιαθέντος, καὶ τὰ ἐν αὐτῇ γε-  
 νόμενα ἐπ' ἀκριβὲς ἰσορήσαντος· ἢ τὴν Ἰσορίαν Ῥοβέρτος Κρέυγτων ὁ Ἀγγλος,  
 Γραικο-Λατινιστὶ ἐξέδοτο ἐν Ἀγῇ Κομήτῳ, ἔτει 1660. Ἐπιγράψας: „Ἰσορίαν  
 „ἀληθῆ, Σωόδῃ μὴ ἀληθῆς,, Ἀλλὰ τὰ Πρακτικά μοι νόει ἐνταῦθα τὰ ἐν τῇ  
 Θ' Τόμῳ τῶν Σωοδικῶν, παρὰ Ἀρδείνῳ, περιεχόμενα.

(160) Ἰβλιανὸς γὰρ ὁ Καρδιάνης, πρὸς τὸν Βασιλέα ἐπιστρέψας ἔφη: „ὁ Ἐφέσῃς Ἀρ-  
 „χιερεὺς, ἀπορήσας Ἀπολογιστῶν ἀνεχώρησε, καὶ ἐκέτι ἀπολογεῖσθαι βέλεται,,  
 (Ἐν Σινελύσει ΚΕ'. τῆς Φλωρεντ: Σωόδῃ, παρὰ τῷ Ἀρδείνῳ, ἐν Τόμῳ Θ'.  
 Στήλη 377.)

(161) Ὅρα τὸν Συροπέλον ἐν τῇ Ἀληθῇ Ἰσορίᾳ τῆς μὴ Ἀληθῆς Σωόδῃ τῆς ἐν Φλω-  
 ρεντίας (ἐν Τμήμ: Ι'. Κεφαλ: ΙΒ' Σελ: 299.)

(162) Παρὰ Ἀρδείνῳ, Τόμ: Θ'. τῶν Σωοδικῶν: Στήλη 432.

„περὶ τῷ Ἐφέσῃ: ὅτι ἐστὶν ἀναγκαῖον δῆναι λόγον: πῶς χρίζεται  
 „τῆς Σωῶδος ἡμῶν; ἔ γὰρ Φρονιμώτερος ἐστὶν ἡμῶν πάντων.  
 „Εἶδομεν γὰρ αὐτὸν, ἐν ταῖς Διαλέξεσιν ἀπορήσαντα, καὶ μὴ  
 „δυνάμενον ἀποκρίνασθαι πρὸς τὰ ζητούμενα παρὰ τῷ Φρά-Ίω-  
 „άννῃ„.

Κατὰ μὲν ἔν τῳ ΚΒ'. τῶν Σωελόβσεων, πρὸς τὸ ἐκ τῷ  
 Βασιλείῃ προτεθὲν ἐκείνο χωρίον Μάρκος ἀπῴτα: δεικνύς τὸ  
 ΠΝΕΥΜΑ ἐν Πτώσει πλαγίᾳ, καὶ μὴ κατ' ὀρθῶν ἐκλαμβάνεσθαι  
 χρῶναι, διὰ τὸν συμφανῆ λόγον, ὃν ἔχατον ἡδὴ φθάσαντες ἀπε-  
 δώκαμεν. Ὁ δὲ Ἰωάννης πρὸς ταῦτα, ἐν τῇ Α'. αὐτῷ ἀποκρί-  
 σει, ἔδεν ἄλλ', ἢ κατ' ὀρθῶν, ἔφασκεν, ἐκληπτέον εἶναι τὸ  
 ΠΝΕΥΜΑ, μηδένα προσεπάγων λόγον τῆς κατ' ὀρθῶν Πτώσιν  
 ἐκδοχῆς. Ὡφειλε δὲ πάντως, τῷ, δι' ἃ Μάρκος τῷ κατ' ἐκείνον  
 ἐκδοχῶν ἀνεσκόβαsen, Ἐπιχειρήματι, κατὰ τὸ ἀποχρῶν ἀπαν-  
 τῆσαι, ἔν ὀρθῶς ἐξῆς, τῷ (κατὰ τὸ Ἰωάννη δόξαν) τῶν τῷ  
 Βασιλείῃ ῥημάτων ἐκθεσιν, ἔτως εὐμαρῶς αὐτῷς ὁ Ἐφέσῃ Μάρ-  
 κος ἐπανεσκόβαsen, ὥπερ αὐτῷ Ἰωάννης ἐπιχειρήσειε κατασ-  
 κοβάσαι. Ἰωάννης δὲ, ἔτω πρόεισι: (163) „Καί γε, παραδείγ-  
 „ματος χάριν: ἔδεν γὰρ λαμβάνει τις τῶν ὑποδεεσέων, παρὰ τῷ  
 „Γαλλωτάτῃ Κυρίῃ τῷ Βασιλείῳ, ὃν τρόπον λαμβάνει τις τῶν  
 „Λογᾶδων παρὰ τῷ Ἀκρῷ Ἀρχιερέως. Καὶ ἔστιν ἀδύνατον, κατὰ  
 „τὸν τῆς παραθέσεως ἐκείνον τρόπον, τό, (τις τῶν Λογᾶδων)  
 „εἶναι Πτώσεως Αἰτιατικῆς, καὶ διὰ τῷτο ἀναγκαίως δεῖ εἶναι  
 „Εὐθείαν, τὸ ΠΝΕΥΜΑ, ἐν τῷ: ὥπερ τὸ Πνεῦμα παρὰ τῷ  
 „Τίῃ„. — Ἀλλὰ καὶ πρὸς ταῦτα ὁ Μάρκος σαφέςατα ἐπαπε-  
 κρίνατο, δεικνύς: ὡς ἔχ ἔτως ἔχε τὸ ὑπὸ Βασιλείῃ ῥηθέν:  
 „Νῦν δὲ ἔ καῖται τῷτο, (ὅτι ἔ λαμβάνομέν τινα παρὰ τῷ Πνύ-  
 „ματος, ὥπερ λαμβάνει τὸ Πνεῦμα παρὰ τῷ Τίῃ) καῖται  
 „δ' ἐκείνως μόνον: (ὅτι ἔ λαμβάνομέν τινα παρὰ τῷ Πνύματος,  
 „ὥπερ τὸ Πνεῦμα παρὰ τῷ Τίῃ) ἔδεν ἄρα πρὸς τὸ προκί-  
 μενον, τὸ τῷ Ἰωάννῃ Παράδειγμα. (164)

Ἐντεῦθεν ἔν πρὸς ἕτερα ἐτράπετο Ἰωάννης: τῷ γὰρ Μάρ-  
 κῃ, τῷ κατ' αὐτὸν ἔννοιαν, τῇ τῷ Μεγάλῃ Βασιλείῃ προθέσει  
 μηδαμῶς ἀρარέναι, ὡς ἄριστα ἀποδεδαχότος, μηδὲν πρὸς τῷ  
 ἀπόδειξιν ἐπισραφεῖς ὁ Προβιγκιάλις, ἐφ' ἕτερα μεταβαίνει, δι' ὃν  
 ἂν ἐπικατασκοβάσειε τῷ ὡ παρέχεν αὐτὸς διάνοιαν. Διαπιω-  
 θάνεταί γὰρ δηλονότι: „Λέγεις, ὅτι λαμβάνομέν τινα, ἕτερα  
 „δ' ἔτα

(163) Ἐν Σωελόβσει ΚΒ'. παρὰ Ἀρδενίῳ, Τόμ: Θ'. Στήλη 266 — 267.

(164) Διὰ γὰρ τῷ ἐπενεχθέντος Παραδείγματος, ἔδεν ἄλλ', ἢ σαφῶς ὁ Φρά-Ίωάννης,  
 ἡτεῖτο τὸ ἐξ ἀρχῆς: ὡς δὴλον, τοῖς καὶν ἀπὸ τῷ φλιῷ ἀσασαμένοις τῷς ἔρε-  
 τῷς τῆς Διαλέξεως.

„ὄντα παρ' αὐτὸ τὸ Πνεῦμα,,; — Ἀλλ' εἰδὲ τῷ Πνεύματος ἕτερα λαμβάνομεν, καὶ πάλιν ἕτερα· ὅτε γὰρ αὐτὸ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα λαμβάνομεν, ἔχ' ἕτερόν τινα παρὰ τῷ Πνεύματος λαμβάνομεν· ὅτε δὲ τὸ ἡμῖν ἐπιχορηγούμενον Πνεῦμα ἐνεργεῖ ἐν ἡμῖν τὰ ἑαυτῷ χαρίσματα, ἕτερα πάλιν παρὰ τῷ Πνεύματος λαμβάνομεν· καὶ ὅτος ὡς ὁμοίως ὁ τῷ Ἐφέσσῳ νῦν, ἡνίκα ἔφασκεν: „ὡς „ἔ λαμβάνομεν τινὰ ἕτερα, παρὰ τῷ Πνεύματος,,. Διὸ καὶ ἐπὶ τέτοις ἀναλαμβάνει: „Ἔτερα, λέγω, ὥσπερ ἐστὶ τὸ Πνεῦμα „ἕτερον τῷ Υἱῷ· (τῷτο γὰρ καὶ αὐτὸς ὡς Βασίλειος ἐκδιδάσκων.) „Ἀλλ' αὐτὸ (λέγων ἔκ ἄλλον δηλονότι τινὰ ἐκείνῃ ἕτερον) τὸ „Πνεῦμα, προσιὸν ἡμῖν, καὶ ἀγιάζον ὑποδεχόμεθα,,. — Ἀτόπως ἄρα Ἰωάννης πρὸς ταῦτα: „κατὰ τέττα βέλομαι εἰπεῖν: ἐπεὶ „ἐστὶν ἀδωάτων, καὶ κατὰ πάσης χωρὲν Ἱερᾶς Γραφῆς,,. — Δικαζέτω δὴ ἄρα, πᾶς ὅς τις ἔν ὁ ταῦτα ἀναγινώσκων, εἰ τῶν ἀδωάτων ἐστὶ, μὴ ἄλλον τινὰ καθ' ἑαυτὸν ὑφεσῶτα, ἀλλ' αὐτὸ ἡμᾶς τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, λαμβάνειν παρὰ τῷ Πνεύματος· καθάπερ δὴ παρὰ τῷ Υἱῷ, ἔκιν τὸν αὐτὸν Υἱὸν, ἕτερον δέ ληνα τῷ Υἱῷ, καθ' ἑαυτὸν ὑφεσῶτα, τελέσει τὸ Ἅγιον Πνεῦμα λαμβάνομεν; Ὁρθῶς ἄρα πρὸς Ἰωάννῳ ἀπαντᾷ ὁ Ἐφέσσος: „Πῶς ἐστὶν ἀδωάτων, „ἐπειδὴ αὐτὸς ὁ Διδάσκαλος λέγει τῷτο,,; ὡσαύτως γὰρ ἐκείνο καὶ Βασίλειος διεβεβαίωτο, καθάπερ εἶδομεν.

Ἐνίσταται δ' ἔν Ἰωάννης: „Ἐρωτῶ σε: εἰ τὰ χαρίσματα „τῷ Πνεύματος εἰσὶν ἕτερα, παρ' ἃ δίδωσιν ἡμῖν τὸ Πνεῦμα τὸ „Ἅγιον,,; — Ἀποκρίνομαι: καθὼ μὲν λαμβάνομεν τὸ Ἅγ: Πνεῦμα, ἔχῃ τινα τῷ Πνεύματος ἕτερον ὄντα λαμβάνομεν, ἀλλ' αὐτὸ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον· καθὼ δὲ σιωάμα τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι, καὶ τὰ ἐκείνῃ χαρίσματα ἡμῖν ἐπιχορηγεῖται, ταῦτα δὴ τὰ χαρίσματα, τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος ἕτερα ἐστὶ καὶ τοσάτω ἐκείνῃ διαφέροντα, ὅσῳ τὸ κτίσμα τῷ κτίσαντος: ὅσῳ τε τὸ μὴ καθ' ἑαυτὸ ὑφεσῶς, τῷ καθ' αὐτὸ ὑφισαμένῃ· τὰ γὰρ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος χαρίσματα, ἔχῃ καθ' ἑαυτὰ ὑφεσῶτα ἐστὶν, ὥσπερ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον· ἐνεργήματα γὰρ μόνον αὐτῷ εἰσὶν ὅθεν καὶ Μάρκος ἔτιω ἐστὶν ἀπαντῶν: „Οὐκ εἰσὶν ἕτερα, ὥσπερ ὁ Υἱὸς καὶ τὸ Πνεῦμα, „καθ' αὐτὰ ὑφεσῶτα, ὥσπερ ὑφέθηκε τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, κατ' „ἰδίαν ὑπόσασιν,,.

Τὰ μὲν ἔν Λατινικᾷ Πρακτικᾷ τῆς ἐν Φλωρεντίας Συνόδου, τὰ ὑπὸ Ὡραλίου τῷ Ἰακωβίαν ἐκδοθέντι, ἀντὶ τῶν ἔχει: (165) „ἔκ εἰσὶν ἕτερα, ἔτιω, ὡς τὸ Πνεῦμα ἕτερον ἐστὶ τῷ Υἱῷ,,; τῶν τῶν: ἔχῃ ἕτερα εἰσὶ τὰ χαρίσματα, ὡς καθ' ἑαυτὰ ὑφισαμένα. —

Πρὸς

(165) Παρὰ Ἀρδεῖνῳ Collatione ΙΘ'. ἐν Τόμῳ Θ'. τῶν Συνοδικῶν: Στήλη 905.

Πρὸς ὃν Ἰωάννης: „Οὐκ ἐρωτῶ, εἰ τὰ χαρίσματα τῷ Πνεύμα-  
 „τος εἰσὶ τοιαῦτα ἕτερα;“ (τὰ δὲ Λατινικὰ Πρακτικά:) „Οὐ  
 „τῷτο αὐτὸς ἐρωτῶ: ἀλλὰ Φημί: πότερον τὰ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι  
 „χαρίσματα, τὰ χορηγούμενα ἡμῖν, ταῦτόν εἰσιν ὅ,τι καὶ τὸ  
 „Πνεῦμα τὸ Ἅγιον; πρὸς δὴ τῷτο ἐν εἵδει ἀποκρίναί· καὶ μὴ  
 „πλέον;“ — Ἀλλὰ γὰρ ὡς ἡδὴ ἐφθήμεν εἰρηκότες: τὰ τῷ Ἁγίῳ  
 Πνεύματος χαρίσματα, ἐ ταῦτα ἐστὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι, ἀλλ'  
 ἕτερα τὸ παράπαν, καθ' ὃν λόγον εἴρηται. Ἐνθεν τοι ἐπαναλαμ-  
 βάνει ὁ Ἐφέσος: „Ἑτέρα εἰσιν· ἀλλ' ἐ κατ' αὐτὰ ὑφεσῶτα;“  
 (Τὰ δέ τοι Λατινικὰ Πρακτικά:) „Φημί δὴ, ἕτερα μὲν εἶναι  
 „τὰ χαρίσματα παρὰ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ἐμὴ δὲ ὅσα καὶ καθ'  
 „ἑαυτὰ ὑφίστασθαι αὐτά;“ — Ἀλλ' Ἰωάννης ἐνίσταται: „Ἑτέρα  
 „παρ' αὐτὸ τὸ Πνεῦμα ἔλεγεσ πρότερον· κατὰ τὸν τρόπον, καθ'  
 „ὃν ἕτερον τῷ Τίῳ τὸ Πνεῦμα;“ (Τὰ δέ γε Λατινικὰ Πρακ-  
 τικά:) „Ἑτέρα μὲν ἐστὶ παρὰ τὸ Πνεῦμα· ἀλλὰ μὴ πρότερον  
 „ἐφασκες τὸναντίον, λέγων ἐκ τῷ Πνεύματος μηδὲν λαμβάνεσθαι  
 „παρ' αὐτὸ τὸ Πνεῦμα;“ — Ἀλλ' ἐχὶ τάναντία φαμὲν αὐτοὶ σὺ  
 τῷ Μάρκῳ, καὶ ἕτερα λέγοντες παρὰ τὸ Πνεῦμα, καὶ πάλιν  
 μὴ ἕτερα: ἦτοι μηδένα ἄλλον παρὰ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα λαμβά-  
 νειν ἡμᾶς· ὅτε γὰρ φαμὲν ἕτερα παρὰ τὸ Πνεῦμα ἡμᾶς λαμ-  
 βάνειν, ἐκεῖνο νοοῦμεν: ὅτι τὰ χαρίσματα, ἅπερ ἕτερα παρὰ  
 τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐστίν, ἐκ τῷ Πνεύματος ὑποδεχόμεθα· ὅτε δὲ  
 πάλιν, ἐχ' ἕτερα παρὰ τὸ Πνεῦμα λαμβάνειν λέγομεν, ἐχ'  
 ἕτερόν τινα παρὰ τὸ Πνεῦμα, κατ' ἑαυτὸν ὑφιστάμενον, ἡμᾶς  
 ὑποδέχεσθαι ἐννοοῦμεν. Καὶ γάρ τοι καὶ αὐτὸ τὸ Πνεῦμα ὑπο-  
 δεχόμεθα, καὶ τὰ παρ' ἐκείνῃ χαρίσματα κατ' ἑαυτὰ ἐχ' ὑφί-  
 σταται. Ἀποκρίνεται τοιγαρὲν ὁ Ἐφέσος: „Τῷτο διωάμεθα πα-  
 „ρασηῆσαι καὶ ἐξ ἑτέρας φωνῆς τῷ Βασιλεῖ;“ (Τὰ Λατινικὰ  
 Πρακτικά:) „Οὕτω κατ' ἐκείνον τὸν τρόπον λαμβάνομεν παρὰ  
 „τῷ Πνεύματος καὶ τοι ἂν λαμβάνομεν χαρίσματα, ἐ καθ' ἑαυτὰ  
 „ὑφεσῶτα ἐστίν, ἀλλ' ἕτερα παρ' αὐτὸ τὸ Πνεῦμα;“ — Πρὸς ἃ  
 „ταῦτα κατεξανίσταται Ἰωάννης: „Ἐρωτῶ Σε, Πάτερ Αἰδεσι-  
 „μώτατε, τὸ χορηγούμενον τῷτο Πνεῦμα παρὰ τῷ Τίῳ, Κτίσης  
 „ἐστίν, ἢ κτίσμα; Δύο γὰρ εἰσιν ἐν τῷ παντὶ Κτίσης, καὶ  
 „κτίσματα: καὶ ἐστὶ Κτίσης τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, αἱ ἐνέργειαι  
 „δὲ αὐτῷ εἰσὶ κτίσματα. Ἄρα κτίσμα ἐστὶ τῷτο τὸ Πνεῦμα τὸ  
 „Ἅγιον, ὃ ἐξέχεεν ὁ Θεὸς πλοσίως ἐν ἡμᾶς διὰ Ἰησοῦ Χριστοῦ;“  
 (Τὰ δὲ Πρακτικὰ Λατινιστὶ ἀντὶ τέτων, ἔχει:) „Ἐρωτῶ: Μὴ  
 „ἐχὶ σωάμα τῷ Πνεύματι χορηγεῖται τὰ χαρίσματα παρὰ τῷ  
 „Ἁγίῳ Πνεύματος; Νυνὶ δὲ συμπεραίνω: καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ  
 „Ἅγιον λαμβάνομεν, καὶ τὰ δῶρα αὐτῷ: καὶ τὸ μὲν Πνεῦμα  
 „τὸ ἡμῖν χορηγούμενον, ἐστὶ Κτίσης, ἐ κτίσμα: τὰ δὲ χαρίσματα,  
 Τόμ: Β'. Φ ΦΦΦ „κτίσ-



„κτίσματα εἰσί. Παρὰ δὲ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι λαμβάνομεν καὶ  
 „αὐτὸ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, καὶ τὰ χαρίσματα αὐτῷ...“

Πρὸς ἃν ταῦτα τὰ ἐρωτήματα, τὸν Μάρκον ἀκωὶ γενέσθαι,  
 τὰ Ἑλλωικὰ τῶν Πρακτικῶν ἔχει: „Ὁ δὲ Ἐφέσος,“ Φασίν, ἐσιώπα.  
 „Ὁ, τι ποτ' ἔν ἄρα περὶ τῆς ὑποληπτέον: (τὰ γὰρ Λατινιστὶ  
 Συγγραφέντα, ἔδὲν τοιῶτον προσιδέασιν.) Καὶ ἀληθὲς ἢ τὸν  
 Ἐφέσος πρὸς ταῦτα σεσιγηκέναι· ἔδὲν ἂν πάντως ὑποσώψασθαι,  
 ἄλλ' ἢτοι ἀπαξιῶσαι αὐτὸν πρὸς τοιαῦτ' ἄτλα Ἐρωτημάτων ἀπαν-  
 τήσαι, ἃ μηδέν τι σωτελεῖν ἠγάτο πρὸς τὸ προκείμενον· ἢ μὴ  
 προχείρως ἐχηκέναι τὰς ἀποκρίσεις τὰς πρὸς αὐτά. Μήτοι γε δὲ  
 παρὰ τῷτο, ὁ κατὰ τῆς ἀληθείας, τῷ ἐκ μόνου τῷ Πατρὶ ἐκ-  
 πορεύεσθαι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, θρίαμβος ἐξετελέσθαι; ἢ μήπο-  
 τε, ὃν Ἰωάννης τοῖς τῷ Βασιλεῖ προσέτριβε ῥήμασιν, ὁ νῦν ἐν-  
 τεῦθεν ἐναπεδέχθη; Ἀλλὰ τί μὲν τὰ Ἐρωτήματα περιέχον  
 ἐκείνα σωείδομεν. Ἰδωμεν ἃν, καὶ τί δῆποτε ὧ, ὅπερ ἐξ αὐτῶν  
 ἐκρίβων ἐπέφερεν Ἰωάννης, ἵνα δὴ πλήρης ἢ περὶ τῶν γεννηθῶν  
 κρίσις. Ἐνίσταται τοιγαρὲν ἐφεξῆς Ἰωάννης, (κατὰ τὰ Ἑλλωικὰ  
 Πρακτικά.) „Δύτερον ἐρωτῶ Σε: πότερον, τὰ χαρίσματα δι-  
 „δονται μετ' αὐτῷ τῷ Πνεύματι, καὶ μετὰ τῷ Προσώπῳ καὶ τῇ  
 „ὑποστάσει αὐτῷ τῷ Πνεύματι, ἢ ὅ; Τρίτον: εἰ ταῦτα  
 „εἰσὶ τὰ χαρίσματα, ἅπερ λαμβάνονται παρὰ τῷ Ἁγίῳ Πνεύ-  
 „ματι,“;

Σωεπιφορεῖ ἃν ἐνταῦθα πάλιν Ἰωάννης ποικίλα Ἐρωτή-  
 ματα, μηδέν τι πρὸς τὸ σκοπόμενον τείνοντα: καὶ γὰρ, καὶ  
 μετὰ τὸ ἐρωτῆσαι, ἐκείνο· μόνον ἐξ αὐτῶν ἐπιφέρει, ὅτι ἄρα  
 τὰ χαρίσματα ἡμῖν χορηγεῖται μετὰ τῷ Πνεύματι. Ἀλλ' ἵνα  
 δὴ ἀποχρώντως πρὸς ἕκαστα ἀπαντήσωμεν: Πάντως περὶ τὰ  
 τῷ Παναγίῳ Πνεύματι δῶρα, σωάμα τῷ Πνεύματι αὐτῷ χο-  
 ρηγεῖται, καὶ σωὶ τῷ Προσώπῳ, καὶ τῇ ὑποστάσει τῇ αὐτῷ:  
 περὶ ὅ ἐς πλάτος ἐν τῇ Πραγματείᾳ (166) διέληπται, τῇ ὅτι  
 „ἢ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι παρὰ τῷ Τίῳ Πέμψις, ἔδὲν εἰς Ἀπό-  
 „δειξιν συμβάλλεται τῇ τῷ Πνεύματι Ἐκπορεύσει ἐκ τῷ Τίῳ...“  
 Πάλιν: ἔτε ταῦτα ἐστὶ χαρίσματα, ἅπερ ἐν ἡμῖν ἐνεργεῖ τὸ  
 Πνεῦμα τὸ Ἅγιον· ἔτε τῷ Πνεύματι ἐστὶ τὰ αὐτά, τὰ χαρί-  
 ματα: περὶ ὅ ἐρηται καὶ ἀνωτέρω.

Πρὸς γὰρ τὰς Ἐρωτήσεις ταύτας, σιγῶντα ἔτι διαμείναι  
 τὸν Μάρκον, τὰ Ἑλλωιστὶ φασὶ Πρακτικά: „Ὁ δὲ Ἐφέσος μη-  
 „δὲν ἔχων ἀποκριθῶσι, ἐσιώπα ἐπὶ πολὺ...“ Ἀλλὰ τὰ Λατι-  
 νικὰ Πρακτικά, ὡς ἐρηται, τῇ ἐπαναληφθείσης ταύτης, καὶ  
 ἐκτε-

(166) Ἐν Πραγμ: τῇ Η'. Ἀπαντ: δὲ Η'.



ἐκτενεσέρας σιγῆς, ἔδὲ τὴν τυχεῖσαν ἐποιήσατο μνείαν. Καί τοι, καὶ δώμεν τὰ Ἑλλωικὰ περὶ τῆς σιγῆς ἀληθεύειν, εἰκὸς ἂν εἴη, ὡς ἀνωτέρω, κρίνειν περὶ αὐτῆς. Σιωαῖς δ' ἔμπης ὁ τῶν Γραικῶν Βασιλεὺς ὡς μηδὲν πρὸς τὴν πρόθεσιν τὰ Ἰωάννης Ἐρωτηματα σιωετέλει, τὰς τοιαύτας τῶν Διενέξεων ἠξίωσεν αὐτὰς παρελθεῖν, κατ' ἀμφοτέρα δὴ τὰ Πρακτικὰ, τὰ τε Ἑλλωιστὶ, καὶ τὰ Λατινιστὶ φερόμενα. Οὕτω γὰρ ἐν τοῖς Ἑλλωικοῖς: „Καὶ ὁ Βασιλεὺς φοβηθεὶς μήποτε εἰς ἄλλο Δόγμα ὁ λόγος ἐμπέσοι, καὶ εἰς μέσον ἄκοντας περὶ κτισθὲ καὶ ἀκτίσθῃ ἡ ἐξέτασις φέροι ἡμᾶς, ὥρισεν ἵνα παύσωνται περὶ τῆς διαλέγεσθαι, „ Ἐν τούτοις δ' ἔν ὅμως τὴν Ἀπόκρισιν ἀπήτην οἱ Λατῖνοι ἐπέγοντες, ἡ τὰ Ἑλλωικὰ φέροι τῶν Πρακτικῶν: „ Ἀλλ' οἱ Λατῖνοι καὶ ἔτι τούτο ἐξήτην αὐτὰς, „ Ἀνθ' ὧν γε πλείονα ἐν τοῖς Λατινικοῖς Πρακτικοῖς ἐμφέρεται, τάδε. — Ὁ ΠΡΟΒΙΓΚΙΑΛΙΣ: „ Μᾶλλον δὲ κατὰ γε τὴν Πρόθεσιν ἐστίν, ὡς αὐτίκα δείξω. — Ὁ ΑΥΤΟΚΡΑΤΩΡ: Φαμέν παρὰ τὴν προτεθεῖσαν μαρτυρίαν εἶναι. — Ὁ ΠΡΟΒ: Ἡμεῖς ὀφείλομεν ἐπὶ τῆς μαρτυρίας δεῖναι τὴν ἐννοίαν αὐτῇ. — Ὁ ΚΑΡΔΙΝΑΛΙΣ: Ἐκ τῶν εἰρημένων ὁ Προβιγκιάλις δείξει βέλεται, ὅτι τὸ Πνεῦμα, Πτώσεως ἐστὶν ὀνομαστικῆς, καὶ ἔτι πρὸς γε τὴν τῆς λόγος Πρόθεσιν ἐστὶν ἀναγκαστικῆς. — Ὁ ΠΡΟΒ: Ταῦτα τὰ χαρίσματα, ἅπερ ἡμεῖς λαμβάνομεν παρὰ τῆς Πνύματος, ἐκ εἰσὶ τὸ Πνεῦμα, καὶ εἰσὶ κτιστὰ ἐν ἡμῖν, „ — Ἐνταῦθα δὴ τῶν Ἰωάννης Ἐρωτημάτων, ἐκ ἀσωτελῆ ὡς πρὸς τὴν Πρόθεσιν τὴν γὰρ ἐννοίαν ἐσκόπει δι' αὐτῶν περιτρέψαι, ὡς ὁ Μάρκος τῇ τῆς Βασιλείας προσενεχθείσῃ ῥήσει προσῆπλεν. Ἀλλ' ἔδὲ τοσαύτας σιωπεπορήσασθαι Ἐρωτήσεις ἐπάναγκες ὡς ἔδ' ἐντεῦθεν ἐμπεδόν τι Ἰωάννης σιωῇγε. Κατεπεγόντων ἔν ἔτι τῶν Λατίνων, (περὶ ἃ ἐν τοῖς καθ' ἑκατέραν τὴν Διάλεκτον Πρακτικοῖς) ἀπεκρίνατο ὁ ἘΦΕΣΟΥ „ ὅτι τὸ Βασιλεῖς χωρίον ἐκεῖνο, ἅτε δὴ ἀμφιβολία τῆς Ἐρμηνείας ἐπιδεκτικόν γε ὄν, ἐκ ἐξ ἀνάγκης ὑπὲρ τῆς Λατίνων δόξης ἔχει ἐπάγεσθαι. ὁπότε ἄλλως καὶ ἢ παρὰ τῆς Ἰωάννης ἀποδοθείσα διάνοια, τῇ ὑφ' ἣ τῆς λόγος ἀσύμβατος ὅλως ἐστὶ διὸ καὶ ἐπ' ἄλλα μεταβητέον, „ (167) Καὶ ἦπερ δὲ, ἀληθεῶς ταῦτα ὁ Ἐφέσος, ὥσπερ

(167) Καλὸν δ' ἐνταῦθα καὶ αὐτὰ ἐπὶ λέξεως παραθέσθαι τὰ τῆς Ἐφέσου ῥήματα: „Τὸ ῥήτον τούτο (ἔφη) παρέχει ἡμῖν ἀμφιβολίαν· ἐπειδὴ ἄλλως μὲν νοεῖται παρ' ἡμῖν, ἑτέρως δὲ παρ' αὐτῶν. Ἐκ δὲ τῶν ἀμφιβολιῶν, ἔδὲν ἀναγκαῖον σιωπάμεθα· ἔδ' ἄρα ἐκ τούτων ἀναγκαίως ἔχετε δεῖξαι τὸ ὑμέτερον βέλημα· ἐπεὶ ἐν διόχῳ, κατὰ τὸν ὑμέτερον λόγον νοηθῆναι, ὅτι ἢ λαμβάνομεν ἕτερα παρὰ τῆς Πνύματος, ὥσπερ λαμβάνει καὶ παρὰ τῆς Ἰῆς τὸ Πνεῦμα· τούτο δὲ καὶ πρὸς τὴν ἀκρίβειαν τῶν εἰρημένων ἐναντίον ἐστὶ καὶ ἑδωκὼς εἰσάγει τὸν Ἰὸν αἴτιον τῆς Πνύματος· κατὰ τὴν φανερὰν τούτο τὸ ῥήτον, ἐφ' ἑτέρον μελετῶμεν, „ (Ἐν Σιωγῇ: τῆς Φλωρ: Σιωδὸς ΚΒ'. παρὰ τῷ Ἀρδάνω, Τόμ: Θ'. Στήλη 268. 269.

ὥστε ἀνωτέρω ἐδάκνυτο. ἸΩΑΝ: δὲ πρὸς ταῦτα, τῷ λόγῳ τῆς ἘΦΕ'ΣΟΥ κατὰ τὸ ἀποχρῶν ἀπαντῆσαι ὀφείλων, τῆ τῷ κατ' αὐτὸν ἔννοϊαν μηδαμῶς σιωπᾶν τοῖς Βασιλείαις ῥήμασιν ἀποδεδοχότος· ὁ δὲ, ποικίλ' ἄτ' αὖ μόνον, ἐκ τῶν ὑπ' αὐτῆς διερωτημάτων ἀναβάλλεται σιωπᾶν.

Ἰδωμεν ἔν τ' ἰδίῳ Ἰωάννης ἐντεῦθεν σιωπᾶν ἐστὶ; — „Κατὰ τὸν αὐτὸν τρόπον, καθ' ὃν λαμβάνομεν τινα παρὰ τῆς „Πνύματος, καὶ παρὰ τῆς Υἱῆς τὸ Πνεῦμα λαμβάνομεν. Ἐπειδὴ „λαμβάνοντες τὸ Πνεῦμα παρὰ τῆς Υἱῆς, λαμβάνομεν καὶ τὰ „χαρίσματα τῆς Πνύματος καὶ λαμβάνοντες, (ἐκ γε τῆς Πνύματος „μας δηλονότι) τὰ χαρίσματα, λαμβάνομεν τὸ Πνεῦμα μετὰ „τῶν χαρισμάτων. Εἰ ἔν ταῦτα, καὶ ἔτι ἕτερα λαμβάνομεν „παρὰ τῆς Υἱῆς, καὶ παρὰ τῆς Ἁγίας Πνύματος πῶς ἂν ἐδίδαξεν „ὁ Βασίλειος, μὴ ἕτερα ἡμᾶς ἐκ τῆς Πνύματος λαμβάνειν, ὃν „δὴ τρόπον ἕτερα, τῆς Υἱῆς τὸ Πνεῦμα παρὰ τῆς Υἱῆς λαμβάνομεν; Τῆτο δὴ ἄρα τὸ Ἰωάννης Ἐπιχέρημα ὡς, — Ἀλλὰ μηδὲν ὅλως αὐτὸν τελεσφορεῖν, σαφῶς ἐστὶ σιωπᾶν ἐντεῦθεν: Τὸν γὰρ Βασίλειος νῦν, αὐτοὶ μετὰ τῆς Μάρκας τοιούτον εἶναι φασί: Ὡς καὶ λαμβάνομεν παρὰ τῆς Ἁγίας Πνύματος ἕτερόν τινα, παρὰ τὸ Πνεῦμα αὐτὸ, καθ' ἑαυτὸν ὑφεσῶτα ὥστε παρὰ τῆς Υἱῆς λαμβάνομεν, ἕτερόν τινα, παρὰ τὸν Υἱὸν αὐτὸν, καθ' ἑαυτὸν ὑφεσῶτα τῆς Υἱῆς, τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. Πῶς ἔν τῆτοις, εἰπέμοι: ὑπεραντὶ ἂν εἴη, τὸ παραπλησίως παρὰ τε τῆς Ἁγίας Πνύματος, καὶ παρὰ τῆς Υἱῆς τὰ αὐτὰ λαμβάνειν ἡμᾶς; Τὰ αὐτὰ πάντως καὶ παρὰ τῆς Ἁγίας Πνύματος λαμβάνομεν, καὶ παρὰ τῆς Υἱῆς· ἀλλὰ παρὰ μὲν τῆς Υἱῆς τὸ Πνεῦμα λαμβάνομεν, ὡς ἕτερον τῆς Υἱῆς, ὑφεσῶς καθ' ἑαυτὸ παρὰ δὲ τῆς Πνύματος λαμβάνομεν τὸ αὐτὸ Πνεῦμα, ἀλλ' ἔτι ὡς ἕτερόν τι τῆς Πνύματος ὃν, χωρὶς τε καὶ καθ' ἑαυτὸ ὑφεσῶς· ἀλλ' ἔν μέντοι, καὶ τὸ αὐτὸ Πνεῦμα Ἅγιον, ὡς δῆλον παντί: ὡς ταύτη γε τῷ διαφορᾶν μηδεμίαν εἶναι, τῷ λόγῳ τῶν παρὰ τῆς Υἱῆς, καὶ παρὰ τῆς Πνύματος λαμβανόμενων, τῷ δὲ λόγῳ μόνῳ τῆς τρόπης (168) καθ' ἑαυτὸν

(168) Κατὰ τῷ τῆς διδομένης δηλ: ἀναφορὰν πρὸς γε τῶν διδόντων ἑκάτερον· τὸ μὲν γὰρ Πνεῦμα διδόν ἑαυτὸ, καὶ διδόντι ἑαυτῆς τι Προσωπικῶς ἕτερον· ὁ δὲ Υἱὸς διδόν τὸ Πνεῦμα, διδόντι τι καθ' ἑαυτὸν ἕτερον ὃν. Ἐνθεν τοι καὶ οἱ λαμβάνοντες, ἔτι ἕτερόν τινα λαμβάνουσι παρὰ τῆς Πνύματος, καθάπερ ἕτερον λαμβάνουσι παρὰ τῆς Υἱῆς· καὶ γὰρ τὸ Πνεῦμα ἑαυτῆς ἕτερον· ἀλλὰ τὸ Πνεῦμα ἕτερον τῆς Υἱῆς. Καὶ τῆτο σαφῶς ὁ Οὐρανοφάντωρ ἐστὶν ἐκδιδάσκων, ἐν οἷς φησὶν: ὅτι „ἐκ παρὰ „τῆς Πνύματος τινα λαμβάνομεν, ὥστε παρὰ τῆς Υἱῆς τὸ Πνεῦμα. Τῆτο γὰρ ἡμῖν πεμπόμενον παρὰ τῆς Υἱῆς, ὡς παρ' ἑτέρου, δηλονότι, Προσώπου λαμβάνομεν· ἦκον δὲ ἀφ' ἑαυτῆς, ἔτι ὡς παρ' ἑτέρου Προσώπου: „ἀλλ' αὐτὸ προσίον, (σιώπῃς ὁ „φησὶ Βασίλειος) αὐτὸ προσίον ἡμῖν, καὶ ἀγιάζον, ὑποδεχόμεθα. Ἐντεῦθεν δὲ, τίποτ' ἂν εἴη τὸ ὁρθῶς σιναγόμενον; ἐπὶ δὲ ἄλλ', ἢ ὅπερ ὁ Θεοφάντωρ Διδάσκαλος κα-

καθ' ὃν τὰ αὐτὰ ἡμῖν, ὅτε Υἱὸς, καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ "Αγιον ἐπι-  
 χορηγῶσιν. Ὁ μὲν γὰρ Υἱὸς χορηγᾷ τὸ Πνεῦμα ὡς ἑτερόν τι  
 παρ' ἑαυτὸν, καθ' ἑαυτὸ ὑφ' ἑσῶς· τὸ δέ τοι Πνεῦμα δίδωσιν αὐτὸ  
 ἑαυτὸ, ὅχ ὡς ἑτερόν τι παρ' ἑαυτὸ, καθ' ἑαυτὸ ὑφ' ἑσῶς. Ἐπειδὴ  
 τοίνυν αὐτὸ τῷτο διδάσκει Βασίλειος, κατὰ τὴν τῶν ἰδίων αὐτῷ  
 ῥημάτων διάνοιαν, ἥπερ αὐτοὶ σωηγοῦντες διατελῶμεν· πῶς,  
 ἠπέμοι: ἔποιτο ἂν, μὴ τὴν αὐτῷ ἐννοίαν χώραν ἔχειν, διὰ τὸ  
 τὰ αὐτὰ ἡμᾶς λαμβάνειν παρά τε τῷ Υἱῷ, καὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύμα-  
 τος; Ἀλλ' εἴ τι καὶ ἔρρωτο ὁ τῷ Ἰωάννῃ λόγος, εἴη ἂν ἐκ τῷ  
 ἀκολούθῳ καὶ ἀπλῶς ψυδὲς, τὸ τὸν μὲν Υἱὸν δίδόναι τὸ "Αγιον  
 Πνεῦμα, ὡς ἑτερόν τι καθ' ἑαυτὸ ὑφ' ἑσῶς· τὸ δὲ Πνεῦμα ἑαυτὸ  
 δίδόναι, ὡς ὅχ ἑτερόν παρ' ἑαυτὸ καθ' ἑαυτὸ ὑφ' ἑσῶς· τῷτο δ' ἂν  
 εἴη ἀπηχέστε καὶ ἄλογον. Τίς γὰρ ἂν ποτὲ τῶν Χριστὸν σεβο-  
 μένων περὶ τῆς ἀμφιγνοῦν τε καὶ ἀμφισβητεῖν ἔλοιτο; ὁδὲν  
 ἄρα τὸ παράπαν, κατὰ τῆς ἐννοίας τῶν τῷ Βασιλείῳ ῥημάτων  
 τῆς ὑφ' ἡμῶν ἀποδιδομένης, ἀτοπον ἔπεσθαι, Ἰωάννης δέκνυσσι  
 διὰ τῷ ἰδίῳ Ἐπιχειρήματος, ὡς ἐστὶ παντί περ κατὰ δῆλον.

Ἀπαντᾷ γε μὴν πρὸς τὰδ' ὁ Ἐφέσος τὴν ῥῆσιν ἐκείνῳ εἶναι  
 ἀμφίδοξον, καὶ κατ' ἀμφοτέρους δὴ τῶς λόγους οἷαν τε εἶναι διερ-  
 μιδωθεῖσθαι. Προτάνει δ' εἰσέτι τὰ ἐφεξῆς ῥήματα, ἃ δὴ περ κα-  
 τασκοιάζοντα ἐστὶ, τὴν δευτέραν τῶν ἐννοιῶν, τὴν ὑπ' αὐτῷ, δη-  
 λονότι ἀποδοδομένην κρατεῖν, ὡς καὶ αὐτοὶ τῷτο ἀνωτέρῳ ἐδείκ-  
 νυμεν· καί γε προσέθησιν: ὅτι δὲ τὸ μὲν "Αγιον Πνεῦμα λαμ-  
 βάνει τὸ εἶναι παρὰ τῷ Υἱῷ, ἡμεῖς δὲ κτιστά τινα, παρὰ τῷ  
 Πνεύματι λαμβάνομεν, κατ' ὁδὲν ἐπάναγκες ἐξ ἐκείνου τῷ χωρὶς  
 δώσεται ἐπιφέρεσθαι. Τῷτο δὲ ἀποδειχθῶναι τῷ Ἰωάννῃ ὀφεί-  
 λεται. Καὶ μὲν δὴ πάλιν ὁ Ἐφέσος ἀληθῶς ταῦτα· καὶ γὰρ  
 καὶ αὐτοὶ ἀνωτέρῳ ἔφθηνεν ἀποδεδεχότες, ὡς εἰ καὶ τὰ τῷ  
 Βασιλείῳ τοιαῦτα ὡς: „Ὅτι ὁ λαμβάνομεν τινα παρὰ τῷ Πνεύ-  
 ματος, ὡς περ τὸ Πνεῦμα λαμβάνει παρὰ τῷ Υἱῷ,“ ὁδ' ὅτως  
 ἂν εὐπῆς ἔποιτο, ὅτι τὸ Πνεῦμα λαβὼν ἔχει τὴν ὑπαρξίν ἐκ  
 τῷ Υἱῷ. — Πάλιν ἐδείχθη: ὡς εἴ τις πρὸς αὐτὸ τὸ ὕφος τὸν  
 νῦν καλῶς ἐπισήσῃ, καὶ τὰ ἐφεξῆς λεγόμενα ἐπισαυμῇσται,  
 ἢ καθ'

κατασκοιάσαι προέθετο: ὅτι „τὸ Πνεῦμα ἐκ ἑσιν Υἱὸς, ὅτε ὀνομάζεται,“ Ἐλαμ-  
 βάνομεν γὰρ ἂν, εἴπερ, καὶ παρ' αὐτῷ τινα Παράκλητον ἄλλον, ὡς περ καὶ παρὰ  
 τῷ Υἱῷ τὸν Παράκλητον τὸ Πνεῦμα λαμβάνομεν. Ἐμοὶ μὲν ἂν ὅτω τηλαυγῆς  
 ἐστὶν ὁδὲ ἢ τῷ Θεωπεσίῳ Πατρὸς διάνοια, ὡς καὶ θαυμάζειν μὲν ἐπέρχεσθαι, ὅπως  
 αὐτῆς οἱ Λατίνων ἐκ ἐφίκοντο Θεολόγοι· θαυμάζειν δὲ καὶ μεγαλιῶεν ἐν τῷτο  
 τὴν δίκην, ὅτι τῷ ἁπαλῇ καινοτομηθέντος αὐτοῖς Δόγματος ἀπρὶξ ἔχεσθαι προε-  
 λομένοις, ἐπὶ προδηλοτάτης τῆς περὶ ἐν ῥητὸν παραινείας τε καὶ παραλογίας πα-  
 ρεχώρησεν ἐπισαυμῇσται τὰ νικητήρια θρασέως ὅτω καὶ ἀπαιδύτως· ὡς ἂν ἐντεῦ-  
 θεν δημοσιολογεῖσθαι λαμπρότερον παραδειγματίζεσθαι καὶ καίτοι καὶ αὐτῇ ἢ τῶν παρα-  
 δογματίζαντων ἀπόνοια.

Τόμ: Β'.

X χχχ

ἢ καὶ ἡμᾶς Ἑρμιωεία πάντα πάντως κρατήσῃ· λοιπὸν ὡς ἄρα τῷ Ἰωάννῃ, τὰ τῷ Ἐφέσῃ πρῶτον, ὑπὲρ τῆς προτεθείσης ἐννοίας Ἐπιχειρήματα ἀπελέγξαι· ἔπειτα δὲ, καὶ ἐξ αὐτῶν τῶν τῷ Βασιλείῃ ρημάτων κατὰσκοδῶσαι καὶ δᾶξαι, ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα λαμβάνει τὸ εἶναι παρὰ τῷ Υἱῷ· ἑξῆς δὲ τῶν αὐτῶν ἐκτελέσας, μόνον ἐξῆς τὸ κατ' αὐτὸν Ἐπιχείρημα, τὸ ἡμῖν ἀνωτέρω ἐπενεχθὲν ἐκείνο ἐπανακυκλοῖτε καὶ διεξέρχεται. Ἀλλὰ γὰρ ὅτι λήρος ἀντικρυς ἐκείνο, καὶ παιδιά τις ἐπιεικῶς, δέδεικται. Τὰ δέ τοι Ἑλλωικὰ τῶν Πρακτικῶν ἐντεῦθεν ἔτι προσέθησι, καὶ πρὸς ταῦτα τὸν Ἐφέσῃ σεσιγηκέναι: „Ὁ δ' Ἐφέσῃ ἐσιώπα, καὶ ἐκ ἀπελογεῖτο πρὸς ταῦτα, (169) Εἰ καὶ ἐδὲ τῆς σιγῆς τῆς ἐνταῦθα μνήμῃ τὰ Λατινικὰ ἐποίησατο. Ἀλλὰ καὶ περὶ τῆς σιγῆς τῆς δευτέρας τῆς δε, ἢ αὐτὴ ὡς ἀνωτέρω κρίσις γένοιτο. Ἐφ' οἷς, καὶ τὸν Αὐτοκράτορα πάλιν τῷ τοιαύτῳ Διάλεξιν ἀπονούσαντα μὴ ἐπιτρέψαι, τὰ Πρακτικὰ ἐπισωάπτει, τὰ Λατινιστὶ φερόμενα. Τὸν τεῦθεν δ' ἐδὲν περαιτέρω Ἰωάννης, περὶ ἧς ἔχει προσεπέθετο ὑπολήψεως φᾶναι· ἀλλ' ὥσπερ εἰ τὸ πρᾶγμα λόγοις ὡς ἀποδεδεχὼς ἀριδηλοτάτοις, ἐδὲν ὅ, τι μὴ, τὸ προτεθὲν ὑπὲρ Λατίνων ἴσαται τῷ Βασιλείῃ χωρίον, μεγαλαυχόμενος διεκόμπαζεν.

Αὕτη μὲν δὴ ἡ Φλωρεντινὴ Διάλεξις ἐκείνη, καὶ ὡς καὶ Μάρκον αὐτὸν, καὶ σὺ αὐτῷ καὶ τῷ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος ἐκ τῷ Πατρὸς μόνῃ Ἐκπόρυσιν, κακοδοξίας ἀπελεγχομένη Λατῖνοι οἶοντα. Ἀλλὰ γὰρ ὁλοχερῇ ταύτῃ ἡμεῖς τεθωρηκότες, καὶ τὰ Ἰωάννης Ἐπιχειρήματα διαβασάνσαντες, ὡς ὑπ' ὀφθαλμοῖς σαφῶς σωζόμεν, μηδὲν τὸ παράπαν τῷ προτεθείσαν τῷ Βασιλείῃ ρῆσιν πᾶσι Λατίνων σωηγορεῖν. Πῶς ἔν ᾧ ἐξ ἐκείνων γε τῷ χωρίῳ κακοδοξίας ψῆφος κατὰ τῆς Καθολικῆς Ἐκκλησίας ἐνώνεται; Ἀλλ' ἀμνηχανήσας ὁ Ἐφέσῃ διετέλεσε, καὶ σιγῶν ἔση· ἢ, ἐδὲ μικρόν τι πρὸς τὰ Ἰωάννης Ἐπιχειρήματά τε καὶ διερρημάτα ἐκ ἡξίωσαν οἱ Γραικοὶ ἀποκρίνασθαι. Ἀλλὰ περὶ μὲν τῆς τῷ Ἐφέσῃ σιγῆς, ἡδὴ εἶρηται· ἐκ ἡξίωσαν δὲ οἱ Ἀνατολικοὶ ἀποκρίνασθαι, ἔχ ὡς ἐδ' εἰσέπειτα ἐξῆς ἐδέποτε πρὸς αὐτό γε τῷ ἀποκρινόμενοι· ἀλλ' ὅτι ἐξ ὑπογείας τὰς Ἰωάννης Σοφιστικὰς διαλύσαι πλεκτάνας πρὸς τὸ παρὸν ἐκ ἔχον. Ἐνθεν τοι μετὰ γε τὰ ἀπομνημονοθέντα, ἐν τοῖς Πρακτικοῖς ἐπιφέρεται: (170) „Ὁ δὲ Βασιλεὺς εὐθὺς ἔφη: περὶ τῷ Προκειμένῳ ἐστὶν ἀνάγκη „διαλέγεσθαι· περὶ δὲ τῶν ἴσως λαληθήσεσθαι εἰς τὸν καιρὸν τὸν „προστήκοντα, „ Κατὰ δὲ τὰ Λατινιστὶ σωζόμενα: „Οὐ γὰρ „ἡμῖν

(169) Παρὰ Ἀρδεῖ: ἐνθ: ἀνωτ: Στήλη 272.

(170) Παρὰ Ἀρδεῖ: Αὐτ: Στήλη 272.



ἡμῶν, (ἔφασκεν ὁ Αὐτοκράτωρ·) ἔδὲ τοῖς ἡμετέροις πρόκειται  
κατ' ἑρίδα λογομαχεῖν· ἀλλὰ μετὰ ἐπιμελὲς ἐρδύνης θεωρεῖσθαι  
τὸ ἀληθές· καὶ τέττα γε ἕνεκα ἐκ ἀξιῶσιν ἐπὶ τῷ παρόντος  
ἀφίεναι τὰς Ἀποκρίσεις. Ἐπειδὴ δὲ ἡ τοιαύτη μαρτυρία ἀμ-  
φιδοξος εἶναι δοκεῖ, ἐκ ἐπέοικεν ἐνέχειν,,. Εἰ δὲ καὶ οἱ Ἀνα-  
τολικοὶ, πρὸς Διάλεξιν τὸ τιμικαῦτα τῷ Ἰωάννῃ ἀπηξίωσαν συ-  
νελθεῖν· μᾶλλον δὴπε ἐν τῷ δε τῷ μέρει Ἰωάννης ἐξήμαρτεν, ἢ  
ἐκείνοι· οἱ μὲν γὰρ ἐπιλιμῶνται, ὡς ἐπ' ἄλλῳ καιρῷ τιῷ τῷ ἐπε-  
νεχθέντος τῷ Ἰωάννῃ Ἐπιχειρήματος ὑπερθέμενοι λύσιν· Ἰωάν-  
νης δὲ, ἔδ' ἐν ψιλῷ ῥηματίῳ, πρὸς τὰ Ἐφέσσ· Ἐπιχειρήματα,  
ὑπὲρ τῆς ἐκτεθείσης τῷ Βασιλεῖς διανοίας, ἀπώτησεν· ἔδὲ μὲν  
ἐν ἀπαντήσῃ κατὰ νῦν προέθετο τὸ παράπαν ἔδέποτε. Καὶ  
ὅρα μοι τιῷ Λατινικῷ ῥαδιουργίαν· τὰ μὲν ἑαυτῶν ἐδέλοντο,  
καὶ κατεπέγοντες διετένοντο δεῖν, τῆς παρὰ τῶν Ἀνατολικῶν  
τυχῆν ἐπιλύσεως· τὰ δὲ τῷ Ἐφέσσ, ἀβρόχοις ποσὶν ἡξίαν αὐτοὶ  
παρελθεῖν· καὶ ταῦτα τέττα πρότερον προβαλομένη αὐτά· πᾶσαν  
ἔτω τοῖς Ἀνατολικοῖς τιῷ δυσχέριαν καταλείποντες. Καίτοι γε,  
καὶ ἔδὲν δὴπε Λατῖνοι ὄναιτο ἂν ἐκ τῆς τοιαύτης δε Προσδιαλέ-  
ξεως· ἐὰν γὰρ τέως, αὐτὸ τῷ ἐπιχειρήματι τὸ Ἰωάννης, ἢ δεῖον ἀνα-  
κριθεῖν, ἔδὲν ὅ,τι καὶ ὑγιές, ὡς ἀνωτέρω ἐδείχθη, ἐν αὐτῷ  
εὐρεθῇται.

Ἐνίσταται δ' ἐν τις (171): „Τὸ Ἅγιον Πνεῦμα τὸ ἐνεργῶν  
κατὰ χαρίσματα, ἔτω λαμβάνομεν παρὰ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος,  
ὡςπερ αὐτὸ λαμβάνομεν παρὰ τῷ Πατρὶ καὶ παρὰ τῷ Υἱῷ·  
τέττα ἐν χάριν, ἢτοι ἐρῶμεν· καινῷ τινι τρόπῳ ἡμᾶς τὸ Πνεῦ-  
μα παρὰ Πατρός τε καὶ Υἱῷ λαμβάνειν, οἷον περ αὐτὸ παρ' αὐτῷ  
τῷ Πνεύματος ἐ λαμβάνομεν· τέττασι· ἢ κατὰ τὰ ἐντός τιῷ  
ἑαυτῷ ἀρχικῶ ἐσὶν ἔχον ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱῷ· ἐ γὰρ ἐξ ἑαυτῷ  
δηλονότι· καὶ ἔτως ἀληθῆς μὲν ἔσται ἡ κοινὴ Ἑρμῶν, ὡδὲ  
ἡ πῶς ἀναπτυχθεῖσα· ἀλλ' ἐξ αὐτῆς ἂν ἔποιτο, τὸ ὑποδέχεσθαι  
ἡμᾶς τὸ Πνεῦμα, ὡς ἔχον τὸ εἶναι ἐκ τῷ Πατρὸς καὶ ἐκ τῷ  
Υἱῷ· ἢ γὰρ ἀσπασόμεθα τιῷ ἐν τῇ κατὰ Φλωρεντίαν Συνόδῳ  
ἀνενεχθεῖσαν Ἑρμῶν· καὶ ντεῦθεν ἰχυρότερον συμπερανῶμεν,  
ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα λαμβάνει ἕτερα παρὰ τῷ Υἱῷ, ἢ ἡμεῖς  
παρ' αὐτῷ. Καὶ ἡμεῖς μὲν παρ' αὐτῷ χαρίσματα λαμβάνομεν,  
ἀ ἐσὶ κτιστά· τὸ δὲ τοι Πνεῦμα παρὰ τῷ Υἱῷ λαμβάνει τὸ  
εἶναι,,. — Ἀλλὰ τιῷ μὲν δοῦτέραι τῶν δε τῶν ἐννοιῶν ἀνωτέρω  
ἡδὴ ἔφθην ἀπελέγξαντες. Ἐὰν δὲ τὸ Πνεῦμα ἐν Πτώσει  
Πλαγία ληφθῇ, ὡσαύτως ἀνωτέρω δεδεικται, τιῷ τῶν ῥημάτων  
διά-

(171) Κιχώδ: Ζητήμ: 5. Σελ: 48.



διάνοιαν εἶναι: ὅτι παρὰ μὲν τῷ Υἱῷ λαμβάνομεν ἕτερόν τι παρ' αὐτόν, καθ' ἑαυτὸ ὑφεσώς· τὸ Ἅγιον Πνεῦμα δηλαδή· παρὰ δὲ τῷ Πνεύματος, ἔχ' ἕτερον παρ' αὐτὸ λαμβάνομεν, καθ' ἑαυτὸ ὑφεσώς. Πῶς ἄρα, εἰν τὸ Πνεῦμα ἐν Αἰτιατικῇ τῇ Πτώσει ληφθῇ, προσλαβεῖν ἔχεν ὁ Ἰησοῦς, ὅτι μόνη κραλῆσαι ἡ ἔννοια, ὡς περ αὐτὸς τῷ προκειμένῳ χωρίῳ προσέπλασε; Τελέσι, παρὰ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος ἔκ' ἄλλον ἐξ αὐτῶν προεληλυθότα ἡμᾶς λαμβάνειν, ὡς παρὰ τῷ Υἱῷ λαμβάνομεν ἕτερον τὸν ἐξ αὐτῶν προερχόμενον;

Ἀλλὰ προσιθῇσιν ὁ αὐτὸς Ἰησοῦς, (172) ὡς „ὁ τῷ λόγῳ „σκοπὸς τῷ ὑπὸ τῷ Θεασείῳ Πατρὸς ἐνεχθέντος, περιπίπτει „εἰς τὸν ὑπὸ τῷ αὐτῷ ἐπενεχθέντα, ἐν τοῖς κατὰ Εὐνομίᾳ „Βιβλίοις, ἐπὶ τῷ ῥηθέντος χωρίῳ· τὰτὶ γὰρ ὡς λεγεσθαι ἔοικεν: „Εἴπερ ὡς τὸ Πνεῦμα Υἱὸς τῷ Υἱῷ, ἐλαμβάνομεν ἂν Πρόσωπόν τι „ἐξ ἐκείνου προῖον, ὡς λαμβάνομεν τὸ προβαλλόμενον ἐκ τῷ „Υἱῷ (τῷτο γὰρ ἐστὶ τὸ ἕτερον ἡμᾶς παρὰ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος „λαμβάνειν, ὡς λαμβάνει παρὰ τῷ Υἱῷ.) Ἀλλὰ „μὴ ὅτι λαμβάνομεν ἕτερόν τι Πρόσωπον, προῖον ἐκ τῷ Πνεύμα- „τος, ὡς λαμβάνομεν τὸ προβαλλόμενον ἐκ τῷ Υἱῷ. Ἄρα „τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἔκ' ἔστιν Υἱὸς τῷ Υἱῷ. Οὗτος ὁ τῷ Ἐπιχα- „ρήματος ἐστὶ τόνος, ῥᾶτος περ σπιιδῆν καὶ προχαρότατος, καὶ „τῷ λόγῳ εἰς ταῦτόν ἰὼν ἐκείνῳ: ὡς ὁ δέον Υἱὸς ἐξ Υἱῶν πα- „ραδέχεσθαι ἐν τοῖς Θεοῖς ἐπ' ἄπειρον,.

Ἀλλὰ Α'. ἔκ' ἐνταῦθα τῷ Βασιλείῳ πρᾶκετο δεῖξαι, μὴ εἶναι τὸ Πνεῦμα Υἱὸν τῷ Υἱῷ· μόνον δὲ, τὸ μηδαμῶς τὸ Πνεῦμα πέφυκεναι Υἱόν, ἵνα μὴ διτλῆς Υἱὸς εἰσαγάγωμεν, δέον Υἱόν εἶναι τε δὴ καὶ μόνον ὁμολογεῖν: „Εἶνα μὲν, φησὶ, Πατέρα, εἶνα „δὲ Υἱόν, ἐν δὲ καὶ Πνεῦμα, κατὰ τὴν Θεῖαν Παράδοσιν ὁμολο- „γητέον· καὶ ἔτε δύο Πατέρας, ἔτε δύο Υἱούς· διόπερ τὸ Πνεῦμα „Υἱὸς ἔκ' ἔστιν, ἔτε ὀνομάζεται,., Β'. Οὐδέ γε τὸ λαμβάνειν ἡμᾶς ἔχ' ἕτερον παρὰ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος, ὡς παρὰ τῷ Υἱῷ λαμβάνομεν τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ταυτὸν ἐστὶ τῷ λαμβάνειν ἡμᾶς παρὰ τῷ Πνεύματος ἔχ' ἕτερον ἐξ αὐτῶν προῖον, ὡς λαμβά- νομεν παρὰ τῷ Υἱῷ ἕτερόν τι ὃ προβάλλεται ἐξ αὐτῶν, ὡς ἡδη δέδεικται. Γ'. Ἐπειδὴ ὅλον αὐτῶν τῷ ἐπιχείρημα ἐπερείδων φαί- νεται τῇ ἀναγνώσει, καθ' ὡς τὸ Πνεῦμα ἐν Ὁρθῇ τῇ Πτώσει λαμβάνεται· αἰτᾶται πάντως τὸ ἐξ ἀρχῆς. Δ'. Ἐνθα ἐπ' Ὁρθῆς Πτώσεως τὸ Πνεῦμα λαμβάνεται, τὴν διάνοιαν εἶναι, φησὶν, ὅτι παρὰ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος ὁ λαμβάνομεν ἄλλαν· τελέσι, Πρόσωπόν τι ἐξ

(172) Αὐτόθι ἐν Σελίδι 49.

ἐξ αὐτῆς προῖόν: ὃν τρόπον παρὰ τῆς Υἱῆς λαμβάνομεν ἄλλα· ἦτοι τὸ Πρόσωπον τὸ προβαλλόμενον ἐκ τῆς Υἱῆς. Ἀλλ' ἐν τῇ προηγησαμένη Ἑνστάσει, τὸν νῦν τῶν τῆς Βασιλείας ῥημάτων, (ἐὰν τὸ Πνεῦμα κατ' Ὁρθῶν ἐκληφθῇ) ἔφησεν εἶναι τῆτον: ὅτι παρὰ τῆς Ἁγίας Πνύματος ἔχ' ἕτερα λαμβάνομεν, ὡς παρὰ τῆς Υἱῆς τὸ Πνεῦμα· ἡμεῖς μὲν γὰρ, κλίσάτινα παρὰ τῆς Πνύματος λαμβάνομεν, τὸ δὲ Πνεῦμα τὸ Θεὸς εἶναι λαμβάνει παρὰ τῆς Υἱῆς. Ἄτινα διαφορώτατα, καὶ ἀλλήλοις πάντῃ ἀσύμβατα. Πῶς γὰρ ἡ αὐτῇ φωνῇ, („τινὰ, ἕτερα, ἢ ἕτερον,“) νῦν μὲν περὶ τῶν κτιστῶν χαρισμάτων, νῦν δὲ περὶ Προσώπων ἑτέρων, τῆς μὴ παρὰ τῆς Πνύματος προβαλλομένης ἐδώατο ἐκλαμβάνεσθαι; Εἰ καὶ τῷ τῆς Ἰησοῦς ἔφοδον ἐπιχειρῶν ὡς Βασίλειος, τοιῶτον ἂν ἐξ ἀνάγκης εἴη τὸ κατ' αὐτὸν Ἐπιχείρημα: Εἰ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα Υἱὸς ὡς τῆς Υἱῆς, δεχοίμεθα ἂν τινα παρὰ τῆς Πνύματος Υἱὸν ἕτερον ἐξ αὐτῆς γεννηθέντα, ὥσπερ παρὰ τῆς Υἱῆς, ἕτερόν τινα ἐξ αὐτῆς γεννητὸν δεχοίμεθα. Ὅτι γὰρ ἔτις ἐχρῶ τότε μορφοῦσθαι τῷ Μείζονα, δῆλον ἐκ τῆς μηδέποτε τῆς Θεῆς Πατέρας ἀποδεικνύου ἐπιχειρήσει, μὴ Υἱὸν τῆς Υἱῆς πεφυκέναι τὸ Πνεῦμα, παρὰ τὸ, ἄλλως ἂν, καὶ ἐκ τῆς Ἁγίας Πνύματος ἕτερόν τινα προελθούσεσθαι· ἀλλὰ παρὰ τὸ Υἱὸν ἐκ τῆς Ἁγίας Πνύματος ἔτις αὐθις ἂν γεννηθήσεσθαι, ὥς Υἱὸς Υἱῶν εἰς ἄπειρον ἐπεισάγεσθαι. Διὸ καὶ αὐτὸς ὁ Ἰησοῦς, εἰς τῆτον ἦκεν τέως τὸν λόγον, τὸ τῆς Βασιλείας ἔφασκεν Ἐπιχείρημα· ἢ, πῶς ἂν, ἄλλως, ἔχοι τὸ εὐλογον ἦδε ἢ Μείζων; Εἴπερ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα Υἱὸς ὡς τῆς Υἱῆς, πρῆβαινε ἂν, καὶ ἐκ τῆς Πνύματος αὐτῆς Πρόσωπον ἄλλο, ὥσπερ τὸ Πνεῦμα πρόειτιν ἐκ τῆς Υἱῆς; Τεθὲν γὰρ ὡς ἀληθεύον, ὅτι τὸ Πνεῦμα Υἱὸς ἐστὶ τῆς Υἱῆς, ἐκ ἂν προσέτι κακῶς ἐφέψοιτο ὡς ἀληθείας ἐχόμενον, τὸ καὶ ἐκ τῆς Πνύματος προεἶναι Πρόσωπον ἕτερον, ὥσπερ ἐκ τῆς Υἱῆς τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον πρόεισι· τὸ γὰρ τὸ Πνεῦμα προεἶναι ἐκ ἑστὶ γεννᾶσθαι· ὡς ἔδδ τὸ γεννᾶσθαι ἐστὶν ἀπλῶς ἐκπορεύεσθαι: Τῆς τοιαύτης Ἐκπορεύσεως λόγον ἅπαντα γεννήσεως ἀποκλεισθῆς. Ὡς καὶ εἰ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκ τῆς Υἱῆς ἐκπορεύοιτο, ἐκ ἂν εἴη Υἱὸς τῆς Υἱῆς. Πῶς ἄρα ἐπὶ τῆς ἡγμένης, τεθὲν Υἱὸν εἶναι τὸ Πνεῦμα τῆς Υἱῆς, ἐπὶ τὸ ἐπόμενον αὐθις τίθεται ἅμα, μηδαμῶς εἶναι τὸ Πνεῦμα Υἱὸν τῆς Υἱῆς, μόνον δὲ ἐκπορεύεσθαι ἐξ αὐτῆς; Εἰ τοίνυν κατὰ τῷ Συλλογιστικῷ ἔφοδον τῆς Ἰησοῦς ἐπιχειρεῖ ὁ Βασίλειος, ἢ Μείζων δῆπερ ἐκείνη ἔτις ἔξει: Εἴπερ τὸ Πνεῦμα Υἱὸς ὡς τῆς Υἱῆς, ἐλαμβάνομεν ἂν ἕτερον ἐξ ἐκείνης γεννηθέντα, ὥσπερ ἂν παρὰ τῆς Υἱῆς ἕτερον ἐξ αὐτῆς γεννηθέντα λαμβάνομεν, τῆς τῆς τὸ Πνεῦμα: καὶ ἔτις ἂν ὁ Θεοφάντωρ πρεσβύων εἴη Βασίλειος, ὅτι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον γεννᾶται ἐκ τῆς Υἱῆς.

Τόμ: Β'.

Ψ ψψψ

Καὶ

Καὶ ὁδε ἄρα ὁ τῷ Ἐπιχειρήματος ἡμῖν ἐστὶ τόνος ἐκείνος, ὁ ῥᾶ-  
 σος νοηθῶναι καὶ προχειρότατος, ὁ τῷ τηλικύτῳ Πατρὶ Δόγμα  
 προσρίβων τὸ βλασφημότατον; 5'. Τίς ποτ' ἂν, εἰπέμοι: ἢ τῆς  
 Μείζονος σωέπεια γένοιτο: ἢ, εἰ τὸ Πνεῦμα Υἱὸς τῷ Υἱῷ εἴη, καὶ  
 ἕτερός τις αὐτοῖς ἐξ αὐτῶ προέλθοι τῷ Πνεύματος; Ἐψοίτο γὰρ  
 ἂν δὴπερ, τὸ πάλιν ἕτερον ἐκ τῷ Πνεύματος ἂν γεννηθήσεται, εἰ  
 καὶ ἕτερος ἐξ αὐτῶ τῷ Πνεύματος προέλθοι Υἱός. Μήτοιγε δὲ ἄρα,  
 εἴπερ ἐκ Πρόσωπα προέσι Πρόσωπον, ἤδη καὶ θάτερον Υἱὸς θα-  
 τέρευ ἐστίν· ὡς ἂν ἐντεῦθεν, ἐὰν ἢ τὸ Πνεῦμα Υἱὸς τῷ Υἱῷ, ἐπό-  
 μενον εἴη, καὶ Πρόσωπα ἐπὶ Προσώποις, ἄλλα ἐπ' ἄλλοις, εἰς ἀπει-  
 ρον προελθῶσεται; Μηδεμιᾶς δὲ τῆς σωεπείας ἕσης, πῶς, εἰπέ-  
 μοι: ὁ τῷ Ἐπιχειρήματος ἐκείνῳ τόνος ἐστὶ προδηλότατος;

Τελούτατον δὲ, τῶν ῥημάτων ἐκείνων: „Οὐ λαμβάνομεν  
 „ἕτερά τινα παρὰ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος, ὥστε τὸ Πνεῦμα λαμ-  
 „βάνει παρὰ τῷ Υἱῷ,· τὸν νῦν εἶναι διδάσκει τὸν δεῖ: καὶ λαμ-  
 βάνομεν ἕτερόν τι Πρόσωπον, ὥστε λαμβάνομεν τὸ προϊόν ἐκ τῷ  
 Υἱῷ. — Ἀλλ' εἴπερ τῶν: („καὶ λαμβάνομεν ἕτερά τινα παρὰ τῷ  
 „Ἁγίῳ Πνεύματος,·) ὁ νῦν ἐστίν, ὅτι παρὰ τῷ Πνεύματος καὶ  
 ἕτερόν τι Πρόσωπον λαμβάνομεν ἐξ αὐτῶ προϊόν· ἐπάναγκες καὶ  
 τῶν ἐφεξῆς: („ὥστε τὸ Πνεῦμα λαμβάνει παρὰ τῷ Υἱῷ:·) ὡσαύ-  
 „τως εἶναι τὸν νῦν, ὅτι (ὥστε τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον λαμβάνει  
 „Πρόσωπον ἕτερον, προϊόν ἐκ τῷ Υἱῷ,·) ὁ γὰρ πρῶτον ἀπόφησι,  
 δεύτερον κατάφησι περὶ τῷ Πνεύματος τῷ λόγῳ τῷ Υἱῷ. Οὐκ ἐν  
 ἡμεῖς, φησὶν, ἕτερα λαμβάνομεν παρὰ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος, ὥστε  
 τὸ Πνεῦμα λαμβάνει παρὰ τῷ Υἱῷ. Ἀλλὰ γὰρ ἤδη, κατὰ τὸν  
 Ἰησοῦν, ἀπέφη φθάσας Βασίλειος Πρόσωπόν τι ἕτερον ἡμᾶς πα-  
 ρὰ τῷ Πνεύματος λαμβάνειν προϊόν ἐξ αὐτῶ καταφάσκει ἄρα  
 περὶ τῷ Πνεύματος, ὅτι παρὰ τῷ Υἱῷ λαμβάνει Πρόσωπόν τι ἕτε-  
 ρον, προϊόν ἐξ αὐτῶ. Ἀλλὰ γὰρ τῷ καὶ ἀδιύατον ἅμα, καὶ  
 βλάσφημον ἐστίν. Εἴεν γὰρ ἂν, εἴπερ, τέτταρα ἐπὶ τῆς Τριάδος  
 τὰ Πρόσωπα: παρὰ τὰ λοιπὰ τρία, καὶ τετάρτῃ ἡμῖν ἀνακύπ-  
 τοντος, ὅπερ ἂν παρὰ τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ὑποδέχοιτο.  
 Ὅση ἐν ἄρα τῇ ἀναιδέα, τὸν τῷ τοιῶδε Ἐπιχειρήματος τόνον  
 πρᾶπτον τε καὶ προχειρότατον νοηθῶναι ὁ Ἰησοῦς εἰπὼν ἀπετόλ-  
 μησεν!

Ἀλλὰ χωρεῖ δὴ καὶ προσωτέρω ὁ ῥηθεὶς Συγγραφεύς: „Ἡ  
 „δέ τοι ἐννοία, φάσκων, ἢ παρὰ τῷ Μάρκῳ ἐπενεχθεῖσα ἀπροσ-  
 „φύτως ἄλλως ἐστίν. Παρὰ τῷ Υἱῷ, φησὶ, (173). λαμβάνοντες τὸ τῆς  
 „Υἱοθεσίας Πνεῦμα, ὑποθέμεθα τῷ Πατρὶ δι' αὐτῶ παρὰ δὲ τῷ  
 „Πνεύ-

(173) Παρὰ Ἀρξιδί: ἐν Συνελύσ: ΚΒ'. Τόμ: Θ'. τῶν Συνοδικ: Σελ: 265.

„Πνεύματος ἔχ' ἑτερά τινα λαμβάνομεν, παρ' αὐτὸ τὸ Πνεῦμα,  
 „ὥπερ παρὰ τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα, ἕτερον ὃν αὐτῷ τῷ Υἱῷ ἔκ'  
 „ἄρα τὸ Πνεῦμα Υἱός, ὥπερ ἔδὲ ὀνομάζεται. Ἐνθα ἑδέ τις  
 „ἔστιν ὑγιῆς σωέπεια, καὶ τὸ ἡγόμενον ψευδές. Ἡ ἔχι γὰρ τὸ  
 „Ἅγιον Πνεῦμα, ἐν ᾧ ἡμῖν τὰ οἰκεία χαρίσματα χορηγεῖ, καὶ  
 „ἑαυτὸ δίδωσιν; ἔχι ἐν τῷ αὐτῷ ὁ Μάρκος ἀντιπε-  
 „ριπίπτων ἔστιν; Ἐπειτα τὸ ὑποθεῖσθαι ἡμᾶς, ἐνέργειαν τῶν  
 „πρὸς τὰ ἑκτὸς ἔσαν, πῶς οἶον τε, μὴ καὶ τοῖς τρισὶ Προσώποις  
 „εἶναι κοινῶ; ἢ πᾶ γὰρ ἡμῶν ἡ Υἱοθεσία ἀγιασμὸς ἐστὶ τὴν δαί;  
 „μὴ ἄρ' ἐκ' ἐπίσης ἀγιαζόμεθα καὶ διὰ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι, καθά-  
 „περ καὶ διὰ τῷ Υἱῷ; τί δ' ἄλλ', εἰμὴ τῷτο, εἴη ἡ Αἵρεσις; —  
 Ἀλλὰ Α'. μὴ ἔκ' ἐξ ἀνάγκης ἔστιν ἐπόμενον: ὅτι, παρὰ μὲν  
 τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα, Πρόσωπον ἕτερον καθ' ἑαυτὸ ὑφεσῶς λαμ-  
 βάνομεν· παρὰ δὲ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι, ἔλαμβάνομεν Πρόσωπον  
 ἕτερον καθ' ἑαυτὸ ὑφεσῶς: Ἄρα τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἔκ' ἔστιν  
 Υἱός; Τῷτον δὲ τὸν τῷ Ἐφέσῃ νῦν εἶναι, φανερόν ἐστι καὶ ἐξ  
 ὧν ἐπὶ τῆς ΚΒ'. Σωελύσεως τῷ Φλωρεντινῷ Συλλόγῃ, ἐπὶ τοῖς  
 προτεθεῖσι ρήμασιν ἀντίκα ὑποσυνάπτει: „Πρὸς ταύτῃ τῷ διά-  
 „νοιαν εἶπεν ὁ Μέγας Βασίλειος, ὅπερ ἐνταῦθα κεῖται: ὅτι τὸ  
 „Πνεῦμα Υἱός ἔκ' ἔστιν, ἔτε ὀνομάζεται· ἐπεὶ ἔλαμβάνομεν τινὰ  
 „παρὰ τῷ Πνεύματι, ἕτερα δηλονότι τῷ Πνεύματι, καὶ καθ'  
 „ἑαυτὸ ὑφεσῶτα· ὥπερ λαμβάνομεν τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον παρὰ  
 „τῷ Υἱῷ, ἕτερον ὃν αὐτῷ κατ' ἰδίαν ὑπόστασιν· ἀλλ' αὐτὸ τὸ  
 „Πνεῦμα προσιὸν ἡμῖν καὶ ἀγιαζὸν ὑποδεχόμεθα,,. Ὁ αὐτὸς  
 ὡς ἄρα ὁ τῷ Ἐφέσῃ νῦν καὶ τῶν προτεθέντων ρημάτων: Ὅτι  
 ὁ μὲν Υἱός τὸ Πνεῦμα δίδωσιν ἡμῖν τὸ τῆς Υἱοθεσίας, ἕτερον  
 δηλονότι ὃν, παρ' αὐτόν· παρὰ δὲ τῷ Πνεύματι ἔχ' ἑτερά τινὰ  
 ἡμεῖς λαμβάνομεν, παρ' αὐτό γε τὸ Πνεῦμα: ὃν τρόπον παρὰ  
 τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα λαμβάνομεν, τὸ ἕτερον ὃν αὐτῷ τῷ Υἱῷ.  
 Τὸ ἄρα Πνεῦμα ἔτ' ἔστιν, ἔτ' ὀνομάζεται Υἱός. Τοιούτων δὲ πάν-  
 τως ὄντων τῶν Ἐφέσῃ ρημάτων, πῶς ἔκ' ἔστιν ὡς ὑγιαίνουσα  
 ἢ σωέπεια; „Ἀλλὰ φησὶν: ἢ ἔχι καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ἐν ᾧ  
 „ἡμῖν τὰ οἰκεία χαρίσματα χορηγεῖ, καὶ ἑαυτὸ δίδωσι,,; Μὴ  
 τοι γε δὲ αὐτὸ τῷτο ποτὲ ὁ Μάρκος ἡρνήσατο; ἢ μὴ παρὰ τῷτο  
 ἐξίτηλος γίνεται ἢ τῷ Ἐφέσῃ σωέπεια; ἢ πᾶ ἐν οἷς ὁ Μάρκος  
 ἀπόφησιν, ἑτερά τινὰ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα διδόναι παρ' ἑαυτὸ, ἔδὲν  
 ἔστιν ἄλλο νοῶν, ἢ ὅτι ἑτερά τινὰ καθ' ἑαυτὰ ὑφεσῶτα, ὥπερ  
 τὸ Πρόσωπον καθ' ἑαυτὸ ὑφεσῶς ἔστιν.

Ἐπειτα, καὶ πᾶ, εἰπέμοι: ἡρνήσατο ὁ Ἐφέσιος, τί καθ'  
 ἡμᾶς Υἱοθεσίαν, καὶ διὰ τῷ Θεῷ ὡσαύτως τελεῖσθαι Πνεύματος;  
 „Διὰ τῷ Υἱῷ (φησὶ) λαμβάνοντες τὸ τῆς Υἱοθεσίας Πνεῦμα,  
 „ὑποδεχόμεθα τῷ Πατρὶ,,. Μὴ δ' ἄρα, παρὰ τῷτο, καὶ διὰ τῷ

Ψ ψψψ 2

Πνεύ-



Πνύματος ὑποθετῆθαι ἡμᾶς τῷ Θεῷ ἀπόφησι; Τῷ γὰρ ὄντι, καὶ ἐκ τῆς καὶ μόνῃ, ὅτι τὸ Πνεῦμα ἀποκαλεῖ Πνεῦμα Υἱοθεσίας, φανερόν ἂν εἴη ὁμολογεῖν τὸν Ἐφέσε, ὡς καὶ διὰ τῆς Ἀγίας ὑποθετῆμεθα Πνύματος. Διὰ γὰρ τῆτο καὶ Πνεῦμα Υἱοθεσίας λέγεται. Εἰ γὰρ καὶ ὁ Υἱὸς τὸ Πνεῦμα δίδωσι τῆς Υἱοθεσίας, ἵνα Υἱοὶ Θεοῦ γενώμεθα· ἐνδηλον δὴπερ, ὅτι καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ὑποθετῆ ἡμᾶς τῷ Θεῷ. Τί δὲ δεῖ πλειόνων; Προέταξε γὰρ Μάρκος πρὸ τῶν ἐπενεχθέντων αὐτῷ ῥημάτων ἐκείνων, καὶ ταῦτα: „Δῆλον, ὅτι παρὰ τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα λαμβάνομεν, „τῆτες τὸ τῆς Υἱοθεσίας Πνεῦμα· τῷ κατὰ φύσιν γὰρ Υἱῷ ἐστὶν „ἴδιον ὑποθετῆ διὰ τῷ Πνύματος. Καὶ τῆτο παρασηῆσαι βεβλόμενος ὁ Μακάριος Ἀπόστολος Παῦλος, ἐν τῇ πρὸς Γαλάτας „Ἐπιστολῇ, τοιαύδε φησίν. Ὅτι δὲ ἐστὶν Υἱοὶ, ἐξαπέστειλεν ὁ „Θεὸς τὸ Πνεῦμα τῷ Υἱῷ αὐτῷ ἐν ταῖς καρδίαις ὑμῶν, κρᾶζον, Ἀββᾶ ὁ Πατήρ, „. Καὶ ταῦτα μὲν εἰς τῆτο, καὶ περὶ τῶν ῥημάτων ἐκείνων, καὶ τῶν ἄλλων τῷ Μεγάλῃ Βασιλεῖ ῥήσεων.

## § 15'.

Ἐκ τῶν Γρηγορίῃ τῷ Θεολόγῃ.

Ἐκ δὲ τῶν τῷ Θεολόγῃ ΓΡΗΓΟΡΙΟΥ, ἀντεπάγχει Α'. τὰ ἐκ τῷ ΛΖ'. Λόγῃ, Σελ: 597. ἐκεῖνα: „Τί ἐν ἐστὶ, φησίν, ὁ λείπει „τῷ Πνύματι πρὸς τὸ εἶναι Υἱόν; Εἰ γὰρ μὴ λείποντι ὡς, „Υἱὸς ἂν ὡς ὁ λείπειν φαμέν· ὁ δὲ γὰρ ἐλλειπῆς Θεός: τὸ δὲ „τῆς ἐκφάνσεως, ἵν' ἔτῳς εἴπω, ἢ τῆς πρὸς ἄλληλα χέσεως διαφορον, διάφορον αὐτῶν καὶ τὴν κλήσιν πεποίηκεν, „. Ἐνθεν τοι ἐν τοῖς λοιποῖς ὁ ΒΕΛΛΑΡΜΙΝΟΣ· Βιβλ: Β': περὶ τῷ Χριστῷ, Κεφαλ: ΚΕ'. „Ἐνθα ταύτῃ ἀποδίδωσι Γρηγόριος τὴν αἰτίαν, „δὲ ὡς τὸ Πνεῦμα ὁ καλεῖται Υἱὸς, διὰ τὸ διαφερέσας ἔχειν, „μᾶλλον δὲ καὶ ἀντιθέτως καὶ ἀμοιβαίας τὰς χέσεις. Πάντως „δὲ ὁ ἂν ἀμοιβαῖον ὑπῆρχον αἱ χέσεις, αἱ τῷ Υἱῷ μεταξὺ „καὶ τῷ Πνύματος, εἰ μὴ καθότι, ὁ μὲν πνέων ἐστὶ, τὸ δὲ „πνεόμενον· ὁ γὰρ ὁ Υἱὸς, ἢ περὶ Υἱὸς, χετικόν τι ἐστὶ πρὸς τὸ „Πνεῦμα: ἀλλ' ὁ Υἱὸς ἢ πνύσης, πρὸς τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον „ἀναφέρεται. Οὐδ' ἐστὶν ἀπαντᾶν, ὅτι διακρίνονται ὁ Υἱὸς καὶ „τὸ Πνεῦμα, διὰ τῶν διαφορῶν χέσεων τῶν πρὸς τὸν Πατέρα, ὅχι δὲ διὰ τῶν ἐξ ἀμοιβῆς πρὸς ἀλλήλους. Σαφῶς γὰρ „ἔφη Γρηγόριος τὸ Πνεῦμα μὴ εἶναι Υἱόν· τῆτο γὰρ ἐστὶν, ὅτι „διακρίνεται τῷ Υἱῷ, διὰ τὸ μετὰ ἀμοιβαῖον τῆς χέσεως, ἢτοι „διὰ τὸ ἀμοιβαῖον τῆς ἀναφορῆς. Παρὰ δὲ ταῦτα, καὶ κατωτέρω γράφων ἐστὶν, ὁ δὲ τῷ Υἱῷ τι λείπει πρὸς τὸ εἶναι Πατέρα, „ἀλλ'



„ἀλλ' εἰ παρὰ τῆτο Πατέρα εἶναι αὐτὸν, διὰ τὴν τῶν ἀναφορῶν  
„δηλονότι ἀντίθεσιν,,.

Ἀλλ' ἐδὲν σωλήσιν ὁ Ἰησεῖτης· ὁ γὰρ Θεολόγος Γρηγόριος  
ἐντεῦθεν δείκνυσι, μηδαμῶς τὸν Υἱὸν εἶναι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον,  
μηδὲ τὸ Πνεῦμα εἶναι τὸν Υἱόν, ὅτι τέτων αἱ χέσεις εἰσὶ δια-  
φέρουσαι τέττις: ὅτι ὁ μὲν Υἱὸς ἐστὶ γεννητὸς, τὸ δὲ Ἅγιον  
Πνεῦμα ἐκπορεύτῳ· εἴχ' ὅτι δὲ καὶ τέτων μεταξὺ, ἢ κατὰ τὸ  
αἷτιον καὶ τὸ αἷτιατὸν ἀναφορὰ μεσιτεύει. Ταύτῳ δὲ τὴν τῆ  
Θεολόγου Γρηγορίου διάνοιαν εἶναι, ἐξ αὐτῆς τέττις τῆ ἀντιπροβαλ-  
λομένης χωρὶς σαφῶς παρίσταται. Ἐφασκε γάρ: „τὸ τῆς πρὸς  
„ἀλλήλα χέσεως διάφορον, διάφορον αὐτῶν καὶ τὴν κλήσιν πε-  
„ποίηκε (τὴν τῆς Υἱῶς δηλ: καὶ τῆς Πνεύματος) ἵν' ὁ μὲν Υἱὸς  
„καλῆται, τὸ δὲ Πνεῦμα Ἅγιον,,. Πρῆκειτο γάρ: „τί ἐν ἐστὶν  
„ὁ λείπει τῷ Πνεύματι πρὸς τὸ εἶναι Υἱόν; εἰ γὰρ μὴ λείπον ὡς,  
„Υἱὸς ἂν ὡς,,. Ὡστερ ἐν καὶ ἔπειτα δείξων, παρὰ τίνος ἀμοι-  
βαίας χέσεις, τῶν ἰδίων ἐλᾶχον ὀνομάτων τὸ Πνεῦμα καὶ ὁ  
Υἱὸς, ὑποσυνάπτει: „Αὐτὸ δὲ τὸ μὴ γεγεννηθῆναι, καὶ τὸ γεγεν-  
„νηθῆναι, καὶ τὸ ἐκπορεύεσθαι, τὸν μὲν Πατέρα, τὸν δὲ Υἱόν,  
„τὸν δὲ, τῆθ' ὅπερ λέγεται, Πνεῦμα Ἅγιον προσηγόρευσε,,.  
Τοιαύτας ἄρα τὰς χέσεις τῆς Υἱῶς καὶ τῆς Πνεύματος, κατ' ἐκείνο  
τὸ χωρίον, ὁ Θεὸς ἐπιγινώσκει Γρηγόριος· ἐξ ὧν, ὁ μὲν Υἱὸς  
ἔχει τὸ καλεῖσθαι Υἱὸς, τὸ δὲ Πνεῦμα, τὸ Πνεῦμα. Οὐκ ἄρα  
διὰ τῶν τοιῶνδε χέσεων τῆς Υἱῶς καὶ τῆς Πνεύματος, τὴν τῆς  
Ἁγίας Πνεύματος ἐννοεῖ Προβολῶν καὶ Ἐκπόρευσιν· εἰ γὰρ ἐκ τῆς  
τῆς Πνεύματος Προβολῆς ὁ Υἱὸς ἔχει τὸ καλεῖσθαι Υἱὸς. Δῆλον  
τὸ λεγόμενον, καὶ ἐξ ὧν ὡς παρασυνάπτει ὁ Θεολόγος Γρηγό-  
ριος: „Οὐδὲ γάρ τι τῷ Υἱῷ λείπει πρὸς τὸ εἶναι Πατέρα, (ἐδὲ  
„γὰρ ἐλλείψει ἢ Υἱότης) ἀλλ' εἰ παρὰ τῆτο Πατὴρ· ἢ, ἔτω γε  
„καὶ τῷ Πατρὶ λείπει τι πρὸς τὸ εἶναι Υἱόν· εἰ γὰρ Υἱὸς ὁ Πα-  
„τὴρ· ἀλλ' ἐκ ἐλλείψεως ταῦτα πόθεν; ἐδὲ τῆς κατὰ τὴν εἰσὶαν  
„ὑφέσεως. Αὐτὸ δὲ τὸ μὴ γεγεννηθῆναι, καὶ τὸ γεγεννηθῆναι, καὶ  
„τὸ ἐκπορεύεσθαι, τὸν μὲν, Πατέρα· τὸν δὲ, Υἱόν· τὸν δὲ, τῆθ'  
„ὅπερ λέγεται, Πνεῦμα Ἅγιον προσηγόρευσε. Ἵνα τὸ ἀσύγ-  
„χυτον σώζηται τῶν τριῶν Ὑποστάσεων, ἐν τῇ μιᾷ φύσει τε καὶ  
„ἀξίᾳ τῆς Θεότητος,,. Ἐν οἷς δήπερ διαβρίδω ὁ Θεολόγος Γρη-  
γόριος, ὡς ἐν τῇ Θεότητι χέσεις ἔχουσιν ὁ Υἱὸς καὶ τὸ Πνεῦμα·  
ἐξ ὧν τε ὁ μὲν Υἱὸς ἔχει τὸ εἶναι Υἱὸς, τὸ δὲ Πνεῦμα τὸ εἶναι  
Πνεῦμα· ἐκ τέττις διερωτῶν αὐτῶν: ὅτι τῷ μὲν Υἱῷ πρόσκειται τὸ  
γεννητὸν εἶναι, τῷ δὲ Πνεύματι τὸ ἐκπορεύτῳ, ἐκ τῆς Πατρὸς  
δηλονότι. Ἐξ αὐτῆς γὰρ ὁ Υἱὸς γεννητὸς, ὡς ὁ αὐτὸς ἐδίδαξε  
πρότερον. Καὶ ἐκ ἄρα διὰ τῶν χέσεων τῆς Υἱῶς καὶ τῆς Πνεύμα-  
τος, τὴν τῆς Πνεύματος ἐννοεῖν τυγχάνει Πρόοδον καὶ Ἐκπόρευσιν.

Τόμ: Β'.

Ω ωωω

Φησὶν

Φησὶν ἔν ὁ Θεολόγος Γρηγόριος, ὅτι „τὸ τῆς πρὸς ἄλληλα „χέσεως διάφορον, διάφορον αὐτῶν καὶ τὴν κλήσιν πεποίηκεν... Οὐχὶ σενῶς τὴν φωνὴν ἐκλαμβάνων, τὴν („τῆς διαφορᾶς τῆς „πρὸς ἄλληλα χέσεως,“) ὥς τε δηλαδὴ χέσιν χέσει ἀντικείμεθα κατὰ τὰ πρὸς τι πῶς ἔχοντα ὥσπερ φέρε, ἢ κατ' ἐνέργειαν πνεύσις ἐστὶν ἀντικείμενη τῇ κατὰ πάθησιν· πλατύτερον δὲ πῶς καθὼ καὶ αὐτοὶ οἱ διαφέροντες τῷ ὑφίστασθαι τρόποι, καὶ τοὶ μὴ χετικῶς, κατὰ τὴν ἐνεργητικὴν τε καὶ παθητικὴν πνεύσιν πρὸς ἀλλήλους ἀντίθετοι, ἀναφορὰν τινα ὁμῶς μεταξὺ τῶν Ὑποστάσεων λέγονται παριστᾶν. Καὶ γὰρ καὶ ἐν τοῖς ἐξῆς ἀναπτύξιν μέλων τὴν χέσιν, ὡς ὁ Πατὴρ πρὸς τὸν Υἱὸν ἔχει, καὶ ἐξ ἧς ἔλαχε τὸ εἶναι Πατὴρ, τῷ τῆς Ἀγεννησίας ἰδιώματος ἐμνήσθη, καθ' ὡς σενωτέρῳ λόγῳ, ὃ χετικῶς ἀντίκειται πρὸς γε τὸν Υἱόν, καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. Τὸ γὰρ γεννητὸν πρὸς τὸ γεννῶν ἐστὶν ἀντιχετικόν, ὃ πρὸς τὸ ἀγεννητον.

Ἐνίστατο δ' ἔν ὁ Ἰησαῖτης: „Κατωτέρω δ' ἐστὶ γράφω (Γρηγόριος) ὅτι ἐδὲ τῷ Υἱῷ τι λείπει πρὸς τὸ εἶναι Πατέρα.... „ἀλλ' ὃ παρὰ τῷ Πατρί· ὅτι δηλ: ἀναφορὰς ἔχουσιν ἀντιθέ- „τας... — Ἀλλ' ἐδὲ περὶ Πατρὸς καὶ Υἱῶ λέγων, ἀναφορῶν μέμ- νήται ἀντιθέτων ὁ Θεολόγος Γρηγόριος· ἐμνήσθη γὰρ τῷ ἀγεν- νήτῃ μόνον καὶ τῷ γεννητῷ, καθάπερ αὐτῷ ἀκηκόαμεν. Καί τοι γε, ἐδ' εἰ τῷ λόγῳ τῷ Πατρὸς καὶ τῷ Υἱῷ τὰ ἀντιχετικὰ νενοήκει, ἐδ' ὅτως ἂν ὀνήσιν τινα τῷ Βελλαρμίνῳ δεδώκει ἐντεῦ- θεν πορίσασθαι. Περὶ γὰρ τῶν χέσεων ἐκείνων ὁ λόγος, ἐξ ὧν, Πατὴρ μὲν ὁ Πατὴρ· Υἱὸς δὲ ὁ Υἱός· Πνεῦμα δὲ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον προσηγορεύεται. Καὶ ὁ μὲν Πατὴρ, διὰ τὴν τῷ Υἱῷ γέννησιν καλεῖται Πατὴρ· ὁ δὲ Υἱός, ἐχὶ τῷ λόγῳ τῆς τῷ Πνεύ- ματος Προβολῆς Υἱός καλεῖται, ὡς ἤδη σεσημείωται. Προφανὴς δὲ μάλα ὁ λόγος.

Ἀλλὰ πρόεισιν ὁ Βελλαρμίνος, μικρὸν δὲ κατωτέρω, τὸ „παράδειγμα προτίθησι τὸ τῷ Ἀδὰμ, καὶ τῆς Εὕας, καὶ τῷ Σήθ· „ὧν ὁ μὲν Ἀδὰμ, ἐκ μηδενὸς ἐστὶν ἀνθρώπων· ἢ δὲ Εὕα, ἐκ „μόνης τῷ ἀνδρός· ὁ δὲ Σήθ, ἐξ ἀμφοῖν· ὁ Ἀδὰμ, φησὶ, τίποτε „ὡς; πλάσμα Θεῷ· τί δὲ ἢ Εὕα; τμήμα τῷ πλάσματος· τί δὲ „ὁ Σήθ; ἀμφοτέρων γέννημα· τοῖς τρισὶν ἄρα τέτοις ἀνθρώποις „τὰ τρία Θεῷ Πρόσωπα τῷ Γρηγορίῳ παραθεμένε, τὸς ὃ σωροῖ, „ὡς ἐκ τῆς αὐτῷ δόξης, ὁ μὲν Υἱὸς ἐστὶν ἐκ τῷ Πατρὸς, τὸ δὲ „Πνεῦμα ἐκ τῷ Πατρὸς καὶ τῷ Υἱῷ...;

Οὐδὲ ταῦτα πάλιν τὰ τῷ Ἰησαῖτῃ χωρὶ κατ' εἰρμόν· οἱ μὲν ἔν παλαιοὶ Πατέρες τὸν Ἀδὰμ δήπη, καὶ τὴν Εὕαν, καὶ τὸν Σήθ, παραβάλλοντες τῇ Τριάδι, τῷ μὲν τῷ Σήθ παραδείγ- ματι τὸν Υἱὸν τῷ Θεῷ ἐκδέχονται· τὸ δὲ τοὶ Πνεῦμα τῇ Εὕα ἐξαικο-

ἐξαικονίζουσιν· ὁ μὲν γὰρ Σὴθ γεγέννητο τῷ Ἀδὰμ, ἡ δὲ Εὐα ἔχλ. Ἐκ δὲ τῆ αὐτῆς Ἀδὰμ καὶ ὁ Σὴθ καὶ ἡ Εὐα. Καὶ ἔτω ταῦτα ἐπὶ τῆ εἰρημένης χωρὶς προτίθῃσι καὶ ὁ Νασιανένιος, ἵνα δείξῃ: διώκασθαι τινὰς διαφορῶν τρόπῳ εἶναι ἐκ τῆ αὐτῆς: ὥστε, τὸν μὲν εἶναι δηλονότι γεννητὸν, τὸν δὲ ἔχ' ἔτως· ἔχλ δὲ καὶ τόδε προσέθετο, τῷ Σὴθ παραβάλλειν χρῶμαι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον· μάλλον δὲ καὶ αὐτόθι φησὶν: „Ἡ Εὐα καὶ ὁ Σὴθ, ἔχλ τῆ αὐτῆς, τῆ Ἀδὰμ; τίνας γὰρ ἄλλας; ἡ καὶ ἀμφοτέροι γεννήματα; ἡ δαμῶς,.. Ἀλλὰ τί; τὸ μὲν τιμήμα, τὸ δὲ γέννημα· ὅθεν δὴ φανερόν, τὸν μὲν Σὴθ τῷ Υἱῷ τῆ Θεᾶς, τὴν δὲ Εὐαν τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι ὑπὸ τῆ Γρηγορίας παραβάλλεσθαι. Ταύτῃ δὲ τῇ τῶν Πατέρων γενέσθαι δόξαν, δῆλον ἔτι καὶ ἐξ ὧν ΑΥΓΟΥΣΤΙΝΟΣ ἐν Βιβλ: ΙΓ'. τῶν περὶ Τριάδος, Κεφαλ: Α'. φησὶν: „Ὅτι πῶς ὁ μὲν Ἀνὴρ αὐτὸς τὸ τῆ Πατρὸς παρυσάγει Πρόσωπον· τὸ δὲ τῆ Υἱᾶς, τὸ ἐξ ἐκείνης κατὰ γέννησιν προελθόν· καὶ ἔτω τὸ τρίτον Πρόσωπον, οἷον τῆ Πνεύματος, τῇ Γωαῖκα εἶναι φασί· τῷ ἔτως ἐκ τῆ Ἀνδρὸς προεληλυθῆσαν, ὡς μήτε Υἱὸν αὐτῇ εἶναι, μήτε Ουγατέρα· καί τοι γε αὐτῆς συλλαβῆσης ἐξεφύη τὸ γέννημα. Εἶπε γὰρ ὁ Κύριος περὶ τῆ Ἁγίας Πνεύματος, ὅτι ἐκ τῆ Πατρὸς ἐκπορεύεται, καὶ μέντοι ἔκ' ἐστὶν Υἱός,.. Καὶ ἐν τῷ 5'. δὲ Κεφαλαίῳ: „Οὐ διὰ τῆτο ταύτῃ ἀποπτύομεν τῇ δόξαν, ὡς δεδιότες τῇ ἁγίαν τε καὶ ἀπαραλύμαινον καὶ ἀτρεπτον ἀγάπῃ (τὸ Ἅγιον Πνεῦμα) ὡς σύζυγον τῆ Θεᾶς καὶ Πατρὸς, ἐξ αὐτῆς μὲν ὑπάρχουσιν, ἔχλ δ' ὡς τέκνον, πρὸς τῇ τῆ Λόγῃ γέννησιν, δι' ἧς πάντῃ ἐγένετο, ἐννοεῖν,.. Καὶ ὁ ΣΥΓΓΡΑΦΕΥΣ δὲ τῆ περὶ Τριάδος Βιβλίας, ὃ τῷ Ἀλεξανδρείας ΚΥΡΙΛΛΩ προσαναγράφει, ἐν Κεφαλ: Η'. Διδάξας τὸν τε Υἱὸν καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῆ Πατρὸς προβάλλεσθαι, ὑποσώπτει: „Ὡς περὶ ὁ Ἀδὰμ ἀγέννητος ὢν, (πλάσμα γὰρ ἐστὶ τῆ Θεᾶς) καὶ ὁ Σὴθ γεννητός· (Υἱός γὰρ ἐστὶ τῆ Ἀδὰμ) καὶ ἡ Εὐα ἐκ τῆς τῆ Ἀδὰμ πλοῦρᾶς ἐκπορεύθῃσα· (ἔ γὰρ ἐγεννήθη αὐτῇ) καὶ φύσει διαφέρουσιν ἀλλήλων· (ἄνθρωποι γὰρ εἰσὶν) ἀλλὰ τῇ τῆς ὑπάρξεως τρόπῳ,.. Ἐνθα δὴ παντί πῃ δῆλον, τῷ μὲν Ἀδὰμ παραβάλλεσθαι τὸν Πατέρα, διὰ τὸ ἀγέννητον· τὸν δὲ Υἱὸν τῷ Σὴθ, διὰ τὸ γεννητόν. Τῷ δὲ Ἁγίῳ Πνεύματι τῇ Εὐαν, διὰ τὸ μηδαμῶς αὐτῇ γεννηθῆναι, ἐκ δὲ τῆς τῆ Ἀδὰμ πλοῦρᾶς προελθεῖν. Ἀδελφὰ δὲ τῷδε τῷ Συγγραφεῖ ἔχει καὶ ἸΩΑΝΝΗΣ ὁ Δαμασκηνός ἐν τῷ Α'. Βιβλ: τῶν περὶ τῆς Ὁρθοδ: Πίσεως, Κεφαλ: Θ'. (174)

Ἀντι-

(174) Ἐπὶ τῆς Λεκουϊώης Ἐκδόσε: ἀριθμεῖται Κεφαλ: Η'. ἐν τῷ Α'. Τόμ: τῶν τῆς Δαμασκ: Συγγραμ: Σελ: 135.

Ἀντιπροτείνουσι δ' ἔτι καὶ ἑνὰ, ἐκ τῆς ΜΘ'. Λόγῃ, τῆς περὶ Πίσεως: (175) „Ὁ Σωτὴρ ἀπέστειλεν ἡμῖν τὸ Ἅγιον Πνεῦμα „ἐκ τῆς ἰδίας μὲν αὐτῆς, μιᾶς δὲ καὶ τῆς αὐτῆς ἑσίας, προσά- „τιω τε καὶ ἐπισφραγιστῶ, καὶ ὁδηγὸν εἰς ζωὴν αἰώνιον· ὡς γέ- „γραπται ἐκ Φωνῆς Θεοῦ: ἐκχεῶ ἀπὸ τῆς Πνύματος μου ἐπὶ τὰς „δάλας μου· καὶ ἐπὶ τὰς δάλας μου. Καὶ αὐτὸς τὸ Πνεῦμα ἐξ „ἐμοῦ προελθούσεται. Καὶ αὐτὸς δὲ ὁ Κύριος καὶ Σωτὴρ ἡμῶν, „ἐκ τῆς ἐμοῦ, φησὶ, λήψεται· ἐξ ἐκείνου δὲ πάντως, ὅπερ ἐστὶν „ὁ Υἱός· ὅτι καὶ ὁ Υἱὸς ἐξ ἐκείνου ὅπερ ἐστὶν ὁ Πατήρ. — Ἀλλ' ἡδὴ ταῦτα ἐπελυόμεθα ἐν τῇ Πραγματείᾳ: ὅτι ἡ τῆς Ἁγίας Πνύματος ἐκ τῆς Υἱῶς λήψις, ἔδεν εἰς κατασκοπὴν συμβάλλεται τῆς τῆς Ἁγίας Πνύματος Ἐκπορεύσεως καὶ ἐκ τῆς Υἱῶς.

Ἐνέχει δ' ἔν τις: (176) ὅτι ὁ ἐκ Ναζιανζῆς Θεὸς Γρηγόριος, Λόγῳ ΛΖ: ὅς ἐστιν ὁ Ε'. τῶν περὶ Θεολογίας, ἐν Ἐκδόσει κατὰ Βίβλιον, τῇ ἐν Ἀντιερπίᾳ, φύλ: 236. (177) περὶ τὸ τέλος· τὰ ῥήματα διασαθμώμενος ἐκείνου: „Εγὼ πέμψω αὐτόν. Καὶ „ἐπ' αὐτὸν δὲ ἔλθῃ κατ': φησὶ, διὰ μὲν τῶν προτέρων, τὸ οἰκῆον „ἀξίωμα: τετέστιν, ὅπερ ἴδιον ἔχει ἀξίωμα ὁ Υἱός· διὰ δὲ τῶν „δοστέρων, τὴν τῆς Πνύματος ἐξουσίαν δέκνυσθαι. Καὶ ἐν τῷ ΚΓ'. δὲ Λόγῳ τῷ πρὸς Ἡρώνα, ὃ πόρρω τῆς τέλους: „Τῆς Πνύματος ἴδιον, φησὶν, ἢ ἐκπεμψίς· ὥς δὲ ἄλλοι εἶναι ἐκ τῆς πα- „ραθέσεως ἑκατέρω τῆς χωρίᾳ, ὅτι τὸ οἰκῆον ἀξίωμα εἰπὼν, „αὐτὸ ἐκείνο ἐνενόησεν, ὃ καὶ τὸν Υἱὸν τῆς Πατρὸς δοστέραν „ὁ Θεὸς διδάσκει Βασίλειος ἐν τῷ Γ. Βιβλ: τῶν κατ' Εὐνομίᾳ, „τῆς ῥηθείσης Ἐκδόσεως, φύλ: 751. (178)· καθότι αὐτῷ (τῷ „Πνύματι) ἀρχὴ καὶ αἰτία τῆς εἶναι ἐστίν. Ἐμπεδῶται δὲ τῷτο „διὰ τῶν τῆς αὐτῆς Θεολογίας ῥημάτων ἐκ τῆς ΜΘ'. Λόγ: περὶ „Πίσεως: ὁ Υἱὸς ἐπέμψεν ἡμῖν τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκ τῆς „ἰδίας αὐτῆς ἑσίας, μιᾶς τε ἑσῆς καὶ τῆς αὐτῆς. Πῶς δ' ἂν „ἔχοι τι ἐκπέμπειν ὁ Υἱὸς ἐκ τῆς ἰδίας ἀδικαρέτης ἑσίας, εἰ μὴ „διὰ τῆς, κατὰ λόγον ἀρχῆς, ἐξ αὐτῆς κοινωνίας καὶ μετὰδόσεως; Καὶ ὁ μὲν, ταῦτα.

Ἀλλὰ

(175) Περὶ τῆς ΜΘ'. τῆδε Λόγῳ, ὅρα ἐν τῇ ΙΒ'. Πραγμ: Ἀπαντ: Ε'. Σημ: (33).

(176) Κιχώβ: ἐν Ζητήμ: Α'. Σελ: 15.

(177) Ἐν τῇ παρ' ἐμοὶ Ἐκδόσει τῆς Κολων: ἔτει 1690. Σελ: 608. — Σημείωσαι δὲ, ὅτι Libertatem (ἐλευθερίαν) οἰομάζετο, κατὰ Κιχώβιον καὶ Ζοιγινιάδιον, ἐπὶ τῆς προ- κειμένης ῥήσεως, καὶ ὁ Ναζιανζηνὸς „Ἐξουσίαν, εἶπεν: ἄριστα δὲ Ἰάκωβος ὁ Βίβλιος, ἐν τῇ παρ' ἐμοὶ ῥηθείσει τῆς Κολων. Ἐκδόσει, ἀπέδωκεν, τὸ μὲν κατὰ τὸν Να- ζιανζ: „Ἀξίωμα, τῆς Υἱῶς, Authoritatem ἐρμηνεύσας· τὴν δὲ τῆς Πνύματος „Ἐξουσίαν, Potestatem.

(178) Κατὰ τὴν Γαργινήν Ἐκδοσιν Τόμ: Α'. Σελ: 272.

Ἀλλὰ πρῶτον, ὅσα μὲν ἀνήκει τῷ χωρίῳ, ἐπιγινώσκει δὴ ὁ Θεολόγος Γρηγόριος τὸ οἰκεῖον τῆς Υἱᾶς ἀξίωμα ἐν τέτῳ: ὅτι ὁ Υἱὸς πέμπει τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἀλλ' ἔχ' ἐπελαί ἐκ τέτῳ καὶ τὸ ἐκπορεύεσθαι τὸ Πνεῦμα ἐκ τῆς Υἱᾶς. Πάντως γὰρ, ἐν ᾧ πέμπει τὸ Πνεῦμα ὁ Υἱὸς, ἐν τέτῳ ἅμα καὶ τὸ τῆς Υἱᾶς ἀξίωμα ἐμφανίζεται· γίνεται γὰρ ἐντεῦθεν φανερόν ἐξ ἀνάγκης, ὅτι ὁ Υἱὸς Θεὸς ἐστὶν ἀληθινός, καὶ τῷ Πατρὶ ὁμοῦσιος, ἅτε δὴ τὸ Πνεῦμα τῆς Πατρὸς ἀποσέλλων, ὡς Πνεῦμα ἴδιον. Τῷ ὄντι δὲ, ἐν ᾧ ὁ Ναζιανζηνὸς ἐπιγινώσκει τὸ τῆς Υἱᾶς „ἀξίωμα ἐμφανίζεσθαι, ἐν αὐτῷ ὁμοίως κατανοεῖ καὶ τὴν τῆς Πνδύματος „ἐξουσίαν,“ ὡς καὶ αὐτὰ εἶχε τὰ τῆς Ἱησοῦς ῥήματα. Ἀλλ' ἢ τῆς Πνδύματος ἐξουσία κατὰ τὴν αὐτῆς Πέμψιν, ἔκ ἄλλως ἐστὶν ἐκδεκτέα, ἢ καθό, καὶ τοι ἐξ ἑτέρας πεμπόμενον, ἐκὸν ὁμῶς ἦκει, καὶ κατὰ τὴν περιῆσαν οἱ κυριότητες, αὐτὸ καὶ ἀφ' ἑαυτῆς προχῆται, καὶ χορηγεῖ ἑαυτὸ τοῖς πιστεύουσιν· οἷα πε καὶ τότε ὡσαύτως ἐπεγίνωσκον οἱ Πατέρες, ἐν τῇ Πραγματείᾳ (179), ὅτι ἢ τῆς Ἁγίας Πνδύματος Πέμψις ἔδέν τι σωτελῆσα ἐστὶν εἰς Ἀπόδειξιν τῆς αὐτῆς καὶ ἐκ τῆς Υἱᾶς Ἐκπορεύσεως, ἐπὶ τῆς Ε'. τῶν Ἀπαντήσεων. Ἀλλὰ γὰρ τῷ λόγῳ τῆς ἀπ' αἰῶνος αὐτῆς Ἐκπορεύσεως, ἔδ' αὐτὸ ἑαυτὸ ἐκὸν τὸ Πνεῦμα ἐκπέμπει, ἢ ἐκπροΐησιν, ἔδ' ἀφ' ἑαυτῆς ἐκπορεύεται. Παραπλησίως ἄρα περὶ τῆς ἐγχρόνου μόνης τῆς Πνδύματος Πέμψεως ὁ λόγος τῷ Θεολόγῳ Γρηγορίῳ, καὶ ἔχι περὶ τῆς προαιωνίης Προόδου, ἐν οἷς διὰ τὴν παρὰ τῆς Υἱᾶς Πέμψιν τῆς Πνδύματος τὸ οἰκεῖον τῆς Υἱᾶς ἐπιγινώσκει „ἀξίωμα,“.

Ἐν δὲ τῷ ΚΓ'. Λόγῳ τῷ πρὸς Ἡρώνα, ἴδιον τῆς Πνδύματος τὴν „Ἐκπεμψιν,“ ἀποκαλεῖ· ἀλλ' ἐπὶ τῆς προτεθέντος ΛΖ'. Λόγῳ, ἔκταν μὲν „ἐκπέμπεσθαι, πέμπεσθαι δὲ μόνον ἐδίδασκε παρὰ τῆς Υἱᾶς τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, τῇ φωνῇ τῆς Πέμψεως τὴν ἐγχρόνον μόνω τῆς Πνδύματος Ἀποστολῇ ὑποσημαίνων, ὡς εἶδομεν. Κατ' ἄλλω ἄρα διάνοιαν μακρῷ διαφέρουσιν, διὰ τὴν τῆς Πνδύματος Πέμψιν ὁ Ναζιανζηνὸς τὸ οἰκεῖον τῷ Υἱῷ ἀξίωμα ἐστὶν ἀπονέμων, ἢ περὶ ὁ Βασίλειος τῷ Πατρὶ, ἐν τῷ Γ'. τῶν κατ' Εὐνομίᾳ, τὸ ἀξίωμα πρὸς γε τὸν Υἱόν. Τῆτο δὲ προσέτι δῆλον, καὶ ἐξ ὧν Βασίλειος διδάσκει τὸν Υἱὸν δοῦτεροῦν ἀξιωματικῇ τῆς Πατρὸς· ὅπερ ὁ Θεολόγος ὡδε Γρηγόριος ἔφησιν τῆτο περὶ τῆς Πνδύματος, ὡς γε πρὸς τὸν Υἱόν: τὸ δοῦτεροῦν δηλαδὴ καὶ τὸ Πνεῦμα ὁμοίως τῆς Υἱᾶς, ἀξιωματικῇ· ἀλλὰ μόνον λέγει, ὅτι τὸ οἰκεῖον τῷ Υἱῷ ἀξίωμα ἐπιγινώσκει, ἐκ τῆς τὸν Υἱὸν πέμπειν τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. Ἀλλ' ἐντεῦθεν ἔμπης ἔδέν τὸ ἀκόλουθον, ἵνα καὶ τὸ Πνεῦμα δοῦτεροῦν τῆς Υἱᾶς, εἰ δῆπερ ἐκ τῆς τῆς Πνδύματος Ἀποστολῆς

(179) Πραγμ: Η'.

Τόμ: Β'.

Α αααα



σολῆς τὸ οἰκῆον τῷ Υἱῷ ἀξίωμα ἐμφανίζεται. Τῆτο γὰρ καὶ ἐξ ἐκείνης παρὰ ταῦτα γίνεται φανερόν, ὅτι καὶ τὸ ὁμοῦσιον εἶναι τῷ Πατρὶ τὴν τῆ Υἱῶ φύσιν ἐντεῦθεν δηλεῖται, ὡς δέ-δεικται.

Τελυταῖον δὲ περὶ τῆς τῆ Ναζιανζιωῦ ρήσεως, τῆς ἐκ τῆ ΜΘ'. Λόγος ἐκείνης, καὶ τῇ Πραγματείᾳ (180) διήλθομεν, τῇ περὶ τῆς τῆ Πνύματος Λήψεως ἐκ τῆ Υἱῶ, ὅτι πρὸς δεξιὴν τῆς αὐτῆς καὶ ἐκ τῆ Υἱῶ Ἐκπορεύσεως ἔδεν συμβάλλεται. Καίτοι παρεκτός γε τῆς, ἔδ' „ἐκπέμψαι,, Φησὶν ὁ Θεολόγος ἐν ἐκείνοις τὸν Υἱὸν τὸ Πνεῦμα, ἀλλὰ „πέμψαι,, τὴν ἐν χρόνῳ Πέμψιν, καὶ ἔχι τὴν ἀπ' αἰῶνος τῆ Πνύματος ἐννοῶν Ἐκπόροσιν κατ' ἡμῶν δῆπερ ἐννοίαν, ὅπως ἐκ τῆς ἰδίας ἑαυτῆς ἐσίας ὁ Υἱὸς λέγοιτο πέμπειν τὸ Πνεῦμα, καίτοι μὴ ἐξ αἰῶνος αὐτὸ προβάλλων, ἐν ἄλλοις ἤδη σιωεωράκαμεν.

Ἀντιτείνων προσέτι ὁ αὐτὸς Συγγραφεύς: (181) „Υπαντίτεται (Φησὶ) δεύτερον τῆτο, ἐν οἷς τόποις τὸν Υἱὸν ἀποκαλεῖ Ἀρχὴν „ἐκ τῆς Ἀρχῆς οἷον ἐν τῷ ΛΗ'. Λόγῳ, τῷ εἰς τὴν Χριστῶ Γέννησιν, Φύλ: 234. (182) ἐνθα αὐτὸν ὀνομάζει καὶ τῆ Πατρός „ὄρον καὶ Λόγον· ἡ δὲ κλήσιν ἑκατέραν τῷ Υἱῷ ἀποιέμει, καὶ „ἐν τῷ ΜΒ'. Λόγῳ, Φύλ: 257 (183). Τὰ δὲ ρήματα ταῦτα „ἐρμηνεύων Νικήτας ὁ Ἡρακλείας Μητροπολίτης, Φύλ: 549. ἐκ-„τίθησιν: Ἀρχὴ μὲν ἀπάντων τῶν ὄντων ὁ Πατήρ ἐστίν, ὡς „αἰτία· Ἀρχὴ δὲ καὶ ὁ Υἱὸς, ὡς τῆς αἰτίας συγκοινωνός· πρὸς „γὰρ τὸν Πατέρα ὁ Δαδὶδ ἀποτείνων τὸν λόγον φησὶ: μετὰ Σθ „ἢ Ἀρχὴ κτ: Ἐστὶν ἄρα ὁ Υἱὸς ἢ ἐκ τῆς Ἀρχῆς Ἀρχὴ· τῆς ἐστὶν „ἐκ τῆ Πατρός,, — Ἀλλ' ὅτι μὲν ἐκ τῆς Ἀρχῆς Ἀρχὴ ὁ Υἱὸς, τῷ λόγῳ τῶν κτισμάτων παρὰ τῶν Πατέρων ἀποκαλεῖται, τῆτο ἤδη, ἐν τῇ περὶ τῶν Μαρτυριῶν τῶν Ἀνατολικῶν Πατέρων Πραγματείᾳ, περὶ τὸ τέρμα δέδεικται. Εἴρηται δ' ἐκεῖ καὶ ὅπως ἐκκληπτέον τὸ ὑπὸ τῆς Νικήτας λεγόμενον. Ὡς περὶ γὰρ ὁ Πατήρ Αἰτία τῶν πάντων ἐστίν, ἔτω καὶ διὰ τῆς Υἱῶ, ἢ Θεῆς Γραφῆς ἐκπαιδεύει, τὰ πάντα γενέσθαι διδάσκουσα. Ταῦτα δὲ δῆπερ τῆς Γραφῆς, ἔδεις ἐστὶ τῶν ἀπὸ Χριστῶ καλεσμένων, ὅς τις ἂν, καὶ περὶ τῆς Ἀγίας Φήσειε σιωεξακτέσθαι Πνύματος.

Πάλιν ἀντιφέρει τὰ ἐκ τῆς ΛΒ'. Λόγῳ, Φύλ: 196. (184): „Ὀνομα δὲ, τῷ μὲν Ἀνάρχῳ, Πατρί· τῇ δὲ Ἀρχῇ, Υἱός· τῷ δὲ „μετὰ

(180) Πραγμ: ΙΒ'. Ἀπάντ: Ε'.

(181) Κιχώβ: Ζητήμ: 5'. Σελ: 55.

(182) Ἐν τῇ κατὰ Κολωνίαν Ἐκδόσει, Τόμ: Α'. Σελ: 620.

(183) Ἐν τῇ ῥηθείσῃ Ἐκδόσει Σελ: 681. 682.

(184) Ἐπὶ τῆς ῥηθ: Ἐκδ: Σελ: 520.

„μετὰ τῆς Ἀρχῆς, Πνεῦμα Ἅγιον· φύσις δὲ τοῖς τρισὶ μία, Θεός. (Καὶ προσέθουσιν:) Ἐνταῦθα πάντως ἔοικε τὸν Υἱὸν Ἀρχὴν λέγεσθαι, πρὸς τὸν μετ' αὐτοῦ, καὶ μετὰ τῷ Πατρὶ μίαν καὶ τὴν αὐτὴν φύσιν ἔχοντα. Ὀνομάζει δὲ ὁ Θεολόγος τὸ Ἅγιον Πνεῦμα „Σωάρχον,, (185) ἥτοι μετὰ τῆς Ἀρχῆς ὡς ἂν μὴ Φήσας ἐκ τῆς Ἀρχῆς εἶναι, ὡς εἴρηκεν εἶναι τὸν Υἱὸν, δόξειε κατὰ τῆς περὶ τὸν Εὐνόμιον διδάσκων ἐκ μόνου τὸ Πνεῦμα εἶναι τῷ Υἱῷ ἢ πάντως, (καθάπερ ἡρμηνεύσε Νικήτας Φύλ: 445.) τὸ Ἅγιον Πνεῦμα Σωάρχον λέγεσθαι εἶναι, ὅτι ἐδὲ τῷ Πατρὶ πρῶτον ὁ Υἱὸς ἀφῆσεν, ἐδὲ τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα,, — Ἀλλὰ πόθεν ἡμῖν ὁ Ἰησοῦς δείκνυσιν, ἀρχὴν ἐνταῦθα τὸν Υἱὸν καλεῖσθαι ὡς πρὸς ἐκείνον, ὃς μετ' αὐτοῦ τε καὶ τῷ Πατρὶ μίαν καὶ τὴν αὐτὴν φύσιν ἔχων ἐστίν; Μὴ γὰρ ἀπόχρη τὸ ἀπλῶς φῆναι, ἢ κατὰ γε τὸ οἷ δοκεῖν, τὸ προκείμενον ἐρμηνεύσαι; Ἀλλ' ὅτι γὰρ τῷ λόγῳ τῶν κτισμάτων ὁ Υἱὸς Ἀρχὴ ὀνομάζεται, ἐπὶ τῷ εἰρημένῳ τόπῳ σαφῶς ἡμῖν ἀποδέδεικται. Ἐφ' οἷς, καὶ τῆς προτέρας τῷ Ἰησοῦ Διερμηνύσεως: τί δῆποτε τὸ Πνεῦμα „Σωάρχον,, ἥτοι „μετὰ τῷ Υἱῷ τῆς Ἀρχῆς,, εἴρηται; ὡς τῆς Ἰησοῦ Μαντικῆς ἀναπλάσματος, ἐδὲν ἐπισχεφόμεθα: τί γὰρ ἐχὶ καὶ παραπλησίως ἀντιτρέφειν ἐξέσαι: διὰ δὲ τῷ μὴ βεληθῶναι τὸν Θεολόγον ἐκ τῆς Ἀρχῆς τὸ Πνεῦμα ὀνομάσθαι, „Σωάρχον,, δὲ μόνον εἰρηκεῖν, ἵνα μή τις τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῷ Υἱῷ, (ὃν περ' Ἀρχὴν εἴρηκε) πισθῇ προβαλλόμενον; ἢ ὅτι ὁ Θεολόγος, ἐδόλως τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι Ἀρχὴν τὸν Υἱὸν πισθῇ ἐγένετο; Ὅ,τι δὲ τῷ δευτέρῳ τῶν Ἐρμηνειῶν ἔς' ἀνῆκον, τῷ κατὰ Νικήταν δηλονότι, ἀτόπως ἂν ἐπισωάψαις: διὰ τὸ μηδέποτε ἀπὸ τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα ἀπῆναι, ἐξ αὐτοῦ ἄρα διὰ τῷ καὶ ἐκπορεύεσθαι. Ἐπειδὴ γὰρ ἅμα ἐκ τῷ Πατρὶ αἰετῶς, καὶ πρὸ πάντων αἰώνων, σῶμα τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα προῆλθε, πῶς, εἴπεμοι: ἐκείνῳ εἶχεν ἀπῆναι, εἰ μὴ καὶ ἐξ αὐτοῦ ἐκπορεύοιτο;

Τελούτατον ὁ αὐτὸς Συγγραφεύς: Ταυτὸ δὲ ἔοικε, φησὶ, „διδάσκων, καὶ ἐν Λόγῳ ΜΔ'. τῷ εἰς τὴν Πενήκοστὴν, Φύλ: 269. (186) „Ὅτι

(185) Τὸ „μετὰ τῆς ἀρχῆς,, εἰς τὸ „Σωάρχον,, ὁ Ἰησοῦς ἐφιλοτιμήσατο μεταπλάσαι, τῷ Ναζιαιζικῷ, ἢ δοκεῖ, οἰόμενος ὁ Λέχος Ἑλλενίσσαι κομψότερον. „Σωάρχον,, μὲν ἐν Ἑλλενιστῇ ὁ „Σωάρχων,,. Λατινιστῇ δὲ ὁ Collega· ὅπερ ἐστὶν ὁ σῶμα ἐτέρω τῷ αὐτῷ τινὰ Ἀρχικὴν τάξιν ἐκπληρῶν. Ἀλλ' ἔτις ἐμπης, καὶ ὁ Υἱὸς τῷ Ἀνάρχῳ Πατρὶ „Σωάρχον,, ἂν εἴη καὶ τὸ Πνεῦμα, τῷ Υἱῷ τῇ Ἀρχῇ, καὶ τῷ Πατρὶ τῷ Ἀνάρχῳ καὶ τὰ τρία Θεαρχικά Πρόσωπα „Σωάρχον,, ὡς μίαν ἔχοντα, καθάπερ τῷ φύσιν καὶ τῷ δυνάμει, ἔτω καὶ τῷ ἐπὶ πάντων Βασιλείᾳ καὶ Κυριότητι.

(186) Κατὰ τὴν ἄλλην ἐξηγήσαν Ἐκδοσὶν Σελ: 713.

„Ὅτι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐν πυρίναις γλώσσαις ἐφάνη, διὰ τὴν  
 „πρὸς τὸν Λόγον οἰκείωσιν. Τὸ δ' αὐτὸ ὑπανίσταται καὶ ἐν Λό-  
 „γῳ Ν'. περὶ τῆς ἐν Νικαίᾳ Πίσεως: (187) „Πισθόμεν, φάσ-  
 „κων, καὶ εἰς τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον· ὃ Θεὸν ἐκ ἀγέννητον, ἔτε  
 „γεννητόν· ἔτε κτιστὸν, ἔτε ποιητόν· ἀλλὰ τῷ Πατρὶ καὶ τῷ  
 „Υἱῷ, ἀεὶ τῷ Πατρὶ σωαίωνίζον προσκινώμεν. Κατὰ δὲ τὴν τῶν  
 „Ἀγίων φράσιν, τὸ αὐτὸ λέγεται τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ ὅν  
 „καθάπερ ἐπὶ τῶν Μαρτυριῶν τῶν ἐκ τῆς Ἀλεξανδρείας Κυρίλ-  
 „λου, δῆλον ἐγένετο: καὶ ἔτι δὲ καὶ κατωτέρω ἀποδεικνύσεται. —  
 Πρὸς μὲν ἐν τῷ Α'. τίς ἢ σωέπεια, εἰπέμοι: ὅτι, τὴν τῆς Ἀγίας  
 Πνεύματος πρὸς τὸν Υἱὸν καὶ Λόγον οἰκείωσιν ὁ Θεολόγος ἐπι-  
 γινώσκων, δι' αὐτῆς ἄρα καὶ τὴν ἐκ τῆς Υἱῶς Ἐκπόρευσιν ὑπεμ-  
 φαίνει τῷ Πνεύματι; ἢ γὰρ ἐχλὶ, τῷ Υἱῷ ὁμοσίᾳ τῷ Πνεύματι  
 ὁμολογημένη, σωμολογητέα ὡς ἐντεῦθεν καὶ ἢ σω ἐκείνῳ τέτῃ  
 οἰκείωσις; Πρὸς δὲ δὴ τὸ Β'. ὅτι ἐχλὶ τὸ Πνεῦμα τὸ αὐτὸ τῷ  
 Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ καλεῖται, παρὰ τὸ ἐκ τῆς Πατρὸς καὶ τῆς  
 Υἱῶς ἐκπορεύεσθαι, δι' ἰδιαίτερας Πραγματείας ἡδὴ ἡμῖν ἀποδέδεικ-  
 ται. (188) ἐν ᾗ κατεσπυράζετο, ὅτι τὸ εἶναι τὸ Πνεῦμα τῷ Υἱῷ  
 ἐκ ἑσὶ λόγος πισωτικός τῆς τῆς Πνεύματος ἐκ τῆς Υἱῶς Ἐκπο-  
 ρύσεως. Ἀλλὰ καὶ περὶ τῶν Γρηγορίων τῶν Νάσιανζων ῥήσεων,  
 τοσαῦτα.

## § ΙΖ'.

Ἐκ τῶν τῶν Ἐπιφανίων.

Ἐκ δὲ τῶν ἘΠΙΦΑΝΙΟΥ ἀντιβάλλει Α'. τὸ συχνάκις τῶτον  
 ἐκδιδάσκων, ὅτι τὸ Πνεῦμα ἐστὶν ἐκ τῆς ἑσίας, καὶ τῆς αὐτῆς  
 Θεότητος τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ. Εἰ γὰρ τὸ Πνεῦμα ἐκ τῆς  
 ἑσίας τε καὶ Θεότητος ἐστὶ τῆς τῆς Υἱῶς, πάντως δῆπερ καὶ ἐξ αὐτῆς  
 ἐκπορεύεται.

Πάντως ἀπανταχῶς διδάσκει Ἐπιφάνιος τὸ Πνεῦμα ἐκ τῆς  
 ἑσίας καὶ τῆς Θεότητος εἶναι τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ· οἷον Αἰρέσει  
 ΕΒ'. ἥτις ἐστὶ τῶν περὶ Σαβέλλιον, Τόμ: Α'. Σελ: 515. „Τὸ  
 „Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ἐκ ἀλλότριον Πατρὶ καὶ Υἱῷ, ἀλλ' ἐκ τῆς  
 „αὐτῆς ἑσίας· ἐκ τῆς αὐτῆς Θεότητος. (Καὶ μετὰ τὸ μέσον:  
 „Σελ: 518.) Πατὴρ ἀληθῶς γεννήσας Υἱόν· καὶ Υἱὸς ἀληθῶς  
 „γεννηθεὶς ἐκ Πατρὸς ἐνυπόστατος, ἀνάρχως καὶ Πνεῦμα Ἅγ:  
 „ἀληθῶς ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱῶς τῆς αὐτῆς Θεότητος, ἐκ Πατρὸς  
 „ἐκπο-

(187) Αὐτ: Σελ: 736. Ἐστὶ δὲ τὸ Συγγραμμάτιον τὸ περὶ τῆς ἐν Νικαίᾳ Πίσεως: Λατι-  
 νιστὶ μόνον σωζόμενον ἐξ Ἐρμιόνας τῆς Πρεσβυτέρου Ῥεφίνε.

(188) Ἐν Πραγμ: τῇ ΙΑ'.

ἐκπορεύομενον, καὶ τῷ Υἱῷ λαμβάνον αἶμα,, Καὶ Αἶρ: ΟΔ'. ἥτις ἐστὶ τῶν Πνευματόμαχων, Σελ: 992. „Πνεῦμα Ἅγιον αἶμα, καὶ γεννητὸν, καὶ κτιστὸν, καὶ σωάδελφον, καὶ προπάτορον, καὶ ὄργανον, ἀλλ' ἐκ τῆς αὐτῆς ὑσίας Πατρὸς καὶ Υἱῷ,, Καὶ Αἶρ: ΟΣ'. ἥτις ἐστὶ τῶν Ἀνομοίων, κατὰ τῷ ΙΘ'. Κεφαλ: τῷ Ἀετὶ, Σελ: 961. „Καὶ εἰ ἐν τοῖς πᾶσι τῷτον (τὸν Θεὸν καὶ Πατέρα) ἀριθμήσας, τοῖς μὴ ἐκ τῆς ὑσίας αὐτῶ ὄντων, ἀλλ' ἐξ ἐκ ὄντων ὑπ' αὐτῶ, διὰ τῷ ὄντος ἐξ αὐτῶ, κατ' ὑσίαν γεγεννημένοις, παρέξ ὁμῶς αὐτῶ, καὶ τῷ Πνεύματος τῷ Ἀγίῳ, τῷ ἐκ τῆς ὑσίας τῷ ἀσυγκρίτῳ Πατρὸς, καὶ τῷ Μονογενῶς Υἱῷ αὐτῶ ὄντος, ἀποπώτατη ἂν εἴη σε ἡ ὁμολογία,, — Ἐν μὲν ἐν τῇ κατ' αὐτὸν Ἑρμηνείᾳ ΠΕΤΑΒΙΟΣ ἔχει: „Καὶ τῷ Πνεύματος τῷ Ἀγίῳ, τῷ ἐκ τῆς ὑσίας τῷ ἀσυγκρίτῳ Πατρὸς, καὶ τῷ Μονογενῶς Υἱῷ αὐτῶ ἘΚΠΟΡΕΥΟΜΕΝΟΥ: Qui processit: Ἀλλ' Ἐκπορεύσεως ὡδε ἐν τῷ Ἑλληνικῷ Πρωτοτύπῳ Ἐπιφάνιος τὸ παράπαν καὶ μέμνηται: μόνον δὲ τῷ ἐκ τῆς ὑσίας ὄΝΤΟΣ, φησὶ, τῆς τῷ Πατρὸς δηλ: καὶ τῷ Υἱῷ. Καὶ ἐν τῷ Ἀγκυρωτῷ δὲ, πολὺ ἀπὸ τῆς ἀρχῆς, Σελ: 12. ἐπαναλαμβάνει ὡς ἀρτι ἀπεμνημονόβσαμεν, ἐκ τῆς ΟΔ'. Αἰρέσεως.

Ἀλλὰ γὰρ κατ' ἑδεμίαν ἀνάγκην περὶ τῆς τῷ Ἀγίῳ Πνεύματος Ἐκπορεύσεως ταῦτα λαμβάνει, τῷ Ἐπιφάνιῳ τὰ μόνον νοῦντος, τῷ τῷ Πατρὸς καὶ τῷ Υἱῷ ὑσίαν, μίαν τε καὶ τῷ αὐτῷ εἶναι καὶ αὐτῷ τῷ Πνεύματι, καθάπερ ἐν καὶ ἀνωτέρῳ δέδεικται περὶ ἈΘΑΝΑΣΙΟΥ: ὅτι τὸ Πνεῦμα λέγων ἐκ τῆς ὑσίας εἶναι τῷ Πατρὸς καὶ τῷ Υἱῷ, ὁδὲν ἀλλ', ἢ μίαν εἶναι νοεῖ καὶ τῷ αὐτῷ ὑσίαν Πατρί τε καὶ Υἱῷ καὶ Ἀγίῳ Πνεύματι. Σιώνιδες γὰρ τοῖς Ἀνατολικοῖς Πατράσι, τοῖς δε προχρηῖται τοῖς ῥήμασιν, εἰς τὸ δηλῶν μίαν εἶναι τῷ τῶν Προσώπων Θεότητα. Τῶν γὰρ ἐκ τῶν Αἰρέσεων ἀλλότριον εἶναι τὸ Πνεῦμα τῆς τῷ Πατρὸς καὶ τῷ Υἱῷ ὑσίας τε καὶ Θεότητος βλασφημάντων, συνεχῶς οἱ Πατέρες κατ' αὐτῶν ἀποφαίνονται λεγοντες, μηδαμῶς τῇ ὑσίᾳ ἀλλότριον τῷ Πατρὸς καὶ τῷ Υἱῷ, ἀλλ' ἐκ μιᾶς καὶ τῆς αὐτῆς ὑσίας ὑπάρχειν ἥτοι, μιᾶς καὶ τῆς αὐτῆς λελαχέναι ὑσίας τὸ Πνεῦμα, ἥς ἐλαχέτω καὶ Πατὴρ καὶ Υἱός. Οὗτος γὰρ ὡς ὁ νῦν ὁ τῷ Ἀθανασίῳ, ὡς ἀνωτέρω: (189) σιμείδωμεν ὁ δ' αὐτὸς ὡς καὶ ὁ τῷ Ἐπιφάνιῳ διὸ καὶ ἔλεγεν Αἶρ: ΕΒ'. „Τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, καὶ ἀλλότριον Πατρὸς καὶ Υἱῷ ἀλλ' ἐκ τῆς αὐτῆς ὑσίας, ἐκ τῆς αὐτῆς Θεότητος,,

Ἀλλὰ

(189) Ἐν §. ΙΒ'.  
Τόμ: Β'.



Ἀλλὰ ΠΕΤΑΒΙΟΣ ἀντιπείταται ὁ Ἰησοῦτης, Βιβλ: Ζ'. περὶ Τριάδος: „Ὅτε, λέγω, ὁ Υἱὸς ἐστὶν ἐκ τῆς ἑσίας τῷ Πατρὶ, „δηλεῖται τὸν Πατέρα αἰτίαν εἶναι τῷ Υἱῷ ὅτε, λέγω, τὸ Πνεῦμα „ἐκ τῆς ἑσίας εἶναι τῷ Πατρὶ, σημαίνω τὸν Πατέρα αἰτίαν εἶναι „τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι. Παραπλησίως ἄρα, καὶ ὅτε, λέγω, τὸ „Πνεῦμα εἶναι ἐκ τῆς ἑσίας τῷ Υἱῷ, τὸν Υἱὸν σημαίνω αἰτίαν „εἶναι τῷ Πνεύματι. — Ἀλλὰ παντάπασί γε ψεύδεις ἐστὶν, ἐνθα ἂν οἱ Ἀνατολικοὶ τῶν Πατέρων, (περὶ γὰρ τῆς κατ' Ἑλλήνας φράσεως ὡδε ὁ λόγος.) τὸν Υἱὸν λέγοιεν, ἢ τὸ Πνεῦμα ἐκ τῆς ἑσίας εἶναι τῷ Πατρὶ, κατ' αὐτὸ μόνον δηλεῖσθαι, αἰτίαν εἶναι τὸν Πατέρα τῷ Υἱῷ, ἢ τῷ Πνεύματι. Παρεκτός γὰρ τῆς καὶ τὸν Υἱὸν, ἢ τὸ Πνεῦμα διδάσκουσιν. ἐκ τῆς ἑσίας τῷ Πατρὶ εἶναι, διὰ τὸ τῷ αὐτῷ ἑσίαν σινάμα τῷ Πατρὶ καὶ τὸν Υἱὸν ἔχεν, ἢ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. Τῆτο δὲ δήπερ σαφὲς ἐγένετο ἀνωτέρω (190) ἐξ ὧν παραπλησίως ἔφασκεν Ἀθανάσιος.

Ἀλλ' ἐνίσταται τις (191): „Ἐπειδήπερ ἡ ἐν Νικαίᾳ Ἱερὰ „Συνόδος ἀπεφώτατο, ταυτὸν εἶναι τὸ ἐκ τῆς ἑσίας εἶναι τῷ Πα- „τρὶ, καὶ τὸ ὑπάρχειν, ἢ προῖεναι ἐκ τῷ Πατρὶ ὡσαύτως ἄρα „καὶ τὸ ἐκ τῆς ἑσίας εἶναι τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ, ταυτὸν ἐπά- „ναγκες σημαίνειν τῷ ὑπάρχειν, ἢ ἐκπορεύεσθαι ἐκ τῷ Πατρὶ καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ. — Ἡ μὲν ἔν ἐν Νικαίᾳ Συνόδος τῷ ὄντι, ἐκ τῆς τῷ Πατρὶ εἶναι τὸν Υἱὸν ἑσίας κατ' ἐκείνον ἀπεφώτατο τὸν ὕμνον, κατ' ὃν ἐκ τῷ Πατρὶ τὸν Υἱὸν προεληλυθέναι παρίσταται. Ψεύδεις ἄλλ' ἔν ἐστὶ, τὸ τῷ ἐν Νικαίᾳ Συνόδον διὰ τῆτο ἀποφί- „νασθαι, ταυτὸ μόνον σημαίνειν, τό, τε ἐκ τῆς ἑσίας τῷ Πατρὶ εἶναι, καὶ τὸ προῖεναι ἐκ τῷ Πατρὶ. Τῆς γὰρ αὐτῆς Προφάσεως αἱ ἐκδοχαὶ διαφέρουσιν αἰώθουσιν εἶναι. Μήποτε δ' ἄρα, ἐὰν ἡ Ἱερὰ Γραφή; ἢ Συνόδός τις Οἰκουμενικὴ κατὰ γε μίαν σημασίαν ἐν πολλαῖς ἄλλαις, ἐκδέχεται τινὰ Πρότασιν, διὰ δὲ τῆτο ὑπο- ληπτέον τῷ Ἱερᾷ Γραφῇ, ἢ τῷ Συνόδον, ἐκεῖνο μόνον τῷ Πρότασιν τῷ ὑποκειμένῳ δηλῶν, καὶ μηδεμίαν ἄλλω συγχωρεῖν ἔννοιαν παρ' ἐκείνῳ; Νυνὶ μὲν τοι γε τὸ ζητούμενον ἐστὶν, ὅτι ἔπερ ἐν τῷ Συμβόλῳ ταυτὸν ἐδήλωσαν οἱ Πατέρες σημαίνειν, τὸ ἐκ τῆς ἑσίας τῷ Πατρὶ εἶναι, καὶ τὸ ἐκ τῷ Πατρὶ προ- βάλλεσθαι. ἄλλ' ἐκεῖνο: πότερον, ὅχι παρὰ τῆτο ἔτι, τὸ ἐκ τῆς ἑσίας τῷ Πατρὶ εἶναι σημαίνει, καὶ τὸ εἶναι τῷ Πατρὶ ὁμο- σιον; Ὅθεν ἢ τῷ Ἰησοῦτι ἀπόφανσις ψευδομένη ἐλέγχεται; καὶ ἐκ μόνης τῆς ἀπομνημονεύσεως μαρτυρίας τῷ ἈΘΑΝΑ- ΣΙΟΥ, ὅς, ἐν οἷς, ἐκ τῆς τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ ἑσίας ἐκδι- δάσκει

(190) Σελίδι 389.

(191) Κιχάβ: Ζητήμ: Ε'. Σελ: 42.



δάσκει πεφυκέναι τὸ Πνεῦμα, ἔδδεν ἄλλο νοεῖν ἐθέλει, ἢ ὅτι σὺ Πατρὶ καὶ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα ἐστὶν ὁμοῦσιον.

Ἐρεῖς: εἰ τὸ Πνεῦμα ἐκ τῆς Πατρὸς καὶ Υἱῶ λέγεται ἑσῖας, ὅτι τῷ αὐτῷ ἐκατέρῳ ἑσῖαν ἔχον ἐστὶν ὁμοίως ἂν καὶ ὁ Πατὴρ, ἢ ὁ Υἱός, ἐκ τῆς ἑσῖας εἶναι ῥηθεῖη τῷ Πνὸύματος, ὅτι καὶ ὁ Πατὴρ καὶ ὁ Υἱός τῷ αὐτῷ ἔχουσιν ἑσῖαν, ὡ καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. Ἀλλὰ τῷτο γὰρ ἐδέποτε οἱ Πατέρες εἰρήκασιν τὸ δέ, διὰ τῷ ἐν τοῖς Προσώποις τάξιν ἐγένετο. Περὶ μὲν γὰρ τῷ Πατρὸς, ἐδέας ποτε τῶν Αἰρετίζόντων ἀμφισβητῶν ὑπῆρξεν, εἰ Θεὸς αὐτὸς ἐστὶ περὶ δὲ τῷ Υἱῷ, τινές περὶ δὲ τῷ Ἁγίῳ Πνὸύματος, εἰσὶν οἱ τῷτο καὶ ἀπηρνῆσαντο. Ἵνα τοίνυν οἱ Πατέρες, τῷ αὐτῷ τῷ Ἁγίῳ Πνὸύματι ἑσῖαν, σὺ τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ, εἶναι δείξωσιν· ἐπειδὴ ἐκτὸς ὡ ἀμφισβολίας ἀπάσης τὸν Πατέρα εἶναι Θεόν· μετὰ δὲ τὸν Πατέρα, δούτέρα τῶν Ὑπερθέων Ὑποστάσεων ἢ τῷ Υἱῷ τάσσειται· διὰ τῷτο δὴ ἐκ τῆς τῷ Πατρὸς καὶ τῷ Υἱῷ ἑσῖας ἔφησαν εἶναι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα· ἔχι δ' ἀνάπαλιν καὶ τὸν Πατέρα, ἢ τὸν Υἱόν, ἐκ τῆς ἑσῖας εἶναι τῷ Πνὸύματος. Οὐ γὰρ δὴ μετὰ τὸ Πνεῦμα ὁ Πατὴρ καὶ ὁ Υἱός ἀριθμεῖται, ὅλως δὲ πρὸ τῷ Πνὸύματος, κατὰ τὰ τῷ Σωτῆρος ἐκείνα: „Βαπτίζοντες αὐτοὺς εἰς τὸ ὄνομα τῷ Πατρὸς, καὶ τῷ Υἱῷ, καὶ τῷ Ἁγίῳ Πνὸύματος„.

Ἀντιφέρουσι δ' ἔτι ἐκ τῶν Ἐπιφανίε ἐκείνα, δι' ὧν, ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον φησὶν. Εἰ γὰρ ἐκ τῷ Πατρὸς καὶ τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα ἐστὶ, δῆλον ὅτι καὶ ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱῷ ἐκπορεύεται. Καὶ τὰ μὲν τῷ Ἐπιφανίε κεῖται ἐν Αἰρ: ΕΒ'. τῇ κατὰ Σαβελλιανῶν, Τόμ: Α'. Σελ: 515. „Πνεῦμα Ἅγιον, „ἐκ ἀλλότριον Πατρὸς καὶ Υἱῷ· ἀλλὰ ἐκ τῆς αὐτῆς ἑσῖας, ἐκ τῆς αὐτῆς Θεότητος, ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱῷ, σὺ Πατρὶ καὶ Υἱῷ, „ἐκνυπόσταλον ἑὶ Πνεῦμα Ἅγιον, Πνεῦμα Θεῶν, Πνεῦμα δόξης, „Πνεῦμα Χριστοῦ, Πνεῦμα Πατρὸς„. Καὶ μετὰ γε τὸ μέσον, Σελίδι 518. „Πατὴρ ἀληθῶς γεννήσας Υἱόν, καὶ Υἱὸς ἀληθῶς „γεννηθεὶς ἐκ Πατρὸς ἐκνυπόσταλος, ἀνάρχως καὶ ἀχρόνως, καὶ „Πνεῦμα Ἅγιον ἀληθῶς ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱῷ τῆς αὐτῆς Θεότητος, „ἐκ Πατρὸς ἐκπορευόμενον, καὶ τῷ Υἱῷ λαμβάνον„. Καὶ ἐν τῷ Ἀγκυρωτῷ δὲ μετὰ τῷ κατὰρχῳ ἐκ ὀλίγων προῶν, Σελ: 13. „Ἀλλ' ἐν μέσῳ Πατρὸς καὶ Υἱῷ (τὸ Πνεῦμα), ἐκ τῷ Πατρὸς „καὶ τῷ Υἱῷ, τρίτον τῇ ὀνομασίᾳ„. Ὁ μὲν ἔν ΠΕΤΑΒΙΟΣ ἐρωτῶν: „Ἐν μέσῳ Πατρὸς καὶ Υἱῷ, „ἐκ τῷ Πατρὸς καὶ τῷ Υἱῷ ἘΚΠΟΡΕΥΟΜΕΝΟΝ„, τρίτον τῇ ὀνομασίᾳ· ἀλλ' Ἐλληνιστὶ ἀναγινώσκειται μόνον: ἐκ τῷ Πατρὸς καὶ τῷ Υἱῷ τῆς Φωνῆς „ἐκπορευόμενον„, μὴ προσκαμένης. Καὶ αὐτόθι δὲ, Σελίδι 14. „Θεὸς ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα, ὡ ἐψόσαντο οἱ ἀπὸ τῷ

B ββββ 2

„Χίσμα-

„χρίσματος, νοσφισάμενοι...“ Ενθα πάλιν ὁ Ἰησοῦτης Πετᾶβιος προσεφερμωδῶεν φιλονεικῶν: „Θεὸς τοίνυν ἐστὶ τὸ Πνεῦμα, ἐκ τῆ Πατρὸς καὶ τῆ Υἱᾶ ἐκπορεύομενον...“ καὶ τοι τῆς Φωνῆς, „ἐκπορεύομενον...“ μὴδ ἐνταῦθα τῆ πρωτοτύπῃ ἐπαναγινωσκόμενης. Καὶ πάλιν δὲ ἐν τῷ Ἀγκυρωτῷ, Σελ: 77. ἃ καὶ τῇ ΟΔ'. Αἰρέσει, Ἀριθμ: Ο'. ὁμοίως ἀπαντᾷ: „Τὸ δὲ Ἅγιον Πνεῦμα „μόνον καλεῖται ἀπὸ Πατρὸς καὶ Υἱᾶ, Πνεῦμα ἀληθείας, καὶ „Πνεῦμα Θεοῦ, καὶ Πνεῦμα Χριστοῦ...“ Καὶ περὶ τὸ μέσον δὲ τῆ Ἀγκυρωτῆς, τὰ καὶ ἐν τῇ ΟΔ'. Αἰρέσι: παραπλησίως ἐμφερόμενα Ἀριθμ: Ζ'. „Τὸ δὲ Ἅγιον Πνεῦμα παρ' ἀμφοτέρων Πνεύμα ἐκ „Πνδύματος...“ Τῆ Πετᾶβίᾳ αὐθις ἐφερμωδόντος: (παρ' ἀμφοτέρων προῖον) Πνεῦμα ἐκ Πνδύματος τῆ ΠΡΟΪΟΝ, (qui oritur:) Ἐλλωισι μὴδαμῶς προσκειμένῃ, μὴδ ἄλλῃ τῇ ῥήματος ἰσοδωμῆντος αὐτῷ. Καὶ ἐν Αἰρ: ΟΔ'. κατὰ μὲν τῷ Ἐλλωισι Ἐκδοσιν, τῷ ἐν Βασιλείᾳ, Ἔτει 1544. Σελίδι 379. (192) „Ἀλλ' „οἶμαι ἀμφοτέρῃ καλοικῆν ἐν τῷ δικαίῳ, ὁ Χριστὸς, καὶ τὸ Πνεῦμα αὐτῶ. Εἰ δὲ Χριστὸς ἐκ τῆ Πνδύματος πισδύεται Θεὸς ἐκ „Θεοῦ, καὶ τὸ Πνεῦμα αὐτῶ ἐκ τῆ Χριστοῦ ἢ παρ' ἀμφοτέρων, „ὡς φησὶν ὁ Χριστὸς: ὁ παρὰ τῆ Πατρὸς ἐκπορεύεται καὶ ἕτος „ἐκ τῆ ἐμῆ λήψεται ὁ δὲ Χριστὸς ἐκ Πνδύματος Ἁγίου. τὸ γὰρ „ἐν αὐτῇ, φησὶν, ἐκ Πνδύματος Ἁγίου, Ἀγγέλου Φωνῆς. Σωλὼ τὸ „λυτρωμένον με Μυσηρίον...“ Τὰ αὐτὰ κεῖται καὶ τῷ Ἀγκυρωτῷ, Σελ: 70. κατὰ τῷ Πετᾶβίᾳ Γραικο-Λατίν: Ἐκδοσι: εἰ μὴ ὅτι, ἀντ' ἐκείνων: (εἰ δὲ Χριστὸς ἐκ τῆ Πνδύματος πισδύεται) κεῖται: (εἰ δὲ Χριστὸς ἐκ τῆ Πατρὸς πισδύεται) (193). Ὁ δὲ Πετᾶβιος ἐρμωδῶν κακεῖνα: „Καὶ τὸ Πνεῦμα αὐτῶ ἐκ τῆ Χριστοῦ, ἢ „παρ' ἀμφοτέρων...“ φησί: „τὸ δὲ τῆ Θεοῦ Πνεῦμα ἐκ Χριστοῦ, „καθὸ αὐτὸ παρ' ἀμφοτέρων ἐκπορεύεται: (ut pote qui al utroque procedit:) τῆδ' ὅπερ ὡς πόρρω τῶν Ἐλλωικῶν ἐκκλίνει κατ' ἄ ἕρηται, (ἢ παρ' ἀμφοτέρων) ἕχι δέ: (καθὸ αὐτὸ παρ' ἀμφοτέρων ἐκπορεύεται.) Καὶ ἐν τῷ Ἀγκυρωτῷ δὲ, Ἀριθμ: ΟΓ'. Σελ: 78. ἃ καὶ τῇ ΟΔ'. Αἰρ: ἀναγινώσκεται τὰ αὐτὰ, πολὺ πρὸ τῆ τέλους, ἐν Τόμ: Α'. Σελ: 898. „Οὐδὲ τὸ Πνεῦμα „(ἐδὲς ἔγνω), εἰ μὴ ὁ Πατὴρ καὶ ὁ Υἱὸς, παρ' ἑ ἐκπορεύεται, „καὶ παρ' ἑ λαμβάνει. Καὶ ἕδε τὸν Υἱὸν, καὶ τὸν Πατέρα, εἰμὴ „τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, τὸ δοξάζον ἀληθῶς, τὸ διδάσκον τὰ „πάντα, τὸ μαρτυρεῖν περὶ τῆ Υἱᾶ ὁ παρὰ τῆ Πατρὸς καὶ ἐκ „τῆ

(192) Κατὰ δὲ τῷ Πετᾶβίᾳ Γραικο-Λατίν: Ἐκδοσι: Σελ: 891.

(193) Ὁμοίως δὲ ἐπὶ τῆς Πετᾶβίᾳ Γραικο-Λατίν: Ἐκδοσι: καὶ ἐν τῇ ἐκ τῆς ΟΔ'. Αἰρ: προενηχθείσῃ μικρὸν ἀνωτέρω ῥήσει, ἀναγινώσκεται: „Εἰ δὲ Χριστὸς ἐκ τῆ Πατρὸς πισδύεται...“

„τῷ Υἱῷ, ὁ μόνος ὁδηγὸς ἀληθείας,,. Εἰμὶ ὅτι ἐπὶ τῆς ρηθείσης Αἵρεσις: ἀντὶ τῶν προτέρων ἐκείνων, ὥτως ἀναγινώσκεται διακρίδόν: „Οὐδὲ τὸ Πνεῦμα (τις ἔγνω), εἰμὶ ὁ Υἱὸς ἐξ ἧ λαμβάνει, καὶ ὁ Πατήρ, παρ' ἧ ἐκπορεύεται,,. Ἄτινα δὴ πάλιν ἐρμηνεύει Πετᾶξιὸς ὑπολιθείς: „Τὸ μαρτυρεῖν περὶ τοῦ Υἱοῦ, ὃ παρὰ τοῦ Πατρὸς, ὃ ἐκ τοῦ Υἱοῦ ἐκπορεύεται,,. Καίτοι γε τῷ ῥήματι **ΕΚΠΟΡΕΥΕΤΑΙ** ἐν τῷ Ἑλλωικῷ ὕφει ἤκιστα γε καίμενα. Ἐτι ἐν τῷ Ἀγκυρωτῷ, Ἀριθμ.: ΟΑ'. Τόμ.: Β'. Σελ.: 75. Καὶ ἐν τῇ ΟΔ'. Αἵρ.: Ἀριθμ.: Η'. Τόμ.: Α'. Σελ.: 896. „Εἰ γὰρ τὸν μὲν Υἱὸν καλεῖ, τὸν ἐξ αὐτοῦ· τὸ δὲ Ἅγιον Πνεῦμα, τὸ παρ' ἀμφοτέρων· μόνον πίσει νοόμενα ὑπὸ τῶν Ἀγίων, φωταῖνα, φωταδοτά, φωταίνῳ τῷ ἐνέργειαν ἔχει· συμφωνίαν τε πρὸς αὐτὸν τὸν Πατέρα ποιῆται φωτὸς πίσει,,. Καὶ μετὰ τινά: „Πνεῦμα Ἅγιον, Πνεῦμα ἀληθείας ἐστὶ, φῶς τρίτον παρὰ Πατρὸς καὶ Υἱοῦ,,. Ἐστὶ δ' ὅς τις (194) καὶ ἐκ τοῦ Ἀγκυρωτοῦ, Ἀριθμ.: ΟΑ'. τῆς Λατιν.: Ἐκδόσις: Σελ.: 28. (195) προσέλθουσιν ἔτι καὶ ταῦτα: „Ζωὴ δὲ ὅλος ὁ Θεός· ἐκὼν Ζωὴ ἐκ Ζωῆς ὁ Υἱός.... τὸ δὲ Ἅγιον Πνεῦμα παρ' ἀμφοτέρων,,.

Ἀλλὰ γὰρ ἐν οἷς Ἐπιφάνιος τοσάκις φησὶν ἐκ τοῦ Πατρὸς καὶ τοῦ Υἱοῦ τὸ Πνεῦμα, ἔκκεν τὸ Πνεῦμα ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱοῦ ἐννοεῖ ὑπάρχον, ἢ ἐκπορευόμενον· μόνον δὲ, ἐκ μὲν τοῦ Πατρὸς ἐκπορευόμενον, ἐκ δὲ τοῦ Υἱοῦ λαμβάνον. Ἐπεὶ ψιλῶς φάσκων τὸ Πνεῦμα ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱοῦ, ἐδέποτ' ἔφη, ὅτι ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱοῦ ὑπάρχει, ἢ πρόεισιν, ἢ ἐκπορεύεται. Ὅς τις δὲ ἄρα ὁ νῦν, ὁ τοῦ Ἐπιφανίως τυγχάνει, σαφῶς ἀναφαίνεται πρῶτον ἐκ τῶν ἀντεπενεχθέντων αὐτοῦ ῥημάτων, τῶν ἐν τῇ ΟΔ'. Αἵρεσις: „Τὸ γὰρ Πνεῦμα παρ' ἀμφοτέρων (λέγει) ὡς φησὶν ὁ Χριστός: ὃ παρὰ τοῦ Πατρὸς ἐκπορεύεται: καὶ, ὅτος ἐκ τοῦ ἐμῶ λήψεται,,. Ἐνθα πάντως τὸ ἐκ τοῦ Πατρὸς καὶ Υἱοῦ ἐρμηνεύει κατὰ τὰ Ἱερογραφικὰ Λόγια: ἐκ μὲν τοῦ Πατρὸς λέγων εἶναι ἐκπορευόμενον, ἐκ δὲ τοῦ Υἱοῦ λαμβάνον. Καὶ τῷτο ἔν δέκνυσιν (Ἐπιφ.): ἐννενοηκέναι, τὸ Πνεῦμα, εἶπας, ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱοῦ, ἢ παρ' ἀμφοτέρων. Ὡσαύτως δὲ ἐπὶ τῆς αὐτῆς Αἵρεσις: κατὰ γε τὰ ἀντεπαχθέντα πολὺ πρὸ τοῦ τέλους ῥήματα, εἰπών: „ἐδὲ τὸ Πνεῦμα ἔγνω, εἰμὶ ὁ Υἱὸς ἐξ ἧ λαμβάνει, καὶ ὁ Πατήρ παρ' ἧ ἐκπορεύεται,,: ὑποσυνάπτει: „Καὶ ἐδὲ τὸν Υἱὸν καὶ τὸν Πατέρα, εἰμὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ὃ παρὰ τοῦ Πατρὸς, ὃ ἐκ τοῦ Υἱοῦ,,: ἐπὶ τὰ προηγησάμενα ἀναφέρων ἐκείνα: „Εἰ μὴ ὁ Υἱὸς ἐξ ἧ λαμβάνει, καὶ ὁ Πατήρ παρ' ἧ ἐκπορεύεται,,.

Καθά-

(194) Κιχώβ: Ζητήμ.: Ε'. Σελ.: 42.

(195) Ἐπὶ τῆς Πετᾶβ: Γραικο-Λατιν.: Ἐκδ.: Ἀγκυρ.: Ἀριθμ.: Ο'. Τόμ.: Β'. Σελ.: 75.

Τόμ.: Β'.

Γ γγγγ

Καθάπερ ἄρα προειρηκώς ὡς, ἐκπορεύεσθαι μὲν ἐκ τῆ Πατρὸς τὸ Πνεῦμα, λαμβάνειν δὲ ἐκ τῆ Υἱᾶ· ὡσαύτως καὶ νῦν Φησὶν: ὁ παρὰ τῆ Πατρὸς, ὁ ἐκ τῆ Υἱᾶ· καὶ ἐν τέτοις αὐτοῖς πάντως ἔτιως ἐπεννοῶν: ὁ παρὰ τῆ Πατρὸς, τετέστιν ἐκπορεύεται· ὁ ἐκ τῆ Υἱᾶ, τετέστι λαμβάνει. Ἐνθεντοι: ἔδε Φησὶν, ὡς ἔωθεν: ὁ παρὰ τῆ Πατρὸς καὶ τῆ Υἱᾶ: ἀλλὰ „ὁ παρὰ τῆ Πατρὸς· ὁ „ἐκ τῆ Υἱᾶ·: ὃν δὴ τρόπον καὶ ἀνωτέρω πρότερον ἔφη: „ἐκπορεύεσθαι μὲν ἐκ τῆ Πατρὸς, λαμβάνειν δὲ ἐκ τῆ Υἱᾶ,,. Οὕτω δὲ καὶ τῇ ΞΒ'. Αἶρ: ἐπὶ τῶν ἀντιπροβληθέντων ῥημάτων, εἰπών: „Πνεῦμα Ἅγιον ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱᾶ: (ὑποσυνάπτει:) ἐκ Πατρὸς „ἐκπορευόμενον, καὶ τῆ Υἱᾶ λαμβάνον,,· ἐπαναπτύσων καὶ ἔτιως, ὅπως φθάσας εἰρήκει τὸ ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱᾶ, διὰ γε τέτων: „Ἐκ Πατρὸς ἐκπορευόμενον, καὶ τῆ Υἱᾶ λαμβάνον... Κἀντεῦθεν δὴ, τοσάκις λέγων „τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱᾶ,, ἐπὶ τῆς Ος'. Αἶρεσ: ἥτις ὡς ἢ τῶν Ἀνομοίων, κατὰ τῆ Α'. Κεφαλ: τῆ Ἀετίς (196) ἔτιως αὐτὰ ταῦτα ἐκφέρει: „Ἐκ Πατρὸς, καὶ τῶν τῆ Υἱᾶ, ἐν οἷς ἐμφανέστατα δηλεῖται, μηδὲν ἄλλ', ἢ ἐκείνα τὸν Ἐπιφάνιον ἐννοῆσαι τὰ Γραφικὰ, „ὅτι τὸ „Πνεῦμα ἐκ τῆ Πατρὸς ἐκπορεύεται,,: ὅτι τὸ Πνεῦμα ἐκ τῆ ἐμῆ: „τετέστιν, ἐξ ἐκείνων ἃ τῆ Υἱᾶ ἐστὶ, λήψεται,,. Καὶ ὁ αὐτὸς ἄρα ἐκείνῳ πρόκειται νῆς καὶ τοῖς ἄλλοις λέγοντι, ἐκ τῆ Πατρὸς καὶ τῆ Υἱᾶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον.

Τὰ μὲν ἔν τῆ Ἐπιφάνίᾳ ἐν τῷ Α. Τόμ: τῶν Συγγραμ: Σελ: 935. τάδε ἐστὶ: „Σαφῶς ἡμῖν, ἀνάρχως καὶ ἀχρόνως τῆ „ἐνυποστάτῃ Λόγῃ τῆ Πατρὸς, καὶ τῆ ἐνυποστάτῃ Πνεύματος τῆ „Ἀγίᾳ, ἐκ Πατρὸς καὶ τῶν τῆ Υἱᾶ, ἡμῶν ἐν γνώσει τελείᾳ ἡσφαλισμένῃ,,· (197) Διὰ δέ τοι τέτο καὶ μυριάκις Ἐπιφάνιος ἐστὶ διδάσκων, ἐκπορεύεσθαι μὲν ἐκ τῆ Πατρὸς τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, λαμβάνειν δὲ ἐκ τῆ Υἱᾶ· ὡς αὐτῆ τὰς μαρτυρίας, ἐν τῇ περὶ τῶν Ἀνατολικῶν Πατέρων Πραγμασίᾳ φθάσαντες κατελέξαμεν. (198) Οὐδέποτε ἄλλ' ἔν εἰρηκώς φαίνεται, ὅτι τὸ Πνεῦμα προέσιν, ἢ ἐκπορεύεται καὶ ἐκ τῆ Υἱᾶ. Μάλιστα δ' ἐν οἷς περὶ τῆς τῆ Ἀγίᾳ Πνεύματος παραγωγῆς τε καὶ ἀρχῆς ἐκ προθέσεως αὐτῷ γίνεται λόγος, διαρρήδην διδάσκει, ὡς ὁ Πατήρ μόνος προβάλλει τὸ

(196) Ἐπὶ τῆς Πετασίς Ἐκδόσ: Σελ: 935.

(197) Ταῦτα δὲ ἔτιως ἐκλελατίνισαι: In perfecta cautione cautum sine principio et sine tempore in substantia esse Sermonein Patris. et in substantia esse Spiritum S. ex Patre, et ijs quae Filij sunt. Ἀπερ' ἂν ἐξελλωιδεῖν καὶ ἔτιως: (Ἐν ἀσφαλείᾳ τελείᾳ ἐστὶν ἀσφαλές, ἀνάρχως τε καὶ ἀχρόνως ἐν Ὑποστάσει εἶναι τὸν Λόγον τῆ Πατρὸς, καὶ ἐν Ὑποστάσει εἶναι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκ τῆ Πατρὸς, καὶ τῶν τῆ Υἱᾶ.)

(198) Ἐν Α'. Πραγμ: Ἐκατονταετ: Δ'.



τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον· ὡς ἐκ τῆ Πατρὸς μόνον αὐτὸ ὑπάρχει· ὡς μόνος ὁ Πατήρ ἢ ἀρχὴ ἐστὶ καὶ ἡ αἰτία τῆ Πνύματος, καθάπερ ἐπὶ τῆς ῥηθείσης Πραγματείας σιτωράκαμεν. Καθ' ὧ δὲ ἐννοίαν οἱ Πατέρες παρέδωκαν ἐκ τῆ Υἱῆς τὸ Ἅγιον Πνεῦμα λαμβάνειν, ἐν ἰδικιτέρῃ Πραγματείᾳ. (199) καὶ τὸτο δέδεικται. Ἀμέλειτοι: ἔχ' ὡς αὐτῶν τὸτο περὶ τῆς ἀρχῆς ἢ αἰτίας ἐκδεξαμένων, ἀλλὰ περὶ τῆς μιᾶς καὶ τῆς αὐτῆς μόνον ἑσίας τε καὶ θελήσεως, καὶ ἐπισήμης τῆ Υἱῆς καὶ τῆ Πνύματος. Προείλετο δ' Ἐπιφάνιος τοσάκις εἰπεῖν, ὅτι τὸ Πνεῦμα ἐκ μὲν τῆ Πατρὸς ἐκπορεύεται, ἐκ δὲ τῆ Υἱῆς λαμβάνει· ἢ, ὃ ταῦτόν ἐστίν: ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱῆς ἔντευνθεν τὸ ἐνιαῖον τῆς τῆ Πατρὸς καὶ τῆ Υἱῆς Θεότητος σὺν τῷ Ἁγίῳ Πνύματι διαπιστωσάμενος, μηδαμῶς ἄλλότριον τῆς τῆ Πατρὸς καὶ τῆ Υἱῆς κοινωνίας τε καὶ ἑσίας, πεφυκὸς, ἐκδιδίδεχται τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. Ταύτη τοι καὶ ἐν Αἰρέσει τῇ ΕΒ'. φάσκων ὧ: „Πνεῦμα Ἅγιον ἀληθῶς ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱῆς τῆς αὐτῆς Θεότητος, ἐκ Πατρὸς ἐκπορεύόμενον, καὶ τῆ Υἱῆς λαμβάνον,“. Περιῆσαν γὰρ οἱ ἐκ τῶν Αἰρέσεων, τὴν τῆ Πατρὸς καὶ τῆ Υἱῆς καὶ τῆ Ἁγίας Πνύματος ἐναδικῶ Θεότητῃ ἐξαρνέμενοι. Ὅτι δὲ ἐξ ἀνάγκης ἐστὶν ἐπόμενον, ὁμοῦσιον τῷ Υἱῷ πεφυκέναι τὸ Πνεῦμα, διὰ τὸ ἐξ αὐτῆς τῆ Πατρὸς ἐκπορεύεσθαι, ἀλλὰ καὶ δέδεικται.

Ἀλλ' ἐνίσταται τις (200) ὅτι ἄρα ὁ Ἐφέσος ὑπεκκλίνει διαπαύων τῆς τόπης, ἐν οἷς λέγεται τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱῆς, διὰ τὸ μὴ Ἐλλωιστὶ τὸ („ἐστίν,“) προσκεῖσθαι καὶ τὴν οἰκείαν ἔτος αὐτῆς κακοτροπίαν, ἢ τὴν ἐπίσημον ἀπαιδοῦσίαν, προδείκνυσιν τὴν μὲν, εἰ τ' ἀληθὲς γινώσκων κατειρωνόβετο καὶ τῷ τοιῷ δε φύκει τῆς Σοφισείας πρὸς ἐξαπάτῃ ἐχρήτο· τὴν δὲ, εἰ τῷ ὄντι ἀγνοῶν ὧ, τῆς Ἐλλωικῆς εἶναι εὐφραδείας τὸ („ἐστίν,“) ἔξωθεν ἐπεννοεῖν. Τέτρε γε μὴ συχνὰ ἀπαντῶσιν αἱ μαρτυρίαι, ἐν τε τῇ Γραφῇ, καὶ παρὰ τοῖς Ἱεροῖς Πατράσιν. Ἐν γὰρ τῇ Α'. πρὸς Κορινθ': Ἐπισ: Κεφαλ: Β'. ἐνθα λέγεται, μὴ τὸ Πνεῦμα ἡμᾶς εἰληφέναι τῆ Κόσμου τέτρε, ἀλλὰ τὸ Πνεῦμα, ὅπερ, ἐκ τῆ Θεῆ ἐστίν· Ἐλλωιστὶ ἀναγινώσκεται: „(Ἀλλὰ τὸ Πνεῦμα τὸ ἐκ τῆ Θεῆ,.)“ μηδαμῶς τῆ („ἐστίν,“) ἐπιφερομένη,.

Ἀλλ' ἵνα δὴ τῆς ἐπὶ τὸ διαβάλλειν προχείρε Ἰησκιτίδος γνώμης τὸ συκοφαντικὸν παρῶμεν: εἰ πάντως ὁ Ἐφέσος ἐπὶ τῶν εἰς τῷ προβαλλομένων, ἐκ τῶν τῆ Ἐπιφανίης ῥήσεων, ἀπείναι μόνον ἀπλώτα τὴν φωνὴν („εἶναι,“) εἰδὲ μηδὲν ὑπονοεῖν ἠγάτο τὸν

(199) Ἐν Πραγμ: τῇ ΙΒ'.

(200) Κιχῶς: Ζητήμ: 5. Σελ: 66.



τὸν Ἐπιφάνιον ἔξωθεν, εἰπόντα ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱῶ· ἀλλὰ παρὰ ταῦτα γε δὴπερ ἐδείκνυ τῷ Ἐπιφάνει ἐννοίαν ἔσαν, ἐν τῷ („ἐκ τῶ Υἱῶ,“) προσεπινοῦσθαι τό: („λαμβάνει,“). ἔν τῷ λαμβάνειν ἐξυπακχόιτο, ἐνθα ἂν ἀπλῶς τὸ Ἅγιον Πνεῦμα λέγηται. Κάν-τεῦθεν ὁ Ἐφέσος ἔφασκεν, ὅτι ἐπεὶ τὸ ῥῆμα τῷτο ἐξυπακχῶν ὡς Ἐπιφάνιος, τάτε δὴ χάριν καὶ προσεπῆγε τὸ ἐκ Υἱῶ ἐστίν· ἢ „ἐκ τῶ Πατρὸς ἐστίν· ἀλλὰ μόνον ἔλεγε: τὸ Πνεῦμα ἐκ τῶ Υἱῶ, ἢ ἐκ τῶ Πατρός,“. Ὁ μὲν ἔν τῆς καθ' Ἑλλωας εὐφραδείας ιδιωτισμός, ἐξυπακχόμενον („τὸ ἐστίν,“) παραλείπει ὡς καὶ τῇ προτεθείσῃ Ἀποστολικῇ ῥήσει ἐξυπακχέται. Ἀλλὰ μὴ ἐκ τάτε, („τὸ ἐστίν,“) αὐτὸ ἀπανταχῶς ἐξυπακχέον; ἄλογον· ἦπερ καὶ γὰρ τρανῶς ἀποδέδεικται, ὡς Ἐπιφάνιος ἐν ἐκείνοις, ἐπὶ μὲν τῶ Πατρὸς ὑπονοχμένῳ ἔξωθεν ἔχει τῷ Φωνῷ: („ἐκπορεύεσθαι,“) ἐπὶ δὲ τῶ Υἱῶ, τῷ: („λαμβάνει,“) ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱῶ τὸ Πνεῦμα φάσκων. Ἀλλὰ τέτοις προθεῖναι πλείονα περιττόν.

Ἄ δ' ὁ αὐτὸς Συγγραφεὺς (201) πρὸς ἐκεῖνα ἀντιπροτείνει τὰ ἐκ τῶ Ἐπιφάνει προλεθέντα ἐκ τῆς ΟΔ. Αἰρέσε: „Τὸ Πνεῦμα „τὸ Ἅγιον μόνον καλεῖται ἀπὸ Πατρὸς καὶ Υἱῶ, Πνεῦμα ἀλη- „θείας, καὶ Πνεῦμα Θεῶ, καὶ Πνεῦμα Χριστοῦ,“ κτ: ταῦτα ἡμεῖς ἐν τῇ Πραγματείᾳ (202), ὅτι τὸ λέγεσθαι Πνεῦμα τῶ Υἱῶ, ἔοθεν εἰς δεῖξιν σωτελεῖ τῆς τῶ Ἁγίου Πνεύματος ἐκ τῶ Υἱῶ Ἐκπορεύσεως, διελύσαμεν.

Προσέτι δ' ἔν καὶ πρὸς ἐκεῖνα, τὰ ἐν τοῖς περὶ τῆς αὐτῆς Αἰρέσεως: („Πνεῦμα Ἅγιον παρ' ἀμφοτέρων, Πνεῦμα ἐκ Πνεύματος,“) ἐπανίσταται ὁ Ἰησοῦτης ΠΕΤΑΒΙΟΣ, ἐν τῷ Ζ'. Βιβλ: περὶ Τριάδος: Κεφαλ: Γ'. Ἀριθμ: Β'. λέγων: „Ὅτι τὸ παρ' ἀμ- „φοτέρων τάντὸ σημαίνει, ὃ καὶ τὸ ἐκ ἀμφοτέρων· τὸ δὲ δὴ „τῷ παραγωγῷ δηλὲν ἐσιώδη, ἄλλως δείκνυσιν, δι' ὧν ἐπιφέρει πρὸς ἀνάπτυξιν: „Πνεῦμα ἐκ Πνεύματος. Διὰ τῷτο γὰρ Πνεῦ- „μα ἐκ Πνεύματος προῖεναι λέγει, ὅτι ὁ Θεὸς Πνεῦμα ἐστίν, κα- „θάπερ ὁ Κύριος φησί· τὸ δέτοι Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῶ Θεοῦ „ἐστίν, ὅτι ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱῶ. Διὸ αἱ προθέσεις αὗται, ἡτις „(„ΠΑΡΑ,“) καὶ ἡ („ΕΚ,“), σαφῶς τῷ Ἐκπόρυσιν, καὶ τῷ „ἀρχῇ σημαίνουσι,“.

Τὰ μὲν ἔν τῶ Ἐπιφάνει ῥήματα, καὶ ἐν τῷ Ἀγκυρωτικῷ ἐμφερόμενα τὰ αὐτὰ, ἔφασιν Ἑλλωισί: „Τὸ Ἅγιον Πνεῦμα „παρ' ἀμφοτέρων, Πνεῦμα ἐκ Πνεύματος,“ ἀλλὰ φασί: τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον παρ' ἀμφοτέρων, (Πνεῦμα „ἐκ Πατρός,“) ἐν τῷ  
F'.

(201) Κιχῶβ: Ζητήμ: Α'. Σελ: 3.

(202) Πραγμ: ΙΑ'. Ἀπάντ: Δ'. περὶ τὸ τέλος.

Β. Τόμῳ τῶν Συγγραμμάτων, Σελίδι 75. καί τοι γε Πετάβιος ἐπὶ τῆς κατ' αὐτὸν Ἐκδόσεως, ἔχει Πνεῦμα „ἐκ Πατρὸς,, κατὰ τὸ Ἑλλωικόν· ἀλλὰ Πνεῦμα ἐκ „Πνύματος,, ἐρμηνεύσαι προέ-  
 λετο. (203) Τῆτο γε μὴν παρείθω· ἀλλ' ἐκείνο ψεύδεις, ὅτι ἐν-  
 ταῦθα, τὸ μόριον („ΠΑΡΑ,,) ἢ τὸ („ΕΚ,,) τὴν ἑσιώδη σημαί-  
 νει παραγωγῇ. — Καὶ ἐξ ὧν δὲ ρημάτων Ἐπιφάνιος προσεπάγει:  
 „Πνεῦμα ἐκ Πνύματος,,: ἔδεν ὄφελος προσγίνεται τῷ Ἰησοῦ  
 ἢ γὰρ ὡς τὰ ἐκείνα: („Πνεῦμα ἐκ Πνύματος προβάλλεται,,)  
 ὡς ἔτος ἐθέλει· ἀπλῶς δὲ μόνον: („Πνεῦμα ἐκ Πνύματος,,)  
 Νοεῖ δ' Ἐπιφάνιος καὶ ταῦτα, ὡς περ καὶ τὰ πρὸ τούτων ἐκείνα:  
 („Τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον παρ' ἀμφοτέρων,,) καθ' ὅτι τὸ Πνεῦμα  
 ἐκ μὲν τῆ Πατρὸς ἐκπορεύεται, ὡς Πνεῦμα ἐκ Πνύματος· ἐκ  
 δὲ τῆ Υἱὸς λαμβάνει, ὡς Πνεῦμα ἐκ Πνύματος. Καὶ ἔδεν ἄρα  
 τῷ Ἰησοῦ ταῦτα σωηγορεῖ.

Πρὸς δ' ἐκείνα ἔτι τὰ ἐκ τῆς αὐτῆς Αἰρέσεως: „Οἶμαι ὅτι  
 „ἀμφοτέρα κατοικεῖ ἐν τῷ δικαίῳ,, κτ: ἔτις ὁ αὐτὸς Ἰησοῦς  
 ἐπὶ τῇ ρηθέντος ἀντιβάλλει χωρὶς: „Οὐδὲν τῇ χωρὶς ἐπενεχ-  
 „θῶμαι (φησὶ) διώλῃ προδηλότερον: τὸ γάρ τοι Ἅγιον Πνεῦμα,  
 „ἔτις ἐκ τῆ Χριστὸς ἐκπορεύεται λέγει, ὡς περ ὁ Χριστὸς ἐκ τῆ  
 „Πατρὸς· τῆς, Θεὸς ἐκ Θεῶ. Καὶ πάλιν παρ' ἀμφοτέρων  
 „προϊέναι φησὶ· τῆτο δὲ τοῖς αὐτοῖς ἐκ τῆ Εὐαγγελίᾳ ἀποφαί-  
 νεται ῥήμασιν, οἷς περ καὶ Λατίνοι προχωρῶνται κατὰ Γραικῶν:  
 „ἐκ τῆ ἐμῆ λήψεται,,.

Ἀμέλειοι: καί περ ἐν τῷ Ἀγκυρωτῷ Ἐπιφάνιος ἔχει λέγων:  
 „Εἰ δὲ Χριστὸς ἐκ Πατρὸς πισδύεται, Θεὸς ἐκ Θεῶ,,· ἀλλ' ἐπὶ  
 τῆς ΟΔ'. Αἰρέσι: ἥ περ ἔφθηνεν προσεσημειωκότες, ἀναγινώσκειναι:  
 „Εἰ δὲ Χριστὸς ἐκ Πνύματος πισδύεται, Θεὸς ἐκ Θεῶ,,. Εἰ καὶ  
 ὁ Ἰησοῦς Πετάβιος, καὶ τῇ εἰρημένῃ Αἰρέσει, ἐπὶ τῆς αὐτῆς  
 Ἐκδόσεως, τίθησιν: „Εἰ δὲ Χριστὸς ἐκ Πατρὸς πισδύεται,,. (204)  
 πάντως δὲ μᾶλλον ὡς ἀναγινώσκειν: „Εἰ δὲ Χριστὸς ἐκ Πνύμα-  
 τος,, ὡς δῆλον ἐξ ὧν ὑποσυνάπτεται: „Καὶ Πνεῦμα ἐκ Χριστῶ,  
 „ἢ παρ' ἀμφοτέρων,,. Πῶς γὰρ ἂν, ἄλλως, ἔφησεν Ἐπιφάνιος,  
 ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῆ Χριστῶ, ἢ παρ' ἀμφοτέρων; Μὴν  
 ὑπολαμβάνειν δεήσει, ἀμφίδοξον τὸν Ἐπιφάνιον γενέσθαι: πότε-  
 ρον δὲ, ἐκ τῆ Χριστῶ μόνον τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ἢ παρὰ τῆ Πα-  
 τρὸς καὶ τῆ Χριστῶ ἅμα; Ἀλλὰ κατὰ τὴν ἑτέραν ταύτῃ τῶν  
 τῆ Ἐπιφάνίᾳ ρημάτων ἀνάγνωσιν, ὡς ἐν τῇ ΟΔ'. Αἰρέσι: τὸ  
 Ἑλλωικόν ὕφος, κατὰ τὴν ἐν Βασιλείᾳ ρηθεῖσαν Ἐκδοσὶν ἔχει,  
 ἐκείνα

(203) Σημείωσαι δ' ὡς ῥαδίον, τὸ ἐκ ΠΑΤΡΟΣ, εἰς τὸ ἐκ ΠΝΕΥΜΑΤΟΣ μεταγράψασθαι.

(204) Σημείωσαι καὶ ὡς, ὡς ἀνωτέρω: ὅτι ἀνάπαλιν τὸ ἐκ τῆ ΠΝΕΥΜΑΤΟΣ εἰς τὸ  
 ἐκ τῆ ΠΑΤΡΟΣ μεταγράφεται ῥαδίον.

Τόμ: Β'.

Δ δδδδ

ἐκεῖνα ἄριστα ἀναπτύσσεται: ὅτι, εἰρηκῶς ἤδη, „τὸν Υἱὸν ἔναι „ἐκ τῆς Ἁγίας Πνεύματος,, ὑποσυνάπτει τῷ εἰρημένῳ κατὰ τὸ ἀνάπαλιν ὁμοίως: „καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῆς Υἱᾶ,, Καὶ προσίθῃσι δὲ τέτοις ἐπάγων: τὸ ἢ „παρ' ἀμφοτέρων,, ὅτι κατὰ τὴν Γραφὴν, ὁ μόνον ἐκ τῆς Υἱᾶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ἀλλὰ καὶ ἐκ τῆς Πατρὸς· τῆ μὲν δηλονότι λαμβάνον, τῆ δὲ ἐκπορεύομενον. Διὸ καθάπερ διὰ τῆς ῥηθέντος: „παρ' ἀμφοτέρων τὸ Πνεῦμα,, δέκνυσιν ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα λαμβάνει ἐκ τῆς Υἱᾶ. ἔτω παραπλησίως καὶ τὸ εἰρημένον: „ἐκ τῆς Πνεύματος ὁ Χριστός,,· κατὰσκοδάζει ἔπειτα τοῖς τῆς Ἀγγέλου ῥήμασιν. Οὐκ ἐν ἄρα τό γε εἰς τόδε προσλαβέσθαι εἶχεν ὁ Ἰησοῦς, ὅτι διδάσκων ὡς Ἐπιφάνιος, ἔτως ἐκ τῆς Χριστὸς τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκπροϊέναι, ὥσπερ ὁ Χριστὸς ἐκ τῆς Πατρὸς.

Ἀλλὰ γὰρ κείτω τοιαῦτα δὴ τὰ Ἐπιφάνιος ἐκεῖνα ῥήματα εἶναι: „Εἰ δὲ Χριστὸς ἐκ Πατρὸς πισδύεται, Θεὸς ἐκ Θεῶ, καὶ „Πνεῦμα ἐκ Χριστοῦ, ἢ παρ' ἀμφοτέρων,, πάντως ἐδ' ἔτω κατὰ τινα λόγους ἀνάγκη ὁ Ἰησοῦς λαμβάνει, ὡς διὰ τέτων Ἐπιφάνιος ἀποφαίνεσθαι: „ἔτως ἐκ τῆς Χριστοῦ τὸ Πνεῦμα ἐκπροϊέναι, ὡς „ὁ Χριστὸς ἐκ τῆς Πατρὸς· τῆς Θεὸς ἐκ Θεῶ. Παραπλησίως „γὰρ συνάπτων ἐστὶν Ἐπιφάνιος: ὁ δὲ Χριστὸς ἐκ Πνεύματος Ἁγίου,, ὃν ἄρα τρόπον μετ' ἐκεῖνα: (εἰ δὲ Χριστὸς ἐκ τῆς Πατρὸς, Θεὸς ἐκ Θεῶ) ὑποσυνάπτει: (καὶ τὸ Πνεῦμα ἐκ τῆς Χριστοῦ, ἢ παρ' ἀμφοτέρων) ἔτως ὁμοίως ἐστὶ προσάπτων: (ὁ δὲ Χριστὸς ἐκ Πνεύματος Ἁγίου.) Ἦδη μὲν ἔν: Εἶπερ ἐν τοῖς προηγησαμένοις ἐκεῖνοις ἀναγκαίως ἔπετο λέγειν τὸν Ἐπιφάνιον: ὅτι ἔτως ἐκ τῆς Χριστοῦ πρόεισι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ὡς ὁ Χριστὸς ἐκ τῆς Πατρὸς· τῆς Θεὸς ἐκ Θεῶ ὁμοίως ἂν ἔποιτο ἐξ ἀνάγκης, ἐπειδὴ προσέθετο Ἐπιφάνιος, καὶ τό: (ὁ δὲ Χριστὸς ἐκ Πνεύματος Ἁγίου) ὅτι ἄρα διδάσκει, καὶ τὸν Χριστὸν ἔτως ἐκ τῆς Πνεύματος προϊέναι, ὥσπερ ὁ Χριστὸς ἐκ τῆς Πατρὸς· τῆς Θεὸς ἐκ Θεῶ ὑπερ ἀδιώλον· ὁ γὰρ ὁ Χριστὸς ἐκ τῆς Ἁγίας Πνεύματος, ὡς Θεὸς ἐκ Θεῶ, τὴν αἰτίαν ἔχει τῆς ἰδίας αὐτοῦ ὑπάρξεως. Ἀλλὰ γὰρ ὅπως Ἐπιφάνιος εἰρηκεν ἐκ τῆς Υἱᾶ τὸ Πνεῦμα, αὐτὸς ἐπάγει, ἐνθα τὸ ῥηθὲν ἐρμηνεύει περὶ τῆς τῆς Πνεύματος λήψεως ἐκ τῆς Υἱᾶ, ὡς εἶχεν ἀνωτέρω τὰ ἐκεῖνα ῥήματα.

Ἐτι δεμὼν ἔδαμῃ Ἐπιφάνιος ἔφη, παρ' ἀμφοτέρων ἐκπορεύεσθαι τὸ Πνεῦμα, ὡς ἐβόλετο ὁ Ἰησοῦς: ἣν γὰρ τὰ ἐκεῖνα μόνον: „τὸ Πνεῦμα παρ' ἀμφοτέρων: τῆτο δ' ἐστὶν, ὡς αὐτὸς „προσέθετο παρὰ μὲν τῆς Πατρὸς ἐκπορεύομενον, ἐκ δὲ τῆς Υἱᾶ „λαμβάνον,,· Τότε γὰρ τέως τοῖς Λατίνοις ἐπέλαβεν ἂν Ἐπιφάνιος, εἶπερ τὰ τῆς Χριστοῦ ἐκεῖνα: (Ἐκ τῆς ἐμῆς λήψεως) ἐπήνεγκεν

νεγκεν ὥς δ᾽ ἔδειξαι, ὅτι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκ τῆς Υἱᾶς προέσιν, ἥτοι ἐκπορεύεται.

Ἐνίσταται δ' ἔτι περὶ τὰ αὐτὰ καὶ ἕτερος Ἰησοῦτης: (205)  
 „Ἐν ᾧ δὴ χωρίῳ (φάσκων) καὶ τοῖς παραπλησίοις, σημειώτεον  
 „τὸν Ἱερὸν Ἐπιφάνιον, ὡς ἀρχὴν πρώτῳ λαμβάνειν, ὅτι ταῦτόν  
 „ἐστὶ τὸ λαμβάνειν ἐκτινος, τῷ ἐκπορεύεσθαι. Καὶ ὅτι, τὸ Πνεῦ-  
 „μα λαμβάνει ἐκ τῆς Υἱᾶς· τὸ γὰρ συμπέρασμα: ἄρα τὸ Ἅγιον  
 „Πνεῦμα παρ' ἀμφοτέρων ἐκπορεύεται· τετέστιν, ἐκ Πατρὸς καὶ  
 „Υἱᾶς, ἔτω κατασκευάζει: Ἐξ ἧς λέγεται τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ-  
 „πορεύεσθαι, ἢ λαμβάνειν, ἐξ αὐτῆς ἐκπορεύεται. Ἀλλὰ μὴ ἐκ  
 „μὲν τῆς Πατρὸς ἐκπορεύεσθαι λέγεται, ἐκ δὲ τῆς Υἱᾶς λαμβάνειν.  
 „Ἀρα ἐκ τῆς Πατρὸς καὶ ἐκ τῆς Υἱᾶς ἐκπορεύεται,, — Ψεῦδος  
 „ἄλλ' ἔν, τὸ ὡς ἀρχὴν λαμβάνειν τὸν Ἐπιφάνιον, ὅτι ταῦτόν ἐστὶ  
 „τὸ ἐκτινος λαμβάνειν, τῷ ἐκπορεύεσθαι· ἢ ὅτι τῆτο ἐστὶ τὸ κατ'  
 „Ἐπιφάνιον σωμαζόμενον, ὡς ἄρα τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκπο-  
 „ρεύεται παρ' ἀμφοτέρων. Προέκειτο γὰρ μόνον τῷ Ἐπιφάνιῳ  
 „δ᾽ ἔδειξαι, καθ' ὃν δὴποτε ἔννοιαν ἀρηνεῶς εἶη, ὅτι παρ' ἀμφοτέρων  
 „τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. Πρὸς ἔν τῆτο ἔτῳς.

Αὐτοῖς δὲ πρὸς τὰ ἐκ τῆς ΟΔ'. Αἰρέσις: ἐπενεχθέντα: „Οὐδὲ  
 „τὸ Πνεῦμα (τις ἔγνω) εἰ μὴ ὁ Υἱὸς ἐξ ἧς λαμβάνει, καὶ ὁ Πα-  
 „τήρ παρ' ἧς ἐκπορεύεται,,. Καὶ εἰδὲ τὸν Υἱὸν καὶ τὸν Πατέρα,  
 „εἰ μὴ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον... ὁ παρὰ τῆς Πατρὸς, ὁ ἐκ τῆς  
 „Υἱᾶς. Οὕτως ἀνθυποφέρει ὁ Ἰησοῦτης Πετάβιος, ἐνθα ἀνωτέρω:  
 „Ἐνταῦθα (φησὶν) ἢ ΠΑΡΑ, τῶν Γραικῶν αὐτῶν ὁμολογόντων,  
 „ἐσιώδη τινα ἐμφαίνει παραγωγίῳ· εἰδὲ γὰρ ἄλλως ὑπάρχει παρὰ  
 „τῆς Πατρὸς. Τοιγαρὲν καὶ ἄλλαχθ, ἐνθα ἥτοι παρὰ τῆς Υἱᾶς,  
 „ἢ παρ' ἀμφοτέρων ἔθετο, ἐσιώδης καὶ καὶ παρίσταται ἢ Ἀρχῇ,  
 „ὡς θάτερον μόριον (ἢ ἘΚ) τὸ ἀποδοθὲν τῷ Υἱῷ σημαίνει,, —  
 „Ἀλλ' εἰδεμὶα ὅλως ἢ ὥδε σωξεία· ὁ δὲ τῆς διαφορᾶς λόγος καὶ  
 „πάνυ σαφής. Ἐνταῦθα γὰρ παρὰ τῆς Πατρὸς λέγων, ἐννοεῖ τὸ  
 „Πνεῦμα παρὰ τῆς Πατρὸς ἐκπορεύεσθαι· ἄλλαχθ δὲ φάσκων παρὰ  
 „τῆς Υἱᾶς, ἐννοεῖ τὴν τῆς Πνεύματος ἐκ τῆς Υἱᾶς λήψιν· καθάπερ ἔν  
 „καὶ ἐν οἷς φησὶ (παρ' ἀμφοτέρων) δῆλον αὐτὸς καθίστησιν, ὅτι  
 „τὸ Πνεῦμα ἐκ μὲν τῆς Πατρὸς ἐκπορεύεται, ἐκ δὲ τῆς Υἱᾶς  
 „λαμβάνει, ὡς ἀνωτέρω ἀποδέδεικται,, — Τελούταϊον δὲ ψεύδεις  
 „καὶ κεῖνο, ὅτι τὴν Ἀρχὴν σημαίνει, ὅτε λέγει Ἐπιφάνιος τό:  
 „(ὁ ἐκ τῆς Υἱᾶς,,) εἰδὲν γὰρ ἐννοεῖ ἄλλ', ἢ ὅτι: τὸ „Πνεῦμα  
 „λαμβάνει ἐκ τῆς Υἱᾶς,, ὡς ἤδη φθάσαντες ἀπεδείξαμεν.

Τελού-

(205) Κιχῶς: Ζητήμ: Α'. Σελ: 11.



Τελούταϊον, καὶ πρὸς τὰ ἐκ τῆς 'ΟΔ'. ἔτι Αἰρέσι: ἑκάνα: „Εἰ γὰρ τὸν μὲν Υἱὸν καλεῖ, τὸν ἐξ αὐτῆς τὸ δὲ Ἅγιον Πνεῦμα, τὸ παρ' ἀμφοτέρων ἔτι αὐτόδι ὁ Ἰησοῦς Πετρίος ἐνίσταται: „Ὡς (Φησὶ) περὶ τῆς κατ' ἐσίαν τε καὶ Προσωπικῆς „τῆς Ἁγίας Πνεύματος παραγωγῆς ὁ λόγος, ἔτι περὶ τῆς τῶν „δωρεῶν καὶ χαρισμάτων ἐκχύσεως, τῶν ἐνίοτε ὑπὸ τῷ ὀνόματι „τῆς Πνεύματος καταλεγομένων ὡς μηδὲ τόπον προφάσεως τοῖς „Γραικοῖς ἀπολείπεσθαι, περὶ ἧς ὕστερον τὸν γὰρ Υἱὸν ἐξ αὐτῆς „φάσκων εἶναι, ἀρχὴν τε τέττα καὶ πρόοδον, ἐκ ἄλλω τινὰ ἐννοῶν „ἐστὶ, παρὰ τὴν κατ' ἐσίαν. Ὅθεν ἔδδ' ἐμὲ περὶ τῆς Πνεύματος „λέγοντα, καὶ παρ' ἀμφοτέρων αὐτὸ εἶναι διδάσκοντα, περὶ ἄλλης „προόδου μεθερμυλῶσθαι,, — Ἀλλὰ γὰρ ταύτῃ ἡμεῖς φθάντες ἀπέφημεν τὴν σωπέειαν· τί γὰρ τὸ κωλύον τοιούτον εἶναι τῆς ἐρημίας τὸν νῦν, ἐὰν τὸν μὲν Υἱὸν λέγῃ ἐκ τῆς Πατρὸς τὸ δ' Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ μὲν τῆς Πατρὸς ἐκπορεύεσθαι, ἐκ δὲ τῆς Υἱοῦ λαμβάνειν; ἐντεῦθεν γὰρ ἐξ ἀνάγκης ἐπιφέρεται, μίαν τε καὶ τὴν αὐτὴν εἶναι ταῖς τρισὶν ὑποστάσεσι τὴν ἐσίαν, ὡς ἀλλὰ ἄλλῃ δέδεικται. Ὡσαύτως δ' ἔν, ἔδδ' ὁ ἕτερος διαπράττεται Ἰησοῦς, ἐν οἷς περ (206) τὴν ἐκ τῆς Ἀγκυρωτῆς ἀπομνημονεύων ῥῆσιν ταύτῃ: „Ζωὴ δὲ ὅλος ὁ Θεὸς, ἐκὼν Ζωὴ ἐκ Ζωῆς ὁ „Υἱός... τὸ δὲ Ἅγιον Πνεῦμα παρ' ἀμφοτέρων (προσέθησιν:) „ὅτι σαφῶς ἐνταῦθα διδάσκει Ἐπιφάνιος, ἐξ ἀμφοῖν ἔτι αὖτε εἶναι „τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ὡς ὁ Υἱὸς ἢ Ζωὴ, ἐστὶν ἐκ τῆς Θεῆς,, Οὐδὲ γὰρ ἐν τέτοις ἀπαραίτηται ἔτι τῆς σωπέειας, ἔνδεον ὅτι Ἐπιφάνιος ἐρρωμένως ὡς τυγχάνει διανοόμενος: Εἰ Ζωὴ ἐστὶν ὅλος ὁ Θεός, ἀνάγκη δὴπερ, καὶ τὸν Υἱὸν τὸν ἐκ τῆς Πατρὸς, τῆς Ζωῆς, γεννηθέντα, καὶ Θεὸν ὄντα, Ζωὴν καὶ αὐτὸν εἶναι ἐπ' ἀναγκῆς δὲ καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ὃ ἐκ τῆς Πατρὸς ἐκπορεύεται, καὶ ὃ ἐκ τῆς Υἱοῦ λαμβάνει, καὶ Θεὸς ἐστὶν ὡσαύτως Ζωὴν καὶ αὐτὸ πεφυκέναι. Ἐκ γὰρ τῆς τῆς Πνεύματος λαμβάνειν ἐκ τῆς Υἱοῦ, ἀναγκαίως ἔπεσθαι τῷ Υἱῷ ὁμοῖον εἶναι, καὶ, κατὰ γε τὸ ἀκόλουθον, Ζωὴν, ἐν ἄλλοις δέδεικται. (207)

Ἀντιφέρουσι δ' ἔτι ἐκ τῶν Ἐπιφανίεω, καὶ τὰ ἐν τῇ 'ΕΘ'. Αἰρέσι: ἥτις ἐστὶν ἢ τῶν Ἀρειανῶν, Ἀριθμ: ΝΔ'. Τύμ: Α'. τῶν Συγγραμ: Σελ: 776. „Ἐνταῦθα ἐν ὁ ἀποδείξας καὶ ὁ ἀπο- „σελλόμενος, ἵνα δείξῃ τῶν πάντων ἀγαθῶν μίαν εἶναι τὴν πη- „γὴν, τέττασι τὸν Πατέρα. καθεξῆς δὲ τῆς πηγῆς ἐκ ἑτερονύ- „μους, ἀλλὰ κατὰ τὸ Υἱοῦ ὄνομα καὶ τῆς Λόγῃ, ὡς μία πηγὴ „ἐκ πηγῆς ὁ Υἱὸς προελθὼν, ἀλλ' ὡς παρὰ τῷ Πατρὶ γεγεννη- μένος:

(206) Κιχάβ: Ζητήμ: Ε'. Σελ: 42.

(207) Ἐν Πραγματ: ΙΒ'. Ἀπαντ: Β'.



„μένος: ὅτι παρὰ Σοὶ πηγὴ Ζωῆς. Καὶ ἵνα δείξῃ καὶ περὶ τῆς  
 „Ἀγίας Πνεύματος: ἐν τῷ φωτίσθαι ὁψόμεθα φῶς· ἵνα δείξῃ φῶς  
 „τὸν Πατέρα, καὶ φῶς τῆς Πατρὸς εἶναι τὸν Υἱόν, καὶ φῶς τὸ  
 „Πνεῦμα τὸ Ἅγιον· καὶ πηγὴν ἐκ πηγῆς, ἐκ τῆς Πατρὸς καὶ τῆς  
 „Μονογενῆς τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον· ποταμοὶ γὰρ ἐκ τῆς κοιλίας.  
 „αὐτῆς ῥοῦσθαι ὕδατος ἀλλομένου εἰς ζωὴν αἰώνιον. Ἐλεγε γὰρ  
 „τὸ περὶ τῆς Ἀγίας Πνεύματος, φησὶ τὸ Εὐαγγέλιον, — Ἀλλὰ  
 „τὸν Υἱόν ἐν τέτοις πηγῶν λέγεσθαι τῆς Ἀγίας Πνεύματος ἐπὶ τὰ  
 „ἐκτός· ἐπειδὴ καὶ τὸ Πνεῦμα παραπλησίως ὥδε πηγὴν εἶναι  
 „δείκνυσιν, καθάπερ ἐστὶ καὶ ὁ Υἱός, ὡς ἀνωτέρω (208) ἤδη, περὶ  
 „τὰ ἐκ τῶν Ἀθανασίᾳ ἀντεπαγόμενα εἶδομεν. Λέγων ἄρα „πηγὴν  
 „ἐκ πηγῆς, ἐκ τῆς Πατρὸς καὶ τῆς Μονογενῆς, τὸ Πνεῦμα τὸ  
 „Ἅγιον, τῷ λόγῳ μόνον τῆς τῆς Πνεύματος ἐκχύσεως ἐπὶ τὰ  
 „ἐκτός, Ἐπιφάνιος διὰ τέτων προσαγορεύει τὸν Πατέρα καὶ τὸν  
 „Υἱόν πηγῶν τῆς Ἀγίας Πνεύματος.

Προβάλλουσιν ἐπὶ τέτοις, καὶ τὰ ἐκ τῆς Ἀγκυρωτῆς, Ἀριθμ.:  
 ΟΕ'. Σελ.: 80. ταῦτα: „Πατὴρ ὡς ἀεί· καὶ τὸ Πνεῦμα ἐκ  
 „Πατρὸς καὶ Υἱῶ πνεῖ· καὶ ἔτε ὁ Υἱὸς κτιστός, ἔτε τὸ Πνεῦμα  
 „κτιστόν, — Ἀλλ' ὅπως αὐτὰ, περὶ τῆς πρὸς τὰ ἔξω ἐκχύσεως  
 „τῆς Ἀγίας Πνεύματος ἐκλαμβάνεται προσφυῶς τε καὶ ἀραρότως!  
 „Ἐκ γὰρ τῆς Πατρὸς καὶ τῆς Υἱῶς τετέστιν, ἐκ τῆς τῆς Πατρὸς  
 „καὶ τῆς Υἱῶς φύσεως ἐκχεόμενον τὸ Πνεῦμα, ἐξ ἀνάγκης ἔπεται,  
 „μηδὲ κτίσμα αὐτὸ εἶναι, ἀλλὰ τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ πεφυκέναι  
 „ὁμοφύες τε καὶ ὁμοόσιον, ὡς ἐν ἄλλοις περὶ τέτων διείληπται.  
 „Καὶ γάρ τοι καὶ ἡ Γραφὴ λέγει „τὸ Πνεῦμα ὅπως θέλει πνεῖ·  
 „τὸ δ' οἱ Πατέρες ἐρμηνεύουσιν περὶ τῆς Ἀγίας Πνεύματος, τῆς τὰ  
 „ἑαυτῆς χάρισματα ἡμῖν διανέμοντος, ὡς ἐν τῇ Πραγματείᾳ κα-  
 „τάδομεν, τῇ περὶ τῆς Πέμψεως: (209) ὅτι ἔστιν αὕτη Ἀπό-  
 „δείξις τῆς τῆς Πνεύματος ἐκ τῆς Υἱῶς Ἐκπορεύσεως. Καὶ ταύτη  
 „ἐν, εἰς ἣν λόγος περὶ τῆς Ἀρχῆς, ἔκ ἂν ῥηθῇ τὸ Πνεῦμα ἐκ  
 „τῆς Πατρὸς, ἢ ἐκ τῆς Υἱῶς „πνεῖν, ἀλλὰ „πνεῖσθαι, — Τὸ γὰρ  
 „πνεῖν ἐμφαίνει ἐνέργειαν. Ὡς εἰ τὰ τῆς Ἐπιφάνιος ἐκείνα, περὶ  
 „τῆς αἰωνίᾳ πνεύσεως ὡς νοητέα, ἔπετ' ἂν ἐξ αὐτῶν, καὶ τὸ  
 „Πνεῦμα, ἕτερον ἔτι Πνεῦμα πνεῖν ὅπερ ἀδυνάτον.

Ἐχάτον ἐπὶ πᾶσιν ἐπιχαίρει τις (210) λέγων: „Ὡς ἔτι  
 „ἐπ' ἀκριβὲς ἀπάσας, τὰς κατὰ τῆς Πνεύματος, καὶ κατὰ τῆς  
 „πληθυσμῶ τῶν Ἀρχῶν Αἵρέσεως ὁ Ἐπιφάνιος ἐκπεριελθὼν,  
 „ἔδωκε διεσήμανεν, ὡς εἴη τις Αἵρεσις καὶ κακοδοξία τὸ λέγειν,  
 „ὅτι

(208) Ἐπὶ τῆς ἐν χειρὶ ΙΕ'. Πραγματ.: §. ΙΒ'.

(209) Πραγματ.: Η'.

(210) Κιχάβ: Ζητήμ: Ε'. Σελ.: 44.

Τόμ.: Β'.

Ε ΕΕΕΕ

„ὅτι τὸ Πνεῦμα ἐκπορεύεται ἐκ τῆ Πατρὸς καὶ ἐκ τῆ Υἱῆς. — Ἀλλὰ τί τὸ ἐντεῦθεν; μὴ παρὰ τῆτο ἔψεται, ὅτι Ἐπιφάνιος ἐγκρίνων ὡς καὶ ἀποδεχόμενος τὴν τῆ Ἁγίας Πνεύματος Ἐκπόρουσιν καὶ ἐκ τῆ Υἱῆς; Τῷ γὰρ ὄντι ταύτης ἑδάμῃ τὸ παράπαν ἐμνήσθη, ἐπεὶ ἑδ' ὄναρ ποτὲ ἑδενὶ τῶν Πατέρων ἐπῆλθεν, ἑδ' αὐτῷ γε Ἐπιφάνιῳ, ἡ ἐκ τῆ Πατρὸς καὶ τῆ Υἱῆς τοιάδε τῆ Πνεύματος Ἐκπόρουσις ὅπερ ἐν καὶ τῷ Θεοδωρήτῃ Ὑποδείγματι δῆλον καθίσταται· περὶ ἧ, ἐν τῇ Πραγματείᾳ τῇ περὶ τῶν μαρτυριῶν τῶν Ἀνατολικῶν Πατέρων, εἴρηται. (211) Ἐπειτα δὲ, καὶ εἴπερ Αἵρεσίν τε καὶ κακοδοξίαν, τὴν ἐκ τῆ Υἱῆς Ἐκπόρουσιν Ἐπιφάνιος ἑδάμῃ κατωνόμασεν· ἀλλ' ἑδάμῃ ὡσαύτως Αἵρεσιν, ἡ κακοδοξίαν ἀπεκάλεσεν, ἑδὲ τὴν τῆ Πνεύματος Ἐκπόρουσιν ἡ μόνῃ τῆ Πατρὸς, καί τοι τοσάκις διελθὼν περὶ τῆς τῆ Πνεύματος Ἐκπορεύσεως. Μᾶλλον δὲ, καὶ τοσάκις Ἐπιφάνιος ἐστὶ διδάξας, ἐκ τῆ Πατρὸς μόνῃ προεληλυθῆναι τὸ Πνεῦμα, ὁσάκις, ἡτοι μόνῃ τῆ Πατρὸς ἐπεμνήσθη, ὡς τὸ Πνεῦμα προεβληκότος ἡ ἐκ μόνῃ τῆ Πατρὸς τὸ Πνεῦμα ἀπεφώατο εἶναι· ἡ μόσον εἶναι τὸν Πατέρα ἀρχὴν καὶ αἰτίαν τῆ Υἱῆς καὶ τῆ Ἁγίας Πνεύματος ἐξεπαίδουσεν, ὡς ἐν τῇ Πραγματείᾳ, τῇ περὶ τῶν Μαρτυριῶν τῶν ἐξ Ἑώας Πατέρων, ἡμῖν ἀποδέδεικται. Καὶ ταῦτα δὴ, καὶ περὶ τῶν ἐκ τῆ Ἐπιφάνιᾳ.

## § ΙΗ'.

Ἐκ τῶν Φίλωνος τῆ Καρπάθιᾳ.

ΦΙΛΩΝ δὲ ὁ Καρπάθιος (212) εἰς τὸ Ἄσμα τῶν Ἀσμάτων, κατ' ἀρχὰς (ἐν Τόμ: Δ'. τῆς τῶν Πατέρ. Βιβλ: τῆς ἐν Κολων: Σελ: 560.) σόμα τῆ Θεῆ καὶ Πατρὸς ἐστὶν ὁ Υἱός. „Διὸ Θεὸς ὢν καὶ ἀνὴρ „ὁμοῦσιος τῷ Πατρὶ, Λόγος καλεῖται· ὅσα γὰρ ὁ Πατὴρ θέλει, „διὰ τῆς Υἱῆς λαλεῖ, καὶ κτίσει, καὶ δημιουργεῖ, καὶ σωᾷ καὶ σωάμα „τῷ Ἁγίῳ ἐκείνῳ Πνεύματι, ὅπερ ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱῆς ἐκπορεύε- „ται. — Ἐπεὶ μὲν τοι γε ἡδε ἡ τῆ Φίλωνος Πραγματεία μόνον Λατίνισι διασώζεσθαι, ἑδὲν ξένον, εἰ τοῖς λοιποῖς κοινῇ τῶν Λατίνων Πατέρων Συγγράμμασιν, ἐν τῷδε τῷ μέρει σωῆπαθε καὶ αὐτῇ, τῆς ἐκείνων ἐκπειραθεῖσα τύχης, περὶ ᾧ ἐν τῇ Πραγματείᾳ τῇ περὶ τῶν γενομένων Παραφθορῶν, ἐν τοῖς τῶν Δυτικῶν Πατέρων Πονήμασιν. (213) Εἰ μὴ τυχὸν ἀντὶ τῆς φωνῆς, pro-

cedit:

(211) Πραγματ: Α'. Ἐκτονταετ: Ε'.

(212) Περὶ τῆς ὁρα ἐπὶ τῆς παρέρσης Πραγματείας ἀνωτ: ἐν §. Γ'. Σημειώσ: (35).

(213) Ἐν Πραγματ: Γ'.

cedit: (ἐκπορεύεται) ἕτερόν τι ῥῆμα Ἑλληνιστὶ ἐνεφέρετο. Καὶ γὰρ δὴ καὶ ΒΕΛΛΑΡΜΙ'ΝΟΣ αὐτὸς, ἐν τῷ Βιβλίῳ τῷ περὶ τῶν Ἐκκλησιαστικῶν Συγγραφέων, περὶ τῶδε τῷ Φίλωνος Ὑπομνήματος γράφων φησὶ, ὡς πολλὰ ἐν τῷ ἐμπαινενοχθῶναι „δοκεῖ, ἐκ τῷ Ὑπομνήματος τῷ Γρηγορίῳ, τῷ εἰς τὸ Ἄσμα, ἅτινα „τῇ τῶν λοιπῶν ἀναπλῦξις ἐ πάνυ τι συμβιβάζεται... (214) Εἰς κενὸν ἄρα ἡμῖν ἐκείνα ἀντιπροβαίνειν, ἃ σὺ πολλοῖς τε καὶ ἄλλοις ὑπὸ Λατίνων προσεθεῖσθαι ἔοικεν.

## § 10'.

Ἐκ τῶν Γρηγορίῳ τῷ Νύσσης.

Ἐκ τῆς ΓΡΗΓΟΡΙΟΥ τῷ Νύσσαίων Βίβλου „ὅτι ἐκ εἰσὶ τρεῖς Θεοί... προβαίνειν πρῶτον: „Πισθόμεν τὸ μὲν αἷτιον, τὸ δὲ ἐκ „τῷ αἰτίῳ, καὶ τῷ ἐξ αἰτίας ὄντος... Καὶ πάλιν, ἐκ τῆς Γ. Ὁμιλ: τῆς εἰς τὴν Κυριακὴν Προσδύχῳ: „Τὸ Ἅγιον Πνεῦμα καὶ ἐκ τῷ Πατρὸς λέγεται, καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ εἶναι προσμαρτυρεῖται... — Ταῦτα γε μὴ κακουργοτάτα παρεφθάρθαι, ἐν τῇ περὶ τῶν Παραφθορῶν

(214) Οὐ μόνος δὲ Βελλαρμίνος ταύτῃ περὶ τῶν τῷ Καρπάθῳ Φίλωνος Ὑπομνημάτων ἤνεγκε τὴν ψῆφον, ἀλλὰ καὶ ἕτερος ἐστὶ Ἰουδαῖος ὁ Ποσειδώνος, ἐν τῷ Β'. Τόμ: τῆς Ἱερᾶς αὐτῆς Προπαρασκευῆς. Καὶ Μαργαρίνος ὁ De la Bigne, ἐν Ἐπιστημῶναι τινί, κατ' ἀρχαίαν τῶν τῷ Φίλωνος (ἐν τῷ Α'. Τόμ: τῆς τῶν Παλαιῶν Πατέρων Βιβλιοθ:) Καὶ ὁ πρῶτος δὲ εἰς φῶς ἐκδὼς τὸ περὶ τῷ ὁ λόγος Ὑπόμνημα, Στέφανος ὁ Σαλκετάτος. Καὶ Μαρετίνος δὲ ὁ Del-Rio, εἰς τὴν Εἰσαγωγὴν τῷ εἰς τὸ Ἄσμα τῶν Ἀσμάτων: Ὑπομνήματος. Κεφαλ: Ε'. „ὅς καὶ θαυμάζειν, φησὶν, ὅπως πολλὰ ἐκ τῶν Γρηγορίῳ τῷ Μεγάλῳ Ἐξηγημάτων ἐν τοῖς τῷ Φίλωνος τῷ ὅπως ἀπαντᾷ ὑφορεῖται δὲ τινὰ Γραικύλλον γενέσθαι τὸν αὐτὰ παρεπισείραντα... Ἐνὸν θαυμάζειν μάλλον εἰκότως: τί ὅτι μὴ ὁ Δελρίῳ ἔτος, ἀντὶ τῷ Γραικύλλῳ, τῆς παραπορεῖς ἐργασίῳ Λατίνῳ τινὰ ὑπέθετο δικαιότερον, τὸν ἐκ Πατρὸς Λατίνῳ προθυμηθέντα κατεκτιπᾶναι τοῖς ὁμογενέσιν αὐτῷ τὰ Φιλόνεια. Ὡσαύτως δ' ἐν καὶ Καβέος, (ἐν τῇ Ἱστορίᾳ τῶν Ἐκκλησιαστικῶν Συγγραφέων, Τόμ: Α'. Σελίδι παρ' ἐμοὶ 375.) περὶ τῷ ἀναγραφόμενῳ τῷ ῥηθέντι Φίλωνι Ὑπομνήματος κρινῶν: Aut ejus, φησὶ, non est, aut admodum interpolatus. Scilicet: Commentatus. Ἀλλὰ καὶ Δεπίνος (ἐν τῷ Β'. Τόμῳ τῆς Νέας αὐτῆς Βιβλιοθ: Αἰῶνι Δ'. Σελ. 302.) ἔχ' ὅπως τὸ σύγγραμμα ὑποβολιμαῖον δι' ὅλας ἡγήτο' ἀλλὰ καὶ αὐτὸν Φίλωνα τὸν συγγραφεῖν λεγόμενον, ἀπλῶς ἐπίπλεον ἀπεφύλατο ἐν ᾧ γε μὴν ἐκ ἀξιοπιστοῦ ἐστὶ Δεπίνος, Κασσιμύρῳ τῷ Ὀυδίνῳ, (ἐν τῷ Α'. Τόμ: τῶν Ὑπομνημ: περὶ τῶν Ἐκκλησιαστικῶν Συγγραφέων καὶ Συγγραμμάτων: Στήλη 892.) εἰδ' ἐμοὶ δοκεῖ (ὅρα ἀνωτ: Σημ: (206), καὶ εἰς τὴν αὐτὴν παραπέμπει, Σημ: (35). Ὅτι μὲν γάρ τοι ἐγένετο Φίλων ὄνομα Καρπάθιος, ὁ καὶ τὸ Βιβλίον Ὑπομνηματίζας τῷ Ἀσματος, ἐκ πολλῶν καὶ ὑπὸ πολλῶν μεμαρτύρηται. Εἰ δὲ τὸ γνήσιον Σύγγραμμα διασώζεται (ὡς φασὶν) ἐν τινὶ Βιβλιοθήκῃ, ἀνέκδοτον ἔστω καὶ νῦν λανθάνον, ἐνείνο τυχρὸν προκύψαν καὶ δημοσιωθὲν ποτὲ πισύσεται, εἰ τὸ περιφερόμενον Λατινιστὶ ἕτερον ἐστίν· ἢτοι ἐκ καταβολῆς τὸ σωζόμενον ὑποβολιμαῖον καὶ νόθον, ἢ ἄλλως αὐτὸ μὲν πως ἐκείνο ἐκ πρώτης Συστάσεως, ἐμὴν δ' ἀπαράτρωτον, εἰδὲ διαδραῖν ὅλως τὴν παρὰ τῶν Βιβλιοφθόρων ἐπήρειαν.

θορῶν Πραγματείας τῶν ἐπὶ τοῖς τῶν Ἀνατολικῶν Πατέρων Συγγραμμασιν (215) ἀποδέδεικται.

Ἀντιπροτείνουσι δ' ἡμῖν, ἐκ τῆς Α'. Βίβλος τῶν κατ' Εὐνομίαν, ἔτι κακῆνα: „Ὁ δ' αὐτὸς ἡμῖν καὶ περὶ τῆς Πνεύματος λόγος, „ἐν μόνῃ τῇ τάξει τῷ διαφορᾷ ἔχων. ὡς γὰρ σιωπάτῃται τῷ „Πατρὶ ὁ Υἱὸς, καὶ τὸ ἐξ αὐτοῦ εἶναι ἔχων ἔχ' ὑπερίκει τῷ ὑπαρ- „ξιν. ἔτω πάλιν καὶ τῆς Μονογενεῖς ἔχειται τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον „κτ: — Ἀλλὰ καὶ τέτων αὐτῶν κατὰ τῆς τῶν Λατίνων κακοή- „θους παρερμηνεύσεως, ἐν τῇ Πραγματείᾳ, τῇ περιεχούσῃ τὰς μαρ- „τυρίας τῶν ἐξ Ἑώας Πατέρων, ἐπημυνάμεθα. (216)

### § Κ'.

Ἐκ τῶν τῆς Χρυσορρήμονος Ἰωάννου.

Ἐκ δὲ ἸΩΑΝΝΟΥ τῆς Χρυσόμοι, προβάλλοντα Α'. ἀπὸ τῆς Α'. Ὀμιλ: περὶ τῆς τῆς Συμβόλης Ἐκθέσεως (ἐν Τόμ: Ε'. τῆς Λατινικῆς Ἐκδόσεως: τῆς ἐν Παρισι: Ἔτ: 1530. Σελ: 543) τάδε: „Ἐκείνο ἐστὶ τὸ Πνεῦμα, τὸ ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱοῦ ἐκπορεύομενον „τὸ διανεμόν τὰ αὐτοῦ χάρισμα καὶ ἑκάστῳ καθὼς βέλεται „Τέ- „των δὲ καὶ ΛΟΜΒΑΡΔΟΣ μέμνηται, ἐν τῷ Α'. Βίβλ: τῶν Ἀπο- „φανσεων. Καὶ μὲν δὴ καὶ ἐκ τῆς Β'. Ὀμιλ: τῆς εἰς τὸ Σύμβο- „λον τῶν Ἀποστόλων (ἐν Τόμ: Ε'. τῆς Λατινικῆς Παρισιακῆς Ἐκ- „δόσεως: Ἔτ: 1588. Σελ: 618. Καὶ τῆς ἐν Ἔτ: 1530. Τόμ: Β'. Σελ: 545.) „Ἰδὲ καὶ εἰς τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον πιστεύομεν ὅπερ „Ἄγ: Πνεῦμα ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱοῦ ἐκπορεύομενον τῇ ἀγάπῃ σιω- „πῃται „Καὶ πρὸ δὴ τέτων, ἐν ταῖς ἐκδόσεσι, (τῇ τε κατὰ τὸ 1588. Σελ: 617. καὶ τῇ κατὰ τὸ 1513. Σελ: 541.) „Τὸ „τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον λέγομεν Πατρὶ καὶ Υἱῷ ὁμοούσιον, καὶ ἐκ- „πορεύομενον ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱοῦ. Τὸτο πείθει, ἵνα μὴ κακῶς „ὁμιλία φθείρωσιν ἡθὴ χρηστὰ „— Ἀλλ' αἱ διότι αὐτὰ Ὀμι- „λία, ἔτινός ποτ' ἐν αὐτῇ καὶ εἶεν, ἔ' σώζονται, εἰμὴ μόνον Λατινι- „σί. Ὅτι δ' ἐν ταῖς τοιαῖς δὲ τῶν Συγγραφῶν ἔ' πάνυ τι πιστό- „τέον πασι Λατίνων, διὰ τῆς περὶ τῶν Παραφθορῶν Πραγματε- „ας, τῶν καὶ ἐπὶ τοῖς Λατινικοῖς τῶν Πατέρων Συγγραμμασιν ἐπι- „τετολμημένων, φανερόν ἤδη ἐγένετο. (217)

Προβάλλ-

(215) Πραγματ: Β'. Παραφθ: ΙΓ': καὶ ΙΔ'.

(216) Πραγματ: Α'. Ἐκατονταετ: Δ'.

(217) Πραγματ: Γ'.

Προβάλλοντα δ' ἔτι ἐκ τῆς 'Ομιλ: τῆς εἰς τὴν Χριστὸν Γέννησιν (218) ἐν Τόμ: Ε'. τῆς ἐν 'Αγγλίᾳ 'Ελληνικ: 'Εκδόσ: Σελ: 134. „Ἦλθε Χριστὸς πρὸς ἡμᾶς· ἔδωκεν ἡμῖν τὸ ἐξ αὐτοῦ „Πνεῦμα, καὶ ἀνέλαβε τὸ ἡμέτερον Σῶμα,,. — 'Ο μὲν ἔν Κωνσ: Πατριάρχ: Φώτιος ἐν τῇ Βιβλιοθ: Κώδ: 805'. Στήλη 1549. ἀνεγίνωσκειν ἔτως: „Ἦλθεν ὁ Χριστὸς πρὸς ἡμᾶς· ἔδωκεν ἡμῖν „τὸ αὐτὸ Πνεῦμα,, καὶ ἀνέλαβε τὸ ἡμέτερον Σῶμα,,. (219) Καθαπερὲν ὁμοίως ὁ αὐτὸς Χρυσορρόμημων, ἐν 'Ομιλ: τῇ εἰς τὴν Χριστὸν Γέννησιν (220), ἐν τῷ 5'. τῆς Γραικο-Λατιν: 'Εκδόσ: Φησί: „Καὶ λαβὼν τὴν ἐμὴν σάρκα, δίδωσί μοι „τὸ ἐκ αὐτοῦ „Πνεῦμα,, ἵνα διδῶς καὶ λαμβάνων Θεσαυρόν μοι ζωῆς ἐμπορεύσῃται· λαμβάνει μὲν τὴν σάρκα, ἵνα με ἀγιάσῃ· δίδωσί μοι „τὸ „Πνεῦμα αὐτοῦ,, ἵνα με διασώσῃ,,. Ἀλλὰ γὰρ καὶ ἔτι τὰ τῷ Χρυσόμομῳ ἐκείνῳ εἶχεν: ὅτι ἔδωκεν ἡμῖν „τὸ ἐξ αὐτοῦ Πνεῦμα,, καὶ ἔτω πάντως κατὰ τὸν νῦν ἂν εἴη τὸ λεγόμενον ἐκκληπτέον, καὶ ὃν καὶ ὑπὸ τῷ 'Αλεξανδρείας Κυρίλλῳ πλεῖσταχθ' παραδίδουται ἀποδείξομεν.

'Αντιφέρει γεμὴν ὁ ΒΕ'ΚΚΟΣ ἐκ τῷ Β'. Προφυλακτικῶς Λίγχι, (221) ὃ ἡ 'Αρχή· ἐπειδὴ τῷ ἀγαθῷ προσερχόμεθα: „Οὕτως ἡμᾶς φυλάξοι τὸ παρὰ Χριστὸν Πνεῦμα εἰς τὴν ἡμέραν τῆς μελλούσης ἀπολυτρώσεως,,. Οἷς περ δὴ τέτοις παραπλήσια ἐστὶ, καὶ ὅτις (222) προτείνει ἐκ τῷ 'Υπομνήματος τῷ εἰς τὸ Γ'. Κεφάλ: τῆς πρὸς 'Εφεσ: 'Επισ: (223) „'Ο Θεὸς ἔδωκε τὸν Υἱὸν αὐτοῦ „τῆς

(218) Τὴν 'Ομιλίαν ταύτην ΜοντεφALKONIOS ἐπέγραψεν: „εἰς τὴν 'Ενανθρώπησιν τῷ Κυρίῳ,,. Ἀνέγραψε δὲ ἐν ταῖς Νότοις, ἐν Τόμ: Η'. τῆς Νεωτ: τῶν τῷ Χρυσόμομῳ 'Εκδόσ: Σελίδι 224. Περὶ ἧς ὅρα ἡ ἐθέλησις, καὶ τὸ ἐκεῖ προσημειωθὲν Monitum, Σελ: 213.

(219) Καὶ ἐν τῇ ῥηθείᾳ δὲ κατὰ ΜοντφALKONIOS: 'Εκδόσει, ὃ τὸ ῥηθὲν ἀποδοῦναι Λατινιστῶς ἡμελίωσε: Dedit nobis Spiritum suum: (τὸ Πνεῦμα αὐτοῦ) ἔχον, Spiritum quod ex ipso est: (τὸ Πνεῦμα τὸ ἐξ αὐτοῦ.)

(220) Ἐπὶ τῆς ΜοντφALKONIOS: 'Εκδόσ: ἡ ἐπιγραφὴ „Λόγος εἰς τὰ Γενέθλια τῷ Σωτῆρι,, κατ: ἐν Τόμ: 5' Σελ: 395. Φησὶ δ' ὁ 'Εκδοὺς ἐν τῷ Προσημειώματι, Σελ. 391. 392. „Ὡς ὁ μὲν Σαβίλλιος τὸν Λόγον ἐν τοῖς Ἀμφιβαλλομένοις κατέταξε Φρόντων δὲ ὁ Δεκαῖος, ἐν τοῖς σαφῶς Ὑποβολιμαίοις,,. 'Ο δὲ Τιλλεμόντιος, (ἐπεὶ Κύριλλος, Φησὶν, ἔστιν ὅς ἐντεῦθεν ῥήσεις ἀνακαλεῖ) ἀναθετέον μὲν ἐν τοῖς τῷ Χρυσόμομῳ τὸ πόνημα κρίνει, ἐκ πολλῶν μὲν τοιγέ, (ὡς ὅδε νῦν ἐστὶν ἔχον) συρράφει καὶ νῦν μὲν τῷ Χρυσόμομῳ, νῦν δὲ καὶ τῷ Ἀθανασίῳ, ἄλλως παρ' ἄλλων ἀναγράφει.

(221) Τὴν Χρυσόμομικὴν τὴν δὲ ῥῆσιν, ὥσπερ ἔν καὶ τὴν προσεχῶς ἀνωτέρω, προβάλλεται Ἰωάν: ὁ Βέκκος ἐν ταῖς Ἐπιγραφαῖς, εἰς τὰ σιωπηλόμενα παρ' αὐτῷ ῥητά τῶν Ἀγίων περὶ τῆς Ἐκπορεύσεως. Ἐν Ἐπιγραφῇ Α'. Σελ: 527. καὶ 528. τῷ Β'. Τόμ: τῆς κατὰ Ἀλλάτιον Ὁρθοδ: Γραμμάτης, τῆς ἐν Ῥώμῃ Ἐκδοθείσης ἔτε 1659.

(222) Κιχάβ: Ζητήμ: 5'. Σελ: 59.

(223) Οὐκ ὀρθῶς ἔχον ἀναφέρει τόδε τὸ χωρίον καὶ Ζοιρνακάβιος, ἀπὸ Κιχάβι μεταγράφας ἀταλαιπάρως, ὡς ἔχει παρ' ἐκείνῳ (Ζητήμ: 5'. Σελ: 59.) ὃ γὰρ εἰς τὸ Γ' ἀλλ' εἰς τὸ Α'. Κεφαλ: ἀναγνώσκεται, ἐν τῇ Β' 'Ομιλ: τῷ Χρυσόμομῳ, εἰς τὴν πρὸς 'Εφεσ: 'Επισ: κατὰ τὴν ΜοντφALKONIOS Ἐκδοσιν, ἐν Τόμῳ ΙΑ'. Σελίδι II.

Τόμ: Β'.

Z 5555



„τῆς εἰρήνης καὶ τῶν σπονδῶν ἐνέχυρον, καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον  
 „τὸ ἐξ αὐτῆς,, — Ἀλλ' ὅπως πολλάκις οἱ Πατέρες φασί, τὸ Πνεῦ-  
 μα „εἶναι ἐκ τῆς Τίξης,, ἐν τοῖς ἐκ τῆς Κυρίως παραπλησίως  
 εἰρημένοις, ἐξῆς εἰσόμεθα. Καίτοι γε ἐπὶ τῆς Β'. τῶν μαρτυ-  
 ριῶν, ὅθεν ἐπ' ἀνάγκης „τὸ ἐξ αὐτῆς,, ἐπὶ τὸν Υἱὸν, ὅχι δ' ἐπὶ  
 τὸν Πατέρα ἀνάγειν, τῆς Χρυσόμοι, ὅχι ὅπως τῆς Τίξης, ἀλλὰ καὶ  
 τῆς Πατρὸς ὡς μνείαν ποιήσαντος.

Πάλιν ἀντιφέρει ὁ Βέκκος (224) ἐκ τῆς Λόγου τῆς περὶ τῶν  
 δύο Διαθηκῶν, ἡ Ἁρχή: „Θεὸν δὲ ἓνα καὶ τὸν αὐτὸν δεδι-  
 „λῶκασιν ἐξ ἀρχῆς κτ.: Διὰ γὰρ τὸ γενέσθαι Ναὸν τῆς Θείας  
 „διωάμεως τὸ Σῶμα τῆς Κυρίως τὸ Θεοφόρον, γίνῃ καὶ σὺ Ναὸς  
 „καθ' ὁμοίωσιν αὐτῆς· δέχῃ γὰρ ἐκπεμπόμενον παρ' αὐτῆς τὸ  
 „Πνεῦμα· ὡς ἐν Χριστῷ ἐπιγνῶς, ἐπέγνως Θεόν, ἔτω Πνεῦμα  
 „Χριστῷ δεξιόμενος, ἐδέξω Θεόν,, — Ἀλλὰ προῖκα δὴ ταῦτα  
 περὶ τῆς τῆς Πνοῦματος Ἐκπορεύσεως ἐκλαμβάνεται, τὰ ὅθεν  
 ἡττοῦ περὶ τῆς ἐγχρόνου Πέμψεως αὐτῆς νοεῖσθαι διωάμενα.  
 Δοθέν καὶ γὰρ, ὅτι καὶ ἡ Ἐκπεμψις, ἔστιν ὅτε, τὴν ἀπ' αἰῶνος  
 ἐμφαίνει τῆς Πνοῦματος πρόοδον, ὅχι αἰ μὲν τοι, ὅχι ἐπὶ πάντων,  
 τῶν ἂν εἴη διασωσάσα μόνον τὸ σημανόμενον.

Ἀντιτιθέασι δ' ἔτι (225) τὸ ἐκ τῆς Λόγου τῆς εἰς τὸ Μυστή-  
 ριον τῆς Βαπτίσματος ἐν Τόμ: Ε'. τῆς Ἑλληνικῆς Ἐκδόσ: Σελ:  
 684. „Διὰ τῆτο ὁ Σωτὴρ δείκνυσιν ἑαυτὸν πηγῶν ζωῆς, καὶ  
 ὕδωρ ζῶν τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον,, — Ἀλλὰ καὶ ταῦτα ἀνωτέρω  
 πρὸ διελύετο, περὶ τὰ ἐκ τῶν Ἀθανασίου ἀδελφῶν τέτοις προβαλ-  
 λόμενα. (226)

Πάλιν προτείνουσιν ἐκ τῆς Ος'. Ὁμιλ: τῆς εἰς τὸν Ἰωάννην,  
 (227) Σελίδι 390. „Καὶ φησὶ περὶ ἀληθείας διαλεγόμενος: ὅν  
 „ἐγὼ πέμψω· ἰδὲ ἔκτετι ὁ Πατὴρ μόνος, ἀλλὰ καὶ ὁ Υἱὸς ἐστὶν  
 „ὁ πέμπων,, — Τίς δ' ἐξηγήσατο ποτὲ ἄλλως, τὸ Πνεῦμα καὶ  
 παρὰ τῆς Τίξης πέμπεσθαι; Ἀλλὰ μή πρὸς διότι ὁ Υἱὸς πέμπει  
 τὸ Πνεῦμα, διὰ δὴ τῆτο καὶ προβάλλει αὐτὸ κατὰ τὴν Ἐκ-  
 πόρυσιν;

Ἀλλ' ὁ ΒΕΛΛΑΡΜΙΝΟΣ ἐνέσηκε, Βιβλ: Β'. περὶ τῆς Χριστῷ  
 Κεφαλ: ΚΕ'. ἐν Ὁμιλ: Ος'. τῶν εἰς τὸν Ἰωάννην: „Ἰδὲ φησὶν  
 „ἔκτετι ὁ Πατὴρ μόνος, ἀλλὰ καὶ ὁ Υἱὸς ἐστὶν ὁ πέμπων τὸ  
 „Πνεῦμα· καὶ ἵνα μὴ λέγωσιν οἱ Γραικοὶ, ὅτι τῷ Χρυσόμοι  
 „ὁ

(224) Ἐνθα ἀνωτέρω εἴρηται, ἐν Ἐπιγραφῇ Α'. Σελ: 527.

(225) Σημεῖται δὲ τὴν ῥῆσιν ταύτην καὶ Βέκκος ἐν Ἐπιγραφῇ Θ'. Σελ: 613.

(226) Ἐν τῇ παρέσῃ Πραγματείᾳ §. 18'.

(227) Κατὰ τὴν Μοντφάλη: Ἐκδόσιν ἀριθμεῖται Ὁμιλ: ΟΖ'. ἡ δὲ ῥῆσις Σελίδι 454' ἐν Τόμ: Η'.

„ὁ λόγος ἐστὶ περὶ τῆς ἐγχρόνου Πέμψεως τῶν τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι  
 „τος χαρισμάτων· ὁ αὐτὸς Χρυσόσομος ἐν τῇ ΟΖ΄. Ὁμιλίᾳ (228)  
 „εἰς τὸν Ἰωάννῃ· ἀναπτύσσων, τίνος δὴ χάριν λέγειν τὸ Πνεῦμα  
 „πέμπεσθαι παρὰ τῷ Υἱῷ; Ἄλλως δὲ (φησὶ) καὶ τῶν Ὑποστά-  
 „σεων τὸ διάφορον δείκνυσι, κτῃ: („δύο τιθεῖς,„) (229) Εἴπερ  
 „ἄρα ἡ Πέμψις ἐκφέρεται εἰς δήλωσιν τῆς τῶν Προσωπῶν δια-  
 „κρίσεως. Αὐτὸ δὴ τὸ Πρόσωπον ἐστὶν ἀληθῶς τὸ πεμπόμενον,  
 „καὶ ἐχὶ τὰ χαρίσματα μόνον· τῆς τοίνυν διακρίσεως τῶν Προ-  
 „σώπων αἰωνίᾳ ἔσης, ἡ Πέμψις αὕτη τὴν ἀπ' αἰῶνος Πρόβλυσιν  
 „ἐστὶν ἐμπερικλείουσα ἐξ ἀνάγκης,„

Ἦπερ μὲν δὴ καὶ αὐτοὶ συγχωρῶμεν πέμπεσθαι καὶ αὐτὸ  
 προσέτι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, καὶ ἡ μόνον αὐτῷ τὰ χαρίσματα,  
 ὡς ἐν ἰδιαιτέρᾳ ἡμῖν ἀποδέδεικται Πραγματείᾳ· (230) ἀλλ' ἐν-  
 τεῦθεν ἡκιστα ἔπεται, τό: ἦτοι τὸ Πνεῦμα κατὰ τὴν Θεότητα  
 πέμπεσθαι, ἢ τὸν Χρυσόσομον ἐν τῷ τεθέντι χωρίῳ, μὴ περὶ  
 τῆς ἐγχρόνου μόνης πραγματεύεσθαι Πέμψεως. Αὐτὴν γὰρ τὴν  
 περὶ ἧς ὁ λόγος Ὁμιλίαν ΟΖ΄. (ἀλλ': ΟΗ΄.) ἀνελίξας, δῆλος  
 ἐστὶν ὁ Χρυσόσομος αὐτόθι, τότε κατὰ τὴν Θεότητα πέμπεσθαι  
 τὸ Ἅγιον Πνεῦμα διαβρίδων ἀπανανόμενος, καὶ περὶ τῆς ἐν  
 χρόνῳ γινομένης Ἀποστολῆς μόνον διαλεγόμενος. Ἐστὶ γὰρ τὰ  
 τῷ Χρυσόσομῳ τοιάδε: „Διατὶ δὲ φησὶ πέμψω αὐτόν; τρεῖσι:  
 „προπαρασκευάσω ὑμᾶς πρὸς τὴν ὑποδοχὴν. Πῶς γὰρ τὸ παν-  
 „ταχῶς ὃν πέμπεται; Ἄλλως δὲ καὶ τῶν Ὑποστάσεων τὸ διά-  
 „φορον δείκνυσι, („δύο τιθεῖς,„) Ἐπειδὴ τοίνυν τὴν τῷ Πνεύματι  
 „τος Πέμψιν ἐρμηνεύει διὰ τῆς ἡμετέρας μόνον προπαρασκευῆς,  
 τῆς πρὸς ὑποδοχὴν τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι ἀπόφησι δὲ, καὶ τὸ  
 πέμπεσθαι ποιᾷ πλὴν λέγειν τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον διῶσθαι (εἰς  
 γὰρ κατασκευὴν τῆς προταχθείσης Προτάσεως, ὑποσιωπάται:  
 „Πῶς γὰρ τὸ πανταχῶς ὃν πέμπεται,„;) Φανερόν δὴ περὶ  
 μόνης τῆς ἐγχρόνου Πέμψεως, ἔκτετι δὲ καὶ περὶ τῆς ἀπ' αἰῶνος  
 τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι Ἐκπορεύσεως τὸν Χρυσόσομον φθέγγεσθαι  
 ἐν οἷς ἐφεξῆς ὑποσηώψεν, ὅτι „ἄλλως καὶ τῶν Ὑποστάσεων τὸ  
 „διάφορον δείκνυσι,„ Τῷ γὰρ τοι λόγῳ τῆς προαιωνίᾳ αὐτῷ Πέμ-  
 ψεως, ἢ περὶ ἀληθῆς αὐτῇ λέγοιτο πέμπεσθαι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα,  
 ἢ ἐκπέμπεσθαι. Ὅτι δὲ φησὶν ὁ Χρυσόσομος: „Ἄλλως δὲ καὶ  
 „τῶν Ὑποστάσεων τὸ διάφορον δείκνυσι, διὸ δὴ ταῦτα ἔγωγε φθέγγ-  
 „ομαι,

(228) Ἄλλως κατὰ τὴν Μαντφάλην: Ἐκδοσιν, Ὁμιλ: ΟΗ΄. Σελ: 461.

(229) Τὸ („δύο τιθεῖς,„) ὡς εἰσενέγκται πλεονάζον· ἔτε γὰρ Ἑλληνιστὶ καὶ τὸ („δύο τιθεῖς,„) ἔτε Λατινιστὶ, τό: cum duas ponit. Καίτοι γε ὁ πλεονασμὸς ἄλλως, ἢ παρὰ τὸ ἐν βαίνων, ἔδεν τῷ ἀληθεῖ προσλυμαίνεται.

(230) Ἐν Πραγματείᾳ Η΄. Ἀπάντησιν Η΄.

„γεται, τὰ εἰρημένα δηλ: πέμψω αὐτόν: ὁ νῆς αὐτῷ ἐστίν, ὡς ἐπειδὴ μνεία διὰ τῶν δε γίνεται τῶν ῥημάτων, τῆ τε πέμποντος καὶ τῆ πεμπομένου, δῆλον ἐντεῦθεν καθίσταται διὸς ἂν Πρόσωπα εἶναι τὸ πνεῦμα, καὶ τὸν Υἱόν. Ἐν ᾧ γὰρ ὑπὸ θατέρου θάτερον πέμπεται, τὸ πέμπον πάντως καὶ τὸ πεμπόμενον κατὰ πᾶσαν ἀνάγκην ἀλλήλων ἀντιδιασέλλεται.

Ἀλλ' ὁ Βελλαρμῖνος ἀνθυποφέρει: „Καὶ τῆς τῶν Προσώπων „διακρίσεως, φάσκει, ἀπ' αἰῶνος ἔσης, ἡ Πέμψις αὕτη τὴν ἀπ' αἰῶνος Πρόβλυσιν ἐμπερικλείουσα ἐστίν ἐξ ἀνάγκης,,. Πλὴν ἄλλ' ἕτερον μὲν ἐστὶ τὸ ἴδιον τῆς τῶν Προσώπων διακρίσεως ἀναπλῦσιν, ἕτερον δὲ τὸ ἐκλινῶν τῆς Ἱεράς Γραφῆς λογίων δεικνύειν διὸς ἂν εἶναι τὰ Πρόσωπα, τὸν Υἱόν, καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. Οὕτω πάντως, ἐπειδὴν λέγεται, ὅτι ὁ Πατήρ ἐξαπέστειλε τὸν Υἱόν αὐτῷ εἰς τὸν κόσμον, δύο ἐν τῷ τῶν Προσώπων τίθεται, καὶ ἐντεῦθεν ἡ τῶν Ὑποστάσεων διαφορὰ διαπισθῆται μήτοι γε δ' ἐκ τῆς, ἐπειδὴ ἀπ' αἰῶνος διακεκριμένα ἐστὶ τὰ Πρόσωπα, καὶ ἡ τῆς Υἱοῦ Ἀποστολῆς ἐκείνη, εἴτ' ἔν ἡ Ἐνσάρκωσις, τὴν ἀπ' αἰῶνος ἅμα ἐμπερικλείουσα ἐστίν ἐξ ἀνάγκης Πρόβλυσιν; Τελούταυον δ' ἂν ἄλλως παρέποιτο, καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἀρχὴν εἶναι τῆς Υἱοῦ, ὅτι ὡσαύτως γέγραπται καὶ τὸ Πνεῦμα τὸν Υἱόν ἀπεσταλέναι, ἐξ ὅμοιως διὸς ἂν τὰ Πρόσωπα τίθεται, καὶ ἡ τῶν Ὑποστάσεων καὶ ἐντεῦθεν διαφορὰ ἀναφαίνεται. Οὐκ ἐν ἄλλως ἐμπερης διανοόμενος ἐστὶ καὶ Χρυσόσομος, ὡς: Ἐπειδὴ ὁ Υἱὸς λέγεται πέμπειν τὸ Πνεῦμα, δύο δὲ Πρόσωπα τίθεται καὶ ἐντεῦθεν ἡ τῶν Προσώπων διαφορὰ ἀναδείκνυται. Ἡ δὲ τῆς τῶν Προσώπων διαφορὰς ἰδιότης ἀπ' αἰῶνος ἐστὶ, καθ' ἑαυτὴν καὶ αὐτὴ ἡ τῶν Προσώπων διαφορὰ διὸ καὶ τὰ εἰς τόδε τείνοντα ὡσαύτως αἰώνια ἐστίν. Ἀλλ' ἐκ ἐνταῦθα πρῆκειτο τῷ Χρυσόσωμῳ, αὐτῷ τῆς τῶν Ὑποστάσεων διαφορὰς τὴν ἰδιότητα ἀναπτύξαι, ὡς δέδεικται.

## § ΚΑ'.

Ἐκ τῶν τῆς Σωεσίς.

Ἀντιπροβάλλουσιν ἔτι Λατῖνοι, καὶ ὅτι ΣΥΝΕΣΙΟΣ ὁ Πτολεμαῖος Ἐπίσκοπος κέντρον εἶναι φησὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, τῆ Πατρὸς καὶ τῆς Υἱοῦ. Οὕτω γὰρ, (ἐν τῷ Δ'. τῶν Ὑμνων, μετὰ τὴν Ἀρχὴν, Σελίδι 334.) πρὸς τὸν Υἱόν ἀνακράζει:

„Σὲ Μάκαρ μέγαλιν

„Πατρὶ σωμνῶ,

„Καὶ τὰν ἐπὶ Σοῦ

„Ὡδῖνα Πατρὸς,

„Γόνιμον

„Γόνιμον βελαν,  
„Μεσάτων αρχαν,  
„Αγίαν πνοϊαν,  
„Κέντρον Γενέτα,  
„Κέντρον δὲ Κόρα,,.

Καὶ ἐν "Υμνῳ δὲ τῷ Ε'. Σελίδι 342.

„Χαίροις ἄχραντος Πνοϊά,  
„Κέντρον Κόρα καὶ Πατρός,,.

Προσίστησιν δέ τις (231) ἐκ τῶ αὐτῶ Σωεσίε (ἐν "Υμνῳ Γ'.  
Ἀριθμ: 228.) „Ὅτι τὸ "Αγιον Πνεῦμα, ὅρος καλεῖται τῶν  
„Φύσεων, τῆς τε γεννώσης καὶ τῆς γεννωμένης. "Ενθεν τοι ὁ αὐ-  
„τὸς Συγγραφεὺς ἐνίσταται: ὅτι, τὸ κέντρον εἶναι Πατρός τε καὶ  
„Τίε, ἐκ αὐτῶν ἐτέρως νοηθεῖν τὸ "Αγιον Πνεῦμα, εἰ μὴ καθὸ πρὸς  
„τῷ αὐτῶ παραγωγῇ ἢ ἐκατέρῳ ἐνῶσα Πνύβτικῇ δυνάμει, ὡς  
„ἐφ' ἑνα τε καὶ τὸν αὐτὸν ὅρον τένυσσα εἶναι. "Επειδὴ δὲ τὸ  
„Πνεῦμα τὸ "Αγιον, ὅρος λέγεται τῶν φύσεων τῆς τε γεννητῆς  
„καὶ τῆς γεννώσης, δείκνυται ἐντεῦθεν, ὅτι ἔτις ἐν τῷ Τίῳ τὸ  
„Πνεῦμα ἐπαναπάυεται, ὡς μὴ ἐπ' ἄλλον τινὰ ὅρον, τῷ ἐν τῇ  
„γεννώσει τε καὶ τῇ γεννητῇ φύσει ἐνῶσαν Πνύβτικῇ δυνάμει πε-  
„ραιτέρῳ προσεπεκτείνεσθαι,,. — Ἄλλ' εἰ γὰρ ὁ Σωεσίος ἐν τοῖς  
προθεῖσι χωρίοις τὸ Πνεῦμα κέντρον ἀποκαλεῖ Πατρός καὶ Τίε·  
ἐν ἄλλοις πάλιν κέντρον ἀποκαλεῖ τὸν Πατέρα, Τίε τε καὶ Πνύβ-  
ματος· μᾶλλον δὲ, καὶ πάντων τῶν ὄντων· ἔτις γὰρ ἐν τῷ Α'.  
τῶν "Υμνων, Σελ: 314.

„Ὅθεν αὐτῇ προθορῶσα  
„Διὰ πρωτόσπορον εἶδος,  
„Μονὰς ἄρρητα χυθεῖσα,  
„Τρικόρυμβον ἔχεν ἀλκάν.  
„ὑπερῶσιος δὲ παγὰ  
„Στέφεται κάλλιϊ παίδων,  
„Ἀπὸ κέντρας τε θορόντων  
„Περὶ κέντρον τε ρυέντων,,.

Καὶ ἐν "Υμνῳ δὲ τῷ Γ'. Σελ: 321. τῷ Πατρὶ λέγων:

„Ὀντων σπέρμα,  
„Πάντων κέντρον,,.

Καὶ ἐν "Υμνῳ τέως τῷ Β'. Σελ: 317. τῷ Θεῷ λέγων:

„Μέγα χαῖρε ῥίζα κόσμου,  
„Μέγα χαῖρε κέντρον ὄντων,,.

Εἴπερ

(230) Κιχάβ: Ζητήμ: ε'. Σελ: 64.

Τόμ: Β'.

Η ηηηη

Εἶπερ ἄρα, κατὰ Σωέσιον, ἅτε τὸ Πνεῦμα Πατρός τε καὶ Υἱὸς κέντρον ἀποκαλῶντα, ἐκπορεύοιτο τὸ Πνεῦμα καὶ ἐκ τῆς Υἱᾶς κατὰ τὸν αὐτὸν ἔψεται δῆπερ, καὶ τὸν Πατέρα ἐκ τῆς Υἱᾶς καὶ τῆς Πνύματος, μᾶλλον δὲ, καὶ ἐκ τῶν κτισμάτων αὐτῶν ἐκπορεύεσθαι· παραπλησίως γὰρ καὶ τῆτον κέντρον προσεῖπε τῆς Υἱᾶς καὶ τῆς Πνύματος, μᾶλλον δὲ τῶν ἀπάντων. Ὁ νῦν ἄρα ὁ τῆς Σωείας, τῆς τὸ Πνεῦμα κέντρον Πατρός τε καὶ Υἱᾶς προσειρηκότος, τῷ παντὶ τῆς τῆς Ἰησοῦ διανοίας διέσηκεν, ὡς τῷ Σωείῳ προσεπατῆλάδωσεν. Εἶπερ γὰρ τῷ τῆς ἀρχῆς ἐκείνῳ λόγῳ Σωείος ἐνενόησεν, ἔφησεν ἂν δῆπερ, τὸν Πατέρα καὶ τὸν Υἱὸν κέντρον τῆς Ἁγίας Πνύματος εἶναι, καθάπερ τῷ τῆς ἀρχῆς λόγῳ, τὸν Πατέρα κέντρον Υἱᾶς τε καὶ Πνύματος, μᾶλλον δὲ τῶν ἀπαξαπάντων ἐξύμνησε. Καθὰ, δηλονότι, ὡς αἱ Γραμμαὶ πᾶσαι ἀπὸ τῆς κέντρος ῥέουσιν ἀγόμεναι ἐπὶ τῆς περιφερείας, ἔτω καὶ σύμπαντα ἀπὸ τῆς Πατρὸς ἀπορρεῖ, καὶ περὶ ἐκείνον περιχορεύει· ὃν τρόπον αὐτὸς Σωείος περὶ τῆς Υἱᾶς καὶ τῆς Πνύματος διαβρίδω ἐφασκεν, ἐν τοῖς ἐκ τῆς Α'. τῶν Ὑμνῶν ἔπεσιν, ὡς ἀνωτέω ἐμνήσθημεν. Ψύδεται τοίνυν ὁ λέγων Ἰησοῦ μὴ ἂν ἄλλως ἔχειν ἐρμηνεύσθαι, ὅπως ἂν ῥηθεῖν τὸ Πνεῦμα κέντρον εἶναι Πατρὸς καὶ Υἱᾶς, ἢ κατὰ τὴν προτεθείσαν ὑπ' αὐτῆς ἐννοίαν. Ποικιλαχῶς γὰρ ἠδυνάτο Πατρός τε καὶ Υἱᾶς κέντρον τὸ Πνεῦμα, ἐνθαὶς ὁ Ποιητὴς γεγονώς ἀποκαλέσαι ὥσπερ ἐν κατὰ τῶν τελεωτάτων ῥημάτων, κατὰ τινὰ ποιητικῶς ἄδειαν ἐλδοθεριάξων, φύσιν ἀπεκάλει τικτασάν τε καὶ τικτομένῳ, ἐκ ἐξὸν ἄλλως τῇ Θεολογίᾳ τὸ ἔτω φράξεν. (232) Εἶχε μὲν γὰρ, φέρε, κέντρον λέγεσθαι Πατρός καὶ Υἱᾶς τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον· ὅτι, καθάπερ κύκλων περιφέρειαι πλείους, ἀπὸ τῆς αὐτῆς σημείας καταγραφόμεναι, ἐν μόνον καὶ τὸ αὐτὸ ἔχουσαι εἰς κέντρον, ἔτω καὶ ὁ Πατήρ καὶ ὁ Υἱὸς ἐν τῷ Πνύματι, καὶ σὺ τῷ Πνύματι τῷ Ἁγίῳ εἰσὶν, ὡς ἐν ἐνὶ καὶ μόνῳ συμμετόχῳ πεφυκότι, μηκέτι ἐπὶ πλείονας

(232) Ταῖς γὰρ ἀπ' ἀλλήλων διακρινόμεναις ταῖς χαρακτῆρσιν Ὑποστάσεσιν, ἥτοι ταῖς Προσώποις, καὶ ἔτι τῇ φύσει, μιᾷ τε καὶ ἀδιαίρετῳ λατρευομένη τὸ γεννᾶν, καὶ γεννᾶσθαι Θεολογεῖται προσιδιάζοντα. Ἀλλ' ἔτι γὰρ ἐπὶ τῆς Ὑπερέτης Τριάδος καὶ κύκλων κέντρα πολλάκις, καὶ κύκλοι αὐτοὶ περιεγόμενοι, καὶ σφαῖραι δ' ἐπὶ πρετέθησαν ἡμῖν ὑπὸ τῶν Θεωπεσίων Πατέρων τε καὶ Διδασκάλων, πρὸς ἐκφάνσιν τῆς τριτῆς τε ἁμα καὶ ἐνιαίας Θεότητος, καὶ τῆς ἐν αὐτῇ τῶν Θεωρχικῶν Προσώπων ἐνώσεως τε καὶ διακρίσεως· καὶ μὴ καὶ τῆς ἴσης τε καὶ ὁμοτίμης πρὸς ἄλληλα, μεσότητός τε τῶν αὐτῶν καὶ ἀκρότητος· ἀπαρρακινήτων μὲν τῶν ἐκείνης Ὑποστάσεως χαρακτῆρισμάτων διασωζομένων· μηδὲ πωσέν δὲ τῶν Θεωπεσίων Προσώπων καινοτομημένων, ὥς ἡ ὑγιὴς Θεολογία ἐπὶ τῶν ἱερῶν Γραφῶν ἐπιστηριζομένη πρὸς βόει· βόειον σιωθεῖν· εἰς μὴ κατοκινήσει, τοῖς πρὸ ἐνιαυτῶν μικρῶν δὲ τριᾶκοντα, ἡμῖν ἐκδοθεῖσιν ἐγκύψαι. Ἰωσήφ τῆς Βρυεννίης συγγραμμάτων, ἐν Αεψίᾳ τῆς Σαξωνίας, ἐν ἔτει αψξξ. καὶ τέτων μάλιστα ἰδιαιτέρον, τὰ ἐν τῷ Β'. Λόγῳ τῆς Α'. Τίμῃ, Σελ: 22 — 25. ἐπιμελῶς ἀναλέξασθαι.



πλέονας τῆς τοιαύτης κοινωνίας τε καὶ ταυτότητος προεπεκτεινομένης. Καὶ τῷδε ἄρα τῷ λόγῳ παραπλησίως εἶχε καὶ ὁρος Πατρός τε καὶ Υἱῆς προσαγορεύθῃαι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα· ἦτοι: „Ὅρος Φυσίων τὰς τιμολίσας καὶ τιμωμένους, ἧ Σωέσιος ἐπεφράσατο, „. Ὅτι δηλ: ἡ τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ φύσις ἐπὶ μόνον ἐκπερατῆται τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, καὶ ἐκέτι περαιτέρω ἐφ' ἑτερόν τι Πρόσωπον προεκτάνεται. Ὡς αὖτις κατ' ἐδὲν ἐπάναγκες εἶναι τὴν ἰδίαν αὐτῶ τὸν Ἰησοῦ ἐνταῦθα παρεισῶθαι ἡμῖν διερμυνώσιν.

### § KB'.

Ἐκ τῶν Κυρίλλου τῷ Ἀλεξανδρείας.

Ἐκ δὲ τῷ Ἀλεξανδρείας ΚΥΡΙΛΛΟΥ ποικίλα ἀντιπροτείνουσιν. Οἶον: τὸ ἐκ τῷ Υἱῷ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα προχεῖσθαι· τὸ εἶναι ἐκ τῆς ἐσίας· τὸ εἶναι Πνεῦμα τῷ Υἱῷ. — Ἀλλὰ ταῦτα πάντως, ὅποια ποτ' ἂν ᾖ, μηδὲν ἀντιβαίνειν τῇ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος ἐκ μόνου τῷ Πατρὶ ἐκπορεύσει, καὶ ἐξ αὐτῆς μόνης τῆς τῷ ΜΑΞΙΜΟΥ πρὸς Μαρίνον Ἐπιστολῇ κατάδηλον γένοιτο. Δείκνυσι γὰρ ἐκεῖνος σαφῶς, (κατὰ τὸ δόξαν καὶ αὐτοῖς ἐτι τοῖς τῷ Πάπᾳ Ῥώμης Ἀποκρισιαρίοις) ὡς ἐκ τῶν τοιούτων τῷ Κυρίλλῳ ῥημάτων, ὁδαμῶς ἐπόμενον εἶναι, αἰτίαν εἶναι τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος τὸν Υἱόν, μόνον δὲ, τὸ ἐκ τῷ Υἱῷ πέμπεσθαι τὸ Πνεῦμα, ἐξ ἧς τὸ ἐνιαῖον τῆς ἐσίας δηλῆται Πατρός τε καὶ Υἱῷ καὶ Ἁγίῳ Πνεύματος. Τῆς ἐν τοιαύτῃ δε μαρτυρίας, τί ποτ' ἂν γένοιτο τηλαυγέστερον; τὰ δὲ τῆς περὶ ἧς ὁ λόγος Ἐπιστολῆς ῥήματα, ὧν καὶ ΜΑΡΚΟΣ ἐμνήσθη ὁ Ἐφέσῃ Ἀρχιεπίσκοπος ἐν τῇ κατὰ Φλωρεντίαν Σиноδῷ, (Συμελῶς: ΚΓ'. Τόμ: ΙΓ'. τῶν Συνοδικ: Στήλη 376.) (233) τοιαῦτα ἐσί: „Τῶν τῷ νῦν Ἀγιωτάτῃ Πάπᾳ Συνοδικῶν, ἐκ ἐν τοσούτοις, ὅσοις γεγράφατε, Κεφαλαίοις, οἱ τῆς Βασιλίδος ἐπελάβοντο, δυσὶ δὲ μόνοις ὧν τὸ μὲν ὑπάρχει περὶ Θεολογίας: ὅτι τε, φασίν, εἶπεν ἐκπορεύεσθαι ἐκ τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον· τὸ δ' ἄλλο περὶ τῆς Θείας Σαρκώσεως: ὅτι περ γέγραφε, δίχα τὸν Κύριον εἶναι τῆς Προπατορικῆς ἁμαρτίας ὡς ἄνθρωπον. Καὶ εἰς μὲν τὸ πρῶτον συμφώνως παρήγαγον χρήσεις Ῥωμαίων Πατέρων. Ἐτι μὲν καὶ Κυρίλλου Ἀλεξανδρείας, ἐκ τῆς πονηθείσης αὐτῷ Ἱερᾶς Πραγματείας εἰς τὸν. Εὐαγγελιστῶν Ἁγ: Ἰωάννῃ ἐξ ὧν ἐκ αἰτίας τὸν Υἱόν ποιῶν τῷ Πνεύματος σφᾶς αὐτῶς ἀπέδειξαν· μίαν γὰρ ἴσασιν „Υἱῷ

(233) Ἐν τοῖς Ἀρδάν: Τόμ: Θ'. Στήλη 305.

„Τίς καὶ Πνδύματος τὸν Πατέρα αἰτίαν, τῷ μὲν κατὰ τὴν Γέν-  
 „νησιν τῷ δὲ κατὰ τὴν Ἐκπορεύσιν· ἀλλ' ἵνα καὶ δι' αὐτῶν προί-  
 „ῃναι δηλώσωσι καὶ ταύτη τὸ σωμαφές τῆς ἑσίας, καὶ ἀπαράλ-  
 „λακτον παραστήσωσι,,. Περὶ μὲν ἔν τῆς Ἐπιστολῆς ταύτης ἐς  
 πλάτος ἐν τῇ Πραγματείᾳ (234) τῇ περὶ τῶν Ἐρίδων τε καὶ  
 Συζητήσεων, αὐτὸν μέσον Λατίνων ἀνέφυσαν, περὶ τῆς ὑπ' ἐνίων  
 ἐν αὐτοῖς πρεσβυομένης Ἐκπορεύσεως τῷ Ἁγίῳ Πνδύματος ἐκ τῷ  
 Τίς. Ἀλλὰ τῇ ὀλοχερεσέῃ ταύτῃ μὴ ἐπαρκέμενοι ἀπαντήσαι,  
 αὐτὰ τὰ τῷ Κυρίλλῳ ῥήματα ἐρδονήσωμεν.

Προβάλλουσι τοιγαρὲν Α'. Πολλαχῶς τὸν Κύριλλον διατελεῖν  
 ἐκδιδάσκοντα, ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα προχέται παρὰ τῷ Τίς.  
 Οὕτω γὰρ αὐτὸς Κύριλλος ἐν Βιβλ: Β'. τῶν εἰς τὸν Ἰωάννην  
 Κεφαλ: Α'. Τόμ: Δ'. τῶν Συγγραμμάτων, Σελίδι 127. (235)  
 αὐτίκα ὑπέθετο: „Εἰ δὲ Χριστὸς ἐν ὑμῖν ἀπαράλλακτον εἰσφέ-  
 „ρων τὴν ὁμοιότητα τῷ Τίς πρὸς τὸ ἴδιον αὐτῷ, καὶ κατὰ φύσιν  
 „παρ' αὐτῷ προχέμενον Πνεῦμα,,. Καὶ ἐν Ἐπιστολῇ δὲ δεκάτῃ  
 (236), τῇ ἐν Τόμ: Ε'. Μέρ: Β'. Σελ: 74. ὡς περ καὶ ἡ ἐν  
 Ἐφέσῳ προσεπεκύρωσε Σύνοδος: „Εἰ γὰρ καὶ ἔστιν ἐν Ὑποστάσει  
 „τὸ Πνεῦμα ἰδικῇ, καὶ δὴ καὶ νοεῖται καθ' ἑαυτὸ, καθὸ Πνεῦμα  
 „ἔστι καὶ ἔχει Τίος· ἀλλ' ἔστιν ἐκ ἀλλότριον αὐτῷ· Πνεῦμα γὰρ  
 „ἀληθείας ὠνόμασαι, καὶ ἔστι Χριστὸς ἡ ἀλήθεια: καὶ προχέται  
 „(237) παρ' αὐτῷ, καθάπερ ἀμέλει παρὰ τῷ Θεῷ καὶ Πατρὶ·  
 („Προχέται,, τοίνυν ἔφη τὸ Ἅγιον Πνεῦμα καὶ ἐκ τῷ Τίς καὶ  
 ἐκ τῷ Πατρὶ· ἔχει δὲ „ἐκπορεύεται,, ὡς οἱ Λατῖνοι κοινῶς  
 τὴν τῷ Κυρίλλῳ ῥῆσιν μεθρημωδύκασιν.) Πάλιν ἐν τῷ Βιβλ: τῷ  
 περὶ τῆς Ὀρθῆς Πίσεως, πολὺ πρό γε τῷ τέλει: ἐν τῷ 5'. Τόμ:  
 Σελ: 34. (238) „Ὁ Θεωπέσιος Πέτρος Ἰσδαίοις προσλαλῶν ἔφη:  
 „μετανοήσατε ἔν, καὶ βαπτισθῆτω ἕκαστος ὑμῶν ἐπὶ τῷ ὀνόματι  
 „Ἰησοῦ Χριστοῦ, εἰς ἄφεσιν ἁμαρτιῶν ὑμῶν· καὶ λήψεσθε τὴν δω-  
 „ρεὰν τῷ Ἁγίῳ Πνδύματος· ἀπολύων γὰρ ἁμαρτίας τὸν αὐτῷ  
 „προσ-

- (234) Πραγματ: Ε'. περίπε τὸ μέσον. Ἐνθα ἔρα καὶ τὴν Σημείωσιν (33). Ὅρα δὲ  
 καὶ ἐν τῇ Α'. Πραγματ: ἐν Ἐκατονταετ: Ζ'. καὶ τὴν ἐκῆ Σημ: (153).  
 (235) Σελίδι 126. Καὶ ὡς μὲν καλῶς ἡ παρὰ Ζοιρνικαβίῳ Ἐρμηνεία, ἔχει τὸ ῥῆμα,  
 profunditur: (προχέται) ἡ δ' ἐν τοῖς Κυρίλλῳ Συγγράμμασι Μετάφρασις ἀναγι-  
 νώσκων παρέχει: et ab ipso secundum naturam procedit; (καὶ ἐξ αὐτῷ κατὰ φύ-  
 σιν ἐκπορεύεται) καὶ περ ἐν τῷ Πρωτοτύπῳ Ἐλλωισί, πάρεστι ἀναγινώσκων (τὸ  
 προχέμενον) ἔχει τὸ (ἐκπορεύμενον).  
 (236) Αὕτη δ' ἡ Κυρίλλῳ Ἐπιστολὴ ἐστὶν ἡ πρὸς Νεστόριον, περὶ τῆς Ἀκωνωνησίας.  
 (237) Ὁμοίως καὶ ταῦτα, ὡς καὶ ἀνωτέρω, κακωγενῆτες οἱ Λατῖνοι ἠρμηνεύσαν: perinde  
 quodque ab illo, at que a Deo Patre procedit: ἀντὶ τῷ (ἥπερ ἔχει ἡ παρὰ Ζοιρνι-  
 καβίῳ Ἐρμηνεία: profunditur: τῷ (προχέται) δηλονότι μεταληφθέντος, εἰς τὸ  
 (ἐκπορεύεται).  
 (238) Εὐρήσεις τὴν χρῆσιν τὴν δε, ἐν τῷ Ε'. Τόμ: τῶν Συγγραμ: Μέρ: Β'. ἐνθα περὶ  
 τὸ τέρμα τῷ Ἰούλῳ τέτακται ὁ πρὸς Θεοδοσίον Προσφωνητήριος Λόγος.

„προσκαίμενον, τῷ ἰδίῳ λοιπὸν καταχρίει Πνεύματι ὅπερ ἐνίησι  
 „μὲν αὐτὸς, ὡς ἐκ Θεῶ καὶ Πατρὸς Λόγος, καὶ ἐξ ἰδίας ἡμῶν  
 „ἀναπηγάξει φύσεως. Κοινὸν δὲ ὥσπερ τὸ χρῆμα τιθεῖς τῇ  
 „μετὰ σαρκὸς οἰκονομίᾳ διὰ τὴν ἔνωσιν, καὶ ὡς ἄνθρωπος ἐνέπνει  
 „σωματικῶς· ἐνεφύσησε γὰρ τοῖς Ἁγίοις Ἀποστόλοις εἰπὼν: λά-  
 „βετε Πνεῦμα Ἅγιον: καὶ ἕκ ἐκ μέτρᾳ δίδωσι, κατὰ τὴν Ἰω-  
 „άννη φωνῇ, τὸ Πνεῦμα· ἀλλ' αὐτὸς ἐνίησιν ἐξ ἑαυτοῦ, καθά-  
 „περ ἀμέλει καὶ ὁ Πατήρ,.. Καὶ ἐν τῷ Βιβλ: δὲ τῷ περὶ τῆς  
 „Ὄρθης Πίσεως πρὸς τὰς Βασιλίδας (239) ἐν τόπῳ τῷ αὐτῷ  
 „Σελίδι 156. „Δέχεται μὲν ἀνθρωπίνως, ἕχ ἑαυτῷ μάλλον,  
 „ἀλλὰ τῇ τῶν ἀνθρώπων φύσει δι' ἑαυτοῦ, καὶ ἐν ἑαυτῷ τῷ πρῶ-  
 „τῳ προξενῶν αὐτὸ, δίδωσι δὲ Θεϊκῶς ἐξ ἰδίας αὐτοῦ φύσεως,  
 „τοῖς ἀξίοις τῷ λαβεῖν ἐνιείς,.. Καὶ ἐν τῷ Γ'. Διαλόγῳ τῶν  
 „περὶ Τριάδος, ἐν Τόμ: Ε'. Μέρ: Α'. Σελ: 492. „Τὸ τοίνυν  
 „ἡμᾶς τὰς ἐπὶ γῆς τῇ τῆς Υἱότητος δόξῃ καταχρυσῆν, φημὶ δὴ  
 „τὸ Πνεῦμα· ἐπέπερ ἐστὶ τῷ Υἱῷ, ἐνεργήσῃ μὲν εἰς ἑτέρας τὴν  
 „Υἱοποίησιν, ἀπρακτῆσαι δὲ παντελῶς περὶ τὸν, ὅπερ ἐστὶν, ἕκ  
 „ἑαυτοῦ κριμένον, ὅτε μὴ ἐξωθεν εἰσπεφοιτηκὸς, ἀλλ' ἐσιωδῶς  
 „ὑπάρχον αὐτῷ, καὶ δι' αὐτῷ προχεόμενον τοῖς ἐλαῖν ἀξίοις ἐν  
 „ἐνδοκίᾳ τῷ Πατρί,..; Σιωάγου τοίνυν οἱ Λατῖνοι: Τοσαύτως  
 „ὁ Κύριλλος διδάσκει, ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα προχεῖται παρὰ τῷ  
 „Υἱῷ, ὡς παρὰ τῷ Πατρί. Ἀλλ' ἐν μὲν τῇ Ἐκθέσει τῷ τῆς  
 „Νικαίας Συμβόλου διαρρήδην φάσκει „προχεῖται,.. ταῦτα ὡς ἐκ  
 „πηγῆς τῷ Θεῷ καὶ Πατρί προέσι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον· ἐν δὲ  
 „τῷ Β'. Βιβλ: τῶν εἰς τὸν Ἰωάν: ἔφασκεν, ὅτι παρὰ τῷ Υἱῷ  
 „κατὰ φύσιν τὸ Πνεῦμα ἐστὶ „προχεόμενον,.. Ταῦτα δὲ, ὅθεν  
 „ἀλλ', ἢ τὴν ἀπ' αἰῶνος τε καὶ Ὑποστατικῶν Ἐκπόρουσιν παρίσῃσιν.  
 „Ἀλλὰ γὰρ τὰ Κυρίλλου ῥήματα, ἐν οἷς τὸ Πνεῦμα προχε-  
 „ῖται διδάσκει παρὰ τῷ Υἱῷ, ὅτι περὶ τῆς ἐγχρόνου μόνον τῷ  
 „Πνεύματος ἐκχύσεως δεόν νοεῖσθαι, δῆλον πάντως ἐκ τῆς προε-  
 „νεχθείσης ῥήσεως, τῆς ἀπὸ τῷ Γ'. Διαλόγου τῶν περὶ Τριάδος.  
 „Ἐλεγε γὰρ, τὸ Πνεῦμα „δι' αὐτῷ (τῷ Υἱῷ) προχεόμενον τοῖς  
 „ἐλαῖν ἀξίοις,.. Τῷτο δὲ περὶ τῆς ἐγχρόνου μόνον νοεῖται, περὶ  
 „τῆς ἐγχρόνου τε καὶ ἐφ' ἡμᾶς γινομένης ἐκχύσεως τῷ Ἁγίῳ Πνεύ-  
 „ματος. Οὕτω καὶ ἐπὶ τῶν ἐκ τῷ Βιβλίῳ ἐπενεχθέντων, τῷ  
 „περὶ τῆς Ὄρθης Πίσεως πρὸς τὰς Βασιλίδας, ἔλεγεν: ὅτι „δί-  
 „δωσι Θεϊκῶς ἐξ ἰδίας αὐτοῦ φύσεως, τοῖς ἀξίοις τῷ λαβεῖν ἐνιείς:  
 „ὅ δὴ περ καὶ τῷτο περὶ τῆς ἐν χρόνῳ μόνον, καὶ πρὸς ἡμᾶς  
 „χορηγίας ἐννοεῖται τῷ Πνεύματος. Πάλιν, ἐν τῷ περὶ τῆς Ὄρθης  
 Πίσεως

(239) Ἔστι δ' ἔτος ὁ Β'. Προσφωνητικὸς ταῖς Βασιλίσαι, περὶ τῆς Ὄρθης Πίσεως.  
 Τόμ: Β'.

Πίσεως πρὸς Θεοδόσιον ἔλεγεν: „ἐκ ἐκ μέτρα δίδωσι τὸ Πνεῦμα  
 „τὸ Ἅγιον, (τοῖς πισύουσι δηλονότι) ἀλλ' αὐτὸς ἐνίσχιν ἐξ αὐτῶ,  
 „καθάπερ καὶ ὁ Πατήρ (τελέειν ἐπὶ τῶς πισύουσης),.. Ἀδελφὰ  
 δὲ τέτοις εἶχε καὶ τῇ δεκάτῃ Ἐπισολῇ. Ἐν μὲν γὰρ τῷ προ-  
 τέρω χωρίῳ εἰρηκῶς ὡ: „ἀλλ' αὐτὸς ἐνίσχιν ἐξ αὐτῶ, καθάπερ  
 „καὶ ὁ Πατήρ,.. Ἐν δὲ τῷ δούτέρῳ: „καὶ προχῆται ἐξ αὐτῶ,  
 „καθάπερ ἀμέλει παρὰ τῷ Θεῷ καὶ Πατρὶς,.. Παραπλησίως  
 ἄρα καὶ τῷδε τῷ δούτέρῳ, περὶ τῆς χρονικῆς μόνης ἐκχύσεως  
 τῷ Ἁγίῳ Πνῶματος ὁ λόγος αὐτῷ ἦπερ μὲν γὰρ ἐν ἄλλοις εἶπεν  
 ὁ Κύριλλος, ὅτι „προχῆται,..: τετέστιν, „ἐκπορεύεται παρὰ τῷ  
 „Πατρὶς,.. ἀλλὰ μὴ παρὰ τῷτο ὁ νῆς ἀπανταχῶ ὁ αὐτὸς κρα-  
 τήσῃ; Τῷ γὰρ ὄντι, ἐν ᾧ καὶ παρὰ τῷ Πατρὶς ὁμοίως τὸ  
 Πνεῦμα λέγεται προχῆσθαι, ἥτοι περὶ τῆς ἐν χρόνῳ, ἢ περὶ  
 τῆς ἐξ αἰῶνος καὶ Ὑποστατικῆς τῷ Πνῶματος νοητέον ἐκχύσεως  
 τὸ λεγόμενον. Ὅθεν καὶ τῇ τῷ τῆς Νικαίας Συμβόλῃς Ἐκθέσει,  
 εἰπών: „ὁ προχῆται παρὰ τῷ Πατρὶς,.. ἵνα μὴ ἐν ἀμφιβολίᾳ  
 καταλίπη τὸ εἰρημένον, προσέθετο: „τετέστιν ἐκπορεύεται..  
 Οὐδὲν ἄρα τὸ παράπαν ὅ,τι καὶ ἀναγκαῖον ὑπὲρ τῆς ἰδίας  
 αὐτῶν δόξης συμπεραίνειν εἶχον παῖδες Λατίνων. Ὅτι δὲ τέως,  
 ἐν τῷ Β'. τῶν εἰς τὸν Ἰωάννῳ Βιβλίῳ „κατὰ φύσιν παρὰ τῷ  
 „Τίῳ προχῆσθαι τὸ Πνεῦμα ἐδίδασκε,.. περὶ τέτῃ κατωτέρῳ  
 εἰρήσεται: ἐνθα δεκτέον, πῶς κατὰ φύσιν εἴρηκεν ὁ Κύριλ-  
 λος προῖεναι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκ τῷ Τίῳ ταῦτα γὰρ  
 ἐστὶ ταυτά.

Ἀντεπάγῃ δ' ἔτι, ὡς Κύριλλος ἐκ τῆς τῷ Τίῳ ἐσίας ὡς δι-  
 δάσκων ὑπάρχειν τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ἐν τῷ Γ'. Βιβλ: τῶν εἰς  
 τὸν Ἰωάν: Τόμ: Δ'. τῶν Συγγραμ: Σελ: 926. „Σημεῖον τέτο  
 „ἔσαι ὑμῖν, ὅτι δὴ πάντως ἐκ τῆς ἐμῆς ἐσίας τὸ Πνεῦμα ἐστὶ,  
 „καὶ οἷον ἐμὸς ἐστὶ νῆς, τὸ εἶναι αὐτὸν τὰ ἐσόμενα, καθάπερ  
 „καὶ ἐγώ,.. Ἐν δὲ τοῖς Θησαυροῖς, Λόγῳ ΛΓ'. Τόμ: Ε'. Μέρ:  
 Α'. Σελ: 334. „Δέχῃ μοι πάλιν ἐντεῦθεν ὀρθᾶς περὶ τῷ Ἁγίῳ  
 „Πνῶματος τὰς ἐννοίας, ἵνα δὴ καὶ ἐκμάθῃς ἀπὸ τῆς τῷ Σω-  
 „τήρος ὑπάρχον ἐσίας, καὶ τῆς μιᾶς Θεότητος ἐκ ἀλλότριον..  
 Καὶ πάλιν ἐν Σελ: 336. „Ὡς γὰρ τῆς ἐσίας ὑπάρχον τῷ  
 „χορηγῶντος αὐτὸ τοῖς Ἁγίοις, Χριστῷ δηλαδή,.. Καὶ ἐν Λόγῳ  
 δὲ ΛΔ'. Σελίδι 344. „Οὐ γὰρ ἀτελες τὸ Πνεῦμα δεικνύων,  
 „ταῦτα περὶ αὐτῷ φησὶν ὁ Σωτήρ, ἀλλ' ἵνα μᾶλλον πληροφορήσῃ  
 „τῶς ἀκροωμένους, ὡς τῆς ἐσίας ὑπάρχον αὐτῷ, (ἥτοι, ἐκ τῆς  
 „ἐσίας αὐτῷ) ἐχ' ἑτερόν τι λαλήσει, παρ' ὅπερ αὐτὸς βέλεται..  
 Πάλιν δὲ, τῷ ΛΔ'. τέτῃ Λόγῳ τοιάνδε προτίθησι τῷ Ἐπιγρα-  
 φῷ: „Ὅτι ἐκ τῆς ἐσίας τῷ Πατρὶς καὶ τῷ Τίῳ τὸ Πνεῦμα  
 „τὸ Ἅγιον,.. Καὶ ἔτι ἀνύοθι, Σελ: 346. „Οὐκ ἐν ἐκ τῆς ἐσίας  
 „τῷ



„τῷ Τιῷ τὸ Πνεῦμα ποιότης τις, ἣν ἔτῳς ἔπωμεν, ὑπάρχον τῷ κυριεύοντος ἀπάντων Θεῷ,,. Καὶ Σελ: 347. „Ὁ δὲ Μιχαήριος Ἰωάννης ἐκ τε τῆς τῷ Πατρὸς ἑσίας, καὶ τῷ Τιῷ τὸ Πνεῦμα δεικνύων, ἐν μὲν τοῖς Εὐαγγελίοις φησί: τὸ Πνεῦμα τῆς ἀληθείας παρὰ τῷ Πατρὸς ἐκπορεύεται· ἐν δὲ τῇ Ἐπιστολῇ, τὸ Πνεῦμα ἐστὶν ἡ ἀλήθεια,,. Ταυτὰ δ' ἐπαναλαμβάνει καὶ τῷ Βιβλίῳ τῶν Ἀποδείξεων: ὅτι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐστὶ Θεός· Τόμ: Ε'. τῶν Συγγραμ: Μέρ: Α'. Σελ: 672. Καὶ ἐν τοῖς Θησαυροῖς, Λόγ: ΛΓ'. Τόμ: Ε'. Μέρ: Α'. Σελ: 338. „Ἐπειδὴ δὲ ζωὴ μὲν ἐστὶ κατὰ φύσιν ὁ Υἱός, ζωοποιεῖ δὲ τὸ Πνεῦμα τὸ παρ' αὐτῷ χορηγούμενον, ἀνάγκη λοιπὸν ἐκ τῆς ἑσίας ὑπάρχειν ὁμολογεῖν αὐτὸ τῆς τῷ Τιῷ καὶ Θεῷ, καὶ πᾶσαν αὐτῷ πτωτερώμεν καὶ τῷ ἐνέργειαν ἔχον,,. Καὶ ἐν Λόγῳ δὲ ΛΔ'. Σελ: 347. „Ὅτε τοίνυν ὁ Λόγος μὲν ἐστὶ τὸ Φῶς τὸ ἀληθινόν, ἐλάμπει δὲ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ἀνάγκη πᾶσα τῆς ἑσίας τῷ Λόγῳ (ἥτοι ἐκ τῆς ἑσίας) καὶ τὸ Πνεῦμα σωμολογεῖν, δι' ἣν φωτίζει πᾶντα ἄνθρωπον, ὡσπερ τινα τῆς οἰκείας φύσεως ἀκτῖνα προτείνων τῷ τῷ Πνεύματος ἐλάμψιν,,. Τελούτατον δὲ καὶ τοῖς κατόπιν ἀπομνημονεύθεισι ῥήμασιν ἐκ τῷ Γ'. Βιβλ: τῶν εἰς τὸν Ἰωάννην, ἐξῆς σωάπτει: „Οὐκ ἂν ἦν ἄρα καθάπερ ἐγὼ προερεῖ· τὰ ἐσόμενα, μὴ ἔχι πάντως ἐν ἐμοί τε ὑπάρχον, καὶ δι' ἐμῶ προῖον καὶ τῆς αὐτῆς ἑσίας ὑπάρχον ἐμοί (ἦγεν ἐκ τῆς αὐτῆς ἑσίας),,,.

Ἄλλα γὰρ, ἡ κατ' ἄλλῳ ἔννοιαν φησὶ Κύριλλος ἐκ τῆς ἑσίας τῷ Τιῷ εἶναι τὸ Πνεῦμα, ἢ κατ' ὡς ἀνωτέρω διδάσκων ἐτύγχανεν Ἀθανάσιος, ὡς ἠκέσαμεν. (240) Ἀμέλει τοι καθὸ ταυτοῦσιον ἐστὶν, ὡς μίαν τε καὶ τῷ αὐτῷ ἑσίαν ἔχον σὺ τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Τιῷ. Ἐνθεντοι ἐν Λόγῳ ΛΓ'. τῶν Θησαυρῶν προσετίθει: „Ὅτι ἀπὸ τῆς τῷ Σωτῆρος ἐστὶν ὑπάρχον ἑσίας, καὶ τῆς μιᾶς Θεότητος ἐκ ἀλλότριον,,. Σώηθες γὰρ τοῖς Ἀνατολικοῖς Πατέρασιν, ἐκφέρειν βελομένοις, τὸ παρὰ Λατίνοις λεγόμενον, τῆς αὐτῆς εἶναι ἑσίας θάτερον θάτερον, ἔτῳ φράζειν: „ὅτι θάτερον ἐκ τῆς θάτερας ἑσίας ἐστὶ,, διὸ καὶ τότε οἱ Γραικοὶ δηλώσαντες, πῇ μὲν τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, φασὶν ἐκ τῆς ἑσίας εἶναι τῷ Τιῷ, πῇ δὲ τῆς ἑσίας τῆς τῷ Τιῷ: καθὰ καὶ Κύριλλος εἶχεν ἐν Λόγῳ ΛΔ'. καὶ ἐν τῷ Γ'. Βιβλ: τῶν εἰς τὸν Ἰωάννην. Οὐδέ γε τέτοις ἀνθέστηκε τὰ ἐκ τῷ ΛΔ'. Λόγῳ ἐκείνα: „Ἰωάννης ἐκ τῆς τῷ Πατρὸς ἑσίας, καὶ τῷ Τιῷ τὸ Πνεῦμα δεικνύων, φησὶ, τὸ Πνεῦμα τῆς ἀληθείας, ὃ παρὰ τῷ Πατρὸς ἐκπορεύεται,,.

Τῷ

(240) Ἐπὶ τῆς παρῆς: Πραγμ: ΙΕ'. ὅρα §. 5'.



Τῷ ὄντι καὶ γὰρ δι' αὐτὸ τῆτο: ἐπειδὴ τὸ Πνεῦμα ἐκ τῆ Πατρὸς ἐκπορεύεται, καὶ τῆς αὐτῆς ἐστὶ Θεότητος κατὰ τὸ ἐπόμενον, σωάμα τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ καὶ κατὰ τὴν διάνοιαν ἐν ταύτῃ προσίθῃσιν, ὡς ἐν τῇ Ἐπιστολῇ, τὸ Πνεῦμα ἐστὶν ἡ ἀλήθεια: ἐκ γὰρ δὴ τῶν ἔτι εἰρημένων ἔπεται μόνον, ὅτι ἐπειδὴ ὁ πῆ Θεὸς Υἱὸς ὡσαύτως ἐστὶν ἡ ἀλήθεια: τὸ δὲ Πνεῦμα, τῆς ἀληθείας Πνεῦμα ἐστὶν ὁμοῦσιον ἄρα τὸ Πνεῦμα. ἐστὶ τῷ Υἱῷ ἐμὴν δὲ καὶ ὅτι ἐκ τῆ Τίς ἐκπορεύεται, ὡς παντὶ πρὸς ἐστὶ κατὰ δῆλον.

Πάλιν προβάλλει τὸν Ἀλεξανδρείας Κύριλλον πολλαχῶς διδάσκοντα, ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῆ Τίς. Οἶον Βιβλ: Θ'. τῶν εἰς τὸν Ἰωάν: ἐν Τόμ: Δ'. Σελ: 810. „Διὰ γὰρ τοι τῆτο „σωματικῶς ἐνεφύσησεν ὁ Χριστὸς, δεικνύς ὅτι, καθάπερ ἐκ „σώματος τῆ ἀνθρώπου προέσι τὸ Πνεῦμα σωματικῶς, ἔτω καὶ „ἐκ τῆς Θείας ἑσίας Θεοπρεπῶς προχῆται τὸ ἐξ αὐτῆς. Καὶ ἐν Βιβλ: δὲ τῶν εἰς τὸν Ἰωάν: Γ'. Τόμ: Δ'. Σελ: 837. „Οὐκ ἔν, „ὡς εἶδος τὰ ἐν τῇ βεβλήσει τῆ Μονογενῆς, πάντα ἡμῖν ἀναγ- „γέλλει ἐκ ἐκ μαθήσεως ἔχον τὴν εἰδῆσιν, ἵνα μὴ φαίνεται „διακόνε τάξιν ἀποπληρῆν, καὶ τῆς ἑτέρας τυχὸν διαπορθευθῶν „λόγους, ἀλλ' ὡς Πνεῦμα αὐτῆς, καθάπερ ἀρτίως εἰρήκαμεν, καὶ „εἶδος ἀδιδάκτως, πάντα τὰ ἐξ ἧς, καὶ ἐν ᾧ περ ἐστὶ καθάπερ „ἀμέλει καὶ ὁ ἀνθρώπινος νῆς πάντα γινώσκων τὰ ἐν αὐτῷ, „διακονεῖ πρὸς τὰ ἔξω, λόγῳ τυχὸν τῷ προφορικῷ, τὰ θελή- „ματα τῆς ψυχῆς ἧς ἐστὶ καὶ νῆς, ἕτερον μὲν τοι παρ' αὐτῷ „ταῖς ἐπινοαῖς ὁρῶμενός τε καὶ ὀνομαζόμενος, ἕτερος δὲ κατὰ „φύσιν ἐκ ὧν: ἀλλ' ὡς μόριον τῆ παντὸς συμπληρωτικόν, ἐν „αὐτῇ τε ὑπάρχον, καὶ ἐξ αὐτῆς ἀναφύεσθαι πισυόμενον. Καὶ ἐν τῷ εἰς τὸν Ἰωάν δὲ Ὑπομνήματι, Τόμ: Γ'. τῶν Συγ- γραμ: Σελ: 228. „Ἡ μὲν γὰρ ἐστὶ Θεὸς καὶ ἐκ Θεῆ κατὰ „φύσιν ὁ Υἱὸς (γεγεννηται γὰρ ἐκ Θεῆ καὶ Πατρὸς) ἴδιον αὐ- „τῆς τε, καὶ ἐν αὐτῷ, καὶ ἐξ αὐτῆς, τὸ Πνεῦμα ἐστὶ, καθάπερ „ἀμέλει καὶ ἐπ' αὐτῆς νοεῖται τῆ Θεῆ καὶ Πατρὸς. Ἡ δὲ γεγο- „νὼς ἀνθρωπος, καὶ γέγονε καθ' ἡμᾶς, ἐπακτὸν ἔχεν τὸ Πνεῦμα „λέγεται. Καὶ ἐν τῷ Ζ'. Διαλόγῳ τῶν πρὸς Ἑρμείαν, Τόμ: Ε'. Μέρ: Α'. Σελ: 641. „Καὶ γὰρ ὁ Κύριος ἡμῶν Ἰησοῦς Χριστὸς, „περὶ παντὸς οἶμαι πιστε καὶ ἀγαθῆς, ἐλδοσόμεθα, φησὶν, ἐγώ „τε καὶ ὁ Πατήρ, καὶ μονῶ παρ' αὐτῷ ποιησόμεθα: καὶ ἐν γε „τῇ τῷ γινώσκωμεν ὅτι ἐν ἡμῖν ἐστὶν, ἐκ τῆ Πνύματος ἡ ἔδωκεν „ἡμῖν. Ἐνοικον γὰρ καὶ ἐνηυλισμένον καταπλαστοίη τις ἀν τὸν „φύσει τε καὶ ἀληθῶς ὄντα Θεόν, ἐκ ἀλλότριόν τι καὶ διεσπασ- „μένον αὐτῆς τὸ Πνεῦμα λαβὼν, ἀλλὰ τὸ ἐξ αὐτῆς τε, καὶ ἐν „αὐτῷ, καὶ ἴδιον αὐτῆς καὶ τὴν ἴσιν ὡς πρὸς αὐτὸν κυριότητα „φορεῖν. „

„Φορῶν,,. Πάλιν, πρὸ τῆς τέλους: — (Β'.) „πλὴν ἐκείνο φασὶν, ὅτι Χριστὸς ἔφη περὶ αὐτῶν: ἐκ τῆς ἐμῆς λήψεται καὶ ἀναγγελεῖ ὑμῖν: μέτοχον ἔν ἅρᾳ, φασὶ, τὸ Πνεῦμα τῆς Τιῆς. — (Α'.) ἡκιστα γὰρ πολλὰ γε οἶμαι καὶ δεῖ: τὸ γὰρ ἐξ αὐτῶν τε, καὶ ἐν αὐτῷ, καὶ ἰδίον αὐτῶν, πῶς ἂν αὐτῶν μεταλλάξοι πώποτε; καὶ ἐν ἴσῳ τοῖς θύραθεν χετικῶς ἀγιάζοιτο; καὶ ἀλλότριον ἔσαι κατὰ φύσιν, ἢ καὶ ἰδίον εἶναι λέγεται,,; Ἐν δὲ τῷ Βιβλίῳ τῷ περὶ τῆς Ὁρθῆς Πίσεως πρὸς Θεοδοσίον; πολὺ πρὸ τῆς τέραςτος ἐν Τόμ: 5'. Σελ: 33. (241) „Οὐ τὸ ἀλλότριον τοῖς βαπτιζομένοις ἐνιέντα (τὸν Τιὸν) Πνεῦμα δαλοπρεπῶς καὶ ὑπεργικῶς ἀλλ' ὡς Θεὸν κατὰ φύσιν μετ' ἐξουσίας τῆς ἀνωτάτω, τὸ ἐξ αὐτῶν καὶ ἰδίον αὐτῶν: δι' ἧς καὶ ὁ Θεὸς ἡμῶν ἐνσημαίνεται χαρακτήρ,,. Ἐν δὲ τοῖς Ὁσαυροῖς Λόγῳ ΛΔ'. (242) „Ὅτε τοίνυν εἰς ἐστὶ Κύριος Ἰησοῦς Χριστὸς, κατὰ τὴν τῆς Παύλου Φωνῇ. Κύριον δὲ τὸ Πνεῦμα καλεῖ: ἡδεμίαν ἅρᾳ φύσεως οἶδε ἰδιαφορὰν τῆς Τιῆς καὶ Πνδύματος: ἀλλ' ὡς ἐξ αὐτῶν, καὶ ἐν αὐτῷ φυσικῶς ὑπάρχον, τῷ τῆς Κυριότητος ὀνόματι καλεῖ... Καὶ πάλιν Σελίδι 343. „Εἰ τοίνυν κεκληκότος αὐτὸν εἰς Ἀποστολῇ τῆς Πνδύματος, παρὰ Χριστῶ Ἰησοῦ κεκληθῆναι φησὶ, δέκνυνται σαφῶς ἐκ ἀλλότριον τῆς ἐξουσίας τῆς Τιῆς τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἀλλ' ἐν αὐτῷ καὶ ἐξ αὐτῶν, καὶ ὡς ἐνέργειά τις φυσικῇ, πάντα ἡδωαμένη πληρῶν, ὅσα βέλεται,,. Καὶ πάλιν Σελίδι 344. „Νῆς γὰρ ὑπάρχον Χριστῶ, πάντα τὰ ἐν αὐτῷ διαλέγεται τοῖς Μαθηταῖς: ἐκ ἐν ἰδίᾳ τινὶ θελήσει, ἡδεμῶς ἐν ἀλλοτρίᾳ βελήσει τῆς ἐν ᾧ, καὶ ἐξ ἧς ἐστὶν, ὁμιλῶν, ἀλλ' ὡς ἐκ τῆς ἐξουσίας αὐτῶν φυσικῶς προϊὼν, καὶ ὅλῳ αὐτῶν τὴν βέλησιν ἔχον, ὥσπερ καὶ τὴν ἐνέργειαν,,. Καὶ Σελίδι δὲ 350. „Δεκνὺς σαφῶς (ὁ Τιὸς) ὅτι Πνεῦμα αὐτῶ ὑπάρχον, τὰ ἐαυτῶ πάλιν διακονήσει ῥήματα. „Οὐ λαλήσει, φησὶν, ἀφ' ἑαυτῶ, ἀλλ' ὅσα ἂν ἀκρόση λαλήσει ὅτι ἐκ τῆς ἐμῆς λήψεται. Ὁμοιον γὰρ, ὡς εἰ καὶ τὸ μέλι, περὶ τῆς ἐνέσης αὐτῷ ποιότητος, λέγοι: ἐκ ἐνθήσει τι ἀφ' ἑαυτῆς τοῖς ἀπογοδομένοις, ἀλλ' ἐκ τῆς ἐμῆς λήψεται φυσικῶς διαβαινέσης τῆς ἐκ τῶν ἐσιῶν, ἢ ἔτιως εἶπω, ποιότητος ἐπὶ τὰ ἐξ αὐτῶν ἀμερίσως προερχόμενα,,. Καὶ Σελίδι 354. „Νομοθετῶντος τοιγαρῶν τῶ Χριστῶ, ὡς ἐν αὐτῷ, καὶ ἐξ αὐτῶ φυσικῶς ὑπάρχον τὸ Πνεῦμα αὐτὸ νομοθετῶν,,. Καὶ πάλιν Σελ: 358. „Ἀνάγκη τὸ Πνεῦμα τῆς ἐξουσίας ὁμολογεῖν τῆς Τιῆς: ὡς γὰρ ἐξ αὐτῶ κατὰ φύσιν ὑπάρχον, καὶ ἐπὶ τὴν κτίσιν παρ' αὐτῶ πεμνόμενον, τὸν ἀνακατασκευάζον ἐργάζεσθαι,,. Καὶ ἐν τῷ Α'. δὲ Βιβλ: περὶ

(241) Ἐν τῷ Ε'. Τόμ: τῶν Συγγραμ: Μέρε: Β'. ὡς ἐν Προσαρτήματι.

(242) Ἐν Σελίδι 339.

Τόμ: Β'.

περὶ τῆς ἐν Πνέυματι λατρείας, Σελίδι 9. „Τρεπτὸν δὲ ἔστι πρὸς  
 „τὸ Πνεῦμα εἶναι ἢ, ἔπερ τὸ τρέπεσθαι νοσῆ, ἐπ' αὐτῷ ὁ μῶμος  
 „τιῷ Θεῶν ἀναδραμεῖται φύσιν· ἔπερ ἐστὶ τῷ Θεῷ καὶ Πατρὶ,  
 „καὶ μὴ καὶ τῷ Υἱῷ, τὸ ἐσιωδῶς ἐξ ἀμφοῖν· ἦγαν ἐκ Πατρὸς  
 „δι' Υἱῷ προχέμενον Πνεῦμα,,. Ἐν δέ τοι τῷ Βιβλίῳ τῶν Ἐπι-  
 λύσεων τῶν δώδεκα Κεφαλαίων, ἐν Ἐπιλύσει τῇ τῷ Θ'. τῶν  
 Ἀναθεματισμῶν: „Ἄνθρωπος γεγονώς ὁ Μονογενὴς τῷ Θεῷ  
 „Λόγος, ἀπομεμῆνηκε καὶ ἔτω Θεός, πάντα ὑπάρχων ὅσα ὁ  
 „Πατήρ, δίχα μόνος τῷ εἶναι Πατὴρ· καὶ ἴδιον ἔχων τὸ ἐξ αὐτοῦ,  
 „καὶ ἐσιωδῶς ἐμπεφυκὸς αὐτῷ Πνεῦμα Ἅγιον, εἰργάζετο τὰς  
 „Θεοσημείας,,. Τελοῦται δὲ ἐν τῷ Δ'. τῶν κατὰ Νεσορίε,  
 Σελίδι 98. „Οἶκοθεν ἔν ἄρα, καὶ παρ' αὐτῷ (τῷ Υἱῷ) τὸ  
 „Πνεῦμα αὐτῷ καὶ τέττε σαφὴς ἀπόδειξις εἴη ἂν, τὸ καὶ ἑτέροις  
 „διώσθαι χορηγεῖν αὐτό,,. (243) Καὶ Σελίδι 106. „Οἱ δὲ ὅλον  
 „αὐτὸ (τὸ Πνεῦμα) κατασκυδάζοντες τῷ Χριστῷ, δυσσεβῶσιν ὁμο-  
 „λογημένως· καὶ γὰρ αὐτὸν ἀτιμάσκει τὸν ὁμοῦσιον αὐτῷ Θεῷ  
 „Λόγον, τοῖς δαλοπρεπέσι περιβάλλοντες μέτροις, τὸ παρ' αὐτῷ τε  
 „καὶ ἐν αὐτῷ κατὰ φύσιν (244) καὶ ἴδιον αὐτῷ,,.

Ἀλλ' ὅτι γὰρ ἔκ ἐκ τῷ Υἱῷ ἐκπορεύμενον τὸ Πνεῦμα ἐφ-  
 ρόνη Κύριλλος ἐν τῷ λέγειν ἐκ τῷ Υἱῷ εἶναι αὐτό, σαφὲς ἐντεῦ-  
 θεν, ὅτι ἐν τῇ Ἐπιλύσει τῷ Θ'. τῶν Ἀναθεματισμῶν εἰρηκῶς  
 „τὸ Πνεῦμα ἐκ τῷ Υἱῷ εἶναι,,. Εἴτα τῷ Θεοδωρήτῃ, ἐπὶ τῇς  
 τῷ αὐτῷ Θ'. Ἀναθεματισμῷ Ἀνατροπῆς ἀνθυπενεγκόντος: „Ἰδιον  
 „τὸ Πνεῦμα τῷ Υἱῷ, εἰ μὲν ὡς ὁμοφυὲς, καὶ ἐκ Πατρὸς ἐκπο-  
 „ρεύμενον ἔφη, σωομολογήσομεν, καὶ ὡς ἐυσεβῆ δεξόμεθα τιῷ  
 „φωνῷ. Εἰ δ' ὡς ἐξ Υἱῷ, ἢ δι' Υἱῷ τιῷ Ὑπαρξιν ἔχον, ὡς  
 „βλάσφημον τέτο, καὶ ὡς δυσσεβὲς ἀπορρίψομεν,,. Κύριλλος πρὸς  
 ταῦτα ἀπολελόγηται: „Ἐκπορεύεται μὲν ὡς ἐκ τῷ Θεῷ καὶ  
 „Πατρὸς τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, κατὰ τιῷ τῷ Σωτήρος φωνῷ,  
 „ἀλλ' ἐκ ἀλλότριον ἐστὶ τῷ Υἱῷ· πάντα γὰρ ἔχει μετὰ τῷ Πατρὶ,,.  
 Ἐνθα δὴ πάντως ἀφορμῶν ὑπονοίας τῷ Θεοδωρήτῃ εἰληφότος.  
 ἐκ

(243) Προϊὼν δ' ἐπὶ τοῖς εἰρημένῃς ἐνταῦθα ὁ Θεοπέσιος Κύριλλος, παρασιωπάει ἐφ' ἧς ἔτι καὶ ταῦτα: „Ὁ δὲ γε Κύριος ἡμῶν Ἰησοῦς Χριστός, ἐξ ἰδίας πληρώματος „προϊὼς τὸ Πνεῦμα, καθὰ καὶ αὐτός ὁ Πατήρ, ἔχ' ὡς ἐκ μέτρων δίδωσιν αὐτό „τοῖς ἀξίοις ἐλεῖν,,. Ὁ δὲ Λατῖνος, ὡς δῆθεν ἀναντίρρητον ἐντεῦθεν τιῷ σωτη-  
 γορίαν τῆς ἰδίας δόξης εὐρών, παρὰ τὸ χαῖλος τῆς Σελίδος παρεσημείωσεν: Et hic locus aperte declarat Spiritum ex Filio etiam procedere. (Καὶ τὸδε τὸ χα-  
 ρίον σαφῶς ἐκφαίνει καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα ἐκπορεύεσθαι) μὴ ἐπίστησας δι-  
 λονότι τοῖς ἐκ τῷ σωεγγυς προσιθεμένοις: „Τῷ καὶ ἑτέροις διώσθαι χορηγεῖν  
 „αὐτό... καὶ τοῖς ἀξίοις ἐλεῖν αὐτό δίδονα, ἃ τηλαυγῶς παρίστησιν ἐνταῦθα. τὸν  
 λόγον τῷ Κυρίῳ μάλιστα εἶναι, περὶ τῆς πρὸς τὰ ἐκτὸς διαδόσεως καὶ χερηνίας  
 τῶν χαρισμάτων τῷ Ἁγίῳ Πνέματι.

(244) Κἀνταῦθα πάλιν ὁ Λατῖνος παρεσημαῖται παρὰ τὸ χαῖλος: Spiritus S. etiam à Filio. (Τὸ Ἅγιον Πνεῦμα καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ.)

ἐκ τῆ εἰρηκέναι Κύριλλον τὸ Πνεῦμα εἶναι ἐκ τῆ Τίτ. καὶ διτλῶ  
 αὐτῷ ἐννοίαν καθυποβαλόντος, καθ' ὃν αὖ τὸ Πνεῦμα τῆ Τίτ  
 ἴδιον εἶναι ῥηθεῖη, εἶπερ. ὁ Κύριλλος ὡς δοξάζων ἐκ τῆ Τίτ τὸ  
 Πνεῦμα ὡς ἐξ αὐτῆ ἐκπορεύομενον, ἀναμφισβολῶς αὖ ἀπαντήσας  
 πρὸς τὰ τῆ Θεοδωρήτη, ὡς ἔχων τυγχάνοι δόξαν ἐκράτῳ· νῦν  
 δὲ τῷ προτέραν τῶν ὑπὸ Θεοδωρήτη προτεθεισῶν δυεῖν ἐννοιῶν,  
 ὁ ἄλλος ὡς ἀνθαιρεῖται· καθ' ὃν δηλονότι τὸ Πνεῦμα τῆ Τίτ ἴδιον,  
 ἢ ἐκ τῆ Τίτ εἶναι λέγεται, ὡς ἐκ τῆ Πατρὸς μὲν ἐκπορεύομε-  
 νον, ἐμὴν δ' ἄλλοτριον τῆ Τίτ πεφυκός· φανερόν δὴ πᾶς τὸ ἐαυτῆ  
 φρόνημα ἔτω κατέστησε Κύριλλος· εἰπὼν, („τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ  
 τῆ Τίτ εἶναι,“) ὡς ἡκιστα τῆτο ὡς, τὸ καὶ ἐκ τῆ Τίτ αὐτὸ  
 ἐκπορεύεσθαι. Οὐδὲ γὰρ ἄλλως ἐκ τῆ Τίτ ἐν τέτοις φαίνε-  
 ται αὐτὸς ἐκδιδάσκων, ἢ καθὸ παρὰ τῆ Τίτ ἡμῖν αὐτὸ ἐπι-  
 χορηγεῖται.

Δήλον δὲ τῆτο, καὶ ἐξ ὧν ἐν τῷ Ε'. Βιβλίῳ τῶν εἰς τὸν Ἰω-  
 ἀννῳ. Κεφαλ.: Β'. ἀπεφωάτο. Περὶ τῆ Χριστῆ γὰρ ἐκεῖ, Σελ.:  
 472. τῆ ἐν τῷ Βαπτίσματι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ὑποδεξαμένην,  
 εἰπὼν: „Ἐδέχετο δὲ πῶς; Ἐπεξεργασέον γὰρ ἀναγκαίως τὸ  
 „εἰρημένον: ἄρ' ὡς ἐκ ἔχων αὐτὸ, τῆτο φάμεν; μὴ γένοιτο.  
 „Ἰδιον γὰρ τῆ Τίτ τὸ Πνεῦμα ἐστὶ, καὶ ἐκ ἔξωθεν, ὥσπερ ἡμῖν,  
 „ἐπεισκρίνεται παρὰ Θεῶν χορηγούμενον· ἀλλ' ἐνυπάρχει φυσικῶς  
 „αὐτῷ καθάπερ καὶ τῷ Πατρὶ, καὶ δι' αὐτῆ πρόεισι τοῖς Ἁγίοις,  
 „κατὰ τὸ ἐκάστῳ πρέπον διανεμηθὲν παρὰ τῆ Πατρὸς... Αὐτίκα  
 μάλα ἐπισυνάπτει: „Δέχεται τοίνυν ἐκ ἐαυτῷ τὸ Πνεῦμα τὸ  
 „Ἅγιον ὁ Μονογενὴς· αὐτῆ γὰρ ἐστὶ, καὶ ἐν αὐτῷ, καὶ δι' αὐτῆ  
 „τὸ Πνεῦμα, καθάπερ ἡδη προείπομεν. Ἄλλ' ἐπείπερ ἄνθρωπος  
 „γενεονῶς, ὅλῳ εἶχεν ἐν ἐαυτῷ τὴν φύσιν, ἵνα πᾶσαν ἐπανορ-  
 „θώσῃ μετασκυβάσας εἰς τὸ ἀρχαῖον...“ Ἐνθα ὁ πρότερον εἰρη-  
 κῶς ὡς, ὅτι („τὸ Πνεῦμα ἐνυπάρχει φυσικῶς τῷ Τίτ, καὶ δι'  
 „αὐτῆ πρόεισι τοῖς Ἁγίοις διανεμηθὲν,“) ἔτῳς ὕστερον αὐτὸ τῆτο  
 ἐκφέρει: („Τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐν αὐτῷ ἐστὶ τῷ Τίτ, καὶ δι'  
 „αὐτῆ, καθάπερ προείπομεν...“) Καὶ τὸ δεύτερον ἄρα τότε:  
 („τὸ Ἅγιον Πνεῦμα διὰ τῆ Τίτ,“) ἔδεν ἕτερον σημαίνει, εἰ μὴ  
 ὅτι: („τὸ Πνεῦμα διὰ τῆ Τίτ,“) Ἄλλὰ μὴ τὸ λέγειν, διὰ τῆ  
 Τίτ διδοῦσθαι τὸ Πνεῦμα, καὶ παρὰ τῆ Τίτ, καὶ ἐκ τῆ Τίτ,  
 ταυτὸν ἐστίν. Ὅρθως ἄρα κατὰ Κύριλλον λέγεται, ὅτι τὸ Πνεῦ-  
 μα τὸ Ἅγιον ἐστὶν ἐκ τῆ Τίτ, καθ' ὃν ἐννοίαν αὐτὸ ἡμῖν χορη-  
 γεῖσθαι διασημαίνεται.

Τίς ποτ' ἐν ἄρα ὁ νῆς τῷ Πατρὶ τοσαυτάκις εἰρηκότι ἐκ  
 τῆ Τίτ τὸ Πνεῦμα εἶναι τὸ Ἅγιον, δήλον καὶ ἐκ τῆς ῥήσεως  
 τῆς προενεχθείσης ἀπὸ τῆ Α'. Βιβλ.: τῆ περὶ τῆς ἐν Πνύματι  
 λατρείας: „Τὸ ἐσιωδῶς (καὶ γὰρ ἔφασκεν) ἐξ ἀμφοῖν ἦγεν



„ἐκ Πατρὸς δι' Υἱῶ προχέομενον Πνεῦμα· ἐπὶ τὰ κτίσματα δη-  
 „λονότι,,. Ἐκ τῶ Υἱῶ γὰρ διὰ τῆτο εἶναι λέγει τὸ Πνεῦμα τὸ  
 „Ἅγιον“, ὅτι ἐξ αὐτῶ ἐπὶ τῷ κτίσιν ἐκχέεται. Ὅτι δὲ κατὰ  
 τῷ δε τῷ ἐννοίαν προσφυῶς μάλα λέγοιτ' ἂν εἶναι τὸ Πνεῦμα  
 ἐκ τῶ Υἱῶ, σαφὲς ἐξ ὧν ὁ Εὐαγγελιστὴς Ἰωάννης φησί: „Μήπω  
 „τὸ πτωικαῦτα τὸ Πνεῦμα εἶναι, διὰ τὸ μήπω δεδοξάσθαι τότε  
 „τὸν Κύριον,,. Ἐν γὰρ τῆτοις ἔχ οἶον τε ὑπολαβεῖν, μήπω δὴ  
 κατ' ἐκείνο ὑπάρχειν τὸ Πνεῦμα κατ' ἐσίαν τῷ ἑαυτῶ, ὡς ἔδει  
 ἄδηλον: ἀλλὰ μόνον τὸ μήπω πρὶν αὐτὸ δεδοξάσθαι, εἰς ὃ ἐδοξάσθαι  
 ὁ Κύριος. Τῷ ἴσῳ ἄρα λόγῳ προστίθεται εἶναι ἐκ τῶ Χριστῶ τὸ  
 Πνεῦμα τὸ Ἅγιον· παναληθῶς γὰρ τὸ Πνεῦμα δίδοται παρὰ  
 τῶ Χριστῶ. Τὸ γὰρ „εἶναι,, σημαίνει ὡδε τὸ „δίδοσθαι,,. Διὸ  
 δὴ καὶ ὁ Συναγῆτης ἈΝΑΣΤΑΣΙΟΣ, ἐν τῷ περὶ τῶν τῆς Πίς:  
 Δόγμ: Βιβλίῳ: „Καὶ γὰρ (φησί) δεικνύων ὅτι ἐξ αὐτῶ τὸ  
 „Ἅγιον Πνεῦμα, ἐμφυσήσας ἔδωκεν αὐτὸ τοῖς Μαθηταῖς,,. Ἐνθα  
 παραπλησίως, καὶ ἕτος, ἐκ ἄλλως εἶναι τὸ Πνεῦμα λέγει ἐκ τῶ  
 Υἱῶ, ἢ κατὰ ἐκ τῶ Υἱῶ ἐστὶν αὐτὸ χορηγούμενον. Ὑποσιωπάται  
 καὶ γὰρ: „Ὁ Σωτὴρ ἡμῶν ἐξ ἑαυτῶ, ὡς ἔκτινος Θεσαυρῶ  
 „τὸ Πνεῦμα τοῖς ἁγίοις διένειμεν,,. Ἀλλὰ περὶ τῶδε μετὰ  
 ταῦτα.

Ἐνίσταται γεμῶ πρὸς τὰ παρὰ τῶ Κυρίλλῳ ἐπενεχθέντα  
 ἐκ τῶ Ζ'. Βιβλ: τῶν πρὸς Ἑρμείαν ὁ Ἰησαῖτης ΠΕΤΑΒΙΟΣ ἐν  
 Βιβλ: Ζ'. τῶν περὶ Τριάδος Κεφαλ: Γ'. „Ἐπ' ἀνάγκης ἐστὶν εἶ-  
 „ῶδη νοεῖσθαι ταύτῃ τῷ Πρόοδον τοιαύτῃ δηλονότι, οἷαν αὐτὸ  
 „τὸ Πνεῦμα, φύσει τῷ Υἱῶ σωημμένον καὶ ὁμοῦσιον καθιστῶν  
 „τῶ ὅπερ ἡ χρονικὴ Πέμψις ἐκ ἀπεργάσθαι,,. Ψόδδες ἀλλ' ἐν,  
 τὸ τῷ ἐγχρονον Πέμψιν μὴ ἀναδεικνύειν τὸ Πνεῦμα τῇ τῶ Υἱῶ  
 ἐσίᾳ σωημμένον καὶ ὁμοῦσιον. Εἶπερ γὰρ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα  
 ἐκ τῶ Υἱῶ, ἢτοι ἐκ τῆς ἐσίᾳ τῶ Υἱῶ δίδοται, ἀνάγκη πᾶσα  
 καὶ ἐν τῇ ἐσίᾳ εἶναι αὐτὸ τῶ Υἱῶ, καὶ ὁμοῦσιον τῷ Υἱῶ.

Πάλιν, πρὸς τὰ ἐκ τῶ περὶ τῆς Ὁρθῆς Πίς: πρὸς Θεοδό-  
 σιον Βιβλίῳ, ὁ Πετάβιος αὐτόθι ἔτως ἐνέσηκεν: „Ἐπιστάσεως  
 „ἄξιον ἡγάμεθα, φησί, τὸ μὴ διώσθαι περὶ τῆς ἐγχρόνου Πνε-  
 „ψεως, καὶ τῆς τῶν χαρισμάτων ἐκχύσεως, νοεῖσθαι τὸ ἐκεί-  
 „λεγόμενον, ὅτι ἐξ αὐτῶ, καὶ δι' αὐτῶ ἐστὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον  
 „ἀλλὰ περὶ τῆς προαιωνίᾳ τε καὶ ἐσιώδους αὐτῶ παραγωγῆς ἐξ  
 „ἀνάγκης δεῖν ἐκλαμβάνεσθαι· εἰμὴ γὰρ ἔτως ἐρμηνεύσομεν, ἀδό-  
 „λεχός τις ἔσται ταυτολογία, καὶ τερθρεία ἀντικρυς τὸ λεγόμε-  
 „νον· μάλλον δὲ καὶ τῶπιχείρημα ἔδεν προβαλεῖται ὅ,τι καὶ  
 „ὑγιές. Πρόκειται γὰρ ἐν ἐκείνοις Κυρίλλῳ, τὸν Χριστὸν, καὶ  
 „σάρκα προσεληφότα, μόνον τε καὶ κατὰ φύσιν Υἱὸν τῶ Θεῶ  
 „εἶναι κατασκυβάσας, ἐκ τῶ αὐτὸν ἔχειν ἄπερ ἴδια ἐστὶ τῶ Θεῶ  
 „οἶον



οἶον δὴ τὸ χορηγεῖν τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ἔχῃ δαλοπρεπῶς ἔδ' ὑπεργικῶς, ὡς ἀλλότριον· ἀλλ' ἢ Θεὸς ἐστίν, ὡς ἴδιον· ἑαυτῷ πεφυκός, ἐξ αὐτῷ τε ὄν, καὶ δι' αὐτῷ. Ὡς δέ τοι τῆς Ἐκ προθέσεως χρονικῶς τινα, καὶ τῷ λόγῳ τῶν χαρισμάτων τῷ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος μετάδοσιν ὑποδηλώσης, ἔδεν δὴ περθεῖν ὁ Κυρίλλος διαπράττεται· μᾶλλον δὲ καὶ γελοῖως πως αὐτὸ τὸ ζητῆμενον πρὸς κατασκευὴν τῷ τέτῳ προβάλλεται· τῷ γὰρ ἔγχρονον ἐκείνῳ, τῷ ἐν τῷ Βαπτίσματι γινομένῳ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος Ἀποστολῇ ὑπὸ Χριστοῦ ἐν πλήρει τῇ ἐξουσίᾳ, καὶ ἔχῃ δαδολικῶς ἐξυπηρετημένῳ, ἐντεῦθεν ἔτω συμπερανεῖ· ὅτι ἐξ αὐτῷ τε καὶ δι' αὐτῷ, κατὰ χρονικῶν ὁμοίως τῷ Πέμψιν τὸ Πνεῦμα πρόεισιν. Ὅπερ λήρος τις ἀτεχνῶς, καὶ ἀηδής τις ἂν εἴη ἐρεχελία. Ἐπ' ἀναγκῆς ἐν τῷ ἑσιώδῃ παραγωγῇ ἐκλαβέσθαι, ἐξ ἧς καὶ μόνῃς ἂν ἐψοῖτο τὸν Χριστόν, ἔχῃ ὡς ἀλλότριον τι· αὐτῷ δὲ χορηγεῖν τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ἀλλ' ὡς ἴδιον· ἢ περ ἐξ αὐτῷ τε καὶ δι' αὐτῷ πεφυκός. Ἐκ γὰρ τῷ τῷ Πνεύμα φύσει καὶ κατ' ἐστίαν τῷ Χριστῷ ἐκπροϊέναι, ὡς ἐξ αὐτῷ εἶναι λέγεσθαι, ἔπεται αὐτὸ ἐξ αὐτῷ, καὶ ὡς τῷ ὄντι ἴδιον, οἰκείῳ τινὶ δικαιοματι καὶ ἀξιωματι πέμπεσθαι· ὅπερ ἑδαμῶς ἔπεται ἐκ τῷ δίδοσθαι κατὰ Πέμψιν τῷ ἔγχρονον.

Ἀλλὰ γὰρ πρῶτον αὐτὴ ἢ ἐκ τῷ ἀπομνημονεύθει'τος χωρὶς ῥήσις, ἔκ ἔχεν („ἐκ τῷ Τίῳ, καὶ διὰ τῷ Τίῳ,“) ἀλλὰ μόνον: („ἐκ τῷ Τίῳ, καὶ ἴδιον τῷ Τίῳ,“) ὡς ἐν αὐτοῖς γε τοῖς ἐκείνῃς κατεύδομεν ῥήμασι· τετὶ γεμῶν ἤδη παρείσθω. Ψυδὲς δ' ἔπειτα, καὶ ὅτι ἢ τῷ Κυρίλλῳ ῥήσις, εἴτ' ἂν τεπιχείρημα ᾧ, ὡς τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῷ Τίῳ πέμπεται· ἄρα ὑπεργικῶς ἔπεται παρὰ τῷ Τίῳ· ᾧ γὰρ τὰ ἐκείνῃς: („τὸ ἐξ αὐτῷ τε καὶ ἴδιον αὐτῷ,“) Καὶ κατὰ τὸν ἐγκείμενον ἄρα νῦν τοῖς Κυρίλλῳ ῥήμασι, αὐτὴ ἂν εἴη ἐκείνῃς ἢ Ἐπιχείρησις. Τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῷ Τίῳ· ἐκ τῷ Τίῳ, Φημὶ, τετέστιν ἐκ τῆς ἐξουσίας τῷ Τίῳ ἡμῖν δίδοται· ἔκ ἄρα ὑπηρετικῶς, ἔδ' ὡς ἀλλότριον τῷ Τίῳ τῷ Θεῷ ἡμῖν ἐστίν ἐπιχορηγούμενον. Καὶ τὸ δὴ ἔτῳς ἐπιχειρεῖν, ληρώδες εἶναι δόξαε, καὶ τέρθρῳμα ἀηδὲς τε καὶ γέλωτος ἄξιον; Πάντως περὶ δὴ χώραν λάβῃ τῷ Ἰησοῦ ἢ ἀπηχέσατα ὑπ' αὐτῷ παρεισθευμένη διάνοια.

Ἀλλ' ἔτι πρὸς τὰ τῷ Κυρίλλῳ, ἐκ τῷ Γ'. Βιβλ.: τῶν εἰς τὸν Ἰωάνν: ὁ αὐτὸς Ἰησοῦς ἐνίσταται: „Ἐκ τῷ Τίῳ ἐστίν: ὑπάρχει ἐκ τῷ Τίῳ. Τετὶ δὲ, ἑσιωδῶς χριῶν διερωτῶσθαι σαφῶς ἐλέγχει ἢ πᾶσα ἐκείνη Διάλεξις... Καὶ προσέτι: „Ὅτι καὶ τὸ ἐν ᾧ, σωεξέβξε τῷ ἐξ ἑ. Ἀλλὰ καὶ τὸ „ἐν ᾧ“, ἑσιωδῇ τῷ ἐν τῷ Τίῳ ἐμφαίνει τῷ Πνεύματος ὑπαρξιν. Ἄρα καὶ τὸ „ἐξ ἑ“, ἑσιωδῇ σημαίνει, καὶ τῷ ἐξ αὐτῷ τῷ Τίῳ προέλῳσιν... Τόμ: Β'. Κ κκκκ Ἀλλ'

Ἄλλ' ἐκ τῆς Υἱᾶς τὸ Πνεῦμα τῆς Κυρίλλου λέγοντος, λοιπὸν ἡμῖν, κατ' ἐδένα ἕτερον, ἢ κατὰ τὸν τῆς Ἀρχῆς λόγον, νοεῖν τὸ λεγόμενον; Καὶ μὴ τῆς ὅλης ἐκείνης Διαλέξεως ἢ πρόθεσις ἡ, τὸ δεῖξαι τὸ Πνεῦμα μηδαμῶς εἶναι ἀλλότριον τῆς Υἱᾶς, ἀλλ' ὁμοῖον αὐτῷ: πῶς ἔν τῷδε ἔκ ἂν ἔποιτο ἐνλεῦθεν, ἐκ τῆς τὸ Πνεῦμα δηλ: τὸ Ἅγιον εἶναι ἐκ τῆς Υἱᾶς: ἐκ τῆς Υἱᾶς Φημί: τρεῖς, ἐκ τῆς τῆς Υἱᾶς ἡμῖν ἐσίας διδόμενον; Ἐπεὶ: καθάπερ τὸ „ἐν ᾧ,, ἐσιώδη τὴν τῆς Ἁγίας Πνεύματος ὑπαρξιν ἐμφαίνει τὴν ἐν τῷ Υἱῷ τρεῖς, καθὼς τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐν τῇ ἐσίᾳ ἐστὶ τῆς Υἱᾶς. ἔτω πάντως καὶ τὸ „ἐξ ἧ,, ὁμοίως σημαίνει τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ἐσιώδως τε καὶ κατὰ φύσιν πέμπεσθαι παρὰ τῆς Υἱᾶς τρεῖς, χορηγεῖσθαι ἡμῖν, ἐξ αὐτῆς τῆς ἐσίας τῆς τῆς Υἱᾶς. Ἄλλ' ἐστὶ δὴ ψευδὲς τὸ ἐντεῦθεν διὰ τῆς „ἐξ ἧ,, κατὰ τὴν τῆς Ἱησοῦ διανοιαν ἐκδηλεῖσθαι τὴν Ἐκπόρουσιν τὴν ἐσιώδη τε καὶ αἰώνιον. ἔδε γὰρ ἔχει λόγον τινὰ ἢ τοιάδε σωεπεία. Καὶ ἐξ ἐδεμίας δὲ ἀνάγκης προάγεσθαι τὸν Ἱησοῦ εἰς ἐν ταῦτα συνάπτειν, ἐξ αὐτῶν τῶν τῆς Κυρίλλου προενωγμένων ῥημάτων, ἀπὸ τῆς Ε'. τῶν εἰς τὸν Ἰωάν: Βιβλ: Κεφ: Β'. ἐστὶ κατὰ δὴλον. Ὁ γὰρ ἄχρι τῆςδε εἰρήκει, τὸ Πνεῦμα εἶναι ἐν τῷ Υἱῷ, καὶ διὰ τῆς Υἱᾶς τῷ κτίσματι δίδοσθαι, ἐκεῖνο ἔπειτα ἔτως ἐπέφερε: τὸ Πνεῦμα ἐν τῷ Υἱῷ εἶναι, καὶ διὰ τῆς Υἱᾶς. Μήτοι γε δ' ἐνταῦθα παρὰ τῆςτο, καὶ τὸ „διὰ τῆς Υἱᾶς εἶναι,, τὴν ἐσιώδη Ἐκπόρουσιν σημαίνει, ὅτι τὸ „ἐν τῷ Υἱῷ εἶναι,, τὴν ἐν τῷ Υἱῷ ἐσιώδη ἐμφαίνει τῆς Πνεύματος ὑπαρξιν; Ἄλλ' αὐτός γε Κύριλλος, τῶν ἰδίων αὐτῆς ῥημάτων τὸν νῦν τοιόνδε εἶναι καθωμολόγει: „Ὅτι „ἐνυπάρχει φυσικῶς αὐτῷ, καὶ δι' αὐτῆς πρόεισι τοῖς Ἁγίοις,,.

Ἐστὶ δ' ὅς (245) τὰς ἐπαχθείσας ῥήσεις ἐκ τῆς Δ'. τῶν κατὰ Νεστορίου, μετὰ τῶν, αὐτόθεν ὁμοίως, σωεπαγαγῶν τῶν δε: „Ὁ δὲ γε Κύριος ἡμῶν Ἰησοῦς Χριστὸς ἐξ ἰδίας πληρώματος προῖαίς „τὸ Πνεῦμα καθὰ καὶ αὐτὸς ὁ Πατὴρ, ὑποσυνάπτει: „Σημειώ- „τέον, ἐν τοῖς προαπομνημονοῦσθαι χωρίοις ἀποχρώντως ὑποση- „μαίνεσθαι, ὡς ἔκ ἂν εἶχε τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἡμῖν δίδοσθαι παρὰ „τῆς Υἱᾶς, εἰ μὴ ἐκπορεύοιτο ἐξ αὐτῆς ἢ, εἰ μὴ ἔτως ἴδιον αὐτῆς „ἡ, ὡς περ ἐστὶ καὶ τῆς Πατρός,,. — Πῶς δ' ἔκ ἂν ὡσαύτως εἶχεν ἡμῖν διδόναι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ὡς περ καὶ ὁ Πατὴρ, καίτοι ἐν τῇ ἐσίᾳ τῇ ἑαυτῆς ἴδιον αὐτὸ ἔχων, εἰ μὴ καὶ ἐκ τῆς Υἱᾶς πα- ραπλησίως εἴη ἐκπορεύομενον, τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον; Ἐπεὶ, καὶ ἔτως ἴδιον τῆς Υἱᾶς ἐστὶ τὸ Πνεῦμα, ὡς περ καὶ τῆς Πατρός. Ἄλλ'

(245) Κιχάδ: Ζητήμ: Β'. Σελ: 21.

Ἀλλ' ἐντεῦθεν ἔχ' ἔπεται τὸ καὶ ἐκ τῆς Υἱᾶς αὐτὸ ἐκπορεύεσθαι, ὡς ἐν ἰδιαιτέρᾳ ἤδη τῷτο Πραγματείᾳ δέδεικται. (246)

Ὁ δ' αὐτὸς Συγγραφεὺς, τὰ ἐκ τῶν Θησαυρῶν ἐν Λόγῳ ΛΔ'. Σελ: 350. προβαλλόμενος, ὑποσιώπται: „Ἐξ ἧς σαφές „μᾶλα Ἐπιχείρημα ἐκπορίζεται τοιοῦτο: Κατ' ἐκείνῳ τῷ ἔννοιαν „ὁ Υἱὸς περὶ τῆς Ἁγίας Πνεύματος ἔφη: ὅτι ἐκ τῆς ἐμῆς λήψεται: „καθ' ἣν τὰ αὐτὰ ἂν ἔφησε καὶ τὸ μέλι περὶ τῆς γλυκύτητος, „τῆς φυσικῶς τε καὶ ὁσιωδῶς ἐξ αὐτῆς προέξσης, ἔφησεν ἂν „(ἔστι δ' ἑκατέρωθεν ἡ Πρότασις τῆς Θεωσεως Κυρίλλου, ὡς δῆλον „ἐν τῷ Ἀναγινώσκοντι.) Ἄρα κατὰ Κύριλλον, ἕτως ἐστὶ βέβαιον „ὅτι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκπορεύεται ἐκ τῆς Υἱᾶς, ὡς βέβαιον „ἐστὶν ὅτι ἡ γλυκύτης ἐκπορεύεται ἐκ τῆς μελιτος.,.

Ἀλλὰ πρῶτον, τὰ Κυρίλλου δῆπιν ἡ: ἕτω λεγέτω τὸν Χριστὸν περὶ τῆς Ἁγίας Πνεύματος, τὸ ἐκ τῆς ἐμῆς λήψεται, ὥστε ἂν εἰ καὶ τὸ μέλι ἔφησε περὶ τῆς κατὰ φύσιν αὐτῆς ποιότητος· ἀλλ' „ἐκ ἐντεῦθεν ἡ τῆς Κυρίλλου διάνοια ἡ, ὅτι πάντῃ πάντως ἀλλήλοις ὁ Υἱὸς καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα συμβαίνετον, ἐπίσης τῷ μελίτι σὺν τῇ κατὰ φύσιν αὐτῆς ποιότητι: μόνον δ' ἐπὶ τρίτῳ τινί· ἄλλως γὰρ, εἰ καὶ καθόλου ταῦτα ἐννοηθεῖν, πολλὰ ἂν ἐντεῦθεν τὰ ἄτοπα ἔψοιτο. Ἐπειτα, καὶ ἐδὲ τὰ Κυρίλλου ῥήματα ἡ: „ὥστε ἂν εἰ τὸ μέλι εἴποι περὶ τῆς κατὰ φύσιν αὐτῆς ποιότητος· ἦτοι τῆς ἐξ αὐτῆς προέξσης γλυκύτητος.,. Ἀλλὰ μόνον: „ὡς εἰ καὶ τὸ μέλι περὶ τῆς ἐνέσης αὐτῷ φυσικῶς ποιότητος „λέγοι.,. Καὶ ἕτω: καθάπερ ἔμφυτος ἐστὶν ἡ γλυκύτης τῷ μελίτι, τὸν αὐτὸν ἂν ἐντεῦθεν ἔποιτο τρόπον, μόνον τό: καὶ ἐν τῇ τῆς Υἱᾶς ὁσίᾳ εἶναι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον· ἐκέτι δὲ καὶ τὸ ἐκ τῆς Υἱᾶς αὐτὸ ἐκπορεύεσθαι. Πρὸς δ' ἐπὶ τέτοις, καὶ ἐδὲν δ' ἂν σὺν λόγῳ ῥηθεῖν, ὅτι ἡ κατὰ φύσιν ποιότης ἐκ τῆς ἰδίας ὑποκειμένης παράγεται· ἡ γλυκύτης, φέρε, ἡ τῷδε, ἡ ἐκείνῳ ἐνδὲς τῷ μελίτι, ὅτι ἐκ τῆς μελιτος αὐτῆς προβάλλεται· ἀλλ' ὅλως, ἐξ ἧς ἂν ὑφεσῶς τι παράγοιτο, ἐκ τῆς αὐτῆς ἐκείνης καὶ ἡ κατὰ φύσιν προσῆσα τῷ ὑφεσῶτι ὑποκειμένῳ ποιότητος παραγομένη ἐστίν. Οὕτω φύσει τῷ ἀνθρώπῳ ἐνεσι τὸ ὁρατικὸν λόγ: χάρις: ἡ μέντοι ὁ Πέτρος, ἡ ὁ Παῦλος, τὸ ὁρατικὸν ἐστὶ προερινωχώς· ἀλλ', ὁ ἐξ ἧς καὶ ἐκεῖνοι προήχθησαν, ἐκεῖνος. Καὶ ὑποσιώπται δὲ Κύριλλος: „φυσικῶς διαβαίνεσης τῆς ἐκ τῶν ὁσιῶν, ἢ ἕτως εἴπω, „ποιότητος, ἐπὶ τὰ ἐξ αὐτῶν ἀμερίσως προερχόμενα· (προερχόμενα γὰρ, φησὶν, ὡς τὰ Ἑλληνικὰ ἔχει, ἐκ ἐκπορεύόμενα·) „οἶον, καθάπερ ἤδη προέπομεν: ἐκ μελιτος ἡ γλυκύτης, ἐκ πυρὸς ἡ θερ-

(246) Ἐν Πραγματ: ΙΑ'.

ἢ θερμότης, ἐξ ὕδατος ἢ ψύξης· τῆς τῆ μελιτος, φέρε, ποιότητος διαβαυνέσης εἰς γλυκύτητα, τὴν ἀχωρίτως προερχομένην ἐξ αὐτῆς. Διὰ μέντοι τῆς τῆ „προέρχεσθαι,, Φωνῆς, ἔχῃ τὸ „παράγεσθαι,, σημαίνει, ὡς ἔπερ ὡς ἐννοῶν, ὅτι ἐκ τῆ μελιτος ἢ γλυκύτης παράγεται· ἀλλὰ τῆτο μόνον: ὅτι ἐκ τῆ μελιτος ἐμφανίζει ἐαυτὴν ἢ γλυκύτης, ὥπερ ἐκ τῆ πυρὸς ἢ θερμότης, καὶ ἢ ψύξης ἐκ τῆ ὕδατος.

Ἀντεπάγῃσι δ' ἐν Κύριλλον ἐκδιδάσκων, ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα φύσει τε, καὶ κατὰ τρόπον πρέποντα Θεῷ, ἐκ τῆ Υἱῆς προέσι. Βιβλ: Γ'. τῶν εἰς Ἰωάν: περὶ τὸ τέλος· ἐν Τόμ: Δ'. Σελ: 925. „Οὐ γὰρ ἄλλότριον τῆς ἑσίας τῆς Μονογενῆς τὸ Ἅγιον νοεῖται „Πνεῦμα· προέσι δὲ φυσικῶς ἐξ αὐτῆς, ἔδεν ἕτερον παρ' αὐτὸν „ὑπάρχον, ὅσον εἰς ταυτότητα φύσεως, εἰ καὶ νοοῖτο τυχὸν ἰδιο- „συσάτως,,. Καὶ ἐν Βιβλ: ΙΑ'. Κεφαλ: Α'. Σελ: 929. „Ἐπει- „δὴ δὲ, ὁμοῦσιόν τε ἐστὶ τῷ Υἱῷ, καὶ προέσι Θεοπρεπῶς δι' αὐτῆς, „πᾶσαν αὐτῆς τὴν ἐφ' ἅπασιν τελεωτάτῃ ἔχον ἐνέργειάν τε καὶ „δύαμιν, διὰ τῆτο φησὶν, ὅτι ἐκ τῆς ἐμῆς λήψεται,,. Ἐν δὲ τοῖς Θεσαυροῖς, Λόγῳ ΛΔ'. Σελ: 345. ἐν Τόμ: Ε'. Μέρει Α'. „Ὅτε τοίνυν τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐν ἡμῖν γενόμενον συμμόρφος „ἀποδεικνύει Θεῷ, προέσι δὲ καὶ ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱῆς, πρόδηλον „ὅτι τῆς Θείας ἐστὶν ἑσίας, ἑσιωδῶς ἐν αὐτῇ καὶ ἐξ αὐτῆς „προῖον. Ὡπερ ἐν ἀμέλει καὶ τὸ ἐξ ἀνθρωπείας σώματος ἐκ- „τρέχον ἐμφύσημα· εἰ καὶ μικρὸν, καὶ ἐκ ἀξίον τῆς λόγος τὸ „ὑπόδαγμα,,. Καὶ Σελίδι 344. „Τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ἐκ ἐν „ἰδίᾳ τινὶ θελήσει, ἑδεμῶς ἐν ἄλλοτρίᾳ βεβλήσει τῆς ἐν ᾧ, καὶ „ἐξ ἧς ἐστὶν, ὁμιλεῖν· ἀλλ' ὡς ἐκ τῆς ἑσίας αὐτῆς φυσικῶς προῖον, „καὶ ὅλῳ αὐτῆς τὴν βεβλήσιν ἔχον, ὥπερ καὶ τὴν ἐνέργειαν,,. Ἄλλ' ἐγένοντο τῶν Αἵρετισόντων οἱ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα παρὰ τῆς Σωτῆρος, ὡς ὑπαργῆς τινός, ἢ ὀργάνου βλασφημῶντες ἡμῖν ἐπιχορηγεῖσθαι· καὶ τέρας τοίνυν ὁ Κύριλλος ἐξελέγχων, τοσάκις, ἔφη „ἑσιωδῶς, φυσικῶς, Θεοπρεπῶς, προῖεναι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα „ἐκ τῆς Υἱῆς,,. Τῶν δὴ ἐν ἄλλοις τε μέμνηται, καὶ τῷ Θ'. Βιβλ: τῶν εἰς Ἰωάν: ἐν Τόμ: Δ'. Σελ: 810. λέγων: „Ἄλλ' „ἐρεῖ τις εἰκότως τοῖς ἄλλοτριον εἶναι νομίζουσι τὸν Υἱόν, τῆς τῆς „Θεῆς καὶ Πατρὸς ἑσίας:· Καὶ πῶς, εἰπέμοι: τὸ τῆς ἀληθείας „Πνεῦμα, τῆς τῆς Υἱῆς δίδωσιν ὁ Πατήρ· ἔχ' ὡς ξένον, ἢ „ἄλλότριον, ἀλλ' ὡς ἴδιον Πνεῦμα, καὶ τοὶ κατ' ὑμᾶς διωρισμένον „ἔχων τῆς ἑσίας τὸν λόγον πρὸς τὸν Υἱόν· καὶ Υἱῆς τὸ Πνεῦμα „ἐστὶν· ἔ· γὰρ ὅτι ἀμφίλογον; Πῶς δὲ αὖ πάλιν, ἔπερ ἐστὶν „ἑτεροῦσιος ὁ Υἱός, τὸ τῆς Πατρὸς Πνεῦμα δίδωσιν, ὡς ἐαυτῆς; „Γέγραπται γὰρ, ὅτι ἐνεφύσησε τοῖς Μαθηταῖς λέγων: λάβετε „Πνεῦμα Ἅγιον. Ἄρ' ἐν ἐκ· οἰήσεται τις, καὶ μάλα δικαίως, „μᾶλλον



„μᾶλλον δὲ ἀραρότως διακρίσεται, ὅτι τῶν τῷ Θεῷ καὶ Πατρὶ  
 „φυσικῶν ἀγαθῶν ὁσιωδῶς ὑπάρχων κοινωνὸς ὁ Υἱὸς, ἔχει τὸ  
 „Πνεῦμα κατὰ τὸν τρόπον, καθ' ὃν περ ἂν νοῖτο καὶ ὁ  
 „Πατήρ, ἐκ ἐπακτὸν, ἐδὲ ἔξωθεν; μᾶλλον δὲ μανικὸν τὸ ἔγω  
 „φρονεῖν. Ἄλλ' ὥσπερ ἡμῶν ἕκαστος τὸ ἴδιον ἐν ἑαυτῷ Πνεῦμα  
 „σωῆται, καὶ ἐκ τῶν ἐνδοτάτω σπλάγχχνων εἰς τὸ ἔξω προχέει.  
 „Διὰ γάρ τοι τῷτο σωματικῶς ἐνεφύσησεν ὁ Χριστὸς, δεικνύς: ὅτι  
 „καθάπερ ἐκ σώματος τῷ ἀνθρωπίνῃ πρόεισι τὸ Πνεῦμα σωμα-  
 „τικῶς, ἔγω καὶ ἐκ τῆς Θείας ὁσίας Θεοπρεπῶς προχέεται τὸ  
 „ἐξ αὐτῆς. Τέτρας ἔν τῆς Αἰρεσιόφρονας; καὶ ἄλλαχ' Κυρίλλος  
 ἐξελέγχει: οἷον ἐν τῷ περὶ τῆς Ὁρθῆς Πίστεως Βιβλίῳ πρὸς  
 Θεοδόσιον διὰ τῶν κατόπιν προενεχθέντων ῥημάτων: „Οὐ τὸ  
 „ἄλλότριον τοῖς βαπτιστέοις ἐνιέντα (τὸν Υἱὸν) Πνεῦμα δαλο-  
 „πρεπῶς καὶ ὑπεργικῶς· ἀλλ' ὡς Θεὸς κατὰ φύσιν μετ' ἐξουσίας  
 „τῆς ἀνωτάτω, τὸ ἐξ αὐτῆς τε καὶ ἴδιον αὐτῆς· δι' ἧ καὶ ὁ Θεὸς  
 „ἡμῶν ἐνσημαίνειται χαρακτῆρ. Οὕτω δὲ καὶ ἄλλοις πολλαχ'.

Τὴν ἄρα Καθολικὴν ἀλήθειαν κατὰ τῶν Αἰρετισμόνων πρεσ-  
 βύων ὁ Κυρίλλος, τοσάκις ἔφασκε: „φυσικῶς, ὁσιωδῶς, ἐκ  
 „ὑπεργικῶς, ἐκ τῷ Υἱῷ ἐξίεναι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον καὶ ἐκ  
 „ὡς ἄλλότριον ἐκ τῷ Υἱῷ διδοῦσθαι αὐτό· τετέστι, τῆς αὐτῆς τῷ Υἱῷ  
 φύσεως τε καὶ ὁσίας ἡκιστα ξένον. Ὡς δὴ πρὸς μὴδὲν ἔρδειν τὸν  
 Ἰησοῦν ΠΕΤΑΒΙΟΝ, ἐν οἷς Βιβλ: Ζ'. τῶν περὶ Τριάδος, Κεφ:  
 Γ'. Ἀριθμ: Θ'. πρὸς τὰ ἀπομνημονοθέντα ἀνωτέρω ἐκ τῷ ΛΔ'.  
 Λόγῳ τῶν Θεσαυρῶν, ἐνίσταται: „Οὐ διώαται, λέγων, ἡ τῷ  
 „Ἁγίῳ Πνεύματι Ἐκπόρευσις αὕτη, ἄλλη τις παρὰ τὴν ὁσιώδη  
 „πλαθῆναι, καθ' ἣν ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱοῦ προῖεναι λέγεται· τὸ  
 „ἄρα ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱοῦ συχνὰ ἐρμιωδῶν φησὶν: ὅτι ὁσιωδῶς  
 „ἐξ αὐτῶν πρόεισι· ὡς ταυτὸν ὃν τὸ ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱοῦ προῖ-  
 „έναι, τῷ ἐκ τῆς ὁσίας προῖεναι τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ. Ἐπειδὴ  
 „τοίνυν ἐκ τῆς ἀμφοτέρων ὁσίας πρόεισι ὁσιωδῶς, ὁσιωδῶς αὐτὸ  
 „ἄρα ἐκ τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ ἐκπορεύεται κατὰ τὸ ἐπόμενον. „  
 Καθάπερ γὰρ ἀποδέδεικται, ἐξ αὐτῆς ὁσιωδῶς προῖεναι φάσκοντι  
 τῷ Κυρίλλῳ, περὶ μόνῃς τῆς ἐν χρόνῳ Πένψευς ὁ λόγος ἐστὶν  
 αὐτῷ, καθ' ἣν ἐκ τῆς Θείας αὐτῆς ὁσίας ἐφ' ἡμᾶς τὸ Πνεῦμα  
 ἐκχέεται.

Τὰ δ' αὐτὰ τῷ Κυρίλλῳ, καὶ ἑτεροῖς (247) ἔγω προσα-  
 ραξιάζεται. „Ἐνταῦθα οἱ Γραικοὶ ἀντιβόλῳ, ἐπιστήσαντες:  
 „ὡς δ' μόνον σαφῶς λέγεται τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ Πατρὸς καὶ  
 „Υἱοῦ ἐκπορεύεσθαι, ἀλλ' ἔτι καὶ κατασκοιάζεται. Δείκνυται δὲ  
 „τὸ

(247) Κιχώβ: Ζητήμ: Α'. Σελ: 34.

Τόμ: Β'.

Λ αλλλ



„τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκ τῆς τῆ Πατρὸς καὶ τῆς Υἱῆς εἶναι ὁσίας  
 „ἐντεῦθεν: ὅτι ὁσιωδῶς πρόεισιν ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱῆς. Ἄρα προῦ-  
 „ποτίθεται ὡς ἀρχὴ βεβαιότερα τε καὶ σαφεστέρα, ὅτι τὸ Πνεῦμα  
 „ἐκπορεύεται ἐκ τῆς Πατρὸς καὶ ἐκ τῆς Υἱῆς. ἄλλως γὰρ ἂν ἐδείκ-  
 „νυτο τὸ ἀσαφές ἐκ τῆς ἀσαφῆς καὶ γε τὸ (καὶ κατ' αὐτὰς ἐτι  
 „τῆς Φωτιανῆς) βέβαιον ὄν, διὰ τῆς (παρ' αὐτοῖς) ἀβεβαίας  
 „μᾶλλον δὲ, διὰ τῆς (ὡς ἂν αὐτοὶ φαῖεν) ψευδῆς τε καὶ κακο-  
 „δόξης φρονήματος,...

Ἄλλὰ πρῶτον, ἔδαμῃ τῆς χωρὶς ἐκείνης, λέγει Κύριλλος, ὅτι  
 τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱῆς ἐκπορεύεται. τὰ γὰρ  
 ἐκείνης ὑπῆρχε μόνον: ὅτι πρόεισιν ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱῆς, περὶ  
 μόνης διαλεγομένης τῆς ἐγχρόνου Πέμψεως τῆς Ἁγίας Πνεύματος.  
 Δείκνυσι δὲ τὸ Πνεῦμα ἐκ τῆς Θείας εἶναι ὁσίας ἥτοι τῆς Θείας  
 ὁσίας κοινωνεῖν (ταῦτα γὰρ ἐκείνης τὰ ῥήματα:). „Ὅτι ὁσιω-  
 „δῶς ἐν αὐτῇ, καὶ ἐξ αὐτῆς πρόεισιν. ἔχ' ὅτι δὲ ὁσιωδῶς ἐκ  
 „Πατρὸς καὶ Υἱῆς ἐκπορεύεται. Φημι δὲ, ἐκπορεύεται. Πῶς ἔν  
 ὡς βεβαιότεραν τε καὶ γνωριμωτέραν ἀρχὴν ὑποτιθέμενος γέ-  
 νοιτο, τῷ: „ὅτι τὸ Πνεῦμα ἐκπορεύεται ἐκ τῆς Πατρὸς καὶ ἐκ  
 „τῆς Υἱῆς,; Ψευδὲς δὲ καὶ τὸ ἔτως ἀποδεικνύοντα Κύριλλον δια-  
 τελεῖν τὸ ἀσαφές διὰ τῆς ἀσαφῆς, ἢ καὶ διὰ τῆς ἀβεβαίας τὸ βέ-  
 βαιον; Εἰ γὰρ τὸ Πνεῦμα ἐκ τῆς Θείας ὁσίας φυσικῶς, ἥτοι  
 ὁσιωδῶς πρόεισιν ἐπειδὴν ἐφ' ἡμᾶς πέμπεται, πᾶσα πάντως ἀνάγκη  
 τῆς Θείας πεφυκέναι ὁσίας αὐτό. Καὶ πῶς, εἰπέμοι: τὸ βέ-  
 βαιον ἐνταῦθα διὰ τῆς ἀβεβαίας, ἢ διὰ τῆς ἀγνωσμένης τὸ ἀγνοώ-  
 μενον δείκνυται;

Χωρεῖ δ' ἔν ὁ αὐτὸς προσωτέρω: „Ἐπισήτωσαν, φησὶν, ἐτι:  
 „ὅτι τόδε τὸ Ἐπιχείρημα ἐκνευδρισμένον ἂν εἴη, μὴ ἐπὶ  
 „τῷ δε τῷ ἀρχὴν ἀναλύοιτο. Ἐξ ἧς ἐκπορεύεται τὸ Ἅγιον  
 „Πνεῦμα, ὁμοῦσιον ἐστὶν αὐτῷ. Διὰ γὰρ τῆτο λέγεται ἐκ τῆς  
 „ὁσίας εἶναι Πατρὸς καὶ Υἱῆς, ἐπειδὴ ἐκπορεύεται ἐκ τῆς Πατρὸς  
 „καὶ τῆς Υἱῆς. Εἰμὴ ἄρα ἐκ τῆς Υἱῆς ἐκπορεύεται, ἐκ ἑσῶ ἐκ  
 „τῆς ὁσίας τῆς Υἱῆς, καὶ ἐπομένως ἐκ ἑσῶ ὁμοῦσιον τῷ Υἱῷ, —  
 Ψεῦδος ἀλλ' ἔν, τὸ ἄλλως ἂν παρῆθαι τὰ νεῦρα τῆς κατὰ Κύ-  
 ριλλον Ἐπιχειρήματος, εἰμὴ εἰς τὴν τοιαύτην ἀρχὴν ἀναλυθῇ,  
 ὡς ἄρτίως δέδεικται. Καθαπερὲν ψευδὲς καὶ κένο: ὅτι διὰ τῆτο  
 λέγεται ἐκ τῆς τῆς Πατρὸς καὶ τῆς Υἱῆς ὁσίας εἶναι τὸ Πνεῦμα  
 τῆς τῆς, τῆς αὐτῆς εἶναι ὁσίας σωματικῶς τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ,  
 ὅτι ἐκπορευόμενον ἐστὶν ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱῆς. Ἐκεῖνο γὰρ δὴ Κύ-  
 ριλλος ἐπὶ τῆς προτεθέντος χωρὶς κατασκευάζει ἐντεῦθεν: ὅτι ἐκ  
 Πατρὸς τε καὶ Υἱῆς πρόεισιν. ἔ γὰρ ἂν εἶχεν ἐκ τῆς Θείας προϊ-  
 εῖναι ὁσίας, ἢ πέμπεσθαι, εἰμὴ τῆς αὐτῆς Θείας ὁσίας ἐτύγχανεν  
 ἀπολαῦον, ἥς περ καὶ ὁ Πατήρ καὶ ὁ Υἱός.

Οὕτω

Οὕτω δέ τοι, τῷ λόγῳ τῆς Πέμψεως τῆς πρὸς ἡμᾶς γενομένης, τοσάνκις ὁ Κύριλλος ἐστὶν ἐκδιδάσκων ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα πρόεισι διὰ τῆς Υἱᾶς. Οἷον ἐν τῷ Β'. Βιβλ: τῶν εἰς Ἰωάν: Κεφ: Α'. Σελ: 135. „Τίνα δὴ ἐν τρόπον ἀπομεριῶμεν τὸ Πνεῦμα „τῆς Υἱᾶς, τὸ ἕτως ἐμπεφυκὸς, καὶ ἐσιωδῶς ἠνωμένον· δι' αὐτῆς τε „προκύπτον καὶ ὑπάρχον ἐν αὐτῷ φυσικῶς, ὡς μηδὲν ἕτερον „εἶναι νομίζεσθαι παρ' αὐτόν„. Καὶ Βιβλ: Γ'. Σελ: 910. „Πνεῦμα τῆς ἀληθείας, τρεῖς ἐαυτῆς, τὸν Παράκλητον εἰπὼν, παρὰ „τῆς Πατρὸς αὐτὸν ἐκπορεύεσθαι φησὶν· ὥσπερ γὰρ ἐστὶν ἴδιον „Πνεῦμα τῆς Υἱᾶς φυσικῶς, ἐν αὐτῷ τε ὑπάρχον, καὶ δι' αὐτῆς „προῖον, ἕτω καὶ τῆς Πατρὸς„. Καὶ ἐν Σελ: 926. „Οὐκ ἂν „ἂν ἄρα, καθάπερ ἐγὼ προερεῖ τὰ ἐσόμενα, μὴ ἐχὶ πάντως „ἐν ἐμοί τε ὑπάρχον, καὶ δι' ἐμῆ προῖον, καὶ τῆς αὐτῆς ἐσείας „ὑπάρχον ἐμοί„. Καὶ Βιβλ: ΙΑ'. Σελ: 987. „Ἐν τῷ Σῶ Λόγῳ, ἐν ᾧ, καὶ δι' ᾧ, τὸ ἀγιάζον ἐσίτε καὶ πρόεισι Πνεῦμα„. Καὶ Σελίδι 993: „Οὐ γὰρ ἕτερον, παρὰ τὸν Υἱόν, τὸ Πνεῦμα „αὐτῆς, κατὰ γε τὸν ἐν ἐσείᾳ λόγον· ἅτε δὴ καὶ ἐν αὐτῷ τε „ὑπάρχον, καὶ δι' αὐτῆς προῖον„. Καὶ ὁ Τίτλος δὲ τῆς Α'. Κεφ: τῆς ΙΑ'. Βιβλίας, Σελ: 928. ἐστὶν: „Ὅτι φυσικῶς ἐκ Θεῶς τε, „καὶ ἐν τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, καὶ δι' αὐτῆς, καὶ ἐν τῇ „ἐσείᾳ αὐτῆς„. Παραπλήσια δὲ τέτοις ἔχει καὶ τῷ Ε'. τῶν εἰς Ἰωάννην, Κεφαλ: Β'. Καὶ Βιβλ: ΙΑ'. Κεφαλ: Α'. καὶ Β'. Καὶ Βιβλ: ΙΒ'. Σελ: 1095. ἐν τοῖς ἀλλαχόσε διαμνημονοῦσθεσι ρήμασι. Τελδοταῖον δὲ, καὶ τῷ περὶ τῆς Ὁρθοδ: Πίς: πρὸς τὰς Βασιλίδας, ἐν τῷ Α'. Μέρ: τῶν Πρακτικῶν τῆς ἐν Ἐφέσῳ Συνόδου, ἐν τῷ Γ'. Τόμ: τῶν Σωδοικ: Στήλῃ 302. (248) „Ἀναθετόν ἐν ἄρα τῷ ζωοποίησιν, καὶ μάλα εἰκότως, ἐκ αὐτῇ πε „πάντως τῇ τῆς σώματος φύσει· καὶ εἰ γέγονεν ἴδιον τῆς ἐκ Θεῶ „Φῶτος Λόγου, δυνάμει δὲ μᾶλλον τῇ ὑπερτάτῃ, καὶ φύσει τῇ „ὑπὲρ τῷ κτίσιν, ὡς ἐν Προσώπῳ τῆς Θεῶ καὶ Πατρὸς, ἐξ ἧς „πέφηνεν ὁ Υἱὸς, ἴσος τε καὶ ὁμοιος κατὰ πάντα αὐτῷ. Πρόεισι „δὲ δι' ἀμφοῖν καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ ζωοποιεῖν„.

Περὶ γεμῶν τὰ τελδοταῖα ταῦτα, ἐνίσταται ὁ Ἰησαΐτης ΠΕΤΑΒΙΟΣ ἐπὶ τῆς εἰρημένης χωρίᾳ: „Ἦδη δὲ, ὡς ἡ τῆς Υἱᾶς Πρόοδος, περὶ ἧς Κύριλλος ἐνταῦθα φησὶν, ὅλως φυσικῇ τις νοεῖται „ἐκείνης παραγωγῇ ἐκ τῆς Πατρὸς· ἕτω καὶ τῆς Ἁγίας Πνοῦματος „ἢ ἐξ ἀμφοτέρων Ἐκπόρουσις ἢ ὑποσπάπτει, φυσικῇ τις ὀφείλει „κρίνεσθαι„. — Ἀλλὰ τίς δὴποτε τῷ λόγῳ δεικνύς ἐστὶν ὁ Ἰησαΐτης ταύτῃ αὐτῆς τῷ Σωέπειαν; ἔδενι πάντως. Ἡ γὰρ ἐχὶ,

προσ-

(248) Ἐν τοῖς τῆς Κυρίλλου Συγγράμμασι κεῖται ἐν Τόμ: Ε'. Μέρει Β'. τῆς ἐν αὐτῷ Προσαρτήματος, Σελ: 172.

προσφυῶς ἂν ἔτω καὶ ἀληθῶς ἐκτεθείη τὰ Κυρίλλου ῥήματα;  
 "Οτι: τὴν ἰδίαν ἑαυτῷ σάρκα ἐξωποίησεν ὁ Σωτὴρ, ἢ Θεὸς ὢν  
 ἀληθινός· ὡς ἔτω προσήκειν μὲν καὶ τῷ Πατρὶ τὸ ζῶποιον,  
 ἐξ ἧς γεννᾶται ὁ Υἱός· ζῶποιον δὲ καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, οἷα  
 δὴ παρ' ἀμφοτέρων, Πατρός τε δηλονότι καὶ Υἱῷ· ἤτοι ἐκ τῆς  
 ἀμφοτέρων ἐσίας ἐφ' ἡμᾶς πεμπόμενον;

Ἀντιβάλλει δ' ἔν ὁ αὐτὸς Ἰησοῦτης ΠΕΤΑΒΙΟΣ τὸ ἐκ τῆς  
 5. τῶν περὶ Τριάδος Διαλόγων: (249) „Εἴτα πῶς ἡμῖν ὁ Υἱός  
 „διὰ τῆς Πνύματος ἀυλίσεται; πῶς δὲ τὸ ἄμεινον κατὰ φύσιν,  
 „τὴν τῆς χείρονος ἐμποιήσει μέθεξιν δι' ἑαυτῆς; Καὶ εἰ Θείας  
 „φύσεως ἀποτελέμεθα κοινῶν τὸ Πνεῦμα δεχόμενοι, πῶς ἐν  
 „δοτέροις τῆς Πνύματος ὁ Υἱός; (250) ἢ πῶς ἄμεινον αὐτῆς,  
 „καὶ ἐχὶ δὲ μᾶλλον ὡς αὐτός τε, καὶ παρ' αὐτῆς ὅλῳ ἔχον αὐτῆς  
 „τὴν ἐνέργειαν, καὶ τὴν αὐτῆς μέθεξιν ἐμποιῶν; (Καὶ προσέ-  
 „θῃσι δ' ἐπὶ τέτοις Πεταβίος:) „Οτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ὡς παρ'  
 „αὐτῆς, φησὶ, τρεῖσι παρὰ τῆς Υἱῷ ὑπάρχειν, καὶ παρ' αὐτῆς τὴν  
 „ἐνέργειαν ἔχειν· ὅπερ ἐν ὁδοῦς ἄλλως, εἰ μὴ διὰ τῆς κατὰ  
 „φύσιν παραγωγῆς γένοιτο,, — Ἀλλὰ γὰρ αὐτὰ τὰ τῆς Κυρίλλου,  
 κατὰ τὸ Ἑλλωιστὶ φθεγγόμενον ὕφος, ἐν τῷ Ε'. Τόμῳ Μέρει Α'.  
 Σελ: 598. ἐκ ἔχει, ὡς περ ἐπὶ τῆς Λατινικῆς Μεταφράσεως:  
 Ab ipso omnem habens ipsius efficaciam: (παρ' αὐτῆς ὅλῳ  
 ἔχον αὐτῆς τὴν ἐνέργειαν.) Ἀλλ' ἔχει παρ' αὐτῆς τὸ Πνεῦμα  
 αὐτῆς, ὅλῳ ἔχον αὐτῆς τὴν ἐνέργειαν. Οὐκ ἄρα τῷ Ἰησοῦτι  
 ἐξῶ προσλαβέσθαι, ὡς διδάσκει Κύριλλος, ὅτι πάντα ὅσα ἔχει  
 τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον· ἤτοι πᾶσαν τὴν ἰδίαν αὐτῆς ἐνέργειαν,  
 ἔχει παρὰ τῆς Υἱῷ· τὸ γάρ τοι κόμμα „παρ' αὐτῆς (τῆς Υἱῷ) τὸ  
 „Πνεῦμα αὐτῆς,, διασέλλει Κύριλλος ἀπὸ τῆς ἐπομένης „ὅλῳ ἔχον  
 „αὐτῆς (τῆς Υἱῷ) τὴν ἐνέργειαν,,. Ἐν ᾧ δὲ γε Κύριλλος παρὰ  
 τῆς Υἱῷ τὸ Πνεῦμα φησὶν· ὁ νῦν ἐστὶν αὐτῷ κατὰ τὰ προειρη-  
 μένα: ὅτι ἐκ ἄμεινον ἐστὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον τῆς Υἱῷ, ἀλλὰ  
 παρ' αὐτῆς χορηγεῖται, καὶ πᾶσαν πλῆτεϊ τὴν ἐκείνης ἐνέργειαν.  
 Ὁ δὲ

(249) Ἐν Ε'. Τόμ: τῶν Συγγραμ: Μέρ: Α'. Σελ: 598.

(250) Διασρόφως ἐρμηνεύθην καὶ ἡμαρτημένως τὸ χωρίον παρὰ τῷ Ἰησοῦτι Πεταβίῳ,  
 ὅπως ἔλαθε μεταγράψας καὶ Ζοιρηνιάδης ὁ ἡμέτερος Συγγραφεύς. Οὐκ ἐν ἀναγ-  
 νωσέν, ὡς ἐν τῇ παρ' αὐτοῖς Μεταφράσει: Quomodo secundas habet à Filio Spi-  
 ritus S. Ἀλλ' ἀντιστρόφως ἀνάπαλιν: Quomodo secundas habet à Spiritu Filius.  
 Ἐπεὶ καὶ αὕτη ἐστὶν ἡ τῆς παντὸς ἐνταυθα λόγος πρόθεσις τῷ Κυρίλλῳ· τὸ κα-  
 τασκευάζειν, δηλονότι, μὴ χείρονος, ἢ τῆς Θείας φύσεως εἶναι τὸν Υἱόν. Καὶ τὸ  
 Πρωτότυπον δὲ Ἑλλωιστὶ ἀσφαλῶς ἔχει, παρέχον ἀναγνώσκων: „Πῶς ἐν δό-  
 „τέροις τῆς Πνύματος ὁ Υἱός,,; Καθ' ἡμέραν καὶ ὁ Ἑρμηνεύς τῶν τῆς Πατρὸς  
 Συγγραμμάτων, ἐν αὐτῇ τῇ Ἐκδόσει ὁρῶς ἀναγνώσκειται ἐκλατινίσας: ἔχει γὰρ  
 καὶ αὐτός: Quomodo inferior erit Spiritu Filius? „Πῶς τῆς Πνύματος ὑποδεέστε-  
 „ρος ἔσται ὁ Υἱός,,;

Ὁ δέ τοι ΒΕΚΚΟΣ (251) ἐκ τῆ Β'. Βιβλ: τῶν Θησαυρῶν ἀντιπροτείνει ἐκείνο: „Ἰδιον δὲ πάντως τὸ Πνεῦμα τῆς ὑσίας „τῆ Τίτῃ, καὶ ἐκ ἑξωθεν ὑποστατόν,, — Ἀλλὰ μὴ ἄρα διὰ τῆτο ἐκ τῆ Τίτῃ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκπορεύεται, διὰ τὸ τῆς ὑσίας τῆ Τίτῃ ἰδιόν τε εἶναι, καὶ μὴ ἑξωθεν ὑφίστασθαι. Πάντως γὰρ τῆ Ἁγίᾳ Πνοῦματος ἐνοικῆντος, τῆτέστιν ἐπαναπαυομένη τε καὶ μένοντος ἐν τῇ τῆ Τίτῃ ὑσίᾳ· καθὼς ἐς ἐστὶ Θεὸς σὺ τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ· ἔπεται ἐξ ἀνάγκης καὶ τὸ μηδαμῶς ἑξωθεν τῆ Τίτῃ ὑφίστασθαι. Ἀλλ' ἤδη περὶ τῆτος καὶ ἄλλοθι.

Ἀντιφέρεισι τέως ἐκ τῆ ΙΑ'. Βιβλ: τῶν εἰς τὸν Ἰωάννῃν: „Τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐξ αὐτῆς μὲν προκύπτει τῆς ὑσίας τῆ Θεῆ καὶ Πατρὸς, χεόμενον δὲ τοῖς ἐλαῖν ἀξίοις διὰ λόγον τῆ ὁμοουσίᾳ, ἐξ αὐτῆς τε πεφωτός, κατ' ἐκφανσιν δηλονότι τὴν εἰς ἡτοῦ εἶναι καθ' ἑαυτό· καὶ ἐν αὐτῷ μένον τε καὶ ὄν ἀεὶ, προσεχῶς τε ἅμα, καὶ οἷον μεμερισμένως,, Ὅθεν ΒΕΛΛΑΡΜΙΝΟΣ ἐν τῷ Β'. Βιβλ: περὶ τῆ Χρυσῆ, Κεφαλ: ΚΕ'. „Πῶς ἂν οἷος τε ἢ σαφέστερον ὁ Θεὸς Κύριλλος εἰπῇ, ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῆ Τίτῃ ἐκπορεύεται; Τῆτο γὰρ αὐτοὶ νοῶμεν Ἐκπόρευσιν τὴν ἐκ τῆ Τίτῃ, τὸ ἔχειν τὸ εἶναι, καὶ ὑφίστασθαι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῆ Τίτῃ, ὅπερ ἐν τρανωτάτοις ὁ Κύριλλος τοῖς ῥήμασιν ἀποφαίνεται,, — Ἀλλ' εἰς πρὸς αὐτὸ, ὡς Ἑλλωισὶ ἔχον ἐστὶ τὸ ὕφος ἀπιδώμεν: „Τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐξ αὐτῆς μὲν προκύπτει τῆς ὑσίας τῆ Θεῆ καὶ Πατρὸς, χεόμενον δὲ τοῖς ἐλαῖν ἀξίοις διὰ λόγον τῆ ὁμοουσίᾳ, καὶ ἐξ αὐτῆς πεφωτός, κατ' ἐκφανσιν δηλονότι τὴν εἰς τὸ εἶναι καθ' ἑαυτόν, καὶ ἐν αὐτῷ μένοντός τε καὶ ὄντος ἀεὶ, προσεχῶς τε ἅμα, καὶ οἷον μεμερισμένως,, Καθ' ὃν δὴ νῦν καὶ ἡ Λατινικὴ Μετάφρασις τῆδε τῆ χωρίᾳ ἔκκεται, ἐν τῷ Δ'. Τόμ: τῶν Συγγραμμάτων τῆς Γραμμο - Λατινικῆς Ἐκδόσεως, Σελίδι 987. Λέγων γὰρ Ἑλλωισὶ Κύριλλος: „Καὶ ἐξ αὐτῆς πεφωτός, καὶ μένοντος καὶ ὄντος ἐν αὐτῷ,, ἔχει περὶ τῆ Ἁγίᾳ Πνοῦματος εἶχε ταῦτα νοεῖν, ἀλλὰ περὶ τῆ Τίτῃ, ὡς κατὰ Γενικῶ τὴν Πτώσιν φθεγγόμενος: „Πεφωτός, καὶ μένοντος καὶ ὄντος,, (Προτεταχῶς γάρ:) „Πνεῦμα προκύπτει ἐκ Πατρὸς, χεόμενον δι' Τίτῃ ὁμοουσίᾳ,, (ὑποσώψε:) „καὶ ἐξ αὐτῆς πεφωτός,, κτ: Πῶς ἂν τὰ κατὰ Γενικῶ Πτώσιν ἐκείνα, ταῖς κατ' Ὀνομασικῶ, ἢ Αἰτιατικῶ: (προκύπτει καὶ χεόμενον) ἐκφερομέναις φωναῖς σιωτάσθαι εἶχε καὶ συμβιβάζεσθαι; Ἐφησε γὰρ ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα „προκύπτει καὶ ἐστὶν ἐκ Πατρὸς, χεόμενον δὲ διὰ τῆ Τίτῃ, τῆ ὁμοουσίᾳ τε „τῷ

(251) Ἐν Ἐπιγραφῇ Α'. Τόμ: Β'. τῆς κατ' Ἀλφάτιον Ὁρθόδοξας Γραμμάτας, Σελίδι 528.  
Τόμ: Β'. Μ μμμμ



„τῷ Πατρὶ, καὶ ἐξ αὐτῆς πεφωότος, καὶ μένοντος, καὶ ὄντος  
 „ἐν αὐτῷ,,. Πῶς ἔν ἄρα τὰ τελοῦντα δὴ ταῦτα τῷ Ἁγίῳ  
 Πνεύματι, καὶ ἐχὶ τῷ Υἱῷ μάλισ' ἂν εἴη προσανήκοντα;

Ὡς δ' αὕτη γε ἡ Κυρίως ἐστὶ διάνοια, ἐκ τε τῶν προηγου-  
 μένων τε, καὶ τῶν ἐπομένων τῆς αὐτῆς ῥημάτων συμβαλεῖν ῥαδίον.  
 Πρᾶκετο γὰρ ὡδε Κυρίως δᾶξαι, ἐχὶ ὑπηρετικῶς τὸ Πνεῦμα  
 παρὰ τῆς Υἱῆς διανέμεσθαι, ἀλλ' ὡς Πνεῦμα ἴδιον ὃν αὐτῆς τῆς Υἱῆς.  
 Ἐπαδὴ γὰρ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐστὶν ἴδιον τῆς Πατρὸς·  
 ἐκ δὲ τῆς Πατρὸς γεννᾶται ὁ Υἱός, καὶ ἐν τῷ Πατρὶ αἰεὶ ἐστὶν  
 ἐπάναγκες δὴπρ τὸ αὐτὸ τῆς Πατρὸς Πνεῦμα, ἴδιον εἶναι Πνεῦμα  
 καὶ τῆς Υἱῆς. Κἀντεῦθεν, φησὶ, τὸ ἄρα Πνεῦμα ἐκείνο, ἐκπο-  
 ρύεται μὲν ἐκ τῆς Πατρὸς, προχᾶται δὲ ἐπὶ τῆς ἀνθρώπου διὰ  
 τῆς Υἱῆς, τῆς ὁμοσίᾳς ὑπάρχοντος τῷ Πατρὶ, καὶ ἐξ αὐτῆς τῆς  
 Πατρὸς πεφωότος, καὶ ἐν αὐτῷ αἰεὶ ὄντος. Οὕτω δὴ καὶ δο-  
 τερον τὴν αἰτίαν ἐπαναλαμβάνων, δι' ἣν ὁ Υἱός τὸ Ἅγιον Πνεῦμα  
 πέμπει ὡς ἴδιον, καὶ ἐχὶ ὡς διάκονός τε καὶ ὑπεργός ὢν τῆς  
 Πνεύσεως. Ἐχει μὲν ἔν ἑτῷ τὰ ἐκείνα ῥήματα ἀκεραίως·  
 „ἴδιον γὰρ τῆς Θεᾶς καὶ Πατρὸς τὸ Πνεῦμα ἐστὶν· ἀλλ' ἐδὲν ἡτῶν  
 „ἴδιον ἐστὶ καὶ αὐτῆς τῆς Υἱῆς· ἐχὶ ὡς ἕτερον καὶ ἕτερον, ἢ μερι-  
 „σῶς ἐν ἑκατέρῳ νοούμενόν τε καὶ ἐνυπάρχον. Ἀλλ' ἐπεὶ περ ἐκ  
 „Πατρὸς, καὶ ἐν Πατρὶ κατὰ φύσιν ἐστὶν ὁ Υἱός, καρπὸς ὑπάρ-  
 „χων ἀληθινὸς τῆς ἑσίας αὐτῆς, τὸ τῆς Πατρὸς ἴδιον Πνεῦμα  
 „κατὰ φύσιν ἐπάγεται, χεόμενον μὲν ἐκ Πατρὸς, δι' αὐτῆς δὲ  
 „τῆς Υἱῆς τῇ κτίσει χορηγούμενον· ἐ κατὰ τινὰ τρόπον διακονικόν,  
 „ἡγαν τὸν ἐν ὑπεργίᾳ νοούμενον· ἀλλ' ὡς περ ἐφω ἀρτίως, ἐξ  
 „αὐτῆς μὲν προκύπτει τῆς ἑσίας τῆς Θεᾶς καὶ Πατρὸς, χεόμενον  
 „δὲ τοῖς ἐλαῖν ἀξίοις διὰ Λόγον τῆς ὁμοσίᾳς, (τῷ Πατρὶ δηλονότι)  
 „καὶ ἐξ αὐτῆς πεφωότος, κατ' ἐμφανσιν δηλονότι τὴν εἰς τὸ εἶναι  
 „καθ' ἑαυτόν (252) καὶ ἐν αὐτῷ μένοντός τε καὶ ὄντος αἰεὶ, προ-  
 „σεχῶς τε ἅμα, καὶ οἷον μεμερισμένως,,. (Οἷς περ δὴ ἔπατα  
 ὑποσώπει ἐχόμενα·) „Ἰδιοσυζάτως μὲν γὰρ εἶναι φαμέν τὸν  
 „Υἱόν· ἐνυπάρχειν δὲ αὐτῷ τῷ ἰδίῳ γεννήτορι, καὶ ἔχειν ἐν ἑαυτῷ  
 „τὸν γεννήσαντα. Ὅτι δὲ τὸ τῆς Πατρὸς Πνεῦμα, Πνεῦμα φαί-  
 „νεται τῆς Υἱῆς, καὶ τῆς Πατρὸς πέμποντος, ἦτοι διανέμει ἐπαγ-  
 „γελλομένους τοῖς Ἁγίοις αὐτό· διαδίδωσι πάλιν ὡς ἴδιον ὁ Υἱός,  
 „διὰ

(252) Πῶς δ' ὁ Καρδινάλιος Βελλαρμίνος ἰὼ τὸν ἐγκέφαλον ἔχων, ὅτε παρὰ τῷ Θεωπεσίῳ  
 Κυρίως ἀνεγίνωσκε ταῦτα: („Καὶ ἐξ αὐτῆς πεφωότος, κατ' ἐμφανσιν δηλονότι  
 „τὴν εἰς τὸ εἶναι καθ' ἑαυτόν,,) Τῆς γὰρ Ἀντωνυμίας („καθ' ἑαυτόν) ἐν Ἀρ-  
 σενικῷ τῷ κατὰ Γραμματικὴν Γένει ἐκφερομένης, πῶς ἐχὶ τὸν Υἱόν αὐτὴν  
 σιωδᾶν παρίσθαι ἐπὶ τῆς λεγομένης νοούμενης; Πῶς γὰρ οἷον τε ἰὼ Κύριον τῷ  
 ἀκαταλλῆλῳ τῆς Σωτᾶξως πολοικίζοντα, ἐπὶ τὸ Πνεῦμα ἀναδραμεῖν, τὸ διὰ  
 Γένος Οὐδετέρου παρ' Ἑλλήνων, (ἐκ Ἀρσενικῆς ὡς παρὰ Λατίνοις) ὀνομαζόμενον;



„διὰ τὴν ταυτότητα τῆς ἑσίας, ἣς ἔχει πρὸς τὸν Πατέρα, καὶ  
 „ὅτι πρὸς πᾶν ἐνεργὸς ὅτις ὁ Πατὴρ δι' αὐτῆς (ὡς) σαφές αὐτῶν  
 „πάλιν αὐτὸς διαμεμώμενος εἰπὼν, „Τοιγαρὶν λέγων: (ἰδιοσυ-  
 „στάτως εἶναι φανερὸν τὸν Υἱὸν ἐνυπάρχον δὲ αὐτῷ ἰδίῳ γεννή-  
 „τορι, καὶ ἔχειν ἐν ἑαυτῷ τὸν γεννήσαντα) διὰ τῶν πάντως  
 τὰ ἀρτίως ἐξηγησάμενα ἐπεξηγησάμενα τῶν: ὅτι τὸν Υἱὸν νενοήκει  
 καὶ εἶναι ἐν τῷ Πατρὶ, καὶ καθ' ἑαυτὸν δὲ καὶ ὑφίστασθαι καὶ  
 τῷ δὲ δὴ τῷ λόγῳ, τὸ αὐτὸ νῦν περὶ τῆς Υἱᾶς ἀπεφώνηται.  
 Καὶ τὰ τελευταῖα ἄρα τῶν ἀντεπενεχθέντων ῥημάτων, ἐκ ἁλ-  
 λως ἢ περὶ τῆς Υἱᾶς ἐκδεκτέα ὡς. Ἐνθεν δὲ ἐφεξῆς προάγων  
 ἐς τὴν ἐπιχείρησιν, ὃς ἔφη κατασκευάσας τὸν Υἱὸν χορηγῆναι τὸ  
 Πνεῦμα, ὡς Πνεῦμα πεφυκὸς ἰδίον αὐτῆς. Ἀμέλει τοι: Ἐπειδὴ  
 τὸ μὲν Πνεῦμά ἐστιν ἰδίον ἐς τὸ Πνεῦμα τῆς Πατρὸς, καὶ ὅτι μία γε  
 καὶ ἡ αὐτὴ ἑσία ἐστὶν ἢ τῆς Πατρὸς ἢ τῆς Υἱᾶς. Ὡς τῷ παντὶ  
 διαμαρτάνειν σωάμα Βελλαρμίνῳ, καὶ τῆς ἐν τῇ Λατινικῇ Ἐκ-  
 δόσει τῇ ἐν Παρισίοις, Ἔτη 1575. τὰ περὶ τῆς Υἱᾶς, ὡς γε πρὸς  
 τὸν Πατέρα ὑπὸ τῆς Κυρίλλου λεγόμενα, περὶ τῆς Πνύματος ὡς  
 δὴ πρὸς τὸν Υἱὸν λεχθέντα διερωτῶσαντας. Καὶ περὶ τῶν ἐκ  
 τῆς Κυρίλλου δὲ, τοσαῦτα.

## § ΚΓ'.

Ἐκ τῶν Ἀνασασίς τῆς Σιναΐτης.

Ἐκ δὲ ἈΝΑΣΤΑΣΙΟΥ τῆς Σιναΐτης, προτείνουσι πρῶτον τὰ ἐκ  
 τῆς Α'. Βιβλ: τῶν περὶ τῆς Πίς: Δογματ: „Και μὴ ὁ Κύριος,  
 „δακνὺς αὐτὸ (τὸ Πνεῦμα) ἐξ αὐτῆς ὑπάρχον, ἐμφυσῶν τοῖς  
 „Μαθηταῖς, ἔλεγε: λάβετε Πνεῦμα Ἅγιον, „ — Ἀλλά τις ἢ τῆς  
 Ἀνασασίς διάνοια περὶ τῆς, ἐκ τῆς χωρὶς ὁλοκληρώως ἀναγι-  
 νωσκομένης κατάδηλος γίνεται. Οὕτω γὰρ ἐν τῷ 5'. Τόμῳ τῆς  
 τῶν Πατέρων Βιβλιοθ: τῆς ἐν Κολωνίᾳ, Μέρ: Α'. Σελ: 697.  
 „Οὕτε ὁ Υἱὸς ἀνευ τῆς Πατρὸς νοεῖται, καὶ ὁ Πατὴρ ἑαυτῷ συ-  
 „νεπάγεται τὸν Υἱόν· τὸ δὲ Ἅγιον Πνεῦμα τῷ Πατρὶ καὶ τῷ  
 „Υἱῷ ἅμα σὺνυπάρχει ὡς νῦν τε καὶ λόγῳ. Ὁ γὰρ Κύριος δακ-  
 „νὺς αὐτὸ ἐξ αὐτῆς ὑπάρχον, ἐμφυσῶν τοῖς Μαθηταῖς ἔλεγε:  
 „λάβετε Πνεῦμα Ἅγιον ὅπερ ἔν οἱ Μαθηταὶ αὐτοὶ προσδύχο-  
 „μενοι, διὰ τῆς τῶν χειρῶν ἐπιθέσεως διένεμον τοῖς πιστεύ-  
 „ουσιν. Ὅθεν ἔπειτα καὶ τὴν μεταξὺ διακονίας τε καὶ ἰσότητος  
 „διαφορὰν σιωδεῖν. Οἱ μὲν γὰρ Ἀπόστολοι, δεόμενοι τε, καὶ ὡς  
 „Κύριον καθικετόμενοι, τοῖς ἀξίοις τῆς αὐτῆς ἐπιφοιτήσεως, τὸ  
 „Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐτύγγχανον διανέμεντες ὁ δὲ Σωτὴρ ἡμῶν  
 „ἐξ ἑαυτῆς, καὶ ὡς ἐκ Θεσαυροῦ τινὸς αὐτὸ ἐχορήγει τοῖς διὰ

Μ μμμμ 2

„βίβλ

„βίη καθαρότητος ἀξίοις γενομένοις εἰσδέξασθαι τὴν ἐκείνην ἐνέργειαν“. Οὕτως ἄρα ἐρηκώς, ὅτι ὁ Σωτὴρ δεικνύειν μέλλων ἐξ αὐτῆς τὸ Πνεῦμα ὑπάρχειν, ἐνεφύσησε τοῖς Μαθηταῖς· οἱ δὲ Μαθηταὶ εὐχῇ πρῶτον χρησάμενοι, τὸ Πνεῦμα διένειμαν, προσίθισιν ὡς ἐκ τέτων: (ἐκ τῶν αὐτῶ εἰς τόδε προλεχθέντων δηλονότι;) ἢ διαφορὰ διαδείκνυται, ἢ μέσον τῆς διακονίας καὶ τῆς ἰσότητος. Ἐπεὶ τοι γε οἱ μὲν Ἀπόστολοι προσδύχόμενοι, τῇ Ἁγίᾳ Πνεύματος μετεδίδοσαν, ὁ δὲ Υἱὸς ἐξ ἑαυτῆς, ὡς ἐκ Θεσσαυρῆς μετέδωκε. Τῇ τοίνυν Ἀνασασίᾳ, κατὰ τὰ εἰρηθῆαι φθάσαντα τὴν διαφορὰν ταύτην σωάγοντος, ἀνάγκη δὴ περ ταῦτα καὶ πρότερον ὑπ' αὐτῆς προτεθεῖναι· καὶ ἔτιως ἐκ τῆς Χριστῆς ὑπάρχειν τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐρηκότος, τὸν νῦν εἶναι, καθάπερ ὑποσώηψεν: ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα παρὰ τῆς Χριστῆς χορηγᾶται τέττοις: ὅτι ὁ Υἱὸς ἐξ ἑαυτῆς, ὡς ἐκ τινος Θεσσαυρῆς τοῖς ἀξίοις τῇ Ἁγίᾳ Πνεύματος μεταδίδωσιν.

Ἄλλ' ἀντιφέρει ὁ ΒΕΪΚΚΟΣ (253) ἐκ τῆς εἰρημένης Βιβλ.: Α'. τῇ Ἀνασασίᾳ περὶ τῶν Δογμ.: τῆς Πίς: „Ταύτη γὰρ, καὶ „Πνεῦμα σώματος αὐτῆς, δηλονότι τῆς Θεᾶς, τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον „λέγεται· σώματος ὄντος τῆς Μονογενῆς. Καὶ Πνεῦμα πάλιν ἐξ „αὐτῆς ἐκπορεύομενον καὶ ἀποσελλόμενον, ἢ μόνον παρὰ τῆς Πατρὸς, ἀλλὰ καὶ παρὰ τῆς Υἱᾶς. Οὕτω δὲ καὶ ΒΕΛΛΑΡΜΙΝΟΣ τῶν αὐτῶν ἐστὶν ἀπομνημονεύων: „Καὶ Πνεῦμα πάλιν ἐξ αὐτῆς „ἐκπορεύομενον καὶ ἀποσελλόμενον· ἢ μόνον παρὰ τῆς Πατρὸς, ἀλλὰ καὶ παρὰ τῆς Υἱᾶς. Ὡς τὸν νῦν εἶναι ἔδεν τι μᾶλλον ἐκ τῆς Πατρὸς, ἢ καὶ ἐκ τῆς Υἱᾶς τὸ Ἅγιον Πνεῦμα καὶ ἐκπορεύεσθαι, καὶ ἀποσελλεσθαι. — Ἄλλ' ἐν τῷ 5'. Τόμῳ τῆς τῶν Πατέρ: Βιβλιοθ.: τῆς ἐν Κολωνίᾳ, Σελ: 696. τὰ αὐτὰ ῥήματα ἔτιως ἀναγινώσκειται: „Πνεῦμα σώματος αὐτῆς, δηλονότι τῆς Θεᾶς, „τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον λέγεται· σώματος ὄντος τῆς Μονογενῆς. „Καὶ Πνεῦμα πάλιν ἐξ αὐτῆς ἐκπορεύομενον, καὶ ἀποσελλόμενον „ἢ μόνον παρὰ τῆς Πατρὸς, ἀλλὰ καὶ παρὰ τῆς Υἱᾶς. Δι' ὧν, ἐν μὲν τῇ τῇ Ἁγίᾳ Πνεύματος Ἀποστολῇ, σωάπτεται τῇ Πατρὶ· ὁ Υἱὸς ἐν δὲ τῷ λεγομένῳ: („ἐξ αὐτῆς ἐκπορεύομενον,) ἢ.

Ψεύδε-

(253) Ὁ δὲ Βέικκος, (ἐν τῇ Α'. τῶν Ἐπιγραφῶν, Τόμ. Β'. τῆς κατ' Ἀλλὰτ: Ὁρθοδόξου Γραμμάτιος, Σελ: 531.) ἀναγράφει τὴν χρῆσιν Θεοδώρου τοῦ Πρεσβυτέρου τῆς Ραϊθῆς καθάπερ ἐν καὶ τὴν ἀνωτέρω: „Ὅτι, οἶμαι, (κατὰ Φησὶ Γεώργιος ὁ Μετοχίτης ἐν τῇ κατὰ Μαννὴλ Ἀντιρρήσει τῆς Κρήτης Ἀνεψιῆς, Αὐτόθι, Σελίδι 1013.) „Βιβλίων τινῶν ἐκ τῶν Ἀνασασίᾳ, περὶ τῶν ὁρθῶν τῆς ἀληθείας Δογμάτων ἢ „Ἐπιγραφῇ, τὸν πολὺ ἐν τοῖς Θεοῖς Δόγμασι Θεόδωρον τὸν τῆς Ραϊθῆς Πρεσβύτερον ἔχει. Ἦν δὲ ὁ Θεόδωρος ἔτος, Μαξίμῳ τῷ Ὁμολογητῇ Σύγχρονος καὶ Σωτήρου, περὶ τὸ 646. ἔτος ἀκμάζων. Τῆτον δὲ, Φασὶν εἶναι τὸν καὶ τὴν γνησιότητα τῶν ἐπ' ὀνόματι Διονυσίου τῆς Ἀρεοπαγίτου Φερομένων Συγγραμμάτων ἀποδῆξαι ἐπιχειρήσαντα. (Ὁρα τὴν Φωτίου Μυριόβιβλον ἐν Κώδικι Α'.)

Ψύδεται ἄρα, ὁ τό: („ἐξ αὐτῆ ἐκπορεύομενον,“) περὶ τῆ Υἱῆ ἐκτιθέμενος. (254) Τῷτο γὰρ πρὸς αὐτὸν τὸν Θεὸν ἀνήγετο κατὰ τὸ προτεῦεν: („Πνεῦμα σώματος αὐτῆ, δηλονότι τῆ Θεῆ,“) ὅπερ ἐστὶν, ὅτι τῆ σώματος τῆ Θεῆ τὸ Πνεῦμα τὸ "Ἅγιον λέγεται. Στόμα γὰρ τῆ Θεῆ ἐστὶν ὁ Μονογενής. (255)

Ὁ δ' αὐτὸς ἡμῖν Συγγραφεὺς, τῇ Φωνῇ „της Πέμψεως,“, αὐτῷ ἐνταῦθα τῷ Ἐκπόρῳσιν ὑποδηλῶσαι διατίνεται: ὅποτε δὴ αὐτὸς Ἀνασάσιος, ἐφ' ᾧ δεῖξαι παρὰ Πατρὸς καὶ Υἱῆ τὸ Πνεῦμα τὸ "Ἅγιον πέμπεσθαι, ὑποσιωπάει: „Ὡς ὁ Κύριος φησὶν: ὁ Παράκλητος ὃν ὁ Πατὴρ πέμψει ὑμῖν,“. Καὶ πάλιν: „Ἐὰν δὲ ἀπέλθω, πέμψω τὸν Παράκλητον πρὸς ὑμᾶς,“. Ἐνθα δὴ πρὸς λόγος περὶ τῆς Πέμψεως τῆς ἐν χρόνῳ. Παραπλησίως δὲ ἄρα περὶ τῆς αὐτῆς μόνον ἐννοητέον, καὶ ἐν οἷς προειρήκει: ὃ μόνον παρὰ τῆ Πατρὸς, ἀλλὰ καὶ παρὰ τῆ Υἱῆ εἶναι τὸ "Ἅγιον Πνεῦμα ἀποσελλόμενον.

Ὁ δὲ προσέτι ἐκ τῶν Ἀνασάσις, τῆ τὸ μὲν Πνεῦμα εἶναι τῆ σώματος τῆ Θεῆ, τὸν δὲ Μονογενῆ τὸ σώμα εἶναι εἰρηκότος, ὁ Βελλαρμῖνος προτείνει, ῥᾶσα διαλύεται. φησὶ γὰρ, ὡς ἐνταῦθα „ἐκ ἀσαφῶς (Ἀνασάσις) ὑποσημαίνει, ὅτι τὸ Πνεῦμα τὸ "Ἅγιον „ἐκ τῆ Υἱῆ ἐκπορεύεται: ὅς ἐστὶν ὁ Θεῆ σώμα καλούμενος: καθὰ „περὶ καὶ τὸ Πνεῦμα τῆ σώματος ἡμῶν, ἐκ τῆ ἡμετέρης ἐκπνέται σώματος,“. Ὅπερ ἐστὶν: εἰ τῆ Θεῆ μὲν ὁ Υἱὸς σώμα, ἐκ δὲ τῆ ἡμετέρης σώματος ἐκπνέται ἡμῶν τὸ Πνεῦμα. ἄρα καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ "Ἅγιον ἐκπνέται πάντως ἐκ τῆ Υἱῆ. Ἀλλὰ γὰρ, ἕξαισι μὲν τὸ ἡμέτερον Πνεῦμα ἐκ τῆ σώματος ἡμῶν, ὃ μὲν τοιγε καὶ παράγεται ἐξ αὐτῆ, ὡς ἔδενι ἄδηλον. — Ἐρεῖς γε μὴ: εἰ σώμα

(254) Κιχάβιος ἐν Ζητήμ: Α'. Σελ: 16.

(255) Κωνσταντῖνος ὁ Μελιτινιάτης, (ἐν τῷ Β'. τῶν αὐτῆ περὶ τῆς Ἐκπορεύσεως Λόγων, Σελ: 874. Ἐπὶ τῆ ἀνωτέρῳ ἡμῖν ἀπομνημονοθέντος Β'. Τόχῃς τῆς κατ' Ἀλλάτιον Ὁρθοδόξ: Γραμμάτις: ὑπεραμιύνων τῆς Λατίνων δόξης, ἀνθυποφέρει ἑαυτῷ τῷ τῆ χωρὶς ἐννοίαν, τῷ ὁρθῶς ἔχουσιν τῇ διακρίσει τῆ κόμματος: ὡς καὶ πάλαι τὸ ὕφος ἀναγνωστικόν τε καὶ νοήμενον, καθάπερ αὐτοὶ φασὶν, ἐφ' ἑαυτοῖς: „Στίξαισι γὰρ (φησὶν) εἰδα τῶν ἐριστικῶν οἱ πλείους εἰς τὸ ἐκπορεύομενον καὶ ἔτιως ἀναγνώσονται τὸ λοιπόν: τὸ Πνεῦμα τὸ "Ἅγιον ἀποσέλλει οἷον καὶ μόνον, τῷ Υἱῷ ἡμετέρας τῆ Πατρὸς ἀπονέμοντες. Καὶ δὴ (προσέειπεν:) ἐλέγξει πάντως αὐτῆς „τὸ μετὰ τῆ τῆτο ρηθέν: ὅτι καὶ μὴ Κύριος ἐξ ἑαυτῆ δεικνύς αὐτὸ ὑπάρχειν, ἐμφυσῶν τοῖς Μαθηταῖς ἔλεγε: Λάβετε Πνεῦμα Ἅγιον,“. (Αὐτ: 875.) Ἐπιφέρει δ' ἐφεξῆς καὶ τὸ ὑπὸ τῆ Μεταφρασῆς εἰρημένον εἰς τὸ τῆ Διονυσίου τῆ Ἀρεοπαγίτου Μαρτύριον: ὅτι „καὶ τὸ ἐκπορεύομενον αὐτῆ Πνεῦμα ἐπὶ τῇ τῶν ἀπίστων Ἐθνῶν καταπέμψει τοῖς Μαθηταῖς ὁδηγία,“. Ἀλλ' ὃν καθ' ἡμῶν φησὶν ἐλεγχον ὁ Μελιτινιώτης Χαρτοφύλαξ, ἔλον ἑαυτῶ ἐπισύρεται, ὡς δὴλον, ἐκ τῆς αὐτῆς τῆς περὶ αὐτῆς εἰς ζήτησιν χωρὶς ἐκθέσεως, ὃ ἡμέτερος ὡς Ζοιρηνιάσιος ἴσῃσι καὶ ἐξ ὧν δ' ἐν ἄλλοις, τὸ ἐκ τῆ Υἱῆ εἶναι τὸ Πνεῦμα, καὶ ὑπ' αὐτῆ τοῖς Μαθηταῖς ἐμφυσήσονται, ὅπως εἰσὶν ὁρθῶς νοητέα, σαφῶς ἀπέδειξε. Περὶ δὲ τῆ Μεταφρασῆς μικρὸν κατωτέρω.

Τομ: Β'.

N νννν

ἐν σώμα τῷ Θεῷ ὁ Υἱός· ἐκ δὲ τῷ σώματος τῷ Θεῷ τὸ Ἅγιον ἐκπορεύεται Πνεῦμα. Ἐκ τῷ Υἱῷ ἄρα τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκπορεύεται. — Ἀλλὰ καὶ τότε τῷ ἐπιχείρημα, μετ' ἀρχαῖς τῆς ἐν χερσὶ Πραγματείας (256) τῆς προσηκύσης ἐτυχεν ἐπὶ λύσεως.

Τελούβιον ΒΕΛΛΑΡΜΙΝΟΣ (257) προβάλλει τὰ τῷ Ἀνασίσ ἐκεῖνα: „Ἐφ' ᾧ διδάξαι, ὅτι μία ἡ ἔσιν τῷ τε λαμβάνοντος, καὶ τῷ παρ' ἧ λαμβάνει, καὶ τῷ ἐξ ἧ φυσικῶς ἐκπορεύεται. (Καί γε προσέθωσιν:) „Ἐνθα, διὰ μὲν τῷ τῷ ἔσιν λαμβάνοντος, „ἐννοεῖ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα· διὰ δὲ τῷ ἐξ ἧ λαμβάνει, τὸν Υἱόν· „διὰ δὲ τῷ ἐξ ἧ ἐκπορεύεται, τὸν Πατέρα. Ὡς εἶγε τὸ Πνεῦμα (φησὶν) ἐκ τῷ Υἱῷ τῷ ἔσιν λαμβάνει, τί ποτ' ἄλλο ἐστίν, „ὅπερ αὐτοὶ ἀπαιτῶμεν; Οὐδὲ γὰρ περὶ τῆς Φωνῆς: (ἐκπορεύεται:) ἡμῖν τὸ ζητούμενον, ἐπειδὴν αὐτὸ τὸ πρᾶγμα ἐστὶ κατ' ὁδόν. — Ἀλλ' ἐκ τῷ Υἱῷ μὲν λαμβάνει τὸ Πνεῦμα, ἔλεγεν Ἀναστάσιος· ἔδωκε δ' ἔφησε καὶ τὸ ἐκ τῷ Υἱῷ λαμβάνει τῷ ἔσιν. Τίνι δ' ἄρα λόγῳ τὸ Πνεῦμα λέγεται λαμβάνει ἐκ τῷ Υἱῷ, ἐν ἰδιαιτέρᾳ Πραγματεῖα. (258) δεδεικται.

#### § ΚΔ.

Ἐκ τῶν Σοφῶν τῷ Ἀλεξανδρέως.

Ἐν τῷ τῶν Σύρων Τυπικῷ, ἀναγινώσκειται τὸ ΣΕΤΗΡΟΤ τῷ Ἀλεξανδρέως Σύμβολον μετὰ τῆς προσηκύσης, τῆς καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ Ἐκπορεύσεως τῷ Ἅγίῳ Πνεύματος. — Τάγε μὴ ἐκεῖ ἔτι ἀναγινωσκόμενα παρεφθάρθαι, ἐν τῇ περὶ τῶν Παραφθορῶν Πραγματεῖα, τῶν ἐν τοῖς τῶν Ἀνατολικῶν Πατέρων Συγγράμμασιν, ἔφθη προαποδειχθέν. (259)

#### § ΚΕ.

Ἐκ τῆς Β'. Σωόδου τῶν ἐν Νικαίᾳ.

Ἀντιφέρουσιν ἔτι, ὅτι καὶ ἐπὶ τῆς Ζ'. ΣΥΝΟΔΟΥ τῆς Οἰκουμένης ἀνεγνώθη τὸ Ἱερὸν Σύμβολον μετὰ τῆς Προσηκύσης. — Ἀλλ'

(256) Πραγματ: ΙΕ'. ἐν § Γ'.

(257) Ὅρα καὶ Πετρίον τὸν Ἰησοῦν, ἐκ τῆς δὲ τῆς τῷ Συναίτε ῥήσεως σοφιστῶντα, ἐν τῷ περὶ Τριᾶδος, Βιβλ: Ζ'. Κεφαλ: Ε'. Ἀριθμ: Β'. Σελ: 379.

(258) Ἐν Πραγματ: ΙΒ'. Ἀπαντ: Α. καὶ Β. καὶ Γ. καὶ Δ. καὶ Ε'.

(259) Ἐν Πραγματ: Β'. Παραφθ: ΙΕ'.



Ἀλλ' ὡς καὶ τὸτο κεκακέργηται παρὰ Λατίνων, ἐν τῇ προῤῥη-  
θείῃ Πραγματείᾳ (260) προαποδέδεικται.

## § Κς'.

Ἐκ τῶν Ἰωάννη τῷ Δαμασκῷ.

Ἀντεπάγυσιν ἐκ τῆς ἸΩΑΝΝΟΥ τῷ Δαμασκῷ Ἱστορίας τῶν  
κατὰ Βαρλαάμ καὶ Ἰωσαφάτ: „Ἐν γίνωσκε Πνεῦμα Ἅγιον,  
„ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱῷ ἐκπορεύομενον„. — Ἀλλ' ἐπὶ τῆς αὐτῆς  
Πραγματείας (261) ἐδείχθη, ὅτι καὶ ταῦτα ἐρραδιέργηται.

Ἀντιπροτείνουσιν ἔτι, ἐκ τῷ Α'. Βιβλ: τῶν περὶ τῆς Ὁρθοδ:  
Πίς: Κεφ: ΙΗ'. (262) „Τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον μέσον τῷ ἀγεν-  
„νήτῳ καὶ τῷ γεννητῷ καὶ δι' Υἱῷ τῷ Πατρὶ σωμαπτόμενον„. —  
Ἀλλ' ὅτῳ ποτὲ λόγῳ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῷ Πατρὸς διὰ τῷ  
Υἱῷ ἐκπορεύεσθαι λέγεται, τῷ αὐτῷ παραπλησίως, καὶ διὰ τῷ  
Υἱῷ τῷ Πατρὶ σωμαπτεσθαι θεολογεῖται. Ἀμέλειτοι: καθὼς ἔχει  
πρὸς τῷ Υἱῷ, ἀλλὰ τῷ Υἱῷ ἐκ τῷ Πατρὸς γεννωμένῳ ἐκπορεύεται  
τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον περὶ ὃ ἀνωτέρω (263) εἰς πλάτος διεί-  
ληπται. Καὶ γὰρ κατὰ τὴν τῷ Δαμασκῷ Ἰωάννη Θεολογίαν,  
„σωσεφέπεται τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ὅτως ἐν τῷ Α'.  
τῶν περὶ τῆς Ὁρθοδ: Πίς: Φάσκοντος: (264) „Διώαμις γὰρ  
„ἐστὶ τὸ Πνεῦμα, ὅτε χωριθῶναι τῷ Θεῷ ἐν ᾧ ἐστὶ, καὶ τῷ Λό-  
„γῳ, ᾧ συμπαρομαρτεῖ, δωμαμένη„. Ὡσαύτως ἔν παλιν, διὰ  
τὴν αὐτὴν τάξιν, καθ' ἣν τὸ Ἅγιον Πνεῦμα συμπαρομαρτεῖ μὲν  
τῷ Υἱῷ, ἔχει ἡγήται δὲ, διὰ τῷ Υἱῷ τῷ Πατρὶ σωῆσθαι ἡδιώατο  
λέγεσθαι. ὡς μηδὲν ἐπάνανγκες εἶναι, αὐτὸ μέσον εἰρησθαι, διὰ  
τὴν αὐτὴν ἐκ τῷ Υἱῷ Ἐκπόρυσιν.

Ἀντιφέρει δ' ἕντις (265), ὡς ταῦτὸ τὸτο ὁ Δαμασκῷδὸς  
ὑποφαίνει, καὶ πειδάν ἐν τῷ Α'. τῶν περὶ τῆς Πίσεως, Κεφ: ΙΑ'.  
(266) διδάσκει „τὰ Θεῖα Πρόσωπα διακρίνεσθαι κατὰ τε τὸ αἰ-  
„τιον καὶ τὸ αἰτιατόν„. Καὶ ἐν οἷς, ἐν τῷ κατὰ Μενιχαίων  
Λόγῳ (267). Καὶ ἐν Λόγῳ Γ'. περὶ τῶν Εἰκόνων: (268) „Τὰ  
„Θεῖα

(260) Πραγματ: Β'. Παραφθορᾷ Α'.

(261) Ἐν Παραφθορᾷ τῶν ἐκεί ΙΖ'.

(262) Κατὰ τὴν Λεκυίν: Ἐκδοσ: Ἀριθμ: Κεφ: ΙΓ'. ἐν τῷ Α'. Τόμ: Σελ: 151.

(263) Ἐν Πραγμ: ΙΕ'. § Α'.

(264) Κατὰ τὴν Λεκυίν: Ἐκδοσ: Βιβλ: Α'. Κεφ: Ζ'. Τόμ: Α'. Σελ: 130.

(265) Κιχάβ: Ζητήμ: Δ'. Σελ: 40.

(266) Παρὰ Λεκυίνω Κεφαλ: Η'. Σελ: 140.

(267) Καὶ ἐν Σελ. 432 Ἡ δὲ ἐκ τῷ Γ' Λόγῳ τῷ περὶ Εἰκόνων, Σελ: 355.

(268) Παρὰ Λεκυίνω Τόμ: Α'. ἡ μὲν ἐκ τῷ Διαλόγῳ τῷ κατὰ Μανιχ: ῥήσις.



„Θεῶν ῥόδα παραικάει τῇ Ῥοδονιᾷ καὶ τῷ ἄνθρ, καὶ τῆς ἀφ'  
 „ἐκατέρω ἐνωδίας τῇ ἡδύτητι... Καὶ ὅτε Βιβλ: Α'. περὶ Πίσε-  
 ως Κεφ: Ζ. (269) φησὶν: „Ὅτι ἐκ ἔσιν ἐνσεβῆς, ἀλλότριόν τι  
 „ἐξωθεν ἐπεισερχόμενον τῷ Λόγῳ λογίζεσθαι τὸ Πνεῦμα,“ (ὡς  
 ἂν ἐπείσερχοιτο δηλονότι, εἰ μὴ ἐξ αὐτῆς ἐκπορεύοιτο:.) „Καὶ  
 „ὅτε (φησὶν Αὐτόθι), ὡς ἐκ ἐνέλειψε ποτὲ τῷ Πατρὶ Λόγος,  
 „ἐδὲ τῷ Λόγῳ Πνεῦμα... Καὶ ὅτε, ἐπὶ τῇ αὐτῇ Βιβλ: Κεφαλ:  
 ΙΗ'. (270) φησὶ: „Δὲ Τίς τῷ Πατρὶ σωμαπτόμενον... Καὶ ὅτε  
 Βιβλ: Α'. περὶ Πίς: Κεφαλ: Θ'. (271) Καὶ ἐν τῷ Λόγῳ τῷ  
 εἰς τὴν Γέννησιν τῆς Μακαρίας Παρθένου: (272) „Καὶ ἐν τῷ  
 „Ῥυμῳ τῷ εἰς τὴν Πεντηκοστὴν ἐνθα τὸν Τίον ἀποκαλεῖ, μόνον  
 „ἐκ μόνου, ὅπως ὑμνωδῶν:

„Ἀναξ ἀνάκτων, οἷος ἐξ οἷου μόνος

„Λόγος προελθὼν Πατρὸς ἐξ ἀνάκτις.

„Ὅπως ὁ Τίος καλεῖται, φησὶν, „Ἀναξ ἀνάκτων, καὶ μόνος ἐκ  
 „μόνου τῇ ὅπερ ἐκ ἂν ἀληθεύον εἴη, εἰ καὶ τὸ Πνεῦμα ἐκ  
 „μόνου ὡς ἐκπορεύομενον τῷ Πατρὶ: ὁ γὰρ ὁ Τίος ἂν ἔχοι λέ-  
 „γεσθαι μόνος τῶν Βασιλέων Βασιλεὺς ἐπεδὴ καὶ τὸ Πνεῦμα  
 „Βασιλεὺς τῶν Βασιλέων ἐστίν, ὡς διωάμει καὶ κυριότητι ἴσον  
 „Πατρί τε καὶ Υἱῷ καὶ ἔχ οἷον τε ἄλλω ἀποδῆναι τοῖς ῥήμασι  
 „τῆτοις ἐννοίαν παρὰ ταύτῃ: ὅτι ὁ Τίος τῶν ἀνάκτων Ἀναξ  
 „ἐστίν, μόνος ἐκ μόνου τῷ Πατρὶ προῖων...“

Ἀλλ' ὁ δὲ Α'. ἀφορᾷ τὰ ἐκ τῇ Α'. Βιβλ: τῶν περὶ Πίς:  
 Κεφ: ΙΑ'. ἐν οἷς τὰ Πρόσωπα διακρίνεσθαι διδάσκει κατὰ γὰρ τὸ  
 Αἷτιον καὶ τὸ Αἷτιατόν περὶ τῆς διεληλυθότες ἡδὴ ἐσμὲν, ἐν τῇ  
 περὶ τῶν Μαρτυριῶν τῶν ἐκ τῶν Ἀνατολικῶν Πατέρων Πραγ-  
 ματεῖα, περὶ τὰ ΓΡΗΓΟΡΙΟΥ τῷ Νύσσης ῥήματα. (273) Ἐπὶ  
 δὲ καὶ τῶν αὐτῶν, ὧν ὁ ἐκ Δαμασκῆ Ἰωάννης εἰρηκῶς ὡς  
 ἐδείκνυμεν, ὡς ἡ τῆς Προτάσεως ἐννοία εἴη: τὸν μὲν Πατέρα  
 εἶναι τὴν Αἷτίαν τὸν δὲ Υἱόν, τὸν ἐκ τῆς Αἷτίας γεννητόν τὸ  
 δὲ Πνεῦμα, τὸ ἐκ τῆς Αἷτίας ἐκπορεύτόν.

Ἐν οἷς δὲ Β'. τὰ Θεῶν ῥόδα Δαμασκηνῶς τῇ Ῥοδονιᾷ, καὶ τῷ  
 ἄνθρ, καὶ τῇ ἡδύτητι τῆς ἐξ ἐκατέρων ἀποφερομένης ὁδοῦ πα-  
 ραικάει, ἐδὲν ἂν ἐξ αὐτῶν ἕτερον σιμαχθεῖη, ἢ ὅτι τὸ Πνεῦμα  
 ἐκατέρω, καὶ τῷ Πατρὶ δὴλ: καὶ τῷ Υἱῷ, Πνεῦμα ἐστίν: ὅτι  
 δὲ καὶ ἐκ τῇ Υἱῷ, ἢ ὅτι ἐξ ἀμφοῖν αὐτὸ ἐκπορεύεται.

Ψδδδδ

(269) Αὐτόθι, Σελίδι 131.

(270) Αὐτ: Κεφαλ: ΙΓ'. Σελ: 151.

(271) Αὐτ: Κεφαλ: Η'.

(272) Παρὰ τῷ Λεκυίνῳ, ἐν Τόμ: Β'. Σελ: 848. „Μονογενὴς δὲ (φησὶν) ὅτι μόνος ἐκ  
 „τῷ Πατρὶ μόνως ἐγενήθη...“

(273) Ἐν Πραγματ: Α'. Ἐκατοντάτ: Δ'.

Ψυδὲς δὲ Γ'. καὶ τὸ ἔξωθεν τῷ Λόγῳ ἐπισέρχεσθαι ἂν τὸ Πνεῦμα, εἰμὴ καὶ ἐξ αὐτῶ ἐκπορεύοιτο· ἢ τῷτο δέδεικται, (274) περὶ τὰ παραπλήσια τέτοις τῷ ἈΘΑΝΑΣΙΟΥ καὶ τῷ ΚΤΡΙΛΛΟΥ ρήματα.

Δ'. Ὅπως δὲ καὶ τὸ μηδέποτε τῷ Λόγῳ ἐλλείψαι τὸ Πνεῦμα, πίσις οἷα τις τῷτο εἰς καλῶς κινῶν γένοιτο τῆς τῷ Ἀγίῳ Πνεύματος καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ Ἐκπορεύσεως; Τῷ γὰρ ὄντι τῷ Θεῷ καὶ Πατρὶς πρὸ παντὸς αἰῶνος τὸν Υἱὸν ἅμα καὶ τὸ Πνεῦμα προβαλλομένῃ, πῶς ἔκ ἂν ἔχοι τὸ Πνεῦμα μηδαμῶς ἀπὸ τῷ Υἱῷ ἀπείναι, εἰ μὴ αὐτὸ καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ ἐκπορεύοιτο; Ἐπὶ τῷ αὐτῷ δὲ προσέτι τέτῃ προτεινομένη χωρίῳ, ἔκιν διὰ τὴν Αἰτίαν, ἀλλ' ἵνα ὁ Δαμασκῖος δείξῃ, ὡς ἔδέποτε τὸ Πνεῦμα τῷ εἶναι ἤρξατο „ἔδέποτ', ἔφη, ἐνέλειψε τῷ Πατρὶ Λόγος, ἔτε τῷ Λόγῳ Πνεῦμα,,. Ὡς γὰρ ὡς προτεταχώς: „Οὕτω καὶ Πνεῦμα . . . διώκῃν „ἐσιώδῃ αὐτῷ ἐαυτῆς ἐν ἰδίᾳ ὑποστάσει θεωρημένῳ . . . μήτε „ἀρχῇ ἔχσαν, μήτε τέλος· ἔ γὰρ ἐνέλειψε ποτὲ τῷ Πατρὶ „Λόγος,, κτ: Περὶ δὲ ἐκείνων ἐν οἷς ὁ Δαμασκῖος φησὶ, τὸ Πνεῦμα διὰ τῷ Υἱῷ σωάπτεσθαι τῷ Πατρὶ, καὶ δὴ εἴρηται.

Ἐπὶ τέτοις δὲ, καὶ τῷ Α'. τῶν περὶ Πίς: Βιβλ: Κεφ: Θ'. ἔχ ἀπλῶς ἔφη ὁ Δαμασκῖος, ὅτι („ὁ Υἱὸς μόνος ἐκ μόνῃ,,) Ἀλλ' ὅτι ὁ Μονογενὴς δὲ (Υἱὸς) μόνος ἐκ τῷ Πατρὶ μόνως ἐγεννήθη. (275) Ἡ γὰρ ἔκ ἀτόπως ἄρα ὁ Ἰησοῦς ἡμῖν ἀντιπροτείνει, τὸ ἐκ τῷ Πατρὶ μόνῃ, μόνον τε καὶ μόνως τὸν Υἱὸν γεννᾶσθαι, ἵν' ἐντεῦθεν σωάψῃ μηδαμῶς τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ μόνῃ τῷ Πατρὶ ἐκπορεύεσθαι; Κατὰ τὴν αὐτῇ δ' ἐν διάνοιαν καὶ τῷ Λόγῳ τῷ εἰς τὴν Γέννησιν τῆς Μακαριωτάτης Παρθένῃ, καὶ ἐν τῷ εἰς τὴν Πεντηκостὴν Ὑμνῷ „οἷον ἐξ οἷς ἀποκαλεῖ τὸν Υἱὸν, ὡς μόνον ἐκ μόνῃ τῷ Πατρὶ αὐτὸν γεννηθέντα, τῶν λοιπῶν ἀπάντων, ὅσοι ποτὲ Υἱοὶ ὀνομάζεσθαι ἔλαχον, μηδέποτε ἐκ μόνῃ Πατρὶς γεννωμένων. Πῶς τοίνυν ἔκ ἂν ἀληθὲς εἴη λέγειν κατὰ

(274) Ἐν τῇ παρέσθαι Πραγμ: ΙΕ'. § Δ'. καὶ § Ε'.

(275) Καλὸν δὲ καὶ τὰ ἐπὶ τοῖς εἰρημένοις, (Κεφαλ: Η'. τῷ Α'. περὶ Πίς: κατὰ τὴν Λεκυίνῃ Ἐκδοσ: Σελ: 135.) προσιδέμενα ἐφεξῆς ὑπὸ τῷ Θεῷ Δαμασκῖῳ, ἐνταυθὶ παραθέσθαι: „Οὐδὲ γὰρ ὁμοῖται (φησὶν) ἑτέρα γέννησις τῇ τῷ Υἱῷ τῷ Θεῷ „γεννήσῃ· ἔδὲ γὰρ ἔστιν ἄλλος Υἱὸς τῷ Θεῷ· εἰ γὰρ καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκ „τῷ Πατρὶ ἐκπορεύεται, ἀλλ' ἔκ γεννητῶς, ἀλλ' ἐκπορεύτῳς. Ἄλλος τρόπος ὑπάρχει „ἔξωθεν ἔτος ἀκατάληπτός τε καὶ ἀγνώστος, ὥστε καὶ ἡ τῷ Υἱῷ γέννησις,,. Πάντα μὲν ἂν τὰ προσεπαγόμενα ταῦτα: ὅτι μόνος τε καὶ μόνως ἐγεννήθη: — ὅτι ἔχ ὁμοῖται τῇ τῷ Υἱῷ γεννήσῃ ἑτέρα γέννησις: — ὅτι ἔκ ἑστὶν ἄλλος τῷ Θεῷ Υἱός, εἰ μὴ εἷς — ὅτι, καὶ εἰ τὸ Πνεῦμα ἐκ τῷ Πατρὶ καὶ αὐτὸ, ὁμῶς ἔκ ἐκ τῷ Πατρὶ γεννητῶς, ἀλλ' ἐκπορεύτῳς: — ὅτι ἕτερος τρόπος ἔτος ὑπάρχει, ἀντιδιατελλόμενος τῆς τῷ Υἱῷ καὶ Λόγῳ γέννησεως. — Πάντα, φησὶ, ταῦτα τηλαυγῶς τοῖς ὀφθαλμοῖς σωέσεως ἔχουσιν, ὡς ἐπεξηγήσεις ἐπιφέρονται, τῷ τὸν Μονογενῆ „Λόγον, μόνον τε καὶ μόνως ἐκ τῷ Πατρὶ γεννηθῆναι λέγεσθαι,,.

Τόμ: Β'.

Ξ ξξξξ

κατὰ τὴν δὲ τὴν ἔννοιαν, τὸν Υἱὸν εἶναι μόνον ἐκ μόνου, εἴπερ τὸ Πνεῦμα ἐκ μόνου ὑπάρχοι ἐκπορευόμενον τῷ Πατρὶ; ἢ γὰρ γεννάται δηλονότι ἐκ τῷ Πατρὶ μόνου τὸ Πνεῦμα, ἀλλ' ἐκπορεύεται.

Ἀλλ' ὁ Ἰησοῦς ἐνίσταται: „Οὐ γὰρ ὁ Υἱὸς, φησὶ, διώκεται „μόνος λέγεσθαι Ἄναξ ἀνάκτων· καὶ γὰρ καὶ τὸ Πνεῦμα τῶν „ἀνάκτων Ἄναξ ἐστίν. Τῷτο μὲν ἔν πανάληθες. Τί δ' ἄρα τὸ „ἐκ τέττα; ἔχ' οἷον τε ἄρ' (ὑποσώπται) ἔννοιαν ἄλλω τέτοις „τοῖς ῥήμασιν ἀποδῆναι, παρὰ ταύτῃ, „: ὅτι ὁ Υἱὸς ὁ Ἄναξ τῶν ἀνάκτων ἐστίν, ὁ μόνος ἐκ μόνου τῷ Πατρὶ προῖών. Καὶ τίς ἡ σκέπεια; ἢ ἔχι γὰρ ἐτι ὁρθῶς ἂν λέγοιτο (καὶ τῷ Πνεύματος ὄντος Ἄνακτος τῶν ἀνάκτων), ὁ Υἱὸς ἀνάκτων Ἄναξ μόνος ἐκ μόνου κατὰ τὸν νῦν τόνδε: ὅτι ὁ τῷ Θεῷ Υἱὸς μόνος, ἔδειξεν δὲ παρ' αὐτὸν ἄλλος, γεννηθεὶς ἐπὶ Ἄναξ ἀνάκτων ἐκ μόνου τῷ Πατρὶ; Ψεῦδες ἄρα τὸ μὴ ἂν ἄλλω ἔχεν τέτοις ἀποδοθῆναι τοῖς ῥήμασι τὴν διάνοιαν, παρ' ἡμῖν ὁ Ἰησοῦς πρεβάλετο.

## § ΚΖ'.

Ἐκ τῆς Σωόδου ἐν ἣ καθίσταται Φώτιος.

Ἀντιφέρει δὲ προσέτι ὁ αὐτὸς Ἰησοῦς: (276) „Ὁμοίως (Φάσκειν) ἐν τῇ Η'. Σωόδῳ, ἐν ἣ Ἰγνάτιος ἀποκαλέσῃ ἐπὶ τῷ Θρόνῳ „Κωνσταντινουπόλεως, τὸ Σύμβολον ἀνεγνώσθη ἐν τοῖς δε τοῖς ῥήμασι: Πισθῶ εἰς τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον τὸ ἐκ τῷ Πατρὶ καὶ „τῷ Υἱῷ ἐκπορευόμενον. Τέττα δὲ, ἔδ' αὐτὸς Φώτιος, ὁ τῆς ἐν „Ρώμῃ Ἐκκλησίας πολέμιος, ἐπελάβετο, ἔδ' ἀπεδοκίμασεν, ὡς „ἐν τῇ Φλωρεντινῇ ἀποδεδεικται Σωόδῳ, καθάπερ ἐκδοθεῖσα „φέρεται ἐν τοῖς Τόμοις τῶν Σωοδικῶν, „.

Ψεῦδες πάντα! ὅς γὰρ ἂν τῆς Η'. ταύτης Σωόδου ἀνελίξῃ τὰ Πρακτικὰ, εἴσεται δὴ μὴδ' ἀναγνωθῆναι ὅλως ἐν αὐτῇ τὸ παράπαν τὸ ἐν Κωνσταντινουπόλει Σύμβολον· τοσούτῃ γε δεῖ τῷ ἀναγνωθῆναι αὐτὸ μετὰ τῆς προθήκης τῆς „καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ“. Ὡσαύτως καὶ τῶν Πρακτικῶν τῆς ἐν Φλωρεντίᾳ Σωόδου, τῶν τε Ἑλλήνων καὶ τῶν Λατίνων ἐκδοθέντων ἀναγνωσκομένων, ἔδειξεν δὲ τὰ παρὰ, ἢ λέγεται, ἀπαντὰ τῷ ἐκείνῳ ἀποδειχθέντος, ὡς ἄρ' ἔτις ἀνεγνώσθη δῆθεν μετὰ τῆς προθήκης τὸ Σύμβολον, ἐπὶ τῆς Η'. Σωόδου ἐκείνης, ἐφ' ἧς καθίσταται Φώτιος.

§ ΚΗ'.

(276) Κιχώσιος ἐν Ζητήμ: Β'. Σελ: 24.

## § ΚΗ'.

Ἐκ τῆς Συμεωνος τῆς Μεταφρασεως.

Ἐπὶ πᾶσι δὲ προβάλλονται τελευταῖον ἐκ τῆς Γ'. Ἐκατονταετη-  
ρίδος (277) καὶ ΣΥΜΕΩΝΑ τὸν Μεταφρασιῶν λέγοντα: „Εἰς  
ἡβρανῆς ὁ ἐμὸς Χριστὸς ἀναφέρεται, καὶ πρὸς τὸν Πατρικὸν ἐπά-  
ναισι Θρόνον· καὶ τὸ ἐκπορεύομενον αὐτῷ Πνεῦμα ἐπὶ τῇ τῶν  
ἡπίσιων Ἑθνῶν καταπέμπει τοῖς Μαθηταῖς ὁδηγία·. Ταῦτα  
μὲν ἐκ τῆς Μεταφρασεως ἐλήφθη· τὰ τῆς Ἀρεοπαγίτης Διονυσίου  
βιογραφῶντος, ἡ δὲ Βιογραφία αὐτῇ τοῖς τῆς Διονυσίου Συγγράμ-  
μασι σωκεκδόταί, Σελίδι 323. Ἀλλ' ἐν τῷ Ἑλληνικῷ ὕφει ἔ-  
κείται τὸ (ἐκπορεύομενον ἐξ αὐτῷ Πνεῦμα:) μόνον δὲ τὸ (ἐκ-  
πορεύομενον αὐτῷ Πνεῦμα.) (278) Ἐνθα ἡ Ἀντωνυμία („αὐ-  
τῷ,) προῖκα σωτάσεται τῇ Φωνῇ („ἐκπορεύομενον,) ἐνὸν αὐ-  
τῷ σωκεκλάβεσθαι τῷ ὀνόματι (Πνεῦμα) ὡς εἶναι τὸν νῦν, ὅτι  
τὸ αὐτῷ τῷ Ἰῷ Πνεῦμα, ὅπερ ἴδιον ἔχει τὸ ἐκπορεύεσθαι ἐκ  
τῷ Πατρός. Ὡς τε τέταρτος γε ἄχρι μηδὲν καρπῶσαι Λατίνων παῖ-  
δας προτείνοντας: ὅτι παρ' Ἑλλήσι τό: („ἐκπορεύομενον αὐτῷ,) ἴσα

(277) Οὐκ οἶδ' εἰς ἕτερος τῶν πάποτε χρονολογηθέντων, εἰς τσαύτας τε καὶ τοτέτα  
διαφερέσας τῆς χρονολογήσαντας διέστησεν ὑπολήψεις, ὡς Συμεών ἔτος ὁ ἐπικλη-  
θεὶς ἐκ τῶν Μεταφράσεων. Τῆτον ἀπὸ τῆς Γ' Ἐκατονταετηρὶς ἀρχομένης, φησὶ  
Καθεὸς, Τόμ. Β'. τῆς Ἰσορ: τῶν Ἐκκλησιῶν Συγγραφῶν: Σελ: 88.) ἐς γ' ἐπὶ τῇ  
ἸΔ' ἄλλοτε ἄλλοι διέταξαν μεταφέροντες. Καὶ Ἀλλάτιος μὲν, ἐν τε τῇ περὶ τῶν  
Συγγραμμάτων τῶν Συμεωνίων, καὶ τῇ περὶ τῶν Ψαλλῶν, ἐν ἀμφοτέροις ταῖς  
Διατριβαῖς, τὸν ἀκριβῆ χρόνον, καὶ ἐν ὁ Μεταφρασεως ἐβίβη εὐρέσαι ὑπέληψε,  
περὶ τῇ Γ'. ἀρχομένῳ Ἐκατοστῷ τῶν ἀπὸ Χριστοῦ ἐνιαυτῶν, ἀκμάσαι διδάξας· ἀπὸ  
λέοντος τῆς Σοφῆς Αὐτοκράτορος, ἐς γ' ἐπὶ τὸν Ἰὶν Κωνσταντῖνον, καὶ Ῥωμανόν  
τὸν ἐκγονόν ἡς δὴ δόξης, καὶ Καθεὸς προέστη καὶ ἐδὲ ἀπέστη Φαβρίκιος Ἀλβερτος  
(Ἑλλῆν: Βιβλίου: Τόμ. Β'. Σελ: 297) Βλονδέλλος δὲ, (ἐν τοῖς περὶ τῆς τῶν  
Φράγκων Γενεαλ:) καὶ Στέφανος Μωύνιος, (ἐν τοῖς εἰς τὰ Πακίλια Ἰερὰ αὐτῷ  
Σημειώμασι, Τόμ. Β'. ἐπὶ τὸν ΙΒ'. κατὰ γὰρ τῶν Αἰώνων λήγοντα· οἷς περ καὶ  
Γενεβέρδος, καὶ Σιμλέρδος, ἀριθμητοὶ εἰσίν. Ὁ δὲ Βολατεράνος, καὶ ἐπὶ τὸ 1300.  
μᾶλλον διαμαρτῶν κατῴεγκε. Τὰ δὲ μέγιστα σφαλόμενος, (ἢ τῷ ρηθέντι Καθεῷ  
λέλεκται) Κασιμίρος Ὀσδίνος, ἐς τ' ἐπὶ τὸ 1330. κατέγραψε. Κασιμίρος μὲν τοῖ  
γε δειμύτερον ὑπὸ τῷ Καθεῷ ἀπελεγχθεὶς, καὶ τῇ διαμαρτίαν ἐπιγνὼς, τῇ τε  
δόξῃ ἀπετάξατο ἡ πρότερον εἶχε, καὶ δούτερας φροντίσι τὸ πρᾶγμα ἀνεξετά-  
σας, ἐν ὁλοκλήρῳ τῇ Διατριβῇ, διεξοδικῶς ὑπ' αὐτῷ φιλοπονηθείση, ἥτις ἐμφέρε-  
ται ἐν τῷ Β' Τόμῳ: τῶν αὐτῷ Ὑπομνημῶν: Στήλη 1300 — 1383.) τὰ περὶ τῆς Με-  
ταφρασεως Συμεωνίων ἐπιμελέστερον φιλοκρινήσας, ἀκμάζοντα τῆτον κατὰ τὸ 1150. ἦτοι  
ἐπὶ τῶν Αὐτοκρατῶν: Ἰωάννης τε καὶ Μαννὴλ τῶν Κομνηνῶν, κατέστησεν· ἐξ ἀμοιβῆς  
τῆς ἄλλης αὐτῆς ἐλέγξας, καὶ πρὸ τῶν ἄλλων, (ὡς τῷ πτερῷ ἐλόντα τὸν τέτ-  
τιγα· Καθεὸν αὐτὸν σὺν Ἀλλάτιῳ τῷ τέτῳ Ἠγήτορι.

(278) Καὶ αὐτὸς γὰρ Βένκος ὁ ἐν τῇ Α'. τῶν Ἐπιγραφῶν, Σελ: 530. τῷ Β', Τόμῳ  
τῆς κατ' Ἀλλάτιον Ὁρθόδοξον Γραμμάτικας) τὸ ρητὸν τῆτον, ὡς ὑπὲρ τῆς Λατινικῆς  
Δόγματος προχειρισάμενος, (ὡς καὶ προσίθισιν ἐντισι Βιβλίῳ τὸν Ἀναστάσιον,  
ἀντὶ τῆς Συμεωνος, ἀναγινώσκουσα) ἔτως ἀνευ τῆς Προθέσεως ἀναφέρει τῷ ρη-  
σιν: „τὸ ἐκπορεύομενον αὐτῷ Πνεῦμα, φάσκων, ἔχει τὸ ἐξ αὐτῷ. Ὡσαύτως δὲ  
καὶ Κωνσταντῖνος ὁ Μελιτινιώτης (ἐν τῷ Β'. τῶν περὶ τῆς Ἐκπορεύσεως: αὐτῷ Λό-  
γων, αὐτόθι, Σελ: 875.) „Καὶ τὸ ἐκπορεύομενον αὐτῷ Πνεῦμα·.



ἴσα διώαται τῷ: („ἐκπορεύομενον ἐξ αὐτῆς,“) Ἀλλ' ἔσω δὴ: καὶ τὸ („αὐτῆς,“) σωτῆτάχθω· ἔδ' ἔτω γεμῶ τὸ („αὐτῆς,“) ἐκληφθήσεται περὶ τῆς Υἱῆς, ἐνὸν δὴπερ περὶ τῆς („Πατρικῆς Θρόνου,“) ἔπερ ὁ Μεταφρασῆς ἀρτίως ἐμμένητο, διερμηνεύθῃ: ὡς εἶναι τὴν διάνοιαν τῆς εἰρημένης τοιάνδε: „Ὅτι „ἐπὶ τὸν Πατρικὸν ὁ Υἱὸς ἐπάνεισι Θρόνον, καὶ τὸ ἐξ αὐτῆς (τῆς „Πατρικῆς νόειμοι Θρόνου“) ἐκπορεύομενον Πνεῦμα, καταπέμψῃ „τοῖς Μιθῆταις,“. Ἐπὶ δὲ δὴ τέτοις πρόθεσι καὶ κείνο: ὅτι, ἀπὸ τῆς Θ'. ἡδὴ ληγῆσης Ἐκατοντάδος τῶν Σωτηρίων ἐνιαυτῶν, καὶ καθεξῆς αἰῶν, ἡ μόνον πισθύνοντες οἱ Ἀνατολικοὶ διετέλουν, ἐκ μόνου τῆς Πατρὸς ἐκπορεύεσθαι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ἀλλὰ καὶ τοῖς Λατίνοις ἐπετίμων τὴνναντίον πρεσβύουσιν· ὡς ἐν τῇ Πραγματείᾳ τῇ περὶ τῶν Μαρτυριῶν τῶν Ἀνατολικῶν Πατέρων, περὶ τῇ Θ'. καὶ τῇ Γ'. τῶν Ἐκατονταετηρίδων σαφῶς ἀποδέδεικται. Καὶ ἔδὲ λείπεται τις τὸ παράπαν ἀμφιβολία, τῆς μὴ ἐπὶ τῆς Μεταφράσεως περιόντος τῷ βίῳ, τῇ Ἀνατολικῇ Ἐκκλησίᾳ κοινῇ γενέσθαι φρονῶσαν καὶ δογματίζουσαν, ἐκ τῆς Πατρὸς μόνου ἐκπορεύομενον τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον.

Κορωνίδος δὲ δίκῃ, ἵνα δὴ τό γε κατόπιν ἡμῶν ἐπαγγελθὲν ἐκπληρωθῇ, ἐπισημεύμεθα: ὅτι περὶ τὰ ΜΑΞΙΜΟΥ τῆς Μάρτυρος, εἰς τὸ Δ'. τῆς Ζαχαρίας Κεφάλαιον: (279). („Τὸ γὰρ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ὡςπερ φύσει κατ' ἐσῆαν ὑπάρχει τῆς Θεᾶς καὶ „Πατρὸς, ἔτω καὶ τῆς Υἱῆς κατ' ἐσῆαν ἐσὶν· ὡς ἐκ τῆς Πατρὸς „ἐσιωδῶς, δι' Υἱῆς γεννηθέντος, ἀφράδως ἐκπορεύομενον,“) ἔσιν ὅς ἔτωσι συλλογίζεται: (280) „Ἐπισητέον ἐνταῦθα Α'. παρὰ „τὰ τῆς Θεᾶς Μάρτυρος ῥήματα, δι' ὧν σαφῶς ὁμολογεῖ, ὅτι „τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῆς Πατρὸς διὰ τῆς Υἱῆς ἐκπορεύεται „καὶ αὐτὸν αὐτῆς τὸν Συλλογισμόν, ὡς λίαν ἐπὶ τὸ προκείμενον σωτελεῖν. Προσεπισημεύεται γὰρ ἐν τέτοις ὁ Θεὸς Πατὴρ τὸν λόγον, καθ' ὃν τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ἔτω κατ' ἐσῆαν „ἐσὶ τῆς Υἱῆς, ὡς ἐσὶ τῆς Πατρὸς· ὅτι δηλ.: ἐκ Πατρὸς δι' Υἱῆς „ὑπάρχει ἐκπορεύομενον. Ἐπισητέον δὲ Β'. ἀποκλείεσθαι ὡδε „τὰ Φωτιανῶν καταφύγια. Ἐπειδὴ γὰρ λέγεται ἐσιωδῶς διὰ „τῆς Υἱῆς ἐκπορεύεσθαι, καὶ διὰ τῆτο εἶναι φύσει (ἢ χάριτι, ἔδ' „εὐποιῆς, ἔδ' εὐδοκίας) κατ' ἐσῆαν τῆς Υἱῆς, ὡς ἐσὶ τῆς Πατρὸς· ἔχ „οἶον τε ἀναπτύσσεται (τὸ λεγόμενον) ἀνδρὶ κακοδοξίας ἐπιδόλῃς, „διὰ τῆς ἐπὶ τὰ ἐκτὸς ἐνεργήσεως. Ἐπειδὴ δὲ λέγεται, καὶ ὅτι „ἐκπορεύεται,“ ἔκ ἔσιν εἰπεῖν ὅτι ἡ ΔΙΑ' ὡδε, σημαίνει τῇ ΣΥΝ. „Εἴη

(279) Ἡ δὲ μαρτυρία αὕτη προβάλλεται ὡς κατ' ἡμῶν, καὶ ὑπὸ τῆς Βέκκε, ἐν τῇ Α' τῶν Ἐπιγραφῶν· Σελίδι 537.

(280) Κιχάβιος Ζητήμ: 5. Σελ: 60.



„Εἴη γὰρ ἂν ὁ νῆς, ὅτι τὸ Ἁγίον Πνεῦμα σὺ τῷ Υἱῷ πνεῖται,  
 „ἢ πρόεισιν ἐκπορεύτῳ· ὁ ψεῦδος ἐστὶ, διὰ τὸ ἔτῳ προσιδιάζειν  
 „τῷ Ἐκπορεύσιν τῷ Πνεύματι τῷ Ἁγίῳ, ὥσπερ τῷ Υἱῷ προσι-  
 „διάζει ἢ γέννησις.

Ἀλλὰ πρῶτον μὲν, ὡς ἔδεν Λατίνοις συμβάλλεται τὸ ὑπὸ  
 τῶν Πατέρων διδασκόμενον, ὅτι τὸ Ἁγίον Πνεῦμα ἐκ Πατρὸς  
 δι' Υἱῶ ἐκπορεύεται, κατ' ἀρχὰς τῆς ἐν χερσὶ Πραγματείας (281)  
 σωήκαμεν· ὅτι δὲ τὸ Πνεῦμα, τῷ Υἱῷ γεννηθέντος, ἐκ τῷ Πα-  
 τρὸς αὐτῷ ἐκπορεύεται, ἐπ' ἀνάγκης ἐστὶ κατὰ τὸ ἐπόμενον, καὶ τῷ  
 Πατρὸς καὶ τῷ Υἱῷ αὐτὸ Πνεῦμα πεφυκέναι ὡσαύτως· ὥς μὴδ'  
 ἐντεῦθεν ἔπειτα πάντως κατὰ τὴν αὐτῷ ἀνάγκην καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ  
 ἐκπορεύεται τὸ Πνεῦμα, παρὰ τὸ ἴδιον εἶναι Πνεῦμα καὶ Πατρὸς  
 καὶ Υἱῶ ἐπίσης τὸ αὐτό· περὶ ὃ δὴ καὶ τέτα, ἐν ἰδιατέρᾳ Πραγ-  
 ματεῖᾳ διείληπται. (282) Ἐπειδὴν δὲ ὁ Θεὸς φησὶ Μάξιμος ἐκ  
 τῷ Πατρὸς ἑσιωδῶς, δι' Υἱῶ γεννηθέντος, τὸ Πνεῦμα ἀφράτως  
 ἐκπορεύεται, ἐνέργειαν δὴπερ ἐννοῶν ἐστὶ τὴν πρὸς τὰ ἐντός· ἀλλ'  
 ἢπερ εἶρηται, ἐνθα ἐδείκνυτο ἀνωτέρῳ, καθ' ὃν ἂν ποτε ἐννοίαν,  
 τὸ Πνεῦμα λέγοιτο ἐκπορεύεται ἐκ τῷ Πατρὸς διὰ τῷ Υἱῷ. Ἐν  
 ὃ δὲ τέως, τῷ Πνεύματος ἐκ Πατρὸς δι' Υἱῶ ἐκπορεύεται λεγο-  
 μέν, ὁ νῆς ὥδε ἀποδίδεται: Ὅτι τὸ Ἁγ: Πνεῦμα ἐκ Πατρὸς  
 ἐκπορεύεται σὺ τῷ Υἱῷ, νοεῖται κατὰ τῷ πάντως, ὅτι τὸ  
 Πνεῦμα παρὰ τῷ Πατρὸς σὺ τῷ Υἱῷ γεννηθέντι ἐστὶν ἐκπορεύο-  
 μένον. Πῶς ἔν ἐντεῦθεν ἂν ἔποιτο, καὶ τὸν Υἱὸν μὴ γεννᾶται,  
 ἀλλὰ καὶ αὐτὸν ἐκπορεύεται;

Ἀλλὰ περὶ ὧν Λατίνοι ἐκ τῶν Ἀνατολικῶν Πατέρων ἡμῶν  
 ἀντιπροτείνουσιν, ἄλλως.

(281) Πραγματ: ΙΕ'. § Α'.

(282) Πραγματ: ΙΔ'.

## ΠΡΑΓΜΑΤΕΙΑ Ι΄.

Ἐν ἣ δέκνυται, εἰδὲ τὰ λοιπὰ Λατίνων Ἐπιχειρήματα οἷα τε εἶναι συμπεραίνειν τῷ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ Ἐκπορεύσιν.

Παρά τὰς ἑκ τε τῆς Ἱερᾶς Γραφῆς, καὶ τὰς ἐκ τῶν Πατέρων μαρτυρίας, ποικίλα ἐτι ἀντιπροβάλλοντα Λατῖνοι Ἐπιχειρήματα, ἅπερ ἡμῖν ἐπιλυθησόμενα λείπεται. Ἀλλὰ πρὸ πάντων, ὅπως περὶ τῶν τοιούτων Ἐπιχειρημάτων ὑποληπθέν, καὶ ἐκείθεν γένοιτο φανερόν, ἐξ ὧν ΠΕΤΡΟΣ ἈΛΛΙΑΚΟΣ (1), Λατῖνος Ἄνθρωπος, διαβρόχῳ ὁμολογεῖ, μηδὲν ὅ,τι καὶ σωτελεῖν συμπεραίνειν τῶς τοιούτοις δὲ τῶν λόγων, ὅς ἡμῖν οἱ ἐκ τῆς αὐτῆς μερίδος εἶσιν ἀντιπροβάλλουνοι. Οὕτω γὰρ αὐτὸς ἐν τῷ Α΄ Βιβλίῳ: τῶν Ἀποφάνσεων, Διακρίσεις ΙΑ΄. Ζητήμη: Η΄. „Τὸ Ἅγιον Πνεῦμα φύσει „ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱῆς, φησὶν, ἐκπορεύεται· καὶ εἰς μὲν οἱ τότε τὸ „Συμπεράσμα λόγοις ἀποδείξαι σπαστάζοντες· ἐγὼ δ' ἀπλῶς, μὴ „ἐξόν εἶναι φημι λογισμοῖς αὐτὸ συμπεραίνεσθαι, τῶς δὲ λόγους, „ὅσους ἂν αὐτοὶ περὶ τούτων προβάλλοιτο, πάντως ἔχουν ἐνυμαρῶς „ἐπιλύεσθαι, „. Τί ἔν τις ἄρα ἐλπίζειν ἐρρωμένον, ἐκ τῶν τηλικούτων Ἐπιχειρημάτων ἀκῆσαι, ἅτλα καὶ αὐτοὶ Λατίνων οἱ πρόκριτοι ἐκσυρίτθαι; Ἀλλ' ἴδωμεν τούτων ἀνὰ μέρος ἕκαστα.

### Α΄. ἘΠΙΧΕΪΡΗΜΑ ΤΩΝ ΛΑΤΙΝΩΝ.

Ὅπερ ἐκ τῷ ΘΩΜᾶ ἀρχηγεῖντος παραλαβόντες κράτισον ἔχουσι, τότε ἐξί: „Τὰ ἐπὶ τῆς Θεότητος Πρόσωπα, διὰ μόνων „τῶν Ἀντιθέτων Σχέσεων ἀπ' ἀλλήλων διακρίνεται, „. Ἀλλ' ἐν ἂν ὁ Υἱὸς καὶ τὸ Πνεῦμα διακρίνοιτο κατὰ χέσιν ἀντίθετον ἀπ' ἀλλήλων, εἰ μὴ ἀρχὴ ὁ Υἱὸς εἴη τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι. Ἀλλὰ καὶ αὐτό γε τέτοιο τὸ τῷ Ἀκωάτῃ Θωμᾷ Ἐπιχείρημα, παρ

(1) Οὗτος ἐν τοῖς Διδασκάλοις τῆς Λατινικῆς Ἐκκλησίας, ἐπὶ τῷ ΙΔ΄ Αἰῶνι διακρίσθαι πᾶσι ἰσότηται.

παρ' ἄλλων πάλιν Λατίνων ἀποσυρίττεται. Ἐλέγχεται μὲν γὰρ ὑπὸ τῆς ΣΚΟΤΟΥ, ἐν τῷ Α'. Βιβλ: τῶν Ἀποφάνσ: Διαίρεσαι ΙΑ'. Περὶ δὲ τῶν λοιπῶν ἔτις ΙΩΑ'ΝΝΗΣ οὗ De Rada ἐν Μέρ: Α'. τῶν Διαφορῶν τῶν μεταξὺ Θωμᾶ τε καὶ Σκότῃ, ἐν Διαφ: ΙΕ'. Ἀρθρῳ Β'. „Τὴν δὲ δόξαν, (τὴν τῆς Σκότῃ δηλ: κατὰ τῆς Θωμᾶ) πρεσβύει Ἐρρίκος ἐν Κροδλιβέτω Ε'. καὶ Αὐρέλιος, καθάπερ ἀναφέρει ὁ Καπρέολος ἐν τῷ ἀνωτέρῳ ἀπομνημονοθέντι χωρίῳ καὶ Διονύσιος ὁ Καρθουσιανὸς, ἐν τῇ Α'. Διαίρεσαι τῆς ΙΑ'. Ζητήμ: τῆς Μοναδικῆς. Καὶ Ὁχαμος δὲ Γαβριήλ, ἐπὶ τῆς αὐτῆς Διαίρεσεως, καὶ Γρηγόριος, καὶ σύμπας ὁ τῶν τῆς Σκότῃ Μαθητῶν θίασος. Ψυδὲς γὰρ ἀμέλει τοι, τὸ ἐξ ἀνάγκης τὴν κατὰ τὸ αἴτιον, καὶ τὸ αἰτιατὸν διαφορὰν, ἐγχαρῆν χρῆσθαι μέσον. Τίς καὶ Ἁγίῃ Πνεύματος, ἵνα δὴ καὶ Προσωπικῶς ὁ Υἱὸς τῆς Ἁγίας Πνεύματος διακρίνηται, ὡς ἐφεξῆς δείξομεν. Καλὸν ἔν αὐτῇ τῇ ΘΩΜΑ' πρῶτον ἀκῆσαι, τὸ δεῖξαι ἀναλαμβάνοντος. Ἐν Βιβλ: Α'. Ζητήμ: Δς'. Ἀρθρ: Β'. „Ὅπερ ἐκ τέττα ἐκδηλον: „Ὅτι ὁ Πατὴρ δις διὰς Σχέσεις ἔχων ἐστίν, ὧν ἡ μὲν τὴν ἀναφορὰν ἐστὶν ἔχουσα πρὸς τὸν Υἱόν, ἡ δὲ πρὸς τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. αἱ τινες ἀλλ' ἔν, ὡς μὴ ἀντίθετοι εἶναι, καὶ σωσιῶσι Πρόσωπα δύο, ἀλλ' ἐνὶ καὶ μόνῳ Προσώπῳ, τῷ τῆς Πατρὸς, ἐπανήκυσιν. Εἰ μὴ ἄρα, ἐν τῷ Υἱῷ καὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι εὐρεῖν ὑπῆρχε, πλὴν ἡ δύο σχέσεις, δι' ὧν ἂν ἕκαστος ἀναφείροιτο πρὸς τὸν Πατέρα· αἱ τοιαύδε σχέσεις εἴη ἂν εἶεν πρὸς ἀλλήλας ἀντίθετοι· ὥστε εἴη δις διὰς ἐκείναι, αἷς ὁ Πατὴρ πρὸς αὐτὰς ἀναφέρεται. Ὅθεν, ὥστε τὸ τῆς Πατρὸς Πρόσωπον ἔν ἐστίν, ἔτις ἂν ἔποιτο καὶ τὸ τῆς Υἱῆς, καὶ τὸ τῆς Πνεύματος, ἀμφω τὰ Πρόσωπα ἐν εἶναι μόνον, δις διὰς ἔχον σχέσεις, δις διὰς ἀντιθέτως σχέσεσιν. „

### Ἀ Π Α Ν Τ Η Σ Ι Σ Α'.

Ἐστὶ μὲν ἔν ὁμολογον, τὰς τῆς Πατρὸς, αἷς πρὸς τὸν Υἱόν καὶ τὸ Πνεῦμα ἀναφέρεται, Σχέσεις, δις διὰ μὲν μηδαμῶς, ἐν δὲ καὶ μόνον σωσιῶν Πρόσωπον, (τό γε τῆς Πατρὸς) τὸ δὲ, καὶ ἀπλῶς γίνεται, παρὰ τὸ μὴ ἀντιθέτως ἀλλήλας εἶναι τὰς σχέσεις τὰς τῆς Πατρὸς (2) ἀλλ' ὅτι ἔτις εἰσὶν καὶ ἀντίθετοι, ὥστε

(2) Τὰς πρὸς τὸν Υἱόν καὶ τὸ Πνεῦμα τῆς Θεῆς καὶ Πατρὸς σχέσεις, δίδωσι Ζοιρνικάκιος ἀντιθέτως μηδαμῶς εἶναι, μηδ' ἀλλήλων ἀνταναιρετικές. Καὶ ἡπερ τὸ διδόμενον ἀληθές, ὑποθέμενος τῆς, ὅπερ ἐστὶ τὸν Υἱόν καὶ τὸ Πνεῦμα, τὰς δις διὰ τῶν σχέσεων εἶναι, καθ' ὑπόθεσιν ἀντιδιαφεύδαι, καὶ ἀπ' ἀλλήλων διακρίνεσθαι. Ἀλλ' εἰ γὰρ ἡ κατὰ τὸν Θωμᾶν ὑπόθεσις πρὸς βραχὺ χώραν λάβοι· καθ' ἑαυτὴν, ἅς ἐκ τῶν τῆς Πατρὸς φηθεσῶν σχέσεων, τῆς τε γεννητικῆς καὶ τῆς ἐκπορευτικῆς, καὶ τὰ Πρόσωπα

ὥς αἱ ἀλλήλας μὴ ἀνταναιρῶν, ἔχεν δὲ εἰς ἓν καὶ ταυτὸν Πρόσωπον σωαλείφεσθαι. Εἰ γάρ τινες χέσεις, καὶ μὴ ἀντικείμενα, ἀλλήλας ὁμῶς ἀνταναιρῶσαι εἰσὶν, εἰς ἓν αὐταὶ καὶ τὸ αὐτὸ ἐκ ἂν ποτε σωέλθοιεν Πρόσωπον. Ἡ γὰρ κατὰ φασιν καὶ ἀπόφασιν τῶ αὐτῷ, καὶ κατὰ λόγον τὸν αὐτὸν, ἐκ ἂν χώραν λάβοι ὅλως ἐπ' ἑδενί. Κατ' ἑδέναν λόγον ἄρα ὁ Θωμᾶς εἶχεν ἀπὸ τῶν ἐν τῷ Πατρὶ χέσεων, ἐπὶ τὰς τῶ Τίθ καὶ τῶ Πνεύματος χέσεις ἐπιχειρεῖν. Ἐκείναι μὲν γὰρ, ἐκ ἀντίθετοι, ἐδ' ἀλλήλας ἀνταναιρῶσαι εἰσὶν (3) αὐταὶ δὲ αἱ χέσεις, ἐκ ἀντίθετοι μὲν, ἀλλήλων δὲ ἔμπης εἰσὶν ἀναιρετικά, ἥπερ ἐν τοῖς ἐξῆς δηλωθήσεται. Ὡς ἔγχε, ὑποβιβάς ἀπλῶς ὁ Θωμᾶς ἔφασκε: „Διὰ δὴ τῆτο τὰς ἐν τῷ Πατρὶ χέσεις Πρόσωπον ἐν σωισμῶν, ὅτι ἀντίθετοι ἐκ εἰσὶν, ἐντεῦθεν ἐπαγαγεῖν ἐβόλετο συλλογισμὸς ὥδε: Αἱ τῶ Πατρὸς χέσεις ἐκ εἰσὶν ἀντίθετοι. Αἱ τῶ Πατρὸς χέσεις Πρόσωπον σωισμῶν ἐν. Αἱ ἄρα χέσεις αἱ μὴ ἀντίθετοι Πρόσωπον σωισμῶν ἐν, „ Τίς ἔστω ὁ τὸν Θωμᾶν ἔγω πάριεν τῷ κατὰ τὴν σωπέσαν καλεσμένῳ Σοφίσματι; Ἐπὶ γὰρ τῶ Γ'. τῶν Συλλογιστικῶν Σχημάτων, τὸ ἐπὶ μέρους μόνον διώκειτ' ἂν συμπεραίνεσθαι. Οὕτως: „Ἄρα τινὲς τῶν Σχέσεων, αἱ μὴ ἔσαι ἀντίθετοι, Πρόσωπον σωισμῶν ἐν, „ Καὶ ἡπερ φανε-

σωίζεται διασά, μένει δὲ ἐν τοῖς δὲ λόγῳ, καὶ ἀντικείμενα αἱ Σχέσεις ἔσονται καὶ ἀλλήλας ἀμοιβαδὸν ἀναιρέεσθαι, ἐκ πάσης ἀνάγκης. Πάντως γὰρ, ἡ τῶ Πατρὸς κατ' ἐνέργειαν γέννησις, κατ' ἰὺ ἐστὶ Πατὴρ καὶ ἡ τῶ αὐτῷ κατ' ἐνέργειαν Ἐκπόρευσις, κατ' ἰὺ ἐστὶ Προβολή. ἢ πρὸς ἄλλο τι ἢ ἄλλο Πρόσωπον ἀναφύεσθαι, ἢ ἀντιθέτω ἐστὶν ἀλλήλων, ἢ ἀναιρέεσθαι ἑκάτερόν γε μὴ ἔχον, ὑποβιβαμένης πρὸς ἐν τι καὶ τὸ αὐτὸ περατῶσαι τὸ γὰρ τὸν αὐτὸν τῶ αὐτῷ Πρόσωπον, καὶ Πατέρα εἶναι, καὶ ἄλλως πῶς Προβολή αὖς τῶ Πνεύματος, τῶ Τίθ καὶ ἡ Προβολή εἶναι, καὶ ἅμα Πατέρα, τῶ Τίθ καὶ Προβολή ἐδὲ λόγῳ ἀποδεικνύον, ὅτε διαιρία ληπτὸν, διὰ τὴν ἀπαντῶσαν ἀντίφασιν. Τὸ μὲν γὰρ, κατὰ τὴν Γέννησιν εἶη, ἢ κατὰ τὴν ἑτερότροπον προβολήν, ἢτοι τὴν Ἐκπόρευσιν τὸ δὲ κατὰ τὴν προβολήν ταύτην τὴν κατὰ τὸν ἑτερόν τρόπον, ἢ κατὰ τὴν Γέννησιν. Ἐνθεντοὶ καὶ ὁ αὐτὸς τῶ αὐτῷ, κατ' ἑνὴ καὶ τὸν αὐτὸν ἀπλῆστατον λόγον, τῆς ἐν τῷ εἶναι προαγωγῆς ἄλλης τινός καὶ Πατὴρ ἂν εἶη, καὶ μὴ καὶ πάλιν Προβλεὺς ἂν εἶη καὶ μὴ καὶ ἡ αὐτὴ Γέννησις τε, καὶ μὴ καὶ Ἐκπόρευσις, καὶ μὴ ἔω γὰρ τὰς ἐκ τῶν ὁρῶν αὐθιγὰς τῶν εἰρημίων χέσεων, ἐφευρόμενας ἂν παραπλησίως ἄλλας ἀντιφάσεις. ἔτι καὶ τὸ αὐτὸ Πρόσωπον Τίς ἂν εἶη καὶ ἔχῃ Τίς, ἄτε δὴ γέννημα, καὶ ἔχῃ γέννημα ὁ αὐτὸς τῶ αὐτῷ καὶ τὸ Πνεῦμα, καὶ Πνεῦμα ὁμοίως ἄτε δὴ ἐκπόρευμα καὶ ἐκ ἐκπόρευμα. Τίποτε ἂν ἀλογώτερόν τις φθάνειτο κραυπαλῶν καὶ κωδωνισμῶν; Ἡν ἄρα τῷ Θωμᾶ ἐπιεικῶς νήφοντι, ἐπειδὴ τὰς διασὰς ἐπὶ τῶ Θεῷ καὶ Πατρὸς χέσεις ὑπέθετο ἀληθεῖς καὶ πραγματιώδεις, σωιδεῖν αὐτίκα, ὅτι κατὰ τὸ αὐτὸ ἅμα, καὶ τὰς δύο ὑποστάσεις Τίθ, καὶ Πνεύματος ἀντιδιαφελλόμενας ἀλλήλων Προσωπικῶς σωυπέθετο μηδὲ δεῖσαι αὐτὰ ἄλλω προσβιάζεσθαι παρεισαγαγεῖν ἐν ταύταις, τὴν μεταξὺ αἰτίαν τε καὶ αἰτιατῆ, εἰς τὴν τέτων ὑποστατικῶν ἀπ' ἀλλήλων διασολῶ καὶ διάκρισιν.

(3) Καθ' ὑπόθεσιν μένον τὴν πρὸς ἄλλο καὶ ἄλλο. Καὶ ἐν ᾧ ἄρα τὴν ἀντιθέσιν τε καὶ ἀνταναιρέσιν ὁ Θωμᾶς ἐκκλείει ἀπὸ τῶν ἐν τῷ Πατρὶ χέσεων, ἀναγκάζεται προὔποτιθέναι τὴν διασολὴν τῶν ὑποστάσεων Τίθ τε καὶ Πνεύματος ἰὺ σοφισμῶν ἑπεὶ τα ἐξ αὐτῶν ἐκείνων παρενενοηκὰς ἀπλῶς ἔλατο.

Φανερόν ὡς ἀφ' ἐνὸς τῆ ἐν τῷ Πατρὶ ὑποδείγματος, ἐκ ᾧ κα-  
 „θόλῃ σωαγαγεῖν, τὸ τὰς μηδαμῶς ἀντικειμένας τῶν χέσεων,  
 „ἔντι καὶ μόνον, ἐχλὶ δὲ δύο σωιστῶν Πρόσωπα,,.

Ἄ Π Α Ν Τ Η Σ Ι Σ Β'.

Ἀλλὰ γὰρ καὶ ἀτόπως ἐπιχειρεῖν τὸν Θωμᾶν ἀπὸ τῶν ἐν τῷ  
 Πατρὶ χέσεων, δι' ὧν πρὸς τὸν Υἱὸν καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον  
 ἀναφέρεται, ἐπὶ τὰς χέσεις τὰς τῆ Υἱᾶ καὶ τῆ Πνέματος, αἷς  
 πρὸς τὸν Πατέρα ἀνάγονται, κἀντεῦθεν δῆλον ἔστιν. Ἡ μὲν  
 γὰρ τῆ Υἱᾶ χέσις, ἥ πρὸς τὸν Πατέρα τῶ ἀναφορὰν ἔχει, ἐστὶ  
 τὸ εἶναι γεννητόν· ἡ δὲ τῆ Πνέματος, τὸ εἶναι ἐκπορεύτόν.  
 Ἀλλὰ γὰρ τὸ ἐκπορεύεσθαι τὸ Πνεῦμα ἐκ ἑσὶ γεννᾶσθαι· καθά-  
 περ αὐτό τε τὸ καθολικὸν τῆς Ἐκκλησίας Δόγμα πρεσβεῖ, καὶ  
 αὐτοὶ Λατῖνοι σωμολογῶσιν. Εἰ γὰρ ἐγεννᾶτο τὸ Πνεῦμα, ᾧ  
 αὐ καὶ αὐτὸ Υἱὸς, ὅπερ ἀδιώατον· Υἱὸν ἕνα τε καὶ μόνον ἡμῶν  
 πισυόντων, δύο δ' ἐχλὶ. Ἐνθεν τοι ἸΟΥΣΤΙΝΟΣ ὁ Μάρτυς ἐν  
 τῇ Ἐκθέσει τῆς Πίς: Σελ: 380. (4) „Τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον  
 „φῶς μὲν ἐκ φωτὸς καὶ αὐτὸ, ἐμὴν γεννητῶς, ἀλλ' ἐκπορεύτῶς  
 „προῆλθε,,. Καὶ ἈΘΑΝΑΣΙΟΣ ἐν τῷ Γ'. Διαλόγῳ κατὰ Μα-  
 κεδονίῃς: (5) „Ὁ μὲν Υἱὸς ἐκ τῆς ἑσὶας γεγέννηται, καὶ διὰ  
 „τῆτο Μονογενῆς Υἱός· τὸ δὲ Πνεῦμα ἐκ τῆς ἑσὶας ἐκπορεύεται·  
 „Πνεῦμα γὰρ παρ' ἐμῆ ἐκπορεύεται, γεγραπτα· ἐ γεγέννηται·  
 „καὶ ὁ Υἱὸς λέγει: τὸ Πνεῦμα τῆς ἀληθείας, ὃ παρὰ τῆ Πατρὸς  
 „ἐκπορεύεται, ἐ γεγέννηται,,. Καὶ ΕΦΡΑΪΜ δὲ ὁ Σύρος ἐν  
 τῷ Λόγῳ τῷ περὶ τῆς Ἐξομολογήσεως: „Τὸ δὲ Ἅγιον Πνεῦμα  
 „μὴ γεννηθὲν προῆλθεν ἐκ τῆς ἑσὶας τῆ Πατρὸς,,. Πάλιν:  
 „Θελήσαντα τὸν Πατέρα καὶ ἄλλον κοινωνὸν προβαλεῖν, ἐχ' ὃν  
 „ἔτεκεν· ἀλλὰ Πνεῦμα Ἅγιον ἐκ τῆς ἑσὶας αὐτῆ σιωῆσῃσε,,.  
 Καὶ ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ ὁ Θεολόγος, Λόγ: ΛΘ'. „Πνεῦμα Ἅγιον ἀλη-  
 „θῶς τὸ Πνεῦμα· προϊὼν μὲν ἐκ τῆ Πατρὸς, ἐχ' Υἱκῶς δέ:  
 „ἐδὲ γὰρ γεννητῶς, ἀλλ' ἐκπορεύτῶς,,. Καὶ Λόγῳ δὲ ΛΖ'. „Τὸ  
 „Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ὃ παρὰ τῆ Πατρὸς ἐκπορεύεται· ὃ, καθ'  
 „ὅσον μὲν ἐκείθεν ἐκπορεύεται, ἐ κτίσμα· καθ' ὅσον δὲ ἐ γεν-  
 „νητόν, ἐχ' Υἱός,,. Καὶ Λόγ: ΙΑ'. „Εἰ γὰρ μὴ, φητὶν, ὡς Υἱὸν  
 „ἐκ τῆ Πατρὸς,,. Καὶ ΕΠΙΦΑΝΙΟΣ δὲ Αἰρέσις: Ος'. „Οὕτω  
 „καὶ ἐπὶ τῆ Ἁγίῃ Πνέματος, διὰ τὸ ἐκ τῆ Πατρὸς ἐξελεῖν·  
 „εἰ καὶ ἐ γεγέννηται διὰ τῆ Υἱᾶ Μονογενές,,. Καὶ ΚΑΙΣΑΡΕΙΟΣ  
 ἐν

(4) Ἐν Σελ: 398. παρ' ἐμοί, κατὰ τὴν Γραικο-Λατίν: Ἐκδόσιν Ἰερωνύμου τῆ Κομμελίνῃς,  
 τῶ ἐν ἔτει 1693.  
 (5) Ἐν Τόμ: Β'. Σελ: 213. τῆς κατὰ Λεκυῖνον Ἐκδόσεως.  
 Τόμ: Β'. Π π π π π



ἐν τῷ Α'. Διαλόγω: „Τὸ δὲ Θεὸν καὶ Πανάγιον Πνεῦμα, ὃ γεν-  
 „νητὸν μὲν, ἐκπορεύον δέ,,. Καὶ ἈΜΦΙΛΟΨΙΟΣ ἐν τοῖς Ἀπο-  
 σπάσμασι: „Καὶ τὴν Ἐκπορεύσιν ὃ φημι γεννησιν,,. Καὶ ὁ  
 ΧΡΥΣΟΣΤΟΜΟΣ ἐν τῇ Ὀμιλ: τῇ περὶ τῆς Ἀγίας Πνεύματος:  
 „Τὶ ἐστὶν ἐκπορεύεται; ὃ ἐπεὶ γεννᾶται· ὃ γὰρ ὃ γέγραπται, ὃ  
 „δεῖ φρονεῖν,,. Καὶ ΑΥΓΟΥΣΤΙΝΟΣ Βιβλ: Β'. περὶ Τριάδος:  
 „Επειδὴ δὲ καὶ ὁ Υἱὸς ἐκ τῆς Πατρὸς ἐστὶ, καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ  
 „Ἅγιον ἐκ τῆς Πατρὸς ἐκπορεύεται; τίνος χάριν ἐκ ἀμφοῦ Υἱοῦ  
 „λέγονται; ὃδ' ἀμφοῦ γεννητοί; Ἀλλ' ἐκένος μὲν ὁ εἰς Μονογε-  
 „νης, τὸτο δὲ Πνεῦμα καὶ ὃς Υἱὸς, ὃδὲ γεννητός; εἰ γὰρ γεν-  
 „νητός, πάντως καὶ Υἱός. Ἀλλὰ καὶ ὡς Θεὸς διδῶ, καὶ ὡς ἂν διδῶ,  
 „διαλεξόμεθα,,. Ἀδελφὰ δὲ τέτοις ἔχει καὶ τῷ Βιβλ: τῷ πε-  
 ρὶ τῆς Πίς: καὶ τῆς Συμβόλης. Καὶ ἐν τῷ Γ'. Βιβλ: κατὰ Μα-  
 ξιμίν, Κεφαλ: ΙΕ'. Καὶ ΚΤΡΙΛΛΟΣ δέ, ἢ εἰς ἄλλος ὁ Συγ-  
 γραφεὺς ἐστὶ τῆς περὶ Τριάδος Βιβλ: Κεφ: Ι'. „Ἐν Πνεύμα Ἀγ:  
 „τὸ Πνεῦμα· προῖον μὲν ἐκ τῆς Πατρὸς, ὃς Υἱὸς δέ, ἀλλ' ἐκ-  
 „πορεύτως,,. Καὶ ἐν Κεφαλ: Η'. „Εἰ γὰρ καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ  
 „Ἅγιον ἐκ τῆς Πατρὸς ἐκπορεύεται, ἀλλ' ἐκπορεύτως,,. Καὶ πά-  
 λιν: „Μόνον τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκπορεύτον ἐκ τῆς ἐσίας τῆς  
 „Πατρὸς, ὃ γέννῶμενον, ἀλλ' ἐκπορεύόμενον,,. Καὶ ἐν Κεφαλ:  
 Θ'. „Τὸ δὲ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, καὶ αὐτὸ μὲν ἐκ τῆς Πατρὸς, ἀλλ'  
 „ὃ γεννητῶς, ἀλλ' ἐκπορεύτως,,. Καὶ ΦΟΥΛΓΕΝΤΙΟΣ δέ, ἐν  
 τῷ περὶ Πίς: Βιβλ: πρὸς Πέτρον, Κεφαλ: Α'. „Ἐτερον ἐστὶ τὸ  
 „γεννῆσαι παρὰ τὸ γεννηθῆναι· ἕτερον δὲ τὸ ἐκπορεύεσθαι, παρὰ  
 „τὸ γεννῆσαι, ἢ γεννηθῆναι,,. Ἀ δὲ ἐν τῷ Ι'. τῶν περὶ Τριά-  
 δος Κύριλλος εἶχεν, ἐπαναλαμβάνει καὶ ἸΩΑΝΝΗΣ ὁ ΔΑΜΑΣ-  
 ΚΗΝΟΣ τὰ αὐτὰ ἐν Βιβλ: Α'. περὶ Ὁρθοδ: Πίς: Κεφ: ΙΑ'. (6)  
 καὶ ὧν δὲ ἐκ τῆς Η'. Κεφ: τῆς αὐτῆς Βιβλ: περὶ Τριάδος: ἀπεμ-  
 νημονόσαμεν ὁδοῦτερον, ἔχει καὶ ὁ Δαμασκηνὸς ἐν Κεφ: Θ'. (7)  
 ὁ δ' αὐτὸς καὶ τῷ Η'. Κεφαλ: (8) „Τὸ δὲ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον  
 „ἐκ

(6) Ἐν τῷ Α'. Βιβλ: περὶ Ὁρθοδ: Πίς: Κεφαλ: ΙΑ'. ὅθεν τοιοῦτον ἀναγινώσκεται κατὰ  
 τὴν Λεκυίναν Ἐκδόσιν.

(7) Ὡσαύτως ἐν τῷ Θ'. Κεφαλ: περὶ τῆς προκειμένης ὁδῆς, ἐπὶ τῆς εἰρημένης τῆς Λε-  
 κυίνης Ἐκδόσεως.

(8) Σημείωσαι, τίς δὲ τὴν χρεῖσιν ἀναγινώσκειται, ἐν τῇ μετὰ τὸ ΙΒ'. Κεφαλ: Προδη-  
 κη ἢς Ἐπιγραφῇ: „Ἐπὶ περὶ Θεῶν Ὀνομάτων ἀκριβέστερον,,. Ἐν τῇ κατὰ Λε-  
 κυίναν Ἐκδόσει, Σελ: 148. Ἐνθα καὶ μικρὸν ἢ ῥῆσις παρήλλακται ὅτως ἐκφερομένη:  
 „Τὸ δὲ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκφαντορικῇ τῇ κρυφίᾳ τῆς Θεότητος διώκει· τῆς Πα-  
 τρός· ἐκ Πατρὸς μὲν δι' Υἱὸς ἐκπορεύομένη, ὡς οἶδεν αὐτὸς, ὃ γεννητῶς,,. Ἡ δὲ τοι-  
 ῆς προδηκῆς πολεῖ μὲν ἀπερὶ Κωδίκων, ἐν ἄλλοις δὲ ἄλλοις ἐμφέρεται: πῇ  
 μὲν, μετὰ τὸ Θ' Κεφαλ: τῆς Δ'. Βιβλ: πῇ δὲ μετὰ τὸ Β'. Κεφαλ: τῆς Β'. Πῇ  
 δὲ καὶ μετὰ πᾶν τὸ περὶ τῆς Ὁρθοδ: Πίσεως Σύγγραμμα, οἷα τις ἐπιθήκης μολοῖται  
 ἀκροτελεύτιος. Καὶ περὶ αὐτῆς διαμφοισθητῆντες ἐγένοντο, εἰ γνησία. Παρὰ δὲ τῷ  
 Λεκυίνῳ, ἐν Σελ: 146. τῆς Α'. Τόμ: τῶν τῆς Δαμασκηνῆς Σύγγραμ: αὐτῶν τῷ ἐκ  
 Δα-

ἢ Πατὴρ δι' Υἱὸν ἐκπορεύομενον, ὡς οἶδεν αὐτὸς, ἢ γεννητῶς... Παραπλήσια δ' ἔχει καὶ τῇ Ἐπισολῇ τῇ περὶ τῆς Τρισαγίας καὶ ἐν τῷ Α'. Βιβλ: τῶν περὶ τῆς Ὁρθοδ: Πίς: Κεφαλ: Γ'. (9) Τελούταϊον δὲ καὶ ΝΙΚΗΦΟΡΟΣ ὁ Κωνσταντινουπόλεως Πατριάρχης, ἐν τῇ πρὸ Λέοντα τὸν Γ'. Ἐπισ: „Τὸ δὲ Πνεῦμα Ἅγιον ἢ Πατὴρ τῶν Ὑπαρξιν ἔχον, ἢ γεννητῶς μὲν ἀλλ' ἐκπορεύτῳς... Τὸ ἄρα ἐκπορεύεσθαι ἢ ἐν γεννᾷσθαι καὶ ἔτι καὶ ἢ τῆς Υἱὸς γεννησις ἀπλήτης ἐστὶν Ἐκπόρευσις.

Ἦδη μὲν ἐν τῶν ἀδιωμάτων ἐστὶ, τὸ αὐτὸ Πρόσωπον ἐξ ἐνός τε καὶ τῆς αὐτῆς Προσώπου γεννᾷσθαι τε καὶ μὴ γεννᾷσθαι, ἢ ἐκπορεύεσθαι ἢ μὴ ἐκπορεύεσθαι; ὥστε τὸ γεννᾷσθαι καὶ μὴ γεννᾷσθαι, τό, τε ἐκπορεύεσθαι καὶ μὴ ἐκπορεύεσθαι, ἐξ ἐνός γε καὶ τῆς αὐτῆς περὶ δυοῖν ἐξ ἀνάγκης Προσώπων λέγοιτο ἂν καὶ ἢ κατὰ πάθησιν, ἔτι καὶ ἄρα λεγομένη, γεννησις ἢ τῆς Υἱὸς, ἢ τε τῆς Ἁγίας Πνεύματος Ἐκπόρευσις, ἐξ ἐνός γε καὶ τῆς αὐτῆς Πατρός, εἰς ἢ καὶ τὸ αὐτὸ Πρόσωπον ἑδόλως διώανται σιωδραμεῖν, ἅτε δὴ ἀλλήλας ἀνταναιρῆσαι, καθάπερ εἴρηται. Ἀλλὰ γὰρ τῷ παντὶ διαφέρουσιν αἱ χέσεις, αἷς πρὸς τὸν Υἱὸν καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ὁ Πατὴρ ἔχων ἐστὶ τῶν ἀναφορῶν. οἷος τε γὰρ ἢ εἰς τε καὶ μόνος, ἕτερον μὲν τινα γεννᾶν, ἕτερον δὲ μηδαμῶς γεννᾶν, ἑτέρω δὲ τρόπῳ παράγειν. (10) Διὸ δὴ καὶ μάλιστα φιλικῶς ἂν ἔχοιεν, ὥστε

- Δαμασκῆς Ἰωάννη ἀποδοτέον εἶναι τὸ Φιλοπνῆμα ἐξάπαντος Βέκκος τε δὴ, καὶ οἱ περὶ τὸν Βέκκον εἰσάγονται ἀποδείξαντες, ἐπὶ τῆς Σωδὸς, ἥς τὰ Πρακτικά Ἰσορήται Γεωργίῳ τῷ Παχυμέρῃ, εἰς Ἀνδρόνικον, Βιβλ: Ζ'. τῆς Ἰσορίας. Μᾶλλον δὲ (Φησὶ Λεκυῖνος) καὶ Γεώργιος ὁ Σχολάριος, ἐν ἐκατέρῳ τῶν περὶ τῆς Ἐκπορεύσεως κατὰ Λατίνων αὐτῶν Συγγράμματι, ὡς τῆς Δαμασκίου γίνον ἀναμφισβητήτως οὐτα ἐκείνον ἐπιγνῶς ἐνέκρινεν.
- (9) Οὐδὲν τοῖσιν, ἔδ' ἐν τῷ Γ'. Κεφαλ: τῆς Α'. Βιβλ: περὶ τῆς Ὁρθοδ: Πίσεως, κατὰ τῶν τῆς Λεκυῖνος ρηθῆσαν Ἐκδοσιν ἀπαντὰ ἐμφερόμενον ἀπασαὶ δὲ αἱ πρὸς τὸ προκείμενον τείνεσαι χρήσεις, ἐκ τῆς Η'. Κεφαλ: ληφθῆσαι εἰσίν. Ὅρα ἐν τῇ, περὶ τῆς Φαμέν, Ἐκδόσει, Τόμ: Α'. Σελ: 135. 136. 137 — 140.
- (10) Ἀλλὰ γὰρ, ὅτι καὶ τὸ γεννᾶν καὶ τὸ ἐκπορεύειν, (τῆς αὐτῆς ὅρα, ἢτοι τῆς γεννητῆς ἢ ἐκπορεύτῆς, ἐνός κατὰ Θωμᾶν ὑποτιθεμένη, παρ' ἑλληνιστῶν τῆς ἐγχεῖν τῆς οὐφελείας κατὰ τὸ αἷτιον καὶ αἷτιατὸν ἀντιχέσεως) χέσεις ἂν εἴεν καὶ ἐπ' αὐτῆς τῆς γεννᾶντος καὶ ἐκπορεύοντος, ἀνταναιρετικαὶ ἀλλήλων, καὶ ἐπομένως ἀσύμβατοι, ὥστε καὶ τὸ γεννᾷσθαι καὶ ἐκπορεύεσθαι, ἐπὶ τῆς γεννητῆς καὶ ἐκπορεύτῆς ἐυτόνως ἔγωγε διατεινᾶμι ἂν. Ὡστε γὰρ ὁ προῖων, ἢ ἂν ὁ αὐτὸς καὶ γεννητὴς καὶ μὴ, καὶ ἐκπορεύτῆς καὶ μὴ ἔτω καὶ ὁ προῖος, ἢ ἂν ὁ αὐτὸς καὶ γεννῶν καὶ μὴ καὶ ἐκπορεύων καὶ μὴ καὶ ἐκατέρωθεν ἐπίσης λαμπρὰ ἢ ἀντίφασις· διὰ τὸ μὴ τῶν τῆς αὐτῆς παρὰ τῆς αὐτῆς Ὑπαρξιν ἐπιδεκτικῶς εἶναι διπλῆς τινὸς ἀντιπεριπτωτικῆς. Ἀλλ' ἐνὶ καὶ τῶν αὐτῶν λόγων ὑπάρχειν ἕκαστον, ὡς ἂν ὑπάρχει ἐκ τῆς αὐτῆς καὶ παρεκτικὸν εἶναι Ὑπαρξίως ἑτέρω, ὡς ἂν παρέχει αὐτῶν μηδαμῇ δὲ μηδαμῶς μηδὲν, ἔτω τε ἢ καὶ ἔχω ἔτω. Καὶ καθάπερ ἐν ἀδιώατον τὸν Υἱόν, φέρε, καὶ γεννᾷσθαι καὶ ἐκπορεύεσθαι ἐκ τῆς Πατρός· ἢ τὸ Πνεῦμα ἐκ τῆς αὐτῆς καὶ ἐκπορεύεσθαι καὶ γεννᾷσθαι ἔτω καὶ τὸν Πατέρα, γεννᾶν τὸν Υἱόν, καὶ ἢ ἐκπορεύειν τὸν αὐτόν· ἢ γὰρ ἐκπορεύειν τὸ Πνεῦμα, καὶ ἢ γεννᾶν τὸ αὐτό. Καὶ τοίνυν, παρ' ἀπερίαν τῆς κατὰ τὸ αἷτιον καὶ τὸ αἷτιατὸν λόγου, (ὡς ἢ κατὰ τὸν Θωμᾶν ὑπόθεσις βέλεται) τῆς Υἱὸς καὶ τῆς Πνεύματος, ἐνός τε ἂν καὶ τῆς

ὥς τε καὶ σωελθεῖν ἀλλήλαις, ἐν ἐνὶ καὶ τῷ αὐτῷ Προσώπῳ αἱ τῆ Πατρὸς χέσεις, αἷς πρὸς τὸν Υἱὸν, καὶ πρὸς τὸ Πνεῦμα ἀναφέρεται. Πῶς γὰρ ἂν τόδ' ἔποιτο; εἰπέμοι: Αἱ τῆ Πατρὸς χέσεις, αἱ μὴ ἀντίθετοι σωισῶσαι εἰς Πρόσωπον ἓν. Ἄρα καὶ αἱ χέσεις αἱ τῆ Υἱᾶ καὶ τῆ Ἁγίας Πνεύματος, ἐν δὴ καὶ μόνον, ἐκ ἂν δὲ δύο συστήσαιεν Πρόσωπα, εἰμὴ ὅ,τε Υἱὸς καὶ τὸ Πνεῦμα, καὶ ἑτέρας χέσεις ἀντιθέτως ἀπ' ἀλλήλων διακρίνοιντο; ἢ πῶς, παραθέσεως γενομένης, ὁ Θωμᾶς προσλαβεῖν ἔχεν, ὅτι ὥσπερ αἱ ἐν τῷ Πατρὶ χέσεις, ἐν μόνον Πρόσωπον σωισῶσιν, ἔτω δὴ καὶ αἱ χέσεις αἱ ἐν τῷ Υἱῷ καὶ τῷ Πνεύματι, αἷς πρὸς τὸν Πατέρα ἀνάγονται, ἐντι ἂν συστήσαιεν Πρόσωπον καὶ τὸ αὐτὸ, εἰμὴ δι' ἀντιθέτων ἄλλων (ὁ Υἱὸς καὶ τὸ Πνεῦμα) διακρίνοιντο χέσεων; Κατὰ γὰρ πᾶσαν ἀνάγκην, τὸ γεννητὸν εἶναι καὶ τὸ ἐκπορεύον, διὸ δεικνύσιν Πρόσωπα, τὸν Υἱὸν καὶ τὸ Πνεῦμα καθεσηκότα, ἀπ' ἀλλήλων διακρινόμενα· καὶ μὴ αὐτὰ δι' ἀντικειμένων ἑτέρων χέσεων ἀντιδιασέλλοιτο· διὰ τὸ ἐνὶ καὶ ταὐτὸν, γεννᾶσθαι ἅμα καὶ μὴ γεννᾶσθαι (ὃ τὸ ἐκπορεύεσθαι ὑπεμφαίνει) εἶναι ἀδιύατον.

#### Ἀ Π Ἀ Ν Τ Η Σ Ι Σ Γ'.

Ἐπειτα τὸν τρόπον τῆς τῆ Ἁγίας Πνεύματος ὑπάρξεως, τετέστι τὸ συζατικὸν αὐτῆς, τῷ Ἐκπορεύειν εἶναι, παρὰ πᾶσι καθωμολογῆται· ὁ μέντοι καὶ ὃν ὑπάρχει ὁ Υἱὸς, τρόπος, ἥτοι τὸ αὐτῷ συζατικὸν τῆ ὑπάρχειν, ὡς Υἱᾶ Πρόσωπον, ἐκ ἔσιν ἢ Πνεύσις, ἢ τῆ Ἁγίας Πνεύματος δηλονότι παρακλητικῇ Πρόεσις. Ἄλλως γὰρ, μόνῳ ἂν αὕτη τῷ Υἱῷ προσανῆκεν, ἐκ ἅμα δὲ καὶ τῷ Πατρὶ. Μόνος καὶ γὰρ ὁ τῆ ὑφίστασθαι τρόπος, καὶ τὸ συζατικὸν τῆ Προσώπου, αὐτὸ ἐστὶ τὸ σωισάνον τὸ Πρόσωπον· ὥς τε ὥσπερ τὸ Πρόσωπον ἐνίτῳ καὶ μόνῳ προσιδιάζον ἐστὶν, ἔτω καὶ τὸ τῆ Προσώπου συζατικὸν, ἥτοι ὁ τρόπος ὁ τῆ ὑφίστασθαι, ἐνὶ ἄντινι Προσώπῳ καὶ μόνῳ προσιδιάσειεν. Ὡς εἶγε ἢ τῆ Ἁγίας Πνεύματος παραγωγὴ εἰς τὸ εἶναι, ἐκ ἔσιν τὸ συζατικὸν τῆ Υἱᾶ, ἥτοι ὁ τρόπος καὶ ὃν ὁ Υἱὸς ὑφίστασθαι· λοιπὸν δὴ, τῆ Υἱᾶ τὸ συζατικὸν, τετέστι τὸν τρόπον τῆ τὸν Υἱὸν ὑφίστασθαι, μόνῳ εἶναι ὁμολογεῖν τῷ

αὐτῆ ὄντος, ἐπίσης ἄλογον ἂν εἴη τὸ γεννᾶν τε καὶ ἐκπορεύειν ἐπὶ τῆ προβαλλόντος ἀναθεωρεῖν, ὡς καὶ ἐπὶ τῆ προβαλλομένης τὸ γεννᾶσθαι καὶ ἐκπορεύεσθαι· ἐκ ἄρα Φιλίως ἂν ἔχοιεν, αἱ τῆ γεννᾶν τε καὶ ἐκπορεύειν χέσεις ἐν τῷ αὐτῷ Προσώπῳ τῶ τῆ Θεᾶ καὶ Πατρὸς σωισῶσαι, ἕως ἂν μήπω σωμολογηθεῖσα ἔφθῃ, ἢ τῆ γεννητῆ καὶ ἐκπορευτῆ, ἀμφοῖν τῶν Προσώπων, ἢ Ὑποστατικῇ ἀπ' ἀλλήλων διάκρισις· ἥτις δὴ ἀρεστέως ἔχει, ὡς Σωμωατιατῶν ἐκ τῆς μιᾶς καὶ μόνης αἰτίας, διαφόρῳ μὲν, ἀνερμινώδῳ δὲ λόγῳ, προϊέναι πισυόμενων, ἥκιστα δὲ, τῆ μὲν ὡς αἰτίας, τῆ δὲ ὡς αἰτιατῆ ἀντιχετικῶς πρὸς ἀλλήλα ἀναφερομένων, καθάπερ ὁ Ἀγγελικὸς τοῖς Λατίνοις Διδάσκαλος Φρεῖδαις ἐπινοίας ἐπανερῶξατο.

τιῷ Υἱότητι. Ὁ ἄρα τῷ ὑφίστασθαι τρόπος, τῷ μὲν Ἀγίῳ Πνεύματι ἐστὶν ἢ „Ἐκπόρευσις,, τῷ δὲ Υἱῷ ἢ „Γέννησις,, οἳ δὴ πάντως, ὑποστάσεως τρόποι εἰσὶ διαφέροντες. Ἐνθεν τοι καὶ ἸΟΥΣΤΙΝΟΣ ὁ Μάρτυς ἐν τῇ Ἐκθέσει τῆς Πίστεως, Σελ: 380. (11) „Ὡστερ ὁ Υἱὸς, ἔφασκεν, ἐκ τῷ Πατρὸς, ἔτω καὶ τὸ Πνεῦμα· „πλὴν γε δὴ, τῷ τρόπῳ τῆς ὑπάρξεως διοίσει. Ὁ μὲν γὰρ, φῶς „ἐκ φωτός, γεννητῶς ἐξέλαμψε· τὸ δὲ, φῶς ἐκ φωτός καὶ αὐτὸ, „ἐμὴν γεννητῶς, ἀλλ' ἐκπορευτῶς προῆλθεν,, (12) Ὁ δὲ Ἀλεξανδρείας ΚΥΡΙΑΛΛΟΣ ἐν Διαλόγῳ Ζ'. τῶν περὶ Τριάδος, Τόμ: Ε'. Μέρ: Α'. Σελ: 640. „Ἀλλ' ἥτις ποτὲ ἐστὶν ἢ τῷ Πνεύματι „φύσις πολυπραγμονεῖν ἀναγκαῖον, τιῷ τῶν ὀνομάτων ιδιότητα „μεθέντας εἰς τὸ παρὸν, ἐχθὶ τῆς Θεότητος ἔσαν δεικτικῶς ἀλλ' „ἐκάσθ' τῶν ὀνομασμένων, τίς ἂν νοοῖτο πρὸς ἡμῶν ὁ τῆς ὑπάρξεως „τρόπος, εἰ μάλα κατασημαίνουσιν. Ὅτι γὰρ τέτοκε, „δηλοῖ τὸ Πατήρ· καὶ ὅτι γεγέννηται, διεσάφησε τὸ Υἱός· καμινῶ, „ὅτι τὸ Πνεῦμα ἐστὶν ἐκ Θεῷ Πατρὸς, ἴδιον δὲ αὐτῷ τῷ Υἱῷ, „δικῶν τῷ καθ' ἡμᾶς καὶ ἀνθρωπίνῳ Πνεύματι, εἰ καὶ ἐν ὑποστάσει „νοοῖτο, καὶ ὑπάρχον ἀληθῶς, διαμεμιλύνκεν ἢ κλήσις,, (ἢ τῷ Πνεύματι δηλονότι.) Ὁ δὲ ΜΑΞΙΜΟΣ ὁ Μάρτυς, ἐν τοῖς Σχολίοις τοῖς εἰς τὸ Β'. Κεφ: τῷ περὶ Θεῶν Ὄνομ: Βιβλ: Διονυσίου τῷ Ἀρεοπαγίτῃ: „Διακρίσεις καλεῖ τὰς καθ' ἑαυτὰς „ὑφεσώσας προσκυνητὰς ἐκείνας ὑπάρξεις· τῷ τε, τό, τε ἐκ τῷ „Πα-

(11) Παρ' ἐμοὶ 298.

(12) Κεῖθ' δὲ πλατύτερον ὧδε, ἃ ὁ αὐτὸς Μάρτυς Θεολογῇ ἐπὶ τῆς αὐτῆς Ἐκθέσεως, μικρὴν ἀνωτέρω: (Σελ: κατὰ τιῷ παρ' ἡμῶν Ἐκδόσιν 292. 293.) „Τὸ ἀγέννητον, „φῶς, καὶ γεννητὸν, καὶ ἐκπορευτὸν, ἐκ ἐσίας ὀνόματα, ἀλλὰ τρόποι ὑπάρξεως. „Ὁ δὲ τρόπος τῆς ὑπάρξεως τοῖς ὀνόμασι χαρακτηρίζεται τέτοις· ἢ δὲ τῆς ἐσίας „δήλωσις, τῇ Θεῷ ὀνομασίᾳ σημαίνεται· ὥς εἶναι τιῷ διαφορὰν τῷ Πατρί, πρὸς „τὸν Υἱὸν καὶ τὸ Πνεῦμα, κατὰ τὸν τῆς ὑπάρξεως τρόπον, τὸ δὲ ταυτὸν, κατὰ „τὸν τῆς ἐσίας λόγον. Εἰ γὰρ ὁ μὲν ἀγέννητος ἔχει τὸ εἶναι, ὁ δὲ γεννητὸς, τὸ „ὡδὲ ἐκπορευτὸς, τὰ τῆς διαφορᾶς ἐπιθεωρεῖσθαι πέφυκεν. . . ὥς τὸ ἀγέννητον, „καὶ γεννητὸν, καὶ ἐκπορευτὸν, ἐκ ἐσίας δηλωτικά, σημαντικά δὲ τῶν ὑποστάσεων „ἐστὶν ἱκανὰ γὰρ ἡμῖν διακρίνειν τὰ πρόσωπα· (τοῖς μὲν τοι περὶ τὸν Ἀκινάτιον „Θωμά, ἐχ' ἱκανὰ δηλονότι) καὶ τιῷ Πατρὶ καὶ Υἱῷ καὶ Ἀγίῳ Πνεύματι ἰδια- „ζόντως δεικνύειν ὑπόστασιν. Καθάπερ γὰρ σφραγίς ἡμῖν τις λεχθὲν τὸ ἀγέννητον, „ἐνθὺς ἀφορίζει τιῷ Πατρὶ ὑπόστασιν. Καὶ πάλιν, ὥς τι σημεῖον τιῷ τῷ γεννητῷ „ὑποσηγορίαν ἀκόντες, τιῷ Υἱῷ λαμβάνομεν ἔννοιαν. Καὶ αὖθις διὰ τῆς τῷ ἐκπο- „ρευτῷ σημασίας, τὸ ἰδιωτικὸν τῷ Πνεύματι πρόσωπον παιδιδόμεθα. Καὶ ταῦτα „ἡμῖν ἀρκεῖ πρὸς ἀπίδειξιν, τῷ μὴ τιῷ ἐσίαν αὐτῷ δηλῆν το ἀγέννητον, καὶ γεν- „νητὸν, καὶ ἐκπορευτὸν· ἀφοριστικὰ δὲ τῶν ὑποστάσεων εἶναι, πρὸς τῷ καὶ τὸν τῷ „ὑπο τῆς ὑπάρξεως διασημαίνουσιν. Ἀρκεῖ μὲν ἐν Ἰερίῳ τῷ Φιλοσόφῳ καὶ Μάρ- „τυρι, ὥς καὶ τοῖς λοιποῖς Θεασταῖς Πατράσι, τὰ τὸν τρόπον διασημαίνοντα τῆς „ὑπάρξεως, ταῦτα Θεολογῇ καὶ τῶν Θεολογικῶν ὑποστάσεων εἶναι τὰ ἀφοριστικά. „Τὰ Θωμά δὲ ἐκ ἀρκεί· εἰ μὴ πρὸς τῷ τῷ τρόπῳ τῆς ὑπάρξεως διασημασία, „λόγον ἕτερον καινοτομήσας παρεισαγάγη, μεταξὺ Υἱῷ τε καὶ Πνεύματος, τὸν „κατὰ τὸ αἶτιον καὶ τὸ αἰτιατόν· ἢ μὴ ἐγχαρήσαντος· φησὶν, ἐδ' ἰὼ καὶ διαφε- „ρόντως ὑπάρχωσιν ὁ Υἱὸς καὶ τὸ Πνεῦμα, ἐδόλωσ' ἀπ' ἀλλήλων διακριθῆσονται.

Τόμ. Β'.

P rrrr



„Πατρὸς ἀνερμύδωτον ἀπάνγκασμα: τῆς, τὴν γέννησιν τῆς Τίς,  
 „καὶ τὴν ἐκ Πατρὸς ἀπερινόητον ἐκπορεύσιν τῆς Ἁγίας Πνεύματος...  
 ἈΝΑΣΤΑΣΙΟΣ δὲ ὁ Συναΐτης, Βιβλ: Α'. περὶ τῶν Δογματῶν  
 τῆς Πίσεως: „Ἡ δὲ τῆς γεννήσεως καὶ τῆς ἐκπορεύσεως δια-  
 „φορὰ, ἐκ ἐσίας διαφορὰν κατασκευάζει. Οὐ γὰρ ἡ διαφορὰ  
 „τὸ τῆς ὑπάρξεως εἶναι σημαίνει, τὸ δὲ πῶς εἶναι διασαφῆς τῆς  
 „αὐτῆς μενέσεως ἐσίας, καὶ τῆς ἐξ ἑ, καὶ τῶν ἐξ αὐτῆς, κατὰ  
 „διαφέροντα τρόπον, εἴτ' ἐν ἐννοίαν· ὁ ἄρα τρόπος τῆς ὑπάρξεως,  
 „καθάπερ εἶρηται, διαφέρει· ὁ δὲ λόγος τῆς ἐσίας, ὁ αὐτός...  
 Ὁ δὲ ΣΥΓΓΡΑΦΕΥΣ τῆς περὶ Τριάδος: Βιβλ: Κεφαλ: Η'. „Οὐδέ  
 „γὰρ ὁμοῖται ἑτέρα γέννησις τῇ τῆς Τίς τῆς Θεῆς γεννήσει· ὅδε  
 „γὰρ ἔστιν ἄλλος Τίς τῆς Θεῆς. Εἰ γὰρ καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον  
 „ἐκ τῆς Πατρὸς ἐκπορεύεται, ἀλλ' ὁ γεννητὴς, ἀλλ' ἐκπορεύτης  
 „ἄλλος τρόπος ὑπάρξεως ἕτος ἄλληπτός τε καὶ ἄγνωστος, ὥστε  
 „καὶ ἡ τῆς Τίς γέννησις... Τὰ δ' αὐτὰ ἐπαναλαμβάνει καὶ ὁ ἐκ  
 Δαμασκῆ ἸΩΑΝΝΗΣ ἐν Βιβλ: Α'. τῆς Ὁδοῦ: Πίς: Κεφ: Θ'.  
 (13) Καὶ ἐν τῷ ΙΓ'. δὲ Κεφαλ: (14) „Πάντα μὲν ἐν ταῦτα,  
 „Φησὶ, κοινῶς ἐπὶ πάσης τῆς Θεότητος ἐκληπτέον, καὶ ταῦτά,  
 „καὶ ἀπλῶς, καὶ ἀμερῶς, καὶ ἠνώμενως· διακεκριμένως δὲ τὸ  
 „Πατήρ, καὶ ὁ Τίς, καὶ τὸ Πνεῦμα, καὶ τὸ ἀνάιτιον, καὶ τὸ  
 „αἰτιατὸν, καὶ τὸ ἀγέννητον, καὶ τὸ γεννητὸν, καὶ ἐκπορεύτὸν.  
 „Ἄτινα ἐκ ἐσίας εἰσὶ δηλωτικά, ἀλλὰ τῆς πρὸς ἄλληλα χέσεως,  
 „καὶ τῆς ὑπάρξεως τρόπος. Τελούταιον δὲ ΘΕΟΦΑΝΗΣ ὁ  
 Κεραμεὺς, ὁ Ταυρομενίαν Ἀρχιεπίσκοπος, Ὁμιλ: Νς'. „Ἰνα  
 „μή τις ὑποτοπάζῃ δαλκικῶς τῆς Πνεύματος τὴν Ἀποστολὴν, ἀνάγει  
 „τὸν λόγον εἰς τὸν τῆς ὑπάρξεως τρόπον· καὶ Φησὶ: τὸ Πνεῦμα  
 „τῆς ἀληθείας ὃ παρὰ τῆς Πατρὸς ἐκπορεύεται... Καὶ τοίνυν  
 πρόδηλον πάλιν, ὡς αἱ τῆς Τίς καὶ τῆς Ἁγίας Πνεύματος χέσεις,  
 αἷς τὴν πρὸς τὸν Πατέρα ἔχουσιν ἀναφορὰν, τρόποι ὑπάρξεως  
 διαφέροντες ἔσται, ἕχῃ μίαν καὶ μόνω ὑπόσασιν, δύο δὲ συνι-  
 σῶσι Πρόσωπα ἐξ ἀνάγκης, ἀπ' ἀλλήλων πάντῃ διακρινόμενα,  
 καὶ μὴδὲσιν ἄλλαις ἀντιφερομέναις χέσεσιν εἶεν ὁ Τίς καὶ τὸ  
 Ἅγιον Πνεῦμα διασελλόμενοι. Ἀπὸ γὰρ τῆς τῆς ὑπάρξεως τρό-  
 πος μόνον (15) ἔχει, ὅτις δὴ πρόσωπον, τὸ εἶναι τῶν ἄλλων  
 προ-

(13). Παρ' ἐμοὶ Κεφαλ: Η'. ὡς εἶρηται.

(14) Τὸ δὲ παρ' ἐμοὶ ἐν τῇ κατὰ Λευκὴν: Ἐκδόσει, ἀναγιγνώσκεται ἐν Κεφαλ: Ι'. ὃ ἔστι  
 γραφή: „Περὶ ἐνώσεως καὶ διακρίσεως... Ἐν Α'. Τόμ: τῶν Δαμασκ: Συγγραμ:  
 Σελ: 143.

(15) Μόνον) „Καὶ γὰρ ἱκανὰ ταῦτα ἡμῖν διακρίνειν τὰ Πρόσωπα... καὶ ταῦτα ἀρκῶς  
 „πρὸς ἀπόδειξιν τῆς... τὸ ἀγέννητον, καὶ γεννητὸν, καὶ ἐκπορεύτὸν, ἀφοριστικῶς  
 „τῶν ὑποστάσεων εἶναι, πρὸς τῷ καὶ τὸν τρόπον τῆς ὑπάρξεως διασημαίνειν, ὡς  
 ἀνωτ: ἔφασκεν Ἰωάννης ὁ Μάρτυς, Σελ: 11.



προσώπων ὅλως διακρινόμενον. Καὶ διοσῶν ἄρα ὑποκειμένων τρόπων τῷ ὑπάρχειν διαφερόντων, καὶ Πρόσωπα γε ὑποτίθεται δύο τέλεια, τελείαν τὴν ἀπ' ἀλλήλων διάκρισιν ἔχοντα. Ἐπειδὴ δὲ αἱ τῷ Πατρὸς, αἷς δὴ τὸν Υἱὸν καὶ τὸ Πνεῦμα ἀφορᾷ χέσεις, ἐκ εἰσὶ τρόποι δύο τῷ ὑφίστασθαι διαφέροντες, (16) ἐντεῦθεν δὴλον, ὡς ἔδεν λόγῳ Θωμᾶς ἐπιχειρεῖν εἶχεν, ἀπὸ τῶν, αἷς ὁ Πατὴρ πρὸς τὸν Υἱὸν καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἀναφέρεται χέσεων, ἐπὶ τὰς, αἷς ὁ Υἱὸς καὶ τὸ Ἅγ: Πνεῦμα πρὸς τὸν Πατέρα ἀναγονται: ὡς εἶγε δῆθεν, καθάπερ αἱ τῷ Πατρὸς, ἔτω καὶ αἱ τῷ Υἱῷ καὶ τῷ Πνεύματος χέσεις, πρόσωπον ἐν ὧφειλον ἐπισωιζᾷν, εἰμὴ ἄλλοθεν ἐξ ἀντιθέτων χέσεων ἄλλων, ἀπ' ἀλλήλων τὸ Πνεῦμα καὶ ὁ Υἱὸς διεκρίνοντο. Ἐπειδὴ γὰρ, ὁ καθ' ὃν ὁ Υἱὸς ὑφίσταται τρόπος, ἡ Υἱότης ἐστίν, ἐκ μόνης πάντως τῆς Υἱότητος, τέλειον ἐστὶν ὑφেষηκὸς πρόσωπον ὁ Υἱὸς, καὶ τελῶς δὲ καὶ ἀπὸ τῶν λοιπῶν Προσώπων, καὶ ἀπὸ τῷ Πνεύματος ἐπομένως διακρινόμενος.

#### Ἀ Π Ἀ Ν Τ Η Σ Ι Σ Δ'.

Καὶ αὐτοὶ δὲ τέως οἱ Θεοὶ Πατέρες, ὁποῖα τις ἢ μέσον Υἱὸς καὶ Ἅγιον Πνεῦματος διαφορὰ ὀνομασίᾳ ἐκδιδάσκοντες, ἔδεν ἄλλ' ἢ τὴν γεννήσιν τὴν τῷ Υἱῷ, ἢ τὴν Ἐκπόρευσιν τὴν τῷ Πνεύματος προτιθέασιν, διὰ μόνων ἔτω τῶν χέσεων αἷς πρὸς τὸν Πατέρα ὁ Υἱὸς ἀνάγεται καὶ τὸ Πνεῦμα, τὰ διοσᾷ τέτων Πρόσωπα σωιζαθαί τε καθ' ἑαυτὰ παραδιδόντες, καὶ ἀπ' ἀλλήλων καὶ διακρίνεσθαι. **ΙΟΥΣΤΙΝΟΣ** μὲν γὰρ ὁ Μάρτυς ἐν τῇ Ἐκθέσει τῆς Πίς: διὰ τῶν ἀρτίως ἀπομνημονυθέντων: „Ὡς περ ὁ Υἱὸς (ἐφασκεν) ἐκ „τῷ Πατρὸς, ἔτω καὶ τὸ Πνεῦμα: πλὴν γε δὴ τῷ τρόπῳ τῆς „ὑπάρξεως διοίσει: ὁ μὲν γὰρ φῶς ἐκ φωτὸς γεννητῶς ἐξέλαμψε: τὸ δὲ φῶς ἐκ φωτὸς καὶ αὐτὸ, ἐμὴν γεννητῶς, ἀλλ' ἐκπορευτῶς προήλθεν (17) ἔτως ἐν τῇ Τριάδι τὴν Μονάδα νοῶμεν, „καὶ

(16) Αἱ τῷ Πατρὸς πρὸς τὸν Υἱὸν καὶ τὸ Πνεῦμα χέσεις, ἢ δῆπερ τρόποι εἰσὶ τῷ τὸν Πατέρα ὑφίστασθαι: ἀλλὰ τῷ αὐτῷ τοῖς ἐξ αὐτῶν δυσὶν αἰτίαι τῷ ὑφίστασθαι εἶναι, ἓνα τε τὸν αὐτὸν καὶ μόνον, τῷ πρὸς ἄμφω αἰτιώδει λόγῳ χαρακτηριζόμενον τε καὶ γνωριζόμενον: προεπινεῖται γὰρ πρὸ τῆς ἐνεργείας ἢ τῆς ἐνεργήσεως ὑπόστασις, καὶ φύσει προϋποτίθεται.

(17) Τὸ ἐκ τῷ Πατρὸς εἶναι κοινὸν ἐπίσης ταῖς δυσὶν ὑποστάσεσι, κατὰ τὸν τῷ αἰτιατῷ λόγον, ἢ περ αἰτιατά: ὡς μή τινα διαφορὰν ἐν τῷ ἐκ τῷ Πατρὸς ἀπλῶς εἶναι ταύτῃ ἔχουσιν: „Ὡς περ γὰρ, φησὶν, ὁ Υἱὸς ἐκ τῷ Πατρὸς, ἔτω καὶ τὸ Πνεῦμα. Τὴν διαφορὰν ἔν ὅλῳ ὑποτίθεται κεισθαι, ἐν μόνῳ τῷ διαφερὲν τῷ τρόπῳ τῆς αὐτῶν τέτων ὑπάρξεως. Προστίθεται γὰρ: „Πλὴν γε δὴ τῷ τρόπῳ τῆς ὑπάρξεως διοίσει: ὁ μὲν γὰρ φῶς ἐκ φωτὸς γεννητῶς ἐξέλαμψε: τὸ δὲ φῶς ἐκ φωτὸς καὶ αὐτὸ, ἐμὴν γεννητῶς, ἀλλ' ἐκπορευτῶς προήλθεν. „Ὅγε μὴν Θωμᾶς, καὶ οἱ σὺ αὐτῶν, πᾶν τὸναντίον. Ἐν μὲν γὰρ τῷ κοινῷ διαφορὰν ἐπινεῖται: ὡς ὁ μὲν ἐκ τῷ Πατρὸς ἐστίν, ὁ Υἱὸς: τὸ δὲ ἐκ τῷ Πατρὸς καὶ τῷ Υἱῷ ἐστὶ τὸ Πνεῦμα. Ἐν

„καὶ ἐν τῇ Μονάδι τὴν Τριάδα γνωρίζομεν,,. Ἵνα ἔν ἡ Τριάς ἐπιγινώσκηται ἐν ἐνότητι τῷ λόγῳ τῷ Τίῳ καὶ τῷ Ἀγίῳ Πνεύματος, ἡδεμίαν ἄλλω τίθῃσι διαφορὰν, εἰμὴ ὅτι, ὁ μὲν Τίος γεννητὸς, τὸ δὲ Πνεῦμα τὸ Ἄγ: ἐκπορεύτῳ ἐκ τῷ Πατρός. Μόναί ἄρα αἱ τῷ Τίῳ καὶ τῷ Ἀγίῳ Πνεύματος χέσεις, αἷς πρὸς τὸν Πατέρα ἀνάγονται, αἱ τὰ δύο τέλεια Πρόσωπα εἰσὶ σωσιῶσαι τῷ Τίῳ φημι καὶ τῷ Ἀγίῳ Πνεύματος. Καθάπερ ἐν καὶ προσεθεαῖς ὡ: (18) „τὰς διὸς ταυταὶ χέσεις, τρόπος εἶναι διὸς τῷ ὑφί: „σταθαι,,. οἱ γὰρ δὴ τῷ ὑφίστασθαι διὸς διαφέροντες τρόποι, διὸς ἐξ ἀνάγκης καὶ τὰ Πρόσωπα σωσιῶσιν ἐντελῶς διαφέροντα. (19)

Ὁ δὲ ἈΘΑΝΑΣΙΟΣ ἐν τῷ Α'. τῶν περὶ Τριάδος Διαλόγων: „Ἡ διαφορὰ Πατρός τε καὶ Τίῳ καὶ Ἀγίῳ Πνεύματος, ἐν τῇ φύσει, ἔ: ἐν τῷ θελήματι, ἔ: ἀλλ' ἐν τῷ γεννᾶν, καὶ γεννᾶσθαι, καὶ ἐκπέμπειν, καὶ ἐκπορεύεσθαι: τί ἐστὶ γεννᾶν, καὶ γεννᾶσθαι, καὶ ἐκπέμπειν, καὶ ἐκπορεύεσθαι; ὅτι ὁ μὲν Πατήρ γεννᾷ, „ταῖς ἐν ἐγέννησεν: ὁ δὲ Τίος γεννᾶται, ταῖς ἐν γεγέννηται καὶ „ὅτι αὐτὸς ὁ Πατήρ ἐκπέμπει τὸ Πνεῦμα, ταῖς ἐν ἐξέπεμψε: „καὶ τὸ Πνεῦμα ἐκπορεύεται, ταῖς ἐν ἐκπεπόρευται. Αὕτη ἐστὶν „ἡ διαφορὰ; Αὕτη,,. Ἐν τέτοις δήπαθεν, ἐκ ἄλλω τινὰ διαφορὰν Τίῳ μεταξὺ καὶ Ἀγίῳ Πνεύματος Ἀθανάσιος ἐπιγινώσκει, εἰμὴ ὅτι, ὁ μὲν Τίος γεννητὸς ἐστὶ, τὸ δὲ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκπορεύτῳ: ἔτω δέ τοι πάντως ἐστὶ διδάσκων, ὅτι μόναι αἱ τῷ Τίῳ καὶ τῷ Πνεύματος, καθ' ἃς πρὸς τὸν Πατέρα ἀνάγονται, χέσεις, αἱ τὰ δύο εἰσὶ σωσιῶσαι τῷ Τίῳ καὶ τῷ Πνεύματος Πρόσωπα.

Ὁ δὲ

Ἐν δὲ τῇ διαφορᾷ κοινότητα ὑφάρωνται. Εἰ μὴ γὰρ ἄλλη τις ἰδ., φασί, χέσις ἀντιθέτος, ἡ τὸν Τίον ἀπὸ τῷ Πνεύματος ἀντιδιασέλλουσα, ὁ τῆς ὑπάρξεως κατὰ τὸ αἰτιατὸν εἶναι ἄμφω τὰ Πρόσωπα λόγος, καὶ τοι διαφερέσης, ἐκ ἀν' ἀποχεῶν εἴη, ἀνευ ἀντιθετικῆς χέσεως ἄλλης, οἷαν περ ἀναπλάττειν ἐθέλῃσι, τὴν ὑπόστασιν ἐν τέτοις διαφορὰν συστήσασθαι.

(18) Τῷτο δ' ἀνώτερον ἰδ. προσεθέν: ἔ: γὰρ ἐχομένως ὡδε, ἡ καθεξῆς: ἐν τῇ παρ' ἐμοὶ Ἐκδόσει, Σελ: 293.

(19) Σησημειάδω δὲ, μὴ κατὰ πάροδον ἐνταῦθα τὸν Ἰεζήν, μὴδ' ὅσον ἀκροθιγῶς ἀψαδαι, ἀλλ' ἐκ προθέσεως, καὶ ὅσον οἶον τε καὶ νοεῖν καὶ λέγειν, περὶ τῆς διακρίσεως τῶν Θεαρχικῶν ὑποστάσεων εἰρηκέναι, ἐπαγγελόμενον. Τὸν γὰρ περὶ τῆς λόγον ἐπισφραγίζων ἐπιλέγει: „Ταῦτα χωρήσαντες, καὶ τῷτο τὸ μέτρον παρὰ „τῷ Κυρίῳ τῆς γνώσεως λαβόντες, τοῖς Τίσι τῆς Ἐκκλησίας τὸ καταληφθῆναι „ἐκτιθέμεθα: ἔτω μὲν φρονεῖν παρακαλῶντες, ἕως ἀν' τελεωτέραν τῆς γνώσεως „τὴν ἐκλαμψὶν δεξωνται: ἐπεί γε τοῖς παρ' ἡμῶν ἐκτεθῆσι σὺ ἐπιμελεία προσέ: „χεν σωφρονικόν: ἔ: γὰρ τι κομψόν, ἡ ὑπέρογκον, ἡ μεγαλαυχίας ἔχον ἀπόδειξιν „ἐφαντάδιμεν: ὅσον δὲ εὐσεβεῖς μᾶλλον καὶ πρέπον τῇ Θεῷ γνώσει κατὰ διδάμην „συλλέξαντες, τῆς μιᾶς Θεότητος τὴν ἐν τελείαις τρισὶν ὑποστάσεσι γνῶσιν ἔξ: „θέμεθα,,. (Ἰεζήν: ὁ Μάρτυς, ἐν τῇ Ἐκδόσει: κατὰ τὴν παρ' ἐμοὶ Ἐκδόσιν, Σελ: 298. 299.

Ὁ δὲ Μέγας ΒΑΣΙΛΕΙΟΣ ἐν τῇ πρὸς Γρηγόριον τὸν αὐτάδελφον Ἐπιστολῇ: „Τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, τὸ γνωριστικὸν τῆς κατὰ τὴν ὑπόστασιν ιδιότητος σημεῖον ἔχει, τὸ μετὰ τὸν Υἱὸν, καὶ σὺ αὐτῷ γνωρίζεσθαι, καὶ τὸ ἐκ τῆς Πατρὸς ὑφεστᾶναι· ὁ δὲ Υἱὸς, ὁ τὸ ἐκ τῆς Πατρὸς ἐκπορεύομενον Πνεῦμα δι' ἑαυτῆς, καὶ μεθ' ἑαυτῆς γνωρίζων, μόνος μονογενὴς ἐκ τῆς ἀγεννήτης Φωτὸς ἐκλάμψας, ἔδωκε μίαν κατὰ τὸ ἰδιάζον τῶν γνωρισμάτων, τὴν κοινωνίαν ἔχει πρὸς τὸν Πατέρα, ἢ πρὸς τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. Οὐδεμίαν ἄλλω διαφορὰν τίθησι τῆς Πνύματος, καθ' ὅσον ἂν διαφέροι τῆς Υἱῶς, εἰ μὴ ὅτι, τὸ μὲν Πνεῦμα, ἐκ τῆς Πατρὸς ἐκπορεύεται, καὶ ἐκ τῆς Υἱῶς γινώσκεται· ὁ δὲ Υἱὸς γεννᾶται ἐκ τῆς Πατρὸς· ἔκκεν δὲ καὶ ὅτι τὸ Πνεῦμα καὶ ἐκ τῆς Υἱῶς ἐκπορεύεται. Μόνοι ἄρα αἱ τῆς Υἱῶς καὶ τῆς Ἁγίας Πνύματος χεῖρες, αἷς πρὸς τὸν Πατέρα ἀνάγονται, τὰ διὰ Πρόσωπα συνισῶσι, τῆς Υἱῶς καὶ τῆς Ἁγίας Πνύματος.

Καὶ ὁ Θεολόγος δὲ ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ Λόγ: ΛΖ'. „Αὐτὸ δὲ τὸ μὴ γεγεννηθῆαι, καὶ τὸ γεγεννηθῆαι, καὶ τὸ ἐκπορεύεσθαι, τὸν μὲν Πατέρα, τὸν δὲ Υἱὸν, τὸν δὲ τῆς ὁπερ λέγεται, Πνεῦμα Ἅγιον προσηγόρευσεν, ἵνα τὸ ἀσύγχυτον σώζεται τῶν τριῶν ὑποστάσεων ἐν τῇ μιᾷ φύσει τε καὶ ἀξίᾳ τῆς Θεότητος. Διαβρίδω διὰ τῶν, φησὶν, ὅτι τῷ λόγῳ τῆς Γεννήσεως καὶ τῆς Ἐκπορεύσεως, ὁ μὲν Υἱὸς λέγεται, τὸ δὲ, Πνεῦμα Ἅγιον καὶ ὅπως ἢ τῶν Προσώπων διάκρισις, ἐν μιᾷ τῇ τῆς Θεότητος φύσει ἀσύγχυτος διασώζεται. Αἱ ἄρα τῆς Υἱῶς καὶ τῆς Ἁγίας Πνύματος χεῖρες, αἷς πρὸς τὸν Πατέρα ἀνάγονται, τὰ διὰ Πρόσωπα εἰσὶ συνισῶσαι τῆς Υἱῶς καὶ τῆς Πνύματος.

Ἀλλὰ καὶ ΡΟΥΦΪΝΟΣ ὁ τῆς ἐν Ἀκυλητῇ Ἐκκλησίας Πρεσβύτερος, ἐν τῇ τῆς Συμβόλης τῶν Ἀποστόλων Ἐκθέσει: „Ἰνα ἄρα τὰ Πρόσωπα διακρίνηται, αἱ τῆς πῶς διάκειται πρὸς ἄλληλα φωναὶ διασέλλονται: καθ' ὅσον ὁ μὲν Πατὴρ ὢν νοεῖται, ἐξ ἧς τὰ πάντα· αὐτὸς δὲ Πατέρα ἔκκεν ἔχει. Ὁ δὲ Υἱὸς, ὡς ἐκ τῆς Πατρὸς γεννηθείς· τὸ δὲ Πνεῦμα Ἅγιον, ὡς ἐκ σώματος τῆς Θεᾶς ἐκπορεύομενον, καὶ πάντα καθ' ἑαυτῶν. Τὰς τῶν Προσώπων διακρίσεις ἀναπτύξων, αἷς πρὸς ἄλληλα διασέλλεται, οἷα δὴ ὑποστάσεις διαφέρειν, τὸν μὲν Υἱὸν, φησὶν, ἐκ τῆς Πατρὸς γεννηθῆναι, τὸ δέ τοι Πνεῦμα ἐκ τῆς σώματος τῆς Θεᾶς ἐκπορεύεσθαι· ἢ ἄρα Γέννησις καὶ ἢ Ἐκπόρευσις, διὰ Πρόσωπα διαφορὰν ἔχοντα συνισῶσιν, ἔκκεν ἔν.

Ἦν δ' αὐτὸ τὸ καὶ ὁ Ἀλεξανδρείας διδάσκων ΚΥΡΙΛΛΟΣ, ἐν τῷ Ζ'. τῶν περὶ Τριάδος Διαλόγων, διὰ τῶν ἀνωτέρω ἀπομνημονοθέντων λέγων: τὸν μὲν, καθ' ὅσον ὁ Υἱὸς ὑφίσταται τρόπον, τὸ „γεννητὸν“, αὐτὸν εἶναι· τὸν δὲ, καθ' ὅσον τὸ Πνεῦμα,

Τόμ: Β'.

Σ σσςσ

τὸ

τὸ εἶναι „Ἐκπορεύτόν,,. Τὰς δύο γὰρ διαφέροντας τῷ ὑφίστασθαι τρόπῳ, ἀνάγκη πᾶσα διωᾶ καὶ τὰ Πρόσωπα σωισᾶν ἀπ' ἀλλήλων διακρινόμενα. Ὁ δ' αὐτὸς ἐστὶ Κύριλλος, ἢ ὅσις ἐν ἄλλῳ ὁ τὸ περὶ Τριάδος ἐκείνο Βιβλίον σωτέταχως, ἐν Κεφαλ: Ο'. „Καὶ διὰ τὸν Πατέρα, φησὶν, ἔχει ὁ Υἱὸς καὶ τὸ Πνεῦμα, ἃ „ἔχει τετέσι, διὰ τὸ τὸν Πατέρα ἔχειν αὐτά· πλὴν τῆς Ἀγεννησίας, καὶ τῆς Γεννήσεως, καὶ τῆς Ἐκπορεύσεως: ἐν ταύταις „γὰρ μόναις ταῖς Ὑποστατικαῖς ιδιότησι διαφέρουσιν ἀλλήλων αἱ „ἅγιοι τρεῖς Ὑποστάσεις· ἐκ ἐσῆς, τῷ δὲ χαρακτηριστικῷ τῆς ἰδίας „Ὑποστάσεως ἀδιακρέτως διακρίμεναι,,. Εἴπερ ἐν μόνον τῇ Γεννήσει καὶ τῇ Ἐκπορεύσει, διαφέρουσιν ἀλλήλων τὸ Πνεῦμα καὶ ὁ Υἱὸς, ἐκδηλον πάντως, ὅτι μόνον ἡ Γέννησις καὶ ἡ Ἐκπόρευσις, τὰ τέλεια καὶ τελείως ἀπ' ἀλλήλων διαφέροντα Πρόσωπα αἱ σωισᾶσαι εἰσὶν.

Ὁ δὲ ΛΕΟΝΤΙΟΣ περὶ Αἱρέσεων, Πράξ: Α'. „Τὸ μόνον „διαφέρουσιν: ὅτι ὁ μὲν Υἱὸς γεννᾶται ἐκ τῷ Πατρὸς, τὸ δὲ „Πνεῦμα ἐκπορεύεται ἐξ αὐτοῦ,,. Εἰ γὰρ διὰ τὴν Γέννησιν, καὶ τὴν Ἐκπόρευσιν, ἐκ τῷ Πατρὸς μόνον ἀπ' ἀλλήλων διαφέρουσιν ὁ Υἱὸς καὶ τὸ Πνεῦμα, δῆλον αὖ πάλιν, τὸ τῇ Γεννήσει καὶ τῇ Ἐκπορεύσει μόνον, τὰ διωᾶ Πρόσωπα τελεία τε καὶ τελείως διαφέροντα ἐξ ἀνάγκης σωίσασθαι.

Ὁ δὲ Συναγῆτης ἈΝΑΣΤΑΣΙΟΣ ἐν τῷ Βιβλ: τῶν Ἑρωτήσεων, Ἑρωτήσαι ΚΔ'. „Ἐπὶ τῆς Ἁγίας Τριάδος, τρεῖς νοῶμεν „Ὑποστάσεις ἀσυγχύτως ἡνωμένας, καὶ καθ' ἑαυτὰς ὑφεσώσας. „Γεννᾶται γὰρ ἐκ τῷ Πατρὸς πρὸ τῶν αἰώνων ὁ Θεὸς Λόγος, „καὶ ἀχώριστος ἐστὶ τῷ γεννήσαντος· καὶ τὸ Πνεῦμα δὲ τὸ Ἅγιον „παρὰ τῷ Πατρὸς ἐκπορεύεται,,. Διὰ τὴν ἐκ τῷ Πατρὸς Γέννησιν τε καὶ Ἐκπόρευσιν, τρεῖς ἐννοεῖσθαι διδάσκει ἀσυγχύτως τε καὶ καθ' ἑαυτὰς ὑφεσώσας Ὑποστάσεις, ἥτοι Πρόσωπα. Ἡ ἄρα Γέννησις καὶ ἡ Ἐκπόρευσις, Πρόσωπα δύο, ἢ μὲν τὸ τῷ Υἱῷ, ἢ δὲ τὸ τῷ Πνεύματος, καὶ ταῦτα τελείως ἀπ' ἀλλήλων διαφέροντα σωισῶσιν, ἔχ' ἔν. Καθαρπερὲν ὁ αὐτὸς καὶ διὰ τῶν ἀνωτέρω ἐπενεχθέντων ἐδίδασκεν, ἐν οἷς τὴν τε τῷ Υἱῷ Γέννησιν, καὶ τὴν Ἐκπόρευσιν τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος, διωᾶς εἶναι παρεδίδετο τρόπῳ τῷ ὑφίστασθαι διαφέροντας.

Ὁ δ' αὐτὸς νῦν ὡς ὁμοίως καὶ τῶν ἀπομνημονοθέντων ρημάτων ἀνωτέρω ΜΑΞΙΜΟΥ τῷ Μάρτυρος, ἐν οἷς τὴν τε τῷ Υἱῷ „Γέννησιν, καὶ τὴν τε τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος Ἐκπόρευσιν, δύο προσκυνητὰς Ὑπάρξεις ἀνυποστάτως προσηγόρευεν,,. Αἱ γὰρ δύο Ὑπάρξεις αἱ καθ' ἑαυτὰς ὑφιστάμεναι, ἔχ' ἐν πάντως, ἀλλὰ δύο ἐξ ἀνάγκης εἰσάγασιν Πρόσωπα.

Τὰ



Τὰ δὲ τῷ σωτεταχότος τὰ περὶ Τριάδος, καὶ ἸΩΑΝΝΗΣ  
ἐπαναλαμβάνει ὁ Δαμασκῖος, ἐν Α'. Βιβλ: περὶ Ὁρθοδ: Πίς:  
Κεφαλ: Γ'. (20) Καὶ ἐν τῷ Γ'. δὲ Βιβλ: Κεφαλ: Ε'. (21)  
„Τὴν διαφορὰν τῶν Ὑποστάσεων ἐν μόναις ταῖς τρισὶν ἰδιότησι:  
„τῇ ἀναιτίῳ καὶ Πατρικῇ, καὶ τῇ αἰτιατῇ καὶ Υἱκῇ, καὶ τῇ  
„αἰτιατῇ καὶ ἐκπορεύτῃ ἐπιγινώσκουμεν,,. Καὶ ἐν τῇ τῷ Βαρ-  
λαάμ δὲ καὶ Ἰωσαφάτ Ἰσορίᾳ, Κεφαλ: ΙΘ'. „Ἰδιον Πατὴρ μὲν  
„τὸ εἶναι ἀγέννητον, Υἱὸς δὲ ἡ Γέννησις, τῷ δὲ Ἁγίῳ Πνεύματι  
„ἡ Ἐκπόρευσις. Ὡσαύτως ἐν καὶ ὁ Υἱὸς καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα  
„κατὰ πάντα ἐν εἶν, ἐξακριβένων τῶν ἰδιοτήτων, ὧν πρὸ μι-  
„κρῶ ἐμνήσθημεν,,. Τῶτοις παραπλήσια ἔχει καὶ ἐν τῷ Α'. Βιβλ:  
τῶν περὶ Ὁρθοδ: Πίς: Κεφ: Β'. (22) Ὡσπερ δὴ καὶ ὁ πολλῷ  
τῷ Δαμασκῖω ἀρχαιότερος, ὁ τῷ Νασιανένῳ Γρηγορίῳ ὁμῶν  
ΚΑΙΣΑΡΕΙΟΣ: (23) „Πᾶσα ἐνότης, Φησὶ, καὶ ἰσότης, καὶ ταύ-  
„τότης ἐν τῇ Τριάδι· πλὴν τῆς Ἀγεννησίας, καὶ τῆς Γεννήσεως,  
„καὶ τῆς Ἐκπορεύσεως,,. Εἰδ' ἄρα ὁ Υἱὸς καὶ τὸ Πνεῦμα δια-  
φέρει μόνον τῇ Γεννήσει καὶ τῇ Ἐκπόρυσιν, ἐκδηλον πάντως  
ὅτι δύο τέλεια τελείως διακεκριμένα σωσιῶσι Πρόσωπα, ἡ Γέν-  
νησις τε καὶ ἡ Ἐκπόρευσις.

Καὶ ΛΕΩΝ δὲ ὁ σοφὸς Αὐτοκράτωρ, ἐν τῷ εἰς τὴν Πεν-  
τηκοσίῳ Λόγῳ, τὰ Θεαρχικὰ Πρόσωπα θεολογεῖ, τῷ λόγῳ μόνῳ  
τῆς ἀρχῆς εἶναι διαφέροντα: „Ὡς τὸν Πατέρα τὴν ἀρχὴν  
„εἶναι τῷ Υἱῷ, καὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι καὶ τὸν μὲν Υἱὸν γεν-  
„νάσθαι, τὸ δὲ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκπορεύεσθαι... Αὐθις τοίνυν, εἶ-  
περ ὁ Υἱὸς καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ἐν τῇ Γεννήσει καὶ τῇ Ἐκ-  
πορύνῃ τὴν διαφορὰν εἶναι ἔχοντες, ἐξ ἀνάγκης ἐστὶν ἐντεῦθεν  
ἐπόμενον, ὅτι μόνον ἡ Γέννησις καὶ ἡ Ἐκπόρευσις τὰ σωσιῶντα  
εἰσὶ τὰ δύο τέλειά τε καὶ τελείως διακεκριμένα Πρόσωπα τῷ  
Υἱῷ καὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι, ὡς μηδὲ παρὰ ταύτας προσαπα-  
τεῖσθαι χέσεις ἐτέρας τὰς κατ' ἀντίθεσιν.

Ὡσαύτως δὲ καὶ ἐν Λατίνοις ἈΛΒΕΡΤΟΣ ὁ Μέγας, ἐν  
τῇ Ἐπιτομῇ τῆς Θεολογικῆς ἀληθείας, Βιβλ: Α'. Κεφαλ: ΚΒ'.  
ἐδίδασκε: „Τὰ ἐπὶ Θεῷ, Φάσκων, γνωρίσματα, πέντε εἰσὶ:  
„ταῦτα δὲ ἐστὶ, Πατρότης, Υἱότης, Ἐκπόρευσις, Ἀγεννησία, καὶ  
„κοινὴ Πνεῦσις. Καὶ τὸ μὲν Α'. ἐστὶ τῷ Πατρί: τὸ δὲ Β'. τῷ  
„Υἱῷ: τὸ δὲ Γ' τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι: τὸ δὲ Δ'. τῷ Πατρί: τὸ  
„δὲ Ε'. τῷ Πατρί καὶ τῷ Υἱῷ. Καὶ τὰ μὲν τρία πρῶτα,  
„γνω-

(20) Κατὰ τὴν Λεκκύν: Ἐκδοσὶν Κεφαλ: Η'. Σελ: 138.

(21) Δὺτ Σελ: 210.

(22) Κατὰ τὴν Λεκκύν: Ἐκδ: Σελ: 124.

(23) Ἐν Τέμ: Α'. τῆς τῶν Παλ: Πατέρ: Βιβλιοθ: Σελ: 549.



„γνωρίσματα λέγονται Προσωπικά, διότι τὰ Πρόσωπα σιωσιῶσι,  
 „καὶ ἰδίως αὐτὰ διακρίνῃσι· καὶ κεῖναι μόναι εἰσὶν αἱ τρεῖς μονάδες  
 „τῶν τριῶν Προσώπων, δι' αἷς τὰ Πρόσωπα τρία λέγεται. —  
 „Εἴτα — Σημειωτέον δὲ, ὅτι κυρίως τρία εἰσὶ τὰ Προσωπικά  
 „ιδιώματα: τὰ δὲ ἐστὶν ἡ Πατρότης, ἡ Υἱότης, καὶ ἡ Ἐκπό-  
 „ρῶσις. Προσωπικὴ γὰρ ἰδιότης ἐστὶν, ἡ ἐνὶ καὶ μόνῳ Προ-  
 „σώπῳ προσήκουσα, καὶ παντὸς ἄλλου πράγματος αὐτὸ διακρι-  
 „νῶσα „.

Ἐμπεδον ἄρ' ἔσηκεν ἡμῖν τὸ Καθολικὸν Δόγμα πρεσβεῦον,  
 ὅτι ἡ Γέννησις καὶ ἡ Ἐκπόρῶσις, ἔχ' ἐν τῇ καὶ μόνῳ, διὸς δὲ  
 Πρόσωπα τέλειά τε καὶ τελείως διακεκριμένα ἐξ ἀνάγκης ἐπισυ-  
 νίστησιν· ἐδ' ἄλλη τις Τίς μεταξὺ καὶ Ἀγίας Πνεύματος διαφορά  
 ἐγχαρῆ, παρὰ τὴν κατὰ τὸ, τὸν μὲν γεννᾶσθαι, τὸ δ' ἐκπορεύε-  
 σθαι. Τίνι ἄρα ποτὲ λόγῳ τὸ Δόγμα τόδε τὸ Καθολικόν, τὸ  
 ἐς αἰὲ ἐν τῇ Ἐκκλησίᾳ παραδοθὲν, ὃ Ἀκωάτης Θωμᾶς ἀνατρέ-  
 ψασθαι ἐπιχείρησε, μόνοις τοῖς κατὰ τὴν Γέννησιν καὶ τὴν Ἐκπό-  
 ρῶσιν ιδιώμασιν ἐντελῶς διακρίνεσθαι τὸν Υἱὸν ἀπὸ τοῦ Πνεύ-  
 ματος ἀρνησάμενος; Ἡ ἐχὶ ταύτῃ γε τοῖς Θεοπεσίτοις Πατράσι,  
 καὶ πάσῃ καθόλου τῇ Ἐκκλησίᾳ τὸν Σαβελλιανισμόν προσπλάσ-  
 σαι ἐπιχειρήσας καθίσταται πρόδηλος; Εἰ γὰρ ἡ κατὰ πάθῃ-  
 σιν, ὡς ἔγω φράσαι, Γέννησις, καὶ ἡ Ἐκπόρῶσις, ἐδὲν τι πλεον  
 ἢ Πρόσωπον ἐν πεφύκασιν σιωσιᾶν, (24) ἀναγκάτως δῆπερ ἔσαι  
 ἐπόμενον, τῆς Θεᾶς Πατέρας, τῆς τὸν Υἱὸν καὶ τὸ Πνεῦμα τῇ  
 Γεννήσει καὶ τῇ Ἐκπορῶσει μόνον διαφέρειν ἀπ' ἀλλήλων πεπιστώ-  
 κότας, ὡς εἶδομεν, κατὰ τῆς περὶ τὸν Σαβελλιον καὶ τέτλης, (25)  
 ἅμα τὸν Υἱὸν καὶ τὸ Πνεῦμα, εἰς ἐν δὴ καὶ μόνον συγχέειν  
 Πρόσωπον, ἐξ Τίος τε καὶ Πνεύματος εἰς ταυτὸ σιωαλείφοντα.  
 Ἀλλὰ τίς ἐκ αὐτῶν τοῦ Θωμᾶ Σαβελλιανισμόν μᾶλλον δικαίως  
 κατακυριεύσας, τῇ τὴν Ἐκπόρῶσιν καὶ τὴν Γέννησιν, τῆς δύο  
 δηλονότι διαφέροντας τῇ ὑφίστασθαι τρόπῳ, εἰς ἓνα σιωαίρεντος,  
 καὶ ταύτῃ γε καὶ ὑποστάσεις δύο σιωσιᾶν αὐτῆς ἀποφάσκοντος;  
 Τῆτο γὰρ ἐδὲν ἐστὶν ἄλλ', ἢ σιωάμα τοῖς ὑποστατικοῖς δυσὶ τρό-  
 ποις, καὶ τὰ ὑφεσῶτα δύο Πρόσωπα κατὰ τὸ ἐπόμενον εἰς ἐν  
 σιωαλείφειν καὶ σιωαίρειν. Ὡς καὶ θαυμάζειν ἔπεισιν, ὅτι καὶ  
 τῶν Λατίνων πλεῖστοι ἐντεῦθεν ἡγεμόνι τῷ Θωμᾶ παρακολοθῶν-  
 τε, παραπλησίως αὐτὸ γε τῆτο, πρῶτενάν τε ἡμῖν, καὶ ἀπανταχῇ  
 προ-

(24) Ὡς περ ἐν καὶ ἡ κατ' ἐνέργειαν Γέννησις τε καὶ Ἐκπόρῶσις τὸ Πρόσωπον σιωσιᾶσι  
 μόνον τὸ τῆ Πατρός.

(25) Παρὰ τοσῶτον διαφέροντας, δηλονότι, ὅτι τῇ Σαβελλίῳ τὴν σιωαλοιφίαν τῶν τριῶν  
 εἰς Πρόσωπον ἐν καθιστῶντος, αὐτοὶ εἰς Πρόσωπα δύο μεταπλάττεσι τὴν δύσ-  
 σέβειαν.

προταίνουσιν, ὡς ἀπόδειξιν ἀντικρυς τῆς τῆς Ἁγίας Πνεύματος καὶ ἐκ τῆς Υἱᾶς Ἐκπορεύσεως.

Ἄλλ' ἔστιν ἔν ὅς τις ὥδε ἐνίσταται: (26) „Οὕτως ἔχει τὸ γεννητὸν πρὸς τὸ πνεῦσον, ὡς τὸ γεννῶν πρὸς τὸ πνέον. Ἄλλ' ἁμὺ τὸ γεννῶν ἀπὸ τῆς πνέοντος, τῷ λόγῳ μόνῳ διακρίνεται. Ἄρα καὶ τὸ γεννητὸν καὶ ἐκπορεύτον, ὑπεξαυραμένης τῆς κατὰ τὴν ἀρχὴν χέσεως, μόνῃ τῇ ἐπινοίᾳ διακρίνονται. (27) Πάντως δῆπερ εἴαν ἐπ' αὐτῆς μόνον τῆς ὁρᾶς ἀπίδης, ἔτως ἔχει τὸ γεννητὸν πρὸς τὸ πνεῦσον, ὥσπερ τὸ γεννῶν πρὸς γε τὸ πνέον: καθάπερ γὰρ τὸ γεννᾶσθαι ἐκ ἔσι πνεῖσθαι, ἐδ' ἀνάπαλιν ἔτως ἐδὲ τὸ γεννᾶν ἐστὶ πνεῖν, ἐδ' ἀνάπαλιν. Οὐμὺ ἄλλ' ἐν τοῖς Θεοῖς, διαφέρων ὁ λόγος ἀνακύπτει ἐντεῦθεν: ὅτι εἷς τε καὶ ὁ αὐτὸς πνέων τε καὶ γεννῶν, ἐχ' ἐν τι ἐστὶ παράγων, διὸ δὲ Πρόσωπα. (28) Αἱ δὲ ἐνέργειαι ἐφ' ἐνός τε καὶ τῆς αὐτῆς Προσώπου διώκονται σιωελθεῖν, ἀνευ τῆς ὑπ' ἀλλήλων ἀμοιβαδὸν ἀνταναιρεῖσθαι, καὶ ἀνατρέπεσθαι. Ὁ γὰρ αὐτὸς θάτερον μὲν γεννᾶν, θάτερον δὲ τῶν Προσώπων ἐχ' γεννᾶν, ἄλλως δὲ πνεῖν ἡδύατο. Ἀλλὰ γὰρ ὡς τῶν ἀδωάτων, ἐν τι ὅποιον ἐν τὸ αὐτὸ καὶ γεννᾶσθαι καὶ μὴ γεννᾶσθαι, καὶ πνεῖσθαι καὶ μὴ μᾶλλον δὲ, παρ' ἐνός τε καὶ τῆς αὐτῆς, πρὸ παντὸς αἰῶνος: ὁ γὰρ κατὰ τρόπον γεννήσεως παραγόμενος, ἐκ ἂν πάλιν παράγοιτο, κατὰ τρόπον ἐχ' γεννήσεως, ὁ αὐτὸς παρὰ τῆς αὐτῆς καὶ ἐξῆς ὁμοίως. Μείζων ἄρα ἐπὶ τῆς Θεότητος ἢ μέσον τῆς γεννᾶσθαι καὶ τῆς πνεῖσθαι ἐγχωρῶσα διαφορὰ, ἢ περ ἢ μεταξὺ τῆς γεννᾶν καὶ τῆς πνεῖν παρεμπίπτουσα. Ἐφ' οἷς καὶ (ὡς ἀνωτέρω ἐδείκνυτο) ἐπὶ μὲν τῆς Υἱᾶς, ὁ τρόπος ὁ τῆς ὑφίστασθαι ἐστὶν ἢ Υἱότης: ἐπὶ δὲ τῆς Ἁγίας Πνεύματος, ἢ Ἐκπόρευσις: τοιγαρὶν τὸ γεννᾶσθαι καὶ τὸ ἐκπορεύεσθαι, τρόποι διαφέροντες τῆς ὑφίστασθαι δύο εἰσὶν. Ἀλλὰ γὰρ τὸ γεννᾶν καὶ τὸ πνεῖν, τρόποι τῆς ὑφίστασθαι διαφέροντες δύο, ἡκιστα εἰσὶν. (29) Πῶς ἔν ἐκ ἂν ἢ διαφορὰ μείζων εἴη, ἢ μεταξὺ τῆς πνεῖσθαι καὶ τῆς γεννᾶσθαι, ἢ περ ἢ ἐν τῷ πνέειν τε καὶ γεννᾶν μεσιτεύουσα; ἢ πῶς ἂν τις ἔχοι συμπεραίνειν, ὡς

(26) Κιχώβ: Ζητήμ: Η'. Σελ: 87. Τέτοις δ' ἔχει παραπλήσια, καὶ τῇ Ἀνασκολῇ τῆς Πιμένε, Σελ: 149.

(27) Τῆτο δὲ παραπλήσιον ἂν εἴη, οἷον εἴ τις καὶ συλλογίζοιτο ὥδ' πως: ὡς τὸ Γραμμὴν ἄγει εὐθείαν πρὸς τὸ καμπύλιον, ἔτως ἢ εὐθεία πρὸς τὴν καμπύλιον. Ἄλλ' ἁμὺ ἢ αὐτὴ χεὶρ ἀγαγεῖν διώαται τὴν μὲν εὐθείαν, τὴν δὲ καμπύλιον. Ἄρα διὰ δὴ τῆτο καὶ ἢ αὐτὴ Γραμμὴ, εὐθεία τε καὶ καμπύλη ἐστὶ.

(28) Ἰδὲ οἱ διατοὶ ὅροι, ἐφ' ἧς ἢ ἐν τῷ Πατρὶ κατ' ἐνέργειαν Γέννησις, καὶ ἢ Ἐκπόρευσις περατῶνται, ὁ μόνος ἐστὶ λόγος τῆς ἐκείνας μὴ εἶναι ἀσυμβάτους, μηδὲ πρὸς ἀλλήλας ἀντιθέτους, μηδ' ἀλλήλων ἀνταναιρετικές. (Ὁρα τὰς ἀνωτ: Σημειώσεις (2) καὶ (10)).

(29) Ὁρα ἀνωτ: Σημει: (16).

Τόμ: Β'.

Τ ΤΤΤΤ

ὥς ἐπεὶ τὸ γεννᾶν καὶ τὸ πνεῖν, τῷ λόγῳ ἐστὶ διαφέροντα μόνῳ, ἄρα καὶ τὸ γεννᾶσθαι δὴ καὶ τὸ πνεύσθαι, ἔδεν τι μᾶλλον διοίσει, ἢ κατ' ἐπίνοιαν; πάντως γὰρ τρόποι δύο τῷ ὑφίστασθαι διαφέροντες, ἕχῃ τῇ ἐπινοίᾳ, ἀλλὰ τελείως, ἀλλὰ πράγματι ἔχοντες εἰς τὴν πρὸς ἀλλήλους διαφοράν. Ἡ γὰρ ἐμὴ Γέννησις καὶ ἡ Ἐκπόρουσις, δύο τρόποι τῷ ὑφίστασθαι ὑπῆρχον διασελλόμενοι.

Κάντεῦθεν ἔτι φρονέει οἴχεται, καὶ ἅπερ ὁ αὐτὸς (30) πρὸς τὴν δὲ τὴν Ἀπάντησιν ἀντεπιφέρει: „Εἰ γὰρ δήπε (Φησὶ) μεταξὺ τῶν χέσεων τῷ Γεννήτορι καὶ τῷ Πνέοντι τοσαύτη ἀνομοιότης, ὅση μεταξὺ τῷ Γεννητῷ καὶ τῷ Πνέοντι. Τίνος ἔνεκα ἔκ ἂν ἐκπηγάσθαι καὶ ἐκείνων Ἀντιθέσεις πράγματι διακριτικά, εἰ τοιαῦτα ἐκ τῶν χέσεων τῷ Γεννητῷ καὶ Πνέοντι εἰσὶν ἐκπηγάσθαι; ἢ ὅτι, ἐκείναι μὲν ἐφ' ἑνὸς γε καὶ τῷ αὐτῷ ὑποκειμένη εἰσὶν, αἱ δὲ, ἐπὶ πλείονων πράγματι διακρινομένων; Ἀλλὰ γὰρ καὶ αὐτὰ ταῦτα ἔκ ἂν πράγματι εἴη διασελλόμενα, εἰ μηδὲν ἢ ἐπ' αὐτῶν, δι' ἧς ἂν πράγματι διασελλοῦντο μηδὲν δ' ἂν ἔσεσθαι δι' ἧς διασελλοῦντο πράγματι, εἰ μή τις λόγος παρέμπετοι ὁ κατὰ τὸ αἴτιον καὶ τὸ αἰτιατὸν, οἱ Θεοὶ Πατέρες διδάσκουσι. Τῷ ὄντι δὲ, μόνῃ αὐτῇ γε παρὰ τῶν Θεωπεσιῶν Πατέρων, κατὰ τῶν περὶ Σαβελλιον, ἐπὶ διακρίσει τῶν Ὑπερθέων Προσώπων, ἡ ἀρχὴ πρόκειται: ὅτι μηδὲν παράγειν ἑαυτὸ οἶον τε ἔστιν. ἔδ' ἂν ἔννοιαι ποτὲ παρ' αὐτοῖς (τοῖς Πατράσι) τὴν τοιάνδε διάκρισιν διὰ τῷ λόγῳ τῆς ἀνομοιότητος ἀποδεικνυμένων. Ὁ δ' αὐτὸς Φησὶ, (πρὸς ὃν ἡ Ἀντίρρησις) διὰ τῆς ἐκ τῷ ἀνομοίᾳ τῶν χέσεων ἀνακυπλίσσης ἀντιθέσεως, Πρόσωπον ἀπὸ Προσώπου ἐν τοῖς Θεοῖς χρῆναι διακρίνεσθαι, προῖκα λέγεται. Πότεν γὰρ τὸ περὶ τέττα; τίς τότε τῶν Ἱερῶν Πατέρων ἐδίδαξε; τίς δ' ἂν ἀποδείξει λόγος; Δεῖξαι δ' ἦπερ αὐτοῖς ἐπ' ἀνάγκῃ, οἱ τὸν προσανατριβόμενον σφίσι Σαβελλιανισμόν ἔκ ἂν ἄλλως ἔχοιεν ἀποξέσασθαι. ὅν τε ἔδ' ἔτι ἂν ἀποξέσαιεν, τῶν τῷ Γεννητῷ καὶ Πνέοντι ἀνομοίων χέσεων, μηδέν τι μᾶλλον διακριτικῶν ἔσων, ἢ περ αἱ τῷ Γεννῶντος τε καὶ Πνέοντος εἶναι πεφύκασιν,,.

Ὅπως μὲν ἔν ἐπὶ τῆς Θεότητος, ἡ τῷ Γεννητῷ καὶ τῷ Πνέοντι ἀνομοιότης, μέγαν ἐστὶ τῆς μεταξὺ τῷ Γεννῶντος καὶ Πνέοντος, πάνυ σαφῶς ἀποδέδεικται. ὅτι δηλ: ἀδύνατον μὲν εἶναι ἕν τι ὁποῖον ἂν, γεννᾶσθαι ἅμα καὶ μὴ γεννᾶσθαι τὸ αὐτὸ, καὶ πνεύσθαι καὶ μὴ τὸ δέ τινα τὸν αὐτὸν, τὸν μὲν γεννᾶν, τὸν δὲ πνεύειν. τετέστι τὸ, ἑτέρῳ τινὶ τρόπῳ παρὰ τὸν διὰ γεννήσεως, ἑτερόν.

(30) Κιχῶς: Σελ: 88. κατὰ τῷ ἐν Γασίῳ Διδασκάλῳ διαλεγόμενος.

ἕτερόν τινα παράγειν, ἔκ τῷ ἀδιώατον. (31) — Πάλιν: τῆς Γεννήσεως καὶ τῆς Ἐκπορεύσεως, δύο μὲν τῷ ὑφίστασθαι τρόπων διαφορῶν ὄντων κατὰ πάθῃσιν, κατὰ δὲ ἐνέργειαν ἑδαμῶς (32). ἕτερός τις λόγος καὶ ἕτος τῷ αἰτιώδῃ, τῷ διὰ μὲν τῆς Γεννήσεως καὶ τῆς Ἐκπορεύσεως, παθητικῶς νοσμένων, χέσεις πράγματι διακριτικᾶς ἐκπηγάξεν, διὰ δὲ τῶν αὐτῶν ἐνεργητικῶς, ἔχοντες τῆς ἀνομοιότητος ταύτης, ἔκ ἐκείνου μόνον αἷτιον ἐστίν, ὡς ὁ Ἰησοῦς ἡμῖν ἀνθυπέφερεν, ὅτι τὸ μὲν γεννᾶσθαι καὶ τὸ πνεῖσθαι, ἐν πλείοσιν ὑποκειμένοις ἐστίν, ἃ πράγματι διακρίνεται, τὸ δὲ πνεῖν καὶ τὸ διὰ γεννήσεως παράγειν, ἐν ἐνὶ καὶ μόνῳ μόνον· καθάπερ γὰρ εἴρηται, ἢ Ἐκπόρευσις καὶ ἢ Τίσις, ἐν τῷ Πνεύματι καὶ ἐν τῷ Τίῳ, τοιαύδε χέσεις εἰσὶν, ὡς δι' αὐτῶν τῶν ἐπάναγκες εἶναι πράγματι ἀπ' ἀλλήλων τὰ Πρόσωπα διακρίνεσθαι, ὡς προδέδεικται. Πῶς δὲ καὶ οἱ Πατέρες εἰς διδάσκοντες, τῷ κατὰ τὸ αἷτιον καὶ τὸ αἰτιατὸν λόγῳ διαφέρειν τὰ Πρόσωπα, ἥδη καὶ τῷτο προαπεδείχθη, ἐν τῇ περὶ τῶν Μαρτυριῶν τῶν Ἀνατολικῶν Πατέρων Πραγματεῖα, περὶ τὰς τῷ Νύσσης Γρηγορίου ῥήσεις. (33) Ἀμέλει τοι: ἔχ' ὅτι ὁ Τίσις καὶ τὸ Πνεῦμα ἔχ' πράγματι διοίσκωσιν, εἰ μὴ ὁ μὲν αἷτιος εἴη, τὸ δὲ αἰτιατὸν· ἀλλ' ἦτοι, διὰ τὸ τὸν μὲν Πατέρα, αἷτιαν τε εἶναι καὶ γεννήτορα· τὸν δὲ Τίον, αἰτιατὸν τε καὶ γεννητόν· τὸ δὲ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, αἰτιατὸν καὶ ἐκπορεύτόν· ὡς αὐτόθι διαβρήδῳ ἐδίδασκεν ἸΩΑΝΝΗΣ ὁ Δαμασκηνός· ἢ γὰρ, κατὰ τὸν Νυσαῖον ΓΡΗΓΟΡΙΟΝ, διὰ τὸ, τὸν μὲν Πατέρα τῷ αἷτιαν εἶναι· τὸν δὲ Τίον, μήπω τινὸς παραχθέντος, ἐκ τῷ Πατρὸς γεννᾶσθαι· τὸ δὲ Ἅγιον Πνεῦμα, ἥδη τῷ Τίῳ γεννηθῶσα ἐπινοσμένη, ἐκ τῷ αὐτῷ Πατρὸς ἐκπορεύεσθαι· ἃ δῆπερ τοῖς τῷ Δαμασκηνῷ ἐκείνοις ἐστὶ συμβαίνοντα.

Ἐν μόνῳ ἄρα τῷ διαφέροντι κατὰ τὸ αἰτιατὸν λόγῳ, τῷ τῷ Τίῳ καὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος διασολῶ οἱ Πατέρες τιθέασιν, ὃ παραπλησίως ἀποδεικνύει σαφέςατα, καὶ τὰ προεπενεχθέντα πρὸ μικρῶ αὐτῶν ῥήματα, δι' ὧν τοσάκις τῇ Γεννήσει τε καὶ τῇ Ἐκπόρυσσει μόνον διαφέρειν τὸν Τίον καὶ τὸ Πνεῦμα ἐδίδασκον. Καὶ πῶς ἔν ἄρα ἡμῖν ὑπεναντίοι ἔσονται οἱ Θεοὶ Πατέρες, τῷ τὰ Θεαρχικὰ Πρόσωπα, μόνῳ τῷ κατὰ τὸ αἷτιον καὶ τὸ αἰτιατὸν λόγῳ διενυωχέναι διδάσκων, ὅποτε δὴ τὸ αὐτό γε τῷτο περὶ τῷ Τίῳ καὶ τῷ Πνεύματος, κατὰ τῶς διαφέροντας τῷ αἰτιατῷ λόγῳ νοῦντες ἐγέ-

(31) Ἀδιώατον δ' τῷ ἂν μόνον, εἰ μή τι ἕτερον ὑποτεθείη, τὸ αὐτὸ δὲ, ἢ σεσημείωται (2) καὶ (10).

(32) Ὁρα Σημείωσιν (16).

(33) Ἐ τῇ Δ'. Πραγματ: Ἐκατοντ: Δ'. ἐ πάνυ πρόβῳ τῷ τέματός.



ἐγένοντο; Τῷ γὰρ ὄντι τῇ Γεννήσει καὶ τῇ Ἐκπορεύσει μόνον διαφέρειν ἀπ' ἀλλήλων ἔφασκον τὸ Πνεῦμα καὶ τὸν Υἱόν, τὰς αὐτὰς διαφορὰς τὰ αἰτιατὰ λόγους καὶ αὐτοὶ ὑπεννοῦντες ἔσμεν, δι' ὧν ὡσαύτως οἱ Πατέρες ἔφασκον μόνον διενυωχέναι τὸ Υἱόν καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον.

Ὁρθῶς δέ τοι καὶ κατὰ τῶν περὶ Σαβέλλιον τῇ τοιαύτῃ ἀρχῇ προσεχρήσαντο οἱ Θεοὶ Πατέρες: („ὡς ἑδὲν ἑαυτὸ παράγειν „οἶον τε ἐξίν,“) ἐφ' ᾧ τὰ διακεκριμένα τῆς Τριάδος Πρόσωπα δείξωσιν. Εἰ γὰρ ὁ Πατήρ γεννᾷ μὲν τὸν Υἱόν, προβάλλει δὲ τὸ Πνεῦμα, φανερόν πάντως ὅτι ἕτερον μὲν Πρόσωπον ἐστὶ παρὰ τὸν Υἱόν ὁ Πατήρ, ἕτερον δὲ καὶ παρὰ τὸ Πνεῦμα· καὶ κατὰ τὸ ἐπόμενον ἔχ' ἓν, πλείω δ' ἑνὸς τὰ Πρόσωπα ἐστὶν ἐπὶ τῆς Θεότητος. Ἀλλὰ τὰς τῶν Πατέρων ῥήσεις παραθέσθαι ἡμῖν ὠφέλην ὁ Ἰησοῦς δι' ὧν τῆς ἀρχῆς προτεθείσης, (τῆς ἑδὲν ἑαυτὸ παράγειν ἀξιόσεως:) ἐντεῦθεν ὅτι ὁ Υἱὸς τὸ Πνεῦμα παράγει ἐστὶ προσελήφασιν· ἢ δι' ὧν, τὸν Υἱόν καὶ τὸ Πνεῦμα ἐκ τῆς αὐτῆς ἀρχῆς ἀπλῶς (34) διωσὰ πεφυκέναι Πρόσωπα σωεπέρανται. ταῦτα γὰρ μόνα ὧδ' ἂν εἴη ἀνήκοντα.

Προσέτι δὲ ψόδδες καὶ κῆνοι ἐν τέτοις ὁ Ἰησοῦς παρασιώπτει „τὸ μηδαμῶς παρὰ τοῖς Πατέράσι τὴν τοιάνδε διάκρισιν εὐρύσκεισθαι, τῷ λόγῳ τῆς ἀνομοιότητος ἀποδεικνυμένῳ ἢ τὸ, διὰ τῆς ἀντιθέσεως τῆς ἐκ τῶν ἀνομοίων χέσεων ἀνακυπτέσεως, τὸν „Υἱόν καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα διακρίνεσθαι,“. Διὰ γὰρ τῶν ἀνομοίων τῶνδε χέσεων, ἢ τε Γεννήσεως καὶ ἢ Ἐκπορεύσεως ἐννοῦνται. Ἀλλὰ γὰρ τοσάκις οἱ Θεοὶ Πατέρες, ἐπὶ τῶν προαπομνημονεύθεισων ῥήσεων διαρρήδιω ἔφασκον, τῇ Γεννήσει τε καὶ τῇ Ἐκπορεύσει μόνον διασέλλεσθαι τὸν Υἱόν, καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. Καὶ μὴ καὶ παρὰ τὰς τῶν Πατέρων μαρτυρίας, καὶ λογισμῶν προσέτι ἐφίεσθαι εὐκότι τῷ Ἰησοῦ, ἡμᾶς καὶ λόγους ἀνωτέρω, περὶ τῷ Β' καὶ τῷ Γ'. τῶν πρὸς τόδε τὸ τῷ Θωμᾷ Ἐπιχέρημα Ἀπαντήσεων αὐτῷ ἐπιωέγκαμεν.

Τίνι δὲ τελοῦταῖον προφάσει δικαία, καὶ Σαβελλιανισμόν αὐτὸς τοῖς ἡμετέροις προσανατρίβει, ἔκγε τῶν κατόπιν ῥηθέντων πάρεσι σιιδεῖν. Τῇ γὰρ Διδασκαλίᾳ τῆς τῷ Χριστῷ Καθολικῆς Ἀγίας Ἐκκλησίας σοιχῶντες ἡμεῖς διδάσκομεν: „Διὰ τῆς Υἱότητος καὶ τῆς Ἐκπορεύσεως, ἐντελῶς διασέλλεσθαι τὸν Υἱόν καὶ τὸ „Πνεῦμα,“. Αἱ δὲ περὶ τέττα τῶν Θεωπεσιῶν Πατέρων ῥήσεις ἀνωτέρω δὴ παρετέθησαν. Ὡς ἄρα μὴ μόνους τὰς ἡμετέρας, ἀλλὰ καὶ

(34) „Ἀπλῶς,“. Ψαλῶς δηλονότι καὶ ἀπροσδιορίστως, χωρὶς τῆς καὶ τῶν διαφορᾶν τῆς Γεννήσεως καὶ τῆς Ἐκπορεύσεως, ὡς δυοῖν διαφερόντων τῶν ὑφίστασθαι τρόπων, τὰς τέτοις τῶν ὑπάρχον, προσεπιμνηθῆναι.



καὶ πᾶσαν τὴν παλαιάν τε καὶ Καθολικὴν Ἐκκλησίαν ἐνδιαβάλλον-  
τα τὸν Ἰησοῦν λαμπρῶς ἀπελέγχεσθαι. Ἀλλ' ἤδη γὰρ, ὡς ἐξ  
ᾧν ἔφθημεν εἰρηκότες, αὐτοὶ μᾶλλον Λατῖνοι, δι' ᾧν δοξάζουσιν  
ἡμῖν ἀντιφρονεῖντες, σὺν αὐτῷ αὐτῶν τῷ Καθηγέτορι Θωμᾷ, ἐπὶ  
τὸν Σαβελλιανισμόν προδήλως ἐκτραχηλιζόμενοι καταφέρονται.

Ἄ δ' ἐφεξῆς αὐτόθι λοιπὰ διαλέγεται ὁ Ἰησοῦς, ὡς μηδὲν  
πρὸς τὴν παρ' ἡμῖν ἀνωτέρω γενομένῳ Ἀπάνησιν τείνοντα, ἐκόν-  
τες παρίμεν.

Τῷ δὲ (καθ' ἃ ὧδε διαλέγεται ὁ Ἰησοῦς (35) εἰρηκότος:  
„ὅτι ἐκ τῶ ἐνδοτέρου λόγος τῆς Υἱότητος, καὶ τῆς παθητικῆς πνύ-  
σεως, ἐντελῶς διασέλλονται· ἦτοι ἀπ' ἀλλήλων διαιρῶνται ταῦτα  
τὰ Πρόσωπα. Ὁ δὲ πρὸς τὰδε ἀπαντᾷ, τὸναντίον ἀντιβάλλ-  
ων: „Ὁ γὰρ ἐσωτερικὸς λόγος τῆς κατ' ἐνέργειαν γεννήσεως,  
καὶ ὁ τῆς κατ' ἐνέργειαν πνύσεως, σιωπᾷν ἐκ ἔχουσι Πρόσωπον  
διακεκριμένον, πολλῷ δ' ἤττον διηρημένον (Φησὶν): Ἄρ' ἐδ' ὁ  
ἐσωτερικὸς λόγος τῆς τε Γεννήσεως τῆς παθητικῆς, καὶ τῆς  
πνύσεως ὁμοίως τῆς κατὰ πάθησιν· ἦτοι τῆς Ἐκπορεύσεως,  
σιωπᾷν ἔχουσι Πρόσωπα ἐντελῶς, ταῖς τε πράγματι ἀπ' ἀλλή-  
λων διακρινόμενα. Ὅτι ἐδ' αὐταί, ὡς ἐδ' ἐκεῖναι, ἀντίθεσιν τινα  
πρὸς ἀλλήλας ἔχουσι, τὴν μόνον ἐν τοῖς Θεοῖς ἀρχὴν ἔσαν  
πραγματιώδως διακρίσεως. Ἀλλ' ἢ τῷ ἐπιφερομένῳ ἐπίλυσιν ἐκ  
τῶν ἀνωτέρω ρηθέντων ἔυδηλος. Ἀπὸ γὰρ τῆς κατ' ἐνέργειαν  
γεννήσεως τε καὶ παραγωγῆς, ἐπὶ τὴν κατὰ πάθησιν γέννησιν τε  
καὶ πρόοδον ἔχ' ὑγιῆς ἢ σωπέια. (36) Αὗται μὲν γὰρ δύο εἰσὶ  
τρόποι ὑπάρξεως διαφέροντες, ἐκεῖναι δὲ ἓ. Ἀλλ' οἱ δύο τῷ  
ὑφίστασθαι διαφέροντες τρόποι, διὸ καὶ τὰ Πρόσωπα σιωπᾷν  
πεφύκασι, πράγματι ἀλλήλων διακρινόμενα. Ἐπειτα καὶ τὸ  
αὐτὸ παρὰ τῷ αὐτῷ καὶ γεννᾶσθαι καὶ μὴ, τῶν ἀδωάτων ἐστὶ.  
Καὶ ἐκ ἄρα οἷον τε ᾧ, ἐν τῷ καὶ τὸ αὐτὸ Πρόσωπον, γεννητόν τε  
εἶναι καὶ μὴ γεννητόν· ᾧ δ' ἐπάναναγκες διὸ εἶναι. Ἐν μέντοι γε  
Πρόσωπον τὸ αὐτὸ, τὸ μέν τι γεννᾷ, τὸ δέ τι ἕτερον ἑτέρῳ  
τρόπῳ προβάλλειν εἰς τὸ εἶναι, παρὰ τὸν κατὰ γέννησιν, ἐδόλως  
ἀδωάτον. Καὶ ὁ λόγος δὲ, ὅπερ ὁ Ἰησοῦς ὑποσιωπάει, αἰ-  
τεῖται τὸ ἐν ἀρχῇ. Ψεῦδές γὰρ ὅτι μόνῃ ἢ ἀντίθεσις, ἀρχὴ  
ἐστὶν ἐν τοῖς Θεοῖς τῆς τῶν Προσώπων πραγματιώδως διακρίσεως.  
Τελούτατον, παραπλήσια τοῖς παρ' ἡμῶν ἀνωτέρω ἐπενεχ-  
θεῖσι τῷ προσδιαλεγόμενῳ (37) ἀντεπαγαγόντος ταῖς τε, ὅτι  
„ἀδωά-

(35) Εὐσεβίος τῷ Πιμένει, ἐν τῷ τέτῳ Συγγράμῳ: ᾧ Ἐπιγράφη Λίθος· Σελ: 153. καὶ ἐν  
τῇ τέτῳ Ἀνασκόπῃ τῇ ὑπὸ τῷ Κιχωβίῳ, Σελ: 149.

(36) Τῷ γεννᾷν τε καὶ ἐκπορεύειν, ἐπὶ τὸ γεννᾶσθαι καὶ ἐκπορεύεσθαι· (ὄρα δὲ μοι καὶ  
τὴν ἀνωτ: Σημ: (27).

(37) Εὐσεβίος τῷ Πιμένει, περὶ ἃ σσημείωται καὶ ἀνωτ: (35).

Τομ. Β'.

Υ υυυυ

„ἀδιώατον ἐστίν· ἐν καὶ τὸ αὐτὸ Θεὸν Πρόσωπον διανοῖς τρόποις  
 „ἀποβλυσάνειν· ἦτοι τὸν μὲν Υἱὸν γεννᾶσθαι ἅμα καὶ πνέεσθαι,  
 „τὸ δὲ Πνεῦμα πνέεσθαι καὶ γεννᾶσθαι. Κἀντεῦθεν ἄρα ἀδιώατον  
 „καὶ τὰ δύο Πρόσωπα, τὰ τοῖς δυσὶ τέτοις ἐκπηγάζοντα τρόποις,  
 „μὴ δύο Πρόσωπα εἶναι ἀπ' ἀλλήλων διακρινόμενα, ἥπερ ὅροι  
 „(ἐνεργειῶν) διακεκριμένων πεφύκασιν,, — Ὁ Ἰησοῦς πάντῃ  
 καὶ πρὸς τόδε: τὸναντίον μὲν ἔν γε, φάσκων: „Ὁ, τι ποτ' ἂν  
 „καὶ ἡ περὶ τῶ ἡγαμέμνε· (ὅτινες τῶν Θεολογούντων ἐπὶ τῆς  
 „προκειμένης ὑποθέσεως ἀπαναίνοντα· μηδένα λόγον ἐνέχαι  
 „διατεινόμενοι, τῶ μὴ ἂν εἶναι καὶ τὴν γέννησιν πνεῦσιν, καὶ τὸ  
 „ἀνάπαλιν· εἴπερ αὐτοδοξασικὸν ἐστὶ, τὸ τοῖς ἀντιφρονέσι δοκῆν,  
 „τὸ μὲν γεννητὸν εἶναι Πρόσωπον, τὸ δὲ δεύτερον· τὸ δὲ Πνεῦμα  
 „εἶναι, τὸ τρίτον·) ἀπόφημι δὴ τὴν σωπέειαν· μᾶλλον δὲ, διακρίνω:  
 „Ἀδιώατον ἐστὶ τὰ τοῖς δε τοῖς τρόποις ἐκπηγάζοντα Πρόσωπα μὴ  
 „εἶναι διακρινόμενα, ἥπερ ἔν τῇ διακρίσει, καὶ οἱ τῶν ἐνεργη-  
 „τικῶν προβλύσεων τρόποι διακεκριμένοι εἰσὶ: διακρίσει δηλονότι  
 „τῇ γε κατ' ἐπίνοιαν: ἐύμφημι· διακρίσει δ' ἔν μειζοτέρῃ, ἢ καθ'  
 „ὧν ἐκείνοι εἰσὶν οἱ τρόποι διακρινόμενοι: τετέστι, διακρίσει τῇ  
 „πραγματιώδει: ἀπόφημι. Καὶ δοθέν ἄρα, ὅτι διὰ τῶνδε τῶν  
 „τρόπων, διακρίνεσθαι διώαται τὰ Θεῖα Πρόσωπα κατ' ἐπίνοιαν,  
 „ἔποτε ἔτως ἀποδειχθήσεται, τὸ διακεκριμένα αὐτὰ εἶναι καὶ  
 „πράγματι,,.

Ἄλλ' ἔδὲν ὅ, τι περ καὶ ὑγιὲς σωιῶν ἐστὶν ὁ Ἰησοῦς· Ἐπι-  
 χειρῶμεν καὶ γὰρ ὧδε: Ἀδιώατον ἐστὶν ἐν τι ὁποιοῦν τὸ αὐτὸ,  
 καὶ γεννᾶσθαι καὶ πνέεσθαι: ἦτοι μὴ γεννᾶσθαι. Ἀδιώατον ἄρα  
 τῶ μὲν Υἱῶ γεννωμένῃ, ἦτοι μὴ ἐκπορδομένῃ· τῶ δὲ Πνεύματος  
 ἀνάπαλιν ἐκπορδομένῃ, τετέστι μὴ γεννωμένῃ, τὸν Υἱὸν καὶ  
 τὸ Ἅγιον Πνεῦμα μὴ δύο Πρόσωπα εἶναι ἀπ' ἀλλήλων διακρινό-  
 μενα. Πῶς ἔν ταῦτα ὁ Ἰησοῦς ἔτω προσδιορίσασθαι εἶχεν,  
 „ὥς ἄρα ταύτῃ γε αὐτὰ ἔσοιτο διακεκριμένα τῇ ἐπινοίᾳ, καὶ  
 „ἔχι τῷ πράγματι,,; Ἡ ἔχι καὶ τόδ', εἶπέ μοι, ἐπιδήλω περι-  
 πίπτει τῇ ἀντιφάσει, τὸ λέγειν, ὅτι ἐκ τινος πεφυκέναι Πρόσωπα  
 ἔπειτα δύο, τῇ ἐπινοίᾳ μέντοι γε, ἔχι δὲ πράγματι διασελλόμενα;  
 (38) Ὡς εἴτινες ἔχοιεν ἀμέλει προσωπικῶς διανοῖσθαι, μόνῃ  
 μὲν τῷ κατὰ ψιλῶ ἐπίνοιαν διακρινόμενοι λόγῳ, μὴδ' ὅπως  
 δ' ἀλλήλων πραγματιωδῶς διαφέροντες. Ἐνθεντοὶ καὶ τὴν διαί-  
 ρεσιν αὐτῶ ἐκείνῳ ὁ Ἰησοῦς ἡμῖν παρεισάγων, ἔχι καὶ τὰ  
 ῥήμα-

(38) Εἰ γὰρ τῇ ἐπινοίᾳ καὶ ἔχι πράγματι, ἔδὲ Πρόσωπα τὴν ἀρχὴν ἔσαι τὰ Πρόσω-  
 πα· ὥς εἶγε Πρόσωπα ἐστὶ, πράγματι ἄρα καὶ διακρίνεται, καὶ ἔχι τῇ ἐπινοίᾳ·  
 τὰ τῇ ἐπινοίᾳ ὑποτιθέμενα διακρίνεσθαι· καὶ ἔτως ἄρα τῇ ἐπινοίᾳ τὰ αὐτὰ καὶ  
 ἔχι τῇ ἐπινοίᾳ· καὶ πράγματι καὶ ἦκιστα πράγματι.

ρήματα ἐπιφέρει ἀκέραια, τὰ ἀνλεπενεχθέντα αὐτῷ δηλονότι  
ἐκείνα: („ὅτι ἀδιώατον ἐστὶ μὴ εἶναι Πρόσωπα δύο διακεκριμένα,“) ἀποκολοῦσι δὲ αὐτὰ ἔτω ῥαδιουργῶν: („ἀδιώατον μὴ εἶναι δια-  
κεκριμένα,“) παραλειφθέντων ἐκείνων: („μὴ δύο εἶναι Πρό-  
σωπα,“) ἐν οἷς ῥήμασιν ἀλλ' ἐν ἅπασα κείται ἡ ἰχὺς τῆ Ἐπι-  
χειρήματος.

Εἰς κατασκοπῇ δὲ τῆς ἰδίας αὐτῆ διαίρεσεως, τίνα λόγον  
ὁ Ἰησοῦς ἐπάγει; μηδέν· τοσῶτον δὲ μόνον ἀποτόμως ἀπό-  
φησι τὸ διώαθαι ποτε ἀποδειχθῆναι, ὅτι διὰ τῆς Υἱότητος καὶ  
τῆς Ἐκπορεύσεως, πράγματι διακρίνονται ἀλλήλων ὁ Υἱὸς καὶ  
τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον: καὶ τοι γὰρ τέττα ἄλλες ἀποδεδειγμέναι δι' ὧν  
ἀνωτέρω λόγων παρεξησάμεθα. Πρῶτον καὶ γὰρ, εἴπερ ἡ τῆ  
Υἱᾶ Γέννησις, καὶ ἡ τῆ Ἁγίας Πνεύματος Ἐκπόρευσις δύο δια-  
φέροντες ὑποστάσεις τρόποι εἰσὶ, καθάπερ δὴ τρανῶς τε τῷ λόγῳ,  
καὶ σαφέσι ταῖς ἐκ τῶν Πατέρων προαποδέδεικται ῥήσεσιν, ἐξ  
ἀνάγκης ἐντεῦθεν ἐπελὰ τὸν Υἱὸν καὶ τὸ Πνεῦμα, διὰ τῆς  
κατὰ πάθησιν ὀνομαζομένης, τὸν μὲν Γεννήσεως, τὸ δὲ Ἐκπο-  
ρεύσεως, πραγματιωδῶς καὶ τελείως ἀλλήλων ἀντιδιασέλλεσθαι.  
Οὐδενὶ γὰρ ἄδηλον, τὸ, ἐκ διαφερόντων τῶν ὑπάρχοντων τρόπων,  
τινὶ πρὸς ἀλλήλας ἔχειν τὰς ὑποστάσεις διασολῶ. Καθάπερ γὰρ  
Πρόσωπον ἀπὸ Προσώπου ἐντελῶς αἰεὶ καὶ πραγματικῶς διακρί-  
νεται, ἔτω καὶ οἱ τῶν ὑπάρχοντων τρόποι τινὶ διαφορὰν ἔχοντες  
εἰσὶ τινὶ πρὸς ἀλλήλας· τὸ γάρ τοι Πρόσωπον, μόνος ὁ καὶ ὃν  
ὑπάρχει τρόπος ἐστὶ σιωπῶν.

Ἐφ' οἷς, καὶ δι' ὧν ἀναγκαίως μὴ ἐν τῇ καὶ μόνον εἶναι Πρό-  
σωπον τὸν Υἱὸν καὶ τὸ Πνεῦμα, δύο δὲ καὶ ἑαυτὰ ὑφεσώτα  
κατασκοπάζεται, αὐτὰ ταῦτα ἐστὶ, δι' ὧν ἐντελῶς τὰ τῆ Υἱᾶ  
καὶ τῆ Ἁγίας Πνεύματος Πρόσωπα διακρίνεται· τέτο γὰρ, τὸ  
ἐντελῶς ἐστὶ διακρίνεσθαι. Νῦν δὲ, διὰ τῆ γεννᾶσθαι, καὶ τῆ  
ἐκπορεύεσθαι, μηδαμῶς ἐν εἶναι καὶ μόνον Πρόσωπον τὸν Υἱὸν  
καὶ τὸ Πνεῦμα, διότι δὲ καὶ ἑαυτὰ ὑφεσηκότα, ἐξ ἀνάγκης  
ἐντεῦθεν κατασκοπάζεται πρόδηλον, ὅτι τὸ γεννᾶσθαι καὶ τὸ  
ἐκπορεύεσθαι, αὐτοὶ οἱ τρόποι εἰσὶ τῶν κατὰ πάθησιν νοημένων  
προβλύσεων, οἱ τοσῶτον ἀλλήλοις ἀντιφερόμενοι, ὡς ἀμήχανον  
εἶναι ἐν τῇ καὶ τῷ αὐτῷ Προσώπῳ ἀμφοτέρους σιωέρεσθαι, δις-  
σάπερ ἐπάνανγκες ὃν αὐτῶς σιωεσάγειν τὰ ὑφιστάμενα. Ἀλλὰ μὲν  
διὰ τῶν τρόπων τῶν κατὰ πάθησιν νοημένων προβλύσεων, τῶν  
ἐξ ἰδίας φύσεως ἔτω πρὸς ἀλλήλας ἀντιφερομένων, ὡς ἀμήχα-  
νον εἶναι ἐν τῇ καὶ τῷ αὐτῷ Προσώπῳ ἀμφοτέρους ἅμα συμβαίνειν  
αὐτῶς, δύο δ' ἐξ ἀνάγκης τὰ ὑφιστάμενα ἐνιστάγειν: ἔχι ἐν,  
ἀλλὰ διότι Πρόσωπα πεφυκέναι ἀνθυφεσώτα τὸν Υἱὸν καὶ τὸ  
Πνεῦμα ἀναγκαίως ἀποδείκνυται. Λέπεται ἄρα, ὅτι διὰ τῆ

Υ υυυυ 2

γεν-

γεννᾶσθαι καὶ τῷ ἐκπορεύεσθαι ἐχὼν ἐν, Πρόσωπα δὲ δύο αὐθυπόστατα δείκνυται καὶ ἔτω, κατὰ γε τὸ παρακολυθῆν, διὰ τῷ γεννᾶσθαι καὶ τῷ ἐκπορεύεσθαι, Πρόσωπα διὸς ἐντελῶς σωίσαι· ὅπερ ἐστὶ: τελείως τε καὶ πραγματικῶς ὁ Υἱὸς καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἀπ' ἀλλήλων διακρίνονται. Δι' ἧ γὰρ ὁ Υἱὸς καὶ τὸ Πνεῦμα ἔτως ἀλλήλων διαφέρουσι, ὡς μηδενὶ τρόπῳ δυνάσθαι εἶναι ἐν, πᾶσα δ' ἀνάγκη Πρόσωπα αὐτὰς πεφυκέναι διὸς, διὰ τὴν πάντως γε διακρίνοντα τελείως τὸ Πνεῦμα καὶ ὁ Υἱὸς τὸ δὲ τελείως διακρίνεσθαι ταῦτόν εἶναι τῷ πραγματιωδῶς, καὶ ἐξ αὐτῶν τῶν πρὸ μικρῶ ἐπενεχθέντων τῷ Ἰησοῦ ῥημάτων, γένοιτο φανερόν. Ἐφασκε γάρ: „Ὅτι ἐδ' ὁ ἐσωτερικὸς λόγος „ὁ τῆς Γεννήσεως τῆς παθητικῆς, καὶ τῆς παθητικῆς Πυρόσεως „ἢτοι τῆς Ἐκπορεύσεως, σωίσαν ἔχοιεν Πρόσωπα ἐντελῶς τῷ τέσι, πράγματι ἀπ' ἀλλήλων διακρινόμενα,,.

Τελούταῖον δὲ, οἱ Θεοὶ Πατέρες ἐν ταῖς αὐτῶν προαπομνημονοθεσίαις ῥήσεσιν ὑπάρχον διδάσκειν: διὰ τῶνδε μόνον τῶν ιδιωμάτων, τῆς Πατρότητος δηλονότι: ἢτοι τῆς ἀγεννησίας, καὶ τῆς γεννήσεως, καὶ τῆς ἐκπορεύσεως, διαφέρειν τὰ Πρόσωπα ἐπὶ τῆς Θεότητος. Εἴπερ ἐν τῷ Ἅγιον Πνεῦμα καὶ ὁ Υἱὸς, τῇ Γεννήσει τε καὶ τῇ Ἐκπορεύσει μόνον ἀπ' ἀλλήλων εἰς διαφέροντες, λοιπὸν πάντως τῇ Γεννήσει τε καὶ τῇ Ἐκπορεύσει τὸν Υἱὸν καὶ τὸ Πνεῦμα, πραγματιωδῶς τε καὶ τελείαν τὴν πρὸς ἀλλήλα ἔχειν διαφορὰν. Εἰ γὰρ ὁ Υἱὸς καὶ τὸ Πνεῦμα πράγματι διαφέρουσι, καὶ τελείως ἀλλήλων ἐπάνανγκες δῆτε, ἢν ὅθεν διαφέρουσιν, αὐτόθεν ἔχουσι καὶ τὴν πραγματιωδῶς, καὶ τελείαν πρὸς ἀλλήλας διαφορὰν. Ἀλλὰ μὴ τῇ Γεννήσει μόνον καὶ τῇ Ἐκπορεύσει διαφέρειν ἀλλήλων τὸν Υἱὸν καὶ τὸ Πνεῦμα οἱ Θεοὶ Πατέρες ἐδίδασκον, μόναις ἄρα ταῖς ιδιότησι ταύταις, τῇ τε κατὰ τὴν Γέννησιν, καὶ τῇ κατὰ τὴν Ἐκπορεύσιν, τελείως τε δὴ καὶ πραγματιωδῶς διαφέρουσιν ὁ Υἱὸς καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. Προσετίθεσαν δὲ οἱ Πατέρες προσέτι, καὶ τὸ ἔτω μόναις ταῖς τῆς Γεννήσεως καὶ τῆς Ἐκπορεύσεως ιδιότησι διαφέρειν τὸν Υἱὸν καὶ τὸ Πνεῦμα, ὥσπερ τῇ Ἀγεννησίᾳ, εἶπεν τῇ Πατρότητι, καὶ τῇ Υἱότητι τὴν διαφορὰν ἔχουσι τὴν πρὸς ἀλλήλας ὁ Πατὴρ καὶ ὁ Υἱός. Μία γὰρ ἡ Πρότασις ἡ, ὅτι: ὁ Πατὴρ, καὶ ὁ Υἱὸς καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα διαφέρουσι μόναις ταῖς ιδιότησι τῆς Ἀγεννησίας, ἢτοι τῆς Πατρότητος, καὶ τῆς Υἱότητος, καὶ τῆς Ἐκπορεύσεως. Ἀλλὰ μὴ ὁ Πατὴρ διαφέρει τῷ Υἱῷ πραγματιωδῶς, καὶ τελείως διὰ τὴν Ἀγεννησίαν, εἶπεν διὰ τὴν Πατρότητα καὶ τὴν Υἱότητα ὡσαύτως ἄρα καὶ ὁ Υἱὸς καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, κατὰ τὴν τῶν Πατέρων διδασκαλίαν, πραγματιωδῶς διαφέρουσι καὶ τελείως, διὰ τὴν Υἱότητα μόνον καὶ τὴν Ἐκπορεύσιν. Ἀλλὰ



Ἄλλὰ γὰρ ἔτι καὶ τῶν φανερῶν ὁμοίως κατὰ τῆς τῆς Ἰη-  
σοῦ ἀντεπενεχθείσης ἡμῖν ἀπαντήσεως, ἔτ' ἐν διακρίσεως, ὅτι  
μᾶλλον, τῷ μετρίῳ τε καὶ ἐπικρατεσέει τῇ διακρίσει, ἢ περὶ  
Πνέοντος ἀπὸ τῆς Γεννήτορος, διαφέρουσιν ἀλλήλων τὸ Γεννητὸν καὶ  
Πνέον. ἐν οἷς γὰρ τῆς παθητικῆς ἐκβλύσεως-τρόποις τοσαύτη  
ἐνεσιν ἢ διαφορά, ὥστε μὴ ἐν, διὸ δὲ Πρόσωπα ἀνθυπόστατα  
ἀναγκαίως ἐνεσάγειν, καὶ ἐκ ἄλλως, εἰ μὴ ἐν δυσι Προσώποις διώ-  
σθαι χωρεῖν (ἐ γὰρ τὸ αὐτὸ οἶον τε καὶ γενναῖον, καὶ μὴ γενναῖον  
ἀλλ' ἐκπορεύεσθαι: ἐνθα δὲ γεννητὸν τε, καὶ μὴ γεννητὸν πνευ-  
σὸν δὲ τίθεται, δύο Πρόσωπα ἀναγκαίως ἐπὶ τὰ ὑποτιθέμενα)  
ἔπεται πάντως ὅτι διὰ τῆς Γεννήσεως καὶ τῆς Ἐκπορεύσεως, ὁ  
Υἱὸς καὶ τὸ Πνεῦμα μετρίῳ τε καὶ ἐπικρατεσέει τῇ διακρίσει,  
ἢ κατ' ὃν αὐτοὶ τῶν ἐνεργητικῶν προβλύσεων οἱ τρόποι, ἀπ'  
ἀλλήλων διακρίνονται. Ἡ μὲν ἐν τῇ Συλλογισμῇ μετρίῳ κατ'  
ἑαυτὴν δῆλη, ἥτις δὴ τὸ ἔμπεδον ἔχει κἀντεῦθεν: οἱ τρόποι,  
οἱ ὅπως ἀπ' ἀλλήλων διαφέροντες, ὡς ἐξ ἀνάγκης μὴ ἐν, διὸ δὲ  
Πρόσωπα κατ' ἑαυτὰ ὑφιστάμενα ἐνεσάγειν, καὶ μηδὲ ἄλλως,  
ὅτι μὴ ἐν Προσώποις δυσὶν ἐνυπάρχειν διώσθαι, μετρίῳ τῇ πρὸς  
ἀλλήλους διέξονται διακρίσει, ἢ περὶ οἱ τρόποι οἱ μὴ διὸ δὲ  
καὶ μόνον ἐπεσάγοντες Πρόσωπον, καὶ ἐν καὶ μόνῳ Προσώπῳ  
ἐνυπάρχειν διώμενοι. Εἴπερ γὰρ τῶν τρόπων οἱ πρότεροι μὴ  
μᾶλλον ἀπ' ἀλλήλων εἰς διέχοντες, ἢ περὶ οἱ ὕστεροι, τί μὴ ἐπί-  
σης καὶ κῆνοι (κατὰ περὶ ὅτοι) ἐν μὲν ἐπεσάγουσι Πρόσωπον καὶ  
μόνον, ἐν ἐν καὶ μόνῳ τῷ αὐτῷ Προσώπῳ σιωεῖναι διώμεναι;  
Ἄρα ἐν οἷς περὶ τρόποις τῆς παθητικῆς προβλύσεως τοσαύτη ἐνε-  
σιν ἢ διαφορά, ὡς ἐξ ἀνάγκης ἐχ' ἐν, διὸ δὲ Πρόσωπα ἀνθυ-  
πόστατα αὐτὰς ἐνεσάγειν, καὶ δυσι Προσώποις ἐξ ἀνάγκης ἐνεῖναι,  
μετρίῳ ὅτοι διακρίνονται ἀπ' ἀλλήλων, ἢ περὶ οἱ τρόποι ἐκῆνοι,  
οἱ ἐν ἐν καὶ μόνῳ Προσώπῳ διώμενοι σιωελθεῖν, ἐν δέ τι καὶ  
μόνον, δύο δ' ἐχ', σιωεσάγοντες Πρόσωπα. Ὡς εἴπερ ἄρα, οἱ  
μόνον ἐν ἐσάγοντες Πρόσωπον τρόποι, καὶ ἐν ἐν καὶ μόνῳ Προ-  
σώπῳ οἱ τε ὄντες ἐμφιλοχωρεῖν, ἢ τῶν ἀπ' ἀλλήλων εἰς διακεκ-  
ριμένοι, ἢ κατ' ὅπως περὶ τοσαύτη ἐνεσκρίνεται ἢ διαφορά, ὡς ἐξ  
ἀνάγκης μὴ ἐν, Πρόσωπα δὲ διὸ δὲ ἀνθυφωσῶτα ἐμπαισάγεσθαι,  
μηδαμῶς ἄλλως, ἢ ἐν μέρει αὐτὰς Προσώποις δυσὶν ἐνυπάρχον-  
τας: ἔπεται δῆλα, διὰ τὸ τῶν τρόπων τῆς κατ' ἐνέργειαν προβ-  
λύσεως, ἐν μὲν Πρόσωπον ἐνεσάγειν, ἐν καὶ μόνῳ τῷ  
Προσώπῳ διώσθαι ἐμφιλοχωρεῖν, ἐλάσσονι τῶν ἀλλήλων διενη-  
νοχεῖν τῇ διακρίσει, ἢ τῶν κατὰ τὴν πρόβλυσιν τῷ παθητικῷ,  
ἐν οἷς τοσῶτον ἐπικρατεῖ τὸ τῆς διαφοράς, ὡς ἐξ ἀνάγκης μὴ  
ἐν, δύο δὲ Πρόσωπα αὐτοῦπόστατα τῶν σιωεπαγαγέσθαι, μὴ δ'  
ἄλλως ἢ ἐν δυσι τοῖς Προσώποις ἀνα μέρους ἐνεῖναι διώσθαι.

Τόμ: Β'.

Φ φφφφ

Καὶ



Καὶ ἔτι, (ταῦτα καὶ γὰρ, ὅσα γε τῇ τῆς Φωνῆς δυνάμει, ταῦτά) τὰς τῆς παθητικῆς προβύσεως τρόπους ἐν οἷς ἡ διαφορὰ τοσῆδε, ὡς μὴ ἐν τι, ἀλλὰ δύο ἐξ ἀνάγκης Πρόσωπα σωεισάμενα καθ' ἑαυτὰ ὑφιστάμενα, εἰδ' ἄλλως ὅπως, ἥπερ ἐν Προσώποις δυνάμεται ἐνυπάρχειν δυσὶ, μέζονι καὶ ἰχυροτέρῳ τῇ πρὸς ἀλλή- λας ἀντιδιασέλλεσθαι διακρίσει, ἢ τὰς τρόπους τῶν κατ' ἐνέργειαν προβύσεων, τὰς τῆς γεννᾶν δηλαδή καὶ τῆς πνέειν. Ο. Ε. Δ.

Κάντεῦθεν προσέτι, καὶ ὅτι, εἰ μόνον τῷ λόγῳ τῷ κατ' ἐπίνοιαν, πράγματι δὲ, διαφέρουσιν ἀλλήλων οἱ κατὰ τὰς πα- θητικὰς τρόποι προβύσεις, δυνατὸν αὖθις συναγαγεῖν. Οἱ γὰρ μέζονι τῇ διακρίσει ἀπ' ἀλλήλων διενυποχότες τρόποι, ἥπερ οἱ κατὰ τὰς προβύσεις τὰς κατ' ἐνέργειαν, μάλλον ἢ τῇ ἐπινόῃ διαφέροντες εἰσὶ, καὶ, κατὰ γε τὸ ἐπόμενον, πραγματιωδῶς ὅτι γὰρ ἰσοδυναμῶντα ταῦτα, καὶ καθ' αὐτὸ δῆλον, καὶ τῷ Ἰησοῦ ἐξὶν ὁμολογόν, εἰπόντι: „διακρίσει μειζοτέρῳ, ἢ καθ' ὧν ἐκείνοι „εἰσὶν οἱ τρόποι διακρινόμενοι τῶν διακρίσει τῇ πραγματιώδει.“ Ἀλλὰ μὲν οἱ κατὰ τὴν παθητικὴν πρόβυσιν τρόποι, (τότε „γεν- νητὸν“, εἶναι καὶ τὸ „ἐκπορεύον“,;) μειζόνως εἰσὶ διακρινόμενοι, ἥπερ οἱ τρόποι οἱ κατὰ τὰς προβύσεις τὰς ἐνεργητικὰς, ὡς δέδεικται. Ἄρα κτ:

Τοσῶν τούτων λόγων τηλαυγέστατα ἀποδεικνύων, πράγ- ματι διασέλλεσθαι τὸν Υἱὸν καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, διὰ τὰς δια- φέροντας τρόπους τῆς παθητικῆς νοημένης προβύσεως, ἀλογώ- τατα δήπερ ἀποφάσκων ὡς ὁ Ἰησοῦς, μηδέποτε τῆτο λέγων δειχθῆναι δυνάμει. Ὁ δὲ παρὰ ταῦτα ὁ αὐτὸς προσετίθει, ὅτι ἐκ τῆς τῶν Ἀνατολικῶν δόξης, αὐτοδοξαζικὸν ἂν εἴη τὸ τὸν μὲν Υἱὸν εἶναι τὸ δεύτερον, τὸ δ' Ἅγιον Πνεῦμα τὸ τρίτον Πρό- σωπον τῆτο μὲν κοινῇ τοῖς Ἀνατολικοῖς ἀντιπροτείνουσιν οἱ Λατῖνοι, (περὶ ἧς ἔπειτα:) ἀλλ' οἱ Ἀνατολικοὶ τῆτο εἰδέποτε ὑπῆρξαν διατενόμενοι. Καίτοι γε καὶ ἄτοποι εἰσὶν οἱ ἐκ Λατί- νων εἰσβάλλοντες, ὅτι αὐτοδοξαζικῶς ὄντος τῆς τὸν Υἱὸν εἶναι δεύ- τερον, τὸ δ' Ἅγιον Πνεῦμα τρίτον Πρόσωπον, εἴη ἂν εἴη τις λό- γος, δι' ὃν ἡ Γέννησις εἴη ἐξ ἑκπορεύσεως, εἰδ' ἀνάπαλιν. Τὸ γάρτοι πνέεσθαι, ἐτέρῳ τῷ τρόπῳ προβάλλεσθαι ἐξὶν, ἢ κατὰ Γέννησιν διὸ καὶ τὸ γεννᾶσθαι εἴη ἐξὶ πνέεσθαι. Πῶς ἔν καὶ τῆς ἀδωάτης τεθέντος: ὅτι τὸ μὲν Πνεῦμα δευτέρον ἐστὶ Πρόσω- πον, καὶ μὲν δὴ καὶ ἔτι πνεόμενον, ἢ πνεῦσις ἂν εἴη γέννησις; ἢ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον γεννητὸν; Καὶ γὰρ ὁ Πατὴρ ἐστὶ δι- καίως ἂν τὸ τῆς Πατρὸς ὄνομα ἔχοι, ὡς ἄρα πρὸ πάντων τῶν αἰώνων ἐξ ἑαυτῆς τὸν τε Υἱὸν γεννήσας, καὶ ἅμα τὸ Πνεῦμα τὸ

τὸ Ἅγιον προβαλλόμενος. Ἀλλὰ γὰρ ταῦτα παροδικώτερον ἤδη, ὥς μηδὲν τὸ παράπαν σωτελῆντα πρὸς τὸ προκείμενον. Καὶ πρὸς μὲν δὴ τὸ Α'. τῶν τῷ Θωμᾷ Ἐπιχειρημάτων, τοσαῦτα.

### Β'. ΤΩΝ ΛΑΤΙΝΩΝ ἘΠΙΧΕΙΡΗΜΑ.

Δεύτερον ἐνίσταται ΘΩΜΑΣ ἐν τῷ ρηθέντι χωρίῳ ἔτως: „Οὐ-  
δαμὲν τόδε ἔυρομεν, ὅτι ἐξ ἐνὸς πλείονα πρόεισιν ἀτάκτως, εἰ  
μη ἐπὶ μόνων τῶν κατ' ὕλῃ διαφερόντων. Ὡστερ χαλκεὺς  
ἔς πλείονα μαχαίρια χαλκῶει, ὑλικῶς ἀπ' ἀλλήλων διακρινό-  
μενα, τάξιν δὲ ἐδεμίαν πρὸς ἀλλήλα ἔχοντα. Ἀλλ' ἐν οἷς περ  
ἐχὼ μόνῃ ἢ κατὰ τὴν ὕλῃ διάκρισιν ἐστὶν, αἰετοτέτις τάξεις  
ἐπὶ τῆς τῶν παραγομένων πληθύος εὐρίσκεται. Ὅθεν καὶ τῇ  
τάξει τῶν δημιουργηθέντων ποιημάτων, ἢ τῆς Θεῆ σοφίας καλ-  
λονὴ ἐπιφαίνεται. Εἰ τοίνυν ἐξ ἐνὸς Προσώπου τῷ Πατρὶ τὰ  
δύο προβάλλεται Πρόσωπα, ὅ, τε Υἱὸς δηλονότι καὶ τὸ Πνεῦμα  
τὸ Ἅγιον, δεῖ τινα καὶ ἐν αὐτοῖς τάξιν εἶναι πρὸς ἀλλήλα. ἐδ'  
οἷον τε τάξιν ἐν αὐτοῖς ἄλλω σημειωθῆναι, παρὰ τὴν τάξιν τὴν  
κατὰ φύσιν κατ' ὃν δὴ, ἐξ ἑτέρου ἑτερον ἐστὶν. Ἀδύατον ἄρα  
λέγειν, ὅτι ὁ Υἱὸς καὶ τὸ Πνεῦμα ἐκ τῷ Πατρὶ ἔτω προΐασιν,  
ὥς μὴ θάτερον αὐτῶν ἐκ θατέρου ἐκπροϊέναι. Εἰ μή τις ἐν  
αὐτοῖς ὑποδείη, διάκρισιν τινα ἐνυλον. — Ἀλλὰ καὶ τόδε πάλιν  
τῷ Θωμᾷ τὸ ἐπιχείρημα, ἀνατρέπει, πρὸς γε τοῖς ἄλλοις,  
καὶ ὈΚΚΑΜΟΣ, ἐν Ζητήμ: Α'. τῷ Α'. Βιβλ: τῶν Ἀποφάνσεων.

Καὶ πρῶτον μὲν, τίς ὁ τῷ ἐπιχειρεῖν τρόπος ἀπὸ γε τῶν  
Ποιημάτων, ἐπὶ τὴν Ὑπερθεον φύσιν τὴν ἀπλυσάτω καὶ ἄπειρον;  
Κεῖθω γὰρ ἐπὶ τῆς κτιστῆς ἐσιώσεως, ὅτι μόνον τὰ ὑλικῶς δια-  
φέροντα ἐδεμίαν τάξιν εἰδότα εἰσὶ: μὴ ἄρα παρὰ τῷτο, καὶ πρὶ  
τῆς Θεότητος τὰντὸ χωρὶν ἔχον ἀδύατον; ἢ γὰρ, ἐπεὶ μόνον  
τὰ ἐν τοῖς δημιουργήμασιν ὕλης μετέχοντα, τάξιν ἠγγνόσαν, εἰ  
μηδεμία ἐγχωροίη ἐν τῇ Θεότητι τάξεις, διὰ δὴ τῷτο καὶ ἢ ἐκ  
τῆς ὕλης διάκρισις χωρὶν ἔξει; Οὕτω εἴη μὲν τὰ ζῶα, νοε-  
ρᾶς δὲ ἄνθρωποι ἐνμοιρῶσι διωάμεως: μὴ ἐν ἄρα καὶ ὁ Ὑψιστος,  
ὅτι καὶ ζῶν ἐστὶ καὶ νῆς, τῇ τε τῶν κτιῶν, καὶ τῇ τῶν ἀνθρώ-  
πων φύσει πελάσει, καὶ ἐνυλόν τι ἐπίσης καὶ αὐτῷ προσεπιγενή-  
σεται; Ἀποπος ἄρα ὁ Θωμᾶς τὸ παράπαν, ὁ ἀπὸ τῷ χαλ-  
κῶς καὶ τῶν μαχαίρων, ἐπ' αὐτὰ τὰ τῆς Θεότητος Μυσήρια,  
καὶ τὰς τῶν Ὑπερθέων Προσώπων προόδους ἐπιχειρεῖν θρασυ-  
νόμενος.

Ἐπειτα δὲ, ἔτοι δήπου ἀπᾶν εἴη καὶ τινα, ἐπὶ τῆς τῷ  
Υἱὸς Γεννήσεως, καὶ τῆς τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος Ἐκπορεύσεως, τά-  
ξιν χωρεῖν ἀλλὰ ψεύδεις, τὸ μηδεμίαν ἂν ἔχον ἄλλω ἐπινοη-

Φ ΦΦΦΦ 2

θῶαι

θῶμαι τάξιν παρὰ τὴν ἐν τῇ φύσει, καθ' ἣν ἕτερον ἐξ ἑτέρου ἐστίν, ὡς ὁ Θωμᾶς ἐνταῦθα ἡμῖν ὑπέθετο. Ἡ γάρτοι τάξις ἢ μεταξὺ τῆς τῆς Υἱᾶ προβολῆς καὶ τῆς Πνεύματος, κατὰ τὴν τῶν Θεωπεσιῶν Πατέρων Διδασκαλίαν, ὣν τὰς ῥήσεις σιωάδομεν, ἐν ἀρχῇ τῆς Πραγματείας, ἐν ἣ τὰς μαρτυρίας τῶν Πατέρων τὰς ὑπὸ τῶν Λατίνων ἡμῖν ἀντιπροβαλλομένας ἐπελυόμεθα, (39) τοιάδε ἐστίν: ὅτι ὁ Θεὸς καὶ Πατὴρ, πρὸ παντὸς αἰῶνος, μηδενὸς προγεννηθέντος, ἢ ἄλλως πως προελθόντος, ἐξ ἑαυτοῦ ἐγέννησε τὸν Υἱόν· ἅμα δὲ τῷ Υἱῷ γεννωμένῳ, πρὸβέβηκετο καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα· ἔτιωσ ὥστε τὸν Υἱὸν τῆς τῆς Ἁγίας Πνεύματος Ὑποστάσεως, τῷ λόγῳ τῆς αἰτίας καθ' ὃν ἅμφω ἐκ τῆς Πατρὸς εἶσι, πρὸ παντὸς χρόνου προεπινοήθη. Ἐπειδὴ ἔν ἡδὲ ἡ τάξις ἐπέχει μεταξὺ τῆς τῆς Υἱᾶ καὶ τῆς Ἁγίας Πνεύματος προβύσεως, πῶς ἂν ἡδεμία τις ἔχοι τάξις ἄλλη ἀποδοθῶναι, εἰ μὴ περ ἢ καθ' ἣν ἐξ ἑτέρου ἕτερον; (40)

Καὶντεῦθεν παραπλησίως οἴχεται Φρόδη, καὶ ἡ τῆς τοσάκις ἡμῖν ἀπομνημονοθέντος Ἰησοῦ Διαλέξις, ἢ τῷ τοιῷδε ἐποικοδομηθεῖσα Ἐπιχαρήματι. Οὕτω γὰρ ἐκείνος: (41) „Εἰ μὴ τὸ „Πνεῦμα ἐκπορεύομενον ὑπάρχει ἐκ τῆς Υἱᾶ, ἐκ ἂν εἴη τρίτον „ἐν τοῖς Θεοῖς Πρόσωπον, ὀδύτερον δέ. Ἀλλὰ μὴ τὸ ἐπόμενον „ἡμῖς συγχωρητέον, ὡς (τῆς Θεωπεσίας ἔτιω κρίνοντος Βασιλείς) „ἐπιφέρων Πίσεως ἀθέτησιν, διὰ τὴν τῆς Μυσηρίαις τῆς Τριάδος „ἀνατροπῇ. Ἄρα ὁ ἐκεῖνο συγχωρητέον ἐξ ἧς τὸ τοσῶτον ἄτο-  
„πον

(39) Ἐν Πραγμ: ΙΕ'.

(40) Πᾶσα τάξις, λόγῳ τινὶ πάντως βεβηκυῖα ἐστὶ κατὰ δὲ τὴν τῶν πλειόνων λόγων, ὥστε ἂν ὑπέεν, διαφορὰν, καὶ ἡ τάξις ἐπὶ τῶν πραγμάτων ποικίλλεται, εἶδος μὲν ἀμείβεσθαι, λόγῳ δὲ μηδέποτε ἀπολειπομένη, ὥς ἂν τάξις ἦ. Ἐστὶ μὲν ἔν τῇ τάξει καὶ διαρυσθῆναι τινὶ, ἄλλως ἄλλῃ τὰ σύμπαντα, τὰ τε ἐν ἐρανῶ καὶ τὰ ἐπὶ γῆς, τὰ τε ὑπὲρ τὴν ὕλην πεφυκότα, καὶ ἃ ἐν ὕλῃ, ἢ τῇ ὕλῃ ἐπὶ ἀνάγκρᾳ ὅτι καὶ πάντα λόγοις τισὶ τεταγμένοις εἰσώτα, ἐν οἷς ἡτε ἐν μέρεσι καλλοπῇ τῶν ὄντων συγκροτῆται, καὶ ἡ τῶν ὄλων σωμαπαρτίτῃ διακόσμησις ἔθεν καὶ τῷ ὅλῳ σωματάγματι ἢ τῆς Κόσμου κλήσις προσήρωςαι. Οὐδὲν γὰρ μά τῷ, ὅδ' ἄνευ λόγου ἔθ' ὁ Θεός, ἔθ' ἡ φύσις ἐργάζεται. Πλὴν εἰ μὴ τὰ ἐν ἀνθρώποις κακὰ προσλογίσαι, καὶ τέτων τὰ κυρίως κακὰ τὰ ἐκ διαστροφῆς δηλονότι προαιρέσεως πλημμελέμενα. Ἀλλὰ γὰρ ταῦτα μὲν, ὅτε παρὰ τὴν φύσιν ἔντα, καὶ παρὰ λόγον, ἐν παντελεῖ ἀκοσμοῦ ἀταξία φρεσφόμενα ἐπὶ δὲ τῆς ὄλης διακόσμου, ἢ τῶν πλειόνων τάξις λανθάνει, ἢ κατὰ τῆς κειμένης τῇ φύσει θεσμῆς, διὰ τὸ τῆς λόγου τῆς τῶν ὄντων ἐκάστω ἐπ' ἀκριβῆς εἰσώσεως, ὅς τε καθ' ἑαυτὰ ἔχει, καὶ ὅς πρὸς ἄλληλα, ἀπύπτως τε εἶναι, καὶ ἀθεάτως, καὶ ἀτεκμαίρεται, καὶ τῆς δευτέρας ἡμῶν λογισμῶν διαφύγοντας. Ἐπὶ δὲ τῆς ὑπερσίστις εἰσώσεως, ἡτις ἢ ἀρχὴ καὶ πηγὴ πάσης τε καὶ παντοίας ὑπάρχει τάξεως, τίς ποτ' ἂν εἰς τοσῶτον ἐλάσειεν ἀπονοίας τε καὶ ἀλογίας, ὡς, ἢτοι τάξιν τὴν ἀκροτάτῃ καὶ ὑπερτελεσάτῃ, ἐν ταῖς κατ' αὐτὴν ὑπερφυέσι καὶ ὑπερακατανοήτοις προόδοις μὴ ὁμολογεῖν, ἢ τῆς ὑπὲρ ἅπαντα νῦν τε καὶ λόγον ὑπερπαναβιβηκότας λόγους περινοεῖν ἐπιθεασώμεσθαι τῆς ἐκεί τάξεως; τίς;... ὁ Θωμᾶς, ἀπὸ τῶν χαλκοτυπῶν ἐρμάρμενος.

(41) Κιχάβιος ἐν Ζημήμ: Η'. Σελ: 84.

„πον ἔπετα. Ἡ σωεπεία δέικνυται ἐκ τῆς ἀρχῆς ταύτης: ὁ  
 „ἀριθμὸς καὶ ἡ τάξις ἐν τοῖς Θεοῖς Προσώποις, ἐκ ἄλλοθεν λαμ-  
 „βάνεται, ἢ ἐκ τῆς τῶν αἰτίων χέσεως πρὸς τὰ ἐξ αὐτῶν, ὡς  
 „ἐν τοῖς ἐπιμνημονοῦσιν τόποις ὁ Θεὸς διδάσκει Βισίλειος: μά-  
 „λιστα δὲ, ἐν τῷ Α'. Βισλ: τῶν κατὰ Εὐνομίαν. Ἡμεῖς δὲ, κα-  
 „τὰ μὲν τῷ τῶν αἰτίων πρὸς τὰ ἐξ αὐτῶν χέσιν, προτετάχ-  
 „θαι τῷ Τίῳ τὸν Πατέρα φαμέν,, — Ἀλλὰ γὰρ ἡ τῆς Μείζονος  
 σωεπεία τὸ παράπαν ὑδαμινή: ὅ,τι δὲ πρὸς τῷ τῆς ἀκολοθίας  
 ἀνήκει δεῖξιν, καὶ αὐτοὶ φαμέν ἐκ τῆς τῷ αἰτίᾳ χέσεως πρὸς  
 τὰ αἰτιατὰ μόνον τῷ ἐν τοῖς Θεοῖς τάξιν λαμβάνεσθαι: καθὼς  
 δηλονότι ὁ Πατὴρ, τῷ Τίῳ γεννωμένον, πρὸβάλλετο τὸ Πνεῦμα  
 τὸ Ἅγιον, ὁ τὸν Τίον γεννήσας μηδενὸς παραχθέντος: ἀλλ'  
 ὅμως ψυδὲς τό: ἐπειδὴν λέγεται, ὅτι ἐν τοῖς Θεοῖς ἡ τάξις  
 λαμβάνεται ἐκ τῆς τῶν αἰτίων χέσεως πρὸς τὰ αἰτιατὰ: διὰ  
 τῆς προτάσεως ταύτης ἐπιδηλῶσαι, τὸ δεῖν καὶ Τίῳ μέσον καὶ  
 Πνεύματος τοιαύτῳ σώζεσθαι τάξιν, ὡς ἐξ ἀνάγκης καὶ τὸν  
 Τίον αἰτίαν καθεσηκέναι τῷ Πνεύματος. (42) Τῷδε μὲν δὴ τῷ  
 τρόπῳ ὁ Πατὴρ προτέτακται τῷ Τίῳ: ἀλλ' ἐκ ἐν γένει ἐφέπεται,  
 τέτταρε ἕνεκα, ἵν', ἐπειδὴν Πρόσωπον Πρόσωπον προτάσσεται, ἅμα  
 καὶ Πατὴρ Πατέρον αἰτίον ἦ. Ἔτι καὶ γὰρ ἐκ τῆς τῷ αἰτίᾳ  
 χέσεως πρὸς τὰ αἰτιατὰ, ἡ τάξις λαμβάνεται ἢ τῷ Τίῳ μεταξὺ  
 καὶ τῷ Πνεύματος: καθ' ὅτι γε, τῇ τάξει, καθ' ὃν τῷ Ἁγίῳ Πνεύ-  
 ματος προεπινοούμενος ἐστὶν ὁ Τίος, ἐκ τῷ Πατρὸς ὡς ἐξ αἰτίᾳ  
 γεννᾶσθαι, προσίπτει τῇ διανοίᾳ, πρὸ τῆς ἐννοίας τῆς τῷ Ἁγίῳ  
 Πνεύματος ὑποστάσεως, ἢ τῆς τῷ Τίῳ, ὡς ὁ Νύσσης ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ  
 ἀπεφώχτο.

Προβιβάσθαι δ' εἴναι ὁ Ἰησοῦς: „Ἐκ ταύτης ἄρα τῆς ἀρ-  
 „χῆς ἡ σωεπεία δέικνυται: ἔτινος δὴ Πρόσωπον προτακτέον ἐκ  
 „ἑξὶ τὸ δεύτερον Πρόσωπον. Τρίτον ἐκείνο Πρόσωπον ἐκ αὐ-  
 „λέγοιτο, ἀλλ' ἦτοι πρῶτον, ἢ γὰρ δεύτερον. Ἀλλὰ μὴ τῷ Ἁγίῳ  
 „Πνεύματι ἐκ μόνον τῷ Πατρὸς ἐκπορεύομένον, ἐκ ἑξὶ προσηκόν  
 „τὸ δεύτερον Πρόσωπον: τὸ ἄρα Ἅγιον Πνεῦμα, ἐκ μόνον ἐκπο-  
 „ρεύομενον τῷ Πατρὸς, ἐκ αὐτοῦ λέγοιτο τρίτον Πρόσωπον. Δείκ-  
 „νυται ἡ μέζων: ὅτι ἀπὸ τῷ πρώτῳ Πρόσωπον, μὴ μεσιτεύοντος  
 „τῷ δευτέρῳ, ἢ ἐπὶ τὸ τρίτον μετάβασιν Πρόσωπον ἀδωάτος ἐστίν.  
 „Ἀδωάτος δὲ καὶ ὁ Τριαδικὸς ἀριθμὸς, ἐν οἷς μεταξὺ τῷ πρώτῳ  
 „καὶ τῷ τρίτῳ, ἐ μεσιτεύει τὸ δεύτερον, ὡς ἅπασιν δῆλον τοῖς  
 „ἀριθ-

(42) Ἡ γὰρ ἐχὶ αὕτη, ἢ ἐξ αἰτίων τε καὶ αἰτιατῶν, κατὰ Λατίνους βαθυμυθὸν προ-  
 ἔστα τάξις, καὶ ἀταξία μᾶλλον πῶς αὐτὴ τῆς τῶν νενοσηκότων τῷ Τίῳ πατερίαν  
 ἀφροσύνης, ἢ τῆς Οὐαλεντινιανῶν, καὶ τῶν ἄλλων Γνωστικῶν παρανοίας τὰ δυσσεβῆ  
 καὶ δύσθεα ἀναπλάσματα;

Τόμ: Β'.

X χχχχ



„ἀριθμεῖν εἰδοσί τὰ πράγματα,.. Ψυδὲς ἀλλ' ἔν ἐσίν, ὅτι τὸ  
 Ἅγιον Πνεῦμα, μόνον τὸ πρῶτον προὔποτίθῃσι Πρόσωπον.  
 Ψυδὲς δὲ, καὶ ὅτι τῷ Πνδύματος ἐκ μόνου τῷ Πατρὶ ἐκπορεύο-  
 μέναι, τὸ δῶτερον Πρόσωπον ἔχ οἷον περ ἔσαι προτάσσεσθαι.  
 Ὅπως γὰρ ἐκ μόνου τῷ Πατρὶ ἐκπορεύομέναι τῷ Πνδύματος,  
 προεπινοῶμαι, ἥτοι προτάσσεται ὁ Υἱὸς, ἥδη σθεωράκαμεν καθὸ  
 δηλονότι, ἔχλ πρὸ τῷ Υἱῷ, ἀλλὰ τῷ Υἱῷ γεννωμέναι τὸ Πνεῦμα ἐκ  
 τῷ Πατρὶ ἐκπορεύεται. Ἀλλὰ καὶ τῷ ἐλάσσονα Πρότασιν ἔτω δέκνυσι  
 τῷ ἑαυτῷ ὁ Ἰησοῦς: „Ἐκείνο μόνον τὸ Θεῖον Πρόσωπον οἷον ἐστὶ  
 „προτάσσεσθαι, ὃ πρὸς τὸ ἔπερ ἂν εἴη προτακτέον, χέσιν ἂν ἔχοι  
 „ἀρχῆς τὸ δῶτερον Πρόσωπον κατὰ τῷ Φωτιανῶς ἐκ ἔχαι  
 „χέσιν ἀρχῆς πρὸς τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ὡς ἐκπορεύόμενον ἐκ  
 „μόνου τῷ Πατρὶ τὸ ἄρα δῶτερον Πρόσωπον, ἔχ οἷον τε ἐστὶ  
 „προτάσσεσθαι τῷ Ἁγίῳ Πνδύματος, τῷ ἐκπορεύόμεναι ἐκ μόνου τῷ  
 „Πατρὶ. Ἐμπεδῶται: τὸ Πρόσωπον, ὃ πρὸ ἑαυτῷ μόνον προ-  
 „τίθῃσι τὸ πρῶτον, Πρόσωπον δῶτερον ἐστὶ τὸ δὲ Ἅγιον Πνεῦμα  
 „ἐκ μόνου ἐκπορεύόμενον τῷ Πατρὶ, μόνον προὔποτίθῃσι πρὸ  
 „ἑαυτῷ τὸ Πρόσωπον τὸ πρῶτον τὸ ἄρα Ἅγιον Πνεῦμα, ἐκ τῷ  
 „Πατρὶ μόνου ἐκπορεύόμενον, Πρόσωπον δῶτερον ἐστὶν,.. — Ἀλλὰ  
 πρῶτον ἐκ ἀληθῶς, ὅτι μόνον ἐν τοῖς Θεοῖς τὸ Πρόσωπον, πρὸ  
 ἑτέρου οἷον τε Προσώπου προτάσσεσθαι, τὸ πρὸς ἐκείνο, ἔπερ ἂν  
 προτάσσοιτο, χέσιν ἔχον ἀρχῆς. Τῷ ὄντι δὲ τὰ τῷ Βασιλείῳ,  
 ἐξ ὧν ταῦτα εἰληφέναι διατείνεται ὁ Ἰησοῦς, ἐδὲν τοῖσιν  
 ἔχει, ὡς δέδεικται. Ἦπερ δὲ καὶ ὁ Θεὸς ἘΦΡΑΪΜ ὁ Σύρος,  
 διδάσκων ὅτι: ὁ Πατὴρ πρῶτον πρὸβάλετο τὸν Υἱόν, μετὰ δὲ  
 τὸν Υἱόν τὸ Πνεῦμα· δέκνυσι μὲν προτάσσεσθαι τῷ Πνδύματος  
 τὸν Υἱόν, ἐκέτι δὲ προστίθῃσι καὶ τὸν Υἱόν ἀρχῆς χέσιν ἔχον  
 πρὸς τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. Καὶ ὁ Νυσαῖος δὲ πάλιν ΓΡΗ-  
 ΓΟΡΙΟΣ, διδάσκων τὸν Πατέρα, μηδενὸς μεσιτεύοντος, ἥτοι  
 μεταξὺ παραγομέναι, γεννᾶν τὸν Υἱόν, γεννωμέναι δὲ τῷ Υἱῷ  
 προβάλλειν τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον: δέκνυσι δὴπερ, ὅτι τῷ Πνδύ-  
 ματος προτάσσεται ὁ Υἱὸς, ἐμὴ δὲ προστίθῃσιν ἐπὶ τέτοις, ὅτι  
 καὶ ἀρχῆς χέσιν ὁ Υἱὸς, ἔχει πρὸς τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον.  
 Ὁ δ' ἐπανήκει τῇ ὑπὸ τῷ Ἰησοῦ ἐπαγομένη προσεμπεδώσει,  
 ψυδὲς πάντως, ὅτι τὸ Πνεῦμα, ἐκ τῷ Πατρὶ μόνου ἐκπορεύο-  
 μένον, πρὸ ἑαυτῷ τὸ πρῶτον μόνον προὔποτίθῃσιν Πρόσωπον.  
 Περὶ μὲν ἔν τῷ ἤδη τούτῳ.

Χωρεῖ δ' ἔτι προσωτέρω ὁ Ἰησοῦς: „Δῶτερον, φησὶν,  
 „ἐνθα εἰσὶν ἀληθῶς καὶ ἀμεταμέπτως Πρόσωπα τρία, ἐκείσε  
 „ἀληθῶς καὶ ἀπαραμέπτως ἐστὶ τι πρῶτον ἔτω δέ τοι, ὥσε μὴ  
 „πρῶτον εἶναι μὴ δυνάσθαι· καί τι δὲ δῶτερον, ἔτως ὡς μὴ  
 „ἔχον μὴ εἶναι δῶτερον· καί τι δὲ τρίτον, ἔτως ὡς μὴ ἔχον  
 „μὴ



„μὴ εἶναι τρίτον. Ἀλλὰ μὴ ἐπὶ τῷ Μυσηρίᾳ τῆς Παναγίας Τρι-  
 „άδος, ἀληθῶς τε καὶ ἀμεταθέτως Πρόσωπα τρία εἰσὶν. Ἐν  
 „αὐτῇ ἄρα ἔστι τι Πρόσωπον ἕτω πρῶτον, καί τι ἕτω δεύτερον,  
 „καί τι δὲ ἕτω τρίτον, ὡς μὴ οἶα τε εἶναι, κατὰ τὸ δοκῆν ἀν-  
 „θρώπῳ, τὸ μὲν ἐξ αὐτῶν εἶναι πρῶτον, τὸ δὲ δεύτερον.  
 „Ἀλλὰ μὴ ἐν τοῖς Θεοῖς Προσώποις τὸ πρότερον καὶ ὑστερον ἐκ  
 „ἄλλως χώραν ἔχοι, ἢ κατὰ λόγον ἀρχῆς· ἦτοι, ὡς οἱ  
 „Γραικοὶ φασί: τῷ λόγῳ τῷ κατὰ γε τὸ αἴτιον καὶ τὸ αἰτιατόν.  
 „Ἄρα καὶ ὡς ἀνάγκη τὸ δεύτερον τῶν Προσώπων ὑποτίθεται  
 „αἰτιατόν, (ὡς ἂν τῇ κατὰ τῆς Γραικῆς προχρήσωμαι φράσει)  
 „ἐκ τῷ Πατρὸς, καὶ αὐτῷ αὐτῷ δῆπερ καὶ τὸ Πρόσωπον τὸ τρίτον,  
 „αἰτιατόν ὑποτίθεται ἐκ τῷ πρῶτῳ καὶ ἐκ τῷ δευτέρῳ. —  
 Ἀλλὰ καὶ τῷ Προσυλλογισμῷ συγχωρηθέντος, τίς, εἴπεμοι, ὁ τῆς  
 σιωπείας λόγος; Ἡ τάξις ἐν τοῖς Θεοῖς λαμβάνεται κατὰ γε  
 τὸ αἴτιον καὶ τὸ αἰτιατόν ὥστε ἄρα τὸ δεύτερον Πρόσωπον  
 ὑποτίθεται αἰτιατόν ἐκ τῷ πρῶτῳ, ἕτως ὑποτίθεται καὶ τὸ τρί-  
 „τον, αἰτιατόν ἐκ τῷ πρῶτῳ καὶ τῷ δευτέρῳ; Καὶ εἰ γὰρ τὸ τῷ  
 τάξιν ἐν τοῖς Θεοῖς λαμβάνεσθαι, τῷ κατὰ τὸ αἴτιον καὶ τὸ  
 αἰτιατόν λόγῳ, ἕτω νοεῖται, ὡς ἐπάνανγκες εἶναι Προσώπων Πρό-  
 σωπον καθίστασθαι αἴτιον, ἔνθα τάξιν ἐν τοῖς Προσώποις τέτοις  
 εἶναι δεῖ· ψυδές περ πάντως, ἕτω τῷ ἐν τοῖς Θεοῖς τάξιν ἐκ  
 τῷ αἰτίᾳ λαμβάνεσθαι καὶ τῷ αἰτιατῷ· εἰ δὲ κατὰ τῷδε τῷ  
 ἔννοιαν οἱ Πατέρες τῷ Πρότασιν ταύτῃ παρεδωκαν· μάλιστα  
 ὁ αὐτῶν ὁ νῦν ἐστὶ μόνον, ὡς ὁ μὲν Υἱὸς ἐκ τῷ Πατρὸς μή τινος  
 παραχθέντος πρότερον, τὸ δὲ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκ τῷ αὐτῷ,  
 ἤδη τῷ Υἱῷ γεννηθέντος· μετὰ τὸ τὸν Υἱὸν δηλ.: νοεῖσθαι πα-  
 ραχθέντα κατὰ τῷ γεννησιν, ὡς ἐν ἄλλοις δέδεικται. (43)  
 Τίς ἄρα ὁ τῆς σιωπείας λόγος; ἐν γε τοῖς Θεοῖς τὸ πρότερον  
 καὶ ὑστερον λαμβάνεται, κατὰ τῷ τάξιν τῆς τῶν αἰτιατῶν πα-  
 ραγωγῆς, τῆς ἐξ αἰτίᾳ τῷ Πατρὸς. Ἄρα ὥστε τὸ δεύτερον  
 Πρόσωπον ὑποτίθεται αἰτιατόν ὃν ἐκ τῷ πρῶτῳ, ἕτως ὑπο-  
 τίθεται καὶ τὸ τρίτον αἰτιατόν εἶναι ἐκ τῷ πρῶτῳ καὶ τῷ  
 δευτέρῳ;

Οὐδὲν ἄρα παραπλησίως κατορθοῖ ὁ Ἰησοῦτης, καὶ ἐν οἷς περ  
 ἀλλαχῇ (44), (ἐκ τῷ, τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ὡς παρὰ μόνον ἐκπο-  
 ρεούμενον τῷ Πατρὸς, τὸ πρῶτον Πρόσωπον μόνον προϋποβιθέντα)  
 ἐπι-

(43) Ἐκδεκτέον αἰεὶ ἐν τέτοις τὰ λεγόμενα κατὰ τῷ ἐν ἡμῖν ἐπίνοιαν νοεμένης τῆς  
 τῷ Υἱῷ Γενήσεως, καὶ τῷ τῷ Πνεύματος ὅσον προφθάνεσης ἐκ τῷ Θεῷ καὶ  
 Πατρὸς Ἐκπόρευσιν. Οὐδὲ γὰρ ἔχομεν ἄλλως ἐννοῆσαι τὸν ἐξ ἑ τοῦ Πνεύματος ἐκπο-  
 ρεῖσθαι Πατέρας ὀνομάζοιτες, μὴ καὶ Υἱὸν ἅμα τὸν ἐξ αὐτῷ τῷ Πατρὸς γεννη-  
 θέντα τῇ διανοίᾳ σύμπεριλαμβανόντες.

(44) Ἐν τῷ ῥηθέντι Ζητήμ: Η'. Σελ: 91.

επιφέρειν ἐθέλει, τὸ Πνεῦμα εἶναι Υἱόν. Ἀλλ' ἀνθυποφέρει ἐφεξῆς ἡμῖν ὁ Ἰησοῦς: „Ἰνα γὰρ οἱ Φωτιανοὶ, Φησὶ, τοῖς ἐπιχαίρημασιν ἀπαντήσωσι τέτοις, ἕτερόν τινα λόγον τῆς τῶν Θεοῦ, ἀρχικῶν Προσώπων ἀποδιδόασιν τάξεως. Ἀμέλειτοι: ὡς εἰ καὶ ἡ ἐκκλησία Προσώπων παραγωγὴ ἐκ μόνου τοῦ Πατρὸς ἐστὶ, προτέρα μέντοι γε ἢ τοῦ Υἱοῦ Γέννησις ἐστὶ, τῆς τοῦ Ἁγίου Πνεύματος Πνεύσεως: διότι ἢ ἐν τῷ Πατρὶ γεννητικὴ δύναμις προτερῶς τῆς πνευματικῆς κἀντεῦθεν ἐπελθῇ, τὸν μὲν Υἱὸν εἶναι Πρόσωπον δόξασαν, τὸ δὲ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, τρίτον.,

Τοῖς Πατράσιν ἡμεῖς ἐπόμενοι Φαμέν, τὸν Πατέρα μήτινος παραχθέντος γεννησάμενον τὸν Υἱόν. τῷ δὲ Υἱῷ γεννηθέντος, (ἢ τοῦ μετὰ τὸν Υἱόν: (45)) τὸ Πνεῦμα προβεβληκέναι τὸ Ἅγιον. κἀνθενδε τῷ τοῦ Υἱοῦ Γέννησιν προτέραν εἶναι τῆς Πνεύσεως, τῆς τοῦ Ἁγίου Πνεύματος Ἐκπορεύσεως. Οὕτω γὰρ ἘΦΡΑΙΜ ὁ Σύρος, ἔτω ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ ὁ Νύσης, ἐπὶ τῶν προαπομνημονοθέντων ῥημάτων κατ' ἀρχὰς τῆς Πραγματείας, ἐν ἣ ταῖς ἀντιπροβαλλομένας ἐκ τῶν Ἀνατολικῶν Πατέρων ἐπελυόμεθα ῥήσεις. (46) Εἰ δὲ πως ἄλλως, τῷ ἐν τῷ Πατρὶ γεννητικῷ δυνάμει, προτέραν εἶναι τῆς πνευματικῆς ἐννοήσεώς τις, τῷ τοιαύτῳ ἀπόκρισιν οἰκείαν ἡμεῖς ἔδαμῶς τιθέμεθα. Ἀτόπως δ' ἐν ὁ Ἰησοῦς ἐνταῦθα ἐστὶν ἀποφάσεων τῷ τοῦ Υἱοῦ Γέννησιν προτερῶς τῆς Προόδου τοῦ Πνεύματος, ὅποτε καὶ αὐτὸς ἐν ἄλλοις αὐτό γε τέτο παραπλησίως φαίνεται σωομολογῶν, ἐν τοῖς δε τοῖς αὐτοῖς ῥήμασιν: (47) „Ἐπὶ τῶν Θεῶν προόδων ἐπάναγκες ἅμα εἶναι, „τῷ τε κατ' ἐνέργειαν Γέννησιν, δι' ἧς συνίσταται ὁ Πατήρ. καὶ „τῷ κατὰ πάθησιν, δι' ἧς ὁ Υἱός. καὶ τῷ ἐνεργητικῷ Πνεύματι, „δι' ἧς πνεῖται τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. τέτων καὶ γὰρ, (μαρτυρῶντος τοῦ Ἱερῶς Ἀθανασίου ἐν τῷ Συμβόλῳ.) ἔδεν μὲν πρότερον, ἔδεν δὲ ὕστερον ἐστίν. Ἡ γὰρ μὲν τάξις, ἢ ἐν ταῖς δε ταῖς „προόδοις φυσικῇ τε ἔσται, καὶ πάντῃ ἀμεταθέτως ἔχουσα, αὕτη „ἐστὶ: τὸ τῆς παθητικῆς γεννήσεως προεπιννοεῖσθαι τῷ γέννησιν „τῷ ἐνεργητικῷ, καὶ τῷ Πατρότητα, καθ' ἣν σωίσταται ὁ Πατήρ. καὶ ἐπομένως δὲ καὶ τῆς ἐνεργητικῆς πνεύσεως προεπιννοεῖσθαι τῷ γέννησιν τῷ παθητικῷ καὶ τῷ Υἱότητι, ὡς συχρικῶς ἔσαν τῆς ἐνεργητικῆς Γεννήσεως καὶ τῆς Πατρότητος, „δι' ἧς ὑποστατικῶς σωίσταται ὁ Πατήρ.,. Οὕτως ἀριδηλοτάτοις ἐν

(45) Μηδεμίαν ἔλας χρονικὴν καθυστέρησιν τῆς ΜΕΤΑ' ὑποσημαινέσης· ἀλλὰ τὰς μόνον, καὶ τὸ κατ' ἐπίνοιαν τῷ ἡμετέρῳ, τῷ Θεῷ Πνεύματος τῷ Ἐκπορεύσιν τῷ ἐκ τοῦ Θεοῦ καὶ Πατρὸς, δόξασαν τῆς τοῦ Υἱοῦ καὶ λόγου Γεννήσεως ἡμῖν ἀντιλαμβανομένοις προπαντῶν.

(46) Ἐπὶ τῆς ΙΕ' Πραγματείας.

(47) Ἐνθ: ἀνωτ: ἔρηται, Σελ: 93.

ἐν ῥήμασιν ἀλλὰ καὶ διδάσκων ἐστὶν ὁ Ἰησοῦς, ὅτι τῆς ἐνεργη-  
τικῆς πνέσεως προεπινοῖσθαι τὴν γέννησιν, τὴν τε κατ' ἐνέρ-  
γειαν, καὶ δὴ καὶ τὴν κατὰ πάθῃσιν. Τίνι ἔν ἄρα ποτὲ τῷ  
προσώπῳ τῆς Ἀνατολικῆς ἔτος, αὐτό γε τῷ διδάσκοντι, ὡς  
τῶν τῆς Καθολικῆς Ἐκκλησίας Δογματικῶν ἀθετητὰς ὑπ' ἐγκλή-  
ματι τίθῃσιν; Οὕτω γὰρ αὐτόθι πρόεισι: „Ἀλλ' ὑπεναντίον  
„ἐστὶ πρῶτον· ἔτω γὰρ παραβαίνοντες εἰς τὰ ἐκπεφασμένα Δόγ-  
„ματα παρὰ τῶν Θεωπεσίων Ἀνατολικῶν Πατέρων, τῶν ἀπο-  
„φασκάντων ἄλλοθεν ποθεν τὴν κατὰ τὸ πρότερον καὶ ὕστερον  
„τάξιν ἐν τοῖς Θεοῖς λαμβάνεσθαι, ἢ κατ' ἀναφορὰν τὴν πρὸς  
„τὸ αἷτιον καὶ τὸ αἰτιατόν„. — Ἀλλὰ γὰρ ὁσάκις τότε ὁ Ἰη-  
„σοῦς ἐπαναλαμβάνων ἐστὶ, τοσάκις καὶ αὐτοὶ ἀποδείκνυμεν  
τὸν νῦν τῶν τῷ διδάσκοντι εἶναι Πατέρων, ὅτι τὰ Πρόσωπα  
διακρίνεται ἀπ' ἀλλήλων, τῷ τὸν μὲν Υἱὸν ἐκ τῆς Πατρὸς τῆς  
αἰτίας, μήτινος προεληθέντος, γεννᾶσθαι· τὸ δὲ Πνεῦμα ἐκ τῆς  
αὐτῆς αἰτίας τῆς Πατρὸς, γεννηθέντος τῆς Υἱοῦ, ἐκπορεύεσθαι. Οὕτω  
γὰρ αὐτὸς ὡς διδάσκων ὁ Νύσης, ὁ τῶν ἰδίων ῥημάτων ἄριστος  
Ἑρμιώδης. Ἀλλ' ἐκ τῆς αὐτῆς τάξεως καὶ ἡμεῖς φάμεν τὸν Υἱὸν  
προεπινοῖσθαι ἔχειν τῆς Πνέσεως. Τῶν δὲ τῆς ἐν Τολήτῳ Συ-  
νόδῳ ῥημάτων, ἃ ἐν τέτοις ὁ Ἰησοῦς παρασιώπῃ, ἡδὲ ὡς  
ἐπισρεφόμεθα· περὶ αὐτῶν γὰρ, ὡς παρεφ' ἑαυτῶν ἐπενεκτέον  
τὴν κρίσιν, ἐκ τῆς Πράγματις τῆς περὶ τῶν γενομένων Πα-  
ραφθορῶν ἐν τοῖς τῶν Δυτικῶν Πατέρων Συγγράμμασιν. (48)

Πρόεισι δ' ἐν ὁ Ἰησοῦς προσενιστάμενος δεύτερον: „Ὅτι  
„προῖκα λέγεται τὴν γεννητικὴν δυνάμιν ἐν τοῖς Θεοῖς, προτε-  
„ρεῖν τῆς πνέσεως· κατὰ τί γὰρ καὶ προτερύσειεν; ἢ γὰρ  
„πάντως τῇ διαρκείᾳ, ὡς ἐκ Πίσεως ἐστὶν ὁμολογόν· ἢ δὲ τῇ  
„Φύσει, ὅτι ἐν τοῖς Θεοῖς ἔχῃ θάτερον θάτερον ἐνεργεῖα ἐξήρτη-  
„ται· ἢ δὲ μὲν ἐν τῇ ἀρχῇ, ὡς αὐτόθεν ἐκ τῶν ὅρων ἐστὶ κα-  
„τάδηλον. Οὐ τις ἄρα μεταξὺ τῶνδε τῶν δυνάμεων Φυσικὴ  
„προτερύσει ἐγκωρεῖ, ἀλλ' ἢ μόνον αὐτοὶ ἀτελῶς ἐννοεῖν πεφύ-  
„καμεν· ὅθεν ἔπεται μὴ τῇ Φύσει τρίτον εἶναι τὸ Πνεῦμα τὸ  
„Ἅγιον, μηδὲ κατὰ τὴν πηγαίαν ἀρχὴν καὶ αἰτίαν, (ὡς οἱ Θεοὶ  
„Πατέρες ἀξιῶσιν) ἀλλ' ἔτις ἀποκληρωτικῶς, καὶ παρὰ τὸ  
„ἡδρανὲς τῆς κατ' ἡμᾶς διανοίας, ὡς μὴ ἐχέσης τὸν Θεὸν  
„ἐννοεῖν πρὸς τὰ ἐντὸς κατὰ θέλησιν ἐνεργῶντα, χωρὶς τῆς  
„προεπινοῖν ἐνεργῶντα αὐτὸν κατὰ νόησιν. Ἐξ ἧς δὴ ἔπεται  
„προσωτέρω, μηδ' εἶναι ταύτη γε, κατὰ τὴν ἐν τῷ Θεῷ γινώσκιν,  
„Πρό-

(48) Ὅρα τὴν Γ'. τῶν Πράγματις ἐν τῇ τέλει· ἐνθα μετὰ τὴν ΜΓ'. περὶ πλειόνων  
Παραφθορῶν συλλέξω ὁ λόγος.

Τόμ: Β'.

Ψ ψψψψ

„Πρόσωπον τρίτον τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ἀλλὰ μόνον κατὰ τὴν  
 „ἐν ἡμῖν αὐτοῖς ἀφαιρετικῶς ἐπινόησιν,,.

Τὸν μὲν Πατέρα, φανέν αὐτοῖς, πρῶτον γεννήσαι τὸν Υἱόν·  
 μετὰ δὲ τὸν Υἱὸν προβαλέσθαι τὸ Πνεῦμα· καὶ διὰ τῆς τῶ κατ'  
 ἐνέργειαν Γέννησιν προτερῶς τῆς τῆς Ἁγίας Πνεύματος Προβολῆς  
 προτέραν εἶσαν δηλονότι ὁ κατὰ χρόνον, ἀλλὰ τῷ λόγῳ τῆς  
 προεκβλύσεως. Διαβρῆδω καὶ γὰρ ἘΦΡΑΪΜ ὁ Θεὸς ἐδίδασκεν:  
 „μετὰ τὸν Υἱόν, τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκ τῆς Πατρὸς προεληλυ-  
 „θέναι,,. Καὶ ὁ τῶν Νουσαέων Θεὸς ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ: „Ὅτι τῆ  
 „Υἱὸς προσεχῶς ἐκ τῆς πρώτης (ἤτοι ἐκ τῆς Πατρὸς) γεννηθέντος,  
 „τὸ Πνεῦμα δι' αὐτῆς (τῆς Υἱοῦ) μεσιτέοντος, ἐκ τῆς αὐτῆς Πατρὸς  
 „πρίαισι,,. Τῷ ὄντι ἄρα, τὸ ταύτη γε πρότερον πραγματιώδες  
 ἐστὶ, καὶ ἐν τῷ Θεῷ χώραν ἔχον· καὶ τοὶ δι' ἀτελειότητα τῆς δια-  
 νοίας ἡμῶν, τὴν τοιάνδε προτερῶς (49), ὁποῖα τις ἐστὶ, περι-  
 νοεῖν μὴ ἐξιχυρίσης. Τὴν δ' ὅτι, καὶ αὐτὸς ὁ Ἰησοῦς ἐν τοῖς  
 προερχομένοις ἐφασκεν: „Ὡς ἡ τάξις ἐν ταῖς δε ταῖς προόδοις  
 „ἢ φυσικῇ τε εἶσα καὶ πάντῃ ἀμεταθέτως ἔχουσα, αὕτη ἐστὶ: τὸ  
 „τῆς παθητικῆς γεννήσεως, προεπινοεῖσθαι τὴν γέννησιν τὴν ἐνερ-  
 „γητικῶν καὶ τῆς ἐνεργητικῆς Πνεύσεως, προεπινοεῖσθαι τὴν Γέν-  
 „νησιν τὴν παθητικῶν; Διὰ γὰρ τέτων ἔμπης ἐπιγινώσκει  
 σαφῶς τὸ πρότερον, καὶ τὴν φυσικῶν τάξιν, μέσον τῆς κατ'  
 ἐνέργειαν Γεννήσεως τε καὶ Πνεύσεως ἐγχωρεῖν: καθότι τῆς  
 ἐνεργητικῆς Πνεύσεως προεπινοεῖται ἡ Γέννησις. Ἀληθῶς ἄρα,  
 καὶ ὅς ὡς αὐτοὶ μόνον ἐννοεῖν πεφύκαμεν, ἡ Γέννησις προτε-  
 ρῶς τῆς Πνεύσεως. (50) Τῇ δὲ δωάμει τῆς πηγῆς, εἴτ' ἐν τῆς  
 ἀρχῆς, τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, τὸ τρίτον καθέστηκεν Πρόσωπον·  
 καθὼς δηλονότι ἀδωάτον ἐστὶ, τὸ μετὰ τὸν Υἱὸν προῖον, τὸ αὐτὸ  
 ἅμα προῖον καὶ πρὸ τῆς Υἱοῦ. (51)

Ἄ δ' ἐπὶ τοῖς ἄλλοις προσίθῃσιν ὁ Ἰησοῦς: διὰ δὴ τῆς  
 δοκεῖν προτερῶς τὴν Γέννησιν τῆς Ἐκπορεύσεως, ὅτι τὸν Θεὸν  
 ὅς οἱ οἶον ἐσμέν πρὸς τὰ ἐντὸς ἐννοεῖν ἐνεργῶντα κατὰ θέλησιν,  
 μὴ

(49) Τὴν „προτερῶς,, καθάπερ καὶ τὴν „μεσιτέον,, ὡς ἐνομάζει ὁ Νουσαέων  
 Γρηγόριος.

(50) Ἐπεὶ ἀληθῶς, δηλονότι, καὶ Πατὴρ μέσον καὶ Πνεύματος, πραγματιώδης ἐστὶ καὶ  
 ἀληθῶς, ἡ τῆς Υἱοῦ „μεσιτέα,, ἔχει ψιλόν τι καὶ ἀνευ λόγου κατὰ τὴν δοκῶν  
 πλατύνον ἵναλμα εἶσα, ἀλλ' ἐν αὐτῇ τῇ τῆς Θεότητος φύσει τὸ εἶναι ἔχουσα.  
 Μηδὲ τις τὰ ἐνταῦθα λεγόμενα τοῖς ἀνωτέρω ρηθεῖσιν, (ἐν Σημειώσι: (43) καὶ 45.)  
 ἀντίξω φέρεσθαι ἠγείδω. Το γὰρ κατ' ἐπίνοιαν ἐν ἐκείνοις μηδὲν πλέον, ἢ περὶ  
 τῆς, (διὰ τὴν ἐν ἡμῖν ἀδένειαν τῆς ἄλλως νοεῖν) παρεμπιπτόσης οἷον διασηματι-  
 κῆς προτερῶς τε καὶ μεσιτέσεως, ἐννοεῖν χρή.

(51) Ὅπερ ἐστὶν: ἀδωάτον, τὸ τῆς Υἱοῦ γεννηθέντος προβαλλόμενον Πνεῦμα, τὸ αὐτὸ  
 ἅμα, καὶ τῆς Υἱοῦ μὴ γεννηθέντος, ἐκ τῆς Πατρὸς προβάλλεσθαι. Εἴη γὰρ αὖν εἴτω  
 καὶ Πατὴρ καὶ μὴ Πατὴρ, ὁ ἐξ ἑ αὖν προβάλλοιτο.

μὴ πρὶν ἐνεργῶντα προειληφότες κατὰ νόησιν· καθότι ἀμέλει ὁ μὲν Υἱὸς διὰ τῆς νῆς γεννᾶται, τὸ δὲ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον διὰ θελήσεως ἐκπορεύεται· μόνων τῶν Σχολαστικῶν ἀναπλάσματα ἐστὶ τὰ τοιαῦτα, μηδενὶ σεβρῶν θεμελίω ἐπεοειδόμενα, ὡς εἰσόμεθα ἐν τοῖς ἐφεξῆς. Ὁ μὲν ἔν Νύσσης ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ, ἐν τῷ Α'. τῶν κατὰ Εὐνομίαν Βιβλ.: Σελ.: 164. Φησὶν: „Ὡς γὰρ συνάπτεται τῷ Πατρὶ ὁ Υἱὸς, καὶ τὸ ἐξ αὐτοῦ εἶναι ἔχων ἔχ· ὑπερίκει κατὰ τὴν ὑπαρξιν· ἔτω πάλιν καὶ τῆς Μονογενεῖς ἔχεται τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ἐπινοία μόνῃ, κατὰ τὸν τῆς αἰτίας λόγον,· προθεωρημένῃ (τῆς Υἱᾶ) τῆς τῆς Πνύματος Ὑποστάσεως,· (52) Ἀλλὰ διὰ τῶνδε τῶν ῥημάτων: („ἐπινοία μόνῃ προθεωρημένῃ τῆς Υἱᾶ,·) τὸ χρονικὸν μόνον διάστημα ὑπεξελεῖν ἐσκόπει Γρηγόριος· ἵνα ὁ νῆς ἦ: ὡς ἑξῆς δέον ἐννοεῖν παρεμπιπτόντα χρόνον, καὶ ὃν ἂν ὁ Υἱὸς προὔπαρχει τῆς Πνύματος· μόνῃ δὲ τῷ χρόνῳ τῇ διανοίᾳ λογίζεσθαι. Ἐπειδὴ γὰρ τότε τὸ πρότερον κατὰ τὸν τῆς αἰτίας λόγον ὠνόμασεν: „Ἐπινοία μόνῃ (Φήσας) κατὰ τὸν τῆς αἰτίας λόγον προθεωρημένῃ τῆς Υἱᾶ,· δῆλον πάντως ὅτι πραγματιώδη τινα καὶ φυσικῶς ἐνταῦθα τὴν προτέρωσιν ὁ Νύσσης Γρηγόριος ὑπενόησεν· ἢ γὰρ κατὰ τὸν λόγον τῆς αἰτίας προτέρωσις φυσική τις ἐστὶ, καὶ πρὶν ἢ τὸν νῆν τὸν ἀνθρώπινον αὐτῆς ἐπιλαβέσθαι,· χώραν ἐστὶν ἐν τοῖς Θεοῖς ἔχουσα. Ἀλλὰ καὶ αὐτοὶ Λατῖνοι παραπλησίως ταῦτα τὰ τῆς Νύσσης διερμινεύουσιν· ὡς δῆθεν νενοηκότες αἴτιον τῆς Ἁγίας Πνύματος εἶναι καὶ τὸν Υἱόν, καὶ ἔτι αὐτὸν τῷ κατὰ τὴν αἰτίαν λόγῳ προεπινοεῖσθαι τῆς Ἁγίας Πνύματος σωτιθέμενοι. Ἦδη μὲν ἔν φανερόν, ὡς ἐφ' οἷς θάτερον θάτερον αἴτιον ἐστὶν, ἐν αὐτοῖς τὸ πρότερον „τῇ φύσει,· κρατεῖ, καὶ ἔ· μόνον „τὸ κατ' ἐπίνοιαν,·· Καὶ πῶς ὁ Νύσσης, ἔπερ ἔτος ὁ νῆς αὐτῆς ὡς, προθείη: τὸ „Ἐπινοία μόνῃ προθεωρεῖσθαι τὸν Υἱόν τῆς Ἁγίας Πνύματος, εἰ μὴ κατὰ γε τὸν εἰρημένον λόγον καὶ ὃν τὴν ῥῆσιν καὶ οἱ Λατῖνοι ἐξέθεντο;

Τελού-

- (52) Τὸ ἔχ· ὑπερίκει τὴν ὑπαρξιν, ὥσπερ ἐπὶ τῆς Υἱᾶ πρὸς τὸν Πατέρα, ἔχ· κατὰ ψιλὸν ἐπινοίας ἀλόγῃ ἀνάπασμα, ἀλλ' ἢ, καθότι ἂν παρεμπέσοι χρονικὸν διάστημα, ἐκδεκτέον ἐστὶν, ἔτω καὶ ἐπὶ τῆς Ἁγίας Πνύματος, παραθέσει τῇ πρὸς τὸν Υἱόν. Χρηται καὶ γὰρ ὁ Νύσσης ἐπιδήλως τῷ „ὑπερίκει,· ῥήματι ἐπὶ τῆς σωτῆς τῆς αὐτῆς ἀπὸ κοινῆς. Καὶ γὰρ ἔχ· ὑπερίκει,· τῷ χρόνῳ ἔτε ὁ Υἱὸς τῆς Πατρὸς, ἔτε τὸ Πνεῦμα τῆς Υἱᾶ. Ἀμφω μὲν τοι κατὰ τὸν τῆς αἰτίας λόγον „ὑπερίκει,· ὁ μὲν τῆς αἰτίας Πατρὸς, ἐξ ἧς γεννᾶται προσεχῶς καὶ ὁ μὲν τῆς αἰτίας Υἱᾶ, δι' ἧς γεννηθέντος ἤδη, καὶ ταύτῃ γε, τῷ τὴν Πατρὸς τῆς αἰτίας περιῆσαν ἐναποφύλασσαι, μεσιτεύοντος, ἐκπορεύεται ἐκ τῆς αὐτῆς Πατρὸς, τῆς ἐνός τε καὶ μόνος αἰτίας ἐν τῇ Θεότητι ὄντος ἀμφοτέρων τῶν αἰτιατῶν Ὑποστάσεων.

Ψ ψψψψ 2



Τελούταϊον ἐνιστάμενος ὁ αὐτὸς Συγγραφεὺς κ' Γ'. Φησὶ Δοθέντος  
 „ὅτι τῶν Θεῶν Προσώπων διώκται τις τάξις ληφθῆναι, ἐκ τῆς  
 „κατ' ἐπίνοιαν προτέρου τε καὶ ὑστερῶν τῶν παρακτικῶν διωάμεων,  
 „ἐκ ἧς ὁ ἔστω ἀποδειχθῆναι, ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα δούτερον ἐστὶ  
 „τῆς Υἱοῦ καὶ γὰρ ἐπίσης τό τε Πνεῦμα, καὶ ὁ Υἱὸς, πρὸς μόνον  
 „ἂν ἀνάγοιτο τὸν Πατέρα· ἀμφότερα δὲ τὰ Πρόσωπα, μόνῃ τῇ  
 „πρὸς τὸ πρῶτον ἀναφορᾷ. ἔη ἂν κατὰ τὸν λόγον τῆς ἀρχῆς  
 „δούτερον εἶναι καὶ ἕδῃς ἂρ' ἔτω λόγος ὑπολειφθῆναι, δι' ὃν ἂν δού-  
 „τερον μᾶλλον τὸ Πνεῦμα λέγοιτο τῆς Υἱοῦ, ἢ ὁ Υἱὸς τῆς Πνεύμα-  
 „τος· μηδεμίαν ἄλλω ἀρχῇ τῆς τῶν Ὑπερθέων Προσώπων ἑξα-  
 „ριθμήσεώς τε καὶ τάξεως ἐπιγινωσκόντων τῶν Θεοπεσίων Πα-  
 „τέρων, παρὰ τὴν κατὰ λόγον τὸν τῆς αἰτίας καὶ τῆς προβύσεως.  
 „Εἴη δ' ἂν ἐπ' ἀνάγκης, καθ' ὃ δὴ γένος τὸ τρίτον Πρόσωπον προ-  
 „ποτίθῃσι γε τὸ πρῶτον, κατὰ τὸ αὐτὸ προϋποτιθέναι καὶ τὸ δού-  
 „τερον· ἢ, ὃ τὰ αὐτὸν ἐστὶ: δι' ὃ τὸ Πνεῦμα τρίτον λέγεται τῆς  
 „Πατρὸς, δι' αὐτό γε τῆτο δούτερον εἶναι καὶ τῆς Υἱοῦ, καὶ τρίτον  
 „ἔτω πεφυκέναι τῆς Ὑπερθέου Τριάδος Πρόσωπον· ἡμῖς μὲν πρὸς  
 „τὸ δοκεῖν, ἀλλὰ κατὰ φύσιν. Καὶ δῆλον ἄρα ἐκ τῆς πηγῆς  
 „τε καὶ φυσικῆς τάξεως, ἔστω ἐναπαυτῆσθαι παρὰ τῆς πρώτης  
 „καὶ τῆς δούτερου παράγεσθαι τὸ τρίτον, ὡς ἐκ τῆς Πατρὸς μόνου  
 „τὸ δούτερον,,.

Ἀλλὰ πρῶτον. ὡς ἀρτίως ἐδείχθη, ἔχει κατὰ ψιλῶς τε καὶ  
 ἀμενικῶς τὴν ἐπίνοιαν ἢ τάξις ἐστὶ, καὶ τὸ πρότερον, ἐπὶ τῆς πα-  
 ραγωγῆς τῆς Υἱοῦ καὶ τῆς Πνεύματος, ἀλλὰ φυσική. Εἰ δὲ κατὰ  
 τῶν εἰρημένων, καὶ τῆς ἀντεπενεχθέντας τῆς δε παρὰ τῆς Ἰησοῦ-  
 ῖτος λόγος πρὸς ἄλλοις ἔτι προσβιαζόμενος, ῥᾶστα σοὶ καὶ ἔτοι ἐπι-  
 λυθῇσονται. Πάντως γὰρ δὴ τῆς Ἁγίας Πνεύματος ἐκ μόνου τῆς  
 Πατρὸς ἐκπορεύομεν, ὁ Υἱὸς καὶ τὸ Πνεῦμα ἐπίσης, ἐπὶ μόνον  
 τὸν Πατέρα, ὡς ἐπὶ Προβολῇ δηλονότι τῷ λόγῳ τῆς Αἰτίας  
 ἀνάγονται. Ἀλλ' ἐκ ἐντεῦθεν ἔπεται μὴδὲ μίαν τῆς λοιπῆς τάξεως  
 μεσολαβεῖν, Υἱὸς μεταξὺ καὶ Ἁγίας Πνεύματος, ὥστε μὴδὲ τὸν  
 Υἱὸν ἐξ ἀνάγκης τὸ δούτερον εἶναι, μὴδὲ τὸ Πνεῦμα τὸ τρίτον  
 τῆς Ὑπερθέου Τριάδος Πρόσωπον. Ψυδὲς γὰρ τὸ ῥηθῆναι, ὅτι ὁ  
 Υἱὸς καὶ τὸ Πνεῦμα, μόνῳ τῷ πρὸς μόνον τὸν Πατέρα λόγῳ,  
 τὸ δούτερον εἶναι ἔχον τὸ κατὰ τὴν πρόβλυσιν· εἰ γὰρ καὶ τὸ  
 Πνεῦμα ἐκ μόνου τῆς Πατρὸς ἐκπορεύεται, ἅμα μὲν τοι αὐτὸ καὶ  
 διὰ τὴν ἐκ τῆς Πατρὸς αὐτῆς πρόοδον ὑπερον ἐστὶ τῆς Υἱοῦ καὶ  
 ἑδόλως ἄρα ἐντεῦθεν ἔπεται, τὸ μὴδένα ἔστω ἂν ἔσεσθαι λόγον,  
 δι' ὃν μᾶλλον ἂν τὸ Πνεῦμα δούτερον τῆς Υἱοῦ ῥηθῆναι, ἢ τῆς Πνεύ-  
 ματος ὁ Υἱός. Εἰ γὰρ μετὰ τὸν Υἱὸν, καὶ ἔχει πρὸ τῆς Υἱοῦ τὸ  
 Πνεῦμα προβάλλεται, πῶς ποτὲ τῆς Ἁγίας Πνεύματος δούτερος  
 ἂν εἴη ὁ Υἱός; Ἐφ' οἷς: καὶ ἐπιγινώσκουσι μὲν οἱ Πατέρες ἐπὶ  
 τῆς



σίας Καθηγητῶν καὶ Πατέρες. Οἶον ὁ Θεὸς ΔΙΟΝΥΣΙΟΣ ὁ Ἀρεο-  
παγίτης ἐν τῷ περὶ τῶν Θεῶν Ὄνομ: Βιβλ: Κεφ: Β'. Σελ: 174.  
„Περὶ τῆς τῆς Υἱοῦ Γεννήσεως, καὶ τῆς τῆς Ἀγίας Πνεύματος Ἐκ-  
πορεύσεως πραγματευόμενος: „Ὅπως δὲ ταῦτα ἐστὶν, ἔτε εἰπὼν,  
„ἔτε ἐννοῆσαι, φησὶ, δυνατόν,,.

Καὶ ἈΘΑΝΑΣΙΟΣ ἐν Διαλόγῳ Α'. περὶ Τριάδος: (53)  
„Πῶς δὲ γεννᾷ τὸν Υἱὸν ὁ Θεός, ὁ πολυπραγμονῶ καὶ πῶς  
„ἐκπέμπει τὸ Πνεῦμα, ὁμοίως ὁ πολυπραγμονῶ ἀλλὰ πισθῶ,  
„ὅτι καὶ ὁ Υἱὸς γεννᾶται ἀρρήτως καὶ ἀπαθῶς, καὶ τὸ Πνεῦμα  
„ἐκπορεύεται ἀρρήτως καὶ ἀπαθῶς,,.

Ὁ δὲ Θεολόγος ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ πρὸς τοὺς ἄλλοις ἐν Λόγ: ΛΖ.  
ὅς ἐστι περὶ τῆς Ἀγίας Πνεύματος, Σελ: 597. „Τίς ἔν ἡ Ἐκπό-  
„ρεύσις; Εἰπὲ σὺ τὴν Ἀγεννησίαν τῆς Πατρὸς, καὶ γὰρ τὴν Γέν-  
„νησιν τῆς Υἱοῦ φυσιολογήσω, καὶ τὴν Ἐκπόρυσιν τῆς Πνεύμα-  
„τος καὶ παραπληκτίσομεν ἄμφω εἰς Θεῶ Μυσήρια παρακλύ-  
„τοντες,,.

Ὁ δὲ ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ ὁ Νύσσης ἐν τῷ περὶ τῆς: „Τί τὸ  
„κατ' Εἰκόνα καὶ κατ' ὁμοίωσιν,,. Ἐν τοῖς λοιποῖς αὐτῆς Πονη-  
ματίοις, τοῖς ἔτε 1596. ἐν Ἰγγολσαδίῳ ὑπὸ Φρόντωνος τῆς  
Δεκταίας ἐκδομένοις, Σελ: 35. „Πῶς δὲ καὶ διαγνωσόμεθα  
„ἐπὶ τῶν ἀσωμάτων καὶ ἀκινήτων καὶ ἀμετασάτων, τὸ διάφορον  
„Γεννήσεως καὶ Ἐκπορεύσεως,,;

Καὶ ὁ ΧΡΥΣΟΣΤΟΜΟΣ Ὁμιλ: Α'. περὶ τῆς Ἀκαταλήπτου  
Θείας φύσεως, ἐν τῷ Α'. Τόμ: τῆς Γραικο-Λατιν: Ἐκδόσ:  
Σελίδι 332. „Οἶδα ὅτι ἐγέννησεν Υἱόν τὸ δὲ πῶς; ἀγνοῶ.  
„οἶδα ὅτι τὸ Πνεῦμα ἐκ αὐτῆς τὸ δὲ πῶς ἐκ αὐτῆς; ὁκ ἐπι-  
„σταμαι,,.

Καὶ ΑΥΓΟΥΣΤΙΝΟΣ Βιβλ: Γ'. κατὰ Μαξιμίνου, Κεφ: ΙΔ'.  
„Διακρίναι τῆς Προόδου ταύτης, ἐκείνῳ τὴν Γέννησιν, ὁκ ἐπίστα-  
„μαι, ὁ δὲ δυνάμει, ὁκ εἰμὶ ἱκανός,,.

Καὶ ὁ ΣΥΓΓΡΑΦΕΥΣ δὲ τῶν Βιβλ: τῶν περὶ τῆς ἡνω-  
μένης ἐν Τριάδι Θεότητος παρὰ ἈΘΑΝΑΣΙΩ Βιβλ: Θ'. ἐν τῷ  
Β'. Τόμ: τῶν Ἀθανασ: Συγγραμ: Σελ: 583. „Ἦρκεσεν αὖ  
„τοῖς πιστοῖς αὐτὸ τῆτο πισθῆναι, ὅτι ὁ μὲν Υἱὸς γεννᾶται, τὸ  
„δὲ Πνεῦμα ἐκ τῆς Πατρὸς ἐκπορεύεται. ὁ ἡ Ἐκπόρυσιν οἷα τε  
„καὶ ἡλικίῃ, εἰδέναι ὁδεῖν ἐπιτρέπεται ὡς καὶ περὶ τῆς Υἱοῦ εἰρη-  
„ται: τὴν δὲ γενεὰν αὐτῆς τίς διηγῆσεται,,;

Καὶ ΛΕΟΝΤΙΟΣ δὲ ἐν τῷ περὶ Αἱρέσεων, Πράξι Α'. Τόμ:  
Α'. τῶν Γραικ: Πατέρ: Σελ: 493. „Πῶς δὲ γεννᾶται ὁ Υἱὸς  
„ἐκ αὐτῆς, ἡ πῶς ἐκπορεύεται τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ὁ δὲ πε-  
„ριεργάζεσθαι,,.

Καὶ

Καὶ ἈΝΑΣΤΑΣΙΟΣ δὲ ὁ Σιναΐτης Βιβλ: Α'. περὶ τῶν Δογμαμάτων τῆς Πίσεως, Σελ: 697. ἐν τῷ 5'. Τόμῳ τῆς τῶν Πατέρ: Βιβλιοθ: τῆς ἐν Κολωνίᾳ: „Πῶς ὁ Λόγος γεννᾶται, ἢ τὸ Πνεῦμα ἐκπορεύεται, μὴ πολυπραγμονῶμεν· ἔ γὰρ ἀσφαλὲς ἔδ' ἀκίνδωνον· τῆτο γὰρ μόνον ἐστὶ γνωστὸν τῇ Ἀρχῇ· ἔ γὰρ ἀσφαλὲς· τῆτο γὰρ μόνον γινώσκεται τῷ Θεῷ..."

Καὶ ὁ ΣΥΓΓΡΑΦΕΥΣ δὲ τῆ περὶ Τριάδος Βιβλίας, παρὰ ΚΤΡΙΛΛΩΙ, Κεφαλ: Η'. „Ἄλλος τρόπος ὑπάρξεως ἔτος, (ὁ κατὰ τὴν Ἐκπόρευσιν) ἄληπτός τε καὶ ἄγνωστος, ὥσπερ καὶ ἡ τῆς Τίξ Γέννησις... — Καὶ πάλιν: „Τῆς τρόπου τῆς Γεννήσεως καὶ τῆς Ἐκπορεύσεως ἀκαταλήπτου ὑπάρχοντος..."

Καὶ ἸΩΑΝΝΗΣ ὁ Δαμασκηνὸς Βιβλ: Α'. τῆς Ὁρθοδ: Πίς: Κεφαλ: Γ'. Σελ: 36. (54) „Ὅτι μὲν ἐστὶ διαφορὰ Γεννήσεως καὶ Ἐκπορεύσεως, μεμαθήκαμεν· τίς δὲ ὁ τρόπος τῆς διαφορᾶς, ἔδαμῶς... Καὶ Κεφαλ: Β'. (55) „Ὅπως Θεὸς ἐκ Θεῆ ἐγεννήθη, ἢ ἐκπορεύεται — καὶ ἀγνοῶμεν, καὶ λέγειν ἔ διωάμεθα... Ἐν δὲ τῷ Θ'. Κεφαλ: (56) τὰ αὐτὰ ἔχει, ὥσπερ ἡδη ἐκ τῆς περὶ Τριάδος Βιβλίας παρεθέμεθα. — Πάλιν δὲ ἐν τῇ τῆς Ἰωσαφάτ, καὶ τῆς Βαβυλωνίου Ἰσορίας Κεφαλ: ΙΘ'. „Κατανοῆσαι, δὲ τὸν τρόπον τῆς Γεννήσεως καὶ τῆς Ἐκπορεύσεως μὴ εἴηται..."

Καὶ ΒΕΔΑΣ τελοῦντα ὁ Ἄγγλος, ἐν Τόμῳ: τῶν Συγγραμ: Στήλῃ 571 ἐν τῷ Ὑπομνήματι τῷ εἰς τὸ Ἰωάν: 15'. Κεφαλ: „Τί διαφέρει τὸ ἐκπορεύεσθαι τῆς γεννᾶσθαι, μακρὸν ἐστὶ καὶ ἐρόβνησαντας διελθεῖν, καὶ διελθόντας διορίσαι· ὅτι καὶ τὸ ὅπως ἐν τῇ διανοίᾳ καταλαβεῖν, καὶ τὸ διανοίᾳ ἴσως καταληφθῆναι, διὰ γλώσσης δυσχερέστατον ἐστὶν ἀναπτύξαι, πηλικυὲν δὴ πρὸς προκαθεζομένους τῆς Διδασκαλίας, πηλικυὲν παρόντος τῆς ἀκρωμένους..."

Τὸ

(54) Κατὰ τὴν Λεκύνην Ἐκδοσ: Κεφαλ: Η'. Σελ: 137. Μικρὸν δὲ ἀνωτ: ἐπὶ τῆς αὐτῆς Κεφαλ: αὐτόθι Σελ: 136. τὰ αὐτὰ ἀπαραλλάκτως τῷ Συγγραφεῖ τῆς περὶ Τριάδος: „Οὕτω μὲν τῆς Θεῆς διδασκίσεως Γραφῆς, τῆς δὲ τρόπου τῆς Γεννήσεως καὶ τῆς Ἐκπορεύσεως ἀκαταλήπτου ὑπάρχοντος· καὶ ἐν τῇ προοίμῳ δὲ τῇ περὶ τῶν Θεῶν ὀνομάτων: τὸ δὲ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκφαντορικῇ τῆς κρυφίας τῆς Θεότητος διώματι, ἐκ Πατρὸς μὲν δι' Τίξ ἐκπορεύομενη ὡς οἶδεν αὐτὸς, ἔ γεννητῶς..."

(55) Ἐν τῷ Β'. Κεφ: τῆς Α'. περὶ Πίς: κατὰ τὴν Λεκύνην: Ἐκδ: Σελ: 125. ἔτω: „τί δὲ ἐστὶ Θεὸς ἑστία, ἢ πῶς ἐστὶν ἐν πᾶσιν (.....) ἢ πῶς ἑαυτὸν κενώσας ὁ Μονογενὴς Υἱός· κτ: — καὶ ἀγνοῶμεν, καὶ λέγειν ἔ διωάμεθα... Ἄλλ' ἐν τῷ αὐτῷ χωρίῳ ἐπὶ τῆς Λατινικῆς Ἑρμηνείας, κατὰ τὴν παρασιχθεῖσαν Παρένθεσιν, (.....) παρενεγράφη: Vel quomodo Deus ex Deo genitus sit, vel processerit: („ἢ πῶς Θεὸς ἐκ Θεῆ ἐγεννήθη, ἢ ἐκπορεύεται...") ὁ καὶ ἔτως ὑποτεθεὶς καὶ Ἑλλισί πρὸς ἀναγινώσκουσαν, βραδίως ἀν' ἐπὶ τὴν ὀρθότητα ἐπανακληθεῖται τῆς Δόγματος.

(56) Ἐν τῷ Θ'. Κεφ: κατὰ τὴν Λεκύνην Ἐκδοσιν, τοιοῦτον ἔδεν. Ἄλλ' ὁ Συγγραφεὺς, τὰ ἐν τῷ Η'. Κεφαλ: ἴσως ἐνταῦθα ἐνόησεν.



Τὸ δ' αὐτὸ ἔτι καὶ ἀλλαχῇ περὶ τῆς τῆς Τίτῃ Γεννήσεως  
 θεολογῶντες παρέδωκαν οἷτε Θεασέσιοι Πατέρες, καὶ αἱ Σωδοί.  
 Οἶον Διονύσιος ὁ Ἀλεξανδρεὺς, πρὸς τὸ Ε'. Ἐρώτημα Παύλου τῆς  
 Σαμωσατέως, ἐν τῷ Α'. Τόμ: τῶν Σωδικ: Στήλη 872. καὶ  
 Ὁσίου ὁ Κοδράβης Ἐπίσκοπος, ἐν τῇ κατὰ Νίκαιαν Α. Σωδό:  
 τῇ Οἰκουμενικῇ παρὰ Γελασίῳ τῷ Κυζικιωῶ, Βιβλ: Β'. Κεφ: ΙΣ'.  
 ἐν Τόμ: Β'. τῶν Σωδικ: Στήλη 180. Καὶ ἐς πλάτος δὲ, ἐξ  
 ὀνόματος τῆς αὐτῆς Οἰκουμεν: Σωδόδ· Εὐσέβιος ὁ Παμφίλος, παρὰ  
 τῷ αὐτῷ Γελασίῳ Βιβλ: Β'. Κεφαλ: ΙΘ'. Στήλη 197. καὶ 200.  
 καὶ 201. Καὶ ἡ ἐν Ἀριμίνῳ δὲ Καθολικῇ Σωδοδ· ἐν τῇ κα-  
 ταψηφίσει τῆς Ἀείας Αἰρέσεως, παρὰ Ἰλαρίῳ ἐν Ἀποσπάσμασι  
 τοῖς ἐν τῷ ὑσέρῳ Βιβλ: περὶ τῆς ἐν Ἀοιμίνῳ Σωδόδ: Σελ: 47.  
 ἐν Τόμ: Β'. τῶν Σωδικ: Στήλη 796. Καὶ Βασίλειος δὲ ὁ  
 Μέγας ἐν Λόγ: τῷ εἰς τὴν Χοιρῇ Γέννησιν, ἀναφέροντος Ἀκα-  
 κίαν τῆς Βερόνης Ἐπισκόπου ἐν Ἐπισολῇ τῇ πρὸς Κύριλλον, ἐν  
 τῷ Α'. Μέρει τῆς ἐν Ἐφέσῳ Οἰκουμεν: Σωδόδ·, Κεφαλ: ΚΓ'.  
 Τόμ: Γ'. τῶν Σωδικ: Στήλη 384. Καὶ Αὐγυστίνος ἐν τῷ Λόγ:  
 τῷ εἰς τὴν τῆς Κυρίας Γέννησιν, ὃν ἀναφέρουσιν οἱ Γάλλοι τε καὶ  
 Γερμανοὶ Ἐπίσκοποι ἐπὶ τῆς ἐν Φραγκοφάρτῳ Σωδόδ·, Τόμ: Ζ'.  
 τῶν Σωδικ: Στήλη 1033. Καὶ Κύριλλος ἐν τῷ Βιβλίῳ τῷ  
 περὶ τῆς Μονογενῆς Ἐνσαρκώσεως, Ἀριθμ: Δ'. Μέρ: Γ'. τῆς  
 ἐν Ἐφέσῳ Α'. Σωδόδ· Κεφ: ΙΑ'. κατ' ἀρχὰς, ἐν τῷ Γ'. Τόμ:  
 τῶν Σωδικ: Στήλη 1095. Καὶ Ἰσινιανὸς δὲ ὁ Αὐτοκράτωρ  
 Βιβλ: κατὰ τῶν Τριῶν Κεφαλαίων, ἐν τῷ Ε'. Τόμ: τῶν Σω-  
 δικ: Στήλη 688. Καὶ Μασσέτος δὲ ἐν τῇ Σωδικ: Ἐπισ: τῇ  
 πρὸς Κωνσταντῖνον τὸν Αὐτοκρ: ἐν Τόμ: Σ'. τῶν Σωδικ: Στή-  
 λη 606. Καὶ Σωφρόνιος ὁ Ἱεροσολ: Πατριάρχ: ἐν τῇ Σωδικ:  
 Ἐπισ: τῇ ἀναγνωθείσῃ ἐπὶ τῆς ΙΑ'. Πράξ: τῆς Οἰκουμεν: Σ'.  
 Σωδόδ· ἐν τῷ Σ'. Τόμ: τῶν Σωδικ: Στήλη 866. Καὶ Νική-  
 φόρος ὁ Κωνσταντινουπ: Πατριάρχ: ἐν τῇ πρὸς Λέοντα τὸν Γ'.  
 Ἐπισ: Τόμ: Ζ'. τῶν Σωδικ: Στήλη 1216. Καὶ Ἰωάννης ὁ  
 Δαμασκ: Βιβλ: Α'. τῆς Ὁρθοδ: Πίς: Κεφαλ: Β'. καὶ ἐν τῇ  
 τῆς Βαρλαάμ καὶ τῆς Ἰωσαφάτ Ἱστορίας, Κεφαλ: ΙΘ'. Καὶ οἱ  
 τῆς Γαλλίας τελευτάων, καὶ τῆς Γερμανίας Ἐπίσκοποι, ἐν τῇ  
 πρὸς τὰς Ἰσπανίας Σωδικ: Ἐπισ: τὰς ἐπὶ τῆς ἐν Φραγκοφάρτῳ  
 Σωδόδ·, Τόμ: Ζ'. Στήλη 1033.

Ἐπιλίποι ἂν ἡμᾶς ἡ ἡμέρα, τοῖς τῶν λοιπῶν Πατέρων  
 Συγγράμμασι τὸ λεγόμενον βεληθέντας προσεμπεδώσασθαι. Ἀπό-  
 χρη γὰρ καταλέξαι, καὶ μόνος τῆς τῆς Προφητικὸν ἔκθετος, περὶ  
 τῆς τῆς Τίτῃ καὶ Λόγῃ ἐκ τῆς Πατρὸς προαιωνίης Γεννήσεως: „τῷ  
 „δὲ γενεᾷν αὐτῇ τίς διηγήσεται; διεμυλωδύσαντας,,. Ὡς Ἰσίδωρος  
 ἐν τῷ πρὸς Τρύφωνά τὸν Ἰσδαῖον Διαλόγῳ, Σελ: 261. καὶ ἐν  
 τοῖς



τοῖς πρὸς τὰς Ὀρθοδόξας Ἐρωτήμασιν, Ἐρωτήσαι ΕΖ'. Σελ: 431. Καὶ Εἰρλωαῖον Βιβλ: Β'. Κεφαλ: ΜΗ'. Καὶ Ἀλέξανδρον τὸν Ἀλεξανδρείας Ἐπίσκοπον, πρὸς Ἀλέξανδρον τὸν Κωνσταντινουπόλεως, παρὰ Θεοδωρήτῳ ἐν τῷ Α'. Βιβλ: τῆς Ἐκκλησιᾶς: Ἰσορ: Κεφαλ: Γ'. ἐν Τόμ: Γ'. τῶν Συγγραμ: Σελ: 528. Καὶ Ἀθανάσιον ἐν Διαλόγῳ Γ'. τῶν περὶ Τριάδος, Τόμ: Β'. Σελ: 213. Καὶ ἐν τῷ Βιβλ: τῆς Ἐκθῆς: τῆς Πίς: Τόμ: Α'. Σελ: 240. Καὶ Κύριλλον τὸν Ἱεροσολυμίτῳ ἐν Κατηχήσει ΙΑ'. Σελ: 94. Καὶ Βασίλειον τὸν Μέγαν Βιβλ: Α'. τῶν κατὰ Εὐνομίαν, Τόμ: Β'. τῶν Συγγραμ: Σελ: 21. Καὶ Ἀμβρόσιον Βιβλ: Α'. περὶ Πίς: πρὸς Γρατιανὸν Κεφαλ: 5'. ἐν Τόμ: Δ'. Σελ: 123. Καὶ Ἱερώνυμον ἐν τῷ εἰς τὸν Ἰεζεκιήλ Ὑπομνήματι Κεφαλ: Α'. ἐν τῷ Δ'. Τόμ: Στήλῃ 733. Καὶ Αὐγκστίνον ἐν Ἐπιστολῇ ΝΔ'. καὶ ΡΝ'. καὶ ΡΟΔ'. Καὶ Κυριλλον τὸν Ἀλέξανδρον: Βιβλ: Α'. τῆς εἰς τὸ Ἰωάν: Ὑπομνήμ: εἰς τὸ Α'. Κεφαλ: ἐν Τόμ: Δ'. τῶν Συγγραμ: Σελ: 11. Καὶ ἐν τοῖς Θησαυροῖς Λόγῳ Δ'. ἐν Τόμ: Ε'. Μερ: Α'. Σελ: 24. Καὶ τὸν Συγγραφέα τῶν Βιβλ: τῶν περὶ τῆς ἡνωμένης ἐν Τριάδι Θεότητος Βιβλ: Η'. ἐν Τόμ: Β'. τῶν Ἀθανασίου Συγγραμ: Σελ: 583. Καὶ Εὐγένιον τὸν Καρχηδόνας Ἐπίσκοπον ἐν τῇ Ὁμολογ: τῆς Πίσεως, παρὰ Οὐλκτορι τῷ Ὑτίκῃ Βιβλ: Β'. περὶ τῆς Οὐανδαλικῆς διωγμῆς. Καὶ ὁμοίως καὶ ἄλλας.

Οὕτω τοίνυν κατὰ τὴν τῶν Καθολικῶν Διδασκάλων ὁμόφροναν δόξαν, ἀγνοομέναις τῇ τρόπῃ τῆς τε τῆς Υἱᾶς Γεννήσεως, καὶ τῆς Ἐκπορεύσεως τῆς Ἀγίας Πνεύματος, πόθεν, εἴπεμοι: ὁ Θωμᾶς μόνος αὐτὸν κατενόησε; μόνος ἄρ' αὐτὸς τῶν Πατέρων ἀπαξάπαντων, καὶ τῶν Ἱερῶν ἀπασῶν Σωόδων ἀνεφάνη σοφώτερος; καὶ τίνα τῆτο λόγον ἔχον ἐστίν; Ἐκατέρω δὲ τῇ τρόπῃ ἐπίσης ἀγνοομέναις, πῶς ἐκ τῆς ἀδήλας τε καὶ κρυφίας, ἀναγκαῖον τι παῖδες Λατίνων εἶχον ἐπαγαγεῖν; Τῷ γὰρ ὄντι τῇ ἐν ἀρχῇ ζητημένῃ αἰτησίᾳ ἐστίν, ἐχὼν πῶς Διαλεκτικοῖς ὅροις εἰχθεῖς, ἐδ' ἀπόδειξις, πολλὰ γε καὶ δεῖ: τὸ ἐκ τῆς ἀσαφῆς τι ὅτις συμπεραίνειν ἐπιχειρεῖν, ὡς ὁ Φιλόσοφος διδάσκει ἐν Βιβλ: Β'. τῶν προτέρων Ἀναλυτικῶν, Κεφαλ: Ι5'. καὶ ἐν τῷ Η'. Βιβλ: τῶν Τοπικῶν Κεφαλ: ΙΓ'.

#### Ἀ Π Α Ν Τ Η Σ Ι Σ Β'.

Ἀλλὰ καὶ τί καινὸν ἐστίν, ὅπερ ὁ Θωμᾶς προβάλλεται, θεωρήσωμεν: „ὁ μὲν Υἱὸς, φησὶ, κατὰ Νῆ ἐνέργειαν πρόεισιν, ἅτε „δὴ Λόγος: τὸ δὲ Πνεῦμα, κατ' ἐνέργειαν Θελήσεως, ὡς Ἐρως „ Τὸ μὲν εἶναι τὸν Υἱὸν ἐκ τῆς Πατρὸς προῖξιναι ὡς Λόγον, ἔξω πάσης Τόμ: Β'. Α ααααα ἀμφι-

ἀμφιβολίας ἐστίν. Ἀλλὰ γὰρ πόθεν ἀποδείκνυσιν τὸν Υἱὸν κατὰ  
τρόπον ἐνεργείας Νῆ ἐκ τῆ Πατρὸς προῖέναι; Ψαδὲς δ' ἔμπης,  
ὅτι καὶ τὸ Πνεῦμα ἐκπορεύεται ὡς Ἔρως, κατὰ τρόπον ἐνε-  
ργείας Θελήσεως. Πάντως μὲν γὰρ, τὸ Ἅγιον Πνεῦμα Ἀγάπη  
ἐστίν, τῆ Ἀποδόλα τῆτο διδάσκοντος (πρὸς Ῥωμ: Ε'. 7.) Ἀλλ'  
ἐχὼ μόνον τὸ Πνεῦμα ἐστίν Ἀγάπη· ἀλλὰ καὶ ὁ Πατήρ, καὶ ὁ  
Υἱός. Ὡς ἐντεῦθεν μὴ παρεῖναι λέγειν, ὅτι ἐκ τῆ Πατρὸς ἐκ-  
πορεύεται τὸ Πνεῦμα, ἥπερ Ἀγάπησις. Παρεκτὸς τοίνυν Διο-  
νυσίου τῆ Ἀρεοπαγίτου, ἐν τῷ περὶ τῶν Θεῶν ὀνομάτων Βιβλ:  
Κεφαλ: Δ'. καὶ τῆ τὰ ἐκείνη Σχολιογραφήσαντος Μαξίμου, αὐτό γε  
τῆτο ἐκ τῆς Ἱερᾶς Γραφῆς ἀποδείκνυσιν Αὐτοῦστινος, ἐν  
Βιβλ: ΙΕ'. τῶν περὶ Τριάδος, Κεφαλ: ΙΘ'. „Υγιέστερον πισθε-  
„ται (λέγων) ἢ νοεῖται, τὸ μὴ μόνον Ἀγάπῃ εἶναι ἐν ἐκείνῃ  
„τῇ Τριάδι τὸ Πνεῦμα. Ἀλλ' ἐ μὲν τοι μάτῳ ἰδίως ὀνομάζεται  
„διὰ τὰ ῥηθέντα· ὥστερ ἐ μόνον ἐστίν ἐπὶ τῆς Τριάδος ἐκείνης  
„αὐτὸ, ἥτοι Πνεῦμα, ἢ Ἅγιον· ὅτι καὶ ὁ Πατήρ Πνεῦμα, καὶ  
„ὁ Υἱὸς Πνεῦμα· καὶ ὁ Πατήρ Ἅγιος, καὶ ὁ Υἱὸς Ἅγιος: περὶ  
„ἐ ἀμφιγνωεῖν ἐκ ἐνσεβέας. Καὶ μὴ αὐτὸ ἥμισυ μάτῳ τὸ Πνεῦ-  
„μα ἰδίως καλεῖται τὸ Ἅγιον, κοινὸν γὰρ ὃν ἀμφοτέρων, ἐκεῖνο  
„ἰδιαιτέρον καλεῖται, ὃ κοινῇ ἀμφοτέροι. Ἀλλως καὶ γὰρ, εἴπερ  
„ἐν ἐκείνῃ τῇ Τριάδι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα μόνον Ἀγάπη ἐστίν, ἥπερ  
„καὶ ὁ Υἱός, ἐχὼ τῆ Πατρὸς μόνον Υἱὸς ὡς εὐρίσκεται, ἀλλὰ  
„καὶ τῆ Ἁγίας Πνεύματος· ἔτω γὰρ μυριαχὲς καὶ λέγεται καὶ  
„ἀναγινώσκεται, ὁ Μονογενὴς Υἱὸς τῆ Θεᾶ καὶ Πατρὸς, ὃς ἐρ-  
„ρύσατο ἡμᾶς ἐκ τῆς ἐξουσίας τῆ σκοτίας, καὶ μετέστησεν εἰς τὴν  
„Βασιλείαν τῆ Υἱᾶ τῆς Ἀγάπης αὐτῆς· ἐκ εἶπε τῆ Υἱᾶ αὐτῆς  
„ὅπερ εἰρηκῶς ἀν εἰρήκοι τὸ ἀληθέστατον· καθάπερ καὶ ἐπεὶ  
„τῆτο εἰρηκε, παναληθέστατα εἰρηκεν· ἀλλὰ φησὶ τῆ Υἱᾶ τῆς Ἀγά-  
„πης αὐτῆς. Υἱὸς ἄρα ἐστὶ καὶ τῆ Ἁγίας Πνεύματος, εἰ μὴ ἐστίν  
„ἐπὶ τῆς Τριάδος ἐκείνης Θεᾶ Ἀγάπη, πλὴν ἢ τὸ Πνεῦμα μόνον  
„τὸ Ἅγιον. Ὡς εἶγε τῆτο ὑπερβάλλον εἰς ἀτοπίαν ἐστὶ ῥηθῆναι,  
„λείπεται ἄρα, τὸ μὴ μόνον ἐκεῖ Ἀγάπῃ εἶναι τὸ Πνεῦμα τὸ  
„Ἅγιον· ἀλλ' ἐκείνων ἕνεκα, περὶ ὧν ἄλλος διείλεγμα, ἰδίως ἔτω  
„προσαγορεύεσθαι. Οὕτως ἄρα, αὐτῆ τῆ Ἀποδόλα διδάσκοντος,  
„καὶ ὁ Πατήρ Ἀγάπη ἐστίν, ἐν οἷς φησὶν, ὅτι μετέστησεν ἡμᾶς  
„εἰς τὴν Βασιλείαν τῆ Υἱᾶ τῆς Ἀγάπης αὐτῆς. Εἴπερ γὰρ ἐν-  
ταῦθα ληφθῇ ἀντὶ τῆς Ἀγάπης τὸ Πνεῦμα, ἔψεται τὸν Υἱὸν  
τῆ Θεᾶ, Υἱὸν εἶναι καὶ τῆ Ἁγίας Πνεύματος, ὅπερ ἀτοπον.  
Τοιγαρὲν διὰ τῆτο, καὶ πολλαχὲ τῶν αὐτῆ περὶ τῆς Τριάδος  
Βιβλίων, καὶ πρό γε τῶν ἄλλων, ἐπὶ τῆ ΙΕ'. ἐν Κεφαλ: ΙΖ'.  
ἀποφάσκων ἐστὶν Αὐγουστίνος Ἀγάπῃ εἶναι μόνον τὸ Πνεῦμα τὸ  
Ἅγιον.

Ταῦτο

Ταὐτὸ δὲ τῆτο ἐκ τῆς Ἱερᾶς Γραφῆς, καὶ ὁ τῆς Ἐπιτομῆς ΣΥΓΓΡΑΦΕΥΣ τῆς κατὰ τῶν Ἀρειανῶν, ὡς ὁ Ἰησοῦτης ΣΙΡΜΟΝΔΟΣ ἐξέδοτο, Σελ: 126. „Ἀγάπη μὲν ὁ Πατήρ, Ἀγάπη „δὲ ὁ Υἱὸς, Ἀγάπη δὲ καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. Καὶ περὶ „μὲν τῶ Πατρὸς, ὁ Θεὸς Ἀγάπη ἐστὶ περὶ δὲ τῶ Υἱῶ, ὁ Ἀπό- „σολος πρὸς Κορινθίους: ἡ Ἀγάπη τῶ Χριστοῦ σιέχει ἡμᾶς περὶ „δὲ τῶ ἁγίου Πνεύματος ὁ Ἀπόσολος πρὸς Ῥωμαίους: Παρακαλῶ „δὲ ὑμᾶς Ἀδελφοί, διὰ τῶ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ, καὶ διὰ „τῆς Ἀγάπης τῶ Πνεύματος. Οὐκ ἄλλως ἄρα τὸ Πνεῦμα Ἀγάπη λέγεται, ἢ ὡς περ καὶ ὁ Χριστὸς καλεῖται ἀλήθεια, ὅποτε „δὲ καὶ ὁ Πατήρ, καὶ τὸ Πνεῦμα, ἀλήθεια ἐστίν. Ἐπεὶ τοίνυν καὶ τὸ Πνεῦμα μόνον ἐστὶν Ἀγάπη, ἀλλὰ καὶ ὁ Πατήρ καὶ ὁ Υἱὸς ἕδεν ἦκιστα, πῶς εἶχε λέγεσθαι τὸ Πνεῦμα ἐκ τῶ Πατρὸς εἶναι ἐκπορεύομενον, καὶ ὅτι Ἀγάπησις ἐστίν; ἕδεν γὰρ μᾶλλον τῆτο λέγειν. ἕξεσιν, ἢ ὅτι, καὶ τὸ ἥπερ Ἅγιον, καὶ ἡ Πνεῦμα, ταύτη τοι καὶ ἐκ τῶ Θεοῦ ἐκπορεύεται ἢ ἔτι, καὶ τὸν Υἱὸν ἐκ τῶ Πατρὸς προῖεναι, ἢ περ ἀλήθεια. Τῷ ὄντι δὲ, ἐπεὶ ὁ Υἱὸς καθὸ Λόγος γεννᾶται παρὰ τῶ Πατρὸς, τῆτο δὲ τὸ ὄνομα, ὅπερ ἴδιον ἐστὶ τῶ Υἱῶ, ἕδεν τῷ τρόπῳ κοινολογεῖται ὁμοίως καὶ τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Πνεύματι. Ἀλλ’ ἡ Ἀγάπη ἐνταῦθα, καὶ εἰ κατὰ τινὰ λόγον προσιδιάξεν ἂν ῥηθῇ τῷ ἁγίῳ Πνεύματι, ὡς ἐβέλετο Αὐγουστῖνος, ἀλλ’ ἐπίσης πάλιν, καὶ τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῶ κοινῇ ἀπονέμεται. Καὶ ἐκ ἄρα ὡς περ ὁ Υἱὸς, ἢ Λόγος, ἐκ τῶ Πατρὸς, ἔτω καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ὡς Ἐρως, πρόεισιν ἐξ αὐτῶ.

#### Ἀ Π Ἀ Ν Τ Η Σ Ι Σ Γ’.

Ἐτίθετο δ’ ὁ Θωμᾶς, ὅτι ἐπεὶ τὸ Πνεῦμα ἐκπορεύεται ὡς Ἀγάπη, ἐκπορεύεται ἄρα κατ’ ἐνέργειαν Θελήσεως ἐκ τῶ Θεοῦ. Ἐπεὶ δ’ ἐν καὶ ὁ Υἱὸς ὁμοίως, κατὰ δέδεικται, Ἀγάπη ἐστὶ, τῷ αὐτῷ τρόπῳ κατὰ Θελήσιν καὶ αὐτὸς προελδύσεται ἐκ τῶ Θεοῦ, καὶ τοι κατὰ τρόπον ἐκπροϊῶν Νῶ διωάμεως καὶ ὡς ὑπόθεσιν, ὁ Θωμᾶς ἐτύγχανε σωιστῶν τῷ διαφορᾷ τῶν Προόδων Υἱῶ τε καὶ ἁγίου Πνεύματος.

#### Ἀ Π Ἀ Ν Τ Η Σ Ι Σ Δ’.

Πάλιν Θωμᾶς ἐπεχείρει ἔτω συλλογισζόμενος: „Ἡ τῶ Πατρὸς γόνιμος Θελήσις, ὡς φράξῃσι, παράγει τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, ὡς Ἐρως. Ἀλλ’ ἕδενός ἐρώμεν, ὃ μὴ τῇ κατὰ Νῶν προσλήψει „καταλαμβάνομεν. Τὸ ἄρα Ἅγιον Πνεῦμα πρόεισιν ἐκ τῶ Πατρὸς κατὰ τρόπον Θελήσεως. Ἀλλὰ καὶ ἐκ τῶ Υἱῶ προσέτι

ἐκπροϊέναι τὸ Πνεῦμα δέκνυται· τὸ γὰρ Πνεῦμα ἐστὶν ἡ Ἀγάπη· ἔδεν δὲ ἀγαπῶμεν, εἰ μὴ καθὼ τῷ Νῷ αὐτὸ προκαταλαμβάνομεν. (57) — Ἀλλ' ἐν τέτοις δὴ πᾶ διαβρίδω ὁ Θωμᾶς ὑποτίθῃσιν, ὅτι ἡ Ἀγάπη ἐκ τῆς τῆς Νῆ καταληπτικῆς προσλήψεως προέσιν. Ἐντεῦθεν καὶ γὰρ (ὡς εἴρηται) ἐκ τῆς Υἱῆς ἐπιφέρει τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκπορεύομενον. Καὶ μέχρι τέττε ἄρα κατὰ τὸν Θωμᾶν, ἐκ τῆς Υἱῆς ἐστὶν ἐκπορεύομενον τὸ Πνεῦμα, ὅτι ἐκ τῆς Νῆ ἐκείνη, οἷον ἐκ καταληπτικῆς προσλήψεως προέσιν, ὡς Ἀγάπη· ὁ ἄρα γόνιμος τῆς Υἱῆς Νῆς προέωκε τὸ Πνεῦμα, ὥσπερ ἡ νοερά καταληπτικὴ σύλληψις, τὴν Ἀγάπην προβάλλεται. Καὶ ἔτως: ἐκ μὲν τῆς Υἱῆς τὸ Πνεῦμα ἐκπορεύεται κατὰ Νῆ τρόπον, ἐκ δὲ τῆς Πατρὸς κατὰ τρόπον Θελήσεως. Τῆτο δὲ ἄτοπον. Διαφερέσαις γὰρ ἂν ἔτω δυνάμεσι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα παράγοιτο, καὶ ἐχὶ Πνύσαι μιᾷ. Μᾶλλον δ' ἂν ἔτω τὰ τῆς Πνύματος Πρόσωπα δύο ἂν εἴη: τὸ μὲν ἐκ τῆς Υἱῆς, τὸ δὲ ἐκ τῆς Πατρὸς προῖον. Τέττε γὰρ ἔνεκα καὶ Θωμᾶς διαφόρῳ λόγῳ τὰ διακεκρινένα Πρόσωπα, τὸν Υἱὸν λέγων καὶ τὸ Πνεῦμα, ἐκ τῆς Πατρὸς ἡεῖα προάγεσθαι· ὅτι ὁ μὲν Υἱὸς κατὰ Νῆ προέσι τρόπον, τὸ δὲ Πνεῦμα κατὰ τρόπον Θελήσεως. Ἐπεὶ καὶ διαφόρῳ λόγῳ ἐν τῇ καὶ ταύτῃ προῖέναι εἰς τὸ ὑπάρχειν, ἀδιώατον.

### Ἄ Π Α Ν Τ Η Σ Ι Σ Ε'.

Ἐπειτα δὴ: καὶ εἰ ὁ μὲν Υἱὸς γεννᾶται ἐκ τῆς γόνιμης Ὑποστατικῆς Νῆ τῆς Πατρὸς, τὸ δὲ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῆς Ὑποστατικῆς Θελήσεως τῆς αὐτῆς ἐκπορεύεται, ἀνάγκη πᾶσα, ἵνα, καθάπερ Πρόσωπον Πρόσωπον ὅλως διενλώχε, καὶ τὴν τῆς Πατρὸς Προσωπικὴν Θελήσιν διαφορὰν λέγωμεν ἔχειν, τῆς Προσωπικῆς Θελήσεως τῆς τῆς Υἱῆς· καὶ ἔτως, ἐκ δυεῖν διαφερεσῶν Θελήσεων τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκπροῖον ἔσαι, ὅπερ ἄτοπον. Εἰ γὰρ ἐκ δυεῖν διαφερεσῶν

(57) Ὁρᾷς τῆς κρυφιομένης, καὶ ἀκαταλήπτου, καὶ ὅλως ἀνερμειώτου Ἐκπορεύσεως τῆς Πνύματος τὸ ἀπρόβητον, ὅπως ἡμῖν ὁ γεννάδας Δομινικανὸς διετράνωσεν; Ἀλλὰ πόθεν ἡ τῆς Πατρὸς Θελήσις ἔχει λαβῆσαι τὸ πρὸς τὴν Πνύσιν τῆς Ἀγάπης ἐνδύσιμον; Ἐκ τῆς τῆς Νῆ (φυσί) καταληπτικῆς προσλήψεως· ἦτοι ἐκ τῆς Λόγου ἐκ γὰρ τοι τέττε πως καθίσταται γόνιμος, καὶ οἷον ὠδίνει τὸν καρπὸν κυφορεῖσθαι τῆς Ἐρωτος· ἐκ ἄρα ὁ Υἱὸς ἐκ τῆς Πατρὸς ἔχει, ὡς οἱ Λατῖνοι βέλονται) τὸ ἐκπορεύειν τὸ Πνεῦμα· ἀλλ' ἐκ τῆς Υἱῆς ὁ Πατὴρ ἀνάπαλιν, ὁ καὶ τῆς ἀτότης ἐκείνης ἐστὶ ἐστὶν ἀτοπώτερον. Πῆ γὰρ ἔτως ἐν τῇ Πατρὶ τὸ (κατ' ἐκείνης) Προκαταρκτικὸν τῆς Αἰτίας διασωθῆσεται; Μὴ γάρ μοι: ὅτι ἡ καταληπτικὴ πρόσληψις τῆς Νῆ ἐστὶ γίνεται γὰρ ἡ Θελήσις γόνιμος εἰς ἐνέργειαν ἐκ τῆς προκαταλήψεως, τετέστιν ἐκ τῆς Λόγου, τῆς ἀμωσγέπως τὴν Θελήσιν κινῶντος, καὶ τὸ Θελητὸν ἐκπεραίνοντος. Καὶ ἔσαι ἄρα, κατὰ τὴν Θωμαϊδὰ ταύτῃ Θεολογίαν: ὁ μὲν Νῆς, αἴτιος τῆς Λόγου· ὁ δὲ Λόγος τῇ Νῇ παραίτιος, τῆς διὰ τῆς Θελήσεως αὐτὸν γενέσθαι καὶ Αἰτίαν τῆς Πνύματος.



ρυσῶν Θελήσεων, ἄρα καὶ ἐκ δυεῖν Πνευματικῶν διωάμεων διαφορὰν  
 ἔχουσιν τὸ Πνεῦμα· καὶ ἐκ ἄρα Πνεύσεαι μιᾷ ἐκπορεύεται. Εἰ  
 δέ γε φαῖεν, ὅτι ἐκ τῆς κοινῆς τῆ Πατρὸς καὶ τῆ Υἱῆ Θελήσεως  
 τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκπορεύεται· τριτλῶ ἤδη Θέλησιν ἔξ-  
 σιν ἅμα, ὁ Πατήρ καὶ ὁ Υἱός· Α'. μὲν, τῶ αὐτοῖς τῷ λόγῳ  
 τῆς κοινῆς ἑσίας προσήκουσιν. Β'. δὲ τῶ Προσωπικῷ. Γ'. δὲ  
 τῶ τέτῳ μεταξὺ μεσιτεύσαν. Ὅπερ ἄτοπον. Τίς γὰρ ἂν  
 εἴη, λέγεμοι· ὁ διαφέρων λόγος τῶν τριῶν τετῶν Θελήσεων;  
 Ὀνόματι μὲν γὰρ αὐταὶ συμβαίνουσι, τὰ δὲ ὀνόματι συμβαίνοντα,  
 καὶ ὀρισμῷ συμβαλὰ, εἰ μή τις ἄλλως ὑπέη ὁμωνυμία λανθάνουσα.  
 Οὐδὲ γὰρ τὸ γόνιμον παραλλαγῶ ἂν τινα ἐμπούσσειε, τῇ φύσει  
 τῆς μεσιτεύσεως τε καὶ Ὑποστατικῆς Θελήσεως. Καὶ γὰρ, καὶ  
 τῶν Προσώπων αὐτῶν, τὸ μὲν γόνιμον ἐστὶ, τὸ δ' ἕ· καὶ μέντοιγε  
 ἑδέν τι παρὰ τετῷ, ὁ τῆ Προσώπου ὀρισμὸς παραλλάσσει, εἴτε δὴ  
 κατὰ τῆ γονίμου, εἴτε καὶ κατὰ τῆ μὴ γονίμου λέγοιτο. Εἰ δὲ  
 μηδὲν αἱ Θελήσεις αὐταὶ παρηλλάχονται ἀπ' ἀλλήλων, αἱ δ' αὐταὶ  
 πάντα εἰσὶ πῶς, εἴπεμοι· ἡ αὐτὴ Θελήσις κοινὴ μὲν εἴη τῷ  
 λόγῳ τῆς ἑσίας, καὶ πάλιν ἰδίᾳ, μιᾷ τινι Ὑποστάσει, ἢ καὶ ταῖς  
 δυσὶν Ὑποστάσεσι μόναις, προσήκουσα; τὸ γὰρ αὐτὸ πάντως, καὶ  
 προσιδιάξεν ἐνὶ μόνῳ, ἢ τοῖς δυσὶ Προσώποις, καὶ πάλιν κοινὸν  
 προσεῖναι ἅπασιν τοῖς τριῶν, τῶν ἀδιωάτων ἐστὶ τῷ δ' αὐτῷ γε  
 τέτῳ Ἐπιχειρήματι παραπλησίως ἂν ἀπελεγχθεῖη, καὶ εἴτις τῶ  
 τριτλῶ ἐκείνῳ Θέλησιν ἄρας, διοςὰς μόνον εἰσενέγκοι Θελήσεις  
 εἶναι τὰς τῆ Πατρὸς καὶ τῆ Υἱῆ· τῶ μὲν φυσικῶ, τῶ δὲ με-  
 σιτεύσαν.

#### Ἄ Π Α Ν Τ Η Σ Ι Σ ε'.

Εἶχε δ' ἔτι τὸ Θωμᾶ Ἐπιχείρημα· ὅτι ἄρα ἡ Ἀγάπη ἐκπο-  
 ρεύεται ἐκ τῆς Λόγου. „Οὐδέν γὰρ ἀγαπῶμεν, ὅ, τι μὴ τῇ κα-  
 ταλήψει τῆς Νεῆ προσλαμβάνομεν, — Ἀλλὰ παράγει μὲν τῶ  
 Ἀγάπῳ ἢ τῆς Νεῆ προκατάληψις, τῶ μέντοι Ἀγάπῳ ἢ τὸ ἀγα-  
 πητὸν ἀγαπᾶται, ἕχλ' δ' αὐτὸ παράγει τὸ ἀγαπήσιμον. Εἴπερ  
 ἐν τὸ ἀγαπήσιμον αὐτὸ Ἀγάπη ἐστὶν Ὑποστατικὴ, τῆς Νεῆ ἢ πρόσ-  
 ληψις παράγει μὲν τῶ Ἀγάπῳ, ἢ περ ἢ Ἀγάπῃ ἢ Ὑποστατικῇ  
 ἀγαπᾶται, εἰ παράγει δὲ τῶ Ἀγάπῳ τῶ Ὑποστατικῷ. Ὁ ἄρα  
 Υἱὸς ἀγαπᾷ, διὸ καὶ ἡ Ἀγάπη πρόεισιν ἐξ αὐτῆ· ἀλλ' ἢ καθ' ἡ  
 τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἀγαπᾶται, ἕχλ' δὲ καὶ τὸ ὑπ' αὐτῆ ἀγαπώ-  
 μενον· τετέστιν αὐτὸ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον· τετῷ γὰρ ἡ Ἀγάπη  
 ἐστὶν ἢ Ὑποστατικὴ. Πάντως γὰρ καὶ ὁ Υἱὸς γινώσκει τὸν Πατέρα,  
 ὡς ἀγαπητὸν δῆπερ· ἢ ἄρα Ἀγάπη ἢ τὸν Πατέρα ἀγαπᾷ, πρό-  
 εἰσι ἐκ τῆς Υἱῆ, ἀλλ' εἰ παρὰ τετῷ καὶ αὐτὸ τὸ ἀγαπητὸν παράγει  
 τετέστι τὸν Πατέρα. Δεόντως τοιγαρὲν, τῷ ἕτῳ τὰς τῆς Υἱῆ  
 Τόμ: Β'. Β β β β β καὶ



καὶ τῷ Πνεύματος Προόδου ἀναπτύσσει ἐπιχειρῶντι Θωμᾷ, τὰ  
 τῷ Θεολόγῳ ΓΡΗΓΟΡΙΟΥ ἐκείνα, ἐκ τῷ ΚΣ'. Λόγος, τῷ περὶ  
 τῆς ἐν Διαλέξεσιν εὐταξίας, ἀντιβάλλομεν: „Δεὸν ἓνα Θεὸν  
 „Πατέρα γινώσκων, ἀναρχὸν καὶ ἀγέννητον· καὶ Υἱὸν ἓνα γε-  
 „γεννημένον ἐκ τῷ Πατρὶ καὶ Πνεῦμα ἐκ. Θεῷ τῷ ὑπαρξί.  
 „ἔχον· παραχωρῶν Πατρὶ μὲν Ἀγεννησίας, Υἱῷ δὲ Γεννήσεως·  
 „τὰ δ' ἄλλα συμφυῆς καὶ σὺνθρονον καὶ ὁμόδοξον καὶ ὁμότιμον.  
 „ταῦτ' εἰδέναι, ταῦτα ὁμολογεῖν, μέχρι τῶν ἱσαθαι· τῷ δὲ  
 „πολλῶ φλυαρίαν, καὶ τὰς βεβήλας κενοφωνίας τῶν λόγων,  
 „τοῖς χολῶ ἄγασιν ἀποπέμπεσθαι. Τοιγαρὲν ἐν τῇ τῆς Πίσεως  
 ἀπλότητι κατὰ τῷ τῷ Θεολόγῳ παραίνεσιν καὶ αὐτοὶ μένοντες,  
 τὰς λήρας, καὶ τὰς βεβήλας ταύτας τῶν τῷ Θωμᾷ λόγων κα-  
 νοτομίας, παισὶ Λατίνων τοῖς ἐπὶ χολῆς τῶν τοιούτων ὑπερασπι-  
 ζόμενοις παρίεμεν.

Ἐπιχειρῶ δ' ἐν τις ἔτι: (58) „Ἡ ἐνέργεια, Φησὶ, καὶ τὸ  
 „εἶδος, καθ' ὃ σωίζεται ὁ Πατήρ, εἰς τὸ Πατήρ εἶναι, ἢ Γέν-  
 „νησις ἐστὶν ἢ κατ' ἐνέργειαν· ἢ δὲ ἐνέργεια, ἢ ἀμέσως ἐφεπο-  
 „μένη τῇ εἰδικῇ συζάσει τῷ Προσώπῳ τῷ Πατρὶ, ἐστὶν ἢ Πνεῦ-  
 „σις ἢ ἐνεργητική. Αὕτη δὲ, ἐκ ἂν ἔχοι μὴ κοινῇ εἶναι καὶ  
 „τῷ Υἱῷ. Ἡ γὰρ τῷ Υἱῷ ἰσότης, ὡς μετὰ τῷ Θεῷ καὶ Πατρὶ  
 „ἔχει, ἀπαιτεῖ, ἵν' ὅ,τι ἂν τῇ τῷ Προσώπῳ τῷ Πατρὶ ἐφείποιτο  
 „συζάσει, κοινὸν ἦ καὶ τῷ Υἱῷ σωάμα τῷ Πατρί. — Ἀλλ' ἢ τῶν  
 ἐπίλυσις σαφὴς δὴπερ, ἐξ ὧν ἐν τῇ Πραγματείᾳ διαλέχθημεν,  
 (59) ἐν ἣ τὰ διάφορα τῶν Ἐπιχειρημάτων παρήχθη τὰ ἐκ τῶν  
 Θεολογικῶν Ἀρχῶν λαμβανόμενα· τῷ γὰρ τῷ Πατρὶ ὀνόματι,  
 ἢτοι αὐτὸ ὁλικῶς τὸ πρῶτον ὑποσημαίνειται Πρόσωπον· ἢ γέν, ἢ  
 χέσις μόνον ἢ πρὸς τὸν Υἱόν. Εἰ μὲν ἐν κατὰ τῷ δευτέρῳ  
 τῶν σημασιῶν ἐκληφθεῖ ἢ φωνὴ „Πατήρ, μόνῃ ἢ κατ' ἐνέρ-  
 γειαν γέννησις σωίσει τὸν Πατέρα, εἰς τὸ εἶναι Πατέρα. Εἰ  
 δὲ κατὰ τῷ προτέρῳ, ἐκ ἀληθὲς τὸ τῷ γέννησιν μόνῳ τὸν  
 Πατέρα εἰς τὸ Πατέρα εἶναι σωίσει· τῇ γὰρ Γεννήσει τῇ ἐνερ-  
 γητικῇ σωάμα, καὶ ἢ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος Ἐκπόρουσις ὁμοίως  
 σωεπισέρχεται, ἐπὶ τῇ συζάσει τῆς πρώτης ἐν τῇ Θεότητι  
 Ὑποστάσεως. Κἀντεῦθεν ψυδὲς ἔτι, καὶ τῷ Ἐκπόρουσιν τῷ  
 Ἁγίῳ Πνεύματος, ἐνέργειάν τινά εἶναι μόνον σωεφεπομένῳ τῇ  
 εἰδικῇ συζάσει τῷ Προσώπῳ τῷ Πατρὶ, καθάπερ ἐπὶ τῆς εἰρη-  
 μένης Πραγματείας εἰς πλάτος δέδεικται. Ἀλλ' ἐπὶ τέτοις, καὶ  
 εἴπερ ἢ τῷ Πνεύματος Προβολῇ ἐνέργειά τις ἔσα ὑποτεθείη,  
 ἢ μόνον

(58) Κιχάβ: ἐν Ζητήμ: Η'. Σελ: 94.

(59) Ἐν Περγματ: 5'. Ἐπιχειρήμ: Ε'.

ἡ μόνον σωφεπομένη τῇ Ὑποστάσει τῶ Προσώπῳ τῶ Πατρὸς· ψυδὲς ἂν καὶ ταύτῃ γε εἴη, τὸ μὴ ἔτως ἴσον ἂν ἔσεσθαι τῷ Πατρὶ τὸν Υἱὸν, εἰμὴ καὶ τέτῳ ἀποδοθείη, ἢ τῇ τῶ Πατρὸς συστάσει σωφεπομένη ἐνέργεια· Πρόσωπον γὰρ Προσώπῳ πάντῃ διήρηται· ταύτῃ τοι καὶ τὸ Πρόσωπον σωάμα τοῖς ἐν αὐτῷ ἐνέ-  
σιν ἅπασιν, ἢ Πρόσωπον, Προσώπῳ ἑτέρῳ ἀντιδιέσταλται. Ἀλλ' ὅπερ ἀμέσως ἐστὶ σωεπόμενον τῇ τῶ Προσώπῳ εἰδικῇ συστάσει, τῷ Προσώπῳ ἐνεσι πάντως, ἢ Πρόσωπον· ὃ γὰρ τῷ λόγῳ τῆς φύσεως ἐνεσιν· ἀλλ' ἔτως ἐνεσιν, ὥπερ καὶ ἡ ἐνέστα κατ' εἶδος ἐν αὐτῷ τῷ Προσώπῳ ἰδίως σύστασις. Οὐκ ἄρα τὸ ἐφεπόμενον τῇ τῶ Προσώπῳ εἰδικῇ συστάσει, καὶ ἑτέρῳ τὸ αὐτὸ Προσώπῳ ἐνῆναι οἶον τε. Ἀλλὰ ταῦτ' ἄχρι τέτῳ, περὶ τῶν, ἃ παῖδες ἡμῖν Λατίνων ἀντιπρολείνουσιν, Ἐπιχειρημάτων εἰς κατασκευὴν τῆς τῶ Ἁγίου Πνεύματος καὶ ἐκ τῶ Υἱοῦ Ἐκπορεύσεως.

Ἐπειδὴ δ' ἔν ἡδὴ τὸν τοσάκις ἡμῖν ἀπομνημονοθέντα Ἱη-  
σαίῳ ἐπέλιπε τὰ Ἐπιχειρήματα· ὁ δὲ, ἐφ' ἑτέρῳ ἄτῳ ἐτράπετο τὰ πρὸς τῷ πρόθεσιν μηδὲν τὸ παράπαν τείνοντα. Τί γὰρ πρὸς τῷ ἔρῳσαν τῷ περὶ τῆς Ἐκπορεύσεως τῶ Πνεύματος τῶ Ἁγίου σωετέλει τὸ Στανισλάσ, Φέρε, τεράσιον; ἢ γὰρ, ἢ τῶ Ζωοδόχῳ Τάφῳ κτήσις ἢ τοῖς Φραγγισκανοῖς ἐπιπεσῶσα, ὑπὸ τῶν Βαρβάρων ἡδὴ ἀλάσσης τῆς Κωνσταντινουπόλεως; Ἐπεὶ τοίνυν ἔξω ταῦτα τῶ προκειμένῳ ἀπεξεκύναιεν, ὃ δ' ἡμῖν ἀναὰ χεῖρας μὴ τὰ Βιβλία τὰ πρὸς τῷ τῶν τοιούτων δαψιλεσέραν τε καὶ ἀκριβεσέραν διά-  
ληψιν ἀπαιτέμενα, εἰκότως δήπερ καὶ παραδραμεῖν εἶχομεν αὐτά.

Ἀλλὰ γὰρ καλὸν ἐν Ἐπιτομῇ καὶ τέτῳν ἐκάστῳ ἐφάψασθαι.  
Α'. ἔν πάντων ἐπάγει (60) τὸν τῆς Ναζαρέτ οἶκον, ἐπὶ Ἰταλίας μετενεχθῆναι. (61) Ἀλλ' ὁ αὐτὸς οἶκος καὶ κατ' ἡμᾶς ἔτι ἐν  
Πα-

(60) Κιχώβ: Ζητήμ: Θ'. Σελ: 95.

(61) Ὑπὸ Σαρακηνῶν ἀπάσης ἡδὴ Συρίας καθάπαξ τῶν Λατίνων ἀπεξελαθέντων, ἐν ἔτει 1291. τὸ τῆς Μητρὸς τῶ Σωτῆρος Οἰκηματίον, ἐν ἡμέρᾳ 5. Μηνὸς Μαΐου τῶ αὐτῶ ἐνιαυτῶ, ἐκ Ναζαρέτ (Φασί) νυκτὸς ἀρθεὶν δι' Ἀγγέλων, ἐπὶ τῆς Δαλ-  
ματῶν χώρας μετενεχθῆναι: κἀντεῦθεν μετὰ τρίτον ἐνιαυτὸν, ἐν ἔτει 1294. Δεκεμβρ: 10. πέραν τῶ Ἀδριατικῶ κόλπῳ, ἐπὶ τῷ κατ' ἀντικρὺ καμένῳ Ἰταλίαν, καὶ ὑπὸ τοῖς Πάπαις ἡδὴ τελέσαν, εἰς ἀγρῶ δρυμῶνα τῶ καλεσμένῳ Πικλῶ, βή-  
μασιν ὡσεὶ τριχιλίαις ἀπὸ τῆς ἀκτῆς ἀπέχοντος, ἀνακομιθῆναι. Εἴτ' αὐθις ἀπὸ τῶ ἐκεῖ ἀλάσσης, ἐπὶ τινὰ τῶν ἐγγύς λόφων μετατεθεῖναι· ἀπὸ δὲ τῶ λόφου τέτῳ, κατὰ τῷ ὁδὸν τῶ ἐπὶ τῆς Ῥηκηνητίωσις ἀγρῶ, (Λαυρέτης τινὸς ἐυλαβῶς γυναι-  
κὸς κτήματος ἐντος) τέως κατασηριχθῆναι. Ἐνθα δὴ κεῖσθαι λέγεται ἄχρι τῆς σήμερον. Τὸ μὲν ἔν περὶ τῆς τῶ Λαυρητιανῶ τῶδε Δωματίου μετακομιδῆς Μυθά-  
ριον, ἱκανῶς ἐυρήσεις ἐξισορηθὲν καὶ ἐξελεγχθὲν ὑπὸ Ἀνδρέου Ριζέτῳ, ἐν τῇ ὑπὲρ τῆς Παναγίας Παρθένου Ἀπολογίᾳ, Βιβλ: Α'. Κεφαλ: ΙΒ'. ἐν τῷ Γ'. Τόμ: τῶν αὐτῶ Συγγράμ: Σελ: 629 — 632. Καὶ δὴ καὶ γλαφυρῶς εἰκονογραφηθὲν παρὰ Φρειδερίκῳ τῷ Σπαρχέμιῳ, ἐν τῇ Ἐκκλησιᾳ: Ἰσορ: Αἰών: ΙΓ'. Τμήμ: ΙΔ'. Ἀριθμ: Δ'. Σελ: 1721 — 1723. ὃς δὴ, καὶ Σιεμόνδον διέξισιν, Ἄνδρα ἐπὶ Σοφίᾳ ἐν Ἱησούταις  
B βββββ 2 ἐπὶ-

Παλαιστίνη καίται, καὶ τοῖς Περιηγηταῖς ἐπιδέκνυται. Τέττα δὲ μάρτυς ἸΩΑΝΝΗΣ ΔΟΥΒΔΑΝΟΣ, ὁ Κανονικὸς τῆς τῆς Ἀγίας Παύλης Ἐκκλησίας, τῆς ἐν τῇ Πόλει τῆς Ἀγίας Διονυσίας τῇ ἐν Γαλλίαις· ὁ ἐν ἔτει 1652. ἀνὰ τὴν Παλαιστίνην διατρίβων, ἐν τῇ τῆς Ἀγίας Γῆς αὐτῆς ἰδίᾳ Περιηγήσει, ὡς Γαλλιστὶ σωεγράψατο· ὅς ἴνα δὴ καὶ ὑπὲρ τῶν οἰκείων ἀπολογίαν μίαν γὰρ ἐάσῃ τινὰ, μέρος μὲν τῆς οἰκίας ἐκείνης ἐπ' Ἰσραήλ διεξέσι μετ' ἀπομνημονεύσας, μέρος δὲ καὶ ἐν Παλαιστίνῃ ὑπολαφθῶσιν· ἐξ ἧς τῆς μαρτυρίας καὶ κείνο ἔτι γίνεται δῆλον, μὴ μόνον ἄρα τῆς Δωματίης ἐκείνης καὶ δορᾶσθαι τῆς θεμελίης ἀλλὰ καὶ τὴν οἰκίαν αὐτῇ, ἐν γὰρ τῷ μέρει. ὥστε μάταιον εἶναι τὸν κατ' ἧς νῦν διαλεγόμεθα Ἰσραήλ, τὸν ἐξ ἐκείνης μόνον νῦν τὰ θεμέλια ἐν Ναζαρέτ ὑπολελειφθῆναι τῆ περὶ ἧς ὁ λόγος οἰκήματος.

ὑποσώπει δ' ἐν ὁ Ἰσραήλ, ὅτι καὶ ἐν Παλαιστίνῃ τὰ ἐπισημότερα τῶν ἱερῶν χωρίων, ἐν οἷς ἡ Σωτήριος ἡμῶν ἀπολύτρωσις ἐκτελέσθη, τοῖς Φραγκισκανοῖς παρακαλετέθη. — Ἀλλὰ τί τὸ ἐντεῦθεν; μὴ ἄρα ἐκ τέττα ἡ Λατινικὴ μὴ, ἡ ἀληθὴς ἔσθαι ἀποδείκνυται πίστις; ἢ ἐκ ἐπίσης ἐξέσθαι ἐπιχειρεῖν, καὶ τὸ Τερρικὸν θρησκῶμα, διὰ τῆς δὴ, τὸ ἀληθὲς εἶναι, διὰ τὸ τῶν χωρίων ἀπάντων ἐκείνων ὑπέρτατα κατεξουσιάζοντα τὸν Τερρικόν, τὰ μὲν αὐτῶν τοῖς Γραικοῖς ἐπιτρέπεν, τὰ δὲ τοῖς Λατίνοις, ἄλλοτε ἄλλως, τῷ λόγῳ δηλονότι τῶν χρημάτων, ὧν ἂν αὐτοὶ καταβάλ-  
λοιεν; Διὰ γὰρ τὸ πλεονα τοῖς Τερρικοῖς προσάγειν τὰ δῶρα καὶ μὴ καὶ παρὰ τὴν τῶν πρεσβυτέρων, ὡς ἐκ τῶν Λατίνων Ἀνάκτων παρ' Ὀθωμανοῖς μεσιτείαν, οἱ Φραγκισκανοὶ μόνον ἐν κα-

ἐπίσημον γεγονότα, παραινέσαι μάλιστ' αὐτῷ Βασιλεῖ, μηδαμῶς ἀξιώσασθαι τῷ Μυσταρίῳ τέττα καὶ ἀβύρρῳ τὰ ἐαυτοῦ Χρονικά: Ne hac Fabula annal s conspurcar: μηδὲ πείσαντα. Σιμόνδον γὰρ αὐτόν, (καὶ περὶ Ἰσραήλ ὄντα:) σπεῖν ἐπι-  
τηδες εἰς τὸ Λαυρήτιον παραγεγονότα, καὶ ἐπιμελῶς πολυπραγμονήσαντα σιω-  
δεῖν, μηδὲν τι τὸ παράπαν, μήτε τῇ ὕλῃ, μήτε τῷ τῆς Οἰκοδομῆς τρόπῳ, δια-  
φέρει τῶν ἐκ γειτόνων οἰκοδομημάτων, τὸ θρυλλέμενον Οἰκημάτων· διὸ καὶ τῆς  
μυθοπλασίας ἀποχέσθαι τὸν αὐτῷ Συμύσιω παρήκει, ὡς καὶ Στέφανος παρ-  
έδωκεν ὁ Αε-Μούνιος παρὰ Βενδεμίου, ἐν τῷ περὶ τῆς παρὰ Βαταβοῖς τῶν Ἐκκλη-  
σιῶν τε καὶ Σχολῶν καταστάσεως Συγγράμματι, Σελ: 404. κξ: Σημειώσας δ' ἐν  
ἐπὶ τέτοις: ὅτι καὶ Βικέντιος Φεβράριος ὁ Δομινικανός, ὁ παρὰ Λατίνοις καὶ ἐν  
χορῷ τῶν Ἀγίων ἐκθειάζομενος ἐναρμόμιος, ἐν τῷ Α'. Λέγω τῷ περὶ τῆς Μετα-  
στάσεως τῆς Μακαρίας Παρθένου, περιττὰς ἀποφαινόμενος τὰς ἐπ' αὐτῇ ἐν εἰς  
ἔσθαι Περιηγήσεις τε καὶ μακρὰς Ἐπιδημίας, τὰς εἰς Ἱερουσαλὴμ καὶ ἀλλὰ χόσε,  
καὶ ἐπικινδύνους, ἢ ἐπωφελεῖς νομίζων: Spiritualiter (ἐφάσκει) fiat peregrinatio; ho-  
die, et quolibet die, potestis ire Nazareth, ad cameram ubi Filius Dei fuit incarnatus.  
(„Ἐν Πίσματι γινέσθαι ἡ Περιήγησις. Σήμερον, καὶ κατὰ πάσαν ἡμέραν, εἰς  
„Ναζαρέτ διωθήσθε παραγινέσθαι εἰς τὸ οἶκημα ἐν ᾧ ὁ Υἱὸς τῆς Θεοῦ σεσάρκατος.“)  
Τὴν ἄρα τῆς Θεομήτορος Δωματίης, ἀπὸ τῆς Ναζαρέτ ἐπὶ τὸ Λαυρήτιον με-  
τακομιδῇ καὶ μετάθυσιν ἀγνοῆσαι ἔοικεν ὁ Βικέντιος ἔτος, τὴν ἀπὸ τῆς Γ'.  
Ἐκατονταετηρίδος γενέσθαι λεγομένῃ, κατὰ τὴν ΙΕ'. κατ' ὡς αὐτὸς ἀκμάσας  
ἐγένετα.

καταχέσει τῶν Ἱερῶν τόπων ἐκείνων σφᾶς αὐτὰς διετήρησαν· τίποτ' ἔν ἄρα, ἐπὶ τῇδε τῇ καταχαριθείσῃ τοῖς Φραγκισκανοῖς ἐπικλήσει, ἔυροιτις-πλεον τῆς εἰρημένης διαμεσιδύσεως; Μᾶλλον δὲ, ἐπεὶ νῦν γε, ὡς πάντες φασίν, αὐτὸς ὁ τάφος ὁ Ἅγιος καὶ τοῖς Ἀνατολικοῖς ἐπετράπη, καὶ πάλαι δὲ, πρὶν ἢ τῷ Παλαισίνῳ ὑπὸ Λατίνων ἐκπολιορκηθῶσι, οἱ Ἀνατολικοὶ μόνοι τῶν Ἱερῶν ἐκείνων χωρίων καθίσταντο κύριοι, αἴποτε δὲ, καὶ ἐν ᾧ ἔχ ἦκιστα τὰς Ἐκκλησίας διήρει τὸ χρίσμα τότε τὸ χρόνιον, πῶς ἂν, εἰπέμοι: ἢ τῶν Ἀγίων τόπων αὐτῶν κατάχεσις ὕπερον, τῷ Λατινικῷ ἀποδείξειε Θρησκείαν τῷ ὄντι εἶναι τῷ καθολικῷ καὶ ὀρθόδοξον;

Ἐπὶ τοῖς ῥηθεῖσιν ὁ Ἰησῆτης (62) προσέθησιν, ὅτι καὶ πολὺ τι πλῆθος Ἱερῶν Λειψάνων παρὰ Λατίνοις τεθησάυρισα. Ὡς εἰ μὴ, καὶ παρὰ τοῖς Ἀνατολικοῖς ὁμοίως, πλῆθος μέγα Ἱερῶν τε Λειψάνων, καὶ πολλῶν Ἀγίων τὰ σώματα ὑπάρχουσι ἔτι καὶ καθ' ἡμᾶς ἀποκείμενα· καὶ ἔχι δὲ καὶ πάλαι, ὁπότε ἡ Λατίνων Ἐκκλησία τῆς Ἀνατολικῆς ἀπεχρίζετο, ὑπὲρ ἀριθμὸν ὧν ἂ παρὰ τοῖς Γραικοῖς διεσώζετο. Καὶ τίνα δήποτε λόγον ἄρα, ὑπὲρ τῆς ὀρθότητος τῆς ἰδίας αὐτῶν Ἐκκλησίας ἐκτρίψειν ἐντεῦθεν ὁλονται; Τί δ' ὅτι, καὶ ὡς πλείω τῶν παρ' αὐτοῖς Λατίνοις Λειψάνων ἐπίπλασα φέρεται, τὰ πολλὰ δὲ καὶ πλεοναχῶς τὰ αὐτὰ προσαντᾷ; οἷον, ἢ δι' ἧς ἢ τῇ Σωτῆρος ἡμῶν ἐξεκεντήθη λόγχῃ, κατὰ τε Ῥώμῃ προδείκνυται, καὶ κατὰ τὸ ἐν Γαλλίαις Λαγδάκρον, καὶ ἐν Νόρμπεργῃ πόλει Γερμανίδι τηρεῖται, ἐξ ἧς ἡ πόλις αὕτη, ὑφ' ἡγεμόνι τῷ Λαθέρῳ τῆς Λατινικῆς Ἐκκλησίας ἀπέσι ἀποσχιρτήσασα; (63)

Τοῖς

(62) Κιχῶς: Αὐτ': Σελ: 96.

(63) Ταυτὶ μάλιστα οἱ τῆς Λατινικῆς Τυραννίδος ἀποχιδέντες Λαθερο-Καλθινισαί, (καὶ τοὶ ἄλλως περὶ τὸ τῆς Ἐκπερύστα: Δόγμα, ἥτοι αὐτοῖς σιωᾶδοντες, ἢ ἀδιαφορεῖτες) τῇ Λατίνων Ἐκκλησίᾳ ἰταμώτερον πῶς ἐπέπληξαν. Φέρεται μὲν γὰρ ὅτι καὶ Καλβίνος πρὸς γε τοῖς ἄλλοις, ἐν Ἑτὶ 1546. Κατάλογον, τὰ ἐν Ἰσπανίᾳ τε καὶ Γαλλίᾳ καὶ Γερμανίᾳ, πολλὰ πολλαχῶς τὰ αὐτὰ προδεικνύμενα Λείψανα περιέχοντα, Γαλλισὶ ἐκδέναι ἀναβαλόμενος, ἠρίθμει παρ' αὐτοῖς Λατίνοις, καὶ ἦλκε σώζεσθαι δέκα καὶ τέσσαρας τῆς τῇ Κυρίᾳ σωρώσεως. Ὑπὲρ ὧν ἀπολογούμενος ὁ Καρδινάλιος Βαρώσιος· (ἐν τοῖς Χρονικοῖς, Ἑτὶ 226.) „Ἐξ ἑνὸς τινός, φησὶν, ἴσως τῶν ἀληθινῶν ἡλων, τμήματ' ἄτλα ληφθέντα, ἐκάστοις τῶν φερομένων σιωεγχαλκιδέντα, τῆς Ἀγιότητος μεταδίδωκεν· ἢ τυχὸν καὶ τῶν δεκατεσσάρων ἡλων, οἱ μὲν εἰσὶν εἰς τὸ Κυριακὸν Σῶμα ἐπὶ τῇ ξύλῃ προσήλωται· οἱ δὲ ἐξ ὧν αὐτὸ τὸ Σταυρικὸν ξύλον σιωήρυσται, ἧς καὶ ἀμήχανον ἐστὶ διακρίναι, παρὰ τὸ ἐξίτηλα γενέσθαι τὰ περὶ αὐτῶν μαρτυρῶντα παλαιὰ Ὑπομνήματα. Τάχα δὲ, καὶ ἦλοι ἐνιοὶ ἐν τοῖς περισωζομένοις εἰσὶν, οἷς τὰ Μαρτύρων σώματα προσηλώθη, ὅσα τὴν διὰ σωρῆς ὑπὸ πύργου θάνατον· ταυτὸν δὲ εἰπεῖν, οἷς περὶ τὰ μέλη τῇ Χρυσῇ προσεπαύγησαν. Ἀλλ' ὁ μὲν Βαρώσιος ταῦτα, ἐμμηχάνως λίαν, καὶ σιωῇ ἐδενὶ πόνῳ ἦλκε ἡμῖν προσεπιχαλκιδῶν. Ἀνδρέας δὲ Ῥιβέτος, καὶ Βαλδρέδης τῇ Πίκτων Διδασκάλος σώματα τρία παρὰ Λατίνοις διέξεισι προδεικνύμενα, τῇ Θεᾷ δῆθεν τὸ Βαλδρέδης πτώμα τριπλασιάσαντος, ἐφ' ᾧ τὴν Ἀλδανλώσιν τε, καὶ Τιννεγανλώσιν καὶ Πραιτονλώσιν, περὶ τῆς παρὰ σφισι τῇ Ὀσίᾳ κηδείας παῦσαι διαξιφιστοῦν. Β'.

Γ γγγγγ

80-



Τοῖς δὲ προσέτι ὁ Ἰησοῦς ὑποσυνάπτει, ὅτι καὶ ὁ ἐν Ἀγίοις Νικόλαος, τῷ Ἰταλίαν ἐαυτῷ ἐπὶ κατασκευάσει μετακομιθεὶς ἐξελέξατο (64) τὴν ἄρα Ῥωμάνου τῷ Πίσιν τετηρηκέναν τῷ Καθολικῷ. — Ἀλλ' ἐκῆσε τῆς Ἰταλίας τὸ τῷ Ἀγίῳ Νικολάῳ μετακεκόμεναι Λείψανον, ἐνθα τὸ τιμικαῦτα ἢ Πίσιν εἰσέτι ἐκράτα τῶν Ἀνατολικῶν ἢ ὀρθόδοξος τῇ Κωνσταντινουπόλεως ὀρθόδοξος Αὐτοκράτορος, ἔτι κατ' ἐκῆνο τῷ κατωτέρῳ τῆς Ἰταλίας μέρους δεσπόζοντος. (65) Ἄς δὲ παραφθορὰς τῶν Σλαβωνικῶν Βιβλίων τοῖς Ἀνατολικοῖς ὁ Ἰησοῦς ἀντιπροβάλλεται, ἄλλοις ἐξετασέας εἶναι παρίεμεν· ἐκῆνο μόνον προσιθέντες, ὅτι καὶ οἱ Βιβλιοτύποι τὰ πλεῖστα διαμαρτάνοντες, συχνὰ ἐν τοῖς Βιβλίοις ἐπισφαλῶς ἐνορθῶσαι παρέχονται. Ἄλλως δὲ, καὶ ἐπὶ παραφθορᾷ τῶν Συγγραφέων τῶν Λατίνων αὐτῶς ὑποβθῶς μάλισα καθεστάναι, διὰ δυεῖν Πραγματειῶν (66) ἐν ἄλλοις ἡμῖν ἀποδέδεικται. Περὶ δὲ τῆς Ἀποστολικῆς ῥήσεως: „Ὁν ὁ Κύριος ἀποκτενεῖ τῷ Πνεύματι τῷ „σώματος αὐτοῦ“, ἐξ ἧς ἡ Φωνὴ ἸΗΣΟΥΣ ἐξωβέλυσαι, εἰς πλάτος εἴρηται ἐν τῇ Πραγματείᾳ: (67) ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, λέγεσθαι Πνεῦμα τῷ Τίῳ, ὅθεν σωτελεῖ εἰς πίσιν τῆς τῷ Ἀγίῳ Πνεύματι καὶ ἐκ τῷ Τίῳ Ἐκπορεύσεως.

Τὸ δ' ἀπὸ τῆςδε ἐφεξῆς ἐκ οἷδ' ἄτλα ὁ Ἰησοῦς μεγαλαυχῆν ὑπὸ τῶν οἰκείων αὐτῷ τελεθέντα τεράσια· οἷον ἐπὶ παραδείγματος: ὅτι Στανίσλαος, νεκρόν τινα ἐξαναστήσας φέρεται ὡς εἰ μηδένες, ἔς γ' ἐπὶ τῷτο, κατὰ τῷ Ἀνατολικῷ ἐξιώθησαν Ἐκκλησίαν οἱ ἐπὶ Ἀγιότητι εἶς, καὶ τοῖς παραδόξως ὑπ' αὐτῶν τερατουργηθεῖσι θαυμάζοντες ἢ, ὡς εἰμὴ καὶ πάλα, κατὰ τὰς ἐν τῇ Ἐώᾳ λήξει μάλισα Ἐκκλησίας, οἱ τῷ ὄντι θαυματουργῶντες, καὶ ἐν Ἀγίοις διαπρέψαντες θεασεσίως Πατέρες ἐξέλαμψαν ὡς τῇ Πίσιν καὶ αὐτοὶ παρακολυθῶντες ἐν ταύτῃ αἰρέμεθα σώζεσθαι. Αὐτοὶ

ζομένους. Καὶ Γλασνιωσίς δὲ τὴν παρὰ Βρετανῶν, καὶ Κολωνιωσίς τὴν ἐν Γερμανίᾳ καθιστορεῖ, τὸ Οὐρεσέλης Λείψανον παρὰ σφίσιν ὃν διατενομένους τε καὶ διαπληκτιζομένους τῆς δ' αὐτῆς Οὐρεσέλης τῷ ποτνίαν κάραν ἤδη καὶ νῦν, ἐν τῇ Κολωνίᾳ, καὶ παρὰ τοῖς Βεργολιωσίσις Αὐγυστινιανοῖς Μονασταῖς ἀναδείκνυσθαι· κτ. (Ὅρα Ῥιβέτ: ἐν τοῖς περὶ τῶν Κεφαλαιῶδ: Διαφορ: Πραγματ: Β'. Ζητήμ: ΝΔ'. Ἀριθμ: Ε'. ἐν Τόμ: Γ'. τῶν Συγγρ: Σελ: 271.)

- (34) Τῷ τῷ Ἰερῷ Λειψάνῳ τῷ ἐν Ἀγ: Θαυματ: Νικολάῳ ἀνακομιδῶν ἐπὶ τῆς ἐν Ἰταλίᾳ Βάρεως, εἰσὶν οἱ καὶ τῶν Λατίνων αὐτῶν, ἐν τοῖς ἀδεσπότοις καὶ ἀμφισβητήσιμοις ἐτι καταγράφουσιν. (Ὅρα ἐν τῷ Μεγάλῳ Λεξικῷ Μωρετίῳ τῷ Γάλλῳ, ἐν τῷ Λέξει „Βάρεις, καὶ Νικόλαος,“. Ἐκῆ μὲν γὰρ Φησὶν; ὅτι: La Translation de S. Nicolas a Bari est encore une Histoire sans Autorité, et sans fondement, etc: Ὡς δὲ: Le corps de S. Nicolas . . . y fut apporté (à Bari) vers l'an: 1087. Lorsque la ville fut ravagée par les Barbares. Οὕτως ἐκ τῶν αὐτῶν κειμένων προεξέρχεται θερμά τε ἄμα καὶ ψυχρὰ νάματα.

(65) Ἐν Ἐκατονταετηρίδι ἀπὸ Χριστῷ Σωτήρος ΙΑ'.

(66) Πραγματ: Β'. καὶ Γ'.

(67) Ἐν Πραγματ: ΙΒ'.



Αὐτοὶ ἔν ιδέτωσαν οἱ Λατῖνοι, πῶς ἂν ἐκείνης προσηκόντως ἐν ὑπολήψει ἔχοιεν Ἀγιότητος, ἧς διὰ τὸ τιῶ προσηκόντως ἐπικεκρυμμένη, βλασφημίας τε ἐνόχως, καὶ τῆς αἰωνίης κολάσεως ὑποβλήσεως τίθεται αὐτὸς ὁ Πάπας Ἰωάννης ὁ Η'. καὶ τῆς, ἐναντίον τῆ ὄρας τῶν Οἰκουμενικῶν τεσσάρων Συνόδων, τὸ προσεθὲν καινοτόμημα, πρεσβεῦσαι τε καὶ δι' ὧδῆς ἐκφωνήσαι τετολμηκότας, ὡς Λέων ὁ Γ'. ἀπεφώατο. Ἡμῖν δὲ τέως Ἀγιοὶ εἰσὶν, ὧν τὰ Δόγματα ἐνταῦθα ἐνσερνιζόμεθα, ΒΑΣΙΛΕΙΟΙ τε δὴ οἱ Μεγάλοι, καὶ οἱ ΘΑΥΜΑΤΟΥΡΓΟΙ ΓΡΗΓΟΡΙΟΙ, καὶ οἱ ΘΕΟΛΟΓΟΙ, καὶ οἱ ΝΥΣΣΗΣ· καὶ ἈΘΑΝΑΣΙΟΙ, καὶ ΚΥΡΙΑΛΛΟΙ, καὶ οἱ ἄλλοι, οἱ ὑπ' αὐτῶν τῶν Ἱερῶν Συνόδων τῶν Οἰκουμενικῶν ἐγκρινόμενοι. Ἀπὸ δὴ τῶν τῶν Θεοπεσίων Πατέρων ἔπερ ἐκκλίνουσιν οἱ Λατίνων μεταγενέστεροι, ὁποίας μὲν ὄντες λέγουσι τοῦ Ἀγιότητος τὸ πολίτευμα, ὁποῖαν δ' ἂν ποιεῖ καὶ πλετύντες εἶεν ἐπὶ τὸ θαυματουργεῖν διώκουν, αὐτὸς μὲν ἐκ ἔχῃ εἰδέναι· ἐκείνα δὲ αὐτοῖς εἰκότως τὰ Ἀποστολικὰ ἐπανακρυσόμεθα: ὅτι „καὶ ὑμεῖς. ἢ Ἄγγελος ἀπ' οὐρανόθεν εὐαγγελίσθηται „παρ' ὃ εὐαγγελιστάμεθα, ἀνάθεμα ἔστω,,. Οὐχὶ ὁ Σωτὴρ ἀφεκτέον ἡμᾶς εἶναι ἐδίδαξεν ἀπὸ τῶν ψευδοπροφητῶν, ὧν οἱ καρποὶ ἐκ ἀγαθῶν, καὶ ὅτι πλεῖστα σημεῖα ἐργάσαντο; Ἀλλὰ γὰρ οἱ ψευδοπροφῆται πονηράν τε δῆκναι, καὶ ψεύδῃ τινα τιῶ Πίσιν κατεπαγγέλλονται· ἐκ ἄρα τὰ τεράσια κατ' ἑαυτὰ τῆς ἀληθινῆς ἀπόδειξις εἰς Πίσεως. „Πολλοὶ γὰρ (ὡς ἐν ἄλλοις περ φησὶν) „ἔρῃσι πρὸς με ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ: Κύριε Κύριε! ἔχλ' ἐπὶ τῷ „ὀνόματί σου προεφητεύσαμεν; ἔχλ' σημεῖα πολλὰ ἐπὶ τῷ Σὺ ὀνόματι ἐποιήσαμεν; καὶ ἀποκριθεὶς ἐρῷ αὐτοῖς: ἐκ ἔγνω ὑμᾶς „πορεύεσθαι ἀπ' ἐμῶ οἱ ἐργάται τῆς ἀνομίας,,. (68) Τίνα δὴ ἔν βασι-

(68) Ὁ Ἰησοῦς Μαλδονάτος, (ἐν τῷ εἰς τὸ Ζ'. Κεφάλ: τῆ Ματθ: Ὑπομνήματι) τὸν Χρυσόστομον παράγει μάρτυρα, καὶ τὸν Ἰερώνυμον, καὶ τὸν Εὐθύμιον, καὶ τὸν Θεοφύλακτον, τῆς διὰ πλείων ἀποδεδοχότας ὑποδείγματων. ὅτι καὶ διὰ τῶν ἀπίστων ἐνίοτε τιὰ τελεσιουργεῖται θαυμάσια. Διατίεται δὲ καὶ αὐτὸς Μαλδονάτος, τῆς ψευδοπροφητίας ἐκείνης, περὶ ὧν τῷ Εὐαγγελιστῇ λόγος: Vera miracula fecisse, vere prophetasse, vere Daemonia eiecisse. („ἀληθῶς τερατουργῆσαι, ἀληθῶς προφητεῦσαι, ἀληθῶς τὰ Δαιμόνια ἐκβεβληκέναι,,) Καὶ Τολῆτος δὲ ὁ Ἰησοῦς καὶ Καρδινάλις, (ἐν τῷ εἰς τὸν Ἰωάν: Ὑπομνήμ: Κεφαλ: Γ'. Σημειώσεις (2)\*) ὁμολογεῖ καί: Dæmones multa facere poss. supra humanas vires, quæ miracula videantur, et aliquando sint. („Πολλὰ καὶ τῆς Δαίμονας ἀποτελεῖν ἔχειν „τῶν ὑπὲρ ἀνθρώπων, θαυμασὰ γε πολλάκις καὶ δοκῆντα, καὶ ἔντα,,) Καὶ Μαρτίνος δὲ ὁ Δελρίο: Ἰησοῦς καὶ ἔτος, (ἐν τῇ περὶ τῆς Μαγ: Ἐξετάσει, Βιβλ: Β'. Ζητήμ: 7.) A malis etiam, et perperam de Fide sentientibus nonnumquam miracula edita fuisse; et solere Deum aliquando hanc gratiam gratuito etiam talibus largiri, sed in veræ Fidei probationem: et Deum posse per infideles miracula operari. („Καὶ ὑπὸ τῶν πονηρῶν ἔτι καὶ δυσσεβοφρόνων ἐνίοτε θαυμάσια (φησὶν) ἐκτελεσθῆναι καὶ τὸν Θεὸν εἰσθῆναι τιῶ δὲ τιῶ χάριν εἶδ' ὅτε, καὶ τοῖς τοῖς τοῖς δωρεῖσθαι· ἀλλ' εἰς ἀπόδειξιν τῆς ἀληθῆς Πίσεως καὶ διώσθαι δὲ Θεὸν πάντως καὶ „διὰ τῶν ἀπίστων θαυματουργεῖν,,. Καὶ τῆτο μὲν, δι' ἐκ εὐαρίθμων ἂν ὑποδειγμάτων ἐκ τῆς Ἱστορίας διαπισωθεῖν· ἀποχρήσει δὲ ὧδε τὸ Παῦλε τῷ Ναυατιανῷ

βάσανον ὑπέχεν ἡμῖν ὁ Σωτήρ, ὥς διακρίναν ἀπὸ τῶν Ψόδοπρο-  
φητῶν τὰς ἀληθεῖς Προφῆτας, ὁπότε δὴ τερατουργήες τέτων ἐκάτε-  
ροι φαίνονται; „Επιγνώσεσθε τέτους, ἔφη, διὰ τῶν καρπῶν αὐτῶν. „  
Διὰ τῶν καρπῶν αὐτῶν ἄρα, παραπλησίως καὶ ἡμεῖς τὰς ἐπὶ τερα-  
τουργήμασι θρυλλομένας παρὰ Λατίνοις ἐπιγινώσκουμεν, ὅτι ἐν ἐρ-  
μασι προβάτων ἦσαν λανθάνοντες, ἅ τε δὴ τῆς Προφήτης, ταυ-  
τὸν εἰπὴν τῆς τῆς Ἱερᾶ Συμβόλης βεβηλώσεως, προσάται ἀναδειχ-  
θέντες καὶ πρόμαχοι. Ἀλλὰ γὰρ παρὰ ταῦτα, καὶ ὁ τῷ Στα-  
νισλάε ἐκείνῳ ἐπανήκει ἐξισορήματι· ἔχοι ἄντις ἐκ ἀπεικότης  
εἰπὴν, τὰ συμβάντα παρὰ τῆς Θεᾶς οἰκονομηθῆναι, ἥκιστα μὲν  
τῆς Στανισλάε ἀνεπιλήπτῃ Πίσεως χάριν, ἀλλὰ πρὸς ἔλεγχον  
τῆς Τυραννῆτος, καὶ εἰς ἐνδειξιν δικαιοσύνης, κατὰ τῆς παρὰ  
πάντα θεσμὸν, δι' ὑπερβολὴν μοχθηρίας τε καὶ ἀπιστίας, τὸν ἴδιον  
ἐαυτῆ Ποιμένα εἰς ὀλεθρον ἐκδιώκοντος. (69) Καθ' ἅπερδ' ἐκ  
τοῖς Ἑθνεσι πλεῖστα κατὰ τὸν αὐτὸν λόγον ἀναγινώσκουμεν ὑπὸ  
Θεᾶ

- παράθεσθαι: ἔ δὴ, τὸν ἀπατεῶνα Ἰσδαῖον προσελθόντα καὶ τὴν Πίσιν πειράζειν  
τὴν ἀμώμητον, ἐπιβαλλομένην βαπτίσαι, τὸ ὕδωρ ἀπὸ τῆς Ἱερᾶς Κολυμβήθρας  
ἐξαπίνης ἐξέλιπεν (ὄρα Σωκρ: Ἐκκλησι: Ἰσορ: Βιβλ: Ζ'. Κεφαλ: ιζ'). τὰ πολλα  
γὰρ, ἐχὶ τῷ ἐργανικῷς τελῶντι, ἀλλὰ τοῖς δι' αὐτῶν οἰκοδομηθησομένοις, τὰ  
τοιαῦτα οἰκονομεῖται θαυμάσια. Ταύτη τοι καὶ ὁ ῥηθεὶς Delrio, ἐν λόγῳ προσέθετο:  
Consequentiam non esse bonam: Fecit miraculum: Ergo Fides ejus est vera. („ὅτι ἐκ  
„ὕμνης τὸ Συμπέρασμα: Ἐτεροτέρησεν: ἄρα ἡ Πίσις αὐτῆ ἐστὶν ἀληθής. „  
(69) Οὐδὲν μὲν περὶ Στανισλάε τῆς Κρακοβίας Ἐπισκόπου, ἐν τῷ ἀναφερομένῳ Θ'. 7η.  
τήματι, ἐν ᾧ τὰς δημόδας ταύτας (ὡς αὐτὸς ἀπεκάλεσεν) ἀποδείξει προτείνει  
τῆς ἰδίας φρονήματος, ἐπὶ τῆς ἡμῖν παρέσης Ἐκδόσ: τῆς ἐν Ἑτ. 1558. Κιχάβιος  
διεξέρχεται. Ἐπεὶ δ' ὁ ἡμέτερος Συγγραφεὺς Ζαιρνικάβιος, ἑτέρῳ γέ τι Ἐκδόσ  
τυχόν ἢ ἐκ οἷδ' ὅ, τι ἄντις εἰπὴν ἔχοι) χρησάμενος, καὶ τῆς Κρακοβίας αὐτῆς,  
ὡς Θαυματοργῆ δῆθεν προσεπεμνήσατο. Σημειώτεον δὲ χάριν τῶν μετιόντων: ὅτι  
Βολέσλαος ὁ Β'. ἀπλωῶς τε καὶ ἀπανθρώπως καταδιωκόμενος τῶν Λέχων, καὶ  
Στανίσλαον αὐτὸν, ὡς ἀπελέγξαντα ἀποτίμως, καὶ ἀφορισμῷ καθυποβαλέντα,  
(Ἑτ. 1079. ἀριθμ. 8. ἢ 5.) ἀνείλεν ἰδίᾳ χειρὶ, ἐπ' αὐτῆς ἐπι-  
δραμὼν τῆς Ἱεροτελεσίας. Πλεῖστα τοίνυν τεράσια ἐπὶ τῷ Στανισλάε τυμβώμα-  
τι, ἅ τε ὑπὲρ τῆς Χριστῆ θανάτου, οἱ Πολωνοὶ γίνεσθαι τὸ ἀπ' ἐκείνης παρεδωκαν,  
οἵπερ ὅμως, ἐφ' οἷς ἐς πλάτος διεξήλθον, ἐ πολὺ τι, ἐδὲ τοῖς Λατίνοις ἀπασιν  
ἀξιόπιστοι ἔδοξαν, ὡς μὴ σύγχρονοι γεγονότες, μετὰ δὲ ἐνιαυτὸς τετρακοσίαις ὕπε-  
ρον ἰσχυρόντες· ταύτη τοι, ἐδὲ τὴν ἐπὶ τῇ τῆς Βολέσλαε τυραννικῇ ὀμότητι τῆς  
Ἐπισκόπου ἐπιτίμησιν, ἐδὲ τὴν ἐκείνης, ὑπὸ τῆς Πάπα Γρηγορίου τῆς Ζ'. ἀπὸ τῆς  
Βασιλείας ἐξέλασιν τε καὶ ἐκπτώσιν, τὸ πῖσιν οἱ Συγγραφεὺς ἔχειν ἡγῶνται καὶ  
βέβαιον, παρὰ τὸ μηδὲν τὸ παρ' ἅπαν περὶ τέτων, ἐν ταῖς τῆς εἰρημένης Πάπα  
σωζομέναις Ἐπιστολαῖς ἐμφέρεισθαι καὶ διὰ τὸ μηδεμίαν ὅλως περὶ τέτων μνείαν  
πεποιηκέναι τῆς Ἱστορικῆς τῆς κατ' ἐκείνην ἀκμάσαντας. (ὄρα τὸν Ἀββ. Γακί-  
ναν ἐν τῇ Ἐπιτομῇ τῆς Ἐκκλησι: Ἰσορ: ἐν Ἑκατονταετ: ΙΑ'. Ἀρθρ: Β' §. Α'.  
ἐν Τόμ. Δ'. Σελ: 170.) Μωρέριος δ' ἐν ἐν τῷ Λεξικῷ: ἀφοριζέμετα παρὰ τῆς  
εἰρημένης Πάπα, καὶ τῆς Ἀρχῆς ἐκπετόντα Βολέσλαον κατὰ τινος μὲν, περὶ τὸ  
1081. αὐτόχρεα ἰσορεῖ ἀναρεθῆναι· ὡς δὲ τινες ἄλλοι φασί, κυνηγεσίαις χολάζον-  
τα, κυνέωτον διαπαράχθέντα ὀλέσθαι. Ὡς γεμῖν ἑτεροί, τὸν μοναδικὸν βίον  
ἐξ ἐπιστροφῆς ἐν μετανόια ἀσκήσαι λαθόντα, ἐγγὺς Ἰσσορεῖ πόλεως, ἐν τῇ Μο-  
ναστηρίῳ καὶ τοῖς ἄλλοις, φησὶ, βέβαιον ὅν, μετὰ τῆς Τίβ Μίσση ἀπελαθεῖτα  
τέως παρὰ τοῖς Οὐγκροῖς αὐτὸν, ἐν ἀπογνώσει τὴν πονηρὰν ψυχὴν κακῶς ἀπο-  
χρέμψασθαι.

Θεὸς ἐκτελεσθέντα θαυμάσια. Οὕτω τὰς ποτὲ τὸ παρ' Ἑλλήσιν Εἰδωλεῖον πεποιηκότας ἀνάστατον, ἅπαντας παραδόξως ἀπολωλέναι ἰσόρηται. (70) Καὶ τὸ πρὸς τὸ εὖ ποιῆν δὲ ἐπιρρέπες τῆς τῷ Πιάστῃ ψυχῆς, καὶ περ Ἑθνικῷ ὄντος, τερατουργήματι ἐπισημοτάτῳ δι' Ἀγγέλων ἐπιβεβαιύεται. (71) Ἀλλ' ἔτι μὴ καὶ τότε φανερόν ἄλλοθεν, ὡς πολλὰ πολλάκις Λατίνων παῖδες τεράσιχα πλάττουσιν, οἷς ῥαδίως πισθεῖν ἔχρη· (72) οἱ καὶ τὴν τοιαύτην πανερ-

(70) Τὴν Βρέννη τῷ Γάλλῳ ἐπιστρατεῖαν ἐν τέτοις ἔοικεν ὑπαινίσσασθαι Ζοιρηνικάβιος. Ἐκεῖνος γάρ ἐν πεντεκαίδεκα μὲν πεζῶν μυριάσι, δυσὶ δ' ἵππεων, Μακεδονίαν τε ἐκπορεύσας καὶ Θετταλίαν, καὶ διὰ τῶν Θερμοπυλῶν εἰσελάσας, τῆς τε λοιπῆς Ἑλλάδος τὰ ὑπὲρ πάντα ἑξανδραποδισάμενος, ἐπεὶ καὶ τῆς Φωκίδος ἔσω ἐγένετο, καὶ τῷ ἐκείσε θρυλλημένοι τῶν Δελφῶν Χρηστηρίῳ ἀνεβάλετο τὴν διαρπαγὴν, τῆς στρατίας τὸ πλεῖστον αὐτόθι ἀπάλεσε, καὶ τῷ πολέμῳ καὶ αὐτὸς ἔργον τέως ἐγένετο. Ἔοικε γάρ, (ὡς Πausanias: ἐν τοῖς Φωκικοῖς Κεφαλ: Ζ'.) ἐξ ἀρχῆς τὸ ἱερὸν τὸ ἐν Δελφοῖς ὑπὸ ἀνθρώπων ἐπιβεβλῆσθαι πλείστων ἡλῆ· τὰς δ' ἐπιβεβλυσμένους κακῶς ἀπαλλάξαι. Ὡς καὶ περὶ τῷ Εὐβοέως ληστῷ, τῷ συλήσαντος πρῶτον, καὶ δεύτερον ἐπιστρατεύσαντος, ἢ Φημιονῇ, Πρόμαντις τὴν καὶ αὐτὰ ἔσα, ἐν ἑξαμέτρῳ φθάσασα ἔχρησεν.

Ἀγχι δ' βαρὺ ἰὸν ἐπ' ἀνέρι Φοῖβος ἐφίσει

Σίντη Παρηγοσιό . . . . . (Αὐτ: Κεφαλ: ζ'.)

(71) Τὸν Πιάστῃ ἰσορῶσι τῶτον ἐκ τῆς ἐν Πολωνίᾳ Κρακοβίας ὁρμώμενον, γηδὶόν τε αὐτεργέντα, καὶ σμικρῇ Μελοισῶν ἐν αὐτῷ διατιθιγόντα, ἔτω πρὸς εὐπορίαν ἐπιρρέπῃ γεγονέναι, καὶ τοὶ ἐν μετρίοις βιοτεύοντα, ὡς κοινῇ τοῖς δεομένοις ἅπασιν ἀνεῶχθαι αὐτῷ τὸ οἶκμα. Τέτω ἔν πρὸς καὶ ἐπὶ τῇ κερᾷ τῷ Υἱὸς ἐορτικῷ ἀγορί, καὶ τισὶ τῶν προσηκόντων αὐτῷ τεθυκότι, καὶ ὑδρομέλιτος ἀμφορέα παρασκευάσαντι πρὸς ἐξίαν, ἀγνώτας ἀνδρας προσελθόντας δὴ ἐπιξενωθῆναι παρ' αὐτῷ καὶ εὐωχηθῆναι, μὴδὲν τι τῶν ἐτοίμων πρὸς τὴν εὐωχίαν ὑπελαττωθέντων, προσεπαρεκσάντων δὲ, ἔχ' ὅπως τοῖς κεκλημένοις· ἀλλὰ καὶ τῷ τῆς χώρας τότε ἡγεμονύοντι Ποπιήλῳ, μετὰ δορυφέρων συχνῶν ἐπελθόντι, καὶ τῆς δαιτὸς μεταχρῆν ἀξιώσαντι. Τῷ τοίνυν Ποπιήλῳ μετ' ἑ πολὺ ὕπερον τὸ ζῆν ἐκμετρήσαντος, καὶ τῶν πέριξ δήμων ἐπὶ τῷ Ἀρχαιρεσιασμῷ τῷ ἐξῆς Ἀρχόντος σκυλεηλυθόντων, ἐπειδὴ τὰ εἰς τροφὴν ἀναγκαῖα ἐπὶ τῆς χώρας τοῖς σκυλημένοις ἐπεπαύριζε πλήθυσιν, τὰς ἀγνώτας αὐτοῖς ἐκείνης, (Ἀγγέλους δὲ τέττας Φασὶ γενέσθαι τὰς καὶ πρότερον χρηματίσαντας) ἐπιφανῆσαι, καὶ τὴν τῷ Πιάστῃ οἰκίαν ἀναδείξαι, ὡς ἐπὶ τῇ τῶν ἀθροισθέντων διατροφῇ ἀποχρήσασαν, ὡς αἰεὶ ἀκένωτόν τε ἔσαν ἐν γε ταῖς χρεῖαις καὶ ἀνεξάντλητον· ἔδ' ἡγενομένης, τὸν Πιάστῃ μὲν Φωνῇ ὑπὸ πάντων αἰρεθῆναι τῷ Ἑθνικῷ Ἀρχόντῃ. Τεθῆναι δὲ αὐτὸν κατὰ τὸ 861. Σωτήριον ἔτος, ἐνιαυτὸς ἔκτισεν ἐπὶ τοῖς ἑκατὸν ζήσαντα, καὶ τὰς ἐπιγόνους ἐπὶ τῆς ἡγεμονίας καταλειποτά, τὰς ἐς γ' ἐπὶ τὸ 1370. τὴν διαδοχὴν παρατείναντας. Οὐδὲν ἔν ἑδὲ περὶ τῷ Πιάστῃ τέττε, ἐν τῷ ῥηθέντι τῷ Ἰησάιτῃ Συγγραμμάτι πρόκειται ἀναγινῶναι, ὡς ἑδὲ περὶ τῷ Στατιστῇ ἀνωτέρῳ εἴρηται, ἐν Σημ: (69). Ἐλήφθη δὲ ἡμῖν ἀλλαχόθεν τὸ Διήγημα, πρὸς τελειότεραν τῶν ὑπὸ τῷ ἡμετέρῳ Συγγραφέως ἐνταῦθα παροδικῶς λεγομένων σῴεσιν: ὡς ἑδὲν ἀπεικός δηλονότι ἐγένετο, εἰ τὸ πρὸς εὐπορίαν ἐπιρρέπες τε καὶ πρόσθυμον τῆς τῷ Πιάστῃ ψυχῆς, καὶ περ τῶν Ἑθνικῶν ἀσεβημάτων θρήσκῃ τυγχάνοντος, μεγάλῳ τερατουργήματι οἱ Ἀγγελοὶ ἐπεβεβαίωσαν.

(72) Νικόλαος γάρ ὁ Λυρανὸς ἐπιμαρτυρῶν τοῖς ἐνταῦθα λεγομένοις, (ἐν τῷ εἰς τὸν Δανιὴλ αὐτῷ Ὑπομνήμ: Κεφαλ: ΙΔ'.) ὅτε δὴ Λατίνες, περὶ τέττα καὶ πισθεῖσθαι ἄξιός, ὡς μὴ μάτῳ διαβάλλειν τὴν Λατινικὴν Ἐκκλησίαν προθέμενος: Quod ali- quando fiat in Ecclesia, maxima deceptio Populi in miraculis fictis à Sacerdotibus, et eis adherentibus propter lucrum temporale. „Κέρδος, φησὶν, οἱ τερασιοπλάσαι ἑαυτοῖς προσορίζονται, τὰς ἀπλυστέρους ἑξαπατῶντες, καὶ τὸ βαλάντιον „αὐξόντες διὰ τῆς τῶν ἱερῶν καταχρήσεως.”

Τομ: Β'.

Δ δδδδδ

πανουργίαν ἀποκαλῆν φιλεῖσιν εὐφημότερον Θεοφιλή τινα καὶ εὐσεβή δόλον, δι' ἑπερ' ἂν ὁ χύδιω ὄχλος (Φᾶσι) πρὸς θερμότεραν τῇ Θεῷ λατρείαν διαπυρσθόιτο. Καὶ ταῦτα μὲν περὶ τῶν θαναταουργημάτων, ἅτ' αἱ ἡμῖν ἐπικροτῶσι Λατῖνοι παρὰ σφίσι τελέμενα.

Ἐφεξῆς δὲ καὶ αὐτὸν ἀναταράττει τὸν σποδὸν τῶν νεκρῶν ὁ Ἰησοῦτης, ὡς ἂν καὶ ἐξ αὐτῶν ἐκπορίσασθαι τι δωρηθεῖν ὅπως ἐν συμβαλλόμενον, πρὸς τῷ ἐκ τῇ Υἱῷ Ἐκπόρυσιν τῇ Ἀγίᾳ Πνεύματι. „Αναφανήναι γὰρ ἔτι, φησὶ, τῷ Καθολικῷ ἀλήθειαν, καὶ ἐκ τῆς, ὅτι οἱ τῶν ἐκ μόνου τῷ Πατρὶ ἐκπορεύεσθαι, βελομένων τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, διδάσκαλοι τε καὶ ἡγεμόνες ἄπαντες ἐξώλεις τε ἐγένοντο ἄνδρες καὶ κακῶς ἀπολέμενοι. Ὅποιος γὰρ ὡς ὁ ἑδαμινὸς Φώτιος, ἐκ τῶν Ἰσορμενίων κατὰ τῷ Ἡ. Σωρόδον εἰς πλάτος περιγράφει Βαρώνιος ὥστε γὰρ Ἀπολλωνίου ἐκείνου τῷ Τυανῇ διεβίωσε παραπλησιώτατος, ἔτω καὶ τὸ ζῶν ὡσαύτως κατέστρεψε. Μιχαὴλ δὲ ὁ Κηρυκτῆς ἑσσιώδης ἐγένετο ἄνθρωπος, ὃς ταῖς ἰδίαις μηχανουργίαις, Μιχαὴλ μὲν τὸν „Στρατιωτικὸν, ἄριστόν τε Ἄνδρα, καὶ εὐσεβεῖα ἐν Ἀυτοκράτορι „διαφέροντα παρέλυσεν τῆς Ἀρχῆς, Ἰσακίῳ δὲ Κομνηνῷ τῷ τὸν „Στρατιωτικὸν διαδεξαμένῳ, μεθ' ὑπερβαλλέσης θρασυτήτος ἐπαπειλῆσας ἔφθη τῷ ἀπὸ τῷ Θρόνου ἀπέλασιν ὑφ' ἧς δὴ καὶ τῷ ἐπὶ „Χερσοννήσῃ ὑπερορίαν καλακρινθῆς, οὐκ ὀλίγως ἐκέισε τὸ ζῶν κατέληξε. Τελούτατον δὲ ὁ Ἐφέσος (ἦν μαρτυρεῖ ὁ Σοφώτατος, καὶ δι' Ἀγιότητα βίβ' καὶ τοῖς Τύρκοις αὐτοῖς διαφερόντως σεβασθεῖς Πατριάρχης Γεννάδιος, Βιβλ: Α'. Κεφ: Ε'. Τμήμ: ΙΓ'.) Ἄνις ἑδ' ἄλλος Φρενῶν ἐπήβολος γεγονώς, ὀγκηρὸς δὲ ἄλλως τε καὶ ἀλαξῶν ἐπιδεικνύων σοφίας, ἀρετῆς παντοίας ὡς ἄμοιρος καὶ „περὶ ἧς ὅπως ὑπεξῆλθε τῇ βίβ', Ἰωσήφ διεξέειπεν ὁ Μεθώνης „Επίσκοπος. Σὺ δὲ (ὡς Μάρκε Ἐφέσος) ὁ τὸν Κωνσταντινουπόλεως „Πατριάρχῃ, καὶ τῆς σὺ αὐτῷ ἐπὶ τῆς ἐν Φλωρεντίᾳ Σωρόδου „τῇ Ῥώμῃς Ἐκκλησίᾳ ὁμοφρονήσαντας, ἀναιδῶς διαβάλλον, τῷ „ψυχῇ σιμάμα τῇ κόπρῳ ἐξέπνύσας μαρτυρεῖ δὲ τὸτο ἅπασαν „ἢ Κωνσταντίνου πόλιν. Οὕτως οἶδεν ἢ Θεῖα δίκη ταλαντῶσαν „ἐκασὸν κατὰ τῷ αὐτῷ Πίσιν, ὡς πάσαι τὸν τῆς μανίας ἐπώνυμον Ἄρειον, ὃς κάτω τὰ ἔγκατα ἐπεμψε, σὺ δὲ ἄνω τῷ κόπρον. Καὶ ὁ μὲν τῶν ταῦτα: ὡς ἔναι δῆλον ἐντεῦθεν, „ὅσον πίσεως ἀποδιδίναμι δέοι τοῖς ἀπὸ τῆς σόματος εἰρημένοις „ἐκείνους, ὃν τηλικαύτη κολάσει μετῴληθε Θεός. Τοιγαρὲν καὶ ἡμεῖς „οἱ Καθολικοὶ τῷ Χρυσόστομῳ ἐπώμεθα μὴ ζηλοτυπῆντες τοῖς „Σχισματικοῖς τὸν Κοπρόσομον. „

Ἀλλὰ γὰρ Α'. ἔχει τὸν Φώτιον αὐτοῖς, ἔδὲ τῆς ἄλλης μόνον ἔχομεν διδασκάλους τε καὶ καθηγεμόνας ἐκείνους. Ἀλλ' ἡμῶν Διδά-



δάσκαλος μὲν ἐστὶν ὁ Χριστὸς, Καθηγεμόνες δὲ οἱ Ἀπόστολοι, ὑφη-  
γητὴ δὲ καὶ οἱ Θεοὶ Πατέρες, οἷς ἔτι καὶ τῷ Δόγματι τῷ περὶ τῆς  
τῆς Ἁγίας Πνεύματος ἐκ μόνου τῆς Πατρὸς Ἐκπορεύσεως παρακο-  
λασθῆμεν ὡς ὁδηγήτοισι. ΦΩΤΙΟΣ δὲ, καὶ ΚΗΡΟΥΛΛΑΡΙΟΣ, καὶ  
ὁ ἘΦΕΨΟΥ, ἔδεν μᾶλλον ἡμῖν εἰσι Διδάσκαλοι καὶ Καθηγεμόνες  
ἐν τῷδε τῷ μέρει, ἢ καὶ τῇ τῆς Υἱῆς ὁμοουσιότητι μετὰ τῆς Πα-  
τρὸς, καὶ τοῖς λοιποῖς Δόγμασι τῆς Καθολικῆς Πίστεως. Καὶ εἰν  
μὲν ἂν Φώτιοί τε καὶ οἱ ἄλλοι, ἀνδρῶν οἱ φαυλότατοι, καὶ κακοὶ  
κακῶς ἀπολέμενοι· μὴ ἄρα ἐπειδὴ καὶ κατὰ Λατίνων τῆς περὶ  
τῆς Ἐκπορεύσεως τῆς Ἁγίας Πνεύματος ἐκ μόνου τῆς Πατρὸς προέ-  
στησαν Δόγματος, τῆς γε δὴ ἕνεκα καὶ αὐτὸ τὸ Δόγμα ψεύδους  
ἂν ἀπελεγχοίτο; Ἀλόγως! Καὶ πόσοι δὴ Πάπαι, οἷον Φαλαγ-  
γηδὸν προεληλυθότες μετὰ τῷ ἤδη πανδήμως παρεισενεχθεῖσαν  
τε, καὶ παρ' αὐτοῖς προσάταις κραταιωθείσαν Ἐκπόρυσιν τῆς Πνεύ-  
ματος καὶ ἐκ τῆς Υἱῆς, ἔχλι παμμόχθηροι ἀνεφάνησαν γεγονότες,  
καὶ οἰκτρότατα ἀπολέμενοι; Ἐξ αὐτῶν δὴπερ ΣΕΡΓΙΟΣ, ὁ τῆς  
Γάλλου διεπανασήσας Ἐπιχειρήματα κατὰ τῶν Ἀναθολικῶν σωε-  
πιφορεῖν, καὶ ἕτερα δὲ βλάβσημα κατὰ τῆς Δόγματος τῆς τῆς  
Ἁγίας Πνεύματος, ἐκ μόνου τῆς Πατρὸς Ἐκπορεύσεως ἀποχρεμψά-  
μενος, μοχθηρότατόν τε καὶ βδελυρώτατον ἀνθρώπου τέρας ἐγέ-  
νετο, καὶ αὐτῶν ἔτι τῶν παρὰ Λατίνοις Ἱστορικῶν σωομολογάν-  
των. Ἀλλὰ περὶ τῆς Σεργίου τῆς, ἐν τῇ περὶ τῶν Μαρτυριῶν  
τῶν Ἀναθολικῶν Πατέρων Πραγμασίᾳ, ἐπὶ τῆς δεκάτης Ἐκατον-  
ταετηρίδος ἐρηται. (73)

Τι εἴν καὶ τῷ Φωτίῳ ὁ Ἰησὺς προσέψειν; ἢ, τὰ κατὰ  
Ἰγνατίου διαπραχθέντα, καὶ τὸ ἀγνοεῖσθαι ἐνθα τε καὶ ὅτε Φώ-  
τιος τέθνηκεν; Ἀλλ' ἂν μὲν κατὰ τῆς Ἱερῆς αὐτοῦ διεπράξατο  
Ἰγνατίου, ἔδ' ἡμεῖς ἀποδεχόμεθα· τί δαὲ παρὰ τῆς; μὴ ἄρα ἔδ' ἐ  
τῷ αὐτῷ Πίστιν, καὶ τοι συμφωνῶσαν εὐρίσκοντες τῇ Καθολικῇ  
Ἐκκλησίᾳ, ἀποδεχόμεθα; Τί δ' ἂν Φωτίῳ, ἀντὶ τῆς πρὸς Λατίνους  
διαφορᾶς, ὁ ἀγὼν ἀπῆλθῃ κατὰ τῶν Ἀρεινῶν, ἢ ἄλλων τινῶν Αἵρε-  
σιοφρόνων διαλεχθῶσι, μὴ τῆς γε ἕνεκα, εἰπέμοι: διὰ τὸ ἄλ-  
λως αὐτὸν ἐπὶ τῶν κατὰ Ἰγνατίον πλημμελῶς ἐνεχθῶσι, ἔψοιτ'  
ἂν καὶ περὶ τὸν ἀγῶνα ἐν μέρει, ὑπόπτῃ εἶναι καὶ κακοδόξῃ τὸν  
Ἄνδρα Πίστεως; Ὡσαύτως ἄρα καὶ τὰ περὶ τὸν Ἰγνατίον δια-  
πλημμελήσας, ἐπαινετέος ὅμως ὁ Ἄνθρωπος καὶ μάλα, ὅτι ἐκθύμως  
τε καὶ εὐτόνως τῇ τῆς Ἁγίας Πνεύματος ἐκ μόνου τῆς Πατρὸς Ἐκ-  
πορεύσει κατὰ Λατίνων ἐπήμιωε. Τί δ' ὅτι καὶ τὰ κατὰ Ἰγνατίου  
διαπε-

(73) Ἐν Πραγματῇ Α'. Ἐκατονταετῇ Γ'. Ὅρα δὲ καὶ τὰ ἐκεῖ ῥηθέντα ἐν Σημειώσεσι  
τῇ (5).



διαπεπραγμένα Φωτίω, ἐξήλεπται τέως διὰ τῆς ἐν τῇ Πατριαρχείᾳ προσεπικυρώσεως αὐτῆς ὑπὸ Ἰωάννη τῷ Η'. ἐπὶ τῆς αὐτῷ Φωτίῳ σωμαθροιοθέσεως Μεγάλῃς Σиноδῆς; Ὡς καὶ τὸν ρηθέντα Η'. Ἰωάννην τῷ Ἀναθεματι παραδεδωκέναι, ἔτις Φώτιον τὸ ἀπ' ἐντεῦθεν ὡς γνήσιον, τέττιν, ὡς Καθολικὸν Κωνσταντινουπόλεως Πατριάρχῳ προσέθαι ἀπαξιώσειν ὡς ἐν τῇ Πραγματείᾳ τῇ περὶ τῶν Μαρτυριῶν τῶν Ἀνατολικῶν Πατέρων: ἀποδέδεικται. (74) Ἐπειτα δὲ, ἐνθα τε, καὶ ὅτε δὴ, καὶ ὅπως τὸ ζῶν κατέλυσε Φώτιος, ἢ μὲν Ἰσορία εἰδὲν παρέδωκεν. (75) Ἀλλ' αὐτό γε τέτο πολλοῖς καὶ ἄλλοις τῶν Καθολικῶν Πατέρων, τῶν τῷ ὑπερορίαν κατακριθέντων, σωέπεσε μή τοι γε δὲ τέττε χάριν καὶ κακῶς ἀπόλωλε Φώτιος, ἢ γὰρ ἀσεβῶς διὰ τέτο προέση τῆς τῷ Ἀγίῳ Πνεύματος ἐκ μόνου τῷ Πατρὶ Ἐκπορεύσεως; καὶ τί ταύτης τῆς Σωεπείας γένοιτ' ἂν ἀλογώτερον;

Ὁ δ' ἐπὶ Μιχαὴλ ἀνήκει τὸν Κηρυκτάριον, τὸ μὲν ἀλαζονικὸν τῷ τρόπῳ καὶ σασιῶδες, καὶ αὐτοὶ ἀποδοκιμάζομεν. (76) τί δὲ

(74) Ἐν τῇ Α'. τῶν Πραγματῶν: Ἐκατοντῶν δὲ τῇ Δεκάτῃ.

(75) Ταῦτ' ἐκ αὐτῶν ὅπως, εἰδὲν ὅτε δὴ, προσεπανακυκλῶσιν ἡμῖν οἱ Παπισταί, καταψυδόμενοι προφανῶς. καὶ τὰ συμβάντα ἀγνοῦντες, ἢ ἀγνοεῖν προσηυμένον. „Τὸν γὰρ Φώτιον ἐπ' αἰτίαις ἐπιπλάσις ὑπὸ Λέοντος τῷ Αυτοκράτορος, κατε-  
„ξωθέντα τὸ δεύτερον, ἐν τῇ Μονῇ τῶν Ἀρμενικῶν τῇ λεγομένῃ τῷ Βόρῳ με-  
„τενεχθῆναι, μαρτυρεῖ Λέων ὁ Γραμματικὸς, τὰ τῶν κατ' αὐτὸν ἐπὶ Νέων Βα-  
„σιλέων Χρονογραφῶν, ἐπὶ Λέοντα, Σελ: 475: Ὁς δὴ καὶ τέτο ἐπὶ προσθήσαντος  
(Αὐτῶν: εἰς Βασιλεῖον, Σελ: 472.) „ὅτι μετὰ ταῦτα ἐν ἐξορίᾳ τελευτήσαντος  
„Φωτίου Πατριάρχου, ἀπετέθη τὸ Σῶμα αὐτοῦ ἐν τῇ Μονῇ τῇ λεγομένῃ τῇ  
„Ερημίας, ἐν τῇ Μερδοσαγαρεί, ὅσης πρότερον Καθολικῆς Ἐκκλησίας. Αὐτὸς δὲ  
„Φώτιος ἐποίησεν αὐτῷ Μονῇ Γαυακίαν. Τέτω ἔν παθόμενος τῷ Χρονογραφῷ  
καὶ Μαρτίνῳ Ἀγκίῳ, ἐν τοῖς περὶ τῶν Βυζαντινῶν Συγγραφέων. (Πραγματῶν:  
Μέρ: Α'. Κεφαλ: ΙΗ'. Σ. σγ.) Id credibile, φησὶ, tam multis afflictum calamita-  
tibus virum, ab anno Imperatoris Leonis sapientis primo, Christi 886. quo secundum  
exilium jam senex pati coepit, non diu rebus mortalibus interfuisse. („Εἰκὸς τὸν  
„Ἄνδρα, τοσαύταις συμφοραῖς ἐπιτεταλαιπωρηκότα ἐξ ἐν αὐτῷ πρώτῃ τῆς  
„Βασιλείας τῷ Σοφῷ Λέοντι, ἐν ἔτει τῷ Σατωριῳ 886. ἐν ᾧ γέρον ἦδη, τῷ  
„ὑπερορίαν τὸ δεύτερον καδυπέτην, μὴ ἐπὶ πολὺ περαιτέρω τοῖς θνητῶν πράγ-  
„μασι προσενδιαίρει. Καὶ Καθεὸς δὲ ἐν Ἰσορίᾳ τῶν Ἐκκλησιῶν Συγγραφέων: Τόχ:  
Β'. Σελ: 47. In Harmeniacorum Monasterium relegatus est (886); ubi non diu  
postea obiisse videtur in Eremitae Monasterio ad Merdosagarem sepultus. („Ἐπὶ τῷ  
„τῶν Ἀρμενικῶν ὑπερορίας ἀπηλῶθη (886) ἐνθα εἰ μακρῶ ὕστερον τὸ ζῶν εἰκεν  
„ἐκπερᾶναι, ἐν τῇ Μονῇ ἐνταφιαθεῖς τῇ λεγομένῃ τῇ Ερημίας ἐν τῇ Μερδοσα-  
„γαρεί. Ταῦτά καὶ Ἰωάν: Ἀλβερτος Φαβρίκιος ἔχει ἐν τῇ Ἑλλῃ: Βιβλιοθῶ:  
Τόχ: Θ'. Σελ: 370. Obiit in Exilio, in Monasterio Harmeniacorum, Bordi dicto  
ἀναφῶν ἐπὶ καὶ Ἀνσελμον Βανδέρῳ, ἐν τῇ Χρονολογικῇ Σειρᾷ τῶν Κωνσταντι-  
νουπόλ: Ἀρχαιοτήτων Σελ: 46. Ταῦτά ταῦτα διαπιστέμενον ἐκ τῶν Ζωναρῶν  
Χρονικῶν: Τόμ: Γ'. Σελ: 141.

(76) Περὶ τέττε καὶ ὁ ἡμέτερος Μελέτιος ὁ Ἀθῶν ἐν τῇ Ἐκκλησιαστικῇ αὐτῇ Ἰσορίᾳ:  
Βιβλ: ΙΑ'. Κεφαλ: ΙΗ'. „Ἀλλ' αὕτη μὲν ἢ πρὸς τὸν Πατριάρχῳ (Μιχαὴλ τὸν  
„Κηρυκτάριον) αὐτῷ (Ἰσακίῳ Κομνηνῷ τῷ Βασιλέως) ἔννοια, εἰς δυσμένειαν ἐν ἐπὶ  
„ρεῖς μετεβλήθη ἢ θελε γὰρ ὁ Πατριάρχης ἐπιτάσσειν αὐτῷ καὶ εἴποτε καὶ  
„πρὸς τὰ αἰτέμενα ἀπετύγχανεν, ἐδυχέραινε, καὶ ἠπέλει αὐτῷ τῷ Βασιλεῖ  
„ἀφελῆσαι, ὡς αὐτὸς ἀπονεμεμῆκῶς αὐτῷ. Διὸ καὶ δράσαι πρὶν τι πάθοι ὁ Βα-  
„σις.

τί δὲ πρὸς τὸ καθολικὸν καὶ ὀρθόδοξον τῆς τῆ Ἀνδρὸς Πίσεως  
τῆτο γε; Τὰς μὲν ἔν τοιαύτας πλημμελείας τε καὶ φαυλότη-  
τας, τὰς ἔτω σιωχῶς ἀπαντῶσας ἐν τοῖς Ῥώμης Ποντιφίξιν  
ἐκ ἂν ἐκὼν αὐτὸς βελοῖμιν ὥδε προσονοιάσαι (77) μνημονό-  
τεσι δ' ἔν ὁμῶς ἡμῖν ἐκ τέτων, αἱ πρὸς τὴν προκειμένῳ ἐνταῦθα  
ἰδιαιτέρον τείνεται πρόθεσιν. Οὐχὶ γὰρ, διὰ τὸ Φατριασικὸν τε  
καὶ Σασιῶδες τῶν Ῥώμης Ποντιφίξιν, τῆ κατὰ Ἰταλίαν Κράτους  
οἱ τῶν Γραικῶν Αὐτοκράτορες ἐκπεπτώκασιν; Ἦπερ γὰρ, ὡς ὁ  
ΠΛΑΤΙΝΑΣ Ἰσορεῖ, ἐπὶ Ἰωάννη τῷ 5'. ἐπειδὴ Θεοφύλακτος  
παρὰ

„σιλεύς προεμηθόσατο καὶ πέμψας χεῖρα στρατιωτικῶς εἰς τὴν Μονὴν τῶν Οὐ-  
ρανίων Δωάμεων, ἐν ἣ ἐώρεταζεν ὁ Πατριάρχης μετὰ τῶν οἰκείων τῶν Πανήγυριν  
αὐτῶν, ὑπερόριον πεποίηκε σὺ τοῖς Ἀδελφιδῶσις· ὃ γὰρ ἠθέλει ἐν τῇ τῆ Θεῷ  
Λόγῳ Σοφίᾳ καταγαγεῖν τὸν Ἀνδρᾶ, ἵνα μή τις παρὰ τῷ δήμῳ καὶ τῷ Κλήρῳ  
ἰσχυρὸς γένηται. Εἶτα καὶ καθαιρέσει ὑποβαλεῖν αὐτὸν διὰ Φροντίδος ἔχεν.  
Ἀλλ' ἔφθη λύσας τὴν Φροντίδα τῷ Πατριάρχῃ ὁ Θάνατος, πρῶτος τῆς Ἐκ-  
κλησίας Ἐτη ΙΕ'. ὃ τὸν νεκρὸν μετ' ἐντίμῃ τῆς προπομπῆς ἐκ τῆς ὑπερορίας  
ἀγαγὼν, εἰς τὴν αὐτῇ Μονῇ τῶν Οὐρανίων Δωάμεων ἐναπέθετο· καὶ τὰς ἐκεί-  
νης Ἀδελφιδῶς αὐτοῖς εἰς τὰς προτέρας τιμὰς ἀποκατέστη· τῇ δ' Ἐκκλησίᾳ τὸν  
Πρόεδρον καὶ Πρωτοεσιτάριον Κωνσταντῖνον τὸν Λειχέδιῳ ἀντικατέστησεν, ἐν  
ἔτει αὐτῷ.”

- (77) Ἐκτραγωδεῖται ταύτας ἐν γένει, ἔς τῶν Λατίνων. Πελάγιος ἔτος ἰὺ ὁ Ἀλβάρος,  
ὁ Λυσιτανῶν Ἐπίσκοπος, ὁ τῷ Δυτικῇ Ἐκκλησίᾳ, (ἥς καὶ αὐτὸς μέλος ὑπῆρχε)  
θρησκείαν ἡμῖν παριστάς· (Βιβλ. Β'. Ἀρθρ. 15.) ἐς καὶ μετὰ τὰς πάλαι Ἀγίας,  
τὰς ἐφεξῆς ἐπ' αὐτῇ χρηματίζοντας Πάπας ἐλεεινῶς ἀναζωγραφεῖν ἔταξεν αὐτὰς  
κατασηλιτῶσαι: Ὡς Romano Pontificatui se ingerentes, procuantes; utinam ante  
promotionem non paciscentes, convenientes et promittentes; cumulantibus absque men-  
sura; parentes ditantes et exaltantes, et consanguineos promoventes; in deliciis viven-  
tes; amicos dignificantes, plurimos que alios conculcantes. In Babylonia, idest Roma,  
secundum Hieronymum, Turres et Palatia aedificantes; gverras nutriendes; Partem  
tenentes in Italia, cum sit una Ecclesia; bona Ecclesiarum dissipantes; indignos pro-  
moventes; in curribus, et Elephantibus, et dextrariis, pretiosis vestibus, familia ani-  
plissima, militum et Baronum armatorum, et in mundi potentia gloriantes; Tempo-  
ralium Dominiorum aliquoties terminos invadentes; de salute animarum parum curan-  
tes. Et quid plura? quae carnis sunt sapientes. „Τὰ τῶν ὕστερον Πάπων δεινῶς τε  
καὶ ἀπερικαλύπτως ἐκτραγωδεῖται καὶ ἀπελέγχει, ὡς ἐπὶ τῇ Ῥωμανικῇ Ἀρ-  
χιερατείᾳ σφᾶς αὐτὰς εἰσώδυνται, παρεισδύντων, καὶ πρὸς βίαν παρεισδρή-  
σασθαι κατασπεδάζοντων. Ὁφελον! φησὶ, μὴ καὶ πρὸ τῆς ἀρχαιερείας τῷ  
Ἀρχίῳ ἐξωνητιῶνται, καὶ τὰ τε τῆς πράσεως συυτιθεμένων, καὶ πολλὰ περὶ  
ἐπιχινυμένων. Ἐπειτ' αὐτὰς ἐπὶ τῇ Θρόνῳ ἡδὴ ἀρθύντας, σηλογραφεῖ, ὡς τῷ  
ὑπεριστάῳ ἀπλήγως καὶ ὑπὲρ πᾶν μέτρον ἐπισωρδύοντας. Καὶ γονεῖς μὲν πλη-  
τίζοντας, τὰς δ' ἐξ αἵματος τιμαῖς γεραίροντας, καὶ ἀξιώμασιν αὐξάντας· καὶ ἐν-  
μέν Φιλέσι προάγοντας, πρὸς ἑς δ' ἄλλως ἔχουσι καταπατύντας καὶ ἐκλακτί-  
ζοντας. Αὐτὰς δὲ ἐν τρυφῇ καὶ παντοίᾳ χλιδῇ διαζώντας. Ἐν γὰρ Βαβυλῶνι,  
φησὶν, ἦτοι ἐν Ῥώμῃ, καὶ Ἰερώνυμον, Ἀνάκτορά τε καὶ Πυργοβάρεις οἰκοδομήσι  
καὶ πολέμους δὲ πολυπόουσι καὶ μάχας, τῆς Ἰταλίας μέρος ἰδίᾳ κατέχοντες,  
ὡς μὴ τῆς Ἐκκλησίας· ἔσης μιᾶς· τὰ γε μὴ τῶν ἀπανταχῇ Ἐκκλησιῶν ὕφ'  
ἐαυτοῖς ποιῶντες, διαπικρύνουσι καταχρώμενοι, καὶ τὰς μὲν ἀναξίους προσβιβά-  
ζουσι, καὶ τιμαῖς ἐξαίρετόν. Αὐτοὶ δ' ἐπὶ τεθρίππων τε καὶ Ἐλεφάντων ὀχόμε-  
νοι, περιβολαῖς προΐασι περικεκοσμημένοι πολυτελείᾳ, σίφει τε θερραπείων περιζι-  
χόμενοι, καὶ Στρατιωτῶν τάγμασι, καὶ Βασιλέων ἐνόπλων, περιτῶς τε λίαν καὶ  
φορτικῶς δορυφορέμενοι, καὶ τῇ κοσμικῇ δὲ διωάμει ἐπιγαυρέμενοι, καὶ ἐπὶ τὰς  
ἐμύρους εἴποτε τῶν ἐξωθεν διωασείας εἰσβάλλουσι, τὰ παρ' αὐτοῖς ὅρια μεταίρου-  
ντες· περὶ δὲ ψυχῶν σωτηρίας μικρὰ πάνυ φροντίζοντες. Καὶ τί δὲ πλείονων;  
ἔτσι οἱ τὰ τῆς σαρκὸς εἰσὶ σιωτοὶ καὶ σοφοὶ τυγχάνοντες.”

Τόμ. Β'.

Ε ΕΕΕΕΕ

παρὰ Τιβερίῳ τῷ Ἀψιμάρῳ Ἐξαρχος ἐπ' Ἰταλίας πεμφθεὶς ἐφί-  
κετο, τὸ ἐπ' Ἰταλίας στρατιωτικὸν, δεδιότες μή τι κακὸν ἀπειλοῖ  
ἐκείνῃ ἢ ἑλθοῖς, ὅτι πρὶν ἤδη φθάσαντες, τοῖς Ποντίφει μάλ-  
λον συγκατελάχθησαν ἢ τοῖς Βασιλεῦσιν, εἰσελθόμενον αὐτὸν εἰς  
τὴν Πόλιν σιωέθεντο ἀνελεῖν. (78) Ὅρῳς ὅπως τὰς κατὰ τῶν  
Αὐτοκρατόρων ἐπαναστάσεις ὑπεκκαίειν εἰώθεσαν οἱ Ῥώμης Πον-  
τίφικες; Ἐκ γὰρ δὴ τότε καὶ οἱ Γρηγόριοι, ὅτε Β'. καὶ ὁ Γ'.  
(79) ἀνταρσίαν προφανῇ κατὰ Λέοντος διηγεράτω τῷ Ἰσαύρῳ,  
ὥς κὴ παραιτίῳ γενέσθαι, τῷ μηκέτι πείθεσθαι, τῷ Ἰταλίαν τὰς  
ἐχούσας, μηδὲ τὰ τέλη δασμοφορεῖν. Οὕτω δὲ κὴ καθεξῆς προσεχώ-  
ρησαν. Ἄτλα γὰρ τὸ ἀπὸ τῶδε ὠφθησαν ἐπιχειρῶντες οἱ Πά-  
παι, ἔδενα δὴ οἶμαι λανθάνειν ὁπότε καὶ αὐτοὶ μετὰ Λέοντος  
τῷ Η'. τῷ Μιχαὴλ ἀντιῆλθε (80), ἐν τε στρατείαις κατήρ-  
ξαντο

- (78) Καὶ Ἰωάννης μὲν αὐτὸς ὁ ε'. (ὅς καὶ τὸ γένος ἔλκεν ἀπὸ Γραικῶν) μεσιτεύσας  
τὸ τιμικαῦτα, τὴν τε τῷ στρατιωτικῷ ἔστησεν ὁρμὴν κατὰ τὴν ἀνάστασιν, καὶ τὸν Ἐξαρχον  
Θεοφύλακτον διέσωσεν, ὡς αὐτόθι ὁ Πλάτυνας ἱστορεῖ· ἀλλ' ἔδεν ἦτον ἀληθὲς  
ἐμπης, καὶ ὅπερ ὁ ἱστορικός αὐτόθι προσέθησι: Quod milites superioribus temporibus  
fere magis cum Pontificibus, quam cum Imperatoribus sensissent. „Τὰς στρατιώτας  
„τοῖς πρὸ τῷ Ἰωάννῃ Πάπῃ τὰ πλεῖστα, ἢ τοῖς Βασιλεῦσι συμφωνήσας συμ-  
„τάσσεται... Ἐξ ἧς δὴλον τὸ ὑπὸ Ζοιρνικάδου ἐνταῦθα λεγόμενον: ὅτι οἱ Πάπαι  
κατὰ τῷ ἰδίῳ αὐτῶν Αὐτοκράτορος τοῖς στρατιώταις συμπατριάζοντες διετέλουν τὸ  
πολλὰ καὶ συσασιαζόντες.
- (79) Τῆς γὰρ τῶν Αὐτοκρατορέων Εἰκονομαχίας ἔτοι ὡς εὐπρεπὲς ἐπειλημμένοι  
προφάσεως, ὁ μὲν Β'. τὸ ἀπὸ τῆς Λογγοβαρδικῆς ἐπιθέσεως κατάλειμμα, ὁ δὲ ἐν  
Ἰταλίᾳ τῷ Κωνσταντινουπόλεως εἰσέτι Κράτει λοιπὸν ὑπέκει: Jure eripuit: („ἐν  
„δικῇ ἀρπάσας ἐσφετερίσαστο...“) κατὰ τὴν Ὀνοφρίῳ τῷ Παμβινίῳ θαυμαστῶς ψῆ-  
Φον. Ὁ δὲ Γ'. τὰ τῇ Γραικῶν ἀνήκοντα Βασιλεία, Καρόλῳ τῷ Μαργετῶν, καὶ  
Πιπίνῳ ἐξ ἧς φέρων παρέδωκεν, ἀνταρσίαν κατὰ Ῥωμαίων τῶν αὐτῷ Κυρίῳ κινή-  
σας, καὶ τοῖς Φράγκοις σιωθέμενος. Ὅρα περὶ τῶν Πλάτυνας, καὶ τῷ Ὀνο-  
φρίῳ τῷ Παμβινίῳ ἐν ἐκείνοις Παρασημείωσιν ἐν οἷς, καὶ τοι γὰρ ὑπὸ τῶν τῷ Πα-  
πισμῷ προμάχων ἐξισορευμένοι, βράδιον ἐπιγνῶναι, ὅσω ὁ τῶν Πάπων τῶν Φα-  
τρισμῶς διαφέρει, πρὸς τὸν τῷ Κηρυλαίῳ ἐκείνον παραβαλλόμενος. Ὡς γὰρ καὶ  
ὁ Ἀθιωτῶν Μελέτιος Φησὶν, (Ἑκκλησιῶν: ἱστορ.: Βιβλ.: Β'. κεφ.: Γ'.) Γρηγόριος ὁ Β'.  
„καὶ μετὰ τῶτον Γρηγόριος ὁ Γ'. οἱ τῆς Ῥώμης Ἐπίσκοποι, τοσῶτον ἀντίστησαν  
„ὑπὲρ τῶν Εἰκόνων Λέοντι τῷ Αὐτοκράτορι, ὥς αὐτὸν τε καὶ τὰς αὐτῶν ὁμολογίας  
„νας σωστικῶς ἀναθέματι καθυποβάλλειν... Καὶ τὸ μὲν μέχρι τότε ἐπὶ τοσῶ-  
τον, ἐκ ἂν ἔχοι τις ἐπιμέμφασθαι, ἀλλὰ καὶ προσεπαυμένους εἰκότως. Τὸ δ' ἐφ' ὅ-  
„ξῃς ἐκέτι καλὸν, ἐδ' ἐπαίνῃς ἄξιον· τὸ γὰρ τὰς μέχρι τότε τῇ Βασιλείᾳ κομι-  
„ζόμενος φόβος κατεχηνέαι, καὶ τὰς ὑπὸ τῶν Ἀποστόλων πεποινημέναι... ἔδεν ἂν  
„οἶμαι εὐσεβοφρονῶν αὐτοῖς ἐπιδοκιμάσειεν, ὡς θεμιτόν τε ὂν καὶ προσήκον πρόβλε-  
„πτικοῖς Ποιμέσι, καὶ τῷ Μεγάλῳ Ἀρχιεπισκοπῇ περὶ τῶν ἐποφείλεσθαι, ἐντελλομένων  
„τὰ Καίσαρες τῷ Καίσαρι ἀποδιδόναι, καὶ τὰ τῷ Θεῷ τῷ Θεῷ. Ἀλλὰ γὰρ ἔτοι  
„οἱ τῆς Πρεσβυτέρας Ῥώμης Ἐπίσκοποι, διαχάσκοντες (Φησὶν) ἐν τοῖς Κοσμικοῖς  
„Βασιλείοις, ἐπαίσαντο τότε τοῖς Φράγκοις, καὶ αἱρετοὶ αὐτοῖς γενέσθαι τῷ κυ-  
„ριεῦσαι τῆς Ῥώμης, ὡς ἐφεξῆς πλατύτερον βηθήσεται, ὅθεν κινήσεις πολέμων  
„μεγάλων ἐν τῇ Ἰταλίᾳ ἤγειραν...)
- (80) Τὸν Θ' εἰπεῖν ἐδεῖσθαι ἔοικεν ἐνταῦθα ὁ Ζοιρνικάδου· ἢ μὴ τυχὸν τῷ Η'. τῷ  
ὑπὸ Ὀτλωνος τῷ Αὐτοκράτορος ἐν ἔτει 1963. προαχθέντος, καὶ τῶν Ἀντιπάπων  
ὑπὸ τῶν Παπποσεπτῶν συγκαταλογιζομένων, εἰς Η'. ἐπεβάλετο τὸν ἀριθμὸν Θ'.  
κατατάξαι ὅπερ εἰκὸς εἶναι γενέσθαι, καὶ Ἰωάννην σεσημειώσαι τῷ Λαυνίῳ, καὶ  
Παπριῳ Μασσάνῳ, ἀνδράσι παρὰ Λατίνοις Σοφοῖς. Ἀλλ' ὅτι γὰρ Λέων ὑπὲρ τῶν

ξαντο ἐξετάζεσθαι, καὶ ὀπλοφορεῖν ἀνεβάλλοντο, καὶ συμμαχίας δημοσίᾳ σὺν ἄλλοις πρὸς ἄλλας Βασιλεῖς συσπένδεσθαι ἐκ ἡρην-  
ρίων, ἐφ' ᾧ τὴν ἑαυτῶν Ἐπικράτειαν προαγαγεῖν καὶ προσεπαυ-  
ξήσασθαι.

Διαβάλλει δὲ τὸν Ἐφέσα ὁ Ἰησαΐτης ἐν οἷς περὶ αὐτῶν διέ-  
ξαισιν, ὃδὲ γὰρ τὰ κατ' ἐκείνους ἀνωμεγμένα, ὑπὸ Γενναδίου ἀλη-  
θῶς μεμαρτύρηται τῷ Πατριάρχῃ, πέπλασαι δὲ ὑπὸ Δραπέτης  
τινὸς καὶ ἀπατεῦνος, ὃν τίς ἂν ἀξιώσειε πίσεως; (81) ἦπερ καὶ  
γὰρ ἐκείνῳ, τὰ ἐν οἷς ὡς διαπρέπων ὁ Ἐφέσα τῶν ἀρετῶν πλεο-  
νεκτήματα οἰάτινα κέντρα τὰς ὁψείας ἐτύγχανε διορύττοντα. Τίς  
δ' ἔπειτα καὶ ὁ λόγος, ὁ ἀπὸ τῆς φύσεως ἐπισκηψάσης κακώσεως,  
τὴν διαστροφὴν τῆς Πίσεως επισυνάγειν ἐπιχειρῶν; Ἀμέλει τοι  
γὰρ, καὶ εἰ ὅτως ἐτελεύτα ὁ Ἐφέσα, ὡς ὁ Δραπέτης Ἰσόρησεν  
(82) ὁ ἕτερος, μὴ διὰ τῆτο τὸν αὐτῶν θάνατον τῷ τῷ Ἀρείῃ πα-  
ραβάλλειν προσήκε, τῷ ἐκ προδήλου τῆς ἀπὸ Θεῶ δίκης ἐξάπικα  
τῷ Αἰρεσιάρχῃ ἐπενεχθέντι, καὶ ἐκ προκαταχόντος σωματικῆς  
ἀρρώστιας; Ἀλλὰ καὶ ὅσοι δὴ ἀριθμῶνται Πάπαι, οἱ αἰχλίσῳ  
μόρῳ τὸ ζῆν κατασρέψαντες; Τί δαί; μὴν ἐντεῦθεν, μῶμον τι-  
νὰ; ἢ λυμῶ ὅλως τῇ κατ' αὐτὸς δικαίως προσρίβεσθαι Ἐκκλησίᾳ  
Λατίνων παῖδες ἀνάχουιντο; ὡς δ' ἄρα δικαιότερον ἡμεῖς ἀντιπρο-  
βαλοῦμεθα Λατίνοις τὴν οἰκτρὰν καὶ ἐλεεινὴν τελευτὴν Ἰαλίου τῷ  
Καρδινάλεως; ὃς ἐπὶ τῆς ἐν Φλωρεντίᾳ Σινόδου ὑπὲρ τῆς ἀσιω-  
θῆτος Πίσεως τὸν κατὰ τῷ Ἐφέσῃ ἀγῶνα πρῶτον ἀναδεξάμενος,  
αὐτός τε ἔπειτα, καὶ περὶ τὰς ὑπὸ Θεῷ μάρτυρι γενομένης ἐνόρ-  
κως πρὸς Ὀθωμανὸς συμβάσεις ἀσιωθητήσας, καὶ τὰς ἄλλας ἅμα  
ἐπὶ τὴν ἀθεσμον ἐπιτοκίαν ἐναγαγὼν, σὺν τοσαύταις ἀνδρῶν χι-  
λιάσιν ἀθλιώτατα προσαπώλετο. Ἰδὲ σοὶ τελευτὴ οἰκτροτάτη, εἰς  
μυριάδας σωεξαμαρτανόντων τῇ ἀσιωθεσίᾳ, καὶ σωεξαπολαμμένων,  
σὺν

ὁ Θ'. κατὰ τὰς φερομένης τῶν Παπῶν Καταλόγους, ὁ ὑπὸ Ἑρρίκου Γ'. τῷ Αὐτοκρά-  
τορ ἐν ἔτει 1408. εἰς Πάπαν προχειρίσας, ἔπερ ὧδε Ζοιρηνιάσιος ἐμνήσθη, ἐξ αὐτῶν  
τῶν Ἰσορηθέντων συνίσταται. Οὗτος γὰρ ὡς Λέων ὁ Θ'. ὁ Φιλονείκος ἄγαν καὶ  
σφοδρῶς κατὰ Κηρυλαίον διατεθείς, καὶ ἀφορίσας, καὶ ἀμοιβὰδὸν ὑπ' αὐτῷ ἀντα-  
φορίσας (ὅρα ἐν Πραγματ. Ζ') ἔτος ὁ μάλιστα περὶ ὅπλα καὶ ἐκτρατείας συβ-  
δάσας· ἔτος ὁ καὶ ἐν Ἀπυλίας κατὰ τῶν Νορμαννῶν στραταρχήσας· ὃς καὶ τὰ  
τῷ Ἀρεῶς ἐπὶ τῆς συμβολῆς αὐτεργῶν ἐτράπη, καὶ ζωγρίας ἐάλω, καὶ ἄλλας εἰς  
Βενεβεντόν ἀπέρχθη· ὃθεν ἀπολυθείς ἔτει 1054. Μαρτίῃ 12. κλινοπετῆς τε ἀνα-  
κομιθεὶς ἐπὶ Ῥώμης ἐνθα τελευτάσας, τῷ ἐφεξῆς Μιῶς Ἀπριλ. 19. τὸ ζῆν κα-  
τέστρεψεν. Ἐφ' οἷς, καὶ τὰς δικαιοτάτας ἐλέγχους ὑπέστη παρὰ Δαμιανῶ Ἀνδρὸς  
ἐν ἐσιότητι ὑπολήψει παρὰ Λατίνοις.

(81) Ὅρα ἐν τῇ Β'. Πραγματ. Παραφθ. ΙΒ'. καὶ τὴν ἐκεῖ Σημείωσιν: (76).

(82) Ἰωσήφ ὁ Μεθώνης, ὃς Γραικὸς τὸ γένος τοῖς Λατίνοις σιωφεατρίαζε, καὶ τοῖς  
ἐν Μεθώνῃ Λατίνοις χρηματίζων διετέλει τὰ εἰς Ἐπίσκοπον.

Ε ΕΕΕΕΕ 2



σὺ αὐτῷ αὐτῶν τῷ Ἀρχηγέτῃ Ἰβλιανῷ, ἐλεεινῶς κατασφρα-  
σα· (83)

ὑποσυνάπτει τέτοις προσέτι ὁ Ἰησοῦτης (84), ὅτι διέξισιν  
ἈΝΑΣΤΑΣΙΟΣ, μόνος τῶν ὀρθοδόξων εἶναι ἐν καταχέσει τῶν  
Ἱερῶν τόπων ἐν οἷς ἡ Σωτηρία ἡμῶν διεπράχθη. Ἀλλὰ καὶ τὸν  
τῆς Ναζαρετ οἶκον ἐπ' Ἰταλίας ὑπ' Ἀγγέλων μελακομιθῶναι, μαρ-  
τύριον οἶον ἐσόμενον τῆς ὀρθῆς τῶν Λατίνων Πίστεως περὶ τῶν  
τέτων ἀμφοτέρων φθάσαντες εἵπομεν. Μαλλον δὲ καὶ προσίθωσιν  
αὐτόθι (λέγει) Ἀναστάσιος: „Εἰ ἀνὸς βίας, ἀνὸς τε δόλος καὶ  
χωρία ἐκείνα κατέχουσιν· εἰ δὲ ἐπαγάγοιτε (Φησὶ) τυραννικὴ βία  
τῶν χωρίων ἡμῶν ἐκείνων κατακρατεῖν, ὁδὸν ἔργον ψευδομένης  
ὑμᾶς ἀπελέγξαι. Ἰδὲ γὰρ καὶ τῶν βαρβάρων ἤδη, τῶν Ἱερῶν  
ἐκείνων χωρῶν κατὰ κυριότητα, ἐκ ὠχέου Θεὸς ἡμᾶς αὐτὰς  
ἀφαιρεθῶναι. — Ἀλλ' οἱ Λατῖνοι τὴν Παλαιστίνην πάλαι ὑφ' ἐαν-  
τῶν ποιησάμενοι, τῶν πρὶν κατέχοντας Γραικοὺς πρὸς βίαν τῶν  
Ἱερῶν τόπων ἐκείνων ἀπεξήλασαν· μετὰ δὲ ταῦτα ἐκ ἄλλως, ἢ ἐπὶ  
δώροις ἀδρόις, καὶ ἀμυνθῆναι ὅσην καταβολὴν χρημάτων, ἔστιν ἂν  
τῶν χωρίων σφίσι παρὰ τῶν βαρβάρων ἐξωνησάμενοι, τὴν ἀπ'  
ἐκείνων κτήσιν κατὰ Γραικῶν ἡσφαλίσαντο. (85) Ἀλλὰ μὴ τοι-  
αῦτέ τις ὡς καὶ ἡ τῶν Ἱερῶν τόπων κληρονομία, ὡς ὁ Συναΐτης Ἀνα-  
στάσιος ἐν ἐκείνοις διετάνετο κατὰ τὴν Αἰρεσιόφρονος;

Ἀντιφέρει ἐφεξῆς ὁ Ἰησοῦτης (86) τὴν τῆς Γραικῶν Βασι-  
λείας κατάλυσιν· ὅ γὰρ ἐνεκά γε τῶν ἐξημαρτημένων, Φησὶ  
τοῖς

(83) Μεράτεω γὰρ μεταξὺ τῶν τότε Αὐταρχήντος τῶν Τέρκων, καὶ Πασιάνων δὴ καὶ  
Δακῶν τὰς ἐν ὄρεσι Φρικώδεσι γενομένης σποδῆς, ὡς δὴθεν ἀκύρες ἔσας, παρὰ  
τὸ ἀγνοεῖν τὴν κατ' ἐκείνο Πάπαν γενέσθαι, ὁ Καρδινάλιος Ἰβλιανὸς ἀνεκέρυξε Φρι-  
κῶν, καὶ τῶν πόλεως συγκροτήσας ἐγγὺς τῆς πόλεως Βάρενης, τῆς τε τῶν Χριστιανικῶν  
δυνάμεων πανολεθρίας ἐγένετο πρὸς ἐξουσίαν παρὼν δὲ καὶ αὐτὸς τῇ μάχῃ, τῆς πα-  
ραπονήσεως τὰ πῆλιν ἀπὸ τῆς ἐκείνου ὑπὸ γὰρ Τέρκων ἐν τῇ τροπῇ, ἢ, ὡς αἱ  
Φασὶν, ὑπὸ Οὐγκρων αὐτῶν οἷς ὡς συστράτευον, ἀνήρηται (ὅρα Χαλκοκονδυλάου  
Ἱστορ: Βιβλ: 5. καὶ 2. Καὶ Αἰν: Σύλβ: ἐν τῇ Καταστάσει τῆς Εὐρώπ: Κεφαλ:  
Α'. καὶ Δ'. Καὶ Ἐπισ: μδ', καὶ ια'. Καὶ Κράνζ: Βιβλ: Β'. τῶν Οὐανδαλικῶν  
καὶ ἄλλων.)

(84) Αὐτ: αὐτ: Σελ: 95.

(85) Ὅπως δὲ, ἐν καταχέσει τῶν ἐν Παλαιστίνῃ Ἱερῶν χωρίων οἱ Λατίνων Φράτορες  
εἰσὶν, ὧν δὴ καὶ εἰσὶν ἔτις μαθεῖν ἐφίεται διελθέτω τὸν μετὰ τὰ Ἀντιφρήτικα  
ἐκδοθέντα λόγον τῶν Ἱεροσολύμων Πατριάρχων Κυρῶ Νεκταρίου, ἀπὸ Σελ: 216 — 252.  
Καὶ πρὸς τέτοις καὶ τὰ Δοσιθέου τῶν ἐκείνων διαδεξαμένων, ἐν τοῖς περὶ τῶν ἐν  
Ἱεροσολ: Πατριαρχουσάντων, Βιβλ: ΙΒ'. Κεφαλ: Α'. §. 6. καὶ γ'. καὶ δ'. καὶ  
Κεφαλ: Γ'. §. 8. καὶ Κεφαλ: Ε'. §. 5. καὶ Κεφαλ: 5. §. 6. γ'. δ'. καὶ  
Κεφ: Η'. §. 6. γ'. δ'. ε'. ζ'. η'. θ'. καὶ Κεφαλ: Θ'. §. 8. καὶ Κεφ: ΙΒ'.  
§. 4. γ'. δ'. καὶ Κεφαλ: ΙΓ'. §. 4. Οἱ γὰρ Ἀσίδιμοι ἔτι Πατριαρχοὶ ἀξί-  
πιστοι εἰσὶν ἐπὶ προσώπῃ πάσης τῆς γῆς διατραγῶντες τὰ ὑπὸ τῶν Λατίνων  
ἐν Ἱεροσολύμοις δεινὰ, ὧν αὐτοὶ σύγχρονοι γεγονότες, καὶ ἐπὶ τῆς ἐκείνῃ Ἀποστολῇ  
καὶ Καθέδρας ἐπαγρυπνεῖν παρὰ Θεὸν ταχθέντες, τὸ πλεῖστον μέρος ἐργάσαντο.

(86) Ὁ Αὐτ: Κιχώβ: Σελ: 97.



τοῖς Γραικοῖς ταύτῃ συμβῶναι, πλείονα γὰρ ἐγένοντο καὶ ἄλλὰ τῶν ἐθνῶν εἰς Θεὸν ἀμαρτήσαντες· διὰ δὲ τὸ Σχίσμα, καὶ τὸ διατείνεσθαι τὸ Πνεῦμα ἐκ μόνου τῷ Πατρὶ ἐκπορεύεσθαι, τῷ τῷ Κράτει αὐτοῖς γείνεσθαι καταστροφῇ. Παραπλήσια δὲ ταῖς καὶ ἕτεροι τῶν Λατίνων φασιν. (87) — Ἀλλὰ πόθεν, εἰπέ μοι: ἡ τῶν Ἀφρων ἅπαντα Ἐκκλησία, Λατινικὴ ἔμπης αὐτῇ τυγχάνουσα, ἐν ἣ ποτε ἑκατοσῦες ὅλοι κατηριθμῶντο Ἐκκλησιῶν, ἢ μόνον, ὡς ἡ τῶν Γραικῶν ἀρθείσης αὐτοῖς τῆς Βασιλείας, τῇ θλίψει ὑποπεπτωκυῖα ἐγένετο, ἀλλ' ὑπὸ τῶν αὐτῶν βαρβαροθρήσκων ἐθνῶν ἄρδῃ ἐξήλειπται; Εἰ δὲ διὰ τὸ τῷ Αἵρεσιν νοσῆσαι τῷ Ἀνατολικῷ Ἐκκλησίαν, ἡ τῶν Γραικῶν Ἀυτοκρατορία καθήρηται· τίς χάριν εἰπέ μοι: εἰς τοσόντον ἔπειτα διωάμεως, καὶ τηλικόντος μεγέθους Ἀρχῆς ἀπεράντης, τὴν Μόχων Δέκας ὁ Ὑψιστος μεγαλιώδης ἐξῆρεν, ὡς ἐπὶ μακρῷ ἐνυχωροτέρων Ἐπαρχιῶν τε καὶ Γαιῶν τὰ νῦν τὸν Ῥώσων Μοναρχόν τε καὶ Ἀυτοκράτορα βασιλεύειν, ἢ ὧν οἱ πάσαι δεσπόζοντες ἐγένοντο, ἐπὶ πάσης Γραικίας τε δὴ καὶ Ἀνατολῆς, Γραικῶν Ἀυτοκράτορες; Καὶ μὴ τῷ αὐτῷ τυγχάνει πρεσβεύουσα Πίστις ἡ τῶν Ῥώσων Ἐκκλησία τῇ τῶν Γραικῶν. Τοιγαρὲν ἔχι διὰ Αἵρεσιν, διὰ δὲ τῷ πληθυσθῆσαν ἐν αὐτοῖς ἀνομίαν, ἀφείλετο ὁ Θεὸς τὸ Κράτος ἀπὸ Γραικῶν. Οὐδέ τι τὸ παράπαν ἐνέσκηκε τὸ ἄλλως τυχόν ἐπὶ πλέον γενέσθαι ἑξαμαρτήσαντας. Ἐμελλε γὰρ δηλονότι καὶ ἐπὶ τῷ ἐξαίρετῳ προσάτῃ τῷ Ἀντιχρίστῃ, καὶ πολλὰς μὲν τῶν ἀκραιφνῶς εὐσεβούντων εἰς πείραν ἦξεν τῆς καταδωασείας καὶ θλίψεως· τὰς δὲ εἰδωλολατρῶντας, καὶ ἀνθρωποκτόνους, καὶ φαρμακούς, καὶ πόρνους, καὶ κλέπτας, κτ.: τὰς ἐκείνους διαφύξεσθαι χεῖρας· ἔτω καὶ γὰρ ἐν τῷ Θ'. Κεφαλ.: τῆς Ἀποκαλύψ.: 20. καὶ 21. „Καὶ οἱ λοιποὶ τῶν ἀνθρώπων, οἳ ἐκ ἀπεικρίστησαν ἐν ταῖς πληγαῖς ταύταις, ἔτε μετένοησαν ἐκ τῶν ἔργων τῶν χειρῶν αὐτῶν, ἵνα μὴ προσκωήσωσι τὰ δαιμόνια, καὶ τὰ εἰδῶλα τὰ χρυσᾶ, καὶ τὰ ἀργυρᾶ, καὶ τὰ χαλκᾶ, καὶ τὰ λίθινα, καὶ τὰ ξύλινα· ἃ ἔτε βλέπειν δώαται, ἔτε ἀκῆν, ἔτε περιπατεῖν καὶ ἢ μετενόησαν ἐκ τῶν φόνων αὐτῶν, ἔτε ἐκ τῶν φαρμακῶν αὐτῶν, ἔτε ἐκ τῆς πορνείας αὐτῶν, ἔτε ἐκ τῶν κλεμμάτων αὐτῶν,.. Καὶ πάλιν ὁ Θεὸς διὰ Ἰεζεκιὴλ Κεφαλ.: ΛΟ'. 23. καὶ 24. δείξεν ἐθέλων τίς χάριν τὴν γνησίαν καὶ ἀλικρινεῖς τῷ εὐσέβειαν, ταῦτόν εἰπεῖν

(87) Πρὸς Λατίνους, τὴν ἐπὶ τῇ προσκαίρῳ ἑκκλησίᾳ τῷ κοσμικῷ Κράτει ἔτω βρενθυομένους, καὶ τῷ τῷ ἡμετέρῃ Γένει κατεπονειδίζοντας θλίψιν τε καὶ ταπείνωσιν, εὐθίκτως μάλα ἔφθη ἀπαντήσας Ἰωσήφ ὁ Βρυέννιος, ἐν τῷ Συμβολικῷ Λόγῳ, τῷ περὶ τῆς ἐνώσεως τῶν Ἐκκλησιῶν ἐν Τόμῃ Α'. τῶν Συγγραμμάτων τῶν ἐν Λαψία τύποις ἐκδοθέντων, Ἐτὶ 1768. Σελ.: 477 — 480.

Τόμος Β'.

Z 55552

ἅπαν τὰς Ὀρθόδοξας Χριστιανὰς, παρέδωκε τῷ διώκτῃ αὐτῶν. Ἐπειτα δὲ τὰς αὐτὰς, ἀπὸ τῆ ἀριθμὸν ἔκ ἔχοντος στρατῶ τῆ Γῶν καὶ Μαγῶν, πῦρ ἀπ' ἑρᾶν καταπέμψας αὐτίκα ἐρρύσατο, μόνων μέμνηται τῶν ἐν ἀμαρτίαις σωλημμένων: „Καὶ γνώ-  
„σονται γὰρ, Φησὶ, πάντα τὰ ἔθνη, ὅτι διὰ τὰς ἀμαρτίας  
„αὐτῶν ἠχμαλωτὸύθησαν οἶκος Ἰσραὴλ, ἀνδ' ὧν ἠθέτησαν εἰς  
„ἐμέ· καὶ ἀπέσρεψα τὸ Πρόσωπόν μου ἀπ' αὐτῶν, καὶ παρέδωκα  
„αὐτὰς εἰς χεῖρας τῶν ἐχθρῶν αὐτῶν, καὶ ἔπεσαν πάντες μα-  
„χαίρα· κατὰ τὰς ἀκαθαρσίας αὐτῶν, καὶ κατὰ τὰ ἀνομήματα  
„αὐτῶν ἐποίησα αὐτοῖς· καὶ ἀπέσρεψα τὸ Πρόσωπόν μου ἀπ'  
„αὐτῶν, „. Οὗς γὰρ ἀγαπᾷ μᾶλλον Κύριος, καὶ τῶν ἄλλων τά-  
χιον παιδεύειν ἔωθεν. Οὕτω γὰρ ὁ Ἀπόστολος πρὸς Ἑβρ.  
Κεφαλ: ΙΒ'. 5. „Τίμεν, μὴ ὀλιγώρει παιδείας Κυρίου, μηδὲ  
„ἐκλύει ὑπ' αὐτῆ ἐλεγχόμενος· ὃν γὰρ ἀγαπᾷ Κύριος παιδεύει·  
Καὶ ἐν τῷ Γ'. δὲ Κεφαλ: ΙΘ'. τῆς Ἀποκαλύψ: ταῦτα ἀναγι-  
νώσκεται: „Εγὼ, ὅσας ἐὰν φιλῶ, ἐλέγχω καὶ παιδεύω· ἐήλω-  
„σον ἔν, καὶ μετανόησον, „.

Ἄλλ' εἰ τοιῶδε λόγῳ οἱ Γραικοὶ δίκας ἔτισαν τὰς ἀξίας, ἔδεν ἥττονα τὴν ποινὴν μέντοι, καὶ τῇ Λατινίδι Ἐκκλησίᾳ τὸ Θεῖον δίκας ἐπέθετο: τοσέτων μὲν ἐξ αὐτῆς Βασιλειῶν, τοσέ-  
των δ' Ἑθνῶν, τοσέτων δ' Ἐπαρχιῶν, διὰ ΛΟΥΘΗΡΟΥ πρώτου ἀρχηγότησαντος, ἀπεχοιτισμένων ἐξ ἧ δὴ, τοσαῦτα Λατίνοις ἀνέφυσαν ἔπειτα αἱματηραῖ τε διαμάχαι καὶ διασάσεις, ὡς πλέ-  
ονας ἐντεῦθεν ἀπολέσθαι, τῶν δὲ οἱ Τερκοὶ ἀνὰ σύμπασαν τὴν Ἑλλάδα μαχαίρας ἔργον ἐποίησαν. Καὶ ἵνα δὲ τέως καὶ τότε προθήσωμεν, παραπλησίως καὶ τὸ Λατίνικόν ἐπαιράθῃ τῆ δαίμονος, ἐπὶ τῆς ἐν Ἱεροσολύμοις αὐτῆς ἐπιδωασύσεως ἧς, πολλαῖς μὲν μυριάσι λαῶν ἀπολωλότων περιγενόμενοι, ἔκ ἐλάττωσι δὲ καὶ ὑπεραμυνόμενοι προσκτηθείσης, ἐντὸς ἧ πάνυ μακρῶν ἐκπεπτώ-  
κασι χρονικῶν περιόδων, δι' ἀμυθήτη ὅση πλήθος ἀνθρώπων κα-  
ταστροφῆς καὶ ὀλέθρου. Πῶς ἔν ἄρα τὸ Γραικῶν Κράτος, τὸ ὑπὸ τῶν βαρβάρων καταλυθὲν, εἰς τεκμήριον τῆς αὐτῶν κακοδοξίας ληφθήσεται;

Ἄλλ' ὁ Ἰησαΐτης προσέθῃσιν: Ὅτι ἡς περ εἰς τὸ Ἄγ: Πνεῦ-  
μα οἱ Γραικοὶ προέσκησαν Αἰρέσεως, ταύτης γε ἕνεκα, καὶ ἡ Κων-  
σταντῖνα πόλις αὐτοῖς ἐάλω κατ' αὐτὴν τὴν ἑορτὴν τῆς Πεντη-  
κοστῆς. „Δείκνυθαι γὰρ δὴ τῆτο ἔχαιν Φησὶν, ἐξ αὐτῆς τῆς  
„τῆ Ἄσσεως ἀλώσεως, καὶ τῆς τῆ Ἀνατολικῆς Κράτης ἀνατροπῆς.  
„Οὐδὲν ἐνλαῦθα, Φησὶν, ἀπὸ Λατίνων ληφθὲν διαλείνομαι. Ἀνέ-  
„σθω Γραικὸς Ἄνθρωπος, ὁ καὶ πρῶτος ὑπὸ τῇ Τερρικῇ αἰχμαλω-  
„σίᾳ Πατριαρχούσας ἐν Κωνσταντινῇ πόλει Γεννάδιος, ὃς καὶ τῆ  
„τοιῶδε ὀλέθρου αὐτόπτης ἐγένετο. Ἐξ ἧ γὰρ, Φησὶ, Νικόλαος  
„Ε'.

„Ε'. ὁ Πάπας Κωνσταντίνω ἐπισέλλων τῷ Αὐτοκράτορι, ἐν "Ετει  
 „1451. τῷ ἄλλωσιν προανεφώνει τοῖς δε τοῖς ῥήμασιν: "Ετη τρία  
 „περιμενῆμεν, εἴαν τυχὸν ἀπὸ τῆ Σχίσματος καὶ τῆ χωρισμῆ  
 „ἐπιστρέψῃτε· εἰ δὲ μὴ γε ἀπολείθαι, ὡς ἂν μὴ καὶ τῷ γυν εἰς  
 „κενὸν καταργῇτε κτ: Τοιγάρην καὶ τῆ τρίτη ἀπὸ τῆς ἀπει-  
 „λῆς ἐνιαυτῆ διαγενόμενα· τετέσι κατὰ τὸ 1453. κατ' αὐτῷ  
 „τῆς Πεντηκοστῆς τῷ Ἑορτῷ, (ὡς πολλοὶ τῶν κατ' ἐκείνο τῆ  
 „χρόνου περιόντων Ἱστορικῶν ἐπιμαρτυροῦσιν) ἐάλω ἡ Κωνσταντι-  
 „νούπολις, „.

Περὶ μὲν ἔν τῶν ὡς ἐκ τῆ Σχολαρίᾳ ἐπενεχθέντων ῥημά-  
 των, ὡς ἔχῃ τῆ τιμικαῦτα ἐν Κωνσταντινουπόλει Πατριαρχεύσαν-  
 τος τὰ ῥήματα ταῦτα· ἀπατεῶνος δέ τινος, καὶ ἐξ ἀποσασίας  
 πρὸς Λατίνους αὐτομολήσαντος ὑπῆρχεν, ἐξῆς εἰρήσεται. Οἰκο-  
 θεν δὲ προσίθῃσιν ὁ Ἰησοῦτης, τὸ κατὰ τῷ Ἑορτῷ τῆς Πεν-  
 τηκοστῆς ἀλῶναι τῷ Κωνσταντινέπολιν· ἔ γὰρ ἔδὲ ταῦτα τῆ  
 Σχολαρίᾳ ἐσί. Παραπλήσιά γε μὴν τέτοις καὶ ἄλλοι τῶν Λατί-  
 νων περιθρυλλῶσιν. Οἶον ΒΕΛΛΑΡΜΙΝΟΣ ἐν Βιβλ: Β'. περὶ  
 τῆ Χρυσῆ, Κεφαλ: Α'. „Ἰνα σωιωῖσιν, ὅτι τῆς αὐτῶν ἀπωλείας  
 „παραίτιος ἡ περὶ τῷ εἰς τὸ "Αγιον Πνεῦμα κακοδοξίαν αὐτῶν  
 „ἰχυρογνωμοσιῇ, κατ' αὐτῷ τῷ Ἑορτῷ τῆ Ἁγίᾳ Πνεύματος  
 „ἡ Κωνσταντινούπολις ὑπὸ Τέρκων ἐάλω· ὃ, τε Αὐτοκράτωρ ἔργον  
 „μαχαίρας ἐγένετο, καὶ τὸ Κράτος ὅλον ἐξήλειπται. Ὡς γὰρ  
 „Γεράρδος ἀποδέκνυσιν ὁ Μεσκάτωρ ἐν τῇ αὐτῆ Χρονολογίᾳ, ἐν  
 „Ετει 1452. τῇ μὲν 28. Ματίᾳ, ἐπέταξε Μωάμεθ παντὶ τῷ  
 „Σρατῷ τῷ ἐχάτῳ ἐκπορεύσιν, τῇ δ' ἐφεξῆς ἡμέρᾳ τῷ Κων-  
 „σταντινέπολιν εἶλε. Κατὰ δὲ τὸν ἐνιαυτὸν ἐκείνον ἡ Πεντηκοστὴ  
 „ἐτελεῖτο τῇ 28. Ματίᾳ· ὡς ἐκ τῆ Χρυσῆ ἀριθμῆ, καὶ τῆ Κυρι-  
 „ακῆ Γράμματος δῆλον, ἐξ ὧν αἱ κινέμεναι ἀνυδρίσκονται τῶν  
 „Ἑορτῶν. Ἦν δὲ Χρυσῆς μὲν ἀριθμὸς ὁ 9. Γράμμα δὲ Κυρι-  
 „ακὸν τὸ Α'. Τοιγάρην καὶ πολλοὶ τῷ Γραικῶν Ἐκκλησίαν τῇ  
 „τῶν Σαμαρειτῶν Βασιλείᾳ παρατιθέασιν, ὡς ἀποχιθεῖσαν μὲν  
 „τῆ ἀληθινῆ Ναῖ, εἰς αἰχμαλωσίαν δὲ τέως ἀπενεχθεῖσαν.  
 „Καὶ ἐν τῷ Β'. δὲ τῆς Χρονολογίας μέρε: ἡ Κωνσταντίνου πόλις  
 „ἀλίσκεται ὑπὸ Τέρκων, ἐν "Ετει 1452. κατ' αὐτῷ τῷ Ἑορτῷ  
 „τῆς Πεντηκοστῆς· ἔτω τῆ Θεῆ δίκας εἰσπραξαμένᾳ Γραικῆς, ἐπὶ  
 „τῇ κακοπισίᾳ τῇ περὶ τὸ Δόγμα τῆς τῆ Ἁγίᾳ Πνεύματος καὶ  
 „ἐκ τῆ Τίτ' Ἐκπορεύσεως, „. Ἀλλὰ καὶ ὁ Ἰησοῦτης ΚΟΡΝΗΛΙΟΣ  
 „ὁ ἁ - Lapide ἐν τῷ εἰς τὸ Β'. Κεφάλ: τῶν Πράξ: Ὑπομνήματι:  
 „Καί, ὡς ἂν μηδεὶς ἔχοι ἀμφιγνοεῖν, τῆς Γραικῆς ἐπὶ τῇ εἰς  
 „τὸ "Αγιον Πνεῦμα βλασφημίᾳ τοιαύτας ἀποτίσκαται δίκας, ἐάλω  
 „μὲν ἡ Κωνσταντίνου πόλις ὑπὸ Τέρκων, ἀνήρηται δὲ καὶ Κων-  
 „σταντῖνος ὁ τῶν Γραικῶν Αὐτοκράτωρ, ἄρδω δὲ καὶ ἡ τῶν  
 Ζ ζζζζζ 2 „Γραι-

„Γραικῶν ἐρήρεπται Βασιλεία, κατὰ τὴν τρίτην τῆς Πεντηκοστῆς  
 „ἡμέραν, Ἐτε Χρῑςθ 1453. κτ: Τὰ δ' αὐτὰ δὴ προτείνει, καὶ  
 τῷ εἰς τὴν Ἀποκάλυψιν Ὑπομνήματι, Κεφαλ: Η'. 8. καὶ 9.  
 Ὁμοίως δὲ καὶ ἄλλοι.

Καὶ Πρῶτον μὲν ψευδὲς πάντῃ τὸ ὑπὸ Κορνηλίῃ τῇ Ἀ-  
 Lapide ὑποτιθέμενον, καὶ παρὰ τοῖς ἄλλοις τῶν Λατίνων κρα-  
 τῆν, ὡς ἡ Κωνσταντινέπολις πέπτωκεν ἀλῆσα τῇ τρίτῃ τῆς  
 Πεντηκοστῆς. Καὶ γὰρ θῶμεν ἐπὶ τῇ 1452. Μαΐου 29. τὴν  
 Πόλιν ἀλῶναι, ὅδ' ἔτω τῇ τρίτῃ, τῇ δὲ δευτέρᾳ τῆς Πεντηκοστῆς,  
 ἔπετα συμβῶναι τὴν ἄλωσιν. Ἐν γὰρ τῷ ἐνιαυτῷ τῷ 4<sup>τῳ</sup> ἢ τῆς  
 Πεντηκοστῆς πρώτη ἡμέρα σωέβαινε Μαΐου 28. ὡς διὰ τῶν προε-  
 πενεχθέντων ἐδείκνυε Βελλαρμῖνος· ἢ ἄρα ἐφεξῆς 29. Μαΐου,  
 ἢ δευτέρα τῆς Ἑορτῆς ὡ, ἔχ ἢ τρίτη. Καὶ γὰρ καὶ τὸ Πάχα  
 κατὰ τὸν Ἑνιαυτὸν ἐκείνον σωέπιπτεν Ἀπριλ: 9. Ἄρα ἢ  
 Μαΐου 28. ἢ τῆς Πεντηκοστῆς πρώτη ὡ, ἔχ ἢ δευτέρα.

Ψεῦδος δὲ προσέτι καὶ τὸ τὴν Πόλιν ἀλῶναι κατὰ τὸ 1452.  
 ὡς ἐντεῦθεν τῇ δευτέρᾳ τῆς Ἑορτῆς, ἢ γὰρ ἐν αὐτῇ τῇ Ἑορτῇ  
 τῆς Πεντηκοστῆς λέγειν ἔχειν Λατίνους τὴν Πόλιν ἐκλωκέναι.  
 Ἐάλω γὰρ αὕτη τέως τῷ ἐφεξῆς Ἐτε 1453. τῇ 29. Μαΐου  
 καθ' ὃ δὴ Ἐτος, ἔκ ἐν τῇ 28. ἢ 27. Μαΐου ἢ πρώτη εἰέπιπτε  
 τῆς Πεντηκοστῆς, ἀλλ' ἐν αὐτῇ τῇ 20. Διὸ δὴ μετὰ ἡμέρας  
 ὀκτῶ, ἀπὸ τῆς τρίτης ἡμέρας τῆς Πεντηκοστῆς ἡ Κωνσταντινέ-  
 πολις ἐκπεπόρθηται. Τῇ γὰρ Ἐτε ἐκείνῃ τὸ Πάχα κατὰ τὴν  
 πρώτῃ Ἀπριλ: σωέβαινε· ὅθεν καὶ τῆς Πεντηκοστῆς τὴν πρώ-  
 τῃ τῇ 20. Μαΐου σωελθεῖν ἐπάναγκες ὡ. Ὅτι δ' αὐτὸς ὑπῆρ-  
 ξεν ὁ καθ' ὃν ἡ Κωνσταντῖν ἐάλω ἐνιαυτὸς, οὔτε κατ' ἐκείνο  
 περιόντες τῷ βίῳ, καὶ οἱ ἐγγὺς ἐπιγεγονότες Συγγραφεῖς ἀπαν-  
 ταχῶς μαρτυροῦσιν ἅπαντες. Οἷς περ καὶ οἱ Νεώτεροι τῶν παρὰ  
 Λατίνους Χρονολόγων κοινῇ σωάδοσι. Μόνοι οἱ κατὰ τὸ μεταξὺ  
 παρελάσαν τῷ χρόνῳ γεγονότες, τοιαῦτα τετολμήκασιν ἀναπλά-  
 σαθαι, ὡς δὴ μᾶλλον τὴν ἰδίαν δόξαν ἔτως ἐπισυστήσαντες.  
 Λήρως γὰρ ὡ ἐκπιπράσκων ὁ τοσάκις ἀπομνημονοθεῖς ἡμῖν  
 Ἰησούτης Κιχώβιος, ἐπιδὰν ἐγγὺς ἀνωτέρω πολλὰς τῶν ὁμο-  
 χρόνων ἱστορικῶν αὐτὸ τῷτο συμμαρτυρεῖν ἔφασκεν, ὅποτε τῇ  
 ναντίον οἱ πάντες, κατὰ τὸ 1453. τὴν Πόλιν τὴν Κωνσταντῖν  
 ἀλῆσαν ἔθεντο. Οὐ γὰρ τῇ 1452. ἀλλ' ἐπὶ τῇ 1453. ἢ Μαΐου  
 29. τῇ Ἑορτῇ τῆς Πεντηκοστῆς ὡ συμπέπτωσα.

Ὁ μὲν ἔν ΦΡΑΝΖΗ'Σ, ὅς καὶ παρὼ τῇ πολιορκίᾳ, ἐν  
 τῷ Γ'. Βιβλ: τῆς Ἰστορ: Κεφαλ: ΙΖ'. „Οἱ Τῆρκοι, φησὶ, τὴν  
 „πόλιν ὅλως ὑπὸ χεῖρα πεποῖωται τῇ τρίτῃ τῆς Ἑβδομάδος,  
 „ἐν ὧρα τῆς ἡμέρας τρίτης σὺ ἡμῖς. Ἐτε δὲ, ἀπὸ μὲν Κτί-  
 „σεως 6961. ἀπὸ δὲ Χρῑςθ 1453. τῇ 29. Μιῶς Μαΐου...  
 Καὶ



Καὶ αὐτὸς ΣΧΟΛΑΡΙΟΣ, πρὸς ἃ τὴν μαρτυρίαν ὁ Ἰησὺς ἡμᾶς ὡς προκαλούμενος ἢ, ὅσις ἐν ἑτέρῳ εἴη ὁ Συγγραφεὺς ἐκεί-  
 νος, ἐν τῷ Ε'. Βιβλ: τῆς ὑπὲρ τῆς ἐν Φλωρεντίας Σιωδὸς Ἀπο-  
 λογίας, Τμήματι ΙΔ'. „Ὡς μεγάλης συμφορᾶς! ἐν μὲν τῷ  
 „1451. Ἐτε, ταύτῃ ἐγράψε τὴν Ἐπιστολὴν ἐν δὲ τῷ 1453.  
 „ἐάλω ἡ Κωνσταντινὸς πόλις... Ὁ δὲ ἈΝΤΩΝΙΟΣ ὁ Φλωρεντίας  
 Ἐπίσκοπος ὁ κατ' ἐκείνους χρόνους συγγράφων, ἐν Τίτλ: ΚΒ'.  
 Κεφαλ: ΙΓ'. Μέρ: Γ'. „Ἐν Ἐτε Χριστῷ 1453. ἡμέρᾳ Μαΐου 29.  
 „ἐάλω ἡ Κωνσταντινὸς πόλις ὑπὸ τε Τέρκων καὶ τῆ Βασιλέως  
 „αὐτῶν... ΦΡΑΓΓΙΣΚΟΣ δὲ Φώσκαιος ὁ τῶν Ἑνετῶν Δῆξ,  
 ἐν Ἐπισ: τῇ πρὸς Φριδερίκον τὸν Γερμανῶν Αὐτοκράτορα, ἥτις  
 „ἐν ταῖς Αἰνεῖς τῆ Συλβίς Ἐπισ: ἀριθμεῖται ΡΝΘ'. ἐκπεπολιορ-  
 „κῆται γράφει τὴν πόλιν Μαΐου 29. τῆ ἐγγύς ἦτοι τῆ παρελ-  
 „θούσης... Ἀλλ' ἡ Ἐπιστολὴ αὕτη ἐπεδόθη ἐν Ἐτε 1453. Ἰν-  
 „δικτιῶνος Α'. ἡμέρᾳ 29. Ἰαλίου. Οὕτω δὲ καὶ ΛΟΜΒΑΡΔΟΣ  
 ὁ Χῖος, ὁ καὶ αὐτὸς ὡσαύτως ἐν τῇ πολιορκίᾳ παρατυχών.  
 Οὕτω καὶ ΛΑΟΝΙΚΟΣ ὁ Χαλκοκοδύλας, ὃς ἐν τῷ Η'. Βιβλ:  
 τὸ τρίτον ἔτος τῆς τῆ Μωάμεθ Βασιλέως ἐπισημεῖται. Καὶ  
 Αἰνεῖας μὲν ὁ Σύλβιος, ἐν τῷ περὶ τῆς Εὐρώπης Βιβλ:  
 Κεφαλ: Ζ'. ὅπως ἔχεν ἀναγινώσκειται: „Ἐπίσημος ὁ ἐνιαυτὸς  
 „ἔτος ἐγένετο, διὰ τὴν τῆς Κωνσταντινῆς πόλεως ἐκπολιόρκησιν  
 „Χριστιανοῖς μὲν αἰχρὸς ἔτω καὶ θριώων ἀξίος, τῷ δὲ τῶν Τέρ-  
 „κων ἔθνη ὅπως αἰσιος καὶ φειδρός ὃς ἀπὸ τῆς τῆ Σωτήρος  
 „Γεννήσεως, δευτέρου καὶ πεντηκοστὸς μετὰ τὸν χίλιον τετρα-  
 „κοσιοντὸν ἀπαντᾷ... Σφαλλῶμαι μὲν τοι τὸν Βιβλιογράφον ἐν-  
 „ταῦθα ἐλέγχω αἱ λοιπαὶ τῆ αὐτῆς Συλβίς Ἐπιστολαί. Ἐν  
 γὰρ τῷ Α'. τῶν Ἐπισ: Βιβλίῳ, Ἐπισ: ΡΝΕ'. „Δυσυχῆς, Φη-  
 „σιν, ἀνάρσιος, δεινὴ τε καὶ φρικτὴ ὡς ἡμᾶς ἀφίκετο ἀγγελία,  
 „ἐκπορθηθῆναι μὲν τὴν Κωνσταντίναν πόλιν, παραδοθῆναι δὲ Τέρ-  
 „κοις καὶ τὸ πέραν Ἀσυ, (ὃς Συκᾶς μὲν τὸ πάλαι, Γαλατᾶν  
 „δὲ κατ' ἡμᾶς καλεῖται) ἡτληθῆναι δὲ καὶ ἀποδιακρηθῆναι, καὶ  
 „τὸ Χριστιανῶν Ναυτικὸν, τὸ εἰς ἐπικερίαν τῶν πολιορκημένων  
 „πεμπόμενον. Φέρουσι γὰρ οἱ ἀπὸ Ῥασκίας ὡς ἡμᾶς ἐρχόμενοι,  
 „τὸν Τέρκων Αὐταρχον πρὸ μιᾶς Καλανδῶν Ἰαννουαρίου, τὰς  
 „Ἐλεπόλεως τῷ Ἀσει προσαγαγέσθαι, τρεῖς δὲ τῆς ἐμβολῆς πε-  
 „ραθῆναι... καὶ: Ἡ δὲ Ἐπιστολὴ αὕτη γέγραπται τῇ ΙΒ'. Κα-  
 λανδῶν Αὐγύστου, Ἐτε 1453. Καὶ ἐν τῷ Α'. δὲ Βιβλ: τῶν  
 Ἐπισ: ἐν Ἐπιστολ: ΡΛΗ'. „Φήμη παρ' ἡμῖν διαρρεῖ, ὡς ὑπὸ  
 „Τέρκων ἡ Κωνσταντινὸς πόλις ἐκπεπόρθηται... Εἰ δὲ τὸ γεγο-  
 „νὸς, ὅπως διελεσθῆται παρ' ὑμῖν δεδήλωται, μαθεῖν ἐφίεμαι παρὰ  
 „Σὺ. Ἐδὲν γὰρ αὐτοὶ νεώτερον ὥδε ἔχομεν, ἢ ταῦτα τὰ ἐκ  
 „τῆς Ἐλλάδος ἀρτίως ἀνενεχθέντα, τὰ φρικτά τε καὶ ἀλγεινὰ  
 Τόμ: Β'. Η ηηηηη „πᾶσι

„πᾶσι τοῖς Χριστιανῶν πλήθεσιν· ἃ καὶ ὄφελεν ἔτω ψόδῃ εἶναι, ὡς ἐγὼ μήποτε ἀληθεύοντα εἶη, καὶ πάνυ δέδια„. Γέγραπτο δ' ἡ Ἐπιστολὴ ἀπὸ Γρατίε, τῇ 10. Αὐγύστου, Ἔτει 1453. Παρὰ πλήσια δὲ καὶ περὶ τῆς ἀφικομένης αὐτῷ ἀγγελίας ἀναφέρει, καὶ ἐν Ἐπισ: ΡΛΘ'. τῇ αὐτῇ Βιβλίᾳ, γεγραμμένη δὲ καὶ αὐτῇ Αὐγύστου 10. Ἔτει 1453. Καὶ ἐν Ἐπιστολῇ δὲ ΡΜΑ'. ἣτις ἐγγράφη Αὐγύστου 11. ἀπὸ Γρατίε τῆς Στυρίας Ἔτει 1453. Καὶ τελευτᾷ ἐν Ἐπισ: ΡΞΓ'. τῇ 12. Ἰουλίου γραφείῃ ὁμοίως ἐν Ἔτει 1453. Καὶ ὁ ΣΥΓΓΡΑΦΕΥΣ δὲ τῆς τῶν Πατριαρχῶν Ἰσορίας, τῆς ἐν τῇ Τερκο-Γραικίᾳ ΜΑΡΤΙΝΟΥ τῇ Κορσίᾳ ἐμφορομένης, Βιβλ: Β'. „Καθ' ὃν δὲ χρόνον ὁ Σουλτάν Μεχμέτης „τῷ Κωνσταντινέπολιν αὐτῷ εἶλεν, Ἔτος ὑπῆρχεν ἀπὸ Χρυσῆς Γεννήσεως 1453. ἡμέρα 29. Μαΐου, τῆς δὲ ἑβδομάδος Τρίτης. Καὶ ἐκάτερον δὲ τὸ Τερρικὸν Χρονικὸν τὸ ὑπὸ ΛΕΥΝΚΛΑΒΙΟΥ ἔκδοθεν, Βιβλ: ΙΕ'. τῆς Τέρκων Ἰσορίας. Καὶ ΣΠΑΝΔΑΓΙΝΟΣ δὲ ἐν τῇ Τερρικῇ Ἰσορίᾳ. Καὶ ΜΙΧΩΒΙΟΣ Βιβλ: Δ'. Κεφαλ: ΞΕ'. τῇ Χρονικῇ τῶν Πολώνων. Καὶ ἸΩΑΝΝΗΣ Φύγκιος ἐν τῇ Χρονολογίᾳ. Καὶ ὁ ΤΡΙΘΕΜΙΟΣ ἐν τῷ Σπαρχεμωσίῳ Χρονικῷ. ΚΡΑΝΤΖΙΟΣ ἐν Βιβλ: ΙΑ'. τῆς Σαξωνίας Κεφ: ΛΔ'. καὶ Βιβλ: ΙΒ'. τῆς Οὐανδαλίας, Κεφ: ΙΗ'. Καὶ ὁ Ἀνώνυμος ΣΥΓΓΡΑΦΕΥΣ ἐν τῇ Περιγραφῇ τῆς Τερρικῆς Αυτοκρατορίας παρὰ ὨΝΟΡΙΩ. Καὶ ΚΡΟΜΕΡΟΣ Βιβλ: ΚΒ'. τῇ Χρονικῇ τῶν Πολώνων. Καὶ τὸ Μέγα Χρονικὸν τὸ ΒΕΛΓΙΚΟΝ. Καὶ ΒΑΡΛΕΤΙΟΣ περὶ τῶν πεπραγμένων ΣΚΑΝΔΕΡΒΕΓΓΙΩ. Καὶ ΒΟΝΦΙΝΙΟΣ ἐν τῷ Γ'. Δεκάδι Η'. ΒΟΕΤΙΟΣ ἐν τῇ Ἰσορίᾳ τῆς Σκοτίας, Βιβλ: ΙΗ'. ΠΑΛΜΕΡΙΟΣ ἐν τῷ Χρονικῷ. ΓΕΝΕΒΡΑΡΔΟΣ ἐν τῇ Χρονολογίᾳ. Καὶ ΒΟΨΣΙΟΣ ἐν τῇ Χρονολογίᾳ τῶν Μεδιολάνων. ΣΗΨΟΣ ὁ Καλβίσιος ἐν τῇ Χρονολογίᾳ. ἸΩΑΝΝΗΣ ὁ Ναύκληρος ἐν τῇ Χρονογραφίᾳ. ἸΑΚΩΒΟΣ Φίλιππος ὁ Βεργομώσιος, ἐν τῷ τῶν Χρονικῶν Ἀναπληρώματι. ἘΝΡΙΚΟΣ ὁ Πανταλέων ἐν τῇ Ἐκκλησιαστικῇ Χρονογραφίᾳ. ΔΡΕΧΣΤΕΡΟΣ ἐν τῷ Τερρικῷ Χρονικῷ. ΚΟΥΣΠΙΝΙΑΝΟΣ ἐν τῷ περὶ τῶν Αυτοκρατόρων Συγγράμματι, εἰς Κωνσταντῖνον τὸν Η'. ΚΑΜΕΡΑΡΙΟΣ περὶ τῶν Τερρικῶν Πραγμάτων. ΦΡΑΓΚΙΣΚΟΣ ὁ Σανσοβῖνος, ἐν τῷ Χρονικῷ, ὃ τῷ Καμεραρίῳ προσέθηκε. ἸΑΚΩΒΟΣ ὁ Γορδόνορ, ἐν τῷ Χρονολογικῷ Πονήματι. ΒΖΩΒΙΟΣ ἐν τῇ Ἐξακολουθήσει τῶν Βαρωνικῶν Χρονικῶν. ΣΠΟΝΔΑΝΟΣ ἐν Ἔτει 1453. Καὶ ΣΑΓΡΕΔΟΣ τελευτᾷ ὁ Προκράτωρ τῇ Ἀγίᾳ Μάρκᾳ ὁ Ἐνετὸς, ἐν τῷ Α'. Βιβλ: τῆς Ἰσορίας τῶν Ὀθωμανικῶν Μοναρχῶν.

Οὐκ ἄρα κατὰ τὸ 1452. κατὰ δὲ τὸ 1453. Ἔτος ἡ Κωνσταντινέπολις ἐάλω. Ἀλλὰ καὶ θω γὰρ, καὶ ἐν αὐταῖς ταῖς τῆς Πεντη-

Πεντηκοστῆς ἡμέραις ἐαλωκέναι· μὴ παρ' αὐτὸ ἔποιτ' ἂν καὶ τὰς Ἀνατολικὰς εἰς τὸ Πνεῦμα ἐξημαρτηκέναι τὸ Ἅγιον; Ὡς, τὸ ἔτω σωμαγόμενον, λόγος παντὸς ἔξω βέβηκε! Τὶ γὰρ ἐν πολιορκήτεσι κοινότερον, τῷ κατὰ τὴν ἐκβασιν, τῇ δὲ ἢ τῇ δὲ τυχὸν τῇ ἡμέρᾳ συμβαίνειν τῆς πόλεως τὴν ἐκπόρθησιν; Καὶ πόσαι δὲ ἐκ ἐκπεπόρθωται πόλεις ὑπὸ βαρβάρων ἐπίσημοι, καὶ ἀπὸ Λατίνων αὐτῶν ἀφαιρεθεῖσαι ἔντε Παλαιστίνῃ, καὶ ἐν Ἑλλάδι (ὧν οἱ Ἑνεῖοι ἦρχον) καὶ ἐν Οὐγκρία, καὶ ἐν Ῥωσίᾳ τελευταῖον τῇ Πολωνοῖς ὑπακῆσθαι; Ἀλλὰ μὴ ἄρα, εἰ τις ἐορτὴν εὐπέσοι κατ' αὐτὴν τὴν ἐκπόρθησιν, διάτινα αἵρεσιν προσπεσεῖν ῥήξον ἂν εἴη Λατίνοις τὸ τοιοῦτον ἀτύχημα;

Ἀλλ' ἀντιπροτείνουσιν οἱ Λατῖνοι, ὃ καὶ ἀνωτέρω ἔφθην ὁ Ἰησὺς προτείναντα· ὅτι τὸν τῆς ἀλώσεως χρόνον ὁ Πάπας προανεφώνησε, διὰ τὴν πεσμονίαν τῶν Γραικῶν δηλονότι τῷ ἐνεπιμένειν τῷ Σχίσματι. Ἀμέλει τοι γὰρ ὁ Πάπας ΝΙΚΟΛΑΟΣ ὁ Ε'. ἐπιστάτης Κωνσταντίνῳ τῷ Αυτοκράτορι, πρὸς γε τοῖς ἄλλοις καὶ τὰ δὲ αὐτῷ προσήμεινεν. „Καλῶς πάντα ἴσμεν. Ἀλλ' ἀνεχόμεθα ἐπὶ τὸν Ἰησοῦν ἀφορῶντες, τὸν προαιώνιον Ἰερέα καὶ Κύριον· τὸν τὴν αἰκάρπον συκῇ ἐκείνῃ μέχρι τῆς τρίτης ἐνιαυτῶν κελεύσαντα σώζεσθαι, τῷ γεωργῷ ἤδη ἐπὶ τὴν ἐκτομὴν τῷ φυτῷ παρασκιδναζομένῳ, ὅτι καρπὸν ἔδενεν ὡς ἀποφέρουσα. Ἐντεῦθεν ἄρα ὁ ΣΧΟΛΑΡΙΟΣ, ἐν Τμήμῃ: ΙΔ'. Κεφαλῇ: Ε'. τῆς ὑπὲρ τῆς Φλωρεντινῆς Σωδοῦς Ἀπολογίας: „Τοῖς Ἀποκρισιαροῖς ἐπέσθηκεν Ἐπιστολὴν φέρετε καὶ φρίκης ἀνάπλεων, ἐνθα σαφῶς ἐπαρώμενος προέφηνεν, ἀναστὰς τε δὴ καὶ πάντῃ ἐξώλεις τε καὶ προώλεις τὰς δυσιώδεις Γραικὰς μέλλειν ἔσεσθαι. Ἐπειτα τὰ τῷ Νικολάῳ ἐπενεχθέντα ῥήματα ἐπαγαγὼν (ὁ Σχολάριος) πρόειπεν: „Ὡς συμφορὰς μεγάλῃς! Ἐτὸς μὲν 1451. ταύτῃ ἔγραψεν (ὁ Πάπας Νικόλαος) τὴν Ἐπιστολὴν ἐπὶ δὲ τῷ 1453. Ἐτὸς ἢ Κωνσταντίνῳ Πόλιν ἐξέλιπε. Μὴ ἄρα λέγειν ἔχετε, μὴ ἀληθῆ ταῦτα εἶναι; Ὡς ἡμῖς πάντων! ἐπεὶ καὶ αὐτὸ πρόδηλον ἐστὶ, καὶ λαμπρῶς τὰ πράγματα μονοναχὶ φωνῇ ἀφιέντα κέκραγε. Τρία ἔτη περιμενόμεν, φησὶν, εἰ τυχὸν ἀπὸ τῷ Σχίσματος καὶ τῆς διαζύξεως ἐπιστρέψοιτε, καὶ τῷ ὄρω· γνησίως προσωαφθείητε, κατὰ τὴν τῷ Σωτήρος περὶ τῆς συκῆς ἐντολὴν· εἰδὲ μήγε, ἀπολεῖσθαι ἵνα μὴ καὶ τὴν γλῶσσαν εἰς κενὸν καταργῇτε. Τῷτο γὰρ ἐστὶ θαῦμα θαυμάτων τὸ μέγιστον, ὅτι: (ὡς ἐν ἐκείνῃ τῇ Ἐπιστολῇ γράφει ὁ Πάπας Νικόλαος) τὸ Γραικὸν γένος, τὸ μέγα τε καὶ φοβερόν ἐκείνο· τὸ σοφόν, τὸ περιφανές, τὸ ἰχυρόν, τὸ ἐπὶ γῆς κυριεῦον, κατὰ Θεῖαν δίκην, ὑπὸ τὴν βαρβάρων δαλείαν ἔτω καθυπεννώεσθαι. „

Η ηηηηη 2

Καὶ

Καὶ δεόντως ἔν ἡμῖν πρῶτον θαυμάζειν ἔπεισι, πῶς ἐπὶ τυχαίᾳ τινὸς προσκυρήσεως ἐπανδάνει Λατίνοις, ἢ Γραικοῖς τοῖς ἐκλατινιωθεῖσι, μυσήριον ἐπίσητῆν! Ἄχρι καὶ γὰρ ἐκείνῃ τῷ ἐν Φλωρεντία ἔνωσιν τῶν Γραικῶν μηδαμῶς ἀποδεχομένων, ἀπειλὰς ἐπισείων ὁ Πάπας, κατὰ τὸ παρῆκον οἱ παρωδεῖ τὰ ὑπὸ τῷ Χρυσῷ εἰρημένα περὶ τῆς ἀκάρπῃ συκῆς, ὡς ἄρα χρόνον ἔτι καὶ αὐτὸς περιμενῶν, καί γε ὀψόμενος, ἔποτε τέως τῷ ἔνωσιν ἐκείνῳ οἱ Γραικοὶ παραδέχονται· ἐὰν δὲ μὴ παραδέξωνται, τῆς κοινωνίας αὐτὰς δι' ἀφορισμῶν ἀποκόψων. Οὐμὶν δὲ καὶ τρίτῃ ἐνιαυτῷ προθεσμίαν αὐτὸς ἐτάξατο τοῖς Γραικοῖς, καὶ ὅν ἂν, τῷ ἔνωσιν μὴ προσησομένων, πάντα πάντως ἢ Πόλις ἢ τῷ Κωνσταντίνῳ ὑπὸ τοῖς Τέρκοις γενήσεσθαι ἔμελλε, καὶ πᾶν τὸ τῶν Γραικῶν Κράτος ἄρδῳ ἀνατραπήσεσθαι. Ἐν γὰρ τῇ Ἐπισολῇ ὁ Νικόλαος καὶ τὰδε ὑποσώπει: „Ὡς εἶγε τὸν τῆς ἐνώσεως ὅρον ἀσπάσασθαι μετὰ τῷ λαῷ παραιτήσῃ, ἐπαναγῆναι καὶ ἡμᾶς, ἅτλα ἂν σωτήρια εἶη, ἡμῖν τε τίμια καὶ πρέποντα προμηθεύσασθαι„. Ἐξ ὧν δὴπρ δῆλος ἐστὶ, μὴ τῷ ὑπὸ τῶν Τέρκων ἐκπόρθησιν τῆς Πόλεως, ἐδὲ τῷ τῷ Κράτει ὑπ' ἐκείνων ἀνατροπῇ ἐπαπειλῶν ὡδε τοῖς Γραικοῖς ὁ Ε'. Νικόλαος, ἀλλὰ τὸν διὰ τῷ Ἐκκλησιαστικῷ Ἐπιτιμῇ Ἀφορισμὸν. (88) Καὶ μέμνηται μὲν αὐτὸς ἐπὶ τῆς Ἐπισολῆς, τὸ πλεῖστον μέρος τῆς Γραικίας ὡς ὑπὸ Τέρκων τυραννεμένης, ἐκέτι δὲ διάγε τῶν καὶ τῇ πόλει καὶ τῷ Αὐτοκράτορι ἐπικαθευμάσθαι τὰ ἴσα προεκφοβεῖται· διέξεισι δὲ μόνον ἐκεῖνα, ἐφ' ὧ τῷ τοιάνδε συμφορὰν ἀποδείξει, εἰς ποινὴν εἶναι τοῖς Γραικοῖς ἀξιόχρεων. Ἀλλ' ἐδ' ἐξ ἡ παρὰ Νικολάου ἢ Ἐπισολῇ Γραικοῖς γέγραπται, ἐς γ' ἐπὶ τῷ Κωνσταντινῆς πόλεως ἄλῳσιν, ἐνιαυτοὶ τρεῖς διεγείνοντο μεταξὺ παραρρῶσαντες, μῶες δέ πρ μόνον ὡσεὶ ὀκτωκαίδεκα. Ἐγγεγραπτο

(88) Ἡ καὶ διὰ σαυροφορικῆς ἴσως ὑπ' αὐτῷ μελετωμένης ἐπιστρατεύσεως, δι' ἧς ἂν ὑπὸ τῷ Παπικῷ τέως ζυγῷ τῷ, τε Ἐθνος ὅλον, καὶ τῷ Βασιλείᾳ ποιήσεν, ἂν τῷ Πίσιν εἰς κοινωνίαν τῶν ἰδίων καινοτομημάτων ἐπισπάσασθαι, μάτῳ οἱ πρὸ αὐτῷ, καὶ αὐτὸς ἄχρῃς ἐκείνῃ ἀγωνισάμενος, ἐδὲλας κατήχυσεν. Σιώνθες δὲ τῷ Φρενί τε καὶ ὀφρυῖ τῇ Παπικῇ· καὶ ἐδ' ἂν αὐτὸς τότε ὁ πρῶτον εἴη κατεργασθεὶς Παπίσιος ἀεθλος ἐκείνος, εἰ μὴ Θεῷ παρακεχωρηκός, ἢ Ὀθωμανικῇ χεὶρ ἄλλως προκατελάβετο φθάσασα. Τούτῳ δὲ μᾶλλον ἔτις ἐκδεκτέαν εἶναι πείθομαι τῷ τῷ Νικολάῳ τῷ Ε'. ἐπαπείλῃσιν ἐκείνῳ, ὅσῳ γὰρ αὐτῷ προσιδέντος ἀκῶ: ἔτι τῶν Γραικῶν αὐτῷ ὑπῆξαι τε καὶ πειθαρχῆσαι μὴ βεληθέντων: „Αὐτὸς ἐπαναγαγῆναι πρέποντα, ἅτλα πρέποντα μὲν εἶη καὶ τίμια αὐτῷ ἐκείνῳ, Γραικοῖς δὲ σωτήρια„. Σωτήριον γὰρ τῷ Γραικῷ ἔθνεϊ, εἴπερ τῷ διὰ τῷ Ἀφορισμῷ τελεῖαν ἀποκοπῇ ἀπὸ τῷ Χρυσῷ σώματος· ἢ γὰρ τῷ ὑπὸ τῶν ἀσπερῶν ἐπενεχθῆσομένῳ τε καὶ ἐπισκήψαν πανωλεθρίαν· καὶ μὴ μᾶλλον τῷ διὰ τῷ ὑπ' αὐτῷ Πολιτεύματι, τῷ κατὰ μικρὸν τοῖς Λατινικοῖς ἐθίμοις καὶ Δόγμασι προχώρησιν τῶν Ἀνατολικῶν καὶ προσκλήσιν, ὁ Πάπας ἐνόησε τοιαῦτα γράφειν, θαυμάσαιμι ἂν!



γραπτο μὲν γὰρ ἡ Ἐπιστολὴ τέως ἐν Ἑτῇ 1451. κατὰ μὴνα Ὀκτωβρίου· ἐάλω δὲ ἡ Κωνσταντινούπολις Ἑτῇ 1453. κατὰ μὴνα τὸν Μάιον. Καὶ πηλίκον δ' ἔν πρὸς Θεῷ, ἐπὶ τῇ Νικολάου ῥήσει Μυσήριον ἔυραιντο, οἱ παρὰ Λατίνοις, ἐν Ἑτῇ 1452. τὴν Πόλιν ἐαλωκέναι διατενόμενοι; Μὴ ἄρα καὶ τέτοις δόξει Προφήτης εἶναι ὁ Εἰ. Νικόλαος; Οὐκ οἴμ' ἐγὼ, εἰμὴ καὶ τὸ ἀπὸ Μιῶος Ὀκτωβρίως, ἐς τ' ἐπὶ τὸν τῷ καθεξῆς ἐνιαυτῷ Μάιον, εἰς Ἑτῇ τρία τὸ μεταξὺ ἐκλογίσαντο. Ἀλλ' εἴη δὴ ἐν τῷδε τῷ μέρει Προφήτης ἡμῖν Νικόλαος ὁ Εἰ. προφειβόμενος ὁ μὴδέποτε κατὰ ἑν ἐπῆλθεν αὐτῷ, καὶ ὁ μὴδ' αὐτὸς ἴσως εἶχεν εἰδέναι, ὡς ἡ ἄρα τι τοιοῦτο προειρηκώς· μὴ ἄρα καὶ τέττα ἐφέψεται, διὰ τὴν προτεινομένην ὑπὸ τῷ Νικολάου αἰτίαν, τὰ δεινὰ τῶν Γραικῶν ὑποσιῶναι ἅπερ ὑπέστησαν; Ὁ μὲν ἔν Καϊάφας ἀληθῶς περὶ τῷ Χριστῷ προεφήτευσεν: „Οτι σωθήσεται ἵνα εἰς ἀπόλυται „ὑπὲρ τῷ λαῷ. Μὴν δὲ δικαίως ὁ Χριστὸς ἔπαθεν, ὡς αὐτὸν σφίσιν ὑπέχειν ποινὰς ἐν δίκῃ Καϊάφας μετὰ τῶν λοιπῶν Ἰουδαίων ἐνόμιζον; Ἀλλὰ δικαίως μὲν τῷ Θεῷ τίσαι τὰς δίκας τῶν Γραικῶν ἐφ' οἷς περ ἐξήμαρτον, συγχωρῶμεν, τὸ δὲ διὰ κακοδοξίαν Αἰρέσεως, ἀποφάσκομεν.

Παρασιώπτει τὸ ἐντεῦθεν ὁ Ἰησοῦς (89) ἐφεξῆς τὰς βλάβας τε καὶ ζημίας διεξιὼν, ὅσαι μετὰ τὸν τῷ Πατριάρχῃ Μιχαὴλ Ἀφορισμὸν τοῖς Γραικοῖς ἐπενέσκηψαν. Παρ' ἑλπίσιν μὲντοιγε τῶν Γραικῶν Ἱστορικῶν, ὅσον ἔχεται ἀληθείας ἔκαστα τῶν λεγομένων, ἐπικρίναι ἔκ ἔχομεν. (90)

Ἑπαι-

(89) Ὁ Κιχώσιος αὐτόθι Σελ: 98.

(90) Ἀμέλειται: ΠΑΝΤΑΛΕΟΝΤΑ, ἃ καὶ οἱ ἄλλοι ἐν τινι, προεβόησαν μάρτυρα τῶν λεγομένων ἡμῖν ὁ Ἰησοῦς, τὸν ἐν Κωνσταντινῇ πᾶσι διατρέχοντα, καὶ αὐτόπτην (ἢ Φησὶ) τῶν Φρικωδεσάτων συμπτωμάτων, ἃ τοῖς Γραικοῖς κατὰ Θεομιλίαν ἐνέσκηψεν Ἑτῇ 1055. αὐτίκα μάλαι, ἐπεὶ τὸν Πατριάρχῃ Μιχαὴλ τὸν Κηρυκτῆριον, τῷ ἀπὸ τῷ Ῥώμης Πάπᾳ οἱ Λεγάτοι πεμφθέντες καθυπέβαλον Ἀναθέματι. Ὡς γὰρ ἀναγινώσκων πρόκειται ἐν τῷ Ἀναπληρώματι τῆς Μεγάλῃς Βιβλιοθήκῃς, Φύλ: 1070. Post Anathema in Cerularium à Legatis Romani Pontificis jactum, Liminare marmoreum in Basilica S. Sophiae dissolutum est; statimque talis clades est subsequuta, ut diebus paucis sexaginta Graecorum millia morerentur, nullo interea alienigena mortuo: et per triduum inestimabiles cornscationes, et tonitrua exstiterunt. („Μετὰ τὸ Ἀνάθεμα, Φησὶ, τὸ ὑπὸ τῶν Λεγάτων τῷ Ῥωμάνῳ Ποντίφικῳ κατὰ τῷ Κηρυκτῆρι ἐπιβόηθεν, ὁ ἐν τῷ Βασιλικῷ Ναῷ τῆς Ἀγίας Σοφίας μαρμάρους „σταθμὸς σιωτρεῖς διελύθη. Αὐτίκα δὲ τηλικῶτος παρηκολέθησεν ὄλεθρος, ὡς „ἐν τῷ ἡμερῶν ὀλίγον, ἐξήκοντα Γραικῶν χιλιάδας ἐπαποθανεῖν, μηδενὸς ἐν τῷ „μεταξὺ ἄλλοθεν τερματίζαντος. Ἐφ' ἡμέραις δὲ τρισὶν, ἀστραπαὶ καὶ βρονταὶ „αὐτῶν ἀμύθητοι ὅσαι κατέσκηψαν. „) Ἀλλὰ τίς ὁ Πανταλέων ἄνθρωπος; ἔθ' ὁ Ἰησοῦς σαφῶς ἡμῖν διεγνώρισεν, ὅδ' ἐν χερσὶν ἡ Βιβλιοθήκη πάρεστιν ἡμῖν ἡ Μεγάλη, ἐξ ἧς τὸ τερατολόγον ληφθὲν ἡ τεμμάχιον, ὁ παρεθέμεθα. Ἡμεῖς δὲ ἄλλως ἕνα Πανταλέοντα ἴσμεν, τὸν τῆς ἐν Κωνσταντινῇ πᾶσι Μεγάλῃς Ἐκκλησίας Διάκονον χρηματίσαντα, καὶ χαρτοφύλακα: ὃς δὴ Λατινοφρονήσας, καὶ τῷ Δομινικανῶν τάγματι, ἑαυτὸν ἐγκαταγράψας, κατὰ Γραικῶν περὶ τῆς Ἐκπόρεως καὶ ἄλλων τινῶν Κεφαλαίων συυτεταχέναι φέρεται· ὃ καὶ Προσεβίνος Τόμ. Β'.

"Επειτα δὲ καὶ λόγους προσέθησι τρεῖς ΔΗΜΗΤΡΙΟΥ τῷ Θεσσαλονικέως, ὅς δημώδεις ἐπονομάζει, προσφυῶς δὴ περ αὐτὸς ἔτῳ ἀποκαλῶν ἔτῳ γὰρ εἰσι δύσιλοι, ὡς εἰκότως ἐδ' ἀπλῶς ἡμῖν ὧδε ἀνενεχθῶσι νομίζεσθαι ἄξιοι. (91)

Υπο-

ἐμνήθη ἐν Τόμῳ Β'. τῆς ἱερᾶς αὐτῆς Προπαρασκόψης, Σελ: 209. Καὶ Φραγκίσκος ὁ Κομβεφίσσιος ἐν τῇ Προπαρασκόψῃ: τῇ πρὸ τῆς Ἐκκλησιαστικῆς Βιβλιοθῆκῃ τῶν Ἀγ. Πατέρων, Σελ: 33. Καὶ Δέων δὲ ὁ Ἀλμάτιος ἐν τῇ Διατριβῇ τῇ περὶ τῶν Συγγραμμάτων Συμμεῶν, καὶ ἄλλοι. Ἀλλὰ γὰρ, ἔπερ ἔτος ἡ' ὁ περὶ ὅ τοις λόγους τῷ Ἰησοῦ Πανταλέων, πρῶτον μὲν αὐτόπτης ἐκ ἡδυνάτο αὐτὸς εἶναι τῶν κατὰ τὸ 1055. ἐν Κωνσταντινουπόλει συμπεσεῖν ὑπ' αὐτῆς τερατολογουμένων: ἔτε ἐπὶ τῆς Ζ'. Ἐκατονταετηρίδος κατὰ τὸν De la Biné, περιῶ τῷ βίῳ: ἔτε τῆς Θ'. μεσότητος κατὰ Ἰωδῶκον τὸν Κέκκιον. ἔτε δὲ δὴ καὶ κατ' ἄλλους ἐρδοτέρων ἴσως, μεσαζέσης ἤδη τῆς τρισκαίδεκάτης Ἐκατοστῆς τῶν ἀπὸ Χριστοῦ Χρόνων. ἦτοι ἐν ἔτει 1252. ἀκμάζων ἐτύγχανεν (ὄρα Ἰωάν: Ἀλβερτ: Φαβρίκ: ἐν τῇ Ἑλλάδι: Βιβλιοθῆ: Τόμῳ Ι'. Σελ: 422. 423. Καὶ Καβέον ἐν τῇ Α'. τῶν τριῶν Διαλέξεων περὶ τῶν Συγγραμμάτων τῆς Ἀμφιβαλλομένης ἡλικίας, Σελ: 15. Καὶ Ὀσδῖον ἐν Τόμῳ Γ'. τῶν Ὑπομνημάτων: Σελ: 229. 230.) "Επειτα δὲ, καὶ ὅτ' ἂν καὶ βέλαιο ὑποτεθέντος γενέσθαι τῷ εἰρημένῳ Πανταλέωνος τέττα, πῶς εἰδὲς τῶν Βυζαντινῶν Συγγραφέων, τῶν τὰ κατ' ἐκείνης τῆς χρόνης τῇ Ἱστορίᾳ παραδεδοκότων, εἰδὲν ἡμῖν εἰδέναι περὶ τῶν τοιούτων τε καὶ τηλικούτων, καὶ ἔτῳ θαυμασίαν Θεομιλιῶν ἡμῖν παρέδηλωσαν; Δῆλον γὰρ ἄλλως ὅτι Ζωναράς τε καὶ Κεδρηνός, καὶ ὁ Κερροπαλάτης Ἰωάννης, οἱ τὰ τέττα Χρονογραφίσαντες, ἐκ ἂν εἰκότως παρελήθον ἐκδηγήσασθαι, εἴ τινα τοιαῦτα σωτέπεσεν, ἔτῳς ἀήθη καὶ ξένα. ὁπότε καὶ τὰ ἐκ σεισμῶν κατὰ καιρὸς πάθη, καὶ Κομητῶν ἐπιφανείας, καὶ ἀνέμων βίας, ὑετῶν τε καὶ ὀμβρῶν καταρρέαγέντων σφοδρότερον ἐπικλύσεις, ἅτλα ποτὲ σωτέβη γενέσθαι, ἀναγράφειν ἐκ ὠκισαν. (ὄρα τὸν Ζωναράν ἐν Βιβλ: ΙΗ'. §. 5'. 9'. κβ'. κγ'. κς'. Καὶ Κεδρηνόν ἐν τῇ Ἐπιτομῇ τῶν Ἱστοριῶν, Σελίδι 724. 730. 732. 737. 739. 742. 748. 754.) Ἔσκειν ἔν ὅτι: ἦτε τῷ μαρμαρέῳ σαθρῷ τῷ Μεγάλῳ Νεῷ διάλυσις, καὶ ἡ τῶν ἐξαισχυρίων Γραικῶν τῶν ἐντὸς ἡμερῶν ὀλίγων. ἐκθανόντων, μηδενὸς τῶν ἀλλογενῶν ἐν τέττῳ σωμαρπαθέντος τῷ βίῳ, συμφορητὴ νέκρωσις: καὶ θαυμάσιον καὶ τὰ ἐξαισία σέλα, καὶ αἱ βρονταὶ αἱ φρικώδεις ἐκείναι, ἐν αὐτῷ τῷ ὑπὸ Φαντισμῷ κακοδαιμόνως ἐμβροντηθέντι τῷ Πανταλέοντος ἐγκεφάλῳ γεγονότα, τὸ θαυμαστὸν ἐπιχείρημα τῷ Ἰησοῦ ὑπηγόρευσε Κιχάβιῳ, δι' ὃ ἂν ἡμῖν διαπισώσῃ κατασκόψας τίῳ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ Ἐκπύρῳσιν.

(91) Δημήτριος ὁ Κυδωνίης ἐκ Θεσσαλονίκης ὤρητο: περὶ τὸ μέσον τῆς ἀπὸ Χριστοῦ τεσσαρεσκαίδεκάτης Ἐκατονταετηρίδος ἀκμάσας. ἡ δὲ καὶ τῷ Βασιλεῖ Ἰωάννῳ τῷ Καντακζυῶ, τὰ τῆς Αυτοκρατορίας διέποντι, τῶν μάλιστα φιλεμένων τε καὶ σωθήτων, καὶ τῶν αὐτῶν δὲ ἐπὶ τὸν Μοναδικὸν βίον τραπέντι, τὸν ἐλαφρὸν ζυγὸν σωμαρπαδοῦ προδεμένων (ἢ λέγεται) εἰς. Εἴτ' ἐκ οἷδ' ὅπως τῆς προδέσεως ἐκπεσῶν, καὶ ἥς πρότερον ἀτεχόμενος ἡ ἐρδοξίας ἐκπέπτακε παρ' Ἰταλοῖς τε περὶδημήσας, καὶ σωματῶ τῇ χώρᾳ καὶ τὸ εὐσεβὲς τῷ Φρονήματος μεταμείψας ἐπὶ τίῳ Λατνικῷ καινοτομίαν μετέθετο. Ὡς ἐξ ἄλλων τε μαθεῖν ἐστὶ, καὶ ἐκ τῶν αὐτῶν ἐπέσελλεν Ἰωσήφ ὁ Βρυέννιος, τίῳ τε ἀποσασίαν ἐπιπλήτῳ, καὶ ἐπὶ τίῳ ἐπιστροφῇ παρορμῶν (ἐν Ἐπισ: Δ'. τῶν Ἐκδομ: εἰς τὰ Βρυέν: Παραλειπόμενα) ἀλλὰ περὶ τῷ αὐτῷ Δημητρίῳ Κυδωνίᾳ, σαφίσερον ἂν διεξίεντα εὐρεῖς, καὶ Κασίμιρον Ὀσδῖον, ἐν τῷ Γ'. Τόμῳ τῶν Ὑπομνημάτων, Σελ: 905 — 907. καὶ Τέττα δὴ τῷ Ἀποστάτῃ οἱ ὑπὲρ τῆς καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ Ἐκπορεύσεως τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι λόγοι τρεῖς, οἱ δημώδεις προσετημένοι, οἱ ἐφεξῆς εἰσιν: ἔς, ὁ μὲν Ἰησοῦς Κιχάβιος, ἐν τῷ Θ'. Ζητήμ: τῷ κατ' αὐτὸν Βήματος, Σελ: 98. 99. ἐκ ἀσιωτελεῖς κομιδῇ αὐτῷ πρὸς κατασκόψῃ τῷ Δέγματι ἐδ' αὐτὸς ἐσμέντες, ἐδ' ἀπελέγεται ὁ δὲ ἡμέτερος Ζορνικάβιος, ὡς δυσιώσας τῷ ὄντι καὶ ἀθλίως, ἐδ' ἀπελέγεται ἀναβαλέσθαι ἡξίωσεν. ἡμεῖς δὲ ὧδε ἡδέως προσήσομεν ἥνα μή τις τῶν ἀπλῶν ὑφραῖτο αὐτὸς, ὡς δὴθεν εὐλογόν τι περιέχοντας, ἐπίτηδες παραλειφθῆναι.

Εν

Ἐν μὲν ἔν τῳ Α'. φησὶν ὁ Κυδώνης, εἰκὸς εἶναι Γραικοὺς μᾶλλον ἢ Λατίνους, ἐξ ἐμπαθείας ἔγω καταδουμένους περὶ τὸ φρόνημα παραφέρεισθαι. Λατίνους μὲν γὰρ ὡς τὸ ἐξ ἀμφοῖν τὸ Πνεῦμα πρεσβόειν, ἔτε δι' ἀπαλλαγὴν κακῶν τινος, ἔτε δι' ἀπόλαυσιν ἀγαθῶν ὅλως προάγειν. Τέτις δὲ Γραικοὺς εἰκέναι τῆς ἰδίας δόξης ἀνευδότως ἀντιποιεῖσθαι, ὡς ἂν τῆς πρὸς τὸν Ῥώμης Ἐκκλησίᾳ ἀπαλλαγέεν, μηδ' ἐαυτῶν οἱ Πατριάρχαι τῷ Πάπᾳ ὥσιν ὑπόβηται. Πρὸς δὲ, καὶ ἵνα τῷ τῷ Οἰκουμενικῷ Τίτλῳ ὁ Κωνσταντινουπόλεως ἐπικομπάζειν ἔχη γαυρούμενος.

Ἐν δὲ τῳ Β'. ἀκινδύνως θεολογεῖν, φησὶ. τῆς τὸ ἐξ ἀμφοῖν δογματίζοντας. Οὐδὲν γὰρ ἔτε τῆς τῷ Πνύματος αὐτοὶ ὑφαιρῶσι δόξης, ἔγω πρεσβόοντες· ἔτε τῆς τῷ Πατρὶ πρεπέσης καὶ τῷ Υἱῷ μᾶλλον δὲ καὶ προσιθέασι τῷ μὲν Υἱῷ, ὡς ἕνα τῶτον μετὰ τῷ Πατρὶ Πνύτικῳ τῷ Πνύματος ὄντα γεραίροντες· τῷ δὲ Πατρὶ, ὡς Γεννήτορα τῷ Συμπνύσει πεφυκότα ὑμνῶντες καὶ μεγαλιύοντες. Οἱ δ' ἐξαρνέμενοι, ἔδεν μὲν τοῖς Θεαρχικοῖς Προσώποις προσαπονέμεσι δόξης, πολὺ δὲ τι ὑφαιρῶνται τῆς προσέσης καὶ τῷ Γεννηθέντι καὶ τῷ Γεινήτορι.

Ἐν δὲ τῳ Γ'. ὡς πλείων μὲν Λατίνους εὐμοιρήσειν, φησὶν, ἀπολογιῶν ἐν τῇ ἑκάτῃ ἡμέρᾳ, ἔγω πισύοντας. Καὶ γὰρ καὶ ἐκ πολλῶν Γραικῶν ῥήσεων ἀποκαλυφθὲν σιγάπτεσθαι τὸ Δόγμα τῆς ἐξ ἀμφοῖν Προόδου τῷ Πνύματος· καὶ πολλὰς δὲ αὐτὸ ἐκδιδάξαι τῶν Ἀγίων σαφῶς. Αὐτὸ δὲ τῶτο καὶ τῷ ἐν Πατρὶ καὶ Υἱῷ ἰσότητα ἐπισιωίζαν τε καὶ ἐναπαιτεῖν, ἵνα πάντες τιμῶσι τὸν Υἱόν, καθὼς τιμῶσι τὸν Πατέρα. Τέτις δὲ λέγοντας ἐκ τῷ Πατρὶ μόνον τὸ Πνεῦμα, μηδένα λέγον ὅλως, μήτ' ἐκ τῶν Γραικῶν, μήτ' ἐκ τῶν Πατέρων ὑπὲρ τῆς ἐαυτῶν δόξης προβαλέσθαι διωαμένους, οἷας δῆποτε ἐπὶ τῇ ἰδίᾳ ἐξαπάτη ἀμειρήσειν εὐλόγη προφάσεως. Καὶ τὰ μὲν τῷ Κυδώνι γενναῖα, ὡς ἐν σιωπῇ συλλαβεῖν, ταῦτα.

Αὐτοὶ δὲ τῶτων πρὸς μὲν τὸ Α'. ἀπαντῶμεν, ὅτι ἐξ ὧν διακείμενος εἶμι, καὶ περὶ τῶν ἄλλων κρίνειν ὁ Κυδώνης ἐνήγετο. Οἷς γὰρ πάθει παραφερόμενος αὐτὸς τοῖς καιροῖς, ἐτύγχανε συμεταβάλλων καὶ τὰ περὶ τῷ Πίσιν φρονήματα, τοῖς αὐτοῖς ἡγέτο, καὶ τέτις ὑπὲρ πᾶν ὅτιον τῷ εὐσέβειαν τιθεμένους παραπλησίως συμπαρασύρεσθαι· Κυδώνης γὰρ (καὶ τῶν Λατίνων αὐτῶν μαρτυρούντων) ('Ορθίν: ἐνθ: ἀνωτ:) *Amplexus est opiniones Theologiae Graecae de Processione Spiritus S. quandiu in Oriente inter Graecos fuit* (τοῖς Γραικοῖς τὸ πρῶτον περὶ τῆς Ἐκπερρύσεως συμεθεολόγει, ἐν ὅσῳ αὐτοῖς σιωδιέτριβε) πρὸς αὐτὸν δὲ, ἔχι *mutantem* (διασαλδύμενον) ὡς ὁ Σπονδανὸς ἔφασκεν ἐν τοῖς Ἐκκλησιαστικῇ Χρονικοῖς, ἔτε 1332. Ἀριθμ: 5.) ἀλλὰ, *contradictum et reluctantem, imo contra scribentem*, (ἀντιλέγοντα, ἀντενισάμενον, μᾶλλον δὲ καὶ ἀντιγράφοντα) καὶ Βαβλαάμ ὁ Καλαβρός, ὑπὲρ τῶν Λατινικῶν ἰσάμενος Δοξασμάτων ἀντεπέστειλεν. Οὐδ' ἀμφισβᾶλλον ἔνεσι (προσιθήσιν Ὁρθίνος) τῷ μὴ Γραικοῖς τὸν Κυδώνι συμεφρονῶντα γενέσθαι αὐτοῖς σιωδιάγοντα, καὶ τῆς ἐνοίας τῷ τῷ Αὐτοκράτορα διέποντος Ἀρχιεπισκόπου τῷ Καντακζιῶ ἀπολαύοντα, καὶ τῶτο σιωόντα ἔς γ' ἐπὶ τῷ 1355. ἔτετις, καὶ ἔνεσις τὰ τῆς Βασιλείας παραιτησάμενος ἐπὶ τὸν Μοναχικὸν βίον ἐστράφητο: ἔτερον ἀπ' αὐτῷ γενέσθαι, καὶ μηδαμῶς αὐτῷ συμοιᾶσαι ἐλέσθαι· ὁ δὲ καὶ σιωθῆσαι πρότερον φέρεται. Τῇ γὰρ βασιλικῇ σιωάμᾳ προσασίᾳ, καὶ ὧν περ ἔτερεφεν ἐλπίδων ἀποπεσῶν, καὶ τυχὸν καὶ τὸν ἐξῆς τὰ σκήπτρα διαχειρίζομενον, διὰ τὸ συμεφαιρῶσαι πρότερον τῷ Καντακζιῶ ὑφορώμενος, ἐπ' Ἰταλίας ἐπτη, ἔτε 1355. εἰς Μεδιόλανον ἀπελθὼν· καὶ εἰσε σιωάμα τῇ χώρᾳ καὶ τῷ Πίσιν συμεμειψάμενος. Κόθορενος καὶ παλὶμβόλος ἄνθρωπος, καὶ ἔδεν ὑγιῆς· παρὰ μὲν τοῖς Ἀνατολικοῖς γραικίζων, παρὰ δὲ τοῖς Δυτικοῖς λατινοφρονῶν. Ὁ γὰρ ἔτος ἀνελευθέρως ὑπὸ ἐλπίδων καὶ φόβων, εἰς τὸ ἄλλοτε ἄλλως περὶ τὰ πισυτέα φρονεῖν μεθαρμοζόμενος, καὶ ὡς κάλαμος τῷ ὄντι ὑπὸ διπλῆς ἀντιπνεόντων ἀνέμῳ τῇτε καὶ εἰσε διασαλδύμενος, τί θαυμαστόν, ἔπερ ἐκ τοιούτων παθῶν κινεμένης ἡγέτο καὶ τέτις Ἀνατολικῶς ἀμφιλαφῶς ἀντέχεσθαι καὶ ἀνευδότως, τῆς ἰδίας Πίσεως; ἔπειτα, καὶ τίνα ἄρα ὁ Κυδώνης προτείνετο, ἂν τέτις Γραικοὺς εἰήγε, τῷ αὐτῶν ἀπὲρ ἀντέχεσθαι Δόγματος; Τὸ χρῆμα δῆθεν τὸ τῆς Ἐκκλησίᾳ, καὶ τὸ τῷ Τίτλῳ τῷ Οἰκουμενικῷ ψυχρὸν πλεονέκτημα. Ὡν τὸ μὲν σφόδρα, ὑπερ αὐτῷ ἐδόκει, κατεβρόδον οἱ Γραικοὶ δεδιότες, τῷ δὲ, καὶ αὐτῷ δολιτέραν ἐτίθεντο τῷ εὐτέβειαν. Τί δαί; μὴ μᾶλλον οἱ Ἀνατολικοὶ τῷ Παπικῷ ἐσπῶδασαν διαφυγεῖν Τυ·αννίδα, ἢ ὁ Πάπας ἐπιθέσθαι τοῖς Ἀνατολικοῖς τὸν ἐκείνης ζυγὸν κατηγάνισαι, καὶ παντοίως ἐμνηχανήσασθαι; Ἀλλὰ καὶ τὸ Οἰκουμενικόν, ἔχι μόνῳ ψιλῶς τῷ ὀνόματι (διὰ τὸ τῆς Αὐτοκρατορείας Πόλεως προνόμιον) ἐπιλέγεσθαι· πράγματι δὲ, καὶ τῇ παντοδραστῇ ἐξουσίᾳ, τίς ὡς ὁ Ῥώμης Πάπας λαμπρῶς ἔτος ἐαυτῷ

ὑποσώπτει δ' ἐκ τῆς ΒΑΡΛΑΑΜΟΥ (92) καὶ εἰκασίας τι-  
νάς, ὡς εἶπερ ἐξ εἰκασιῶν εἰκὸς ὡς τὰ τῆς Χρυσιανῶν Πίσεως  
ἀποδείκνυθαι. Καὶ πρώτη μὲν αὐτῷ εἰκασία ἐστίν „ὅτι ἐκ τῆς  
„τῆς Υἱῶς Γεννήσεως, ἢ πρώτη τῶν ὑποστάσεων ἔχει τὸ Πατὴρ  
„ὀνομάζεσθαι· ἐκ δὲ τῆς τῆς Πνύματος Ἐκπορεύσεως ὄνομα ἰδιά-  
„ζον ἐκ ἔχει τίνος δὴ χάριν; εἰπέμοι: ἢ ὅτι κοινῇ ἐστίν ἡ ἐνερ-  
„γεια αὕτη, Πατρὶ καὶ Υἱῷ„. Ἡ γὰρ ἐχὶ καὶ διὰ τῆτο ἐκ  
τῆς τῆς Ἁγίας Πνύματος Ἐκπορεύσεως ἰδιάζον ὄνομα ὁ Πατὴρ  
ἐκ ἂν ἔχοι, ὅτι: ὧ μὲν λόγῳ προῆκται παρὰ τῆς Πατρὸς ὁ  
Υἱὸς, ἡμῖν ἀποκεκάλυπται· ὧ δὲ τὸ Πνεῦμα, ἐχί; ὁ μὲν γὰρ  
Υἱὸς διὰ Γεννήσεως προῆλθε· τῆς δὲ τῆς Ἁγίας Πνύματος Προ-  
δῶ, ὁ τρόπος ἀφρατος, καὶ ἡμῖν ὅλως ἀναποκάλυπτος. Ἡ δὲ  
ἐτέρα τῶν εἰκασιῶν αὕτη: „Συνεχῶς ὁ Πατὴρ ἐνεργεῖν λέ-  
„γεται διὰ τῆς Υἱῶς· καὶ ὁ Πατὴρ δὲ καὶ ὁ Υἱὸς διὰ τῆς Πνύ-  
„ματος· ἐδέποτε δὲ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐνεργεῖν λέγεται διὰ τῆς  
„Πατρὸς, ἢ διὰ τῆς Υἱῶς. Τίνος ἔνεκα τῆτο; ἢ ὅτι ἡ τῆς ἐνερ-  
„γῆτος διώαμις τῷ Υἱῷ ἐνεσι παρὰ τῆς Πατρὸς, τῷ δὲ Ἁγίῳ  
„Πνύματι παρὰ τῆς Πατρὸς καὶ τῆς Υἱῶς„;

Ἄλλὰ

ἐγκομῶσάμενος προσαπέδιδέ τε καὶ διεσάλπισεν, ὁ ἀπὸ περὶ τῶν περὶ τῶν  
τῆς Οἰκισμένης, ἢ μόνον κατὰ τῆς παγκοσμίας Ἐκκλησίας, ἀλλὰ καὶ κατὰ τῶν  
Βασιλέων ἀπάντων, διττοῖς αὐτοῖς καὶ τρισὶν ἐαυτὸν Universalem (Παγκόσμιον)  
ἐμφυσήσας, καὶ τὴν διττὴν μάχαιραν περιζωσάμενός τε, καὶ πλεονάκεις ἀποχρη-  
σάμενος, ἢ ἐρθέτερον φῶναι καὶ ἀχρησάμενος; Πῶς ἔν ἐ μᾶλλον εἰκὸς, τῆς Πα-  
πικῆς προσανάπλειν ἐμμανεῖ Φιλαρχίας τὴν περὶ τὸ Δόγμα Φιλονεικίας καὶ ἐρί-  
θειαν, εἶπερ ἐκ τοιούτων ἀρχῶν καὶ προφάσεων δέησαι κρῖναι τὴν περὶ τὸν  
ἀντιθέτον δογματισμὸν τῶν μερῶν ἐκείνων διαφορὰν τῆς φρονήματος; Ἀλλὰ γὰρ  
περιττὸν ἴσως ἐν τέτοις ἐπὶ πλέον ἐνδιαφέρει. Καὶ ἐπαινετός πάντως ὁ ἡμέτε-  
ρος Συγγραφεὺς Ζορνικάσιος, ὁ μὴδὲ ἀπαλήψαι ὅλως τοῖς τοιοῖς δε παραληρη-  
μασι τῆς Κυδωνίης ἐπαξιώσας. Ἄλλος γὰρ ἰχυρῶς, ἀμοιρεῦντες ἐξελέγχονται λό-  
γων δικαιοτέρων, οἱ τοῖς ἔτω σαθεῖς θεμελίους τὴν ἰδίαν ἐποικοδομήσαντες δέξαν-  
τάμενοι.

Πρὸς τὸ Β'. τῶν τῆς Κυδωνίας φαιμένων: ὡς ἐδὲν δὲ προσιδέσθαι δόξης τοῖς Θεο-  
χικτοῖς Προσώποις ἐπικαιρομῆτις περὶ τὰ Δόγματα, καὶ τὰ μηδαμῶς τῶν ἱερῶν  
Γραφῶν ἀποκαλυφθέντα κατὰ τὸ δοκῆν ἀναπλάττειν. Δὲ δὲ διὰ μόνων τῶν ἐν  
τοῖς Λογίοις ἐκπεφασμένων, τὴν ὑπερῶσιον Τριάδα δοξάζειν καὶ ἀνυμνεῖν εὐσεβῶς  
ὁμολογῆσαι μὲν τὸ Θεὸν Πνεῦμα ἐκ τῆς Πατρὸς εἶναι ἐκπορεύομενον, κατὰ τὴν ἐν  
Εὐαγγελίοις αὐτῆς τῆς Κυρίας Φωκίῃ, ἐκσυρίττοντας δὲ τὴν ὑπὸ Λαλίνων ἀλόγως  
καινολομηθεῖσαν Προδίκην, ὡς οἱ πρὸ τῆς Σχίσματος πάντῃ ἡγνόησαν καὶ ταύτῃ  
ὡς ἐχί δέξαν τε καὶ μεγαλωσώμεν τῇ ὑπερῶσι Θεότητι φέρεσαν, ἀλλ' ὡς ὕβρι-  
μᾶλλον καὶ δυσφημίαν φεικώδη προσέριβαν ἀποπτύοντες. Βλασφημῶσι γὰρ πα-  
ραπλησίως τοῖς Πνύματομαχοῖς, ὅσοι τι τῶν Πατρὶ καὶ Υἱῷ κοινῇ προσόντων  
ὑφαιρῶσι τῆς Πνύματος. Βλασφημῶσι δὲ ἐδὲν ἥτις καὶ τῶν τὴν Υἱοπατορίαν  
γενεσηκότων Αἰρετικῶν, ὅσοι τὸ Πανάγιον Πνεῦμα ἐκ τῆς Υἱῶς τὴν ἀρχὴν τῆς ἁγίας  
ζέως ἔχον διίχυρίζονται. Βλασφημῶσι δὲ τέως καὶ κατὰ τῆς ἐν τῇ Θεότητι εἰκός  
καὶ μόνῃ αἰτίᾳ, ἥτοι τῆς Θεῆς καὶ Πατρὸς, οἱ τὴν δυαρχίαν εἰσάγουν ἐπιτολμῶν-  
τες ἐπὶ τῆς Μοναδικῆς καὶ Ἑνιαίας Θεότητος.

Πρὸς δὲ δὴ τὸ Γ', ἀπασα δι' ὅλα ἢ ἐν χερσὶ Συγγραφῇ διὰ τῶν περὶ τῶν  
θεῶν Πραγματειῶν δαψιλῶς τε καὶ ἐκ περιστάς ἀπολελόγηται.

- (92) Ὁ Καλαβρὸς ἔτος Βαβυλῶν, ἢ τὰς Εἰκασίας ἡμῖν προβάλλειν εἰληθῶς ὁ  
Ἰησοῦς Κιχώσιος, ἅτε δὴ ἐκ Λαλίνων τὸ πρῶτον ἐπὶ τῆς Ἀναβολικῆς μετὰ τὴν



Ἀλλὰ γὰρ πρόδηλα ἐστὶ τὰ τῷ Ἀποστόλῃ πρὸς Ῥωμ. Η'. 2. Ὁ γὰρ νόμος τῷ Πνεύματι τῆς ζωῆς ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ, ἡλευθέρωσέ με ἀπὸ τοῦ νόμου τῆς ἀμαρτίας καὶ τοῦ θανάτου, ἐνθα δὴ παρ' ἐμοῦ ἔστι Ἰησοῦς, τούτῳ ἐστὶ τῷ „διὰ τῷ Ἰησοῦ“, ὡς δὴλον παντί. Καὶ σιμῶνεται δὲ καὶ ἐκ τῶν Γραφικῶν ἐκείνων, ἐν οἷς ὁ Χριστὸς λέγεται ἐν Πνεύματι Ἁγίῳ ἐκβάλλειν τὰ δαιμόνια: τούτῳ γὰρ τῷ „ἐν Πνεύματι“, εἰρημένῳ, τό: „διὰ τῷ Πνεύματος“, καθαπερὲν καὶ τὰ τῷ Ἀποστόλῃ ταῦτα διερμηνεύουσιν ὁ, τε Θεὸς ΧΡΥΣΟΣΤΟΜΟΣ, καὶ ὁ Μάρτυς ΘΕΟΔΩΡΟΣ ὁ Στραδὶτης ἐν τοῖς αὐτοῖς Ὑμνοῖς. Ἀλλως τε δὲ, καὶ τὸν Υἱὸν αὐτοῦ εἰρημένως λέγεσθαι διὰ τῷ Πνεύματος ἐνεργεῖν, καὶ διὰ τὸν λόγον τῆς τάξεως, καθ' ὅτι καὶ τῷ Υἱῷ δοῦτερόν ἐστι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον.

Τελού-

ἐκ δὲ τούτων ἀνάπαλιν δεικνύμενον ἐπὶ Λατίνους ἐπιστρέψας καὶ τὰ τούτων φρονήματα, ὅδ' ἄξιός ἐστιν ἀκρίβει. (Μέτιθι τῆς περὶ αὐτῶν ἰσορήσαντας: τὸν Βασίλειον Ἰωάννην: τὸν Καντακεζιωτὴν, Βιβλ.: Β'. τῆς Ἰσορ.: Κεφαλ.: Α'. καὶ Μ' καὶ Βιβλ.: Γ' Κεφ.: ΥΗ' καὶ Βιβλ.: Δ' Κεφαλ.: ΚΓ'. καὶ ΚΔ'. Καὶ Ἀλλὰτ: ἐν τῷ περὶ Συμφων: ἐκατέρ: τῶν Ἐκκλησιῶν: Κεφ.: ΙΣ'. καὶ ΙΖ'. Καὶ ἐν τῷ Προσαρτήματι τῆς Καθ' ἡμεῖς Ἰσορ: τῶν Ἐκκλησιῶν: Συγγραφοῦ: Ἐρβόκον Οὐάρετοια Σελ.: 36. καὶ Ῥόδετον Γέριον Σελ.: 37. Καὶ Ἀλβέρτ. Φαβρίν: Ἐκκλησιῶν: Βιβλιοθ.: Τόμος: Ι'. Σελ.: 427 — 432. Καὶ Κασίμ. Ὁσδίν. ἐν Τόμ.: Γ'. τῶν Ὑπομνημάτων: Σελ.: 815 — 823.) Οἷα δὲ τις ἢ τῷ Βασιλαίῳ τῷ Εἰκασίᾳ ἢ πρώτῃ; „Ἐκ τῆς τῷ Υἱῷ, Φησὶ, Γεννήσεως ὁ Πατὴρ ὀνομάζεται“ ἐκ δὲ τῆς Ἐκπορεύσεως ἰδιάζον ὄνομα ἐκ ἔχει: τί ἄρα τὸ ἐντεῦθεν σιμῶμενον; Ἐπειδὴ ἄρα Φησὶ μόνος Πατὴρ ὀνομάζεται, μόνος καὶ γεννᾷ τὸν Υἱὸν ὁ Πατὴρ. Ἐπειδὴ δὲ ἐκ τῆς ἄλλης Προέσεως ἐστὶν ἀκαλονόματος (ὅτι ἰδιάζον ὄνομα ἐκ ταύτης δίδεν ἐκ ἔχει, ἐπόμενον ἐστὶ κοινῶν εἶναι ταύτῃ τῷ Πνεύματι Πατρὶ καὶ Υἱῷ. Ἀλλὰ γὰρ ἔτω παραλογιζόμενος, πῶς ποτ' ἄρα ἡμεῖς ὁ Καλαβρός Σοφιστὴς τὸν ἐγκέφαλον; Εἴπερ γὰρ, εἰ διὰ τὸ πρὸς τῷ δοῦτερον Ὑπόστασιν μόνον ἔχειν ὄνομα τὸ Πατὴρ, γεννᾷν λέγεται τὸν Υἱὸν πρὸς γε τῷ τρίτῳ διὰ τὸ μὴ ἔχειν ὄνομα ὅπως, ἐκ ἐκπορεύσει τυχόν τὸ Πνεῦμα. Ἀλλ' ἔχει Φησὶ: πλὴν ἐκ ἰδιάζον τὸ ποῖον; ὁ „Προβόλος“, ὁ Αἰτίας, ἢ Ἀρχή. Καὶ μὴ ταῦτα ἡμεῖς τῷ Πατρὶ μόνῳ διακρινόμεθα εἶναι προσιδιάζοντα. Μόνος γὰρ ὁ Πατὴρ ἢ Ἀρχή ἐστὶν ἐπὶ τῆς Θεότητος: ἐξ αὐτοῦ γὰρ καὶ μόνος, ὡς καὶ ὁ Υἱός, ὡς ἐκ Πατρὸς μόνος γεννᾶται, ἔτω δὴ καὶ τὸ Πνεῦμα ὡς ἐξ Αἰτίας καὶ Προβόλου μόνος ἐκπορεύεται: τί ἄρα λόγῳ σιμῶμεθα ὅδ' ὁ Καλαβρός ἡμῖν τὸ ζητούμενον, προὑποτιθεὶς τὸ Προβόλου ὄνομα μὴ εἶναι τῷ Πατρὶ ἰδιάζον, καθὰ καὶ τὸ τῆς Ἀρχῆς, καὶ τὸ τῆς Αἰτίας ἐν τῇ Θεότητι: ὡς ἐν ἄλλοις διὰ πολλῶν ἀποδείκνυται; — Ἀλλὰ πρὸς τῷ δοῦτερον τῶν τῷ Καλαβρῷ εἰκασίῳ, ἀπαντήσαι βέλδιον. Πότερον γὰρ αὐτῶν, τὰς ἐνεργείας τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ τὰς διὰ τῷ Πνεύματος, ἐμμένοντες εἶναι θέλει πρὸς τὰ ἐν τῇ Θεότητι καὶ ἀμεταβάτως; ἢ μεταβατικὰς ἐπὶ τὰ ἐν τῷ, πρὸς τὰ κτιστά; Εἰ μὲν γὰρ τούτο, τὸ „διὰ τῷ Πνεύματος“, ὅδ' ἐν σημαίνει, ἄλλ', ἢ „σιμῶν τῷ Πνεύματι“. Αἱ γὰρ τοιαῦτα ἐνεργεῖται ταῖς τρεῖσι Θεαρχικαῖς Ὑποστάσεσι ἀχωρίτως ἐπὶ κοινά. Εἰδ' ἐκεῖνο, καὶ ὁ Πατὴρ καὶ ὁ Υἱός διὰ τῷ Πνεύματος εἰσὶν ἐνεργεῖτες πρὸς τὰ ἐν τῷ, καὶ ὁ τῆς ἐνεργείας ταύτης ὅρος ἐν αὐτῇ ἐστὶ τῇ Θεότητι. Τοιαῦτα λόγῳ καὶ κτήσασθαι παρεσχεδίσθηται Πρόσωπον ἐν τοῖς Θεοῖς, καὶ ἔσαι δὴ ἑξὶ Τριάδος, ἢ Τριάδος ἢ Ὑπερθεός, ἀλλὰ Τετράς ἡμῖν ἀνακύνει. Ὡς γὰρ (κατὰ Λατίνους εἰπεῖν) ὁ Πατὴρ διὰ τῷ Υἱῷ, ἦτοι σιμῶν τῷ Υἱῷ ἐκπορεύει τὸ Πνεῦμα: ἔτω ὁ Πατὴρ καὶ ὁ Υἱός διὰ τῷ Πνεύματος, ἦτοι σιμῶν τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι ἐνεργεῖτες ἐμμένοντες, ἐκπορεύονται καὶ ἑτέραν Ὑπόστασιν, ἢ τι, ὅτι ἐν ἄλλῳ Θεῷ βλασφημεῖν τις βέλδιον, Πρόσωπον. Ἀλλ' ἐπὶ τῷ τῷ Καλαβρῷ κάραν ἐπιτεσθὲν μενέτω τὸ βλασφημον.

Τόμος: Β.

I IIII

Τελούταϊον ὁ Ἰησούτης προτένει, καὶ τὸ Ο'ΥΓΩΝΟΣ τῷ  
 'ΑΙΘΕΡΙΑΝΟ'Υ Ἐπιχείρημα, ὃ τοιοῦτον ἐστίν: „Εἰ τὸ Ἅγιον  
 „Πνεῦμα ἐκπορεύομενον ὡς ἐκ μόνου τῷ Πατρὶ, ἐκπορεύοιτ' ἂν  
 „ἄνευ τῆς σωδρομῆς καὶ τῆς διώμεως καὶ τῆς σοφίας τῷ Θεῷ.  
 „(ὁ γὰρ Υἱὸς ἢ σοφία καὶ ἢ διώμεως τῷ Θεῷ) τὸ δὲ ἐπόμενον  
 „ἄτοπον ἔγω γὰρ ἂν ἢ τῷ Πνεύματος παραγωγὴ μικρά τις εἴη  
 „καὶ ἀδρανῆς, ὅπερ βλάσφημον. Ἄρα τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ ἐκ-  
 πορεύεται ἐκ μόνου τῷ Πατρὶ; — Ἀλλ' ἤπερ μέζονι σὺ ἀνολοῖ  
 ἐκ ἔχεν ὁ Ἰησούτης μετὰ τῷ Αἰθεριανῷ συλλογισάσθαι. Εἴπερ,  
 φησὶ, τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῷ Πατρὶ μόνου ἐκπορεύομενον ὡς,  
 ἐκπορεύοιτ' ἂν τῆς σωδρομῆς ἄνευ καὶ τῆς διώμεως καὶ τῆς σο-  
 φίας τῷ Θεῷ. Πῶς ἔν ὁ Πατὴρ μόνος ἐγέννησε τὸν Υἱόν; μὴ  
 ἄρα σοφίας ἄνευ καὶ διώμεως; ἔ γὰρ δήπερ σωέτρεχεν ὁ Υἱὸς  
 τῷ Πατρὶ ἐπὶ τῇ ἰδίᾳ Προόδῳ καὶ μὴ ἄρα ἢ τῷ Υἱῷ γέννησις  
 μωρά τις ἂν εἴη καὶ ἀδρανῆς παρὰ τῷτο; Ἀλλὰ τίς ἐκ ἂν τῷ  
 ληρώδεις Ἐπιχειρήματος τῷδε καταγελάσαιεν; Ἐστὶ μὲν γὰρ ὁ  
 Υἱὸς πάντως ἢ τῷ Θεῷ σοφία καὶ διώμεως· ἀλλὰ μὴ παρὰ τῷτο  
 ὁ Θεὸς καὶ Πατὴρ ἅμοιρος ἐστὶ σοφίας, ἅμοιρος ἐστὶ διώμεως; ἢ  
 ἐκ ἐνλεῦθεν μᾶλλον σαφεὲς ἐξ ἀνάγκης: ὡς εἴπερ ἅπασα, ὡς ἔχει  
 ὁ Υἱὸς τῷ Θεῷ σοφίαν, ἅπασά τε ἢ διώμεως, ἐξ αὐτῷ τῷ Πατρὶ  
 ἐστίν, ἐδ' αὐτὸν εἰκὸς τὸν Πατέρα τῆς σοφίας ἅμοιρον καὶ τῆς  
 διώμεως; Πῶς ἔν ἄρα τῷ Ἁγ: Πνεύματος ἐκ μόνου τῷ Πατρὶ  
 ἐκπορεύομενον, ἄνευ σωδρομῆς τῆς τῷ Θεῷ σοφίας καὶ διώμεως,  
 ἢ αὐτῷ τῷτο Ἐκπόρευσις γένοιτο; Οὐδέ ποτε δηλονότι, εἰ μὴ τῷ  
 Θεῷ καὶ Πατρὶ τὴν σοφίαν ἀπαρνήσαιο καὶ τὴν διώμεν καὶ εἰ μὴ  
 τὴν τῷ Υἱῷ τῷ Θεῷ γέννησιν μωρὰν τε καὶ ἀδιώαμον εἴποις· ὃ καὶ  
 ἐννοηθῆναι βλάσφημον.

Καὶ ταῦτα μὲν ἄχρι τῷδε πρὸς τὰ Λατίνων Ἐπιχειρήμα-  
 τα, ἅτλα ὑπὲρ τῆς Ἐκπορεύσεως τῷ Ἁγῷ Πνεύματος καὶ ἐκ τῷ  
 Υἱῷ πλέκεν εἰώθασιν. Ἄ δὴπερ ὅσον μὲν δύσιμα, ὅσον δὲ καὶ  
 μικρὰ λόγος ἄξια, παντίπερ πρόδηλον· τοσῷτο γὰρ δὴ, ὡς καὶ  
 πρὸς τὰ ἔξω τῆς προθέσεως αὐτῶς ἀναγκάζεσθαι καταφύγειν,  
 καθὰ καὶ τὸν παραχθέντα Ἰησούτῳ ποιῶντα κατέδομεν.

## Π Ρ Α Γ Μ Α Τ Ε Ϊ Α Ι Ζ.

Ἐν ἣ δέκνυται, ὅτι ἡ ἐπὶ Ἰννοκεντίᾳ Πάπα τῆ Γ'. μετὰ τῆς ἐν Ῥώμῃ Ἐκκλησίας ἔνωσις, χειρὶ βιάει τοῖς Ἀνατολικοῖς ἐπε-  
δεσποτοῦθῃ· ἔνθεντοι καὶ ὑπὸ τέτων, ἐπειδὴν ἐξῴω,  
ἡθέτηται, καὶ ἀνετράπη.

Παρά τὰ ποικίλα τῶν Ἐπιχειρημάτων, ἅπερ ὑπὲρ τῆς τῆς Ἁγίας Πνεύματος Ἐκπορεύσεως καὶ ἐκ τῆς Τίτῃ σωεπισωρῶσιν οἱ Λα-  
τῖνοι, τοῖς Ἀνατολικοῖς προσέτι καὶ τὰ τῶν Προγενεσέρων αὐτῶν  
παραδείγματα προτιθέασιν. Ἐκείνων καὶ γὰρ τοσάκις δῆθεν, τὴν  
μετὰ τῆς ἐν Ῥώμῃ Ἐκκλησίας ἔνωσιν, καὶ τὴν περὶ τὸ Λατινι-  
κὸν Δόγμα ὁμοφροσύνῃ ἀσπασαμένων, ὁποῖω δῆποτε, Φασὶν, ἄρα  
τῷ Προσώπῳ οἱ αὐτῶν Ἀπόγονοι πάλιν ἀναφανδὸν ὑπὲρ τῆς Σχί-  
σματος ἀγωνιζόμενοι, ἀπὸ τε τῆς ἐπεγκριθείσης ἐνότητος, καὶ τῆς  
σωομολογηθείσης ἀληθείας πρὸς τε Θεῶ καὶ ἀνθρώπων, ἀποσατή-  
σαι ἐδύναντο, καὶ ἐν τῷ αὐτῷ Σχίσματι ἐπιμένειν; Καὶ Πρῶ-  
τον μὲν ἀντιπαράγχει τὴν ἐπὶ Ἰννοκεντίᾳ τῆ Γ'. γενομένην ἔνω-  
σιν, καὶ ἐν τῇ Σιωδῶν μάλιστα τῇ Λατερανικῇ τελεθεῖσαν,  
περὶ ἧς, ἐπὶ τῆς ἐν χειρὶ Πραγματείας διαληψόμεθα.

Τῆ μὲν δὲν τὴν Κωνσταντινουπόλεως Ἀυτοκρατορίαν ὑπὸ Λα-  
τίνων ἐκπεπορθηθῆαι, ὥστε καὶ Λατίνους ἐντεῦθεν προτείνειν ἔχειν  
τὴν μετὰ τῆς ἐν Ῥώμῃ Ἐκκλησίας ἐκείνῃ ἔνωσιν, οἱ Γραικοὶ  
ὑπῆρξαν αὐτοῖς παραίτιοι, τὰς ἀφορμὰς δεδοκότες, διὰ τε τρόπον  
ἀλαζονείαν, καὶ ἐν σφίσι Φατρίας σωέσθησαν ὅς διεγείραντες. Μα-  
νηλ γὰρ (1) τὸ εἶναι τῆς Αὐτοκράτορος μελαλλάξαντος, ἐπέβη τῆς  
Θρόνου

(1) Κεῖθωσαν ὡδε, πρὸς ἀκριβεστέραν τῶν εἰρησομένων κατὰληψιν, αἱ κατ' ἐκεῖνο τῆς  
χρόνου, τῶν τε ἐπὶ τῆς Κοσμικῆς δυναστείας, καὶ τῶν ἐπὶ τῆς Ἐκκλησιαστικῆς προεδ-  
ρείας προαχθέντων διαδοχαί. Τῆ Κομνιῶν Μανηλ ἐν ἔτει 1180. ἀπελθὼς τῆς  
βίβης, Ἀλέξιον Κομνιῶν βασιλεύσαντα τὸν Νεώτερον, (ἐφ' ὃν τὰ τῆς διαδοχῆς  
μετέβαινον) Ἀνδρόνικος ὁ τῆς γενεῆς Ἀλεξίου, ἐξ Ἰσακίου τῆς πρεσβυτέρου τῶν  
Τύων ἐκγονος, βρόχῳ διαφθείρας, τυραννικῶς ἐπέβη τῆς Θρόνου, ἔτει 1183. Κατε-  
λύθη δὲ τῆς Τυραννίδος ὁ Ἀνδρόνικος ἔτος, ἔτει 1185. Οἰκιστάς τινος ψυχρῶ  
ἀποδὲς, ἐν ἀμυθήτοις αἰκίαις τε καὶ κολάσεσιν· αὐτὸς αὖτ' ἐπὶ ἀνηγόρευται Ἰσαάκιος  
"Λγ.

Θρόνῳ Ἀνδρόνικος. Ἀνδρόνικος δὲ ἐκκρεθέντος, Ἰσαάκιος Ἀγγε-  
λος. Ἀπελαθέντος δὲ τέως καὶ τῷ Ἀγγέλῳ, Ἀλέξιος ὁ Κομνηνὸς  
ὁ τότε Ἀυτάδελφος τῆς ἀρχῆς ἐπεδράξατο. Ἐφ' ᾧ δὴ καὶ Ἀλέ-  
ξιος

Ἀγγελος ὁ Κομνηνός. Ἀλλὰ καὶ ἕτος, ὑπὸ Ἀλεξίου Ἀγγέλου Κομνηνὸς τῷ αὐτάδελ-  
φῳ, τῷ ἐν ἔτει 1195. ἀνταρσίαν ἐκπολιούσαντος καθαιρεθεὶς τῷ Θρόνῳ, καὶ τὰς  
ὄψεις πηρωθεὶς ἐγκαθέρχθη δεσμώτης φερέμενος. Ἐφεξῆς δὲ καὶ Ἀλέξιος  
Ἀγγελος, ὑπὸ Ἀλεξίου, γίγνεται τῷ προκαταρθεθέντος Ἰσαακίου, ἰδίῃ δὲ ἀδελφῷ,  
ἐπικερίας παρὰ Λατίνων τυχόντος κατεβλήθη τῷ κράτει. Καὶ ὁ καλαβρῶν δὲ  
αὐτὸν Ἀλέξιος ὁ τῷ Ἰσαακίῳ τῷ τυφλῷ καὶ ἐμφρέρει, ὃ πολὺ τῆς βασιλείας  
παρὰπολαύσας, μετὰ μύσας ἔξ, ὑπὸ Ἀλεξίου δέκα τῷ ἐπιλεγόμενῳ Μερξέφῳ  
βρόχῳ καὶ αὐτὸς διεφθάρη. Μερξέφῳ δ' ἐπὶ τέτῳ, ἡμέρας ἀρχὰς ἐδεμήκον-  
τα, ἐλεεινῶς ἐξαπώλετο. Καὶ Νικόλαος δὲ τις Καναβὸς τῷ ἐπὶ κλίῳ, τῆς δυστυχίας  
ἀρχῆς μικρὸν ὅσον ἀπογυθισάμενος, αὐτίκα μάλα οἰκτρῶς κατέστρεψεν.

Ἐν τέτῳ γοῦν τῆς Κωνσταντινουπόλεως ὑπὸ Λατίνων ἐκπολιορκησάντων ἀλέσας  
ἔτ: 1204. Ἀπρίλ: 12. Βαλδουῖνος ὁ Φλάνδριος Κόμης, τῷ ἐξῆς Μαΐου 31. πρῶτος  
Λατίνων ἐπὶ τῆς Ἀρχῆς ἦρθη τῆς Αυτοκρατορίας. Βαλδουῖνον δ' ἐν πολέμῳ πρῶτος  
τα, καὶ τραγικῶς τὸ ζῶν κατελύσαντα Ἐρρίκος διεδέξατο ὁ ἀδελφός, ἐν ἔτ: 1206.  
Μετὰ δὲ Ἐρρίκῳ τῆς Αυταρχίας ἔλαχε Πέτρος ὁ Κερτινιακός, ἔτ: 1216.  
Καὶ μετὰ Πέτρον, Ροβέρτος ὁ Κερτινιακός, ἔτ: 1220. Μετὰ δὲ Ροβέρτον Ἰωάν-  
νης Βρυέννιος, ὁ ἐν Ἱεροσολύμοις ἤδη βασιλεύων, ἐπιτροπικῶς ἀνήρηται τῷ ἐν  
Κωνσταντινουπόλει Δυναστείᾳ διέπειν, Βαλδουῖνον Β'. ἐν παισὶν ἔτι τυχεύοντι, ἔτ: 1228.  
Τῷ δὲ Βρυεννίῳ τελευτήσαντος, τῶν σιγήσεων ἤψατο ἡδη ὀκτωκαιδεκτῆς  
ὁ Β'. Βαλδουῖνος, ἐν ἔτει 1237. Τελευτάειν δὲ καὶ ὁ Βαλδουῖνος ἕτος, τῆς ἥς περ  
αὐτὸς κατακυριεύων ἀποτρίας Ἀρχῆς ἐκπέπτωκεν, ἀπελαθεὶς ὑπὸ Μιχαὴλ τῷ Πα-  
λαιολόγῳ, ἔτ: 1261. τῷ τῷ Κωνσταντινουπόλει Ἰουλίου 25. ἀπὸ Λατίνων ἐπανα-  
σώσαντος.

Ἐν ᾧ τοίνυν ἡ Κωνσταντίνη ὑπὸ Λατίνοις ἦν, δι' ἐτῶν ΝΗ'. Θεόδωρος μὲν ὁ  
Λάσκαρις τῷ Γραικῶν διέσωσεν Αυτοκρατορίαν, βασιλεύσας ἐν ἔτει 1206. Θεό-  
δωρον δὲ διεδέξατο Ἰωάννης Δέκας Βατάτζης, ὁ ἐπὶ θυγατρὶ τῇ ἐκείνου Εἰρήνῃ  
γαμβρός, ἔτ: 1221. Ἰωάννῳ δὲ τέτῳ, ὁ γιὸς Θεόδωρος Λάσκαρις ὁ Νεώτερος,  
ἔτ: 1255. Θεόδωρον δὲ, Ἰωάννης ὁ γιὸς ἐξαέτης ἀποφανεθείς, ἔτ: 1260. ἔ-  
κατ' ἀρχὰς μὲν, Ἐπίτροπος εἶναι ταχθεὶς, μετ' ὅσον δὲ καὶ ἐκ μέσων τὸν Ἐπι-  
τροπικόν ποήσας, ἐβασίλευσε Μιχαὴλ ὁ Παλαιολόγος, ὁ ἐν ἔτει 1261. τῷ  
Κωνσταντίνῳ, ὡς εἴρηται, ἐπαναβύσας.

Ἀλλὰ καὶ τῶν Κωνσταντινουπόλεως γνησίων Πατριαρχῶν οἱ ἐν Νικαίᾳ τῆς Βι-  
θυνίας αἱ τὸ μεταξὺ ἐγένοντο ἐφεδρεύσαντες: Ἰωάννης ὁ Καματηρός, ἔτ: 1198.  
Μεθ' οὗ παραιτησάμενον, Μιχαὴλ ὁ Αυτοριανός, ἔτ: 1206. Μεθ' οὗ, Θεόδω-  
ρος ὁ Εἰρηνικός, ὁ ἐπὶ κλίῳ Κωπᾶς, ἔτ: 1213. Μεθ' οὗ, Μάξιμος ὁ τῶν  
Ἀκοιμήτων Ἀββάς, ἔτ: 1215. ἢ (ὡς ἄλλοι ὀρθότερον:) 1222. μετὰ μόνους ἐπιζή-  
σας ἔξ. Μεθ' οὗ Μανηὴλ ὁ Σαραντινός, ἔτ: 1216, ἢ (κατ' ἄλλους) 1223. Μεθ'  
οὗ, Γερμανός ὁ Β', ἔτ: 1227. Μεθ' οὗ Μανηὴλ ὁ Ἀρχιεπισκόπος ἔτ: 1243.  
Μεθ' οὗ Ἀρσένιος Μοναχός ὁ Αυτοριανός, ἔτ: 1255. Μεθ' οὗ ὑποχωρήσαντα,  
Νικηφόρος ὁ ἀπὸ Ἐφέσου ἔτ: 1260. Μεθ' οὗ Ἀρσένιος, ἀποκαταστάς αὐτοῖς ἐπα-  
νακτηθείσης τῆς Πόλεως, ἔτ: 1261.

Κατ' ἐκείνῳ δὲ καὶ οἱ ἐκ Λατίνων παρείσαντο ἐπέβησαν τῆς ἐν Κων-  
σταντινουπόλει Πατριαρχείας: Θωμᾶς ὁ Μαυροκλίτος, ἔνετος τῷ Πατρίδῳ, ἔτ: 1205.  
Ἐῖτα Γερβάτιος ὁ Τῆσκος, ἔτ: 1215. Ἐῖτα Ματθαῖος, ἢ Ματθίας, ἔτ: 1221.  
Ἐῖτα Σίμων ὁ Τύρῃς Ἀρχιεπίσκοπος, ἔτ: 1227. Ἐῖτα Νικόλαος ὁ Σπο-  
λετῖνος Ἐπίσκοπος, ἔτ: 1233. Ἐῖτα Πανταλέων ὁ Ζησιγάνος, ἔτ: 1253. μετὰ  
καὶ τῆς Λατίνων ἀπὸ τῆς Κωνσταντίνης ἐξώσεως.

Οἱ δὲ κατὰ τὰς αὐτὰς χρόνους χρηματίσαντες Πάπαι: Ἰννοκέντιος Γ', ἔτ: 1198.  
Ἰννοκέντιος Δ', ἔτ: 1216. Γρηγόριος Θ', ἔτ: 1227. Καλεστῖνος Δ', ἔτ: 1254.  
Ἰννοκέντιος Δ', ἔτ: 1243. Ἀλέξανδρος Δ', ἔτ: 1254. Καὶ Οὐρβανός Δ',  
ἔτ: 1261.



ξιος ὁ τῷ Ἰσαακίῳ Υἱὸς ἐπαγανακτήσας, πρὸς Λατίνους ἀπάρας κατέφυγεν, εἰς ἐπανάκτησιν τῷ Κράτει, ἐπικερίας τῆς παρ' αὐτῶν τυχεῖν δεησόμενος: ὅρκοις τε ὑπὸ χυμένους, ἢ μὴ ἀπάσαν ἀναδείξειν τὴν Ἀνατολικὴν Ἐκκλησίαν ὁμόφρονα Λατίνοις καὶ σωθῆσθαι, εἰ διὰ σωαρωγῆς τῆς ἐκείνων τὸν πατριῶν ἀνασώσασθαι κληρὸν οἱ περιγένοιτο περὶ ὧν ΝΙΚΗΤΑΣ ὁ Χωνειάτης, ἐν τοῖς αὐτοῖς Χρονικοῖς, Βιβλ: Γ'. Σελ: 348. τοῖς ἐν Παρισ: Γ. Λ. ἐκδοθεῖσι, τὰ κατὰ τὸν Κομνιῶν Ἀλέξιον ἐξισορῶν. Καὶ δὴ, ευκαίρως τότε συμβᾶν μέγαν παρὰ Λατίνοις στρατὸν καταλέγεσθαι, πολυαρίθμους τέτινας νεολαίας ἐκ πάσης καὶ παντοίας τάξεως συναρροφῶν, ὡς εἰς Παλαισίνῳ ἐπὶ συμμαχίᾳ τῶν σφετέρων κατὰ τῶν ἀπίστων ἐκστρατεύοντας, ἐτοίμους εὐρατο εἰς ἐπικερίαν ἑαυτῷ ὁ Ἀλέξιος, ὅτε δὴ μεγαλεῖα τινὰ ἐκτελέσειν, περὶ τὴν τῶν Ἐκκλησιῶν Ἀνατολικῆς τε καὶ Δυτικῆς, ἐπαγγελόμενος ἔνωσιν. Τῷτο γὰρ μάλιστ' ἀπὸ Λατίνους εἰς τὸ αὐτῷ σωεπικερῆσαι ἐναγαγέσθαι, αὐτὸς Ἀλέξιος διεξέειπεν ἐν τῇ πρὸς τὸν Πάπαν τῆς παλαιᾶς Ῥώμης Ἐπιστολῇ, παρὰ ΒΖΩΒΙΩ, ἐν ἔτει 1203. Ἀριθμ. Α'. Κατήχθη τοίνυν μετὰ τῷ συναρροφῶντος στρατῷ εἰς τὴν Κωνσταντίναν Ἀλέξιος ὁ Ἀγγελος. Ἐπεὶ δὲ λόγοις οὐκ ἔπειθε, τὴν πολιορκίαν ἐπιχειρεῖ. Ἐπὶ τούτοις, τῷ ἤδη Ἀυτοκρατορῶντος Ἀλεξίῳ τῷ Κομνιῷ πανικῷ δέματι κατελημμένῳ, καὶ εἰς φυγὴν τραπομένῳ, ὑπὸ τῶν ἐν τῇ πόλει τῆς εἰρκῆς ἐξάγεται Ἰσαάκιος, πεπηρωμένος ὧν ἡδὴ τῷ ὀφθαλμῷ ὑπὸ τῷ ὁμαίμωνος ἐξαχθεὶς δὲ, τὴν τῷ Κομνιῷ φυγὴν παραυτίκα τῷ Υἱῷ διαγγέλλει, τῷ τε ἑαυτῷ ἀποκατάσσειν διασημῶς, τὴν ἐπὶ τὸ Ἄσυ εἰσελθεῖν αὐτῷ παραινῆ. Ἀλλ' οὐκ ἂν ἐπιτρέψειν ἔφησαν οἱ Λατῖνοι εἰς τὴν πόλιν τὸν Υἱὸν εἰσεῖναι, εἰμὴ πρότερον καὶ ὁ Πατὴρ σωυπόχοιτο εἰς τέλος ἄξιον, ὅτε ὁ Υἱὸς ἐπὶ τῇ γενομένῃ ἐπικερίᾳ Λατίνοις φθάσας προεπηγγέλατο. (Νικήτας Χωνειάτης ἐν τοῖς περὶ Ἰσαακίῳ τῷ Ἀγγέλῳ, καὶ Ἀλεξίῳ τῷ Υἱῷ, Σελ: 354.) Ἦνεν δὲ καὶ ὕστερον αὐθις, ἐκπολιορκηθείσης ἡδὴ τῆς πόλεως, τὴν τῶν Ἀνατολικῶν Ἐκκλησιῶν ὑπὸ τῷ Ῥώμης Θρόνῳ ὑπόπτωσιν διὰ Γραμμάτων πρὸς τε τὸ Σταυρόσημον στρατιωτικὸν, καὶ πρὸς αὐτὸν δὲ τὸν Πάπαν, ὑποχέσθαι ἀναγινώσκεται καὶ Ἀλέξιος ὁ Κομνιῶς: ὡς οὐ μόνον ἐκ τῶν ρηθέντων Γραμμάτων, ἀλλὰ καὶ ἐκ τῆς τῷ Σταυροφορικῷ Στρατῷ Ἐπιστολῆς τῆς πρὸς τὸν Πάπαν Ἰννοκέντιον τὸν Γ', φανερὸν γίνεται παρὰ Βζωβίῳ, ἔτει 1203. Ἀριθμ: Β'. Ἀλλὰ γὰρ καὶ κατ' ἑτέραν προτέτι σωθήκῃ, ὑπὲρ τῆς ἐπενεχθῆσομένης ἐπικερίας, καὶ ἀμύθητον ὅσον χρημάτων πλῆθος τοῖς Σταυροφόροις ἐπαριθμηθήσεσθαι ὡς προεπαγγελθέν: καὶ ταῦτ' ἄρα οἱ τῶν Σκήπτρων ἀρτίως ἐπειλημμένοι, ταλαπώ-

Τόμ: Β'.

Κ κκκκκ

ρως

ρως λίαν καὶ χαλεπῶς διὰ σπυδῆς ἐποιῶντο πανταχόθεν σωμα-  
 γαγεῖν· ἔτε γὰρ τῶν ἐν τοῖς Βασιλείοις ταμείων, ἔτε τῶν ἄλλων  
 τῶν ἀλόντων πλῆτε ἐπαρκέντων Λατίνοις· (μικρὰ γὰρ ἐδόκει  
 τὰ προσφερόμενα) καὶ αὐτὰ τὰ τῷ Θεῷ καθιερωμένα, ἀνοσίῳ  
 διαρπάζεσθαι τόλμη· ἔδὲ τις ἔδὲ τῶν Ἐκκλησιαστικῶν Ἱερῶν σκεδῶν  
 ὑπείσθῃ φειδῶ, ἔδὲ καλλονῆς τῆς τῶν Ἀγίων Εἰκόνων, ὡς μη-  
 δὲν εἰς λόγον εὐσεβείας διαφέρειν τιθεμένων Λατίνων, εἰ καὶ τὸν  
 ἀπὸ τῶν χρυσῶν ἀπεκασάσαν· Καὶ ἔποτε δὲ καὶ καθεξῆς  
 οἱ Κρατῶντες τῆς παρ' ἐκείνων ἐπεδεήθησαν βοηθείας, ἐκ ἄλλως  
 πάλιν, ἢ ἐπὶ μεγάλῃ χρυσῷ δωάμει τῷ ἐξ αὐτῶν ἀρωγῶν ἐτύγ-  
 χανον ἐξωνόμενοι· καὶ περ εὖ εἰδότες, τὰ Ἱερὰ αὐτοῖς ἐπάναν-  
 κες εἶναι διασυλᾶν ἐπὶ τῷ καὶ βεβηλῶν. Ἐφ' οἷς, ἔδ' οἱ τῆς  
 Πόλεως ἔδὲν τι ἥττον ἐδόκειν ἀνέχεσθαι, ὅπερ ἐκ τῶν περιόν-  
 των σφίσι, μηδὲν ὅλως εἰς τῷ ἐπιτασσομένῳ αὐτοῖς τῶν κοινῶν  
 ἔνεκα δαπάνῃ σωαισφέρειν ἀξιῶντες, ἔδὲνα λόγον ἐποιῶντο τῆς  
 τῶν Ἀγίων ἀνατροπῆς τε καὶ βεβηλώσεως. (Νικήτ: ὁ Χωνεάτ:  
 Αὐτ: Σελ: 355.) Ἐν ᾧ τοίνυν ἔτως ἀπανταχόθεν τὰ χρή-  
 ματα σωελέγετο, τὰ τε μεταξὺ προπολίσματα καὶ προάσια,  
 τὰ τε κατὰ τῷ Προποντίδα Ἱερὰ Τεμένη, καὶ τὰ περίεξ Ἀνάκ-  
 τορα· οἱ Σταυροφορῶντες διεπόρθην τε καὶ ἐδήκον· πολλὰ καὶ ἐκ  
 καὶ τοῖς Γραικοῖς πρὸς τῷ τῶν ἰδίων ἄμωαν ἀντεπεξίστι χα-  
 ρας σωέβαλλον. Διὸ δὴ καὶ ὁ λαὸς ἐπανασάντες, ἐπικερῶν  
 σφίσι κατὰ Λατίνων ἐξητῶντο τῶς Αὐτοκράτορας. Καὶ ὁ μὲν  
 Ἀλέξιος, οἷα εἰκὸς, φοίκῃ σπείχετο ἐπὶ τῶτοις. Πῶς γὰρ ὅπλα  
 εἶχεν ἄραι κατὰ Λατίνων, ὅς ἐαυτῷ γε πάντως, καὶ ἰχυροτέρως  
 ὄντας ἦδει, καὶ ἐφικομένως ὡς ἀντιλήπτορας; Ὁ δὲ Ἰσαάκιος  
 ὑπετίθετο τῷ ἡμῖν, τῶν τῶν χύδῳ ὄχλῳ κραυγῶν ἀμελήσαντα,  
 τιμᾶν χρῶμαι τῶς εἰς ἀνάληψιν τῶ Κράτους αὐτοῖς ὑπογοήσαντας.  
 Μόνος τοιγαρὲν ἈΛΕΞΙΟΣ ὁ ΔΟΥΚΑΣ, ᾧ ἐπὶ κλῶ ΜΟΥΡΖΟΥ-  
 ΦΛΟΣ διὰ πύρως ἄγαν βασιλείων πρὸς Λατίνους ἐτόλμησεν ἀντε-  
 πεξελεθεῖν, ὡς τῷ παρὰ τῶν Πολιτῶν χάριν ἔτως ἐκρυπτοῦ περι-  
 ποιησόμενος. Ἐμμανῶς ἔν ὁ δῆμος ἐν τῶτοις ἐπισυγᾶς, καὶ λοι-  
 ποῖσι μὲν τῶς Αὐτοκράτορας περιπλῶων, ἀνταρσίαν δὲ ὠδύνων,  
 ἐπὶ τῷ Μεγάλῳ Ἐκκλησίαν συρρεῖ, καὶ τῶς λογάδας ἕνα τινὰ  
 προσβιάζεται ἀνελεῖσθαι τὸν αὐτοῖς Βασιλεύοντα. Ἀλλ' εἰς μηδαίς  
 ὅλως ἀπώτα, ὁ τὸ διάδημα τῶ Κράτους παραβόλων ἀναδέξασθαι.  
 Τρίτης δὲ παρελθούσης ἡμέρας, Νεανίας τις ΝΙΚΟΛΑΟΣ ΚΑΝΑ-  
 ΒΟΣ ὄνομα, Αὐτοκράτωρ καὶ ἄκων ἀναγορεύεται. Ὅπερ δὴ πυ-  
 θόμενος Ἀλέξιος, Βονιφάτιον τὸν Σταυροφόρον Ἀρχιερατηγόντα  
 μεταπέμπεται: καὶ βυλῶσαμένοις, τὰς Λατίνικὰς δὲν ἔδοξε σπεί-  
 ρας εἰς τὸ Παλάτιον εἰσενεχθῶναι, ὑφ' ὧν ὅτε ἀρτίως προχειρι-  
 θείς ἐπικαταληφθεῖν, καὶ ὁ λαὸς κατασείλοιτο· ὁ δὲ δὴ Μάρτυρ  
 ἐνκαί-

εὐκαιρίας ταύτης δραξάμενος τῇ τῆς Ἀρχῆς αὐτοῦ ἐπιβίῳ, τῷ βασιλῷ αὐτίκα τῷ Κρατῆντος ἀνακαλύπτει τοῖς Πελεκυφόροις στρατιώταις, καὶ ῥᾶτα ἐαυτῷ προσεφέλκεται· ὅθεν τῷ Ἀλέξει ἐν εἰρκῇ βληθέντος, ἀμφιέννυται μὲν Μέρξφλος τὰ τῆς Βασιλείας παράσημα, Νικόλαον δὲ ἀπὸ τῶν περὶ αὐτὸν ἐγκαταλειφθέντα συλλαβὼν εἰς φυλακὴν παραδίδωσιν· τὸν δὲ Ἀλέξιον, ὡς, δις σπᾶσαι· τὰ δὲ δηλητηρία, μὴ κατεργάσθαι σιωεῖσθαι, τὰ δὲ δημῖα αὐτεργῶν βρόχῳ ἀπῆγγεν. (ΝΙΚΗΤΑΣ ὁ Χωνιάτης Αὐτ.: Σελ: 360.

Ταῦτα ἄλλ' ἐν ταῦτα, μακρῷ ἄλλως διεξίσιν οἱ Λατίνοι, κάκις παρεξηγούμενοι πάντα, ἐφ' ᾧ γε δεῖξαι δικαιοτέρον σφᾶς κατὰ τῶν Γραικῶν ἐκμανῶσαι, καὶ ὅπλα ἄρασθαι. Φέρεται γὰρ τὰ ὑπὸ ΒΑΛΔΟΥΤΙΝΟΥ, τῷ πρώτῳ ἐκ Λατίνων ἐν Κωνσταντινπόλει Αὐτοκρατορήσαντος, πρὸς τὸν Πάπαν Ἰννοκέντιον τὸν Γ'. γεγραμμένα, καὶ ἐν τοῖς αὐτῷ τῷ Ἰννοκέντιῳ Πρακτικοῖς, τοῖς ὑπὸ Ἀνωνύμου τινὸς συγγραφῇ παραδεδομένοις διασωζόμενα, ἐν Καταλόγῳ 13. 14. 15. 16. Βιβλ: Δ'. τῶν Ἰννοκέντιῳ Ἐπιστολῶν, ὃν ΦΡΑΓΚΙΣΚΟΣ ΒΟΣΚΟΥΤΟΣ ἐν Τολόσῃ τῶν Τεκτοσάγων ἐξέδωκεν Ἐφ' 1635. Σελ: 87. Ἐν γὰρ τοῖς Γράμμασιν ἐκείνοις (Βαλδουίνος) τὰς Λατινικὰς τόλμας δικαιολογήσων πρὸς Ἰννοκέντιον, πλεῖστα τῆς Γραικῆς ἀπιστίας δείγματα παρεξηκῆναι διέδειξε. Πρῶτον μὲν γὰρ, τὸν Αὐτοκράτορα, φησὶ, μετὰ τῷ Λαῷ παρὰ χρεῖμα, ὡς οἱ Λατίνοι τειχέων ἔξω ἐγένοντο, πάντα ἀθετήσαντας τὰ ὑπεχημένα, τοσαύταις ἐπιουκίαις περιπεσεῖν, ὅσα περὶ αὐτὸν πρότερον αὐτοῖς ἐπομύματα. Ἐπειδὴ δὲ τῶν προπολισμάτων τὰ πλεῖστα ἄγαστε καὶ φέρει τοῖς Λατίνοις, τινὲς τῶν Γραικῶν ἀντεπεξήρσαν ἀμωμέμενοι· ἔτι καὶ ταῦτα γράφει κατὰ πολλῷ ἀσυνθεσίαν πρὸς τῷ Αὐτοκράτορι διαπραχθῶσαι. Καὶ πέμψαι μὲν αὐτὸν τὸν Ἀλέξιον τῆς ὑποχρηστέρας ὅτι παραδοθήσεται τὸ Παλάτιον, παρακρέσασθαι δ' εἰς τῷ τὸν Μαρχίωνα ἀφικόμενον. Πρὸ δὲ πάντων, καὶ Ἰσαάκιον, φησὶν, ἀπὸ Λατίνων τῷ τῷ παιδὸς ψυχῇ ἀποτρέψαι· ὁπότε δὴ πρὸς Λατίνους εὖ ἴσμεν ἐπιρρέπεσθαι εἰς αἰὶ γεγονέναι σιῶμα τῷ Υἱῷ Ἀλέξιῳ, καὶ Ἰσαάκιον τὸν γεννιήτορα, ὅσον ἐδὲ παρασηῖσαι ἔχει τῷ λόγῳ ἀποχρώντως ΝΙΚΗΤΑΣ, μάρτυς τῶν πραγμάτων αὐτόπτης γενόμενος. Προσέθησι δὲ Βαλδουίνος, καὶ ὡς ὑπὸ Μέρξφλου ἢ Πόλις προμαχῶσι τε καὶ τοῖς ἄλλοις πολεμιστοῖς ὀργάνοις καὶ μηχανήμασι κατὰ χύρω· ὡς εἰ μὴδὲ θέμις αὐτῷ δηλονότι παντὶ ὅτῳ τὰ οἰκεία κατοχυρῆν καὶ κατασφαλίσθαι. Καί τοι γε ἐδὲ μάχῃ τῷ ὄντι τῶν Γραικῶν σιωάσθαι πρὸς Λατίνους προαιρουμένων, ἐφιεμένων δὲ μᾶλλον, ὅπως ἂν αὐτοῖς οἱ ξένοι ἀπάραντες τῆς Πόλεως, ἄλλοτε ποι τράποιντο. Βαλδουίνον δὲ τῇ

Κ κκκκ 2

ψύδο-

ψευδολογία ὑπερβαλέσθαι φιλονεικῆ πῶς καὶ ἈΝΤΩΝΙΟΣ ὁ Φλω-  
ρεντινὸς Ἐπίσκοπος προθαί: ὅτι καὶ οἱ Βασιλεῖς αὐτοὶ τὸ παρ'  
αὐτοῖς στρατιωτικὸν ἐξαγαγόντες σωέβαλον εἰς μάχῃ Λατίνους,  
καὶ πολλοὶ ἐκ τούτων ἀπώλοντο. Ἐν Τίτλῳ ΚΒ'. Κεφαλ: ΙΓ'.  
Μέρ: ΙΒ'.

Ὁ τοίνυν ἐπιβήτωρ τῆς Θρόνου Μέρξφλος πρεσβείαν ἐπὶ τῆς  
Σταυροφορέντας σειλάμενος διαλύσεις τε πρῆτεινε, καὶ πρὸς λό-  
γους εἰρηνικὰς παρεκάλει· οἱ δὲ, τῷ τε ἀποκατάσασιν τῆς κατα-  
χευθέντος Ἀυτοκράτορος ἀνεन्दότως ἀπήτην, καὶ ἥς Ἀλέξιος  
Φθάσας ὑπέχετο ὑπὸ τῇ Ῥώμῃς Ἐκκλησίᾳ ὑπαταγῆς τῷ ἐκ-  
πλήρωσιν· ὧν ἐκάτερον ἐξ ἴσου ὁ Μέρξφλος ἀπεσρέψατο. (ΒΑΛ-  
ΔΟΥΓΓΙΝΟΣ ἐν τοῖς ἀπομνημονοῦθεσι Γράμ:) Οὐ δὲ χάριν ἐν πολι-  
ορκήσῃ τὸ Ἄσυ οἱ Λατῖνοι περιλαβόντες, καὶ τοῖς πολιορκημέ-  
νοις εὐχαιρώτοις περιτυχόντες, ῥαδίως εἰσέβαλον, καὶ τῆς προ-  
συχόντας ἀπαξάπαντας ἔργον μαχαίρας ἐπίσησαν· ὡς μὴδ' ἐξαρ-  
κῆν ἐπὶ πλέον πρὸς τὰ τῶν ἀναιρεμένων πλήθη τὸ στρατιωτι-  
κόν, ἀπειρημέναι δὲ ὑπὸ τῆς καμᾶς, καὶ τὰ ὅπλα τέως ἀπο-  
θεμένους, πρὸς ἀνάπαυλάν τραπέντας ἀναπεσῆν. Καὶ πρὸς κα-  
λεῖτο μὲν τῆς ἰδίης ἐπὶ τὰ ὅπλα μεταξὺ Μέρξφλος, ἔδεν ὁμῶς  
ἀνύων, διὰ φυγῆς ἔγνω τῷ σωτηρίαν ἑαυτῷ πραγματούσασθαι.  
Τοιγαρὲν μηδεμιᾶς ἔτι ὑπολειπομένης ἐλπίδος, τῇ ἐπίσῃ παρί-  
σανται τοῖς πολεμίοις οἱ ἐκ τῆς Πόλεως. Σταυρὸς τε ἀνὰ χεῖ-  
ρας ἔχοντες, καὶ τῆς Σωτῆρος τὰ ἐκτυπώματα. Ἀλλὰ μὴδὲν  
τὸ παράπαν ἐκ τούτων ἐπικαμφθεὶς ὁ στρατὸς εἰς οἶκτον, ἐπὶ τε  
τὰ λάφυρα τρέπεται, καὶ ἐπ' αὐτὰ τέως τὰ τεμένη τὰ Ἱερὰ,  
καὶ ἐπὶ τὰ Ἁγία τῶν ἐν τοῖς Ναοῖς σκιδῶν χεῖρας ἐφίησι.  
Καὶ καταβάλλονται μὲν Ἱερὰ εἰκόνες, προσριπτῆνται δὲ τῷ  
βορβόρῳ, τὰ μαρτύρων εὐαγγῆ λείψανα, καταχεῖται δὲ κατὰ  
Φρικτῷ ἀνοσιότητά τὸ Χριστὸς ζωηφόρον αἷμα, καὶ τὸ σῶμα κα-  
ταπατεῖται εἰς τῆς δαφνός. Εἴτ' ἀπὸ τῶν εἰρημένων Ἱεροσυλιῶν καὶ  
ἀσεβημάτων, ἐφ' ἑτέρας ἀθεμιτηγίας τραπομένων, ἀρπάζονται  
μὲν ἀνυποστάτῳ βίᾳ εἰς φθορὰς, καὶ μοιχείας, καὶ ἀθέτους ἐτέ-  
ρας μίξεις Ματρῶναι, Παρθένου, Μονάστρια, διαπορθῆνται δὲ κατὰ  
οἰκίαι, καὶ ἀπελαύνονται τῶν ἰδίων οἱ κεκτημένοι περιάγοντες δὲ  
εἰς τὰς πλατείας τε καὶ ἀμφοδὸς, ἔδ' ὅπως ἂν καταλύσαιεν ἴσασιν·  
εἰς ὃ δὲ, φωνὴ κηρύττοντος ἐξηκέσθη τορὸν τε καὶ διαπρύσιον·  
ὅτι Λατίνων ἐπιτρεπόντων, ἐφῆται παντὶ τῷ βελομένῳ ἀπὸ  
τῆς πόλεως ἐξέρχεσθαι. Οἱ δὲ ἄρα ἐξήρσαν· καὶ ὁ μὲν τῷ  
γαμετῷ, ὁ δὲ τὸ θυγάτριον· ἑκασὸς τε τὸ οἱ προσπασσὸν δεινὸν  
ἐκ τῆς ἐπηρείας, ἢ τ' ἀγαθὸν ἔπερ ἀφῆρητο, προῆει κλάων τε  
καὶ ἀποδυρόμενος. Ἠγάτο δ' ἀπάντων ὁ Οἰκουμενικὸς Πατριάρ-  
χος ἐπ' ὀναρίᾳ δυσίῳς ὀχόμενος, μὴ πῆραν φέρων, μὴ ῥάβδον, μὴ



μὴ ἀργύριον ἐπὶ ζώνης, μὴδ' ὑποδύματα. (ΝΙΚΗΤΑΣ ὁ Χω-  
νεάτης, εἰς Ἀλέξ: Δέκ: Μέρξφλ: Σελ: 366. κξ:) Τῶν μὲν  
ἐν γενομένων σφαγῶν, καὶ τῆς ἀμυθίτης λείας, καὶ Βαλδουίνος  
αὐτὸς ἐπὶ τῆς εἰρημένης Ἐπισολῆς μνείαν πεποίηται. Τὰς δὲ  
δὴ βιαίως ἀρπαγὰς, καὶ τὰς γυναικῶν φθοράς καὶ μοιχείας, καὶ  
τῷ λοιπῷ ἀκολασίαν τε καὶ ἀσέλγειαν, σιγῇ παρήλθε βαθεία:  
στρατὸν Θεῷ, καὶ στρατοδόμενον ἔτι τῷ Θεῷ, τὰς ἀλιτηρίδας ἀν-  
δραποδιστὰς ἐκείνας κατονομάσας. Ἀλλ' ὅτι γὰρ τ' ἀληθῆ Νι-  
κήτας τῇ Ἱστορίᾳ παρέδωκε, καὶ αὐτὸς ἸΝΝΟΚΕΝΤΙΟΣ ὁ Γ'.  
ἐπιμαρτυρεῖ, τὰς τῶν ἀλασφύρων ἐκείνων ἀνοσιουργίας ὁμοίως  
ἀποδοκιμάσας, ἐν τῇ πρὸς τὸν Μόντις-Φεδράτῃ Μαρχιῶνα  
Ἐπισ:, περὶ ἧς ὕστερον, τοιάδε λέγων: „Μηδαμῶς τῷ Ἱερσα-  
„λήμ ἐπανακτῆσασθαι σκοπῶντες, τῷ δὲ Κωνσταντίνῃ πόλιν κα-  
„τακυριῶσασθαι· ἄτε τῷ ἐπὶ γῆς περισίαν τῆ ἐν ἔρανοῖς πλῆ-  
„τῃ προτέραν τιθέμενοι τὸ δὲ πολλῷ τῆς δεινότερον, ὅτι τι-  
„νὲς ἐδὲ θρησκείας, ἐδ' ἡλικίας, ἐδὲ τῆς τῆ θήλεος ἀφενείας  
„ἐφείσαντο, ἀλλὰ καὶ πορνείας, καὶ μοιχείας, καὶ αἰμομιξίας  
„πρὸ ὀφθαλμῶν τοῖς πᾶσιν ἐργ' ὅμενοι, τάς τε ὑπ' ἀνδρὶ τελεί-  
„σας, καὶ χηρῶν, καὶ Ματρῶνας, καὶ παρθένους, καὶ τὰς  
„Θεῷ προσέτι καθωσιωμένας, τῇ τῶν οἰκοτρίβων ἀκαθαρσίᾳ ὑπε-  
„ξέθεντο. Οὐδ' ἄλλος ὑπῆρξε τὰ Βασιλικὰ τῶν ταμίων ἐξωτ-  
„ληκόσιν ἀποκενώσασθαι, καὶ πάντα δὴ, τά τε τῶν μεζόνων  
„ἐπίσης, καὶ τὰ τῶν ἐλασσόνων λείαν πεποικέναι· εἰ μὴ καὶ πρὸς  
„τῆς θησαυρῆς τῶν Ἐκκλησιῶν, καὶ τὸ μᾶλλον ἔτι δεινὸν, καὶ  
„πρὸς τὰς αὐταῖς ἐπανηκῆσας κτήσεις τὰς χεῖρας ὑμῶν ἐκτεί-  
„νῃτε· τῆς τε ἀργυρῆς δίσκους ἀπὸ τῶν Οὐσιασθηρίων ἀρπάζοντες,  
„τά τε ἄδυστα προσεπιβιαζόμενοι, καὶ σταυρῆς, καὶ εἰκόνας, καὶ  
„Ἱερὰ λείψανα σωμαποφερόμενοι· ὥς τῷ Γραμμῶν Ἐκκλησίαν,  
„καὶ τοὶ τῆς ἐκ τῶν διωγμῶν θλίψεως κατεπειγῆς, εἰς ὑπα-  
„κοὴν τὴν ὑπὸ τὸν Ἀποστολικὸν Θρόνον ἐπανιέναι ὀλιγωρεῖν· τὰ δὲ  
„τῆς ἀπωλείας ὑποδείγματα, καὶ τὰ ἔργα τῆ σκότης παρὰ  
„Λατίνους κατιδόντας, δεόντως αὐτὰς ὑποφρίττειν, καὶ ὡς χεί-  
„ρας κινῶν ἀποσρέφεσθαι. Τὰ δ' αὐτὰ διεξέρχεται ἅμα καὶ  
ἀποβδελύττεται Ἰννοκέντιος ὁ Γ'. καὶ ἐν τῇ πρὸς τὸν Καρδινά-  
λιν τῆ Ἀγίας Μαρκέλλῃ Ἐπισολῇ, περὶ ἧς ὁμοίως ἔπειτ' εἰρήσεται.

Ταῦτ' ἄρα παῖδες ἔδρων Λατίνων οἱ τῷ Σταυρῷ ἑαυτὰς  
παρασημιώμενοι: τῆς δὲ εὐχῆς καθαγιασθέντες στρα-  
τοῦσθαι τῷ Θεῷ. Αὐτίκα δὲ ὡς ἔτως ἐγένοντο τῆς πόλεως  
κύριοι, καὶ ΒΑΛΔΟΥΤΙΝΟΝ ἔγνωσαν ἐκ τῶν ἰδίων ἐπὶ Κωνσταντι-  
νουπόλεως βασιλεῦσαι τὸν Φλανδρίας Κόμητα· ὅς δὴ τὸ ἀπ' ἐν-  
τεῦθεν ἅπαντα ἐξῆς τῷ Γ'. Ἰννοκετίῳ δι' Ἐπισολῶν ἀναφέρων,  
πλατείαν τινὰ τῷ κατηγορίαν κατὰ τῶν Ἀνατολικῶν ἐξυφαί-

Τόμ: Β'.

Λ αλλλλ

ναν

νων μετήει, ἐφ' ᾧγε, ὡς μὴ παρ' αἷσαν τέτοις γενομένης τὰς παρὰ τῶν σταυροφορέων ἀπονοίας τῷ Πάπᾳ ἐναποδείξει· τὰς γὰρ Ἀνατολικὰς αὐτοῖς ἐμποδῶν γενέσθαι, τῷ μὴ τῷ Παλαισίνῳ δηλαδὴ ἀνακτιήσασθαι, τῷ ἐκείνης ταῖς μετὰ τῶν Σαρακηνῶν ἐπαγαπήσασι Σωθῆκαίς, καὶ τῷ τέλειον μῖσος τὸν Πάπαν μισεῖν καὶ τῷ τὰς γραπτὰς δὴ μόνας τῶν εἰκόνων (ἡμισα δὲ τὰς γλυπτὰς ἢ λαξυτάς) προσέσθαι καὶ τῷ Λατίνῳ δὲ ἅτε ἀδαπτίσας, αὐτοῖς καταδύειν καὶ κῶας ἀποκαλεῖν. Ἀνθ' ὧν, καὶ τὸν Θεὸν, τῷ τε Πόλιν αὐτῶν καὶ τὸ Κράτος τῇ τῶν Σταυροφόρων χειρὶ παραδεδωκέναι, δίκας αὐτὰς τὰς ἐπὶ τοσούτοις παρανομήμασιν εἰσπραττόμενον. Ἰκετοῦ δ' ἐπὶ τέτοις τὸν Πάπαν, ἦν, ἐστυνασθὲν τὰς τυχόντας, τῶν τε ἐν καὶ τῶν ἄλλως γεγοιότων ἐπίσης, Ἄνδρας τε δὴ καὶ γυναικας, ἀπὸ τῶν Ἐσπερίων χωρῶν μεταπεμψάμενος ὡς αὐτὸν ἀποσείλη, γῆν τρισόλβιον κληρωθησομένης· περιεῖναι γὰρ, ὅσα ἅπασιν ἐξαρκέσειαν, πλῆτεις, τιμὰς, τὰ ἄλλα· πρὸ δὲ πάντων, ἵνα τὰς ἀπὸ τῷ Κλήρῳ, καὶ τὰς ἐκ τῷ Μοναχικῷ χήματος ἐπιτάξειε, τὰς δῆμους εἰς τὸτο προτρέπεσθαι· σωάμα δὲ τῷ Λαῷ καὶ αὐτὰς κατ' ἴλας ἐπ' Ἀνατολὰς διαπεραιεῖσθαι, Ἐκκλησίας αὐτόσε φυτοῦσοντας. Προσίθῃσι δὲ, καὶ ὡς ἔ' μικρὸν τοῖς πράγμασι σωτελέσει, εἴπερ ἐν Κωνσταντινουπόλει ὁ Πάπας Σώροdon συγκροτήσας, καὶ αὐτὸς ἐν προσώπῳ παρυσιάσειεν· ἔτω γὰρ ἂν ἡ τῆς Ἑώας λήξεως Ἐκκλησία εἰς κοινωνίαν τέως τοῖς Λατίνοις συμβαίη· ὡς νῦν ἡδὴ ὁ εὐκταυτότατος καιρὸς ἐπιφαύσειε, καὶ τρόπῳ παντὶ τῆς δοθείσης εὐκαιρίας δεήσει δράξασθαι, ὁπότε ῥᾶς ἂν εἰς πέρας ἀχθείη; ἢ τῶν Ἐκκλησιῶν εἰς ταῦτο ὁμοφροσύνῃ καὶ ἑνώσει. Ἄυτη μὲν ἦ Βαλδεδίνῃ Ἐπιστολῇ, ἔνθα ἀνωτέρω εἴρηται, κεῖται. Ἐν δὲ δὴ τῷ τῶν Λατίνων Λογάσιν ἐπιμελὲς ᾧ, ἀγρόεις τε δὴ, καὶ πόλεις ὅλας, καὶ παντοίαν ἄλλω περικεῖσθαι ὑφ' ἐαυτοῖς ποιεῖσθαι ὧν περ ἐν τοῖς μάλιστα ἐπιτελεαγμένῳ ὁ Μαρτίων Μόντις-Φερράτῃς (2), ἐπισείλας καὶ ἔτος πρὸς Ἰννοκέντιον, διεπωθάνετο· Πότερον; ἅτλα κατεληφὼς ᾧ, ἐν δίκῃ ἄρα κατέχειν διώαιτο, ἢ ἔ'; ὁ δὲ κατὰ τὸ αὐτὸ, καὶ τῷ τῷ Πάπᾳ ἐπὶ τῷ περιποιέμενος συγκατάνοθον, πλεῖστα παραπλησίως ἐν οἷς ἔγραφε κατεφέρετο τῶν Ἀνατολικῶν. Παρίσῃ δὲ καὶ ὡς, ἡδὴ ἐπὶ τῆς Ἀρχῆς Ἰσαακίῃ τε καὶ Ἀλεξίῃ ἀποκαστάντων, αὐτοὶ μὲν Λατῖνοι, τῷ ἐπὶ Συρίας ἀγασσαν ἐτύγχανον παρασκυβάζομενος· ἐπεὶ δὲ πρὸς ἀπάτῃ ἐκείνης τοῖς ὄρκοις καταχρωμένους σωεωράκασιν, εἰς ἐκπόρθησιν τῆς Πόλεως καὶ

(2) Mons Ferratus. ἔρος σιδηρῶν ἐστίν, Ἐλλοις εἰπεῖν διὰ τὰ ἐν αὐτῷ Σιδηρεῖα Μεταλλεῖα ἔτω καλούμενον.

καὶ ἄκοντες ἀναγκαζοῦν χωρεῖν, καὶ ὡς ἔτω διαπεπραχότες ἅπαντα εἶεν, ἐφ' ᾧ τὰς Ἀνατολικὰς ἐπὶ τῷ σὺν Λατίνοις κοινῶν πάλιν ἀνακαλέσασθαι. Ἀλλὰ νῦν αὐτὰς ἐν ψυχῇ μετέρω ἀποκαρδοκεῖν τῷ τῷ Πάπα ἀξίωσιν τε καὶ σιώνουσιν.

Ὁ τοίνυν Πάπας τὰς τῷ Βαλδρίνῳ καὶ τῷ Μαρχίῳ Ἐπιστολὰς δεξάμενος, τὸ μὲν πρῶτον ἐν ἀμνηχανίᾳ ᾧ, πολλὰ κατὰ Φρένας ἐλίττων καὶ κατὰ θυμόν. Ἐλύπει γὰρ αὐτὸν, οἷα εἰκὸς, τὰς ἐπὶ ἀπολυτρώσει τῆς Ἱερᾶς γῆς σταυροφορήσαντας εἰς τὴν ἐκστρατείαν, καὶ μηδὲν ὅλως τῆς τῶν Χριστιανῶν ἀψαθαι χώρας πῖσιν ἔνορκον παρεχημένους, χαίρειν ἤδη φράσαντας Παλαιστίνῳ, καὶ τὰς περὶ αὐτῷ ἀγῶνας ἐν δοῦτέρῳ θεμένους, ἐπὶ τῷ Κωνσταντινέῳ ἀνακρέσασθαι πρῶτον, καὶ αὐτῷ ἐν μυρίαις ἀνδροκτασίαις, λεηλασίαις, Ἱεροσυλίαις, Γωαικῶν ἀρπαγαῖς, μοιχείαις, αἰμομιξίαις, παντοδαποῖς τε ἄλλοις ἀσελγήμασιν ἐκπορδήσασθαι. Ἀλλὰ πάλιν αὐτῷ τὸν νῦν εἰσῆει διαλογισμένῳ, ὅτι καὶ τὰ πρὸς ἐπισιτισμὸν ἤδη τῷ στρατιωτικῷ ἐπιλελοίπει, ἀχορηγήσεσθαι Ἀλέξιος ἐπὶ τῇ παρ' ἐκείνων ἐπικυρία προὔποσας ᾧ, ὡς ἐντεῦθεν τῷ ἐνθὺ Συρίᾳ ἔχειν τραπῶναι τῶν Γραικῶν δ' ἔπειτα τοῖς ὑπεχημένοις μὴ ἐμμενόντων, δικαίως ἄρα καὶ Λατίνους τῷ ἐκείνων πόλιν ἐξ ἐφόδου προαχθῶναι εἶναι. Ὡς ἔν ἐπὶ πολὺ τῷ ψυχῷ Ἰννοκέντιος ἐκυμήνατο, τῷ ἐκ Θεῶ δίκῃ τελοῦσθαι σιωθεῖν ἔδοξε τὰς Γραικὰς μετ' ἐληλυθεῖαν διὰ τε τὸ χίσμα, καὶ παρὰ τὸ μὴ κατὰ σπῆδον ὡς τάχος τὰ βοηθήματα Λατίνοις παρεχημέναι, οἷς ἔτοι τῷ Παλαιστίνῳ ἀνακτῆσεσθαι ἔμελλον. Καὶ δὴ, καὶ ὅπως ἂν ῥάδιον τὸ ἐφεξῆς ἐντεῦθεν οἱ Λατῖνοι τῆς Ἱερᾶς γῆς προϊῶσθαι ἔχοιεν, τάχα γε ἔνεκα καὶ τὸν Θεὸν τὸ συμβᾶν ἐπιτρέψαι. Τῷ δὲ Μαρχίῳ ἀπώτησε: μηδὲν τι περὶ τῷ ἐρωτήματος μήπω ἀποκρίνασθαι ἔχειν. Δικαίαν μὲν γὰρ ἴσως τῷ δίκῃ τὰς Ἀνατολικὰς ὑποχεῖν ἀδίκως γεμῶν ἐκείνοις τὰς Σταυροφορικὰς ἐπιθέσθαι. Ἐπιτρέπαι δ' ἂν ὅμως αὐτῷ τῶν τε κατελημμένων Πόλεων τῷ Κυριότητι, καὶ ὧν ἂν ἄλλων κατὰρξοι ἐφεξῆς ὕψερον. Τὸ δέ τοι τοιαῦτα βαλῶσθαί τε καὶ ἀποκρίνασθαι Ἰννοκέντιον, ἐξ αὐτῶν αὐτῷ γίνεται δῆλον τῶν πρὸς τὸν Μαρχίον ἀπαντήσεων, τῶν ἐν ταῖς Ἰννοκεντίς ἐμφερομένων Πράξεσι. Σελίδι 94.

Οὕτω παρὰ πάντα λόγον δικαίως ὑπὸ τῶν Σταυροφόρων αὐτῆς τε Κωνσταντινῆς πόλεως, καὶ συχνῶν ἄλλων ἐπὶ τῆς Γραικίας χωρῶν ἐκπεπορθημένων, ὅλος ᾧ τὸ ἀπ' ἐκείνου ὁ Πάπας, εἰς τὸ τῷ Ἀνατολικῷ Ἐκκλησίᾳ ἐνώσασθαι τῇ Δυτικῇ. Καὶ πρῶτον μὲν ἐπισείας τῷ Βαλδρίνῳ, τὸ τῆς Κωνσταντινῆς πόλεως αὐτῷ ἐπεκύρως Κράτος· ἅμα δὲ καὶ τοῖς Σταυροφορῶσιν ἐπέτασε πᾶσι Βαλδρίνῳ κατὰ Γραικῶν ἐπιβοηθεῖν, τῷ Ἀρχίῳ αὐτῷ προ-

Λ αλλλλ 2

σεπι-

σεπισηρίζοντας. Τοῖς δ' ἐν 'Επισκόπῃ ἢ 'Αββάδος βαθμῷ τεταγμένοις, καὶ τοῖς λοιποῖς τῷ Κλήρῳ τοῖς ἄχρις ἐκείνῃ τῇ τῶν Σταυροφόρων Στρατιᾷ σωεφεπομένοις, παρήναι Βαλδνῖνῳ τε καὶ τοῖς ἄλλοις τῶν 'Αρχόντων σωεργοῖς εἶναι, εἰς τὸ τῆς 'Ανατολικῆς πρὸς τὴν κοινωνίαν ἐνάγειν τὴν μετὰ τῶν Δυτικῶν καὶ ταῖς τῆς Πόλεως 'Εκκλησίαις τὰς κατ' ἔθος τὸ παρὰ Λατίνοις ἐπικρατῆν 'Ιεροτελεσίας διὰ σπασθῆς ἀπάσης ποιῆσθαι ἀντιπαρῆσάγειν. (ΒΖΩ'ΒΙΟΣ ἐκ τῶν 'Ιννοκεντίκων 'Επισολῶν, τῶν ἐν "Ετῇ 1204. 'Αριθμ: Δ'.) Καὶ τοῖς ἐν Γαλίᾳ δὲ Προέδροις ἐπισέλων ὁ Πάπας ὑποτίθῃσιν, ὡς ἂν καὶ αὐτοὶ, ἀπὸ τε τῷ Κλήρῳ καὶ τῷ Λαῷ πάντοθεν προεκκαλόμενοι, ἐπ' 'Ανατολὰς καὶ Βαλδνῖνον προχωρεῖν τῆς πάντας προῖρέποιεν, πλῆθυσιν ἐκείσε πνύματικῶς τε ἅμα καὶ σωματικῶς δαψιλῶς ἀπολαύοντας. "Ἰν' ἔτω τῶν Βαλδνῖνων πραγμάτων ἐπὶ τῆς Γραικίας κραταιωθέντων, ῥαδίως ἔπειτα τὸ Λατινικὸν προελθεῖν δωήσοιτο εἰς τὴν τῆς Παλαισινῶν χώρας ἐκπόρθησιν. Καὶ ἡ 'Επιστολὴ δὲ αὕτη καίται παρὰ Βζώβῳ, ἐν "Ετῇ 1205. Καὶ ταῖς 'Ιννοκεντίκων δ' ἐμφέρεται Πράξεσι; Σελ: 96. 'Αλλὰ καὶ τοῖς ἐν Γαλίᾳ 'Επισκόποις ἔτι, καὶ τοῖς ἐν τῇ Παρισιακῇ 'Ακαδημίᾳ Διδάσκασι τε δὴ καὶ Μαθητιῶσιν ὑπέβαλλεν ὁ Πάπας εἰς τὴν Κωνσταντίνην πόλιν σπῶδειν, καὶ τὰς πρὸς 'Ανατολὰς Ἠλίαν χώρας, ὡς παιδείας τε καὶ λόγων αὐθις ἐπισυνησομένης. ἐκείνῃ Φροντισήρια. Διεγεροθέντες τοιγαρὲν ταῖς τοιαῖς δὲ τῷ Πάπᾳ ὑποθήκαις καὶ παραινέσεσι, τοσῶτον πλῆθος ἐκ τῆς Εὐρώπης ἀπάσης ἐπὶ τὴν 'Ανατολὴν προσεβρέη, ὡς ΘΩΜΑ' τῷ Λατίνῳ Πατριάρχῃ, ὃ μικρὸν ἔργον γενέσθαι τῷ διακρίναι, οἷς περ ἂν ἐν τοσῶτ' 'Ιερέων πλήθει τὴν ἐπὶ τὰς 'Ιεροτελεσίας ἄδειαν ἐπιτρέψειεν. (Βζώβ: ἐκ τῶν 'Ιννοκεντ: 'Επισολ: τῶν ἐν "Ετῇ 1205. 'Αριθμ: Δ'.) 'Εν τέτοις δὲ καὶ οἱ Σταυροφόροι, καὶ τοὶ ὅρκους προῦπεχημένοι τὴν Παλαισίνῳ ἀπὸ τῶν Βαρβάρων ἐπανασώσασθαι, ἀντὶ πλείονος ἐποιῶντο, τῶν τερπνοτάτων χωρίων, ὧν ἤδη κατέχον, μεθ' ἡδονῆς ἀπολαύειν, ἢ λιμῶν τε καὶ δίψῃ προσπαλαίοντας σφατῶσθαι, καὶ τὰ ἔσχατα διακινδυνύειν ἐν μάχαις ἐξεταζομένης βαρβαρικῆς. Ταύτῃ τοι καὶ πρὸς τῷ Λεγάτῃ, τῶν τε προομωθέντων αὐτοῖς ὅρκων, καὶ τῆς ἐπ' ἀναρρύσει τῶν 'Ιεροσολύμων, ᾧ ἠνέξαντο, εὐχῆς ἀφειῶσαι ἤξιον. 'Εξ ὧν καὶ Λατίνων οἱ λοιποὶ, ὅσοι ἐν Παλαισίνῃ ἐτύγχανον διατρίβοντες, ἐπὶ τῆς παρὰ τῶν Σταυροφόρων ἐλπιζομένης ἀπέγνων ἐπικαρίας, ἅμεινον ἠγήσαντο διαλυσας πρὸς τῆς βαρβάρης ποιήσασθαι καὶ χώραν ἔτω κινδυνῶν ἐμπλεων καταλελοιπότες, ἐπὶ τὰ εἰρωικώτερα καὶ τερπνότερα τῆς Γραικίας μεταχωρεῖν. Καὶ ἀμύθητον ἔν' ὅσον πλῆθος Λατίνων ἐκ Παλαισίνης τιωικάδε ἐπὶ τὴν 'Ελλάδα σωεβρέει Κληρικῶν τε



κῶν τε ἅμα καὶ Λαϊκῶν, ὡς πολλοὺς πάνυ τῶν ἐκεί τινὰς ἐπι-  
 διαμεῖναι. Τῶν οὖν Πάπας πυθόμενος, ἔδεν τι ἥττον κατὰ τῆς  
 Λεγάτης πρὸς ὀργὴν ἐξεκαίετο, ἢ κατὰ τῶν Σταυροφόρων· οἱ  
 Παλαισίνω μὲν ἦνεν, πλῆτε δὲ τῷ περισσίαν, καὶ τῶν ἄλλων  
 ἀγαθῶν τῷ κτήσιν μεταδιώκοντες διετέλυν, φόνοις τε μυρίοις,  
 καὶ διαφθοραῖς, ἱεροσυλίαις τε καὶ ἀσελγείαις πάντοίαις σφᾶς  
 αὐτὰς ἐκδιδόναι μηδὲν αἰδέμενοι. (Ἐν ταῖς Ἰννοκεντ: Πράξι:  
 Σελ: 98. καὶ τῇ Ἐπισ: τῆς αὐτῆς, τῇ πρὸς τὸν Καρδινάλ: Μάρ-  
 κελλον Αὐτ: Σελ: 99) Ὡς ἐντεῦθεν δῆλον καθίσταται, ὅσον  
 Ἰννοκέντιος ἐπὶ τοῖς αὐτοῖς λογισμοῖς διεμαρτυρεῖτο οἰωνιζόμενος, ὅτι  
 ἐπινδύσειεν ἤδη τὸ Θεῖον ὑπὸ χεῖρα τῶν Σταυροφορέντων τῷ  
 Γραικίαν ἐλθεῖν, ἢ ἐπικαίρως μᾶλλον τὸ ἀπ' ἐντεῦθεν οἱ Λατῖνοι  
 τῇ Ἱερᾷ γῇ ἐπαμῶνεν ἔχωσι καὶ ἐπεκδικεῖν. Ἡ γάρ τοι δια-  
 πόρθησις τῆς Κωνσταντινουπόλεως Κράτους, εἰς ἀπώλειαν τῆς Πα-  
 λαισίνης ἐγένετο, τῶν εἰς ἐπανάκτησιν ταύτης ἀποσαλέντων  
 Λατίνων τῇ Γραικίᾳ μᾶλλον προσετηκότων. Ἐκαστος γὰρ τῶν  
 τῇδε τερπνῶν προηρεῖτο ἀπολαύειν, ἢ ἐπὶ χώρας κατηρημα-  
 μένης ἤδη, καὶ ἔδὲ ἀσφαλῆς παροικεῖσθαι, ἀναστρεφόμενος δια-  
 τρεῖν. Ὡς τελευτᾷον καὶ πάντας ἔτω Λατίνους τῆς Παλαισί-  
 νης ἐξελαθέντας ἀποπεσεῖν.

Δεινὰ ὅν ἐν τῷ τῷ Ἑλλάδα πάχεν σωέβαινε, Λατίνους  
 ἤδη παρὰ τῶν Σταυροφορέντων ἡρημένους καὶ αὐτῶν τῶν ἐν Κων-  
 σταντινουπόλει Πατριαρχοῦσόντος. Κατὰ γὰρ τὰς ἐν ἀλλήλοις  
 συμβάσεις, ἐκ μὲν τῶν Φράγκων ὁ Αὐτοκράτωρ, ἐκ δὲ τῶν  
 Ἑνετῶν ὁ Πατριάρχης προήγετο. (ΒΛΟΝΔΟΣ Βιβλ: Η'. Δε-  
 κὰδ: Κεφ: Β'.) Ἐκ Λατίνων δὲ καὶ οἱ ἐπὶ τῆς Ἐπισκοπικῆς  
 Θρόνης καθίσαντο· καί ποτε δὲ μεταξὺ, καὶ ἐκ τῶν τῷ ἔνωσιν  
 μετὰ τῆς ἐν Ῥώμῃ Ἐκκλησίας προσιεμένων ἐν οἷς καὶ ὁ Κλη-  
 ρος ὑπῆρχεν ὁ Θεσσαλονικεὺς, ὡς δῆλον ἐκ τῆς Ἰννοκεντίς τῆς  
 Γ'. Ἐπισ: πρὸς τῆς Ἐπισκόπου τόν τε Θερμοπυλῶν, καὶ τὸν  
 τῆς Σαρδικῆς ἥτις δὴ ΜΑ'. Ἀριθμεῖται ἐν τῷ ΙΓ'. Καταλόγῳ  
 τῶν Ἰννοκεντ: Ἐπισ: Σελ: 33. κατὰ τῷ προμνημονεύθ: Ἐκ-  
 δοσιν. Καὶ ἐκ τῆς Ἐπισ: τῆς αὐτῆς Ἰννοκεντ: τῆς πρὸς τὸν  
 Θεσσαλον: Ἀρχιεπίσκ: ἥτις ἀριθμεῖται ΙΗ'. τῆς ΙΕ'. Καταλόγῳ,  
 Σελ: 317. Παρεκτὸς δὲ τῆς Θεσσαλονικέων Ἐκκλησίας, καὶ ἡ  
 Κορινθίων τότε τῇ μετὰ Λατίνων προσεγένετο κοινωνία, ὡς δη-  
 λᾶται ἐκ τῆς τῆς αὐτῆς Ἰννοκεντ: Ἐπισ: Ἀριθμ: ΜΗ'. ἐν Κα-  
 τάλῳ: ΙΕ'. Σελ: 344. τῆς πρὸς Γαλαθέρων τὸν Κορίνθ: Ἀρχιεπ:  
 Καὶ Ἰωάννης δέ τις Ἐπίσκ: Ῥάιδες, τῷ ἔνωσιν ἀσπασάμενος  
 τῷ Ῥώμης Θρόνῳ καθυπετάγη: ὡς καὶ ἐκ τῆς πρὸς τῆτον αὐ-  
 θίς τῆς Ἰννοκεντίς Ἐπιστολῆς καταφαίνεται, Ἀριθμ: ΡΠΒ'. καὶ  
 τῆς ΡΠΓ'. τῆς ΙΕ'. Καταλ: Σελ: 400. Ἐνθεντοὶ καὶ Ἰννοκέντιος  
 Τόμ. Β'. Μ μμμμμ αὐτὸς

αὐτὸς ὁ Γ'. τὴν μετὰ τῆς ἐν Ῥώμῃ Ἐκκλησίας ἔνωσιν τῆς Ἀνατολικῆς φέρεται διαθρυλλῶν. Οὕτω γὰρ ἐν Ἐπισ: τῇ πρὸς ἅπαντας τὰς Ἀρχιεπισκ: Ἐπισκ: τε καὶ Ἀββάδας, καὶ τὰς λοιπὰς τῶν Ἐκκλησιῶν Προέδρους, τὰς ἀνὰ πᾶν τὸ ἐν Κωνσταντινουπόλει Κράτος καθεστώτας, ἥτις ἀριθμεῖται Ἐπισ: ΡΕ'. τῇ ΙΣ'. Καταλ: Σελ: 629. „Πάντως τῇ Πατρὶς τῶν Φώτων, ἐξ ἧς „πᾶσα δόσις ἀγαθὴ, καὶ πᾶν δῶρημα τέλειον, τὴν τῶν Γραικῶν „Ἐκκλησίαν κατὰ τὸν αὐτὸν ἔλεον διαφωτίσαντος, ἐπ' αὐτῇ τὴν τῇ „Πέτρῳ Διδασκαλίαν καὶ εἰς ἐνότητα; τετέστιν εἰς ὑπακοὴν τῆς „ἐν Ῥώμῃ Ἐκκλησίας αὕτη σωτηριωδῶς ἐπανήχθη. Τέτοις δὲ παραπλήσια γράφει, καὶ τῇ πρὸς τὸν Ἀρχοντα Ἀχαΐας, Λατῖνον ὄντα, καὶ πρὸς τὰς λοιπὰς τῶν ἐν Λατίνους Λογείων Ἐπιστολῇ, ἥτις ἐστὶν Ἀριθμ: ΡΣ'. ἐν τῇ ΙΣ'. Καταλόγῳ, Σελ: 639.

Συμμεμορήθη τοίνυν ἐφεξῆς ἐν ἔτει 1215. ἡ ἐν Λατεράνῳ τῆς Ῥώμης Σύνοδος, ἐν ᾗ παρήσαν ἐπέκεινα τῶν τετρακοσίων Ἐπισκόπων Λατίνων, μετὰ τῶν Κωνσταντινουπόλεως καὶ Ἱεροσολύμων Πατριαρχῶν; Ταύτης τὸ Α'. Κεφάλ: „ἐν τῇ ΙΑ'. Τόμῳ τῶν Συνοδικῶν, Μέρ: Α'. Σελ: 142. ὅπως ἔχει, „Στεφ- „ρῶς πισθόμεν καὶ ἀπλῶς ὁμολογῶμεν, ὅτι εἷς καὶ μόνος ἐστὶν „ὁ ἀληθινὸς Θεός· αἰώνιος τε καὶ ἀπειρος, παντοδύναμος, ἀτρεπ- „τος, ἀκατάληπτός τε καὶ ἀνερμηνεύτος· ὁ Πατὴρ, ὁ Υἱός, καὶ „τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. Τρία μὲν Πρόσωπα, μία δὲ ἑσὶς καὶ „φύσις ἀπλυσάτη. Ὁ μὲν Πατὴρ ἐξ ἑδενός· ὁ δὲ Υἱὸς ἐκ μόν- „ου τῇ Πατρὶς· τὸ δὲ Ἅγιον Πνεῦμα ἐξ ἀμφοτέρων· ἀεὶ ὡσάν- „τως, ἀρχῆς ἀνδρὸς, καὶ τέλους ἐπέκεινα, ὁ μὲν Πατὴρ γεννῶν, „ὁ δὲ Υἱὸς γεννητὸς, τὸ δὲ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκπορεύτῳ ὁμο- „σίοι καὶ ὁμοτίμοι, συμπαντοδύναμοι καὶ σιωμαῖνοι. Μία τῶν „πάντων ἀρχή. Ἐπὶ γέν τῆς Συνόδου ταύτης οἱ Λατῖνοι Φα- „σί (3) τὴν μετὰ τῆς Ῥωμάνων Ἐκκλησίας ἔνωσιν τὰς Γραικὰς παραδέξασθαι· καὶ τοι μετὰ βραχὺ διὰ τὸ εὐμετάβολον αὐτῶν τῇ τρόπῃ ἀποσάτησαντας, Καθ' ἕπερ δὴ καὶ περὶ τῶν προλαβόντων χρόνων, ΚΡΟΜΕΡΟΣ ἐν Βιβλ: Ζ'. τῶν Πολωνικῶν: „Τὸν δὲ (Φησὶν) ὁ Γάλλος διεδέξατο Βαλδουίνος καὶ τὸ Σχίσμα „ἄρας, τὴν Ἀνατολὴν τῇ Ἐκκλησίᾳ τῆς Ῥώμης διήλλαξε τε καὶ „καθυπέταξε.

Διέμενε δὲ αὕτη (προσιδέασιν οἱ Λατῖνοι) τῶν Ἐκκλησιῶν ἡ διαλλαγή, ταῖς τῶν Γραικῶν ψυχαῖς ἐπὶ πολὺ διαρκέσασα. Τῇ γὰρ Πάπᾳ καὶ ὕστερον, πρὸς Ἰωάννῳ Δεκά τὸν ἐπ' Ἀσίας

(3) Κιχάδ: Ζητήμ: Β'. Σελ: 24.

Ἀσίας τὰ Ἀυτοκρατορικὰ σκῆπτρα χειρίζοντα, καὶ πρὸς Μα-  
νηλ τὸν Πατριάρχῳ, ἐν ἔτει 1249. ἀπεσταλκός τις ἐπὶ  
τῷ Πίσιν καὶ τῷ κοινωνίᾳ τῆς Ῥωμάνας Ἐκκλησίας προσκα-  
λεσομένων, ἄριστα δὴ τὸ πρᾶγμα προσεχώρει, καὶ κατ' εὐχὴν  
ἂν τῷ Πάπᾳ ἦκεν εἰς τέλος, εἰ μὴ αὐτῷ θανάτῳ τῷ τε Ἀυ-  
τοκράτορος καὶ τῷ Πάπᾳ κατὰ τὸν αὐτὸν ἐνιαυτὸν ἐπικαταληφ-  
θέντων, (4) ἀτελὲς τὸ ἔργον παρελείφθη. (ΑΝΤΩΝΙΝΟΣ ὁ  
Φλωρεντίνος, Τίτλ: ΚΔ'. Κεφ: Θ'. Μέρ: Β'.) Ὅτι δὲ οἱ ἐκείσε  
τὸ τιμικαῦτα Γραικοὶ τῇ μετὰ Λατίνων ἐνώσει ἔκ ἀπὸρρέσ-  
κοντο, ἐπὶ σωθήκαις μέντοιγε τισὶν ὠρισμέναις καὶ ΓΕΩΡ-  
ΓΙΟΣ ὁ Παχυμέρης μνείαν ποιᾶται, Βιβλ: Ε'. τῆς Ἰσορ:  
Κεφαλ: ΙΒ'. Καὶ τὰ περὶ τῆς ἐνώσεως δ' ἐνταῦθα πραγμα-  
τοῦθιαι, καὶ ΓΡΗΓΟΡΑΣ ἐπιμαρτυρεῖ, ἐν τῷ Ε'. Βιβλ: τῆς  
Ἰσορ: αὐτῆς. Κατ' ἐκείνο δὲ, καὶ ΝΙΚΗΦΟΡΟΝ τὸν Βλεμμί-  
δω, Ἄνδρα παιδείᾳ διαφέροντα ἐξ αὐτῶν τῶν Ἀνατολικῶν,  
τῆς Λατινικῆς προεξηκέναι δόξης περὶ τῷ Ἐκπόρῳ τῷ Πα-  
ναγίᾳ Πνύματος, ἐν οἷς πρὸς τε Θεόδωρον τὸν Λάσκαριν, καὶ  
Ἰάκωβον τὸν Βαλγαρίας σωέγραψε πονηματίοις ἅτινα ὈΔΟ-  
ΡΙΚΟΣ Ῥαϋνάλδος, ὁ τῶν Βαρωνιακῶν ἐξακολουθήτωρ, ἐν τῷ  
Α'. Τόμῳ τῆς αὐτῆς Ἐξακολουθήσεως Ἑλλωιστὶ καὶ Λατινιστὶ  
ὑπεξέθετο. Βλεμμίδης μὲν δὴ καὶ Νικηφόρος ὁ Γρηγοράς ἐμ-  
νήθη ἐνθαπερ εἶρηται. Ἀλλὰ καὶ ἡ Κύπρος ὅλη τῇ μετὰ Λα-  
τίνων κοινωνίᾳ ὡς προσεμμένεσσα, ὡς δῆλον, ἐξ ὧν, Ἰννοκέντιος  
ὁ Δ'. ἐπέσελλε πρὸς Ὀδωνα τὸν Καρδινάλιν Τσικελανῶν, περὶ  
τῆς ἀναφύσεως διχονοίας μέσον τῶν Λατίνων Ἀρχιεπισκόπων Νι-  
κωσίας, καὶ τῶν κατὰ Κύπρον Ἐπισκοποπόδόντων Γραικῶν, ἐν  
Ἐπισ: Γ'. τῶν Ἰννοκεντίων τῶν Δ'. Τόμ: ΙΑ'. τῶν Σωοδικ:  
Καὶ ἐκ τῆς Ἐπισ: δὲ τῶν εἰρημένων Ὀδωνος πρὸς Πάπαν Ἰννο-  
κέντιον, ἐν τῷ Ζ'. Τόμ: τῆς Σταχυολογ. τῶν Παλαιῶν Συγ-  
γραφέων, τῶν ἐν Παρισίοις ἔτει 1666. ἐκδοθέντων, Σελ: 223.  
Ἀλλὰ γὰρ καὶ ἐπὶ Ἰννοκεντίων τῶν Γ', οἷτε ἐκ Βλαχίας,  
καὶ οἱ ἐκ Βαλγαρίας ὑπὸ τῶν Πάπα προσκεκλημένοι ἐκασίως λέ-  
γονται, σωάμα Ἰωαννικίῳ τῷ αὐτῶν Ἀρχοντι, καὶ Βασιλείῳ  
τῷ Ἀρχιεπισκόπῳ, ἐπὶ τῷ μετὰ Λατίνων κοινωνίᾳ προσχω-  
ρῆσαι, ὡς ἐν ταῖς Ἐπιστολαῖς φανερόν γίνεται, τῶν ρηθέντων  
Ἰωαννικίων τε καὶ τῶν Ἀρχιεπισκόπων Βασιλείων, ταῖς ἐν ταῖς  
Πράξεσι σωζομέναις Ἰννοκεντίων τῶν Γ'. Σελ: 50. καὶ 51. Οὕτως  
ὡς

(4) Νοητέον ἐνταῦθα Ἰννοκέντιον τὸν Δ'. τὸν ἀπὸ ἔτους 1243. ἄχρι τῶν 1254. τῷ Ῥώ-  
μης Καθέδρᾳ διέποντα· καθ' ὃν δὴ ἐνιαυτὸν καὶ Ἰωάννης ὁ Δέκας ἀπῆλθε τῶν  
βίβλιν, διάδοχον καταλιπὼν τῶν Κράτους τὸν Νεώτερον Θεόδωρον τὸν Λάσκαριν, ὡς  
ἀνωτ: ἰδεῖν ἐστὶν ἐν Σημειώσεσι. (1).

ὡς καὶ αὐτὸν Βασίλειον τῆς εἰς Ῥώμην πορείας ἀψάμενον, ὑπὸ δὲ Γραικῶν συλληφθέντα καὶ ὁδὸν καὶ ἀπειληθέντα, αὐτὸν μὲν ἀποχέσθαι τῇ πορεύθῃ, δύνω δὲ ὁμῶς τῶν σωεφεπομένων οἱ, ὡς αὐτὸς ἀπελθεῖν ἐκ εἶχεν, ἐπὶ Ῥώμης διαπέμψασθαι καθάπερ ἔν κ' ἐξ ἰδίας αὐτῷ δηλᾶται τῷτο Ἐπιστολῆς, ἧς ἐπανιῶν ἤδη ἐπὶ τὰ ἴδια πρὸς τὸν Πάπαν ἐπέσειλε. Σώζεται δὲ καὶ αὕτη ἡ Ἐπισ: ἐν ταῖς Πράξ: Ἰννοκεντίς, Σελ: 56. Ἀνθότ' γε καὶ Ἰωάννης ὁ Καρδινάλις παρὰ τῷ Πάπα εἰς Βλαχίαν ἀποσαλεῖς ἀντίκα μάλα, τότε Ἀρχιεπισκοπικὸν ὠμοφόριον, καὶ τῷ Μίτραι, καὶ τὸν δακτύλιον τῷ Βασιλείῳ προίχετο, ἐπομωσομένῳ κατ' ἐνώπιον τῷ Καρδινάλεως τῷ Ῥώμης Πάπα διαπειθαρχεῖν. Ἀλλὰ καὶ Ἰωαννίκιος ἐπὶ παρσίᾳ τῷ αὐτῷ Καρδινάλεως, ἑαυτὸν τε καὶ τῷ αὐτῷ Ἡγεμονίαν καθυποτάξας τῷ Πάπα καὶ τῇ ἐν Ῥώμῃ Ἐκκλησίᾳ, πᾶσαν ἐπηγγέλατο εὐπείθειαν καὶ ὑπακοὴν, γράμμα ἐπὶ τέτῳ δὲ τῇ ἰδίᾳ σφραγίδι καλᾶσημανθέν. (Ἐν ταῖς Πράξ: Ἰννοκεντ: τῷ Γ'. Σελ: 54.) Ἔπειτα δὲ, καὶ εἰς Ῥώμην ἤδη τῷ Καρδινάλεως Ἰωάννης ἐπανιόντος, καὶ ἐτέρας αὐτοῖς Ἐπιστολάς, ὅ, τε Ἰωαννίκιος ἐπισέλλει τῷ Πάπα, καὶ δὴ καὶ ὁ Ἀρχιεπίσκοπος Βασίλειος, σιωάμα τοῖς Βελγαρίας Ἐπισκόποις, τῷ ἑαυτῶν οἱ σύμπαντες ὑποταγῇ τῷ Πάπα καθυπεδήλωσαν. Ὅρα ἐν ταῖς Πράξεσιν Ἰννοκεντίς Γ'. Σελ: 55. 56. 57.

Καὶ ὁ Σερβίας δὲ Ἀρχων, παρὰ Ἰννοκεντίς τῷ Γ'. Λεγάτον οἱ ἐξητήσατο ἀποσαλῶναι, ὡς ἂν τὸ ὑφ' ἑαυτῷ τελεῖν Ἔθνος, τῇ Καθέδρᾳ καὶ αὐτὸς συγκαταλλάξῃ τῆς Ῥώμης ἀλλὰ τῷ τῶν Οὐγκρῶν Ἀνακτος προσεσηκότος, ἐκ εἰς ἔργον ἔχε προβῆναι τὸ προτεθέν: ὡς ἐκ τῆς Ἐπιστολῆς αὐτῷ δῆλον Ἰννοκεντίς, τῆς πρὸς τὸν Οὐγκρίας Ἀνακτα, σωζομένης καὶ ταύτης ἐν ταῖς τῷ Ἰννοκεντίς Πράξεσι. Σελ: 68.

Μάλιστα δὲ, τῷ καὶ αὐτῷ τῶς Ῥώσας τῇ ἐνώσει τὸ τιωκαῦτα ἐπύδοκῆσαι, εἰς ἀπόδειξιν πρόκειται: ὅτι ῬΩΜΑΝΟΥ τῷ Δεκάδ' τελευτήσαντος, ἐκ Λατίνων Ἀρχοντα σφίσιν ἔλοντο Ἀνδρέαν Κολομάννον, τὸν Υἱὸν τῷ Οὐγκρίας Ἀνάκτορος. Καὶ σώζονται γὰρ αἱ τῷ Κολομάννῳ Ἐπιστολαί, ἐν τῷ Β'. Βιβλ: τῶν Ῥωμ: Προνομίων, Ἐπισ: Λς'. Καὶ ἐν τῷ Α'. Τόμ: τῶν Ἀνατολικῶν ἐκστρατεύσεων, περὶ τὸ τέλος δι' ὧν αὐτὸς Ἀνδρέας παρὰ Ἰννοκεντίς αἰτεῖται, ἵνα τῶν Ἀλικίων ἤδη ὑπεχήμενων τὸ ἐφεξῆς τῇ ἐνότητι καὶ τῇ ὑπακοῇ τῆς ἐν Ῥώμῃ Ἐκκλησίας ἐνεπιμένειν, ἐπιτρέψῃ τῷ Ἀρχιεπισκόπῳ τῆς ἐν Οὐγκρίᾳ Στριγωνίας, ὡς ἐξ ἰδίας Προσώπ'ς, τὸν Κολομάννον καθαγιασά τῷ χρίσματι.

Ταύτη



Ταύτῃ τοι (5) καὶ Ὑακίνθῃ τῇ ἐκ τῆς Κηρύκων Φρατρίας, αἰτησαμένῃ ἐν Ἑταί 1230. Μοναστήριον, ὑπὲρ τῆς ἰδίας Τάγμα-  
τος ἐν τε Ἀλικίᾳ (ὡς ΜΙΧΩΒΙΟΣ μαρτυρεῖ Βιβλ: Κεφ: ΛΖ.)  
καὶ ἐν Κιάϊβῳ, (ὡς μαρτυρεῖ ΚΡΟΜΕΡΟΣ.) οἱ Ῥώσων Με-  
γάλοι Δῆκες ἐδείμαντο. Ἐν Ἑταί δὲ τῷ 1246. Δανιήλ ὁ  
Ῥωσσίας Δῆξ, αὐτὸς σὺ παντὶ τῷ ὑπ' αὐτὸν ἔθνεϊ, εἰς ὑπα-  
κοήν τε καὶ κοινωνίαν τῆς ἐν Ῥώμῃ Ἐκκλησίας μεταβιῶναι, ὑπέ-  
σκη. (Μιχώβ: Βιβλ: Γ'. Κεφαλ: ΜΓ'. Καὶ Κρομέρ: περὶ τῶν  
κατὰ τὰς Πολωνῶν Πραγμάτων Βιβλ: Θ'.) Προσέτι δὲ καὶ ἐπὶ  
τῇ ἐφεξῆς ἐνιαυτῇ 1247. Λατίνων τινῶν Μοναχῶν, ἐκ τῆς  
πρὸς Ἀνατολὰς Ταρταρίας, διὰ τῶν Ῥωσσιακῶν χωρῶν ἐπ'  
Ἰταλίας ἐπανιόντων, καὶ τὰς Ῥώσους προτρέπόντων τῇ μετὰ  
Λατίνων ἐνώσει σωθῆθαι, ἀπεκρίνατο ὁ ῥηθεὶς Δανιήλ, ὡς  
ἔξῃσι δὴ τῇ λοιπῇ, τὸν μὲν Πάπαν οἱ Ῥῶσοι ἀντὶ Πατρὸς καὶ  
Δεσπότης, τὴν δὲ τῆς Ῥώμης Ἐκκλησίαν ἀντὶ Μητροῦς τε καὶ δι-  
δασκάλου· ἐπιδὼς ἅμα αὐτοῖς περὶ τῆς καὶ πρὸς τὸν Ῥώμης  
Πάπαν Ἐπιστολῆς. Μάρτυρες δὲ τῇ πράγματι οἱ αὐτοὶ Μονα-  
χοὶ καθεσθήκασιν, οἱ ἐκ τῆς τῶν ἐλασσόνων Τάγματος ὄντες,  
παρὰ ΒΙΚΕΝΤΙΩ ἐν τῷ Κατόπτρῳ τῆς Ἰσορίας, Βιβλ: ΛΑ'.  
Κεφ: ΛΘ'.

Καὶ αὕτη ἄρα ἡ τῆς Ἀνατολικῆς ἐστὶν Ἐκκλησίας, ἡ με-  
τὰ τῆς Ῥωμάνου ἐπὶ Ἰννοκεντίου τῇ Γ'. συσῆστα ἑνωσις, ἣν  
ἄλλοι τῷδε ἡμῖν οἱ Λατῖνοι ἀντεπιστάουσιν.

Ἀλλὰ γὰρ Α'. παρεκτὸς δὴ τῆς, ὅτι ἐν ταῖς πλείοσιν  
Ἐπαρχίαις τῶν ὀρθοδόξων ἀπελαυνομένων, Πρόεδροι ἐκ Λατί-  
νων ἀντικαθίσταντο καὶ ἑστίνες ἄλλως ἐκ τῶν Ἀνατολικῶν τὴν  
μετὰ τῶν Λατίνων τιμωκαῦτα κοινωνίαν ἀσπάζαντο, ἐδ' ἐκόντες  
ἔτοιμοι τῷτο ἐποίουν, λόγοις δηλονότι πειθόμενοι· ἀλλ' ἀπειλαῖς,  
ἀλλὰ ποιναῖς τε καὶ παντοδαύτοις κακώσεσιν, ἀλλ' ἀφαιρέσει τε καὶ  
διαρπαγῇ τῆς περιέσεως κτήσεως καταβιαζόμενοι. Ὡς γὰρ ὁ  
ἈΝΩΝΥΜΟΣ περὶ τῆς τῶν Ἀνατολικῶν τε καὶ Δυτικῶν πραγ-  
ματοβόμος Διαφωνίας, παρὰ ΛΕΨΟΝΤΙ τῷ Ἀλλατίῳ, ἐν τῷ  
περὶ τῆς διωκεκῆς Συμφωνίας τῶν Ἐκκλησιῶν, Βιβλ: Β'. Κεφ:  
ΠΓ'. Ἀριθμ: Α'. „Ἀπὸ τῆς Βασιλείας Κυρῆ Μανηλ τῇ Πορ-  
„φυρογεννήτῃ, ἕως τῆς Βασιλείας Κυρῆ Ἰωάννου τῇ Βατάτζῃ, (6)  
„μόνον ἐπόρθεν τὰς πόλεις καὶ τὰς νήσους μανικῶς· καὶ ὅσας  
„ἐδωρήθησαν ἐλεῖν, ἐδίωκον τὰς ὀρθοδόξους Ἀρχιερεῖς, καὶ ἀντ'  
„ἐκείνων ἐποίουν Καδδωαρίους ὁμόφρονας αὐτῶν· ἦγαν εἰς τὴν  
„Κων-

(5) Κιχάβιος ἐν τῷ περὶ τῆς Ἀρχῆς τῇ Πάπα, Προτάσει Θ'. Σελ: 265.

(6) Ἀπὸ Ἑταί 1180. ἄχρι τῇ 1255.

Τόμ: Β'.

Ν νννν

„Κωνσταντινέπολιν, εἰς τὴν Κύπρον, εἰς τὴν Μεγάλῃ Ἀντιόχειαν, καὶ εἰς τὰς λοιπὰς χώρας ἅς ἔειπον. Οὐ μόνον δὲ τὸτο, ἀλλὰ καὶ τὸν λοιπὸν λαὸν, τὴν τε Ἱερῆς καὶ Μονάζοντας τυραννικῶς ἐξεβίαζον, εἰς τὸ ὁμοφρονεῖν καὶ συγκοινωνεῖν αὐτοῖς, καὶ μνημονοῦν. Καὶ ὅσοι μὲν ἐπέειποντο τοῖς Δόγμασιν αὐτῶν, τήτοις Φιλονείκως (ἀναγ: Φιλικῶς) διετίθεντο. ὅσοι δὲ ἤλεγχον αὐτὸς ὡς Αἰρετικὸς, καὶ τὴν κοινωνίαν αὐτῶν πάντῃ ἀπεσρέφοντο, καὶ ἐκόλαζον Φανερωῶς καὶ μαρτυρίαν ἱστων κατὰ τὴν πάλαι βασιλεῖς καὶ τυράννους τῶν ὀρθοδόξων Χριστιανῶν. Τῆς γὰρ Κύπρου τῷ ὄντι ἐν ἔτει 1231. τῇ δωαξείᾳ αὐτῶν καθυποκυψάσης (7) Μοναχὰς τινὰς τριετίαν ἐν δεσμωτηρίῳ καθεύξαντες, παντοίοις διετέλω ἐξετάζοντες βασανιστοῖς, ὡς δὴ τὴν μετὰ Λατίνων κοινωνίαν ἀπαξιῶντας προσήκαθα. Οὗς τέως καὶ μηδὲν τελεσφορήσας ἰχύσαντες, ποικίλοις θανάτοις διέφθειραν εἶδεν. Ἐν ᾧ δὲ ὁ Ἀββᾶς ἸΩΑΝΝΗΣ ἐν μέσῳ τῆς Φλογὸς ὀρθίος ἱστάμενος ἦρχετο, εἰς δὴ τις τῶν περιεσώτων Λατίνων ἐπεμμανεῖς τῷ Μάρτυρι, καὶ ῥοπάλῳ πόρρωθεν ἀκοντίσας κατέσρωσεν. Ἐπὶ δὲ τοῖς Ἱεροῖς λειψάνοις, ὧν τέως τὸ πῦρ ἐφείσατο μὴ καταναλῶσαν, ὅσα κτιῶν παντοίων ἐπὶ τῆς πυρᾶς ἐπισυμφορήσαντες, ταῖς Φλογὶ συγκατακαίῳ παρέδωκαν. Οὕτω γὰρ ὁ ῥηθεὶς Ἀνώνυμος διέξεισι προῖων: „Μαρτυρεῖσι δέμῃ τῷ λόγῳ οἱ ἐν Κύπρῳ ἀθλήσαντες Ἅγιοι Μονάζοντες ἕς τινος, διὰ τὸ μὴ καταδέξασθαι συγκοινωνήσας τέτοις, τριετίαν φυλάκισαντες, καὶ πᾶν εἶδος κολάσεως αὐτοῖς ἐπαγαγόντες, ὕσπερον ὡς ἐκ ἐπειθὸν αὐτοῖς καὶ διὰ σώματος ὁμολογήσας, ὅτι „καλῶς κρατεῖτε: ἐκμανέντες, ἕς μὲν δῆσαντες ἐν ταῖς ἑρᾶς τῶν ἑαυτῶν ἵππων, ἐν τραχέσι καὶ δυσβάτοις τόποις σύραντες, τῆς ἀπέκτειναν τὴν δὲ προκρίτας αὐτῶν, πυρκαϊὰν ἀνάψαντες μεγίστῃ, τῆς κατέκαυσαν. Οἱ δὲ Καθηγόμενος τῶν Ἀββᾶς Ἰωάννης καλόμενος, μέχρι πολλῶ ἐφάνετο τοῖς παῶν ἐν μέσῳ Φλογὸς ἱστάμενος καὶ προσδύχόμενος. Ἐμμανήσ

(7) Ῥίχαρδος γὰρ ὁ Βρεττανῶν Βασιλεὺς, Ναυτικῶς ἐξέλω κατὰ Σαρακηνῶν πλέων, καὶ τρικυμῖα καταληφθεὶς ἀνυπόστατος, ὡς εἰδὲ ἐλλοιμενιδίῳ ὑπὸ Κυπρίων ἐπετρέπετο, πολέμῃ βίᾳ τῆς Νήσου περιγεγόμενος, ἐν ἔτει 1182. (ἢ ἄλλ: 1190.) τοῖς Τεμπλαρίοις ἀπέδωκε δεκάκις μυρίων νομισμάτων, τῶν καλεσμένων Ἀσπίδων (Scutatorum.) Παρά δὲ τῶν Τεμπλαρίων τούτων πάλιν, Γυίδων ὁ Γάλλος ἐξωνήσατο: ἔπειτα ὁ Ἀδελφὸς Ἀμέριγος ἔπειτα, καὶ τίτλῳ Βασιλεὺς Κυπρίων πρὸς τὴν Πάπᾳ τετίμηται. Μετὰ ταῦτα δὲ Γενεσιῶσι τῆς Κύπρου κατέστησαν Κύριοι. Ἐκ δὲ Γενεσιῶν, Αἰκατερίνης, ἣ λέγεται, τῆς Κορνηλίας εἰς κλῆρον τῇ ἑαυτῆς Πατρίδι καταλιπέσης, οἱ Ἑνετοὶ τὴν Νήσον κατέχον ἐν ἔτει 1473. ἐς γὰρ ἐπὶ τὸ 1570. ἄρξαντες, καὶ ὁ Σεπτέμβριος 22. Σελῖμης ὁ Σουλτάν Ἑνετὸς ἐξελάσας, τοῖς μετ' αὐτὸν Ὀθωμανοῖς, ἥδη καὶ καὶ ἡμᾶς κεκτημένοις, παρέλιπε. (Μελέτ: Ἀθῶν: Γεωγραφ: Πάλ: καὶ Νέας, Βιβλ: Β', Τμήμ: Α'. Κεφαλ: Ις. Σελ: 494. 495.)

ἡνὶς δὲ γενόμενος εἰς ἐξ αὐτῶν τῶν Λατίνων Καῖσαλαρίων,  
ἡκοντίσας κατ' αὐτῶν ῥόπαλόντι, καὶ κρέσας τῶτον μέσον τῆς  
ἡφλογὸς ἔρριψε· καὶ ἔτως ὁ ὅσιος τῷ ἀγίαν αὐτῶ ψυχῇ τῷ  
ἡΘεῷ παρέδωκε. Κατασβεθείσης δὲ τῆς πυρκαϊῆς ἐκείνης, καὶ  
ἡἑυρόντες τὰ λείψανα σώα, ὅσα παντοδαπῶν ζώων καὶ μιαρῶν  
ἡθηνίων ἐπισωάψαντες, ἐπὶ τέτοις ἐκ εἶσαν τὸ πῦρ, ἕως εἰς  
ἡτέλος κατετέφρωσαν.

Περὶ τῶτων ἐκατέρω: τετέσι, περὶ τῆς ἀπανταχῶ παρὰ  
Λατίνων θλίψεως καὶ καταδωασείας τῶν Γραικῶν, καὶ περὶ τῶ  
ἐν Κύπρῳ γενομένη διωγμῶ, τοιαῦτα ΓΕΡΜΑΝΟΣ ὁ Κωνσταν-  
τινῆπόλεως Πατριάρχης, πρὸς Γρηγόριον ἐπισείλας τὸν Πάπαν  
(κεῖται δὲ τὰ Γράμματα ἐν τῷ ΙΑ'. Τόμ: τῶν Συνοδικ: Μέρ: Α'.  
Στήλη 318. κξ:.) \*., ἵνα γὰρ αὐτῶ τῶ τῆς ἀληθείας ἀψώμεθα  
ἡ\*μυελῶ, πολλοὶ τῶν διωατῶν καὶ τῶν ἐπισήμων ὑμῖν ἂν πει-  
ἡ\*θαρχοῖεν, εἰ μὴ τὰς ἀδίκας καταδωασείας, καὶ τὰς ἱταμῶ-  
ἡ\*τερον ἐπιφερομένας τῶν περισσιῶν εἰσπράξεις, καὶ τὰς μηδα-  
ἡ\*μῶς ἐποφειλομένας δαλείας ἐδεδείκεσαν, ἅς πρὸς βίαν παρὰ  
ἡ\*τῶν ὑποτασομένων ὑμῖν ἀπαιτεῖτε\*. Ἐντεῦθεν καὶ ἄσπονδοι  
ἡπόλεμοι κατ' ἀλλήλων πόλεων ἱ\*χανισμοί: σφραγίδες ἀπηρωρη-  
ἡμέναι κατὰ τῶν Ἐκκλησιαστικῶν θυρῶν. \*Ἀδελφῶν χρίσματα,  
ἡκαὶ παντελὴς ἀργία\*. Ἱεροπραξίαις παντοίαις, ἵνα μὴ Γραι-  
ἡκαῖς φωναῖς δοξολογῇται Θεός. Ἐν ἐλείπετο μόνον, καὶ γέγονε  
ἡκαὶ αὐτό: ἵνα μαρτυρίας καιρὸς (ἔτως) αὐτῇ (ἱσ: αὐ: ἡ\*) καὶ  
ἡβῆμα τυραννικὸν προτεθῇ, καὶ θρόνος μαρτυρικὸς ἀνοιγῇ.  
ἡ\*καὶ γε αἱματος ἐπὶ κλυσις δαψιλῶς ἐπιρρύσση\*. καὶ ἡμεῖς πρὸς  
ἡτὸ σάδιον τῆς μαρτυρίας (ἔτως) ἀναβησώμεθα, τὸν ἀγῶνα  
ἡτὸν καλὸν ἀγωνισόμενοι, καὶ παντοκρατορικῇ σεφθησώμεθα  
ἡδεξιᾷ. Οἶδεν ἂ λέγω ἡ Κύπρος ἡ περιώνυμος Νῆσος, νέας  
ἡΜάρτυρας θρασυμένη καὶ σρατιῶτας Χριστῶ οἱ πρότερον δι'  
ἡῦδατος διελθόντες δακρύων τῆς κατανύξεως, καὶ τοῖς ἰδρῶσι  
ἡλυσάμενοι τοῖς ἐκ τῶν ἀσκητικῶν τῶ σώματος πόνων ἐπὶ χρό-  
ἡνοις μακροῖς, τὸ τελευταῖον διήλθον διὰ πυρὸς καὶ ὕδατος, καὶ  
ἡἐξήγαγεν αὐτῶς ὁ ἀγωνοθέτης Θεὸς εἰς ἀναψυχῇ. Καλὰ γε  
ἡταῦτα Ἀγιώτατε, καὶ τῶ Ἀποστόλῃ Πέτρῳ διάδοχε; Ταῦτα  
ἡπαραγγέλλει ὁ τῶ πρῶτος καὶ ταπεινῶ τῇ καρδίᾳ Χριστῶ Μαθη-  
ἡτής; Οὕτω καταρτίζει τῶς Πρεσβυτέρῳ διὰ τῆς Ἐπιστολῆς;  
ἡΠρεσβυτέρῳ, φησὶ, τῶς ἐν ὑμῖν παρακαλῶ,, κτ: (8).

Οὐδὲν

(8) Ἡ τῶ Πατριάρχῃ Γερμανῶ πρὸς τὸν Πάπαν Γρηγόριον τὸν Θ'. Ἐπιστολὴ αὕτη ἀναγινώσκεται καὶ παρὰ Ἀρμένιῳ Λατινιστῇ, ἐν 5'. Τόμ: τῶν Συνοδικ. σήλ: 149 — 152. καὶ Ἑλληνιστῇ σήλ: 1961 — 1964. Ἀπογραφείσα μὲν, ἡ λέγεται (Ἀρμέν: αὐτ:) ἐκ τῶ Βασιλικῶ Κώδικ. 2503. ὑπὸ Μιχαὴλ Λεκούνης τῶ Δομινικανῶ, πολλῶν

Οὐδὲν ἦττον δὲ καὶ ἐπὶ Θεσσαλονίκῃς οἱ Λατῖνοι κατὰ Γραι-  
κῶν ἅπαντα μανίας ἰὸν ἐξέχεαν. Τῆς γὰρ πόλεως ἀλάσης,  
θηρίων δίκῃ ἀπλώεσατα προσώεχθησαν τοῖς πολίταις, ἐν οἰκή-  
μασιν, ἐν πλατείαις, ἐν ἀντροῖς, χεῖρας καὶ τοὶ γε ἐκέτιδας  
προϊχομένους, τῷ σιδήρῳ αὐτὰς διαπείροντες. Οὐδέ τι σωτέλει  
τοῖς τάλασιν ἐπὶ τὰ ἱερὰ καταφύγειν· πανταχῶς γὰρ ἐπεμβαί-  
νων ὡς ὁ ὤμος ὀπλίτης· ὅσοι δὲ τὸν σίδηρον διεδίδρασκον, τὴν  
ἅπασαν ἀφῆρθοντο περισσίαν, καὶ τῶν οἰκῶν ἀπελαυνόμενοι, ἢ  
καὶ τῶν ἱματίων ἀπογυμνήμενοι περιῆγον τὰ ἄμφοδα, ἔδ' ἐθῆ-  
τος αὐτοῖς ὑπολειφθείσης, ἢ τὴν γύμνωσιν συγκαλύψειαν, ἔδ'  
ἄρτι ὥπερ τραφεῖεν, ἔδὲ σέγῃς ὡς ἂν ὑπέλθοιεν. Καὶ ὡς αὐ-  
τοῖς ἄρα σέγη μὲν ὁ ἑρᾶνός, σρωμνὴ δ' ἡ γῆ, εἰς τροφῶν δ' οἱ  
φορυτοὶ, τὰ φύσει μυσαρῶτατα χορηγῶντες πρὸς σίτησιν. Διηρ-  
πάζοντο δὲ καὶ ἱερὰ τεμένη, καὶ τὰ Θεῶ ἐν Ναοῖς ἀνακείμενα·  
αἱ τε εἰκόνες ἐν τεμμαχίοις κατακλύμεναι, μετὰ τὸ ἀφαιρεθῶσαν  
τὸν περιόντα κόσμον, ἐπ' ἀγῆας χαμάζε ἀπερρίπτωντο, ἢ γὰρ  
ἀντὶ κοινῶν ξύλων εἰς ὑπέκκαυμα πυρὸς ὑπεβάλλοντο. Καὶ ὀρ-  
χήσεις μὲν περὶ τὰς Ἱερὰς σωεκροτῶντο Τραπέζας, ἄσματα δὲ  
προσῆδετο βαρβαρικά· τὰ δὲ τῶν ἱερῶν ἐδάφη κατεμιάνετο,  
καὶ πάντα τὰ Ἁγία ἐβεβηλῆτο. Ὡς δὲ σωτόμως τὸ πᾶν ἐκ-  
περᾶναι, παρὰ τὴν λοιπὴν ἐχάτιν αὐτῶν ἀθλιότητα, καὶ ἐν  
Ἐκκλησίαις τῶν πολιτῶν σωερχομένων, ἐφ' ᾧ τὰς νομιζομένους  
ὑμῶν ἀναπέμψαι Θεῶ, ἐμπηδῶντες οἱ στρατιῶται, βαρβαρικῶς  
τε κραυγαῖς καὶ ἀναβοήσεσι θορύβων τὰ πάντα ἐμπιπλῶντες,  
τὴν εἰς τὸν Ὑψιστον ὑμνωδίαν σωεθρόον καὶ σωετάραιον· οἱ δὲ,  
καὶ

δὲ ὅμως σφαλμάτων ἐμπλεως, καὶ ἡκροτηριασμένη δὲ μεταξὺ τὰ πολλὰ, ἥπερ  
ἔοικε· τετὶ γὰρ καὶ ὑφορεῖσθαι ἔπειν, ἔχ' ὅπως παραθέσει τῆς ἐπὶ τὴν Λατινί-  
δα φωνὴν μεταφράσεως· ἀλλὰ καὶ ἐκ τῆς ἀπαντήσεως, ὡς πρὸς Γερμανὸν τὸν  
ἐπισείλαντα ὁ Πάπας Γρηγόριος ἀπώτησε. Φέρεται καὶ γὰρ τινα ἐν τῇ Ἀπαν-  
τήσει, ὥπερ ἦκιστα ἐναπαιτεῖν ἐδόκει τὰ ὑπὸ τῷ Πατριάρχῃ ἐπεσαλμένα, καὶ  
ἄτῃα παρὰ χορδίῳ ἔοικεν ἀδεῖσθαι. Ὅτι δ' ἐν ἡ Γερμανὸς Ἐπιστολὴ αὐτῇ περὶ τῆς  
ὁ λόγος ἐ πᾶν τι ἄριστος ἀπαντᾷ, καὶ αὐτὸς ὁ Ἰησοῦς Ἀρμένιος ἐπῆθετο.  
Ἐκδὲς γὰρ αὐτὴν ὡς ἀπὸ Λακύνῃς ἔχεν ἀπογραφῆσαν, ἀντέθετο παρὰ τὸ χεῖλος  
παρασημειώσας: Multa hic desunt, quae in Latino legas superius. Pag. 151. B. C.  
Διὸ καὶ αὐτοὶ τὴν ἀρχὴν τῆς περικοπῆς, ἄχρι τῆς „ἀπαιτεῖτε,“ καὶ τινα τῶν  
μεταξὺ, ἐκ τῆς Λατινικῆς ὕφους μετηγάγομεν, ὡς καὶ παρὰ Ζοιρνακῶν ἐνταῦθα  
εἶχεν ἀναγινωσκόμενα· ταῦτα δὲ εἰς, ἃ τοῖς ἐκατέρωθεν ἀσερισκοῖς \* — \* διείληπ-  
ται.

Ἄλλ' ἐκ ἂν ἀπεικός εἴη, καὶ τὸν περὶ τῶν Κυπρίων, ὅπως τοῖς Λατίνοις  
ἰῶντο, μαθεῖν ἐφιέμενον, τὴν Ἰωσήφ τῆς Βρυεννίης μετελθεῖν παραινέσαι Μελέ-  
τιν, τὴν περὶ τῆς Κυπρίων ἐνώσεως· τὴν ὑπ' αὐτῆς ἐν τῇ περιωνύμῃ Ναῶ τῆς  
τῆς Θεῆς Σοφίας, ἐν τῷ Σινδικῷ πρὸς τὴν Σύνοδον ἐκφωνηθεῖσαν, κατὰ τὴν ἐπ-  
τακαίδεκάτῃ τῆς Μαρτίης Μηνὸς τῆς 5'. Ἰνδικτιῶνος τῆς ἑξακχιλίου 58 ἐννακοσιο-  
58 εἰκοσθ' ἔτας· ἔπερ ὡς τὸ ἀπὸ Χρισθ' Σωτῆρος 1412. Ὅρα ἐν τῇ Ἰωσήφ τῆς  
Βρυεννίης εὐρεθεῖσι Συγγράμμασι, τοῖς ἐν Λαψία τῆς Σαζωνίας τύποις ἐκδομέ-  
ταις παρὰ Βρεϊτκόπφ, ἐν Ἑτε αψξη. Ἐν τῷ Β'. Τόμῳ, Σελ: 1 — 25.



καὶ τῶν αἰχρῶν τινα καὶ ἀσέμνων σωεμίνυον προσασμάτων· οἱ δὲ, ὑλαγμὸς ἀγρίος τινὰς παρεξεφώνεν, ὡς μηδὲ τὰς δοξολογῶντας Θεὸν ἐξακέσθαι. Ταῦτα ἐς πλάτος Νικήτας διέξισιν ὁ Χωνειάτης, τὰ τῷ Κομνηνῷ Ἀνδρονίκῳ καθισορῶν ἐν Βιβλ.: Α'. Σελ.: 192.

Ἐπὶ ταῖς καὶ τῷ ἐκ Λατίνων Πατριάρχῃ τὸ ἀπ' ἐντεῦθεν ὁ Πάπας ἐπιτάσσων διεκελεύετο: „Ἐν μὲν ταῖς Ἐκκλησίαις, ἐν αἷς ἂν εἰσθότες εἶεν Γραικοὶ μόνοι ἐκκλησιάζεσθαι, καὶ τῶν τῷ ἔνωσιν ἀποδεχομένων, καὶ τῇ Ἐκκλησίᾳ τῆς Ῥώμης ὑπακένει ἐπαγγελλομένων Γραικῶν προάγεσθαι δεῖν εἰς Ἐπισκόπους· εἰ δὲ Λατίνοι οἱ Γραικοὶ συγκαταμεμίσχονται, μόνοις προεδρεύειν Λατίνους χρῶναι· τὰ δὲ Γραικικὰ Μοναστήρια, καὶ ἔνδειαν Μοναστῶν Γραικῶν, ἢ Λατίνων τῶν ἐνδιατηρουμένων, τοῖς ἐν κόσμῳ ἀνασρεφομένοις Κληρικοῖς παραδίδοσθαι· (ὡς ἐκ τῆς Ἐπιστολῆς δῆλον Ἰννοκεντίῳ τῷ Γ'· πρὸς Θωμᾶν τὸν Μαυροκλῆνον, τῆς ἐν ταῖς Ἰννοκεντ: Πράξ: ἐμφερομένης, Σελ.: 199) Καὶ δὴ ἀπανταχῶς τῆς Ἑλλάδος Λατῖνοι οἱ κατακυριεύοντες διετέλουν Ἀρχιεπισκοποὶ τε καὶ Ἐπίσκοποι· οἱ δὲ τῇ μετὰ τῆς ἐν Ῥώμῃ Ἐκκλησίας ἐνώσει μηδαμῶς ἐναγαπῶντες ἀπεξελάυνοντο, ἀντικαθίσαντο δὲ Λατῖνοι. Μᾶλλον δὲ, καὶ ἐν ἑλλήσι προσέτι ὅν, τὸ καὶ Κόρινθον τοῖς Λατίνοις ἀντίκα μάλα καθυπαχθῆσεσθαι, ἐπισέλλων ἔφθανε τοῖς ἐπ' Ἀνατολῆς Λατίνοις Ἀρχιεπισκόποις ὁ Πάπας, καί γε παρήναι, ὡς ἂν πρῶτον τῆς Πόλεως τὸ Λατινικὸν περιγένηται, ἐκείνο δὴ πρὸ παντὸς ἐπιμελὲς θέσθαι, ὅπως ἂν αἱ ἐκεῖ Ἐκκλησίαι τῷ Ῥώμης Θρόνῳ καθυποκύψωσιν. Εἰ δὲ τυχὸν ὁ Ἀρχιεπισκοπῶν ἀπαξιῶσι, κεφαλὴν ἰδίαν ἐσόμενον οἱ τὸν Πάπαν ἐπιγνώσκειν τε καὶ ἐνόρκως ὁμολογῆσαι, ἀποκρυσθεῖν εἶναι καὶ αὐτὸν τῆς Καθέδρας, καὶ Λατῖνον ἀντ' αὐτῷ ἀντισενεκτέον. Ὡς εἶγε τῷ ἀντικαθεσῶτι μὴ πειθαρχεῖν αἰροῖντο οἱ τῶν Ἐκκλησιῶν Κληρικοὶ, παραπλησίως καὶ τῶν ἀπελαυνομένων, ἀντεσάγεσθαι τὰς πειθαρχήζοντας· τὰς δὲ τετολμηκότας ἀνταπεῖν ὑποδίκας ποιῆσθαι τῷ Ἀναθέματι. (Δῆλα δὲ καὶ ταῦτα ἐκ τῆς Ἐπισ: Ἰννοκεντ: τῷ Γ'· τῆς πρὸς τὸν Ἀθινῶν Ἀρχιεπίσκοπον, καὶ τὰς Ἐπισκόπους τῆς Θεοδοπολῆς καὶ τῆς Σιδονίας, ἥτις ἀριθμεῖται Ἐπισ: 5'. τῷ ΙΓ'. Καταλόγος, Σελ.: 8).

Πρὸς ταῖς δὲ καὶ Πελάγιον ὡς ἐξ αὐτῷ Λεγάτον, ἐπὶ τῆς Κωνσταντίνης ἀποσέλλων ὁ Πάπας, ἐπέτρεπεν αὐτῷ ἅπαντα „(ὡς ἔφασκεν) ἐκρίβειν, καθαιρεῖν, οἰκοδομεῖν, φυθεῖν· τὸ δὲ ἦν, τὰς μὲν Λατίνους προσιόντας αὐτομόλως Γραικούς, ἐπὶ τῇ ἐνώσει ζητεῖν· τὰς δὲ μὴ αὐτομολοῦντας, πρὸς τῷ ἔνωσιν καταβιάζεσθαι. (ἢ συμφανὲς ἐκ τῆς Ἰννοκεντ: τῷ Γ'· Ἐπισ. πρὸς

Τόμ.: Β'.

Ξ ξξξξξ

τὸν

τὸν ἐν Κωνσταντινῃ: 'Αυτοκρατορῶντά, ἥτις ἀριθμεῖται ΡΔ'. ἐν Καταλόγῳ Ις'. Σελ: 28. Καὶ ἔτι δὲ, ἐκ τῆς τῆ αὐτῆς 'Επισ: τῆς πρὸς ἅπαντας τὰς 'Αρχιεπισκόπους, καὶ 'Επισκόπους, καὶ 'Αββάδας, καὶ Προεσῶτας, καὶ τὰς λοιπὰς τῶν 'Εκκλησιῶν Προέδρους, τὰς ἀνὰ πᾶν τὸ τῆς Κωνσταντινῆ πόλεως Κράτος ἥτις ἐστὶν 'Επισ: ΡΕ'. Σελ: 628. Καὶ ἐκ τῆς 'Επισ: τῆς αὐτῆς τῆς πρὸς τὸν 'Αχαΐας Δεσπόζοντα, καὶ τὰς ἄλλας τῶν Λατίνων Λογάδας, ἥτις ἀριθμεῖται Ρς'. Σελ: 630.)

Ο' τοίνυν Πελάγιος ἐκεῖνος εἰς τὴν Κωνσταντίνην ἤδη κατάρκας τοῖς Πολίταις παρὰ χρῆμα ἐλέσθαι πρὸςβάλλετο θάτερον: ἥτις ἀποθανεῖν, ἢ τῷ 'Ρωμάνῳ Θρόνῳ ὑπακοὴν ἐπομύσασθαι, κατὰ πᾶσαν ἀνάγκην. Καὶ τὰ μὲν 'Ιερὰ ἐκέλευσεν ἀνεωγέσθαι. (9) πολλὰς δὲ τῶν Μοναζόντων, καὶ τῶν ἐκ τῆς Κλήρος δεσμοῖς περιέβαλλεν ὥστε καὶ ἀνάρσιον ἂν αὐτῷ συμβῶναι τὸ τέλος, εἰ μὴ 'Ερρίκος ὁ Λατῖνος 'Αυτοκράτωρ, ὃν οἱ ἐν Κωνσταντινῇ πόλει ἐπεκαλέσαντο, ταῖς τηλικαύταις τῆς Πελαγίᾳ ὁρμαῖς ἀπώλησε. Διέξεισι δὲ ταῦτα ΓΕΩΡΓΙΟΣ ὁ 'Ακροπολίτης, ἐν 'Αριθμ: ΙΖ'. Σελ: 15. τῆς ἐν Παρισ: Γραικο- Λατιν: 'Εκδόσ: τῆς ἐν "Ετα 1651. „Τῆς δὲ τῆς 'Ερρεῖ τῆς Κωνσταντινῆ πόλεως κατάρχοντος, „ἀπεσάλη παρὰ τῆς Πάπας πρὸς τὴν Βασιλίδαν τῶν Πόλεων 'Αρχιερεῖς, ὃν καὶ Λεγάτον αὐτοὶ φασί: τὸνομα Πελάγιος, οἵπαν- „τα τὰ Προνόμια τῆς Πάπας φέρων ἐρυθροβαφῇ καὶ γὰρ ὑπεδέδε- „το πέδιλα, ἐκ τῆς αὐτῆς δὲ χοιρῆς καὶ τὰ ἐνδύματα ἔχε „καὶ ἡ ἐφεστὶς δὲ τῆς ἵππου, καὶ τὰ χαλινὰ, τῷ τοιούτῳ ἐξέπ- „τοντο χρώματι ἡθὺς δὲ τυχὼν ἀγριωτέρως, καὶ ἀλαξήρει „χρώμενος, πολλὰ δεινὰ ἐνεδείξατο ἐπὶ τοῖς τῆς Κωνσταντίνης „οἰκήτορσι. Καὶ ἡ σκῆψις ὡς εὐλογος: ἡνάγκαζε γὰρ τὰς πάν- „τας τῇ τῆς πρεσβυτέρας 'Ρώμης ὑποκύψαι ὑποταγῇ. 'Εντεῦ- „θεν καθέργνυντο Μοναχοί, 'Ιερεῖς ἐδεσμεύοντο, καὶ Νεὸς ἅπας „ἐκέκλειτο. Καὶ ἦν ἐν αὐτῷ δυοῖν θάτερον: ἢ ὁμολογήσαι τὸν „Πάπαν πρῶτον 'Αρχιερεῖα, καὶ τέττα τὴν μνήμην ἐν 'Ιεροτελε- „σίαις ποιεῖν ἢ θάνατον εἶναι τῷ μὴ διαπραξαμένῳ τῆτο, τὸ „ἐπιτίμιον. τῆτο εἰς βαρυθυμίαν ἤγε τὰς οἰκήτορας τῆς Κων- „σταντίνης, καὶ μάλιστα τῶν ἄλλων τὰς πρὸςχοντας. Τὶ ἐν θαυμασὸν, εἴπερ ἔτω μὲν καταδωασθόντων Λατίνων, ἔτω δὲ τῶν τὴν ἑνώσιν ἀποπτύοντων Γραικῶν καταθλιβομένων, εἰς γέ- „τις, ἕτερός τε τῶν ἐν τέτοις 'Επισκόπων, καὶ αὐταὶ τῶν 'Εκ- κλησιῶν, ἢ ἐκείναι, τῷ 'Ρώμης Πάπᾳ καθυπετάγησαν, καὶ τὴν μετὰ

(9) Δῆλον ἐν ἔτι φθάσας ὁ Λεγάτος τὰ 'Ιερὰ προαποκεκλήκει, ὡς φησὶ Γεώργιος ὁ 'Ακροπολίτης, μικρὸν κατωτέρω: „Καὶ Νεὸς ἅπας ἐκέκλειτο.

μετὰ Λατίνων κοινῶν προείλοντο; Ἀναγκασῶς τόδ' ἐπράξαντο, ἔχ' ἐκασίως. Μὴ ἄρα δὲ ἡ τοιάδε ἔνωσις, ὡς ὑπ' ἐνίων τι-  
νῶν ἐν τοῖς Ἀνατολικοῖς ἐγκριθεῖσα, τὸ Λατίνων Δόγμα ἐπισυ-  
σῆσεν; ἔδεν δὴπερ μᾶλλον, ἢ τοῖς ἐξ Ἀρείσσι σινηγοροῖσι, τὸ  
πολλὰς αὐτοῖς προσγενέσθαι, ἐπειδὴν ὁμοίως ὑπ' ἐκείνων οἱ Κα-  
θολικοὶ ἐτύγχανον πιεζόμενοι, καὶ τῶν γνησίων ἀπελαυνόμε-  
νων Ἐπισκόπων, οἱ ἐκ τῆς Αἰρέσεως ἀντεισῆγοντο.

Πάντως γὰρ Ἀλέξις τῷ Ἀγγέλῳ μετὰ τῆς Σταυροσίμης στρα-  
τίας ἐπὶ τῷ Κωνσταντίνῳ καταύροντος, ὁ Αὐτοκρατορῶν τότε  
Ἀλέξιος ὁ Κομνῆνός, ἐκ ἔχεν ἄμεινον κατὰ τὴν ἀντιφιλονεικίαν  
περὶ τῆς Ἀρχῆς τῆς ἐν τῇ Πόλει διαναστῆσαι, ἢ δεικνύς  
ἦεν Λατίνους ἐπὶ καθαιρέσει τῶν Ἱερῶν, καὶ ἐπὶ τῷ σφῶς τῷ  
Πάπῳ καθυποτάξει. Ταύτηντοι, καὶ ὅτε σωτυχεῖν οἱ Λατῖνοι  
ἐβόλουντο τοῖς Πολίταις, βέλεμνα ἔτοι αὐτοῖς ἐπαφίεσαν ἀντὶ  
ἐπῶν, ὡς οἱ Σταυροφόροι αὐτοὶ ἔφασκον στρατιῶται, ἐν τῇ πρὸς  
Ἰννοκέντιον Ἐπιστολῇ, τῇ ἐν ταῖς τέτταρτάξις ἐμφερομένη, *Σελίδι 86.* ὡς περ ὡς ἐκ τῆς Πραίνεσιν Καρδινάλεως ἀναφέρει  
ΒΖΩΒΙΟΣ ἐν Ἑταίῳ 1203. Ἀριθμ. Β'. „Παρὰ πᾶσαν ἔν ἐλπί-  
„δα τὰς ψυχὰς ἔυρομεν τῶν Πολιτῶν ἀπάντων, ἀτέγκτας τε  
„καθ' ἡμῶν καὶ ἀνευδότας. Οὐδέ γε ἄλλως κατὰ τὴν σφῶν αὐτῶν  
„Κυρίῳ τῷ Πόλιν κατείδομεν τέχεσί τε καὶ μηχανήμασι περι-  
„πεφραγμένῳ, ἢ, ἔπερ ἂν λαὸς ἀπίστων προσίοι ἐπὶ τῷ μιᾶναι  
„τὰ Ἁγία, καὶ τὸ εἰς Χριστὸν σέβας ἀδυσωπήτως ἐξαποσπάσασθαι.  
„ὁ γὰρ τῆς Κράτους ὠμότατος ἐπιβήτωρ, ὁ τὸν αὐτῷ Κύριόν τε  
„καὶ Ἀδελφὸν ἐξομματώσας τε καὶ προδὼς, καὶ ἐν διωκεῖ δεσ-  
„μωτηρίῳ, μηδὲν ἔχων ἐπεγκαλέσαι, καταδικάσας ὁ τὰ πα-  
„ραπλήσια καὶ τὸν ἐπιφανέστατον Υἱὸν ἐκείνῳ Ἀλέξιον ἐργασό-  
„μενος, ὡς μὴ ἔτος ὑπερόριος προεξελθὼν τὰς αὐτῶν χεῖρας διε-  
„ξέφυγε, σωομωσίαν βδελυρωτάτῳ μετὰ τῷ Λαῷ σωθέμενος,  
„τῶς τε ἐν ὑπεροχῇ ἅμα δυνάμεως, καὶ ὅσον τῷ δήμῳ ὀχλῶδες,  
„ταῖς βεβήλοις αὐτῷ παραφάσειν ἔτω διέθετο, ὥς ἀναπείσαι,  
„πρὸς ἀνατροπῇ τῆς πάλαι αὐτῶν ἐλδοθερίας ἀφικέσθαι Λατί-  
„νους, τῷ τε χώρῳ, καὶ τὸ ἔθνος ὑποχείριον τῷ Ῥώμῃς Πον-  
„τίφικι κατασησομένῳ, καὶ νόμοις Λατινικοῖς καθυπαγαγέσθαι  
„σπασάσοντας. Ταῦτα μὲν δὴ τὰς πάντας ἔτω καθ' ἡμῶν ἐξέ-  
„μηνε καὶ ἐφώπλισεν, ὡς ἡμῖν τε σφίσι καὶ τῷ πρὸς ἡμᾶς προ-  
„σπεφύγοι ἐπίσης ξύμπαντας σωομωμοκότας ἐπιθέσθαι δοκεῖν.  
„Πολλάκις μὲν ἔν διὰ τε πρεσβειῶν ἡμετέρων, καὶ δὴ καὶ διὰ  
„τῶ παρ' ἡμῖν πρόσφυγος, καὶ διὰ τῶν ἡμετέρων Βαρώνων, ἀκ-  
„ροάσεως τυχεῖν παρὰ τῶν Πολιτῶν αἰτησάμενοι, ἔδὲ τὸ τῆς  
„ἡμῶν ἐπελδύσεως αἴτιον, ἔδὲ τὸν τῆς ἀπαιτήσεως τρόπον αὐ-  
„τοῖς ἐκθέσθαι κομιδῇ ἐπετράπημεν ἄλλ' ὅσάκις ἀπὸ γῆς, ἢ  
„θα-

Ξ Ξ Ξ Ξ Ξ 2

„θα-

„θαλάσσης προσιόντες τοῖς τέχεσι λόγους προεβαλλόμεθα, τσά-  
 „κισ ἀντὶ ῥημάτων βέλη ἀπωεγκάμεθα,,. Κἀντεῦθεν γὰρ καὶ  
 μόνον φανερόν γένοιτο, μηδοπασῶν τὰς Γραικὰς τὸ τιωικαῦτα,  
 τῇ μετὰ τῶν Ῥωμάνων ἐνώσει προσεχηκέναι τὸ σῶολον· ὅ, τι  
 δ' ἐξῆς ἐνώσεως ἐπηκολέσθησεν ὕσερον, κατὰ βίαν διαπραχθῆναι  
 καὶ ἀναγκασῶς ἅπαντα.

Ἐνθεντοι Β'. ὅπως περ ἐξῶ, καὶ οἱ ὑπὸ τῇ Λατίνων ἔτι  
 δωασεία τελῶντες, Ἐπίσκοποί τε καὶ Μονασαὶ, καὶ ὁ Λαὸς, ἐλδύ-  
 θεριάζοντες, τὴν τῶν Λατίνων Ἐπισκόπων ἀπετρέποντο κοινω-  
 νίαν, καὶ δημοσίᾳ τῇ Πατρίῳ Πίσει σοιχῶντες ἔμενον. Ἐκ τέ-  
 των ὑπῆρχον οἷ τε Ἐπίσκοποι, καὶ ὁ Κλήρος, οἱ ὑπὸ τὸν Λα-  
 ρίως τεταγμένοι Ἀρχιεπίσκοπον· οἱ ἐδόλως τῷ Λατίνῳ Ἀρχι-  
 επισκόπῳ σφᾶς αὐτὰς παραχρὴν ἠξίωσαν ὑποπειθεῖς, ἐδὲ τὴν  
 μετὰ Λατίνων ὅπως ἀσάσασθαι κοινωνίαν, τῆς χηρδύσεως ἡδὴ  
 τῇ Μοντισφερόντῃ Μαρχίῳ Συζύγῃ πρὸς τὴν τοιαύτῃ ἐλδύ-  
 θερίαν αὐτοῖς ἐνδιδέσσης· ἐφ' οἷς καὶ τὸν Πάπαν, οἷον ἐκμεμώ-  
 τα, γράμμαισι σφοδροῖς κατεπέμψεν τὰς ἐπ' Ἀνατολαῖς Ἀρχιεπισ-  
 κοπῶντας Λατίνους, τῆς μὲν προθέσεως τὴν χηρδύσαν ἀποση-  
 σαι, τὰς δ' ἀπειθῶντας τῶν Ἐπισκόπων, εἰ δέοι, τῷ Ἀναθέ-  
 ματι καθυποβαλεῖν. Οὕτω γὰρ αὐτὸς ἸΝΝΟΚΕΝΤΙΟΣ, ἐν  
 Ἐπισ: τῇ πρὸς τὸν Ἀρχιεπ: Νέων Πατρῶν, καὶ τὸν Ναζωρε-  
 σκίς (10) καὶ τὸν Κίτρον ἥτις ἀριθμεῖται ΡΓ'. ἐν τῷ ΙΓ'. Κα-  
 ταλόγῳ, Σελ: 97. „Μᾶλλον δὲ ἐ μόνον αὐτὰ κατέχει, ἀλλὰ  
 „καὶ τῶν Γραικῶν τινὰς Ἐπισκόπων, (τῶν ὑπὸ τὸν Λαρίως  
 „Ἀρχιεπ: τελῶντων) καὶ ἄλλας Ἀββάδας τε καὶ Κληρικὰς, μὴ  
 „βυλομένους τὸ ἀξιόχρεον ἐκείνῳ σέβας ἀπονέμειν αὐτῇ περι-  
 „ποιεῖται, καὶ τοῖς τσῆδε τῇ μοχθηρίᾳ πρὸς ἐκείνον προσφερο-  
 „μένοις καταχαρίζεται. Τὸ τοίνυν διὰ τῆς ἐπιφανῆς γυναικὸς  
 „ταύτης, τὸν Ἀρχιεπίσκοπον τῇ οἰκείᾳ δικαίωματος ἐκπίπτειν  
 „ἐδάμῳς ἀνεχόμενοι, διὰ τῶνδε τῶν Ἀποστολικῶν Γραμμάτων  
 „τῇ ὑμετέρᾳ διακρίσει ἐντελλόμεθα, ὅπως ἂν αὐτῷ τά τε κα-  
 „τακρατέμενα ἀποδῶναι, καὶ τῆς τοιαύτης ἀπονοίας ἀποχέσθαι  
 „διὰ πωδῆς ποιήσῃθε παραινέσαι, καὶ δραστηρίως πρὸς ταῦτα  
 „ἐναγάγητε, καὶ δι' Ἐκκλησιαστικῆς ἐπιτιμίας, εἴπερ ἐπάναγκες,  
 „μηδεμιᾶς ἐκκλήτης ἐμποδῶν γινομένης, ὡς ἂν εἴη δίκαιον. Κα-  
 „ταναγκάζοντες δὲ, καὶ προσβιαζόμενοι, καὶ τὰς εἰρημένους Ἐπισ-  
 „κόπους τε, καὶ Ἀββάδας, καὶ Κληρικὰς παραπλησίῳ τῷ Ἐπιτιμῷ,  
 „ἵνα τὴν ὀφειλομένῃ ὑπακοῇ τῷ αὐτῷ Ἀρχιεπισκόπῳ προσνέμωσιν.

Ὡσαύ-

(10) Οὕτω Nazorencensem: τῷ γεμῶν ὀνόματι τέτῳ ἐν τοῖς Καταλόγοις τῶν ὑπὸ  
 τὸν Κωνσταντίνον: Ἐπαρχίῳ, ἐδάμῳ μοι γέγονε περιτυχῆν.



Ἐπ' αὐτῷ δὲ καὶ τῶν ἄλλαχ' ὁμοσπονδούντων Λατίνων ἐλοῦθ' ἔροισιν  
 εἶναι τοῖς Γραικοῖς ἐνδιδόντων, ἀναφανδὸν ἔτοι πᾶσαν ἀπλωά-  
 νοντο τοῖς Λατίνων Προέδροις ὑποταγῶ, καὶ τῷ μετ' αὐτῶν  
 ἀπετρέποντο κοινωνίαν. Δῆλον δὲ. ἐκ τῆς Ἰννοκεντ: τῆς Γ'.  
 πρὸς τε τὸν Λαρίωνος Ἀρχιεπ: Ἐπιστολῆς, καὶ τῆς πρὸς τὸν Ἐπίσκ:  
 Κυδωνίας, Ἀριθμ: ΡΟΒ'. τῆς ΙΓ'. Καταλ: Σελ: 140. „Ὁ Αἰδέσι-  
 „μος, φησὶν, Ἀδελφὸς ἡμῶν ὁ Πατρῶν Ἀρχιεπ: πρῶτον ἐνῶ-  
 „πιον ἡμῶν, ὡς οἱ τῆς γῆς ἐκείνης δεσπόζοντες, τὰς Ἱερεῖς αὐτοῖ  
 „καὶ Μοναστὰς τῶν Γραικῶν ἀγγαροῦν ἐπιχειρῶντες, τῆς ὀφει-  
 „λομένης αἰδῆς τε καὶ ὑπακοῆς αὐτῷ τε καὶ τοῖς λοιποῖς Λατίνοις  
 „Προέδροις ἐκείνης ἀπάγασιν, ἐκ ἄνευ βάρους τε καὶ ζημίας τῶν  
 „ἰδίων ψυχῶν· τέττα χάριν, διὰ τῶν Ἀποστολικῶν Γραμμάτων  
 „ἐντελλόμεθα τῇ Σῇ Ἀδελφότητι, ἵνα τὰς εἰρημένους Ἀρχοντας  
 „τῆς τοιαύτης ἀπέχεσθαι τόλμης, πρῶτον μὲν παραινέσῃτε, τέως  
 „δὲ καὶ δι' Ἐπιτιμῆς Ἐκκλησιαστικῆς προσαναγκάσῃτε, μηδεμιᾶς  
 „ἐκκλησίᾳ ἐμποδῶν ἰσαμένης, ὡς ἂν ᾖ δίκαιον,,.

Ὡς δὲ καὶ Πελάγιος ὁ τῆς Ῥώμης ἐν Κωνσταντινουπόλει Λε-  
 γάτος, ἦτοι θάνατον τοῖς Κωνσταντινουπολίταις προτεθείκει, ἢ  
 τῷ μετὰ Λατίνων ἔνωσιν, ἢ ἔτι καὶ ἐκείνοι ἐπὶ τῷ ἔνωσιν ἐπε-  
 σφάφησαν τὸ παράπαν, ἀλλὰ πρὸς τὸν Λατίνον Αὐτοκράτορα  
 προσδραμόντες τούτῳ ἤνυσαν, ὡς καὶ ἄκοντος τῆς Λεγάτης, ἀνα-  
 δέξασθαι τὸν Βασιλέα πρυτανεῦσαι Γραικοῖς τὸ ἐλεύθερον. Οὕτω  
 καὶ γὰρ ἀκολούθως τοῖς ἀνωτέρω ὁ Ἀκροπολίτης ΓΕΩΡΓΙΟΣ:  
 „Τούτο εἰς βαρυθυμίαν ἦγε τὰς οἰκήτορας τῆς Κωνσταντίνης, καὶ  
 „μάλιστα τῶν ἄλλων τὰς πρῶτοντας· οἱ καὶ πρὸς τὸν Βασιλέα  
 „Ἐρρίκῳ ἀφικνέμενοι, ἡμεῖς μὲν, ἔφασαν: ἄλλα γεγονότες γένους,  
 „καὶ ἄλλον Ἀρχιερεῖα ἔχοντες, ἐκ τῆς τῷ Κράτει Σα ὑπετάξα-  
 „μεν, ὥστε σωματικῶς κατάρχειν ἡμῶν, ἐμὴν γε ψυχικῶς καὶ  
 „πνευματικῶς. Σὲ μὲν γὰρ ἐν πολέμῳ ὑπερμαχεῖσθαι, τῶν  
 „ἀναγκαίων· τῶν δ' ἡμετέρων ἐκσιῶναι σεβασμάτων καὶ θρησκευ-  
 „μάτων, τῶν ἀδωάτων πάντων καθέστηκεν· ἢ γὰρ λύσον ἡμῖν  
 „τὰ ἐπελθόντα δεινὰ, ἢ ἄφες ὡς ἐλοῦθ' ἔροισιν ἐν τοῖς Ἰθαγενέσιν  
 „ἀφίχθαι. Ταῦτ' εἶπον: Κακῆνος μὴ βεβλόμενος ἐν σερήσει γε-  
 „νέσθαι τούτων καλῶν καὶ ἀγαθῶν ἀνθρώπων, καὶ ἄκοντος  
 „τῆς εἰρημένης Λεγάτης, τὰς τε Ναὺς ἀνέψξε, καὶ τὰς ὅσοι ταῖς  
 „ἐίρηκαῖς ἦσαν κατιχημένοι Μοναχὰς τε καὶ Ἱερεῖς ἀπολέλυ-  
 „κε, καὶ τὸν καταχόντα τότε τῷ Κωνσταντίνῳ κλύδωνα κατε-  
 „σόρεσεν,,.

Ἐπὶ τέτοις δὲ πάλιν, ἐν ἔτει 1205. Βενέδικτος ὑπὸ τῆς  
 Πάπας Λεγάτος ἀποσταλὴς μετὰ πολλῶν σεβασμίων τε καὶ σοφῶν  
 Ἀνδρῶν, ἐν τε Θεσσαλονίκῃ, καὶ ἐν Κωνσταντινουπόλει, καὶ Ἀθῶνῃσι,  
 περὶ τῆς τῆς Ἁγίας Πνεύματος Ἐκπορεύσεως προσδιαλεξάμενος  
 Τόμ: Β'. Ο 00000 Φέρεται.

φέρεται. Οὕτω γὰρ ΝΙΚΟΛΑΟΣ ὁ ἐξ Ὑδρῆντος, ἐν Α'. Βιβλ: κατὰ Λατίνων, ὃν ἀναφέρει ΛΕΩΝ ὁ Ἀλλάτιος ἐν τῷ Β'. Βιβλ: τῆς Διωκεῖς τῶν Ἐκκλησιῶν Συμφωνίας, Κεφ: ΙΓ'. Ἀριθμ: Δ. „Φέρε λοιπὸν, τὸν διάλογον ἐκ Συλλογισμῶν τῶν παρὰ τῶν „Θείων καὶ Φιλοσόφων Ἀνδρῶν καλῶς σωτεθέντων συλλέξαντες „εἰς μέσον προθῶμεν, καὶ ἃ μάλιστα ἐνωτίσθημεν παρὰ τῶν ἐν „Θεσσαλονίκῃ, καὶ τῇ Βασιλίδι τῶν Πόλεων ἔ μόνον, ἀλλὰ καὶ „ἐν Ἀθώϊσι σοφωτέρων καὶ Ἱερῶν Ἀνδρῶν, τῶν μετὰ τῷ Κυρῷ „Βενεδίκτη Καρδηνάρει, καὶ Τοποτηρητῷ τότε καθεσηκότος τῷ „Ρώμης Προέδρῳ Ἰννοκεντίῳ τῷ Γ'. διαλεχθέντων, σωεγραψά- „μεθα· ἐν μνήμῃ θέμενοι ταῦτα, ἅτινα τῇ παραγγελίᾳ ἐκείνῃ „ἐν Λατινικῇ ἐξ Ἑλληνίδος μετεσρέψαμεν γλώττης. Καὶ γὰρ „τότε διερωτώμεθα ἀναμειλαῖν Γραικῶν καὶ Λατίνων ὑπάρχοντες. „Καὶ ἡνίκα δὲ Ἰωάννης ὁ Ραιδεσῆ Ἐπίσκοπος εἰς κοινωνίαν Λα- „τίνοις σωῆλθε, πρὸς τρέπετο ὑπὸ τῷ Πάπα, ὅπως καὶ τὰς Σωε- „πισκόπους, Μοναχούς τε καὶ Κληρικὸς αὐτῷ πρὸς ὑπακοὴν τῆς Ρω- „μάνης Καθέδρας ἐνάξεν. Οὐκ ἄρα οἱ Ἐπίσκοποι ἐκεῖνοι, ἔδ' οἱ Μοναχοί, ἔδ' οἱ ἐκ τῷ Κλήρῳ, τῷ μετὰ Λατίνων κοινωνίαν ἡσυχάζοντο. Οὕτω γὰρ ἸΝΝΟΚΕΝΤΙΟΣ ὁ Γ'. ἐν τῇ πρὸς τὸν ῥηθέντα Ἰωάννῳ Ἐπιστολῇ, ἣτις ἀριθμεῖται ΡΠΓ'. Καταλόγ: ΙΕ'. Σελ: 400. „Εἰς ὑπακοὴν τῷ Ἀποστολικῷ Θρόνῳ ἐπανιῶν, ἵν' „ὅπερ ἠκυσας, καὶ ἐτέρῳ ἔποις, ἔλθοις, καὶ ἐλκύσῃς ὡς αὐλαία „αὐλαίαν: τῇ ἐξουσίᾳ τῶνδε τῶν Γραμμάτων τῇ Σῇ Ἀδελφί- „τητι ἐπιτάσσομεν, ὅπως τὰς Σωεπισκόπους τὰς Σὲς, καὶ προσέτι „τὰς Γραικὸς Μοναχούς τε καὶ Κληρικὸς, εἰς ὑπακοὴν τῆς Ἀποστο- „λικῆς Καθέδρας ἐπανελθεῖν δρασηρίως τε παραινέσῃς, καὶ σωε- „τῶς ἐναγάγῃς ὥστε καὶ τῷ Σὼ σπιδῷ ἐν ἔργοις ἐπιλάμψῃ, „καὶ Σὲ τῆς ἡμῶν πληρεσέρας ἄξιον ἀναφανῶναι ἐυνόιας καὶ „χάριτος. „

Ὡς περ ἐν πολλοῖς μὲν τὸν Παπικὸν ζυγὸν, πολλοῖς δὲ καὶ τὸν κλοιὸν τὸν τυραννικὸν ἐπέθεντο οἱ Λατίνοι: ἔτω δὲ Γ'. καὶ οἱ Γραικοὶ ὅπως δὴποτε τέντεῦθεν δεδιώμεται, ἄραντες ὅπλα, καὶ δημοσίᾳ Λατίνοις ἀντεπανιστάμενοι, σφῶν τε αὐτῶν, καὶ τῶν σφίτιν ἐπανηκόντων τῇ ἐλδοθερίᾳ ἐπήμωσαν ὑπὲρ ψυχῆς τε καὶ Πίσεως ἀγωνιζόμενοι. Καὶ κατ' ἀρχὰς μὲν γὰρ, τῷ Κωνσταντίνῳ Λατίνων ἐπικαταλαβόντων, καὶ δίκῃ ἀκρίδων πανταχόσε περιϊόντων, ἅπαντα δ' ἐπιβοσκομένων, γλῶ τε πᾶσαν ὑφ' ἐαυτοῖς ποιμένων, ἐξ ἐκείνων ἤδη τινὲς τῶν λογάδων πρὸς ἐλδοθερίαν ἀπέβλεπον· τῶν δὲ δεινῶν αὐτοῖς εἰς ἀκμῇ προΐόντων, τελούτων καὶ φανερῶς ἀφίσαντο Λατίνων, καὶ τῷ Ἀδριανῷ πόλιν ἤρξαντο, τῷ πολέμῳ οἷον ἐσομένῳ αὐτοῖς δομητήριον. Διὸ Βαλδεδίνος ὁ τῷ ἐν Κωνσταντινῇ πόλει Λατινικῷ Κράτῃ τὰς ῥήσας χα-

χαρίζων, τῷ ἄρτι φυομένῳ σάσιν κατασῆλαι βελόμενος, χει-  
 ρὶ ὀπλιτῶν ἐυζώνῳ ἐπικαταλαβὼν τῷ Ἀδριανῷ πολιορκεῖν ἐπε-  
 βάλετο· ἔδεν μὲν τοι καὶ ἦνυεν, Ἰωαννικίᾳ τῇ τιμηκαῦτα Βλά-  
 χων ἡγεμονδούντος, ὃς ἐπὶ συμμαχίᾳ τοῖς πολιορκουμένοις ἦκε  
 μετάπεμptos, τῷ ἐλοδθερίαν αὐτοῖς προμνησθεσάμενος. Σὺν  
 γὰρ μεγάλῳ στρατῷ ἐπιφθάσας ἔτος, ἀπαραφυλάκτως μαχομε-  
 νος Λατίνης τε καὶ Βαλδοίνου αὐτὸν, καὶ πλείους ὅσους τῶν ἐν  
 αὐτοῖς λογάδων, δορυαλῶτας ἀπήγαγεν. Οὕτω καὶ γὰρ ἘΡ-  
 ΡΙΚΟΣ ὁ τῇ Βαλδοίνῳ ἀντάδελφος, ἐν τῇ πρὸς Ἰννοκέντιον  
 τὸν Πάπαν Ἐπισ: τῇ ἐν ταῖς Πράξεσι ταῖς τέττα ἐμφερομένη  
 Σελ: 114. „Συνέβη τῆς Γραικῆς, ἐν ὑπερβαλλύσῃ μοχθηρίᾳ,  
 „καὶ τῇ σωήθει ἀπιστία, (καί τοι παντοίας πρὸς ἀσφάλειαν προ-  
 „φυλακῆς ἡμῖν γινομένης) ὥς αἰέποτε τῷ προδοσίαν καὶ προ-  
 „τερον μεμελετηκότας, αὐτίκα μετὰ τῷ ἀποσολῷ τῶν ἔχα-  
 „στον πρὸς ὑμᾶς διεκπεμφθέντων, τῷ ἰὼ ἐξ ἀρχῆς ὠδίνοντες  
 „ἐτύγχανον ἀνταρσίαν τε καὶ ἐπανάσασιν καθ' ἡμῶν προδήλως  
 „κεκνηκέναι. Οἱ γνῆς ὁ ἐμὸς Ἀδελφός τε καὶ Κύριος ὁ Ἀυτο-  
 „κράτωρ, πρὸς τὸ παραχρήμα σὺν ὀλίγοις, (ἦν γὰρ ἡμῖν τῇ  
 „στρατῇ τὸ πλεῖστον, ἔντε δὴ τοῖς Φραγκίοις, καὶ ἐπὶ τῶν χωρῶν  
 „τὰς Μαρχιακὰς καλεμένας διασκεδαθέν) ἔνθα ἡ σάσις ἐκο-  
 „ρυφῆτο, παρὰ τῷ Ἀδριανῷ δηλονότι πόλιν, καρτερῶς ἔσαν  
 „τοῖς Γραικοῖς κατωχυρωμένῳ; καὶ μόνοις τοῖς ὄρεσιν ἀπὸ Βλάχ-  
 „γων τῶν ὁμόρων ἀποδιελημένῳ πρὸς ἄμωσαν σπύδων ἐξήει-  
 „κτῆς Βασιλίδος τῶν πόλεων. — Τοιγαροῦν ὁ τῶν Βλάχων δε-  
 „σπότης Ἰωαννίκιος, μεθ' ἑτῶς ὀλίγων τῷ ἐρημένῳ πόλιν περι-  
 „καθῆσθαι τῆς Λατίνης πυθόμενος; (ὃν ἄλλως οἱ Γραικοὶ λάθρα,  
 „ὥς ἂν καὶ μᾶλλον βλάβειαν, σφίσιν ἐπικερρον μετεπέμψαντο)  
 „ἐπεσπίπτει ἐξάπινα τοῖς ἡμετέροις; πλήθη ἄγων Βαρβαρικὰ  
 „Βλάχων τε, καὶ Κομμανῶν, καὶ ἄλλων πρὸς ἧς καὶ λίαν  
 „ἀπερискέπτως ἀντεπεξιόντων τῶν ἡμετέρων, καὶ πορρωτέρω  
 „ἢ ἐχρῶ ἀπαντῶντων, ἐνέδραμς τε πυκναῖς πανταχόθεν πε-  
 „ριελημμένων, οἴμοι! ὅτε Κύριος Ἀυτοκράτωρ, καὶ Λοδοῖκος  
 „Στέφανος ὁ Δε-Πέρτικο, καὶ τινες ἄλλοι τῶν Βαρώνων τε καὶ  
 „στρατιωτῶν, (ὅπερ ἐκ ἀνδρῶν αἵματηρῶν ἐξαγγέλλειν ἔχω δα-  
 „κρύων) ὑπὸ πλήθους τοσούτων κατεπικλυθέντες, ἐν χειρὶ ταῖς  
 „τῶν πολεμίων, ἔδὲ τέτων ἀζημίως πάντῃ περιγεγονότων, πεπ-  
 „τώκασιν. Ἐπὶ τέτοις καὶ Μιχαλίκιος ἀπέστη, ἀνὴρ πελαγῶν  
 „σίφεισι, καὶ πλῆθος περισσὴ ἰχθὺ περιβεβλημένος· ὃς τῆς Λατί-  
 „νοις στρατοδομένους σφοδρῶς ἐπελαύνων, οἷς περ ἂν ἐκ τῆς Λα-  
 „τινικῆς ἱεραλείας περιτυχῇ γενοίτο, πολυειδέσι θανάτοις πάντας  
 „διέφθειρεν· ἐκ ὀλίγων (ὃ καὶ θαυμάζειν ἔπεςιν!) αὐτῷ καὶ Λα-  
 „τίνων στρατιωτῶν, πρὸς Λατίνης συμμαχάντων· ὅθεν ὁ Πάπας,

τῆς περὶ ᾧ ἐσπένδετον ἐνώσεως ποιούμενος πρόνοιαν, τῷ ἐν Κων-  
 σταντινουπόλει Πατριάρχῳ, καὶ τοῖς ἐπ' Ἀνατολῆς λοιποῖς Ἀρ-  
 χιεπισκόποις Λατίνοις ἐπισέλλων διεκελεύετο, τὰς ὑπὸ Μιχαλι-  
 κίῳ ἐκ Λατίνων στρατομένας ἀνακαλεῖσθαι, ἀπειθεῖν δὲ  
 παραδιδόναι τῷ Ἀναθέματι ὡς ἐκ τῆς Ἰννοκεντίου πρὸς τὸν  
 εἰρημένον Πατριάρχῳ Ἐπιστολῆς φανερόν ἐστιν, ἐν Καλαλόγῳ Π'.  
 Σελ: 149. „Ἐκ τῶν Γραμμάτων τῶ ἐν Χριστῷ ἀγαπητῷ ἡμῶν  
 „Τίτῳ (Ε.) τῶ Κωνσταντινουπόλεως Ἐκλάμπρῳ Ἀυτοκράτορι, τῇ  
 „Ἀποστολικῇ ἡμῶν ἐπιστάτῃ δεδοῦλωται, ὅτι (Μ) (ΙΙ) παρ' ἑδὲν  
 „θέμενος ᾧ περ' αὐτῷ τῷ Αὐτοκράτορι καθυπέχετο πῖσιν, τῶν  
 „ἀμφ' ἐκείνου μηδὲν τι μηδενὸς ὑφορμένον· κατὰ φρονήσας δὲ καὶ  
 „τῶν πρὸς τὸν Ἀυτοκράτορα, καὶ τὸν τότε ἀδελφόν (Ε.)  
 „(ὧ καὶ τῷ ἰδίῳ ἀντὶ πρωτότοκον θυγατέρα, αὐτοῦ (Μ.) εἰς  
 „γάμον σωῆψε) γενομένων ὁρκῶν τὸν (Α.) τῆς Βασιλείας ὄντα  
 „Comestabulum: (Κονόσταβλον, ἢ Κοντόσταβλον.) σὺ σατιώτατος  
 „τις, καὶ ἄλλοις ἄχρις ἐκατὸν ἀριθμημένοις δόλῳ συλλαβῶν,  
 „τὰς μὲν ἐξ αὐτῶν ἐμασίγῳ, τὰς δὲ ἐν δεσμωτηρίῳ κατὰ ἑρ-  
 „ξιν, τὰς δὲ πονηρῶς ἀνέλε· τὸν δὲ Κονόσταβλον αὐτὸν μετὰ  
 „τρίων ἄλλων, καὶ τῶ Ἐφημερίᾳ αὐτῶ Ἱερέως (ὁ Φρικτὸν ἐστὶ  
 „καὶ λέγειν!) ἐπὶ στυγρῇ ἀνεσκολόπισεν. Ἐπὶ δὲ τέτοις καὶ πρὸς  
 „μοχθηρίαν μείζονα ἐμψυχώσεως ἄτε δὴ τῇ Λατίνων τινῶν ἐπι-  
 „πεποιθὼς διδάμει, τῶν ὑπὸ φιλοχρηματίας ἐκφυλωθέντων,  
 „καὶ πρὸς αὐτὸν τὸν Μιχαλίκιον ἀντομολησάντων· τὰς τε τῶ Ἀυτο-  
 „κράτορος περιεκάθητε παρεμβολὰς, καὶ πόλεις ἐνέπρησε, καὶ  
 „ὅσας ἂν ἐκ τῶν Λατίνων Ἱερῶν ἐλεῖν ἐδωρήθη· καὶ τινα δὲ εἰς  
 „Ἐπίσκοπον καὶ αἵρεθέντα καὶ κυρωθέντα ἀπεκεφάλισε. — Τῇ  
 „Σῇ δὲ Ἀδελφότητι δι' Ἀποστολικῶν ἐντελλόμεθα Γραμμάτων,  
 „ἵνα τοῖς Λατίνοις ἐπιμελῶς ὑποβαλὼν παραινέτης, καὶ ὑπὸ  
 „Ἐπιμύῳ ἀφορισμῷ ἐπιλέξης, μηκέτι τῶ λοιπῶ τοῖς Γραικοῖς,  
 „κατὰ γε τῶ εἰρημένῳ Ἀυτοκράτορι, ἢ τῶν ἐκείνῳ ὑπακούντων,  
 „ἐπιβοηθεῖν καὶ πρὸ πάντων τῷ ῥηθέντι Μιχαλίκῳ, ὅς τὰς  
 „Ἱερεῖς θανάτῳ παραδίδῃς, τῷ βρόχῳ τῷ τῶ Ἀναθέματος  
 „περιέπεσε. κλ:

Ἦδη μὲν δὲ πανταχόθεν ἐπανίσταντο οἱ Γραικοί· ὥστε καὶ  
 Ὀνόριον ἐφεξῆς τὸν Ἰννοκεντίου διάδοχον, ἐπὶ τῷ Κωνσταντίνῳ  
 πέμψαντα Λεγάτον, ἅμα καὶ τῷ Πατριάρχῳ κελεύσαι, τῶ Ἀυ-  
 τοκράτορι ἐτοίμως ἀντιλαμβάνεσθαι κατὰ Γραικῶν τῶν (ὡς  
 ἔφασκεν) ἐπαναστατάντων, καὶ διὰ τὸ χίσμα πάντα ἄνω τε καὶ  
 κάτω

(ΙΙ) Οὕτω διὰ τῶν ἁκρῶν σοιχείων σεσημείωτο τὰ ὀνόματα, ἐν ἐκείνῃ τῇ Ἐκδόσει τῶν  
 Ἰννοκεντίου Ἐπιστολῶν.



κάτω φερόντων. (ΒΖΩΒΙΟΣ ἐκ τῶν Ὠγορ: Ἐπισολ: Ἔτει 1217. Ἀριθμ: 2.) Οὕτως ἔν ἐπὶ πολὺ ἐν ταῖς πρὸς Λατίνους μάχαις τῶν Ἀνατολικῶν ἐξεταζομένων, ἐπεὶ μάλιστα καὶ βοηθήματα ἐπιχορηγῶν αὐτοῖς σιωπεπράττετο ἈΣΑΝΗΣ ὁ Βλάχων Κοράνος (τιῷ γὰρ ὑπὸ τῇ Ῥώμης Καθέδρᾳ ὑπακοὴ αὐτοῖς ἢ Βλαχία παρήτητο) εἰς μανιώδη τινὰ ὀργὴν ὁ Πάπας Γρηγόριος ὁ Θ'. ἐξοισηθεὶς, Βελᾶν τε τῶν Οὐγκρων Ἀνακλᾶ κατὰ Βαλγάρων παρωξύνει ἐπισείλας, καὶ τοῖς Λατίνοις Μονασαῖς ἐπέτρεπε σαυροφορικὸν κατ' ἐκείνων στρατιωτικὸν σιωαγέειν. Αἱ δὲ πρὸς τὸν Ἀνακλᾶ, καὶ πρὸς ἄλλας Ἐπισολαὶ παρὰ ΒΑΔΔΙΓ-ΓΩΙ ἐν Ἰστορίᾳ τῶν Ἑλασσόνων καλεσμένων Φραζόρων σωζόμεναι φέρονται. Καὶ ΜΑΤΘΑΪΟΣ δὲ ὁ ΠΑΡΙΣ τὰ τῶν Ἀγγλων καθιστορῶν, εἰς Ἑρρίκον τὸν Γ'. Σελ: 585. τῆς ἐν Λονδίνῳ Ἐκδόσεως, τῆς ἐν Ἔτει 1571. οὕτω δεινῶς τὸν ἐν Κωνσταντινουπόλει Ἀυτοκρατορῆντα τὰς Γραικὰς διέξεισι καταπιέζοντα γενέσθαι, ἔτω δὲ δυσμενῶς καὶ κατὰ τῆς Ῥωμάνων Ἐκκλησίας αὐτὰς φέρεσθαι, ὥς τε καὶ πολλὰς (τῶν Λατίνων) γνώμῃ τε καὶ βελῶν ὑποτιθέναι, σαυροφορικὸν χρίων ἀνακαλέσασθαι κατὰ τῶν Γραικῶν. Καὶ γάρ τοι καὶ αὐτὸν τὸν Λατίνων Ἀρχιεπίσκοπον ἐπὶ Δυσμὰς ἀπαναχωρήσας ἐπικυρίας δεόμενον, ὥς τε πρὸς Γραικὰς ἔχειν ἀντίπαλον δυνάμιν, ἦν ἀντιτάξαιεν. „Κατὰ τὰς (Φησὶ) ἡτὰς χρόνας, τῶν Γραικῶν τῷ σιωήθει θράσει ἐκβαλχθέντων κατὰ τῆς ἐν Ῥώμῃ Ἐκκλησίας, καὶ κατ' αὐτὰς τὰς Δεσπονοῦσας αὐτῶν, τὰς Κωνσταντινουπόλεως Ἀυτοκράτορος ὁ Κύριος Πάπας, καὶ πᾶσα ἡ Ἐκκλησία ἔτω παρωξύνθη, ὥς τε πολλῶν γενέσθαι καὶ γνώμῃ καὶ θέλῃσιν τὰς στρατῶν κατ' αὐτῶν σαυροφόρων ἐκπέμπειν. Ἀλλὰ καὶ ὁ Ἀυτοκράτωρ αὐτὸς, ὡς ἂν ἡτῶν μανίαν τιῷ ἐκείνων ἐξυπαλύξῃ, ἐπὶ τὰ πρὸς Ἑσπεραν ὑπανεχώρησε, βαλῆς τε ἅμα καὶ ἐπικυρίας παρὰ τῆς Ῥωμάνας Ἐκκλησίας τυχεῖν δεησόμενος. Καὶ δὴ παρὰ τῶν πρὸς γένους αὐτῷ προσήκόντων, καὶ παρὰ Φίλων, στρατὸν ἰχυρὸν ὁ Βαλδουίνος σιωαγχοῶς, τῷ ἐπιόντι ἐνιαυτῷ 1238. ἐπ' Ἀνατολὰς μετὰ τῶν τάξεων ἐπενήει, τὰς ἀπ' αὐτῶν τε, καὶ τῆς ἐν Ῥώμῃ Ἐκκλησίας ἀφεςῶτας Γραικὰς, ἐπὶ τιῷ ὀφειλομένῳ ὑπακοῇ ἐπανάξων. Οὕτω γὰρ ὁ αὐτὸς ΜΑΤΘΑΪΟΣ Σελ: 644. „Κατὰ τὰς αὐτὰς χρόνας ἐπεσφράττεσεν ἐπὶ μέρη τινὰ τῆς Ἑλλάδος, καὶ ὑποτάξων οἷ τε αὐτῷ καὶ τῇ Ἐκκλησίᾳ τῆς Ῥώμης τὰς ἀποστατήσαντας ὁ Κωνσταντινουπόλεως Ἀυτοκράτωρ Βαλδουίνος ἐν χειρὶ κραταιᾷ, καὶ στρατιᾷ ἐκ ἐλαχίστη, ὅσῳ τε καὶ ἡλίμῳ ἀπαντες αὐτῷ οἷ τε Φίλα Φρονεῖντες, καὶ οἷ τῷ γένει προσήκοντες δεδωῶνται παραχρῆν... Ταύτητοι καὶ ἐν Ἔτει 1287. ΦΙΛΙΠΠΟΣ ὁ ἐκ τῶν Ἑλασσόνων καλεσμένος Μονασικὸς Τάγματος, τῆς

Τόμ: Β'.

Π πππππ

δὲ

δὲ Ἱερᾶς γῆς Προβινγκιάλις, ἐπισέλλων Γρηγορίῳ τῷ Πάπᾳ, τῆς Γραικῆς ἔφασκε τοῖς Λατίνοις ἀπανταχῆ ἀντιλέγειν, καὶ πᾶσαν δόξαν, ἥτις ἂν τῆς ἰδίας αὐτῶν διαφέρει, κακὸφρονά τε καὶ Αἰρεσιώδη ἀποκαλεῖν. Καὶ γὰρ ἐν ἐκείνοις τοῖς Γράμμασιν ἐμφέρεται πρὸς δὴ τοῖς ἄλλοις καὶ ταῦτα, παρὰ τῷ μνημονοῦμένῳ Ματθ: τῷ Πάρις, Σελ: 590. „Ἀπάντων τῶν προειρημένων „Ἑθνῶν (Νεσοριανῶν τε δηλ: καὶ Εὐτυχιανῶν) τῇ περὶ Τριᾶδος Διδασκαλίᾳ (νοεῖ δὲ τῷ περὶ τῆς τῆς Ἁγίας Πνεύματος Ἐκπορεύσεως) καὶ ταῖς ἡμετέραις Διδαχαῖς ἐφυσυχαζόντων, οἱ „Γραικοὶ μόνοι τῇ κακοτροπίᾳ τῇ ἑαυτῶν ἐπιμένουσιν, ἀπαντα- „χῆ εἴτε λάθρα, εἴτ' ἀμφαδὸν τῇ Ἐκκλησίᾳ τῆς Ῥώμης ἀντι- „φερόμενοι, καὶ πάντα τὰ παρ' ἡμῖν Ἱερὰ καταβλασφημῶντες, „καὶ ἅπαν φρόνημα τῆ ἑαυτῶν ἀλλοτρίως ἔχον, κακὸδοξόν τε „καὶ αἰρετικὸν ὀνομάζοντες,,.

Ἐν μὲν ὅν τοῖς ἄλλοις τῶν Γραικῶν, ὅποσοι τῆς τε Ῥωμᾶ- νᾶς Ἐκκλησίας, καὶ τῶν Σταυροφορέντων ἐσπῆδάζον τὸν ζυγὸν ἀποσείσασθαι, τῆς δὲ σφῶν τε αὐτῶν, καὶ τῆς τῶν σφίσιν ὁμογενῶν ἐλδοφείας, ὅπλοις ἀμυνάσθαι, διαφέρων ὡς μάλιστα κατ' ἐκείνο τῆ χρόνῳ ΒΑΤΤΑΚΙΟΣ. Τούτοις γὰρ ὀπλιτῶν περιε- πέφρακτο στίφειν, ὡς τὸν Βαλδρίνον, μηδὲ τῆ ἀπὸ τῶν Ἑσπερίων ἀρτίως οἱ προσεπεληλυθότος σύμμαχικῆ, ἀξιόμαχον ἐκείνῳ πρὸς γὰρ ἀσφάλειαν φαίνεσθαι ἐπαναγκάζεσθαι δ' ἐπὶ ἐπικυρίαν προσεξαυτῆσθαι καὶ παρὰ Φριδερίκῳ τῷ Γερμανῶν Αὐτοκράτορος. Ὃς δὴ καὶ ἐπιμεσιτεύσας, ἐκεχειρίαν ἐπ' ἐνιαυ- τῷ σωθέσθαι Βαλδρίνον τε καὶ Γραικῆς, κατέστη πρόξενος. Ὁ δ' αὐτὸς Αὐτοκράτωρ Φριδέρικος, καὶ τῷ ἑαυτῆς θυγατέρα εἰς γάμον σωῆπτε τῷ Δουκὶ Βατλακίῳ, ὃ καὶ τῆ Πάπα λίαν χαλεπῶς φέροντος, αἱ τὰς γε μέσον καὶ Φριδερίκῳ τῷ Αὐτο- κράτορος δυσμένειαι ἐπὶ πλέον προσηῦξον, ἢ πάλιν αὖ καὶ τότε αὐτὸς ἡμῖν ὁ Πάρις Ματθαῖος διέξεισι Σελ: 832. „Κατὰ τὸν „αὐτὸν τῆτον χρόνον ὁ Κωνσταντῖνος Αὐτοκράτωρ τὸν ὑπὸ τῶν „Γραικῶν διωγμὸν ὑπαλύξας, μηδ' εὐπορῶν ἐν τοῖς ταμείοις „χρημάτων, δι' ὧν ἂν προαγάγοι περαιτέρω τὸν πόλεμον, καὶ „τὰς συχνὰς ἐφόδους τὰς τῶν Γραικῶν ὑποσαύη, ἐπὶ τῷ βαλῶν τε „καὶ ἐπικυρίαν τῷ Ῥωμαίων Αὐτοκράτορος προσέφυγε Φριδερίκῳ. „Φριδέρικος δὲ, τὰ μὲν δεινότερον τοῖς Γραικοῖς ἀπειλῶν, τὰ δὲ „καὶ πρὸς τὸ ἐυθελότερον ὑποβάλλων, πρὸς ἀνακωχὰς ἐνιαυσίως „τελοῦσθαι αὐτὸς ἐδυσώπησεν. ἅμα δὲ καὶ τῷ θυγατέρα ἐπι- „μελὲς ἔθετο τῷ ἑαυτῆς, ἐπισήμῳ τινὶ τῶν ἐν Γραικοῖς Ἀρχόν- „των, Βατλακίῳ ὄνομα, εἰς γάμους κοινωνίαν σιμάσθαι: τῆ δ' ὅπερ „τῷ Κυρίῳ Πάπᾳ, καὶ πάσῃ ἀπλῶς τῇ κατὰ Ῥώμῃ Αὐλῇ δε- „νὸν ἐδόκει καὶ ἔκ ἀναχετόν. ὅτι διὰ τῆςδε τῆ Βατλακίᾳ, τὸ „με-

μεταξὺ τῶν Ἐκκλησιῶν Ῥώμης τε καὶ Γραικίας ἀνεφύετο χίσμα, ὃ χάριν καὶ ἡ ἐν Ῥώμῃ χισματικὸν αὐτὸν ἀπεκάλει καὶ ἀπετραχύνετο ἔτι τὸ μεταξὺ τῆς Κυρίας Πάπα, καὶ Φριδερίκου τοῦ Αὐτοκράτορος μίσος. Ἐν ᾧ τοίνυν μετὰ τοσαύτης δριμύτητος οἱ Γραικοὶ τὸν ὑπὲρ τῆς Ἐκκλησίας ἅμα καὶ τῆς Κράτους αὐτῶν ἀπεδύοντο ἀγῶνα, ἔδεν μονομαχίᾳ ἐπ' Ἀνατολῆς περιῶ Λατίνους ἐπέκεινα τῆς Κωνσταντίνης, ἐν ᾗ πως περιειργομένους αὐτὸς οἱ Γραικοὶ σωαῖχον. Σωάμα δὲ τοῖς διωαζούσιν καὶ τὰ τῆς Λατινικῆς θρησκείας σωεξελαύνετο, καὶ τῷ ἐλεύθεριαν ἕκαστος τῆς πατρώας Πίσεως ἔπνευτε καὶ ἐφίετο, καὶ ἀμφοῖν ἐνεσερνίζετο ταῖς ὠλέναις. Ὡς τε τὸν ἐν Κωνσταντινπόλει Λατίνων Πατριαρχεῦντα, τὸν πρότερον ὑφ' ἑαυτὸν τελῶντα Ἀρχιεπισκόπου πλεῖν ἢ τριάκοντα ἀριθμῶντα, ἐν ἔτει 1245. μόλις τρεῖς ἔχειν περιλειπομένους αὐτῷ. (12) Ἐνθεντοι καὶ δεινὸν ἐτίθετο τῷ ἐπὶ τῆς ἐν Λαγδένῳ Σωόδῳ χειτλιάδων ὁ Λατινο-Πατριάρχης· ὅτε δὴ καὶ ὁ τῇ Σωόδῳ ἐκείνῃ, ὡς ἐκ τῆς Αὐτοκράτορος Φριδερίκου ἐπιτροπικῶς παρσιιάδων ὑπὶ χνῆτο τῷ Πάπα, ὡς, ἰὼ περ ἔτος τῷ Κυρίῳ αὐτῷ διαλλαγείῃ, ἐν ὅπλοις ἔπειτα πρὸς ὑπακοὴν τῆς ἐν Ῥώμῃ Ἐκκλησίας ὁ Αὐτοκράτωρ τὰς Γραικὰς προσβιάσεται. Ἀλλ' ὁ Πάπας (13) μὴ πάνυ τι τῷ Αὐτοκράτορι πισθῆναι ἔχων, τῷ Σωθήκῳ ὃ προσεδέξατο. Ἐλεεινολογήσας δὲ μόνον τὰ τῆς Λατίνων κατασάσεως, τῷ μετὰ τῆς ἐν Ῥώμῃ Ἐκκλησίας ἔνωσιν τῇ Σωόδῳ αὐθις προέθετο. Καὶ γάρ τοι πρὸς γε τοῖς ἄλλοις καὶ ταῦτα ἐν τοῖς Πρακτικοῖς ἐκείνης τῆς Σωόδου ἐμφέρεται, παρὰ Ματθαίῳ τῷ Πάρις Σελ: 896. Καὶ ἐξ αὐτῆς ἐν τῷ ΙΑ'. Τόμ: τῶν Σωοδικ: Μέρ: Α'. Στήλῃ 658. „Πρὸς ἄλλοις ἔλετο ὁ Λατῖνος Κωνσταντινπόλ: Πατριάρχης τῷ τε κατὰ σασιν καὶ τὰς ἀνάγκας τῆς Ἐκκλησίας αὐτῆς παρασήσας, ὅτι πάλαι μὲν ὑφ' ἑαυτὸν ὑπὲρ τὰς τριάκοντα ἔχεν ὑποψηφιφορῶντας, ἔξ ὧν ἤδη μόλις πρὸς αὐτῷ τρεῖς περίεσι προσιθῆς, ὡς οἱ Γραικοὶ, καὶ τινες ἄλλοι τῶν πρὸς τῷ Ἐκκλησίαν τῆς Ῥώμης ἀπεχθῶς διακειμένων, ὁλοχερεῖς μικρὰ δὲ τὸ τῆς Ῥωμανίας Κράτος, ἔς γ' ἐπὶ τὰς πυλῶνας τῆς Κωνσταντινπόλεως πρὸς βίαν κατέλαβον· οἱ καὶ τῇ Ῥώμῃ Ἐκκλησίᾳ ὅλως ἐν μηδεὶν πειθαρχῶντες, ἀποτροπιάζονταί τε αὐτῷ, καὶ δυσμενῶς ἄγαν κατ' αὐτῆς ἀντιφέρονται· ὅθεν δὴ ὁδωή τε καὶ σύγχυσις τοῖς Χριστιανοῖς πᾶσιν ἐπίκειται. — Παρὶν δ' ἐκεῖ καὶ Θαδδαῖοις ὁ Δε-  
„Σαέ-

(12) Νικόλαος ἰὼ ἔτος ὁ Σπολετῖνος, ὁ τῶν ἐκ Λατίνων ἐν Κωνσταντινπόλει Πατριαρχεῦντων Πέμπτος· (ὄρα ἀνωτ: ἐν τῇ Σημειώσει (1).)

(13) Ἰννοκέντιος ὁ Δ'. (ὡς ἐν τῇ Σημ: (1).) Ἐφ' ὃ καὶ ἡ ἐν Λαγδένῳ Α'. συγκεκριμένηται Σωόδος, ἐν ἔτει 1245.

„Σκέψα, τῷ Αὐτοκράτορος Κυρίῳ Φριδερίκῳ Ἐπίτροπος. Ἀνὴρ  
 „σιώσῃ τε καὶ εὐφραδείᾳ διαφέρων, στρατείᾳ τε ἐξητασμένος,  
 „καὶ τῇ περὶ νόμους ἐπιστήμη Διδάσκαλος, καὶ τῷ Ἱερῷ Πα-  
 „λατίῳ Αὐτοκρατορικῷ Δικαστῇ καθεώς· παρῷ δὲ ἄρα ὡς  
 „ὑπὲρ τῷ Κυρίῳ αὐτῷ ἐπιμελῶς καὶ εὐτόνως ἀποκρινόμενος.  
 „Καὶ δὴ, ὡς τῷ εἰρώνῳ καὶ τῷ ἀρχαίᾳ ἀποκαταστήσῃ Φι-  
 „λίαν θαρσάλεως ἔτος προβάλλετο, ὅτι ὁ Κύριος αὐτῷ ὁ  
 „Αὐτοκράτωρ διὰ σπῆδης ἀναλήφεται, πρὸς τῷ τῆς Ῥωμα-  
 „νικῆς Ἐκκλησίας ἐνότητι, σύμπαν τῆς Ῥωμανίας, ταύτων  
 „ἐπὶ τῆς Ἑλλάδος, τὸ Κράτος ἀνακαλέσασθαι. — Πρὸς  
 „ἃ δὴ πάντα μεγαλοφώνως, ὁ Πάπας ἀπεκρίνατο λέγων:  
 „ὡ τῶν πολλῶν καὶ μεγάλων ὑποχέσεων, τῶν μηδαμῇ μέντοι  
 „μηδέποτε πληρωθεῖσιν, μήτε πληρωθησομένων! Ἀλλὰ καὶ ταῦ-  
 „τα ὡς δῆλον ἐν ὑποχέσει προβάλλεται, ἵνα τῆς Σωδὸς παρα-  
 „κρηθείσης τε καὶ λυθείσης, ἢ παρὰ τῷ ῥίσκῳ κειμένη ἀξίῃ  
 „διὰ τῆς ἀναβολῆς ἀπρακτῇ. Τῷ ἔν κατὰ τὸν προοιμωθέν-  
 „τα ὅρκον εἰρώνῳ ἐν τῇ ψυχῇ αὐτῷ ὁ Αὐτοκράτωρ τηρέτω,  
 „καὶ σέργω. Ἀλλὰ γὰρ τίνι τῷ δεσμῷ τὸν Πρωτέα τῆτον κα-  
 „θέξω, τὸν ἔτω τὰς ὄψεις προσμεταμείβοντα; Ἐάν περ αὐτῷ  
 „τὰ τῆς αἰτήσεως ἐπιβρέψω, ὁ δὲ καὶ αὐτὸς ἐθελήσῃ ἀναπηδή-  
 „σαι (ἐδὲ γὰρ ἄλλως πέποιθα.) τίς νῦν ὑπὲρ αὐτῷ προνοόμενος  
 „ἐγγυήσεται αὐτὸς ἀναπηδήσαντα προσβιάσασθαι; Τῷ δὲ Θαδδαίῳ  
 „Βασιλεῖς δύο πρὸς τῆτον, τὸν τε Φράγκων, καὶ τὸν Ἀγγλων,  
 „ἐγγυητὰς ἔσεσθαι ἐπαγγελλόμενος, ἀπεκρίνατο ὁ Κύριος Πάπας:  
 „ὅ βεβλήμεθα. Εἰ γὰρ τὰς Σωθῆκας παρατρέψῃ, ἢ καὶ τὸ  
 „παράπαν ἀθετήσῃ (ἐδὲ γὰρ ἄλλοτι διὰ τὸ συχνὸν (τῆς πεί-  
 „ρας) πισδύομεν.) ἔσαι ποτὲ, ὅτ' αὖ δεήσῃ ἐκείνης ὡς ὑπὸ  
 „θῷος τίσεσθαι καὶ τρεῖς αὖ ἔξοι τὸ τιμικαῦτα πολεμίας ἢ Ἐκ-  
 „κλησία, ὣν τῇ κατὰ κόσμον διωάμει, ἔχ' ὅπως ἐ μέζονες ἄλλοι,  
 „ἀλλ' ἐδὲ ἀντιτάλαντοι εἰσίν. Ἐπεὶ ἔν εἰς τῆτον ἢ Θαδδαίῳ πρεσ-  
 „βείᾳ ἐκ ἤρκει, ἐδὲ καιρὸς ἦν ὥς ταῦτα σιωτελεσθῶναι, ἐπι-  
 „σκυθρωπάσας ἔτος ἔλετο σιγᾶν — Γενομένης δὲ τῆς τῷ Ἀγίῳ Πνύ-  
 „ματος ἐπικλήσεως, καὶ ἐφεξῆς λιτανείας, καὶ τῶν λοιπῶν ὡς  
 „ἐχρῶ διαπεπραγμένων, ὁμιλίαν ἔχεν ὁ Κύριος Πάπας, ἐναρ-  
 „ξάμενος, καὶ μεταξὺ λυγμῶν παράκοπλόντων προθέκενος τὸ δε-  
 „τὸ θέμα: Οἱ πρὸς ὑμᾶς πάντες παραπορευόμενοι ὁδὸν, ἐπιστρέ-  
 „ψατε καὶ ἴδετε, εἰ ἐστὶν ἄλγος κατὰ τὸ ἄλγος μὲν. Τὸν δὲ δὴ  
 „λόγον ἐκ αὐτοῦ κομψείας παρατάνων, πέντε τινὰ παρέθετο,  
 „ἅπερ ἦλγει μέγιστα ἄλγη, τοῖς τῷ Χριστῷ πέντε τραυμασί τε καὶ  
 „πληγαῖς παραβαλὼν. Καὶ τὸ μὲν ὡς, τὸ περὶ τῶν ἀπανθρώ-  
 „πων τε καὶ θηριῶν Τετάρτων· τὸ δὲ περὶ τῷ τῆς Ῥωμανίας  
 „Σχίσματος· τετέστι περὶ τῆς τῶν Γραικῶν Ἐκκλησίας, ἣτις  
 „καθ'



καθ' ἡμᾶς, ἐξ ἑ πάνυ πολλῶν περιελιχθέντων χρόνων, τῶν αὐτῆς τῆς μητρὸς, ὡς ἐκ μητρειᾶς κόλπων ἀποσφραφίσαι, ἀπο-  
νενοημένως τε καὶ ἀνθαδῶς ἀπεσκίρτησε. Περὶ ταύτης δὲ τῆς Ὀμιλίας οὕτω καὶ τὰ Πρακτικὰ διελήφασιν τῆς αὐτῆς Σωό-  
δου τὰ Βατικάνια, ἐν Τόμ: ΙΑ'. Μέρει Α'. τῶν Σωόδ: σήλη 638.  
Ὡν δὴ τελεοθέντων διδάσκων ἤρξατο, ἀπὸ τῆς Προφητικῆς  
ρήσεως προοιμιάσας: Καὶ τὸ πλῆθος τῶν ὁδυνῶν με ἐν τῇ  
καρδίᾳ με, αἱ παρακλήσεις Σα κτ: ὅτι πολλαπλῆτις ὡς αὐτῶ  
ἢ ὁδῶν ὅτι πέντε ὁδοὶ περιέχον αὐτόν. Καὶ Α'. μὲν ὡς, ἢ  
περὶ τῆς ἀκοσμίας τῶν τε προεδροβόνων, καὶ τῶν ὑπ' αὐτῶν.  
Β'. δὲ, ἢ περὶ τῆς ἀπονοίας τῶν Σαρακηνῶν. Γ'. δὲ ἢ περὶ τῆς  
σχίσματος τῶν Γραικῶν. Δ'. δὲ, ἢ περὶ τῆς ἀπλωείας τῶν Ταρ-  
τάρων. Ε'. δὲ ἢ περὶ τῆς διωγμῶς τῆς παρὰ Φριδερίκου τῆς Ἀυ-  
τοκράτορος. — Η' δὲ περὶ τῆς τῶν Γραικῶν Σχίσματος Γ',  
ὅπως (14) Βακάριος (ἔτω.) ὁ τῶν Γραικῶν Ἀυτοκράτωρ, μετὰ  
Γραικῶν Σχισματικῶν, ἐπικαλαβόντες διεπόρθησαν ἀπαντα  
μικρὰ δὲν ἄχρι Κωνσταντινουπόλεως· παρὶς δὲ καὶ περὶ αὐτῇ  
τῇ πόλει δεδιέναι, εἰμὴ ταχέια τις σφαργὴ ἐκ τῶν Χριστι-  
ανῶν ἐπισπῶσειεν.

Ἐπεὶ τοίνυν ὅπλοις ἔκτετι εἶχε, διὰ τῶν παρ' αὐτῶ ἀπο-  
σελλομένων ἐπεχείρει τὸ ἐντεῦθεν ὁ Πάπας εἰς ὑπακοὴν τῷ ὑπὸ  
τὸν Ἀποσολικὸν Θρόνον τῆς Ἀνατολικῆς ἐπιστρέψαι: (παρὰ  
ΒΑΔΔΙΓΓΩΙ ἐν τῇ Ἰσορ: τῶν Ἐλασσόν: Φραζόνων, Ἔτει 1247.)  
Ἀλλ' εἴπερ ἄρα ἔχουσιν τε ὡς τὰ ὅπλα τοῖς Λατίνοις τῆς Γραι-  
κῆς ὑποτάξαι, πῶς ἂν τὰ ῥήματα τῶν Ἀποσελλομένων ἰχύσει-  
αν; ὁ μὲν ἔν Γ'. Ἰννοκέντιος ἐν τῇ πρὸς Ὁθωνα τὸν Τσεκα-  
λανὸν Ἐπιστολῇ, τῇ ἐν τῷ ΙΑ'. Τόμ: τῶν Σωόδ: Μερ: Α'. σή-  
λη 612. ἔτω περὶ τῆς διαμέσεως τῶν Ἐκκλησιῶν διεξέρχεται:  
Τῶτο δὴπε τῆς πολυμερίμης ψυχῆς ἡμῶν τῷ ἔσειν, οἷα πη-  
γή τις τῷ εὐφροσύνῳ δαψιλῇ ἐπιρρέσσει ἀπαναψύξειεν, εἴπερ  
ἀπαντες, ὅς πάλαι ἐν τῇ αὐτῇ μιᾷ Καθολικῇ Ποίμνῃς ὁ Κύ-  
ριος σωελέξατο, πολλῶν ἐξ αὐτῆς ἀπαναχωρησάντων, ἐπὶ  
τὸ αὐτὸ ἀδιαίρετον ἄθροισμα ποιμένος ἐνὸς ἐπισηροῖται ἢ δι-  
δασκαλία, καὶ ἢ φρενὰ συγκρατᾷσθαι. Ὡ! εἰν τοῖς  
Ἀνατολικοῖς ἢ ἐξ ὕψους Ἀνατολῇ ἐπιφάνσει, καὶ τῷ ἐκ τῆς  
Φωτὸς αὐτῆς ἀπανγασμάτι ἐπὶ τῷ ἐνότῃ τῷ καθολικῷ ἐπα-  
νάξειεν, ἢ ἵνα σὺ τοῖς λοιποῖς ὁρθοδόξοις ἐπὶ τῷ αὐτῷ αὐτῷ  
συλλεγέντες, ἐκ τῆς μαθῆ τῶν τῆς Ἐκκλησίας μητρῶν κόλπων  
τὰ

(14) Ἰσ: „Βατάτζιος“, βέλεται λέγειν. Διᾷπε γὰρ ἐν τῇ Ἀσίᾳ τὰ Γραικῶν Ἀυτοκρα-  
τορικὰ Σκήπτρα τὸ πτωκαῦτα, Ἰωάννης Λάκας ὁ Βατάτζης, ἀπὸ Ἔτους 1221.  
Ἀυταρχήσας, ἄχρι τῆς 1255. ὡς ἐπὶ τῆς Σημ: (1) ἀνωτ: εἴρηται.

Τόμ. Β'.

P rrrrrr

τὰ τῆς Σωτηριώδους διδασκαλίας ἐκδηλάσειαν νάματα! τότε δὴ  
 „τὸ μέγα καὶ εὐκταυτότατον ἄν γένοιτο τῆς Ἐκκλησίας σωτήριον  
 „τότε αὐτῆς ἡ μήτρα διδυμοτοκῶσα ἐυθωήσεται· τότε ὁ τῷ ἄνω-  
 „θεν φωτισμῷ ὁρθρὸς τοῖς Ἀνατολικοῖς ἐξαυγάσεται· τότε ὁ τῆς  
 „ἀληθείας Ἑωσφόρος αὐτοῖς ἐπιλάμψει· τότε δι' ἀπάσης τῆς  
 „Ἐκκλησίας τὸ τῆς πλημμυρῆσης ἀγαλλιάσεως ἐκραγείη πηγά-  
 „σαν πλήρωμα· τότε ἐν εὐφροσυνῇ ὑπερβαλλέσῃ φαιδρωθεῖη πᾶσα  
 „ἡ γῆ· ὅτι πάνυ καλὸν καὶ τερπνὸν ἄν εἴη τὸ κατοικεῖν ἀδελ-  
 „φῶς ἐπὶ τὸ αὐτὸ ἐν οἴκῳ Κυρίου· τότε ἡ αὐτὴ Ἐκκλησία, τῆς  
 „χαρμονῆς ἐν αὐτῇ πολυπλασιασθείσης, ἐν φωνῇ ἀγαλλιάσεως  
 „ἄσμα κακὸν ἐξηχήσεται.

Τὸ δὲ δὴ μετὰ ταῦτα, ἐν Ἔτει 1253. διατρίβων ὁ Πάπας  
 ἐν Ἀοισίῳ, ἐνετείλατο τῷ Πολωνίας Προβικιᾶλει, τῷ ἐκ τῆς  
 τῶν Κηρύκων τάξεως, ἵν' ἐκ τῶν ὑπ' αὐτὸν Μοναζόντων ἐπὶ  
 Γραικὸς ἀποσείλῃ, τὸς εἰς ὑπακοὴν τῆς Ῥωμάνας Καθέδρας  
 αὐτὸς ἐπανάξοντας. (Παρὰ Βαδδίνῳ ἐν τῇ Ἰσορ: τῶν Ἑλασσόν:  
 Φρατόρ: Ἔτει 1253.) Καίτοι γε καὶ κατὰ τὸ 1252. τῶν τινες  
 ἐν Κωνσταντ: Λατίνων συγγράφοντες κατὰ τῶν Ἀνατολικῶν  
 ὑπῆρχον περὶ τῆς τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος Ἐκπορεύσεως, (ἡ δὲ  
 Βίβλος ἐν Ἰγγολσαδίῳ Ἔτει 1616. ἐκδότομα ὑπὸ Πέτρῳ Στε-  
 βαρτίῳ, σὺ καὶ ἄλλοις τισὶ Συγγραφεῦσι Γραικοῖς καὶ Λατίνοις)  
 διαρρήδην τε ὡμολόγησαν, ὅς γ' ἐπ' ἐκείνῳ τῷ χρόνῳ αἰεὶ ποτε Λατί-  
 νοις τὸς Γραικὸς ἀντεπενεχθῆναι, μηδέποτε δὲ εἰς κοινωνίαν  
 αὐτοῖς σσελθεῖν. Οὕτω καὶ γὰρ προοιμιαζόμενοι Φασὶ Σελ: 535.  
 „Εἰ καὶ τῷ Γραικῶν Ἐκκλησίαν ἀρετῶν ἄνθεσι, καὶ ταῖς περὶ  
 „τὰ φιλοσοφούμενα μελέταις ποτὲ κατηγλαῖσμένῳ οἶδαμεν καὶ  
 „τοῖς τε τῶν Θεωπεσίων Πατέρων, καὶ τοῖς τῶν Προφητῶν καὶ  
 „Ἀποστόλων ἔχουσιν εὐθυδρόμως παρακοληθεῖν ἀποδύσασιν, ὡς  
 „πλείους ζῶντας τε καὶ διαπεπυρωμένους λίθους, εἰς ἐποικοδόμησιν  
 „τῆς ἄνω Ἱερουσαλὴμ ἐξ ἐαυτῆς πάλαι σσεισενεγκεῖν· ἀλλὰ τὰ  
 „νῦν ὁμῶς, ἐν τέλει τῶν καιρῶν, (ὅπερ ἐκ ἄνευ βαρείας ὁδωῆς  
 „ἐκφράσαι διωάμεθα) πολλοῖς τε καὶ παντοίοις ἐπισκοτημένῃ  
 „λαίλαψι κακοδοξιῶν, ἀλλοτριοφρονῶσα τῆς Ἁγίας Ῥωμάνας  
 „Ἐκκλησίας, ἐν αὐτῇ τῇ ἀχλύϊ ἐπιμένει τῶν ἰδίων ἐαυτῆς ὑπο-  
 „λήψεων. Καί περ δὲ ὑπὲρ ἀριθμὸν ἐστὶ τὰ τῶν Αἱρέσεων πα-  
 „ραβλάσηματα, τὰ ἐξ ἐνιαυτῶν ἤδη ὀγδοήκοντα ἐπὶ τριακο-  
 „σίοις τετέστιν ἀπὸ τῷ χρόνῳ Φωτίου, ἢ Φωτεινῷ (15) (τῷ πρῶ-  
 „τῳ

(15) Φωτεινὸς μὲν ὁδὲποτε ὠνομάσθη, αἰεὶ δὲ ἦκεν ὁ Ἱερώτατος Ἄνθρωπος, ΦΩΤΙΟΣ:  
 ἐν τε Συγκλητικαῖς ἀξιάμασιν ἐνδιαπρέψας, καὶ ἐπὶ τῷ Πατριαρχικῷ περιω-  
 πῷ ὕψους ἐξαρθεὶς. Ὡς εἶγε διὰ τῆς τῷ πάλαι κακοδόξου Φωτεινῷ ἐπωνυμίας,  
 λαιδορίας τινὰ κἀντεῦθεν ἐποίησαν οἱ Παπισταὶ τῷ Ἐυσεβεστάτῳ Πατριαρχῇ περᾶν-  
 ται,

ἡ τὸ χίσμα τότε ἀνδρόντος) πολλαχῇ τῶν αὐτῆς μερῶν, ἡπαρά τε ἔλλειψιν ἐπισήμης, καὶ διὰ φθόνη πικρίαν, προδήλως ἡπαρεκφυέντα, ἐξόχως ἄλλ' ἢ ἐν Κεφαλαίοις τέσσαρσι κατὰ ἡγένος, ἥτοι κοινότερον, τῆς παρ' ἡμῖν εὐθείας ὁδῷ γινώσκεται ἡπαρεκκλίνουσα. Ὡν διὰ μὲν τῇ Α', ὃ ἀπ' αὐτῆς ἀρχεται ἡ τῆς Θείας Μεγαλωσύνης, ἀκαθάρτῳ σώματι κατὰ τῆς δόξης, ἡ μᾶλλον δὲ κατὰ τῆς Πίσεως τῆς Καθολικῆς διατένεται, ὅτι ἡ τὸ τρίτον Πρόσωπον ἐπὶ τῆς Τριάδος, ἥτοι τὸ Ἄγ: Πνεῦμα, ἡ δαμῶς ἐκ τῇ Γ' ἐμπορεύεται, ἡ πνέται, ἡ λαβὸν ἔχει τὴν ὑπαρξιν. — Καθ' ὧν ὁλεθρίων κακοδοξιῶν, καὶ τοι πολλοὶ τῶν ἡπιστῶν, ἀπλέτους ἰδρωῦτας πόνων ἐξέχεαν, καὶ πλεῖστα πρὸς ἡμῶν τῆς ἀληθινῆς καὶ καθολικῆς Πίσεως ἐκδεδώκασιν ἀναγνώσεως ἡἄξια· ἐπείγεμῳ οἱ τῶν Γραικῶν νεώτεροι, οἱ πρόσφατοι ὁμοίως καὶ παλαιότεροι Σχισματικοὶ, ἔτε δι' Ἑπιχειρημάτων ἡ λόγων, ἔτε ταῖς ἐκ τῆς Ἱερᾶς Γραφῆς μαρτυρίαις, εἰ μὴ ταῖς ἡτῶν παρ' αὐτοῖς Ἀγίων Συγγράμμασιν, οἷς πλεῖστον προσεπερρίδονται, ἀποκρύφους τε δὴ καὶ ἀληθεῖς ἡτῶν βέλονται. ἡ Ἀδελφικαῖς ἐτι ἐπιπειθαρχῶν παρακλήσεσιν, ὅπως καὶ ἐξ ὧν ἡ ἔχσιν βιβλίων, τὸ αὐτῶν ἐξελεγχεται ἡ ἀδελφεία τε καὶ ἡ ὑπόγνωμον, ὡς ἂν οἷος τε ἡ ἀποδείξει περάσομαι. — (Πρὸς δὲ ἡτοῖς ἡλλοις, Σελ: 591.) Ἐπειδὴ τοίνυν ἡ ἐν τῷ ἀπολογίῳ ἡχσιν οἱ Γραικοὶ, πόθεν αὐτοῖς, ὅτι διὰ τὸς χρόνους ἡτῆς μητρὸς ἀφεσῶτες Ἑκκλησίας, ἔτως ἡχυρογνωμόνως παραιτῶνται εἰς ὑπακοὴν ἐπανελθεῖν; τὸ μῆκος οἶμαι τῇ χρόνῳ, ταύτῃ τῇ τῇ ἔσω ἀνθρώπων πώρῳ αὐτοῖς ἐνεργάσατο. Παρηγήλθον γὰρ τριακόσιοι ὀγδώκοντα ἔνιαυτοὶ καὶ ἐπέκεινα, ἡ πνέεται, ἐξ ἡ τὸ χίσμα τότε καὶ τὸ σκάνδαλον ἀναφύεσθαι ἡῖρξατο. Ἀλλὰ μὴ γὰρ ὁ χρόνος ἐν τοῖς τοιούτοις προκαταγνώσεως καθίσταται πρόφασις; τῇναντίον μὲν ἡν, τὸς τῷ μᾶλλον, ἐν τῷ παρὰ τῇ αἰωνίῳ Κριτῇ ἐτασμῷ ὑπόβητοι τῇ Σχίσματος γίνονται, ὅσω περ ἀγνωμονέσερον τοῖς συγχωρηθεῖσιν αὐτοῖς εἰς μετάνοιαν κατεχρήσαντο χρόνοις.

Διέξεισι δ' ἐπὶ τέτοις ΜΑΤΘΑΪΟΣ ὁ Πάρις, ἐν ἡ 1254. ὡς τῶν Ἀνατολικῶν τινὲς ἐπιφανεῖς ἡνδρες, σωτυχόντες ἐν ἡ Ῥώμῃ τῷ Πάπῃ, ἡταμώτερόν τε πρὸς αὐτὸν φθεγγόμενοι ἀπέδειξαν,

ται, ἐπεικῶς ἡδεῖς ἡμῖν εἰσὶν, ἡ μὴ ἀνδῆς εἶπω, τὰ τοιαῦτα σφύλλοντες· τὸ δὲ καὶ τῇ τῇ Σχίσματος ἀρχῇ τῷ Φωτίῳ ἐπανατρίβειν, ἀπαυδυσίας ἐξίστη καὶ κακονοίας τῆς ἡχάτης ἐδὲν ἀποδεῖ. ἡΕτι δὲ καὶ ψεύδεις ἔχεται προδηλοτάτα, ὡς ἀπὸ σώματος τῶν Ἀποχιστῶν τὸ λεγόμενον· τίνες γὰρ οἱ τῆς Ἑκκλησίας ἡαυτῆς ἀποχίσαντες διὰ τῇ περὶ τὸ Δόγμα καινοτομήματος; καὶ τίνες οἱ παραπῆξαι τολμήσαντες, τῇ μὴδ' ἀκωθεῖσαν πάλαι προδήκλι; ἡ ἐν χερσὶν ὅλη Βίβλος λαμπρῶς ἀποδείκνυσιν.

δειξαν, ὅσον σφαλερῶς αὐτὸς σιῶμα τοῖς λοιποῖς Λατίνοις πρεσβόων εἶη τὸ "Ἅγιον Πνεῦμα καὶ ἐκ τῆ Τιῆ ἐκπορεύεσθαι ποικίλας δὲ μετὰ τῆτο καὶ πρὸς Λατίνους σιῶσησαν ἀντιδιαλέξεις. Τῆτες δὲ καλῶς ὁ Πάπας ἀποδεξάμενος, σιῶ δώροις ἐπὶ τῆς οἰκείας ἀπέλυσεν. Οὕτω γὰρ ὁ Ματθαῖος ἐν Σελίδι 1190. „ὑπὸ τῷ αὐτῷ δὲ χρόνῳ, θέρους ἰσαμένε, ἦκον τινὲς τῶν Γένει τε „καὶ δωάμει διαφερόντων ἐν τῷ Κράτει Γραικῶν· λαμπρῶς τε „ἐξαλμένοι, καὶ ἵπποις ἐποχόμενοι ἀρίστοις, καὶ ὑπὸ πεντήκον- „τά πε εὐπατρεδῶν, καὶ οἰκετῶν πλήθους ἄλλας εὐπρεπῶς πα- „ρεσκιδασμένων περισιχόμενοι. Ἐνέτυχον δὲ τῷ Κυρίῳ Πάπα „ρήμασιν αὐτῷ ἐπιθέμενοι τραχυτέροις, ὡς δὴ λίαν περὶ τῷ „Πίσιν ἐξαμαρτάνοντι· καθὰ καὶ οἱ λοιποὶ δι' αὐτῆς Λατῖνοι πάν- „τες, οἱ λέγοντες ὅτι τὸ "Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῆ Πατρὸς ἐκπο- „ρεύεται καὶ ἐκ τῆ Τιῆ· τὸ μόνον ἐκ τῆ Πατρὸς προῖον, κατὰ „τῷ τῶν Γραικῶν ὁμολογίαν καὶ Πίσιν. Καὶ αὕτη δὴ ἡ Γραι- „κῶν παλαιὰ κακοδοξία, ὡς οἱ Λατῖνοι καταψηφίζονταί τε καὶ „ἀποδοκιμάξουσιν, ἰχυροῖς τε λόγοις καὶ μαρτυρίαις ἐπιβρῶννύμε- „νοι· περὶ ὧν μακρὸν ἂν εἶη νῦν διελθεῖν. Διελέγοντο δ' ἐπὶ „τέτοις συζητήσιν: εἰ τῇ πέμψει ταύτῃ ἡ Ἐκπόρευσις, ἢ ἕτερον; „ἢ τῷ ἀνάκρισιν ἐπὶ τῶν σωισαμένων περὶ τέττε προσδιαλέ- „ξεων παραλειπτόν. — Διερωτηθέντες ἄλλ' ἐν περὶ τῶν ἄρθρων „τῆς Πίσεως, καὶ περὶ τῶν Μυσηρίων, ἄλλας ἀναχετὰ ἀπεκρί- „ναντο. Ἐν οἷς περ δὲ ταλαντοδόμενοι τῷ γνώμῳ διεσχαλδούν- „το, καὶ διδάσκεσθαι τινὲς ἐξ αὐτῶν ἐπικαιῶς κατηξίεν. Ὁ δὲ „Πάπας ἐσθῆτας αὐτῆς ἐδωρήσατο πολυτίμους πορφυράς, ἐν δερ- „μασιν ἐξεζητημένως περικεκοσμημένας· καὶ ζώνας δὲ συρικὰς „ἀργυρίῳ τε καὶ χρυσίῳ σιωεπιπορημένας· πολλὰ τε ἄξια βάν- „τρα, ἐφ' οἷς ἂν καὶ ἐπικαυχοῖντο ἀγλαϊζόμενοι.

Οὕτω τοίνυν τῆς αὐτῶν καταδωασθόντας Λατίνους, τῶν Γραικῶν πολεμάντων, καὶ ἐλαυνόντων, καὶ τῷ εἰς Θρόνον ἐκεί- νοις ὑποτελῆσαν πόλιν τῆ Κωνσταντίνε, πορθεῖν πρὸ πάντων διὰ σιωδῆς ποικιμένων, τελούταῖον σιωδρομῇ τε τῶν ἄλλων Γραικῶν, καὶ τῇ τῶν Πολιτῶν σιωμοσίᾳ, ΜΙΧΑΗΛ Παλαιολόγος ὁ Αὐτοκράτωρ, Ἔτε 1261. ἐν καταχέσει τῆ Ἄσεος γεγωνῶς, πολλὰς ἐλεεινότατα διέφθαρε τῶν Λατίνων δίκῃ ὑπὸ Θεῆ τίσαντας, ἀνθ' ὧν καὶ αὐτοὶ δεινῶν ἐν τῷ τῷ Πόλιν ἐλεῖν ἀπλωῶς Γραικῆς εἰργάσαντο φθάσαντες. Ἐν γὰρ ὀργῇ οἱ Γραικοὶ διεκκεκαυμένοι, δι' ὡς προπεπονθότες ὑπῆρχον κατὰ τε τῆς ἐλδοθερίας αὐτῶν καὶ θρησκείας ἐπήρειαν, πάντας ἐξαπώλεσαν Λατίνους, ὅσοι μὴ φυγῇ τῷ σωτηρίαν ἐπραγματόδσαντο· καὶ ἐμπιπραμένων μὲν τέτοις τῶν οἰκημάτων, γιωαῖκες ἅμα, καὶ βρέφη νήπια, καὶ οἱ ἐπὶ κλίνης κατακείμενοι διὰ νόσον, πυρὸς ἐγένοντο παρανάλωμα· ἐπυρ-



ἐπυρπολεῖτο δὲ ὡσαύτως καὶ τὰ Λατίνων ἱερὰ τεμένη, καὶ τῶν  
 πρὸς αὐτὰ προσπεφούγोटων ἐν ταῖς Φλοξίν οἰκτρῶς παραπολλυ-  
 μένων. Πρὸ δὲ τῶν ἄλλων κατὰ τῆς Λατινικῆς Κλήρης ἀπλωέ-  
 σατα προσίωχθησαν· οἱ Γραικοὶ, πρὸς ἐκείνης τὸ πλεον ἀνάγον-  
 τες τῆς προκαταχΐσης αὐτῆς ἐπηρείας καὶ θλίψεως. Ἐνθεντοι  
 καὶ τὸν τῆς Πάπα Λεγάτον καρατομήσαντες ἀπὸ κωδὸς ἑρᾶς τιῶ  
 κεφαλῶν προσέδωσαν περισύρεσθαι. Καὶ αὐτὰ δὲ προσέτι τα  
 νεκρῶν πτώματα τῶν σωρῶν ἀπεξενεχθέντα, διὰ τῶν πλατειῶν  
 ἔλκετο καὶ κατεσπαράττετο, εἰς ἁμωιαν δηλονότι τῶν ὕβρεων,  
 αἷς ἐκείνοι ζῶντες Γραικὲς διέθεντο. Καὶ ἔδὲ τῆς Ξενοδοχείας δὲ  
 Φειδῶ τις ὡς τὸ παράπαν, ἀλλὰ καὶ οἱ ἐν ἀθηνείαις ἐπίσης, καὶ  
 πολυειδέσι νοσήμασι κάμνοντες, μαχαίρας ἔργον ἐγίνοντο· καὶ  
 αὐτῶν δὴ τῶν ἀπὸ τῆς Κλήρης, καὶ τῶν ἐκ τῆς Μονασικῆς Σχή-  
 ματος τῆς ἰδίης ὑπεξερεθιζόντων, καὶ δωρεαῖς ἐπὶ τιῶ ἐκδίκη-  
 σιν προσπαροτρωνόντων, ἐφ' ᾧ μηδεὶς Λατίνων ὑπαλύξῃ τὸν ὄλε-  
 θρον. Πλεῖστοι δ' ἔν κ' ἀνδραποδιαθέντες διεπράθησαν τοῖς Βαρ-  
 βάροις. Τῶν ἑκαστα ΓΥΛΙΕΛΜΟΣ ἐξισορεῖ ὁ ἐκ Λατίνων  
 Τύρης Ἀρχιεπίσκοπος, Βιβλ: ΚΒ'. τῆς Ἱερῆς Πολέμης, Κεφαλ: ΙΒ'.  
 Περὶ γὰρ τῆς ἐπανακτηθείσης διεξιῶν Κωνσταντινουπόλεως „ἐγέ-  
 νετο δὲ, Φησὶ, τῆς ἐκείνων κατιχυΐσης σωμοωσίας τὸν Πρωτο-  
 „σεβασον συλληφθῆναι, καὶ τὰς μὲν ὄψεις πηρωθῆναι, τῆς δὲ  
 „ὄρχης ἀπεκλμηθῆναι. Διὸ οἱ ἡμέτεροι σφόδρα τὰς ψυχὰς δια-  
 „ταραχθέντες, καὶ δεδιότες μὴ κατ' αὐτῶν αἴφνης ἡ ἔφοδος γέ-  
 „νηται, ὑπὸ δέ τινων, οἷς τὰ τῆς σωμοωσίας ἐκ ὡς ἄδηλα, προ-  
 „μεμαθηκότες, ὅσοι μὲν τῶν ἐρῶμενεσέρων ἐτύγχανον, οἱ μὲν  
 „ἐν ταῖς τριήρεσι, τέσσαρσιν ἐπὶ τεσσαράκοντα ἀριθμημέναις,  
 „αἷς ἐν τῷ λιμένι ἐνέτυχον, ἐπιβάντες, τιῶ ἀρτυομένῳ αὐτοῖς  
 „ὑπὸ Γραικῶν διέδραν ἐπιβελῶν· οἱ δὲ ἐν ναυσὶν ἄλλαις πολλαῖς  
 „εἰς πλήθος ἐνορμιζομέναις, πᾶσαν τιῶ κατ' οἶκον αὐτοῖς περισ-  
 „σίαν ἐνθήμενοι, ἔξω τῆς κινδύως ἐχώρην. Ὅποσοι δὲ νωχελέ-  
 „σεροι ὑπῆρχον, ἢ ἀθηνεῖς, καὶ εἰς ἀπόδρασιν ἦκιστα ἐπιτήδειοι,  
 „παρ' ἑαυτοῖς ἔτοι καταμείναντες οἶκοι, τῆς ἥς οἱ ἄλλοι ἀπηλ-  
 „λάγησαν λύτης ἐν πέτρᾳ ἐγένοντο· διὰ γὰρ τῆς λάθρα παρεσ-  
 „κευασμένης πλοῖς, ὁ πολλάκις ρηθεὶς Ἀνδρόνικος τὰ σωὴ αὐτῷ  
 „στρατιωτικᾷ πλήθῃ ἐπὶ τιῶ πόλιν διεπεραίωσεν· οἱ δὲ, ὡς εἰσε-  
 „φρησαν, ἅμα τοῖς Πολίταις αὐτίκα πρὸς ὃ οἱ ἡμέτεροι ᾤκην  
 „μέρος τῆς πόλεως ἐμβαλόντες, τὸ λοιπὸν τῆς λαῖς, ὅσοι τοῖς  
 „ἀπερχομένοις σωκεδραμεῖν ἐκ ἡβλήθησαν, ἢ ἐκ ἔχον, ἐν  
 „βομφαίᾳ παίοντες μανικῶς καταργάσαντο. Καίτοι δὲ ὀλιγά-  
 „ριθμοι ἦσαν οἱ τοῖς ὅπλοις χρήθαι ἰχύοντες, ἀντέστησαν ἐπὶ  
 „πολὺ, ἐκ ἀναιμωτὶ τιῶ καθ' ἑαυτῶν νίκῃ τοῖς πολεμίοις ἀπεμ-  
 „πωλήσαντες. Ἐπιλαθόμενοι τοιγαρὲν τῶν σωθῆκα, καὶ τῶν

Τόμ: Β'.

Σ σσστ

„πολ-

„πολλῶν χαρίτων, ἃς οἱ ἡμέτεροι κρατῆντες αὐτοῖς κατεβάλον-  
 „το· ἀνηρημένων ἤδη τῶν δοκόντων ἔχειν ἐνίστασθαι, πῦρ ὑφά-  
 „ψαντες τοῖς τέτων οἰκήμασι, τὸ ὅπερ ᾤκεν κλῖμα αὐτίκα μά-  
 „λα κατετέφρωσαν, γυναικας τε δὴ, καὶ παῖδια, καὶ γέροντας,  
 „καὶ ἀφενείας σωιχημένους συγκατεμπρήσαντες. Οὐδ' ἦρκε τῇ  
 „αὐτῶν ἀπηνεία κατὰ τῶν βεβήλων τόπων ὡμῶς ἔτω κατενεχ-  
 „θῆναι, ἀλλὰ καὶ τὰς Ἐκκλησίας αὐτὰς, καὶ τῶν χωρίων τὰ  
 „ἄλλως εἶναι σεπτὰ νομιζόμενα, πυρὶ τὰ πάντα παραδιδόντες  
 „σὺν αὐτοῖς τοῖς Ἱεροῖς σηκοῖς καὶ τεμένεσι, καὶ τὰς πρὸς αὐτὰ  
 „καταπεφύγοτας φλοξὶ παρανάλωμα γενέσθαι παρέδωκαν.  
 „Οὐδέ τις ἰὼ ὅλως τῶν ἐκ τῆς Δήμης, καὶ τῶν ἐκ τῆς Κλήρης δια-  
 „φορά· εἰ μὴ παρ' ὅσον πρὸς τὰς δοῦτέρας καὶ ἀπιώεσερον προ-  
 „σεφέροντο, τὰς θρησκείας τε δὴ καὶ τῆς ἡθῶν εὐκοσμίας τῷ  
 „περιβολῇ παραφαίνοντας. Τοῖς γὰρ Μονασικοῖς καὶ τοῖς Ἱε-  
 „ρεῦσι βαρυτέρας ἐπάγοντες τὰς ὕβρεις, ἐν χαλεπωτέροις τέτῃς  
 „τοῖς κολασηρίοις ἀπέκτεινον. Ἐν οἷς περ καὶ Ἄνδρα σεβάσμιον  
 „Ἰωάννην ὄνομα, τῆς Ἀγίας ὄντα Ῥωμάνας Ἐκκλησίας ὑποδιά-  
 „κονον· ὃν ἐπὶ πράγμασιν Ἐκκλησιαστικοῖς ὁ Κύριος Πάπας ἀπε-  
 „σάλκε· τῷτον συλλαβόντες ἐπ' ὀνέδει τῆς Ἐκκλησίας, ἀπέτεμον  
 „τῷ κεφαλῇ, καὶ ἐρᾷ κωδὸς ἀκαθάρτη περιάγειν προσέδησαν.  
 „Ἀλλ' ἐδὲ τοῖς νεκροῖς αὐτοῖς, ὧν καὶ ἡ, ὀπόσω ἂν περ καὶ εἰ-  
 „ποις, ἀτάσθαλία φείδεσθαι εἴωθεν· (ὡς ἐν ἔτω μιαιοῖς καὶ πα-  
 „τραλοῖων χείροσιν ἱεροσύλοις) ἐν ἀσφαλείᾳ ἰὼ ἡ ἀνάπαυσις·  
 „καὶ γὰρ καὶ τέτῃς ἐκ τῶν μνημείων ἐξάγοντες, ὡσανεὶ τῶν  
 „αὐτοῖς ἐπαγομένων προπηλακισμῶν αἰσθάνεσθαι εἶχον· διὰ τριό-  
 „δων τε καὶ πλατειῶν περιέλκον. Παρὰ ταῦτα δὲ, καὶ πρὶ τὸ  
 „Ξενοδοχεῖον ἀφικόμενοι τὸ τῆς Ἀγίας Ἰωάννης καλούμενον, ἃς ἂν  
 „ἐν αὐτῷ περιτύχοιεν κάμνοντες, ἀνῆκον. Οἷ τε ἐξ ἐπαγγελματος  
 „τῆς ὅν ἔφερον χαρακτῆρος διὰ γένεσιν ἔλεος τοῖς ἐπὶ θάνατον διω-  
 „κόμενοις ὀφείλοντες ἐπιβοηθεῖν, καὶ τὰ θανά ὑπανακαθίξαι, οἱ  
 „ἐκείνων δηλονότι Ἱερεῖς, καὶ Μονασαὶ, καὶ δι' ἐπιδόσεως ἔτι  
 „τὰς λωποδύτας καὶ ἀνδροφόνους πρὸς ὄλεθρον ἐπιπαρορμῶντες  
 „παρέδηνον, ἀναχωρήσεις τε, καὶ μυχὰς οἰκιῶν διεροδινώμενοι,  
 „ὡς ἂν μήτινες τὸν τῆς θανάτῃ κίνδυνον ἐν αὐτοῖς λάθωσιν ὑπεκ-  
 „φυγόντες· τὰς δὲ εὐρεθέντας βιάως ἀνέσπων καὶ τοῖς βασανι-  
 „σαις παρεδίδον· καὶ τῷ τιμῇ ἔτι τῆς αἵματός, ἵνα μὴ προῖκα  
 „εἶεν πεπονηκότες ἐπὶ τῇ τῶν ἐλεεινῶν ἀναιρέσει, προσκαταβά-  
 „λοντες· ὅσοι δὲ φιλανθρωπότερον ἐδόκεν πρὸς αὐτὰς φέρεσθαι,  
 „ἐκείνοι τὰς αὐτοῖς προσφυγόντας, ἐλπίδι σωτηρίας πτερῶσαντες,  
 „Τάρκους τε δὴ, καὶ τοῖς ἐκ τῶν ἀπίστων Ἑθνῶν ἄλλοις διεπι-  
 „πρασκον διὰ βίβη δαλῶσοντας. Ἐξ ὧν ἀναμῖξ ἀπὸ πάσης καὶ  
 „παντοίας φύσεώς τε καὶ ἡλικίας καὶ καταστάσεως, πλεῖν ἢ τε-  
 „τρα-

ἡτραχιχίλιοι τοῖς βαρβάροις διεκδοθῶσι λεγόμενοι ὦνιοι. Οὕτως  
 ἔν ὁ λαὸς τῶν Γραικῶν ὁ ἄνομος, τὰ τῶν Ἐχιδνῶν γεννήμα-  
 τα, ὅφρων δίκῃ ἐν κόλπῳ, καὶ μυὸς ἐν πήρᾳ, τὰς μηδὲν πα-  
 ῖθῃν τοῖστον ἀξίως, καὶ μηδὲν τοῖστον ὑφορωμένως, ἔτι κακῶς  
 ἡτὰς αὐτῶν ξένως ἡμέψαντο· οἷς περ γεμῶ τάς τε θυγατέρας  
 ἡτὰς ἑαυτῶν, καὶ ἀνεψιάς, καὶ ἀδελφὰς ἐκδεδώκεισαν εἰς γυναι-  
 κας, καὶ τῇ χρονιωτέρᾳ σωδιατριβῇ, οἰκείως τε σφίσι πεποιήκε-  
 σαν, καὶ σωήθεις,.

Καὶ ἔδὲ τὴν λοιπὴν δὲ κατ' ἐκείνο Ἑλλάδα, τῷ τῆς Ῥώ-  
 μης Θρόνῳ καθυποκύψαι πίστις ἔστιν, ὅτι οἱ, ἀπὸ Λατίνων Φυγάδες,  
 οἱ τῆς Κωνσταντινουπόλεως ἐκδιασωθέντες, εἰς ἄμωαν τῶν ἐκεῖ  
 ἀναιρεθέντων αὐτοῖς οἰκείων, ἐκάλεραν τὴν παράλιον ἀκτὴν, ἀπ'  
 αὐτῆς τῆς πόλεως ἄχρι τῆ πορθμῆ τῆς μεσογείας θαλάσσης,  
 ἡτὰς τε καὶ Μονασήρια ἐπιδραμόντες, δῆμους τε καὶ Μονασὰς καὶ  
 ἡτὰς ἀνήρων, διὰ μακρὰ ἄγοντες καὶ φέροντες πάντα. Ἐφ' οἷς  
 ἔπειτα καὶ τὸ μεσόγειον διαπλέοντες, τὰ παρὰ τὰς ἀκτὰς ἀπανταχῇ διε-  
 λήκοντό τε ὁμοίως καὶ κατεπίμπρων. Οὕτω γὰρ ὁ αὐτὸς Γυί-  
 λελμος ἐν Κεφ: ΙΓ'. ἡτὰς γὰρ τὸ τηλικῶτον καὶ ἀνήκεστον  
 ἡτὰς αἰῶνος ἀνοσιβέργημα ἔκ ἀποινὶ πάντῃ λεγόμεν ἐκτετελεκέ-  
 ναι· οἱ γὰρ ἐπὶ ταῖς τριήρεσιν, ὡς εἶρηται, ἐπιβάντες, καὶ οἱ  
 ἡτὰς τοῖς ἐξῆς ἐπὶ ναυσὶν ἑτέροις προσεπιπαρηκολαθηκότες, πλη-  
 ῖθῃ μεθ' ἑαυτῶν φέροντες ἔκ εὐαρίθμον, καὶ σόλον ἔτινα σμι-  
 κρόν σιωιστῶντες, ἔκ πάνυ πόρρω τῆς πόλεως προσηθροόθησαν  
 ἡτὰς ἀποκαρδοκῶντες τὸ τέλος· οἱ καὶ ὡς πληρέσερον ἔγνων τὰς ἐν  
 ἡτῇ πόλει τὸν τάραχον διεγείραντας, τότε αὐτῶν ἐμπεπρηκέναι  
 ἡτὰς κλίμα, καὶ γαμεῖας αὐτῶν καὶ τέκνα, καὶ τὰς ἄλλας οἰκέτας  
 ἡτὰς σύμπαντας, τὰς μὲν σιδήρῳ τὰς δὲ πυρὶ κατὰ νηλωκέναι, χα-  
 ῖλεπῶς οἷα περ ὡς εἰκὸς τὸ γεγονὸς ἐνεγκόντες, εἰς ὀργὴν ἐξε-  
 καύθησαν καὶ τῆ τῶν οἰκείων ὑπεραμύνασθαι αἵματος σφοδρῶ.  
 ἡτὰς ἐφιεμένοι, ἐκάλεραν περιπλέοντες ἀκτὴν Ἑλλησπόντιον, ἀπὸ  
 ἡτὰς σόματος δηλονότι τῆ Ἑυξείνης Πόντος, ὃ τριάκοντα Μιλίοις  
 (16) ἀπέχον ἐστὶ Κωνσταντινουπόλεως, ἄχρι τῆ κατὰ τὸ Μεσό-  
 γειον πέλαγος ἐχάτε πορθμῆ, τῆ ἀπὸ τῆς αὐτῆς μυλίοις δια-  
 κοσίοις ἀφεστηκότος· τάς τε πόλεις, καὶ τὰ φρέγια, τὰ παρὰ  
 τὴν θάλασσαν κατὰ πόρθον βιαίως, καὶ τὰς ἐν αὐτοῖς οἰκῶντας σι-  
 δήρῳ πάντας κατέκλεινον. Ἀλλὰ καὶ τῶν Μοναστηρίων, ὅσα τ'  
 ἐπ' ἀκτῆς ἐκάλερας, καὶ ὅσα ἐπὶ τῶν ἐλασσόνων ἰδρυτο Νήσων,  
 ἡτῶν

(16) Οὕτω καὶ Ἰωάννης ὁ Λεῦνκλάδιος, ἐν ταῖς Τυρρικήαις Πανδέκταις Κεφ: Κε'. καὶ  
 Κεφ: ΡΚΗ'. τὸ ἀπὸ Κωνσταντινουπόλεως, ἐπὶ μὲν τὸ σόμα τῆ Ἑυξείνης Πόντος  
 διάστημα μυλίων Γραικικῶν εἶναι, φησὶ, καὶ δὲν πέντε ἐπὶ τριάκοντα· ἐπὶ δὲ τὸ τῆ  
 Μεσογείας πελάγους, διακοσίων.

„τῶν διὰ τῆ πελάγους ἐκείνης Σποράδων κατὰληγόμενοι, τὰς μὲν  
 „ψεύδομονάχας, καὶ Ἱερᾶς αὐτῶν τὰς Ἱεροσύλας, ἔργον ἐπαίησαν  
 „μαχαίρας, τῆ τῶν οἰκείων ἀδελφῶν ἐκχυθέντος αἵματος ὑπε-  
 „ραμιωόμενοι· τὰς δέ τοι μονὰς αὐτὰς, σῶμα τοῖς ἐν αὐταῖς  
 „προσπεφύργουσιν ἐν πυρὶ ἀνήλισκον κατὰφλέγοντες. — Ταὶ δὲ τῆς  
 „ἐκεῖ θαλάσσης, τὰ μετὰ Σησῆ καὶ Ἀεὺδα, τῶν ἀρχαιοτάτων  
 „παραλίων πόλεων ἐπισυνέμενα κατὰλιπόντες, καὶ τὴν μεσο-  
 „γείαν εἰσπλοῦσαντες, ἐπ' ἀκτὰς τε τὰς θειταλικὰς, καὶ τὰς τῶν  
 „προσθαλασσίων χωρῶν πόλεις τε καὶ ἄστυα καταίροντες, καὶ  
 „ἐπιμελῶς διερωδνόμενοι, πάντα κατεπίμπρων τε καὶ διήρπαζον,  
 „ἀμύθητον ὅσον τὸν ὀλεθρον ἀπανταχῆ ἐπιφέροντες.

Ἐκ τούτων τοίνυν εἰς τόδε σαφῶς ἀναφαίνεται, ὡς οἱ Γραι-  
 κοὶ, ὑπὸ τῶν ἐν αὐτοῖς κατὰκυριούσάντων Λατίνων, πρὸς τὴν  
 μετὰ τῆς ἐν Ῥώμῃ Ἐκκλησίας ἔνωσιν τυραννικῶς κατὰβιασθέν-  
 τες, ἐπειδὴν, ἤτοι αὐτοὶ ἐφεξῆς τὸν Λατινικὸν ζυγὸν ἀποσείσα-  
 θαι ἔχον, ἢ καὶ τῇ στωαρωγῇ τῶν ἐπιχωρίων αὐτοῖς Ἀρχόντων  
 ἀδείας ἔτυχον καὶ ἐλδοθερίας τῆ τὴν μετὰ Λατίνων ἀποσκορα-  
 κίσσασθαι κοινωνίαν, αὐτίκα μάλα χαίρειν φράσαντες τῇ ὑπὸ τῇ  
 Ῥώμῃ Πάπᾳ ὑπακοῇ, ἐπὶ τὴν προέραν αὐτῶν ἐτράποντο Πί-  
 σιν, τὴν εὐσεβῆ καὶ ὀρθόδοξον. Τούτο δ' ἔτι προδηλότατον ἴσα-  
 ται καὶ ἐξ ἐκείνης: ὅτι Μιχαὴλ ὁ Παλαολόγος, τὴν Κωνσταν-  
 τίνην ἤδη ἀπὸ τῶν Λατίνων ἐπανασώσας, πολὺ μετὰ τῶν Ῥώ-  
 μης Ποντιφίκων ἀνελάβετο τὸν ἀγῶνα, ἤτοι σπασάσας τῷ ὄντι,  
 ἢ σπασάσας δοκεῖν ἐθέλων, ἐφ' ᾧ πάσας τὰς ἀν' Ἑλλάδα Ἐκ-  
 κλησίας ἐπὶ τὴν ὑπακοὴν τῆς ἐν Ῥώμῃ Καθέδρας ὑπαγαγεῖν· ὃ  
 καὶ αὐτοὶ μὲν οἱ Λατῖνοι ὁμολογεῖσι καὶ εἰδὲς ἂν, εἰ μὴ φρενῶν  
 ἐνδεῆς, ἢ ξένος τις ᾧ πάντῃ περὶ τὴν ἰσορίαν τῶν ἐπὶ τούτῳ  
 διαπεπραγμένων, ἕξαρνος γένοιτο. Τότε δὲ σαφῶς ἔτω στωμο-  
 λογεμένους τοῖς πᾶσιν, ἀνδρὸς ἐπιεικῶς ἂν εἴη τῆ καὶ σφόδρα  
 χολάζοντος, τὰς πίσεις περᾶσθαι ἐπαγαγεῖν. Καὶ ἔστιν ἄρα  
 συμφανὲς ἄλλις, ὅτι βίᾳ προήχθησαν ἐξαναγκαθέντες, ὅποσοι  
 δὴ τῶν Γραικῶν τὴν μετὰ τῶν Λατίνων ἀπάσασθαι ἔνωσιν ἔδο-  
 ξαν ὑπὸ Ἰννοκεντίῳ τῷ Γ'.: εἰδὲν πλέον ἢ τῷ σώματι, ἀντιβού-  
 σης τῆς καρδίας, στωφθῶσι Λατίνοις ἐπαγγελάμενοι. Διατὶ  
 γὰρ ἄλλως καὶ ὅπλα ἀράμενοι παραχρήμα, ὅποτε σφίσιν ἐξ-  
 ῶ, τῆς ἐκ τῶν Ἐκκλησίας τὴν ἐλδοθερίαν διεκδικήσασθαι, ἔσπλο-  
 σαν; ἢ τίνος χάριν ἐνθὺς τῶν Λατίνων ἀπαλλαγέντες, τὴν τε  
 σὺν αὐτοῖς περητήσαντο κοινωνίαν, καὶ τὰς Ἱερολελεσίας τὰς  
 ἐκείνων τέλειον μῖσος μισθύντες ὤφθησαν; Πῶς δὲ ἄλλως τε καὶ  
 μᾶλλον ἔλλοντο τὴν πρὸς Λατίνους ἀθετήσαντες πίσιν, ἀνταρσίας  
 σφίσιν αὐτοῖς μομφῇ προμνηστύσασθαι, ἢ σφᾶς τε καὶ τὰς σφῶν  
 αὐτῶν



αὐτῶν παριδόντες, ἐπὶ τῇ μετὰ Λατίνων ἐνώσει ὑποβθιώως γενομένης δι' αἰῶνος ἐνέχεσθαι;

Ἀλλὰ Δ', ὅτι δὴ οἱ Γραικοὶ, ἐνθα γοῦν ἢ παρὰ Λατίνων αὐτοῖς προσεπαγομένη βία χώραν ἐκ εἶχε, τὴν μετὰ τῆς Λατινικῆς Ἐκκλησίας σιμάφαιαν ὅλως ὑπῆρχον ἀποσρεφόμενοι, φανερόν ἐξ ὧν ὁ τῶν σαυροσημίων στρατὸς ἐχ οἷος αὐτῶν ἐγένετο περιγενέσθαι, καὶ τοῖς ἄλλοις ἐπίσης καὶ αὐτὸς χειρώσασθαι. Καὶ γὰρ τῶν Λατίνων ἐνεχόντων, Θεόδωρος ὁ Λάσκαρις, ὅς ἐν Γραικοῖς τῷ τιωικαῦτα μεγαλυνόμενος, πρὸς τῷ Κλήρῳ τὰ ἔχοντα ὑπὸ τῶν Σταυροφόρων των παθεῖν δεδιότος, Ἀυτοκράτωρ ἀνηγόρευται τῆς Κωνσταντίνης καὶ τὰ μὲν τῆς Βασιλείας παράσημα ἀναδέξασθαι παρητέτο, τοῖς δὲ πλήθεσιν πρὸς αὐτὸν ἐπιρρέεσι παρῆναι ἐνέχειν· ὡς δ' ἐδὲν ἦν, τῷ λαῷ ἐπεγκειμένον καὶ ἐπιμένοντος ἤδη δέπῃ καὶ τὸ Λατίνων στρατιωτικὸν πελάζον ἑώρα, τὴν σωτηρίαν ἐαυτῷ φυγῇ ποῦσας ἐπραγματεύσατο. (ΝΙΚΗΤΑΣ εἰς Ἀλέξ: Δεκ: τὸν Μάρτυρον.) Ἀποδρὰς ἐν τῆς Πόλεως, καὶ περαιωθεὶς ἐπ' Ἀσίας, πολλάς τε τῶν ἐκεῖ χωρῶν προσαγόμενος, ἐνρύτι τὸ Κράτος ὑπ' ὀνόματι τῷ Κωνσταντινῆ πόλεως Ἀυτοκράτορος ἐαυτῷ σικεκρόται. Καὶ μὲν δὴ καὶ ὁ ὀρθόδοξος Πατριάρχης τῆς ἰδίας ἀπεληλαμένος Καθέδρας, εἰς Νίκαιαν ὡσαύτως ἐπικατέφυγε, παρὰ Θεοδώρῳ τῷ Βασιλεῖ παρεδρόντων. Πλείονες δ' ἐφεξῆς ἐκεῖ τὰ σκηπτρα διαδεξάμενοι, κατὰ τῆς Λατίνων Τυραννίδος ἅπαντες ταῖς ὑπ' αὐτοῖς τελέσαις Ἐπαρχίαις, ἐντυχῶς ἐπήμωσαν. Εἰς ὃ Μιχαὴλ ὁ Παλαιολόγος, καὶ αὐτὴν ἐλὼν τῶν πόλεων τὴν Βυτιλίδα, σωῆψε πάλιν τῷ Κράτει τῷ τῶν Γραικῶν. Τοιγαρὲν ἐπὶ τῶν εἰρημένων Ἀυτοκρατόρων, οἱ Γραικοὶ ἀντελοβθεριάζοντες ἐπ' Ἀσίας, τὴν μετὰ Λατίνων ἐνώσειν ἐδέποτε ἔτε προσήκοντο, ἔτε προσέσθαι, καὶ τοιγε πολλὰ προτραπέντες, ἠξίωσαν πρὸς αὐτοῖς ἐκείνων οἱ ὁμογενεῖς δηλονότι, ὑπὸ τῶν ἐν αὐτοῖς τυραννάντων κατεβιάζοντο. Οἱ γὰρ προδηλωθεὶς Θεόδωρος καὶ λίαν περιφανεὶς κατέστησεν, ὃ κατὰ Λατίνων ὠδινεν ἔχθρος, τὸν ἐξ ἐκείνων Ἀρχοντα συλληφθέντα κελεύσας ἀποδαρῶναι τῷ δέρματι· ἔτω γὰρ ἸΝΝΟΚΕΝΤΙΟΣ ὁ Γ'. πρὸς τὸν ἐν Κωνσταντινοπόλει Πατριάρχοντα. (Καταλ: ΙΓ'. τῶν αὐτῶν Ἐπισ: Σελ: 149.) „Παρὰ „ταῦτα ὁ Λάσκαρις ὁ αὐτοσυστάτως τὰ Ἀυτοκράτορος διαχειρί „ζων, ταῖς ἐκ Λατίνων δωάμεσι πεφραγμένος, τῶν μηδὲ τὸν „Θεὸν αὐτὸν φοβεμένων, μηδὲ τὰς ἀνθρώπων αἰδωμένων κα „τολιγωρησάντων μὲν ὧν ὁ γνήσιος Ἀυτοκράτωρ ἐπιχορηγεῖν „ἠδωάτο αὐτοῖς σιτηρεσίων, τὰ δ' ὑπὸ τῶν ἐχθρῶν ὡς ἀδρότερα „προλετιμνηκότων, τῶν περὶ ἐκείνον τινὰ συλλαβῶν Ἀρχόντων, „ἢ λέγεται, ἀπεξέδειρεν.

Τόμ: Β'.

Τ ΤΤΤΤΤ

Ἐπι-

Ἔπειτα δὲ, κατὰ τὸ 1231. Ἔτος, ΓΕΡΜΑΝΟΣ ὁ Ὁρθόδοξος Πατριάρχης ἐπισέλων ἀπὸ Νικαίας τῷ Πάπᾳ, ἐφ' οἷς οἱ Γραικοὶ διετέλουν πάχοντες ὑπὸ τῆς Λατινικῆς Τυραννίδος (περὶ ἧς ὁ Ἀνώνυμος ἀνωτέρω παρὰ Λέοντι τῷ Ἀλλατίῳ, ἐνθα ἔρηται, τῷ Γραικῶν τε μέσον καὶ Λατίνων διχοφροσύνῃ ἐξισορῶν) ἰχυρῶς ἐν τοῖς γράμμασι τὸν Πάπαν πρὸς ῥέπελο ἐπιμελῶς ἐρδυνήσασθαι, μήτοι γε ἐκ μέρους Λατίνων εἴη τὸ τῷ Σχίσματι αἴτιον; ἑαυτὸν δ' ὑπεσήμενεν ἑτοιμῶς ἔχειν καὶ πόνας ἀναβαλέσθαι, καὶ πορείαν ὑπομεῖναι μακρὰν, καὶ περ ἡδὴ ὑπεργηράσαντα, εἰ μόνον ἐν γνησίᾳ τέ, καὶ τῇ ἐκ προγόνων ἀνωθεν κρατῆσθαι ἐνότητι τὰς Ἐκκλησίας γένοιτο εἰς ἐν σωελθῆν. Κεῖται δ' ἡ Ἐπιστολὴ αὕτη ἐν τῷ ΙΑ'. Τόμῳ τῶν Σιωδικ. Μέρ: Α'. Στήλῃ 318. Ἀμα δὲ καὶ τοῖς Καρδιναλίοις τῆς ἐν Ῥώμῃ Ἐκκλησίας ἐπέθηκεν (ὁ Γερμανὸς) Ἐπιστολὰς, τὰ παραπλήσια τοῖς ῥηθεῖσι περιεχέσας αἱ παρὰ Ματθαίῳ κεῖνται σωζόμεναι τῷ Πάρις (17), ἐν τῇ Ἀγγλικῇ Ἱστορίᾳ, ἐν τοῖς περὶ Ἑρρίκῃ τῷ Γ', Σελ: 615. Ἐν γοῦν τῇ ὑσέρᾳ Ἐπιστολῇ τὰ δε σημειωτέον τὰ ῥήματα: „Τατὶ μόνον προσθήσω, καὶ πέρας ἐπιθήσω τῷ λόγῳ: ὅτι δηλ: πολλὰ τε καὶ μεγάλα ἔθνη ἐστὶ τὰ ὁμοφρονῶντα ἡμῖν καὶ ὅσοι δὲ Γραικοὶ εἰσὶ, σωομολογῶσιν ἡμῖν ἐν ἅπασιν. Πρῶτοι δὲ, οἱ τῷ πρώτῳ μοῖραν τῆς Ἀνατολῆς ἔχοντες Αἰθίοπες· εἶτα Σύροι καὶ ἄλλοι δέτοι, καὶ τέτων ἐπιβριθέσσεροι τε, καὶ μᾶλλον ἀρετῆς ἀντιποιέμενοι ταῖς, Ἰσραῆλ τε καὶ Λαῶν, καὶ Ἀλανῶν, καὶ Γότθων, καὶ τὰ ὑπὲρ ἀριθμὸν δὲ πλῆθη τῶν Ῥώσων, καὶ τὸ μεγαλόνηκον γένος τῶν Βαλγάρων. Καὶ ἔτι δὴ πάντες τῇ καθ' ἡμᾶς Ἐκκλησίᾳ ὡς μητρὶ πειθαρχῶσι, τῇ ἀνέκαθεν ὀρθοδοξίᾳ ἀπαρασαλεύτως ἄχρις ἡμῶν ἐπιμένοντες. Ἐξ ὧν δὴ πᾶς πάλιν γίνεται φανερόν, τῆς ὑπὸ τοῖς ἰδίοις μάλιστ' νόμοις Βιῶντας Γραικὸς τιμωκαῦτα, μηδὲ ὡς τῇ μετὰ Λατίνων κοινωνίᾳ προσεχηκέναι. Οἱ δέτοι Πάπας Γρηγόριος τῷ Γερμανῷ ἀποκρινόμενος, τῆς Γραικὸς μόνος ὑποτίθησιν ὑποδυνάμει ὄντας τῷ Σχίσματι παραινῇ δ' εἰς πλάτος ἐπὶ τῷ τῆς Ῥώμης αὐτῆς Ἐκκλησίαν ἐπιστρέψαι τῷ ἀδιάπτωτον. Ἐμφέρεται δ' ἡ Ἐπιστολὴ αὕτη ἐν Τόμ: ΙΑ'. τῶν Σιωδικ: Μέρ: Α'. Στήλῃ 321.

Μὴ ἐπαρκέμενος δὲ τοῖς γραφομένοις, καὶ Λεγάτος ἀπέστειλεν ὁ Πάπας τῆς τῶν Ἐκκλησιῶν ἐπιμελησομένης ἐνώσεως. Ἀς δὲ τέτοις προσεπέθηκεν Ἐπιστολὰς, κεῖνται ἐν τῷ 5'. Τόμ: τῶν

(17) Οἱ δ' αὐτοὶ καὶ Παρισιακοὶ ἐκ ἀπὸ τῆς Πατρίδος, Ἄγγλος γὰρ ἡν. ἡκμαζε δὲ περὶ τὸ 1240. ἔτελεύτα δὲ κατὰ τὸ 1259. καθ' ὃ καὶ συγγράφειν, καὶ ζῆν ἐπαύσατο. (ὅρα περὶ τέττε Ὁσδίνον Τόμ: Γ'. τῶν Ὑπομνημάτων: στήλῃ 204 — 217.

τῶν Σωοδ: Μέρ: Α'. Στήλη 324. Τὰ μὲν ἔν Πρακτικᾷ τῆς δε  
 τῆς Λεγατείας, ὑπὸ τῶν Λεγάτων αὐτῶν συγγραφέντα, ἐν τοῖς  
 Χερογράφοις τηρεῖται τῆς κατὰ τὸ Βατικανὸν Βιβλιοθήκης· ἐκ  
 δέ τοι τῶν Ἀποσπασμάτων τινα, ἐν τῷ Ἐξακολουθήματι τῶν  
 Βαρωνίᾳ Χρονικῶν, κατὰ τὸ 1232. Ἔτος ἐπεισήγαγεν ὉΔΕΡΙ-  
 ΚΟΣ ὁ Ῥαϋνάλδος: „Διαπισθανομένων τοίνυν τῶν τῷ Πάπα  
 „Λεγάτων, τίνα δὴ ποτε ὡς τὰ αἷτια, τὰ τῷ Ἀνατολίῳ ἀπὸ  
 „τῆς Δύσεως ἀποχίσσαντα; βεβλής γενομένης (φασὶ τὰ Πρακτι-  
 „κά) τοιὸν δέ τι ἀπεκρίναντο: Φαμέν, ὅτι δύο τὰ αἷτια ἐσί:  
 „τὸ μὲν, τὸ περὶ τῆς Ἐκπορεύσεως τῷ Ἀγίῳ Πνεύματος· τὸ δέ,  
 „τὸ περὶ τῷ Μυσηρίῳ τῷ ἐν τῷ Οὐσιαστηρίῳ. Πρὸς ἔν τῷτο  
 „ἀπεκρινάμεθα ἔτως: Εἴγε ταῦτα ἐστὶ τὰ αἷτια, καὶ ἐκ ἄλλα,  
 „διὰ τὴν ἀπὸ τῆς ὑπακοῆς τῆς ἐν Ῥώμῃ Ἐκκλησίας σφᾶς αὐτῶς  
 „ὑπεξηγάγετε; Εἴδωμεν, εἰ ταῦτα ἐστὶν, ἢ ἀποχρῶντα δεῖν  
 „αἷτια εἶναι πρὸς τηλικαύτῳ ἀπέθειναι. Μεσολαβήσαντος ἔπειτα  
 „δυνεῖν ἡμερῶν διαλείμματος, ἀγῶν σωέσῃ ἐν τῷ τῷ Αὐτοκρά-  
 „τορος Παλατίῳ περὶ τῆς τῷ Ἀγίῳ Πνεύματος Ἐκπορεύσεως καὶ  
 „ἔτι θέμεις παρὰ Λατίνων ἐν τῷ Συμβόλῳ προσίθεσθαι; Τὸ  
 „δ' ἀπ' ἐντεῦθεν ἡξίαν οἱ Λεγάτοι ἐπὶ θάτερον τῶν ζητημένων,  
 „τὸ περὶ τῶν ἀζύμων δηλονότι, μεταβιῶναι δεῖν. Ἀλλ' ὁ Πα-  
 „τριάρχης Γερμανὸς ἐνείχε: προσήκειν λέγων ἐπαθροισθῆναι Σύ-  
 „νοδον Ἐπισκόπων Ἀνατολικῶν. Μηδὲ γὰρ ἐν πράγματι ἔτως  
 „ὑψηλῷ τε καὶ δυσεφίκτῳ ἀνακριθῆναι τι διώκεσθαι ἢ ἀποφανθῆ-  
 „ναι, ἄνευ τῆς τῶν λοιπῶν Πατριαρχῶν συνανέσεως. Συγκρο-  
 „τηθείσης τοιγαρὲν ἐξῆς Σωόδου Ἀνατολικῶν Ἐπισκόπων, ἐνέ-  
 „καιντο οἱ Λεγάτοι, ἵνα ἐπὶ ἀνακρίσει τὸ περὶ τῷ Μυσηρίῳ τῆς  
 „Εὐχαριστίας προτεθῇ· ἢ δὲ Σωόδος περὶ τῆς Ἐκπορεύσεως τῷ  
 „Ἀγίῳ Πνεύματος ἡξίαν πρῶτον δεῖν πραγματεύεσθαι. Οἱ δὲ  
 „τῷ Πάπᾳ Ἀγγελιαφόροι πρὸς ταῦτα: Ὁρῶμεν, ὅτι τὸν καιρὸν  
 „ἔξωνεῖθε καὶ τῷ μὲν ἡμετέραν ζήτησιν διαφυγεῖν πειρᾶθε,  
 „τῷ δὲ Πίσιν ὑμῶν ἐτολμάτε ὁμολογεῖν. Ἀπὸ τῷ νῦν ἐν  
 „πλατωμένῳ σώματι ἢ καρδίᾳ ἡμῶν δηλωθήσεται ὑμῖν· καὶ  
 „γνωρίζωμεν, ὅ,τι ποτὲ περὶ ὑμῶν ὑπολαμβάνομεν. Ἦδη γὰρ  
 „συνεωράκαμεν ἐπιστήσαντες, ὅτι κακῶς φρονεῖτε περὶ τῷ ἐν  
 „ἀζύμοις Μυσηρίῳ ὑμεῖς. Α'. μὲν, διὰ τῶν ὑμετέρων Συγγραμ-  
 „μάτων, ἃ πλεοναχούτης εἰσὶ τῆς Αἵρεσεως. Β'. δὲ, ὅτι ἐπὶ  
 „τῷ προτεθέντι ζητήματι περὶ τῷ Μυσηρίῳ, ἐδὲν ἀποκρίνασθαι  
 „τετολμήκατε, ἵνα μὴ ἢ παρ' ὑμῖν Αἵρεσις πρόδηλος γένηται.  
 „Γ'. δὲ, ὅτι τὰ ὑφ' ὑμῶν πραττόμενα αὐτὸ τῷτο διαπισθῆται.  
 „Πλῴετε γὰρ τὰς παρ' ὑμῖν ἱεράς τραπέζας, μετὰ τὸ λειτε-  
 „ργῆσαι τινὰ τῶν Λατίνων ἐπ' αὐταῖς. Δ'. ὅτι τὰς ἐκ Λατίνων  
 „προσερχομένους ἐπὶ τὰ Μυσηρία ὑμῶν καταναγκάζετε ἀποσα-  
 Τ τττττ 2 „τῶν,

„τέιν, καὶ τὰς τῆς Ῥωμάνας Ἐκκλησίας ἀγίας ἐξόμνηται.  
 „Ε'. ὅτι τὸν Κύριον Πάπαν ἐκβεβλήκατε ἐκ τῶν διπτύχων  
 „ὑμῶν· οἶδαμεν δὲ, ὅτι μηδένα ἐκβάλλετε, εἰ μὴ τὸν ἀκοινώ-  
 „νητον καὶ αἵρέσεως ἑνοχον. Σ'. ὅτι ἅπαξ τῷ ἐνιαυτῷ ἀφορί-  
 „ζετε αὐτὸν, ὡς διηγέσαντο ἡμῖν τινὲς αὐτήκοοι γεγονότες.  
 „Πρὸς ταῦτα ὁ Χαρτοφύλαξ, ἐγερθεὶς, ἡρνήσατο τὸν Πάπαν  
 „ὑπὸ τῶν Ἀνατολικῶν ἀφορίζεσθαι, καὶ προσέθετο: περὶ μὲν  
 „τῶν ἄλλων ὧν ποιῶμεν, μηδὲν θαυμάσητε· οἱ γὰρ ὑμέτεροι  
 „Λατῖνοι, ὅτε τὴν Κωνσταντῖνα διεπόρθησαν πόλιν, καθεῖλον μὲν  
 „Ναῶς, ἀνέτρεψαν δὲ Θυσιαστήρια χρυσόν τε καὶ ἄργυρον τὸν  
 „ἐν αὐτοῖς διαρπάσαντες, ἱερὰ δὲ λείψανα Ἀγίων κατὰ θαλάσ-  
 „σης διέρριψαν, τὰς δ' εἰκόνας τὰς τέτων κατεπάτησαν, καὶ  
 „τὰς Ἐκκλησίας εἰς ἱπποσύσια μετεποίησαν· ὥς δοκεῖν ἐκείνο  
 „τὸ προφητικὸν πεπληρωθῆαι: ὁ Θεὸς ἦλθον ἐξ ἡμῶν εἰς τὴν κλη-  
 „ρονομίαν, ἐμίλανε τὸν Ναὸν τὸν Ἁγίον σου. Τέτων εἰρημέ-  
 „μένων ὑπολαβὼν ὁ Πατριάρχης ἔφη: Εἰ θαυμάζετε ὅτι τὸν  
 „Πάπαν τῶν ἡμετέρων διπτύχων ἀποβεβλήκαμεν, πωθάνομαι:  
 „διατί με ἀπὸ τῶν αὐτῶν διπτύχων αὐτὸς ἀπεβάλετο; πρὸς ὃν οἱ  
 „τῷ Πάπα Ῥήτορες: ὁ Κύριος Πάπας ἐδέχθη σε, ἐκ τῶν ἰδίων διπ-  
 „τύχων ἐξέβαλεν· ἐδὲ γὰρ ἦθα ποτὲ αὐτός. (δηλ: ἀναγεγραμμένος.)  
 „Εἰ δὲ περὶ τῶν προκατόχων πωθάνοιθε τῶν ὑμετέρων, ὑμεῖς ἀναγ-  
 „νώσθε πότερον, ὁ Πάπας ὑμᾶς, ἢ αὐτὸν ὑμεῖς πρότεροι ἀπε-  
 „βάλετε; Τὰ δ' ἄλλα ἃ τὴν Ῥωμάναν αὐτοὶ διαβάλλετε Ἐκκλη-  
 „σίαν, διακενής διαβάλλετε. Ἐπεὶ ἐδὲ διεπράχθη ἐκείνα βεβλή-  
 „τῆς Ῥωμάνας Ἐκκλησίας, ἢ ἐπιτάγματι ἢ εἰ καὶ πέπρακ-  
 „ται τὰ τοιαῦτα, ὑπ' ἀνδρῶν ἐγένετο λαϊκῶν, καὶ αἰτιῶν,  
 „καὶ ἀφορισμῶν ὑποβυθίων, τῶν αὐτεξουσιαστικῶς τοιάδε ποιῶν  
 „ἀπαυθαδιασμένων. Οὐδέ γε ὅλη ἀναθετέον τῇ Ἐκκλησίᾳ  
 „τὸ ὑπότινων παρανόμων ἐκτολμηθῆναι. Ἀλλ' ἃ περὶ ὑμῶν  
 „λέγομεν, ταῦτα ἐστὶν ἀληθῆ, καὶ τέτοις ὑμεῖς ἐπιμαρτυρεῖτε  
 „καὶ λόγῳ καὶ πράγματι. Ταῦτα δὲ πρῶτοι διαλεῖσθαι ποιῶντες  
 „οἱ παρ' ὑμῖν Πατριάρχαι τε καὶ Ἀρχιεπίσκοποι, καὶ Ἐπίσκο-  
 „ποι, καὶ οἱ λοιποὶ τῆς καθ' ὑμᾶς Ἐκκλησίας Πρόεδροι· ταῦτα  
 „καὶ γὰρ ποιεῖτε, καὶ ταῦτα διδάσκετε γίνεσθαι, ὡς μὴδ' ἀπολο-  
 „γίαν ἔχεν ἐπὶ ταῖς ἀμαρτίαις ὑμῶν. Ἐπεὶ δὲ παρ' ὑμῖν εὐρίσ-  
 „κομεν τοσαῦτα βδελύγματα, ἐδέχθη βεβλήθῃ ὅλως τίθεσθαι  
 „τῷ τὰ εἰς τὴν ἐξημαρτημένην ἐπανορθώσασθαι, ἰδὲ ἡμεῖς ἐπὶ  
 „τὸν ἡμᾶς ἀποδείλαντα ἐπανήξομεν. Ἐξ ὧν δὴ πρῶτον ἀνα-  
 „φαίνεται, τὸ τὰς Ἀνατολικῶν Ἐκκλησίας ἐκείνας μηδὲ τιμιὰτα,  
 „μηδ' ὕψερρον, τὴν μετὰ Λατίνων ἀσπάσασθαι κοινωνίαν, ἀλλὰ καὶ  
 „μᾶλλον ἔτι αὐτὴν ἀποτροπιάσασθαι.

Τὰ



Τὰ Πρακτικὰ τῆς Λεγατείας περὶ ἧς ὁ λόγος, σωέγραψε καὶ Κέντιος ὁ Καμεράριος, τὰ ἐν τῇ Βατικανῇ ἀποκείμενα Βιβλιοθήκη· ἃ, καὶ παρὰ Βαδδίγγω ἐν τοῖς Χρονικοῖς τῶν Ἑλασσόνων (Φράρων), καὶ ἐν τῷ Θ'. Τόμ. τῶν Σωδικ. Μέρ. Α'. Στήλη 460. πρὸς γε τοῖς ἄλλοις καὶ τόδε παρίσχησιν· ὡς ἄλλήλοις σωεληλύθει τὰ μέρη σωθέμενα, ἵνα, οἱ μὲν Λατῖνοι, περὶ τῆς τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος Ἐκπορεύσεως, οἱ δὲ Γραικοὶ περὶ τῶν ἀζύμων τὴν ἰδίαν αὐτῶν ὁμολογίαν ἔγγραφον ἀνατάξωνται. „Τελυταῖον δὲ διατειναμένων (Φασὶ) τῶν Γραικῶν, καὶ τῶν Πατριαρχῶν, καὶ πάντων τῶν ἐν Προεδρείᾳ καθυπογραφάντων, καὶ μάλιστα τῷ προειρημένῳ Σαμασρίας (ἴσ. Ἀμασρίας) Ἀρχιεπισκόπῳ· ὅτι Αἰρετικὸς τε καὶ τὴν ὁδὸν τῆς ἀπωλείας ἐςὶ βαίνων, πᾶς ὃς ἂν εἴποι, ἐν ἀζύμοις τὸ Μυστήριον ἐξεῖναι ἐπιτελεῖν· ἔφησαν, ὅπως οἱ μὲν τὴν ἑαυτῶν περὶ τῆς ὕλης τῷ Μυστήριῳ Πίξιν· οἱ δ' Ἀποκρισιάριοι τὴν ἰδίαν, περὶ τῆς τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος Ἐκπορεύσεως ἐκθέμενοι ἀνάγραφτον παραδῶσι.,. Καὶ ἔτιω ἄρα, οἱ μὲν Γραικοὶ τὸ περὶ ἀζύμων σωελάξαντο Σύγγραμμα, ὃ κεῖται ἐν τῷ ΙΑ'. Τόμῳ τῶν Σωδικ. Μέρ. Α'. Στήλη 461. οἱ δὲ Λατῖνοι τὸ περὶ τῆς Ἐκπορεύσεως τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος ὃ Λατινιστὶ μὲν κεῖται Αὐτ. Στήλη 326. Ἑλλωιστὶ δὲ, ἐν τῷ ΙΑ'. Τόμ. τῶν Σωδικ. Μέρ. Β'. Στήλη 2336. Ἐν δὴ τέτοις τῆς τῷ Πάπᾳ ὁ Βασιλεὺς μεταπεμψάμενος Ῥήτορας, δωατὸν εἶναι πρὸςβάλλετο ἐκτελεσθῆναι τὴν ἔνωσιν, εἰ μὲν Λατῖνοι, ἀπὸ τῷ Συμβόλῳ τὴν προσηκῶν ἐξοβελίσωσιν· οἱ δὲ Γραικοὶ συγχωρήσωσι καὶ ἐν ἀζύμοις ἐξεῖναι Ἱερουργεῖν. Ἀλλ' οἱ Λεγάτοι τὰς τοιάςδε σωθήκας πάντῃ ἀποκηρύξαντες, τότε μόνον τὴν ἔνωσιν ἀπεδείκνυνον εἰς ἔργον ἔχαι ἀχθῆναι, ἐπειδὴ οἱ Γραικοὶ τὸ Δόγμα τὸ περὶ τῆς ἐκ μόνου τῷ Πατρὶ Ἐκπορεύσεως τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος κατακρίναντες, ἅπαντα τῷ πυρὶ παραδῶσιν, ὅσα περὶ τέττα Βιβλία ποτὲ συγγεγράφαται. Ταῦτα πυθόμενοι εἰς ὀργὴν χαλεπῶς ἐξήφθησαν οἱ Ἀνατολικοὶ, καὶ ὅπως ἂν αὐτοῖς τῆς Λεγάτης ποιήσαι ἀναπολογήτης ἐσπέδασαν. Οὕτω γάρ, (ἐν τοῖς Πρακτικοῖς τῆς Λεγατείας ἐκείνης, ἐν τῷ ΙΑ'. Τόμ. τῶν Σωδικ. Μέρ. Α'. Στήλη 463.) ἐφεξῆς λέγεται τῆς Λεγάτης ἀποκριθῆναι τῷ Αὐτοκράτορι· „Εὐψύχως τε εἰ καὶ ἀπαρακαλύπτως ἐδήλωσαν οἱ Ἀποκρισιάριοι· ὅσον ἐξαπατῶμενος ὡς ὁ Ἄνθρωπος, ὁ ἄλλως, ἢ γράφουσιν, ἐπικηρῆς τε καὶ ἀγαθός, καὶ πάννυ σφόδρα τῆς ἐνώσεως ἐφιέμενος. Εἶναι δὲ καὶ τίςδε αὐτῷ ἰσέον, ὡς ἐδενὶ ἐπὶ κέρδει, ἐδὲ πρὸς ἐπὶκτησίν τινος Ἐπαρχίας, ὅσον ἂν καὶ βέλοισις ἐπινοῇσαι μεγάλης· ἐδέποτε ἢ Ῥώμης Καθολικῇ Ἐκκλησίᾳ, ἐδὲ ἰῶτα ἐν, ἢ κεραίαν, ἀπὸ τῆς σεβρότατα τεθεμελιωμένης ἰδίας ἀμείψεται Πίξεως·

Τόμ. Β'. Τ υ υ υ υ υ „ἐδε-

„ἔθενί τε τρόπῳ διωήσεται μετὰ τῆς Ἐκκλησίας Γραικῶν ἐνω-  
 „θῶμαι, εἰ μὴ πρότερον αὕτη τὰς ἐαυτῆς κακοδοξίας ἀπορρίψα-  
 „σά τε καὶ κατακρίνασα, καὶ μάλιστα τῷ περὶ τῆς Ἐκπορεύσεως  
 „τῆς Ἁγίας Πνεύματος ἀπαξάπασας τὰς Βίβλους, ἃς τῷ τοιάνδε  
 „διδασκαλίαν πέθειν ἐπιχειρῶσα σωέγραψε· κατακρίτως τε θείῃ,  
 „καὶ τῷ πυρὶ παραδῶ γενέσθαι ἀνάλωμα. Ὁ δ' ἐπανήκει τῇ  
 „δὲ ἐνζύμων Ἱερουργίᾳ, ἢ παρὰ τῆτο τῷ Γραικῶν Ἐκκλησίαν  
 „ἀποβάλλεσθαι, ἢ κατακρίνεσθαι ὑπὸ τῆς Λατινικῆς· ἀλλ' ἔδὲ  
 „πάλιν ἀνέχεσθαι ταύτῃ ὑπ' ἐκείνης καλῶς ψηφίζεσθαι τῶν ἀζύμων  
 „ἔνεκα· καθ' ὅτι ἔξερσιν, ἐκατέραν δηλονότι δι' ἐκατέρῃ τῇ ἄρτι  
 „Ἱερουργεῖν. Προσιδέασι δ' ἐπὶ τέτοις ἔτι τὰ αὐτὰ Πρακτικά,  
 „ὅτι: ἀκέσας τέτων ὁ Αὐτοκράτωρ σιωεχύθη τῷ ψυχῷ, καὶ πᾶ-  
 „σαν ἐλπίδα κοινωνίας ἀπέθετο. Εὖ γὰρ εἰδὼς ὡς τῶν ἰδίων  
 „τὸ ἰχυρόγνωμον, ἔς κατὰ πολλὴν πρόληψιν, ἔθενι τρόπῳ ἡπί-  
 „σατο, ἔδ' ἱκεσίᾳ καμφθησομένους ὥς Λατίνοις ὑπέξεν, ἔδὲ μὲν  
 „ἐν ἀξιῶσιν ποτὲ τοῖς ἐν βάρει ἐγκεκολλημένοις τὸ χαίρειν  
 „φράσαι φρονήμασι. Καὶ τῇ ἐφεξῆς δὲ ἐπίσση ἡμέρᾳ ἐν αὐτοῖς  
 „ἐπέγνω τοῖς πράγμασιν, ἐπειδὴν ὡς ἔχε μετὰ τῶν Ἀποκρισια-  
 „ρίων συλλαλιὰν τοῖς ἰδίοις ἀνήγγειλεν. Οὕτω γὰρ σιωεταράχ-  
 „θησάν τε καὶ εἰς ὀργὴν ἐχαλέπων, ὥς θρῆς μεγάλῃ σφίσιν  
 „ἐνεγερθέντος, κατὰ τῶν Ἀποκρισιαρίων δεινῶς ἐμβριμήσασθαι,  
 „καὶ ἰδίᾳ σιωισαμένους βυλῶεσθαι, ὅπως ἂν ἐκείνους συγχέαντες  
 „ἀπελέγξωσι,,.

Σιωελούσεως ἔν μετὰ ταῦτα δημοσίᾳ συγκροτηθείσης, ἀνεγ-  
 νώθη ἡ τῆς περὶ τῷ Ἐκπόρυσιν τῆς Ἁγ: Πνεύματος Πίσεως  
 ὁμολογία, ὡς τοῖς Ἀναθολικοῖς οἱ Λεγάτοι προσιῶεγκαν. Ταύτης  
 δὲ ἀναγνωθείσης, πολλὰ οἱ Ἀναθολικοὶ κατὰ τῆς Λατίνων διει-  
 λέχθησαν δόξης. Οἱ δὲ λαὸς ἐμπαροξισθεὶς τῇ περὶ τὸ Δόγμα  
 καυνοιομία, μόλις περὶ τῆς Πατριάρχῃς καλῶνεν. Τελού-  
 ταιον δὲ οἱ τῆς Πάπᾳ Ῥήτορες ἐπηρώτησαν: „Εἰ πισθῶοιεν ἐκ-  
 „πορεύεσθαι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῆς Γίῃ; — Οἱ δὲ Πατριάρχῃς,  
 ὡς ἐκ σώματος τῶν πάντων ἐπαπεκρίνατο: „Ὅτι πισθῶοσι τὸ  
 „Πνεῦμα τὸ Ἅγιον μηδαμῶς ἐκπορεύεσθαι ἐκ τῆς Γίῃ,, — Πρὸς  
 ὅν ἐκείνοι: „Τοιγαρὲν ὑπόδικοι ἐστὲ τῷ Ἀναθέματι· ὁ γὰρ Κύ-  
 „ριλλος καλῶς δικάζει τὸν ἀρνήμενον τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκπορεύε-  
 „σθαι ἐκ τῆς Γίῃ,, — Πρὸς ἅπερ οἱ Ἀναθολικοὶ ἐπὶ τῇ ἀναιδε-  
 σάτῃ ἀποκρίσει ταύτῃ πρὸς ὀργὴν ἐξαφθέντες, αὐτὰς μὲν ἐνγε  
 ἀπαξάπαντας τῆς διδάσκοντος τὸ Ἁγ: Πνεῦμα ἐκπορεύεσθαι καὶ  
 ἐκ τῆς Γίῃ, σὺν αὐτοῖς ἐκείνοις τοῖς Ἀποκρισιαρίοις, Αἰρετικὰς  
 εἶναι ἐπεβίησαν ἀνακεκραγότες, καὶ ὑποδίκας τῷ Ἀναθέματι.  
 Οὕτω γὰρ πρόεισι τὰ Πρακτικά: (παρὰ τῷ Βαδδίγγῳ, καὶ ἐν  
 τῷ ῥηθέντι τῶν Σιωδικῶν Τόμῳ, σὴλη 474.)

„Πα-

„Παρήγγειλαν δὲ τῇ τελευτῇ τῆς Γ'. μετὰ τὸ Πάχα ἔβδω.  
 „μάδος, ἵνα τῇ ἐπίσῃ ἡμέρᾳ πέμπτῃ ἐπὶ Σωόδω συνέλθωσιν,  
 „ὥς ἂν αὐτῷ ὁμοθυμαδὸν διαλύσωνται. Οὐδὲ γὰρ ἤδη δαῖν τῷ  
 „λοιπῷ ἐδόκει Σωόδον ἑτέραν συγκροτηθῶαι. Προσιόντες ἔν,  
 „ἔυρον ἅπασαν τὴν τῷ λαῷ πληθὺν σωαγηνεργμένην καὶ, τῶν  
 „θυρῶν ἀνεωγμένων, τὸν Πατριάρχην ἐν τῷ Νάρθηκι καθεζό-  
 „μενον· ἐνταῦθα τῆς Σωόδω ὡς ἐν ἐνρυχωροτέρῳ τόπῳ σωα-  
 „νθροισθείσης. Καθεσθέντων δὲ, Φωνὴ μεγάλη εἰς ἐπήκοον πάν-  
 „των ἔφη ὁ Πατριάρχης: Ἐφ' ὅσον ἐλπίς ἡ τῆς ἐνώσεως, πᾶ-  
 „σαν εἰρώην πρὸς ὑμᾶς ἐλαλήσαμεν· πᾶσαν ἀγάπην ἐνεδειξά-  
 „μεθα· νῦν δὲ οἶσθιν ἐλπίδος ἐκπεπωκότες, τί καὶ ῥέξαμεν,  
 „ἀγνοῶμεν· τὴν ὑμῶν περὶ τῷ Ἀγ. Πνεύματος ἔγγραφον ἐκδε-  
 „δώκατε Πίσιν· βέλεθε δὲ, ὅπως αὐτῷ διὰ πάντων τῶν Γενῶν,  
 „καὶ ἔθνων, καὶ διὰ τῶν ἡμετέρων Ἐπαρχιῶν ἀνακηρύξωμεν;  
 „Ταύτῃ ἔν ἡμεῖς ἐνταῦθα ἐνώπιον ὑμῶν παρόντων, εἰ καὶ ὑμῖν  
 „δοκεῖ, ἀξιῶμεν ἀναγνωθῆναι. Τῶν δὲ ἀποκριναμένων, τῷτο  
 „καὶ σφίσι δοκεῖν, ἔδέτι μᾶλλον ἢ τῷτο αὐτοῖς εἶναι κατ' ἔφε-  
 „σιν, ὡς ἂν ἀπανταχόσε διαδοθῇ τε καὶ ἀναγνωθῇ ἡ τῆς  
 „Ῥωμάνης Ἐκκλησίας Διδασκαλία ἡ ἀληθινή· αὐτίκα εἰς τις  
 „τῶν ἡλικίᾳ προηκόντων Βασιλέων διήλθε τὸν ὅρον τῶν Ἀπο-  
 „κρισιαρίων ἀπαντα. Ἐπειτα δὲ, κατὰ τῶν ἀναγνωσθέντων ῥήσεις τι-  
 „νάς τῶν Θεωπεσίων Πατέρων, οἱ Γραικοὶ ὑπὲρ τῆς σφῶν αὐτῶν  
 „δόξης προεννόησαν. — Διεγερθέντος δὲ τότε ἐν τῷ λαῷ δεινῶ  
 „παράχῃ τε καὶ θορύβῳ, ὁ Πατριάρχης τὸ πλῆθος καὶ χεὶρ καὶ  
 „Φωνὴν κατέσβεσεν· δεδιότων περὶ σφίσι τῶν Ἀποκρισιαρίων τὸ  
 „ῥασιωδες τῷ λαῷ καὶ ἀχάλινον. Ὡς δὲ κατεσορέθη τὸ πλῆ-  
 „θος, καὶ τῷ θρόνῳ ἐπαύσατο, ἔφησαν ὑψηλῇ τῇ Φωνῇ οἱ Ἀπο-  
 „κρισιάρχοι: Πισθεῖτε τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῷ Τίτῳ ἐκπορεύεσθαι,  
 „ἢ ἔχι; ἀπεκρίνατο δὲ εἰς ὑπὲρ πάντων ὁ Πατριάρχης: Πι-  
 „σθόμεν, ὅτι ἐκ ἐκπορεύεται ἐκ τῷ Τίτῳ. Οἱ δὲ παρασωῆψαν:  
 „καὶ εἰ Κύριλλος, ὅς ἐν τῇ Γ'. Σωόδῳ ἡ προεδρεύων, πάντας  
 „τῷ Ἀναθέματι καθυποβάλλει τὸς αὐτὸ μὴ πισθόντας, ἄρα  
 „ὑμεῖς ἐξὲ ὑπὸ Ἀναθέματι. Ἐτι δὲ ὑμεῖς πισθεῖτε καὶ λέγετε,  
 „ὅτι τὸ Χριστὸν σώμα ἐ δώαται ἐν ἀσύμῳ ἐπιτελεῖσθαι. Τῷτο  
 „δὲ αἰρετικὸν τὸ φρόνημα. Οἱ δὲ διαλαραχθέντες ἐπὶ ταῖς τρα-  
 „χύτερόν πως κατακριθείσας αὐτῶν ὑπολήψεσι, τὸς Ἀποκρισια-  
 „ρίους αὐτῶν, ὡς προμάχους ὄντας, ἢ ὁπαδὸς τῶν τοιῶνδε φρο-  
 „νημάτων, αἰρετικὸς ἀπεκάλεον ἀναβοῶντες, καὶ ὑποδίκας τῷ  
 „Ἀναθέματι.

Καὶ τοιόνδε δὴ τὸ πέραν ἔχεν ἡ Σωόδος· οἱ γὰρ Λεγάτοι  
 δεδιότες περὶ σφίσι τὸν ὄχλον, τῷ τε ἄδειαν τῷ ἀπιέναι παρὰ  
 τῷ Ἀυταρχῆντος ἐκδυσωπήσαντες, ἤψαντο τῆς ὁδοῦ· ἔτω γὰρ καὶ

Τ υυυυ 2

τὰ

τὰ Πρακτικὰ ἀκολούθως: „Στάσεως γὰρ γενομένης μεγάλης καὶ  
 „θορύβου, ἀπεχώρησαν οἱ Ἀποκρισιάριοι φοβούμενοι ἑαυτοῖς καὶ  
 „γε πρὶν ἀριεῖσθαι, τῷ Ἀυτοκράτορος ἐπιμόνως προσεδεήθησαν,  
 „τὴν εἰς ἐπάνοδον αὐτοῖς ἐλδοθερίαν ἐπιτραπιῶναι, ὁρῶντες ὡς  
 „ἔδδεν ἀνύσαι δεδυῶνται· ἔδδεν τις ὡς ἐλπίς ὑπολειπομένη τῷ ἐπι-  
 „καμφθήσεσθαι γενεᾶν σκληροτράχηλον, καὶ ἰχυρογνῶμόνως  
 „ἀντεχομένενίω τῶν ἰδίων κακοδοξιῶν. Καὶ δὴ τῆς ἀδείας τυ-  
 „χόντες, (ἐλύπει γὰρ τὸν Ἀυτοκράτορα ὅτι ἀτέλεσον διέμενε  
 „τὸ ἔργον, εἰς ᾧ σῶσιν προῖαν καὶ ἐρίθειαν.) ὁρθρὸν βαθείως τῇ  
 „μετ' ἐκείνῳ ἡμέρᾳ, Σάββατον δὲ ἦν· ἀπὸ Νυμφαῖς ὑπανεχώ-  
 „ρησαν.

Ἐπὶ δὴ τέτοις ἀπεσάλησαν παρὰ τῆς Σωόδου, οἱ τοῖς Λε-  
 γάτοις ἀποδώσοντες μὲν τὴν ὑπ' αὐτῶν προσενεχθεῖσαν τῇ Σωό-  
 δῳ ὁμολογίαν τῆς Πίσεως, τῆς περὶ τὴν τῷ Ἀγ: Πνδύματος Ἐκ-  
 πόρουσιν, ἀνταπαιτήσαντες δὲ τὴν ὑπὸ τῆς Σωόδου δοθεῖσαν αὐ-  
 τοῖς περὶ τῶν ἀξύμων. Οἱ δὲ Λεγάτοι ἐκ ἔφησαν ταύτῃ ἀπο-  
 δώσιν· ἔχοντες οἱ Ἀποσαλέντες Ἀναθέματι καθυπέβαλον, ἅτις  
 ἂν, ἅτε ἡγεμῶν ἔσοιτο τῆς ὁδοῦ τοῖς Λεγάτοις, εἴτ' ἄλλως πως  
 βελίης μεταδὲς ἐκείνοις συμπράξαιτο· οἱ δὲ ἀποδυσαπετήσαντες  
 ἤψαντο μὲν τῆς ὁδοῦ, πλανώμενοί γε μὴν καὶ περὶ σφίσι δεδοι-  
 κότες, ἐπὶ τὸ ἄς πάλιν ἐπανῆλθον· ὥς ἀρθείσης βίᾳ ἔτω πως  
 ἀπ' αὐτῶν τῆς κατὰ τῶν ἀξύμων ὁμολογίας, ἄλλη περὶ τῆς τῷ  
 Ἀγ: Πνδύματος ἐκ μόνου τῷ Πατρὶ Ἐκπορεύσεως ὑπὸ τῆς Σωόδου  
 σωταχθεῖσα τέτοις ἐνεχειρίσθῃ, ἐνεχθησομένη τῷ Πάπᾳ. Οὕτω  
 καὶ γὰρ τὰ Πρακτικὰ ἔχει μετέτινα: „Οἱ δὲ Πατριαρχικοὶ  
 „Ἀποκρισιάριοι ἀποσαλῆναι ἔφησαν παρὰ τῆς Σωόδου, ἵνα, τὴν  
 „μὲν ὁμολογίαν, ἥτοι τὸν ὅρον τῆς Πίσεως περὶ τῆς Ἐκπορεύ-  
 „σεως τῷ Ἀγίῳ Πνδύματος, τὸν ὑπὸ τῶν Λεγάτων προσενεχ-  
 „θέντα, τέτοις αὐτοῖς ἀποδώσι· τὴν δ' ὑπὸ τῶν Γραικῶν δοθεῖ-  
 „σαν περὶ τῷ Μυσηρίῳ τῆς Εὐχαριστίας Ἐκθεσιν ἀντιλάβωσιν.  
 „Ἀπεκρίναντο ἔν οἱ Λεγάτοι, διὰ δὴ τέτοιο τὸν ὅρον αὐτοῖς δε-  
 „δωκέναι, ἵν' εἰς ὑπόμνημα παρὰ σφίσι σώζηται τῆς τε Πίσεως  
 „καὶ Διδασκαλίας τῆς Ῥωμάνης Ἐκκλησίας· ὥς ἅπασαν τὴν  
 „τῶν Γραικῶν Ἐκκλησίαν εἰδέναι, τίποτε πισθεῖν δεοὶ καὶ διδάσ-  
 „κειν περὶ ἐκείνου τὸ ἄρθρον. Τὸ δὲ γράμμα φασὶ, τὸ ὑμέτε-  
 „ρον, τὸ περὶ τῷ Μυσηρίῳ τῆς τραπέζης, σὺ ἑαυτοῖς βεβλόμεθα  
 „μετενεγκῆν, ἵν' εἰδέναι ἔχη βεβαιότερον ἢ Λατίνων Ἐκκλησία,  
 „καὶ ὁ Ἀγιώτατος Κύριος Πάπας, ἐν οἷα ποτὲ κακοδοξία ὑμεῖς  
 „ἀναστρέφεσθε, ἀφ' ἧς ἀποσιῶναι ἔβλεπε. Ἀλλ' οἱ Πατριαρχι-  
 „κοὶ ἐνέκειντο, ἐφ' ἡμέρας δυσὶ τὴν προθεσμίαν τῆς τῷ γράμ-  
 „ματος ἀποδώσεως ὀρισάμενοι: ἀπολαβεῖν δὲ τέως μὴ διωηθέν-  
 „τες, ἀφορισμῷ ἐπέβαλον ἐπιτίμιον, τῷ τοῖς Λεγάτοις σιωδοῦ-  
 „πορή-



„πορήσεν ἐπιτολήσονται, ἢ τῆς ὁδῶς ἡγεμόνι αὐτοῖς ἐστομένῳ προ-  
 „σαπαγορεύσαντες ἔτι ὑπ' Ἀναθέματι, ὡς ἂν μηδαὶς τέτοις μήτε  
 „βελῆς μεταδοίῃ, μηδέ τινος τὸ σῶολον ἀντιλήψεως. Μετὰ δὲ  
 „ταῦτα τῷ ποδῶμένῳ τυχόντες, καὶ πρὸς ἐπικεσέρας λόγους  
 „τραπέντες, μετ' εἰρώνης αὐτὸς ἀπέλυσαν, ἐγχαρίσαντες αὐτοῖς  
 „τάς δὲ τὰς Ἐπισολὰς τῆς Νικαίας, ἡτοὶ τῷ Κωνσταντινῆ πόλεως  
 „Πατριάρχῃ, καὶ δὴ καὶ τῷ Ἀντιοχείᾳ, ἢ μᾶλλον συμπάσης  
 „τῆς Σιωδῆς. Ἐν αἷς τῷ ἐαυτῶν περὶ τῷ Ἐκπορεύσιν τῷ Ἀγίῳ  
 „Πνύματος κακοδοξίαν ἐπιδιεύοντο, ῥήσεις Πατέρων Ἀγίων  
 „ἄχρι ναυτίας σιωπισωρῶσαντες,,. Καθεξῆς δὲ αὐτόσε, καὶ ἢ  
 τῆς Ἐκπορεύσεως τῷ Πνύματος ἐκ μόνῃ τῷ Πατρὶ Ὁμολογία  
 διεξοδικῶς ὑποσώπτεται, ὑφ' ᾧ ὁ Χαρτοφύλαξ ὑπογεγραφῶς  
 ἐτύγχανεν ἔτως :

„Αὐλῖνος ὁ Χαρτοφύλαξ τῆς Μεγάλῃς τῷ Θεῷ Ἐκκλησίας  
 „Κωνσταντινῆ πόλεως, τὸν παρόντα Λίβελλον τῆς ἡμετέρας Ὁμο-  
 „λογίας καὶ Πίσεως, ἐξ ἐπιτάγματος τῶν Ἀγιωτάτων Πατριαρ-  
 „χῶν, τῆς Οἰκουμενικῆς, καὶ τῷ τῆς Θεσπόμεως Μεγάλῃς Ἀν-  
 „τιοχείᾳ καὶ κατ' ὑπακοὴν δὲ τῆς Ἀγίας Σιωδῆς ὑπέγραψε,,.  
 Σώζεται δὲ ἡ Ὁμολογία αὕτη Ἐκκλησίᾳ, ἐν τῇ κατὰ Βιένναν  
 Βιβλιοθῆ: ἐν ΞΔ'. Χειρογράφῳ Θεολογικῷ Κώδικι, Ἐκκλησίᾳ ὡς  
 μαρτυρεῖ Πέτρος ὁ Λαμβέκιος ἐν Βιβλ: Γ'. περὶ τῆς ἐν Βιέννῃ  
 Βιβλιοθήκης, Σελ: 118. Ὅτι δὲ καὶ τῇ Βατικανῇ σώζεται,  
 μαρτυρεῖ Λέων ὁ Ἀλάτιος, ἐν τῷ Β'. Βιβλ: τῆς διωκεῖς κατ'  
 αὐτὸν Συμφωνίας τῶν Ἐκκλησιῶν, Κεφαλ: ΙΔ'. Ἀριθμ: Γ'.

Ἀλλὰ καὶ ἔπειτα ὁ αὐτὸς Γερμανὸς συγγράψας ἐξέδωκε  
 κατὰ τῶν Λατινικῶν Αἰρέσεων ἰδιαιτέρον δὲ, κατὰ τῆς Ἐκπο-  
 ρεύσεως τῷ Ἀγίῳ Πνύματος καὶ ἐκ τῷ Τίτῳ. Ἐμφέρεται γὰρ  
 ἐν τῷ μνημονοθέντι τῆς Βιέννης Κώδικι, τῷ αὐτῷ μαρτυρῶντος  
 Λαμβέκιῳ ἐνθα ἔρηται: Σελ: 121. Σιώψις μαρτυριῶν, ἐκ τε  
 τῆς Ἱερᾶς Γραφῆς, καὶ ἐκ τῶν Ἀγ: Πατέρων, κατὰ τῶν Λατι-  
 νικῶν Αἰρέσεών τε καὶ κακοδοξιῶν περὶ τε τῆς Ἐκπορεύσεως τῷ  
 Ἀγίῳ Πνύματος, καὶ περὶ τῶν Ἀξύμων, καὶ περὶ τῷ Βαπτίσμα-  
 τος. Αἷτινες δὴ μαρτυρία ἐλήφθησαν ἐκ τῆς Ἀποκρίσεως Γερ-  
 μανῷ τῷ Πατριάρχῃ, πρὸς τῷ Ἐπισ: τῷ Πάπα Γρηγορίῳ τῷ Θ'.  
 Ἀλλὰ παρὰ τῷτο καὶ ἕτερον προσέτι Σώταγμα ἐξέδωκεν ὁ Γερ-  
 μανὸς, περὶ τῆς τῷ Ἀγίῳ Πνύματος Ἐκπορεύσεως. Ἐπὶ δὲ  
 τέτοις καὶ πάσας σιωλέξατο τὰς ῥήσεις τῶν Πατέρων, Ἀνατο-  
 λικῶν τε καὶ Δυτικῶν, Ἐκκλησίᾳ καὶ ταύτας ἐκφράσας, ὅσαι  
 πρὸς τῷ ἐκ μόνῃ τῷ Πατρὶ Ἐκπόρ: τῷ Ἀγ: Πνύμ: τείνσασαί  
 πως εἰσί προαῖς καί τινας ἐπιστάσεις, κατὰ Λέων Ἀλάτιος,  
 ἐνθα προέρηται μαρτυρεῖ.

Τόμ: Β'.

Φ ΦΦΦΦΦ

Φρέδη

Φρόδη ἄρα σπᾶδῃ ἄχρις αὐτῶ, τὴν ἔνωσιν ἐκείνῃ τῆς Ἀνατολικῆς Ἐκκλησίας μετὰ τῆς Δυτικῆς, ὁ Θ'. Γρηγόριος εἰς πέρας ἐπειράσατο ἀγαγεῖν. Περὶ δὲ καὶ αὐτὸς ἐποτινιάτο πρὸς Φριδέρικον ἐπισέλλων, ἐν τῷ ΙΑ'. Βιβλ: τῶν Ἐπισ: αὐτῶ, Ἐπισολ: ΥΙΓ'. Καὶ ἔστιν ἄρα πρόδηλον ἄλλις ἐντεῦθεν, ὡς αἱ τῆς Ἑώας ἐκείναι Ἐκκλησίαι, ἔς γ' ἐπὶ τὸ τιμικαῦτα τὴν τοιάνδε ἔνωσιν διετέλεον ἀποσρέφόμεναι.

Πάλιν: ἐπειδὴ ἐν Ἔτει 1249 τὰ περὶ τῆς ἐνώσεως αὐτῆς τῆς Ἀνατολικῆς τε καὶ Δυτικῆς τῶν Ἐκκλησιῶν ἐπανελαμβάνετο, ἐπὶ ταῖςδε μόνον οἱ Ἀνατολικοὶ ταῖς Σωθῆκαῖς τὴν ἔνωσιν ἀπεδέχοντο: Μνημονοῦσθω ὁ Πάπας ἐν ταῖς Λειτουργίαις. — Οἱ Λατῖνοι τοῖς κατακυριεύουσι Κωνσταντινουπόλεως μηδαμῶς ἐπιβοηθείωσαν. — Ἀφαιρεθήτω ἀπὸ τῆς Συμβόλης τὰ τῆς προθήκης. — Κεῖται παρὰ τῷ ΠΑΧΥΜΕΡΕΙ ἀναγνωσθῶσι ταῦτα δωάμενα, ἐν Ε'. Βιβλ: τῆς ἐκείνης Ἱστορίας Κεφ: ΙΒ'. „Λαμβάνων γὰρ (Μιχαὴλ Παλαμολόγος ὁ Ἀυτοκράτωρ) ἀπὸ τῶν „ἀμφ' αὐτὸν τὰς τῶν Ἱστοριῶν σωάρσεις, πρὸβάλλετο μὲν τὸν „Λέκαν Ἰωάννῃ καὶ Βασιλέα, καὶ τὰς ἀμφ' ἐκείνον Ἀρχιερεῖς, „καὶ τὸν Πατριάρχῃ σφῶν Μανηλ· ὅπως ἐνεδίδεν ἀπελθόντας „Ἀρχιερεῖς λειτουργεῖν τε καὶ μνημονοῦειν, εἰ μόνον ὁ Πάπας τῆς „πρὸς τὰς ἐν τῇ Πόλει βοηθείας ἀπόχοιτο. Καὶ ἅμα μὲν τὸ „Κωδίκιον τῆς Ἐκκλησίας εἰς πίσειν προεκκομίζετο, ἅμα δὲ καὶ „τῷ Βασιλεῖ τὰ τότε καὶ νῦν πράγματα σκεκρίνετο. Πρὸβάλλετο δὲ καὶ τὰς κατ' ἐκείνο, ὡς δῆθεν σφῶν Γραφάς, πῶς „μὴ κατηγορεῖντες ὅλως ἀσεβείας τὰς Ἱταλὰς, ἡξίεν παραρρεῖν- „τας τὴν προθήκῃ τῆς Συμβόλης, ἐν ταῖς λοιπαῖς γραφαῖς ἀνά- „γραπτον ἔχοντας, σωδιῦναι τοῖς πεφρασμένοις ἀναγινώσκουσι. Κάντεῦθεν ἐπὶ τέτοις τελοῦντες τῶ Πάπα Ἰννοκεντίῳ (18), Ἀλέξανδρος ὁ ἐκείνον διαδεξάμενος τὰς τοιαύτας περὶ τῆς ἐνώσεως σωθῆκας πυθόμενος, προσέειπε πάσας ἐκ ἡβλήθη, Οἰκουμενικῶς προθεῖς δὲν συγκροτηθῶσι Σύνοδον, ἢ ἔτις ἢ τῶν Ἐκκλησιῶν ἐνότης ῥᾶον σωλελεσθῆναι τῶν ὅπερ καὶ Λεγάτον Θεοδώρῳ πέμψας τῷ Λασκάρει, τῷ Ἰωάννῃ τὸν Δέκαν ἤδη διαδεξαμένῳ, ἐσήμειε (παρὰ Βαδδίνγῳ ἐν τοῖς Χρονικοῖς τῶν Ἑλασσόνων, Ἔτει 1256. Ο' δὲ ΘΕΟΔΩΡΟΣ καὶ λόγους ἐξῆς δύο περὶ τῆς Ἐκπορεύσεως τῶ Ἀγ: Πνύματος κατὰ Λατίνων σωέγραψε, μαρτυρῶντος Λέοντος Ἀλλατίου ἐν τῷ Β'. Βιβλ: τῆς κατ' αὐτὸν Συμφωνίας τῶν Ἐκκλησιῶν, Κεφ: ΙΔ'. Ὡς καὶ τεῦθεν

(18) Νουτῆον Ἰννοκέντιον ὡς Πάπαν, ἐχὶ τὸν Γ., τὸν δὲ Δ'. ὃν ἐν Ἔτει 1243. ἐπὶ τῆς Παπικῆς Καθέδρας ἀρθέντα, Ἀλέξανδρος ὁ Δ'. κατὰ τὸ 1254. διεδέχετο. Ὡς ἐν τῇ (1) τῶν ταύτης τῆς Πραγματείας Σημειώσεων κατ' ἀρχὰς εἰρηται.

τεῦθεν φανερόν εἶναι, τίποτε περὶ τῆς ἐνώσεως ἐκείνης ὑπο-  
λαμβάνειν χρῆ, ἣν μονοεχὶ τελείαν ὑπὸ Ἰωάννῃ τῷ Δέκῃ ἐκ-  
περανθῶσι οἱ Λατῖνοι διεταίνοντο. Εἰ γὰρ ἡ ἔνωσις ἐκείνη διε-  
κυρβῆτο, ἐν τῷ τὸν Πάπαν μόνον κατὰ τὰ Ἱερὰ Δίπτυχα μνη-  
μονοθεοῖται, ἐπὶ τῷ καὶ τὰς Λατίνους ἅμα τὴν προθήκην ἀφελῆν  
ἀπὸ τῆ Συμβόλης, ὡς ἂν δῆπιν τοῖς Ἀνατολικοῖς καταθύμιος.  
Δύο γὰρ ἐστὶ τὰ μάλιστα διαιρῶντα τὰς Ἐκκλησίας, ἥτε ἐν τῷ  
Συμβόλῳ Προθήκη, καὶ ἡ Παπικὴ Τυραννίς· ἀλλὰ γὰρ ἐκείναις  
ταῖς ἐπὶ τῇ ἐνώσει σωθήκαίς ἑδαμῶς ὁ Πάπας ἐπέσεργεν. Ὁ  
μὲν τοι ΒΛΕΜΜΙΔΗΣ (19) ὡς ἄρα ὑπὲρ Λατίνων, ἣ φέρεται,  
τιωκαῦτα συγγεγραφώς, ἔδεν παραβλάπτει. Οὐδὲ γὰρ οἷς μέ-  
τεσίτι Σοφίας, ἐν ἅπασιν ἀπάτης τυγχάνουσι κρείσσονες· τὰ  
πολλὰ δὲ καὶ ἀρχηγοὶ Αἰρέσεων ἀνεφάνησαν καὶ προσάται,  
Ἄνδρες τ' ἄλλα σοφώτατοι. Καὶ τίς ἄρα λόγος εἰς πίσιν ὁρθό-  
τητος Δόγματος εἶη, τὸ ἓνα τῶν Σοφωτέρων τινὰ, τῆ τοιούτου  
γενέσθαι Φρονήματος; Μετὰ γὰρ δὴ ταῦτα οἱ αὐτοὶ Γραικοὶ  
Μιχαὴλ σιωδραμον τῷ Παλαιολόγῳ, ὥς Λατίνους τε καὶ τὰς  
Λατίνων Ἱεροτελεσίας ἀπὸ Κωνσταντινουπόλεως ἐξελάσαι. Καὶ  
ὅπως δ' ἐφεξῆς ὁ αὐτὸς Μιχαὴλ ὁ Παλαιολόγος, ἵνα τὰς Γραικὰς  
εἰς ὑπακοὴν τῆς Ῥωμανίδος Ἐκκλησίας διὰ πειθὸς ἐτίθετο, ἢ  
γὰρ τιθέναι δοκεῖν ἡξίει, ἐν ἄλλοις εἶρηται.

Εἰ δὴ τελευτᾶν καὶ κατὰ Συρίαν καὶ Παλαιστίνην οἱ Γραι-  
κοὶ τότε τοῖς κατὰ κυριότητα αὐτῶν Λατίνοις, ἥτοι κρύφα, ἢ  
ἐμφανῶς ἀντιβαίνοντες ἦσαν, ὅσον ἂν καὶ ὑπακοῆς ἐκείνοις πα-  
ρεῖχον, τῷ γε σώματι καὶ ἐχὶ τῇ καρδίᾳ παρέχειν δῆλοι γινώ-  
μενοι. Ἐνθεν τοι ἸΑΚΩΒΟΣ ὁ δὲ Βιτρίακος, ὁ Ἀκωνίτης τῆς κα-  
τὰ Συρίαν (20) Λατίνος Ἐπίσκοπος, ἐν Κεφαλ: ΚΔ. τῆς Ἱερο-  
σολυμικῆς Ἱστορίας (21) ἐν Τόμ: Α'. τῆς Ἀνωβίᾳ ἐκδοθείσης  
Ἱστορ: τῶν Ἀνατολικ: ἐν Ἔτε 1611. Σελ: 1090. περὶ τῶν  
„Σύρων λέγων: τὰ Γραικῶν ἔθνη καὶ τὰς διατυπώσεις ἐν τοῖς  
„Θείοις, καὶ ταῖς ἄλλαις Ἱεραῖς τελεταῖς, οἱ Σύροι ὅλως διατη-  
„ροῦσι, καὶ τέτοις ὡς ἰδίῳ προγόνοις ὑπέκταν· τοῖς δὲ τῶν Λα-  
„τίνων Πρόεδροις, ὧν διάγοντες εἰσὶν ἐν ταῖς Διοικήσεσιν, ἐχὶ  
„τῇ

(19) Μέτιθι τὴν περὶ Νικηφόρου τῆ Βλεμμίδος Ἀνάκρισιν, τὴν ἐν Ἐπιθήκης μοίρᾳ προ-  
σεθεῖσαν τῷ Γ'. Τόχῃ περὶ τῶν Παραλειπομένων Ἰωσήφ τῆ Βρυεννίᾳ ἃ κατὰ  
τὸ αψπδ. ἐν Λειψία Τύποις ἐκδόθηται.

(20) „Ἀκωνίτης, ἢ Ἀκωνός,” αὕτη δ' ἦν ἡ πόλις Πτολεμαῖς, ἢ καὶ παλαιότερον Ἀκη-  
κληθεῖσα ἀπὸ Ἡρακλέους, τῆ εἰς ἄκρον τὴν Βοτάνην ἐυρόντος τὴν Πυθόχρητον.  
Νῦν δὲ Ἀκρη κοινότερον λεγόμενη, ἥς περὶ ὁ Ἐπίσκοπος διετέλει ὑπὸ τὸν Τύρον.

(21) Οὗτος ἐν τρισὶ Βιβλ: τὰ τῶν Ἑσίων καὶ τῶν Ἑσπερίων ἀνεβάλετο ἱστοῦσαι, ἃν  
ἐν μὲν τῷ Α'. τὰ Ἀνατολικά διέξεισιν, ἀπὸ τῶν Μωάμεθ χρόνων ἄχρι τῆ 1210.  
Ἐν δὲ τῷ Γ'. προήγαγε τὰ αὐτὰ, ἔς γ' ἐπὶ τὸ 1218. παρέτεινε δὲ τὸ ζῆν εἰς  
τὸ 1244.

„τῇ καρδίᾳ, μόνον δὲ τῷ σώματι καὶ ἐπιπολαίως αὐτοῖς φασὶ  
 „διαπειθαρχεῖν· φόβῳ δηλονότι τῶν κοσμικῶν Δυναστῶν. Ἐχσσι  
 „γὰρ ἰδίᾳς Ἐπισκόπους Γραικούς. Ἀφορισμὸς δὲ τῆς ἐκ Λατίνων,  
 „ἢ ἄλλας οἰασθήποτε ἐπιλιμήσεις ἐφ' ὅτῳ, ἢ ἂν φοβηθῆεν,  
 „ἐμὴ τέτων ἐπὶ τῆς ἐν τοῖς συμβολαίοις κοινωνίας, καὶ ἐπ' ἄλ-  
 „λων τινῶν ἀναγκαίων, οἱ κατ' ἡμᾶς Λαῖκοι ἀπέχοντο. Φασὶ  
 „γὰρ ἐν ἁλλήλοις λέγοντες: ὡς οἱ Λατῖνοι πάντες ἀφωρισμένοι  
 „εἰσὶ διὸ ἐδὲ δυνάμει ἐτέρᾳ διὰ ψήφου τινὸς ἐνδεσμεῦσαι. Ἐν  
 „γὰρ τῇ κατὰ Νίκαιαν Συνόδῳ, μιᾷ ἔσῃ τῶν τεσσάρων κυριω-  
 „τέρων, ἃς ἐπίσης τοῖς τέσσαρσιν Ἐυαγγελίοις ἀπαραιτήτως ἢ  
 „Ἐκκλησίᾳ ἀσπάζεται· ἐν ἣ τριακόσιοι δέκα καὶ ὀκτὼ παρήσαν  
 „Ἐπίσκοποι: ἐν πολλοῖς ἄλλοις καὶ τότε εἶρηται καὶ διώρισται,  
 „ὅτι τὸ Ἄγ: Πνεῦμα ἐκπορεύεται ἐκ τῆ Πατρὸς. Τελούταῖον δὲ  
 „καὶ πάντες, ὅσοι ἂν τῇ ρηθείᾳ Συνόδῳ προαῖναι τι τολμήσει-  
 „αν, ἢ ἀφελῆν, Ἀναθέματος ψήφῳ εἰσὶν ὑπόδιχοι — (Καὶ ἔπει-  
 „τα:) Ὅθεν Γραικοί τε καὶ Σύροι, ἐξ ἀφορμῆς τῆ Συμβόλου,  
 „ὅπερ οἱ Θεοὶ Πατέρες ἐν τῇ κατὰ Νίκαιαν Συνόδῳ σωέταξαν,  
 „ἐλεηνῶς ἐξαπατώμενοι, ἀποφάσκοντες εἰσὶν ἐκ τῆ Τίτῃ τὸ Πνεῦ-  
 „μα τὸ Ἄγ: ἐκπορεύεσθαι. (Καὶ μετὰ τινὰ δὲ τελούταῖον:) Γραι-  
 „κοί τε καὶ Σύροι, κατὰ προεῖρηται, Ἀφορισμῷ ἐνόχως εἶναι  
 „Λατίνους νομίζουσιν ἀπαξάπαντας.

Οὕτω δὲ καὶ ΜΑΡΙΝΟΣ Σανδτος Τορσέλλος ὁ Ἐνετὸς (22)  
 ἐν τῷ Γ'. Βιβλ: τῶν ἀπορρήτων τῶν τῆ Σταυρῆ Πιστῶν, Μέρ:  
 Η'. Τόμ: Β'. τῆς Ἀνατολικῆς Ἐκκλησίας, Σελ: 182. περὶ τῶν  
 Σύρων ὁμοίως ἀποφωάμενος: „Τηρῶσι τὰ ἔθνη καὶ τὰς διατυ-  
 „πώσεις τὰς τῶν Γραικῶν, ὡς προγόνων αὐτῶν· τοῖς δὲ Λατί-  
 „νων Προέδροις, ὥν περ ἐν ταῖς Διοικήσεσι βιοτεύουσι, σώματι καὶ  
 „ἐχλὶ καρδίᾳ ἐπαγγέλλονται καθυπακχεῖν, φόβῳ τῆς θύραθεν ἐξ-  
 „σίτας· διὸ ἐδὲ τῆς παρ' ἐκείνων ἀφορισμὸς δαιμαίνουσιν, ἐμὴ κατ'  
 „ὅσον ἀπὸ τῶν μετὰ τῶν πιστῶν συμβολαίων, καὶ τῶν ἄλλων  
 „χρεῶν αὐτῆς, ἀπείργουσιν· φασὶ γὰρ, κατάγε τὰ προτεθέντα,  
 „σύμπαντας Λατίνους εἶναι ἀφορισμῷ ὑποδίχους, καὶ διὰ τῆτο ἀφο-  
 „ρισμῷ ψήφον κατ' ἄλλων φέρειν αὐτῆς μὴ δυνάσθαι. — Καὶ ὁ  
 „Συγγραφεὺς δὲ τῆ Προσαρτήματος τῶν Ἱερῶν πολέμων, ἐν τῷ  
 5'. Τόμ: τῶν Κανόνων Ἀρχαίων Ἀναγνωσμάτων, Σελ: 265.  
 „Ἐχσσι δὲ οἱ Σύροι Ἐπισκόπος ἰδίᾳς Γραικούς· τῆς δὲ παρὰ τῶν  
 „Λατίνων ἀφορισμὸς διαπαίττει καὶ ὑποχλοβάττει, φάσκοντες  
 „αὐτῆς μᾶλλον ὑπὸ αἰωνίῳ ἔσεσθαι Ἀναθέματι. Ἐτι δὲ τοῖς

Γραι-

(22) Τέδε δὲ τὸ Βιβλ: ἐν ᾧ τὰ Συριακὰ καὶ τὰ Αἰγυπτιακὰ καὶ μάλιστα τὰ κατὰ  
 τὴν Παλαιστίνην Ἱσσερικοῦς διέξουσιν ὁ Σανδτος, ἤρξατο μὲν συγγράφειν ἐν ἔτει  
 1306. ἐκπεράνας δ' ἐκθώσισε τῷ Πάπᾳ Ἰωάννῃ ΚΒ'. ἐν ἔτει 1321.



„Γραικοῖς παραπλησίως ὑπενδοιάζουσι περὶ τῆς Ἀγίας Τριάδος, λέγοντες: ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ ἐκπορεύεται ἐκ τῆς Υἱοῦ, ἀλλ' ἐκ μόνου τῆς Πατρός. Ἐπειδὴ τοίνυν καὶ Γραικοὶ καὶ Σύροι καὶ Λατίνες πάντας ἀφορισμένους εἶναι νομίζουσι, τὰς αὐτῶν Ἱερὰς Τραπεζὰς, ἐφ' αἷς ἂν Λατῖνοι Ἱερουργήσαιεν, πρὶν ἢ αὐτοὶ ἐπὶ τῶν αὐτῶν αὖ λατουργήσωσιν, ἀποπλύνειν εἰώθασιν. Καὶ τοῖς καθ' ἡμᾶς δὲ Μυσηρίοις ἐδὲν σέβας προσνέμεσι,„

Καὶ δὴ τότε χάριν, ἐπὶ τῆς Πάπα Ἰννοκέντιος τῆς Γ'. (23) ὁ Ἀντιοχείας Πατριάρχης μετὰ τῆς περὶ αὐτὸν Κλήρος, ὡς ἄρα ὑπεναντία βαίνων Λατίνοις, παρὰ τῆς Παπικῆς Λεγάτης Ἀφορισμῷ κατεψήφισα· καί τοι γε πάλιν ἐπὶ τὸν ἴδιον Θρόνον αὐτῆς, μετὰ τῶν λοιπῶν Γραικῶν, πρὸς τῆς Ἀρμενίων Ἀνακτος ἀποκαταστάς, τῆς καὶ ἀλλαχόθι τῆς μὲν τῶν Λατίνων Κληρικῆς ἀπελάσαντος, τῆς δὲ τῶν Γραικῶν ἀντικαταστήσαντος. Οὕτω γὰρ τῷ Ἀρμενίῳ τότε Ἰννοκέντιος αὐτὰ δι' Ἐπισολῆς ἐπιπλήττει, ἣτις ἐστὶ τῶν ἐν τῷ Ις'. Καταλόγῳ, Ἐπισ: Β'. Σελ: 521. „Καὶ πρότερον δὲ τινα, (ἅπερ ὁ ῥηθεὶς Πατριάρχης τὸ κακὸν ἐν τῷ ἀγαθῷ πασθάζων νικάει, ἄχρι τῆς νῦν ὑπῆρχε σιγῶν) ὥφθης ἐπιχειρήσας, οἷς τὸν Ἀποσολικὸν Θρόνον, μᾶλλον δὲ τὸν τῶν ἀπασῶν τῶν Ἐκκλησιῶν μητέρα τε καὶ διδάσκαλον ἐπισυζητάμενον (Ἐκκλησίαν) ἐ μικρὸν ἤδεις παραπικράνας. Τῆς γὰρ σεβασμιωτάτης ἡμῶν Ἀδελφῆς, τῆς Ἱεροσολύμων Πατριάρχης, καὶ Λεγάτης τῆς Θρόνου τῆς Ἀποσολικῆς, κρίναντος κατὰ τὸν τῆς δικαίας λόγον, ἐξ ἰδίας ἡμῶν ἐπιτάγματος, καθελεῖν τινα, Πατριάρχῳ ἑαυτὸν Ἀντιοχείας ἀποκαλῶντα· καὶ κατὰ πάντων τῶν, ὅσοι ἐκείνῳ ὡς Πατριάρχῃ προσεῖχον, Ἀφορισμῷ ψῆφον ἀνακηρύξαι· οὗτος, Σὺ ἐδὲν ἦτλον, ἐκ ἄνευ ὕβρεως τῆς Ἀποσολικῆς Θρόνου, αὐτὸν ἀπεδέξω, εἰκῇ προσέχων αὐτῷ ὡς Πατριάρχῃ. Πρὸς δὲ τότε τῆς ἐκλεχθέντος Ταρσῆς ἐκ μέσων γεγονότος, ὁπότε ὁ πόλλ' ἀκίς ῥηθεὶς Πατριάρχης ἐλπίδων ἰὼ, ἥπερ ὑπέχετο, Ἀρχιεπίσκοπος ἐκείσε κατασαθρήσεσθαι· σὺ τὰς προσόδους, καὶ τὰς ἀνήκοντας τῇ Ἐκκλησίᾳ ἐκείνῃ ἀγρῆς τοῖς σαυτῆς στρατιώταις ἱεροσύλῳ τόλμῃ ἐνδιανέμας, καὶ τῆς Λατίνης Κληρικῆς ὅλως αὐτῆς ἐξελάσας, Γραικὲς τινας ἀντιπαρεισαγαγεῖν ἐν αὐτῇ ἀπετόλμηςας,„

Ἀλλὰ καὶ Σύρος, καὶ ἄλλα τῶν ἐπ' Ἀνατολῆς Ἑθνη, Γερμανὸς ὁ Κωνσταντινουπόλεως Πατριάρχης ἐν τῇ πρὸς τῆς Καρδινάλεις Ἐπισολῇ διεξαισιν, αὐτῷ τε καὶ τῇ ὑπ' αὐτὸν Ἐκκλησίᾳ, ἦκιστα δὲ τῇ ἐν Ῥώμῃ, κατ' ἐκείνο ἐπικοινωνεῖν. Οὕτω γὰρ ἐν τοῖς

(23) Ἐπάπισε δὲ Ἰννοκέντιος ὁ Γ'. 1198 — 1216.

Τόμ. Β'.

X XXXXX

τοῖς ἀνωτέρω παρατεθεῖσιν, ἔφασκε: „Τετὶ μόνον προθήσω, καὶ πέρας ἐπιθήσω τῷ λόγῳ. Ὅτι δηλ: πολλά τε καὶ μεγάλα „Ἐθνη ἐστὶ τὰ ὁμοφρονῶντα ἡμῖν. Καὶ ὅσοι δὲ Γραικοὶ εἰσὶ „σιωμομολογῶσιν ἡμῖν ἐν ἅπασιν. Πρῶτοι δὲ, οἱ τῷ πρώτῳ μοί- „ραν τῆς Ἀνατολῆς ἔχοντες Αἰθίοπες. Εἷτα Σύροι καὶ ἄλλοι „δ' ἐτι καὶ τέτων ἐπιβριθέσμενοι τε καὶ ἀρετῆς μᾶλλον ἀντιποιέ- „μενοι τετέστιν Ἰβηρές τε, καὶ Λαῖοι, καὶ Ἀλανοὶ, καὶ Γότθοι, „καὶ Χάζαροι, καὶ τὰ ὑπὲρ ἀριθμὸν πλῆθη τῶν Ῥώσων, καὶ „τὸ μεγαλόνηκον γένος τῶν Βελγάρων καὶ ἔτι δὴ πάντες τῇ „καθ' ἡμᾶς Ἐκκλησίᾳ ὡς μητρὶ περὶ παρὰ ἡμᾶς, τῇ ἀνέκαθεν ὁρθο- „δοξίᾳ ἀραρότως ἄχρις ἡμῶν ἐπιμένοντες. Παρσιάσαι δὲ ἐπὶ „τῆς κατὰ τὸ Νυμφαῖον Σωόδε, ἐν Ἔτει 1233. καὶ τὸν Ἀντιο- „χείας Πατριάρχῳ, καὶ τῷτον, ὡς καὶ ὁ Γερμανὸς, τοῖς Λα- „τίνοις ἀντιβῶναι, ἤδη σιωεωράκαμεν. Ὅτε δὲ καὶ ἐν Ἔτει 1237. Φίλιππος ὁ ἐκ τῶν Ἑλασσόνων Τάγματος, Προβιγκιάλις κατὰ „τῷ Ἱερᾷ γλῶ, ἐκ Παλαιστίνης ὡς ἐπισέλλων τῷ Πάπᾳ, ἔτω „πρὸς τοῖς ἄλλοις ἔγραφε, παρὰ Ματθαίῳ τῷ Πάρις, ἐν τῇ Ἀγ- „γλικῇ Ἱστορίᾳ τῇ περὶ Ἑρρίκῃ τῇ Γ'. Σελ: 590. „Ἀπάντων τῶν „εἰρημένων Ἑθνῶν, τῇ καθ' ἡμᾶς περὶ Τριάδος Διδασκαλίᾳ, καὶ „ταῖς ἡμετέραις διδασκαίς ἐφησυχάζοντων, οἱ Γραικοὶ μόνοι τῇ „ἐαυτῶν κακοτροπίᾳ ἐνεπιμένουσιν οἱ πανταχῶς, ἔτε λάθρα, ἢ „ἐμφανῶς τῇ Ἐκκλησίᾳ τῆς Ῥώμης ἀντιλέγουσιν ἅπαντά τε τὰ „παρ' ἡμῖν ἱερὰ καταβλασφημεῖσιν, καὶ πᾶν σύστημα τὸ πρὸς „αὐτῶς ἀπαλλοτριούμενον, μοχθηρόν τε καὶ Αἵρετικὸν ὀνομά- „ζουσιν. „

Ἐν Ἔτει δὲ 1238. ὁ Ἀντιοχείας Πατριάρχης, σιωαινῶντος καὶ τῷ Κωνσταντινουπόλεως Γερμανῷ, τὸν Πάπαν σιω ἀπάσῃ τῇ Ῥωμανίδι Ἐκκλησίᾳ τῷ Ἀναθέματι καθυπέβαλε προθεῖς ἐν ἄλλοις, καὶ ὅτι ἡ ἰδία αὐτῷ Ἐκκλησίᾳ τῆς Ῥωμανίδος ἐστὶν προέ- „χουσα, ὡς πρώτη ἀπασῶν ὑπὸ τῷ Πέτρῳ ἐν ἑπταετίᾳ διδω- „θεῖσα, καὶ τιμαῖς ὑπερβαλλέσαις τῷτον ἐς αἰὲς θεράπευσσα, ὅπερ ἐν Ῥώμῃ ἔγινε. Καὶ τῷ ἐν Ῥώμῃ δὲ ἄλλως Ἐκκλησίαν, παντοίοις Σιμωνίας εἵδεσι κατερρύπανθαι, καὶ ἄλλοις ἐγκλήμασιν. Οὕτω γὰρ ὁ αὐτὸς Ματθαῖος, ἐνθα εἴρηται, Σελίδι 644. „Καὶ κατὰ τὸ αὐτὸ δὲ Ἔτος εἰς τοσῶτον προπετείας καὶ τόλμης „ἤλασεν ὁ Ἀντιοχείας Ἀρχιεπίσκοπος, σιωαινῶντος καὶ αὐτῷ τῷ „Κωνσταντινουπόλεως τῷ τῶν Γραικῶν σιωηγόρῳ ὥς καὶ Ἀντι- „πάπαν οἷον ἐκυτὸν ἀντικαθίστων, τὸν Κύριον Πάπαν μετὰ πά- „σης αὐτῷ τῆς Ῥωμᾶς Ἐκκλησίας τε καὶ αὐλῆς, κατὰ κενὴν „τινα Αὐθεντίαν ἀφορισμῷ καθυπέβαλε. Καὶ βλασφημῶν δὲ, „καὶ γε ἐαυτὸν, καὶ τῷ ὑπ' αὐτῷ τελέσαν Ἐκκλησίαν ἀνακη- „ρύττων καὶ χρόνῳ καὶ ἀξιώματι, αὐτῷ τε τῷ Κυρίῳ Πάπᾳ καὶ „τῇ

ἡ τῆς κατὰ Ῥώμῃ Ἐκκλησίας προτέραν ἔταξεν ὑπάρχειν τε καὶ  
 ὑπάρξει, ὑπὲρ αὐτῷ τῷ Ῥωμαϊκῷ ὑπερέχουσιν· καὶ ὅτι γε  
 Πέτρος ὁ μακάριος Ἀπόστολος, τῷ μὲν Ἀντιοχείῳ Ἐκκλησίᾳ  
 πρῶτον μετὰ τιμῆς μεγάλης δίδωεν, εἰς ἐπὶ λατρίαν αὐτόθι,  
 ἐν ὑπερβαλλύσῃ ὡς εἰκὸς σεπτὸς ἐνλαβεία, καὶ ὁμοίως ἐντίμως  
 ἐν θρόνῳ αὐτοῦ. Ἐν δὲ Ῥώμῃ πολλάς τε καὶ πολυτρόπως ὑπέτλη  
 λειδορίας καὶ ὕβρεις· καὶ τελευτᾷ ἐπὶ Νέρωνος Αὐτοκρατορῆ-  
 ντος, ἅμα τῷ Σωαποσόλῳ μακαρίῳ Παύλῳ, τῷ κατ' ἐξαίρεσιν  
 τῶν Γραικῶν Διδασκάλῳ, δι' ἀπὸ πᾶς θανάτου ποινῆς τὸ ζῶν ἐπεσ-  
 φράγισεν. Ὅθεν δεόντως φιλτέραν τε καὶ ποθεινοτέραν εἶναι,  
 τῷ πόλιν τε καὶ τὰς πέριξ χώρας, σὺ τοῖς αὐτῶν Πολίταις  
 καὶ οἰκήτορσιν, τὰς τῷ μακαρίῳ Ἀποστόλῳ Πέτρῳ τιμῇ καὶ  
 σέβας πρεσβεύουσας, ἥπερ αἱ ὀνειδισμὸς καὶ βασάνες αὐτῷ  
 προμνηστύσαντο. Τῷ δέ τοι δώαμιν τῆ δεσμεῖν καὶ λύειν ἐν  
 ἐξουσίᾳ, εἰκὸς μᾶλλον αὐτὸν τῇ τῶν Γραικῶν Ἐκκλησίᾳ παρεσ-  
 χηκέναι, ἢ τῇ Ῥωμάνῃ, ὡς Σιμωνίαι τε δὴ καὶ ἐκτοκίσεις, καὶ  
 Φιλαργυρία, καὶ ἀνοσιβρημάτων ἄλλων κηλίδες ἐπιδήλως ἤδη  
 καταρρύπαινεν. Τέτοις δὴ καὶ παραπλησίους ἄλλοις ἐπιπολαί-  
 οντες λόγοις, τὰς ἐαυτῆς μώλωπας ὁ ῥηθεὶς Ἀντιπάπας σω-  
 κάλυπτε, προφασιζόμενος προφάσεις ἐν ἀμαρτίαις. Ἀλλ' ὁ  
 Στύλος τῆς Ἐκκλησίας, ὁ Κύριος Πάπας, ὁ τῆ Μακαρίᾳ Πέτρῃ  
 γνήσιος διάδοχος, καὶ τοι μὴ ἀκριβὲς ὢν αὐτῆς ἐκμιμήτωρ, ἔδα-  
 μως ἐκινεῖτο, ἀποταμιύων ἐκδίκησιν πᾶσαν ἐν καιρῷ ἀπο-  
 δόσεως.

Τελευτᾷ καὶ ἐν ἔτει 1247. ἀναγιγνώσκοντες τὸν Πάπαν  
 Ῥώμης, διὰ τινων παρ' αὐτῆς ἀπεσταλμένων πείραν εἰληφέναι,  
 ἔπως τὰς ὑπὸ τοῖς Πατριάρχαϊς, τῷ τε Ἀντιοχείᾳ καὶ τῷ Ἱε-  
 ροσολύμῳ, τελευτᾶς Γραικῆς, εἰς ὑποταγῇ τῆς ἐν Ῥώμῃ Ἐκ-  
 κλησίας ἐλκύσαιτο. Παρὰ Βαδδίγγῳ ἐν τοῖς τῶν ἐλαχίστων λε-  
 γομένων Φράων, ἐν ᾧ ἔρηται.

Καὶ ἄλλοις ἄρα φανερόν ἐκ τῶνδε, ὡς οἱ Ἀναθολικοὶ, ὁσά-  
 κισ ἐξῶ, τῷ ῥηθεῖσαν διέφυγον ἔνωσιν, ἔδὲ τῷ ψυχρῷ ἐπ'  
 αὐτῇ τὸ παράπαν προσέχον. Οἱ δ' ἐπὶ ταύτῃ χειρὶ βιάειά ἐπα-  
 ναγκαθέντες, ἐλδοθερίας ποθὲν αὐτοῖς ἐπιγενομένης, ἦν, εἴτε  
 ὅπλα ἄραντες περιποιήσαντο σφίσιν, εἴθ' ὑπὸ ἄλλων ἐπικερίας  
 τυχόντες ὅπως ἐπανεκτήσαντο· ὁμοφρόνῳ βελῇ τε καὶ γνώμῃ  
 τῷ κοινωνίαν παρήτιωται· ἅτε δὴ μὴ τῇ καρδίᾳ, τοῖς δὲ χείλε-  
 σι μόνοις αὐτῷ κατεπαγγελάμενοι. Τί τοίνυν ἄχρι τῆς, ἢ  
 τῆ Ἰννοκεντίου τῆ Γ'. ἐπιταχθεῖσα τῇ Ἐλλάδι ἔνωσις, ἢ τοι Λα-  
 τίνες ὀνήσειεν, ἢ Γραικοῖς προσλυμήναιτο; Πάντως γάρ περ, ἔχ-  
 ὄτι μέρος τῆς Καθολικῆς Ἐκκλησίας (ὅπερ ὑπὸ τῶν Ἀρειανῶν  
 καὶ πάλαι σωέβη) ἐνδεδωκε καταθλιβέν, ἐκ τῆς ἂν καὶ ὁ

X ΧΧΧΧΧ 2

τῆς

τῆς ἀπάτης καὶ τῆ ψεύδους ἔλεγχος τῇ Πίσει τῇ Καθολικῇ προ-  
σεπιτριβείῃ· ὡς παρὰ πᾶσιν ἀνωμολόγηται.

Ἐκείνο δ' ὃ ἀντεπέφερον ἀνωτέρω, ἔστιν ἕς τῶν βασιλευ-  
σάντων, ὁποῖαν δὴ τινα γέν ἔνωσιν μετὰ τῆς Ῥωμάνας Ἐκκλη-  
σίας ἡδέως ἂν προσέθαι, ἐδ' αὐτὸ δὴπερ τῇ τῶν ὀρθοδόξων  
προσλυμαίνεται ἀληθείᾳ. Οὐ γὰρ αἰτίας ἐκείνας ἡμεῖς ἀπαλλάτ-  
τομεν ἐπὶ τῷ, φαμέν δέ τοι παρακεκρῆσθαι. Καὶ προσέτι δὲ  
ἐχὼ λόγων ἐπιχειρήμασιν, ἐδ' ὑπὸ παιδῆς τινὸς, ἐδὲ μὲν ἔν  
τοῖς τῆ σικεϊδότος κέντροις ὑπονυχθέντες τὴν πρὸς ἐκεῖνο ἔχον  
ῥοπὴν· λογισμοῖς δὲ παραγόμενοι ἀνθρωπίνους, ἵνα δὴ τὸ Κρά-  
τος ἐπανακτῆσονται, καὶ τὴν Βασίλειον ἐξουσίαν ἀκεραίαν ἀπο-  
λάβωσιν· οἱ δὲ ἐξ ἀφορμῶν τοιούτων κινέμενοι, ἐχὼ τὸ πλέον  
εἰς ἀνοδίας ἐκτραπέσθαι, καὶ περὶ τὸ ψεῦδος περιολιθῆσαι ἡδυνά-  
το; Ἐμπης γὰρ ἡμῖν κανὼν ἐστὶ Πίσεως, καὶ τῆς μετὰ τῶν  
ἄλλων κοινωνίας τε καὶ ἐνώσεως ὅρος, καὶ τὸ πρὸς καιρὸν ὠφελεῖν,  
καὶ κέρδος, καὶ ἡ ἐξ ἀνθρώπων τιμὴ, καὶ εὐκλεία ἢ ἐκ φή-  
μης· ἀλλὰ μόνῃ ἢ Γραφῇ ἢ Ἀγίᾳ κατὰ νοῦν ἐκλαμβανομένη,  
καθ' ὃν αἰὲν ἐν τῇ Καθολικῇ Ἐκκλησίᾳ ἡρμυζόσθαι. Εἰ δέ τις  
μὴ τῷ κανόνι τῷδε σοιχοίῃ, δι' ἧς αἱ περὶ Πίσεως ἀνακρίνονται  
διαπορήσεις, τί θαυμαστὸν ἐὰν εἰς ἀνοδίας παράγων ἐκτραχηλί-  
ζηται; τῷ γὰρ ὄντι ὁ τῆ Ἰσαακίᾳ Υἱὸς, ἐδὲν δι' ἄλλο· συγχοι-  
νωνήσεν Λατίνοις ὑπέχετο τὰ Ἱερὰ, ἢ ἵνα τῇ τέττων ἐπικερρίῃ  
καὶ ἀντιλήψαι τὴν πατρῴαν ἀρχὴν, ἣνπερ ὑπὸ τῆ Πατραδέλφου  
ἀφῆρητο, ἀνακτῆσθαι· ἄλλως γὰρ, ἐδ' ἂν ἐλπίδα οἱ βοηθήμα-  
τος Λατῖνοι παρέχον, οἱ ἐνομώτως τιμικαῦτα ἐνθὺ Παλαυσίνης  
ἔτοιμοι πλοῦσεσθαι. Τὸν δέ τοι Βλάχον ἐπὶ τῷ ἔνωσιν ἐπιστρέψαι,  
αἱ τῆ Βασιλικῆ διαδήματος κατεγοήτοῦσαν μαρμαρυγὰν, ἐπερ,  
τῆς ἐνώσεως τελεθείσης, ῥᾶστα ἂν ὑπὸ τῆ Πάπα προσεδόκησε  
τὸ ἔξεσθαι. Τῷ τοι καὶ πανταχῆ τῶν αὐτῆ Γραμμάτων ἔγκειται  
καὶ καθικετόβει, καὶ τῇ παρ' ἄλλων δὲ προσέτι προσεπιχρώμε-  
νος διαμεσιτῶσει, αἰτέται πρὸς τῆ Πάπα εἰς Βασιλέα ἀνασεφ-  
θῶμαι. Οὕτω γὰρ ἐπὶ τῆς πρὸς αὐτὸν τὸν Πάπαν Ἐπισολῆς·  
(ἐν ταῖς Ἰννοκεντ: Πράξ: Σελ: 50.) „Τατὶ δὲ τὸ Κράτος ἡμῶν  
„ἐξαίτεται παρὰ τῆ Ἀποστολικῆς Θρόνου, ὥς ἐπὶ τὴν Ῥωμάναν  
„ἡμᾶς Ἐκκλησίαν, ὡς Υἱὸς ἐπὶ μητέρα ἐπιστηρίξεσθαι. Ἐν πρώ-  
„τοις ἔν παρὰ τῆς Ῥωμανικῆς Ἐκκλησίας ζήτῳμεν τὸ διάδημα  
„καὶ τὴν τιμὴν, ὅπως ἂν ἐν τάξει εἴλω ἀγαπητῆς Υἱῆς, καθάπερ  
„ἡμῶν οἱ πάλαυ Ἀυτοκράτορες εἶχον αὐτά· ὧν ὁ μὲν ἦν ὁ Πέ-  
„τρος, ὁ δὲ ὁ Σαμεὴλ· καὶ ἄλλοι δὲ τῶν προγενεσέρων, ὡς ἐπὶ τῶν  
„ἡμετέρων καίτοι Βιβλίων ἀνάγραφῃ. — Ἀλλὰ καὶ ΒΑΣΙΛΕΙΟΣ  
ὁ τῶν Βαλγάρων Ἀρχιεπίσκοπος, ἐπὶ τῆς πρὸς τὸν Πάπαν Ἐπι-  
σολῆς καὶ αὐτὸς, τῆς ἐν ταῖς Ἰννοκεντίᾳ Πράξ: Σελ: 51. „Διὸ  
„καὶ



καὶ ἡμεῖς μικροῖτε καὶ μέζονες, ὡς Υἱοὶ κακοὶ παρακαλῶμεν  
 „σε ὡς ἀγαθὸν Πατέρα, ἵνα ὁ Κύριος ἡμῶν Ἀυτοκράτωρ τύ-  
 „χοι ὧν ἡτήσατο παρ' ὑμῶν, ὅτι ἄξιός ἐστι τῷ τυχεῖν καὶ γὰρ  
 „καὶ αὐτὸς καὶ πᾶσα ἡ αὐτοῦ Ἐπικράτεια, καλὸν τὸ σέβας πρὸς  
 „τινὲν ἐν Ῥώμῃ θάλλουσιν Ἐκκλησίαν, ὡς κληρονόμοι ἐξ αἵματος  
 „καταγόμενοι Ῥωμαῖκοι. — Καὶ πάλιν ὁ τῆς Βλαχίας Ἀρχὼν  
 ἐν ἑτέροις αὐτοῖς πρὸς τὸν Πάπαν Γράμμασιν, ἐνθ' ἀνωτ' Σελ:  
 55. „Καὶ ἕτερον δὲ ζητῶ παρὰ τῆς Σῆς Ἀγιότητος ἵνα Καρ-  
 „δινάλιν εἰς τόδε τὸ Κράτος διαπέμψῃς, ὡς ἐμὲ ἥξοντα ἢ γὰρ  
 „ἕτερόν τινα ἀπὸ τῶ. Θρόνου τῶ Ἀποσολικοῦ, ἐγχαρίσας αὐτῷ τὸ  
 „Διάδημα καὶ τὸ σκήπτρον, κατὰ τινὲν τῶ Ἀποσολικοῦ Θρόνου,  
 „ἢ τῶ κορυφαίᾳ τῶν Ἀποσόλων ἐυλογίαν. Πέμψῃς δὲ καὶ Προ-  
 „νόμιον τῇ χρυσῇ σφραγίδι κατασεσημασμένον, ὅπως τὸ αὐτῷ  
 „Ἀντίγραφον διασώζηται εἰς τὸν αἰὲ χρόνον ἐν τῇ Ἐκκλησίᾳ  
 „Τριωνίας (24). Ἴνα δὴ δῶσι ταῦτα πάντα τῷ Κράτει ἡμῶν,  
 „καὶ καθιερώσωσι, καὶ κατασέψωσι τὸ ἡμέτερον Κράτος, ὡς ἐκ  
 „τῆς Σῆς Ἀγιότητος. Προσεχέτω δὲ ὁ παρὼν Ἀγγελιαφόρος ὁ  
 „Βλανδιζιζιερλώσιος Ἐπίσκοπος Βλάσιος, ἵνα ἔχη τι ἀναγαγεῖν  
 „ἐγγράφους τῇ ἰδίᾳ χειρί. Καὶ εἰς πάντα ταῦτα πληρώσῃ ἢ  
 „Σὴ Ἀγιότης, ὅπως ἡγήσομαι κατὰ τινὲν Σοφίαν τῶ ἐμῷ Κράτει  
 „καὶ πάντων Βαλγάρων τε καὶ Βλάχων, ὅτι εἰς τέκνα ἀγαπη-  
 „τὰ τῆς Ὁρθοδόξου Ἀγίας Ἐκκλησίας τῆς Ῥωμανικῆς. Τὸ ἄρα  
 σέμμα τῆς Βασιλείας μόνον ὑπῆρχε, τὸ μυωπίσαν τὸν Βλάχον  
 ἐπὶ τινὲν ἔνωσιν, ὥς δηλονότι καὶ τῶς προγενεσέρας λαμπρωμέ-  
 νης διεμνημόνευεν. Οἱ δὲ Βασίλειος ὁ τῶν Βαλγάρων Ἀρχιεπί-  
 σκοπος, ἦτοι ἕτερος τινὸς ἕνεκα, ἢ γὰρ, ἐπὶ τῷ πρὸς τῶ Πάπα  
 ὡσαύτως τυχεῖν τῶ ἀξιωματοῦ τῶ Πατριαρχικοῦ, ἐφιέμενος καὶ  
 ἕτος ἐτύγγχανε τῆς ἐνώσεως. Οὕτω καὶ γὰρ ὁ Ἀυτοκράτωρ ἐν  
 τῇ πρὸς τὸν Πάπαν ῥηθείᾳ Ἐπισολῇ, τῇ ἐν ταῖς Ἰννοκεντ' Πράξ:  
 Σελ: 55. „Δέομαι καὶ παρακαλῶ τινὲν Σινὲν Μεγάλιν Ἀγιωσιώιν,  
 „τῶ πληρῶσαι τὸν τῆς Ἀυτοκρατορίας πόθον, καὶ πέμψαι τινὲν  
 „Ποιμαντικῶν ῥάβδον ἐπὶ τῷ σιωάγειν τὰ πρόβατα, καὶ τ' ἄλλα  
 „ὅσα τὸν Πατριαρχεῦντα ἔχεν νενόμισαι, καὶ ποιῆσαι τὸν πα-  
 „ρόντα Πρόεδρον Πατριαρχικὸν ἐν τῇ Ἀγίᾳ καὶ Μεγάλῃ Ἐκ-  
 „κλησίᾳ τῆς Τριωνίας, τῆς πρωτεύουσας Πόλεως ἀνὰ πᾶσαν τινὲν  
 „Βαλγαρίαν. Καὶ ἵνα δὴ καὶ μετὰ θάνατον τῶδε τῶ Πατριάρ-  
 „χου, ἢ Ἐκκλησία αὕτη Πατριάρχῳ ἔχη εἰς τὸ διωκεῖς, ἐξ  
 „ἐντάλλματος τῆς Σῆς Ἀγιότητος. — Ἀλλὰ γὰρ ἐντεῦθεν δῆλον

8

(24) Μήτοιγε „Τριναξίας; Τέρνοβον, γὰρ καὶ „Τρίναξος, ὁ καθ' ἡμᾶς νῦν „Μέγας  
 „Τέρναξος, ἢ πρὸς τὸ ὄρος τὸν Ἄμμον ὁχυρὰ ποτε πόλις, ἐν ᾗ ἴδρυτο τὰ Βαλ-  
 γάρων Κασίλεια.

Τόμ: Β'.

Ψ ψψψψψ

ὃ γίνεται, εἰ παρὰ τῆς πρὸς τῷ ἔνωσιν ἐναχθέντας ἐφέσει ὑπερτέρῃ ἀξιώματος, καὶ οἱ λοιποὶ τῆς Κλήρης, οἷτε ἐκ τῶν ἐπισήμων τῷ γενεῖ, καὶ οἱ ἐκ τῆς δῆμῃς, τῇ τοιαύτῃ ἐνώσει ἐπινενόκασιν εὐδοκήσαντες· ὃ γὰρ ἀπλῶς πισθεῖν ἐστὶ ταῖς τῆς Βασιλέως ἐπαγγελίαις καὶ παραδηλώσεσι· παραπλησίως γὰρ τῆς Λατίνης ἐξαπατήσας ἀπαδάσας ἐγένετο καὶ Μιχαὴλ ὁ Παλαιολόγος, περὶ ὃ ἐν ἄλλοις. Ἐπὶ δὲ τέτοις καὶ Γερμανὸς ὁ Πατριάρχης, ἐν τῇ πρὸς τῆς Καρδινάλης Ἐπιστολῇ, ὡς ἔτι 1232. ἐπέσελλε, σαφῶς ἦν ἐπιμαρτυρῶν, ὡς Βλάχοι τε δὴ καὶ Βέλγαροι, ἐν τῇ μετὰ τῆς Ἀνατολικῆς Ἐκκλησίας, ἦλθον δὲ τῆς Δυτικῆς, ἐνώσει μένοντες ἦσαν σερεῶς τε καὶ ἀραρότως· ὃ τῶν ρημάτων καὶ αὐτοὶς ἀκασόμεθα. Ἐν οἷς καὶ κείνο βέβαιον ἐστὶ, μετ' ὃ πολλὰ παρέλθουσιν τῆς χρόνῃς, τῆς Βελγάρῃς τῆς τῶν Λατίνων κοινωνίας πάντῃ ἀπηλλοτριῶσθαι, ὥς καὶ Ἀσάνῳ τὸν ἐν αὐτοῖς Ἀνάσσοντα εἰς ἐπικρίαν τῶν Γραικῶν σιωδεδραμηκέναι, τὸν Λατινικὸν ζυγὸν ἐκσεόντων, καὶ τῷ ἐλδοθερίαν σφίσιν ἐπανακτήσασθαι ἀγωνιζομένων. Ἐφ' ᾧ δὴ καὶ Γρηγόριος ὁ Θ'. εἰς μανίαν οἷον ἐξοισηθεὶς, Βελάμῳ τὸν Οὐγκρῶν Βασίλεα πρὸς καλεῖτο κατὰ Βελγάρων, τοῖς δὲ Μονασαῖς ἐπέτρεπε σταυρόσημον κατ' ἐκείνων στατὸν ἀγείρειν, ὡς αἱ περὶ τέττε γραφεῖσαι πρὸς τε τὸν Οὐγκρον καὶ ἄλλας δηλῶσιν Ἐπιστολαί, παρὰ τῷ Βαδδίνῳ ἐν τοῖς τῶν Ἐλασσόνων Χρονικοῖς ἀναγινωσκόμεναι. Πρὸ δὲ δὴ τέττε καὶ Γερμανὸς ὁ Πατριάρχης Κωνσταντινουπόλεως τοῖς ἐν Ῥώμῃ Καρδινάλεσιν ἔτῳς ἦν ἐπισέλλων, ὡς καὶ ἀνωτέρω ἐμνημονόβετο: „Πολλὰ τε καὶ μεγάλα ἔθνη ἐστὶ τὰ ὁμοφρονῶντα „ἡμῖν· καὶ ὅσοι δὲ Γραικοὶ εἰσὶ, σιωμολογῶσιν ἡμῖν ἐν ἅπασιν — „Τὰ ὑπὲρ ἀριθμὸν πλήθη τῶν Ῥώσων, καὶ τὸ μεγαλόνηκον γένος τῶν Βελγάρων· καὶ ἔτοι δὴ πάντες τῇ κατ' ἡμᾶς Ἐκκλησίᾳ „ὡς μητρὶ παιδαρχῶσι, τῇ ἀνέκαθεν Ὀρθοδοξίᾳ ἀραρότως ἄχρισ ἡμῶν ἐπιμένοντες, „Ἦτοι ἄρα κατ' ἐκείνο δὴ τῆς χρόνῃς, τὸ λοιπὸν τῶν Βελγάρων ἔθνος τῷ ἔνωσιν ὁδομῶς παρεδέξατο· ἢ καὶ παραδεξάμενον, τῇ τῆς Ἀρχοντοῦ αὐτῶν βελλῇ καὶ τοῖς ἐπιτάγμασι μόνον ὑπέειξαν, ἀφ' ὧν ἔπειτα ἀπολυθέντες, ἐπὶ τῷ προτέρῳ ἐκόντες ἐπανῆκον εὐσεβείαν. Καθ' ἡμέραν καὶ ἐξῆς ἐν ἔτι 1253. κατὰ τὸ Ἀσσίσιον διάκων ὁ Πάπας, τῷ ἐκ τῆς Κηρύκων Τάγματος ἐν Πολωνίᾳ Προβιγκιάλει ἐνετέλλετο ἐπὶ Βελγάρῃς Μονασαῖς πέμπειν, τῆς εἰς ὑπακοὴν τῆς Ῥωμάνης Ἐκκλησίας τὸ ἔθνος ἀποκαταστήσοντα. (Παρὰ Βαδδίνῳ τῆς αὐτῆς ἔτις.)

Παραπλησίως δὲ καὶ Στέφανος ὁ Σερβίας Μαγνιππάνος (25) μετὰ τῆς ἐν Ῥώμῃ Ἐκκλησίας ἐνωθῶν εἰς πόθον ἦλθεν, ἦν

ὡς καὶ

(25) Μήτοι „Μαγνιππάνος, ὃδε Λατινικώτερον ἀκούει, ὃ „Καταπάνος, ἀκούων Ἑλληνικώτερον;

ὡσαύτως ὑπὸ τῆς Πάπα καὶ αὐτὸς ἐπικοσμηθεὶς τῷ Βασιλικῷ διαδήματι. Ἐφεξῆς γὰρ, ὡς αὐτῷ τὸ σέμμα εἰς διεπέμπετο, εἰς ἑτοῦς δημοσίᾳ τὴν ἑνωσιν ἐνεσιγήγαγεν· ἦν δὴ πρὸς, πᾶς ὁ ἐπὶ Δωασείας τεταγμένος, εἰς γνησίως αὐτῷ αἰρεῖται, καὶ ἄνευ τῆς τῆς ἀπὸ Ῥώμης Λεγάτου παρυσίας ἐν τῇ κατ' αὐτὸν Αὐλῇ οἶος ἐστὶν ἐνεσιγαίνει. Οὕτως γὰρ Ἰννοκέντιος ὁ Γ'. ἐν τῇ πρὸς τὸν Οὐγκρίας Βασιλεῦσιν Ἐπιστολῇ, τῇ ἐν ταῖς Ἰννοκεν[...]: Πράξις: Σελ: 68. „Καὶ κείνο δὲ ἐκ ἄπο τρόπου καραδοκεῖν ἔχοιμεν ἂν ἐπὶ τῆς δευτέρας περιστάσεως, ὅτι τῆς Ἐπιφανῆς Ἀνδρὸς Στεφάνου τῆς Μαγνιππᾶν Σερβίας, δι' αἰδεσίμων Ἀποκρισιαρίων ταπεινῶς ἡμῶν δεηθέντος, Λεγάτον ἐπὶ τὴν χώραν τὴν ὑπ' αὐτὸν διδιδῶναι, τὸν πρὸς ὑπακοῇ τῆς Ῥωμάνης Ἐκκλησίας αὐτὸν ἀποκαταστήσαντα, καὶ τὸ τῆς Βασιλείας ἅμα διάδημα ἐκείνῳ διακομιᾶντα, τὴν αὐτῶν αὐτοὶ ἐκ κοινῆς βουλῆς τῶν Ἀδελφῶν ἡμῶν εἰς ἔργον ἀγαγεῖν ἐγνωκότες, καὶ τὴν εἰς τῆς τείνουσαν Λεγατείαν, τῷ ὁσιωτάτῳ ἡμῶν Ἀδελφῷ τῷ Ἐπισκόπῳ Ἀλβανίας ἀναθέμενοι· ὁμῶς ἐπειδὴ σιωεωράκαμεν, τῆς τῇ Γαλιωότητι ὡς ἡλίαν ἀπαρέσκειν, Σὺν χάριν, ἐκ ἄνευ πηλικησῶν ἐντροπῆς ἡμετέρας, ἀπεχέθημεν τῆς Ἐπιχειρήσεως. Τοιγαρὶν καὶ τῆς Φῆλκας ἔπειτα τὸν Στέφανον ἐπὶ τῆς Ἀρχῆς διαδεξαμένους, εἰς ὑπακοῇ τῆς Ῥωμάνης Ἐκκλησίας τὴν Σερβίαν ὑπαγαγεῖν μὲν ἐθέλησαι ἰσόρηται ὁ τῶν Οὐγκριων Βασιλεὺς, ἐπιτρέπων ἅμα καὶ διαπεμφθῶναι τῷ Φῆλκῳ τὸ Βασιλεῖον πρὸς τῆς Πάπα Διάδημα· ἅλλ' ὅτι δὴ καὶ Φῆλκος αὐτὸς ἐν ἐφῆσαι τῆς ἐνώσεως ἐτύγχανε γεγυνώς, εἰς δόλῳ ἀναγινώσκεται. Τῷ ὄντι δὲ εἰς δέμια ἑνωσις τῆς Σέρβων μετὰ τῆς ἐν Ῥώμῃ Ἐκκλησίας εἰς ἔργον ἤχθη. Οὕτως ἐπὶ τῆς ῥηθείσης Ἐπιστολῆς Ἰννοκεν[...]: προῖόντος τῷ λόγῳ: „Σὺ δὲ τὴν Σερβίαν ἐκπεπορθηκώς, καὶ Στέφανον ἐξελάσας, τὸν δὲ Φῆλκον ἐπὶ τῆς Ἀρχῆς ἀντικαταστήσας, διὰ τῶν τέττα ἀνὴγγεῖλας Ἀποκρισιαρίων, ὅτι τὴν χώραν ἐκείνῳ εἰς ὑπακοῇ τῆς Ῥωμάνης Ἐκκλησίας ἐπόθεις ἐναγαγεῖν, καὶ σαζομένους τῆς Σῆς δικαιοῦματος κατὰ τὰ ἐν τῷ Κόσμῳ καὶ πρόσκαιρα· ὅτι ἀνέξη καὶ τὸν ῥηθέντα Φῆλκον, πρὸς τῆς Ἀποστολικῆς Θρόνον ἀπολαβεῖν τὸ Βασιλικὸν Διάδημα. Ταύτην τοι καὶ κατὰ συμβεβηκὸς τὴν τῶν Σῶν Ἀποκρισιαρίων, ἔδοξεν ἡμῖν τῷ Σεβασμῶν Ἀρχιεπισκόπῳ Κολοκλυσίῳ τῷ Ἀδελφῷ ἡμῶν ἐπιτρέψαι τὸ ἔργον, ἵνα τὸ πᾶν διαπράττηται. Ἀλλὰ καὶ διετίνας ἐξ ἐκείνων ἤδη παρελθούσης, εἰς δέμιαν ἔπῳ καὶ νῦν τῶν πραγμάτων γενομένῳ πρόοδον οἶδαμεν.„

Τελούταῖοι δὲ καὶ Δανιὴλ ὁ Δεξ Ῥώσων ὁμοίως, εἴτι ποτ' ἔφη, ἢ ἐπηγγείλατο ὑπὲρ τῆς μετὰ Λατίνων ἐνώσεως, ἐπὶ σκοπῷ μόνῳ προέβητο τῆς εἰς Βασιλέα χριθῶναι πρὸς τῆς Ἐκκλησίας

Ψ ψψψψ 2

τῆς

τῆς Ῥωμανικῆς ταύτητοι καὶ τῷ ποθμμένῃ τυχῶν, ἐπὶ τῶν-  
 τῶν πάλιν μετετράπετο δημοσίᾳ. ΚΡΟΜΕΡΟΣ γὰρ ἐν Βιβλ:  
 Θ'. τῶν Πολωνικῶν: „Πρεσβείας (φησὶ) πρὸς Ὀπίσωνα τὸν  
 „ἐν Πολωνίᾳ Ἀποσολικὸν Λεγάτον πεμφθείσης, ὑπὶχινόμενος ἀν-  
 „τὸς σὺ παντὶ τῷ ἰδίῳ ἔθνεϊ, τῇ Ῥωμανίδι Καθολικῇ Ἐκκλη-  
 „σίᾳ εἰς ἐνότητα προσελθούσῃ, καὶ ταῖς Χριστιανικαῖς χώραις,  
 „κατὰ τῶν μέγα τὸ τιμικαῦτα δέος τοῖς Χριστιανῶν πᾶσι Δωά-  
 „σαις ἐμβαλόντων Ταρτάρων ἐπαμυνῆσθαι· τό, τε ὄνομα, καὶ τὸ  
 „διάδημα τὸ Βασιλικόν, ἐαυτῷ τε καὶ τοῖς μετ' αὐτὸν Ἀπογόνοις  
 „(ἐδέν τι, Πρενδότῃ τῷ Κρακοβίᾳς Ἐπισκόπῳ, καὶ τινων ἄλλων,  
 „Ὀπίσωνα ἀποτρεπόντων) ἐξεδυσώπησεν. Ἄλλὰ τυχῶν ἔπερ  
 „ἐπόθει, τῷ τε δοθῆσαν πίσιν, καὶ τὸν ὄρκον ἠθέτησε· καὶ  
 „τῷ προτέρῳ πάλιν· κακοδοξίαν κατενεχθεὶς, ἔχ' ὅπως κατὰ  
 „τῶν βαρβάρων Χριστιανοῖς ἐκ ἐπήμωσεν, ἀλλὰ προσέτι, ὡς ἐρη-  
 „ται, πρῶτον μὲν ἅμα Ταρτάροις, ὕστερον δὲ καὶ ἅμα Λιθουοῖς,  
 „Χριστιανοῖς ἐπιθέμενος παρηνόχλησεν,.. Ὁ δὲ ΜΙΧΩΒΙΟΣ  
 Βιβλ: Γ'. Κεφαλ: ΜΓ'. „Δανιὴλ τὸν Δροχικὴν καὶ Κιαβίαν  
 „Ἀρχοντα, τὸν ἐν Ἀρχισὶ Ῥώσων διώμεν διαφέροντα, δεόμε-  
 „νον τε καὶ καθυπὶχινόμενον μετὰ πασῶν τῶν Ῥωσικῶν χω-  
 „ρῶν, τῷ κατὰ Γραικὸς διατύπωσιν κατὰ λιπόντῃ, εἰς ὑπακοὴν τε  
 „καὶ κοινωνίαν τῆς Ῥωμάνης μετασῆσθαι Ἐκκλησίας· Ὀπίσων  
 „ὁ προῤῥηθεὶς Λεγάτος, ἐν τῷ αὐτῷ ἔτει 1246. ἐν τῷ Κίεφ  
 „κατέψεψε τε αὐτὸν καὶ ἔχρισεν, εἰς Βασιλέα ἐπὶ τῶν Ῥώσων  
 „ἐσόμενον: τῷ ὅπερ ἅπαντες οἱ ἐν Πολωνίᾳ Ἀρχιερεῖς ἐτύγχα-  
 „νον ἀποτρέποντες, τῷ τῷ Δεκάδῳ Δανιὴλ ἐν εἰδότες πίσιν δο-  
 „λεράν τε ἔσαν καὶ ἄστατον, ὡς ἔπειτα ἀναπέφηνε,.. Καὶ ἐν  
 τῷ Γ'. δὲ Βιβλ: Κεφαλ: Ν'. ἐν ἔτει 1249. „Ἐπὶ τῷ αὐτῷ  
 „δ' ἐνιαυτῷ, Ἀλβερτος ὁ ποτὲ μὲν Ἐπίσκοπος Ἀρμακάνος, τιμι-  
 „καῦτα δὲ ὑπὸ Ἰννοκεντίου τῷ Δ'. εἰς Ἐπίσκοπον Πρωσίας προ-  
 „αχθεὶς, ἐπὶ Δανιὴλ τὸν Ῥωσίας ἀπεσαλμένος, ὑπακύνει αὐτὸν  
 „ἀπηγῆτο τῇ Ἐκκλησίᾳ τῇ Ῥωμανικῇ· ὁ δὲ τῇ Ἀποσολικῇ  
 „ἀπαιτήσῃ μηδαμῶς πειθαρχήσας, ἀπέλυσε τὸν Ἀποσολικὸν  
 „Λεγάτον ἄτερ τιμῆς,.. Καίπερ δὲ καὶ δεύτερον τέως διὰ Πα-  
 „πικῷ Λεγάτῳ ὁ αὐτὸς Δανιὴλ Βασιλεὺς κατεσέφθη, καὶ τῷ  
 „ὑπακοὴν αὐτῷ τῇ Ῥωμάνῃ Ἐκκλησίᾳ ἐνομώτως ὑπέχετο, καὶ  
 πάλιν μὲν τοιγε τῷ τοιᾶδε ἀπέση φρονήματος. Οὕτω γὰρ ὁ  
 ΜΙΧΩΒΙΟΣ ἐν τῷ Γ'. Βιβλ: Κεφαλ: ΝΓ'. „Ἐξ ἐπιτάγματος  
 „Ἰννοκεντίου Πάπα τῷ Δ'. ἐν ἔτει Σωτηρίῳ 1253. Ὀπίσων ὁ  
 „ἐκ Μεσσανίας, ὁ τῷ Θρόνῳ Λεγάτος τῷ Ἀποσολικῷ, παραλαβὼν  
 „μετ' ἑαυτῷ Πρενδότῃ τὸν Κρακοβίᾳς Ἐπίσκοπον, μετὰ καὶ  
 „ἄλλων τινῶν Ἐπισκόπων, Δανιὴλ τὸν Δεκά Ῥωσίας, τὸ δού-  
 „τερον, ἀνεγκαινίσας δηλονότι τῷ προτέρῳ ἀνάψεψιν, ἐν τῷ  
 „Δρο-



„Δροχικίωσίω ἸΑσει εἰς Βασιλέα τῶν Ῥώσων ἐπανέστειψεν, ὅρκω  
 „ἐπομωσάμενον: ἡμῶν, τῆς μὲν κατὰ τῆς Γραικῆς ἱεροτελεσίας  
 „ἀποσηῖναι, τῇ δὲ κατὰ τὴν Ῥωμάναν Ἐκκλησίαν πιστῶς αὐτὸν τε,  
 „καὶ τὸ Ῥωσικὸν ἅπαν ἐφέσειται,,. Ἀλλὰ γὰρ, (παρεκτὸς τῶν  
 πολέμων, ὅς τὸ ἀπ' ἐντεῦθεν διέξεισι τὸν Δανιὴλ τοῖς Πολωνοῖς  
 ἐπενωχέναι, (Βιβλ: Γ'. Κεφαλ: ΜΓ'. καὶ ΜΗ'. ἐν ἸΕται 1260.  
 καὶ 1262. Καὶ Κεφαλ: ΜΕ'. ἸΕται 1265.) καὶ ταῦτα ἐτι προ-  
 σέθεν ἐπὶ τῇ ΝΕ'. Κεφαλαίᾳ: „Ἐν δὲ τῷ προβόρῳ ἐνι-  
 „αυτῷ 1266. Δανιὴλ ὁ Ῥώσων Βασιλεὺς, Σχισματικὸς τε ὢν,  
 „καὶ τῆς Ῥωμάνας Ἐκκλησίας Ἀποστάτης, τὸ εἶναι ἐξετέλεσεν ἐπὶ  
 „δυσὶν Ἰέσι, Λέοντι καὶ Ῥωμανῷ, ὅς κατέλιπεν,,.

Ἦ δ' ἀντεπῆγον ἀνωτέρω, ὡς δῆθεν μετὰ τὴν τῇ Ῥωμα-  
 νῷ τελευτῇ, Λατῖνον οἱ Ῥώσσοι ἑαυτοῖς προέβουτο ἸΑρχοντα,  
 καὶ τῆς μετὰ τῶν Ῥωμάνων κοινωνίας ἐν ἐφέσει γεγονῶσι, ψῦ-  
 δὲς δῆπερ καταφαίνεται ἐκ τῆς: ὅτι δέει τῷ περὶ τῆς Ἰδίας Πί-  
 σης, τὸν Λατῖνον αὐτῶν Δωσῶν οἱ Ῥώσσοι ἐξήλασαν, ὡς ΚΡΟ-  
 ΜΕΡΟΣ ἰσορεῖ ἐν τῷ Ζ'. Βιβλ: περὶ τῶν Πολωνικῶν: „Ἰπερ  
 „οἱ Ῥώσσοι ἀπαρεσκόμενοι, ὡς ἀήθεις μὲν ὄντες ἄρχεσθαι ἀπ'  
 „ὁθνεῖων· δεδιότες δὲ, μὴ μετὰγε τῇ ἸΑρχοντος, καὶ τὸ θρήσκευ-  
 „μα ὡσαύτως τὸ ἑαυτῶν, ἔπερ ἀπρὶς μάλα εἶναι ἐχόμενοι,  
 „μεταβαλεῖν προσαναγκαθεῖν, ὡς ἡδιστα σὺν Μεσκισλάω, τῷ  
 „τῷ Ἀλικίαν κατὰ Κλήρη δικαίωμα ἀπαιτῶντι, κατὰ τε Οὐγ-  
 „κρων καὶ Πολωνῶν συμπεπνύκασιν,,. Καὶ ΜΙΧΩ' ΒΙΟΣ δὲ ἐν  
 Βιβλ: Γ'. Κεφαλ: ΛΑ'. „Εἰς ἸΑλικὸν παραγενομένης, καὶ διὰ Βι-  
 „κεντίας τῇ Κρακοβίας, καὶ ἐτέρων Οὐγκρίας Ἐπισκόπων εἰς Βα-  
 „σιλέα Γαλλικῆς ἀναστειφέντος τε καὶ χριθέντος, οἱ Ῥώσσοι  
 „ἐτράποντο πρὸς ἀπέχθειαν, καὶ αὐτῇ ἀπηλλοτριώθησαν, δε-  
 „διότες μὴ διὰ τῶνδε τῶν τελετῶν, καὶ τὸ αὐτῶν γένος εἰς  
 „ὁλεθρὸν καταντήσῃ. Μεσκιλάος τοίνυν κτ: ἸΕθεντο ἐν ἸΕται  
 1232. ὑπὸ Γερμανῷ τῇ Πατριάρχῃ τοῖς Καρδινάλεσιν ἐπισέλ-  
 λοντος, πρὸς γε τοῖς ἄλλοις ἸΕθνεσι, τοῖς πρὸς μὲν Λατῖνους ἀκοι-  
 νωνήτοις, κατὰ δὲ τῆς Γραικῆς ἐν ἅπασιν φρονέσι, καὶ ὁ λαὸς  
 ὅλος ὁ τῆς Ῥωσίας ἡρίθμηται, ὡς ἡδὴ τῶν ἐκείνῃς ῥημάτων φθά-  
 σαντες ἀκηκόαμεν.

Ὁ δ' ἀνωτέρω ἀντιπροτείνων, (26) ὅτι καὶ τοῖς Λατῖνοις  
 ἔσθ' ἂν τῶν Μονασιῶν ἐπιτέτραπται ἔχειν ὁ αὐτὸς προσέειπεν:  
 „Καὶ τοι Κρομέρος αὐτόθι σωῆψε τῷ Δλεγόσσῳ παρηκολαθηνῶς,  
 „ἐν ἸΕται 1233. ὅτι Βλαδίμοιρος ὁ Ῥεριοβίγιος, δεδιὼς μὴ τὸ  
 „ἴδιον θρήσκευμα, τὸ κατὰ Γραικῆς, διὰ τῶν Κηρύκων Πατέρων,  
 ἸΑν-

(26) Κιχάβιος περὶ τῆς ἸΑρχῆς τῇ Πάπῃ, Προτάσει Ε'. Σελ: 265.  
 Τόμ: Β'. Ω ωωωωω

„Ανδρῶν δηλονότι ὁσιότητι καὶ ἀρετῇ πολιτεύματος κεκοσμημέ-  
 „νων, ἀναβραπείη, ἀπὸ Κιαιβίας τέττας ἐξήλασεν,,. Ὅποῖος δέ τις  
 ἄρα ὁ λόγος ἂν εἴη, πρὸς διαπίσωσιν τῆς μετὰ Λατίνων ἐνώ-  
 σεως, τὸ τοῖς Λατίνοις ἐπίδοθῶμαι ἐν Μονασήριον; „Τελούταϊον  
 „δ' ἦπερ φησὶ ΚΡΟΜΕΡΟΣ, ἐν τῷ Θ'. Βιβλ: τῶν Πολωνικῶν,  
 „ὡς τῇ τελετῇ ἐκείνῃ παρήσαν ὅτε Ἀρχιεπίσκοπος, καὶ οἱ τῆς  
 „Πολωνίας Ἐπίσκοποι, ὅσοις δῆποτε παρῆναι ἐνεδίδεχ ἢ περιῆσα  
 „ῥῶσις τε καὶ ὑγίεια ὁμοίως δὲ καὶ Γεράρδος ὁ Ῥώσσω, καὶ  
 „Βίτος ὁ τῶν Λιτθανῶν, οἱ Ἐπίσκοποι καὶ γὰρ οἱ μὲν, εἰς τῶν  
 „Χριστιανῶν ἤδη προσήεσαν Πίσιν, οἱ δὲ Ῥώσσοι εἰς κοινωνίαν  
 „τῆς Καθολικῆς σωήλθουσιν Ἐκκλησίας ὧν ἐκάτερον ἐφεξῆς  
 „πληρέξερον ἐκδησόμεθα,,. Ἀλλ' ὅγε περὶ τῆς τῶν Ῥώσσω  
 ἐνώσεως μετὰ τῆς Ῥωμάνας Ἐκκλησίας παρασπάπτει, τὸ τῷ  
 Δεκάδῳ Ῥωσσίας Δεσπότην ὑπαντίττειν, περὶ ᾧ ἐρηται. Οἱ δὲ δύο  
 Ἐπίσκοποι ὁ Λιτθανίας καὶ ὁ Ῥωσσίας, ἔτω γὰρ περὶ τέτων  
 ΜΙΧΩΒΙΟΣ ἐν Γ'. Βιβλ: „Κεφαλ: ΝΑ'. „Ἐκ τῶν Πνευματι-  
 „κῶν παρήσαν, Ὅπισσων τε ὁ Ἀββᾶς ἀπὸ Μεσζάνης, ὁ τῷ Ἀπο-  
 „στολικῷ Θρόνῳ Λεγάτος, καὶ Φέλικων ὁ Ἀρχιεπίσκοπος Γνέσνης,  
 „καὶ Πρανδόθης ὁ Κρακοβίας, καὶ Θωμάς ὁ Βραβισλαβίας, καὶ  
 „Βολίμερος ὁ Βλαδισλαβίας, καὶ Ἀνδρέας ὁ Πλοκλώσης, καὶ Γεράρ-  
 „δος ὁ τῶν Ῥώσσω πρῶτος ἐκ τῆς τάξεως τῶν Κισερκισίων,  
 „ὁ ποτὲ Ἀββᾶς ἐξ Ὀππάτω, καὶ Βίτος ὁ τῶν Λιτθανῶν πρῶ-  
 „τος ἐκ τῆς τῶν Κηρύκων τάξεως, οἱ Ἐπίσκοποι ἦπερ δὲ, κατ'  
 αὐτόγε τέτο τὸ ἔτος ὁ Πάπας Ἰννοκέντιος ὁ Δ'. διατρίβων ἐν  
 Ἀσσισίῳ, ἐνετέλλετο τῷ ἐκ τῆς τῶν Κηρύκων τάξεως Προβιν-  
 κιάλει ἀποστέλλειν πρὸς Ῥώσσης τῶν τινας ὑπ' αὐτὸν Μονασίων,  
 ἵν' αὐτὰς εἰς ὑπακοὴν τῆς Ῥωμάνας Καθέδρας ἐπιστρέψωσι.  
 (παρὰ Βαδδίγγῳ ἐν τοῖς τῶν Ἐλασσόνων Χρονι: ἐν ἔτει τῷ  
 αὐτῷ.)

Ὁ δὲ τῇ ἐπὶ Ἰννοκέντι τῷ Γ'. ἀνῆκον ἐστὶ Σιωδῶν τῇ ἐν  
 Λατεράνῳ συστάσει (καὶ γὰρ καὶ τέτο ἀνωτέρω ἡμῖν προετένετο.)  
 ἐν αὐτῇ μόνως ἴσμεν Λατίνους παρεσέλασαντας, τῶν δὲ Γραικῶν  
 ἑδῆνα. Παρήσαν μὲν γὰρ οἱ Πατριάρχαι ὅτε Κωνσταντινουπό-  
 λεως, καὶ ὁ Ἱεροσολύμων, ἀλλὰ καὶ ἔτοι Λατίνοι ὁ μὲν γὰρ  
 Ἱεροσολύμων παρεγένετο ὡς ἐπικερταὶν αἰτησόμενος ἐπ' ἀναρ-  
 ρύσει τῆς Ἱερᾶς γῆς, πρὸς τῶν Βαρβάρων τῆς Ἱερουσαλήμ πάλιν  
 ἀλάσης. Ἐαλωκῆς δὲ ἤδη καὶ τῆς Κωνσταντινουπόλεως,  
 Φράγκοις τε καὶ Βενετοῖς σιωδιατεθέν ἦν πρὸς ἀλλήλους, ἵν' ὁ  
 μὲν Ἀυτοκράτωρ ἐκ Φράγκων, ἐκ Βενετῶν δ' ὁ Πατριάρχης  
 ἐκλέγοιτο περὶ ᾧ καὶ ἀνωτέρω δὴ λέλεκται. Ἀλλ' ἡ μὲν Κων-  
 σταντῖν ἑάλω τῆς ΙΓ'. Ἐκαλονταετηρίδος τῶν Σωτηρίων ἐνιαυ-  
 τῶν ἤδη ἐναρχομένης ἡ δὲ ἐν Λατεράνῳ Σιωδὸς σιωεκροτέτο  
 ἐν

ἐν ἔτει 1215. Ὡς ἐκάντευσθεν δρόνως καλαγέλασον φαίνεσθαι  
τὸν Ἰησάιτω, τὸν ἀνωτέρω προθέμενον (27): „Ὡς οἱ Γραικοὶ  
„τῷ μετὰ τῆς Ῥωμάνας Ἐκκλησίας ἔνωσιν ἐν ταύτῃ ἡσπάσαν-  
„το τῇ Σωόδῳ, ἀφ' ἧς μετὰ βραχὺ καλὰ τῷ αὐτῶν σωήθῃ  
„παλιμβελίαν ἐμελλον ἀποσήσεσθαι.

Περὶ μὲν ἔν τῆς ἐνώσεως, τῆς ἐπὶ Ἰννοκεντίῃ τῷ Γ'. χει-  
ρὶ βιάει τοῖς Γραικοῖς ἐπικελεύσεσθαι, τοσαῦτα.

## Π Ρ Α Γ Μ Α Τ Ε Ϊ Α Ι Η.

Ἐν ἣ ἀποδείκνυται ὅθεν ὅλως σωτελεῖν Λατίνοις, τὴν ὑπὸ τῷ  
Αὐτοκράτορος Μιχαήλ τῷ Παλαιολόγῳ προαχθεῖσαν τῆς  
Ἀνατολικῆς τε καὶ Δυτικῆς Ἐκκλησίας Ἑνωσιν.

Ἀπὸ τῆς τῶν Ἐκκλησιῶν ἐπὶ Ἰννοκεντίῳ τῷ Γ'. Ἑνώσεως, ἐπὶ  
τῇ διὰ τῆς ἐν Λαγδάνῳ Συνόδῳ ἐπιχειρηθεῖσαν, μεταβαίνουσιν οἱ  
Λατίνοι. Καὶ Α'. μὲν φασίν, ὅτι ὁ Αὐτοκράτωρ Μιχαήλ ὁ Πα-  
λαιολόγος, τὸν Κρότωνος Ἐπίσκοπον (1) αὐτεπαγγέλτως μετα-  
πεμψάμενος, ἵν' ὅπως ἄρα ἡ ἐν Ῥώμῃ Ἐκκλησία Πίσεως ἔχῃ  
παρ' αὐτῷ διαπύδηται· καὶ διὰ τῆς τέτῃς Κατηχήσεως ἐπιστρέψας,  
Οὐρβανῷ τῷ Πάπᾳ ἐπέστειλεν ἐπὶ τῇ Ἑνωσιν προκαλέμενος, καὶ εἰς  
ὑπακοὴν τῆς Ῥωμάνας Καθέδρας τὰς Ἀνατολικὰς Ἐκκλησίας  
ἀποκατάσῃσιν, προθύμως ἔχειν ἐπιδεικνύμενος. (Σώζεται δ' ἡ  
τοιαύτη Ἐπιστολὴ παρὰ ΒΖΟΒΙΩΙ ἐν Ἑτῇ 1263. Ἀριθμ.: ΙΓ'.)  
Οὐχ ἅπαξ δὲ, φασίν, ἀλλὰ καὶ ὀκτώτερον δὴ, καὶ τρίτον, τὰ  
αὐτὰ ἐπιστέλλων ἐδέϊτο, πρὸς τρέπετο, ἐπιμόνως ἡτέϊτο· ὡς δῆλον  
ἐκ τῶν τῷ Πάπᾳ Οὐρβανῷ τῷ Δ'. Ἐπιστολῶν, τῶν πρὸς αὐτὸν  
Μιχαήλ τὸν Αὐτοκράτορα. (αἱ παρὰ Βζοβίῳ καὶ αὐταὶ κεῖνται,  
Ἑτῇ 1339. Ἀριθμ.: ΛΓ'.) Ἐπὶ τέτοις Οὐρβανῷ τελευτήσαντος,  
καὶ πρὸς Κλήμεντα ὁμοίως τὸν Δ'. ἐκὼν αὐτῷ διασημιώσασθαι ὁ  
ῥηθεὶς λέγεται Αὐτοκράτωρ, μηδέν τι πρότερον ποιῆσθαι τῆς τῶν  
Ἐκκλησιῶν ἑνώσεως. (παρὰ Βζοβίῳ Ἑτῇ 1266. Ἀριθμ.: Θ'.)  
Τῷ δὲ Θρόνῳ τῆς Ῥώμης ἐφεξῆς χηρῶντος, καὶ πρὸς τὸν  
Οὐγκρίας Ἀνάστοντα Λαδοβίκον τῶς διαπρεσβυδομένου ἀποστεί-  
λασθαι, καὶ τέτῃς δαΐσθαι διατητητῶ καὶ μεσίτῳ γενέσθαι, ὡς ἂν  
διαπραχθεῖν τέως ἢ ἑνωσιν· ἣ τῷτο δηλῆται, ἐξ ὧν οἱ Καρδι-  
νάεις πρὸς τῶς ἐπὶ τῆς Κωνσταντίνης Λεγάτους ἔγραφον. (παρὰ  
ΒΑΔΔΙΓΓΩΙ Τόμ.: Β'. τῶν Χρονικ.: τῶν Ἑλασσόν: Φράρ: Ἑτῇ  
1270.) Γρηγορίῳ τοίνυν ἐπὶ τῇ Ῥώμῃ Ἀρχιερατείαν προβι-  
βαθέν-

(1) Ἡ Κρότων τῆς ἀπωτέρας Καλαβρίας ὀχυρὸν Ἄστυ ἦν ὁ Ἐπίσκοπος ὑπὸ τὸν Σεβή-  
ρινόν Ἀρχιεπίσκοπον ὑπέκειτο. (Μελετ.: Ἀθῶν: Γεωργ.: Σελ.: 283.)



βαθέντος, παραπλησίως ἀντίκα καὶ πρὸς τῷτον ἐκπέμψαι τὰς τῆς ἐνώσεως ἐπιμελησομένους, ὡς δῆλον ἐκ τῶν ΝΙΚΗΦΟΡΟΥ τῷ ΓΡΗΓΟΡΑ, (Βιβλ: Ε'. τῆς Ἰσορ:) καὶ τῷ ΠΑΧΥΜΕΡΟΥΣ. (Βιβλ: Ε'. Κεφαλ: ΙΑ'.) καὶ δὴ καὶ ἐκ τῶν Γρηγορίων τῷ Ι'. πρὸς τὸν Παλαμολόγον. (παρὰ ΒΖΟΒΙΩΙ ἐν Ἔτει 1339.)

Ὁ μὲν τοι ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ ἀπὴν ἤνατο εἰς κοινωνίαν τῆς Ῥωμάνας Ἐκκλησίας ἔχων προδέξαθαι, μὴ ἐν ἅπασιν σοιχᾶντα ταύτης τοῖς Δόγμασιν. Οὐδὲ γὰρ ἐγχαρᾶν ἐπὶ τῷ Σώῳδον ἀθροισθῆναι· μηδὲ γὰρ ἐξῆναι περὶ τῆς Ῥωμάνας Πίσεως ἐνδοιάξαι, ἢ περὶ τῆς ἐν αὐτῇ ἀληθείας τε καὶ ὁρθότητος ὅπως διαμφοισθῆναι τῆς δὲ τῶν Λατίνων Πίσεως πρότερον ὁμολογηθείσης, εἴθ' ἔτι καὶ Σώῳδον ἐφῆθα ὕστερον συγκροτᾶν. Σαφὲς δὲ καὶ ἐκ τῶν εἰρημένων Γρηγορίων τῷ Ι'. Ἐπιστολῶν, ὡς ὁ Αὐτοκράτωρ ἐξῆς τὸν τε Πατριάρχην, καὶ τὰς Ἐπισκόπους, καὶ τὰς Κληρικούς συγκαλέσας, εἰδὲν παρέλιπε τῶν ὅσα γε σωτελεᾶν ἐδόκει, ὥς τε αὐτὸς ἐπὶ τῷ τῶν Ἐκκλησιῶν εἰρῳίῳ ἀνακαλέσασθαι. (Παχυμ: Βιβλ: Ε'. Κεφαλ: ΙΒ'.) Ἐπιμελὲς δ' ἔχε καὶ Βιβλίον σύγγραφῶν, ἐν ᾧ ἀπεδεικνύετο μὴ οἶον τε εἶναι Λατίνους ἐπεγκαλεῖσθαι Αἱρέσεως. (Παχυμ: Βιβλ: Ε'. Κεφαλ: ΙΔ'.)

Ἀλλὰ καὶ ὁ ΒΕΚΚΟΣ τιμικαῦτα, ταῖς ΒΛΕΜΜΙΔΟΥ ἐνδὲς ἀποδείξει, τὰ Λατίνων Ἱερὰ, καὶ τῷ μετὰ τῆς Ῥωμάνας ἐνωσιν Ἐκκλησίας, ἐν ἐπαίνῳ ἐτίθετο. (Νικηφ: Γρηγορ: Βιβλ: Ε'. τῆς Ἰσορ: καὶ Παχυμ: Βιβλ: Ε'. Κεφαλ: ΙΕ'. καὶ ΙΣ'.) „Ἀλλὰ γὰρ τὰς τῶν Θεωπεσίων Πατέρων μαρτυρίας, (προσέθησι τις: (2)) πολλῷ δὴ μάλλον ὁ τηλικῶτος Ἀνὴρ κατενόησεν, ἢ ὁ „Παλαμάς, ὁ τῶν δεινῶν Αἱρέσεων, καὶ τῶν παρεμφερῶν τοῖς „Θαλμεικοῖς μυθάρων πλάσης ἢ, ἐκ οἷδ' ὅς τις Πλήθων, ἢ „Καεβάσιλας οἷς εἰς αὐτοὺς δῆπερ, οἱ τῶν προσοικειούμενοι Γραικοί, τοσῶτον ἐπεμαρτύρησαν σοφίας τε καὶ ὁσιότητος βίη, ὅσον „προσένειμαν Ἰωάννη τε τῷ Βέκκῳ, καὶ Νικηφόρῳ τῷ Βλεμμίδῃ, — „Ἐπειτα καὶ Μανυὴλ τῷ Καλέκῳ, καὶ Βαρλαάμῳ, καὶ Σχολαρίῳ, καὶ Βησσαρίωνος, καὶ Χρυσολάνῳ τῷ ἐκ Μεδιολάνων, καὶ τῶν (ἐκ τῶν παραπλησίων ἀλφίτων) ἄλλων ἐπιμνηθεῖς: — „Ὡδε ὑμᾶς (ὑποσυνάπτει) ὡς ὁσίοι τε καὶ Θεοφιλεῖς „Πατέρες προκαλεῖμαι, ἵνα, κατὰ τὸ περιὸν ὑμῖν εἰλικρινές τε „τῷ τρόπῳ καὶ φιλοδίκαιον, κρίνητε: πότερον ἀσφαλὲς ἄρα τὸ „βέλδυσμα, ἐπὶ ὁδῷ τῆς εἰς τῷ αἰώνιον σωτηρίαν ἀγάσης, καὶ „ἐπὶ τῶν Δογμάτων τῆς Πίσεως, παραλιπεῖν μὲν ὁδηγὸς τηλικῶς, οἷς καὶ αὐτοὶ Γραικοί, ὑψηλὸν μὲν τὸ τῆς σοφίας, „ἐπί-

(2) Κιχώσιος Ζητήμ: Ζ'. Σελ: 75.

Τόμ: Β'.

Α αααααα

„ἐπίσημον δὲ τὸ τῆς Ἀγιότητος ἐπιμαρτύρονται κλέος· ἔπειθαι  
 „δὲ ἐκείνοις, ὧν ἑδὲς παρὰ τοῖς ὁμογενέσι τοσαύτης ἔλαχε  
 „μαρτυρίας ἐπὶ σοφίᾳ καὶ ὁσιότητι; Ἐμοὶ γὰρ δοκεῖ, ὡς καὶ  
 „ἑδεμία παρὰ Λατίνοις προσέη Διδασκαλία, ἑδεμία Γραφή,  
 „ἑδεμία συζῶσα Σωὸδος, ἑδὲς τῶν Πατέρων τῶν Ἱερῶν· ζητῶν  
 „δ' ἐλείπετο Γραικοῖς παρὰ Γραικῶν μόνων, τὴν εἰς σωτηρίαν  
 „ἄγασαν τρίβον, καὶ τὴν Διδασκαλίαν τῆς Πίσεως· πολλὰ ἂν  
 „ἄμεινον βελοῦσεσθαι, εἰ ταύτῃ ἐζήτησαν παρ' ἐκείνοις, ἅς καὶ  
 „αὐτοὶ Σοφωτάτης ἐν τοῖς οἰκείοις γενέσθαι καθομολογῶσιν, ἢ  
 „παράτισι τῶν ἀπαιδύτων καὶ ἡμισόφων, ὧν ἡ σκεδὴ μία καὶ  
 „μόνη, τὸν τῷ Χριστῷ Κυρίῳ ἡμῶν διαβρῆξαι χιτῶνα τὸν  
 „ἄρραφον„.

Τοιγαρὲν καὶ τῶν Ἐπισκόπων τὰ τῆς ἐνώσεως ἀσπασόμε-  
 νων, ἀποσείλαντος Πρέσβεις τῷ Ἀυτοκράτορι, ἐντελῆ τε ἔσαν  
 τὴν ἐνωσιν ὑποδηλῶντος τῷ Πάπᾳ· Σωὸδον ἤδη κατὰ τὸ Ἀγδὸν-  
 νον σιωεκρότε Γρηγόριος ἐπὶ τέτῳ, ἐν ᾧ, παρὰ τῆς Ἀνατολι-  
 κῆς, καὶ τινες Λατίνων Ἐπισκόπων ἑκατοσῦες παρῆσαν. Ἐπὶ  
 δ' αἱ Ἐπιστολαὶ (3) ἅς ὁ Ἀυτοκράτωρ τῷ Πάπᾳ διὰ τῶν ἐρη-  
 μένων Πρέσβεων διεπέμπετο, τοιαῦτ' ἄτλα περὶ τῆς τῷ Ἀγ:  
 Πνεύματος Ἐκπορεύσεως περιέχον: (ἐν Τόμ: ΙΑ'. τῶν Σωοδικ:  
 Μέρ: Α'. σήλῃ 964.) „Πισθόμεν καὶ τὸ Ἄγ: Πνεῦμα πλήρη  
 „τε καὶ τέλειον εἶναι Θεόν. Θεὸν ἀληθινὸν ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱῶ  
 „ἐκπορευόμενον· καὶ αὐτὴ δὴ ἡ ἐν Ἀγδὸνῳ Οἰκουμενικῇ Σω-  
 δος τέττον ἀυτόθι τὸν ὅρον ἐξέθετο, σήλῃ 974. (4) „Μετὰ  
 „Πίσεως καὶ ἐνσεβείας ὁμολογῶμεν, ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα αἰ-  
 „ωνίως ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱῶ, ἔχ' ὡς ἐκ δυῶν Ἀρχῶν, ἀλλ' ἐξ ἁρ-  
 „χῆς μιᾶς· ἔχ' διὰ δισῶν Πνεύσεων, ἀλλὰ διὰ μιᾶς καὶ μό-  
 „νης Πνεύσεως ἐκπορεύεται. Τέτο ὡμολόγησεν ἄχρι τέτῃς ἐκλή-  
 „ρυξετε καὶ ἐδίδαξε· τέτο σεβρῶς κατέχει τε καὶ κηρύττει, καὶ  
 „ὁμολογεῖ, καὶ διδάσκει ἡ Ἀγιωτάτη Ῥωμᾶνα Ἐκκλησία, ἡ  
 „Μήτηρ καὶ Διδάσκαλος πάντων τῶν Πιστῶν· τέτο πρεσβεῖ  
 „τὸ τῶν Ὁρθοδόξων Πατέρων καὶ Διδασκάλων Λατίνων τε ὡσανύ-  
 „τως καὶ Γραικῶν, ἀπαραποίητόν τε καὶ ἀληθινὸν Φρόνημα.  
 „Ἀλλ' ἐπέπερ τινὲς δι' ἄγνοιαν τῆς ἀπαρατρώτῃς προτεθείσης δι-  
 „δασκαλίας, εἰς ποικίλας κατωλίθισαν πλάνας, ταῖς τοιαῦσδε  
 „ἀπάταις πάντοίαν ἡμεῖς ἀποφράξασθαι ἐφιέμενοι πάροδον, τῆς  
 „ἱερᾶς ταύτης ἐπικυρώσεως Σωὸδος, κατακρίνομέν τε καὶ ἐκκηρύτ-  
 „τομεν ἅπαντας τῆς ἀρνεῖσθαι τολμῶντας, αἰωνίως τὸ Ἅγιον  
 „Πνεῦ-

(3) Ἡ Μιχαὴλ τῷ Παλαιολόγῳ Ἐπισ: αὐτὴ πρὸς Γρηγ: τὸν Ι'. Ἐκλιωσί τε καὶ Λα-  
 τινισὶ ἀναγινώσκειται, καὶ παρὰ Ἀγδὸνῳ ἐν Τόμ: Ζ'. τῶν αὐτῶ Σωοδ: σήλῃ 693.

(4) Παρὰ δὲ τῷ Ἀγδὸνῳ Ἐνθ: εἴρηται, σήλ: 705.

„Πνεῦμα ἐκ τῆ Πατρὸς καὶ τῆ Υἱῶ ἐκπορεύεσθαι· καθάπερ ἔν  
 „καὶ τὰς κηρύττειν θρασυνομένους, ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ Πα-  
 „τρὸς καὶ Υἱῶ, ὡς ἐκ δυεῖν ἀρχῶν, καὶ ἔχ ὡς ἐξ ἀρχῆς μιᾶς  
 „ἐκπορεύεται,,.

Ἐπὶ τῆς Σωόδου ταύτης, καὶ αὐτὸν Μιχαὴλ παρσιᾶσαι  
 τὸν Αὐτοκράτορα, μαρτυρῶσι ΦΛΑΪΟΥΤΙΟΣ ὁ Βλόνδος, καὶ ῬΟ-  
 ΒΕΡΤΟΣ Γυαγυίνος, καὶ ἸΩΑΝΝΗΣ ὁ Ναύκληρος, καὶ ἄλλοι  
 παρὰ ΣΕΒΗΡΙΝΩ τῷ Βινίῳ, ἐν τῷ Βίῳ Γρηγορίου τῆ Γ'. παρ-  
 σιᾶσαι δὲ καὶ Γερμανὸν τὸν Πατριάρχην Κωνσταντινουπόλεως· πα-  
 ρσιᾶσαι δὲ καὶ τὰς Ἀποκρισιαρίδας τῶν Ἀνατολικῶν Ἐπισκόπων,  
 ὧν καὶ τὰ Γράμματα ἐν τοῖς Πρακτικοῖς τῆς Σωόδου ἐκείνης  
 ἐνδιασώζεται, σπᾶμα τῷ Ὁρκῷ, ὃν οἱ Ἀποκρισιᾶριοι, ὡς ἐξ  
 ὀνόματος τῶν ἰδίων Ἐπισκόπων ὁμωμόκασιν, ἐν ᾧ τε τῷ Λατί-  
 νων ἐπιβεβαῶσι Πίσιν, καὶ τῷ μετ' αὐτῶν ἔνωσιν. Καὶ ἔτω δὲ  
 καὶ ἐφεξῆς, τῶν τῆς Σωόδου Πρακτικῶν ἐν Κωνσταντινουπόλει  
 ἀναγνωσθέντων, ἥτε τῆ Πάπα Γρηγορίου μνεία ἐν τοῖς Ἱεροῖς  
 ἐγένετο, καὶ ὑπέρτατος Ἀρχιερεὺς τῆς Ἀποστολικῆς Ἐκκλησίας  
 ἀνεκηρύχθη, καὶ Πάπας Οἰκουμενικός. (Παχυμ: Βιβλ: Ε'. Κε-  
 Φαλ: ΙΒ'.) Ἐπεὶ δὲ, καὶ τῶν Ἰωάννου τῆ ΚΑ'. Λεγάτων πα-  
 ρόντων, ὁ Αὐτοκράτωρ αὐθις τὸν ὄρκον, ὃν ὁ ὑπὲρ αὐτῶν πρεσ-  
 βῶων ὡς ἐξ ὀνόματος αὐτῶν, ἐπὶ τῆς ἐν Λαγδάνῳ Σωόδου προο-  
 μωμόκει, καὶ πάλιν προσεπεκύρωσε. Καὶ Γράμματα δὲ πρὸς  
 τὸν Πάπαν ἐπιδὲς Ἰωάννῳ, τῇ τε τῆς Πίσεως Ὁμολογίᾳ, καὶ  
 αὐτῷ Γρηγόριος ὁ Γ'. προδιεπεπόμφει, καθυπέγραψεν ἔτι, καὶ  
 ὄρκον προσεπανείληφε τὸν αὐτόν. (παρὰ Βεδοίῳ ἐν Ἑτα 1276.  
 Ἀριθμ: Η'. καὶ Θ'.) Καὶ Βέκκος δ' ἐπὶ τούτοις, τὸ μεταξὺ  
 τινῶν, κατὰ τῆ Ὁρῆ τῆς Οἰκουμενικῆς Σωόδου, ἐν οἷς περ ἐκδε-  
 δώκασιν Λιβέλλοις, τῷ τῶν Ἀνατολικῶν ἔνωσιν ἀποδοκιμαζόντων,  
 διαφερέσας ἄλλας ἀντεκδεδωκὼς Συγγραφαὶς αὐτοῖς ἐκείνων κα-  
 τεξήλεγξε τῷ ἀπόνοϊαν. (Παχυμ: Βιβλ: Ε'. Κεφαλ: ΚΗ'. καὶ  
 Βιβλ: 5'. Κεφαλ: ΚΓ'.) Ἐξ ὧν, Λέοντος τῆ Ἀλλατὶς Λατινιστὴ  
 διηρμηνεύκωτος, τετύπωνται ἐν Μογαντίᾳ κατὰ τὸ 1655. Βιβλ:  
 τρία περὶ τῆς Ἐκπορεύσεως: τῆ Ἀγίας Πνεύματος, πρὸς Θεόδωρον  
 τὸν Σαγδίας Ἐπίσκοπον. Ἐρμηνεύσαντος δὲ Πέτρου τῆ Ἀρκε-  
 δίας, τετύπωνται Γραικο - Λατινιστὴ ἐν Ῥώμῃ, Ἑτα 1630.  
 καὶ αἱ τῶν Ῥήσεων τῶν Πατέρων Συλλογαὶ, αἱ περὶ τῆς  
 τῆ Ἀγ: Πνεύμ: Ἐκπορ: μετὰ καὶ τῶν ἐπὶ ταῖς αὐταῖς Ἐπι-  
 γραφαῖν. Τὰ δέ τοι λοιπὰ τῶν τῆ Βέκκου Συγγράμματα, κα-  
 ταλέγει Λέων ὁ Ἀλλατίος ἐν τῷ Β'. Βιβλ: τῆς Διωκεῖς Συμ-  
 φωνίας τῶν Ἐκκλησιῶν, Κεφ: ΙΕ'. Ἀριθμ: Η'. Τοῖς δὲ δὴ  
 Λατίνοις ἐπαμυνῶν καὶ ὑπὲρ τῆς ἐνώσεως γεγραφέναι λέγεται  
 καὶ ὁ Διάκονος ΓΕΩΡΓΙΟΣ ὁ Μετοχίτης. Τὰς δέ τοι Πραγμα-  
 Α ααααα 2 τείας

τέας ταύτας ἐξαριθμεῖ Λέων ὁ Ἀλλάτιος ἐν τῇ περὶ τῶν Γεωργίων διατριβῇ, ἣτις ὑποσηῖπται τῇ Ἱστορίᾳ Γεωργίας τῇ Ἀκροπόλει, τῇ ἐν Παρίσι: Ἐκδοθείση, ἐν Ἔτ: 1651. Σελ: 345 καὶ 346. Καὶ ἐν τῷ Β'. δὲ τῆς τῶν Ἐκκλησιῶν Συμφ: Βιβλ: Κεφ: ΙΔ'. Ἀριθμ: Θ'. Οἷς περὶ δὴ καὶ τὰ ὑπὸ ΣΙΜΩΝΟΣ τῷ Κωνσταντινουπόλεως ὑπὲρ Λατίνων συγγραφέντα συγκαταλέλεκται. Αὐτ: Ἀριθμ: Θ'. Ὁ δέ τοι Βέκκος τελοῦνταῖον Σωόδοτον ἐκ πλειόνων Ἐπισκόπων ἀθροίσας, Ἐπιστολὰς ἐπέδωκεν Ἰωάννῃ Πάπᾳ τῷ ΚΑ'. ἐν αἷς διεξοδικῶς ἐπιβεβαιῶται, ἡ ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱὸς ἅμα Πρόοδος τῇ Ἀγ: Πνεύματι. Ἐμφέρονται δὲ αἱ Ἐπιστολαὶ αὗται, ἐν τῷ ΙΑ'. Τόμ: τῶν Σωοδικῶν Μέρ: Α'. σήλ: 1034. Προσέθετο δὲ καὶ Σωοδικῶν ἑτέραν, ἐν ἣ, οἱ τῶν μετὰ Λατίνων γενομένων ἔνωσιν ἀκυρῶντες, Ἀφορισμῶν πάντες ὑπόδοκοι κρίνονται· καὶ δὲ καὶ αὕτη αὐτόθι σήλ: 1037. Καὶ ταῦτ' ἄρα Λατῖνοι προτείνεν ἔχον, περὶ τῆς ὑπὸ Μιχαὴλ τῷ Ἀυτοκράτορος προαχθείσης ἐνώσεως,

#### Ἀ Ν Τ Ι Θ Ε Σ Ι Σ. Α'.

Ἀλλὰ γὰρ Α'. καὶ τῶν πάντων βεβαίων ἐστίν, ὅτι Μιχαὴλ ὁ Παλαιολόγος, ὁ τῆς εἰς πείραν ἐλθέσης ἐκείνης ἐνώσεως τῶν Ἐκκλησιῶν ἀρχηγὸς καὶ προαγωγεὺς, ἐπὶ σκοποῖς ἡκιστα δῆπρ Θεοτέροις, ἀπλῶς δ' ἀνθρωπίνοις, ὡφθη τῶν ψυχῶν ἐπιστρέψας ἐπ' ἐκείνῳ τῶν ἔνωσιν. Οὐδὲ γὰρ ἔχεν ὁρᾶν ὅπως ἄλλως, τὸ ἀρτίως οἱ προσανακλῆθῃν, ἀπεληλαμένων Λατίνων, Κωνσταντινουπόλεως Κράτος, κατ' ἐκείνων τε δὴ, καὶ κατὰ τῇ Πάπᾳ ἅμα, κρατωθείη αὐτῷ καὶ ἔμπεδον γένοιτο, ἔδ' ὅπως ἀπὸ τῆς λοιπῆς Ἑλλάδος τὰ Λατίνων προσαπεξελάσσειε λάψανα. Τῷ γὰρ ὄντι αὐτίκα ὡς ἡ Κωνσταντινὴ ἐάλω, τῶν στυροφορίαν ὁ Πάπας κηρύξαι κατὰ τῇ Μιχαὴλ ἀνεβάλετο. Περὶ δὲ ΒΑΔΔΙΤ-ΓΟΣ, ἐν τῷ Β'. Τόμ: τῶν Χρονικῶν τῶν Ἑλασσόν. Φράρ: Ἔτ: 1261. Ἀριθμ: ΙΖ'. Ἐνθεν τοι κατ' ἀρχὰς μὲν πλατύομενος μόνον πρῶτεν Λατίνους τῶν ἔνωσιν· ὡς ἂν ἐπὶ τῇ τοιαύτῃ ἐλπίδι τὰ Λατίνων ὅπλα ἀφ' ἐαυτῶν ἀποτρέψει· καὶ τοιγε τὸ μετὰ ταῦτα τῶν Πάπων ἐγκειμένων τε καὶ κατεπειγόντων, ἐναχθεὶς μὲν ὑπὸ τῆς ἀνάγκης, ὡς ἡκιστα δὲ ὑπὸ λόγων κινήθεῖς τῶν τῆς ἀληθείας, τὰ τῆς ἐνώσεως ἐκθύμως πρὸς τρέπετο. Διαβρόνδω δὲ ταῦτα ΒΖΟΒΙΟΣ, ἐκ τῶν Ἐπιστολῶν Κλήμεντος τῷ Δ'. κατὰ τὸ 1266. Ἔτος, Ἀριθμ: Θ', διέξασιν: „Ἐν ᾧ ταῦτα κατ' Ἰταλίαν ἐπράττετο, Μιχαὴλ ὁ Παλαιολόγος τὰς αὐτῶν ἐπικαλύπτων μηχανουργίας, πρεσβείαν ἀπέσταλκε πρὸς τὸν Ποντίφικα, ἑτοιμόν τε ἐν ᾧ πασι καὶ ὑποπειθῇ τῷ Κλήμεντι ἐαυτὸν „ἐσώ-



ἡτόμενον κατεπαγγελλόμενος. Οὗ δέ τοι Πάπας ἐκ ἀγνοῶν αὐ-  
 τὸν, σιωάμα τῷ Μανφρέδῃ κατὰ Καρώλα συμπνύσαντα, καὶ  
 ἡμὸν ἄλλο διὰ πικρίας ποιεῖμενον, ἢ ὅπως Βαλδερίον καὶ τῆς  
 ἐν Ἐλλάδι γωνίας ἐς ἡμῶν ἐκπεφύγει προσεξελάσεις, τὰς δὲ  
 Καρώλας διωάμεις, τῷ αὐτῷ δι' ἀγκιστεῖαν τότε βοηθεῖν προαι-  
 ρημένους, τάχα δὲ καὶ πρὸς τὸ Κωνσταντινουπόλεως Κράτος προ-  
 σπιχαινόντος, ἀποτρέψει· τὴν μετὰ Μανφρέδου τῷ ἀρτίως ἀναι-  
 ρεθέντος δολερὰν σύμπνοιάν τε καὶ Φιλίαν, καὶ τὰς πρὸς ἐκεί-  
 νον σωθήκας αὐτῷ κατωνείδισεν· ἅμα δὲ καὶ παρήγει ἐπιδή-  
 λως ἐνδείξασθαι, εἰ βάλοιτο τοῖς τῷ Ἀποστολικῷ Θρόνῳ ἐπιτάγ-  
 μασι πειθαρχεῖν, καὶ πρὸς τὴν τῆς Ἐκκλησίας ἐνότητα σιωά-  
 μα τοῖς ὑπ' αὐτὸν τελῶσιν ἐπανιέναι, καὶ τὸν τῆς Πίσεως τύ-  
 πον, ὃν ἐξ ἔθους ἀρχαῖς πεπόμενοι ἀναφανδὸν ἐπαγγέλλεσθαι.  
 Πάλιν δὲ ὁ αὐτὸς Βεόβιος, ἐξ ἄλλων ἐτι Ἐπιστολῶν τῷ Δ'. Κλή-  
 μεντος ἐν Ἑτ' 1267. Ἀριθμ.: Δ'. „Οὗ δὲ Παλαιολόγος ἐς τό-  
 δε διεταλαντόβετο, ἅτε δὴ μὴ εἰλικρινῶς ἐπαγόμενος, ἐπειγό-  
 μενος δ' ὑπὸ τῆς ἀνάγκης, τὴν κατὰ τὴν Ῥωμάναν Ἐκκλησίαν  
 Πίσιν, καὶ τὴν μετ' αὐτῆς κοινωνίαν προέτεινε, καὶ ἐν δόλῳ  
 καθυπιχνεῖτο προσήσεσθαι. Περὶ ἧς δὴ ὁ Ἀρχιερεὺς Κλήμης,  
 ἐφ' ᾧ τὴν γνώμην αὐτῷ βεβαιότερον διαγνώσκει, τὸν ὑπὸ τῷ  
 Ἀποστολικῷ Θρόνῳ συλληφθέντα τῆς Πίσεως τύπον αὐτῷ διε-  
 πέμψατο, ὡς ἂν ἐκ τέτταρ' ἐνώπιον τῶν διορισθέντων Ἀποκρισια-  
 ρίων, ἅμα τῷ Πατριάρχῃ, καὶ τοῖς Ἐπισκόποις, καὶ τῷ Κλήρῳ, καὶ  
 τῷ λαῷ δημοσίᾳ, κατὰ τὸ ἀρχαῖον ἔθος τὴν ὁμολογίαν ποιή-  
 σαι· καὶ ὅπερ ἔν ἡ Ῥωμάνᾳ Ἀγίᾳ Ἐκκλησίᾳ πισθούσα τε  
 ἔη καὶ ὁμολογῶσα, τῷ αὐτῷ καὶ αὐτὸς πισθύνει τε καὶ ὁμολο-  
 γεῖν ἐμφανῶς ἀνακηρύξει, σὺ παντὶ τῷ Κλήρῳ καὶ τῷ λαῷ  
 ἐπὶ τὴν τῆς αὐτῆς Ἐκκλησίας ἐπιστρέψας ἐνότητα.

Ἐπὶ τοῖς ἤδη ρηθεῖσι, καὶ τὰς Καρώλας προσέτι πολεμικὰς  
 δείσας παρασκυδὰς, τὴν τοιαύτην ἔνωσιν παρεισάξαν ὁ Μιχαὴλ  
 Γρηγορίῳ τῷ Πάπᾳ κατεπηγγέλατο· ἔτω γὰρ ΝΙΚΗΦΟΡΟΣ  
 ὁ Γρηγορίας διεξιὼν φέρεται ἐν Ε'. Βιβλ.: τῆς Ἰσορ: Σελ.: 74.  
 „Οὐδὲν ἀνάγκαις τοσαύταις σωεσθόμενος ὁ Βασιλεὺς πρὸς ἀπόγνω-  
 σιν ἐλαυνέσας, διαπρεσβύεσθαι ἤδη καὶ πρὸς τὸν Πάπαν περὶ  
 τῆς τῶν Ἐκκλησιῶν ὁμονοίας τε καὶ ἐνώσεως, τῆς τε Παλαιᾶς  
 Ῥώμης δηλ.: καὶ τῆς Νέας, εἰ μόνον ἐμποδῶν τῇ ἐκστρατείᾳ γένοι-  
 το τῷ Καρχέδονι. Καὶ ὁ ΠΑΧΥΜΕΤΡΗΣ δὲ, Βιβλ.: Ε'. Κεφ.: Α'. (5)  
 „Ταῦτα τῷ Γρηγορίῳ διὰ Φρερίων διερμίνωσάμενος, δῆλον ἡμῶν, ὡς  
 ὁ μὲν κρατῶν κατὰ δειλίαν τὴν πρὸς τὸν Κάρολον τὴν εἰρῶν  
 ἐξήτει,

(5) Ἐν τῷ Α'. Τόμ.: τῆς ἐν Ῥώμῃ Ἐκδόσεως: Ἑτ': 1666. Σελ.: 251.

Τόμ.: Β'.

Β ββββββ

„ἐξήτει, ὡς αὐτῆς γε μὴ ἔσης, μὴδ' εἰς νῦν φέρειν ἐκείνῳ πώποτε,,. Καὶ ἐν τῷ αὐτῷ δ' ἐφεξῆς Βιβλίῳ τε καὶ Κεφαλαίῳ (6) „Ἀλλ' ὁ Βασιλεὺς ἅπαξ τῷ τοιᾷδε σκοπῷ γενόμενος, ἢ οἶδα, ἢ ἢ θέλων, ἢ ἢ προσβιαζόμενος· ὁ δὲ καὶ κείνοις μὲν ὑπεκρύπτετο, ἡμῖν δ' ἐνεφάνισε φόβος πάραπλέκων καὶ πολέμους, καὶ „χεθισόμενα αἵματα, ἀμεταθέτως ἔχε, καὶ ὅτι τις ἔλεγε,,. Καὶ ἐν Κεφαλ: δὲ ΙΖ'. (7) „Καὶ ὡς ἀνάγκη Πρέσβεις πέμπεσθαι, ἐφ' ᾧ παρ' ἐκείνων τὸ ἀσφαλὲς γενέσθαι, ὡς ἐντεῦθεν ἢ μὴ ὑποπτοῦναι τὸν κίνδυνον ὑποταγέντας τῇ τῶν Ἐκκλησιῶν „πρωτίσῃ, ἢ ἢ ἢ γνηστὶς ἐκείνης νομιζομένης,,. Καὶ ἐν τῷ ΙΗ'. Κεφαλ: δὲ διέξεισι (8), τίσι ποτὲ λόγοις ὁ Ἀυτοκράτωρ τῆς Κληρικῆς τῆς Μεγάλης Ἐκκλησίας ἐπειρᾶτο πείσαι τὴν παραδοχὴν τῆς ἐνώσεως· δεικνὺς δηλονότι, ὅσα τὰ ἐπιόντα δεινὰ τῷ ἐνότῳ ἀποσεισάμενοις ὅσοι οἱ πόλεμοι, ὅσα αἱ τῶν πόλεων τε καὶ χωρῶν ἐκπορθήσεις, ὅσα αἱ ἀνδροκτασίαι· ἃ δὲ πάντα, μόνον αὐτὸς εἰς κοινωνίαν σωαφθέρῃας ἐστὶ προκαταλαβεῖν. Τελούτατον δὲ τὸν λόγον ἐκπεραίνων: „Τὸ γὰρ κατεπεῖγον ἐν ἐστὶ „Φησὶ, τὸ Φυγεῖν κίνδυνον ἀναγκαῖον εἰ ταῦτα πράττοιμεν· ὁπόσον δὲ τῷτο, κατ' αὐτὸν ἕκαστος ἐννοῶν, ἔτω προφερέτω τὴν „γνώμην ὡς ἂν εὖ ἐκείνη, ἔθ' ἡμῖν κινήτῃ ταῦτα κτ:,,. Τί τῶν, εἰπέμοι, ἀριδηλότερον; ὁμολογεῖ γὰρ ὁ Βασιλεὺς, ὡς ἢ ἂν ἐκὼν αὐτὸς εἶναι προῆγε τὰ τῆς ἐνώσεως, μὴ δέει τῶν ἐπαπειλόμενων πολέμων εἰς τῷτο κινέμενος. Καὶ ΒΖΟΒΙΟΣ δὲ ἐς πλάτος διεξέρχεται, ἐν Ἑτει 1276. ἐν Ἀριθμ: Η'. Θ'. καὶ Ι'. ὅτι τῷ Βασιλεῖ Μιχαήλ, διὰ τὰς τῶν Λατίνων πολεμικὰς παρασκοὰς, εἰς ξενὸν κομιδῇ ἐχώρει τὰ πράγματα, ὥς πάλιν δόξαι κατὰ σπασθὲν τὰ ἀρέσκοντα τῇ Ῥωμάνῃ Ἐκκλησίᾳ, καὶ τὴν μετ' αὐτῆς κοινωνίαν ἀσπασάμενον, τῇ τε Ὁμολογίᾳ τῆς Πίξεως, ὡς Γρηγόριος ὁ Ι'. αὐτῷ προδιεπεπόμφει, καὶ δόύτερον καθυπογράψαι, καὶ τὸν γε παρὰ τῶν ἰδίων Ἀποκρισιασίων ἐν τῇ κατὰ τὸ Λέγδονον Σωόδῳ, ὡς ἐξ αὐτῶν γενόμενον ὅρκον, αὐτῷ προσεπικυρώσασθαι.

Ἐπειδὴ δὲ καὶ ἔπειτα ὑπὸ τῷ Πάπα Μαρτίνῳ Μιχαήλ ὁ Ἀυτοκράτωρ, ὡς δῆθεν ὑποκριθεὶς τὴν ἑνώσιν ἀφορισμῷ ὑπεβλήθη,

(6) Ἑτ: ἔρηται, Σελ: 253.

(7) Σελ: 261. σημειῶσαι δὲ, ὅτι ὁ Ἰουδαῖος Ποσσίνος τὸν παραφράζοντα μᾶλλον ἐπιδείκνυσθαι βέλεται, ἢ τὸν ἐρμηνεύοντα ἀπλῆστερον, ἐνταῦθα τε δὴ, καὶ διὰ πάντων τῶν χειρὸς τῆς Συγγράμματος, ἄγαν ἀκρατῶς ἀπελευθεριάζων περὶ τῶν μετὰφρασιν ὡς ἂν ἔτω ῥάδιον αὐτῷ ἢ, ἔς τ' ἂν δόξαι, παρεσιωθεῖν τὰ πρὸς θυμῷ. ἔπερ ἔχ' ἅπαξ ποῖαν τετήρηται καὶ ὡς ἔχ' ἁλεπὸν ἐν ἔκ ἐλίγοις σιωπεῖν, εἴ τις παρὰ τὴν πρὸς τὸ Ἑλληνικὸν ὕφος, τὴν Λατινικὴν ἐκφρασιν.

(8) Αὐτ: Σελ: 262. 263.

βλήθη, καὶ περὶ δὴ τὰ τῆς ἐνώσεως λίαν ἐκτροπιαζόμενος, ἀλλὰ σκοπῶν τινων ἔνεκα ἀνθρωπίνων, ὁδωμῶς αὐτῷ διαβρῆξαι ἤξιωσεν. Οὕτω γὰρ ὁ ΠΑΧΥΜΕΡΗΣ ἐν 5'. Βιβλ: Κεφ: Δ'. (9) „Ταῦτα γινῶς ὁ Βασιλεὺς παρὰ τῷ Νικαίᾳς ἐπανιόντος, (ὁ γὰρ „Ἡρακλείας ἐτεθνήκει) ἐν δαινῷ ἐποιεῖτο ὥς καὶ τῷ Διακόνῳ „μέλλοντος μνημονεύειν τῷ Πάπα κατὰ τὸ σωήθες, τῷ Βασιλεὺς „παρόντος ὁ Κρατῶν διεκώλυε: κατὰ λέγων τῆς ἀγάπης ἐκείνων ἀπόνασθαι, ὥς αὐτὸν μὲν ἐκπολεμῶσαι δι' ἐκείνης ἑαυτῷ „τῶς οἰκέας, ἐκείνης δὲ μὴ ὅπως χάριν ἔχειν, ἀλλὰ καὶ προσάφορίζειν· τότε δὲ καὶ διαλύειν ἤθελε τὰς σπονδὰς· καὶ διελύοντο, „εἰμήτι προσίστατο τῇ βελῇ. Αὐτὸν μὲν γὰρ πολλὰ παθεῖν διὰ „ταῦτα, καὶ μόλις ἀνῆλθαι, καὶ ἑξαπινάκως λύοι παλινωδῶν, ἐπισάντος καὶ αὐτοῖς καιρῷ τῷ ταῦτα ζητήσοντος, μὴ ἂν ἀνυσὰ „γενέσθαι τὸ σῶολον· χωρεῖν δὲ ἄλλως καὶ εἰς μεταβολὴν τὰ τῆς „Ἐκκλησίας πράγματα τῷ Ἰωσήφ ἐπικατασάντος. Αὐτὸν μὲν „ἐν καὶ εἰρηνικὸν εἰς ἅπαν εἶναι, καὶ μηδὲν ἐξ αὐτῶ πισύειν τῶν „ἀνηκέστων γίνεσθαι· ἐμὴν ἀλλ' ἀνάγκη εἶναι καὶ τῶς κινήσοντας. „Καὶ ταῦτα ἐχ' ἀπλῶς ὑποπτόων· ἔλεγεν, ἀλλάγε τὸ πρὸ τῶν „των συμβᾶν ἀνὰ τὸν Σάγγαρον διατρίβοντος, δειλῶν ἐποίει „περὶ τῶν ὅλων τὸν Βασιλέα, εἰπως ὡς ἐπισφαλῇ τὰ συγκείμενα „διαλύσειεν,,.

Τὰ δὲ περὶ ΒΕΚΚΟΥ, ἐφ' ὅσον ἔτος ὃ παρὼν χλεῖτο πρὸς τῷ Βασιλεὺς, ὃ ἐν πάρα γεγωνῶς ὡς τῆς ἐν τῷ δεσμωτηρίῳ κακώσεως, ἐκὼν ὑπῆρχε τῶς Λατίνης ἀποσρεφόμενος ὥς δὴ καὶ τῷ Κρατῶντος διερωτήσαντος ἀποκρίνασθαι: (ἢ διέξεισιν ὁ Παχυμέρης Βιβλ: Ε'. Κεφαλ: ΙΒ'.) (10) „Ὡς οἱ μὲν, ἐπί τινι „καὶ εἰσὶ, καὶ λέγονται (Αἰρετικοί) οἱ δὲ, ὅτι εἰσὶν, ὅτε λέγονται· „οἱ δὲ, λέγονται μὲν, ἐκ' εἰσὶ δὲ οἱ δ' ἀνάπαλιν εἰσὶ μὲν, καὶ „λέγονται δὲ ἐν τέτοις ταῦτέον καὶ Ἰταλῶς μὴ λεγομένης μὲν, „ἀλλ' ὄντας ἐνόχως Αἰρέσει,,. Οὗ χάριν ἔπειτα καὶ ἐν δεσμωτηρίῳ εἰρχθεῖς, καὶ ταῦτα τὰ ΝΙΚΗΦΟΡΩΙ τῷ ΒΛΕΜΜΙΔΗ προεκπονηθέντα παρὰ τῷ Κρατῶντος ἐπὶ τῷ ἀναγνῶναι λαβὼν, ἐφεξῆς τέως τῷ κατὰ Λατίνης Πίσιν, καὶ τῷ μετ' αὐτῶν ἔνωσιν ἐπιδοκιμάσας ἠσπάσατο. (ΝΙΚΗΦΟΡΟΣ ΓΡΗΓΟΡΑΣ Βιβλ: Ε'. Σελ: 93.) (11) καὶ ΠΑΧΥΜΕΡΗΣ Βιβλ: Ε'. Κεφαλ: ΙΕ'. καὶ Ις'. (12). Σωήργησε δ' ἐπὶ τῷτο καὶ τὸ ἀλαζονικὸν τῷ Ἀνδρὸς

(9) Αὐτ: Σελ: 344.

(10) Αὐτ: Σελ: 255.

(11) Γενεράς ἐν Τόμ: Α'. τῆς ἐν Παρισ: Ἐκδόσ: Ἔτ: 1702. Βιβλ: Ε'. Κεφαλ: Β'. Ἀριθμ: Ε'. καὶ 5'. Σελ: 72 — 78.

(12) Ἐν τῷ Α'. Τόμ: τῆς ἐν Ρώμῃ Ἐκδόσ: Σελ: 258. 259.

Ἄνδρὸς καὶ Φιλόδοξον, ὡς μέγα τι ἐπὶ τῇ τῷ Φρονήματος μετα-  
 θέσει, ἀντικομίσχασθαι ἂν παρὰ τῷ Αὐτοκράτορι, προσδοκῆσαντος.  
 Τῷ ὄντι δὲ ΜΑΝΟΥΗΛΟΣ τε καὶ ἸΣΑΑΚΙΟΣ τῷ αὐταδέλφῳ,  
 ὡς τὴν μετὰ Λατίνων ἔνωσιν ἀποπτύοντε πηρωθησομένῳ τὰς  
 ὄψεις, διαρρήδην τόδε λέγεσθον ἐπονιδίσχαι τῷ Βένκῳ. Οὕτω γὰρ  
 ὁ ΠΑΧΥΜΕΡΗΣ Βιβλ: 5'. Κεφαλ: ΚΔ'. (13) „Οἱ δὲ τὴν τῷ  
 „διαπράξασθαι ἂ μὴδὲς ἄλλος ἐτόλμα δόξαν ὑπὲρ πατρῶν ἐθῶν  
 „ἀπὼν ἐγκαντο, πολλὰ πρότερον καὶ αὐτὸν Πατριάρχῳ ἐπὶ Βασι-  
 „λέως ἐλέγξαντες: ὡς ἐκεῖνα πείθονται τέτῳ, ἂ δὴ ἐφ' ἑαυτῷ  
 „ὦν ὡμολόγει καὶ ἐπιτιμίοις πεδόμενος, καὶ ἔχ' ἂ τέως μετ' ἀξιώ-  
 „ματος,„ Ἀλλὰ προσέτι: (ἵνα κἀντεῦθεν τὸ παλίμβολόν τε καὶ  
 ἄσαστον αὐτῷ τῆς γνώμης ἐκδηλότερον γένηται) καὶ τῷ Μιχαήλ  
 ἀποδιώσαντος, τῷ τε Κωνσταντινουπόλεως, καὶ τῷ Ἀλεξανδρείας  
 τοῖς Πατριάρχασι, Λίβελλον (14) προσλίεγκε μεταγνώσεως,  
 τῇ

(13) Ἐν τῷ Α'. Τόμ: Σελ: 331.

(14) Ἀλλὰ καὶ τὸν Λίβελλον αὐτὸν τῷ Βένκῳ ἐνταῦθα ἐπὶ λέξεως παραθέσθαι, ὥστε  
 ἐκ ἀσκόπου.

Ἡ περὶ ἐπὶ τῇ προβάσει ἐπισφαλῶς οἰκονομία τῆς δὴθεν Ἐκκλησιαστικῆς  
 „εἰρήνης, ὥστε συναγαγεῖν με πάντας εἰς τὴν τοιαύτην εἰρήνῃ, συνέβη λαλῆ-  
 „σαι με καὶ γράψαι περὶ Δόγματων Ἐκκλησιαστικῶν, ἐν οἷς εὐρέθησαν καὶ τινα  
 „ἐρηθέντα παρ' ἐμῷ ἀπαύδοντα τοῖς Ἱεροῖς καὶ Θεοῖς Δόγμασι, καὶ ἐπισφαλῶς  
 „ἔχοντα ἄπερ ἔσως ἔχοντα καὶ ἡ Θεία καὶ Ἱερὰ Σινάδος ἐφωράσατο: ἦγεν, τὸ  
 „λέγειν με ὅτι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον αἴτιον ἔχει τῆς ἐαυτῷ ὑπάρξεως τὸν Πατέρα  
 „καὶ τὸν Υἱόν· καὶ εἰς τῷτο συμφωνεῖ καὶ ἡ λέξις ἡ λέγεται τὸ Πνεῦμα ἐκ τῷ  
 „Πατρὸς δι' Υἱὸς ἐκπορεύεσθαι· ἔθεν καὶ δύο ἀναφαίνεται τῷ Πνύματος αἰτία·  
 „καὶ ἡ προσεχὴς καὶ πόρρω ἀρχὴ ἐντεῦθεν ὑπονέσται· καὶ τοσούτον ἐστὶ καὶ ὁ  
 „Υἱὸς αἴτιος τῆς ὑπάρξεως τῷ Πνύματος, ὅσον ἦκει εἰς τὴν (διὰ) ταῦτα πάν-  
 „τα ἐπεὶ ἐν τοῖς ἐμαυτῷ Συγγράμμασι καὶ Λόγοις ἐμφερέμενα εὐρηται· ἐμῷ ταῦ-  
 „τα καὶ ἐκ ἄλλων Φρονήσαντος καὶ γράψαντος· καὶ πρὸς τέτοις, καὶ τὸ λέγειν  
 „αἴτιον ἐν τῷ Πνύματος τὸν Πατέρα καὶ τὸν Υἱόν· ἐξ ὧν ὡς ἀπὸ μιᾶς ἀρχῆς  
 „καὶ πηγῆς ἔχει τὸ εἶναι. Ταῦτα πάντα, καὶ εἴτι ἕτερον εἰς τὴν τοιαύτην  
 „ἀποπῆν Φέρεται τῷ Δόγματι, ἐνώπιον τῷ Θεῷ καὶ τῶν Φοβερῶν Ἀγγέλων αὐτῷ·  
 „εἴτι δὲ καὶ ἐνώπιον τῆς Θείας καὶ Ἱερᾶς Σινάδος, ἐκ ψυχῆς μέσης, χωρὶς τι-  
 „νὸς δολιότητος, καὶ τῷ ἄλλῳ μὲν κρύπτειν, ἄλλῳ δὲ λέγειν· ἀποτρέπομαι, ἀδε-  
 „τῶ, καὶ ἀποβάλλομαι ὡς εἰς ἕχαστον ψυχῆς Φέροντα ὀλεθρον. Ὁμολογῶ δὲ κατὰ  
 „δία καὶ σῶματι, καὶ φρονῶ, καθὼς ὁμολογῶ ἀναθεν ἡ Ἁγία καὶ Καθολικὴ  
 „Ἐκκλησία, τὴν Ἁγίαν Τριάδα, τὸν ἕνα Θεόν, ἔσως: ὅτι ὁ Πατὴρ ἔτε ἐξ  
 „ἐτέρου, ἔτε ἐξ αὐτῷ ἔχει τὸ εἶναι· ἀλλ' ἀναρχος ἐστὶ καὶ ἀναίτιος· ὁ δὲ Μονο-  
 „γενὴς Υἱὸς τῷ Θεῷ, ἐκ Πατρὸς τὴν ὑπαρξίν γεννητῶς, καὶ αἴτιον ἔχει τὸν  
 „Πατέρα· τὸ δὲ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ὁμολογῶ καὶ πιστεύω, ὅτι ἐκ τῷ Θεῷ καὶ Πα-  
 „τρὸς τὴν ὑπαρξίν ἔχει ἐκπορεύτῳ· καὶ ὁ Πατὴρ, κατὰ τὰς Ἱερὰς τῶν Διδασ-  
 „κάλων Φωνάς, αἴτιος ἐστὶ τῷ Υἱῷ καὶ τῷ Πνύματος· τῆς διὰ τῷ Υἱῷ ἐκπερδύε-  
 „σθαι Φωνῆς μηδὲως εἰσαγέσης τὸν Υἱόν αἴτιον εἶναι τῷ Πνύματος, ἢ κατὰ  
 „ἑαυτὸν, ἢ μετὰ τῷ Πατρί, ὡς εἶναι τὸν Υἱόν καὶ τὸν Πατέρα, κατὰ τὴν  
 „ἐπισφαλῆ τινῶν καὶ ἀλλόκοτον ὑπόληψιν, ἐν αἴτιον καὶ μίαν ἀρχὴν τῷ Πνύμα-  
 „τος. Ταῦτα μὲν ἔγω φρονῶ, καὶ εὐχομαι μέχρι τελευταίας με ἀναπνεῖς ἔγω  
 „με φρονῶντα εὐρίσκεσθαι, καὶ ἐν πᾶσι Δόγματιν ὁμοφρονεῖν τῇ Ἁγίᾳ τῷ Θεῷ  
 „Καθολικῇ Ἐκκλησίᾳ κατὰ τὴν αἰσαγγεγραμμένῃ ὁμολογίᾳ. Πάντας δὲ τῶς μὴ  
 „ἔγω φρονῶντας, ἢ καὶ εἰς τὸ μέλλον φρονήσοντας, ἀκαινωήτες ἔχω καὶ ἀπο-  
 „βλήτες, καὶ πόρρω τῆς τῶν Χριστιανῶν Ὁρθοδόξου Πίστεως. Οὗτος ἐστὶν ὁ τῆς  
 „ἐμῆς



τῇ καὶ ἑαυτῇ ἐπενεχθείσῃ ψήφῳ, καὶ τῇ καθαιρέσει ἐμμένειν διὰ τέττε πίσιν διδύς· εἰ καὶ ὑπερον ἐπὶ τὴν προτέραν γνώμην ἐπανελήλυθε. (15) Καὶ τῆτο μὲν ἐκ τῆς Ἀνδρονίκης τῆ Παλαιολόγου κατὰ τῆς Βέκκης συστάσεως Σιωδὸς διέξεισιν, ὁ ΣΠΟΝΔΑΝΟΣ, ἐν Ἐτει 1283. Ἀριθμ.: Ι'. Ἀλλὰ κατ' ἀρχὰς τῆς αὐτῆς Σιωδὸς, τὰ αὐτὰ τῷ Βέκκῳ ὑπὸ τῆς Μεγάλῃς Ῥήτορος ἀνθυπενεχθῶσα ἴσορῃ καὶ Παχυμέρης ἐν τῷ Ζ. Βιβλίῳ, (16) παρὰ Λέοντι τῷ Ἀλλατίῳ, Βιβλ.: Β'. περὶ τῆς Διωκεῖς Συμφωνίας τῶν Ἐκκλησιῶν: Κεφαλ.: Β'. Ἀριθμ.: ΙΑ'. Οὕτω γὰρ ἐκείνος: „Ἐπὶ τέτοις ὁ τῆς Ἐκκλησίας Ῥήτωρ, ὃς δὴ καὶ τῶν Διαλόγων κατήρχετο· ὁ ῬΗΤΩΡ: Καὶ ἵνα τί, φησὶν, ὦ ἔστος; „ὕγιων ἔσων καὶ ἔτι τῶν σῶν συλλαβῶν, ἐφ' οἷς ὡμολόγησιν ἐσ- „φάλαθαι, καὶ συγγνώμην ἐζητεῖς, καὶ παραίτησιν ἐποιᾷ, σήμερον „ἀναλαμβάνεις τὰ ὡμολογημένα, καὶ ἀδικεῖσθαι δι᾽ ἡμετέραν, ὥστε „καὶ τοιαύτῳ δὴ καὶ τοσαύτῳ συγκροτηθῶσι τὴν παρῶσαν Σιω- „δον; ὁ ΒΕΚΚΟΣ: „Ὅτι, φησὶ, λόγους Πατέρων εἰπόντες, καὶ „λόγον ἀπαιτῆμενοι περὶ τέτων, ἡμεῖς, ἄλλον μὲν εἰδότες κα- „ρὸν τὸν τῆς ἐκείνων ἀναπτύξεως, ἄλλον δὲ τὸν τότε παρόντα, „εἰρνωδῶν θελοντες μόνον, ἀφέντες τὰ πάντα, ταῦτ' ἐπράττομεν „ἐμὴν δὲ καὶ ὥστε τῆς βελομένης ἐργολαβίᾳ, καὶ περιάπτειν ἡμῖν „Αἰρέσεως ἔγκλημα,,. (17)

“Α

- „ἐμῆς ὁμολογίας Λίβελλος (καὶ) Πίστεως· δι' ἧς καὶ πᾶσιν ὁμολογῶ καὶ μαρτύρομαι καὶ παριστάνω τρανῶς ὅπως ἔχω τῆς πρὸς Θεὸν εὐσεβείας, καὶ ὅπως ἐλοχερῶς ἐξέχομαι τῶν Ἐυαγγελικῶν καὶ Ἀποστολικῶν καὶ Πατρικῶν Δογμάτων καὶ διδασκαλῶν. Ἐπεὶ δὲ, ἐνεκεν τῆς τόλμης ἧς ἐπισημῶς κατετόλμησα εἰς τινὰ τῶν εἰρημίων Θεῶν Δογμάτων, κατεδικάσθην καθαιρέσει τῆς Ἀρχιερωσύνης παρὰ τῆς Ἀγιωτάτης Δεσπότης καὶ Οἰκουμενικῆς Πατριαρχῆς, καὶ τῆς περὶ αὐτὸν Θεῆας καὶ Ἱεραῆς Σιωδὸς, ἐν ᾗ ἐπεδήμει καὶ ὁ Ἀγιώτατος Πάπας Ἀλεξανδρείας καὶ Πατριαρχῆς· δέχομαι καὶ τὴν τοιαύτην καθαιρέσιν, ὡς ἐνθέσμως καὶ κανονικῶς γεγονούσαν· καὶ εἰρῶ τὴν τοιαύτην ψήφον ὡς δικαίαν καὶ ἔννομον, μηδὲ ποτε πειρασόμενος Ἱερωσύῳ ἀνακαλέσασθαι.
- (15) Ταῦτα γὰρ ἐκεῖνος ἐκθέμενος (τὰ ἐν τῷ Λίβελλῳ) καὶ οἰκεία χειρὶ γράψας τε καὶ ὑπογράψας, ὡς ἄνεσιν ἔλαβεν ἀπὸ τῆς Δικαστηρίας, καθάπαξ ἠθέτησε καὶ πάλιν Βιβλία συστάτῃ, καὶ πάλιν βλασφημίαι, καὶ πάλιν Δόγματα νόθα, καὶ λόγων ἄλλως παρεσαγωγαι· κτ.: „Ὡς ἐν τῷ κατ' αὐτῆς Συνοδικῶς ἐκδοθέντι Τόμῳ ἀναγιγνώσκεται, παρὰ Βανδερῖῳ ἐν τῷ Γ'. Τόμῳ: τῶν τῆς Κωνσταντινουπόλ.: Ἀρχαιοτ.: Σελ.: 943.
- (16) Κατὰ τὴν ἐν Ῥώμῃ τῶν τῆς Παχυμέρης Συγγραμ.: Ἐκδόσιν, τὴν ἐν Ἐτει 1669. ἐν τῷ Β'. Τόμῳ: Βιβλ.: Δ'. Σελ.: 57.
- (17) Τὸ Βέκκῳ παλίμφορον καὶ ἀσάθμητον Βανδέρειος δικαιολογεῖν βεβλόμενος ἐν τῷ Β'. Τόμῳ: τῶν Κωνσταντ.: Ἀρχαιοτ.: Σελ.: 941. τὸν Λίβελλον αὐτὸν φησὶ δεδωκέναι: ad efferatos adversum se plebeculae animos placandos: „(ἵνα τὰς κατ' αὐτῆς ἐκθεριωθείσας ἐξιλεώσῃται τῆς χυδῆς ὀχλῆς ψυχῆς.) τῆ δὲ ἑτέρον ἡδὲν ἐστὶ λέγειν, ἢ ὅτι Βέκκος λαμπρῶς ἐδοκίμαστο ἐν ᾧ ἐπὶ τῆς Λίβελλῳ ἔφασκεν: ὅτι ἐκ μέσης ψυχῆς, χωρὶς τινὸς δολιότητος, καὶ τῆς ἄλλῃ μὲν κρύπτειν, ἄλλῃ δὲ λέγειν, ἀπετρέπετο, καὶ ἠθέτει, καὶ ἀπεβάλλετο (τὰ πρὶν αὐτῷ εἰρημένα δηλονότι) ὡς εἰς ἔχατον ψυχῆς φέροντα ὀλεθρον,,. Ἐπεὶ ὡς ἄρα ὑποθωπύσων Τόμῳ: Β'.

Γ γγγγγγ

τθ

"Α δ' ἡμῖν περὶ τῆς Βέκκας, τῶν Ἰησυχίων τις ἀνθυπέφερεν ἀνωτέρω καὶ ἐν Βέκκῳ τε αὐτὸν καὶ Βλεμμίδῳ τῶν κατὰ παιδείαν καὶ λόγους διαφερόντων γενέσθαι δοίημεν· τίς ἐκ οἶδεν, ὅτι καὶ ἄλλοι πάλαι τε καὶ ἐφ' ἡμῶν ὑποβύθιοι Αἰρέσεις ἀνεφάνησαν Ἄνδρες, οἱ πολυμαθεῖς καὶ παντοδαπαῖς τῶν ὄντων εἰδήσεσι διαπρέψαντες; Κατὰ μὲν ἐν τῷ ἐν Νικαίᾳ τὸ πρῶτον συστᾶσαν Σινόδον Ἀρειανόφρων τις αὐτίκα Φιλόσοφος ἀπώτα, τοσῶτον τῇ διωάμει τῶν λόγων ὑπερέχειν δοκῶν, ὥς ἐμὴν κατ' αὐτῆς τῆς Πατέρας ἰχύσαι ἐν Διαλέξεσι. (18) Καὶ ἈΠΟΛΛΙΝΑΡΙΟΣ δὲ, ὁ τῶν κατ' αὐτὸν ἀπάντων μὲν σοφώτατος γεγυνώς, ἀποχρισθεὶς δὲ διὰ κακοφροσύνην, καὶ τῶν λοιπῶν Καθολικῶν Πατέρων ἑαυτὸν ἀπορρήξας, ἔθεν ἄδηλος. (19) Καὶ ἵνα μὴ ἐν ἔτῳ ἐπιδήλῳ μακρηγορῶ πράγματι, τίνες ἔχῃ παρὰ τοῖς τὰ Λαθίῃ καὶ τὰ Καλβίνῃ Φρονέσι, περιεδόμενοι φέρονται; ἢ μή περ τῶν παρὰ τοῖς ἄλλοις Λατίνοις σοφῶν ὑπερτερῶντες, ἀλλ' ἔθεν πάντως τέτων ὑπελαττέμενοι. Οὐκ ἐπὶ λόγων δυνάμει, ἔδ' ἐπὶ τῇ Φιλοσοφίᾳ, ἀλλ' ἐπὶ τῇ ἀπλῇ τῆς Πίστεως παραδόσει ἢ Καθολικῇ Ἐκκλησίᾳ ἐσηρίετο. Στύλοι δὲ αὐτῆς ἐξ ἀλίστων τινὲς ὑπῆρξαν, ἐκ ἀπὸ τῶν Ἀθιῶσι Φιλοσοφούντων μεταίτεμπτοι· οἵ τε Ἀπόστολοι ὡσάντως, ἔχῃ τῆς Ἀθιῶθαι τὰ τῆς Φιλοσοφίας ἀπαρυσταμένους, ἔδ' ἐπὶ τῆς περὶ τὰ Θεολογούμενα γεγυμνασμένους ἀνεστήσαν, ὅς ἂν ταῖς Ἐκκλησίαις προσήσειαν. Καὶ ἡλικὸν δὲ τελευταῖον ἡμῖν τὸν Βέκκον, ἡλικὸν δὲ καὶ τὸν Βλεμμίδῳ ὁ Ἰησυχίτης ἀντιπροβάλλεται, ὡς ἐμὴν μηδεὶς πρὸς ἐκείνους οἶος τ' ἂν εἴη παρακρίνεσθαι, τῶν ὅσοι ποτὲ κατὰ Λατίνων ἐκδικοὶ τῆς Καθολικῆς ὠφθησαν Δόγματος; ΦΩΤΙΟΝ (20) μὲν γὰρ

Σοφώ-

τε καὶ ἐξίλειωσόμενος τῷ κατ' αὐτῆς efferatam plebeculam: (τὶ δὲ μὴ μάλλον καὶ τῆς ἐν διωάμει καὶ ἀξιώμασι, καὶ Σοφίᾳ τε διαφέροντας καὶ σωέσαι, καὶ τῇ ἐν εὐσεβείᾳ καὶ Πίστει ἐρεσδομένους τῶν Δογμάτων ἐρῶντι;) καὶ ἐντεράπη, ἐνώπιον „τῆς Θεᾶς καὶ τῶν Φοβερῶν Ἀγγέλων, ἐπὶ δὲ καὶ ἐνώπιον τῆς Ἀγίας καὶ Ἱερᾶς „Συνόδου καταδοκίμασθαι τε καὶ καταψύσασθαι.

(18) Ὅρα τὸ Γελασίῃ τῆς Κυζικίου Συντάγματος, περὶ τῶν ἐν τῇ κατὰ Νίκαιαν Συνόδῳ, Κεφ: ΙΓ'. — ΚΓ'.

(19) Ὅρα περὶ τῆς Ἀπολλινάριου, Σωκράτ: Ἐκκλησιᾶς Ἰσορ: Βίβλ: Β'. Κεφαλ: Μ'. Καὶ Βίβλ: Γ'. Κεφαλ: Ιδ'. Καὶ Σωζόμεν. Βίβλ: Ε'. Κεφ: ΙΗ'. Φιλοσόφιος δὲ ὁ Ἀρειανὸς Βίβλ: Η'. Κεφ: ΙΑ'. τῆς κατ' αὐτὸν Ἰσορ:, τοῖς μεγάλαις Πατέρεσι Βασιλείῳ τε καὶ Γρηγορίῳ, ὅς ἐπὶ Σοφίᾳ διενεγκεῖν ἀπάντων Φασί, καὶ Ἀπολλινάριον παραβάλλον, τόγχε ὑπομνηματικὸν εἶδος καὶ αὐτῶν ἐκείνῳ προέταττεν, ὡς ἄρα καὶ τῆς Φωνῆς ὄντα τῆς Ἐβραϊδος εἰδήμονα. Ὅρα καὶ Σειδ: ἐν Λέξει „Ἀπολλινάρ:

(20) Περὶ Φωτίου, ὅσος τε καὶ ἡλικὸς ἦν τῷ Σοφίᾳ, ἔδ' ἐμὴν χρὴ λέγειν· ἔδ' ἐμὴν γὰρ δὴ καὶ εἰμὴ καὶ τίς τις, ἔχῃ αὐτῷ εἶδος παρέβαλεν. Ἀλλ' ὁ τῆς Ἀγγλίας Καθὼς περὶ τὸν Ἄνδρα ἐκθειασμὸς ἐπιεικῶς εἰς ὑπερβολὴν ἐκπίπτειν δοκῶν· Vir ut caetera lateam infinitae Lectionis, stupendae eruditionis; omnium non sui modo, sed et omnium pene saeculorum doctissimus. (ἐν τῷ Β'. Τόμῳ: τῆς Ἰσορ: τῶν Ἐκκλησιᾶς Συγγραφο: Σελ: 47.) „Ἀνῆρ, ὡς τ' ἄλλα παρελθεῖν, ἔδ' ὑπὲρ μέτρον μὲν τῶν „ἀναγ-

Σοφώτατον Ἄνδρα γενέσθαι, αὐτοὶ τε σωομολογῶντες εἶσιν οἱ Λατῖνοι, καὶ τὰ ἐκείνῃ ἄλλῃ ἐπιμαρτύρουντα ἐς Συγγράμματα· πρὸ δὲ πάντων ἡ Μυριόβιβλος παρίσῃσιν, ὅσω ἐκεῖνος τριβλῶ ἔχε δεικνύσα, περὶ τῶν τῶν Πατέρων, καὶ τῶν ἄλλων Συγγραφῶν ἀνάγνωσιν. Καὶ ΦΕΟΦΥΛΑΚΤΟΝ (21) δὲ, τὸν τῶν Ἱερῶν Γραφῶν Σοφώτατον Διερμινύοντι πάντες διὰ θαύματος ἄγομεν. Καὶ ἔδεν ἐλάσσονος ἐπὶ Σοφίᾳ κλέος ἡγέμεθα ἄξιον, ἩΛΙΑΝ (22) τὸν Κρήτης Μητροπολίτη χρηματίσαντα· ἐκ τῶν αὐτῶ περὶ τῆς λόγου ΓΡΗΓΟΡΙΟΥ τῷ Θεολόγῃ ὑπομνηματισμῶν κρίνοντες. Παρεκτὸς δὲ τῶν, τίς ποτε τῶν Λατινισάντων Γραικῶν, τοῖς ἐπισημοτάτοις Φιλοσόφοις, Εὔστρατιῶνι τε (23) τῷ Μητροπολίτῃ Νικαίας, καὶ ΜΙΧΑΗΛ τῷ Ψελλῷ (24) ταχθείη ἂν ἰσοσάσιος; Καὶ παρήμι μὲν Εὔθυμιον τὸν Ζυγαβλῶν (25) τὸν ἐκ τῆς αὐτῷ Συγγραφείσης κατὰ πασῶν τῶν Αἰρέσεων Πανοπλίας Ἐπιφανέσατον. Σιγῶ δὲ καὶ ΝΕΚΤΑΡΙΟΝ τὸν Ἀββᾶν, τὸν ἐπὶ τῆς ἐν Λατεράνῃ Σινώδῃ, κατὰ τὸ 1179. ὡς ῥᾶσα πάντα τὰ Λατίνων Ἐπιχειρήματα, ἐπιλυσάμενον καὶ ἀνασκυβάσαντα, παρὰ Βαρωνίῳ μάρτυρι, ἐν ἔτει 1179. Σιγῇ δὲ παρατρέχω καὶ πλείους ἄλλας. Ἐπιλίποι γὰρ ἂν ἡμᾶς ἡ ἡμέρα καὶ μόνων τῶν ὀνομάτων μνημονεύσκει θελήσαντας. Εἰ δὲ Γρηγοῶς τὸ πολυμαθὲς ἐξύμνησε Βέκκῃ τε καὶ Βλεμμίδῃ· ἀλλά γε καὶ ἑτέρων ὁ αὐτὸς ἐπεμνήσθη, τῶν ἔτι καὶ τῷ Βέκκῃ πολυμαθεσέρων, καὶ τῶν, κατὰ τὴν ἐπ' Ἀνδρονίκῃ τῷ Παλασιολόγῃ συγκροτηθεῖσαν Σινώδον, κακοδοξίας ἀποδειξαμένων ὑπὸ θύων.

- „ἀναγνωσμάτων τὸ πλῆθος, ὑπὲρ θαῦμα δὲ τὸ τῆς πολυμαθείας· καὶ ἔσοφώτερον ἄλλον, ἔθ' ὃ ἐπ' αὐτῷ, ἔθ' ἑτεροῖς τις μονονυχὶ προήνεγκε χρότος.
- (21) Κομβεφίστιος ἐν τῷ ἐπιμέτρῳ τῷ Η'. Τόμος τῆς Ἐκκλησιαστικῆς Βιβλίου: ἐκδιδὸς τῷ τῷ Ἱερῷ Θεοφύλακτῃ Ὁμιλ.: εἰς τὴν Ἱκαπαντίῳ, παρεσημαῖτο παρὰ τὸ χεῖλος τῆς Δέλτης: Sapientissimum et haec prodit oratio; utinam nec Sancti alia abrogarent titulum. „Σοφώτατον, Φησὶ, καὶ ἡ Ὁμιλία αὕτη παρίσῃσι, (τὸν „Θεοφύλακτον ἐν ὀφελον! μὴ τ' ἄλλα αὐτῷ ἀφῆλον καὶ τῆς Ἀγιότητος τὸ ἐπὶ ὀνυμον. Ἀμέλει τοι ἐκπέπτακε τῆς Ἀγιότητος ὁ Θεοφύλακτος, ὡς Λατίνοις μηδὲν ὁμοφρονῶν.
- (22) Περὶ τῆς ὅρας ἐν τῇ Α'. τῶν Πραγματειῶν τῷ παρόντος Συγγράμματος· ἐν τῷ Α'. Τόμος: Σελ.: 182. Σημ.: 9. καὶ 10.
- (23) „Ἄνῃρ τὰ τε Θεῖα σοφὸς καὶ τὰ θύραθεν, δεινὸς δὲ ἐπὶ ταῖς Διαλέξεσι μάλλον, „ἢ οἱ περὶ τὴν Στοάν καὶ Ἀκαδημίαν ἐνδιατρίβοντες. (Ἀλεξιάς Ἰσορ: Βιβλ.: 10.) Σωτέγραψε δὲ τὰ μὲν Θεολογικά, τὰ δὲ καὶ Φιλόσοφα. Τῶτον ἐπὶ τῆς 18'. Ἐκατονταετηρίδος ἀρχομένης ἀκμάσαντα, καὶ Λατῖνοι πολλὰ λόγῃ ἠξίωσαν, καὶ τοιγὰ αὐτῶν ταῖς δόξαις ἀντιφερόμενον ἐν τοῖς Συγγράμμασι. Περὶ τῆς καὶ Ἀλλάτιος ἐν τῷ Β'. τῶν περὶ τῆς Συμφαν: τῶν Ἐκκλησιῶν: Κεφ.: 1'. Ἀριθμ.: Β'.
- (24) Τῷ Μιχαὴλ τῷ τῷ, μεσότης τῆς 1Α'. τῶν Ἐκατονταετ.: γενομένης, μάρτυς τῆς Σοφίας πιστὸν ὁ Ἀλλάτιος, ἐν τῇ περὶ τῶν Ψελλῶν Διατριβῇ.
- (25) Ἡκμάζει δὲ καὶ ἔτος ἐπὶ Ἀλεξίῳ τῷ Κομνινοῦ· ἔτι καὶ πρὸς Κύριον ἐκδημῶντος, περὶ τῷ ἔτι τῷ βίῳ κατὰ τὸ 1118.

Γ γγγγγ 2

θωνον. Οἱ περ ἐγένοντο ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ τε (26) ὁ Κωνσταντινῆ-  
πόλεως Πατριάρχης, καὶ ὁ Μέγας Λογοθέτης ΜΟΥΖΑΛΩΝ. (27)  
Τά γε μὴν ὑπὸ τῷ Γρηγορῷ ρηθέντα ἐξῆς σιωπούμεθα.

Ἐπὶ τούτοις, καὶ εἰ τῶν Γραικῶν τινες ἐλατινοφρόνησαν  
ἀλλὰ καὶ ἐκ τῶν Λατίνων ἔμπης ὑπῆρξαν οἱ ὑπὲρ Γραικῶν  
συγγεγραφότες, Ἄνδρες Σοφώτατοι ὧν εἷς καὶ ὁ πρὸ μικρῶ  
ἀπομνημονεύθεις Πατριάρχης ΓΕΩΡΓΙΟΣ (28) ὁ Κύπριος, καὶ  
ΒΑΡΛΑΑΜ ἔπειτα ὁ ἀπὸ Καλαβρῶν (29), καὶ τοί γε πάλιν ἕτος  
πρὸς Λατίνους αὐτομολήσας· περὶ δὲ ὁ ΚΑΝΤΑΚΟΥΖΗΝΟΣ ἐν  
τῷ Β'. Βιβλ: τῆς Ἰσορ: Κεφ: ΛΘ'. Σελ: 329. τῆς ἐν Παρισι:  
Ἐκδόσ: Ἐτε 1645. Καὶ ΝΕΪΛΟΣ ὁ Δάμιλας (30) ὁ τῷ  
γένει Ἰταλιώτης, παρὰ Λέοντι τῷ Ἀλλατίῳ ἐν Β'. Βιβλ: τῆς  
Συμφων: τῶν Ἐκκλησι: Κεφαλ: ΙΗ'. Ἀριθμ: Γ'. ὅς δὲ Ἀλλά-  
τιος καὶ αὐτόθι προσέθετο: „Καίπερ ἐκ ἀγνοῶ, πολλὰς τῶν  
„Ἰταλῶν, καθὰ καὶ ἐν ἄλλοις ἡμῖν γέγραπται, περὶ τούτου (ἦτοι  
„τῆς τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος Ἐκπορεύσεως ἐκ μόνου τῷ Πατρὸς)  
„τοῖς Γραικοῖς γενέσθαι σιωγησάντας,„ (31)

Οὐχ ἓνα ἄρα τὸν Παλαμᾶν (32), ἢ καὶ ἕτερον τὸν Πλή-  
θωνα

- (26) Περὶ τούτου μέτιθι Γεώργιον τὸν Παχυμέριον, Τόμ: Β'. Βιβλ: Β'. Κεφ: 5. — Γ'.  
Καὶ Νικηφ: Γρηγορ: Ἰσορ: Βιβλ: 5. Κεφ: Α'. Ἀριθμ: Ε'. Καὶ Ἀλλάτ: ἐν τοῖς  
περὶ τῆς Συμφων: τῶν Ἐκκλησι: Βιβλ: Β'. Κεφ: ΙΕ'. Ἀριθμ: 12. Καὶ ἐν τῇ  
περὶ τῶν Γεωργίων Διατριβῇ.
- (27) Περὶ Θεόδωρου τῷ Μεζάλωνος, Μεγάλου χρηματίσαντος Λογοθέτου, Παχυμέρης  
ἀλλαχῆ τε μνείαν ποιεῖται, καὶ ἐν Κεφαλ: ΛΕ'. τῷ Α'. Βιβλ: τῷ Β'. Τόμ:  
ἐν ᾧ τὰ κατὰ Ἀνδρόνικον ἰσορᾶται. Καὶ Γρηγορᾶς ἐν τῷ 5. τῆς Ἰσορ: Κεφ: Β'.  
Ἀριθμ: Γ' καὶ Δ'.
- (28) Οὗτος γάρ ἐν Κύπρῳ ὑπὸ γονέων Λατίνων τεχθεὶς καὶ ἀνατραφεὶς, ἐν αὐτῇ  
τῇ Λατινίδι Ἐκκλησίᾳ, εἰς τὸν Ἀναγνώστῃ προῆκτο βαθμὸν, εἰκοσὸν ἄγων ἕτος  
τῆς ἡλικίας· τὸ δ' ἐξῆς εἰς τὴν Κωνσταντίνην ἐλθὼν, καὶ λόγοις ἑαυτὸν ἐπιδέξας,  
καὶ τὰ καθαρά τῆς Ὁρθοδοξίας ἀρυσάμενος νάματα, τὸν Μοναδικὸν προεἶλετο  
βίον, καὶ τῷ Κλήρῳ σωεταγῇ τῷ Παλατίῳ, ἐν ᾧ προαχθεὶς, ἐφεξῆς ἐν Ἐτε  
1284. καὶ ἐπ' αὐτῷ ἤρθη τῷ Πατριαρχικῷ περιωπῷ, ἰδιώας τῷ Ἐκκλησίαν  
ἄρει τῷ 1289. ὅτε δὲ καὶ πολλῶν εἰς πείραν ἐπηρεῶν γενόμενος καὶ διαβολῶν,  
ἀπολογησάμενός τε ὡς οἷος τε ἴω, ἐκὼν; ἢ ἄκων, ὑπεξέστη τέως τῷ Ἀξιώματι.
- (29) Ὑπὲρ δὲ τούτου ὅρα ἐν τῷ Προσαρτήματι τῆς τῷ Καβέῃ περὶ τῶν Ἐκκλησιᾶς.  
Συγγραφ: Ἰσορ: Ἑβραϊκὸν Οὐάρετωνα, καὶ Ρωβέρτον Γέριον, Ἐτε 1340. Καὶ Κα-  
σιμ: Ὁσδῖνον ἐν Τόμ: Γ'. τῶν ὑπομνημ. σήλη 814. κξ: Καὶ Φαβρίκ: Βιβλιοθ.  
Ἑβλ: ἐν Τόμῳ Γ'. Σελ: 429. ἐνθα ἰσορᾶται, ὑπὲρ τὰ εἰκοσι Συγγράμματα  
Φιλοπονήσαι τὸν Ἄνδρα, περὶ τῆς ἐκ μόνου τῷ Πατρὸς Ἐκπορεύσεως τῷ Ἀγ:  
Πνεύματι.
- (30) Καὶ περὶ τούτου ὁμοίως Ἑβραϊκὸς ὁ Οὐάρετων ἐν τῷ εἰς τὰ Καβέῃ Προσαρτήματι,  
ἐν Ἐτε τῷ Σωτηρίῳ 1400.
- (31) Τὸ δ' αὐτὸ Φησὶν Ἀλλάτιος, καὶ τῷ αὐτῷ Βιβλ: καὶ Κεφ: Ἀριθ: ΙΗ'.
- (32) Ἦκμαζεν ὁ Θεὸς ἕτος Ἀνθρ' κατὰ τὸ 1354. Ἐκ μὲν τῆς Ἀσίας ἐρμώμενος, Θεο-  
σαλονικέων δὲ Πρόεδρος ἀναδειχθεὶς. Σοφία τε καὶ Ἀγιότητα βίβ' ἐπίσης διάση-  
μος ὅς καὶ Βαρλαάμ κατὰ τῶν Θεῶν γλωσσαλγῶντα Συνοδικῶς κατεσίγασε.  
Πολλὰ δὲ σινέγραψε περὶ ᾧ Ἀλβέρτος Φαβρίκιος. Ἑβλ: Βιβλιοθ: Τόμ: Γ'.  
Σελ: 461. Ὁσδῖν. Τόμ: Γ'. τῶν ὑπομνημ: Σελ: 843. καὶ Οὐάρετ: ἐν τῷ εἰς τὰ  
Καβέῃ Προσαρτήμ: Σελ: 54. Καὶ Ἀλλάτ: περὶ τῆς Συμφ: Βιβλ: Β'. Κεφ: 15'.



θωνα (33) καὶ τρίτον τὸν Καβάσιλαν (34), μόνως ἔχομεν: Ἀνδρῶν δὲ ἀριθμὸν ἔκ·ὀλίγον, καὶ τέτων Διδασκάλων τῆς Ἐκκλησίας γενομένων Σοφωτάτων, οἱ περὶ τῆς τῆς Ἀγίας Πνεύματος ἐκ μόνως τῆς Πατρὸς Ἐκπορεύσεως ὑπὲρ Γραικῶν κατὰ Λατίνων συνέγραψαν. (35) Τὰ μὲν ἔν τῆς ΓΕΜΙΣΤΟΥ, (τῆς καὶ ἄλλως ἐπικληθέντος ΠΛΗΘΩΝΟΣ, ἐν δὲ Γραικοῖς σοφία διενεγκόντος.) Ἐκπονήματα, Λέων ὁ Ἀλλάτιος καταλέγει Βιβλ: Γ'. Κεφ: Γ'. Ἀριθμ: 6. Ὁ δὲ ΠΑΛΑΜΑΣ ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ ὁ Θεσσαλονίκης Ἀρχιεπίσκοπος, Λόγως ἀποδεικτικὰς περὶ τῆς τῆς Ἀγίας Πνεύματος Ἐκπορεύσεως σωέταξε κατὰ Λατίνων, τὰς ἐν Λονδίῳ τύποις ἐκδοθέντας, (36) καὶ ἀναγνωσθῆναι ἀξιολογώτατας. Συνέγραψε δὲ καὶ Ἀνασκόδας εἰς τὰς Ἐπιγραφὰς τῆς Βέκκας τὰς περὶ τῆς Ἐκπορεύσεως, ὡς ΠΕΤΡΟΣ ἈΡΚΟΥΔΗΣ Γραικο - Λατινιστὴ Ἔτ: 1630· ἐν Ῥώμῃ ἐξέδοτο. Ὁ δὲ ΝΕΪΛΟΣ ὁ ΚΑΒΑΣΙΛΑΣ, ὁ τῶν Θεσσαλονικέων ὁμοίως καὶ ἕτος Ἀρχιεπίσκοπος χρηματίτας

διὰ-

(33) Γεώργιος ὁ Γεμιστός, ὁ ἑαυτὸν ἐκ τέττε καὶ Πλήθωνα χαίρων ἀποκαλεῖν· διὰ τὸ προσεικὸς τῆς ὀνομασίας τῆς Πλάτωνος, ὃν διαφερόντως διέτελει ἀγάμενος· ἐν τοῖς ἐπ' αὐτῆς πρῶτα Φέρων ἐν Φιλοσοφίᾳ, καὶ εὐδὲ τινὶ Ἱερῶν δὲ παιδείαν εἰδένος δόξτερος, παρὶν ἐπὶ τῆς ἐν Φλωρεντίᾳ Σινίδας, γενναῖος τῆς ἐρθευδὲς φρονήματος προσάτης, καὶ λέγων καὶ γράφων ἐς τέλος ὑπερασπιστὴς διακρύσιος. ὅρα Ἀλλάτι: ἐν τῇ περὶ τῶν Γεωργίων Διατριβῇ, καὶ ἐν τῷ Γ'. τῶν περὶ Συμφωνίας Βιβλ: Κεφ: Γ'. Καὶ Οὐάρεται δὲ, καὶ Ἱέρων, ἐν τῷ εἰς τὰ Καθεῖς Προσαρτήματι. Καὶ Ὁσδίν: ἐν Τόμ: Γ'. σήλη 2348.

(34) Διακριτέον Νέλλον Καβάσιλαν, τὸν Θεσσαλονίκης Ἀρχιεπίσκοπον χρηματίσαντα κατὰ τὸ 1340· καὶ Νικόλαον Καβάσιλαν, τὸν κατὰ τὸ 1350. ἐξ ἀδελφῆς ἐκείνου Ἀνεψιὸν γενόμενον. Ἀμφω δὲ γενναίτατά κατὰ Λατίνων ἱγανιστάδων· περὶ ὧν ὅρα Ἀλλάτιον ἐν τῇ περὶ τῶν Νέλων Διατριβῇ καὶ Οὐάρεται ἐν τῷ εἰς τὰ Καθεῖς Προσαρτήματι καὶ Ὁσδίνον ἐν Τόμ: Γ'. τῶν ὑπομνημ' σήλη 917. καὶ 983.

(35) Ὁ τὸ περὶ τῆς Ἐκπορεύσεως Σύγγραμμα τῆς Σοφωτῆς Ἀρχιεπ: Νοβογοροδίας Θεοφάνους τῆς Προκοπίδους Ἔτει 1772 ἐν Γότθῃ ἡμῖν ἐκδὲς, μετὰ τινὶ ὑπὸ τῆς Συγγραφέως ἰσορικῇ τῆς Ζητημένης διεξέλθοσιν, καὶ τὸν χρονολογικὸν ἔγνω δεῖν Πίνακα παρενθέντα, τῶν ἔτσι ποτὲ συγγράφαι ἀνεβάλλοντο, τῆς σφετέρως κατὰ τῶν ἀντιφρονήτων δόξης ἐκατέρωθεν ἀμυνόμενοι. Καταλέγει γὰρ τὰς μὲν ὑπὲρ Λατίνων σπιδάσαντας γενέσθαι ὑπὲρ τὰς ἐκατὸν, τέτοις ἅμα καὶ τὰς συγκροτηθείσας Σινίδας παρασινώφας· τὰς δ' ὑπὲρ τῶν Γραικῶν, ὡσεὶ ὀγδοηκοντα. Ἀλλὰ πολὺ πορρωτέρω καὶ τῶν δούτερον ὁ ἀριθμὸς αὐτὸν προαχθεῖν, ὡς μὴ λανθάνειν οἱ πλεῖστοι κατεδικάθησαν ὧν μέγατι νέφος, Ingentem nubem; καὶ τέλος ἐπίκεινα, sine fine; καὶ ευρύτατόν γε τὸ λήϊον, amplissimam segetem; ἔς τε Λατινέλεγκτας Ἐλλωζῶν προσαγορεύει Φριδέρικος ὁ Σπαγχεμίος, ἐν τοῖς αὐτῆς Συμμίγμασι τοῖς περὶ τῆς Ἱερᾶς Ἀρχαιότητος (Βιβλ: Δ'. Μέρ: Δ'. §. V. VI. — ἄχρι τῆς XI.) ὧν τε, Φησὶν, editi pauci, plerique in Bibliothecis latitant, notissimi Ailatio: „ὀλίγοι μὲν οἱ ἐκδοθέντες, οἱ δὲ πλεῖστοι ἐν ταῖς Βιβλιοθήκαις λανθάνουσιν, Ἀλλάτιῳ ἡκιστα ἀγνοούμενοι.

(36) Ἐκδεδόνται δ' ἐν Λονδίῳ Ἔτει 1624. Ἐλλωζῆ. Ἐγραψε δὲ ὁ Ἱερὸς Γρηγόριος ὁ Παλαμάς, καὶ κατὰ τῶν ἘΠΙΓΡΑΦΩΝ τῆς Βέκκας ἈΝΤΕΠΙΓΡΑΦΑΣ. Κατὰ δὲ τῶν Ἀντεπιγραφῶν τέτων Βησσαρίων σωέταξεν Ἀπολογίαν ὕστερον, τῆς Βέκκας ὑπεραμυνόμενος. Αἱ δὲ τρεῖς Συγγραφαὶ αὗται ἅμα ἐκδεδομέναι τύποις φέρονται τοῖς ἐν Ῥώμῃ, Ἔτ: 1630. καὶ 1671 μετὰ καὶ τινων ἄλλων ὑπὸ Πέτρῳ τῆς Ἀρενδῆς Ἐλλωζῆ καὶ Λατινιστῆ. Ἐπιγραφὴ δὲ αὐταῖς: „Περὶ τῆς Παναγίας Χρυσᾶς Θεολογικᾶς.

Τόμ: Β'.

Δ δδδδδδ

διάφορα κατὰ Λατίνων σωέθετο, ὧν Ἀλλάτιος μνημονοῦει ἐν τῇ περὶ τῶν Νείλων Διατριβῇ, καὶ τῶν ἐκείνων Συγγραμμάτων, τῇ ὑποσημαφθάσει ταῖς Ἐπιστολαῖς Νείλῃ τῷ Ἀσκητῇ, ταῖς ἐν Ῥώμῃ ἐκδοθείσαις κατὰ τὸ 1668. Σελ: 49 Ὑπερφέρει δὲ ἐν τοῖς τῷ Νείλῃ τῷ ὑπὲρ τῆς τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος Ἐκπορεύσεως Ἀποσπάσματα, ἃ καὶ εἰς Τεῦχος μέγα τὸν ὄγκον φασὶν ἀυξηθῆναι, ὡς ΒΗΣΣΑΡΙΩΝ μαρτυρεῖ παρὰ τῷ ΣΤΡΟΠΟΤΛΩΙ ἐν τῇ Ἱστορίᾳ τῆς ἐν Φλωρεντίᾳ Σωόδου, Τμήματι 5'. Κεφ: ΙΒ'. τὴν δὲ πρὸ τῷ Πονήματος ἐκείνου Προθεωρίαν τῷ Νείλῃ, ἐκδεδωκώς φέρεται ΚΑΒΑΣΙΛΑΣ (37) ὁ ἐξ Ἀδελφῶν Ἀνεψιὸς αὐτῷ. ὡς, ἐνθά εἰρη-  
ται ἀνωτέρω, Λέων ἀναφέρει ὁ Ἀλλάτιος.

Τῶν δὲ τὰ Συγγραμμάτων, ἐπεὶ μηδέποτε ὁ Ἰησαΐτης ἐκεί-  
νος (Κιχώβ:) ἀνέγνω, πῶς, πρὸς Θεῶ! τὴν περὶ τῆς ἐκείνων Σοφίας ἀποδοῖναι εἶχεν ἐπίκρισιν; Ἀλλὰ γὰρ, εἴπερ οἱ ῥηθέν-  
τες Συγγραφεῖς ὑπὲρ Λατίνων μόνον ἐτύγχανον συγγεγραφότες, τότε ἂν σοφώτατοι, τότε Ἀγκύτατοι ἦκασαν, οἱ νυνὶ ἔδενός λόγου, οἱ νυνὶ ἡμίσοφοι ἀκρόντες, καὶ οἷον ἐν τοῖς τῶν ἐλασσόνων Ἑθνῶν Θεοῖς ὑπὸ Λατίνων ταυόμενοι. Ἀλλ' ὡς φλύαρός τε καὶ φλεδο-  
νώδης, καὶ ἀτεχνῶς γλιχραντιλογεξεπίτριπτός τις βεβαιωτῆς τῆς τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος Ἐκπορεύσεως καὶ ἐκ τῷ Τίτῃ, ἀνεδέχθη ὁ ΧΡΥΣΟΛΑΝΟΣ ἐκείνος (38) ἐπὶ τῆς πρὸς τῷ Ἀνατολικῷ αὐ-  
τῷ Διαλέξεως, φανερόν καὶ παρὰ τῷ Βαρωνίῳ ἐν "Εται 1116. Ἀριθμ: ΙΒ'. Καμινὴ καὶ τῆτον ὁμοίως ἐπὶ Σοφίας ἀκρότητι ἀνωτέρω ἡμῖν ἐπέσειεν ὁ Ἰησαΐτης. Ἐπεὶ δὲ ἄρα κοινῇ Λατί-  
νοι ᾤκησαν, καὶ ΓΕΝΝΑΔΙΟΝ (39) τὸν Κωνσταντινουπόλεως Πατριαρχοῦσαντα, ὑπὲρ αὐτῶν συγγεγραφέναι διὰ δὴ τῆτο καὶ Σοφώτατος ἔτος αὐτοῖς θρυλᾶται Πατριάρχης καὶ Ἀγιώτατος καὶ πολλῶν γε τιμῶν παρ' αὐτοῖς καὶ τὰ Λατινιστὶ ἐκδοθέντα ἐκείνου Ζητή-  
ματα, ἐν οἷς κατασκοβεῖται ἢ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος Ἐκπορεύσει καὶ

(37) Παρὰ τισι μὲν ἐξ Ἀδελφῶν ἀνεψιὸς εἴρηται, ὡς καὶ παρὰ τῷ Συγγραφεῖ ὡς τῷ ἡμετέρῳ. Ἀλλ' ἐξ Ἀδελφῆς παρ' ἄλλοις. Καί τις Ἐπιστολὴ δὲ τῷ Νείλῃ πρὸς τὸν Νικόλαον φέρεται, ὡς ἐκ τῷ πρὸς Μητρὸς Θεῶ αὐτῷ γραφείσῃ. (ὄρα Φα-  
βρίκ: "Ἀλβερτον ἐν τῇ Ἑλλῶ: Βιβλιοθ: Τόχ: Ε'. Σελ: 61. Σημειώσ: (12) Καὶ Ἀλ-  
λάτ: ἐν τῇ Διατριβῇ τῇ περὶ τῶν Νείλων.

(38) Περὶ τῷ Χρυσολάνῳ τῷ τῷ, ἢ Γρυσσολάνῳ, ἢ Πρεκσλάνῳ, ὃν ὁ Πάπας Παχάλης ὁ Β'. ἀπέσταλκε πρὸς τὸν Κομνιῶν Ἀλέξιον, τὴν περὶ τὸ Ἁγ: Πνεῦμα καινοτο-  
μίαν ἀναδιδάσκοντα μετὰ τῷ Ἀλλάτιον ἐν τῷ περὶ τῆς Συμφων: τῶν Ἐκκλησι: Βιβλ: Β'. Κεφ: Ι'. Καὶ Λεκυῖνον ἐν τῇ Α'. τῶν Δαμασκηνικῶν Διαλέξεων §. 41. Ἀλλά-  
τιος γὰρ, ὡς ἐκ τῆς τῷ Τριθεμῆς μαρτυρίας, τά τε ἄλλα σοφὸν Ἄνδρα γενέ-  
σθαι φασί, καὶ μὲν δὴ, καὶ Græca et Latina Floquentia insignem. (τῇ Ἑλλῶνικῇ  
τε καὶ τῇ Λατινικῇ εὐφραδείᾳ ἐπίσημον.) Ἀλλ' ἐκ ἐνδίδωσι τεινάνδε περὶ τῷ  
Ἄνδρὸς ὑπόληψιν ἔχον, ὁ πρὸς Ἀλέξιον τὸν Κομνιῶν αὐτῷ Δόγος ὁ περὶ τῆς τῷ  
Πνεύματος Ἐκπορεύσεως ὅνπερ ἡμῖν αὐτὸς Ἀλλάτιος ἐν τῷ Α'. Τόμ: τῆς κατ'  
αὐτὸν Ὁρθοδ: Γραμμάτιος ἐκδεδωκεν.

(39) Ὁρα ἐν Πραγμ: Β'. Σημειώσ: (77). Ἐν τῷ Α'. Τόμ: Σελ: 256.

καὶ ἐκ τῆς Υἱᾶς. Ἀλλ' ἔνθα δὴ τὰ αὐτὰ Ζητήματα, τῷ Γενναδίου ὀνόματι μηδαμῶς ἐπιγεγραμμένα, μετὰ τὰ Ἀθανασίῃς κεῖται Συγγράμματα, ἐκ μόνου τῆς Πατρὸς τῷ τῆς Ἀγίας Πνεύματος ἀκραιφνῶς πρεσβύοντα· ὅπως ἄρ' οἶα πρὸς τῆς Ἰησοῦ ταῦτα καταμασιζέει; „Ὑπεναντία δὴ τότε τῇ Πίσει τὰ ἐν ἐκείνοις παραδιδόμενα· εὐτελής ἡ φράσις· γελοῖα τὰ ἐνθυμήματα· ἦτε ἔν τοις Θεοῖς παραγωγῇ, ὡς ἐκ τῆς Θεολόγου Γρηγορίου προβάλλεται, χλοῦης ἀξία· τό τε τῆς ἐνσαρκώσεως τέλος, λίαν ἀφελές τε καὶ γλίχρον· καὶ τὰ Ζητήματα τελοῦσθαι τοιαῦτα, οἷα ἔπερ μεγάλῳ τινὶ Πατριάρχῃ ἀποδοθῆναι ἤκιστα πρέποντα. (40) Οὕτως ἄρα, ἔτις, παρὰ Σοφωτάτῃς ἄλλως καὶ Ἀγιωτάτῃς τινὸς Πατριάρχου προεληλυθῆα Βίβλος, ἐὰν μὲν τὰ ἐν αὐτῇ γεγραμμένα προθήκῃς αὐξήται κατὰ Λατινικῶν ῥαδικυρίαν, ἀποδεκτὴ κρίνεται ἅπασιν· ἐὰν δ' ἡ αὐτὴ ἀλλαχῇ πάλιν ἀπαραχαράκτως ἔχουσα Συγγραφὴ τὸ κατὰ τῆς Ἀνατολικῆς Δόγμα ἐπισηρίξῃ, ταύτῃ ἤδη ὁ Συγγραψάμενος ἔδεν ὑγιᾶς εἰδῶς, ἀφυῆς, σκαιὸς, ἀχρεῖος τὸ παράπαν ἀκρίβεται. Καὶ ὁ τυχὼν δὲ δοθῇ τότε εἰς βιβλὸν αἴρεται. Ἄργοι ἀντικρυς τῆς ὀφθαλμῶς τιμικαῦτα παῖδες Λατίνων, καὶ πανταχόθεν αὐτοῖς φαύλως εἰρηθῆαι δόξει τὰ λεγόμενα· ἅτλα ἂν ἄλλως, μόνῃ ἢ καὶ ἐκ τῆς Υἱᾶς ὁμολογηθῆτα τῆς Πνεύματος Ἐκπόρουσις ἀπαλείψαι ἰχύσειεν· αὕτη γὰρ τοσῶδε φωτὶ αὐτοῖς ἐπικαταστράπτει, ὡς λημῶν αὐτῶν τὰς ὕψεις ποιεῖν περὶ τὰ σφαλλόμενα. Τίς ἔν τῷ τοσῷ δε τῶν Λατίνων κενοφροσύνῳ, ἐκ ἂν δεόντως καταγελάσειεν;

Ἀλλὰ προσετίθει τέως ὁ Ἰησοῦς, ὅτι καὶ αὐτοὶ Γραικοὶ διὰ πλείστων ἐκτεθειάκασιν ἐπαίνων, τῷ Βέκκῃ τε καὶ Βλεμμίδῃ καὶ σοφίαν καὶ ἀγιότητα. — Περὶ μὲν ἔν τῆς σοφίας συμφάσκω· περὶ δὲ τῆς Ἀγιότητος ἀποφάς, ἐκ ἂν ἴσως σφόδρα ἄτοπος εἶω. Ταύτης γὰρ ἔδὲ ψιλῶ ῥήματι ὁ Γρηγορὸς ὑπεμνήθη· οἷκοθεν δὲ καὶ ἐξ ἐαυτοῦ προσεδαψιδύσατο ὁ Ἰησοῦς. Ἀλλὰ καὶ περὶ τῆς Αὐτοκράτορος Μιχαήλ, καὶ περὶ τῆς Βέκκῃ, τοσαῦτα.

#### ἈΝΤΙΘΕΣΙΣ Β΄.

Δεύτερον δὲ, καὶ εἴ τινας τῶν Ἐπισκόπων, ἢ τῶν ἐκ τῆς Κλήρης, τὸν νῦν ἐξῆς προσέχον περὶ τῷ ἑνώσειν, ὑπὸ τῆς Αὐτοκράτορος προτραπέντες, ἢ καὶ ἐπαναγκαθέντες, τόδ' ἐποίησαν. Ἐφ' ὅσον μὲν γὰρ αὐτοῖς ἐλθεῖν φρονεῖν ἐφῆτο, ἀπλῶς ἦπα τῷ ἑνώσειν ἐτύγχανον ἀποτροπιαζόμενοι. Α'. καὶ γὰρ ὑπὸ τῶν τῆς Γ. Γρηγορίου

(40) Κιχῶς: Ζητήμ: Γ'. Σελ: 117. 118.

γορίε διερωτηθέντες Λεγάτων, ἀδωάλον ἔφασαν τὰ τῆς ἐνώσεως ἐπιχειρηθῶαι, ὡς μὴ πρότερον ἀπὸ τῆς Συμβόλης τὸ τῆς Προσθήκης ἀρθῇ· καί τοι περὶ τῆς Δόγματος αὐτῆς μηδὲ προσδιαλεχθῶαι ἀξιῶν πρεσεπαγγελάμενοι. Οὕτω γὰρ ὁ ΠΑΧΥΜΕΡΗΣ, ἐν τῷ Ε'. Βιβλ: Κεφ: ΙΑ'. (41) „Οἱ δὲ τῆς Ἐκκλησίας, καλὸν μὲν „ἔλεγον τὴν εἰρήνῃ εἶναι· καὶ πῶς γὰρ ἔ; καὶ μᾶλλον Ἐκκλη- „σίαις τοιαύταις κεφαλῆς λόγον ἔχουσαι, τοῖς ὅπως δῆποτε τῆ „Εἰρηάρχῃ Χριστῷ Μαθηταῖς. Πλὴν μετ' ἀσφαλείας, καὶ ἔχ „ὥς ἔτυχεν· εἶναι γὰρ τὸν κίνδυνον μέγαν, τοῖς τῆς ὁρθῆς ὁπωσὲν „ἀμαρτάνουσι· καὶ τῆτο ἔχ ἡμῖν ἄρτι σωθεῖν πεπράχθαι, ὡς „καὶ αἰτίαν ἔχεν τῆτε καινοτομεῖν ἢ ἑδῆς πρότερον, καὶ τῆ μὴ „θέλειν μεταβάλλειν πάλιν, εἰς ὃ καὶ πρὶν ἡμεῖς ἄλλ' ἄνδρες με- „γάλοι τὴν ἀρετῇ, καὶ σοφοὶ τὴν γνῶσιν περὶ τέτων λαλήσαν- „τες διωέχθησαν, καὶ δόξαν ἐκείνοις διέσκησαν. — Καλὸν ἐν ἡ „συμφέρειν τὴν εἰρήνῃ σε ἀποδόντα τῶν Ἐκκλησιῶν, ἔτω πε- „ραῖσθαι σωθεῖν ταύτῃ σοφῶς οἰκονομῶντα παρ' Ἰταλοῖς τὴν τῆ „σκανδάλῳ ἀφαιρέσιν· καὶ ἡμεῖς οἱ αἰτιώμενοι τῆ σκανδάλῳ „δικαίως ἡμῖν ἐπιπλήττοντα, ὡς ἐτοίμοις ἔσι δέχεσθαι τὴν ἐπίπ- „ληξιν. Εἰ δὲ παρ' ἐκείνοις τὸ σκάνδαλον ἔβλαψεν, ἀνάγκη „πνευματικὸν ὄντα, ἡ πρεσβυτέρῳ τῆς εἰρήνης, ἐκείνοις ὡθεῖν „πειραῖσθαι τὸ ἐπὶ τῇ καινοτομίᾳ τῆς Συμβόλης ἀμάρτημα. „(Προσέθῃσι δὲ Παχυμέρης:) „Οὕτως ἔλεγον οἱ τῆς Ἐκκλησίας, „καὶ ἔτως ἔχον, ὡς ἑδὲν ἀκασόμενοι Βασιλέως εἰ προσάσοι ἐν „τέτοις, καὶ εἴ γε τὰ μέγιστα ἀπειλοῖ,,.

Ὡς δ' ὁ Κρατῶν ἔπειτα εἰς Σύνοδον συγκαλέσας τὸν Πατρι- ἀρχῇ, καὶ τῆς Ἐπισκόπου, καὶ τὸν Κλήρον, πλείους πρεσβύλλετο παρακαλῶν αὐτοὺς πρὸς τὴν ἑνώσιν, ὁ ΒΕΚΚΟΣ Χαρτοφύλαξ ὢν, ἐναχθεὶς τε παρὰ τῆς Πατριάρχῃ ἐπιμνήσκων Ἀναθέματος προε- νεγκεῖν, ὅπως ποτ' ἂν αὐτὸς ἔχοι δόξης περὶ τῶν Ἰταλῶν; Ὁ δὲ τέτῃς, Αἰρετικὸς εἶναι μὲν ἀπεκρίνατο· μὴ λέγεσθαι δὲ ὅμως διὰ τὴν τῆς γένεσιν ἰχώ. (Παχυμ: Βιβλ: Ε'. Κεφαλ: ΙΒ'.) (42) τῆ δ' Ἀυτοκράτορος ἐφεξῆς Τόμον σωταχθῶαι ἐπιμεληθέντος δεικνῶαι μηδαμῶς ἐξῆναι Λατίνους ἐγκαλεῖσθαι Αἰρέσεως, ἡ τῆτον διαπεψαμένῃ τῷ Πατριάρχῃ ἀναντίρρητόν τινα ὄντα, ὡς ᾤετο. Σύνοδον ὁ Πατριάρχῃς ἀγέρας, ἐνετέλατο ἐκάσῃ, ὡς ἂν οἷος τε ἦ, τὰ ἀντιπίπτοντα εἰς μέσον προεξενεγκεῖν· πᾶδ' ἔτω γεγραμ- μένα προσωέχθῃ μετὰ τῆτο τῷ Βασιλεῖ. (Παχυμ: Βιβλ: Ε'. Κεφαλ:

(41) Ἐν Τόμ: Α'. τῆς ἐν Ῥώμῃ Ἐκδόσ: Σελ: 252, 253.

(42) Ἐν Τόμ: Α'. Σελ: 255.



Κεφαλ: ΙΔ'.) (43). „Ὁ δὲ Πατριάρχης σὺν τῇ Σωόδῳ περὶ  
 „τῷ Τόμῳ διασκεψάμενος, πέμψαντες σωήγον τὰς μετ' αὐτόν  
 „εἶναι δοκῦντας. Ἦσαν ὅν κ' ὅσον τὸ τῆς Ἐκκλησίας ἔκκριτον,  
 „ἦσαν δὲ καὶ οἱ περὶ τὸν Τορνικόπαλον Ἰωαννίκιον, χιζόμενοι  
 „μὲν τῷ Πατριάρχῃ περιφανῶς, ὅμως δὲ τῆς χρείας καλῆσης,  
 „τὰ τῆς μικροψυχίας ἐκάνης χώραν ἐκ ἔχον. Σὺν τέτοις δὲ  
 „παριῷ καὶ ἡ τῷ Βασιλέως αὐταδέλφῃ Ἐυλογίᾳ καὶ πᾶν ὅσον  
 „ῶ (ἐπ' αὐτοῖς) ἐν Μοναχοῖς καὶ Λογίοις ἐξεταζόμενον· οἷς σκο-  
 „πὸς εἰς ῶ πρὸς τὸν Τόμον ἀπολογεῖσθαι τῷ Βασιλεῖ. Καὶ δὴ:  
 „ἀνεγνωσέτο μὲν ὁ Τόμος· ἄλλος δ' ἄλλο τι πρὸς τὸ παρεσὸς,  
 „τοῖς προκειμένοις ἀντέλεγεν. Ἐπὶ δὲ χρεία ῶ συμφραθῶναι  
 „τὰς λόγους, καὶ εἰς ἓνα σωτεθήσεσθαι Τόμον· καὶ ἐξητᾶτο ὁ  
 „σωθησόμενος, ἀνεδέχετο μὲν τὸ ἔργον ὁ Ἰασίτης Ἰωβ, εἶχε  
 „δὲ καὶ ἄλλος, καὶ μᾶλλον τὸν Συγγραφέα τῶν τοιῶτων ἐμὲ,  
 „τῶν ἐννοιῶν συλλήπτορας· καὶ μετ' ἐ πολὺ ὁ Τόμος ἐξείργαστο·  
 „ὅν δὴ, καὶ κοινῶς ἀναγνωθέντα πάλιν τοῖς ὅλοις, καὶ ὅσον ῶ  
 „πρὸς τὸ εὐχημότερον μεταπλαθέντα, ὡς μὴ λυποῖη, σκληρῶς  
 „ἐντισιν ἔχων, τὸν Ἀνακτα, μετ' αὐτῷ δὴ τῷ Ἀρσενίῳ πέμψ-  
 „σιν „.

Ἐπὶ τέτοις ὁ Πατριάρχης ἅπασιν τοῖς ὑπ' αὐτὸν τελέσιν  
 Ἐπισκόποις ἐπισείλας παρήναι, μηδὲν ὅλως τῆς ἀρχαίας ἀποχω-  
 ρεῖν Πίσεως, μηδὲ τοῖς ἔξω σωάπτεσθαι, καθυποβαλὼν κ' ὅρκῳ,  
 ὥπερ ἑαυτὸν ἐδέσμευ· ὥς πάντα ταῦτα ἀμεταθέτως τηρεῖν.  
 Συγκροτηθείσης ὅν τῆς τῶν Ἐπισκόπων Σωόδου, αἱ τῷ Ἰωσήφ  
 ἀνεγνωσθήσαν αὐτῇ Ἐπισολᾷ, αἷς δὴ καὶ πάντες μὲν συγκατέ-  
 θεντο, πλεῖσοι δὲ χειρὶ ἰδίᾳ καὶ καθυπέγραψαν· κἀντεῦθεν δὲ  
 καὶ πανταχῶς διεπέμφθησαν. αἱ αὐταί. (Παχυμ: Βιβλ: Ε'.  
 Κεφαλ: ΙΕ'.) (44) „Τῷ μέντοιγε Πατριάρχῃ μέλον ῶ ἐφ'  
 „ἐκάσῳ τῶν πρὸς Βασιλέα Ἀποκρίσεων μεζόνως ἤδη ἐπιτιθέ-  
 „μενον, καὶ γ' ἡρεμεῖν μὴ εἶντα „. (Παχυμ: Αὐτ: Κεφαλ: Ις'.  
 ἐφεξῆς) (45) „Ταῦθ' ὁρῶν ὁ Μοναχὸς Ἰωβ Ἰασίτης, καὶ παρὰ  
 „τῷ γνώμῳ ὁρῶδῆσας τῷ Πατριάρχῃ μὴ καθυφείη τῆς ἐνστά-  
 „σεως ἀπειπὼν, μηχανᾶται τι τοιοῦτον ἐπὶ τῷ τῷ γνώμῳ τῷ  
 „Πατριάρχῃ ζηρεῖναι. Ὑποτίθεται γὰρ γνώμῳ, γράφειν καὶ  
 „πέμπειν τοῖς ὅπῃς δῆποτε ἐυλαβέσιν Ἀνδράσιν, εἰς πληροφορίαν  
 „δῆθεν, προσιθέντα καὶ ὅρκον, ἐφ' ὃ μὴ κλονοῖντο, ἀλλ' ἀραρό-  
 „τως ἔχειν, ὡς ἐ καθυφείη, πισθύνοντας· κ' ἔτιως ἔλξιν ἐκείνης  
 „πρὸς τὸ εὐμενέσερον, ὥς καὶ χιζόμενης τὸ πρῶτον δέχεσθαι.  
 „Τέτοις

(43) Ἐν Τόμῳ: Α'. Σελ: 257.

(44) Τόμῳ: Α'. Σελ: 259.

(45) Τόμῳ: Α'. Σελ: 259. 260.

Τόμῳ: Β'.

Ε ξεξεξε

„Τῆτοις τοῖς λόγοις ὁ Ἱεράρχης παθεῖς, ἐγχωρᾷ μὲν ἐκτιθέμενα  
 „τιῷ γνώμῃ, καὶ ἐξετίθετο τιῷ ταχίσῳ. Πρὶν δὲ πεμφθῶναι,  
 „ἔδοξε τῶν Ἀρχιερέων ἀποπαρᾶσθαι, ὡς μάθοι, εἰ εἰς τέλος  
 „ἀντίχοιεν. Σωαχθέντων τοίνυν, ὑπανεγνωσκετο μὲν ἡ γνώ-  
 „μη τῇ Πατριάρχῃ, ἡρωτῶντο δὲ, εἴγε καὶ αὐτοὶ ἐμμένειν ἔχοιεν  
 „κατὰ ταύτῃ; καὶ ὡμολόγησαν αὐτίκα, καὶ τιῷ γνώμῃ ἑκάστος  
 „ἰδίᾳ ὑπογραφῇ (πλὴν τῶν προνοεσέων) ἐβεβαίωτε καὶ κατησ-  
 „φαλίσετο. \* Ὡς γὰρ ἐπέμψθη μὲν ἡ γνώμη, ἐν ἀφύκτοις δ' ὦν  
 „ὁ Πατριάρχης τῇ μὴδ' εἴτι καὶ γένοιτο, μεταβάλλαν· τοῖς γὰρ  
 „ὄρκοις σωείληπτο· δηλὸς ὦν καὶ πρὸς Βασιλέα λέγων, ὡς ἔ-  
 „ποιήσω, ὃδὲ καταπραεζόμενος τιῷ ἐγχείρησιν. \* Οὕτω δὴ περ,  
 ὡς ἐν τῷ Βασιλεῖ τελευτάων τὸν Πατριάρχῃ σωθέσθαι, ὅπως  
 τὸν Πατριαρχικὸν παραιτήσῃται Θρόνον, εἰ τέλος λάβοι τὰ τῆς  
 ἐνώσεως· ἐπὶ τὸν αὐτὸν δ' αὖ ἐπανέλθῃ, ὡς μὴ ἡ ἔνωσις ἔψοιτο.  
 (Παχυμ: Βιβλ: Ε'. Κεφαλ: ΙΖ'.) (46) Περὶ δὲ τῆς διείληψε  
 καὶ ἡ πλειόνων Γραικῶν Ἐπισκόπων πρὸς τῆς Λατίνης Ἐπιστολῇ,  
 ἡ ἐν τῷ ΙΑ'. Τόμῳ τῶν Σωδοικ: ἐμφερομένη, Μερ: Α'. Στήλῃ  
 970. ὅπερ ἐν ὕστερον καὶ σωξέῃ τῆς ἐνώσεως ἡδὴ προβάσεως  
 ὅτε καὶ τὸν Πατριαρχικὸν Θρόνον ἐκὼν (ἄκων) παρελίπε.  
 (Παχυμ: Βιβλ: Ε'. Κεφαλ: ΚΒ'.) (47) Ἐξ ὧν δὴ πάντων  
 ἄλλης ἐστὶ Φανερόν, ὡς ἐφ' ὅσον μὲν παρῶν τὸ ἐλδύθερον, τῷ τε  
 Πατριάρχῃ, καὶ τοῖς Ἐπισκόποις, καὶ τῷ Κλήρῳ, καὶ τῷ Λαῷ,  
 ἔδδεν τι τὸ παράπαν αὐτοὶ ἐπακέναν περὶ ἐνώσεως ἡθέλον. \* Ἐκ  
 δὲ τῇ ἐπομένῃ, ὡς ἔδδεν μετὰ ταῦτα ἐκόντες, ἀλλ' ἐπειγόμενοι τε  
 καὶ καταναγκασόμενοι ὑπὸ τῇ Κρατῆντος, πρὸς τιῷ ἔνωσιν ἐνε-  
 δίδωσαν.

ἌΝΤΙΘΕΣΙΣ Γ.

Ἀμέλειται γὰρ καὶ τρίτον οἱ Ἀνατολικοὶ Ἐπίσκοποι, ἐκ αὐτῶν ἐκόντες, ὡς τῇ διωάμει τῶν Ἱερῶν λογίων ἐνδιαθέτως πληρο-

(46) Ἐν τῷ Α'. Τόμ: Σελ: 262.

(47) Τόμ: Α'. Σελ: 270. Ἐνταῦθα μὲν ἔν, τὸ ὅτι καὶ (Ἰῶαν) ὁπωσὲν τὸ ὑπὸ Ζαΐ-  
νικαβίβ παραλειφθῆναι, ἡμῖν ἐκότως παρελείθη. Ὡς γὰρ ὁ ἱστορικὸς Φησίιν: (Αὐτ':  
Βιβλ: Ε'. Κεφαλ: ΚΚ'. Σελ: 270.) „Οὐκ αὐτόθεν ἐκείνος (ὁ Πατριάρχης) πα-  
ρηβλήτο τιῷ προσασίαν,.. Πῶς ἔν sponte; (ἐκάν;) ἢ ὅτι εἰς τῶτο πρότερον διὰ  
τῷ γενομένῳ ἔρκῃ ἐκάν ὑπενύωεκται; Ἀλλ' εἴπερ ἐκάν ὁμασεν, ἄκων ὁμως ἐυόρ-  
κησεν" ὅτι γὰρ ἐκάν ἐκάν ὁπεχώρεν τῷ Θρόνῳ, Φανερόν ἐξ ὧν αὐτὸς αὐτόθι, Πα-  
χυμέρης προσέθετο καὶ γὰρ καὶ μακτύρων ἰδέησε τὰν παρασησόντων τιῷ πρὸς  
ἐκάνς τῷ Βασιλεῖ γενομένῳ ὑπόχρεσιν" καὶ ψήφῃ δὲ προσέθηκες τῆς παρὰ τῶν  
Ἀρχιερέων, τῶν ἐκάνς ὡς ἦδη ἐπισηκῆσαι, ἀγνίαν ἐπικαλῆψιφισαμένων. Οὕτως  
ἰχυρόν τὸ Φίλαρχον ἐμφιλοχωρεῖν, καὶ τῶς ἄλλως ἀποτάσσεσθαι τῇ προσέσῃ ἐξ-  
σία τε καὶ δύναμις ἐπαγγελλομένοις ἐγκείται τὰ πλεῖστα καὶ παρενοχλεῖ. Ἦν  
μή πετι περὶ τῷ Πατριάρχῃς τῶτος εἰπεῖν ἐθέλοι, ὅτι, ὡς ἀντισυόμενος τῇ  
ὑπεσθῆσθαι καινοτομίᾳ, εἰ μείνει Πατριαρχεῖσιν, τῆς ἀφαιρεμένης ἀξίας ἔτι πάν-  
νυγε ἐκάν ὑπεξίστατο.

πληροφορούμενοι, ἐκ δὲ τῆς Κρατουῦτος ἐπαιγόμενοι, τῆς διὰ τῆς  
ἐξῆς ὁλέθρου, ἕως ἄλλως περὶ τοῖς λαοῖς ἐδεδίει, ὑπὸ μερίμνης  
μονονυχὶ ἀνγχομένους, τῇ ἐνώσει δὴπὲρ ἐκείνη τῇ μετὰ τῶν Λα-  
τίνων ἐνέδωκαν· ἔχ' ὅτι γε καὶ καλῶς αὐτῷ ἐνόμιζον, ἀλλ' ἢ  
λίκοις ἄλλως παρὰ Λατίνων ἐπήρτητο. Οὕτω γὰρ δὴ τραυῶς  
ὁ Παχυμέρης Βιβλ.: 5'. Κεφαλ: ΚΓ'. (48) „Οἱ περὶ τὸν Ἐφέ-  
σον, καὶ πολλοὶ τινες τῶν Ἀρχιερέων, πολλὰ παθόντες πρὸς τὸ  
καταδεξασθαι τὴν εἰρήνῃ, ἔτω μόλις καθυπεβλήθησαν· καὶ τῷ  
δοκεῖν εἰρωδῶν θραυπῶντες τὴν σωείδῃσιν, ἐκ ἀπὸ Γραφῶν  
μαῶν· ἔ' γὰρ ἡ ἐκ τέτων καιρός· ἀλλ' ἐκ τῆς πολλῆς τοιαῦτα  
πολλάκις οἰκονομηθῶσα τῇ Ἐκκλησίᾳ, χάριν μεζόνων καλῶν·  
ἔτω γὰρ καὶ Παῦλον ξυρίσασθαι, καὶ ἀγγεῦσαι, καὶ περιτεμεῖν  
Τιμόθεον· ἔτω τὸν Μουσεσίας μὴ ἐκκηρυχθῶσα παρὰ τῆς Γ'.  
Σωῶδης Θεόδωρον· ἔτω πρὸς τέττα τὸν Μέγαν Βασίλειον, τὰ τῆς  
Οὐάλεντος δῶρα τῇ Ἐκκλησίᾳ προσαγόμενα δέχεσθαι· ἔτω τὰ  
καὶ τὰ, ἵνα μὴ καθ' ἑκάστον λέγητις, δοκιμασάντων τῶν ἐπὶ  
τῶν πραγμάτων τότε πεπράχθαι· ἔτω τοίνυν καὶ ἔτοι τὴν  
εἰρήνῃ ἐδέχοντο, ὥς καὶ προσομολογεῖν ἡμαρτήσθαι σφίσιν,  
ἥντις σκοποῖη πρὸς τ' ἀσφαλὲς καὶ τοῖς ἀποσταῖσιν ὁσίως προσ-  
φέρεσθαι, ὥς ἀπηκριβωμένοις μάλα πρὸς τὸ ὀρθόν. Ἐνθεντοι  
τῆς Βέκης τὴν μετὰ Λατίνων ἐπιδοκιμάζοντος ἔνωσιν, καὶ τέτων  
ἀσφαλῶς ἔχαι ἡγεμένους τὸ Δόγμα, οἱ λοιποὶ τῶν ἐνωθέντων  
κατ' ἐκείνους σφοδρῶς ὠέχθησαν· ἢ καὶ περὶ τέττα προῶν ὁ Πα-  
χυμέρης διεξέειπεν: „Τῷ δὲ (Βέκῃ) ἐκ ἡ ἀρεσὸν ἔτω· ἀλλ'  
εἰμὶ δεικνύοι καὶ σφάλλοντας τῆς προτέρης δῆθεν ἐκ τῶν Γρα-  
φῶν, οἳ δὴ καὶ τὴν πρὸς ἐκείνους εἰρήνῃ ἐκ ἀπεδέχοντο, ἐδὲ  
βιωτὸν εἶχον τὸν βίον· ὅθεν καὶ συχνὰς Σωῶδης καθίσα, καὶ  
προσεκαλεῖτο πολλὰς καὶ τῶν ἔξω, καὶ Βίβλος ἀνέλιττε, καὶ  
ἄλλως ἐξετίθετο πλείσας, δεικνύων ὥς εἶχε τὴν εἰρήνῃ τὸ ἀσ-  
φαλὲς ἔχουσαν· καὶ τὰ πλείσα προσελιχνόετο. — Ταῦτα μὲν  
ὁ Πατριάρχου ἐσίγη δεικνύς τὴν μεσιτείαν τῆς Τιῆς ἐξ ἀνάγ-  
κης εἰσάγουσαν τὴν ΔΙΑ', καὶ διὰ ταύτης τὴν ἘΚ τῶν Ἰταλῶν  
προσιέμενος, ὥς ἀντιπαραχωρεσῶν τῶν προθέσεων. Οἱ δὲ πε-  
ρὶ τὸν Ἐφέσον, καὶ τὸν Ἀθῖων Μελέτιον, καὶ ἄλλοι πλείσοι  
ἐσκανδαλίζοντο, μεζόνος κακῆς τῆς δοκεῖν παρακινεῖν Δόγματα,  
ἐλαττον κακὸν, τὸ ἡμαρτήσθαι σφίσι ποιησαμένοις εἰρήνῃ μετὰ  
σφαλλόντων ἐν Θεοῖς Δόγμασιν, ἀνθαιρέμενοι. Ἀλλ' ὁ μὲν Με-  
λέτιος καὶ λίαν ἐπαρρησιάζετο, (καὶ ὥς μιᾶς (ἡμέρ:) πολλὰ  
,,έν

(48) Τόμ: Α'. Σελ: 327.

„ἐν Σιωδῶ λαλήσαι, καὶ τέλος τὸν ἐπενδύτῳ κελεῦσαι τῷ ὅπα-  
 „δῶ ἀράμενον ἔπεσθαι, ὡς καὶ εἰς ἐξορίαν ἔτοιμον) ὡς ὑπὲρ  
 „τοιούτων ἀγωνιζόμενος. Οἱ δὲ περὶ τὸν Ἐφέστῃ προνοητικῶς  
 „μὲν εἶχον διὰ Βασιλέα, μὴ θέλοντες δοκεῖν εἰσάγειν ἐν καθε-  
 „στῶσι σκάνδαλα· ὅμως δὲ καὶ βαρέως ἔφερον, καὶ ἐκποδῶν  
 „ποιεῖν κατὰ τὸ λεληθὸς ἐκείνον, ὡς ἐδόκειν, ἐβέβηκον. Καὶ  
 ἀνωτέρω δὲ πρὸ τούτων ὁ αὐτὸς Παχυμέρης περὶ Βέκκῃ φθά-  
 „σας εἰπεῖν, (49) ὡς καὶ τῆς ἐνώσεως, καὶ τῇ Λατινικῇ Δόγμα-  
 τος προΐσαίτο· „Τὶ τὸ ἐντεῦθεν (Φησὶ); μάχητις ἐπ' ἐ καίροις  
 „καὶ φιλονεικία σιωῖσεται· τὸ δὲ τῆς μάχης κεφάλαιον, ὅτι κι-  
 „νῶνται Δόγματα μέλει. Εἴτα ὑμῖν μὲν ἐφαίται εἰς ὅ,τι χρή-  
 „σασθαι Δόγμασι, καὶ εἰσιτητὰ εἰς οἶκον Κυρίῃ, ταῦτόν δ' εἰπεῖν καὶ  
 „Δογματῶν, καὶ ὅ,τι λέγοιτε ἄλλοις δ' ἐκ τῷ μεμνηθῆαι Δογματῶν  
 „ἀπολογημένοις περὶ Δογματῶν· καὶ μεριμνῶνται ἀναγκαζόμε-  
 „νοι, ἀδικοῖεν ἄν. Ἐγὼ μὲν ἐκ οἴμα· πλὴν μέχρι καὶ αὐτῶν  
 „Βασιλικῶν ἀκοῶν ἀνήγον τὸ ἐγκλημα· καὶ γ' εἰρωδῶν ὑπὶ-  
 „χνῶντο, εἰ Βασιλεὺς ῥητῶς προσάσσοι μὴ λαλεῖν τινὰ Δόγμα-  
 „τα, καὶ οἶα, καὶ ὅπως λέγοι.

Τοιάνδε τόνῳ ἐνωσιν, τοιάν δέ τε ὁμοφροσύνῳ ἐπανέσαιεν  
 ἂν οἱ Λατῖνοι, ἢ τοῖς σφῶν πράγμασι σιωῖσσαν ἡγήσαιντο;  
 τίς μετὰ τῶν ἀτόπως οὕτως περὶ τὰ τῆς Πίσεως Δόγματα φρο-  
 νεῖν πεπεισμένων; ἀδόκιμον δὲ καὶ ἐπισφαλῆ τίς σὺ αὐτοῖς κοι-  
 νωνίαν οἰομένων; δεῖ δὲ μόνον τῶν ἐπηρτημένων δεινῶν, ὡς  
 κακὸν αὐτῷ τὸ μὴ χεῖρον, σφίσιν ἀνθαιρεμένων; πῶς ἐν ἄρα  
 τίς ἐπὶ Μιχαήλ τῇ Ἀυτοκράτορος χεδιαθέσαν ἐνωσιν ἐκείνῳ  
 τοῖς Ἀνατολικοῖς οἱ Λατῖνοι ἀντιπροτείνειν ὑφίστανται ἐκ αἰδῶ-  
 μενοι;

#### Ἀ Ν Τ Ι Θ Ε Σ Ι Σ Δ'.

Ἀλλὰ τέταρτον τίς ἐνωσιν ἐκείνῳ ἐχ' ὅπως οἱ Ἀνατολικοὶ τό-  
 τε φράδῳ τε καὶ ἐξίτηλον τὸ παράπαν γενέσθαι διεμαρτύραντο,  
 ἀλλὰ καὶ αὐτοὶ Λατῖνοι, δι' ἧς ἐκπεπόμεφασι Λεγατείας τοιαύτῳ  
 ἀπέδειξαν. Μιχαήλ γὰρ ὁ Παλαιολόγος, ἐφ' ᾧ πᾶσαι τὰς ἰδίους  
 προσέσθαι τὴν ἐνωσιν, τοιαῦτα ἔλεγε (παρὰ τῷ Παχυμέρῃ,  
 Βιβλ: Ε'. Κεφ: ΙΗ'. (50) φάσκων: „Τρισὶ δὴ Κεφαλαίοις καὶ  
 „μόνοις τὸ πρὸς τὴν τῶν Ῥωμαίων Ἐκκλησίαν πραττόμενον πε-  
 „ριζήσεσθαι: πρωτεύω, ἐκκληλῆτω, καὶ μνημοσιώω ὧν ἕκασον, εἰ  
 „τις ἀκριβῶς σκοποῖη, κενὸν εἶναι ἀνάγκη. Τὸ δ' αὐτὸ καὶ τοῖς  
 „ἐν

(49) Τόμ: Α'. Σελ: 326.

(50) Τίμ: Α'. Σελ: 263.

ἔν τῇ περσίᾳ διάγῃσι Μονασαῖς Λατίνοις τινὲς τῶν Ἀνατολικῶν διαβρήδῳ καθωμολόγησαν. (Παχυμ: Βιβλ: 5'. Κεφ: ΙΔ'. (51). „Τινὲς γὰρ καὶ παρὰ τῶν ἡμετέρων, πολλοῖς τῶν ἐν ἐκείνοις Φρερίων μινυῶτες, χλοῖω ἔλεγον τὴν εἰρώλιω εἶναι. Καὶ αὐτὸς δὲ ὁ Κρατῶν, (παρὰ τῷ Παχυμ: ἐφεξῆς Κεφαλ: ΙΕ'. (52) „Ἐπεὶ δὲ τῶν ἡμετέρων τινὲς, ὡς πέπυσμαί — Φρερίοις ἐντυχόντες κατὰ πρὸς τὴν περσίαν, χλοῖω τὴν εἰρώλιω εἶπον, καὶ ἀπάτῳ εἶναι, κτ.: „Ἐνθεντοὶ Ἰωάννης ΚΑ', ὁ Πάπας Ῥώμης, ἀποστείλας Λεγάτους ὑπεσημῶατο τῷ τε Ἀυτοκράτορι καὶ τοῖς Ἀνατολικοῖς, μὴ ἐν ψιλοῖς ῥήμασι τὴν εἰρώλιω κεῖσθαι τῶν Ἐκκλησιῶν, ἀλλ' ἐν πράγμασι καὶ δὲν ἄρα ἐξ ἀνάγκης αὐτὰς εἰρωδοῦσας ἀναδειξάτω τὰς Ἐκκλησίας, ἀποδεξαμένους μετὰ γε τῆς προσηύκης τὸ Σύμβολον. (Παχυμ: Βιβλ: 5'. Κεφαλ: ΙΔ'. (53) Τῷ αὐτῷ δὴλον καὶ ἐκ τῆ Ὑπομνησικῆς, ὅ τοῖς αὐτοῖς ἐκείνοις Λεγάτοις δεδοκῶς ἦν ὁ Πάπας (παρὰ Λέοντι τῷ Ἀλλατίῳ Βιβλ: Β'. τῆς διωκεκῆς Συμφων: τῶν Ἐκκλησιῶν: Κεφαλ: ΙΕ'. Ἀριθμ: Β'.) Ἀλλὰ τὴν τοιάνδε Σωθῆνικὴν ἐδόλωσεν ὁ Κρατῶν αὐτὸς, ὅ οἱ λοιποὶ τῶν τῇ ἐνώσει ἐπινοῦσάντων προσέειπεν ἡξίωσαν (Παχυμ: Βιβλ: 5'. Κεφαλ: ΙΔ'. ΙΕ'.) ἀπαρτῇ δὲ μόνον τῇ τῆ Ἀυτοκράτορος γράμμα σωετάρχη, ὡς παρὰ πάντων τῶν Ἀνατολικῶν Ἐπισκόπων ὑπογραφέν ἐν ᾧ δὴ, ἐδόκει μὲν πως ἡ τῆ Ἀγ: Πνύματος Ἐκπόρευσις καὶ ἐκ τῆ Τίτῃ κατασκοδάζεσθαι, πλείοσι δ' ἐν ῥήμασιν ἑτέροις ἔτω σωελίσσετο τὸ Δόγμα, ὡς κομιδῇ συγκαλύπτεσθαι τὸ τῆς Ἐκπορεύσεως ὄνομα ὑπεγέγραπτο δὲ τῷ Γράμματι καὶ ἀριθμὸς πολὺς Ἐπισκόπων ἐνεφέρετο δ' ἐν αὐτῷ καὶ πλείους Ἀνδρῶν τε καὶ χωρῶν ὀνόματα τῶν μὴδ' Ἐπισκοπικῆς προεδρείας πώποτε κατηξιωμένων· τὰ δὲ τῶν λοιπῶν, Γραφῆως τέχνη πρὸς μίμησιν ἀπεξεκασμένα, τὴν χεῖρα τῶν ὀνοματιζομένων καθυπεκρίνετο. Τοιγαρὲν καὶ τὸ τοιόνδε Γράμμα, ὅσον γνήσιον, καὶ τοῖς τῶν Λεγάτων αἰτήμασι προσεπαρκέσον ἐνεχείρισε τέτοις ὁ Βασιλεὺς, παραπέσειν ἔτω Λατίνους δοκῶν ἢ ἔμπεδον αὐτοῖς εἶναι ἡγήσθαι τὴν γενομένην ἑνωσιν μετὰ τῶν Ἀνατολικῶν, τὴν κατ' ἐαυτὴν ἄλλως ματαιοτάτῳ τυγχάνουσιν. Οὕτω γὰρ ὁ Παχυμέρης: (Βιβλ: 5'. Κεφ: ΙΖ'. (54). „Τότε συμπλασάμενοι Γράμμα τῆς πρὸς τὸν Πάπαν Ἀπολογίας, (Οὐρβανὸς δὲ ὡς.) πολλαῖς μὲν ὑπογραφαῖς μήτ' ὄντων Ἐπισκόπων, μήτ' Ἐπισκοπῶν ἑσῶν, μιᾷ καὶ τῇ αὐτῇ χεὶρὶ τῆ Γραφῆως, ὡς δὴθεν πολλῶν Ἱερῶν Ἀνδρῶν καὶ μεγάλων,

(51) Τόμ: Α'. Σελ: 312.

(52) Τόμ: Α'. Σελ: 313.

(53) Τόμ: Α'. Σελ: 312.

(54) Τόμ: Α'. Σελ: 315.

Τόμ: Β'.

Z 222222



„λων, κατησφαλίσοντο· εἰ μὲν καὶ Πατριάρχῃ δοκῇ, ἔκ οἷδα·  
 „τέως δὲ καὶ λίαν τῷ Βασιλεῖ, φέρειν πίσεις προνοαμένῳ ἐπὶ τῇ  
 „τῶν Ἐκκλησιῶν συμβάσει, παραδοκόντων πολλῶν καὶ κατ' ἐκεί-  
 „νης Ἐπισκόπων. Καὶ γὰρ σφίσιν ἔτω τὰ τῶν Ἐπισκόπων ἐπε-  
 „πύκνωτο, ὥς καὶ εἰς ἑκατοσύας ἀριθμεῖσθαι πλείσας τιῷ παρ'  
 „ἐκείνοις Σιώνον. Ταῦτ' ἄρα καὶ τὰ ἡμέτερα ἐξισάζειν θέλων  
 „ἐκείνοις, ταῦτ' ἔπραττε. Πολλὰς δ' ἑτέρας γραφαῖς τῶν ἡμε-  
 „τέρων Πατέρων, ταῖς ἐκ τῆς Τίτῃ δηλ: προχέσθαι, χορηγεῖσθαι,  
 „δίδουσθαι, ἐκλάμπειν, ἐκφαίνεσθαι, καὶ ταῖς ὁμοίαις, τιῷ τῆς ἐκ-  
 „πορεύεσθαι λέξιν ἐπέκλεπτον· δηλῆντες καὶ τῆτο: ὥς καὶ τῆς μὴ  
 „πειθομένους ἐρωθεῖν, ταῖς ἀξίαις δίκαις καθυποβάλλομεν· τὸ δ'  
 „ἄρ' ὡς ὄνειρος καὶ ἐπὶ ψεύδεσιν ἐγκληθέντες, ἀπολογούμενοι ἔ-  
 „διαλύειν, ἀλλὰ σωισθῆν τὸ ἐγκλημα τοῖς εἰδόσι διεγινώσκοντο.  
 „Ἐμελλε δὲ καὶ τῆτο τοῖς ταλαιπώροις τῆς Ἐκκλησίας ἐς ὕπερον  
 „πρόσκομμα εἶναι, ἐγκαταμένους ὡς ἐξεκηρύχθησαν οἱ Ὁρθόδο-  
 „ξοι· καὶ αἱ πρὸς τὸν Πάπαν γραφαὶ φασὶ μάρτυροι σοφώτατοι.  
 „τὸ δ', ὥς ἐμὲ γὰρ εἰδέναι, ἄλλως ἔχεν· εἰ καὶ πρὸς τὸν Πάπαν  
 „κατὰ τινα θωπείαν ἔτως ἐγράφετο.

Αἱ δὲ Ἐπιστολαὶ αὗται ὁλοχερεῖς ἐμφέρονται ἐν τῷ ΙΑ'. Τόμ:  
 τῶν Σωδικ: Μέρ: Α'. Στήλῃ 1034. Καὶ παρὰ Λέοντι δὲ τῷ  
 Ἀλλατ: Βιβλ: Β'. τῆς διωκεῖς Συμφ: τῶν Ἐκκλησ: Κεφ: ΙΕ'.  
 Ἀριθμ: Ε'. αἱ καὶ περὶ τῆς τῆς Ἀγίας Πνεύματος Ἐκπορεύσεως  
 τοιαύτ' ἔχουσιν: „Ὡσαύτως πισυόμεν καὶ εἰς τὸ Ἅγιον Πνεῦμα,  
 „τὸ πάντα ἐρδυνῶν, καὶ τὰ βίβη τῆς Θεᾶς ὁ φυσικῶς μὲν ἔνεστιν  
 „ἐν τῷ Θεῷ καὶ Πατρὶ, καὶ ὑσιωδῶς ἐμπεφυκὸς ἐστίν, ἔτως  
 „εἰπεῖν, ἐν αὐτῷ, καὶ ἀδιαρέτως ἐκπορεύεται ἐξ αὐτῆς· φυσικῶς  
 „δὲ ἔνεστι καὶ ἐν τῷ Υἱῷ, καὶ ὑσιωδῶς ἐμπεφυκεν αὐτῷ, καὶ  
 „ἀδιαρέτως ἐξ αὐτῆς πρόεισι προχεόμενον. (55) Τὸ γὰρ αὐτὸ  
 „ἐκπορεύεται μὲν ὡς ἐκ πηγῆς τῆς Θεᾶς καὶ Πατρὸς, προχεῖται  
 „δὲ καὶ ἐξ αὐτῆς τῆς Υἱᾶς ὡς ἐκ πηγῆς, καθαπερὲν καὶ ἐξ αὐτῆς  
 „τῆς Πατρὸς. Ἀλλ' εἰ καὶ ὁ Πατὴρ πηγὴ τῆς Πνεύματος ἐστὶ καὶ ὁ  
 „Υἱὸς πηγὴ τῆς Πνεύματος ἐστίν· ἔ μὲν τοι δύο αἱ πηγαὶ τῆς Πνεύ-  
 „ματος εἰσὶν, ὁ Πατὴρ καὶ ὁ Υἱός. Μίαν γὰρ πηγὴν τῆς Πνεύμα-  
 „τος τὸν Πατέρα καὶ τὸν Υἱὸν ἢ πρὶν καὶ ὑστερὶς διάνοια κρατεῖ.  
 „Καὶ διὰ τῆτο, κοινὸν Πατὸς καὶ Υἱᾶς τὸ Ἅγ: Πνεῦμα οἱ τῆς  
 „Ἐκκλησίας Φωστῆρες καὶ διδάσκαλοι ἐθεολόγησαν. Ὡστερ γὰρ  
 „ἐκ τῆς ὑσίας τῆς Πατρὸς φυσικῶς τὸ Πνεῦμα ἐστίν, ἔτω καὶ ἐκ  
 „τῆς ὑσίας τῆς Υἱᾶς φυσικῶς τὸ Πνεῦμα ἐστὶ καὶ ὥστερ κατὰ τιῷ  
 „ὑσίαν

(55) Παρὰ Ἀλλατίῳ αὐτόθι ἀναγινώσκεται: profunditer: ὁμοιοχημόνως δηλ: τοῖς ἄλλοις,  
 οἷς χρῆται Ἐπιβήμασι: naturaliter, essentialiter, indivisibiliter, profunditer.

„ἑσῖαν ὑπάρχει τῷ Θεῷ καὶ Πατρὶ, ἔτω καὶ κατὰ τὴν ἑσῖαν  
 „ὑπάρχει τῷ Υἱῷ καὶ ὡς περ ἴδιον ἐστὶ τῆς ἑσῖας τῷ Πατρὶ, καὶ  
 „ἐκ ἑξω αὐτῷ πρόεισιν εἰς τὸ εἶναι, ἔτω καὶ τῆς τῷ Υἱῷ ἑσῖας  
 „ἴδιον ἐστὶ, καὶ ἐκ ἑξω αὐτῆς πρόεισιν εἰς τὸ εἶναι· τῶν γὰρ φυ-  
 „σικῶν ἀγαθῶν τῷ Θεῷ καὶ Πατρὶ ἐσιωδῶς ὑπάρχων ὁ Υἱὸς κοι-  
 „νωνὸς; ἔχει τὸ Πνεῦμα, καὶ ἐκ τῶν ἐσωτάτω ἀπλάγχυνων προχέει  
 „αὐτὸ ἐπὶ τὰ ἐκτός. Διὸ σωματικῶς αὐτὸ τοῖς Μαθηταῖς ἐνε-  
 „φύσησεν· ὅτι, ὡς τῇ τῷ Υἱῷ πνύσει τὸ Πνεῦμα ἐγνωμεν, καὶ  
 „νοῶν εἶναι τῷ Χριστῷ τὸ Πνεῦμα παρὰ τῷ Ἀποστόλῃ ἐδιδάχθη-  
 „μεν, — Ἐπεὶ τοίνυν ἐξ αὐτῆς τῶν Ἀνατολικῶν, καὶ τῆς τῷ  
 Ἀυτοκράτορος δὲ ἀμα. ὁμολογίας εἰς κενὸν ἢ ἑνώσις ἐκείνη ἀπέ-  
 βη, καὶ κατὰ τῆς Λατίνης δὲ αὐτῆς ἐν ῥήμασι μόνον σωέσθῃ,  
 καὶ μετῇ δ' ὡς ῥαδιουργίας καὶ δολιότητος, ἐστ' ὅπως ἂν αὐτῷ  
 ἐπιδοκιμάσαιεν, καὶ τοῖς σφίσι ἀρέσκῃσι σωηγορεῖν ὅλως φήσαιεν;

### Ἀ Ν Τ Ι Θ Ε Σ Ι Σ Ε'.

Καὶ γὰρ δὴ καὶ πέμπτον τὸ τῇ τοιαύτῃ τιμικαῦτα τῆς Ἀνατο-  
 λικῆς προσκεχωρηκέναι ἐνώσει, πῇ μὲν τὸ τῆς πειθανάγκης, καὶ  
 τὰ παρὰ τῷ Κράτῳ ἐπαπειλόμενα, πῇ δὲ περ καὶ αἱ ὑπερορίαι,  
 καὶ αἱ χρηματικαὶ ἀποτίσεις, αἵ τε ἄλλαι ἐπαγόμεναι πολλοῖς  
 ποιναί, καὶ κακώσεις ἐποίησιν. ΒΑΡΛΑΑΜ καὶ γὰρ ὁ Ἀβελὶς ἀρι-  
 δῆλως τοῖς ἐν Ῥώμῃ ἐξέθετο, καθάπερ Βενέδικτος ὁ ΙΒ'. ἐν  
 τῇ πρὸς τὸν Ῥήγα Σικελίας Ῥοβέρτον Ἐπιστολῇ μαρτυρεῖ: (Πα-  
 ρὰ Λέοντι Ἀλλατίῳ, ἐν τῷ Β'. τῆς διωκεῖ: τῶν Ἐκκλησιῶν Συμ-  
 φων: Κεφαλ: ΙΣ'. Ἀριθμ: Β'.) „ὅτι ὁ Ἀυτοκράτωρ (Μιχαήλ)  
 „ἠγωνίσασθαι ποιῆσαι τὴν μετ' ὑμῶν ἑνώσιν κατὰ βίαν, καὶ ἐ-  
 „κατὰ τὸ ἐκείσιν, — Τῆς γὰρ τῶν Ἐκκλησιῶν προΐσαμένους, μὴ  
 πρὸς τὸ αὐτῷ δοκεῖν ἐπιστάσασθαι δωρηθέντα, εἰς ὀργὴν τὸν Ἀυ-  
 τοκράτορα ὑπερξέσται, καὶ ἐγκλήματα τέτοις παντοῖα ἐπατιτιάσα-  
 θαι· καὶ ὡς ἀθετήσαιεν μὲν τὴν αὐτῷ ἐποφειλομένῳ ὑπακοῇ,  
 ἐπεμβαῖεν δὲ καὶ τοῖς τὴν ἑνώσιν ἀσπασαμένοις· ἐνλογήσαιεν δ'  
 ἐπ' αὐτῇ καὶ τὸν Βασιλέα. Καὶ ταῦτα δ' αὐτοῖς ἐπεγκεκληκό-  
 τα προσεπιτάξαι, ἵν' ὅς τις ἐν εἰς μέσον προθείη, ὅπως ποτὲ αὐ-  
 τὸς φρονῶν τυγχάνοι περὶ τὴν ἑνώσιν. (Παχυμέρ: Βιβλ: Ε'.  
 Κεφαλ: ΙΖ'. καὶ ΙΗ'.) Ἐνθεντοι καὶ σφοδρῶς κελεῦσαι τὸ ἀπ'  
 ἐντεῦθεν, ἀπασαν ἐπιμελῶς οἰκίαν διερδυνᾶσθαι τῆς Πόλεως·  
 διετάινετο γὰρ, εἰς ἴδιον ἑαυτῷ δικαίωμα μεταπεπτωκέναι πάντα,  
 διὰ τὸ Κύριον αὐτὸν τῷ Ἀσέως κατασιῶσαι, τὸν πολέμιον ἐξελάσαν-  
 τα· μὴδ' ἀξιῶν τοῖς ἀπειθέσι τὴν τέτων χρήσιν κατὰ χαρίζεσθαι.  
 Καὶ τοίνυν ἐς τὴν ὑπερορίαν ἐφεξῆς ἐλκομένων τῶν ὅσοι τέως  
 ἐπὶ τῇ ἐνώσει ἀντίξας τῷ Βασιλεῖ ὑπῆρχον φερόμενοι· τῶν δὲ

Z 55555 2

καὶ

καὶ αὐτομάτων ἐξιέναι τῆς πόλεως ἐπικελευθέντων, πολλὰς  
 τῷ πλήθει τῶν δεινῶν ὑπενδόντας τῷ κοινωνίαν σωέσῃ ἐλέσθαι·  
 ἔτω γὰρ ὁ Παχυμέρης Βιβλ: Ε'. Κεφ: ΙΘ'. (56). „Επειτα πέμ-  
 „ψας τὰς ἰδίους, οἰκίαν ἐκάστου κατεψηλάφα· ὅς τ' αἴτιος, ὅς τε καὶ  
 „ἐκὶ καὶ ἡ πρόφασις: ὡς αὐτὸν μὲν εἶναι τὸν κατὰχόντα τῷ πόλιν·  
 „καὶ πρὸς τοῖς ἄλλοις αὐτῷ καὶ μόνῃ καὶ τὰς οἰκίας εἶναι, ἀποχαρίζεσθαι  
 „δὲ ταύτας τοῖς εὐνοῶσι· τοῖς δὲ κατὰ τι ἀφωιδύεσσι, καὶ τῷ χάριν  
 „ἀναλρέπειν. Δίκαιον δ' εἶναι καὶ τὰ τῶν ὀπιθεν χρόνων ἀναζητῆν  
 „τὰς ἐνοικεῖντας ἐποίκια. Ἀνεκεφαλαῖοντο παραυτίκα κόσμιά τε  
 „παντοῖα καὶ ἑπιπλα, καὶ πᾶν ὃ, τις εἶχε· καὶ τὸ μείζον, ἐκρίνοντο  
 „καὶ εἰς καθοσίωσιν. Ἐτοιμάζοντο δὲ καὶ Φορτίδες τῷ ἐξορίζεσθαι  
 „τὰς ἡδὴ κατακρίτους δοκύντας. Οὐμῶ δὲ καὶ μέχρις ἐλπισμῶν  
 „τὰ δεινὰ ἦσαν, ἀλλὰ καὶ πείρα τινὲς τῶν δεινῶν μετεῖχον, ὡς  
 „τὰς μὲν εἰς Λῆμνον, τὰς δὲ εἰς Σκυῖρον, ἄλλας δ' εἰς Κέω,  
 „καὶ ἄλλας εἰς Νικαίας πόλιν περιορίζεσθαι. Ἄλλας δ' αὖθις τῆς  
 „Πόλεως, τὰς μὲν ἀκασίως, τὰς δ' ἐκόντας ἐξορίζεσθαι. Ἄλλας  
 „δὲ μέχρι Σηλυβρίας καὶ Ῥαιδεῶ. Τινὰς δὲ καὶ ἐντὸς τῷ κα-  
 „τὰ τὸν Φάρον λιμένος γνωσιμαχήσαντας ὑποκλῖναι τε καὶ ὑπο-  
 „σρέψαι.

Καὶ ἔδὲ τὰ τῆς Προγραφῆς δ' ἄλλις εἶχεν· ἀλλὰ καὶ Ὀλόβο-  
 λον τὸν ῥήτορα, μασιγωθέντα σὺν ἄλλοις δέκα τῶν ἐκ τῷ Κλή-  
 ρῃ, κατηκισμένους αἰχρῶς εἰς θῆαν πάνδημον, διὰ μέσης ἀγορᾶς  
 ἐλκυθῆναι τὰς ἀθλίους ἐκέλευσεν· ὥς τε τὰς λοιπὰς τῶν Κληρικῶν  
 Φρίκη συχεθέντας, καὶ σφίτιν ἐυλόγως περιδεδιότας, καδικετῶν  
 ἀνακωχὰς αὐτοῖς συγχωρηθῆναι ἄχρι τῆς τῶν Ἀποκρισιαρίων  
 ἐπανόδου, τῶν εἰς Ῥώμην προαποσταλέντων τὰ τῆς συμβάσεως  
 διαπράξεσθαι. Δριμύτερόν γε μὴν ἐπέκειτο ὁ Κρατῶν, ὡς ὑπό-  
 θυῶς ἅπαντας καθοσιώσεως ἐγκλήματι κρίνων, ὅσοι μὴ τῇ  
 ἐνώσει παραχρῆμα καθυπογράψαν. Διὸ καὶ τινες κατέσπυον  
 τῷ φυγαδεῖαν, ὡς ἂν μὴ παραπλησίαν τῷ δίκῳ ὑφέξωσιν.  
 Ἐπὶ τέτοις καὶ Δίπλωμα ὁ Βασιλεὺς ἀνεκήρυξε, δι' ὃ πολλὰ ἐαν-  
 τῷ κατεπαρώμενος διεμαρτύρετο, μηδὲ κεραίαν ἐπιτρέψαι προ-  
 σεθῆναι ἀνέξεσθαι τῷ Συμβόλῳ, εἰ μόνον ἐπί τε τῇ ὑπεροχῇ,  
 καὶ τῇ Ἐκκλησίᾳ, καὶ τῇ Μνημονόσει συγκατανύσωσιν. Ἄλλως  
 δὲ, δριμυτάταις αἰκίαις ὑπενεχθήσεσθαι τὸν ἐπὶ τέτοις μὴ ὑπο-  
 γράψοντα. Ἐνθεντοι, καὶ πολλοὶ μὲν τῶν Κληρικῶν καθυπέγρα-  
 ψαν ἐπὶ τοῖς εἰρημένοις· πολλοὶ δὲ καὶ τῶν πρότερον ὑπογράψαι  
 ἀπαξικόντων, καὶ τῶν εἰς τῷ ὑπερορίαν διὰ δὴ τῷτο ἀπαχθέντων,  
 τέως ἐνέδωκαν καὶ αὐτοί· εἰς ὃ παρὰ παντὸς τῷ Κλήρῳ ἐπεκυ-  
 ρώθη

(56) Τόμ: Α'. Σελ: 265. 266.

ρώθη τέτρω τῷ τρόπῳ τὰ τῆς ἐνώσεως. Οὕτω γὰρ ὁ Παχυμέ-  
ρης Βιβλ: Ε'. Κεφαλ: Κ'.

„Καὶ πρῶτον μὲν (τὸν Ῥήτορα Ὀλόβολον) ἀπιωῶς προ-  
„σάσσει καὶ ἀπανθρώπως αἰκίζεσθαι· ἔπειτα δὲ τὸν καίνον ἐκεί-  
„νον θρίαμβον ἀπεργάξετο. Σχοίνῳ γὰρ μακρᾷ τῶν τραχήλων  
„κελῶσας ἐκδῆσαι ἐκείνον μὲν πρῶτον, καὶ τὸν Ἰασίτιω Μελίαν  
„δοῦτερον· καὶ ἐξῆς ἄλλας, ἕως καὶ ἐς δέκα τῶ ἀριθμῷ τῶν  
„Ἀνδρῶν ποσωθέντος· ὕστατον δὲ, καὶ τὴν Ἀνεψιάν, εἰς τὴν τῶν  
„Μαγειῶν δῆθεν ἔνδειξιν· τὰς μὲν δύο τὰς πρώτας, ὡς καὶ ἐπὶ  
„τῇ ὑποθέσει μὴ κατανοῶντας, καὶ ἐγκάτοις προβάτων ἐπιφορ-  
„τίζει, σὺν ἀντοῖς τοῖς ἐκείνων διαχωρήμασι· τὸν Ῥήτορα δὲ δια-  
„φερόντως καὶ ἥπασι προβάτων κατὰ σόμα κελῶει τύπτεσθαι  
„σιωχεσέμερον· καὶ ἔτις ἀνὰ τὴν πόλιν ἅπασαν θριαμβευομένης,  
„κύκλῳ τῆς Ἐκκλησίας περιαγαγεῖν, ἀτιμῶντας ἐκείσε πλέον,  
„εἰς φόβον καὶ ἀπειλῆς τοῖς Κληρικοῖς ἔνδειξιν. Ἐπράττετο μὲν  
„ἐν ταῦτα Ἐλαφροβολιῶνος ἔκτη Μιῶς τῷ ἐπιόντος Ἑτῆς· τῷ  
„Πατριάρχῃ Ἀρσενίῳ, πρότερον ἢ ταῦτα γίνεσθαι ἡμερῶν ἕξ,  
„κατὰ τὴν Νῆσον μεταλλάξαντος· εἴτ' ἐν τριακοστῇ Γαμηλιῶνος  
„Μιῶς· οἱ δὲ τῷ Κλήρῳ, τὸν κίνδυνον σφίσιν αἰωρόμενον βλέ-  
„ποντες, καθικέτονον τὸν Κρατῶντα ἀνείναι αὐτὰς τῆς ὀργῆς  
„ἐφ' ᾧ ἡσύχως καθῆσθαι, μέχρις ἂν οἱ πρέσβεις ἐκ Ῥώμης ἐπα-  
„νασθῶσιν· ἀλλ' ἐκ ἑπαθον πολλὰ λιπαρῶντες, ἀλλ' ἀντικρυς  
„ἐκρίνοντο τῆς πρὸς Βασιλέα καλοσιώσεως, ὡς μή γε τὰ τῆς  
„ὑπογραφῆς τελοῖεν. Ὡς δὲ τινες εἰς φόβον κατέφθονον τῷ μή τι  
„καὶ πλέον προσβιασθῶσι, ὁ Βασιλεὺς αὐτίκα προσάσσει, καὶ  
„λόγος ἐκτίθεται Χρυσόβλλειος, πλήρης μὲν Φρικωδεσάτων ἀρῶν,  
„πλήρης δὲ καὶ ὀρκῶν παλαμναοτάτων, ἢ μὴ μὴ ἐκβιάσασθαι  
„πλέον, μὴ διαπράξεσθαι, μὴ παρεγχειρῆσαι, μηδ' εἰς νῦν βα-  
„λεῖν, μέχρι καὶ ἐς κεραίαν μίαν, καὶ Ἰῶτα τῷ Συμβόλῳ πα-  
„ραγαγεῖν, μὴ πλέον τῶν τριῶν Κεφαλαίων, Πρωτείς, καὶ Ἐκ-  
„κλητίς, καὶ Μνημοσύνης· καὶ τέτων ἐπὶ ψιλοῖς ὀνόμασι κατ' οἰ-  
„κονομίαν ζητῆσαι. Εἰδ' ἐν, ἐξώλῃ τε καὶ προώλῃ γενέσθαι, καὶ  
„τὰ φοβερώτερα ὑποχεῖν. Ταῦτα γράψας καὶ ὑπογράψας, προ-  
„σέτι δὲ καὶ Βέλλῃ χρυσῇ καλῶσφαιλισάμενος, πέμπει τῇ Ἐκκλη-  
„σίᾳ διὰ τῷ Πρωτασηκρήτις Νεοκαισαρειώτῃ Μιχαήλ· ᾧ δὴ καὶ  
„βεβαιωθέντες ὑπογράφουσιν, ἄνευ καὶ τότε τινῶν· οἱ δὴ καὶ ἐξο-  
„ρισθέντες, μετὰ καιρὸν συγκαταθέμενοι κατάγονται, καὶ ἐνῶνται  
„τῇ Ἐκκλησίᾳ, ὅθενὸς τῶν τῷ Κλήρῳ ἐλλείψαντος.”

Τῷ δὲ Ἰωσήφ ἐπομένως τῇ ἐνώσει εὐδοκῆσαι μὴ βεληθέντι,  
ἢ τῆς Ἐκκλησίας προσασία ἀπείρηται. (Παχυμ: Βιβλ: Ε'.  
Κεφαλ: ΚΒ'.) Καὶ ἐξῆς δὲ, ἅτε Φιλίως ἀποδεχομένῳ τὰς τὴν  
ἔνωσιν ἀποδοκιμάζοντας, ἀπηγόρευται τῷ αὐτῷ παρὰ τῷ Κρα-

Τόμ: Β'.

Η ηηηηηη

τέντος



τῆντος, καὶ τοῖς τοιούτοις σωτυγχάνειν καὶ ἀνασρέφεσθαι. Πρὸς δὲ ὃν ὁ Πατριάρχης σκληρὸν οἱ ἔσεσθαι ἀπώτα, εἰ μὴδὲ μετὰ τῶν οἰκειοτάτων αὐτῷ καὶ σωήθων ἐπ' ἀδείας ἐπιτρέποιτο ὁμιλεῖν· τὰτ' γὰρ ἐκ ἄλλως, εἰμὴ δι' ἐξορίας φθάσαντα ὅσον τε εἶναι φυλάττειν. Ἐλεγε δὲ ταῦτα, πρὸς οἵκτον ἐλπίζων ἐπικαύψαν τὸν Ἀρχοντα, ὃν ἄλλως ἦδαι ἑαυτῷ ὄντα ἐννέσαντον· ὁ δὲ, τὸ ῥηθὲν ἐκλαδόμενος, ὡς ἔπερ ἐκὼν τῷ ὄντι ὁ Ἰωσήφ τῷ ὑπερροίαν αἰροῖτο, τὸν μὲν ἐπὶ τὰ πορρωτέρω ἀπαχθῶναι διενελεῖτο, τῶν δὲ Μοναζῶν ὅποσοι ἐκείνῳ προσέκειντο, ἀλλὰχόσε τῷ ἐξορίαν κατεψήφίζετο. (Παχυμ: Βιβλ: Ε'. Κεφ: ΚΘ'. (57)

Ἀλλὰ παρὰ τὸ μὴ ἐπιδόκεῖν τῇ ἐνώσει, καὶ τῶν προσηκόντων τῷ γένει τινὲς τῷ Αὐτοκράτορι ἐν εἰρκτῇ κατέχοντο, ὅς καὶ τοῖς ἐκ τῆ Πάπα διαπρεσβυδομένοις ἐπεδείκνυτο, ὡς τῆς ἔτι πληροφορήσων ἐκθύμως αὐτὸν προάγειν τὰ τῆς ἐνώσεως. (Παχυμ: Βιβλ: Σ'. Κεφαλ: ΙΣ'.) (58) „Ταῦτ' ἄρα καὶ Βασιλεὺς, ὡς ἐχλῶν εἶναι τῷ εἰρῶν πληροφορῶν, τὸν Ἐφέσεσ' Ἰσαάκ, ὡς Πρέσβεσιν ἀποδείξας, καθαιργμένους ἐδείκνυ προσγενεῖς ἐν ταῖς φυλακαῖς· οἱ δ' ἦσαν, ὁ Πρωτοσράτωρ Παλαιολόγος Ἀνδρόνικος, ὁ Πυγκέρνης Ῥαβλ Μανηήλ, ὁ Ἀδελφὸς αὐτῶν Ἰσαάκιος, καὶ τέταρτος ὁ τῆ Πρωτοσράτορος Αὐτανέψιος Παλαιολόγος Ἰωάννης· οἱ δὲ καὶ τραχακοσμηθέντες, ἔποιτις Ποιητῆς, βαρέως ἀλύσει, φυλακῆς τετραγώνου γωνίαν ἐπαῆχεν ἑκάστος. Μᾶλλον δὲ καὶ ἄλλος τῷ ἐνωσιν ἀποδοκιμάζοντας, εἰς Ῥώμῃ τῷ Πάπᾳ διεπέμψατο, δύνῃ, ὡς ἐδόκει, τίσοντας· ὅς μὲν τοι γὰρ ὁ Πάπας ἐυμενέστερον ὑποδεξάμενος, ἀπαραλυμάντας τῷ Αὐτοκράτορι ἀνταπέστειλε. (Παχυμ: Βιβλ: Σ'. Κεφ: ΚΔ'.) (59) „Τὰ δ' ἐκείνῳ τότε πραττόμενα δακρύοις μᾶλλον, ἢ μέλανι, γράφειν, ὡς ἄξιον. Λογισμοῖς γὰρ ἀγρίοις διενεακχούθεις ὁ Κρατῶν, καὶ πᾶσιν ὑπόπτως ἔχων, ἐκ οἷδα καθότι, τέως δὲ γε τοῖς φαινομένοις καὶ τῷ δοκεῖν, ὑπὲρ ἑαυτῶν, καὶ τῆς αὐτῶν δῆθεν ῥησικείας πονῶν· εἰ ὁρθοδοξῶν, ἐς τὰ μάλισα τὰ πρὸς παρατροπῇ Πίσεως διαβάλλοιτο, δεινὰ ἐποίη· ὅθεν καὶ πέμψας ἐξάγει τῆς φυλακῆς τὴς ἐυγενεῖς Ἀνδρας ἐκείνας, ὧν καὶ πρῶτον ἐμνήσθημεν· τὴς ἐκ Ῥαβλ ἀνταδέλφους, τὸν Μανηήλ τε καὶ τὸν Ἰσαάκιον, καὶ τρίτον τὸν ἐκ Καντακυσῶν· (ὁ γὰρ Πρωτοσράτωρ Ἀνδρόνικος φθάσας ἐν τῇ φυλακῇ προτετελευτήκει) καὶ σφᾶς πρὸς ἑαυτὸν κατὰκρίτας φέρει· ὅς δὲ καὶ ἐφ' ἡμέραις ἐτάζων λόγοις καὶ ὕβρεσι πλείσταις τε καὶ δειναῖς, τέλος ἐπεὶ ἐκ

(57) Τόμ. Α'. Σελ: 282. κξ:

(58) Τόμ. Α'. Σελ: 314.

(59) Τόμ. Α'. Σελ: 330.

ὡς σφᾶς ὑποκλίνεσθαι τῷ τῆ Κρατῆντος θελήματι, τὸν μὲν Μανηήλ πρῶτον, ἐπ' ἐκείνῳ δὲ καὶ τὸν Ἰσαάκιον σεροῖ τῶν ὁμιμάτων· κελεύσας ἄμφω καὶ μόνους· ὁ γὰρ Καντακυσῶς ἀπαγόμενος, δειλιάσας ὑπέκλινεν· ἐπ' ἐκείνοις γὰρ μόνοις τὸ παθεῖν, καὶ μὴ, ὡς καὶ διὰ τῆς, ἐκείνῳ μὲν ὡς ὑποκλιθέντι σώζεσθαι, οἱ δὲ τῷ τῆ διαπράξεσθαι, ἃ μηδεὶς ἄλλος, δόξαν ὑπὲρ πατρῶν ἐθῶν ἀπώεγκαντο. — Καὶ ἔδε μία ἡμέρα ἐσερημένους ὁμιμάτων, ὅς μία γαστήρ ὥδινε, καὶ ὅς ἦτε χέσις σωήγε, καὶ τὸ ὑπὲρ ἑνὸς παθεῖν τῆς ἀπ' ἀλλήλων διηρημένους, ὡς τὸν μὲν ἀλλὰχὼς πε, τὸν δὲ Μανηήλ ἐν ταῖς κατὰ Σμάμανδρον Κεγχεαῖς ἀπανθρώπῳ τινὶ φρεσίῳ ἐγκατακλεισθῶναι φρενέμενον.

Εἰ δὲ καὶ πρὸς τινὰς ἐξ αἰτίας ἄλλης ἀναπλαθείσης, ἐπιχαλεπαίνεν ἐπῆει, ἀσπασαμένοις τῷ ἐνωσιν τὰ τῆς τιμωρίας ἐξῶ ὑπαλύξει, ὡς ἄλλως ὑπελθεῖν ἐπ' ἀνάγκης ὡς. Τελούτατον δὲ καὶ πρὸς ἅπαντας ὁ Κρατῶν ἐχαλεπαίνεν ἀδιαφόρως, ὅς ἂν γνοίῃ τί ἐναντίον προενεγκαμένους, ἢ αὐτῷ ἐδόκει, περὶ τὰ δόγματα, καὶ αὐτοῖς ἐκ τῆ ῥάσε πισθῶν τοῖς διαβάλλουσιν. Οὕτω γὰρ μετὰ τινὰ προῖων ὁ Παχυμέρης: (60) „Πρὸς δὲ καὶ Μακάριον, τὸν καὶ Περιερίῳ παρονομαθέντα τῆ ἀπλῆ καὶ ἀκάνη χάριν, ὑπαγαγὼν δίκην καθοσιώσεως, ὡς τῆς Δυτικῆς Ἀρχοντας κατὰ Βασιλέως διεγείραντα, ἔξωπε τῶν ἡμετέρων ὁρίων καθήμενον, ἐπαγγέλας τῷ Ἰκαρίῳ, τῷ τῆ Μεγάλῃ Διῶν καὶ περιεῶσμένῳ τιμῇ, εἰς χεῖρας ποιῆται, καὶ προτείνων τῷ καθοσιώσιν, τῆ ἐγκλήματος ἀνίῃ εἰ τῷ εἰρῶν δέχοιτο· εἰδ' ὅν, ἀλλὰ τῇ δίκῃ καθυπάγειν· ὁ δὲ, τῇ ἐνστάσει διακαρτερῶν, τῷ τιμωρίαν ὑπέχεα. Κόκκους δὲ Μοναχῶς, καὶ τῆς κατ' ἐκείνον ἐξ ὅς τόσο γὰρ παρωξυσμένος ὡς, ὥς προβάλλειν ὡς μόνον τινὰ κινήθεντα, καὶ τῷ προβολῇ ἢ ποιῇ διεδέχετο· ὥς καὶ πισθὸς ὡς ὁ λέγων, μόνον εἰπὼν, ταῖς πρὸς τῆς ὑπηκόας ὑπονοίας, ὡς ἱκαναῖς μαρτυρίαις ἰχυρίζομενος· καὶ πρὸς τὸ τῆς ὀργῆς ἀπαραίτητον, ἀνδράσιν οἷς ὡς παρρησιάζεσθαι πρὸς ἐκείνον ἀπολογέμενος, βασιλικῶς προέτεινε νόμους, ὡς μὴ καλὸν ὄν, ἐδὲ δίκαιον, κατὰ Μοναζᾶς τῆς Ῥωμᾶς πολιτεύεσθαι, ὡς μετανοίας ἡξιῶσθαι τὰ πταίσματα· ἔχεν δὲ καὶ τῷ προσαγγέλλοντι ὁδυσμενῶς, ὅτι λέγοι, ἢ ἀκῆσας, ἢ καὶ πλαττόμενος ἐκ τῆς περὶ τὸν πλησίον ἀπεχθείας· αὐτὸν δ' ἀκῆσαντα ἀνάγκῃ εἶναι μετιέναι τὸ ἐγκλημα· ταῦτα πολλὰς ἀπελογεῖτο: καὶ ὅτι φίλος Μοναχῶν ἀκῶν βρεφόθεν, εἰς ἀνάγκῃ ἦλθε μισεῖν Μοναχῶς, διὰ τῷ σφῶν δύσνοιαν· δύσνοιαν δὲ τῷ ἀποφυγῇ τῶν πραττομένων ἐκάλε.

Ἐπεὶ

(60) Τόμ. Α'. Σελ: 333.

Ἐπὶ δὲ τελούτων Βέκκῃ τῷ Λατίνων Δόγματι, δι' ὧν ἐξεδίδε Συγγραφῶν σωηγορῶντα, πολλοὶ ἐσήγγελλον πρὸς τὸν Ἀυτοκράτορα, καὶ κατὰ τέτων ὁμοίως τῶν ἐναγόντων ὁ Βασίλευς ἐτραχώετο. Οὕτω γὰρ ὁ Παχυμ: Βιβλ: 5'. Κεφαλ: ΚΕ' (61) „Τὸ δὲ πρὸς τὸν Πατριαρχῶντα τὰς αἰτίας ἄγειν, (ἡ „, γὰρ ἀναφορὰ τῇ σκανδαλίᾳ σφίσι πρὸς ἐκένον ὡς, ὡς ἔλεγον „, ἀσφαλεῖς τὸ κατ' αὐτὸν, Λατίνους, παρὰ μόνῳ τῷ ἐν τῷ „, Συμβόλῳ πρόθεσιν, κρίνοντα.) ἔτοιμον ὡς ἐκ τῇ ῥάσει ἢ προ- „, φανῶς καὶ ἀμφοτέρωθεν ἔκτε Βασιλέως καὶ τῶν παχόντων „, ὁ ὄχλος αὐτῷ περιέβατο. Ἐκένος μὲν, ὡς τῷ τῶν οἰκείων „, ἀπολωλότος ἔννοϊαν τῶν δὲ, καὶ δι' αὐτὸν παχόντων, μὴ „, ἔχοντα τὰ πεπραγμένα μᾶλλον τῷ χρόνῳ ὑποχαλᾶσθαι. Τῷτο „, ξιῶσθαι καὶ ἄλλοις πλείοις, ἐμμεβήκει δὲ καὶ Κωνσταντίνῳ τῷ „, Ἀκροπολίτῃ, καὶ τῷ Θεοδώρῳ Μεσάλωνι. Τῆς τοίνυν ἄχρη „, τέτῃ προτροπᾷ παντοίαις ἐναγομένους, καὶ ἀπειλαῖς καὶ βασά- „, νοις προσβιαζομένους ἐπὶ τῷ ὑπὸ τῇ Κρατῶντος προαγομένῳ „, ἐκένῳ ἔνωσιν ἐνδόντας τῆς Ἀνατολικῆς, σόματι μὲν πάντως, „, ἦκισα δὲ τῇ καρδίᾳ πρὸς αὐτῷ ἐνδκῆσαι, ἄλλις ἐντεῦθεν φα- „, νερόν ἐσί. Καὶ διὸ πάλιν ἐκ τῶν εἰρημένων γίνεται δῆλον, „, ὡς ἐδὲν τὸ παράπαν συμβᾶλλεται Λατίνοις, ἢ ὑπὸ Μιχαὴλ τῷ „, Παλαιολόγῃ σπασαθεῖσα τῶν Ἐκκλησιῶν ἔνωσις.

ἌΝΤΙΘΕΣΙΣ 5.

**Α**λλὰ γὰρ ἔκτον, καὶ αὐτῶν ἐν μέσῳ τῶν τῷ Ἀυτοκράτορος προ-  
 τροπῶν, καὶ ἐπαπειλήσεων, καὶ ποινῶν, καὶ ἐξοριῶν ἐνίων, αἱ  
 ὑπῆρξαν οἱ τιμὴν ἔνωσιν ἐκείνῳ πάντῃ ἀποσφερόμενοι, τῶν μὲν  
 μᾶλλον, τῶν δ' ἥττον τὸ καρτερόν τε καὶ εὐσαφὲς ἐπιδεικνυμέ-  
 νων· ἔτι δ' αὖν, καὶ ἄχρι τέλους τῷ Κρατῶντι προσιςαμένων.  
 Τῶν γὰρ Ἐπισκόπων ὑπὸ τῷ Βασιλέως τῇ ἐνώσει τέως ἐναχ-  
 θέντων σωθῆθαι, ἐγένοντο τιμὴν ἀρχῇ οἱ ἐκ τῷ Κλήρῳ ἀποτρε-  
 πόμενοι προσχωρήσαι· εἰς ὃ τελούταίον διὰ τὰς ἐπαγομένας τιμὰς  
 τῶν πρὸς γένους αὐτοῖς κολάσεις, προήχθησαν καὶ ἔτι τῇ ἀνάγκῃ  
 τῆς ἐνώσεως ὑπενδύναμι. Ῥήμασι γὰρ μόνοις ἐς γ' ἐπ' ἐκά-  
 νο εἰδὲν ἐνεδίδεν· ἀλλὰ καὶ τῷ Βασιλέως ἀναπάθειν σπασάδοντος,  
 μηδὲν αὐτὸς, ἅτε δὴ ὑπὸ τῷ Πατριάρχῃ τεταγμένος, περὶ τῆς  
 εἰρώνης ἔφασκον ἔχειν σφᾶς ἀποφύλαθαι. Χωρὶς δ' ἐκάστων ἀνὰ  
 μέρος διερωτωμένων, οἱ μὲν καὶ τιμὴν ὑπεροχῇ, καὶ τιμὴν ἐκκλη-  
 τον, καὶ τὸ μνημόσμων ἐπίσης ἀποδοκιμάζοντες ἦσαν· οἱ δὲ τότε

(61) Τόμ: Α'. Σελ : 337.

πρωτῆον, καὶ τὴν ἔκκλητον ἐπιτρέποντες, ὡς ἐν ὀνόματι μόνον  
ὑφιστάμενα ὑποκένω, τὸ μνημόσιον ὅλως ἐτίθεσαν ἀποτρόπαιον.  
Ξιφιλῖνος δὲ ὁ Μέγας Οἰκονόμος, καὶ τοῖς πρὸς προσπίπτων τῷ  
Ἀνακτορῷ ἐγεννάζετο, μηδαμῶς ἀξιοῦν ἐν πολιτικαῖς τε καὶ Ἐκκλη-  
σιαστικαῖς διαμάχαις τῆς ἰδίας ἐμβάλλειν, ἐν ᾧ τῶν ἐξωτερικῶν  
αὐτὸς ἀπαλλάξαι πολέμων, πᾶσαν τε καὶ παντοίαν σπαδῶν ἐποιεῖ-  
το καὶ ἐπιμέλειαν. Οὕτω γὰρ ὁ Παχυμ: Ἐν Βιβλ: Ε'. Κεφαλ:  
ΠΗ'. (62). „Τὸ δὲ περὶ τῶν προκειμένων ἡμᾶς ἐρωτᾶσθαι, (τῆς  
„ἐκ τῷ Κλήρῳ δηλονότι:) πρῶτον μὲν, ὡς εἰ μετὸν ἡμῖν τῆς  
„περὶ τέτων σκέψεως ἐκ Κανόνων ὑπ' Ἀρχιερεῶν τελῶσι, καὶ  
„δοφίλουσιν ἔπεσθαι, τί χρὴ καὶ λέγειν; πλὴν ἰδίᾳ ἕκαστος κατ'  
„αὐτὸν ἐρωτᾶσθαι καὶ ἴσως φόβος εἰδῆς, τῆς Σῆς Βασιλείας εἰς  
„βελῶν προτιθέσης τὸ προκείμενον, λέγειν τὸ παριστάμενον. Τό-  
„τε τοίνυν ἐρωτωμένων, ὁ μὲν ἀπέλεγε καὶ τὰ τρία: μὴδὲν γὰρ  
„ἐντέτων καταλαβεῖν ὅλως τὴν Ἐκκλησίαν, ἐνὶ χρησομένῳ καὶ  
„μόνῳ (63) χρῶμαι δὲ διατηρεῖν καὶ τοῖς ὀψὲ γεννησομένοις,  
„ὃ δὲ σφῆς ἐκ τῶν προτέρων παρέλαβον. Εἰ δ' ἐπιστάται κίν-  
„δωος, αὐτὸς μὲν μὴ χρεὸν φροντίζειν, πλὴν τῷ εὐχεσθαι:  
„τὸν δέ γε κρατῶντα μὴ ἀνιέναι μὴδὲν τῶν εἰς μέριμναν ἡκόν-  
„των, ἐφ' ᾧ ἀκινδύνως τὸν κίνδυνον ἄλλως ἐκφύγοιμεν. Οἱ δ'  
„ᾗσαν, οἳ καὶ πρωτῆον μόνον ἐδίδαν καὶ ἔκκλητον, ὡς αὐτῶν γε  
„καὶ μόνων οἶον τε ὄντων ὑποκριθῆσεσθαι, καὶ χῆρ' ἔχαιν καὶ  
„ὄνομα, πλὴν τῷ πράττεσθαι. (64) Μνημόσιον δὲ, τῷ Πάπα δοκεῖν  
„τι διαφέρεισθαι ἐπὶ Συμβόλῳ καὶ ταῦτα Πίσεως, μὴ καὶ τῶν λείων  
„ἀπειρημένον ἦν. Οἱ δὲ Ξιφιλῖνος Μέγας Οἰκονόμος ὢν τῷ τό-  
„τε, τῷ γήρατι καὶ τῇ πρὸς τὸν Βασιλέα σωηθεῖα πισθῶν,  
„καὶ προσελιπάροις εἰδῆς, καὶ γε τῶν γονάτων τῷ Βασιλέως  
„ἀπτόμενος: μὴ, ζητῶν ἀναχαιτίζειν ἄλλοτριον πόλεμον, ἴδιον  
„κατ' ἡμᾶς αὐτὸς προσεπινόειν: μὴδὲ γὰρ εἰρωδοῦσαν πάντας,  
„καὶ ἡμεῖς, Φησὶν, εἰρωδοῦσαιμεν.

Μᾶλλον δὲ τὸ ἐντεῦθεν ἐπὶ τὸ πλεον ἐπεδίδα τῇ Ἐκκλησίᾳ ὁ θόρυβος, ἄλλων ἄλλως διὰ τὴν ἐπιδοκιμαθεῖσαν ἔγνωσιν κατακρινόντων. Οὕτω γὰρ προΐων ὁ Παχυμέρης Κεφ: ΙΘ'. (65) „Ἐπιχῶν ἐφ' ἡμέραις ὁ Βασιλεὺς, καὶ μαθὼν ὡς ἐν κλύ-  
„δωμι τὰ τῆς Ἐκκλησίας εἰσὶ, καὶ εἰς τὸν ἕνα ἔ παραδέχεται·  
ὁ

(62) Τόμ: Α'. Σελ: 264'

(63) Ἰσως ὅτω νοητόν: „Μηδὲν γὰρ τῶτων εἶχεν καταλαβεῖν· ὡς Κεφαλῇ δη-  
“μηδὲν τῶτων φέρειν, ἢ συγχωρεῖν.) ἐνὶ Χρησιμοποιήν καὶ μόνω.) ὡς Κεφαλῇ δη-  
λουότι τῷ ἰδίῳ αὐτῆς Πατριάρχῃ.  
... τῶ Μυμύρωσιων δὲ, τῷ Πάπα κτ:

64) Οὕτως ἀναγινώσκω: (Μετά τὸ Μνημόσμων δὲ, τῷ Πάπᾳ κτ:

65) Τόμ: Α'. Σελ: 265.

ὁ δῆθεν ἀνένδοτος τὸν ὑποκλιθέντα· καὶ πολλῶν μὲν ἐφεξῆς, ὡς ἀποδοκιμαζόντων τὰ τῆς ἐνώσεως ἐπὶ Λῆμνον, ἢ Σκυρον, ἢ ἀλλαχόσε ὑπεροριζομένων, εἰσὶν οἳ καὶ ἐκόντες ὑπεξῆλθον τῆς πόλεως. Καὶ τῶν ἐξορίσων δὲ, οἳ μὲν ἐπὶ τῆς πατρώας ἔμενον δόξης· οἳ δὲ, ὑπὸ τῶν δεινῶν τεθραυσμένοι, τῇ ἐπικυρώσει τῆς κοινωνίας τῷ ἐλδοθερίαν τῆς ἐπανόδου διεμποροῦντο. Οὕτω γὰρ αὖ μετὰ τινά ο Ἰαχυμέρης: „Ἦτοιμάζοντο δὲ καὶ φορτίδες „τῷ ἐξορίζεσθαι τὰς ἡδὴ κατακρίτους δοκῦντας· ἐμὼ δὲ καὶ μέ- „χρὶς ἐλπίσμων τὰ δεινὰ ἦσαν, ἀλλὰ καὶ πέρα τινὲς τῶν δεινῶν „μετέειχον· ὡς τὰς μὲν εἰς Λῆμνον, τὰς δ' εἰς Σκυρον, ἄλλας δ' εἰς „Κέω, καὶ ἄλλας εἰς Νικαίας πόλιν περιορίζεσθαι. Ἄλλας δ' αὖ- „θις τῆς Πόλεως, τὰς μὲν ἀκασίως, τὰς δ' ἐκόντας ἐξορίζεσθαι „ἄλλας δὲ μέχρι Συληθρίας, καὶ Ῥαιδεσσ. Τινὰς δὲ καὶ ἐντὸς „τῷ κατὰ τὸν Φάρον λιμένος γνωσιμαχίσαντας ὑποκλῖναι τε καὶ „ὑποσρέψαι.

Ἐκ δὲ τῶν ἐγένοντο καὶ οἱ μετὰ τῷ Μεγάλῳ Ῥήτορος Ὀλοβόλῳ δημοσίᾳ ἐπ' ἀτιμοτάτῳ τε καὶ οἰκτροτάτῳ θάνατι διὰ τῆς πόλεως Αὐτοκρατορικῷ κελύσματι περιενεχθέντες, ὡς ἔρηται δι' ὧν τῆς καρτερίας, τῷ ἐν τοῖς λοιποῖς Κληρικοῖς εὐστάθειαν ὑπερέχεν ὁ Βασιλεὺς, παραπλήσια καὶ σφίσιν ἄλλως ὑποπεπτη- χόσι τὰ κολαστήρια.

Μετὰ δὲ ταῦτα τῶν τῷ Βασιλεῶς Πρεσβυτῶν ἀπὸ τῆς ἐν Λαγυδάνῳ Σωόδου ἐπανεληλυθόντων, ὡς ἄπαξ τὸ πρῶτον ἐν Ἱεροῖς ἢ τῷ Πάπᾳ μνεία ἐξήμεσται, μέγας τις ἦρθη θρῶς ἐν τῇ Ἐκ- κλησίᾳ· ἄλλας τ' ἄλλοι ἔτις εἶχον ἀποτροπαίους, ὡς μὴδ' ἀπλῶς ἀξιῶν ἐντυγχάνειν αὐτοῖς, καὶ τὸ ἀπλῶς συλλαλῆσαι, ἢ ἐξ ὀνό- ματος ἀποκαλέσσαι, συγερὸν ἡγεῖσθαι τι καὶ προσρόπαμον· τὸ δὲ τοι χεῖρον, ὅτι καὶ αὐτοὶ ὁμοφρονῶντες διετέλουν ἀλλήλοις οἱ τῷ ἔνωσιν ἀσπασόμενοι. Οἱ γὰρ Παχυμέρης καὶ ταῦτα, Βιβλ: Ε'. ΚΓ'. (66) „Ἐντεῦθεν τὰ τῆς Ἐκκλησίας ἐνόσει, καὶ διεσέλ- „λοντο ἀπ' ἀλλήλων ἀνθρώποι· καὶ ὁ μὲν ἐκοινώνει τῷδε τῶν „Θείων σιμᾶξων· οἳ δὲ, μὴ ἄψῃ, μὴ θίγῃς, μέχρι καὶ ἐκπω- „μάτων αὐτῶν καὶ προσφωνημάτων ἀπακριβέμενοι. Ἦρετο δὲ „μεῖζον τὸ χίσμα· καὶ ὁ χθὲς ἐπὶ τῷδε πληροφορούμενος, σή- „μερον ἀπεσρέφετο. Καὶ ὥστερ ἔτις κακοσπλάγχχνως ἔχων, „ἐπισυμβάντος καὶ ἄλλου νοσήματός διπλῆν ἔχει τὸ ἄλγος, καὶ „τὸ πρότερον ἀνέσταται τῇ τῷ ἐπιγενομένῳ προσκρύσει. Ἐκείνα „δ' αὖθις πρὸς ἀλλήλα διαφέρετον, ὥστε τὸ εἰς θραπείαν τέττε „καὶ συσολῶ, εἰς αὐξίαν θάτερος γίνεσθαι, καὶ ἀπαγορεύειν τὸν κάμ-

(66) Τόμ: Α'. Σελ: 271.



καί μινοντα. Τὸν αὐτὸν τρόπον καὶ τότε τῇ τῷ Θεῷ Ἐκκλησίᾳ  
 σωζέσθαι· προόντος γὰρ ἀποχρώντως τῷ κατὰ τὸν Ἀρσένιον  
 Σχίσματος, ἐπισυμπίπτει καὶ δεύτερον τόδε. Ὡς εἰ μὲν καὶ  
 ἅμῃ τὰ μέγιστα ἀρρώγηματα, καὶ τὸ μέγα τῆς Ἐκκλησίας  
 σῶμα καὶ ἀσάσιασον οἶατε διαλυμαίνονται, καὶ αὐτὰ δὲ καὶ  
 ἄλλαν ἀξύμβητα· αὐτὰς δ' αὖθις τὰς ἑκατέρας μερίδος πρὸς ἀλ-  
 ῥήλους διαφωνεῖν· καὶ τὰς μὲν ἔγω, τὰς δ' ἄλλως· καὶ τὰς μὲν  
 ἀπλῶς, τὰς δ' ἀκριβέστερον διακρίθαι ἐπὶ τῷ Σχίσματι.

Ἐκ δὲ δὴ τῶν τῷ ἑνώσειν ἀποδοκιμαζόντων πλείοι, Ἰωσήφ  
 προσιόντες τῷ Πατριάρχῃ, κατὰ τῆς ἐνώσεως διαναστῶν παρή-  
 νει· καὶ τὰς ἐνωθέντας κοινωνίας ὅλως μηδεμιᾶς ἀξιῶν. Ἐφ'  
 οἷς ὁ Βασιλεὺς χελεπήνας, τῷ μετὰ τῶν τοιῶνται ὁμιλίαν τε  
 καὶ ἀναστροφῇ τῷ Πατριάρχῃ σαφῶς ἀπηγόρευσε, κατὰ καὶ  
 ταῦτα ὁ Παχυμέρης Βιβλ: Ε'. Κεφ: ΚΘ'. (67) διέξεισιν. „Οὐκ  
 ἦν δέτινας ἡρεμεῖν ἐντεῦθεν· ὥς καὶ τὸν Ἰωσήφ ἐκείσε κατή-  
 μενον ἀναπαύεσθαι· ἀλλ' ὅσημέραι προσφοιτῶντες ἠνώχλων τὸν  
 ἄνδρα, συχναῖς περιέβαλλον ἀχολίας τὸν αὐτὸς ἦλον (καὶ γὰρ  
 κατ' ὀλίγον κατέψυκτο τῇ τῶν τρόπων ἀπλότητι) ἀναζωπυρεῖ-  
 ντες οἷον, καὶ πρὸς τὸ θερμότερον διεγείροντες· ἦν γὰρ ὁ ἀνὴρ  
 ἐπὶ τὸς ἰλαρὸς καὶ μέτριος, ὥς καὶ ἔπερ χρεία γεγόναι,  
 τινὰς τῶν τῇ Ἐκκλησίᾳ κοινωνούντων προσφοιτᾶν ἐκείνῳ· οἱ δ'  
 ἠθέλον ἐυλογεῖσθαι, μόνον ἦν ἐκείνης προσπίπτειν, καὶ τῷ ἐυλογεῖν  
 ἐπισητεῖν· καὶ αὐτὸν ἐυθὺς κοινωνεῖν ἐκείνοις τῶν χαρισμάτων  
 τῷ Πνύματος· ὃ καὶ τοῖς περὶ ἐκείνον, καὶ τοῖς ἄλλοις, ἐκ  
 οἷον ᾤ. Διὰ τῷτο καὶ ὅσημέραι προσφοιτῶντες, ἀνεθάρρουν  
 πρὸς τὸ τελῶς χρίζεσθαι. Τῷτ' ἀναθὲν τῷ Κρατῶντι, ὁ  
 δὲ, πληροφορίαν τῷ εἰς ἐκείνον ἐκείνῳ ἀφῆς, καὶ τὸ ἐπὶ πολὺ  
 συγκεχωρηκὸς ἐκ προθέσεως ἔ πάνυ μετρία, ὡς ἔ δίκαια πά-  
 χων κατεμέμψατο· εἰ αὐτὸς σωήδεται οἱ ταῖς ἀναπάσεσιν  
 ὡς εἰκὸς προσαποδεχόμενος· ἐκείνος δ' ἀνδράσι προσφέρεται ἐυ-  
 μενῶς καὶ οἰκείως, πάνυ πολὺ τὸ πρὸς αὐτὸν διεσηκὸς ἔχουσιν· ὥς  
 καὶ τὸ σῶμα κατατεύρειν τῆς Ἐκκλησίας· χρίων δ' ἐκείνης  
 αὐτῷ καὶ μὴ αὐτὸν ἐκείνοις ἔπεσθαι, ἐχθροῖς ἀριδήλως ἔσι, καὶ  
 ἐπὶ τοῖς μεγίστοις διαφορομένοις. Πρὶν πεμπε τοίνυν τὰς ἀπερῶ-  
 ντας μὴ δέχεσθαι σφᾶς, ἦν μέλοι οἱ τῷ κατ' ἡσυχίαν κατῆ-  
 θαι. Ἰωσήφ τοίνυν τῆς μετὰ τῶν ἀποδοκιμαζόντων τῷ ἑνώσειν  
 σωσσίας μὴ θέλων ἀπέχεσθαι εἰς ὑπερορίαν ἀπάγεται, καὶ ἄλ-  
 λων ἔτι Μοναχῶν τινων προσεξοριαθέντων, τῶν προσεχόντων  
 αὐτῷ· τῷτῆσι τῶν ἄλλοις ἐκείνῳ τῷ ἑνώσειν παραδέξαται, ὁμοίως  
 ἐκεί-

(67) Τόμ: Α'. Σελ: 282. 283.



ἐκείνῳ σωμαπαξιόντων. Οὕτω καὶ γὰρ μετὰ πολλὰ Παχυμέρης Αὐτόθι. (68). „Τινὰς δὲ καὶ τῶν Μοναχῶν, οἳ δὴ ἐκείνῳ προσέκειντο, ἄλλον ἄλλαχθ' ἐξορίζει, καὶ Νήσοις ταῖς κατ' Αἰγαῖον „περιορίζει· τὸν δέγε Μοναχὸν Ἰασίτιω Ἰωῆ ἐν Καβαία, Φοῶ- „ριον δ' αὐτῇ πρὸς τῷ Σαγγάρεϊ κείμενον ποταμῷ, ὑπ' ἀσφα- „λείας πέμψας περιορίζει.

Εἰς τοσῶτον δὲ τέως τῇ Ἐκκλησίᾳ πρὸςχώρησε τὰ τῷ Σχίσματος, ὥστε τινὰς, καὶ τῶν κατὰ μόνον τὸν εἰρημένον τρόπον τῷ ἔνῳσιν ἀποδεχομένων, ἀνάθεμα καταψηφίσασθαι. (Παχυμ: Βιβλ: 5'. Κεφαλ: ΙΗ'.) (69) „Ἐπειδὴ γάρ τινες τῶν περιττῶν „καὶ ἐνκόλων, οἷς ὅδ' ἡμεῖς τὸ παράπαν εἶδέναι τὰ τῆς Ἐκκλησίας „τῶν Ἰταλῶν, ὅτε μὴ καὶ ἀξιῶσι ζῶναι, ὡς πάλαι ποτὲ ἦσαν „ἐν πρώτοις ἡνωμένοι τῶν ἄλλων πλέον, καὶντι συμπεσὼν πα- „ρέλυσε τὸν δεσμόν· ὅμως δὲ πάλιν ἀπαράθραυστα μένουσιν ἡμῖν „τε ἐκείνοις τὰ τῷ Χριστιανισμῷ Μυστήρια, ὡς μηδὲν παρεγχε- „ρεῖν τολμᾶν τινὰς ἐπὶ τῷ τελεσμῷ Βαπτίσματος, καὶ Ἱερωσῶν, „καὶ γάμων, καὶ μονασικῇ καταστάσει, καὶ τοῖς λοιποῖς, οἷς ἄρα „καὶ ἡ Καθολικὴ καὶ μία Ἐκκλησία τῆς αὐτῆς ἐπιτελεῖ τρο- „φίμους. Ἀλλ' ὥστερ ἂν ἐκ δρυὸς, ἢ ἀπὸ πέτρης ἀρχῇθεν ἦσαν, „μηδὲν τῶν τοῖς Χριστιανοῖς ἀνηκόντων εἰδότες, καὶ διὰ ταῦτα „ἐκείνους ἀτόπως ἀποσρεφόμενοι καὶ τὰ παρὰ τοῖς ἡμετέροις „ἐβδελύσσοντο Ἄγρια, καὶ κρημνοὺς καὶ ποταμοὺς καὶ ὄρεσιν ἐδί- „δαν, ὡς μηδὲν ὄντα τίμια, καὶντεῦθεν ἐκώλυον τὰ τῆς Πίσεως „ἀναλαμβάνει ζῆλον ὁ Βασιλεὺς, καὶ πάντας Ἐπισκόπους προσ- „καλεῖται καὶ Μοναχούς· ἔστι δ' ὃ καὶ τινὰς τῶν χιζομένων, πλὴν „ἐπ' ἀσφαλείᾳ, περιφανείς· ὧν εἷς ἡμεῖς καὶ ὁ ἐν Φρυγianoῖς Ἀκά- „κιος, καὶ ὁ μαθητῆς αὐτοῦ Γερμανός, καὶ λοιποὶ πλείοι.

Ἐν δὲ πολλοῖς καὶ ἄλλοις τοῖς τῷ ἔνῳσιν τιμικαῦτα μῆδα- μῶς παραδεχομένοις ἡμεῖς, καὶ ὁ τῶν Νιχισίων Δεσπότης Δέκας, καὶ ὁ Σεβαστοκράτωρ Ἰωάννης Δέκας ὁ ἐκ Πατρῶν· οἳ διὰ τῶτο πάντες, ὡς ταραξία κατὰ τῆς εἰρήνης, ἐν ταῖς πρὸς Ἰωάννῳ τὸν ΚΑ'. ὡς παρὰ Βέκκας καὶ τῶν λοιπῶν Ἀνατολικῶν γεγραμ- μέναις Ἐπιστολαῖς, ὑπόδιοι γεγονάσι τῷ Ἀναθέματι. Οὕτω γὰρ ἔχει ἡ τοιαύδε Σωδικὴ Ἐπιστολὴ, ἐν Τόμ: ΙΑ'. τῶν Σω- δικ: Μέρ: Α'. Στήλῃ 1037. (70) „Διὰ τῶν παρόντων Γραμ- „μάτων δῆλον εἶναι τῇ ὑμετέρᾳ ἀγάπῃ βεβλόμεθα, ὅτι σωμα- „θροισθέντων ἡμῶν ἐπὶ τῆς ἐν Κωνσταντινῆ πόλει Σωδόδῃ, ἐπὶ „ἐξετάσει τῷ ἐκ πολλῶν ἤδη, μέσον τῆς Λατίνων καὶ τῆς Γραικῶν Ἐκ-

(68) Ἀυτ: Σελ: 283. 284.

(69) Τόμ. Α'. Σελ: 317.

(70) Ἐν δὲ τοῖς κατὰ Ἀρδεῖνον Σωδικαῖς, ἐν Τόμ: Ζ'. Σελ: 257. 258.

„Εκκλησίας, γενομένης Σχίσματος· σωάμα τῇ Ἀγίᾳ ταύτῃ  
 „Σωόδω ψήφῳ ἐπενεχθείσης ἅπαντας τὰς Σχισματικὰς καὶ δια-  
 „ταράκτας τῆς Ἐκκλησιαστικῆς ἐνώσεως, τὰς ἐγγύς τε καὶ πόρ-  
 „ρω, ὅπως δὴποτε, τῇ ἀπονοίᾳ τῇ ἑαυτῶν ἐπιμένοντας· τὰς μὲν  
 „ἀποδεχομένους τὴν μὲν ἐν Ῥώμῃ Ἀγίαν Ἐκκλησίαν, Μητέρα τε  
 „καὶ Κεφαλὴν πασῶν τῶν ἄλλων Ἐκκλησιῶν, καὶ Πίσεως  
 „τῆς Ὀρθοδόξου Διδάσκαλον· τὸν δὲ ταύτης ὑπέρτατον Ἀρχιε-  
 „ρέα, πρῶτον ἐν τῇ Ποιμένᾳ ἁπάντων Χριστιανῶν, ὁποῖα ποτ' ἂν  
 „ᾧσιν ἐπαγγέλματος, ἢ βασιλείας, ἢ ἀξιώματος Ἀρχιερατικῆς, ἢ  
 „Ἱερατικῆς, ἢ Διακονικῆς· καὶ πάντας δὲ καθόλου τὰς ἄλλας  
 „παραξίας Σχισματικὰς, οἰαζίνουσιν τάξεως, ἢ καταστάσεως, ἢ  
 „ἀπὸ τῆς Βασιλείας βαλῆς, εἴτ' ἀπὸ τῆς Συγκλήτης, ἢ τινὸς κα-  
 „ταστάσεως ἑτέρας. Σὺ οἷς καὶ αὐτὸν τὸν Νιχιστὴν Δέκαν, τὸν  
 „Δεσπότην ὀνομαζόμενον· καὶ Ἰωάννην Δέκαν τὸν Πατρῶν τὸν  
 „Σεβαστοκράτορα (71) προσειρημένον· ὡς Σχισματικὰς, καὶ τὴν  
 „τοιαύτην τῆς Ἐκκλησίας ἐνώσιν ἀναταράττοντας, καὶ διώκτας  
 „ὄντας τῶν σωεληλυθότων ἐπὶ τῇ τοιαύτῃ ἐνώσει τῇ Ἐκκλη-  
 „σιαστικῇ. Ὡσαύτως δὲ καὶ τὰς ἀπὸ τῆς καθ' ἡμᾶς ἀπομεριζομέ-  
 „νης πληρώματος, καὶ τὴν μετ' ἡμῶν ἀναστροφὴν φέροντας, δι'  
 „ὧν πρὸς τὸν Ἀποστολικὸν Θρόνον ἀποδεδώκαμεν ὑπακοὴν· ἀφο-  
 „ριθέντας τε καὶ τῷ Ἀναθέματι παραδοθέντας, ὑποβύνας αὐτὰς  
 „κολάσεως ἀπεφωλόμεθα, καὶ ὅλως ἀδοκίμους. Πρὸς δὲ τὴν τέτη  
 „μαρτυρίαν, τὴν ἡμετέραν σφραγίδα, μετὰ τῆς παρέσης ἡμῶν  
 „σιωπίας ὑπογραφῆς προσάψαθαι δεῖν ἡγήσάμεθα,,. Ἐδόθη ἐν  
 „Κωνσταντινουπόλει ἐν τῇ Ἀγίᾳ Σοφίᾳ, Ἐτα Κυριακῇ 1277.  
 „Ὡς εἶγε καὶ Παχυμέρης κατὰ τὰ ἀνωτέρω ρηθέντα, ἐκ τῆς Δ'.  
 „Βιβλ: Κεφ: Ις'. παρὰ τῆς Βασιλέως μόνου τὰς Ἐπιστολὰς ταύτας  
 „γεγράφθαι ἡγήσατο, ἄλλως μὲν τοι κἀντεῦθεν δῆλον, ὡς πλείους  
 „τὸ τιμικαῦτα γενέσθαι τὰς ἀλλοτρίως τῆς ἐνώσεως ἔχοντας· οἱ  
 „μηδὲ μόνοις ἐπαρκέμενοι ῥήμασι, καὶ Βιβλία ἐκδεδώκασιν πλείους,  
 „ἐν οἷς κατὰ τῆς ἐνώσεως ἐκείνης διετέλουν ἀντιφερόμενοι. Ὡς  
 „Παχυμέρης αὐτὸς, ἐν τῷ 5'. Βιβλ: Κεφαλ: ΚΓ'. διέξεισι: (72)  
 „Καὶ γὰρ ὁσημέραι δεχόμενος (φησὶν ὁ Βέκκος) τὰ τῶν ἄλλων,  
 „οἱ δὲ καὶ ἐς μέγα ἠύξανον τὴν παραβασίαν, ἐξ ὧν ἀπογρα-  
 „φῶν δεικνύειν ᾤοντο οἷς πρὸς τὰς Ἱταλὰς εἰρωδύσαν, καὶ τῷ  
 „κατὰ σφᾶς ἀσφαλεῖ τὴν τῶν ἄλλων ὀργῇ ἐξέκαιον, εἰ τοιούτοις  
 „σωιχημένοι τοῖς χαλεποῖς, διὰ ταῦτα παρήγον κἀκείνον γράφειν.  
 „Ὁ δὲ

(71) Τὸ γὰρ Syntocrator (Συντοκράτωρ) τὸ ἐν ταῖς λοιπαῖς ἑκδόσεσιν, Ἀρδεῖνος ἐν τῇ κατ' αὐτὸν παρὰ τὸ χεῖλος ἐπανορθούμενος Σεβαστοκράτωρ γράφει. Αὐτόθι Στήλη 258.

(72) Τόμ: Α'. Σελ: 326.

Τόμ. Β'.

I IIIII

Ὁ δὲ Βασιλεὺς τελευτάϊον, καὶ κατὰ τῶν ἐκ γένους αὐτοῦ προσηκόντων ἐτραχώατο· ὅσοι ἀποδοκιμάζοντες ὑπῆρχον τῷ ἔνωσιν. Παχυμέρης καὶ ταῦτα, Βιβλ: 5'. Κεφαλ: ΚΔ'. (73) „Λογισμοῖς γὰρ ἀγρίοις διεκβακχούθεις ὁ Κρατῶν, καὶ πᾶσιν „ὑπόπτως ἔχων, ἐκ οἶδα καθότι, τέως δέ γε τοῖς φαινομένοις, „καὶ τῷ δοκεῖν ὑπὲρ ἑαυτῶ, καὶ τῆς αὐτῶ δῆθεν θρησκείας πο- „νῶν, εἰ ὀρθοδοξῶν ἐς τὰ μάλιστα, τὰ πρὸς παρατροπῇ Πίσεως „διαβάλλοιτο, δεινὰ ἐποίησιν. Καὶ ὅσα ἐφεξῆς τοῖς ἀνωτέρω ῥη- „θῆσι παρασιωῆψε, περὶ ὧν ὑπέστησαν κολάσεων, οἱ πρὸς γένους ὄντες τῷ Αὐτοκράτορι.

Ἐκ μὲν ἔν τῶν ἄχρις ἐκείνης ἀντιφερομένων τῇ ἐνώσει, πρὸ τῶν ἄλλων ὑπῆρχον οἱ Μονασαί· οἱ δὲ, καὶ τῶ πλήθους ἐνε- „κα ὧν ἔπαχον δεινῶν οἱ τῇ ἐνώσει καθυπογράψαι μὴ σέροντες ἐπιμελῶς ἀναζητεῖν ἤρξαντο, ὃν ἄρα χρόνον τῷ Αὐτοκράτορι καθάμαρτο θνήξεσθαι, ὡς τότε δηλονότι καὶ σφᾶς τῆς Τυραννίδος ἀπαλλαγῆσεσθαι ἐπελπίζοντες. Ἐξ ὧ καὶ μᾶλλον ὁ Βασιλεὺς εἰς ὀργῇ διαφλεχθεὶς, δεινотάταις τῆς Μοναχῆς ἐπεχείρει ἐτά- „ζεν τε καὶ καταπιέζειν κολάσειν. Ὁ Παχυμέρης Αὐτόθι: (74) „Ἐντεῦθεν ὁογὴ κατὰ Μοναχῶν· ἔχ' ὅτι τῆς Ἐκκλησίας ἀπο- „στατῶσιν, ἀλλ' ὅτι ἡμέρας ἀριθμῶσιν αὐτῶ, καὶ χρόνους περιορί- „ζουσιν, ὡς ἀνεσείοντες τῶν κακῶν ἐντεῦθεν. Καὶ δεινὰ μὲν „ῆσαν αἱ κατ' ἐκείνων ἀπειλαὶ ἐξ ὀργῆς ἀνημμέναι, ὅμως δ' „ἀνηρτῶντο προνοία τῶ μὴ δοκεῖν κολάζειν ἀλόγως, εἰ καὶ μι- „κρὸν ὅσον· καὶ Γαλακτίωνα μὲν τῶν ὁμμάτων σεροῖ, Μελέ- „τιον δὲ ἀφαιρεῖται τῆς γλώσσης. Αἱ δ' ἐξορίαι καὶ μᾶλλον τοῖς „ἀνδράσιν ἐμετριάζοντο ἐκκλίνουσι τὰς ποινάς. Λάξαν μὲν ἔν „τὸν Γοριανίτῳ Ἄνδρα σεβάσμιον, ἀποσεύλας τῆς ἐκτυφλώσαντας, „ταῖς ποιναῖς ὑπῆγε· πρὸς δὲ, καὶ Μακάριον τὸν καὶ Περιερίῳ „παρονομαθέντα, τῶ ἀπλῶ καὶ ἀκάκῃ χάριν κτ:... Τὰ γὰρ „καθεξῆς ἀνωτέρω παρεθέμεθα. Ἐν τέτοις γὰρ περὶ τῆς ὀρθό- „τητος τῶ Λατινικῆ Δόγματος τῶ Βέκκῃ συγγράψαντος, οἱ τῷ ἔνωσιν ἀποσέροντες δριμύτερον τὸ ἐντεῦθεν κατεξαναשאίντες, ἐνεκάλεσαν μὲν αὐτὸν πρὸ τῶ Βασιλέως· (75) κολάσεις δ' ἔν „αὐτ' ἀποκρίσεων ἀπλωέγκαντο· καθὰ καὶ τῶτο Παχυμέρης Βιβλ: 5'. ΚΕ'. (76) „Τὸ δὲ πρὸς τὸν Πατριαρχοῦντα τὰς αἰτίας „ἄγειν, (ἢ γὰρ ἀναφορὰ τῶ σκανδάλῳ σφίσι πρὸς ἐκείνον ἰῶ, „ὡς

(73) Ἀυτ: Σελ: 330.

(74) Ἀυτ: Σελ: 333.

(75) Σωπετέσθαι γὰρ, μηδέτερον τῶν διαφερομένων μερῶν κατὰ θατέρῃ Συγγραφαῖς ἐπιτίθεσθαι.

(76) Ἀυτ: Σελ: 337.

ὥς ἔλεγον, ἀσφαλῆς τὸ κατ' αὐτὸν Λατίνος, παρὰ μόνῳ τῷ  
 „ἐν τῷ Συμβόλῳ πρόθεσιν, κρίνοντα·) ἔτοιμον ὡς ἐκ τῆς ῥᾶςα.  
 „Καὶ προφανῶς καὶ ἀμφοτέρωθεν, ἔκ τε Βασιλέως, καὶ τῶν  
 „παχόντων, ὁ ὄχλος αὐτῷ περιῖστατο. Ἐκείνους μὲν, ὡς τῷ τῶν  
 „οἰκείων ἀπολωλότες ἔννοιαν, τῶν δὲ καὶ δι' αὐτὸν παχόντων,  
 „μὴ ἐῶντα τὰ πεπραγμένα τῷ χρόνῳ μᾶλλον ὑποχαλᾶσθαι·  
 „τῷτο ξωῆθη. καὶ ἄλλοις πλείοις κτ:.,. Τὰ λοιπὰ δὲ ὡσαύτως  
 ἀνωτέρω κατείδομεν.

Τοιγαρὲν τελοῦνταίον καὶ οἱ πρὸς αἵματος ὄντες τῷ Αὐτοκρά-  
 τορι, καὶ ἄλλοι, ἀναφανδὸν εἰσείσαντες, πᾶσαν διὰ τῷτο εὐπεί-  
 θειαν αὐτῷ ἀπιωύαντο: καὶ ὅπλα ἀράμενοι, τοῖς παρὰ τῆς Βα-  
 σιλέως πεμφθεῖσι στρατιωτικοῖς ἀντέστησαν εἰς φεσιν. Ἐτι δὲ καὶ  
 Σωόδοον σωμαγείραντες ἐξ ἑκατὸν μὲν Μοναχῶν, ὀκτὼ δ' Ἐπισ-  
 κόπων, καὶ ἐνίων δὲ Ἀββάδων, κατὰ τε Νικολάου τῆς Πάπα, καὶ  
 τῆς Αὐτοκράτορος, καὶ τῆς Βέκκας, καὶ πάντων τῶν αὐτοῖς προσκει-  
 μένων, Ἀναθέματος κατεψηφίσαντο δίκῃ, καὶ ὡς Αἰρεσιόφρονας  
 ἀπεδοκίμασαν ἐκσυρίζαντες. Ἀλλὰ καὶ τῶν Ἐπισκόπων τῆς  
 ἀνθυπενεχθέντας αὐτοῖς διέθεντο κάκιςα. Ὡς τε τὸν Βασιλέα  
 τέως σιωεωρακότα τῶν ἀμνηστῶν εἶναι τὸ περαιτέρω προάγειν  
 τῷ ἐνωσιν, μὴ ἄλλως καὶ τῆς Κράτης ἐκπέσοι τέλεον, Πρέσβεις  
 ἀποσείλασθαι εἰς Ῥώμῃ τῆς Νικολάου τῷ Πάπα δηλώσαντας.  
 Οὕτω γὰρ ὁ ΣΠΟΝΔΑΝΟΣ ἐν Ἐτει 1279. Ἀριθμ: Α'. „Ἐτει  
 „Χρυσῆ ασοθ'. Ἰνδικτι: Ζ'. ἦγον παρὰ Παλαιολόγας τῆς Γραικῶν  
 „Αὐτοκράτορος Ἀποκρισιάριοι Νικολάου ἐπὶ τῇ Ἀρχιερατείᾳ συ-  
 „νηθησόμενοι. Δι' ὧν ὡσαύτως καὶ Ἰωάννης ὁ Βέκκος ὁ Κωνσταν-  
 „τινῆ πόλεως Πατριάρχης κατὰ τὸ οἱ καθῆκον σωήδετο, Ποιμένα  
 „Ποιμένων τὸν Νικόλαον ἐπιγινώσκων, καὶ τῶν λοιπῶν ἀπάντων  
 „κατ' ἐξοχῇ ὑπερφέροντα. Προσέθετο δὲ Ὁγέριος ὁ τῆς Βασι-  
 „λέως Πρωτονοτάριος ὑπόμνησιν, δι' ἧς ὡς ἐξ αὐτῆς πρὸς τὸν  
 „Πάπαν Νικόλαον διασημανθῆναι ἠέξει, ἔς γε μὲν ἐπ' ἐκείνο  
 „μηδὲν τι τὸν Βασιλέα σπασθῆς ὑφῆναι ὡς πάντας ἀποκα-  
 „ταστήσας πρὸς τῷ μετὰ τῆς Ῥωμάνας Ἐκκλησίας ἐνωσιν·  
 „πολλὰς δὲ ὅμως τῶν γένεστε καὶ ἀγχιστείας αὐτῷ προσηκόντων,  
 „ἐ γὰρ ὅπως τῶν ἄλλων, ἰχυρῶς ἀντιστῆναι, ὥς τε καὶ κατὰ  
 „προφανῇ τῷ εἰσιν αὐτῷ ἀντεπεξελεθῆν· ἔς περ, ἐδὲ διὰ  
 „τῶν ὀπλιτικῶν ταγμάτων, οἷος τε ὥφθη ὁ Αὐτοκράτωρ κατα-  
 „σορέσασθαι, ἃ κατ' ἐκείνων ἀντεπεξήγαγεν. Οὐ μόνον δὲ,  
 „ἀλλὰ καὶ ψεύδοσιν ὁδὸν τινὸς προσαγγηγεμένης, ἐξ ἑκατὸν μὲν  
 „Μοναχῶν, τινῶν δὲ Ἀββάδων, καὶ Ἐπισκόπων ὀκτὼ, Νικό-  
 „λαόν τε αὐτὸν τὸν Πάπαν, καὶ τὸν Βασιλέα, καὶ τὸν Κων-  
 „σταντινῆ πόλεως Πατριάρχην, καὶ πάντας δὲ ὅσοι τέτοις προσέ-  
 I ιιιι 2 κειντο,



„κειντο, καθυπέβαλον Ἀναθέματι, ἀπεκήρυξάν τε ὡς Αἰρετικῶς, καὶ τὰς αὐτοῖς ἀντιβαίνοντας τῶν Ἐπισκόπων κἀκίσα διέθεντο. Οὗ χάριν, ἐπεὶ ἀμήχανον ἐδόκει τῷ Κρατῶντι περαιτέρω „προάγειν τὰ τῆς ἐνώσεως, ἥπερ οἶον τε περιεσκεμμένως καὶ „πεφυλαγμένως ἔγνω χρῆσθαι προσφέρεσθαι, μὴ τυχὸν καὶ αὐτῆς „ἐκπέσῃ τὸ παράπαν τῆς Κυριότητος. Κεῖνται δὲ αἱ ῥηθείαι „Ἐπιστολαὶ, καὶ ἡ ὑπόμνησις ἀνάγραφτος, ἐν τῷ Καταλόγῳ τῶν „Νικολάου τῷ Πάπᾳ, ὡς καὶ Βαδδίγγος φθάσας κατέγραψεν. Κἀκεῖνο δὲ προσέτι βέβαιον, ὅτι πολλοὶ τῶν ἐπισημοτέρων καὶ ἐν ὑπεροχαῖς καθεσώτων, ἀποτρόπιαζόμενοι τῇ ἐνώσει, ἐπὶ Τραπεζέντος τότε κατέφυγον, καὶ τῷ ἐκεί Κράτῳ Τραπεζεντί τὰς θεμελίους κατεβάλλοντο, πολλὰς καὶ ἄλλας Ἐπαρχίας καταδημαγωγήσαντες πρὸς τὸ μέρος τὸ ἴδιον. Οἱ δὴ πᾶς Κράτος τὸ ἀπὸ τῶδε ἦν θὰ ἀκμάσας, τὸ ἔς γ' ἐπὶ τὸ ἔτος παρατεῖναν τὸ 1461. καθ' ὃ τῆς τῶν Τραπεζεντίων Δυναστείας ὑπὸ Ὀθωμανῶν κατεκπορθηθείσης, Δαβὶδ ὁ Κομνηνὸς, τῶν ἐκείσε Ἀυταρχησάντων ὁ ἔχματος, ἔργον πολέμου κατέπεσε. Περὶ δὲ Βαδδίγγου ἐν τοῖς χρονικοῖς τῶν Ἐλασσόνων Φράσεων, ἐν Τόμῳ Β'. ἐς πλάτος γέγραπται.

Ἐφ' ἅπασιν δὲ, πλὴν τῷ Αὐτοκράτορος αὐτοῦ, καὶ τῷ Βένκῳ, καὶ τινων αὐτοῖς πελαζόντων, τοῖς λοιποῖς ἅπασιν ἀχθῆρὰ ἤδη συνέβαινε τὰ τῆς ἐπιχειρηθείσης δοκεῖν ἐνώσεως, καθὰ Παχυμέρης διέξεισιν ἐν Βιβλ.: 5'. Κεφαλ.: Λ'. (77). „Τὰ γὰρ καθ' „ἡμῶς, ὡς εἶχον, μαθόντες, καὶ, ὅπερ ἰσχυρῶς, ὑποτοπήσαντες χλευάζοντες, τὸ γεγονὸς, καὶ ἐκ ἀλήθειαν ἀντικρυς παρὰ μόνον γὰρ Βασιλέα καὶ Πατριάρχην, καὶ τινας τῶν περὶ αὐτὰς, πάντες ἐδυσμηνανον τῇ εἰρήνῃ. Ἀλλ' ἔδ' οἱ λοιποὶ τρεῖς τῶν Πατριαρχῶν, ὅ,τε Ἀλεξανδρείας, καὶ ὁ Ἀντιοχείας, καὶ ὁ Ἱεροσολύμων, μετὰ τῶν ἰδίων Ἐπισκόπων σωυδοκηκότες ἦσαν περὶ τῇ ἐνώσει. Τὸ γὰρ πᾶν ὅ,τι περὶ τῆς ἐνώσεως διεπραγματεύετο ἐν τῇ Κωνσταντινουπόλει Ἐκκλησίᾳ, καὶ τοῖς ὑπ' αὐτῇ τελευτήσαντες Ἐπισκόποις περιωρίζετο. Τὶ τοίνυν σωτελέσειεν ἂν Λατίνοις ἢ τοιαύτῃ ἐνώσει, ἢ οἱ πλείους, μᾶλλον δὲ τῶν Ἀνατολικῶν οἱ πλείοι, ἐδόλως προσήκοντο; ἢ τε οἱ παραδεξάμενοι διὰ βιασμῶν τε καὶ ἀπειλήσεων καὶ κολάσεων πρὸς αὐτῇ ἐνήγοντο, καὶ πρὸς ἡμῶς ὡς ἐπ' ἀγαθόν τι, ἀλλὰ δεῖ κακῶν μεζόνων, ὡς κακῶ τῷ μὴ χεῖρον ἐνεδίδωσαν; τελευτᾶν δὲ καὶ ἐφ' ἣ ἐπαχάλλαιεν τι καὶ ἀδημονεῖν περιῶ καὶ ἐπάχθεσθαι;

ἌΝΤΙ-

## ἈΝΤΙΘΕΣΙΣ Ζ'.

Ἐνθεντοι ἔβδομον, καὶ Μιχαὴλ ἐφεξῆς αὐτὸς ὁ Παλαιολόγος, ὡς δῆθεν μὴδ' εἰλικρινῶς μετελθὼν, μὴδὲ καλῶς προαγαγὼν τῷ ἔνωσιν, ὑπὸ Μαρτίνου τῷ Πάπα, ἐν ἔτει 1234. ἀκοινωνησίας ψήφῳ καθυποβέβληται. Ἀναφέρει δὲ τὰ τῷ Ἀναθεματισμῷ ῥήματα ἘΒΕΡΡΑΡΔΟΣ ὁ τῆς ἐν Ῥατισβόνῃ Ἐκκλησίας Ἀρχιδιάκονος ἐν τοῖς αὐτοῖς Χρονικοῖς, ἐν τῷ Α'. Τόμ.: τῶν Κανόνων Παλαιῶν Ἀναγνωσμάτων. Ἡ δ' αὐτὴ αὐτῇ Βελλα ἐμφέρεται καὶ τῷ Βελλαρίῳ τῶν Ποντιφίκων, ἐν Α'. Τόμ.: τῆς ἐν Ῥώμῃ Ἐκδόσεως, ἔτ.: 1617. Σελ.: 124. ἔτῳ ἔχουσα: „Μαρτίνος Ἐπίσκοπος δῆλος τῶν δόλων τῷ Θεῷ. Βεβαιώσεως μὲν ἕνεκα τῶν „ὄντων, μνήμης δὲ τῶν ἐσομένων. Μιχαὴλ τὸν Παλαιολόγον, τὸν ὀνομαζόμενον Γραικῶν Ἀυτοκράτορα, ὡς τῶν αὐτῶν ἕνα ὄντα Γραικῶν τῶν πάλαι Σχισματικῶν, καὶ τῷ παλαιῷ „Σχίσματι ἐγκαμμένων, καὶ διὰ τῶτο Αἰρετικῶν, καὶ τῆς αὐτῶν „ἔτι Αἰρέσεως, καὶ τῷ παλαιῷ Σχίσματος Προσάτιω καὶ ἀντιλήπτορα, βεβλήτε καὶ γνώμῃ τῶν ἡμετέρων Ἀδελφῶν· παρόντος καὶ „πλήθους τῶν Πιστῶν μάλα συχνῶς, τῇ παρὰ τῷ Κανόνος ἐπε„νεχθείσῃ ἀκοινωνησίας τε καὶ ἀφορισμῷ ἑνοχον καταγγέλλομεν „ψήφῳ, τῆς τοιαύτης δε ψήφου τῷ δεσμῷ δεδεμένον ἐσόμενον κτ.: „Τὸ δ' αὐτὸ, καὶ τῶν ἐκ τῷ Βασιλέως Ἀποκρισιαρίων παρόντων διαπράξαται Μαρτίνον, καὶ Παχυμέρης ἰσόρησε Βιβλ.: 5'. Κεφ.: Α'. (78). „Ἐωθέη γὰρ, Φησὶ, τότε ἀνὰ Πρῶσαν διάγοντι, „καὶ τὰ κατὰ τὸν Πάπαν μαθεῖν· ὅς δὴ καὶ Μαρτίνος μετὰ Νι„κόλαον ὤ. Πρὸς γὰρ αὐτὸν ἔφθασε πέμψαι τὸν τε Ἡρα„κλείας Λέοντα, καὶ τὸν Νικαίας Θεοφάνη· οἳ δὴ καὶ ἐπισάντες, „κατ' ἐλπίδας ἃς εἶχον ἀποσελλόμενοι, παρ' ἐκείνων ἐδέ„χοντο, ἀλλὰ τὸναντίον ἅπαν· τὰ γὰρ κατ' ἡμᾶς ὡς εἶχον μα„θόντες, καὶ ὅπερ ὤ ὑποτοπάσαντες χλοῦν τὸ γεγονὸς, καὶ ἐκ „ἀλήθειαν ἀντικρυς παρὰ γὰρ μόνον Βασιλέα καὶ Πατριάρχην, καί „τινας τῶν παρ' αὐτοῖς, πάντες ἐδυσμέναινον τῇ εἰρήνῃ καὶ μάλ„λον, ὅτι καὶ ποιναῖς ἀλλοκότοις ἤθελεν ἀσφαλίζεσθαι ταύτῃ ὁ „Βασιλεὺς· ἐκείνης μὲν ἐν ἀτίμοις εἶχον, καὶ τῷ εἰς τὸν Πάπαν „πρόσοδον ὅψε μολίς παρῆχον· τέλος δὲ Βασιλέα μὲν, καὶ τὴς „περὶ αὐτὸν ὡς χλοῦσας, ἐπιτιμίοις καὶ μὴ ἀληθείαις σοιχῶν„τας, ἀφορισμοῖς καθυπέβαλον· τὴς δὲ πρέσβεις μηδενὸς ἀξιώ„σαντες τῶν εἰκότων ἀπέπεμπον,. „Ὅτω ἔν ἄρα προσώπῳ, τῷ„δε ἡμῖν ἀντιπροτέινουσι τῷ ἔνωσιν οἱ Λατῖνοι, ἦν, ἐν τῇ κατὰ τῷ

(78) Σελίδι 344.

Τόμ.: Β'.

Κ κκκκκκ

τῷ Βασιλέως καὶ τῶν λοιπῶν Γραικῶν καταψηφισθείσῃ ἀκοινωνή-  
σιν, φρεδῶν ἐς τὸ παντελὲς καὶ ἐξίτηλον, ὡς εἰς τὴν ἀρχὴν  
ὅλως ἦν ὑφεσῶσα, ὁ Πάπας αὐτὸς ἐναπέφηνε; ἦπερ γὰρ ἐπι-  
λαθέσθαι εἰκὸς τῷ ἀφορισμῷ ἐκείνῳ τῶν ἡμῶν ἀνδυπορέοντα,  
ἦν μετὰ Λατίνων ὁ Μιχαὴλ συστήσασθαι ἀπεπειράσατο ἔνωσιν  
καὶ γὰρ ἄλλως ἔτις ἡμῶν ἀνευθυριάστως τὴν κοινωνίαν ἐκείνῃ,  
ὡς ὑπὲρ τῆς ἑαυτῶν ἰσαμένῃ ἀνέφερον καινοτομίας, ἦν περ σό-  
ματι μόνῳ καὶ ἐχλὶ τῇ καρδίᾳ, τῶν Γραικῶν ἐπαγγελαμένους γενέ-  
σθαι, αὐτὸς τέως ὁ Πάπας ἐπαπεφώατο.

Ταύτητοι καὶ οἱ λοιποὶ τῶν Λατίνων ἐφεξῆς, εἰδὲνα λόγον  
ἐκείνης πεποιθῆσθαι ἔδοξαν τῆς ἐνώσεως. Ἰννοκέντιος μὲν γὰρ ὁ  
ς'. ἐν τῇ πρὸς Καντακζώνων Ἐπιστολῇ τὸν Βασιλέα, παρὰ  
BZOBIΩI Ἔτη 1353. Ἀριθμ: ΚΔ'. „Ἐπεγνώσθη ἡμῶν ἡ τῷ  
„πρότερον ἔξις, καὶ τὸ πλήρωμα τῆς διαθέσεως ἀνεκαλύφθη, ὡς  
„ἀδιαλείπτως ἡ Σὴ ψυχὴ ἐστὶ διακαυομένη, ἵνα τῷ ἰδῷ τῷ ἐκ τῷ  
„παλαιῷ Σχίσματος ἀποκαθαρθέντος, καὶ τῆς ἀπὸ τῶν κακοδο-  
„ξιῶν σκοτομῶν ἀπελαθείσης, ἐπὶ τὴν ἐνότητα τῆς Ῥωμάνου  
„Ἀγίας τε καὶ παγκοσμίας Ἐκκλησίας, καὶ τὴν ἐπίγνωσιν τῆς  
„καθολικῆς Πίστεως, (ἦν ἡ Ἐκκλησία αὕτη ἡ τῆς ἀληθείας δι-  
„δάσκαλος, καὶ παντὸς ἔσα ψόδου ἀνεπίδεκτος κρατεῖ, καὶ δι-  
„δάσκει, καὶ κηρύττει καὶ ὁ Σωτὴρ πάντων Χριστὸς ὁ ταύ-  
„της ἀρχηγὸς ἐκ ἀνέχεται διαυρεθῆναι) σωάμα τῷ Σοὶ ὑπακούον-  
„τι λαῷ ἐπανέλθης καὶ ἔτι Σὺ τε αὐτῷ καὶ ἐκείνων σωτηριωδῶς  
„κηδόμενος, ὁδηγὸς γένοιτο τὰ πρὸς σωτηρίαν. Ἀνθ' ὧν ἡ ψυ-  
„χὴ ἡμῶν ἐμεγάλυνε τὸν Κύριον, καὶ τὸ Πνεῦμα ἡμῶν ἐπὶ τῷ  
„Θεῷ τῷ Σωτῆρι ἡμῶν ἠγαλλίασεν, ἐν τῷ τάτῳ μάλιστα, ὅτι ὡς  
„εἰκὸς πιστεύομεν, καὶ πρὸς τὸν τὰ διεσῶτα τέχνη σωάψαντα  
„ἐπὶ πλέον θαυμάζομεν καὶ πεποίθαμεν, ὅτι τὸ τῆς ἐνώσεως ἔργον  
„ἐκατέρως τῶν Ἐκκλησιῶν, τῆς τῶν Λατίνων δηλονότι καὶ τῆς  
„τῶν Γραικῶν, ἐφ' ἧς τῇ προαγωγῇ πολλοὶ τῶν ἡμετέρων Προ-  
„κατόχων παρὰ τὴν φιλοθέῳ σφόδρα κεκοπιάκασιν, πρὸς ἑκάστω  
„τῆς ἐφετῆς σωτελείας τέως ἀχθήσεται καὶ ἔτις ἐν τοῖς κατ'  
„ἡμᾶς χρόνοις, ἡ τῷ Κυρίῳ ποιμνῇ, αὐτῷ τῷ ταύτῳ ἡμῶν ποι-  
„μαίνειν τε καὶ διδασκαλεῖν ἐπιτρέψαντος, σωαιρομένους, καὶ τῶν  
„τῷ παλαιῷ ἐχθρῷ πανουργομάτων νικηθέντων, ὑφ' ἐνὶ καὶ μό-  
„νῳ βοσκηθήσεται Ποιμένι, καὶ ἐν μιᾷ καὶ μόνῃ αὐτῇ ἀναπαυθή-  
„σεται. Εἰ τοίνυν πολλοὶ πρὸ τῷ σ'. τῷδε Ἰννοκέντιῳ Πάπῳ,  
ὑπὲρ τῆς τῶν Ἐκκλησιῶν ἐνώσεως κεκοπιάκασιν· αὐτὸς δὲ μό-  
νος Ἰννοκέντιος ὁ σ'. ἐν ἐλπίσιν ὡς ἐπὶ αὐτῷ τέλει τὴν ἔνωσιν  
ἐκπερανθήσεται (ἔτις γὰρ ὡς ὁ τῷ Ἰννοκέντιῳ Νῆς) ἐκδηλον  
δήπερ, ὡς ἐν εἰδενὶ ἄρα λόγῳ τιθέμενος ὡς Ἰννοκέντιος τὴν ἔνω-  
σιν ἐκείνῃ, περὶ ὡς ὁ Μιχαὴλ μάτῳ παρὰ δάσας ἐγένετο.

Ἀλλὰ

Ἀλλὰ καὶ Εὐγένιος ὁ Δ'. ἐν τῷ ὄρω τῆς ἐν Φλωρεντία Σινόδου, ἐν Τόμῃ: ΙΓ'. τῶν Σινωδικ. στήλῃ 512. (79). „Τοιαῦτα ἔφασκεν. Ἰδὲ γὰρ, οἷτε Δυτικοὶ, καὶ οἱ Ἀνατολικοὶ Πατέρες, μετὰ τὸν μακρότατον τῆς διαφωνίας καὶ τῆς διασάσεως χρόνον ἔκκλινον, πρὸς πάντα παραβαλόμενοι κύνδων τὸν ἐν γῇ καὶ θαλάτῃ, καὶ πάντα πόνον ὑπερβαλόντες, πρὸς τὴν Ἱερὰν ταύτην καὶ Οἰκουμενικὴν Σύνοδον, τῇ τῆς Ἱερᾶς ἐνώσεως ἐφέσει, καὶ τῇ τὴν παλαιὰν ἀγάπην ἀνακτήσασθαι ἕνεκα, γεγηθότες σιωπῇ λθόν καὶ πρόθυμοι καὶ τῇ σκοπῇ ἐκ ἀπέτυχον. — Μέγα τῷ ὄντι καὶ Θεῷ ἡμῖν ὁ Θεὸς δῶρον δεδώρηται καὶ τοῖς ὀφθαλμοῖς ἑδομεν, ὁ πολλοὶ τῶν πρὸ ἡμῶν ἐπιθυμήσαντες ἰδεῖν, ὃ δεδομένον. Εἰ δὲ τὴν τῶν Ἐκκλησιῶν ἑνωσιν ἔδειξεν ὡς ὁ ἄλλος ἐκείνους ἐωρακώς, καὶ τοὶ ἐχ εἰς ἐγένετο ὁ ταύτῃ λίαν ἐπιθυμήσας ἰδεῖν. Φανερόν ἐμπης, ὡς ἔδει Γρηγόριος ἄρα ὁ Θ'. ἔδ' Ἰωάννης ὁ ΚΑ'. ἔδει Νικόλαος ὁ Γ'. αὐτὴν κατέειπεν καὶ λόγον ἔδεναι ἐποιεῖτο ἄρα ἔδ' ὁ Δ'. Εὐγένιος τῆς ἐνώσεως, ἧς Μιχαὴλ ὁ Παλαιολόγος ἀπεπείρασάτο.

Προσέτι δὲ καὶ ΒΗΣΣΑΡΙΩΝ ἐν τῷ Λόγῳ ὃν ἔχεν ἐπὶ τῆς Α'. τῶν Σινωδικῶν (80) τῆς ἐν Φλωρεντία Σινόδου: „Τὸ γὰρ τοσούτον ἤδη χρόνον τὰ τῆς Ἐκκλησίας μέλη ἀπ' ἀλλήλων διεφθόγοντα, μὴδ' ἀνέχεσθαι σινωδεῖν, ἀλλὰ καὶ πρὸς μόνῳ ἴσως τὴν ἀκοὴν δυσχεραίνειν, καὶ μένειν τὸ οἰκεῖον ἀγαπῶντα κακόν. νυνὶ δὲ τοσαύτῃ ἀμφοῖν τοῖν μεροῖν προθυμίαν ἐγγενέσθαι, ὥς πολλῶν ὄντων τῶν κωλυμάτων, πάνθ' ὅμως ἐν δοθέντῃ θεμέλει μόνον γενέσθαι τῇ σιωπῇ πρὸς τὴν ἑνωσιν, πῶς ἐκ αὐτῆς τις ἐπιγράψαι τῇ Θεῷ δωάμεν, καὶ ἀκολούθως παντὸς ἀγαθῆς θείας τεκμήριον. ; Εἰ τοίνυν ἐς γ' ἐπὶ τὴν κατὰ Φλωρεντίαν Σύνοδον, ἔδειξεν τρόπον οἱ Γραικοὶ σινωδεῖν τοῖς Λατίνοις ἡξίαν, πρόδηλον ὅτι ἔδει, ὅπερ ἂν εἰς ἑνωσιν ἑμπεδόν τε εἴη καὶ τελεσιουργὲς, ἐπὶ τῶν εἰρημένων, Γρηγόριος, καὶ Ἰωάννης, καὶ Νικόλαος κατεπράχθη. Πρὸς δὲ δὴ τοῖς ἄλλοις, καὶ Νικόλαος ἕτος ὁ Ε'. ἐν τῇ πρὸς Κωνσταντῖνον τὸν Βασιλέα Ἐπιστολῇ, τῇ ἐν τοῖς ἈΡΚΟΥΔΙΟΥ Θεολογικοῖς Χρυσεῖς, (ὡς αὐτὸς ἀποκαλεῖ) Πονήμασιν ἐμφερομένη, Σελ: 693. (81) „Ἰδὲ δὴ, φησὶ, μέχρι τῇ νυνὶ

(79) Παρ' Ἀρσένῳ Τόμῃ: Θ'. Στήλῃ 420.

(80) Παρ' Ἀρσένῳ Τόμῃ: Θ'. Στήλῃ 28.

(81) Ἐστὶ δὲ τὰ πονήματα ταῦτα: περὶ τῆς τῇ Ἀγ. Πνεύματος Ἐκπορεύσεως, Ἰωάννης τῇ Βίκτω, Γρηγόριος τῇ Παλαιᾷ, Βησσαρίωνος τῇ Καρδινάλεως, Δημητρίου τῇ Κυβώτῃ, καὶ Μαξίμου τῇ Πλανέδῃ. ἅπερ ὑπὸ Ἀρσένου ἐπὶ τὴν Λατίνων μεταφρασθέντα φωνῇ, ἐκδόθησαν Ἑλλήνισι ἅμα καὶ Λατίνισι τοῖς ἐν Ῥώμῃ τύποις, κατὰ τὸ 1620. καὶ 1671. Περὶ δὲ Πέτρους τῇ Ἀρσένου ἔρα, εἰ βέλαι, ἐν τῇ Ἀλβέρτου τῇ Φαβρίκιου Ἑλλῶν: Βιβλιοθ: ἐν Τόμῃ Ι'. Σελ: 416 — 418.



„νῦν ἔτη παρήλθε μικρὰ πεντακόσια, ἐξ ὅτε γε Σατᾶν, ὁ πά-  
 „σης ἀμαρτίας ἀρχέκακος αἴτιος, καὶ μάλιστα τῷ Σχίσματος καὶ  
 „τῆς διασάσεως πρόξενος, τῷ Κωνσταντινουπολιτῶν Ἐκκλησίαν,  
 „ἀπὸ τῆς τῷ Ῥώμης Ἀρχιερέως ἀπεβηκόλησεν ὑπακοῆς, ὅς ὁ  
 „Διάδοχος ἐστὶ τῷ Πέτρῳ, καὶ τῷ Κυρίῳ ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστῷ Ἐπί-  
 „τροπος. Μυρία γὰρ ὅσα διεπραγματεύθη· πλεῖσαι δὲ Σωοδοὶ  
 „συγκεκρότῳται· ὑπὲρ ἀριθμὸν δ' αἰς τῷτο ἐτάχθησαν Πρεσβύ-  
 „ται, ὥς τε τὸ ἔτω θανόν τῆς τῷ Θεῷ Ἐκκλησίας τραῦμα τυ-  
 „χῆν ἰάσεως. Ἐχάτον δὲ, ἔτιως ἄρα τῷ Θεῷ προβλεψαμένη,  
 „ἐν τῇ κατὰ Φερράριαν τε καὶ Φλωρεντίαν Σωόδῳ κτ:„. Εἴπερ  
 „ἄρα ἔδεν ἄλλ', ἢ Πραγματεῖαι τε καὶ Σωοδοὶ μόνον διεμεσίτῳσαν  
 „ἐπ' ἀναιρέσει τῷ Σχίσματος, ἄχρι τῆς ἐν Φλωρεντίᾳ Σωόδου,  
 „Φανερόν τῳ ὄντι κἀντεῦθεν, ὡς ἐς γ' ἐπὶ ταύτης, ἔτοι ἔμπεδος  
 „προσκηχώρηκε τῶν Ἐκκλησιῶν ἡ σωένωσις.

#### Ἀ Ν Τ Ι Θ Ε Σ Ι Σ Η'.

Ἀλλὰ καὶ ὄγδοον, Μιχαὴλ τῷ Αὐτοκράτορος, τῷ τῆς ἐνώσεως  
 ἐκείνης Προαγωγέως τὸ ζῶν μεταμείψαντος, παρὰ πάντων ἀντί-  
 κα, τῶν ἐς γ' ἐπ' ἐκείνο, εἴθ' ἐκόντ' ἐπ' ἀκόντων, τῇ κοινωνίᾳ κα-  
 θυπογραφάντων, εἴτε δὲ καὶ τῷ ἀρχίῳ σωθῆθαι πάντῃ ἀπα-  
 νωκμένων, ὁμοψύχῳ τότε συμφωνίᾳ ἢ ἔνωσις ἀπερρίφθη καὶ  
 κατεψήφισαι. Παρὰ χρῆμα γὰρ κατὰ γε τῶν ἐνωθέντων οἱ  
 μὴ ἐνωθέντες διεθορύβησαν. (ΓΡΗΓΟΡΑΣ ΒΙΒΛ: 5'. κατ' ἀρ-  
 χάς:) (82) „Ἐπεὶ δὲ πρὸς τὸν Τύδον Ἀνδρόνικον ἢ τῷ Κράτῳ  
 „καὶ τῶν Βασιλικῶν σκήπτρων μετέβη διαδοχὴ, καὶ πολὺς πολ-  
 „λαχόθεν τὰ πράγματα θόρυβος σιωπῆκα. Ἐνθεν μὲν γὰρ  
 „ὁ τῆς Ἐκκλησίας ἀναρρίπιζεσθαι ἤρξατο πόλεμος παρὰ τῶν  
 „ἀπορραγέντων μερῶν, ἀφορμῇ εἰληφόντων ἤδη τῷ τελούτῳ τῷ  
 „Βασιλείῳ. Ὁ δὲ Τύδος Ἀνδρόνικος ὁ Παλαιολόγος, τῷ ἐπὶ  
 „τῷ κληψηφισμῷ τῆς ἐνώσεως ἐκδιωκομένης δημοσίῳ θεασίματι  
 „ἀνεκάλεσε τῆς ὑπερορίας, καὶ τῷ ἔνωσιν ἐκ μέσων δεῖν πάλιν  
 „ἀρθῶναι ἐδήλωσεν. Ἐπεὶ καὶ τῷ Πατρὶ ἐτι περιόντος τῷ βίῳ,  
 „ἔδεν ἄλλ', ἢ ἐπλάττετο τοῖς πραττομένοις αὐτὸς ἐπὶδοκῆν.  
 „Οὕτω γὰρ μετὰ βραχεία ὁ Γρηγοράς: (83) „Αὐτὸς ἐς Βυζάν-  
 „τιον ἐπανῆκε καὶ τελεσθέντος τῷ πένθους, ἔργον πεποίηται  
 „μέγιστόν τε καὶ πρῶτον, τῷ τῆς Ἐκκλησίας κατάρσασιν. Ζῶντος  
 „μὲν γὰρ τῷ Πατρὶ ἐκρυπτε τῷ μελέτῳ αὐτῆς ἐν τοῖς λογισ-  
 „μοῖς,

(82) Ἐν τῷ Α'. Τόμ: Σελ: 99.

(83) Σελίδι 97.

„μοῖς, καθάπερ ἐν πόντῳ γῆ χειμῶνος ἐυγενῆ τινὰ σπέρματα·  
 „νῦν δ' ἦρος, ὡς εἰπᾶν, ἐπιγενομένων τοῖς πράγμασιν, ἔδειξεν  
 „ὅς τις ὦν ἐλάνθανε. Καὶ μὲν δὴ κήρυκες πανταχῇ, καὶ βα-  
 „σιλικὰ διατάγματα διεπέμποντο, τῷ τε τῆς Ἐκκλησίας διόρ-  
 „θωσιν εὐαγγελιζόμενα, καὶ ἅμα τὰς διὰ τὸν τῆς Ἐκκλησίας  
 „ἑλὼν ὑπερορίας κατὰγοντα, καὶ ὅσοι τῶν ἀνηκέστων τι ἐπεπόν-  
 „θεσαν;· Ὁ δέ τοι Βέκκος καὶ αὐτὸς τιμωραῦτα, ἔγγραφον  
 „δὲς, ἡμαρτηκέναι διωμολόγησε (84) καὶ συγγνώμῃ αἰτήσας τῷ  
 Πατριαρχίᾳ ἐκὼν παρητήσατο. Τοιγαρὲν τῷ Βέκκῳ, δέε τῷ  
 μὴ ὑπὸ τινων διασπαθῶναι, ἐν τῇ Μονῇ τῆς Παναχράντης ἑαυτὸν  
 κατακλείσαντος, ἀντ' αὐτῷ πάλιν ἀποκαθίσταται Ἰωσήφ, ὡς ὁ  
 Γρηγορίας διεξιὼν πρόεισιν: „Ἐπὶ τέτοις ὁ Βέκκος λάθρα τὸν  
 „Θρόνον καταλιπὼν ὑπεχώρησε, καὶ συνεκλείσεν ἑαυτὸν εἰς τῷ  
 „τῆς Παναχράντης Μονῇ, δέσας μὴ πρόφασιν τῷ ἀθρόαν με-  
 „ταβολῇ τῶν πραγμάτων λαβόντες τινὲς διασπαράξωσι τῶτον  
 „δραμόντες ἐξαιφνίως. Ἀνήχθη δ' ἐνθὺς ὁ τῷ Βέκκῳ παραχω-  
 „ρήσας τῷ Θρόνῳ Πατριάρχῃς Ἰωσήφ, νόσῳ καὶ γήρᾳ τὸ σῶμα  
 „καταπεπονημένος ἤδη, καὶ λαμπροῖς τῷ θανάτῳ τοῖς προοιμίῳ  
 „εἰς τὸν τάφον ὅλως σφαιρανόμενος;·

Ἐπεὶ δ' ἐντεῦθεν ὁ Βέκκος ὑπερόριος ἀπεπέμπετο, Γρηγο-  
 ρίᾳ εἰς τῶτον ὁ μικρὸν σφαιρηγῆσαντος τῷ Κυπρίῳ, τῷ μετὰ τὸν  
 Ἰωσήφ Πατριαρχεύσαντος, ἀδίκως τῷ τῷ τῷ ὑφίστασθαι ὕβριν  
 ἐπιβώμενος, καὶ ἐγκαταλειφθεὶς παρὰ πάντων, δημοσίᾳ δίκη  
 δικασθῆναι προεκαλεῖτο· ἦτοι τὰς δικάσοντας ἕτως ἔξεν  
 εὐμενεσέρας, διὰ τῆς ἐξ αὐτῷ εὐφραδείας ἐλπίδων, ἢ καὶ τὸ  
 κατ' αὐτῷ ἀνηλεὲς ἐκείνων καὶ ἀπλῶς ἀπελέγξων. Τῶτον πυθό-  
 μενος ὁ Βασιλεὺς, ἵνα μὴ καὶ ἀδικεῖσθαι ἐφ' οἷς πεπόνθοι ὁ  
 Βέκκος δοκοίη· μετὰ τῶν περὶ αὐτὸν Μεγιστάνων βελοῦσάμενος  
 καὶ τῷ Κλήρῳ, Σύνοδον δεῖν ἐγνώ συγκροτηθῆναι, τῷ τὰ περὶ  
 τῷ Βέκκῳ ἐπιδικάσασθαι, ὡς ὁ Γρηγορίας διεξέρχεται αὐτόθι:  
 „Καὶ τοίνυν ἡ Σύνοδος γίνεται. (85) Καὶ παρῷ μὲν ὁ Πα-  
 „τριαρχεύων Γρηγόριος, παρῷ δὲ καὶ ὁ Ἀλεξανδρείας Ἀθανά-  
 „σιος, σιωπῇ δὲ καὶ πᾶσα ἡ τῶν Ἀρχιερέων Ὀμνήγυρις ἦσαν  
 „δὲ καὶ οἱ τῆς Ἐκκλησίας, καὶ Μοναχοὶ πλεῖστοι, καὶ τῶν Λαϊ-  
 „κῶν οἱ Ἐκλόγιμοι. Ἦν δὲ καὶ ὁ Μέγας Λογοθέτης Μεσάλων,  
 „τὰ πρῶτα τῶν σφαιλεγμένων, σῶάμα τῷ Πατριάρχῃ ἀναδε-  
 „ξάμενος τὰ τῆς Διαλέξεως. Διερωτήθησαν ἔν πρώτον οἱ περὶ  
 „τὸν

(84) Ὁρα ἄνωγ: ἐν Σημειώσ: 14. 15. 17.

(85) Ταῦτα δ' ἐφεξῆς ἐκ τῶν Γεωργίᾳ τῷ Παχυμέρῃ Βιβλ: Ζ', (ὅ τὸ Α'. ἐστὶ τῶν ἐν τῷ  
 Β'. Τέμ: Συγγράμ: τέττ.) ἀποσπασθέντα, σφαιπτικώτερον ὡς ὑπὸ τῷ Ζοιρηνικαίῳ  
 παρατίθεται, ὡς αὐτὸς κατωτέρω δηλᾷται.

Τόμ: Β'.

Λ ΛΛΛΛΛ

„τὸν Βέκκον δύο Ἀρχιδιάκονοι: (86) Τί γε τὸ δοξαζόμενον; οἱ  
 „δὲ, πισθεύειν ἀποκρίνονταί τι ἡ ἐκ τῆς Τίς Ἐκπόρουσιν τῆς Ἀγίης  
 „Πνεύματος μηδαμῶς ἐναντίαν εἶναι τῷ Συμβόλῳ τῆς Πίσεως.  
 „Εὐρίσκειν γὰρ (αὐτὸς) ἐν ταῖς Γραφαῖς τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον  
 „χορηγούμενον, διδόμενον, ἀποσελλόμενον ἐκ Πατρὸς δι' Τίς.  
 „τὸν δὲ Μέγαν Διαμασκῶν Ἰωάννῳ λέγειν, ὅτι ὁ Πατὴρ ἐστὶ  
 „Προβλεὺς διὰ λόγῳ ἐκφαντορικῆς Πνεύματος. Ταῦτόν δὲ (προ-  
 „σιθέασι) τὸ Προβλεὺς τῷ Αἰτίῳ γινώσκουμεν. Αἴτιον ἔν ὃ  
 „φαμέν τὸν Τίον ἐπὶ τῇ ἐκ Πατρὸς Προόδῳ τῆς Πνεύματος. ὅτε  
 „μὴ Σωαίτιον τὸν δὲ Πατέρα Αἴτιον, δι' Τίς, τῆς Πνεύματος  
 „λέγομεν. — Ἀλλὰ γὰρ, ὅθεν ποτ' εἶχον ἀτοπώτερον τέττα οἱ  
 „Ἀρχιδιάκονοι προενεγκέν. Εἰ γὰρ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκ τῆς  
 „Τίς ἐκπορεύεται, ἥτοι προβάλλεται, ὁ Τίς ἔσαι πάντως τῆς Ἀγίης  
 „Πνεύματος Προβλεὺς. Ἀλλὰ μὴ κατ' αὐτὸς, ταῦτόν τὸ Προ-  
 „βλεὺς τῷ Αἰτίῳ. Εἰ ἄρα ὁ Τίς ἐστὶ Προβλεὺς, ἔσαι δὴ πᾶς  
 „καὶ Αἴτιος τῆς Ἀγίης Πνεύματος. Πῶς ἔν πάλιν τὸν Τίον αἴτιον  
 „τῆς Ἀγίης Πνεύματος εἶναι ἀπέφασκον;

Ἐνθεντοὶ ὁ Μέγας Λογοθέτης ὥδε ἐνίστατο: „Καὶ πῶς,  
 „ὡς ἔτοι, ὃ ποιεῖτε Αἴτιον τὸν Τίον ἐπὶ τῇ ἐκ Πατρὸς Προόδῳ  
 „τῆς Πνεύματος, ἐπέπερ διὰ λόγῳ αἴτιον ὁμολογεῖτε τὸν Πατέρα  
 „τῆς Πνεύματος. (Τῇ γὰρ ΔΙΑ' τὸν Προβλεὺς σημαίνειν ἡθε-  
 „λον.) (87) Τὸς δὲ (πρὸς ταῦτα) θέλοντας ἐκφύγειν τὸ ὑπο-  
 „νοούμενον ἄτοπον, φάναι „ὡς πολλὰ ἐπὶ τῆς Θεολογίας λέγοι-  
 „ται, ἃ δὴ, μικρῷ μέτρῳ τὰ μεγάλᾳ θαυμάσιμα ἐμφαίνουσι τι  
 „ταῖς χαμερπέσιν ἐννοήσις, καὶ ἄτοπον ὅλως, καὶ μὴ πρέπον  
 „Θεῷ. „

(86) Κωνσταντῖνος ὁ Μελιτινιώτης, καὶ Γεώργιος ὁ Μετοχίτης, οἱ τῆς Βέκκας Πατριαρχ-  
 χόοντος ὑπῆρχον Ἀρχιδιάκονοι.

(87) Ἀμέλειτοι, ὃ κατὰ μεσιτείαν ἀπλῶς τι τὴ ΔΙΑ' νοῶντας ὑπῆρχον οἱ Ἀρχιδιάκονοι  
 ἀλλὰ καὶ τῆς εἶναι αἴτιον (ὃ κυρίως σημαίνει τὸ Προβλεὺς) καὶ τῆς ὑπάρξεως  
 τῷ Πνεύματι τὸν Τίον σημαίνουσαν αὐτῷ (τι τὴ ΔΙΑ') ἐνέειν. Ὅθεν προσετίθει  
 ἐπὶ τῆς ἐνστάσεως ὁ Λογοθέτης καὶ κἀκεῖνα: „Λέκνυτε γὰρ ἐξ ὧν λέγετε, ὡς ὅτι  
 „ἂν ὁ Πατὴρ προβάλλῃ τὸ Πνεῦμα, εἰ μὴ Τίον ἐγέννηται. (Τῆς ἐν, εἰ μὴ κατὰ  
 τὸ αὐτὸ σωήσεται καὶ ὁ Τίς ὃν ἐγέννησεν, ἅμα τῷ Πατρὶ, ἐπὶ τῇ προβολῇ καὶ  
 προόδῳ εἰς τὸ εἶναι τῆς Ἀγ: Πνεύματος.) τὸ δὲ ἐστὶν ἐμφανιζόμενον Αἴτιον. Τῆτο  
 δὲ καὶ πάντῃ εὐλόγως εἶχε θαυμάζειν ὁ Λογοθέτης: (Καὶ πῶς, ὡς ἔτοι, ὃ  
 „ποιεῖτε Αἴτιον τὸν Τίον, κτλ.) Ἡ γὰρ ἀντίφασις ἄλλως ἀρίστη ἐπὶ λέξεως,  
 ἐν αὐτῇ τῇ φράσει τῶν Ἀρχιδιακόνων προσέπιπτε. (Παχυμ: Βιβλ: Α'. Τόμ: Β'.  
 Κεφαλ: ΔΙ'. Σελ: 57.) λεγόντων: „Ταῦτόν δὲ τὸ Προβλεὺς τῷ Αἰτίῳ γινώσκο-  
 „μεν. Αἴτιον ἔν ὃ φαμέν τὸν Τίον ἐπὶ τῇ ἐκ Πατρὸς Προόδῳ τῆς Πνεύματος,  
 „ὅτε μὴ Σωαίτιον ἀλλὰ καὶ ἀναθεματίζομεν, καὶ ἀποβάλλομεν τὸς ἔτω λέ-  
 „γοντας. Ἐπειτα καὶ τι τὴ ΔΙΑ' εἰς αἰτίας λόγον ἀντικρῶ, κατὰ τι τὴ Ἐκ μετα-  
 λαμβανόντων ἥτις ἢ αὐτῶν τέτων, καὶ τῆς Καθηγούμενου αὐτῶν Βέκκας, καὶ  
 πάντων δὲ τῶν Λατίνων, καὶ τῶν Λατινιστῶν ἡ διάνοια ἥτις γὰρ, εἰ μὴ τῆτο ἐστὶν,  
 ἐκ αὐτῶν ἔχοι τις εἰπεῖν, τίποτε ἄλλο τὸ φάσκειν καὶ ἀποφάσκειν ἐστὶ τὸ αὐτὸ κατὰ  
 τῆς αὐτῆς, ὅπερ ἐστὶν ἡ Ἀντίφασις.

„Θεῶν,“ (88) Οὕτω δὲ ἄρα ἀποχρώντως τῇ ἐνστάσει τῆς Λογο-  
 θέτης ἀπλώτηται; Δεκτέον ὡς δῆπερ μηδέν τι ἄτοπον ὅλως ἐκ  
 τῆς Δόγματος αὐτῶν ἔπεσθαι. Ψεῦδές δὲ ἄλλως ὡς καὶ ὅπερ  
 ἀπλώτων, ὡς ἔχοι ἂν τι καὶ ἐκ τῶν ἄλλων τῆς Πίσεως Δογμα-  
 τῶν ἄτοπον ἐπιφέρεισθαι. Ὁ μὲν ἔν ΜΟΣΧΑΜΠΑΡ (89) ἐπὶ  
 τῶν, ἀπέφη τῆς Δαμασκηνῶς εἶναι τὰ προενεχθέντα ἐκεῖνα.  
 Ἀλλ' ἀντεῖπεν αὐτῷ ὁ Μέγας Λογοθέτης, ὅς ἐπιστραφεὶς πάλιν  
 πρὸς τῆς Ἀρχιδιακόνους, ὕτως ἐνίστατο: „Εἰ τὸ Πνεῦμα διὰ  
 „Λόγον τε καὶ Υἱὸν τὴν αἰτίαν ἔχει ἐκ τῆς Πατρὸς (καθ' ὃν δη-  
 λονότι νῦν οἱ ἀντικείμενοι, αἷς εἶρηται, τὸτ' ἐξεδέχοντο: „Ἀλλω  
 „μὲν αἰτίαν ῥητέον εἶναι τὸν Πατέρα, ἄλλω δὲ τὸν Υἱόν· ἔ τι  
 „ἂν εἴη τὸ χάρισον,“; (90) Πρὸς αὐτοὺς Ἀρχιδιάκονοι ὡς μὴ  
 οἷοι τε

(88) Τίνα δὲ ἄρα τὰ ἄτοπα καὶ ἀπρεπῆ ἐπὶ τῆς Ἱερᾶς Θεολογίας οἱ τῆς Βέκκης  
 συνεώρων Ἀρχιδιάκοιόι τε καὶ Μῦσαι; Πρὸς δὲ, καὶ τῶν τῶν ἀπόνειαν θάυ-  
 μασον. „Οὐ λέγομεν (Φασί) τέλειος Θεός ὁ Πατήρ, ἢ τέλειος Θεός ὁ Υἱός,  
 „καὶ τέλειος Θεός τὸ Πνεῦμα τὰ ἅγια; ἔχ' ὑπονοεῖται τριθεΐα τὸ σιναγόμενον;  
 „ἢ λέγομεν, ἐγέννησεν ὁ Πατήρ τὸν Υἱόν; ἔκ' ἀναξῆ Ἄρειος, ἐν ὧν εἰπὶ καὶ  
 „ἄτομον χρόνον, μέσον τῆς γεννῶντος καὶ τῆς γεννωμένης; ἀλλὰ τὸ βλάσφημον ἀπο-  
 „φύγομεν. Ἰσάμεθα δὲ ἐν ὅροις τῆς εὐσεβείας, καὶ τὸ τῶν Γραφῶν ὁμολογῶν-  
 „τες, καὶ τὸ κακέμφοσεν ἢ παραδεχόμενοι,“ Οὐκ ἔν, ὡς ἀνέητοι ἐξ ἢ περιθά-  
 λπτε Δόγματος, ἐδ' αὐτοὶ ἀγνοῶτε, ὅτι καθ' ὑμᾶς ἔτω φρονέτας σιναγεται  
 ἐπὶ τῆς ἐνός καὶ μόνου Θεοῦ τὸ τῆς δυαρχίας κακέμφοσεν τε καὶ βλάσφημον. Ἐφί-  
 σάνειν δ' ἐχρῆν, ὡς ἔτε τὸ τῆς Τριθεΐας ἄτοπον, ἐκ τῶν τριῶν ὑπερθέων ὑπο-  
 σάσεων ἔπειτα, ἐφ' ὅσον μοναδική τε καὶ εἰαία: καὶ πάντα ἀτμῆτος καὶ ἀμέ-  
 ριστος ὁμολογεῖται ἡ τριαδικὴ φύσις· ἔτε Ἄρειος ποτὲ διὰ τῆς μέσον τῆς γεννῶν-  
 τος καὶ τῆς γεννιτῆς ὑπονοημένης χρονικῆς εἰρήνης ἀναξήσει, ἐφ' ὅσον, πρὸ παντός  
 χρονικῆς διαστήματος ἐγχαρῆντος, ἢ ἀπ' αἰῶνος πιστεύεται γέννησις· τό γε μὴν τῆς  
 δυαρχίας βλάσφημον, ἐδ' ἐμὴν ὑμῖν παρεισαγόμενον ὑπολείπει ἀπολογία, ἢ μόνον  
 τῷ Πατρὶ, ἀλλὰ καὶ τῷ Υἱῷ ἐξίσως τὴν τῆς παναγίας Πνύματος ὑπαρξίν ἀνατι-  
 θέμενοις, καθ' ὅσον αἱ μὲν πρόσδοι τῶν ὑποσάσεων εἰσὶ καὶ ἐχὶ τῆς φύσεως, τὰ  
 δὲ Πρόσωπα τῆς Θεαρχικῆς Τριάδος ὑποστατικῶς διακρίνονται. Ἀλλ' ἐπισικῶς  
 τοῖς τῶν Ἀρχιδιακόνων Ἀπολογήμασιν ἐκεῖνοις, τῶν τοιαῦτ' ἀπεκρινάμενων τῷ  
 Λογοθέτῃ, ἐδ' ἂν αὐτοὶ Λατῖνοι πάντῃ ἐνασμενίσαντο.

(89) Περί τῶν τῆς Μοσχάμπαρως Γεωργίου, Νεωτέρους τις, ἢ πολὺ πρὸ ἡμῶν ἀκμάσας  
 Γεώργιος ὁ Βάλχιος, (ἐν τῇ Ἱερᾷ τῆς Ζητήματος τῆς περὶ τῆς τῆς Ἁγ: Πνύματος  
 Ἐκπορεύσεως, Κεφ: Ε'. §. VII.) γέγραφε Quod non magnum nomen sibi com-  
 paraverit; nec apud suos singularem ingenij existimationem sit adsequutus (μὴ μέ-  
 γα τι περιποιήσασθαι ὄνομα, μηδ' ἐν φύσει ὑπόληψιν παρὰ τοῖς ἐμογενέσιν.) ὁ δὲ  
 „Ἀλλάτιος, (Ἐν τῷ Β'. Βιβλ: περὶ τῆς Διάνοιας: Συμφ: τῶν Ἐκκλησιῶν: Κεφ: ΙΕ'.  
 §. 13) τὸτ' αὐτὸ τὸ τῆς Βαλχίως φθάσας εἰπεῖν πρέτερον, προσέθετο καὶ κεῖνο:  
 „Ὅτι πολλὰ ὁ Μοσχάμπας κατὰ τῆς Λατινικῆς ὑλάκτησεν Ἐκκλησίας· πρὸς  
 ἅπερ ὁ Βέκκος ἀποκριθεὶς Σοφώτατα: Tantum Nebulonis impetum fastumque  
 compressit; (τὴν τοσούτῃ τῆς ἀχρείας σιναπέσει ῥύμῳ τε καὶ ἀλαζονείαν.) Ἀλλ'  
 ὁ Ἀλλάτιος ἔλαθεν ἐχομένως ὁμολογήσας, ὡς εἰδότες, ἔτε τὴν Μοσχάμπαρως,  
 ἔτε τὴν τῆς Βέκκης Συγγραφήν αὐτὸς εἶδε. Neque Moschamparis scripta, neque  
 Uecci Responsiones vidi. ὅπερ ἐστίν: ὅτι ἔκρινε τυφλᾶς, καὶ ἀπεφύλατο τολμη-  
 ρῶς, καὶ κατελοιόρησε τὸν Ἄνδρα ἀπονενοημένως, ὡς nebulonem ὁ τῷ ὄντι  
 hebulo Ἀλλάτιος.

(90) Ἀλλ' ἐξέσω ἡμῖν ἐνταῦθα, τὰ κατὰ τὴν συγκροτηθεῖσαν ἐκεῖ τότε Διάλεξιν ἐκθέ-  
 σαι πλατύτερον, πρὸς ἀκριβετέραν τῶν εἰρημένων τε καὶ ἀνταρτημένων σιμῶσιν.

Λ ΛΛΛΛΛ 2

Ἐκ



Ἐκ τῆς τῆ Θεωπεσίᾳ Λαμασνικῆ προτεθείσης ῥήσεως: „ὅτι ὁ Πατὴρ Πρεβ-  
 „λός ἐστι δια λόγῳ ἐκφαντορικῶ Πνύματος: οἱ ἄρχ μακοιοι εἰσέβαλλον, Λίτιον  
 μὲν εἶναι τὸν Προβολέα, πλὴν ἄλλ' ἐ καθ' ἑαυτὸν, διὰ δὲ τῆ Υἱῆ καὶ Λόγῳ,  
 οἷα σιωεργέντος καὶ τέτῃ, καὶ συμπράττοντος ἐπὶ τῇ προόδῳ τῆ Ἀγίᾳ Πνύμα-  
 τος. ἈΓΓΙΩΔΩΣ δηλονότι, καὶ ἔχῃ κατὰ ἀπλὴν ἄλλως πῶς νοημένῳ τῷ με-  
 σιτείαν, ἐκλαμβανομένης τε καὶ ἐρμηνευομένης τῆς ΔΙΑ' προθέσεως: τὸ δὲ τοῖστον  
 ἦν, οἷον εἴτις εἴποι: ὅτι Λίτιος μὲν ἐστὶν ὁ Πατὴρ τῆ εἶναι τῷ Πνύματι ὁ μῖος  
 δὲ, ὁδὲ τῆ Υἱῆ αἰὲς ἄλλὰ διὰ τῆ Υἱῆ, τῆ καὶ αὐτῆ τέτῃ ἐν τῇ τῆ Πνύμα-  
 τος Ἐκπορεύσει, τῷ Πατρὶ, ὡς ἔτω φάναί, σιωεπιβρέοντος. Ἡ δὲ σιωεπιβρόῃ  
 αὐτῇ καὶ κινωῖα τῶν Θεαρχικῶν δύο Προσώπων εἰς τῷ τῆ τρίτῃ ὑπαρκτικῷ  
 πρόεσιν, ἕνα δὴ τρόπον πάντως τεθεῖη ἐπινοημένη, τῶν δισῶν τέτων τὸν ἑτε-  
 ρον. Ἦτοι γὰρ καθότι ὁ μὲν Πατὴρ αἷτιος, ἥπερ ἔΞ ἈΥΤΟΥ. ὁ δὲ Υἱός  
 Σιωαίτιος, ἥπερ ΔΙ' ΑΥΤΟΥ, ἑτέρῳ δῆτινι λόγῳ τῷ εἰς τὸ εἶναι πρόεον ἔχει  
 τὸ Πνεῦμα. ἢ γὰρ καθό, ὁ μὲν Πατὴρ αἷτιος ἐστὶ τῆ εἶναι τῷ Πνύματι, ἢ τὸ  
 Πνεῦμα ἐξ αὐτῆ ἐστὶν ὁ δὲ Υἱός αἷτιος ἐστὶ τῷ Πατρὶ, τῆ αἷτιᾳ εἶναι τῆ Πνύ-  
 ματος, καθό διὰ τῆ Υἱῆ δηλονότι ὁ Πατὴρ ἔχει, τῆ Πνύματος εἶναι προβολός τε  
 καὶ αἷτιος. Ἀλλ' εἰ μὲν τὸ πρῶτον, ἔκέν δισῶ τὰ αἷτια ἀνακύψει τῆ εἰός τε  
 καὶ τῆ αὐτῆ Πνύματος καὶ ταῦτα (ὅπερ ἐστὶ τὸ χεῖρις) καὶ τῷ λόγῳ τῆ  
 ἐνεργεῖν διαφέροντα. Τὸ μὲν γὰρ ὡς ἐξ ἑ, καὶ ἔχ, ὡς δι' ἑ. τὸ δὲ ἀνάπαλιν  
 ὡς δι' ἑ, καὶ ἔχ, ὡς ἐξ ἑ. Εἰ δὲ τὸ δεύτερον, πάλιν τὰ αἷτια δισῶ τὸ μὲν  
 γὰρ αἷτιον ὁμολογεῖται τῆ Πνύματος, ὁ προβολός Πατὴρ τὸ δὲ αἷτιον ἀναφαί-  
 νεται τῆ αἷτιᾳ καὶ προβολέως, ὁ Υἱός ἄτε δι' ἑ, καὶ ἥπερ ὁδῶμῳ αἰὲς, προ-  
 βολός τῆ Πνύματος ἐστὶν ὁ Πατὴρ ὅπερ, εἰς ὁδὸν ἄλλ', ἢ εἰς τῆτο ἥκει τὸ λῆ-  
 γεν, ὅτι ὁ μὲν Πατὴρ αἷτιος καθ' ἑαυτὸν τῷ Υἱῷ τῆ εἶναι γεννητῶς. ὁ δὲ Υἱός  
 ἔμπαλιν αἷτιος τῷ Πατρὶ, τῆ δι' αὐτῆ προβάλλειν τὸ Πνεῦμα ἐκπορευτικῶς  
 Ταῦτα δὴ σιωερακῶς τὰ ἄτοπα, ἐκ τῆς τῶν Ἀρχιδιακόνων ἐπόμενα ἀπο-  
 κρίσεως ὁ Λογοθέτης, ἢ σιφός ἰὼ Ἀνῆρ, καὶ (ὡς ὁ Βέκκος ἐπὶ τέτοις αὐτῶ  
 ἐμαρτύρει ἐν αὐτῇ τῇ Σιωδῶ, μὴ ὑποτρέχων, τέτῃσι μὴ κολακῶν, ὡς ἔφασ-  
 κε) Διαλεκτικῶς καίσι χρώμενος, καὶ κατὰ τὸ προσῆκεν διαλεγόμενος: πάνν  
 εὐθίκτως καὶ προσφυῶς ἀπεκρίνατο: Δέχομαι μὲν ἐπὶ τὸ ῥητὸν τῆ Ἀγίᾳ  
 „πλὴν ἔχ ὁμολογήσω τὸ Πνεῦμα διὰ Λόγῳ τε καὶ Υἱῆ τῷ αἷτιᾳ ἔχειν ἐκ τῆ  
 „Πατρός,“ ὡς εἰ ἔλεγεν: ὅτι τὸ μὲν προβολέα εἶναι διὰ λόγῳ τὸν Πατέρα, δῶσῶ  
 τῆ Υἱῆ ἀπλῶς μεσιτεύοντος: ταῦτη γε, ἥπερ εἰμὴ τὸν Υἱὸν ἢ γεννῶν, ὁδ' ἂν  
 Πατὴρ πάντως ἦν καὶ πῶν ἂν ὁ Πατὴρ προβολός ῥηθεῖη τῆ Πνύματος, ὡπερ  
 ἀληθῶς καὶ ἐστὶ καὶ λέγεται; Καθπερὲν ὡσάντως καὶ (ὑποτεθεῖν τὸ αἰδιῶ-  
 τον) εἴπερ ὁ Υἱός τῷ Πνύματι ἦν αἷτιος τῆ ὑπάρχειν, προβολός ἂν εἰκότως  
 ῥηθεῖη διὰ τῆ Πατρός ὁ Υἱός. ὁ γὰρ τῆ Πατρός αἰὲς Υἱός, ἔτε ἂν ἐστὶ, ἔτε  
 νοόμενος. Τὸ μὲντοιγε ἐκ τῆ Πατρός διὰ τῆ Λόγῳ τῷ αἷτιᾳ ἔχειν τὸ Πνεῦμα,  
 εἰθ' ὅτι καὶ ἐξ ἐκείνης ἅμα καὶ διὰ τέτῃ σιωεπιβρέοντοιν αὐτῷ εἰς τὸ εἶναι. εἰθ'  
 ὅτι καὶ διὰ τῆ Υἱῆ καὶ Λόγῳ αἷτις τε καὶ προβολός τῆ Πνύματος αἰαδάνκνυ-  
 ται ὁ Πατὴρ, τῆθ' ἥκισα, (ὁ Λογοθέτης ἔφασκεν: ὁμολογήσω „Δέχομαι μὲν  
 „τὸ ῥητὸν Ἀγίᾳ εἶναι“ πλὴν, ἔχ ὁμολογήσω τὸ Πνεῦμα διὰ Λόγῳ τε καὶ τῆ Υἱῆ  
 „τῷ αἷτιᾳ ἔχειν ἐκ τῆ Πατρός,“. Ὁ γὰρ ἐντεῦθεν τῆς ἀσιβείας κίνδυνος με-  
 ζῶν, ἢ ἐκ τῆ λέγειν, ὅτι τὸ Πνεῦμα ἐκ τῆ Πατρός ἐστὶ καὶ ἐκ τῆ Υἱῆ. Διατὶ  
 δὲ μέζων; ὅτι τὸ τῆς δυναρχίας ἔτω, καὶ διὰ τῆς ἀνισαρχίας κρατῶνεται βλάσ-  
 φημον, καὶ προσαύξει: „ὡς εἰάν ἐκείνο καθομολογήσω. ἔτω καὶ παραβολώτερόν τι  
 „ἂν εἴποιμι, Φησὶ, τῶν ἐκ τῆ Πατρός καὶ ἐκ τῆ Υἱῆ λεγόντων τὸ Πνεῦμα τὸ  
 „Ἀγιον ἐκπορεύεται“ τὶ δῆποτε; ὅτι Φησὶν: ἐκεῖ μὲν ἐπὶ τῆ ἐκ Πατρός καὶ Υἱῆ  
 δηλονότι: „τῆς αὐτῆς προθέσεως ἐπίσης κειμένης, τὸ αἷτηρον τῆν τάλμης ἀμη-  
 „γέπη ἔοικεν ἐπειλύειν“ ἐνταῦθα δὲ, (ἐπὶ τῆ ἐκ τῆ Πατρός δι' Υἱῆ τὸ διάφο-  
 „ρον τῶν προθέσεων, διάφορον καὶ τῆς λέξεως τῷ ἐννοίᾳ ἐργαζόμενον, δια-  
 „φορᾶν, παραστήσει μεγίστῳ ἐπὶ τῆς αὐτῆς καὶ μῖας προόδῳ τῆ Πνύματος ἐκ τῶν  
 „Θεαρχικῶν ὑποστάσεων ὡς ἄλλῳ μὲν αἷτιᾳ εἶναι τὸν Πατέρα, ἄλλῳ δὲ τὸν  
 Υἱὸν ὁ τὶ ἂν εἴη τὸ χεῖρις;

Ὁ μὲν ἂν Λογοθέτης Μεζάλων ταῦτα: Ὁ δὲ Ἀλλάτιος, ἢ μὴ σιωεῖς μῆ-  
 δόλως ὁ γενναῖος τῶν εἰρημένων τῷ δῶαμιν, ἢ μὴ σιωεῖναι πλατῖόμενος, τῶς  
 Φιλτάτοις Λατίνοις ἀχλὺ ἐπιχέει τῷ σιωῇ καὶ ταῦθα καὶ παραπέθειν αὐ-  
 τῆς ἀγωνίζεται, ὡς ἐπὶ τῆς ἐπ' Ἀνδρῆνικῃ τῆ Ἀυτοκράτ: συστάσης ταύτης  
 Σιωδῆ, καὶ αὐτῶν τῶν Γραικῶν ὁμολογόντων, ὁ Δαμασκηνός ὑπὲρ Λατίνων μῆλ-  
 λον

λον ἢ Γραικῶν ἴσταται. Ἀλλ' εἴπερ ἔτως οἱ Γραικοὶ ὡμολόγησαν, αὐτὸς Γραικὸς ὢν ὁ Παχυμέρης, ὁ τὰ κατὰ τὴν Συνόδον ἐκείνῃ ἐπὶ λεπτῇ διεξιὼν, μαρτυρεῖται τὶ ἔν ὁ Παχυμέρης; „ἔτως εἰπόντος (τῷ Λογοθέτῃ Φησί.) καὶ ἰχυρῶς „πάνυ δέξαντος λέγειν ἐκείνῃ, μὴ διωαμένους ἀπολογεῖσθαι πρὸς ταῦτα, μόνον „λέγειν τὰς Ἀρχιδιακόνους: Καὶ τὶ πρὸς ἡμᾶς λέγεις ταῦτα; λέγε πρὸς τὸν „εἰπόντα καὶ εἰ μὲν κενοφωνεῖν οἶες τὸν Δαμασκόν. . . . Εἰ δὲ τὸν λόγον δέ- „χη. ἵνα τὶ ἡμεῖς ἐν Αἰρέσει κατηγορεῖμεθα, εἰ ταῦτά σοι πράττομεν, καὶ τὸν λόγον καὶ αὐτοὶ ὡς Ἁγίῃ λόγον τιμῶμεν; Ἀλλὰ πρὸς ταῦτα φθάσας προαπλω- „τῆκε ὁ Λογοθέτης: „Δέχεσθαι μὲν (εἰπὼν) τὸ ρητὸν ὡς ὃν τῇ Ἁγίῃ, τὸν δὲ „ἔν ὃν ἐκείνοι τῇ ρητῇ ἐφῆπτον, δι' αὗς δηλονότι προσεφέλκεται ἀτοπίας, μὴ „ὁμολογήσειν (προδούς) μηδέποτε. Ὡς ἐδὲν πρὸς ἔπος, ἐπανειλήφασιν οἱ Ἀρχιδιακonoι. Διὸ καὶ ἐφεξῆς πρὸς αὐτὰς, ἔτως ἐνῆθως ἀπακρινάμενος ὁ Πα- „τριάρχης: „τί γὰρ, εἰ δεχόμενοι τὸ ρητὸν σρεβλᾶτε τὴν ὑποπόνησιν; καὶ ἐξ ἐκείνῃ (κατὰ τὸν Ἱστορικόν) σφίσι φροντίς ἢ μικρά, ἔπως κατ' ὀρθόδοξον νῦν τὸ τῷ Δαμασκόν. Πάτερς ρητὸν συμβιβάζειαν.

Τῷ τοίνυν ρητῇ ὡδε, μὴ ὀρθῶς, ἀλλ' ἐνδιασφρόφως ὑπὸ τῶν περὶ τὸν Βέκκον νοεῖσθαι ὑποκειμένης, ἐξ ὧν ὅτε Μαζάλων εἰρήκει, καὶ οἱ προτείναντες ἀναπολο- „γῆτως παρεῖλθον ἔχοι ἅντις (πρὸς Θεῷ!) φᾶναι, ὅτι „μᾶλλον ὑπὲρ Λατίνων, „ἢ ὑπὲρ Γραικῶν, ἴσασθαι τὸν Θεὸν Δαμασκινὸν οἱ Γραικοὶ αὐτοὶ ὡμολόγησαν; Græcis ipsis fatentibus? ἢ ἂν οἶμαι, εἰ μὴ κατ' Ἀλλὰτίον τις θρασυώμενος ἔτως ἀναιδῶς καταψεύδεσθαι ἔλοιτο, ὡς ἐκ παντὸς τρόπου συζητᾶται τὸ οἱ σκοπόμενον.

Ναὶ φησὶν: αὐτοὶ γὰρ οἱ Γραικοὶ ὡμολόγησαν: Plus scilicet hoc in loco Damascenum dicere, magis que verbis illis Processionem Spiritus ex Filio stabiliri, quam si dixisset Spiritum ex Patre Filio que procedere. „(πλέον τι ἐν τῷδε τῷ „χωρίῳ τὸν Δαμασκινὸν λέγειν, καὶ ἀσφαλέστερον διὰ τῶν ρημάτων ἐκείνων τὴν „ἐκ τῷ Τίῳ Ἐκπόρθεσιν τῷ Πνύματος τηρεῖσθαι, ἢ εἴπερ εἰρηκῶς ὑπῆρχε τὸ „Πνεῦμα ἐκ Πατρὸς καὶ Τίῳ ἐκπορεύεσθαι.) Ἀλλὰ: ἐν τῷ περὶ τῆς Συμφ: τῶν Ἐκκλησ: Βιβλ: Β'. §: ΧΙ'. σήλ: 496. Καὶ κωτωτέρω: (Αὐτ: σήλ: 510.) Hinc factum est, ut nihil certi in ea Synodo statutum, illud apud omnes verum Iudicium fuerit: Damasceni verba illa: Pater est productior per verbum Spiritus; multo expressius ac validius Processionem Spiritus ex Filio comprobata, quam si dixisset Spiritum ex Patre et Filio procedere. „(Ἐνθεν τοι σωῖσθαι μηδὲν τι βέβαιον ἐν „τῇ Συνόδῳ ταύτῃ ἀποφανθῆναι, ἐκείνῃ παρὰ πᾶσιν ἐπενεχθῆναι τὴν κρίσιν, „ὅτι τὰ τῷ Δαμασκινῷ ρήματα ἐκείνα: ὁ Πατὴρ ἐστὶν ὁ Προβολέας διὰ Λόγον τῷ „Πνύματος, πολλῶ ἐκτυπώτερόν τε καὶ ἰχυρότερον τὴν τῷ Πνύματος ἐκ τῷ „Τίῳ κατασκαδάζειν Ἐκπόρθεσιν, ἢ εἴπερ ἔφησε τὸ Πνεῦμα ἐκπορεύεσθαι ἐκ τῷ Πατρὸς καὶ ἐκ τῷ Τίῳ. Καὶ ἔτι κωτωτέρω (Αὐτ: αὐτ: §. XII. σήλ: 515.) In Synodo Damascenus pro Latinis magis, Græcis ipsis fatentibus, quam pro Græcis stat. . . . Quis ergo Damascenum pro Græcis esse, nisi desipiat, non pro Latinis dicat? habemus ex Damasceni dicto per Filium efficacius Processionem Spiritus ex Filio exprimi, quam si ex Filio dixisset: quid ultra quaerimus? „(Ἐν τῇ Συνόδῳ „(τῇ ἐπὶ Ἀνδρονίκε ταύτῃ.) ὁ Δαμασκινὸς ὑπὲρ Λατίνων μᾶλλον (αὐτῶν δὲ τῶν „Γραικῶν ὁμολογούντων) ἢ ὑπὲρ Γραικῶν ἴσταται. . . . Τὸ ἔν ἐρεῖ τὸν Δα- „μασκινὸν ὑπὲρ Γραικῶν εἶναι, καὶ ἔχ ὑπὲρ Λατίνων, εἰ μὴ τὰς φρένας κεκί- „νηται; Ἐχομεν ἐκ τῆς τῷ Δαμασκινῷ ῥήσεως, διὰ τῷ Τίῳ, θρασυώτερον τὴν ἐξ „Τίῳ Ἐκπόρθεσιν τῷ Πνύματος ἐκδηλημένῃ, ἢ εἴπερ ἐκ τῷ Τίῳ εἰρήκει τὶ ζητῆ- „μεν ἐπέκεινα;

Τεῖα γοῦν ἐν τέτοις σημειωτέον ταῦτα. Α'. ὅτι τὸν Δαμασκινόν, φησὶν ὁ Ἀλλὰτίος, τὸν Πατέρα διὰ Λόγον Προβολέα εἰπόντα τῷ ἐκφαντορικῷ Πνύματος, ὑπὲρ Λατίνων μᾶλλον, ἢ ὑπὲρ Γραικῶν ἴστασθαι. Β'. ὅτι ἐκεῖνο εἰπόντα, ἐκδηλότε- „ρόν τε καὶ θρασυώτερον τὴν ἐκ τῷ Τίῳ Ἐκπόρθεσιν τῷ Πνύματος ἐπισυσῆσαι, ἢ εἴπερ ἂν ἐκ τῷ Πατρὸς καὶ ἐκ τῷ Τίῳ τὸ Πνεῦμα ὑπῆρχεν εἰπὼν τὸ δὲ Γ' ὅτι καὶ ταῦθ' ἔτως ἔχειν, καὶ διὰ τῷτο φρεσὶν ἐπομένως τὴν ἐπ' Ἀνδρονίκε ἐκείνῃ συζῆναι τοῖς Γραικοῖς Συνόδον, οἱ Γραικοὶ αὐτοὶ φθάσαντες ὡμολόγησαν.

Πρὸς μὲν ἔν τὸ Α'. Εἴπερ ὁ Θεὸς Δαμασκινὸς δηλονότι, ὁ μυριαχὺς τῶν αὐ- „τῷ Συγγραμμάτων, μόνον τὸν Πατέρα αἰτίον τε καὶ προβολέα τῷ Πνύματος σα- „φῶς ἀνακηρύττων ὁ μίαν τε καὶ μόνῃ τὴν ἀρχὴν καὶ αἰτίαν ἐπὶ τῆς Θεότητος ὀρθότατα θεολογῶν ὁ διαβρίδων τὸ ἐξ Τίῳ λέγειν ἀπαγορεύων, καὶ τοι τὸ δι' Τίῳ ἢ ἀρνεύμενος ὅτι δὴ ὁ αὐτὸς πρὸς τὸν Πατέρα διὰ τῷ Λόγον Προβολέα τῷ Πνύματος, κατὰ γοῦν τὸν εὐσεβῆς τε καὶ προσηκόντως καὶ ὑπὸ τῶν ἄλλων Τόμ: Β'. Μ μμμμμμ Δε.

οἱοί τε ἀπαντήσαι, τὴν τῆ Δαμασκίω αὖ ἐπανέλαβον ῥῆσιν: „ὅτι ὁ Πατὴρ διὰ τῆ Λόγου ὁ Προβολεὺς ἐστὶ τῆ Πνύματος, ἐπειπόντες: μὴ πρὸς σφᾶς ἄρα, πρὸς δὲ τὸν Δαμασκίων αὐτὸν ἀναφέρεσθαι τὴν ἀντίρρῃσιν. Ὑπολαβὼν δὲ ὁ Πατριάρχης Γρηγόριος: ὅτι πολλάκις καὶ ταῖς Γραφαῖς ἀπαντᾷ τὰ δοκῶντα πως εἶναι

Θεοσεσίων Πατέρων ἀναπυσσόμενον, προσεῖπε: „διὰ δὴ τῆτο μᾶλλον ὑπὲρ Λατίνων ἴσαται, ἢ ὑπὲρ Γραικῶν· ἐδὲν τῆ λοιπῇ χρὴ λέγειν, ἐπεικῶς γὰρ περιττὸν ἄλλως τε γὰρ καὶ περὶ τέτων ἀποχεράντας ἐν ἄλλοις διέληπται. Πρὸς δὲ τὰ λοιπὰ δύο τὸν νοῦν ἐπισήσας, τέ, τε ἰ'. Φημί: ὅτι „δρασικώτερον ἐστὶ καὶ ἐκφανέστερον τὸ δι' Ἰῆ λέγειν, ἢ τὸ ἐξ Ἰῆ. Καὶ τὸ Γ'. δὲ, ὅπερ ἐκ τῆς κοιλίας τῆς ἑαυτῆ καταψυδόμενος ὁ Λατινόφραν ἠρόξατο: ὅτι „καὶ οἱ Γραικοὶ αὐτοὶ „τῆτο καθωμολόγησαν: περὶ ταῦτα εὐλογον δῆπερ παρ' Ἀλλατίς τὰς ἀποδείξεις ἀπαιτεῖν. Διατὶ γὰρ ἡ ΔΙΑ' ἐπικρατεστέρα τε καὶ ἐμφαντικώτερα ἐστὶ τῆς ἘΚ ἐπὶ τῇ Ἐκπορεύσει τῆ Πνύματος; ὅτι μᾶλλον αἷτιος τῆ Πνύματος ἀναφαίνεται ὁ Υἱὸς ΔΙ' ΟΥ, ἢ ὁ Πατὴρ ἘΞ ΟΥ; ἀλλ' ἐκ ἂν εἴποι ἢ καὶ τὴν ΔΙΑΠΟΡΕΥΣΙΝ ἡμῖν ὥτως ὑποθήσεται πρὸ τῆς ἘΚΠΟΡΕΥΣΕΩΣ; καινολογεῖν καὶ περὶ τὰ Θεοπρεπῆ ἐνόματα θρασυώμενος. Ἀλλ' ὅτι ἄλλως πως, καὶ ἄλλως, ὁ Πατὴρ ἘΞ ΟΥ, καὶ ὁ Υἱὸς ΔΙ' ΟΥ παρίσανται αἷτιοι, ἀλλὰ τῆτ' ἦν, ὅπερ ὡς χεῖρισον ὁ Λογοθέτης κατορθώων καὶ νοεῖν ἀπετροπιάζετο, καὶ ἐδ' αὐτοὶ Λατίνοι ἀκῆεν ἀνέχονται. Ἐπειδ' ὥπως τῆτο καὶ οἱ Γραικοί, ὡς Φησί, σιωπομολογήκασιν; πῶς γὰρ, οἱ μὴδὲν τι ἔλως τὸν Υἱὸν σιωποφύρειν ἐπὶ τῇ τῆ Πνύματος ὑπεκτικῇ Προόδῳ ἀνευδῶτως διατεινόμενοι; τίνες δὲ τέως καὶ οἱ καθωμολογηκότες Γραικοί; οἱ περὶ τοὺ Βέκκον, καὶ ὅσοι τέτοις γεγονάσι σύμφρονες, ἢ ὅσοι Γρηγορίῳ τῷ ἐπὶ τῆς Σιωδῆς τότε Πατριαρχέοντι, ἐξ ὁποιᾶσιν αἰτίας ὠφθῆσαν ἀντιβαίνοντες; Ἀλλ' εἰ τόδ' εἴποι, ἐχὶ καὶ καταγέλαστος ὁ Παπολάτρεις ὠφθῆσεται ὡς εἶγε καὶ Χελαῶν ἡμῖν τὸν Ἐφέσε προβάλλεται (Ἀλλάτ: αὐτ: §. XI. σήλ: 513.) καὶ τὸν Παχυμέριω Γεώργιον (Αὐτ: αὐτ: §. XIII. σήλ: 517.) μὴ ἐπαρεσχομένους τῇ ὑπὸ τῆ Πατριαρχῆς ἀποδοθείσῃ ἀναπτύξει τῆς τῆ Δαμασκίω ῥῆσιν, ἢ παρὰ τῆτο ἐδὲ τέτλες ἐρεῖ ὠμολογηκέναι, ἐδ' ὅτι ὁ Δαμασκίως κατὰ Λατίνους ἐφρόνει· ἐδ' ὅτι διὰ τῆ Ἰῆ εἰπὼν δρασικώτερόν τι παρεδῆλωσεν, ἢ εἴπερ ἄλλως εἰρήκει ἐκ τῆ Ἰῆ τὴν τῆ Πνύματος εἶναι προόδον· ἐδέτερον γὰρ τέτων ἐδέτερος αὐτῶν ἀποφινώμενος φέρεται, ἐδαμῶς. Ἐνα δὴ καὶ μόνον ἂν ἔχη, ὡς οἶον αὐτῷ ἐπιμαρτυρῶντα προβαλέσθαι, ἀλλ' ἐχ' ὑπὲρ ἑαυτῆ, καθ' ἑαυτῆ δὲ πάντῃ καὶ αὐτὸν λέγοντα, ἐπισήσας καλῶς ὁ Ἀλλάτιος, τὸν Λογοθέτῳ Μεζάλωνα. Οὗτος γὰρ ἰὼ ὁ εἰπὼν καὶ ὁμολογήσας: τί δῆποτ' ἄρα; ὅτι μᾶλλον τοῖς Λατίνοις, ἢ τοῖς Γραικοῖς σιωπορῶν ἐστὶ ἐν οἷς ἀπεφινώτο ὁ Δαμασκίως Θεολόγος; ἤκιστα πάντων. Ἀλλ' ὅτι διὰ Λόγου τὸν Πατέρα Προβόλεα εἰπὼν, ἰχυροτέρων πως καὶ ἐκφαντικώτερον ἐνέφινε τὴν παρὰ τῆ Ἰῆ Ἐκπόρυσιν τῆ Πνύματος, ἢ εἴπερ εἰρήκει ἐκ τῆ Ἰῆ; ἐδὲ τῆτο πολλὰ γε καὶ δεῖ ὁ γὰρ Μεζάλων ἐκεῖνο πᾶν ὀρθῶς, ἢ περ ἀνωτέρω ἐλέγομεν, τῆς Ἀρχιδιακόνους ἐξελέγχων ὑπέθετο: ὅτι τὸ ἐκ Πατρὸς καὶ Ἰῆ τὸ Πνεῦμα δογματολογεῖν, ἄτοπον ὄν. τὸ ἐκ Πατρὸς δι' Ἰῆ, ὡς παρὰ τὸ διτλὸν τῆς αἰτίας, ἐστὶ καὶ διαφορὰν τῶν αἰτιῶν παρρησάγον, ἢ τλὸν ἐστὶν ἀνεκτόν, ὡς ἀτοπώτερον ἐστὶ καὶ βλασφημότερον. „τὸ γὰρ „διάφορον τῶν προθέσεων, (κατὰ σημασίαν αἰτίας ἀμφοῖν ἐκλαμβανόμενων πρὸς „ὑπαρξιν τὴν τῆ Πνύματος) διάφορον καὶ τῆς λέξεως τὴν ἐννοίαν ἐργαζόμενον, „διαφορὰν παραστήσει μεγίστην, ἐπὶ τῆς αὐτῆς καὶ μιᾶς Προόδῃ τῆ Πνύματος, „τῶν Θεαρχικῶν ὑποστάσεων· ὡς ἄλλω μὲν αἰτίαν εἶναι τὸν Πατέρα, ἄλλω δὲ „τὸν Υἱόν· ἢ τί ἂν εἴη τὸ χεῖρισον;

Ἀλλ' ἡμῖν ὁ ἀναγινώσκων συγγνώμῃ τῆς μακροτέρας ταύτης Παρασημειώσεως· ἐδὲ γὰρ, καὶ τοὶ μάλα ἐπιτεμεῖν αἰρημένοις, σιωποτικώτερον ἐξεγίνετο τὴν Ἀλλατίς διαβολικῶς ἀποτρίψαι, ἢν κατὰ τῶν Γραικῶν, καὶ τῆς ἐπὶ Ἀνδρονίκου συστάσεως Σιωδῆς, ὁ ἀπατεῖν ἐκεῖνος, ὁ ἐδὲν ἄλλ' ἢ ψεύδεται βάζειν εἰδῶς ἐτύμοισιν ὁμοῖα, δι' ἑκοσι χερδὸν Σελίδων τῆς κατ' αὐτὸν ψευδοσυμφωνίας τῶν Ἐκκλησιῶν (σήλῃ 495 — 515.) συστήσασθαι ἠγωνίσαστο.

εἶναι τραχύτερα, ἐκ ἀπεμφαίνεσθαι δὲ ὁμῶς τῷ ὑπονόησιν ἐπι-  
τρέποντα· παραπλησίως ἔν ἔχειν καὶ τὰ τῷ Δαμασκῳῳ ἐκείνῳ,  
τὰ κακῶς ὑπ' αὐτῶν σρεβλόμενα, καὶ μεθελκόμενα πρὸς τὸ  
δείξαι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα καὶ ἐκ τῷ Τίῳ ἐκπορεύεσθαι. Συχνὰ  
γὰρ ἀσαφές ἐσθ' ὅτι, καὶ ὑπὸ τῶν Διδασκάλων εἰρήσθαι. Ὡς αὖν  
ἐν τοιούτῳ εἶναι καὶ τὸν τῷ Δαμασκῳῳ λόγον, δείξατον, φησί,  
καὶ ἐξ ἄλλων Πατέρων αὐτὸν συγκροτῆμενον. Πρὸς ὃν οἱ Ἀρ-  
χιδιάκονοι: „Τὸ προκείμενον τῷτο ῥητὸν, ἐξ ἀνάγκης σημαν-  
τικὸν εἶναι ἐννοίας τῆς κατ' αὐτὸς διετείνοντο, „ Ἀλλὰ γὰρ ὁ  
τῷ Δαμασκῳῳ νῦν, ὅς τις ὡς, ἐν ἄλλῃ Πραγματείᾳ φθάσαντες  
ἔδομεν. (91) Ὁ δὲ δὴ Πατριάρχης πρὸς ταῦτα: „Ἐκεῖνοι τὸ  
ῥητὸν (ἀπεκρίνατο) ἐξηγῶνται, οὐ δὴ ἐκ Πατρὸς φασὶ τὸ Πνεῦ-  
μα τὸ Ἅγιον ἐκπορεύεσθαι, „ Πρὸς ὃν οἱ Ἀρχιδιάκονοι: „Καὶ  
τίς ἔφρονε τῷτο; φασί, τῷτο καὶ ἡμῖν ἀγαπητὸν, καὶ σωτη-  
ρίας ἐλπίς. Ἐνίστατο δὲ ὁ Λογοθέτης: καὶ εἰ τῷτο δέχεσθε,  
τί ἐκεῖνο προβάλλεσθε, „; Οὐ γὰρ δηλονότι ἐπόμενον ὅλως ἐστὶ  
τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκ τῷ Πατρὸς ἐκπορεύεται: ἄρα καὶ ἐκ  
τῷ Τίῳ. Ἐφ' οἷς ὁ Βέκκος: „Ἡ ἐχὶ καὶ ὁ Νύσσης ΓΡΗΓΟ-  
ΡΙΟΣ, ἐκ Πατρὸς δι' Τίῳ προβάλλεσθαι διδάσκει τὸ Πνεῦμα τὸ  
Ἅγιον; (92) Ἡ ἐχὶ καὶ τὸ Φῶς διὰ τῆς ἀκτίνος ἐκ τῷ ἡλίῳ,  
καὶ τοι γὰρ ἐχὶ ἡ ἀκτίς, ὁ δὲ ἥλιος τὸ τῷ Φωτὸς ἐστὶν αἷτιον, „;  
Ἐπειδὴ δὲ ταῦτα οἱ περὶ τὸν Πατριάρχῳ Γρηγόριον ἔτις ἐξε-  
λαβον, ὡς εἶγε διασάσεις οἷον τινὰς ὑπενόει, ὡς τῷ Τίῳ γεν-  
νηθέντος, χρόνῳ δὲ μεσολαβήντος, τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῷ Τίῳ  
ἐκπορεύεσθαι· δείκνυσσι μὲν ὁ Βέκκος μηδένα μὲν ἐκεῖ χρόνον  
μεσολαβεῖν· ἀλλ' ὁμῶς τῷ κατ' ἐπίνοιαν τῷ ἡμετέρῳ λόγῳ, ὡς  
ὁ Νύσσης φησί: τὸν μὲν Τίον ἀμέσως γεννηθῆναι ἐκ τῷ Πατρὸς,  
τὸ δὲ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον διὰ τῷ Τίῳ ἐκ τῷ Πατρὸς ἐκπορεύεσθαι.  
Φαύλως μὲν ἔν ἔτω τοῖς Ἀρχιδιάκονοις ὁ Βέκκος ἐπήμυνεν  
ἐξητάτο γάρ: πότερον, ὁ Πατὴρ αἰτία ὡς διὰ τῷ Τίῳ; ταύτη  
δηλ: ὡς ἐντεῦθεν δείκνυσθαι, καὶ τὸν Τίον ὁμοίως Προβολέα  
εἶναι τῷ Πνεύματος; Κατά γε μὴν τὸν τῷ Νύσσης νῦν, ἐκεῖνο  
μόνον νοεῖται, ὅτι τῷ Τίῳ γεννηθέντος ἐκπορεύεται τὸ Πνεῦμα  
παρὰ τῷ Πατρὸς, ἐμὴ δὲ ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ Πατρὸς ὁμῶς  
καὶ Τίῳ ἐκπορεύεται.

Ἐν

(91) Ὅρα ἐν τῇ Α' τῶν Πραγματειῶν, ἐπὶ τῆς Η'. Ἐκατονταετηρίδος. Καὶ ἐν Πραγ-  
ματ: ΙΕ'. ἐνθα, ὅπως ἐκ τῶν Ἀνατολικῶν Πατέρων, τὸ ἐκ Πατρὸς δι' Τίῳ νοη-  
τέον ἐπὶ τῆς Προόδου τῷ Παναγίῳ Πνεύματος, διὰ πολλῶν ἀποδείκνυται.

(92) Τὶ δὲ διαφέρει, τὸ κατὰ τὸν Νύσσης φῶσαι ἐκ Πατρὸς δι' Τίῳ προβάλλεσθαι τὸ  
Πνεῦμα, τῷ κατὰ τὸν Δαμασκῳνόν λέγειν τὸν Πατέρα Προβολέα εἶναι διὰ τῷ  
Λόγῳ τῷ Πνεύματος; διαφέρει πάντως ἑδὲν τῷτο ἐκεῖ· αἱ γὰρ Προτάσεις ἐπ'  
ἀκριβὲς ἰσοδυναμοῦσιν. Ὡς παῖς οἷος ὁ Βέκκος, τὸ ἐν ἀρχῇ αἰτᾶται, τὸ αὐτὸ διὰ  
τῷ αὐτῷ κατασκοιάσαι ἔχειν διόμενος.

Μ μμμμμμ 2



Ἐν ᾧ δὲ ἔτῳ ὁ Βέκκος τοῖς Ἀρχιδιακόνοις ὡς ἐπαμύνων, ὁ Ἀλεξανδρείας Πατριάρχης, αὐτόθεν ἀπὸ τῆς Σκίμποδος (ἐπεὶ νοσηλοδόμενος ἀνέκετο.) „Καινὰ Σκ Βέκκε ταῦτα τὰ Δόγματα, „ἀνεφώνησε· ταῦτα λέγειν παρὰ τῶν Πατέρων ἔκ ἐδιδάχθημεν· τό: ἐπειδὴν λέγειν δηλονότι ἐκ τῆς Πατρὸς διὰ τῆς Τίτῃ, νοεῖσθαι ἢ ἐκ τῆς Τίτῃ ὅμῃ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκπορεύεσθαι· κατὰ γὰρ τὸν νῦν τόνδε συμφώνως τοῖς Ἀρχιδιακόνοις ὁ Βέκκος ἐκείνα ἀντιπροέτανε. Ἄλλως καὶ γὰρ οἱ Πατέρες πάντες ἐδίδαξαν, ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα παρὰ τῆς Πατρὸς μετὰ τὸν Υἱόν· τέτρεσι γεννηθέντος τῆς Τίτῃ, ἐκπορεύεται. (93) Ἐνθεν τοι ὁ Ἀλεξανδρείας ἐρωδοτέον εἶναι τῆς λοιπῆς ὑπετίθετο, μηδὲ περὶ τὰ μηδαμῶς ἀναγκαῖα ἐριδανέον· τὸ δ' αὐτὸ πρᾶτρεπελο ἢ ὁ Βασιλεύς. Ἄλλὰ γὰρ ὑπολαβὼν μεταξὺ Γρηγόριος ὁ Πατριάρχης: „Ἑμεῖς δ' ἔν „Φατέ ἰσοδωαμεῖν ἐπὶ τέτοις τῇ ἘΚ τῷ ΔΙΑ· ὡς τῆς Ἀγίης λέγοντος, τῆς διὰ τῆς προσεχῶς ἐκ τῆς πρώτης, ὑμᾶς λέγειν „καὶ ἐκ τῆς προσεχῶς ἐκ τῆς πρώτης: ὁ δὲ, καὶ ποῖον τρόπον „ἀμαθίας ἢ παρελήλυθεν; οἱ μὲν ἔν περὶ τὸν Βέκκον ὁμολογῶντες τὸ παραλόγιμα, μὴ διὰ τῆτο παραβασίας ἐξ ὁλοκλήρου, „καὶ ἐπὶ Αἰρέσει κρίνεσθαι ἠτῶντο· εἶναι γὰρ ἐπίσης καὶ ἐκ τῶν „ἐτέρων τῆς ἢ μικρὰ παραβάντας,. Ὁ δὲ Βέκκος μὴ προχωρεῖν ὁρῶν αὐτῷ τὸ πρᾶγμα κατ' ἔφεσιν „Ποιεῖτε, Φησὶ, τὸ παρῖ „σάμενον· ἡμεῖς προηγείσθε, καὶ γὰρ ἔψομαι πράττεσιν. Ἐκλιθεῖσθαι „Τόμος, καὶ ἀποπεποιεῖσθαι τὸ Δόγμα, ἢ ἀποβεβλήσθαι τὸ δι' Τίτῃ, „εἰ βέλεσθαι. . . . . θέλω σὺ ὑμῖν πᾶσι καὶ δικαιωθῆναι καὶ κα- „τακριθῆναι. Εἰ δ' ὑμεῖς μὲν διδύλαβεσθε τῷ πράξειν, ἡμῖν δ' „ἐπιφορτίζεσθε τῷ ἀποβολῇ, ἔυλογον εἶναι πάντως (ἵνα καὶ μὴ „καὶ ἀναγκαῖον εἶπω)· ὑμῶν διδύλαβων καὶ διαμελλόντων, καὶ „ἡμᾶς δεδιέναι, μήπως παρασφαλεῖσιν ἡμῖν ἢ μόνοις τὰ τῆς κιν- „δύως περισχέσθαι,. — Διακενῆς ἔμπης ὁ Βέκκος ταῦτα· ἢ γὰρ ὑπὸ αἰτίαν ἤγετο, ὡς τὸ Πνεῦμα λέγων ἐκ τῆς Πατρὸς δι' Τίτῃ ἐκπορεύεσθαι· ἀλλ' ὅτι τὸ Δι' ΤΙΟΤ ἔτῳ ὡς ἐκδεχόμενος, ὡς εἰ καὶ ἘΚ ΤΟΤ ΤΙΟΤ ἅμα ἐκπορεύεσθαι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐν τέτοις διεσημαίνετο· καὶ τέτρε γε ἔνεκα, τῷ Πρότασιν ἐκείνῳ, κατὰ τῷδε τῷ τῆς Βέκκος ἔννοιαν ἐκκληφθῆσαν, ἢ τε Σωόδος ὡς ἀποφάσκουσα, καὶ παρὰ πάντων ἀξιόσα αὐτῷ ἀποφάσκεσθαι. Τὰλλα δὲ δὴ πάντως μετὰ τῶν Πατέρων καὶ τῆς Οἰκουμενικῆς Ζ'.

(93) Ὡς πῶς δ' ἀπέσω τῆς προθέσεως, ἢ παντὸς ἔτιωσεν παρεμπόλητος χρονικῆς διαστήματος δήλωσις. Πρὶν γὰρ ἐμπεσεῖν χρονικόν τι ὅπως διάστημα, ὥστε ἢ τῆς Τίτῃ Γέννησις, ἔτω καὶ ἢ τῆς Ἀγ: Πνεύματος παρὰ τῆς Πατρὸς Θεολογείτω Ἐκ- πέρσεσις. Ὅρα ἐν τῇ Α'. τῶν Πραγματειῶν, ἐνθα ἐκ τῆς Α'. Ἐκλήονταετηρίδος, εἰς μαρτυρίαν παρατίθεται τῆς Θεᾶς Ἐφεσῆς ἢ ῥήσις. Καὶ ἐν Πραγματ: δὲ τῇ ΙΔ'. κατ' αὐτῷ τῷ Ἀρχιῳ.

Ζ'. Σωόδσ σωεχώρει τὸ Πνεῦμα, κατὰ τὴν ἰδίαν αὐτῆς διάνοιαν, ἐκ τῆ Πατρὸς διὰ τῆ Τιῆ ἐκπορεύεσθαι. Τέως δ' ἔν τῆ Πατριάρχῃ ἐν τέτοις καὶ μᾶλλον ἐκτραχισμένῃ τῷ Βέκκῳ, καὶ δριμύτερον ἐπιπλήξαντος, σωέβη καὶ τῆτον παροξωθέντα ὁμοίως τῷ Πατριάρχῃ ἐπιλοιδορήσασθαι, καὶ πρὸς τὸν Αὐτοκράτορα ἐπιστραφέντα εἶπεν: „Ἄν μὴ ἔτος ἐξέλθοι τῆ Πατριαρχείῃ, ἐκ ἂν ποτε τὸν „τῆς Ἐκκλησίας κατασβεσθῆσθαι κλύδωνα. Οὕτω δὴ πρὸς ἐρίθειαν ἢ πρώτη αὐτῇ κατέληξε τῆς Σωόδσ ταύτης σωέλδους. Διέξεισι δὲ ταῦτα ἐς πλάτος ὁ ΠΑΧΥΜΕΡΗΣ Βιβλ: Ζ'. παρὰ Λέοντι τῷ Ἀλλατίῳ, Βιβλ: Β'. τῆς Δίωκε: Συμφων: τῶν Ἐκκλησιῶν: Κεφ: Β'. Ἀριθμ: ΙΑ'. (94) Ἄπαντα γὰρ ἐπὶ ῥήματος διὰ τὴν ἔκτασιν μεταγράψαι παρίεμεν.

Ὅτι δ' ἐπὶ τῆς Σωόδσ ταύτης ἀντέστησαν τῷ Βέκκῳ ὁ, τε Πατριάρχης καὶ ὁ Μέγας Λογοθέτης, ἔτως ὥς αὐτῶν γενέσθαι τὸν Βέκκον ἡττονα, καὶ ΓΡΗΓΟΡΑΣ ἐξισορεῖ ἐν τῷ 5'. Βιβλ: τοιάδε ἔχων: (95) „Οὗ γενομένου, καὶ τῆ Βέκκῃ παριόντος „εἰς μέσον, καὶ πάντα τῇ γενναίᾳ παλάμῃ τῆς γλώττης σφοδρῶς συγκυκλώντος καὶ ἀναξάνοντος, ὅποσα οἱ τ' ἀσφαλὲς περιέποντες δόγμα ἐπέφερον· εἰ μὴ Γρηγόριος ὁ Πατριάρχης καὶ „Μεζάλων ὁ Μέγας Λογοθέτης, σοφίας περιστά, καὶ Γραφῶν „Ἱερῶν ἐκλογαῖς ἀντέχον, καὶ τὸν σφοδρὸν ἐκείνον χαιμῶνα „τῆς παλαμναίας ἐκείνης ἀνέσελλον γλώττης, τάχ' ἂν τὸ ψεῦδος „κατὰ τῆς ἀληθείας ἐλάμβανε κράτος καὶ τῆς ἀρετῆς, ἢ περὶ „ριεργία τὸ πλεον ἐκτάτο. (96) Ἦν δ' ὁ Μεζάλων ἔτος τῷ „Βασιλεῖ παραδωσάμενος τότε, καὶ τοῖς Βασιλικοῖς καὶ δημοσίοις „μεσιτόδων πράγμασι· καὶ παρὰ τῆ Βασιλέως μεγίστῳ καρπέν „μενος τὴν αἰδῶ, διὰ τε σοφίαν, καὶ γῆρας μακρὸν, καὶ ποικίλῳ „ἐμπερίᾳ πραγμάτων μετὰ φρονήσεως ἔχων. Δι' αὐτὴν δὴ, καὶ „τιμῶν τινά ταύτῃ ἔχεν ἐξαίρετον, μόνος τῶν πάλαι τὸ ὅμοιον „αὐτῷ προσεληφόντων ἀξίωμα, καλύπτραν φορεῖν ἐπὶ κεφαλῇς „χρυσοκοκκίνῳ κεκαλυμμένῳ ἐνδύματι, ὅσον τὸ ἄνω, καὶ πρὸς „τῇ Πυραμίδι τῆς ἐπιφανείας χύμα· ἐν τέτῳ παραλλάττεσαν „μόνον τῆ παραπλησίαν εἶναι καθάπαξ τῇ τῶν τῆ Βασιλέως „ἐγγόνων, ὅτι μὴ καὶ τὴν κάτω καὶ κοίλῳ ἐπιφάνειαν εἶχε „κυκλίσκοις πεποικιλμένῳ χρυσοειδέσιν, ἀλλὰ λείαν τελέως...

Μετὰ

(94) Κατὰ δὴ τὴν ἐν Ῥώμῃ Ἐκδοσ: τῶν τῆ Παχυμ: ἐν τῷ Β'. Τόμῳ τῷ εἰς τὸν Ἀνδρόνικον, Βιβλ: Α'. Κεφ: ΛΕ'. Σελίδι 57 — 63.

(95) Ἐν τῷ Α'. Τόμῳ: Βιβλ: 5'. Κεφ: Β'. Ἀριθμ: Γ'. καὶ Δ'. Σελ: 103.

(96) Τὰ δ' ἐφεξῆς περὶ τῆ Μεζάλωνος ἱστορέμενα παρὰ χορδῶν ἐπὶ τῆ ἐνταῦθα περιεμμένη δοκεῖ μοι κρεῖσθαι· κείδω δ' ἔν, ἐπεὶ ἐκ ἑδοξε τῷ ἡμετέρῳ Ζοιρικασίῳ εἶδεν ταῦτα παραλιπεῖν.

Τόμ: Β'.

N ννννν

Μετὰ δὴ ταῦτα, ἐπὶ τῆς αὐτῆς Σωόδου Τόμον ὁ Πατριάρχης κατὰ τῆς Βέκκης σωέγραψεν. Οὕτω γὰρ ὁ ΠΑΧΤΜΕΡΗΣ ἐν Βιβλ: Η'. παρὰ Λέοντι τῷ Ἀλλατίῳ, ἐνθα εἶρηται ἀνωτέρω. „Διὰ τῆτο καὶ δεχόμενοι τὸ Κεφάλαιον, καὶ ὡς Ἀγίῳ τῷ λέξιν ἔχοντες (τῷ τῆς Δαμασκῆως δηλονότι, ἐν οἷς ἔφη τὸν Πατέρα εἶναι Προβολέα τῆς Ἀγίης Πνεύματος διὰ τῆς Τίξης) τῷ Θεραπείαν „ἐξήτην κατὰ τὸ ὄρθον τῆς Δόγματος καὶ Τόμον γράφειν ἤρξαντο „καὶ λογογραφεῖν τῷ εὐσεβείῳ. Σοφῶ γὰρ δοκῶντι τῷ Πατρι- „άρχῃ, καὶ ὑπὲρ πολλὰς ταῖς ἀληθείαις ὄντι, τῷ τῆς Τόμου γρα- „φῶν ἐπέτρεπον, σὴλλω μὲν εὐσεβείας ἔσεσθαι νομιζομένῳ, καὶ „τῆς τῶν παρεγκλινάντων δῆθεν κακίας, τοῖς ὀψιγόνοις. Καὶ „δὴ τῷ πράξιν ὑποσῶς ὁ Πατριάρχης, γενναῖον Τόμον σωτίδη- „σιν... (97) Ἐν τῷδε τοιγαρὲν τῷ Τόμῳ, πρῶτον μὲν ἡ τῆς Πίσεως ἐτέθη ὁμολογία, ἐν ᾗ μάλιστα ἀποδέδεικται, ὅτι τὸ Ἀγ: Πνεῦμα ἐκ μόνου τῆς Πατρὸς ἐκπορεύεται. Ἐπεταὶ δ' ἐφεξῆς ἡ κατὰ τῆς ἐν Λαγδένῳ ἐνώσεως ψῆφος· τῷ δὲ διαδέχεται ἡ τῶν ἐν τῇ κατὰ Βέκκης Σωόδῳ πεπραγμένων διήγησις καὶ προσέτι, ὅτι διημαρτημέναι ὁ Βέκκος ὁμολογήσας, τῷ καθ' ἑαυτὸν Καθάρ- ρεσιν ἔσερξε. Τελούταῖον δὲ ὑπεσφύθη ἡ τῆς Βέκκης καὶ τῶν αὐτῷ συμφρονέντων Καλακρίσεως ψῆφος· ἀποπλυσθείσης καὶ πάλιν τῆς ἐνώσεως, ἥς ὁ Αὐτοκράτωρ Μιχαὴλ πείραν εἴληφεν. Ὑπέ- γραψαν δὲ τῷδε τῷ Τόμῳ, παρεκτὸς τῆς Βασιλέως, ὅ, τε Πα- τριάρχης, καὶ τεσσαράκοντα δύο Ἐπίσκοποι, καὶ ἑκοσι καὶ ὀκτὼ Κληρικοί. Οὕτω γὰρ ὁ ΣΠΟΝΔΑΝΟΣ ἐπὶ Ἔτους 1283. Ἀριθμ: Γ'. „Διεκοινώσατο ἡμῖν ὁ Σοφώτατος Πατὴρ Ἰάκωβος ὁ Σιρμόνδος, „ὁ ἐκ τῆς ἐταιρίας τῆς Ἰησῆ, ὁ τότε νῦν ἔχον τῆς Χριστιανικῆς „τάτης Βασιλέως ἀπὸ τῶν Ἐξομολογήσεων (Πνευματικός) τῷ „ἐκ τῆς προῤῥηθείσης ἀφορμῆς, ἐπὶ Αὐτοκράτορος Ἀνδρονίκου τῆς „Παλαιολόγου, καὶ Γρηγορίου τῆς Πατριάρχου συζῆσαν Σωόδον, κα- „τά τε αὐτῆς Ἰωάννου τῆς Βέκκης, καὶ τῶν ἐκείνου ὁπαδῶν Κων- „σταντίνου τῆς Μελιτινιώτου, καὶ Γεωργίου τῆς Μετοχίτου, τῶν τὸ „Λατίνων περὶ τῆς τῆς Ἀγίης Πνεύματος Ἐκπορεύσεως Δόγμα „ἐπαγγελλομένων, καὶ ἀπὸ ὀκταετίας ἤδη, ὡς αὐτὰ ὑπεμφαίνα „τὰ τῆς Σωόδου ῥήματα, εἰς τὸ διδάσκειν αὐτὸ ἀραρότως ἐπιμε- „νόντων· τῆς δὲ ἐν Λαγδένῳ συγκροτηθείσης γενικῆς „Σωόδου, ἐν ἔτει τῷ Σωτηρίῳ ασοδ'. Μετὰ τὸν Πρόλογον τί- „θεται ἡ τῆς Πίσεως ὁμολογία, ἐν ᾗ μάλιστα συνεχῶς ἐπανα- „λαμβάνεται ἡ περὶ τῆς τῆς Ἀγίης Πνεύματος Ἐκπορεύσεως δόξα „ἡ

(97) Ἐκδέδοται δὲ ὁ Τόμος ὑπὸ Ἀισέλμου Βανδερὶς ἐν τῷ Β'. Τόμῳ: τῶν Ἀρχαιοτήτων τῆς Κωνσταντινουπόλεως: Βιβλ: Η'. Σελ: 942. κ. τ. λ.

ἢ τῶν Γραικῶν· καὶ περὶ τὸ τέλος ἢ ἐπὶ τῆς αὐτῆς Λαγδονι-  
 κῆς Σωόδου γενομένη Εἰρῶν ἀποκηρύττεται. Εἴτα διέξεισιν,  
 ὡς Ἰωάννης ὁ Βέκκος, τέτταρτε ἕνεκα, ἐν τινι τῶν αὐτῶν Γραι-  
 κῶν Σωόδῳ φθάσας προκατεκέκριτο· ἐν ᾗ παρὰ τὸν Κωνσαν-  
 τινῆ πόλεως Πατριάρχῳ, καὶ ὁ τῆς Ἀλεξανδρείας παρῶ. Καὶ  
 ὅτι καὶ Λίβελλον ἐκείνος μεταμελείας, (98) προσώεγκε, δι' ἧς  
 ἐφηρεμήσεν ὑπὸ χνῆτο, ἐπὶ τῇ κατ' αὐτῆς Ψήφῳ τε καὶ Καθαί-  
 ρεσσι. Καί τοι γε ὕστερον ἐπὶ τῷ προτέρῳ δόξαν ἐπανελήλυ-  
 θεν. Ἐπὶ τέτοις ἔπεται ἡ Ψήφος τῆς Κατακρίσεως τῶν εἰρη-  
 μένων τριῶν· καὶ ἡ Ἀνασκυβὴ ἐκάστῃ τῶν Κεφαλαιῶν τῆς κατ'  
 ἐκείνης Διδασκαλίας περὶ τῆς Ἀγίας Πνύματος, μετὰ τῆς ἐπα-  
 ναληφθέντος αὐτοῖς ἀποτροπιασμῆς τῆς γενομένης ἐνώσεως· ὡς  
 πεπλασμένῳ οἰκονομίᾳ, καὶ εἰρῶν πολέμῳ ἀποκαλῶσι. (99)  
 Προσίδενται δ' ἐν τῷ τέλει αἱ ὑπογραφαί· πρῶτον μὲν ἡ τῆς  
 Αὐτοκράτορος ἐν Γράμμασιν Ἐρυθροῖς· ἈΝΔΡΟΝΙΚΟΣ ἐν  
 ΘΕΩ ΠΙΣΤΟΣ ΒΑΣΙΛΕΥΣ καὶ ΑΥΤΟΚΡΑΤΩΡ ΔΟΥΚΑΣ  
 ΑΓΓΕΛΟΣ ΚΟΜΝΗΝΟΣ ΠΑΛΑΙΟΛΟΓΟΣ. Ἐπειτα· ΓΡΗ-  
 ΓΟΡΙΟΣ Θείῳ ἐλέει Ἀρχιεπίσκοπος Κωνσαντινῆ πόλεως Νέας  
 Ῥώμης, καὶ Οἰκουμενικὸς Πατριάρχης. ἸΩΑΝΝΗΣ ταπεινὸς  
 Επίσκοπος τῆς Ἐφεσίων Μητροπόλεως κτ· Ὑπογεγράφαται  
 δὲ Ἐπίσκοποι ΜΒ'. Ὀφθίκα δὲ Ἐκκλησιαστικὰ ΚΗ'. Πᾶ δὲ  
 ἄρα ποτὲ ἡ τοιάδε ἡθροῖσαι Σωόδος, ἔτε ἐκ τῆς Ἐπιγραφῆς,  
 ἢ τὸ πλεῖστον μέρος ἐξέληπται, ἔτε ἐκ τῆς τέλους διακρίνεσθαι  
 δυνάται. Ἐπεὶ δ' ἐξ ὧν ἔρηται ἀνωτέρω, δῆλον κατ' ἀρχὰς  
 αὐτῆς τῆς Ἀνδρονίκου Βασιλείας σωμαθροισθῆναι, εἰκάσμεν ὅτι  
 ἐν Κωνσαντινῆ πόλει συγκεκρότηται.

Περὶ δὲ δὴ τῆς Σωόδου ταύτης, καὶ ΝΙΚΗΦΟΡΟΣ ὁ Κάλ-  
 λιστος, Συγγραφεὺς σύγχρονος γεγωνῶς, τοιάδ' ἔχει ἐν τῇ Προσ-  
 φωνῇ τῆς αὐτῆς Ἰστορίας πρὸς Ἀνδρόνικον Παλαιολόγον τὸν Ἀυ-  
 τοκράτορα, πρὸ τῆς τέλους, ἐν τῷ Α'. Τόμῳ· τῆς Παρις· Ἐκδόσις·  
 τῆς ἐν Ἐτει 1630. Σελ· 22. „Τὶ δὲ καὶ Σόι; ἐκ ἴσου ἐκείνῳ  
 δρόμος περὶ τῆς συμφύξης Πνύματος; Συλλόγος καὶ γὰρ ἡθροῖ-  
 κῶς ἐκ οἰκογενῶν δῆτινων, ἀλλ' Ἐκκλησίας πρωτοτόκιον τῶν  
 κατ' ἡμᾶς, ὡσπερ τις νέος καθεστὼς Ἀβραὰμ, τῷ μακαρίαν  
 καὶ αὐτοῖς ξενίζεις Τριάδα, καὶ γλωσσαλῶν Φάλαγγας διατέμ-  
 νεις· καὶ ἐκείνο τρανῶς τῷ Ἐκπόρῳσιν ὅθεν ἔχει διασαφεῖς· ὅτι  
 „περ

(98) Ὁρα τὸν Λίβελλον ἀνωτ· Σημ· (14) ὅς καὶ ἐν αὐτῷ τῷ Σωοδικῷ Τόμῳ ἐπὶ λέ-  
 ξεως ἀνάγραφτος περιέχεται.

(99) Ὡς ἐπὶ λέξεως ἐν τῷ Τόμῳ ἀναγιγνώσκεται· „Πεπλασμένῳ οἰκονομίᾳ, καὶ  
 „ἀπέβλητον, καὶ τῷ καλῷ πολέμῳ Εἰρῶν.



„περ ἐκ μόνου δηλ: τῷ Πατρὸς, ὅθεν τὸ εἶναι ἀπερινοήτως,  
„πλὴν γεννητῶς, καὶ τῷ Υἱῷ πρόσεσι.

Τῆς μὲν ἐν Σωόδου πέρας λαβέσης, ἐδ' ἔτιω διέφυγον τὸ  
δεινῶν εἰς πέραν ἐλθεῖν παρὰ τῶν ἄλλων, οἱ ἐπὶ Μιχαὴλ τῇ  
ἐνώσει καθυπογράψαντες, καὶ τοιγε παρρησίᾳ καταψηφισάμενοι  
ταύτης, καὶ ἡμαρτηκέναι ὁμολογήσαντες. Πάντες γὰρ αὐτοὶ  
Μητροπολίται δὴ, καὶ Ἐπίσκοποι, καὶ Ἱερεῖς, ὅσοι ἐν τῷ Ναῷ  
ἀθροισθέντες, δεόμενοι τε καὶ ἐκλιπαρῶντες ἐλέος τούτου, καὶ  
ὑποδείγματα ἐκ τῷ παρεληλυθότος χρόνου προβαλλόμενοι, τῶν  
ιδίῳ ὁμῶς ἀπεσφίοντο τάξεων καὶ πολλὰ δ' ἀπρεπῆ ὑποσάν-  
τες, καὶ τῷ Ἱερῷ τέως πρὸς βίαν ἀπεξηλάθησαν. Καίπερ ἔπειτα  
καὶ αὐτοὶ οἱ δρῶσαντες ἔτοι, τῆς ἐαυτῶν μανίας δίκας ἔτισαν τὰς  
δικαιοσύνας, τῶν ὧν περ ἐπαῖχον ἀπελαθέιντες καὶ αὐτοὶ Ὁρόνων,  
ὡς ὁ ΓΡΗΓΟΡΑΣ ἐν τῷ 5. τῆς Ἰσορ: Βιβλ: παρέδωκε. (100).  
„Μετὰ γὰρ τῷ περὶ τὸ Ἀτραμύτιον πυρκαϊᾶν ἐκείνῳ τῶν Βίβ-  
„λων τῆς ἔριδος, ἐς τὸ Βυζάντιον ἄπαντες σωδραμόντες οἱ τὸν  
„ἔηλον ὑποκρινόμενοι, καὶ τὰς Μητροπόλεις, καὶ τ' ἄλλα τῶν  
„ἀξιωματῶν, τὰ μὲν ἤδη διανεμάμενοι, τὰ δὲ μέλλοντες, κα-  
„θαίρεσιν παντὲς τῶν Ἀρχιερέων, καὶ τῷ Κλήρῳ παντὸς, ὅσοι  
„τῷ Βασιλεῖ Μιχαὴλ τῷ Δόγματος ἐνοινώνησαν, πρὸς ἀπώλειαν  
„καταψηφίσαντο· ἔτε μετρίως, ἔτ' ἀνθρωπίνως τῇ τύχῃ χρησά-  
„μενοι. Δῆμος γὰρ ὄντες τὸ πλεῖστον ἀγοραῖος καὶ ἀνώματος καὶ  
„ἀνυπακοῆς, χθρὲς καὶ πρώτῳ ἔπω Βασιλέως ἡξιωμένοι θεάσασθαι  
„πρόσωπον, καὶ περὶ ἐξάφνης καὶ παρ' ἀξίαν πλεσίας ἀπολε-  
„λανκότες αὐτῷ τῆς ἐνμενείας, μάλιστα ἐφρόνησαν τῆς ἐαυτῶν  
„τύχης, καὶ τῶν μεθυσόντων ἑδὲν ἄλκον διετέθησαν· παρὰ γὰρ  
„τῷ Βασιλεῖ τὸ ἐνδόσιμον εἰληφότες, ἄτε μικρὰ πρὸς ἅπαντα  
„τῶν ὑπείκοντος, διὰ τῷ φλέγσαντες ἔφεσιν, ἦν ἐν καρδίᾳ πρὸς  
„τῷ τῆς Ἐκκλησίας ἔτρεφεν ἔνωση, κατὰ πολλὴν τινὰ ἤδη τῷ  
„ἀδελφῷ, καὶ ὧν ἔμελλον τῷ ἄτιμον ἐκείνῳ ψήφον ἐπενεγκεῖν,  
„πάντας ὡς πρόβατα πρὸς τὸν ἐν Βλαχέρναις σωήθροισαν Μέ-  
„γαν Νεών. Ὡν πολλὰ πρὸς οἶκον εἰσαγόντων καὶ χήματα,  
„καὶ ῥήματα, καὶ Φιλανθρωπίας ὅμοια τῶν παλαιῶν ὑποδείγμα-  
„τα· τὰ τε ἄλλα, καὶ ὅσα ἐπὶ τῶν χρόνων (ὅπως δὴ ποτὲν) τῆς  
„διπλῆς Εἰκονομαχίας ἐγένοντο· ὅπως χείρονα τῶν νῦν πεπρα-  
„χότες ἐκείνοι, Φιλανθρώπων τε ἀπήλαυσαν τῶν ὑπερὸν τῆς ὁρ-  
„θοδοξίας προσάντων, καὶ πρὶ τῆς τάξεως ἧς ἕκαστος ἔτυχεν ἑμι-  
„ναν (ἐνιοί)· ἀπαλλαγὴν τῆς θηριώδους γνώμης καὶ ἔγνωσαν ἑδ'  
„ὅπως ἐν εἰληφέναι. Ἀλλὰ πάντα (sic) φειδῶ τε καὶ οἶκον οἱ  
„τῆς

(100) Βίβλ: 5. Κεφ: Β'. Ἀριθμ: Ε'. καὶ 5. Σελ: 104. 105.

ἡτῆς κακίας, ἀπειληφότες κλύδονες, ἐς Ἀτλαντικῇ πελάγῃς πυθ-  
 μένας ὡς ἔοικε κατ'εβάπτισαν· ἔτω πολὺς τις ἐχόρυβε φθόνος  
 ἐν μέσῳ τῇ Ἱερῇ Συλλόγῃ ἐκείνῃ, καὶ μάλα πικρὸς κατωρχεῖτο  
 κλύδων, ἐνθὺς ἐξ ἀρχῆς τῆς καλῆς ὁμονοίας ἐκείνης. Ἀλλὰ τις  
 ἔτω σκληρὸς καὶ ἀδαμαντίνῳ ἔχων ψυχῇ, διήγήσατο τῷ  
 ὕβριν ἐκείνῳ καὶ ἀπανθρωπίαν, ἥ κατὰ τῶν ἀθλίων ἐχρήσαντο  
 Ἐπισκόπων, καὶ ὅσοι τῇ Ἱερατικῇ Καταλόγῃ; Μετὰ γὰρ τὰς  
 ἀπὸ γλώττης λαιδορίας, εἴτα προσέταττον οἱ τῆς προεδρείας τῆς  
 ὑφεδρῶν/ας, λαβομένους τῶν ἐπὶ κεφαλῆς καλυμμάτων ἐκεί-  
 νων, ῥῖπιν αὐτὰ κατὰ γῆς, ἐπιβοῶντας τό: Ἀνάξιος τρίς.  
 Ἄλλος δὲ ἄλλων τὰ ἱμάτια περιδύειν ἀπὸ τῶν κρασπέδων ἐπὶ  
 κεφαλῆς ἀντισρόφως αἶροντας, καὶ τό: ἀνάξιος αὖθις ἐπιβοῶν-  
 τας τρίς. Ἐπειτα ὠθισμῷ, καὶ βίᾳ, καὶ τοῖς ἐπὶ κόρυθς ῥα-  
 πίσμασιν, ὡς τινὰς τῶν ἀνδροφόνων ἐξελαύνειν τῇ Ἱερῇ. Ταῦ-  
 τα οἱ δίκαιοι Κριταὶ καὶ τῇ Ἐυαγγελίᾳ μύσαι· ὁ δὲ φιλάνθρω-  
 πος Ἰησοῦς καὶ Σωτὴρ, καὶ τὸν Λησιῷ προσεδέξατο, καὶ τῇ  
 Προδότῃ τῷ μετάνοιαν, εἶπερ καὶ κείνῳ πρὸς βαλίσσεως ἰῷ, ἄσ-  
 μενος ἐπὸ θῆς καὶ ἐκαρτέρει. Ταύτῃ τοι καὶ βραδέως μὲν, ἀλλ'  
 ἔυρον καὶ ἔτοι τῷ δίκῳ ὀψὲ, τῷ ἀξίαν ἐπάγασαν ἀντιμέτρη-  
 σιν· ἐδὲ γὰρ ἐδεῖς τῶν νέων τέτων Νομοθετῶν καὶ Κριτῶν ἐν  
 τῇ οἰκίᾳ τετελεύτηται τιμῇ, ἀλλ' αἰχίσῃ τῶν οἰκείων ἐξελα-  
 θέντες Θρόνων, ὡς προϊόντες ἐρῶμεν, βέλεσι λύπης τῇ εἰῷ  
 ἀπερβράγησαν.

Πλὴν δὲ τῇ μνημονοθέντος Τόμου, σωζόμενοι ἀπόκεινται  
 κατὰ τῷ ἐν Βιέννῃ Βιβλιοθήκῳ, καὶ Λόγοι τινὲς ΓΡΗΓΟΡΙΟΥ  
 τῇ Κυπρίᾳ κατὰ τῶν Βέκκας βλασφημιῶν. (101) Ἀλλὰ καὶ  
 ΓΕΩΡΓΙΟΣ ὁ Μοχάμπαρ, ὁ τῆς Μεγάλῃς Ἐκκλησίας Χαρτο-  
 φύλαξ· κατὰ Λατίνων λογογραφῶν ἐγένετο τιμωκαῦτα, ἥ Βέκκος  
 μαρτυρεῖ παρὰ Ἀλλατίῳ, ἐν τῷ Β'. τῆς Διωκῆ: Συμφων: τῶν  
 Ἐκκλησιῶν: Κεφ: ΙΕ'. Ἀριθμ: ΙΓ'. Τελευταῖον δὲ καὶ ΚΩΝΣΤΑΝ-  
 ΤΙΝΟΣ ὁ Ἀκροπολίτης ὁ Μέγας Λογοθέτης, (102) ἐκ ὀλίγας  
 περι

(101) Λαμβέκιος μαρτυρεῖ ἐν Η'. Βιβλ: τῶν αὐτῇ Ὑπομνημ: τῆς Βυζαντινῆς Βιβλ:  
 Σελ: 510.

(102) Υἱὸς ἔτος ἐγένετο Γεωργίῳ τῇ Ἀκροπολίτῃ, τῇ ὑπὲρ τῆς μετὰ Λατίνων ἐνώ-  
 σεως ἐχ' ἅπαξ τῷ Βασιλεῖ Μιχαήλ πρὸς Ἱταλὸς διαπρεσβευταμένῃ καὶ ἐν τῇ  
 κατὰ τὸ Λεγδενον δὲ Σιωδῶ παρασάντος, καὶ ἐπ' ὀνόματι τῇ ἀπασείλαντος  
 Ἀυτοκράτορος ἐπικυρωσαμένη τῷ εἰωσιν. Ἐοικεν ἔν, εἰ μὴ τῷ ἐντι Λατινοφρο-  
 νήσας γένοιτο ὁ Πατὴρ Ἀκροπολίτης Γεώργιος· (πῶς γὰρ, Φασίν, εἰ τοσούτοις  
 αὐτὸν ἐπαίνοις κατασέφει Γρηγόριος ὁ Κύπριος;) τῇλάχισον (ὡς ἡ ἐμὴ κρίσις)  
 ἀδιαφορεῖται περὶ τὸ Δόγμα· διὰ τε τὰς λειτουργηθείσας αὐτῷ πρεσβείας· καὶ ὅτι,  
 κατὰ τὸν Παχυμέριον (Τόμ: Α'. Βιβλ: Δ'. Κεφαλ: ΚΗ'. Σελ: 213) „Καὶ τοι Μέ-  
 γας καὶ σοφὸς τὰ μάλιστα, πλὴν κατημελημένως τῶν εἰς σωείησιν ἔχων ἦν.  
 Οὗ δὲ Υἱὸς Ἀκροπολίτης ὁ Κωνσταντῖνος, ἔπερ ὧδε μέμνηται Ζοιρνακάσιος, καὶ  
 λίαν ζηλωτὴς ἰῷ ὑπὲρ τῇ Πατρίᾳ Δόγματος. Ὡς καὶ διὰ τὸ μὴ ὑπερδύναμι  
 Τόμ. Β'. .

περὶ τῆς Ἐκπορεύσεως τῆς Ἀγίας Πνεύματος κατὰ Λατίνων ἐξέδοτο Πραγματείας, παρὰ τῷ αὐτῷ Ἀλλατίῳ, ἐνθα εἶρηται, Ἀριθμ: ΙΔ'. Οὕτως οἱ Ἀνατολικοὶ τὴν ἐλευθερίαν ἀπειληφότες, μονονυχὶ πάντες· παρεκτὸς τῆς Βέκκας, καὶ τῶν δύο τῶν συμφρονησάντων αὐτῷ· οἱ λοιποὶ ὁμοψύχῳ τῇ διανοίᾳ, τὴν ὑπὸ Μιχαὴλ τῆς Παλαμολόγας διὰ πέρας γενομένην ἔνωσιν τῶν Ἐκκλησιῶν περιέτρεψάν τε καὶ κατεδίκασαν· ὃ δὴ πρὸς τεκμήριον ἐστὶν ἀσφαλέστατον τῆς ἀκοντάς γ' ἐς ἐκείνο σωθεῖσθαι τὰς δόξαντας· ἐνισταμένη δὲ δηλονότι καὶ παραβιαζομένη τῆς Ἀυτοκράτορος. Καὶ ἡ τοιαύτη ἔνωσις, ἐστὶν ἂν ὅ, τι τὰς προβαλλομένης Λατίνων παίδας ὀνήσειεν;

#### Ἀ Ν Τ Ι Θ Ε Σ Ι Σ Θ'.

Ἐπὶ πᾶσιν ἔννατον, ὅσα γε πρὸς τὴν ἐν Λαγδένῳ Σινώδον καθ' ἑαυτὴν ἀνήκει: Πῶς Οἰκουμενικὴ αὕτη, πρὸς Θεῶ! ἀκρίβεται, ἐν ἣ, ἔθ' οἱ Ἀνατολικοὶ Πατριάρχαι, ἔθ' οἱ ὡς ἐξ αὐτῶν Ἀποκρισιάρχιοι παρεσιάζοντες ἔτυχον; Ἐνθεντοὶ καὶ ΒΑΡΛΑΑΜ ὁ Ἀββάς, ὡς διέξεισι ΒΕΝΕΔΙΚΤΟΣ ὁ ΙΒ'. (ἐν Ἐπιστολῇ τῇ πρὸς τὸν Ῥήγα Σικελίας Ῥοβέρτον, παρὰ Λέοντι Ἀλλατίῳ Βιβλ: Β'. Κεφαλ: Ις'. τῆς Διωκε: Συμφ: τῶν Ἐκκλησιῶν: Ἀριθμ: Β'.) „Εἰ δέ τις εἴποι, ὡς ἐγένετο περὶ τῶν ἐν Λαγδένῳ Σινώδου „Γενικῇ, ἐν ἣ καὶ οἱ Γραικοὶ παρήσαν: Ἴσω, ὡς ἔδδ' καθ' „παγαγεῖν διωθήσεται τὸ Γραικῶν Γένος, τὴν τοιαύτην Σινώδον, „ἀνευ προσεπισυστάσεως Σινώδου ἑτέρας, ἀποδέξασθαι. Τίνος δὲ „χάριν; ὅτι οἱ Γραικοὶ οἱ ἐν ἐκείνῃ τῇ Σινώδῳ παρεσιάσαντες, „ἔθ' ὑπὸ τῶν τεσάρων Πατριαρχῶν τῶν τὴν Ἀνατολικὴν Ἐκ- „κλησίαν διεξαγόντων ἐτύγχανον ἀποσαλέντες, ἔθ' ὑπὸ τῆς Λατίνων „ἀλλ' ἐκ μόνου τῆς Βασιλέως, ὅς τις πρὸς βίαν ἠναγκάζετο μεθ' „ἡμῶν ἐνωθῆναι, καὶ ἔχι καθ' ἐκείσιν θέλησιν,,. Καὶ παρήσαν ἄρα ἐκείνοι τῇ Σινώδῳ διαπρεσβεύοντες παρὰ τῆς Ἀυτοκράτορος Μιχαήλ· ἥ δὲ, λόγοις εἰς τὸτο κινήθεντος ἀπλῶς ἀνθρωπίνους, ὥσπερ κατέδομεν, φρέδῃ τὸ παράπαν ἡ ἐνταῦθα κρίνεται συγκατάνοσις· ὃ γάρ τινες τῶν Λατίνων προσετίθεν ἀνωτέρω, καὶ αὐτὸν ἔχ ἤκιστα τὸν Ἀυτοκράτορα ἐπὶ τῆς Σινώδου ἐκείνης παραγενέσθαι, τῆς ἀληθείας ἀπέχον ἐστὶ παντάπασιν· ὅς καὶ αὐτὸς ΒΑΔΔΙΓΓΟΣ ἐν τοῖς τῶν Ἐλασσόνων Φράων Χρονικοῖς, Τόμ: Β'. σαφῶς ἀπελέγξειεν. Ἀλλ' ἔδδ' Γερμανὸς ὁ Κωνσταντινουπόλεως Πατριάρχης τῇ Σινώδῳ παρὶν ἐκείνῃ, ἕτερος δέ τις Γερμανὸς

τῇ ὑπὸ τῆς Βασιλέως Μιχαήλ διαδεδωμένη ἐνώσει, τῆς τῆς Κρατῆντος χάριτος ἐκπεσεῖν, μηδὲν πλέον τῶν περὶ αὐτὴν περὶ αὐτὴν, ἢ τῷ Πατρὶ, ὃν ἤκιστα ἐμμήσατο. (Μέτιθι Ἀλβέρτ: Φαβρίκ: Ἐκκλ: Βιβλ: Τόμ: 5. Σελ: 448. 449.)

μανὸς ὄνομα, ὃς τῷ Βασιλεῖ Μιχαήλ τῶν ἐξ αἵματος προσήκων  
 ὡς καὶ Διδάσκαλος· ὅς τις τε, εἰ καὶ πάλαι ποτὲ κατ' ἐνιαυτὸν  
 ἓνα τῶ Πατριαρχικῇ Θρόνῳ ἔλαχεν ἐπικαθεσθῆναι, (103) ἀλλ'  
 ἐπὶ τῆς ἐν Λαγδένῳ τῳικαῦτα Σωόδῃ, παρὰ μὲν τῆς Ἐκκλη-  
 σίας ὁδομῶς, παρὰ δὲ τῆς Αὐτοκράτορος ἰδίᾳ διαπεμφθεὶς, ὡς  
 ἐξ ὀνόματος τῆς Αὐταρχήντος τῇ ἐνώσει ἐκείνῃ σπεύδετο. Πα-  
 ρῆσαν δὲ καὶ Ἀποκρισιάριοι μετὰ Ἐπιστολῶν, εἴτε παρὰ τῶν  
 ἰδίων Ἐπισκόπων ἀποσελλόμενοι, εἴτε δὴ καὶ ὑπὸ μόνῃ καθυ-  
 ποβληθέντες τῆς Αὐτοκράτορος. Σώζεται μὲν γὰρ ἐν τοῖς Πρακ-  
 τικοῖς τῆς Λαγδένικῃ ταύτης Σωόδῃ, Ἐπιστολή τις τῶν Ἀνατολι-  
 κῶν Ἐπισκόπων, δι' ἧς ἐπιγινώσκουν σφᾶς τῷ κατὰ τὸ Πρωτεῖον  
 ὑπεροχῇ τῆς Πάπα κατεπαγγέλλονται ἐπανιέναι δὲ καὶ ἐπὶ τῷ  
 ἔνῳσιν ἐπιστρέφοντας· ἀντικαταστήσαντας δὲ ἀντὶ τῆς Ἰωσήφ καὶ  
 Πατριάρχῳ τὸν τῇ ἐνώσει μηδαμῶς ἀντιβαίνοντα. (104) Πα-  
 ραπλησίως δ' ἔν ἡ αὐτῇ Ἐπιστολῇ αὕτη, καὶ ὡς ἐξ ὀνόματος  
 σύμπαντος τῆς τῆς Μεγάλῃς Ἐκκλησίας Κλήρῳ φέρεται γεγραμ-  
 μένη, ὡς παντὶ γίνεται δῆλον τῷ ἀνελίτῳ. Ἀλλ' οἱ ἐκ τῆς  
 Κλήρῳ τῷ τῳικαῦτα ἔπω σπευτέθεντο τῇ ἐνώσει, ὅτε οἱ Ἀπο-  
 κρισιάριοι ἐπὶ τῷ Σωόδῳ ἀπεσέλλοντο, ὡς μαρτυρεῖ ὁ ΠΑΧΥ-  
 ΜΕΡΗΣ Βιβλ: Ε'. Κεφαλ: ΙΖ'. καὶ ΙΗ'. Εἰ γὰρ τό γε περὶ  
 τῶν Κληρικῶν διεπέπλαστο ἡ Ἐπιστολή καὶ κατέψυξο, τίνος  
 ἂν ἔπειτα πίσεως εἴη ἀξία ὀλοχερῶς ἐκκληφθεῖσα, ἐφ' οἷς  
 περὶ τε τῶν Ἐπισκόπων, καὶ τῶν ὡς ἐξ αὐτῶν ἀποσαλέντων  
 διεξέρχεται;

Καὶ μὲν δὴ ἡ περὶ ἧς ὁ λόγος Ἐπιστολή (105) πρὸς τοῖς  
 ἄλλοις ἔχει καὶ κείνα: „Ἀλλ' ἡ τῆς Θεοσεπτε Βασιλέως ἐπιμέλεια  
 „τέως

(103) Γερμανὸς γὰρ ὁ περὶ τῆς αὐτῆς λόγος, ἐπὶ τῷ Πατριαρχικῷ ἀρθεὶς ἐχρημάτισε  
 περιωπῇ, διὰ τῷ Ἀρσενίῳ καθάρισιν, ὡς μηδαμῶς ἀφιέντος Μιχαήλ τῷ Πα-  
 λασιολόγῳ τῷ Ἰωάννῃ τῆς Γνησίῃς τῆς Βασιλείας Κληρονόμῳ ἐκτύφλωσιν, καὶ τῷ  
 τυραννικῷ τῆς Κράτης ἐπικατάχῃσιν. Ἐπατριαρχεῖσθε γοῦν ἀντὶ Ἀρσενίῳ ὁ Γερ-  
 μανὸς ἐν ἔτει 1267. Ἰνίς 5. Μετὰ δὲ μῶας ὀλίγας, ἥτοι Σεπτεμβρίῳ 14. τῆς  
 αὐτῆς ἔτους παρητήσατο τῷ Πατριαρχεῖαν. Καχεροτόνηται δὲ ἀντ' αὐτῆς, ἔτ-  
 1268 Ἰωσήφ ὁ Γαλησίῳ Ἀββάς. Μετὰ δὲ ἐξαετείαν, ὑποχωρήσαντος τῆς Ἰωσήφ,  
 Πατριαρχεῖας κατέστη Ἰωάννης ὁ Βένκος, ἐν ἔτει 1274. ἔτε καὶ ἡ ἐν Λαγδένῳ σιωή-  
 θροισαί Σωόδῳ ὑπὲρ τῆς ἐνώσεως. Πῶς ἔν ὡς Πατριαρχεῖας τῷ Κωνσταντι-  
 πόλεως Ἐκκλησίαν διέπων παρὶν ὁ Γερμανὸς τότε τῇ κατὰ τὸ Λαγδένον Σωόδῳ,  
 ὁ πρὸ ὀκτῶ ἡδὴ ἐνιαυτῶν τῷ Πατριαρχικῷ προεδρεῖαν, μετὰ τὸ μολὶς ἀπο-  
 γλυθῆναι, παραιτησάμενος; μεθ' ὃν Πατριαρχεῖαι δύο τῶν Πατριαρχικῶν διακῶν  
 ἐπελάβοντο;

(104) Ἀφρὲι δὲ καὶ ὅπως σύμφωνα σφίσι Λατῖνοι λέγουν οἱ τὸν Πατριάρχῳ Γερμα-  
 νὸν ἐν τῇ κατὰ τὸ Λαγδένον Σωόδῳ παρεδρεῖοντα πλάττοντες· ὁπότε τὸν Κων-  
 σταντινουπόλεως Ἰωσήφ οἱ Ἀνατολικοὶ Ἐπισκοποὶ, διὰ τῆς ἰδίας αὐτῶν Ἐπιστολῆς  
 ταύτης παριστάσι, μηδοτιᾶν πρὸς τῷ ἔνῳσιν ἀντιβαίνοντα.

(105) Κατὰ δ' ἡ Ἐπισ: αὕτη καὶ ἐν τῷ Ζ'. Τόμ: τῶν Ἀρδεῖν Σωοδικῶν, σήλη  
 698 — 701.



„τέως ἐξενίκησε, καὶ πάντας ἤδη συμφωνῶντας ἔχει πρὸς μό-  
 „νω ταύτῃ τῷ ἔνωσιν, δι' ἧς τὰ ἀπονεμόμενα πάλαι πρεσβεῖα  
 „τῷ Ἀποσολικῷ Θρόνῳ τῆς Πρεσβυτέρας Ῥώμης ἀποδιδόναι συ-  
 „νυδοκῶμεν, „ Ἀλλὰ καὶ ταῦτα πάλιν ἅπαντα πέπλασαι· πα-  
 ρεκτὸς γὰρ τῶν Ἐπισκόπων, ὡς περ εἴρηται, οἱ λοιποὶ ἔσω-  
 θεντο, ἢ καὶ ἀνωτέρω σωεωράκαμεν, ὅσον μὲν ἐξῆς τὸ ἀπ' ἐν-  
 τεῦθεν ὑπὲρ τῆς τῷ ἔνωσιν προαγαγέσθαι ὁ Αὐτοκράτωρ ἠγώ-  
 νισαι, ὅσον δὲ καὶ ταύτῃ ὑπῆρχον οἱ πλεῖστοι τῶν Ἀνατολικῶν  
 ἀποσυγῶντες τε καὶ ἀποτρεπόμενοι. Ἦν γὰρ σωήθης ἡ τέχνη  
 δηλ: τῷ Κρατῶντι ἐκείνῳ, ῥαδιουργεῖν τὰ τοιαῦτα ἐπὶ τῇ Λατί-  
 νων ἐξαπάτῃ, τοιαύτας ὡς παρὰ τῶν Ἐπισκόπων Ἐπισολὰς  
 ἀναπλάττοντι· καθὰ καὶ κατόπιν σιμείδομεν περὶ τὰ πρὸς Ἰωάν-  
 νῳ τὸν ΚΑ'. γραφόμενα.

Ἐπίπλαστος δὲ τελοῦταῖον ὡς καὶ ὁ Ὅρκος, ὃν ὁ τῶν Ἐπι-  
 κόπων διήθεν Ἀποκρισιάριος, κατ' ἐπιταγὴν ἐκείνων, ἐπὶ τῆς αὐ-  
 τῆς Σιωδὸς παρίσταται ὁμωμοκῶς. Ὁ γὰρ Ὅρκος ἔτως ἔχων  
 ἀναγινώσκεται, ἐν Τόμ: ΙΑ'. τῶν Σιωδικ: Μέρ: Α'. Στήλη 97.  
 (106) „Εγὼ (ὁ Δεῖνα) Ἀποκρισιάριος, ἀποχρῶν ἔχων ἐπίταγ-  
 „μα πρὸς τὰ κατωτέρω γραφόμενα, ἅπαν ὅλως Σχίσμα ἐξόμ-  
 „νυμαι· τῷ δὲ ὑπογεγραμμένῳ τῆς Πίσεως ἀλήθειαν, καθάπερ  
 „ἐντελῶς ἀνεγνώσθῃ, καὶ πισῶς ὑπ' ἐμῆ ἐξετέθῃ, ἐξ ὀνόματος  
 „τῆς Θεῆς, καὶ τῆς ἡμετέρας Κυρίως, τῷ ἀληθινῷ καὶ Ἀγίῳ, καὶ  
 „Καθολικῷ Πίσιν εἶναι ἐπιγινώσκω, καὶ ταύτῃ ἀποδέχομαι,  
 „καὶ καρδίᾳ καὶ σώματι ὁμολογῶ· καὶ αὐτῷ, ὡς κατέχει καὶ  
 „πιστῶς διδάσκει καὶ κηρύττει ἡ Ἁγία Ῥωμάνᾳ Ἐκκλησίᾳ, ἀπα-  
 „ραβιάσως ἐμαυτὸν τηρήσῃ, καὶ ἐν αὐτῇ διὰ παντὸς τῆς χρόνῃς  
 „ἐπιμενεῖν, καὶ μηδέποτε αὐτῆς ἀποστήσεσθαι, ἢ ὅπως ἐν ἀποκλι-  
 „νεῖν, ἔτε διενεχθήσεσθαι ὑπὸ χυνῆμαι. Ὡσαύτως καὶ τὸ Πρω-  
 „τεῖον τῆς αὐτῆς Ἀγιωτάτης Ῥωμάνας Ἐκκλησίας, ὡς ἐν τῇ  
 „προτεθείσῃ Ἐκτάξει περιέχεται, πρὸς ὑπακοὴν τῆς αὐτῆς Ἐκ-  
 „κλησίας ἐκὼν γε ἡκὼν ὁμολογῶ, ἐπιγινώσκω, ἀποδέχομαι τε καὶ  
 „ἐκκσίως προσίεμαι. Αὐτὸς δὲ τὰ προτεθέντα πάντα, τά τε  
 „περὶ τῷ τῆς Πίσεως ἀλήθειαν, τά τε περὶ τὸ τῆς αὐτῆς Ῥω-  
 „μάνας Ἐκκλησίας Πρωτεῖον, καὶ τῷ τῶν Ἐπισκόπων ἐπίγνωσιν,  
 „καὶ ἀποδοχῇ, καὶ ὑποδοχῇ, καὶ μετ' εὐλάβειας θεραπείαν, καὶ  
 „ἐπιμονῇ ἄχρι τέλους τηρήσῃ, σωματικῶς ἐπομνὺς ὑπὸ χυνῆμαι  
 „τε καὶ ἐπιβεβαιῶ. Οὕτως αὐτῷ Θεὸς ἐπιβοηθοίη, καὶ τὰ Ἁγία  
 „ταῦτα Εὐαγγέλια. Ὁ Σκρινιάριος (107) ὁ Σακρίστας, ὁ χαρ-  
 „το-

(106) Παρὰ Ἀρδεῖνῳ ἐνθα σσημ: στήλη 701 — 702.

(107) Τὰ αὐτὰ Ὀφφίκια, πρῶτον μὲν Λατινιστὶ προενύκταται, ἔπειτα δὲ καὶ Ἑλληνιστὶ.  
 ΣΚΡΙΝΙΑΡΙΟΣ γὰρ ὁ Χαρτοφύλαξ. ΣΑΚΡΙΣΤΑΣ δὲ, ὁ Σκοφοφύλαξ.

„τοφύλαξ, ὁ Μέγας Σκοβοφύλαξ τῷ ἐν Κωνσταντινῆ πόλει Πατρι-  
„αρχεῖς Ἰωάννης Ἀναγνώσης„.

Ἐν μὲν ἔν τῇ ὀρκωμασίᾳ τῇ δε, καὶ τῷ τῶν Ἐπισκόπων  
Ἐπιτάγματι, ἐπιβεβαιῶται ἡ Λατινικὴ αὐτὴ Πίσις. ἐκ δὲ τῷ  
ἀκολούθῳ καὶ ἡ τῷ Ἀγίῳ Πνεύματος ἐκ τῷ Υἱῷ Ἐκπόρῳσις.  
Ἀλλ' οἱ Ἐπίσκοποι, καίπερ ἄχρι τέττα τὰ τῆς ἐνώσεως προαι-  
ρέμενοι, αἰ μὲντοιγε Λατίνους σφαλερῶς ἔχαιν περὶ τὴν Πίσιν,  
ὁμοθυμαδὸν ὠμολόγησαν οἱ πάντες, ὅτι ὅλως περὶ τῷ Δόγμα-  
τος τῶν Λατίνων ἀκέραιον ἦθελον. Τὸ δέ τοι σώολον τῆς διαπε-  
πραγμένης ἐνώσεως, περὶ ἐκείνα μόνον σρεφόμενον ὡς τὰ τρία:  
τότε Πρωτεῖον φημι τὸ τῷ Πάπα, καὶ τὴν Ἐκκλησίαν, καὶ τὸ  
Μνημόσυνον ὡς ἀνωτέρω εἰς πλάτος δέδεικται. Πῶς ἔν ὁ τοιός  
δε ὅρκος, ὡς ἐξ ἐπιτάγματος τῶν Ἐπισκόπων ἐπώμνυτο; —  
Εἶχε δὲ ὁ ὅρκος, καὶ τό: Οὕτως ἈΥΤΩ Θεὸς ἐπιβοηθοίη! Εἶ-  
δ' ἐπ' ὀνόματι τῶν Ἐπισκόπων ἐπώμνυτο, εἰπὼν ἔδει αὐτ' ἐκεί-  
νων αὐτῶν „ὅτως ἈΥΤΟΙΣ Θεὸς ἐπιβοηθοίη! — Εἶχε δὲ πάλιν:  
Ἐξ ὀνόματος τῷ ΘΕΟΥ, καὶ τῷ ἡμετέρῳ ΚΥΡΙΟΥ. ἀλλ' ὁ  
Ἀποκρισιάριος ἐκ εἶχεν ἐξ ὀνόματος τῷ ΘΕΟΥ, καὶ αὐτ' αὐτῷ  
τῷ ΘΕΟΥ, τῷ Ῥώμης Θρόνῳ τὴν ὑπακοὴν ὑπὸ χυνοῦ. Ταύτη  
τοὶ καὶ ὁ Ἰησοῦτης ΓΑΒΡΙΗΛ ΚΟΣΣΑΡΤΙΟΣ, ὁ μετὰ ΦΙΛΙΠ-  
ΠΟΥ ΛΑΒΒΕΟΥ Ἰησοῦτης καὶ τέττα, ἐν Παρισίοις κατὰ τὸ  
1671. Ἔτος τῆς τῶν Σωόδων Τόμης ἐκδεδωκώς, αὐτόθι ὑπο-  
σώαπτει: „Τοῖς αὐτοῖς σωείληπται ῥήμασιν, οἷς περ καὶ ὁ  
„προεκδοθεὶς ὅρκος, ὡς ἐξ αὐτῷ τῷ Αὐτοκράτορος ἐξ ἑ καὶ τὰ  
„κεχλωτά περ ὡς τῷ λόγῳ ἀνεπληρώσαμεν. Τί δ' εἶπερ ἐν τέ-  
„τοις αὐτοῖς ὁ Αὐτοκρατορικὸς ἀναγέγραπται ὅρκος ἀντὶ τῷ  
„Ἐπισκοπικῷ; Καὶ γὰρ εἰπὼν ὡφείλεν ὁ τῶν Ἐπισκόπων Ἀπο-  
„κρισιάριος: ὡς ἐξ ὀνόματος τῶν Ἐπισκόπων, καθάπερ ὁ τῷ  
„Καίσαρος εἰρήκει, ἐν ὀνόματι τῷ εἰρημένῳ Κυρίῳ με· αἵτινες  
„Φωναὶ ὡς παρεφθαρμένοι εἰσι, καὶ εἰς ταύτας μεταμεφθεῖσαι:  
„ἐξ ὀνόματος τῷ Θεῷ, καὶ τῷ ἡμετέρῳ Κυρίῳ. Οὐδὲ γὰρ ἐκεί-  
„νος δὴ περ τὴν Πίσιν ταύτῃ, ὡς ἐξ ὀνόματος τῷ Θεῷ ἀπεδέ-  
„χετο· ἢ γὰρ ἐπ' ὀνόματι τῷ Θεῷ, καὶ ἀντὶ τῷ Θεῷ, τῷ τῆς  
„Ῥωμάνης Ἐκκλησίας Πρωτεύῳ τὴν ὑπακοὴν ὑπὸ χυνοῦ. Ἐπει-  
„τα δὲ, τί ἄλλο αἱ Φωναὶ αὗται περὶ τὸ τέλος φασίν; Οὕτως  
„αὐτῷ ὁ Θεὸς ἐπιβοηθοίη· τὸ δ' ἀνωτέρω: Αὐτὸς δὲ τὰ προ-  
„τεθέντα πάντα κτ: ἐκείνο ἐστὶ τὸ ἐν τῷ ὀρκῳ τῷ Βασι-  
„λέως ἀναγινωσκόμενον: Καὶ αὐτὸν πάντα τὰ προτεθέντα„  
κτ: (108).

Ἀλλὰ

(108) Τὰ δ' αὐτὰ ταῦτα καὶ παρ' Ἀρδβίνῳ ἐπισημειωθέντα ἀναγνώσκειται ἐμοίως,  
ἐν τῷ Ζ'. Τόμῃ: τῶν αὐτῶ Συναδικῶν, σὴλη 702.

Τόμῃ: Β'.

Ο 000000

'Αλλὰ γὰρ δεδόσθω δὴ καὶ τὰς 'Επισκόπους παραπλήσι' ἅτλα ὑπὲρ τῆς ἐνώσεως γεγραφέναι· δεδόσθω δὲ καὶ αὐτὰς ἐπὶ τέτοις τὰς ἰδίαις 'Αποκρισιαρίαις ἀπεσαλκέναι, καὶ τῇ ἐνώσει καὶ αὐτὰς ἔτω σωθῆσθαι· τί ἔν ἡ τοιάδε συμβάλλεται ἐνώσει, ἐφ' ᾧ δειχθεῖη, τὴν ἐν τῷ Λαγδένῳ τότε συζῆσαν ἐκείνῳ Οἰκουμενικῷ εἶναι τῷ ὄντι Σιώδον; τὴν μὲν γὰρ πρὸς Λατίνους κοινωνίαν (ἔσω:) ἠσπάσαντο οἱ 'Επίσκοποι· ἐμὴν δὲ καὶ ὡς καθ' ἑαυτὴν ἔυτε καὶ καλῶς ἔχουσιν. Διωμολογῶντο καὶ γὰρ μετὰ τῶν περὶ τὴν Πίσιν σφαλλομένων σφᾶς αὐτὰς σωλιῶσθαι· καὶ τῆτο δὴ, ὡς τῶν κακῶν τὸ ἥττον προελομένους τῇ χείρονος· δεινῶν τινων πολέμων, καὶ σφαγῶν, καὶ ὀλέθρων ὑπὸ Λατίνων τοῖς 'Ανατολικοῖς ἐπιστοιμένους. Μᾶλλον δὲ, καὶ εἰς τὸ τὴν τοιάνδε, καὶ ἔτω πῶς αὐτοῖς προβαλλομένῳ εἰρήνῳ, αὐτοῖτε δὴ καὶ οἱ ἄλλοι ἔπειτα προσέσθαι, ἔχῃ ἐκόντες ἐνήχθησαν, ἀλλὰ πρὸς τῇ Δεσπόζοντος κατεπειχθέντες, ἀλλ' ἀπειλαῖς καὶ κολασηρίοις ἀναγκαζόμενοι. Καὶ τῆς τοιαύτης ἄρα ἐνώσεως τῇ παραδοχῇ, οἶοντ' ἂν οἱ Λατῖνοι, τὴν τῆς ἐν Λαγδένῳ Σιώδος ἐξουσίαν τε καὶ κυριότητα σφίσιν ἐπισπώσασθαι; ἢ οὐχὶ τῷ λόγῳ μάλισα τῷδε, πολλῇ τῇ πλάνῃ ἐλεγχθεῖεν ἂν ἐνέχεσθαι προδηλότερα; Δεδόσθω δὲ μὴ ἔτι καὶ τὰς 'Επισκόπους τῇ κατὰ τὴν ἐν Λαγδένῳ Σιώδον ἐνώσει σωθῆσθαι· ἀλλὰ μὴ παρὰ τῆτο καὶ τοῖς Σιωδοικοῖς φαίνονται καθυπογράψαντες ὅροις; Εἶδομεν γὰρ ἅτ' ἐπιμόνως τὰς αὐτὰς 'Επισκόπους, τὴν τῇ Παναγίᾳ Πνεύματος καὶ ἐκ τῇ Υἱῷ Πρόοδον ἀπαντωμένους. (109) 'Αλλὰ μὴ ἐπὶ τῆς αὐτῆς ἐκείνης Σιώδος, κατακρίσεως καθυποβάλλοντα ψήφοις (ἢ καὶ τῆτο ἀνωτέρω σιμείδωμεν) ὅσοι περὶ τόδε τὸ Δόγμα διαμφισβητῶντες εἰσὶν, ἀπλῶς ἀπαξάπαντες. Πῶς ἔν οἱ 'Ανατολικοὶ παραδεχθέντες εἶεν τὴν Σιώδον τὴν Λαγδενικῇ; ἢ πῶς τῇ τέτων συγκαταθέσει τε καὶ ἐπιδοκιμασίᾳ, τῇ τοιᾷδε Σιώδῳ προθήκη τις ἐξουσίας καὶ κύριος προσεπὶ γένειτο; Μόνος ἄρα Μιχαὴλ ἄχρι τέτ' Λατίνους περιλείπεται ὁ Αὐτοκράτωρ, ὁ τοῖς Σιωδοικοῖς αὐτῶν ὅροις ἐκείνοις ὁμόψηφος αὐτοῖς πεφωώς. 'Αλλ' ἔδ' ἔτος ἐλικρινῇ ἑαυτὸν εἰς τόδε παραχῶν διετέλεσεν, ὡς φθάσαντες ἔγνωμεν· ἔδ' ἡ χάριν καὶ αὐτὸς ὑπὸ Μαρτίνου τῇ Πάπα τῷ

(109) Τὸ γοῦν ἔτως ἀπὸ τῆς ἐξουσίας τὰς Λατίνους τῆς μετὰ τῶν ἀποπτυνόντων αὐτῶν τὸ Δόγμα ἐνώσεως, μὴ καὶ εἰς ἐλεγχὸν ἀδιαφορίας περὶ τὰ πιστόμενα αὐτοῖς ἀντιπεριστάει; ἐκείνο μόνον σκοπεῖν τε καὶ πρὸ παντός ἄλλου τιθέναι αὐτοῖς εὐκόσιν, ὅπως ἡ τῇ Παπᾷ Θρόνῳ ὑπὲρ ἅπαντα ἐπαιρομένη ὑπεροχὴ καὶ ἀκρότης τῆς 'Εξουσίας ἐπίσης, ὥστε καὶ τῆς 'Εσπερίας ἡδὴ, κατὰρξαι λήξεως; ἢ τί γὰρ καὶ λυῶσθαι διιχυρίζοιτο Λατῖνος τῷ 'Ανατολικῷ, τῷ ἀποσυγῆντι καὶ ἀποτροπιαζομένῳ ἀριδῆλως αὐτῇ τὸ Θρόνημα; ἢ περὶ τῶν ἀντιδοξέντων ὁ τὴν ἐνώσιν ἐμολογῶν, ἔχ' ὁ μὴ, τῇ ἀντικειμένῃ εἰσὶν Δόγματος.

τῷ τῷ ἀφορισμῷ ἐπιτιμῶ καδυποβεβληται. Τοιγαρὲν μόνοι παραλείπονται Λαῖνοι ὄντες, οἱ τῇ Σωόδῳ τάυτῃ καὶ παρσιάσαντες καὶ σωθέμενοι. Καὶ τίνι ἄρα τῷ προσώπῳ, ὡς Οἰκουμενικῶ ἀντικρυς ἡμῖν τῷ τοιάνδε θρυλλᾷσι Σωόδον;

Πρὸς δ' ἐπὶ τέτοις, ὡμολόγηται μὲν ἐπὶ τῆς Σωόδου ταύτης ἡ τῷ Ἀγίῳ Πνεύματι Ἐκπύρῳσις καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ, κατεκρίθησαν δὲ καὶ οἱ ταύτῳ ἀρνήμενοι· ἀλλ' ἐδὲν ὅμως περὶ τῷ Δόγματι ἐν τῇ Σωόδῳ διεξέτασαι, ἐδὲν ἀποδέδενται, πάντα πρὸς τὸ δοκῆν τῷ Πάπᾳ καὶ τοῖς Λατίνοις ἐτέθη. Οὐκ ἐν κατὰ τῷ ἐν ταῖς Νομίμοις τῶν Σωόδων ἐπικρατῆσαν σωήθειάν τε καὶ διατύπωσιν, ἐν αἷς ἀείποτε αἱ τῶν πισυτέων Ἀποδείξεις ἀπὸ τε τῶν ἀρχῶν τῆς Ἱερᾶς Γραφῆς, καὶ ἐκ τῆς τῶν Πατέρων μαρτυρίας ληφθεῖσαι πρὸ ὁδῶ ἐγίνοντο, πρὶν ἢ τὸν ὅρον προενεχθῶναι τε καὶ παραδοθῶναι, περὶ ὃ ἡ ἐξήγησις. (110) Ἐνθεντοὶ καὶ τῶν

(110) Τὴν τῆς Λεγδένου Σωόδου ταύτης ἐκτέλεσιν, Θεοφάνης ὁ Νοβογοροδίας Ἀρχιεπὶς ἐν τῇ Ἱστορίᾳ τῆς περὶ τῆς Ἐκπύρῳσις Ζητήματος, ἔτως ἡμῖν κομφῶς διαγράφει. „Ὡς ἐν παρέργῳ (Φησὶν) ἐνταῦθα τῷ Φιλοπραγμονῶντι Ἀναγνώστῃ, τῆς περὶ ἧς „ὁ λόγος Σωόδου τῷ Ἱστορίᾳ, ὑποτιθέμεθα ἡδύτερπῃ τε ἔσαν, καὶ ἔως σφίδρα „ἀναγνωσθῶναι ἀξίαν, ἔστι ὅλως Σχολὴ περίεση, ἀναλέξασθαι. Οὐδὲν ἐκεῖ σκυ- „θρὸν, ἐδὲ τραχυνόν· ἔστις ἕστις ὅλως ἀγών· ἀλλ' ἐφ' ἑκάστην Σωελδύ- „σεως, λαμπράτις σκηνὴ παραφαίνεται· οἷον ὅτι ὁ Ἀκρέτατος Ἀρχιερεὺς ὑπὸ τῶν „περιεσῶτων Διακόνων καλτιῖται, ἀποδύεται, „περιδύεται· καὶ οἱ δ' ἐαυτὸν ἐπιστρέ- „φει· ὅτε δ' ἐκ τῷ ἐδέθλῳ ἀνεγείρεται, ἴσταται, αὐτοῖς καθέζεται· ὁποῖα δ' ἐν „ἡχῃ τῶν τῶν ὕμνων ἀπάρεχεται; ὅστις δ' ὁ τῷ λαῷ παρακελεύσματος „(κλίνωμεν τὰ γόνατα.) τίς δ' ὁ ἀνθυπολαμβάνων; (ἀρατε.) ὀνομαστὶ γὰρ οἱ Τα- „ξερῶνικοι ἔτοι ἀναφέρουσι, ὅτι πολὺ τι οἶμαι τῇ Ἐκκλησίᾳ διαφέρων ἦν, τῆς „ὀψιγόνου ταῦτα εἰδέναι εἰσέπειτα. Μείλα δὲ δὴ τὰς τοιαύτας ἐπιτελεσίας καὶ „τὰς παιδαίους τῷ Πάπᾳ διαχηματίσεις, ἐκ' οἷον ὅτι καὶ ἐκκλησιάσαι τῆτον ἡ „Ἱστορία διέξασιν ἐκμελετήσαντα. Οἱ δὲ Πατέρες ἐκεῖνοι, ὅσοι γε καὶ παρῆσαν, „ἐδὲν πλέον, ἢ ψιλοὶ τῆς Κωμωδίας ὑπῆρχον θεάμονες· ἐδὲν αὐτοὶ διεπράξαντο, „ἐδὲν ἐφθόγγοντο. Ἐσαύτη δὲ ἐνήκμαζεν ἡδὴ ἡ βαρβαρότης, καὶ ἡ τῆς Ἐκ- „κλησιαστικῆς ἀπαιδευσίας διατυπώσεως.

Ἐπ' αὐτῆς τῆς Σωόδου μελᾶπεμπλον ἔδει παρῆναι, Θωμᾶν τε Ἀκυινάτιον τὸν „Δομινικανόν. καὶ τὸν Φραγκισκανὸν Βοναβενίεραν, τῷ διττῷ πολέμῳ σκηπῶ. „Ἀλλ' ὁ μὲν, καθ' ὁδὸν τὸ ζῶν ἐξεμέτησε· Βοναβενίερας δὲ, ἐν αὐτῷ Λεγδένῳ, „μήπω τῆς Σωόδου διαλυθείσης· ἦπερ δὲ καὶ πάνυ εὐκαίρως· τί γὰρ ἂν πράξαιεν, „ἢ πρὸς τίνα καὶ διαλεχθῆεν οἱ τηλικῶτοι Θεολόγοι; ὁ μὲν γὰρ Γραικὸς Ἀπο- „κρισιάρχιος, ὁ ἐξ ὀνόματος πρεσβύτων τῷ Ἀυτοκράτορι, ἦκεν ἐτοίμως ἔχων πρὸς „συγκλήθεσιν· ἄλλος δὲ, ὁ ἐξ ὀνόματος τῶν Ἐπισκόπων, ἐδέπω δὴ τότε ἐ- „πέπλαστο. Καὶ φασὶ μὲν τινες, καὶ τὸν Κωνσταντινουπόλεως Πατριάρχον· ἐκεῖ „παρῆναι· ἀλλ' Ἰσθᾶτος τῆτο πισυτέω ὁ ψωλός· ἐχ' ὅπως γὰρ οἱ τῶν Γραι- „κῶν Ἱστορικοὶ, οἷον Παχυμέρης τε, καὶ Γρηγοράς, καὶ ἄλλοι ἐδὲν τοιῶτον καδι- „σορεῖσιν· ἀλλὰ καὶ τῶν Λατίνων οἱ μὲν Γερμανὸν ἀναφέρουσι τὸν ἐπίπλαστον „ἐκεῖνον γεγονέναι Πατριάρχον, οἱ δὲ Παυλαλέοντα. Ἀλλὰ γὰρ ἀνωτέρω ἰδόντες „ἐφθόγγον, ὅτι Βέκκος ἡ ὁ Ἰωαννικαῦτα Πατριάρχων· Βέκκον δὲ μάλιστα εἰκός „ἡ καὶ παρσιάσαι, τὸν καὶ ἐπὶ τῷ Λατινικῷ δοξαν αὐτομολήσαντα. Ἀλλ' ἰδέσθαι καὶ ἡ θρυλλομένη ἐκείνη Λεγδένου Σωόδου.

Ο 000000 2



τῶν λοιπῶν Οἰκουμενικῶν Συνόδων ἀπασῶν ὑπὸ τῆς Παγκοσμίας Ἐκκλησίας ἀπαρατρέπτως πρεσβυομένων, αὕτη δὴ ἡ Σύνοδος ἡ Λαγδένιος, διὰ Συνόδου τῶν Ἀνατολικῶν ἰδίᾳ συγκροτηθείσης, ὡς αὐτίκα τῷ εἰμὼ ὁ Μιχαὴλ ἀπερῶαγη, ἐκσεύριται, καὶ καλεῖται, καὶ ἐδεμιάς ὑποδοχῆς ἐδέποτε ὑπὸ τῆς Ἀνατολικῆς Ἐκκλησίας ἡξίωται. Καὶ ἐνθεν ἄρα τηλαυγῶς παρίσταται, ὅσον ἀτόπως τῷ ἐν Λαγδένῳ Συνόδον ἐκέντω τοῖς Ἀνατολικοῖς Παῖδες Λαλίνων ἀντιπροτείνουσι.

Καὶ ταῦτα περὶ τῆς τῶν Ἐκκλησιῶν ἐνώσεως, ὡς ὁ Παλαιολόγος Μιχαὴλ ἀπεπεράσατο διαπράξαται.

ΠΡΑΓ-

## Π Ρ Α Γ Μ Α Τ Ε Ϊ Α ΙΘ'.

Ἐν ἣ ἀποδείκνυται, ὅτι ἡ ἐν Φλωρεντία Σινόδος ἐκ Ἑννομος  
ὡς πολλὰ γε καὶ δαίν ταῖς Οἰκουμενικαῖς τῶν Σινόδων  
ταύτῃ συγκαταλέγεσθαι.

Τὰ τῆς ἐν Φλωρεντία Σινόδου Πρακτικὰ ἐν χειρὶ περιφέρεται  
ταῖς ἀπάντων ὡς μηδ' ἐπ' ἀνάγκης εἶναι ὑπὲρ Λατίνων νυν τι  
προανατάξασθαι, εἰς αὐτὸ δὲ μᾶλλον δαίν ἐπ' εὐθείας λέναι τό γε  
προκείμενον· τῷτο δ' ἐστὶ τὸ δαῖξαι· τίνος γ' ἕνεκα αἱ Ἀνατολικαὶ  
Ἐκκλησίαι τῷ τοιαύτῳ Σινόδον δεόντως ἔς γε καὶ νυν ἐκσυ-  
ρίτθουσιν.

### § Α'.

Πρῶτον ἐν, τὸ τῆς Σινόδου ταύτης προηγούμενον μέρος, ἐν ταῖς  
περὶ τῆς Ἐφεσιακῆς ὁρᾶ ἐκείνης· (,ὅτι, ἄλλον Πίσσεως ὅρον, παρὰ  
,,τὸν τῆς ἐν Νικαίᾳ Σινόδου, ὁδὸν καὶ τὰς Ἐκκλησίαις ἐμπα-  
,,ρεισάγεσθαι,,) προκατὶ πάλῳ Διαλέξεσιν. Ἠγωνίζοντο δ' οἱ  
Λατίνοι, ὡς ὑπὲρ Ἱερῶν καὶ αὐτῆς Ἑσίας, δαῖξαι τὸν νῦν τῆς  
ὁρᾶς τῷτον εἶναι, τὸ μὴ δαίν ἐμπαρεισάγειν τῷ Συμβόλῳ, μόνον  
δὴ τὰ ἐπισφαλῶς ἔχοντα. Ἐνθεντοὶ καὶ τῆς Σινόδου τελευταῖον  
ἐκπερανθείσης, ἐπιμελὲς αὐτοῖς ἐγένετο ἀποφύγεσθαι· τὸ εὐλόγως  
ὑπ' αὐτῶν ἐσενώεσθαι τῷ Ἱερῷ Συμβόλῳ τῷ ἐξ Υἱοῦ Ἐκπό-  
,,ρῶσιν τῆς Ἀγίας Πνεύματος. Ἀλλ' ὅ,τι μὲν τότε πρότερον ἐν  
Φεβρουαρίᾳ διὰ τούτων Διαλέξεων παρὰ Λατίνων πρὸςτέθη· ὅ,τι  
δὲ δὴ καὶ ὑστερον ἐν Φλωρεντίᾳ παρὰ τῶν αὐτῶν περὶ τῆς  
Προσθήκης ὤρισται, τῷ ἐξαπάτῳ ὁμῶς πρὸ ὀφθαλμῶν αὐτοῖς  
ἵστησι, καὶ σαφῶς ἐξελέγχει, ἡ παραπλησία μὲν, πρὸς ἄλλον δὲ  
σκοπὸν μακρῶς διαφέροντα κινηθεῖσα, ἐπὶ ΛΕ'ΟΝΤΟΣ τῆς Γ'.  
Διάλεξις, καὶ ὁ ἐπ' αὐτῇ ὁρος. Ἐκεῖνος γάρ (ὁ ΛΕ'ΩΝ) ἐν τῇ  
προσδιαλέξει τῇ πρὸς τῆς εἰς Ῥώμην ἀποσταλέντας, ἐκ τῆς ἐν  
Ἀκνισγράφῳ Σινόδου Ἀποκρισιάρχης, εἰς πλάτος ἀπέδειξε τῷ ἐκεί-  
νῳ τῆς ὁρᾶς τῶν Σινόδων διάνοιαν εἶναι, τὸ μὴδὲ τ' ἀληθῆς δῆπρ-  
θεν θέμις εἶναι τῷ Συμβόλῳ ἐμπαρεισάγειν. Ἐκεῖνος τὸν τευθεν  
καὶ ὅρον ἐπὶ ἡνεγκεν ἐπιτάξας· „Ἀφαιρετέαν εἶναι ἀπὸ τῆς Συμ-  
Τόμ: Β'. Π πππππ „βόλῃ

„βόλε τὴν παρεσενεχθεῖσαν Ἐκπόρευσιν τῇ Ἀγίᾳ Πνεύματος καὶ  
 „ἐκ τῇ Υἱῷ“. Ἐκεῖνος καὶ μνημαῖον αἰδίου ἀνεσήλωσεν, ἐν ᾧ  
 χρυσεῖς Γράμμασι τὸ Ἱερὸν Σύμβολον ἀπαρাত্রώτως ἀνεγέ-  
 γραπτο ἄνευ τῆς Προθήκης, προσεπιθεῖς καὶ ὑπογραφῶ τοιάνδε:  
 ΛΕΩΝ ΚΑΤΑ ΖΗΛΟΝ ΤΕ ΚΑΙ ΠΡΟΦΥΛΑΚΗΝ ΤΗΣ ὉΡ-  
 ΘΟΔΟΞΟΥ ΠΙΣΤΕΩΣ ΤΑΔ' ΕΘΕΜΗΝ. Μᾶλλον δὲ καὶ προ-  
 στείθετο ἐπὶ τῆς Διαλέξεως ἐκείνης ὁ ΛΕΩΝ: „τοιαῦτα τινὰ  
 „προκείσθαι Ἐπιχειρήματα,“ (οἷς περ ἂν ἀποδαχθεῖη· δηλονότι,  
 τὴν τῇ ὄρᾳ ἐκείνῃ τῶν Οἰκουμενικῶν Σωόδων διάνοιαν εἶναι, τὸ  
 μηδὲ τ' ἀληθεύοντα ἐξεῖναι τῷ Ἱερῷ Συμβόλῳ ἐμπαρεισάγειν)  
 „ὅσπερ ἂν, ἔχ' ὅπως τοῖς Σοφοῖς ἀποχρήσειαν εἰς πληροφορίαν,  
 „ἀλλὰ καὶ τοῖς ἡττοῦ νοήμοσιν, εἰς ἀναγκαίαν ἐπικατάπεισιν.“  
 Ἐν ἥποτε ἄρα μοῖρα παρὰ δικαστῇ τῷ Λέοντι, οἱ ἐπὶ τῆς  
 Φερρηνικῆς Σωόδου σωεληλυθότες Λατῖνοι ταχθεῖεν, ὅποτε  
 πλείστα περὶ τῆς ἘΦΕΣΟΥ πρόεδρος ΜΑΡΚΟΣ διαλεγόμενος  
 ἔχ' οἷος τε πῆσαι ἐγένετο; Ἀλλὰ ταῦτα προαγαγεῖν περαιτέρω  
 παρήμι· ἐς πλάτος γὰρ τόδε τῆς ἐπιχειρήμα, τὸ ἐκ τῶν διαπραχ-  
 θέντων τῷ Λέοντι προήκται ἡμῖν, ἐπὶ τῆς Πραγματείας (1) ἐφ'  
 ἧς ἐδείκνυτο τῆς ἐν Ἐφέσῳ Σωόδου τὸν νῦν γενέσθαι, μηδὲ τὰ  
 ἀληθείας ἐχόμενα παρενιστάγειν ἐξεῖναι εἰς τὸ Ἱερὸν Σύμβολον.  
 Ὡς δὲ καὶ αἰχμώσθαι ἐπὶ τέτοις προσήκε Λατίνους, ὅτι ἀναι-  
 δῶς ἔγω, τάναντία τῆς Ἐκθέσεως, καὶ τῇ ὄρᾳ τῇ Γ'. Λέοντος,  
 (ἐφ' ᾧ τ' ἄλλα τῶν Ἐπιχειρημάτων, τὰ ἐν ἐκείνοις ἐπενεχθέντα,  
 παραλιπεῖν) ἡ Σωόδος αὐτῶν ἡ Οἰκουμενικὴ αὕτη, διεπρέσβε-  
 σεν, ἔφησεν, ἀπεφώτατο. Οἰκουμενικὴ γὰρ Σωόδος, ἡ γνησίᾳ τε  
 καὶ ἔννομος ἔσα, τὰ τῶν ἄλλων Οἰκουμενικῶν Σωόδων Θεωρί-  
 ματα ἡκιστα καταπατεῖ, ἐδὲ τάναντία τέτοις πρεσβεῖαι, ἐδὲ  
 τὰ ψευδέστατα κατασκοδάζειν ἐπαγωνίζεται ἐν πλείοσι ταῖς Σωε-  
 λούσεσιν, ἐδὲ τελευταῖον ἂ μὴ θέμις ἐπιδιορίζεται. (2)

## § Β.

Ἐξῆς μέρους τῆς Σωόδου, περὶ ἧς ὁ λόγος, κατινώλυσαν οἱ  
 Λατῖνοι ἐν ταῖς Προδιαλέξεσι ταῖς περὶ αὐτῇ τῇ Δόγματος  
 ἐφ' ᾧ

(1) Αὕτη δὲ τῶν Πραγματειῶν ἦν ἡ Ε'. ἦν μετιτέον ἄχρι τῆς τέλους.

(2) Ὅτι δὲ ἀθέμιτος, καὶ ὅπως ἄθεσμος εἶπεν, μετὰ τὴν ἐν Ἐφέσῳ Οἰκουμενικῇ  
 ἐκείνῃ Σωόδῳ, πᾶσα τε καὶ παντοία προθήκη περὶ τὸ Ἱερὸν Σύμβολον τῆς Πί-  
 στως ἐπιτολμηθεῖτα, (καὶ ἄλλως τῆς ἀληθείας μὴ παρεκκλίνουσα) καὶ αὐτοὶ  
 ἡμῖν συνομολόγησαν οἱ Λατῖνοι, καλῶς ἐπιστήσαντες. Ἰνατὶ γὰρ ἐδέχοντο ἄλλοτε  
 τῇ ἀθείᾳ ταύτῃ, τῇ προσιδέναι τὴν τῷ Συμβόλῳ, καὶ ἀναπτύσσειν ἐπὶ τὸ σαφέ-  
 ρερον τὰ κηθέντα τῶν Δογμάτων αὐτοὶ προχρήσασθαι, ἐφ' ὅσαισιν Σωό-  
 δαις, εἴτε πρὸς τῆς Φλωρεντιανῆς, εἴτε καὶ μετὰ ταύτῃ, ταῖς κατὰ τῶν ἐπι-  
 φρεσιῶν κρίσεων, ἐπιτετολμήκασιν; ἢ τῆς, ὡσαιεὶ γέρας ἴδιον, καὶ πρεσβεῖον ἀντι-  
 κρυσ τῇ περὶ ἧς ὁ λόγος Σωόδῳ ἀπέδωκαν αὐτεξιστάσαντες;

ἐφ' ᾧ δέξαι δηλονότι τῷ τῷ Πνύματος Ἐκπόρυσιν καὶ ἐκ τῷ  
 Υἱῷ διδάσκεισθαι μὲν ἐν Ἱεραῖς Γραφαῖς, ἐκδιδάσκεισθαι δὲ καὶ  
 ὑπὸ τῶν Θεασεσίων Πατέρων, τῶν τε Ἀνατολικῶν, καὶ τῶν Δυ-  
 τικῶν καὶ ταύτῃ ἔτω ψήφῳ κοινῇ ὑπό γε τῆς Ῥωμάνας καὶ  
 Λατινίδος Ἐκκλησίας, ἐκ ἔσιν ὅτε μὴ ὡς Δόγμα τῷτο ὑπάρξει  
 ἀραρότως διαπρεσβούμενον. Ἀλλ' ὅσα μὲν πρὸς τῷ Ἱερᾷ Γρα-  
 φῷ ἐπανήκει, ἔδεν ἄλλ' ἢ ἐπαγωγαῖς τισιν ἀτόποις, ὡς ἐν πλείοσι  
 Πραγματείαις ἀνωτέρω δέδεικται, τοῖον δὲ Δόγμα παρασιωῶν.  
 τῶν δέ τοι Μαρτυριῶν τῶν ἐκ τῶν Ἀνατολικῶν Πατέρων, πολ-  
 λὰς μὲν κακῶς ἐρμηνεύοντες, πολλὰς δὲ καὶ παραφθείροντες προη-  
 νέγκαντο ὡς ἐν τῇ Πραγματείᾳ τῇ περὶ τῶν χρήσεων τῶν ἐξ  
 Ἑῶας Πατέρων, ἃς ἡμῖν Λατῖνοι προβάλλοντες, καὶ τῇ περὶ τῶν  
 Παραφθορῶν τῶν ἐν τοῖς ἐκείνων Συγγράμμασι γεγρονειῶν, ἐφθῆ  
 ἀποδεχθέν. (3) Ἐκ δὲ τῶν πρὸ τῶν ἄλλων ὡς, τὰ ΒΑΣΙΛΕΪΟΥ  
 παραπεποιήμενα, περὶ τῷ ἀρχῷ τῷ Γ'. τῶν κατὰ Εὐνομίαν Βιβλίων,  
 καὶ τὸ ἈΘΑΝΑΣΙΟΥ Σύμβολον μᾶλλον δὲ (ὅπερ ἦν τὸ χαίρι-  
 ζον) καὶ αὐτὸ τὸ τῆς Β'. ἐν Νικαίᾳ Σωόδῃ Σύμβολον τῆς Οἰ-  
 κουμενικῆς. Τὸ μὲν ἐν πλείστον τῶν ἐν τῷ ἑτέρῳ τῷδε Μέρει τῆς  
 περὶ ἧς Φαμὲν Σωόδῃ Σωελύσεων, περὶ τὰς ἀντιδιαλέξεις δια-  
 τέτριπται, τὰς περὶ τὸ παρεφθαμένον ἐκείνο χωρίον τῷ Βασι-  
 λείῳ καὶ τὸ ἕτερον, τὸ ἐκ τῆς ΙΖ'. Ομιλίας τῷ αὐτῷ, τῆς εἰς τὸ  
 Βάπτισμα. Ὡς εἶπερ ἄρα ἐπὶ ταῖς δισσοῖς ταῖς δε μαρτυρίαις ἢ  
 τῶν Λατίνων δόξα, ἐπὶ κρηπίδι βασιμωτάταις ἐδράζοιτο, ὅποτε  
 καὶ ἐξ αὐτῶν τῶν παρ' αὐτοῖς Λατίνοις ἐκδεδομένων τῷ Βασιλείῳ  
 ἐπανατυπώσεων, ἔτως ἐκάτερον τῶν χωρίων ἀναγινωσκόμενον  
 φέρεται, ὡς τιτωκαῦτα ΜΑΡΚΟΣ ὁ ΕΦΕΣΟΥ κατὰ τὸ ἀλη-  
 θές διετένετο. Ἀλλὰ καὶ τῷτο ἡμεῖς δι' ἄλλων παρὰ ταῦτα  
 λόγων ἐν ταῖς ἀπομνημονοβύθαις Πραγματείαις ἀποδείξαντες  
 ἐφθῆμεν. Καὶ μὴ προσέτι, καὶ τὰς τῶν Δυτικῶν ὁμοίως Πα-  
 τέρων μαρτυρίας, ἃς παρήγαγον οἱ Λατῖνοι, παρεφθαρμένας καὶ  
 ταύτας, ἐν Πραγματείᾳ (4) τῇ περὶ τῶν Παραφθορῶν τῶν ἐν  
 ταῖς ῥήσεσι γενομένων ταῖς τῶν Λατίνων Πατέρων, δέδεικται.  
 Δέδεικται δὲ, καὶ ὡς ψυδῶς παρ' αὐτοῖς ὑποτιθέμενον ἐστὶ, τὸ  
 ἀπαραλλάκτως τε καὶ συμφώνως ἐν ταῖς Λατινικαῖς Ἐκκλησιαῖς  
 ἐς αἰὲν γενέσθαι πρεσβυδομένῳ τῷ Ἐκπόρυσιν τῷ Ἀγίῳ Πνύμα-  
 τος καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ. Ὅσαι γὰρ ἔρεις τε καὶ φιλονεικίαι, (ἐφ' ᾧ  
 τὸν πρὸ τῷ χρόνον σιγῇ παρελθεῖν) ὅσαι δ' ἀντιθέσεις, καὶ δια-  
 μάχαι, μέσον αὐτῶν ἀνέφυσαν Λατίνων, ἐξ ἧς τῆς Θ'. Ἐκατον-  
 ταετη-

(3) Ἐν Πραγμ: Β'.

(4) Ἐν Πραγμ: Γ'.



ταετηρίδος τῶν ἀπὸ Χριστοῦ ἐνιαυτῶν ἤδη ἐναρξομένης, τὸ Δόγμα ἐνιοι ἐκείνο ἐν τῇ Λατινίδι ἐνεισήγαγον Ἐκκλησίᾳ, διὰ Πραγματείας ἰδιαιτέρας (5) ἡμῖν ἐξιζόρηται. Ἐπειτα καὶ τὸ Δόγμα αὐτὸ, ὑπὲρ ὃ σπαδῇ τοσαύτῃ διηγωνίσαντο, καὶ ὅπερ τέως καὶ διὰ τῶ ἐπενεχθέντος ὄρα προσεπικυρώσασθαι διεσπῆδασαν, ἐχὼ μικρὸ τινος λόγῳ ἦν, ἀλλὰ καὶ αὐτῇ τῇ Ἀγίᾳ Γραφῇ, καὶ πάσῃ καθόλου τῇ ἐν ταῖς Ἱεραῖς Συνόδοις, καὶ τοῖς τῶν Πατέρων Συγγράμμασιν ἐγκαταλειφθείσῃ ἡμῖν παραδόσει φέρεται ἀντιστρατόμενον, αὐτάς τε τὰς τῆς Χριστιανικῆς Πίστεως ἀρχὰς καὶ τὰ θεμέλια προθέλυμνα ἐστὶν ἀνασπῶν, ὡς ἀρχὰς τε δισσὰς, ἐκ δὲ τῶ ἀκολούθῳ καὶ Θεὸς δύο, ἐθνικῶς παρεσάγον· ὡς ἐν πλείοσιν ἀλλὰ καὶ Πραγματεαῖς καὶ τῷ τοῦ δεδεικται. Καὶ ἡ τοιαύτη δ' ἐν ἁρᾷ Συνόδος Οἰκουμενικὴ ἔσῃ ῥηθείη, ἐνθα ὡς ἐπὶ παιδιᾷ, διὰ σοφιστικῶν τινων Συμπερασμάτων ἢ Ἱερᾷ Γραφῇ βεβηλῆται; ἐνθα πρὸς νῦν τὸν ἀρέσκοντα αἱ τῶν Πατέρων Μαρτυρίαι διασρέφονται; Ἐνθα τέως ἀνέκλειπτον τινα τῇ Λατινικῇ Ἐκκλησίᾳ τῷ περὶ τὸ Δόγμα τότε συμφωνίαν τε καὶ σωάνεσιν ἐς αὐτὴν γενέσθαι, δι' ἀκροάτης τῶ ψεύδους ἐπισυσσάθῃναι σπαδάξεται; Οὐχ ἡ διαστροφῇ, ἐχ ἡ παραφθορά τε καὶ παραποίησις χώραν ἔχει ἐν ταῖς Συνόδοις, ἀλλ' ἡ ἀλήθεια μόνῃ τῆς ἀληθείας προΐσταται. Ταύτη τοι καὶ οἱ ἐκ τῶ τῶν Μονοθελητῶν Κόμματος, ἐπεὶ τὰ Πρακτικὰ τῆς Οἰκουμενικῆς Ε'. Συνόδου ἐάλωσαν παραφθέραντες, ὑπὸ τῆς ἐφεξῆς συστάσεως Οἰκουμενικῆς Σ'. κατὰ κρίσει καθυπεβλήθησαν περὶ ὃ ἀλλὰ καὶ ἔρηται. Ἀλλ' Οἰκουμενικὴ Συνόδος αὕτη εἴη, ἐν ᾗ, Δόγμα τὸ τῇ Ἱερᾷ Γραφῇ, καὶ ταῖς Συνόδοις, καὶ τοῖς Πατράσι, μᾶλλον δὲ καὶ αὐταῖς ταῖς βασιμωτάταις ἀρχαῖς τῆς εἰς Χριστὸν Πίστεως ἀντιπίπλον προσατόβεται, σωίσαται, δογματίζεται; Εἴεν μὲν δὲ οἱ ἐπὶ Φλωρεντίας ἐξ Ἀνατολῶν καὶ Δυσμῶν παρεσιάσαντες Πατέρες πολλῶ ἔτι πλείονες τὸν ἀριθμὸν, ἢ ὅσους σωεληλυθότας ἀκόμεν, ἦν μὴ καὶ ἡ ἀλήθεια ἐκείσε ἐπισωῆσῃ, εἰ Δόγμα ψεύδους ἐφωρίσθῃ, ὅποσος ἂν καὶ γένοιτο ὁ τῶν σωελθόντων Πατέρων ἀριθμὸς, ἐδέποτ' ἀληθῆ ἢ Οἰκουμενικῶ ἔσαν ἀναδείξει τῷ Συνόδον. Διὰ γὰρ τῷ καὶ ἡ μὲν Συνόδος ἢ κατὰ Νίκαιαν συσῆσα τῇ Ἐκκλησίᾳ παραδεκτῇ, ἢ δ' ἐν Ἀριμίνω, καὶ τοι γε σωδρομῇ πλειόνων ἀριθμῶ Ἐπισκόπων συγκροτηθεῖσα, ἀπόβλητος ὅτι τῷ καθολικῶ τῆς Πίστεως παράδοσιν, τῷ ἐπὶ ταῖς Ἱεραῖς Γραφαῖς, καὶ τοῖς τῶν Πατέρων Συγγράμμασιν ἐπιστηριζομένῳ, ἐδεμῖα Συνόδος οἷα τε ἐστὶ καθελεῖν, ἐδὲ δὲ ὅρα τινὸς, οἷον ἂν περ ἀνθυπενέγκοι, αὐτῷ παραγράψασθαι.

§ Γ'.

(5) Ἐν Πραγμ: Δ'.

## § Γ'.

Ἀλλὰ τρίτον, ὡς ἐπ' αὐτὸς ἐλθεῖν τὰς Πατέρους τὰς Ἀνατολικὰς, τὰς ἐν τῇ Συνόδῳ ταύτῃ συναγερθέντας· μήποτε ἄρα, ἐφ' ὅσον ἐκείνων ἕκαστος ἐλευθέρως ἐφρόνει, ἐφ' ὅσον ἐπ' ἀδείας ἠκμαζον αἱ πρὸς Λατίνους Διαλέξεις, ἐνέδωκάν πως οἱ Ἀνατολικοὶ λόγοις τισὶν ἡττηθέντες, καὶ τῇ Λατινικῇ δόξῃ προθέμενοι; ἠκιστα πάντων. Ἦν μὲν ἔν, καὶ ἔστιν ὡς εἰκὸς ἡ πρώτη μεταξὺ τῶν Ἐκκλησιῶν διαζήτησις, ἡ περὶ τῆς τολμηθείσης προθέσεως. Καὶ δὴ ὡμολόγηται μὲν τὸ τέως ΜΑΡΚΟΣ ὁ ἘΦΕΣΟΥ, ὡμολόγησαν δὲ ἔπειτα καὶ οἱ Ἀνατολικοὶ, τὰς Ἐκκλησίας ἐς αἰὶ διώσθαι συναφθῆναι ἐν ἀληθινῇ καὶ βεβαίᾳ τῇ ἐνώσει, ἀρθείσης ἀπὸ τῆς Συμβόλου τῆς γενομένης προθέσεως. Ἀνερόβνᾳθω δὴ τὰ τῆς ἐν Φερρὰρῃ Συνόδῳ Πρακτικὰ· ἀναπτυσσέσθωσαν οἱ περὶ τῆς Συνόδου ταύτης Συγγράμματα· ἔσθ' ὅς ποτὲ τῶν Ἀνατολικῶν, ἦτοι ἐν αὐταῖς ἡδη συγκροτημέναις ταῖς περὶ τῆς προαθήκης Διαλέξεσιν, ἢ καὶ μετ' αὐτὰς παυσαμένας, διωμολογηκῶς ἀνεγνώσθῃ καὶ κατανύσας, ὡς ἐξὼ τῷ γε Πάπᾳ, ἢ τοῖς Λατίνοις, τὸ τυχὸν ὀτιῶν, (καὶ ἄλλως ἀληθεύον ἢ) ἐν τῷ Συμβόλῳ παραιρενέγκασθαι; Οὐδεὶς εἰδὼς. Τίςιν ἄρα λόγοις οἱ Ἀνατολικοὶ ἔπειτα ἡττηθέντες καθυπογράψαι τῷ ὄρῳ προήχθησαν, ὡς ἐν τῷ Συμβόλῳ ὁρθῶς οἱ Λατῖνοι διασώξουσιν τὴν προαθήκην τῆς τῆς Ἁγίας Πνεύματος καὶ ἐκ τῆς Τίτῃ Ἐμπορεύσεως; Πάλιν: ἐφ' ὅσον μὲν ἐν Φλωρεντίᾳ ἐφῆτο ἐλευθέρως περὶ τῆς Δόγματος διαλέγεσθαι, εἰδότας οἱ Ἀνατολικοὶ προσεχώρουν Λατίνοις, ἀλλ' ἐπίσης ἐπὶ τῆς ἐξ ἀρχῆς ὑπάρχον μένοντες Πίσεως. Ἀρ' ἐν τοῖς παρὰ τῶν Λατίνων ἔπειτα λόγοις ἀναπειθέντες, τῷ Λατινικῷ καθυπογράψαι προήχθησαν Δόγματι; Πρὸς δ' ἔτι: ἐπεὶ σωιδῶν ὁ Βασιλεὺς, ἀτελεσφόρητα προσδιαλεγόμενοι εἶναι τὰ τῆς ἐνώσεως, πάντας τοῖς Γραικοῖς ἀπηγόρευσε περαιτέρω μετὰ Λατίνων Διάλεξιν, σωζομένης ἔτι δὲ καὶ τιωικαῦτα τῆς ἐλευθερίας, ὁ ὑπὸ Λατίνων προενεχθεὶς ὁρος περὶ τῆς Ἐμπορεύσεως τῆς Ἁγίας Πνεύματος καὶ ἐκ τῆς Τίτῃ, ἀποδοκίμασαι παρὰ πάντων. Μᾶλλον δὲ καὶ αὐτὸς ὁ Πρωτοσύγκελλος ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ, καὶ ὁ Κιαίβης Μητροπολίτης ἸΣΙΔΩΡΟΣ, καὶ ΒΗΣΣΑΡΙΩΝ ὁ Νικαίας, καὶ τοὶ διάθερμοι ὄντες τῆς ἐνώσεως προαγωγῆς, συνάμα τῷ Μιτυλώῃ, ἕτερόν τινα σωεβέλευτον ἐνώσεως ὅρον σιωπαχθῆναι δεῖν ὡς αὐτόπῃς δὴ καὶ ἀντήκοος γεγονῶς τῶν πραγμάτων ΣΤΑΒΕΣΤΟΣ ὁ ΣΤΡΟΠΟΥΛΟΣ μαρτυρεῖ, ἐν τῇ Ἱστορίᾳ τῆς Φλωρεντινῆς Συνόδου, Τμήμ: Η'. Κεφ: ΙΔ'. Καὶ μὴν, τό γε μετὰ ταῦτα τῶν Ἀνατολικῶν οἱ πλείοσι τῷ προκαταγνώσθῃ ὑπ' αὐτῶν ὄρῳ ὑπέγραψαν· ἐκδὲν λόγοις διήκεθεν ἄλλοις μακρῶ δια-

Τόμ: Β'.

P rrrrrrr

Φέ-

φέρουσιν εἰκὸς οἶεσθαι· πολλὰ γὰρ καὶ δὴ τὰ ἀποδείξει ταῖς τῶν Λατίνων καθυπενεχθέντας τὰς Ἀνατολικὰς κινηθῆναι, εἰς τὸ δι' ὑπογραφῆς τὸ Δόγμα κυρῶσαι, καὶ τ' ἄλλα τὰ τοῖς Λατίνοις ἀρέσκοντα. Ἀμέλει τοι ταῖς τὰ Ἀυτοκράτορος, πῇ μὲν προῤῥοπαῖς τε καὶ παρακλήσεσι, πῇ δὲ θωπείαις τε καὶ ἐπαγωγαῖς, πῇ δὲ καὶ ἐπαπειλήσεσι καὶ ἐκδειματώτεσι κινηθῆτες· ἢ γὰρ καὶ τῇ ἀδημονίᾳ καὶ τῷ ὄχλῳ ἐπαχθόμενοι τὰ ἐπὶ τῆς ξένης διατρέξιν, καὶ τῶν ἐν χρήμασιν ἐπιβοηθημάτων τῇ σπάνει καὶ τῇ ἐνδείᾳ ἐκπιεθέντες, χάρας τελοῦταῖον τοῖς Λατίνοις ὑπέχον. Ἐπεὶ γὰρ ὁ Βασιλεὺς σωροῦν οὐκ εἶχεν, ὅθεν ἂν, ἀντὶ τῆς παρὰ Λατίνων ἐπικυρίας, ἑαυτὸν τε δὴ καὶ τὴν πόλιν κατὰ τῶν ἐπικειμένων διασώσειε Τέρκων, ὅπως δὴ καὶ γένοιτο ἀμωσγέπως, ἐλπίδι τῆς παρὰ Λατίνων σωαντιλήψεως, τὴν μετὰ τῶν ἐνωσιν εἰς πέρας προέθετο ἀγαγεῖν· ταύτητοι καὶ μηδὲν εἰς τὸ σωτηλέως τὰς Διαλέξεις ὁρῶν, τὴν τῶν χρησιν ἀπειρηκώς, πρὸς ἄλλα μέσα ἀπείδεν, οἷς περ ἂν, τὰς οἰκείας τοῖς Λατίνοις σωάψειν. Ἐπὶ ὧν ταύτας τὰς συμβουλίας μόνος μετεπέμπετο τὰς μνημονοῦθέντας: Γρηγόριόν τε καὶ Ἰσίδωρον καὶ Βησσαρίωνα ὁ Ἀυτοκράτωρ, ὡς ἐν μάλα τῇ ἐνώσει σωηγοῦντας αὐτῷ ἐπιστάμενος· μαρτυροῦντος καὶ τὸ Συμβούλου, Τμήμ: Η'. Κεφ: Δ'. Καθάπερ ὧν καὶ αὐτὰ τὰ Πρακτικὰ τῆς ἐν Φλωρεντ: Συνόδου, τὰ Ἑλληνιστὶ μὲν ἐκδοθέντα, ὑπὸ δὲ Ἰωάν: Ματθ: τὰ Καρυοφύλλου (6) ἐκλαβινθέντα, περὶ τὸ τέλος τῆς ΚΕ'. Σωελδύσεως, αὐτίκα σωάπησι, καὶ Ἰσίδωρον, καὶ Βησσαρίωνα, ἐπιδοκιμάσας τὴν μετὰ τῶν Λατίνων ἐνωσιν.

Τοιγαροῦν ἐπεὶ παντοίως ἀπεπειράσατο ὁ Ἀυτοκράτωρ, ἀπὸ βελῆς τῶν εἰρημένων τριῶν, τὴν μετὰ Λατίνων ἐνωσιν δὲν ἀπεφύνατο περαινθῆναι, εἰ μόνον ἔτοι τὴν Ἐπιστολὴν παραδέξαιντο τὰ Ἱερὰ ΜΑΞΙΜΟΥ, περὶ ἧς ἐν οἰκείῳ τόπῳ διήλθουμεν. (7) Ταῦτα γὰρ τὰ Βασιλέως προβαλλομένων, συγκεκλημένων

(6) Ὁ Καρυόφυλλος, ἢ Καρυοφίλης ἔτος, ὁ ἔς γ' ἐπὶ τὸ 1633. ἔτος βίβας, Κρήτης μὲν ἦν γέννημα, τῆς δὲ Ῥώμης τιθιμένα τε καὶ ἀνδράποδον· ὡς καὶ Πέτρος Ἀρκεδίου ὁ Κερκυραῖος ὁ ἐκείνῳ σύγχρονος, καὶ Λέων Ἀλλάτιος ὁ Χῖος, ὁ μετ' ἐκείνου εἰς πολὺ ὕψηρον. τὰ ἐν Καρυοφύλλῳ τέττα, μεταξύ τῶν ἄλλων, ἃ καθ' ἧς ἀπέστη Ἐκκλησίας σωέγραψε (περὶ ὧν ὄρα Φαβρίκιον Βιβλιοθ: Ἑλλιν: Τόμ. 1. Σελ: 414 — 416.) καὶ ἡ τῆς τῆς Φλωρεντίνης Συλλογῆς Ἱστορίας, τῆς ὑπὸ Θεοδώρου τῆς Ξανθοπέλας τῆς Μεγάλης Σκοφοφύλακος Ἑλληνιστὶ σωταχθείσης, ἐπὶ τὸ Λατινικὸν ἐστὶ Μετάφρασις. Καθάπερ καὶ ἡ τῶν φερομένων τριῶν Εἰρηνικῶν Λόγων Γεωργίου τῆς Σχολαρίου, καὶ τῆς τῆς Ἰωσήφ τῆς Μεθώνης, καὶ τῆς Γρηγορίου τῆς Πρωτοσυγκέλλου τῶν Ἀπολογιῶν, κατὰ τῆς Μάρκε τῆς Ἐφέσε Ἐπιστολῆς. Ἀ' δὴ πάντα Ἑλληνιστὶ καὶ Λατινιστὶ τοῖς τῆς Βιβλίου, καὶ τῆς Λαβέας, καὶ Ἀρδεῖας Σιωδικαῖς ἐκδομένα ἐμφέρεται.

(7) Ὅρα ἐν τῇ Α'. Πραγματ: ἐπὶ τῆς Ζ'. Ἐκατονταετ: Καὶ ἐν Πραγματ: τῇ ΙΕ'.

νων ἤδη καὶ τῶν ἄλλων Ἀνατολικῶν, οἱ μὲν σωετίθεντο, οἱ δὲ, ἐδὲ τὴν ἔτις ἐπιχειριζομένῳ ἔνωσιν ἐπιδοκιμάζοντες ἦσαν, ὡς ὁ ΣΥΛΒΕΣΤΡΟΣ διέξεισι Τμήμ: Η'. Κεφ: Ε'. "Ενθεντοι καὶ νὸς Ἐνώσεως σωεγράφη Τόμος ἐκ Βασιλικῆς Ἐπιτάγματος τῆ δὲ Τόμος ὁ νῆς, τῶν μὲν Λατίνων ὁμολογῶντων τὸ "Αγ: Πνεῦμα ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱῆς, ὡς ἐκ μιᾶς ἀρχῆς ἐκπορεύεσθαι, τῶν δὲ Γραικῶν, ἐκ Πατρὸς μὲν ἐκπορεύεσθαι, τῆ δὲ Υἱῆς ἴδιον εἶναι, ἐξ αὐτῆς τε ἐκπηγάσθαι, καὶ παρ' ἀμφοτέρων, Πατρὸς δηλ: καὶ Υἱῆς, κατ' ἑσῖαν προχῆσθαι δογματίζοντων. ἐντεῦθεν δὴ καὶ Γραικὸς καὶ Λατίνος, εἰς μίαν πάλιν Ἐκκλησίαν καὶ τὴν αὐτὴν συναλίσσεσθαι. (Σύλβεσρ. Τμήμ: Η'. Κεφ: ΙΖ'.) Ἀλλ' ἐδὲ ταῦτα πόλιν ἤρεσκε τοῖς Ἀνατολικοῖς. Ψήφων γὰρ ἐπενώεγμεν, δυωκαίδεκα μὲν οἱ ἀπονδύοντες ὑπῆρξαν, δις δὲ τοσῶτοι, οἱ ἐπιδοκίησαντες. (Σύλβεσ: Ἀτ: Κεφ: ΙΗ'.) Καὶ ἐδ' αὐτοὶ δ' οἱ Λατῖνοι τὸν δε τὸν ὑπὸ τῆς Ἀυτοκράτορος προτεθέντα ὅρον εἰς ἔνωσιν προσέσθαι τὸ παράπαν ἠξίωσαν· μὴ ἂν ἄλλως εἰπόντες ἐνῆσθαι ἔχαι, ἣν μὴ ἀπλῶς οἱ Ἀνατολικοὶ τῷ Δόγματι τῷ κατ' ἐκείνης καθυπογράψαιεν. (Συρόπ: ἐν Κεφ: ΙΘ'. καὶ ὁ ῥηθῆς Συγγραφεὺς τῶν Πρακτ: τῆς ἐν Φλωρεντ: Σωόδου, ἐν Σωελ: ΚΕ'.) Οὐμὼ ἄλλ' ὅτι καὶ τοιαῦτ' ἄτλα ἐπὶ τῇ ἐνώσει διεπραγματεύθη, μαρτυρεῖ καὶ ἸΟΥΛΙΑΝΟΣ ὁ Καρδινάλιος παρὰ ἈΝΔΡΕΑΙ τῷ ἐκ τῆς Ἀγ: Σταυρῆς, (8) ἐν Σωελόβ: ΚΒ'. τῆς Φλωρεντ: Σωόδου, ἐν Τόμ: ΙΓ'. τῶν Σωοδ: σήλη 1159. (9) „Τέως „γὰρ ἐδόκει (Φησὶ) τῷ Κυρίῳ Ἀυτοκράτορι καὶ τοῖς Γραικοῖς, „πάνυσασθαι μὲν τῆ διαλέγεσθαι, ἐφ' ὠρισμένας δέ-τινας σωελθεῖν „διαπραγματεύσεις, ὡς εἰς πέρας ἦξαι ἔτις ἐλπίζοντες. „Ἐβόλοντο δὲ μὴ πολλὰς εἶναι τὰς εἰς τῆτο σωερχομένους. Ἐφ' „ὧ δὲ τῷ θελήματι αὐτῶν καθυπέσθαι, ἐκ ἣν ἀπάσας ἀνερωτη- „θῶμαι τὰς ὑμετέρας Πατρότητας, ἀλλ' ἐπὶ τῷδε τινὲς διετάχθησαν. „Ἐπεὶ δὲ ἡ περὶ τῆς Ἐκπορεύσεως ὑπόθεσις ὧ ἢ δυχερεστέρα, „περὶ ταύτης ἤρξαντο πλείονα πραγματεύεσθαι, ἐλπίζοντες ὡς „ὧ τὰ περὶ ἐκείνης συμπερανθεῖν, ἐκ ἣν πολὺ τι διαφορὰς ἐξῆς „ὑπολείποιο. Καὶ πολλὰ μὲν ἐπηκέσθησαν αἱ δυσκολίαι, πολλοὶ „δὲ πρὸτέθεισαν καὶ οἱ τρόποι. Πρῶτον μὲν ἔφασκον οἱ Γραι- „κοι,

(8) Οὗ δὲ Ἀνδρέας ἔτος ὁ ἐπικαλούμενος De S. Cruce (Ἀπὸ τῆς Ἀγ: Σταυρῆς) Πατρίκιος ἦν ἐκ Ρώμης, καὶ τῆς Ἀποστολικῆς Καντισορίας Σωήγορος (Advocatus.) ὅς τῇ Σωόδῳ παρῶν, τὰ ἐκατέρωθεν κατὰ τὰς Προδιαλέξεις λεγόμενα ὑποδεχόμενος, εἶα δὴ Νοτάριος, ἀνεσημεῖτο ὡς Φησὶν Ὁρᾶτιος ὁ Ἰεζινιανός, ὁ τῆς Βατικανῆς Βιβλιοθ: τὴν Φυλακίῳ πεπισθόμενος ἐν τῷ Προλόγῳ τῆς Συλλογῆς, ἣν σωετάξατο, τῶν Πρακτικῶν τῆς ἐν Φλωρεντίᾳ Σωίδου. Παρὰ Ἀρδανῶν Τόμ: Θ'. σήλη. 671. — 672

(9) Παρὰ Ἀρδανῶν Τόμ: Θ'. σήλη 979. 980.



„καὶ, ὅπως ἂν ὁριθῇ ἐκπορεύεσθαι τὸ Πνεῦμα ἐκ Πατρὸς διὰ  
 „τῆ Υἱᾶ· ὑπό γε μὴν τῶν ἐπὶ τέτῳ τεταγμένων ἀπεβλήθη ἡ  
 „ὁδὸς αὕτη, πολλῶν ἕνεκα· πρῶτέθῃ δ' ὁδὸς ἑτέρα, ἣν αὐτοὶ  
 „ὁμολογήσωσι, καλῶς μὲν καὶ ἡμᾶς κατέχουν, καλῶς δὲ καὶ  
 „αὐτὰς πρεσβεῖν κατὰ νῦν γε τὸν ἴδιον. Ἀλλὰ καὶ αὕτη ἡ  
 „ὁδὸς παρ' ἡμῶν ἀπεκράθη, παρὰ τὸ μηδεμίαν τὸ ἀληθεῦς  
 „διαίρεσιν ἐπιδέχεσθαι. Εἴτα καὶ ἄλλη δέδοται, τὸ διασαφηθῆ-  
 „ναι προχέσθαι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱᾶ, ὡς τῶν  
 „Γραικῶν ἀποτρεπομένων. τὸ ῥῆμα τῆ ἐκπορεύεσθαι. (10) Ὅφ'  
 „ἡμῶν δὲ καὶ ἡ ὁδὸς ἀποσεσύρικται αὕτη, διὰ τὸ τὰ τοιαῦτα  
 „ῥήματα, ὡς ὑπὸ ἀμφιλογίᾳ γινόμενα, μὴ δέον ἐν τῷ ὄρω τί-  
 „θεσθαι. Ἐπειτα δ' ἐλέγετο, ὡς ἔκ τῷ ἡ διαφορᾷ, εἰ τὸ Ἅγιον  
 „Πνεῦμα ἐκπηγάξοι, ἢ προχέοιτο, ἀλλ' εἰ ἐκπορεύοιτο· καὶ διὰ  
 „τῆτο, ἔκ τῷ ἂν τὸν δε ὁριθῇ τὸν τρόπον ἢ προκειμένη διαμφισ-  
 „βήτησις. Ἐπειτα πρῶτέθῃ ὁριθῶναι, ὡς ἐκπορεύεται ἐκ Πατρὸς  
 „καὶ Υἱᾶ· καὶ μὲν δὴ καὶ ἐκ Πατρὸς δι' Υἱᾶ. Ἀλλ' ἔδὲ τῆτο  
 „ἔδοξεν ἑυδοῖν· ἔχοι γὰρ ἂν μὴ καλῶς παρερμηνεύθῃναι, ὥς  
 „τινὶ Ἐκ πρόθεσιν μεταληφθῆναι εἰς τινὶ ΔΙΑ'. Ἐλέγετο δὲ,  
 „καὶ ὅτι ἔτῳς ἐκδηλωθῇ τὸν Υἱὸν εἶναι τινὶ αἰτίαν· καὶ ὅτι  
 „ἔκ καλὸς ἂν εἴη ὁ τρόπος ὁ τῆς ἐκφράσεως· εἴη γὰρ ἂν ἀμφισ-  
 „βητήσιμος ἢ ἀπόφανσις, ὡς δέον βεβαίαν τε εἶναι καὶ ἀναμφισ-  
 „βήτητον...

Οὕμῳ δὲ παρὰ τινὶ τοιάνδε τῶν Λατίνων διαφωνίαν ἐνέ-  
 λαιπεν ὁ Βασιλεὺς τῆς ἰδίᾳς πρὸς Σωέλδοσιν συγκαλεῖν. Ἐπὶ  
 δὲ πρότερον τινὲς κατὰ τῶν λοιπῶν διετάνοντο, τινὶ Ἐκ ἰσο-  
 δωαμῆν τῇ ΔΙΑ', (περὶ ἧ ΣΥΛΒΕΣΤΡΟΣ, Τμήμ: Η'. Κεφαλ:  
 ΙΔ'. ΙΕ'. καὶ Ις'.) δοκῶν ἐκ τῆς τοιαύτης τῶν ἰδίων διχοφροσιῶς,  
 ἐπὶ κατορθώσει ἧς περ ὡς σπιδάξων ἐνώσεως, ὅφελός τι ἀποίσε-  
 θαι, πρῶθετο: „Πότερον, μὴ ἄρα τὸ ἐκ τῆ Υἱᾶ, ταυτὸν εἴη  
 τῷ δι' Υἱᾶ,; Ἐπεὶ δὲ ἔδ' ἔτῳς, ἐπὶ τάναντία τῶν Ἐπισκόπων ἀντι-  
 περιῦσαμένων, σωτελεῖν τι ἔχουν ἑώρα, διετάνετο μηδαμῶς ἄλ-  
 λως ἐξῆναι εἰς πέρας ἐλθεῖν τινὶ ἑνωσιν, εἰ μὴ πρότερον τὸ  
 περὶ τέτῳ τοῖς Δυτικοῖς Πατράσι δοκῶν φανερόν γένοιτο. Σωε-  
 ωράκει γὰρ, ὑπὸ Λατίνων ἐν τέτῳ τῆς οἰκείας πιεζομένης, ἔκ  
 εἰς μικρὰν εὐπλέκεσθαι τινὶ δυσχέρειαν, ἅτε δὴ τῶν Δυτικῶν Πα-  
 τερῶν διαβρήδῳ ἐπιμαρτυρέντων τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκπορεύεσθαι  
 καὶ ἐκ τῆ Υἱᾶ· ὥς σῶεσθαι ἐκ τῆ ῥάσῃ ἐπὶ τινὶ ἑνωσιν  
 ἐπιρ-

(10) Νοητέον δὲ, ὅτι ἀποτρεπόμενοι τὸ „ἐκπορεύεσθαι,, οἱ Γραικοὶ ὑπῆρχον, ἐξ ἀμ-  
 φῆν δηλονότι· ὡς σημαντικὸν ὅν ἰδίως τῆς ὑποστατικῆς ἐκ μόνῃς τῆς Πατρὸς προόδου  
 τῆς Πνεύματος· τὸ δὲ „προχέσθαι ἐπὶ Πατρὸς καὶ Υἱᾶ θεολογεῖσθαι κοινῇ σῶε-  
 χώρῳ, ὡς δηλωτικὸν τῆς τῶν χαρισμάτων τῆς Πνεύματος μεταδόσεως.

ἐπιρρέψαι τὸν ἐκείνης ἀποδεχόμενον. Ἀλλ' ἐπενεχθαισῶν καὶ περὶ τῆς ψήφου, οἱ μὲν ἀποδεκτέες εἶναι, οἱ δὲ μηδαμῶς, ἀποβλητέες δὲ ἀπεφαίνοντο (Συλβες: Τμήμ: Θ'. Κεφ: Β'. καὶ Γ'.) οἱ δὲ τῷ ἀποδοχῇ ἀπαντῶμενοι, πέντε μὲν τῶν Ἐπισκόπων ὑπῆρχον, Σταυροφόροι δὲ τρεῖς, καὶ οἱ λοιποὶ οἱ μετ' αὐτὰς ἐπιψηφισάμενοι. Ἰνα τοίνυν τὰς τῶν διαφωνούντων ψήφους ὑπελαττώσῃ ὁ Αὐτοκράτωρ, ῥαδιουργῶν ὑπεξῆλε τῶν Σταυροφορούντων τὰς ψήφους, ὡς ἄρα μὴδ' ἐν ταῖς προλαβύσαις ἑπτὰ Οἰκουμενικαῖς Συνόδοις αὐτῶν ποτὲ καθυπογραψάντων. (Συλβες: Αὐτ: Κεφαλ: Δ'.)

Καὶ τὸ ἐντεῦθεν ἄρα ὁ Βασιλεὺς διεπυθάνετο τῶν ἰδίων, ἔπερ ἄρα δοξάζουσιν ἐκπορεύεσθαι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῆς Τίτῃ; Πρὸς ὃ δὴ: ὁ μὲν Πατριάρχης ἀμφίβολόν τι ἐπαπεκρίνατο ἐκ δὲ τῶν Ἐπισκόπων καὶ τῶν Κοινοβιακῶν, δέκα μὲν ἐκείνο κατέφησαν, ἑπτακαίδεκα δὲ κατέκριναν ἀποφύσαντες. Τοιγαρῶν, ὡς ἂν καὶ τέττας ὁ Κρατῶν ἔτω διαφωνήντας πρὸς τῷ αὐτῷ ἐπιπάσαιτο δόξαν, μηχαναῖς παντοίαις τὸ ἀπ' ἐκείνης ἐπεχέρει ὑπαγαγέσθαι, τὰς μὲν ὕβρεσί τε καὶ λοιδορίαις, τὰς δ' ἐντοῦξεί τε καὶ οὐμιλίαις Φιλικωτέραις, τὰς δὲ θωπείαις σπιδάξων χειρώσασθαι, σμεργάντων οἱ καὶ τῆ Πατριάρχῃ, καὶ τῆ Ἰσιδώρῃ. (Συλβες: Τμήμ: Θ'. Κεφ: Η'.) Οὐδ' εἰς κενὸν αὐτῷ ἀπέβη τὸ βάλειμα. Ἐπειδὴ γὰρ οἱ μὲν τῆ εἰς τῷ Πατρίδα νόσῃ ἐφίετο, ἐπ' αὐτελέσῃ δὲ τῇ ἐνώσει χαλεπῶς αὐτοῖς ὁ εἰς παλινόσῃσιν προσεγίνετο πόρος: τὰς δὲ δέος εἶχε, μὴ τῶν αὐτοῖς ὑπεχημένων αὐτοχρήσειαν ἐπιχορηγήσειν, ὃ καὶ ἅπαξ ἤδη αὐτοῖς συμβεβήκει ἐντεῦθεν ἐπὶ τῷ Λατίνων δόξαν προσιλέσερον ὑφίσταντο ἀπαντᾶν. Εἰς βαλὼν γὰρ πάλιν τῆ Βασιλέως αὐτὰς συγκαλεσαμένης, καὶ διαπυθανομένης: ὅπως ἄρα δόξης ἔχοιεν περὶ τῆς Ἐκπορεύσεως τῆς Ἁγίας Πνύματος καὶ ἐκ τῆς Τίτῃ; σμῆθεντο μὲν τῶν Ἐπισκόπων δέκα καὶ τρεῖς, ἀνένδυσαν δὲ μόνοι τέσσαρες. Οὐκέτι γὰρ ἐπεξητήθησαν τῶν Κοινοβιακῶν καὶ Σταυροφόρων αἱ ψήφοι, ὡς ἤδη πρὸ τέττας ὑπεναντίως φερομένων τῷ τῆ Βασιλέως βαλήματι, καὶ τέττας γε ἔνεκα τὸ ψηφίσασθαι ἀφρημένων.

Πρὸ πάντων ἔν τωικαῦτα ὁ Πατριάρχης διωμολόγησε, τὸ ΔΙΑ ΤΟΤ ΤΙΟΤ αἰτίας εἶναι σημαντικὸν, καὶ τὰ ἴσα διώσθαι τῷ ἘΚ ΤΟΤ ΤΙΟΤ. Οἱ δὲ ἐκ τῆς Λαῖ (11) διερωτηθέντες ἐνέκριναν τῷ ἔνωσιν ἀπαξάπαντες. Ἐς πλάτος ταῦτα διέξεισιν ὁ Σύλ-

(11) Τετέστιν οἱ Λαῖκοι, καὶ Βιωτικοί, καὶ καὶ Κοσμικοὶ ἄλλως κοινῇ ἐπονομαζόμενοι, ὡς μὴ τῷ κατὰ τὰ Ἐκκλησιαστικὰ Ὀφείκια Κλήρω, καταλεγεγμένοι, μὴδὲ τὸ Μονασικὸν Σχῆμα τε καὶ πολίτευμα ἐπανηρημένοι.

Τόμ. Β'.

Σ σσσσσσ

ὁ Σύλβεσρος Κεφαλ: Θ'. καὶ Γ. Τῷ ἄρα πλείονος καὶ κυριωτέρως μέρος τὸ Λατινικὸν Δόγμα δοκιμασάντων, τὰς διαφωνήσας ἡσυχίαν ἄγειν ἡγήσατο χριῶναι ὁ Βασιλεὺς, ἔδεν μὲν αὐτοῖς ἐλευθερίας παραλείπων, ἀλλὰ καὶ ἄκοντας τὴν ἀντικειμένῃ προσέσθαι δόξαν προσβιαζόμενος. Διὸ δὴ καὶ τὴν Σωελοδοσιν λύειν μέλλων ἐκείνῃ, Λόγον ἀνεβάλετο διελθεῖν, ὃ ὁ νῦν ὡς: „Τὴν „μετὰ Λατίνων ἔνωσιν ἥδη σωεσάναι διὰ Σωόδε Οἰκουμενικῆς „καὶ εἰκὸς ἄρα ἅπαντας αὐτῇ εἶναι σωθῆσθαι, καὶ ἀμφιλαφῶς „τηρεῖν· εἰ τόδε μόνον μὴ προσεπιβάλλωσιν οἱ Λατῖνοι, τὸ καὶ „τὴν προθήκῃ χριῶναι τὰς ἡμετέρας προσαποδέξασθαι, ἢ τὰς „κατ' αὐτὰς τελεῖας καὶ διαλυώσεις ἀσπάζασθαι„. (12) (Σύλβεσ: Τμήμ: Θ'. Κεφαλ: Γ.) Ἐπεὶ δ' ἔν μετὰ τῷ προειληφῶς ὡς ὁ Πάπας, μηδαμῶς ἀποχριῶναι τὴν ἐπὶ τῷ Δόγματι τῆς Ἐκπορεύσεως τῷ Ἀγίῳ Πνεύματι καὶ ἐκ τῷ Τίτῳ συγκαλάνουσιν, εἰ μὴ πρὸς γε τοῖς λοιποῖς Κεφαλαίοις, καὶ τὸ τῆς ἐν τῷ Συμβόλῳ προθήκης ἐπικυρώσειαν· ἐπιλέλησθαι δὴ ὃ προὔπεχεται (ὁ Βασιλεὺς), ἔχῃ λόγοις τισὶν εἰς μεταμέλειαν ἐναχθεῖς, ἀλλ' ὅτι μόνον εὐώρα τὰς Λατίνους ἄλλως ἀπαξιῶντας τὴν ἔνωσιν. Τοιγαρὲν καὶ πάντα τὰ τοιαῦτα προσεπεκύρωσεν ὁ Αὐτοκράτωρ ἀγνοήτων ἀπάντων, πλὴν Γρηγορίου, καὶ Ἰσιδώρου, καὶ Βησσαρίωνος. (Σύλβεσ: Τμήμ: Γ. Κεφαλ: Α'.) Ὅποιον ποτ' ἔν ἄρα προτώπῳ, ὁποῖον δὲ καὶ τῷ σωειδότι, ὅ, τε Κρατῶν καὶ οἱ ὑπ' αὐτῶν ὑποσυρέντες ἄλλοι, τοῖς τοιούτοις εἶχον Κεφαλαίοις καθυπογράψαι, ἅτλα ἐκ ψυχῆς ἀποτροπιαζόμενοι διετέλουν, καὶ ἀποτροπιάζεσθαι πρὸ βραχέως ἐπαγγελλόμενοι; Διὰ γάρ τοι τῷ τῷ μὴ τὴν προθήκῃ ἐπέκεινα συγχωρήσειν ὁ Αὐτοκράτωρ φθασας ἐμνήσθη, ὅτι κατάδηλον αὐτῷ ὡς τὰς οἰκείας τὸ παράπαν αὐτῷ ἀποσρέφεσθαι.

Ὅτι δὲ δὴ παρὰ ταῦτα καὶ ὁ Πάπας, ἵνα πρὸς τὴν ἔνωσιν ἐπαναγκάσῃται τὰς Ἀνατολικὰς, καὶ τὰς ἐπιχορηγήσεις, ἃς περ ἐπ' Ἰταλίας αὐτοῖς ἐπιδημήσασιν ἐκὼν προὔπες, ἐκ ὡς ἀπολινῶς, παρὰ γε ΣΥΛΒΕΣΤΡΟΝ τὸν Συρόπαλον, ἀπανταχῶς περὶ τῆς ἐκπολινώμενον, καὶ ΜΑΡΚΟΣ ὁ Ἐφέσης μαρτυρεῖ ἐν τῇ Ἀπολογίᾳ, ὡς κατὰ τῆς Φλωρεντινῆς Σωόδε σωέγραψε. Μᾶλλον δὲ καὶ ὁ Συγγραφεὺς αὐτὸς τῆς αὐτῆς Σωόδε, ἐν Σωελόδοις ΙΕ'. τῇ κατὰ Φερράριαν συστάσει, ἐπιχεθῶν σφίσι τὰ σιληρέσια (φησὶν) ὡς ἂν ἔτι εἰς Φλωρεντίαν μεταβῶν ἀναγκαθῶσιν. Οὕτω γὰρ ἐν τῷ ΙΓ'. Τόμῳ τῶν Σωοδικ: Στήλη 216. (13)

„Περὶ

(12) Ὁρα Συρόπαλον Ἀυτ: Σελ: 265.

(13) Ἐν τοῖς Ἀρδεῖνσι Σωοδικ. Τόμ: Θ'. στήλη 172. κξ.

„Περὶ δὲ τῆς δόσεως τῶν τροφείων ἐκ τῷ μελέτη ποτέ διὸ καὶ  
 „ἐξερέμεθα τὰ μέγιστα. Ἐλεγε γὰρ ὁ Πάπας: Ἐπίσταθε ἀκρι-  
 „βῶς, ὅτι τίποτε εἰδὲν ἔχω δώσειν ὑμῖν ἐν Φεβρουάρῳ· ἐπειδὴ  
 „ὅσα ἠλπίζομεν, εἰδὲν εὐοδῆται· λοιπὸν οἱ Φλωρεντῖνοι δανείσονται  
 „ἡμῖν τεσσαράκοντα χιλιάδας χρυσίνων, ὅπως μεταθήσωμεν  
 „ἐκεῖσε τὴν Σιώνον. Ἀκολουθήσατέ μοι γὰρ, ἵνα ἀπέλθωμεν εἰς  
 „τὴν Φλωρεντίαν, καὶ ὑπόχομαι δώσειν ἐν τῇ Κωνσταντινουπόλει  
 „ὑπὲρ βοήθειας χρυσίνων χιλιάδας δώδεκα, καὶ τριήρας δύο·  
 „ὑμῖν δὲ ὅσα Φλωρία χρεωσῶ, καὶ Μπάγκον εἰς τὸ ἐξῆς ἀνελ-  
 „λιπῶς λαμβάνειν κατὰ Μῶσα τὸ διατεταγμένον ὑμῖν. Ἐλθέτε  
 „ἐν εἰς Φλωρεντίαν, καὶ εἰς διορίαν τριῶν Μηνῶν, ἢ τεσσάρων,  
 „ἵνα ἔχητε ἐξουσίαν ἐπιστροφῆς, καὶν τε ἐνωθῶμεν, καὶν τε μή.  
 „Ταῦτα ἡμεῖς ἀκῶσαντες ἐταράχθημεν ὡς εἰκός, καὶ μάλιστα  
 „ὅτι ἐκ εἶχομεν ἐλπίδα δόσεως ἐν τῇ Φεβρουάρῳ, καὶ τί ποιῶσαι  
 „ἐκ εἶχομεν. Μὴ ἀπελθεῖν εἰς τὴν Φλωρεντίαν; καὶ μὴ εὐπο-  
 „ρῆντες ὡςδε τῷ εἶναι; ἀπελθεῖν; καὶ μήπως ἔυρωμεν τὰ ἀντὶ  
 „ἐκεῖ, ὅσα καὶ ἐν Φεβρουάρῳ; Ἀλλ' ὅμως τί ποιῶσαι ἐκ εἶχο-  
 „μεν. — Εἶτα καὶ ἐκ Στήλῃ 217. „Διὸ καὶ ἐξηγήσαμεν τῷ  
 „Βασιλεῖ ποιῶσαι ἡμῖν ταῦτα, καὶ ἔτιως ἀπελευσόμεθα εἰς Φλω-  
 „ρεντίαν· ὅπως ἔχη ἡ Πόλις ἡμῶν ὁκλῶ Μηνῶν βοήθειαν· ὅπως  
 „ἔχωμεν ἡμεῖς πέντε Μηνῶν ὀφειλόμενα.„

Ἀλλὰ καὶ ἈΜΥΡΟΤΤΖΗΣ (14) ὁ φιλόσοφος διαβεβαίεται,  
 τῶν χρηματικῶν ἕνεκα χορηγιῶν, ἐνὶ τῇ τῶν Ἀνατολικῶν ὑπο-  
 γεγραφέναι, τῷ Πάπᾳ προσεπιχορηγεῖν ἀπάνιωμένους, καὶ εἰς τῷ-  
 το αὐτὸς καθυπαγαγόντος. Ὁ δὲ, καὶ αὐτὸς ὁμοίως καθυπέ-  
 γραψε τῇ ἐνώσει, ἀλλ' ἐπανελθὼν αὐτὸς τὰ τῆς ἐνώσεως παρη-  
 τήσατο. Οὕτω γὰρ παρὰ Λέοντι τῷ Ἀλλατίῳ, ἐν Βιβλ: Γ'. τῶν  
 περὶ τῆς Διωκεῖς Συμφων: τῶν Ἐκκλησιῶν: Κεφ: Α'. Ἀριθμ: Δ'.  
 „Πῶς ἂν Οἰκουμενικὴ ἢ ἀργυραμοιβικὴ καὶ Σιμωνιακὴ Σιώνος, ὡς  
 „διὰ πόρας χρημάτων καὶ ἐγκοσμίων βοηθημάτων οἱ δεξάμενοι  
 „εἰ-ησ-

(14) Τραπεζάντιος ὢν Ἀμυρόττης ἔτος, μετὰ τὴν ἄλυσιν τῆς αὐτῆς Πατρίδος τὰ τῷ  
 Μωάμεθ θρησκεῦσαι ἰσχυράσθαι· ὡς γὰρ ἐν τῇ πολιτικῇ Ἱστορίᾳ, ἥν ἐπὶ τῆς  
 Τερκοκρατικῆς Κεῖςιος ἐξέδοτο, ἀναγινώσκωμεν, (Βιβλ: Α'. Σελ: 21.) τῆς Γίσε  
 τῷ Ἀμυρόττῃ εἰς τὸ Σαράγιον ἐμβαλόντες, τῷτον Ἀγαρίων ἐποίησαν ταῦτα  
 περὶ αὐτῶν, καὶ Δεπίνος, ἐν Τόμῳ ΙΒ'. τῆς Ἐκκλησιας: αὐτῶν Βιβλίου: περὶ τῶν  
 Συγγραφ: τῆς ΙΕ'. Ἐκατονταετ: Σελ: 122- Καὶ Ροβέρτος ὁ Γέριος ἐν τῷ Προ-  
 σαρτήματι τῆς Ἱστορ: τῶν Ἐκκλησιῶν. Συγγραφ: Γυλλέλμου Καβέν, Σελ: 122.  
 Τὰ αὐτὰ δὲ περὶ τῶν αὐτῶν διαπίσθεται καὶ Ἀλλάτιος (ἐν τῷ περὶ τῆς Συμφωνίας  
 τῶν Ἐκκλησιῶν: Βιβλ: Γ'. Κεφ: Γ'. §. Ε'. Σελ: 936.) ἐπιμαρτυρῶντα ἐπάγων,  
 Γεώργιον τὸν Τραπεζάντιον, ἐν τῷ Συγγράμ: τῷ εἰν τὸ Μαρτύριον τῷ Ἀγ: Ἀν-  
 δρέῃ τῷ Χίε. Καὶ ἐν ταῖς προδηκταῖς δὲ τῆς αὐτῆς Συμφων: τῶν Ἐκκλησιῶν: καὶ  
 Δωρόθιον ἀναφύον τὸν Μονεμβασίας Μητροπολίτην, χυδαίνωτέραν τῇ φράσει  
 ἐξισχυρῶντα: „ὅτι ὁ Σουλτάνος ἔβαλε τὰ Παιδιά τῷ Ἀμυρόττῃ εἰς τὸ Σαράγι,  
 „καὶ αὐτὸν ἔκαμε Τῆρκεν.



„ἐνησμένισαν; — Ὅδὲ Πάπας τοιαῦτα φησί: Θεωρῶ μὲν κατὰ  
 „πάντα τὴν διαίρεσιν πρὸ ὀφθαλμῶν καὶ θαυμάζω εἰς τὴν ὠφελή-  
 „σαι ἢ διαίρεσις ὑμᾶς; Ὅμως εἰ τῆτο γενήσεται, πῶς μέλλοσι  
 „τῆτο δεχθῶσι οἱ Δεσπότες οἱ Δυτικοί; καὶ ἡμεῖς πόσω λύπῃ  
 „ὀφείλομεν ἔχειν ἐν ἑαυτοῖς; μάλλον δ' ὑμεῖς πῶς μέλλετε ἀπελ-  
 „θεῖν ἐν τῇ Παλρίδι ὑμῶν; Σημείωσαι καλῶς τὸν Πάπαν, δῆλον  
 „τοῖς Ἀνατολικοῖς καθιστῶντα: ὥς εἰ μὴ τῇ Σωόδῳ ὑπογράψω-  
 „σιν, ἀπὸ τῶν εἰς τροφὴν ἀναγκαίων, ὧν ἀπολειφθήσονται μὴ ὑπο-  
 „γράψαντες, ἔτε ἐπανιέναι εἰς Πατρίδα διωθήσονται, ἔτε κατὰ τῆ  
 „Αγαρὼν ἄρῃσι τρόπαιον,,.

Προσέτι καὶ ΔΟΣΙΘΕΟΣ, ἐπὶ τῆς ἐν Κωνσταντινουπόλει Σωό-  
 δῃ, τῆς δ' πολὺ πρὶν ἢ τὴν Πόλιν ὑπὸ Τούρκων αἰλῶσαι συζύσης,  
 ὡς ταύτης εἰσόμεθα τὰ Πρακτικά (15) ἐφεξῆς: „Πλὴν τῆ πα-  
 „νουργίᾳ, φησὶ, Γρηγορίᾳ, ἁμφοῖν βία καὶ ὑποταγῇ τῇ Βασιλεύῃ  
 „ταῖς ἀθέστοις ὑπογραφαῖς ὑπεβέβημεν (ἄκιστι γὰρ καὶ ἐξ ἀνάγκης  
 „ἡ σωῆσε τὸ πλημμέλημα) νομίσαντες διὰ τῶν ὑπογραφῶν  
 „μὴ μόνως τὰς φερέσας πρὸς τὴν ἐπάνοδον (δαπάνας) καρπώ-  
 „σεσθαι, ἀλλὰ καὶ νίκῃ κατὰ τῶν πολεμίων ἐκείθεν πορίσε-  
 „σθαι,, ἐν ἑτέρᾳ δὲ τῆς αὐτῆς Σωόδῃ Σωελούσαι, ὡσαύτως καὶ  
 ὁ ΓΕΜΙΣΤΟΣ, περὶ τῶν ἐν Παλρίᾳ πεπραγμένων λόγον διεξελ-  
 λὼν, ἀποδείκνυσι τὴν ἐν Φλωρεντίᾳ ἔνωσιν Σιμωνιακῶς, πρὸς τε  
 τῇ Ἀυτοκράτορος, καὶ τῶν ἄλλων, διαπραγματευθῆναι. Μάλλον  
 δὲ καὶ οἱ τρεῖς Πατριάρχαι, ὅτε Ἀλεξανδρείας, καὶ ὁ Ἀντιο-  
 χείας, καὶ ὁ Ἱεροσολύμων, ἐπ' αὐτοῖς προσέθεντο: ὡς „τῇ ἐξελεύσει  
 „τῆς ἀληθείας, καὶ ἔχῃ βίαν Βασιλικῇ, καὶ τῇ τῶν ἀναγκαίων ἀπο-  
 „σερήσει ἐχρῶν τὰς Ἀνατολικὰς ἐναχθῶσι πρὸς συγκατάνουσιν.  
 „Ἀλλὰ περὶ τῆς ὕστερον,,.

Ὁ δέ τοι ΔΟΥΚΑΣ τελοῦνταῖον, ὁ τῇ Μιχαὴλ Ἀνεψιός  
 (καίτοιγε προσάτης ὢν τῆς ἐνώσεως) ἐν τῇ Βυζαντινῇ Ἱστορίᾳ,  
 Κεφ: ΛΑ'. Σελ: 120. τῆς Παρισιακ: Ἐκδόσ: Ἔτ: 1651. μετὰ  
 ΓΕΩΡΓΙΟΥ τῇ Ἀκροπολίτι, ἐν τῷ περὶ τῆς τῶν Ἐπισκόπων  
 ἐπανόδῳ ἐξ Ἰταλίας: „Οἱ δὲ Ἀρχιερεῖς (φησὶν) εὐθέως ἀπὸ  
 „τῶν Τριήρων ἀποβάντες, καὶ οἱ τῆς Κωνσταντίνης κατὰ τὸ  
 „σιώηδες ἠσπάζοντο αὐτοὺς, ἐρωτῶντες: πῶς τὰ ὑμέτερα;  
 „πῶς τὰ τῆς Σωόδῃ; εἰ ἄρα ἐτύχομεν τὴν νικῶσαν; οἱ  
 „δὲ ἀπεκρίνοντο: πεπράκαμεν τὴν Πίσιν ἡμῶν. (Καὶ μετὰ  
 „τινα:) Καὶ γὰρ ἦσαν τινὲς τῶν Ἀρχιερέων ἐν τῷ ὑπογράφειν  
 „λέγοντες: ἔχῃ ὑπογράφομεν, εἰ μὴ τὸ ἱκανὸν ἡμῖν τῆς προ-  
 „σόδῃ παράχοιτε: οἱ δὲ ἔδιδον, καὶ ἐβάρυντο κάλαμος. ὑπερ-  
 „ἀρίθ-

(15) Παρὰ τῷ Ἀρδεῖνῳ ἐν Τόμ: Θ'. τῶν Σωοδ: Σελ: 1356. κξ:

„ἀριθμὸν γὰρ ἦσαν τὰ δαπανηθέντα εἰς αὐτὰς νομίσματα, καὶ  
 „τὰ ἐν χερσὶ μετρηθέντα ἐκάσθ τῶν Πατρῶν. Εἶτα μετὰ μελη-  
 „θέντες ἔδδ τὰ ἀργύρια μετέσρεψαν. Πρὸς τὴν φωνὴν ἐν αὐτῶν,  
 „ὅτι τὴν Πίσιν αὐτῶν πέπρακον, καὶ ἐπέκεινα τῆ Ἰδα ἡμαρτον,  
 „τῆ σρέψαντος τὰ ἀργύρια,, . . . . Εἰ δέ τινες, ἔτε δὴ ταῖς τοιαῖς  
 δε προτροπαῖς τῆ Βασιλέως ὑπέϊκον, ἔτε φιλοχρηματίας ἥσσονες  
 ἦσαν, ἀλλὰ ταῖς παρὰ τῆ Κρατῆνος ἐπιλαγαῖς τε καὶ ἀπειλαῖς ἐν-  
 διδόντες, ὑπογράφειν καὶ ἔτοι κατωαγκάζοντο. Εἰ καὶ τῶν Σταυ-  
 ροφόρων τρεῖς, ἔτω κελδοθέντες τῇ ἐνώσει καθυπογράψαι, ὅλως  
 ἐκ ἐνέδωκαν τῷ κελδοσμάτι ὧν εἰς καὶ ΣΥΛΒΕΣΤΡΟΣ ὧν, ὡς  
 ἐν τῷ Γ. Τμήμ: τῆς αὐτῆ Ἰσορ: Κεφ: 5'. αὐτὸς παρίσῃσιν. (16)  
 Ἀλλὰ γὰρ πάλιν προσεπιτεθεισῶν τῇ κελδοσει τῶν ἐκ τῆ Βασι-  
 λέως ἐπαπειλήσεων, σωέθεντο μὲν· πλὴν (ὡς αὐτὸς ΣΥΛΒΕΣΤΡΟΣ  
 διαβεβαιῶται) ἐκ ἀνευ ἐπιδιαμαρτυρήσεως, τῆ ἐκτρέπεσθαι μὲν  
 τὴν Λατινικῶν δόξαν, ἐπαναγκαζομένους τοῖς ἐπιταχθεῖσιν ὑπεί-  
 κειν· ἐξεῖναι δ' αὐτοῖς ὕψερὸν παλινωδίαν ἄσαι, ἐπειδὴν βέλοιντο.  
 (Συλβ: Τμήμ: Γ. Κεφ: Η'. (17)

Ἀλλ' ὅτι γὰρ δὴ βία τε καὶ ἀπειλαῖς ταῖς παρὰ τῆ Αὐτο-  
 κράτορος ἢ ἐν Φλωρεντία Σύνοδος σωέσῃ, καὶ ἈΜΥΡΟ΄ΤΤΖΗΣ  
 ὁ Φιλόσοφος ὁμολογεῖ· ἔτω γὰρ ἐν τῷ προβρῆθέντι τόπῳ:  
 „Πῶς ἐν Οἰκουμενικῇ — ἢ βιαιά, καὶ μὴ ἀποδείξουσιν Ἀγίων,  
 „ἀλλὰ βία Βασιλέως περὶενεχθέντος τῇ πλάνῃ, καὶ σκολοδινα-  
 „σαντος, καὶ ἀπειλαῖς ἐκείνης ἔσα σωθεμένη,,; — Ἦν δὲ καὶ  
 τὰ τῆ προειρημένῃ ΔΟΣΙΘΕ΄ΟΥ: „Πλὴν τῆ πανέργῃ Γρηγορίῃ,  
 „ἀμφω βία καὶ ὑποταγῇ τῆ Βασιλέως ταῖς ἀθέστοις ὑπογραφαῖς  
 „ὑπέτέθημεν. Ἀκασί γὰρ καὶ ἐξ ἀνάγκης σωέπεσε τὸ πλημμέ-  
 „λημα· νομίσαντες, κτ:,,. Ὅς δὴ καὶ μετὰ τινὰ προσέθετο:  
 „Κἀγὼ μετὰ γινώσκω . . . . συγγνώμῃ μοι ὁ Θεὸς τῆς βιαιᾶς καὶ  
 „Τυραννικῆς Ἐπιταγῆς,, — Τελδοταῖον δὲ καὶ οἱ Σύροι τρεῖς  
 Πατριάρχαι ἐν τοῖς προπενεχθεῖσιν ἔφασκον: „Ταῖς διὰ τῶν  
 „Διαλέξεων ἐξελάσεσι, καὶ ἔχλ ταῖς παρὰ τῆ Βασιλέως ἀνάγ-  
 „καις δεῖν τὴν ἀλήθειαν ἐξελάζεσθαι,,.

Ἄλλις ἄρ' ἐντεῦθεν δῆλον τὴν Φλωρεντιανὴν Σύνοδον, ὡς Σι-  
 μωνιακὴν καὶ βιαιάν, εἰκότως παρὰ πάντων ἀποκηρύττεσθαι, καὶ  
 ἀποπέμπεσθαι. Ὁ γὰρ Αὐτοκράτωρ, ὡς ἔδομεν, ὁ πρῶτος  
 τῆς ἐνώσεως προαγωγεὺς, ἔκην διὰ τὰς ἀποδείξεις αὐτὸς μὲν  
 ταῖς Λατινικαῖς καθυπέγραψε δόξαις, τὰς δὲ οἰκείας ἐπὶ τὸ  
 αὐτὰς ἐπιδιοκιμάσαι ἐνήγαγεν· ἀλλὰ κατὰ σκοπὸν καὶ τρόπον  
 πάν-

(16) Σελ: 287.

(17) Ὅρα ἐν Τμήμ: Γ. Κεφ: Ζ'. Σελ: 291. Καὶ Κεφαλ: Η'. Σελ: 292.

Τόμ: Β'.

Τ ΤΤΤΤΤΤ

πάντως γε Σιμωνιακόν, ἵνα τὰ κατὰ τῶν Τέρκων καρπώσῃται  
 βοηθήματα· τῷ γὰρ ἐναχθεὶς τῷ σκοπῷ, πάντα τρόπον ἐφίετο  
 τὰς Ἀνατολικὰς μετὰ τῶν Λατίνων ἡνωμένους ἰδεῖν. Οὐδὲ γὰρ  
 ἂν ποτε, εἴδ' αὐτῇ μόνῃ τῇ τῷ Πνδύματος καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ Ἐκπορεύσει  
 καθυπογράψαιεν, εἴπερ ἄλλως αὐτῷ ἐξῴ τῷ μετὰ Λατίνων δια-  
 πράξαται ἔνωσιν· καθάπερ ἔν καὶ διαφόροις αὐτὸν σωθήκας,  
 ἐκπειρασάμενον εἶδομεν, εἴπως ὁδὸν τινὰ ἐξούροι ἐτέραν, τῷ  
 ἐπὶ τὸ πέρας τῆς ποθῆμένης ἐνώσεως οἴσασαν· τὸ δὲ, τίποτ'  
 ἐστὶν ἄλλ', ἢ Σιμωνιακῶς προδιδόναι, καὶ τῶν ἔξωθεν ἐκπιπράσ-  
 κειν ὠφελειῶν τῷ εἰς Χριστὸν Πίσιν τῷ Ὁρθόδοξον καὶ ἀμώμητον;  
 Καθάπερ ἔν ἐφεξῆς καὶ αὐτὸς ὁ Βασιλεὺς ἔτος, ὡς μικρὸν ὄν  
 σωῆδε τὸ ἐκ τῆς Λατίνων κοινωνίας ἐκείνης αὐτῷ προσγενόμε-  
 νον ὄφελος, ψυχρότερόν πως ἀνεβάλετο αὐτῷ προάγειν, πρὸς  
 δ' αὐτὸ τέως ἀφικόμενος τῷ βίβ τὸ πέρας, καὶ τέλεον ἀπολαξά-  
 μενος παρητήσατο. Ὁ δ' αὐτὸς Σιμωνιακὸς λόγος ἄλλας τε δὴ  
 καὶ Βησσαρίωνα, καὶ Γρηγόριον ἐνήγαγε, καὶ Ἰσίδωρον, ἐπὶ τῷ  
 ἔνωσιν προτρέψασθαι τὸν Βασιλέα, ἢ καὶ αὐτὰς ἐπικατανεῦσαι.  
 Ταῖς γὰρ τῶν τριῶν τέτων ὑποβολαῖς πάντα διαπραττόμενος,  
 σὺ αὐτοῖς καὶ τὰς πρὸς τῷ ἔνωσιν ποικίλας ὁδὰς ἐκείνας διὰ  
 πείρας ἐλάμβανε· διὸ καὶ ἔτοι ὁμοίως, (εἰ μόνον σιωπῶν  
 Λατῖνοι) τῷ μὲν μετὰ τέτων ἔνωσιν, ὡς ἥδις ἂν σιωπέτε-  
 σαν, ταῖς δὲ τῶν Λατίνων δόξαις ἔκ ἂν σιωπέτασαντο, εἴδ' ἂν  
 καθυπέγραψαν. Ἐπειτα καὶ τῶν Διαλέξεων ἡδὴ ἀπειρημένων,  
 ἐφ' ὅσον περιῶ αὐτοῖς τὸ ἐλεύθερον, καὶ αὐτὸν ἀπλῶς τὸν τῆς  
 Ἐκπορεύσεως τῷ Ἀγίῳ Πνδύματος καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ ὅρον, ἅπαντες  
 κοινῇ ὑπῆρχον ἀποκηρύττοντες· ὡς δὲ κατὰ τὸ δοκῶν τῷ Βασι-  
 λεῖ, καὶ ἐξ ἐπιτάγματος ἐκείνου, εἰ λόγοις, ἔκ ἀποδείξεσιν, εἰ  
 συζητήσεσιν ἐτελεῖτο ὅσα ἐπράττετο, τῷ καὶ αὐτῷ ἔχ ὅπως τὸ  
 Δόγμα, ἀλλὰ καὶ τῷ ἐν τῷ Συμβόλῳ προθήκῃ τῷ Δόγματος,  
 καὶ ἕτερα δὴ προσέτι τινὰ τῶν Λατινικῶν φρονημάτων παρεδέ-  
 ξαντό τε καὶ πρόσεκύρωσαν. Τίς ἔν εἰ σιωρᾷ, ἔκ ἄλλως ἢ πρὸς  
 βίαν τε καὶ κατ' ἀνάγκην, τῷ τοιαύτῳ γενέσθαι Σιώδον; τὰς  
 μὲν γὰρ Σταυροφόρους, καὶ τὰς ἐκ τῶν Κοινοβίων, ἐπεὶ μηδὲν  
 τῇ ἐνώσει προσεδεισόμενος ὁ Βασιλεὺς σιωῆκε, τῆς τῷ ψηφί-  
 σαθαι ἀδείας αὐτὰς ἀπεξέρρησεν, ὡς ἂν μὴ διαφωνῶντες αὐτοὶ  
 περαιτέρω τῷ τῶν λοιπῶν διαταράττοιεν συμφωνίαν, εἰς ὅπαδὸς  
 τῇ γνώμῃ ἔχεν ἐβέλετο. Καὶ ἐν ᾧ τοίνυν τοῖς ἔτῳς ἡθροισ-  
 μένοις Πατράσιν, ἢ πρὸς τὸ ἀποφαίνειν τὸ παριστάμενον ἔτῳς  
 ἐκολάετο ἐλεύθερία, ἔστιν ὅς ἂν ἔξαρκος γένοιτο πάλιν, τῷ μὴ  
 κατ' ἀνάγκην τῷ τοιάνδε συζῶναι Σιώδον; Ἐφ' οἷς δὴ καὶ ὁ  
 Βασιλεὺς, καὶ οἱ τέττε ὁμόφρονες, πῇ μὲν Φιλίοις τισὶν ἐντὸς  
 καὶ ὁρισμοῖς, πῇ δὲ θωπύμασί τε καὶ κολακείαις, πῇ δὲ λοιδορίαις  
 καὶ

καὶ ὑβρεσιν, εἰς τὸ τιῶν Λατινικῶν δόξαν προσέσθαι τὰς διαφωνήν-  
 τας ἐπερῶντο κινεῖν· τὰς ἔν τοσαύταις ῥαδιουργίαις, τηλικούτοις  
 τε δολιγύμασι πρὸς τὸ τιῶν Λατίνων Πίσιν ἀσπάζεσθαι ἐναχθέν-  
 τας, τίς ἂν εἴποι λόγοις τε καὶ ἀποδείξεσιν ἀναπεπεισμένους, καὶ  
 μὴ μᾶλλον σωμαλίαις τισὶ ῥημάτων ἐπιτελχθέντας, ἢ ἄλλως  
 παρακινηθέντας, τῇ ἐνώσει σιωτάξασθαι; Προσιδέσθω δ' ἐπὶ τοῖς  
 ῥηθεῖσι καὶ ὁ ἐκ τῆς ξενιτεύσεως ὄχλος, δι' ὃν τῇ ἐνώσει σιωτέ-  
 σθαι προήχθησαν· ἐδὲ γὰρ ὡς ἄλλως, ὅπως ἐπ' οἴκῃ ἐπινοσήσασιν·  
 καὶ μὲν δὴ καὶ ὧν ἐν χρεῖα ὑπῆρχον χρημάτων ἢ ἐπίδοσις· καὶ  
 γὰρ καὶ ταῦτα ὁ Πάπας ἄλλως ἀπλωάνετο δώσειν· ἔτω δὲ ἄρα  
 τὰς ἐν Σωόδῳ νομίμῳ σιωιόντας Πατέρας, κατωαγκασμένους,  
 ὠνίστες, τῷ τῆς Πίσεως ὄρω καθυπογράφειν εἰκὸς ἐνάγεσθαι;  
 Προσεγένετο δ' ἐπὶ πᾶσι καὶ ἡ παρὰ τῷ Αὐτοκράτορος βία, τῷ  
 τῷ πλείῳ μέρει τῶν ψήφων ἐπεσθαι δεῖν ἐπιτάσσοντος, καὶ παν-  
 τοίας πρὸς τῷ τῷ ἀπειλὰς ἐπισείοντος. Καὶ τῷ τῷ δὲ ἄρα  
 τὸν τρόπον ἐν Νομίμοις Σωόδοις, δι' Αὐτοκρατορικῆς ἰχύος ἢ τῷ  
 Δόγματος ἀλήθεια καὶ ὀρθότης ἀνακρίνεται; ἔχλ δὲ μᾶλλον, διὰ  
 τῶν ἐκ τῆς Ἱερᾶς Γραφῆς, καὶ τῶν Σωόδων, καὶ τῶν Πατέρων  
 λαμβανουμένων Ἀποδείξεων; Δικαίως τοιγαρὲν τῶν ἐνεκα,  
 τῶν Σιωωνιακῶν τε καὶ ληστρικῶν μία ἐπαριθμεῖται καὶ αὕτη, ἡ  
 Φλωρεντιανὴ Σωόδος· ὡς ἐν ἡ, ἔχ ἐκόντες οἱ Ἀνατολικοὶ,  
 παρὰ δὲ τὸ μηδαμῶς ἄλλως εἰς ταύτῃ σιωελθεῖν ἂν ἔχαιεν Λα-  
 τίνους, καὶ διὰ τιῶν ὑπὲρ τῆς Πατρίδος ἐλπιζομένῳ ἐπικερταίναν,  
 καὶ διὰ τιῶν τῶν χορηγημάτων ἀνάγκῃ, καὶ διὰ τὰς προτροπὰς καὶ  
 ἐπιταγὰς, καὶ ἀπειλὰς τῷ Δεσπόζοντος, ταῖς Λατινικαῖς δοξασίαις  
 ὑπογεγράφασι. Ταῦτα γὰρ ἅπαντα τῶν νομίμων Ἱερῶν τε καὶ  
 Οἰκουμενικῶν Σωόδων, ἃς ἡ Ἐκκλησία παραδέχεται, μακρὰν  
 ἀπῆσαν, καὶ ἦπερ δὲ, καὶ ὅτι πορρωτάτῳ ἀπεῖναι οφείλου-  
 σιν. (18)

Ἔπεισιν ἔν μοι καὶ τῆς ἐν Ἀριμίνῳ ἐνταῦθα ἐπιμνησθῆναι  
 Σωόδου, τῆς παραπλησίως τρόποις συσχεσθαι θέσης. Καὶ γὰρ οἱ  
 Καθολικοὶ καὶ ἐπ' ἐκείνης, τῇ ὀρθοδόξῳ Πίσει σεβρῶς ἐνέμενον  
 μέχρι τινός· ὥστε καὶ τοῖς ὡς ἐξ αὐτῶν Ἀποσταλείσι, διὰ τὸ  
 τοῖς Ἀρειανοῖς ἐπὶ τῆς Ἑώας ἐνδεδναί, τιῶν κοινωνίαν ἀπεί-  
 πασθαι.

(18) Μέτιθι δὲ, εἰ βέλει περὶ τῶν καὶ τὰ τῷ Ἱεροσολύμων Πατριάρχῃ Δοσιθέῃ;  
 ἐν τοῖς περὶ τῶν ἐν Ἱεροσολύμοις Πατριάρχαις· ὅς ἐν Βιβλ: Ι'. περὶ τῆς ἐν Φλω-  
 ρεντίας Σωόδου διαλεγόμενος, διατείνεται, „ὅτι ἔτε Οἰκουμενικὴ αὕτη ἐστίν, ἔτε  
 „Ἀγία· ἀλλὰ δολία, τυραννική, καὶ παράνομος. Διελθε δὲ τῷ αὐτῷ Βιβλίῳ  
 καὶ ΚεΦ: Δ'. ἐνθα δέκνυται αὐτῆς τῆς Συνόδου ἡ ματαιότης. Καὶ ΚεΦ: Ι'. §:  
 Α'. καὶ Β'. ἐν οἷς καὶ ἀπὸ τῶν „Διεφθαρμένων αὐτῆς Πρακτικῶν σιωάγεται πο-  
 νηθευμένων γενέσθαι αὐτῷ Σωόδῳ. Σελ: 904: — 909.



παθαι. Ὑστερον μέντοι καὶ κείνων οἱ πλεῖστοι, πῇ μὲν κατὰ δια-  
νοίας ἀθένειαν, πῇ δὲ διὰ τὸν ἐκ τῆς μακρᾶς ἀποδημίας ὄχλον  
ἡττηθέντες, χεῖρας ὑπέχον τοῖς ὑπεναντίως ἐσῴσιν ἅπαξ τε  
τῶν ψυχῶν οἰάτινος ἐπικλίσεως γενομένης, Φαλαγγηδὸν ἐπὶ  
θάτερα προσεχώρησαν, ὥς τε τῶν Καθολικῶν τέως τὸν ἀριθμὸν  
ἀπομειωθῶσι ἄχρι τῶν ἑκοσιν. Ἐπεὶ δ' ἔν κατὰ τῶν ἐν τοῖς  
ὑποληφθεῖσι δὴ τέτοις γεννασιότερων, αἱ τῶν ἀντιφρονούντων ἐπα-  
πειλήσεις ἔδεν σωτεῖσθαι, τότε αὐτὰς ἰκεσίαις τε καὶ δακρύοις  
ἐντρέπαι καὶ παραβιάζεσθαι ἀνεβάλλοντο, ἐπικαιρέσθαι σφίσι βελού-  
σταθαι ἀναπέδοντες· μὴ γὰρ ἔβδομον ἐγκαταργημένους ἤδη ἄγειν  
αὐτὰς· πρὸς δὲ ταῖς τῷ χαμῶνος, καὶ τῇ ἐνδείᾳ ἔτι τετραχ-  
μένοις, μηδεμίαν σφίσιν ἐλπίδα ἄλλω καθυπολείπεσθαι· ὅποιον  
δ' ἂν ἄρα καὶ τὸ πέρας τῶν δεινῶν αὐτοῖς ἔσεσθαι; χρῶμαι τοίνυν  
τῷ τῶν πλειόνων ὑποδείγματι παρηκολογηκότας, τῶν ἀριθμῶ  
ὑπερβαλλόντων, τῇ Ἀυθεντίᾳ ἐφέπεσθαι. Ἐκεῖνοι μὲν ἔν ἀμε-  
τακινήτως ἐνέμενον καὶ πρὸς γε ταῦτα ἐφ' ἡμέραις τισί· τέως  
δ' ἔν, ὡς ἔδεν ὅτι καὶ σωτεῖσθαι τὰ πρὸς εἰρήνῃ, ὕστερον καὶ  
αὐτοὶ καθυπέβησαν ἐνδόντες τοῖς Ἀρειανόφροσι (19) παραπλήσιον  
δηλονότι τοῖς ἐν Φλωρεντίᾳ εἰληφότες τὸ τέλος· εἰ μὴ ὅτι, ἐκεί-  
σε μὲν, εἰς ἔδεν εἰς τῶν Καθολικῶν ὑπολείπειτο, ὁ μὴ τοῖς Ἀρει-  
ανοῖς ὑπενδός· ὥδε δὲ πλείονες ὅσοι ὁμολογητὰ διαμεμενήκασι  
καρτεροὶ καὶ σεβροὶ, ὡς ἔπειτ' εἰρήσεται. Καὶ γὰρ ἐπίσης τῷ  
τῆς ξενιτείας ἄχθει, καὶ τῷ μὴ ἄλλως ἐξῆναι ἐπανελθεῖν εἰς τὰ  
ἴδια, καὶ τῇ τῶν ἀναγκαίων δὲ ἐνδείᾳ, καὶ τῇ τῷ Κρατῆτος ἀσθενείᾳ,  
καὶ ταῖς θωπείαις τῶν λόγων, καὶ τῇ βίᾳ τελευτάων πρὸς τὸ τῷ  
μετὰ Λατίνων ἀσπασάσθαι εἰρήνῃ οἱ ἐν Φλωρεντίᾳ σιωελθόντες  
κατηπείγοντο Ἀνατολικοὶ· καθάπερ ἔν τῷ ἄχθει τῆς ἀποδημίας,  
ὡσάυτως, καὶ τῇ παρὰ τῷ Βασιλέως βίᾳ τῷ ἐπάνοδον, μὴ  
τῆς εἰρήνης γενομένης, ἥμισυ συγχωρῆντος, καὶ τῇ τῶν ἀναγ-  
καίων ἀπορίᾳ, πρὸς τῷ μετὰ τῶν Ἀρειανῶν εἰρηνῇ σιωθεῖσθαι,  
ἐκινουῶτο καὶ οἱ ἐν τῇ κατὰ Ἀρίμινον Σινόδῳ ἀθροισθέντες  
Κα-

(19) Ταῦτα παρὰ Σωκράτει (Ἐκκλησιᾶ: Ἰσορ: Βιβλ: Δ'. ΚεΦ: ΙΑ'.) αὐτὸς μαρτυρεῖ  
ὁ Ῥάμης Λιβέριος. „Πάντων τῶν κατὰ τῷ Δύσιν Ἐπισκόπων, τῶν εἰς τὸ Ἀρί-  
μινον σιωελθόντων, ὅποτε τέττες ἡ κακοῦθαι τῶν Ἀρειανῶν σιωεργότησεν, ὅπως  
„ἢ διὰ παιθῆς τινος, ἢ, ἵνα ἀληθέστερον εἶπω, κοσμικῆς διωάμεως, τῷ ὅπερ  
„ἀσφαλέστατον ἦν ἐν τῇ Πίσει κείμενον ἀνέλοιεν, ἢ πλαγίως ἀρνήσανται· ἔδεν  
„τέτων ὠφέλησεν ἡ πανουργία. Καὶ γὰρ σχεδὸν πάντες ἐκεῖνοι οἱ ἐν τῇ Ἀρίμινῳ  
„γενόμενοι, καὶ δελεαθέντες, ἢ ὑπαχθέντες τότε, νῦν ἀναφρονήσαντες, καὶ ἀναθεματί-  
„σαντες τῷ Ἐκθεσιν τῶν ἐν Ἀρίμινῳ σιωελθόντων, καὶ ὑπογράφαντες τῇ Καθολικῇ  
„καὶ Ἀποστολικῇ Πίσει, τῇ κατὰ Νίκαιαν Θεσπιθέσῃ· οἱ καὶ ἡμῖν κοινωρήσαντες,  
„ἐκδυμότερον κατὰ τῷ Ἀρείῳ Δόγματος, καὶ κατὰ τῶν αὐτῶ μαθητῶν χαλε-  
„παίνουσι.

Καθολικοί. Τῆς τοίνυν ἐν Ἀριμίνῳ ἐκείνης, ὡς δολερᾶς τινος Σωόδου καὶ ληστρικῆς ὑπὸ πάντων καταψηφισομένης τε καὶ ἀποκηρυττομένης, ὅσω δικαιότερον ἢ ἐν Φλωρεντίᾳ Σωόδος αὕτη, ὡς ληστρικὴ τε καὶ καταναγκαστικὴ, καὶ δολιῶδης, καὶ Σιμωνιακῇ, ἐκκηρυκτέα ἂν εἴη καὶ κατακρίσιμος; Πλεονεκτεῖ γὰρ δηλονότι ἐκείνης ἐν τέτῳ αὕτη, ὅτι πάντα ὥδε Σιμωνιακῶς διεπεράνθη· καὶ μὲν δὴ, καὶ κατεπείγοντος, καὶ ἐπικαιμένου, καὶ ἐπαπειλάντος αὐτῆς παρόντος τῷ Αὐτοκράτορος, ὅπερ εἰς αὐτῶς συμβεβήκει κατὰ τὴν ἐν Ἀριμίνῳ τὸ τιμικαῦτα Σωόδον.

Ἀλλ' ἵνα μὴ καὶ πλάτῃεν αὐτοὶ δόξωμεν ἃ περὶ τῆς ἐν Ἀριμίνῳ Σωόδου ἐκείνης φασκέν, ἀκκέσθω δὴ ΣΟΥΛΠΙΚΙΟΣ ΣΕΒΗΡΟΣ ἐν Βιβλ: Β'. τῆς Ἱερᾶς Ἱστορίας· αὐτῶς γὰρ ἐσοιχόμεν τοῖς ῥήμασιν ἀνωτέρω, ἔτω γράφοντος: „Τῆς Σωόδου τελεοθέσεως, ὡρίσθη πρεσβείαν παλῶν τῷ Αὐτοκράτορι τὰ διαπραχθέντα ἀπαγγελεῖσθαι. Ἀπῆλθον δὲ καὶ οἱ καταψηφισθέντες, ταῖς γε τῶν ὁμοφρονούντων διωάμεσι, καὶ ἐδέν τι ἡτλῶν τῇ τῷ Βασιλέως ὁμοφροσυνῇ κατοχυρούμενοι. Ἐν δὴ τέτοις, τῶν παρὰ τῆς ἐν Ἀριμίνῳ Σωόδου ἀποσαλέντων, τὰς ὡς ἐκ τῶν ἡμετέρων, βιάζεσθαι ὁ Αὐτοκράτωρ συγκοινωνῆσαι τοῖς ἐκ τῆς Αἰρέσεως, ὅρον Πίσεως αὐτοῖς διδῶς τῆς ὑπὸ τῶν κακοφρόνων συγγραφείσης, καὶ ῥήμασιν ἀπαληλοῖς σωελημμένης, ἐν οἷς ὑπὸ τῇ Καθολικῇ Διδασκαλίᾳ ἐλάνθανε φθεγγομένη ἢ δυσεύθεια. Καὶ γάρ τοι τῶν τοῦ Οὐσίᾳ, ὡς δὴθεν ἀμφίλογον, καὶ εἰκὴ ἐν χρήσει τοῖς Πατράσι ληφθέν, ἐξ Αὐθεντίας τῆς Ἱερᾶς Γραφῆς προεληλυθός, ὑπὸ προχρήματι λόγῳ μὴ ἀληθεύοντος, ἐξήτηλον ἐποιεῖτο, ὡς ἂν μὴ ὁ Υἱὸς σὺν τῷ Πατρὶ μίᾳ εἶναι εὐσέας πισύβοιτο. Ἡ αὐτὴ δὲ Πίσις, ὅμοιον τῷ Πατρὶ τὸν Υἱὸν ὡμολόγει· ἀλλ' ἐνδοθεν ἐξ ἐτοίμου παρὼς ὁ δόλος· ἢ ὅμοιος μὲν, μὴ ἴσος δὲ ἦ. Οὕτω τῶν Ἀποκρισιαρίων ἀπολυθέντων, ἐπιτέτακται τῷ Ἐπάρχῳ, μὴ πρότερον ἀπολύσαι τὴν Σωόδον, πρὶν ἢ ἐκείνη τῇ Συγγραφείᾳ Πίσει σωθεῖται, δι' ὑπογραφῶν ἰδίων ἀπαντες ἐπαγγέλλαντο: εἰ δέ τινες ἰχυρογνωμονέσερον ἐπιμένοντες προσιζάμενοι, εἰ μόνον τέτων ὁ ἀριθμὸς ἐντὸς τῶν πεντεκαίδεκα περικλείοιτο, εἰς τὴν ὑπερορίαν αὐτὰς ἀπελαύνεσθαι. Ἀλλὰ γὰρ τοῖς Ἀπεσαλμένοις ἐπανίστι, καὶ τοι τὴν παρὰ τῷ Βασιλέως ἀνάγκην πρὸς ὑποπαράτησιν προβαλλομένοις, ἀπιώησαντο τὴν κοινωνίαν. Τῶν δέ τοι ὀριθέντων φανερῶν γενομένων, μέσσω ὁ ἐπὶ τῶν πραγμάτων καὶ τῶν βελούματων ὡς ὁ δόρυβος. Εἴτα κατὰ βραχὺ τῶν ἡμετέρων συχνοὶ, πῇ μὲν κατὰ φύσεως ἀθένειαν, πῇ δὲ τῷ τῆς ξενιτείας ἄχθῃ ἡτληθέντες, παρέδωκαν σφᾶς τοῖς ὑπεναντίοις, ἰχυροτέροις ἢ δὴ μετὰ τὴν τῶν ἀπεσαλμένων ἐπάνοδον καθεσῶσι, καὶ τὴν

Τόμ: Β'.

Υ νυυυυ

„Ἐκ-

„Εκκλησίαν (ἀπελαθέντων τῶν ἡμετέρων) ἐπικατάχῃσι. Ταῖς  
 „τοίνω ψυχαῖς, οἷά τινος ἐπικλίσεως ἅπαξ ἐγγενομένης, καὶ  
 „ἴλας ἐπὶ θάτερα προσεχώρην, μέχρις ἔπερ ἐς εἴκοσι, ὁ τῶν  
 „καὶ ἡμᾶς ἀπομεμείωται ἀριθμός· οἱ δ' ἐν, ὅσω περ ἐλάτῃας,  
 „τοσούτῳ σερρότεροι διετέλυν· σερρότητι δὲ μάλιστα διαφέρων ἐν  
 „αὐτοῖς ὁ, τε ἡμέτερος Φαιγάδιος, καὶ ὁ Τέγγρων Ἐπίσκοπος  
 „Σερβατίων· τέτῃς τοιγαρῶν, ὡς εἰδ' ἀπειλαῖς, εἰδὲ δάμασιν ἐνεδί-  
 „δοσαν, παρακλήσεσιν ὁ Ταῦρος μέτεισι, καὶ δακρύων διαμαρ-  
 „τύρεται, ὅπως ἂν ἐπιεικέστερα σφίσι βελοῦσαιντο. Περιορισμέ-  
 „νων γὰρ τῶν Ἐπισκόπων ἐντὸς πόλεως μιᾶς, μὴ δ' ἐκτὸς ἐβ-  
 „δομον ἡδὴ ἀγόντων, ὑπὸ τε τῆς ἐκ τῆ χειμῶνος ἐπηρείας, καὶ  
 „ὑπὸ ἐνδείας τετραχωμένων, μηδὲ πρὸς ἐπάνοδον ἐλπίδος εἰδε-  
 „μιᾶς ὑπέσης, ὅποιον ἄρα τὸ πέρας ἂν γένοιτο; Ἐπεὶ δ' αὖν  
 „ἄρα τῶν πλειόνων τῷ ὑποδείγματι, ἐκ δὲ τῆ ἀριθμῆ μόνον τὸ  
 „κῦρος ἐκδέχεσθαι. Ὁ γὰρ Φαιγάδιος ἐτοίμως ἔχειν καὶ εἰς  
 „ἐξορίαν, καὶ εἰς πᾶν ὅτις δεινὸν, εἰς ὅπερ ἂν ἀπαιτηθεῖη κα-  
 „τεπηγγέλλετο, ὡς μηδαμῶς μηδέποτε τῷ ὑπὸ τῶν Ἀρειανῶν  
 „ἐκτεθεῖσαν Πίσιν ὑποδεξόμενος. Οὕτως ἐν τῷ τοιῷδε ἀγῶνι  
 „ἡμερῶν τινων παραρρύνεισιν, ὡς μικρόν τι ἐπεδίδυν τὰ τῆς εἰρή-  
 „νης, κατὰ βραχὺ καὶ ἔτος ὑποθρανθεῖς, τελοῦταῖον σωθήκης  
 „αὐτῷ τινος προτεθείσης ἐνδέδωκε. Οὐάλης γὰρ καὶ Οὐρσάτιος  
 „διεβεβαῖοντο, τῷ προβαλλομένῳ Πίσιν Ὀρθόδοξον μὲν ἔσαν  
 „τὸ φρόνημα, ὑπὸ δὲ τῶν Ἀνατολικῶν, ἀρχηγετῶντος τῆ Αὐτο-  
 „κράτορος, προενεχθεῖσαν, μὴ ἂν ἀπροσρόπως ἔχειν ἀποκηρυχ-  
 „θῶναι· ὅποιον τι γὰρ καὶ τῶν διαφωνιῶν γένοιτο πέρας, εἰ ὅπερ  
 „ἂν τοῖς ἐξ Ἑώας ἀρέσκοι, τέτο τοῖς Δυσμικωτέροις ἀπαρέσκον  
 „εἶη; Ἀλλὰ τελοῦταῖον, καὶ εἴτι διὰ τῆ παρόντος ὄρε τῆς Πί-  
 „σεως ἐνδεέστερον δόξειεν ἐκδεδοῦσθαι, προσιθῆτωσαν αὐτοὶ, ἅτῃ  
 „ἂν νομίσαιεν δεῖν προσεθῆναι, ὡς ἐτοίμων αὐτῶν ὄντων, οἷς  
 „ἂν προσεθείη συγκατανεῦσαι. Τῷ ἐν ἐπαγγελίαν, ἅτε δὴ κατὰ  
 „θυμὸν ἔσαν, ἡδιστα πάντων ἐπασμενισαμένων, εἰδὲν περαιτέρω  
 „ἐτόλμησαν οἱ ἡμέτεροι ἀντιφθέγγεσθαι, ὅτῳ ἡδὴ τρόπῳ πέ-  
 „ρας ἐπιθέσθαι τοῖς πράγμασιν ἐφιεμένοι. Ἐπὶ τέτοις αἰ παρὰ  
 „Φαιγαδίᾳ καὶ Σερβατίωνος Ὁμολογίαι ἐκδίδουσθαι ἡρξάντο. Ἐν  
 „αἷς πρὸ πάντων Ἀρειος καὶ ἡ ἐκείνῃς δυσέβεια πᾶσα ἀποσυρίτ-  
 „τεται. Οὐμὴ δ' ἀλλ' ἐχὶ καὶ τῷ Πατρὶ ἴσος, καὶ ἀρχῆς ἀνευ,  
 „καὶ χρόνῳ ἐπέκειν· ὁ τῆ Θεῆ Υἱὸς ὁμολογεῖται· τότε δὲ τῆ  
 „Οὐκίλεντος, ὡς εἰ καὶ τοῖς ἡμετέροις ἐτύγχανεν ἐπιβοηθῶν,  
 „γνώμῳ ὑποβαλόντος ὑφ' ᾧ ὁ δόλος ἐλάνθανε· μὴ εἶναι δηλο-  
 „νότι τὸν Υἱὸν τῆ Θεῆ κτίσμα κατὰ τὰ λοιπὰ τῶν κτισμάτων,  
 „τῇ τῆς ὁμολογίας διπλὴν παρεκρέσθησαν οἱ ἀκέσαντες. Ἐν  
 „γὰρ τοῖς ῥήμασι τέτοις, δι' ὧν ὅμοιος εἶναι τοῖς λοιποῖς τῶν  
 „κτισ-

κτισμάτων ἀπεφάσκετο ὁ Υἱὸς, ἔδεν ἥττον ἀνεκηρύττετο κτίσμα  
 ὢν, καί τοι τῶν ἄλλων ὑπέρτερον. Οὕτως ἄδετέρα μερὶς οἶε-  
 σθαι εἶχεν, ἔτε νικῆσαι, ἔτε νικηθῆναι τὸ σωῶλον· ὅτι ἡ μὲν  
 Πίστις αὐτῇ ὑπὲρ τῶν Ἀρειανῶν ἴσατο· αἱ δὲ ὕστερον προσεθε-  
 σαι ὁμολογίαι, ὑπὲρ τῶν ἡμετέρων ἦσαν, παρὰ τὴν ὑπὸ Οὐά-  
 λεντος παρεπισωαφθεῖσαν· ὡς τότε μὲν ὁ σωῆκαν, ὁψὲ δὲ  
 πᾶσι σωιέοντες σωεωράκασιν. Καὶ τῷδε δὴ τῷ τρόπῳ ἡ Σωώ-  
 δος ἀπελύθη, ἡ ἔν μὲν ἐναρξάμενη, αἰχρὰν δὲ χῆσα κατὰ  
 τὴν ἔξοδον τὴν σωτέλειαν.,.

Ἐπειδὴ τοίνυν ὅν ἐρηται τρόπον, ἡ ἐν Φλωρεντία Σωώδος  
 σωελεάθη, παρὰ χορδῶ πάντως ἡχεῖ τὰ ὑπό τινος Ἰησεῖτε (20)  
 γραφόμενα. „Ἀγνοεῖν ἔκ ἔχουσιν, ὁ μόνον τῆς Γραικῆς, καὶ  
 τῆς Γερμανῆς Ἱστορικῆς (ὣν ἐν μὲν αὐτῇ Βιβλίον κατὰ Νοριμ-  
 βέργην, ἐκδοθὲν, ὡς ἐγγιστα μετὰ τὴν Φλωρεντινὴν Σωώδον,  
 ἐν Γεδόνῳ κατέδον, ἐπὶ τῆς Βιβλιοθήκης τῆς Ροζράζεβιανῆς·  
 ἕτερον δὲ κατὰ Ἀυγύσω, τὸν αὐτὸν χρόνον ἐκτυπωθὲν  
 ἐν Κιαιβίᾳ, ἐν τῷ παλαιάτῳ τῆς Ἐπιφανεσάτης τῶν Κηρύ-  
 κων Πατέρων Κοινοβίῳ ἐθεασάμην.) ὁ μόνον, φημι τῆς κατ'  
 ἑκείνου ἡγμακότας Γραικῆς τε καὶ Γερμανῆς Συγγραφεῖς, μαρ-  
 τυρεῖν, ἐν παντελεῖ τῇ τῶν Ἀνατολικῶν καὶ Δυτικῶν Πατέ-  
 ρων συμφωνίᾳ (ἐνὸς ἀνθικράτορος τῆ Μάρκε· ἢ, ὡς ὁ Γραι-  
 κὸς τῆς Φλωρεντινῆς Σωώδος Συγγραφεὺς φησὶν: Κορώνης μιᾶς  
 μενάσης Κορώνης) ἐντυχέσασα διαπερανθῆναι: Ἀλλ' ἐν αὐτῇ  
 δὴ τῆς Γραικῆς ὅπως αὐτῆς, ἀλλ' ἐτι καὶ τῆς Ἀρμενικῆς,  
 μετὰ τῆς Ῥωμάνας Ἐκκλησίας σωενωθῆναι. — Ἀλλὰ γὰρ μή-  
 ποτε ἄρα ἡ τῶν ἐν Φλωρεντία διαπεπραγμένων ἀλήθεια παρ'  
 αὐτῶν Λατίνων δηλονότι τῶν Γερμανῶν, ἢ παρὰ τῶν ἀπὸ τῶν  
 Γραικῶν αὐτομολησάντων πρὸς τῆς Λατίνους (τῆς γὰρ ὁ  
 Ἰησεῖτης ἐφεξῆς ἐπικαταλέγει.) ζητῆσθαι ἥτοι εἶχεν, ἢ ὥφειλεν;  
 ἴδομεν αὐτοὶ Σύλβεσσον τὸν Συρόπελον· ἴδομεν τῆς ἄλλης τῆς  
 ἐπ' ἐκείνης τῆς Σωώδος παρεσιάσαντας· ἀλλὰ παρὰ τέτοις μα-  
 κρῷ διαφέρεσα ἢ ὅψις τῶν ἐκείναις πραγμάτων παρίσταται· τὸ γὰρ  
 σωῶλον, Σιμωνιακῶς, καὶ κατὰ δόλον καὶ βίαν τὴν Σωώδον  
 ἐκείνην φαίνεται ῥαδικωρῆθαι, καὶ μηδέποτε Λατίνοις τῆς Ἀνα-  
 τολικῆς σωθῆναι· ἐφ' ὅσον τέτοις διέσωζετο τὸ ἐλεύθερον. Οὕ-  
 τως ἔν ἄρα, ἐν παντελεῖ τῇ ὁμοφροσύνῃ τὴν τῶν Ἀνατολικῶν  
 τε καὶ Δυτικῶν Σωώδον ἐντυχέσασα διαπερανθῆναι λέγοιτ' αἱ;  
 ἐν ἣ σωέθεντο μὲν οἱ Ἀνατολικοὶ Πατέρες· ἀλλὰ δόλῳ, ἀλλ'  
 ἐπιτάγματι καὶ βίᾳ Βασιλικῇ, ἀλλὰ κατὰ Σιμωνίαν πρὸς τῆς  
 αὐτῇ

(20) Κιχώβ: Ζητήμ: Β'. Σελ: 25.



αὐτὸ ἐναγόμενοι. Καὶ μὴ ἔδ' ἐκείνο ἀληθές, ὅτι μόνος ὁ Μάρκος ἀντιδιεμαρτύρατο κράξας, πλειόνων παρὰ τῶτον ἔτι καὶ ἄλλων, ἐνεπιμεινάντων ἀνευδότως τῇ τῶν Λατινικῶν ἀποκηρύξει Δογματῶν· περὶ ὧν εἰσέπατα. Ἐπὶ δὲ τέτοις, καὶ εἴ τι τελευταῖον περὶ τῆς Ἀρμενίας διεπράξατο ὁ Πάπας Ἐυγένιος· ἀλλ' ἔδεμیان ὅμως Ἀρμενικὴν μεταξὺ καὶ Λατίνων γενέσθαι ἔνωσιν, τῶτο δὴ τῶν βεβαιοτάτων ἐστίν. (21). Διαρρήδην μὲν γὰρ ΒΟΤΕ-

ΤΕ-

- (21) Ὡραίος ὁ Ἰερωνυμὸς ἐν τῷ Προλόγῳ τῆς Συλλογῆς τῶν Πρακτικῶν τῆς Φλωρεντίας: Συνοδὸς παρὰ Ἀρδεῖ: Τόμ: Θ'. Σελ: 672, Φησὶ, „τὰς ὅρας τῆς Πάπας Ἐυγενίου, περὶ τῆς ὑπακῆς τῶν Ἀρμενίων τε καὶ Ἰακωβιτῶν τῷ Ἀποστολικῷ Θρόνῳ . . . (Εἰ καὶ ἐν τῷ Ῥωμάνῳ Βελλαρίῳ, καὶ ἐν τοῖς Βατικανικοῖς Κώδικεσιν, „αἰσινώσκονται“) αὐτὰς γεμὴν ἄλλως εἶναι ἀδήλως. Οὐ μόνον γὰρ, Φησὶ, ἐν τοῖς Πρακτικοῖς τῆς Συνοδῆς εἰ ταῦτοι ἔροι ἑδαμῶς ἐκδέδονται, ἀλλ' ἔδ' ἄλλοθι, „πε ὅλως δημοσίᾳ φαίνεται, ἐκ τίνος ἀφορμῆς; τίνων τε διαπρεσβυσομένων; „καὶ τίσιν ἄρα οἱ Ἀποσταλέντες ἐνέχον; τίσι δ' ἐνέδωκαν; ἐφ' οἷς τε τὰ τῶν ὁρῶν ἐγένετο; Τὶ οὖν ἐκ ἐσθλάσεν ἢ Ῥώμη δημοσιεύσαι τε καὶ γνωστῶ παῖσαι τιῶ πρὸς αὐτῶν τιῶ Ῥωμάνων, τῶν Ἐκκλησιῶν ἐκείνων προσαγωγῶν, καὶ ὑπακοῶν, καὶ ἔνωσιν; ἢ, ὅτι ἔδεμیان τῷ ἐντὶ συνέσει τοιαύτῃ ἔνωσις. Ἀπέδειξεν δὲ, ἢ μέχρι καὶ κατ' ἡμᾶς παρὰ τοῖς Ἀρμενικοῖς κρατῶσα Πίστις περὶ τῆς Ἐκπερόσεως τῆς Ἀγ: Πνεύματος, ἣν ἡ τῆς Ἀρμενικῆς Ἐκκλησίας ἐμολογία, καθάπερ ἔ' πρὸ πολλῆ ταύτης ἡμῖν τιῶ Ἐκθεσὶν Λατινιστὶ διερμηνεύσας, καὶ σημειώσασιν ἰδίαις τισὶ διασαφίσας ἐξέδωκεν Ἰωάν: Ἰωακείμ ὁ Σχρηδέρης ἐν τῷ Βιβλίῳ τῷ Ἐπιγραφῇ Θεσαυρὸς τῆς Ἀρμενικῆς Διαλέκτου τυπωθέντι ἐν Λενδίνῳ, παρὰ Ἰωάν: Ρίβιγγτον, ἔτει 1780. Ἐν γὰρ τῇ ἐμολογίᾳ, ἣν καὶ σήμερον παρ' Ἀρμενίοις ὁ Ἀνάδοχος, ὡς ἐκ τῆς βαπτισμένης ἡπίης ἐκφανεῖν εἴποιται: „Ἐξ ὅλης „(Φησὶ) καρδίας πιστεύομεν, τὸν Πατέρα καὶ Θεὸν ἐκείνον, ὃ ποιηθέντα, ὃ γεννηθέντα, ὃ ἀρχιῶ ἔχοντα, καὶ τῷ Υἱῷ ὄντα γεννητότερα, καὶ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος πρεσβυλεύα. — Πιστεύομεν εἰς τὸν Λόγον ἐκεῖνον καὶ Θεόν ὃ ποιηθέντα, ὃ γεννηθέντα δὲ, καὶ ἀρχιῶ ἔχοντα ἐκ τῆς Πατρὸς πρὸ πάντων τῶν αἰώνων τὴν ἡμῖν ὑπερῶν, μῆτε ἐλάσσονα· ἀλλ' ὥσπερ ὁ Πατὴρ ἐκεῖνος Πατὴρ ἐστίν, ἔτω καὶ ὁ Υἱὸς ἐκεῖνος Υἱὸς ἐστίν. — Πιστεύομεν εἰς τὸ Ἅγιον ἐκεῖνο Πνεῦμα, μὴ ποιηθέν, μὴ ὑπὸ χρέονος μὴ γεννηθέν, ἀλλ' ἐκπορεύομενον ἐκ τῆς Πατρὸς ὁμοῦσιον τῷ Πατρὶ, καὶ σὺνδοξαζόμενον τῷ Υἱῷ. Καὶ τῶτο δὲ ἄρα τὸ περὶ τῆς Ἀγ: Πνεύματος ἄρθρον, Γρηγόριος ὁ Ναριεκλιῆσις Ἐπίσκοπος διαλυσκαίνων, παρὰ τῷ Σημειωτῇ Ἀγγλῳ (Αὐτ: Σελ: 17.) „τὸ Πνεῦμα (Φησὶ) τὸ Ἅγιον ἐστὶ πνεῦσις παρὰ τῆς Πατρὸς ἀβήγητος, ὃ κατὰ Γέννησιν ὡς ὁ Υἱὸς, ἀλλὰ κατ' Ἐκπόρευσιν ἐκ τῆς ἐσίας ἐκεῖνης. Κατ' ἐκεῖνο δὴ τὸ τῆς Ἰωάννης Κεφαλ: ΙΕ'. Πνεῦμα τῆς ἀληθείας, ὃ παρὰ τῆς Πατρὸς ἐκπορεύεται· ἢ τῶτο σινάπτει καὶ ὁ Κλαυδίουσιος Πατριάρχης Νιερσῆσις: τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐστὶν Ἐκπόρευσις (ἢ τοῦ Ἐκπόρευμα) παρὰ τῆς Πατρὸς. Καὶ Νιερσῆσις ὁ Λαμπρονιώσιος Ἀρχιεπίσκοπος: τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐστὶν Ἐκπόρευσις ἐκ τῆς Πατρὸς, ὡς ἐκ πηγῆς. Ἐνθα ὁ Ἀγγλος ἐν ταῖς αὐτῇ παρασημασίαις (Αὐτ: Σελ: 18.) ἐπάγει καὶ τὸ τῆς Θεᾶς Λαμασκίως, ἐκ τῆς περὶ τῆς Ὁρθοδ: Πίς: Βιβλ: Α'. „Ὅτι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον καὶ ἐκ τῆς Πατρὸς λέγομεν, καὶ Πνεῦμα Πατὴρ ἐνομάζομεν, ὃ ἐπαγαγὼν δὲ προσέθησιν: Idem etiam ab Armenis Patribus dici plus semel observavimus: (τὸ αὐτὸ καὶ ὑπὸ τῶν „Ἀρμενίων Πατέρων λέγεσθαι, πλέον ἢ ἅπαρ „παρατηρηθήκαμεν) Ἀλλ' ὅπερ τῇ ἰδίᾳ δόξῃ σοιχᾶν ὁ Σχρηδέρης ἔτος εἰσβάλλει: τὸ ἐκ ἀσαφῶς ἐντεῦθεν ὑποσημαίνεσθαι (τιῶ τῆς Πνεύματος ἐκ τῆς Πατρὸς καὶ „ἐκ τῆς Υἱᾶς Ἐκπόρευσιν.) non obscure insinuari Processionem Spiritus S. a Patre et Filio: παρὰ τὸ Πνεῦμα λέγεσθαι ἀμφοτέρων καὶ τὸ ἐκ τῆς αὐτῆς εἶναι ἐσίας· καὶ διὰ τὸ ἐκ τῆς Υἱᾶς λαμβάνειν, καὶ ἐξ αὐτῆς πέμπεσθαι· ταῦτα δὴ καὶ τὰ τοιαῦτα, ἀντιπρεσβαλλόμενα μάτῳ (περὶ ὧν ἄλλῃ εἴρηται ἐν ταῖς ἀνωτέρω.) ἔδ' ἐν μᾶλλον Ἀρμενίῳς, ἢ τὰς λοιπὰς ὀρθοδόξους, Λατινοφρονέοντας παρίστησιν· ἔσας ἐν τῶν Ἀρμενίων περὶ τῆς Πνεύματος καὶ κατ' ἡμᾶς οἶα δὴ καὶ πάλας δόξης ἐχόν-

ΤΕΡΟΣ ἐν τῷ Γ'. Μέρει τῶν καθόλου ἐκδιηγήσεων, ἐν Κεφαλαίῳ τῷ περὶ τῶν Δίοσκοριανῶν· ἐνθα περὶ τῶν Ἀρμενίων καθιστορεῖ, (ὡς ἐκ τῆς κοινῆς Ἰταλίδος Φωνῆς, ἐν ᾗ αἱ ἐκδιηγήσεις ἐκείναι δημοσίᾳ ἐκδεδομέναι φέρονται, ἐπὶ τῷ Λατινίᾳ ἐρμηνεύσασαι·) ὅτι „Ἐμνήθησαν τῆς πρώτης αὐτῶν (οἱ Ἀρμένιοι) „μετὰ τῆς Ῥωμάνας Ἐκκλησίας ἐνώσεως, τῆς ἐπὶ Συλδέσσε „τῆ Πάπα, καὶ Κωνσταντίνου γενομένης τῆς Αὐτοκράτορος. Καὶ „ἡμεῖς οὐκ ἔχομεν τῷ τῆς ἐνώσεως Βάλλαν τῶν Ἀρμενίων, „τῶν Γραικῶν, καὶ τῶν Ἰακωβιτῶν, τῷ ἐν τῷ τέλει τῆς Φλωρεντινῆς Συνόδου γεγεννημένῳ. Καίτοι γε αὐτοὶ Ἀρμένιοι, παραπλησίως δὲ καὶ Ἰακωβίται, ἔδδ' ἐν τῷ τυχεῖσαν αὐτῆς ἐπιδιασώσασιν μνήμῳ. (22).

## § Δ'.

Ἀλλὰ τέταρτον, εἰ καὶ τὸ πλεῖστον μέρος οἱ κατὰ Φλωρεντίαν ἀθροισθέντες Ἀνατολικοὶ, κατ' ὃν ἔρηται τρόπον, Λατίνοις ἐνέδωκαν, ὑπῆρξαν ἀλλ' οὐ καὶ οἱ ἀνεκδότως ἐκείνης καταβοήσαντες τῆς ἐνώσεως. Ἐν δὴ τέτοις ὑπερεῖχε ΜΑΡΚΟΣ ὁ Ἐφέσος Ἀρχιεπίσκοπος, ὁ καὶ Ἐξαρχος ἔτι ἐπὶ τῆς Συνόδου τελῶν· ὅς τῶς ἐν τε Φεβρουάρῳ, καὶ ἐν Φλωρεντίᾳ, τὸ τῶν πρὸς Λατίνους Διαλέξεων ἄχθος μόνος ὑπέστη· ὅς τε καὶ πάντων ἄριστα, μηδὲν τι ἔμπεδον ἐν ἑαυτοῖς τὰ Λατινικὰ τῶν Ἐπιχειρημάτων περιέχοντα σιωπῶντος, ἔδδ' ὡς ὡς κατὰ τῆς ἰδίας σιωπῆτος τοῖς τῶν ἄλλων Σιμωνιακοῖς ὑπεκδοῦναι λόγοις, ἔδδ' τοῖς ἐπιτάγμασι παιδαρχῆσαι, ἔδδ' ταῖς προτροπαῖς τε καὶ ἀπειλαῖς ὑπεῖξαι ταῖς τῆς Αὐτοκράτορος. Καθήψατο δὲ τῆς Πάπα μόνος τῶν ἄλλων τῶν διαπεφωνηκότων ὁ Μάρκος, τῇ τῆς Συνόδου καθυποβλήν αὐτὸν ψήφῳ θελήσαντος· (23) καὶ τάχα ἂν ἐκ τῆς ὁμολογίας ἦρθη ἐπὶ τὸ Μαρτύριον, εἰ μὴ τῆτο παντάπασιν οἶον τε εἶναι

ἔχόντων, τί ἄρα γέγονεν ἢ παρὰ τῆς Πάπα Ἐυγενίου μετὰ τῶν Ἀρμενίων αὐτῶν διαπραχθῆναι θρυλλομένην ἑνωσιν;

- (22) Εἰς δὲ τῷ τέτῳ διαπίστωσιν φέρεται, καὶ ἡ Κλαυδία Ἰακωβίτης πρὸς Ἀνατόλιον, ἐν τῷ Γαλλικῷ Συγγράμματι: Sur la Perpetuite de la Foy. (περὶ τῆς Αἰδιότητος τῆς Πίστεως) τῆς μαρτυρίας ἀνακαλῶντος Ἀντώνιον De Gouvea, ἐν ταῖς αὐτῆς Ἐκδιηγήσεσι λέγοντα: Je ne trouve entre eux (les Grecs Armeniens) aucune memoire de cette Reduction, ny que ce concile y ait été publié, ny cette observance prechée; Il n'en apparait aucune chose par leurs Livres, et par leurs traditions; il ne se voit rien qui en fasse aucune mention. „(Οὐδὲν παρ' Ἀρμενίοις εὐρίσκω ὑπόμνημα „τῆς αὐτῶν Ἀποκαταστάσεως· ἔδδ' ὅτι ἡ Σύνοδος αὕτη παρ' αὐτοῖς ἀνεδημοσιεύθη. . . . Οὐδὲν τοιοῦτον φαίνεται ἐν τοῖς παρ' αὐτοῖς Βίβλοις, ἢ παραδόσεσιν· ὅλως ἔδδ' ἐν τῷ τυχεῖσαν ποιῆν ὑπόμνησιν.)

- (23) Σησημείωται ταῦτα καὶ Δοσιθέῳ, ἐν τοῖς περὶ τῶν ἐν Ἱεροσολ: Πατριαρχ: Βιβλ: Γ'. Κεφ: Γ'. Σελ: 906. „Ἀντίση ὁ Ἐφέσος τῷ Πάπα Συνωδικῶς προκαθήμενῳ· ἔδδ' αὐτὸν ὁ Πάπας καθῆραι, καὶ ἐκ ἡδυνῆθαι.

Τόμ: Β'.

Φ ΦΦΦΦΦΦ

εἶναι γενέσθαι ὁ Αὐτοκράτωρ ἡρνήσατο, ΣΥΛΒΕ΄ΣΤΡΟΥ ἐπιμαρ-  
τυρήτης τῆ Συροπέλας, ἐν Κεφαλ: ΙΒ'. τῆ Ι'. τῆς Ἰσορ: Τμή-  
ματος. Μετάπεμπτος δ' ἐναντίον τῆ Πάπα παρασῶς, καὶ τοιγε-  
δινὰ ἀπειλῶντος, ὅδ' ἔτω τῆς περισῆς εὐσαθείας παράσαι-  
θῶμαι δεδωήται (Σύλβες: Αὐτ: Κεφ: ΙΕ'). Ἀλλ' ὅδ' ὁ ΔΕΣ-  
ΠΟ΄ΤΗΣ ὁ γνήσιος τῆ Βασιλέως ὁμαίων, ταῖς Λατίνων ἐπὶ-  
δοκήσας ἡγάπησε δόξαις, (24) ὅδ' ὁ ΓΕΜΙΣΤΟΣ ὅδ' ὁ ΣΧΟ-  
ΛΑΡΙΟΣ, οἱ Γραμμῶν ἀπάντων κατ' ἐκείνο τῆ χρόνῃ Σοφύτα-  
τοι. (Ἐν ᾧ γὰρ ἤδη, οἱ μὲν ἄλλοι πλεῖστοι σωετίθεντο τῇ ἐνώ-  
σει, οἱ δὲ λοιποὶ εἰς τὸ παραδέξασθαι ταύτῃ κατωαγκάζοντο,  
οἱ ῥηθέντες ἔτοι σωάμα τῷ Δεσπότη Ἐνετίαζε ὑπεχώρου. (Συλβ:  
Συρόπ: Βιβλ: Θ'. Κεφ: Ι'.) τῶν δὲ δύο τέτων ἑδότερον εἰς Διά-  
λεξιν ἐπέτρεψαν εἰσελθεῖν οἱ Λατῖνοι. τὸ ὑπερέχον τῆς ἐν αὐ-  
τοῖς Σοφίας ἐν μάλα γιννώσκοντες. Μᾶλλον δὲ, καὶ ἵνα τὸν Γε-  
μιστὸν ἔτι καὶ πορρωτέρω ποιήσωνται, εἰς Γαλίαν ἀπέστειλαν,  
ὡς Βίβλος συλλέγοντα, καθάπερ αὐτὸς ἐδήλωσεν εἰπὼν ἐπὶ τῆς  
Συνόδου, τῆς ἐγγυῆς, πρὶν ἢ τῷ Κωνσταντίνῳ ὑπὸ Τέρων ἀλῶναι  
συζάσης περὶ ἧς ὕστερον. Ἀλλ' ὅδ' οἱ ἐκ τῆ τῶν Ἰερίων ἔθνης  
Ἀποκρισιάριοι συγκαταθέσθαι τῇ ἐνώσει ἡξίωσαν. (25) ὅτε καὶ  
τέτων ὁ ἕτερος, τῆς ὑπογραφῆς τῆ ὅρα προβαλλομένης κατὰ  
τῷ Λατίνων Πίσιν, τὸ τῆ Ἀντιοχείας Πατριάρχῃ προεξιλέγκα-  
το δίπλωμα δείξας, κελύοντος αὐτὸν μηδαμῶς συμφωνήσαι Λα-  
τίνοις, μηδ' ἄχρι κεραίας ἀπὸ τῆς ὁρθοδόξου τῶν Ἀνατολικῶν  
Πίσεως ὑφελέσθαι. (Σύλβες: Τμήμ: Θ'. Κεφ: ΙΒ'.) Καθ' ἀπερδὲν,  
ὅδ' ἐν ταῖς τῆ Φλωρεντινῆ ὅρα ὑπογραφαῖς, τὰ τῶν ἐξ Ἰερίας  
εἰρημένων Ἀποκρισιάρων ὀνόματα, ὁδὸλως ἐμφέρεται. Εἰ καὶ ὁ  
τὰ Πρακτικὰ τῆς ἐν Φλωρεντίας Συνόδου Συγγραφέας, κατ' ἀρ-  
χὰς τῆς Συνόδου, δύο Ἀποκρισιάρους, ἐξ Ἰερίας παρσιάσαι  
μαρτυρεῖ: (26). „Τπῆρχον γὰρ, φησὶ, καὶ ἀπὸ τῆς Ἰερίας  
„Μητροπολίτης εἷς, καὶ Ἐπίσκοπος εἷς. Καὶ ἐν τοῖς Πρακτικοῖς  
δὲ τῆς αὐτῆς Συνόδου, τοῖς ὑπὸ Ἀνδρέα τῆ ἀπὸ τῆ Ἀγίης Σταυ-  
ροῦ ἐκτεθεῖσιν, ἐν Σωελόσσει Α'. τοῖς ἐξ Εὔας Ἐπισκόποις συμ-  
παρσιάσαι μνημονόβεται καὶ Ἰερίος Μητροπολίτης, ὁ τῆ Ἰε-  
ρίας

(24) Ὁ Δεσπότης ὁ Ἀδελφὸς τῆ Βασιλέως, καὶ ὁ Σοφὸς Γεμιστὸς, καὶ Γεώργιος ὁ  
Σχολάριος ἀνεχώρησαν εἰς τὴν Βενετίαν πρὸ τῆ ὅρα τῆς Συνόδου καὶ ὑπο-  
γραφῆς. (Δοσίθ: ὁ Ἱεροσολ: Αὐτόθι.)

(25) „Ὁ Τοποτηρητὴς τῆ Καθολικῆ τῆς Ἰερίας, κολακιδόμενος ἵνα ὑπογράψῃ, πρῶ-  
τον μὲν ἔδειξε Γράμμα τῆ Ἀντιοχείας, τῆ παραγγέλαντος αὐτῷ προσέχειν  
„μὴ δεῖσθαι μήτε πρόδωσιν, μήτε ἀφαίρεσιν. Εἶτα φεβόμενος τῷ βίαν, ὑπε-  
„κρίθη τὸν φρενίτιον, καὶ ἔφυγεν. — Ὁ Ἄρχων τῆ Βασιλέως Ἰερίας, ἐλέγχας  
„τὸν Πάπαν Σωδοκῶς προκαθήμενον, ὡς προφανῶς παρανομῶντα, ἀνεχώρησεν.  
„(Δοσίθ: ὁ Ἱεροσολ: Αὐτ:)

(26) Ὅρα καὶ Ἀρδεῖν: ἐν τοῖς Σωδοκ: Τόμ: Θ'. σήλη 12.

ρίας Βασιλέως 'Αποκρισιάριος' ἀλλ' ἔδ' ἔτος ἔπειτα ὑπογεγραφῶς αὐτόσε ἀναγινώσκεται. Καὶ περὶ τῆ Σχολαρία δὲ, ἔτω ΛΑΟ-ΝΙΚΟΣ ὁ Χαλκοκονδύλας, Βιβλ: 5'. Σελ: 156. τῆς ἐν Παρισ: Γραικο-Λατίν: 'Εκδόσ: τῆς ἐν "Ετα 1650. μαρτυρεῖ γράφων: „Μάρκον τε τὸν 'Εφῆσθ' Ἀρχιερέα, ἔδὲ τῷ ἀρχίῳ τιθέμενον τῷ „τῶν Λατίνων Δόγματι τὸ παράπαν, καὶ Σχολάριον τὸν τότε „παρ' 'Ελλῆσι τὰ ἐς Σοφίαν ἐνδοκιμῶντα,,. 'Εκ τῆς τῶν Ἀνδρῶν ἄρα ἐκείνων διαφωνίας, καὶ μάλιστα Μάρκου καὶ Σχολαρία, καὶ Γεμισῆ, τῶν ἐπὶ Σοφίᾳ τὰ πρῶτα φερόντων, γίνεται καταφανὲς, ὅτι ἔ' λόγοις, ἔδ' ἀποδείξεσιν οἱ Ἀνατολικοὶ ἐνήχθησαν ἐπὶ τὸ βεβαιῶσαι τὰ τοῖς Λατίνοις ἀρέσκοντα· λογισμοῖς δὲ ἄλλοις ἀνθρωπίνοις προαχθέντες ἐνέδωκαν. Διὰ τῆς λόγων ἐκείνοι ἀπορῶντες, ἔς περ εἰς πληροφορίαν ἀπήταν, ἅτε δὴ σοφώτεροι ἀπηξίωσαν δι' ὑπογραφῶν ἀθεμίτων ἐπιθέσθαι βάρος ταῖς ἰδίαις αὐτῶν σιωδήσεσιν.

## § Ε'.

Πάλιν δὲ πέμπτον, οἱ ἐν Φλωρεντίᾳ ἐπὶ τῇ ἐνώσει σιωθήμενοι, καὶ ταῖς Λατίνων καθυπογράψαντες δόξαις ἐπὶ τῶν ἰδίων ἐπανιόντες ἅπαντες, πλὴν τῆ Κυζίκου, καὶ Γρηγορίου τῆ Πρωτοσυγκέλλου, καὶ Βησσαρίωνος, καὶ Ἰσιδώρου, οἱ λοιποὶ τῷ ἔνωσιν παρητήσαντο: ἔχ' ἅπαξ, ἀλλὰ πολλάκις ἀναγγέλαντες, ἀδοκίμως τε, καὶ κακῶς, καὶ Σιμωνιακῶς, καὶ ἀναγκαστικῶς ἐκεί πάντα διαπεπράχθαι, ὡς Μαρτυρεῖ ΛΑΟΝΙΚΟΣ ὁ Χαλκοκονδύλας, ἐν Βιβλ: Α'. Σελ: 4. „Τὴς μὲν τοι 'Ελλῶας ἐπ' οἴκῃ γενομένης, μὴ ἐμμεῖναι τοῖς ἐν Ἰταλίᾳ καὶ ἐν Σιωδοῖς γενομένοις, ἀξιῶντας σφίσι μηδαμῇ εὐαγὲς εἶναι, 'Ρωμαίοις, ὡς δὴ „μὴ ἴσα διῆχυριζομένοις σωτίσθαι τὸ παράπαν· καὶ ἔτω διάφορα διὰ τέλους γενέσθαι 'Ελλῆσι τὰ πρὸς 'Ρωμαίους. — Καὶ ἐν „Βιβλ: δὲ 5'. οἱ μὲν ἐν 'Ελλῶας ὡς ἐπ' οἴκῃ ἐγένοντο, ἐκέτι ἔφασαν ἐμμεῖναι τοῖς ὁμολογημένοις· ἀλλὰ τῶναντίον κατέστη, „μηκέτι βυλομένοις σωτίσθαι τοῖς 'Ρωμαίοις,,. Συμφάσκει δὲ ὁμολογῶν καὶ ΛΕΟΝΑΡΔΟΣ (27) τῆς Ἀνατολικῆς μετὰ τῷ ἐν Φλωρεντίᾳ Σιωδῶν, τῷ τε προτέραν ἀβελτηρίαν καὶ ἡλιθιότητα ἀποθεμένους, καὶ τῷ πολλῶν ἀποσείσαντας νωχελίαν σιωδῆν τέως, οἷον ἐξ ὕπνου ἐγερθέντας, τὰ δεινότατα σφᾶς ἐξημαρτηκέναι

(27) Οὗτος ἰω̄, ὃν Γρηγόριος ὁ ἐκ Πρωτοσυγκέλλου Πατριάρχης Κωνσταντ: ὑπὲρ ἑαυτοῦ ἀπέστειλεν ἐπὶ τῆς ἐν τῇ Ἀγ: Σοφίᾳ Σιωδῶς ἀπολογησόμενον· εἰπὼν: „ἦξει δὲ ἀντ' ἐμῆ, ὁ Φράτερ Λεονάρδος ἀπολογησόμενος. (ἐν τῇ Α'. τῶν Σιωελῶς:) Ο' δ' αὐτὸς ἦν ὁ καὶ μετὰ Θεόδωρου τῆ Μεγ: Ῥήτορος προσδιαλεζάμενος αὐτόθι περὶ τῆς τῆ Πνύματος Ἐκπορεύσεως, ὡς ἐν τοῖς Πρακτικοῖς τῆς ἐκείνης Σιωδῶς φαίνεται.



κέναι τῷ Λατίνοις σωεπινδύσασθαι, ἅπερ εἰς ἐπιτρέψαι ὅλως προσῆκεν, εἰδὲ παρασαλεύσαι θέμις ὡς τὸ παράπαν. Διὸ καὶ κρηνοῖς δακρύων γνωσιμαχήσαντας διὰ σπασθῆς ἐπιμελὲς θέσθαι τὴν ἐκ τῶν ἡμαρτημένων προσροπὴν ἀποτρίψασθαι. Καὶ ὁ Φιλόσοφος δὲ ἈΜΤΡΟΫΤΙΖΗΣ· ὁ ἐπὶ τῆς αὐτῆς Φλωρεντινῆς Συνόδου παρατυχὼν, καὶ δι' ἰδίας ὑπογραφῆς αὐτῷ προσκυρώσας, διὰ τῶν ἀνωτέρω ἐπενεχθέντων ὁμοίως, Σιμωνιακῶς μὲν καὶ ληστρικῶς, ἥκιστα δ' Οἰκουμενικῶς γενέσθαι τὴν Σινώδον ἐκείνῳ καθωμολόγησε, τὴν κοινωνίαν πάντῃ τὴν κατ' ἐκείνῳ ἀπομωσάμενος. Καὶ ΜΙΧΑΗΛ δὲ ὁ ΒΑΣΣΑΜΩΝ (28) ὁ καὶ ὑπογεγραφῶς ὡσαύτως τῷ τῆς Συνόδου ἐκείνης ὄρω, ἐς πλάτος αὐτῆς καταψηφίζεται, ἐπὶ τῆς τῆς Κωνσταντινουπόλεως Κλήρος Ἀναφορᾶς, παρὰ ΛΕΟΝΤΙ τῷ Ἀλλατίῳ, Βιβλ: Γ'. τῆς Δίωκε: Συμφ: τῶν Ἐκκλησιῶν, πολλαχῶς. (29) Ὑπογεγραφότες δ' ἔτυχον καὶ Μακάριος ὁ Νικομηδείας, καὶ Ἰγνάτιος ὁ Τορνόβου· ἀλλὰ καὶ ἔτοι ἔπειτα ταύτης κατέγκων, ὡς δῆλον ἐκ τῆς τῶν Ἀνατολικῶν Ἐπιστολῆς τῆς πρὸς τὴν Βοέμιαν περὶ ἧς ἐξῆς. Καὶ πολλὰς δὲ καὶ ἄλλας τῶν δι' ὑπογραφῆς τὸν ὅρον ἐπιβεβαιωσάντων ἀπεπτυνκέναι τὴν ἔνωσιν, φανερόν ἐκ τῆς ἐν Κωνσταντινουπόλει Συνόδου, τῆς εἰς πολὺ πρὸ τῆς ὑπὸ τῶν Τέρκων ἀλώσεως τελεθεύσεως· ἐξ ὧν Δοσίθεος, Μητροφάνης, Ἀθανάσιος ὁ τῆς Μοναστηρίου τῆς Περιβλέπτου Ἠγόμενος, καὶ ἄλλοι, ὡς ἔπειτ' εἰσόμεθα.

Ἐν μὲν ἐν Κωνσταντινουπόλει τιμικαῦτα ἐπὶ ψηφοφορίᾳ τῆς Πατριαρχούσουτος ἀρχαιρεσίας προκειμένης, ὁ Ἡρακλείας ἔτω πρὸ τῶν Ἀρχαιρεσιαζόντων ἐφθέγγατο: (ΣΤΑΒΕΣΤΡΟΥ Μαρτυροῦντος τῆς Συνοπτικῆς, ἐν Τμῇ: ΙΒ'. Κεφαλ: Β'. Σελ: 333.) „Εγὼ ἐκ ἡλθον ἐνταῦθα χάριν τῆς ψηφίσεως, ἀλλ' ἵν' εἰπῶ ὁ „βέλομαι πρὸς ὑμᾶς. Λέγω τοίνυν, ὅτι ἐγὼ εἰς τὰ γεγονότα ἐν „τῇ Φλωρεντίᾳ, ἔτε ἐν τῇ γνώμῃ μου σωεφώνησα ὑμῖν τοῖς „ἑξέρξασιν τὴν ἔνωσιν, ὡς καὶ ὑμεῖς οἴδατε· ἔτε ἑξέρξα τὸ γε- „γονὸς ὡς ὑγιές· ἔτ' ἐκ προαιρέσεως σωεθέμην. Εἰ γὰρ καὶ μὴ „θέλων, ἐκ οἴδα δ' ὅπως ὑπέγραψα ἐν τῷ ὄρω· ἀλλ' ἐν ἡγάμα „τὰ ἐν αὐτῷ ἐναντία τῆς τῆς Κυρίως ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ παραδό- „σεως, καὶ ἀλλότρια τῆς Ἐκκλησίας ἡμῶν· καὶ ἔκτοτε τοῖς τῆς „σωειδότος βαλλόμενος κέντροις ἡνιώμην, καὶ ὡς ὑπὸ μεγίστη „φορῇ πιεζόμενος ἐδυχέραινον, καὶ ἐζήτην πῶς ἂν ἀποσεισάμην „αὐτό. Νυνὶ ἐν εὐχαριστῶ τῷ Θεῷ, ὅτι ἡξίωσε με ἰδεῖν ὑμᾶς „σωηγμένους, καὶ εἰπᾶν ἅπερ ἐβλόμην, καὶ ἐνώπιον ὑμῶν τὸ „ἄχ-

(28) Οἱ Μέγας Χαρτοφύλαξ, καὶ Ἀρχιδιάκονος χρηματίζων.

(29) Ἰδία δὲ ὅρα αὐτῆς Κεφ: Β'. §. Γ'. Σελ: 910. 922. 924. Καὶ Κεφαλ: Γ'. §. Α'. Σελ: 927.

„ἄχθος ἀποτινάξαθαι· ἤδη τοιγαρὲν λέγω, ὅτι ἀποβάλλομαι,  
 „καὶ ἀποσέργω, μᾶλλον δὲ ἐδὲ ἔσερξα τὴν ἔνωσιν καὶ τὸν ὅρον,  
 „καὶ τὰ ἐν αὐτῷ, ὡς ἀσύμφωνα καὶ ἀπάδοντα τῇ ἀρχαίᾳ πα-  
 „ραδόσει τῆς Ἀγίας Καθολικῆς Ἐκκλησίας ἡμῶν ἀποσρέφομαι.  
 „Παρέχω δὲ ἐμαντὸν τῇ Ἐκκλησίᾳ ὑποβύθιον, ὡς ὑπογράψαντα,  
 „ὃ ἐκ ἐξῆς,,.

Ὁ δὲ ΤΡΑΠΕΖΟΥΤΝΤΙΟΣ τοῖς τὴν διάνοιαν αὐτῷ ἐξετά-  
 ζουσι περὶ τῆς ἐνώσεως, τοιάδε ἀπεκρίνατο: (παρὰ ΣΥΛΒΕΨΤΡΩΙ,  
 Τμήμ: ΙΒ'. Κεφαλ: Γ'. Σελ: 334.) „Οὔτε καλή μοι φαίνεται  
 „ἡ ἔνωσις αὕτη, ἔτε καλῶς γεγονέναι διὸ ἐ δυνάμει σέργειν  
 „αὐτῷ (ὡς δὲ πολλοῖς λόγοις ἐπεχείρειν κατὰπεῖθαι αὐτόν....  
 „ἀπεκρίθη....) νῦν ἐν τοσαύτῃ συγχύσει καὶ διχονοίᾳ τῆς  
 „Ἐκκλησίας, ἀδυνάτον ἐστὶν ἵνα δέξωμαι αὐτὸ, (τὸ Πατριαρ-  
 „χεῖον) καὶ εἰ τὴν γεγονέναν ἔνωσιν ἴσως ἔσεργον· πόσω μᾶλ-  
 „λον, ὅτι ἐδὲ καλή μοι δοκεῖ, ἔτε εὐσεβῆς, ἔτε κατὰ Θεὸν γε-  
 „γεννημένη αὕτη ἡ ἔνωσις, ἔτε σέργεται παρὰ πάντων, ἔτε  
 „παρ' ἐμῶ; Ταῦτ' ἀπολογῶμαι, καὶ ποιήσατε καθὼς χρήζετε,  
 „ἐδὲ γὰρ εὐρήσετε ἄλλο τι παρ' ἐμῶ,,.

Τῷ δὲ Βασιλέως ἐκλέξαντος τὸν Κυρίκον εἰς Πατριάρχην,  
 ὡς ὑπερμαχέντα τῆς γενομένης ἐνώσεως, ὁ Μέγας Χαρτοφύλαξ,  
 καὶ Σύλβεσρος αὐτὸς ὁ Συρόπαλος, ἀμφότεροι τῶν Σταυροφόρων  
 τυγχάνοντες, μηδαμῶς τῶτον Πατριαρχοῦσαντα φέροντες, τὸ  
 ἴδιον αὐτῶν Ὀφφίκιον παρητήσαντο, ἅτε δὴ ἐπίσης ἐκότεροι,  
 καὶ τὰ τῆς ἐνώσεως πάλιν καταδικάζοντες. (Μαρτυρῶντος αὐτῷ  
 καὶ τότε τῷ Συλβέσρῳ, ἐν Τμήμ: ΙΒ'. Κεφαλ: 5'. καὶ Ζ'. Σε-  
 λίδι 339. 340.)

Ἀλλὰ καὶ ΜΙΧΑΗΛ Δέκας ὁ ἀνεψιὸς, ἐν τῇ Βυζαντινῇ  
 Ἱστορίᾳ: Κεφ: ΛΑ'. τοιαῦτα περὶ τῶν ἐπὶ τῆς Πατρίδος ἐπανελη-  
 λυθόντων διέξεισι, Σελ: 120. τῆς ἀνωτ: ῥηθ: Ἐκδόσ: „Οἱ δὲ  
 (οἱ τῆς τῷ Βύζαντος δηλ: πολίται) τῆς Ἀρχιερεῖς εὐθέως ἀπὸ  
 „τῶν Τριήρεων ἀποβάντας, κατὰ τὸ σωήθεις ἡσπάζοντο, ἐρωτῶν-  
 „τες: πῶς τὰ ὑμέτερα; πῶς τὰ τῆς Σωόδου; εἰ ἄρα ἐτύχομεν  
 „τὴν νικῶσαν; οἱ δὲ ἀπεκρίνοντο: πεπράκαμεν τὴν Πίσιν ἡμῶν  
 „ἀντηλλάξαμεν τῇ ἀσεβείᾳ τὴν εὐσεβείαν· προδόντες τὴν καθαρὰν  
 „θυσίαν Ἀσυμίται γεγόναμεν ταῦτα, καὶ ἄλλα αἰχρότερα καὶ  
 „ῥερυπασμένα λόγια. Καὶ ταῦτα τίνες; οἱ ὑπογράψαντες ἐν  
 „τῷ ὅρῳ ὁ Ἡρακλείας Ἀντώνιος, καὶ οἱ πάντες. Εἰ γάρ τις  
 „πρὸς αὐτὸς ἤρετο: καὶ διατὶ ὑπεγράφετε; ἔλεγον: Φοβούμενοι  
 „τῆς Φράγγου καὶ πάλιν ἐρωτῶντες αὐτὸς: εἰ ἐβασάνισαν οἱ  
 „Φράγγοι τινά; εἰ ἐμασίγνωσαν; εἰ εἰς φυλακὴν ἔβαλον; ἐχί-  
 „δ' ἄλλὰ πῶς ἡ δεξιὰ αὕτη ὑπέγραψεν, ἔλεγον, κοπήτω ἡ γλῶτ-  
 „τα ὡμολόγησεν, ἐκριέσθω· ἐκ ἄλλο εἶχον τι λέγειν. Καὶ γὰρ  
 Τόμ: Β'. X ΧΧΧΧΧΧ „ἦσαν

„ἦσαν τινὲς τῶν Ἀρχιερέων ἐν τῷ ὑπογράφειν λέγοντες: ἔχ  
 „ὑπογράφομεν, ἐὰν μὴ τὸ ἱκανὸν ἡμῖν τῆς προσόδου παράχῃτε·  
 „οἱ δὲ ἔδιδον, καὶ ἐβάρυντο κάλαμος· ὑπὲρ ἀριθμὸν γὰρ ἦσαν τὰ  
 „δαπανηθέντα εἰς αὐτὰς νομίσματα, καὶ τὰ ἐν χερσὶ μετρηθέντα  
 „ἐκαστὸν τῶν Πατρῶν. Εἶτα μεταμεληθέντες, ἐδὲ τὰ ἀργύρια  
 „μετέστρεψαν. Πρὸς τὴν Φωνὴν ἐν αὐτῶν, ὅτι τὴν Πίσιν αὐτῶν  
 „πέπρακον, καὶ ἐπέκεινα τῆς Ἰσίδας ἡμαρτον, τῇ σρέψαντος τὰ ἀρ-  
 „γύρια „.

Τὸ δ' αὐτὸ καὶ ἕτερος τῶν τὴν ἑνωσιν ἀσπαζομένων, ὁ ΠΛΟΥ-  
 ΣΙΑΔΗΝΟΣ Ἰσορέ, (30) καὶ τοὶ ἀλόγως ὑπεξηγήμενος, τῆς Πα-  
 τέρας μὴ ἐξ οἰκείας γνώμης ἐκείνα φθέγγεσθαι· ἔτω γὰρ παρὰ  
 ΛΕΟΝΤΙ τῷ Ἀλλαίῳ, ἐν τῷ Γ'. τῆς Δίωκε: Συμφ: τῶν Ἐκκλ:  
 Κεφ: Β'. Ἀριθ: Α'. Σελ. 906. „Ομοίως καὶ οἱ λοιποὶ ἐλθόν-  
 „τες, καὶ ἰδόντες τὸν κοινὸν λαὸν ἔτω τεταραγμένον κατὰ Λα-  
 „τίνων, καὶ Λατινόφρονας αὐτὰς καὶ Ἀσύμεικτας ἀναιδῶς ἀποκα-  
 „λυσθέντας παρὰ τῇ πλήθους· καὶ μήτε Ἀρχιερέας αὐτὰς, μήτε  
 „Χορυσίανδρας τὸ σώλον ἡγούμενους, εἰρωνυόμενοι τοῖς Συμπολίταις  
 „ἔλεγον: τί πρὸς ἡμᾶς μαίνεσθε ἔτως, ὅτι ὑπεγράψαμεν; κακῶς  
 „ἐποιήσαμεν. Ἰδὲ αἱ χεῖρες ἡμῶν αἱ ἐμεῖς ὑπογράψασαι· ἐκκόψα-  
 „τε αὐτάς. Ταῦτα ἔλεγον φιμῶντες τὴν ὀρμὴν τῇ κοινῇ κατ'  
 „αὐτῶν ἀναιδῶς κινημένῳ· εἰ δὲ καὶ ἀληθῶς ἔλεγον, ὅπερ ἐκ  
 „οἴμα, θαυμαστὸν ἐδέν „ — Ἀλλ' ἔπερ ὁ Πλασιαδιδὸς ἡγνός  
 πότερον ἀληθῶς, ἢ κατ' εἰρωνείαν, τοιαῦτα ἔλεγον ἐπανελθόντες  
 οἱ Ἀνατολικοὶ, τῶν λοιπῶν γε πάντως οἱ λοιποὶ Συγγραφεῶν, ὅς  
 ἔδομεν, ἄλλος πισθύνει τὰ τοιαῦτα ἐκείνης ἐκ γνώμης εἰλικρινῆς  
 εἰρηκέναι. Καὶ τοίνυν, ἔσθ' ὅπως ἂν γνησίᾳ καὶ νόμιμος γένοιτο  
 ἢ κατὰ Φλωρεντίαν Σύνοδος ἐκείνη, ὅποτε τὴν ἐλδοθερίαν ἤδη  
 ἀναλαβόντες οἱ Ἀνατολικοὶ Πατέρες, τὴν καθυπογραφῆσαν αὐ-  
 τοῖς ἑνωσιν λαμπρῶς ἐξώμυντο, ἅτε δὴ ἄκοντες εἰς αὐτὴν ἐνα-  
 χθέντες, καὶ ὑπὸ τῇ Βασιλείᾳ παραπεισθέντες καὶ καταναγ-  
 καθέντες ὑπογράψαι κατὰ τῆς ἰδίας ἑαυτῶν συνειδήσεως; (31)  
 Ἐοῖς

- (30) Ἰωάννης Πρωτοῖερεὺς ὁ Πλασιαδιδὸς ἦν ὁ τῇ Διαλόγῃ Συγγραφεὺς τῇ μεταξὺ  
 Εὐλαβῆς τινος, καὶ Τελώνος, καὶ Ῥακενδύτης, καὶ ἐνὸς τῶν δώδεκα Ἑνωτικῶν  
 Ἱερέων: περὶ τῆς μέσον Γραικῶν καὶ Λατίνων, Διαφορᾶς: καὶ περὶ τῆς Ἱεροσολίτης  
 Φλωρεντινῆς Συνόδου. Εὐρήσεις δὲ τὸν Διάλογον τένδε Ἑλληνιστὶ καὶ Λατινιστὶ ἐκ-  
 δομένον ὑπὸ Ἀλλαίᾳ, ἐν τῷ Α'. Τόμῳ τῆς Ὁρθοδόξου Γραικίας. ἐν Σελ: 582-64.  
 (31) Ἀλλὰ καὶ τῆς Ἀνατολικῆς μετὰ τὴν ἐπάνοδον ἀπὸ Φλωρεντίας, τὴν ἀδοκίμον  
 ἑνωσιν ἀπομνησμένης γενέσθαι καὶ καταπτύοντας, ἔτε Πάπας αὐτὸς, καὶ ὁ Βα-  
 σιλεὺς Ἰωάννης ἀποδεικνύουσιν, οἱ ὡς ἐβόλοντο τὰ τῆς Συνόδου ἐκείνης διεκπερῆσαι  
 ἀπαράσταντες. „Ὁ μὲν γὰρ ταῦτα μαθὼν, Σοφὴς τις ἐπεμψεν ἐπὶ τὸ Βυζάν-  
 „τιον, ἐς Διάλεξιν ἀφιστομένης τοῖς τῶν Ἑλλήνων σοφοῖς· ὃ μὲν τοι ἠνέετο αὐτοῖς  
 ἐδὲν ἐς λόγων ἀμιλλαν ἀφικνεμένοις, ἀλλ' ἀπεχώρην ἀπρακτοὶ ἐπ' Ἰταλίας (ὡς  
 „ἐκ τῇ Χαλκοκοινὸν ἐξῆς εἰσόμεθα) Ὁ δὲ Βασίλεὺς πτωχάνομος τῆς ἐν Κων-  
 „σταν-

Ἐρεῖς μετὰ τῷ ἀπομνημονοθέντος Πλασιαδῶ, ὅτι ταῦτο σωέβη καὶ ἐπὶ τῆς ἐν Νικαίᾳ Συνόδου ἐν ἣ παραπλησίως τινὲς τῶν ἐπικυρωσάντων τῷ Καθολικῷ Πίστιν Πατέρων, ὕψερρον αὐτῷ ἀπωμόσαντο. Ἀλλὰ πολὺ τὸ πρᾶγμα διέστηκε, μᾶλλον δὲ τὸ πᾶν. Ἐπὶ γὰρ τῆς ἐν Νικαίᾳ Συνόδου συζητήσεσιν τε καὶ λόγοις ἀποδεικτικοῖς τὰ πάντα διεπεραίνετο· ἡ δὲ χρυσὴ ἔθαλλεν ἐλευθερία· ὃ βία ἐκεί, ὃ δόλω, ὃ κ' ἀπειλαῖς, ὃ θωπείαις πρὸς τὸ ὑπογράψαν ἐνήγοντο οἱ Πατέρες· ὥδε δ' ἐν ἐπὶ Φλωρεντίας ταλναντία ἐγίνετο πάντα. Τῆς γὰρ ἐλευθερίας τέως περὶ τὸ γνωματεύειν ἀρθείσης, ἔκινον αἱ ἀποδείξεις ὑπῆρχον αἱ τῶν Πατέρων ἐπὶ τῷ ὑπογραφῷ προσβιβάσσειν, ἀλλ' αἱ παρὰ τῷ Κρατῆντος κατεσπασμένα προτρέψεις, καὶ θωπείαι, καὶ ἀπειλήσεις, καὶ οἱ κατὰ Σιμωνίαν λόγοι τὰ κινῆντα ἐτύγχανεν· ἔτις ἐν ἄρα ἐπὶ τῆς αὐτῶν ἐπανόδου ἅπαντα διαπεπράχθαι καθομολογούντων ἐκείνων, καὶ δὴ καὶ τῷ ἔνωστιν παραιτησαμένων, τίς ὃ σιωρᾷ τῷ τῷ Φλωρεντινῷ Συλλόγῳ σύμπασαν περιτρέπεσθαι Ἀυθεντείαν, ὡς ἀμοιράσης τῷ ἐλευθέρῳ τῆς τῶν Ἀνατολικῶν Πατέρων συγκαταθέσεως; Ἀλλὰ τοιοῦτο τι, ὥσπερ ἔφω, ἔδεν προδιατείνασθαι ἔχον, οἱ τῇ Καθολικῇ Πίστι κατὰ Νίκαιαν ὑπογράψαντες, ὡς ἐλευθέρως, καὶ διὰ λόγων εἰς παιδῶν κατασιγαθέντες. Οὐ χάριν, ἔδ' ἡ ὕψερρον ἐκείνων διαφωνία, ἔδεν ἂν τὸ παράπαν τῆς Οἰκουμενικῆς Συνόδου τῷ ἀκεραιότητι παρὰβλάψειν.

## § 5'.

Ἀλλὰ καὶ ἔκτον· ἐφ' ᾧ τις Σύνοδος τῷ ὄντι προσαγορεύοιτο Οἰκουμένη, ὑπὸ πάσης ἐξῆς τῆς ἀπανταχῶ Καθολικῆς Ἐκκλησίας δεῖον ὁμολογεῖσθαι αὐτῷ καὶ προσεπισφραγίσσεσθαι. Ἀλλὰ μὲν περὶ τῆς ἐν Φλωρεντίᾳ Συνόδου οἱ λοιποὶ τῶν Ἀνατολικῶν Ἐπισκόπων, οἱ ἐν αὐτῇ μὴ παρσιδίσαντες, ἔδ' ἀκῆσαι τι τὸ παράπαν  
ἡξίω-

„σαντινι πόλεις εὐρισκομένους Ἀρχιερεῖς καὶ Καθηγούμενους, δι' ἣν αἰτίαν τὰ ἐν „Φλωρεντίᾳ γεγονότα Συνωδικὰ ὃ παραδέχονται· ἐγγράφον Ἀπολογίαν ἀπὸ ἐγ- „κατο, ἐς πλάτος διαλαμβάνουσιν τὰ αἰτία. (Ἦν ἀνάγνωθι τυπωθεῖσαν ἐν τῷ Τόμῳ τῆς Καταλλαγῆς, Φύλ. 422) ἀρχομένῳ ἔτις: „Ἐπεὶ ὠρίσθημεν παρὰ „τῆς Κραταιᾶς κτ.: ἑμὸν δὲ, ἀλλὰ καὶ δέδωκεν αὐτοῖς ἄδαν (ὡς Φησὶ Γεώργι: ὁ Σχολάριος ἐν τῷ κατὰ τῆς Προδικῆς Λόγῳ, τῷ τυπωθέντι ἐν τῷ Τόμῳ τῆς Ἀγάπης. Φύλ. 305.) „ἐν τῷ Παλατίῳ πολλὰς, καὶ δῆναι ἀπόκρισιν περὶ τῆς „ἐνστάσεως, παρόντος τῷ Λεγάτῳ, καὶ μεγάλῳ ἀνάγκῃ ἐπάγοντος ὑπὲρ τῆς „ἐνώσεως. Ὁμοίως δὲ ἐκδεδώκασιν καὶ ἑτέραν Ἀπολογίαν καὶ Ἀναφορὰν σωτομα- „τέραν περὶ τῆς ἐν Φλωρεντίᾳ κακίης Συνόδου, ἀρχομένῳ ἔτις: τολμῶς ἀνα- „φέρωμεν τῷ Κραταίῳ καὶ Ἀγίᾳ Βασιλείᾳ Σε Δέσποτα κτ.: „τυπωθεῖσαν ἐν τῇ Ἀν- „τιβήσσει περὶ τῆς τῷ Πάπῳ Ἀρχῆς, τῷ Κύρ Νεκταρίῳ Ἱεροσολίμων. Μελέτ: Ἀθῆν. Ἐκκλ.: Ἰσορ: τῇ ἔτι ἀνεκδότῳ, ὡς ὑπ' αὐτῷ συγγέγραπται. Βιβλ.: ΙΕ'. Κεφ.: 5'.)

X ΧΧΧΧΧΧ 2



ἤξιωσαν. Ὡσαύτως δὲ καὶ οἱ λοιποὶ τρεῖς τῶν Πατριαρχῶν, ὅτε Ἀλεξανδρείας, καὶ ὁ Ἀντιοχείας, καὶ ὁ Ἱεροσολύμων, τῷ τοιαύτῳ Σνώδον κατακρίσεως καθυπέβαλον ψήφῳ, καὶ αὐτὰς δὴ τῶν ἰδίων Ἀποκρισιαρίων ἀποκυρώσαντες τὰς ὑπογραφὰς τῆς ἐν Ἑώας ἀπάσης, τῷ Σνώδον ἔτως ἀποσυνησάσης ἐκείνῳ, καὶ τῶν Πατριαρχῶν τὰς τῶν ἰδίων Ἀποκρισιαρίων ὑπογραφὰς κατηρηγηκότων πῶς, ἀπέμοι. ὅσαγε τῇ Ἀνατολικῇ Ἐκκλησίᾳ ἀνήκει, Οἰκουμενικῇ ἂν προσαγορευθεῖν ἢ ἐν Φλωρεντίᾳ Σνώδος; Περὶ μὲν ἐν τῇ ὅλης Ἀνατολικῆς Ἐκκλησίας ἐν γένει, αὐτὴ ἢ τῆς Φλωρεντινῆς Σνώδος Ἱστορία, ἢ πρὸ τῶν Πρακτικῶν αὐτῆς προταχθεῖσα, μετὰ γε τὸ πλεῖστα πρὸς ὑβρίν τῶν Ἀνατολικῶν διεξελεῖν, περὶ τὸ τέλος προσίθουσιν: (ἐν Τόμ: ΙΓ'. τῶν Σνωδικ: σήλη 4. (32) „Ὡς ἔτω σωῆβη, παρὰ τὰς τῇ Σνώδῳ παρσιάσαντας τῆς Ἀνατολικῆς Ἐκκλησίας Πατέρας, μηδέποτε τὰς ἱραϊκὰς τῷ Γενικῷ ταύτῳ Σνώδον παραδέξασθαι. Περὶ δὲ τῆς ἐν Κωνσταντινουπόλει Ἐκκλησίας ἐν μέρει, ἔτω ΣΥΛΛΕΞΕΙΣΤΟΣ ὁ Συρόπτελος: (ἐν Τμήμ: ΙΒ'. Κεφαλ: Α'. Σελ: 330.) „Ἡμεῖς δὲ, ὅσοι ἐκ τῶν Ἀρχόντων τῆς Κλήρης τῆς Θεῆς Μεγάλης Ἐκκλησίας ἐτυγχάνομεν, μετὰ καὶ τῶν ὑφ' ἡμῶν σωηγόμεθα πάλιν εἰς τὴν Μεγάλῃ Ἐκκλησίᾳ, καὶ κατὰ τὴν πρώτην τῶν Νησιῶν Ἐβδομάδα παρεγινόμεθα ἐν πάσαις ταῖς ἱεραῖς αὐτῆς τελεταῖς, κατὰ τὴν ἀρχαίαν τάξιν ἡμῶν παρήσαν δὲ καὶ οἱ ἐκ τῆς Κλήρης διαμεμενηκότες ἐνταῦθα, οἳ καὶ κατέχον τὴν Ἐκκλησίαν, καὶ ἀηδῶς ἐθεώρουν ἡμᾶς. Ἐλθέσης δὲ τῆς ἑορτῆς τῆς Ὁρθοδοξίας, γνόντες, ὡς εἰ θελήσομεν λειτουργῆσαι γενήσεται σύγχυσις, ἀπεχωρήσαμεν κατὰ τὸ Σάββατον καὶ τὴν Κυριακὴν ἐκείνῳ. Εἶτα πάλιν σωηρόμεθα κατὰ τὴν τάξιν ἣν εἶχομεν. Οἱ δὲ Πνευματικοὶ καὶ οἱ Ἠγέμενοι, καὶ Ἱερεῖς πάντες ἀπεσείοντο ἡμᾶς, ὡς λατρίσαντας. (Καὶ μετ' ὀλίγα:) „Καὶ τῇ Κυριακῇ τῆς Σταυροπροσκυώσεως, ἐλειτέρησεν ὁ Μέγας Χαρτοφύλαξ, μετὰ καὶ ἑτέρων, τῶν ὄντων μεθ' ἡμῶν ἐν τῇ Σνώδῳ καὶ ἔτε ὁ Ἐφημέριος, ἔτε ἄλλος τις τῶν δοξάντων πειθῶν ἐλειτέρησεν ἄλλ' ὑπεκρίθησαν μόνον, εἶτα ἀπατήσαντες ἔφυγον. Καὶ ἐκ τῆς παρητήσαντο τελείως τὴν Ἐκκλησίαν, καὶ ἐλειτέρησαν οἱ μεθ' ἡμῶν.

Ἡ δὲ Πολιτικὴ Ἱστορία τῆς Κωνσταντινουπόλεως, ἢ ἐν τῇ ΚΡΟΥΣΙΩΤῇ Τροχο-Γραμμῇ ἐμφερομένη, (Βιβλ: Α'. Σελίδι 4.) ἔτως ἔχει ταῦτ' ἀναφέρειν: „Οἱ δὲ ἐν τῇ Πόλει Κληρικοὶ, Ἱερομόναχοι, Ἱερεῖς, Ἠγέμενοι, Πνευματικοὶ, καὶ οἱ λοιποὶ, ..

(32) Παρὰ Ἀρδεῖνῳ Τόμ: Θ'. σήλη 671.

„ἐκ ἡθέλον συλλειτουργῆσαι τοῖς ἐλθόνσιν, ἢ μνημονεῦσαι αὐτούς·  
 „ἀλλ' ἐχωρίζοντο αὐτῶν, ὡς ἀσεβῶν εἶπαι. Πολλοὶ δὲ παρητή-  
 „σαντο καὶ τῷ Ἰερωσώλῳ καὶ γέγονεν ἡ ἔνωσις διαίρεσις,,  
 ΑἴΝΕΪΑΣ δὲ ὁ ΣΥΛΒΙΟΣ, ὁ Πάπας ὕψερον χρηματίσας, καὶ  
 μελονομαθείς Πῖος ὁ Β'. ἐν τῷ περὶ τῆς Εὐρώπης Βιβλ: Κεφ: Γ'.  
 „Καί τοι γε; Φησὶ, καὶ Ἰωσήφ ὁ Πατριάρχης, καὶ Ἰωάννης ὁ τῆ  
 „Ἐθνικῆς τέττε ἀνάστων, μετὰ τῆς Λατινικῆς Ἐκκλησίας συμφώνως  
 „τὸ Σύμβολον ἐψαλμώδησαν· ἀλλ' ἡ τῆς Κωνσταντινουπόλεως Ἐκ-  
 „κλησία, μὴ θέμις εἶναι πισδεῖν ἐνόμισεν, ὅπερ ἡ Ῥωμάνᾳ Ἐκ-  
 „κλησία φρονῶσα ὤ,,.

Ὡς δὲ περὶ τῶν ἐν τῇ Φλωρεντινῇ πεπραγμένων Σιωδῶν  
 ἐπύθετο ἈΡΣΕΝΙΟΣ ὁ Καισαρείας Μητροπολίτης Καππαδοκίας,  
 καὶ πάσης Ἑξαρχος ὢν Ἀνατολῆς παραγενόμενος εἰς Παλαιστί-  
 νῳ, τοῖς τρισὶ Πατριαρχαῖς διηγήσατο τὰ γενόμενα. Οἱ δὲ  
 σωελθόντες, τῷ ἐν Φλωρεντίᾳ συσῆσαν Σιωδὸν ἐκείνῳ κατέ-  
 κριναν, ὁρίσαντες καὶ τὰς ἐκ τῆς Κλήρης λατινίσαντας καθαρεῖ-  
 θαι· τὰς δὲ ἀπαθεῖς, καὶ ἀναθεματισμῷ ὑποτάξαντες. Τὸ γὰρ  
 τῆς Σιωδῆς ταύτης ψήφισμα ΛΕΨΩΝ ἀναφέρει ὁ Ἀλλάτιος ἐν  
 τῷ Γ'. Βιβλ: τῆς Διωκ: Συμφ: τῶν Ἐκκλησιῶν: Κεφαλ: Δ'.  
 Ἀριθμ: Α'. Στήλη 939. κξ: τῶν Πατριαρχῶν τῆς Συρίας (33)  
 προκαθημένων: „Ἐπειδὴ ἦκε καὶ ὁ Πανιερώτατος Μητροπολί-  
 „της ἐνταῦθα τῆς Ἀγιοτάτης Μητροπόλεως Καισαρείας Καππα-  
 „δοκίας, ὁ καὶ Πρωτόθρονός τε καὶ Ἑξαρχος πάσης Ἀνατολῆς,  
 „ἅμα μὲν προσκυνῶν τὸν Πάνσεπτον καὶ Θεὸν τῆς Κυρίᾳ ἡμῶν  
 „Ἰησοῦ Χριστοῦ τάφον, καὶ τὰς Ἱερὰς ἐν Ἱεροσολύμοις ἰσορήσαι  
 „τόπικας (καθ') ὅς τὰ παράδοξα ἐτελέσθησαν τῆς καθ' ἡμᾶς Οἰκο-  
 „νομίας Μυσήρια· ἅμα δὲ κοινώσασθαι πρὸς ἡμᾶς, καὶ τὸ τῆς  
 „Ὀρθοδοξίας καὶ ἐνσεβείας Χριστιανῶν μέγα Μυσήριον καὶ δη-  
 „λοποιῆσαι τὰ ἐν Κωνσταντινουπόλει σκάνδαλα πάντα, διὰ τῷ  
 „συναθροισθῆσαν ἐν Φλωρεντίᾳ τῇ πρὸς Ἰταλίαν μιανὰν Σιω-  
 „δον, καὶ τὰ τῶν Λατίνων σὺν τῷ Εὐγενίῳ Πάπᾳ δοξάσασαν,  
 „ἅπερ ἐκ ἕξεσι· τινὰ προθήκῃ δηλαδὴ ἐν τῷ τῆς Πίσεως  
 „ἡμῶν Θεῷ καὶ ἀμωμήτῳ Συμβόλῳ ὑπογράψασαν, καὶ παθεῖ-  
 „σαν, ὡς καὶ ἐκ τῆς Υἱᾶς τὸ Θεὸν ἐκπορεύεται Πνεῦμα· τά τε  
 „Ἄξυμα συγχωρήσασαν πρὸς ἡμᾶς θύεσθαι, καὶ μνημονεῖν διὰ  
 „τῆς τὸν Πάπαν· ἔτι τε ἄλλα ὅσα παρὰ Κανόνας ἄθεσμα ἐκεί-  
 „νων, συγκατατιθεῖσαν καὶ σέρεξασαν. Καὶ ὅπως ὁ Κυβερνῶν Μη-  
 „τροφόνος ληστρικῶς τὸν τῆς Κωνσταντινουπόλεως Θρόνον ἥρπασε  
 „συναυνήσασαν (ἴσ: συναίνεσας) τοῖς τε Αἵρετικοῖς, καὶ τῷ εἰρημένῳ  
 „Πάπᾳ,

(33) Φιλοθέης Ἀλεξανδρείας, Δωροθέης Ἀντιοχείας, καὶ Ἰωακείμ Ἱεροσολύμων.  
 Τομ: Β'. Ψ ψψψψψψ

„Πάπα, καὶ Βασιλεῖ τῶν Ῥωμαίων Παλαιολόγῳ τῷ Λατινόφρονι  
 „τὰς μὲν πιστὰς καὶ ὀρθοδόξας ἀπειλῶντι, διώκοντι, τυραννῶντι  
 „καὶ ἐπιτιμῶντι τὰς δ' ἀπίστους καὶ κακοδόξας προσκαλῶντι, τι-  
 „μῶντι, καὶ ἀναβιβάζοντι, ὡς τῆς ἑαυτῶ Ἀίρεσεως σύμφρονας,  
 „καὶ ὑπερεκπερισεῖ μάλισα προσποικιμένῳ (34) τῆς κατὰ ἀντι-  
 „πάθειαν τῆς ὀρθοδοξίας καὶ εὐσεβείας ὡς (ἴσ: ὁς) ἐκ τῆς τῆ  
 „τρόπῃ καὶ Μητροπολίδι βέβηλα, καὶ μισρὰ Ἐπισκοπίδι παντα-  
 „χῶς εἰς τὰς Θείας καὶ Ἀγίας Θρόνους τῆς Ἀγίας Μεγάλης Ἐκκλη-  
 „σίας Κωνσταντινουπόλεως προτρέψας, ὡς ὑπὸ τῆς ἑαυτῶ τάχα  
 „Ἐνορίας ὑποκειμένους. Ἐδείξαν (ἴσ: ἔδειξαν) ὅπως ὁ εἰρημένος  
 „Πανιερώτατος Μητροπολίτης Κύριος Ἀρσένιος τῆς Ἀγιωτάτης  
 „Μητροπόλεως Μεγάλης Καισαρείας Καππαδοκίας, Πρωτόθρονος  
 „τε καὶ Ἐξαρχος πάσης Ἀνατολῆς, ὡς ὁ μόνον πρὸς τὰς ἄλλας  
 „Ἐκκλησίας ὁ Μητροφόνος Πατριάρχης τὰς πασανόμους χειροτό-  
 „νίας προτρέψας (καθὰ καὶ μικρὸν ἀνωτ: ἀλλ' ἴσ: ἐπιτρέψας) Λατινοφρό-  
 „νοις (ἔτως: ἀλλ' ἴσως Λατινοφρονῶν ἢ Λατινόφρων) ἀλλ' ἤδη καὶ πρὸς τὰς  
 „Ἐπαρχίας τῆς Ἀνατολῆς πάσης, τέσσαρα ὁ ἀχειροτόνητός κε-  
 „χειροτόνηκε Μητροπολίδι, καὶ Ἐπισκοπίδι πρὸς τε τῷ Ἀμα-  
 „σίαν δηλονότι, Νεοκαισάρειαν τε, Τύανα, καὶ Μακησὸν τὰ τῶν  
 „Λατίνων πάντα καὶ φρονῶντα καὶ πράττοντα· ἀ καὶ ὁ μόνον  
 „ἐντεῦθεν τῷ ἑαυτῶν ἀνεχόμενα φθορὰν καὶ ἀπώλειαν· ἀλλὰ γε  
 „μετὰ τῷ τοσαύτῳ τόλμῳ, καὶ τὰς ὑπὸ τῷ τῷ Χριστῷ ποιμνίῳ  
 „ἅπαντας ἐκάτε Χριστιανὸς, ἔτως ἀπατῶντα καὶ διαφθείροντα,  
 „καὶ πολλὰ τῇ Ὀρθόδοξῳ Ἐκκλησίᾳ σκάνδαλα προξενῶντα. Διὰ  
 „τῆτο ὁ εὐσεβὴς καὶ πιστότατος, καὶ τῆς ὀρθοδοξίας πάσης ὑπέρ-  
 „μαχός τε καὶ ἐκκλησιάρχης, ἔτος ὁ εἰρημένος (Πανερῶτ: παρὰ Μελετίῳ)  
 „Μητροπολίτης Καισαρείας Καππαδοκίας, μὴ ἀνεχόμενος τῷ τῆς  
 „Ἐκκλησίας Χριστῷ καινοτομίᾳ καὶ λύμῳ τῶν ἑτεροδόξων πρὸς  
 „τῷ ὀρθοτάτῳ καὶ ὑγιαίνοντι ἡμῶν Πίσιν, ἠξίωσε Σιωδικῶ  
 „λαβεῖν γνώμῳ παρ' ἡμῶν τῶν τριῶν Ὀρθόδοξων Ἀρχιερέων  
 „τῶν ἐν τῇ Συρίᾳ: τῆτε δηλονότι Φιλοθέῃ Ἀλεξανδρείας,  
 „Δωροθέῃ Ἀντιοχείας, καὶ Ἰωακείμ Ἱεροσολύμων, ὅπως ἀποσοδήσῃ  
 „τὰς μὴ ὀρθῶς φρονῶντας ἐκ πάσης τῆς Ἐπαρχίας (Ἐξαρχίας,  
 „παρὰ Μελετίῳ) αὐτῶ, ὡς ὅτι Πρωτογενέσερος ἔτος καὶ Ὀρθόδοξος.  
 „Ἐνθεντι καὶ ὀρίζομεν ἡμεῖς Σιωδικῶς ὁμῶς: Ἐν τῷ ὀνόματι  
 „τῆς

(34) Ἐσφαλμένως παρὰ Ἀλκατίῳ ἐν πτώσει κενταὶ πλαγία αἱ μετοχαὶ αὗται, δέον ὀρθότερον κατὰ τὸν νῦν τῷ ψήφισματι, ἐν ὁρῇ λέγεσθαι πρὸς τὴν Κυζικὴν Μη-  
 τροπόλιν, (τὴν ἐκ ἀπεικότητος Μητροφόνον ἐπικληθῆντα.) ἀναφερόμεναι, ἔτω:  
 „Σωαινέσας, ἢ σωαινῶν, ἀπειλῶν, διώκων, τυραννῶν, ἐπιτιμῶν, προσκαλῶν,  
 „τιμῶν, ἀναβιβάζων, προσποικιμένους. Οὕτω γὰρ ἔχον ἀναγινώσκεται τὸ αὐτὸ ψή-  
 φισμα, καὶ παρὰ Μελετίῳ τῷ Ἀθηνῶν, ἐν τῇ ἐτι Ἀλεξάνδρῳ, (ὡς ὑπ' αὐτῶ  
 ἀνωγράφῃ;) Ἐκκλησιᾶ: Ἰσόρ: Βιβλ: ΙΕ'. Κεφ: Η'..

„τῆς Ὁμοσείας, Ζωαρχικῆς τε καὶ ἀδιαρέτης Ἀγίας Τριάδος, τὰς  
 „μὴ δι' ἀρετῶν καὶ εὐσεβείαν χειροτονηθέντας Μητροπολίτας τε  
 „καὶ Ἐπισκόπους πανταχῶς, καὶ προσέτι (ἐν πᾶσιν ἔτι τε παρὰ Μελετ:)  
 „Ἠγχεμένους ὁμῶς, καὶ Πνύσματικὰς τάχας ὡσαύτως τε (καὶ) Ἱερεῖς  
 „καὶ Διακόνους, καὶ πάσης Ἐκκλησιαστικῆς ἀπλῆς ψηφας, ἄλλως  
 „βεβήλους τε ὄντας καὶ ἀναξίους, τόνδε τῆς Αἱρέσεως καὶ διωγμῶ  
 „τῆς ὀρθοδοξίας δραξαμένους καιρὸν, καὶ δραμόντας ἀναξίως, κε-  
 „νοδοξίας μόνης καὶ αἱρέσεως τρόπῳ πρὸς Ἐπισκοπὰς τε καὶ Μη-  
 „τροπόλεις, ὡς δῆθεν τάχα σωτήρας ψυχῶν ἵνα σιωῇ αὐτοῖς ἄλ-  
 „λος (μᾶλλον αὐτ:) καὶ τὸ τῷ Χριστῷ τῷ ἀληθινῷ Θεῷ ἡμῶν ἅπαν  
 „ὀρθόδοξον ποίμνιον, μηδὲν φόβον Θεῷ, καὶ δικαιοσύνης, καὶ  
 „εὐσεβείας κεκτημένους καρπὸν, ἀλλὰ καταφρονητὰς καὶ ἀναιδέας  
 „ὄντας πρὸς εὐσεβείαν πᾶσαν· τῆτεςιν (τέτες παρὰ Μελετ:) ὀρίξο-  
 „μεν ἀπὸ τῆς σήμερον ἀργῶς, καὶ ἀνιέρους εἶναι πάσης Ἱεροπραξίας, καὶ  
 „Ἐκκλησιαστικῆς καταστάσεως, ἄχρις ἂν ἐξετασθῇ ἡ εὐσεβεία κοι-  
 „νωῶς τε καὶ Οἰκουμενικῶς. Οὕτω μὲν ἔν καταπειθέντες ἔσωσαν  
 „ἀργοὶ καὶ ἀνίεροι ἀνταίρωντες δὲ, καὶ ἀνθιστάμενοι ληστρικῶς τε  
 „καὶ παρανόμως, ἔσωσαν ἀφωρισμένοι, καὶ ἡλλοτριωμένοι τῆς  
 „Ἀγίας καὶ ὑπερσείας καὶ ὁμοσείας Τριάδος, ὡς ἀπειθεῖς καὶ ἀν-  
 „τίλογοι. Ὡσαύτως δὲ καὶ οἱ τέτες δεχόμενοι, καὶ σωαινῶντες  
 „ἐν τοῖς τοῖς τοῖς, καὶ ὑπερασπίζοντες. Ἀποκαθιστῶμεν δὲ ὅπως  
 „(ὅπως παρὰ Μελετ:) τῆς εὐσεβείας καὶ ὀρθοδοξίας τὸν ἄνωθεν  
 „ἐρημμένον Πανιερώτ: Μητροπολίτῳ, τὸν καὶ ὑπέρτιμον, καὶ  
 „ἐξάρχον πάσης Ἀνατολῆς, κηρύξαι πανταχῶς τῷ εὐσεβείαν,  
 „μὴ αἰδέμενον πρὸς ἀλήθειαν πρόσωπον Βασιλέως, ἢ Πατριάρ-  
 „χος τῷ μὴ ὀρθῶς φρονῶντος καὶ πράττοντος, μηδὲ πλεσίς καὶ  
 „Ἀρχοντος (ἢ τῷ τυχόντος παρὰ Μελετ:) ἀνθρώπου. Ἀλλὰ παρρησίᾳ  
 „τῷ Πίστιν καὶ ὀρθοδοξίαν κατέχοντα ἀφόβως καὶ ἀδιστακτως,  
 „κατὰ τῷ ἐντολῷ, ἔχεν αὐτὸν ἄδειαν ἀπὸ τῷ νῦν, ἔνεκεν  
 „εὐσεβείας ἐλέγξαι, ἐπιτιμῆσαι, καὶ διορθῶσαι τὰς μὴ ὀρθῶς  
 „φρονῶντας ἐν παντὶ τόπῳ, ἐφ' ὅσον ἂν ἰχὺς ὁδοῦεν (περιοδεῖν  
 „Μελετ:) παρ' ἡμῶν εἰληφότα τῷ συγγνώμῳ, διὰ τῆς δοθείσης  
 „ἡμῖν χάριτος καὶ δωάμεως τῷ Ἀγίῳ Πνύματος ὅς καὶ ὀφείλει  
 „κατὰ τῶν τηρήσαι ἀδωροδοκίῳ τε καὶ ὀρθῶς τῷ εὐσεβείαν. Οὗ  
 „ἐνεκεν ἐπεδοθη αὐτῷ καὶ ἡ ἔγγραφος ἡμῶν γνώμη Συνοδικῶς,  
 „ὑπογραφεῖσα ἰδιοχείρως ἐν Μίλῳ Ἀπρίλ: τῷ 5 ψνα'. Ἔτες, τῆς  
 „νῦν τρεχέσης Ἰνδικτιῶνος 5'. καὶ ἀπὸ Χριστῷ αὐμγ'.

Ἐπεσάλκει μὲν ἔν ὁ Πάπας καὶ τοῖς Πατριάρχαις, ἵνα τῷ  
 ἐν Φλωρεντίᾳ ἔνωσιν καὶ αὐτοὶ παραδεξωνται· ἐμὴν ἀλλ' ἔ προ-  
 σέτι, καὶ καθ' ὃν τρόπον τὰ τῆς ἐνώσεως συνετελέσθη, ἐν οἷς  
 ἔγγραφε προσετίθετο· οἱ δ' ἔν ἀπλώτων τῷ Πάπα: ὡς, εἰ μὲν  
 αἱ τῶν ἑπτὰ Οἰκουμενικῶν Παραδόσεις Συνόδων, ἐπεκυρώθησαν

Ψ ψψψψψ 2

ἐπὶ



ἐπὶ τῆς ἐν Φλωρεντίας, ὑποδέχονται ἂν καὶ αὐτοὶ ταύτῃ· εἰδ' ἄλλως, τῆς τε γενομένης ἐνώσεως, καὶ πάντων, ὅσοι ἐκ τῶν Ἀνατολικῶν αὐτῇ προσετέθησαν, κατεψηφίζοντο. Ἐνθεν τοι ἐπεὶ μήπω μηδὲν αὐτοῖς δῆλον γεγένητο, ὅτῳ ἄρα τρόπῳ ἡ ἐν Φλωρεντίας σωεσθήκει ἐκείνη ἔνωσις, φθάσαντες προγεγράψασιν οἱ αὐτοὶ Πατριάρχαι Ἰωάννη τῷ Ἀυτοκράτορι, παραινέντες τοῖς Γράμμασιν ἀπαραιτῶτως τὰς Ἐκκλησιαστικὰς Παραδόσεις τηρεῖν, καὶ μὴ παραβαίνειν, ἀλλ' ἐπὶ τὸν ὑγιέσερον νῦν ἐπιστρέφειν· ἄλλως γὰρ ἀπειθῆντος, καὶ ἐπιτιμίων κατ' αὐτὸ ὀϊσεσθαι ψῆφον ἡπέλκεν· ἔτω γὰρ ἡ τῶν Πατριαρχῶν Συνοδικὴ Ἐπιστολὴ πρὸς τὸν Βασιλέα ἔχει, παρὰ ΛΕ'ΟΝΤΙ τῷ Ἀλλατίῳ Βιβλ: Γ'. Κεφαλ: Δ'. Ἀριθμ: Α'. Σελ: 943.

„Κράτισε, καὶ ἡμερότατε, καὶ Γαλιωτάτε μοι (γράφ: ἡμῖν.)  
 „Ἀυθέντα καὶ Βασιλεῦ. Ἐυχῆς τυγχάνοιμι ποιῶν (γράφ: τυγχάνοιμι ποιῶντες) πρὸς Θεὸν ἀδιαλείπτως, ὅπως τηρηθεῖς Σὺ τὸ Κράτος ἀπὸ παντὸς ἐναντίῳ σωαντήματος, καὶ εἰς ἡμετέραν Πνευματικῶν εὐφροσύνην. Γνωστὸν ἔσω τῇ Ἀγίᾳ Βασιλείᾳ Σὺ, ὅπως ἡμεῖς  
 „ἐδεξάμεθα πρώτῳ καὶ δευτέρῳ καὶ τρίτῳ Γραφῶ ἀπὸ τὸν  
 „Πάπαν (ἴσ. τῆ) Ἐυγένιον περὶ τῆς ἐνώσεως τῆς Ἐκκλησίας,  
 „ἵνα σέξωμεν ταύτῃ ἀπαραιτήτως καθὼς περ ἐγένετο, καὶ νῦν  
 „μνημονόσωμεν καὶ τὸν Πάπαν. Τοιαῦτα μὲν ἀπλῶς ὁ Πάπας  
 „Ἐυγένιος πρὸς ἡμᾶς γέγραπεν· ἔδεν δὲ παρέδειξεν ἡμῖν, ὅπως  
 „ἡ πράξις ἐγένετο. Ἐγὼ δὲ κατὰ τὴν προλαβῆσαν Γραφῶν  
 „πρὸς με τῆ Ἀγιωτάτης μοι Ἀδελφῆ Κυρίᾳ Ἰωσήφ τῆ Ἀρχιεπι-  
 „σκοπῆς Κωνσταντινουπόλεως, Νέας Ῥώμης, καὶ Οἰκουμενικῆς Πα-  
 „τριάρχης, νῦν ἔμαθον ἀληθῶς, ὅτι ἡ ἐν Φλωρεντίας Σύνοδος ἐκ ἐγένε-  
 „νετο, κατὰ τὰς συμβιβάσεις ἃς ἔχον πρὸς Ῥωμαίους οἱ Λατῖνοι  
 „ἐνόρκως διὰ Γραμμάτων, Κανονικῇ, καὶ ἀβίαςος, καὶ ἐλύθη, καὶ  
 „κατὰ τὰς Παραδόσεις τῶν Ἀγ: Ἀποστόλων, καὶ τῶν Ἀγ: ἐπὶ τῶν  
 „καὶ Οἰκουμενικῶν Συνόδων, καὶ τῶν Θεῶν Πατέρων· ἀλλὰ ῥα-  
 „δικρίας μυρίας ἐπινοήσαντες οἱ Ἰταλοὶ, τὰς μὲν συμβιβάσεις  
 „ἠθέτησαν, παρέβησαν δὲ τὰς ἐγγράφους αὐτῶν ὀρκους, ἐβίασαν  
 „δὲ τὴν ἀλήθειαν καὶ τέλος τυραννικῶς τρόπῳ τὰ ἄθεσμα αὐτῶν  
 „πάλιν ἐκύρωσαν Δόγματα, καὶ ἔτι ἂν ἄλλο παρὰ Κανόνας ἐκρά-  
 „τησαν· τὸ χεῖρον δὲ μᾶλλον καὶ ἀσεβεῖς, ὅτι μετὰ τῶν ἄλλων,  
 „καὶ τὴν ἐν τῷ κοινῷ τῆς Πίστεως Συμβόλῃ προθήκῃ καὶ παρητή-  
 „σαντο, ἀλλὰ καὶ ἐγγράφως παρέδωκαν, φεῦ! παρὰ πᾶσιν ὁμο-  
 „λογῆσθαι. Διὰ τῆτο ἀπελογήθῃ ἐγὼ πρὸς τὸν Πάπαν τοιαῦτα:  
 „ὅτι, εἰ μὲν σέξῃ τὰς Παραδόσεις τῶν Ἀγ: Οἰκουμενικῶν Συνό-  
 „δων, καὶ ἀποκυρώσεις (ἴσ: ἐπικυρ:), καὶ ἔτι Κανονικὸν καὶ νόμιμον  
 „οἱ τοιοῦτοι Πατέρες ἐθέσπισαν, ἥδη καὶ τὴν ἐν Φλωρεντίας Σύνο-  
 „δον καὶ αὐτὸς σέργω, καὶ τὸ τῆ Πάπα μνημόσμων δέχομαι. Σω-  
 „ζομένης,

„ζομένῃς, ἵνα τὴν τοιαύτην ὁμολογίαν πρὸς ἡμᾶς ἔγγραφον εἰλή-  
 „ῳ Πάπας κατὰ τὴν νόμιμον καὶ ἀρχαίαν Παράδοσιν, καὶ συνη-  
 „θεῖαν. Χωρὶς δὲ τῆς ἀλλεοτρόπως, ἔτε τὴν Σωόδον παραδέ-  
 „χομαι τὴν ἐν Φλωρεντία ἐδόλως, ἔτε τὸ τῷ Πάπα μνημόσων·  
 „ἀλλὰ καὶ τῆς ἐξ ἡμῶν συγκατατιθεμένης πρὸς τὰ τοιαῦτα,  
 „πρὸς τε τὴν ἐν Φλωρεντία Σωόδον δηλονότι, καὶ τὸ τῷ Πάπα  
 „μνημόσων, χωρὶς τῆς ὑγιαυνέσης εἰρημένης ὁμολογίας ἐκείνης·  
 „Εἰ μὲν τῷ Κλήρῳ ὥσιν, ἀργῆς αὐτῆς καὶ ἀνιέρης ἀπὸ τῷ νῦν  
 „πάσης Ἱεροπραξίας ἔχομεν· εἰ δὲ τῆς Συγκλήτης, ἀφωρισμένης  
 „καὶ ἀκοινωνήτης κατὰ τῆς τῶν Θεοκηρύκων Κανόνας, καὶ Μεινιτῶν  
 „τῷ Χριστῷ, καὶ τῶν Θεῶν καὶ Οἰκουμενικῶν ἐπτὰ Σωόδων καὶ ἀποκυ-  
 „ρώσεις (ἴσ. ἐπικ.) Παραδόσεις ταῦτα μὲν ἡμεῖς πρὸς ἐκείνον  
 „ἐγράψαμεν. Νῦν καὶ πρὸς τὴν (Σὴν) Βασιλείαν γνωρίζομεν τάδε·  
 „Οτι, εἰ μὲν προσέδραμεν, ὡς τῷ ἡμετέρῳ γένει παντελῶς ἐξηθην-  
 „κότος, καὶ διὰ τῆτο καταναγκασόμενος παντοιοτρόπως, ὅπως  
 „λήψη βοήθειαν, καὶ τινὰ ἴτω ἄλλω οἰκονομίαν νενόηκας· ἔτε  
 „τῆς (\*) . . . . καὶ πρὸς τὰ τῶν Λατίνων ἐνέπεσας, καὶ τὴν  
 „προθήκην ἐδέξω κατὰ ἀνάγκην· εἰδ' ἔτως ἀποτρεψάμενος νῦν  
 „τὰ ἐκείνων τερατολογήματά τε καὶ ἀσεβήματα, καὶ τὴν ὑγιαί-  
 „νσαν ἐν τῷ Θεῷ Συμβόλῳ Παράδοσιν, κατὰ τὰς Θεῆς πάσας  
 „Γραφὰς ὁμολογῆς, ἀδιστάκτως τε σέργεις, καὶ πέθη ὡς οἱ πρὸ  
 „Σὲ ἅπαντες εὐσεβεῖς Ἀυτοκράτορες Βασιλεῖς, ἤδη καὶ ἡμεῖς ἔ-  
 „μόνον τὸ προσφιλὲς μνημόσων τῆς Βασιλείας Σὲ ἐπιτελεῖν ἔχο-  
 „μεν, ἀλλὰ καὶ διωκεῖ καὶ ἀένναον ἱκεσίαν πρὸς Θεὸν ἐκπλη-  
 „ρῶν μέλλομεν τῷ Σὲ Κράτεις ἔνεκα, καὶ ὑπὲρ ψυχῆς μάστιγα·  
 „δι' ὧν, ἐξιλεόμενον κατ' ἐκάστῳ τὸ Θεὸν συγκοινῶσαι τέ Σοι  
 „(γὰρ: Συγγνώσεται Σοι:) καὶ τὰ ἀμπλακήματα ἐν γνώσει καὶ ἀγ-  
 „νοίᾳ πρὸς τὴν· ἔτω μὲν ἔν ἔσται σοι ἔλεος τῶν πλημμελημά-  
 „των, ἔτω δὲ ἄφεσις τῶν ἀγνοημάτων, εἰ μὲν τὰς Θεῆς ἐκ  
 „ἀθετεῖς Παραδόσεις. Εἰ δὲ περιμένεις, καὶ ἀνέχη τὰ τῶν ἐτε-  
 „ροδόξων, ὥστε ἄλλότρια ὄντα πάσης Κανονικῆς Παραδόσεως  
 „καὶ Σωοδικῆς, ἔμόνον ἐκκόψομεν τὸ τῷ Σὲ Κράτεις μνημό-  
 „σων, ἀλλὰ τὰ τῷ βάρους προθήσομεν Ἐπιτίμια, ἵνα μὴ τῇ  
 „τῷ Χριστῷ Ἐκκλησίᾳ διαφέρῃ ἡ λύμη τῷ ἀλλοτρίᾳ (ἴσ. ἵνα, μὴ  
 „τὴν τῷ Χριστῷ Ἐκκλησίαν διαφθείρῃ ἡ λ. τῷ ἀλλ.) καὶ βλαβερῷ Δόγματος·  
 „καθότι ποιμένες τῆς εὐσεβείας ἐκλήθημεν, καὶ ὁμολογήσαμεν  
 „ἔτως ἐγγράφως ἐναντίον Θεῷ καὶ Ἀγίων Ἀγγέλων. Οὐκ ἔν ἔ-  
 „κατὰ μισωτῆς ἀνεχόμεθα ποιμαίνειν τὴν τῆς εὐσεβείας Ἐκ-  
 „κλησίαν, ἐδὲ φειδόμεθα μάλλον ψυχῆς τε καὶ αἵματος, ἀλλ' ἔνε-  
 „κεν

(\*) Ὡς τι λέπει.

Τομ: Β'.

Ω ωωωωω

„κεν Χριστὸς καὶ τὸ Ἐυαγγέλιον ἐτοιμῶς ἔχομεν δέσσει ψυχῶν καὶ  
 „σάρκα καὶ αἷμα, καὶ τ' ἄλλα ὅσα ἐπὶ τῆς γῆς κτώμεθα. Ἄν  
 „δὲ τῷ τυραννικῷ τρόπῳ παρανόμως βιάσῃ, καὶ πειθανολογῇς  
 „τινὶ ἐλοῦθρον καὶ ἀδύλωτον τὸ Χριστὸν Ἐκκλησίαν, γίνωσκε ἔτι  
 „ὅτι (εἰ) παραιτησόμεθα μὲν ἡμεῖς τινὶ εὐσεβείαν ὅλως, εἰ  
 „ἀνεξόμεθα σιωπᾶν ἐφεξῆς· ἀλλὰ κατὰ τινὶ ἐντολῇ ἀφόβως  
 „ἐλέγξαντες, καὶ ἐπιτιμῆσαι μέλλομεν τῷτον. (ἴσ: τὸν Τυραννικὸν  
 „τρόπον.) Διόπερ καὶ σέλλομεν πρὸς τινὶ Ἀγίαν Σε Βασιλείαν  
 „ταῦτα μετὰ τῷ ἐν Ἱερομονάχοις καὶ Πνύματικοῖς τιμιωτάτῃ  
 „Κυρίῳ Μακαρίῳ, καὶ Τίῳ τῆς ἡμῶν μετριότητος ὅς καὶ ἀναγ-  
 „γελεῖ πρὸς τινὶ Σιν Βασιλείαν τὰ περὶ τῆς Σωότης, ἅπερ αὐτῷ  
 „ἀνεθήκαμεν. Σφόδρα γὰρ ἡμεῖς, πίσυσον: ὡς εἰδὲς τῶν ἀν-  
 „θρώπων ἐπιποθῆμεν τῆς (ἴσ: μετὰ) τῆς Πρεσβυτέρας Ῥώμης  
 „καὶ τῶν Ἱταλῶν πάντων ἐνώσεως, σωζόμενα, εἰ πρὸς τινὶ ἀλή-  
 „θειαν ἔλθωσιν. Εἰ δὲ συζητῶν τὸ ψεῦδος Φιλονεικῆσιν, εἰ δυ-  
 „νάμεθα συγκοινωνῆσαι αὐτοῖς, εἰδὲς ἂν πάντας ἡμᾶς διὰ μιᾶς  
 „ἡμέρας ἀπεκεφάλισαν. Κρεῖττον εὐσεβῶς καὶ πρὸς καιρὸν  
 „ὅπερ (ἴσ: θανεῖν πρὸς καιρὸν, ἔπερ) τέλος ἀποθανεῖν μέλλομεν. Μνή-  
 „σθητι τοιγαρὶν καὶ αὐτὸς, ὅ Βασιλεῦ Γαληνότατε καὶ Θεότατε,  
 „τῆς Θεᾶς Θεσμῆς (ἴσ: ζῶν κατὰ τὴν Θ. Θ.) καὶ νόμος Χριστὸς, καὶ τὰς  
 „Παραδόσεις τῶν Θεοκηρύκων αὐτῷ Μαθητῶν, καθότι εὐσεβῶς  
 „ἔζησας ἄχρι τῷ νῦν, ὡς οἱ Σε Πατέρες ὁμολογῶσιν ἔργον  
 „(ἴσ: ἔργον) εὐσεβῶς καὶ ὁσίως τεθνήξαντες. Οὐδὲν γὰρ ἐστὶ τῆς  
 „ἡμετέρας εὐσεβείας ἀμφίβολον, ὅπως πρὸς ἀπορίαν ἐμπέσῃς καὶ  
 „δισαγμὸν ἐν τοῖς Χριστιανικοῖς Δόγμασιν. Ἀλλ' ὅμως, ὡς εἰδὲς ἐν  
 „γένος τοσαύτῳ ἀκρίβειαν καὶ ἔρῳναν πεποίηκε περὶ Πίσεως  
 „ὅσῳ (οἱ) Πατέρες (ἡμῶν) ἐν (τῇ) Χριστὸ Πίσει πεποιήκασιν.  
 „Ὅθεν καὶ τὰς ἀπὸ κτίσεως κόσμου μαρτυρίας εὐρόντες, κατὰ  
 „διαφόρους καιροὺς παρὰ τῷ Ἀγίῳ Πνύματος, διὰ τῶν Ἀγίων  
 „Προφητῶν προκηρυχθείσας, ἔσεξαν μὲν ταῦτα βεβαίως ἐν  
 „πρώτοις, ὕστερον δὲ τῆς σκιάς παρελθούσης διὰ τῆς (τῆς) χά-  
 „ριτος παρσείας τὸ τῆς Οἰκονομίας ὅλον ἐτελειώθη σωτηριῶδες  
 „Μυστήριον· καὶ ἔτι τῆς ὑπερλάμπους καὶ ζωοποιῆς Ἀναστάσεως  
 „πληρωθείσης, οἱ τῆς αὐτῆς θεωρίας Μῦσαι καὶ Μαθηταὶ διὰ  
 „Πνύματος Ἀγίου σαφῶς τὸ Μυστήριον τῷτο τρανώσαντες πᾶσιν  
 „ἐκήρυξαν. Ἰν' ἐφεξῆς ἐπόμενοι πάντες ὀρθῶς, εἰκ ἀσοχήσωμεν  
 „ὅλως τινὶ τῆς ἀπεράντης Βασιλείας ἐκείθεν ἀπόλαυσιν· ἥς γέ-  
 „νοιτο πάντας ἡμᾶς ἐπιτυχεῖν ἐν Χριστῷ Ἰησῷ τῷ Κυρίῳ ἡμῶν.  
 „Ἀμὲν. Μὴ Δεκεμβρίῳ Ἰνδικτιῶνος Ἑκτῆς.,.

Παραπλησίᾳ δὲ τῇ διαθέσει τὸ τιμικαῦτα, καὶ ἡ τῶν Ῥώσ-  
 σων Ἐκκλησία τινὶ ἐν Φλωρεντίᾳ ἐνωσιν ὑπεδέξατο. Ὁ γὰρ  
 Κιρίλλος Μητροπολίτης Ἰσίδωρος, ὁ ἐν τοῖς πρώτοις ἀριθμῶμενός  
 τῶν

τῶν τῷ Φλωρεντινῷ ἔνωσιν ἐκείνῳ ἀσπασαμένων, καὶ διὰ τῆτο Καρδινάλιος ἔπειτα τῆς Ῥωμάνας Ἐκκλησίας ὑπὸ τῆ Πάπα προ-  
 χαριθεὶς, ἐπεὶ πρὸς τῆς λαοῦς τάτης τὰ περὶ τῆς ἐνώσεως ἀνε-  
 βάλετο κηρύττειν, ὁδεμιᾶς ὑπ' αὐτῶν ἡξιῶται ἀκροάσεως. Μᾶλ-  
 λον δὲ καὶ εἰς Μοχοβίαν μεταβὰς ὑπὸ τῶν ἐκεῖ Κρατάντων συ-  
 νελήφθη, καὶ δέσμιος ἐνερχθεὶς, πάσης ὁσης εἶχε κτήσεώς τε  
 καὶ περιστείας ἀπογεγύμνωται. Προσέτι δὲ, καὶ ὑπὸ Σωόδου Ἐπισ-  
 κόπων ἀθροισθείσης κατακριθεὶς, καὶ Φλοξὶν ἂν παρεδόθη κατὰ  
 τῷ ἐκείνων ψῆφον, εἰ μὴ φυγῇ ἀπὸ τῆ δεσμοτηρίου τῷ σωτη-  
 ρίαν ἐπραγματώσατο. Ὡς δὲ καὶ παρὰ τοῖς λοιποῖς τῶν Ῥώ-  
 σων ὁδὲν τι ὅλως ὁδὲ τὸ μετὰ ταῦτα ἐπέραινε, τελευτᾶν ἐπα-  
 νῆκεν εἰς Ῥώμῳ, κατὰ ΜΑΤΘΙΑΣ διέξαισιν ὁ ΜΙΧΩΒΙΟΣ ἐν  
 Βιβλ: Β'. περὶ τῆς Σαρματίας, Κεφαλ: Α'. „Ἰσίδωρος ὁ Κιαίβου  
 „ποτὲ Μητροπολίτης, γλώτῃ τε καὶ παιδείᾳ ἐν Γραικοῖς δοκιμώ-  
 „τατος, ἐπὶ Πάπα Εὐγενίῳ τῷ Δ'. πρὸς τῷ ἐν Φλωρεντίᾳ Σύ-  
 „νοδον μετὰ Ἱππων ἑκατὸν ἀφίκετο καὶ τῷ μετὰ τῆς Ῥωμάνας  
 „Ἐκκλησίας ἀποδεξάμενος ἔνωσιν, ἐπὶ Ῥωσίας ἐπανῆλθε. Τῷ  
 „τον οἱ Μόχοι, τῷ ὑπὸ τῷ Ῥώμῳ ὑποταγῶν αὐτοῖς κηρύττοντα,  
 „ἀπεγύμνωσάν τε ὧν εἶχε, καὶ εἰς ἑκατὸν ὀλέθρου σωήλασαν,,  
 Καὶ ἐν Βιβλ: δὲ Δ'. τῷ Πολωνικῷ Χρονικῷ, Κεφ: ΝΗ'. περὶ  
 τῆς ἐν τῇ Φλωρεντιανῇ Σωόδῳ πραγματωθείσης ἐνώσεως διελ-  
 θῶν: „Ἡ ἔνωσις (Φησὶν) ἐκείνη, ἢ τῆς Λατινικῆς τε καὶ Ἀνα-  
 „τολικῆς Ἐκκλησίας, ἐπὶ βραχὺ πάνυ διήρκεσε· Γραικῶν τε δὴ  
 „καὶ Ῥώσων ἐπιχλυθαζόντων αὐτῷ καὶ περιφρονέντων. Ὅθεν  
 „καὶ ὁ προῤῥηθεὶς Ἰσίδωρος πρὸς τῆς ὑπ' αὐτῷ τελεῶντας κατὰ τε  
 „Ῥωσίαν καὶ Μόχαν ἐπανιῶν, καὶ τῷ ἔνωσιν αὐτοῖς ἐκείνῳ  
 „διακηρύττων, παρὰ τῶν ἐν Μόχα τὸ Κράτος ἀνεξωσμένων συ-  
 „νεχέθη, καὶ ἐν δεσμοτηρίῳ καθεύχθη, καὶ τῶν θησαυρῶν  
 „ἀπάντων, ὅς ἦδη ἐπισήμους ὡς κεκτημένος, ἀφῆρηται· ἔπειτα  
 „μέντοι, Θεῷ σιωαραμένῳ, τῆς εἰρήνης ἐκείνης ἀποδράς διασέσωσαι,,  
 Καὶ ΚΡΩΜΕΡΟΣ δὲ περὶ τῶν Πολωνικῶν Πραγμάτων Βιβλ:  
 ΚΒ'. „Ἰσίδωρος ὁ Κιαίβου Μητροπολίτης, εἰς Καρδινάλιον ὑπὸ  
 „Εὐγενίῳ προβιβαθείς, παρὰ τῶν οἰκείων αὐτῷ Ῥώσων, διὰ τὸ  
 „Λατίνοις ἐπὶ τῆς Φλωρεντινῆς Σωόδου σωλυωθῆναι ἀπελαθείς,  
 „ἐπανῆκεν εἰς Ῥώμῳ,, Καὶ ἘΡΒΕΡΣΤΕΪΝΙΟΣ ὁ Πρέσβυς τῷ  
 Γερμανῶν Αὐτοκράτορος παρὰ τῷ Ῥωσίας Μοναρχῶντι, ἐν τῷ  
 Β'. Βιβλ: περὶ Μοχοβίας: „Ἦν δέ τις Μητροπολίτης Ῥωσίας,  
 „ὅς κατὰ αἵτησιν Εὐγενίῳ τῷ Πάπα, ἐπὶ τῆς Σωόδου ἀφίκεται,  
 „ἐνθα καὶ αἱ Ἐκκλησίαι σωλυώνται· ἐπανιῶν δ' αὐτὸς ἐπὶ τῆς  
 „Πατρίδος αὐτῷ συλλαμβάνεται, καὶ τῆς περιστείας ἀπάσης ἀπο-  
 „γυμνῆται, καὶ εἰς φυλακὴν ἐμβάλλεται· ὅθεν τέως ἀπέδρα,,  
 Καὶ ΓΥΑΓΝΙΝΟΣ ἐν τῇ τῆς Μοχοβίας περιγραφῇ, Κεφαλ: Β'.  
 Ω ωωωωω 2 „Ἦν



„Ἦν δὲ Ῥωσίας Μητροπολίτης ὀνόμαζι Ἰσίδωρος, ὁ τὸν ἐν Κιαίβω  
 „Θρόνον ἰθύνων· ἔτος, ὡς ἐν τῇ κατὰ Φλωρεντίαν Σωόδῳ, τῇ  
 „ὑπὸ Ἐυγενίᾳ τῷ Πάπα τελεσθείσῃ παρὼν, τὰς Ῥωσσιακὰς Ἐκ-  
 „κλησίας, ἀποβληθεῖσιν τῶν κατὰ Γραικὸς τελετῶν καὶ τάξεων,  
 „μετὰ τῆς Ῥωμάνας Ἐκκλησίας συνῆψε· τέως δ' εἰς Ῥωσίαν  
 „ἐπανιῶν, ἐπειδὴ τῷ κατ' αὐτὸν πρόθεσιν καὶ τῷ, τῷ πράγμα-  
 „τος ἐκπλήρῳσιν τοῖς Ῥώσοις πρεβάλετο, καὶ διὰ τῶν Θεῶν  
 „λογίων, πρὸς ἐνότητα Πίσεως καὶ ὁμοφροσύνης αὐτῶς διδάσκων  
 „πρετρέπετο, συλληφθεὶς ὑπ' αὐτῶν, καὶ ὧν εἶχεν ἀπάντων ἀγα-  
 „θῶν ἀπογυμνωθεὶς, εἰς δεσμωτήριον ἐνεβλήθη. Καὶ ΛΕΩΝ  
 „δὲ ὁ Κρεῖσσας, ἐν τῷ Ἀπολογητικῷ Βιβλιαρίῳ ὑπὲρ τῆς τῶν Ἐκ-  
 „κλησιῶν Ἐνώσεως, τῷ ἐν ἔτει 1618. ἐν Βίλνῳ ἐκδοθέντι·  
 „Βασίλειος Βασιλείδης ὁ Μέγας Δεξ. Μοχοβίας, Ἰσίδωρον τὸν Μη-  
 „τροπολίτην, ἐπὶ τῇ τῶν Μόχων μετὰ τῆς Ῥωμάνας Ἐκκλησίας  
 „σίας ἐνώσει, τῷ τῶν δογματιζόντων ἐν τῇ κατὰ Φλωρεντίαν  
 „Σωόδῳ ἀλήθειαν ἐπισωιζόντα κακῶς ὑπεδέξατο. Καὶ γὰρ καὶ  
 „ἐν εἰρκῇ ἐνέβαλε δέσμιον, καὶ Ἐπισκόπων Σωέδριον ἐν Μοχο-  
 „βίᾳ σωμαθροῖσας, δίκῃ ἐσησε κατ' αὐτῶν ἥς τῇ ψήφῳ ἀναμ-  
 „φιβόλως καὶ φλοξίν ἄν (Ἰσίδωρος) παρεδόθη, εἰμὴ κατὰ Θεὸν  
 „ἔλεος ἐξαρπαθεὶς διεσέσωσθαι. (35) Ἀὐτὸ δὲ δὴ τότε δῆλον γί-  
 νεται

- (35) Ἐπὶ τέτοις καὶ ὁ τὰ Χρονικά τῆς Ῥωσίας ἐπὶ πολλῇ ἀναγραφάμενος Γάλλος, καὶ ἐν Παρισίοις (ἔτει 1769. chez J. P. Costard) ἐκδεδοκώς, ἐπὶ τῷ χρονολογικῷ Πίνακι, τὰ αὐτὰ περὶ τῷ Ἰσίδωρῳ τέττε ἐπιβεβαίωσι. Ὅτι δηλ.: μετὰ τῆς ἐν Φλωρεντίᾳ Σωόδου, à son retour en Russie, il prêcha l'abolition du Schisme, mais sans succès; il fut en Prison. Quelque temps après ayant trouvé le moyen de s'échapper il passa à Rome, où le Pape Eugene IV. lui donna le Chapeau de Cardinal. Καὶ ἐκ τῶν ἡμετέρων δὲ ὁ Ἱεροσολύμων Πατριαρχ. Δοσίθεος, ἀναθεὶς τὰ περὶ Ἰσίδωρῳ τέττε διαξιῶν. (ἐν τοῖς περὶ τῶν ἐν Ἱεροσολ.: Πατριαρχ.: Βιβλ.: 1. κεφ.: 5. Σελ.: 959. 910.) „Ἐπὶ Μανηλ, Φησί, τῷ Παλαιολόγῳ, ἐν ἔτει 5917. (6917.) ἐχειροτονήθη Μητροπολίτης Ῥωσίας Φώτιος, ἑοῖος Ἀνθρ. ἔκαμηνθέντος καὶ ἁλῶς ἐψηφίσατο ἡ ἐν Ῥωσίᾳ Σωόδος εἰς Μητροπολίτην, τὸν Ῥεξανίᾳ Ἀρχιεπίσκοπον Ἰωάνν. Ἐν τέτοις δὲ Ἰσίδωρος τις κακομήχανος ἄνθρωπος, πανουργίας χρησάμενος ἐχειροτονήθη Ῥωσίας, πρὶν ἢ φθάσαι τὸν Ἰωάνν εἰς Βυζάντιον. Πα-ραγενομένης δὲ τῷ Ἰωάνν εἰς Βυζάντιον, εἶπεν ὁ Κωνσταντινουπόλεως τῷ Ἰσίδωρῳ: „Ἰσίδαρε, ἐπειδὴ πανουργίας ἐχειροτονήθης, ἐτελεσφορήσεις. Ἀπελθόντος ἔν τῷ Ἰσίδωρῳ εἰς Ῥωσίαν, καὶ κείθεν σαλόντος εἰς τῷ ἐν Φλωρεντίᾳ Σωόδῳ ὅπως ἀγωνισαμένης καὶ ἐπαιεθέντος εἰς Ῥωσίαν τῷ διδάξαι τὸν Λατινισμόν· ὁ Μέγας Κναιζῆς Βασίλειος, τῷ μὲν Σωόδῳ, καὶ τῷ κατ' αὐτῷ ἐνωσίν, μετὰ πάσης τῆς ἐν τῇ Ῥωσίᾳ Ἐκκλησίας ἀνεθεμάτισε· τὸν δὲ Ἰσίδωρον καθάρξεν εἰς σκοτεινὴν φυλακίαν. Ἐξενφυγὼν ἐκείνος ἀπῆλθεν εἰς Ῥώμην ὅπως γεόμενος Καρδινάλιος Πολωνίας, ἐτελεύτησε. Ταῦτα λέγεται τὰ Ἱστορικά τῶν Ῥώσων. Ἀλλὰ γὰρ τὸ τῆς τελευτῆς τῷ Ἰσίδωρῳ ὕστερον. Καὶ γὰρ (ὡς αὐτὸς αὐτοδ. κεφ.: Ζ. Σελ.: 911.) „Νικόλαος ὁ Πάπας, ὁ μετὰ τὸν Δ' Εὐγένιον, ἀπέστειλε τὸν Ἰσίδωρον ἀπὸ Ῥώμης εἰς Κωνσταντινούπολιν μετὰ ταῦτα, ἐν ἔτει 5918. (6918.) ἀκεσόμενον διεβρωγυῖαν αὐθις τῷ σαθρῶν ἐνωσιν. Περὶ ἔδῃ, καὶ ὁ Ἀθινῶν Μελέτιος, ἐν τῇ Ἐκκλησίᾳ αὐτῷ Ἰσρ.: Βιβλ.: 1Ε' κεφ.: Η'. „Ταῦτα μαθὼν (τὰ κατὰ τῆς ψευδοενώσεως ἐν Κωνσταντινουπόλει διαπραχθέντα) „ὁ μετὰ τὸν Εὐγένιον Πάπας Νικόλαος ὁ Ε'. „ἐπεμψεν εἰς Κωνσταντινούπολιν Ἰσίδωρον τὸν πρῶτον Κιαίβε, ἥτοι Σαρματίας, „ὄν

νεται καὶ ἐκ τῆς τῆς Βασιλέως Πολώνων ΚΑΣΙΜΙΡΟΥ πρὸς Ἰωάννῳ τὸν Καπισράνον Ἐπισολῆς, τῆς Ἑτ: 1451. Οὕτω γὰρ ἐν αὐτῇ ὁ ῥηθεὺς Βασιλεὺς παρὰ ΒΖΩΒΙΩι κατὰ τὸ αὐτὸ Ἔτος 1451. Ἀριθμ: 26. „Εἰσὶν ἡμῖν παρὰ ταῦτα καὶ Ῥωσσιακαὶ χωραὶ „εὐρύταται· αἱ καὶ περ τὴν εἰς Χρῖστον ἐπαγγελλόμεναί Πίσιν, „ἀλλ' ἐπὶ τὴν τῶν Γραικῶν ἐκ πολλῶν εἰσὶν ἐκκλίνουσαι Αἴρεσιν, „καὶ τὴν κατ' ἐκείνης τελεῖσαι τε καὶ διασώζειν διατύπωσιν· ὅδε „διὰ χρόνον τοσόντων, ὅσος ὁ ἐκ τῶν ἐκείνων ὀλίγος, καὶ τῆς „Λατινικῆς ἀποχρίσεως Ἐκκλησίας διήλθε παραρρύνει, ἀπὸ τῆς „τῶν ἰδίων τελεῶν σκοπομῶν, (καὶ τοι τοσόντων ἐν πολλαῖς Σιω- „δοῖς πόνων καταβληθέντων,) ὅδαμῶς ἀπαχθῶν δεδιώμεται, ὅδ' „ἀποσπαθῶν, „ Οὐκὲν ἄρα οἱ Ῥῶσοι τὸ τιμικαῦτα τὴν ἐν Φλωρεντίᾳ παρεδέξαντο Σιῶδον· καὶ μάτῳ ἄρα ὁ Ἰησὺς ΒΠ- ΟΥΚΙΟΣ ἐν Βιβλ: Δ'. τῆς τῶν Λιθuanῶν Ἱστορίας, Σελ: 187. κατελήρησε. „Κατὰ τὸν αὐτὸν χρόνον, ἐν μέσταις ταῖς πολεμι- „καῖς τρικυμίαις, ἢ κατὰ τὴν θρησκείαν γαλῶν, ἢ μακρῶν τε καὶ „χρονίῳ τῷ τῶν Φλωρεντίνων Πυλίων καμᾶν παλινδρομή- „σασα ἐπανήκται· καὶ κατὰ τὴν Λιθuanίαν ὁμοίως, σπασθῇ καὶ „ἐπιμελείᾳ Ἰσιδώρου τῆς Κιαιβίας Ἀρχιερέως, καὶ τῆς Ἀγίας Ῥω- „μάνος Ἐκκλησίας Καρδινάλεως, μεγάλας προσέληφε τὰς ἐπι- „δόσεις, „

Καὶ τὸ ἐντεῦθεν τοίνυν μαθὼν ὁ Πάπας, τῆς Γραικῆς ὡς μάλα καὶ κατὰ τῆς Φλωρεντινῆς ἐνώσεως ἀντιφέρεισθαι, Ἀποκρισια- ρίς εἰς τὴν Κωνσταντῖν ἀπέστειλε, τῆς ἐπιμεληθησομένης, ὅπως ἂν τὴν τοιαύτῃ Σιῶδον ἅπαντες παραδέξαιντο. Ἐπειδὴ μὲν- τοι γε τὸ πρᾶγμα εἰς Διάλεξιν περιέστη, ἐπ' ἀτελέσῃ τῷ ἔργῳ οἱ Ῥωμᾶνοι Λεγάτοι ἀνέστρεψαν. Οὕτω γὰρ ΛΑΘΝΙΚΟΣ ὁ Χαλκοκονδύλας ἐν Βιβλ: 5'. Σελ: 156. „Ο' μὲν τοι Ἀρχιε- „ρεὺς καὶ Σοφῶν τινες ἐπετόμφει ἐπὶ τὸ Βυζάντιον παρὰ τῆς „Ἑλλῶας, εἰς Διάλεξιν ἀφίξομένης τοῖς τῶν Ἑλλῶν Σοφοῖς, „οὗ δ' ἐπρόσεντο τὴν γενομένην σφίσι Σιῶδον κατὰ τὴν Ἰταλίαν. „Μάροκ τε τῷ Ἐφέσῃ Ἀρχιερεῖ, ὅδε τὴν ἀρχὴν τῷ τῶν Λα- „τίνων Δόγματι τὸ παράπαν, καὶ Σχολαρίῳ τῷ τότε παρ' Ἑλλη-

„ὃν Καρδινάλιον Σαβῖαν (ἢ Σαβῖαν ἴσ: ἢ Σαρματῶν.) ἀνέδειξεν ἐπὶ τῆς ἐν Φλω- ρεντίᾳ Σιῶδος ὁ Εὐγένιος, ὡς Σιῶδον ποιησόμενον, καὶ τῆς Ἑλλῶας τῇ Ῥώμῃ „Ἀρχιερεῖ διαλλάζοντα· ἔς ἐπαμύων τῇ Πατρίδι ἐπὶ τῆς ἀλώσεως, ἐάτω ὑπὸ „τῶν Τσεκῶν καὶ ὡς ἤχθη εἰς Γαλατῶν ἀπεδόθη, καὶ ἐσθῆς εἰς ναὺν ἀπέδρα „ἐπὶ Πελοπόννησον. Εἰ μὲν ἔν αὐτὸν ἔγνω Ἰασιλεὺς (ὡς εἶη Καρδινάλιος Ἰσιδώ- ρος) ἀνέειλετο ἂν αὐτὸν, καὶ ἐκ ἀνίει διαφυγεῖν νῦν δὲ οἴομαι αὐτὸν τεθιά- ναι, ἐκ ἐπεισέτο λόγον ὁδὸν ὡς τῇ Χαλκοκονδύλᾳ ἰστέρηται. (Βιβλ: Η'. Σελ: 209 καὶ „211. τῆς ἐν Παρισίοις Ἐκδόσεως.

Τόμ. Β'.

Α ααααααα

„Ἐλθῃσι τὰ ἐς Σοφίαν εὐδοκιμῶντι· ὁ μὲντοι ἡνύετο αὐτοῖς  
 „ἐδὲν ἐς λόγων ἄμιλλαν ἀφικνεσμένοις, ἀλλ' ἀπεχώρην ἀπρακτοί  
 „ἐπ' Ἰταλίας,.. Τῆς δὲ Προσδιαλέξεως ταύτης μέμνηται καὶ ἐκ  
 Λατίνων ἈΝΤΩΝΙΟΣ, (36) καὶ τοὶ πάντα πρὸς τὸ δοκῶν οἱ  
 διασρέφων εἰς ἄμωαν τῶ οἰκείῳ Δόγματι. Οὕτω γὰρ ἐν Τίτλῳ  
 ΚΒ'. Κεφαλ: ΙΑ'. „Ἀλλ' ἐκείνος ὁ δριμύτατος Διαλεκτικὸς ὁ  
 „Ἐφέσος, τῇ ἰδίᾳ κακοφροσῶν ἐμμένων, ὅς ἡξίωσε μετὰ τῶν  
 „ἄλλων ἐπιστρέψαι πρὸς τὴν ἀλήθειαν, ἐπανιών δ' ἐπὶ τῆς Πα-  
 „τρίδος ὤχετο. Τῶ γὰρ Ἐνετῶ Καρδιναλέως, τῶ ἐπὶ τῷ Κων-  
 „σταντινουπόλεως Λεγατείᾳ ἀφοριθέντος, ἐκεῖ διατρίβοντος, καὶ  
 „τῷ σωεταυριζομένῳ τῶ εὐλαβεσάτῃ Ἐπισκόπῳ Κορώνης Κυρῶ  
 „Βαρθολομαίῳ τῶ ἐκ Φλωρεντίας, ἀρίστῳ μὲν ἐν Διδασκάλοις  
 „τῆς Ἱερᾶς Θεολογίας, τῆς δ' Ἑλληνίδος γλώσσης εἰδήμονος· ἔδοξε  
 „τῷ Γραικῶν Αὐτοκράτορι, καὶ τοῖς περὶ αὐτὸν Μεγιστάσι, ζή-  
 „τησιν κοινῇ κροτηθῆναι μετὰ τῶ προῤῥηθέντος Ἐφέσου, καὶ  
 „τῶ Ἐπισκόπῳ Κορώνης· ὁ τινος ἐπὶ σοφία ἤδη ἐκεῖ διέβριε λόγος  
 „πολύς· τῶ γὰρ ἀγῶνος συζάντος, ὁ εἰρημένος Ἐφέσος καὶ πάλιν  
 „ἦλθον ὡφθῇ ἐκείνῳ, καὶ σιωχέσθῃ· ἐξ ὧ καὶ τοσῆδε κατεπόθη  
 „τῇ ἀθυμίας, ὡς ἐντὸς ἡμερῶν ὀλίγων, σιωάμα τῇ αὐτῇ κακο-  
 „φροσῶν σωμαποπνέσασθαι,.. — Ἀλλ' ὅτι δὴ κατὰ Φλωρεντίαν  
 ἐδέντι τῶ Ἐφέσου οἱ Λατῖνοι κατίχυσαν, ἐν ἄλλοις περὶ δέδεικται.  
 Ἐκείνον δὲ, καὶ μετὰ τὰς ἐν Κωνσταντινουπόλει ταύτας Προσδια-  
 λέξεις, ἐντὸς ὀλίγων ἡμερῶν τελοῦσθαι, καὶ τῷτο ψυδὲς ὡσαύ-  
 τως. Ἐβίβη γὰρ εἰσέτι ἐπὶ Κωνσταντίνῳ τῶ Αὐτοκράτορος· ἐν δὲ  
 τῇ ἐχάτῃ Σιωδῶ, τῇ πρὶν ἢ τῷ πόλιν ὑπὸ τῶν Βαρθάρων  
 ἀλῶναι συζάνῃ, καὶ αὐτὸς παρῶν· περὶ ὧ ἐν τοῖς ἐφεξῆς.

Ἀλλὰ καὶ αὐτὸς Ἰωάννης ὁ Αὐτοκράτωρ, ὁ ἄχρις ἐκείνῳ  
 τῷ ἐν Ἰταλίᾳ Φλωρεντινῶ ἐνωσιν ἔτω σφοδρῶς ἐπισπέρχων,  
 ἔτοι τοσῆτον τέως περὶ αὐτῷ διετέλει σπιδάων, ὡς δὴ καὶ θνήσ-  
 κων τέως εἰς τὸ παντελὲς παρητήσατο. Ἐνθεντοὶ· καὶ ὁ Πα-  
 τριαρχῶν Μητροφάνης εἰς τὰ Σεκρέτα ὑπαναχωρήσας, τῆς  
 ἰδίας ἀψαθῇ ἀπλωάτο ἐπιστάσις, εἰ μὴ πρὶν ὁ Βασιλεὺς δη-  
 μοσίᾳ ἐναισαγάγῃ τῇ Ἐκκλησίᾳ τῷ ἐνωσιν· ὁ δὲ καὶ ποιήσεν  
 μὲν ὁ Κρατῶν ὑπὶχινῆτο· ἀλλ' ἐν ᾧ ἡ πρὸς τῷτο ἡμέρα προδιελάσ-  
 σετο, τὸν Πατριάρχῳ τὸ χρεὼν προκατείληφεν· ὅθεν καὶ πολ-  
 λῶν κωλυμάτων παρεμπесόντων, ἐδὲ εἰσήγαγεν. Ἐς πλάτος  
 ταῦ-

(36) Ἀντώνιος Μασσάνος ἐκ τῶ τῶν Ἑλασσόνων Μοναστικῶ Τάγματι, ὁ ὑπὸ τῶ Πα-  
 πα Μαρτίνῳ τῶ Ε'. Ἀποκρισιάρχῳ εἰς τῷ Κωνσταντίνῳ ἀποσταλῆς ἐν ἔτει 1422.  
 (Ὁρα παρὰ Ἀρδένῳ Σιωδῳ. Τόμ: Η'. σῆλῃ 1018 — 1024. Ὁρα δὲ καὶ Δοσί-  
 θεον περὶ τῶ ἐν Ἱεροσολύμοις Πατριαρχῶσάντων Βίβλ: Ι'. Κεφαλ: Α'. Παρὰ-  
 γράφ: Β'. καὶ Γ'. Σελ: 900.

ταῦτα διέξεισιν ὁ Συρόπυλος ἐν τῷ IB'. Τμήματι. Ἀλλὰ καὶ ὁ Πάπας Εὐγένιος, ἐν τῇ πρὸς τὸν Δεσπότην Κωνσταντῖνον τὸν Παλαιολόγον Ἐπιστολῇ, τῇ γραφείῃ "Ετει 1441. ἢ ἐν τῷ Γ'. Μέρει τῆς Φλωρεντινῆς Σιωδῶδ, Ἀριθμ: Γ'. ἐμφέρεται: (37) „Ὅτω „δήποτε πόθῳ, καὶ ψυχῆς ζέσει (Φησὶ), διὰ τε τὸ πρὸς Θεὸν „σέβας, καὶ κατὰ ζῆλον τῆς Καθολικῆς Πίστεως, ἐφίεταί σε ἡ „Εὐσέβεια, ἵνα ἡ Ἁγία αὕτη τῆς Δυτικῆς τε καὶ Ἀνατολικῆς „Εκκλησίας ἔνωσις, ἡ ἀρτίως τῇ τῷ Κυρίῳ καὶ Σωτῆρι ἡμῶν „Ἰησοῦ Χριστῷ χάριτι, ἔτω πάνδημος καὶ καλῶς καὶ ὁμοψύχως „σωτελεσθεῖσα, τὴν προσήκυσαν αὐτόθι τε ἐν Κωνσταντινουπόλει, „καὶ τοῖς λοιποῖς μέρεσι τῆς Γραικίας ἐκπλήρῳσιν λάβῃ, τὰ „Γράμματα τῷ Αἰδεσίμῳ Ἀδελφῷ Ἐπισκόπῳ Κορώνης Χριστοφόρῳ „τῷ ἡμετέρῳ Ἀποκρισταρίῳ, καὶ αἱ πολλῶν Ἀνδρῶν ὀρθοδοξέν- „των ἀναφορὰ ἡμῖν τε, καὶ τῷ Ἀποστολικῷ Θρόνῳ ἀνήγγειλαν. „Καί τοι γὰρ περὶ τὸ πρᾶγμα, ὁ λίαν ἀγαπητὸς ἡμῖν ἐν „Χριστῷ Υἱὸς, Ἰωάννης ὁ Παλαιολόγος ὁ τῶν Ῥωμαίων Αὐτοκρά- „τωρ, ἀμελῶς πως ἄχρι τῆδε καὶ χλιαρῶς προσενώεσθαι, „ἀλλὰ τὸ σὸν ὕψος ἀξιοῖτε καὶ βέλεται χώραν ἔχειν τὸ γε- „γονός, καὶ ἐκπληρωθῆναι ὡς οἶον τε. — Τοιγαρὲν τῷ Θεῷ βοη- „θῆντος, ἔ τὸ ἔργον ἐν τῇ προκειμένη ὑποθέσει προάγεις, καὶ „προάγεσθαι, ἢ προεῖρηται, ἀξιοῖς ἔποτε δὴ κατὰ τὸ μέλλον „γένοιτό Σε τὴν τοιαύτην τῶν Ῥωμαίων διαδέξασθαι Βασιλείαν, „ἢ ὅτω δήποτε τρόπῳ τῶν πραγμάτων προσῶμαι, καὶ εἰς Αὐτοκρά- „τορα ἀναγορεύθῃν (38) ὁ δὲ, τῇ σερεώσει τῆς προειρημένης „ἐνώσεως, τῇ δημοσιόβσει τε καὶ ἀνακηρύξει τῷ ὄρει, τὴν ὀφειλομένην, „ἢ προλέγειν, παράχοιο ἀναπλήρῳσιν (ἴδι) ὡς τῇ Σῇ Εὐσεβείᾳ „διὰ τῶν παρόντων Γραμμάτων, ἐξ ὀνόματος ἡμῶν τε, καὶ τῷ „Ἀποστολικῷ Θρόνῳ, ὑπὸ χνέμεθα τὰς αὐτὰς βοηθείας τε καὶ „σωδρομάς καὶ χορηγίας, ἃς καὶ τῷ λίαν Ἀγαπητῷ ἐν Χριστῷ „ἡμετέρῳ Υἱῷ τῷ ῥηθέντι Αὐτοκράτορι πρὸς ὑπερασπισμόν τε „καὶ διακρένδουσιν τῆς Κωνσταντινουπόλεως προὔπεχόμεθα ὡς ἂν „τὰ κατὰ πλημμέλειάν τε καὶ χλιαρότητα τὴν ἐκείνην σωτελε- „σθῇ μὴ δωρηθέντα, ἐπὶ σεαυτὸν ἀναλαβὼν ἐν ἰδίῳ Πρῶτῳ „πρωτοκαῦτα, τῆς Αὐτοκρατορίας προκαθήμενος, ἢ περ εἴρηται, „τὴν τοιαύτην ἔνωσιν διὰ Σῶ πρῶτον ἐκτελεσθεῖσαν προσεπισε- „ρεώ-

(37) Παρὰ τῷ Ἀρδείνῳ ἐν Τόμῳ Θ'. σήλη 1030.

(38) Οὗτα πως πλαγίως τὴν ἀνταρσίαν ἔεικεν ὑπαγορεύειν ὁ Ἀγιώτατος Πάπας τῷ Εὐσεβεστάτῳ Δεσπότη, τὴν κατὰ τῷ Βασιλεῦς Ἀυταδέλφῳ Ἰωάννῃ ὃν χλιαρῶς καὶ ἀμελῶς ἐς γ' ἐπ' ἐκείνο περναῖται προσενεχθῆναι πρὸς ἐκπλήρῳσιν τῆς ποθεμένης ἐνώσεως ἢτοι γὰρ διαδέξασθαι τὴν Βασιλείαν, Φησὶν, ἢ ὅτω δή- „πτε τρόπῳ τῶν πραγμάτων προσῶμαι, καὶ εἰς Ἀυτοκράτορα ἀναγορεύθῃν, „γένοιτο.



„ρεώσης, κατασφραγίσσης, κὶ ταῖς προσηκέσαις προμηθείαις τε κὶ  
 „κηδεμονίαις ἐπαναπληρώσης. Ἐτι καὶ καὶνο Σοι προσιδέντες ἀνεν-  
 „δοιάσως ἔχεν, τὸ μηδέποτε Σε ὑπὸ τῆς Ῥωμάνας Ἐκκλησίας,  
 „Ἀποσολικῆς Θρόνου ἐγκαταλειφθήσεσθαι, ἐφ' ὅσον ἂν πρὸς αὐτῷ  
 „τὸ μετ' ἐνλαβείας προσφέρης ὀφειλόμενον σέβας, κὶ τὰς τῆς  
 „δικαιοσύνης τρίβους βηματίσης· κὶ πρὸς τῷ ἀναγκαίαν ἐκπλήρω-  
 „σιν τῆς Ἱερᾶς κὶ Ἀγίας ταύτης ἐνώσεως, κατὰ τὸ περιὸν τῆς  
 „ἐν Σοι δωάμεως, πισῶς σπεδάσης.

Ἄλλ' ὅτι ἔδὲ τὸ μετὰ ταῦτα ὁ Βασιλεὺς Ἰωάννης κοινῇ  
 τῷ ἐνωσιν ἐνεσήμενεν, δῆλον καὶ ἐκ τῆς Νικολάου τῆς Ε'. Ἐπι-  
 σολῆς πρὸς Κωνσταντῖνον τὸν ἐξῆς Αὐτοκρατορήσαντα. Κατα-  
 δὲ ἡ Ἐπισολή, περὶ τὸ τέλος τῶν Χρυσῶν (ἥπερ ἐκάλεσε)  
 Θεολογικῶν Πονημάτων, ὧν ΠΕΤΡΟΣ Ἀρκέδιος ἐν Ῥώμῃ ἐξέ-  
 δοτο, Ἐτα 1630. ἔτω γὰρ ἐκέισε: „Οὐδὲ γὰρ ἀμφιγνοῦμεν  
 „ἡμεῖς, ὡς Ἰωάννης ὁ Παλαιολόγος ὁ πρὸ Σδ' Αὐταρχήσας, ὁ  
 „Σὸς Ἀδελφὸς, εἶπερ ἡβηλήθη, κατὰ τῷ χορηγηθῆσαν αὐτῷ  
 „ὑπὸ Θεῶ σωέσιν, εἰς εὐτυχὲς ἂν πέρας τὸ πρᾶγμα προήγα-  
 „γεν· ἄλλ' ἐν ᾧ ἐκαῖνος ἐπὶ πολὺ διετέλει, ὅπως ἂν τὸ πρᾶγμα  
 „τῇ καθ' ἑαυτὸν προσκαίρῳ κατασάσει προσεναρμόσειεν, ἐκ μέ-  
 „σας ἀνῆρπασαι. — Ἀλλὰ γὰρ, ὅτι κὶ θνήσκων ἐκαῖνος τὰ τῆς  
 ἐνώσεως παρητήσατο, μάρτυς ὁ τῆς ἐν Κωνσταντινῆ πόλει τελού-  
 ταιας Σωδὸς Συγγραφεὺς, ἔτως ἀρχόμενος: „Ἐντεῦθεν τὸ Βιβ-  
 „λίον ἀπάρχεται τῆς ἐν Κωνσταντινῆ πόλει ὑσάτης Σωδὸς, ἐν  
 „τῇ Ἀγίᾳ Σοφίᾳ ἐπιτελεθείσης, μετὰ τῷ γένεσιν τῆς ψόδου συλ-  
 „λόγῃ τῆς Φλωρεντινῆς, ἐνὸς ἐνιαυτῆς διαστήματι κὶ ἡμίσεως· κὶ μετὰ  
 „τῷ τελούτῳ τῆς Λατινόφρονος Ἰωάννου Παλαιολόγου, τῆς ἀπατη-  
 „θέντος ὑπὸ τῶν Ἰταλῶν ἐπὶ βοηθείᾳ· κὶ ἐπὶ τελούτῃς συμφρο-  
 „νήσαντος τῷ ὀρθοδόξῳ Δόγματι. (39). Ἀλλὰ περὶ τῆς Σωδὸς  
 ταύτης ὕστερον.

Και μὲν ἔδ' ἔπειτα, Αὐταρχῆντος ἤδη τῆς Κωνσταντίνης, ἔς γ'  
 ἐπὶ τὸ 1451. τὸν τῆς Φλωρεντινῆς ἐνώσεως ὅρον ἀποδοχῆς πα-  
 ρὰ τοῖς Ἀνατολικοῖς ἀξιωθῶναι, μαρτυρεῖ πάλιν Νικόλαος ὁ Ε'.  
 ἐπὶ τῆς ῥηθείσης Ἐπισολῆς· ἔτω γὰρ αὐτόθι Σελ: 697. „Καὶ  
 „ἔδ' ἔτη τοσαῦτα ἤδη παρήλθεν, ἐξ ἧς ταῦτα ἐγένετο· κὶ ὅμως  
 „παρὰ Γραικοῖς ὁ τῆς τοιαύτης ἐνώσεως ὅρος σιγῇ καλύπτεται·  
 „ἔδ' εἰς ὑποφαίνει ἐλπίς, ἥ δοκεῖ, εἴτινες ἐπὶ τὸ τῷ ἐνωσιν  
 „ταύτῳ ἀσπάσασθαι εἰσὶν οἱ εὖ διακείμενοι. Ὅσημέραι ἀναβολαὶ  
 „γίνονται, κὶ αἱ αὐταὶ χεδὸν προφάσεις ἐπάγονται. Ὡς τε  
 „Γραι-

(39) Ὅρα εἰ βέβαια καὶ Δοσίθεον περὶ τῶν ἐν Ἱερουσόλ: Πατριαρχ: Βιβλ: Γ'. Κεφ: Θ'.  
 §. Α'. Σελ: 914, 915. Καὶ Κεφ: ΙΓ'. §. Θ'. Σελ: 932.

„Γραικοὺς πισθεῖν, ὅτι ὁ Ῥώμης Ἀρχιερεὺς, καὶ ἡ Δυτικὴ πα-  
 „σα Ἐκκλησία (ἔτω γὰρ ἡγάμεθα) ἐν εὐφῶ διάγει τῷ τῆς  
 „ἀγνοίας, εἰς ἣν ἔχει σωιέναι, ὡς ἐπὶ τῷ ἀναβολῷ ταύτῳ τὰ  
 „τῶν ἰδίων ἀποκρίσεων ῥήματα διατείνουσι. Σωίασι μὲν, ἀνέ-  
 „χονταί δέ.

Ἄλλ' εἰ γὰρ εἰς τόδε ἦρκει ταῖς Ἀνατολικαῖς Ἐκκλησίαις,  
 τὸ ἐν ὁμοφρονήσας ψυχαῖς τῷ κατὰ Φλωρεντίαν ἔνωσιν ἐκκε-  
 κηρυχέναι, ἔγνωσαν δὲ περαιτέρω, καὶ Σύνοδον ἔτι Σινώδῳ τῇ  
 Φλωρεντινῇ ἀντιπαρατάξαι, καὶ ὡς Σιμωνιακῶς ταύτῳ καὶ λη-  
 σρικῶς τινα, ψήφοις κατακρίσεως καθυποβαλεῖν. Σωεκροτήθη  
 δ' ἡ περὶ ἧς ὁ λόγος Σύνοδος, ἐν ἔτει 1450 Ἐν Κωνσταντι-  
 πόλει, ἐν τῷ Ναῷ τῆς Ἀγ: Σοφίας, ἐπὶ Κωνσταντίνῳ Αὐτοκρά-  
 τορος. (40) Καὶ δὴ, ἐν μὲν τῇ Α'. τῶν Σινωλεύσεων, σινω-  
 δροβόντων τῶν τριῶν Πατριαρχῶν, τῶν Ἀλεξανδρείας, τῶν Ἀντιο-  
 χείας, καὶ τῶν Ἱεροσολύμων, πάλιν καὶ πάλιν τότε προσεκλή-  
 θη ὁ ἐν Κωνσταντινῇ πόλει τότε Πατριαρχεὺς Γρηγόριος ὁ τῶν  
 Λατινικῶν Δογματῶν προασιζήσας τε καὶ πρόμαχος ὅς τις, καὶ  
 τὸ τρίτον ἔτι μετὰ πεμτος, εἰς αὐτὴν ἠθέλησεν ἀπαντῆσαι. Διὸ δὴ  
 παραιτησαμένους τὰς τῷ Πατριαρχείῳ, ἐνεθρονίσθη Ἀθανάσιος  
 ὁρθόδοξος ὢν, καὶ εἰς τῷ Σινώδῳ εἰσενήνεκται. Ἐτάχθησαν  
 δὲ ἐκ τῶν Ἀνατολικῶν, ὅτε τοῖς Λατίνοις σινηγορῶντες, καὶ  
 οἱ τοῖς Ἀνατολικῶν. Τῶν δὲ ὑπὲρ Λατίνων ἀπόντος ἡττονος ἐλεγ-  
 χθέντος, διελύθη τὰ τῆς Σινωλεύσεως.

Ἐν δὲ τῇ Β'. Σινωλεύσει ὁ Σοφώτατος Γεμισὸς περὶ τῶν  
 ἐν Ἰταλίᾳ πεπραγμένων δημηγορήσας ἀπέδειξεν, ὅτι ἡ Φλωρεν-  
 τινὴ Σύνοδος διεπεράνθη ὑπὸ τε τῶν Αὐτοκράτορος, καὶ τῶν ἄλ-  
 λων, Σιμωνιακῶς. Πρὸς τὰς οἱ τῆς Συρίας Πατριάρχαι: τῷ  
 ἀλήθειαν διὰ λόγων, καὶ μὴ διωάμει Αὐτοκρατορικῇ ἐξετάζεσθαι  
 δεῖν· κακῶς τε τῶν ἀναγκαίων τῆς Ἀνατολικῆς ἀποσερηθῆναι,  
 ἐφ' ᾧ ἐπαναγκαθῆναι πρὸς συγκατάθεσιν. — Ὑπολαβὼν δ' ὁ Γε-  
 μισός: μὴδ' ἐπιτρέψαι ἔφη Λατίνους τοῖς τῶν Ἀνατολικῶν σοφω-  
 τέροις ἐλθεῖν εἰς Διάλεξιν· ἀλλὰ τοῖς ἀπαιδοῦτοις καὶ ἀγροικοτέροις  
 μόλις ἐκπέμψασθαι δὲ καὶ αὐτὸν ἐπὶ Γαλλίας, ἐφ' ᾧ Βιβλία συμ-  
 πορίσθη: μὴδ' ἐνδεῖναι ὅπως μὴδὲ τῷ Γενναδίῳ προσδιαλέξασθαι.  
 Ἀλλὰ καὶ τῷ ἐπὶ τῆς Σινώδου Ἐξάρχῳ Μάρκῳ τῷ Ἐφέσῃ, σιγαῖν  
 τέως ἐπιταχθῆναι· τὸν δὲ Βησσαρίωνα τῷ Καρδινάλιον ἐαυτῷ  
 ἀξίαν

(40) Τύποις ἐκδοθεῖσα ἡ Σύνοδος αὕτη, ἐμφέρεται ἐν τῷ Τόμῳ τῆς Ἀγάπης, Σελ: 568. Ἦν ἐξ ἰδιόχρητος Κώδικος Χιόθεν αὐτῷ ἀπενεχθέντος ἐξέφετο Ἀλλάτιος ἐπι-  
 τεμῶν, ἐν ταῖς Περιθέσει ταῖς εἰς τὸ περὶ τῆς Διωκτικῆς Συμφωνίας· σήλη 1340. — 2395. Ἐκ δὲ τῶν καὶ Ἀρδεῖος ἐξέφετο, μετὰ καὶ τῶν ἐκ τῶν Ἀλ-  
 λατίς αὐτῶν Ἀντιβήσεων, Τόμ: Θ' τῶν Σινωδικ: σήλη 1354.

Τόμ: Β'.

Β βββββββ

ἀξίαν θηρώμενον, ἀρχηγὸν τῷ κακῷ παντὸς γεγονέναι. Τότε δ' ἅπαντες οἱ λοιποὶ σιωπομολόγησαν κατωχαγκάσθαι σφᾶς πρὸς τῷ Αὐτοκράτορος ἐξηπατῆσθαι δὲ καὶ τῇ ἐλπίδι τῆς βοηθείας, καὶ τῷ δέει προσέτι, τῷ μὴ καὶ τῶν ἀναλωμάτων ἀποτυχεῖν, τῶν πρὸς τῷ ἐπ' οἴκῳ ἐπάνοδον· ἔτω δὲ καθυπογράψαι.

Τὰ μὲν ἔν Πρακτικῇ τῆς Συνόδου ταύτης, ὡδὲ πως ἔχει: ΠΑΤΡΙΑΡΧΗΣ ἈΘΑΝΑΣΙΟΣ: „Ὦντως δ' ἀποθανὼν Ἰωσήφ „ὁ Πατριάρχης, καὶ πρὸ ἐμῶ ἀρχῆς τῆς Βασιλίδος, πρὸ τῆς ὑπο- „γραφῆς τὸν βίον ἀπέλιπε· τίνας δ' ἦσαν οἱ ὑπογράψαντες; ἔθ' „ὁ Ἐφέσῃ Μάρκος, ἔθ' ὁ Ἡρακλείας, ἔτε ἐγὼ ἔκειν τῇ ὑπο- „γραφῇ δὲν ἐγνωμὲν ἀθέσμως ἔσθῃ, καὶ μὴ ἐξ ἐπιμέτρως τῇ „Ἱερᾷ Διδασκαλίᾳ ἀνταυγῆσθαι. Οἱ δ' Ἰσίδωρος Κιαίβης, καὶ Δοσίθεος „Μονεμβασίας ὑπέγραψαν. ΔΟΣΙΘΕΟΣ: Πλὴν τῷ πανέρως „Γρηγορίῳ, ἁμφοῖν βία καὶ ἐπιταγῇ τῷ Βασιλέως ταῖς ἀθέσμοις „ὑπογραφαῖς ὑπετέθημεν· ἄκασι γὰρ καὶ ἐξ ἀνάγκης σιωπέσει „τὸ πλημμέλημα· νομίσαντες διὰ τῶν ὑπογραφῶν, μὴ μόνως „ταῖς φερέσας δαπάνας πρὸς τῷ ἐπάνοδον καρπώσασθαι, ἀλλὰ „καὶ ἦσαν (νικῶ) κατὰ τῶν πολεμίων ἐκείθεν πορίσασθαι. Τέ- „λος δ' οἱ Λατῖνοι ἠπάτησαν τὸν Βασιλέα μηδὲν ἀμύναντες. „Οἱ ΠΑΤΡΙΑΡΧΑΙ: Ἐπειδὴ ἄρα πανουργίαις, καὶ φενακισμοῖς, „καὶ ἀνάγκαις, καὶ μὴ ἐξετάσει ἀληθείας, τὰ τῆς ψεύδοσι συνόδου „ἐκείνης πέρας ἔλαβε, καὶ παρὰ τῷ ἡμετέρῳ διάνοιαν, ἄκυρον „τὸ ἐπιτροπικὸν μενέτω. Ἀθετείθω δὲ καὶ ἡ Σύνοδος ἐκείνη „ὡς τολμηρὰ, καὶ ταῖς Ἀγίαις καὶ Οἰκουμενικαῖς Συνόδοις ἀντι- „καθισταμένη· ἠθέτησε γὰρ ὁ Θεὸς λοιμὸν καταπέμψας καὶ „θάνατον. ΔΟΣΙΘΕΟΣ: Καὶ γὰρ μεταγινώσκω ἐπὶ τῇ βιαιᾷ „ὑπογραφῇ· Θεὸς δέ μοι συγγνώμη. ΜΗΤΡΟΦΑΝΗΣ: Καὶ μοι „συγγνώμη· ὄντως πᾶς ἄνθρωπος ψόβους. ΔΟΣΙΘΕΟΣ: Καὶ μοι „συγγνώμη τῆς τυραννικῆς καὶ βιαιᾶς ἐπιταγῆς· ἐδεῖς ἀναμάρ- „τητος, εἰμὴ εἰς μόνος ὁ Θεός· ἀμαρτάνει γὰρ τὸ τρεπτόν. „ΜΑΚΑΡΙΟΣ ΝΙΚΟΜΗΔΕΪΑΣ: Καὶ μοι τῷ συγγνώμῃ παράχοι „ἐπέσειλε δέ μοι καὶ ὁ Μητροπολίτης Κιαίβης Κύρ Δωρόθεος, αἰ- „τηρεῖν τῷ Πίσιν μετὰ τῶν ὑποκειμένων (41) ὡς πάλαι ποτὲ „ἐντεῦθεν ἐφωτίσθησαν τῷ Πίσιν δηλονότι τῶν Ἀγίων καὶ „Οἰκουμενικῶν ἑπτὰ Συνόδων, καὶ ἀποσκορακίσαν τὸν δόλον τῷ „ἐν Φλωρεντίᾳ συλλόγῳ καὶ τῷ βίῳ· καὶ προσέτι διαφυλάττειν „ἀπα-

(41) Οὐκ αἰδ' ἂν θ' ὅτι τὸ „μετὰ τῶν ὑποκειμένων,, ὁ Ἀλλάτιος μεταφράσαι ἠξίω-  
σε: „μετὰ τῶν ὑπογεγραμμένων,,: cum infra scriptis· δέον ἐρμηνεύσαι: μετὰ τῶν  
ὑποτεταγμένων; cum sub iis, vel submissis, vel suffraganeis. τέτρες γὰρ ἐπ' ἀναγ-  
κῆς ὡδὲ νοεῖσθαι, τῆς Ἐπαρχιώτας δηλονότι, τῆς Παιμένους ὑπ' αὐτῷ, ἢ τελευ-  
τας ὑπ' αὐτὸν ῥώσας αὐτοὶ γὰρ δήπεθεν ἦσαν. οἱ παρὰ τῶν Ἀσιατικῶν Φω-  
τιδέντες πάλαι, καὶ τῷ εἰς Χριστὸν μεταγωγῇ τῆς πίσις, τῷ εὐσεβῇ καὶ ἐρῳδόξῳ.

„ἀπαράτρωτον τῷ ἐπὶ τῷ Ἀγιωτάτῃ Φωτίῃ Σιώνον, ἣ σωήνεσε  
 „καὶ ὁ Πάπας Ἰωάννης· ἐν ἣ διωρίζετο τὸν προαθησόμενον τῷ  
 „Συμβόλῳ πρὸ κρίσεως καταδικάζεσθαι· ὅτε καὶ τῷ Ἀγίῳ Πέ-  
 „τρῳ ἐγκολαπτόμενον ἐπιταγῇ τῷ Πάπα τὸ Ἱερὸν Σύμβολον  
 „ἐνεφάνη. Ὁ ΠΑΤΡΙΑΡΧΗΣ ΘΕΟΦΑΝΗΣ: Εἴη ὑμῖν πᾶσι  
 „συγγνώμων ὁ Θεός. Ὁ ἘΦΕ΄ΣΟΥ: Ἐμὲ δ' Αἵρετικὸν εἶναι  
 „ἐνόμισον. Οἱ ΠΑΤΡΙΑΡΧΑΙ: Ἐπιπέσοι ὁ πόνος αὐτῶν ἐπὶ  
 „κεφαλῇ αὐτῶν. Οὐ γὰρ αἵρετικὰ ἐφθέγγε, τῷ δὲ τῶν Ἀγίων  
 „Διδασκαλίαν ἐν ἅπασιν, εἰμῶ τινι ἀπαραβάτῳ διεφύλαττες.  
 „Εἰ γὰρ ἡ πρόθεσις τὸ σκάνδαλον ἠτιάσατο, πάντως ἔμελλεν  
 „ἡ ἀφαίρεσις χορηγήσκειν τῷ εἰρῳ, διαφερόντως τῷ Χριστῷ  
 „ἀποδοδομένῳ. Ἐγὼ γὰρ εἰμὶ, φησὶν, ἡ εἰρὴ καὶ ἡ ζωὴ τῶν  
 „δὲ σκανδάλων αἴτιος ἐστὶν ὁ Διάβολος. Ἐχρῶ γὰρ ἐκείνης  
 „ἀφελεῖν πρότερον, εἴτα δὲ ζητῶν εἰ χρὴ προῖναι, ἢ ἀφελεῖν.  
 „Οὐκ ἐχρῶ δὲ τὸν Πάπαν, κρινόμενον ὑπὸ τῶν Διαλεγομένων,  
 „ἀποφαίνεσθαι· εἰ γὰρ τοῖς δικαζομένοις, ἀλλὰ τοῖς δικάζουσιν αἱ  
 „ψῆφοι σωείρουν· εἰ δ' εἰ διώταται κατὰ τῷ Πίσιν ἀμαρτάνειν,  
 „πῶς κατὰ τῷ Πίσιν κρίνεται; Ἐφεξῆς ἔν ὃ, τε Ἐφέσε, καὶ ὁ  
 „Γεινάδιος, καὶ ἄλλοι, ποικίλα διελέχθησαν περὶ τῆς ἐν  
 „τῷ Συμβόλῳ προαθήκης, καὶ περὶ τῶν Πατέρων, ὅς περ οἱ Λατῖ-  
 „νοι διεφθαιραν. Τελυταῖον δὲ ἡ Σιώνος κατεκρίθη.

Καὶ ἡ Γ'. δὲ Σωελύσεις ἐπὶ ταῖς Ἐφέσε πάλιν, καὶ Γεν-  
 ναδίς, καὶ ἄλλων Διαλέξεσι, περὶ τῆς καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ Ἐκπορῶ-  
 σεως τῷ Ἀγίῳ Πνεύματος, διεπεράνθη. Ἐχάτον δ' οἱ ΠΑΤΡΙΑΡ-  
 ΧΑΙ ἐπέφερον: „Οἱ δὲ Λατῖνοι, ἀγρὸς ἰδίους εἶναι τὸν Πρά-  
 „δεισον καὶ τὸν Ἀδῶν οἰόμενοι, ἠγῶνται ἐπ' αὐτοῖς εἶναι, καὶ μὴ  
 „ἐπὶ τῷ Θεῷ, ἐντιθέμεναι τῷ Ἀδῶν ὃν ἂν βεληθεῖν καὶ πάλιν  
 „ἐν Παραδείτῳ, ὃν ἂν ἐθέλοιεν. Καὶ διὰ τῷ τὸν μὴ πισθύνῃ  
 „τὸ Πνεῦμα ἐκ τῷ Πατρὸς καὶ τῷ Υἱῷ εἶναι, ὡς ἀπὸ μιᾶς ἀρ-  
 „χῆς καὶ αἰτίας, εἰς Ἀδῶν ἐμβάλλουσι καὶ τὸν πισθύνοντα, εἰς  
 „Παράδεισον. Μὴ σωορῶντες καὶ Διονύσιον Ἀρεοπαγίτῳ, καὶ  
 „Ἰουστῖνον, καὶ Γρηγόριον Θαυματουργὸν, καὶ πάσας τὰς ἑπτὰ  
 „Σιώνος, ἀρκῶσαν Πίσιν πρὸς σωτηρίαν διδάξασθαι κατὰ γὰρ  
 „τὸν Νύσσης, ἐν τῷ εἰς τὸν Θαυματουργὸν Λόγῳ, ὁ Μακάριος  
 „ἐκείνος ἐδίδασκεν: ἐν Πνεῦμα Ἁγίῳ ἐκ Θεῷ τῷ ὑπαρξίν ἔχον,  
 „καὶ δι' Υἱῷ πεφωδὸς, δηλαδὴ τοῖς ἀνθρώποις. Σκόπει καλῶς  
 „καὶ ἀκριβῶς τό: ΔΗΛΑΔΗ'.

Ἐν τῇ Δ'. δὲ τῶν Σωελύσεων ἡ Διάλεξις σωέση περὶ  
 τῶν λοιπῶν Λατινικῶν Δογματῶν. Ἐπισεσημείωνται δὲ αἱ τε-  
 λεταῖ, καὶ τὰ ἔθνη, οἷς κατὰ τῶν Κανόνων ἐξαμαρτάνουσιν.  
 Ἐπισωήφθη δὲ τελυταῖον τὸ τῷ Πατριάρχῃ ψήφισμα: „Τί  
 „ἐν ἔπεται; εἰ μὴ τὸν Φλωρεντινὸν Σύλλογον ἀπάτῳ εἶναι, καὶ

B ββββββ 2

„φε-



„Φενακισμόν, καὶ ἐγκόσμιον (42) καὶ βίαιον, καὶ τῆς ἀνωτέρας  
 „ἐντρεχίας ἀπολειπόμενον; ὁ μὲν γὰρ προδότης Βησσαρίων, ἄλ-  
 „λα μὲν κόβων ἐνὶ Φρεσὶν, ἄλλα δ' ἐξαγγέλλων τῷ σώματι,  
 „ἐπαθε τὰς Πατριάρχας προσεφελκύσαι τὰς Ἰταλὰς δυνάσθαι διὰ  
 „τῶν Διαλέξεων· τὸν δὲ Βασιλέα διὰ τῆς ἐνώσεως, τῶν Ἀγα-  
 „ριωῶν περιγενήσεσθαι. Ἐπεὶ δὲ τῷ τε Φερδινάνδῳ, καὶ Φλω-  
 „ρεντίαν ἐπῆλθεν ἡ Ἀνατολικὴ Σωάθροισις, ἐπηγγέλατο τοῖς  
 „Λατίνοις, εἰν αὐτὸν Καρδινάλιον καταστήσωσι, πᾶσαι τὰς Γραι-  
 „κὰς τῇ αὐτῶν δόξῃ σωθῆσθαι. Τὸν δὲ Βασιλέα ὑάγκαζε τῷ  
 „μετὰ Ἰταλῶν ἔνωσιν ὑπταίης ταῖς χερσὶν ἐνσερνίσασθαι, ὅπως  
 „τρόπαιον κατὰ τῶν Ἀγαριωῶν ἄρῃ. Ἡπάτων δ' οἱ Ἰταλοί, καὶ  
 „μεγάλα ὑπὶ χυνοῦτο μικρὰ δυνάμενοι. Καὶ ταύτῃ καὶ Ἰταλοί  
 „ἠπάτησαν, καὶ ἠπατήθησαν. Πῶς γὰρ ἠτήθεντες λόγοις,  
 „ἐμελλον βίᾳ κρατήσιν; Ἄκυροι ἄρ' ἔσωσαν καὶ αἱ ὑπογραφαί,  
 „καὶ ἡ κακὴ ἐκείνη Σωέλυσις, καὶ τῶν Σωόδων ἔσω ἄλλοτρι-  
 „μένη, ὡς βίας καὶ ἀπάτης γέμεσσα. Τὰς μὲν γὰρ Οἰκουμενι-  
 „κὰς Σωόδους ἐπεκύρην οἱ Πατριάρχαι, καὶ ἡ Οἰκουμενὴ ταύ-  
 „τῃ δὲ οἱ Πατριάρχαι ὡς Θεομιστῇ μετὰ τῆς Ἀνατολῆς ἠθέτη-  
 „σαν,, — Μετὰ δὲ ταῦτα ἀνακρίνοντα, τὰ ὑπὸ τῶν Λατίνων  
 „τοῖς Ἀνατολικοῖς ἀντιπροτεινόμενα. Καὶ τελοῦντα ἔπονται αἱ  
 „ὑπογραφαὶ τῶν τεσσάρων Πατριαρχῶν, πολλῶν τε Ἐπισκόπων,  
 „καὶ τῶ Κλήρου παντός. Προσιθέασι δέ: „Εὐμπαντες σωομολο-  
 „γῶμεν περιτλὴν εἶναι τὴν πρόθεσιν τὴν ἐν τῷ Συμβόλῳ· ἐπειδὴ  
 „ἡ χρῆσις διορθώσεως τὸ τῶν ἐπὶ τῶν Σωόδων Σύμβολον· καὶ μὴ  
 „εἶναι ἐλλειπὲς πρὸς σωτηρίαν· τὸ Πνεῦμα ἐκπορεύεσθαι ἐκ τῶ  
 „Πατρὸς, καὶ μὴ ἐκ τῶ Υἱοῦ· καὶ εἶναι μόνῳ αἰτίαν τὸν Πατέ-  
 „ρα τῆς ὑπάρξεως Υἱοῦ καὶ Πνεύματος· τὸν Πάπαν ὁρθόδοξον  
 „ὄντα, μετὰ τῶν τετάρων Πατριαρχῶν σωιστῆν Σωόδον Οἰκ-  
 „μενικῶν, καὶ ὑπερτερῆν τῶν ἄλλων τῇ τάξει, καὶ μὴ τῷ ἀξιώ-  
 „ματι, ὡς ὑποκειμένων τοῖς ἐκείνους νόμοις. Μόνῳ δὲ τῷ Οἰκ-  
 „μενικῶ Σωόδον κανονίσαι, καὶ μὴ ὡς Μονάρχῳ τὸν Πάπαν·  
 „τὰς Ἀγίας ὁρᾶν τὸν Θεόν, ἀλλὰ μὴ τελείως πρὸ τῆς Κρίσεως  
 „τὴν λύτρωσιν γίνεσθαι ἐν τῷ Ἄδῃ, καὶ μὴ ἐν Καθαρτηρίῳ πυρὶ  
 „ἔξωθεν τῶ Ἄδου· τὴν κατ' ἐστίαν μεταβολὴν τῶν Μυστηρίων γί-  
 „νεσθαι ὑπὸ τε τῆς Τριάδος καὶ τῶν Κυριακῶν λόγων μετὰ τὰς  
 „εὐχὰς τῶ Ἱερέως, φέροντος καὶ κείνης ὡς ὀργάνου πρὸς τὴν Ἱε-  
 „ραρχίαν. Σωαινεῖ ταύτῃ τῇ Σωόδῳ καὶ ἡ τῶν τριῶν Πατριαρ-  
 „χῶν Σωέλυσις, ἥς ἡ ἀρχή: τῶν τριῶν Οἰκουμενικῶν Πα-  
 „τρι-

(42) Τὸ „ἐγκόσμιον,, ὡς Ἡ Ἀλλάτιος Universalem (καθόλου) φανύως ἡρμηνεύσεν: ἀντὶ  
 τῶ mundanum θείῳ, καὶ politicum; seu modis at que medijs, non seditui Eccle-  
 siæ, sed huic mundo solitis in usu venire transactum.

„τριαρχῶν Ὁρθοδόξων Φιλοθέα Ἀλεξανδρείας, Ἰωαννὲς Ἱεροσό-  
λυμων, καὶ Δωροθέα Ἀντιοχείας.

Ταῦτα μὲν περὶ ἐκείνης τῆς Συνόδου ἐκ τινος Χειρογράφου λαβὼν τύποις ἐκδédωκε κατ' Ἐπιτομὴν Λέων ὁ Ἀλλάτιος, ἐν τῷ Προσαρτήματι τῷ πρὸς τοῖς τρισὶ Βιβλίοις, τοῖς περὶ τῆς Διη-  
νεκῆς Συμφωνίας τῶν Ἐκκλησιῶν. Ἀυτὸς ἔμεινεν ἀλλά γε τὴν ὅλην  
Συνόδον ὑπὸ Νεωτέρου τινὸς Συγγραφέως ἀναπλασθῆναι διΐχυ-  
ρίζεται.

Α΄. γὰρ, φησὶν, ἐν ἀπάσαις Συνόδοις τε καὶ Συνελθούσεσιν Ἐκ-  
κλησιαστικαῖς, κατ' ἀρχὰς, ἢ γὰρ ἐπὶ τῇ τέλει, παρασημειῶσθαι  
ἔωθεν ὁ Χρῆστος, καὶ ὅν ἡ Σύνοδος σωέσθαι, ἢ ἡ Συνελθούσης.  
Ὡς δὲ, ἔτις τῇ Χρόνῳ λόγος, ἔδδ τῇ Μηνὸς μνήμη, ἔδδ τῆς  
Ἰνδικτιῶνος παρασημείωσις ὁ δὲ Τίτλος ἔχει: „Ἐντεῦθεν τὸ βι-  
βλίον ἀπάρχεται τῆς ἐν Κωνσταντινουπόλει ὑσάτης Συνόδου, ἐν  
τῇ Ἁγίᾳ Σοφίᾳ ἐπιτελεσθῆσης μετὰ τὴν γένεσιν τῇ ψῦδοςουλ-  
λόγῃ τῇ Φλωρεντινῇ, ἐνὸς ἐνιαυτοῦ διαστήματι καὶ ἡμίσεως καὶ μετὰ  
τὴν τελευτὴν τῇ Λατινὸφρονος Ἰωάννου τῇ Παλαιολόγῃ, τῇ ἀπα-  
τηθέντος ὑπὸ τῶν Ἰταλῶν ἐπὶ βοήθειᾳ, καὶ ἐπὶ τελευτῇ συμ-  
φρονήσαντος τῷ Ὁρθοδόξῳ Δόγματι. Ἐπὶ τῇ Ὁρθοδόξῃ Τίθι  
αὐτῇ Κωνσταντίνῃ. Ἐξεβλήθη ἐκ τῶν τῆς Βιβλιοθήκης ἰδιο-  
χείρων Κωνσταντίνῃ τῇ Λασκάρῃ τῇ ὄντως σοφωτάτῃ, καὶ  
τὴν ἀνεπτυγμένῃ Γραμματικῇ διδάξαντος ἐπιταγῇ τῇ Σοφω-  
τάτῃ Βυζαντίῃ Πατριάρχῃ Ἀθανασίῃ Κωνσταντινοπόλεως καὶ  
μετεγράφη ὑπὸ Θεοδώρου τῇ Ζυγομαλᾷ, Πρωτεκδικῇ τῆς Μεγά-  
λης Ἐκκλησίας, — Καὶ λέγεται μὲν ἐπιτελεσθῆναι τὴν Σύνο-  
δον μετὰ τὴν γένεσιν τῇ Φλωρεντινῇ Συλλόγῃ, ἐν διαστήματι  
ἐνὸς ἐνιαυτοῦ καὶ ἡμίσεως ὁ δὲ, ὡς ἐνιαυτοῦ ὁ 1449. Γίνεται δ'  
ὁμοῦς μνεία ἐν τοῖς Πρακτικοῖς ταύτης, καὶ τῆς ἐτέρας Συνόδου  
τῶν Πατριαρχῶν, ἣτις σωέπεσε κατὰ τὸ 1443. Ἐπὶ τέτοις  
δὲ προσίσταται, ὅτι καὶ ἡ Σύνοδος συνεκροτήθη ἐπὶ Κωνσταντίνῃ.  
Ἀλλ' Ἰωάννης ἐτελεύτησεν ἐν ἔτει 1449. Πῶς ἔν ἐπὶ ἐνιαυτῷ  
καὶ ἡμίσει ἀπὸ τῆς Φλωρεντινῆς Συνόδου, ἢ τοιαύτη Σύνοδος  
συνετελέσθαι;

Β΄. Καὶ Κωνσταντῖνος Ἀδελφὸς μὲν ὡς, ἥκιστα δ' ὧς  
Ἰωάννης.

Γ΄. Ψῦδες, φησὶ, καὶ τὸν Αὐτοκράτορα Ἰωάννην, τὴν ἁ-  
παξ συνετελεσθῆσαν ἔνωσιν ἡθετηκέναι. Ἀυτὸς γὰρ προήγαγεν  
ἐπὶ τῇ Πατριαρχικῇ Θρόνῳ τὸν Κυρίῃ Μητροφάνῃ, τὸν τῆς  
ἐνώσεως πρόμαχον ἐκείνῃ δὲ τεθνηκότος, Γρηγόριον τὸν Πρω-  
τοσύγκελλον ἔπερ ἔτι τῷ βίῳ περιόντος ὁ Αὐτοκράτωρ τὸ εἶναι  
μετήλλαξε.

Τόμ: Β΄.

Γ γγγγγγγ

Δ΄.

Δ'. Ψεῦδος δὲ καὶ τὸν Λάσκαριν ἐπιταγῇ τῆ Πατριάρχῃ τῇ Γραμματικῇ σωτεταχέναι· τὸτο γὰρ ἐγένετο τέως ἐν Ἰταλίᾳ, ἐνθα τὸ παράπαν ἐκ ἐνεχώρει ἢ τῆ Πατριάρχῃ ἀξίωσις. Ἀλλὰ καὶ Λάσκαρις αὐτὸς ὁμολογεῖ, ὅτι κατ' αἰτησιν τινῶν Λατίνων τῇ Γραμματικῇ σωετάξατο. Εἰ δ' εἴποις τὸν νῦν εἶναι τῆ εἰρημένῃ, μὴ τῇ Γραμματικῇ ἐκ ἐπιταγῆς τῆ Πατριάρχῃ τὸν Λάσκαριν συγγεγραφέναι· ἀλλ' ἐκείνῃ κελύσαντος, τῇ περὶ ἧς ὁ λόγος Σωόδον, ἐκ τῶν τέττα ἰδιοχείρων ἀντιγεγραφθῆναι, πάντα ταύτη γε διασρεβλωθήσεται. Καὶ μὲν δὴ, καὶ θαυμάζειν ἐπεὶ, τὸ Σωόδον μόλις περ συζῶσαν, ἐπιτάγματι τῆ προεδρεύσαντος ἐκ ἀλλοτρίας Κώδικος ἀντιγράφεται. Ἡ γὰρ ἐν τοῖς Χαρτοφυλακείοις ἐχρὶ διεσώζετο τὸ ὑπόμνημα; ἢ ἐκ ἐξῆς παρὰ τῶν Νοταρίων ἀπαιτηθῆναι τ' ἀντίγραφον; ἢ Ἀθανάσιος τοῖς ὑπομνήμασι τῆ Κωνσταντίνῃ μᾶλλον, ἢ τοῖς τῶν λοιπῶν πισθύνων ἐτύγχανε;

Ε'. Καὶ Πατριάρχῃ δὲ Κωνσταντινουπόλεως Ἀθανάσιον ὀνομα τὸ τῷ καὶ τα γενέσθαι, ἔδει περ τῶν Συγγραφῶν, ἔτε Γραμμῶν, ἔτε Λατίνων, τῇ μνήμῃ παρέδωκεν.

Σ'. Ἐν μὲν τῇ Α'. Σωελύσει ὁ Ἀντιοχείας Πατριάρχης καλεῖται Δωρόθεος· ἐν δὲ ταῖς ὑπογραφαῖς Ἀνανίας· μετὰ τριετίαν δὲ, Δωρόθεος αὐτῷ ἐν ζωῇ ἠρίθμηται, ὡς δῆλον ἐκ τῆς Σωόδῃ τῶν τριῶν Πατριαρχῶν. Καὶ τῶν χειροτονούντων δὲ Πατριάρχῃ τὸν Ἀθανάσιον, ὁ μὲν Νικαίας Ἐπίσκοπος καλεῖται Νεόφυτος, ὁ δὲ Κυζίκου Μητροφάνης· ἐν δὲ ταῖς ὑπογραφαῖς, ἕτος μὲν, Παρθένιος ἀκέραι· ἐκείνος δὲ Σταυράκιος· τί ἔν, ἐξίτηλα τὰ ὀνόματα γέγονεν; ἄφνω δ' ἐκ τέττα, οἱ μὲν θνήσκοντες, οἱ δ' ἀντικαθιστάμενοι· εἴτα δ' ἀναστῶντες, καὶ πάλιν αὐτῷ τῷ ἰδίῳ αὐτῶν ἀξιώματι ἀποκαθιστάμενοι.

Ζ'. Ἐπὶ τῆς Β'. Σωελύσεως ὁ Κιαίβης Μητροπολίτης Ἰσίδωρος περιεμπίχεται τὸν Δωρόθεον· καὶ ἔτως ἐφεξῆς.

Η'. Ἐπὶ τῆς αὐτῆς Σωελύσεως, καθαιρεῖται μὲν ὁ Πατριάρχης Γρηγόριος, ἐκλέγεται δὲ Ἀθανάσιος ἐν ἔτει 1440. Ἐν ᾧ δ' ἡ τοιαύτη Σωόδος σωίστατο, ἐκ τῆ Πατριάρχῃ ὁ Γρηγόριος, ἄτε δὴ τέως μετὰ τὸν Μητροφάνην ἕτος, ἐν ἔτει 1445. Πατριαρχεύσας.

Θ'. Αὐτόθι μὲν ὁμολογεῖ Ἀθανάσιος εἶναι καὶ αὐτὸν γενέσθαι τὸν ἐπὶ τῆς ἐν Φλωρεντίᾳ Σωόδῃ παρσσιαστάντων, καὶ σιωάμα τῷ Ἐφέσῃ καὶ τῷ Ἡρακλείᾳ, μὴ βεληθέντων καθυπογράψαι· „Ἀλλ' ἐν τοῖς ἐπὶ τῆς Φλωρεντινῆς Σωόδῃ παρσσιασάσιν, ἔδει „(φησὶν) ἀπαντᾶ Ἀθανάσιος, εἰμὴ, ὁ ποτὲ Ἠγόμενος χρηματίσας ἐν τῷ Μοναστηρίῳ τῆς Περιβλέπτῃ· ὅς ἐπειδὴ καὶ τῇ ψόδοσσι τῷ ταύτῃ, μετὰ Ἀθανάσιον ὑπογράψαι τὸν Πατριάρχῃ, „καὶ

„καὶ ἄλλος, Ἠγόμενος τῆς Περιβλέπτει εἶναι ἐκ εἶχεν· εἶχε μὲν  
 „ἐν ἑτερός τις εἶναι· ἀλλ' ἐαυτὸν τῷ Ἐφέσῃ, καὶ τῷ Ἡρακλείῃ  
 „ἴσον ποιῶντος τοῖς Μητροπολίταις, ἐκ ἂν, ἥπερ εἰκὸς, τὰ Πρακ-  
 „τικὰ ἀπεσίγησε τῆνομα „.

Γ'. Ἀθανάσιος χειροτονεῖται Πατριάρχης ὑπὸ Μακαρίου τῷ  
 Νικομηδείᾳ, καὶ Νεοφύτῃ Νικαίᾳ, καὶ Μητροφάνει Κυρίῃ.  
 Ἀλλ' ὡς γὰρ ἔθος αἰετὸ τελεῖσθαι πρὸς τῷ Ἡρακλείῃ, ὃς δὴ  
 τότε καὶ παρὼν ὡς καὶ καθυπογράψας.

ΙΑ'. Μητροφάνης ὁ ἀπὸ Κυρίῃ Πατριαρχούσας, ὑπεραπι-  
 στῆς ὡς ἐτύγχανε τῆς Λατίνων δόξης· πῶς ἐν δικίῳ αἰρέσεως  
 διαφυγῶν ἐπὶ τῷ Ἐπισκοπῷ προήχθη πάλιν Κυρίῃ. Καὶ ὡς  
 μὲν ἕτερος τυχόν. Διατὶ δ' ἐχὶ κακῆνος ὁ Μητροφάνης προσέτι  
 ὑπέγραψεν;

ΙΒ'. Ἐν τῇ Γ'. Σωελούσαι λέγεται, παρὰ τὸν ἐνσκήψαντα  
 λοιμὸν τῷ Φλωρεντινῷ Σινόδῳ διακοπῶν· ἀλλ' ἐν μόνῃ τῇ  
 Φερδινάνδῳ ὁ λοιμὸς ὡς ἐνσκήψας.

ΙΓ'. Ἐπὶ τῆς Δ'. Σωελούσεως λέγεται, ὅτι περὶ τῶν Κυ-  
 ριακῶν Λογίων ἐν Φλωρεντίᾳ σκεκροτήθῃ Διάλεξις, πότερον  
 δι' αὐτῶν δηλονότι τελεῖται ἡ μεταποίησις τῷ μὲν ἄρτι εἰς σώ-  
 μα, τῷ δὲ οἶνῃ εἰς αἶμα Χριστοῦ, ἢ πρὸς τέτοις ἀναγκαίως ἐπι-  
 τητῶν καὶ αἱ ὑποσυνάπτομεναι τῶν Πατέρων εὐχαὶ καὶ δεή-  
 σεις; τῷ δὲ Λατίνῃ εἰπεῖν: ὅτι, ἐν ᾧ εὐχονται μετὰ τὰ Κυ-  
 ριακὰ Λόγια: „Ποίησον τὸ μὲν σῶμα τῷ Κυρίῃ, τὸ δὲ αἶμα·  
 „μεταβαλὼν τῷ Πνεύματι Σε τῷ Ἁγίῳ νοῦσιν ἀντὶ τῷ: μετα-  
 „βαλὼν ἤδη, ποίησον: ἵνα, ὅδε μὲν ὁ ἄρτος τὸ σῶμα, ὅδε δὲ  
 „ὁ οἶνος τὸ αἶμα, γένηται τοῖς μεταλαμβάνουσιν εἰς ὑγίαν σώ-  
 „ματος καὶ ψυχῆς „. Ἀλλὰ καὶ τῷ πάλιν ψυδὲς ἐστὶ τῷ  
 γὰρ Λατίνῃ διαπυθέσθαι τῶν Γραικῶν: τῷ χάριν τῇ τοιαύτῃ  
 προχρῶνται ἱεσὶα μετὰ τὰ Κυριακὰ Λόγια;

Ἐχάτον ἐν ταῖς κατ' ἐκένῳ τῷ Σινόδῳ Προδιαλέξεσιν,  
 ἀναφέρονται καὶ νεώτεροι τινὲς τῶν Ἀνατολικῶν Συγγραφεῖς,  
 οἱ ἐπὶ τῷ Σχίσματος δηλονότι ἀκμιάσαντες, καὶ Πατέρες δέ τινες  
 τῶν Λατίνων· ἀλλὰ τῷ δὴ τοῖς Γραικοῖς εἰωθὸς περ ἡκιστα ὡς.  
 Καὶ ταῦτα μὲν ὁ Λέων Ἀλλάτιος.

Πάντως δὲ δι' ἕτερον ἑδὲν τὸν τοσῶτον ἀνελήφει ἀγῶνα  
 τῷ τῷ Σινόδῳ ποιῆσαι ἐξίτηλον, ἢ ἐφ' ᾧ μὴ τῶν Λατίνων ἡ  
 δόξα, σὺν αὐτῇ τῇ κατὰ Φλωρεντίαν Σινόδῳ ἡττηθῶναι δό-  
 ξειεν. (43) Τὶ δαί; ἐχὶ καὶ αὐτὸς Ἀλλάτιος, μικρὸν ἀνωτέρω,  
 βε-

(43) Παραπλησίως καὶ Δοσίθεος (ἐν τοῖς περὶ τῶν ἐν Ἱεροσολύμοις Πατριαρχ: Βιβλ:  
 Γ'. Κεφ: Θ'. Παραγρ: Δ'. Σελ: 917.) ἐτόπαξε. „Μάχονται (λέγων) οἱ Λατῖνοι  
 „τῇ Σινόδῳ ταύτῃ καὶ ἄρα διατὶ; ἢ διότι φανερώς ἀντίκειται τῇ ἐν Φλωρεντίᾳ  
 „ψευδοσυνόδῳ ἡ Σινόδος ὅπως ἀνωτέρα ἐστὶ τῶν συκοφαντιῶν αὐτῶν κτ:



βεβαίαν ὑπετίθετο τῷ ἐρημένῳ τῶν τριῶν Πατριαρχῶν Σωόδον; ἔχι δὲ καὶ ἄλλοθεν φανερόν, καὶ τὰς λοιπὰς τῶν Γραικῶν, τὰς τε τῇ Φλωρεντινῇ παρσιάσαντας Σωόδῳ, ὀλιγίστων ἐξαίρεμένων, καὶ τὰς οἰκοὶ μέναντας, τῷ Σωόδον ἐκείνῳ παντάπασι ἀποβεβληκέναι, ὡς Σιμωνιακῶ τε καὶ ληστρικῶ; τὸτο δὴ πρὸς φθάσαν ἡμῖν ἀποδέδεικται. Παραπλησίως ἄρα καὶ νῦν εἶδεν, ἔδεν ἅλλ' ἢ κοινῇ τῷ Ἀνατολῷ ἅπασαν, κατὰ τῆς Φλωρεντινῆς Σωόδου σύμψηφον ἔχομεν. Ἀλλὰ γὰρ ἐκ κινήσεως ἦδε Λατίνοις ἢ ὑπεξαίρεσις. Ἐπειδὴν τις τῶν Σωόδων γένοιτο φερομένη αὐτοῖς ἀντίξως, τὸ πεπλάσθαι αὐτῷ αὐτίκα προσδιατένεσθαι. Ταῦτο γὰρ, καὶ κατὰ τῆς ἐπισημοτάτης ἐκείνης ἐποίησεν, τῆς ἐπὶ Φωτίου συγκροτηθείσης περὶ ἧς ἀλλαχῇ ἡμῖν εἴρηται. (44). Καθὰπερ γὰρ αὐτοὶ Λατῖνοι ῥαδιουργίας ἀγόμενοι Πνύματι μυριαχῇ διεφθαιραν τὰ τῶν Πατέρων Συγγράμματα, τὰ μὲν, τῶτοις ἔσθ' ἅτλα ἐγκατασπείραντες· τὰ δὲ καὶ τέλεον ἐξοβελίσαντες· ἔτις ὑπὸ τῇ αὐτῇ φερόμενοι Πνύματος, ἔτις τύχοι Σωόδου αὐτοῖς ἀντιβάνουσα, ἐκτὸς αὐτῷ θεῖται φιλονεικῶσιν ὑπάρξεως, ὡς ἐμὴ δὲ τῷ ἀρχῇ ὅλως ἐγένετο. Πηλίκῃ δ' αὐτοὶ τῇ ἐξαπάτῃ καὶ σκοδωρίᾳ, καὶ τῷ τῇ Ἀλεξανδρείας Πατριάρχῃ Φιλοθέῃ ὑπὲρ τῆς Φλωρεντινῆς Σωόδου Ἐπιστολῇ ἐγένοντο ἀναπλάσαντες, κατωτέρω εἰσόμεθα. Καταφανὲς ὡς τὸ πρᾶγμα· ἔδεν ἐνταῦθα ὑπολείπεται ἐνδοιάσιμον. Ὡς δὲ δικαιοτέρον ἡμᾶς ἔχειν ἀντεπιτιμᾶν Λατίνοις, τὸ μηδαμῶς αὐτὰς ἀγαθῇ τῇ πίσει παρδᾶσαι τὸν Φλωρεντινὸν ἐκείνον ἐπισυστήσασθαι Σύλλογον.

Ὅ,τι δ' αὐτὰς τὰς Ἀλλατῖς ἀφορᾷ λόγους, ὅσωπερ ἂν καὶ πιθανοὶ δόξαιεν εἶναι, ἅλλ' ἔδεν ὅμως συμπεραίνουσιν αὐτῷ ἐξ ἀνάγκης· ἔτις πως ἄλλως εἰωθότι, καὶ δι' ὅλα τὰ περὶ τῆς Διοσκουρίας Συμφωνίας τῶν Ἐκκλησιῶν ἐκείνης Συγγράμματος, πιθανολογίας μόνον τισὶ προχρηῖσθαι, ἔδέποτε δὲ ἀποδείξεσιν ἐπερέδεσθαι σεβρᾶς καὶ ἀναμφηρίστοις, ὡς διὰ πλειόνων παραστήσαι ἂν ἔχοιμεν, εἰμὴ τὸ μῆκος τῶν λόγων ἀπεκλίνουμεν.

Τὰ τοίνυν πλεῖστα τῶν προεπαχθέντων ὑπ' αὐτῇ Ἐπιχειρημάτων, καὶν διὰ μιᾶς τε καὶ μόνης περιτραπείῃ τῆς ἀπαντήσεως. Πόθεν γὰρ δῆλον τῷ Ἀλλατῇ, ὅτι τῶν ὀνομάτων ἕκαστα, τὰ, ἐν ᾧ περ αὐτὸς ἐκέχρητο χειρογράφῳ Δελλαρίῳ τῆς Σωόδου ἐκείνης ἐυφερόμενα, ἐκ τῶν ἐν αὐτῇ ἡθροισμένων Πατέρων ἐπ' ἀκριβὲς τὰ πάντα προελύθεισαν; τίς αὐτῷ ἐχέγγυος; Ἡ ἔχι πολλὰ καὶ τῶν Βιβλιογράφων, ἐτέρων μεθ' ἐτέρους ἀντιγράφειν, τὰς τῶν ἄλλων Συγγραφεῶν ἀναβαλλομένων, παρορᾶται καὶ ἀμαρτάνεται;

(44) Ἐν τῇ Α'. Πραγματ: Σελ: 152. 153. κα:

τάνεται; Ἀλλὰ μὴ παρὰ τὰς τοιαύτας δε διαμαρτίας, πεπλάσθαι δι' ὅλα δεῖσαι λέγειν τὸ Σύγγραμμα; Πῶς ἔν ἀναγκαίως εἶχε τί συμπερᾶναι Ἀλλάτιος περὶ τῆς Σωόδου ταύτης, ἐκ τῆ παρ' αὐτῷ Χειρογράφου Κώδικος; Πῶς δ' ἂν καὶ εἴη πιθανὸν, εἰπέμοι: καὶ εἴπερ ὑπὸ ἄλλας νεωτέρας τινὸς ἢ Σωόδου αὕτη ἀναπέπλασται, ἐκόντα τὸν ψευδοπλαστήσαντα διαμαρτήσασθαι ἐπὶ τῶν αὐτῷ προδηλοτάτων ἐλέσθαι; ἢ πάντως ἐπὶ τῶν διαλαθεῖν αὐτὸν μὴ οἶων τε πεφυκότων; καὶ μάλιστα τοιούτων ὄντων, ἃ, καὶ ἔτιως ἤπερ εἶχε πράγματι παρ' αὐτῷ ἐτέθη, ἔδεν ἂν τὸ παράπαν τῇ ὑποθέσει τῆς πλασσεργαμένης Σωόδου προσελυμῖναι; Οὕτως ἔν μονονυχὶ τῶν πάντων ἐχόντων, ἅτλα ὑπὸ Λέοντος Ἀλλατίου ἡμῖν ἐνταῦθα ἀντιπροβάλλεται, ἔυδηλον ὡς ἕτερός τις ὑπέσι λόγος, δι' ὃν, ἐπὶ τῇ Χειρογράφῃ τῆς Σωόδου τοιαῦτ' ἅτλα προσυπαντᾷ, τὰ σημειωθῆναι δωάμενα· καὶ ὃ θέμις ἐντεῦθεν τῷ Σωόδον ἀπλῶς ἀκυρῆν τολμᾶν, ἀποσερῆντας οἷας δῆποτε πίστεως. Ἐκείνο μὲν ἔν ἐυχῆς ἂν εἴη ἄξιον, εἴπερ ἐξ ἐτέρων, ὡς οἷον τε πλειόνων καὶ ὀρθοτέρων Χειρογράφων, τύποις ἐξεδόθη κοινῶς ἢ Σωόδου αὕτη (45) ἔτω γὰρ ἂν οἶμαι μακρῷ ἑτεροῖα ὀφθεῖν τὰ κατ' αὐτῷ ἢ πάντως δῆπερ βεβαιότερα ἂν ἐξενεχθεῖν ἢ κρίσις ἢ περὶ τέτων ἔκαστα.

Τὸ μὲν τοίνυν ἐπὶ τῷ τῆς Σωόδου ἀνῆκον Ἐπιγραφῷ, ἐξ ἧς πολλότινα ὡς ἐπιπλέκων Ἐπιχειρήματα ὁ Ἀλλάτιος· τί δὴ ποτ' εἰπέμοι ἐκ τῆς Ἐπιγραφῆς ἂν ἐπενεχθεῖν κατὰ τῆς Σωόδου ἀντιφερόμενον; Ἐξω γὰρ ἢ Ἐπιγραφῇ ἄτοπος, καὶ μὴδὲ τοῖς χρόνοις συμβαινέτω, μὴδ' ἄλλοις τισὶ λόγοις ἐχέτω σύμφωνα: μὴ ἄρα τῆς Σωόδου τὰ ῥήματα ὡς ἐκείνα, καὶ ἔχι μᾶλλον τῇ τὰ Πρακτικὰ τῆς Σωόδου, ἐκ τῆς τῇ Λασκάρους Βιβλιοθήκης, ἀντιγράψαι ἐπιχειρήσαντος; Πῶς ἔν ἄρ' ἐντεῦθεν εἶχε συμπερανθῆναι, τὸ ψιλὸν ἀνάπλασμα εἶναι αὐτῷ τῷ Σωόδον; Οὐ γὰρ δῆπερ τῇ Σωόδῳ, ἔδὲ τοῖς αὐτῷ συγκεκροτηκόσι Πατράσιν εἰκὸς προσριβῆναι τὰ τοιαῦτα διαμαρτήματα.

Ἀλλ'

(45) Τῇθ' ὅπερ ἦν κατ' ἔφεσιν Ζοιρνικαῖον, εἰς ἔργον ἤδη παρὰ τῇ Ἱεροσολύμων Πατριάρχῃ Δοσιθέῳ ἴσμεν ἀχθῆναι, ἐν τῷ ἐπιγεγραμμένῳ Τόμῳ τῆς Ἀγάπης: ὡς αἰωτέρῳ (Σημ: 40.) εἴρηται. Εἰκὸς δὲ τὰ παρὰ τὴν καὶ ἐπιμελείαν τῇ Πατριάρχῃ ἐκδοθέντα Βιβλία τὸν Ζοιρνικαῖον ἡγνοῦναι, διά τε τὸ ἑτεροῖον τῆς Διαλέκτου ἢ σιωπῆς γράψαι, καὶ διὰ τὴν ἀπόστασιν τῆς χώρας, καὶ περ ἄλλως τυγχάνοντα σύγχρονον· ὁ μὲν γὰρ Πατριάρχης Δοσίθεος, ἐν ἔτει 1641. προελθὼν εἰς τὸν βίον, κατὰ τὸ 1707. κατέληξεν· τὸν δὲ ἡμέτερον Συγγραφέα τῆτον Ζοιρνικαῖον, ἐν τῷ 1652. γεννηθέντα, ἐπὶ τῆς ΙΗ'. τῶν ἀπὸ Χριστοῦ ἑκατονταετηρίδος ἀρχομένης τὸ ζῆν ἐκμετρήσαι ἔοικεν· ὡς εἰκόσαι πάρεστιν ἐξ ὧν, ὁ Νοβογροδίας Θεοφάνης ὁ Προκοποδίκης, ὁ ἐν ἔτει 1736. ἀποβιώσας, ὡς ἀπελθόντος ἤδη τῇ Ἀνδρῶς μέμνηται.

Τόμ: Β'.

Δ δδδδδδδ

'Αλλ' ἰδίᾳ ἕκαστον ἐν μέρει τῶν τῆ 'Αλλαίᾳ λόγων (46) φέρε διασκεψώμεθα. Ὁ τοίνυν Α'. ἀφορᾷ τὴν τῆ χρόνον ἐπιστημύωσιν, ἧς αὐτὴ ὅλως παρελείφθη καὶ γὰρ καὶ ἐν αὐτῇ δὴπερ τῇ ἀντιπροτεθείσῃ 'Επιγραφῇ τῆς Σινώδος, ἔσθ' ἡτις μνεία καὶ τῆ χρόνον ἐγένετο. Ἐκόντες γεμὴν ὁμολογεῖμεν, σφαλερῶς τι ὥδε παρεσφρήσαι τοῖς λεγομένοις· ἡ γὰρ κατὰ τὸ 1440. ἡ Σινώδος ἐκείνη σωεκροτήθη, ἃλλ' ἤδη μετὰ τὴν τελευτὴν Ἰωάννη τῆ 'Αυτοκράτορος, διασήματι ἐνιαυτῶ ἐνός καὶ ἡμίσεος ῥᾶσον δὲ ὡς, τὸν Βιβλιογράφον ἐπὶ συλλαβῇ σφαλιῶσαι μίαν· ὥστε δηλαδὴ δεῖον γράφειν κατὰ τὸ 'Ελληνικὸν ὕφος: „μετὰ τὴν γένεσιν τῆ ψευδοσυλλόγου τῆ Φλωρεντίνου, ἐνός ἐνιαυτῶ διασήματι καὶ ἡμίσεως μετὰ τὴν „τελευτὴν Ἰωάννη τῆ Παλαιολόγου· ὁ δὲ, τὸν (καὶ) σωδισμόν „παρενέγραψε πρὸ τῶν ῥημάτων (μετὰ τὴν τελευτὴν Ἰωάννη.) (47) τῷ γὰρ ὄντι Κωνσταντῖνον, ἐπὶ τῆ 'Αυτοκρατορικῆς Θρόνον ἀρθέντα μηδαμῶς τὴν Λατίνων ἀσπάσασθαι Πίσιν, τῆς δὲ Φλωρεντινῆς ἐνώσεως πολέμιον ἀναφανίσαι. Ἐνθεντοὶ καὶ Γρηγόριον μὲν τὸν ἐν Κωνσταντινουπόλει Πατριαρχόσαντα, ὡς λατινοφρονῶντα καθελεῖν· καὶ μηδὲ τὸ τῆ Πάπᾳ τότε μνημόσμων τελεῖσθαι, ἐκ τῶν κατ' ἐκείνο τῆ χρόνον Συγγραφέων ἐστὶ προδηλότατον. Ὁ γάρ τοι ΔΟΥΚΑΣ Μιχαὴλ ὁ Ἀνεψιός, ἐν τῇ Βυζαντινῇ Ἱστορίᾳ Κεφ: Λς'. Σελ: 141. „Ὁ Βασιλεὺς ὡς εἴλας ἐν Ῥώμῃ „μη προλαβὼν αἰτῶν βοήθειαν, καὶ ὅπως σωτεθῶσι τῇ ὁμονοίᾳ „τῇ γεγυμνασμένῃ ἐν Φλωρεντίᾳ, καὶ λάβῃ τὸ μνημόσμων ὁ Πάπας „ἐν τῇ Μεγάλῃ Ἐκκλησίᾳ· καὶ ὁ Πατριάρχης Γρηγόριος ἐπανε- „λθόν-

(46) Τέσσαρες καὶ δέκα, ὡς μὲν εἶπεν λόγος, ὡς δ' ἀληθέστερον ἀλόγως Ἀντιλογίας πρεβάλλετο Ἀλλότιος τὰς προτεθείσας, ὥστε τὴν περὶ ἧς ὁ λόγος Σινώδον ἀποδείξαι, ψευδὴ καὶ ἐπίπλῃον τῶν δὲ Ἀντιλογιῶν τέτων καὶ Δοσίθεος (ἐν τοῖς περὶ τῶν ἐν Ἱεροσολ: Πατριαρχ: Βιβλ: Γ'. Κεφ: Θ'. μέμνηται) ὧν τὰς μὲν ἐν Παραγραφῇ Α'. τῆ ῥηθέντος Κεφ: ἀπελέγχε· τὰς δὲ ἐν τῷ Β'. ἐννέα καταλέγων Ἐπιχειρήματα. (Ὁρα Σελ: 914. 915.) Πρὸς μὲν ἐν τῷ Α'. τῶν Ἀλλαϊκῶν Σοφισμάτων, ἔτω καὶ Δοσίθεος ἀπαντᾷ· „τὸ ἐνός ἐνιαυτῶ διασήματι καὶ ἡμίσεος „ἐννοούμενον μετὰ τὴν τελευτὴν τῆ Λατινόφρονος Ἰωάννη, οἱ Λατῖνοι λέγουσιν ἐννοεῖσθαι μετὰ τὴν γένεσιν τῆ ψευδοσυλλόγου τῆ Φλωρεντινῆς ὅπερ . . . ἀναμνήσκειν πλάσμα καὶ συκοφαντία ἐστίν· ἡ γὰρ ἐν Φλωρεντίᾳ Σινώδος ἐγένετο τῷ „αυτῷ. Ἦτα, ἐν δὲ τῷ αὐτῷ. ἀπέθανεν Ἰωάννης ὁ Βασιλεὺς καὶ ἐγένετο αὐτῷ „αὐτῷ Βασιλεὺς ὁ Ἀδελφός αὐτοῦ Κωνσταντῖνος· καὶ μετὰ ἐν καὶ ἡμισυ ἔτος τῆ „θανάτου τῆ Ἰωάννη, καὶ τῆς Βασιλείας τῆ Κωνσταντίνου, ἐγένετο ἡ Σινώδος· καὶ „τῷ βεβαῖσθαι καὶ τὰ ἐν τῇ Ἀνατολῇ Ἀντίγραφα. Ἀδὲ οἱ Λατῖνοι λέγουσιν „κατὰ τῆς Σινώδος ἀπὸ τῆς Ἐπιγραφῆς, ἐδελέσθαι αὐτῶν εἰς κενεργήματα.

(47) Ἐυδοκίᾳ δ' ὧν ἡ Σινώταξις κατὰ τὴν ἀληθείαν ἐννοίαν, καὶ τῆ Συμπλεκτικῆς Σινώσεως (καὶ) προταχθέντος εἶγε διὰ τῆς ὑποδιαστολῆς, τὸ παρεμβεβλημένον εἰς εὐκρινεστέραν ἐπιδήλωσιν τῆ χρόνον, κόμμα, διατίθεται ἔτω: „Μετὰ τὴν „γένεσιν τῆ Φλωρεντινῆς ψευδοσυλλόγου καὶ (ἐνός ἐνιαυτῶ καὶ ἡμίσεος) μετὰ τὴν „τελευτὴν Ἰωάννη τῆ Παλαιολόγου καὶ:

„λῴβσεται ἐν τῷ Θρόνῳ αὐτῷ· καὶ (48) μετεκαλεῖτο τινας ἀφικέ-  
 „θαι τῶν τῷ Πάπα, ὅπως εἰρωδύσει τῷ ἀσπονδῶν ἔχθραν τῷ  
 „Σχίσματος,,. Καὶ ὁ Πάπας δὲ Νικόλαος ὁ Ε΄. ἐν τῇ πρὸς τὸν  
 Ἀυτοκράτορα Κωνσταντῖνον Ἐπιστολῇ παραπλησίως μνείαν ποιᾷ τῇ  
 τῇς τῷ Λατινόφρονος Πατριάρχου καθαιρέσεως· καὶ τῷ δαῖν αὐτοῖς  
 ἐπὶ τὸν Θρόνον ἀποκαταστήσας αὐτόν· ἔτω γὰρ, πρὸς γε τοῖς ἄλ-  
 λοις Σελ: 607. τῶν Χρυσέων Θεολογικῶν Πονημάτων τῶν ὑπὸ  
 Ἀρκιδίου ἐκδομένων: „Θέλομεν ἵνα τὸν Κωνσταντινῶν πόλεως Πα-  
 „τριάρχῳ, ἐπὶ τὸν αὐτῷ Θρόνον ἀνακαλέσῃς,,. Καὶ ΑἴΝΕΪΑΣ  
 ὁ Σύλβιος ἐν τῷ περὶ τῆς Εὐρώπης Βιβλίῳ, Κεφ: Γ΄. „Ὁ δὲ  
 „διαδεξάμενος αὐτὸν Κωνσταντῖνος, ἔτ' ἐξαπατηθεὶς, ἔτ' ἐν καὶ  
 „ἐκὼν ἐκμανεῖς, ἥκιστα σωάδων τῇ ἐνώσει ἐφάινετο· καὶ γὰρ  
 „καὶ Γρηγόριον τὸν μετὰ τὸν προπατριαρχόσαντα, διὰ τὸ κατὰ  
 „τῷ ἀλήθειαν τῆς Πίστεως βηματίζειν, ἀπήλασε τῷ οἴκῳ, καὶ  
 „τὰ τῆς Ἐκκλησίας διήρπασε κτήματα,,. Ἀλλὰ καὶ ἡ παρὰ  
 „τῆς ἐν Κωνσταντινῶν πόλει Μεγάλης Ἐκκλησίας Ἐπιστολὴ πρὸς  
 τὸς Βοέμους, ἡ ἐν Ἔτει 1451. τῇ 18. Ἰαννουαρίῳ δοθεῖσα, περὶ  
 ἧς ὕπερον, ἔτως ἔχει: „Εἰδὼς ὅτι ἡ Μεγάλῃ Ἐκκλησίᾳ ταῦτα  
 „πρὸς ὑμᾶς γράψαι, καὶ πρὸς τῷ μετ' αὐτῆς ἐνότητι προτρέ-  
 „ψασθαι· ἐχὶ κατὰ τῷ ἐν Φλωρεντίᾳ ἐπίπλεον ἐκείνῳ ἐνωσιν,  
 „ὡς χωρισμὸν μᾶλλον ἀπὸ τῆς ἀληθείας ὀνομάζειν δίκαιον. Διὸ  
 „καὶ ταύτῃ ἐκ ἀπεδεξάμεθα, μᾶλλον δὲ καὶ ὅλως ἐξεδενώσαμεν·  
 „ἀλλὰ κατὰ τὸν ἀπαράτρωτον καὶ ἀμεταποίητον ὅρον, ἐν ᾧ μόνον  
 „ἀληθῶς τε καὶ ἀσφαλῶς ἐνθάδε διωάμεθα,,. Ἀλλὰ μὲν ἐπὶ Ἰω-  
 ἄννῃ περιόντος ἔτι τῷ βίῳ, ἔπω κοινῇ ὅλως ἠθέτητο ἡ ἐν Φλω-  
 ρεντίᾳ ἐνωσις· τῷτο ἄρα ἐπὶ τῆς Κωνσταντίνου ἐγένετο Βασιλείας.  
 Τελούτατον δὲ τὰ ἈΜΥΡΟΫΤΤΖΗ ῥήματα τῷ φιλοσόφῳ, τῷ καὶ  
 κατὰ τῷ Φλωρεντινῷ Σύνοδον παρόντος, τρανώτατα ἐστὶ, παρὰ  
 Λέοντι τῷ Ἀλλατίῳ, ἐν τῷ Γ΄. Βιβλ: Κεφαλ. Α΄. Ἀριθ: Δ΄.  
 „Δὶ ἅπερ οἱ Πατριάρχαι τὰς ὑπογραφαῖς τῶν οἰκείων Ἐπιτρό-  
 „πων ἐυλόγως καὶ Συνοδικῶς ἠθέτησαν, βεβλόμενοι παρὰ τῶν  
 „Διαλέξεων, καὶ μὴ ἀθεεὶ πέρας ἔξαι τὰ τῆς Συνοδοῦ ἐκείνης,,.  
 Ἀλλὰ τῷτο τέως οἱ Πατριάρχαι ἐν τῇ περὶ ἧς ὁ λόγος Συνοδῶν  
 κατεποάξαντο. Εἶχε γὰρ ἔτως αὐτῶν τὰ ῥήματα, ἐπὶ τῆς ἐν  
 αὐτῇ Β΄. Σωελῴσεως: „Επειδὴ ἄρα πανουργίας καὶ φανακισμοῖς  
 ..καὶ

(48) Οἱ μὲν Ἱστορικοὶ φησὶν: ὅτι („ὁ Βασιλεὺς σέλας . . . . μετεκαλεῖτο τινὰς  
 „ἀφικέσθαι τῶν τῷ Πάπα,,) ὁ δὲ Λατινισὶ διερωδύσας, ἐκ οἷδ' ἀνθ' ὅτου, προσ-  
 θεῖς ἔχει: hortantibus etiam Legatis. aliquos Papa mitteret. τῷτῇσι: („παρο-  
 „τρωνόντων ἔτι καὶ τῶν Ἀποκριτῶν, ἵνα τινὰς ὁ Πάπας πέμψῃ,,) τὶ ἔτως;  
 ἡ δὲ τῷ μὴ ὑπένοιάν τινά τῷ ἀναγνώσκοντι ὑπείσεσθαι, ὡς ἐκ τῆς μετακλή-  
 σεως τῷ Βασιλέως, καὶ ἐχὶ ἐξ ἀδείας τῆς τῷ Ποντίφικος ἡ τῶν ἀποσταλῆσομέ-  
 νων ἀφίξις γένοιτο.



„καὶ ἀνάγκαις, καὶ μὴ ἐξετάσει ἀληθείας τὰ τῆς ψευδοσιωδῶς  
 „ἐκείνης πέρας ἔλαβε, καὶ παρὰ τὴν ἡμετέραν διάνοιαν, ἄκυρον  
 „τὸ Ἐπιτροπικὸν μενέτω,,. Τοιγαρὲν ἐπὶ τῆς Βασιλείας Κων-  
 σταντίνου τῷ Αὐτοκράτορος, ἐν ἔτει 1450. ἡ Σύνοδος ἐκείνη  
 σιωπευκροτήθη· ἔχλ' δὲ μετὰ ἐνιαυτῷ ἡμιόλειον ἀπὸ τῆς ἐν Φλω-  
 ρεντίας συστάσεως Σωόδου, ὡς ἐκ τῷ παρασφαλέντος Βιβλιογρά-  
 φου, (49) ἐν τῷ παρ' αὐτῷ Ἀλλάτιος Χειρογράφῳ ἀναγινώσκων  
 ἐτύγχανε.

Β'. Ἀληθὲς δὲ καὶ κεῖνο, ὅτι Κωνσταντῖνος Ἰωάννου Αὐτάδελ-  
 φος ἦν, ἔχ' Υἱός. Ἀλλὰ καὶ τότε ἐξ ἀπαιδευσίας, ἢ ἀπροσεξίας  
 Βιβλιογράφου τινὸς, ἔτω παραγέγραπται· (50) ὡς μηδὲν μηδ' ἐν-  
 τεῦθεν ἐξῆναι κατὰ τῆς Σωόδου ἐκείνης ἐπάγεσθαι.

Γ'. Δὲ ὁ τῷ Ἀλλάτι λόγος ἔδεν ὑγιής. Τίς γὰρ ἡ Σωέ-  
 πεια; Ἰωάννης ἐπὶ τὸν Πατριαρχικὸν Φθάσας προεβίβασε Θρό-  
 νον, πρῶτον μὲν Μητροφάνῳ, ἔπειτα δὲ Γρηγόριον, Λατινοφρο-  
 νῶντα ἐκάτερον. Τελούτων ἄρα τὴν ἐν Φλωρεντία ἔνωσιν ἔδα-  
 μῶς παρητήσατο· (51) ὅτι δὲ ἄρα ψυχρότερόν πως ἐπ' οἷμα ἐπανε-  
 θόντι αὐτῷ προήχθη τὰ τῆς ἐν Φλωρεντία ἐνώσεως, καὶ τέως  
 πάντῃ καὶ παρημέληται, ἀνωτέρω ἐδέχθη· ὡς μηδὲ θαυμαστὸν  
 εἶναι, εἰ καὶ τῇ ἐνώσει ἐφεξῆς εἶπε τὸ χαίρειν, ἐπεὶ μηδὲν  
 αὐτῷ πεμπόμενον εἶδεν ἐπιβοήθημα· μηδὲ ἄλλως τεθνηξομένῳ,  
 ἀναγκαίαν τὴν ἐπικερίαν οἱ αὐτῷ σιωεώρακεν. Ἐπ' ἐλπίδι καὶ  
 γὰρ

(49) Εἰ μὲν ὁ χρόνος ἐπὶ τῷ Βιβλίῳ ἐγγεγραπτο ὠρισμένῳ, ῥαδίον ἦν τὸν  
 Βιβλιογράφον παρασφαλιῶσαι· ἀντὶ τῷ ΑἰΤΝ'. γράψαντα ΑἰΤΜ'. Ἐπεὶ δ' ἐκ  
 ἐμφέρεται τὸ ἔτος ἐγγράφως ἐν Ἀριθμητικοῖς σοιχείοις κεχαραγμένον, τὸ  
 ἀμάρτημα ἐνταῦθα, ὅπερ ὁ Συγγραφεὺς αἰτιάται, τῇ τῷ Συμπλεκτικῷ (καὶ)  
 παρὰ τόπον σωτάζει ἀποδοτέον.

(50) Θαυμάζειν εἰκότως ἔπεισιν, εἰ τὸ ἔτω προφανὲς καὶ ἀρίγνωτον, ὅ τὰ Πρακτικά  
 ἐκεῖνα κατ' Ἀλλάτιον ἀναπλάσας, ἐκ ἧδ' ἢ γούτι καὶ σιωτελέσειν αὐτῷ τῷ  
 πλάσματι ἤλπισε, τὸ εἰς Υἱὸν τὸν Ἀδελφὸν μεταλήψασθαι· Δοσίθεος γεμῶν  
 πρὸς τόδε τὸ Β'. ἀπαντᾷ ὥδε: „Σωόδου, ὑστάτη κτ: . . . ἐπὶ τῷ ὁρθόδοξῳ Ἀδελ-  
 „φῷ αὐτῷ Κωνσταντίνῳ Βασιλέως,,. Αὕτη ἡ Ἐπιγραφή (Φησὶ) τῶν Πρακτικῶν τῆς  
 Σωόδου, ἥτις καὶ ἀληθευσάτη ἦν, ὡς παρίσχει τὰ παρ' ἡμῖν Ἀντίγραφα, ἥτις  
 „καὶ συνετυπώθη παρ' ἡμῶν. Ἀλλὰ δὲ Ἀντίγραφα ἔχουσιν Ἐπιγραφὴν: Σωό-  
 „δου ὑστάτη ἐν Κωνσταντινουπόλει, ἐπιτελεθεῖσα ἐν τῇ Ἀγ: Σοφίᾳ μετὰ τῷ γέ-  
 νει τῷ ψευδοσυλλέγῃ τῷ Φλωρεντινῷ, ἐνὸς ἐνιαυτοῦ διαστήματι καὶ ἡμίσεος μετὰ  
 τῷ τελούτῳ τῷ Λατινίφρονος Ἰωάννου ταῦτα ἐν ταῖς Ἐπιγραφαῖς. Οἱ δὲ Λα-  
 „τῖνοι νοθεύουσιν αὐτάς· καὶ ἀντὶ τῷ Ἀδελφῷ αὐτῷ Κωνσταντίνῳ τῷ Βασιλέως,  
 „ἐνέδθησαν ἐπὶ τῷ Υἱῷ αὐτῷ Κωνσταντίνῳ τῷ Βασιλέως· ὅπερ καὶ τυφλῷ δῆλον  
 „ὅτι προδήκη ἐστίν,,. (Δοσίθ: ἐνθ: ἀνωτέρω. Σελ: 915.

(51) Ὅμοιον γὰρ τῷτο, ὡς εἰ σιωάψει τις, ἐκ τῷ τὸν Ἰωάννου ἀθετήσαντα ἐξημαρ-  
 τηκέναι, ἔδ' εἰς τέλος ἄρα αὐτὸν γνωσιμαχίσαντα ἀνανῆψαι· ἀλλὰ τῇ ἀθετήσει  
 μέχρι παντὸς ἐμμέναντα ἐπαποθανεῖν ἐν τῇ ἀμαρτίᾳ αὐτῷ.

γὰρ τῷ βοηθείας εὐκαίρως τούξεσθαι, τὴν ἐπὶ Φλωρεντίας ἔνωσιν αὐτὸν ἀπαύσαθαι ἀποδέδεικται. (52)

Δ'. Δὲ προσέτι ἐδ' ἐκείνος τῶν τῆς Ἐπιγραφῆς ῥημάτων ὁ νῦν ἔστιν, ὅτι Κωνσταντῖνος ὁ Λάσκαρις ἐπιταγῇ τῷ Πατριάρχῃ ἐξέδοτο τὴν Γραμματικὴν ἀλλ' ὅτι τῷ Πατριάρχῃ κελεύσαντος, ἀπεγράφῃ τῆς Σιωδὸς τὰ Πρακτικά. (53) Οὐδ' ὅτως ἅπαντα σρεβλῆται διασρεφόμενα· ὁ γὰρ νῦν σαφὴς τε καὶ πρῆπτος, καὶ ἀπαραβιάστος. Τὰ γάρ τοι Πρακτικά, ἐλήφθη μὲν ἐκ τῶν Χειρογράφων τῷ Κωνσταντίνῃ, ἐπιτάγματι τῷ τῷ Πατριάρχῃ, ἀπεγράφῃ δὲ παρὰ τῷ Ζυγομαλᾷ. Πολλῶν δὲ γε ἕνεκα πάντως ἔχεν ἐκ τῶν Κωνσταντίνῃ Χειρογράφων τὰ τῆς Σιωδὸς ταύτης Πρακτικά ἐκληφθῆναι τε καὶ ἀπογραφῆναι, ὡς μηδὲν ἐκ τούτων ἐπιεικῶς ἐπάναγκες εἶναι κατὰ τῆς ἀληθείας τῆς γενομένης Συνόδου ἐκτρίψασθαι τι συμπέρασμα.

Ε'.

(52) Καὶ πρὸς τόδε δὲ τὸ Γ'. ὁ Δοσίθεος αὐτίθι: „Ὅτι δὲ καὶ Ἰωάννης ὁ Βασιλεὺς „σωσεφρόνησε τῇ ὁρθοδοξίᾳ, καὶ ποῖα τρέπω, ῥηθήσεται μετὰ ταῦτα (ἐν Κεφ: „ΠΓ') εἴτα ἐκείσε: (Παραγε: Θ'. Σελ: 932.) ὅτι γὰρ ὁ Παλαιολόγος Ἰωάννης ἐκ „ἑὸν ἐκδοτὸς εἰς τὸ Λατικὸν Δόγμα, ἀλλ' ἐπραγματεύετο καὶ πρὸ τῆς Σιωδὸς, „καὶ μετὰ τὴν Σιωδὸν τὴν Ἐκκλησίαν, νομίζων ἐκ τούτων βοηθῆσαι τῇ Πολιτείᾳ, „ἐν τῇ πρὸς Κωνσταντῖνον τὸν Βασιλέα Ἐπιστολῇ ὀλοφυρόμενος Νικόλαος (ὁ μετὰ „τὸν Εὐγένιον Πάπας) Βεβαῖτι τῷτο, λέγων: ὡς εἰ κατὰ μικρὸν γῆν ἐκείνος (ὁ „Ἰωάννης) ἰσχυρὸς τοῖς γενομένοις προσηῖναι ἐβέβητο, ἐδὲν ἂν ἰὼ ἐμποδὼν μὴ εἰς τέ- „λος εὐτυχὲς τὰ τῆς Σιωδὸς προχωρῆσαι· νῦν δὲ, ἀλλ' ἅτλα αἰεὶ προαιρέμενος, „καὶ ἔργον Θεῶν ἐπιθυμία πραγμάτων πολιτικῶν μάλλον τῷ δέοντος Φιλοτιμέμε- „νος ἐφαρμόσαι, ἐπίχειρα προαιρέσεως ἐκ ἀγαθῆς καταστροφῆς τῷ βίᾳ λαμβά- „νει παρὰ Θεοῦ. Ἀλλὰ καὶ ὁ Σχολάριος ἐν ᾧ γράφει κατὰ τῆς προδήκης, λέγει: „περὶ μὲν Ἰωάννη τούτῃ ἴσμεν καλῶς, τί περὶ τῶν ἐν Φλωρεντίᾳ ὑπ' αὐτῷ γε- „γονότων ἐφρόνει· καὶ πῶς ταῖς ἡμετέραις ἡσμένιζεν Ἀποκρίσεις, καὶ ὅπως ἔτ' „ἐπιπυλάκαζε, καὶ ἐβέβητο τὸ Πάτριον ἡμᾶς διαφυλάττειν Δόγμα· καὶ ἐπῆναι τὴν „τῷτο πράττοντας, ἐμίσει τε τὴν ἄλλως διακειμένην· ἡμεῖς τούτων μάρτυρες πάν- „τες, ἐκ τῆς ἐκείνης φωνῆς καὶ γλώττης ἕκαστος πάντα εἰδότες. Ἀλλὰ περὶ τῆς „Ἀρχῆς δεδιὼς ἀδεῆς τι δέος, ἐκ ἡνείκετο φανεράν τὴν Ἰατρειάν τῆς ψυχῆς „ἐξεργάσασθαι . . . Καὶ . . . εἰδ' ἔσαι τι πλέον αὐτῷ παρὰ τῆς Θείας Φιλαν- „θρωπίας διὰ τὴν πρὸς ἡμᾶς ἡμερότητα, καὶ τὰς ἐνδὸν μεταμελείας, ὑπὸ τῶν „κακῶς αὐτῷ καινοτομηθέντων, Θεὸς ἂν εἰδείη.

(53) Καὶ πρὸς τῷτο δὲ τὸ Δ'. ῥητέον (Φησὶ Δοσίθ: αὐτ:) ὅτι προτροπῇ τῷ Ἀθανασίῃ, „ἔχ' ὁ Κωνσταντῖνος σωέσθαι τὴν Γραμματικὴν ἀλλὰ τὰ Πρακτικά τῆς Σιω- „δου ἐξεβλήθη ἐκ τῶν ἰδιοχείρων τῆς Βιβλιοθήκης αὐτῆς. Συγχύσεων γὰρ ἔσων, „καὶ ἀλλεπαλλήλων κακῶν ἐν Βυζαντίῳ, ἐνδέχεται παραφθαρῆναι τὰ Πρακτικά· „καὶ ὡς ἀπὸ ἀνορθῶτων καὶ ἀναμφοδόλων, τῶν ὑπὸ τῷ Λασκάρει Συγγραφέν- „των ἐξεβλήθη, ἐκ ἐν τῷ αὐτῷ χρόνῳ, ἀλλὰ μετὰ τινα ἔτη. Μετὰ γὰρ τέσ- „σαρα ἢ ἡμισυ ἔτη τῆς ἀθροίσεως τῆς Σιωδου, ἐάλω ἡ πόλις ὑπὸ τῶν Ὀθωμα- „νῶν, καὶ εἰκὸς ζῶν ἕως τῆς ἀλώσεως, ἢ μετὰ τὴν ἀλῶσιν τὸν Ἀθανάσιον. „Συνέγραψε δὲ ὁ Λάσκαρις τὴν Γραμματικὴν εἰς τὴν Δύσιν μετὰ τὴν Σιωδὸν „ἔτη εἰκοσι δύο· ἐν δὲ τῷ καιρῷ τῆς Σιωδου ἰὼ εἰς Κωνσταντινούπολιν. Ἦσαν δὲ „τότε ἐν τῇ Δύσει Ἑλλήνες Διδάσκαλοι: Θεόδωρος ὁ Γαζής, Γεώργιος ὁ Τραπε- „ζέντιος, ὁ Χρυσολωρᾶς, ὁ Χαλκοκυνδύλης, ὁ Μυστήριος, ὁ Γεμισός, Ἀνδρέας ὁ „Τραπεζέντιος, ὁ Λάσκαρις· ἐξ ὧν τινὲς μὲν ἀπῆλθον ἐκείσε πρὸ τῆς ἀλώσεως, „τινὲς δὲ μετὰ τὴν ἀλῶσιν.

Τόμ. Β'.

Ε ΕΕΕΕΕΕΕ

Ε'. 'Αληθές μὲν, ὅσα καὶ αὐτὸς μέμνηται, τὸ τὰς ἄλλας τῶν Συγγραφέων μὴ μνημονόειν τῷ Πατριάρχῃ Ἀθανασίῃ· ἀλλὰ τὸ τυχὸν, εἴτε διὰ τὸ αὐτὸν μετὰ βραχὺ αὐτίκα τῷ βίῃ ὑπεξελθάν, εἴτε γὰρ καὶ ὑπὸ τῷ Βασιλέως μετὰ μικρὸν τῷ Θρόνῳ καθαιρεθῶσι ἀπιδόντος ἐπὶ Λατίνης, ὡν τῆς βοηθείας ἐδέετο, κατὰ τῶν ὅσον ἔπω ἐπισκηψόντων Ἀγκυρῶν. Ἀκαριαίας καὶ γὰρ, ὡς ἔτω φάναι, τῆς ἐκείνης γενομένης Πατριαρχίας, ἔδεν ἀπεικὸς, καὶ παρὰ τῶν Συγγεγραφότων τὰ τότε, μηδὲνα περὶ αὐτῷ λόγον γενέσθαι. Τῷ ὄντι γὰρ κατὰ τὸ 1451. τῇ 18. Ἰαννουαρίῃ, μηδὲνα Κωνσταντινουπόλεως χρηματίσας Πατριάρχῃ, ἢ πρὸς Βοέμης μαρτυρεῖ παρὰ τῆς ἐν Κωνσταντινουπόλει Ἐκκλησίας προαπομνημονοῦσθαι Ἐπιστολῇ, περὶ ἧς ὕπερον (54)

5'. Ὁ δὲ τὰ Δωροθέα τῷ Νικαίας, καὶ τῷ Κυζίκῃ Ἐπισκόπῃ ὀνόματα ἀφορᾷ, ἔξεσι τὸν Βιβλιογράφον ἐν αἰτίᾳ ποιήσασθαι· ἢ κατ' ὀντινῶν ἕτερον λόγον, καὶ οἱ Χειρόγραφοι Κώδικες ἔτω τυχὸν ἔχειν ἡδυνάοντο. (55) Ὡς εἶγε ἢ κατὰ Ἀλλότιον Ἐπιχειρήσεις εἶχε χώραν, καὶ αὐτῷ ἡδὴ τῷ ἐν Φλωρεντίᾳ Σινώδον, ὡς πεπλασμένῳ ὁμοίως ὑφορεῖσθαι δεήσειεν· ἔδεν γὰρ, ἔδεν ταύτης τὰ Πρακτικὰ ἐπίσης ἔχει συμφώνως περὶ τὰ τῶν ἐκείνων Πατέρων ὀνόματα. Καίτοι μόνον τῷ Κωνσταντινουπόλεως Πατριάρχῃ, καὶ τῷ Μητροπολίτῃ Σταυρουπόλεως ἐκείσε τὸ εἶναι ἐκπερά-  
ραντος.

(54) Τίτῳ δὲ Ε'. Ἐνταῦθα ταύτῳ, ἔτῳ, ὡς ἐκ τῶν Λατίνων προβαλλομένῳ προτίθηναι ὁ Πατριάρχης Δοσίθεος: (Ἄντ' ἐν τῷ Γ'. Βιβλίῳ ΚεΦ: Θ'. Παραγρ: Β'. Σελ: 915.) „Ε'· ὅτι λέγει (ἢ Σινώδος δηλ.: καθαιρεθέντος τῷ Γρηγορίῳ ἐγένετο Ἀθανάσιος, ὅπερ καὶ αὐτὸ ψεύδος. Ἐπεὶ δὲ τῷ αὐμ'. Ἐτε, ἔπω ἦν Πατριάρχης ὁ Γρηγόριος. Παραιτησαμένη γὰρ τῷ Μητροφάνῃ ἐν Ἐτε αὐμὲ ἐγένετο ὁ „Γρηγόριος· ἢ δὲ Σινώδος ἡθροίσθη, ἔπω ὄντος Πατριάρχῃ τῷ Γρηγορίῳ. — Ἀπαντᾷ δὲ πρὸς ταῦτα (Αὐτ: ἐν Παραγρ: Γ'. Σελ: 916. ἔτω: „Πρὸς δὲ τὸ „Ε'. ρητέον: ὅτι εἰ ὁ Γρηγόριος ἐγένετο Πατριάρχης παραιτησαμένη τῷ Μητροφάνῃ ἐν Ἐτε αὐμὲ. ἢ δὲ Σινώδος ἐγένετο, ἔ μετὰ ἐν καὶ ἡμῖν ἔτος τῆς „Φλωρεντινῆς Σινώδος, ἀλλὰ μετὰ τὸν θάνατον τῷ Βασιλέως Ἰωάννῃ, ὅς συμβέβηκεν ἐν Ἐτε αὐμζ. ἀναμφιδέως ὁ Γρηγόριος, ὡς Πατριάρχης Κωνσταντινουπόλεως ὅτε ἡθροίσθη ἢ παρεῖσα Ἀγία Σινώδος· πλὴν, καθήρημένος. Καὶ ψάλλονται καὶ ταῦτα (Φησὶν ὁ Πατριάρχης) προφανῶς οἱ Λατῖνοι

(55) Ὁ Πατριάρχης Δοσίθεος, τίτῳ 5'. ταύτῳ Ἀντιλογίαν, ὡς Α'. καὶ Β'. τῶν κατὰ τῆς Σινώδος ἐννέα Λατινικῶν Ἐπιχειρημάτων (ἐν τῷ Β'. Παραγρ: τῷ Θ'. ΚεΦ: τῷ Γ'. Βιβλ:) διασείλας καταλέγει. Εἰτά ἀπαντᾷ (Ἄντ: Παραγρ: Γ'. ρητέον „(Φησὶ πρὸς μὲν δὴ τὸ Α'., ὅτι Δωροθέος γράφεται καὶ τοῖς Πρακτικοῖς, καὶ „τῇ ὑπογραφῇ καὶ ψάλλονται οἱ γεννάει Λατῖνοι. Πρὸς δὲ τὸ Β'., ἔτι καὶ ἐν „τῇ Β'. Πράξει, καὶ ἐν τῇ ὑπογραφῇ Παρθένιος γράφεται Κυζίκῃ. Πλάσμα „ἄρα τῶν Παπιστῶν ἐστίν, ὅτι γράφεται ἐν μὲν τῇ Πράξει Μητροφάνῃ, ἐν δὲ „τῇ ὑπογραφῇ Παρθένιος. Εἰδὲ Νικαίας ἐν τῇ ὑπογραφῇ ἐκ ἑστὶ Νεόφυτος, „ἀλλὰ Σταυράκιος, ἐκ ἀπεικὸς ἐστὶ. Γενομένων γὰρ τῶν Σιωλεύσεων ἔ κατὰ „σιωλέων, ἀλλὰ ποτε μετὰ πολλὰς ἡμέρας, καὶ ποτε μετὰ μῆνας, ὡς ἐστὶν „ἰδέν ἐν τοῖς Πρακτικοῖς τῶν Σινώδων, ἐνδέχεται ἀπεθανόντα τὸν Νεόφυτον, „χειροτονηθῶσι τὸν Σταυράκιον ὅπερ ἐκ ἀναγκαῖον ὡς γραφίῳ ἐν τοῖς Πρακτι- „κοῖς.

ναντος. Ἐὰν γὰρ ἐπὶ τὰ Ἑλλήνιστὶ γραφέντα Πρακτικὰ τῆς Σωόδου ἐγκύψης, ὑπέγραψε δῆπου τῇ Σωόδῳ Ἰγνάτιος ὁ Μητροπολίτης Τορνόβου, καὶ Ματθαῖος ὁ Μελενίκ. Ἀλλὰ τῶν δὴ, κατ' ἀρχὰς τῶν Πρακτικῶν τῆς Σωόδου, ὡς ἐν τοῖς λοιποῖς Ἀνατολικοῖς παρόντων, ἕδεμὶα γίνεταί μνεία. Ἀνὰ πάλιν δέ, κατ' ἀρχὰς τῶν Πρακτικῶν ἀναφέρεται Μεθόδιος ὁ Μητροπολίτης Λακεδαιμονίας, ὃς τῇ Σωόδῳ ἑδόλως φαίνεται ὑπογράφας. Καὶ πάλιν: αὐτόθι μὲν Ἐυσράτιος ὁ Μελενίκ καλεῖται, ἐν δὲ τῇ ὑπογραφῇ, Ματθαῖος ὁ Μελενίκ κατονομάζεται. Εἰ δ' ἀνελέξαιμεν τῶν Πρακτικῶν τὰ Λατινικὰ, τὰ ὑπὸ Ἀνδρέα τῷ ἀπὸ τῷ Ἀγίῳ Σαυρῷ συγγραφέντα, ἐν μὲν τῇ Α'. Σωελούσαι μνήμη γίνεταί πρῶτον τῷ Ἀρχιεπισκόπῳ Τριβονίωσιν, ἥτοι Τορνόβωσιν· τῷ Ἀρχιεπισκόπῳ Τολὸσῶν, καὶ τῷ Γαρινίωσιν, καὶ τῷ Ἀχιλίουσιν· ἀλλ' ἔτι μὲν τοιγε ἐν ταῖς ὑπογραφαῖς ἐκ ἐμφέρονται· τὸναντίον δὲ ὑπέγραψαν ὁ, τε Ῥωσίας, καὶ ὁ Ῥόδου, καὶ ὁ Σάβου, καὶ ὁ Δράμας, οἱ Ἀρχιεπίσκοποι οἱ ἐν τῇ πρώτῃ Σωελούσαι ἀκατονόμαστοι. Καὶ παρὰ τῆς ῥηθέντας δὲ δύο τῶν μεταλλάξαντας τῶν τῇδε, μόνος τῶν Ἀρχιερέων ὁ Ἐφέσσας, μετὰ τῶν ἐξ Ἰβηρίας Ἀποκρισιαρίων καθυπογράφει ἀνένδοσαν.

Ζ'. Ὁ δ' ἐπὶ ἐκείνῳ ἐστὶν ἀνῆκον, ὁποῖα τις, εἰπέμοι, ἡ σωεπία: Ἰσιδώρος ὡς ὁ Ῥωσίας Μητροπολίτης· ἄρα πρὸ τῆς Σωόδου ἐκείνης, τῆς ἐν ἔτει 1450. τελεοθείσης, ἐκείνῳ περιόντος τῷ βίῳ, Μητροπολίτης Κιαιῶν ἕτερος ἕδῃς ὡς; (56) Ἀνωτέρω γὰρ

ἔφθην.

- (56) Καὶ τότε ἐπὶ τοῖς Θ'. ὡς Ι'. τῶν Λατινικῶν Ἐπιχειρημάτων, ὁ Δοσίθεος (Ἄντ: Σελ: 917.) ἀνθυπενεγκῶν: („προφέρει δέκατον, ὅτι ὡς Ῥωσίας Μητροπολίτης „ὁ Ἰσιδωρος“ ἐν δὲ τῇ Σωόδῳ γράφεται Θεόδωρος: ) ῥητέον (ἀπεκρίνεται) ὅτι καὶ „τῷτο ἐκείσιν ψεῦδος ἐστὶ τῶν Λατίνων“ καθότι ὁ Ἰσιδωρος ἦν καθηρημένος, ὡς ἡ „Ἐκκλησιαστικὴ Ἱστορία τῶν Ῥώσων μαρτυρεῖ. Ἀλλ' ἐνταῦθα παρασημαστέον „ἡμῖν“, ἥτις ἀκριβῶς ἔχουν, ὅπερ ἐπὶ τῷτο ἐφεξῆς ὑπὸ τῷ Δοσίθεῳ προσίθεται“ ὅτι δὴ ἦν ἐν τῇ ἐν Φλωρεντίᾳ Σωόδῳ Ῥωσίας Φώτιος, καθὼς γράφει ὁ „Συρόπελος“ ἐν δὲ τῇ παρῇ Σωόδῳ, ἡ γραφικὸν σφάλμα ἐγένετο, καὶ ἐγράφη ἀντὶ Φωτίου Θεόδωρος, ἡ ἀποθανόντος τῷ Φωτίῳ ἐγένετο Θεόδωρος. Οὐ γὰρ ἐν τῇ Φλωρεντινῇ Σωόδῳ Φώτιος ὡς, εἰ δὲ τῷτο φησὶν ὁ Συρόπελος, ἀλλ' ἐκείνο: ὅτι πρὸ τῷ συζητῶν τῷ Σωόδῳ, βελῆς γινομένης καὶ σκέψεως, περὶ τῆς τῶν Ἀνατολικῶν εἰς Ἰταλίαν ἐπιδημίας, ὁ Πατριάρχης ἀσύμφορον ὑπετίθετο τὸ παρὰ τῶν ἄλλοτεῖς ἀπελθεῖν, συμφέρεν δὲ μᾶλλον παρὰ σφίσι τιτὸ Σωόδον ἐν Κωνσταντινῇ πόλει συγκροτηθῆναι: δεῖσαν δὲ χρημάτων, συνεβέβηκε τῶν Ἀρχιερέων ἐκ τῶν αὐτοῖς περιττῶν καταβαλεῖν „Καὶ ἐλόγισται ἔν ἑφασκε πρὸς „τοῖς ἄλλοις.“ καὶ ὁ Ῥωσίας Φώτιος μετὰ βίῃ πολλῇ καὶ ἁσπρῶν ἐπέκεινα τῶν ἑ. χιλιάδων“ καὶ λήψεται ἐξ ἐκείνῳ ὁ Βασιλεὺς μετὰ ευκολίας ἁσπρῶς καὶ (Συρόπ: Ἱστορ: τῆς Φλωρεντ: Σωόδου Τμήμ: Β'. Κεφαλ: ΙΗ'. Σελ: 14 ) ἐξ ὧν συνάγεται προκάτοχον τῷ Ἰσιδώρῳ γενέσθαι τὸν Φώτιον, ἔχον δὲ, ὡς ὑπολαμβάνειν ἔοικε Δοσίθεος“ ) διάδοχον. Τῷ δ' ὄντι, ἐπὶ τῷ Καταλόγῳ τῶν Μητροπολίτῶν Ῥωσίας παρὰ τῷ Νεωτέρῳ Συγγραφεῖ Γάλλῳ (ἐν ταῖς Ἐφημερίσι Πολωνίας τε καὶ Ῥωσίας ταῖς ἐν Πάρισι: ἐκδοθείσαις ἐν ἔτει 1770.) ἐπὶ μὲν τῷ 1409. ἔτες, Μητροπολίτῳ Κιαιῶν προαχθῆναι Ἰστέριον Φώτιον τὸν Λατινολέγκην, καὶ διὰ τῷτο Λιθουανῶν μὲν ἀπαρέσκηται, ἀπασὶ δὲ τοῖς Ῥωσῖας Ἐπισκόποις ἀποδεκ-

Ε Ξ Ξ Ξ Ξ Ξ Ξ Ξ 2

τὸν



ἔφθηνεν ἰδόντες Ἰσίδωρον, ἐκ τῆς Φλωρεντινῆς ἐπανιόντα Σιωδό-  
δα, παρὰ τῶν ἰδίων ἀποβληθῶσι· μᾶλλον δὲ κατὰ Κρομέρον  
ἀπελαθέντα, καταναγκαθῶσι ἐπὶ Ῥωμῆς καταφυγεῖν· ὑποχω-  
ρήσαντος δὲ τῷ Ἰσιδώρῳ, πῶς ἐκ εἰκὸς ὡς Μητροπολίτῳ ἕτερον  
χειροτονηθῶσι τὸν ἐκείνῃ τὸν Θρόνον διαδεξόμενον; Τῷ ὄντι  
δὲ, Γρηγόριόν τινα ἐν Κωνσταντινουπόλει ἡγεμονδύοντα κατὰ τὸ  
1442. εἰς Μητροπολίτῳ προβληθῶσι Κιαβία, ἡ Ῥώσων Ἱστορία  
διέξασιν· ὅς δὴ πότερον, τῶν τῇ Ῥωμᾶν Ἐκκλησίᾳ σωενωθέν-  
των τις ὡς, ἢ ἔχι; ἢ γὰρ ὁ αὐτὸς τῷ Δωροθέῳ, μεταποιηθέντος  
κατά τινα παρατροπὴν ἐπὶ τῆς Σιωδῶδ αὐτῷ τῷ ὀνόματος; ὃ τῷ  
παρόντος ἐστὶν ἀκριβέστερον ἀναζητεῖν. Ἀπόχρη γὰρ ἐκ τῆς ἐκείνῃ  
προβιβασμῶς τὸ Ἀλλατίς Ἐπιχείρημα κατελέγεσθαι, τῷ διὰ τῆτο  
μηδένα ἄλλον τότε Κιαβίας Μητροπολίτῳ, φέρ' εἰπεῖν τὸν Δωρό-  
θεον· γενέσθαι σωάγοντος, ὅτι Μητροπολίτης ὑπῆρχεν αὐτοῦ ἐκείνῳ  
Ἰσίδωρος.

Ταῦτ' ὅσον προαθήσομεν, ὅτι ψεύσεως ἐστὶν ὁ Ἰησεΐτης (57)  
πρὸς γε τοῖς ἄλλοις ἐπικομπάσων· τὴν Ῥωσὶαν σωάμα τῷ εἰρη-  
μένῳ Γρηγορίῳ τὴν ἐν Φλωρεντίᾳ τότε παραδέξασθαι ἔνωσιν.  
(58) „Ἡτήσατο (λέγων) παρ' αὐτῶν· (Ἰσίδωρος παρὰ τῷ Πάπᾳ·)  
„ἵνα ὁ Σιωδοιπόρος αὐτῷ Γρηγόριος, Μητροπολίτης Κιαβίας  
„Χειροτονηθῇ, καὶ τῆς αἰτήσεως ἐκ ἀπέτυχεν· ἦμε γὰρ εἰς  
„Πολωνίαν μετὰ τῶν παρὰ τῷ Πονίφικος Γραμμάτων ὁ Γρηγόριος,  
„δι' ὧν παρὰ τῷ Βασιλεῶς ἐξήτατο, ὅπως ἂν ἐπαρκέσῃ τῷ Γρη-  
„γορίῳ πρὸς τὸ λαβεῖν τὴν Μητρόπολιν. — ἡθελον δὲ ἀντιτιθεῖσθαι  
„τάτῳ οἱ Μόχοι, διὸ καὶ νέον σφίσι Μητροπολίτῳ τὸν Ἰωάνν' ἐξε-  
„λε-

τὸν καὶ σεβασμιον. Μετὰ δὲ Φώτιον ἐν ἔτει 1438. Ἰσίδωρον χειροτονηθῶσι τὸν  
Ἀποστόλῳ, καὶ τῆς ἀποστασίας γέρας τὴν Καρδινάλιῳ ἀξίαν ἀπενεγκάμενον.  
Ἰσιδώρῳ δὲ Διάδοχον χρηματίσαι Ἰωάνν' τὸν ἀπὸ Ῥεζανίης· περὶ δὲ ὁ Γάλλος Συγ-  
γραφεὺς τῶν Ἐφημερίδων προσέειπεν· Son zèle ardent pour le Schisme, fit tomber  
Le choix sur Lui: (ὅτι ὁ ζῆλος ὑπὲρ τῆς Σχίσματος ζήλος ὃν εἶχεν, ἐπ' αὐτῷ πε-  
σῆναι τὴν Ἐκλογὴν ἐποίησεν.) ἔτει 1448. Ἰωάνν' δὲ διαδεχθῶσι Θεόδωρον τὸν ἀπὸ  
Ῥωσσίας, ἐν ἔτει 1460. Ἀλλ' εἴπερ ἔτος ἦν, ἢ δοκεῖ, τῆτο 1450. καὶ ἔχι  
1460. ὁ Θεόδωρος τυχὸν ἔτος ὑπῆρχεν (ἔχι Δωροθέος κατ' Ἀλλατίον, καὶ τὸν  
Ἀλλατίῳ συμπαρακρεθέντα Ζαϊνικάσιον.) ὁ ἐπὶ τῆς ἐν Κωνσταντινουπόλει ὑστάτης  
Σιωδῶδ καθυπογραφάμενος. Ἀλλ' ἐφείδω περὶ τῆτος ζητεῖν καὶ κρίνειν, εἴπερ  
ἔχει τις ἄμεινον.

(57) Κιχώσιος ἐν τοῖς περὶ τῆς Ἀρχῆς τῷ Πάπᾳ, Προτάσει Θ'. Σελ: 267.

(58) Ὁ μὲν Ἰησεΐτης Κιχώσιος διατείνεται, μετὰ τὴν τῷ Ἰσιδώρῳ ἀπέλασιν, ὑπὸ τῷ  
ἐκείνῳ σιωδοιπέρῳ τε καὶ σιωποσάτῃ Γρηγορίῳ, ὑπεργῶς τε γενομένη καὶ ῥέκτῃ,  
τὴν Ῥωσσίαν τῇ Ῥωμᾶν Ἐκκλησίᾳ σωενωθῶσι. Ἀλλ' ὁ τῶν Ἐφημερίδων Συγ-  
γραφεὺς Γάλλος, ἔπερ ἀνωτέρῳ (Σῆμ: 55) ἐμνήσθημεν· ἅπαν τῶν αὐτῶν ἐπιμαρτυ-  
ρεῖ, γράφων ὅτι τὸ ἀπ' ἐκείνῳ ἦτοι τὸ ἀπὸ τῆς Ἰσιδώρῳ καθαιρέσεως· παρὰ  
τοῖς Ῥώσσοις τὸ πρὸς τῆς Λατίνης χίσμα ἐπὶ τὸ μᾶλλον ἐκραταιώθη καὶ ἐπε-  
σῆκεται: C'est à la deposition du Metropolitte Isidore qu' on doit recourir pour  
trouver la veritable Epoque de l' affermissement du Schisme en Russie.

„λέξαντο. (59) Ἀλλ' ἡ Ῥωσσία ἢ τῷ Βασιλεῖ Πολώνων ὑποκειμένη, ὑπεδέξατο Γρηγόριον μετὰ τῆς ὑπ' αὐτῷ διακηρυχθείσης ἐνώσεως. (60) ὡς γὰρ ἀνωτέρω φθάσαντες ἀπεδείξαμεν, εὐδόλως ἡ Ῥωσσία τὴν τοιάνδε ἡπάασατο ἔνωσιν. Καὶ τῆτο δὴ πρὸ πάντων ἐδήλυν αἱ Κασιμίρς τῷ Πολώνων Βασιλέως Ἐπιστολῇ, αἱ κατὰ τὸ 1451. γραφῆσαι, ἐν αἷς ἐκεῖνος ὡμολόγει, μηδὲν τῆς ἐνώσεως, τὴν ὑπὸ τοῖς Πολώνοις τελεῖσαν Ῥωσσίαν ἐς' ἐπ' ἐκεῖνο ἀσπάσασθαι. Πῶς ἔν ἐν Ἐτὶ 1422. σιῶμα τῷ Γρηγορίῳ τὴν ἐν Φλωρεντία γενομένην ἔνωσιν ἡ Ῥωσσία προσήκατο; ὁπότε καὶ ἐκ τῆς Βρεξιωσίας Σιωδὸς, δυοῖν τῶν ἐκ Ῥωσσίας Ἐπισκόπων (μηδὲν τῶν λοιπῶν σιωιδότων) πανουργότατα ἐς Ῥώμην ἀφικομένων, καὶ ὡς ἐξ ὀνόματος δῆθεν καὶ τῶν ἄλλων, ἐν Ἐτὶ 1595 τὴν ὑποταγὴν τῷ Πάπα κατεπαγγεिलाμένων ἔτω κελύσει τῷ Πάπα ΣΤ' ΛΒΙΟΣ ὁ ἈΝΤΩΝΙΑΝΟΣ ὁ Ἀσηκρίτις αὐτῷ ὑπάρχων, τοιαῦτα ρητορδύσας ἐδημηγόρησε, παρὰ ΒΑΡΩΝΙΩΙ, ἐν τῷ πρὸς τὸν Ζ'. Τόμον Ἐξαρήματι: „Ἐπὶ τὴν πέτραν τῆς Πίσεως, ἐφ' ἣν Χριστὸς ὁ Κύριος ἡμῶν ὠκοδόμησε τὴν Ἐκκλησίαν αὐτῷ, ἐπὶ τὸ ὄρος τὸ Ἅγιον, ἐν ᾧ κατοικεῖν εὐδόκησεν ὁ Θεός· πρὸς τὴν „Μητέρα καὶ Διδάσκαλον πασῶν τῶν Ἐκκλησιῶν, τὴν Ἁγίαν „Ῥωμάναν Ἐκκλησίαν ἐπιστρέψε ὡς ῬΩ' ΣΣΟΙ Ἐπίσκοποι μετὰ „ἔτη ΡΝ'. κατὰ μεγάλῳ πάντως καὶ ἐξαίρετον τῷ Θεῷ εὐεργεσίαν πρὸς τε ὑμᾶς αὐτὰς, καὶ πρὸς τὸ ἔθνος ὑμῶν· τοσαύτῳ „χαρὰν τῷ Ἀγιωτάτῳ Κυρίῳ ὑμῶν προμνησδύσαντες, ὅσις κα „ἔσι

- (59) Οὐ μόνον (ἤθελον) ἀλλὰ καὶ πρᾶγματι (ἐξελέξαντο.) κατὰ γὰρ τὸν τὰς Ἐφημερίδας χρονογραφῆσαι βηθελία Γάλλοι: Son zele ardent pour le Schisme fit tomber le choix sur Lui. τετέστι καὶ γὰρ, ὅτι οἱ πόρρω τῆς μετὰ Λατίνων ἐνώσεως ἀπέχοντες Μόχοι, ποιμένα ἑαυτοῖς ἡρετίσαντο· τὸν αὐτοῖς ὁμόφρονα καὶ ὁμόδοξον Ἰωάνν, ὡς τὸ πρὸς Ἰταλὸς χίσμα μετὰ περιφλεγῶς τῷ ζήλῳ αἰρέμενον.
- (60) Θαυμαστὸν δ' εἶδεν, εἴτινες τῶν ὑπὸ τῷ Λατίνῳ Βασιλεῖ τελέντων, τὰ τῆς Λατινικῆς ὑπέθαλπον Ἐκκλησίας φρονήματα· ἀλλ' ἀπρὶξ ἔμως εἶχοντο τῆς ὀρθοδόξου αὐτῶν ὁμολογίας τὸ πλεῖστον τῷ ἔθνει καὶ ὑγιέστερον. Ὡς μὲν οὖν τις εἰσὶς ἐγένετο κατ' ἐκεῖνο, ἐπὶ τῇ τῷ Ἀρχιεπισκόπῳ διαψηφίσει, ἀκασέον τῷ Ἐφημεριδογράφῳ Γάλλῳ, διεξιόντος ἔτιως ἐν τῷ Χρονικῷ τῆς Ῥωσσίας τὰ γεγόμενα: „Ἐν Ἐτὶ 1465. Ἀρχιεπισκοπῆντος Φιλίππς τῷ Α'. ἢ κατὰ Νοβογοροδίαν Ἐκκλησίαν, „τῆς ἐν τῇ Ῥωσσίᾳ ἀπέχιστο, ἔνεκα τῆς Ἐκλογῆς τῷ Ἀρχιεπισκοπήσαντος. Οἱ „μὲν γὰρ Θεόφιλον πρεβάλλοντο τῷ Σχίσματι ἀντιποῖντον (τετέστι τὴν μετὰ Λατίνων ἀδέκιμον ἔνωσιν ἀποστέργοντα.) οἱ δὲ, (οἱ ἐν τῇ Ῥωσσίᾳ δηλονότι, τῇ τῷ Βασιλεῖ Πολώνων ὑποκειμένη) προηρῶντο Γρηγόριον, τὸν τῆς Ἐκκλησίας ἀντιχόμενον τῆς Λατινικῆς. „Ἀλλ' ὁ τῆς Μεγαλοπόλεως ταύτης, (ἦτοι ὁ τῆς Νοβογοροδίας) λαὸς, τῆς τῶν πρώτων μερίδος ὢν, ἀποσείσασθαι διηπείλει τὴν τῷ „Μεγάλῳ Δεκός Ἀρχιῷ. Γνωὴ δὲ τις ὀνόματι Μάρθα, γένειτε καὶ πλεῖστε „πεισιὰ ἐπίσημος, τῆς εἰσιώτας ἐτύγχανε διεγέρσας· ἥτις δὴ, εἰδὲν τι ἥτιον ἢ „τῆς γάμψς τῷ Μεγάλῳ τῆς Λιθανίας Δεκός Μιχαήλ, (τῷ, ἢ δοκεῖ καὶ αὐτῷ „ἀλλοθίως ἔχοντος τῆς μετὰ τῶν Λατίνων ἐνώσεως.) ἐτύγχανεν οἰεροπολῶσα, „καὶ τὴν Νοβογοροδίαν διωασείαν οἶονεῖ προῖκα προῖχουσα· εἰσατίας γεμὴν κατὰ „τῶν εἰσιωσῶν ἐπιπεμφθείσης, ἐλώφησε τὰ τῆς εἰσιωσῆς.

Τόμ: Β'.

Ζ ζζζζζζζζ

„ἔσι λόγῳ δαψίλεια, εἰδ' ἐκφράσεως δυνάμεις, ἥτις ἂν ἀποχρώντως  
 „ἐρμηνεύσαι ἰχύσει. — Καὶ μετὰ ταῦτα: "Ετοιμος ἐσὶν ὁ Ἅγι-  
 „ώτατος Κύριος ἡμῶν μετὰ πατρικῆς ἐννοίας, ὑμᾶς τε αὐτὰς, καὶ  
 „τὸν ὑμέτερον Μητροπολίτην, καὶ τὰς Σωεπισκόπους ὑμῶν, καὶ τὸ  
 „Ἔθνος ὑμῶν τὸ Ῥωσικὸν, τὰς τῆς Ἀγάπης διανοίξας ἀγκάλας  
 „πρὸς κοινωνίαν καθυποδέξασθαι,,. — Εἰ γὰρ ἐν "Ετει 1595.  
 ἐνιαυτοὶ ἤδη ἠριθμῶντο 159. ἐξ ἧς Λατίνοις ἡ Ῥωσία εἶχ' ἥνωτο.  
 (ἐξ ἀφορμῆς δὲ ἄλλως Ἰσιδώρ τῇ Ῥωσσίᾳ Μητροπολίτη, τῷ  
 Ῥωσσίαν ἡγήται ἐπεγνωκέναι, ὡς ὁ Πάπας ὑπερδιαλείνεται ἔχειν  
 ὑπεροχὴν) τίνι λόγῳ σπῆμα τῷ Γρηγορίῳ, τῷ ἐν Φλωρεντίᾳ  
 ἔνωσιν ἡ Ῥωσία ἀσπάσται; ἢ γὰρ (ὡς ἄλλως ἀξιῶσι Λατίνοι)  
 πῶς ἄχρι τῶν 1516. ἡ Ῥωσία πᾶσα τῇ Ῥωμάνῃ Ἐκκλησίᾳ  
 ὑποκείμετο; (61) Οὐ χρὴ Λατίνοις ἄρα παραυτίκα πισθεῖν, ἐπειδὴν  
 ἐπὶ τῇ μετὰ τῆς Ῥωμάνης Ἐκκλησίας ἐνώσει, Πατριάρχας τε,  
 Φασὶ, καὶ Μητροπολίτας, καὶ Ἀρχιεπισκόπους, καὶ ὅλα Ἔθνη, ἐπεγ-  
 νωκέναι ὡς ἰδίαν κεφαλὴν τὸν Ποντίφικα. (62)

H'.

(61) Λέων ὁ Κρεῖσσας, ἐν τῷ Βιβλίῳ τῷ περὶ τῆς ἐνώσεως τῶν Ἐκκλησιῶν.

(62) Ἐπεὶ οὖν, ἐξ ἀφορμῆς τῆς τυχεύσης, Φιλονεικῶσι Παῖδες Λατίνων, τῆς μετ'  
 αὐτῶν ἐπὶ τοῖς καινοτομηθεῖσι Δόγμασι κοινωνίας, μείσχος γενομένης ἀποδείξαι  
 τὰς Ῥώσους ἐτι καὶ ἁκούσας, ἐκ ἀπο σκοπῆ ποιήσιν μοι δοκῶ, εἰ παραδείλω ὡς  
 τῶν ἀνέκαθεν Ῥωσσίας Μητροπολιτῶν τὸν Κἀλάλογον, ὡς ἔχει ὑπὸ τῆς πλέον ἢ  
 ἀπαξ μνημονεύθεις Γάλλων κἀλαγραφίαις, ἐν τῷ τῶν Ῥωσσιακῶν Ἐφημερίδων  
 χρονολογικῷ ἀντίπιννακι.

"Ετει 988 — Α'. ΜΙΧΑΗΛ Σύρος Μητροπολίτης Κιαιβίας, ὑπὸ Μιχαὴλ τῷ Χρυσό-  
 βέργῃ Πατριάρχῃ Κωνσταντινουπόλεως χειροτονηθείς, ἀπεσάλη τῷτον  
 ὡῶθαι, Φησὶ, Λατίνοις ὡς πρὸ τῆς Σχίσματος, τῇ κατὰ τὸ 1043.  
 ἐπὶ Μιχαὴλ τῷ Κηρυλαρίῳ συμβαίῳ, (καίτοι γε καὶ πρότερον  
 μὲν ὑπωδινομένη, τότε δ' εἰς τὸ ἐμφανέστερον ἐκραγέλιος. Ἀλλ'  
 εἰδὲν μάλλον ἢ Ῥωσσιακῇ Ἐκκλησίᾳ τὸ τιμικαῦτα ἥνωτο τῇ τῶν  
 Λατίνων, ἥπερ ἢ τῆς Κωνσταντινουπόλεως, ὑφ' ἧς ὁ Κιαιβὴς Μητρο-  
 πολίτης ἐχειροτονεῖτο καὶ ἀπεσέλλετο.)

992 — Β'. ΛΕΩΝ, ἢ ΛΕΟΝΤΙΟΣ ὑπὸ Νικολάου τῷ Πατριάρχῃ Κωνσταντινουπό-  
 λεως χειροτονηθείς.

1008 — Γ'. ἸΩΑΝΝΗΣ . . . . Ἀλλως ἸΩΝΑΣ.

1038 — Δ'. ΓΕΩΡΓΙΟΣ, ΝΙΚΗΦΟΡΟΣ . . . . (ἐκ' οἷδ' ἀνθ' ὅτου) ἐκκλείεται.

1048 — Ε'. ΘΕΟΠΕΜΠΤΟΣ.

1051 — ς'. ἸΛΑΡΙΩΝ. Οὗ καὶ τῇ ἐπὶ Κηρυλαρίῳ Σχίσματι ἀναφύγιος, μέναι  
 ἐν τῇ μετὰ Λατίνων ἐνώσει. Πόθεν δὴλον; ἔτι τῷτον (Φησὶν) ὁ  
 τῆς Ῥωσσίας ἐξελέξατο Κλῆρος. (Ἀλλ' εἰδὲν ἀπεικός, εἰ τῷτον καὶ  
 τὰς ἄλλας ἐξῆς, ὁ μὲν τῆς Ῥωσσίας Κλῆρος πρεσβύτερος, ἐπιδό-  
 κει δὲ ὁ Κρατὼν τοῖς πρεσβυτέροις· ὁ δὲ τῆς Κωνσταντινουπόλεως  
 Θρόνος τῷ χειροτονίαν ἐπέτρεπε, τὰς σωήθεις Κανονικὰς Ἐκδόσεις  
 ἢ Πράξεις, τοῖς χειροτονουμένοις παρέχων, ὡς κοινωνοῖς καὶ ὁμόφρο-  
 σιν. Εἰπάτω δ' ὁ Γάλλος, εἰ καὶ τῆς τῆς Κωνσταντινουπόλεως κοι-  
 νωνίας τότε ὁ Ἰλαρίων ἀπέστη. Ἀλλ' ἐκ' αὐτοῦ εἶχαι δεῖξαι ποθέν.)

1071 — Ζ'. ΓΕΩΡΓΙΟΣ ὁ Β'.

1076 — Η'. ἸΩΑΝΝΗΣ ὁ Β'.

1077 — Θ'. ἸΩΑΝΝΗΣ ὁ Εὐνέχος.

Ἐτει

Η'. Οὐδὲν ὅ,τι καὶ ἰχύσειεν ὥδε ἦδε ἡ "Ενσασις" ἐπεὶ ἐχλ  
κατὰ τὸ 1440. "Ετος, ἀλλὰ κατὰ τὸ 1450. ἡ περὶ ἧς ὁ λόγος  
συγκεκρότηται. Σινώδος. (63)

Θ'.

- \*Ετε 1078 — Γ'. ΕΦΡΑΙΜ. Καὶ τέτον δὲ (Φησὶ) τῆς τῶν Λατίνων κοινωνίας γενέ-  
θαι· εἰ γὰρ ἂν ἄλλως ἐορτάζεν ἡρεσία τινὶ τῶν Λατίνων τῇ  
Θαυματουργῇ Νικολάῳ ἀπὸ Λυκίας εἰς τὸ Βάριον ἀνακομιδῇ. (ὡσα-  
ναι καὶ ἡ Ἀνατολικὴ ἅπασα Ἐκκλησία, τὰς Λατίνων τότε ἡσά-  
σατο καινολογίας, διὰ τὸ ἐορτάζειν ἐτησίως διατυπώσασθαι, τινὶ  
ἀπὸ τῶν τῆς ἐκείνης χώρας ἐπικρατησάντων Δυσσεβῶν βαρβάρων, τῇ  
Γερῇ Σκλώως ἀλλαχόσε μετακόμισιν.)
- 1103 — ΙΑ'. ΝΙΚΗΦΟΡΟΣ Β'. Ἐπὶ τέττῃ Βολέσλαος Γ'. ἐξητήσατο (Φησὶν)  
ἄδειαν παρὰ τῇ Πάπᾳ Σβυσλάδαν γαμῆσαι τινὶ Σβιαλοπόλκε θυ-  
γατέραν, Συγγενίδα αὐτῇ τυγχάνουσαν. (ὡς εἰ καὶ ὁ Κωνσταντινουπό-  
λεως Πατριάρχης Νικέλαος ὁ Μυσικός, καὶ οἱ κατ' ἐκεῖνο Γραικοὶ  
πάντες λαλίσαιεν, τῆς ἀπὸ Χριστοῦ Γ'. ἀρχομένης Ἐκκλησιαστικῆς,  
ἐπειδὴ Λέων ὁ Σοφὸς τινὶ τῆς τείραγαμίας ἄδειαν, παρὰ τῇ Πά-  
πᾳ ἐξητήσατο.)
- 1132 — ΙΒ'. ΝΙΚΗΤΑΣ  
1142 — ΙΓ'. ΜΙΧΑΗΛ { Περὶ τέτων οἱ Λατῖνοι εἰδὲν εἶπεν ἔχουσιν.  
1161 — ΙΔ'. ΚΥΡΙΛΛΟΣ  
1165 — ΙΕ'. ΚΛΗΜΗΣ. Περὶ τέττῃ ὁμολογεῖ ὁ Χρονογράφος, ὅτι ἐπ' αὐτῇ  
τὸ Σχίσμα τὸ τῶν Γραικῶν καθίσταται· καὶ τοιγαυτὶ τῇ Κλήρῳ (προ-  
σέειθαι) Κλήμεντα τὸν ἴδιον αὐτῇ Μητροπολίτῃ ἐκλεξαμένον. (Ἀλλ'  
εἰδὲν ἀπεικὸς τὸ τὸν Κλήρον εἰς ἴδιον αἰρεῖσθαι ποιμένα, ὃν ὁ Πα-  
τριάρχης ἐπιγινώσκει ἐαυτῷ σύμφρονον.)
- 1176 — Ις'. ΚΩΝΣΤΑΝΤΙΝΟΣ.  
1182 — ΙΖ'. ΘΕΟΔΩΡΟΣ.  
1226 — Κ'. ΜΑΤΘΑΙΟΣ, ἡ Ῥωσσιακὴ (Φησὶν) Ἐκκλησία μεμέρισται περὶ τὸ Σχί-  
σμα. (Καὶ πλέον εἰδὲν ἔχει ὅ,τι περὶ τέττῃ καὶ Φαίῃ.)
- 1238 — ΚΑ'. ΚΥΡΙΛΛΟΣ Β'.  
1248 — ΚΒ'. ἸΩΣΗΦ ἐκ Νικαίας· ὑπὸ τέττῃ (Φησὶν) ἡ Ῥωσσιακὴ Ἐκκλησία  
ἰωώθη αὐτῇ τῇ Λατινίδι· (ἐκεῖν πρὸ τέττῃ ἀφίστατο· ἀλλὰ καὶ ὁ  
λέγει ἐκ τίνων ὑπομνημάτων ἔχει λαβῶν; ἐξ εἰδένος.)
- 1252 — ΚΓ'. ΚΥΡΙΛΛΟΣ Γ'. Ἐκ τέττῃ δὲ (Φησὶν) οἱ Ῥῶσσοι ἐπαύσαντο τῇ τὸν  
Πάπαν ὡς Κεφαλὴν ἀφορᾶν τῆς Παγκοσμίας Ἐκκλησίας. (Πότε  
οὖν ὡς τοιοῦτον ἀπέβλεπον; ἢ, ἀπὸ 1248 — 1252. τεττέρι δι' ἐτῶν  
4. καὶν τέτο τις δὴ Λατῖνοις προσφιλοτιμύμενος· πῶς γάρ;)
- 1253 — ΚΔ'. ΜΑΞΙΜΟΣ, Ἐφ' εἰ (Φησὶ) Γρηγόριος ὁ Κωνσταντινουπόλεως Πα-  
τριάρχης τὸν Ῥωσσίας Θερόνον ἀπὸ Κιαιῖβας εἰς Βλαδιμιρὶαν μετάνε-  
γε, καὶ τεῦθεν εἰς Μοσχόβιαν. Καθ' ὃν δὴ χρόνον καὶ ὁ Λιθουανίας  
Δεξ, τοῖς ὑπ' αὐτὸν μὲν τελεῖσι, τὰ δὲ τῆς Ἀνατολικῆς Ἐκκλη-  
σίας ὅργια θρησκείᾳ δέμοις, Μητροπολίτῃ ἴδιον ἐλέσθαι ἐπέτρε-  
ψε. Προσέειθαι δ' ὅτι: La Politique dicta cet ordre; (ἡ πολιτικὴ  
φρόνησις τότε τὸ Διάταγμα ὑπηγάγεον.)
- 1305 — ΚΕ'. ΠΕΤΡΟΣ ὁ Θαυματουργός, ὁ ὑπὸ τῇ Κωνσταντινουπόλεως Πατριάρχῃ  
χειροτονηθείς.
- 1328 — Κς'. ΘΕΟΓΝΩΣΤΟΣ.  
1353 — ΚΖ'. ἈΛΕΞΙΟΣ ὁ Θαυματουργός.  
1373 — ΚΗ'. ΖΩΣΙΜΟΣ ὁ Γερόντιος· Σχίσματος δὲ ἐπὶ τῇ ἐκλογῇ γενομένου,  
ὑπετέθη ὡς τὸν Ἀλέξιον διαδεχόμενος ὁ ἐξῆς.
- 1379 — ΚΘ'. ΚΥΠΡΙΑΝΟΣ.  
1409 — Λ'. ΦΩΤΙΟΣ ὁ σφοδρῶς Λατῖνοις ἀντιφερόμενος, καὶ διὰ τέτο ὑπὸ  
τῶν Λιθουανῶν, ἐν ἰδίᾳ αὐτῶν Σινώδῃ καθαιρεθείς, ἀντιπαρὰσησάν-  
των ἄλλων· παρὰ δὲ τῶν ἐν τῇ Μεγάλῃ Ῥωσσίᾳ ὡς γνώσιος ἐς  
τέλος ἀπεδεκτός· (περὶ εἰ ὅρα ἀνωτέρω ἐν Σημειώσεσι τῇ 55.).)

(63) \*Ορα ἀνωτ: ἐν Σημειώσεσι 53.

Z 555555 2



Θ'. Ἡδωάτο μὲν ἐπὶ τῆς Φλωρεντινῆς Συνόδου Ἀθανάσιος ἔτος παρῶν, ὑποδεεσέρας τότε ὡν κατασάσεως. (64) Ἐνιαυτῶν δ' ἔπειτα διαδραμόντων, τῶν ἀπὸ τῆς ἐν Φλωρεντίᾳ Συνόδου ἄχρι τῆς 1450. εἰς τάξιν προαχθεὶς ἀνωτέραν, τίνος ἕνεκα ὕψερον, ἐπὶ Πατριαρχίης ἡρέθη, τῷ Ἡρακλείᾳ τε καὶ τῷ Ἐφέσῳ ἑαυτὸν συγκατονομάσαι ἔκ ἔχεν;

Γ'. Τῆ δὲ τὸν Κωνσταντινουπόλεως Πατριάρχῳ παρὰ τῶν ἄλλων τότε, καὶ ἔχι παρὰ τῆς Ἡρακλείας χειροτονηθῶναι, ποικίλ' ἄλλα παρεμπесῶν ἔχε τὰ αἷτια· ὥστε ἔδ' ἐνλεῦθεν ἄν τι συμπερανθείη κατὰ τῆς Ἀθανασίᾳ Πατριαρχίας ἔυλογον. (65)

ΙΑ'. Πάντως δὲ ὁ Κυζίκης Μητροφάνης, ὁ ἐν ἐκείνῃ τῇ Συνόδῳ παρσιάσας, ἕτερος τις ὢν τῆς Κυζίκης Μητροφάνης, τῆς ἐν Κωνσταντινουπόλει Πατριαρχεύσαντος. Τὸ δὲ ἐν τῇ ὑπογραφῇ τὸ αὐτὸ ὄνομα ἀπαντᾷ, ξένον ἔδεν. Αὐτὸ γὰρ τῆτο καὶ ἐν τοῖς Πρακτικοῖς τῆς κατὰ Φλωρεντίαν Συνόδου συμβῶναι, ἥδη δὲ δεκτῶν. (66)

ΙΒ'. Ὁρθῶς δὲ ἐλέγετο, καὶ τὸ τῷ Φλωρεντινῷ Συνόδῳ, διὰ τὸν ἐπισκήψαντα λοιμὸν διακοπιῶναι. Ἐφ' ἐνὶ γὰρ καὶ τῷ αὐτῷ ὀνόματι καὶ

(64) Πρὸς τόδε, ὡς πρὸς τὸ Δ'. τῶν Λατινικῶν Ἐπιχειρημάτων, Δοσίθεος ἀπαντῶν: (ἐν Παραγ: Β'. τῆς Θ'. Κεφαλ: τῆς Γ'. Βιβλ: Σελ: 915.) „Τέταρτον, Φησὶν, ὅτι ἡ „Συνὸς λέγει τὸν Περιβλέπτη Ἡγούμενον Ἀθανάσιον γεγονέναι Πατριάρχῳ Κωνσταντινουπόλεως· ἐφεξῆς (ἐν Παραγ: Γ'. Σελ: 916.) πρὸς τὸ τέταρτον ῥητόν „(Φησὶν) ὅτι ἔ γράφεται ἐν τῇ Συνόδῳ, ὡς ὁ Ἡγούμενος τῆς Περιβλέπτου Ἀθανάσιος ἐγένετο Πατριάρχης· ἀλλ' ἀπολελυμένως: ὅτι Ἀθανάσιος ἐγένετο Πατριάρχης. Ἐν δὲ τῇ ὑπογραφῇ φέρεται: ὁ ποτὲ Ἡγούμενος τῆς Περιβλέπτου Ἀθανάσιος. Ἐξ ἧς δέκνυται ὅτι διαφέρει θάτερος θάτερος.”

(65) Πρὸς τῆτο δὲ τὸ παρ' αὐτῷ καλεσθέντος ὁ Δοσίθεος (Αὐτ: Σελ: 916.) ψευδὸς „ἐστὶ (Φησὶ) τό: ὁ Κωνσταντινουπόλεως μὴ χειροτονηθεὶς ὑπὸ τῆς Ἡρακλείας, ἔκ ἔστι „Πατριάρχης· ἔδεις γὰρ τῆτο ἔπε, πλὴν τῶν Νεωτεριστῶν καὶ προφάσεις ζητῶν „των ἐπὶ κάλαςροφῇ τῆς ἀληθείας. Ἐχειροτόνησαν γὰρ οἱ τρεῖς τὸν Ἀθανάσιον „Πατριάρχῳ πρότροπῇ τῆς Συνόδου, ἐν ᾗ ἔ παρὶν ὁ Ἡρακλείας· ὅς ἴσως, διὰ „περίσσειαν τινα, ἔκ ἡδυνήθη παρῶναι ἐν τῇ Χειροτονίᾳ· ἢ, ἔτως ὥρισεν ἡ Συνὸς, „ἥτις καὶ Πατριάρχας χειροτονεῖ τῇ ἰδίᾳ Αὐθεντίᾳ, ἀνωτέρα ἔσα τῶν τοιούτων „διατυπώσεων· ὅθεν ἡ Β'. ἔδωκε τὰς Θρόνους, τῷ Ἱεροσολύμων καὶ τῷ Ἀντιοχείας. „Οἱ Ἐπίτροποι τῆς Γ'. Οἰκουμένης ἐχειροτόνησαν Κωνσταντινουπόλεως τὸν Μαξιμιανὸν ἐν Βυζαντίῳ· ἢ Δ'. ἐχειροτόνησαν Ἀλεξανδρείας τὸν Προτέρειον· ἢ ὁ Ἀντιοχείας τὸν Θεοφάνη· ἔτω κἀνταῦθα ἐγένετο.”

(66) Ἀλλ' ὡς δὲ τῷ ἐνστατῶν ἀναιρεῖ Δοσίθεος, ὡς δὲ ἄλλοτε τῶν Λατινικῶν Ἐπιχειρημάτων αὐτῷ προθέμενος, (Σελ: 915.) καὶ ἐπιλυόμενος (Σελ: 96.) „Φησὶ γὰρ ἔτι „κἀν τῇ Β'. Πράξι, κἀν τῇ ὑπογραφῇ, Παρθένιος γράφεται Κυζίκης. Πλάσμα „ἄρα τῶν Παπιστῶν: ὅτι γράφεται ἐν μὲν τῇ Πράξι, Μητροφάνης· ἐν δὲ τῇ „ὑπογραφῇ Παρθένιος.” Ἐφ' οἷς προσίθῃ καὶ τῆς περὶ τῆς Νικαίας ἀπορίας τῷ λύσει. ἔς ἐν τῇ ὑπογραφῇ ἔκ ἔστι Νεόφυτος, ἀλλὰ Σταυράκιος. Περὶ ὧν εἴρηται καὶ ἀνωτέρω ἐν τῇ Ἀπαντήσῃ τῆς ὁ. τῶν Ἀλλατῶν Ἀντιλογιῶν, καὶ ἐν τῇ ἐκῇ Σημειώσει (54).

καὶ παρ' αὐτοῖς Λατίνοις, ἢ αὐτὴ Σινόδος καὶ Φεβρουαριανή, καὶ Φλωρεντιανή. (67)

ΙΓ'. Οὐ πᾶσα ἡ περὶ τῆς Ἱερολεσίας τῶν Μυσηρίων Διάλεξις, περὶ τῶν τῶν Λατίνων ἐσρέφετο πεῦσιν: „Τίνος χάριν οἱ „Ἀνατολικοὶ μετὰ τὰ Κυριακὰ λόγια ἔτι προσδύχεσθε,,; Πολλὰς συζητῆσαι περὶ τῆς ἀνέγνωμεν κατὰ τὴν ἐν Φλωρεντίᾳ Σινόδον Προσδιαλέξεις, ἐπὶ τῆς ΚΖ'. τῶν ἐκεί Σωελύσεων καὶ τὴν τὸ ἀδιώατον, εἰ παρὰ Λατίνων ἐν Λογοτριβαῖς τοσαύταις, προσέθεντο οἱ Ἀνατολικοί καὶ τὸ ὑπὸ τῆς Σινόδου Ἰσορρέμενον διερωτῆσαι καὶ πρὸς δὴ τῆτο, οἱ Λατῖνοι τὸ Ἐρώτημα ἐκείνο ἀπώτησαν; (68)

Ἐχάτον δὲ προσετίθει Ἀλλάτιος, καὶ τὸ τῶν Σινόδων ἔστιν ἐξ τῶν ἐπὶ τῇ Σχίσματος ἀκμασάντων Πατέρων, καί τινες δὲ καὶ τῶν Λατίνων, εἰς μέσον παραγαγέσθαι. (69) Ἀλλὰ τὴν παρὰ τῆτο; τί δ' ἔχει; ὁπότε γὰρ ἄλλοις ἠπίσαντο, ὅτι καὶ Λατῖνοι ἐκ τῶν οἰκείων τινὰς τῶν ἐπὶ τῇ Σχίσματος ἡκμακότων τοῖς Ἀνατολικοῖς πρὸ χειρίσαντο, ἔχει καὶ τέτοις ἀνάπαλιν ἀποδιδόναι τὰ  
ἴσα

(67) Δοσίθεος τὴν λοιμὸν διατίθεται γενέσθαι, τὸν ὑπὸ τῆς Σινόδου μαρτυρηθέντα, καὶ ἄλλοι τῶν Ἱσρικῶν ἐκ ἐμνήσαντο. (Αὐτ.: Σελ.: 916.) Ἀλλὰ προφερεστέρα ὡς ἡ τῇ Ζαρινιασίᾳ Ἀπάντησις.

(68) Καὶ τῆτο δὲ ὡς Η'. τῶν Λατινικῶν Ἐπιχειρημάτων Δοσίθεος, (Αὐτ.: ἐν Παραγράφῳ Β'.) προτίθησιν: „Ὅτι λέγει (ἡ Σινόδος) τὰ τῶν Λατίνων Ἐπιχειρήματα „περὶ τῆς τελειώσεως τῇ Μυσηρίᾳ διελύθη παρὰ τῇ Μιτυλιῶνις,,. (Ἐν δὲ τῇ Γ'. Παραγράφῳ ἀποκρίνεται:) „Ὅτι ψεύδος ἐστίν, ὅτι εἶπεν ἡ Σινόδος τῆτο κτ: „Ἀλλ' ἐν τῇ Δ'. Σωελύσει τόσον μόνον φέρεται: ὅτι ἐρωτησάντων τῶν Πατριαρχῶν καὶ ἐπόντων: τί σωπερεάνατε περὶ τῆς ὥρας τῆς μεταβολῆς τῆς Εὐχαριστίας; ὁ Ἐφέσος ἀποκριθεὶς εἶπεν: ἡτήλωται καὶ κατὰ τῆτο, ὡς καὶ κατὰ τὰ ἄλλα οἱ Λατῖνοι.

(69) Τότε δ' ὡς Θ'. τῇ ἀριθμῷ Ἐπιχείρημα ὁ Δοσίθεος ἔτω προτίθησιν: „Ὅτι ἐν αὐτῇ (τῇ ὑσάτῃ Σινόδῳ) φέρονται μαρτυρίαι παρὰ τινων Δυτικῶν Πατέρων, ὧν τὰ ὀνόματα μάλιστα ἐγίνωσκον τότε οἱ Ἀνατολικοί, καθὼς ὁ Ἐφέσος μαρτυρεῖ „ἐν ταῖς Διαλέξεσι ταῖς ἐν Φλωρεντίᾳ,,. Ἀπαιτῶν δὲ καὶ πρὸς τῆτο ὁ Πατριαρχὸς φησὶν: „Ὅτι ὁ Ἐφέσος βλέπων τῆς Λατίνες παρερμηνεύοντες καὶ παραχαράττοντες τα ῥητὰ τῶν Δυτικῶν Πατέρων, ἀγωνιστικώτερον ἔπε, τό: μάλιστα γινώσκοντες τὰ ὀνόματα τῶν Δυτικῶν Ἀγίων ὅτι γὰρ ἔχον οἱ Ἀνατολικοὶ „τίτῳ εἶδον τῶν Δυτικῶν Ἀγίων, πασίδηλον ἐστὶ καὶ πάρεσι μάρτυρες αἱ Οἰκουμενικαὶ Σινόδοι, Γ'. Δ'. Ε'. ζ'. καὶ Ζ'. Καὶ οἱ κατ' αὐτάς Ἅγιοι Πατέρες, ἐν αἷς, καὶ ἐν αἷς, φέρονται μαρτυρίαι τῶν Δυτικῶν Ἀγίων ἡτοι Ἰερίλ, Φήλικος, Δεσνίλος, Ἀνασασίος, Δαμάσχος, Καλεσίνος, Ἀμβροσίος, Ἰλαρίος, Λύγαςίνος, Κυπριανός, καὶ ἄλλων. Καὶ δὴ Μάξιμος ὁ Πλανέδης μετέφρασε τὸ τῇ Λύγαςίνος περὶ „Ἱεράδος εἰς τὴν Ἑλληνικὴν γλῶσσαν. Καὶ ἐπὶ Ἰωάννης τῇ Καντακζιώτῃ μετέφρασεν ὁ Κυδώνης τινὰ τῶν Συγγραμμάτων Θωμᾶ τῇ Ἀκβίνα καὶ τέως μετὰ τὸ Σχίσμα ἐγίνωσκον οἱ Ἀνατολικοὶ τὰς κατὰ καιρὸς παρεκτροπὰς τῶν Λατίνων, καὶ τῆς Συγγραφῆς αὐτῶν. Καὶ ὅπως βλέποντες τῆς Λατίνες παρερμηνεύοντες τῆς Ἀγίας, σιωπῶν μαθεῖν τὴν Λατινικὴν γλῶσσαν, καὶ ἐρμηνεύειν τὰ Συγγράμματα αὐτῶν, εἰς μαρτυρίαν καὶ βεβαίωσιν τῶν Θεῶν Δογμάτων ὡς ἠδὴ παρὰ τῷ Νείλῳ. καὶ τῷ Σχολαρίῳ, καὶ ἄλλοις πολλοῖς. Ἐξ αὐτῶν τινες „παρόντες τῇ Ἁγίᾳ Σινόδῳ, τὰ αὐτὰ ἐποίησαν ἐπὶ πρόσφατον ἔργον ἀποπληρῶντες, ἀλλ' ἀρχαῖον καὶ πάτριον,,.

Τόμ.: Β'.

Η ηηηηηηη

ἴσα ἐκείνοις ἐξελῶ; Τέναντίον γὰρ παρὰ Γραικοῖς ἔθος ἐπικρα-  
τῆσαι αὐτὸς ἔκ οἶδα. Ἐπίσης γὰρ καὶ ἔτοι τὰς πρὸ αὐτῶν γε-  
νομένας ὡς μάρτυρας, κατὰ σιωπῆς πρόοδον εἰσάγειν ἐπάγειν,  
ἐφ' ᾧ δεῖξαι ἐκ διαδοχῆς ἀδιαλείπτως σφίσι τὴν τῆ καθολικῆς Δόγ-  
ματος κατιέναι παράδοσιν. Πῶς δὲ καί τινες τῶν Λατίνων Πα-  
τέρων μαρτυρίας τῷ αὐτῶν Δόγματι σινηγορήσας οἱ Ἀνατολικοὶ  
ἀγνοεῖν ἠδυνάμηντο, οἱ κατὰ τὴν Ἰταλίαν πρότερον ἱκανῶς διατρέ-  
ψαντες; Ἐπειτα, καὶ εἴτι ἄρα ὁ λόγος ἔχυν ἔτος, ἔκην ὑπὸ  
Γραικῶ τινος (ἥπερ Ἀλλάτιος βέλεται) παρὰ δὲ Λατίνων ἡ Σωό-  
δος αὕτη πέπλαστο, ὅπερ ἄτοπον· τοιαῦτα γὰρ, αὐτὸς φησὶ τὰς  
Γραικὸς εἰσάγειν ποιεῖν. Καὶ ταῦτα μὲν περὶ τῆς ὑστάτης ἐκεί-  
νης Συνόδου τῆς ἐν Κωνσταντινουπόλει συστάσεως, ἄχρι τοσούτου.

Εἰκὸς δὲ τὸ τιμικαῦτα τοῖς Βοεμίοις, τοῖς Λατίνων Πίσεως  
ἀποκεχωρηκόσι, καὶ δι' ἰδίων Γραμμάτων, ἃ πρὸς τὴν Κωνσταν-  
τινουπόλεως γεγράφασιν Ἐκκλησίαν, ταύτην γε σιωπῆσιν προαι-  
ρημένοις, ἀντιγραφῶναι τὴν ἐξ ὀνόματος τῆς ἐν Κωνσταντινουπόλει  
Μεγάλης Ἐκκλησίας Ἐπιστολῇ, δι' ἧς αὐτοῖς ἡ ἐπὶ Φλωρεντίας Σύ-  
δος κατακρίνεται. Ἐκδόδοται δ' ἡ Ἐπιστολὴ αὕτη ἐν Φραγκο-  
φάρῳ, Ἔτ: 1583. (70) περὶ τὸ τέλος τῆ Βιβλίου ΔΑΒΙΔΟΥ Τῆ  
ΧΥΤΡΑΪΟΥ, περὶ τῆς Καταστάσεως τῶν ἐν τῇ Γραικίᾳ Ἐκκλησιῶν.  
Ἦς ἡ ἀρχή: „Ἡ Ἱεροαγία τῆς Κωνσταντινουπόλεως Ἐκκλησία,  
„ἡ Μήτηρ πάντων τῶν ὀρθοδόξων καὶ Διδάσκαλος κτ: Οὕτω  
δ' ἔχει τὰ ῥήματα τῆς Ἐπιστολῆς ταύτης ἐπὶ λέξεως. „Ἐκρινεν  
„αὕτη ἡ Ἱεροαγία Ἐκκλησία γράψαι τε πρὸς ὑμᾶς, καὶ πρὸς τὴν  
„μετ' αὐτῆς ἔνωσιν διεγείραι. καὶ κατ' ἐκείνῳ τὴν ἔνωσιν τὴν ἐν Φλω-  
„ρεντίᾳ δεδεκασμένῳ, ἥτις, διαίρεσις ἀπὸ τῆς ἀληθείας, εὐλόγως  
„αὐτὴν ὀνομάζοιτο καὶ διὰ τούτου ἐκείνῳ καὶ προσεδεξάμεθα, ἀλλὰ  
„μᾶλλον παντόπασιν ἠκυρώσαμεν. Ἀλλὰ κατὰ τὸν τῆς ἀληθείας  
„ἀπαράγραπτον Κανόνα, ἐν ᾧ μόνῳ ἀληθῶς τε καὶ ἀσφαλῶς ἐνέσθαι  
„δωάμεθα. (Ἐπὶ γράψαν δέ:) ὁ Νικομηδείας Μακάριος ὁ ταπει-  
„νὸς Μητροπολίτης Τορνόβου Ἰγνάτιος ὁ Φιλιππουπόλεως Ἰωσήφ  
„ὁ ταπεινὸς Μητροπολίτης Ἀνάκιοις ὁ Μέγας Ἐκκλησιαρχὴς Διά-  
„κονος Σύλβεσρος Συρόπουλος ὁ Δικαιοφύλαξ καὶ Ἱερομνήμων Θεό-  
„δωρος ὁ Ἀγαλλιανός ὁ Καθολικὸς τῆς τῶν ὀρθοδόξων Ἐκκλη-  
„σίας Διδάσκαλος ταπεινὸς Μοναχὸς Γεννάδιος,.. Προσιδέασι δὲ  
οἱ τὴν Ἐπιστολὴν ταύτην τύποις ἐκδεδωκότες, ὅτι ἐς φῶς προε-  
ξωέχθη ἐκ τῆς Βιβλιοθήκης τῆς Κολλεγίης Καρόλας τῆς Δ'. Καὶ  
ὅτι ἐν θάττω τῆς Μεμβράνης ἡμίσει, καὶ Λατινιστὶ ἐγγέγραπτο.  
Καί τοι γε Λατινιστὶ προσαπλώτα, ἄλλα ἐν τῷ Ἑλληνικῷ ὕφει ἔκ-  
ιν.

(70) Ἐν τῷ Ζοιρικᾷ: Ἔτ: 1573. Τυπογραφ: ἴσ: διαμαρτήματι.

ὡς τὰ ἐφεξῆς: „Πρὸς βεβαιότητα καὶ ἀσφάλειαν πάντων, οἷς  
 „περ ἂν τὰ παρόντα ἐφίκοιτο Γράμματα, ἠξιωσαμεν ἀσφαλίσαι-  
 „θαι αὐτὰ τῇ Σφραγίδι τῆς Εἰκόνης τῆς Κυρίας καὶ Θεᾶς καὶ Σωτῆ-  
 „ρος ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ, καὶ τῆς Μητρὸς αὐτοῦ τῆς Θεοτόκου, ἣς τὸ  
 „Ἐκμαγεῖον ἐν κηρῷ Λαζυραίῳ (τῷ χοιρῶν) ἐν Πυξίνῳ ξυλίνῳ  
 „κοιλώματι, ἠρτημένῳ ὑπὸ τὸ λῶμα διὰ σιρικῆς σπαρτίς Ἰόχροος  
 „καὶ ταῖς ἡμετέραις μάλιστα ὑπογραφαῖς κατοχυρῶσαι. Δέδοται  
 „δὲ ἡμέρα 18. Ἰαννουαρίου 1451. Ἰνδικτιῶν: ΙΕ’.

Τὸ γὰρ ἐντεῦθεν, τῷ τῶν Ἀγαθῶν Τέρκων διώμῳ καθ’  
 ἑαυτοῦ ἐγκειμένῳ ὁρῶν ὁ Βασιλεὺς Κωνσταντῖνος, καὶ ἐπὶ τὰς πα-  
 ρὰ τῶν Λατίνων ἀπιδὼν βοήθειαν, κατὰ τῷ ἐθίμῳ ἤδη τοῖς  
 Ἀνατολικοῖς Ἀυτοκράτορσι τέχνῳ, τῇ ἐνώσει προσιέναι προσε-  
 ποιῆτο· εἰς δὲ Ῥώμῳ Ἀποκρισιαρίης πέμπων παρίσθη, μήπω δὴ  
 τῷ Φλωρεντινῷ ἔνωσιν εἰσαγαγεῖν, (καί τοι πάνυ σφόδρα ποθῶν,)   
 διωηθῶν πολλῶν ἔνεκα, τῶν εἰς τόδε αὐτῷ ἐμποδῶν γενομένων.  
 Ἀλλὰ γὰρ ῥήματα ταῦτα ψιλὰ μόνον εἶναι κατοικωνιζόμενος ῥα-  
 δίως ὁ Πάπας, ἐπιμελῶς ὅμως τῷ ἔνωσιν εἰσενεγκεῖν σπεύδων  
 αὐτῷ διεκελεύετο· ὡς δὴλον ἐξ αὐτῆς τῆς Ἐπιστολῆς Νικολάου  
 τοῦ Ε’ πρὸς τὸν ἐρημέζον Ἀυτοκράτορα, τῆς ἐν τέλει φερομένης  
 τῶν Χρυσέων Θεολογικῶν Πονημάτων, ἃ Πέτρος ἐξέδοτο ὁ Ἀρκέ-  
 διος. Πάλιν δὲ τῷ Τυράννῳ ἐπὶ τῷ εἰμαρμένῳ τῇ πόλει πα-  
 ρασκοδάζομένῳ πολιορκίαν, εἰς τὰ ἔχματα τῆς ἀνάγκης ἐναχθεὶς  
 ὁ Ἀυτοκράτωρ, καὶ ἑτέρας αὐτοῖς ὡς τὸν Πάπαν διεπέμπετο Ἀπο-  
 κρισιαρίης ἐξαίτησόμενος, ἐπιπροσθεὶς καὶ τῷ ὑπόχεσιν, ὅτι σφό-  
 δρα δὴ κατὰ νῦν ὡς ἔχων τῷ ἐν Φλωρεντίᾳ ἔνωσιν ἐπιβεβαιώ-  
 σασθαι; καταστήσασθαιτε αὖ ἐπὶ τῷ Πατριαρχικῷ Θρόνῳ Γρηγό-  
 ριον, καὶ τῷ Πάπα δὲ αὐτῷ τὸ ἐπὶ τῶν Διπτύχων Μνημόσμων  
 ἐπαναλαβέσθαι· ἀλλ’ ἀποσείλαι τὸς ἐξ αὐτοῦ Λεγάτους ὁ Πάπας τὸ  
 μέγα Σχίσμα ἀνταναιρήσοντάς. Τοιγαρὶν καὶ ἀπεσάλη ἐπὶ τῆς  
 Κωνσταντίνης Ἰσίδωρος. Ἀλλὰ Σιωάξως γενομένης, καὶ λόγων ἐπὶ  
 τῇ ἐνώσει, ὁ μὲν Ἀυτοκράτωρ, καὶ τινες ἄλλοι, ἠσπάσαντο αὐτῷ,  
 οἱ δὲ πλεῖστοι κατεψηφίσαντο. Οἱ μὲν γὰρ τῷ ἔνωσιν ἀποτρεπό-  
 μενοι πρὸς Γεννάδιον προσιόντες διέπιωθάνοντο, τί καὶ ποιήσαιεν;  
 ὁ δὲ, ἀπὸ τῆς θυρίδος τῆς αὐτοῦ Κέλλης χεδάριον ἐξαρτήσας,  
 σφοδρῶς κατεφέρετο, τῶν ὅσοι φθάσαντες τὰ τῆς ἐνώσεως προ-  
 σεκύρωσαν. Προδότας γὰρ αὐτοῦ γενέσθαι τῆς Ὀρθοδόξου Πίστεως,  
 καὶ τῆς ἐλευθερίας, ἅτε δὴ μὴ πρὸς Θεὸν, ἐπὶ δὲ τὰς παρὰ  
 τῶν ἑξωθεν βοήθειας ἅπασαν αὐτῶν τῷ ἐλπίδα θεμένους, καὶ  
 διὰ τῆτο πάντας εἰς δαλείαν ἀπαχθησομένους ἀλάσης τῆς Πόλεως.  
 Τῷ τοίνυν Σχολαρίῳ παρηκολούθηκότες ἦσαν, ὅσοι δὴ τῆτον καὶ  
 ἐξελύσαντο. Οἱ δὲ τῷ ἔνωσιν ἐπιδοκιμάσαντες, ὕψερρον ἔφατ-  
 κον δημοσίᾳ ἀποσήσεσθαι μέλλειν, ἐπὶν ἔξω κινδυνὸς σφᾶς ἴδωσι

Η ηηηηηη 2

τῇ



τῶ ἐπικειμένῃ· ἔδὲ γὰρ ἄλλως, ὅτι μὴ διὰ τὰ παρὰ Λατίνων προσδοκώμενα βοηθήματα, ἀρεσίῳ αὐτοῖς τότε δὴ δόξαι τὴν ἔνωσιν. Οὕτω γὰρ 'ΙΩΑΝΝΗΣ ΔΟΨΚΑΣ, ἐν τῇ Βυζαντινῇ 'Ιστορίᾳ Κεφ: Λγ'. Σελ: 141.

„Ο Βασιλεὺς ὡς εἴλας ἐν 'Ρώμῃ προλαβὼν, αἰτῶν βοήθειαν, καὶ ὅπως σωτηθεῶσι τῇ ὁμονοίᾳ καὶ ἐνώσει τῇ γεγενεῖα ἐν „Φλωρεντία, καὶ λάβῃ τὸ μνημόσμων ὁ Πάπας ἐν τῇ Μεγάλῃ „Εκκλησίᾳ καὶ ὁ Πατριάρχης Γρηγόριος ἐπανελθούσεται ἐν τῷ „Θρόνῳ αὐτῶ καὶ μετεκαλεῖτο τινὰς ἀφικέσθαι τῶν τῶ Πάπα, „ὅπως εἰρωδύσῃ τὴν ἀσπονδον ἔχθραν τῶ Σχίσματος. Ἐπειλε δ' „ὁ Πάπας τὸν Καρδιῶν Πολωνίας, τὸν ποτὲ Ἀρχιεπίσκοπον „Ρωσσίας 'Ισίδωρον, Ἄνδρα σωετὸν, καὶ σώφρονα, καὶ πεπαιδευ- „μένον ἐν Δόγμασιν ὀρθοῖς, Ῥωμαῖον τὸ γένος, καὶ αὐτὸν ἔνα „τῆς ἐν Φλωρεντίας Σωδὸς ὑπάρχοντα Πατέρα τίμιον, ὡς ὁ λό- „γος φθάσας ἐδήλωσε. — Καὶ δὴ φανῆσα ἡ ἐκδεχομένη παρ' „αὐτῶν ναὺς, ἐξῆλθον ἐκ τῆς Χίε, πρὸς Κωνσταντινέπολιν ἔπλυν- „σαν, καταντήσαντες ἐν αὐτῇ τὸν Νοεμβρίου Μῶνα τῶ 5 ψξά. „Ἐπὶ καὶ ὁ Βασιλεὺς δεξιῶς ἀποδεξάμενος, καὶ τιμήσας ὡς „ἔπρεπεν, ἦλθον εἰς τὴν τῆς ἐνώσεως λόγους καὶ ἔυρον τὸν Βα- „σιλέα εἰς τῶτο κατανόσαντα, καὶ μερικὸς τῶν τῆς Ἐκκλησίας „Τὸ πλεῖστον ἐν μέρος τῶ Ἱερατικῶ καὶ Μοναχικῶ τάγματι, „Ἡγούμενοι, Ἀρχιμανδρίται, Μονάζουσαι· τί λέγω τὸ πλεῖστον; „Παρεκλήθησαν με γὰρ αἱ Μονάζουσαι εἰπεῖν καὶ γράφειν: ἔδεις ἐξ „ἀπάντων. Καὶ αὐτὸς ὁ Βασιλεὺς πεπλασμένως κατένδυσε. „Πλὴν ἐλθόντες οἱ φαινόμενοι, κατὰ τὸ δοκεῖν, τῆς ἐνώσεως ἐν „τῇ Μεγάλῃ Ἐκκλησίᾳ, Ἱερεῖς τε καὶ Διάκονοι τῶν τῶ Κλήρῳ, „καὶ ὁ Βασιλεὺς σὺ τῇ Συγκλήτῳ, ἐβόλοντο κοινῇ ὁμονοίᾳ λει- „τεργῆσαι Θεῷ, καὶ ἀποδόσαι τὰς εὐχὰς ἀδόλῳ γνώμῃ· τότε τὸ „Σχισματικὸν μέρος ἐλθὼν ἐν τῇ Μονῇ τῶ Παντοκράτορος, ἐν „τῇ Κελλίᾳ τῶ Γενναδίου, τῶ ποτὲ Γεωργίου Σχολαρίου, ἔλεγεν „αὐτῷ: καὶ ἡμεῖς τί ποιήσομεν; Αὐτὸς δὲ ἐγκλειθεὶς, καὶ χάριτω „λαβὼν καὶ γράψας τὴν γνώμην αὐτῶ, διὰ τῆς γραφῆς ἐδήλωσεν „καὶ τὴν συμβεβηλὼν τὰ γραφέντα ἐν, ἐδήλυν ἔτι: Ἄθλιοι „Ῥωμαῖοι, εἰς τί ἐπλανήθητε, καὶ ἀπεμακρυνάτε ἐκ τῆς ἐλπίδος „τῶ Θεοῦ, καὶ ἠλπίσατε εἰς τὴν δυνάμιν τῶν Φράγκων, καὶ σὺ „τῇ πόλει ἐν ἣ (ἴσ: ἐν-φ) μέλλει φθαρῆναι, ἐχάσατε καὶ τὴν „εὐσεβειάν σας. Ἰλεός μοι Κύριε! μαρτύρομαι ἐνώπιόν Σε, ὅτι „ἀθῶος εἰμὶ τῶ τοιούτῳ πταίσματος. Γινώσκετε ἄθλιοι Πολῖται „τί ποιεῖτε καὶ σὺ τῷ αἰχμαλωτισμῷ, ὃς μέλλει γενέσθαι εἰς „ὑμᾶς, ἐχάσατε καὶ τὸ Πατροπαράδοτον, καὶ ὡμολογήσατε τὴν „ἀσέβειαν. Οὐαὶ ὑμῖν ἐν τῷ κρίνεσθαι. Ταῦτα καὶ ἕτερα πλείω „γράψας, καὶ εἰς τὴν θύραν τῶ Κελλίου αὐτῶ προσηλώσας ἐκλείθη „ἐν-

„ἔνδον, καὶ ὁ χάρτης ἀνεγινώσκετο. Τότε αἱ δοκῆσαι καθαραὶ  
 „καὶ εἰς Θεὸν ἐν ὀρθοδοξίᾳ χολάσασθαι Μονάσρια, κατὰ τὸ δοκῆν  
 „αὐταῖς, καὶ (ἴσ: κατὰ) τὸν αὐτῶν Διδάσκαλον Γεννάδιον, ἅπασαι  
 „σὺν τοῖς Ἠγχεμένοις, καὶ Πνευματικοῖς, καὶ λοιποῖς Ἱερεῦσι καὶ  
 „Λαϊκοῖς, τὸ Ἀνάθεμα ἐξεβόησαν, καὶ τὸν ὅρον τῆς Σωόδου, καὶ  
 „τὰς σέρξαντας, καὶ σέργοντας, καὶ μέλλοντας σέρξαι ἀνεθεμά-  
 „τισαν· ὁ χυδαῖος ἦν καὶ ἀγοραῖος λαὸς ἐξελθόντες ἐκ τῆς αὐλῆς  
 „τῆς Μοναστηρίου ἐν Καπηλείοις, κρατῶντες (κρατῶντ:) ἐν χερσὶ  
 „τὰς Φιάλας πλήρεις ἀκράτου, ἀνεθεμάτιζον τὰς ἐνωτικὰς, πίνον-  
 „τες εἰς πρεσβείαν τῆς Εἰκόνης τῆς Θεομήτορος, καὶ παρακαλῶν-  
 „τες αὐτῷ τῷ γενέσθαι προσάτης καὶ ἀρωγὸς τῆς Πόλεως, ὡς  
 „ποτὲ, κατὰ τῆς Χοσρόου, καὶ τῆς Χαγάνου, καὶ κατὰ Ἀράβων·  
 „ἔτω καὶ νῦν κατὰ τῆς Μεχεμέτ. Τῷ γὰρ Λατίνων ἔτε βοή-  
 „θειαν, ἔτε ἔνωσιν χρῆζομεν. Ἀπέσω ἀφ' ἡμῶν ἢ τῶν Ἀβυμ-  
 „βιτῶν Λατρεία. Οἱ δὲ ἐν τῇ Μεγάλῃ Ἐκκλησίᾳ ἀθροισθέντες  
 „Χριστιανοὶ, δέησιν πρὸς τὸν Θεὸν ἐκτενῆ ποιήσαντες, καὶ τὰς  
 „λόγους τῆς Καδδωαλίου ἐνωτιθέντες, ἔσερχαν τὸν τῆς ἐνώσεως  
 „ὅρον καὶ αὐτοὶ μετὰ συμφωνίας· ὡς ὅτι, παρελθούσης τῆς περι-  
 „στάσεως τῶν Τούρκων, καὶ γαλλώης γενομένης, καθίσαντες τιτὲς  
 „τῶν ἐλλογίμων ἴδωσι τὰς ὁρὰς καὶ εἰ ἔστι τὸ μὴ τελέως ὀρ-  
 „θοτομεῖν διορθώσωσιν. Ἐν τῇ συμφωνίᾳ ἦν αὐτῇ ἔσερχαν τῆς  
 „γενέσθαι Λατινικήν κοινῶν ἐν τῇ Μεγάλῃ Ἐκκλησίᾳ, τελεοθεῖ-  
 „σαν παρ' Ἰταλῶν καὶ Γραικῶν· καὶ μνημονεύσαντες τὸν Πάπαν  
 „Νικόλαον ἐν τοῖς Διπλύχοις, καὶ τὸν ἐξόριστον Πατριάρχην Γρη-  
 „γόριον. Τὰ τῆς Ἱερᾶς Λατινικῆς ἐπληρώθη ἐν Μῶνι Δεκεμβ-  
 „βρίου ΙΒ'. τῆς σ' ἡμέρας. Ἦσαν δὲ πολλοὶ, οἱ ἔκ ἐλαβον προ-  
 „σφοδρὰν Ἀντιδώρη, ὡς βδελυκτῶν θυσίαν τελεοθεῖσαν ἐν τῇ Ἐνω-  
 „τικῇ Λατινικῇ. Ὁ δὲ Καδδωάλιος ἀνιχνεύων πᾶσαν καρδίαν,  
 „καὶ πάντα σκοπὸν τῶν Γραικῶν· ἔκ ἐλάνθανον γὰρ τὰ μαγα-  
 „νόμενα καὶ αἱ ἀπάται τῶν Γραικῶν αὐτῷ. Ἀλλ' ὡς τῆς αὐτῆς  
 „γένεως ὢν, σὺν ὀλίγῃ ὁρμῇ ἔσπουδε βοηθῆσαι τῇ Πόλει καὶ ἡρ-  
 „κει πρὸς ἀπολογίαν τῷ Πάπᾳ ὅσον γέγονε, τὸ δὲ πλεον ἀνε-  
 „τίθετο τῷ Θεῷ, τῷ πάντα οἰκονομεῖν πρὸς τὸ συμφέρον. Ἀλλ'  
 „ὁ λαὸς ὁ ἀπώλης καὶ μισόκαλος, ἡ ῥίζα τῆς ὑπερηφανείας, ὁ  
 „κλάδος τῆς κενοδοξίας, τὸ ἄνθος τῆς ὑψηλοφροσύνης, ἡ τρυ-  
 „γία τῆς γένεως τῶν Ἑλλήνων, ἡ καταφρονήσασα τὰ γένη τῶν  
 „ἀνθρώπων, καταφρόνησις ἀληθινή, πάντα τὰ γενόμενα ἐλογί-  
 „ζοντο ὡς μὴ γενόμενα. Ἐλεγον ἦν ὁμιλῶντες οἱ τῆς ἐνώσεως τοῖς  
 „Σχισματικοῖς: Ἀφετε ἴδωμεν, εἰ ἔξομαι ὁ Θεὸς τὸν ἐχθρὸν  
 „τῶτον τὸν ἀντιζάμενον ἡμῖν· τὸν μέγαν Δράκοντα, τὸν καυ-  
 „χώμενον ἄρδην καταπιεῖν τὴν πόλιν· καὶ τότε ὁψεσθε, εἰ τοῖς  
 „Ἀβυμβίταις ἡμεῖς ἐνωθώμεν.

Τόμ: Β'.

Θ 9999999

"Οτι

Ὅτι δὲ ἐπίπλασός τις ὡς καὶ ψεύδης ἡ ἔνωσις αὕτη, μαρτυρεῖ καὶ ΛΕΟΝΑΡΔΟΣ ὁ Χῖος (71) ἐν Βιβλίῳ τῷ περὶ τῆς Ἐκπορθήσεως τῆς Κωνσταντινουπόλεως. Κατὰ δὲ τὴν τεσσαρακονθήμερον νησεῖαν, ὅτε κατ' ἔθος ἐγίνοντο αἱ Ἐξομολογήσεις, Σχίσμα μέγα τὴν ἐν Κωνσταντινουπόλει διετάραττον Ἐκκλησίαν. Οἱ γὰρ ἐκ τῶν Ὁρθοδοξόντων Πνύσματικοι, εἴ τιτι περιτύχοιεν, εἴ τε κοινωνίαν ἔχοντι μετὰ τινος τῶν ἀπὸ τῆς ἐνώσεως, εἴτ' ἐν καὶ λειτουργίας ὑπὸ ἐνωτικῇ Ἱερέως τελεμένης παρόντι, ποινῆς ὑπέυθυνον τῶτον ἔκρινον βαρυτάτης καὶ τῆς ἱκανοποιήσεως πέρας λαβῆσης, ἐπέταττον μηδαμῶς αὐτὸν τὴν εὐχαριστίαν καταδέξασθαι παρὰ τινος τῶν Ἱερέων τῇ ἐνώσει ἐπιδροκήσαντος· τὸν γὰρ τοιοῦτον μὴδ' Ἱερέα εἶναι, μὴδὲ τὴν προσφορὰν τελεσιουργεῖν. Καὶ εἴποτε δὲ ἐπ' ἐκφορὰν, ἢ ἐπὶ μνημοσύνῳ νεκρῷ τελεσθισομένῳ προσίοιτις τῶν ἐνωθέντων, οἱ λοιποὶ ἀπεδίδρασκον ἅπαντες. Ἡ δὲ Μεγάλη Ἐκκλησία ἐν ἣ τοιαύδε διεπέπρακτο ἔνωσις, καὶ ἡ τῇ Πάπᾳ ἐν αὐτῇ μνήμῃ ἐγένετο, ὑπὸ πάντων ἡρήμωτο, τῇ Σχολαρίᾳ ἐφεξῆς ἐπιμένοντος, ἐν τῷ καθυποβάλλειν τῆς ἐνωθέντας ταῖς παλαμναιοτάταις ἀρχαῖς. Οὕτω γὰρ ὁ αὐτὸς ΔΟΨΚΑΣ, Κεφ: ΔΖ'. Σελ: 146. „Καὶ σὺν αὐτοῖς τοῖς προσκρῆσμασι καὶ ἔαρ „ἐπέστη, καὶ αἱ τῶν νησεῶν ἡμέραι ἤρξαντο ἀριθμεῖσθαι, καὶ ἡ „τῆς Ἐκκλησίας ἡσυχία ἔκλειπεν. ἀλλ' ὡς ἰδεῖν ξένῳ ἡσυχίᾳ ἐν „τοῖς ἐμπιστευθεῖσιν ἀκχεῖν λογισμὸς ἀνθρώπων. Καὶ ἐρχόμενοι „οἱ Χριστιανοὶ τῇ ἐξομολογήσασθαι τὰ σφάλματα αὐτῶν, ἠρώ- „τῶντο παρ' ἐκείνων: οἱ μὲν, εἰ ἐκοινωνήσε τοῖς ἀκοινωνήτοις, καὶ εἰ „ἔτυχον ἀκχεῖν λειτουργίαν παρὰ τῇ ἐνωτικῇ Ἱερέως ταῦτα, καὶ „κα-

(71) Οὗχ ἔτος ὁ ἐνταῦθα, Λεονάρδος ὁ Χῖος ὁ Ἱατρός, ὃς μνείαν ποιεῖται Κερίσιος ἐν ταῖς Σημειώσεσι ταῖς εἰς τὴν Πατριαρχικὴν Ἱστορίαν τῆς Κωνσταντινουπόλεως, Σημει: αα'. Σελ: 205. ὡς δὴ ἐπὶ Ἱερεμῖς τῇ Πατριαρχεῖ, τὰ Ἀρμενίᾳ εἰς τὸ Ἄριστον: Ὁργαν: Ὑπομνήματα διεργάζοντος. Ἀλλ' ἕτερος ἔτος ἐκεῖνος ἀρχαιότη- ρος, ὃς ἐπὶ τῆς ἀλώσεως τῆς Βυζαντινῆς ἡμέραζεν (ἔπερ ὁ αὐτὸς Κερίσιος ἐμνή- θη αὐτέθι ἐν Σημειῶ: γ'. Σελ: 187.) ἦς καὶ τὴν ὑπὸ τῇ Β'. Μωάμεθ ἐκπολιό- κησιν ἀναγραφάμενος ἐν Εἰδέσ: Ἐπιστολῆς ἐπεμψε Νικολάῳ Ε'. τῷ Πάπᾳ. Λέγε- ται δὲ ἔτος καὶ Μιτυλιῶνς χρηματίζεται Μητροπολίτης, καὶ πρὸς τὸν Βασιλέα Κωνσταντῖνον σιωάμα τῷ Ῥωσικῷ Ἰσιδώρῳ, ὡς ἐκ τῇ βιβλίου Πάπᾳ συλλεγα- τεῦσαι· ἐνθεντοὶ καὶ τῆς Πέλεως πεσῆσης ἀλῶναι τε, καὶ κακῶς ὕστερον ὑπὸ τῷ Βαρ- βάρων διαφθαρεῖν· (ὅρα ἐν τῷ, εἰς τὰ Γυμνάσια τῇ Καβέε, Προσαρτήματι Ῥοβέρτον Γέριον, Σελ: 173. Καὶ Κασσιμῖρον Ὁσδίνον, ἐν Τόμ: Γ'. τῷ Ὑπομνήμᾳ Στήλῃ 2422.) Πῶς ἐν Ἀλβερετ: Φαβρίκ: τὸν παρὰ Κερίῳ Λεονάρδον Χῖον τὸν Ἱατρὸν, τὸν ἐπὶ Ἱερεμῖς ἐν τῷ Πατριαρχεῖᾳ Φιλοσοφόντα, αὐτὸν ἐκεῖνον εἶναι ὑπέληφε, τὸν ἐπὶ τῆς ἀλώσεως τῆς Κωνσταντίνης· τὸν ἐνιαυτοῖς εἴκοσιν ἐπὶ τοῖς ἑκατὸν προδιώσαντα; Πῶς τοῖς ὑπὸ τῇ Κερίῳ γεγραμμένοις: (Constantinopolis in Patriarchatu medicus quidam Leonardus e Chio etc: προσέθετο ἐν παρεθέσει: (Idem qui expugnationem Constantinopolis descripsit;) (Ἐν τῇ ἑλλιν. Βιβλιοθ: Τόμ: 5'. Σελ: 680.) ἔτος ἀταλαιπώρως ἀποφηνάμενος, καὶ μὴδὲ τὴν τυχεῖσαν ἐπιφέρει πρὸς τῆς τῶν δύο ὁμωνύμων προσώπων εἰς ἐν, σιωαιρέσεως;

„κανῶν δριμύς, καὶ ἐπιτίμιον βαρύν. Μετὰ δὲ τὸ δαλεῦσαι τὸν „Κανόνα κατὰ τὸ ἔθος, ὁ ἄξιός τῃ σώματος καὶ αἵματος τῇ Δε- „σποτικῇ εἰς τὸ κοινωνῆσαι, μὴ προσελθῆν τοῖς τῆς ἐνώσεως Ἱε- „ρεῦσι μετ' ἐπιτιμίας βαρέος· ἔτε γὰρ Ἱερεῖς εἰσὶν, ἔτε τὰ προσ- „φερόμενα τέλει εἶλεγον. Εἰ γὰρ ἐκαλέντο ἐν κηδείᾳ νεκρῷ, ἢ „ἐν μνημοσώφῳ τεθνεώτος καὶ ἐφαίνετό τις τῶν ἐνωτικῶν ἐκῆ „Ἱερεὺς, καλῶς θύς τὰς φελῶνας ἐκδυόμενοι, ὡς ἀπὸ πυρὸς ἐφύ- „γον. Καὶ ἡ Μεγάλη Ἐκκλησία ὡς καταφύγιον δαιμόνων, καὶ „Βωμὸς Ἐκκλησιαστικὸς αὐτοῖς ἐλογίζετο. Πῶ κηροί; πῶ ἔλαμον ἐν „ταῖς λυχναψίαις; τὰ πάντα σκοτεινὰ, καὶ ἡ δαίς ὁ κωλύων. Ἐρη- „μον τὸ Ἅγιον τέμενος ἐφαίνετο, προσημαῖνον τῷ ἐρημίᾳ, ὡς „ὑποσώμα μέλλει μετ' ὀλίγον διὰ τὰς παραβάσεις καὶ ἀνομίας τῶν „κατοικούντων· ὁ δὲ Γεννάδιος ἐγκλειστος ἐδίδασκε, καὶ ἀρὰς ὑπετί- „θει τοῖς τῷ εἰρώλῳ ἀσπασόμενοις.

Ἀλλὰ καὶ τῆς πολιορκήσεως ἤδη ἐναρξαμένης, ἔδεν γι ἡτλον οἱ Κωνσταντινουπολίται τῷ τοιαύτῳ ἔννοσι ἐτύγχανον ἀπορροπόμενοι, ὡς ὁ αὐτὸς μαρτυρεῖ Συγγραφεὺς, Σελ: 148. „Οἱ δὲ „τῆς Πόλεως, ἀπὸ τῆς ἡμέρας ἐκείνης ἐν ἣ ἐγένετο τάχα ἡ „ἔνωσις ἐν τῇ Μεγάλῃ Ἐκκλησίᾳ, ὡς Ἱσδαίων Συναγωγῇ ταύ- „τῳ ἀπέφθον· καὶ ἐκ τῷ ἐν αὐτῇ ἔτε προσφορὰ, ἔτε ὀλοκάντωσις, „ἔτε θυμίαμα. Εἰ ἐτυχέτις τῶν Ἱερέων λαιμαργῆσαι Θεῷ ἐν ἡμέρᾳ ἐπισήμῳ, οἱ προσδύχομενοι μέχρι τῆς ὥρας τῆς προσφορᾶς ἔσαντο, καὶ τότε πάντες ἐξήρχοντο, ἔτω γυναικες ὡς Ἄνδρες· ἔτω Μοναχοὶ ὡς Μονάζουσιν· τί χρὴ λέγειν; καὶ τὸν Ναὸν ὡς Βωμὸν, καὶ τῷ θυσίᾳ ὡς Ἀπόλλωνι τελευμένῳ ἐνόμιζον — ὁ δὲ Γεννάδιος ἐδιέλιπε κατ' ἐκάστῳ διδάσκων καὶ γράφων κατὰ τῶν ἐνωτικῶν, „καὶ πλέκων Συλλογισμὸς καὶ Ἀντιφάσεις κατὰ τῇ Σόφωτάτῃ „καὶ μακαρίτῃ Θωμᾷ τῇ Δε-Ἀκίνῃ, καὶ τῶν Συγγραμμάτων „αὐτῶν καὶ Κυρίᾳ Δημητρίᾳ τῇ Κυδώνῃ, ἀποδεικνύων αὐτῶν Αἰ- „ρετικὰς· ἔχων ἐκ τῆς Συγκλήτῃ τὸν Πρῶτον Μεσάζοντα, τὸν „Μέγαν Δέκαν, σιωεργὸν καὶ συλλήπτορα· τὸν καὶ τοσῶτον εἰπεῖν τολ- „μήσαντα κατὰ Λατίνων, ὅτε εἶδον οἱ Ῥωμαῖοι τὸν ἀναρίθμητον „στρατὸν τῶν Τέρκων· μᾶλλον δὲ κατὰ τῆς Πόλεως: Κρεῖττον „ἔστιν εἶδεναι ἐν μέσῳ τῆς Πόλεως Φακιόλιον βασιλεῦον Τέρ- „κων, ἢ καλύπτραν Λατινικῇ. Καὶ γὰρ ἀπογνόντες οἱ τῆς „Πόλεως ἔλεγον: Εἶθε ἐδόθη ἡ Πόλις ἐν χερσὶ τῶν Λατί- „νων τῶν ὀνομαζόντων τὸν Χριστὸν, καὶ Θεοτόκον, καὶ μὴ ἀπορ- „ριφθῶμεν ἐν ταῖς τῶν ἀσεβῶν παλάμαις: τότε καὶ αὐτὸς ἐκείνο „ἐφθέγγετο...

Κἂν ταύταις ἐν ταῖς ἡμέραις ἡ πόλις ἀλλῶσα ὑπὸ τοῖς Τέρ- „κοις ἐγένετο. Ἐπιλίποι δ' ἂν ἡμᾶς ἡ ἡμέρα, εἰ παρασηῆσαι ἐπιβαλομένη, ὅπως τέως ἄχρι καὶ τῶν κατ' ἡμᾶς ἡμερῶν,

Θ ρρρρρρρ ρ

τῷ



τιῶ ἐν Φλωρεντία Συνόδον ἐκένωσιν οἱ Ἀνατολικοὶ ἀποτροπιάζον-  
ται. Ἀπόχρη γὰρ, ὅτι τὸ κατὰ τῆς Φλωρεντινῆς Συνόδου εἰς  
λόγον ἔχατον ἀνωτέρω ἡμῖν ἀντεπενεχθὲν, ἥδη δέδεκται: τὸ  
μηδαμῇ μηδαμῶς τῆς Ἀνατολικῆς ἀποδέξαθαι τιῶ ἔνωσιν τιῶ  
ἐν Φλωρεντία, ὡς τὰ κατ' αὐτῇ ἐγένετο σφίσι μαθεῖν ὡς ἐγε-  
νετο· ἔχ' ὅπως γὰρ προσέθαί ἀπηξίωσαν, ἀλλὰ καὶ Συνόδου κατ'  
αὐτῆς ἐπισυγκροτήσαντες, ὡς δολικῶς τε καὶ βιάαν καὶ Σιμι-  
νιακῶ ἀπεκήρυξαν. Εἰ δέ τινες ἔτι καὶ ἐφεξῆς ἀνεφάνησαν  
αὐτῆς οἱ προεσηκότες, ἐν ὑποκρίσει μόνον ἔυδηλον τῆτο αὐτῆς  
διαπράξαθαι, κατὰ λόγους Σιμωνιακῆς τε καὶ ἀνθρωπίνης, ὅπως  
ἂν τῆς παρὰ Λατίνων ἐπικερίας τε καὶ ἀντιλήψεως τεύξων-  
ται. (72).

Ἀντί

- (72) Κεῖθω ὅν ἐνταῦθα οἶονεῖ ἀνακεφαλαίωσις τῶν Εἰρημένων, τὰ ὑπὸ τῆ Ἱεροσολύ-  
μων Δοσιθέου (ἐν τοῖς περὶ τῶν ἐν Ἱεροσολύμοις Πατριαρχαῶν: Κιβλ: Ι'. ΚεΦ: 5.  
Σελ: 910.) ἐξισορέμενα: Α'. „Φησὶ τῷ Ἰσιδώρῳ ἐπανελθόντος εἰς Ῥωσίαν τῇ  
„διδάξαι τὸν Λατινισμόν, ὃ Μέγας Κναιζῆς Βασίλειος, τῷ μὲν Συνόδῳ καὶ τῷ  
„κατ' αὐτῇ ἔνωσιν, μετὰ πάσης τῆς ἐν τῇ Ῥωσίᾳ Ἐκκλησίας ἀνεθεμάτισε·  
„τὸν δὲ Ἰσιδώρον καθείρξεν εἰς σκοτεινὴν φυλακὴν· ὅθεν Φυγὼν ἐκεῖνος ἀπῆλθεν  
„εἰς Ῥώμην· ὅπερ γενόμενος Καρδινάλιος Πολωνίας, ἐτελεύτησε· ταῦτα λέγουσι τὰ  
„ἱστορικὰ τῶν Ῥώσων. — Β'. Ὁ Κράλις Σερβίας, μήτε Τοπόληρῳ ἔσειλε, μήτε  
„Γράμματα εἰς τῷ Συνόδῳ· μήτε ἐδέχθη αὐτῷ. — Γ'. Ὁ Βασίλειος Μολδοβλα-  
„χίας ἐπανελθόντος τῷ Νεάγωγῳ, καὶ τῷ Μητροπολίτῃ ἀπὸ τῆς Συνόδου, ἀπέ-  
„βάλεν αὐτῷ, καὶ ἀνεθεμάτισε. — Δ'. Τὰ αὐτὰ ἐποίησαν καὶ πάντες οἱ Ἱερεῖς,  
„Μιγγρέλαιοι, Σαάνοι, Ἀλβανοὶ, Ἀβασγοὶ, καὶ τὰ περὶ τῷ Ἱερείῳ ὀρθόδοξοι  
„ἔθνη. — Ε'. Τὰ αὐτὰ ἐποίησε καὶ ὁ Βασιλεὺς Τραπεζούντος, καὶ ἀπασα ἡ Ἀνα-  
„τολή καὶ Δύσις. — 5'. Ἐγένετο Σύνοδος Πατέρων δέκα καὶ ἑπτὰ, καὶ ἔγρα-  
„ψαν τῷ Βασιλεῖ Ἰωάννῃ κατὰ ταύτης τῆς ἐν Φλωρεντία Συνόδου, ἐν οἷς ἦσαν  
„οἱ πλείους τῶν ἐπανελθόντων ἀπὸ τῆς ἐν Φλωρεντία Ἐπισκόπων, καὶ Κληρικῶν.  
„Κεῖται δὲ ἡ Ἀναφορά αὐτῶν εἰς τὸ τέλος τῆς Σιωταγματικῆς Νεκταρίῳ Ἱεροσο-  
„λύμων. — Ζ'. Ὁ Νικομηδείας Μακάριος, καὶ ὁ Νομοφύλαξ Λέων, ὄντες καὶ  
„αὐτοὶ ἐν τῇ Φλωρεντίᾳ, συνέγραψαν ἰδίαν κατάκρισιν τῆς Συνόδου· ἥτις καὶ  
„αὐτὴ κεῖται εἰς τὸ Σιωταγματικὸν τῷ Νεκταρίῳ. — Η'. Συνέλευσις ἐγένετο ἐν  
„τῇ Ἀγίᾳ Σοφίᾳ πληρεσάτη Ἐπισκόπων, Κληρικῶν, Ἠγμένων, καὶ Διδασκάλων·  
„καὶ ἀπέβαλε τῷ Συνόδῳ μετὰ Ἐπιτίμῃς Ἀναθέματος· ἥτις κεῖται ἐν τῇ Κα-  
„ταλλαγῇ. — Θ'. Σύνοδος ἐγένετο ἐν τῇ Ἀνατολῇ, ἥτοι ἐν Ἱεροσολύμοις τῶν  
„πεντῶν Πατριαρχῶν, Φιλοθέῳ Ἀλεξανδρείας, Δωροθέῳ Ἀντιοχείας, καὶ Ἰωακείμῳ  
„Ἱεροσολύμων· παρόντος καὶ τῷ Καισαρείας Ἀρσενίου· καὶ ἀνεθεμάτισε τῷ Συ-  
„νόδῳ ταύτῃ τῆς Φλωρεντίας, ἐν ἧς τῷ Κοσμικῷ ψῆφον καὶ ἐκάθην καὶ  
„ἀνεθεμάτισε τὸν Κωνσταντινουπόλεως Μητροφάνη τὸν Λατινέφρονα. Κεῖται δὲ τὸ  
„Συνωδικὸν ἐν τῇ Σιωταγματικῇ τῷ Νεκταρίῳ. — Ι'. Οἱ εἰρημένοι Πατριάρχαι  
„Ἀλεξανδρείας, καὶ Ἀντιοχείας, καὶ ὁ μετὰ Ἰωακείμ Θεοφάνης Ἱεροσολύμων,  
„ἐλθόντες εἰς Κωνσταντινῆσιν, καὶ Σύνοδον ἀθροίσαντες ἐν τῇ Ἀγίᾳ Σοφίᾳ, ἐπὶ  
„Κωνσταντίνῳ τῷ Βασιλεῖ τὸν μὲν Γρηγόριον ψευδοπατριάρχην ἐδιώξαν τῷ Θεό-  
„νῳ, Ἀθανάσιον δὲ ὀρθόδοξον προέβαλον. Εἴτα Συνωδικῶς καὶ Ἀποδοκτικῶς ἀπέ-  
„βαλον τῷ ἐν Φλωρεντίᾳ ταύτῃ Κεσοδιαν, καὶ τῷ Ἀναθέματι παρέπεμψαν.  
„Κεῖται δὲ ἡ Σύνοδος ἐν τῇ Καταλλαγῇ. — ΙΑ'. Εἰ καὶ λέγει ὁ Πλάτυνας, καὶ  
„ὁ Τριθέμιος, ὅτι Τρισκαιδεκάκις ἐνίκηθησαν οἱ Ἑλλῆνες ὑπὸ τῶν Λατίνων· ὅπερ  
„ἐστὶ δόξα τῶν Λατίνων, καὶ καταφρόνησις τῶν Ἑλλήνων. Ἀλλὰ ῥητέον: — Πρῶ-  
„τον, ὅτι ἰδέτω ὁ Φιλομαθὴς ἐν τοῖς ἀνωτέρω Βιβλίοις τὰς Λατινικὰς Συνόδους,  
„πῶς εἶχον Πατριάρχας Λατινο-Ἐπισκόπους· καὶ ἦσαν Λατῖνοι καὶ οἱ Νικαῖτες  
„καὶ οἱ Νικαῖται. — Δεύτερον, ὅσας γεγενῆσιν Συνόδοι Οἰκουμενικαί, πάντοτε  
„οἱ

Ἀντὶ Κορωνίδος τὴν Λατινικὴν ὥδε παρασημειώμεθα ραδιερ-  
γίαν, δι' ἧς Ἐπισολῶν τινὰ συνέπλασαν, ὡς ἐκ τῆς Ἀλεξιν-  
δρείας Πατριάρχης ΦΙΛΟΘΕΟΥ γραφῆσαν, τῇ τῇ κατὰ Φλω-  
ρεντίαν δῆθεν ἐνώσει ἐπυδοκήσαντος. Κατόπιν μὲν ἐν ἡμῖν  
ἀνῆνεκται τὰ ὑπὸ τῶν τριῶν Πατριαρχῶν γεγραμμένα πρὸς  
Ἰωάννῃ τὸν Ἀυτοκράτορα, ἐν οἷς καὶ αὐτὸς Φιλόθεος ἐμνημο-  
νύετο, δι' ὧν τε οἱ Πατριάρχαι ἐδήλωσαν: εἰληφέναι μὲν τὰς πα-  
ρὰ τῆς Πάπας περὶ τῆς ἐν Φλωρεντίᾳ διαπραχθείσης ἐνώσεως  
Ἐπισολὰς, ἐμὴν ἄλλ' ἐδὲν σιωδεῖν ἐν αὐταῖς ἀπὸ τῆς Πάπας  
προσημειώμενον αὐτοῖς, περὶ τῆς ὅπως δὴ τὰ τῆς ἐνώσεως ἐκεί-  
νης σωετελέσθῃ καὶ διὰ τῆς πρὸς αὐτὸν ἀπλωτηκέναι: ὡς ἔπερ  
ἡ Φλωρεντινὴ ἐνώσις ἐγένετο κατὰ τὰς τῶν ἑπτὰ Οἰκουμενικῶν  
παραδόσεις Σωόδων, ἀποδεκτικῶν πάντως αὐτῶν ἔσεσθαι ὁμοίως καὶ  
ἐν τῇ Ἀνατολικῇ λήξει· εἰ μόνον ἔγγραφον αὐτοῖς τοῖς Πατριαρ-  
χαῖς διαπέμψαιτο ὁ Πάπας τὴν ὁμολογίαν τῆς ἑαυτῷ Πίσσεως  
ὡς ταύτης γε ἀντὶ τῆς ὁρθῆς τῆς Πάπας Ὁμολογίας, τὴν ἐν  
Φλωρεντίᾳ Σωόδον μηδέποτε ἀποδεξομένους· μᾶλλον δὲ καὶ τὰς  
ἀποδεξαμένους ἐτόιμοις εἶσιν ἀποκηρύξεσθαι. Οἱ δ' αὐτοὶ Πα-  
τριάρχαι καὶ τῷ Ἀυτοκράτορι Ἰωάννῃ τὰ παραπλήσια ἐπεσάλ-  
κασιν, ὡς ἐξ αὐτῶν τῶν Πατριαρχικῶν Γραμμάτων δῆλα δὴ  
γίνεται· ἵν' εἰ τὴν Λατίνων δόξαν ἐν ἐκείνῃ τῇ κατὰ Φλωρεν-  
τίαν Σωόδῳ καὶ αὐτὸς ἡσπάσατο, τὴν αὐτῶν αὐτοῖς ἐξομώσῃται·  
ἄλλως γὰρ, καὶ αὐτὸς ἀπειθήσας ἐπιτιμίοις ὑποβληθήσεται· τὴν  
μὲν γὰρ μετὰ τῶν Λατίνων ἐνώσιν ἀρίστῳ ἔσεσθαι καθ' ἑαυτὴν,  
ἐμὴν δὲ, ἄλλ' ἀποδεκτικῶν ταύτῃ εἶναι σφίσι μὴ δύνασθαι, τὰς  
ψευδοδοξίας τὰς ἑαυτῶν συστήσασθαι φιλονεικούντων. Ἀλλὰ δὴ καὶ  
ἐφεξῆς οἱ αὐτοὶ τρεῖς Πατριάρχαι, κατὰ Μητροφύνης τῆς ἐπὶ τὸν  
Κωνσταντινουπόλεως Πατριαρχικὸν Θρόνον προεβασθέντος, ὡς Λα-  
τινοφρονέντος, Σωδικῶν Ἐπισολῶν ἐκδεδώκασιν, τὴν τε Φλωρεν-  
τινὴν Σωόδον δι' αὐτῆς ἐπαρώμενοι, καὶ τὰς Λατινοφρονήσαν-  
τας ἀπαξάπαντας, Μητροπολίτας τε καὶ Ἐπισκόπους, καθαιρέσει  
καθυ-

οἱ Ἑλλῆνες ἦσαν Διδάσκαλοι, ὅθεν καὶ Νικηταί. — Τρίτον ὁσάνκις ἦλθον Λατίνων  
„Διδάσκαλοι εἰς Βυζάντιον, καὶ εἰς Νίκαιαν, πάντοτε οἱ Λατῖνοι ἐνικήθησαν καὶ  
„δι' καὶ ἐπὶ τῶν παρόντων Κωνσταντίνου καὶ Ἰωάννου ἐξηλέγχθησαν παραχαράττει  
„τῆς εὐσεβείας, ὅθεν καὶ κατεκρίθησαν ἐν Ἱερουσαλὴμ, ἐν Συρίᾳ, ἐν Αἰγύπτῳ,  
„ἐν Βυζαντίῳ πολλὰς, ἐν Σεβείᾳ, ἐν Ἰβηρίᾳ, ἐν Ἰταλίᾳ, ἐν Βαλγαρίᾳ, ἐν  
„Μολδοβλαχίᾳ, ἐν Ῥωσίᾳ, καὶ Ἀλανίᾳ, καὶ Ἑλλάδι, ἐν Νήσοις καὶ ἀπλῶς ὑπὸ  
„τῶν Τεσσαρῶν Πατριαρχικῶν Θρόνων, καὶ τῶν Ἀυτοκεφάλων Ἀρχιεπισκόπων  
„ὑπὸ Βασιλέων, ὑπὸ Ῥηγῶν, ὑπὸ Λύθεντων. Καὶ μετὰ τὴν ἄλωσιν Κωνσταντινου-  
„πόλεως πολλὰς Σωδικῶς ἐξηλέγχθησαν, καὶ ὡς παραβάται κατεκρίθησαν·  
„ὅθεν καὶ τὰ ἀνθρωπάκια Πλάτυνας καὶ Τριθέμιος, Ψύλλο-Γενιάδιος, Ψύλλο-  
„λάριος καὶ ὅσοι Ἀποστάται καὶ δεισιμαῖοι, καὶ καθυρημένοι ὑπὸ τῆς Ἀγίας  
„Ἀνατολικῆς Ἐκκλησίας, ἐψύλλθησαν καὶ ψύλλονται κατὰ τὸ ἴδιον τῇ Παπισμῇ,  
„ὃ ἡ πᾶσα σύστασις σύγκειται ἐξ ὑποκρίσεως καὶ ψύλλης.”

καθυπάγοντες ἦν δὴ Ἐπιστολῶ ἀνωτέρω παρεθέμεθα. Τελού-  
ταῖον δὲ οἱ αὐτοὶ Πατριάρχαι, ἐπὶ τῆς ἑκατον ἐν Κωνσταντι-  
νυπόλει συγκροτηθείσης Συνόδου ἐν Ἔτει 1450. τῆς Φλωρεντινῆς  
ἐκάνη, ὡς δολερᾶς καὶ βιαίας καὶ Σιμωνιακῆς, ψῆφον κατωέγ-  
καν, ὡς ἐν τοῖς Πρακτικοῖς αὐτῆς εἶδομεν. Πῶς οὖν ἄρα Φι-  
λόθεος τὰ περὶ τῆς ἐν Φλωρεντίᾳ ἐνώσεως Γράμματα παρὰ τῷ  
Πάπᾳ δεξάμενος, αὐτίκα δὴ ταύτῃ προσέθετο; ἢ πῶς ὠρισμέ-  
νως εἶχεν ἀπαντῆσαι τῷ Πάπᾳ, ὡς ἄρα τὸν ὅρον τῆς Φλωρεν-  
τινῆς Συνόδου, καὶ τὸ κατὰ Λατίνους Σύμβολον, καὶ αὐτὸς εἶη  
ἀποδεχόμενος; Ἐτι δὲ δὴ πῶς, εἴπεμοι: Φιλόθεος ἐπισέλω  
τῷ Βασιλεῖ Ἰωάννῃ, τὸν τῷ Φλωρεντινῷ μὴ ἀσπάζομενον Σωό-  
δον, κατὰκριτον ἂν ἀποφαίνοιτο; ὁπότε καὶ αὐτὸν αὐτὸς τὸν Αὐ-  
τοκράτορα, ὡς ἐγνώμεν, ἀφορισμῷ ἄξιον ἀπεφώτατο, εἴπερ ἰχυ-  
ρογνωμονῶν ἐπιμένει τῷ Λατινικῷ προΐστασθαι Δόγματος; Ἀλλὰ  
γὰρ τοιαῦτ' ἄτ' αἰὶν ἡ Φιλοθέου Ἐπιστολὴ περιέχει, ὥς οἱ Λατίνοι  
προβάλλοντα ἡμῖν ἐγκαυχώμενοι. Οὕτω γὰρ αὕτη, ἐν τῷ ΙΓ'.  
Τόμῳ τῶν Σωδικῶν ἐμφερομένη, ἐν σήλῃ 1173.

„Πάτερ Ἀγιώτατε, Πάτερ Μακαριώτατε, Θεῷ καθωσιω-  
„μένε, Δικαιότατε, Ἐπίγειε Ἀγγελε, καὶ Οὐράνιε Ἀνθρῳπε-  
„ὸ τῷ Θεῷ χάριν ἡμφιεσμένος, ὁ τῇ Ἱερᾷ περιβολῇ περικεκοσ-  
„μημένος, ὁ ἄριστος τῆς καλῆς Ἀγέλης Νομῶς· ὁ διὰ τῆς Σῆς  
„Διδασκαλίας τῆς ἐφορμῶντας λύκας, ἀπὸ τῶν τῆς παγκοσμίας  
„ποιμνῆς προβάτων ἀποσοδῶν. Ἡ διὰ προσασίας τῆς ἐνεργετή-  
„σαντος ἡμᾶς Χριστοῦ, ἔπειτα καὶ τῆς Κορυφαίας τῶν Ἀποστόλων  
„Πέτρου, Πέτρα τῆς Πίσεως· ἡ Κεφαλὴ πασῶν τῶν Χριστιανι-  
„κῶν Ἐκκλησιῶν· ὁ παρὰ τῆς Κυρίας ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ τῷ Ἱερᾷ  
„ἐξουσίαν δεξάμενος, καὶ Πάπας μὲν Ῥωμαίων, ὑπέρμαχος δὲ  
„τῶν λοιπῶν Πατριαρχῶν γενόμενος. Συλλειτουργεῖ καὶ Ἀδελφε  
„ἐν Ἀγίῳ Πνεύματι, Κύριε Ἀγίε Πάπα Ευγένιε! Εἰὴ Σοὶ χά-  
„ρις, μεγαλοπρέπειά τε ἅμα καὶ Δόξα παρὰ Θεῷ Πατρὸς Παν-  
„τοκράτορος, καὶ τῆς Κυρίας ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ· ὅς παραχρῶν τοῖς  
„ἰδίοις αὐτῆς Μαθηταῖς τῷ εἰρώλῳ ἐν τῇ Ἀγίᾳ Σιών, εἰρώλῳ,  
„ἔφη, τῷ ἐμῷ δίδωμι ὑμῖν· εἰρώλῳ ἀφίημι ὑμῖν, ὅς καθὼς τοῖς  
„λοιποῖς ἔθνεσιν· ἀλλὰ διὰ πυρίνων γλωσσῶν πρὸς αὐτὰς ἐλθὼν,  
„καὶ τὰς καρδίας αὐτῶν διανοίξας, καὶ πληρώσας αὐτὰς, ὅσον  
„ἕκαστος χωρεῖν ἠδυνάτο· καὶ ἔτῳ μεμνημένους ἐπὶ τὸν Κόσμον  
„ἅπαντα αὐτὰς ἀποσέλας, ὅσον μὲν τῆς φυσικῆς τε καὶ ἐθνικῆς  
„Φιλοσοφίας ἀπαιδούτους, τοσούτον διὰ τῆς ἀληθινῆς γνώσεως καὶ  
„δικαιοσύνης ἐσοικεωμένους· ταύτῃ δὴ τῷ χάριν καὶ εἰρήνῃ καὶ  
„τῷ εὐλογίαν, ἐν τῇ Μεγίστῃ Μακαριότητί σου πρῶτον, ἔπειτα  
„δὲ καὶ ἐν τοῖς Ἀγίοις Ἀδελφοῖς τῆς ἐμῆς Μετριοτήτος, Ἀρχιε-  
„ρεῦσι τε καὶ Ἱερεῦσι, καὶ ἅπασιν τοῖς Χριστοπυνύμοις, τὸ αὐτὸ  
„Πνεῦ-

„Πνεῦμα πολλαπλασιάσαι καταξιώσει. Πρεσβυβείης εἰς τὸτο  
 „τῆς τελειοτάτης Βασιλείσης καὶ Δεσποίνης Θεοτόκῃς Μαρίας, καὶ  
 „τῷ Μακαρίῳ Ἀποστόλῃ καὶ Εὐαγγελιστῷ Μάρκῃ, καὶ πάντων  
 „τελοῦταϊον τῶν Ἀγίων τῷ Θεῷ. Ἀμὴν.

Ἡ ἐμὴ ταπεινότης, Μακαριώτατε Πάτερ, πυθομένη παρὰ τῷ  
 „ἐμῷ, ἐν Πνῶματι Ἀγίῳ, Υἱῷ, τῷ Ἀδελφῷ Ἀλβέρτῃ Μοναχῷ,  
 „τῷ ἐκ τῆς τῶν Ἐλασσόνων τάξεως, ἀναφέρω: Ὅτι δηλ: ἐν-  
 „θάδε παραγενόμενος πρὸς ἡμᾶς διεκόμισε τὰ Ἀγιώτατα Γράμ-  
 „ματα τῆς Σῆς Ἀγιότητος, ἅπερ ἐπιμελέσασα ἀναγνωσθῆναι  
 „ἐκελεύσαμεν. Τὰ δὲ περιεχόμενα ἐν αὐτοῖς Ἐπιτάγματα, πε-  
 „ρὶ τῆς Ἱερᾶς τε καὶ Οἰκουμενικῆς Σиноδῆς, μετὰ πάντων τῶν  
 „Τοποτηρητῶν τῶν Ἀγιωτάτων Πατριαρχῶν, καὶ τῷ Κρατίστῃ  
 „Αὐτοκράτορος ἡμῶν Ἰωάννῃ τῷ Παλαμολόγῃ, καὶ πάντων τῶν  
 „Ἀρχιερέων καὶ Ἀγίων Διδασκάλων, τῶν τε Ἀνατολικῶν καὶ τῶν  
 „Δυτικῶν, σωήκαμέν τε καὶ ἐγνωμέν τίνι ποτὲ σωθήκη ἢ ἐνω-  
 „σις καὶ ἡ εἰρήνῃ ἐν ὅλῃ τῇ Καθολικῇ Ἐκκλησίᾳ διετελέσθῃ, ἐν  
 „ἀγάπῃ τελείᾳ, μιᾷ ψυχῇ, μιᾷ Πίστει, καὶ ἐν ἐνὶ Συμβόλῳ ἀπαρ-  
 „θέντος τε τῷ Σχίσματος καὶ τῆς ἑχθρας, πρὸς κοινὴν λατρείαν  
 „τε καὶ δικαιοσύνην, ἢ τῷ παντοδυνάμει Θεῷ ἀγάπῃ, καὶ ἡ εἰρήνῃ  
 „ἀνεκλήθησαν χάριτι, καὶ ἐλέει, καὶ οἰκτιρμοῖς τῷ Κυρίῳ ἡμῶν  
 „Ἰησοῦ Χριστῷ, ᾧ ἡ δόξα εἰς τὸς αἰῶνας τῶν αἰώνων. Ἀμὴν.

„Ἀναγνωσθῶν τολύω τῶν Σῶν Ἀγιωτάτων Ἐπιστολῶν, τε-  
 „λειότατε Πάτερ, ἀπάσας τὰς κατὰ Λατρείαν εὐχαριστίας ἀπε-  
 „δώκαμεν τῷ Κυρίῳ ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστῷ, ὑπὲρ τῷ πάντα ὑπερέ-  
 „χοντος δώρου, ὃ ἐχαρίσατο τῇ Καθολικῇ Ἐκκλησίᾳ αὐτῷ. Ἐπὶ  
 „δὲ ταύτῃ τῇ ἡμῶν εὐφροσύνῃ, καὶ ἕτερον προστετέθη γένος ἀγαλ-  
 „λίσεως. Κατ' αὐτὸ γὰρ τῷ χρόνῳ, ἐν ᾧ ὁ Κύριος Ἀδελφὸς  
 „Ἀλβερτος ἐνθάδε παρεγένετο, ἐπεδόθησάν μοι καὶ γράμματα ἐκ  
 „τῆς Μεγάλῃς Κωνσταντινουπόλεως, παρὰ τε τῷ Γαλιωσίτῃ Κυρίῳ  
 „Αὐτοκράτορος, καὶ τῶν ἡμετέρων Τοποτηρητῶν Πατέρων, καὶ τινων  
 „Εὐγενῶν, διακομιθέντα χερσὶ τῷ Πανιερωτάτου Ἀδελφοῦ τῆς  
 „ἐμῆς Μετριότητος, τῷ Μητροπολίτου Ρόδου Κυρίου Ἀναθερμύτῃ.  
 „Ἀνεγνωμέν ἔν ἐκάτερά, τά τε Ἑλλῶνισι δηλαδή, καὶ τὰ Λατίνισι  
 „γεγραμμένα· καὶ παρεβάλομεν αὐτὰ λόγον λόγῳ, καὶ εἶχον εἶχῳ,  
 „καὶ ὁμοιότατα ἔννομεν, πεπιστωμένα ταῖς ὑπογραφαῖς τῶν Ἱε Ἀγίων  
 „Ἀρχιεπισκόπων, Πατέρων καὶ Ἀδελφῶν ἡμῶν, καὶ τῶν Διδασκάλων  
 „Ἀνατολικῶν τε καὶ Δυτικῶν· καὶ ἐπισεσημασμένα δὲ καὶ ταῖς  
 „σφραγίδι τῆς Σῆς Μεγάλῃς Ἀγιωσύνης, καὶ τοῦ Κραταιοτάτου  
 „Πρίγκιπος, τῷ Κυρίῳ Αὐτοκράτορος· ὅθεν μετὰ τῶν περὶ ἡμᾶς  
 „Αἰγυπτίων Ἀρχιερέων, καὶ τῶν λοιπῶν τῷ ἡμετέρῳ Κλήρῳ, διω-  
 „ρίσαμεν ἵνα ἀπαντήσῃ, ἐν πάσαις ταῖς τῷ Χριστῷ Ἐκκλησίαις,  
 „κατὰ τὰς τῶν Λειτουργιῶν τελετὰς, πρὸ τῶν ἄλλων Πατριαρχῶν  
 I mmi-2  
 „μνή-



„μνήμῳ ποιῶμεν τῆς Σῆς Μακαριότητος, ὡς πρόνοια περὶ τῆς  
 „ἐγένετο, ἐν ταῖς Ἱερᾷς διατυπώσειςιν. Ἐγὼ δὲ, Πάτερ Μακα-  
 „ριώτατε, τὸν τῆς Ἱερᾷς Σωόδου ὅρον μεθ' ὑπερβαλλέσης τῆς ἐυλα-  
 „θείας ἀποδεξάμενος, ἐπὶ αἰωνίῳ τηρήσει ἐνεστερνισάμην, αἰρέμενος  
 „ἐπεῖθαι τοῖς Ἱεροῖς ἵχνεσι τῆς Σῆς Ἀγιότητος, καὶ ταῖς Σωόδοις,  
 „καὶ τοῖς Κανόσι τοῖς Ἀποστολικοῖς. Παρὰ δὲ ταῦτα, σιώμα τέ-  
 „τοις τοῖς χρισωνύμοις πλήθεσι, καὶ Θεῷ μετ' ἐυστεθείας εὐχαρι-  
 „στῶμεν, τῷ τοσαύτης ἡμᾶς καλᾷξιώσαντι χάριτος, καὶ καλᾷξήσαντι  
 „πάντας, ὡς ὑπὸ τῇ Ἀσθεντίᾳ καὶ τῇ ἐξουσίᾳ τῆς Σῆς Ἀγιότητος  
 „διῴθωεσθαι, καὶ ὑπὸ τῇ σκέπῃ τῶν πτερύγων τῆς Σῆς ἐυστεθείας  
 „καθοδηγεῖσθαι.

Σὲ δὲ, Πάτερ Μακαριώτατε, εὐδαίμονά τε καὶ τῆς Ἀκροτά-  
 „της Μακαριότητος ἄξιον, πάντα τὰ ἔθνη ἡγήσονται. Ἡ γὰρ  
 „πηγὴ τῆς ζωῆς ἐν τῷ Ἐυαγγελίῳ μακαρίως εἶπε, καὶ Υἱὸς Θεοῦ  
 „τὸς τῷ εἰρώνῳ ἐν ἀνθρώποις προμνησθόντας. Καὶ ὄντως Μα-  
 „κάριος εἶ Ἀγιώτατε Πάτερ. Πολλοὶ γὰρ τῶν ἄλλων Ἀρχιερέων,  
 „καὶ τῶν Βασιλέων, ἐπεθύμησαν ἰδεῖν τὸ δῶρον τῆς ἐνὶ  
 „σεως, καὶ ἐκ ἡδωήθησαν. Σὺ δὲ ἐ μόνον τῆς πρόγε τῶν ἄλ-  
 „λων ἀπολαῦσαι ἡξίωσαι, ἀλλὰ καὶ μέγιστον ἀποίση τὸν μισθόν, καὶ  
 „μετὰ δικαίων ἀπάντων ἀναδήσει τὸν τῆς ἀληθείας σέφανον. Ἀμὴν.

„Ἐγραψεν Ἐπιστολὰς ἡ ἐμὴ ταπεινότης πρὸς τὸν Κραταιό-  
 „τατον Πρίγκιπα, τὸν Κύριον Ἀυτοκράτορα καὶ πρὸς τινὰς δὲ  
 „τῶν ἐν Κωνσταντινπόλει Ἀρχιερέων, δηλώσασα: ὅτι ἐάν τις τὰ  
 „ἐν τῇ Ἱερᾷ Σωόδῳ ψηφισθέντα καὶ ὀρισθέντα μὴ παραδέχῃται,  
 „ὡς τύραννος καὶ Αἵρετικὸς λογίσειτο, καὶ τῆς κοινωνίας ἐκπέσοι  
 „τῆς Ἀγίας καὶ Καθολικῆς Ἐκκλησίας.

„ὑποκλίνω ἑμαυτὸν, Πάτερ Μακαριώτατε, ὑπὸ τῷ ὑποποδίῳ  
 „τῶν ποδῶν τῆς Σῆς Ἀγιότητος μεθ' ἧς εἴη χάρις, μακαριότης,  
 „καὶ εἰρήνη, σὺν ἅπασιν τοῖς ὑπὸ τῷ Σὺν ἐξουσίαν τελέσιν Ἀνδρά-  
 „σιν ἀμφοτέρων τῶν τάξεων. Ἡ δὲ εὐλογία τῆς Σῆς Μακα-  
 „ριότητος, εἴη μετὰ πάντων ἡμῶν. Ἀμὴν.

Οὕτω τοιγαροῦν τῷ ἀπατηλῷ Φλωρεντινῷ Σωόδῳ, δι'  
 ἑτέρας ἐφεξῆς ἀπάτης, ἡδωλήθησαν οἱ Λατῖνοι ἐπισυζησεσθαι.  
 Ἀλλὰ περὶ τῆς ἐν Φλωρεντίᾳ Σωόδου τοσαῦτα.

ΤΕΛΟΣ ΤΟΥ Β. ΤΕΤΥΧΟΥΣ

ΚΑΙ ΤΟΥ ὍΛΟΥ ΣΥΓΓΡΑΜΜΑΤΟΣ.

ΜΑΡΚΟΥ

# ΜΑΡΚΟΥ ΕΦΕΣΟΥ ΤΟΥ ΕΥΓΕΝΙΚΟΥ

ΠΕΡΙ ΤΗΣ ΕΚΠΟΡΕΥΣΕΩΣ ΤΟΥ ΑΓΙΟΥ ΠΝΕΥΜΑΤΟΣ

ΣΤΑΛΟΓΙΣΤΙΚΑ ΚΕΦΑΛΑΙΑ

Πρὸς Λατίνους.

## Κεφάλαιον Α'.

Τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱῶ ἐκπορεύόμενον, ἢ ὡς ἐκ δύο Ὑποστάσεων πρόεισιν, ἢ ὡς ἐκ τῆς κοινῆς αὐτῶν Φύσεως, ἢ ὡς ἐκ τῆς προβλητικῆς Δωάμεως. Ἀλλ' εἰ μὲν ὡς ἐκ δύο Ὑποστάσεων, δύο αἱ Ἀρχαὶ προδήλως, καὶ δύο τὰ Αἰτίαι ἐπὶ τῆς Θείας Τριάδος, καὶ δύο οἱ Προβολαί· καὶ ἡ Μοναρχία ἀνῆρηται, καὶ τὸ μόνω εἶναι πηγῶ τῆς Θεότητος τὸν Πατέρα. Εἰδ' ὡς ἐκ τῆς κοινῆς αὐτῶν Φύσεως, πρῶτον μὲν, εἰδέπω καὶ νῦν ἠκῆσαι, δυοῖν Ὑποστάσεων ἑτέραν ἐκπεφυκῆσαν Ὑπόστασιν, μὴ ἐξ αὐτῶν εἶναι λέγειν, ἀλλ' ἐκ τῆς κοινῆς Φύσεως ἔπειτα καὶ ἔτω πάλιν, καὶ εἰς τὸ αὐτὸ περιενεχθήσεται.

Ἡ γὰρ Ὑπόστασις εἰδὲν ἕτερον ἐστίν, ἢ φύσις μετὰ τῶν ἰδιωμάτων ὥσε τὸ ἐκ Φύσεως τινὸς, ἢ τινῶν, καὶ ἐκ τῆς Ὑποστάσεως, ἢ τῶν Ὑποστάσεων εἶναι ἀνάγκη· πρὸς τῷ μήθ' ἀπλῶς εἶναι τῆς Θείας Φύσεως τὸ προβάλλειν· ἢ γὰρ ἂν, καὶ τὸ Πνεῦμα προέβαλλεν ἕτερον, ἢ ἑαυτὸ, τῆς αὐτῆς κοινωνῶν Φύσεως. Εἰ δὲ ἐκ τῆς προβλητικῆς Δωάμεως ζητητέον τίς αὕτη ἢ προβλητικὴ Δωάμις; καὶ εἰ ἑτέρα παρὰ τὴν φύσιν; ἢ ἡ αὐτή; Εἰ μὲν ἔν ἡ αὐτῇ τῇ φύσει, πάλιν οἱ αὐτοὶ λόγοι τὰς αὐτὰς ἐπιφέροντες ἀτοπίας. Εἰ δὲ ἑτέρα παρὰ τὴν φύσιν· ἤδη μὲν συνεχώρησαν, ἕτερόν τι τῷ Θεῷ προσεῖναι τῆς αὐτῆς Φύσεως, ὅπερ ἐν ἄλλοις διαλεγόμενοι, μᾶλλον ἂν ἔλοιντο τὰς γλώσσας προέβαλλαν, ἢ ὡς ὁμολογούμενον δεξασθαι. Ἐπειτα πῶς ἐκ ἀτοπον, ἕτερόν τι παρὰ τὴν Θεῶν φύσιν ἀποτελεσικὸν εἶναι Θεῶν Φύσεως, εἴτ' ἔν Ὑποστάσεως; Ἀλλὰ καὶ ἔτω πάλιν τὰς δύο ἀρχὰς ἐκ ἐκφύξοντα· Καὶ γὰρ τὸ ἐκ Πατρὸς καὶ Μητρὸς γεννώμενον, ἐκ τῆς γεννητικῆς αὐτῶν Δωάμεως πρόεισιν· ἢ διὰ τῆς γεννητικῆς αὐτῶν Δωάμεως, (ἥτις ἐστὶν αὐτοῖς κοινὴ, καὶ διαφέρει τοῖς τρόποις) ἀλλ' εἰδὲν ἥττον ἐκ δύο τε ἐστὶν Ὑποστάσεων,

Τόμ: Β'.

Κ κκκκκκκ

καὶ

καὶ δύω τὰς ἀρχὰς ἔχει τῆς ἑαυτῆς γεννήσεως· καὶ ἐκ ἅν τις ὅλως ἀρνήσασθαι τῆτο τολμήσκειν· ὥς κὲ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, εἶπερ ἐκ Πατρὸς κὲ Υἱῆς πρόεισι διὰ τῆς προβλητικῆς Δωάμεως, δύω τὰς ἀρχὰς ἔχει τῆς ἑαυτῆς ὑπάρξεως.

„Ἀλλ' ἡ κτίσις, Φασίν, ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱῆς καὶ Ἁγίου Πνύματος ἔσα, διὰ τῆς Δημιουργικῆς ταύτης Δωάμεως, ἐξ ἑνὸς „ἐστὶ Θεὸς καὶ Δημιουργῶ· καὶ μίαν ἀρχὴν τὸν Πατέρα καὶ τὸν „Υἱὸν καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἔχει· τί ἐν κωλύει καὶ τὸ Ἅγιον „Πνεῦμα ἐκ Πατρὸς κὲ Υἱῆς προερχόμενον, ὡς ἐξ ἑνὸς τε εἶναι „Θεὸς καὶ Προβολέως, καὶ μίαν ἀρχὴν ἔχειν τὸν Πατέρα καὶ „τὸν Υἱόν·;”

Ἀπήλλαξας ἡμᾶς πραγμάτων ὧ βέλτιζε, τοῖς κτίσμασι σωτάξας τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον· καὶ Πνύματομάχον καθαρῶς ἑαυτὸν ἀποφῆνας· εἰ γὰρ τὸν αὐτὸν τρόπον ἥτε κτίσις ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱῆς καὶ Ἁγίου Πνύματος, καὶ τὸ Πνεῦμα ἐκ Πατρὸς κὲ Υἱῆς, τί (γὰρ) ἄλλο, ἢ κτίσμα τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον; Ἀλλ' ἐγὼ Σοὶ τὸ ἐναντίον ἀναστρέψας εὐσεβῶς ἐρῶ· ὡς ἐπέειπερ ἡ κτίσις ἔτως, ἐχ' ἔτω τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. Τὸ μὲν γὰρ δημιουργικῶς ἐκ δύω καὶ πολλῶν γινόμενον, ἐστὶν εἰπεῖν ὡς ἐξ ἑνὸς γεγονέναι πρὸς τὸν δημιουργικὸν ἀφορῶντας λόγον, ἐ μόνον ἐπὶ τῆς Θείας δημιουργίας, καθ' ὃν μία καὶ ἡ αὐτῇ βελή, καὶ θελησις, καὶ σοφία, καὶ δώαμις, καὶ ἐνέργεια· ἄλλα καὶ ἐπὶ τῆς ἀνθρωπίνης κὲ καθ' ἡμᾶς. Εἰς γὰρ ὁ αὐτὸς ἐν διαφόροις τεχνίταις ὁ τεχνικὸς λόγος· καὶ οἱ τεχνίται ἐν εἰσι πάντες· καὶ κατὰ τῆτο, τὸ ἐκ πολλῶν γενόμενον ἐξ ἑνὸς ἐστὶν εἰπεῖν γεγονέναι, καὶ μίαν ἀρχὴν ἔχειν· τὸ δὲ φυσικῶς ἐκ δύω τῶ ὑπαρξιν ἔχον, ἐκ ἅν τις ὅλως ἐξ ἑνὸς εἶποι ποτέ· καὶ γὰρ ἀδωάτον τὸν αὐτὸν τρόπον ἐκάτερον εἰς τὸ εἶναι συμβάλλειν. Καὶ αὐτοὶ δὲ οἱ Λατῖνοι λέγουσι διάφορον εἶναι τῶ ἐκ Πατρὸς τῆ Πνύματος πρόοδον, τῆς ἐκ τῆς Υἱῆς· καὶ τῶ μὲν ἄμεσον εἶναι, τῶ δὲ ἔμμεσον· ὥς κὲ ἐκ ἅν ἐκφύγοιεν ἑδαμῶς τὰς δύω ἀρχὰς, εἰμὴ μέλλοιεν ἑτέροις πλείοσιν ἀτόποις περιπεσεῖσθαι.

„Καὶ τί κωλύει, Φασί, δύω μὲν εἶναι τὰς ἀρχὰς, τῶ μὲν τοι ἑτέραν αὐτῶν ὑπὸ τῶ ἑτέραν, ὥς κὲ ἔτω μίαν εἶναι „τὰς δύω; τῆτο δὴπερ καὶ ὁ Θεολόγος Γρηγόριος ἤρηται, λέγων· „ἢ ἐκ τῆς ἀρχῆς ἀρχή·”

Εἰ ἔτω τὰς ἀρχὰς λέγεις, ὡς τῶ μὲν ἔγγιον εἶναι, τῶ δὲ πορρώτερον, ἐκ οἷδ' εἰ μᾶλλον οἷον τε μία διὰ τὸ ὑπάλληλον εἶναι, ἢ καὶ μάλα δύω, διότι καὶ μάλα διάφοροι. Σκόπει δέ· ἐκατέρα τέτων μᾶλλον ἀρχὴ τῆς ἑτέρας, καὶ ἥττον· πῇ μὲν μᾶλλον, πῇ δὲ ἥττον. Ἡ μὲν ἔγγιον μᾶλλον ἀρχὴ, διὰ τὸ ἔγγιον εἶναι· ἡ δὲ πορρώτερον μᾶλλον, διὰ τὸ περιέχειν τὸ ἔγγιον.

Εἰ

Εἰ ἔν ἔτω διαφέρει, πῶς ἔσονται μία; Τίς δ' ἂν εἶποι τὸν Ἀδὰμ, καὶ τὸν Σήθ, μίαν ἀρχὴν τῷ Ἐνὼς εἶναι; καὶ τοι γε τέτων ἐκάτερος ἀρχή: ἢ μὲν ἔγγιον, ἢ δὲ πορρωτέρω πῶς ἔν αὐται μία; Πῶς δὲ καὶ ἀνεκτὰ βλασφημῶσι καὶ ἔτω, τιθέντες τὸ Πνεῦμα πόρρω τῆς Πατρικῆς ὑποστάσεως, καὶ οἷον Υἱὸν αὐτὸ λέγοντες; „Καὶ τοι γε τὸ ἐκ τῷ Πατρὶ ἐκπορεύομενον ἔρηται καὶ Πνεῦμα „τὸ ἐκ τῆς Πατρικῆς ἐκπορεύομενον ὑποστάσεως,,. Ἀλλ' ὅπερ ὁ Θεολόγος ἔρηκε, πρὸς τὰ κτίσματα βλέπων ἔρηκε τῆτο καθάπερ ἂν εἰ εἶπε: δημιουργὸν ἐκ δημιουργῶ ὥστερ καὶ φῶς ἐκ φωτός, καὶ Θεὸν ἐκ Θεῶ, καὶ ἀγαθὸν ἐξ ἀγαθοῦ. Ἄπερ ἅπαντα μετὰ τῷ Πατρὶ ὄντα, (ἵ: ὦν) εἰς ἐστὶ Θεὸς μετ' αὐτῷ, καὶ ἐν φῶς, καὶ ἀγαθὸς εἰς, καὶ ἀρχὴ μία τῶν γεγονότων ἀπάντων: „Πάντα γὰρ, φησὶ, δι' αὐτῷ ἐγένετο, καὶ χωρὶς αὐτοῦ ἐγένετο ἑδὲ ἐν, ὃ γέγονεν,,. (\*) Ἐξ αὐτοῦ δὴ παρθεν ὄν, ἑδὲ δι' αὐτοῦ τῆτο δ' ἐστὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. Ὅτι δὲ ἔτως ἔχει τὸ εἰρημένον ὑπὸ τῷ Θεολόγῳ, δῆλον ἐξ ὧν ἐν ἑτέροις φησὶν: „Ἀναρχον, καὶ Ἀρχὴν, καὶ τὸ μετὰ τῆς Ἀρχῆς, εἰς Θεός,,. Οὐκ εἶπε τὸ ἐκ τῆς Ἀρχῆς, ἀλλὰ τὸ μετὰ τῆς Ἀρχῆς, ἐκ τῷ Ἀνάρχῳ δηλ: προϊόν. Καὶ τοι γε, εἰ ὅλως ἐφρόναι τῷ Πνεύματος Ἀρχὴν τὸν Υἱὸν, πῶς ἂν μάλλον ἔρηκε τῆτο, βιαύοτατοι πάντων ἀνθρώπων; Ἀλλ' ἔθ' ἔτος, ἑδ' ἕτερος τῶν καθ' ἡμᾶς Θεολόγων τῆτο φρονῶν φαίνεται, καὶ ὑμεῖς σοφισόμενοι πάντα τὸν χρόνον καταναλώσητε.

## Κεφάλ: Β'.

Πνεῦμα, φησὶν ὁ Νουσαεὺς Θεολόγος, τὸ τῆς Πατρικῆς ἐκπορεύομενον ὑποστάσεως· εἰ δὲ τὸ αὐτὸ, καὶ τῆς τῷ Υἱῷ ὑποστάσεως ἐκπορεύεται, τί ἄλλο, ἢ ἐκ δύο ἐκπορεύεται ὑποστάσεων; τὸ δ' ἐκ δύο ὑποστάσεων ἐκπορεύομενον, τί γ' ἄλλο ἢ δύο ἀρχὰς ἔχει τῆς ἑαυτοῦ ὑπάρξεως; ἔκ ἄρα Λατῖνοι τῷ δυαρχίαν ἐκφύξονται, μέχρις ἂν καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον εἶναι λέγωσιν.

Εἰ ὥστερ ἐκ τῷ Πατρὶ ὁ Υἱὸς, ἔτω καὶ τὸ Πνεῦμα ἐκ τῷ Πατρὶ, διατὶ μὴ καὶ τὸ Πνεῦμα Υἱός; ὅτι διαφέρει τῷ τῆς ὑπάρξεως τρόπῳ κατὰ τῆς Θεολόγας, καὶ ἔχ ὑπὸ τῷ Πνεύματι ἐκ τῷ Πατρὶ, ἑδὲ γεννητῶς προϊόν. Τίνα ταύτης διάκρισιν ἀκριβεστέραν ζητήσομεν τῷ Υἱῷ καὶ τῷ Πνεύματος πρὸς τὸν Πατέρα, καὶ πρὸς ἀλλήλους; Εἰ γὰρ τῷ αὐτῷ τὸ μὲν Υἱός, τὸ δ' ἔχ

Υἱός,

(\*) Διεφθάρθαι δοκεῖ ἐνταῦθα ἡ λέξις, ἢ τι ἐλλείπειν. Ἀναγνωστέον ἔν ἴσως ἔτως: „Ἐστὶ δὲ τι ἐκ ἐξ αὐτοῦ δὴ παρθεν ὄν. ἑδὲ δι' αὐτοῦ (γεγονώς μοι νόει, ὡς τὰ κτίσματα) τῆτο δὲ ἐστὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον.



Υἱός, ἀλλ' ἄλλο τι· δῆλον ὅτι πρὸς μὲν τὸν Πατέρα τῷ τῆς χέσεως διακρίνονται λόγῳ, καὶ ὡς αἰτιατὰ πρὸς αἴτιον ἔχουσι. Πρὸς ἄλληλα δὲ, τῇ κατὰ τὴν Ἀντίφασιν ἀντιθέσει· τὸ γὰρ Υἱὸν εἶναι, τῷ μὴ Υἱὸν εἶναι, δῆλον ὡς ἀντιφατικῶς ἀντίκειται. Οὐκ ἄρα καὶ ἐπὶ τέτων, Υἱὸς λέγω καὶ Πνεύματος, ἀναγκαῖα ἢ κατὰ τὴν χέσιν ἀντίθεσις πρὸς διάκρισιν, εἴπερ καὶ διὰ τῆς Ἀντιφατικῆς δυνάμεως διακρίνεσθαι.

#### Κ ε φ ά λ: Γ'.

Οἱ Λατῖνοι μὴ θέλοντες ἔπεσθαι ταῖς κοινῇ παρὰ πᾶσιν ὁμολογημέναις τῆς Θεολογίας Ἀρχαῖς, ἀλλ' ἑτέρας ἐπινοῶντες αὐτοὶ πρὸς τὴν ἰδίαν ὑπόθεσιν σωτηνέσας, ἡ καθάπερ ἡμεῖς διακρίνομεν τὰ τῷ Θεῷ προσόντα, τὰ μὲν κοινὰ λέγοντες εἶναι, τὰ δὲ ἴδια τῶν Θεαρχικῶν Προσώπων· ἀλλ' ἑτερόν τινα καινότερον τρόπον· τὰ μὲν ἴδια φασὶν εἶναι, τὰ δὲ κοινὰ, τὰ δὲ κοινότατα. Τὰ μὲν ἐνὶ Προσώπῳ προσόντα λέγοντες ἴδια· τὰ δὲ δυσὶ κοινὰ· τὰ δὲ ὁμῶς τοῖς τρισὶ κοινότατα. Ὅτι μὲν ἐν ἀσιωθήθῃ ταῦτα, καὶ τοῖς Λατίνοις σωθήθῃς κεκαυνοτόμηται, δῆλον ἐξ αὐτῶν τῶν φωνῶν. Ἀλλ' ἰδωμεν καὶ τίνα ἐστὶν, ἃ φασὶν εἶναι κοινὰ, καὶ ἃ κοινότατα; τῷ μὲν Υἱῷ καὶ τῷ Πνεύματι λέγουσιν εἶναι κοινόν, τὸ ἐκ τοῦ Πατρὸς εἶναι· δηλ.: τὸ αἰτιατόν· καὶ δὴ, καὶ τὸ πέμπεσθαι παρ' αὐτοῦ, καὶ ὅσα τέτοις ὁμόδοιχα· τῷ δὲ Πατρὶ καὶ Υἱῷ τὸ πέμπειν τὸ Πνεῦμα, καὶ προχεῖν, καὶ πηγάζειν, καὶ εἶτι τοιοῦτον· οἷς τούτων εἶναι λέγουσι, καὶ αὐτὸ τὸ προβάλλειν ἐσιωδῶς τὸ Πνεῦμα.

#### Κ ε φ ά λ: Δ'.

Σκεπτέον ἐν ἄνωθεν. Εἰ μὲν τὸ αἰτιατόν, ἄλλο τι παρὰ τὸ γεννητόν καὶ ἐκπορευτόν· ἐδήλα, περὶ Θεοῦ λεγόμενον, εἶχεν ἂν χώραν κοινὴν τοῖς δυσὶ τέτοις λέγειν· εἰδ' ἃ ἐστὶν, ἃ ἐπινόησιν λαβεῖν τὸ αἰτιατόν ἐφ' ἑκατέρω τέτων, ἂν δὲ τῷ τρόπῳ· τὸ μὲν γὰρ ἐστὶν αἰτιατόν· γεννητῶς, τὸ δὲ ἐκπορευτῶς· φωνὴ μὲν ἐστὶ μία τὸ αἰτιατόν, πράγματα δὲ δύο: τὸ γεννητόν, καὶ ἐκπορευτόν· αὐτὰ δὲ ταῦτα καὶ ἴδια λέγομεν ἑκατέρω τέτων. Οὐκ ἄρα τι κοινὸν ἄλλο τοῖς δυσὶν ὑπάρχει· (\*) πρὸς τὸν Πατέρα διακρίνεσθαι, καὶ ἀλλήλων.

Τότε δὴ πέμπεσθαι, καὶ εἶτι τοιοῦτο, μάλιστα μὲν τὴν εὐδοκίαν δηλοῖ κατὰ τὸν Θεολόγον Γρηγόριον, καὶ τὸ πρὸς τὴν πρώτην αἰτίαν τὰ ἐξ αὐτῆς ἀναφέρεσθαι πάντα, καὶ ἵνα μὴ δοκῶσιν ἀντί-

(\*) Ταῦτα γὰρ, καὶ πρὸς τὸν Π. δ. καὶ ἀλ:

ἀντίθετοι. Ἐπειτα καὶ χρονικὸν ὄν, καὶ ποτὲ, καὶ πρὸς τι γινόμενον, ἐκ ἂν εἰκότως προσλογίζοιτο τοῖς Θεοῖς ἰδιώμασιν, ἀνάρχοις τε καὶ αἰδίοις ὀφείλουσιν εἶναι. Τὰ δ' αὐτὰ ταῦτα καὶ περὶ τῆς πέμπειν ἐρῶμεν: ὅτι καὶ αὐτὸ χρονικὸν ὄν, καὶ ποτὲ, καὶ πρὸς τι, καὶ διὰ τι γινόμενον, ἐκ ἂν εὐλόγως ὡς ἴδιον τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ πρὸς τὸ Πνεῦμα δοθῇ· πολλὰ γε δεῖ ταῦτὸν εἶναι τῇ ἀνάρχῳ καὶ ἀνατίῳ προόδῳ τῆς Πνύματος. Ἐπειτ' ἐδὲ τὸ Πνεῦμα τῆς πέμπειν ἀφῆται· καὶ δῆλον ἐξ ὧν ὁ Προφήτης φησὶν, ἐκ Προσώπῃς τῆς Υἱᾶ λέγων: „Κύριος ἀπεσάλκεμε, καὶ τὸ Πνεῦμα αὐτῶν. Εἰ δὲ ὡς ἄνθρωπος ἀπεσάλθαι παρὰ τῆς Πνύματος λέγεται, πόθεν δῆλον; ἢ δεῖξον, ἢ μὴ κατασοφίσῃς. Καί τοι ὁ Θεὸς Χρυσόσομος, ἐν τῷ περὶ τῆς Ἁγίας Πνύματος Λόγῳ, παρὰ τῆς Πατρὸς εἰρημένον τῆτο δείκνυσιν, ἐξ αὐτῶν τῶν τῆς Ἡσαΐας Προφητείας ῥημάτων· καὶ τῆτον ἀπεσάλθαι παρὰ τῆς Υἱᾶ καὶ Πνύματος διατάνεται. Κοινότατον ἄρα τὸ πέμπειν, καὶ ἐχὶ κοινὸν, ὡς δοκεῖ τοῖς Λατίνοις. Εἰ δ' ἄρα τὸ προβάλλειν αἰδίως τὸ Πνεῦμα κοινὸν ἐστὶ Πατρὶ καὶ Υἱῷ, ἐξέλιπε (\*) Πρὸς δὲ τέτοις, τῷ μὲν Υἱῷ καὶ τῷ Πνύματι, θαυμαστὸν ἐδὲν, ἔτι κοινὸν ὑπάρχει πρὸς τὸν Πατέρα: ὁ μὲν γὰρ ἐκ ἀρχῇ μόνον, ἀλλὰ καὶ ἀναρχος καὶ ἀναίτιος· οἱ δὲ ἀρχῇ ἔχουσι τὸν Πατέρα καὶ ἄμφω· τῷ δὲ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ πόθεν κοινόν τι δώσομεν, ὃ μὴ καὶ τῷ Πνύματι πρόσσευν; ἔ γὰρ ἀφῆσι τῆτο Διονύσιος ὁ Μέγας διαπρύσιον κεκραγώς: „τὰ κοινὰ Πατρὶ καὶ Υἱῷ, καὶ „Ἁγίῳ Πνύματι κοινωνικῶς καὶ ὡωμένως ὁ Θεαρχικὸς ἀνατίθῃσι λόγος. Καὶ ὁ Θεολόγος Γρηγόριος: Πάντα ὅσα ὁ Πατὴρ „τῆς Υἱᾶ, πλὴν τῆς αἰτίας· πάντα ὅσα ὁ Υἱὸς τῆς Πνύματος, „πλὴν τῆς γεννήσεως.

## Κεφάλαιον Ε'.

Ἐτι περὶ τῆς Ἀποστολῆς ἀκριβέστερον ἐπισκεπτόμεν. Ἐγνωσται μὲν ὁ Πατὴρ ἐν τῇ Παλαιᾷ Διαθήκῃ· ἔδει δὲ καὶ τὸν Υἱὸν γνωσθῆναι ἐν τῇ Καιῇ· τῆτο ἔν ἐστὶ τὸ τὸν Υἱὸν ἀπεσάλθαι, τὸ οἶονεῖ πεφανερῶσθαι παρὰ τῆς Πατρὸς εἰς τὸν κόσμον. Πάλιν τῆς Υἱᾶ γνωσθέντος, ἔδει γνωσθῆναι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. Τῆτο παρὰ Πατρὸς καὶ Υἱᾶ, τῶν ἤδη προεγνωσμένων, ἀπεσάλθαι λέγεται· τελέσει πεφανερῶσθαι. Τίς γὰρ ἑτέρα πέμψις καὶ ἀποστολὴ Θεῶ, τῆς πανταχῶ παρόντος καὶ μηδαμῇ μελαίνοντος; Διὰ τῆτο, φησὶν: ἐὰν πορευθῶ, πέμψω αὐτὸν πρὸς ὑμᾶς. Τῆτο δὲ, ἢ τι

(\*) Ἐδ' ὅ, τι λέπειν ἐνταῦθα ἔοικεν, δυσείκαστον γὰρ ἄλλως, ὅπερ ὁ Συγγραφεὺς νοεῖν βέλεται.

Τόμ.: Β'.

Λ αλλλλλλ

ἐ τὴν αἰδίον πρόοδον δηλοῖ πάντως· ἐ γὰρ τὸτο λέγει, ὅτι ἐὰν ἐγὼ μὴ ἀπέλθω, ἐ προβάλλω τὸν Περὰκλητον· ἐὰν δὲ πορεύθῃ, τότε προβαλῶ. Ἀλλ' ὅτι ἐὰν αὐτὸς ἐξ ὀφθαλμῶν ὑμῶν γενώμαι, τὴν ἐκείνῃ χάριν καὶ δώσω ὑμῖν φανερώσω.

Ἔτι καὶ τὸ μεταβαίνειν Θεῷ ἀλλότριον, σωμάτων γὰρ ἴδιον. Εἰ μὲν περὶ τοῦ Υἱοῦ τὸ πέμπεσθαι λέγεται, τὴν Σωματικῇ αὐτῷ παρῆσαν εἰς τὸν κόσμον δηλοῖ. Ἐξαπέστειλε γὰρ, φησὶν, „ὁ Θεὸς τὸν Υἱὸν αὐτοῦ εἰς τὸν κόσμον, γεννώμενον ἐκ γυναικός. Εἰ δὲ περὶ τοῦ Ἀγ. Πνεύματος, τὴν χάριν αὐτοῦ μιλῶν καὶ τὴν ἐνέργειαν, ἐκ αὐτῇ τὴν ἑνότητα· ὅτι καὶ διαφέρουσα ἐκείνης αὐτῇ (ὡς ἐπὶ) μάρτυς ὁ Θεὸς Χρυσόστομος ἐν ταῖς κατὰ Ἰωάννην ὁμιλίαις, ἔτω λέγων: „τὸ Πνεῦμα τὴν χάριν ἢ Γραφὴν ποιεῖ „μὲν πῦρ, ποτὲ δὲ ὕδωρ καλεῖ· δεικνύσα ὅτι ἐκ ἑσίας ἐστὶ ταῦτα „τὰ ὀνόματα, ἀλλ' ἐνέργειας. Καὶ πάλιν: Πνεῦμα ἐνλαύθῃ τὴν ἐνέργειαν λέγει· αὐτὴ γὰρ ἐστὶν ἡ μεριζομένη, αὐτὴ τοιγαρὶν καὶ ἡ πεμπομένη. Πέμπεται δὲ παρὰ Πατρὸς δι' Υἱοῦ ἐν Ἀγίῳ Πνεύματι, κοινῇ τῆς Τριάδος ἕσα μία καὶ ἡ αὐτή. Οὐδὲν ἄρα τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ κοινὸς πρόσεςιν, ὅπερ καὶ τῷ Πνεύματι, καθὼς ὁ Διονύσιος ὁ κλεινὸς ἀποφαίνεται.

„Πνεῦμα, φησὶν ὁ Νυσσαεὺς Θεολόγος, τὸ τῆς Πατρικῆς „Ἐκπορεύομενον Ὑποστάσεως· τίτι δῆλον ἐκ ἑστῶν ἐντεῦθεν: ὅτι τὸ προβάλλειν τὸ Πνεῦμα, τὸ Πατρὸς ἐστὶν Ὑποστατικόν, ἢ ἔν Ὑποσωπικόν ἰδίωμα; Καθάπερ γὰρ τὴν τῷ Μονογενεῖ Ὑπόστασιν σαρκωθῶσα λέγοντες, ἀκοινωνήτον τὸτο τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Πνεύματι δεικνύμεν· ἔτω καὶ τὴν τῷ Πατρὸς Ὑπόστασιν τὸ Πνεῦμα προβάλλειν εἰρηκότες τὸ Ἅγιον, ἐκέτι ἂν εἰκότως καὶ τῷ Υἱῷ τὸτο δοίμεν. Ἡ τοίνυν Λατῖνοι διαξάτωσάν τινα τῶν Θεολόγων, καὶ ἐκ τῆς τοῦ Υἱοῦ Ὑποστάσεως τὸτο λέγοντα· ἢ καθαροῶς ἐντεῦθεν ἐκ μόνου τοῦ Πατρὸς ἐκπορεύεσθαι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἀναφαίνεται.

#### Κεφάλαιον 5'.

Οἱ Λατῖνοι, τὸ τρίτον εἶναι μετὰ Πατέρα καὶ Υἱὸν τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ὡς ὁμολογούμενον ἔχοντες, ἐκ τῆς τάξεως ταύτης ὁρίωνται δεικνύσθαι καὶ ἐκ τοῦ Υἱοῦ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκπορεύεσθαι. Εἰ γὰρ μὴ τάξιν εἶχε, φησὶ, καὶ πρὸς τὸν Υἱὸν, κατὰ τὴν πρὸς αὐτὸν χάριν, ἐκ ἂν ἐλέγετο τρίτον, ἐδ' ἐξῆς μετ' αὐτόν. Ἀλλ' ὡς γενναῖοι (φαίη ἀντις πρὸς αὐτὸς) εἰ μετὰ τὸν Πατέρα δεύτερος ὁ Υἱός, τὸτο γὰρ ἢ χάρις ἀπαυτεῖ, καὶ ἐκ ἂν ἄλλο τι μεταξὺ παρεμπέσοι· τί ἂν ἄλλο εἴη τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ἢ τρίτον; πρῶτον μὲν γὰρ ἐκ ἂν εἴη δῆπερ· δεύτερον δὲ ὁ Υἱός ἐξ ἀνάγκης· τρίτον ἄρα τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, εἴπερ ἐστὶ

ἐς συμπληρωτικὸν τῆς Μακαρίας Τριάδος ἐκείνης. Διὰ τῆτο δὲ καὶ ἡ τάξις, ὅμαι, τοῖς Θεολόγοις παρείληπται, ἵνα μὴ Υἱὸς νομιθῇ μετὰ τὸν Πατέρα τατλούμενον. Ἀλλως γὰρ, καὶ ἀναιρῶσι τὴν τάξιν· ἐκ ἔχει γὰρ, Φασί, τάξιν ἡ Ἁγία Τριάς· ἔχ' ὡς ἄτακτος, ἀλλ' ὡς ὑπὲρ τάξιν. Καὶ αὖθις τὰ αὐτὰ καὶ προαριθμῶνται, καὶ σωμαριθμῶνται, καὶ ὑπεραριθμῶνται· τί ἔν ἡ τάξις σωτελεῖ πρὸς τὴν ἡμετέραν ὑπόθεσιν; εἰ μὴ πᾶν τὸ ἐχόμενον τινος κατὰ τάξιν, καὶ ἐξ αὐτῆς τὸ εἶναι ἔχειν ἀνάγκη. Φέρε δὴ καὶ τὸν Μέγαν ὑμῖν προθῶμεν Βασίλειον, ἵνα ἴδωμεν, οἷα περὶ τῆ προκαμένου ὁθέγγεται.

Ἐπειδὴ, Φησί, τὸ Πνεῦμα ἀφ' ὃ πᾶσα ἐπὶ τὴν κτίσιν ἡ τῶν ἀγαθῶν χορηγία πηγάζει, τῆ Υἱῶ μὲν εἴρηται (\*) ὡς ἀδιασάτως συγκαταλαμβάνεται· τῆς δὲ τῆ Πατρὸς αἰτίας ἐξημμένον ἔχει τὸ εἶναι, ὅθεν καὶ ἐκπορεύεται· τῆτο γνωστικὸν τῆς κατὰ τὴν Ὑπόστασιν ιδιότητος σημεῖον ἔχει, τὸ μετὰ τὸν Υἱὸν, καὶ σὺν αὐτῷ γνωρίζεσθαι, καὶ ἐκ τῆ Πατρὸς ὑφεσῆναι. Ἀκέραις τῆ Οὐρανοφάντορος οἷα λέγει; τῆ Υἱῶ, Φησὶν, ἡρτηται· τῆς ἐξελαι ἔχ' ὅτι σὺν αὐτῷ ἀδιασάτως ἐκ τῆ Πατρὸς τὸ εἶναι ἔχον καταλαμβάνεται· τῆς τῆ Μονογενῆς μεσιτείας, (ὃ Φησὶν ὁ ἀδελφὸς αὐτῆς Γρηγόριος ὁ τῆς Νύσσης) καὶ ἐαυτῷ τὸ Μονογενὲς φυλαττέσθαι, καὶ τὸ Πνεῦμα τῆς Φυσικῆς χέσεως πρὸς τὸν Πατέρα μὴ ἀπαλλοτριώσθαι. Καὶ πάλιν· γνωστικὸν σημεῖον ἔχει, Φησί, τὸ μετὰ τὸν Υἱὸν, καὶ σὺν αὐτῷ γνωρίζεσθαι, καὶ (ικ) τῆ Πατρὸς ὑφεσῆναι· τῆτων τί ἂν γένοιτο λυβρότερον, ἢ σαφέστερον, ἢ πρὸς (τὴν) ἡμετέραν δόξαν ὁμοφωνώτερον;

#### Κ ε φ α λ : Ζ'.

Πολύ τι δοκεῖ συμβάλλεσθαι τοῖς Λατίνοις πρὸς τὴν οἰκείαν ὑπόθεσιν, τὸ λέγειν τῆ Υἱῶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. Ἐγὼ δὲ προθήσω τέτοις, καὶ ὅτι ἴδιον ἐς τῆ Υἱῶ καὶ ἐκ ἀλλότριον τῆ Υἱῶ καὶ ὅσα τέτοις ὅμοια. Ἀρ' ἔν διὰ ταῦτα, καὶ ἐξ αὐτῆς ἐκπορεύεται; Ἀλλ' ἐκ ἐάσει τῆτο πρῶτον μὲν Θεοδώρητος, βλάσφημόν τε καὶ δυσσεβῆ τὴν τοιαύτῃ δόξαν ἡγόμενος. Ἐπειτα καὶ αὐτὸς ὁ Θεότατος Κύριλλος, ἐν οἷς Φησί: „κατ' ἐδένα τρόπον σαλῶν ἀνεχόμεθα τὴν ὁριθεῖσαν παρὰ τῶν Πατέρων Πίσιν, ἢτοι τὴν τῆς Πίσεως Σύμβολον· ἔτε μὴ ἐπιτρέπομεν ἑαυτοῖς, ἢ ἑτέροις, λέξιν γὰρ μίαν ἀμείψαι τῶν ἐγκειμένων ἐκάσε· ἔ γὰρ ἦσαν αὐτοὶ οἱ λαλῶντες, ἀλλὰ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον· ὃ ἐκπορεύεται μὲν ἐκ τῆ Θεῶ καὶ Πατρὸς, ἐς δὲ ἐκ ἀλλότριον „τῆ

(\*) Ἰσ: ἡρτηται.



„τῷ Υἱῷ κατὰ τὸν τῆς ἐσίας λόγον,,. Ἀκούεις κατὰ τίνα λόγον τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα λέγεται, καὶ ἴδιον αὐτῷ, καὶ ἐκ ἀλλότριον; Κατὰ τὸν τῆς ἐσίας Φησὶ, λόγον· ὁμοῦσιον αὐτῷ δηλαδή. Λέγει δὲ καὶ ὁ Μέγας Βασίλειος, ἐν τῷ ΙΗ'. τῶν πρὸς Ἀμφιλόχιον: „Πνεῦμα Χριστῷ λέγεται, ὡς ὠκειωμένον αὐτῷ,,. Τίνα τοίνυν (\*) ἴσσι: ἐξηγητικῶς ἔτι βελτίονα, τῶν Ἀποστολικῶν τε καὶ ἰδίων (\*) ῥημάτων καὶ Θεῶν των δεξιόμεθα, παρὰ τῆς Θεῆς τετρασὶ Διδασκάλης;

## Κ ε φ α λ: Η'.

Τὸ δι' ἐμφυσήματος παρὰ τῷ Κυρίῳ δίδοσθαι τὸ Πνεῦμα τοῖς Μαθηταῖς μετὰ τῷ Ἀνάσασιν, Σύμβολον οἱ Λατῖνοι ποιῶνται τῷ ἐξ αὐτῷ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκπορεύεσθαι. Ὅτι μὲν ἔν ἐχ ἡ ἐσία τῷ Πνεύματος ἦν ἡ διδομένη τότε δι' ἐμφυσήματος, δῆλον ἐξ ὧν εἰπὼν τότε, τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον παραγέγονεν. „Εάν γὰρ ἐγὼ μὴ ἀπέλθω, φησὶν, ὁ Παράκλητος ἐκ ἐλδύσεσθαι „πρὸς ὑμᾶς,,. Μαρτυρεῖ δὲ καὶ ὁ Θεὸς Χρυσόστομος ἐν τοῖς κατὰ Ἰωάννην ἐξηγητικοῖς, ἔτι λέγων: „Τινὲς μὲν φασὶν, ὅτι ὁ Πνεῦμα ἔδωκεν, ἀλλ' ἐπιτηδεύει αὐτῷ πρὸς ὑποδοχὴν, διὰ τῷ (\*) ἴσσι: „ἐμφυσήματος παρεσκευάσεν· ἐκ ἂν δέ τις ἀμάρτοι καὶ τῷ (\*) τότε „εἰληφέναι αὐτῷ λέγων ἐξουσίαν τινὰ πνευματικῶς καὶ χάριν, ὥστε ἀφιέναι ἀμαρτήματα· διὸ ἐπήγαγεν: ὧν ἀφῆτε, ἀφιένται, δεικνύς ποῖον εἶδος ἐνεργείας δίδωσι. Καὶ γὰρ ἄφρατος ἡ τῷ Πνεύματος χάρις, καὶ πολυειδής ἡ δωρεά,,· καὶ εἰδὲν θαυμαστὸν, ὅπως γε καὶ παρὰ Μωσέως ὁ Θεὸς τῷ Πνεύματος ἀφελῶν, ἑτέροις μετέδωκεν· ἐν δὲ τῷ Δεσπότη Χριστῷ πᾶσα ἡ τῷ Πνεύματος χάρις ἐπανεπάυετο· ὁ γὰρ ἐκ μέτρων δίδωσιν ὁ Θεὸς ἐκείνῳ τὸ Πνεῦμα· διὸ καὶ ἐξ αὐτῷ μετεδίδοι, καὶ δι' αὐτῆς (ἴσσι αὐτῷ) τὰς Θεοσημείας ἐργάζετο· ἐν γὰρ Θεῷ Πνεύματι, φησὶν, ἐκβάλλω ἐγὼ τὰ δαιμόνια.

## Κ ε φ α λ: Θ'.

Πάλιν τὸ εἰκόνα λέγεσθαι τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα, εἰς σωτηγορίαν ἔλκεσι τῷ οἰκείῳ Δόγματι. Λέγομεν δὲ καὶ πρὸς τῷ: ὡς ὁ πάντως ἀνάγκη τῷ εἰκόνα τὸ εἰκονιζόμενον αἷτιον ἔχειν, ἔτε ἐπὶ τῆς τέχνης, ἔτε ἐπὶ τῆς φύσεως. Καὶ γὰρ ὁ Υἱὸς εἰκὼν τῷ Πατρὶ λέγεται, ὁ τὸς αὐτὸν πρὸς αὐτὸν κατ' αἰτίαν ἀναφερόμενος, ὅσον ὡς ἐν ἐαυτῷ τὸν Πατέρα δεικνύς, (καὶ) εἰκονίζων· ὥσπερ φησὶ πρὸς τὸν Φίλιππον: „ὁ ἑώρακώς ἐμὲ, εἶώρακε „τὸν Πατέρα. Εἰκὼν τοίνυν καὶ τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ὅτι ὡς αἰτίαι αὐτῷ ὄντος· ἀλλ' ὅτι μὴ οἶον τε γινώσκει τὸν Υἱὸν ἐτέρωθεν, εἰ μὴ διὰ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος. „Οὐ γάρ τις διώαται „εἰπεῖν Κύριον Ἰησοῦν, εἰ μὴ ἐν Πνεύματι Ἁγίῳ. Καὶ αὐθις: „ἐκεί-

„ἐκεῖνος ἐμὲ δοξάσει, ὅτι ἐκ τῆς ἐμῆς λήψεται καὶ ἀναγγελεῖ ὑμῖν.  
 „ὅπερ, ὁ Θεὸς Χρυσόστομος, τῆς ἑσθιᾶς, Φησί: σιωπῶν τοῖς ἐμοῖς  
 „ἐρεῖ... Ἐπεὶ γὰρ ἐμὰ ἐστὶ τὰ τῆς Πατρὸς, ἐκεῖνος δὲ ἐκ τῶν  
 τῆς Πατρὸς ἐρεῖ, ἐκ τῶν ἐμῶν ἐρεῖ. Καθάπερ γὰρ ὁ Υἱὸς, ἐλ-  
 θὼν εἰς τὸ πληρῶσαι τὸν παλαιὸν Νόμον· τετέστι τελειῶσαι, καὶ  
 προθεῖναι τὰ παραλελειμμένα διὰ τὴν τῶν ἀκρόντων ἀφένειαν,  
 αὐτῷ τῷ τῷ τὸν Πατέρα ἐδόξασε τὸν Νόμον ἐκεῖνον θέμενον:  
 „Ἐγὼ γάρ Σε, Φησὶν, ἐδόξασα ἐπὶ τῆς γῆς, τὸ ἔργον ἐτελείωσα  
 „ὃ δέδωκάς μοι ἵνα ποιήσω· ἔτω καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, τὸ  
 „τῆς Υἱᾶς ἔργον ἐτελείωσεν αὐτῷ. Πολλὰ γὰρ, Φησὶν, ἔχω λέ-  
 „γειν ὑμῖν, ἀλλ' ἐγὼ δυνάμει βασιλεύειν ἄρτι· ὅταν δὲ ἔλθῃ ὁ Πα-  
 „ράκλητος, τὸ Πνεῦμα τῆς ἀληθείας, ὁδηγήσει ὑμᾶς εἰς πᾶσαν  
 „τὴν ἀλήθειαν· ἐγὼ γὰρ λαλήσει ἀφ' ἐαυτοῦ, ἀλλ' ὅσα ἂν ἀκέσῃ,  
 „λαλήσει, καὶ τὰ ἐρχόμενα ἀναγγελεῖ ὑμῖν. Ἐκεῖνος ἐμὲ δο-  
 „ξάσει, ὅτι ἐκ τῆς ἐμῆς λήψεται, καὶ ἀναγγελεῖ ὑμῖν τὰ λειπό-  
 „μενα δηλ.: ὃ ἔργον ταύτῃ ἐστὶ τῷ τῆς Πατρὸς· πάντα γὰρ,  
 „ὅσα ἔχει ὁ Πατήρ, ἐμὰ ἐστὶ... Διὰ τῆς ἄρα καὶ Εἰκῶν τῆς  
 Υἱᾶς τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, διὰ τὸ ἀναγγέλλειν τὰ τῆς Υἱᾶς, καὶ  
 τὸν Υἱὸν δοξάζειν, ἐκ τῆς ἑργῆς αὐτῆς λαμβάνον, καὶ τελειῶν αὐτὸ  
 δὴ τὸ ἔργον· ὡς περ ἐκεῖνος τὸ τῆς Πατρὸς.

## Κεφάλαιον: Γ'.

Ἔτι διὰ τῆς Υἱᾶς προῖεναι, ἢ ἐκπορεύεσθαι τὸ Πνεῦμα τὸ  
 Ἅγιον, εἰς ταύτῃ ἀγασί τῷ ἐκ τῆς Υἱᾶς, τὴν ΔΙΑ λέγοντες ἰσο-  
 διωαμεῖν τῇ Ἐκ παρὰ τῇ Θεῇ Γραφῇ. Ἐνθα μὲν ἐν ἰσοδιωα-  
 μεῖ, περὶ Δημιουργίας ὁ λόγος· ὅτε, καὶ χωρὶς τῆς Πατρὸς, ἐπὶ  
 τῆς Υἱᾶς τίθεται. Πάντα γὰρ (Φησὶ) δι' αὐτῆς ἐγένετο· ἢ δὲ τῆς  
 Πνεύματος προόδος ἠδὲποτε ἄνευ τῆς Πατρὸς τίθεται· ἀλλ' ἐκ  
 Πατρὸς, Φασὶ, δι' Υἱᾶς· δηλὸν ἐν, ὡς ἑτερόν τι τὸ δι' Υἱᾶς, καὶ  
 ἐπὶ τὸ ἐξ Υἱᾶς σημαίνει. Καίτοι γε ἠδὲ ἐπὶ τῆς Ἐκπορεύσεως,  
 καὶ ἐπὶ τῆς Μεταδόσεως τῆς λέγεται. Λέγει γὰρ ὁ Δαμασκη-  
 νὸς Ἰωάννης: „Πνεῦμα μὲν Υἱᾶς λέγομεν, ἐκ τῆς Υἱᾶς δὲ ἐ λέ-  
 „γομεν· δι' Υἱᾶς δὲ φανερεῖσθαι καὶ μεταδίδοσθαι ἡμῖν ὁμολογῶμεν...  
 Αὕτη ἡ διαστολή προδήλως, ἑτερόν τι τὸ δι' Υἱᾶς, παρ' ὃ βέλονται  
 Λατῖνοι, καθαρῶς ἀποφαίνει.

Εἰ δέποτε καὶ ἐπὶ τῆς ἐσιώδους ἔρηται τῆς προόδου τῆς  
 Πνεύματος, πάλιν αὐτῆς τῆς Θεολόγους ἐξηγητὰς ἑαυτῶν καλέ-  
 σωμεν. Λέγει γὰρ ἐν τοῖς πρὸς Ἐυνόμιον ὁ Θεὸς Γρηγόριος ὁ  
 τῆς Νύσσης: „Τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον διὰ τῆς Υἱᾶς σιωπημένως κα-  
 „ταλαμβάνεται· ἐχ' ὑπερίκον κατὰ τὴν ὑπαρξιν μετὰ τὸν Υἱόν,  
 „ὡς ποτὲ τὸν Μονογενῆ δίχα τῆς Πνεύματος νοηθῆναι. Ἀλλ' ἐκ  
 „μὲν τῆς Θεᾶς τῶν ὅλων καὶ αὐτὸ τὴν αἰτίαν ἔχον τῆς εἶναι,

Τόμ: Β'.

Μ μμμμμμ

„ὅθεν

„ὅθεν καὶ τὸ Μονογενὲς ἐστὶ Φῶς, διὰ δὲ τῆ ἀληθινῆς Φωτὸς ἐκ-  
 „λάμπαν. Ἐν τέτοις σαφῶς τὸ μὴ ὑπερίξιν κατὰ τὴν ὑπαρ-  
 „ξιν, τὸ διὰ τῆς Υἱῆς δηλοῦν βάζεται· ταύτην δ' εἶπεν μετὰ τῆς  
 „Υἱῆς· ὅπερ ἐν ἄλλοις διαρρήδην φησί: „δι' αὐτῆς δὲ καὶ μετ' αὐ-  
 „τῆς, πρὶν τι κενὸν καὶ ἀνυπόστατον παρεμπεσεῖν νόημα, τὸ  
 „Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκπορεύεται,,. Καὶ ὁ Χρυσόρρημων δὲ, ἐξη-  
 „γούμενος τὸ Ἀποστολικὸν ἐκεῖνο ῥητόν: Ἵνα γνωρισθῇ ταῖς ἀρχαῖς  
 „καὶ ταῖς ἐκκlesiαῖς διὰ τῆς Ἐκκλησίας ἢ πολυπόκιλος Σοφία τῆς  
 „Θεῆς, τὸ (διὰ τῆς Ἐκκλησίας), ἀντὶ τῆς (μετὰ τῆς Ἐκκλησίας)  
 „ἐξελάμβανεν· ὅ γὰρ δὴ ἡ Ἐκκλησία τῆς Ἀγγελίας ἐδίδαξεν· ὅ-  
 „τως ἐν κἀνταῦθα τὸ διὰ τῆς Υἱῆς ληπτέον. Ἐχει γὰρ ὅτως:  
 „Ἐπεὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ὁσιωδῶς ἐκπορεύεσθαι λέγεται, Ἵνα  
 „μὴ Υἱὸς ἕτερος νομισθῇ· καὶ γὰρ ὁ Πατὴρ πρὸς τὸν Υἱὸν ἀπο-  
 „δίδοται· διὰ τῆς τοῦ δι' Υἱῆς παρείληπται „τῆς τῆς Υἱῆς μεσιτείας  
 „(ὅ φησιν ὁ Ἱερὸς Γρηγόριος ἐν ἑτέροις) καὶ ἑαυτῷ τὸ μονογε-  
 „νὲς φυλαττέσθαι, καὶ τὸ Πνεῦμα τῆς φυσικῆς πρὸς τὸν Πατέρα  
 „χέσεως μὴ ἀπαργῆς. Διὰ τῆς καὶ προσεχῶς μὲν, φησί,  
 „τὸν Υἱὸν ἐκ τῆς πρώτης ἐν ἑτέροις· ὡς Υἱὸν ἐκ τῆς Πατρὸς  
 „δηλαδή,,· τὸ δὲ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκ εἶπεν ὅ προσεχῶς· (ὅτω  
 „γὰρ ὑπερίξιν ἔσαι κατὰ τὴν ὑπαρξιν) ἀλλὰ διὰ τῆς προσεχῶς  
 „ἐκ τῆς πρώτης· τῆς δὲ τὴν κοινωνίαν καὶ ἀλληλεχίαν, ὡς ἔρη-  
 „ται, παριστᾷ, καὶ τὸ ὁμοτίμως καὶ ὁμοφυῶς ἐκ τῆς Πατρὸς προ-  
 „εἶναι· Οὕτω γάρ: εἰ καὶ ὁ Πατὴρ ἐλέγετο Προβλεὺς, τὸ Πνεῦμα  
 „μὲν προσεχῶς ἂν ὡς ἐκ τῆς Προβλεῶς· ὁ δὲ Υἱὸς διὰ τῆς προ-  
 „σεχῶς ἐκ τῆς Προβλεῶς τῆς τῆς Πνεύματος. Ἐπείπερ ὁμο-  
 „τίμως ἄμφω, καὶ σωημένως ἐκ τῆς Πατρὸς προέσιν. Οὐκ  
 „ἄρα πλέον ὁδὸν ἔσαι Λατίνοις, ἐκ τῆς ΔΙΑ, πρὸς τὴν δόξαν  
 „τὴν ἐκυτῶν.

Ὅτι δὲ καὶ τὸ ἐναντίον ἐστὶν ἅπαν, ἥπερ ἐκεῖνοι βέλονται,  
 παρείτω πάλιν ἡμῖν μαρτυρήσων ὁ τῆς ἀληθείας Μάρτυς καὶ  
 Ὁμολογητῆς, ὁ Θεότατος Μάξιμος. Λέγει γὰρ ὁ ἅγιος ἐν τῇ πρὸς  
 Μαρτῖνον Κύπρου Πρεσβύτερον Ἐπιστολῇ, τοιαύδε: „Τῶν τῆς νῦν  
 „Ἀγιωτάτης Πάπας Σωδοικῶν, ἐκ ἐν τοσούτοις, ὅσοις γεγράφατε,  
 „Κεφαλαίοις οἱ τῆς Βασιλίδος Πόλεως ἐπελάβοντο, δυσὶ δὲ μό-  
 „νοις· ὧν τὸ μὲν ὑπάρχει περὶ Θεολογίας,,· ὅτι περ καὶ ἐκ τῆς  
 „Υἱῆς ἐκπορεύεσθαι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον· τὸ δὲ περὶ τῆς Οἰκονο-  
 „μίας: ὅτι περ εἶπε τὸν Κύριον δέχαι τῆς Προπατορικῆς ἀμαρτίας  
 „εἶναι ὡς ἄνθρωπον. „Καὶ τῆς μὲν πρώτης ῥήσεις παρήγαγον Ῥω-  
 „μαίων Πατέρων, καὶ Κυρίλλου Ἀλεξανδρείας, ἐκ τῆς πονηθείσης  
 „αὐτῷ Πραγματείας εἰς τὸν Ἅγιον Ἰωάννην τὸν Ἐυαγγελιστῆν,  
 „ἐξ ὧν, ἐκ αἰτίας τὸν Υἱὸν ποιῶντας τῆς τῆς Ἁγίας Πνεύματος  
 „Ἐκπορεύσεως σφᾶς αὐτῆς ἀπέδειξαν· μίαν γὰρ ἴσασιν Υἱῆς καὶ  
 „Πνεύ-

„Πνεύματος τὸν Πατέρα αἰτίαν· τῷ μὲν κατὰ Γέννησιν, τῷ δὲ κατ' Ἐκπόρευσιν· ἀλλ' ἵνα τὸ δι' αὐτῷ προῖεναι δηλώσωσι καὶ ταύτῃ τὸ σωμαφές τῆς ἑσίας καὶ ἀπαράλλακτον παραστήσωσιν. Ἐνταῦθα, τὴν ἐναντίαν ὥσπερ ἐπίτηδες οἱ Λατῖνοι, τῷ Μεγίστῳ Μαξίμῳ βαδίζουσιν· ὁ μὲν γὰρ μετὰ τῶν τότε Ῥωμαίων, καὶ αὐτῷ τῷ Πάπᾳ, τὴν Ἐκ πρὸς τὴν ΔΙΑ μεταφέρει καὶ ταύτῃ τὸ σωμαφές τῆς ἑσίας καὶ ἀπαράλλακτον παριστάν βέλεται· οἱ δὲ, μικρὸν ἠγόμενοι τὸ μὴ πείθεσθαι τοῖς Πατράσιν, ἂν μὴ καὶ τὰναντία φρονῶσι τὸ ΔΙ ΤΙΟΥΤ, ταῦτόν ἠγόνται τῷ ἘΞ ΥἱΟΥΤ· καὶ τὴν αἰτίαν τῷ Πνεύματος τῷ Υἱῷ διδόασιν, ἧς ἐκεῖνοι καθάπαξ τὸν Υἱὸν ἀφείλοντο. Τί ἂν γένοιτο ταύτης τῆς μάχης ἀναιχλωτότερον;

## Κεφάλ: ΙΑ'.

Τῶν προσόντων τῇ Θεῇ φύσει, τὰ μὲν ἐνικῶς μόνον αἰετ λέγεται, καὶ τοῖς τρισὶ Προσώποις ἐνθεωρεῖται· καθάπερ τὸ, Θεός, καὶ Δημιουργός, καὶ Βασιλεὺς καὶ Ἀγαθός, καὶ εἰ τι τοιοῦτον. Εἰς γὰρ Θεός λεγόμενος καὶ εἰς Δημιουργός, καὶ εἰς Βασιλεὺς, καὶ εἰς Ἀγαθός, ὁ Πατήρ καὶ ὁ Υἱός καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. Τὰ δὲ πληθυστικῶς αἰετ, καὶ τοῖς δυσὶ μόνοις· ὡς τὸ Αἰτιατὸν ἐπὶ Υἱῷ καὶ Πνεύματος. Δύω γὰρ τὰ Αἰτιατὰ, καὶ ἕχ' ἐν λεγόμενος. Τέττων ἔτως ἐχόντων· ἐπειδήπερ Λατῖνοι καὶ τὸ τῆς Θεότητος Αἴτιον δυσὶ Προσώποις, τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ νέμουσιν ἐρώμεθα τέττας· ὅποια τῶν εἰρημένων μερίδι, τέτο σωμαπῆσιν; Εἰ μὲν ἔν τῇ δευτέρᾳ φήσουσιν, αὐτόθεν δῆλον τὸ ἄτοπον. Δύω γὰρ ἔσαι τὰ Αἴτια, καθάπερ καὶ τὰ Αἰτιατὰ δύω καὶ ἔτως ἢ Δυναρχία πάροdon ἔξει, καὶ τὸ πολυῦμνητον τῆς Μοναρχίας ἐκποδὼν γενήσεται. Εἰ δὲ τῇ πρωτέρᾳ, πρῶτον μὲν πῶς; ἐκείνα γὰρ κοινά τε καὶ φυσικά, καὶ τοῖς τρισὶ Προσώποις ὁμοίως Ὑπάρχοντα. Ἐπειτα καὶ ἔτω πάλιν εἰς τὸ αὐτὸ περιενεχθήσεται· τὸ γὰρ ἐν Αἴτιον, ἢ Γεννήτωρ καὶ Προβολεὺς, ὅπερ ἐστὶν ὁ Πατήρ μόνος, καὶ ἔστι ταῦτόν ἀριθμῶ τῷ ἐνὶ αἰτίῳ, ἢ Προβολεὺς μόνον· ὅπερ ἐστὶν ὁ Πατήρ καὶ ὁ Υἱός, ὡς αὐτοὶ λέγουσι. Δύω ἄρα τὰ Αἴτια καὶ ἔτω, καὶ Ἀρχαὶ δύω καὶ ἢ Δυναρχία πανταχόθεν αὐτὰς περιέσεται.

## Κεφάλ: ΙΒ'.

Τὸ τῆς Θεότητος Αἴτιον, ὡς ἂν φαῖεν Λατῖνοι, διαφόρως τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ πρόσεσι, καὶ ἕ τὸν αὐτὸν τρόπον. Ἀλλὰ τῷ Πατρὶ μὲν, ἢ Γεννήτωρ, καὶ Προβολεύς· τῷ δὲ Υἱῷ, ἢ Προβολεύς μόνον· ἢ δὲ διαφορὰ, κατὰ τὰς Πατέρας, ἀριθμὸν ἑαυ-

Μ μμμμμμ 2

τῇ



τῇ σωείσάγει. Δύω ἄρα τὰ τῆς Θεότητος Αἰτία· καὶ ἡ Μοναρχία κἀντεῦθεν τοῖς Λατίνοις ἐλήλαται.

#### Κεφάλ: ΙΓ'.

Θωμᾶς ὁ τῶν Λατίνων Διδάσκαλος; ἀξιῶν (κατὰ) μίαν τῶν Ἀντιθέσεων, ἀνάγκη εἶναι τὰ Θεαρχικὰ Πρόσωπα διακρίνεσθαι. Ἐπειδὴ, φησὶν, ἡ Ὑλικὴ διάκρισις ἐν τοῖς Θεοῖς χωρὶς ἐκ ἔχει τὴν κατὰ Σχέσιν Ἀντίθεσιν βέλεται μόνω εἶναι τὴν διακρίνεσθαι, ὡς ἐτέρας τῶν Ἀντιθέσεων ἐκ ἐχέσης χωρὶς. Δεικτέον ὅτι ἡμῖν, ὡς μᾶλλον ἱκανὴ πρὸς διάκρισιν ἢ τῶν Ἀντιθέσεων Ἀντιφατικὴ, καὶ ταύτῃ μόνῃ κατὰ τὰς Θεολόγους, ἀλλήλων πάντα τὰ Θεῖα Πρόσωπα διακρίνομεν. Πρῶτον μὲν ὅτι ἐκείνο δῆλον ἐπὶ τῶν Θεῶν, ὡς ἐκάστω ὁ τῆς ὑπάρξεως τρόπος ἀνταρκέστατος πρὸς τὴν ἀφ' ἐτέρας διάκρισιν. Τρόπος δὲ ὑπάρξεως ἐπὶ τῶν Θεῶν Προσώπων οἱ Θεολόγοι, τὸ ἀγέννητον, καὶ τὸ γεννητὸν, καὶ τὸ ἐκπορευτὸν λέγουσιν· ἥτοι καθολικώτερον φράσαι: τὸ ἀνάιτιον, καὶ τὸ αἰτιατὸν, ἅπερ ἀλλήλοις δῆλον ὡς Ἀντιφατικῶς ἀντίκεινται· τὸ γὰρ ἔχον αἰτίαν, καὶ τὸ μὴ ἔχον αἰτίαν, Ἀντίφασις. Ὁ μὲν ὅτι Πατὴρ, Υἱὸς καὶ Πνεύματος τριτέστιν (ἴσ: ταύτῃ γε) Ἀντιφατικῶς διακρίνεται. Ὁ δὲ Υἱὸς καὶ τὸ Πνεῦμα πρὸς ἀλλήλα τοῖς τῶν οἰκείων αὐτοῖς ὑπάρξεων τρόποις. Τὸ γὰρ γεννητῶς εἶναι, καὶ τὸ μὴ γεννητῶς, ἀλλ' ἐκπορευτῶς, τρόποι τε ὑπάρξεων ἐπὶ τέτων εἰσὶ, καὶ ἀλλήλοις Ἀντιφατικῶς ἀντίκεινται. Καὶ τῷ περὶ τοῦ Πνεύματος ὁ Θεολόγος Γρηγόριος λέγει: „προῖον μὲν ἐκ τοῦ Πατρὸς, ἐκ τοῦ Υἱοῦ δὲ· ὅδε γὰρ γεννητῶς, ἀλλ' ἐκπορευτῶς. Αὕτη μὲν ὅτι διάκρισις (ἢ) κατὰ τὴν Ἀντίφασιν, ὅσα καὶ τῇ ἀληθείᾳ σύμφωνος, καὶ τοῖς Θεολόγοις ἅπασιν, καὶ πάντα τὰ Θεῖα Πρόσωπα δυνάται διακρίνειν. Ἦν δὲ εἰσάγει Θωμᾶς, ὡς μόνω ἱκανῶς ὅσαν, τὴν κατὰ σχέσιν λέγω: τὸν μὲν Πατέρα τῶν ἐξ αὐτοῦ προελθόντων, Υἱὸς καὶ Πνεύματος, διακρίνει· τὰ δὲ λοιπὰ τῶν Προσώπων ὅδε ὅπως· ὅδε γὰρ Αἷτιον πατέρα πατέρα· ὅδε φαίνεται ταύτῃ ὅδε τῶν Θεολόγων τὴν διάκρισιν ἐρηκῶς, ἀλλὰ καὶ τὸναντίον ἅπαν. Μόνος γὰρ Αἷτιος ὁ Πατὴρ, φησὶν ὁ Δαμασκηνός, καὶ ὁ Νύσσης Γρηγόριος: „τὸ (δὲ) ἐξ Αἷτίας ὄντος πάλιν ἄλλω διαφορὰν ἐννοῶμεν;“ ἄλλω, φησὶ, παρὰ τὴν ἐρημένω· ἢ δὲ ἢν κατὰ τὸ αἰτιατὸν δηλονότι. Καθόλου δὲ, ὅτι τολμητέον εἰπεῖν, ἢ ἐννοῆσαι παρὰ τὰ Θεωδῶς ἡμῖν ἐκ τῶν Ἱερῶν Λογίων ἐκπεφασμένα; (ὡς) Διονύσιος ὁ κλεινὸς ἀποφαίνεται.

Κεφάλ:

## Κ ε φ α λ: ΙΔ'.

Εἰ τὸ Αἰτιατὸν διαφόρως ὑπάρχει τῷ Υἱῷ καὶ τῷ Πνεύματι· τὸ μὲν γὰρ γεννητὸν, τὸ δ' ἐκπορευτὸν· ἢ δὲ διαφορὰ κατὰ τῆς Πατέρας ἀριθμὸν ἐαυτῇ σιωπάγει. Δύω ἄρα τὰ Αἰτιατὰ, ὁ Υἱὸς καὶ τὸ Πνεῦμα. Κατὰ τὸν αὐτὸν δὴ τρόπον: εἰ τὸ τῆς Θεότητος Αἷτιον διαφόρως Πατρὶ καὶ Υἱῷ πρόσκεινται· ὁ μὲν γὰρ Γεννήτωρ καὶ Προβολεὺς· ὁ δὲ Προβολεὺς μόνον· δύω ἔσονται τὰ τῆς Θεότητος Αἷτια, τῇ διαφορᾷ τῶ ἀριθμῷ ἐπομένῃ· τετέστι τῆς δυνάδος, κατὰ τὴν τῶν Θεολόγων Ἀπόφασιν.

## Κ ε φ α λ: ΙΕ'.

Εἰ τιμιώτερον Θεῷ, τὸ αἰτίῳ Θεότητος εἶναι, ἢ τὸ αἰτίῳ τῆς κτίσεως: Πῶς τῷ τιμιωτέρῳ Πατρὶ καὶ Υἱῷ μὴ κοινωνῶν κατὰ τῆς Λατίνης, τὸ Πνεῦμα τὸ "Ἅγιον· ἐκ ἐλαττον ἔσται τῇ ἀξίᾳ καὶ τῇ Θεότητι; Εἰ μὲν γὰρ ὅλως μεταδοῖον τὸ τῆς Θεότητος Αἷτιον, διατὶ μὴ καὶ τὸ Πνεῦμα τέττα μετέληφεν; Εἰ δ' ἀμετάδοτον ὅλως, ὡς τῷ Πατρὶ ἴδιον, ὥστε καὶ τὸ ἀναίτιον, ἔδδ' ὁ Υἱὸς ἄρα τέττα μετέξει, κατ' ἑξῆνα τρόπον. Εἰ καὶ μάλα τέτο Λατῖνοι βέλονται.

## Κ ε φ α λ: Ις'.

Ἡμεῖς μὲν, τὸν Υἱὸν ἀφαιρῶντες τῆς Αἰτίας τῷ Πνεύματι, ἔδδ' αὐτὸν ἐλαττώμεν τῆς τῷ Θεῷ Πατρὶ ἀξίας· ἔδδ' γὰρ ὅλως μεταδοῖον τὸ τῆς Θεότητος Αἷτιον λέγομεν· ὥστε ἔδδ' τὸ Ἀναίτιον τῷ Πατρὶ, ἔδ' αὐτῷ τὴν Πατρότητα. Λατῖνοι δὲ μεταδοῖον τέτο φρονέοντες, εἴτα τὸ Πνεῦμα τέττα λείπεσθαι λέγοντες, πάσαις ἀνάγκαις ἐλαττον αὐτὸ ποιεῖσι τῆς τῷ Πατρὶ καὶ Υἱῷ Θεότητος καὶ ἀξίας· καὶ κατὰ τέτο βλασφημεῖν εἰς τὸ Πνεῦμα τὸ "Ἅγιον, ὥστε καὶ κατ' ἄλλα, πολλαχῶς ἀναγκάζονται.

## Κ ε φ α λ: ΙΖ'.

Τὸ Πνεῦμα τὸ "Ἅγιον ἐκ Πατρὸς καὶ Υἱῷ προερχόμενον, ἢ καθὼ εἰς διακεκριμένοι τέτων πρόεισιν, ἢ καθὼ εἰς ὡόμενοι. Εἰ μὲν ἔν καθὼ εἰς διακεκριμένοι καὶ δύω, τέτων προέρχεται· διακεκριμένοι δὲ εἰς κατὰ τὰς Ὑποστάσεις καὶ δύω· ἐκ δύω Ὑποστάσεων ἄρα τὸ Πνεῦμα τὸ "Ἅγιον πρόεισι· καὶ ἐκ δύω Ἀρχῶν, ἐξ ἀνάγκης. Εἰ δὲ καθὼ εἰς ὡόμενοι πρῶτον, ἐκεί· τι τὸ αὐτὸ καὶ καθὼ εἰς διακεκριμένοι τέτων πρόεισιν· ἐκ ἄρα ἐκ τῶν Ὑποστάσεων αὐτῶν πρόεισιν· ἔτε ἄρα ἐκ τῆς Πατρικῆς Ὑποστάσεως, ἔτε ἐκ τῆς τῷ Υἱῷ Ὑποστάσεως. Ἀλλὰ τὸ μὲν ἀληθές, τὸ δὲ ψεῦδος ὁ τῆς Νύσεως Γρηγόριος Ποιμῶν διελέγχει.

Τόμ: Β'.

N nnnnn

Λέγει

Λέγει γὰρ ἔτιωσι ρητῶς: „Πνεῦμα, τὸ τῆς Πατρικῆς ἐκπορεύο-  
 „μενον Ὑποστάσεως,.. Καὶ τί ἂν εἴη τῆτο, καθὸ εἰσὶν ἡνωμένοι;  
 τὴν φύσιν ἐρεῖσι τυχόν, ἢ τὴν Προβλητικῶν διώαμιν. Ἄλλ' εἰ μὲν  
 ἐκ τῆς φύσεως πρόεισι, καὶ ἐξ αὐτῆς (ἐπάναγκες ἐστὶ) προσελού-  
 σεσθαι· κοινὴ γὰρ τοῖς τρισὶν ἢ φύσις. Εἰ δὲ ἐκ τῆς Προβλητι-  
 κῆς διωάμεως, καὶ ταύτῃ ὠφείλεν ἔχειν αὐτό· τὰ γὰρ κοινὰ  
 Πατρὶ καὶ Υἱῷ, κοινὰ καὶ τῷ Πνεύματι: Διονύσιος, Φασὶ, καὶ Βα-  
 σίλειος οἱ Μεγάλοι. Ἄλλὰ τίς ὁ σοφὸς αὐτῶν πρὸς τῆτο, κατὰ-  
 γέλαιος λόγος; Εἶχεν ἂν, Φασὶ, καὶ αὐτὸ ταύτῃ, εἰ μὴ ἀδιώα-  
 τον ὡς ἐαυτὸ προβάλλειν. Τῆτο μὲν εἶναι ὁμοιον: ὡς εἰτις ὁρῶν,  
 ἐκ τῶν ἐαυτῆς σωμαγόμενον λόγων, τὸν ἄνθρωπον λίθον εἶναι·  
 τὰ μὲν, ὅθεν τῆτο σωμαγέται, μηδοπῶσεν ἐπανορθῆναι πειρώτο·  
 λέγοι δὲ, ὡς ὡς ἂν ὁ ἄνθρωπος λίθος, εἰ μὴ ἀδιώατον ὡς τὸ  
 λογικὸν ζῶον, ἀψυχόν τε καὶ ἀκίνητον εἶναι.

#### Κ ε φ α λ: ΙΗ'.

Τὰ τῷ Θεῷ προσόντα, κυρίως, καὶ μόνως, καὶ μόνῳ, καὶ  
 μόνῳ, καὶ αἰῶνι, καὶ πάντῃ προσεῖναι ὀφείλκει· τὰ μὲν φυσικὰ  
 καὶ κοινὰ τοῖς τρισὶν Προσώποις, τὰ δ' ὑποστασιακὰ καὶ προσωπικὰ  
 τῶν τριῶν ἐκάσῳ· ἕδεν γὰρ ἐκεῖ συμβεβηκὸς, ἕδεν ἐπίκτητον,  
 ἕδ' ὕψερρον προσγενόμενον· ἕδεν ἔ κυρίως καὶ μόνως. Καθάρπερ  
 εἶναι καὶ ἀγαθὸς, καὶ σοφὸς, καὶ Θεὸς, καὶ βασιλεὺς, καὶ δημιουργός·  
 εἶτι δὲ ἀόρατος, καὶ ἀθάνατος, καὶ αἰδῖος ὁ Θεὸς λεγόμενος,  
 μόνως τε καὶ κυρίως ὡς πρὸς τὴν κλίσιν ἅπαντα ταῦτα λέγεται.  
 Λέγει γὰρ ὁ Ἀπόστολος: „Τῷ δὲ Βασιλεῖ τῶν αἰώνων, ἀφθάρτῳ,  
 „ἀοράτῳ, καὶ μόνῳ σοφῷ Θεῷ. Καὶ αὐτῇ: ὁ μόνος ἔχων ἀθα-  
 „νασίαν· ὁ φῶς οἰκῶν ἀπρόσιτον,.. Οὕτω καὶ ὅπερ ἂν λέγοιτο  
 τῶν τριῶν ἐκάσῳ, μόνον τε καὶ κυρίως ἐστὶ πρὸς τὰ λοιπὰ,  
 τῆθ' ὅπερ λέγεται. Πατὴρ γάρ ὁ Πατὴρ, καὶ μόνον, καὶ μόνος,  
 καὶ κυρίως, καὶ μόνως. Καὶ Πνεῦμα ὁμοίως τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον.  
 Οὕτω δὴ καὶ Ἀναίτιος ὁ Πατὴρ· εἶτ' εἶναι ἀγέννητος μόνον, καὶ  
 μόνος, καὶ κυρίως, καὶ μόνως. Ἄλλὰ δὴ καὶ αἰτίος αὐτῇ: ὁμοίως  
 καὶ τὰ λοιπὰ τῶν Προσώπων ἄρα, μόνον καὶ αἰτιατὰ, καὶ μόνῳ,  
 κυρίως, καὶ μόνως. Δυσὶν γὰρ ὄντοιν, Αἰτίῳ, καὶ Αἰτιατῷ, εἰ τὸ  
 Αἷτιον μόνος ὁ Πατὴρ ἔχει, τὸ Αἰτιατὸν ἄρα, μόνῳ τὰ λοιπὰ  
 τῶν Προσώπων, καὶ μόνον, καὶ μόνως. Σκεπτέον γὰρ, ὅτι τὸ  
 μόνον αἰῶνι πρὸς τὸ ἀντικείμενον λέγεται. Μόνον γὰρ Πατὴρ ὁ  
 Πατὴρ, καὶ ἕχῃ καὶ Υἱός. Καὶ μόνον Υἱὸς ὁ Υἱός, ἀλλ' ἔ καὶ  
 Πατὴρ. Καὶ μόνον Πνεῦμα Ἅγιον (τὸ Πνεῦμα), ἀλλ' ἔ καὶ Πατὴρ  
 ἢ Υἱός. Καὶ μόνον Ἀναίτιος ὁ Πατὴρ, ἀλλ' ἔ καὶ αἰτίαν ἔχων.  
 Οὕτω δὴ καὶ μόνον Αἷτιος, ἀλλ' ἔ καὶ Αἰτιατός. Καὶ τὰ λοιπὰ  
 τῶν Προσώπων ἄρα μόνον Αἰτιατὰ, καὶ ἕδεν τῆτων Αἷτιον.

Εἰ

Εἰ γάρ τι τέτων καὶ Αἴτιον εἶη, τὸ μόνον ἀναμειβήσεται· καὶ ἔτε μόνον καὶ κυρίως Αἴτιον ἔσαι, ἔτε μόνον καὶ κυρίως Αἰτιατόν, ὃ τὸναντίον ἀνάγκη εἶναι προαποδέδεικται. Ἡ γὰρ Ἀντίθεσις διακρίσεως Αἰτία, καὶ κατ' αὐτὰς τὰς Λατίνους καὶ ἄμφω τὰ ἀντικείμενα σωδραμεῖν ἐφ' ἑνὸς τῶν Θεαρχικῶν Προσώπων ἀδιώατον· θάτερον γὰρ τέτων καὶ κυρίως ἔσαι, καὶ διὰ τῆτο πάντως ἔδ' ἔσαι. Τέτοις συμφωνεῖ καὶ τὰ τῶν Ἀγίων ῥητά: „τῷ μὲν Δαμασκῳ λέγοντος ἐν τοῖς Θεολογικοῖς Κεφαλαίοις, „μόνος Αἴτιος ὁ Πατήρ· Θεοδῶρ δὲ τῷ Στεδίτῃ ψάλλοντος μόνον „Μονογεννήτωρ Μονογενὲς Υἱὸς Πατρός· καὶ μόνον μόνον Φῶς Φωτὸς ἀπαύγασμα· καὶ μόνον μόνως μόνον Θεὸς Ἅγιον Πνεῦμα „Κυρίως, Κύριον ὄντως ὄν,,. Οὐκ ἄρα τὸ Αἴτιον ὁ Υἱὸς ἔξει, μόνον Αἰτιατὸς ὁφείλων γε εἶναι, καὶ μόνον Υἱὸς ὥσπερ καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, μόνον μόνον Πνεῦμα τῷ Θεῷ Πατρί.

## Κ ε φ α λ: ΙΘ'.

Ἐρώμεθα τὰς Λατίνους: εἰ πάντα τὰ τῷ Πατρὶ τὸν Υἱὸν ἔχεν βέλεσθε, διατὶ μὴ καὶ Πατέρα τῆτον ποιῆτε; ὅτι (Φασὶν) Ἀντίθεσιν ἔχει τῆτο πρὸς τὸν Υἱόν· ἢ δ' Ἀντίθεσις διακρίνειν οἶδε τὰ Πρόσωπα, καὶ ἐχὶ σωάπτειν, ἵνα μὴ σύγχυσις ἐν αὐτοῖς γένηται. Εἰ ἔν η' Ἀντίθεσις διέλε τὰ Θεῶν Πρόσωπα κατ' ὑμᾶς, ὡς Σοφώτατοι, καὶ ἄμφω τὰ ἀντικείμενα σιωελθεῖν ἐφ' ἑκάστω τέτων ἀδιώατον, ἔδ' ἄρα τὸ Αἴτιον καὶ Αἰτιατὸν σιωελθῆσεται. Καὶ ταῦτα γὰρ ἀντικείμενα· ἔδ' ὁ Υἱὸς Αἰτιατὸς ὁμῶς καὶ Αἴτιος ἔσαι, καθάπερ ἔδ' ὁ Υἱὸς, Υἱὸς ὁμῶς καὶ Πατήρ. Ἀλλὰ τί πρὸς τῆτο; Φήσουσιν: ὡς ἂν καὶ Πατήρ, εἰ εἶχε πρὸς ὃν ἀποδοθήσεται ὡς τῆς ἀτοπίας! Πάλιν ἡμῖν ἐπανήκει τὸ καταγέλαστον ἐκεῖνο Σόφισμα. Καὶ ταῦτον ποιῶσιν οἱ τῆτο λέγοντες· ὥσπερ ἂν εἴ τις ἀποφαινόμενος, πάντα ἄνθρωπον γεννητὸν εἶναι, ἔλεγεν, ὡς ὡς (ἂν) καὶ ὁ Ἀδὰμ γεννητὸς, εἰ Πατέρα εἶχεν.

## Κ ε φ α λ: Κ'.

Φασὶν οἱ Λατῖνοι, μηδὲν διαφέρειν ἐπὶ τῶν Θεῶν Προσώπων, τὴν ΔΙΑ τῆς ἘΚ παρὰ τῇ Θεῶν Γραφῇ· καὶ διὰ τῆτο, τὸ ΔΙ ΥἱΟΥ προῖεναι λέγεσθαι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἑνρηλαίαν (φερόμενον.) Εἰ γὰρ ταῦτόν καὶ ἀδιάφορον, ἔδει καὶ τῆτο λέγεσθαι, καθάπερ ἐπὶ τῆς κτίσεως, ἑνρηλαίαν πολλαχῶς: „Παῦλος „Ἀπόστολος Ἰησοῦ Χριστοῦ, διὰ θελήματος Θεοῦ, κτ: Καὶ πάλιν: „Παῦλος Ἀπόστολος, ἐκ ἀπ' ἀνθρώπων, ἔδ' ἐκ ἀνθρώπων, ἀλλὰ „διὰ Θεοῦ Πατρός, καὶ Κυρίου Ἰησοῦ Χριστοῦ. Καὶ πάλιν: „Ἐκλή- „σάνθρωπος ἄνθρωπον διὰ τῷ Θεῷ. Καὶ πάλιν: „Οὐχὶ διὰ τῷ Θεῷ „ἢ διασάφησις αὐτῶν ἐστίν,,; Ὅλως δὲ, εἰ μὲν πάντα τὰ περὶ

N ννννν 2

τῷ



τῷ Θεῷ λεγόμενα Πνεύματος, πρὸς τὸν Πατέρα καὶ τὸν Υἱὸν ὁμοίως ἀνεφέρετο, ἔχεν ἂν χώραν κοινοποιεῖν ἅπαντα, καὶ τὴν ἐκ ἐκλήρου ὁμοίως ὁμολογεῖν Πρόοδον. Εἰ δὲ τὰ μὲν τῷ Πατρὶ ἰδίως, τὰ δὲ τῷ Υἱῷ νενέμηται, τὰ δ' ἀμφοτέροις ἐπίσης, μὴ μινύττωσαν ὁμῶς πάντα χρήματα. Δι' Υἱὸς προϊέναι λέγεται, δι' Υἱὸς χορηγεῖσθαι τῇ κτίσει. Ἐν Υἱῷ μέναι, ἐν Υἱῷ ἀναπαύεσθαι· ἔτε διὰ Πατρὸς προϊέναι, ἔτε διὰ Πατρὸς χορηγεῖσθαι, ἔτε ἐν Πατρὶ μέναι, ἔτε ἐν Πατρὶ ἀναπαύεσθαι (\*) ἀλλὰ ἐκ τῷ Πατρὸς ἐκπορεύεσθαι. Λεγέσθαι τοιγαρὶν τὰ κεκηρυγμένα, καὶ τὰ σεσιγημένα σιγάσθαι. Καὶ τὸ ἐκ Υἱὸς τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκπορεύεσθαι, ὡς ἐκφυλόν τε καὶ ἁήθες ἀπεσκορακίσθαι.

Κ ε φ ά λ: ΚΑ'.

Ὅταν ἀποβλέψω πρὸς τὰς φωνὰς τῶν Ἁγίων, αἷς κεχρημένοι περὶ τῷ Θεῷ φαίνονται Πνεύματος, οἶμαι τὰς Λαλινοφρονούντας, μηδὲ λογικῆς γέν ἀκολαθίας, καὶ συμφράσεως τεχνικῆς ἐπαυθάνεσθαι· μήτοιγε Θεῆας ἀκριθείας Δογματῶν, καὶ Πατρικῆς διανοίας μετὰ τῷ Πνεύματος ζητῶσι (ἵς: ζητεῖν) τὰ τῷ Πνεύματος. Τὶ γὰρ καὶ φήσασιν, ὅταν οἱ Ἅγιοι μερίζωσι τοῖς Σωδέσμοις τὴν εἰς Πατέρα καὶ Υἱὸν ἀναφορὰν τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος; „Καὶ ὁ μὲν λέγει: ἐκ μὲν τῷ Θεῷ τῶν ὅλων καὶ αὐτὸς τὴν ὑπαρξιν ἔχεν· δι' Υἱὸς δὲ πεφηνός, δηλ: τοῖς ἀνθρώποις; Ὁ δὲ, ἐκ τῷ Πατρὸς μὲν ἐκπορευόμενον, ἐν δὲ τῷ Υἱῷ μένον; Ὁ δὲ, τῷ Υἱῷ μὲν ἡρτηται, τῷ ἀδιασάτως συγκαταλαμβάνεσθαι, τῇ δὲ τῷ Πατρὸς αἰτίας ἐξημμένον ἔχει τὸ εἶναι, ὅθεν καὶ ἐκπορεύεται; Ὁ δὲ, ἐκπορεύεται μὲν ἐκ τῷ Θεῷ καὶ Πατρὸς, ἔστι δὲ ἐκ ἀλλότριον τῷ Υἱῷ, κατὰ τὸν τῆς ἐσίας λόγον,; Ἄρ' ἔτι τολμήσασι φάναι μίαν ἐξ ἀμφοῖν εἶναι τὴν τῷ Πνεύματος Πρόοδον; Καὶ τίποτε αὐτοῖς ὁ μερισμὸς ἐβέλετο βέλτιστοι, καὶ τὸ μὲν τέττω διδόναι, τὸ δὲ ἐκένω; Τίς γὰρ ἐνσεβῶν ἐρεῖ: παρὰ μὲν τῷ Θεῷ καὶ Πατρὸς ὑποσιῶναι τὴν κτίσιν, διὰ δὲ τῷ Υἱῷ κεκοσμήσθαι, τὴν καὶ παρ' ἀμφοῖν ὁμοίως, ὡς ἐνὸς Θεῷ καὶ Δημιουργῷ, καὶ τὸ εἶναι λαβῆσαν, καὶ διακοσμηθεῖσαν; Πῶς δὲ ἐκ ἀδιανόητον, εἰ τὰυτὸν αἱ λέξεις ἠδωῶντο, μερίζαν αὐτὰς τοῖς Σωδέσμοις; ὥστε ἂν εἴ τις ἔλεγε: παρὰ μὲν τῷ Θεῷ καὶ Πατρὸς ἐσερεῶσθαι τὸν ἔρανόν, διὰ δὲ τῷ Υἱῷ συμπεπῆχθαι. Ἄλλ' ὁ τοιούτω χήματι χρώμενος μερισμῷ, ἀφαιρεῖ θαλέρας θάτερον. Ὡστε ὁ λέγων: Παῦλος μὲν Ταρσεὺς, Παλα-

στῖνος

(\*) Ἄλλ' ἔτε δὴ ἐκ τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα τῶν Γραφῶν περὶ εἴρηται ἄλλ' ἐκ τῷ Πατρὸς ἐκπορεύεσθαι· ἥδε γὰρ ἡ τῷ Συγγραψάντος ἐννοία, ἣν ὁ Ἀντιγραφεὺς τυχὸν παρέδραμεν.

σῖνος δὲ Πέτρος, ἐκ ἁμῶν καὶ ἁμφοῖν δίδωσι. Καὶ ὁ λέγων: εὐδοκία μὲν τῷ Πατρὶ, αὐταργία δὲ τῷ Υἱῷ, σωεργία δὲ τῷ Πνεύματι τῷ Οἰκονομίαν γενέσθαι, ἐν ἐκείνῳ ὁδῷ, ἀφείλετο τὰ λοιπά. Δῆλον ἄρα καὶ ἐξ αὐτῶν τῶν κατὰ τὸν μερισμὸν χήματος, ὡς ἔτε τῷ Πατρὶ προσήκει τὸ δι' αὐτῶν χορηγεῖσθαι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ἔτε τῷ Υἱῷ τὸ ἐξ αὐτῶν ἐκπορεύεσθαι.

## Κεφάλ: ΚΒ'.

Ὁ ἐν τῇ Θεῇ Γραφῇ λαλήσας Θεὸς, προειδὼς τῶν ἀνθρώπων τὸ φιλομόχθηρον, καὶ τὰ παρὰ τῶν ἐχθρῶν ἐπιπαρησόμενα ζιζάνια τῇ αὐτῇ Διδασκαλίᾳ προανασέλλων, ὑδεμίαν ἀφῆκε λέξιν, ἣν ἐλλειπῶς ἔχεν δοκῆσαν, ἐκ ἀνεπλήρωσεν ἐν ἑτέροις ἢ λαβῶντινα παρέξεν μέλλουσαν, ἐκ ἀπρόθυμεν ἀλλαχόθεν ἵνα ἐκείνο τὸ τῷ Σοφῷ πληρωθῇ: „Πάντα εὐθέα ἐστὶ τοῖς σιωπῇ, καὶ ὁρθὰ τοῖς ἐνρίσκουσι γινώσκουσιν. Ἄντικα τό: ὁ Πατήρ καὶ ὁ υἱὸς ἐστίν,,: Ἐπειδὴ πολὺ τὶ συμβάλλεσθαι ἔμελλε τοῖς τὸν Υἱὸν ἐλατῶσαι τῆς Πατρικῆς ἀξίας ἐπανίστασεν ἐν ἑτέροις εἰπὼν: ἐγὼ καὶ ὁ Πατήρ ἐν ἐσμέν. „Καὶ ὁ Ἀπόστολος: ἐχ' ἀρπαγμὸν ἡγήσατο τὸ ἑῶν ἴσα Θεῷ... Πάλιν ἐν ταῖς Παροιμίαις, τό: Κύριος ἐκτίσέ με, παρὰ τῆς Σοφίας λεγόμενον, ἐν τοῖς ἐφεξῆς διορθῶται λέγει γὰρ ὑποκατιῶσα: „πρὸ δὲ πάντων τῶν βηνῶν „γεννᾶμε,,. Διὰ μὲν ἐκείνη, τῷ κατὰ Σάρκα δηλῶσα κτίσιν καὶ γένεσιν, διὰ δὲ τῆς τῷ προαιώνιον γέννησιν. „Πάλιν: ἐπέπερ „ἐν τοῖς Ἐυαγγελίοις, μόνον ἀληθινὸν Θεὸν τὸν ἑαυτῷ Πατέρα, „Φησί λέγει γάρ; ἵνα γινώσκωσιν τὸν μόνον ἀληθινὸν Θεὸν, „καὶ ὃν ἀπέστειλας Ἰησοῦν Χριστόν ἵνα μὴ δόξη τῆς ἀληθινῆς Θεότητος ἑαυτὸν ἀφορίζεσθαι, αὐτὸς ὁ ταῦτα γράψας Ἰωάννης, ἐν τῇ Ἐπιστολῇ περὶ τῶν Υἱῶν φησὶν: „ἔτος ἐστὶν ὁ ἀληθινὸς Θεός, „καὶ ἡ ζωὴ ἡ αἰώνιος,,. Πάλιν: ἐπειδὴ τὸ Πνεῦμα τῷ Πατρὶ λέγεσθαι κατὰ τὴν φυσικὴν οἰκείωσιν, καὶ τῷ πρὸς ἡμᾶς δωρεάν: „λέγει γάρ: ἐκ ἐσὲ ὑμεῖς οἱ λαλοῦντες, ἀλλὰ τὸ Πνεῦμα τῷ Πατρὶ ὑμῶν τὸ λαλῶν ἐν ὑμῖν,, ἵνα μὴ δόξη τῷ Υἱῷ ἀλλότριον εἶναι, καὶ μὴ ὁμοίως καὶ παρ' αὐτῶν δίδεσθαι, Πνεῦμα καὶ τῷ Υἱῷ λέγεσθαι λέγει γάρ ὁ Ἀπόστολος: „Ἐξαπέστειλεν ὁ Θεὸς τὸ „Πνεῦμα τῷ Υἱῷ αὐτῷ εἰς τὰς καρδίας ἡμῶν,,. Εἰ τοίνυν καὶ τὸ ἐκ Πατρὸς ἐκπορεύεσθαι τοῖς ὡς, ὡς σινοῦσθαι καὶ ἐκ τῶν Υἱῶν ἐκπορεύεσθαι, ἐκ ἂν παρέλιπεν ἐν ἑτέροις εἰπεῖν τῷ, καὶ διορθῶσαι, ὁ τῆς τῶν ἀνθρώπων κηδόμενος Σωτηρίας ἀλλ' ἢ δι' ἑαυτῶν πάντως, ἢ διὰ τῶν αὐτῶν Μαθητῶν ἔμελλε τῷ σαφῶς ἐκκαλύψαι. Ἐπεὶ δὲ ἐκ εἴρηκε, διὰ τῷ ὁ Δαμασκηνὸς Ἰωάννης φησὶ: „Πνεῦμα Υἱὸς λέγουμεν, ἐκ τῶν Υἱῶν δὲ ἔ' λέγομεν ὁ Τόμ: Β'.

Ξ ξξξξξξξξ

,,δὲ

„δὲ Θεὸς φησὶν Ἀπόστολος: Καὶ Ἄγγελος ἐξ ἔρανθ' εὐαγγελί-  
„σηται ὑμᾶς παρ' ὃ παρελάβετε, Ἀνάθεμα ἔσω.

#### Κ ε φ ᾶ λ: ΚΓ'.

Τὸ Πατὴρ ἐπὶ Θεῷ λεγόμενον ὄνομα περιλαμβάνει πάντα  
τὰ αὐτῷ ἰδιώματα· τό, τε γὰρ ἀγέννητον ἐν ἑαυτῷ περιέχει  
κατὰ τὸν Μέγαν Βασίλειον. Ὁ γὰρ κυρίως καὶ μόνος Πατὴρ  
ἐξ ἑδενὸς ἄλλω γεγέννηται, καὶ πρὸς τὸ Πνεῦμα Πατὴρ, ὡς  
Προβολεὺς λέγεται, καὶ ἅ τινι Γραφῇ τινὶ λέγουσαν „τῷ Πατρὶ  
„τῶν Φώτων, „ Εἰ τοίνυν τῷ Πατρὶ ὀνόματος ἔμελει δίδωσι  
τῷ Υἱῷ, ἔδὲ τῆς Προβλητικῆς ιδιότητος αὐτῷ μελεδίδωσιν, ἵνα  
καὶ Ἀπάτωρ ἀναφανῇ ὁ Υἱὸς καὶ ἡμᾶς τὰς ἀνθρώπους, καὶ τὸ  
Πνεῦμα ἐντεῦθεν Υἱωνὸς μὴ νομιᾶται.

#### Κ ε φ ᾶ λ: ΚΔ'.

Ὁ Πατὴρ καὶ ὁ Υἱὸς ἐν Αἴτιον τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι οἱ Λα-  
τῖνοι φασίν. Ἐρωτήσωμεν ἐν αὐτοῖς: ὥστε ὁ Πατὴρ μόνος ἐν  
Αἴτιον; ἢ ἄλλως; Εἰ μὲν ἐν ἑτῷ φήσασιν, ὁ δὲ Πατὴρ μόνος  
ἐν Πρόσωπον, ἔσαι καὶ ὁ Πατὴρ καὶ ὁ Υἱὸς ἐν Πρόσωπον καὶ  
Συναλοιφῇ, καὶ Σαβέλλιος ἐπεισῆλθεν. Εἰ δὲ ἄλλως μὲν ὁ Πα-  
τὴρ ἐν Αἴτιον μόνος ἄλλως δὲ ὁ Πατὴρ καὶ ὁ Υἱὸς μὴ λαν-  
θανέτωσαν ἑαυτῶν, δύο Αἴτια, καὶ Ἀρχαὶ δύο, καὶ μὴ θέλω-  
σιν, ἐπεισάγοντες.

#### Κ ε φ ᾶ λ: ΚΕ'.

Καθολικὸν τινα διακρίσεως λόγον ἀποδιδόναι τοῖς διακρίνο-  
μένοις ἅπασιν οἱ Λατῖνοι μεγαλαυχῶσιν· ἔτος δ' ἐστίν: ἢ κατὰ  
τὴν ὕλην, ἢ κατὰ μίαν τῶν Ἀντιθέσεων αὐτὰ διακρίνεσθαι.  
Ὅτι μὲν ἐν, εἰ καὶ ἐπὶ τῶν ὄντων ἀληθὴς ὡς ὁ λόγος, ἐκ αὐ-  
τῷ ἀνάγκη μεταφέρειν αὐτὸν πρὸς τὰ Θεῶν (ἐ γὰρ τοῖς αὐτοῖς  
ἐκείνα τε καὶ ταῦτα λόγοις ὑπόκειται) τό γε νῦν ἔχον παραλε-  
λείφθω. Προκείσθω δὲ ἡμῖν δεῖξαι, ὅτι ἔδὲ ἐπὶ τῶν κατ' ἡμᾶς  
ὄντων, καὶ ὅπως ἐγνωσμένων· λέγω δὴ τῶν κτισμάτων· ἐκ  
ἀναγκαῖος ὁ λόγος, ἔδ' ἀληθὴς ὅλως· ἔ μόνον ὅτι τὸ μὴ καθόλου  
ἀποδίδωσιν ὡς καθόλου· ἀλλ' ὅτι καὶ ἐν οἷς ἡ ὕλική διακρίσεις, ἢ ἢ  
κατὰ Ἀντίθεσιν θεωρεῖται, ἐκ αὐτῇ τινὶ αἰτίαν τῆς διακρίσεως ἢ  
ὕλη, ἢ Ἀντίθεσις· ἔχει ἄλλὰ διακεκριμένοις ἤδη καθάπερ τι  
παρακολέσθημα ἔπεται τέτων ἐκάτερον· ἐμφαίνει μὲν, ὅτι κατ'  
αὐτὸ διακρίνεται τὰ διακεκριμένα, τῆς δὲ διακρίσεως αἰτίον ὃν  
ἔδαμῶς. Σκεπτέον δὲ ἔτι:

Ἡ ὕλη

Ἡ ὕλη καθ' ἑαυτὴν ἐστὶν ἀδιαίρετος· ὥστε γὰρ ἄποιοις ἔστω <sup>ὅτι ἡ ὕ-</sup> καὶ ἄποτοις· τὸ ἄποτον δὲ, ἀδιαίρετον· τὸ ἀδιαίρετον δὲ, ἀδιά- <sup>λη δ' δύ-</sup> κριτον· ὃ δὲ καθ' αὐτὸ μὴ διακρίνεται καὶ διακρίνεται, πῶς αἰ- <sup>ναίαι αἰ-</sup> ἐτέρω τιῷ αἰτίαν παρέχει τῆς διακρίσεως; καὶ ὃ τιῷ ἐτερότητι <sup>τία εἶναι</sup> <sup>διακρίσε-</sup> μὴ προσίεται, (πᾶσα γὰρ ὕλη πάση ὕλει ἐστὶν ἀδιάφορος κατὰ <sup>ως.</sup> τὸν οἰκῆον λόγον·) πῶς ἂν ἐτέροις αἴτιον γένοιτο τῶ ἐτέροις ἀλλήλων εἶναι; Ἀλλ' ὅτι τὸ ὑλικὸν σῶμα, κατ' αὐτὴν τιῷ ὕλει, εἰς μέρη ποσὰ διήρηται, ἐκ ἑξὶ λαβεῖν ἕκαστον τῶν, καὶ ἀνὰ μέρος θάψαι καὶ δεῖξαι τὸ ἐστὶ ὄν, καὶ ἔχ' ὅπερ αἴτιον, ὕλη καὶ διάκρισις, (ἴσ'· ὑλικὴ <sup>διάκρισις</sup>) τὸ τοιοῦτον καλεῖται· τῶτο δὲ, ἔστι τιῷ ὕλει εἰσάγει (πλήρ'· αἰτίαν) τῆς διακρίσεως. Πῶς γὰρ, τιῷ καθ' αὐτὴν ἀδιάκριτον; ἀλλὰ τιῷ κατὰ τιῷ ὕλει διαίρεσιν, ἀφ' ἧς καὶ τὸ ποσὸν τοῖς διακρινομένοις ἔπεισιν. Ὡστε καὶ τῶ ἐνεργεῖν, ἔστι τὸ εἶδος τοῖς σώμασιν αἴτιον· πῶς γὰρ τὸ καθ' αὐτὸ ἀνενεργητόν; ἀλλ' ἡ πρὸς τιῷ ὕλει αὐτῶ Σωδοδος. Οὐ γὰρ, εἴτι τῶ Σωθέτω, κατὰ τιῷ τῶν ἐν αὐτῶ ἀπλῶν, ὑπάρχει, καὶ τῶ ἄλλῳ κυρίως ὑπάρχει· ἔτ' ἄρα τῶ εἶδει τὸ ἐνεργεῖν ὑπάρχει, καὶ τοι γὰρ κατὰ τὸ εἶδος τοῖς σώμασιν ἡ ἐνέργεια· ἔτε τῇ ὕλει διακρίνεται, καὶ τοι γὰρ κατ' αὐτὴν ἡ διάκρισις τοῖς Σωθέτοις· ἐκ ἄρα τιῷ ὕλει ἀποδιδόντες αἰτίαν τῆς διακρίσεως, ὑγιῶς ἂν ἀποδεδωκότες εἴημεν· ἀλλὰ τιῷ κατὰ τιῷ ὕλει διαίρεσιν, ἐφ' ὧν ἡ ὕλη τιῷ χώραν ἔχει.

Πάλιν δὲ, ἐφ' ὧν ἡ ὕλη μὴ ἐστὶ, σκεπτέον· εἰ ἀναγκαῖα πρὸς τιῷ διάκρισιν ἡ ἀντίθεσις. Τὰ ἀπὸ τῶ αὐτῶ διακρίμενα γένος, ἀντιδιακρίμενα ἀλλήλοις λέγεται· πάντα μὲν ἴσως, μά- λιστα δὲ τὰ πλεῖστον ἀλλήλων διεσηκότα, ἢ τὰ πλεῖστον διεσηκό- σιν ἀφορισζόμενα· οἷον ἀπὸ μὲν τῶ χρώματος, πλεῖστον διεσηκότα, τὸ λευκὸν καὶ τὸ μέλαν· ταῦτα δὲ καὶ ἐναντία καλεῖται· ἀπὸ δὲ τῶ ζώης, τοῖς πλεῖστον διεσηκόσιν ἀφορισζόμενα, τῶ λογικῷ φημὶ καὶ ἀλόγῳ, ἀνθρωπός τε καὶ ἵππος. Ἀρ' ἐν ταῦτα μόνον διακρίνεται ἀλλήλων ἀφ' ὧν ἡ ἀντίθεσις, εἴτ' ἐν ἐναντίωσις, ἢ καὶ τὰ μετὰ τῶν, καὶ σὺν αὐτοῖς διακρίμενα; πάντως δήπερ καὶ κεῖνα· τῶ γὰρ κοινῶ γένει σωῆπται πάντα· διακρίνεται δὲ, τοῖς ἀφοριστικοῖς ἕκαστον δηλονότι λόγοις, εἰ καὶ μὴ πλεῖστον ἀλ- λήλων διέσηκεν, ἢ καὶ θάτερος τῶν ἐναντίων μάλλον μετέχει· τίς γὰρ ἀντίθεσις ἢ κίρρ'· πρὸς ἐρυθρόν ἐν τῶ χρώματι; τίς δὲ ἵππος πρὸς βῆν ἐν τῶ ζώῳ; ἀλλ' ἐπειδὴ τῶ αὐτῶ διήρηται γένος, καθ' ὅσον μὲν ἐκεῖθεν διήρηται, τῶ κοινῶ διακρίνεται· καθ' ὃ δὲ καὶ ἀλλήλοις ἀντιδιήρηται, καὶ ἀλλήλων δήπερ διὰ- κρίνεται τοῖς ἰδίοις λόγοις, εἰ καὶ μὴ πάντας ἡμεῖς ἀποδιδόναι βραδύως ἔχομεν. Οὐκ ἄρα τιῷ ἀντίθεσιν αἰτιατέον τῆς διακρί- σεως ἢ ἐνταῦθα· πῶς γὰρ; ἢ τις ἐπὶ τῶν πλείστων ἐκ ἔχει

Ξ ξξξξξξξ 2

χώραν;



χώραν; ἀλλὰ πρὸ αὐτῆς τὴν διαίρεσιν, ἥτις ἀπὸ τῆς αὐτῆς τοῖς ἰδίοις λόγοις ἕκαστον διαίρεται· ταύτῃ δὲ καὶ τῆς ἀντιθέσεως αἰτίαν ἀποδιδόναι πανάληθες.

Ἀλλὰ καὶ ἐπὶ τῶν Ἀτόμων, ὁ αὐτὸς δήπερ τῆς διακρίσεως λόγος· τί γὰρ, εἰμὴ καὶ κεῖνα ὕλης μετέχει; τί δὲ, εἰ μὴδ' ἀντίθεσιν ἐστὶν εὐρεῖν ἐν αὐτοῖς; Ἄρα διὰ τῆτο ἡμῖν ἀδιάκριτα ἔσται, καὶ ἐν ἀριθμῷ πάντα γενήσεται; Πολὺ γὰρ ἂν ἔτω τερατουργήσῃεν ἢ τῶν Λατίνων τεχνολογία· ἀλλ' ἢ ἀπὸ τῆς αὐτῆς εἰδὸς καὶ κεῖ διαίρεσις, τοῖς οἰκείοις ἕκαστον ἀφορίζουσα λόγοις, τὴν διακρίσιν ἀπεργάζεται. Εἰ δὲ τῆς λόγου ἡμεῖς ἀγνοῶμεν, θαυμαστὸν ἔδεν· ὅπερ γε καὶ τῶν πλειόνων εἰδῶν τῆς λόγου ἐκ ἂν ἔχοιμεν ἀποδόναι βραδίως· ἐκείνογεμῶ ὁμολογούμενον ἐστὶν, ὡς ἐπὶ τῆς αὐτῆς πλείω διήρηται· τῆτο δ' ἀδωάτον ὡς, εἰμὴ ἀλλήλων τε καὶ ἐξ ἑ διήρηται διεκέκριτο. Προσεχῶς ἄρα καὶ πρώτως ἢ διαίρεσις αἰτία τῆς διακρίσεως· ἔχῃ ἢ ὕλη, ἢ ἢ Ἀντίθεσις· ἔτε γὰρ ἐπὶ πάντων αὐταὶ διακρίνουν πεφύκασιν . . . . Καὶ μὴ, καὶ αὐτὸ τῆνομα συγγενὲς ἢ διαίρεσις ἔχουσα, δῆλον ἡμῖν καθίστησιν ὡς αὐτὴ τὴν αἰτίαν αὐτῇ παρέχεται.

Λέπει  
ἐνλαύθα.

Τί ἔτι; τὴν τῶν πρὸς τι Ἀντίθεσιν, ὡς ἀναφορικῶς καλῶσι· διακρίνουν, φασίν, ἱκανωτάτῃ εἶναι. Καὶ τῆτο δὲ, ὅτι κενὸν ἐστὶν ὅλον, ἔδὲ λόγος δέεται δεικνύει. Α'. μὲν γὰρ ὑπερογενῆς αὕτη τῆς φύσεως. Πρῶτον γάρ τις ἄνθρωπος, εἶτα Παιτήρ· καὶ πρῶτον μέγεθος, εἶτα διπλάσιον. Ἐπειτα, καὶ σωσάγειν ἀλλήλα τὰ πρὸς τι πεφύκασιν· τῆτο δὲ σωάπτειν μᾶλλον, ἢ διακρίνουν ἐστὶν. Ἐπειτα ἐν τῷ αὐτῷ καὶ ἄμφω, καὶ μὴ πρὸς τὸ αὐτὸ σωδραμεῖν ἐνδέχεται· ταῦτα δὲ πάντα διακρίσεως πόρρω. Μάτῃ ἄρα, καὶ εἰκὴ τοῖς Λατίνοις ὁ πολυφύλλητος λόγος τῆς διακρίσεως κατὰ τὴν ὕλην, ἢ τὴν ἀντίθεσιν ἐκτετόξευται.

Φέρε δὴ: μετὰγωμεν τὸν ἡμέτερον λόγον ἐπὶ τὰ Θεῶν· τάχα γὰρ ἐφαρμόσειε μᾶλλον αὐτοῖς ἔτος, ἢ ὅν οἱ Λατῖνοι λέγουσιν. Ἡ ἀπὸ τῆς ἐκ τῆς (ἴσ: αὐτῆς) διάφορος Πρόοδος, εἶκοι καὶ μάλα τῇ διαίρεσει. Πρόοδος γάρ τις καὶ ἢ διαίρεσις. Καὶ καθάπερ ἐκεῖ τὰ ἀπὸ τῆς αὐτῆς διαίρεσιν, καὶ μὴπω πρὸς τὴν ἀντικειμένῃ ἀποσῇ χώραν, εὐθὺς οἱ ἀφοριστικοὶ λόγοι παραλαβόντες (ἢ προλαβόντες) ἀλλήλων τε διακρίνουν, καὶ τῆς ἐξ ἑ διηρέθησαν· ἄλλως γὰρ ἐκ ἂν διηρέθησαν· ἔτω καὶ λαύθα· (λέγω δὲ ἐπὶ τῶν Θεῶν Προσώπων) ὁ Υἱὸς καὶ τὸ Πνεῦμα τῆς αὐτῆς Πατρὸς προελθόντα κατὰ διάφορον τρόπον, αὐτῷ τῆτω καὶ τῆς Πατρὸς διακρίνουν, καὶ ἀλλήλων. Ἐκείνους μὲν, ὅτιπερ ἐξ ἐκείνων. Πᾶν γὰρ τὸ προῖον ἐκ τινος, τῆς ἐξ ἑ προήλθεν, ἕτερον δήπερ· ἀλλήλων δὲ, ὅτι κατὰ διάφορον τρόπον· εἰ καὶ ἀγνώστος ἡμῖν

ἡμῖν ἔτος ἐστὶ, καὶ ἀπόρρητος· ἐκ ἄρα δὲ τῆς ἀντιθέσεως ἡμῖν πρὸς διάσαφην τὴν Τίξ καὶ Πνύματος, ὡς ὁ Θωμᾶς ἀξιοῖ. ἡς ἔδὲ ἐπὶ τῶν καθ' ἡμᾶς ὄντων ἔδει. Ἰκανὴ γὰρ ἡ διάφορος Πρόοδος αὐτὰ διακρίνειν καὶ τὸ καὶ τοῖς ἑσὶ σύμφωνον, καὶ τοῖς τῶν Ἁγίων Δόγμασιν, ἅπερ ἐκείνοι τὴν διάκρισιν πλήρη παραδεδώκασι. Λέγει γὰρ ὁ Δαμασκηνὸς Θεολόγος ἐν Α'. (ἢ ἐν Η'.) τῶν Θεολογικῶν: „Εἰ καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκ τῆς Πατρὸς ἐκπορεύεται, ἀλλ' οὐ γεννητῶς, ἀλλ' ἐκπορεύτῶς. Ἄλλος τρόπος ὑπάρχει, ὡς ἔτος ἀληπτός τε καὶ ἄγνωστος. Καὶ ὁ Θεολόγος Γρηγόριος: Αἱ δὲ Ἰδιότητες, Πατρὸς μὲν, καὶ Ἀνάρχου, καὶ Ἀρχῆς, ἐπινοημένα καὶ λεγομένα. Τίξ δὲ Γέννησις. Πνύματος δὲ ἡ Ἐκπόρευσις.

Κεφάλαιον: ΚΣ'.

Ὡς περ ἔδὲν σωτελεῖ τῷ Πατρὶ τὰ ἐξ αὐτῆς Θεῆα Πρόσωπα πρὸς τὴν αὐτῆς ὑπαρξιν· ὅλον γὰρ παρ' ἐκείνου καὶ ἐντελὲς ἔχει τὸ εἶναι· κατὰ τὸν αὐτὸν τρόπον, ἔδὲ πρὸς τὴν ἀλλήλων ὑπαρξιν ἔδὲν αὐτῷ σωτελεῖται· ἔτε ἄρα τῷ Πατρὶ Σωαίτιον εἰς τὴν τῆς Τίξ Γέννησιν τὸ Ἅγιον Πνεῦμα· ἔθ' ὁ Τίξ τῷ Πατρὶ πρὸς τὴν τῆς Πνύματος Προβολήν. Πλήρης γὰρ ἡ Γεννητικὴ καὶ Προβλητικὴ ἐνέργεια· καὶ μία παρ' ἐνὸς ἑκατέρω πρὸς τὴν ἐνὸς ὑπαρξιν.

Κεφάλαιον: ΚΖ'.

Ὡς περ τὸ ἐνεργεῖν ὠρισμένως ὠρισμένῳ εἰσάγει καὶ τὴν ἐνέργειαν, ἥτις καὶ ἡ ὠρισμένη ἐνέργεια πρὸς ὠρισμένον τὸ ἐνεργεῖν ἀναφέρεται. Εἰ τοίνυν τὸ γεννᾶν ὁμῶς καὶ προβάλλειν ἐνὸς ἐστὶ τῆς Πατρὸς ὠρισμένη ἐνέργεια. Τὸ δὲ προβάλλειν μόνον, ἑμὴ καὶ γεννᾶν, ἐνὸς ἐστὶ Προβολέως ὠρισμένη ἐνέργεια, τῆς Πατρὸς καὶ Τίξ, κατὰ Λατίνους· τὸ δὲ γεννᾶσθαι τῆς Τίξ αὐτῆς ὠρισμένη ἐνέργεια· καὶ τὸ ἐκπορεύεσθαι τῆς Ἁγίας Πνύματος· τέσσαρα ἔσονται τὰ ὠρισμένως ἐνεργεῖν ἐν τοῖς Θεοῖς Προσώποις. Εἰς Πατὴρ· εἰς Προβόλεις· ἕτεροι ἀλλήλων τῷ ἀριθμῷ ὄντες· εἰς Τίξ· καὶ ἐν Πνεῦμα Ἅγιον. Τέσσαρα δὲ ὠρισμένως καὶ διαφόρως ἐνεργεῖν (ἐν τοῖς Θεοῖς Προσώποις) τί ἄλλο, ἢ Τετράδα Προσωπικῶς, ἀντὶ Τριάδος εἰσάγει; Μάτις ἄρα Λατῖνοι τὴν εἰς Τριάδα Πίσιν ἀνυψοῦσιν, ἔτις αὐτῇ τοῖς οἰκείοις Δόγμασι καθυβρίζοντες.

Κεφάλαιον: ΚΗ'.

Τὸ τῆς Θεότητος Αἵτιον, ἢ τῶν Ὑποστάσεων ἐστὶν ἴδιον τῆς Πατρὸς καὶ τῆς Τίξ κατὰ Λατίνους, ἢ τῆς αὐτῶν φύσεως, ἢ ἐνεργείας τινός. Εἰ μὲν ἔν τῶν Ὑποστάσεων ἐστὶν ἴδιον, πῶς οὐ δύω τὰ Αἴτια; δύω γὰρ καὶ αἱ Ὑποστάσεις. Καθάπερ καὶ τὸ Αἴτιαζον

Τόμ. Β'.

Ο 000000

δυσὶ

δυσὶ Προσωπικαῖς Ὑποτάξεσι, δύο καὶ τὰ Αἰτιατὰ πάντως εἰσάγει. Εἰ δὲ τῆς αὐτῶν φύσεως, ἐξισάσῃ πάντος αὐτῇ· καὶ (τὸ Πνεῦμα) ἐπὶ πλεον ἔσται· τὸ γὰρ Πνεῦμα ἔκ ἐστιν Αἷτιον. Εἴτι ἄρα Πατὴρ καὶ Υἱὸς φύσις, τὸτο Θεότητος Αἷτιον· καὶ εἴ τι Θεότητος Αἷτιον, τὸτο Πατὴρ καὶ Υἱὸς φύσις. Ἀλλότριον ἄρα τὸ Πνεῦμα τῆς τῷ Πατὴρ καὶ Υἱὸς φύσεως, ὥστε καὶ τῷ Αἷτιῳ ἀλλότριον. Καὶ τί ἐστὶ Μακεδονίῳ Λατῖνοι μέμφονται; Εἰ δὲ ἐνεργείας τινὸς ἐστὶν ἴδιον· ζητητέον: εἰ μία τῷ ἀριθμῷ ἐστὶν αὕτη, ἢ δύο; καὶ εἰ μὲν δύο, δύο πάλιν ἐξ ἀνάγκης ἔσται τὰ Αἷτια. Εἰ δὲ μία, ζητητέον αὐτῇ: Προσωπικὴ ἐστὶν αὕτη, ἢ φυσικὴ; Καὶ εἰ μὲν φυσικὴ, φυσικῆς τινὸς ἐνεργείας ἔσται τὸ Πνεῦμα ἀλλότριον· κἀντεῦθεν δὴ, καὶ τῆς φύσεως. Εἰ δὲ Προσωπικὴ, πρὸς ἓν Πρόσωπον ὠρισμένως ἀνενεχθήσεται. Μία γὰρ τῷ ἀριθμῷ Προσωπικὴ ἐνέργεια, πάσαις ἀνάγκαις ἐνὸς ἔσται Προσώπου, πρὸς ἓν ἐνεργήμα τέινσσα. Μάτις ἄρα Λατῖνοι, τῷ μίαν τῷ ἀριθμῷ Προβλητικῶς ἐνέργειαν καὶ ἰδιότητα τῷ Πατρὶ καὶ τῷ Υἱῷ διδόασιν.

## Κεφάλ; ΚΟ'.

Ἡ μία τῷ ἀριθμῷ καὶ ἀπλῇ ἐνέργεια, καὶ πρὸς ἓν ἐνεργήμα τέινσσα, καὶ πρὸς ἓν ἀριθμῷ τὸ ἐνεργῆν ἀναφέρεται. Ἐς τὸ ἐνεργοῦν, ἐφ' ὃ τὸ Α. τὸ δὲ πρὸς ὃ ἢ ἐνέργεια, ἐφ'

Πατὴρ  
Α

Υἱὸς  
Β

Υἱὸς Β

Γ

Πνεῦμα Ἄγ:

ἐφ' ὃ τὸ Γ. μεταξὺ δὲ αὐτῶν, ἐνέργεια μία τῷ ἀριθμῷ ἢ ΑΓ. λέγω, ὅτι καὶ τὸ ἐνεργῆν Α. ἓν ἐστὶν ἀριθμῷ. Μὴ γάρ: ἀλλ' ἔσω δύο τὸ Α καὶ Β. Τὸ δὲ Β, ἦτοι μέρος ἐστὶν αὐτῷ τῷ Α, ἢ χωρὶς ἀντικείμενον. Εἰ μὲν ἓν μέρος ἐστὶν αὐτῷ, ἔκ ἄλλο παρ' αὐτὸ ἐστὶν, ἀλλ' ἓν μετ' αὐτῷ, καὶ ἔτω πάλιν ἔσται τὸ ὅλον, ἓν ἀριθμῷ.

Εἰ δὲ χωρὶς αὐτῷ κείται· κείθω κείθω τῷ Α. Ἡ δὲ ἀπὸ τῷ Α πρὸς τὸ Γ ἐνέργεια, ἦτοι ὁμαλὴ καὶ σωεχὴς ἐστὶ, τῷ ἀριθμῷ ἔσται, καὶ δῆλον ὅτι ἐδὲν αὐτῇ συμβαλεῖται τὸ Β μετὰ καίμενον· ἀλλ' ἦτοι ἔκ ἐνεργήσῃ, ἢ ἐπρὸς τὸ Γ, καθάπερ τὸ Α. Εἰ δ' ἀνώμαλος ἐστὶ, δῆλον ὅτι ἐπίτασιν τινα δέξεται κατὰ τὸ Β, καὶ σφοδρότερα ἐαυτῆς ἔσται, καθάπερ τις ποταμὸς προσλαμβάνων ἕτερον ρεῦμα· τὸτο δὲ ἔκ ἐστὶ μιᾶς ἐνεργείας καὶ σωεχῆς ἴδιον· διακοπὴ γάρ τις μεταξὺ γενήσεται, καὶ συμβολὴ τῆς ἀπὸ τῷ Β ἐνεργείας, καὶ ἔτω διπλῇ ἢ ἐνέργεια ἔσται, καὶ ἔκ ἀπλῇ, ἐδὲ μία. Ἀλλὰ δὴ κείθω ἐκ πλαγίῃ τῷ Α (τὸ Β). δῆλον δὲ ἐνταῦθα, πολλῷ μᾶλλον, ὅτι δύο εἰσὶν αἰνέργειαι· μία μὲν ἢ ἀπὸ τῷ Α πρὸς τὸ Γ, ἑτέρα δὲ ἢ ἀπὸ τῷ Β. πρὸς τὸ Γ.

Ἀδωά-

Ἀδιώατον ἄρα μίαν τῷ ἀριθμῷ ἐνέργειαν, πρὸς δύω τὰ ἐνεργῆντα τῷ ἀναφορὰν ἔχον· καθάπερ ἀδιώατον μιᾶς γραμμῆς ἐκ θατέρου μέρους δύω τὰ πέρατα εἶναι· μία ἄρα τῷ ἀριθμῷ ἐνέργεια, πρὸς ἓν ἀριθμῷ. Τὸ ἐνεργῆν Α, ὁ Πατήρ καὶ Προβολός· τὸ πρὸς ὃ ἡ ἐνέργεια Γ, ἡ τῆς Ἀγίας Πνεύματος ὑπαρξίς. Μεταξὺ δὲ αὐτῶν ἡ προβλητικὴ μία καὶ ἀπλή, ἀφιδιος ἐνέργεια. Τὸ Β δὲ ὁ Υἱός. Πρὸς μόνον ἄρα τὸν Πατέρα, καὶ ὃ πρὸς τὸν Υἱὸν ἀναφέρεται ἡ προβλητικὴ τῆς Πνεύματος μία Προσωπικὴ ἐνέργεια. Τῆτο δὲ καὶ Ἀριστοτ.: ἐν τῷ Ε'. τῆς Φυσικῆς Ἀκροάσεως ῥητῶς ἀποφαίνεται. „Λέγει γάρ: μία ἀριθμῷ ἐνέργεια, ἐνὸς ἀριθμῷ. Καὶ ἔτι ἐν τῷ Θ'. τῆς αὐτῆς Βιβλίας: μία κίνησις ἢ ἕξ ἐνός τε τῆς κινῆντος καὶ τῆς κινημένου· εἰ γάρ τι ἄλλο, καὶ ἄλλη κινήσει, ὃ σιωπῆς ἢ ὅλη κίνησις.

## Κ ε φ α λ: Λ'.

Τὸ ἐκ Πατρὸς εἶναι, κοινὸν Υἱῷ καὶ Πνεύματι Γρηγόριος ὁ Θεολόγος ἀποδέδωκεν. Εἰ δὲ ὁ μὲν Υἱὸς ἀμέσως ἐκ τῆς Πατρὸς, καὶ μηδένα ἕτερον αἷτιον ἔχων· τὸ Πνεῦμα δὲ ὃ ἐκ ἀμέσως, ἀλλὰ αἷτιον ἑαυτῆς τὸν Υἱὸν ἔχον· ἔκτετι κοινὸν αὐτοῖς ἔσθαι τὸ ἐκ Πατρὸς, ὃ μὴ ἐπίσης μετέχουσιν· ἢ τοίνυν τὸν Θεολόγον ἀνάγκη ψεύδεσθαι· ἢ, εἰμὴ τῆτο, πάντῃ τε καὶ πάντως Λατῖνοι ψεύδονται τῷ Υἱῷ τὴν αἰτίαν διδόντες.

## Κ ε φ α λ: ΛΑ'.

Τρόπον ὑπάρξεως καὶ ιδιότητος τῆς Ἀγίας Πνεύματος οἱ Θεολόγοι φασίν, ὃ τὸ ἐκπορεύεσθαι ἀπλῶς, ἀλλὰ τὸ ἐκ τῆς Πατρὸς ἐκπορεύεσθαι. Εἰ δὴ τῆτο τρόπος αὐτῷ ὑπάρξεως καὶ ιδιότητος ἐστὶ· τὸ ἐκ τῆς Υἱῆς ἐκπορεύεσθαι ἢ μάτῳ αὐτῷ πρόσεσιν, ἢ προσβίθῃσι· τῇ ὑπάρξει, καὶ διπλῶ ποιεῖ τὴν αὐτῆς ιδιότητα.

## Κ ε φ α λ: ΛΒ'.

Ὅταν μίαν Ἀρχὴν τῶν κτισμάτων λέγωμεν τὸν Πατέρα, καὶ τὸν Υἱὸν, καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, δηλονότι τὴν Θεῖαν Φύσιν πρὸς τὰς λοιπὰς συγκρίνοντες, τῆτο λέγοντες ἐσμὲν· ἡ τις ἐστὶ μία, πολλῶν ἐκείνων καὶ διαφορῶν ὄσων. Κατὰ τὸν αὐτὸν δὴ τρόπον, καὶ ὅταν μίαν ἀρχὴν Θεότητος λέγωμεν, ἓν Πρόσωπον δηλονότι πρὸς τὰ λοιπὰ συγκρίνοντες τῆτο φημέν. Καὶ ὥστε ὁδὸν τῶν κτισμάτων εἰς τὴν μίαν Ἀρχὴν κατὰ τὴν δημιουργίαν παραλαμβάνεται, ὥστε ἑξῆς τοῖν δυοῖν Προσώπων εἰς τὴν μίαν Ἀρχὴν κατὰ τὴν Θεότητα παραληπτέον ἐστὶ. Τὸ γὰρ ἓν, τῶν πλειόνων Ἀρχὴν εἶναι μάλλον εἰκὸς, ἢ τὰ πλείονα



τῷ ἐνὸς μόνῃ. Ἄρα ὁ Πατὴρ Ἀρχὴ μία τῷ Υἱῷ καὶ τῷ Πνεύματι ὡς ὅτι μόνῃ ἢ Τριάδι Ἀρχὴ μία πάσης τῆς κτίσεως· τὸ δὲ καὶ ὁ Θεὸς Διονύσιος διαρρήδην φησί. Μόνῃ πηγῇ τῆς ὑπερσείας Θεότητος ὁ Πατήρ.

## Κεφάλαιον: ΛΓ'.

Ἡ παρὰ τῷ αὐτῷ ἐνεργῶντος ἐν τῷ αὐτῷ χρόνῳ διάφορος ἐνέργεια, διάφορον ἀποτελεῖ τὸ ἐνέργημα.

Ἔστω τὸ αὐτὸ ἐνεργῶν ἐφ' ὃ τὸ Α. Ἐνέργεια δὲ αὐτῷ ἐν τῷ αὐτῷ χρόνῳ, μία μὲν ἢ πρὸς τὸ Β, ἑτέρα δὲ διάφορος πρὸς αὐτῷ, ἢ πρὸς τὸ Γ. Λέγω ὅτι καὶ τὸ Γ διαφέρειν ἔσται τῷ Β. Εἰ γὰρ τὸ αὐτὸ, ἐφαρμόσει πάντως αὐτῷ καὶ ἢ πρὸς τὸδε ἐνέργεια (τὸ Γ) ἐφαρμόσει τῇ πρὸς τὸ Β. Ἐνέργεια μία ἄρα καὶ ἡ αὐτὴ ἔσται. Ἀλλ' ὑπέκειτο εἶναι δύο, καὶ πρὸς ἀλλήλας διαφόρους. Καὶ τὸ Γ ἄρα διάφορον ἔσται τῷ Β.

Ἔστω τὸ μὲν Α Πατὴρ ὁ αἰδίως καὶ φυσικῶς ἐνεργῶν· τὸ δὲ Β Υἱός· τὸ δὲ Γ, τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. Ἐνέργεια δὲ διάφοροι πρὸς ἀλλήλας, ἢ πρὸς τὸ Β μὲν, ἢ τῷ Υἱῷ Γέννησις· ἢ δὲ πρὸς τὸ Γ, ἢ τῷ Θεῷ Πνεύματος Ἐκπόρευσις. Διαφέρειν ἄρα τῷ Υἱῷ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγ., ἐπεὶ καὶ αἱ πρὸς τῷ ὑπαρξίν ἐκάλει ἐνέργεια διαφέρειν καὶ ἐκ ἂν ἡμῖν ἐτι δεοὶ διακρίσεως ἑτέρας τῷ Υἱῷ καὶ τῷ Πνεύματι αὐτῶν τῶν διαφορῶν ἐνεργειῶν καὶ Προόδων διακρίνειν αὐτὰ διωαμένων.

## Κεφάλαιον: ΛΔ'.

Ἐρωτῶσιν ἡμᾶς οἱ τὰ Λατίνων φρονεῖντες: Εἰ μετὰ τῆς αὐτῆς διωάμεως καὶ σοφίας ὁ Πατὴρ προβάλλει τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον; ἢ ἀσόφως καὶ ἀδιωκτικῶς; Ἰν', εἰ τὸ δόύτερον φέροντες τὸ Πρῶτον ἀποκρινώμεθα, πρὸς τῷ αὐτῶν ἡμᾶς ἐπανάγωσι δόξαν: ὅτι ἡ Σοφία καὶ Διωαμὶς τῷ Πατρὶ ἐστὶν ὁ Υἱός· μετὰ τῷ Υἱῷ ἄρα προβάλλει τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ὁ Πατήρ, καὶ ὁ μόνος αὐτός· Ὅτι μὲν ἐν μετὰ τῷ Υἱῷ προβάλλει τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ὁ Πατήρ· εἴτ' ἐν μετὰ τῷ Λόγῳ, καὶ τῆς Σοφίας, καὶ τῆς Διωάμεως, εἴτ' ἡμᾶς ἀρνησόμεθα. Συμπρόεισι τῷ Λόγῳ, κατὰ τῆς Θεῆς Πατέρας, τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, καὶ συμπαρομαρτῇ, καὶ σιωαναφαίνει αὐτόν· καὶ ὅτε ὁ Λόγος ἐστὶν ἀνδρὶ Πνεύματος, ὅτε τὸ Πνεῦμα πρόεισι ἀνδρὶ τῷ Λόγῳ· πλὴν ὅχι ὅπως, ὡς καὶ τὸν Υἱὸν Αἴτιον τῆς τῷ Πνεύματος Ὑπάρξεως εἶναι, καθάπερ ὅτε τὸ Πνεῦμα

μα τῷ Υἱῷ αἴτιον. (\*) . . . . Τα γὰρ ὁμῶς, καὶ κατὰ τὸ αὐτὸ ἔκ- (\*) Ση-  
 τινος προϊόντα, καὶ ἀλλήλων Αἴτια εἶναι, ἀδιώατον. Οὐ τοίνυν <sup>μείωται</sup>  
 ἐπεὶ ἅμα τῷ Υἱῷ πρόεισι, καὶ ἐκ τῷ Υἱῷ προίεναι ἀνάγκη τὸ <sup>παρὰ τὸ</sup>  
 Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. Εἰ δὲ μὴ, τῶν κτισμάτων ἑδὲν διοίσει τῶν <sup>χάλος</sup>  
 διὰ λόγον Θεῶ, καὶ διωάμεως, καὶ σοφίας γεγεννημένων. „Πάντα <sup>τῷ</sup> <sup>ἀπο-</sup>  
 „γὰρ φησὶ δι' αὐτῶ ἐγένετο, καὶ χωρὶς αὐτῶ ἐγένετο ἑδὲ ἐν ᾧ γέ- <sup>γράφ,</sup>  
 „γονεν,“ ὁ ἄρα μὴ γέγονεν; ἑδὲ δι' αὐτῶ τὸ εἶναι ἔχειν ἀνάγκη. <sup>ὅτι λε-</sup>  
 „Ἐπειτα ἔχ' ἔτω Σοφία καὶ Διωάμις τῷ Πατρὶ ἐστὶν ὁ Υἱὸς, ὡς <sup>πειτι ἐν-</sup>  
 Υἱὸς, ἢ Λόγος. Υἱὸς μὲν γὰρ καὶ Λόγος ἔτῳ ἐστὶ τῷ Πατρὶ, <sup>ταῦτα.</sup>  
 ὡς μὴ ὄντος αὐτῶ Υἱῶ, μηδὲ Λόγου. Πρὸς τὸν Πατέρα γὰρ ὁ  
 Υἱὸς ἀναφέρεται, καὶ πρὸς τὸν λέγοντα ὁ Λόγος. Σοφία δὲ καὶ  
 Διωάμις ἔτῳ ἐστὶ τῷ Πατρὶ, ὡς καὶ αὐτῶ Σοφίας καὶ Διωά-  
 μεως ὄντος, καὶ ἔ Σοφῶ καὶ Διωατῶ μόνῳ. Σοφία γὰρ ἐστὶν ἐκ  
 Σοφίας, καὶ Διωάμις ἐκ Διωάμεως ὡς περ Θεὸς ἐκ Θεῶ, καὶ  
 Φῶς ἐκ Φωτός. Λέγεται δὲ Πατὴρ Σοφία καὶ Διωάμις, ὡς ὅλῳ  
 αὐτῶ τῷ Σοφίαν, καὶ τῷ Διωάμιν ἔχων ὡς ἂν Εἰκῶν Ἀρχε-  
 τύπη. Ἀλλὰ καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ἑδὲν ἤτῳ Σοφία καὶ  
 Διωάμις καὶ τῷ γε ἑδὲς ἀντερεῖ τῶν τὰς Γραφὰς εἰδόντων καὶ  
 ὅτι κοινὰ καὶ ἑσιώδη τῶν Θεῶν εἰσὶ Προσώπων ταῦτα τὰ ὀνό-  
 ματα. Καὶ ὁ Θεὸς δὲ Ἀυγεστίνος, ἐν τῷ περὶ Τριάδος Βιβλίῳ,  
 τέτοις συμμαρτυρεῖ. Εἰ τοίνυν Σοφία καὶ Διωάμις, ἐκ Σοφίας  
 καὶ Διωάμεως τῷ Πατρὶ ἐκπορεύεται τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον εἰ-  
 μή τις αὐτὸ κτίσμα βάλοιτο κατασκοδάζειν, καθάπερ ἔρηται:  
 „Ὁ Θεὸς τῇ Σοφίᾳ ἐθεμελίωσε τὴν γλῶσσαν, ἡτοίμασε δὲ ἑρανὸς  
 „τῇ φρονήσει,“ Ἀλλ' ἔτε διὰ μέσης Σοφίας καὶ Διωάμεως ὁ Πα-  
 τὴρ ἦλθεν ἐπὶ τῷ τῷ Πνεύματος Ἐκπόρουσιν, ὡς περ ἑδὲ ἐπὶ  
 τῷ τῷ Υἱῷ Γέννησιν, ἔτε διὰ μέσης Θεότητος ὅλως τῶν γὰρ  
 κτισμάτων ἴδιον τὸ τοῖστον, οἱ Θεολόγοι φασίν. Ἀμέσως ἄρα  
 καὶ ἐξ αὐτῆς τῆς ἑσίας τῷ Πατρὶ, ἐπίσης ἅμῳ προΐασιν, ὁ  
 Υἱὸς καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον καὶ μετ' ἀλλήλων, ἔκ ἐξ ἀλλή-  
 λων δέ· ἑδ' ὅλως ἐκ πατέρῳ πατέρα.

Κεφάλ: ΛΕ'.

Εἴτι ἐπὶ πλειόνων ἐνικῶς ἐν τοῖς Θεοῖς Προσώποις λέγε-  
 ται, ἢ ἑσία πάντως, ἢ ἑσιώδες ἐστὶν. Ὡς περ γὰρ ἐν ἐστὶ πάν-  
 τη κατ' ὅ τῶν λοιπῶν ἑκάστον τῷ Προσώπων χωρίζεται, ἔτω  
 καὶ ἐν ἐστὶ πάντῃ κατ' ὅ τὰ τρία ἐνίσονται. τῷ δὲ ἐστὶν ἢ μία  
 τῷ ἀριθμῷ ἑσία, ἢ τι τῶν ἑσιωδῶς αὐτῇ προσόντων ὅλον ἢ  
 μία θελήσις, ἢ μία διωάμις, ἢ ἢ μία ἐνέργεια. Λέγομεν γὰρ  
 Θεὸν ἐκ Θεῶ τὸν Υἱόν, καὶ ἅμῳ Θεὸν ἑνα. Φῶς ἐκ Φωτός,  
 καὶ ἅμῳ ἐν Φῶς. Σοφίαν ἐκ Σοφίας, καὶ ἅμῳ μίαν Σοφίαν.  
 Διωάμιν ἐκ Διωάμεως, καὶ ἅμῳ μίαν Διωάμιν. Κατ' ἑδὲν ἄρα

Τόμ: Β'.

Π ππππππ

διώαν-

διώνται ἐν εἶναι τὰ Θεῖα Πρόσωπα, ἀλλ' ἢ καὶ ὁ ἐστὶν ἐν αὐτοῖς ἐν τῷτο ὁ ἐστὶν ἐσιωδῶς. Εἰ τοίνυν καὶ τὸ προβάλλειν ἐν ἐστὶν ἐν Πατρὶ καὶ Υἱῷ, ἢ κοινωνήσει τέτε καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ἐσιωδῶς γε ὄντος, καὶ ἔσαι καὶ αὐτὸ προβάλλον ἕτερον διήπε Πρόσωπον ἢ ἐσιωδῶς τινὸς ἀλλότριον ὄν, ἐκ ἀδηλον ὅτι καὶ τῆς ἐσίας ἔσαι. Τέτοιον ὁπότερον ἂν βέλοιντο τοῖν βαράθροι ἐλέθωσαν οἱ Λατῖνοι καὶ ἄμφω δ' ἐκτρεπόμενοι, τὴν ἐαυτῶν δόξαν ἀπολιπέτωσαν πρότερον, ἥτις ἐξ ἀνάγκης ἐπὶ ταῦτα ἐπάγει.

## Κ ε φ α λ: Λς'.

Εἰ ἐκ τῆς ἐσίας τῆ Πατρὸς ὁ Υἱὸς καὶ τὸ Πνεῦμα· ἐκ δὲ τῆς ἐσίας τῆ Πατρὸς καὶ τῆ Υἱῶ τὸ Πνεῦμα μόνον, κατὰ τῆς Λατίνης, ἐκ ἄρα τῶν αὐτῶν Αἰτίων ἢ ἐσία τῆ Πατρὸς καὶ τῆ Υἱῶ τὰ δὲ μὴ τῶν αὐτῶν Αἰτία, ἐδὲ τὰ αὐτὰ πάντως· ἄλλο ἢ ἔσαι ἢ ἐσία τῆ Πατρὸς, καὶ ἄλλο ἢ ἐσία τῆ Πατρὸς καὶ τῆ Υἱῶ· ἀνάγκης δὲ καὶ ἢ τῆ Πνεύματος ἄλλο. Πολλὰ ἄρα ἐσία ἐν τῇ Θεῇ Τριάδι· τέτο δὲ βλάβοςφημον καὶ παράλογον.

## Κ ε φ α λ. Λζ'.

Εἰ ὁ μὲν Πατὴρ Αἰτίος Υἱὸς καὶ Πνεύματος, ὁ δὲ Υἱὸς τῆ Πνεύματος μόνον· τὰ δὲ μὴ τῶν αὐτῶν αἰτία, ἐδὲ τὰ αὐτὰ πάντως· ἐκ ἄρα ἐν καὶ τὸ αὐτὸ Αἰτίον ἐπὶ τῆς Θεῆς Τριάδος, ἀλλὰ δύο τὰ Αἰτία. Καὶ μάττω οἱ Λατῖνοι τὰς δύο Ἀρχὰς φέγουσιν.

## Κ ε φ α λ: Λη'.

Ἡ τῆ Υἱῶ προσηγορία δύο ταῦτα σημαίνει, τὴν τε πρὸς τὸν Πατέρα χέσιν, καὶ τὴν ἐν αὐτῷ εἶναι παρ' αὐτῷ ἔχει, καὶ τὸ πρὸς αὐτὸν ὁμοῖον· πᾶς γὰρ Υἱὸς τῷ Πατρὶ ὁμοῖος· ὡσαύτως δὲ καὶ ἢ τῆς Γεννήσεως· τὴν τε γὰρ Αἰτίαν ὅθεν ἔχει τὸ εἶναι, καὶ τὴν ὁμοσιότητα παρίσῃσιν ἰκανῶς· ἐχ' ἔτω δὲ καὶ ἢ τῆς Ἁγίας Πνεύματος, ἔτε μὴ ἢ τῆς Ἐκπορεύσεως τέτο διώεται. Ἀλλ' ὅταν μὲν ἀκῶσωμεν Πνεῦμα Πατρὸς, δῶρον τι ἐννοήσωμεν εἰς ἡμᾶς φθάνον, καὶ ἡμᾶς ἀγιάζον, καὶ ἐν ἡμῖν ἐνεργῶν. Λέγει γὰρ ὁ Κύριος: „τὸ Πνεῦμα τῆ Πατρὸς ἡμῶν, τὸ λαλεῖν ἐν ὑμῖν· ὅθεν καὶ Υἱὸς Πνεῦμα τὸ αὐτὸ λέγεται· κοινὸν γὰρ ἐστὶ δῶρον ἀμφοῖν, ὡς καὶ ὁ Μακάριος Φησὶν Αὐγουστῖνος. Ὅταν δὲ ἀκῶσωμεν Πνεῦμα ἐκ Πατρὸς ἐκπορεύομενον, ἐνταῦθα τὴν μὲν Αἰτίαν ὅθεν ἔχει τὸ εἶναι, καὶ τὴν Ἰπόστασιν αὐτῇ ἐξελάβομεν· ὁ μὲν τοι τὸ ὁμοῖον, ἔτε ἢ τῆς Πνεύματος φωνῇ, ἔτε μὴ ἢ τῆς Ἐκπορεύσεως τέτο διώεται. Διὰ τέτο οἱ Θεολόγοι, ὅταν μὲν τὴν Αἰτίαν ἀπλῶς, ὅθεν ἔχει τὸ εἶναι, παρασηῶσαι βεβαιῶνται, Πνεῦμα

Πνεῦμα ἐκ Πατρὸς ἐκπορεύομενον λέγασιν, ἐξ αὐτῆ τῆ Κυρίᾳ τῷτο παρειληφότες, ἔχ ἡμιτελῶς Θεολογῶντες, ἔδῃ τὰ ἐγγύτερον Αἴτιον παρὰ λιμπάνοντες. "Απαγε τῆς ἀτοπίας! "Όταν δὲ ὁμῶς καὶ τὴν ὁμοσιότητα δηλῶν ἐθελῶσι, τότε καὶ τὸ δι' Τίς προσιδέασιν καὶ ἐκ Πατρὸς δι' Τίς ἐκπορεύομενον λέγασιν ὡσανεὶ λέγοντες: ἔκ ἄνευ τῆ Τίς· ἔχ ἑτεροφυῇ παρὰ τὸν Τίον. Ἄλλ' ἅμα τῇ Γεννήσει, νοείθω καὶ ἡ Ἐκπόρευσις ὡπερ ὅταν λέγωμεν: διὰ τοσάυτα χρόνῃς τότε γέγονεν, οἶονεὶ ἐκπροϊόντος τῆ χρόνῃς ὅθεν, καὶ ὁ Θεὸς φησὶ Μάξιμος: „δι' Τίς γεννηθέντος „ἀφράσως ἐκπορεύομενον,, ἔκ ἂν προαίτις τὸ, γεννηθέντος: εἰ μὴ τῷτο νοεῖν ἠβέλετο. "Ότι δὲ καὶ οἱ λοιποὶ τῷτο νοῶσι, μάρτυς αὐτὸς ἐν τῇ πρὸς Μαρίνον Ἐπιστολῇ, τῆς τότε Ῥωμαίως λέγων: „Οὐκ αἰτίαν τῆ Πνεύματος τὸν Τίον ποιεῖν ἀλλ' ἵνα „τὸ δι' αὐτῆ προιδέναι δηλώσωσι, καὶ ταύτῃ τὸ σὺν ἀφῆς τῆς ἰσχύος „καὶ ἀπαράλλακτον παραστήσωσιν,,. Ἡ δὲ νῦν καταγέλαστος τῶν Λατίνων Θεολογία, τὸ ἐγγύτερον Αἴτιον ἐκ τῆ: δι' Τίς νοῶσα, καὶ τὸν Πατέρα πορρώτερον αἴτιον, καὶ ἔχ προσεχῆς τιθεῖσα ἐστὶ τῆς τῆ Ἁγίας Πνεύματος Ὑποστάσεως ὡπερ δὲ τὸ, Ἐνὼς ἐκ τῆ Ἀδὰμ διὰ τῆ Σήθ λέγομεν τῆς μὲν τῆ Σεπτῆ Γρηγορίᾳ τῆ Νύσσης φωνῆς ἔκ ἀκέραι λέγασθης: „Ότι, ἡ τῆ Τίς μεσιτεία, καὶ αὐτῷ τὸ Μονογενὲς φυλάττει, καὶ τὸ Πνεῦμα τῆς „φυσικῆς πρὸς τὸν Πατέρα χέσεως ἔκ ἀπείργει,, βαθμὴς δὲ καὶ ὑποβάσεις ἐπὶ τῆς Ἁγίας Τριάδος εἰσάγει καὶ τὸν μὲν Πατέρα τίθησιν αἰνώτατον καὶ πρῶτον Αἴτιον, τὸν δὲ Τίον κατώτερον καὶ δεύτερον Αἴτιον ὡπερ τι διατείχισμα μέσον τῆ Πατρὸς καὶ τῆ Πνεύματος τὸ δὲ Ἅγιον Πνεῦμα, κατώτατον καὶ Αἰτιατὸν μόνον. Καὶ ἔτως εἰς τὸ τῆς ἀθείας βάραθρον καταπίπτει, καὶ τὰ Θεῖα Πρόσωπα περιγράφει, καὶ τὸ Πνεῦμα ὡπερ Τίονον ἀπεργάζεται.

## Κ ε φ α λ : Λ Θ'.

Ἐνέτυχόν τινι τῶν Λατινικῶν Διδασκάλων ὑπὲρ αὐτῶν γράφοντι: ὅτι ἔχρη λέγειν ἐκ Πατρὸς δι' Τίς τὸ Πνεῦμα Ἅγιον· ἔτω γὰρ δύω τὰ αἰτία, καὶ διαφέροντα ἔσαι: τὸ μὲν ἐγγύτερον, τὸ δὲ πορρώτερον. Ἀλλὰ ἐκ Πατρὸς καὶ Τίς (καθαπερὲν καὶ ἐν τῷ Συμβόλῳ προσέθετα.) ἵνα ὡς ἓν Αἴτιον ὁ Πατήρ καὶ ὁ Τίος νοῶται τῆ Ἁγίας Πνεύματος. Εἰ ἓν ἔτως ἔχει, καθάπερ ἐκείνος φησὶ, πρῶτον αὐτοῖς διέπεσεν ἡ σπαραζομένη δῆθεν συμφωνία πρὸς τῆς παρ' ἡμῖν Διδασκάλης καὶ ἔκτι λοιπὸν ἐκ τῆ δι' Τίς τὸ προσεχῆς Αἴτιον νοηλέον· ἔδῃ τὴν ΔΙΑ ληπλέον ἀντὶ τῆς ἘΚ, ὡς τινες τῶν ἐξ ἡμῶν ἐκπεσόντων ἐλήρησαν Ἐπειτὰ καὶ διακεκριμένα Πρόσωπα προβάλλει τὸ Ἅγιον τὸ Πνεῦμα καὶ τὸ μὲν,

Π π π π π π 2

παρ'



παρ' ἐαυτῷ τὸτο ἔχει, τὸ δὲ ἐκ τῆς ἑτέρας λαβόν· καὶ δύο πάντως Αἰτίαι κἀντεῦθεν ἔσαι· καὶ τῷ ΔΙΑ παρ' ἐαυτῶν ἀπολέσαντες, τὰς δύο Ἀρχὰς ἑδ' ἕτως ἐξεφυγον· ἀλλὰ καὶ τὸ τῆς Δόγματος αὐτῶν ἀσύμφωνον, καὶ πρὸς ἐαυτὸ μαχόμενον, καὶ πανταχόθεν ἀσύστατον ἔδειξαν.

## Κεφάλ: Μ'.

Ἡρετό με τις τῶν ἐξ ἡμῶν ἐκπεσόντων, καὶ τὰ Λατίνων ὑπερμαχόντων: Εἰ μὴ πᾶν τὸ ἐκ τινος διά τινος προῖον, Αἷτιον ἔχει τὸ δι' ἑ πρόεισι. Καὶ γὰρ ὁ ἄνθρωπος ἐξ Ἀνδρὸς διὰ Γυναικὸς γεννώμενος, ὡς φησὶν ὁ Ἀπόστολος, δύο ἔχει τὰ αἰτία, τὸν Πατέρα καὶ τῷ Μητέρα δηλονότι. Καὶ ὁ Ἰακώβ τῷ Ἀβραὰμ διὰ Ἰσαὰκ γεννηθεὶς, δύο ἔχει τὰ αἰτία, τὸ μὲν ἐγγυόν, τὸ δὲ πορρώτερον, τὸν Πατέρα δηλ.: καὶ τὸν Πάππον. Εἰ ἔν τοις ἐξ ἡμῶν παραδείγμασι τῷ ἐαυτῶν κρατῶειν περῶνται Θεολογίαν, ὁμολογέτωσαν καὶ τὰ δύο Αἰτία καὶ τὰς δύο Ἀρχὰς, καὶ μὴ τὰ ἐξ ἀνάγκης ἐπόμενα τοῖς οἰκείοις λόγοις ἀρνήσθωσαν.

## Κεφάλ: ΜΑ'.

Καὶ πῶς, φησὶν, ἡ κτίσις ἐκ Πατρὸς δι' Υἱοῦ ἐν Ἁγίῳ Πνεύματι τὸ εἶναι λαβῆσα, ἢ τρία ἔχει τὰ Αἰτία, ἀλλ' ἐν Αἷτιον, καὶ ἓνα Δημιουργόν; Ἡ κτίσις, ὦ Θαυμασίε, πρὸς αὐτὸν ἐφίω: ἔτε ἐκ τῆς ἐσίας ἡρτηται τῆ Πατρὸς, ἢ τῆς Υἱοῦ, ἔτε ἐκ τῆς ὑποστάσεως. Ἀλλ' ἐκ τῆς κοινῆς Θελήσεως καὶ Λωάμεως, ἡτις ἐστὶ μία καὶ ἡ αὐτὴ τῶν τριῶν ὅθεν καὶ τὸν ἓνα Θεὸν αἷτιον ἔχει καὶ δημιουργόν. Τὸ δὲ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκ τῆς ὑποστάσεως ἡρτηται τῆ Πατρὸς· εἰ δὲ αὐτὸ καὶ ἐκ τῆς ὑποστάσεως ἐστὶ τῆς Υἱοῦ, καὶ ὑμᾶς, δύο ὑποστάσεις αἰτίας ἔχον, δύο Αἰτίας, καὶ δύο Ἀρχὰς ἔξει πάντως, εἰ μὴ μεθύομεν. Μὴ ἔν ἀνοικείοις παραδείγμασι χρῆσθαι πάλιν. Ἡ γὰρ κτίσις ἢ φυσικῶς, ἀλλὰ δημιουργικῶς ἐκ Θεοῦ.

## Κεφάλ: ΜΒ'.

Εἰ τὸν Υἱὸν προσεχές Αἷτιον τῆ Ἁγίᾳ Πνεύματος οἱ Λατῖνοι λέγῃσι, τὸν Πατέρα (ἐρῶσι πάντως) ἢ προσεχές ταῦτα δὲ, (ὡς) ἀντικείμενα σσελθεῖν ἀδωάλον· ἔκ ἄρα ἐν Αἷτιον ὁ Πατὴρ ἔσαι καὶ ὁ Υἱὸς, ἀντικείμενα αἰτία ὄντα. Δύο ἄρα. Καὶ Πῶς τὰς δύο Ἀρχὰς οἱ χέτλιοι φῶξονται, πανταχοθεν αὐτοῖς ἐπόμενας;

Κεφάλ:

## Κεφάλ: ΜΓ'.

Οἱ Λατῖνοι προσεχῆς ἢ ὁ προσεχῆς αἷτια ἐπὶ Πατρὸς καὶ Υἱῶ λέγοντες, καὶ Πρῶτον, ἢ Δεύτερον, καὶ Τρίτον, φυσικῇ τινι τάξει ἢ ἀναγκαίᾳ δῆλον ὅτι διῃσῶσι τῷ Πατρὸς τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, καὶ βαθυμῆς καὶ ὑποβάσεως εἰσάγασιν ἐπὶ τῆς Ἁγίας Τριάδος. Καὶ τὸν μὲν Πατέρα μέζονα τῷ Υἱῶ λέγουσι, τὸν δὲ Υἱὸν μέζονα τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος. Ἀλλ' ἀκυσάτωσαν τῆς Ε'. Σωόδε τῶν Οἰκουμενικῶν, ὅτι ταῦτα τῷ Ὀριγένης εἰσὶ Δόγματα. Λέγει γὰρ ὁ αἰοδιδίμος Βασιλεὺς Ἰσινιανὸς, ἐν τῷ κατ' αὐτῷ Λόγῳ, περὶ αὐτῶ τάδε: „ὅς τις πρὸ πάντων εἰς αὐτῷ τῷ Ἁγίῳ ἢ ὁμοῦσιον Τριάδα βλασφημήσας, ἐτόλμησεν εἰπεῖν, τὸν μὲν Πατέρα, μέζονα „εἶναι τῷ Υἱῶ τὸν δὲ Υἱὸν, τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος ὅθεν καὶ πολυθεὸν αὐτὸν ἐν τῷ αὐτῷ Λόγῳ φησὶ καὶ εἰκότως: Λέγει γὰρ ἢ ὁ Θεολόγος Γρηγόριος: „Εἷς Θεός ὅτι μία Θεότης, ἢ οἱ πρὸς ἐν τὰ ἐξ αὐτῶ ἀναφερόντες, εἰς ἓνα Θεὸν πιστεύουσιν, οἱ δὲ μὴ πρὸς ἐν τὰ δύο, δῆλον ὅτι ὁ εἰς Θεὸν, ἀλλ' εἰς πολλὰς πιστεύει καὶ τὶ ἔτι τοῖς Ἑλλήσι μέμφονται;

## Κεφάλ: ΜΔ'.

Εἰ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκ μὲν τῷ Υἱῶ προσεχῶς ἐκπορεύεται, ἐκ δὲ τῷ Πατρὸς ὁ προσεχῶς, κατὰ τῆς Λατίνης δηλονότι ἐκ μὲν τῆς Ὑποστάσεως τῷ Υἱῶ ἐκπορεύεται, ἐκ δὲ τῆς Ὑποστάσεως τῷ Πατρὸς ὁ δαμῶς. Πῶς γὰρ, τὸ μὴ προσεχῶς ἐξ αὐτῷ τῷ ὑπαρξίν ἔχον; Οὐδὲ γὰρ ὁ Ἰακώβ ἐκ τῷ Ἀβραάμ ὁ προσεχῆς ἔχων τὸ εἶναι, λέγοιτ' ἂν ἐκ τῆς τῷ Ἀβραάμ Ὑποστάσεως. Πλὴν δ' ἄρα θέλει δις (ἀναγ: πλὴν εἰ ἄρα θέλει τις) λέγειν ἐκ τῆς ὁσίας. Καὶ πάντες δὲ ἄνθρωποι τὸ γένος ἔλκοντες ἐξ Ἀδάμ, ἐκ μὲν τῆς ὁσίας τῷ Ἀδὰμ λεγόμεθα, ἐκ τῆς Ὑποστάσεως δὲ ὁ δαμῶς. Ἀλλὰ μὴ οἱ Ἅγιοι τὸ ἐναντίον ἐπὶ τῷ Πνεύματος λέγουσιν, ἐκ τῆς Ὑποστάσεως τῷ Πατρὸς αὐτὸ Θεολογῶντες ὁ, τε Θεηγόρος Γρηγόριος ὁ τῆς Νύσσης, καὶ ὁ μέγιστος τῷ ὄντι Μάξιμος, καὶ οἱ λοιποὶ πάντες. Ἐκ τῆς Ὑποστάσεως δὲ τῷ Υἱῶ ὁδεῖς αὐτὸ εἶπεν, ὅσα γε ἡμᾶς εἰδέναι. Μάτις ἄρα Λατῖνοι τῷ Ὑπόστασιν τῷ Υἱῶ προσεχῇ Αἰτίαν τῷ Πνεύματος τίθενται.

## Κεφάλ: ΜΕ'.

Ὅταν οἱ Λατῖνοι λέγωσι τὸν Πατέρα μὴ προσεχῇ Αἴτιον τῷ Ἁγίῳ Πνεύματος, ἐρώμεθα τέττας: Πότερον, διὰ τὸ εἶναι τῷ Υἱῶ Αἴτιον, λέγουσιν αὐτὸν καὶ τῷ Πνεύματος Αἴτιον; ἢ διὰ τὸ ἢ αὐτὸν τι συμβάλλεσθαι παρ' ἐαυτῷ πρὸς τὸ εἶναι τῷ Πνεύματος; Εἰ μὲν ἐν διὰ τὸ εἶναι τῷ Υἱῶ Αἴτιον λέγουσι, δῆλον ὅτι αὐτὸς

Τόμ: Β'.

P rrrrrrr

δ

ὃ κυρίως ἐστὶ τῷ Πνεύματι Αἴτιος· τοιοῦτον γὰρ τὸ πόρρω καὶ ὃ προσεχὲς Αἴτιον. Καὶ εὐρίσκειται ὁ Πατήρ τῷ μὲν Υἱῷ κυρίως ὡς Αἴτιος, ἅτε καὶ προσεχὲς· (πληρὶς δὲ Πνεύματος ὃ.) Ἀλλὰ ταύτῃ τῇ Θεολογίᾳ, ἢ Θεομαχίᾳ εἰπεῖν μᾶλλον, ὁδὲπω μέχρι καὶ νῦν ἠκρόσαμεν. Ἀλλ' ἐκεῖνο γὰρ ἀκρόομεν, ὅτι ὡς ὁ Υἱὸς ἐκ τῷ Πατρὶ, ἔτω καὶ τὸ Πνεῦμα ἐκ τῷ Πατρὶ· μάτῳ δὲ ἡμῶν ἐγκαλῶσι τὸ ἐκ μόνου τῷ Πατρὶ, αὐτοὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκ μόνου τῷ Υἱῷ λέγοντες. Εἰ δὲ καὶ τὸν Πατέρα συμβάλλεσθαι φήσῃσι πρὸς τὸ εἶναι τῷ Πνεύματι, τίτις ἂν φαίη πάλιν πρὸς τὸν ἐσμὸν τῶν ἀναφυσόμενων ἀτοπημάτων; δύω τε γὰρ ἐντεῦθεν ἔσται τὰ Αἴτια, ἐπεὶ καὶ αὐτὸ Ὑποστάσις δύω, καὶ μεριστὸν τὸ εἶναι τῷ Πνεύματι· τὸ μὲν ἐκ τῷ Πατρὶ, τὸ δὲ ἐκ τῷ Υἱῷ χορηγούμενον· καὶ τὸ Πνεῦμα σώζοντες ἐξ ἀμφοῖν ἔχον τῇ ὑπαρξεῖν καὶ ὅσα ἄλλα τοῖς τοιοῦτοις ἀλλοκότοις ἐπέλῃ Δόγμασιν.

## Κεφάλαιον: ΜΣ'.

Ἀλλὰ τέτοις οἱ Λατῖνοι σενοχωρούμενοι πρὸς τὸ Παράδειγμα τῆς κλίσσεως ἀποβλέπῃσι πάλιν, ἵνα δηλονότι Πνευματομάχης καθαρὰς ἐαυτὰς ἀποδείξωσι, καὶ κλίσμα τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐνρεθῶσι φρονεῖντες· ἐρῶσι δ' ὅτι καὶ ἡ κλίσσις ἐκ Πατρὸς δι' Υἱῷ λεγομένη τὸ εἶναι ἔχῃ, ὁμοίως αἴτιον ἕνα καὶ δημιουργὸν ἔχῃ πεπίσθαι καὶ ἔτε δύω ἢ τρεῖς αἰτίαι, ἔτε τὸν μὲν κυρίως, τὸν δὲ ὃ κυρίως, ἔτε μέρος ἐκάτερον αὐτῇ πρὸς τὸ εἶναι συμβάλλειν. Ἄν ἔν ταῦτα λέγωσιν, ἢ καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγ· ὁμολογήτωσαν κλίσμα φρονεῖν φανερώς ἢ μαθέτωσαν, ὅτι ἕξω μὲν τῆς ἐαυτῶν ἐσίας καὶ Ὑποστάσεως, δῶνται καὶ παρ' ἡμῶν δύω Πρόσωπα, μιᾷ ἐνεργείᾳ, καὶ ἐνὶ λόγῳ, τεχνικῶς ὑφιστάν ὅπερ ἂν βάλωνται. Ἐκ δὲ τῆς ἐαυτῶν Ὑποστάσεως ἐκάτερον φυσικῶς προάγειν ἐν Πρόσωπον διὰ μιᾷς ἐνεργείας ἀδιδῶν, εἰ μὴ μέρος ὅπερ εἶρηται, πρὸς τὸ εἶναι συμβάλλειν. Ὡς εἶναι δύω τὰς ἀρχάς, καὶ δύω τὰς ἐνεργείας, καὶ τὸ προαγόμενον σώζοντες. Πόθεν ἔν αὐτοὶ μίαν Προσωπικῶν ἐνεργειᾶν δυσὶ Προσώποις ἀπονέμῃσι, καὶ μίαν Ἀρχὴν τὰ δύω φασί; θαυμάζειν ἄξιον!

## Κεφάλαιον: ΜΖ'.

Καὶ ὁ ἐν ἡμῶν νῆς, ὁ ἀνθρώπινος λέγω, λόγον ἐξ αὐτῶν γεννᾷ, καὶ Πνεῦμα προβάλλει, τὸν μὲν, οἷον Ἀγγελον τῶν ἐαυτῶν κινήματων καὶ νοημάτων· τὸ δὲ, ζῶν καὶ κινῶν τὸ σῶμα, καὶ τὸν λόγον αὐτὸν σωματικῶς καὶ διαρθρῶν. Συμπρόεισι μὲν ἔν ἀλλήλοις ὁ λόγος τε καὶ τὸ Πνεῦμα παρὰ τῷ Νῷ· καὶ ὁ μὲν, ἀγγέλλει τοῖς ἕξω τὰ τῷ Γεννήτορι, τὸ δὲ ζῶσι καὶ ἄγει τὸ σῶμα, ὅποι

ὅποι ἂν ὁ Προβολεὺς βέληται. Παρὰ τῆ λόγος δὲ προῖέναι τὸ Πνεῦμα τὴν αἰτίαν ἔχεν, ἢ ἂν τις ἐν φρονῶν εἴποι ποτέ. Πῶς γὰρ, τῷ λόγῳ πρὸς τὴν φανέρωσιν σπεύδειν, καὶ δι' αὐτῆς πάλιν αὐτὸ φανερόμενον; Οὕτω δὴ καὶ ὁ αἰδῖος Λόγος, συμ-  
 προῖον μὲν ἔχει τὸ Πνεῦμα παρὰ τῆ Πρώτης Νῆ καὶ Πατρὸς, ἔμῳ αὐτὸς αὐτῷ τὴν αἰτίαν τῆ εἶναι παρέχει κατὰπερ ἔδὲ παρ' αὐτῆς ταύτῃ λαμβάνει. Ταῦτα Θεολογεῖ μεθ' ἡμῶν τε καὶ πρὸ ἡμῶν ὁ Θεότατος Μάξιμος, καὶ τὴν Εἰκόνα ἐφαρμόζει θαυμασίως τῷ Ἀρχετύπῳ. Κατὰπερ γὰρ ὁ ἐν ἡμῖν λόγος, Ἀγγελος ἐστὶ τῶν τῆ Νῆ κινήματων, ἔτω καὶ ὁ Θεὸς Λόγος τῆς Μεγάλης βελῆς τῆ Πατρὸς Ἀγγελος ὀνομάζεται. Καὶ κατὰπερ τὸ ἐν ἡμῖν Πνεῦμα ζωτικὸν ἐστὶ καὶ κινητικὸν τῆ Σώματος, ἔτω καὶ τὸ Θεὸν Πνεῦμα ζωοποιὸν ὑπάρχον, καὶ κινητικὸν, καὶ σπεκτικὸν, καὶ Ἀγιαστικὸν τῆς κλίσεως, ζωὴ ὀνομάζεται. Λέγει ἔν ὁ εἰρημένος Θεὸς Ἀνὴρ, ἐν Κεφαλῇ Γ'. τῆς Γ'. Ἐκατοντάδος τῶν Γνωστικῶν: „Οὔτε ὧ, ἔτε ἔσιν, ἔτε ἔσαι τῆ Λόγος Λόγος „ἀνώτερος. Λόγος δὲ ἢ ἄνθρωπος, ἢ Ζωῆς ἄμοιρος, ἀλλ' ἐννῆς καὶ „ζῶν: ὡς γεννῶντα Νῆν ἔχων ἐσιωδῶς ὑφεσῶτα τὸν Πατέρα. „καὶ Ζωὴν ὑφεσῶσαν, ἐσιωδῶς ἐνυπάρχουσαν τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. „Ὅρα Νῆν μὲν γεννῶντα καλέμενον τὸν Θεὸν καὶ Πατέρα. Λόγον δὲ γεννώμενον ἐξ αὐτῆς τὸν Υἱὸν καὶ Θεόν. Ζωὴν δὲ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐνυπάρχουσαν τῷ Υἱῷ, ἀλλ' ἢ ἐξ αὐτῆς ὑπάρχουσαν. Καὶ τῆτο ἐστίν, ὅπερ ἕτερος Θεολόγος φησὶν: „Ἐκ τῆ Πατρὸς „ἐκπορεύεται, ἐν τῷ Θεῷ μένει.„

## Κ ε φ α λ: ΜΗ'.

Εἰ τῷ ἐμμέσῳ καὶ ἀμέσῳ μόνῳ διαφέρουσιν αἱ Πρόοδοι τῶν Θεῶν Προσώπων, κατὰ τὰς Λατίνους, τῷ τὸν μὲν Υἱὸν ἐκ μόνου τῆ Πατρὸς εἶναι, τὸ δὲ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐν Πατρὸς δι' Υἱῆς, καὶ τῆτο ἐστὶν ἢ Ἐκπόρευσις κατ' αὐτὰς ταύτῃ ἄρα τῇ Γεννήσει ἢ Ἐκπόρευσις, καὶ τῇ Ἐκπορεύσει ἢ Γέννησις. Δύω ἄρα ἐν τῇ Τριάδι Υἱοί, ὁ μὲν ἐκ μόνου τῆ Πατρὸς γεννώμενος, ὁ δὲ ἐκ Πατρὸς δι' Υἱῆς. καὶ ὁ μὲν τῷ Πατρὶ προσεχὴς, ὁ δὲ τῷ μὲν Υἱῷ προσεχὴς, τῆ δὲ Πατρὸς Υἱωνὸς πόρρω. Ἀλλὰ τὸ Θεολόγημα τόδε, μᾶλλον δὲ παραλήρημα, μέχρι τῆ νῦν ἢ ἠκέσαμεν.

## Κ ε φ α λ: ΜΘ'.

Ἡ ἢ αὐτὴ ἐστὶν Ἀρχὴ τῆ Υἱῆς καὶ τῆ Ἀγίας Πνεύματος, ἢ ἄλλη καὶ ἄλλη. Εἰ μὲν δὴ ἢ αὐτὴ, τῆ Υἱῆς δὲ ὁ Πατὴρ μόνος Ἀρχὴ, καὶ τῆ Πνεύματος ἄρα ὁ Πατὴρ μόνος. Εἰ δὲ ἄλλη καὶ ἄλλη, πῶς ἢ δύο Ἀρχαί;

P rrrrrrrr 2

Κεφάλ:



## Κεφ α λ: Ν'.

Ἡ Ὑπόστασις τῆ Πατρὸς, ἐστὶν ἀρχὴ τῆ Ἁγίας Πνεύματος.  
 Ἐστὶ δὲ καὶ ἄλλη Ὑπόστασις τῆ Υἱῆς, Ἀρχὴ τῆ Ἁγίας Πνεύματος  
 κατὰ τὰς Λαλίνδς. Ἀλλῃ ἄρα καὶ ἄλλη Ὑπόστασις ὅπερ ἐστὶν Ὑπο-  
 (\*) Ἐοι-στάσεις δύο τῆ Πνεύματος εἰσὶν Ἀρχαὶ κατ' αὐτὰς. Δύω ἄρα (\*)  
 κέ πως τῆ Πνεύματος αἱ Ἀρχαὶ κατ' αὐτὰς.  
 περιττὸν  
 τὸ ἐπα-  
 ναληφ-  
 θέν.

## Κεφ α λ: ΝΑ'.

Ὁ Πατὴρ καὶ ὁ Υἱὸς, ἕτως ἐν Αἴτιον τῆ Ἁγίας Πνεύματος,  
 ὡς ἐκάτερος μόνος, ἢ ἄλλως; Εἰ μὲν δὴ ἕτως, ἀμφω ὡς ἐκά-  
 τερος μόνος· ἐκάτερος δὲ μόνος ἕτως ἐν Αἴτιον, ὡς ἐν Πρόσω-  
 πον· καὶ ἀμφω ἄρα ἕτως ἐν Αἴτιον, ὡς ἐν Πρόσωπον· καὶ ἕτως  
 ἀναξὶ Σαβέλλιος. Εἰ δὲ ἄλλως μὲν ἀμφω ἐν Αἴτιον, ἄλλως δὲ  
 ἐκάτερος μόνος, πῶς ἔ δύο τὰ Αἴτια; τὸ γὰρ ἄλλως καὶ ἄλλως,  
 καὶ ἡ διαφορὰ, πάντως δήπερ καὶ ἀριθμὸν σφαισάγει.

## Κεφ α λ: ΝΒ'.

Ἐν τοῖς Θεοῖς Προσώποις ἐν ἐστὶ τὸ Αἴτιον, ἢ ἔχ ἕν; Εἰ  
 μὲν δὴ ἐν ἐστὶ Πρόσωπον Αἴτιον, ἔχομεν τὸ ζητούμενον· ὁ Πατὴρ  
 γὰρ δήπερ ἐστὶ μόνος. Εἰ δὲ ἔχ ἕν, δύο πάντως ἔσσι τὰ  
 Αἴτια, καθάπερ καὶ τὰ Αἰτιατὰ δύο τῆτο δὲ αὐτόθεν ἄτοπον.

## Κεφ α λ: ΝΓ'.

Εἰ τὸ ἀμέσως Αἴτιον, μᾶλλον καὶ ἐγγύτερον τῆ ἐμμέσως,  
 διατὶ τοσαυτάκις ἐκ τῆ Πατρὸς ἐκπορεύεσθαι λεγομένον τῆ Πνεύ-  
 ματος, ὀλιγάκις τὸ δι' Υἱῆς παρεντίθεται; Διατὶ τὸ μᾶλλον Αἴ-  
 τιον καὶ ἐγγύτερον σιωπᾶται; τὸ δὲ ἥττον καὶ πορρώτερον αἰεὶ λέγε-  
 ται; Πῶς δὲ καὶ ἔ δύο τὰ Αἴτια, ἐν οἷς τὸ μᾶλλον καὶ ἥττον, καὶ  
 ἐγγύτερον καὶ πορρώτερον, χώραν ἔχει;

## Κεφ α λ: ΝΔ'.

Ὁ Υἱὸς Αἴτιος τῆ Ἁγίας Πνεύματος, τῷ λόγῳ τῆς φύσεως,  
 ἢ τῷ λόγῳ τῆς Ὑποστάσεως; Εἰ μὲν δὴ τῷ λόγῳ τῆς φύσεως,  
 φύσις δὲ ἡ αὐτὴ τοῖς τρισὶ, καὶ (ἴσ: κοινὸν) ἔσσι τοῖς Τρισὶ τὸ  
 Αἴτιον· καὶ προβαλεῖ τὸ Πνεῦμα ἑαυτὸ, ἢ ἕτερον. Εἰ δὲ τῷ λόγῳ  
 τῆς Ὑποστάσεως ὁ Υἱὸς Αἴτιος, ἑτέρα ὦν Ὑπόστασις παρὰ τὸν  
 Πατέρα, ἑτέρα ἔσσι παρὰ τὸν Πατέρα Αἰτία, καὶ ἑτέρα Ἀρχή.  
 Δύω ἄρα Αἰτία, καὶ γευθεν δὴ καὶ δύο Ἀρχαί.

Κεφ α λ:

## Κεφάλ: ΝΕ'.

Ἡ Προβλητική Δύαμις ἐν Πατρὶ καὶ Υἱῷ μία καὶ ἡ αὐτὴ ὑπάρχουσα, κατὰ Λατίνους, ἐσιώδης ἐστὶ πάντως καὶ Φυσικὴ, ταύτης δὲ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον λείπειται, τῷ μηδὲν ἄλλο προβάλλειν Πρόσωπον. Ἀλλ' ὥστε τὰ τῆς αὐτῆς δυνάμεως ὄντα, καὶ τῆς αὐτῆς ἐσίας εἶναι ἀνάγκη, κατὰ τῆς Θεολόγου Παύλου ἔτω καὶ τὸν ἀντιπάλον, τὰ μὴ τῷ αὐτῷ ἐσιώδῃ δυνάμει ἔχοντα, μηδὲ τῷ αὐτῷ ἐσίαν ἔχειν ἀνάγκη· καὶ ἔτι ἀλλοτριεῖται τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον τῆς κοινῆς ἐσίας Πατρὸς καὶ Υἱοῦ, τῆς κοινῆς ἐσιώδους δυνάμεως ἀλλότριον ὄν. Ἀλλ' ἡμεῖς ὥστε ὁμοῦσιον, ἔτω καὶ ὁμοδύαμον ἴσμεν τῷ Ἁγίῳ Τριάδα· καὶ μίαν δυνάμιν τῶν τριῶν κηρύττομεν ὥστε καὶ μίαν ἐσίαν· τέτοις τοῖς Πνευματομάχοις ἐρρώσθαι πολλὰ φράσαντες.

## Κεφάλ: Νς'.

Ἰδιώματα τῶ Πατρὸς εἰσὶ, κατὰ τῆς Θεολόγου Παύλου, ἢτε Ἀγεννησία, καὶ τὸ γεννᾶν καὶ προβάλλειν. Εἰ ἐν ἐνὸς τέτων, (τῶ προβάλλειν Φησὶ) κοινωνεῖ τῷ Υἱῷ, κατὰ τῆς Λατίνους· τῶ δὲ Πνεύματος πᾶσι διδασκαλίας· πλείονα ἄρα τῷ κοινωνίαν ὁ Πατήρ ἔχει πρὸς τὸν Υἱόν, ἢ πρὸς τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον· καὶ ἐξ ἀνάγκης πλείονα τῷ ἑτερότῳ πρὸς τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ἢ πρὸς τὸν Υἱόν. Καὶ τί ἔτι Μακεδονίῳ Λατῖνοι μέμφονται, καθαρῶς αὐτοὶ Πνευματομαχῶντες;

## Κεφάλ: ΝΖ'.

Τίνα τριαδικῶς ἐπὶ τῶ Πατρὸς, καὶ τῶ Υἱῷ, καὶ τῶ Ἁγίῳ Πνεύματος λέγεται, καὶ τίνα μοναδικῶς; Μία Φύσις, Τρία Πρόσωπα. Μία Εἰκὼν, τρεῖς Ὑποστάσεις. Μία Μορφή, Τρία Ὄνόματα. Μία ἐσία, τρεῖς Χαρακτῆρες. Μία Θέλησις, τρεῖς Ἐνέργειαι. Μία Δύαμις, Τρεῖς Ἰδιότητες. Μία χάρις, τρεῖς Ὁμολογίαι. Μία Πίσις, Τρεῖς Ἐπιγνώσεις. Μία δόξα, Τρεῖς Ἀκτῖνες. Μία Ἐλλαμψις, Τρεῖς Λαμπρότητες.

---

# ΕΠΙΣΤΟΛΗ ΔΟΓΜΑΤΙΚΗ (\*) ΚΟΡΥΔΑΛΕΩΣ

Τῷ ἐν Κωνσταντινπόλει Διδασκάλῳ, πρὸς τὸν Πανο-  
σιώτατον. Πατέρα

ΣΩΦΡΟΝΙΟΝ ΠΟΚΖΑΣΚΙ,

Τὸν Ῥέκτορα μὲν πρῶτω χρηματίσαντα τῆς ἐν Κιαιβία Σχολῆς,  
τότε δὲ ἐν Γιασίῳ τῆς Μολδαβίας Ἠγμενδόντα.

---

Τῷ Πανοσιωτάτῳ Πατρὶ καὶ Σοφωτάτῳ, Ἀδελφῷ τε καὶ Φίλῳ  
ἐν Χριστῷ Σεβασμιωτάτῳ, τῷ ἀπάντων τῶν ἐφετῶν  
παρὰ Θεοῦ ἐκπλήρῳσιν.

## ἈΠΑΝΤΗΣΙΣ.

Παντὶ τῷ αἰτῶντι διδόναι παρὰ τῷ Σωτῆρος αὐτοῦ παραινέμεθα,  
ὥς ἅπασιν τοῖς δεομένοις, ὡς ἂν ἐγχωρῇ δηλονότι, ἐπιβοηθῆν.  
Εἰ δὲ τοῖς τὰ ἐπὶ γῆς αἰτῶμένοις, κατὰ τὸ περιὸν ἡμῶν τῆς  
διωάμεως, ὀφείλομεν ἐπαρκεῖν· πολλῷ δὲ μᾶλλον ἐτοιμῶς ἔχεν  
τοῖς τὰ Πνευματικὰ, καὶ πρὸς τῷ ἐν ὕψους λήξειν φέροντα.  
Τοιαῦτα τοίνυν τῆς Σῆς Πατρότητος ἐκθύμως, (ἢ Φῆς) παρ' ἐμῶ  
ἀπαιτήσεως, περάσομαι κατὰ τὸ ἐνὸν ἐκπληρῶσαι τὰ τῆς αἰτή-  
σεως· χρήσομαι δ' ὃν τρόπον προχειρότερον τε ὄντα ἡγάμαι καὶ  
βεβαιότερον.

Αἱ ἐπὶ τῶν Θεολογικῶν συμβαίνουσαι Ζητημάτων ἐπισφαλεῖς τε  
ὑπολήψεις καὶ ἔρεις, (Αἰδεσιμώτατε Πάτερ·) αἱ τοσαύτας τε καὶ  
τηλικαύτας διαφωνίας μετὰ Χριστιανῶν ἀναφύσας, τὰ δὲ μέλη  
τῶ

---

(\*) Ἡ Ἐπιστολὴ αὕτη ἀξία κέκεται τῷ παρόντι προσεθεῖναι Συγγραμμάτι, ἢ μόνον  
ὡς περὶ τῶν αὐτῶν πραγματευομένη, καὶ ὑπὸ Διδασκάλου Γραικοῦ συγγενὲς τῷ  
ἡμετέρῳ Συγγραφεῖ σωτεθεῖσα, ἀλλ' ὅτι καὶ τῷ Ἀθροίσματι τῶν γένε Τπομ-  
νημάτων ἔνυται, ἢ ἀλλὰχθ' ἐνρίθαι ἢ ἑάθιον. Ἡ Σημείωσις ἐστὶ τῷ Λατινιστῷ  
ἐκδόντος.

τῷ αὐτῷ Σωτῆρι ἐλεεινότατα κατ' ἀλλήλων ἐκπολεμεῖσαι, ὅτι ἐκ δυοῖν οἰονεὶ πιδάκων τῆς αὐτῆς πηγῆς προβλυσάνεσι, παντί περ δῆλον. "Ἦτοι γάρ, ἐκ τῷ μὴ τὰς αὐτὰς τὰς πάντας προϋποτιθέναι ἀρχάς· ἢ ὅτι καὶ τῶν αὐτῶν ἀρχῶν προϋποκειμένων, ἐκ ἐπίσης αὐταῖς οἱ πάντες εἰσι προχρώμενοι. Διὰ τοι τῆτο, ἐκλεθεσῶν τῶν ἀρχῶν, ἃς ἡ Ἀνατολικὴ ὑποτίθῃσιν Ἐκκλησίᾳ, καὶ τῷ τρόπῳ ἅμα καὶ ὃν αὐταῖς κέχρηται, σαφές τε δὴ καὶ ἐνσιβής ἡμῖν, ὡς ἠγάμεθα, ἢ ὁδὸς ἔσαι, ἢ πρὸς τὴν ἐπίκρισιν τε καὶ περινόησιν τῶν ἐξημένων Προτάσεων ἄγασα.

Ἡ μὲν ἔν Ἀνατολικῇ Ἐκκλησίᾳ, ἡ μόνη ἀληθὴς τε καὶ Ἀποστολικὴ ἐστὶ τοιαύτῳ δ' ἐννοῶ ἔσαν, ἐχ' ἥπερ ὑπὸ τῶν κατὰ καιρὸν διεπόντων αὐτῷ συγκροτεῖται, ἀνθρώπων ἐς αἰ, καὶ γνώμας καὶ τρόποις διαφόρων γενομένων, ἀλλ' ἥπερ ὑπὸ τῷ τῶν Πιστῶν σωισαμένη ἐστὶ πληρώματος, τῶν κοινῇ τῇ τῶν παλαιῶν ἐν αὐτῇ Διδασκάλων καθηγίσει παρακολοθεῖν ἐπαγγελλομένων καὶ τοι γε ἐξ ἀπαιδουσίας ἐνιοὶ ἐξαπατῶνται, παραδεχόμενοι τινα τὰ ἥμισυ παραδεκτὰ κατὰ τὴν ἐκείνων Διδασκαλίαν τυγχάνοντα. Αὕτη, Φημι, ἡ Ἐκκλησία, ἐξ αὐτῶν ἐστὶ διδαχθεῖσα τῶν Ἀποστόλων, ὅτι τὸ Εὐαγγέλιον τὸ εὐαγγελισθὲν αὐτῇ, ὃ καὶ ἐδέξατο, καὶ κατέχει, ἐκ ἑσὶ κατὰ ἄνθρωπον, ἐδὲ παρὰ ἀνθρώπου παρέλαβον αὐτὸ, ἔτε ἐδιδάχθησαν οἱ αὐτὸ παραδεδοκότες, ἀλλὰ δι' Ἀποκαλύψεως Ἰησοῦ Χριστοῦ διὸ καὶ ἐπὶ τῆς τῶν Ἀποστόλων Διδασκαλίας, ὡς ἐπὶ κρηπίδος σερρῆς καὶ ἀδιασείστῃ αἰὲν στηρίζεται· ἐπωκοδόμηται γὰρ ἐπὶ τῷ θεμελίῳ τῶν Ἀποστόλων καὶ Προφητῶν, ὄντος ἀκρογωνιαίου λίθου αὐτοῦ τῷ Χριστῷ, ἐν ᾧ „πᾶσα ἡ οἰκοδομὴ σωαρμολογημένη ἄρχει εἰς Ναὸν Ἁγίον ἐν Κυρίῳ. Μᾶλλον δὲ, καὶ παρ' αὐτῶν κατέμαθεν ἐκπαιδευθεῖσα τῶν Ἀποστόλων, ὅπως τε δὴ, καὶ πρὸς ἃς ὀφείλει ἐν λόγοις λαλεῖν, κατὰ τὸ Ἀποστολικὸν ἐκείνο: „Οὐ γὰρ ἡμεῖς τὸ Πνεῦμα „τῷ κόσμῳ ἐλάβομεν, ἀλλὰ τὸ Πνεῦμα τὸ ἐκ τοῦ Θεοῦ· ἵνα εἰδῶμεν τὰ ὑπὸ τοῦ Θεοῦ χαρισθέντα ἡμῖν· ἃ καὶ λαλοῦμεν ἐκ ἐν „διδασκτοῖς ἀνθρωπίνης σοφίας λόγοις, ἀλλ' ἐν διδασκτοῖς Πνευματικός Ἁγίος, Πνευματικοῖς Πνευματικὰ συγκρίνοντες... Ἐπεὶ δὲ τοίνυν ἔτως ἡ Ἀνατολικὴ Ἐκκλησία ἐστὶν Ἀποστολική, ὡς ὑπὸ τριῶν Διδασκάλων ἐκδιδάχθησα· ἕνα ἐπομένως ἐς αἰὲν θεμελίον οἶδε τῆς ἰδίας οἰκοδομῆς, τὸν διὰ τῆς Διδασκαλίας τῶν „Ἀποστόλων καὶ Προφητῶν, παρ' ὃν ἑδὲς ἄλλον δυνάται θεῖναι „ὅς ἐστιν Ἰησοῦς ὁ Χριστός... Μίαν οἶδε κεφαλὴν ἑαυτῆς, ἣτις ἐστὶν αὐτὸς ὁ Σωτήρ. Αὐτὸς ἐστὶν ἡ κεφαλὴ τοῦ Σώματος τῆς „Ἐκκλησίας. Ἐνα ἀσπάζεται Νομοθέτῳ, τὸν διωάμενον σῶσαι „καὶ ἀπολέσαι, ὡς ὁ Θεὸς φησὶν Ἰάκωβος. Ταῦτα γὰρ μετὰ τὸν Θεὸν σύμπαντα, δέλα τε ὄντα ἐπίσταται, καὶ ὑπῆκοα τῷ Θεῷ.

Σ σσσσσσ 2

Ταύ-



Ταύτη τοι καὶ μίαν Διδασκαλίαν, κατ' αὐτὴν αἰ ἀληθεύσαν, καὶ ἀρχάς τινας πρώτας τε καὶ ἀναποδέκτας ἐν τοῖς περὶ Πίσεως ὁμολογεῖ καὶ ὑποτίθῃσι τὰ δὲ ἐς τὰ Θεόπνευστα λόγια, οἷς ἔδὲ προθεῖναι, ἔδ' ἀφελεῖν ἐπιτρέπει ἑδόλως ἔδεν. Ἐξ ὧν δὴ, τάτε πισυτέα, καὶ τὰ πρακτέα, τὰ ἐν τοῖς Γράμμασι τοῖς Ἱεροῖς παραδοδομένα, ἢ γὰρ τὰ ἐξ αὐτῶν τέτων ἀναγκαίως ἐπόμενα, τοῖς ἀπανταχῶ γῆς Χριστιανοῖς πρόδηλα εἶναι, καὶ πάσης ἐκτὸς διαμφοισθητήσεως κείμενα, ῥᾶσα παθόμεθα. Εἰ δὲ δεῖ καὶ μαρτυριῶν, καὶ ὁποίας ἄρα δόξης πωθάνοιτό τις, ἢ πάλας Ἐκκλησία περὶ τὰ εἰρημένα ἐτύγχανε; πάρεσι μὲν, ἅπαντας μονονυχὶ τὰς Διδασκάλας τῆς ἡμῶν Ἐκκλησίας, μαρτυρῶντας παραγαγεῖν ἀρκέτω δ' ἔν, σωτοῦίας χάριν πρὸς τὸ παρὸν, καὶ ὁ Μέγας ἐν Διδασκάλοις ΒΑΣΙΛΕΙΟΣ, ἐν τοῖς Ἀσκητικοῖς, ἐν τῷ Λόγῳ τῷ περὶ τῆς Πίσεως. Καὶ ἐν τῷ ΡΓ'. "Ὁρω τῶν κατ' Ἑρώτησιν" καὶ ἐν τῷ "Ὁρω τῷ Κς". τῶν κατ' Ἐπιτομῇ καὶ Ἐπιγραφῇ: „Δεῖ τῶν „Ἀκροατῶν τὰς πεπαιδευμένους,,.

Τῶν μὲν ἔν Σωόδων ἐκείνας ἢ Ἀνατολικὴ καὶ Ἀποσολικὴ παραδέχεται Ἐκκλησία, ὅσαι σωωδὰ τῷ Πνεύματι ἀποφαίνοντα τῷ Ἀγίῳ, καὶ ὧν οἱ ὅροι ἔκ ἀντιπίπτουσι τοῖς Θεοῖς Λογίοις τῶν ὅ καὶ αὐτοὶ ἀξιοῦσιν οἱ τὰς Σωόδας, συγκροτῶντες Πατέρες, ἐν αἷς αἰ ποτε τὰ ζητούμενα, κατὰ τὰς Ἱερὰς Γραφὰς ἐπαγγέλλονται διορίσαν. "Ὁπερ καὶ ὁ λόγος διαπισθεταί τῆς τέτων ἐπὶ τὸ αὐτὸ σωελούσεως· ἔ γὰρ ἄλλως ἐν μεγάλοις ἀναλώμασί τε καὶ πόνοις, ἐκ παντοδαπῶν, καὶ πόρρω ἀφισαμένων ἡθροίζοντο Ἐπαρχιῶν, ἢ ἐφ' ᾧ, τὰς ἐν τῇ Ἐκκλησίᾳ ἐπισυμβαινέσας διαφορὰς διὰ τῶν Γραφῶν ἀνακρίναντες, ἃ μὲν αὐταῖς ἔυροιεν συμφώνως ἔχοντα ἀποδέξαθαι, ἃ δὲ διαφωνῶντα σωίδοιεν ἀποβαλεῖν τε καὶ διαπτύσαι. Μηδ' ἡμᾶς τὸ πρὸς Τιμόθεον ὑπὸ τῆ Ἀποστόλου ρηθὲν δεδιττέσθω: Ἡ γὰρ Ἐκκλησία, ἐφ' ὅσον Χριστῷ ὑπόκειται τῇ αὐτῆς Κεφαλῇ, ἐκ τῆς αὐτῆς Διδασκαλίας, ὡς ἐκ τῆς ἀμπέλας τὸ κλήμα, τῷ Πνευματικῷ μύησιν ἐξαρυομένη, Ἐκκλησία ἐς Θεὸν τὸ ζῶντος, σύλος καὶ ἐδραῖωμα τῆς ἀληθείας. Ἀπὸ δὲ τῆ Χριστοῦ, τῆς μυσικῆς Ἀμπέλας, ἀποτμηθεῖσα, (ὅ τὰς ἀνὰ μέρος μόνον Ἐκκλησίας ἐπισυμβαίνει· οἷον τῇ τῶν Ἀρμενίων, ἢ ἑτέρα δή τι τοιαύτη· ἥτις ἂν καὶ εἴη) ἔκετι Ἐκκλησία ἐς Θεὸν, ἀλλ' ἀνθρώπων Σωαγωγὴ πονηροδομένων καὶ ἀθετηντων. Τῆ γὰρ Χριστοῦ ἀπολέμνεσθαι, τῷ τὰς αὐτῆς Διδασκαλίας ἐκδιασρέφουσιν Ἐκκλησίαν, τίς ἀποφήσει; Ἀυτὸ δὴ τέτο καὶ ἐκ πείρας μανθάνομεν. Οὐδὲ γὰρ ἄλλος ἔνεκα οἱ Πιστοὶ, τῷ ἐν Ἀριμίνῳ, φέρε, ἔ παρεδέξαντο Σωόδον, τῷ ὑπὲρ τῆ Ἀρειανικῆς Δόγματος ἀθροισθεῖσαν, τῆς δ' ἐν Νικαίᾳ ἀντιποιεῖσθαι προείλοντο· ἢ ὅτι, τῆς μὲν οἱ "Ὁροι τὰς Ἱερὰς Γραφὰς ἔ σωῆδον, ἢ δ' ἐν Νικαίᾳ τοῖς ἐν αὐταῖς ἀπε-

ἀπεφαίνετο σύμφωνα. Οὐ γὰρ ἄν τις Φαίη διὰ τὸ πλῆθος τῶν ἀθροισθέντων· πλείονες γὰρ οἱ ἐν Ἀριμίνῳ ὑπῆρχον ἐξ ἑκατέρας τῆς Ἐκκλησίας Ἀνατολικῆς τε καὶ Δυτικῆς ἀριθμύμενοι. Καθ' ἃπερ δὴ καὶ ἡμεῖς τῶν κοινῶν ἐν Φλωρεντίᾳ συζῆσαν Σνώδον, δι' ἧδ' ἐν ἄλλο ἀποκηρύττομεν, ἢ διὰ τὸ μὴ συμφώνως ταῖς Γραφαῖς ἀποφῆνασθαι. Οὐ γὰρ ἂν ἔχοι τις εἰπεῖν, ὡς ἐχὶ πλήρης τὸν ἀριθμὸν αὐτῇ, ἢ ὡς οἱ ἐν αὐτῇ σωεληλυθότες ἡττοῦνες ὑπῆρχον τῷ ἀξιωματι· ἐπεὶ καὶ ὁ Ἀυτοκράτωρ παρῶν, καὶ Πάπας, καὶ Πατριάρχης, καὶ Ἐπισκόπων πλῆθὺς πολυάριθμος. Εἰ δέ τις καὶ κρατιστέρῃ λόγῳ προσέτι ἐφίοιτο, εἰπεῖν ἔχω, ὅτι καὶ πᾶσα ἡ μετὰ Θεὸν φύσις, ὑπηρέτις ἐστὶν αὐτῷ Θεῷ, καὶ ἢ μόνον ἡ Ἐκκλησία, ἀλλὰ καὶ αἱ τῶν Ἀγγέλων Ἱεραρχίαι, Φῶτα εἰς δόρυ τε ρέοντα, κατὰ τὴν τῷ ΘΕΟΛΟΓΟΥ Φωνῇ, τῷ Πρώτῳ λειτουργῆντα Φωτὶ· ὑπεργὸν δὲ πάντα, κατὰ θεσμὸς τῆς αὐτῷ γεγραμμένης αἰεὶ προσήκειν τῷ Κυρίῳ αὐτῷ δαλῶσαι, τῶν βεβαιωτάτων ἐστίν· ἐνθεντοὶ καὶ οἱ Ἐπίσκοποι, κατὰ τὸν Θεόθεν αὐτοῖς ἀποκαλυφθέντα νόμον, τῶν ἑαυτῶν ὑπεργίαν τῷ Θεῷ ἀποδιδόναι ὀφείλουσιν. Ἀλλ' ἐπὶ τέτοις τελευτῶν τὸ ῥηθὲν καὶ ἔτω σιωλόμενος ἂν ἔχοι προσεμπεδέσθαι. Ὁ τῷ Θεῷ Νόμος ὀλιγωρῶν, καὶ τῇ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι διδασκαλίᾳ ἀντιφερόμενος, περὶ τῶν εἰς Χριστὸν Πίστιν ἑξαμαρτάνων ἐστίν. Οὐδεμίᾳ δὲ Ἐκκλησίᾳ, ἐφ' ὅσον ἐν τῇ τῷ Θεῷ χάριτι διασώζεται, περὶ τῶν εἰς Χριστὸν Πίστιν ἑξαμαρτάνει. Οὐδεμίᾳ ἄρα Ἐκκλησίᾳ τῷ ὄντι εἴη, ἢ κατωλιγοῦσα τῷ κατὰ Χριστὸν Νόμῳ, καὶ τῇ Διδασκαλίᾳ βαίνουσα ἀντίξας τῇ τῷ Ἁγίῳ Πνεύματι. Δέδεικται ἄρα ὡς αἱ Σνώδοι κατὰ τοσῶτον εἰσὶν ἀποδεκταί, καθ' ὅσον τοῖς Ἱεροῖς συμφθέγγονταὶ Γράμμασιν.

Τρίτοι δὲ τακτοὶ μετὰ τὰς Οἰκουμενικὰς Σνώδας, οἱ Θεωῆσιοι τῆς καθ' ἡμᾶς Ἐκκλησίας Διδάσκαλοι. Ἐξ ὧν εἰσὶν: ΒΑΣΙΛΕΙΟΣ· ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ ὁ κατ' ἐξοχὴν ΘΕΟΛΟΓΟΣ· ΧΡΥΣΟΣΤΟΜΟΣ· ἈΘΑΝΑΣΙΟΣ· ΚΥΡΙΑΛΛΟΣ ὁ Ἱεροσολυμίτης· ΚΥΡΙΑΛΛΟΣ ὁ Ἀλεξανδρούς· ΙΟΥΣΤΙΝΟΣ ὁ Φιλόσοφος καὶ Μάρτυς· ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ ὁ Νεοκαισαρείας· ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ ὁ Νύσσης· ΔΙΟΝΥΣΙΟΣ ὁ Ἀρεοπαγίτης· ὁ Σοφώτατος καὶ Ἀγιώτατος ΜΑΞΙΜΟΣ· ΒΑΣΙΛΕΙΟΣ ὁ Σελεύκειας· ἸΩΑΝΝΗΣ ὁ Δαμνσκιώδης· ὁ Σοφώτατος ΘΕΟΔΩΡΗΤΟΣ· ΜΑΚΑΡΙΟΣ ὁ Αἰγύπτιος· καὶ πλείονες ἄλλοι, ὧς περ καὶ σεβόμεθα ἢ δέον, καὶ τῶν κατ' αὐτὰς ἀσπαζόμεθα Διδασκαλίαν, τά τε Ἱερὰ Γράμματ' ἀδιερμολόγητας καὶ τὸν τρόπον τῷ ὁρθῶς βίῃν ἐπιβεβαιῶντας. Παραδέχεσθαι δ' ἐπὶ τέτοις ἡ Ἀποστολικὴ ἡμῶν Ἐκκλησία, καὶ τῆς Ἱερᾶς Διδασκάλης τῶν Δυτικῶν οἷοι περ εἰσὶν: ΑΥΓΟΥΣΤΙΝΟΣ, καὶ ἹΕΡΩΝΥΜΟΣ, καὶ ἈΜΒΡΟΣΙΟΣ, καὶ ΚΥΠΡΙΑΝΟΣ, καὶ ἄλλοι καὶ μὴ τοσῶτον τοῖς αὐτῶν προχρήται Πονήμασιν, ἅτε δὴ τοῖς οἰκείοις προσεπαρκ-

Τόμ: Β'.

Τ τττττττ

μένη,

μένη, ὑπεξαυρεμένα τῷ Θεῷ Ἀνυγασίνῃ· ὃν ὡς πλεῖστα συγγεγρα-  
φότα καὶ πολλῆς ὠφελείας γέμοντα, τῶν τινες παρ' ἡμῖν Νεωτέ-  
ρων εἰς μαρτυρίαν παράγουσιν. Οἱ δὲ δὴ Σχολαστικοὶ πάντες,  
καὶ ἄλλοι τῶν ὕστερον Δυτικῶν, οἱ ΘΩΜΑΣ τε, καὶ ΣΚΟΤΟΣ,  
καὶ ΒΕΛΛΑΡΜΙΝΟΣ, καὶ οἱ τοιαῦτοί· ἔτι δὲ δὴ καὶ ΛΑΜ-  
ΒΑΡΔΟΣ ὁ ταύτης ἐξάρξας τῆς τάξεως· ἔτοι, φημί· ἐδεμίαν  
ἔχουσι χώραν ἐπὶ τῆς Ἀνατολικῆς Ἐκκλησίας, τῆς ὄντως Ἀπο-  
σολικῆς. Τὰς γάρ τοι Νεωτερικὰς καινοτομίας, καὶ τὴν περὶ τὰ  
τῆς Πίστεως περιτλὴν πολυπραγμοσύνην, ἐδ' εἰς ἀκοὴν ὡτίς αὐτῇ ἦκειν  
ἢ Ἀνατολικῇ Ἐκκλησίᾳ ἀνέχεσθαι. Ὅσιώτερον καὶ γὰρ ἡγήται, τοῖς ἤδη  
ἐγνωσμένοις τε καὶ ὠρισμένοις ἐπὶ τῶν Ἱερῶν Γραμμάτων ἐμμένειν,  
ἢ ἐν ποικιλότητι λόγων, τεχνικῶς ἐπεξεδρημένων, παρασαλῶσθαι.

Τῶν ἔν Θεολογικῶν Ἀρχῶν ἕτως ὑποκειμένων, πρὸ πάντων  
χρὴ τὰς τὰς Ἱερὰς Γραφὰς μέλλοντας ἐρμηνεύειν, ἢ μόνον ἐν  
ἡκείνῃ παιδείᾳ τε καὶ σωέσει, ἀλλὰ καὶ εἰλικρινεῖς αὐτὰς εἶναι  
καὶ γνώμη καὶ τρόποις, ὥς μὴ δι' ἀναπτύξεως ἐνδιασρόφῃ, ἐπὶ  
σιωπηγορίᾳ τῶν ἰδίων δοξασμάτων, τὰς Γραφικὰς ῥήσεις παραβιά-  
ζεσθαι, μηδὲ πρῶτον μὲν τὸ σωαπτεόν Πρόβλημα, κατὰ γε τὸ  
σφίσι δοκῶν ὑποτιθέναι, ἔπειτα δὲ παρὰ τῶν Γραφῶν ζητᾶν,  
ἢ παρὰ τῶν Διδασκάλων, τὰς ἀρχὰς αἷς ἂν αὐτὸ συμπεράνῃσι,  
πρὸς πέτρον μέτρον, ἢ χεὶρ πρὸς μέτρον πέτρον, τὸ τῷ λόγῳ,  
προσάγειν περῶμενοι. Τῆς μὲν ἔν Γραφῇ τῶν ἀσαφείᾳ σπει-  
λημένων τόπων, ἐκ τόπων ἐτέρων, τῶν ἐν αὐτῇ σαφεσέων  
καὶ μᾶλλον γνωρίμων, εἰ διωατὸν, ἀναπτυσσομένων, αὕτη ἀναμ-  
φισβητήτως ἐστὶν ἢ γνησία τε καὶ εἰλικρινὴς διερμηνεύσις, τῆς  
Γραφῆς ἕτως αὐτῆς ἐαυτῷ διαδοκυνέσις. Εἰ δὲ τῷτο μὴ  
οἶον τε, ἐπὶ τῆς Θεηγόρου τότε Διδασκάλης καταφύγειν ἐπά-  
ναγκες, καὶ τῆς ἄλλης τῶν Διερμηνεύων, ὧν, ὡς εἴρηται, μᾶλ-  
λον ἢ μαρτυρία ἐχέγγυος· παρ' οἷς, ὅσα περ ἂν περὶ Δογμάτων,  
ἢ περὶ ἡθῶν, παραπλησίως ἔυροιμεν τοῖς πᾶσιν ἐρμηνεύομενα,  
ταῦτα δὴ, καὶ ἢ Ἐκκλησία ἐπεγκρίνει, ὡς παραδοχῆς ὄντα ἄξια.  
Περὶ αὖ δ' ἂν οἱ Ἐρμηνεύται διαπεφωνηκότες τύχωσι, περὶ τῶν  
ἢ τῶν πλειόνων τε καὶ σοφωτέρων ψήφῳ κρατάτω, ὡς πιθανω-  
τέρῃ· ἐν οἷς, καὶ τῆς Ἀρχαιοτέρας εἰκὸς τιμᾶσθαι, ἅτε ἐγγυτέρως  
τῶν χρόνων γενομένης τῶν Ἀποσολικῶν, καὶ τῆς καθαρωτέρας  
ὑπ' ἐκείνων γοῦσαμένης Διδασκαλίας καὶ εἰσηγήσεως. Διτλὴν δὲ  
τινα τῆς Ἱερᾶς Γραφῆς οἶδεν ἢ Ἐκκλησία τὴν Διερμηνεύειν·  
τὴν μὲν κατὰ τὸ Γράμμα, τὴν δὲ μυσικωτέραν. Εἴτε Ἀλλη-  
γορικῶς ταύτῃ ἐποις, εἴτε Τροπολογικῶς. Καὶ κατὰ τὸ Γράμμα  
μὲν ὁ νῦν ἐν αὐτῇ ἐστὶν, ὃν ὁ Συγγραφεὺς δηλῶσαι σκοπεῖ, ὅτε  
μὲν ὀνόμασι κεχρημένος κυρίως, ὅτε δὲ καὶ τροπικοῖς τε καὶ μετα-  
φορικοῖς. Ἀλλὰ περὶ τῶν, πλειόνων ἢ δὲ.

Εἰς

Εἰς δὲ πληρεσέραν κατανόησιν τῶν ἰδίας λεγομένων ὑφ' ἑκάστων τῶν Διδασκάλων: Πρῶτον μὲν ἔχρη πεισθεῖν ἀπλῶς ἔδ' ἀπραγμόνως προσέσθαι τὰς ἐκ τῶν Πατέρων Μαρτυρίας καὶ ῥήσεις, τὰς ὑπὸ τῶν Σχολαστικῶν ἀπομνημονοούμενας τε καὶ προβαλλομένας. Τὰ γάρ τοι πλεῖστα, ἵνα μὴ πάντα λέγω, διασρόφως προφέρουσιν· ἐνίοτε δὲ καὶ πάντῃ ψυδῶς· ὡς ἐγὼ διὰ μακρᾶς πείρας χρόνων ἐκ ὀλίγων κατέμαθον. Ὡσαύτως ἔδει τὸν γνησίως Θεολογῶντα ἐνί τινι τῶν Ὑπομνηματιστῶν ἑαυτὸν ὑποβάλλειν, τῷ διαφθέροντι τὴν τῶν Διδασκάλων διάνοιαν, καὶ πρὸς βίαν μετέλκοντι, ἐφ' ᾧ τὰς ἰδίας ἑαυτοῦ προλήψεις κατασκυβάσσει τε καὶ συστήσασθαι· ἀλλ' αὐτὸς καθ' ἑαυτὸν τῆς λόγους τῶν Διδασκάλων μετὰ σωτόνους προσοχῆς καὶ ἐπιμελείας, ἔχ' ἅπαξ, ἀλλὰ καὶ δῶτερον, καὶ τρίτον ἐπαναγινωσκέτω· καὶ εἰ περὶ τῶν αὐτῶν ζητήματος ὁ αὐτὸς Συγγραφεὺς πλεοναχῶς τυγχάνει πραγματευόμενος, τῆς τόπας ἅπαντας ἀναγνώσειον ἑκάστης, καὶ τὰς παντοίας περὶ τῶν αὐτῶν ῥήσεις ἐπισυλλεκτέον, ὧν πρὸς ἀλλήλας παρεξεταζομένων, ἢ ἀληθὴς καὶ γνησία ἔννοια καὶ φαίνεται ἢ τῶ Συγγράφοντος

Δεῖ δὲ καὶ περὶ τὰς Ἐπιχειρήσεις ἐπιμελῶς προσέχειν, πρὸς ἐκφυγῶν οἰασθῆν συγχύσεως καὶ ἐξαπάτης σοφιστικῆς: „Μηδ' ἀπλῶς τὰ μετὰ προσδιορισμῶν τινος εἰρημένα νοεῖν· μηδ' ἀνάπαλιν, ὡς μετὰ προσδιορισμῶν καὶ κατὰ τι ῥηθέντα, τὰ ἀπλῶς λεγόμενα ἐκλαμβάνειν,.. Εἰ μὴ τόπος ἕτερος τῆς Γραφῆς τυχόν, ἢ ἑτέρα τις τῶ Συγγράφοντος ῥήσις ἐπιδιήλως τὸδ' ἀπαιτοίη. Οὐδὲ διαιρέσεις ἄλλως περιτλαίτινες καὶ παράλογοι ἐπινοητέαι, ἐπὶ τῷ ἀποκλίνειν τὰς πίσεις καὶ συγχεῖν τὴν ἀλήθειαν, ἐν αἷς ἄγαν οἱ Νεώτεροι πλεονάζουσι. Μάλιστα δὲ φυλακτέον μή τοι γε αἰτοῖτο τὸ ἐν ἀρχῇ· περὶ δὲ, τὰ Παπισμικὰ τῶν Ἐπιχειρημάτων ἐξαμαρτάνει συχνότατα.

Ἐστὶ δ' ἐν ταῖς Ἐκκλησίαις, παρὰ τὰ ἐκτεθέντα, καὶ τὰ τοῖς ἡθεσι προσανήκοντα· οἷα τὰ περίτε τὰς νηθείας, καὶ τὰς ἄλλας τῶν τελετῶν καὶ διατυπώσεων· ὧν τὰ μὲν, κατὰ πάσας κοινῇ τὰς Ἐκκλησίας τηρεῖται, τὰ δὲ, ἐν ἐνίαις τῶν Ἐκκλησιῶν ἰδιαίτερον, ἃ δὴ ἐκ ἐμφέρεται ταῖς Γραφαῖς ὠρισμένως, κοινότερον δέπως καὶ ἀορίσως ἐντέταλται. Καὶ ταῦτα μὲν εἶναι τηρητέα ἢ Ἐκκλησία κρίνει καὶ ἄλλα δὲ, ὅποσα τοῖς Ἱεροῖς λόγοις μηδαμῶς ἀντιβαίνοντα, ὠφέλιμά τε ἐστὶ καὶ τελεσιουργὰ πρὸς τε ἀντίληψιν τῶν ἐνθέων Δογμάτων, καὶ πρὸς κατανόησιν καὶ ἐπισήριξιν Πίσεως· καὶ μὲν δὴ καὶ πρὸς κατάρτισμὸν τὸν ἐν τοῖς ἀξιεπαῖνοις τρόποις τε καὶ ἡθεσιν, ἅπερ ἔδ' αὐτὰ δὴπαθεν ἀποβλητέα ἐν αἷς Ἐκκλησίαις ἐκράτησε. Περὶ δὲ τῶν ἀγράφων Παραδόσεων λόγος ἄλλος, ὡς ἐπὶ τῶ προκειμένῳ ὧδε χώραν ἔκ



ἐχουσῶν. Καί περ ἔδὲ ταύτας τοῖς γνησίως Θεολογῶσιν ἔτω παραδεκτέον, καθ' ὃν τρόπον οἱ Παπισταὶ διατείνονταί παρεισάγειν αὐτάς.

Τοιγαρὲν αἱ ἀρχαί, αἷς ἡ Ἀγία τε καὶ Ἀποστολικὴ Ἀνατολικὴ Ἐκκλησία, παρὰ τῶν Ἀποστόλων παρέλαβέ τε καὶ ἐδιδάχθη, αὐταὶ εἰσὶ. Ταύταις ἐπιθεμελιῶνται ταύταις χρηταί, ἐν τῷ, τὰ μὲν τέκνα τὰ ἑαυτῆς ἐκδιδάσκουσιν, τὰς δ' ἀντιλέγοντας ἐπελέγχουσιν, τὰς δ' ἐνδιαβάλλοντας ἀποσκορδαίνουσιν. Αἷς δὲ καὶ ἡ Σὴ ὁσιωτάτη Πατρότης, ὡς Υἱὸς αὐτῆς γνήσιος ὀφείλει ἐρείδεσθαι, καὶ πάσαις διωάμεσιν ἐπαμύων, ἔδέν τε προτιμᾶν ὧν ἔτος, ἢ ἐκείνος φησί. Πλεῖστα μὲν Ἑβραῖοι περὶ τῆς Παλαιᾶς διδάσκοντες εἰσὶ Διαθήκης, ἃ καὶ αὐτοὶ σωμολογῶμεν: ἀλλ' ἔδέν τι μάλλον, ἔδὲ Χριστιανοὶ ἐκείνοι, ἔδ' Ἑβραῖοι ἡμῶς παρὰ τὸτο γε. Καὶ οἱ ἐκ τῆς Ἀγαρ δὲ πολλὰ μὲν ἐκπαιδύουσι τὰς ὁμοθρήσκους: οἷον ὅτι ὁ Χριστὸς ἐκ Πνεύματος σωελήφθη Ἀγίᾳ· ἐγεννήθη δὲ ἐκ Μαρίας Παρθένου· ἐλάβετο δ' ἐν ἡμέρᾳ τῆς Κρίσεως, κρίνειν μέλλων ζῶντας τε καὶ νεκρούς, καὶ ἄλλα· ἃ μὲν τοι, πρὸς τῷ μὴ κοινωνεῖν αὐτοῖς, ἔδὲ σφίσιν ἀποφατέον· ἐκ ἄρα τῆς ἡμᾶς διαπτοείτω, ἔτι ἔτος, ἢ ἐκείνος, ἐστὶν ἐκδιδάσκων· ἀλλὰ σκεπτέον εἰ ταῖς Ἀποστολικαῖς ἀρχαῖς τὸ διδασκόμενον σωάδον ἐστίν. Ἐν τέτοις, εἰ συμφωνεῖ μοι ἡ Σεβάσμιός Σα Πατρότης, τὰ λοιπὰ πάντα ὁμοφρονεῖν ἐσόμεθα. Ἐκ γὰρ τῶν ἀρχῶν τέτων, τοῖς ὀρθῶς χρησομένοις ῥᾶστα δῆλον γενήσεται, τί δήποτε περὶ ἐκάστη ῥητέον τῶν προλεθέντων τοῖς γράμμασιν.

Ἦδη μὲν ἔν, „περὶ τῶν Εἰκόνων,, ἢ ἐν Νικαίᾳ δευτέρᾳ Σύνοδος σωεκροτήθη· ἐν ἣ ἐκ τῶν Ἱερῶν Γραφῶν σωάγεται ἢ τῶν Εἰκόνων, ἢ μόνον τῆ Σωλήρος καὶ τῆς παναχράντης Παρθένου, ἀλλὰ καὶ τῶν λοιπῶν Ἀγίων, τιμὴ καὶ προσκυώσεις.

Περὶ δὲ τῆς Ἐυχαριστίας· πρῶτον· καὶ μάλιστα αἱ Ἱεραὶ πρόκεινται Γραφαί, ἐν αἷς ἔχ' ἅπαξ περὶ τῆς Ἐυχαριστίας γίνεται λόγος· μετὰ δὲ τὰς Γραφὰς εἰσὶν οἱ Θεοφόροι Διδάσκαλοι· οἷον ὅ,τε Δαμασκίως, ἢ καὶ ἡ Σὴ ἀπεμνημονόβου Σεβασμία Πατρότης· καὶ πρὸ τῆς Δαμασκίως δὲ, ὁ Σοφώτατος καὶ Ἀποστολικώτατος Ἀνὴρ ὁ Ἀρεοπαγίτης, ὁ ἐκ προθέσεως περὶ τῶν Μυστηρίων πραγματεύσάμενος, καὶ ἰδιαίτερον περὶ τῆς Ἐυχαριστίας· ὁ δὲ Σὴ Σύγγραμμα τὸν μὴ σωεχέσασα ἐπανεγνωκότα καὶ διαμελετήσαντα, ἢ ῥάδιον περὶ τῆς Μυστηρίας ἐν τῇ καθ' ἡμᾶς Ἐκκλησίᾳ ὀρθῶς διαλέγεσθαι. Σὴ δὲ τέτω καταλεγέσθω καὶ ὁ Ἀγιώτατος καὶ Σοφώτατος Μάξιμος ὁ ἐκείνης Σχολιαστής. Καὶ μὲν δὴ καὶ ὁ Παχυμέρης. Καὶ οἱ λοιποὶ δὲ τῆς Ἐκκλησίας Διδάσκαλοι μονονεχὶ πάντες, περὶ τῆς Μυστηρίας πολλαχῶς τῶν Συγγραμμάτων αὐτῶν διελήφασιν· ἐξ ὧν, ὅ,τι ποτὲ ὀρθῶς σωάγεσθαι δυνάται, ἢτε Ἐκκλησία ἐπὶ λέξεως παραδέχεται, καὶ  
μονο-

ἡμεῖς ἀσπαζόμεθα, καὶ ἡ τῆτο παραδοξότατον. Μεμαθήκαμεν γὰρ ἅπαν ὕψωμα καθαιρεῖν, τὸ κατὰ τῆς γνώσεως ἐπαιρόμενον τῷ Θεῷ, καὶ εἰς ὑπακοὴν τῷ Χριστῷ αἰχμαλωτίζειν πᾶν νόημα.

Περὶ δὲ τῆ μακαρίας μνήμης γενομένων Πατριάρχων Κυρίλλου, ὡσαύτως καὶ ἡμεῖς φρονῶμεν. Ἐγνωμεν αὐτὸν ἐυσεβῆ τε καὶ σοφὸν Ἄνδρα. Τί δὲ οἱ αὐτὸν φασὶν ἐνδιαβάλλοντες, ἀγνοῶμεν. Αὐτοὶ ἰδέτωσαν.

Ἐχεις Ἄνερ Πανοσιώτατε, καὶ φίλων λίαν Ἀγαπητὲ, ὡς ἐν βραχεῖ φάναι τῷ χρόνῳ, τὰ διωάμενα χρησιμεῦσαι τῇ Σῇ Πατρότητι. Εἴπερ ἔν ἐν καλῷ θείῃς ἀποδεξάμενος, τιῶ τε πρὸς ἀλλήλους ἐννοίαν δεσμῷ στενωτέρῳ συσφίγξεις· καὶ ἐπεὶ δὴ τὸ τῆς παρ' ἐμοὶ διωάμεως, ἐτοιμότερον τῇ προθυμίᾳ ποιήσεις, περὶ θαρχεῖν τοῖς παρὰ Σὲ ἀπαντῶντα ζητήσεις.

Ἐδῶσο ὑγιῆς τε καὶ σῶος τῇ Χριστῷ τῷ Κυρίῳ Χάριτι πάντη σκεπόμενος, καὶ ἀεὶ περιφραττόμενος καὶ φρενόμενος.

Ἐδόθη ἐν τῷ Πατριαρχικῷ οἰκήματι τῷ ἐν Κωνσταντινπόλει, Μωδὸς Αὐγύστου 5. ἐν ἔτει 1640.

Ἐφεξῆς αἱ τῶν Ἐπιχειρημάτων Ἐπιλύσεις τῶν περὶ τῆς Ἐκπορεύσεως τῆς Ἀγίας Πνεύματος.

Τιῶ τῶν ἤδη προεκτεθέντων διώαμιν καὶ τὸν λόγον διωησόμεθα εἰς πέραν ἀγαγεῖν, ἐφαρμόσαντες τοῖς τῶν ὑπεναντίων Ἐπιχειρήμασιν, ἅπερ ἡμῖν περὶ τῆς τῆς Ἀγίας Πνεύματος προβάλλοντα Ἐκπορεύσεως. Ἐπειδὴ γὰρ ἔδεν ὅλως ἔξεσιν, ὅτε προθεῖναι, ὅτ' ἀφελεῖν, ἐπὶ τῶν Δογματῶν τῶν τῇ Τριάδι μάλιστα ἐπανηκόντων, παρὰ τὰ ἐν ταῖς Γραφαῖς ἐκπεφασμένα· ἐν δὲ τοῖς Ἱεροῖς Γράμμασι λέγεται δήπερ τὸ „Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῆ Πατρὸς „εἶναι ἐκπορευόμενον„. Περὶ δὲ τῆς Τριῆς ἔδεν γέγραπται ἄλλ', ἢ ὅτι ἐκ αὐτῆς πέμπεται ἐπὶ τὴν κτίσιν· τὸ δὲ ἡ χάριν ἅπαντα τὰ Ἐπιχειρήματα ταῦτα, καὶ εἴ τινα τοιαῦτα τῆς αὐτῆς γένεως, ἔδεν ὅ,τι καὶ ἰχύνει καταλαμβάνεται. Ὅτι δ' ἐν ταῖς Γραφαῖς ἔδαμῃ καὶ τὸ „Ἅγιον Πνεῦμα ἐκπορευόμενον εἶναι ἐκ τῆς Τριῆς, ἀναμφίλεκτον. ἐστὶ τοῖς γε τινώλλως διαφιλονεικεῖν καὶ εἰσεῖν ἡκιστα θέλκω. Ἀλλ' ἵνα μὴ νήσεις (ἢ λέγεται) τῆς δαιτὸς ἀπώμεν, καὶ τὸ δὴ μέζον, ἵνα ὑμῖν χαρισώμεθα, ἡνὶ δὴ μετὰ τῶν παιζόντων καὶ αὐτοὶ παίξωμεν.

Τῆ ἐν τῇ τάξει Α'. Ἐπιχειρήματος, ψευδοῦς ἢ Πρότασις ἐστὶν ἐκείνη: „Ὅτι ἡ τῶν Προσώπων διάκρισις ἐν τοῖς Θεοῖς ἐκ ἔστιν, εἰ μὴ διὰ τῆς τῶν χέσεων ἀντιθέσεως„· ἡτις ἐστὶ τῆς Θωμᾶ Πρότασις, ὑπ' ἐκείνη πρώτη ἐπινοηθεῖσα τε καὶ ἐνεσταχθεῖσα ἐν τῷ Α'. Μέρεϊ τῆς αὐτῆς Θεολογίας, Ζητήμ: Δ5'. πρὸς σύγχυσιν

Τόμ: Β'.

Υ υυυυυυ

τῆς

τῆς ἀληθείας. Ἀλλὰ γὰρ ἡ Πρότασις αὐτῇ, καὶ ὑπ' αὐτῶν ἔδεν ἦτον τῶν Παπιστῶν ἀναλρέπειαι, καὶ μάλιστα ὑπὸ τῆς Σκότης. Ὅρα μοι τὸν Καϊετάνον αὐτόθι.

Ἐντεῦθεν ἐπομένως ἀναιρεῖται καὶ τῶν Ἐπιχειρημάτων τὸ Β', ἀποφασκομένης τῆς ἐν αὐτῷ σωπεύσεως ὅτι δηλ.: „Εἰ μὴ ἐκπο-  
ροῦμενον ὡς τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἐκ τῆς Υἱᾶς, αἱ παθητικαὶ προ-  
βλύσεις, (τὸ γεννᾶσθαι δὴ καὶ τὸ πνέεσθαι) ἐκ ἂν ἀπ' ἀλλήλων  
τῷ πράγματι διακρίνοιντο. Ὁ δὲ τῆς ἀποφάσεως λόγος ἔυδηλος.  
Τὸ γὰρ γεννᾶσθαι καὶ τὸ πνέεσθαι καθ' αὐτὰ διακρίνεται, ἥπερ  
ἐπὶ τῆς αὐτῆς ὑποκειμένης πάντῃ πάντως ἀσύμβατα.

Πρὸς δὲ τὸ Γ' ῥητέον, ὅτι ἡ ἐνεργητικὴ πνεῦσις ἑδαμῶς  
σωλίσῃσι τὸ τῆς Πατρὸς Πρόσωπον, ὡς σωιζάμενον διὰ τῆς γεννᾶν  
προσῆκει δὲ τῷ Πατρὶ ὡς πνέοντι, καθὼς μία πηγὴ, καὶ ἀρχὴ  
ἐνιαία τῆς Τριάδος ἐστίν. Οὐμὴ ἀλλ' ἔχει καὶ τῷ Υἱῷ προσῆκει  
τὸ πνέειν, χωρὶς τῆς ἀρχᾶς συγχωρεῖσθαι δισάας· ἔδὲ σωλεῖται  
αὐτοῖς ἡ ἐπινοηθεῖσα διαβολὴ τῆς ἀρχῆς „εἰς τὴν Προκαταρκτικῶν,  
καὶ τὴν μὴ Προκαταρκτικῶν. Οὐ μόνον ὅτι πλάσμα νεωτερι-  
κὸν τόδε ἐστὶ, καὶ ἔδ' ἐν Ἱεραῖς Δελτοῖς, ἔδὲ παρὰ τινι τῶν πα-  
λαιῶν ἀναγινωσκόμενον· ἀλλ' ὅτι καὶ μᾶλλον ἔτι τὸ δισδὸν τῆς  
ἀρχῆς σωλίσῃσιν, ἢ ἀναιρεῖ. Καὶ ἔδὲ τὸ ἕτερον ἐκείνο ἰχύει τι,  
ὃ φαίνει: ὅτι ἄμφω τὰ Πρόσωπα δηλονότι, διὰ τῆς αὐτῆς Πνύ-  
στικῆς διωάμεως πνεῖ· ἔδὲ ὅλως ἰχύει, φημί. Ἡ γὰρ τοιαύτη  
διωάμις πότερον, „Οὐσιώδης, ἐστίν, ἢ „Προσωπική,; Εἰ μὲν  
τὸ πρῶτον, καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα προάγοι ἂν ἐνεργητικῶς  
πνέον, ἦτοι ἐκτὸς, ἢ Πνεῦμα ἕτερον. Οὐδέτερον δὲ θέμις εἰπεῖν.  
Εἰ δὲ Προσωπικῶς φαῖεν, ἦτοι σύγχυσις ἂν ἔψοιτο τοῖς Προ-  
σώποις τῆς Πατρὸς, καὶ τῆς Υἱᾶς· ἢ ἄλλως τετραὶς Προσώπων ἐπὶ  
τῆς Θεαρχίας εἰσάγοιτο φύσεως, τοῖς τρισὶ προσιδεμέναι καὶ τε-  
τάρτῃ τῆς Πνέοντος· εἴη γὰρ ἂν Ὑπόστασις ἕτως ἐν τοῖς Θεοῖς  
ὁ πνέων, εἰ Θεὸν παρῆγε Πρόσωπον· αἱ γὰρ ἐνέργειαι τῶν Ὑπό-  
στάσεων εἰσὶν, ἢ κοινῇ λέγεσθαι. Οὐδὲν δ' ἂν, ἔδὲ τὸ ἄλλο σωλε-  
λέσθαι αὐτοῖς ἐκείνο, εἰ φαῖεν: ὅτι τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἔνοεῖται  
παρῆχθαι, ἐν ᾧ Πατὴρ καὶ Υἱὸς νοεῖται, ἢ πνέοντες· ἔτι σω-  
τελέσειε φημί· ὅτι καὶ τέττα τεθέντος, ἔδὲν ἦτον τὰ σωεγγυς  
εἰρημένα ἐφέψεται. Ἐπειὰ καὶ ἡ τάξις ἦδε ὡς αὐτοὶ τιθέασιν ἐπι-  
νοίας ἐστὶν ἀνάπλασμα· καθάπερ ἐν καὶ τὸ ἐν ἀρχῇ αἰτῆται.

Πρὸς δὲ τὸ Δ'. Ἀποφατέον, τοιαύτῳ εἶναι τὴν τάξιν Υἱᾶς τε  
μεταξὺ καὶ τῆς Πνύματος τῆς Ἀγίας, ὡς θάτερον θατέρως παρὰ-  
γεσθαι, οἷα δὴ καὶ τῆς πυρὸς τὸ φῶς. Τὴναντίον γὰρ ἐν τοῖς  
τῶν Ἱερῶν Διδασκάλων ἀναγινώσκεται τόχῃσιν. Ὁ γὰρ Να-  
ζιανζηνὸς, τὸν μὲν Πατέρα τῷ δίσκῳ τῷ Ἡλιακῷ παραβάλλει·  
τὸν δὲ Υἱὸν καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, δισσαῖς ἀκτῖσιν ἀμέσως ἐκ τῆς  
Ἡλίας

Ἡλίου εκπροΐσταις ὡσαύτως, τὸν μὲν Πατέρα παρεικάζει πηγῇ, τὸν δὲ Υἱὸν καὶ τὸ Πνεῦμα δυσὶν ὁδὸν φράζειν, ἐκ τῆς αὐτῆς πηγῆς εκπρορρέεσθαι· ὁ δὲ Δαμασκινὸς, τὸν μὲν Πατέρα ῥίξιν ἀφομοιοῖ, τὸν δὲ Υἱὸν καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, δυσὶ σελεύχεσι τοῖς ἐκ τῆς αὐτῆς ῥίξης ἀνίχυσθαι· Ἀλλ' ἐπὶ τὸν Βασίλειον ἔλθωμεν, ὃς ἐν τῷ Γ'. τῶν πρὸς Ἐυνόμιον λόγῳ θέλει λέγειν· ὅτι καὶ δοθεῖη καὶ τρίτον εἶναι τῇ τάξει τὸ Πνεῦμα, ἐκ ἂν ἔψοιτο φύσεως ἐτερας εἶναι, παρὰ τὴν τῆ Πατρὸς καὶ τῆ Υἱᾶ. Ἀλλὰ τί δὴποτε διαβάλλομεν τὰς Πατέρας; καὶ ἵνα τι τὸ ἀφ' ἡλίου φῶς καταλιπόντες, ἐν τῇ σκοτίᾳ ζητῶμεν φῶς; ὁπότε αὐτοὶ οἱ Διδάσκαλοι φωλὸς τηλαυγέστερον φαίνεσι μυριαχὺ κράζοντες· ὅτε μὲν, ἐκ τῆ Πατρὸς μόνον τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἐκπορεύεσθαι; ἄλλοτε δὲ ἐκ τῆ Πατρὸς, καὶ ἔχι ἐκ τῆ Υἱᾶ; οἱ δὲ πλεῖστοι Ἀρχὴν μίαν καὶ μόνω ἐν τῇ Θεότητι ὑποτιθέασιν; ἤτοι μίαν μὲν τὴν Αἰτίαν, δύο δὲ τὰ Αἰτιατά; Ἀναγνωσθήτω δὴ Βασίλειος αὐτὸς ἐν τῇ πρὸς Γρηγόριον τὸν Ἀδελφὸν Ἐπιστολῇ, περὶ διαφορᾶς Οὐσίας καὶ Ὑποστάσεως.

Πρὸς δὲ τὸ Ε'. ἀποφάσκομεν τὸ προτερῶν τὸν Υἱὸν τῇ Ἀρχῇ· ὁ δὲ λόγος τῆς ἀποφάσεως ἐκ τῶν ἀνωτέρω σαφής. Ἐπειτα ἔδ' ἔστιν ἐπόμενον τὸ ἐκπορεύεσθαι τὸ Πνεῦμα ἐκ τῆ Υἱᾶ, εἴπερ ἐκπορεύεται ἐκ τῆς ἑσίας τῆ Υἱᾶ, καθὼς μία ἡ τῶν τριῶν Ὑποστάσεων ἑστία ἐστίν. Οὐ γὰρ ἡ ἑστία προβάλλει, καθὼς ἑστία ἐστίν, ἀλλὰ καθὼς ταυτίζεται τοῖς Προσώποις, ἤτοι ταῖς Ὑποστάσεσι.

Πρὸς δὲ τὸ Σ'. ἀποφάσκειται τὸ ἐπιφερόμενον ἄτοπον. Αὐτὸς δὲ τῆ Βασιλείας ἐκείνου ὁλόκληρον τὸν Λόγον (Γ'. ὄντα τῶν πρὸς Ἐυνόμιον) διελθὼν, ἔδαμῃ ευραῖν ἐδωρήθην τὸ ἐν τῷ Ἐπιχειρήματι ἀναφερόμενον· ἔδεν γε πιθανὸν ὅπως ἂν εἴη, τὸ λέγειν τὸν Βασίλειον· ὅτι τῇ Θεῷ τᾶς ἀντιβαίνων ἐστὶ, καὶ τῆς Πίσεως ἀλλότριος, ὁ τῆ Υἱᾶ προτάσων τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, καὶ μὴ συμφάσκων τὸ Πνεῦμα τῇ τάξει τῆ Υἱᾶ δυνστερῶν, εἰ μὴ παραπλησίως ἐννοῶν εἴη, εἰτις καὶ τὸν Υἱὸν προτάσσοι τῆ Πνύματος τῆτο· γὰρ ἐκ τῶν ἀνωτέρω σιμᾶνεται. Καί·τοι γε τὸ Ἐπιχειρήμα ἔδεν συμπεράναι, καὶ τέττα δοθέντος. Ἀλλὰ κατὰ στυλὸν, ἀντιβολῶ, τὸν Συγγραφέα ἀνάγνωθι.

Τὸ δὲ Ζ'. κομιδῇ ληρῶδες, καὶ ἐκ ὀλίγα τὰ τέττω ἐφεπόμενα ἄτοπα. Ἐννόησον γὰρ, πόθεν τέττω εἰληπται, τὸ ἀγάπῃ εἶναι τὸ Πνεῦμα, καὶ κατὰ τρόπον ἀγάπης εκπροΐεσθαι. Ἡ ἔχι κενοφωνία τις αὐτῇ τυγχάνει τῶν Σχολαστικῶν; „Καὶ γὰρ ὁ Θεὸς Ἀγάπη „ἐστὶ· διὸ καὶ ὁ Πατὴρ καὶ ὁ Υἱός,„ (Ἀλλὰ μὴ ἔχι καὶ τὸ Πνεῦμα;) Καὶ εἰ ὁ Πατὴρ τὸν Υἱὸν ἀγαπᾷ, καὶ ὁ Υἱὸς τὸν Πατέρα ὡσαύτως δὴ καὶ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ἀγαπᾷ τὸν Πατέρα καὶ τὸν Υἱόν· ὅθεν ἔπεται τὰ ἀνωτέρω.

Υ υ υ υ υ υ υ 2

Πρὸς



Πρὸς δὲ τὸ Η'. ἀποφαλέον, ὅτι Πρόσωπον, ὅπερ ἂν πρὸς τὰ ἐκτὸς πέμποι Πρόσωπον ἕτερον, τῷτο καὶ προβάλλον ἐς κατὰ τὰ ἐντός· ὃ καὶ αὐτοὶ οἱ ἀντικείμενοι ἡμῖν ὡσαύτως σωμαποφάσκουσιν. "Ορα τὸν Θυμᾶν, Ζητήμ: ΠΓ'. Εἰ δ' ὁ Πατὴρ μηδέποτε λέγεται πέμπεσθαι, ἀλλ' ὁ Υἱὸς εἴρηται ἀπεσάλθαι, καὶ παρ' ἑ τοῦ γεννηθῆναι ἔκ ἔχει Ἁγίᾳ Πνοῦματος.

Πρὸς δὲ τὸ Θ'. „Εἰ δέ τις Πνεῦμα Χριστῶ ἔκ ἔχει,,: Πρὸς Ῥωμ: Η'. τῷ Ἀποστολικῷ ῥῆσιν διασαφῶν Βασίλειος, Φησί: „Κα- „θὼ ὁμοῦσιον ἐστὶν αὐτῷ... Τὰ λοιπὰ δὲ κατὰ τῆ Βασιλείᾳ ἐστὶν, ἵνα μὴ κατὰ τῆ Θεῶ εἶπω, ἑ τῇ Διδασκαλίᾳ μὴ ἀγαπᾶντες, αἰετι προτεπινοῶσιν ὃ ἂν προθεῖεν, ἢ γὰρ ἀφελοῖεν. Ἀλλ' εἰς τί φέροι τὸ ἐρωτᾶν: Διατί ὁ Υἱὸς ἑ λέγεται τῆ Ἁγίᾳ Πνοῦματος; μὴ παρὰ τῷτο ἐκ τῆς καθ' ἡμᾶς περινοίας ἐπανορθῶν δεήσει τὰ Θεῶ ῥήματα; Ἀλλὰ γὰρ καὶ ὁ τῆ ἐρωτήματος λόγος πρόδηλος: „διατί ἑλέγεται ὁ Υἱὸς τῆ Ἀγ: Πνοῦματος,,; "Οτι τὸ Υἱὸς ὄνομα χέσεως ἐστὶ σημαντικόν, καθ' ὃ ὁ Υἱὸς πρὸς τὸ Ἅγιον Πνεῦμα ἑκ ἀναφέρεται· τότε μὲν τῆ Πνοῦματος ὄνομα πλεοναχῶς παραλαμβάνεται καὶ δηλοῖ προσέτι καὶ τῷ Θεῶν Οὐσίαν, καὶ τὰ τῆ Ἁγίᾳ Πνοῦματος χαρίσματα.

Πρὸς δὲ τὸ Ι'. Ἐπειδὴν ἐν τῷ Εὐαγγελίῳ, πάντα ὁ Υἱὸς λέγεται ἔχειν τὰ τῆ Πατρὸς, περὶ τῶν κατ' ὁσίαν νοεῖται τὸ λεγόμενον· τὸ δέ τοι („παρὰ τῷ Πατρίτῃ,,) προτετέθη παρὰ τῶν Σχολαστικῶν, ἑλαπῶς γεμῖν· προθεῖναι γὰρ ἔδει, καὶ παρὰ „τὸ ἐν τῇ Θεαρχικῇ ὁσίᾳ, καὶ Ἀρχίῳ εἶναι καὶ Αἰτίαν τῆ Ἁγίᾳ „Πνοῦματος,,.

Πρὸς δὲ τὸ ΙΑ'. τῷ Κυρίλλῳ ῥῆσιν ἑκ ἐγένετό μοι ἰδεῖν, ἀμοιρῶντι τῆς Βίβλου, καθὰ καὶ ἄλλων πολλῶν· ἐμὲ δ' ἀλλ' ἑ μεγάλῳ τινὰ ἐν ἐκείνῃ σιωρῶ τῷ ῥοπῷ, εἰς τὸ ἐμποιῆσαι δυσχέρειαν. Καί τοι γε ἐπὶ τῶν ῥημάτων ἐκείνων: ὅτι „ἐν αὐτῷ τῷ „Υἱῷ καὶ ἐξ αὐτῆς τὸ Πνεῦμα ἐστὶν,,· εἰ ποῖς ἂν: ὡς ἔστι μὲν ἐν αὐτῷ καθότι „ἐν αὐτῷ οἰκεῖ πᾶν τὸ πλήρωμα τῆς Θεότητος σωματικῶς,,· λέγεται δὲ „καὶ ἐξ αὐτῆς,,· ὅτι, „ἐκ τῆ πληρώματος „αὐτῆς ἡμᾶς πάντες ἐλάβομεν,,· Ἀλλ' ἄλλῃς πέπαυται: Ἐπὶ τὸ ἀπεδαιότερον εἰπᾶν ἔλθωμεν. Τὸ δὲ ἐστὶ, τό:

Τῇ Σῇ Πανοσιωτάτῃ καὶ Σοφωτάτῃ

Πατρίτῃ, ἐς αἰὲ μένειν ὑποπειθῇ

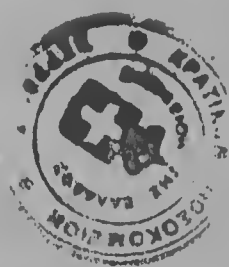
Τὸν Διδάσκαλον Κορυθαλέα.





Δημόσια Κεντρική Βιβλιοθήκη Βέρνης

Δημόσια Κεντρική Βιβλιοθήκη Βέροιας



Εθνική Κεντρική Βιβλιοθήκη Αθηνών



